विज्ञापन ।

श्री वेदव्यासजी जब महाभारतादिक बड़े बड़े ग्रन्थ रच चुके और उस परभी किसी प्रकार उनके चित्तको शान्ति नहीं हुई तब नारदजीके उपदेशसे श्रीमद्भागवत महापुराण रचकर श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्दके अतीव निर्मल गुणोंका गान किया और भक्त जनोंके हेतु मोक्षका सोपान बनादिया इसीतरहसे उन्हीं नारदके उपदेशसे श्रीकृष्णचन्द्रके कुलपुरोहित श्रीगर्गाचार्य्यजीने इस ग्रन्थको रचा, इसकी कथा बडी रसीली ललित मनोहारिणी और प्रिय है, इसमें वे वे गूढ़ कथा वर्णन की हैं जो अन्य ग्रन्थोंमें दर्शनमात्रको भी नहीं हैं, इस ग्रन्थकी प्रशंसा करना मनुष्यके पुरुषार्थसे बाहर है क्योंकि स्वयं महादेवजी इसकी प्रशंसा करते २ फूले अंग नहीं समाते, ऐसा अनुपम ग्रन्थ संस्कृतमें होनेके कारण सर्व साधारणको उपयोगी नहीं था इससे हमने इसकी टीका व्रजभाषामें स्वर्गवासी पं० वंशीधरजीसे कराके छपवायाहै जिससे श्रीकृष्णचन्द्रके भक्त और कथाकहनेवाले अमित लाभ उठावें.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

लाला श्यामलाल,

श्यामकाशी प्रेस-मथुरा.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस-बम्बई.

SARASWATI LIBRARY

नारद
बहुलाश्व राजा
गर्गाचार्य
शौनक
गोलोक

सौभरी
मांधाता
यज्ञपत्नियों ने कराया
हुआ अन्नप्राशन
व्योमासुर व अरिष्टासुर वध

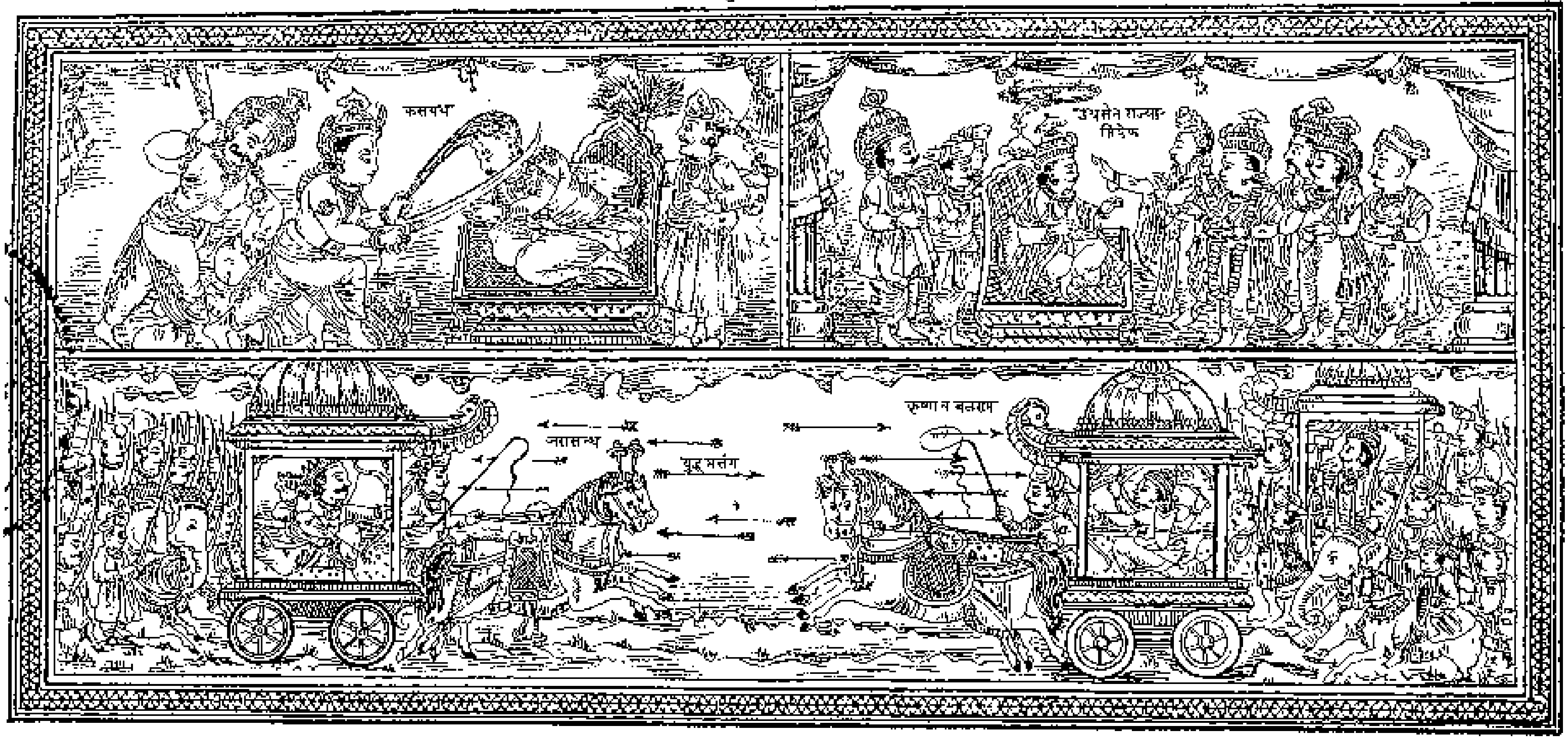
कंसवध
उग्रसेन राज्या-
भिषेक
जरासन्ध
युद्ध प्रसंग
कृष्ण व बलराम

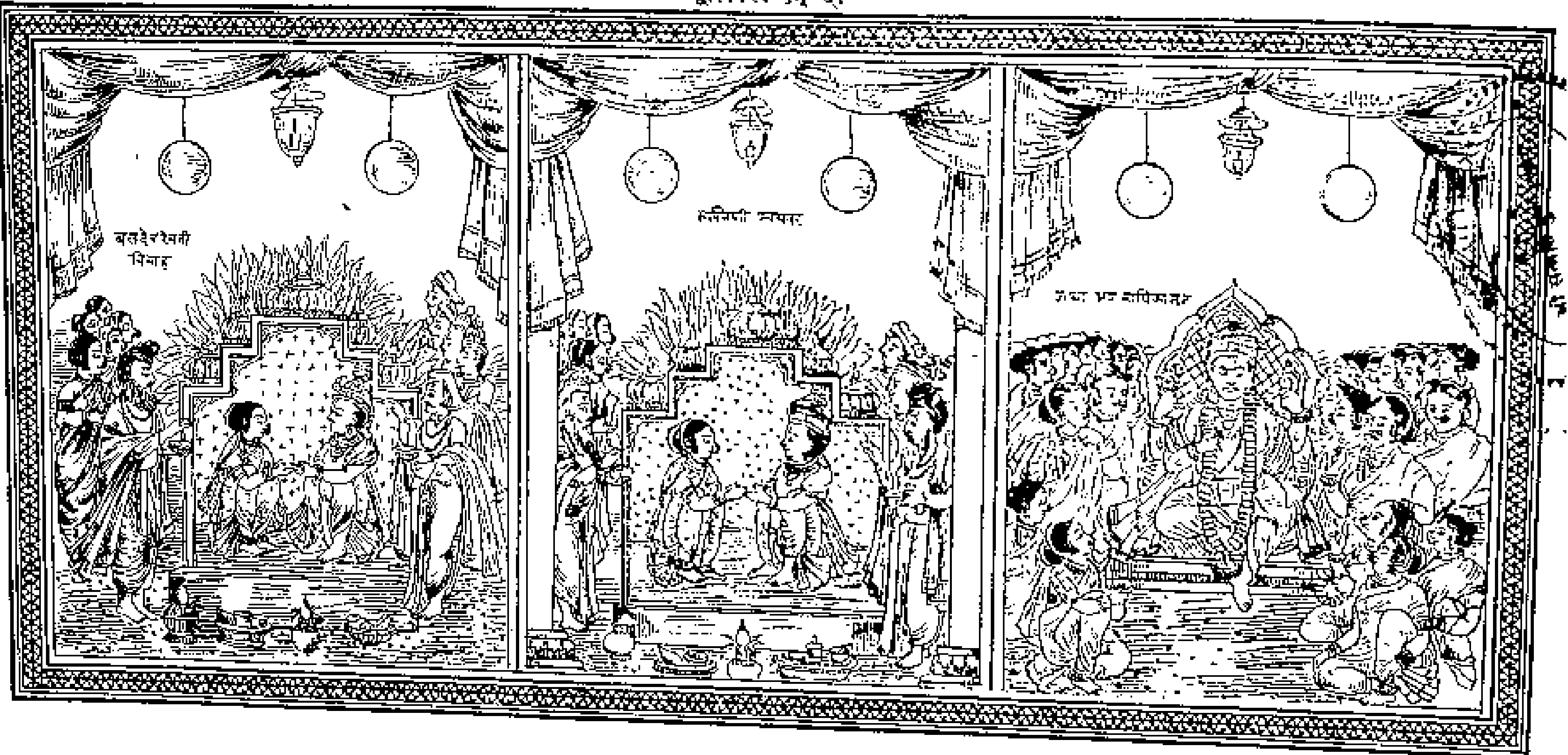
बलदेवरेवती
विवाह

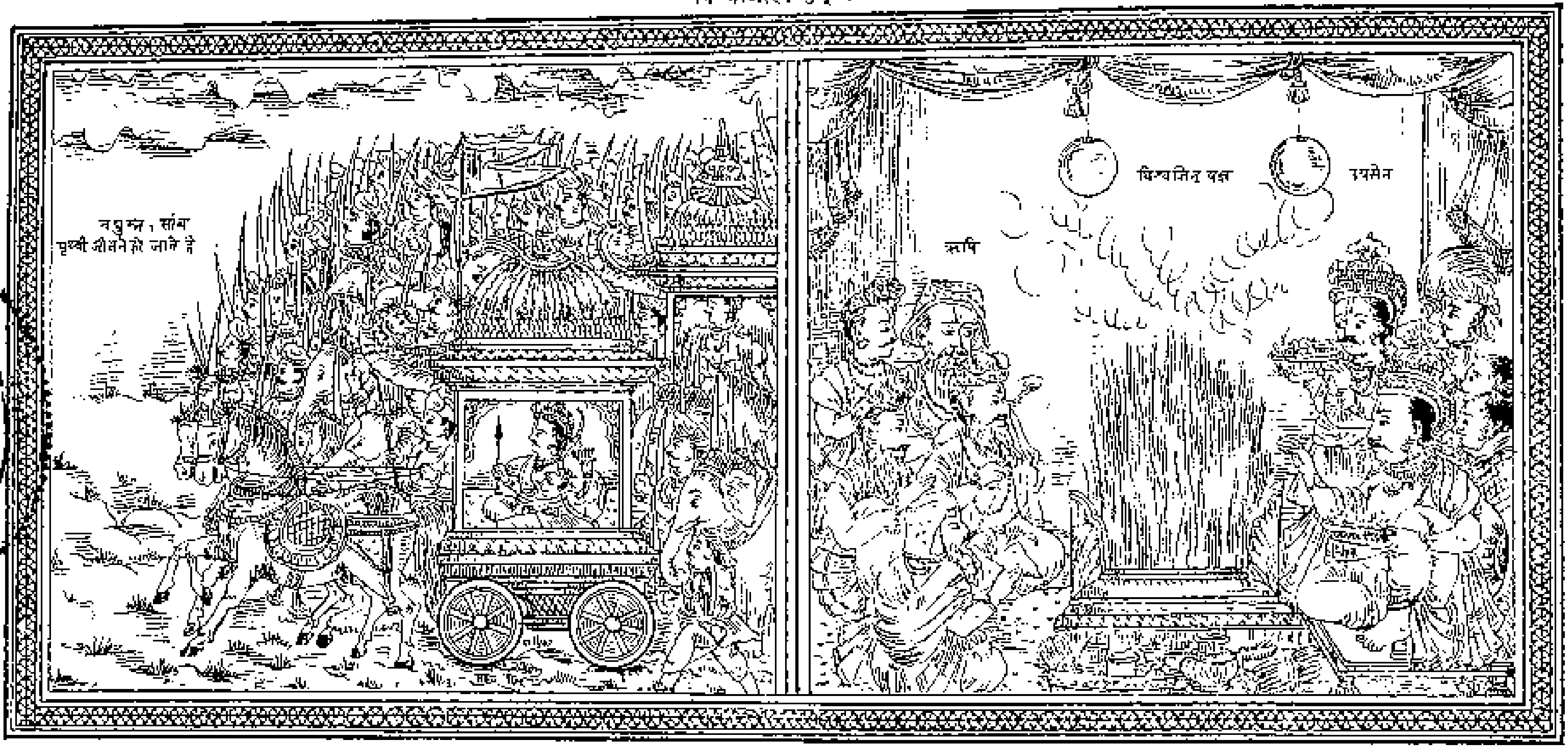
प्रद्युम्न, सांब
पृथ्वी जीतने को जाते हैं
ऋषि
विश्वजित् यज्ञ
उग्रसेन

दुर्योधन
बलदेव
ज्योतिष्मती तपश्चर्या करती है

व्यास
उग्रसेन
कृष्ण
कृष्णपुत्रसांब
बहुलाश्वराजा
नारद

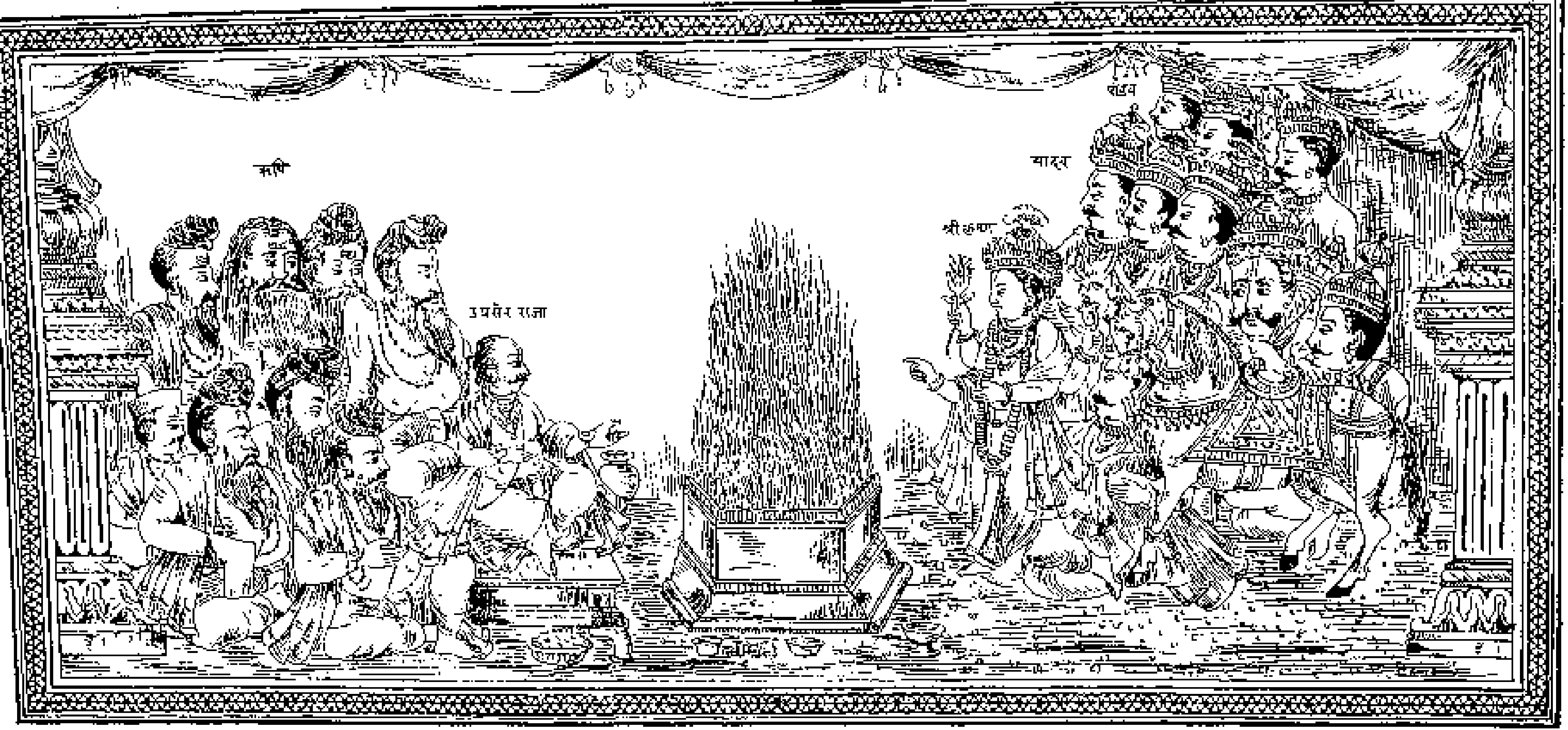
पांडव
ऋषि
यादव
श्रीकृष्ण
उग्रसेन राजा

॥ अथ गर्गसंहितामाहात्म्यं भाषाटीकासमेतं प्रारभ्यते ॥

इस ग्रन्थका पुनर्मुद्रणादि सर्वाधिकार १८६७ एक्ट २५ के अनुसार "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणालयाध्यक्षने स्वाधीन रक्खा है

श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीनन्दकुमाराय नमः ॥ अब हम कवीनके ईश्वर श्रीगर्गाचार्यकूं नमस्कार करिकें गर्गसंहिताकौ माहात्म्य वर्णन करेहैं । कैसे हैं श्रीगर्गाचार्यजी ? वृष्णिवंश और श्रीकृष्ण देवके कुलपुरोहित है ॥ १ ॥ शौनक बोले–हे ब्रह्मन् ! आपके मुखते काननकूं सुख बढायवेवारे उत्तम उत्तम पुराणनके माहात्म्य विस्तारपूर्वक सुने ॥ २ ॥ अब हे मुने ! गर्गसंहिताके सारस्वरूप माहात्म्यकौ विचार करिकें हमारे सामने आप वर्णन करिये ॥ ३ ॥ हे मुने ! गर्गाचार्यकी रचीभई यह संहिता परम धन्य और भागवती है, यामें राधा और माधवकी अत्यन्त महिमा वर्णन कीनी गई है ॥ ४ ॥ सूतजी बोले–हे शौनक ! यह माहात्म्य मैंने नारदजीके मुखते सुन्योहै शिवजीनें स्वयं याकौ उपदेश पार्वतीके अर्थ संमोहनतंत्रमें दियोहै ॥ ५ ॥ कैलासके शुभ्र शिखरपै अक्षयवटके नीचे अलकनंदाके किनारेपै शिवजी नित्यप्रति विराजे है ॥ ६ ॥ एक दिन सर्वमंगलयुक्ता पार्वती अत्यन्त प्रसन्न ह्वैकें सिद्धनके सुनत सुनत अपनो जो वांछित

॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ ॥ वृष्णीनांकृष्णदेवानामाचार्यायमहात्मने ॥ श्रीमद्गर्गकवीशायतस्मैनित्यंनमोनमः ॥ १ ॥ ॥ शौनकउवाच ॥ ॥ श्रुतंतवमुखाद्ब्रह्मन्पुराणानांचविस्तरात् ॥ श्रेष्ठंश्रेष्ठंचमाहात्म्यंकर्णयोःसुखवर्द्धनम् ॥ २ ॥ गर्गस्यचमुनेरत्रसंहितायाःप्रयत्नतः ॥ अस्मा कंवदमाहात्म्यंसाररूपंविचार्यच ॥ ३ ॥ अहोधन्याभागवतीमुनेर्गर्गस्यसंहिता ॥ राधामाधवयोर्यस्यांमहिमाबहुवर्णितः ॥ ४ ॥ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ ॥ अहोशौनकमाहात्म्यंनारदाच्चमयाश्रुतम् ॥ उक्तंसंमोहनेतन्त्रेशिवायैचशिवेनवै ॥ ५ ॥ कैलासशिखरेशुभ्रेयत्राक्ष यवटाजिरे ॥ तीरेचालकनंदायानित्यंसंराजतेहरः ॥ ६ ॥ शंकरंचैकदादेवंगिरिजासर्वमंगला ॥ सिद्धानांशृण्वतांतत्रपप्रच्छवांछितंमुदा ॥ ७ ॥ ॥ पार्वत्युवाच ॥ ॥ यदेवंध्यायसेनाथतस्यापिचरितंपरम् ॥ जन्मकर्मरहस्यंचकथयस्वममाग्रतः ॥ ८ ॥ पुरात्वन्मुखतः साक्षाच्छ्रुतंनाम्नांसहस्रकम् ॥ श्रीमद्गोपालदेवस्यतत्कथांवदमेहर ॥ ९ ॥ ॥ महादेवउवाच ॥ ॥ कथागोपालकृष्णस्यराधेशस्यमहात्मनः ॥ गर्गस्यसंहितायांचश्रूयतेसर्वमंगले ॥ १० ॥ ॥ पार्वत्युवाच ॥ ॥ बहूनिचपुराणानिसंहितादीनिशंकर ॥ सर्वान्विहायगर्गस्यत्वंप्रशंससि संहिताम् ॥ ११ ॥ यस्यांकाभगवल्लीलाविस्तरेणतदुच्यताम् ॥ कृतवान्संहितांगर्गःकेनसंप्रेरितःपुराः ॥ १२ ॥ किंपुण्यंकिंफलंचास्याःश्रव णेनापिलभ्यते ॥ पुराकैःकैर्जनैर्देवश्रुतामवदप्रभो ॥ १३ ॥

है ताहि शिवजीतें पूछत भई ॥ ७ ॥ पार्वती बोली–हे नाथ ! जाको तुम ध्यान करोहो ताके परम अद्भुत चरित्र और जन्मकर्मके गूढ आशयनकौ मेरे आगे वर्णन करिये ॥ ८ ॥ हे हर ! पहले मैंने साक्षात् आपके मुखते श्रीमद्गोपाल देवकौ सहस्रनाम सुन्यौ हौ अब थाकी कथा मोकूं सुनाओ ॥ ९ ॥ महादेवजी बोले–हे सर्वमंगले ! राधिकापति श्रीगोपालकृष्णकौ चरित्र गर्गसंहितामें वर्णन कियौ है ॥ १० ॥ यह सुनिकें पार्वतीजी बोली–हे शंकर ! संहितादिक बहुतसे पुराण है उन सबनकूं छोडिकें तुम गर्गाचार्यकी संहिताकी जो प्रशंसा करोहो ॥ ११ ॥ यामे भगवान्की कौनसी लीला वर्णन करीहै याकौ विस्तारपूर्वक वर्णन करिये, कौनकी प्रेरणासे गर्गजीने गर्गसंहिता रची है ॥ १२ ॥ याके श्रवणको कहा पुण्य और कहा फल है

और याकूं पहिले कौनकौननें सुनी है यहभी मेरे आगे वर्णन करिये ॥ १३ ॥ सूतजी बोले—अपनी प्रियाके वचनकूं सुनिकें सब ऋषिनके बीचमें बैठेभये भगवान् महेश प्रसन्नचित्त हैकें
गर्गाचार्यकी रचीभई कथाकौ विचार करके बोले ॥ १४ ॥ हे भवानी ! श्रीराधामाधव और गर्गसंहिताकौ माहात्म्य प्रयत्नपूर्वक सुनिये याके सुनेते पापनकौ नाश होयहै ॥ १५ ॥
प्रथम ब्रह्माजीने स्वयं भगवान्‌की चरित्र पूछौहो सो भूतलमें विचरते भये हरिभगवानने राधाते कह्यौहो ॥ १६ ॥ फिर शेषजीने भगवान्‌ते गोलोकमें पूछौहो उनके आगे प्रसन्नहैकें
भगवानने सब कथा वर्णन करीहो ॥ १७ ॥ शेषजीने ब्रह्माकूं उपदेश दीनो, ब्रह्माजीने धर्मकूं उपदेश कीनो, धर्मने यह कथामृत अपने दोनो पुत्रनकूं पान
करायौ ॥ १८ ॥ हे सर्वमंगले ! नर नारायणकूं एकांतमें उपदेश दीनो, नारायणनें सेवापरायण नारदकूं उपदेश दीनो ॥ १९ ॥ जैसो धर्मके मुखते सुन्यो हो

॥ ॥ सूतउवाच ॥ ॥ इतिप्रियायावचनंनिशम्यप्रसन्नचित्तोभगवान्महेशः ॥ विचार्यगर्गस्यकृतांकथांचप्रत्याहवाक्यंसदसिस्थितःसः ॥१४॥
॥ ॥ महादेवउवाच ॥ ॥ शृणुदेविसविस्तारंमाहात्म्यंपापनाशनम् ॥ राधामाधवयोश्चापिसंहितायाःप्रयत्नतः ॥ १५ ॥ पूर्वंचरित्रंस्वस्यापि
ब्रह्मणप्रार्थितोयदि ॥ राधायैकथयामासप्रव्रजन्भूतलंहरिः ॥ १६ ॥ ततःशेषेणभगवान्गोलोकेप्रार्थितःपुनः ॥ तस्याग्रेकथयामाससमस्तां
स्वकथांमुदा ॥ १७ ॥ शेषोददौब्रह्मणेचब्रह्माधर्मायसंहिताम् ॥ धर्मःसंप्रार्थितःप्राहस्वपुत्राभ्यांकथामृतम् ॥ १८ ॥ नरनारायणाभ्यांचरहसि
सर्वमंगले ॥ नारायणोनारदायसेवनेनिरतायच ॥ १९ ॥ जगादकृष्णचरित्च्छ्रुतंयच्चधर्मतः ॥ ततश्चप्रार्थितःप्राहगर्गाचार्यायनारदः ॥
॥ २० ॥ नारायणमुखाल्लब्धांसर्वांश्रीकृष्णसंहिताम् ॥ इतिश्रुत्वापरंज्ञानंहरेर्भक्तिसमन्वितम् ॥ २१ ॥ चकारपूजनंगर्गोनारदस्यमहा
त्मनः ॥ उवाचनारदोगर्गंत्रिकालज्ञंचपार्वति ॥ २२ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ मयातुभ्यंश्रावितंचयशःसंक्षेपतोहरेः ॥ वैष्णवानांप्रियंगर्गत्वमेत
द्विपुलंकुरु ॥ २३ ॥ सर्वेषांकामदंशश्वत्कृष्णभक्तिविवर्द्धनम् ॥ ममप्रियंकुरुविभोशास्त्रंतुपरमाद्भुतम् ॥ २४ ॥ वचसाममविप्रेंद्रकृष्णद्वैपायने
नच ॥ सर्वशास्त्रात्परंश्रेष्ठंश्रीमद्भागवतंकृतम् ॥ २५ ॥ ब्रह्मन्यथाभागवतंगोपयिष्याम्यहंतथा ॥ त्वत्कृतंश्रावयिष्यामिबहुलाश्वायभूभृते ॥
॥ २६ ॥ इति श्रीसम्मोहनतंत्रेपार्वतीहरसंवादेश्रीगर्गसंहितामाहात्म्येप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

वैसाही कृष्णचरित नारदजीने गर्गाचार्यकूं उपदेश दीनो ॥ २० ॥ नारायणके मुखते प्राप्तभई सम्पूर्ण श्रीकृष्णसंहिताकूं सुनकै हरिभगवान्‌की भक्तिते मिलेभये
ज्ञानकूं प्राप्तकरकें ॥ २१ ॥ गर्गजी महात्मा नारदको पूजन करतभये, हे पार्वती ! त्रिकालज्ञ गर्गजीते नारदजी बोले ॥ २२ ॥ हे गर्गजी ! मैंने हरिभगवान्‌की यश संक्षेपतें
आपकूं सुनायोहै तुम याकूं वैष्णवनकी प्रीतिके अर्थ विस्तारपूर्वक वर्णन करो ॥ २३ ॥ निरंतर सम्पूर्ण कामनानकी देनहारी श्रीकृष्णमे भक्ति बढायवेवारी मेरी प्रसन्नताके अर्थ
परम अमृत शास्त्रकूं रचौ ॥ २४ ॥ हे विप्रेन्द्र ! मेरेही कहेते कृष्णद्वैपायन व्यासने सम्पूर्ण शास्त्रनते परम उत्तम श्रीमद्भागवत कियो है ॥ २५ ॥ हे ब्रह्मन् ! जैसें भागवतकूं
मै छिपाऊंगो और तुम्हारे रचेभये ग्रन्थकूं मैं बहुलाश्व राजाकूं सुनाऊंगो ॥ २६ ॥ इति श्रीसम्मोहनतंत्रे पार्वतीहरसंवादे श्रीगर्गसंहितामाहात्म्ये भाषाटीकायां प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

महादेव बोले—देवऋषि नारदके वचनकूं सुनके महामुनीश्वर गर्गाचार्यजी विनयपूर्वक नमस्कार करके हँसतेभये यह बोले ॥१॥ गर्गजी कहैहैं—हे ब्रह्मन् ! जो बात आपने कही वह सब ओरसे कठिन दीखैहै तौभी जो आप कृपा करौगे तौ आपकी आज्ञाको पालन करूंगो ॥ २ ॥ हे सर्वमंगले पार्वती ! भगवान् नारद यह कहके अपनी वीणाकूं बजावते और हरियश गावते प्रसन्न होतेभये ब्रह्मलोककूं गये ॥ ३ ॥ गर्गजी महाराजने गर्गाचलमें महाअद्भुत शास्त्र बनायौ तामें देवऋषि नारदजी और बहुलाश्वराजाको संवाद वर्णन कियो है ॥ ४ ॥ श्रीकृष्णके अनेक प्रकारके विचित्र चरित्रनको वर्णन कियो है, यह महान् अद्भुत ग्रन्थ बारहहजार श्लोकनसे अलंकृत है, ये श्लोक अमृततेऊ मीठे हैं ॥ ५ ॥ गर्गजीने जो कछू गुरुनके मुखते सुन्यो है और अपने नेत्रनते कृष्णमहाराजके चरित्र देखेहैं वे सब या अपनी संहितामें वर्णन किये हैं ॥ ६ ॥ यह गर्गसंहिता नामक कृष्णकी कथा भक्ति देनहारी है,

॥ ॥ महादेवउवाच ॥ ॥ श्रुत्वादेवर्षिवचनंगर्गाचार्योमहामुनिः ॥ विनयावनतोभूत्वाप्रहसन्निदमब्रवीत् ॥ १ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ त्वयाब्रह्मन्वचश्चोक्तंकठिनंसर्वतःस्फुटम् ॥ तथापिचकरिष्यामित्वंकरोषिकृपांयदि ॥ २ ॥ इत्येवमुक्तोभगवान्नारदःसर्वमंगले ॥ स्ववीणांवादयन्गायन्ब्रह्मलोकंययौमुदा ॥ ३ ॥ गर्गाचलेकविर्गर्गःशास्त्रंचक्रेमहाद्भुतम् ॥ निरूपितंचसंवादंदेवर्षिबहुलाश्वयोः ॥ ४ ॥ नानाकृष्णचरित्रैश्च विचित्रैःपरिपूरितम् ॥ श्लोकैर्द्वादशसाहस्रैःसुधामिष्टैरलंकृतम् ॥ ५ ॥ यच्छ्रुतंगुरुवक्त्राच्चयद्दृष्टंश्रीहरेर्महत् ॥ तत्सर्वंचरितंगर्गःसंहितायांसमादधे ॥ ६ ॥ श्रीगर्गसंहितानाम्नाकथाभूत्कृष्णभक्तिदा ॥ यस्याःश्रवणमात्रेणसर्वकार्यंचसिध्यति ॥ ७ ॥ अत्रैवोदाहरंतीममितिहासंपुरातनम् ॥ यस्यश्रवणमात्रेणसर्वंपापंप्रणश्यति ॥ ८ ॥ वज्रस्यापिसुतोराजाप्रतिबाहुर्नृपोह्यभूत् ॥ तस्यराज्ञः प्रियादेवीमालिनीनामवर्तते ॥ ९ ॥ मथुरायांकृष्णपुर्य्यांभार्यया सहितोनृपः ॥ संतानार्थेविधानेनबहून्यत्नांश्चकारह ॥ १० ॥ गावश्चबहवोदत्ताःसुपात्रेभ्यःसवत्सकाः ॥ तथातेनकृतायज्ञादक्षिणाभिःप्रयत्नतः ॥ ११ ॥ गुरवोब्राह्मणादेवाःपूजिताभोजनैर्धनैः ॥ पुत्रोनजातस्तद्‌पितताश्चिंतातुरोऽभवत् ॥ १२ ॥ तावुभौदंपतीनित्यंचिंताशोकपरायणौ ॥ पितरोस्यजलंदत्तंकवोष्णमुपभुंजते ॥ १३ ॥ राज्ञःपश्चान्नपश्यामोयोस्माकंतर्पयिष्यति ॥ इत्येवंस्मरतस्तस्यदुःखिताःपितरोऽभवन् ॥ १४ ॥

याके श्रवणमात्रहीते सम्पूर्ण कार्यनकी सिद्धि होय है ॥ ७ ॥ यहां एक प्राचीन इतिहास वर्णन करे हैं, याके श्रवणमात्रते सम्पूर्ण पापनको नाश होय है ॥ ८ ॥ वज्रको बेटा एक प्रतिबाहु नाम राजा होतभयौ, वाकी एक रानी बड़ीप्यारी मालिनीदेवी नाम करके विख्यात होती भई ॥ ९ ॥ श्रीकृष्णकी पुरी मथुरामें यह राजा अपनी स्त्री सहित संतानके अर्थ अनेक प्रकारके यत्न करतो भयो ॥१०॥ सुपात्रनकों बछड़ा बछिया समेत बहुतसी गौअनको दान करत भयो, यज्ञ किये दक्षिणा दीनी ॥११॥ धन और भोजननके द्वारा गुरु, ब्राह्मण और देवतानको विधिपूर्वक पूजन करत भयौ तौभी पुत्र न भयौ, तब तौ राजाकूं बड़ी चिन्ता भई ॥ १२ ॥ अब वे दोनों राजा रानी नित्यप्रति शोक और चिन्तामें डूबे रहें और याके दियेभये जलकूं पित्रीश्वर उष्णवत् पान करें ॥ १३ ॥ राजाके पीछे हमकूं कोई ऐसौ नहीं दीखैहै जो हमे तर्पणादिद्वारा तृप्त करैगो या बातको स्मरण करेते

और याकूं पहिले कोनकोनने सुनी है यहभी मेरे आगे वर्णन करिये ॥ १३ ॥ सूतजी बोले–अपनी प्रियाके वचनकूं सुनिकें सब ऋषिनके बीचमें बैठेभये भगवान् महेश प्रसन्नचित्त हेकें
गर्गाचार्यकी रचीभई कथाकौ विचार करकें बोले ॥ १४ ॥ हे भवानी ! श्रीराधामाधव और गर्गसंहिताको माहात्म्य प्रयत्नपूर्वक सुनिये याकें सुनेंते पापनकौ नाश होयहै ॥ १५ ॥
प्रथम ब्रह्माजीने स्वयं भगवान्‌को चरित्र पूछ्योहो सो भूतलमे विचरते भये हरिभगवान्‌ने राधाते कह्योहो ॥ १६ ॥ फिर शेषजीने भगवान्‌ते गोलोकमें पूछ्योहो उनकें आगे प्रसन्नहैकें
भगवानने सब कथा वर्णन करीहो ॥ १७ ॥ शेषजीनें ब्रह्माकूं उपदेश दीनो, ब्रह्माजीनें धर्मकूं उपदेश कीनों, धर्मने यह कथामृत अपने दोनो पुत्रनकूं पान
करायो ॥ १८ ॥ हे सर्वमंगले ! नर नारायणकूं एकांतमें उपदेश दीनो, नारायणनें सेवापरायण नारदकूं उपदेश दीनों ॥ १९ ॥ जैसो धर्मके मुखते सुन्यो हो

॥ ॥ सूतउवाच ॥ ॥ इतिप्रियायावचनंनिशम्यप्रसन्नचित्तोभगवान्महेशः ॥ विचार्यगर्गस्यकृतांकथांचप्रत्याहवाक्यंसदसिस्थितःसः ॥१४॥
॥ ॥ महादेवउवाच ॥ ॥ शृणुदेविसविस्तारंमाहात्म्यंपापनाशनम् ॥ राधामाधवयोश्चापिसंहितायाःप्रयत्नतः ॥ १५ ॥ पूर्वंचरित्रंस्वस्यापि
ब्रह्मणाप्रार्थितोयदि ॥ राधायैकथयामासप्रव्रजन्भूतलंहरिः ॥ १६ ॥ ततःशेषेणभगवान्गोलोकेप्रार्थितःपुनः ॥ तस्याग्रेकथयामाससमस्तां
स्वकथांमुदा ॥ १७ ॥ शेषोददौब्रह्मणेचब्रह्माधर्मायसंहिताम् ॥ धर्मःसंप्रार्थितःप्राहस्वपुत्राभ्यांकथामृतम् ॥ १८ ॥ नरनारायणाभ्यांचरहसि
सर्वमंगले ॥ नारायणोनारदायसेवनेनिरतायच ॥ १९ ॥ जगादकृष्णचरित्रंतंयच्चतंधर्मवक्त्रतः ॥ ततश्चप्रार्थितःप्राहगर्गाचार्यायनारदः ॥
॥ २० ॥ नारायणमुखाल्लब्धांसर्वांश्रीकृष्णसंहिताम् ॥ इतिश्रुत्वापरंज्ञानंहरेर्भक्तिसमन्वितम् ॥ २१ ॥ चकारपूजनंगर्गोनारदस्यमहा
त्मनः ॥ उवाचनारदोगर्गंत्रिकालज्ञंचपार्वति ॥ २२ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ मयातुभ्यंश्रावितंचयशःसंक्षेपतोहरेः ॥ वैष्णवानांप्रियंगर्गत्वमेत
द्विपुलंकुरु ॥ २३ ॥ सर्वेषांकामदंशश्वत्कृष्णभक्तिविवर्द्धनम् ॥ ममप्रियंकुरुविभोशास्त्रंतुपरमाद्भुतम् ॥ २४ ॥ वचसाममविप्रेंद्रकृष्णद्वैपायने
नच ॥ सर्वशास्त्रात्परंश्रेष्ठंश्रीमद्भागवतंकृतम् ॥ २५ ॥ ब्रह्मन्यथाभागवतंगोपयिष्याम्यहंतथा ॥ त्वत्कृतंश्रावयिष्यामिबहुलाश्वायभूभृते ॥
॥ २६ ॥ इति श्रीसम्मोहनतंत्रेपार्वतीहरसंवादेश्रीगर्गसंहितामाहात्म्येप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

वैसाही कृष्णचरित्र नारदजीने गर्गाचार्यकूं उपदेश दीनो ॥ २० ॥ नारायणके मुखते प्राप्तभई सम्पूर्ण श्रीकृष्णसंहिताकूं सुनकें हरिभगवान्‌की भक्तिते मिलेभये
ज्ञानकूं प्राप्तकरकें ॥ २१ ॥ गर्गजी महात्मा नारदको पूजन करतभये, हे पार्वती ! त्रिकालज्ञ गर्गजीते नारदजी बोले ॥ २२ ॥ हे गर्गजी ! मैंने हरिभगवानको यश संक्षेपते
आपकूं सुनायोहै तुम याकूं वैष्णवनकी प्रीतिकें अर्थ विस्तारपूर्वक वर्णन करो ॥ २३ ॥ निरंतर सम्पूर्ण कामनानकौ देनहारो श्रीकृष्णमें भक्ति बढायवेवारो मेरी प्रसन्नताकें अर्थ
परम अमृत शास्त्रकूं रचौ ॥ २४ ॥ हे विप्रेन्द्र ! मेरेही कहेते कृष्णद्वैपायन व्यासने सम्पूर्ण शास्त्रनते परम उत्तम श्रीमद्भागवत कियो है ॥ २५ ॥ हे ब्रह्मन् ! जैसे भागवतकूं
मैं छिपाऊंगो और तुम्हारे रचेभये ग्रन्थकूं मैं बहुलाश्व राजाकूं सुनाऊंगो ॥ २६ ॥ इति श्रीसम्मोहनतंत्रे पार्वतीहरसंवादे श्रीगर्गसंहितामाहात्म्ये भाषाटीकायां प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

महादेव बोले–देवऋषि नारदके वचनकूं सुनके महामुनीश्वर गर्गाचार्यजी विनयपूर्वक नमस्कार करके हंसतेभये यह बोले ॥१॥ गर्गजी कहैहैं–हे ब्रह्मन् ! जो बात आपने कही वह सब ओरते कठिन दीखैहै तौभी जो आप कृपा करौगे तो आपकी आज्ञाको पालन करूंगो ॥ २ ॥ हे सर्वमंगले पार्वती ! भगवान् नारद यह कहके अपनी वीणाकूं बजावते और हरियश गावते प्रसन्न होतभये ब्रह्मलोककूं गये ॥ ३ ॥ गर्गजी महाराजने गर्गाचलमें महाअद्भुत शास्त्र बनायो तामें देवऋषि नारदजी और बहुलाश्वराजाको संवाद वर्णन कियो है ॥ ४ ॥ श्रीकृष्णके अनेक प्रकारके विचित्र चरित्रनको वर्णन कियो है, यह महान् अद्भुत ग्रन्थ बारहहजार श्लोकनसे अलंकृत है, ये श्लोक अमृततेक मीठे हैं ॥ ५ ॥ गर्गजीने जो कछु गुरुनके मुखते सुन्यो है और अपने नेत्रनते कृष्णमहाराजके चरित्र देखेहै वे सब या अपनी संहितामें वर्णन किये हैं ॥ ६ ॥ यह गर्गसंहिता नामक कृष्णकी कथा भक्ति देनहारी है,

॥ ॥ महादेवउवाच ॥ ॥ श्रुत्वादेवर्षिवचनंगर्गाचार्योमहामुनिः ॥ विनयावनतोभूत्वाप्रहसन्निदमब्रवीत् ॥ १ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ त्वयाब्रह्मन्वचश्चोक्तंकठिनंसर्वतःस्फुटम् ॥ तथापिनकरिष्यामित्वंकरोषिकृपांयदि ॥ २ ॥ इत्येवमुक्तोभगवान्नारदःसर्वमंगले ॥ स्ववीणांवादयन्गायन्ब्रह्मलोकंययौमुदा ॥ ३ ॥ गर्गाचलेकविर्गर्गःशास्त्रंचक्रेमहाद्भुतम् ॥ निरूपितंचसंवादंदेवर्षिबहुलाश्वयोः ॥ ४ ॥ नानाकृष्णचरित्रैश्च विचित्रैःपरिपूरितम् ॥ श्लोकैर्द्वादशसाहस्रैःसुधामिष्टैरलंकृतम् ॥ ५ ॥ यच्छ्रुतंगुरुवक्त्राच्चयद्दृष्टंश्रीहरेर्महत् ॥ तत्सर्वचरितंगर्गःसंहितायांसमादधे ॥ ६ ॥ श्रीगर्गसंहितानाम्नाकथाभूत्कृष्णभक्तिदा ॥ यस्याःश्रवणमात्रेणसर्वकार्यंचसिध्यति ॥ ७ ॥ अत्रैवोदाहरंतीममितिहासंपुरातनम् ॥ यस्यश्रवणमात्रेणसर्वपापंप्रणश्यति ॥ ८ ॥ वज्रस्यापिसुतोराजप्रतिबाहुर्नृपोह्यभूत् ॥ तस्यराज्ञःप्रियादेवीमालिनीनामवर्तते ॥ ९ ॥ मथुरायांकृष्णपुर्य्यांभार्य्ययासहितोनृपः ॥ संतानार्थेविधानेनबहून्यत्नांश्चकारह ॥ १० ॥ गावश्चबहवोदत्ताःसुपात्रेभ्यःसवत्सकाः ॥ तथातेनकृतायज्ञादक्षिणाभिःप्रयत्नतः ॥ ११ ॥ गुरवोब्राह्मणादेवाःपूजिताभोजनैर्धनैः ॥ पुत्रोनजातस्तद्पितश्चिंतातुरोऽभवत् ॥ १२ ॥ तावुभौदंपतीनित्यंचिंताशोकपरायणौ ॥ पितरोस्यजलंदत्तंकवोष्णमुपभुंजते ॥ १३ ॥ राज्ञःपश्चान्नपश्यामोयोऽस्मांकंतर्पयिष्यति ॥ इत्येवंस्मरतस्तस्यदुःखिताःपितरोऽभवन् ॥ १४ ॥

याके श्रवणमात्रहीते सम्पूर्ण कार्यनकी सिद्धि होय है ॥ ७ ॥ यहां एक प्राचीन इतिहास वर्णन करें है, याके श्रवणमात्रतें सम्पूर्ण पापनको नाश होय है ॥ ८ ॥ वज्रको बेटा एक प्रतिबाहु नाम राजा होतभयो, वाकी एक रानी बड़ीप्यारी मालिनीदेवी नाम करके विख्यात होती भई ॥ ९ ॥ श्रीकृष्णकी पुरी मथुरामें यह राजा अपनी स्त्री सहित संतानके अर्थ अनेक प्रकारके यत्न करतो भयो ॥१०॥ सुपात्रनकों बछड़ा बछिया समेत बहुतसी गौअनको दान करत भयो, यज्ञ किये दक्षिणा दीनी ॥११॥ धन और भोजननके द्वारा गुरु, ब्राह्मण और देवतानको विधिपूर्वक पूजन करत भयो तौभी पुत्र न भयो, तब तो राजाकूं बड़ी चिन्ता भई ॥ १२ ॥ अब वे दोनों राजा रानी नित्यप्रति शोक और चिन्तामें डूबे रहे और याके दियेभये जलकूं पितीश्वर उष्णवत् पान करें ॥ १३ ॥ राजाके पीछे हमकूं कोई ऐसो नहीं दीखैहै जो हमें तर्पणादिद्वारा तृप्त करैगो या बातको स्मरण करते

गेहूं वा जौकी पूरी और मिष्टान्न भोजन करै, सेंधोनोन, कंद, दही और दूधको विधानते सेवन करे ॥ १२ ॥ विष्णुभगवान्के प्रसादको हे नृपोत्तम ! सेवन करे इन सब कामनकूं श्रद्धापूर्वक करै और श्रद्धाते कथा सुनै तौ सम्पूर्ण कामनानकी प्राप्ति होय है ॥ १३ ॥ भूमिपै शयन करै, क्रोध और लोभकूं छोडदे और गुरुनके मुखते कथा सुने तौ सम्पूर्ण कामनानकी प्राप्ति होयहै ॥ १४ ॥ जो मनुष्य गुरुकी भक्तिते रहित है, नास्तिक हैं, पापी है, अवैष्णव हैं, दुष्ट है, उनकूं कथाको फल नहीं होय है ॥ १५ ॥ मनुष्यकूं उचित है कि, सुन्दर मुहूर्तमे अपने घर कथाको आरम्भ करावै अपने जान पहिचानके ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य सबनकूं बुलावै ॥ १६ ॥ भक्तिपूर्वक केलाको मंडप बनावै, आग जलसे भरयोभयौ कलश, पंचपल्लवसमेत राखै ॥ १७ ॥ प्रथम गणेशजीको पूजन करके फिर नवग्रहनकी पूजन करै फिर पुस्तकको पूजन करके वक्ताको

मिष्टान्नंपूरिकांचैवगोधूमस्ययवस्यवा ॥ अश्नीयात्सैन्धवंकंदंदधिदुग्धंविधानतः ॥१२॥ विष्णुप्रसादंभुंजीतनाप्रसादंनृपोत्तम ॥ श्रद्धयातुप्र कुर्वीतश्रवणंसर्वकामदम् ॥ १३ ॥ भूमिशायीभवेत्प्राज्ञःक्रोधलोभविवर्जितः ॥ कथांगुरुमुखाच्छ्रुत्वासर्वकामफलंलभेत् ॥१४॥ गुरुभक्तिवि हीनानांनास्तिकानांचपापिनाम् ॥ अवैष्णवानांदुष्टानांकथायाश्चफलंनहि ॥ १५ ॥ सुमुहूर्तेकथारंभंस्वगृहेकारयेन्नरः ॥ ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रा न्समाहूयस्वकान्स्वकान् ॥ १६ ॥ मंडपंकदलीखण्डैःप्रकुर्य्याद्भक्तितःसुधीः ॥ अग्रेतुकलशंधृत्वाजलपूर्णंसपल्लवम् ॥ १७ ॥ पूर्वंविनायकंपू ज्यतत्पश्चात्तुनवग्रहान् ॥ ततश्चपुस्तकंपूज्यवक्तारंपरिपूजयेत् ॥ १८ ॥ सुवर्णंदक्षिणांदत्त्वाह्यशक्तोरजतस्यवा ॥ कलशेश्रीफलंधृत्वामिष्टान्नंतु निवेदयेत् ॥ १९ ॥ प्रकुर्य्यादार्तिकंभक्त्यासंपूज्यतुलसीदलैः ॥ समाप्तिदिवसेराजन्प्रदक्षिणमुपाचरेत् ॥ २० ॥ परदाररतंधूर्तंवादिनंशिवनि न्दकम् ॥ अवैष्णवंक्रोधपरंवक्तारंतुनकल्पयेत् ॥ २१ ॥ वादीचनिंदकोमूर्खोगाथायांभंगमाचरेत् ॥ दुःखदाताचसर्वेषांसतुश्रोताहतःस्मृतः ॥ ॥२२॥ गुरुशुश्रूषणेरक्तोविष्णुभक्तःकथार्थवित् ॥ गाथांश्रोतुंमनोयस्यसश्रोताश्रेष्ठउच्यते ॥ २३ ॥ शुद्धःसआचार्यकुलप्रजातःश्रीकृष्णभक्तोब हुशास्त्रवेत्ता ॥ कृपाकरःसर्वजनेषुनित्यंसंदेहहारीकथितःसवक्ता ॥ २४ ॥ वरणंब्राह्मणानांचयथाशक्त्याचकारयेत् ॥ कथाविघ्ननिवृत्त्यर्थंद्वाद शाक्षरविद्यया ॥ २५ ॥

पूजन करै ॥ १८ ॥ सुवर्णकी दक्षिणा देय जो सामर्थ्य न होय तो चांदीहीकी देय, कलशमें श्रीफल रखके मिष्टान्नकी निवेदन करै ॥ १९ ॥ तुलसीदलते पूजनकरिके भक्तिते आरती उतारै, समाप्तिकेदिन परिक्रमा देय ॥ २० ॥ परस्त्रीगामी, धूर्त, वादी, शिवनिंदक, अवैष्णव ऐसे वक्ताके मुखते कथा न सुनें ॥ २१ ॥ वादी, मूर्ख, निन्दक जो कथाके बीचमे बोलउठै और जो सबकूं दुःख देय ऐसौ श्रोता दुष्ट होयहै ॥ २२ ॥ जो श्रोता गुरुकी सेवामें परायण होय, विष्णुभक्ति रक्खै कथाके अर्थकूं समझै, जाको मन कथासुनवेमें लगै सो श्रोता श्रेष्ठ होयहै ॥ २३ ॥ जो शुद्ध होय, श्रेष्ठ आचार्यके कुलमें उत्पन्न भयोहोय, श्रीकृष्णको भक्त होय, सम्पूर्ण शास्त्रनको जाननहारौ होय सम्पूर्ण मनुष्यनपै दया राखै और संदेहनकूं दूर करै सो वक्ता श्रेष्ठ है ॥ २४ ॥ यथाशक्ति ब्राह्मणनको वरण करावै कथाकी निर्विघ्नसमाप्तिके हेतु द्वादशाक्षर मन्त्रको जाप

करावे ॥ २५ ॥ धीरे २ तीन पहरतक कथा बांचे, कथाकौ विश्राम दोबेर करावे ॥ २६ ॥ लघुशंकादि कृत्यसे निवृत्त हैके जलसे पवित्र हैके हाथ पांव धोयके मुख धोवे ॥ २७ ॥ हे राजन् ! नवें दिन विज्ञानखंडमें कहीभई रीतिसे पुष्प, नैवेद्य, चन्दनसे पुस्तककौ पूजन करे ॥ २८ ॥ सोने, चांदी, हाथी, घोड़ा, आदिकी दक्षिणा देय, वस्त्र आभूषण, गंधादिकसे वक्ताकौ पूजन करे ॥ २९ ॥ नौसहस्र अथवा नौ सौ अथवा नब्बे अथवा भद्धा न होय तौ नौही ब्राह्मणनकूं खीरसे जिमावे ॥ ३० ॥ यथाशक्ति भोजन करावे तौ कथाकौ फल मिले, कथाके विश्राममें हरिनाम संकीर्त्तन करावे ॥ ३१ ॥ विष्णुभक्तिपरायण स्त्रीजननके संग पुरुषनके संग कांस्यपात्र, झांझ, शंख, मृदंग, वंशी आदि जयजय करतौभयौ बजावे ॥ ३२ ॥ गुरुके लिये गर्गसंहिताकौ पुस्तक सोनेके सिंहासनपै रखके देय फिर हरिके मंदिरकू जाय ॥ ३३ ॥ हे राजन् ! यह गर्गसंहिताकौ माहात्म्य

कथांतुधीरकंठेनवाचयेत्प्रहरत्रयम् ॥ कथायास्तत्रविश्रामोद्विवारंकारयेद्बुधः ॥२६॥ लघुशंकादिकंकृत्वाभूत्वानीरेणवैशुचिः ॥ प्रक्षाल्यपाणी दौचमुखप्रक्षालनंचरेत् ॥२७॥ नवाहेपूजनंचोक्तंखण्डेविज्ञानकेनृप ॥ पुस्तकंपूजयित्वाचपुष्पनैवेद्यचंदनैः ॥२८॥ सुवर्णरजताद्यैश्चवाहनाद्यैः सदक्षिणैः॥ वस्त्रभूषणगंधाद्यैर्वाचकंपूजयेत्सुधीः ॥२९॥ विप्रान्वानवसाहस्रांस्तथानवशतान्नृप ॥ तथानवनवंवापिपायसैर्वानवद्विजान्॥३०॥ भोजयेत्तुयथाशक्त्याकथायाश्चफलंलभेत् ॥ कथायास्तत्रविश्रमेकीर्त्तनंकारयेद्बुधः ॥ ३१ ॥ स्त्रीजनैःपुरुषैःसार्द्धंविष्णुभक्तिसमन्वितैः ॥ कांस्यशंखमृदंगाद्यैर्जयशब्दैरितस्ततः ॥ ३२ ॥ श्रीगर्गसंहितायाश्चपुस्तकंगुरवेजनः ॥ निधायस्वर्णसिंहेवैदद्यात्सोतेहरिंव्रजेत् ॥३३॥ इतिते कथितंराजन्किंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ संहिताश्रवणेनापिभुक्तिर्मुक्तिःप्रदृश्यते ॥ ३४ ॥ इतिश्रीसंमोहनतन्त्रेपार्वतीहरसंवादेश्रीगर्गसंहितामाहात्म्यश्रवणविधिवर्णनंनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ महादेवउवाच ॥ ॥ इदंवचःश्रीमुनिशस्यश्रुत्वाप्रहृस्यराजाविनतस्तुसम्यक् ॥ कुरुत्वंसपुत्रंमुनेमांशरण्यंत्वरंश्रावयत्वंहरेःसंहितांच ॥ १ ॥ श्रुत्वाभूपवचश्चकारसुखदंपारायणंमंडपंकृत्वाश्रीयमुनातटेमुनिवरःश्रुत्वाऽऽययुर्माथुराः ॥ पूर्णेनाथदिनेतथापरदिनेराजाथदानंत्वदाद्विप्रेभ्योवरभोजनंबहुधनंश्रीयादवेंद्रोमहान् ॥ २ ॥ शांडिल्यायमुनीन्द्रायरथाश्चान्द्रविणं महत् ॥ गोगजादीनिरत्नानिसंपूज्यप्रददौनृपः ॥ ३ ॥ श्रीमद्गोपालकृष्णस्यममोक्तंसर्वमंगले ॥ सहस्रनामशांडिल्यःसर्वदोषहरंजगौ ॥४॥

मैने तेरे अगाड़ी कह्यो अब कहा सुनवेकी इच्छा करे है, या संहिताके श्रवणमात्रसे भुक्ति मुक्ति मिलेहै ॥ ३४ ॥ इति श्रीसंमोहनतंत्रे पार्वतीहरसंवादे श्रीगर्गसंहितामाहात्म्ये भाषाटीकायां श्रवणविधिवर्णनं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ महादेवजी बोले—मुनीश्वरके या वचनकूं सुनके प्रसन्न हैके राजा बड़ौ नम्र भयौ और कहनलग्यौ हे मुनीश ! मैं आपकी शरण आयौहूं मोहि या संहिताकूं जल्दी सुनायके पुत्र दीजिये ॥ १ ॥ राजाके या वचनकूं सुनके यमुनाजीके किनारेपै सुन्दर मंडप बनवायके कथाकौ पारायण करौ और या खबरकूं सुनके सबरे मथुरावासीहू आये यादवनकौ राजा कथाके पूर्वदिन और समाप्तिके दिन ब्राह्मणनकूं बहुत दान देतौभयौ भोजन कराये और खूब धन दीनौ ॥ २ ॥ शांडिल्यऋषिकूं बहुतसे रथ घोडा और बहुतसौ धन दीनौ सम्यक् प्रकार पूजन करके गौ दीनी, हाथी दीने, रत्न दीने ॥ ३ ॥ हे सर्वमंगले ! फिर शांडिल्यऋषिने

॥ इति गर्गसंहितामाहात्म्यं भाषाटीकासमेतं समाप्तम् ॥

उ0 ७८८(७)

॥ अथ गर्गसंहितायां गोलोकखण्डं भाषाटीकासहितं प्रारभ्यते ॥

(प्रथमखण्डम्)

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ गोलोकखंडभाषाटीका प्रारभ्यते ॥ वक्ताको उचित है कि, ग्रंथकी आदिमें प्रथम नारायणकूं तथा नरनमें उत्तम जो नरभगवान् हैं तिनकूं एवं देवी जो सरस्वती है ताकूं और श्रीमहामुनि वेदव्यासजीकूं नमस्कार करके संसारकं जीतनेवारे पुराणको वर्णन करे ॥ १ ॥ ग्रन्थकर्ता श्रीगर्गजी कहेहैं कि, मैं श्रीराधापति श्रीकृष्णके चरणकमलको ध्यान करहूं कैसे चरणकमल हैं कि, शरद् ऋतुके निर्मल कमलकी शोभाकूं अत्यंत फीकी करेहै और भौंरारूप मुनिनकरिके सेवित वज्र, अंकुश, यव, पद्म इन चिह्नकरिके युक्त हैं और झलमलाते बजते सुवर्णके नूपुरनसौं दूरि कीनेहै भक्तनके अध्यात्म, अधिभूत, अधिदैव, तीनि ताप जाने ऐसौ मुक्तिको दाता जो चरणकमल ताकू मै ध्यान करहूं और जहां जहां वा चरणकूं धरेहै तहां तहां चरणकमलकी कांतितें पृथ्वी लाल होतीजाय है, नखचंद्रकी किरन छूटतीजाय है ऐसो वो चरणकमल द्वय है ॥ २ ॥ जाके मुखकमलसें निकस्यो जो प्रथम कथारूपी अमृत ताकू जे पुरुषनमें उत्तम हैं ते पीवेंहै ऐसे बदरिकाश्रममें विचरनवारे सत्यवतीके कुमार प्रणाम करनवारे पुरुषनके पापके हरनवारे शार्ङ्गधन्वाको अवतार श्रीवेदव्या

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ ॐसरस्वत्यैनमः ॥ अथगोलोकखण्डःप्रारभ्यते ॥ ॐ नारायणंनमस्कृत्यनरंचैवनरोत्तमम् ॥ देवींसरस्वतींव्यासं ततोजयमुदीरयेत् ॥ १ ॥ शरद्विकचपंकजश्रियमतीवविद्वेषकंमिलिन्दमुनिसेवितंकुलिशकंजचिह्नावृतम् ॥ स्फुरत्कनकनूपुरंदलितभक्तता पत्रयंचलद्द्युतिपदद्वयंहृदिदधामिराधापतेः ॥ २ ॥ वदरव नविहारःसत्यवत्याःकुमारःप्रणतदुरितहारःशार्ङ्गधन्वावतारः ॥ ३ ॥ कदाचिन्नैमिषारण्येश्रीगर्गोज्ञानिनांवरः ॥ आययौशौनकंद्रष्टुंतेज स्वीयोगभास्करः ॥ ४ ॥ तंदृष्ट्वासहसोत्थायशौनकोमुनिभिःसह ॥ पूजयामासपाद्याद्यैरुपचारैर्विधानतः ॥ ५ ॥ ॥ शौनकउवाच ॥ ॥ सतांपर्यटनंधन्यंगृहिणांशांतयेस्मृतम् ॥ नृणामन्तस्तमोहारीसाधुरेवनभास्करः ॥ ६ ॥ तस्मान्मेहृदिसंभूतंसंदेहंनाशयप्रभो ॥ कतिधा श्रीहरेर्विष्णोरवतारोभवत्यलम् ॥ ७ ॥ ॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ ॥ साधुपृष्टंत्वयाब्रह्मन्भगवद्गुणवर्णनम् ॥ शृण्वतांगदतांयद्वैपृच्छतां वितनोतिशम् ॥ ८ ॥ अत्रैवोदाहरंतीममितिहासंपुरातनम् ॥ यस्यश्रवणमात्रेणमहादोषःप्रशाम्यति ॥ ९ ॥

सजी है सो मेरी वाणीकूं शोभायमान करो ॥ ३ ॥ काहूसमय ज्ञानीनमें श्रेष्ठ बड़े तेजस्वी योगके सूर्य श्रीगर्गाचार्यजी शौनक ऋषिकूं देखिवेकूं नैमिषारण्यवनमें आवतभये ॥ ४ ॥ इन गर्गजीको आये देखिके शौनकऋषि मुनिनकूं संग लैकें उठकर पाद्य अर्घ, आचमन, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आदि उपचारसें वेदकी विधितें पूजा करके बोले ॥ ५ ॥ शौनकजी बोले–हे महाराज ! संतनकी जो विचरिबौ है सो गृहस्थीनके आनन्दके लिये कह्यो है क्योंकि मनुष्योंके अंतःकरणके अंधकारके दूर करनवारे साधुही हैं सूर्य नहीं ॥ ६ ॥ तातें हे प्रभो ! मेरे मनमें जो संदेह उठ्योहै ताहि दूरि करौ कि, विष्णुभगवानके सब कितने अवतार होंय हैं ॥ ७ ॥ तब गर्गजी बोले कि, हे ब्रह्मन् ! तुमनें भली बात पूछी क्योंकि जो यह भगवानके गुणनको वर्णन है सो कहिवेवारे सुनिवेवारे और पूछिवेवारेनकौ कल्याण करनवारौ है ॥ ८ ॥ यहां यह एक पुरानो इतिहास वर्णन करें

है जाके सुनिबेइतें बडे बडे पाप नाश होंयहैं ॥ ९ ॥ पहले मिथिला नगरीमें बडो प्रतापी एक बहुलाश्व नाम करिके राजा बडो शांतात्मा निरहंकारी और कृष्णको भक्त होतो भयौ ॥ १० ॥ ताके घर एक समय श्रीनारद आकाशमार्गमें हैकें आये उनके देखके राजा उनकी पूजा करिके आसनपै बैठारि हाथ जोरिके यह बोल्यौ ॥ ११ ॥ जनक राजा बोल्यौ कि, जो अनादि आत्मा पुरुष भगवान् प्रकृतितें परेंहै सो अवतार क्यों लेय हैं हे महाबुद्धिवारे! सो मोसें कहौ! ॥ १२ ॥ तब नारदजी बोले–कि, हे राजन्! गौ, ब्राह्मण, साधु, देवता और वेद, इनकी रक्षाके लिये साक्षात् भगवान् हरि अपनी लीला करिके अवतार धरेंहैं ॥ १३ ॥ जैसे नट अपनी लीलामें मोहित नही होयहै और देखिबे वारे हैजायहै ऐसेही हरिकी मायाकूं देखिके और मोहित होंयहैं आप हरि मोहित नही होंयहैं ॥ १४ ॥ तब राजाजनक बोल्यौ कि, भगवान् हरिके कितने प्रकारके अवतार

मिथिलानगरेपूर्वंबहुलाश्वःप्रतापवान् ॥ श्रीकृष्णभक्तःशान्तात्माबभूवनिरहंकृतिः ॥ १० ॥ अंबरादागतंदृष्ट्वानारदंमुनिसत्तमम् ॥ संपूज्य चासनेस्थाप्यकृतांजलिरभाषत ॥ ११ ॥ ॥ श्रीजनकउवाच ॥ ॥ योनादिरात्मापुरुषोभगवान्प्रकृतेःपरः ॥ कस्मात्तनुंसमाधत्तेतन्मे ब्रूहिमहामते ॥ १२ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ गोसाधुदेवताविप्रवेदानांरक्षणायवै ॥ तनुंधत्तेहरिःसाक्षाद्भगवानात्मलीलया ॥ १३ ॥ यथानटःस्वलीलायांमोहितोनपरस्तथा ॥ अन्येदृष्ट्वाचतन्मायांमुमुहुस्तेनसंशयः ॥ १४ ॥ ॥ श्रीजनकउवाच ॥ ॥ कतिधाश्रीहरे र्विष्णोरवतारोभवत्यलम् ॥ साधूनांरक्षणार्थंहिकृपयावदमांप्रभो ॥ १५ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ अंशांशोंशस्तथावेशःकलापूर्णः प्रकथ्यते ॥ व्यासाद्यैश्वस्मृतःषष्ठःपरिपूर्णतमःस्वयम् ॥ १६ ॥ अंशांशस्तुमरीच्यादिरंशाब्रह्मादयस्तथा ॥ कलाःकपिलकूर्माद्याआवेशाभार्ग वादयः ॥ १७ ॥ पूर्णोनृसिंहोरामश्चश्वेतद्वीपाधिपोहरिः ॥ वैकुंठोपितथायज्ञोनरनारायणःस्मृतः ॥ १८ ॥ परिपूर्णतमःसाक्षाच्छ्रीकृष्णो भगवान्स्वयम् ॥ असंख्यब्रह्मांडपतिर्गोलोकेधाम्निराजते ॥ १९ ॥ कार्याधिकारंकुर्वन्तःसदंशास्तेप्रकीर्तिताः ॥ तत्कार्यभारंकुर्वन्तस्ते ऽशांशाविदिताःप्रभोः ॥ २० ॥

साधूनकी रक्षाके लिये होंयहै तिनें हे प्रभू! कृपाकर हमतें कहौ ॥ १५ ॥ तब नारदजी बोले कि, हे राजन्! भगवान्के कितनेऊ तो अंशावतार, कितनेऊ अंशांशावतार, कितनेऊ कलावतार और कितनेऊ पूर्ण अवतार, व्यासादिकवे वर्णन करेहै पर श्रीकृष्ण तो स्वयं परिपूर्णतम अवतार है ॥ १६ ॥ सो कहेहैं मरीच्यादिक तौ अंशके अंश हैं और ब्रह्मा, विष्णु, महेश, जेहैं वे अंशावतारहै और कपिल, कूर्मादिक कलावतार हैं और परशुरामादिक आवेशावतार है ॥ १७ ॥ नृसिंह, राम, श्वेतद्वीपके पति हरि, वैकुंठ, यज्ञ और नरनारायण ये पूर्णावतार है ॥ १८ ॥ और परिपूर्णतम तो साक्षात् स्वयं श्रीकृष्णभगवान्ही हैं सो अखिल ब्रह्मांडनके पति गोलोकमें विराजैहै ॥ १९ ॥ जो (कर्तव्य) कर्मके अधिकार (औंदा) मात्रकोंही (जैसे इन्द्र यम) करे है वो तौ ब्रह्मके अंश हे राजन्! और जे इन इन्द्रादिकी आज्ञाकूं करे है वे प्रभुके अंशके अंश कहावे है ॥ २० ॥

और जिनके भीतर बैठिके भगवान् करने योग्यको करिके निकसजायहैं वे सब आवेशावतार कहावे है ॥ २१ ॥ और जुगजुगकें धर्मकूं जानिकें फिर उन युगधर्मनको अच्छीतरह प्रवृत्त करते युगसमाप्तिपर्यंत वर्तमान हैकें जे अंतर्धान हैजाय हैं वे भगवान्के कलावतार कहावे हैं ॥ २२ ॥ और जा अवतारमें चतुर्व्यूह (वासुदेव संकर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध या राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न,) दीखें और पूरे ९ नोरस दीखें और समग्र अलौकिक वीर्यनको प्राकट्य दीसे तो पूर्ण कहो जाय हैं ॥ २३ ॥ जाके निज तेजमें सबरे तेज लीन हैजायहैं ताकूं स्वयं साक्षात् परिपूर्णतम परे अवतार वर्णन करेहैं ॥ २४ ॥ और जहां परिपूर्णको सब लक्षण दीखे और जाको न्यारे न्यारे भाव करिके जन देखेहै सोई परिपूर्णतम स्वयं भगवान् कहावे है ॥ २५ ॥ वो साक्षात् परिपूर्णतम श्रीकृष्णही है और कोई नही है क्योंकि जो एक कार्यके लिये आयकें कोटि कार्य करतो भयो ॥ २६ ॥

येषामन्तर्गतोविष्णुःकार्यंकृत्वाविनिर्गतः ॥ नानाऽवेशावतारांश्चविद्धिराजन्महामते ॥ २१ ॥ धर्मंविज्ञायकृत्वायःपुनरंतरधीयत ॥ युगेयुगे वर्तमानःसोऽवतारःकलाहरेः ॥ २२ ॥ चतुर्व्यूहोभवेद्यत्रदृश्यन्तेचरसानव ॥ अतःपरंचवीर्याणिसतुपूर्णःप्रकथ्यते ॥ २३ ॥ यस्मिन्सर्वाणिते जांसिविलीयन्तेस्वतेजसि ॥ तंवदन्तिपरेसाक्षात्परिपूर्णतमंस्वयम् ॥ २४ ॥ पूर्णस्यलक्षणंयत्रयंपश्यन्तिपृथक्पृथक् ॥ भावेनापिजनाः सोयंपरिपूर्णतमःस्वयम् ॥ २५ ॥ परिपूर्णतमःसाक्षाच्छ्रीकृष्णोनाऽन्यएवहि ॥ एककार्यार्थमाऽऽगत्य कोटिकार्यंचकारह ॥ २६ ॥ पूर्णःपुराणःपुरुषोत्तमोत्तमःपरात्परोयःपुरुषोपरेश्वरः ॥ स्वयंसदाऽऽनन्दमयंकृपाकरंगुणाकरंतंशरणंव्रजाम्यहम् ॥ २७ ॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ तच्छ्रुत्वाहर्षितोराजारोमांचीप्रेमविह्वलः ॥ प्रमृश्यनेत्रेऽश्रुपूर्णेनारदंवाक्यमब्रवीत् ॥ २८ ॥ ॥ श्रीबहुलाश्वउवाच ॥ ॥ परिपूर्णतमः साक्षाच्छ्रीकृष्णःकेनहेतुना ॥ आगतोभारतेखंडेद्वारावत्यांविराजते ॥ २९ ॥ तस्यगोलोकनाथस्यगोलोकंधामसुन्दरम् ॥ कर्माण्यपरिमेयानि ब्रूहिब्रह्मन्बृहन्मुने ॥ ३० ॥ यदातीर्थाटनंकुर्वञ्छतजन्मतपःपरम् ॥ तदासत्संगमेत्याऽऽशुश्रीकृष्णंप्राप्नुयान्नरः ॥ ३१ ॥ श्रीकृष्णदास स्यचदासदासःकदाभवेयंमनसार्द्रचित्तः ॥ योदुर्लभोदेववरैःपरात्मासमेकथंगोचरआदिदेवः ॥ ३२ ॥

पूर्ण, पुराण अनादिसिद्ध पुरुषोत्तमोत्तम, परसें पर, जो परेश्वर पुरुष और स्वयं सदा आनंदमय, कृपानिधि गुणनको निवासस्थान जो ईश्वर है ताकी मैं शरण प्राप्त भयोहूं ॥ २७ ॥ श्रीगर्गजी कहे है कि, ऐसें नारदजीको वचन सुनिके राजा बड़ो प्रसन्न भयो और रोमांच हैआये प्रेममें विह्वल हैगयो, आंसूनसे भरे नेत्रनको पोंछके नारदजीते वचन बोल्यो ॥ ॥ २८ ॥ कि हे ऋषे ! श्रीकृष्ण साक्षात् परिपूर्णतम कौनसे कारणसो है जो भरतखंडमें आये और द्वारिकामें विराजे हैं ॥ २९ ॥ वा गोलोकनाथको जो गोलोकधाम बड़ो सुंदर है वाको और हे ब्रह्मन्! वा भगवान्के जे अपरिमित कर्म है तिनैं हे महामुनिजी ! तुम हमसों कहो ॥ ३० ॥ जब यह प्राणी तीर्थाटन करै और सौ जन्मतक बड़ो तप करै तब ये प्राणी सत्संगको प्राप्त हैकें श्रीकृष्णको प्राप्त होयहै ॥ ३१ ॥ भीगेहुये चित्तवारो मैं अपने मनसे श्रीकृष्णके दासनके दासको दास कब होऊंगो और जो बड़ेबड़े देवतानकूंभी

दुर्लभ परात्मा आदिदेव भगवान् है सो मेरी आंखिनके अगारी कैसें आवेगो ॥ ३२ ॥ तब नारद बोले कि, हे राजशार्दूल ! तूं धन्य है क्योंकि जो तूं श्रीकृष्णको इष्ट है और हरिको प्यारा है यासे ताकूं दर्शन देवेकूं भक्तनके ईश भगवान् यहांही आमेंगे ॥ ३३ ॥ ब्राह्मण है देवता जिनके ऐसे जनार्दन भगवान् तेरी और श्रुतदेव ब्राह्मणकी नित्य द्वारिकामें याद करबो करेहे यासे मेरे जान संतनकी ही अहो भाग्य है इनकी याद भगवानभी करेहें ॥ ३४ ॥ इति श्रीगर्गसंहितायां गोलोकखंडे नारदबहुलाश्वसंवादे भाषाटीकायां श्रीकृष्णमाहात्म्यवर्णनं नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ नारदजी कहेहैं कि हे राजन् ! जो मनुष्य जीभ पायकेभी कीर्तन करिवेयोग्य श्रीकृष्णको कीर्तन न करे तो जानिये कि, मुक्तिकी नसेनी पायके भी जो दुर्बुद्धि मुक्तिकूं नहीं चढेहै ॥ १ ॥ भो राजन् ! अब यहाँसो आगे मैं तेरे अगाडी या वाराहनामके कल्पमें श्रीकृष्णको भूमिमें आके तो और जो कछु या कल्पमें वृत्तांत भयोहै सो सब कहोंगो याकूं तुम सुनो ॥ २ ॥ पहले दानव दैत्य मनुष्य और दुष्ट राजा तिनके बोझके मारें जब ये भूमि अत्यंत दबन लगी तब ये पृथ्वी गौको रूप धरके ॥ ३ ॥

॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ धन्यस्त्वंराजशार्दूलश्रीकृष्णेष्टोहरिप्रियः ॥ तुभ्यंचदर्शनंदातुंभक्तेशोऽआगमिष्यति ॥३३॥ त्वांनृपंश्रुतदेवंचद्विजदेवो जनार्दनः ॥ स्मरत्यलंद्वारकायामहोभाग्यंसतामिह ॥ ३४ ॥ इतिश्रीगर्गसंहितायांगोलोकखंडेनारदबहुलाश्वसंवादेश्रीकृष्णमाहात्म्यवर्णनंनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ श्रीनारद उवाच ॥ ॥ जिह्वांलब्ध्वापियःकृष्णंकीर्तनीयंनकीर्तयेत् ॥ लब्ध्वापिमोक्षनिश्रेणींसनारोहतिदुर्मतिः ॥ १ ॥ अथतेसंप्रवक्ष्यामिश्रीकृष्णागमनंभुवि ॥ अस्मिन्वाराहकल्पेवैयद्भूतंतच्छृणुप्रभो ॥२॥ पुरादानवदैत्यानांनराणांखलभूभुजाम् ॥ भूरिभारसमाक्रांतापृथ्वीगोरूपधारिणी ॥ ३ ॥ अनाथवद्रुदंतीववेदयंतीनिजव्यथाम् ॥ कंपयंतीनिजंगात्रंब्रह्माणंशरणंगता ॥ ४ ॥ ब्रह्माथाश्वास्य तांसद्यःसर्वैर्देवगणैर्वृतः ॥ शंकरेणसमंप्रागाद्वैकुंठमंदिरंहरेः ॥ ५ ॥ नत्वाचतुर्भुजंविष्णुंस्वाभिप्रायंजगादह ॥ अथोद्विग्नंदेवगणंश्रीनाथःप्राहतंविधिम् ॥ ६ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ कृष्णंस्वयंविगणितांडपतिंपरेशं साक्षादखंडमतिदेवमतीवलीलम् ॥ कार्यंकदापिनभविष्यतियंविनाहिगच्छाशुतस्यविशदंपदमव्ययंत्वम् ॥ ७ ॥ ॥ श्रीब्रह्मोवाच ॥ त्वत्तःपरंनजानामिपरिपूर्णतमंस्वयम् ॥ यदियोन्यस्तस्यसाक्षाल्लोकंदर्शयनःप्रभो ॥ ८ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्तोपिहरिःपूर्णःसर्वैर्देवगणैः सह ॥ पदवींदर्शयामासब्रह्मांडशिखरोपरि ॥ ९ ॥

अनाथकी नाईं रोवत अपनो दुःख जतावती कांपत २ ब्रह्माजीकी शरण गई ॥ ४ ॥ तब ब्रह्माजी तत्काल पृथ्वीको आश्वासन करिकें सब देवतानकूं संग लैकें और महादेवजीकूं संग लैके वैकुंठमें हरिके मंदिरकूं गये ॥ ५ ॥ चतुर्भुज भगवान्को प्रणाम करके अपनो अभिप्राय कहतभये तब उद्विग्न देवतानके गणनकूं देखिकें लक्ष्मीकेनाथ ब्रह्माजीते यह बोले ॥ ६ ॥ कि सुनो ब्रह्माजी श्रीकृष्ण आप अखिल ब्रह्माण्डके मालिक परेश और साक्षात् अखंड ब्रह्म देवनके देव अगणित लीलावारेहें ता बिना तुमारो कछु काम नहीं होयगो सो तुम जल्दीही विशद जो अव्यय वाको पद है तहां जाउ ॥ ७ ॥ तब ब्रह्माजी बोले कि, महाराज हम तो तुमते परे और कोई परिपूर्णतमकूं नहीं जाने हैं और जो तुमते न्यारो कोई स्वयं परिपूर्णतम है तो वाके साक्षात् लोककूं हे प्रभो ! हमे दिखाओ ॥ ८ ॥ नारदजी कहन लगे कि, हे राजन् ! ऐसें जब

ब्रह्माजीने कही तब पूर्ण भगवान् सब देवतानसहित ब्रह्माजीको ब्रह्मांडकी शिखरपै वर्तमान जो गोलोक है ताको रस्ता दिखामनलगे ॥ ९ ॥ वामनजीके बांये पांवके अंगूठाते फूट्यौ जो ब्रह्मांडको मस्तक जो ब्रह्मद्रवते युक्त है वाही छेदमें है लैकेचले ॥ १० ॥ अब जलके मार्गसे बाहिर सब देवता निकसे तब यह ब्रह्मांड नीचे तर चूजके समान दीखौ ॥ ११ ॥ और इंद्रायनके फलके समान जलमें लढकते और अनेक ब्रह्मांड दीखे तब वे सब देवता देखिकें बडे अचंभेमें आयगये और चकितसे हैगये ॥ १२ ॥ ताके किरोडन योजन ऊपर जायके दिव्य रत्नमय परकोटानसो युक्त और वृक्षनके समूहनसो मनके हरनवारे अलौकिक आठ पुर देखे उनमें हैके देवता गये ॥ १३ ॥ ताके ऊपर जायके देवताननें विरजा नदीको शुभ तट देख्यौ जामें तरंग उठ रही हैं और क्षौम (रेसम) के समान श्वेत है और मणिमय सिढीनसों जगमगाय रह्यो है ॥ १४ ॥ ताकूं देखिकें चलते २ देवतावो उत्तम पुरकूं जात भये जो मानो असंख्य किरोड सूर्य मंडलको बडीभारी तेजको पुंज है ॥ १५ ॥

वामपादांगुष्ठनखभिन्नब्रह्मांडमस्तके ॥ श्रीवामनस्यविवरेब्रह्मद्रवसमाकुले ॥ १० ॥ जलयानेनमार्गेणबहिस्तेनिर्ययुःसुराः ॥ कलिंगबिंबवच्चेदं ब्रह्मांडंददृशुस्त्वधः ॥ ११ ॥ इंद्रायनफलानीवलुठंत्यन्यानिवैजले ॥ विलोक्यविस्मिताःसर्वेबभूवुश्चकिताइव ॥ १२ ॥ कोटिशोयोजनोर्द्ध्वंवै पुराणामष्टकंगताः ॥ दिव्यप्राकाररत्नाढ्यद्रुमवृंदमनोहरम् ॥ १३ ॥ तदूर्ध्वंददृशुर्देवाविरजायास्तटंशुभम् ॥ तरंगितंक्षौमशुभ्रंसोपानैर्भास्वरं परम् ॥ १४ ॥ तंदृष्ट्वाप्रचलन्तस्तेतत्पुरंजग्मुरुत्तमम् ॥ असंख्यकोटिमार्तंडज्योतिषांमंडलंमहत् ॥ १५ ॥ दृष्ट्वाप्रताडिताक्षास्तेतेजसाथपि ताःस्थिताः ॥ नमस्कृत्वाऽथतत्तेजोदध्यौविष्ण्वाज्ञयाविधिः ॥ १६ ॥ तज्ज्योतिर्मंडलेऽपश्यत्साकारंधामशान्तिमत् ॥ तस्मिन्महाद्भुतंदीर्घं मृणालधवलंपरम् ॥ सहस्रवदनंशेषंदृष्ट्वानेमुःसुरास्ततः ॥ १७ ॥ तस्योत्संगेमहालोकोगोलोकोलोकवंदितः ॥ यत्रकालः कलयतामीश्वरो धाममानिनाम् ॥ १८ ॥ राजन्नप्रभवेन्मायामनश्चित्तंमतिर्ह्यहम् ॥ नविकारोविशत्येवनमहांश्चगुणाःकुतः ॥१९॥ तत्रकंदर्पलावण्याःश्यामसुन्दरविग्रहाः ॥ द्वारिगंतुंचाभ्युदितान्यपेधन्कृष्णपार्षदाः ॥२०॥ ॥देवाऊचुः॥ ॥लोकपालावयंसर्वेब्रह्मविष्णुमहेश्वराः॥ श्रीकृष्णदर्शनार्थंयशक्राद्याआगताइह ॥२१॥

ता तेजकूं देखिकें उनके नेत्र झपगये और वा तेजकरिकें धर्षित होकर जहाँके तहाँ खडे हैगये, फिर वा तेजपुंजकूं नमस्कार करके विष्णुकी आज्ञाते ब्रह्माजी ध्यान करनेलगे ॥ १६ ॥ ता तेजके भीतरही साकार धाम शांतिस्वरूप दीख्यो ता धामके भीतर कमलतंतुसे सुफेद महा अद्भुत हजारमुख जिनके ऐसे शेषजीको देखकर सब देवता नमस्कार करनेलगे ॥ १७ ॥ तिनकी गोदीमें लोकवंदित गोलोक देख्यौ जो गोलोकमें मारनवारेनको मारनवारो और इंद्रादिक धाम मानीनको ईश्वर जो काल है वोभी जहां अपनो प्रभाव नहीं करै है ॥ १८ ॥ और मायाभी अपनो प्रभाव नहीं करैहै और मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार, तथा षोडशविकार और महत्तत्त्व जहां नहीं हैं फिर तीनों गुण न होंय यामें कहनौही कहा है ॥ १९ ॥ जब दरवज्जेमें धसन लगे तब श्यामसुंदर शरीरवारे कामदेवसे जे श्रीकृष्णके पार्षद हैं उन्ने रोके ॥ २० ॥ तब देवता बोले कि, हम सब लोकपाल हैं,

ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इंद्रादिक श्रीकृष्णके दर्शनकूं यहां आये हैं ॥ २१ ॥ श्रीनारदजी कहेहैं कि, तिनके अभिप्रायको सुनिकें गोलोकनाथके द्वारपाल जे सखीजन वे श्रीकृष्णते भीतर जायके अर्ज करतीभई ॥ २२ ॥ तब एक शतचंद्रानना नामकी गोपी निकसी, पीतांबर ओढें, बेंत जाके हाथमें सो देवतानसों उनको वांछित पूछन लगी ॥ २३ ॥ जो तुम सबरे यहां आयेहो सो तुम कौनसे ब्रह्मांडके मालिक देवता हो सो कहो तब मैं भगवान्‌ते जायकें अर्ज करूँगी ॥ २४ ॥ तब देवता बोले—अहो ! यहे अचंभेकी बात है ब्रह्मांड कोई औरहू हैं कहा हमनें तो नहीं देखे हैं, हे कल्याणि ! हम तो एकही ब्रह्मांड जानें हैं हे शुभे ! हम तो यासे अन्यको नहीं जाने हैं ॥ २५ ॥ तब चन्द्रानना बोली हे ब्रह्मदेव ! यहां करोडन ब्रह्मांडनके समूह लुडके डोलें है जैसें तुम एक ब्रह्मांडमें रहोहो तेसेंही अपने अपने ब्रह्मांडोंमें सब न्यारे २ रहेहें ॥ २६ ॥

॥ श्रीनारद उवाच ॥ ॥ तच्छ्रुत्वा तदभिप्रायं श्रीकृष्णाय सखीजनाः ॥ ऊचुर्दैवप्रतीहारा गत्वा चांतःपुरं परम् ॥ २२ ॥ तदा विनिर्गता काचिच्छत चन्द्रानना सखी ॥ पीतांबरा वेत्रहस्ता साऽपृच्छद्वांछितं सुरान् ॥ २३ ॥ ॥ चन्द्राननोवाच ॥ ॥ कस्यांडस्याधिपा देवा यूयं सर्वे समागताः ॥ वदताशु गमिष्यामि तस्मै भगवते ह्यहम् ॥ २४ ॥ ॥ देवा ऊचुः ॥ ॥ अहो अंडान्यथान्यानि नास्माभिर्दर्शितानि च ॥ एकमंडं प्रजानीमोऽथोऽप रं नास्ति नः शुभे ॥ २५ ॥ ॥ श्रीचन्द्राननोवाच ॥ ॥ ब्रह्मदेव लुठंतीह कोटिशो ह्यंडराशयः ॥ तेषु यूयं यथा देवास्तथांडेंऽडे पृथक्पृथक् ॥ २६ ॥ नामग्रामं न जानीथ कदा नात्र समागताः ॥ जडबुद्ध्या प्रहृष्यध्वे गृहान्नापि विनिर्गताः ॥ २७ ॥ ब्रह्मांडमेकं जानंति यत्र जातास्तथा जनाः ॥ मशकाश्च यथांतस्था औदुम्बरफलेषु वै ॥ २८ ॥ ॥ श्रीनारद उवाच ॥ ॥ उपहास्यं गता देवा इत्थं तूष्णीं स्थिताः पुनः ॥ चकिता इव तान्दृष्ट्वा विष्णुर्वचनमब्रवीत् ॥ २९ ॥ ॥ श्रीविष्णुरुवाच ॥ ॥ यस्मिन्नंडे पृश्निगर्भोऽवतारो भूत्सनातनः ॥ त्रिविक्रमनखोद्भिन्ने तस्मिन्नंडे स्थिता वयम् ॥ ३० ॥ ॥ श्रीनारद उवाच ॥ तच्छ्रुत्वा तं च संश्लाघ्य शीघ्रमन्तःपुरं गता ॥ पुनरागत्य देवेभ्यो ह्याज्ञां दत्त्वा गता पुरम् ॥ ३१ ॥ अथ देवग णाः सर्वे गोलोकं ददृशुः परम् ॥ तत्र गोवर्द्धनो नाम गिरिराजो विराजते ॥ ३२ ॥ वसन्तमानिनीभिश्च गोपीभिर्गोगणैर्वृतः ॥ कल्पवृक्षलतासंघै रासमंडलमंडितः ॥ ३३ ॥

और तुम अपने ब्रह्मांडकौ नाम गामहू नहीं जानोहो यहां कभीभी नहीं आये हो तुम जडबुद्धितेही खुसी रहोहो क्योंकि घरके बाहर कभी नहीं निकसे हो ॥ २७ ॥ ब्रह्मांडकूं एकही जानोंहो जहां कि, भयेहो जैसें गूलरके भीतर भुनगा वा गूलरकूं ब्रह्मांड जानेहे ॥ २८ ॥ नारदजी कहेहैं ऐसें जब देवतानकी हंसी करी तब वे सब चुप्प हैके खडे हैगये तब तिन्हे चकितभयेकी तरह खडे देख विष्णु बोले ॥ २९ ॥ कि, सुनोजी जा अंडामें पृश्निगर्भ भगवान्‌कौ सनातन अवतार भयोहो और वामनजीके नखते जो अंडा फूटिगयोहे ता अंडामें हम रहै है ॥ ३० ॥ नारदजी कहेहे कि, विष्णुके वा वचनकूं सुन वो चंद्रानना उनकी बडाई करकें जल्दीते भीतर महलमें जायके पूछके आई और इने आज्ञा देके फिर चलीगई ॥ ३१ ॥ तब वे सब देवता भीतर गये वा गोलोककूं देखते भये जहां गोवर्धन पर्वत विराजै है ॥ ३२ ॥ जहां वसंतमानिनी

गोपीनके और गाअनके गण है और कल्पवृक्षनकी लतानके समूहनसो सुशोभित जहां रासमण्डल है ॥ ३३ ॥ और जहां श्यामा कालिंदीनाम नदी है जो नदी
एक किरोड तोली (कोट) नसो भूषित है तथा अनेक वैडूर्य मणिकी जामें सिढी है और वो नदी अपनी इच्छापूर्वक वहे है ॥ ३४ ॥ दिव्य वृक्ष लतानते
सघन जहां वृंदावन भ्राजमान है, जामें चित्रविचित्र पक्षी तथा भौरानकी गुंजारसों विराजमान वंशीवट है ॥ ३५ ॥ जहां पुलिनमें शीतल मंद पवन हजारा कमलनकी
सुगंधि लिये मकरन्दको उडावतो मंद २ चलैहै ॥ ३६ ॥ जहां बत्तीस वननके मध्यमें परिकोटा और खाईसों युक्त अरुण अक्षयवटयुक्त जामें अंगण ऐसो निज निकुंज
है ॥ ३७ ॥ सात प्रकारके पुखराज मणिनके चौक तथा कुड्यभित्ति तिनसो विभूषित है और जहां चंद्रमंडलके आकार चंदोहानके फूल बूंटा तिनकी कांति छिटकि
रहीहै ॥ ३८ ॥ जिनपै ध्वजा, पताका फैराय रही ऐसे दिव्य फूलनके निकुंज मंदिरनके मार्ग बने है जिनमें हैरही जो भ्रमरनकी झंकार तथा मत्त मयूर और पपीहानके

यत्रकृष्णानदीश्यामतोलिकाकोटिमंडिता ॥ वैदूर्यकृतसोपानास्वच्छन्दगतिरुत्तमा ॥ ३४ ॥ वृन्दावनंभ्राजमानंदिव्यद्रुमलताकुलम् ॥ चित्र
पक्षिमधुव्रातैर्वंशीवटविराजितम् ॥ ३५ ॥ पुलिनेशीतलेवायुर्मन्दगामीवहत्यलम् ॥ सहस्रदलपद्मानांरजोविक्षेपयन्मुहुः॥३६॥ मध्येनिकुञ्जकु
ञ्जोस्तिद्वात्रिंशद्वनसंयुतः ॥ प्राकारपरिखायुक्तोरुणाक्षयवटाजिरः ॥ ३७ ॥ सप्तधापद्मरागाग्र्याजिरकुड्यविभूषितः ॥ कोटींदुमंडलाकारैर्विता
नैर्गुलिकाद्युतिः ॥ ३८ ॥ पतत्पताकैर्दिव्याभैःपुष्पमंदिरवर्त्मभिः ॥ जातभ्रमरसंगीतोमत्तबर्हिपिकस्वनः ॥३९॥ बालार्ककुण्डलधराःशतच
न्द्रप्रभाःस्त्रियः ॥ स्वच्छंदगतयोरत्नैः पश्यंत्यःसुंदरंमुखम् ॥ ४० ॥ रत्नाजिरेषुधावंत्योहारकेयूरभूपिताः ॥ क्वणन्नूपुरकिंकिण्यश्चूडामणिवि
राजिताः ॥ ४१ ॥ कोटिशःकोटिशोगावोद्वारिद्वारिमनोहराः ॥ श्वेतपर्वतसंकाशादिव्यभूषणभूषिताः ॥४२॥ पयस्विन्यस्तरुण्यश्चशीलरूप
गुणैर्युताः ॥ सवत्साःपीतपुच्छाश्चव्रजंत्योभव्यमूर्तिकाः ॥ ४३ ॥ घंटामंजीरसंरावाः किंकिणीजालमंडिताः ॥ हेमशृंग्योहेमतुल्यहारमाला
स्फुरत्प्रभाः ॥ ४४ ॥ पाटलाहरितास्ताम्राः पीताः श्यामाविचित्रिताः ॥ धूम्राः कोकिलवर्णाश्चयत्रगावस्त्वनेकधा ॥ ४५ ॥

शब्द तिनसो युक्त है ॥ ३९ ॥ बालक सूर्यकैसे तेजवारे कुंडल पैहरे, सो चंद्रमाकीसी कांति जिनके ऐसी स्वच्छन्दगतिवारी स्त्री वे मणिनमें अपने सुंदर मुखनकूं देखें
है ॥ ४० ॥ और जहां गोपीगण पाइनमे नूपुर बजने, पदकहार, बाजूबंद, कंकण, छल्ला, अंगूठी कोधनी और चूडामणि इनसो भूषित रत्नजटित अजिरों अंगणोमें
डोलरहीहैं ॥ ४१ ॥ और किरोरन गौ दरवाजे २ पै सुपेद पर्वतसी दिव्य गहनेनते भूषित मनकी हरनवारी विराजें है ॥ ४२ ॥ बहोत दूधकी देनवारी तरुणी
शील रूप और गुणसे युक्त बछरासहित पीरी जिनकी पूंछ भव्यमूर्तिवारी विचरें हैं ॥ ४३ ॥ जिनकें घंटी, नूपुर, पैंसुरी, किंकिणी आदि बंधी हैं, सोनेके सींग हार माला, तिनते
शोभित हैं ॥ ४४ ॥ कोई लाल, सुपेद रंगकी, कोई हरी, कोई पीरी, कोई कारी, कोई चितकबरी है, कोई धूमरी है,कोई कोई कोकिलवर्णी है, जहां ऐसे अनेक प्रकारकी गौ हैं ॥ ४५ ॥

मनसे देखते २ श्यामसुन्दर श्रीकृष्णके शरीरमें शीघ्रही लीन हैगये ॥ १३ ॥ तब सब देवता परिपूर्णतम साक्षात् श्रीकृष्णकूं स्वयं प्रभू जानिकें बड़े अचंभेमें आयकें स्तुति करनलगे ॥ १४ ॥ पूर्णपुरुष, परेतें परे, यज्ञेश्वर, कारणके कारण, राधिकाके पति, परिपूर्णतम, गोलोकधाम है निवासस्थान जिनको ऐसे परपुरुष श्रीकृष्ण तिनकूं हमारो नमस्कार है ॥ १५ ॥ योगेश्वर तौ तुमकूं महत् पुरुष वर्णन करेहैं, भक्त तुमकूं सगुणब्रह्म वर्णन करेहैं, हमनें तौ अद्वितीय बड़ेनके जानेहौ तिनके अर्थ नमस्कार है ॥ १६ ॥ बड़े बड़े योगीराजाहूँ व्यंग करके तथा लक्षण करके और स्फोट करके जाको नहीं जानेहैं और निर्देश्य भावसों रहितहै जो प्रकृति सों पर है ऐसे ब्रह्म निर्गुणकी हम शरण प्राप्त भये हैं ॥ १७ ॥ कोई तौ जाकूं ब्रह्म कहै है, कोई काल कहै है, कोई प्रशांतरूप कोई कर्मरूप कहै है और पहले मुनि जाको योगरूप कहैं हैं कोई कर्ता कहै है,

परिपूर्णतमंसाक्षाच्छ्रीकृष्णंचस्वयंप्रभुम् ॥ ज्ञात्वादेवाःस्तुतिंचक्रुःपरंविस्मयमागताः ॥ १४ ॥ ॥ श्रीदेवाऊचुः ॥ ॥ कृष्णायपूर्णपुरुषाय परात्पराययज्ञेश्वरायपरकारणकारणाय ॥ राधावरायपरिपूर्णतमायसाक्षाद्गोलोकधामधिषणायनमःपरस्मै ॥ १५ ॥ योगेश्वराः किलवदन्ति महःपरंत्वंतत्रैवसात्वतमनाःकृतविग्रहंच ॥ अस्माभिरद्यविदितंयदहोऽद्वयंतेतस्मैनमोस्तुमहतांपतयेपरस्मै ॥ १६ ॥ व्यंग्येनवाननहिलक्षणयाकदापिस्फोटेनयच्चकवयोनविशंतिमुख्याः ॥ निर्देश्यभावरहितंप्रकृतेः परंचत्वांब्रह्मनिर्गुणमलंशरणंव्रजामः ॥ १७ ॥ त्वांब्रह्मकेचिदवयंतिपरेचकालंकेचित्प्रशांतमपरेभुविकर्मरूपम् ॥ पूर्वेचयोगमपरेकिलकर्तृभावमन्योक्तिभिर्नविदितंशरणंगताः स्मः ॥ १८ ॥ श्रेयस्करींभगवतस्तवपादसेवांहित्वाथतीर्थयजनादितपश्चरंति ॥ ज्ञानेनयेचविदिताबहुविघ्नसंघैःसंताडिताःकिलभवंतिनतेकृतार्थाः ॥ १९ ॥ विज्ञाप्यमद्यकिमुदेवअशेषसाक्षीयःसर्वभूतहृदयेषुविराजमानः ॥ देवैर्नमद्भिरमलाशयमुक्तदेहैस्तस्मैनमोभगवतेपुरुषोत्तमाय ॥ २० ॥ योराधिकाहृदयसुन्दरचन्द्रहारः श्रीगोपिकानयनजीवनमूलहारः ॥ गोलोकधामधिषणध्वजआदिदेवःसत्वंविपत्सुविबुधान्परिपाहिपाहि ॥ २१ ॥ वृन्दावनेशगिरिराजपतेव्रजेशगोपालवेषकृतनित्यविहारलील ॥ राधापतेश्रुतिधराधिपतेधरांत्वंगोवर्द्धनोद्धरणउद्धरधर्मधाराम् ॥ २२ ॥

ऐसें बहुत वर्णन करिकें जो जानिवेमें नहीं आवैहै तिनकी हम शरण प्राप्त भये हैं ॥ १८ ॥ कल्याणकी करनहारी जो तुम्हारी चरणकमलकी सेवा ताकूँ छोंडिके तीर्थसेवन यज्ञादि तप करेहै और जे ज्ञानी हैं ते ज्ञानसों विदित होयहै परन्तु वे बहुत विघ्नतें ताडित होयहै परन्तु कृतार्थ नहीं होयहैं ॥ १९ ॥ अब हम आपतें कहा विज्ञापना करें क्योंकि आप सबके साक्षी और सबके हृदयमें विराजमान हो, निर्मल जिनके अंतःकरण वासनारहित जिनके देह तिन करिकें स्तुति कीयेहो वा पुरुषोत्तम भगवान्को हमारो नमस्कार है ॥ २० ॥ जो राधिकाके सुंदर हृदयके चन्द्रहार हो, जो गोपीनके नयननके जीवनमूल हार हो और गोलोकधाम है स्थान जिनको सो आदिदेव तुम विपत्तिमें देवतानकी रक्षा करो ॥ २१ ॥ हे वृंदावनके ईश्वर ! हे गिरिराजपति ! हे गोपालवेषकरिकें नित्य लीला विहारके करनहारे हे राधापते !

हे भुतिधरपते ! हे गोवर्द्धनोद्धरण ! धर्मकी धारण करनहारी जो पृथ्वी ताको उद्धार करो ॥ २२ ॥ नारदजी कहेहैं ऐसें जब देवतानने गोकुलेश्वर श्रीकृष्णकी स्तुति करी तब गोकुलेश्वर श्रीकृष्ण प्रणत जे देवता हैं तिनते मेघसी गम्भीर वाणीते बोले ॥ २३ ॥ हे ब्रह्माजी ! हे महादेव ! हे देवताओ ! तुम मेरो वचन सुनो मेरी आज्ञाते अपने अंशनते स्त्रीनकरिके सहित तुम सब यादवकुलमें जायके जन्म लेउ ॥ २४ ॥ और मैंहू अवतार लेउंगो पृथ्वीको भार उतारूंगो, यादवनमें जन्म लैके तुम्हारो कारज करूंगो ॥ २५ ॥ वेद तौ मेरो वचन है, ब्राह्मण मेरो मुख है, गौ मेरो तन है, देवता तुम मेरे अंग हौ और साधु मेरे प्राण हैं ॥ २६ ॥ जब युग २ में पाखंडी मनुष्यनकरके धर्म, यज्ञ और दयाको बाधा होयहै तब तब मैं अपने साक्षात् रूपसे अवतार धरूं हूं ॥ २७ ॥ नारदजी कहें हैं ऐसें कहते जे जगदीश्वर अपने पति हरि

॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्तोभगवान्साक्षाच्छ्रीकृष्णोगोकुलेश्वरः ॥ प्रत्याहप्रणतान्देवान्मेघगम्भीरयागिरा ॥ २३ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ हेसुरज्येष्ठहेशंभोदेवाःशृणुतमद्वचः ॥ यादवेषुचजन्यध्वमंशैःस्त्रीभिर्मदाज्ञया ॥ २४ ॥ अहंचावतरिष्यामिहरिष्यामिभुवोभरम् ॥ करिष्यामिचवःकार्यंभविष्यामियदोःकुले ॥ २५ ॥ वेदामेवचनंविप्रामुखंगावस्तनुर्मम ॥ अंगानिदेवतायूयंसाधवोह्यसवोहृदि ॥ २६ ॥ युगेयुगेचबाध्येतयदापाखंडिभिर्जनैः ॥ धर्म्मः क्रतुर्दयासाक्षात्तदात्मानंसृजाम्यहम् ॥ २७ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ इत्युक्तवंतंजगदीश्वरं हरिंराधापतिंप्राणवियोगविह्वला ॥ दावाग्निनादुःखलतेवमूर्च्छिताऽश्रुकंपरोमांचितभावसंवृता ॥ २८ ॥ श्रीराधोवाच ॥ ॥ भुवोभरंहर्तुमलंव्रजेर्भुवंकुर्तपरंमेशपथंशृणोत्वतः ॥ गतेत्वयिप्राणपतेचविग्रहंकदाचिदत्रैवनधारयाम्यहम् ॥ २९ ॥ यदात्वमेवंशपथंनमन्यसेद्वितीयवारंचवदामिवाक्पथम् ॥ प्राणोधरेगन्तुमतीवविह्वलः कर्पूरधूलः कणवद्गमिष्यति ॥ ३० ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ त्वयासहगमिष्यामि माशोचंकुरुराधिके ॥ हरिष्यामिभुवोभारंकरिष्यामिवचस्तव ॥ ३१ ॥ ॥ श्रीराधिकोवाच ॥ ॥ यत्रवृन्दावनंनास्तियत्रनोयमुनानदी ॥ यत्रगोवर्द्धनोनास्तितत्रमेनमनःसुखम् ॥ ३२ ॥

तिनको वचन सुनिके राधा जो है वो श्रीकृष्णके वियोगते विह्वल हैके मूर्छित हैके दौंकी आगकी मारी लता जैसें जाय परै तैसें मूर्छा खायकें जायपरी, आंखिनमें आंसू आयगये रोमावली ठाढ़ी हैगई ॥ २८ ॥ तब राधिकाजी बोली कि, हे प्राणनाथ! आप तौ पृथ्वीको भार उतारिवेकूं जाओहो पर मेरी प्रतिज्ञाको सुनो हे प्राणपति ! तुम्हारे गयेपीछे मैं तो एक छिनभरहू शरीर नहीं राखोंगी अर्थात् नहीं जीउंगी ॥ २९ ॥ जो मेरी या सौगंदकूं नहीं मानोगे तौ दूसरो वचन कहूंहूं सो सुनो जो मोकूं छोड़कें चले जाओगे तौ कपूरकी धूरिकी नाई मेरो यै देह नाश हैजायगो ॥ ३० ॥ तब श्रीकृष्ण बोले—हे राधिके ! शोच मति करै मैं तुमकूं संग लैके चलूंगो पृथ्वीको भार हरूंगो और तेरो वचन करूंगो ॥ ३१ ॥ तब राधिकाजी बोलीं कि, जहां वृंदावन नहीं है, जहां यमुना नहीं है, और जहां गोवर्धन नहीं है तहां मेरे मनकूं कैसे सुख होयगो ॥ ३२ ॥

अब नारदजी कहै हैं कि, तब श्रीकृष्ण अपने निजधामते चौरासीकोस ब्रजभूमि गोवर्धनपर्वत यमुनानदी इनकूं मनुष्यलोकमें पठावत भये ॥ ३३ ॥ तब तौ ब्रह्माजी देवगण सहित पूर्णतम श्रीकृष्णकूं वेरवेर नमस्कार करिके परिपूर्णनमें परिपूर्ण साक्षात् जे श्रीकृष्ण तिनते ये बोले ॥ ३४ ॥ कि हे प्रभो ! मैं कहां जन्म लउंगो और तुम कहां जन्मोगे और ये देवता कहां जायकर जन्म लेंयगे और इनके कौनकान नाम होंइगे ॥ ३५ ॥ तब भगवान बोले–वासुदेवकी स्त्री देवकीमें तौ स्वयं पर मैं जन्म लउंगो और मेरी कला जो शेष है वो रोहिणीमें जन्म लेयगो यामें संदेह नहीं ॥ ३६ ॥ और साक्षात् लक्ष्मी भीष्मकी बेटी रुक्मिणी होयगी और शिवा जो पार्वती है वो जांबवती होयगी, तुलसी सत्या होयगी और वसुंधरा भूमि सत्यभामा होयगी ॥ ३७ ॥ और दक्षिणा जो यज्ञ भगवान्की पत्नी है वो लक्ष्मणा होयगी, विरजा नामकी सखी कालिंदी होयगी, ह्री

॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ वेदनागकोशभूमिंस्वधाम्नः श्रीहरिःस्वयम् ॥ गोवर्द्धनंचयमुनांप्रेपयामासभूपरि ॥ ३३ ॥ तदाब्रह्मादेवगणैर्नत्वा नत्वापुनः पुनः ॥ परिपूर्णतमंसाक्षाच्छ्रीकृष्णंसमुवाचह ॥ ३४ ॥ श्रीब्रह्मोवाच ॥ अहंकुत्रभविष्यामिकुत्रत्वंचभविष्यसि ॥ एतेकुत्रभविष्यंतिकेगृहैः कैश्वनामभिः ॥ ३५ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ वसुदेवस्यदेवक्यांभविष्यामिपरः स्वयम् ॥ रोहिण्यांमत्कलाशेषोभविष्यतिनसंशयः ॥ ३६ ॥ श्रीःसाक्षाद्रुक्मिणीभैष्मीशिवाजांबवतीतथा ॥ सत्याचतुलसीभूमौसत्यभामावसुन्धरा ॥ ३७ ॥ दक्षिणालक्ष्मणा चैवकालिन्दीविरजातथा ॥ भद्राह्रीमित्रविंदाचजाह्नवीपापनाशिनी ॥ ३८ ॥ रुक्मिण्यांकामदेवश्चप्रद्युम्नइतिविश्रुतः ॥ भविष्यतिनसन्देहस्तस्यत्वंचभविष्यसि ॥ ३९ ॥ नन्दोद्रोणोवसुःसाक्षाद्यशोदासाधरास्मृता ॥ वृषभानुःसुचन्द्रश्चतस्यभार्याकलावती ॥ ४० ॥ भूमौकीर्तिरितिख्यातातस्यांराधाभविष्यति ॥ सदारासंकरिष्यामिगोपीभिर्व्रजमण्डले ॥ ४१ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांगोलोकखण्डेश्रीनारदबहुलाश्वसंवादआगमनोद्योगवर्णनंनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ नन्दोपनन्दभवनेश्रीदामासुबलःसखा ॥ स्तोककृष्णोर्जुनोंशुश्चनवनन्दगृहेविधे ॥ १ ॥ विशालर्षभतेजस्वीदेवप्रस्थवरूथपाः ॥ भविष्यंतिसखायोमेव्रजेषड्वृषभानुषु ॥ २ ॥

लज्जादेवी भद्रा होयगी और पापकी नाशिनी जो गंगा है वो मित्रविंदा होयगी ॥ ३८ ॥ रुक्मिणीके कामदेवको अवतार प्रद्युम्न होयगो और सुनो ब्रह्माजी !, वा प्रद्युम्नके तुमारो अवतार अनिरुद्ध होयगो यामें संदेह नहीं है ॥ ३९ ॥ और यह द्रोण नाम वसु नंद होयगो और यह धरा नाम द्रोणपत्नी यशोदा होयगी ॥ ४० ॥ सुचंद्र वृषभानु होयगो और वाकी कलावती जो स्त्री है वो पृथ्वीमें कीर्तिनामसे प्रसिद्ध होयगी तामें तूं राधा होयगी जा तेरेलिये मैं गोपीनके संग ब्रजमंडलमें सदाई रास करौंगो ॥ ४१ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां गोलोकखंडे भाषाटीकायां नारदबहुलाश्वसंवादे आगमनोद्योगो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ नारदजी कहैहैं फिर भगवान्ने कही कि, हे ब्रह्मन् ! नन्द, उपनंदके घरमें श्रीदामा और सुबल मेरे सखा होंयगे और स्तोक, श्रीकृष्ण, अर्जुन, अंशु जे मेरे सखा है वे नौनंदनके घरमें होंयगे ॥ १ ॥ विशाल, ऋषभ, तेजस्वी, देवप्रस्थ, वरूथप, जे है वे छै जे वृषभानु हैं उनके

घरमें होयगे ॥ २ ॥ तब ब्रह्माजी बोले कि, कौनकूं तो नंद पदवी है और कौन वृषभान् कहामें हैं, हे देवेश ! उपनंदको लक्षण कहा है सो कहो ? ॥ ३ ॥ श्रीभगवान् कहें हैं कि, जे गोप खिरकनमें गौवनकूं और बैलनकूं पालें और जिनके निरंतर गउनकीही जीविका होतीहोय वे तो गोपाल कहामें हैं तिनको लक्षण तुम सुनो ॥ ४ ॥ नौलाख गौ गोप इन कौ पालन करें सो नंद कहावे और पांचलाख गौवनको जो पालन करे वह उपनंद कहावे है ॥ ५ ॥ और दसलक्ष गौवनको जो पालन करे सो वृषभान कहावे है और किरोड़ गौवनके पालन करे सोही नन्दराज होयहै ॥ ६ ॥ और जो पचासलाख गऊनको पाले वो गोप वृषभानुवर कहावे है ऐसे उक्त लक्षणवारे गोप व्रजमें दोही है एक सुचंद्र और दूसरो द्रोण यही सर्वलक्षणसंपन्न गोपराज होयहैं ॥ ७ ॥ सो चंद्रमाकीसी जिनके मुखकी शोभा ऐसी अतिसुन्दरी सुंदर वस्त्र धारण करे ऐसी किशोर गोपीनके मेरे व्रजमें शतयूथ होयगे ॥ ८ ॥

॥ श्रीब्रह्मोवाच ॥ ॥ कस्यवैनन्दपदवीकस्यवैवृषभानुता ॥ वददेवपतेसाक्षादुपनन्दस्यलक्षणम् ॥ ३ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ गाःपालयन्तिवोपेषुसदागोवृत्तयोनिशम् ॥ तेगोपालामयाप्रोक्तास्तेषांत्वंलक्षणंशृणु ॥ ४ ॥ नन्दःप्रोक्तःसगोपालैर्नवलक्षगवांपतिः ॥ उपनन्दश्चकथितः पंचलक्षगवांपतिः ॥ ५ ॥ वृषभानुःसउक्तोयोदशलक्षगवांपतिः ॥ गवांकोटिर्गृहेयस्यनन्दराजःसएवहि ॥ ६ ॥ कोट्यर्धंचगवांयस्यवृषभानुवरस्तुसः ॥ एतादृशौव्रजेद्वौतुसुचन्द्रोद्रोणएवहि ॥ ७ ॥ सर्वलक्षणलक्ष्याढ्यौगोपराजौभविष्यतः ॥ शतचन्द्राननानांचसुन्दरीणांसुवाससाम् ॥ गोपीनांमद्व्रजेरम्येशतयूथोभविष्यति ॥ ८ ॥ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ॥ हेदीनबन्धोहेदेवजगत्कारणकारण ॥ यूथस्यलक्षणंसर्वंतन्मेब्रूहिपरेश्वर ॥ ९ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ अर्बुदंदशकोटीनांमुनिभिःकथितंविधे ॥ दशार्बुदंयत्रभवेत्सोपियूथःप्रकथ्यते ॥ १० ॥ गोलोकवासिन्यःकाश्चित्काश्चिद्वैद्वारपालिकाः ॥ शृंगारप्रकराःकाश्चित्काश्चिच्छय्योपकारकाः ॥ ११ ॥ पार्षदाख्यास्तथाकाश्चिच्छ्रीवृन्दावनपालिकाः ॥ गोवर्द्धननिवासिन्यःकाश्चित्कुंजविधायकाः ॥ १२ ॥ मेनिकुंजनिवासिन्योभविष्यंतिव्रजेमम ॥ एवंचयमुनायूथोजाह्नवीयूथएवच ॥ १३ ॥ रमायामधुमाधव्याविरजायास्तथैवच ॥ ललितायाविशाखायामायायूथोभविष्यति ॥ १४ ॥ एवंह्यष्टसखीनांचसखीनांकिलषोडश ॥ द्वात्रिंशच्चसखीनांचयूथाभाव्याव्रजेविधे ॥ १५ ॥

तब ब्रह्माजी बोले–हे दीनबन्धु ! हे देव ! हे जगत्कारणके कारण ! हे परेश्वर ! यूथको सब लक्षण मोते कहो ! ॥ ९ ॥ तब भगवान् बोले–हे ब्रह्मा ! मुनिजनोने कहा है कि, दशकिरोड़की संख्याको १ अर्बुद होयहै और दस अर्बुदकी यूथ संख्या है ॥ १० ॥ कोई तो गोलोकवासिनी हैं, कोई द्वारपालिका हैं, कोई शृंगार करवेवारी है, और कोई २ शय्या रचेहै ॥ ११ ॥ कोई २ पास रहिवेवारी पार्षद कहामें हैं कोई वृंदावनपालिका है, कोई गोवर्धनवासिनी हैं, कोई निकुंज बनानेवाली हैं, ॥ १२ ॥ कोई मेरी निकुंजवासिनी हैं, वे सब व्रजमें होंयगी ऐसेही एक यमुनाजीको यूथ, एक जाह्नवीजीको यूथ, ॥ १३ ॥ एक रमाको यूथ, एक मधुमाधवीको यूथ, १ विरजाको जूथ, १ ललिताको जूथ, १ विशाखाको यूथ और एक मायाको यूथ ए सब यूथ व्रजमें होंयगे ॥ १४ ॥ ऐसेही अष्टसखीनके जूथ सोलह

सखीनके यूथ और बत्तीस सखीनके यूथ हे ब्रह्मन् ! व्रजमें जन्म लेंयगे ॥ १५ ॥ और श्रुतिरूपा गोपी, मुनिरूपा गोपी, मिथिलापुरवासिनी गोपी कोसलदेशवासिनी गोपी, अयोध्यावासिनी गोपी यज्ञसीतारूपागोपी पुलिंदी कन्या गोपी ॥ १६ ॥ और जिनकूं मैंने पहिले २ युगोंमें वर दीनोंहे तिन सब गोपीनके यूथ मेरे शुभ व्रजमें होयंगे ॥ १७ ॥ तब ब्रह्माजी बोले कि, ये व्रजमें कैसें होंयगी इनको कहा पुण्य, कहा तप है और कौन २ वर इने मिले हैं क्योंकि हे पुरुषोत्तम ! तुम्हारो पद तो योगीनकूंहू दुर्लभ है ॥ १८ ॥ तब भगवान् बोले कि, हे ब्रह्मन् ! श्वेतद्वीपमे पहले श्रुतिननें भूमा परपुरुषकी मनोहर वाणीसों स्तुति करी तब सहस्र चरण भगवान् प्रसन्न हैकें श्रीहरि बोले ॥ १९ ॥ तुम वर मांगो जो तुम्हारे मनमें होय सो जिनपै मैं साक्षात् प्रसन्न होऊं तिनकूं कहा दुर्लभ है ॥ २० ॥ तब श्रुति बोली—मन वाणीके परें तुम हो सो जाने नहीं जाओहो,

श्रुतिरूपाऋषिरूपामैथिलाःकौशलास्तथा ॥ अयोध्यापुरवासिन्योयज्ञसीतापुलिंदकाः ॥ १६ ॥ यासांमयावरोदत्तोपूर्वेंपूर्वेंयुगेयुगे ॥ तासां यूथाभविष्यंतिगोपीनांमद्व्रजेशुभे ॥ १७ ॥ ॥ श्रीब्रह्मोवाच ॥ ॥ एताःकथंव्रजेभाव्याःकेनपुण्येनकैर्वरैः ॥ दुर्लभंहिपदंतुभ्यंयोगिभिः पुरुषोत्तम ॥ १८ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ श्वेतद्वीपेचभूमानंश्रुतयस्तुष्टुवुःपरम् ॥ उशतीभिर्गिराभिश्चप्रसन्नोभूत्सहस्रपात् ॥ १९ ॥ ॥ श्रीहरिरुवाच ॥ ॥ वरंवृणीतयूयंवैयन्मनोवाञ्छितंमहत् ॥ येषांप्रसन्नोहंसाक्षात्तेषांकिंदुर्लभंहितत् ॥ २० ॥ ॥ श्रीश्रुतयऊचुः ॥ ॥ वाङ्मनोगोचरातीतंततोनज्ञायतेतुतत् ॥ आनन्दमात्रमितियद्वदंतीहपुराविदः ॥ २१ ॥ तद्रूपंदर्शयास्माकंयदिदेयोवरोहिनः ॥ श्रुत्वैतद्दर्शयामासस्वंलोकंप्रकृतेःपरम् ॥ २२ ॥ केवलानुभवानंदमात्रमक्षरमव्ययम् ॥ यत्रवृंदावनंनामवनंकामदुघैर्द्रुमैः ॥ २३ ॥ मनोरमनिकुञ्जाढ्यं सर्वर्तुसुखसंयुतम् ॥ यत्रगोवर्द्धनोनामसुनिर्झरदरीयुतः ॥ २४ ॥ रत्नधातुमयःश्रीमान्सुपक्षिगणसंवृतः ॥ यत्रनिर्मलपानीयाकालिन्दी सरितांवरा ॥ रत्नबद्धोभयतटीहंसपद्मादिसंकुला ॥ २५ ॥ नानारासरसोन्मत्तंयत्रगोपीकदंबकम् ॥ तत्कदंबकमध्यस्थःकिशोराकृतिरच्युतः ॥ २६ ॥ दर्शयित्वाचताःप्राहब्रूतकिंकरवाणिवः ॥ दृष्टोमदीयोलोकोयंयतोनास्तिपरंवरम् ॥ २७ ॥

तुमकूं विद्वान् आनंदमात्र वर्णन करेहै ॥ २१ ॥ ता रूपकूं हमे दिखाओ जो वर देउहो तो यही वर हमकूं देउ, ऐसें सुनिके तुम प्रकृतितें परें जो अपनों लोक है ताहि दिखावत भये ॥ २२ ॥ जो केवल अनुभव आनंदमात्र है अक्षर और अव्यय है सो दिखायो तहां वृंदावन नाम वन है और जहां कल्पवृक्षनको वन है ॥ २३ ॥ और जो मनोहर निकुंजनसो युक्त है सब ऋतुमें सुखदायी यहां गोवर्धन पर्वत है, जामेंते झरना झरे हैं और अनेक खोह है ॥ २४ ॥ कैसो हैं गोवर्धन रत्न धातुमय है, सुंदर पक्षीनके गणकरिकें सेवित है और रत्नकी सिढी जाकी निर्मल जाको जल ऐसो श्रीकालिंदी नदीनमें मुख्य जहां बहैहै ॥ २५ ॥ नाना रासके रसते उन्मत्त जहां गोपीनको उन्मत गण है तिनके मध्यमें किशोरमूर्ति श्रीकृष्ण विराजे है ॥ २६ ॥ ऐसें दिखायकें उन देवतानसों बोले कि, मांगो कहा चहिये में तुमारो कहा करों,

मेरो ये लोक तुमनें देख्यौं जाते परें और वर नही है ॥ २७ ॥ तब श्रुति बोली–कोटि कंदर्पकी सुंदरता जामें ऐसें तुम्हारे रूपकूं देखिकें हमारे मन कामदेवके वशते कामिनीको भावको प्राप्त हैके कामदेवसे व्याप्त हैगये है ॥ २८ ॥ जैसें तुम्हारे लोककी बसनवारी गोपी कामतत्त्व करिकें रमण जे तुम हौ तिने भजेहैं तेसेंही हमारीहू भजन करवेकी इच्छा भईहै ॥ २९ ॥ तब भगवान् बोले–हे श्रुतियों ! तुम्हारो मनोरथ तौ बड़ो दुर्लभ और बड़ो दुर्घट है पर जो मैंनें तुमकूं वर देनो कह्यो है सो तौ सत्यही होयगो ॥ ३० ॥ जब दूसरी बेर ब्रह्माको सृष्टिके अर्थ उद्यम होयगो तब तुम सारस्वत कल्प व्यतीत हैजाय तब व्रजमें गोपी होउगी ॥ ३१ ॥ पृथ्वीमे भरतखंडमें मथुरा नाम मेरे मंडलमें वृन्दावनमें रासमण्डलमें तुमारी अत्यंत प्यारो होऊंगो ॥ ३२ ॥ तब जारभावकरिकें सबसे अधिक अत्यन्त दृढ स्नेहको

॥ ॥ श्रीश्रुतयऊचुः ॥ ॥ कन्दर्पकोटिलावण्येत्वयिदृष्टेमनांसिनः ॥ कामिनीभावमासाद्यस्मरक्षिप्तान्यसंशयम् ॥ २८ ॥ यथात्वल्लोकवासिन्यःकामतत्त्वेनगोपिकाः ॥ भजंतिरमणंत्वांचचिकीर्षाऽजनिनस्तथा ॥ २९ ॥ ॥ श्रीहरिरुवाच ॥ ॥ दुर्लभोदुर्घटश्चैवयुष्माकंतुमनोरथः ॥ मयानुमोदितःसम्यक्सत्योभवितुमर्हति ॥ ३० ॥ आगामिनिविरिंचौतुजातेसृष्ट्यर्थमुद्यते ॥ कल्पेसारस्वतेतीतेव्रजेगोप्योभविष्यथ ॥ ३१ ॥ पृथिव्यांभारतेक्षेत्रेमाथुरेममर्मंडले ॥ वृंदावनेभविष्यामिप्रेयान्वोरासमंडले ॥ ३२ ॥ जारधर्मेणसुस्नेहंसुदृढंसर्वतोधिकम् ॥ मयिसंप्राप्यसर्वाहिकृतकृत्याभविष्यथ ॥ ३३ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ ताश्चगोप्योभविष्यंतिपूर्वकल्पवरान्मम ॥ अन्यासांचैवगोपीनांलक्षणंशृणुतद्विधे ॥ ३४ ॥ सुराणांरक्षणार्थायराक्षसानांवधायच ॥ त्रेतायांरामचंद्रोभूद्वीरोदशरथात्मजः ॥ ३५ ॥ सीतास्वयंवरंगत्वाधनुर्भंगंचकारसः ॥ उवाहजानकींसीतांरामोराजीवलोचनः ॥ ३६ ॥ तंदृष्ट्वामैथिलाःसर्वाःपुरन्ध्योमुमुहुर्विधे ॥ रहस्यूचुर्महात्मानंभर्तानोभवराघव ॥ ३७ ॥ ताआहराघवेन्द्रस्तुमाशोकंकुरुतस्त्रियः ॥ द्वापरान्तेकरिष्यामिभवतीनांमनोरथम् ॥ ३८ ॥ तीर्थदानंतपःशौचंसमाचरततत्त्वतः ॥ श्रद्धयापरयाभक्त्याव्रजेगोप्योभविष्यथ ॥ ३९ ॥ इतिताभ्योवरंदत्त्वाश्रीरामःकरुणानिधिः ॥ कौसलान्ध्ययोधन्वतेजसाजितभार्गवः ॥ ४० ॥

मेरे बीचमें प्राप्त हैके तुम सब कृतकृत्य हैजाउगी ॥ ३३ ॥ सो हे ब्रह्माजी ! वे तो पहले कल्पके वरते गोपी होंयगी और जे गोपी औरभी होंयगी तिनको लक्षण तू सुन ॥ ३४ ॥ देवतानकी रक्षाके अर्थ और राक्षसनके मारिवेके लिये त्रेतायुगमें दशरथके पुत्र श्रीरामचन्द्र वीर भयेहैं ॥ ३५ ॥ उन्ने सीताके स्वयंवरमें जायकें कमललोचन रामने जब धनुष तोड़ो और जानकी व्याहीही ॥ ३६ ॥ तब मिथिलापुरवासिनी सब स्त्री हे विधे ! रामचन्द्रकूं देखकें सब मोहित हुई और महात्मा श्रीरामचंद्रसों एकांतमे यह बोली हे रघुवर ! तुम हमारे पति होउ ॥ ३७ ॥ तब विनते रामचंद्र बोले कि, हे स्त्रियो ! तुम शोच मत करो द्वापरके अंतमें मे तुम्हारो मनोरथ पूरो करौंगो ॥ ३८ ॥ तबताईं तीर्थ, दान, तप और शौचको परम श्रद्धातें तथा भक्तिसे भलीभाँतिसे आचरण करो तब तुम व्रजमें गोपी होओगी ॥ ३९ ॥ ऐसें धनुषधारी करुणानिधि श्रीरामचन्द्र

उनकूं वर देकें परशुरामको गर्व हरके अयोध्याकूं आये ॥४० ॥ तब मार्गमें कोसलदेशवासिनी स्त्री कामदेवतें सुंदर रामचंद्रकूं देखिकें उन्ने काममोहन रघुनाथको मनहीतें पति वरलीने ॥४१॥ तब अशेषके देखिवेवारे रामचन्द्रनेहू मनहीतें उनकूं वर दियो कि, तुम ब्रजमें गोपी होओगी तब में तुमारो मनोरथ पूरो करोंगो ॥ ४२ ॥ विवाह करकें सीतासहित सेनाकूं लियें आवत जो रघुवर तिनकूं आये सुनिकें अयोध्यापुरवासिनी स्त्री देखवेकूं आई ॥ ४३ ॥ वे स्त्री रामचन्द्रको रूप देखके मोहकूं प्राप्त हैगई प्रेममें मूर्छित हैगई तिन्ने सरजूके तीर श्रीरामकी प्राप्तिके लिये व्रत धारण करकें तप कियो ॥ ४४ ॥ तब उनकूं आकाशवाणी भई कि, द्वापरके अंतमें कालिंदीके तीर वनमें तुम्हारो मनोरथ निस्सन्देह पूर्ण होयगो ॥ ४५ ॥ फेर पिताके वचनते जब राम दंडकारण्य वनकूं गये हैं वहां सीता और लक्ष्मण सहित धनुषधारी रघुनाथ विचरे हैं ॥ ४६ ॥ तहां जे गोपालजीके उपासक दंडकारण्यवासी मुनि

मार्गेचकौसलानार्योरामंदृष्ट्वातिसुंदरम् ॥ मनसावव्रिरेतंवैपतिंकन्दर्पमोहनम् ॥ ४१ ॥ मनसापिवरंरामोददौताभ्योह्यशेषवित् ॥ मनोरथंक रिष्यामिव्रजेगोप्योभविष्यथ ॥ ४२ ॥ आगतंसीतयासार्द्धंसैनिकैःसहितंरघुम् ॥ अयोध्यापुरवासिन्यःश्रुत्वाद्रष्टुंसमाययुः ॥ ४३ ॥ वीक्ष्यतंमोहमापन्नामूर्च्छिताः प्रेमविह्वलाः ॥ तेपुस्तपस्ताःसरयूतीरेरामधृतव्रताः ॥ ४४ ॥ आकाशवागभूत्तासांद्वापरांतेमनोरथः ॥ भवि ष्यतिनसन्देहःकालिंदीतीरजेवने ॥ ४५ ॥ पितुर्वाक्याद्यदारामोदंडकाख्यंवनंगतः ॥ चचारसीतयासार्धंलक्ष्मणेनधनुष्मता ॥ ४६ ॥ गोपालोपासकाःसर्वेदण्डकारण्यवासिनः ॥ ध्यायन्तःसततंमांवैरासार्थंध्यानतत्पराः ॥४७॥ येषामाश्रममासाद्यधनुर्बाणधरोयुवा ॥ तेषां ध्यानेगतोरामोजटामुकुटमंडितः ॥ ४८ ॥ अन्याकृतिंतेतंवीक्ष्यपरंविस्मितमानसाः ॥ ध्यानादुत्थायदद्दशुःकोटिकंदर्पसन्निभम् ॥ ४९ ॥ ऊचुस्तेयंतुगोपालोवंशीवेत्रंविनाप्रभुः ॥ इत्थंविचार्यमनसानेमुश्चक्रुःस्तुतिम्पराम् ॥ ५० ॥ वरंवृणीतमुनयःश्रीरामस्तानुवाचह ॥ यथासीता तथासर्वेभूयास्मइतिवादिनः ॥ ५१ ॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥ ॥ यथाहिलक्ष्मणोभ्रातातथाप्रार्थ्योवरोयदि ॥ अद्यैवसफलोभाव्योभवद्भि र्मत्प्रसंगतः ॥ ५२ ॥ सीतोपमेयवाक्येनदुर्घटोदुर्लभोवरः ॥ एकपत्नीव्रतोहंवैमर्यादापुरुषोत्तमः ॥ ५३ ॥

रासके अर्थ ध्यानमें तत्पर हे जे निरंतर मेरो ध्यान करते हे ॥ ४७ ॥ तब तरुणमूर्ति धनुषबाणधारी रामचन्द्र जटाको मुकुट बनायें उनके हृदयमें प्राप्त हैगये ॥ ४८ ॥ तब तो वे और दूसरी आकृति देखिकें बडे विस्मित मन हैके ध्यानते उठकें जो देखे सोई किरोड कामसे सुंदर राम देखे ॥ ४९ ॥ तब वे बोले कि, ये बेंत और बंसीके बिना ये गोपालजी हे ऐसे बिचार करकें उन्ने मनसों दंडवत करी फिर स्तुति करनलगे ॥ ५० ॥ तब रामचन्द्र बोले–हे मुनीश्वरो ! तुम वर मांगो तब मुनीश्वर यह बोले कि, जैसें आपकी सीता पत्नी हे तैसेही हमहू होंय ५१ ॥ या वचनकूं सुनकें श्रीराम बोले कि, हे ऋषिओ ! जो तुम यह वर मांगते कि, जैसें लक्ष्मण हैं तैसे हम होंय तो यह तुमारो मनोरथ अबही मेरे संगते सफल हैजातो ॥ ५२ ॥ पन जो सीताकी उपमाते तुमने वर मागो ये बडो दुर्लभ और दुर्घट हे क्योंकि मै एकपत्नीव्रत और

मर्यादापुरुषोत्तम हूं ॥ ५३ ॥ तातें तुम मेरे वरतें द्वापरके अंतमें जन्म लेउगे तब मैं तुम्हारो वांछित मनोरथ पूर्ण करूंगो ॥ ५४ ॥ ऐसें रामजी उनकूं वर देकें पंचवटीकूं चलेगये. तहां पर्णशालामें बैठिकें बनवास कीनों ॥ ५५ ॥ ताही रामके दर्शनतें कामको रोग जिनकूं भयो ऐसी भीलिनी प्रेममें विह्वल ह्वैके रामकी पाइनकी रजको शिरपे धारण करिके प्राण त्याग करिवेकूं उद्यत भई ॥ ५६ ॥ तबही ब्रह्मचारीको रूप धरिके राम वहां आये और यह बोले—हे स्त्रियो ! वृथा प्राणत्याग मति करो ॥ ५७ ॥ द्वापरके अंतमें वृंदावनमें तुम्हारो मनोरथ पूरो होयगो ऐसें कहि ब्रह्मचारी तहां अंतर्ध्यान ह्वैगये ॥ ५८ ॥ ताके अनंतर रामचंद्र सुग्रीवआदि वानरेन्द्रनको संग लें रावणादिक राक्षसनकूं जीतिके लंकामें जायके सीताजीकूं पुष्पक विमानमें बैठारि अयोध्याकूं आवत भये ॥ ५९ ॥ फेर लोकके अपवादतें श्रीरामचन्द्रजीनें सीताकूं वनमें त्यागदीनी,

तस्मात्तुमद्वरेणापिद्वापरांतेभविष्यथ ॥ मनोरथंकरिष्यामिभवतांवांछितंपरम् ॥ ५४ ॥ इतिदत्त्वावरंरामस्ततःपंचवटींगतः ॥ पर्णशालां समासाद्यवनवासंचकारह ॥ ५५ ॥ तद्दर्शनस्मररुजःपुलिंद्यःप्रेमविह्वलाः ॥ श्रीमत्पादरजोधृत्वाप्राणांस्त्यक्तुंसमुद्यताः ॥ ५६ ॥ ब्रह्म चारीवपुर्भूत्वारामस्तत्रसमागतः ॥ उवाचप्राणसंत्यागंमाकुर्वीतस्त्रियोवृथा ॥ ५७ ॥ वृन्दावनेद्वापरांतेभवितावोमनोरथः ॥ इत्युक्त्वाब्रह्मचा रीतुतत्रैवांतरधीयत ॥५८॥ अथरामोवानरेन्द्रैरावणादीन्निशाचरान् ॥ जित्वालङ्कामेत्यसीतांपुष्पकेणपुरींययौ ॥ ५९ ॥ सीतांतत्त्याज राजेन्द्रोवनेलोकापवादतः ॥ अहोसतामपिभुविभवनंभूरिदुःखदम् ॥ ६० ॥ यदायदाकरोद्यज्ञंरामोराजीवलोचनः ॥ तदातदास्वर्णम यींसीतांकृत्वाविधानतः ॥ ६१ ॥ यज्ञसीतासमूहोभून्मंदिरेराघवस्यच ॥ ताश्चैतन्यघनाभूत्वारंतुंरामंसमागताः ॥ ६२ ॥ ताआहराघवे शेन्द्रोनाहंगृह्णामिहेप्रियाः ॥ तदोचुस्ताःप्रेमपरारामंदशरथात्मजम् ॥ ६३ ॥ कथंचास्मान्नगृह्णासिभजन्तीर्मैथिलीःसतीः ॥ अर्धांगीर्य ज्ञकालेषुसततंकार्यसाधिनीः ॥ ६४ ॥ धर्मिष्ठस्त्वंश्रुतिधरोऽधर्मवद्भाषसेकथम् ॥ करंगृहीत्वात्यजसिततःपापमवाप्स्यसि ॥ ६५ ॥ ॥ ॥ श्रीराम उवाच ॥ ॥ समीचीनंवचःसत्योयुष्माभिर्गदितंचमे ॥ एकपत्नीव्रतोहंहिराजर्षिःसीतयैकया ॥ ६६ ॥

अहो ! देखो भूमिमें असंतनको होनो बडो दुखदाई है ॥ ६० ॥ जब २ राजीवलोचन रामने यज्ञ करे तब २ विधितें सोनेकी सीता बनाय २ के यज्ञ किये ॥ ६१ ॥ तब राघवके मंदिरमें बहुतसी यज्ञसीतानकी मूर्त्ति जुरिगई वे मूर्त्ति चैतन्यघन ह्वैके राममें रमिवेकूं प्राप्त होतभई ॥ ६२ ॥ तिनतें रामचन्द्र बोले हे प्यारीओ ! मैं तो तुमकूं ग्रहण नहीं करिसकूं हूं, तब तो वे प्रेममें तत्पर ह्वैकें दशरथके बेटा रामचंद्रतें बोली ॥ ६३ ॥ भजन करनेवारी जे हम हैं तिन हमकूं कैसें ग्रहण नहीं करोगे हम तो सीता हैं, सती हैं, तुमकूं भजें हैं, अर्द्धांगी हैं, और यज्ञसमय कार्यकी साधिवेवारी हैं ॥ ६४ ॥ तुम धर्मात्मा हो, वेदमार्गमें चलो हो फिर अधर्मीकी नाई कैसें बोलोहो, हमारो हाथ पकरिकें हमकूं त्यागोहो तो तुमकूं पाप होयगो ॥ ६५ ॥ तब रामचन्द्र बोले कि, जो तुम कहो सो बहुत ठीक है परन्तु या अवतारमें तो

मेरो एक पत्नीव्रत है यासो तुमारे मनोरथको पूर्ण नहीं करसकूं ॥ ६६ ॥ याते जब तुम वृंदावनमें जन्म लेउगी तब द्वापरके अंतमें वृंदावनमें तुम्हारो मनोरथ पूर्ण करूंगो ॥ ६७ ॥ श्रीकृष्ण बोले ये यज्ञसीताऊ व्रजमें गोपी होंयगी औरहू गोपीनके होयवेके लक्षण हैं उने ब्रह्माजी तुम औरहू सुनों ॥ ६८ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां गोलोकखंडे भाषाटीकायां प्रश्नवर्णनं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ और भगवान् कहेंहैं कि जो रमावैकुंठवासिनी हैं, श्वेतद्वीपकी सखीजन हैं, ऊर्द्ध्व वैकुंठकी वसनहारि हैं, तैसेही अजित भगवान्के पदकी आश्रिता हैं ॥ १ ॥ और जे श्रीलोकाचलवासिनी हैं, समुद्रसे उत्पन्नभई लक्ष्मीकी सखी हैं, वे सब लक्ष्मीपतिके वरते व्रजमें गोपी होंयगी ॥ २ ॥ कोई दिव्या हैं, कोई अदिव्या हैं, कोई त्रिगुणवृत्तिवारी हैं, कोई नाना प्रकारके पुण्यनकरिकें व्रजमें गोपी होंयगी ॥ ३ ॥ और रुचिके बेटा यज्ञावतार भगवान् स्वर्गके पति भये तिनके रूपकूं देखिकें

तस्माद्यूयंद्वापरान्तेपुण्येवृंदावनेवने ॥ भविष्यथकरिष्यामियुष्माकंतुमनोरथम् ॥ ६७ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ ताव्रजेपिभविष्यन्ति यज्ञसीताश्चगोपिकाः ॥ अन्यासांचैवगोपीनांलक्षणंशृणुतद्विधे ॥ ६८ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायांगोलोकखंडेभगवद्ब्रह्मसंवादेऽन्योगप्रश्नवर्णनंनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ रमावैकुंठवासिन्यःश्वेतद्वीपसखीजनाः ॥ ऊर्द्ध्ववैकुण्ठवासिन्यस्तथाजितपदाश्रिताः ॥ १ ॥ श्रीलोकाचलवासिन्यःश्रीसख्योपिसमुद्रजाः ॥ तागोप्योपिभविष्यंतिलक्ष्मीपतिवराद्व्रजे ॥ २ ॥ कश्चिद्दिव्याअदिव्याश्चतथात्रिगुणवृत्तयः ॥ भूमिगोप्योभविष्यंतिपुण्यैर्नानाविधैःकृतैः ॥ ३ ॥ यज्ञावतारंरुचिरंरुचिपुत्रंदिवस्पतिम् ॥ मोहिताःप्रीतिभावेन वीक्ष्यदेवजनास्त्रियः ॥ ४ ॥ ताश्चदेवलवाक्येन तपस्तेपुर्हिमाचले ॥ भक्त्यापरमयातामेगोप्योभाव्योव्रजेविधे ॥ ५ ॥ अन्तर्हितेभगवतिदेवेधन्वंतरौभुवि ॥ औषध्योदुःखमापन्नानिष्फलाभारतेभवन् ॥ ६ ॥ सिद्ध्यर्थन्तास्तपस्तेपुः स्त्रियोभूत्वामनोहराः ॥ चतुर्युगेव्यतीतेतुप्रसन्नोभूद्धरिःपरम् ॥ ७ ॥ वरंवृणीतचेत्युक्तंश्रुत्वानार्योमहावने ॥ तंदृष्ट्वामोहमापन्नाऊचुर्भर्ताभवान्नः ॥ ८ ॥ ॥ श्रीहरिरुवाच ॥ ॥ वृन्दावनेद्वापरान्तेलताभूत्वामनोहराः ॥ भविष्यथस्त्रियोरासेकरिष्यामिवचश्चवः ॥ ९ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ भक्तिभावसमायुक्ता भूरिभाग्यावरांगनाः ॥ लतागोप्योभविष्यन्तिवृन्दारण्येपितामह ॥ १० ॥

स्वर्गकी देवी देवकन्या मोहित हैगई हैं ॥ ४ ॥ इनने देवलऋषिकी आज्ञाते हिमालयमें तप कीनों वेहू हे विधे ! बड़ी भक्तिके प्रतापसे व्रजमें गोपी होंयगी ॥ ५ ॥ भगवान् धन्वंतरि जब अंतर्ध्यान हैगये तब भूमिसे सब औषधी बड़ी दुःखी भई कि, अब हम भरतखंडमें निष्फल हैगई ॥ ६ ॥ तब तो अपनी सिद्धिके लिये मनोहर स्त्री हैकें तप करन लगी, जब चार युग व्यतीत हैगये तब भगवान् तिनपै प्रसन्न भये ॥ ७ ॥ यह बोले कि, तुम वर मांगो या वचनकूं सुनकें वे नारी वा सुंदर रूप देखकें मोहमें प्राप्त हैगईं तब यह बोली कि, तुम हमारे पति होउ ॥ ८ ॥ तब श्रीहरि बोले द्वापरके अंतमें वृंदावनमें मनोहर लता होउगी फिर रासके समय तुम स्त्री हैजाउगी तब तुमारे कहेको मैं करूंगो ॥ ९ ॥ श्रीकृष्णभगवान् कहेंहैं वे भक्तिभावते युक्त बड़ी भाग्यवान् श्रेष्ठ अंगना हे ब्रह्मन् ! वृन्दावनमें गोपी होंयगी ॥ १० ॥

॥ ११ ॥ तब उनकूं आकाशवाणी भई कि,
जलंधरके पुरकी स्त्री वृंदाके पति हरिकूं देखके यह बोली कि, यही साक्षात् हरि हमारे साक्षात् वर होउ ॥ १२ ॥ और समुद्रकी कन्या मत्स्य
तुम सब जलदी लक्ष्मीकांतको भजन करो तब तुम जैसें वृंदा है तैसेंई तुम वृंदावनमें होओ ॥ १३ ॥ आगें पृथुराजा मेरो साक्षात् अंश प्रचंड पराक्रमी नृपनमें
भगवानकूं देख मोहित हैगई, तेऊ मत्स्यभगवानके वरतें व्रजमें गोपी होंयगी ॥ १४ ॥ बर्हिष्मतीपुरीकी वसनहारी स्त्री पृथुराजाको देखके
श्रेष्ठ होतभयो तानें शत्रूनकूं जीतकें पृथ्वीमेंते सबरी अभीष्ट वस्तु ऐसें दुही ही जैसें कोई गौकूं दुहेहै ॥ १५ ॥ यह बोली कि, यह राजराजेंद्र बड़ौ पराक्रमी पृथुराजा हमारो वर कैसें होय सो उपाय हे महामुने ! हमकूं
मोहमें विह्वल हैकें अत्रिऋषिके समीप आई ॥ १६ ॥

आकाशवाग्बभूत्तासां भजताशुरमापतिम् ॥ ११ ॥ जालंधर्य्यश्चयानार्योवीक्ष्यवृन्दापतिंहरिम् ॥ ऊचुर्वाऽयंहरिःसाक्षादस्माकन्तुवरोभवेत् ॥ १२ ॥ समुद्रकन्याःश्रीमत्स्यंदृष्ट्वाचमोहिताः ॥ ताहिगोप्योभविष्यंतिश्रीमत्स्यस्यवराद्व्रजे ॥ यथावृंदातथायूयंवृन्दारण्येभविष्यथ ॥ १३ ॥ आसीद्राजापृथुःसाक्षान्ममांशश्चंडविक्रमः ॥ जित्वाशत्रून्नृपश्रेष्ठोधरांकामान्दुदोहह ॥ १४ ॥ बर्हिष्मतीभवास्तत्रपृथुंदृष्ट्वापुरस्त्रियः ॥ अत्रेःसमीपमागत्यताऊचुर्मोहविह्वलाः ॥ १५ ॥ अयंतुराजराजेन्द्रःपृथुःपृथुलविक्रमः ॥ कथंवरोभवेन्नोवैतद्वदत्वंमहामुने ॥ १६ ॥ अत्रिरुवाच ॥ ॥ गोदोहंकुरुताश्चय्यपृथ्वीयंधारणामयी ॥ सर्वदास्यतिवोदुर्गंमनोरथमहार्णवम् ॥ १७ ॥ मनोरथंप्रदुदुहुर्मनःपात्रेणता ॥ तस्माद्गोप्योभविष्यंतिवृन्दारण्येपितामह ॥ १८ ॥ कामसेनामोहनार्थंदिव्याअप्सरसोवराः ॥ नारायणस्यसहसावभूवुर्गंधमादने॥ १९ ॥ भर्तुकामाश्चताआहसिद्धोनारायणोमुनिः ॥ मनोरथोवोभवितात्रजेगोप्योभविष्यथ ॥ २० ॥ स्त्रियःसुतलवासिन्योवामनं वीक्ष्यमोहिताः ॥ तपस्तत्वाभविष्यन्तिगोप्योवृंदावनेविधे ॥ २१ ॥ नागेंद्रकन्यायाःशेषंभेजुर्भक्त्यावरेच्छया ॥ संकर्षणस्यरासार्थंभविष्यंतिव्रजेचताः ॥ २२ ॥

यह बोली कि, हे स्त्री हो ! तुम शीघ्रही गोदोहकूं करौ तब ये धारणामयी पृथ्वी दुही सो पृथ्वी तुम्हारौ कठिनते कठिन मनोरथ समुद्रसो तुमे
बताओ ॥ १६ ॥ अत्रिमुनि कहनलगे कि, हे स्त्री हो ! तुम शीघ्रही गोदोहकूं करौ तब ये धारणामयी पृथ्वी दुही सो पृथ्वी तुम्हारौ कठिनते कठिन मनोरथ समुद्रसो तुमे
पारकरैगी ॥ १७ ॥ तब उन्नेहू मनरूपी पात्रमें भूमिसे अपनों मनोरथ दूध दुहिलीनों, हे पितामह ! तेऊ वृंदावनमे गोपी होंयगी ॥ १८ ॥ दिव्य कामकी
सेना श्रेष्ठ अप्सरा नारायणके मोहिवेके लिये गन्धमादनपर्वतमें आईही ॥ १९ ॥ ते अप्सरा नारायणके रूपसों मोहित हैगई याहीसों उन्ने यह
चाही कि, हमारो नारायण भर्ता होय तब उनको अत्रिने वरदान दियो कि, तुम व्रजमें गोपी होउंगी ॥ २० ॥ ऐसेंही सुतल लोककी रहनेवारी स्त्री
वामनजीके रूपको देखके मोहित हैकें तप करैंगी वेहू हे विधे ! वृंदावनमें गोपी होवेंगी ॥ २१ ॥ और जिन नागकन्याननें वर (पति) हैवेकी इच्छा करके भक्तिसों

शेषजीको रासार्थ सेवन कियोहै वेहू ब्रजमें जन्म ले गोपी होंयगी ॥ २२ ॥ कश्यपजी वसुदेव होंयगे, अदितिजी देवकी होंयगी, प्राणनामको वसु सूर होयगो और ध्रुवनामको वसु देवक होयगो ॥ २३ ॥ और वसु नामको जो वसु है वो उद्धव होयगो, दक्षको अवतार अक्रूर होयगो, कुबेरको अवतार हृदीक यादव होयगो, वरुणको अवतार कृतवर्मा होयगो ॥ २४ ॥ प्राचीनबर्हिको अवतार गद, मरुतनको अवतार उग्रसेन होयगो, ता उग्रसेनकों राज्य देकें मैं रक्षा करौंगो ॥ २५ ॥ अंबरीषराजा युयुधान यादव, प्रह्लादको अवतार सात्यकि, क्षीरसमुद्रको अवतार शन्तनु राजा और द्रोणवसुको अवतार भीष्मजी होंयँगे ॥ २६ ॥ दिवोदासको अवतार शल राजा, भगनाम सूर्यको अवतार धृतराष्ट्र, पूषादेवताको अवतार पाण्डु और धर्मको अवतार युधिष्ठिर होयगो ॥ २७ ॥ पवनको अवतार भीमसेन, स्वायम्भू मनुको अवतार अर्जुन

कश्यपोवसुदेवश्चदेवकीचादितिःपरा ॥ शूरःप्राणोध्रुवःसोपिदेवकोवतरिष्यति ॥ २३ ॥ वसुश्चैवोद्धवःसाक्षाद्दक्षोक्रूरोदयापरः ॥ हृदीकोधनदश्चै
वकृतवर्मात्वपांपतिः ॥ २४ ॥ गदः प्राचीनबर्हिश्चमरुतोह्युग्रसेनउत ॥ तस्यरक्षांकरिष्यामिराज्यंदत्त्वाविधानतः ॥ २५ ॥ युयुधानश्चांब
रीषःप्रह्लादःसात्यकिस्तथा ॥ क्षीराब्धिःशंतनुःसाक्षाद्भीष्मोद्रोणोवसूत्तमः ॥ २६ ॥ शलश्चैवदिवोदासोधृतराष्ट्रोभगोरविः ॥ पांडुःपूषास
तांश्रेष्ठधर्मोराजायुधिष्ठिरः ॥ २७ ॥ भीमोवायुर्बलिष्ठश्चमनुः स्वायंभुवोर्जुनः ॥ शतरूपासुभद्राचसविताकर्णएवहि ॥ २८ ॥ नकुलः
सहदेवश्चस्मृतौद्वावश्विनीसुतौ ॥ धाताबाह्लीकवीरश्चवह्निर्द्रोणःप्रतापवान् ॥ २९ ॥ दुर्योधनः कलेरंशोभिमन्युस्सोमएवच ॥ द्रौणिः साक्षा
च्छिवस्यापिरूपंभूमौभविष्यति ॥ ३० ॥ इत्थंयदोः कौरवाणामन्येषांभूभुजांनृणाम् ॥ कुलेकुलेचभवतः स्वांशैस्त्रीभिर्ममाज्ञया ॥ ३१ ॥
येऽवतारामेपूर्वंतेषांराज्ञोरमांशकाः ॥ भविष्याराजराज्ञीषुसहस्राणिचषोडश ॥ ३२ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वाश्रीहरिस्तत्रब्रह्माणं
कमलासनम् ॥ दिव्यरूपांभगवतींयोगमायामुवाचह ॥ ३३ ॥ ॥ ॥ भगवानुवाच ॥ ॥ देवक्याः सप्तमंगर्भंसंनिकृष्यमहामते ॥
वसुदेवस्यभार्यायांकंसत्रासभयात्पुनः ॥ ३४ ॥ नन्दव्रजेस्थितायांचरोहिण्यांसंनिवेशय ॥ नंदपत्न्यांभवत्वंवैकृत्वेदंकर्मचाद्भुतम् ॥ ३५ ॥

शतरूपा रानीको अवतार सुभद्राजी और सूर्यको अवतार कर्ण होयगो ॥ २८ ॥ अश्विनीकुमारके अवतार नकुल, सहदेव, धाताको अवतार वीर बाह्लीक और अग्निको अवतार द्रोणाचार्य बडे प्रतापी होंयँगे ॥ २९ ॥ कलियुगको अंश दुर्योधन, चंद्रमाको अंश अभिमन्यु साक्षात् शिवजीको अंश अश्वत्थामा भूमिमें होयगो ॥ ३० ॥ या प्रकार यादव तथा कौरव तथा और राजा मनुष्यनके कुलकुलमें अपनी स्त्रीनको संग लेके मेरी आज्ञाते जन्म लेयँगे ॥ ३१ ॥ और जेजे मेरे अवतार पहले भये उनकी पत्नी सब लक्ष्मीकी अंश सोलह हजार होयँगी ॥ ३२ ॥ नारदजी बोले कि, ऐसे श्रीहरि कमलासन ब्रह्माजीसे कहिके दिव्यरूप जो भगवती योगमाया है तासे बोले ॥ ३३ ॥ कि हे योगमाये ! तू देवकीके सातमें गर्भको खैंचके हे महामते ! वसुदेवकी भार्या जो कंसके डरसे नंदके व्रजमें रहैहै वाके गर्भमें प्रवेश

करदे फिर ये सब काम करके तूं नंदकी पत्नीके गर्भमें जन्म ले ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ नारदजी कहेहैं कि, ब्रह्माजी भगवद्वचनको सुनके देवगणनके सहित भूमिको आश्वासन कर अपने लोकको चलेगये ॥ ३६ ॥ हे मैथिल ! आप श्रीकृष्णको परिपूर्णतम जानों ये कंसादि दुष्टनके मारवेके लिये भूमिमें आये हैं ॥ ३७ ॥ हे नृप ! यदि रोमसंख्या समान जिह्वा होय तोभी भगवान्‌के गुण कहनेमें नहीं आवें ॥ ३८ ॥ जैसे अपनी २ उडानके अनुसार आकाशमें पक्षी उडैहैं तैसेंही विद्वान्‌लोग कृष्णलीलाको जितनी जाकी पोहच है तितनी कहैहैं ॥३९॥ इति गर्गसंहितायां गोलोकखंडे भाषाटीकायां पंचमोऽध्यायः ॥५॥ बहुलाश्वराजा बोले कि, हे महाराज ! ये कंसराजा पहले जन्ममें कौन दैत्य हो या कंसके जन्म और कर्मको हे देवर्षिसत्तम ! मोसे कहो ॥ १ ॥ तब नारदजी बोले कि, हे राजन् ! पहले समुद्रमंथनके समय

॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ श्रुत्वाब्रह्मादेवगणैर्नत्वाकृष्णंपरात्परम् ॥ भूमिमाश्वास्यवाणीभिःस्वधामचसमाययौ ॥ ३६ ॥ परिपूर्णतमंसाक्षाच्छ्रीकृष्णंविद्धिमैथिल ॥ कंसादीनांवधार्थायप्राप्तोयंभूमिमंडले ॥ ३७ ॥ रोममात्रतनौजिह्वाभवतीत्थंयदानृप ॥ तदपिश्रीहरेस्तस्यवर्ण्यतेन गुणोमहान् ॥ ३८ ॥ नभःपतंतिविहगायथाह्यात्मसमंनृप ॥ तथाकृष्णगतिंदिव्यांवदंतीत्थंविपश्चितः ॥ ३९ ॥ इतिश्रीगर्गसंहितायांगोलोकखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेअवतारव्यवस्थानामपञ्चमोध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ कंसः कोयंपुरादैत्योमहाबलपराक्रमः ॥ तस्यजन्मानिकर्माणिब्रूहिदेवर्षिसत्तम ॥ १ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ समुद्रमथनेपूर्वंकालनेमिर्महासुरः ॥ युयुधेविष्णुनासार्द्धंयुद्धेतेनबलाद्धतः ॥ २ ॥ शुक्रेणजीवितस्तत्रसंजीविन्यास्वविद्यया ॥ पुनर्विष्णुंयोद्धुकामउद्योगंमनसाकरोत् ॥ ३ ॥ तपस्तेपेतदा दैत्योमन्दराचलसन्निधौ ॥ नित्यंदूर्वारसंपीत्वाभजन्देवंपितामहम् ॥ ४ ॥ दिव्येषुशतवर्षेषुव्यतीतेषुपितामहः ॥ अस्थिशेषंसवल्मीकंवरंब्रूहीत्युवाचतम् ॥ ५ ॥ ॥ कालनेमिरुवाच ॥ ॥ ब्रह्मांडेयेस्थितादेवाविष्णुमूलामहाबलाः ॥ तेषांहस्तैर्नमेमृत्युः पूर्णानामपिमाभवेत् ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ॥ दुर्लभोयंवरोदैत्ययस्त्वयाप्रार्थितः परः ॥ कालांतरेतेप्रातःस्यान्मद्राक्यंनमृषाभवेत् ॥ ७ ॥

कालनेमि नाम दैत्य विष्णुके संग लडोहो तब विष्णुने कालनेमि जबराईसो मारोहै ॥ २ ॥ तब शुक्राचार्यने संजीविनी अपनी विद्यासो वाकूँ जिवाय दियो तब वाने विष्णुके संग युद्ध करवेको मनसो उद्योग कियो ॥ ३ ॥ तब कालनेमिने मंदराचलके समीप तप कियो केवल दूबके रसको पी तेने देव ब्रह्माजीको भजन (सेवन) कियो ॥ ४ ॥ जप तप करतें २ दिव्य देवतानके सौवर्ष १०० बीतगये और हाडमात्र बाकी रहे और जब याके शरीरपे बामी चढगई तब ब्रह्माजीने कहा कि, वर मांग ॥ ५ ॥ तब कालनेमिने कही कि, जितने या ब्रह्मांडमें बलवान् देवता हैं जिनकी जड विष्णु हैं उनमें पूर्ण देवता है उनके हाथ मेरी मृत्यु न होय ॥ ६ ॥ तब ब्रह्माजीने कही कि, हे दैत्य ! जो वर तेने मागो ये वर बडो कठिन है और दुर्लभ है ये वर तोकों कालांतरमें मिलेगो मेरी कही झूठ नहीं होयहै ॥७॥

नारदजी कहें हैं वह कालनेमि असुर भूमिमें उग्रसेनकी पत्नीमें फिर जन्म लेतभयो तब बालकपनमें भी महा मल्लनतें निरंतर युद्ध करतो भयो ॥ ८ ॥ जरासंध मगधदेशको राजा
दिग्विजयके लिये निकस्यो यमुनाजीके किनारेपे याको डेरा इत वित जायपर्यो ॥ ९ ॥ तब याको कुवलयापीड हाथी आर्य एकहजार हाथीको पराक्रम जैसो मतवारो हाथी सांक
लनको तोरके डेरामेंतें भाजगयो ॥ १० ॥ वो डेराकूं परकूं तथा पर्वतनके टीलनकूं तोडत रंगभूमिमें मथुरामें आयो जहां कंस खड़ रह्यो हो ॥ ११ ॥ सब मल्ल सब भाजगये तब
कंसनें आपके सूंडपकर वाकूं पृथ्वीमें देमारो ॥ १२ ॥ फिर उग्रसेनके बेटा कंसनें वा कुवलयापीड हाथीकूं दोनों हाथनसों पकर घुमाय जरासंधके डेरातें सौयोजन परे फेंकदियो
॥ १३ ॥ तब वा कंसके अद्भुत बलकूं देख जरासंध प्रसन्न होगयो और अपनी अस्ति प्राप्ति दो कन्यानकूं कंसकूं व्याहि देतभयो ॥ १४ ॥ और दायजेमें दसहिजाड़ घोड़ा

श्रीनारदउवाच ॥ ॥ कौमारेपिमहामल्लैःसततंसयुयोधह ॥ उग्रसेनस्यपत्न्यांकोजन्मलेभेऽसुरःपुनः ॥ ८ ॥ जरासंधोमागधेन्द्रोदिग्जयाय
विनिर्गतः ॥ यमुनानिकटेतस्यशिबिरोभूदितस्ततः ॥ ९ ॥ द्विपःकुवलयापीडःमदमत्तद्विपमत्तभृत् ॥ बभंज शृंखलांस्वंद्रावशिबिरा
न्मदी ॥ १० ॥ निपातयन्सशिबिरान्गृहांश्चभूभृतस्तटान् ॥ रंगभूम्यामाजगाममथुरांकंसोप्ययुध्यत ॥ ११ ॥ पलायितेषुमल्लेषुकंसस्तंतुसमा
गतम् ॥ शुंडादंडेसंगृहीत्वापातयामासभूतले ॥ १२ ॥ पुनर्गृहीत्वाहस्ताभ्यांभ्रामयित्वोग्रसेनजः ॥ जरासंधस्यसेनायांचिक्षेपशतयोज
नम् ॥ १३ ॥ तदद्भुतंबलंदृष्ट्वाप्रसन्नोमगधेश्वरः ॥ अस्तिप्राप्तीददौकन्ये तस्मैकंसायशर्मिते ॥ १४ ॥ अश्वानुदंडिनस्तिलक्षंरथानांचत्रिलक्ष
कम् ॥ अयुतंचैवदासीनांपारिबर्हंजरासुतः ॥ १५ ॥ द्वंद्वयोधीततःकंसोभुजवीर्यमदोद्धतः ॥ माहिष्मतींययौवीरोचैकाकीचंडविक्रमः
॥ १६ ॥ चाणूरोमुष्टिकःकूटःशलस्तोशलकस्तथा ॥ माहिष्मतीपतेःपुत्रामल्लयुद्धजयैषिणः ॥ १७ ॥ कंसस्तानाहसाम्नापिदीयतांवंरंग
मेवमे ॥ अहंदासोभवेयंवोभवंतोजयिनोयदि ॥ १८ ॥ अहंजयीचेद्भवतोदासान्सर्वान्करोम्यहम् ॥ सर्वेषांपश्यतांतेषांनागराणांमहात्मनाम्
॥ १९ ॥ इतिप्रतिज्ञांकृत्वाथयुयुधेतेजयैषिभिः ॥ यदागतंसचाणूरंगृहीत्वायादवेश्वरः ॥ २० ॥ भूपृष्ठेपोथयामासशब्दमुच्चैस्समुच्चरन् ॥ तदा
यान्तंमुष्टिकाख्यंमुष्टिभिर्युधिनिर्गतम् ॥ २१ ॥ एकेनमुष्टिनातंवैपातयामासभूतले ॥ कूटंसमागतंकंसोगृहीत्वापादयोश्चतम् ॥ २२ ॥

एकलाख हाथी और तीनलाख रथ और दसहजार दासी दीनी ॥ १५ ॥ तदनंतर द्वंद्वयुद्धको करनवारो कंस भुजानके बलतें उद्धत भयो इकलोड चंडपराक्रमी माहिष्मती पुरीकूं
चलयो गयो ॥ १६ ॥ वा सामनो माहिष्मतीपुरीके राजाके चाणूर, मुष्टिक, कूट, शल, तोशल, ये पांच बेटा मल्लयुद्धतें जीतनेकी इच्छा करनवारे हैं ॥ १७ ॥ तिनतें कंस बोल्यो
कि, तुम हमसे कुस्ती लडो जो तुम मोकूं पछाड देउगे तो मैं तुम्हारो दास हैजाउंगो ॥ १८ ॥ जो मैं जीतूंगो तो तुम सबकूं अपनो दास करलेऊंगो, सब नगरके
महात्मा लोगनके आगे हमारी तुम्हारी कुस्ती होयगी ॥ १९ ॥ ऐसें प्रतिज्ञा करके जयेच्छुनसें उनसें कुस्ती लड़ो जब चाणूर आयो तब कंसनें वाकूं
पकरके ॥ २० ॥ पृथ्वीमें देमारो और गर्जनलग्यो फिर जब मुक्का बांधके आयो मुष्टिकको ॥ २१ ॥ कंसने एकही घूंसाके मारे धरतीमें मार पटकदियो फिर

कूट आयौ वाके दोनों पांव पकरके मुष्टिककी नाईं मारके पटकदियो ॥ २२ ॥ फिर खंब ठोकके शलभी आयौ तब कंसने एकही हाथसो पकर पछारकें धरनीमें खेंचन लग्यौ ॥ २३ ॥
फिर तोशल आयो वाके दोनों हाथ जोरते पकर पृथ्वीमें पटक फिर उठायके चालीस कोसपे फेंकदियो ॥ २४ ॥ तब उनकूं दास बनाकें अपनें संग लै वो यादवेश्वर कंस नारदजी
कहेहै कि, मेरे कहेसो प्रवर्षण पर्वतकूं शीघ्रही चल्यौ गयौ ॥ २५ ॥ तहां द्विविद बंदरते अपनों अभिप्राय कह्यौ तब द्विविदते कंसको बीसदिन निरंतर विश्रामरहित युद्ध होत
भयो ॥ २६ ॥ तब द्विविद बन्दरनें एक पर्वतकूं उखारकें कंसके मूँडके ऊपर फेंक्यौ तब कंसनें पर्वतकूं पकरके द्विविदके ऊपर फेंकदेत भयौ ॥ २७ ॥ तब द्विविद कंसकें
घूंसा मारि आकाशमें उछरगयौ तब कंसनें उछरते द्विविदकूं पकरकें पृथ्वीमें पटकदियौ ॥ २८ ॥ ता प्रहारके मारें द्विविद मूर्च्छा खायकें जायपरौ, मल नष्ट हैगयौ, हाड़ फूटगये,

भुजमास्फोट्यधावन्तंशलंनीत्वाभुजेनसः ॥ पातयित्वापुनर्नीत्वाभूमिंतंविचकर्षह ॥ २३ ॥ अथतोशलकंकंसोगृहीत्वाभुजयोर्बलात् ॥ निपा
त्यभूमावुत्थाप्यचिक्षेपदशयोजनम् ॥ २४ ॥ दासभावेचतान्कृत्वातैः सार्द्धंयादवेश्वरः ॥ मद्वाक्येनययावाशुप्रवर्षणगिरिंवरम् ॥ २५ ॥ तस्मै
निवेद्याभिप्रायंयुयुधेवानरेणसः ॥ द्विविदेनापिविंशत्यादिनैःकंसोह्यविश्रमम् ॥ २६ ॥ द्विविदोगिरिमुत्पाट्यचिक्षेपतस्यमूर्द्धनि ॥ कंसो
गिरिंगृहीत्वाचतस्योपरिसमाक्षिपत् ॥ २७ ॥ द्विविदोमुष्टिनाकंसंघातयित्वानभोगतः ॥ धावन्कंसश्चतंनीत्वापातयामासभूतले ॥ २८ ॥
मूर्च्छितस्तत्प्रहारेणपरंकश्मलमाययौ ॥ क्षीणसत्त्वश्चूर्णितास्थिर्दासभावंगतस्तदा ॥ २९ ॥ तेनैवाथगतःकंसऋष्यमूकवनंततः ॥ तत्रकेशी
महादैत्योहयरूपोघनस्वनः ॥ ३० ॥ मुष्टिभिर्घातयित्वातंवशीकृत्वारुरोहतम् ॥ इत्थंकंसोमहावीर्योमहेंद्राख्यंगिरिंययौ ॥ ३१ ॥ शतवारं
चोज्जहारगिरिमुत्पाट्यदैत्यराट् ॥ पुनस्तत्रस्थितंरामंक्रोधसंरक्तलोचनम् ॥ ३२ ॥ प्रलयार्कप्रभंदृष्ट्वाननामशिरसामुनिम् ॥ पुनःप्रदक्षि
णीकृत्यतदंघ्र्योर्निपपातह ॥ ३३ ॥ ततःशान्तोभार्गवोपिकंसंप्राहमहोग्रदृक् ॥ हेकीटमर्कटीडिंभतुच्छोसिमशकोयथा ॥ ३४ ॥ अद्यैवत्वां
हन्मिदुष्टक्षत्रियंवीर्यमानिनम् ॥ मत्समीपेधनुरिदंलक्षभारसमंमहत् ॥ ३५ ॥ इदंचविष्णुनादत्तंशंभवेत्रिपुरेयुधि ॥ शंभोःकरादिहप्राप्तं
क्षत्रियाणांवधायच ॥ ३६ ॥

तब द्विविदहू कंसकौ दास हैगयौ ॥ २९ ॥ फिर द्विविदहूकूं संग लेकें ऋष्यमूक पर्वतके वनकूं गयौ तहां बादलकी गरजके समान हिनहिनामनवारौ केशीदानव घोडाके रूपते रह
तो हो ॥ ३० ॥ ता केशीकूं घूंसानते मार वशकरकें वाके ऊपर चढ़कें महेन्द्रपर्वतकूं चल्यौगयौ ॥ ३१ ॥ वहां जाय सौ बेर वा पर्वतकूं उखार उखारकें धरदीनों तहां
क्रोधके मारें लाल लाल जिनके नेत्र और प्रलयके सूर्यकौसौ जिनको तेज ऐसे परशुरामको देख शिरते दंडवतकरि फिर परिक्रमा दैकें उनके चरणनमें जायपरो ॥ ३२ ॥ ३३ ॥
तब उग्रदृष्टीवारे परशरामजी शांत हैकें कंसते बोले-अरे कीरा ! बंदरियाके बच्चा तुच्छ तू मच्छरकी बराबर है ॥ ३४ ॥ हे दुष्ट ! वीर्याभिमानी क्षत्री तोकूं अभी मारूहूं मेरे
पास यह लाखभारको धनुष धरौहै ॥ ३५ ॥ यह धनुष विष्णुने त्रिपुरासुरकी लड़ाईमें महादेवकूं दीनों हो महादेवसों दुष्ट क्षत्रीनके नाशके लिये ये मेरे पास आयो है ॥ ३६ ॥

जो तू या धनुषकूं चढ़ायलेगौ तौ तो भलीभला है और जो तोपै न चढ्यौ तौ तेरे प्राण लेडारूंगो ॥ ३७ ॥ कंस ऐसें परशुरामको वचन सुनकें सात ताल लंबे धनुषकूं उठायकें उनके देखते देखतेइ वा धनुषको खेलकरकेही चढ़ाय लेतोभयौ ॥ ३८॥ और कानतलक खेंचकें सौ बेर टंकारतो भयौ तब वाकी टंकारमें सौ बिजलीकीसी तड़तड़ाहट भयौ॥३९॥ ता शब्दतें सब ब्रह्मांड झनकार उठ्यौ, सातोंलोक नीचेके तलनसुद्धां झंकार उठे, दिग्गज चलायमान हैगए, तारागण टूट २ कें पृथ्वीपर गिरे ॥ ४० ॥ कंस फिर धनुष धरिकें बेर २ दंडोत करिकें परशुरामजीतें यह बोल्यौ हे देव ! मैं क्षत्री नही हूं मैं तो दैत्य आपकौ टहलुआ हूं ॥ ४१ ॥ तुमारे दासनको दास ई हे पुरुषोत्तम ! मेरी रक्षा करौ, तब तो प्रसन्न हैकें परशुराम वो धनुष कंसकूं देदेते भये ॥ ४२ ॥ और कहनलगे कि, जो या धनुषकूं तोडेगौ सोई परिपूर्णतम अवतार तोकूं मारेगौ यामें

यदिचेदंतनोषित्वंतदाचकुशलंभवेत् ॥ चेदस्यकर्षणंनस्याद्धातयिष्यामितेबलम् ॥ ३७ ॥ श्रुत्वावचस्तदादैत्यःकोदंडंसततालकम् ॥ गृहीत्वा पश्यतस्तस्यसज्यंकृत्वाथलीलया ॥ ३८ ॥ आकृष्यकर्णपर्यंतंशतवारंततानह ॥ प्रत्यंचास्फोटनेनैवटंकारोभूत्तडित्स्वनः ॥ ३९ ॥ ननाद तेनब्रह्मांडंसप्तलोकैर्बिलैःसह ॥ विचेलुर्दिग्गजास्ताराह्यपतन्भूमिमंडलम् ॥ ४० ॥ धनुःसंस्थाप्यतत्कंसोनत्वानत्वाहभार्गवम् ॥ हेदेवक्ष त्रियोनास्मिदैत्योहंतेचकिंकरः ॥ ४१ ॥ तवदासस्यदासोहंपाहिमांपुरुषोत्तम ॥ श्रुत्वाप्रसन्नःश्रीरामस्तस्मैप्रादाद्धनुश्चतत् ॥ ४२ ॥ ॥ ॥ श्रीजामदग्न्युवाच ॥ ॥ यत्कोदंडंवैष्णवंतद्येनभंगीभविष्यति ॥ परिपूर्णतमोनात्रसोपित्वांघातयिष्यति ॥ ४३ ॥ ॥ श्रीनारद उवाच ॥ ॥ अथनत्वामुनिंकंसोविचरन्समदोन्मदः ॥ नकेपियुयुधुस्तेनराजानश्चबलिंददुः ॥ ४४ ॥ समुद्रस्यतटेकंसोदैत्यंनाम्नाह्यघासु रम् ॥ सर्पाकारंचफूत्कारैर्लेलिहानंददर्शह ॥ ४५ ॥ आगच्छन्तंदशन्तंचगृहीत्वातंनिपात्यसः ॥ चकारस्वगलेहारंनिर्भयोदैत्यराड्बली ॥ ॥ ४६ ॥ प्राच्यांतुवंगदेशेषुदैत्योरिष्टोमहावृषः ॥ तेनसार्द्धंसयुयुधेगजेनापिगजोयथा ॥ ४७ ॥ शृंगाभ्यांपर्वतानुच्चांश्चिक्षेपकंसमूर्द्धनि ॥ कंसोगिरिंसंगृहीत्वाचाक्षिपत्तस्यमस्तके ॥ ४८ ॥ जघानमुष्टिनारिष्टंकंसोवैदैत्यपुंगवः ॥ मूर्च्छितंतंविनिर्जित्यतेनोदीचींदिशंगतः ॥ ४९ ॥

संदेह नही है ॥ ४३ ॥ नारदजी बहुलाश्वराजातें कहनलगे कि, तब कंस परशुरामजीकूं नमस्कार करिकें मतवारौ विचरतोभयो तब काऊ राजानें फिर यासों युद्ध न कीनों सब राजा आप २ कें भेंट देतेभये ॥ ४४ ॥ तब समुद्रके किनारेपै सर्पके आकारवारे फुंकार मारते और जीभकूं लपलपावते अघासुरकूं देखतभयौ ॥ ४५ ॥ सन्मुख आते और काटते अघासुरकों हाथतें पकरिकें धरतीमें मारिकें निर्भय हैकें दैत्यराट् कंसनें अपने गलेमें हारके सदृश पहर लीनों ॥ ४६ ॥ और पूर्वमें बंगदेशोंमें अरिष्टासुर नाम बैलके रूपतें बसैहो ताके संग युद्ध कीनो जैसे हाथीतें हाथी लडै है ॥ ४७ वह अरिष्टासुरने सींगनतें पर्वतकूं कंसके मूंडपै फेंके तब कंस उन्ही पर्वतनकूं लैलैकें वृषभासुरकेही मूंडपै फेंकत भयौ ॥ ४८ ॥ तब फिर कंस वा अरिष्टकूं घूंसानतें मार मूर्छितकूं जीतकें उत्तरदिशाकूं चलौ गयौ ॥ ४९ ॥

वहां प्राग्ज्योतिषपुरको राजा भौमासुर नरक जाको नाम महाबली राजा हो तातें यह बोल्यौ कि, हे दैत्यनके राजा! मैं कंसहूं युद्धके लिये आयोहूं युद्ध दे ॥ ५० ॥ जो तुम मोय जीतलेउगे तो मैं तुम्हारौ दास हैजाउंगो, जो मैं जीतुंगो तो मैं तुमें दास करलेऊंगो ॥ ५१ ॥ नारदजी कहें है पहले तो प्रलंबासुर महाबली कंसते लड्यौ जैसें पर्वतमें नाहरते नाहर और उद्भटते उद्भट लड़ें हैं तैसें लडतो भयो ॥ ५२ ॥ मल्लयुद्धमें कंस प्रलंबासुरकूं धरतीमें पटककें फिर वाके दोनों पांव पकरि फिरायकें प्राग्ज्योतिषपुरके राजाको फैंकदियौ ॥ ५३ ॥ फिर धेनुकासुर नाम दैत्य आयौ वो बड़े क्रोधते कंसकूं पकरकें बडे जोरसो बड़ी दूरतलक हटाय लैगयौ ॥ ५४ ॥ फिर कंसनें धनुषको सौ योजन ताईं हटाय लैगयौ फिर पृथ्वीमें पटककें मारे घूंसानके मारें धेनुकके अंगको चूर २ करदियौ ॥ ५५ ॥

प्राग्ज्योतिषेश्वरंभौमंनरकाख्यंमहाबलम् ॥ उवाचकंसोयुद्धार्थीयुद्धंमेदेहिदैत्यराट् ॥ ५० ॥ अहंदासोभवेयंवोभवन्तोजयिनोयदि ॥ अहंजयीचेद्भवतोदासान्सर्वान्करोम्यहम् ॥ ५१ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ पूर्वंप्रलंबोयुयुधेकंसेनापिमहाबलः ॥ मृगेन्द्रेण मृगेंद्रोऽद्रावुद्भटेनयथोद्भटः ॥ ५२ ॥ मल्लयुद्धेगृहीत्वातंकंसोभूमौनिपात्यच ॥ पुनर्गृहीत्वाचिक्षेपप्राग्ज्योतिषपुरंदरे ॥ ५३ ॥ आगतोधेनुकोनाम्नाकंसंजग्राहरोषतः ॥ नोदयामासदूरेणबलंकृत्वाथदारुणम् ॥ ५४ ॥ कंसस्तन्नोदयामासधेनुकंशतयोजनम् ॥ निपात्यचूर्णयामासतदंगंमुष्टिभिर्दृढैः ॥ ॥ ५५ ॥ तृणावर्त्तोभौमवाक्यात्कंसंनीत्वानभोगतः ॥ तत्रैवयुयुधेदैत्यऊर्द्ध्वैलक्षयोजनम् ॥ ५६ ॥ कंसोऽनंतबलंकृत्वादैत्यंनीत्वातदांबरात् ॥ भूम्यां संपातयामासवमंतंरुधिरंमुखात् ॥ ५७ ॥ तुंडेनाथग्रसन्तंचबकंदैत्यंमहाबलम् ॥ कंसोनिपातयामासमुष्टिनावज्रघातिना ॥ ५८ ॥ उत्थायदैत्योबलवान्सितपक्षोघनस्वनः ॥ क्रोधयुक्तःसमुत्पत्यतीक्ष्णतुंडोग्रसच्चतम् ॥ ५९ ॥ निगीर्णोऽपिसवज्रांगोयद्गलेरोधकृच्चयः ॥ सद्यश्चच्छर्दतंकंसंक्षतकंठोमहाबकः ॥ ६० ॥ कंसोबकंसंगृहीत्वापातयित्वामहीतले ॥ कराभ्यांभ्रामयित्वाचयुद्धेतंविचकर्षह ॥ ॥ ६१ ॥ तत्स्वसारंपूतनाख्यांयोद्धुकामामवस्थिताम् ॥ तामाहकंसःप्रहसन्वाक्यंमेशृणुपूतने ॥ ६२ ॥ स्त्रियासार्द्धमहंयुद्धंनकरोमिकदाचन ॥ बकासुरःस्यान्मेभ्रातात्वंचमेभगिनीभव ॥ ६३ ॥

फिर भौमासुरके कहेते तृणावर्त कंसकूं पकरकें आकाशमें लैगयौ और वहीं लक्षयोजन ऊपर जायके युद्ध कियौ ॥ ५६ ॥ तब कंसने अनंत बलकरके दैत्यकूं लोहूकी उलटी करतेको आकाशसो पृथ्वीमें देमारौ ॥ ५७ ॥ फिर आयकें अपनी चोंचसो कंसकूं निगलते बकासुरको कंसनें वज्रके तुल्य एक घूंसा मारकें धरतीमें पटको ॥ ५८ ॥ तब बडो बली सुफेद जाके पंख मेघकीसी जाकी गर्जना ऐसे बकासुरनें चोंच फारकें कंसकूं निगललियौ ॥ ५९ ॥ निगलहू लीयौ तौहू वज्रांगी कंस बकासुरके गलेमें अटक गयौ तब यानें कंसको जल्दी उगलदीनों, बकासुरके गरेमें घाव हैगये ॥ ६० ॥ तब कंसनें बकासुरकूं पकरकें धरतीमें गेरकें युद्धमें घसीटो ॥ ६१ ॥ तब वाकी बहन पूतना लड़वेकूं आई वाते कंस हँसिके यह बचन बोल्यौ हे पूतने! तू मेरौ वचन सुन ॥ ६२ ॥ मैं स्त्रीके संग कभीभी युद्ध नहीं

करूंगो, बकासुर मेरौ भैयाहै तू मेरी बहन हैजा॥६३॥ तब कसकूं अनंत बली जानके भौमासुरहू धर्षित हैगयौ फिर कंसकूं देवतानते संग्राममें सहायके लिये मित्र करलीनों ॥६४॥ इति श्रीगर्गसंहितायां गोलोकखंडे भाषाटीकायां नारदबहुलाश्वसंवादे कंसबलवर्णनं नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ नारदजी बोले—याके पीछें कंसप्रलंबादिक दैत्य और पहले दैत्यकूं संग लैके शंबरासुरके पुरमें जायके अपनो लड़वेकौ मतलब जतावत भयौ॥ १ ॥ शंबरहू अति बली हो परंतु कंससौ लड़ौ नहीं तब कंसने अतिबलीनके संग मित्रता करलीनी ॥ २ ॥ फिर त्रिशृंगशिखर पर्वतमें बड़ो बली व्योमासुर सोवेहो महाबली कंसनें वाकें एक लात मारी तब वो कंसकी लातके मारें जागपरो और क्रोधसो वाके लाल लाल नेत्र हैआये ॥३॥ तब व्योमासुरनें उठिकें मारे घूंसानके मारें कंसकूं पिलपिलो करदीनों फिर इन दोनोंनकौ घूंसानते बड़ो युद्ध भयौ ॥ ४ ॥ तब कंसके घूंसानके मारे भ्रमातुर हैकें व्योमासुरहू निःसत्व हैगयौ तब कंस वाहूको

ततोनन्तबलंकंसंवीक्ष्यभौमोपिधर्षितः ॥ चकारसौहृदंकंसेसहायार्थंसुरान्प्रति ॥ ६४ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांगोलोकखंडेनारदबहुलाश्व संवादेकंसबलवर्णनंनामषष्ठोध्यायः ॥६॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ अथकंसःप्रलंबाद्यैरन्यैःपूर्वंजितेश्वतैः ॥ शंबरस्यपुरंप्रागात्स्वाभिप्रायं न्यवेदयत् ॥ १ ॥ शंबरोह्यतिवीर्योपिनयुयोधसतेनवै ॥ चकारसौहृदंकंसोसेवैरतिबलैःसह ॥२॥ त्रिशृंगशिखरेशेतेव्योमोनामाऽसुरोबली ॥ कंसपादप्रबुद्धोभूत्क्रोधसंरक्तलोचनः ॥ ३ ॥ कंसंजघानचोत्थायप्रबलैर्दृढमुष्टिभिः ॥ तयोर्युद्धमभूद्घोरमितरेतरमुष्टिभिः ॥ ४ ॥ कंसस्यमु ष्टिभिःसोपिनिःसत्त्वोभूद्भ्रमातुरः ॥ भृत्यंकृत्वाथतंकंसःप्रातंमांप्रणनामह ॥ ५ ॥ हेदेवयुद्धाकांक्षोऽस्मिक्वयामित्वंवदाशुमे ॥ प्रोवाच तंतदागच्छदैत्यंबाणंमहाबलम् ॥ ६ ॥ प्रेरितश्चेतिकंसाख्योमयायुद्धदिदृक्षुणा ॥ भुजवीर्यमदोन्नद्धःशोणिताख्यंपुरंययौ ॥ ७ ॥ बाणासुर स्तत्प्रतिज्ञांश्रुत्वाक्रुद्धोह्यभून्महान् ॥ तताडलत्तांभूमध्येजगर्जघनवद्बली ॥ ८ ॥ आजानुभूमिगांलत्तांपातालांतमुपागताम् ॥ कृत्वातमाह बाणस्तुपूर्वंचैनांसमुद्धर ॥ ९ ॥ श्रुत्वावचःकराभ्यांतामुन्मदारमदोत्कटः ॥ प्रचंडविक्रमःकंसःखरदंडंगजोयथा ॥ १० ॥ तयाचोद्धलत्यो रखाताल्लोकाःसप्ततलाद्दृढाः ॥ निपेतुर्गिरयोनेकाविचेलुर्दृढदिग्गजाः ॥ ११ ॥

अपनो दास बनायके चल्यो सोई मैं रस्तामें मिल्यो तब मोते यह बोल्यौ ॥५॥ हे महाराज ! मेरें युद्धकी चाहना है मैं कहां जाऊं मोते जल्दी कहो तब मैंने कही कि, तू महाबली बाणासुरसौ जायके लड़ ॥ ६ ॥ तब मैंनें युद्ध देखवेकों प्रेरणा करी तब भुजानके बलते उद्धत कंस शोणितनाम पुरकूं गयो ॥ ७ ॥ तब बाणासुर कंसकी प्रतिज्ञाकों सुनकें बड़ो क्रोधित भयो और पृथ्वीमें एक लात मारी और महाबलीनें मेघके समान गर्जना की ॥ ८ ॥ वो बाणासुरकी लात जांघतलक धरतीमें गड़गई और पातालकी जड़में पहुंची तब ये बाण कंसते बोल्यौ कि, पहले तू मेरे पांवको तो उखारले ॥ ९ ॥ तब मदोद्धत और चंडविक्रमवारे कंसने वाके वचन सुनकें दोनों हाथनते पकड़कें पांव ऐसें उखाड़लीनों जैसें हाथी कमलदंडकूं उखाड़ लेयहै ॥ १० ॥ जा लातके उखाड़वेमें सातों पाताल उखड़ आये और अनेक पर्वत जायपरे और खड़े दृढ जे

दिग्गज हैं वे भी चलायमान हेगए ॥ ११ ॥ तब बाणासुरको युद्ध करवेकूं तैयार भयो देखके महादेवजीने आयके सबनकूं संबोधन देके बलिके पुत्र बाणासुरते कही ॥ १२ ॥
कि, श्रीकृष्णके विना याकूं भूमिमें कोई नही जीतेगो क्योंकि परशुरामजीनें याकूं वर दीनों है और विष्णुभगवान्‌की दियोभयो धनुषभी याकूं दीनोंहै ॥ १३ ॥
नारदजी कहेंहै कि, ऐसें कहिकें कंसकी और बाणासुरकी साक्षात् शिवनें मित्रता करायदीनी ॥ १४ ॥ फिर कंसनें पश्चिम दिशामें वत्सासुरको सुन्यो तब वत्सरूप
धारी वा दैत्यतो वह दैत्य कंस लड्यो ॥ १५ ॥ तब तो कंसनें पूंछ पकरकें वत्सासुरको पृथ्वीमें देमारो, ऐसे वा पर्वतकूं वशमें करकें म्लेच्छदेशनकूं कंस गयो ॥ १६ ॥
नारदजी कहेंहै कि, तब मेरे मुखते महाबली जो कालयवन दैत्य सो कंसको आगमन सुनिकें गदा हाथमें लैके लाल २ हैं मूंछ जाकी ऐसो कालयवनहू युद्ध करवे

श्रोद्धतमुद्यतंबाणंदृष्ट्वागत्यवृषध्वजः ॥ सर्वान्संबोधयामासप्रोवाचबलिनंदनम् ॥ १२ ॥ कृष्णंविनापरंचैतंभूमौकोपिनजेष्यति ॥ भार्गवे
णवरंदत्तंधनुरस्मैचवैष्णवम् ॥ १३ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ इत्युक्त्वासोहदंहर्षंसख्योर्वैकंसबाणयोः ॥ चकारपरयाशांत्याशिवःसाक्षान्महे
श्वरः ॥ १४ ॥ अथकंसोदिक्प्रतीच्यांश्रुत्वावत्संमहासुरम् ॥ तेनसार्द्धंसयुयुधेवत्सरूपेणदैत्यराट् ॥ १५ ॥ पुच्छेगृहीत्वातंवत्संपोथया
मासभूतले ॥ वशेकृत्वाथतंशैलंम्लेच्छदेशांस्ततोययौ ॥ १६ ॥ सम्मुखात्कालयवनःश्रुत्वादैत्यंमहाबलम् ॥ निर्ययौसन्मुखेयोद्धुंरक्तश्म
श्रुर्गदाधरः ॥ १७ ॥ कंसोगदांगृहीत्वास्वांलक्षभारविनिर्मिताम् ॥ प्राक्षिपद्यवनेन्द्रायसिंहनादमथाकरोत् ॥ १८ ॥ गदायुद्धमभूद्घोरंतत्र
हिकंसकालयोः ॥ विस्फुलिंगान्क्षरंत्यौद्वेगदेचूर्णीबभूवतुः ॥ १९ ॥ कंसःकालंसंगृहीत्वापातयामासभूतले ॥ पुनर्गृहीत्वानिष्पात्यमृततुल्यं
चकारह ॥ २० ॥ बाणवर्षंप्रकुर्वन्तींसेनांतांयवनस्यच ॥ गदयापोथयामासकंसोदैत्याधिपोबली ॥ २१ ॥ गजांस्तुरंगान्सुरथान्वीरान्भूमौ
निपात्यच ॥ जगर्जवनवद्वीरोगदायुद्धेमृधांगणे ॥ २२ ॥ ततश्चदुद्रुवुर्म्लेच्छास्त्यक्त्वास्वंस्वंरणंपरम् ॥ भीतान्पलायितान्म्लेच्छान्नजघाना
र्थनीतिमान् ॥ २३ ॥ उच्चपादोदीर्घजानुः स्तम्भोरुर्लघिमाकटिः ॥ कपाटवक्षाः पीनांसः पुष्टः प्रांशुर्बृहद्भुजः ॥ २४ ॥

कूं सन्मुख निकस्यो ॥ १७ ॥ तब कंसहू अपनी एकलक्ष भार बोझकी गदाकूं लैकें कालयवनके ऊपर फेंककें सिंहनाद करतभयो ॥ १८ ॥
जब कंस और कालयवन दोनोंनको बडो मद्दा युद्ध भयो गदानमेंते पतंगा उडते २ दोनोंनकी गदा चूर्ण हैगयी ॥ १९ ॥ तब कंसनें कालयवनकूं पकरकें पृथ्वीमें दे मारो
फिर उठाय २ कें ऐसो मारो कि, मरेके तुल्य करदीनों ॥ २० ॥ और बाणनकी वर्षा करतो कालयवनकी सेनाको गदानके मारे बली कंसनें चूरण करडारी ॥ २१ ॥ हाथी
नकूं रथनकूं घोडानकूं, वीरनकूं भूमिमें पटककें फिर गदायुद्धमें कंस मेघके समान गर्जो ॥ २२ ॥ तब तो सबरे म्लेच्छ अपने २ रणकूं छोडकें भाजगये, भयभीत भाजे जाय ऐसें
म्लेच्छनकूं देखकें नीतिके जाननहारो कंस फिर नहीं मारतभयो ॥ २३ ॥ फिर ऊंचे पांववारो, मोटी जाकी जांघ, खंभसे जाके ऊरू, पतरी कमर, किवारसी छाती, मोटे कन्धा,

मोटी देह, ऊंची बड़ी भुजा ॥ २४ ॥ कमलदलसे नेत्र हैं, बड़े २ केश हैं, लाल जाकौ रंग है, कारे वस्त्र धारण कररक्खे हैं, किरीट, कुंडल, हार, पद्ममाल इत्यादिते शोभित ॥ २५ ॥ और ढाल, तरवार, धनुष, बाण, तर्कश, कवच, मुद्गरको बाधे मदोत्कट जो कंस है वो देवतानके जीतिवेकूं अमरावती पुरीमें जातभयौ ॥ २६ ॥ चाणूर, मुष्टिक, अरिष्ट, शल, तोशल, प्रलंब, बकासुर, द्विविद बंदर, ॥ २७ ॥ तृणावर्त, अघासुर, कूट, भौमासुर, बाणासुर, शंबर, व्योमासुर, धेनुकासुर, वत्सासुर, इनकूं संग लैकें कंसने अमरावतीपुरी घेरलीनी ॥ २८ ॥ तब कंसादिकनकूं आयौ देखिकें देवतानकौ राजा इन्द्र क्रोधकरकें सब देवतानकूं संग लैकें युद्ध करवेकूं बाहर निकस्यौ ॥ २९ ॥ तब दिव्य शस्त्रनके समूह और बड़े प्रकाश करते बाणनसों विन दोनोंनको ऐसो भयंकर युद्ध भयौ जाय देखकें रोंगटा ठाडे हैजांय ॥ ३० ॥ जब शस्त्रनकौ अंधकार हैगयो तब रथमें बैठिकें इंद्रनें कंसके मारिवेके लियें विजलीकीसी कांति जाकी ऐसौ सौधारकौ वज्र चलायौ ॥ ३१ ॥ तब कंस शीघ्रही

पद्मनेत्रोबृहत्केशोऽरुणवर्णोऽसितांबरः ॥ किरीटीकुण्डलीहारीपद्ममालील्यार्करुक् ॥२५॥ खड्गीनिषंगीकवचीमुद्गराढ्योधनुर्धरः ॥ मदोत्कटो ययौजेतुंदेवान्कंसोऽमरावतीम् ॥२६॥ चाणूरमुष्टिकारिष्टशलतोशलकेशिभिः ॥ प्रलंबेनबकेनापिद्विविदेनसमावृतः ॥२७॥ तृणावर्त्ताघकूटैश्च भौमबाणाख्यशंबरैः ॥ व्योमधेनुकवत्सैश्चरुरुधेसोमरावतीम् ॥ २८ ॥ कंसादीनागतान्दृष्ट्वाशक्रोदेवाधिपः स्वराट् ॥ सर्वैर्देवगणैःसार्द्धंयोद्धुं क्रुद्धोविनिर्ययौ ॥ २९ ॥ तयोर्युद्धमभूद्घोरंतुमुलंरोमहर्षणम् ॥ दिव्यैश्चशस्त्रसंघातैर्बाणैस्तीक्ष्णैः स्फुरत्प्रभैः ॥ ३० ॥ शस्त्रांधकारेसंजातेरथा रूढोमहेश्वरः ॥ चिक्षेपवज्रंकंसायशतधारंतडिद्द्युति ॥ ३१ ॥ मुद्गरेणापितद्वज्रंतताडाशुमहासुरः ॥ पपातकुलिशंयुद्धेछिन्नधारंवभूवह ॥३२॥ त्यक्त्वावज्रंयदावज्रीखड्गंजग्राहरोपतः ॥ कंसंमूर्ध्नितताडाशुनादंकृत्वाथभैरवम् ॥ ३३ ॥ सक्षतोनाभवत्कंसोमालाहतइवद्विपः ॥ गृहीत्वासगदां गुर्वीमष्टधातुमयींदृढाम् ॥ ३४ ॥ लक्षभारसमांकंसश्चिक्षेपेन्द्रायदैत्यराट् ॥ तांसमापततींवीक्ष्यजग्राहाशुपुरंदरः ॥ ३५ ॥ ततश्चिक्षेपदैत्याय वीरोनमुचिसूदनः ॥ चचारयुद्धेविदलन्नरीन्मातलिसारथिः ॥ ३६ ॥ कंसोगृहीत्वापरिघंतताडाऽसेसुरद्विपम् ॥ तत्प्रहारेणदेवेंद्रःक्षणंमूर्च्छा मवापसः ॥ ३७ ॥ कंसंमरुद्गणाःसर्वेगृध्रपक्षैःस्फुरत्प्रभैः ॥ बाणौघैश्छादयामासुर्वर्षासूर्यमिवांबुदः ॥ ३८ ॥

मुद्गरते वज्रकूं मारतभयौ ताईसमय मुद्गरको मारी वज्र धार जाकी कटगई सो युद्धमें जाय परौ ॥ ३२ ॥ फिर वज्रधारी इंद्रनें वज्रकूं छोडकें खड्ग लीनों और बड़े रोषते एक खड्ग कंसके माथेमें मारौ फिर बड़ो भयंकर नाद कीनों ॥ ३३ ॥ खड्गके प्रहारसों कंसकें नेंकहू घाव नहीं भयौ जैसें फूलनकी माला मारेते हाथीकें घाव नहीं होयहै फिर कंसनें अष्टधातुकी बड़ी बोझल और दृढ ॥ ३४ ॥ लाखभारकौ बोझ जामें ऐसी गदा लैकें इंद्रकें मारिवेकूं फेकी, इंद्रने गदाको आवती देखकें शीघ्रता सो हाथमें पकरलीनी ॥ ३५ ॥ वही गदा बड़ेवीर नमुचिके मारनवारे इंद्रनें फेंकिकें कंसकें मारी, युद्धमें वैरीनकूं मारतोभयौ इंद्र मातली जाको सारथि सो विचरतोभयौ ॥ ३६ ॥ तब कंसने एक लोहनिर्मित गदा लैकें इंद्रके कन्धामें मारी ता प्रहारके मारें १ क्षणभरकूं इन्द्र मूर्च्छित हैगयो ॥ ३७ ॥ तब तौ मरुद्गणने गीधकेसे जिनकें पंख ऐसे

बड़े पैने बाणनते कंसकूं ऐसें ढकदीनों जैसें वर्षाके बादल सूर्यकूं ढक देंय हैं ॥ ३८ ॥ तब तौ हजार भुजावारौ बाणासुर हजार भुजानते पांचसे धनुषकूं टंकारत बाणनके समूहनते मरुद्गणनकूं भजाय देतभयौ और वे सब मारें बाणनके मारें दशोंदिशानमें भाजगये ॥ ३९ ॥ ताके अनन्तर आठौ वसु, ग्यारह रुद्र, बारह सूर्य, ऋभुदेवता सब दिशानते नाना प्रकारके शस्त्रनते बाणासुरकूं मारनलगे ॥ ४० ॥ इतनेंईमें प्रलंबादिकनकूं संग लैकें भौमासुर गर्जतौ आयौ, वाकी नादते देवता मूर्च्छा खायकें जायपरे ॥ ४१ ॥ तब तौ इंद्र शीघ्रही उठिकें ऐरावत हाथीपे बैठिकें आयौ और क्रोधके मारें लाल जाके नेत्र ऐसौ इन्द्रनें मदोन्मत्त ऐरावत हाथीकूं कंसपै पेल्यौ ॥ ४२ ॥ तब अंकुशके मारें कोपित हाथी बैरीनकौ चूर्ण करत, सूंडकी फुंकारके मारें इतवित मारतो ॥ ४३ ॥ मद चुचावते, हिमालयसे दुर्गम, गर्जते, वारंवार सूंडकूं चलावते ॥ ४४ ॥ घण्टा किंकिणी बजावते, रत्ननकूं

दोःसहस्रयुतोवीरश्चापंटंकारयन्मुहुः ॥ तदातान्कालयामासबाणैर्बाणासुरोबली ॥ ३९ ॥ बाणंचवसवोरुद्राआदित्याऋभयःसुराः ॥ जघ्नु र्नानाविधैःशस्त्रैःसर्वतोद्रिसमागताः ॥ ४० ॥ ततोभौमासुरःप्राप्तःप्रलंबाद्यसुरैर्नदन् ॥ तेननादेनदेवास्तेनिपेतुर्मूर्च्छितारणे ॥ ४१ ॥ उत्थायाशुतदाशक्रोगजमारुह्यरक्तदृक् ॥ नोदयामासकंसायमत्तमैरावतंगजम् ॥ ४२ ॥ अंकुशास्फालनात्क्रुद्धंपातयंतंपदेद्विपः ॥ शुंडादं डस्यफूत्कारैर्मर्दयन्तमितस्ततः ॥ ४३ ॥ स्रवन्मदंचतुर्दन्तंहिमाद्रिमिवदुर्गमम् ॥ नदन्तंशृंखलांशुंडांचालयंतंमुहुर्मुहुः ॥ ४४ ॥ घंटा द्वयंकिंकिणीजालरत्नकंबलमंडितम् ॥ गोमूर्धचयसिन्दूरकस्तूरीपत्रभृन्मुखम् ॥ ४५ ॥ दृढेनमुष्टिनाकंसस्तंतताडमहागजम् ॥ द्वितीय मुष्टिनाशक्रंसंजघानरणांगणे ॥ ४६ ॥ तस्यमुष्टिप्रहारेणदूरेशक्रःपपातह ॥ जानुभ्यांधरणींस्पृष्ट्वागजोपिविह्वलोभवत् ॥ ४७ ॥ पुनरु त्थायनागेन्द्रोदन्तैश्चाहत्यदैत्यपम् ॥ शुंडादंडेनचोद्धृत्यचिक्षेपलक्षयोजनम् ॥ ४८ ॥ पतितोपिसवज्रांगःकिंचिद्व्याकुलमानसः ॥ स्फुरदोष्ठोतिरुष्टांगोयुद्धभूमिंसमाययौ ॥ ४९ ॥ कंसोगृहीत्वानागेन्द्रंसंनिपात्यरणांगणे ॥ निष्पीड्यशुंडांतस्यापिदन्तांश्चूर्णीचकारह ॥ ॥ ५० ॥ अथैरावतोनागोदुद्रावाशुरणांगणात् ॥ निपातयन्महावीरान्देवधानींपुरींगतः ॥ ५१ ॥ गृहीत्वावैष्णवंचापंसज्यंकृत्वाऽथदैत्य राट् ॥ देवान्विद्रावयामासबाणौर्वैश्वधनुःस्वनैः ॥ ५२ ॥

पहिरें, बनाती कामदार झालरते शोभित, गोरोचन, कस्तूरी, सिन्दूरके चित्रविचित्र रचना युक्त मुखवारे वा इंद्रके हाथीको ॥ ४५ ॥ आवत देख कंसनें बड़े जोरते एक घूंसा मारौ और दूसरौ घूंसा इंद्रकें मारौ ॥ ४६ ॥ ताके घूंसाके प्रहारके मारें इन्द्रहू दूर जायपरौ और हाथीहू पृथ्वीमें घुटुअन जायपरौ और विह्वल हैगयौ ॥ ४७ ॥ फिर ऐरावत हाथीनें उठकें चारों दांतनते कंसकूं उठाय सूंडते पकरकें फिरायकें लाखयोजनपै फेंक दीनों ॥ ४८ ॥ गिरोभयोभी वज्रकेसे अंगवारो वो कछु विह्वलहू हैगयौ तौऊ क्रोधते होठनकूं फड़कावत अत्यंत रोषमें मग्न भयो युद्धभूमिमें फिर आयौ ॥ ४९ ॥ तब कंस ऐरावतकूं पकर रणांगणमें पटक सूंडकूं मोडके दांतनकौ चूर्ण करतभयौ ॥ ॥ ५० ॥ याके अनंतर हाथी रणांगणसों शीघ्रही भाजगयौ और बड़े २ वीरनकूं पटकत देवधानी पुरीकूं चल्यौ गयो ॥ ५१ ॥ फिर कंस विष्णुके दियेभये

धनुषकूं चढायकें बाणनके समूहते तथा धनुषकी टंकारके शब्दतें देवतानकूं भजाय देतभयो ॥ ५२ ॥ तब कंसके मारे वे देवता दिशानमें भाजगये और सबनकी लीन बुद्धि हैगयी कितने उन्ने चुटिया खोलदीनी, कितनेक दीनकी तरह कहनलगे कि, हम भयभीत हैं ॥५३॥ कितनेक हाथ जोरते अति दीनकी तरह शस्त्रधर संग्राममें अपनी काछ खोल भागगये कितनेक कंसके सन्मुखहू न भये मनोरथ जिनके भग हैं अति विह्वल हैगये ॥ ५४ ॥ ऐसें भये जो देवता हैं तिनें देखिके उनको छत्र सिंहासनको लैकें सब दैत्यनके संग अपनी राजधानी जो मथुरा है तार्कूं आवत भयौ ॥ ५५ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां गोलोकखंडे भाषाटीकायां कंसदिग्विजयवर्णनं नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ अब गर्गजी कहेहैं कि, हे शौनक ! हरिभक्त जो मैथिल राजा है सो बडे ज्ञानीदेवर्षिनमें श्रेष्ठ जो नारद तिनकूं दंडवत् करकें ये अद्भुत वृत्तांतके सुनवेको बोल्यौ ॥ १ ॥

ततःसुरास्तेननिहन्यमानाविदुद्रुवुर्लीनधियोदिशान्ते ॥ केचिद्रणेमुक्तशिखावभूवुर्भीताःस्मइत्थंयुधिवादिनस्ते ॥ ५३ ॥ केचित्तथाप्रांजलयोतिदीनवत्संन्यस्तशस्त्रायुधिमुक्तकच्छाः ॥ स्थातुंरणेकंसनृदेवसंमुखेगतेप्सिताःकेचिदतीवविह्वलाः ॥ ५४ ॥ इत्थंसदेवान्प्रगतान्निरीक्ष्यताञ्जीत्वाचसिंहासनमातपत्रवत् ॥ सर्वैस्तदादैत्यगणैर्जनाधिपःस्वराजधानींमथुरांसमाययौ ॥ ५५ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांगोलोकखंडेनारदबहुलाश्वसंवादेदिग्विजयवर्णनंनामसप्तमोध्यायः॥७॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ ॥ श्रुत्वातदाशौनकभक्तियुक्तःश्रीमैथिलोज्ञानभृतांवरिष्ठम् ॥ नत्वापुनःप्राहमुनिंमहाद्भुतंदेवर्षिवर्यंहरिभक्तिनिष्ठः ॥ १ ॥ ॥ श्रीबहुलाश्वउवाच ॥ ॥ त्वयाकुलंकोविशदीकृतंमेस्वानंददोर्जद्यशसामलेन ॥ श्रीकृष्णभक्तक्षणसंगमेनजनोपिसत्स्याद्बहुनाकिमुस्वित् ॥ २ ॥ श्रीराधयापूर्णतमस्तुसाक्षाद्भूत्वाव्रजेकिंचरितंचकार ॥ तद्ब्रूहिमेदेवऋषेऋषीशत्रितापदुःखात्परिपाहिमांत्वम् ॥ ३ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ धन्यंकुलंयन्निमिनानृपेणश्रीकृष्णभक्तेनपरात्परेण ॥ पूर्णीकृतंयत्रभवान्प्रजातोयुक्तोहिमुक्तोभवतोनचित्रम् ॥ ४ ॥ अथप्रभोस्तस्यपवित्रलीलांसुमंगलांसंश्रृणुतात्परस्य ॥ अभूत्सतांयोभुविरक्षणार्थंनकेवलंकंसवधायकृष्णः ॥ ५ ॥ अथैवराधांवृषभानुपत्न्यामावेश्यरूपंमहसःपराख्यम् ॥ कालिंदजाकूलनिकुंजदेशेसुमन्दिरेसावततारराजन् ॥ ६ ॥

हे महाराज ! तुमनें जाके निर्मल यश सो मेरो कुल पृथ्वीमें निर्मल करदीनों क्योंकि जा श्रीकृष्णभक्तनके क्षणमात्र संगतें जन आत्माको आनंद देनवारो सत् उत्तम है जाय है, या विषयमें बहुत कहनेकी आवश्यकता नहीं है ॥ २ ॥ श्रीराधिकाके संग पूर्णतम भगवान् व्रजमें जन्म लेके कहा कहा चरित्र करतेभये सो हे देवऋषि ! मेरे आगें कहो और हे ऋषीश तीन तापनके दुःखसो मेरी रक्षा करो ॥ ३ ॥ यह सुनिकें नारदजी कहनलगे कि, निमि राजाको ये कुल धन्य है, जो उत्तमोत्तम और श्रीकृष्णके भक्त तुमनें कृष्णभक्तिते अपनों कुल कृतार्थ करिदीनों,जामें तोसरीको भक्त पैदा भयो यासों तुम जीवन्मुक्त हो यामें कछू अचंभेकी बात नहीं है॥ ४ ॥यासो तू प्रभुकी मंगलकारी पवित्र लीला सुन, जा कृष्णने केवल संतनके रक्षाके लिये जन्म लियो है कछू कंसके मारिवेकेही लीयो होय सो नहीं ॥ ५ ॥ याके पीछें अपनों परसंज्ञक (नामक) जो तेज राधा

है ताकूं वृषभानुकी स्त्रीमें प्रवेश करिके आयेंहै सो राधा यमुनाजीके तटपै निकुंजमंदिरमें अवतार लेतभई ॥ ६ ॥ भादों महीना शुक्लपक्षमें अष्टमी सोमवारके मध्याह्नके समय जब मेघनसों आकाश छादित हो तब जन्म लीनो, तब देवता नंदनवनके पुष्पनकी वर्षा करतेभये ॥ ७ ॥ वासमय श्रीराधाके अवतारते नदी निर्मल हेगई, दिशा प्रसन्न हेगई, शीतल कमलकी सुगन्ध लिये मंद मंद पवन चलन लगी ॥ ८ ॥ सो चन्द्रमाकीसी कांति जाकी ऐसी अपनी बेटीकूं देखिके कीर्तिनामकी गोपी वृषभानुकी रानी बड़ी प्रसन्न भई, तब रानीनें शुभकृत्य करायकें अपनी बेटीके कल्याणके निमित्त शीघ्रही आनंदकारी दो लाख गौ ब्राह्मणनकूं दीनी ॥ ९ ॥ जाको दर्शन देवतानकूं और जो किरोड़न जन्मनताईं यज्ञकरें तिनहूंकूं दुर्लभ है और बड़े २ योगीजननको कोटि २ जन्मनके अभ्याससों कठिन सो मिलेहै ता मूर्तिमती राधाकूं वृषभानुके मंदिरमें

घनावृतेव्योम्निदिनस्यमध्येभाद्रेसितेनागतिथौचसोमे ॥ अवाकिरन्देवगणाःस्फुरद्भिस्तन्मन्दिरेनन्दनजैःप्रसूनैः ॥ ७ ॥ राधावतारेणतदा बभूवुर्नद्योमलांभाश्चदिशःप्रसेदुः ॥ ववुश्चवाताअरविन्दरागैःसुशीतलाः सुंदरमंदयानैः ॥ ८ ॥ सुतांशरच्चंद्रशताभिरामांदृष्ट्वाथकीर्त्तिर्मुदमापगोपी ॥ शुभंविधायाशुददौद्विजेभ्योद्विलक्षमानंदकरंगवांच ॥ ९ ॥ यद्दर्शनंदेववरैःसुदुर्लभंतज्ज्ञैरवाप्तंजनजन्मकोटिभिः ॥ सविग्रहांतां वृषभानुमंदिरेलक्षन्तिलोकाललनाप्रलालनैः ॥ १० ॥प्रेंखेखचिद्रत्नमयूखपूर्णेसुवर्णयुक्तेकृतचंदनांगे ॥ आंदोलितासाववृधेसखीजनैर्दिनेदिने चंद्रकलेवभाभिः ॥ ११ ॥ श्रीरासरंगस्यविकासचंद्रिकादीपावलीभिर्वृषभानुमंदिरे ॥ गोलोकचूडामणिकंठभूषणांध्यात्वापरांतांभुविपर्यटाम्यहम् ॥ १२ ॥ ॥ श्रीबहुलाश्वउवाच ॥ ॥ वृषभानोरहोभाग्यंयस्यराधासुताभवत् ॥ कलावत्यासुचंद्रेणकिंकृतंपूर्वजन्मनि ॥ १३ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ नृगपुत्रोमहाभागःसुचंद्रोनृपतीश्वरः ॥ चक्रवर्तीहरेरंशोबभूवातीवसुंदरः ॥ १४ ॥ पितॄणांमानसीकन्यास्तिस्रोभूवन्मनोहराः ॥ कलावतीरत्नमालामेनकानामनामतः ॥ १५ ॥ कलावतींसुचन्द्रायहरेरंशायधीमते ॥ वैदेहायरत्नमालांमेनकांचहिमाद्रये ॥ पारिबर्हेणविधिनास्वेच्छाभिःपितरोददुः ॥ १६ ॥

गोपीनने लाड़ लड़ाई सब देखें हैं ॥ १० ॥ सुवर्णके बनेभये रत्नजटित चन्दनसों लिपटे पालनेमें सखीनने झुलाई ऐसी राधिका दिन दिन प्रति ऐसें बढ़ी जैसें प्रकाशसों चन्द्रमाकी कला नित्य बढ़ैहै ॥ ११ ॥ श्रीरासरंगके प्रकाश करनहारी चंद्रिका सो दीपावलीन करिके वृषभानुके मंदिरमें प्रकाश करीगई गोलोकचूड़ामणि श्रीकृष्णकी कंठभूषण राधिकाकौ ध्यान करते मैं पृथ्वीपै विचरहूं ॥१२॥ ऐसें सुनिकें राजा बहुलाश्व नारदजीते बोल्यो कि, वृषभानुको बड़ो भाग्य है जाकें राधासी बेटी भई सो कलावती और सुचन्द्रने पूर्वजन्ममें ऐसो कहा तप कीनोहो सो कहौ ॥ १३ ॥ नृगको बेटा महाभाग्यवान् राजानको ईश्वर होतभयो चक्रवर्ती हरिको अंश अतिसुंदर एक सुचन्द्र नामवारो राजा होतो भयो ॥ १४ ॥ पितरनके अतिमनोहर तीन कन्या भई तिनको नाम कलावती, रत्नमाला और मेनका हो ॥ १५ ॥ इनमेंते कलावती नामकी कन्या तो हरिको अंश जो बुद्धिमान

धनुषकूं चढायके बाणनके समूहतें तथा धनुषकी टंकारके शब्दतें देवतानकूं भजाय देतभयौ ॥ ५२ ॥ तब कंसके मारे वे देवता दिशानमें भाजगये और सबनकी लीन बुद्धि हैगयी कितने ऊनने चुटिया खोलदीनी, कितनेक दीनकी तरह कहनलगे कि, हम भयभीत हैं ॥५३॥ कितनेक हाथ जोरते अति दीनकी तरह शस्त्रधर संग्राममें अपनी काछ खोल भागगये कितनेक कंसके सन्मुखहू न भये मनोरथ जिनके भग्न हैं अति विह्वल हैगये ॥ ५४ ॥ ऐसें भये जो देवता हैं तिनें देखिकें उनको छत्र सिंहासनको लैकें सब दैत्यनके संग अपनी राजधानी जो मथुरा है ताकूं आवत भयौ ॥ ५५ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां गोलोकखंडे भाषाटीकायां कंसदिग्विजयवर्णनं नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ अब गर्गजी कहैहैं कि, हे शौनक ! हरिभक्त जो मैथिल राजा है सो बडे ज्ञानीदेवर्षिनमें श्रेष्ठ जो नारद तिनकूं दंडवत् करकें ये अद्भुत वृत्तांतके सुनबेको बोल्यौ ॥ १ ॥

ततःसुरास्तेननिहन्यमानाविदुद्रुवुर्लीनधियोदिशान्ते ॥ केचिद्रणेमुक्तशिखावभूवुर्भीताःस्मइत्थंयुधिवादिनस्ते ॥ ५३ ॥ केचित्तथाप्रांजल
योतिदीनवत्संन्यस्तशस्त्रायुधिमुक्तकच्छाः ॥ स्थातुंरणेकंसनृदेवसंमुखेगतेप्सिताःकेचिदतीवविह्वलाः ॥ ५४ ॥ इत्थंसदेवान्प्रगतान्निरीक्ष्यता
न्नीत्वाचसिंहासनमातपत्रवत् ॥ सर्वैस्तदादैत्यगणैर्जनाधिपःस्वराजधानीमथुरांसमाययौ ॥ ५५ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांगोलोकखंडेना
रदबहुलाश्वसंवादेदिग्विजयवर्णनंनामसप्तमोध्यायः॥७॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ ॥ श्रुत्वातदाशौनकभक्तियुक्तःश्रीमैथिलोज्ञानभृतांवरिष्ठम् ॥
नत्वापुनःप्राहमुनिर्महाद्भुतंदेवर्षिवर्यंहरिभक्तिनिष्ठः ॥ १ ॥ ॥ श्रीबहुलाश्वउवाच ॥ ॥ त्वयाकुलंमेविशदीकृतंमेस्वानंददोर्जस्वयशसामलेन ॥
श्रीकृष्णभक्तक्षणसंगमेनजनोपिसत्स्याद्बहुनाकिमुस्वित् ॥ २ ॥ श्रीराधयापूर्णतमस्तुसाक्षाद्भूत्वाव्रजेकिंचरितंचकार ॥ तद्ब्रूहिमेदेवऋषेऋषीश
त्रितापदुःखात्परिपाहिमांत्वम् ॥ ३ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ धन्यंकुलंयन्निमिनानृपेणश्रीकृष्णभक्तेनपरात्परेण ॥ पूर्णीकृतंयत्रभवान्प्रजा
तोयुक्तोहिमुक्तोभवतोनचित्रम् ॥ ४ ॥ अथप्रभोस्तस्यपवित्रलीलांसुमंगलांसंशृणुतात्परस्य ॥ अभूत्सतांयोभुविरक्षणार्थंनकेवलंकंसवधाय
कृष्णः ॥ ५ ॥ अथैवराधावृषभानुपत्न्यामावेश्यरूपंमहसःपराख्यम् ॥ कालिंदजाकूलनिकुंजदेशेसुमन्दिरेसावततारराजन् ॥ ६ ॥

हे महाराज ! तुमने जाके निर्मल यश सो मेरो कुल पृथ्वीमें निर्मल करदीनो क्योंकि जा श्रीकृष्णभक्तनके क्षणमात्र संगते जन आत्माको आनंद देनवारो सत् उत्तम है जाय है, या विषयमें बहुत कहनेकी आवश्यकता नही है ॥ २ ॥ श्रीराधिकाके संग पूर्णतम भगवान् व्रजमें जन्म लेके कहा कहा चरित्र करतेभये सो हे देवऋषि ! मेरे आगें कहो और हे ऋषीश तीन तापनके दुःखसो मेरी रक्षा करो ॥ ३ ॥ यह सुनिकें नारदजी कहनलगे कि, निमि राजाको ये कुल धन्य है, जो उत्तमोत्तम और श्रीकृष्णके भक्त तुमनें कृष्णभक्तिते अपनो कुल कृतार्थ करदीनो,जामे तोसरीको भक्त पैदा भयो यासो तुम जीवन्मुक्त हो यामें कछू अचंभेकी बात नही है॥ ४ ॥यासो तू प्रभुकी मंगलकारी

है ताकूं वृषभानुकी स्त्रीमें प्रवेश करिके आयेहै सो राधा यमुनाजीके तटपै निकुंजमंदिरमें अवतार लेतभई ॥ ६ ॥ भादों महीना शुक्लपक्षमें अष्टमी सोमवारके मध्याह्नके समय जब मेघनसों आकाश छादित हो तब जन्म लीनो, तब देवता नंदनवनके पुष्पनकी वर्षा करतेभये ॥ ७ ॥ वासमय श्रीराधाके अवतारतें नदी निर्मल हैगई, दिशा प्रसन्न हैगई, शीतल कमलकी सुगन्ध लियें मंद मंद पवन चलन लगी ॥ ८ ॥ सो चन्द्रमाकीसी कांति जाकी ऐसी अपनी बेटीकूं देखिके कीर्तिनामकी गोपी वृषभानुकी रानी बड़ी प्रसन्न भई, तब रानीने शुभकृत्य करायके अपनी बेटीके कल्याणके निमित्त शीघ्रही आनंदकारी दो लाख गौ ब्राह्मणनकूं दीनी ॥ ९ ॥ जाकौ दर्शन देवतानकूं और जो किरोड़न जन्मनताईं यत्नकरें तिनहूकूं दुर्लभ है और बड़े २ योगीजननकों कोटि २ जन्मनके अभ्याससों कठिन सो मिलेहै ता मूर्तिमती राधाकूं वृषभानुके मंदिरमें

घनावृतेव्योम्निदिनस्यमध्येभाद्रेसितेनागतिथौचसोमे ॥ अवाकिरन्देवगणाःस्फुरद्भिस्तन्मन्दिरेनन्दनजैःप्रसूनैः ॥ ७ ॥ राधावतारेणतदा बभूवुर्नद्योमलांभाश्चदिशःप्रसेदुः ॥ ववुश्चवाताअरविन्दरागैःसुशीतलाः सुंदरमंदयानैः ॥ ८ ॥ सुतांशरच्चंद्रशताभिरामांदृष्ट्वाथकीर्त्तिर्मुदमापगोपी ॥ शुभंविधायाशुददौद्विजेभ्योद्विलक्षमानंदकरंगवांच ॥ ९ ॥ यद्दर्शनंदेववरैःसुदुर्लभंतज्ज्ञैरवाप्तंजनजन्मकोटिभिः ॥ सविग्रहांतां वृषभानुमंदिरेलक्षन्तिलोकाल्लनाप्रलालनैः ॥ १० ॥प्रेंखेखचिद्रत्नमयूखपूर्णेसुवर्णयुक्तेकृतचंदनांगे ॥ आंदोलितासावबृधेसखीजनैर्दिनेदिने चंद्रकलेवभाभिः ॥ ११ ॥ श्रीरासरंगस्यविकासचंद्रिकादीपावलीभिर्वृषभानुमंदिरे ॥ गोलोकचूडामणिकंठभूषणांध्यात्वापरांतांभुविपर्यटाम्यहम् ॥ १२ ॥ ॥ श्रीबहुलाश्वउवाच ॥ ॥ वृषभानोरहोभाग्यंयस्यराधासुताभवत् ॥ कलावत्यासुचंद्रेणकिंकृतंपूर्वजन्मनि ॥ १३ ॥ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ नृगपुत्रोमहाभागःसुचंद्रोनृपतीश्वरः ॥ चक्रवर्तीहरेरंशोबभूवातीवसुंदरः ॥ १४ ॥ पितॄणांमानसीकन्यास्तिस्रोभूवन्मनोहराः ॥ कलावतीरत्नमालामेनकानामनामतः ॥ १५ ॥ कलावतींसुचन्द्रायहरेरंशायधीमते ॥ वैदेहायरत्नमालांमेनकांचहिमाद्रये ॥ पारिबर्हेणविधिनास्वेच्छाभिःपितरोददुः ॥ १६ ॥

गोपीनने लाड़ लड़ाई सब देखे है ॥ १० ॥ सुवर्णके बनेभये रत्नजटित चन्दनसों लिपटे पालनेमें सखीनने झुलाई ऐसी राधिका दिन दिन प्रति ऐसें बढ़ी जैसें प्रकाशसों चन्द्रमाकी कला नित्य बढ़ैहै ॥ ११ ॥ श्रीरासरंगके प्रकाश करनहारी चंद्रिका सो दीपावलीन करिके वृषभानुके मंदिरमें प्रकाश करीगई गोलोकचूड़ामणि श्रीकृष्णकी कंठभूषण राधिकाकौ ध्यान करते मैं पृथ्वीपै विचरहूं ॥१२॥ ऐसे सुनिके राजा बहुलाश्व नारदजीतें बोल्यौ कि, वृषभानुकौ बड़ोभाग्य है जाकें राधासी बेटी भई सो कलावती और सुचन्द्रने पूर्वजन्ममें ऐसो कहा तप कीनोहो सो कहौ ॥ १३ ॥ नृगकौ बेटा महाभाग्यवान् राजानकौ ईश्वर होतभयौ चक्रवर्ती हरिकौ अंश अतिसुंदर एक सुचन्द्र नामवारो राजा होतो भयौ ॥ १४ ॥ पितरनके अतिमनोहर तीन कन्या भई तिनकौ नाम कलावती, रत्नमाला और मेनका हो ॥ १५ ॥ इनमेंते कलावती नामकी कन्या तो हरिकौ अंश जो बुद्धिमान

सुचन्द्र ताकूं ब्याही, रत्नमाला विदेहकूं ब्याही और मेनका हिमालयकूं विधिपूर्वक ब्याहीगई ॥ १६ ॥ रत्नमालामें सीता और मेनकामें पार्वती उत्पन्न भई, इन दोनोंनके चरित्र हे महामते ! पुराणान्तरनमें लिखेभये हैं ॥ १७ ॥ सुचन्द्र और कलावती दोनों गोमतीके तीर वनमे दिव्य बारहवर्ष ब्रह्माजीके नामसो तप करतेभये ॥ १८ ॥ तब ब्रह्माजी आयकें यह बोले कि, तुम वर मांगो, तब सुचन्द्र दिव्यरूप धारिके बमईमेंते निकसो ॥ १९ ॥ और दंडवत् करिकें यह बोल्यौ कि परेते परे जो दिव्य मोक्ष है सो मोकूं मिले या बातकूं सुनकें बहुत दुःखी हैके साध्वी कलावती ये बोली ॥ २० ॥ हे ब्रह्मन् ! पतिही स्त्रीनको परम देवता है जो ये मोक्षकूं प्राप्त होंयगे तो मेरी कहा गति होयगी ॥ २१ ॥ जो आप इनको मोक्ष देउगे तो मै पतिके विना नहीं जीवोंगी और पतिके वियोगमें विह्वल हैकें मै तुमकूं साप देऊँगी ॥ २२ ॥ यह सुनिकें ब्रह्माजी कहनलगे कि, हे देवि ! तेरे सापतेहू मै डरपूँहूं

सीताभूद्रत्नमालायांमेनकायांचपार्वती ॥ द्वयोश्चरित्रंविदितंपुराणेषुमहामते ॥ १७ ॥ सुचंद्रोथकलावत्यागोमतीतीरजेवने ॥
दिव्यैर्द्वादशभिर्वर्षैस्ततापब्रह्मणस्तपः ॥ १८ ॥ अथविधिस्तमागत्यवरंब्रूहीत्युवाचह ॥ श्रुत्वावल्मीकदेशाच्चनिर्ययौदिव्यरूपधृक्
॥ १९ ॥ तंनत्वोवाचमेभूयाद्दिव्यंमोक्षंपरात्परम् ॥ तच्छ्रुत्वादुःखितासाध्वीविधिंप्राहकलावती ॥ २० ॥ पतिरेवहिनारीणांदैवतंप
रमंस्मृतम् ॥ यदिमोक्षमसौयातितदामेकागतिर्भवेत् ॥ २१ ॥ एनंविनानजीवामियदिमोक्षंप्रदास्यसि ॥ तुभ्यंशापंप्रदास्यामि
पतिविक्षेपविह्वला ॥ २२ ॥ ॥ श्रीब्रह्मोवाच ॥ ॥ त्वच्छापाद्भयभीतोहंमेवरोपिमृषानहि ॥ तस्मात्त्वंप्राणपतिनासार्धंगच्छत्रिविष्ट
पम् ॥ २३ ॥ भुक्त्वासुखानिकालेनयुवांभूमौभविष्यथः ॥ गंगायमुनयोर्मध्येद्वापरांतेचभारते ॥ २४ ॥ युवयोराधिकासाक्षात्परिपूर्णतम
प्रिया ॥ भविष्यतियदापुत्रीतदामोक्षंगमिष्यथः ॥ २५ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्थंब्रह्मवरेणाथदिव्येनामोघरूपिणा ॥ कलावती
सुचन्द्रौचभूमौतौद्वौबभूवतुः ॥ २६ ॥ कलावतीकान्यकुब्जेभलंदननृपस्यच ॥ जातिस्मराह्यभूद्दिव्यायज्ञकुंडसमुद्भवा ॥ २७ ॥ सुचन्द्रोवृ
षभान्वाख्यः सुरभानुगृहेभवत् ॥ जातिस्मरोगोपवरःकामदेवइवापरः ॥ २८ ॥ संबंधंयोजयामासनंदराजोमहामतिः ॥ तयोश्चजातिस्मरयो
रिच्छतोरिच्छयाद्वयोः ॥ २९ ॥

और मेरो वरभी झूंठो नहीं है तातें तू प्राणपतिके संग जायकें स्वर्गके भोगनकूं भोग ॥ २३ ॥ फिर कोई कालांतरमें तुम दोनों सुख भोगकें पृथ्वीमें जन्म लेउगे द्वापरके अन्तमे भारतखण्डमें गंगा यमुनाके मध्यमें आपके जन्मोगे ॥ २४ ॥ तब तुम दोनोंनके साक्षात् परिपूर्णतम श्रीकृष्णकी प्यारी श्रीराधा पुत्री हैके जन्म लेयगी तब तुम्हारी मुक्ति होयगी ॥ २५ ॥ नारदजी कहेहैं ऐसें ब्रह्माजीके वा दिव्य अमोघ वरतें कलावती कीर्ति रानी भई और सुचन्द्र वृषभान भये ॥ २६ ॥ तब कलावती तौ कन्नौज देशमें भलंदनराजाकी वेदी यज्ञकुंडमेंते पूर्वजन्मकी स्मृतियुक्ता भई ॥ २७ ॥ सुचन्द्र सुरभानुके घरमें भये इनको नाम वृषभानु भयो, ये गोपनमें श्रेष्ठ कामदेवसे सुंदर इनहूकूं पूर्वजन्मकी याद रहो ॥ २८ ॥ फिर महाबुद्धिमान् नंदजीने इनको संबंध करायदीनों इन दोनोंनकी इच्छा ही और दोनोंनकूंही पूर्वजन्मकी

ऐसे जो कोई या वृषभान और कलावतीके आख्यानकूं सुनें सो सब पापनते छूटके कृष्णकी सायुज्य मुक्तिकूं प्राप्त होयहै ॥ ३० ॥ इति श्रीगर्गसंहितायां गोलोकखंडे भाषाटीकायां श्रीराधिकाजन्मवर्णनं नामाष्टमोध्यायः ॥ ८ ॥ नारदजी कहेंहै जब मथुरापुरीमें सब उत्तम यादवननें शूरसेनजीके इच्छासे गर्गजीकूं पुरोहित बनायौ तब बडे प्रामाणिक भये एकदिन नंदजीके सुंदर मंदिरमें आये ॥ १ ॥ हीरानके जडेभये सोनेके जामें किवार हैं और हाथीनके काननसो ताडनकिये भौंरानकी गुंजारसे शब्दितहै और हाथीनके गंडस्थलमेंसो बहती मदकी धारके झरनानसो युक्त है और अनेक मंडपनके समूहनसो सुशोभित है मदकी धाराते सुगंधित है ॥ २ ॥ और बडे २ वीर कवच पहिरें धनुषधारी ढाल तलवार लिये चतुरंगिनी फौज लिये जा महलकी रक्षा करिरहे हैं ॥ ३ ॥ ता मंदिरमें गर्गजीने अक्रूर देवक और कंस इनसों सेवित

वृषभानोःकलावत्याआख्यानंशृणुतेनरः ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तःकृष्णसायुज्यमाप्नुयात् ॥ ३० ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांगोलोकखंडेनारदबहुलाश्वसंवादेश्रीराधिकाजन्मवर्णनंनामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ तत्रैकदाश्रीमथुरापुरेवरेपुरोहितः सर्वयदूत्तमैः कृतः ॥ शूरेच्छयागर्गइतिप्रमाणिकः समाययौसुन्दरराजमंदिरम् ॥ १ ॥ हीराखचिद्धेमलसत्कपाटकंद्विपेन्द्रकर्णाहतभृंगनादितम् ॥ इभस्रवन्निर्झरगंडधारयासमावृतंमंडपखंडमंडितम् ॥ २ ॥ महोद्भटैर्वीरजनैः सकंचुकैर्धनुर्धरैश्चर्मकृपाणपाणिभिः ॥ रथद्विपाश्वध्वजिनीबलादिभिःसुरक्षितंमंडलमंडलीभिः ॥ ३ ॥ ददर्शगर्गोनृपदेवमाहुकंश्वाफल्किनादेवककंससेवितम् ॥ श्रीशक्रसिंहासनउन्नतेपरेस्थितंवृतंछत्रवितानचारैः ॥ ४ ॥ दृष्ट्वामुनितंसहसासनाश्रयादुत्थायराजाप्रणनामयादवैः ॥ संस्थाप्यसंपूज्यसुभद्रपीठकेस्तुत्वापरिक्रम्यनतःस्थितोऽभवत् ॥ ५ ॥ दत्त्वाशिषंगर्गमुनिर्नृपायवैपप्रच्छसर्वंकुशलंनृपादिषु ॥ श्रीदेवकंप्राहमहामनाऋषिर्महौजसंनीतिविदंयदूत्तमम् ॥ ६ ॥ ॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ ॥ शौरिंविनाभुविनृपेषुवरस्तुनास्तिचिन्त्योमयाबहुदिनैःकिलयत्रतत्र ॥ तस्मान्नृदेववसुदेववरायदेहिश्रीदेवकींनिजसुतांविधिनोद्वहस्व ॥ ७ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ कृत्वातदैवपुरिनिश्चयनागवल्लींश्रीदेवकःसकलधर्मभृतांवरिष्ठः ॥ गर्गेच्छयातुवसुदेववरायपुत्रींकृत्वाथमंगलमलंप्रददौविवाहे ॥ ८ ॥

राजानके राजा ऊंचे इन्द्रासनपै बैठे छत्र चमर जाके ढर रहे दिव्य चंदोवानसे युक्त ऐसे उग्रसेन राजाको देखौ ॥ ४ ॥ गर्गमुनिकूं देखके राजा उग्रसेनने वाही समय सिंहासनपैसो उठके यादवनसहित प्रणाम कीनी सुभद्रपीठ सिंहासनपै बैठाय विधिपूर्वक पूजन करि परिक्रमा दे बडी नम्रतासो बैठगये ॥ ५ ॥ तब गर्गमुनि राजाको आशीर्वाद देके सब राजांग सहित कुशल पूछके बडे मनस्वी श्रीगर्गजी बडे पराक्रमी नीतिवेत्ता और यादवनमें श्रेष्ठ जो देवक है ताते ये बोले ॥ ६ ॥ बहुत दिननते मैंने यहां तहां येही चितामें रह्यौ परंतु या समय या पृथ्वीमें वसुदेवसो अतिरिक्त मेरी दृष्टिमें और कोई नृपनमें बडभागी नहीं है ताते हे नृदेव ! अपनी बेटी जो देवकी ताहि वसुदेववरकूं विधिसो ब्याहिदेउ ॥ ७ ॥ ताही समय धर्मधारीनमें मुख्य, देवकने पुरीमें निश्चयकर सगाईके बीड़ा पठायदीनों फिर गर्गजीकी आज्ञाते वसुदेवकूं बेटी ब्याहिकें परम मंगल करयौ ॥ ८ ॥

ब्याह हैगयो तब वसुदेवजी विदाके समय रत्नजटित अत्यंत सुंदर दिव्य अश्व जामें जुते ऐसे दिव्य रथमें गहनेनते शोभित देवकीको बैठारके आपहू वाही रथमें बैठे ॥९॥ तब तौ कृपा स्नेहसो कंस बहनको अत्यन्त प्यार करवेकें लिये चलते घोड़ानकी बागडोर पकर चतुरंगिनी सैनाकों संग ले आपही हांकवेको बैठो॥१०॥तब देवकनें बेटीकूं हजार दासो, दस हजार हाथी, दस लाख अश्व, एक लाख रथ, और दोलाख गौ दायिजेमें दीनी ॥११॥ जा समय यादव विदाकरकें चले तब रस्तामें मङ्गलकारक भेरी, मृदंग, सहनाई, गोमुख, वीणा, आनक, वेणु, आदि अनेके बाजेनको और प्रयाणसमयमें सङ्ग जानवारे यादवनको बडो भारी अत्यन्त शब्द होतोभयो ॥१२॥ रस्ताहीमें आकाशवाणी कंसकूं भई कि, रे अबुध ! तू नहीं जानें है जाके घोडानकी बाग पकरें तू रथकूं हांक रह्यौ है याहीकौ आठमों गर्भ तेरे नाश करवेवारो होयगो ॥ १३ ॥ तबही कुसंगनिष्ठ दुष्ट कंस बहनको हाथमें जूड़ा पकरिकें

कृतोद्वहःशौरिरतीवसुन्दरंरथंप्रयाणेसमलंकृतंहयैः ॥ सार्द्धंतयादेवकराजकन्ययासमारुहत्कांचनरत्नशोभया ॥ ९ ॥ स्वसुःप्रियंकर्तुमतीव कंसोजग्राहरश्मींश्चलतांहयानाम् ॥ उवाहवाहांश्चतुरंगिणीभिर्वृतःकृपास्नेहपरोथशौरेः ॥ १० ॥ दासीसहस्रंत्वयुतंगजानांसत्पारिबर्हंनियुतंहयानाम् ॥ लक्षंरथानांचगवांद्विलक्षंप्रादाद्दुहित्रेनृपदेवकोवै ॥ ११ ॥ भेरीमृदंगोद्धरगोमुखानांधुंधुर्जवीणानकवेणुकानाम् ॥महान्स्वनोभूच्चलतांयदूनांप्रयाणकालेपथिमंगलंच ॥ १२ ॥ आकाशवागाहतदेवकंसंत्वामष्टमोहिप्रसवोंजसास्याः ॥ इन्तानजानासिचयांरथस्थांरश्मीन्गृहीत्वावहसेऽबुधस्त्वम् ॥ १३ ॥ कुसंगनिष्ठोतिखलोहिकंसोहंतुंस्वसारंधिषणांचकार ॥ कचेगृहीत्वासितखड्गपाणिर्गतत्रपोनिर्दयउग्रकर्मा ॥ १४ ॥ वादित्रकाररहिताग्रभूवुरग्रेस्थिताःस्युश्चकिताहिपश्चात् ॥ सर्वेषुवाश्वेतमुखेषुसत्सुसौरिस्तमाहाशुसतांवरिष्ठः ॥ १५ ॥
॥ ॥ श्रीवसुदेवउवाच ॥ ॥ भोजेन्द्रभोजकुलकीर्तिकरस्त्वमेवभौमादिमागधबकासुरवत्सबाणैः ॥ श्लाघ्यागुणास्तवयुधिप्रतियोद्धुकामैःसत्वंकथंतुभगिनीमसिनाग्रहन्याः ॥ १६ ॥ ज्ञात्वास्त्रियंकिलबकींप्रतियोद्धुकामांयुद्धंकृतंनभवतानृपनीतिवृत्त्या ॥ सातुत्वयापिभगिनीवत्कृताप्रशान्त्यैसाक्षादियंतुभगिनीकिमुतेविचारात् ॥ १७ ॥ उद्वाहपर्वणिगताचतवानुजाचबालासुतेवकृपणाशुभदासदैषा ॥योन्योसिनात्रमथुराधिपहंतुमेनांत्वंदीनदुःखहरणेकृतचित्तवृत्तिः ॥ १८ ॥

एक हाथमें पैनी तलवार लैके निर्लज्ज उग्रकर्मा निर्दयी मारनको तयार भयो ॥ १४ ॥ बाजेवारे सब बंद हैगये, अगारीके चोकके पिछाडीकूं देखनलगे सबनके काले मोहडे निकसआये, तब संतनमें श्रेष्ठ वसुदेवजी बडे जल्दी बोले ॥ १५ ॥ हे भोजेन्द्र ! तुम तौ भोजवंशीनकी कीर्ति करनहारे हौ, भौमासुर, जरासंध, बकासुर, वत्सासुर बाणासुर आदि जो तुम्हारे सन्मुख लडे हैं वेहू तुमारे गुणनकी बड़ाई करेहैं ऐसे तुम बहनकूं खड्गसे कैसे मारोहो ॥ १६ ॥ देखो ! पूतना तुमतें लड़वेकूं आई पर राजनीतितें आप वाकूं स्त्री समझके लड़े नहीं और शांति करकें बहनकी तुल्य बनाय लई फिर यह तो साक्षात् तुमारी बहनही है ॥ १७ ॥ फिर भी यह ब्याहसो पर्व ताऊमें बालक है, तुमारी छोटी बहन है, गरीबनी है, तुम्हारी सदा मंगल चाहनहारी है, सो हे मथुराके ईश्वर ! आप याकूं मारवेके योग्य नहीं हो, आपके चित्तकी

॥ च

वृत्ति तौ सदा दीन दुःखीनके दुःख दूर करवेमें है ॥ १८ ॥ नारदजी कहे हैं कि, ऐसे अनेक रीतिते समझायौ तोऊ कुसंग करनवारो अति दुष्टनें न मानी
तब तौ वसुदेवजी हरिकी कालगति जानकें शरण हैकें फिर कंसते बोले ॥ १९ ॥ हे राजन् ! कछू याते तौ तुमें देववाक्यसो भय हैई नही मेरी बात सुनों जिन
संतानते तुमकूं भय है तिनकूं मैं तुमें देदउंगो तुम व्यथायुक्त मत होउ ॥२०॥ नारदजी कहें हैं कंस वसुदेवजीको वचन सुनिकें मनसे निश्चय कर बड़ाई करिके घरकूं चल्योगयौ, वसु
देवहू भयभीत हैं देवकीकूं संग लैकें अपने घरकूं चलेआये॥२१॥ इति श्रीगर्गसंहितायां गोलोकखंडे भाषाटीकायां वसुदेवविवाहवर्णनं नाम नवमोऽध्यायः॥९॥ नारदजी कहेहें तब कंसनें
विचार कीनों कि, वसुदेव डरके मारें कहूं भाज न जाय तब दशहजार योधा भेजदीने शस्त्रधारीन्नें उन वसुदेवको घर घेरलियौ ॥ १ ॥ तब समय आनेपर वसुदेवने वर्ष २

॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ नामन्यतेत्थंप्रतिबोधितोपिकुसंगनिष्ठोतिखलोहिकंसः ॥ तदाहरेःकालगतिंविचार्य्यशौरिःप्रपन्नःपुनराहकंसम्
॥ १९ ॥ ॥ श्रीवसुदेवउवाच ॥ ॥ नास्यास्तुतेदेवभयंकदाचिद्यद्देववाक्यात्कथितंचतच्छृणु ॥ पुत्रान्ददामीतियतोभयंस्यान्मातेव्यथास्याः
प्रसवप्रजातान् ॥ २० ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ श्रुत्वासनिश्चित्यवचोथशौरेःकंसःप्रशंस्याशुगृहंगतोभूत् ॥ शौरिस्तदादेवकराजपुत्र्याभ
यावृतःसन्गृहमाजगाम ॥ २१ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांगोलोकखंडेवसुदेवविवाहवर्णनंनामनवमोऽध्यायः ॥९॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥
भीतःपलायितेवायंयोद्धारःकंसनोदिताः ॥ अयुतंशस्त्रसंयुक्तारुरुधुःशौरिमंदिरम् ॥ १ ॥ शौरिःकालेनदेवक्यामष्टौपुत्रानजीजनत् ॥ अनु
वर्षंचाथकन्यामेकांमायांसनातनीम् ॥ २ ॥ कीर्तिमंतंसुतंह्याद्यंजातमानकदुंदुभिः ॥ नीत्वाकंसमभ्येत्यददौतस्मैपरार्थवित् ॥ ३ ॥
सत्यवाक्यस्थितंशौरिंदृष्ट्वाकंसोघृणीह्यभूत् ॥ दुःखंसाधुस्तुसहतेसत्येकस्यक्षमानहि ॥ ४ ॥ ॥ कंसउवाच ॥ ॥ एषबालोयातुगृहमेतस्मा
न्नहिमेभयम् ॥ युवयोरष्टमंगर्भंहनिष्यामिनसंशयः ॥ ५ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्तोवसुदेवस्तुसपुत्रोगृहमागतः ॥ सत्यंनामन्यतम
नाग्वाक्यंतस्यदुरात्मनः ॥ ६ ॥ तदांबरादागतंमांनत्वापूज्योग्रसेनजः ॥ पप्रच्छदेवाभिप्रायंप्रावोचंतंनिबोधमे ॥ ७ ॥ नंदाद्यावसवः
सर्वेवृषभान्वादयःसुराः ॥ गोप्योवेदऋचाद्याश्चसंतिभूमौनृपेश्वर ॥ ८ ॥

पीछे देवकीमें आठ पुत्र पैदा किये और एक सनातनी जो माया है सो कन्या भी भई ॥ २ ॥ पहलेई उत्पन्नभये कीर्तिमान् बेटाकूं लैकें वसुदेवजी परार्थके ज्ञातानें कंसकूं
ददीनों ॥ ३ ॥ साँचे वचनपै स्थित वसुदेवकूं देखके कंसकूं दया आयगई, साधुजन दुःखकूं सहजायहैं और साचके ऊपर दया कौनको नही आवैहे ॥ ४ ॥ तब कंस बोल्यो
कि, या बालककूं अपने घर लैजाओ याते मोकूं भय नही है, तुम्हारे आठवें गर्भकूं मैं मारुंगो यामें संदेह नही है ॥ ५ ॥ नारदजी कहेहे ऐसें सुनके वसुदेवजी बेटाकूं लैकें घर
आयगये परं वा दुरात्माके वचनकूं नेंकहू सत्य नही मानों ॥ ६ ॥ तबही में आकाशते आयगयो, तब दंडवतकर पूजन करिकें उग्रसेनको पुत्र मोसों पूछन लग्यौ कि, महाराज !
आप कैसें पधारे तब जो कुछ मैने कंसते कह्यौ ताहि तू सुन ॥७॥ हे राजन् ! पृथ्वीपै नंदादिक जे गोप हैं ते तौ आठ वसु हैं; वृषभानते लैकें सब देवता हैं और हे नृपेश्वर ! या

भूमिमें गोपी हैं ये सब वेदकी ऋचा हैं ॥ ८ ॥ और या मथुरामें वसुदेवादिक जितने यादव हैं ते सब देवता हैं देवकीते आदि लैकें सबरी जे स्त्री हैं वे देवी हैं यह निश्चय जान ॥ ९ ॥ सात बेरके गिनवेते सब आठवें होंयहैं, तेरे मारिवेके लिये तौ यही संख्या है देवतानकी गतिको मे जानौं ॥ १० ॥ ऐसें कहिकें मैं तौ चल्यौगयौ. दैत्यनके मारवेकौ देवतानकौ उद्यम है यह सुन कंसकूं बडौ क्रोध आयौ और तभीसो यादवनके मारवेकौ उद्यम कीनों ॥ ११ ॥ देवकी वसुदेवकें बेडी डारके कैद किये और वा बालककौ मगवाये सिलासौं मीड डारौ ॥ १२ ॥ जब अपने पूर्व जन्मकी याद आयगई तब याने अपने दुष्टपनसो और विष्णुके भयते भूमिमें भये २ देवकीके बेटानकूं विष्णु जानके मारे ॥ १३ ॥ तब यादवेंद्र उग्रसेन कुपित है वसुदेवकी सहाय करतो कंसकूं रोकतभयौ ॥ १४ ॥ और कंसकौ खोटौ अभिप्राय जानकें उग्रसेनके अनुगामी बडे २

वसुदेवादयोदेवामथुरायांचवृष्णयः ॥ देवक्याद्याःस्त्रियःसर्वदेवताःसन्तिनिश्चयम् ॥ ९ ॥ सप्तवारप्रसंख्यानामष्टमाःसर्वएवहि ॥ तेहन्तुः संख्ययायंवादेवानांचमतोगतिः ॥ १० ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वातंमयिगतेकृतदैत्यवधोद्यमे ॥ कंसःकोपावृतःसद्योयदून्हंतुंमनो दधे ॥ ११ ॥ वसुदेवंदेवकींचबद्ध्वाचनिगडैर्दृढैः ॥ ममर्दतंशिलापृष्ठेदेवकीगर्भजंशिशुम् ॥१२॥ जातिस्मरोविष्णुभयाज्जातंजातंजघानह ॥ इतिदुष्टस्वभावाच्चभूमौभूतंह्यसंशयम् ॥ १३ ॥ उग्रसेनस्तदाक्रुद्धोयादवेन्द्रोनृपेश्वरः ॥ वारयामासकंसाख्यंवसुदेवसहायकृत् ॥१४॥ कंसस्य दुरभिप्रायंदृष्ट्वोत्तस्थुर्महाभटाः ॥ उग्रसेनानुगारक्षांचक्रुस्तेखड्गपाणयः ॥१५॥ उग्रसेनानुगान्दृष्ट्वाकंसवीराःसमुत्थिताः ॥ तैःसार्द्धमभवद्युद्धंस भामंडपमध्यतः ॥ १६ ॥ द्वारदेशेपिवीराणांयुद्धंजातंपरस्परम् ॥ खड्गप्रहारैरयुतंजनानांनिधनंगतम् ॥ १७ ॥ कंसोगृहीत्वाथगदांपितुःसे नांममर्दह ॥ कंसस्यगदयास्पृष्टाःकेचिच्छिन्नललाटकाः ॥ १८ ॥ भिन्नपादाभिन्ननखाश्छिन्नाशाश्छिन्नबाहवः ॥ अधोमुखाऊर्ध्वमुखाःस शस्त्राःपतिताःक्षणात् ॥ १९ ॥ वमन्तोरुधिरंवीरामूर्च्छितानिधनंगताः ॥ सभामंडपमारक्तंदृश्यतेक्षतजस्रवात् ॥ २० ॥ इत्थंमदोत्कटः कंसस्संनिपात्योद्भटान्रिपून् ॥ क्रोधाद्घोराजराजेन्द्रजग्राहपितरंखलः ॥ २१ ॥ नृपासनात्संगृहीत्वाबद्ध्वापाशैश्चतंखलः ॥ तन्मित्रैश्चनृपं सार्द्धंकारागारेरुरोधह ॥ २२ ॥ मधूनांशूरसेनानांदेशानांसर्वसंपदाम् ॥ सिंहासनेचोपविश्यस्वयंराज्यंचकारह ॥ २३ ॥

योद्धा उठे, उन्ने खड्ग लैके उग्रसेनकी रक्षा करी ॥ १५ ॥ उग्रसेनकें योधानकूं देखकें कंसके योधा उठे तिन दोनोंनकी सभाके बीचमंडपमें बडौ युद्ध भयौ ॥ १६ ॥ और दरवजे पै हू आपसमें वीरनकौ परस्पर बडौ युद्ध भयौ जा युद्धमें तरवारनके मारे दशहजार वीर मरगये ॥ १७ ॥ तब कंसने गदा लैके पिताकी सेनाकूं मारी जा गदाते वीरनके शिर फूटगये ॥ १८ ॥ पांव टूटगये, नख टूटगये, नाक कटगई, बाहु कटगई और ऊंचेकूं नीचेकूं मुख ऐसें शस्त्रनसहित एक छिनभरमें पृथ्वीपै जायपरे ॥ १९ ॥ बहुत वीर रुधिरकी उलटी करते मूर्छित है मरगये,रुधिरके बहनेसे वो सभामंडप लाल दीखै ॥ २० ॥ ऐसें बडे खल मदोत्कट कंसने उद्भट वैरीनकूं मारकें क्रोधके मारे हे राजेन्द्र ! पिता उग्रसेनकूं पकड़लीनों ॥२१॥ राज्यसिंहासनपैते उठायके मुशक बांधके उनके मित्रवर्गसहित बंदीमें कैद करदीने ॥ २२ ॥ मधुदेश, शूरसेनदेशनकी संपदानकी मालिक हैकें आपही

राजगद्दीपै बैठगयौ ॥ २३ ॥ तब सबरे यादव दुःखी ह्वैकै संबंधके मिसतै देशांतरनमें चारौंदिशानकूं भाजगये, क्योंकि वे जानैहै कि, जैसो समय होय वैसौंही वर्त्तनों चहिये ॥ ॥ २४ ॥ देवकीकें सातमो गर्भ हर्षशोककौ बढ़ामनहारौ भयौ, ताको योगमायानें देवकीके पेटमेंते खेंचकें व्रजमें जायकें रोहिणीके पेटमें धरदीनों ॥ २५ ॥ तब मथुराके मनुष्य यह कहनेलगे अहो देवकीको गर्भ कहां गयौ कहां जायपरौ ॥ २६ ॥ भादोंके जब पांच दिन चलेगये तब शुक्लपक्षकी षष्ठीके दिन बुधवार स्वातिनक्षत्र मध्याह्नके समय तुलालग्नमें बलदेवजी व्रजमें प्रगट भये जा लग्नमें पांच ग्रह उच्चके हैं ॥२७॥ कैसे समय है कि, मेघ छोटीछोटी फुहारनकी वर्षा कररहे हैं देवता फूलनकी वर्षा कररहे हैं ताही समय वसुदेवकी स्त्री जो रोहिणीजी हैं तिनमें श्रीबलदेवजी अपनी कांतितें नंदजीके घरकों प्रकाश करते उत्पन्न भये ॥२८॥ तब नंदजीनेंभी बालकको जातकर्म कर ब्राह्मणनकूं दशलाख गौअनकौ दान दीनो

पीडितायादवाःसर्वेसंबंधस्यमिषेस्वरम् ॥ चतुर्दिशांतरंदेशान्विविशुःकालवेदिनः ॥ २४ ॥ देवक्याःसप्तमेगर्भेहर्षशोकविवर्द्धने ॥ व्रजं प्रणीतेरोहिण्यामनन्तेयोगमायया ॥ २५ ॥ अहोगर्भःक्वविगतइत्यूचुर्माथुराजनाः ॥ २६ ॥ अथव्रजेपंचदिनेषुभाद्रेस्वातौचषष्ठ्यांचसिते बुधेच ॥ उच्चैर्ग्रहैःपंचभिरावृतेचलग्नेतुलाख्येदिनमध्यदेशे ॥ २७ ॥ सुरेषुवर्षत्सुसुपुष्पवर्षघनेषुमुंचत्सुचवारिबिन्दून् ॥ बभूवदेवोवसुदेव पत्न्यांविभासयन्नंदगृहंस्वभासा ॥ २८ ॥ नंदोपिकुर्वञ्शिशुजातकर्मददौद्विजेभ्योनियुतंगवांच ॥ गोपान्समाहूयसुगायकानांरवैर्महा मंगलमातनोति ॥ २९ ॥ द्वैपायनोदेवलदेवरातवसिष्ठवाचस्पतिभिर्मयाच ॥ आगत्यतत्रैवसमःस्थितोभूत्पाद्यादिभिर्नन्दकृतैःप्रसन्नः ॥ ॥ ३० ॥ ॥ नंदराजउवाच ॥ ॥ सुंदरोबालकःकोयंनदृश्योयस्समःक्वचित् ॥ कथंपंचदिनाज्जातस्तन्मेब्रूहिमहामुने ॥ ३१ ॥ ॥ ॥ श्रीव्यासउवाच ॥ ॥ अहोभाग्यन्तुतेनंदशिशुःशेषःसनातनः ॥ देवक्यांवसुदेवस्यजातोयंमथुरापुरे ॥ ३२ ॥ कृष्णेच्छयातदुदरा त्प्रणीतोरोहिणींशुभाम् ॥ नंदराजत्वयादृश्योदुर्लभोयोगिनामपि ॥ ३३ ॥ तद्दर्शनार्थंप्राप्तोहंवेदव्यासोमहामुनिः ॥ तस्मात्वंदर्शयास्मा कंशिशुरूपंपरात्परम् ॥ ३४ ॥

गोपिनकूं बुलायके गवैयानके रागनते बड़ौ मंगल करौ ॥ २९ ॥ तहां वेदव्यास, देवल, देवरात, वशिष्ठ वाचस्पति आदि मोसहित सब आये तब नंदनें सबको पाद्यादिकसो पूजन करी और प्रसन्न ह्वैकें यह बोलौ ॥ ३० ॥ यह सुंदर बालक कौन है ऐसो सुंदर तो कबहू कहूं कोई देख्यौ नहीं है और पांचही दिनमें याकौ जन्म कैसें ह्वैगयौ यह बात हे महामुने ! मेरे साम्हनें कहौ ॥ ३१ ॥ यह सुनकें वेदव्यासजी बोले—हे नन्दराज ! तुम्हारो बड़ौ भाग्य है ये साक्षात् शेषजी आये हैं, मथुरामें वसुदेवकी स्त्री देवकीके उदरमें इनकौ प्रादुर्भाव भयौ है ॥ ३२ ॥ सो कृष्णकी इच्छातें योगमायानें देवकीके गर्भमेंसे रोहिणीके गर्भमें धरिदीने, हे नंद ! बड़ो मंगल भयौ, इनकौ दर्शन योगी श्वरनकूंहू दुर्लभ है सो इनको दर्शन तुमको करना उचित है ॥३३॥ मैं वेदव्यास महामुनि इनीके दर्शनकूं यहां आयौहूं ताते तुम हमें याकौ दर्शन कराऔ यह बालकरूप परब्रह्म

है ॥ ३४ ॥ तब तो नारदजी कहनलगे कि, नंदजी अचंभी करते या शेपरूप बालककूं दिखावत भये, तब वेदव्यासजी हिंडोलामें झूलते वा बालककूं देखि दंडवत करिके यह बोले ॥ ३५ ॥ हे देवाधिदेव ! भगवन् ! कामपाल ! तुम्हारे अर्थ नमस्कार है, तुम अनन्त हो, शेप हो, साक्षात् राम हो, तिनके अर्थ नमस्कार है ॥ ३६ ॥ परिपूर्ण हो, पृथ्वीकूं धारणकरनहारे हो, सीरपाणि हो, हजारशिरके संकर्षण हो, तिनके अर्थ मेरो नित्य नमस्कार है ॥ ३७ ॥ हे रेवतीरमण ! बलदेव ! अच्युताग्रज ! हलायुध ! प्रलंबासुरके मारनहारे ! पुरुषोत्तम ! मेरी रक्षा करो ॥ ३८ ॥ बल हो, बलभद्र हो, ताल तुम्हारी ध्वजामें है, गौरवर्ण, नीलांबरधारी, रोहिणीके बेटा हो, तुम्हारे अर्थ नमस्कार है ॥ ३९ ॥ तुम्ही धेनुकारि हो, मुष्टिकारि हो, तुम्ही कुंभांडारि हो, तुम्ही रुक्मी, कूपकर्ण और बल्वल इनके संहारकर्ता हो, सो तुम्हारे अर्थ नमस्कार है ॥ ४० ॥ तुमही कालिंदीके खेंचिवे

॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ अथनंदःशिशुंशेपंदर्शयामासविस्मितः ॥ दृष्ट्वाप्रेंखस्थितंप्राहनत्वासत्यवतीसुतः ॥ ३५ ॥ ॥ श्रीव्यास उवाच ॥ ॥ देवाधिदेवभगवन्कामपालनमोस्तुते ॥ नमोनन्तायशेषायसाक्षाद्रामायतेनमः ॥ ३६ ॥ धराधरायपूर्णायस्वधाम्नेसीरपाणये॥ सहस्रशिरसेनित्यंनमःसंकर्षणायते ॥ ३७ ॥ रेवतीरमणत्वंवैबलदेवोच्युताग्रजः ॥ हलायुधःप्रलंबघ्नपाहिमांपुरुपोत्तम ॥ ३८ ॥ बलायबलभद्रायतालांकायनमोनमः ॥ नीलांबरायगौरायरौहिणेयायतेनमः ॥ ३९ ॥ धेनुकारिर्मुष्टिकारिःकुंभाण्डारिस्त्वमेवहि ॥ रुक्म्यरिःकूपकर्णारिःकूटारिर्बल्वलान्तकः ॥ ४० ॥ कालिन्दीभेदनोसित्वंहस्तिनापुरकर्पकः ॥ द्विविदारिर्यादवेन्द्रोव्रजमंडलमण्डनः ॥ ४१ ॥ कंसभ्रातृप्रहंतासितीर्थयात्राकरःप्रभुः ॥ दुर्योधनगुरुःसाक्षात्पाहिपाहिप्रभोजगत् ॥ ४२ ॥ जयजयाच्युतदेवपरात्परस्त्वयमनन्तदिगन्तगतश्रुत ॥ सुरमुनीन्द्रफणीन्द्रवरायतेमुसलिनेबलिनेहलिनेनमः ॥ ४३ ॥ इहपठेत्सततंस्तवनंतुयःसतुहरेःपरमंपदमाव्रजेत् ॥ जगतिसर्वबलंत्वरिमर्दनंभवतितस्यजयःस्वधनंधनम् ॥ ४४ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ बलंपरिक्रम्यशतंप्रणम्यतैर्द्वैपायनोदेवपराशरात्मजः ॥ विशालबुद्धिर्मुनिबादरायणःसरस्वतींसत्यवतीसुतोययौ ॥ ४५ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांगोलोकखंडेश्रीनारदबहुलाश्वसंवादेबलभद्रजन्मवर्णनंनाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ परिपूर्णतमःसाक्षाच्छ्रीकृष्णोभगवान्स्वयम् ॥ विवेशवसुदेवस्यमनःपूर्वपरात्परः ॥ १ ॥

वारे हो, तुमही हस्तिनापुरके खेंचिवेवारे हो, फिर कैसे हो द्विविदके वैरी हो, यादवेंद्र हो, व्रजमंडलके भूपण हो, तुम्हारे अर्थ नमस्कार है ॥ ४१ ॥ कंसके भैयानके मारनहारे हो, तीर्थयात्राके करनहारे हो, दुर्योधनके गुरु हो, प्रभु ! या जगत्की रक्षा करो ॥४२॥ हे अच्युत ! हे देव ! हे परात्पर ! हे अनंत ! हे दिगंतयशोगामिन् ! हे सुरेन्द्रवर ! हे मुनींद्रवर ! हे फणीन्द्रवर ! हे मुशलिन् ! हे बलिन् ! हे हलिन् ! तुम्हारे अर्थ नमस्कार है ॥ ४३ ॥ या आपके स्तोत्रकूं जो कोई निरंतर पढैगो सो हरिके परपदकूं प्राप्त होयगो, जगत्में सबरे बल पावेगो, वैरीको नाश होयगो, धनी होयगो ॥ ४४ ॥ नारदजी कहेहैं वेदव्यासजी पराशरके पुत्र बडीबुद्धिवारे सत्यवतीके सुत बदरिकाश्रमवासी बलदेवजीकी परिक्रमा देके दंडवत् करके बदरिकाश्रमकूं चलेगये॥४५॥ इति श्रीगर्गसंहितायां गोलोकखंडे भापाटीकायां बलदेवजन्मवर्णनं नाम दशमोऽध्यायः ॥१०॥ श्रीनारदजी कहैहैं परिपूर्णतम साक्षात् स्वयं

श्रीकृष्णभगवान् परेतें परे पहले वसुदेवजीके मनमें प्रवेश भये ॥ १ ॥ तब महामना वसुदेवजी अत्यंत तेजसों सूर्य, चन्द्रमा, अग्निसे तेजस्वी हैगये, मानो दूसरो यज्ञ इन्द्रही हे ॥ २ ॥ सबकूं अभयके देनवारे कृष्ण जब देवकीके गर्भमें आये तब वा तेजसों देवकी घरमें ऐसी लगनलगी जैसें घनमे बिजली दमके हे ॥ ३ ॥ तेजोवती देवकीकूं देखके भयभीत हैके कंस यह बोल्यो कि, मेरो प्राणहर्ता हरि याके पेटमें आयगयो है, क्योंकि पहलें ये ऐसी नहीं ही ॥ ४ ॥ होतेही मारूंगो, ऐसे कहिकें भयविह्वल हैके सब जगत् हरिको देखतो अपने पहले वैरीको चितवन करतो भयो ॥ ५ ॥ देखो वैरके अनुबन्धते असुरनको सर्वत्रही साक्षात् श्रीकृष्ण दर्सेहैं ताहीतें असुर श्रीकृष्णते वैर करें हे ॥ ६ ॥ अब ब्रह्मादिक देवता हमसे मुनिनकूं संग लेकें वसुदेवके घरके ऊपर आकाशमे आयकें श्रीकृष्णकूं दंडवत् करकें स्तुति करनलगे ॥ ७ ॥ जो यह जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति अवस्थानमें कारण

सूर्येन्दुवह्निसंकाशोवसुदेवोमहामनाः ॥ बभूवात्यन्तमहसासाक्षाद्यज्ञइवापरः ॥ २ ॥ देवक्यामागतेकृष्णेसर्वेषामभयंकरे ॥ रराजते नसागेहेघनेसौदामिनीयथा ॥ ३ ॥ तेजोवतींचतांवीक्ष्यकंसःप्राहभयातुरः ॥ प्राप्तोयंप्राणहन्त्रीमेपूर्वमेषानचेदृशी ॥ ४ ॥ जातमात्रंहनिष्यामीत्युक्त्वास्तेभयविह्वलः ॥ पश्यन्सर्वत्रचहरिंपूर्वशत्रुंविचिंतयन् ॥ ५ ॥ अहोवैरानुबन्धेनसाक्षात्कृष्णोपिदृश्यते ॥ तस्माद्वैरंप्रकुर्वन्तिकृष्णे प्राप्त्यर्थमासुराः ॥ ६ ॥ अथब्रह्मादयोदेवामुनीन्द्रैरस्मदादिभिः ॥ शौरिगेहोपरिप्राप्ताःस्तवंचक्रुःप्रणम्यतम् ॥ ७ ॥ ॥ देवाऊचुः ॥ ॥ यज्जागरादिषुभवेषुपरंह्यहेतुर्हेतुःस्विदस्यविचरन्तिगुणाश्रयेण ॥ नैतद्विशन्तिमहदिन्द्रियदेवसंघास्तस्मैनमोग्निमिवविस्तृतविस्फुलिंगाः ॥ ॥ ८ ॥ नैवेशितुंप्रभुरयंबलिनांबलीयान्मायानशब्दउतनोविषयीकरोति ॥ तद्ब्रह्मपूर्णममृतंपरमंप्रशान्तंशुद्धंपरात्परतरंशरणंगताःस्मः ॥ ९ ॥ अंशांशकांशककलाद्यवतारवृंदैरावेशपूर्णसहितैश्चपरस्ययस्य ॥ सर्गादयःकिलभवन्तितमेवकृष्णंपूर्णात्परन्तुपरिपूर्णतमंनताःस्मः ॥ १० ॥ मन्वन्तरेषुचयुगेषुगतागतेषुकल्पेषुचांशकलयास्ववपुर्बिभार्षि ॥ अद्यैवधामपरिपूर्णतमंतनोपिधर्मंविधायभुवि मंगलमातनोषि ॥ ११ ॥ यद्दुर्लभंविशदयोगिभिरप्यगम्यंगम्यंद्रवद्विरमलाशयभक्तियोगैः ॥ आनंदकंदचरतस्तवमन्दयानंपादारविन्दमकरन्दरजोदधानः ॥ १२ ॥

है और अकारण है याहीके आश्रयते गुण विचरेहे महदादिक देवतानके गण यामें प्रवेश नही होसकेहे जैसें अग्निके पतंगा अग्निकूं प्रकाश नही करसकेहैं ॥ ८ ॥ बलीनको बली यह काल जाको वश करवेको समर्थ नही होयहै और मायाभी यामें अपनों प्रभाव नहीं करसकेहै वेदहू जाकों विषय नही करसकेंहे और वो परिपूर्ण परमशांत शुद्ध अमृतसमान परेते परें जो श्रीकृष्ण ताकी हम शरण प्राप्त भयेहें ॥ ९ ॥ जा परके अंशावतार अंशांशावतार कलावतार आवेशावतार पूर्णअवतार इनकरके या जगत्की उत्पत्ति पालन और संहार होयहै वा पूर्णसो परें परिपूर्णतम श्रीकृष्णकूं हम दंडवत् करेहे॥१०॥तीनोंकालनके मन्वंतर युग और कल्प इनमें जो अपने अंश कला आवेश तिन करके शरीर धारण करेंहै अबही अपनो तेजोरूप परिपूर्णस्वरूप धारण करेंहै सो पृथ्वीमें धर्मको विधान करके मंगल विस्तारोंगे॥११॥जो विशद योगीनहूकूं अगम्य है तोहू निर्मल प्रेमलक्षणा भक्तितें गम्य है हे आनंदकन्द ! मंद२ चल

नवारे तुम्हारे चरणकमलकी रजकूं हम धारण करें हैं ॥१२॥ पहिले मनोहर वपुधारी किरोड़ कंदर्पकी सुन्दरताको मोहन गोलोकधामकी कांतिकूं धारण करनवारे राधाके पति अनोंखे पृथ्वीके धर्मकी रक्षा करनवारे धर्मके बोझरूप धनके धारण करनवारेको मैं प्रणाम करूंहूं ॥ १३ ॥ नारदजी कहेहै ऐसें ब्रह्मादिक देवता मुनिनसहित श्रीकृष्णकी स्तुति कर नमस्कार करकें गावत बजावत उनकी बड़ाई करतकरत आनंदपूर्वक अपने २ धामनकूं चलेगये ॥१४॥ तदनंतर हे मैथिलराजेन्द्र ! श्रीकृष्णके जन्मसमय आकाश और दशों दिशा निर्मल हैगई ॥ १५ ॥ तारागण निर्मल हैगये, पृथ्वीमंडल प्रसन्न हैगयौ, नद, नदी, समुद्र, सरोवर सब निर्मल जिनके जल ऐसे हैगये ॥ १६ ॥ सौ दलके और हजार दलके खिले कमलनकी रजकी सुगंधिते युक्त पवन दशोंदिशानमें फैलगई ॥ १७ ॥ तिनपै बहुतसे भौंरा गुंजार कररहे है, विचित्र पखेरू बोल रहेहे, तहां शीतल, मंद, सुगन्ध पवन चली आवैहै

पूर्वन्तथात्रकमनीयवपुष्मयंत्वांकंदर्पकोटिशतमोहनमद्भुतंच ॥ गोलोकधामधिषणद्युतिमादधानंराधापतिंधरमधुर्यधनंदधानम् ॥ १२ ॥
॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ नत्वाहरिंतदादेवाब्रह्माद्यामुनिभिःसह ॥ गायन्तस्तंप्रशंसन्तःस्वधामानिययुर्मुदा ॥ १४ ॥ अथमैथिल
राजेन्द्रजन्मकालेहरेःसति ॥ अंबरंनिर्मलंभूतंनिर्मलाश्चदिशोदश ॥ १५ ॥ उज्ज्वलास्तारकाजाताःप्रसन्नंभूमिमंडलम् ॥ नद्योनद्यः
समुद्राश्चप्रसन्नापःसरोवराः ॥ १६ ॥ सहस्रदलपद्मानिशतपत्राणिसर्वतः ॥ विकचानिमरुत्स्पर्शैःपतद्गन्धिरजांसिच ॥ १७ ॥ तेषुनेदुर्मधु
करानदन्तश्चित्रपक्षिणः ॥ शीतलामन्दयानाश्चगंधाक्तावायवोवबुः ॥ १८ ॥ ऋद्धाजनपदाग्रामानगरामंगलायनाः ॥ देवाविप्रानगागा
वोबभूवुःसुखसंवृताः ॥ १९ ॥ देवदुन्दुभयोनेदुर्जयध्वनिसमाकुलाः ॥ यत्रतत्रमहाराजसर्वेषांमंगलंपरम् ॥ २० ॥ विद्याधराश्चगन्धर्वाः
सिद्धकिन्नरचारणाः ॥ जगुःसुनायकादेवास्तुष्टुवुःस्तुतिभिःपरम् ॥ २१ ॥ ननृतुर्दिविगन्धर्वाविद्याधर्य्योमुदान्विताः ॥ पारिजातकमन्दारमा
लतीसुमनांसिच ॥ २२ ॥ मुमुचुर्देवमुख्याश्चगर्जन्तश्चघनाजलम् ॥ भाद्रेबुधेकृष्णपक्षेधात्रर्क्षेहर्षणेवृषे ॥ कर्णेष्टम्यामर्द्धरात्रेनक्षत्रेशमहोदये
॥ २३ ॥ अन्धकारावृतेकालेदेवक्यांशौरिमन्दिरे ॥ अविरासीद्धरिःसाक्षादरण्यामिवाग्निवत् ॥ २४ ॥ स्फुरदक्षविचित्रहारिणंविलसत्कौस्तु
भरत्नधारिणम् ॥ परिधिद्युतिनूपुरांगदधृतबालार्ककिरीटकुंडलम् ॥ २५ ॥

॥ १८ ॥ देशनमें समृद्धि हैगई, नगरमें मंगल हौनलगे, देवता, गौ, ब्राह्मण, सुखी हैगये ॥१९॥ देवतानकी दुंदभी बजन लगी, जय जय ध्वनि हौनलगी, जहांतहां सब जगह मंगल हौनलगे ॥ २० ॥ सिद्ध, विद्याधर, गंधर्व, किन्नर, चारण, देवतानमें सुंदर गवैया गावनलगे, स्तुति करनलगे ॥ २१ ॥ आकाशमे गन्धर्व, विद्याधर, सिद्ध, किन्नर और चारण प्रसन्न हैके नाचनलगे और अपनी अपनी नायकानसहित देवता पारिजात मन्दार और मालतीके पुष्पनकी वृष्टि करनलगे ॥ २२ ॥ और गरजते मेघ मेह वर्षावनलगे ऐसे समयमे भाद्रपद मासको कृष्णपक्ष, बुधवार, रोहिणीनक्षत्र, हर्षणयोग, अष्टमीतिथि और वृषलग्न, आधी रात जा समय चन्द्रमाकौ उदयभी हैगयौहै ॥२३॥ और लोक अंधकारसो आच्छादित हो तब वसुदेवके मन्दिरमें देवकीके गर्भसो साक्षात् हरि भगवानको प्रादुर्भाव हौतौभयौ, जैसे अरणीमे अग्नि प्रगट होयहै ॥ २४ ॥ जगमगाते स्वच्छ विचित्र हारकूं धारण करें शोभायमान

कौस्तुभमणिनको हारको पहरे चन्द्र और सूर्यके मंडलके समान उज्ज्वल नूपुर और बाजूबन्द धारणकरें और प्रातःकालके सूर्यके समान चमकीले किरीट कुंडल धारण करें हैं ॥२५॥ चंचल अग्निके समान प्रदीप्त कंकण, बिजलीके समान प्रकाशित कोंधनी धारण करें भ्रमरनकी गुंजार युक्त कमलनकी मालाकूं धारण करें अग्नितप्त सुवर्णतुल्य दिव्य पीतांबरकूं धारण करें ॥ ॥ २६ ॥ वा पीताम्बरसों चमकती बिजलीसहित सजल श्याम घटाके समान काली, लटकाली, घूघरवाली अलकावलीते आवृत और अंधकारनाशक किरणयुक्त जाको मुख सुंदर शुभदेनवारे कमलसे नेत्र ॥ २७ ॥ और कीनी पत्ररचना सो शृंगार कियो निरंतर सोकोटि कामदेवको मोहन कलध्वनि वासुरीके बजायवेमें तत्पर परिपूर्णनमें परिपूर्ण परनसों पर ॥ २८ ॥ जो वो स्वरूप ताको यदूत्तम श्रीवसुदेवजी देखकें हरिके जन्मकों उत्सव करकें फूलेहैं नेत्र जाके सो मनकरकें ब्राह्मणनकूं तत्काल प्रसन्न है दशहजार गौ देतभये ॥ २९ ॥ तब वसुदेवजी वा अनंत भगवान्‌को देखकें अचंभेमें आके प्रभुको प्रणाम करके, हाथ जोरके, निर्भय हैके वा प्रसूतिकाघरमें अनेक स्तोत्रनकरकें स्तुति करतभये ॥ ३० ॥ तब श्रीवसु

चलदद्भुतवह्निकंकणंतडिदूर्जितगुणमेखलाचितम् ॥ मधुभृङ्गनिपद्ममालिनंनवजांबूनददिव्यवाससम् ॥२६॥ सतडिद्घनदिव्यसौभगंचलनीलालकवृन्दभृन्मुखम् ॥ चलदंशुतमोहरंपरंशुभदंसुन्दरमंबुजेक्षणम् ॥२७॥ कृतपत्रविचित्रमंडनंसततंकोटिमनोजमोहनम् ॥ परिपूर्णतमंपरात्परंकलवेणुध्वनिवाद्यतत्परम् ॥ २८ ॥ तमवेक्ष्यसुतंयदूत्तमोहरिजन्मोत्सवफुल्ललोचनः ॥ अथविप्रजनेषुआशुवैनियुतंसन्मनसागवांददौ ॥ २९ ॥ हरिसानकदुंदुभिःस्तवैस्तमनन्तंप्रणिपत्यविस्मितः ॥ अकरोदुदितप्रभूदयोगतभीःसूतिगृहेकृतांजलिः ॥ ३० ॥ ॥ श्रीवसुदेव उवाच ॥ ॥ एकोयःप्रकृतिगुणैरनेकधासिहर्तात्वंजनकउतास्यपालकस्त्वम् ॥ निर्लिप्तःस्फटिकइवाद्यदेहवर्णैस्तस्मैश्रीभुवनपतेनमामितुभ्यम् ॥ ३१ ॥ एधःसुत्यनलइवात्रवर्तमानोयोन्तस्थोवहिरपिचाम्बरंयथाहि ॥ आधारोधरणिरिवास्यसर्वसाक्षीतस्मैतेनमइवसर्वगोनभस्वान् ॥ ३२ ॥ भूभारोद्भटहरणार्थमेवजातोगोदेवद्विजनिजवत्सपालकोसि ॥ गेहेमेभुविपुरुषोत्तमोत्तमस्त्वंकंसान्मांभुवनपतेप्रपाहिपापात् ॥ ३३ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ परिपूर्णतमंसाक्षाच्छ्रीकृष्णंश्यामसुन्दरम् ॥ ज्ञात्वानत्वाथतंप्राहदेवकीसर्वदेवता ॥ ३४ ॥

देवजी बोले कि, वास्तवमें जो तुम एक हो सो तू मायाके गुणनते अनेक प्रकारके हो, तुमही या जगत्‌को उत्पत्ति, पालन, संहार करो हो पन स्फटिकमणिकीसी देहके वर्णते निर्लिप्त हौ सो त्रिभुवनके पति जे तुम तिनके अर्थ मेरा नमस्कार है ॥ ३१ ॥ जो या विश्वमें ईंधनमें अग्निकी तरह रहेहे और जो सबके बाहिर भीतर आकाशकी नाई वर्तमान हो और पृथ्वीकी नाई सबके आधार हो और पवनकी नाई सर्वत्र विद्यमान सबके साक्षी हो ता तुम्हारे अर्थ मेरा नमस्कार है ॥ ३२ ॥ पृथ्वीके भाररूप जे उद्भट तिनके दूर करिवेके लियेही आपने जन्म लीनों है गौ, ब्राह्मण, देवता और अपने भक्त तेई भये बछरा तिनके पालक हो सो पुरुषोत्तमोत्तम तुम मेरे घर प्राप्त भये हो सो हे भुवनपते ! तुम, पापी जो कंस ताते मेरी रक्षा करो ॥ ३३ ॥ नारदजी कहेहैं कि, परिपूर्णतम साक्षात् श्यामसुंदर श्रीकृष्णकूं जानिकें सर्वदेवता देवकी दंडवत करकें

बोली ॥ ३४ ॥ हे कृष्ण ! हे अखिल ब्रह्मांडके पति ! हे परेश ! हे गोलोकधामस्वामिन् ! आदिदेव ! हे पूर्णेश ! पूर्ण ! परिपूर्णतम ! हे प्रभो ! हे परमेश्वर ! पापी कंसते मेरी रक्षा करौ ॥ ३५ ॥ ता वचनके स्वयं परिपूर्णतम भगवान् सुनिकें दुःखनके हरनवारे मंद मुसक्यान करके बोले ॥ ३६ ॥ ये तो पूर्वजन्ममें पतिव्रता पृश्नि ही और हे वसुदेव ! तुम सुतपा प्रजापति हे, पुत्रकी तुमारे इच्छा ही, तब तुमनें ब्रह्माजीकी आज्ञाते अन्न जल विना बड़ौ भारी तप करौ ॥ ३७ ॥ तब मन्वंतर व्यतीत हेगयौ प्रजाके अर्थ तुमने तप कियो तब मैं प्रसन्न हेकें यह बोल्यौ वर मांगो ॥ ३८ ॥ यह सुनिके तुमने यही वर मांग्यौ कै हमारे तुमसरीकोही बेटा होय तब मैं तथास्तु कहकें चल्यौगयौ तब दोनों तुम अपने तपके प्रताप सो प्रजापति भये ॥ ३९ ॥ मैंने अपने समान जगत्में जब कोई नहीं देखौ तब परेश्वर मैंनेंई तुमारें जन्म लीनों पहले जन्ममें पृश्निगर्भ मेरौ नाम विख्यात भयौ और दूसरी विरिया

॥ ॥ श्रीदेवक्युवाच ॥ ॥ हेकृष्णहेविगणितांडपतेपरेशगोलोकधामधिषणध्वजआदिदेव ॥ पूर्णेशपूर्णपरिपूर्णतमप्रभोमांत्वंपाहिपाहिपरमेश्वरकंसपापात् ॥ ३५ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ तच्छ्रुत्वाभगवान्कृष्णःपरिपूर्णतमःस्वयम् ॥ सस्मितोदेवकींशौरिंप्राहसवृजिनार्दनः ॥ ३६ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ इयंचपृश्निःपतिदेवताचत्वंपूर्वसर्गेसुतपाःप्रजार्थी ॥ ब्रह्माज्ञयादिव्यतपोयुवाभ्यांकृतंपरंनिर्जलभोजनाभ्याम् ॥ ३७ ॥ कालेषुमन्वन्तरपेव्यतीतेतपःपरन्तत्तपसःप्रजार्थी ॥ तदाप्रसन्नोयुवयोरभूवंवरंपरंब्रूतमयातदोक्तम् ॥ ३८ ॥ श्रुत्वायुवाभ्यांकथितंतदेवभूयात्सुतस्त्वत्सदृशःकिलावयोः ॥ तथास्तुचोक्त्वाथगतेमयिप्रजापतीह्यभूतंस्वकृतेनदम्पती ॥ ३९ ॥ नमत्समःकोपिसुतोजगत्यलंविचार्यतद्वामभवंपरेश्वरः ॥ श्रीपृश्निगर्भोभुविविश्रुतःपुनर्द्वितीयकालेह्युपेन्द्रवामनः ॥ ४० ॥ तथाभवंह्यद्यतनेपरात्परोनीत्वाथमांप्रापयनन्दमन्दिरम् ॥ अतोनभूयाद्भयमौग्रसेनतः सुतांसमादायसुखीभविष्यथः ॥ ४१ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ तूष्णींभूत्वाहरिस्तत्रतद्द्वयःपश्यतोस्तयोः ॥ दृश्यंह्यप्रकटंकृत्वाबालोभूत्कोयथानटः ॥ ४२ ॥ प्रेंखेधृत्वाथतंशौरिर्यावद्गन्तुंसमुद्यतः ॥ तावद्व्रजेनन्दपत्न्यांयोगमायाजनिस्वतः ॥ ४३ ॥ तयाशयानेविश्वस्मिन्नक्षकेषुस्वपत्सुच ॥ द्वारउद्घाटिताःसर्वाःप्रस्फुटच्छृंखलार्गलाः ॥ ४४ ॥ निर्गतेवसुदेवेचमूर्ध्निश्रीकृष्णशोभिते ॥ सूर्योदयेयथासद्यस्तमोनाशोभवत्स्वतः ॥ ४५ ॥ घनेषुव्योम्निवर्षत्सुसहस्रवदनःस्वराट् ॥ निवारयन्दीर्घफणैरासारंशौरिमन्वगात् ॥ ४६ ॥

वामन नाम भयो ॥ ४० ॥ तैसेंई परात्पर मैं अब भयौंहू अब मोकूं लेकें नंदजीके मन्दिरमें पहुंचाय देउ, नंदजीकी कन्याकूं लैआओ, सुखी होउगे फिर कंसते तुमकूं भय न होयगो ॥ ४१ ॥ नारदजी कहेहे ऐसें कहिके हरि चुप्प हैगये और उनके देखते २ दृश्यरूपको अदृश्य कर हालके भये बालकसे हैगये जैसें बाजीगर ॥ ४२ ॥ हिंडोलामें बैठार जबतलक वसुदेव चलनलगे तबही व्रजमें यशोदाजीके कन्या भई ॥ ४३ ॥ जो वसुदेव लेके चले सोही योगमायाके प्रतापसे द्वारपाल सोयगये और सब विश्व सोयगयो दरवजोनके सांकर ताले अर्गला सब खुलगये ॥४४॥ जब वसुदेवजी मूंड़पै श्रीकृष्णकूं धरिकें गये तबही सब अंधकारको ऐसे नाश हैगयौ जैसे सूर्योदयसी हेजायहै ॥ ४५ ॥ जब आकाशमें

मेघ वर्षन लग्यो तबही शेषजी वसुदेवजीके पीछेपीछे श्रीकृष्णकी छाया करत चले ॥ ४६ ॥ यमुनामें बड़े २ भँवर पडेहे, सिंह सर्पादिक बहे, चले आमें है, ऐसी भयंकर यमुना ही परन्तु वा कालिंदीने वसुदेवजीकूं मार्ग देदीनो ॥ ४७ ॥ जब नंदजीके व्रजमें गये तब सब सोवते पाये, बालककूं यशोदाकी सेजपे स्वायदीनों, कन्या देखी ॥ ४८ ॥ ता कन्याकूं लेके फिर वसुदेव यमुनाकूं उतरके पूर्ववत् अपने घरमे आयबैठे ॥ ४९ ॥ तब गोपी यशोदा बेटा भयो, कै बेटी भई कछु भयोहे यह जानके हारगई ही सो आनन्दनिद्रामे अपने पलँगपे सोयगई ॥ ५० ॥ यहां जब कन्या रोई तबही बालध्वनि सुनिके द्वारपाल उठे, राजमन्दिरमें जायके कंसते कहतभये कि, महाराज ! देवकीके बालक भयो है ॥ ५१ ॥ तब कंस बालककौ जन्म सुनिकें भयते कायर हेकें जल्दीही प्रसूतिकाघरकूं चल्योआयो तब देवकी बहन दीनसी रोवत कंस भयाते यह बोली ॥ ५२ ॥

ऊर्म्यावर्ताकुलावेगैःसिंहसर्पादिवाहिनी ॥ सद्योमार्गंददौतस्मैकालिन्दीसरितांवरा ॥ ४७ ॥ नन्दव्रजंसमेत्यासौप्रसुप्तंसर्वतःपरम् ॥ शिशुंयशोदाशयनेविधायाशुददर्शताम् ॥ ४८ ॥ तत्सुतांसमुपादायपुनर्गेहाञ्जगामसः ॥ तीर्त्वाश्रीयमुनांशौरिःस्वागारेपूर्ववत्स्थितः ॥ ४९ ॥ सुतंसुतांवाजातंचज्ञात्वागोपीयशोमती ॥ परिश्रांतास्वशयनेसुष्वापानन्दनिद्रया ॥ ५० ॥ अथबालध्वनिंश्रुत्वारक्षकाःसमुपस्थिताः ॥ ऊचुः कंसायवीरायगत्वातद्राजमन्दिरम् ॥ ५१ ॥ सुतीगृहंत्वरंप्रागात्कंसोवैभयकातरः ॥ स्वसाथभ्रातरंप्राहरुदतीदीनवत्सती ॥ ५२ ॥ ॥ श्रीदेवक्युवाच ॥ सुतामेकांदेहिमेत्वंपुत्रेषुप्रमृतेषुच ॥ स्त्रियंहंतुंनयोग्योसिभ्रातस्त्वंदीनवत्सलः ॥ ५३ ॥ तेऽनुजाहंहतसुताकारागारेनिपातिता ॥ दातुमर्हसिकल्याणकल्याणींतनुजांचमे ॥ ५४॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ अश्रुमुख्यामोहितयासमाच्छाद्यात्मजांबहु ॥ प्रार्थितोंकाद्रिनिर्भत्स्यंतांसआचिच्छिदेखलः ॥ ५५ ॥ कुसंगनिरतःपापःखलोयदुकुलाधमः ॥ स्वसुःसुतांशिलापृष्ठेगृहीत्वांघ्र्योर्न्यपातयत् ॥ ५६ ॥ कंसहस्तात्स्तमुत्पत्यसानंशाचांबरेगता ॥ शतपत्रेरथेदिव्येसहस्रहयसेविते ॥ ५७ ॥ चामरांदोलितेशुभ्रेस्थितादृश्यतदिव्यदृक् ॥ सायुधाष्टभुजामायापार्षदैःपरिसेविता ॥ शतसूर्यप्रतीकाशाकंसमाहघनस्वना ॥ ५८ ॥ ॥ श्रीयोगमायोवाच ॥ ॥ परिपूर्णतमःसाक्षाच्छ्रीकृष्णोभगवान्स्वयम् ॥ जातःक्वापितेहंतावृथादीनांदुनोषिवै ॥ ५९ ॥

कि, हे भ्रातः ! बेटा तौ मेरे सब मरगये एक बेटी तौ मोहि दे, यह बेटी है, तू दीनवत्सल है, याहि मारबेकूं योग्य नहीं है ॥ ५३ ॥ मै तेरी छोटी बहन हूं, बेटा मेरे मरगये हैं, बंदीखानेमें पड़ी हूं, हे कल्याण ! कल्याणकरनहारी कन्याकूं मोकूं दे ॥ ५४ ॥ नारदजी कहे है–आंसू आयरहे हैं, मोहमें व्याप्त है, बेटीकूं छातीते चिपटायरही है, याचना कररही है ता बहनकूं दुष्ट कंस ललकार हाथमेंते कन्याकूं छीनलेतभयो ॥ ५५ ॥ कुसंगनिरत पापी दुष्ट यदुकुलमें अधम कंस बहनकी बेटीके दोनों पांव पकरके शिलापे मारनलग्यो ॥ ५६ ॥ सोई वो देवी अनंशा कंसके हाथते छूटकें कंसकी चांदमें लात मारकें आकाशमें उडगई, हजार घोड़ाके कमलके रथमे बैठी दीखनलगी ॥ ५७ ॥ दिव्यरूपा चमर जापै डुर रहे, अष्टभुजा देवी पार्षदन करके सेवित आठ जाकी भुजा सौ सूर्यकोसो जाको तेज मेघकोसो गर्जनते कंसते बोली ॥ ५८ ॥ परिपूर्णतम साक्षात् श्रीकृष्णभगवान्

तेरो हंता कहूं जन्म लैचुक्यो है तू वृथा या दीनाकूं क्यों दुःख देयहै ॥ ५९ ॥ नारदजी कहे है ऐसें कंसते कहकें वो देवी विंध्याचलकूं चलीगई ता योगमाया भगवतीके बहुतसे नाम होतभये ॥ ६० ॥ तब मायाके वचन सुनकें कंस बड़ो विस्मित भयो और देवकी वसुदेवकूं बंदीखानेते छुड़ायदेतभयो ॥ ६१ ॥ कंस बोल्यो मैं पापी हूं, पापकर्मा, यादवनमें अधम हूं तुम्हारे बेटा मैंनें मारे हैं, मेरे अपराधकूं क्षमा करो ॥ ६२ ॥ हे बहिन हे जीजा ! सुनों सब कालको कीयोहै, कालके चलाये सब हैं, ऐसेही मै भी कालवश हूं, वायु जैसें बादलनकूं चलायमान करदेयहै ॥ ६३ ॥ मै तो देवतानके वचनके विश्वासमें रह्यो सो देवतानकीहू बात झूंठी होयहै, मै नहीं जानूं हूं मेरो वैरी कहां जन्म लैचुक्यो जो मायादेवीने कह्योहै ॥ ६४ ॥ नारदजी कहें है ऐसें कंस कहकें देवकी वसुदेवके चरणनमें जायपरो आंसू मुखपै आयरहे हैं ऐसे परम सेवा करनलग्यो,

॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥इत्युक्त्वातांततोदेवीगताविन्ध्याचलेगिरौ ॥ योगमायाभगवतीबहुनामाबभूवह ॥ ६० ॥ अथकंसोविस्मितोभूच्छ्रुत्वामायावचःपरम् ॥ देवकींवसुदेवंचमोचयामासबन्धनात् ॥ ६१ ॥ ॥ कंसउवाच ॥ ॥ पापोहंपापकर्माहंखलोयदुकुलाधमः ॥ युष्मत्पुत्रप्रहन्तारंक्षमध्वंमेकृतंभुवि ॥ ६२ ॥ हेस्वसःशृणुमेशौरेमन्येकालकृतंत्विदम् ॥ येननिश्चाल्यमानोवावायुनेवघनावलिः ॥ ६३ ॥ विश्वस्तोहंदेववाक्येदेवास्तेपिमृषागिरः ॥ नजानामिकमेशत्रुर्जातःक्वकथितोनया ॥ ६४ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्थंकंसस्तदंघ्र्योश्चपतितोऽश्रुमुखोरुदन् ॥ चकारसेवांपरमांसौहृदंदर्शयंस्तयोः ॥ ६५ ॥ अहोश्रीकृष्णचंद्रस्यपरिपूर्णतमप्रभोः ॥ दानदक्षैःकटाक्षैश्चकिंनस्याद्भूमिमंडले ॥ ६६ ॥ प्रातःकालेतदाकंसःप्रलंबादीन्महासुरान् ॥ समाहूयखलस्तेभ्योऽवदद्दुक्तंचमायया ॥ ६७ ॥ ॥ कंसउवाच ॥ जातोमेहंतकुत्रभौकथितोयोगमायया ॥ अनिर्दशान्निर्दशांश्चशिशून्युयंहनिष्यथ ॥ ६८ ॥ ॥ दैत्याऊचुः ॥ ॥ सज्जस्यधनुषोयुद्धेभवताद्द्वंद्वयोधिना ॥ टंकारेणोद्गतादेवामन्यसेतैःकथंभयम् ॥ ६९ ॥ गोविप्रसाधुश्रुतयोदेवाधर्मादयःपरे ॥ विष्णोश्चतनवोह्येषांनाशेदैत्यबलंस्मृतम् ॥ ७० ॥ जातोयदिमहाविष्णुस्तेशत्रुर्योमहीतले ॥ अयंचैतद्वधोपायोगवादीनांविहिंसनम् ॥ ७१ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्थंमहोद्धटादुष्टादैतेयाःकंसनोदिताः ॥ दुद्रुवुःखंगवादिभ्योजघ्नुर्जातांश्च बालकान् ॥ ७२ ॥

तिन दोनोंनकूं परम सुहृदता दिखावन लग्यो ॥ ६५ ॥ अहो ! श्रीकृष्णचन्द्र परिपूर्णतम प्रभूके दानदक्ष चतुर कटाक्षनते भूमिमें कहा नहीं होयहै ॥ ६६ ॥ तब प्रातःकालही प्रलंबादिक असुरनकूं इकट्ठे करके योगमायाको वचन सुनावत भयो ॥ ६७ ॥ मेरो मारनवारो तो भूमिपै कहूं जन्म लैचुक्यो जो कि योगमाया कहिगइ है दस दिनके भीतर या दस दिनके अगारी पिछारीके भये बालकनकूं तुम मारडारो ॥ ६८ ॥ तब दैत्य बोले जब तुम द्वंदयुद्धमें धनुषकूं टंकारोहो तबही तुमारी धनुषटंकारसोंही देवता उखड़जायहै तिनते भय क्यों करोहो ॥ ६९ ॥ गौ, ब्राह्मण, साधु, श्रुति, देवता, धर्म, ये विष्णुके तन है इनके नाशकूं दैत्यनकोंही बल है ॥ ७० ॥ जो विष्णु तुम्हारो वैरी है वो यदि भूमिमे जन्म लैचुक्योहै तौ वाके मारवेको यही उपायहै कि, गौ, ब्राह्मणादिकन को वध करनों चाहिये ॥ ७१ ॥ नारदजी कहे है ऐसे उद्भट दुष्ट दैत्य कंसके प्रेरेभये आकाशमें

उड़नलगे बालकनकूं और गौनकूं मारनलगे ॥ ७२ ॥ समुद्र पर्यंत पृथ्वी तलके विषय कामरूपी राक्षस घर २ में ऐसें डोलनलगे जैसें सर्प और मूसा डोले हैं ॥ ७३ ॥ उत्पथ मार्गमें चलनहारे उद्भट ताऊमें कंसके मेरे एक तौ बंदर फिर पीजाय भांग फिर काटखाय बीछू फिर वाकी चंचलताकों कहा ठिकानों है यासों भूतग्रस्तके समान है गये ॥ ७४ ॥ हे वैदेहा हे मैथिल ! हे नरेन्द्र ! हे उपेन्द्रभक्त ! हे धर्मिष्ठमुख्य हे राजन् ! हे सुतप ! हे जनक हे प्रतापिन् हे बहुलाश्व ! पृथ्वीमें संतनकों जो अपराध है सो धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, चारोंपदार्थनको नाश करैहै ॥ ७५ ॥ इति ग० सं० गोलोकखंडे भाषाटीकायामेकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ नारदजी कहेहै कि, अनंतर पुत्रके उत्सवकूं नंदजी सुनके बड़े प्रातःकाल ही ब्राह्मणनकूं बुलाय मंगल करामनलगे ॥ १ ॥ श्रीकृष्णके जन्मते हैगयौ है बड़ौ मन जिनको ऐसे नंदराज विधिते जातकर्म करायकें ब्राह्मणनकूं दक्षिणासहित

आसमुद्राद्भूमितलेविशंतश्चगृहेगृहे ॥ कामरूपधरादैत्याचेरुःसर्पाखवोयथा ॥ ७३ ॥ उत्पथाउद्भटादैत्यास्तत्रापिकंसनोदिताः ॥ कपिः सुरा
प्यलिढतोभूतग्रस्तइवाभवन् ॥ ७४ ॥ वैदेहमैथिलनरेन्द्रउपेन्द्रभक्तधर्मिष्ठमुख्यसुतपोजनकप्रतापिन् ॥ एतत्सतांचभुविहेलनमंगराजन्सर्वंछि
नत्तिबहुलाश्वचतुष्पदार्थम् ॥७५॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांगोलोकखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेश्रीकृष्णजन्मवर्णनंनामैकादशोऽध्यायः ॥११॥
॥ ॥श्रीनारदउवाच ॥ ॥ अथपुत्रोत्सवंजातंश्रुत्वानन्दउपःक्षणे ॥ ब्राह्मणांश्चसमाहूयकारयामासमंगलम् ॥ १ ॥ सविधिंजातकंकृत्वान
न्दराजोमहामनाः ॥ विप्रेभ्योदक्षिणाभिश्चसुदालक्षंगवांददौ ॥ २ ॥कोशमात्रंरत्नसानून्सुवर्णशिखरान्गिरीन् ॥ सरसान्सततधान्यानिददौवि
प्रेभ्यआनतः ॥ ३ ॥ मृदंगवीणाशंखाद्यानेदुर्दुंदुभयोमुहुः ॥ गायकाश्चजगुर्द्वारेननृतुर्वारयोषितः ॥ ४ ॥ पताकैर्हेमकलशैर्वितानैस्तोरणैः
शुभैः ॥ अनेकवर्णैश्चित्रैश्चबभौश्रीनन्दमन्दिरम् ॥५॥ रथ्यावीथ्यश्चदेहल्योभित्तिप्रांगणवेदिकाः ॥ तोलिकामंडपसमारेजुर्गन्धजलांबरैः ॥
॥ ६ ॥ गावःसुवर्णशृंग्यश्चहेममालालसद्गलाः ॥ घंटामंजीरझंकारारक्तकंबलमंडिताः ॥ ७ ॥ पीतपुच्छाःसवत्साश्चतरुणीकरचिह्निताः ॥
हरिद्राकुंकुमायुक्ताश्चित्रधातुविचित्रिताः ॥ ८ ॥ बर्हपुष्पैर्गन्धजलैर्नृपाधर्मधुरंधराः ॥ इतस्ततोविरेजुःश्रीनन्दद्वारिमनोहराः ॥ ९ ॥

आनंदते लाख गौ देतभये॥२॥कोश २ भरके तिलके सात पर्वत रतननके जिनके शिखर जरीके वस्त्रनसों ढकेहुये और गौ, तेल सहित दिये हो और सदा धान्यकोभी ब्राह्मणनको नम्र हैके दान करतेभये ॥ ३ ॥ मृदंग, वीणा, शंख, दुंदुभी आदि बाजे बजनलगे, गैवया गामनलगे, वेश्या दरवज्जे पै नाचनलगी ॥ ४ ॥ नंदमंदिरमें अनेक रंगे ध्वजा, पताका सुवर्णके कलश चंदोआ और बंदनवार तिनते नंदमहलकी बड़ी शोभा होतीभई ॥ ५ ॥ और गली कूंचनमें, तिराये, चौराये, देहरी, आंगन, चौक, चौंतरा, छत्री, मंडप ये सब सुगंधित जलनते छिरकदिये, बिछौना बिछायदिये ॥ ६ ॥ सुनहरी सींग, गलेमें सौनेकी माला और घंटानके सुन्दर शब्द पीठपै बनात पूंछमें मोतीनके गुच्छा जिनकें ऐसी गौ सजाई ॥ ७ ॥ पीली जिनकी पूंछ बछरान सहित, तरुणअवस्थावारी, हरदी, केशरसे लिप्त और गेरू, खड़िआ, मनशिलादि धातुनसों चितीभई ॥ ८ ॥ मोरपंखकी झूमरि और

पुष्प तिनते सजी गौ और सुगंधिके जलनते न्हवाय मोरपंखके मुकुट बांधि सजेभये मनोहर वृष वे इतवित नंदके दरवज्जेपे सुशोभित भयेहैं ॥ ९ ॥ बछिया बछरा सोनेकी माला, मोतीनके हार, पावनमें झांझन पहरे श्वेत जिनके रंग वे इतवित उछरते डोलेंहैं ॥ १० ॥ नंदके घरमें पुत्रोत्सव सुनकें वृषभानवर कीर्तिरानीकूं संग लैकें हाथीपे चढ़ भेट लेके आये ॥ ११ ॥ नौ नंद आये, नौ उपनंद आये, छः वृषभानु, अनेकन तरहकी भेट लै २ कै आये ॥ १२ ॥ केशरिया पागनके ऊपर माला पहरें और पीरो रंगके जामानको पहरे मोरपंखनके पगरीनमें छुरसे बंधे जिनके केश वनमाला पहिरें आयेहे ॥ १३ ॥ और केशरकी खौर लगाये, मोरपंखकी फेंट बांधे, बेत लिये, बंशी बजावत, अनेक गोपनके झुण्ड ॥ १४ ॥ नाचत, गावत, पिछौरानकूं फिरावत, शृङ्गारकर, मूछनकूं सम्हारत, अनेकन भेट लैके छोटे बडे सब आवतभये ॥ १५ ॥

गोवत्साहेममालाढ्यामुक्ताहारविराजिताः ॥ इतस्ततोविलंघन्तोमंजीरचरणाःसिताः ॥ १० ॥ श्रुत्वापुत्रोत्सवंतस्यवृषभानुवरस्तथा ॥ कलावत्यागजारूढोनन्दमंदिरमाययौ ॥ ११ ॥ नन्दानवोपनन्दाश्चतथापट्वृषभानवः ॥ नानोपायनसंयुक्ताःसर्वेतेपिसमाययुः ॥ १२ ॥ उष्णीषोपरिमालाढ्याःपीतकंचुकशोभिताः ॥ बर्हगुंजाबद्धकेशावनमालाविभूषणाः ॥ १३ ॥ वंशीधरावेत्रहस्ताःसुपत्रतिलकार्चिताः ॥ बद्धबर्हपरिकरागोपास्तेपिसमाययुः ॥ १४ ॥ नृत्यन्तःपरिगायंतोधुन्वंतोवसनानिच ॥ नानोपायनसंयुक्ताःश्मश्रुलाःशिशवःपरे ॥ १५ ॥ हैय्यंगवीनदुग्धानांदध्याज्यानांबलीन्बहून् ॥ नीत्वावृद्धायष्टिहस्तानन्दमंदिरमाययुः ॥ १६ ॥ पुत्रोत्सवंव्रजेशस्यकथयन्तःपरस्परम् ॥ प्रेमविह्वलभावैःस्वैरानन्दाश्रुसमाकुलाः॥१७॥ जातेपुत्रोत्सवेनन्दःस्वानन्दाश्रुकुलेक्षणः ॥ पूजयामासतान्सर्वास्तिलकाद्यैर्विधानतः ॥१८॥ ॥ ॥ श्रीगोपाऊचुः ॥ ॥ हेव्रजेश्वरहेनन्दजातोपुत्रोत्सवस्तथा ॥ अनपत्यत्वछेत्तालमतःकिंमंगलंपरम् ॥ १९ ॥ दैवेनदर्शितंचेदंदिनंवोबहुभिर्दिनैः ॥ कृतकृत्याश्चभूयास्मदृष्ट्वाश्रीनन्दनन्दनम् ॥ २० ॥ हेमोहनेतिदूरात्त्वमंकंनीत्वागदिष्यसि ॥ यदालालनभावेनभवितानोतदासुखम् ॥ २१ ॥ ॥ श्रीनन्दउवाच ॥ ॥ भवतामाशिषःपुण्यास्त्वातंसौख्यमिदंशुभम् ॥ आज्ञावर्तीह्यहंगोपगोपीनांव्रजवासिनाम् ॥ २२ ॥

माखन, दही, दूध, घृत इनकी भेटके लिये बहँगी लिवायके बूढे २ गोप आसा लियेनंदके महलकें आयेहे ॥ १६ ॥ व्रजेशके पुत्रोत्सवकूं परस्पर कहते, प्रेमके भावते विह्वल भये आनंदके आंसूनसो युक्त आयेहैं ॥ १७ ॥ पुत्रोत्सवके हैवेसों आनंदके आंसूनसों आकुल जाके नेत्र ऐसें नन्दराज गंध पुष्पादिते उन सबको विधिसे पूजन करतभये ॥१८॥ हे व्रजेश ! हे नंद ! देखो तुम्हारें पुत्र नही हो सो तुम्हारे पुत्रोत्सव भयौ है याते सिवाय और कहा मंगल होयगो ॥१९॥ आज ईश्वरने बहुतदिननमे यह शुभदिन दिखायो है हम तो आज कृतकृत्य है जो हे नंद ! तेरे नंदन भया ताके दर्शन पाये ॥ २० ॥ हे व्रजेश ! जब तुम पुत्रकूं गोदीमें लैकें लाड़ लड़ाओगे तब हमकूं सुख होयगो ॥ २१ ॥ तब नंदजी

बोले तुम्हारे आशीर्वाद सब सत्य है याहीते ए शुभ सुख मोकूं भयोहै और मैं तो ब्रजवासीनको तुम्हारी गोप गोपीनकी आज्ञावर्ती हूं ॥ २२ ॥ नारदजी कहे हैं कि, हे राजन् ! नंदजीके बेटा हैवेको अद्भुत उत्सव सुनकें गोपी घरके सब कामकाजनको छोड्कें बलि (भेट) लैकें जल्दीही आवतभई आनंदते भरेहै मन और अंग जिनके ॥ ॥ २३ ॥ आनंद मंदिरको पूर जो अपनों घर तासों इतउतमें होत जल्दी चलवेसों सिथिल हैगये हैं वस्त्र भूषण केश जिनके और हे नरेंद्र ! मार्गमे भूमिमें मोतिनको वर्षावती ॥ २४ ॥ झनकरे बजत जे नूपुर नवीन बाजूबन्द व सुनहरी वस्त्रनको पहिरे मंजीर, हार, मणिनके कुंडल, कोंधनी, कंठसूत्र, भुजानमें कंकण, चेंदी चूदनसों पूर्ण चन्द्रमंडलसे जिनके मुख ऐसी वे गोपी वा समय बडी शोभाको प्राप्त भई है ॥ २५ ॥ राई, नोन, हरदी, गेहूंको, चून, सरसों और जो तिनके लालनको मुखपें उतार २ के डारती गावती तथा

॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ श्रीनन्दराजसुतसंभवमद्भुतंचश्रुत्वाविसृज्यगृहकर्मतदैवगोप्यः ॥ तूर्णंययुःसबलयोव्रजराजगेहानुद्यत्प्रमोदपरिपूरितहृन्मनोंगाः ॥ २३ ॥ आनन्दमंदिरपुरात्स्वगृहान्व्रजंत्यःसर्वाइतस्ततउतत्वरमाव्रजन्त्यः ॥ यानश्लथद्वसनभूषणकेशबन्धारेजुर्नरेंद्रपथिभूपरिमुक्तमुक्ताः ॥ २४ ॥ झंकारनूपुरनवांगदहेमचीरमंजीरहारमणिकुंडलमेखलाभिः ॥ श्रीकंठसूत्रभुजकंकणबिंदुकाभिःपूर्णेंदुमंडलनवद्युतिभिर्विरेजुः ॥ २५ ॥ श्रीराजिकालवणरात्रिविशेषचूर्णैर्गोधूमसर्षपयनैःकरलालनैश्च ॥ उत्तार्यबालकमुखोपरिचाशिषस्ताःसर्वाददुर्नृपजगुर्जगदुर्यशोदाम् ॥ २६ ॥ ॥ श्रीगोप्यऊचुः ॥ ॥ साधुसाधुयशोदेतेदिष्ट्यादिष्ट्याव्रजेश्वरि ॥ धन्याधन्यापराकुक्षिर्यंयायंजनितःसुतः ॥ २७ ॥ इच्छायुक्तंकृतंतेवैदेवेनबहुकालतः॥ रक्षबालंपद्मनेत्रंसुस्मितंश्यामसुन्दरम् ॥ २८ ॥ ॥ श्रीयशोदोवाच ॥ ॥ भवदीयदयाशीर्भिर्जातंसौख्यंदयाचमे ॥ भवतीनामपिपरंदिष्ट्याभूयादतःपरम् ॥ २९ ॥ हेरोहिणिमहाबुद्धेपूजनंतुव्रजौकसाम् ॥ आगतानांसत्कुलानांयथेष्टंहीप्सितंकुरु ॥ ३० ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ रोहिणीराजकन्यापितत्करोदानशीलिनी ॥ तत्रापिनोदितादानेददावतिमहामनाः ॥ ३१ ॥ गौरवर्णादिव्यवासारत्नाभरणभूषिता ॥ व्यचरद्रोहिणीसाक्षात्पूजयंतीव्रजौकसाम् ॥ ३२ ॥

नाचती अनेक आशीर्वाद देतीभई ॥ २६ ॥ हे यशोदे ! साधु २ आजकी सोनेकी घडी है आज बडौ मंगल भयो, हे व्रजेश्वरि ! धन्य है २ तेरी कूंखकूं जा कूखने ऐसो बेटा जन्यौ ॥ २७ ॥ दैवनें बहुतदिननमें तेरो मनोरथ पूर्ण करौ श्यामसुन्दर कमललोचन सुंदर मुसिक्यान है जाकी ऐसे बालककी तू रक्षा कर ॥ ॥ २८ ॥ तब यशोदाजी कहा कहेहै कि, री भेनाहा ! तुम्हारी दया तुम्हारौ आशीर्वाद, ताहीते मोकूं यह सुख भयौ है तुमहूंकूं भगवान् एसो सुख देय ॥ २९ ॥ हे रोहिणि ! हे महाबुद्धे ! व्रजवासीनकौ पूजन करौ और आई जे सत्कुलकी गोपी है तिनको मनोरथ पूरण करौ ॥ ३० ॥ नारदजी कहे हैं कि, रोहिणी तौ राजकन्या है यासो याके हाथ तौ दानी हैं ताहूमें दान करवेकी प्रेरणा कीनीहै तब तौ बडे मनकी अत्यन्त दान दैन लगी ॥ ३१ ॥ गौर जाकौ वर्ण है, दिव्य वस्त्र पहिरे, रत्नके आभूषणनते शोभित,

व्रजवासीनकौ सत्कार करती रोहिणी महलमें साक्षात् विचरतभई ॥३२॥ परिपूर्णतम साक्षात् श्रीकृष्ण जब व्रजमें आये तब नरलोकके तासे बजनलगे तिनकी बड़ी ध्वनि भई॥३३॥ दही, दूध, घृत और नवीन माखनते गोप गोपी हर्षित ह्वैकें आपसम छिडकेंहैं और ऊंचे स्वरते गामेहैं॥३४॥जब गोकुलमें बाहर भीतर सब जगह दूध दहीकी कीच ह्वैगई वा दधि कांदमें बूढेर मोटेर गोप रपट पड़े तब औरने बड़ी हंसी करी ॥३५॥ सूत पौराणिक और वंशके कहनेवारे जगा अमल बुद्धिवारे वंदीजन कहावे है जे समयानुसार बात कहै है ये अनेकनप्रकारसे स्तुति करन लगे ॥३६॥ तिन सबनकूं एक २ कूं न्यारीरे हजार हजार गौ नंदजीने दीनी और कपड़ा, आभूषण, घोडा, हाथी, मोहर येभी दीनी ॥३७॥ सूत, मागध, वंदी जननकूं और सबनपै नंदराज व्रजेश्वरनें धनकी ऐसी वर्षा करी जैसे मेघ बर्षे है ॥३८॥ ऋद्धि, सिद्धि, निधि, वृद्धि, मुक्ति और भुक्ति, घरघरमें, गलीगलीमें, लुढ़कत डोले हैं जिनकी

परिपूर्णतमेसाक्षाच्छ्रीकृष्णेव्रजमागते ॥ नदत्सुनरतूर्येषुजयध्वनिरभून्महान् ॥ ३३ ॥ दधिक्षीरघृतैर्गोपागोप्योहैयंगवैर्नवैः ॥ सिषिचुर्हर्षिता स्तत्रजगुरुच्चैःपरस्परम् ॥ ३४ ॥ बहिरन्तःपुरेजातेसर्वतोदधिकर्दमे ॥ वृद्धाश्चस्थूलदेहाश्चपेतुर्हास्यंकृतंपरैः ॥ ३५ ॥ सूताःपौराणिकाःप्रो क्तामागधावंशशंसकाः ॥ वंदिनस्त्वमलप्रज्ञाःप्रस्तावसदृशोक्तयः ॥ ३६ ॥ तेभ्योनंदोमहाराजसहस्रंगाःपृथक्पृथक् ॥ वासोलंकाररत्नानिहयेभानखिलान्ददौ ॥ ३७ ॥ वंदिभ्योमागधेभ्यश्चसर्वेभ्योबहुलंधनम् ॥ ववर्षधनवद्भूपोनंदराजोव्रजेश्वरः ॥ ३८ ॥ निधिःसिद्धिश्च वृद्धिश्चमुक्तिर्भुक्तिर्गृहेगृहे ॥ वीथ्यांवीथ्यांलुठन्तीनतदिच्छाकस्यचिन्नहि ॥ ३९ ॥ सनत्कुमारकपिलशुकव्यासादिभिःसह ॥ हंसदत्तपुलस्त्याद्यैर्मयाब्रह्माजगामह ॥ ४० ॥ हंसारूढोहेमवर्णोमुकुटीकुंडलीस्फुरन् ॥ चतुर्मुखोवेदकर्ताद्योतयन्मंडलंदिशाम् ॥ ४१ ॥ तथातमनुभूताव्योवृषारूढोमहेश्वरः ॥ रथारूढोरविःसाक्षाद्गजारूढःपुरंदरः ॥ ४२ ॥ वायुश्चखंजनारूढोयमोमहिषवाहनः ॥ धनदःपुष्पकारूढो मृगारूढःक्षपेश्वरः ॥ ४३ ॥ अजारूढोवीतिहोत्रोवरुणोमकरस्थितः ॥ मयूरस्थःकार्तिकेयोभारतीहंसवाहिनी ॥ ४४ ॥ लक्ष्मीचगरुडारूढा दुर्गाख्यासिंहवाहिनी ॥ गोरूपधारिणीपृथ्वीविमानस्थासमाययौ ॥४५॥ दोलारूढादिव्यवर्णामुख्याःषोडशमातृकाः ॥ षष्ठीचशिबिकारूढाखड्गारियष्टिधारिणी ॥ ४६ ॥

कोई इच्छा नहीं करतो भयो ॥ ३९ ॥ तहां सनक, सनंदन, सनत्कुमार, कपिल, शुक, व्यास और हंस, दत्त, पुलस्त्य इनकूं और मोकूं संग लैके ब्रह्माजी आये॥४०॥ सोनेकोसो वर्ण, चार जाके मुख, मुकट कुंडल पहरे, हंसपे बैठो वेदको कर्ता ब्रह्मा दशौं दिशानमें उजीतो करतो आयो ॥ ४१ ॥ तिनके पीछें भूतनको संगलिये महादेवजी नन्दीश्वरपै चढ़कें आये. रथमें बैठकें सूर्य आये और हाथीपे बैठके इन्द्र आयो ॥ ४२ ॥ खंजनपै चढ़के पवन आयो, भैंसापे चढ़कें धर्मराज आयो, पुष्पकमें बैठके कुवेर आयो, मृगपै चन्द्रमा आयो ॥ ४३ ॥ बकरापै चढ़के अग्नि, मगरपै चढ़के वरुण आये, मोरपै चढे स्वामिकार्तिक, हंसपै चढ़िके सरस्वती आई ॥ ४४ ॥ गरुड़पै चढ़िकें लक्ष्मी आई, सिंहपै चढ़ी दुर्गा, गौके रूपते विमानमें बैठके पृथ्वी आई ॥ ४५ ॥ डोलानमें बैठि दिव्यरूप षोडशमातृका आई, खड्ग चक्र और लष्टिकाकूं धरे पालकीमें चढ़ी षष्ठी आई ॥ ४६ ॥

बेंदरपै चढ़के मंगल, भासपै बैठो बुध, कालेमृगपै बैठे बृहस्पति, गेंजपै बैठे शुक्र ॥ ४७ ॥ मगरपै बैठो शनिश्चर, ऊंटपै चढिके राहु ऐसे नौऊ ग्रह किरोड़ बालार्कजैसो तेज जाको ता नंदजीके महलमें आये ॥ ४८ ॥ जो नंदराजको मंदिर गोप गोपीनके झुंडते भरो हो जामें ऐसो कोलाहल हैरह्योहो कि, कानों कान नहीं सुनाई नहीं देय तहां क्षणभर ठहरके सम्पूर्ण देवता चलेगये ॥ ४९ ॥ परिपूर्णतम साक्षात् श्रीकृष्णके बालरूपकूं देखके नमस्कार करके सब स्तुति करनलगे ॥ ५० ॥ तब देवता ब्रह्मादिक श्रीकृष्णकूं देखिके ऋषिनसहित स्तुति करिके ममम विह्वल दंडवत करिके बडे हर्षित है अपनेर धामकूं चले गये ॥ ५१ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां गोलोकखण्डे भाषाटीकायां द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ तब नारदजी कहनलगे के वसुदेवकी कुशल पूछिवेकूं कंसकूं कर देवेके लिये और पुत्रके होयवेकी बधाई देवेकूं नंदराज मथुराकूं चलेगए ॥ १ ॥

मंगलोवानरारूढोभासारूढोबुधःस्मृतः ॥ गीष्पतिःकृष्णसारस्थःशुक्रोगवयवाहनः ॥ ४७ ॥ शनिश्चमकरारूढउष्ट्रस्थःसिंहिकासुतः ॥ कोटिबालार्कसंकाशआययौनंदमंदिरम् ॥ ४८ ॥ कोलाहलसमायुक्तंगोपगोपीगणाकुलम् ॥ नंदमंदिरमभ्येत्यक्षणंस्थित्वाययुःसुराः ॥ ॥ ४९ ॥ परिपूर्णतमंसाक्षाच्छ्रीकृष्णंबालरूपिणम् ॥ नत्वाद्दृष्ट्वातदादेवाश्चक्रुस्तस्यस्तुतिंपराम् ॥ ५० ॥ वीक्ष्यकृष्णंतदादेवाब्रह्माद्याऋषिभिःसह ॥ स्वधामानिययुःसर्वेहर्षिताःप्रेमविह्वलाः ॥ ५१ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांगोलोकखंडेनारदबहुलाश्वसंवादेश्रीकृष्णदर्शनार्थं ब्रह्माद्यागमनंनामद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ शौर्यंनामयपृच्छार्थंकरंदातुंनृपस्यच ॥ पुत्रोत्सवंकथयितुंनंदेश्रीमथुरांगते ॥ १ ॥ कंसेनप्रेषितादुष्टापूतनाघातकारिणी ॥ पुरेषुग्रामघोषेषुचरंतीघर्घरस्वना ॥ २ ॥ अथगोकुलमासाद्यगोपगोपीगणाकुलम् ॥ रूपंदधारसादिव्यंवपुःषोडशवार्षिकम् ॥ ३ ॥ नकेपिरुरुधुर्देवाःसुंदरींतांचगोपिकाः ॥ शचीवाणींरमांरंभांरतिंचक्षिपतीमिव ॥ ॥ ४ ॥ रोहिण्यांचयशोदायांघर्षितायांस्फुरत्कुचा ॥ अंकमादायतंबालंलालयंतीपुनःपुनः ॥ ५ ॥ ददौशिशोर्महाघोराकालकूटावृतस्तनम् ॥ प्राणैःसार्द्धंपपौदुग्धंकद्रोपावृतोहरिः ॥ ६ ॥ मुंचमुंचवदंतीत्थंधावंतीपीडितस्तना ॥ नीत्वावहिर्गतातंवैगतमायाबभूवह ॥ ७ ॥ पतन्नेत्राश्वेतगात्रारुदंतीपतिताभुवि ॥ ननादतेनब्रह्मांडंसतलोकैर्बिलैःसह ॥ ८ ॥

तब कंसने बालघातिनी दुष्टा पूतना भेजी के पुरनमें, गामनमें, घरर शब्दकरत विचरती ॥ २ ॥ जब नंदजीके गोकुलमें आई तब गोपगोपीनको झुंड देखिके दिव्यरूप धारणकरके सोलहवरषकी दिव्य स्त्री हैगई ॥ ३ ॥ तब याको सुंदर रूप देखिके काऊ गोपीने न रोकी ऐसी बनी मानो इंद्राणी, सरस्वती, लक्ष्मी, रंभा, रति, इनतेऊ सुंदर ॥ ४ ॥ याहि देखके रोहिणी यशोदा दोनों धर्षित हेगई, जाके कुचनमें दूध भरो है सो बालक श्रीकृष्णकूं गोदीमें लेके पुनः२ प्यार करतीने ॥ ५ ॥ बालकके मुखमें विषको लिपिटो भयो स्तन देदीनो तब श्रीकृष्णकूं रोष आयगयो सो याको प्राणनसहित दूध पीवन लगे ॥ ६ ॥ जब याके स्तनमें पीडा होनलगी तब तो छोडदे२ ऐसे पुकारत इतउतमें भाजती अपनी मायाकूं भूलिगई और वा बालकको लेके भाजी॥७॥नेत्र पथरायगये श्वेतांग हेगयो रोवती धरती मे जायपरी, तब याके वो रोनेके शब्दसो सातों लोक सातों पाताल

झवाय परे ॥ ८ ॥ द्वीपनसहित पृथ्वी चलायमान हैगई ये एक बडो अद्भुतको तरह भयो, छःकोशके वृक्ष वाकी पीठिके नीचें आयगये ॥ ९ ॥ हे राजन्! तिन वृक्षनको वज्रसे अंग नते चूरण करिडारो तब गोपनके गण वाके घोर शरीरकूं देखके यह बोले ॥ १० ॥ अरे! जाकी गोदीमें जायके बालक कहू न बचे परन्तु वाके वक्षस्थलपै आनन्दते क्रीडा करत हँसते बालककूं ॥ ११ ॥ जो दूध पीकें जम्हाई लैरह्यो है ऐसे श्रीकृष्णकूं देखके गोपीजन सब हँसी बालकको उठायलियो यशोदाजी रोहिणीजी छातीते लगाय अचंभेमें आय गई ॥ १२ ॥ बालककूं लैके सब औरतें रक्षा करनलगी, कालिंदीको जल, मृत्तिका, गौकी पूछको फिरायबो ॥ १३ ॥ गौकी रज, गोबर, गोमूत्रते स्नान कराय यह स्तोत्र पढनलगी ॥ १४ ॥ श्रीकृष्ण तेरेशिरकी रक्षा करौ, वैकुंठ कंठकी रक्षा करौ, श्वेतद्वीपके पति काननकी रक्षा करौ, यज्ञ नासिकाकी रक्षा करौ ॥ १५ ॥ नृसिंह तेरे नेत्रनकी रक्षा करौ, राम तेरी

चचालवसुधाद्वीपैस्तदद्भुतमिवाभवत् ॥ षट्क्रोशंसाद्दहान्दीर्वान्वृक्षान्पृष्ठतलेगतान् ॥ ९ ॥ चूर्णीचकारवपुषावज्रांगेणनृपेश्वर ॥ वदंतस्तेगो पगणावीक्ष्यघोरंवपुर्महत् ॥ १० ॥ अस्योत्संगगेबालोनजीवतिकदाचन ॥ तस्योरसिसानंदंक्रीडंतंसुस्मितंशिशुम् ॥ ११ ॥ दुग्धंपी त्वाजृंभमाणंतंदृष्ट्वाजहृषुःस्त्रियः ॥ यशोदयाचरोहिण्यानिधायोरसिविस्मिताः ॥ १२ ॥ सर्वतोबालकंनीत्वारक्षांचक्रुर्विधानतः ॥ कालिं दीपुण्यमृत्तोयैर्गोपुच्छभ्रमणादिभिः ॥ १३ ॥ गोमूत्रगोरजोभिश्चस्नापयित्वात्विदंजगुः ॥ १४ ॥ ॥ श्रीगोप्यऊचुः ॥ ॥ श्रीकृष्णस्ते शिरःपातुवैकुंठःकंठमेवहि ॥ श्वेतद्वीपपतिःकर्णौनासिकांयज्ञरूपधृक् ॥ १५ ॥ नृसिंहोनेत्रयुग्मंचजिह्वांदशरथात्मजः ॥ अधरावबतात्तेतु नरनारायणावृषी ॥ १६ ॥ कपोलौपातुतेसाक्षात्सनकाद्याःकलाहरेः ॥ भालंतेश्वेतवाराहोनारदोभ्रूलतेवतु ॥ १७ ॥ चिबुकंकपिलः पातुदत्तात्रेयउरोवतु ॥ स्कंधौद्वावृषभःपातुकरौमत्स्यःप्रपातुते ॥ १८ ॥ दोर्दंडंसततंरक्षेत्पृथुःपृथुलविक्रमः ॥ उदरंकमठःपातुनाभिंधन्वन्त रिश्चते ॥ १९ ॥ मोहिनीगुह्यदेशंचकटिंतेवामनोवतु ॥ पृष्ठंपरशुरामश्चतवोरूबादरायणः ॥ २० ॥ बलोजानुद्वयंपातुजंघेबुद्धःप्रपातुते ॥ पादौपातुसगुल्फौचकल्किर्धर्मपतिःप्रभुः ॥ २१ ॥ सर्वरक्षाकरंदिव्यंश्रीकृष्णकवचंपरम् ॥ इदंभगवतादत्तंब्रह्मणेनाभिपंकजे ॥ २२ ॥ ब्रह्मणाशंभवेदत्तंशंभुर्दुर्वाससेददौ ॥ दुर्वासाःश्रीयशोमत्यैप्रादाच्छ्रीनंदमंदिरे ॥ २३ ॥

जीभकी रक्षा करौ, ऋषि नरनारायण तेरे होठनकी रक्षा करौ ॥ १६ ॥ हरिकी कला सनकादिक तेरे कपोलनकी रक्षा करौ श्वेतवाराह तेरे माथेकी रक्षा करौ, नारदजी भ्रूमंडलकी रक्षा करौ ॥ १७ ॥ कपिलदेव तेरी ठोडीकी रक्षा करौ, दत्तात्रेय वक्षस्थलकी रक्षा करौ, ऋषभदेवजी कंधानकी रक्षा करौ, मत्स्यभगवान् हाथनकी रक्षा करौ ॥ १८ ॥ पृथुलपराक्रमी पृथु भुजाकी रक्षा करौ, कच्छपजी उदरकी रक्षा करौ, धन्वंतर नाभिकी रक्षा करौ ॥ १९ ॥ मोहनी गुह्यदेशकी रक्षा करौ, वामनजी करमकी रक्षा करौ, पीठकी परशुरामजी रक्षा करौ, बादरायण ऊरुकी रक्षा करौ ॥ २० ॥ बलदेव घोंटूनकी रक्षा करौ, बुद्धभगवान् पींडुरीनकी रक्षाकरौ, कल्किभगवान् पांवनकी और टकुनानकी रक्षा करौ ॥ २१ ॥ यह सर्व रक्षाको करनहारो दिव्य कृष्णकवच है, यह नारायणने नाभिकमलपै बैठे ब्रह्माजीकूं दीनों है ॥ २२ ॥ तब ब्रह्माने महादेवकूं दीनो, महादेवने दुर्वासाकूं, दुर्वासाने यशोदाकूं नंद मंदिरमे

दीनों ॥ २३ ॥ गोपीनके संग या स्तोत्रते यशोदा रक्षा करके स्तन प्यायके ब्राह्मणनको अनेक दान देतीभई ॥२४॥ तब नंदादिक गोप सब मथुरासे गोकुल पोहोंचे उस बडी घोरा मरीपरी पूतनानामकी राक्षसीको देखके भयसे विकल होतेभये ॥ २५ ॥ तब सब गोप वाके वा देहको टूक २ काटके यमुनाजीके तटपे अनेक चिता लगाय जलायदियो ॥ २६ ॥ तब कृष्णके स्पर्शसो पवित्रभये याके शरीर जरेके धुआमेंसो इलायची, लोंग, चंदन, तगर, अगरकोसो उत्तम गंध निकसोहे ॥ २७ ॥ कहो या लोकमें कृष्णको छोडके और कोनकी शरण जाय जो पतितपावनने पूतनासीहू पापनीको सद्गति देदीनी ॥ २८ ॥ यह वृत्तांत सुनके राजा बहुलाश्व बोले कि, महाराज नारदजी ! ये बालकनकी मारनवारी रांड पूतना कौन ही ! महादुष्टाभिप्रायवारी ये राक्षसी जहर स्तननमें लगाय जाने दूध प्यायो और फिर परमोक्षको कैसे गई सो कहो॥२९॥ तब नारदजी बोले कि हे राजन् ! बलिराजाकी

अनेनरक्षांकृत्वास्यगोपीभिःश्रीयशोमती ॥ पाययित्वास्तनंदानंविप्रेभ्यःप्रददौमहत् ॥ २४ ॥ तदानंदादयोगोपाआययुर्मथुरापुरात् ॥ दृष्ट्वाघोरांपूतनाख्यांबभूवुर्भयविह्वलाः ॥ २५ ॥ छित्त्वाकुठारैस्तद्देहंगोपाःश्रीयमुनातटे ॥ अनेकाश्चचिताःकृत्वादाहयामासुरेवताम् ॥ २६ ॥ एलालवंगश्रीखंडतगरागरुगंधिभृत् ॥ धूमोदग्धस्यदेहस्यपवित्रस्यसमुत्थितः ॥ २७ ॥ अहोकृष्णमृतेकंवाव्रजामशरणंत्विह ॥ पूतनायैमोक्षगतिंददौपतितपावनः ॥२८॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ केयंवाराक्षसीपूर्वंपूतनाबालघातिनी ॥ विषस्तनादुष्टभावापरंमोक्षंकथंगता ॥ ॥ २९ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ बलियज्ञेवामनस्यदृष्ट्वारूपमतःपरम् ॥ बलिकन्यारत्नमालापुत्रस्नेहंचकारह ॥ ३० ॥ एतादृशोयदिभवेद्बालस्तंहिशुचिस्मितम् ॥ पाययामिस्तनंतेनप्रसन्नंमेमनस्तदा ॥ ३१ ॥ बलेःपरमभक्तस्यसुतायैवामनोहरिः ॥ मनोरथस्तुतेभूयान्मनस्यपिवरंददौ ॥ ३२ ॥ साभवद्द्वापरान्तेवैपूतनानामविश्रुता ॥ श्रीकृष्णस्पर्शसंभूतपरंप्रातमनोरथा ॥ ३३ ॥ यःपूतनामोक्षमिमंशृणोतिकृष्णस्यदेवस्यपरात्परस्य ॥ भक्तिर्भवेत्प्रेमयुतापितस्यत्रिवर्गसिद्धिःकिमुमैथिलेन्द्र ॥ ३४ ॥ ॥ इति गर्गसंहितायां गोलोकखंडे नारदबहुलाश्वसंवादे पूतनामोक्षोनामत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ इत्येवंकथितंदिव्यंश्रीकृष्णचरितंवरम् ॥ यःशृणोतिनरोभक्त्यासकृतार्थोनसंशयः ॥ १ ॥

रत्नमाला नाम बेटीने वामनजीको रूप यज्ञमें देखो तब याने विचारकियो कि, ऐसो बेटा मेरे होय ऐसे याने पुत्रके स्नेहमय भाव विचारो ॥ ३० ॥ जो मंदमुस्करातो ऐसो मेरे बालक होय और वाकूं मैं अपने बोबा प्याऊं तब मेरो चित्त प्रसन्न होय ॥ ३१ ॥ तब परमभक्त बलिराजाकी बेटीको आपने अपने मनमेंही ये वर दियो कि, री रत्नमाला ! जा तेरो ये मनोरथ पूरो होयगो ॥ ३२ ॥ तब वोही रत्नमाला द्वापरके अंतमें पूतनानाम विख्यात भई सो वो श्रीकृष्णचंद्रके अंगके स्पर्शको पायके अपने मनोरथको अच्छीतरह प्राप्त भई ॥ ३३ ॥ जो कोई परात्पर श्रीकृष्णके सकाशते जो पूतनाको उद्धार भयो ताको सुनेंहे वो मनुष्य प्रेमयुक्त भक्तिको अधिकारी (पात्र) होयहे, फिर त्रिवर्ग (अर्थ धर्म काम) की सिद्धिको प्राप्त हैजाय तो आश्चर्यही कहाहे ॥ ३४ ॥ इति गर्गसंहितायां गोलोकखंडे भाषाटीकायां पूतनामोक्षणं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ श्रीगर्गजी कहेहैं

सर्वोत्कृष्ट श्रीकृष्णको चरित्र हमने कह्यो, जो कोई मनुष्य याकूं भक्तिसे सुनैहै वो निःसंदेह कृतार्थ होयगो ॥१॥ तब शौनक प्रश्न करनलगे कि, महाराजजी ! ये श्रीकृष्णचरित्र
सुधाखंडसोहू परम मीठो है ताय आपके मुखसो सुनके हम कृतार्थ हैं यामें संदेह नही हैं ॥ २ ॥ सो वो श्रीकृष्णको भक्त शांत जाकी आत्मा संतनमें श्रेष्ठ जो राजा मैथिल है वो
कहा पूछतभयो सो हे तपोधन ! मेरेआगे कहो ॥ ३ ॥ गर्गजी कहे है कि, मैथिलेंद्र राजा हर्षित है प्रेममें विह्वल हैगये सो धर्मात्मा परिपूर्णतम श्रीकृष्णको स्मरण करतो नारदजीते
यह बोल्यो ॥ ४ ॥ भूरिकर्मा तुमने हमें कृतार्थ करदीनों यासो मै बडो धन्य हों क्यों कि, संसारमें भगवतभक्तनको संग बडो दुर्लभ है और दुर्घट है ॥ ५ ॥ श्रीकृष्ण जो साक्षात्
बालक है अद्भुतरूप भक्तवत्सल है आगें कहाकहा अद्भुत चरित्र करते भये हे मुने ! सो कहो ॥ ६ ॥ तब नारदजी बोले हे राजन् ! तैंने भली बात पूछी तूं भगवद्धर्मी है, साधूनको

॥ ॥ श्रीशौनकउवाच ॥ ॥ सुधाखंडंपरंमिष्टंश्रीकृष्णचरितंशुभम् ॥ श्रुत्वात्वन्मुखतःसाक्षात्कृतार्थाःस्मवयंमुने ॥ २ ॥ श्रीकृष्णभक्तः
शांतात्माबहुलाश्वः सतांवरः ॥ अथोमुनिंकिंपप्रच्छतन्मेब्रूहितपोधन ॥३॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ ॥ अथराजामैथिलेंद्रोहर्षितःप्रेमविह्वलः ॥
नारदंप्राहधर्मात्मापरिपूर्णतमंस्मरन् ॥ ४ ॥ ॥ श्रीबहुलाश्वउवाच ॥ ॥ धन्योहंचकृतार्थोहंभवताभूरिकर्मणा ॥ संगोभगवद्भक्तानांदु
र्लभोदुर्घटोस्तिहि ॥ ५ ॥ श्रीकृष्णस्त्वर्भकःसाक्षादद्भुतोभक्तवत्सलः ॥ अग्रेचकारकिंचित्रंचरित्रंवदमेमुने ॥ ६ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥
साधुपृष्टंत्वयाराजन्भवताकृष्णधर्मिणा ॥ संगमःखलुसाधूनांसर्वेषांवितनोतिशम् ॥ ७ ॥ एकदाकृष्णजन्मर्क्षेयशोदानंदगेहिनी ॥ गोपीगो
पान्समाहूयमंगलंचाकरोद्द्विजैः ॥ ८ ॥ रक्तांबरंकनकभूषणभूषितांगंबालंप्रगृह्यकलितांजनपद्मनेत्रम् ॥ श्यामंस्फुरद्धरिनखावृतचंद्रहारंदेवा
न्प्रणम्यसुधनंप्रददौद्विजेभ्यः ॥ ९ ॥ प्रेंखेनिधायनिजमात्मजमाशुगोपींसंपूज्यमंगलदिनेप्रतिगोपिकास्ताः ॥ नैवाशृणोत्सुरुदितस्यसुतस्य
शब्दंगोपेषुमंगलगृहेषुगतागतेषु ॥ १० ॥ तत्रैवकंसखलनोदितउत्कचाख्योदैत्यःप्रभंजनतनुःशकटंयएत्य ॥ बालस्यमूर्ध्नियदिपातयितुंप्र
वृत्तःकृष्णोपितंकिलतताडतुरोदनेन ॥ ११ ॥ चूर्णंगतेथशकटेपतितेचदैत्येत्यक्त्वाप्रभंजनतनुंत्विमलोबभूव ॥ नत्वाहरिंशतहयेनरथेनयुक्तो
गोलोकधामनिजलोकमलंजगाम ॥ १२ ॥

संग सबको कल्याण करै है ॥ ७ ॥ एकदिन श्रीकृष्णके जन्मको नक्षत्र आयो तब नंदरानी यशोदानें गोपी गोपीनकूं बुलायकें और ब्राह्मणनकूं बुलायके मङ्गल करायो ॥ ८ ॥
फिर श्रीकृष्णको शृंगार कीनो, लालजामा, लालदुपट्टा, लालटोपी, सुवर्णके गहनेसे भूषित अंग कर श्यामसुन्दर अंजनलगे कमलसे नेत्र, पन्ना, मोतीनको बघनखासहित चन्द्रहार
आदि गहने पहराय, देवतानकूं दण्डवत् कराय, सुवर्ण, धन, ब्राह्मणनकूं देतभई ॥ ९ ॥ वा मङ्गलदिनमें गोपीनको सत्कार करके अपने बेटाकूं पालनेमे स्वायकें चली आई, सो
श्रीकृष्णकूं भूखलगी तब रोमनलगे, वह बेटाके रुदनको शब्द गोप गोपीनके मङ्गलनिमित्तसो आयबे जायबेमे यशोदाजीनें न सुन्यो ॥ १० ॥ तहां पापी कंसको भेज्यो पवनको
रूप धारणकर उत्कच नाम दैत्य आयो वो गाडापे बैठिकें गाडाकूं श्रीकृष्णके माथेके ऊपर गेरनलग्यो तबही श्रीकृष्णने रोवत रोवत एक लात मारी ॥११॥ वा लातसों गाडाके टूकर

हैगये, दैत्य मरके नीचे आयपर्यो और पवनरूप छोड दिव्यदेह हैगयो श्रीकृष्णकूं दंडवत् करके सो घोडानके रथमें बैठ वो दैत्य निजधाम गोलोककूं चल्यौ गयो ॥ १२ ॥ या शब्दकूं सुनकें नन्दादिक व्रजके लोग और गोपी सब इकट्ठी हैकें बालकनते बोली क्योरे छोराओ! यह गाडा आपही कैसे आयपर्यो तुम जानो हो तो कहो? तब बालक बोले॥१३॥ पालनेमें बैठ्यौ बैठ्यौ दूधकेलिये रोयरह्योहो सो रोवत २ गाडामें लातमारी सो गाडा आयपर्यो ॥ १४ ॥ गोप गोपीनने बालकनकी बात सांच न मानी अचंभो करत यह बोले कि, कहांतो तीन महीनाको बालक और कहां इतने बोझ सो भरो गाडा कहो याकूं कैसे पटकदेयगो ॥ १५ ॥ भूतप्रेतके डरते यशोदाजी बालककूं गोदीमें लैके ब्राह्मणनकूं तृप्ति करके विधिसो यज्ञ करावती भई ॥ १६ ॥ राजा बहुलाश्व बोल्यो हे नारदजी ! यह उत्कच पूर्वजन्मको कौन हो बडी अचंभोहै कि, जो श्रीकृष्णके चरणके छीयेते मोक्षकूं प्राप्त

नंदादयोव्रजजनाव्रजगोपिकाश्चसर्वेसमेत्ययुगपत्पृथुकांस्तदाहुः ॥ एषस्वयंचपतितःशकटःकथंद्विजानीथहेव्रजसुताःसुगताश्चयूयम् ॥ १३ ॥
॥ बालाऊचुः ॥ ॥ प्रेंखस्थोयंक्षिपन्पादौरुदन्दुग्धार्थमेवहि ॥ तताडपादंशकटेतेनेदंशकटंत्वनु ॥१४॥ श्रद्धांनचक्रुर्बालोक्तेगोपागोप्यश्चवि
स्मिताः ॥ त्रैमासिकःक्वबालोयंक्वचैतद्भारभृत्त्वनः ॥ १५ ॥ बालमंकेसंगृहीत्वायशोदाग्रहशंकिता ॥ कारयामासविधिवद्यज्ञंविप्रैःसुतर्पितैः
॥ १६ ॥ ॥ श्रीबहुलाश्वउवाच ॥ ॥ कोयंपूर्वंतु कुशलीदैत्यउत्कचनामभाक् ॥ अहोकृष्णपदस्पर्शाद्गतोमोक्षंमहामुने ॥ १७ ॥
॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ हिरण्याक्षसुतोदैत्यउत्कचोनाममैथिल ॥ लोमशस्याश्रमेगच्छन्वृक्षांश्चूर्णीचकारह ॥ १८ ॥ तंदृष्ट्वास्थूल
देहाढ्यमुत्कचाख्यंमहाबलम् ॥ शशापरोपयुग्विप्रोविदेहोभवदुर्मते ॥ १९ ॥ सर्पकंचुकवद्देहंपतन्कर्मविपाकतः ॥ सद्यस्तच्चरणोपांतेपति
त्वाप्राहदैत्यराट् ॥ २० ॥ ॥ उत्कचउवाच ॥ हेमुनेहेकृपासिंधोकृपांकुरुममोपरि ॥ तेप्रभावंनजानामिदेहमेदेहिहेप्रभो ॥ २१ ॥
॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ तदाप्रसन्नःसमुनिर्दृष्टंनयशतंविधेः ॥ सतांरोषोपिवरदोवरोमोक्षार्थदःकिमु ॥ २२ ॥ ॥ लोमशउवाच ॥ ॥
वातदेहस्तुतेभूयाद्व्यतीतेचाक्षुषांतरे ॥ वैवस्वतांतरेमुक्तिर्भविताचपदाहरेः ॥ २३ ॥

हैगयो ? ॥ १७ ॥ नारदजी कहें हैं हे मैथिल ! ये हिरण्यकश्यपको बेटा उत्कचनाम दैत्य हो सो ये लोमशऋषिके आश्रममें जायकें वृक्षनकूं तोरो करेहो ॥ १८ ॥ या महाबली उत्कचके बडे मोटे देहकूं देख रोषके मारे लोमश शाप देतभये हे दुर्बुद्दे ! तूं विदेह हैजा मरजा ॥ १९ ॥ तब खोटे कर्मके फलते गिरतो २ ये दैत्य सांपकी कांचरी की नाईं या देहको छोडके दैत्यनको राजा वाही समय उनके चरणनमें परके यह बोल्यो ॥२०॥ हे मुने ! हे कृपासिन्धो ! मेरे ऊपर कृपाकरो आपको प्रभाव मैंने नहीं जान्यो है, हे प्रभो ! मोकूं देह देउ ॥ २१ ॥ नारदजी कहे हैं तबही ऋषि प्रसन्न हैगये ब्रह्माकीसो नीति जिननें देखीहै संतनको रोषहू वरको दाताहै फिर वर मोक्ष दाता होय यामेतो कहनोही कहाहै ॥ २२ ॥ तब लोमशऋषि बोले-तेरी पवनकी देह है जाउ और चाक्षुष मन्वंतरके व्यतीत भयेपै वैवस्वत मन्वंतरमें श्रीकृष्णके चरणते तेरी मुक्ति होयगी ॥ २३ ॥

नारदजी कहें हैं याहीतें वो उत्कचदैत्य लोमशके तेजतें मुक्ति हैगयौ यासौं वर और सापके देवेमें समर्थ जे संत हैं तिनके अर्थ मेरो नमस्कार है॥२४॥ एक दिना यशोदा श्रीकृष्णकूं गोदीमें लेके बैठी ही सो श्रीकृष्णने अपनी देहमें बोझ बढायदीनों तब सिलावतमें यशोदाजीपै परवतकोसो बोझ नहीं सह्योगयो ॥ २५ ॥ बिचारनलगी कि, अहो पर्वतके समान ये बालक कैसे हैगयो ऐसे अचंभेमें हैगई, तब श्रीकृष्णकूं तत्काल धरतीमें बैठारदीनो पर काहूतें कही नहीं॥२६॥तबही कंसको प्रेरोभयो तृणावर्त दैत्य महाबली आयो वायुके आवर्ततें सुंदर खेलतेमध्ये बालककूं भभूरेमें उडायके गयो॥२७॥तबही गोकुलमें बडी धूर उडनलगी ताते अंधकार हैगयो और बडो शब्दभी भयो आंखिनमें धूर भरिगई, दोघडीतक यह गति हैगई ॥२८॥तदनंतर यशोदाने आंगनमें बेटा नहीं देखके मूर्च्छितहै रोमनलगी, घरनके शिखरनकूं देखती भई॥२९॥जब कहीं पुत्रको नहीं देखौ तब मूर्च्छित हैके भूमिमें जायपरी, करुणा उपजावत ऊंचे

॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ तस्मादुत्कचदैत्यस्तुमुक्तोलोमशतेजसा ॥ सद्भ्योनमोस्तुयेनूनंसमर्थावरशापयोः ॥ २४ ॥ उत्संगेक्रीडितं बालंलालयंत्येकदानृप ॥ गिरिभारंनसेहेतंवोढुंश्रीनंदगेहिनी ॥ २५ ॥ अहोगिरिसमोबालःकथंस्यादितिविस्मिता ॥ भूमौनिधायतंसद्योनेदं कस्मैजगादह ॥ २६ ॥ कंसप्रणोदितोदैत्यस्तृणावर्तोमहाबलः ॥ जहारबालंक्रीडंतंवातावर्तेनसुंदरम् ॥ २७ ॥ रजोंधकारोभूत्तत्रघोरशब्द श्चगोकुले ॥ रजस्वलानिचक्षूंषिबभूवुर्घटिकाद्वयम् ॥ २८ ॥ ततोयशोदानापश्यत्पुत्रंतंमंदिराजिरे ॥ मोहितारुदतीघोरान्पश्यंतीगृहशे खरान् ॥ २९ ॥ अदृष्ट्वायदापुत्रंपतिताभुविमूर्च्छिता ॥ उच्चैरुरोदकरुणंमृतवत्सायथाहिगौः ॥ ३० ॥ रुरुदुश्चतदागोप्यःप्रेमस्नेहसमा कुलाः ॥ अश्रुमुख्योनंदसूनुंपश्यंत्यस्ताइतस्ततः ॥ ३१ ॥ तृणावर्तोनभःप्राप्तऊर्ध्वंवैलक्षयोजनम् ॥ स्कंधेसुमेरुवद्बालंमन्यमानःप्रपी डितः ॥ ३२ ॥ अथकृष्णंपातयितुंदैत्यस्तत्रसमुद्यतः ॥ गलंजग्राहतस्यापिपरिपूर्णतमःस्वयम् ॥ ३३ ॥ मुंचमुंचेतिगदितेदैत्येकृष्णोद्भुतो र्भकः ॥ गलग्राहेणमहताव्यसुंदैत्यंचकारह ॥ ३४ ॥ तज्ज्योतिःश्रीघनश्यामेलीनंसौदामिनीयथा ॥ दैत्योंबरान्निपतितःशिलायांशिशु नासह ॥ ३५ ॥ विशीर्णावयवस्यापिपतितस्यस्वनेनवै ॥ विनेदुश्चदिशःसर्वाःकंपितंभूमिमंडलम् ॥ ३६ ॥

स्वरतें ऐसे रोवतभई जैसें बछराके मरेतें गौ रोवेहै ॥ ३० ॥ तब औरहू सब गोपी स्नेहसों व्याकुल है रोमन लगी, रोवत २ आंखिनमेंसों सबनके आंसूनकी धार बहनलगी, नंदके बेटाकूं इतउत देखन लगी ॥ ३१ ॥ तृणावर्त ऊपरकूं लाखयोजन ऊंचो आकाशमें चढिगयो तब आप नारमें कंठीकी नाईं श्रीकृष्ण लिपट गये इतनो बोझ बढयो जा बोझको तृणावर्तने सुमेरुपर्वतकी बराबर मान बड़ो पीडित भयो ॥ ३२ ॥ श्रीकृष्णके पटकवेकूं दैत्यने उद्यम कीनो कि, मैं याकूं पटकादेउं तब परिपूर्णतम स्वयं भगवान् याके गलेसों लिपटगये ॥ ३३ ॥ तब छोडिछोडि ऐसे दैत्यके पुकारते सन्ते अद्भुत बालक श्रीकृष्णनें गलेकूं भींचिकें याको प्राणनसों रहित करदियो ॥ ३४ ॥ ताकी देहमेंते एक ज्योति निकसी सो घनश्याम श्रीकृष्णमें समाय गई, जैसें मेघमें बिजली लीन हैजायहै तब यह दैत्य बालकसमेत आकाशमेंते शिलापै आयके पर्यो ॥ ३५ ॥ धरतीमें परनेतें

॥ ३४ ॥

अंग अंग जाके बिखरगये जब ये गिरै तब याके शब्दते दशोंदिशा झनकारउठी और भूमि हलनलगी ॥ ३६ ॥ ताकी पीठपै चुपचाप स्थित ऐसे बालकको देखिकें रोवती २ सब गोपी दौडी२ और बालककों याकी छातीपैतें उठाकें मैय्याकी गोदीमें बैठारिके यह बोलीं ॥ ३७ ॥ हे यशोदे ! तूं मूर्ख है अरी बीर ! तोमें बालकके खिलायवेको तनकभी सहूर नहीं हैं कहेंतेतो तुम रिस हैजाउगी परबो बीर तेरे नेकभी दया नहींहै॥३८॥ बलैरी बीर ! अंधेरेमें अपनी गोदमेंते कोई भी बालककूं धरतीमें बैठारती होयगी निर्दयन तेने ऐसे समय या बालककूं धरतीमें बैठारिदीनों ॥ ३९ ॥ तब यशोदाजी बोली कि, री भैनाहैं मैं नहीं जानूं कि, ये बालक पहाडको सो भारी कैसें हैगयो ताते मेंनें वाँ आँधी भभूडेके महाभयमें बालको धरतीमें बैठारदीनो ॥ ४० ॥ तब गोपी बोली ए कल्याणी ! ए यशोदा ए दारी ! झूंठ मत बोलै ये दूधको बालक रुईकौसी फोइया फूलसी ताकूं पहाड बतावै

तत्पृष्ठस्थंशिशुंतूष्णींरुदंत्योगोपिकास्ततः ॥ ददृशुर्युगपत्सर्वानीत्वामात्रेददुर्जगुः ॥ ३७ ॥ ॥ गोप्यऊचुः ॥ ॥ नयोग्यासियशोदेत्वं बालंलालयितुंमनाक् ॥ नघृणातेक्वचिद्दृष्टाक्रुद्धासिकथितेनवै ॥ ३८ ॥ प्रांतेंधकारेस्वारोहात्कोपिबालंजहातिहि ॥ त्वयानिर्घृणयाभूमौ धृतोबालोमहाभये ॥ ३९ ॥ ॥ श्रीयशोदोवाच ॥ ॥ नजानामिकथंबालोभारीभूतोगिरींद्रवत् ॥ तस्मान्मयाकुतोभूमौचक्रवातेमहा भये ॥ ४० ॥ ॥ गोप्यऊचुः ॥ ॥ मानृपावदकल्याणिहेयशोदेगतव्यथे ॥ अयंदुग्धमुखोबालोलघुःकुसुमतुल्यवत् ॥ ४१ ॥ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ तदागोप्योऽथगोपाश्चनंदाद्याआगतेशिशौ ॥ अतीवमोदंसंप्रापुर्वदंतःकुशलंजनैः ॥ ४२ ॥ यशोदाबालकंनी त्वापाययित्वास्तनंमुहुः ॥ आघ्रायोरसिवस्त्रेणरोहिणींप्राहमोहिता ॥ ४३ ॥ ॥ श्रीयशोदोवाच ॥ ॥ एकोदैवेनदत्तोयंनपुत्रास्तिद्वश्च मे ॥ तस्यापिवहवोरिष्टाआगच्छंतिक्षणेनवै ॥ ४४ ॥ अद्यमृत्युमुखान्मुक्तोभविष्यत्किमतःपरम् ॥ किंकरोमिक्वगच्छामिकुत्रवासोभवेदतः ॥ ॥ ४५ ॥ धनंदेहोगृहंसौधोरत्नानि विविधानिच ॥ सर्वेयांतुह्यवश्यंवैभूयान्मेकुशलीशिशुः ॥ ४६ ॥ हरेर्चादानमिष्टंपूर्तंदेवालयंशतम् ॥ करिष्यामितदाबालोरिष्टेभ्योविजयीयदा ॥ ४७ ॥ एकंबालेनमेसौख्यमंधयष्टिरिवप्रिये ॥ बालंनीत्वागमिष्यामिदेशेरोहिणिनिर्भये ॥४८॥

है ॥ ४१ ॥ नारदजी कहेहैं तब गोपगोपी नन्दादिक आये बालककूं देखिकें बडे खुशी हैगये और आपसमें कुशल पूछनलगे ॥ ४२ ॥ यशोदा बालककूं लैकें स्तन प्यायकें माथो सूंघकें ओढनीते ढकि कें मोहित हैके रोहिणीते बोली ॥ ४३ ॥ देख भेना रोहिणि ! ये एक बेटा दैवने जाने कैसे मोकूं दीनोंहै बहुतसे तो कछु मेरे हैंईनहीं जाऊके ऊपर छिनछिनमें अरिष्ट आमेहै ॥ ४४ ॥ आजतो मृत्युके मुखमेते निकसिकें आयोहै आगें जानें कहा होयगो कहाकरूं कहांजाऊं यहांतेऊ जायके कहां रहूँ ॥४५॥ महल, मंदिर, घर, बाहिर, धन, रतन, देह, भलेही ये सब जातरहौ पर मेरो बालक तो खुशी रहै ॥ ४६ ॥ हरिकी पूजा, दान, धर्म, मंदिर, वापी, कूप ये सब मैं सेकरान बनवाऊंगी जो मेरो बालक खुशी रहैगो तो ॥ ४७ ॥ हे प्यारी ! एक या बालकतेही मोकूं तो सुख है जैसे आंधेरेको लकडिया, सो मैं तो या बालककूं लैकें कहूं निकसिजाऊंगी

जहां निर्भय देश होयगो तहां ॥ ४८ ॥ नारदजी कहेंहैं तबही बड़ेबड़े पंडित ब्राह्मण नंदजीके महलमें आये, तब नंदजीने यशोदाजी समेत पूजन करिके आसनपर बैठारे ॥ ४९ ॥ वे ब्राह्मण नंदजीसे बोले-हे नंदराज ! हे नंदरानी ! सोच मतकरो हम या बालककी रक्षा करेंगे तेरो बालक चिरंजीव रहेगो ॥ ५० ॥ नारदजी कहेंहैं ऐसे कहके द्विजनमें मुख्य जे वे ब्राह्मण हे ये कुशानके अग्रनसो और आमकी कोपलसों पवित्र कलशानके जलनते चारों वेदनके मंत्रनतें रक्षा करत भये ॥ ५१ ॥ और उत्तम स्वस्तिवाचन करायके विधानते यज्ञ कराय विधिपूर्वक अग्निकूं पूजि फेरि बालककी रक्षा करन लगे ॥ ५२ ॥ ब्राह्मण बोले कि, दामोदर तो तेरे चरणनकी रक्षा करौ, विष्टरश्रवा पीडुरीकी रक्षा करौ, हरि जंघाकी रक्षा करौ, परिपूर्णतम नाभिकी रक्षा करौ ॥ ५३ ॥ राधापति कमरकी रक्षा करौ, पीतांबरधारी तेरे पेटकी रक्षा

॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ तदैवविप्राविद्वांसआगतानंदमंदिरम् ॥ यशोदयाच नंदेनपूजिताआसनस्थिताः ॥ ४९ ॥ ॥ श्रीब्राह्मणा ऊचुः ॥ ॥ माशोचंकुरुहेनंदहेयशोदेव्रजेश्वरि ॥ करिष्यामःशिशोरक्षांचिरजीवीभवेदयम् ॥ ५० ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वा द्विजमुख्यास्तेकुशाग्रैर्नवपल्लवैः ॥ पवित्रकलशैस्तोयैर्ऋग्यजुःसामजैःस्तवैः ॥ ५१ ॥ परैःस्वस्त्ययनैर्यज्ञंकारयित्वाविधानतः ॥ अग्निं संपूज्यविधिवद्रक्षांविदधिरेशिशोः ॥ ५२ ॥ ॥ ब्राह्मणाऊचुः ॥ ॥ दामोदरःपातुपादौजानुनीविष्टरश्रवाः ॥ ऊरूपातुहरिर्नाभिंपरिपूर्णतमःस्वयम् ॥ ५३ ॥ कटिंराधापतिःपातुपीतवासास्तवोदरम् ॥ हृदयंपद्मनाभश्चभुजौगोवर्द्धनोद्धरः ॥ ५४ ॥ मुखंचमथुरानाथोद्वारकेशःशिरोवतु ॥ पृष्ठंपात्वसुरध्वंसीसर्वतोभगवान्स्वयम् ॥ ५५ ॥ श्लोकत्रयमिदंस्तोत्रंयःपठेन्मानवःसदा ॥ महासौख्यंभवेत्तस्यनभयंविद्यतेक्वचित् ॥ ५६ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ नंदस्तेभ्योगवांलक्षंसुवर्णंदशलक्षकम् ॥ सहस्रंनवरत्नानांवस्त्रलक्षंददौपरम् ॥ ५७ ॥ गतेषुद्विजमुख्येषुनंदोगोपान्नियम्यच ॥ भोजयामाससंपूज्यवस्त्रैर्भूषैर्मनोहरैः ॥ ५८ ॥ ॥ श्रीबहुलाश्वउवाच ॥ ॥ तृणावर्तःपूर्वकालेकोयंसुकृतकृन्नरः ॥ परिपूर्णतमेसाक्षाच्छ्रीकृष्णेलीनतांगतः ॥ ५९ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ पांडुदेशोद्भवोराजासहस्राक्षःप्रतापवान् ॥ हरिभक्तोधर्मनिष्ठोयज्ञकृद्दानतत्परः ॥ ६० ॥

करौ, पद्मनाभ हृदयकी रक्षा करौ, गोवर्द्धनधारी भुजानकी रक्षा करौ ॥ ५४ ॥ मथुरानाथ मुखकी रक्षा करौ द्वारिकानाथ शिरकी रक्षा करौ असुरध्वंसी पीठिकी रक्षा करौ, स्वयं भगवान् सब ओरते रक्षा करौ ॥ ५५ ॥ यह तीन श्लोकनको स्तोत्र है, जोकोई मनुष्य याकों नित्य पाठ करेगो ताकूं काहूतें भय न होयगो और महा सुखी होयगो ॥ ५६ ॥ नारदजी कहेहैं नंदजीनें उनकूं एक लाख गौ, दशलाख महोर दीनी, हजार रत्न दीने, एक लाख वस्त्र दीने, जहां साक्षात् हरि है तहां कहा अचंभो है ॥५७॥ जब ब्राह्मण चलेगये तब नंदजीनें गोपनकूं बुलाय उन गोपनकूं सुंदर वस्त्र और मनोहर भूषण देके फिर उने खूब अनेकप्रकारके पदार्थनसो भोजन कराये ॥ ५८ ॥ तब बहुलाश्व राजाने नारदजीते प्रश्न कियो कि, यह तृणावर्त पहिले जन्मको कौन हो और याने कहा सुकृत कियोहो जाते परिपूर्णतम श्रीकृष्णमें लीन हैगयो ? ॥५९॥ नारदजी बोले-पांडुदेशको राजा एक सहस्राक्ष प्रतापी होतभयो ये बड़ो

हरिभक्त, धर्मनिष्ठ, यज्ञकर्ता और बड़ो दान करनवारो होतोभयो ॥ ६० ॥ दिव्य लता बेत जामें ऐसे रेवानदीके किनारेपै हजार स्त्रीनकूं संग लैकें रमण करतो विचरतोभयो ॥ ६१ ॥ तहां साक्षात् दुर्वासामुनि आये तिनकूं देखिकें याने दंडवत न करी तब दुर्वासानें शाप दियो हे दुर्बुद्धे ! तू राक्षस हैजा ॥ ६२ ॥ तब यह उनके चरणनमें जायपरो तब प्रसन्न हैकें दुर्वासा याकूं वर देतभये कि, हे राजन् ! श्रीकृष्णके अंगके स्पर्शते तेरी मुक्ति होयगी ॥ ६३ ॥ वोभी दुर्वासाके शापते भूमिमें तृणावर्त भयो सो श्रीकृष्णके शरीर स्पर्शते मोक्षकूं प्राप्त हैगयो ॥ ६४ ॥ इति श्रीगर्गसंहितायां गोलोकखंडे भाषाटीकायां शकटासुरतृणावर्तमोक्षो नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ नारदजी कहैं है-एकसमय श्रीकृष्ण रत्नके पालनेमें सोयरहे कैसे है कि, श्यामसुंदर बालक जननके मनके हरनवारे मंदमुसिक्यान कररहे देखिवेईमें सबके पीड़ाके हरनवारे काजर दिठौना जाके लगिरह्यो

रेवातटेमहादिव्येलतावेत्रसमाकुले ॥ नारीणांचसहस्रेणरममाणश्चचारह ॥ ६१ ॥ दुर्वाससंमुनिंसाक्षादागतंननामह ॥ तदामुनिर्ददौशापं राक्षसोभवदुर्मते ॥ ६२ ॥ पुनस्तत्पदंघ्योःपतितंनृपंप्रादाद्वरंमुनिः ॥ श्रीकृष्णविग्रहस्पर्शान्मुक्तिस्तेभवितानृप ॥ ६३ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ सोपिदुर्वाससःशापात्तृणावर्त्तोभवद्भुवि ॥ श्रीकृष्णविग्रहस्पर्शात्परंमोक्षमवापह ॥ ६४ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांगोलोकखंडेनारदबहुलाश्वसंवादेशकटासुरतृणावर्त्तमोक्षोनामचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ प्रेंखेहरिंकनकरत्नमयेशयानंश्यामंशिशुंजनमनोहरमन्दहासम् ॥ दृष्टचर्तिहारिमपिविंदुधरंयशोदास्वांकेचकारधृतकज्जलपद्मनेत्रम् ॥ १ ॥ पादंपिबंतमतिचंचलमद्भुतांगंवक्रैर्विनीलनवकोमलकेशबंधैः ॥ श्रीपत्रकेहरिनखस्फुरदर्द्धचंद्रंतंलालयन्त्यतिघृणामुदमापगोपी ॥ २ ॥ बालस्यपीतपयसोनृपजृंभितस्यतत्त्वावृतंचवदनेसकलंविराजम् ॥ मातासुराधिपमुखैःप्रयुतंचसर्वंदृष्ट्वापरंभयमवापनिमीलिताक्षी ॥ ३ ॥ राजन्परस्यपरिपूर्णतमस्यसाक्षात्कृष्णस्यविश्वमखिलंकपटेनसाहि ॥ नष्टस्मृतिःपुनरभूत्स्वसुतेघृणार्ताकिंवर्णयामिसुतपोबहुनंदपत्न्याः ॥ ४ ॥ ॥ श्रीबहुलाश्वउवाच ॥ ॥ नंदोयशोदयासार्द्धंकिंचकारतपोमहत् ॥ येनश्रीकृष्णचन्द्रोपिपुत्रीभूतोबभूवह ॥ ५ ॥

कमलसे नेत्रनमें काजल जाके लगिरह्यो तिनकूं मैयानें पालनेमेंतें गोदमें बैठार लीनों ॥ १ ॥ पाँवके अँगुठाकूं चोसिरहे हैं, अतिचंचल हैं, अद्भुत जाको अंग, घुंघराली नीली जाकी अलकावली, लक्ष्मीके चिह्नके ऊपर बघनखा और सोनेको चंद्रमा कठलामें चमकि रह्योहै तिनकूं लड़ावती गोपी यशोदा अतिदयाते गोदमें लेके बड़ेआनंद कूं प्राप्त होतभई ॥ २ ॥ दूध पीकें जब कृष्णने जम्हाई लई तबही मुखमें तत्त्वनमें लिपिट्यो ब्रह्मांड देख्यो, तब माता ब्रह्मादिक देवतान सहित सब जगतकूं देखिके आंख मीचिके भयको प्राप्त भई ॥ ३ ॥ हे राजन्! सबते परेसो परे परिपूर्णतम साक्षात् श्रीकृष्ण कपटते मनुष्यबालक बन ताके मुखमें विश्वको दर्शन करके फिर वाहीकी पुत्रस्नेहमयी मायासो वा विश्वके देखवेकी स्मृति जाको भूलगई सो यशोदा फिर मोहमें आयगई, अहो ! नंदरानीके तपकी मैं कहा बडाई करूं ॥ ४ ॥ बहुलाश्वराजा बोल्यो कि, हे नारदजी ! महाराज नंदने यशोदाजीसहित कौनसो तप कियोहो याते श्रीकृष्ण इनको

बेटा भयो ॥ ५ ॥ अब नारदजी बोले आठ वसु देवता है तिनमें मुख्य द्रोणनामको जो वसु हो ताकी ये धरानाम स्त्री ही, इनके सन्तान नहीं हो ये दोनों बडे हरिभक्त हैं देव तानके राजा है ॥ ६ ॥ एकदिन पुत्रकी जिनके अभिलाषा ऐसे ये दोनों ब्रह्माजीकी आज्ञाते मंदराचल पर्वतपै तप करिवेकूं चलेगये ॥ ७ ॥ तब कंद मूल फलको आहार कियो फिर सूखे पत्ता खाये फिर जल पीके रहे फिर निर्जल रहे ऐसे इनने निर्जनवनमें तप कियो ॥ ८ ॥ तप करत २ जब इनको दशकरोड वर्ष व्यतीत हैगये तब ब्रह्माजी प्रसन्न है इनके पास आयके बोले तुम वर मांगो ॥ ९ ॥ तब तौ वामीमेंते दोनों निकसिकें ब्रह्माजीकूं दण्डोत पूजन करिकें ब्रह्माजीसों यह बोले ॥ १० ॥ परिपूर्णतम जनार्दन श्रीकृष्ण हमारो बेटा होयँ तो जनार्दनमे हे ब्रह्मन् ! हमारी दोनोंनकी निरंतर प्रेमलक्षणा भक्ति होय ॥ ११ ॥ जा भक्तिते हम दुस्तर संसारसमुद्रसे सहजहीमें तरिजायँ हे विधे! हम येही

॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ अष्टानांवसूनांचद्रोणोमुख्योधरापतिः ॥ अनपत्योविष्णुभक्तोदेवराज्यंचकारह ॥ ६ ॥ एकदापुत्रकांक्षीचब्रह्मणानोदितोनृप ॥ मंदराद्रिंगतस्तप्तुंधरयाभार्ययासह ॥ ७ ॥ कंदमूलफलाहारौतस्पर्णाशनौतपः ॥ जलभक्षौततस्तौतुनिर्जलौनिर्जनेस्थितौ ॥ ८ ॥वर्षाणामर्बुदेयातेतपस्तत्तपतोर्द्वयोः ॥ ब्रह्माप्रसन्नस्तावेत्यवरंब्रूहीत्युवाचह ॥ ९ ॥वल्मीकान्निर्गतोद्रोणोधरयाभार्ययासह ॥ नत्वाविधिंचसंपूज्यहर्षितःप्राहतंप्रभुम् ॥१०॥ ॥श्रीद्रोणउवाच ॥ ॥ परिपूर्णतमेकृष्णेपुत्रीभूतेजनार्दने ॥ भक्तिःस्यादावयोर्ब्रह्मन्संततंप्रेमलक्षणा ॥११॥ ययांजसातरंतीहदुस्तरंभवसागरम्॥ नान्यंवरंवांछितंस्यादावयोस्तपतोर्विधे ॥१२॥ ॥ श्रीब्रह्मोवाच ॥ ॥ युवाभ्यांयाचितंयन्मेदुर्घटंदुर्लभंवरम् ॥ तथापिभूयात्सफलंयुवयोरन्यजन्मनि॥१३॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ द्रोणोनंदोभवद्भूमौयशोदासाधरास्मृता ॥ कृष्णोब्रह्मवचःकर्तुंप्राप्तोघोषेपितुःपुरात् ॥ १४ ॥ सुधाखंडात्परंमिष्टंश्रीकृष्णचरितंशुभम् ॥ गंधमादनशृंगेवैनारायणमुखाच्छ्रुतम् ॥ १५ ॥ कृपयाचकृतार्थोहंनरनारायणस्यच ॥ मयातुभ्यंचकथितंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि॥१६॥ ॥श्रीबहुलाश्वउवाच ॥ ॥ नंदगेहेहरिःसाक्षाच्छिशुरूपःसनातनः॥ किंचकारबलेनापितन्मेब्रूहिमहामुने॥ १७ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ एकदाशिष्यसहितोगर्गाचार्योमहामुनिः ॥ शौरिणानोदितःसाक्षाद्ययौनंदस्यमंदिरम् ॥ १८ ॥

वर मांगे है यासो अन्य वर नही मांगेंहे ॥ १२ ॥ तब ब्रह्माजी बोले कि, जो तुमने मांगे यह तौ तुम्हारो वर बडो दुर्लभ और दुर्घट है तोहू तुमारो ये वर जन्मान्तरमें सुफल होयगो ॥ १३ ॥ नारदजी कहे है तब वह द्रोण तो नन्दराय भये, धरा यशोदा भई, श्रीकृष्ण ब्रह्माजीको वचन सत्य करिवेकूं पिताके घरते व्रजमें आयगये ॥ १४ ॥ अमृतखंडतें मीठो यह शुभ श्रीकृष्णको चरित्र है, गन्धमादन पर्वतकी शिखरपै नारायणके मुखसे मैने सुन्योहै ॥ १५ ॥ नरनारायणकी कृपाते मैं कृतार्थ भयोहूँ वोही चरित्र मैंने तेरे आगे कह्योहै अब आगे कहा सुनिवेकी इच्छा करै है ॥ १६ ॥ बहुलाश्व राजा बोल्यो हे महामुने! साक्षात् सनातन हरि बालकरूपते बलदेवके संग कहा २ चरित्र करतभये सो मेरे अगाडी कहो ॥ १७ ॥ तब नारदजी बोले-एक समय शिष्यनसहित गर्गजी महामुनि

साक्षात् वसुदेवके भेजे नंदजीके महलमें आये ॥ १८ ॥ तब नंदरायनें मुनिश्रेष्ठ गर्गको पाद्यादिकनते विधिपूर्वक पूजन करिकें परिक्रमा देकें साष्टांग दंडौत करी फिर यह बोले ॥ १९ ॥ आज हमारे पितर देवता और हमारी गार्हपत्यअग्निभी अति प्रसन्न भये और तुम्हारे चरणकमलकी रेणुते हमारो घरहू पवित्र हेगयो ॥ २० ॥ हे महामुने ! मेरे बेटाको नामकरण करौ क्योंकि, अनेक पुण्य और तीर्थ सेवनतेहू आपकौ आयबौ दुष्प्राप्य नाम कठिन है ॥ २१ ॥ तब गर्गजी बोले तेरे बेटाको नामकरण करूंगो यामे संदेह नहीं है पहली बात कहूंगो याते हे नन्द ! एकांतमें चलौ ॥ २२ ॥ तब नंदजीकूं संग लेकें और कृष्ण बलदेवकूं यशोदाजीकूं संग लेकें गर्गजी वहांसो उठके एकांतमे भवनके खिरकमें जायकें नाम करण करतभये ॥ २३ ॥ गणेशादिकनकूं पूजकें यत्नसों ग्रहनकूं शोधकें महामुनि गर्ग प्रसन्न है नन्दजीते यह

नंदःसंपूज्यविधिवत्पाद्याद्यैर्मुनिसत्तमम् ॥ ततःप्रदक्षिणीकृत्यसाष्टांगंप्रणनामह ॥ १९ ॥ ॥ श्रीनंदउवाच ॥ ॥ अद्यनःपितरोदेवाःसंतुष्टाअग्नयश्चनः ॥ पवित्रंमंदिरंजातंयुष्मच्चरणरेणुभिः ॥ २० ॥ मत्पुत्रनामकरणंकुरुद्विजमहामुने ॥ पुण्यैस्तीर्थैश्चदुष्प्राप्यंभवदागमनंप्रभो ॥ २१ ॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ ॥ तेपुत्रनामकरणंकरिष्यामिनसंशयः ॥ पूर्ववार्तांवदिष्यामिगच्छनंदरहस्थलम् ॥ २२ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ उत्थाप्यगर्गोनन्देनबालाभ्यांचयशोदया ॥ एकांतेगोव्रजेगत्वातयोर्नामचकारह ॥ २३ ॥ संपूज्यगणनाथादीन्ग्रहान्संशोध्ययत्नतः ॥ नंदंप्राहप्रसन्नांगोगर्गाचार्योमहामुनिः ॥ २४ ॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ ॥ रोहिणीनंदनस्यास्यनामोच्चारंशृणुष्वच ॥ रमन्तेयोगिनोह्यस्मिन्सर्वत्ररमतीतिवा ॥ २५ ॥ गुणैश्चरमयन्भक्तांस्तेनरामंविदुःपरे ॥ गर्भसंकर्षणादस्यसंकर्षणइतिस्मृतः ॥ २६ ॥ सर्वावशेषाद्यंशेषंबलाधिक्याद्बलंविदुः ॥ स्वपुत्रस्यापिनामानिशृणुनंदह्यतंद्रितः ॥ २७ ॥ सद्यःप्राणिपवित्राणिजगतांमंगलानिच ॥ ककारःकमलाकांतऋकारोरामइत्यपि ॥ २८ ॥ षकारःषड्गुणपतिःश्वेतद्वीपनिवासकृत् ॥ णकारोनारसिंहोयमकारोह्यक्षरोग्निभुक् ॥ २९ ॥ विसर्गौचतथाह्येतौनरनारायणावृषी ॥ संप्रलीनाश्चषट्पूर्णायस्मिञ्छब्देमहात्मनो ॥ ३० ॥ परिपूर्णतमेसाक्षात्तेनकृष्णःप्रकीर्तितः ॥ शुक्लोरक्तस्तथापीतोवर्णोस्यानुयुगंधृतः ॥ ३१ ॥

बोले ॥ २४ ॥ पहिलें तौ रोहिणीके बेटाके नाम सुनों योगी जामें रमणकरें अथवा आप सर्वत्र रमें सो ये तेरो बेटा राम होयगो ॥ २५ ॥ अथवा अपने गुणनमें भक्तनकूं रमावे तातें एक नाम तौ याको राम है और योगमायाने जो गर्भ खेंच्यौ तातें दूसरौ नाम संकर्षण होयगौ ॥ २६ ॥ सबके पीछें जो शेष रहे याते एक नाम शेष और बलमें अधिक होनेसे एकनाम बलदेव होयगौ हे नंद ! अब तू अपने बेटाके नामनको सावधान हेकें सुन ॥ २७ ॥ या तेरे बेटाके नाम सबही प्राणीनकूं पवित्र करनवारे और जगतकूं मंगल करनहारे हैं ककारको अर्थ तौ कमलाकांत है और ऋकारको अर्थ राम है ॥ २८ ॥ षकारको अर्थ छःऐश्वर्यपूर्ण श्वेतद्वीपपति है णकारके नरसिंह है और अकारको अर्थ अग्निभुक् है ॥ २९ ॥ विसर्ग है सो नर नारायण हैं ये छः और जा शब्दमे में पूर्णरूपसो वर्तमान होय ॥ ३० ॥ सो परिपूर्णतम साक्षात्

कृष्ण नाम होंयगो और सुपेद लाल पीले ये तीन रंग याने तीनों युगनमें धारण कीने हैं ॥ ३१ ॥ अब द्वापरकें अंतमें कलियुगकी आदिमें याने कृष्णरूप धर्योहै ताते यह नंदनन्दन श्रीकृष्ण कहावैगो ॥ ३२ ॥ दूसरो नाम याको वासुदेव है वसु नाम तौ इन्द्रीनको है और इन्द्रीनके देवता और चित्त इनमें जो बास करै सो वासुदेव मानो है ॥ ३३ ॥ वृषभानकी बेटी कीर्तिमे भई राधा जाको नाम ताको ये पति है ताते राधापति कहावैगो ॥ ३४ ॥ ये साक्षात् पुरुषो त्तम परिपूर्णतम अखिल ब्रह्मांडको पति हैं जो गोलोकमें विराजे हैं ॥ ३५ ॥ सोई ये तेरो बेटा भयो है भूमिके भार उतारवेकूं और कंस आदिकनके मारवेके लिये और भक्तनकी रक्षाके लिये ॥ ३६ ॥ हे नंद ! वेदमें गुह्य अनंत याके नाम जो २ लीला करी है तिनके निमित्तसे होंयगे ताते याके कर्मनमें तू कछू अचंभो मत करियो ॥ ३७ ॥ हे नंद

द्वापरांतेकलेरादौ बालोयंकृष्णतांगतः ॥ तस्मात्कृष्णइतिख्यातोनाम्नायंनंदनंदनः ॥ ३२ ॥ वसवश्चेंद्रियाणीतितद्देवाश्चित्तमेवहि ॥ तस्मिन्यश्चेष्टतेसोपिवासुदेवइतिस्मृतः ॥ ३३ ॥ वृषभानुसुताराधायाजातार्कीर्तिमंदिरे ॥ तस्याःपतिरयंसाक्षात्तेनराधापतिःस्मृतः ॥ ३४ ॥ परिपूर्णतमःसाक्षाच्छ्रीकृष्णोभगवान्स्वयम् ॥ असंख्यब्रह्मांडपतिर्गोलोकेधाम्निराजते ॥ ३५ ॥ सोयंतवशिशुर्जातोभारावतरणायच ॥ कंसादीनांवधार्थायभक्तानांरक्षणायच ॥ ३६ ॥ अनंतान्यस्यनामानिवेदगुह्यानिभारत ॥ लीलाभिश्चभविष्यंतितत्कर्मसुनविस्मयः ॥ ३७ ॥ अहो भाग्यंतु तेनंदसाक्षाच्छ्रीपुरुषोत्तमः ॥ त्वद्गृहेवर्तमानोयंशिशुरूपःपरात्परः ॥ ३८ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वाथगतेगर्गेस्वात्मानं पूर्णमाशिषम् ॥ मेनेप्रमुदितः पत्न्यानंदराजोमहामतिः ॥ ३९ ॥ अथगर्गोज्ञानिवरोज्ञानदोमुनिसत्तमः ॥ कालिंदीतीरशोभाढ्यांवृषभानुपुरंगतः ॥ ४० ॥ छत्रेणशोभितंविप्रंद्वितीयमिववासवम् ॥ दंडेनराजितं साक्षाद्धर्मराजमिवस्थितम् ॥ ४१ ॥ तेजसाद्योतितदिशंसाक्षात्सूर्यमिवापरम् ॥ पुस्तकीमेखलायुक्तंद्वितीयमिवपद्मजम् ॥ ४२ ॥ शोभितंशुक्लवासोभिर्देवंविष्णुमिवस्थितम् ॥ तंदृष्ट्वामुनिशार्दूलंसहसोत्थायसादरम् ॥ ४३ ॥ प्रणम्यशिरसासद्यःसंमुखोभूत्कृतांजलिः ॥ मुनिंचपीठकेस्थाप्यपाद्याद्यैरुपचारवित् ॥ ४४ ॥

तेरो अहोभाग्य है जो साक्षात् पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण सो बालरूप तेरे घरमे विराजे हैं जो परे सो परे हैं ॥ ३८ ॥ नारदजी कहें है ऐसें कहकें जब गर्गजी चलेगये तब महामति नंदजी अपनेकूं यशोदासहित पूर्णमनोरथ मानतभये ॥ ३९ ॥ अनंतर गर्गजी ज्ञानके देनवारे ज्ञानीनमें श्रेष्ठ कालिंदीके किनारे अतिसुशोभित वृषभानके पुरमें गये तब वृषभानने देखे कैसे है गर्गजी तिनको वर्णन करेंहैं ॥ ४० ॥ छत्र धारण कररहेंहै याते तौ दूसरे इन्द्रसे दीखें है और दंडको हाथमें लिये ते यमराजसे दीखें हैं ॥ ४१ ॥ तेजते दशों दिशानमें उजीतो हैगयो सो मानों दूसरो सूर्य है पुस्तक लिये और मेखला पहरे याते मानों दूसरे ब्रह्माही हैं ॥ ४२ ॥ सुफेद वस्त्रनसे विष्णुसे दीखें हैं मुनिनमें श्रेष्ठ ऐसे गर्गमुनिकूं देखिकें आदरते वृषभान ठाडे हैगये ॥ ४३ ॥ जल्दीही शिरते दंडौत करिकें शीघ्रही सिंहासनपे बैठारिकें पाद्यादिक सामिग्रीते पूजनकर हाथ जोरके

आगारी खड़े भये ॥४४॥ ज्ञानीनमें श्रेष्ठ गर्गजीकों विधितें पूजन करि परिक्रमा देकें दंडवत करिकें वृषभानवर बोले ॥ ४५ ॥ संतनको डोलिवो शांतिकी करनहारो है गृहस्थीनकी बाधाकूं शांति करें है मनुष्यनके भीतरके अंधकारके दूर करनवारे साधुही हैं सूर्य नही है ॥ ४६ ॥ हे प्रभो ! तुम्हारे दर्शनते हम सब गोप पवित्र हैगये भूलतमें तुमसरीके साधु तीर्थनकूंहूं पवित्र करें हैं ॥ ४७ ॥ सो हे मुने ! एक मेरें राधा नामकी मंगलरूपा कन्या है सो कौनसे वरकूं देऊं सो तुम निश्चय करके कहो ॥ ४८ ॥ तुम सूर्यकी नाई दिव्यदर्शन त्रिलोकीमें विचरो हो सो याके समान जो वर होय ताकूं मैं देऊं ॥ ४९ ॥ नारदजी कहेंहैं कि, तब गर्गजी वृषभानको हाथ पकरकें यमुनाके किनारेपे निर्जन सुंदर एक स्थलमें लेगये ॥ ५० ॥ जहां कालिंदीके जलकी लहरनको कोलाहल है, तहां गोपराजको बैठारके धर्मवेत्ता मुनि वृषभानुते ये बोले ॥ ५१ ॥ हे गोप ! एक मैं गुप्त बात कहूंहूं या बातोको काहूते कहियो

पूजयामासविधिवच्छ्रीगर्गंज्ञानिनांवरम् ॥ ततःप्रदक्षिणीकृत्यवृषभानुवरोमहान् ॥ ४५ ॥ ॥ श्रीवृषभानुरुवाच ॥ ॥ सतांपर्यटनंशांतंगृहिणांशांतयेस्मृतम् ॥ नृणामंतस्तमोहारीसाधुरेवनभास्करः ॥४६॥ तीर्थीभूतावयंगोपाजातास्त्वद्दर्शनात्प्रभो ॥ तीर्थानितीर्थीकुर्वंतित्वादृशाःसाधवःक्षितौ ॥ ४७ ॥ हेमुनेराधिकानामकन्यामेमंगलायना ॥ कस्मैवरायदातव्यावदत्वंमेसुनिश्चितम् ॥ ४८ ॥ त्वंपर्यटन्नर्कइवत्रिलोकींदिव्यदर्शनः ॥ वरोनयासमोयोवैतस्मैदास्यामिकन्यकाम् ॥ ४९ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ हस्तंगृहीत्वाथश्रीगर्गोवृषभानोर्महामुनिः ॥ जगामयमुनातीरंनिर्जनंसुंदरस्थलम् ॥ ५० ॥ कालिंदीजलकल्लोलकोलाहलसमाकुलम् ॥ तत्रोपवेश्यगोपेशंमुनींद्रःप्राहधर्मवित् ॥ ५१ ॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ ॥ हेगोपगुप्तमाख्यानंकथनीयंनचत्वया ॥ परिपूर्णतमःसाक्षाच्छ्रीकृष्णोभगवान्स्वयम् ॥ ५२ ॥ असंख्यब्रह्मांडपतिर्गोलोकेशःपरात्परः ॥ तस्मात्परोवरोनास्तिजातोनंदगृहेपतिः ॥ ५३ ॥ ॥ श्रीवृषभानुरुवाच ॥ ॥ अहोभाग्यमहोभाग्यंनंदस्यापिमहामुने ॥ श्रीकृष्णस्यावतारस्यसर्वंत्वंवदकारणम् ॥ ५४ ॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ ॥ भुवोभारावताराय कंसादीनांवधायच ॥ ब्रह्मणाप्रार्थितःकृष्णोबभूवजगतीतले ॥ ५५ ॥ श्रीकृष्णपट्टराज्ञीयागोलोकेराधिकाऽभिधा ॥ त्वद्गृहेसापिसंजातात्वंनजानासितांपराम् ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ तदाप्रहर्षितोगोपोवृषभानुःसुविस्मितः ॥ कलावतींसमाहूयतयासार्द्धंविचार्यच ॥ ५७ ॥

मती. परिपूर्णतम स्वयं भगवान् साक्षात् श्रीकृष्ण है ॥ ५२ ॥ परेते परें अखिल ब्रह्मांडनके पति गोलोकके ईश्वर एही श्रीकृष्ण हैं, ताते परे तेरी राधाको और कोई वर नही है जाने नंदके घरमें जन्म लीनोंहै ॥ ५३ ॥ तब वृषभानु बोले कि, हे महामुने ! अहोभाग्य तो नंदजीकोही है हे महामुनिजी ! कृष्णके अवतारको सब कारण कहो ॥ ५४ ॥ गर्गजी बोले कि, पृथ्वीको भार उतारिबेकूं कंसादिकनकें मारिबेकूं ब्रह्माजीकी प्रार्थनाते श्रीकृष्ण भगवान् भूमितलमें आये हैं ॥ ५५ ॥ जो श्रीकृष्णकी पटरानी राधा गोलोकमें ही ताने तेरे घरमें जन्म लीनो है तू नही जाने है ॥ ५६ ॥ नारदजी कहेंहैं तब तौ वृषभानु गोप बड़े प्रसन्न भये अचंभौ करनलगे तब तौ कलावतीकूं बुलाय विचार करनलगे ॥ ५७ ॥

राधा, कृष्णको प्रभाव जानके वृषभानु आनन्दके ऑसू छोड़त फिर गर्गजीते ये बोल्यौ ॥ ५८ ॥ हे ब्रह्मन् ! मैं श्रीकृष्णकूं अपनी कमलनयनी राधाकूं देऊंगो तुमनेही मोकूं रस्ता दिखाईहै सो तुमही व्याह करायदीजो ॥ ५९ ॥ तब गर्गजी बोले हे राजन् ! मैं व्याहकूं नही कराऊंगो इनको व्याह भाण्डीरवनमें कालिंदीके किनारेपै होयगो ॥ ६० ॥ वृन्दा वनके समीपमें निर्जन सुन्दर स्थलमें इनके व्याहको ब्रह्माजी आयके करावेंगे ॥ ६१ ॥ तातें हे गोपवर ! तू राधाकूं श्रीकृष्णकी अर्द्धांगी जान यह या लोकमें राजानको चूडामणि तू है और लोकनको चूडामणि गोलोकमंदिर है ॥ ६२ ॥ तुमहू सबरे गोपाल गोलोकते आयेहो सब गोपीहू राधिकाकी इच्छाते आई है ॥ ६३ ॥ याको दर्शन दुर्लभ है और दुर्घट है देवतानकूंहू यज्ञ करेउते नही मिले सो मूर्तिमती राधिका तुम्हारे मंदिरमें विराज रही है ताहि सब गोप गोपी देखें है ॥ ६४ ॥ नारदजी कहें हैं तब तो दोनों स्त्री पुरुष बड़े

राधाकृष्णानुभावंचज्ञात्वागोपवरःपरः ॥ आनंदाश्रुकलांमुंचन्पुनराहमहामुनिम् ॥ ५८ ॥ ॥ श्रीवृषभानुरुवाच ॥ ॥ तस्मैदास्यामिहे ब्रह्मन्कन्यांकमललोचनाम् ॥ त्वयापंथादर्शितोमेत्वयाकार्योयमुद्वहः ॥ ५९ ॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ ॥ अहंनकारयिष्यामिविवाहमनयो र्नृप ॥ तयोर्विवाहोभविताभांडीरेयमुनातटे ॥ ६० ॥ वृंदावनसमीपेचनिर्जनेसुन्दरस्थले ॥ परमेष्ठीसमागत्यविवाहंकारयिष्यति ॥ ६१ ॥ तस्माद्राधांगोपवरविद्ध्यर्धांगींवरस्यच ॥ लोकेचूडामणिःसाक्षाद्राज्ञांगोलोकमंदिरम् ॥ ६२ ॥ यूयंसर्वेपिगोपालागोलोकादागताभुवि ॥ तथागोपीगणागोपगोलोकेराधिकेच्छया ॥ ६३ ॥ यद्दर्शनंदुर्लभमेवदुर्घटंदेवैश्चयज्ञैर्नचजन्मभिःकिमु ॥ सविग्रहांतांतवमंदिराजिरेलक्ष्यं तिगुप्तांबहुगोपगोपिकाः ॥ ६४ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ तदाचविस्मितौराजन्दंपतीहार्षितौपरम् ॥ राधाकृष्णप्रभावंचश्रुत्वाश्रीगर्गमू चतुः ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ दंपतीऊचतुः ॥ ॥ राधाशब्दस्यहेब्रह्मन्व्याख्यानंवदतत्त्वतः ॥ त्वत्तोनसंशयच्छेत्ताकोपिभूमौमहामुने ॥ ६६ ॥ ॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ ॥ सामवेदस्यभावार्थंगंधमादनपर्वते ॥ शिष्येणापिमयातत्रनारायणमुखाच्छ्रुतम् ॥ ६७ ॥ रमयातुरकारःस्या दाकारस्त्वादिगोपिका ॥ धकारोधरयाहिस्यादाकारोविरजानदी ॥ ६८ ॥ श्रीकृष्णस्यपरस्यापिचतुर्धातेजसोभवत् ॥ लीलाभूःश्रीश्च विरजाचतस्रःपत्न्यएवहि ॥ ६९ ॥ संप्रलीनाश्चताःसर्वाराधायांकुंजमंदिरे ॥ परिपूर्णतमांराधांतस्मादाहुर्मनीषिणः ॥ ७० ॥ राधाकृ ष्णेतिहेगोपयेजपंतिपुनःपुनः ॥ चतुष्पदार्थंकितेषांसाक्षात्कृष्णोपिलभ्यते ॥ ७१ ॥

खुसी भये, विस्मित भये और राधा कृष्णके प्रभावको सुनके गर्गजीते ये बोले ॥ ६५ ॥ कि, हे ब्रह्मन् ! राधाशब्दकी व्याख्याको तत्त्वसे करौ हे मुने ! तुमते अधिक या संसारमें संशयको दूर करनहारो और कोऊ नही है ॥ ६६ ॥ तब गर्गजी बोले कि, गंधमादन पर्वतमें सामवेदको भावार्थ जो मैंने नारायणके मुखते सुन्योहै ताहि सुनो ॥ ६७ ॥ रमा को अर्थ रकार आदि, गोपिकाको अर्थ ककार, धराको अर्थ धकार और विरजा नदीको अर्थ आकार है ॥ ६८ ॥ श्रीकृष्णको जो परम तेज है ताके चार रूप भये लीला १, भू २, विरजा ३, श्री ४, ये चार स्त्री भई ॥ ६९ ॥ वे ४ स्त्री कुंजमंदिरमें राधामें लीन हैगई ताते जे बड़े बुद्धिमान् हैं के श्रीराधाजीकूं परिपूर्णतम कहेंहै ॥ ७० ॥ हे गोप !

राधाकृष्ण राधाकृष्ण ऐसें जो कोई वारंवार जपैहैं ताकूं धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, कछू दुर्लभ नहीं है, किंतु जे साक्षात् श्रीकृष्ण हैं वेहू मिलजायहैं ॥ ७१ ॥ नारदजी कहैहैं तब तो वृषभानु स्त्रीसहित बड़ो प्रसन्न भयो, विस्मित हैगयो और राधाकृष्णके प्रभावकूं जानिके आनंदमय हैगये ॥ ७२ ॥ या प्रकार ज्ञानीनमें श्रेष्ठ गर्गजीकूं वृषभानुने जो पूजा की ताको अंगीकार कर सर्ववेत्ता जे मुनि बड़े कवि श्रीगर्गजी हैं, वे अपने घरकूं चलेगए ॥ ७३ ॥ इति श्रीगर्गसंहितायां गोलोकखंडे भाषाटीकायां श्रीकृष्णनामकरणं नाम पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ अब श्रीनारदजी कहैहैं कि, एकदिना गौ चरावत २ नंदजी बेटाकूं गोदीमें लैके खिलावत २ पहले पास फिर दूर भांडीरवनमें जातभये, कालिंदीके तीर जहां मंद २ पवन चलैहै फिर ऐसेही भांडीरवनमें गये ॥ १ ॥ वहां कृष्णकी इच्छातें वड़ी भारी आंधी आई ताके संगही बादर चलेआये आकाश मलीन हैगयो कदंब पर्सेंदूनके हल २ के

॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ तदातिविस्मितोराजन्वृषभानुःप्रियायुतः ॥ राधाकृष्णप्रभावंतंज्ञात्वाऽऽनंदमयोह्यभूत् ॥ ७२ ॥ इत्थं गर्गोज्ञानिवरःपूजितोवृषभानुना ॥ जगामस्वगृहंसाक्षान्मुनींद्रःसर्ववित्कविः ॥ ७३ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांगोलोकखंडेनारदबहुलाश्व संवादेनंदपत्न्याविश्वरूपदर्शनंश्रीकृष्णनामकरणंनामपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ गाश्चारयन्नंदनमंकदेशेसंलालय न्दूरतमंसकाशात् ॥ कालिंदजातीरसमीरकंपितंनंदोपिभांडीरवनंजगाम ॥ १ ॥ कृष्णेच्छयावेगतरोऽथवातोघनैरभून्मेदुरमंबरंच ॥ तमा लनीपद्रुमपल्लवैश्चपतद्भिरेजद्भिरतीवभीकैः ॥ २ ॥ तदांधकारेमहतिप्रजातेबालेरुदत्यंकगतेतिभीते ॥ नंदोभयंप्रापशिशुंसविभ्रद्धरिंपरेशं शरणंजगाम ॥ ३ ॥ तदैवकोट्यर्कसमूहदीप्तिरागच्छतीवाचलतीदिशासु ॥ बभूवतस्यांवृषभानुपुत्रींददर्शराधांनवनंदराजः ॥ ४ ॥ कोटीं दुबिंबद्युतिमादधानांनीलांबरंसुन्दरमादिवर्णम् ॥ मंजीरधीरध्वनिनूपुराणामाबिभ्रतींशब्दमतीवमंजुम् ॥ ५ ॥ कांचीकलाकंकणशब्द मिश्रांहारांगुलीयांगदविस्फुरंतीम् ॥ श्रीनासिकामौक्तिकहंसिकाभिःश्रीकंठचूडामणिकुंडलाढ्याम् ॥ ६ ॥ तत्तेजसाधर्षितआशुनंदोनत्वा धतामाहकृतांजलिःसन् ॥ अयंतुसाक्षात्पुरुषोत्तमस्त्वंप्रियासिमुख्यासिसदैवराधे ॥ ७ ॥ गुप्तंत्विदंगर्गमुखेनवेद्मिगृहाणराधेनिजनाथमं कात् ॥ एनंगृहंप्रापयमेघभीतंवदामिचेत्थंप्रकृतेर्गुणाढ्यम् ॥ ८ ॥

पत्ता झरन लगे भयंकर दीखनलग्यो ॥ २ ॥ तहां वड़े भारी अंधकारमें भयते गोदीके बालक श्रीकृष्ण रोमनलगे, बालककूं भयभीत देखिके बालककूं लिये नंदजीकूंहू भय लग्यो तबही नंदजी परेश भगवानकी शरण प्राप्तभये ॥ ३ ॥ तबही किरोड़ सूर्यकेसे तेजकी जाकी दीप्ति मानो दशों दिशानमें चली आवेहै ता दीप्तिमें नौनंदनके राजाकूं राधाके दर्शन भये ॥ ४ ॥ कैसी है किरोड़ चन्द्रमाकीसी कांतिको और अतिसुंदर आदि वर्ण नीलांबरकूं व मधुर मंद २ बोछिया तथा नूपुरनकी झंकारको धारण करे है ॥ ५ ॥ कोंधनीके घुंघुरु बजैहैं, झांझन बजैहैं, हार, कंकण, छल्ला, अंगूठी, चमकि रहे हैं, नासिकामें सुरवारी हंसिनीसी बेसर लटकि रही है, श्रीकंठ, चूडामणि, कुंडल, पहरे है ॥ ६ ॥ ऐसें वाके रूपकूं देखि नंदजी धर्षित हैके प्रणाम करे, हाथ जोरके बोले कि, ये तो साक्षात् पुराणपुरुष हैं और हे राधे ! त इनकी सदाही प्राणप्यारी है ॥ ७ ॥ गर्गजीके कहेते गुप्त जो तुम्हारो

महिमा है ताहि मैं जानूंहूं याते हे राधे ! मायासो मनुष्य नाव्यवारे अपने नाथकूं तू मेरी गोदमेंसें लेके याकूं घर पहुंचायदेउ यह मेहते डरपैहे ये मेरी प्रार्थना है ॥ ८ ॥ मैं प्राणीमात्रको अलभ्या जो तू है वा तेरे अर्थ नमस्कार करूंहूं तू मेरी रक्षा कर और काहूकी सामर्थ नहीं है, तब राधिकाजी बोली–हे नंद ! मैं तेरे भक्तिभावते प्रसन्न हूं मेरो जो दर्शन है वो अवश्य दुर्लभ ही है ॥ ९ ॥ तब नंदजी बोले–जो तुम मोपै प्रसन्न भईहो तो तुम्हारे दोनोंनके चरणकमलमें मेरी दृढभक्ति होय जुगजुगमे तुमारे भक्तनको संग होय ॥१०॥ नारदजी कहेहै तब राधिका तथास्तु तैसेई होय ऐसे कहिके नंदजीकी गोदमेंते अपने नाथकूं लेके भांडीर बनकूं जाति भई ॥ ११ ॥ गोलोकते जो भूमि आई ही सो अपने स्वरूपकूं धारण करतभई, पद्मराग, पुखराजमणि जामें जडरही ऐसी सुवर्णकी सब भूमि हैगई ॥ १२ ॥ वृंदावनने दिव्यस्वरूप धरिलीनो, कल्पवृक्षकी लता झूमन लगी और सुवर्णमय महल

नमामितुभ्यंभुविरक्षमांत्वंयथेप्सितंसर्वजनैर्दुरापाम् ॥ श्रीराधोवाच ॥ अहंप्रसन्नातवभक्तिभावान्मद्दर्शनंदुर्लभमेवनंद ॥९ ॥ ॥ श्रीनंदउवाच ॥ ॥ यदिप्रसन्नासितदाभवेन्मेभक्तिर्दृढाकौयुवयोःपदाब्जे ॥ सतांचभक्तिस्तवभक्तिभाजांसंगःसदामेऽथयुगेयुगेच ॥ १० ॥ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ तथास्तुचोक्त्वाथहरिंकराभ्यांजग्राहराधानिजनाथमंकात् ॥ गतेऽथनंदेप्रणतेव्रजेशेतदाहिभांडीरवनंजगाम ॥ ॥ ११ ॥ गोलोकलोकाच्चपुरासमागताभूमिर्निजंस्वंवपुरादधाना ॥ यापद्मरागादिखचित्सुवर्णबभूवसातत्क्षणमेवसर्वम् ॥ १२ ॥ वृंदावनंदिव्यवपुर्दधानंवृक्षैर्वरैःकामदुघैस्सहैव ॥ कलिंदपुत्रीचसुवर्णसौधैःश्रीरत्नसोपानमयीबभूव ॥ १३ ॥ गोवर्द्धनोरत्नशिलामयोभूत्सुवर्णशृंगैःपरितःस्फुरद्भिः ॥ मत्तालिभिर्निर्झरसुन्दरीभिर्दरीभिरुच्चांगकरीवराजन् ॥ १४ ॥ तदानिकुंजोपिनिजंवपुर्दधत्सभायुतंप्रांगणदिव्यमंडपम् ॥ वसंतमाधुर्यधरंमधुव्रतैर्मयूरपारावतकोकिलध्वनिम् ॥ १५ ॥ सुवर्णरत्नादिखचिद्भदैर्वृतंपतत्पताकावलिभिर्विराजितम् ॥ सरःस्फुरद्भिर्भ्रमरावलीढितैर्विचर्चितं कांचनचारुपंकजैः ॥ १६ ॥ तदैवसाक्षात्पुरुषोत्तमोत्तमोबभूवकैशोरवपुर्घनप्रभः ॥ पीतांबरःकौस्तुभरत्नभूषणोवंशीधरोमन्मथराशिमोहनः ॥ १७ ॥

मंदिरनसो युक्त रत्ननकी सिढी जाकी ऐसी यमुनाजी हैगई ॥ १३ ॥ जाके रत्ननकी शिला, सुवर्णके शिखर दूरतेई झलमलाय रहेहैं, मतवारे भौंरा वहां गुंजारेहैं, झरना झरें, सुंदर जाकी गुहा ता गोवर्द्धनने ऐसो रूप धरलीनो जैसे सज्योभयो कंचनशरीरवारो हाथी होयहै ॥ १४ ॥ तब ही निकुंजननें अपनो रूप धरिलीनो लतानकेही सभा, कचेरी, छत्री, बँगला, कमारा, आंगन, चौक, दरवजे, बनिगये, वसंत ऋतु आय गई मीठी २ गुंजार भौंरा करनलगे, मोर बोलन लगे, कोकिला बोलनलगीं, पपीहा झंनकारनलगे. कबूतर गुटकन लगे॥१५॥ जिन निकुंजमंदिरनमे सुवर्णके रतनजडे महल मंदिर जिनपे ध्वजानकी पंक्ति फहरायरही जगेजगे जिनमें चलिदान दरवाजेनपे बडे २ झोंधा तिनसों युक्त और मत्तभ्रमरननें जिनके मकरंदको आस्वादन कियो ऐसे हजारन खिले सुनहरी कमलवनयुक्त दिव्य सुंदर सरोवर ॥ १६ ॥ तबही साक्षात् पुरुषोत्तमोत्तम किशोररूप धरे, श्यामसुंदर, पीतांबर ओढे,

कौस्तुभमणि पहरें, वंशी धरें, किरोड़न कामदेवसे सुंदर मदनमोहन ह्वैगये ॥ १७ ॥ हँसत २ भुजाते प्रियाके गलेमें गलबांही डारिकें विवाहके माण्डपमें चलेगये जामें विवाहकी सब सामग्री धरी है, चौक पुरी है, घट धरे हैं, पंचपल्लव, हरी डाभ, केलाके खंभ, वंदनवार बँधिरही हैं, चंदोआ मोतीनकी झालरके टंग रहेहै ॥ १८ ॥ तहां ऊंचे रत्नसिंहासनपै परस्पर दोनों विराजमान.मधुर वाणीते आपसमें बतरावते घनमें बीजुरीकी तरह अत्यंत सुशोभित भये ॥ १९ ॥ तबही आकाशमेंते देवमुख्य श्रीब्रह्माजी आये दोनोंनके चरणनकूं नमस्कार करि उनके सामने बैठके हाथ जोड़ श्रीचतुर्मुख अपने चारों मुखनसों सुंदर वाणीनतें स्तुति करनलगे॥ २० ॥ आपही अनादि और सबको आदि पुरुषोत्तमोत्तम अपने भक्तनके वत्सल, असंख्य ब्रह्मांडनके पति, परेतें परे, श्रीराधाके पति हौ तिनकी मैं शरण प्राप्त होउं ॥ २१ ॥ हे गोलोकनाथ ! तुम्हारी अनेक लीला है और निजलोक (गोलोक) में अनेक लीला विहार करनवारी ये श्रीराधा लीलावती है और जब तुम वैकुंठनाथ होओ हौ तब यह वृषभानुजा राधाही लक्ष्मी होयहै ॥ २२ ॥ जब भूमिमें तुम रामचंद्र होओहो तब यह जानकी होयहै

भुजेनसंगृह्यहसन्प्रियांहरिर्जगाममध्येसुविवाहमंडपम् ॥ विवाहसंभारयुतःसमेखलंसदर्भमृद्वारिघटादिमंडितम् ॥ १८ ॥ तत्रैवसिंहासनउद्गतवरेपरस्परंसंमिलितौविरेजतुः ॥ परंब्रुवंतौमधुरंचदंपतीस्फुरत्प्रभौखेचतडिद्घनाविव ॥ १९ ॥ तदांबराद्देववरोविधिःप्रभुःसमागतस्तस्यपरस्यसंमुखे ॥ नत्वातदंघ्रीउशतीगिराभिःकृतांजलिश्चाहचतुर्मुखोजगौ ॥ २० ॥ ॥ श्रीब्रह्मोवाच ॥ ॥ अनादिमाद्यंपुरुषोत्तमोत्तमं श्रीकृष्णचंद्रंनिजभक्तवत्सलम् ॥ स्वयंत्वसंख्यांडपतिंपरात्परंराधापतिंत्वांशरणंव्रजाम्यहम् ॥ २१ ॥ गोलोकनाथस्त्वमतीवलीलोलीलावतीयंनिजलोकलीला ॥ वैकुंठनाथोसियदात्वमेवलक्ष्मीस्तदेयंवृषभानुजाहि ॥ २२ ॥ त्वंरामचंद्रोजनकात्मजेयंभूमौहरिस्त्वंकमलालयेयम् ॥ यज्ञावतारोसियदातदेयंश्रीदक्षिणास्त्रीपतिपत्निमुख्या ॥ २३ ॥ त्वंनारसिंहोसिरमाहृदीयंनारायणस्त्वंचनरेणयुक्तः ॥ तदात्वियंशांतिरतीवसाक्षाच्छायेवयाताचतवानुरूपा ॥ २४ ॥ त्वंब्रह्मचेयंप्रकृतिस्तटस्थाकालोयदेमांचविदुःप्रधानम् ॥ महान्यदात्वंजगदंकुरोसिराधातदेयंसगुणाचमाया ॥ २५ ॥ यदांतरात्माविदितश्चतुर्भिस्तदात्वियंलक्षणरूपवृत्तिः ॥ यदाविराड्देहधरस्त्वमेवतदाऽखिलंवाभुविधारणेयम् ॥ २६ ॥

जब हरि होओ हौ तब यह कमलालया होयहै, जब यज्ञअवतार धरौहौ तब यही राधा प्रतिपत्नीनमें मुख्य दक्षिणा ह्वैजायहै ॥ २३ ॥ तुम नरसिंह होओहो तब यह रमाहृदी होयहै, जब नरनारायण होओहो तब यह शांति होयहै, या प्रकार ये सदा छायाकी नाईं तुम्हारे अनुरूप रूप धारणकर सदा आपकेई संग रहेहै ॥ २४ ॥ तुम जब ब्रह्मरूप होओहो तब यह तटस्था होके प्रकृति होयहै, जब कालरूप होओहो तब यह प्रधान होयहै और जब तुम जगत्को अंकुर महानरूप होउहौ तब यही राधा सगुणा माया बनजाय है ॥ २५ ॥ और जब तुम मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, इन चारोंनसे विदित अंतरात्मा होउहौ, तब यह लक्षणरूप, और वृत्तिरूप होय है और जब आप विराट्देह धरौहो अथवा अखिलरूप भूमिमें होउहो तब यह पृथ्वीरूपा होय है ॥ २६ ॥

श्यामंचगौरंविदितंद्विधामहस्तवैवसाक्षात्पुरुषोत्तमोत्तम ॥ गोलोकधामाधिपतिंपरेशंपरात्परंत्वांशरणंव्रजाम्यहम् ॥ २७ ॥ सदापठेद्योयुग
लस्तवंपरंगोलोकधामप्रवरंप्रयातिसः ॥ इहैवसौंदर्यसमृद्धिसिद्धयोभवंतितस्यापिनिसर्गतःपुनः ॥ २८ ॥ यदायुवांप्रीतियुतौचदंपतीपरात्प
रौतावनुरूपरूपितौ ॥ तथापिलोकव्यवहारसंग्रहाद्विधिंविवाहस्यतुकारयाम्यहम् ॥ २९ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ तदासउत्थाय
विधिर्हुताशनंप्रज्वाल्यकुंडेस्थितयोस्तयोःपुरः ॥ श्रुतेःकरग्राहविधिंविधानतोविधायधातासमवस्थितोभवत् ॥ ३० ॥ सवाहयामासहरिंच
राधिकांप्रदक्षिणंसप्तहिरण्यरेतसः ॥ ततश्चतौतेप्रणमय्यवेदवित्तौपाठयामासचसप्तमंत्रकम् ॥ ३१ ॥ ततोहरेर्वक्षसिराधिकायाःकरंचसंस्था
प्यहरेःकरंपुनः ॥ श्रीराधिकायाःकिलपृष्ठदेशकेसंस्थाप्यमंत्रांश्चविधिःप्रपाठयन् ॥ ३२ ॥ राधाकराभ्यांप्रददौचमालिकांकिंजल्किनींकृष्ण
गलेऽलिनादिनीम् ॥ हरेःकराभ्यांवृषभानुजागलेततश्चवह्निंप्रणमय्यवेदवित् ॥ ३३ ॥ संवासयामाससुपीठयोश्चतौकृतांजलीमौनयुतौ
पितामहः ॥ तौपाठयामासतुपंचमंत्रकंसमर्प्यराधांचपितेवकन्यकाम् ॥ ३४ ॥ पुष्पाणिदेवाववृषुस्तदानृपविद्याधरीभिर्ननृतुःसुरांगनाः ॥
गंधर्वविद्याधरचारणाःकलंसकिन्नराःकृष्णसुमंगलंजगुः ॥ ३५ ॥ मृदंगवीणामुरुयष्टिवेणवःशंखानकादुंदुभयःसतालकाः ॥ नेदुर्मुहुर्देववरै
र्दिविस्थितैर्जयेत्यभून्मंगलशब्दमुच्चकैः ॥ ३६ ॥

हे पुरुषोत्तमोत्तम जो गौर तेज और श्याम तेज जानोगयो है सो दोऊ तेरोही साक्षातेज हैं और गोलोकधामके पति ब्रह्मादिकनके ईश परेते परे तिनकी मैं शरण प्राप्त भयोहूं ॥२७॥ जो सर्वोत्कृष्ट या युगुलस्तोत्रकूं नित्य पढै वो सर्वलोकोत्तम गोलोकधामको जाय और याही लोकमें वाकों स्वाभाविकी संपूर्ण समृद्धि होयँ ॥ २८ ॥ यद्यपि आप प्रीति युक्त दोनो स्त्री पुरुष हौ और दोनोंनको दोनोंनके अनुरूप रूप है तौऊ लोकव्यवहारके संग्रहके लिये में विवाहकी विधि कराऊंहूं ॥ २९ ॥ नारदजी कहै हैं तब ब्रह्माजी उठके कुण्डमें अग्नि प्रज्वलित करके तिनके अगाड़ीही वेदविधिते परस्पर पाणिग्रहण करायके बैठगये ॥ ३० ॥ तब ब्रह्माजीनें श्रीराधाकृष्ण दोनोंनको अग्निकी सात परिक्रमा दिवायी नमस्कार करायके ब्रह्माजी जे सात मन्त्र है तिनें पढतेभये॥३१॥ ताके पीछे हरिके हृदयपे राधिकाकी हाथ धरायके फिर श्रीकृष्णको हाथ प्रियाजीकी पीठपे धरायके तत्कालीन जे विवाहपद्धयुक्त मन्त्र है तिनें पढ़तेभये ॥ ३२ ॥ राधिकाजीके हाथते भ्रमर जामें गुंजारकरैं ऐसी मकरंदयुक्त कमलनकी माला श्रीकृष्णकूं पहिरवायके श्रीकृष्णके हाथते राधिकाके गलेमें पहिरावतेभये ॥ ३३ ॥ फिर दोनोंनकुं उत्तम सिंहासनपे बैठारे फिर हाथ जोरें मौन धरें बैठे जो राधाकृष्ण तिनकूं पांच मन्त्र पढायकें जैसें पिता कन्याकुं समर्पण करै तैसे करतेभये ॥ ३४ ॥ हे राजन् ! देवतान्ने तब पुष्पनकी वर्षा करी और विद्याधरीनके संग देवांगना नाचनलगीं, वीणा, गन्धर्व, विद्याधर, चारण, किंनर, राधाकृष्णकी मङ्गला श्रक गामनलगे ॥३५॥ और आकाशमें ठाढे देवता मृदंग,वीणा, मुहचंग,बांसुरी, शंख, नागाड़े, मजीरा, चँव, बजामनलगे और उच्चस्वरसो जयजय शब्द करनलगे ॥ ३६ ॥

तब तो स्वयं हरिभगवान् ब्रह्माजीते बोले—हे ब्रह्मन्! तुम अपनों वांछित वर दक्षिणा मांगो तब ब्रह्माजी बोले कि, हे प्रभो! तुम मोकूं अपने चरणकमलकी भक्ति देउ यही दक्षिणा है ॥३७॥ तब तैसेंही होउ ऐसे कहते श्रीराधाकृष्णके चरणकमलकूं बेरबेर शिरसो प्रणाम करके बडे प्रसन्न हैके ब्रह्माजी अपने लोककूं चलेगये ॥३८॥ तब तो निकुंजमें प्रियाजीके दिये भक्ष्य, भोज्य, लेह्य, चोष्य, चार प्रकारके सिद्धान्नकूं मन्द २ हँसते परात्मा श्रीकृष्णने भोजन कियो और श्रीकृष्णनें राधिकाजीकूं चतुर्विधान्न भोजन कराय पानसुपारी बीडी खवाई ॥३९॥ फिर अपने हाथतें प्रियाके हाथकूं पकडके वृन्दावनके लता वृक्षानकूं और श्रीयमुनाजीकी शोभाकूं और वृंदावनकी शोभाकूं राधिकाजीकूं दिखावत यमुना किनारे विचरते २ मधुर २ बतरावते बोलते निकुंजमें पधारे हैं ॥ ४० ॥ जब श्रीमती लतानके कुंजमें जो निकुंज है तामें आय दुबकगये हैं तब शाखाके अंतरमें छिपे और मन्द मुसकान कररहे जो श्रीकृष्ण तिनकों श्रीराधिकाजी देखके आपके पीताम्बरकों पकड खडी हैगई ॥४१॥ फिर श्रीराधिकाजी श्रीकृष्णपेते हाथ छुडाय नूपुरनकी झनकार करती एक हाथके छेटे श्रीकृष्णके

उवाचतत्रैवविधिंहरिःस्वयंयथेप्सितंत्वंवदविप्रदक्षिणाम् ॥ तदाहरिंप्राहविधिःप्रभोमेदेहित्वदंघ्र्योर्निजभक्तिदक्षिणाम् ॥ ३७ ॥ तथास्तुवाक्यंवदतोविधिर्हरेःश्रीराधिकायाश्चपदद्वयंशुभम् ॥ नत्वाकराभ्यांशिरसापुनःपुनर्जगामगेहंप्रणतःप्रहर्षितः ॥ ३८ ॥ ततोनिकुंजेषुचतुर्विधान्नंदिव्यंमनोज्ञंप्रियया प्रदत्तम् ॥ जघासकृष्णःप्रहसन्परात्माकृष्णेनदत्तंकमुकंचराधा ॥ ३९ ॥ ततःकरेणापिकरंप्रियायाहरिर्गृहीत्वाप्रचचालकुंजे ॥ जगामजल्पन्मधुरंप्रपश्यन्वृंदावनंश्रीयमुनालताश्च ॥ ४० ॥ श्रीमल्लताकुंजनिकुंजमध्येनिलीयमानंप्रहसंतमेव ॥ विलोक्यशाखांतरितंचराधाजग्राहपीतांबरमव्रजंती ॥ ४१ ॥ दुद्रावराधाहरिहस्तपद्माझंकारमंघ्र्योःप्रतिकुर्वतीको ॥ निलीयमानायमुनानिकुंजेपुनर्व्रजंती हरिहस्तमात्रात् ॥ ४२ ॥ यथातमालःकलधौतवल्ल्याघनोयथाचंचलयाचकास्ति ॥ नीलोद्रिराजोनिकषाश्मखन्याश्रीराधयाश्रस्तुतथारमण्या ॥ ४३ ॥ श्रीरासरंगेजनवर्जितेपरेरेमेहरीरासरसेनराधया ॥ वृंदावनेभृंगमयूरकूजल्लतेचरत्येवरतीश्वरःपरः ॥ ४४ ॥ श्रीराधयाकृष्णहरिःपरात्माननर्तगोवर्द्धनकंदरासु ॥ मत्तालिपुंप्रस्रवणैःसरोभिर्विराजितासुद्युतिमल्लतासु ॥ ४५ ॥ चकारकृष्णोयमुनांसमेत्यनरंविहारंवृषभानुपुत्र्या ॥ राधाकराल्लक्षदलंसपद्मंधावन्गृहीत्वायमुनाजलेषु ॥ ४६ ॥

आगे आगे यमुनाकी निकुंजमें दुबकवेको पधारी है तब दोडके पकडके नारमें प्रियाजीके गलबाई करलीनी ॥ ४२ ॥ तब जैसें तमालते लिपटी सुनहेरी लता जैसें घनमें लिपटी बिजली और कसौटी की खानसो पन्नाको पहाड शोभित होयहै तैसी श्रीकृष्णके संग शोभितभई ॥ ४३ ॥ जनवर्जित एकांत रासमें श्रीकृष्ण राधाके संग रास रसतें वृन्दावनमें रमतभये जा वृन्दावनमें मोर बोलरहे है, भौंरा गुंजारहे तामें रतिके संग जैसें साक्षात् कामदेव रमण करे तैसें प्रियाके संग आप रमें है ॥ ४४ ॥ मतवारे भौंरा जिनमें गुंजारे झरना और दिव्य सरोवरनसो सुशोभित दिव्य स्वर्णलता जिनमें विद्यमान ऐसी गोवर्द्धनकी कन्दरानमें श्रीराधिकाजीसहित श्रीकृष्ण नृत्य करतेभये ॥ ४५ ॥ फिर श्रीकृष्ण यमुनाजीपै आयके श्रीराधिकाजीके संग सुन्दर विहार करतभये फिर श्रीराधिकाजीके हाथमेंते लाखदलके कमलके फूलकूं छुडायके यमुनाजलमें छिपकगये ॥ ४६ ॥

तब श्रीराधाजीनें श्रीकृष्णकी बांसुरी, छड़ी, और पीतांबर लेके हँसती २ चलीगई जब श्रीकृष्णनें बांसुरी, छड़ी, और पीतांबर मांगें हैं तब श्रीराधाजीने कहा कि, हे महाराज! आप हमें हमारो सहस्रदलकमलपुष्प देउ पुष्प देउगे तो मुरली पीतांबर मिलें नही तो नहीं मिलेंगे ॥ ४७ ॥ जब श्रीकृष्णने कमलको फूल देदीनो तब राधाजीने वन्शी, बेत, पीतांबर दीनो या प्रकारकी यमुनातटपे अनेक लीला पुनः होतीभई ॥ ४८ ॥ ताके अनंतर श्रीप्रभूने भांडीरवनमें प्यारीकी अद्भुत मनमोहन शृंगार मुखमें पत्ररचना, पगतलीनमें महावर, नेत्रनमें कज्जल और दिव्य पुष्प तथा रत्ननसों कीनो है ॥ ४९ ॥ तब तो राधिकाजीहू श्रीकृष्णको शृंगार करवेको उद्यत भई तभी श्रीकृष्ण किशोररूप छोडि के बालकरूप हैगये ॥ ५० ॥ जैसें भयसे रोवते भूमिमें लुढकते बालकरूप नंदजीनें राधाकूं दीने हैं, तैसेही बालक हैगये तिने राधिकाजी देखकें रोमनलगी और यह बोली कि,

राधाहरेःपीतपटंचवंशींवेत्रंगृहीत्वासहसाहसंती ॥ देहीतिवंशींवदतोहरेश्चजगादराधाकमलंनुदेहि ॥ ४७ ॥ तस्यैददौदेववरोथपद्मंराधाददौ पीतपटंचवंशीम् ॥ वेत्रंचतस्मैहरयेतयोःपुनर्बभूवलीलायमुनातटेषु ॥ ४८ ॥ ततश्चभांडीरवनेप्रियायाश्चकारशृङ्गारमलंमनोज्ञम् ॥ पत्रावलीयावककज्जलाद्यैःपुष्पैःसुरत्नैर्व्रजगोपरत्नः ॥ ४९ ॥ हरेश्चशृंगारमलंप्रकर्तुंसमुद्यतातत्रयदाहिराधा ॥ तदैवकृष्णस्तुबभूवबालोविहा यकैशोरवपुःस्वयंहि ॥ ५० ॥ नंदेनदत्तंशिशुमेवयादृशंभूमौलुठंतंप्ररुदंतमभयात् ॥ हरिंविलोक्याशुरुरोदराधिकातनोपिमायांनुकथंहरे मयि ॥ ५१ ॥ इत्थंरुदंतींसहसाविषण्णामाकाशवागाहतदैवराधाम् ॥ शोचंनुराधेइहमाकुरुत्वंमनोरथस्तेभवितापश्चात् ॥ ५२ ॥ श्रुत्वाथराधाहिहरिंगृहीत्वागताशुगेहेव्रजराजपत्न्याः ॥ दत्त्वाचबालंकिलनंदपत्न्याउवाचदत्तंपथितेचभर्त्रा ॥ ५३ ॥ उवाचराधांनृपनंद गेहिनीधन्यासिराधेवृषभानुकन्यके ॥ त्वयाशिशुर्मेपरिरक्षितोभयान्मेघावृतेव्योम्निभयातुरोवने ॥ ५४ ॥ संपूजितासद्गुणश्चाविताससा नंदितासावृषभानुपुत्री ॥ यदाह्वनुज्ञाप्ययशोमतींसाशनैःस्वगेहंनिजगामराधा ॥ ५५ ॥ इत्थंहरेर्गुप्तकथाचवर्णिताराधाविवाहस्यसुमंग लावृता ॥ श्रुताचयैर्वापठिताचपाठितातान्पापवृंदानकदास्पृशंति ॥ ५६ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायां गोलोकखंडे श्रीनारदबहुलाश्वसंवादे श्रीराधिकाविवाहवर्णनंनामषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

हे हरे! मात माया क्यों करौहो ॥ ५१ ॥ ऐसे व्याकुल हैकें रोयरही श्रीराधाके प्रति आकाशवाणी भई हे राधे! तू शोच मति करै तेरो जो मनोरथ है, वो पीछे होयगो ॥५२॥ ऐसे सुनके श्रीराधा श्रीकृष्णकूं लैकें बडी शीघ्रतासों व्रजरानीके घरको गई श्रीकृष्णकूं नंदकी पत्नीको सोंपकें बोली कि, इनै रस्तामें व्रजराज मोकूं देगये है ॥ ५३ ॥ तब नंदरानी राधिकाते बोली हे वृषभानुनंदनी! तुम धन्यहौ तुमनें आज मेरे बालककी या मेहवूंदके भयते बड़ी रक्षा करी यह वनमें मेहते बड़ो डरगयोहै ॥५४॥ ऐसें यशोदाजीनें सन्मान और वाके उत्तम गुणन बड़ाई कीनी तब राधिकाजी प्रसन्न हैके यशोदासों आज्ञा लैकें हौलें २ अपने घरकूं चलीगई ॥ ५५ ॥ या प्रकार हरिकी बडी गुप्त राधिकाजीके विवाहकी मंगल करनवारी कथा वर्णन करीहै याकूं जो कोई सुनैहैं सुनावैहै पढ़े पढावे ताकूं पापसमूह कबहू स्पर्श नही करे हैं ॥ ५६ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां गोलोकखंडे भाषाटीकायां

नारदबहुलाश्वसंवादे श्रीगर्गशिविरविलासवर्णनं नाम पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ नारदजी कहेंहैं याके अनन्तर [illegible]
लसी अत्यंत शुशोभित करतभये ॥ ॥ १ ॥ हे मैथिल ! घुटुअन रेंगते थोरेहि दिननमें व्रजमें [illegible] ॥ २ ॥ [illegible]
दोनो बालक कभी तो गोदीमेंते निकसजाय हैं और कबहू फिर गोदीमें आजाय हैं ॥ ३ ॥ [illegible] और [illegible]
त्रिलोकीकूं मोहित करत व्रजमें बालकलीला करते भये ॥ ४ ॥ कभी व्रजबालकनके संगमें [illegible] ॥
बतभई ॥ ५ ॥ फिर गोदीमेंते उतर आंगनमें [illegible] ॥ ६ ॥

॥ श्रीनारद उवाच ॥ ॥ अथ बालौ कृष्णरामौ गौरश्यामौ मनोहरौ ॥ लीलया चक्रतुस्तत्र सुन्दरौ नन्दमन्दिरे ॥ १ ॥ रिङ्गमाणौ च जानुभ्यां पाणिभ्यां सह मैथिल ॥ व्रजतालेन कालेन व्रजन्तौ मधुरं व्रजे ॥ २ ॥ यशोदया च रोहिण्या लालितौ पोषितौ शिशू ॥ [illegible] मास्थितौ ॥ ३ ॥ मंजीरकिंकिणीरावं कुर्वन्तौ [illegible] ॥ त्रिलोकीमोहनौ [illegible] मायाबालकविग्रहौ ॥ ४ ॥ [illegible] ऽजिरे कुट्टिमे व्रजबालकैश्च ॥ [illegible] प्रांगणमध्यगौ ॥ ५ ॥ [illegible] मात्रेकदेशे पुनरव्रजन्मन्दभावं जंकमाभिनलीला ॥ ६ ॥ [illegible] ॥ [illegible] सुतं सा पमुदं यशोदा ॥ ७ ॥ बालं मुकुंदमतिसुन्दरबालकेलिं दृष्ट्वा परं मुदमवापुरतीव गोप्यः ॥ [illegible] ॥ ८ ॥ श्रीनंदराजव्रजकृत्रिमसिंदकर्पदद्वाव्र [illegible] ॥ [illegible] ॥ ९ ॥ ॥ श्रीगोप्य ऊचुः ॥ ॥ क्वाद्य [illegible] ॥ [illegible] ॥ १० ॥ ऊर्ध्वं [illegible] ॥ [illegible] ॥ ११ ॥ [illegible] ॥ गोविंदसुरसा [illegible] ॥ १२ ॥

सुवर्णके [illegible] ॥ ७ ॥
बालक [illegible]
सब देखतीहैं ॥ ८ ॥ कबहूं तो नंदमंदिरमें [illegible]
[illegible] ॥ ९ ॥ [illegible]
है कह काहूको नजर न लगिजाय ॥ १० ॥ [illegible]

नके दूर करिवेकूं तोकूं दान और गौ, ब्राह्मण, देवता, साधु, वेद इनको पूजन करिवानो चाहिये ॥ १२ ॥ नारदजी कहे हैं तब तो यशोदाजी रोहिणीजी बेटानके कल्याणके लिये वस्त्र, गहने, मोहर, गौ, और अन्न इनके नित्य दान करावती भई ॥ १३ ॥ फिर ब्रजमें सिंहके बच्चाकीसी चितवन जिनकी ऐसे ये दोनों बालकरूप राम कृष्ण पांवन चलनलगे और दिन प्रतिदिन बड़े होनलगे ॥ १४ ॥ श्रीदामा सुबलते आदिलैके जे बराबरके ब्रजबालक तिनके संग यमुनाजीकी रेतीमें अनेकप्रकार खेल करते लोटयो करें हैं ॥ १५ ॥ फिर कालिंदीके किनारेके शाल, ताल, तमाल, और कदंबनकी निकुंजनकी शोभायुक्त बगीचानमें जायके रामकृष्ण विचरनलगे हैं ॥ १६ ॥ गोप गोपीनकूं बाललीलाते आनंद देते भगवान् बराबरके बालकनके संग माखन चुरामनलगे ॥ १७ ॥ एकसमय उपनन्दकी स्त्री प्रभावती-नंदके मंदिरमें आयके यशोदाजीते यह बोली

॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ तदायशोदारोहिण्यौसुतकल्याणहेतवे ॥ वस्त्ररत्नगवान्नानांदानंनित्यंचचक्रतुः ॥ १३ ॥ अथव्रजेरामकृष्णौबाल सिंहावलोकनौ ॥ पद्भ्यांचलंतौवोपेषुवर्द्धमानौबभूवतुः ॥ १४ ॥ श्रीदामसुबलाद्यैश्चवयस्यैर्व्रजबालकैः ॥ यमुनासिकतेशुवेलुठंतौसकुतू हलौ ॥ १५ ॥ कालिंद्युपवनेश्यामैस्तमालैःसघनैर्वृते ॥ कदंबकुंजशोभाढ्येचेरतूरामकेशवौ ॥ १६ ॥ जनयन्गोपगोपीनामानंदंबालली लया ॥ वयस्यैश्चोरयामासनवनीतंघृतंहरिः ॥ १७ ॥ एकदाह्युपनंदस्यपत्नीनाम्नाप्रभावती ॥ श्रीनंदमंदिरंप्राप्तायशोदांप्राहगोपिका ॥ ॥ १८ ॥ ॥ प्रभावत्युवाच ॥ ॥ नवनीतंघृतंदुग्धंदधितक्रंयशोमति ॥ आवयोर्भेदरहितंत्वत्प्रसादाच्चमेभवत् ॥ १९ ॥ नाहंवदामिचाने नस्तेयंकुत्रापिशिक्षितम् ॥ शिक्षांकरोषिनसुतेनवनीतमुपिस्वतः ॥ २० ॥ यदामयाकृताशिक्षातदाधृष्टस्तवांगजः ॥ गालिप्रदानंदत्त्वायंद्र वतिप्रांगणान्मम ॥ २१ ॥ व्रजाधीशस्यपुत्रोयंभूत्वास्तेयंसमाचरेत् ॥ नमयाकथितंकिंचिद्यशोदेतवगौरवात् ॥ २२ ॥ ॥ श्रीनारद उवाच ॥ ॥ श्रुत्वाप्रभावतीवाक्यंयशोदानंदगेहिनी ॥ बालंनिर्भर्त्स्यंतामाहसाम्नाप्रेमपरायणा ॥ २३ ॥ ॥ श्रीयशोदोवाच ॥ ॥ गवांकोटिर्गृहेमेस्तिगोरसैरार्दिताचला ॥ नजानेदधिदुग्धंबालंनात्तिसोत्रकदाचन ॥ २४ ॥ अनेनमुषितंगव्यंतत्समंत्वंगृहाणमे ॥ तेशिशौमे शिशोर्भेदोनास्तिकिंचित्प्रभावति ॥ २५ ॥

॥ १८ ॥ हे यशोमति ! दही, दूध, मठा, माखन, हमारो तुम्हारो सब एक है और तुम्हारीही कृपाते हमारे भयेहैं ॥ १९ ॥ पन में नहीं जानूंहूं यानें चुरायवो कहांते सीख्यो है तू या माखनचोर अपने बेटाकूं सीख नाही देय है देख यह अच्छी बात नहीं है ॥ २० ॥ जब मैंने याकूं सीख दीनी तो देख ढीठ ये तेरोबेटा गारी देके मेरे आंगनमेते भाजआयो है ॥ २१ ॥ देख ब्रजाधीशको बेटा हैके चोरी करेहै तेरे गौरवसुलायजेते हे यशोदे ! मैंने कछु नहीं कही ॥ २२ ॥ श्रीनारदजी कहे है नन्दकी रानी यशोदा प्रभावतीकी वचन सुनिके बालककूं ललकारिके बड़े प्रेमते प्रभावतीसों ये बोली ॥ २३ ॥ सुन री वीर ! प्रभावती मेरे घरमें एककिरोड गौ ऐसी है कि, जिनके दही दूध माखनते घरकी धरतीमें कीच रही आवे है पन मैं यह नहीं जानूंहूं कि, तेरोही दही दूध जाने कैसे चुरायलावेहै यहां तो नेंकहूभी कभी नाही खाय ॥ २४ ॥ सो यानें जितनो तेरो दही

माखन चुरायौ है वितनौं तूं मोपैते लैजा और देख बीर ! तेरे बेटा मेरे बेटामें भेद नहींहै॥२५॥ परन्तु देख जा काऊ दिन तू याकूं खातमें पकड लावेगी ता दिन मे जानूंगी हे प्रभावती ! तवही याकूं ललकारूंगी और बांधूंगी ॥ २६ ॥ नारदजी कहें हैं ऐसे व्रजरानीके बचन सुनिकें प्रभावती प्रसन्न हैकें घरकूं चलीआई ॥ २७ ॥ फिर एक दिन श्रीकृष्ण बरा बरके बालकनकूं लेके याके घर चोरीकूं गये भीतके नीचें ठाढेभये हाथते हाथ पकडकें हौलें २ भीतर गये ॥ २८ ॥ तब छींकेपै धरो गोरस देख्यो जहां हाथ न पहुंचे तब उलूखल धरयौ वापै पीढा धरयौ तापै गोपकूं ठाढो कर ताके ऊपर आप चढगये ॥ २९ ॥ तौऊ ऊंचौ रह्यो छींकेपै हाथ न पोहुंचे तब श्रीदामा सुबलनें लकुटते फोरयौ तब बासन फूटगयौ तामेंते गोरस चुचाय निकस्यो ॥ ३० ॥ धरतीपै परयौ ताकूं श्रीकृष्ण खानलगे और बालकनकूं बन्दरन्कूंहूं खवावनलगे ॥३१॥ फूटे बासनकी आहट सुनेकें प्रभावती चलीआई तब

नवनीतमुखंचैनमत्रत्वंह्यानयिष्यसि ॥ तदाशिक्षांकरिष्यामिभर्त्सनंबंधनंतथा ॥ २६ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ श्रुत्वावाक्यंतदागोपीप्रसन्नागृहमागता ॥ एकदादधिचौर्यार्थंकृष्णस्तस्यागृहंगतः ॥२७॥ वयस्यैर्बालकैःसार्द्धंपार्श्वकुड्येगृहस्यच ॥ हस्ताद्धस्तंसंगृहीत्वाशनैःकृष्णोविवेशह ॥२८॥ शिक्यस्थंगोरसंदृष्ट्वाहस्ताग्राह्यंहरिःस्वयम् ॥ उलूखलेपीठकेचगोपान्स्थाप्यारुरोहतम् ॥२९॥ तदपिप्रांशुनालभ्यंगोरसंशिक्यसंस्थितम् ॥ श्रीदाम्नासुबलेनापिदंडेनापितताडच ॥ ३० ॥ भग्नभांडात्सर्वंगव्यंववहद्भूमौमनोहरम् ॥ जघाससबलोमर्कैर्बालकैःसहमाधवः ॥ ३१ ॥ भग्नभांडस्वनंश्रुत्वाप्राप्तागोपीप्रभावती ॥ पलायितेषुबालेषुजग्राहश्रीकरंहरेः ॥ ३२ ॥ नीत्वामृपाश्वंभीरुंचगच्छन्तीनन्दमंदिरम् ॥ अग्रेनन्दंस्थितंदृष्ट्वामुखेवस्त्रंचकारह ॥ ३३ ॥ हरिर्विचिंतयन्नित्थंमातादंडंप्रदास्यति ॥ दधारतद्बालरूपंस्वच्छन्दगतिरीश्वरः ॥ ॥ ३४ ॥ सायशोदांसमेत्याशुप्राहगोपीरुषान्विता ॥ भांडंभग्नीकृतंसर्वंमुषितंदध्यनेनवै ॥३५॥ यशोदातत्सुतंवीक्ष्यहसंतीप्राहगोपिकाम् ॥ वस्त्रांतंचमुखाद्गोपिदूरीकृत्यवदांहसः ॥ ३६ ॥ अपवादोयदादेयोनिर्वासंकुरुमेपुरात् ॥ युष्मत्पुत्रकृतंचौर्यमस्मत्पुत्रकृतंभवेत् ॥ ३७ ॥ जनलज्जासमायुक्तादूरीकृत्यमुखांबरम् ॥ सापिप्राहनिजंबालंवीक्ष्यविस्मितमानसा ॥ ३८ ॥

और बालक तौ भाजगये श्रीकृष्णकौ हाथ पकडलीनौं ॥ ३२ ॥ जब श्रीकृष्ण डूंढईकूं रोमनलगे तिनकी बांह पकडकें वह गोपी नन्दमहलकूं लैचली, अगारी नन्दजीकूं बैठे देखकें घूँघट मारलीयौ ॥ ३३ ॥ श्रीकृष्णने चितमन कीनी कै मैया देखेगी तौ मारेगी तब स्वच्छन्दगति श्रीकृष्णनें वाके बेटाकौ रूप धरलीनौं ॥ ३४ ॥ वह गोपी यशोदाके पास आयकें बडी रिसियायकें यह बोली ॥ ३५ ॥ कि, देख री बीर ! देखलै मेरो सबरौ दही खायौ और चुरायौ है और चौकनी हंडि याहू फोरडारी, तब यशोदा याहीके बेटाकूं देखकर हँसके गोपीते बोली नैंक घूँघट तौ उघार ता पीछे दोषको कहियो ॥ ३६ ॥ देख री बीर ! जो तूं नाहक्कूं लालाको दोष देयहै तो मेरे गोकुलमेंते निकसजा जो अपने बेटाकी करी चोरीको मेरे बेटाकों लगावै है ॥ ३७ ॥ तब लाजके मारें ही जो घूँघट खोलकें, देखे तौ अपनोंही बालक है ताकूं देखकें अचंभेमें आयके बोली ॥ ३८ ॥

अरे निगोडे तूं कहांते आयगयौ व्रजकौ सार तौ मेरे हाथ हो ऐसें कहतभई बालककूं लैकें नन्दमहलते लिसआयके चलीआई ॥ ३९ ॥ यशोदा, रोहिणी, नन्दजी, बलदेव, गोप, गोपी, हँसत हँसत यह बोले अरे मैयाओ ! देखो व्रजमें ये बडौ अन्याय है ॥ ४० ॥ तब नंदनंदन भगवान् तौ बाहर गलीमे आयकें हँसत बडे ढीठ चंचलनेत्रवारे या प्रभावतीसों यह बोले ॥ ४१ ॥ हे गोपिके ! जो तूं मोकूं अब फिर पकडैगी तौ मैं तेरे खसमको रूप धारण करलेऊंगो यामें सन्देह मत समझियो ॥ ४२ ॥ नारदजी कहें हैं कि, हे मैथिल ! या बातकूं सुनिके वह गोपी विस्मित है अपने घरकूं चलीगई ॥ ४३ ॥ इति श्रीगर्गसंहितायां गोलोकखण्डे भाषाटीकायां बालचरित्रे दधिस्तेयवर्णनं नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ नारदजी कहें हैं माखनचोर गोपीनके घरनमें विचरे है श्यामसुन्दर मनोहर रूप नव कमल दललोचन बालचन्द्रमासे बढ़त नरनको चित्त हरत

निष्पदस्त्वंकुतःप्राप्तोव्रजसारोस्तिमेकरे ॥ वदन्तीत्थंचतंनीत्वानिर्गतानन्दमन्दिरात् ॥ ३९ ॥ यशोदारोहिणीनंदोरामोगोपाश्चगोपिकाः ॥
जहसुःकथयंतस्तेदृश्योन्यायोव्रजेमहान् ॥ ४० ॥ भगवांस्तुवहिर्वीथ्यांभूत्वाश्रीनन्दनन्दनः ॥ प्रहसन्गोपिकांप्राहधृष्टांगश्चंचलेक्षणः ॥
॥ ४१ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ पुनर्मायदिगृह्णासिकदाचित्त्वंहिगोपिके ॥ तेभर्तृरूपस्तुतदाभविष्यामिनसंशयः ॥ ४२ ॥
॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ श्रुत्वासाविस्मितागोपीगतागेहेथमैथिल ॥ तदासर्वगृहेगोप्योनगृह्णन्तिहरिंह्रिया ॥ ४३ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसं
हितायांगोलोकखंडेश्रीनारदबहुलाश्वसंवादेश्रीकृष्णबालचरित्रेदधिस्तेयवर्णनंनामसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥
गोपीगृहेषुविचरन्नवनीतचौरःश्यामोमनोहरवपुर्नवकंजनेत्रः ॥ श्रीबालचन्द्रइववृद्धिगतोनराणांचित्तंहरन्विचचारव्रजेचशोभाम् ॥ १ ॥
श्रीनंदनंदनमतीवचलंगृहीत्वागेहेंनिधायसुमुहुर्नवनंदगोपाः ॥ सत्कंदुकैश्चसततंपरिपालयंतेगायंतऊर्जितसुखानजगत्स्मरंतः ॥ २ ॥ ॥
॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ नवोपनंदनामानिवददेवऋषेमम ॥ अहोभाग्यंतुयेषांवैतेपूर्वकेइहागताः ॥ ३ ॥ तथावृषभानूनांकर्माणिमंगलानिच ॥
॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ गयश्चविमलःश्रीशःश्रीधरोमंगलायनः ॥ ४ ॥ मंगलोरंगवल्लीशोरंगोजिद्देवनायकः ॥ नवनंदाश्चकथिताबभू
वुर्गोकुलेव्रजे ॥ ५ ॥ वीतिहोत्रोग्निभुक्सांबः श्रीकरोगोपतिःश्रुतः ॥ व्रजेशःपावनःशांतउपनंदाःप्रकीर्तिताः ॥ ६ ॥

व्रजमें शोभा करतेभये ॥ १ ॥ अतिचंचल श्रीनंदनंदनकूं पकडके अपने घरमें बैठारिकें नौऔ नन्द अत्यंत मोहित हैगये सुन्दर गेंद बनाय खिलामें है गामे है घरके सुख छोडिदिये है कृष्णके आनन्दमे काहूकी यादि नहीं करें है ॥ २ ॥ राजा प्रश्न करैहै कि, हे देवर्षे ! नौ नन्द और नौ उपनंदनके नाम मोते कहौ इनको बडौ भाग्य है ये पूर्वजन्मके कोन हे ॥ ३ ॥ तैसेई ये छै वृषभानु पूर्वजन्मके कौन है इनके मङ्गलरूप कर्मनको कहौ तब नारदजी बोले कि, गय, विमल, श्रीश, श्रीधर, मंगलायन ॥ ४ ॥ मंगल, रंगवल्लीश, रंगोजि, देवनायक, ये नौ नंद हैं, ये व्रजमें जो गोकुल तामें होतेभये ॥ ५ ॥ और वीतिहोत्र, अग्निभुक, साम्ब,

श्रीकर, गोपति, श्रुत, व्रजेश, पावन, और शांत, ये नौ उपनंद कहे हैं ॥ ६ ॥ और नीतिवित्, मार्गद, शुक्र, पतंग, दिव्यवाहन, गोपेष्ट, ये छः व्रजमें वृषभानु हैं ॥ ७ ॥ ये गोलोकमें निकुंजके द्वारनपै रहनवारे वेत लीये श्यामलअंग श्रीकृष्णकी निकुंजके रखवारे नौ नंद हैं ॥ ८ ॥ और निकुंजनमें जे किरोडन गौ हैं तिनके पालनमें तत्पर मोरपंख धरें हैं बांसुरी बजामें है ते ९ उपनंद है ॥ ९ ॥ और निकुंजरूप किलेकी रक्षाके लीये दंड पाशी इनकूं धारण करेंहैं छः द्रवज्जेनपै रहे हैं वे छः वृषभानु कहे हैं ॥ १० ॥ ये श्रीकृष्णकी इच्छाते सबरे गोलोकते भूमिमें आयेहै तिनके प्रभाव वर्णन करिवेको ब्रह्माजीहू समर्थ नही हैं ॥ ११ ॥ मैं तिनके भाग्यनको महोदय कहा वर्णन करूं जिनकी गोदीमें बैठिकें श्रीकृष्ण बाललीला करें है ॥ १२ ॥ एकदिना यमुनाकिनारेपै श्रीकृष्णनें मट्टी खायलई तब बालकननें यशोदाजीते आय कही कै तेरो बेटा मट्टी खायहै ॥

नीतिविन्मार्गदःशुक्रःपतंगोदिव्यवाहनः ॥ गोपेष्टश्चव्रजेराजञ्रताःषड्वृषभानवः ॥ ७ ॥ गोलोकेकृष्णचंद्रस्यनिकुंजद्वारमाश्रिताः ॥ वेत्रहस्ताःश्यामलांगानवनंदाश्चतेस्मृताः ॥ ८ ॥ निकुंजेकोटिशोगावस्तासांपालनतत्पराः ॥ वंशीमयूरपक्षाढ्याउपनंदाश्चतेस्मृताः ॥ ९ ॥ निकुंजदुर्गरक्षायांदंडपाशधराःस्थिताः ॥ षड्द्वारमास्थिताःषट्कथितावृषभानवः ॥ १० ॥ श्रीकृष्णस्येच्छयासर्वेगोलोकादागताभुवि ॥ तेषांप्रभावंवक्तुंहिनसमर्थश्चतुर्मुखः ॥ ११ ॥ अहंकिंवुवदिष्यामितेषांभाग्यंमहोदयम् ॥ येषामारोहमास्थायबालकेलिर्विभोहरिः ॥ १२ ॥ एकदा यमुनातीरेमृत्कृष्णेनावलीढिता ॥ यशोदांबालकाःप्राहुरत्तिबालोमृदंतव ॥ १३ ॥ बलभद्रेचवदतितदासानंदगेहिनी ॥ करेगृहीत्वास्वसुतंभीरुनेत्रमुवाचह ॥ १४ ॥ ॥ श्रीयशोदोवाच ॥ ॥ कस्मान्मृदंभक्षितवान्महाज्ञभवान्वयस्याश्चवदंतिसाक्षात् ॥ ज्यायान्बलोयंवदतिप्रसिद्धंमाएवमर्थंनजहातिनेष्टम् ॥ १५ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ सर्वेमृषावादरताव्रजार्भकामातर्मयाक्वापिनमृत्प्रभक्षिता ॥ यदासमीचीनमनेनवाक्यंतदामुखंपश्यमदीयमंजसा ॥ १६ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ अथगोपीबालकस्यपश्यंतीसुन्दरंमुखम् ॥ प्रसारितंचददर्शेब्रह्मांडरचितंगुणैः ॥ १७ ॥ सप्तद्वीपान्सप्तसिंधून्सखंडान्सगिरीन्द्रढान् ॥ आब्रह्मलोकाल्लोकांस्त्रीन्स्वात्मभिःसव्रजैःसह ॥ १८ ॥ दृष्ट्वानिमीलिताक्षीसाभूत्वाश्रीयमुनातटे ॥ बालोऽयंमेहरिःसाक्षादितिज्ञानमयीह्यभूत् ॥ १९ ॥

॥ १३ ॥ बलदेवजीहू कहन लगे तब नंदरानी बेटाको हाथ पकरिके भयभीत नेत्र जाके ता बेटाते यह बोली ॥ १४ ॥ अरे तैंने माटी क्यों खाई तू बड़ो अनसमझ है देखिये तेरे यार कहे हैं और सोई बात तेरो बड़ो भैया जो दाऊ है वोहू कहेंहै ॥ १५ ॥ तब भगवान् बोले कि, अरी मैया ! ये व्रजके बालक सब झूंठा है मैनें कभी माटी नहीं खाई है जो तोकूं सांच नहीं आवै है और इन्होंके कहेको सांच मानै है तो मेरे मुखमें देखले ॥ १६ ॥ नारदजी कहें हैं कि, इतनी कहके भगवान्ने मुख फारो तब गोपी यशोदा श्रीकृष्णके मुखमें देखनलगी तो वाके मुखमें त्रिगुणते रच्यो सबरो ब्रह्मांड दीख्यो ॥ १७ ॥ सातों द्वीप, सातों समुद्र, सबरे खंड, पर्वत, नदी, पातालते लैके सत्यलोक ताई तीनों लोक और आपसमेत समग्र अपनों व्रजलालाके मुखमें देख्यो ॥ १८ ॥ देखिकें भोरी यशोदानें यमुनाके किनारेपै आंख मींचिलई और यह बोली कि, ये मेरो बेटा साक्षात् भगवान्

है ऐसे ज्ञानमयी हैगई ॥ १९ ॥ तब तो श्रीकृष्ण अपनी मायाते मोह करावते हंसिदीने तब जो वैभव यशोदानें देख्यो हो ताकी याद भूलगई ॥ २० ॥ इति श्रीगर्गसंहितायां गोलोकखंडे भाषाटीकायां ब्रह्मांडदर्शनं नामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ नारदजी कहें है कि, एकसमे गोकुलमें गोपी सब दही मथरही ही तब घरघरमें परम मनोहर गोपालजीके चरित्र गायरही ॥ १ ॥ और श्रीयशोदाहू प्रातःकाल उठकें नंदमहलमें मांठमें रई पडकें सुन्दरी दही मथरही ॥ २ ॥ तबही बालक नंदनँदन माखनके लिये रईके शब्दके तमासेते झांझन बजावत नांचनलगे ॥ ३ ॥ तब बालकेलि भगवान् मैयाकी परिक्रमा देते सुंदर जामे शब्द ता कोंधनीको बजावत मैयाके आगे नाचे है ॥ ४ ॥ मीठी २ बोलीते मैयापे मांखन मांगते है ता बेटाके हाथको पकरकें नंदरानीने हटायदीनो और रिसके मारे माखनहू न दीनो तबही श्रीकृष्णने दहीको मांठ फोरडारयो

तदाजहासश्रीकृष्णोमोहयन्निवमायया ॥ यशोदावैभवंदृष्टंनसस्मारगतस्मृतिः ॥ २० ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायांगोलोकखंडेनारदबहुलाश्वसंवादेब्रह्मांडदर्शनंनामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ एकदागोकुलेगोप्योममंथुर्दधिसर्वतः ॥ गृहेगृहेप्रगायन्त्यो गोपालचरितंपरम् ॥ १ ॥ यशोदापिसमुत्थायप्रातःश्रीनंदमंदिरे ॥ भांडेरायंविनिक्षिप्यममंथदधिसुंदरी ॥ २ ॥ मंजीररावंसंकुर्वन्बालः श्रीनंदनंदनः ॥ ननर्त्तनवनीतार्थंरायशब्दकुतूहलात् ॥ ३ ॥ बालकेलिर्विभोनृत्यन्मातुःपार्श्वमनुभ्रमन् ॥ सुनादिकिंकिणीसंघझंकारंकारयन्मुहुः ॥ ४ ॥ हैयंगवीनंसततंनवीनंयाचन्समातुर्मधुरंब्रुवन्सः ॥ आदायहस्तेशमसुतंरुपासुधीर्विभेदकृष्णोदधिमंथपात्रम् ॥ ५ ॥ पलायमानंस्वसुतंयशोदाप्रधावतीप्रापनहस्तमात्रात् ॥ योगीश्वराणामपियोदुरापःकथंसमातुर्ग्रहणेप्रयाति ॥ ६ ॥ तथापिभक्तेषुचभक्तवश्यताप्रदर्शिताश्रीहरिणानृपेश्वर ॥ बालंगृहीत्वास्वसुतंयशोमतीबबंधरज्ज्वाथरुषाह्युलूखले ॥ ७ ॥ आदाययद्यद्रहुदामतत्तत्स्वल्पंप्रभूतंस्वसुतेयशोदा ॥ गुणैर्नबद्धःप्रकृतेःपरोयःकथंसबद्धोभवतीहदाम्ना ॥ ८ ॥ यदायशोदागतबन्धनेच्छाखिन्नानिषण्णानृपछिन्नमानसा ॥ आसीत्तदायंकृपयास्वबंधेस्वच्छंदयानःस्ववशोपिकृष्णः ॥ ९ ॥ एवंप्रसादोनहिवीतकर्मणांनज्ञानिनांकर्मधियांकुतःपुनः ॥ मातुर्यथाभून्नृपएषुतस्मान्मुक्तिंव्यधाद्भक्तिमलंनमाधवः ॥ १० ॥

और भागे ॥ ५ ॥ तब भाजते बेटाके पीछें यशोदाहू भाजी पर हाथमे न आये एक हाथ दूर रहे नारदजी कहें है कि, हे राजन! योगीश्वरनकेहू ध्यानमें नही मिले ताहि यशोदा कैसे पकड सकेहै ॥ ६ ॥ हे नृपेश्वर! तौऊ हरिने भक्तनमे अपनी भक्तवत्सलता दिखाई आपही मैयाके हाथ आयगये तब मैया बालकको पकरकें रोषकी भरी उलूखलते बांधनलगी ॥ ७ ॥ तब वो रस्सी- दो अंगुल कमती भई तब और नेती जोडी तब वोहू रस्सी दो अंगुल कम हैगई ऐसे जो जो रस्सी जोडे है वो २ सब दो अंगुल कमती होतीजाय है भलो राजन्! जो परमेश्वर प्रकृतिके गुणनतेऊ नही बँधे है सो रस्सीते कैसे बँधसके है ॥ ८ ॥ जब और बडी दुखी हैके बैठगई यशोदा बांधत २ थकित हैगई तब भक्तवत्सल अपने वश भगवान् आपही कृपा करकें यद्यपि कृष्ण स्ववशभी है पन तोभी बंधनमे आय गये ॥ ९ ॥ ऐसो प्रसाद कबहू वीतरागी ज्ञानीननेहू नही पायो कहो कर्मनमें बुद्धि राखनवारेन

को तो वो मिलही कैसे सके हैं सो प्रसाद मैय्याने बाललीलामें पायो याहीते प्रसन्न हैके माधव मुक्ति तो देदेय है पर कबहू भक्ति नही देय है ॥ १० ॥ तबही सब गोपी आयगई उन्ने दहीको माठो तो फूट्यो देख्यो और लाला उलूखलते बँध्यो डरप्योसो देख्यो तब वे दयाकी मारी यशोदाजीते यह बोली ॥ ११ ॥ कि, अरी बीर ! हमारे घरनमें जायके ऐसी चीकनी २ हँडियानको यह नित्य फोरयो करेहो हमने तो एकहू दिन दयाकी मारीन्ने याते कभी कछू न कही हे नंदरानी ! तोकूं नेकहू दया नही आवे है ॥ १२ ॥ हे ब्रजेश्वरि ! हे यशोदे ! हे निर्दयिन ! देख तोको लालाके बांधेको लठियाते बालककूं मारेको नेकभी दुःख नही है कहूं बालकको तेरी तरह मारते ललकारते होंयगे जो एकही हँडियाके फोड़बेपै तैने बांधि दीनों है और लकडेनसों मारे है ॥ १३ ॥ नारदजी कहे हैं ऐसे सुन यशोदा तो घरके कामनमें व्यग्र हैगई तब उलूखल खेंचते २ बालकनके संग श्रीकृष्ण जमुनाजीकूं चलेगये ॥ १४ ॥ तहां किनारेपै दो जोरुआ वृक्ष बडे पुराने हे यमलार्जुन नाम हो तिनके बीचमें हैके हँसते २ दामोदर निकसे ॥ १५ ॥ उनके बीचमें

तदैवगोप्यस्तुसमागतास्त्वरंदृष्ट्वाथभग्नंदधिमंथभाजनम् ॥ उलूखलेबद्धमतीवदामभिर्भीतंशिशुंवीक्ष्यजगुर्घृणातुराः ॥ ११ ॥ ॥ गोप्यऊचुः ॥ अस्मद्गृहेषुपात्राणिभिनत्तिसततंशिशुः ॥ तदप्येनंनोवदामःकारुण्यान्नंदगेहिनि ॥ १२ ॥ गतव्यथेह्यकरुणेयशोदेहेब्रजेश्वरि ॥ यष्ट्यानिर्भर्त्सितोबालस्त्वयाबद्धोघटक्षयात् ॥ १३ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्तायांयशोदायांव्यग्रायांगृहकर्मसु ॥ कर्षन्नुलूखलंकृष्णो बालैःश्रीयमुनांययौ ॥ १४ ॥ तत्तटेचमहावृक्षौपुराणौयमलार्जुनौ ॥ तयोर्मध्येगतःकृष्णोहसन्दामोदरःप्रभुः ॥ १५ ॥ चकर्षसहसाकृष्ण स्तिर्य्यग्गतमुलूखलम् ॥ कर्षणेनसमूलौद्वौपेततुर्भूमिमंडले ॥ १६ ॥ पातनेनापिशब्दोभूत्प्रचंडोवज्रपातवत् ॥ विनिर्गतौचवृक्षाभ्यांदिव्यौ द्वावेधसोऽग्निवत् ॥ १७ ॥ दामोदरंपरिक्रम्यपादौस्पृष्ट्वास्वमौलिना ॥ कृतांजलीहरिंनत्वानतौतत्संमुखेस्थितौ ॥ १८ ॥ देवावूचतुः ॥ ॥ आवांमुक्तौब्रह्मदंडात्सद्यस्तेऽच्युतदर्शनात् ॥ माभूत्तेनिजभक्तानांहेलनंह्यावयोर्हरे ॥ १९ ॥ करुणानिधयेतुभ्यंजगन्मंगलशीलिने ॥ दामो दरायकृष्णायगोविंदायनमोनमः ॥ २० ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इतिनत्वाहरिंतौद्वौउदीचींचदिशंगतौ ॥ तदैवह्यागताःसर्वेनंदाद्याभ यकातराः ॥ २१ ॥ कथंवृक्षौप्रपतितौविनावातंब्रजार्भकाः ॥ वदताशुतदाबालाऊचुःसर्वेब्रजौकसः ॥ २२ ॥

तिरछो है उलूखल फसगयो के श्रीकृष्णनें धरिखेंच्यो तबही जड़ते उखरिकें वे दोनों पेड़ आयपरे ॥ १६ ॥ उनके गिरनेमें ऐसो शब्द भयो मानों कही वज्र पड़ो तब उनमेंते दो देवता निकसे जैसे इंधनमेंते अग्निसे निकसे ॥ १७ ॥ वे दामोदरकी परिक्रमा देकें अपने मुकटनते चरण छी कै हाथ जोरि भगवान्के सन्मुख ठाड़े हैगये ॥ १८ ॥ और ये बोले हे अच्युत ! हे हरे ! तुमारे दर्शनते हम ब्रह्मशापते छूटगये अब येही प्रार्थना है कि, हम तुमारे भक्तनकी अपराध कबहू न करें ॥ १९ ॥ करुणानिधि जगतकूं मंगलकर्ता दामोदर श्रीकृष्ण गोविंदके इन्द्र तिनके अर्थ हमारी नमस्कार है ॥ २० ॥ नारदजी कहै हैं ऐसे दोनों देवता हरिकूं दंडौत करिकें उत्तर दिशाकूं चलेगये तबही नंदादिक गोप भयके मारे आये ॥ २१ ॥ उन्ने बालकनसों पूछी कि, हे ब्रजबाल ! कहो आंधी बिना ये दोनों पेड कैसें

आयकरें ये गलाओ। ऐसें जब सब ब्रजवासी कहनलगे तब ये बालक बोले ॥ २२ ॥ कि, या श्रीकृष्णनेंही ये दोनों पेड गेरे हैं उन पेडनमेंतें दै चमकते पुरुष निकसे सो याकूं दंडोत करिकें अभी उत्तरकूं चलेगये हैं ॥ २३ ॥ नारदजी कहे हैं कि, ऐसें उनके वचन सुनिकें ब्रजवासीनें उनको कह्यो सांच न मान्यो तब नंदजीनें उलूखलमें बंधे अपने बालककूं खोलिदीनो ॥२४॥ और या बालककों माथो सूंघिकें अपनी गोदीमें खिलावन लगे यशोदाजीकूं उलकारके ब्राह्मणनकूं बुलायके सौ गौदान देतभये ॥२५॥ बहुलाश्व राजा पूछे है हे देवऋषि। ये दोनों पुरुष कौन हैं कोनसे दोषसे ये वृक्ष भये ॥ २६ ॥ नारदजी कहे हैं कि, ये नलकूबर मणिग्रीव दोनों कुबेरके बेटा हैं एकदिन ये मंदाकिनीके किनारेपे नंदनवनमें चलेगये ॥ २७ ॥ अप्सरा तो गुण गामें हैं ये मदिरा पी नंगे विचरनलगे कैसे हैं ये दोनों मदिरातें उन्मत्त युवानपनेमें नाकामतूर धनको गर्व तिनकूं ॥ २८ ॥

॥ बालाऊचुः ॥ ॥ अनेनपातितौवृक्षौतन्मध्याद्द्वौपुरुषौस्थितौ ॥ एवंनत्वागतावद्यतावुदीच्यांस्फुरत्प्रभौ ॥ २३ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥
इति श्रुत्वावचस्तेषांनतेश्रद्दधिरेततः ॥ मुमोचनंदःस्वंबालंदामाबद्धमुलूखले ॥ २४ ॥ संलालयन्स्वांकदेशेसमाघ्रायशिशुंनृप ॥ निर्भर्त्स्य
भामिनींनंदोविप्रेभ्योगोशतंददौ ॥ २५ ॥ ॥ श्रीबहुलाश्वउवाच ॥ ॥ काविमौपुरुषौदिव्यौवददेवर्षिसत्तम ॥ केनदोषेणवृक्षत्वंप्रापि
तौयमलार्जुनौ ॥ २६ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ नलकूबरमणिग्रीवौराजराजसुतौपरौ ॥ जग्मतुर्नंदनवनंमंदाकिन्यास्तटेस्थितौ ॥ २७ ॥
अप्सरोभिर्गीयमानौनेरतुर्गतवाससौ ॥ वारुणीमदिरामत्तौयुवानौद्रव्यदर्पितौ ॥ २८ ॥ कदाचिद्देवलोनाममुनींद्रोवेदपारगः ॥ नग्नौदृष्ट्वान
तावाहदुष्टशीलौगतस्मृती ॥ २९ ॥ ॥ देवलउवाच ॥ ॥ युवांवृक्षसमौधृष्टौनिर्लज्जौद्रव्यदर्पितौ ॥ तस्माद्वृक्षौतुभूयास्तांवर्षाणांशत
कंभुवि ॥ ३० ॥ द्वापरांतेभारतेचमथुरेव्रजमंडले ॥ कलिंदनंदिनीतीरेमहावनसमीपतः ॥ ३१ ॥ परिपूर्णतमंसाक्षात्कृष्णंदामोदरंहरिम् ॥
गोलोकनाथंतंदृष्ट्वापूर्वरूपौभविष्यथः ॥ ३२ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्थंदेवलशापेनवृक्षत्वंप्रापितौनृप ॥ नलकूबरमणिग्रीवौश्री
कृष्णेनविमोचितौ ॥ ३३ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां गोलोकखण्डे उलूखलबंधनयमलार्जुनमोचनंनामैकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥ ॥
॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ एकदाकृष्णानन्दस्यदर्शनार्थंपरस्यन ॥ दुर्वासामुनिशार्दूलोव्रजमंडलमाययौ ॥ १ ॥

यहां कोई देवल नाम ऋषि वेदको पारगामी चलेआये दुष्टस्वभाव नंगे पेडसे तिनकूं देखिकें ये बोले ॥ २९ ॥ अरे। तुम दोनों पेडसे जड ठाडे ढीठ हो धनके गर्वतें बेशरम हो तातें तुम पृथ्वीमें जायकें सौवर्ष तलक वृक्ष हैजाओ ॥ ३० ॥ जब द्वापरके अंतमें भरतखंडमें मथुरा ब्रजमंडलमें यमुनाके किनारेपे महावनके पास ॥ ३१ ॥ परिपूर्णतम साक्षात् श्रीकृष्ण दामोदर हरि गोलोकके नाथकूं देखिकें पहिले रूपकूं प्राप्त हैजाओगे ॥ ३२ ॥ नारदजी कहे हैं ऐसे देवलके शापतें ये वृक्ष हैगये ये कुबेरके पुत्र नलकूबर, मणिग्रीव हैं तिनको श्रीकृष्णनें छुटायदीनो ॥ ३३ ॥ इति श्रीगर्गसंहितायां गोलोकखंडे भाषाटीकायामेकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥ एकसमैपर श्रीकृष्णके दर्शनकूं मुनिनमें मुख्य दुर्वासा

मुनि व्रजमें आये ॥ १ ॥ उन्ने कालिंदीकें निकट अतिपवित्र रमणरेतीमें महावनके पास दूरितेंई श्रीकृष्णकूं दर्शन कियो ॥२॥ शोभायमान कामकेऊ मोहन अति सुंदर बालकनके संग रेतीमें लोटिरहे आपुसमें बाललीलातें कुस्ती लडिरहेहें अति मनोहरमूर्ति ॥ ३ ॥ धूरितें धूसरो अंग जिनको घूंघरवारे केश नंगधड़गे बालकनके संग भागते डोलें तिनें देखि दुर्वासा अचंभेमें आयगये ॥ ४ ॥ दुर्वासा बोले–यह कैसो ईश्वर है बालकनके संग धूरिमें लोटैहै, यह तो श्रीकृष्ण नंदकोई बेटा है, परात्पर परब्रह्म नही है ॥ ५ ॥ नारदजी कहे है, ऐसे दुर्वासा मुनि मोहमें आपसन्ते श्रीकृष्ण आपही खेलत २ उनकी गोदीमें आयगये ॥ ६ ॥ फेर थोरी देरमें गोदसो निकरिगये बालसिंहकीसी जिनकी चितवन हंसत २ मिठी बोली बोलत फिर दुर्वासाके सन्मुख आय ठाड़े भये ॥७॥ तब हंसते जो श्रीकृष्ण तिनके मुखमें श्वासकी रस्ता दुर्वासा चलेगये तहां पेटमें औरही महा लोक देख्यो वो बडे

कालिंदीनिकटेपुण्येसैकतेरमणस्थले ॥ महावनसमीपेचकृष्णमाराद्ददर्शह ॥ २ ॥ श्रीमन्मदनगोपालंलुठंतंबालकैःसह ॥ परस्परंप्रयुद्ध्यंतं बालकेलिमनोहरम् ॥ ३ ॥ धूलिधूसरसर्वांगंवक्रकेशंदिगंबरम् ॥ धावंतंबालकैःसार्द्धंदारंवीक्ष्यसविस्मितः ॥ ४ ॥ ॥ श्रीमुनिरुवाच ॥ ॥ सईश्वरोयंभगवान्कथंबालैर्लुठन्भुवि ॥ अयंतुनंदपुत्रोस्तिनश्रीकृष्णःपरात्परः ॥ ५ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्थंमोहंगतेतत्रदुर्वाससिमहामुनौ ॥ क्रीडन्कृष्णस्ततसमीपेतदंकेह्यागतःस्वयम् ॥ ६ ॥ पुनर्विनिर्गतोह्यंकाद्बालसिंहावलोकनः ॥ हसन्कलंब्रुवन्कृष्णःसंमुखःपुनरागतः ॥ ७ ॥ हसतस्तस्यचमुखेप्रविष्टःश्वसनैर्मुनिः ॥ ददर्शान्यंमहालोकंसारण्यंजनवर्जितम् ॥ ८ ॥ अरण्येषुभ्रमंस्तत्रकुतःप्राप्तइतिब्रुवन् ॥ तदैवाजगरेणापिनिगीर्णोभून्महामुनिः ॥ ९ ॥ ब्रह्मांडंतत्रददर्शसलोकंसबिलंपरम् ॥ भ्रमन्द्वीपेषुसमुनिःस्थितोभूत्पर्वतेसिते ॥ १० ॥ तपस्ततापवर्षाणांशतकोटिप्रभुंभजन् ॥ नैमित्तिकाख्येप्रलयेप्राप्तेविश्वभयंकरे ॥ ११ ॥ आगच्छंतःसमुद्रास्तेप्लावयंतोधरातलम् ॥ वहंस्तेषुसदुर्वासानप्रापांतंजलस्यच ॥१२॥ व्यतीतेयुगसाहस्रेमग्नोभूद्विगतस्मृतिः ॥ पुनर्जलेषुविचरन्नंडमन्यंददर्शह ॥ १३ ॥ तच्छिद्रेचप्रविष्टोसौदिव्यांसृष्टिंगतस्ततः ॥ तदंडभूर्भिलोकेषुविधेरायुःसमंचरन् ॥ १४ ॥ एवंछिद्रंतत्रवीक्ष्यप्राविशत्सहरिंस्मरन् ॥ बहिर्विनिर्गतोह्यंडाद्ददर्शाशुमहाजलम् ॥ १५ ॥

भारी वनसहित है, और निर्जन है ॥ ८ ॥ या वनमें भ्रमण करतेनें विचार कियो कि, रे मैं कहां आयगयो ऐसे कहते दुर्वासामुनिको एक अजगर सर्पनें ग्रसिलीने ॥ ९ ॥ तब इते वहां या अजगरके पेटमें एक औरही ब्रह्मांड देख्यो पातालते सत्यलोकताईं तामें सातों द्वीपनमें डोलत २ श्वेत पर्वतपे आपके ठाडेभये ॥ १० ॥ वहां प्रभूको स्मरण करते २ सौकिरोड़वर्ष तप कीनों जब विश्वकों भयंकर नैमित्तिक प्रलय आयो ॥ ११ ॥ तब भूमिकूं डुबावत चारोंओरतें समुद्र आये तिनमें बहते डोले दुर्वासाजीको जलको अंत न पायो ॥ १२ ॥ फिर जलमें विचरते २ दुर्वासाको हजार युग बीते तब ये बेहोस हैगये दुर्वासाने और १ ब्रह्मांडको देखो ॥ १३ ॥ ऐसें विचरते विचरते एक छेदमें चलेगये तहां दिव्यसृष्टि देखी तहां ऊपरले लोकनमें रहे ब्रह्माकी आयु भोगी ॥ १४ ॥ ऐसे फिर छेदकूं देखकें हरिको स्मरण करते धसगये फिर अंडाके बाहिर निकसे तहां बड़ो भारी

जल देख्यौ ॥ १५ ॥ ता जलमें करोड़न ब्रह्मांड देखे फिर जलको देखत विरजा नदी देखी ॥ १६ ॥ ताके पार जायके मुनिने गोलोक देख्यौ ताके भीतर गये तामें वृंदावन गोवर्द्धन और यमुनाके पुलिन ये सब अति शुभ देखे ॥ १७ ॥ सो दुर्वासा ये सब देखकें बड़े प्रसन्न भये, फिर कुंजमें गये तहाँ गोप गोपीनके गण और किरोड़न गौ देखी ॥ ॥१८॥ जामें असंख्य किरोड़ सूर्यके प्रकाशमंडलमें लाखदलके कमलपै राधापतिकूं देख्यौ ॥ १९ ॥ परिपूर्णतम साक्षात् पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण असंख्य ब्रह्मांडनको पति जो अपनो गोलोक है सो गोलोक देख्यौ ॥ २० ॥ फिर श्रीकृष्णकूं हँसी आई सो मुनि श्रीकृष्णके मुखमें चलेगये फिर श्वासीके संग बाहिर निकस परे तहां बालकरूप नंदनंदनकूं देख्यौ ॥ २१ ॥ कहाँ कि, कालिंदीके किनारेपै पवित्र रमणरेतीमें बालकनके संग महावनमें विचर रहे ऐसे कृष्णको देखकें ॥ २२ ॥ तब दंडवत् करकें दुर्वासा मुनि परात्पर श्रीकृष्णको ही जानके ये वही नंदनंदन है सौबेर प्रणाम करकरकें स्तुति करनलगे ॥२३ ॥ दुर्वासा मुनि कहे हैं कि, नंदनंदन जो श्रीकृष्ण तिनकूं मैं नमस्कार करूंहूं कैसे श्रीकृष्ण है कि,

तस्मिञ्जलेतुलक्ष्यंतेकोटिशोब्रह्मंडराशयः ॥ ततोमुनिर्जलंपश्यन्ददर्शविरजांनदीम् ॥ १६ ॥ तत्पारंप्रगतःसाक्षाद्गोलोकंप्राविशन्मुनिः ॥ वृंदावनंगोवर्द्धनंयमुनापुलिनंशुभम् ॥ १७ ॥ दृष्ट्वाप्रसन्नःसमुनिर्निकुंजंप्राविशत्तदा ॥ गोपगोपीगणवृतंगवांकोटिभिरन्वितम् ॥ १८ ॥ असंख्यकोटिमार्तंडज्योतिषांमंडलेततः ॥ दिव्येलक्षदलेपद्मेस्थितंराधापतिंहरिम् ॥ १९ ॥ परिपूर्णतमंसाक्षाच्छ्रीकृष्णंपुरुषोत्तमम् ॥ असंख्यब्रह्मांडपतिंगोलोकंस्वंददर्शह ॥ २० ॥ श्रीकृष्णस्यापिहसतःप्रविष्टस्तन्मुखेमुनिः ॥ पुनर्विनिर्गतोपश्यद्बालंश्रीनंदनंदनम् ॥ २१ ॥ कालिंदीनिकटेपुण्येसैकतेरमणस्थले ॥ बालकैःसहितंकृष्णंविचरंतंमहावने ॥ २२ ॥ तदामुनिश्चदुर्वासाज्ञात्वाकृष्णंपरात्परम् ॥ श्रीनंदनंदनंनत्वानत्वाप्राहकृतांजलिः ॥ २३ ॥ ॥ श्रीमुनिरुवाच ॥ ॥ बालंनवीनशतपत्रविशालनेत्रंबिंबाधरंसजलमेघरुचिंमनोज्ञम् ॥ मंदस्मितंमधुरसुंदरमंदयानंश्रीनंदनंदनमहंमनसानमामि ॥ २४ ॥ मंजीरनूपुररणन्नवरत्नकांचीश्रीहारकेसरिनखप्रतियंत्रसंघम् ॥ दृष्ट्यार्तिहारिमषिबिंदुविराजमानंवंदेकलिंदतनुजातटबालकेलिम् ॥ २५ ॥ पूर्णेन्दुसुन्दरमुखोपरिकुंचिताग्राःकेशानवीनघननीलनिभाःस्फुरंतः ॥ राजंतआनतशिरःकुमुदस्ययस्यनंदात्मजायसबलायनमोनमस्ते ॥ २६ ॥ श्रीनंदनंदनस्तोत्रंप्रातरुत्थाययःपठेत् ॥ तन्नेत्रगोचरोयातिसानंदंनंदनंदनः ॥ २७ ॥ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इतिप्रणम्यश्रीकृष्णंदुर्वासामुनिसत्तमः ॥ तंध्यायन्प्रजपन्प्रागाद्बदर्याश्रममुत्तमम् ॥ २८ ॥

श्यामसुंदर बालक है नवीन कमलदलकेसे विशाल जाके नेत्र हैं सजल श्याम घटाके समान मनोहर मंद मुसिक्यान जिनकी ललित मंदमंद चाल लालरकदूरीसे होठ जिनके तिनकूं मैं नमस्कार करूंहूं ॥ २४ ॥ झोभन नूपुर बाजेनके संग बजें है कोधनी जिनकी श्रीहार बघनखाको कठला और आर्तिकी हरनवारी श्यामबिंदी लगरही है दृष्टि तेह दुखियानकी पीड़ाके हरनहारे कालिंदीके तटपै बाललीला करें तिनकूं मेरी दंडवत् है ॥ २५ ॥ जाकी पूर्णचन्द्रमासौ मुख तापै घूंघरवारी श्यामघटाके समान नीली अलकावली देदीप्यमान झुकरही है ऐसे नंदके बेटा श्रीकृष्णकूं बलदेवकूं मेरी नमस्कार है ॥ २६ ॥ यह श्रीनंदनंदनको स्तोत्र है जाकूं प्रातःकाल उठकें जो कोई पढ़ेगौ सो आनंदते श्रीकृष्णको साक्षात् दर्शन करैगो ॥ २७ ॥ नारदजी कहे हैं ऐसें दुर्वासामुनि श्रीकृष्णकूं दंडवत करकें श्रीकृष्णकोही जप ध्यान करत उत्तम जो बदरिकाश्रम ताकूं चलेगये ॥ २८ ॥

गर्गजी बोले या प्रकार नारदजीने बहुलाश्व राजाते श्रीकृष्णको चरित्र वर्णन करो ॥२९॥ शौनकजी बोले-सोई हे शौनक ! मैंने तुम्हारे आगे कृष्णचरित्र वर्णन करचो है, कलिमलको नाश करनहारो है, चतुर्वर्गनको देनहारो है, आगे तुम कहा पूछो चाहो हो ! तब शौनकजी बोले ॥ ३० ॥ मैथिलदेशको इंद्र बहुलाश्वराजा बडे शांत और ज्ञानके दाता नारदजीने फिर कहा पूछतो भयो सो हे तपोधन ! मेरे आगें कहो ॥ ३१ ॥ गर्गजी बोले कि, मानको देनवारो बहुलाश्वराजा ज्ञान देनहारे नारदजीकूं नमस्कार करके मंगलायतन भगवान् श्रीकृष्णको आगेको चरित्र पूछन लग्यो ॥ ३२ ॥ बहुलाश्व बोल्यो कि, साक्षात् परमानंदस्वरूप श्रीकृष्ण आगें कहा २ विचित्र चरित्र करतभये सो कहो ॥ ३३ ॥ पहले अवतारनमेंहू मंगलके स्थान चरित्र करे है, कृष्णावतारमें कौन २ से मंगल चरित्र करे तिनें कहो ॥ ३४ ॥ तब नारदजी बोले-स्याबासि हे राजा ! तैंने भलो प्रश्न करचो जो

॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ ॥ इत्थंदेवर्षिवर्येणनारदेनमहात्मना ॥ कथितंकृष्णचरितंबहुलाश्वायधीमते ॥ २९ ॥ मयातेकथितंब्रह्मन्यशःक लिमलापहम् ॥ चतुष्पदार्थदंदिव्यंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ३० ॥ ॥ शौनकउवाच ॥ ॥ बहुलाश्वोमैथिलेन्द्रःकिंप्रपच्छमहामुनिम् ॥ नारदंज्ञानदंशांतंतन्मेब्रूहितपोधन ॥ ३१ ॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ ॥ नारदंज्ञानदंनत्वामानदोमैथिलोनृपः ॥ पुनःप्रपच्छकृष्णस्यचारितं मंगलायनम् ॥ ३२ ॥ ॥ श्रीबहुलाश्वउवाच ॥ ॥ श्रीकृष्णोभगवान्साक्षात्परमानंदविग्रहः ॥ परंचकारकिंचित्रंचरित्रंवदमेप्रभो ॥ ॥ ३३ ॥ पूर्वावतारैश्चरितंकृतंवैमंगलायनम् ॥ अपरंकिंतुकृष्णस्यपवित्रंकिमतःपरम् ॥ ३४ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ साधुसाधुत्व याषृष्टंचरित्रंमंगलंहरेः ॥ तत्तेहंसंप्रवक्ष्यामिवृंदारण्येचयद्यशः ॥ ३५ ॥ इदंगोलोकखंडंचगुह्यंपरममद्भुतम् ॥ श्रीकृष्णेनप्रकथितंगोलोके रासमंडले ॥ ३६ ॥ निकुंजेराधिकायैचराधामह्यंददाविदम् ॥ मयातुभ्यंश्राविंतंचदत्तंसर्वार्थदंपरम् ॥ ३७ ॥ इदंपठतिविप्रस्तुसर्वशा स्त्रार्थगोभवेत् ॥ श्रुत्वेदंचक्रवर्तीस्यात्क्षत्रियश्चंडविक्रमः ॥ ३८ ॥ वैश्योनिधिपतिर्भूयाच्छूद्रोमुच्येतबंधनात् ॥ निष्फलोयोपिजगतिजीव न्मुक्तःसजायते ॥ ३९ ॥ योनित्यंपठतेसम्यग्भक्तिभावसमन्वितः ॥ सगच्छेत्कृष्णचंद्रस्यगोलोकंप्रकृतेःपरम् ॥ ४० ॥ इति श्रीमद्ग०गो० खंडेनारदबहु०संवादेभगवज्जन्मवर्णनंदुर्वाससोमायादर्शनंश्रीनंदनंदनस्तोत्रवर्णनंनामविंशोऽध्यायः ॥२०॥ समाप्तश्चायं गोलोकखण्डः॥१॥

तू मंगलकारी हरिचरित्रकूं पूछै है सो मैं तेरे अगारी कहूंगो जो वृंदावनमें लीला करी हैं ॥ ३५ ॥ यह गोलोकखंड बडो गुह्य और अद्भुत मैंने तोते कह्यो है, पहिले श्रीकृष्णनें रासमंडलमें राधिकाते गोलोकमें निकुंजमंदिरमें जो कह्यो है ॥ ३६ ॥ राधिकाजीनें मोतें कह्यो मैंने तोकूं सुनायो यह सब मनोरथको देनहारो है ॥ ३७ ॥ जो ब्राह्मण याकूं पढे तो सब शास्त्रको जाननवारो पंडित होय और क्षत्री सुने तो बडा प्रतापी चक्रवर्ती राजा होय ॥ ३८ ॥ वैश्य सुने तो धनी होय और शूद्र सुने तो बंधनते छूटिजाय और जो कछू कामको न होय सोहू जीवन्मुक्त हैजाय ॥ ३९ ॥ जो याकूं भक्तिभावतें नित्य पाठकरै सो मनुष्य प्रकृतिते परे श्रीकृष्णके गोलोककूं प्राप्त होय ॥ ४० ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां गोलोकखंडे भाषाटीकायां नारदबहुलाश्वसंवादे दुर्वासोमायादर्शनं नाम विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ समाप्तोयं गोलोकखंडः ॥ १ ॥

इदं पुस्तकं क्षेमराज-श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना मुम्बय्यां (खेतवाडी ७ वी गली खम्बाटा लेन) स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) मुद्रणयन्त्रालये मुद्रयित्वा प्रकाशितम् । संवत् १९६७, शाके १८३२

॥ इति गर्गसंहितायां गोलोकखण्डं भाषाटीकासमेतं समाप्तम् ॥

॥ अथ गर्गसंहितायां वृन्दावनखण्डं भाषाटीकासहितं प्रारभ्यते ॥

(द्वितीयखण्डम् २)

ग्रन्थकर्त्ता कहे है कि, कोकिला तथा क्रीडाशुक जामें बोलरहे, गुंजा (चिरमिटी) के पुंज तथा कल्पवृक्षके पुष्पनको यमुना तटपे
श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ वृंदावनखंडम् ॥ जो निकुंज तामें शंखकीसी जिनकी ग्रीवा परस्पर गलबांई गेरे विचर रहे जे श्रीराधाकृष्ण ये दोनों मोकूं मङ्गलके करनवारे होउ ॥ १ ॥ अज्ञानरूपी अंधेरीते आँधरो जो मे ता मेरी आँख जिनने ज्ञानरूपी सलाईते खोलदई तिन गुरुनकूं मैं नमस्कार करूंहूं ॥ २ ॥ नारदजी कहे हैं एक दिना श्रीनन्दराज, नौ नंद, नौ उपनन्द, छः वृषभानु और वृषभानु तथा ॥ ३ ॥ और हू बूढे २ सब गोपनकूं बुलायके सभाके बीचमें यह बोले—क्यों भैया ओ ! अब मैं कहा करें बोलो, महावनमें तो बडे २ उत्पात आमे हैं ॥ ४ ॥ नारदजी कहे हैं एक संनंदगोप सबनमें बूढो बडो समझवाल ज्ञानी हो सो वह सब गोपनको वचन सुनिके कृष्ण बलदेवकूं गोदीमें बैठारि

श्रीगणेशायनमः ॥ अथ वृन्दावनखण्डम् ॥ कृष्णातीरेकोकिलकेलिकीरेगुंजापुंजेदेवपुष्पादिकुंजे ॥ कंबुग्रीवौश्लिष्टबाहूचलन्तौराधाकृष्णौ मंगलंमेभवेताम् ॥ १ ॥ अज्ञानतिमिरान्धस्यज्ञानांजनशलाकया ॥ चक्षुरुन्मीलितंयेनतस्मैश्रीगुरवेनमः ॥ २ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ एकदोपद्रवंवीक्ष्यनंदोनन्दान्सहायकान् ॥ वृषभानूपनंदांश्चवृषभानुवरांस्तथा ॥ ३ ॥ समाहूयपरान्वृद्धान्सभायांतानुवाचह ॥ नंदउवाच ॥ किंकर्त्तव्यंतुवदतोत्पाताःसंतिमहावने ॥ ४ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ तेषांश्रुत्वाथसन्नन्दोगोपीवृद्धोतिमंत्रवित् ॥ अंकेनीत्वारामकृष्णौ नंदराजमुवाचह ॥ ५ ॥ ॥ सन्नंदउवाच ॥ ॥ उत्थातव्यमितोस्माभिःसर्वैःपरिकरैःसह ॥ गंतव्यंचान्यदेशेषुयत्रोत्पातानसंतिहि ॥ ॥ ६ ॥ बालस्तेप्राणवत्कृष्णोजीवनंव्रजवासिनाम् ॥ व्रजेधनंकुलेदीपोमोहनोबाललीलया ॥ ७ ॥ हावक्याशकटेनापितृणावर्तेनबालकः ॥ मुक्तोयंद्रुमपातेनह्युत्पातंकिमतःपरम् ॥ ८ ॥ तस्माद्वृंदावनंसर्वैर्गंतव्यंबालकैःसह ॥ उत्पातेषुव्यतीतेषुपुनरागमनंकुरु ॥ ९ ॥ ॥ नंदउवाच ॥ ॥ कतिक्रोशैर्विस्तृतंतद्वनंवृंदावनंव्रजात् ॥ तल्लक्षणंतत्सुखंचवदबुद्धिमतांवर ॥ १० ॥ ॥ सन्नंदउवाच ॥ ॥ प्रागुदीच्यां बर्हिषदोदक्षिणस्यांयदोःपुरात् ॥ पश्चिमायांशोणपुरान्माथुरंमंडलंविदुः ॥ ११ ॥

नन्दराजते यह बोल्यो ॥ ५ ॥ संनन्द बोले—अब हमकूं तो यहांते सब परिकरकूं लेके कोई और स्थानको उठनो चाहिये जहां उत्पात कोई न होय, श्रीकृष्ण ॥ ६ ॥ तेरो बालक प्राणसो प्यारो है और सब व्रजवासीनको जीवन है, व्रजको धन है, कुलको दीपक है, बाललीला करिके सबको मोहन करनवारे है ॥ ७ ॥ पहलेई तो पूतना आई, फिर शकटासुर गिरचो, फिर तृणावर्त्त उडाय ले गयो, फिर यमलार्जुनपैते भगवानने बचायो जाते सिवाय कहा उत्पात आवैगो ॥ ८ ॥ ताते सबजने बालकनकूं संग लेके वृन्दावनकूं चलो जब यहांके उत्पात जात रहैं तब फिर आय जैयो ॥ ९ ॥ तब यह बात सुनिके नन्दराजा बोले—यहांते वृंदावन के कोश है ताके लक्षण कहो वहां कौन कौनसो सुख है सो तुम कहो तुम बड़े बुद्धिमाननमें श्रेष्ठ हो ताते मैं पूछूं हूं ॥ १० ॥ तब संनन्द बोले—बर्हिषदते तो पूर्व उत्तर ईशान कोणकूं है और मथुराते

दक्षिणमें है, शोनहदते पश्चिममें है, जाकूं मथुरामण्डल कहें हैं ॥ ११ ॥ जाको चौरासी कोशको विस्तार है, याकूं ज्ञानी पुरुष व्रज कहें हैं सो मथुरामंडलमें ही हैं ॥
॥ १२ ॥ मथुरामें वसुदेवके घरमें गर्गाचार्यके मुखते मैंने सुन्यौ है, यह मथुरामंडल प्रयागराजनेहू पूज्यौ है ॥ १३ ॥ या मथुरामंडलमें सब वननते वृंदावन उत्तम है,
परिपूर्णतम श्रीकृष्णकी लीलाको आंगन है और बड़ो मनोहर है ॥ १४ ॥ वैकुंठते परे कोई लोक उत्तम न भयो न होयगो परन्तु ये वृंदावन वैकुंठतेऊ परेते परे है ॥ १५ ॥
यहां गोवर्द्धन पर्वतनको राजा विराजे है, जहां निकटही कालिंदीजी बहें हैं और मङ्गलकारी जहां पुलिन है ॥ १६ ॥ जहां बृहत्सानु पर्वत हैं, तहाँई नन्दीश्वर पर्वत है,
जो पर्वत चौबीस कोशको है और बडे २ वननसों वृत है ॥ १७ ॥ पशूनकूं हितकारी है और गोप गोपी और गऊनकूं सेवनकरिबेलायक है और लतानकी कुंजनसों युक्त है,

विंशद्योजनविस्तीर्णंसार्द्धंयद्योजनेनवै ॥ माथुरंमंडलंदिव्यंव्रजमाहुर्मनीषिणः ॥ १२ ॥ मथुरायांशौरिगृहेगर्गाचार्यमुखाच्छ्रुतम् ॥ माथुरं मंडलंदिव्यंतीर्थराजेनपूजितम् ॥ १३ ॥ वनेभ्यस्तत्रसर्वेभ्योवनंवृंदावनंवरम् ॥ परिपूर्णतमस्यापिलीलाक्रीडंमनोहरम् ॥ १४ ॥ वैकुंठाश्चापरोलोकोनभूतोनभविष्यति ॥ एकंवृन्दावनंनामवैकुंठाच्चपरात्परम् ॥ १५ ॥ यत्रगोवर्द्धनोनामगिरिराजोविराजते ॥ कालिन्दीनिकटे यत्रपुलिनंमंगलायनम् ॥ १६ ॥ बृहत्सानुर्गिरिर्यत्रयत्रनन्दीश्वरोगिरिः ॥ क्रोशानांचचतुर्विंशद्भिस्तृतैःकाननैर्वृतम् ॥ १७ ॥ पशव्यंगोपगोपीनांगवांसेव्यंमनोहरम् ॥ लताकुंजावृतंतद्वैवनंवृन्दावनंस्मृतम् ॥ १८ ॥ ॥ नंदउवाच ॥ ॥ कदाव्रजोयंसन्नंदतीर्थराजेनपूजितः ॥ एतद्वेदितुमिच्छामिपरंकौतूहलंहिमे ॥ १९ ॥ ॥ सन्नंदउवाच ॥ ॥ शंखासुरोमहादैत्यःपुरानैमित्तिकेलये ॥ स्वपतोब्रह्मणःसोपिवेदधृग्दैत्यपुंगवः ॥ २० जित्वादेवान्ब्रह्मलोकाद्धृत्वावेदान्गतोर्णवे ॥ गतेषुयदिवेदेषुदेवानांचगतंबलम् ॥ २१ ॥ तदासाक्षाद्धरिःपूर्णोधृत्वामात्स्यंवपुःपरम् ॥ नैमित्तिकलयांभोधौयुयुधेतेनयज्ञराट् ॥ २२ ॥ शूलंचिक्षेपहरयेशंखोदैत्योमहाबलः ॥ स्वचक्रेणहरिःसाक्षात्तच्छूलंशतधाकरोत् ॥ २३ ॥ हरिंतताडशिरसाशंखोविष्णुमुरःस्थले ॥ तस्यमूर्द्धप्रहारेणनचचालपरात्परः ॥ २४ ॥ तदांगदांसमादायमत्स्यरूपधरोहरिः ॥ पृष्ठेजघानतंदैत्यंशंखरूपंमहाबलम् ॥ २५ ॥

वाहीको वृन्दावन नाम है ॥ १८ ॥ नन्दजी बोले कि, सन्नन्दजी यह व्रजमंडल प्रयागराजने कब पूज्यौ है ? या बातको मैं जाना चाहूंहूं मेरे मनमें बडो आश्चर्य है ॥ १९ ॥
तब सनंदन बोले पहले एक शंखासुर नामको दैत्य वेदनको द्रोही दैत्य नैमित्तिक प्रलयके समयमें भयो ॥ २० ॥ वह सब देवतानकूं जीतिकें ब्रह्माजीके लोककूं गयो, ब्रह्माजीके
सोयगये देखके तिनके वेदनकों चुरायके समुद्रमें चलोगयो तब वेदनके गयेते देवतानको बल जातो रह्यो ॥ २१ ॥ तब साक्षात् हरि यज्ञनके ईश्वर पूर्ण भगवान्
मत्स्यरूपधारि वा नैमित्तिक प्रलयके समुद्रमें वा दैत्यते युद्ध करते गये ॥ २२ ॥ वा महाबली शंख दैत्यने भगवानपै त्रिशूल चलायो तब हरिने अपने चक्रते त्रिशूलके
सौ टूक करडारे ॥ २३ ॥ फिर दैत्य अपने शिरते विष्णुकूं छातीमें मारतो भयो तब वाके शिरके प्रहारते परात्पर भगवान् चलायमान न भये ॥ २४ ॥ तब तो मत्स्य

रूपी भगवानने गदा लेके शंखरूपी महाबली दैत्यकी पीठमें मारी ॥ २५ ॥ तब गदाके प्रहारसों व्यथा जाके भई सो कुछ व्याकुलमन है फिर उठिके विष्णुके वक्षस्थलमें घूँसा मारतो भयो ॥ २६ ॥ तबही साक्षात् भगवान् कमललोचन अपने चक्रते शीघ्रसमेत वाके दृढ शिरकूं काटि लेतेभये ॥ २७ ॥ हे व्रजेश्वर ! ऐसे शंखासुरकूं जीतिके देवतानकूं संग लेके विष्णुभगवान् प्रयागमें आयके ब्रह्माजीकूं वेद देतेभये ॥ २८ ॥ और सब देवतानके गणनके संग विधिसहित यज्ञ कीनो और प्रयागकूं बुलायके सब तीर्थनको राजा कीनो ॥ २९ ॥ तब साक्षात् अक्षयवटको लीला छत्रकीसी नाई बनायो और गंगा यमुनाकी लहरीरूप चमर ढुरेहैं तिनसो प्रयागराज सुशोभित है ॥ ३० ॥ तबही जंबुद्वीपके सम्पूर्ण तीर्थ बलि भेंट लेलेके बुद्धिमान जो तीर्थराज प्रयाग ताके पास आवतभये ॥ ३१ ॥ सम्पूर्ण तीर्थने तीर्थराज प्रयागको पूजन कियो जब हरिसहित सब ब्रह्मादिक

गदाप्रहारव्यथितः किंचिद्व्याकुलमानसः ॥ पुनरुत्थायसर्वेशंमुष्टिनासतताडह ॥ २६ ॥ तदाविष्णुःस्वचक्रेणसशृंगंतच्छिरोदृढम् ॥ जहारकुपितःसाक्षाद्भगवान्कमलेक्षणः ॥ २७ ॥ जित्वाशंखंदेववरैःसार्द्धंविष्णुर्व्रजेश्वर ॥ प्रयागमेत्यसहरिर्वेदांस्तान्ब्रह्मणेददौ ॥ २८ ॥ यज्ञंचकारविधिवत्सर्वैर्देवगणैःसह ॥ प्रयागंचसमाहूयतीर्थराजंचकारह ॥ २९ ॥ तत्साक्षादक्षयवटःकृतोलीलातपत्रवत् ॥ शुनिभागसुतेयोर्मिचामरैस्तंविरेजतुः ॥ ३० ॥ तदैवसर्वतीर्थानिजंबूद्वीपस्थितानिच ॥ नीत्वाबलिंसमाजग्मुस्तीर्थराजायधीमते ॥ ३१ ॥ तीर्थराजंचसंपूज्यनत्वातीर्थानिसर्वतः ॥ स्वधामानिययुर्नन्दहरौदेवैर्गतेसति ॥ ३२ ॥ तदैवनारदःप्राप्तोमुनीन्द्रःकलहप्रियः ॥ सिंहासनेभ्राजमानंतीर्थराजमुवाचह ॥ ३३ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ तीर्थैःप्रपूजितस्त्वंवैतीर्थराजमहातप ॥ तुभ्यंचसर्वतीर्थानिमुख्यानीहबलिंददुः ॥३४॥ व्रजवृंदावनादीनिनागतानीहतेपुरः ॥ तीर्थानांराजराजस्त्वंप्रमत्तैस्तैस्तिरस्कृतः ॥ ३५ ॥ ॥ सन्नन्दउवाच ॥ ॥ इतिप्रभाष्यवैसाक्षाद्गतेदेवर्षिसत्तमे ॥ तीर्थराजस्तदाक्रुद्धोहरिलोकंजगामह ॥ ३६ ॥ नत्वाहरिंपरिक्रम्यपुरःस्थित्वाकृतांजलिः ॥ सर्वतीर्थैःपरिवृतःश्रीनाथंप्राहतीर्थराट् ॥ ३७ ॥ ॥तीर्थराजउवाच ॥ ॥ हेदेवदेवप्राप्तोहंतीर्थराजस्त्वयाकृतः ॥ बलिंददुर्मेतीर्थानिमथुरामंडलंविना ॥ ३८ ॥

देवता अपने अपने लोककूं चलेगये तब तीर्थहू सबरे अपने अपने स्थानकूं चलेआये ॥ ३२ ॥ तबही हे नंद ! वहां कलहप्रिय मुनींद्र नारदजी आये, सिंहासनपै बैठे, जो तीर्थनके राजा प्रयागकूं देखके बोले ॥ ३३ ॥ हे महातप ! हे तीर्थनके राजा ! सब मुखिया मुखिया तीर्थनने तुम्हारी पूजा कीनी और बलि(भेंट) दीनी ॥ ३४ ॥ पर व्रजते वृंदावनादिक तीर्थ तेरे आगे नहीं आये तू सब तीर्थनको राजा है पर मस्त जे व्रजके तीर्थ हैं तिनने तेरो तिरस्कार करदीनों तो तू काहेको राजा है ॥ ३५ ॥ सन्नन्द नन्दजीते कहें हैं कि, ऐसे नारद कहिके जब चलेगये तब तीर्थराज प्रयागकूं वडो क्रोध आयो और तबही प्रयाग हरिके लोककूं चल्योगयो ॥ ३६ ॥ हरिकी परिक्रमा देके, हरिकूं दंडौत करिकें, हाथ जोडके, अगाडी ठाडो हैके सब तीर्थनकूं संग लेके तीर्थनको राजा श्रीभगवान् सो यह बोल्यो ॥ ३७ ॥ हे देवदेव ! मैं आपके पास आयो हूं, मोकूं आपने तीर्थनको राजा कीनों

सब तीर्थनने मोकूं बलि(भेंट) दीनी पर एक मथुरा मंडल नहीं आयौ ॥ ३८ ॥ घडे मतवारे व्रजके तीर्थनने मेरौ तिरस्कार करिदीनों ताते तुमते कहिवेकूं तुम्हारे मंदिरमें मे प्राप्त भयौ हूं ॥ ३९ ॥ तब भगवान् तीर्थराज प्रयागते बोले अरे ! मैने तोकूं सब तीर्थनको राजा कीन्हों है पर अपने घरको मालिक नही कीन्हो है ॥ ४० ॥ कहा तू मेरे घरकूंभी लियो चाहे है ? अरे ! मतवारेकी नाईं कैसे बोले है सो है तीर्थनके राजा ! जा अपने घरकूं चल्यौ जा और जो मै कहूं तो मेरे वचनकूंभी सुनले ॥ ४१ ॥ मथुरामंडल परात्पर साक्षात् मेरौ घर है तीनो लोकते परे है और यह प्रलयमेंभी कबहूं नष्ट नही होय है ॥ ४२ ॥ सन्नंद कहे है ऐसे सुनिके तीर्थनको राजा प्रयाग विस्मित है गयो और गर्व सब जात रह्यो, यहां आयके व्रजमें दंडौत करिके मथुरामंडलकूं पूजिके ॥ ४३ ॥ फिर परिक्रमा देके फिर अपने धामकूं जातोभयो ये सब बात धराके मानभंगके अर्थ पहिलेई

प्रमत्तैर्व्रजतीर्थैश्चतैरहंतुतिरस्कृतः ॥ तस्मात्तुभ्यंचकथितंप्राप्तोऽहंतवमंदिरे ॥ ३९ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ धरायांसर्वतीर्थानांत्वं कृतस्तीर्थेराण्मया ॥ किंतुस्वस्यगृहस्यापिनकृतोराट्त्वमेवहि ॥ ४० ॥ किंत्वंमेमंदिरंलिप्सुर्मत्तवद्भाषसेकथम् ॥ तीर्थराजगृहंगच्छशृणु वाक्यंशुभंचमे ॥ ४१ ॥ मथुरामंडलंसाक्षान्मंदिरंमेपरात्परम् ॥ लोकत्रयात्परंदिव्यंप्रलयेपिनसंहृतम् ॥ ४२ ॥ ॥ सन्नन्दउवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वातीर्थराजोविस्मितोभूद्गतस्मयः ॥ आगत्यनत्वासंपूज्यमाथुरंव्रजमंडलम् ॥ ४३ ॥ ततःप्रदक्षिणीकृत्यस्वधामगतवान्पुनः ॥ धरायामानभंगार्थंपूर्वमेतत्प्रदर्शितम् ॥ मयातवाग्रेकथितंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ४४ ॥ ॥ नन्दउवाच ॥ ॥ धरायामानभंगार्थंकेनपूर्वंप्रदर्शितम् ॥ एतन्मेवदगोपेशमाथुरंव्रजमंडलम् ॥ ४५ ॥ ॥ सन्नन्दउवाच ॥ ॥ आदौवाराहकल्पेस्मिन्हरिर्वाराहरूपधृक् ॥ रसातलात्समुद्धृत्यगांबभौदंष्ट्रयाप्रभुः ॥ ४६ ॥ गच्छन्तंवारिवृन्देषुभगवन्तंरमेश्वरम् ॥ दंष्ट्राग्रेशोभितापृथ्वीप्राहदेवंजनार्दनम् ॥ ४७ ॥ ॥ धरोवाच ॥ देवकुत्रस्थलेत्वंवैस्थापनांमेकरिष्यसि ॥ जलपूर्णंजगत्सर्वंदृश्यतेवदहेप्रभो ॥ ४८ ॥ ॥ वाराहउवाच ॥ ॥ यदावृक्षाःप्रदृष्टाहिभवन्त्युद्वेगताजले ॥ तदातेस्थापनाभूयात्पश्यंतीगच्छभूरुहान् ॥ ४९ ॥ ॥ धरोवाच ॥ ॥ स्थावराणांतुरचनाममोपरिसमास्थिता ॥ अन्यास्तिकिंवाधरणीत्वंहिधारणमयी ॥ ५० ॥

दिखायदीनी है ये सब हवाल मैंने तुम्हारे आगे कह्यौ है आगे कहो तुम कहा सुनिवेकी इच्छा है ॥४४॥ तब नंदराज बोले कि, हे गोपेश ! पृथ्वीके मानभंगके अर्थ पहले यह मथुरा मंडल कौनने कौनकूं दिखायो हो यह सब मेरे आगे कहो ? ॥ ४५ ॥ अब सन्नंद गोप बोले कि, पहिले या वाराहकल्पमें हरिने वाराहरूप धर्यो हो, जब रसातलते पृथ्वीकूं डाढपे धरिके लाये तब प्रभुकी बड़ी शोभा भई ॥ ४६ ॥ जलनके समूहमे चले आमे जे भगवान् लक्ष्मीनाथ तिनके डाढाके अग्रपे बैठी जो पृथ्वी है वो भगवानते यह वचन बोली ॥ ४७ ॥ हे देव ! तुम मेरी कहाँ स्थापना करोगे, सब जगतमें जलही जल भर्यो दीखे है, हे प्रभो ! मोंसे कहो ॥ ४८ ॥ तब श्रीवाराहजी बोले जहाँ वृक्ष दीखनलगेंगे और जलमे उद्वेगता होयगी तहाँई तेरी स्थापना होयगी याते तु वृक्षनकूं देखत चल ॥ ४९ ॥ तब पृथ्वी बोली कि, स्थावरकी रचना तो मेरेई

ऊपर है कोई औरहू पृथ्वी है कहा ? धारणमयी धरती तो एक मैं ही हूँ ॥ ५० ॥ सन्नंद कहे हैं कि, पृथ्वी वाराहजीते ऐसे कहत चली आवे है के जलके बीचमें बड़े मनोहर वृक्ष देखे, लता फूली फूली देखी, तब तो पृथ्वीको सबरो गर्व जात रह्यो और पृथ्वी वाराहजीते ये बोली ॥ ५१ ॥ हे देव ! ये सुंदर २ वृक्ष, ये लता कोनसी जगह हैं, यह मेरे मनमें बडो अचंभो है, हे यज्ञपति ! हे प्रभो ! सो तुम कहो ॥ ५२ ॥ तब वाराहजी बोले हे नितंबिनी ! यह अगाडी दिव्य मेरो मथुरामंडल दीखे है, यह गोलोककी भूमि है, यह तो महा प्रलयहूमें नाश नहीं होय है ॥ ५३ ॥ सनंद कहे हैं ताकूं सुनिके पृथ्वी अचंभो करनलगी अभिमान सब जात रह्यो याते हे नंद ! हे महाबाहो यह व्रज सब तीर्थनते अधिक है ॥ ५४ ॥ या व्रजके महात्म्यकूं जो कोई मनुष्य सुनेगो सो जीवन्मुक्त होयगो, यह माथुर व्रजमंडल है सो एक तीर्थराज प्रयाग कहा जितने ब्रह्मांडमें तीर्थ हैं उन सबनतेऊ श्रेष्ठ है ॥ ५५ ॥

॥ ॥ सन्नन्दउवाच ॥ ॥ वदंतीत्थंददर्शाग्रेजलेवृक्षान्मनोहरान् ॥ वीक्ष्यपृथ्वीहरिंप्राहसर्वतोविगतस्मया ॥ ५१ ॥ ॥ धरोवाच ॥ देवकस्मिन्स्थलेवृक्षाः सन्तिह्येतेसपल्लवाः ॥ इदंमनसिमेचित्रंवदयज्ञपतेप्रभो ॥ ५२ ॥ ॥ वाराहउवाच ॥ ॥ माथुरंमंडलंदिव्यंदृश्य तेऽग्रेनितंबिनि ॥ गोलोकभूमिसंयुक्तंप्रलयेपिनसंहृतम् ॥ ५३ ॥ ॥ सन्नन्दउवाच ॥ ॥ तच्छ्रुत्वाविस्मितापृथ्वीगतमानाबभूवह ॥ तस्मान्नन्दमहाबाहोव्रजोयंसर्वतोधिकः ॥ ५४ ॥ श्रुत्वेदंव्रजमाहात्म्यंजीवन्मुक्तोभवेन्नरः ॥ तीर्थराजात्परंविद्धिमाथुरंव्रजमंडलम् ॥ ५५ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीवृन्दावनखंडेनन्दसन्नन्दसंवादेवृन्दावनागमनोद्योगवर्णनंनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ नन्दउवाच ॥ ॥ हेस न्नन्दमहाप्राज्ञसर्वज्ञोसिबहुश्रुतः ॥ व्रजमंडलमाहात्म्यंवदतस्तेमुखाच्छ्रुतम् ॥ १ ॥ गिरिर्गोवर्द्धनोनामतस्योत्पत्तिंचमेवद ॥ कस्मादेनंगि रिवरंगिरिराजंवदन्तिहि ॥ २ ॥ यमुनेयंनदीसाक्षात्कस्माल्लोकात्समागता ॥ तन्माहात्म्यंचवदमेत्वमसिज्ञानिनांवरः ॥ ३ ॥ ॥ सन्न न्दउवाच ॥ ॥ एकदाहास्तिनपुरेभीष्मंधर्मभृतांवरम् ॥ पप्रच्छपांडुरित्थंतंजनानांचानुशृण्वताम् ॥ ४ ॥ परिपूर्णतमः साक्षाच्छ्रीकृष्णो भगवान्स्वयम् ॥ असंख्यब्रह्मांडपतिर्गोलोकाधिपतिःप्रभुः ॥ ५ ॥ भुवोभारावतारायगच्छन्देवोजनार्दनः ॥ राधांप्राहप्रियेभीरुगच्छत्व मपिभूतले ॥ ६ ॥

इति श्रीमद्गर्गसंहितायां श्रीवृंदावनखण्डे भाषाटीकायां नंदसन्नंदसंवादे वृंदावनागमनोद्योगवर्णनं नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ नंदजी अब सन्नंद गोपते पूछेहैं हे सन्नंद ! तुम सर्वज्ञ हो हे ! महाप्राज्ञ तुम बहुश्रुत हो, व्रजमंडलको माहात्म्य मैंने तुम्हारे मुखतेई सुन्यो है ॥ १ ॥ सो जो ये गोवर्धन पर्वत है ताकी उत्पत्ति मेरे आगे कहो कोनसे कारणते या गिरिराजको गिरिवर कहे हैं ॥ २ ॥ और यह जो साक्षात् यमुना नदी है सो कोनसे लोकते आई है ? याहूको माहात्म्य मेरे अगाड़ी वर्णन करो, तुम ज्ञानीनमें श्रेष्ठ हो ॥ ३ ॥ अब सन्नंद गोप बोले-एक समय हस्तिनापुरमें पांडुराजा सबके सुनत सुनत धर्मधारीनमें श्रेष्ठ जो भीष्मपितामह तिनते यही पूछतभयो ॥ ४ ॥ हे पितामह ! परिपूर्णतम साक्षात् श्रीकृष्ण भगवान आप असंख्य ब्रह्मांडनके पति और गोलोकके पति प्रभू ॥ ५ ॥ पृथ्वीको भार उतारिवेके लिये गमन करते जनार्दन राधिकाजीते यह बोले हे प्यारी ! हे भीरु ! तुमहू पृथ्वीतलपै

चलौ ॥ ६ ॥ तब राधिकाजी यह बोलीं कि, हे प्यारे ! जहां वृन्दावन नहीं , जहां यमुनानदी नही है, और जहाँ गोवर्द्धन नहीं तहीं मेरे मनकूं सुख नहीं है ॥७॥ ऐसे नंदजीते सन्नंद कहै है, श्रीकृष्ण ऐसे राधिकाजीकौ वचन सुनिके अपने धामते चौरासीकोस भूमिको पृथ्वीमें भेजते भये और गोवर्द्धन पर्वतकूं और श्रीयमुनाजीकूं भेजत भये ॥ ८ ॥ तब सब जाकूं दंडोत करें ऐसी चौरासी कोश भूमि चौबीस वननकूं संग लेके यहां आई ॥ ९ ॥ और भरतखंडते पश्चिम दिशामें शाल्मलीद्वीपके बीचमें द्रोणाचल पर्वतकी स्त्रीमें गोवर्द्धनपर्वत जन्म लीनों ॥ १० ॥ तब तो देवता गोवर्द्धन पर्वतके ऊपर पुष्पनकी वर्षा करते भये और हिमालय सुमेरुते आदि लेके सबरे पर्वत आवत भए ॥ ११ ॥ गोवर्द्धनकूं नमस्कार करिके परिक्रमा देके विधानते पूजा करिके सबरे बडे बडे पर्वत गोवर्द्धनकी परम स्तुति करनलगे ॥ १२ ॥ तुम साक्षात् परिपूर्णतम कृष्णचंद्रके गोलोकमें विराजो हो जा गोलोकमें सब गोपाल और गौअनके गण तथा गोपी विराजे हैं ॥ १३ ॥ तुम्हीं

॥ ॥ राधोवाच ॥ ॥ यत्रवृंदावनंनास्तिनयत्रयमुनानदी ॥ यत्रगोवर्द्धनोनास्तितत्रमेनमनःसुखम् ॥ ७ ॥ ॥ सन्नन्दउवाच ॥ ॥ वेदनागक्रोशभूमिंस्वधाम्नःश्रीहरिः स्वयम् ॥ गोवर्द्धनंचयमुनांप्रेषयामासभूपरि ॥ ८ ॥ वेदनागक्रोशभूमिः सापिचात्रसमागता ॥ चतुर्विंशद्वनैर्युक्तासर्वलोकैश्चवन्दिता ॥ ९ ॥ भारतात्पश्चिमदिशिशाल्मलीद्वीपमध्यतः ॥ गोवर्द्धनोजन्मलेभेपत्न्यांद्रोणाचलस्यच ॥ १० ॥ गोवर्द्धनोपरिसुराःपुष्पवर्षंप्रचक्रिरे ॥ हिमालयसुमेर्वाद्याःशैलाःसर्वेसमागताः ॥११॥ नत्वाप्रदक्षिणीकृत्यपूजांकृत्वाविधानतः ॥ गोवर्द्धनस्यपरमांस्तुतिंचक्रुर्महाद्रयः ॥१२॥ ॥ शैलाऊचुः ॥ ॥ त्वंसाक्षात्कृष्णचंद्रस्यपरिपूर्णतमस्यच ॥ गोलोकेगोगणैर्युक्तेगोपीगोपालसंयुते॥१३॥ त्वंहिगोवर्द्धनोनामवृन्दारण्येविराजसे ॥ त्वन्नोगिरीणांसर्वेषांगिरिराजोसिसांप्रतम् ॥ १४ ॥ नमोवृन्दावनांकायतुभ्यंगोलोकमौलिने ॥ पूर्णब्रह्मातपत्रायनमोगोवर्द्धनायच ॥ १५ ॥ ॥ सन्नन्दउवाच ॥ ॥ इतिस्तुत्वाऽथगिरयोजग्मुःस्वंस्वंगृहंततः ॥ शैलोगिरिवरःसाक्षाद्गिरिराजइतिस्मृतः ॥ १६ ॥ एकदातीर्थयायीचपुलस्त्योमुनिसत्तमः ॥ द्रोणाचलसुतंश्यामंगिरिंगोवर्द्धनंवरम् ॥ १७ ॥ माधवीलतिकापुष्पफलभारसमन्वितम् ॥ निर्झरैर्नादितंशान्तंकंदरामंगलायनम् ॥ १८ ॥

या समय हमारे सब पर्वतनके राजा हो और तुमी गोवर्द्धन नामसों वृन्दावनमें विराजो हो ॥ १४ ॥ वृन्दावनके गोदीमें रहनहारे अथवा वृन्दावनके चिह्न अर्थात् वृन्दावन कौनसो कि, जामें गोवर्धन नाम पर्वत है यासों वृंदावनके तुम चिह्न हो और गोलोकके मुकुटरूप पूर्णब्रह्मके छत्र ऐसे अथवा पूर्णब्रह्म पुरुषोत्तम श्रीनंदनंदन है छत्रकी तरह रक्षक जाको ऐसे जो गोवर्द्धन हो तिनकूं हमारो नमस्कार है ॥ १५ ॥ फिर सन्नंद कहे हैं ऐसे सम्पूर्ण पर्वत गोवर्द्धनकी स्तुति करके अपने २ घरकूं चलेगये सन्नंदगोप नन्दजीते कहे है तबते यह गोवर्द्धन पर्वत गिरिराज कहावे है ॥ १६ ॥ एक समय पुलस्त्य नाम मुनि तीर्थयात्राकूं आये है, तहां द्रोणाचलको बेटा श्यामसुन्दररूप गोवर्द्धन पर्वत देख्यो ॥ १७ ॥ जामें माधवीकी लता फूलरही है, फूल फलनते झलमलाय रह्यो है, झरना जामें झरि रही है, तिनके शब्दसों युक्त है गुफा जाकी बड़ी मनोहर है,

मङ्गलकारी हैं ॥ १८ ॥ तप करिवेलायक हैं, शत जाके शिखर हैं, गेरू, खड़िया, मनशिल, चित्र विचित्र धातुते विचित्र जाको अंग है और तोता, मैंना, मोर, चकोर, जहां बोलि रहे हैं ॥ १९ ॥ मृग और बन्दर जामें डोल रहे हैं, इतने भरचो है, मोर जामें म्याऊं म्याऊं कर रहे हैं, फिर कैसौ है मुमुक्षुनकूं मुक्तिको देनहारो है, ता गोवर्द्धनकूं पुलस्त्यजी देखनलगे ॥ २० ॥ मुनिनमें शार्दूल गोवर्द्धनको लेवेकी चाहना जिनके सो पुलस्त्यजी द्रोणाचलके पास गये तब द्रोणाचलने पुलस्त्यजीकी बड़ी पूजा करी, तब पुलस्त्यजी द्रोणाचलते यह बोले ॥ २१ ॥ हे द्रोण! तू पर्वतनको राजा है, सब देवतनने तोकूं पूज्यो है, तो में दिव्य औषधि बसें हैं नित्यही मनुष्यनकूं जीवदानको दाता है ॥ २२ ॥ मै काशीको रहनहारो अर्थी मुनीश्वर तेरे पास आयौ हूं, तूं अपने गोवर्द्धन बेटाको मोकूं दे २ और मेरा यहां कछू काम नहीं है ॥ २३ ॥ विश्वेश्वर

तपोयोग्यंरत्नमयंशतशृंगंमनोहरम् ॥ चित्रधातुविचित्रांगंसटंकंपक्षिसंकुलम् ॥ १९ ॥ मृगैःशाखामृगैर्व्याप्तंमयूरध्वनिमंडितम् ॥ मुक्तिप्रदंमुमुक्षूणांतंददर्शमहामुनिः ॥ २० ॥ तल्लिप्सुर्मुनिशार्दूलोद्रोणपार्श्वसमागतः ॥ पूजितोद्रोणगिरिणापुलस्त्यःप्राहतंगिरिम् ॥ २१ ॥ ॥ पुलस्त्यउवाच ॥ ॥ हेद्रोणत्वंगिरीन्द्रोसिसर्वदेवैश्चपूजितः ॥ दिव्यौषधिसमायुक्तःसदाजीवनदोनृणाम् ॥ २२ ॥ अर्थीतवांतिकेप्राप्तःकाशिस्थोहंमहामुनिः ॥ गोवर्द्धनंसुतंदेहिनान्यैर्मेत्रप्रयोजनम् ॥ २३ ॥ विश्वेश्वरस्यदेवस्यकाशीनाम्नीमहापुरी ॥ यत्रपापीमृतःसद्यःपरंमोक्षंप्रयातिहि ॥ २४ ॥ यत्रगंगागतासाक्षाद्विश्वनाथोपियत्रवै ॥ तत्रैवस्थापयिष्यामियत्रकोपिनपर्वतः ॥ २५ ॥ गोवर्द्धनेतवसुतेलतावृक्षसमाकुले ॥ तस्मिंस्तपःकरिष्यामिजातोयंमेमनोरथः ॥ २६ ॥ ॥ सन्नंदउवाच ॥ ॥ पुलस्त्यवचनंश्रुत्वास्वसुतस्नेहविह्वलः ॥ अश्रुपूर्णोद्रोणगिरिस्तंमुनिंवाक्यमब्रवीत् ॥ २७ ॥ ॥ द्रोणउवाच ॥ ॥ पुत्रस्नेहाकुलोहंवैपुत्रोमेयमतिप्रियः ॥ तेशापभयभीतोहंवदाम्येनंमहामुने ॥ २८ ॥ हेपुत्रगच्छमुनिनाभारतेकर्मकेशुभे ॥ नैवर्ग्यंलभ्यतेयत्रनृभिर्मोक्षमपिक्षणात् ॥ २९ ॥ ॥ गोवर्द्धनउवाच ॥ ॥ मुनेकथंमांनयसिलंबितंयोजनाष्टकम् ॥ योजनद्वयमुच्चांगंपंचयोजनविस्तृतम् ॥ ३० ॥

देवकी काशीपुरी है जहां पापीहू मरिजायं तौ जल्दी मुक्तिकूं प्राप्त है जाय ॥ २४ ॥ जहां गङ्गाजी विराजें हैं जहां साक्षात् विश्वेश्वर महादेव विराजें हैं, तहाँहीं मैं स्थापना याकी करूंगो, जहां कोई पर्वत नहीं है ॥ २५ ॥ तेरो बेटा गोवर्द्धन जामें सुंदर २ वृक्ष लता तिनमें फूल फल तिनपै सुन्दर पखेरू बैठे हैं तामें बैठिके मैं तप करूंगो, मेरो यह मनोरथ भयो है ॥ २६ ॥ संनन्द नन्दजीते कहै हैं कि, ऐसे पुलस्त्यमुनिको वचन सुनिकै द्रोणपर्वत पुत्रके स्नेहसों विह्वल ह्वैके आँखिनमें आसूँ भरिलायो और मुनिते यह बोल्यो ॥ २७ ॥ पुत्रके स्नेहते मैं बडो आकुल हूं मोकूं यह बेटा अत्यंत प्यारौ है सो हे महामुने! तुम्हारे शापके डरके मारे मैं याते कहूंहूं ॥ २८ ॥ ऐसे कहिके पुत्रते बोल्यो हे बेटा! मुनीश्वरके संग तूं कर्मभूमि भरतखंडमें जा, जा भरतखंडमें धर्म, अर्थ, काम, तीनों मिले हैं और जहां मोक्षहू एकक्षणभरमेंही मिले है ॥ २९ ॥ तब गोवर्द्धन

बोल्यो—हे मुनि ! मोकूं कैसे ले चलोगे मैं तो आठ योजन लम्बो हूं और पांच योजन चौड़ो हूं और दो योजन ऊँचो हूं ॥ ३० ॥ तब पुलस्त्यजी बोले—हे बेटा ! मेरे हाथपै बैठिके सुखते चल्योचल तोकूं मैं जबतक काशीजी न पहुंचोगे तबतक एक हाथपे धरके लेचलूंगो ॥ ३१ ॥ तब फिर गोवर्द्धन बोल्यो हे मुने ! तुम जहां कहीं मोकूं धरतीमें धरिदेउगे धरतीमेंते फिर नहीं उठूंगो यह मेरे सौगंद है ॥ ३२ ॥ तब फिर पुलस्त्यजी बोले कि, जामेंभी प्रतिज्ञा करहूँ कि, शाल्मली द्वीपते लेके कोशलदेशताई बीचमें तोकूं कहूँ नहीं धरूंगो ॥३३॥ संनन्द कहे हैं हे नन्दराजा ! तब गोवर्द्धन पर्वत द्रोणाचल पिताकूं दण्डौत करके पिताके वियोगजन्य दुःखते आंखिनमें आँसू भरि मुनीश्वरके हाथपे बैठि गयो ॥ ३४ ॥ तब पुलस्त्यमुनि अपने दहने हाथपै गोवर्द्धन पर्वतकूं धरके दुनियांकूं अपनो प्रभाव दिखावत हौले २ चलते २ जब ब्रजमंडलमें आये ॥ ३५ ॥ तवही गोवर्द्धनकूं

॥ ॥ पुलस्त्यउवाच ॥ ॥ उपविश्यकरेमेत्वंगच्छपुत्रयथासुखम् ॥ वाहयामिकरेत्वांवैयावत्काशींसमागतः ॥३१॥ ॥ गोवर्द्धनउवाच ॥ ॥ मुनेयत्रस्थलेभूम्यांस्थापनांमेकरिष्यसि ॥ करिष्यामिनचोत्थानंतद्भूम्याःशपथोमम ॥ ३२ ॥ ॥ पुलस्त्यउवाच ॥ ॥ अहमाशाल्मली द्वीपान्मर्यादीकृत्यकौशलम् ॥ नस्थापनांकरिष्यामिशपथस्तेपिमेपथि ॥ ३३ ॥ ॥ संनंदउवाच ॥ ॥ मुनेःकरतलेतस्मिन्नारुरोहमहा चलः ॥ प्रणम्यपितरंद्रोणमश्रुपूर्णाकुलेक्षणः ॥ ३४ ॥ मुनिस्तंदक्षिणकरेधृत्वागच्छञ्छनैःशनैः ॥ स्वतेजोदर्शयन्नृणांप्राप्तोभूद्व्रजमंडले ॥३५॥ जातिस्मरोगिरिस्तत्रप्राहेदंपथिचिंतयन् ॥ परिपूर्णतमःसाक्षाच्छ्रीकृष्णोभगवान्स्वयम् ॥३६॥ असंख्यब्रह्मांडपतिर्व्रजेऽत्रावतरिष्यति ॥ बाल लीलांचकैशोरींचेष्टांगोपालबालकैः ॥ ३७ ॥ दानलीलांमानलीलांहरिरत्रकरिष्यति ॥ तस्मान्मयानगन्तव्यंभूमिश्चेयंकलिन्दजा ॥ ३८ ॥ गोलोकाद्राधयासार्द्धंश्रीकृष्णोत्रागमिष्यति ॥ कृतकृत्योभविष्यामिकृत्वातद्दर्शनंपरम् ॥ ३९ ॥ इतिविचार्यमनसाभूरिभारंददौकरे ॥ तदामुनिश्चश्रांतोभूद्धृतपूर्वंगतस्मृतिः ॥ ४० ॥ करादुत्तार्यतंशैलंनिधायव्रजमंडले ॥ लघुशंकाजयार्थंहिगतोभूद्भारपीडितः ॥ ४१ ॥ कृत्वाशौचंजलेस्नात्वापुलस्त्योमुनिसत्तमः ॥ उत्तिष्ठेतिमुनिःप्राहगिरिंगोवर्द्धनंपरम् ॥ ४२ ॥ नोत्थितंभूरिभाराढ्यंकराभ्यांतंमहामु निः ॥ स्वतेजसाबलेनापिगृहीतुमुपचक्रमे ॥ ४३ ॥

अपनी पहली बात याद आई तब मार्गमें चितवन करतो यह बोल्यो कि, परिपूर्णतम श्रीकृष्ण यहाँ आपु अवतार लेंगे ॥३६॥ असंख्य ब्रह्मांडनके पति गोपबालकनके संग बालक्रीड़ा किशोर लीला करेंगे ॥३७॥ दानलीला मानलीला करेंगे, ताते मोकूं और जगह जानो योग्य नही है, यह चौरासीकोस भूमि गोलोकते आई है और कलिंदनंदिनी श्रीयमुनाजीभी यहांही है ॥३८॥ गोलोकते राधिकाके संग श्रीकृष्ण यहाँ आमेंगे उनके दर्शन करके मैं कृतकृत्य होऊंगो ताते मोकूं यहांते जानो योग्य नही है ॥ ३९ ॥ ऐसे विचारके अपनो बोझ मुनीश्वरके हाथके ऊपर बढायदीनो तब तो पुलस्त्यजी हारिगये और यह जो प्रतिज्ञा करी ही के मैं तोकूं धरूंगो नही ता प्रतिज्ञाकूं भूलगये ॥ ४० ॥ तब हाथते उतारिके गोवर्द्धनकूं या ब्रजभूमिमें धरिदीनों बोझके मारे लघुशंकाकूं चलेगये ॥ ४१ ॥ फेर शौच करिके जलमें स्नान करिके पुलस्त्यमुनि गोवर्द्धनते बोले कि, बेटा ! उठ ॥ ४२ ॥ तब तो बड़ो

बोझ बढ़िगयो मुनिपे दोनों हाथनसोहू उठ्यो नही, तब अपने तेजते बलते उठावन लगे ॥ ४३ ॥ मुनिने बहुत जोरते उठायो तोहू गिरराज गिरिकी बोझलताले द्रोणाचलको बेटा एक अंगुलहू चलायमान न भयो ॥ ४४ ॥ तब पुलस्त्यजी बोले हे गिरिनमें श्रेष्ठ ! चलि चलि बोझ मति बढ़ावे मैंने जानी तूं रूठिगयो है सो तूं अपनों अभिप्राय कह ॥४५॥ तब गोवर्द्धन बोल्यो-हे मुनि ! यहां मेरो दोष नही है तुमने मोकूं धरिदीनों अब मै यहांते नही उठूंगो मैं आपसे या बातकी सौगंद खायचुको हूं ॥ ४६ ॥ संनंद कहे हैं कि, मुनिनमें सिंह पुलस्त्यमुनिके जब कोई उपाय न चले तब क्रोधके मारे इंद्री जिनकी चलायमान हैं गई, ओठ फरकन लगे, हाथ, पांव, कांपन लगे, तब गोवर्द्धनकूं ये शाप दियो ॥ ४७ ॥ कि, अरे पर्वत ! तूं तौ बड़ो ढीठ निकस्यो ! तैने मेरो मनोरथ न कीनों जाते तूं एक एक तिल नित्य घटि ॥ ४८ ॥ संनंद कहे हैं हे नंद ! पुलस्त्यऋषि तो

मुनिनासंगृहीतोपिगिरिराजोगिरार्द्रया ॥ नचचालांगुलिकिंचित्तदपिद्रोणनन्दनः ॥ ४४ ॥ ॥ पुलस्त्यउवाच ॥ ॥ गच्छगच्छगिरिश्रेष्ठभारंमाकुरुमाकुरु ॥ मयाज्ञातोसिरुष्टस्त्वमभिप्रायंवदाशुमे ॥ ४५ ॥ ॥ गोवर्द्धनउवाच ॥ ॥ मुनेत्रमेनदोषोस्तित्वयामेस्थापनाकृता ॥ करिष्यामिनचोत्थानंपूर्वंमेशपथःकृतः ॥ ४६ ॥ ॥ सन्नन्दउवाच ॥ ॥ पुलस्त्योमुनिशार्दूलःक्रोधात्प्रचलितेन्द्रियः ॥ स्फुरदोष्ठोद्रोणपुत्रंशशापविगतोद्यमः ॥ ४७ ॥ ॥ पुलस्त्यउवाच ॥ ॥ गिरेत्वयातिधृष्टेननकृतोमेमनोरथः ॥ तस्मात्तुतिलमात्रंहिनित्यंत्वंक्षीणतांव्रज ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ सन्नन्दउवाच ॥ ॥ काशींगतेपुलस्त्यर्षौत्वयंगोवर्द्धनोगिरिः ॥ नित्यंसंक्षीयतेनन्दतिलमात्रंदिनेदिने ॥ ४९ ॥ यावद्भागीरथीगंगायावद्गोवर्द्धनोगिरिः ॥ तावत्कलेःप्रभावस्तुभविष्यतिनकर्हिचित् ॥ ॥ ५० ॥ गोवर्द्धनस्यप्रकटंचरित्रंनृणांमहापापहरंपवित्रम् ॥ मयातवाग्रेकथितंविचित्रंसुमुक्तिदंकौरुचिरंनचित्रम् ॥ ५१ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीवृन्दावनखण्डेगिरिराजोत्पत्तिकथनंनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ सन्नंदउवाच ॥ ॥ गोलोकेहरिणाज्ञप्ताकालिन्दीसरितांवरा ॥ कृष्णंप्रदक्षिणीकृत्यगन्तुमभ्युदिताभवत् ॥ १ ॥ तदैवविरजासाक्षाद्गंगाब्रह्मद्रवोद्भवा ॥ द्वेनद्यौयमुनायांतुसंप्रलीनेबभूवतुः ॥ २ ॥ परिपूर्णतमांकृष्णांतस्मात्कृष्णस्यनन्दराट् ॥ परिपूर्णतमस्यापिपट्टराज्ञींविदुर्जनाः ॥ ३ ॥

काशीकूं चलेगये ताही दिनते यह गोवर्द्धन एक एक तिलभर नित्य घटै है ॥ ४९ ॥ या पृथ्वीपे जबतलक भागीरथी गंगा हैं और जबतलक गोवर्द्धन पर्वत है तबतलक कलियुगको प्रभाव कभी नही होयगो ॥ ५० ॥ गोवर्द्धनको यह चरित्र मैंने तेरे आगे वर्णन कर्यो है, यह मनुष्यके महापापको हरनहारो है, मनोहर है, विचित्र है पृथ्वीतलमें प्रकट है, मुक्तिको दाता है, सो गोवर्द्धनको यह माहात्म्य चित्र नही है ॥५१॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां वृंदावनखण्डे भाषाटीकायां गिरिराजोत्पत्तिकथनं नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ संनंद कहे हैं कि, गोलोकमें साक्षात् हरिने जब आज्ञा दीनी तबही श्रीकृष्णकी परिक्रमा देके नदीनमें श्रेष्ठ श्रीयमुना व्रजमें आयवेकूं उद्यत भई ॥ १ ॥ तबही विरजानदी और ब्रह्मद्रवते भई श्रीगंगा दोनों नदी श्रीयमुनाजीमें आयके लीन है गई ॥ २ ॥ याहीते हे नंदराज ! परिपूर्णतम श्रीकृष्णकी परिपूर्णतम श्रीयमुनाको पटरानी जाने हैं ॥ ३ ॥

तबही नदीनमें उत्तम कालिंदीजी बडे वेगते विरजाके वेगकूं भेदिके निकुंजके द्वारमें हैके निकसी हैं ॥ ४ ॥ असंख्य ब्रह्मांडनके समूहनकूं छीवत श्रीगङ्गाजीमें मिली फिर
अपने वेगते बडे भारी गंगाके प्रवाहकूं भेदत चली ॥ ५ ॥ वामनजीके वामपावँके अँगुठाके नखते फूटे ब्रह्मांडके मस्तकपै गंगाजीमें मिलिके ॥ ६ ॥ अजित भगवान्को स्थान
वैकुंठ जो ध्रुवलोक तहां आयके प्राप्तभई ॥ ७ ॥ ब्रह्ममंडलमें है नीचेकूं गिरती २ सैंकरन देवतानके लोकनते लोकनमें होती २ ॥ ८ ॥ खडे वेगते सुमेर पर्वतके माथेमें परी
फिर वहांते बहुतसे पर्वतनके कूटनकों उल्लंघन कर बडे २ ढील शिलानकूं फोरती ॥ ९ ॥ जब सुमेरुकी दक्षिणदिशामें चलिवेकूं उद्यत भई तब साक्षात् श्रीयमुना गंगाजीमेंते
निकसी ॥ १० ॥ फिर गंगाजी तो हिमालयकूं चलिगई और महानदी श्रीजमुनाजी कलिंद पर्वतकूं चलिआई ॥ ११ ॥ फिर जब कलिंदपर्वतते निकसी तबहीते यमुनाजीको

ततोवेगेनमहताकालिन्दीसरितांवरा ॥ विभेदविरजावेगंनिकुंजद्वारनिर्गता ॥ ४ ॥ असंख्यब्रह्मांडचयंस्पृष्ट्वाब्रह्मद्रवंगता ॥ भिन्दन्तीतज्ज
लंदीर्घस्ववेगेनमहानदी ॥ ५ ॥ वामपादांगुष्ठनखभिन्नब्रह्मांडमस्तके ॥ श्रीवामनस्यविवरेब्रह्मद्रवसमाकुले ॥ ६ ॥ तस्मिञ्छ्रीगंगयासार्द्धं
प्रविष्टाभूत्सरिद्वरा ॥ वैकुंठंचाजितपदंसंप्राप्यध्रुवमंडले ॥ ७ ॥ ब्रह्मलोकमभिव्याप्यपतन्तीब्रह्ममंडलात् ॥ ततःसुराणांशतशोलोकाल्लोकंजगा
मह ॥ ८ ॥ ततःपपातवेगेनसुमेरुगिरिमूर्द्धनि ॥ गिरिकूटानतिक्रम्यभित्त्वागंडशिलातटान् ॥ ९ ॥ सुमेरोर्दक्षिणदिशांगन्तुमभ्युदिताऽभ
वत् ॥ ततःश्रीयमुनासाक्षाच्छ्रीगंगायांविनिर्गता ॥ १० ॥ गंगातुप्रययौशैलंहिमवन्तंमहानदी ॥ कृष्णातुप्रययौशैलंकालिन्दंप्राप्यसायदा ॥
॥ ११ ॥ कालिन्दीतिसमाख्याताकालिन्दप्रभवायदा ॥ कलिन्दगिरिसानूनांगंडशैलतटान्दृढान् ॥ १२ ॥ भित्त्वालुठन्तीभूखंडेकृष्णावेग
वतीसती ॥ देशान्पुनन्तीकालिन्दीप्राप्तावैखांडवेवने ॥ १३ ॥ परिपूर्णतमंसाक्षाच्छ्रीकृष्णंवरमिच्छती ॥ धृत्वावपुःपरंदिव्यंतपस्तेपेकलि
न्दजा ॥ १४ ॥पित्राविनिर्मितेगेहेजलेऽद्यापिसमाश्रिता ॥ ततोवेगेनकालिन्दीप्राप्ताभूद्व्रजमंडले ॥१५॥ वृन्दावनसमीपेश्रीमथुरानिकटेशुभे ॥
श्रीमहावनपार्श्वेचसैकतेरमणस्थले ॥ १६ ॥ श्रीगोकुलेचयमुनायूथीभूत्वातिसुन्दरी ॥ श्रीकृष्णचन्द्रसार्थंनिजवासंचकारह ॥ १७ ॥
अथव्रजाद्व्रजन्तीसाव्रजविक्षेपविह्वला ॥ प्रेमानन्दाश्रुसंयुक्ताभूत्वापश्चिमवाहिनी ॥ १८ ॥

कलिंदनंदिनी कालिंदी ये नाम भये, फिर कलिन्द पर्वतके ढील शिलानकूं बड़े बड़े दृढ किनारेनकूं भेदकैं ॥ १२ ॥ बड़े वेगते भूखंडमें लुड़कत २ देशनकूं पवित्र करती श्रीकालिंदी खांडववनमें प्राप्त
होत भई ॥ १३ ॥ तब परिपूर्णतम श्रीकृष्णकी वरवेकी इच्छा करती कलिंदपुत्री परम दिव्यरूप धारिके परम तप कियो ॥ १४ ॥ याही जलमें पिताजी सूर्यने जो महल बनाय दीनों हो ता महलमें
निवास कियो ताके अनन्तर श्रीकालिंदी जब वेगतें पधारी तब श्रीव्रजमंडलमें प्राप्त भई ॥ १५ ॥ वृंदावनके समीप, मथुराके निकट, महावनके पास, रमणरेतीमें ॥ १६ ॥ अति सुंदरी
श्रीयमुना श्रीगोकुलमें अपनो यूथ बनायके श्रीकृष्णके रासके अर्थ अपने निवासके स्थान करती भई ॥ १७ ॥ जब व्रजते अगाडीकूं चली तब व्रजके वियोगमें विहाल ह्वैगई, प्रेमा

नदके आंशू आयगये, सो पश्चिमकूं बहन लगी ॥ १८ ॥ ताके अनन्तर ब्रजमंडलको तीन बार प्रणाम कर देशनकूं पवित्र करत तीर्थराज जो प्रयाग ताकूं चलीगई ॥ १९ ॥ फिर श्रीगंगाजीके संग क्षीरसमुद्रकूं गई तब देवताने आकाशमें सो पुष्पनकी वर्षा करी और जय जय शब्द करे ॥ २० ॥ कृष्णा जो श्रीयमुना कालिंदी नदीनमें श्रेष्ठ वो समुद्रमें जायके गद्गदवाणीते श्रीगंगाजीते बोली ॥ २१ ॥ हे गंगे ! तू धन्य है, सम्पूर्ण ब्रह्मांडकूं पवित्र करे है, श्रीकृष्णके चरणकमलते तेरी उत्पत्ति भई है, सब लोककूं एक तूही वंदना करिबे-योग्य है ॥ २२ ॥ मैं तो अब ऊपरकूं हरिके लोककूं जाऊ हूं, हे शुभे ! तुमहू जाउ तुम्हारे समान तीर्थ कोई भयो न होय ॥ २३ ॥ हे गंगे ! तू सब तीर्थमई है ताते मैं तोकूं नमस्कार करूंहूं, हे सुमंगले गंगे ! जो कछू मैंने कह्यो होय ताकी क्षमा करियो ॥ २४ ॥ श्रीगंगाजी यमुनाजीते बोली, हे कृष्णे ! तू धन्य है, सब ब्रह्मांडकी पवित्र करनहारी है, श्रीकृष्णके

ततस्त्रियारंवेगेननत्वाथोव्रजमंडले ॥ देशान्पुनतीप्रययौप्रयागंतीर्थसत्तमम् ॥ १९ ॥ पुनःश्रीगंगयासार्धंक्षीराब्धिसाजगामह ॥ देवाःसुवर्षंपुष्पाणांचक्रुर्दिविजयध्वनिम् ॥ २० ॥ कृष्णाश्रीयमुनासाक्षात्कालिन्दीसरितांवरा ॥ समुद्रमेत्यश्रीगंगांप्राहगद्गदयागिरा ॥ २१ ॥ ॥ यमुनोवाच ॥ ॥ हेगंगेत्वंतुधन्यासिसर्वब्रह्मांडपावनी ॥ कृष्णपादाब्जसंभूतासर्वलोकैकवन्दिता ॥ २२ ॥ ऊर्ध्वंयामिहरेर्लोकंगच्छत्वमपिहे शुभे ॥ त्वत्समानंहिदिव्यंचनभूतंनभविष्यति ॥ २३ ॥ सर्वतीर्थमयीगंगातस्मात्त्वांप्रणमाम्यहम् ॥ यत्किंचिद्वाप्रकथितंतत्क्षमस्वसुमंगले ॥ ॥ २४ ॥ ॥ गंगोवाच ॥ ॥ हेकृष्णेत्वंतुधन्यासिसर्वब्रह्माण्डपावनी ॥ कृष्णवामांससंभूतापरमानन्दरूपिणी ॥ २५ ॥ परिपूर्णतमासाक्षात्सर्वलोकैकवन्दिता ॥ परिपूर्णतमस्यापिश्रीकृष्णस्यमहात्मनः ॥ २६ ॥ पट्टराज्ञींपरांकृष्णेकृष्णांत्वांप्रणमाम्यहम् ॥ तीर्थदेवैर्दुर्लभात्वंगोलोकेऽपिचदुर्घटा ॥ २७ ॥ अहंयास्यामिपातालंश्रीकृष्णस्याज्ञयाशुभम् ॥ त्वद्वियोगातुराहंवैयानंकर्तुंनचक्षमा ॥ २८ ॥ यूथीभूत्वाभविष्यामिश्रीव्रजेरासमंडले ॥ यत्किंचिन्मेप्रकथितंतत्क्षमस्वहरिप्रिये ॥ २९ ॥ ॥ सन्नन्द उवाच ॥ ॥ इत्थंपरस्परंनत्वाद्रेनद्यौययतुर्द्रुतम् ॥ लोकान्पवित्रीकुर्वन्तीपातालेस्वःसरिद्गता ॥ ३० ॥ सापिभोगवतीनाम्नाबभौभोगवतीवने ॥ यज्जलंसत्रिनयनःशेषोमूर्ध्नाबिभर्तिहि ॥ ३१ ॥ अथकृष्णास्ववेगेनभित्त्वासप्ताब्धिमंडलम् ॥ सप्तद्वीपमहीपृष्ठेलुठन्तीवेगवत्तरा ॥ ३२ ॥

वामांगते तुम्हारो जन्म है, परमानंदरूपिणी हो ॥२५॥ साक्षात् परिपूर्णतमा हो, और सब लोक तुमको वंदन करे हैं परिपूर्णतम महात्मा श्रीकृष्णकी पटरानी हो ॥ २६ ॥ सो कृष्णे ! मैं आपको नमस्कार करौहों तुम सब तीर्थ और देवतानको दुर्लभ हो और गोलोकमें हू दुर्घटा ॥ २७ ॥ मैंहूं श्रीकृष्णकी आज्ञाते पातालको जाऊंहूं, पर तेरे वियोग चल्यो नहीं जाय है ॥२८॥ हम तुम यूथ हुके व्रजमें रासमंडलमें प्राप्त होयँगी अब तो जाऊंहूं जो मैंने कछु अयोग्य कह्यो होय सो तुम क्षमा करियो ॥२९॥ सनंद कहे हैं–ऐसे परस्पर प्रणाम करके दोनों नदी गंगा यमुना जलदी चलीगई, लोकनकूं पवित्र कर तब गंगा तो पातालमें गई ॥ ३० ॥ तब वा गंगा तो भोगवतीपुरीके वनमें भोगवती नामसे विख्यात भई जा गंगाके जलकूं महादेव करिके सहित शेषजी शिरपै धारण करें हैं ॥ ३१ ॥ याके पीछे श्रीयमुनाजी सातो द्वीपनकूं और सातों समुद्रनकूं भेदिके बड़े वेगते पृथ्वीपै

उछलतभई चली गई ॥ ३२ ॥ सोनेकी भूमिमें ह्वैके लोकालोक पर्वतमें गई फिर कालिन्दी ताके शिखिरनकूं भेदत ताके मूंडपे चढिगई ॥ ३३ ॥ फुहारेसी उछलत जे धारा तिनते ऊपरकूं उछलत देवतानके स्वर्गकूं चलीगई ॥ ३४ ॥ वहांते महर्लोक, जनलोक, तपलोक, सत्यलोकमें ह्वैके सत्यलोकते वैकुंठमें प्राप्त भई वहांतें ब्रह्मांडके छेदमें ह्वैके ब्रह्मद्रवमें मिलत भई ॥ ३५ ॥ गोलोककूं चली गई, तब देवता पुष्पनकी वर्षा करन लगे, नमस्कार करनलगे ॥ ३६ ॥ यह कलिंदगिरिनंदनीको नव चरित्र है, अनोखो है, यदि जो कोई सुने अथवा कहे ताकूं पृथ्वीपे मंगल प्राप्त होय, जो जन नित्यही याको पाठ करे सो निज निकुंजलीला नित्यपदकूं प्राप्त होयगो ॥ ३७ ॥ इति श्रीगर्गसंहितायां वृंदावनखण्डे भाषाटीकायां नंदसंनंदसंवादे कालिंद्यागमनवर्णनं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ नारदजी बहुलाश्वराजासे वर्णन करे हैं—ऐसे नंदराज संनंद गोपको वचन सुनिके बडे

गत्वास्वर्णमयींभूमिंलोकालोकाचलंगता ॥ तत्सानुगंडशैलानांतटंभित्त्वाकलिन्दजा ॥ ३३ ॥ तन्मूर्ध्निचोत्पतितासुस्फुरा त्जलधारया ॥ उद्गच्छन्तीतदूर्ध्वंसाययौस्वर्गंतुनाकिनाम् ॥ ३४ ॥ आब्रह्मलोकंलोकांस्तानभिव्याप्यहरेःपदम् ॥ ब्रह्मांडरंध्रंशीघ्र ब्रह्मद्रवयुक्तंसमेत्यसा ॥ ३५ ॥ पुष्पवर्षंप्रवर्षत्सुदेवेषुप्रणतेषुच ॥ पुनःश्रीकृष्णगोलोकमारुरोहसरिद्वरा ॥ ३६ ॥ कलिन्दगिरिनन्दिनीनव चरित्रमेतच्छुभंश्रुतंचयदिपाठितंभुवितनोतिसन्मंगलम् ॥ जनोपियदिधारयेत्किलपठेच्चयोनित्यशःसयातिपरमंपदंनिजनिकुंजलीलावृतम् ॥ ॥ ३७ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीवृन्दावनखण्डेनंदसन्नंदसंवादेकालिंद्यागमनवर्णनंनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ संनन्दस्यवचःश्रुत्वागन्तुंनन्दःसमुद्यतः ॥ सर्वैर्गोपगणैःसार्द्धंमुदितोभून्महामनाः ॥ १ ॥ यशोदयाचरोहिण्यासर्वगोपीगणैःसह ॥ अश्वै रथैर्वीरजनैर्मंडितोविप्रमंडलैः ॥ २ ॥ गोभिश्चशकटैर्युक्तोवृद्धैर्बालैस्तथाऽनुगैः ॥ गायकैर्गीयमानश्चशंखदुंदुभिनिःस्वनैः ॥ ३ ॥ पुत्राभ्यांरामकृष्णाभ्यांनन्दराजोमहामतिः ॥ रथमारुह्यहेराजन्वनंवृन्दावनंययौ ॥ ४ ॥ वृषभानुवरोगोपोगजमारुह्यभार्यया ॥ अंकेनी त्वासुतांराधांगीयमानश्चगायकैः ॥ ५ ॥ मृदंगतालवीणानांवेणूनांकलनिःस्वनैः ॥ गोपालगोगणैःसार्द्धंवृन्दारण्यंजगामह ॥ ६ ॥ उपनन्दास्तथानन्दास्तथापड्वृषभानवः ॥ सर्वैःपरिकरैःसार्द्धंजग्मुर्वृंदावनंवनम् ॥ ७ ॥

प्रसन्न भये, बडो है मन जिनको सब गोपनकूं संग लेके चलिवेकूं उद्यत होतभये ॥ १ ॥ गौअनकूं आगे करिके बालक बूढेनकूं गाडानपे चढायके यशोदाजीकूं, रोहिणीजीकूं, रथनपे चढायके गोपनकूं, ब्राह्मणनकूं, घोडानपे चढायके ॥ २ ॥ गौ, गाडी, बालक, बूढे, टहलुआनकूं अपने संग लेके, गवैया गावत जाय हैं, शंख, दुंदुभी, बजत जाय हैं ॥ ३ ॥ पुत्र दोऊ कृष्ण बलदेव तिनकूं संग लेके, रथमें चढिके बडे बुद्धिमान् नंदजी वृंदावन नामके वनकूं जात भये ॥ ४ ॥ ऐसेंही वृषभानुवर गोप अपनी बेटी राधिकाकूं गोदीमें बैठार कीर्तिरानीकूं संग लेके हाथीपे चढिके वृंदावनकूं चले, गवैया गावत चले हैं ॥ ५ ॥ मृदंग, मंजीरा, बैन, बांसुरी, वीणा, गोप बजावत जिनके संग चले हैं तिन मनोहर शब्दनकूं सुनत आनंदते गौ गोपीनके झुंडनकूं संग लेके वृन्दावनमें प्रवेश करतभये ॥ ६ ॥ ऐसेई नौ उपनन्द

ऊः वृषभानु अपने सब परिकरकूं संग लेके वृन्दावनकूं आये ॥ ७ ॥ सबरे गोप दहलुआनकूं सँग लेके वृन्दावनमें प्रवेश ह्वैके न्यारे २ खिरक बनायके घर बनायके इतवित वास करत भये ॥ ८ ॥ सोलह कोसके बीचमें किलो बनायो जामें परिकोटा, खाई, सभा, कचेरी और सात दरवाजे बनाये हैं ॥९॥ चारों बगल जाके सरोवर मनको हरनवारे जामें बजार और हजारन जामें कुञ्ज ऐसो पुर वृषभानुजीने अपनी न्यारौ बनायौ ॥ १० ॥ तब श्रीकृष्ण नन्दके नगरमें और वृषभानुपुरमें गोपीनको प्रीति बढ़ावत बालकनके सँग खेलन लगे ॥ ११ ॥ याके अनन्तर वृन्दावनमें मनोहर राम कृष्ण दोनों भैया सम्पूर्ण गोपालनको सम्मत बछड़ानको पालन करनवारे भये ॥ १२ ॥ बालकनके सँग गामकी सीममें कालिन्दीके पुण्य पुलिननमें राम केशव दोनों भैया बछरा चरामन लगे ॥ १३ ॥ कबहूं २ कुंज निकुञ्जनमें दबकि जाय हैं, कबहूं २ इत वित वनमें विचरे हैं ॥

वृन्दावनेसंप्रविश्यगोपाःसर्वेसहानुगाः ॥ घोषान्विधायवसतीर्वासंचक्रुरितस्ततः ॥ ८ ॥ सभामंडपसंयुक्तंसदुर्गंपरिखायुतम् ॥ चतुर्योजनविस्तीर्णंसप्तद्वारसमन्वितम् ॥ ९ ॥ सरोवरैःपरिवृतंराजमार्गमनोहरम् ॥ सहस्रकुंजंचपुरंवृषभानुरचीक्लृपत् ॥ १० ॥ श्रीकृष्णोनन्दनगरे वृषभानुपुरेऽर्भकैः ॥ चचारक्रीडनपरोगोपीनांप्रीतिमावहन् ॥ ११ ॥ अथवृन्दावनेराजन्सर्वगोपालसंमतौ ॥ बभूवतुर्वत्सपालौरामकृष्णौमनोहरौ ॥ १२ ॥ चारयामासतुर्वत्सान्ग्रामसीम्न्यर्भकैःसह ॥ कालिन्दीनिकटेपुण्येपुलिनेरामकेशवौ ॥ १३ ॥ निकुंजेषुचकुंजेषुसंप्रलीनावितस्ततः ॥ रिंगमाणौचकुत्रापिनन्दंतौचेरतुर्वने ॥ १४ ॥ किंकिणीजालसंयुक्तौसिंजन्मंजीरनूपुरौ ॥ नीलपीतांबरधरौहारकेयूरभूषितौ ॥ १५ ॥ क्षेपणैःक्षिपतौबालैर्वंशीवादनतत्परौ ॥ मुखेनाकिंकिणीशब्दंकुर्वद्भिर्बालकैर्श्रुतौ ॥ १६ ॥ धावन्तौपक्षिभिश्छायांरंजतूरामकेशवौ ॥ मयूरपक्षसंयुक्तौपुष्पपल्लवभूषितौ ॥ १७ ॥ एकदावत्सवृन्देषुप्राप्तंवत्सासुरंनृप ॥ कंसप्रणोदितंज्ञात्वाशनैस्तत्रजगामह ॥ १८ ॥ धावन्गोपेषुसर्वत्रलांगूलंचालयन्मुहुः ॥ दैत्यःपश्चिमपादाभ्यांहरिमंसेतताडह ॥ १९ ॥ पलायितेषुबालेषुकृष्णस्तंपादयोर्द्वयोः ॥ गृहीत्वाभ्रामयित्वाथपातयामासभूतले ॥ २० ॥ पुनर्नीत्वाकराभ्यांतंकपित्थेप्राहिणोद्धरिः ॥ तदामृत्युंगतेदैत्येकपित्थोपिमहाद्रुमः ॥ २१ ॥

॥ १४ ॥ पांयनमें नूपुर बजें हैं, कमरमें कौंधनी बजें हैं, हार, कुण्डल, केयूरनते सजेभये पीतांबर नीलांबर धरे विचरत भये ॥ १५ ॥ किंकिणीनके शब्द करनवारे बालकनके सँग बालचेष्टासे क्षेपण (गिल्ली) न उडावतेको मुखते वंशी बजानेमें तत्पर ॥ १६ ॥ पक्षीनकी छायाके नीचे भाजते, मोरपक्षनको पहरे लाल लाल नये पत्ता और पुष्पनके शृंगारको करे विचरत दोनों भैया कृष्ण बलदेवजी अति शोभित भये ॥१७॥ एक समय बछरानके समूहमें कंसको भेजे वत्सासुरको आयो जान होले २ याके पास गये ॥ १८ ॥ गोपनमें सब जगह भागते पेंछकूं चलावते २ वा दैत्यने श्रीकृष्णके पास आयके पिछारीके पावनकी एक दुलत्ती कन्धामें मारी ॥ १९ ॥ जब सब बालक भाजि गये तब श्रीकृष्णने वाके पिछले दोनों पांव पकड़के घुमायके धरतीमें मारयौ ॥ २० ॥ फिर दोनों हाथनते पकड़के फिरायके कैथके पेड़में मारयौ तब दैत्यके लगवेसो वा कैथके पेड़ने ॥ २१ ॥

और बहुतसे कैथनके पेड तोरडारे ये बडो अचंभो भयो बालक सब अचंभेमें आय गये और स्याबास ! स्याबास ! ऐसे कहनलगे ॥ २२ ॥ आकाशमें देवता जय जय शब्द ते पुष्पनकी वर्षा करन लगे तब वा दैत्यके शरीरमेंते एक ज्योति निकसी सो सबके देखत २ श्रीकृष्णमें समाय गई ॥ २३ ॥ अब बहुलाश्व राजा बोल्यौ-हे मुने ! अहो पहले जन्ममें सुकृतको करनवारो यह वत्सासुर कौन हो ? जो परिपूर्ण परते पर श्रीकृष्णमें लीन ह्वैगयो ॥ २४ ॥ तब नारदजी बोले कि, पूर्वजन्ममें ये मुरदैत्यको बेटा देवतानको जीतनवारो प्रमील नाम दैत्य हो, यै वशिष्ठजीके आश्रममें गयो तब ये वशिष्ठजीकी नंदिनी गौकूं देखतो भयो ॥ २५ ॥ ता गौकी लेवेकी इच्छाते ब्राह्मण बनिकै मनोहर गौकूं वशिष्ठजीसो मांगतोभयो, जब दिव्यदर्शन वशिष्ठजीने चुप ह्वैके कछु उत्तर न दियो तब वह गौ वा दैत्यते बोली ॥ २६ ॥ हे दुर्बुद्धे ! जो तूं मुनीश्वरनकी गौकूं

कपित्थान्पातयामासतदद्भुतमिवाऽभवत् ॥ विस्मितेषुचबालेषुसाधुसाध्वितिवादिषु ॥ २२ ॥ दिविदेवाजयारावैःपुष्पवर्षंप्रचक्रिरे ॥ तद्दैत्यस्यमहज्ज्योतिःकृष्णेलीनंबभूवह ॥ २३ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ अहोपूर्वंकृतसुकृत्कोयंवत्सासुरोमुने ॥ श्रीकृष्णेलीनतांप्राप्तः श्रीपूर्णेपरात्परे ॥ २४ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ मरुपुत्रोमहादैत्यःप्रमीलोनामदेवजित् ॥ वसिष्ठस्याश्रमेप्राप्तोनन्दिनींगांददर्शह ॥ २५ ॥ तल्लिप्सुर्ब्राह्मणोभूत्वाययाचेगांमनोहराम् ॥ तूष्णींस्थितेगौरुवाचवसिष्ठेदिव्यदर्शने ॥ २६ ॥ ॥ नन्दिन्युवाच ॥ ॥ मुनीनांगांसमाहर्तुंभूत्वाविप्रःसमागतः ॥ दैत्योसिमुरजस्तस्माद्वोवत्सोभवदुर्मते ॥ २७ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ तदैववत्सरूपोभून्मुरपुत्रोमहासुरः ॥ वसिष्ठंगांपरिक्रम्यनत्वात्राहीत्युवाचह ॥ २८ ॥ ॥ गौरुवाच ॥ ॥ द्वापरान्तेमहादैत्यवृन्दारण्येयदातव ॥ गोवत्सेषुगतस्यापितदामुक्तिर्भविष्यति ॥ २९ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ परिपूर्णतमेसाक्षात्कृष्णेपतितपावने ॥ तस्माद्वत्सासुरोदैत्योलीनोभूत्रहिविस्मयः ॥ ॥ ३० ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीवृन्दावनखण्डेवत्सासुरमोक्षोनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ एकदाचारयन्वत्सान्सरामोबालकैर्हरिः ॥ यमुनानिकटेप्राप्तंबकंदैत्यंददर्शह ॥ १ ॥

लेवेके लीये ब्राह्मण बनिके आयो है, तू मुरको बेटा दैत्य याते तूं गऊको बछरा ह्वैजा ॥ २७ ॥ नारदजी कहे हैं ताही समय वो मुरदैत्यको बेटा प्रमील नाम दैत्य बछडा ह्वैगयो, तब वत्सरूपधारी दैत्य वशिष्ठजीकी और गऊकी परिकमा देके और दंडोत करके बोलो कि, 'मां त्राहि ! त्राहि !' मेरी रक्षा करौ नंदिनी गौ बोली ॥ २८ ॥ कि, द्वापरके अन्तमें वृन्दावनमें हे महादैत्य ! श्रीकृष्ण भगवान् बछरा चरायवे आमेंगे तिन बछरानमें तूं जब जायगो तब तेरी मुक्ति होयगी ॥ २९ ॥ नारदजी कहें हैं कि, यासो जो ये परिपूर्णतम साक्षात् श्रीकृष्णके विषय लीन ह्वैगयो सो कछू अचंभो नहीं है क्योंकि श्रीकृष्ण पतितपावन हैं ॥ ३० ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां श्रीवृन्दावनखण्डे भाषाटीकायां वत्सासुरमोक्षणं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ नारदजी कहें हैं-एक समय बलदेवजीके संग गोप

बालकनकूं संग लेके बछरानकूं चरावते श्रीकृष्ण यमुनाजीके किनारेपे बकासुरकूं देखत भये ॥ १ ॥ श्वेतपर्वतकी बराबर बडो है, बडे बडे जाके पांव, बोलतमें बाद
रसो गर्जे है, याहि देखिके बालक भाजनलगे, वज्रसी जाकी चोंचि सो चोंचि फारिकै श्रीकृष्णको निगलि गयौ ॥ २ ॥ तब तो सबरे बालक रोमन लगे और मरेके समान है
गये तब हाहाकार करते सबरे देवता आये ॥ ३ ॥ तबही इंद्रने वा बकके वज्र मार्यो वज्रके घाडको मार्यो मूर्च्छा खायके जाय पर्यो पर मर्यो नही, फिर उठ ठाढ़ो भयो
॥ ४ ॥ ताके अनंतर ब्रह्माजीने क्रोधकरिके ब्रह्मदंडते मार्यो तब ये दो घडी तक मूर्च्छा खायके जायपर्यो ॥ ५ ॥ फिर वेगते अपने शरीरकूं फड़फड़ायके जम्हायके उठ
ठाढ़ोभयो पर मरो नही और महाबली मेघसो गर्जनलग्यो ॥ ६ ॥ फिर महादेवने या महासुरको त्रिशूल मार्यो तब एकपंख याको कटिपर्यो पन अतिभयंकर यह दैत्य मर्यो नही

श्वेतपर्वतसंकाशोबृहत्पादोघनध्वनिः ॥ पलायितेषुबालेषुवज्रतुंडोग्रसद्धरिम् ॥ २ ॥ रुदन्तोबालकाःसर्वेगतप्राणइवाभवन् ॥ हाहाकारं तदाकृत्वादेवाःसर्वेसमागताः ॥ ३ ॥ इन्द्रोवज्रंतदानीत्वातंतताडमहाबकम् ॥ तेनघातेनपतितोनममारसमुत्थितः ॥ ४ ॥ ब्रह्मापिब्रह्मदंडेनतंतताडरुषान्वितः ॥ तेनघातेनपतितोमूर्च्छितोघटिकाद्वयम् ॥ ५ ॥ विधुन्वन्स्वतनुंवेगाज्जृंभितःपुनरुत्थितः ॥ नममारतदादैत्योजगर्जघनवद्बली ॥ ६ ॥ त्रिलोचनस्त्रिशूलेनतंजघानमहासुरम् ॥ छिन्नैकपक्षोदैत्योपिनमृतोतिभयंकरः ॥ ७ ॥ वायव्यास्त्रेणवायुस्तंसंजघानबकंततः ॥ उच्चचालबकस्तेनपुनस्तत्रस्थितोभवत् ॥ ८ ॥ यमस्तंयमदंडेनताडयामासचाग्रतः ॥ तेनदंडेननमृतोबकोवैचंडविक्रमः ॥ ९ ॥ दंडोपिभग्नतांप्रागात्सक्षतोनाभवद्बकः ॥ तदैवचाग्रतःप्राप्तश्चंडांशुश्चंडविक्रमः ॥ १० ॥ शतबाणैर्बकंदैत्यंसंजघानधनुर्धरः ॥ तीक्ष्णैःपक्षगतैर्बाणैर्नममारबकस्ततः ॥ ११ ॥ धनदस्तंचखड्गेनसुतीक्ष्णेनजघानह ॥ छिन्नद्वितीयपक्षोभून्नमृतोदैत्यपुंगवः ॥ १२ ॥ नीहारास्त्रेणतंसोमःसंजघानमहाबकम् ॥ शीतार्त्तोमूर्च्छितोदैत्योनमृतःपुनरुत्थितः ॥ १३ ॥ आग्नेयास्त्रेणतंह्यग्निःसंतताडमहाबकम् ॥ भस्मरोमाभवद्दैत्योनममारमहाखलः ॥ १४ ॥ अपांपतिस्तंपाशेनबद्ध्वाकौविचकर्षह ॥ कर्षणात्समहापापश्छिन्नोभून्नमृतश्चवै ॥ १५ ॥

॥ ७ ॥ फिर वायुदेवताने याके वायु अस्त्र मार्यो तब ये नेक चलायमान ह्वैकै फिर तहांको तहाँही स्थिर ह्वैगयो ॥ ८ ॥ फिर यमराजने अगारी खडेके याके कालदंड मार्यो तोऊ
बडो प्रचंड पराक्रमी ये बक न मर्यो ॥ ९ ॥ और दंडहू टूटि गयो पर बकासुर घायलहू नही भयो तब याके सामने चण्डांशु सूर्य जाको बडो चंडपराक्रमसो आयो है ॥ १० ॥
तब धनुर्धर सूर्यने बडे तीक्ष्ण सौ १०० बाण मारे वे बाण बकासुरके पंखनमें लगेभी परंतु बकासुर मर्यो नही ॥ ११ ॥ तब तो कुबेरने बडो पैनो खड्ग मार्यो ताते बक दैत्यको
दूसरो पंख कटके जाय पर्यो पर मर्यो नही ॥ १२ ॥ फेर नीहारास्त्रते चंद्रमाने मार्यो तबहू शीतते आर्त ह्वै मूर्च्छा खायके जायपर्यो पर वह मर्यो नही, फेर उठके ठाढ़ो है
गयो ॥ १३ ॥ फिर या बकको आग्नेय अस्त्र करिके अग्निने मार्यो तब याके रोंगटा तो जरिगये पर महाबल बक मर्यो नही ॥ १४ ॥ तब तो वरुणने पाशमें बांधिके धरतीमें

बहुत खचेन्यो तब बडो पापी ये बक छिल तौ गयो पर मन्यौ नहीं ॥ १५ ॥ तब तौ भद्रकालीदेवीने बडेवेगते मारी जो गदा ताके मारे ये तडफडायके मूर्च्छा खाय गिरपरे और बडो वेदनको प्राप्त भयो ॥ १६ ॥ मूंड फूटिगयौ तौऊ फटफटायके फिर उठके ठाढो भयो और ये बकदैत्य महाबली घनसो गर्जन लग्यौ ॥ १७ ॥ तब शक्तिके धरनहारे स्वामिकार्तिकने शक्ति मारी तब याको एक पाउं कटिपर्यौ तौ पक्षिनमें श्रेष्ठ मन्यौ नहीं ॥ १८ ॥ तब तौ क्रोध करिकै दैत्य बीजरीसो तडतडायके पैनी अपनी चोंचते सब देवतानकूं भजाय देत भयो ॥ १९ ॥ तब अगारी आकाशमें भाजते देवतानके पीछे भाजो और दिशानके मंडलकूं नादयुक्त कियो ॥ २० ॥ फेर ये बकदैत्य तहाँही आय बैठ्यो तब तौ सब देवऋषि ब्रह्मऋषि और सब देवता तथा ब्राह्मण श्रीकृष्णकूं सफल आशीर्वाद देनलगे ॥ २१ ॥ तब श्रीकृष्णने वाके गलेमें अपनी देह बढ़ायी तब जल्दीही

तताडगदयातंवैभद्रकालीतरस्विनी ॥ मूर्च्छितस्तत्प्रहारेणपरंकश्मलतांययौ ॥ १६ ॥ क्षतमूर्द्धासमुत्थायविधुन्वन्स्वतनुंपुनः ॥ जगर्ज घनवद्वीरोबकोदैत्योमहाखलः ॥ १७ ॥ तदाशक्तिधरःशक्तिंतस्मैचिक्षेपसत्वरः ॥ तयैकपादोभग्नोभून्नमृतःपक्षिणांवरः ॥ १८ ॥ तदाक्रोधेनसहसाधावन्दैत्यस्तडित्स्वनः ॥ देवान्विद्रावयामासस्वचंच्वातीक्ष्णतुण्डया ॥ १९ ॥ अग्रेपलायितान्देवान्स्वधावद्बकोऽम्बरे ॥ पुनस्तत्रागतोदैत्योनादयन्मण्डलंदिशाम् ॥ २० ॥ तदादेवर्षयःसर्वेसर्वेब्रह्मर्षयोद्विजाः ॥ श्रीनन्दनन्दनायाशुसफलांचाशिषंददुः ॥ २१ ॥ तदैवकृष्णस्तन्मध्येततानवपुरुज्ज्वलम् ॥ चच्छर्दकृष्णंसहसाक्षतकंठोमहाबकः ॥ २२ ॥ पुनःकृष्णंसमाहर्तुंतीक्ष्णयातुंडयाऽऽगतम् ॥ पुच्छेगृहीत्वातंकृष्णःपोथयामासभूतले ॥ २३ ॥ पुनरुत्थायतुण्डंस्वंप्रसार्य्यावस्थितंबकम् ॥ ददारतुंडेहस्ताभ्यांकृष्णःशाखांगजोयथा ॥ २४ ॥ तदामृतस्यदैत्यस्यज्योतिःकृष्णेसमाविशत् ॥ देवतावब्रुषुःपुष्पैर्जयारावैःसमन्विताः ॥ २५ ॥ गोपालाविस्मिताःसर्वेकृष्णंसंश्लिष्यसर्वतः ॥ ऊचुस्त्वंकुशलीभूतोमुक्तोमृत्युमुखात्सखे ॥ २६ ॥ एवंकृष्णोबकंहत्वासबलोबालकैःसह ॥ गोवत्सैर्हर्षितोगायन्नाययौराजमन्दिरे ॥ २७ ॥ परिपूर्णतमस्यास्यश्रीकृष्णस्यमहात्मनः ॥ जगुर्गृहेगताबालाःश्रुत्वेदंतेतिविस्मिताः ॥ २८ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ कोयंदैत्यःपूर्वकालेकस्मात्केनबकोऽभवत् ॥ पूर्णब्रह्मणिसर्वेशेश्रीकृष्णेलीनतांगतः ॥ २९ ॥

वाने उगल दीने और वाके गलेमें घाउ ह्वै गयो ॥ २२ ॥ फेरहूं अपनी पैनी चोंचसूं श्रीकृष्णके ग्रसिवेकूं आयौ तब श्रीकृष्णने वाकी पूंछ पकडके धरतीमें दैमान्यौ ॥ २३ ॥ फिर उठके अपनी चोंच फाड्के आयौ जो बकासुर ताकी दोनों चोंचनको हाथनसो पकड चीरके डारि दीनों जैसे मस्त हाथी पेड़की डारीको चीर डारै ॥ २४ ॥ तबही मन्यो जो दैत्य ताकी ज्योति श्रीकृष्णमे समायगई तब देवता जयजय शब्द करनलगे पुष्पनकी वर्षा करनलगे ॥ २५ ॥ सब गोपाल अचंभेमें आयगये ये बडो मंगल फेर श्रीकृष्णते मिले और यह बोले, हे सखे ! तू राजीखुसी आज मृत्युके मुखमेंते छूट्यो है ॥२६॥ ऐसे श्रीकृष्ण बकासुरकूं मारिके बलदेवजीकूं गोपनकूं और बछरानकूं सबकूं संग लैके हर्षित ह्वैके गावत २ राजमंदिरकूं आये ॥ २७ ॥ परिपूर्णतम श्रीकृष्ण महात्माके चरित्रकूं बालकने अपने २ घरनमें जाके कहे तब सब वृंदावनवासी अचंभौ करन लगे ॥ २८ ॥ अब बहुलाश्वराजा

नारदजीते पूछनलग्यो, क्यों महाराज ! यह दैत्य पूर्वजन्ममें कौन हो ? काहेते कौन कारणते यह बगुला भयो जो पूर्णब्रह्म सर्वेश्वर श्रीकृष्णमें लीन है गयो ? ॥ २९ ॥ अब नारदजी बोले कि, हे नृप ! हयग्रीव दैत्यको बेटा उत्कल नाम एक दैत्य हो सो बडो बली हो रणमें देवतानकूं जीतिके इंद्रको छत्र छिडाय लायो ॥ ३० ॥ महाबलीने औरहू मनुष्यनको तथा राजनको राज्य छिनाय लीनों और सौ वर्षताई बडौ सर्व समृद्धिमान् राज्य कीनों ॥ ३१ ॥ वुह दैत्य विचरत २ एकसमय गंगासागरमें सिद्ध जो जाजलिमुनि तिनकी पर्णशालाके समीप गयो ॥ ३२ ॥ तहां जलमें जाल डारके मछलीनकूं पकडन लग्यो, मुनीश्वरने नाहीहू करी पर दुर्बुद्धीने मानी नहीं ॥ ३३ ॥ तब तो सिद्ध जाजलिमुनिने शाप दीनो और दुर्बुद्धी ! तूं बगुलाकी नाई मछलीनकूं खाय है ताते तूं बगुला हैजा ॥३४॥ ताहीक्षण वुह बगुला है गयो, गर्व जातरह्यो, तेज नष्ट हैगयो, तबही मुनीश्वरके चरणनमें

॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ हयग्रीवसुतोदैत्यउत्कलोनामहेनृप ॥ रणेऽमरान्विनिर्जित्यशक्रच्छत्रंजहारह ॥ ३० ॥ तथानृणांनृपाणांचराज्यं हृत्वामहाबलः ॥ चकारवर्षाणिशतंराज्यंसर्वविभूतिमत् ॥ ३१ ॥ एकदाविचरन्दैत्यःसिंधुसागरसंगमे ॥ जाजलेर्मुनिसिद्धस्यपर्णशाला समीपतः ॥ ३२ ॥ जलेनिक्षिप्यबडिशंमीनानाकर्षयन्मुहुः ॥ निषेधितोपिमुनिनानामन्यतसदुर्मतिः ॥ ३३ ॥ तस्मैशापंददौसिद्धोजा जलिर्मुनिसत्तमः ॥ बकवत्त्वंझषानत्सित्वंबकोभवदुर्मते ॥ ३४ ॥ तत्क्षणाद्बकरूपोभूद्भ्रष्टतेजागतस्मयः ॥ पतितःपादयोस्तस्यनत्वा प्राहकृतांजलिः ॥ ३५ ॥ ॥ उत्कलउवाच ॥ ॥ नजानेतेतपश्चण्डंमुनेमांपाहिजाजले ॥ साधूनांभवतांसंगंमोक्षद्वारंपरंविदुः ॥ ३६ ॥ मित्रेशत्रौसमामानेऽपमानेहेमलोष्टयोः ॥ सुखेदुःखेसमायेवैत्वादृशाःसाधवश्चते ॥ ३७ ॥ किंकिंनजातंमहतांदर्शनात्कौमुनेनृणाम् ॥ पारमेष्ठ्यंचसाम्राज्यमैन्द्रंयोगपदंभवेत् ॥ ३८ ॥ जाजलेमुनिशार्दूलत्रैवर्ग्यंकिमभून्नृणैः ॥ साधूनांकृपयासाक्षात्पूर्णब्रह्मापिलभ्यते ॥ ३९ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ तदाप्रसन्नःसमुनिर्जाजलिस्तमुवाचह ॥ वर्षषष्टिसहस्राणितपस्तप्तंचयेनवै ॥ ४० ॥ ॥ जाजलिरुवाच ॥ ॥ वैवस्वतान्तरेप्राप्तेअष्टाविंशतिमेयुगे ॥ द्वापरान्तेभारतेपिमाथुरेव्रजमंडले ॥ ४१ ॥

जाय पर्यौ दंडोत करिके हाथ जोरिके यह बोल्यौ ॥ ३५ ॥ हे मुने ! तुम्हारो उग्र तेज मैंने नहीं जान्यो, हे जाजले ! मेरी रक्षा करो तुम सरीखे साधुनके संगकूं तो मोक्षको दरवज्जो वर्णन करे है ॥ ३६ ॥ मित्रमें शत्रुमें समान होय है, मानमें अपमानमें, सुवर्णमें और लोहेमें, सुखमें और दुःखमें जे कोई तुम सरीके समान रहै हैं वेही साधु कहामें है ॥ ३७ ॥ महत् पुरुषनके दर्शनते पृथ्वीमें मनुष्यनकूं कहा कहा नहीं मिले है, किन्तु चक्रवर्ती राज्य, ब्रह्माको पद, इंद्रको पद और योगकी सिद्धि ये सब मिलिजाय हैं ॥ ३८ ॥ हे जाजले ! हे मुनिनमें शार्दूल ! मनुष्यन करके साधूनकी कृपासो धर्म, अर्थ, काम प्राप्त कियेजाय तो कहा अचंभो है, यदि महत्पुरुषनकी कृपा होय तो साक्षात् पूर्ण ब्रह्मकी भी प्राप्ति है जाय है ॥ ३९ ॥ नारदजी कहैं हैं जाने साठहजार वर्ष तप कीनों सो जाजलिमुनि प्रसन्न हैके उत्कलते बोले ॥ ४० ॥ वैवस्वत मन्वंतरकी अट्ठाईसवी चौकडीके द्वापरके अन्तमें

भरतखंडमे मथुरा व्रजमंडलमें ॥ ४१ ॥ परिपूर्णतम साक्षात् स्वयं श्रीकृष्ण भगवान् वृन्दावनमें गउनके बछरानकूं चरावते विचरैंगे ॥ ४२ ॥ तब तूं श्रीकृष्णमे निःसंदेह तन्मयताकूं प्राप्त होयगो क्योंकि, हिरण्याक्षते आदिलेके बहुतसे जे दैत्य हैं वे केवल वैरभावतेही भगवानकूं प्राप्त हैगये ॥ ४३ ॥ नारद कहे है कि, ऐसे ये बकासुर दैत्य पूर्वजन्मको उत्कल नामको दैत्य हो वो जाजलिमुनिके वरते कृष्णमें लीन हैगयो यामें ये सिद्धांत समझनो कि, सत्संगसों कौनसो पदार्थ नहीं मिलेहै ॥ ४४ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां वृंदावनखंडे भाषाटीकायां बकासुरमोक्षो नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ नारदजी कहें है—एक समय बालकनके संग गौअनके बछरानकूं चरावत २ बडे रमणीय कालिंदीके तीरपै श्रीकृष्ण बालक्रीडा करते हैं ॥ १ ॥ कि, अघासुर नामको बडो भारी दैत्य कोसभर लंबे

परिपूर्णतमःसाक्षाच्छ्रीकृष्णोभगवान्स्वयम् ॥ वृन्दावनेगवांवत्सांश्चारयन्विचरिष्यति ॥ ४२ ॥ तदातन्मयतांकृष्णेयास्यसित्वंनसंशयः ॥
हिरण्याक्षादयोदैत्यावैरेणापिपरंगताः ॥ ४३ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्थंबकासुरोदैत्यउत्कलोजाजलेर्वरात् ॥ श्रीकृष्णेलीन
तांप्राप्तःसत्संगात्किंनजायते ॥ ४४ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां वृन्दावनखण्डे बकासुरमोक्षोनाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॥
॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ एकदाबालकैःसाकंगोवत्सांश्चारयन्हरिः ॥ कालिन्दीनिकटेरम्येबालक्रीडांचकारह ॥ १ ॥ अघासुरोनाम
महान्दैत्यस्तत्रस्थितोऽभवत् ॥ क्रोशदीर्घवपुःकृत्वाप्रसार्यमुखमंडलम् ॥ २ ॥ दूराद्वैपर्वताकारंवीक्ष्यवृन्दावनेवने ॥ गोपाजग्मुर्मुखेत
स्यवत्सैःकृत्वांजलिध्वनिम् ॥३॥ तद्रक्षार्थंचसबलस्तन्मुखेप्राविशद्धरिः ॥ निगीर्णेषुसवत्सेषुबालेषुत्वहिरूपिणा ॥ ४ ॥ हाशब्दोऽभूत्सुरा
णान्तुदैत्यानांहर्षएवहि ॥ कृष्णोवपुःस्वंवैराजंततानाघोदरेततः ॥ ५ ॥ तस्यसंरोधगाःप्राणाःशिरोभित्त्वाविनिर्गताः ॥ तन्मुखान्निर्ग
तःकृष्णोबालैर्वत्सैश्चमैथिल ॥ ६ ॥ सवत्सकान्छिशून्दृष्ट्वाजीवयामासमाधवः ॥ तज्ज्योतिःश्रीघनश्यामेलीनंजातंतडिद्यथा ॥ ७ ॥

शरीरको धरिके मुख फाड आयके मार्गमें सोयगयो ॥ २ ॥ दूरतेई याको पर्वतके आकार वृन्दावनमें परो देखिके सब बालक बछरानकूं अगारी करिके ताली बजावत वाके मुखमें चलेगये ॥ ३ ॥ तिनकी रक्षाके लिये बलदेवजी करिके सहित श्रीकृष्ण और सबरे बालक बछरा सर्परूपी अघासुरके मुखमें चलेगये और अघासुर सबको निगलगयो ॥ ४ ॥ तब देवतानमें तौ हाहाकार मचगयो और दैत्यनके बडी खुशी भई, तब श्रीकृष्णने अपनो विराट् देह वा अघासुरके पेटमें बढायो ॥ ५ ॥ तब रुकेभये वाके प्राण सिरकूं फोडके निकलगये ताके पीछे बालक बछडानकूं संग लेके, हे मैथिल ! श्रीकृष्णहू वाके मुखसें बाहिर निकसे ॥ ६ ॥ तब भीतर असुरकी जठराग्निते मरे बालक बछरानकूं भगवानने अपनी कृपामृतभरी दृष्टिसो जिवायदिये तब अघासुरके शरीरमेंते जो ज्योति निकसी सो श्रीकृष्णमें समायगई

जैसे बिजली घनमें लीन हैजाय है ॥ ७ ॥ तबही देवतानें पुष्पनकी वर्षा करी, ऐसो मुनिको वचन सुनिके राजा मैथिल यह बचन बोल्यो ॥ ८ ॥ क्यों महाराज यह दैत्य पूर्वजन्ममें कोन हो ! जो श्रीकृष्णमें लीन हैगयो, अहो ! आश्चर्य है कि, ये दैत्य बैरते जलदीही हरिकूं प्राप्त हैगयो॥९॥ तब नारदजी बोले कि, शंखासुरको बेटा पहिले अघासुर नामको महाबली एक दैत्य भयोहो वो युवा अवस्थामें ऐसो सुंदर हो मानो दूसरा कामदेवही है॥ १०॥ वाने मलयाचल पर्वतमें बडे कुरूप अष्टावक्र ऋषि जेते आठ जगेते टेढे हैं, तिन्हें देखिके ये पापी अघासुर बोल्यो कि, देखो ! ये कैसो कुरूप है ऐसे कहिके हंस्यो ॥ ११ ॥ तब अष्टावक्रने या महादुष्टकूं शाप दीनों है दुर्बुद्धे ! तूं सर्प हैजा क्योंकि या पृथ्वीमंडलमें टेढी चलनवारी अति कुरूपा जाति सर्पनकीही है ॥ १२ ॥ तब तो मुनीश्वरके चरणनमें परयो गर्व जाको नष्ट हैगयो अति दीन भये या दैत्यको देखके

तदैववपुर्देवाः पुष्पवर्षाणिपार्थिव ॥ एवंश्रुत्वामुनेर्वाक्यंमैथिलोवाक्यमब्रवीत् ॥ ८ ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ कोयंदैत्यःपूर्वकालेश्रीकृष्णे लीनतांगतः ॥ अहोवैरानुबन्धेनशीघ्रंदैत्योहरिंगतः ॥ ९ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ शंखासुरसुतोराजन्नघोनाममहाबलः ॥ युवाऽतिसुन्दरःसाक्षात्कामदेवइवापरः ॥ १० ॥ अष्टावक्रंमुनिंयांतंविरूपंमलयाचले ॥ दृष्ट्वाजहासतमघःकुरूपोयमितिब्रुवन् ॥ ११ ॥ तंशशापमहादुष्टंत्वंसर्पोभवदुर्मते ॥ कुरूपावक्रगाजातिःसर्पाणांभूमिमंडले ॥ १२ ॥ तत्पादयोर्निपतितंदैत्यंदीनंगतस्मयम् ॥ दृष्ट्वाप्रसन्नःसमुनिर्वरंतस्मैददौपुनः ॥ १३ ॥ ॥ अष्टावक्रउवाच ॥ ॥ कोटिकन्दर्पलावण्यःश्रीकृष्णस्तुतवोदरे ॥ यदागच्छेत्सर्परूपात्तदामुक्तिर्भविष्यति ॥ १४ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ अष्टावक्रस्यशापेनसर्पोभूत्वाअघासुरः ॥ तद्वरात्परमंमोक्षंगतोदेवैश्चदुर्लभम् ॥ १५ ॥ वत्सावकमुखान्मुक्तंततोमुक्तंह्यघासुरात् ॥ श्रुत्वाकतिदिनैःकृष्णंयशोदाभूद्भयातुरा ॥ १६ ॥ कलावतींरोहिणींचगोपीगोपान्वयोधिकान् ॥ वृषभानुवरंगोपंनन्दराजंव्रजेश्वरम् ॥ १७ ॥ नवोपनन्दान्नन्दांश्चवृषभानून्व्रजेश्वरान् ॥ समाहूयतदग्रेचवचःप्राहयशोमती ॥ १८ ॥ ॥ यशोदोवाच ॥ ॥ किंकरोमिक्वगच्छामिकल्याणंमेकथंभवेत् ॥ मत्सुतेबहवोरिष्टाआगच्छन्तिक्षणेक्षणे ॥ १९ ॥

मुनिने फिर ये वर दियो ॥ १३ ॥ कि, किरोर कामदेवसे सुंदर श्रीकृष्ण जब तेरे उदरमें आमेंगे तब तेरी या सर्पदेहसों मुक्ति हैजायगी ॥ १४ ॥ नारदजी कहैं हैं ऐसें अष्टावक्रके शापते ये अघासुर सर्प हैके फिर उनहीके वरते देवतानकूं दुर्लभ जो मुक्ति है ताकूं प्राप्त हैगयो ॥ १५ ॥ वत्सासुरते और बकासुरके मुखते फिर थोरे दिन पीछे अघासुरके मुखते छूटे श्रीकृष्णकूं सुनिके यशोदाजी बडी भयातुरा भयी ॥ १६ ॥ तब तो कलावती, रोहिणी और बूढे २ गोप गोपीनकूं वृषभानुवरकूं व्रजेश्वर श्रीनंदराजकूं नो नंद और नो उपनंद छे वृषभानु इन सबकूं बुलायके उनके अगारी यशोदाजी यह बोली ॥ १७ ॥ हे व्रजराज हो ! मैं कहा करूं ? कहां जाऊं अब मेरो कल्याण कैसे होय मेरे बेटाकूं तो छिनछिनमें नित्य नये अनेक अरिष्ट आमें हैं ॥ १८ ॥ पहले तो महावनकूं छोडिके हम वृंदावनमें आये अब या वृंदावनकोहू छोडिके ऐसो निर्भय स्थान कोनसो है जहा

हम चलेजायेंगे सो ऐसो निर्भय देश तुम्हें दीखे तो कहो ॥ १९ ॥ देखो एक तो यह मेरो बालककी बड़ो चंचल है, दूसरे घड़ी घड़ी २ खेलवेकूं जाय है, और तीसरे बालक भी सब अचपले हैं, मेरी कही माने नहीं है ॥ २० ॥ देखो पहले तो बकासुर पैनी चोंचिको बड़ो पक्षी तानें मेरे बालककूं निगलि लियो फिर पाते छूटे मेरे बालकको वत्स नसहित अघासुर निगलि गयो ॥ २१ ॥ फिर याही बालकको वत्सासुर मारिवेकूं आयो सो दैवने वा वत्सासुरको मारि डारो सो मैं तो अब यकड़ा चरायवेकूं अपने बालककूं कभी घरते बाहिर निकारूंगी नहीं ॥ २२ ॥ नारदजी कहेंहैं-ऐसे यशोदाजी कहतजायं हैं, और रोवत जायहैं, तिनको देखको नंदजी बोले और गर्गजीके कहे वचननते यशोदा जीको आश्वासन करतेभये कैसेहैं नंदजी कि, धर्मधारीनमें श्रेष्ठ हैं, और धर्म अर्थके वेत्ता हैं ॥ २३ ॥ हे यशोमतीजी ! कहा तुम गर्गजीको कह्यो वचन सब भूलिगई देखो ब्राह्म

पूर्वंमहावनंत्यक्त्वावृन्दारण्येगतावयम् ॥ एतत्त्यक्त्वाक्वयास्यामिदेशेवदतनिर्भये ॥ २० ॥ चंचलोऽयंबालकोमेक्रीडन्दूरेप्रयातिहि ॥ बाल काश्चंचलाःसर्वेनमन्यन्तेवचोमम ॥ २१ ॥ बकासुरश्चमेबालंतीक्ष्णतुंडोऽग्रसद्बली ॥ तस्मान्मुक्तन्तुजग्राहार्भकैर्दीनमघासुरः ॥ २२ ॥ वत्सासुरस्तज्जिघांसुःसोपिदैवेनमारितः ॥ वत्सार्थंस्वगृहाद्बालंनबहिःकारयाम्यहम् ॥ २३ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्थंवदन्तीं सततंरुदन्तींयशोमतींवीक्ष्यजगादनन्दः ॥ आश्वासयामाससुगर्गवाक्यैर्धर्मार्थविद्धर्मभृतांवरिष्ठः ॥ २४ ॥ ॥ नन्दराजउवाच ॥ ॥ गर्गवाक्यंत्वयासर्वंविस्मृतंहियशोमति ॥ ब्राह्मणानांवचःसत्यंनासत्यंभवतिकिंचित् ॥ २५ ॥ तस्माद्दानंप्रकर्तव्यंसर्वारिष्टनिवारणम् ॥ दानात्परंतुकल्याणंनभूतंनभविष्यति ॥ २६ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ तदायशोदाविप्रेभ्योनवरत्नंमहाधनम् ॥ स्वालंकारांश्चबालस्यस बलस्यददौनृप ॥ २७ ॥ अयुतंवृषभानांचगवांलक्षंमनोहरम् ॥ द्विलक्षमन्नभाराणांनन्दोदानंददौततः ॥ २८ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांवृ न्दावनखंडेअघासुरमोक्षोनामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ गोपेच्छयारामकृष्णौगोपालौतौबभूवतुः ॥ गाश्चारयन्तौगोपा लैर्वयस्यैश्चेरतुर्वने ॥ १ ॥ अग्रेपृष्ठेतदागावश्चरन्त्यःपार्श्वयोर्द्वयोः ॥ श्रीकृष्णस्यबलस्यापिपश्यन्त्यःसुंदरंमुखम् ॥ २ ॥

णनको कह्यो वचन सब सांचो है वो कबहूं झूंठो नहीं होय है ॥२४॥ तातें जो तुमपै बने सो दान करो जो दान सब अरिष्टनको नाश करिवेवारो है, देखो दान देवेते अधिक कल्याण तो न कोई भयो और न कोई होयगो ॥२५॥ नारद कहेंहैं-तब यशोदाजी ब्राह्मणनकूं बहुमूल्य नौ रत्नके दान देतभयी और अपने तथा कृष्ण बलदेवके गहने सब पुण्य कराय देने और नये पहराय देने ॥ २६ ॥ और नंदजीने दशहजार तो बैल, एक लाख मनोहर गौ, और दो लाख भार अन्नको दान कीनो ॥२७॥ इति श्रीगर्गसंहितायां वृंदावनखंडे भाषाटीकायामघासुर मोक्षो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ नारदजी कहें हैं कि, तदनंतर गोपनकी इच्छा करिके राम कृष्ण दोनो भैया गौअनके पालन करनवारे भये, बराबरके बालकनकूं संग लेके वनमें गौअनकूं चरावते विचरते भये ॥ १ ॥ तब अगाड़ी पिछाड़ी और दोनों बगल गौही गौ दीखे हैं, कैसी गौ हैं, छोटी छोटी घंटारि जिनके नारमें किंकिणीनके मालको धारण कर

१ शुक्लाष्टमी कार्तिके तु स्मृता गोपाष्टमी बुधैः तद्दिनाद्वै गोपोऽभूत्कृष्ण - पूर्वं तु वत्सपः ॥१॥ अर्थ-कार्तिकसुदी ८ बुधवारते दीनसों श्रीकृष्ण गऊ चरायवे लगे तब आप गोपी कहाये ? पहले बछरानको चरावते हैं ॥ १ ॥

मोतीनके गुच्छा और मोरपंखनसों शोभित जिनकी पूंछ ... इतमें वितमें डोलती ॥ २ ॥ ३ ॥
रही, सोनेनकी माला इनके गलेमें पहरे श्रीकृष्ण बलदेवके सुंदर मुखकूं देखती इतमें वितमें डोलती ॥ २ ॥ ३ ॥ मोतीनके गुच्छा और मोरपंखनसों शोभित जिनकी पूंछ
और उज्ज्वल जिनके केशरा प्रकाश करते नौरत्ननकी मालानते विराजमान हैं ॥ ४ ॥ और हे राजन्! सींगनके बीचमें जे शिरोमणि और कलावत्तूनकी रस्सीनते बंधि रहे हैं
शृंग और पार्श्वप्रवेष्टन झूल जिनकी ॥ ५ ॥ कोई तो लाल ठोंकेकी हैं, कोई पीली पूंछकी है, कोई लाल पांवकी है, कोई बहुत सुपेद कैलासकीसी शीलरूप और गुणसों युक्त
हैं ॥ ६ ॥ और हे मैथिल! बछरान करके सहित ऐनके भारते मंद मंद चले हैं, कुंडसे इनके ऐन हैं, कोई सुपेद हैं, कोई लालरंगकी कोई२ भव्यमूर्ति ॥७॥ कोई पीरी, कोई श्याम, कोई हरी,
कोई चितकबरी, कोई धूमरी, कोई घनसी श्याम है और घनश्याम श्रीकृष्णमें नेत्र जिनके लग रहे हैं ॥८॥ कोई छोटे सींगनकी हैं, कोई बडे सींगनकी हैं, कोई ऊंचे सींगनकी है, कोई हिरन

घंटामंजीरझंकारंकुर्वन्त्यस्ताइतस्ततः ॥ किंकिणीजालसंयुक्तहेममालालसद्गलाः ॥ ३ ॥ मुक्तागुच्छैर्बर्हिपिच्छैर्लसत्पुच्छाच्छकेसराः ॥
स्फुरत्तानवरत्नानांमालाजालैर्विराजिताः ॥ ४ ॥ शृंगयोरन्तरेराजच्छिरोमणिमनोहराः ॥ हेमरश्मिप्रभास्फूर्जच्छृंगपार्श्वप्रवेष्टनाः ॥ ५ ॥
आरक्ततिलकाःकाश्चित्पीतपुच्छारुणांघ्रयः ॥ कैलासगिरिसंकाशाशीलरूपामहागुणाः ॥ ६ ॥ सवत्सामन्दगामिन्यऊधोभारेणमैथिल ॥
कुंडोध्न्यःपाटलाःकाश्चित्छ्वेत्योभव्यमूर्तयः ॥ ७ ॥ काश्चित्पीताविचित्राश्चश्यामाश्चहरितास्तथा ॥ ताम्राधूम्राघनश्यामाघनश्यामेगत
क्षणाः ॥ ८ ॥ लघुशृंग्योदीर्घशृंग्यउच्चशृंग्योवृषैःसह ॥ मृगशृंग्योवक्रशृंग्यःकपिलामंगलायनाः ॥ ९ ॥ शाद्वलंकोमलंकान्तंवीक्षन्त्यो
पिवनेवने ॥ कोटिशःकोटिशोगावश्चरन्त्यःकृष्णपार्श्वयोः ॥ १० ॥ पुण्यंश्रीयमुनातीरंतमालैःश्यामलैर्वनम् ॥ नीपैर्निम्बैःकदम्बैश्चप्रवालैः
पनसैर्द्रुमैः ॥ ११ ॥ कदलैःकोविदाराम्रैर्जम्बुबिल्वैर्मनोहरैः ॥ अश्वत्थैश्चकपित्थैश्चमाधवीभिश्चमंडितम् ॥ १२ ॥ बभौवृन्दावनंदिव्यंव
सन्ततुमनोहरम् ॥ नन्दनंसर्वतोभद्रंश्रिभिंचैत्ररथंवनम् ॥ १३ ॥ यत्रगोवर्द्धनोनामसनिर्झरदरीयुतः ॥ रत्नधातुमयःश्रीमान्मन्दारवन
संकुलम् ॥ १४ ॥ श्रीखण्डबदरीरंभादेवदारुवटैर्वृतम् ॥ पलाशप्लक्षाशोकैश्चारिष्टार्जुनकदम्बकैः ॥ १५ ॥

कैसे सींगनकी हैं कोई टेढे सींगनकी है और कोई कपिला हैं, जे मङ्गलकी करनवारी हैं ॥ ९ ॥ हरी हरी कोमल मनोहर हरित तृणमय भूमिकूं बन बनमें देखती
किरोइन गौ श्रीकृष्णके चारों ओर घास चरें हैं ॥ १० ॥ पवित्र यमुनाजीकी तीर तामें श्याम तमालनको बन, जामें नीप (कदम्ब भेद) निंब, कदंब, मूगा, कठहर, बडहर
॥ ११ ॥ केला, कचनार, आम, जामुन, बेल, पीपर, कैथ और माधवीकी लतानते मंडित जो दिव्य वृन्दावन सो बडो शोभित भयो ॥ १२ ॥ जो छः ऋतुनके सुन्दर फल
फूलनसों मनोहर है और जो देवतानके नन्दनवन सर्वतोभद्र और चैत्ररथ वनकी शोभाकूंहू फीकी करे है ॥ १३ ॥ जामें गोवर्द्धन नाम पर्वत है, जामें सुन्दर सुन्दर गुहा है,
झरना जामें झर रहे हैं रत्ननसों और अनेक धातुनसों युक्त है, और बडो श्रीमान् है, और मन्दार नामके कल्पवृक्षनके बनसों संकुल है ॥ १४ ॥ जो गोवर्द्धन चन्दन, बेर, केला,

देवदारु, वट, पलाश, पाकर, अशोक, बहेडा, अर्जुन और कदंबके वृक्षोंसे आवृत है, ॥ १५ ॥ पारिजात, पाढर और चंपाके वृक्षनसो शोभित है, करंजाके जालनकी निकुञ्ज जामें
बनि रही है और श्याम इन्द्रजौके वृक्षनसो घिर रह्यो है ॥ १६ ॥ मनोहर कण्ठकी कोकिला, पुंस्कोकिला बोलि रही हैं, मोर कुहुकि कुहुकिकै नाचि रहे है पपीहा झंकार रहे हैं,
ऐसे गोवर्द्धनके वनमें गौअनकूं चरावत श्रीकृष्ण विचरते भये ॥ १७ ॥ वृन्दावनमें, मधुवनमें, तालवनके बगलमें, कुमुदवनमें, बहुलावनमें और कामवनमें ॥ १८ ॥ बरसानेमें,
नन्दगाममें, कोकिलावनमें, जहां कोकिलानकी झंकार है रही है ॥ १९ ॥ मनोहर कुशवनमें जहां मनोहर लतानके जाल छा रहे है महापवित्र भद्रवनमें, उपवन, भांडीरवनमें ॥
॥ २० ॥ लोहार्गलमें, यमुनाके तीर वन वनमें पीतांबर पहरे नटवर वेषको शृंगार करें ॥ २१ ॥ बेतकूं धारण करें, वंशी बजावत, मोरमुकुट धरें, वनमाला पहरे, गोपिनको

पारिजातैःपाटलैश्चचंपकैःपरिशोभितम् ॥ करंजजालकुंजाढ्यंश्यामैरिन्द्रयवैर्वृतम् ॥ १६ ॥ कलकंठैःकोकिलैश्चपुंस्कोकिलमयूरभृत् ॥
गाश्चारयंस्तत्रकृष्णोविचचारवनेवने ॥ १७ ॥ वृन्दावनेमधुवनेपार्श्वेतालवनस्यच ॥ कुमुद्वनेबाहुलेचदिव्यकामवनेपरे ॥ १८ ॥ बृह
त्सानुगिरेःपार्श्वेगिरेर्नन्दीश्वरस्यच ॥ सुन्दरेकोकिलवनेकोकिलध्वनिसंकुले ॥ १९ ॥ रम्येकुशवनेसौम्येलताजालसमन्विते ॥ महापुण्ये
भद्रवनेभांडीरोपवनेनृप ॥ २० ॥ लोहार्गलेचयमुनातीरेतीरेवनेवने ॥ पीतवासःपरिकरोनटवेषोमनोहरः ॥ २१ ॥ वेत्रभृद्वादयन्वंशींगो
पीनांप्रीतिमावहन् ॥ मयूरपिच्छभृन्मौलीस्रग्वीकृष्णोबभौनृप ॥ २२ ॥ अथकृत्वागवांवृन्दंसायंकालेहरिःस्वयम् ॥ रागैःसमीरय
न्वंशींश्रीनन्दव्रजमाविशत् ॥ २३ ॥ वेणुवंशीध्वनिंकुलाश्रीवंशीवटमार्गतः ॥ गोरजोभिर्नभोव्याप्तंवीक्ष्यगेहाद्विनिर्गताः ॥ २४ ॥ दूरी
कर्तुंव्याधिबाधामाहर्तुंसुखमुत्तमम् ॥ विस्मर्तुंनसमर्थास्तंदृष्टुंगोप्यःसमाययुः ॥ २५ ॥ संकोचवीथीषुनसंगृहीतःशनैश्चलन्गोगणसंकु
लासु ॥ सिंहावलोकोगजबाललीलैर्बन्धूजनैःपंकजपत्रनेत्रः ॥ २६ ॥ सुमंडितंमैथिलगोरजोभिर्नीलंपरंकुन्तलमादधानः ॥ हेमांगदीमौ
लिविराजमानआकर्णवक्रीकृतदृष्टिबाणः ॥ २७ ॥

प्रीति बढावते विचरते श्रीकृष्ण अत्यंत शोभाको प्राप्त होते भयो ॥ २२ ॥ जब वनते व्रजकूं आमें हैं तब कैसी शोभाते आमें हैं सन्ध्यासमें आगे तो गौअनको झुंड काली, पीली,
लाल, सुपेद, हरी, बूंदरी, पाढल, धूमरी चले हैं, पीछे गोपनके वृंद तिनके संग आप हरि भगवान् बांसुरीमें अनेकन राग गावत नंदग्रामकूं आमें हैं ॥ २३ ॥ कोई बेन बजामें
है, कोई वंशी बजामे हैं, वंशीवटपै हैके चले आमें हैं, गौरजते आकाश पूर्ण हैजाय है, दर्शनकूं जब गोपी अपने २ घरते निकसें है ॥ २४ ॥ मनकी व्यथाकूं दूरि करिवेके लिये
उत्तम सुखकूं लेवेके लिये, दर्शनकूं गोपी आमें है, क्योंकि, श्रीकृष्णकूं भूलिवेकूं नहीं समर्थ है ॥ २५ ॥ सकडी गलीनमें गौअनकी भीरमे देखिवेमें नहीं आमें तब फिर फिरके
सिंहकी नाई बालक हाथीकी नाई झूमत चलत जो कमललोचन तिनकूं गोपी देखे है ॥ २६ ॥ घूघरवारी नीली अलकावली छिटकि रही है, गोरजते माचि है रही, रत्नजडे

सुवर्णके किरीट, मुकुट, कुण्डल, बाजू, कंकण धारण करें. कानतक टेढेकीने हैं दृष्टिरूपी बाण जामें ॥ २७ ॥ गोरजतें मंडित, कुन्दके हार जाके, काननमें लगाये हैं कर्णिकारके फूल जामें ता मुखकूं दिखावत, पीतांबर ओढे, वंशी बजावत, गोपीनकूं आनंद देत सन्ध्या समय पृथ्वीके भार उतारनहारे श्रीकृष्ण मेरी रक्षा करो ऐसे नारदजी कहे हैं ॥ २८ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां वृन्दावनखंडे भाषाटीकायां श्रीकृष्णगोचारणवर्णनं नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ नारदजी कहे हैं एक समय बलदेवजीके संग गोपालन करिके सहित गऊनको चरावते श्रीकृष्ण नवीन तालके वनकूं जाते भये ॥ १ ॥ धेनुकासुरके भयते तालवनके भीतर कोई गोप न गये तब श्रीकृष्णहू न गये एक केवल बलदेवजीही गये ॥ २ ॥ महाबली बलदेवजी नीलांबरकूं कमरते बांधिके, पके फलनके लिये तालवनमें विचरन लगे ॥ ३ ॥ भुजानते तालनकूं हलावते और ढेरको ढेर तालके फलनको पटकते निर्भय

गोधूलिभिर्मंडितकुन्दहारःकर्णोपरिस्फूर्जितकर्णिकारः ॥ पीतांबरोवेणुनिनादकारःपातुप्रभुर्वोहतभूरिभारः ॥ २८ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांवृन्दावनखण्डेश्रीकृष्णगोचारवर्णनंनामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ एकदासबलःकृष्णश्चारयन्गामनोहराः ॥ गोपालैःसहितःसर्वैर्ययौतालवनंनवम् ॥ १ ॥ धेनुकस्यभयाद्गोपानगतास्तेवनान्तरम् ॥ कृष्णोपिनगतस्तत्रबलएकोविवेशह ॥ २ ॥ नीलांबरंकटौबद्ध्वाबलदेवोमहाबलः ॥ परिपक्वफलार्थंहितद्वनेविचचारह ॥ ३ ॥ बाहुभ्यांकंपयंस्तालान्फलसंघंनिपातयन् ॥ गर्जंश्चनिर्भयःसाक्षादनन्तोनन्तविक्रमः ॥ ४ ॥ फलानांपततांशब्दंश्रुत्वाक्रोधावृतःखरः ॥ मध्याह्नेस्वापकृद्दुष्टोभीमःकंससखोबली ॥ ५ ॥ आययौसंमुखेयोद्धुंबलदेवस्यधेनुकः ॥ बलंपश्चिमपादाभ्यांनिहत्योरसिसत्वरम् ॥ ६ ॥ चकारखरशब्दंस्वंपरिधावन्मुहुर्मुहुः ॥ गृहीत्वाधेनुकंशीघ्रंबलःपश्चिमपादयोः ॥ ७ ॥ चिक्षेपतालवृक्षेचहस्तेनैकेनलीलया ॥ तेनभग्नश्चतालोपितालान्पार्श्वस्थितान्बहून् ॥ ८ ॥ पातयामासराजेन्द्रतदद्भुतमिवाभवत् ॥ पुनरुत्थायदैत्येंद्रोबलंजग्राहरोषतः ॥ ९ ॥ योजनंनोदयामासगजंप्रतिगजोयथा ॥ गृहीत्वातंबलःसद्योभ्रामयित्वाथधेनुकम् ॥ १० ॥

हैके गर्जना करते अनंतभगवान् है और अनंत है पराक्रम जिनको तिनने तालवनमें प्रवेश कियो ॥ ४ ॥ पटापट परते फलनके शब्दको सुनके धेनुकासुर गधारूप मध्याह्नके समय सोय रह्यो बडो दुष्ट भयंकर और कंसके सखा ॥ ५ ॥ बलदेवजीके सम्मुख युद्ध करिवेकूं आयो, सो ये बलदेवजीको छातीमें पिछारीकी दुलत्तीको बडी जल्दी मारिके रेंकन लग्यो ॥ ६ ॥ और सब तरफ भाग लैंन बडो खर शब्द कियो है तब तो जल्दीही बलदेवजीने याके पिछले पांवनको पकडके ॥ ७ ॥ एक हाथतेंई सहजमेंही एक खेलसों करके याकूं तालके वृक्षपै देमार्यो तब या धेनुकके मारे वो ताडहू टूटिपर्यो और वो ओड़पासनके तालनकूंभी पटकके ॥ ८ ॥ औरहू बहुतसे तालनकूं गेरत भयो, हे राजन् ! ये अचम्भो भयो फिर धेनुकासुरनें उठके बडे रोषते बलदेवजीकूं पकड लीनो ॥ ९ ॥ और चारि कोसतक धकियावत लेगयो जैसे हाथी हाथीकूं लेजाय, तब तो फिर

बलदेवजीने पकडके धेनुककौ फिरायके ॥ १० ॥ पृथ्वीमें दैमारचो तव मूर्च्छित है गिरपरो मूँड फूटि गयौ, एक छिनमेंई फिर क्रोधयुक्त है फडफडायके उठचो ॥ ११ ॥ फिर मूँडके चारि सींगकौ भयंकर रूप धरके पैने पैने भयंकर सींगनते गोपनकूँ भजावत भयो ॥ १२ ॥ और अगारी भाजत जे गोप तिनके पीछे पीछे मदमें उत्कट ये दैत्य बडो वेगसौं आप भाजतभयो तव श्रीदामाने एक लट्ठ मारचो सुबलने एक घूंसा मारचौ ॥ १३ ॥ स्तोक नामके सखाने या महाबलकों फासीते, अर्जुन गोपने क्षेपणते और अंश नामके सखाने लातनते मारचो ॥१४॥ विशालर्षभने आयके वडे जोरते एक लात मारी, तेजस्वीने अर्द्धचंद्र शस्त्रते मार्यो, देवप्रस्थने एक चपेट मारी ॥ १५ ॥ वरूथपने गेंदते मारचो फिर वा महा खरकूं श्रीकृष्णने दोनों हाथनते पकडके उठाय ॥ १६ ॥ फिरायके वडे वेगसों गोवर्द्धन पर्वतके ऊपर फेंकदियो तव श्रीकृष्णके प्रहारते दो घडी तलक मूर्च्छा

भूपृष्ठेपोथयामासमूर्च्छितोभग्नमस्तकः ॥ क्षणेनपुनरुत्थायक्रोधसंयुक्तविग्रहः ॥ ११ ॥ मुर्धिकृत्वाचतुःशृंगंधृत्वारूपंभयंकरम् ॥ गोपान्विद्रावयामासशृंगैस्तीक्ष्णैर्भयंकरैः ॥ १२ ॥ अग्रेपलायितान्गोपान्दुद्रावाशुमदोत्कटः ॥ श्रीदामातंचदंडेनसुबलोमुष्टिनातथा ॥ १३ ॥ स्तोकःपाशेनतंदैत्यंसतताडमहाबलम् ॥ क्षेपणेनार्जुनोंशुश्चदैत्यंलत्तिकयाखरम् ॥ १४ ॥ विशालर्षभएत्याशुपादेनस्वबलेनच ॥ तेजस्वीह्यर्द्धचंद्रेणदेवप्रस्थश्चपेटकैः ॥ १५ ॥ वरूथपःकंदुकेनसंतताडमहाखरम् ॥ अथकृष्णोपितंनीत्वाहस्ताभ्यांधेनुकासुरम् ॥ १६ ॥ भ्रामयित्वाशुचिक्षेपगिरिंगोवर्द्धनोपरि ॥ श्रीकृष्णस्यप्रहारेणमूर्च्छितोघटिकाद्वयम् ॥ १७ ॥ पुनरुत्थायस्वतनुंविधुन्वन्दारयन्मुखम् ॥ शृंगाभ्यांश्रीहरिंनीत्वाधावन्दैत्योनभोगतः ॥ १८ ॥ चचारतेनखेयुद्धमूर्ध्वंवैलक्षयोजनम् ॥ गृहीत्वाधेनुकंदैत्यंश्रीकृष्णोभगवान्स्वयम् ॥ ॥ १९ ॥ चिक्षेपाथोभूमिमध्येचूर्णितास्थिःसमूर्च्छितः ॥ पुनरुत्थायशृंगाभ्यांनादंकृत्वातिभैरवम् ॥ २० ॥ गोवर्धनंसमुत्पाट्यश्रीकृष्णेप्राहिणोत्खरः ॥ गिरिंगृहीत्वाश्रीकृष्णःप्राक्षिपत्तस्यमस्तके ॥ २१ ॥ दैत्योगिरिंगृहीत्वाथश्रीकृष्णेप्राहिणोद्बली ॥ कृष्णोगोवर्धनंनीत्वापूर्वस्थानेसमाक्षिपत् ॥ २२ ॥ पुनर्धावन्महादैत्यःशृंगाभ्यांदारयन्भुवम् ॥ वलंपश्चिमपादाभ्यांताडयित्वाजगर्जह ॥ २३ ॥ ननाद तेनब्रह्मांडंप्रैजद्भूखंडमंडलम् ॥ हस्ताभ्यांसंगृहीत्वातंवलदेवोमहाबलः ॥ २४ ॥

खायके जाय परचो ॥ १७ ॥ फिर उठके अपने शरीरको फडफडायके मुख फाडके, सींगनपै श्रीकृष्णकूँ धरिके उडके आकाशमें लेगयो ॥ १८ ॥ लाख योजन ऊंचो लैगयो, वहां जाय श्रीकृष्णते युद्ध करन लगो तव श्रीकृष्ण भगवानने धेनुकासुरकूं पकडके ॥१९॥ नीचे पृथ्वीमें पटको तव चूर्णितास्थि हैके मूर्च्छित हैगयो फिर उठके भयंकर नाद करिके याने सींगनते गोवर्द्धनकों ॥ २० ॥ उखारिके श्रीकृष्णके ऊपर फेंक्यो तव श्रीकृष्णने गोवर्द्धनकूँ हाथसों पकर धेनुकासुरके मूडते मार्यो ॥ २१ ॥ तव फिरहू महाबली या दैत्यने गोवर्द्धनको हाथसों पकडके श्रीकृष्णके ऊपर फेंक्यो तव श्रीकृष्णने गोवर्द्धनको लैके जहांको तहीं स्थापित करिदीनों ॥ २२ ॥ तव वह महा दैत्य भाजिके महाबली सींगनते धरतीकूं खोदत पिछिले पाइनतें दुलत्ती वलदेवजीके मारिके वड्यौ गरज्यो ॥ २३ ॥ जाकी गर्जनातें ब्रह्मांड झनकार उठ्यौ, पृथ्वी कांपन

लगी, तब तो महाबली बलदेवजीने याकूं दोनों हाथनते पकरकें ॥ २४ ॥ फिरायके पृथ्वीमें दैमार्‍यौ तब मूर्च्छित भये माथे फटे या दैत्यको कृष्णके बड़े भैया बलदेवजीने ऐसो एक
घूंसा मार्‍यौ ॥ २५ ॥ ता घूंसाके मारे ये दैत्य तत्काल मरगयो तब देवता नंदनवनके पुष्पनकी वर्षा करी ॥२६॥ तब वाकी देहते एक श्यामसुन्दर स्वरूप देव निकस्यो, पीतांबर
ओढ़े, वनमालासों विभूषित ॥ २७ ॥ लक्ष पार्षद जाके संग, हजार पैया जामें लगरहे, हजार ध्वजा फहराय रहीं, दश हजार घोडा जामें लगरहे ॥ २८ ॥ लाख चमरनकी
शोभासों युक्त रत्नसों जटित, लाल जाको वर्ण, एक योजनको जाको विस्तार मनकोसो जाको वेग, अति मनोहर ॥ २९ ॥ किंकिणीनके जालयुक्त मनोहर शब्दवारे घंटा जामें
बजिरहे, ऐसे दिव्य रथमें बैठके दिव्य रूपको धर श्रीकृष्ण बलदेवकी परिक्रमा देके ॥ ३० ॥ अपनी कांतिते दिशानके मंडलको उजीतो करतो वह धेनुकासुर प्रकृतिते परे जो

भूपृष्ठेपोथयामाससमूर्च्छितंभग्नमस्तकम् ॥ पुनस्तताडतंदैत्यंमुष्टिनाह्यच्युताग्रजः ॥२५॥ तेनमुष्टिप्रहारेणसद्योवैनिधनंगतः ॥ तदैववनृषुर्देवाः
पुष्पैर्नन्दनसंभवैः ॥ २६ ॥ देहाद्विनिर्गतःसोपिश्यामसुन्दरविग्रहः ॥ स्रग्वीपीतांबरोदेवोवनमालाविभूषितः ॥ २७ ॥ लक्षपार्षदसंयुक्तः
सहस्रध्वजशोभितः ॥ सहस्रचक्रध्वनिभृद्धयायुतसमन्वितः ॥ २८ ॥ लक्षचामरशोभाढ्योऽरुणवर्णोऽतिरत्नभृत् ॥ दिव्ययोजनविस्तीर्णोमनोयायीमनोहरः ॥ २९ ॥ किंकिणीजालसंयुक्तोघंटामंजीरसंयुतः ॥ हरिंप्रदक्षिणीकृत्यसबलंदिव्यरूपधृक् ॥ ३० ॥ दिव्यंरथंसमारुह्यद्योतयन्मंडलन्दिशाम् ॥ जगामदैत्योहेराजन्गोलोकंप्रकृतेःपरम् ॥ ३१ ॥ श्रीकृष्णोधेनुकंहत्वासबलोबालकैःसह ॥ तद्यशस्तुप्रगायद्भिर्बभौगोकुलगोगणैः ॥ ३२ ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ मुनेमुक्तिंकथंप्राप्तःपूर्वंकोधेनुकासुरः ॥ कथंखरत्वमापन्नएतन्मेब्रूहितत्त्वतः ॥
॥ ३३ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ वैरोचनेर्बलेःपुत्रोनाम्नासाहसिकोबली ॥ नारीणांदशसाहस्रैरेमेवैगन्धमादने ॥ ३४ ॥ वादित्राणां
नूपुराणांशब्दोभूत्तद्वनेमहान् ॥ गुहायामास्थितस्यापिश्रीकृष्णंस्मरतोमुनेः ॥ ३५ ॥ दुर्वाससोऽथतेनापिध्यानभंगोबभूवह ॥ निर्गतः
पादुकारूढोदुर्वासाःकृशविग्रहः ॥ ३६ ॥ दीर्घश्मश्रुर्यष्टिधरःक्रोधपुंजानलद्युतिः ॥ यस्यशापाद्विश्वमिदंकंपतेसजगादह ॥ ३७ ॥

गोलोक ताकूं चल्यौ गयौ ॥ ३१ ॥ ऐसे श्रीकृष्ण बलदेवजीके संग धेनुकासुरकूं मारके अपने यशकूं गावत आमें ऐसे गोपनकूं और गऊनकूं संग लीये जब ब्रजकूं पगदे तब बड़ी
शोभा भई ॥ ३२ ॥ यह कथा सुनिके राजा बहुलाश्वने नारदजीते प्रश्न कीनो कि, हे मुने ! या धेनुकासुरकी मुक्ति कैसे हुगई ? और पूर्वजन्मको यह कौन हो ? और या जन्ममें
गधाकी योनि याकूं कैसे मिली ? सो ये सब वृत्तांत असली होय सो कहो ? ॥ ३३ ॥ तब नारदजी बोले कि, विरोचनके बेटा बलिको साहसिक नाम बलवान् एक बेटा हो
दश हजार स्त्रीनकूं संग लेके गंधमादन पर्वतमें विहार करिरह्यौ हो ॥ ३४ ॥ तहां बाजेनकौ और स्त्रीनके नूपुरनको वा वनमें बड़ौ शब्द भयौ, वहांही गुफामें दुर्वासा मुनि कृष्णको
ध्यान कर रहे हे ॥ ३५ ॥ सोई वा शब्दते दुर्वासामुनिको ध्यान भंग है गयो तब दुर्वासामुनि खडाम पहरे निकसे तपते जिनको बडो शरीर लटिगयो है ॥ ३६ ॥ बड़ी २ जिनकी

११

७०॥ मूछ, जटा बढ़िरही, दंडको लिये कोधके पुंज अग्निकीसी कांतिवारे जाके शापते सम्पूर्ण विश्व कांप्योकरै सो दुर्वासा बोले ॥ ३७ ॥ अरे गधाके आकारके ! तू उठजा और हे दुर्बुद्धी ! तू गधा हैजा, चारि लाख वर्ष बीतेपै फिर तूं भरतखंडमें ॥ ३८ ॥ ॥ मथुरामंडलमें दिव्य तालवनमें हे असुर ! बलदेवजीके हाथसे तेरी मुक्ति होयगी ॥ ३९ ॥ नारद जी कहैं हैं—ताते श्रीकृष्णने बलदेवजीके हाथन धेनुकासुरकूं मरवायो, क्योंकि पहले प्रह्लादकूं नृसिंहजीने ये वरदीनो हो कै तेरे वंशके असुरकूं मैं नही मारूंगो ॥ ४० ॥ इति श्रीगर्गसंहितायां वृंदावनखंडे भाषाटीकायां धेनुकासुरवधो नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ नारदजी कहैं हैं एक दिना बलदेवके विनाही स्वयं श्रीकृष्ण गोपनकूं संग लेके गौअनकूं चरावत कालिंदीके आयके विषके मिले जलको पीते भये ॥ १ ॥ जो जल फणींद्र कालीने विषसो विगाडराख्योहो सो गौ और गोप वा विषके जलको पीके जलके किनारेपै मरिके जायपरे

॥ दुर्वासाउवाच ॥ ॥ उत्तिष्ठगर्दभाकारगर्दभोभवदुर्मते ॥ वर्षाणांतुचतुर्लक्षंव्यतीतेभारतेपुनः ॥३८॥ माथुरेमंडलेदिव्येपुण्येतालवनेवने ॥
बलदेवस्यहस्तेनमुक्तिस्तेभविताऽसुर ॥ ३९ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ तस्माद्बलस्यहस्तेनश्रीकृष्णस्तंजघानह ॥ प्रह्लादायवरोदत्तो
नवध्योमेतवान्वयः ॥ ४० ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांवृन्दावनखण्डेधेनुकासुरमोक्षोनामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥
बलंविनाक्वचिद्गोपालैश्चारयन्गाहरिःस्वयम् ॥ कालिन्दीकूलमागत्यपपौवारिविषावृतम् ॥ १ ॥ कालियेनफणीन्द्रेणजलंयत्रविदूषितम् ॥
पीत्वानिपेतुर्व्यसवोगावोगोपाजलान्तिके ॥ २ ॥ तदाताञ्जीवयामासदृष्ट्यापीयूषपूर्णया ॥ आर्द्रचित्तोहरिःसाक्षाद्भगवान्वृजिनार्दनः ॥
॥ ३ ॥ कटौपीतपटंबद्ध्वानीपमारुह्यमाधवः ॥ पपातोत्तुंगविटपात्तत्तोयेविषदूषिते ॥ ४ ॥ उच्चचालजलंदुष्टंकृष्णसंपातघूर्णितम् ॥
तत्सर्पमन्दिरंनद्यांभृंगीभूतंबभूवह ॥ ५ ॥ तदैवकालियःक्रुद्धःफणीफणशतावृतः ॥ दशन्दन्तैश्चभुजयाचच्छादनृपमाधवम् ॥ ६ ॥ कृष्णो
दीर्घवपुःकृत्वाबन्धनान्निर्गतश्चतम् ॥ पुच्छेगृहीत्वासर्पेन्द्रंभ्रामयित्वात्वितस्ततः ॥ ७ ॥ जलेनिपात्यहस्ताभ्यांचिक्षेपसधनुःशतम् ॥
पुनरुत्थायसर्पेन्द्रोलेलिहानोभयंकरः ॥ ८ ॥ वामहस्तेहरिंसर्पोरुषाजग्राहमाधवम् ॥ हरिर्दक्षिणहस्तेनगृहीत्वातंमहाखलम् ॥ ९ ॥

॥ २ ॥ तब श्रीकृष्ण अपनी अमृतवर्षिणी दृष्टिकरिके उनै जिवावत भये, ऐसेई दयावान् हरि हैं, दुःखके दूरि करनहारे हैं ॥ ३ ॥ तब फिरि कमरिते पीतांबर बाँधके कदंबपै चढके वा ऊंचे कदंबपैते वा विषके दूषित जलमें कूदिपडे ॥ ४ ॥ ता समय वो दुष्ट जल श्रीकृष्णके कूदबेते चारौ तरफ घूमन लग्यौ वा समय वो कालीनागको मंदिर भृंगीभूत जैसे घिर्रा घूमै ऐसे होतोभयो ॥ ५ ॥ तबही कालीनाग कोध करिकै सो फणनकरिकै आवृत श्रीकृष्णकूं दांतनते मर्मस्थलमे काटके अपने शरीरसो पांउते मूंडतलक लिपटि गयो ॥ ६ ॥ तब श्रीकृष्ण अपनी दीर्घवपु करिके बंधनते निकसगये, फेरि जलमें पटकके वा सर्पकी हाथनसो पूंछको पकड़के इत उतमाऊं घुमायके ॥ ७ ॥ सो धनुष पर्छा और फेंक देतभये, फिर यह सर्पराज महाभयंकर जीभसो चाटतो फिर आयो ॥ ८ ॥ और बडे कोधसों बायें हाथमें हरिकूं पकन्यो तबही श्रीकृष्णने दाहिने हाथसो या महादुष्ट कालीको पकडके ॥ ९ ॥

वाही जलमें पटक मारी जैसे सामान्य कोई सर्पको गरुड मारै है तब ये सर्प अपने सौ मुंहडेनकूं फाडके फेरि आयो ॥ १० ॥ फेरि श्रीकृष्ण पूंछ पकडके वाकों सौ धनुषताई खचेर लेगये, फेर या सर्पने श्रीकृष्णके हाथते निकसिके श्रीकृष्णकूं फिर काटखायो ॥ ११ ॥ तब तो त्रिलोकीके बलके धरनहारे श्रीकृष्णने सर्पके एक घूंसा मार्यो श्रीकृष्णके घूंसाके मारे मूर्च्छित हैके बेहोश हैगयो ॥ १२ ॥ तब ये अपने सौ १०० मुखनकूं नीचो करिके श्रीकृष्णके सन्मुख आय ठाढौ भयो तब याके मणिधारी सौ शिरनपे चढके ॥१३॥ नटकी तरह मनोहर नटकोसो जिनको रूप ऐसे श्रीकृष्ण सप्त स्वरनके तालसहित संगीत रागको गावते तांडव नृत्यसों नाचते भये जैसे नटराज नाचै है ॥ १४ ॥ या तांडवमें देवतानके पुष्पनकी वर्षा करते संते आनंदते वीणा, नगाडे, वंशीनकूं बजावत जायँ हैं ॥ १५ ॥ तालके संग पांवनकी धरनते वाके उज्ज्वल फणनकूं मींडते हैं स्वासलेते महात्मा

तज्जलेपोथयामाससुपर्णइवपन्नगम् ॥ सर्पोमुखशतंदीर्घंप्रसार्यपुनरागतः ॥ १० ॥ पुच्छेगृहीत्वातंकृष्णश्चकर्षशुधनुःशतम् ॥ कृष्णहस्ताद्विनिष्क्रम्यसर्पस्तंव्यदशत्पुनः ॥ ११ ॥ तताडमुष्टिनासर्पंत्रैलोक्यबलधारकः ॥ कृष्णमुष्टिप्रहारेणमूर्च्छितोविगतस्मृतिः ॥ १२ ॥ नतंकृत्वाऽऽननशतंस्थितोभूत्कृष्णसंमुखे ॥ आरुह्यतत्फणशतंमणिवृन्दमनोहरम् ॥ १३ ॥ ननर्तनटवत्कृष्णोनटवेषोमनोहरः ॥ गायन्सस्वरैरागंसंगीतंचसतालकम् ॥ १४ ॥ पुष्पैर्देवेषुवर्षत्सुतांडवेनटराजवत् ॥ वादयन्समुदावीणाऽऽनकदुन्दुभिवेणुकान् ॥ १५ ॥ सतालंपदविन्यासैस्तत्फणान्सोज्ज्वलान्बहून् ॥ बभंजश्वसतःकृष्णःकालियस्यमहात्मनः ॥ १६ ॥ तदैवनागपत्न्यस्ताआगताभयविह्वलाः ॥ नत्वाकृष्णपदंदेवमूचुर्गद्गदयागिरा ॥ १७ ॥ ॥ नागपत्न्यऊचुः ॥ ॥ नमःश्रीकृष्णचंद्रायगोलोकपतयेनमः ॥ असंख्यांडाधिपतयेपरिपूर्णतमायते ॥ १८ ॥ श्रीराधापतयेतुभ्यंव्रजाधीशायतेनमः ॥ नमःश्रीनंदपुत्राययशोदानंदनायते ॥ १९ ॥ पाहिपाहिपरदेवपन्नगंत्वत्परंनशरणंजगत्त्रये ॥ त्वंपरात्परतरोहरिःस्वयंलीलयाकिलतनोपिविग्रहम् ॥ २० ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ नागपत्नीस्तवान्तेतुकालियोनष्टगर्वकः ॥ भगवन्पूर्णकामेतिपाहिश्रीकृष्णमुक्तवान् ॥ २१ ॥ पाहीतिप्रवदंतंतंकालियंभगवान्हरिः ॥ प्रणतंसंमुखेप्राप्तंप्राहदेवोजनार्दनः ॥ २२ ॥

कालीके सब फणनकूं तोड गेरे ॥ १६ ॥ तब भय करिके विकलभई वे नागपत्नी श्रीकृष्णके चरणकमलनकूं नमस्कार करिके गद्गदवाणीतें स्तुति करनलगी ॥१७॥ श्रीकृष्णचंद्र ! तुम गोलोकके पति, अखिल असंख्य ब्रह्मांडनके पति, परिपूर्णतम हौ तिनके अर्थ नमस्कार है ॥ १८ ॥ श्रीराधापति हो, व्रजके अधीश हौ, नंदके पुत्र यशोदानंदन हौ, तिनके अर्थ नमस्कार है ॥ १९ ॥ हे परदेव ! सर्पकूं त्राहि त्राहि रक्षा करो २ तीनों जगतमें तुमते परे और कोई रक्षा करिबेवारो नहीं है, तुम परते पर हौ, हरि हौ, अपनी इच्छाते शरीर धारण करौ हौ ॥ २० ॥ नारदजी कहें हैं कि, ऐसे जब नागपत्नीनने श्रीकृष्णकी स्तुति करी और कालीको गर्व नष्ट हैगयो और भगवान्से बोलो कि, हे प्रभो ! मैं शरण आयो हौं मेरी रक्षा करौ, तब साक्षात् परिपूर्णतम श्रीकृष्ण कालीकूं छोडते भये ॥ २१ ॥ जब काली पाहि पाहि करत भयो दंडौत करत श्रीकृष्णके सन्मुख आयो तब

जनार्दन भगवान् याते बोले ॥ २२ ॥ कि, हे कालीय ! तू अपने पुत्र, स्त्री, भैया, बंधु, कुटुंबकूं संग लैके रमणक द्वीपकूं चल्योजा अब गरुड तोकूं भक्षण नही करैगो क्योंकि अब मेरे चरणको चिह्न तेरे शिरपै हैगयो है याते ॥ २३ ॥ नारदजी कहैं हैं कि, काली सर्प श्रीकृष्णकी आज्ञा पायके श्रीकृष्णको प्रमाण कर पूजन करिके परिक्रमा दैके बेटा स्त्रीनकूं संग लैके रमणक द्वीपकूं चल्यौ गयो ॥ २४ ॥ अब नंदादिक गोपनने सुनी के श्रीकृष्णकूं कालीने ग्रसि लीनो तब नंदादिक गोपगण स्त्री, पुत्र सहित सब वहांही आये ॥ २५ ॥ जब श्रीकृष्ण जलते निकसे तब देखिके बड़े प्रसन्न भये और नंदजी अपने बेटाके आलिंगन करके परमआनंदकूं प्राप्त भये ॥ २६ ॥ तब वो यशोदाजी अपने बेटाकूं प्राप्त हैके बेटाके कल्याणके अर्थ ब्राह्मणनकूं दान देन लगी और स्नेह करिके स्तननमेंते दूध चुचान लग्यो ॥ २७ ॥ वा दिन गोपनकूं जो परिश्रम बहुत भयो

॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ द्वीपंरमणकंगच्छसकलत्रसुहृद्वृतः ॥ सुपर्णोभ्रत्तनत्त्वांवैनोद्यान्मत्पादलांछितम् ॥ २३ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ सर्पःकृष्णंतुसंपूज्यपरिक्रम्यप्रणम्यतम् ॥ कलत्रपुत्रसहितोद्वीपंरमणकंययौ ॥ २४ ॥ अथश्रुत्वाकालियेनसंग्रस्तंनंदनंदनम् ॥ तत्राजग्मुर्गोपगणानंदाद्याःसकलाजनाः ॥ २५ ॥ जलाद्विनिर्गतंकृष्णंदृष्ट्वासुमुदिरेजनाः ॥ आश्लिष्यस्वसुतंनंदःपरांमुदमवापह ॥ २६ ॥ सुतंलब्ध्वायशोदासासुतकल्याणहेतवे ॥ ददौदानंद्विजातिभ्यःस्नेहस्नुतपयोधरा ॥ २७ ॥ तत्रैवशयनंचक्रुर्गोपाःसर्वेपरिश्रमात् ॥ कालिंदीनिकटेराजन्गोपीगोपगणैःसह ॥ २८ ॥ वेणुसंघर्षणोद्भूतोदावाग्निःप्रलयाग्निवत् ॥ निशीथेसर्वतोगोपान्दग्धुमागतवान्स्फुरन् ॥ ॥ २९ ॥ गोपावयस्याःश्रीकृष्णंसबलंशरणंगताः ॥ नत्वाकृतांजलिंकृत्वातमूचुर्भयकातराः ॥ ३० ॥ ॥ गोपाऊचुः ॥ ॥ कृष्णकृष्णमहाबाहोशरणागतवत्सल ॥ पाहिपाहिवनेकशान्दावाग्नेःस्वजनान्प्रभो ॥ ३१ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ स्वलोचनानिमाभैष्यन्यमीलयतमाधवः ॥ इत्युक्त्वावह्निमपिबद्देवोयोगेश्वरेश्वरः ॥ ३२ ॥

याते वहांही यमुनाके किनारेपै सब गोपी गोपगणन सहित रात्रिमें शयन करतेभये ॥ २८ ॥ सो वा रातमें वा वनमें बांसनकी जो आपुसमें घसबो भयो ताते दौंकी आग प्रलयकीसी अर्द्धरात्रके समयमें गोपनकूं जरायवेकूं चारो ओरसो फुंकारत भई गोपनको जरायवेकी आई तब गोप, गोपी, गौ सब व्याकुल हैगये ॥ २९ ॥ तब उमरके बराबरके सब गोप श्रीकृष्ण बलदेवकी शरण आये भयसों कायर हैरहे वे सब प्रणाम कर हाथ जोड़के यह बोले ॥ ३० ॥ हे कृष्ण ! हे कृष्ण ! हे बड़ी भुजावारे ! हे शरणागतवत्सल ! पाहि २ या दौंकी आगते या वनमें जरेजाय हैं तिन हमारी रक्षा करौ, हे प्रभो ! हम तुम्हारे स्वजन हैं ॥ ३१ ॥ नारदजी कहैं हैं—तब कृष्ण बोले—अरे गोप हो ! तुम भय मति करो अपने २ नेत्रनकूं मींचिलेउ, भगवान् ऐसे कहिके जब उने आंखि मींचि लई तबही वा अग्निकूं पीगये यामें आश्चर्य नही है क्योंकि योगी जो चाहें सो करिसके है

फिर श्रीकृष्ण तो योगीश्वरनके ईश्वर हैं ॥ ३२ ॥ प्रातःकाल जब भयो तब विस्मित भये सब गोपगणनकूं और गउनको संग लैके श्रीयुत ब्रजमंडलकूं आये ॥ ३३ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां वृंदावनखंडे भाषाटीकायां कालियदमनदावाग्निपानं नाम नवमोऽध्यायः ॥९॥ अब विदेहराजा प्रश्न करै हैं जो श्रीकृष्णकी चरणकमलकी रज बहुत जन्मनकी तप स्याहूते या लोकमें बड़े २ योगीश्वरनकूंभी दुर्लभ है सो चरणकमल साक्षात् कालीके मस्तकपै शोभायमान भये ॥ १ ॥ सो यह काली सर्पनमें श्रेष्ठ कौन हो ? कौनसो याने कुशल कर्म करयो हो ? मैं वाके जानिवेकी इच्छा करूंहूं सो हे देव ! ऋषिनमें सत्तम मोसों कहो ॥ २ ॥ तब नारदजी बोले कि, पहले स्वायंभू मन्वंतरमें विंध्याचल पर्वतमें एक वेदशिरा नाम मुनि भृगुवंशी तप कर रहेहे ॥ ३ ॥ तिनके आश्रममें तप करिवेकूं अश्वशिरा नाम मुनि आये, तिनकूं देखिके लाल नेत्र करिके क्रोधते वेदशिरा

प्रातर्गोपगणैःसार्द्धंविस्मितैर्नंदनन्दनः ॥ गोगणैःसहितःश्रीमद्व्रजमंडलमाययौ ॥ ३३ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायांवृन्दावनखण्डेकालियदमनदावाग्निपानंनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥ वैदेहउवाच ॥ यद्रजोदुर्लभंलोकेयोगिनांबहुजन्मभिः ॥ तत्पादाब्जंहरेःसाक्षाद्बभौकालियमूर्द्धसु ॥ १ ॥ कोयंपूर्वंकुशलकृत्कालियोफणिनांवरः ॥ एनंवेदितुमिच्छामिब्रूहिदेवर्षिसत्तम ॥ २ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ स्वायंभुवान्तरेपूर्वंनाम्नावेदशिरामुनिः ॥ विंध्याचलेतपोकार्षीद्भृगुवंशसमुद्भवः ॥ ३ ॥ तदाश्रमेतपःकर्तुंप्राप्तोह्यश्वशिरामुनिः ॥ तंवीक्ष्यरक्तनयनःप्राहवेदशिरारुषा ॥ ४ ॥ ॥ वेदशिरा उवाच ॥ ॥ ममाश्रमेतपोविप्रमाकुर्यास्सुखदंनहि ॥ अन्यत्रतेतपोयोग्याभूमिर्नास्तितपोधन ॥ ५ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ श्रुत्वाथवेदशिरसोवाक्यंह्यश्वशिरामुनिः ॥ क्रोधयुक्तोरक्तनेत्रःप्राहतंमुनिपुंगवम् ॥ ६ ॥ ॥ अश्वशिरा उवाच ॥ ॥ महाविष्णोरियंभूमिर्नतेमेमुनिसत्तम ॥ कतिभिर्मुनिभिश्चात्रनकृतंतपउत्तमम् ॥ ७ ॥ श्वसन्सर्पइवत्वंभोवृथाक्रोधंकरोषिहि ॥ सदासर्पोभवत्वंहिभूयात्तेगरुडाद्भयम् ॥ ८ ॥ ॥ वेदशिराउवाच ॥ ॥ त्वंमहादुरभिप्रायोलघुद्रोहेमहोद्यमः ॥ कार्यार्थीकाकइवकौत्वंकाकोभवदुर्मते ॥९॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ आविरासीत्ततोविष्णुरित्थंचशपतोस्तयोः ॥ स्वस्वशापाद्दुःखितयोःसांत्वयामासतौगिरा ॥१०॥

बोले ॥ ४ ॥ हे विप्र ! मेरे आश्रममें तप मत करै यहांको तप तोकों सुखकारी नहीं होयगो, हे तपोधन ! कहां और तप करिवेकूं धरती तुमकूं कहूं पैदा नहीं है ॥ ५ ॥ नारदजी कहैं हैं-ऐसे वेदशिराको वचन अश्वशिरा मुनि सुनके क्रोधसों लाल नेत्र करके वा मुनि श्रेष्ठसो यह बोले ॥ ६ ॥ हे मुनिसत्तम ! महाविष्णुकी यह भूमि है, न तेरी है न मेरी है, न जाने कितने मुनि यहां तप करगये और कितने करेंगे ॥ ७ ॥ जो तूं निरंतर सर्पकी नाईं श्वास लेतो वृथा क्रोध करै है याते तुम सर्प होउ और तोकूं गरुड़ते भय होयगो ॥ ८ ॥ तब वेदशिरा बोले कि, तुम्हारो ये बड़ो खोटो अभिप्राय है जो नेकसे अपराधमें इतनो क्रोध कियो यासों कार्यार्थी तूं काककी नाईं है याते हे दुर्बुद्धी ! तूं काक हैजा ॥ ९ ॥ नारदजी कहैं हैं कि, ऐसे वे दोनों परस्पर शाप देरहे हैं वाही समय विष्णु वहाँ प्रगट भये, अपने २ शापते दुःखीकूं वाणी करिके

विष्णुभगवान् शांत करत भये ॥ १० ॥ हे मुनि हो ! तुम दोनों मेरे समान भक्त हो जैसे शरीरमे भुजामें अपने वाक्यको झूठो करवेकू समर्थ हूं ॥ ११ ॥ पर भक्त वाक्यकूं झूंठ करिवेकूं मैं समर्थ नही हूं या वातकी मेरे शपथ है सो हे वेदशिरा ! जब तेरे शिरपै मेरे चरण धरजायंगे ॥ १२ ॥ तब तोकों गरुडते भय नही होयगो और हे अश्वशिरा ! मेरे वचनको सुन शोचको तूं मति करै ॥ १३ ॥ काकरूपमेंभी तोकूं निश्चित ज्ञान होयगो और योगसिद्धिनसहित त्रैकालिक ज्ञान तुमे होयगो ॥ १४ ॥ नारदजी कहैं हैं-ऐसे कहके विष्णु तो चलेगये तब हे नृप ! वे अश्वशिरा नाम मुनीश्वर बडे योगींद्र नील पर्वतपै जायके साक्षात् काकभुशुंडि नामसे विख्यात काक भये ॥ १५ ॥ वे महातेजस्वी काकभुशुंड सम्पूर्ण शास्त्रनके दीपक और श्रीरामके भक्त भये, जिन काकभुशुंडीने महात्मा गरुडके आगे श्रीरामायण गान करी ॥ १६ ॥

॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ युवांतुमेसमौभक्तौभुजाविवतनौमुनी ॥ स्ववाक्यंतुमृषाकर्तुंसमर्थोऽहंमुनीश्वरौ ॥ ११ ॥ भक्तवाक्यंमृषाकर्तुं नेच्छामिशपथोमम ॥ तेमूर्ध्निहेवेदशिरश्चरणौमेभविष्यतः ॥ १२ ॥ तदातेगरुडाद्भीतिर्नभविष्यतिकर्हिचित् ॥ शृणुमेऽश्वशिरोवाक्यंशोचंमा कुरुमाकुरु ॥ १३ ॥ काकरूपेपिसुज्ञानंतेभविष्यतिनिश्चितम् ॥ परंत्रैकालिकंज्ञानंसंयुतंयोगसिद्धिभिः ॥ १४ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वाथगतेविष्णौमुनिरश्वशिरानृप ॥ साक्षात्काकभुशुंडोभूद्योगींद्रोनीलपर्वते ॥ १५ ॥ रामभक्तोमहातेजाःसर्वशास्त्रार्थदीपकः ॥ रामायणं जगौयोवैगरुडायमहात्मने ॥ १६ ॥ चाक्षुषेह्यन्तरेप्राप्तेदक्षःप्राचेतसोनृप ॥ कश्यपायददौकन्याएकादशमनोहराः ॥ १७ ॥ तासां कद्रूश्चयाश्रेष्ठासाद्यैवंरोहिणीस्मृता ॥ वसुदेवप्रियायस्यांबलदेवोऽभवत्सुतः ॥ १८ ॥ साकद्रूश्चमहासर्पाञ्जनयामासकोटिशः ॥ महोद्भटा न्विषबलान्शश्वान्पंचशताननान् ॥ १९ ॥ महामणिधरान्कांश्चिद्दुःसहांश्चशताननान् ॥ तेषांवेदशिरानामकालियोभून्महाफणी ॥ २० ॥ तेषामादौफणीन्द्रोभूच्छेषोऽनन्तःपरात्परः ॥ सोद्यैवबलदेवोस्तिरामोनन्तोच्युताग्रजः ॥ २१ ॥ एकदाश्रीहरिःसाक्षाद्भगवान्प्रकृतेःपरः ॥ शेषंप्राहप्रसन्नात्मामेघगंभीरयागिरा ॥ २२ ॥

चाक्षुष मन्वंतरमे प्रचेतानको बेटा दक्षप्रजापति कश्यपजीकूं बडी मनोहर ग्यारह कन्या व्याहत भयी ॥१७॥ तिनमे श्रेष्ठ जो कद्रू ही सो अब आयके रोहिणी भई वो वसुदेवकी स्त्री भई ताके बलदेवजी पुत्र भये॥१८॥ता कद्रूने पांच २ सौ मुखके, बडे २ विषधारी, विषकोही केवल जिनको बल बडे २ उद्भट करोडो ऐसे नाग प्रकट कीने ॥१९॥ तिनमें कितनेहू महामणिधारी, कितनेई दुःसह सौ सौ फणके नाग भये तिनमे वेदशिरा जे मुनीश्वर हे वे काली नामके नाग भये ॥ २० ॥ तिन नागनमें सबनमें मुख्य परसे पर भगवान् शेषजी भये सोई अब बलदेवजी हैं जिनके राम, अनन्त और अच्युताग्रज नाम भये ॥ २१ ॥ एक समय भगवान् श्रीहरि प्रकृतिते प्रसन्न हैके मेघगम्भीर वाणीते शेषजीते बोले ॥२२॥

कोई कोई अत्र ... नाम भये ॥ २१ ॥ ... भगवान् ... शेषजीसे बोले ॥ २२ ॥

या भूमण्डलकी धारण करवेकी काहूकी सामर्थ्य नहीं है ताते या भूमण्डलकूं अपने मस्तकपर तुम धारण करो ॥ २३ ॥ तुम्हारो अनन्त पराक्रम है ताते तुम अनंत कहाओ हो, प्राणीनके कल्याणके निमित्त या कार्यकूं तुम करवेको योग्य हो ॥ २४ ॥ तब शेषजी बोले कि, हे महाराज ! मोते आप पृथ्वीके उठायवेकी अवधि करदेउ कबतलक मैं या पृथ्वीकूं उठाये रहूं, जबतक आप आज्ञा देउगे तबतलक मैं तुम्हारी आज्ञाते भूमिकी धारण करूंगो ॥ २५ ॥ तब भगवान् बोले–हे सर्पेन्द्र ! तुम्हारे हजार मुख हैं और दोहजार जीभ हैं तिनते मेरे गुण जिनमें ऐसे नये नये नामनको उच्चारण करो करो ॥ २६ ॥ जबै मेरे दिव्य नामनको अन्त आयजाय पूरे हैजायँ तबही तुम पृथ्वीकूं उतारके धरि दीजियो ॥ २७ ॥ तब शेषजीने पूछो कि, हे प्रभो ! पृथ्वीको तो आधार मैं होऊँगो परन्तु मेरो आधार कौन होयगो ? तब बताओ फिर निराधार

॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ भूमंडलंसमाधातुंसामर्थ्यंकस्यचिन्नहि ॥ तस्मादेनंमहीगोलंमूर्ध्नित्वंहिसमुद्धर ॥ २३ ॥ अनंतविक्रमस्त्वंवैयतोनन्तइतिस्मृतः ॥ इदंकार्यंप्रकर्तव्यंजनकल्याणहेतवे ॥ २४ ॥ ॥ शेषउवाच ॥ ॥ अवधिंकुरुथावत्त्वंधरोद्धारस्यमे प्रभो ॥ भूभारंधारयिष्यामितावत्तेवचनादिह ॥ २५ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ नित्यंसहस्रवदनैरुच्चारंचपृथक्पृथक् ॥ मद्गुणस्फुरतांनाम्नांकुरुसर्पेन्द्रसर्वतः ॥ २६ ॥ मन्नामानिचदिव्यानियदायांत्यवसानताम् ॥ तदाभूभारमुत्तार्यफणिस्त्वंसुसुखीभव २७ ॥ ॥ शेषउवाच ॥ ॥ आधारोहंभविष्यामिमदाधारश्चकोभवेत् ॥ निराधारःकथंतोयेतिष्ठामिकथयप्रभो ॥ २८ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ अहंचकमठोभूत्वाधारयिष्यामितेतनुम् ॥ महाभारमयींदीर्घांमाशोकंकुरुमत्सखे ॥ २९ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ तदाशेषःसमुत्थायनत्वाश्रीगरुडध्वजम् ॥ जगामनृपपातालादधोवैलक्षयोजनम् ॥ ३० ॥ गृहीत्वास्वकरेणेदंगरिष्ठंभूमिमंडलम् ॥ दधारस्वफणेशेषोप्येकस्मिंश्चंडविक्रमः ॥ ३१ ॥ संकर्षणेऽथपातालेगतेऽनन्तेपरात्परे ॥ अन्येफणीन्द्रास्तमनुविविशुर्ब्रह्मणोदिताः ॥ ३२ ॥ अतलेवितलेकेचित्सुतलेचमहातले ॥ तलातलेतथाकेचित्संप्राप्तास्तेरसातले ॥ ३३ ॥ तेभ्यस्तुब्रह्मणादत्तंद्वीपंरमणकंभुवि ॥ कालीयप्रमुखास्तस्मिन्नवसन्सुखसंवृताः ॥ ३४ ॥

मैं जलमें कैसे स्थित हैसकौंहौं ॥ २८ ॥ तब भगवान् बोले कि, मैं कच्छपरूप हैके तोको और महाबोझवारी बडी तेरी तनुको भी धारण करूंगो, मेरा मित्र तूं याको शोच मत करै ॥ २९ ॥ नारदजी कहैं हैं कि, तबही शेषजी उठके श्रीगरुडध्वजकूं नमस्कार करके हे नृप ! पातालके लाख योजन नीचे चलेगये ॥ ३० ॥ तब बडे प्रचंडसे शक्तिवारे शेषजी एक हाथतेई या बडे बोझके भूमण्डलकूं एक फणपैही धरिलेत भये ॥ ३१ ॥ जब अनंतपराक्रमी परसे पर संकर्षण श्रीशेषजी पातालकूं चलेगये तब औरहू बडे बडे सर्प ब्रह्माजीकी आज्ञाते तिनके पीछे पातालको चलेगये ॥ ३२ ॥ कोई अतलमें, कोई सुतलमें, कोई वितलमें, कोई महातलमें, कोई पातालमें, कोई तलातलमें और कोई रसातलमें चलेगये ॥ ३३ ॥ और पृथ्वीमें ब्रह्माजीने नागनके लिये रमणक द्वीप दीनों तामें कालीते आदि लेके सब नाग सुखपूर्वक रमणकद्वीपमें वसे ॥ ३४ ॥

हे राजन् ! यह हमने तेरे अगाडी कालीको कथानक वर्णन कर्यो, यह भुक्ति मुक्ति देनहारो सार है, अब तू कहा सुनिबेकी इच्छा करैहै सो कहो ॥ ३५ ॥ इति श्रीगर्गसंहितायां वृंदावनखण्डे भाषाटीकायां शेषोपाख्यानवर्णनं नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ राजा बहुलाश्व प्रश्न करे है कि, हे ब्रह्मन् ! रमणकद्वीपमें और सर्पनके बिना कालीहीकूं क्यों भय भयो ये सब वृत्तान्त मोसों कहो ॥ १ ॥ नारदजी कहैं हैं कि, वा रमणकमें नागनको काल जो गरुड हैं वो नित्य नागनके झुंडनकूं मार्यो करै हो, तब एक समय वे भयभीत सबरे नाग निर्भय जो गरुड तासे बोले ॥ २ ॥ हे गरुड ! तुमकूं हमारो दंडोत है, तुम साक्षाद्विष्णुके वाहन हो, जो तुम नित्य ऐसेही हमकूं खाओगे तो हमारो जीवन कैसे होयगो ॥ ३ ॥ याते तुम महीना महीनामें एक एक सर्पकी भेंट एक एकके घरते लेलीओ करो, भेंटकी रीतिते एक पेडके नीचे धरिआयो करेंगे ॥ और वो नागके संगमें और अन्नादिकभी

इतितेकथितंराजन्कालियस्यकथानकम् ॥ भुक्तिदंमुक्तिदंसारंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ३५ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांवृन्दावनखण्डे शेषोपाख्यानवर्णनंनामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ द्वीपेरमणकेब्रह्मन्सर्पानन्यान्विनाकथम् ॥ एतन्मेब्रूहिसकलंकालियस्याभवद्भयम् ॥ १ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ तत्रनागान्तकोनित्यंनागसंघंजघानह ॥ गतक्षुब्धंचैकदातेताक्ष्यंप्राहुर्भयातुराः ॥ २ ॥ ॥ नागाऊचुः ॥ ॥ हेगरुत्मन्नमस्तुभ्यंत्वंसाक्षाद्विष्णुवाहनः ॥ अस्मानत्सियदासर्पान्कथंनोजीवनंभवेत् ॥ ३ ॥ तस्माद्बलिंगृहाणाशुमासेमासेगृहात्पृथक् ॥ वनस्पतिसुधान्नानामुपचारैर्विधानतः ॥ ४ ॥ ॥ गरुडउवाच ॥ ॥ एकःसर्पस्तुमेदेयोभवद्भिर्वागृहात्पृथक् ॥ कथंपचामितमृतेबलिंवीटकवत्परम् ॥ ५ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ तथास्तुचोक्तास्तेसर्वेगरुडायमहात्मने ॥ गोपीथायात्मनोराजन्नित्यंदिव्यंबलिंददुः ॥ ६ ॥ कालियस्यगृहस्यापिसमयोभूद्यदानृप ॥ तदाताक्ष्यंबलिंसर्वंबुभुजेकालियोबलात् ॥ ७ ॥ तदागतःप्रकुपितोवेगतःकालियोपरि ॥ चकारपादविक्षेपंगरुडश्चंडविक्रमः ॥ ८ ॥ गरुडांघ्रिप्रहारेणकालियोमूर्च्छितोभवत् ॥ पुनरुत्थायजिह्वाभिःप्रावलीढन्मुखंश्वसन् ॥ ९ ॥

हम तुमे देओ करैंगे ॥४॥ तब गरुडजी बोले कि, तुम एक सर्प मोकूं देन कहो हो महीना महीनामें सो एक एक घरते जो महीना २ में एकही नाग ओसरेनते आवेगो ताहि तो मैं बीडीकी नाई खाय लेउंगो,फिर का महीनाभर भूखो रहूंगो॥५॥ नारदजी कहैं हैं तब सबरे नाग महात्मा गरुडसे अपनी रक्षाके लिये बोले कि, अच्छो महाराज ! एक नाग हमपैते नित्य नित्य लेलीयो करो ये कहिके नित्य प्रति बलि देन लगे ॥ ६ ॥ तब गरुडने ये बात अंगीकार करी तब वे सर्प सदा देन लगे, एकदिन कालीको ओसरो आयो तब जबरन गरुडकी सब बलिको काली आपही खायगयो ॥ ७ ॥ जब बडे वेगसों गरुडजी आये तब या बातकूं सुनिके कालीके ऊपर बडे कोप भये और बडे पराक्रमी गरुडजीने कालीके एक पंजा मार्यो ॥ ८ ॥ गरुडके पञ्जेके मारे काली विलविलाय मूर्च्छित हेगयो, फिर उठयो जीभनते ओठनकूं और मुखकूं चाटतो श्वास लेतो ॥ ९ ॥

गरुड़जीकूँ काटतो भयो ॥ १० ॥ तब विष्णुवाहन गरुड़जीने
सर्पनमें श्रेष्ठ बड़ो बली जो काली है सो अपने सौ फणनकूँ फैलायके विषभरे दांतनते
कालीकी अपनी चोंचसों पकड़के धरतीमें दैमारयो और पंखनते मारनलगे ॥ ११ ॥ तब कालीने गरुड़की चोंचमेंते निकरके गरुडके पंख उखारगेरे और पांवनते लिपिट गयो
और बेर बेर फुंकारन लग्यो ॥ १२ ॥ तब गरुड़जीके जे दो पंख जायपड़े तिनमेंते एक पंखमेंते मोर और एक पंखमेंते नीलकंठ भयो, तिनको दर्शन सदाँही फलको दाता है पर
हे मैथिलेंद्र ! क्वारके दशहरामें नीलकंठको दर्शन है वो अत्यंतही शुभको दाता है ॥ १३ ॥ कुपित हेके गरुड़जी चोंचते कालीकूँ पकड़के धरतीमें मारके ताकूँ पकड़के खचेरन
लगे ॥ १४ ॥ तब तौ ये काली गरुड़की चोंचमेंते निकसिके भयसों विह्वल हेके भाज्यो, तब पक्षीनके राजा गरुड महाबली कालीके पीछे भाजे ॥ १५ ॥ सातों द्वीपनमें,

गृहीत्वातंचतुंडेनगरुडोदिव्यवाहनः ॥ भूपृष्ठेपोथया
मासपक्षाभ्यांताडयन्मुहुः ॥ ११ ॥ तुंडाद्विनिर्गतःसर्पस्तत्पक्षान्विचकर्षह ॥ तत्पादौविष्टयंस्तुद्यन्फूत्कारंव्यदधन्मुहुः ॥ तदातत्पक्षसंभूतौनी
लकण्ठमयूरकौ ॥ १२ ॥ तेषांतुदर्शनंपुण्यंसर्वकामफलप्रदम् ॥ शुक्लपक्षेमैथिलेंद्रदशम्यामाश्विनस्यतत् ॥१३॥ कुपितोगरुडस्तंवैनीत्वातुंडे
नकालियम् ॥ निपात्यभूम्यांसहसातत्तनुंविचकर्षह ॥ १४ ॥ तदादुद्रावतत्तुंडात्कालियोभयविह्वलः ॥ तमन्वधावत्सहसापक्षिराट्चंडवि
क्रमः ॥ १५ ॥ सप्तद्वीपान्सप्तखंडान्सप्तसिंधूस्ततःफणी ॥ यत्रयत्रगतस्तार्क्ष्यंतत्रतत्रददर्शह ॥१६॥ भूर्लोकंचभुवर्लोकंस्वर्लोकंप्रगतःफणी ॥
महर्लोकंततोधावञ्जनलोकंजगामह ॥ १७ ॥ यत्रैवगरुडेप्राप्तेऽधोधोलोकंपुनर्गतः ॥ श्रीकृष्णस्यभयात्कोपिरक्षांतस्यनसंदधुः ॥ १८ ॥
दीनोभया
तुरःप्राहदीर्घपृष्ठःप्रकंपितः ॥ २० ॥ ॥ कालियउवाच ॥ ॥ हेभूमिभर्तर्भुवनेशभूमन्भूभारहृत्वंस्वभिभूरिलीलः ॥ मांपाहिपाहिप्रभवि
ष्णुपूर्णःपरात्परस्त्वंपुरुषःपुराणः ॥ २१ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ दीनंभयातुरंदृष्ट्वाकालियंश्रीफणीश्वरः ॥ वाचामधुरयाप्रीणन्प्राहदे
वोजनार्दनः ॥ २२ ॥

सातों खंडनमें, सातों समुद्रनमें, काली भाज्यो भाज्यो डोल्यो पन जहां २ जाय तहांही तहां गरुड़जीको देखतो भयो ॥ १६ ॥ भूर्लोकमें, भुवर्लोकमें, स्वर्गलोकमें, महर्लोकमें हेके
जनलोक ताईं भाज्यो २ डोल्यो ॥ १७ ॥ पन जहां २ गयो तहां २ याने पीछे २ गरुड दीखो तब ऐसोई नीचेके लोकनमें गयो पर श्रीकृष्णके भयते काहूने याकी रक्षा न करी ॥
॥ १८ ॥ कहूं सुख न मिल्यो तब ये काली भयके मारे देवतानके देव श्रीशेषजीके चरणकमलमें जायके प्राप्त भयो ॥ १९ ॥ तब शेषजीके चरणनमें दंडोत करिके हाथ
जोड़ परिक्रमा देके महादीन भयातुर काँपत २ बोल्यो ॥ २० ॥ हे भूमिधर ! हे भूमन् ! हे भुवनेश ! हे भूभारहृत् ! हे स्वामिन् ! हे भूरिलील ! हे प्रभावकरनहारे ! हे परात्पर !
मेरी रक्षा करो रक्षा करो तुम पुराणपुरुष हो ॥२१॥ नारदजी कहे है कि, नागनके ईश्वर शेषजी भयातुर दीनभये कालीकूँ देखिके मीठी वाणीते प्रसन्न करते जनार्दन देव ये बोले॥२२॥

प्रसार्य्यस्वंफणशतंकालियःफणिनांवरः ॥ व्यदशद्गरुडंवेगाद्द्विर्विषमयैर्बली ॥ १० ॥
जगामदेवदेवस्यशेषस्यचरणांतिके ॥ १९ ॥ नत्वाप्रणम्यतंशेषंपरिक्रम्यकृतांजलिः ॥
क्वापिनसुखेजातेकालियोपिभयातुरः ॥

हे कालीय ! हे महाबुद्धे ! मेरो परम बचन सुनि अब तेरी कहूंभी रक्षा नहीं होयगी यामें संदेह नहीं है ॥ २३ ॥ देख आगे (पहले) एक महामुनी बडे सिद्ध सौभरि नामके हे वे वृंदावनमें दशहजार वर्ष जलमें तपस्या करते भये ॥ २४ ॥ मगर मछलीनको विषय देखके उनकूं गृहस्थाईकी इच्छा भई, तब वा महाबुद्धिने मांधाताकी सौ कन्या व्याही ॥ २५ ॥ तब श्रीकृष्णने वा सौभरि ऋषिकूं ऐसी ऐश्वर्यवती लक्ष्मी दीनी ताकूं मांधाता राजा देखिके विस्मित हे गतस्मय हे गयौ ॥ २६ ॥ यानी राज्यलक्ष्मीको गर्व जातरह्यौ, यमुनाके भीतर जलमें सौभरि ऋषि तो बडी तपस्या करि रहे हे कि, सौभरि ऋषिके देखत देखत गरुड एक मगरकूं निगल गयो ॥ २७ ॥ दुःखनके हंता सौभरि मीननकूं बडे दुःखी देखिके दीनवत्सल मुनि मुख्य ऋषि क्रोध करिके गरुडजीकूं शाप देत भये ॥ २८ ॥ कि, आजते लेके यहां जो तू चलते मीननकूं खायगो तो ताही समय मेरे शापसों तेरे

॥ ॥ शेषउवाच ॥ ॥ हेकालियमहाबुद्धेशृणुमेपरमंवचः ॥ कुत्रापिनहितेरक्षाभविष्यतिनसंशयः ॥ २३ ॥ आसीत्पुरामुनिःसिद्धःसौभरिर्नामनामतः ॥ वृन्दारण्येतपस्तप्तोवर्षाणामयुतंजले ॥ २४ ॥ मीनराजविहारंयोवीक्ष्यगेहस्पृहोभवत् ॥ सउवाहमहाबुद्धिर्मांधातुस्तनुजाशतम् ॥ २५ ॥ तस्मैददौहरिःसाक्षात्परांभगवतींश्रियम् ॥ वीक्ष्यतांनृपमांधाताविस्मितोभूद्गतस्मयः ॥ २६ ॥ यमुनांतर्जलेदीर्घंसौभरेस्तपतस्तपः ॥ पश्यतस्तस्यगरुडोमीनराजंजघानह ॥ २७ ॥ मीनान्सुदुःखितान्दृष्ट्वादुःखहादीनवत्सलः ॥ तस्मैशापंददौक्रुद्धःसौभरिर्मुनिसत्तमः ॥ २८ ॥ ॥ सौभरिरुवाच ॥ ॥ मीनानद्यतनादत्रयद्यत्सिस्त्वंबलाद्विराट् ॥ तदैवप्राणनाशस्तेभूयान्मेशापतस्त्वरम् ॥ २९ ॥ ॥ ॥ शेषउवाच ॥ ॥ तद्दिनात्तत्रनायातिगरुडःशापविह्वलः ॥ तस्मात्कालियगच्छाशुवृन्दारण्येहरेर्वने ॥ ३० ॥ कालिंद्यांचनिजंवासंकुरुमद्वाक्यनोदितः ॥ निर्भयस्तेभयंताक्ष्यान्नभविष्यतिकर्हिचित् ॥ ३१ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्तःकालियोभीतःसकलत्रःसपुत्रकः ॥ कालिंद्यांवासकृद्राजञ्छ्रीकृष्णेनविवासितः ॥ ३२ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायांवृन्दावनखण्डेकालियोपाख्यानवर्णनंनामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इदंमयातेकथितंकालियस्यापिमर्दनम् ॥ श्रीकृष्णचरितंपुण्यंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ १ ॥ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ श्रीकृष्णस्यकथांश्रुत्वाभक्तस्तृप्तिंनयातिहि ॥ यथाऽमरःसुधांपीत्वायथालिःपद्मकर्णिकाम् ॥ २ ॥

प्राण जलदी जाते रहेंगे ॥ २९ ॥ शेषजीने कही कि, हे कालिय ! ता दिनते गरुडजी शापके मारे धनरायके यहां नहीं जायहैं ताते हे कालीय ! तू श्रीहरिके वृंदावनमें चल्योजा ॥ ३० ॥ मेरे कहे तू कालिंदीमें अपने निवास कर यहाँ निर्भय रहैगो, ता हरिके वनमें गरुडते भय तोकूं कबहूं न होयगो ॥ ३१ ॥ नारदजी बोले कि, ऐसे जब शेषजीने कही तब डरप्यो भयो कालो बेटा स्त्री कूं संग लेके कालिंदीमें वास करतो भयो सो अब श्रीकृष्णने निकासिदीनों ॥३२॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां वृंदावनखंडे भाषाटीकायां कालियोपाख्यानं नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ नारदजी कहे है कि, यह मैंने कालीमर्दनकी कथा तेरे अगाडी वर्णन करी, यह बडोपवित्र श्रीकृष्णको चरित्र है, अब बताय तू कहा सुनिवेकी इच्छा करे है ॥ १ ॥ तब बहुलाश्व राजा बोल्यो कि, श्रीकृष्णकी कथा सुनत सुनत भक्तकी तृप्ति नहीं होयहै, जैसे देवता अमृत पीवत और जैसे भौंरा कमलकर्णिका सूंघत २ नहीं

अधाय हैं ॥ २ ॥ बालकरूप श्रीकृष्ण महात्मा रास करिवेकूं भांडीर वनमें गये तब खेदित मनवारी राधिकाकूं आकाशवाणी भई ॥ ३ ॥ कि, हे कल्याणी ! तू शोच मतकरै मनोहर वृंदावनमें श्रीकृष्ण महात्माके संग तेरो मनोरथ पूर्ण होयगो ॥ ४ ॥ ऐसें देववाणीको कह्यो राधिकाजीको मनोरथरूपी समुद्र सो हे भगवन् ! वा मनोहर वृंदावनमें कैसे पूर्ण होतभयौ ॥ ५ ॥ और परिपूर्णतम साक्षात् स्वयं श्रीकृष्ण राधिकाके संग वृंदावनमें मनोहर रासलीला कैसे करत भये ॥६॥ नारद कहैं हैं—हे राजन् ! तैंने भली बात पूछी भगवानको शुभ चरित्र पूछ्यौ जो देवतानतेक गुप्त सो मनोहर रासलीला तोंते कहूं हूं ॥ ७ ॥ एक समयकी बात है कि, ललिता विशाखा दो मुख्य सखी हीं, वृषभानु गोपके घरमें जायके एकांतमें राधिकाके पास पहुँची ॥ ८ ॥ और ए दोनो ये बोली हे राधे ! जाको तूं नित्य चिंतवन करै है और जाके गुणनकूं तूं नित्य गावैहै सो तो बालकनकूं संग लैके

रासंकर्तुंहरौजातेशिशुरूपेमहात्मनि ॥ भांडीरेदेववागाहश्रीराधांखिन्नमानसाम् ॥ ३ ॥ शोचंमाकुरुकल्याणिवृन्दारण्येमनोहरे ॥ मनोरथस्तेभविताश्रीकृष्णेनमहात्मना ॥ ४ ॥ इत्थंदेवगिराप्रोक्तोमनोरथमहार्णवः ॥ कथंबभूवभगवन्वृन्दारण्येमनोहरे ॥ ५ ॥ कथंश्रीराधयासार्द्धंरासक्रीडांमनोहराम् ॥ चकारवृन्दकारण्येपरिपूर्णतमःस्वयम् ॥ ६ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ साधुपृष्टंत्वयाराजन्भगवच्चरितंशुभम् ॥ गुप्तंवदामिदेवैश्चलीलाख्यानंमनोहरम् ॥७॥ एकदामुख्यसख्यौद्वेविशाखाललितेशुभे ॥ वृषभानोर्गृहंप्राप्यतांराधांजग्मतूरहः ॥ ८ ॥ ॥ ॥ सख्यावूचतुः ॥ ॥ यंचिंतयसिराधेत्वंयद्गुणंवदसिस्वतः ॥ सोपिनित्यंसमायातिवृषभानुपुरेर्भकैः ॥ ९ ॥ प्रेक्षणीयस्त्वयाराधेदर्शनीयोतिसुन्दरः ॥ पश्चिमायांनिशीथिन्यांगोचारणविनिर्गतः ॥ १० ॥ ॥ राधोवाच ॥ ॥ लिखित्वातस्यचित्रंहिदर्शयाशुमनोहरम् ॥ तर्हितत्प्रेक्षणंपश्चात्करिष्यामिनसंशयः ॥ ११ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ अथसख्यौव्यलिखतांचित्रंनंदशिशोःशुभम् ॥ नवयौवनमाधुर्यंराशयैददतुस्त्वरम् ॥ १२ ॥ तद्दृष्ट्वाहर्षिताराधाकृष्णदर्शनलालसा ॥ चित्रंकरेप्रपश्यन्तीसुष्वापानंदसंकुला ॥ १३ ॥ ददर्शकृष्णंभवनेशयनाघनप्रभंपीतपटंदधानम् ॥ भांडीरदेशेयमुनांसमेत्यनृत्यन्तमाराद्वृषभानुपुत्री ॥ १४ ॥ तदैवराधाशयनात्समुत्थितापरस्यकृष्णस्यवियोगविह्वला ॥ संचिंतयन्तीकमनीयरूपिणंमेनेत्रिलोकींतृणवद्विदेहराट् ॥ १५ ॥

नित्यही बरसानेंमें आवै है ॥ ९ ॥ वह तोकूंभी देखनो चाहिये क्योंकि, वह देखिवे लायक अत्यंत सुंदर है वो पिछली रातिते गौ चरायवेकूं निकसे है ॥ १० ॥ तब राधिकाजी यह बोली कि, पहले तुम वाको चित्र लिखिके मोहि दिखाय देउ तब पीछे मै वाको दर्शन करूंगी यामें संदेह नहीं ॥ ११॥ नारदजी कहैं हैं—तब वे दोनों सखी नंदनंदनको सुंदर चित्र लिखती भई नवीन जोवनकी सुंदरता जामें झलके ऐसो चित्र लिखिके राधाजीकूं शीघ्रही देतभई ॥ १२ ॥ ता चित्रकूं देखिके राधिकाजी बडी प्रसन्न भई और कृष्णदर्शनकी लालसा उठी सो हाथमें चित्रकूं लियेकी लिये आनंदभरी देखत देखत सोयगई ॥ १३ ॥ भवनमें सोवती सोवती वृषभानुनंदिनी श्रीराधा स्वप्नमें श्रीकृष्णकूं देखती भई, श्यामसुंदर पीतांबर ओढे भांडीरवनमें यमुनाजीके किनारेपै नृत्य करि रहे हैं ॥ १४ ॥ तबही राधिकाजी शयनपेते उठिके कृष्णके वियोगमें विह्वल है वाही मनोहर रूपवारेको चितमन

करती है विदेहराज ! त्रिलोकीकूं तिनुकाकी बराबर देखती भई ॥ १५ ॥ तबही अपने भवनते निकसिके जब बर्षानेमें आये तब सकोच गलीमें हैके निकसे ताही समय सखीनने झरोखामेंते श्रीकृष्णको दर्शन करायो सो सुंदरी राधिका देखिके मूर्च्छा खायके जायपरी ॥ १६ ॥ और श्रीकृष्णहू अनेक गुणवती अति सुरूपा कुशलतावारी वृषभानुनंदिनीकूं देखिके रमण करवेकूं मन करते लीलातनुधारी अपने भवनकूं चले गये ॥ १७ ॥ ताके पीछे ऐसे श्रीकृष्णके वियोगमें विह्वल भई प्रकर्ष करके भयो जो कामज्वर ताते खिन्न है मन जाको ऐसी जो वृषभानुनंदिनी ताको देखके ललिता सखी ये वाणी बोली ॥ १८ ॥ कि, हे राधे ! तू कैसे विह्वल हैकें अत्यंत मूर्च्छित है और अति व्यथाको प्राप्त हैरही है, जो तुम हरिकी इच्छा करोहो तो, हे सुंदर भृकुटीवारी ! श्रीकृष्णमें दृढ स्नेह करो ॥ १९ ॥ हे शुभे ! जो अब या समय दुःखाग्नि हरनवारो सर्व प्रकारसों सुख है वोही सुख पावसो

तर्ह्यांव्रजंतंभवनाद्व्रजेश्वरंसंकोचवीथ्यांवृषभानुपत्तने ॥ गवाक्षमेत्याशुसखीप्रदर्शितंदृष्ट्वातुमूर्च्छांसमवापसुन्दरी ॥ १६ ॥ कृष्णोहिदृष्ट्वा
वृषभानुनंदिनींसुरूपकौशल्ययुतांगुणाश्रयाम् ॥ कुर्वन्मनोरंतुमतीवमाधवोलीलातनुःसम्प्रययौस्वमंदिरम् ॥ १७ ॥ एवंततःकृष्णवियोगवि
ह्वलांप्रभूतकामज्वरखिन्नमानसाम् ॥ संवीक्ष्यराधांवृषभानुनंदिनीमुवाचवाचंललितासखीवरा ॥ १८ ॥ ॥ ललितोवाच ॥ ॥ कथंत्वं
विह्वलाराधेमूर्छितातिव्यथांगता ॥ यदीच्छसिहरिंसुभ्रुतस्मिन्स्नेहंदृढंकुरु ॥ १९ ॥ लोकस्यापिसुखंसर्वमधिकृत्यास्तिसांप्रतम् ॥ दुःखा
ग्निहृत्पदहतिकुंभकाराग्निवच्छुभे ॥ २० ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ ललितायाश्चललितंवचःश्रुत्वाव्रजेश्वरी ॥ नेत्रेउन्मील्यललितांप्राह
गद्गदयागिरा ॥ २१ ॥ ॥ राधोवाच ॥ ॥ व्रजालंकारचरणौनप्राप्तौयदिमेकिल ॥ कदाचिद्व्रियहंतर्हिनहिस्वंधारयाम्यहम् ॥ २२ ॥
॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वावचस्तस्याललिताभयविह्वला ॥ श्रीकृष्णपार्श्वंप्रययौकृष्णातीरेमनोहरे ॥ २३ ॥ माधवीजालसंयुक्ते
मधुरध्वनिसंकुले ॥ कदम्बमूलेरहसिप्राहचैकाकिनंहरिम् ॥ २४ ॥ ॥ ललितोवाच ॥ ॥ यस्मिन्दिनेचतेरूपंराधयादृष्टमद्भुतम् ॥
तद्दिनात्स्तंभतांप्राप्तापुत्तिकेवनवक्तिकिम् ॥ २५ ॥ अलंकारस्त्वर्चिरिववस्त्रंभर्जरजोयथा ॥ सुगन्धिःकटुवद्यस्यामन्दिरंनिर्जनंवनम् ॥२६॥
पुष्पंबाणंचंद्रबिंबंविषकन्दमवेहिभो ॥ तस्यैसंदर्शनंदेहिराधायैदुःखनाशनम् ॥ २७ ॥

दुकरादे कुम्भकाराग्निवत् दाह करे है ॥ २० ॥ ऐसे ललिताको ललित वचन सुनके नेत्रनको खोलिके व्रजेश्वरी राधा गद्गद वाणीसों यह बोली ॥ २१ ॥ हे प्यारी ललिता ! जो कहीं नंदनंदन व्रजभूषणके चरणकमल मोकूं प्राप्त न होंयगे तो मैं अपने प्राणनकूं धारण नहीं करूंगी ॥ २२ ॥ नारदजी कहे हैं ऐसे राधिकाको वचन सुनिके ललिता भयविह्वल है कालिंदीके मनोहर किनारेपै श्रीकृष्णके पास चली गई ॥ २३ ॥ जहां माधवी माधुरीकी बेलें कुंजनते लिपटि रहीहैं, तिनकी सुगंधिते मत्त भौंरा गुंजार रहे, ता कदंबके नीचे एकांतमें ... जे श्रीकृष्ण तिनते ललिता सखी यह बोली ॥ २४ ॥ हे प्यारे ! जा दिनते राधिकाने तुम्हारो रूप देख्यो है ता दिनाते स्तंभित हैगई है, जैसे काठकी पुतली नहीं बोले है ऐसे कछु चेष्टा नहीं करे है ॥ २५ ॥ आभूषण तो ज्वालासे लगे हैं, वस्त्र भाडकी भूभरसे लगे हैं, सुगंधि कडवी लगे है और महल वाको निर्जनवनसे लगे हैं ॥२६॥ फूल तीरसे लगें हैं, चंद्रमा

को विंत विषसो लगे हैं, ये आप जानो सो वा श्रीराधिकाकूं हे दुःखनाशन! अपनी दर्शन देउ ॥ २७ ॥ तुम तो सबके साक्षी हो तुम कहा नहीं जानोहो, जो धरतीपै है वाय तुम जानोहो
क्योंकि, तुमही या जगतके उत्पत्ति, पालन, संहारके करनहारे हो यद्यपि तुम सब प्राणीनमें समान हो तोऊ परमेश्वर तुम भक्तनको भजन करोहो ॥ २८ ॥ नारदजी कहैं हैं या प्रकार ललिताको
ललित वचन सुनके मेघसी गंभीर मनोहर वाणीते श्रीकृष्ण ये वचन बोले॥२९॥हे भामिनि! परेते परे भगवान्के प्रति मनको एकाग्रभाव होय नहीं है याते मेरे विषय प्रेम ही स्वतः कर्तव्य
है प्रेमके समान या भूमिमें और कोई पदार्थ नहीं है ॥३०॥ जैसे भांडीरवनमें वाको मनोरथ भयोहो तैसेई अब होयगो, संतनने जाको आश्रय कीनों सो प्रेम अहैतुक है वाहीको संत
जन निर्गुण कहैं हैं ॥ ३१ ॥ जे कोई राधिकामें और केशवदेवमें मोमें जैसे दूधमें और शुक्लतामें भेद नहीं ऐसेही भेद नही देखे है और निर्हेतुक भक्ति जिनके विद्यमान है वेही

तेसाक्षिणःकिंविदितंनभूतलेसृजत्यलंपासिहरस्यथोजगत् ॥ यदासमानोसिजनेषुसर्वतस्तथापिभक्तान्भजसेपरेश्वरः ॥ २८ ॥ ॥ नारद
उवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वाहरिःसाक्षाल्ललितंललितावचः ॥ उवाचभगवान्देवोमेघगंभीरयागिरा ॥ २९ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥
सर्वंहिभावंमनसःपरात्परंनह्येकतोभामिनिजायतेततः ॥ प्रेमैवकर्तव्यमतोमयिस्वतःप्रेम्णासमानंभुविनास्तिकिंचित् ॥ ३० ॥ यथाहिभांडी
रवनेमनोरथोबभूवतस्याहितथाभविष्यति ॥ अहैतुकंप्रेमचसद्भिराश्रितंतच्चापिसन्तःकिलनिर्गुणंविदुः ॥ ३१ ॥ येराधिकायांमयिकेशवेमना
ग्भेदंनपश्यन्तिहिदुग्धशौक्ल्यवत् ॥ तएवमेब्रह्मपदंप्रयान्तितदहैतुकस्फूर्जितभक्तिलक्षणाः ॥ ३२ ॥ येराधिकायांमयिकेशवेहरौकुर्वन्तिभे
दंकुधियोजनाभुवि ॥ तेकालसूत्रंप्रपतंतिदुःखितारंभोरुयावत्किलचंद्रभास्करौ ॥ ३३ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्थंश्रुत्वावचःकृ
ष्णंनत्वातंललितासखी ॥ राधांसमेत्यरहसिप्राहप्रहसितानना ॥ ३४ ॥ ॥ ललितोवाच ॥ ॥ त्वमिच्छसियथाकृष्णंतथात्वांमधु
सूदनः ॥ युवयोर्भेदरहितंतेजस्त्वेकंद्विधाजनैः ॥ ३५ ॥ तथापिदेविकृष्णायकर्मनिष्कारणंकुरु ॥ येनतेवांछितंभूयाद्भक्त्यापरमयासति ॥
॥ ३६ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वासखीवाक्यंराधारासेश्वरीनृप ॥ चंद्राननांप्राहसखींसर्वधर्मविदांवराम् ॥ ३७ ॥ ॥ राधो
वाच ॥ ॥ श्रीकृष्णस्यप्रसन्नार्थंपरंसौभाग्यवर्द्धनम् ॥ महापुण्यंवांछितदंपूजनंवदकस्यचित् ॥ ३८ ॥

ब्रह्मपदको प्राप्त होय हैं ॥ ३२ ॥ और जे राधिकामें और केशवदेव हरिमें मेरेमें भेद देखेहैं ते कुबुद्धी, हे रंभोरु! एककल्पताई अति दुःखित होते जबतक सूर्य चंद्र रहै हैं
तबताई कालसूत्र नरकमें पड़ैं हैं ॥ ३३ ॥ नारदजी कहैं हैं–ऐसे श्रीकृष्णको वचन सुनिके ललिता सखी कृष्णको प्रणाम कर फिर एकांतमें राधाजीके पास आयके हँसिके सब
कहत भई ॥ ३४ ॥ हे राधे! जैसे तूं श्रीकृष्णको चाहै है तैसेही श्रीकृष्ण तोकूं चाहैं हैं, तुम दोनोंनमें भेद नहीं है, तेज तो एकही है पर भक्तजन दो रूप गावैं हैं ॥ ३५ ॥
तोहू हे देवि! तूं कृष्णके अर्थ निष्कारण कर्म कर, हे सती! जा कर्मते परमभक्ति सो तुम्हारो वांछित फल होयगो ॥ ३६ ॥ नारदजी कहैं हैं कि, हे नृप! ऐसे राधा रासेश्वरी
सखीको वचन सुनिके सर्व धर्मवेत्तानमें उत्तमा जो चंद्रानना नाम सखी है ताते बोली ॥ ३७ ॥ श्रीकृष्णके परम प्रसन्नताके अर्थ परम सौभाग्यको बढ़ावनहारो महापवित्र

वांछित फलको देनहारो काहूको पूजन बताउ ॥ ३८ ॥ हे भद्रे ! तैंने गर्गाचार्यते धर्मशास्त्र सुन्यो है ताते हे महामते ! मोकूं व्रत अथवा कोई पूजन बताउ ॥ ३९ ॥ इति श्रीगर्गसंहितायां वृंदावनखंडे भाषाटीकायां राधाकृष्णप्रेमोद्योगो नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ नारदजी कहें हैं कि, हे राजन् ! ऐसे राधिकाजीको वचन सुनिके सब सखीनमें उत्तमा जो चंद्रानना सखी है सो एक क्षणभर अपने हृदयमें विचार करके यह वचन बोली ॥ १ ॥ हे राधे ! परमसौभाग्यको देनवारो तथा वरको दाता महापवित्र जो तुलसीको सेवन मेरी समझमें आवे है सोही श्रीकृष्णकी प्राप्तिके अर्थ करनो चाहिये ॥ २ ॥ जो स्पर्श करी, ध्यान करी, नामकीर्तन करी, स्तुति करी, लगाई, सींची और पूजन करी तुलसी मनुष्यनको कल्याण करनवारी होयहै या तुलसीकी ॥ ३ ॥ यह नौ प्रकारकी भक्ति है, याकूं जे कोई पुरुष नित्य करेहैं वो नर हजार युगताईं वैकुंठमें वास पावे हैं ॥ ४ ॥ जिन

त्वयाभद्रेधर्मशास्त्रंगर्गाचार्यमुखाच्छुतम् ॥ तस्माद्व्रतंपूजनंवाब्रूहिमह्यंमहामते ॥ ३९ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांवृंदावनखण्डेराधाकृष्णप्रेमोद्योगंनामद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ राधावाक्यंततःश्रुत्वाराजन्सर्वसखीवरा ॥ चंद्राननाप्रत्युवाचसंविचार्यक्षणंहृदि ॥ १ ॥ ॥ चन्द्राननोवाच ॥ ॥ परंसौभाग्यदंराधेमहापुण्यंवरप्रदम् ॥ श्रीकृष्णस्यापिलब्ध्यर्थंतुलसीसेवनंमतम् ॥ २ ॥ यद्दृष्टास्पृष्टाथवाध्याताकीर्तितानामभिःस्तुता ॥ रोपितासिंचितानित्यंपूजितातुलसीदलैः ॥ ३ ॥ नवधातुलसीभक्तिंयेकुर्वंतिदिनेदिने ॥ युगकोटिसहस्राणितेयांतिसुकृतंशुभे ॥ ४ ॥ यावच्छाखाप्रशाखाभिर्बीजपुष्पदलैःशुभैः ॥ रोपितातुलसीमर्त्यैर्वर्धतेवसुधातले ॥ ५ ॥ तेषांवंशेषुयेजाताग्रतास्तेवैसुरालये ॥ आकल्पयुगसाहस्रंतेषांवासोहरेर्गृहे ॥ ६ ॥ यत्फलंसर्वपत्रेषुसर्वपुष्पेषुराधिके ॥ तुलसीदलेनचैकेनसर्वदाप्राप्यतेतुतत् ॥ ७ ॥ तुलसीप्रभवैःपत्रैर्योनरःपूजयेद्धरिम् ॥ लिप्यतेनसपापेनपद्मपत्रमिवांभसा ॥ ८ ॥ सुवर्णभारशतकंरजतंयच्चतुर्गुणम् ॥ तत्फलंसमवाप्नोतितुलसीवनपालनात् ॥ ९ ॥ तुलसीकाननंराधेगृहेयस्यावतिष्ठति ॥ तद्गृहंतीर्थरूपंहिनयांतियमकिंकराः ॥ १० ॥ सर्वपापहरंपुण्यंकामदंतुलसीवनम् ॥ रोपयन्तिनराःश्रेष्ठास्तेनपश्यन्तिभास्करिम् ॥ ११ ॥

लगाईभई यह तुलसी जब तलक शाखा प्रशाखान और बीज पुष्पनसों तथा दलनते पृथ्वीतलमें बढ़े है ॥ ५ ॥ तिनके वंशमें जे भये हैं तिनके सहित लगामनवारे मनुष्य हजार युगताईं वैकुंठमें बसे हैं ॥ ६ ॥ हे राधिके ! जो फल सब पत्रनके चढ़ायवेसों और सब फूलनके चढ़ायवेसों होय है सो फल फकत एक तुलसीदलके चढ़ायवेमें होय है ॥ ७ ॥ तुलसीके पत्रनते जो मनुष्य हरिको पूजन करेहै ताकूं पाप स्पर्श भी नहीं करे है, जैसे सरोवरमें चाहे तितनो जल चढ़िजाय पर कमलके फूलकूं नहीं छूवे है ॥ ८ ॥ जो फल सौ १०० भार सुवर्ण और चारसौ ४०० भार चांदीके दान करेसों मिलेहै सो फल तुलसीके वनके पालन करते होय है ॥ ९ ॥ हे राधे ! जाके घरमें तुलसीको वन होय ताके घरकूं तीर्थरूप जानें, या घरमें यमके दूत कभी नहीं आय हैं ॥ १० ॥ तुलसीवन सब कामनाको देनवारो है, सब पापनको हरनहारो है, जो नरनमें श्रेष्ठ तुलसीके वनकूं लगामें

है ते मनुष्य यमराजको दर्शन नही करें है ॥ ११ ॥ लगायेते, सींचेते, दर्शन करेते, छीयेते ये तुलसी मनुष्यनके मनके कीये, वाणीके कीये और कायाके कीये तीनों प्रकारके पाप
नको भस्म करैहै ॥ १२ ॥ पुष्करते आदि लैके जितने तीर्थ, गंगादिक सब नदी और विष्णुते आदि लैके सब देवता तुलसीदलमें बसैं हैं ॥ १३ ॥ तुलसीकी मंजरी मुखमें
धरके जो प्राणनकूं त्यागे है वाने सैकड़नहूं पाप करे होय तौहू यमराज वाकूं देखभी नहीं सके है ॥ १४ ॥ जो पुरुष तुलसीके काठको चंदन लगावे तो वापै पापहू बनिजाय
तौहू वाकूं नहीं लगे ॥ १५ ॥ हे शुभे ! तुलसीके वनकी छाया जहां २ होय तहां २ श्राद्ध करै तो पितरनकी अक्षय तृप्ति होय है ॥ १६ ॥ हे सखी ! तुलसीके माहात्म्य कहिवे
की तो ब्रह्माहूकी सामर्थ्य नहीं है जैसे हरिके माहात्म्यके कहिवेकी सामर्थ्य नही है तैसेई ॥ १७ ॥ हे गोपकन्ये ! याते तूं नित्य तुलसीको सेवन कर जा सेवन करेते श्रीकृष्ण

रोपणात्पालनात्सेकाद्दर्शनात्स्पर्शनान्नृणाम् ॥ तुलसीदहतेपापंवाङ्मनःकायसंचितम् ॥ १२ ॥ पुष्कराद्यानितीर्थानिगंगाद्याःसरित
स्तथा ॥ वासुदेवादयोदेवावसन्तितुलसीदले ॥ १३ ॥ तुलसीमंजरीयुक्तोयस्तुप्राणान्विमुंचति ॥ यमोपिनेक्षितुंशक्तोयुक्तंपापशतैरपि ॥
॥ १४ ॥ तुलसीकाष्ठजंयस्तुचंदनंधारयेन्नरः ॥ तद्देहंनस्पृशेत्पापंक्रियमाणमपीहयत् ॥ १५ ॥ तुलसीविपिनच्छायायत्रयत्रभवेच्छुभे ॥
तत्रश्राद्धंप्रकर्तव्यंपितॄणांदत्तमक्षयम् ॥ १६ ॥ तुलस्याःसखिमाहात्म्यमादिदेवश्चतुर्मुखः ॥ नसमर्थोभवेद्वक्तुंयथादेवस्यशार्ङ्गिणः ॥ १७ ॥
तुलसीसेवनंनित्यंकुरुत्वंगोपकन्यके ॥ श्रीकृष्णोवश्यतांयातियेनवासर्वदैवहि ॥ १८ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्थंचन्द्राननावाक्यंश्रु
त्वारासेश्वरीनृप ॥ तुलसीसेवनंसाक्षादारेभेहरितोषणम् ॥ १९ ॥ केतकीवनमध्येचशतहस्तंसुवर्तुलम् ॥ उच्चैर्हेमखचिद्भित्तिपद्मरागतटंशु
भम् ॥ २० ॥ हरिद्धीरकमुक्तानांप्राकारेणमहोल्लसत् ॥ सर्वतस्तोलकायुक्तंचिंतामणिसुमंडितम् ॥ २१ ॥ हेमध्वजसमायुक्तमुत्तोरणविराजि
तम् ॥ हैमैर्वितानैःपरितोवैजयन्तमिवस्फुरत् ॥ २२ ॥ एतादृशंश्रीतुलसीमन्दिरंसुमनोहरम् ॥ तन्मध्येतुलसींस्थाप्यहरित्पल्लवशोभि
ताम् ॥ २३ ॥ अभिजिन्नामनक्षत्रेतत्सेवांसाचकारह ॥ समाहूतेनगर्गेणदिष्टेनविधिनासती ॥ २४ ॥ श्रीकृष्णतोषणार्थायभक्त्यापरमया
सती ॥ इषपूर्णांसमारभ्यचैत्रपूर्णावधिव्रतम् ॥ २५ ॥

नित्यही वशवर्ती होय है ॥ १८ ॥ नारदजी कैहैं कि, हे राजन् ! ऐसे चंद्राननाको वचन सुनिके रासकी ईश्वरी राधा है सो साक्षात् हरिको प्रसन्न करनहारो जो तुलसीको सेवन
है ताको प्रारंभ करती भई ॥ १९ ॥ केतकीके वनमें सौ हाथको गोल ऊँचो पुखराजके जड़ाऊ जाके किनारे और जाकी सुवर्णकी भीत है ॥ २० ॥ हरिन्मणि तथा हीरा,
पन्ना, मोतीनके जडाऊ जाको परकोटा, तासो अति शोभित चिंतामणिकी परिक्रमा गली जामें ॥ २१ ॥ सुनहैरी ध्वजा पातकानसो युक्त मोतीनकी चंदनवार सुनहैरी चंदो
आनसो युक्त वैजयंत मानो दूसरो इन्द्रको महलही है ॥ २२ ॥ ऐसो तुलसीजीको मनोहर मंदिर बनायो, ताके बीचमें हरे हरे पत्तानकी तुलसीजी पधराई ॥ २३ ॥ अभि
जित् नक्षत्रमें तुलसीजीकी सेवाको प्रारंभ कीनो, गर्गजीकूं बुलाय विधिपूर्वक पूजा करी ॥ २४ ॥ परम भक्ति करिके सती श्रीराधिकाने श्रीकृष्णकी प्रीतिके अर्थ शरदपूनोते

लेके चैत्रकी पूनो ताई यह तुलसीके व्रत कियौ ॥ २५ ॥ कार्तिकमें तो दूधते सींची १, मार्गशिरमें ईखके रसते सींची २, पूषमें दाखके रसते सींची ३, माहमें आमके रसते सींची ४, फागुनमें मिश्रीके रसते सींची ५ ॥ २६ ॥ और चैतमें पंचामृतते सींची ६. वैशाखकी पड़वाकूं उद्यापन कर्यौ ॥ २७ ॥ गर्गजीकी बताई विधिते हे नृप ! श्रीवृषभानुनंदिनीने या प्रकार व्रतोद्यापन कर, फिर एक एक अन्नकी छप्पन छप्पन सामिग्रीनते दो लाख २००००० ब्राह्मणनकूं भोजन कराये ॥ २८ ॥ भूषण वस्त्रनते ब्राह्मणनकूं तृप्त करके दक्षिणा दीनी और हे विदेहराट् बड़े बड़े दिव्य मोती लाख भार दीने ॥ २९ ॥ किरोड़न भार सोनों गर्गजीकूं दीनो तब आकाशमें दुंदुभी बजन लगी, अप्सरा नाचन लगी और देवता श्रीराधिकाजीके मंदिरके ऊपर फूलनकी वर्षा करनलगे ॥ ३० ॥ तबही हरिकी प्यारी

कृत्वान्यषिंचद्दुग्धेनतथाचेक्षुरसेनवै ॥ द्राक्षयाऽऽम्ररसेनापिसितयाबहुमिश्रया ॥ २६ ॥ पंचामृतेनतुलसींमासेमासेपृथक्पृथक् ॥ उद्याप
नसमारंभंवैशाखप्रतिपद्दिने ॥ २७ ॥ गर्गादिष्टेनविधिनावृषभानुसुतानृप ॥ षट्पंचाशत्तमैर्भोगैर्ब्राह्मणानांद्विलक्षकम् ॥ २८ ॥ संतर्प्यव
स्त्रभूषाद्यैर्दक्षिणांराधिकाददौ ॥ दिव्यानांस्थूलमुक्तानांलक्षभारंविदेहराट् ॥ २९ ॥ कोटिभारंसुवर्णानांगर्गाचार्य्यायसाददौ ॥ देवदुंदुभयो
नेदुर्ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥ तन्मंदिरोपरिसुराःपुष्पवर्षंप्रचक्रिरे ॥ ३० ॥ तदाविरासीत्तुलसीहरिप्रियासुवर्णपीठोपरिशोभितासना ॥ चतुर्भु
जापद्मपलाशवीक्षणाश्यामास्फुरद्धेमकिरीटकुंडला ॥ ३१ ॥ पीतांबराच्छादितसर्पवेणीस्रजंदधानानववैजयंतीम् ॥ खगात्समुत्तीर्यचरंगव
ल्लीचुचुंबराधांपरिरभ्यबाहुभिः ॥ ३२ ॥ ॥ तुलस्युवाच ॥ ॥ अहंप्रसन्नास्मिकलावतीसुतेत्वद्भक्तिभावेनजितानिरन्तरम् ॥ कृतंचलो
कव्यवहारसंग्रहात्त्वयाव्रतंभामिनिसर्वतोमुखम् ॥ ३३ ॥ मनोरथस्तेसफलोऽप्रभूयाद्बुद्धीन्द्रियैश्चित्तमनोभिरग्रतः ॥ सदानुकूलत्वमलंपतेः
परंसौभाग्यमेवंपरिकीर्तनीयम् ॥ ३४ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवंवदन्तींतुलसींहरिप्रियांनत्वाथराधावृषभानुनन्दिनी ॥ प्रत्याहगोवि
न्दपदारविन्दयोर्भक्तिर्भवेन्मेविदिताह्यहैतुकी ॥ ३५ ॥

तुलसीजी प्रकट होतभई, सुवर्णके सिंहासनपै बैठीभई चार भुजा कमलसे नेत्र झलकि रहे हैं, षोडश वर्षकी अवस्थाधारी सुवर्णके किरीट कुण्डलनसो युक्त ॥ ३१ ॥ पीतांबर ओढ़े, सर्पाकार वेनीमें बैजन्ती माला पहरें, गरुडपैते उतरके भुजानते राधिकाजीते मिलिके चुंबन करती राधाते यह बोली ॥ ३२ ॥ तुलसीजी बोली हे कलावती की बेटी ! मैं तोपै प्रसन्न भई, तेरी भक्तिने मोकूँ अत्यंत वश करलीनी, और हे भामिनि ! तैने लोकमें मेरी पूजा चलायबेके लीये यह सर्वतोमुख व्रत कीनो है, ॥ ३३ ॥ तुमने जो मनोरथसों बुद्धि, इन्द्री, मनसे ये व्रत कीनो है सो मनोरथ तुम्हारो पूर्ण होउ, अतिशय करके तुम्हारे पति तुमपै सदाही अनुकूल रहेंगे, बड़ाई करबेलायक नित्य सौभाग्य तुम्हारो रहेगो ॥ ३४ ॥ नारदजी कहैं हैं ऐसे कहती जो हरिकी प्यारी तुलसी है ताकूं वृषभानुनंदिनी राधा नमस्कार करके यह बोली हे प्यारी ! गोविंदचरणारविन्दमें मेरी

निरन्तर निष्काम भक्ति होउ ॥ ३५ ॥ तथास्तु तैसेंई होयगी ऐसे कहिके हरिकी प्रिया तुलसीजी अन्तर्धान है गई, हे मैथिलराज! तबही राधिकाजी अपने नगरमें प्रसन्न चित्त हैगई ॥ ३६ ॥ यह श्रीराधिकाको विचित्र चरित्र है ताकूं जो कोऊ मनुष्य या भूमिमें भक्तिते सुने है सो त्रिवर्गके फलको मनसों भोगिके परम गतिकूं जायहै ॥ ३७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां वृंदावनखंडे भाषाटीकायां तुलसीपूजनं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ बहुलाश्व राजा पूछे है हे महामुनि! राधाकृष्णको चरित्र सुन सुन मेरो मन नहीं अघाय है, जैसे शरदऋतुके कमलकूं भौंरा सूंघत २ नहीं अघाय है ॥ १ ॥ रासेश्वरी कृष्णपत्नीको हे ब्रह्मन् ! हे तपोधन! तुलसीको सेवन करे पीछे जो कछू भयो होय सो मोंते कहो ॥ २ ॥ नारदजी कहें हे राधिकाको तुलसीसेवनको तप जानिके श्रीकृष्ण राधिकाकी प्रीतिकी परीक्षा करिवेकूं बरसानेमें आये ॥ ३ ॥ अद्भुत गोपीको रूप धरिके

तथास्तुचोक्तातुलसीहरिप्रियाऽथांतर्दधेमैथिलराजसत्तम ॥ तदैवराधावृषभानुनन्दिनीप्रसन्नचित्तास्वपुरेबभूवह ॥ ३६ ॥ श्रीराधिकाख्यानमिदंविचित्रंशृणोतियोभक्तिपरःपृथिव्याम् ॥ त्रैवर्ग्यभावंमनसासमेत्यराजंस्ततोयातिनरःकृतार्थताम् ॥ ३७ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायां वृन्दावनखण्डेतुलसीपूजनंनामत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ राधाकृष्णस्यचरितंशृण्वतोमेमनोमुने ॥ नतृप्तिंयातिशरदःपंकजेभ्रमरायथा ॥ १ ॥ रासेश्वर्य्याकृष्णपत्न्यातुलसीसेवनेकृते ॥ यद्बभूवततोब्रह्मंस्तन्मेब्रूहितपोधन ॥२॥ ॥ नारदउवाच ॥ राधिकायाश्चविज्ञायतुलसीसेवनेतपः ॥ प्रीतिंपरीक्षन्श्रीकृष्णोवृषभानुपुरंययौ ॥ ३ ॥ अद्भुतंगोपिकारूपंचलज्झंकारनूपुरम् ॥ किंकिणीघंटिकाशब्दमंगुलीयकभूषितम् ॥ ॥ ४ ॥ रत्नकंकणकेयूरमुक्ताहारविराजितम् ॥ बालार्कताटंकलसत्कबरीपाशकौशलम् ॥ ५ ॥ नासामौक्तिकदिव्याभंश्यामकुन्तलसन्निभम् ॥ धृत्वासौवृषभानोश्चमन्दिरंसंददर्शह ॥ ६ ॥ प्राकारपरिखायुक्तंचतुर्द्वारसमन्वितम् ॥ करीन्द्रैःकज्जलकारैर्द्वारिद्वारिमनोहरम् ॥ ७ ॥ वायुवेगैर्मनोवेगैश्चित्रवर्णैस्तुरंगमैः ॥ हारचामरसंयुक्तंप्रोल्लसन्मंडपाजिरम् ॥ ८ ॥ गवांगणैःसवत्सैश्चवृषैर्धर्मधुरंधरैः ॥ गोपालयत्रगायन्तेवंशीवेत्रधरानृप ॥ ९ ॥ मायायुवतिवेषोसौततोह्यन्तःपुरंययौ ॥ १० ॥ यत्रकोटिरविस्फूर्जत्कपाटस्तंभपंक्तयः ॥ रत्नाजिरेषुशोभन्तेललनारत्नसंयुताः ॥ ११ ॥

छल्ला, अँगूठी, कोंधनी पहरिके नूपुरनकी झनकार करते चले ॥ ४ ॥ रतनजटित कंकण, मोतीनके हार, बालसूर्यसे चमकते कर्णफूल पहरिके, सुन्दर केशनको जूडा बांधि चोटी लटकाय ॥ ५ ॥ नकबेसरि पहरि, घूंघुरवारी अलकावली छिटकाय, वृषभानुके मन्दिर पहुँचे ॥ ६ ॥ कैसो महल है जाके खाई परिकोटा बनरहेहैं, चार जाके दरवजे हैं जिनपे कारे २ काजरसे मतवारे हाथी झूम रहे हैं, तिनसों मनको हरनवारे हैं ॥ ७ ॥ मन और पवनकेसे वेगवारे चित्र विचित्र रंगनके घोडे बन्ध रहे हैं, हार, चमरसों युक्त सुशोभित मंडपसहित नंदोहा आंगनमें तन रहे हैं ॥ ८ ॥ और हे नृप! जहां बछडानसुद्धा सुहावनी गौ और धर्मधुरंधर बडे २ वृष बँधिरहेहैं, गोप गायरहे हैं, बेत लीये रक्षाकूं ठाडे हैं, मनोहर वंशीनमें अनेक राग गायरहे हैं ॥ ९ ॥ कपटते स्त्रीको वेश धरिके श्रीकृष्ण आप वृषभानुके मंदिरमें रणवासमें पहुँचे ॥ १० ॥ जहां अनेक

लेके चैत्रकी पूनो ताई यह तुलसीके व्रत कियो ॥ २५ ॥ कार्तिकमें तो दूधते सींची १, मार्गशिरमें ईखके रसते सींची २, पूषमे दाखके रसते सीची ३, माहमें आमके रसते सीची ४, फागुनमें मिश्रीके रसते सीची ५ ॥ २६ ॥ और चैतमें पंचामृतते सींची ६. वैशाखकी पड़वाकूं उद्यापन करयो ॥ २७ ॥ गर्गजीकी बताई विधिते हे नृप ! श्रीवृषभानुनंदिनीने या प्रकार व्रतोद्यापन कर फिर एक एक अन्नकी छप्पन छप्पन सामिग्रीनते दो लाख २००००० ब्राह्मणनकूं भोजन कराये ॥ २८ ॥ भूषण वस्त्रनते ब्राह्मणनकूं तृप्त करके दक्षिणा दीनी और हे विदेहराट् बड़े बड़े दिव्य मोती लाख भार दीने ॥ २९ ॥ किरोड़न भार सोनों गर्गजीकूं दीनो तब आकाशमें दुंदुभी बजन लगी, अप्सरा नाचन लगी और देवता श्रीराधिकाजीके मंदिरके ऊपर फूलनकी वर्षा करनलगे ॥ ३० ॥ तबही हरिकी प्यारी

कृत्वान्यर्पिचद्दुग्धेनतथाचेक्षुरसेनवै ॥ द्राक्षयाऽऽम्ररसेनापिसितयाक्तमिश्रया ॥ २६ ॥ पंचामृतेनतुलसीमासेमासेपृथक्पृथक् ॥ उद्यापनसमारंभेवैशाखप्रतिपद्दिने ॥ २७ ॥ गर्गादिष्टेनविधिनावृषभानुसुतानृप ॥ षट्पंचाशत्तमैर्भोगैर्ब्राह्मणानांद्विलक्षकम् ॥ २८ ॥ संतर्प्यैवस्त्रभूषाद्यैर्दक्षिणांराधिकाददौ ॥ दिव्यानांस्थूलमुक्तानांलक्षभारंविदेहराट् ॥ २९ ॥ कोटिभारंसुवर्णानांगर्गाचार्य्यायसाददौ ॥ देवदुंदुभयोनेदुर्ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥ तन्मंदिरोपरिसुराःपुष्पवर्षंप्रचक्रिरे ॥ ३० ॥ तदाविरासीत्तुलसीहरिप्रियासुवर्णपीठोपरिशोभितासना ॥ चतुर्भुजापद्मपलाशवीक्षणाश्यामास्फुरद्धेमकिरीटकुंडला ॥ ३१ ॥ पीतांबराच्छादितसर्पवेणीस्रजंदधानानववैजयंतीम् ॥ खगात्समुत्तीर्यचरंगवल्लीचुचुंबराधांपरिरभ्यबाहुभिः ॥ ३२ ॥ ॥ तुलस्युवाच ॥ ॥ अहंप्रसन्नास्मिकलावतीसुतेत्वद्भक्तिभावेनजितानिरन्तरम् ॥ कृतंचलोकव्यवहारसंग्रहात्त्वयाव्रतंभामिनिसर्वतोमुखम् ॥ ३३ ॥ मनोरथस्तेसफलोऽत्रभूयाद्बुद्धीन्द्रियैश्चित्तमनोभिरग्रतः ॥ सदानुकूलत्वमलंपतेःपरंसौभाग्यमेवंपरिकीर्तनीयम् ॥ ३४ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवंवदन्तींतुलसींहरिप्रियांनत्वाथराधावृषभानुनन्दिनी ॥ प्रत्याहगोविन्दपदारविन्दयोर्भक्तिर्भवेन्मेविदिताह्यहैतुकी ॥ ३५ ॥

तुलसीजी प्रकट होतभई, सुवर्णके सिंहासनपै बैठीभई च्यार भुजा कमलसे नेत्र झलकि रहे है, षोडश वर्षकी अवस्थावारी सुवर्णके किरीट कुण्डलनसो युक्त ॥ ३१ ॥ पीतांबर ओढे, सर्पाकार वेनीमें वैजन्ती माला पहरें, गरुडपैते उतरके भुजानते राधिकाजीते मिलिके चुंबन करती राधाते यह बोली ॥ ३२ ॥ तुलसीजी बोली हे कलावतीकी बेटी ! मै तोपै प्रसन्न भई, तेरी भक्तिने मोकूं अत्यंत वश करलीनी, और हे भामिनि ! तैने लोकमें मेरी पूजा चलायबेके लीये यह सर्वतोमुख व्रत कीनो है, ॥ ३३ ॥ तुमने जो मनोरथसों बुद्धि, इन्द्री, मनसे ये व्रत कीनो है सो मनोरथ तुम्हारो पूर्ण होउ, अतिशय करके तुम्हारे पति तुमपै सदाही अनुकूल रहेंगे, बडाई करबेलायक नित्य सौभाग्य तुम्हारो रहेगो ॥ ३४ ॥ नारदजी कहैं हैं ऐसे कहती जो हरिकी प्यारी तुलसी है ताकूं वृषभानुनंदिनी राधा नमस्कार करके यह बोली हे प्यारी ! गोविंदचरणारविन्दमें मेरी

निरन्तर निष्काम भक्ति होउ ॥ ३५ ॥ तथास्तु तैसेई होयगी ऐसे कहिके हरिकी प्रिया तुलसीजी अन्तर्ध्यान है गई, हे मैथिलराज! तबही राधिकाजी अपने नगरमें प्रसन्न चित्त हैगई ॥ ३६ ॥ यह श्रीराधिकाको विचित्र चारित्र है ताकूं जो कोऊ मनुष्य या भूमिमें भक्तिते सुने है सो त्रिवर्गके फलको मनसों भोगिके परम गतिकूं जायहै ॥ ३७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां वृंदावनखंडे भाषाटीकायां तुलसीपूजनं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ बहुलाश्व राजा पूछै है हे महामुनि! राधाकृष्णको चरित्र सुन सुन मेरो मन नहीं अघाय है, जैसे शरदऋतुके कमलकूं भौंरा सूंघत २ नहीं अघाय है ॥ १ ॥ रासेश्वरी कृष्णपत्नीको हे ब्रह्मन्! हे तपोधन! तुलसीको सेवन करे पीछे जो कछू भयो होय सो मोते कहो ॥ २ ॥ नारदजी कहैं हैं राधिकाको तुलसीसेवनको तप जानिके श्रीकृष्ण राधिकाकी प्रीतिकी परीक्षा करिवेकूं बरषानेमें आये ॥ ३ ॥ अद्भुत गोपीको रूप धरिके

तथास्तुचोक्तातुलसीहरिप्रियाऽर्थांतर्दधेमैथिलराजसत्तम ॥ तदैवराधावृषभानुनन्दिनीप्रसन्नचित्तास्वपुरेबभूवह ॥ ३६ ॥ श्रीराधिकाख्यानमिदंविचित्रंशृणोतियोभक्तिपरःपृथिव्याम् ॥ त्रैवर्ग्यभावंमनसासमेत्यराजंस्ततोयातिनरःकृतार्थताम् ॥ ३७ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायां वृन्दावनखण्डेतुलसीपूजनंनामत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ राधाकृष्णस्यचरितंशृण्वतोमेमनोमुने ॥ नतृप्तिंयातिशरदःपंकजेभ्रमरायथा ॥ १ ॥ रासेश्वर्य्याःकृष्णपत्न्यातुलसीसेवनेकृते ॥ यद्बभूवततोब्रह्मंस्तन्मेब्रूहितपोधन ॥२॥ ॥ नारदउवाच ॥ राधिकायाश्चविज्ञायतुलसीसेवनेतपः ॥ प्रीतिंपरीक्षञ्छ्रीकृष्णोवृषभानुपुरंययौ ॥ ३ ॥ अद्भुतंगोपिकारूपंचलज्झंकारनूपुरम् ॥ किंकिणीघंटिकाशब्दमंगुलीयकभूषितम् ॥ ॥ ४ ॥ रत्नकंकणकेयूरमुक्ताहारविराजितम् ॥ बालार्कताटंकलसत्कबरीपाशकौशलम् ॥ ५ ॥ नासामौक्तिकदिव्याभंश्यामकुन्तलसन्निभम् ॥ धृत्वासौवृषभानोश्चमन्दिरंसंददर्शह ॥ ६ ॥ प्राकारपरिखायुक्तंचतुर्द्वारसमन्वितम् ॥ करीन्द्रैःकज्जलाकारैर्द्वारिद्वारिमनोहरम् ॥ ७ ॥ वायुवेगैर्मनोवेगैश्चित्रवर्णैस्तुरंगमैः ॥ हारचामरसंयुक्तंप्रोल्लसन्मंडपाजिरम् ॥ ८ ॥ गवांगणैःसवत्सैश्चवृषैर्धर्मधुरंधरैः ॥ गोपालयत्रगायन्तेवंशीवेत्रधरानृप ॥ ९ ॥ मायायुवतिवेषोसौततोह्यन्तःपुरंययौ ॥ १० ॥ यत्रकोटिरविस्फूर्जत्कपाटस्तंभपंक्तयः ॥ रत्नाजिरेषुशोभन्तेललनारत्नसंयुताः ॥ ११ ॥

छल्ला, अँगूठी, कोंधनी पहरिके नूपुरनकी झनकार करते चले ॥ ४ ॥ रतनजटित कंकण, मोतीनके हार, बालसूर्यसे चमकते कर्णफूल पहरिके, सुन्दर केशनको जूडा बांधि चोटी लटकाय ॥ ५ ॥ नकवेसरि पहरि, घूंघुरवारी अलकावली छिटकाय, वृषभानुके मन्दिर पहुँचे ॥ ६ ॥ कैसो महल है जाके खाई परिकोटा बनरहेहैं, चार जाके दरवजे हैं जिनपे कारे २ काजरसे मतवारे हाथी झूम रहे हैं, तिनसों मनको हरनवारे हैं ॥ ७ ॥ मन और पवनकेसे वेगवारे चित्र विचित्र रंगनके घोडे बन्ध रहे हैं, हार, चमरसों युक्त सुशोभित मंडपसहित चंदोवा आंगनमें तन रहे हैं ॥ ८ ॥ और हे नृप! जहां बछडानशुद्धा सुहावनी गौ और धर्मधुरंधर बडे २ वृष बँधिरहेहैं, गोप गायरहे हैं, वेत लीये रक्षाकूं ठाढे हैं, मनोहर वंशीनमें अनेक राग गायरहे हैं ॥ ९ ॥ कपटते स्त्रीको वेश धरिके श्रीकृष्ण आप वृषभानुके मंदिरमें रणवासमें पहुँचे ॥ १० ॥ जहां अनेक

रत्नजटित किवाड तथा खम्भ तिनकी शोभासों युक्त आंगन हैं तिनमें सैंकडन स्त्रीरत्न बैठी हैं ॥ ११ ॥ जे वीणा, मृदंग, मँजीरानकूं बजायरही ऐसी अति मनोहरा फूलनकी छड़ी हाथमें लेके राधिकाके गुण गामें हैं ॥ १२ ॥ ता रत्नमंदिरमें सुन्दर एक नजर बगीचा लग रह्यो है, ता बगीचामें आम, अनार, कुन्द, मन्दार, अर्जुन, अशोक, आंवले, अनन्नास, अखरोट, नीबू, नारंगी, नारियल, केला, कदंब, कंजा लग रहे हैं ॥ १३ ॥ और कुन्द, केतकी, केवड़ो, कनेर, कोइल, कमल, चम्पा, कठचम्पा, चांदनी, चमेली, बेला, मगुला, बासूना, वसन्त, माधवी, मालती, मोरसिरी, मोतिया, सेव, सेवती, सदासुहागिल, सोनजुही, गेंदा, गुलमहदी, गुलाब इन पुष्पन करिके शोभित बगीचा तामें श्रीराधिकाजीकी निकुंज तहां कल्पवृक्षनके फूलनकी सुगन्ध आय रही है ॥ १४ ॥ तहां सुगंधिके मतवारे भौंरा गुंजारि रहे हैं और हे नृपेश्वर ! जहां सुगंधित पवन शीतल मंद मंद चली आवें हैं ॥ १५ ॥ जे पवनसों हजारन कमलकी रज उड़ी चली आवें हैं, तहां मोर, कोयल, सारस, तोता, ॥ १६ ॥ निकुंजकी गुमटीपे बैठे मधुर बाणी बोलरहे

वीणातालमृदंगादीन्वादयंत्योमनोहराः ॥ पुष्पयष्टिसमायुक्तागायंत्योराधिकागुणम् ॥ १२ ॥ तस्मिन्नन्तःपुरेदिव्यंव्रजश्चोपवनंमहत् ॥ दाडिमीकुन्दमन्दारनिंबूनतद्रुमावृतम् ॥१३॥ केतकीमालतीवृंदैर्माधवीभिर्विराजितम् ॥ तत्रराधानिकुंजोस्तिकल्पवृक्षसुगन्धिभृत् ॥ १४ ॥ पतन्तियत्रभ्रमरामधुमत्तानृपेश्वर ॥ गन्धाक्तःशीतलोवायुर्मन्दगामीवहत्यलम् ॥ १५ ॥ सहस्रदलपद्मानांरजोविक्षेपयन्मुहुः ॥ पुंस्कोकिलाकोकिलाश्चमयूराःसारसाःशुकाः ॥ १६ ॥ कूजन्तेमधुरंनादंनिकुंजशिखरेषुच ॥ पुष्पशय्यासहस्राणिजलकुल्याःसहस्रशः ॥ १७ ॥ प्रोच्छलन्तिस्फुरच्छारायत्रवैमेघमन्दिरे ॥ बलार्ककुंडलधराश्चित्रवस्त्रावराननाः ॥ १८ ॥ वर्तन्तेकोटिशोयत्रसख्यस्तत्कर्मकौशलाः ॥ तन्मध्येराधिकाराज्ञीप्रमन्तीराजमंदिरे ॥ १९ ॥ काश्मीरपंक्तिसंयुक्तेसूक्ष्मवस्त्रविराजिते ॥ शिलाम्बुपुष्पक्षितिजदलैरागुल्फपूरके ॥ २० ॥ मालतीमकरंदानांक्षरद्भिर्बिन्दुभिर्वृते ॥ कोटिचन्द्रप्रतीकाशातन्वीकोमलविग्रहा ॥ शनैःशनैःपादपद्मंचालयन्तीचकोमलम् ॥ २१ ॥ समागतांतांमणिमन्दिराजिरेददर्शराधावृषभानुनन्दिनी ॥ यत्तेजसातच्छलनाहतत्विषोजातास्त्वरंचन्द्रमसेवतारकः ॥ २२ ॥

हैं, जहां हजारन फूलनकी सेज और हजारनहीं अनेकन छोटी २ तलैया ॥ १७ ॥ और जहां मेघमंदिर हैं तहां सैकड़न फुहारे छूटरहेहैं, और जहां चित्र विचित्र वस्त्रनको धारण करें प्रातःकालीन सूर्यकेसे कुंडल पहरे, चंदसे मुख जिनके ऐसी किरोड़न राधिकाकी सखी बैठी हैं जे राधिकाजीके सेवा कर्ममें कुशल हैं तिनके बीचमें वा राजमंदिरमें राधिकाजी डोलि रहीं हैं ॥ १८ ॥ १९ ॥ जहां केशरके रंगके रंगे सूक्ष्मवस्त्रके बिछौना बिछ रहे हैं और जहाँ अनेक प्रकार पुष्पनके टकुना| २ गेहरे गद्दा बिछरहे हैं ॥ २० ॥ जे मालतीके मकरंदकी झरती बूंदके छिडके भये हैं, तहां किरोड चन्द्रमाकोसो जाको प्रकाश अति नाजुक बहुत पतले जाको अग्र ऐसी श्रीराधिकाजी होले होले कोमल चरणकमलकूं चलावती विचरे हैं ॥ २१ ॥ वा मणिमंदिरमें आई जो सखी कृष्णरूप ताहि श्रीवृषभानुसुता देखती भई, जाके तेजमें सब सखीनको तेज

फीको पडगयो, जैसे चंद्रमाके उदयते तारागण फीके पडजायं हैं ॥ २२ ॥ ता सखीको बडो उत्तम गौरव जानिके राधिकाजी उठ ठाढी भइ और दोनों भुजानसों प्यार कर
मिलीं, फिर दिव्य सिंहासनपै बैठारिके लोकरीतिते जल बीडाको आदर करन लगीं, अतर लगावन लगीं, फिर यह बोलीं ॥ २३ ॥ हे शुभे ! आपु भले आईं, आपको नाम कहा है
सो कहो आपु अपनी ओरते कृपा करिके जो आईं यही हमारो आज बडो भाग्य है ॥ २४ ॥ तुम्हारे समान दिव्यरूप या पृथ्वीमें तो काहूकी नहीं दीखै है जा महलमें तुम
विराजौहो हे सुभ्रु ! वही महल धन्य है ॥ २५ ॥ हे देवि ! अपने आयवेको कारण विस्तारसों कहौ मेरे लायक जो कछू आपको काम होय तो आपु नेकहू
संकोच मति करियो ॥ २६ ॥ या समय आप कटाक्ष करके, गति करके, सुंदर दृष्टि करके, सुंदर वचन करके और आकृतिते, मंद मुसिक्यानते, मोकूं तो लक्ष्मीपति भगवान्सी
दीखो हौ ॥ २७ ॥ आप तो नित्यही मेरे मिलिवेकूं आयो करौ जो न आयौ तौ अपनो संकेत मोकूं बताय देउ और जैसे जा प्रकारसों मेरो तुमारो नित्य

विज्ञायतद्गौरवमुत्तमंमहदुत्थायदोर्भ्यांपरिरभ्यराधिका ॥ दिव्यासनेस्थाप्यसुलोकरीत्याजलादिकंचार्हणमारभच्छुभम् ॥ २३ ॥ ॥ राधो
वाच ॥ ॥ स्वागतंतेसखिशुभेनामधेयंवदाशुमे ॥ भूरिभाग्यंममैवाद्यभवत्यागतयास्वतः ॥ २४ ॥ त्वत्समानंदिव्यरूपंदृश्यतेनहिभूतले ॥
यत्रत्वंवर्तसेसुभ्रुपत्तनंधन्यमेवतत् ॥ २५ ॥ वददेविसविस्तारंहेतुमागमनस्यच ॥ ममयोग्यंचयत्कार्यंवक्तव्यंतत्त्वयाखलु ॥ २६ ॥
कटाक्षेणसुदीप्त्याचवचसासुस्मितेनवै ॥ गत्याकृत्याश्रीपतिवद्दृश्यतेसांप्रतंमया ॥ २७ ॥ नित्यंशुभेमेमिलनार्थमाव्रजनचेत्स्वसंकेतमलंवि
धेहि ॥ येनैवसंगोविधिनाभवेद्धिविधिर्भवत्याससदाविधेयः ॥ २८ ॥ अयित्वदात्मातिपरंप्रियोमेत्वदाकृतिःश्रीव्रजराजनन्दनः ॥ येनैवमे
देविहृतंतुचेतस्त्वयाननान्देववधूर्दधामि ॥ २९ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवंराधावचःश्रुत्वामायायुवतिवेषधृक् ॥ उवाचभगवान्कृष्णो
राधांकमललोचनाम् ॥ ३० ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ रंभोरुनन्दनगरेनंदगेहस्यचोत्तरे ॥ गोकुलेवसतिर्मेस्तिनाम्नाऽहंगोपदेवता ॥
॥ ३१ ॥ त्वद्रूपगुणमाधुर्यंश्रुतंमेललितामुखात् ॥ द्रष्टुंचंचलापांगित्वद्गृहेऽहंसमागता ॥ ३२ ॥ श्रीमल्लवंगलतिकास्फुटमोदनीनांगुंजानि
कुंजमधुपध्वनिकंजपुंजम् ॥ दृष्टंश्रुतंनवनवंतवकंजनेत्रेदिव्यंपुरन्दरपुरोपिनयत्समानम् ॥ ३३ ॥

मिलनो होय सो विधि आपको सदा करनी उचित है ॥ २८ ॥ अये प्यारी ! तूं मोकूं बड़ी प्यारी लगैहै क्योंकि, हे श्यामसखि ! तेरेहीसो स्वरूप ब्रजराज
नंदनको है, मोकूं तो अब ऐसोही दीखै है, हे प्यारी ! मोकूं तो अत्यंत प्यारी हौ, हे देवि ! जो तैंने मेरो चित्त हरिलीनो है या तोकूं मैं हे वधू ! अपनी नन
दकी नाईं मानूंगी ॥ २९ ॥ ऐसे राधाको वचन सुनके माया करके स्त्रीरूप बने जो श्रीभगवान् कृष्ण हैं सो कमलसे नेत्र जिनके ता राधिकाते ये बोले ॥ ३० ॥ हे रंभोरू !
नंदनगरमें नंदमहलके उत्तरमांऊं हमारो घर है और गोपदेवी हमारो नाम है ॥ ३१ ॥ तुम्हारो रूप तथा गुण माधुर्य ललिताके मुखते सुन्यो हो सो हे चंचलकटाक्षवारी !
ताहि देखिवेकूं मैं आज तुमारे घर चली आई हूं ॥ ३२ ॥ शोभायमान जो लौंगनकी लतानके फूल तिनकी सुगंधि जिनमें ऐसी चिरमिठीनकी निकुंज जिनमें भ्रमर गूंजें

ऐसे कमलनके पुंज जिनमें ऐसे ये नये तेरे घर तिन्हें देखिवेकूं, हे कमललोचनी ! मैं आई हूं, ऐसो तो इंद्रके पुरमें हू आनंद नहीं है ॥ ३३ ॥ नारदजी कहैं हैं–हे मिथिलापुरीके ईश्वर ! ऐसे तिनको मिलाप भयो परस्पर प्रीति करके ताईं वनमें विचरन लगे, तब दोनोंनकी अत्यंत शोभा भई ॥ ३४ ॥ आपसमें हँसे हैं, गावैं हैं, फूलनकी गेंदनते खेलैं हैं, वनके वृक्षनकूं देखत भये, हे बहुलाश्व ! वे दोनों वहाँ विचरते भये ॥ ३५ ॥ कलानकी चतुराई जामें ऐसी कमलनयनी जो राधा है तातें गोपदेवता जो श्रीकृष्ण सो मीठी वाणीतें यह बोले ॥ ३६ ॥ हे व्रजकी ईश्वरी ! नंदनगर तो बहुति दूर है और संध्या हैगई है प्रातःकाल मैं तेरे नगरमें आऊंगी यामें कछु संदेह नहीं है ॥ ३७ ॥ नारदजी कहैं हैं–ता सखीको वो वचन सुनके व्रजकी ईश्वरीकी आखोंमें आँसू भरि आये, रोमावली उठ आई, हर्षके उद्गमसों भक्तिमें भरिगई, अमलसेमें घूमि घूमि केलाके वृक्षकी नाईं पृथ्वीमें

॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ एवंतयोर्मेलनंतद्बभूवमिथिलेश्वर ॥ प्रीतिंपरस्परंकृत्वावनेतत्रविरेजतुः ॥ ॥ ३४ ॥ हसंतौतौचगायंतौपुष्पकन्दु
कलीलया ॥ पश्यन्तौवनवृक्षांश्चेरतुर्मैथिलेश्वर ॥ ३५ ॥ कलाकौशलसंपन्नाराधांकमललोचनाम् ॥ गिरामधुरयाराजन्प्राहदेवंगोपदेवता ॥
॥ ३६ ॥ ॥ गोपदेवतोवाच ॥ ॥ दूरेवैनन्दनगरंसन्ध्याजाताव्रजेश्वरि ॥ प्रभातेचागमिष्यामित्वत्सकाशंनसंशयः ॥ ३७ ॥
॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ श्रुत्वावचस्तस्यतुतद्व्रजेश्वरीनिक्षिप्यसद्योनयनांबुसन्ततिम् ॥ रोमांचहर्षोद्गमभावसंवृतारंभेवभूमौपतितासमु
द्धता ॥ ३८ ॥ शंकागतास्तत्रसखीगणास्त्वरंसुवीजयन्त्योव्यजनैर्व्यवस्थिताः ॥ श्रीखण्डपुष्पद्रवचर्चितांऽशुकांजगादराधांनृपगोपदेवता ॥
॥ ३९ ॥ ॥ गोपदेवतोवाच ॥ ॥ प्रभातेआगमिष्यामिमाशोचंकुरुराधिके ॥ गोश्चभ्रातुर्गोरसस्यशपथोमेनचेदिदम् ॥ ४० ॥
॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवमुक्त्वाहरीराधांसमाश्वास्यनृपेश्वर ॥ मायायुवतिवेषोसौययौश्रीनन्दगोकुलम् ॥ ४१ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहिता
यांवृन्दावनखण्डेराधाकृष्णसंगमोनाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ अथरात्र्यांव्यतीतायांमायायोषिद्वपुर्हरिः ॥
राधादुःखप्रशान्त्यर्थंवृषभानोर्गृहंययौ ॥ १ ॥ राधातमागतंवीक्ष्यसमुत्थायातिहर्षिता ॥ दत्तासनाविधानेनपूजयामासमैथिल ॥ २ ॥

जायपरी ॥ ३८ ॥ ताही समय शंकाकी मारी सखीनके गण चले आये, ठाढ़ी हैके वीजना करनलगीं, चंदनके फूलनके अतरते छिड़कनलगीं, तब तो हे नृप ! ये गोपदेवता राधि कातें बोली ॥ ३९ ॥ हे राधिके ! शोच मत करै मैं प्रातःकाल निश्चय आऊंगी जो न आऊं तो मोकूं गैयाकी सौगंद, भैयाकी सौगंद और गोरसकी सौगंद है ॥ ४० ॥ नारदजी कहैं हैं–ऐसे राधाकूं राजी करके जिन्होंने मायाते गोपी वेष धरचो सो नंदनन्दन गोकुलकूं आवत भयो ॥ ४१ ॥ इति श्रीगर्गसंहितायां वृंदावनखंडे भाषाटीकायां राधाकृष्णसंगमो नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ नारदजी कहैं हैं–अब वह रात्रि व्यतीत हैगई तब मायासों गोपीरूप जे श्रीहरि वे राधाके दुःख दूरि करिवेकूं वृषभानुके घर गये ॥ १ ॥ तब राधा

गोपदेवताकूं आई देखिके हंसिके ठाढ़ी ह्वैगई. आसनपै बैठारिके, हे मैथिल ! वाकौ विधिविधान बड़ो पूजन सत्कार कीनो ॥ २ ॥ और यह बोली—हे सखी ! तो विना तो मैं रातकूं
बड़ी दुःखी रही, तेरे आयेते ऐसी सुखी भई मानो कोई निधि पाई जैसे कुपथ्यसे पहले सुख पीछे दुःख होय है तैसेई सत्संगते होय है ॥ ३ ॥ ऐसे राधिकाको वचन सुनिके ये
गोपदेवता विमना ह्वैगई, राधिकाते कछू नहीं बोली और दुःखिताकी नाई स्थित भई ॥ ४ ॥ राधिका गोपदेवताकूं खेदित देखिके सखीनके संग विचार करिके स्नेहमें तत्पर यह
बोली ॥ ५ ॥ हे भद्रे ! तू विमन क्यों ह्वैरही है, हे गोपदेवता ! तूं मोंते कह माताने, ननंदने, पतिने, तू ललकारी तो नी है ? अथवा सासूने तो क्रोधते तोकूं नाहि ललकारी है ?
॥ ६ ॥ कोई सौत दोष है ? कै पतिको वियोग ह्वैगयो है ? कै कहूं और जगह तेरो चित्त लग गयो है ? हे मनकी हरनहारी ! अपने मनकी बात तौ कहो ? ॥ ७ ॥ कै रस्ताकी

॥ ॥ राधोवाच ॥ ॥ त्वयाविनाहंनिशिदुःखिताऽऽसंत्वय्यागतायांसखिलब्धवस्तुवत् ॥ पूर्वंह्यपथ्यस्यसुखंयथाततोदुःखंतथाभामि
निसत्प्रसंगतः ॥ ३ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वाथतद्वाक्यंविमनागोपदेवता ॥ नकिंचिदूचेश्रीराधांदुःखितेवव्यवस्थिता ॥
॥ ४ ॥ विज्ञायखेदसंपन्नांराधिकागोपदेवताम् ॥ सखीभिःसंविचार्य्याथजगादस्नेहतत्परा ॥ ५ ॥ ॥ राधोवाच ॥ ॥ विम
नास्त्वंकथंभद्रेवदमांगोपदेवते ॥ मात्राभर्त्राननांद्रावाश्वश्र्वाक्रोधेनभर्त्सिता ॥ ६ ॥ सपत्नीकृतदोषेणस्वभर्तुर्विरहेणवा ॥ अन्यत्रलग्नचि
त्तेनविमनाःकिंमनोहरे ॥ ७ ॥ मार्गखेदेनवाकच्चिद्विह्वलाभूरुजाथवा ॥ शीघ्रंवदमहाभागेस्वस्यदुःखस्यकारणम् ॥ ८ ॥ कृष्णभक्तसुते
विप्रेयेनकेनापिकुत्सितम् ॥ कथितंतेऽथरंभोरुतच्चिकित्सांकरोम्यहम् ॥ ९ ॥ गजाश्वादीनिरत्नानिवस्त्राणिचधनानिच ॥ मन्दिराणिविचि
त्राणिगृहाणत्वंयदीच्छसि ॥ १० ॥ धनंदत्त्वातनुंरक्षेत्तनुंदत्त्वात्रपांव्यधात् ॥ धनंतनुंत्रपांदद्यान्मित्रकार्यार्थमेवहि ॥ धनंदत्त्वाचसततंरक्षेत्प्रा
णान्निरन्तरम् ॥ ११ ॥ योमित्रतांनिष्कपटंकरोतिनिष्कारणंधन्यतमःसएव ॥ विधायमैत्रंकपटंविदध्यात्सलंपटःहेतुपटुर्नटंधिक् ॥ १२ ॥
तस्याःप्रेमवचःश्रुत्वाभगवान्गोपदेवता ॥ प्रहसन्नाहराजेन्द्रश्रीराधांकीर्तिनन्दिनीम् ॥ १३ ॥

हरारत भई है ? कै कछू तुम्हारे शरीरमें रोग है ? हे महाभाग्यवान् ! अपने दुःखको कारण जल्दी कहौ ॥ ८ ॥ एक तो ब्राह्मण और कृष्णको भक्त इन दोअनपै तो मेरो
जोर है नहीं इनसों व्यतिरिक्त जो और काहूने तुम्हारो अपराध करयो होय तौ वाको मैं उपाय करूं ॥ ९ ॥ हाथी, घोड़ा, रत्न, वस्त्र, धन, सोनो और महल, मंदिर, जो कछू
तुमें चाहना होय सो लेऊ ॥ १० ॥ धनकूं देके तनकी रक्षा करै, तनकूं देके लाज राखै और जो कोई मित्रको काम परे तो धनकूं, तनकूं, लाजकूं, सबकूं देके मित्रको काम
करै, और कोईको ऐसोहू मत है धनकूं देके निरंतर प्राणनकी रक्षा करै ॥ ११ ॥ जो विना मतलबके निष्कपट मित्रता करैहै वह तौ धन्यतम है और जो मित्रता कर
कें फिर कपट करै तो वह मतलबी लंपट है और अपनेही काममें चतुर है वा नटकी तरह वरतनेवालेकूं धिक्कार है ॥ १२ ॥ ता राधिकाको प्रेमको वचन

सुनिके गोपदेवता भगवान् प्रसन्न ह्वैके कीर्तिनन्दिनी जो राधा है तातें यह बोली ॥ १३ ॥ हे राधे ! गोवर्द्धन पर्वतकी संकोच गलीमें ह्वैके दही बेचिबेकूं मै चलीजातीही सो रस्तामें आतमें नंदके वेटाने मोकों रोक लई ॥ १४ ॥ वंशी और वेतकों लियें हंसते २ निर्लज्जने आयके मेरौ हाथ पकड़के वो रसीलो बोलो कि, री ! मेरो कर लगे है सो देके जा ऐसे मोसों कर दान मांगन लग्यौ ॥ १५ ॥ तव मैने यह कही मैं तो गोरसके लंपटकूं दान कबहूं नहीं देऊंगी जव मैने ऐसे कही तव वाने मेरी गागरी दहीकी भरी फोड़डारी ॥ १६ ॥ हंडियाकूं फोड़के और दहीको पीके मेरी चादर लैके चल्यौगयो, नंदगामके पर्वतकी खोतरमें दबक गयौ, तातें प्यारी ! मेरो मन बिगड़ रह्यो है ॥ १७ ॥ जातिको गोप और कालौ जाको वर्ण न तो वडौ धनी, न बड़ो वीर, न कछू सुन्दर, न अच्छो सुभाव, हे

॥ ॥ गोपदेवतोवाच ॥ ॥ राधेव्रजन्सानुगिरेस्तटीषुसंकोचवीथीषुमनोहरासु ॥ यान्तींस्वतोमांदधिविक्रयार्थंरुरोधमार्गेनवनन्दपुत्रः ॥१४॥ वंशीधरोवेत्रकरःकरेमांत्वसंगृहीत्वाप्रहसन्विलज्जः ॥ मह्यंकरादायकरायदानंदेहीतिजल्पन्विपिनेरसज्ञः ॥ १५ ॥ तुभ्यंनदास्यामिकदापिदानं स्वयंभुवेगोरसलंपटाय ॥ एवंमयोक्तेवचनेऽथभाण्डंनीत्वाविशीर्णीकृतवान्सदध्नः ॥ १६ ॥ भाण्डंसभित्त्वादधिकिंचपीत्वानीत्वोत्तरीयंमम चेदुरीयम् ॥ नन्दीश्वराद्रेर्विदिशंजगामतेनाहमाराद्विमनाःस्मजाता ॥ १७ ॥ जात्यासगोपःकिलकृष्णवर्णोऽधनीनवीरोनहिशीलरूपः ॥ यस्मिंस्त्वयाप्रेमकृतंसुशीलेत्यजाशुनिर्मोहनमथकृष्णम् ॥ १८ ॥ इत्थंसवैरंपरुषंवचस्तच्छ्रुत्वाचराधावृषभानुनन्दिनी ॥ सुविस्मिता वाक्यपदेसरस्वतीपदंस्मयन्तीनिजगादतांप्रति ॥ १९ ॥ ॥ राधोवाच ॥ ॥ यत्प्राप्तयेविधिहरप्रमुखास्तपन्तिवह्नौतपःपरमयानिजयोग रीत्या ॥ दत्तःशुकःकपिलआसुरिरंगिरायत्पादारविन्दमकरन्दरजःस्पृशन्ति ॥ २० ॥ तंकृष्णमादिपुरुषंपरिपूर्णदेवंलीलावतारमजमा तिंहरंजनानाम् ॥ भूभूरिभारहरणायसतांशुभायजातंविनिन्दसिकथंसखिदुर्विनीते ॥ २१ ॥ गाःपालयन्तिसततंरजसोगवांचगंगांस्पृशंति चजपंतिगवांसुनाम्नाम् ॥ प्रेक्षन्त्यहर्निशमलंसुमुखंगवांचजातिःपरानविदिताभुविगोपजातेः ॥ २२ ॥

सुशीले ! ऐसेमें तैने कहा समुझिके निर्मोहीमें प्रेम लगायौ है, यातें या श्रीकृष्णकूं तो छोड़दे ॥ १८ ॥ ऐसे वैरको भरी भयौ कठोर वचन वृषभानुनंदिनी सुनिके विस्मित ह्वैगई, वाक्यपदमें सरस्वतीको स्थान स्मरण करती ता गोपदेवताते बोली ॥ १९ ॥ जाकी प्राप्तिके लीये ब्रह्मा हरतें आदि लेके अग्निमें तप तपें हैं, परम निज योगकी रीति करिके दत्तात्रेय, शुकदेव, कपिलदेव, आसुरि, अंगिरा सव जाके चरणकमलकी रजको स्पर्श करें हैं ॥ २० ॥ सो श्रीकृष्ण, आदिपुरुष, परिपूर्ण देव, लीलावतार, अजन्मा, जननकी आर्ति हर्ता, भूमिको भार उतारिवेकूं, संतनकी रक्षा करिवेके लीये प्रकट भयौ है तिनकी, हे सखि ! हे दुर्विनीते ! तूं निन्दा करै है ॥ २१ ॥ गोपनकी जाति तो बड़ी उत्तम है, निरन्तर गौनको पालन करैं है, गोरजको स्पर्श करैं हैं वोही मानसी गङ्गाको स्पर्श करैं है, गौनके नामनकूं जपै हैं, रात दिन गौनको मुख देखैं हैं, सो बड़ी श्रेष्ठ गोपनकी जाति है ताकूं तूं

नहीं जाने है ॥ २२ ॥ देखो ! जाकी श्यामरंगमें शोभित सुन्दर कलाको महादेवजी देखिके वा श्रीकृष्णमें लगे मनसों सुन्दर सुख छोडके उन्मत्तकी नाई चलें हैं, भाजें हैं, जटाजूट, विष, भस्म, खोपडी और काले सर्प इनकूं धारण करैं हैं ॥ २३ ॥ स्वर्गलोक, सिद्ध, मुनि, यक्ष, मरुद्गण इनके नाथ और नर, किन्नर, यक्ष, राक्षस, नाग इनके नाथ हैं वेहू सब भक्तिते जाके चरणारविंदमें निरन्तर नमस्कार करके अनेक तरहकी लक्ष्मी पावैं हैं और श्रीकृष्णकूं बलि भेंट देय हैं ॥ २४ ॥ जो श्रीकृष्ण अगणित ब्रह्मांडनकूं पैदा करैं हैं और नाश करैं हैं ता कृष्णकों बत्सासुर, बकासुर, शकटासुर, तृणावर्त, पूतना, अघासुर इनको मारिवो, यमलार्जुनको उखारिवो, कालीको दमन करिवो, कहा यश है अर्थात् इनको मारवो वाकी कछु बडाई नहीं है ॥ २५ ॥ वा पुरुषोत्तमको भक्तिते प्यारो न तो ब्रह्मा है, न महादेव है, न लक्ष्मी है और न बलदेवजी हैं क्योंकि, भक्तिते बंध्यो है चित्त जिनको ऐसे सकल लोकजनन्के चूडामणि श्रीकृष्ण अपने भक्तनके पीछे २ डोले हैं ॥ २६ ॥ महान् है

तत्कृष्णवर्णविलसत्सुकलांसमीक्ष्यतस्मिन्विलग्नमनसासुसुखंविहाय ॥ उन्मत्तवद्व्रजतिधावतिनीलकण्ठोबिभ्रत्कपर्दविषभस्मकपालसर्पान्॥ ॥ २३ ॥ स्वर्लोकसिद्धमुनियक्षमरुद्गणानांपालाःसमस्तनरकिन्नरनागनाथाः ॥ यत्पादपद्ममनिशंप्रणिपत्यभक्त्यालब्धश्रियःकिलबलिंप्रद दुःस्मतस्मै ॥ २४ ॥ वत्साद्यकालियबकार्जुनधेनुकानामाचक्रवातशकटासुरपूतनानाम् ॥ एवंविधःकिमुतसस्य यशोमुरारेर्यःकोटिशोंडनि चयोद्भवनाशहेतुः ॥ २५ ॥ भक्तात्प्रियोनविदितःपुरुषोत्तमस्यशंभुर्विधिर्नचरमानचरौहिणेयः ॥ भक्तानुव्रजतिभक्तिनिबद्धचित्तश्चूडाम णिःसकललोकजनस्यकृष्णः ॥ २६ ॥ गच्छन्निजंजनमनुप्रपुनातिलोकानाविद्यन्हरिजनेस्वरुचिंमहात्मा ॥ तस्मादतीवभजतांभगवान्मुकु न्दोमुक्तिंददातिनकदापिसुभक्तियोगम् ॥ २७ ॥ ॥ गोपदेवतोवाच ॥ ॥ राधेत्वदीयधिषणाधिषणंहसन्तीवाणींश्रुतिंप्रकुशलेनविडंब यन्ती ॥ अत्रागमिष्यतियदाथहरिःपरेशःसत्यंददातिवचनंतवदेविमन्ये ॥ २८ ॥ ॥ राधोवाच ॥ ॥ यद्यागमिष्यतियदाथहरिःपरेशः किंकारयामिभवतींवदतर्हिसुभ्रु ॥ चेदागमोनहिभवेद्वनमालिनःस्वंसर्वंधनंचभवनंचददामितुभ्यम् ॥ २९ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ अथ राधासमुत्थायनत्वाश्रीनंदनन्दनम् ॥ उपविश्यासनेदध्यौध्यानस्तिमितलोचना ॥ ३० ॥

आत्मा जिनको ऐसे भगवान् भक्तनमें अपनी रुचिको दिखावते अपने भक्तनके पीछे २ चलते भक्तनके चरणकमलकी रजते अपने रोमनमें वर्तमान ब्रह्मांडनके जीवनकूं पवित्र करैं हैं यातेते अपने भक्तनकूं भगवान् मुक्ति तो देदेय हैं पर भक्तियोग नहीं देंय है क्योंकि, भक्तिते वश होनों पडे है ॥ २७ ॥ तब गोपदेवता बोली—हे राधे ! ये तुम्हारी बुद्धि बृहस्पतिकी और सरस्वतीकीहू हांसी करै है और अपनी चतुराईते वेदको अनुकरण करै है परन्तु हे राधे ! जो परेश श्रीकृष्ण तुम्हारी याद करेते अबही चल्यो आवैगो तो मैं तुम्हारे वचनकूं सांच मानूं ॥ २८ ॥ जो परेश हरि मेरे बुलायेते अबही चल्यो आवे तो फिर बताय मैं तेरो कहा करूं और हे सुन्दर भृकुटीवारी ! मेरे बुलायवेते जो वनमाली हे अली ! न आयो तो मैं सबरो अपने धन, महल तोकूं देदेउं ॥ २९ ॥ नारदजी कहैं हैं अब राधिकाजी उठके नन्दनंदनकूं दंडोत करिके आसनपै बैठि ध्यान करनलगीं, ध्यानते

मिचेंहैं लोचन जाके ॥ ३० ॥ तब अत्यंत उत्कंठिता हैं और प्रेमके आंसू जाके वहैं तथा पे पसीना जाके आयगये और अपने रूपमें तन्मय भई ऐसी राधिकाकी देखिके भगवान्ने वाही समय गोपीरूपकूं छोडिके पुरुषरूप धरिलीनो ॥ ३१ ॥ और भक्तवत्सल भगवान् सखीनके देखते देखते प्रसन्न हैके मेघसी गम्भीर वाणीते राधिकाते यह बोले ॥ ३२ ॥ हे रंभोरू ! हे चन्द्रवदने ! हे व्रजसुन्दरीशे ! हे राधे ! हे प्रिये ! हे नये जोवनके मदते मान करनवारी ! नेक नेत्र खोलिये में आयगयो हूं मोकूं देखिये, आपुने मीठी वाणीते जो मोकूं बुलायो सोई में आय गयो ॥ ३३ ॥ और हे प्रिये ! जो मैंने हे श्रीकृष्ण ! आपु जल्दी आओ ऐसो तेरो वचन सुन्यो सोही जल्दीही गौनकूं और गोपनकूं छोडिके वंशीवटते यमुनाके तटते भाजिके हे ललने ! मैं तुम्हारे पास यहाँ आयो हूं ॥ ३४ ॥ जब में आयो तबही एक सुंदरसी सखी यहांते उठगई

उत्कंठितांस्वेदयुक्तांबाष्पकंठींप्रियांहरिः ॥ अश्रुपूर्णमुखींवीक्ष्यविभ्रत्स्वांपौरुषींतनूम् ॥ ३१ ॥ पश्यन्तीनांसखीनांचसहसाभक्तवत्सलः ॥ राधांप्राहप्रसन्नात्मामेघगंभीरयागिरा ॥ ३२ ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ रंभोरुचन्द्रवदनेव्रजसुन्दरीशेराधेप्रियेनवसुयौवनमानशीले ॥ उन्मील्यनेत्रमपिपश्यसमागतंमांतूर्णंत्वयामधुरयाचगिरोपहूतम् ॥ ३३ ॥ आगच्छकृष्णइतिवाक्यमतःश्रुतंमेसद्योविसृज्यनिजगोकुलगोपवृंदम् ॥ वंशीवटाच्चयमुनानिकटात्प्रधावंस्त्वत्प्रीतयेऽथललनेत्रसमागतोस्मि ॥ ३४ ॥ मय्यागतेसतिगतासखिरूपिणीकायक्ष्यासुरीसुरवधूकिलकिन्नरीवा ॥ मायावतीछलयितुंभवतींचतस्माद्विश्वासएवननिधेयउरंगपत्न्याम् ॥ ३५ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ अथराधाहरिंदृष्ट्वानत्वातत्पादपंकजम् ॥ मुदमापपरंराजन्सद्यःपूर्णमनोरथा ॥ ३६ ॥ एवंश्रीकृष्णचन्द्रस्यचरितान्यद्भुतानिच ॥ यःशृणोतिनरोभक्त्यासकृतार्थोभवेन्नरः ॥ ३७ ॥ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांवृन्दावनखण्डेश्रीकृष्णचन्द्रदर्शनंनामपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ ॥बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ राधायैदर्शनंदत्त्वाकृत्वाप्रेमपरीक्षणम् ॥ अग्रेचकारकांलीलांभगवानात्मलीलया ॥१॥ ॥नारदउवाच ॥ ॥ माधवोमाधवेमासिमाधवीभिःसमाकुले ॥ वृन्दावनेसमारेभेरासंरासेश्वरःस्वयम् ॥ २ ॥ वैशाखमासिपंचम्यांजातेचन्द्रोदयेशुभे ॥ यमुनोपवनेरेमेरासेश्वर्यामनोहरः ॥३॥

हे सखि ! वो कोई यक्षिणी ही के देववधू ही के आसुरी ही के किन्नरी ही के नारी ही कि कोई मायावती ही, जो तुमें छलवेको आई ही देखो ऐसी बिना जानती काऊ नागिनीको विश्वास करनो नहीं चाहिये ॥ ३५ ॥ नारदजी कहैहैं हे राजन् ! ऐसे राधिकाजी श्रीकृष्णकूं देखिके ताके चरणकमलकूं दंडोत करिके परम आनन्दकूं प्राप्त हैगई और तत्कालही सब मनोरथ पूर्ण हैगयो ॥३६॥ ऐसे ये श्रीकृष्णके अद्भुत चरित्र हैं इने जो भक्तिते सुने वो मनुष्य कृतार्थ हैजायहै ॥३७॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां वृंदावनखण्डे भाषाटीकायां श्रीकृष्णचंद्रदर्शनं नाम पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ अब बहुलाश्व राजा बोलो कि, श्रीकृष्ण ऐसे राधिकाजीकूं दर्शन देके प्रेमकी परीक्षा करके आगे अपनी इच्छाते कहा लीला करत भये ? ॥ १ ॥ नारद कहैहैं माधव भगवान् माधवीकी लतानसो शोभित ऐसे वैशाखके महीनामें वृंदावनमें रासके ईश्वर आपुही रासको प्रारंभ करतभये ॥ २ ॥ वैशाख महीनाकी पंचमीके दिन जब

सुंदर चंद्रमा उदय भयो तब रासेश्वरी राधाके संग यमुनाजीके उपवनमें मनोहर श्रीकृष्ण रासविहार करते भये ॥ ३ ॥ हे मैथिल ! पहले गोलोकते जो भूमी आई ही सो वो सबरी तत्काल सुवर्णमयी और पुखराजते जडी हैगई ॥ ४ ॥ वा समय या वृंदावन दिव्य रूप धारणकरतो भयो और कल्पवृक्षनके वन प्रकट है आये और माधवी मालतीकी लता प्रफुल्लित हैआई । तब इंद्रके नंदनवनकूंहू लज्जित करन लगो ॥ ५ ॥ रत्ननकी सीढीसो युक्त प्रकाश करती सोनेनकी छत्री तिनपै हंस, राजहंस, सारस, बगुला बैठे है और कमल जामें फूल रहेहैं ऐसी श्रीयमुना शोभित भई ॥ ६ ॥ रत्नमय गोवर्द्धनके शिखरनमें हीरा, पन्ना, मणि, माणिक, लाल, नीलकणनसो जगमगान लगो और सुंदर २ वृक्ष लतानके पुष्पनसो शोभित हैगयो, जामें अनेक वनके जीव डोलैहै और तोता, मैंना, मोर, चकोर, कोयल, कबूतर, पपीहा बोल रहेहैं, तिनसों मनको हरनवारो है गयो ॥ ७ ॥ जिनमें झरना झरैहैं, भौरा भौंरी गुंजारैहैं ऐसी खोहनसों वां गोवर्द्धनपर्वतकी सजे भये हाथीकीसी शोभा हैगई ॥ ८ ॥ और वांसके अनेकन कुंज निकुंजनको दिव्यरूप

पुरामैथिलगोलोकाद्भूमिर्याकौसमागता ॥ सर्वावभूवुःसौवर्णपद्मरागमयीत्वरम् ॥ ४ ॥ वृन्दावनंदिव्यवपुर्दधत्कामदुघैर्द्रुमैः ॥ माधवीभिर्लताभिश्चप्रक्षिपन्नन्दनन्दनम् ॥ ५ ॥ रत्नसोपानसंपन्नास्फुरत्सौवर्णतोलिका ॥ रराजयमुनाराजन्हंसपद्मादिसंकुला ॥ ६ ॥ रत्नधातुमयःश्रीमद्रत्नशृंगस्फुरद्युतिः ॥ सपक्षिगणसंयुक्तोलतापुष्पमनोहरः ॥ ७ ॥ निर्झरैःसुन्दरीभिश्चदरीभिर्भ्रमरीवृतः ॥ रेजेगोवर्द्धनोनामगिरिराजःकरीन्द्रवत् ॥ ८ ॥ सर्वेनिकुंजाःपरितोरेजुर्दिव्यवपुर्धराः ॥ सभामण्डपवीथीभिःप्रांगणस्तंभपंक्तिभिः ॥ ९ ॥ पतत्पताकैर्दिव्याभैःसौवर्णैःकलशैर्नृप ॥ श्वेतारुणैःपुष्पदलैःपुष्पमन्दिरवर्त्तिभिः ॥ १० ॥ वसन्तमाधुर्यधराःकूजत्कोकिलसारसाः ॥ पारावतैर्मयूरैश्चयत्रयत्रनिकुंजिताः ॥ ११ ॥ राधाकृष्णकथांपुण्यांगायमानैर्मधुव्रतैः ॥ पतद्भिर्मधुमत्तैश्चकुंजाःसर्वेविराजिताः ॥ १२ ॥ पुलिनेशीतलोवायुर्मन्दगामीवहत्यलम् ॥ सहस्रदलपद्मानांरजोविक्षेपयन्मुहुः ॥ १३ ॥ काश्चिद्गोलोकवासिन्यःकाश्चिच्छय्योपकारिकाः ॥ शृंगारप्रकराःकाश्चित्काश्चिद्द्वारपालिकाः ॥ १४ ॥ पार्षदाख्याःसख्यजनाश्छत्रचामरपाणयः ॥ पुष्पाभरणकारिण्यःश्रीवृन्दावनपालिकाः ॥ १५ ॥

हैगयो कैसी हैगई कि, जिनमें रत्नमय खंभ लगे ऐसी सभा बनगई, छत्री बनगई, तिबारी, बारहद्वारी, आंगन, चौक, गली, बनगई, तिनसों शोभित भयो ॥ ९ ॥ जिनपै पत्र, फूलनकी दिव्य ध्वजा पताका फहराय रही ऐसे सुनहरी कलशानसों और काले, पीले, लाल, सफेद, सोसनी, सुन्हेरी, सवंती फूलनके अनेकन महल मंदिर तिनसों ॥ १० ॥ और वसंतऋतुके माधुर्ययुक्त कोकिल, सारस, मोर, कबूतर, पपीहा, तोता, मैंनानके शब्दनसों कूजित ॥ ११ ॥ औरहू अनेकन पक्षी कुंज २ में राधा कृष्णकी पुण्यकथाकूं गायनवारे भौरानके गानसों युक्त जहाँ अति सुशोभित कुंज बन रही हैं ॥ १२ ॥ पुलिननमें शीतल, मंद, सुगंधित पवन चली आवैहै, जो हजारन कमलके केशरनकी रजको उड़ावैहै ॥ १३ ॥ वा समय चारों ओरते गोपीगण श्रीकृष्णके पास आवती भई हैं इनमें कोई तो गोलोकवासिनी, कोई शृंगार करनहारी, कोई सेज सजावनहारी और कोई द्वारपालकी है ॥ १४ ॥ कोई चमरधारी, कोई छत्रधारी, कोई बीजनाधारी, कोई फूलनके हार, माला गुंजा तुर्रा गहने बनावनहारी कोइ सख्यभाववारी प्यारी २ गोपी सब आई हैं ये सब वृंदावनकी रक्षा करनवारी हैं ॥ १५ ॥

कोई गोवर्द्धनवासिनी, कोई निकुंज, बनायवेवारी, कोई निकुंजवासिनी, कोई नृत्य करनहारी और कोई बाजे बजावनवारी हैं ॥ १६ ॥ ये सबरी चंद्रवदना गोपी किशोर जिनकी अव स्था है इनके बारह यूथ श्रीकृष्णके पास आये ॥ १७ ॥ तैसेही यमुनाजी अपनो यूथ बांधिके आई, नीलांबर धरे श्याम कमलसे जाके लोचन हैं ॥ १८ ॥ तैसेही जाह्नवी गंगाजी अपनो यूथ बांधके गौरवर्णा, श्वेत वस्त्र पहरे मोतीनके शृंगारते सजी भई आई ॥ १९ ॥ तैसेही रमा (लक्ष्मी) लाल वस्त्र धरे, पद्मराग लालनके गहने पहरि चंद्रमासो जिनको वर्ण मंदजाको हास येहू अपने यूथको बनायके आई है ॥ २० ॥ तैसेही कृष्णपत्नी मधु माधवी जाको नाम कमलवर्णा, फूलनके गहने पहरे उत्तम जाके वस्त्र पेभा अपने यूथके संग आई ॥२१॥ तैसेही विरजा नामकी सखी अपने यूथको बांधिके हरे वस्त्रनको पहरे पन्नानके, रत्ननके भूषण और गौरवर्ण धारण करे आई हैं॥२२॥फेर ललिताजीको विशाखाको मायाको

गोवर्द्धननिवासिन्यःकाश्चित्कुंजविधायकाः ॥ तन्निकुंजनिवासिन्योनर्तक्योवाद्यतत्पराः ॥ १६ ॥ सर्वाश्चन्द्रवदनाःकिशोरवयसोनृप ॥
आसांद्वादशयूथाश्चाजग्मुःश्रीकृष्णसन्निधिम् ॥ १७ ॥ तथैवयमुनासाक्षाद्यूथीभूत्वासमाययौ ॥ नीलाम्बरारत्नभूषाश्यामाकमललोचना ॥
॥ १८ ॥ तथैवजाह्नवीगंगायूथीभूत्वासमाययौ ॥ श्वेताम्बराश्वेतवर्णामुक्ताभरणभूषिता ॥ १९ ॥ तथाययौरमासाक्षाद्यूथीभूत्वारुणाम्बरा ॥
चन्द्रवर्णामन्दहासापद्मरागविभूषिता ॥ २० ॥ तथाययौकृष्णपत्नीनाम्नायामधुमाधवी ॥ पद्मवर्णापुष्पभूषायूथीभूत्वाशुभांबरा ॥ २१ ॥
तथैवविरजासाक्षाद्यूथीभूत्वासमाययौ ॥ हरिद्रम्बरागौरवर्णारत्नालंकारभूषिता ॥ २२ ॥ ललितायाविशाखायामायायूथःसमाययौ ॥ एवं
त्वष्टसखीनांचसखीनांकिलषोडश ॥ २३ ॥ द्वात्रिंशच्चसखीनांचयूथाःसर्वेसमाययुः ॥ रराजभगवान्राजन्स्त्रीगणैरासमण्डले ॥ २४ ॥
वृन्दावनेयथाकाशेचन्द्रस्तारागणैर्यथा ॥ पीतवासःपरिकरोनटवेषोमनोहरः ॥ २५ ॥ वेत्रभृद्वादयन्वंशींगोपीनांप्रीतिमावहन् ॥ मयूरपक्षभृ
न्मौलीस्रग्वीकुण्डलमण्डितः ॥ २६ ॥ राधयाशुशुभेरासेयथारत्यारतीश्वरः ॥ एवंगायन्हरिःसाक्षात्सुन्दरीरागसंवृतः ॥ २७ ॥ यमुनापु
लिनंपुण्यमाययौराधयायुतः ॥ गृहीत्वाहस्तपद्मेनपद्माभंस्वप्रियाकरम् ॥ २८ ॥ निषसादहरिःकृष्णातीरेनीरमनोहरे ॥ पुनर्जल्पन्सुमधु
रंपश्यन्वृन्दावनंप्रियम् ॥ २९ चलन्हसद्राधिकयाकुंजंकुंजंचचारह ॥ कुंजेनिलीयमानंतंत्वरंत्यच्चाप्रियाकरम् ॥ ३० ॥

इनके तथा अष्ट सखीनके और सोलह सखीनके न्यारे २ यूथ आये हैं ॥२३॥ ऐसेही बत्तीस सखीनके सब यूथ आये, हे राजन् ! ता समय श्रीकृष्ण भगवान् रासमंडलमें गोपी गणनते बडी शोभाकूं प्राप्त भये ॥ २४ ॥ जैसे आकाशमें चंद्रमाकी तारागणनते शोभा होयहै तैसेही वृंदावनमें पीतांबरको कमरसो बांधे नटकोसो जाको वेष मनको हरनवारो ॥ २५ ॥ बेत धरे, पीतांबर ओढे, मोरपंखनको मुकुट पहरे वनमाला पहरे, मकराकृत कुंडल धारण करे, वंशी बजावते जे श्रीकृष्ण हैं वे ॥ २६ ॥ राधाके संग ऐसे शोभित भये जैसे रतिके संग रतिराज कामदेवकी शोभा होय है ॥ २७ ॥ ऐसे साक्षात् हरि सुंदर रागको गावते राधिकाके संग पवित्र यमुनाजीके पुलिनमें अपने हस्तकमलसों प्रियाके हस्तकमलको पकडे आवते भये ॥ २८ ॥ मनोहर जल जाको ता कालिंदीके किनारेपै बैठगये, मधुर बतरात प्यारे वृंदावनकूं देखत भये ॥ २९ ॥ हँसत २ राधिकाके संग,

चलत २ कुंज २में विचरत २ प्यारीके हाथकूं छोड़के लतानमें दबकि गये ॥३०॥ तब राधिकाजीने वृक्षकी डालीकी ओटमें छिपे श्रीकृष्णको देखिके झपटिके जाय पकड़े ऐसेही राधिका हाथ छोड़के झनन २ नूपुर बजावत भाजि उठी ॥३१॥ श्रीकृष्णके देखत निकुंजमें लीन हैगई जबताइ माधव गये तोलों अन्यत्र दबकि गई॥३२॥कदंबके नीचे एक हाथ के अंतरते इतते चित चलावत हाथमें पकरिवेमें नहीं आये ऐसे श्रीकृष्ण ऐसे शोभित भये जैसे सुनहरी बेलिसी तमालको वृक्ष और बादलकी काली घटा बिजलीसी शोभित होय हैं ॥३३॥और सुवर्णकी खानसो जैसे नीलादि ऐसे विश्वमोहिनी राधाके सग मदनमोहनकी शोभा होतीभई ॥ ३४ ॥ रासरंगमें श्रीकृष्ण नटसें नाचतभये वा वृंदावनमें ऐसे मालुम पडे जैसे रतिरानीके संग मानो कामदेवही नाचै है, तब जितने रूप गोपिनके हे तितनेई रूप श्रीकृष्णके है गये ॥३५॥ रंगभूमिमें नटवर जैसे नाचैहैं तैसेही रासरूप रंगमें कृष्ण नट नाचते भये

विलोक्यशाखान्तरितंराधाजग्राहमाधवम् ॥ राधाद्रुद्रावतद्धस्ताज्झंकारंकुर्वतीपदे ॥ ३१ ॥ विलीयमानाकुंजषुपश्यतोमाधवस्यच ॥ धावन्हरिर्गतोयावत्तावद्राधाततोगता ॥ ३२ ॥ वृक्षपार्श्वेहस्तमात्रादितश्चेतश्चधावती ॥ तमालेहेमवल्येवघनश्चंचलयायथा ॥ ३३ ॥ हेमखन्येवनीलाद्रीरेजेराधिकयाहरिः ॥ राधयाविश्वमोहिन्याबभौमदनमोहनः ॥ ३४ ॥ वृन्दावनेरासरंगेरत्येवमदनोयथा ॥ धृत्वारूपाणितावन्तियावन्तिव्रजयोषितः ॥ ३५ ॥ ननर्तरासरंगेसौरंगभूम्यांनटोयथा ॥ गायन्त्यश्चापिनृत्यन्त्यःसर्वागोप्योमनोहराः ॥ ३६ ॥ विरेजुःकृष्णचन्द्रैश्चयथाशक्रैःसुरांगनाः ॥ वरंविहारंकृष्णायांचकारमधुसूदनः ॥ ३७ ॥ सर्वैर्गोपीगणैःसार्द्धंयक्षीभिर्यक्षराडिव ॥ कबरीकेशपाशाभ्यांप्रसूनैःप्रच्युतैःशुभैः ॥ ३८ ॥ चित्रवर्णैर्बभौकृष्णायथोष्णिङ्मुद्रितातथा ॥ मृदंगतालैर्मधुरध्वनिस्वनैर्जगुर्यशस्तामधुसूदनस्य ॥ प्रापुर्मुदंपूर्णमनोरथाश्चलत्प्रसूनहाराहरिणागतव्यथाः ॥ ३९ ॥ श्रीहस्तसंताडितवारिबिंदुभिःस्फारासमस्फूर्जितशीकरच्छुभिः ॥ वृन्दावनेशोव्रजसुंदरीभीरेजेगजीभिर्गजराडिवस्वयम् ॥ ४० ॥

तब सबही मनोहर गोपी गावती और नाचती ॥३६॥ श्रीकृष्णकी मूर्तिनके संग ऐसी शोभित भयी जैसे इंद्रके संगमें देवांगनानकी शोभा होयहै, यमुनाके किनारपै मधुसूदनने ऐसे श्रेष्ठ विहार कीनो ॥ ३७ ॥ तब सब गोपीगणनके सग श्रीकृष्ण ऐसे शोभाकूं प्राप्त भये जैसे यक्षणीनके संग विहार करतो कुबेर शोभित होय है, तब कबरी और केशपाशते गिरे जे शुभ ॥ ३८ ॥ चित्र विचित्र फूल तिनके यमुनाजीकी बंधी पगड़ीकी शोभा भई, तब मृदंग मजीरानकी मनोहर धुनिके सग वे गोपी मधुसूदनके यशकूं गामती भई परम आनन्दकूं प्राप्त भई पूर्ण मनोरथ भये, फूलनके हारनको पहरे वे गोपी श्रीकृष्णके संग सोगई है व्यथा जिनका ऐसी होतीभई ॥ ३९ ॥ महारासको परिश्रम दूरि करिवेकूं यमुनाजलमें जलक्रीड़ा करनलगे, शोभायमान राधिकाके वा ललितादिक गोपीनके हाथनते फेंकी जे जलबिंदु और फुहारेके समान बूंद जिनके मुखपै ऐसी व्रजसुंदरीके संग रमण करते श्रीकृष्ण

ऐसे शोभित भये जैसे हथिनीनके संग हाथी शोभित होय है ॥ ४० ॥ विद्याधरी, देव, गंधर्वनकी स्त्री विमाननमें बैठी वा रासरंगको तमासो देखि रही ही, सो अपने २ पतिन सहित फूलनकी वर्षा करती मोहकूं प्राप्त हैगई, नाडे जिनके सिथल हगये और शरीरनपैसो वस्त्र उतरपरे ॥ ४१ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां वृंदावनखंडे भाषाटीकायां रासक्रीडावर्णनं नाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ नारदजी कहे हे-याके अनंतर श्रीकृष्ण जलविहार लीलाकूं करिके सब गोपिनके गणनकूं संग लेके गोवर्द्धन पर्वतकूं गये ॥ १ ॥ गोवर्द्धनकी कंदरामें जहां रत्नमय भूमि है तहां रासेश्वरी राधिकाके संग स्वयं आप नृत्य करते भये ॥ २ ॥ फेरि रास करिके दोनों रत्नसिंहासनपै बैठे, तब सखीजननने शृंगार कीनों तब पर्वतके ऊपर घनमें बीजुलीकी तरह शोभा भई ॥ ३ ॥ तब फिर स्वामिनीको शृंगार आनंदते सखीजननें चंदन, केसर, कस्तूरी, अतर, अरगजा, महदी, महावर, अंजन, रोली,

विद्याधर्योदेवगंधर्वपत्न्यःपश्यन्त्यस्तद्रासरंगंदिविस्थाः ॥ देवैःसार्द्धंचक्रिरेपुष्पवर्षंमोहंप्राप्ताःप्रश्लथद्वस्त्रनीव्यः ॥ ४१ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायांवृन्दावनखण्डेरासक्रीडानामषोडशोऽध्यायः ॥१६॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ अथकृष्णोहरिर्वारिलीलांकृत्वामनोहरः ॥ सर्वैर्गोपीगणैःसार्द्धंगिरिंगोवर्धनंययौ ॥ १ ॥ गोवर्धनेकन्दरायांरत्नभूम्यांहरिःस्वयम् ॥ रासंचराधयासार्द्धंरासेश्वर्याचकारह ॥ २ ॥ तत्रसिंहासनेरम्येतस्थतुःपुष्पसंकुले ॥ तडिद्घनाविवगिरौराधाकृष्णौविरेजतुः ॥ ३ ॥ स्वामिन्यास्तत्रशृंगारंचक्रुःसख्योमुदान्विताः ॥ श्रीखण्डकुंकुमाद्यैश्चयावकागुरुकज्जलैः ॥ ४ ॥ मकरन्दैःकीर्तिसुतांसमभ्यर्च्यविधानतः ॥ ददौश्रीयमुनासाक्षाद्राधायैनूपुराण्यलम् ॥ ५ ॥ मंजीरभूषणंदिव्यंश्रीगंगाजह्नुनन्दिनी ॥ श्रीरमाकिंकिणीजालंहारंश्रीमधुमाधवी ॥ ६ ॥ चन्द्रहारंचविरजाकोटिचन्द्रामलंशुभम् ॥ ललिताकंचुकंमणिंविशाखाकण्ठभूषणम् ॥ ७ ॥ अंगुलीयकरत्नानिददौचन्द्राननातदा ॥ एकादशीराधिकायैरत्नाढ्यंकंकणद्वयम् ॥ ८ ॥ भुजकंकणरत्नानिशतचन्द्राननाददौ ॥ तस्यैमधुमतीसाक्षात्स्फुरद्रत्नांगदद्वयम् ॥ ९ ॥ ताटंकयुगलंवंदीकुंडलेसुखदायिनी ॥ आनन्दीयासखीमुख्याराधायैभालतोरणम् ॥ १० ॥ पद्मासद्भालतिलकबिन्दुंचन्द्रकलंददौ ॥ नासामौक्तिकमालोलंददौपद्मावतीसती ॥ ११ ॥

सिंदूरसों कियो है ॥ ४ ॥ फिर श्रीवृषभानुनंदिनीको विधिसो अतरते छिरकके श्रीयमुनाजीने मणिमय नूपुर पहिराये हैं ॥ ५ ॥ दिव्य बीछिया जह्नुनंदिनी श्रीगंगाजीने पहराये, रमाने कोंधनीनको जाल पहरायो और मधुमाधवीने हार पहरायो ॥ ६ ॥ विरजाने चंद्रहार दीनों जामें किरोडन चंद्रमा झलकें हैं, ललिताजीने मणिजटित अंगिया दीनी, विशाखाने गुलीचंद पाटिया आदि कंठभूषण दीने ॥ ७ ॥ छल्ला, अंगूठी, आरसी, मुदरी, ये चंद्राननाने दीने, एकादशीने रत्नके जडे दो कंकण दीने ॥ ८ ॥ भुजानके कंकण, पहुंची शतचंद्राननाने दीने; मधुमतीने मणिमय दो चड़ा बाजू दीने ॥ ९ ॥ सुखदेनवारी वंदीने दो ताटंक और दो कुंडल दीने, आनंदी जो मुख्य सखी ही ताने श्रीराधाजीको माथेकी झौर दीनी ॥ १० ॥ पद्मा सखीने चन्द्रकलाके समान मस्तककी शोभा करनहारी बेंदी दीनी और पद्मावती सतीने

बेसर दीनी ॥ ११ ॥ बालसूर्यकोसो तेज जामें ऐसो शिरफूल अति शोभायमान उत्तम सखी चंद्रकांताने दीनों ॥ १२ ॥ सुंदरीने चूडामणी दीने, प्रहर्षिणीने रत्नवेणी दीनी और चंद्र सूर्य नामके गहने किरोड़ विजलीसी जिनमें चमक ॥ १३ ॥ ये आभूषण वृंदावनेश्वरी वृंदादेवीने राधिकाजीकूं दीने ऐसे शृंगारते राधा कृष्णके रूपकी झलम लानते चकाचोंधके मारे रूपपे काहूकी नजर नहीं ठैरैहै ॥ १४ ॥ तब गिरिराज गोवर्धनपे ऐसी शोभा भई जैसे दक्षिणापत्नीसो यज्ञ नामके भगवान् शोभित होयहै ॥ १५ ॥ वा दिनसो गोवर्द्धनमे शुद्ध शृंगारस्थल कहावै है, तब फेरि श्रीकृष्ण प्यारी गोपीनकूं संग लैके चंद्रसरोवरकूं चलेगये ॥ १६ ॥ ता चंद्रसरोवरमें जलक्रीड़ा करी जैसो हथिनी नते हाथी करैहै, तहां चंद्रमाने आय दो चंद्रकांतिमणि राधिकाजीकूं दीनी ॥ १७ ॥ हजार २ दलके दो कमल एक राधाजीकूं एक श्रीकृष्णकूं चंद्रमाने दीने, तब श्रीकृष्ण

बालार्कद्युतिसंयुक्तंभालपुष्पंमनोहरम् ॥ श्रीराधायैददौराजंश्चंद्रकान्तासखीशुभा ॥१२॥ शिरोमणिंसुन्दरीचरत्नवेणींप्रहर्षिणी ॥ भूषणेचन्द्र सूर्याख्येविद्युत्कोटिसमप्रभे १३ ॥ राधिकायैददौदेवीवृन्दावृन्दावनेश्वरी ॥ एवंशृंगारसंस्फूर्जद्रूपयाराधयाहरिः ॥ १४ ॥ गिरिराजेबभौरा जन्यज्ञोदक्षिणयायथा ॥ यत्रैराधयारासेशृंगारोऽकारिमैथिल ॥ १५ ॥ तत्रगोवर्द्धनेजातंस्थलंशृंगारमंडलम् ॥ अथकृष्णःस्वप्रियाभिर्ययौ चन्द्रसरोवरम् ॥ १६ ॥ चकारतज्जलेक्रीडांगजीभिर्गजराडिव ॥ तत्रचन्द्रःसमागत्यचन्द्रकान्तौमणीशुभौ ॥ १७ ॥ सहस्रदलपद्मेद्वेस्वामि न्यैहरयेददौ ॥ अथकृष्णोहरिःसाक्षात्पश्यन्वृन्दावनश्रियम् ॥ १८ ॥ प्रययौबाहुलवनंलताजालसमन्वितम् ॥ तत्रस्वेदसमायुक्तंवीक्ष्यसर्वं सखीजनम् ॥ १९ ॥ रागंतुमेघमल्लारंजगौवंशीधरःस्वयम् ॥ सद्यस्तत्रैववव्रृषुर्मेघाअंबुकणांस्तथा ॥ २० ॥ तदैवशीतलोवायुर्ववौगन्ध मनोहरः ॥ तेनगोपीगणाःसर्वेसुखंप्राप्ताविदेहराट् ॥ २१ ॥ जगुर्यशःश्रीमुरारेरुच्चैस्तत्रसमन्विताः ॥ तस्मात्तालवनंप्रागाच्छ्रीकृष्णोरा धिकापतिः ॥ २२ ॥ रासमंडलमारेभेगायन्व्रजवधूवृतः ॥ तत्रगोपीगणाःसर्वेस्वेदयुक्तास्तृषातुराः ॥ २३ ॥ ऊचूरासेश्वरंरासेकृतांजलिपुटाः शनैः ॥ ॥ गोप्यऊचुः ॥ ॥ दूरेवैयमुनादेवतृषाजातापरंहिनः ॥ २४ ॥ कर्तव्यंभवताऽत्रैवरासंदिव्यंमनोहरम् ॥ वारांविहारंपानंचकरि ष्यामोहरेवयम् ॥२५॥ जगत्कर्तापालकस्त्वंसंहारस्यापिनायकः ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ तच्छ्रुत्वावेत्रदण्डेनकृष्णोभूमिंतताडह ॥२६॥

वृन्दावनकी शोभा देखते २ ॥ १८ ॥ बहुलावनमें गये जामें बड़े लतानके जाल हैं, तहां सब सखीनकूं पसीना आयगयो ॥ १९ ॥ तब तो वंशीधर श्रीकृष्ण मेघमल्लार राग गामन लगे, तबही मेघ घिरआये नन्ही २ फुहार परनेलगी ॥ २० ॥ ताही समय शीतल सुगंधित मंद मंद पवन चलनलगी, तासे हे विदेहराट् सब सखीगण सुखी हैगये ॥ २१ ॥ तब वे सब सखी जन वहां ऊंचे स्वर करके श्रीकृष्णको यश गामनलगी, वहांते राधिकापति श्रीकृष्ण तालवनकूं गये॥ २२ ॥ तहां फिर व्रजवधूनके संग गान करते श्रीकृष्णने रास करनेको आरंभ कियो तब रास करत २ व्रजवधूनके पसीना आयगयो और प्याससो आतुर भई ॥ २३ ॥ तवही रासमें रासेश्वर जे श्रीकृष्ण तिनते हाथ जोरके होले होले यह बोलीं हे देव ! यमुना तो दूर है और हमे प्यास बहुत लगिआई है ॥ २४ ॥ यासों यहांही आपकूँ रासविहार कर्तव्य है मनोहर जलको विहार जलको पान कर्तव्य है हमहू करेंगी ॥ २५ ॥ जगत्के कर्ता, जगत्के

पालक, जगत्को संहार ताके नायक तुमही हो नारदजी कहें हैं कि, हे मैथिल! ऐसे सुनिके श्रीकृष्णने एक बेत पृथ्वीमें मारयो ॥ २६ ॥ तहांते स्रोता निकस्यो है वेत्रगङ्गा जाको नाम कहे हे जाके जलके स्पर्श करिके ब्रह्महत्या नाश हैजाय है ॥ २७ ॥ ताके जो स्नान करै वो नर गोलोककूं प्राप्त होयहै, तामें राधिकाके संग गोपीनके संग ॥ ॥ २८ ॥ मदनमोहन जलविहार करन लगे, ताके अनंतर लतानके समूह जामें ता कुमुदवनमें आये ॥ २९ ॥ ता वनमें बड़ी फूलनकी सुगंधि, तहां भौंरानके झुंडनके झुंड गुजारें है, तहां सखीजनके संग रास कीनो, तहां राधिकाजीने श्रीकृष्णको शृंगार कीनों ॥ ३० ॥ तब नाना प्रकारके दिव्य पुष्प और फल, फूल, पत्ता, चिरमिटी इनते श्रीकृष्णने व्रजवासिनीनके चमकती उज्ज्वल फेट बनाई, सोनजुहीके सुन्दर सुन्हेरा बाजू बनाये ॥ ३१ ॥ हजारा कमलके फूलकी बीचकी कली बीचमें लगायके मोहन माला और कुन्द,

तदैवनिर्गतःस्रोतोवेत्रगंगेतिकथ्यते ॥ तज्जलस्पर्शमात्रेणब्रह्महत्याप्रमुच्यते ॥ २७ ॥ तत्रस्नात्वानरःकोपिगोलोकंयातिमैथिल ॥ गोपीभीराधयासार्द्धंश्रीकृष्णोभगवान्हरिः ॥ २८ ॥ वारांविहारंकृतवान्देवोमदनमोहनः ॥ ततःकुमुद्वनंप्राप्तोलतावृन्दमनोहरम् ॥ २९ ॥ भ्रमरध्वनिसंयुक्तंचक्रेरासंसखीजनैः ॥ राधातत्रैवशृंगारंश्रीकृष्णस्यचकारह ॥ ३० ॥ पुष्पैर्नानाविधैर्द्रव्यैःपश्यन्तीनांव्रजौकसाम् ॥ चम्पकोद्यत्परिकरःस्वर्णयूथिभुजांगदः ॥ ३१ ॥ सहस्रदलराजीवकर्णिकाविलसच्छ्रुतिः ॥ मोहिनीमालिनीकुंदकेतकीहारभृद्धरिः ॥ ३२ ॥ कदम्बपुष्पविलसत्किरीटकटकोज्ज्वलः ॥ मन्दारपुष्पोत्तरीयःपद्मयष्टिधरःप्रभुः ॥ ३३ ॥ तुलसीमंजरीयुक्तवनमालाविभूषितः ॥ एवंशृंगारतांप्राप्तःश्रीकृष्णःप्रिययास्वया ॥ ३४ ॥ बभौकुमुद्वनेराजन्वसन्तोहर्षितोयथा ॥ मृदंगवीणावंशीभिर्मुरुयष्टिसुकांस्यकैः ॥ ३५ ॥ तालशैपैस्तलैर्युक्ताजगुर्गोप्योमनोहरम् ॥ भैरवंमेघमल्लारंदीपकंमालकौशकम् ॥ ३६ ॥ श्रीरागंचापिहिन्दोलंरागमेवंपृथक्पृथक् ॥ अष्टतालैस्त्रिभिर्ग्रामैःस्वरैःसप्तभिरग्रतः ॥ ३७ ॥ नृत्यैर्नानाविधैरम्यैर्हावभावसमन्वितैः ॥ तोषयन्त्योहरिंराधांकटाक्षैर्व्रजगोपिकाः ॥ ३८ ॥ गायन्मधुवनंप्रागात्सुंदरीगणसंवृतः ॥ रासेश्वर्यारासलीलांचक्रेरासेश्वरःस्वयम् ॥ ३९ ॥

केतकी, कनेरके हार श्रीकृष्णकूं पहराये ॥ ३२ ॥ कदंबके पुष्पनके किरीट, मुकुट, कुंडल, कंकण, पहराये, कल्पवृक्षनके फूलको दुपट्टा, कमलके फूलनकी छड़ी ॥ ३३ ॥ तुलसीकी मंजरीको वनमाला पहराई, ऐसो शृंगार प्यारी राधिकाने श्रीकृष्णको कीनो ॥ ३४ ॥ हे राजन्! तब कुमुदवनमें श्रीकृष्णकी ऐसी बडी शोभा भई जैसे हर्षित वसंतऋतु फूले है, मृदंग बजन लगे, वीणा बजन लगे, और वेणु, बांसुरी, मजीरा, मोहचंग, झांझ, बजन लगी ॥ ३५ ॥ गोपी ताल बजावन लगी, और मनोहर ९ राग गावन लगी भैरव, मेघमल्लार, दीपक राग, मालकोश ॥ ३६ ॥ श्रीराग, हिंडोल राग न्यारी २ गातिते आठ ताल, तीन ग्राम, सात स्वरनते गामें हैं ॥ ३७ ॥ मनोहर हाव भावते सुंदर नृत्य करैंहैं, श्रीकृष्णकूं और राधिकाजीकूं अपने कटाक्षनते प्रसन्न करै है ॥ ३८ ॥ फेरि श्रीकृष्ण गान करते सुंदरीनके गणनकूं संग लेके मधुवनकूं आये, तहां रासेश्वरीके संग रासेश्वर श्रीकृष्ण रासलीला करत

भये ॥३९॥ वैशाखकी पूर्णमासीकूं जा मधुवनमें मालतीकी सुंगध चली आवें हैं, कमलके फूलनके केसरनके रज उड़ें हैं ॥ ४० ॥ फूले जे मालतीके झंड तिनते शोभित निर्जन
मधुवनमें गोपीगणनते श्रीकृष्ण रमत भये जैसे नंदनवनके विषे अप्सरानते इंद्र रमे है तैसे रमत भये ॥ ४१ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां वृंदावनखंडे भाषाटीकायां
रासक्रीडावर्णनं नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ नारदजी कहैं हैं या प्रकार श्रीकृष्ण मनोहर कुन्दवनमें, सुन्दर मालतीके वनमें, आमनके वनमें, नारंगीके
वनमें, नीबूनके वनमें ॥१॥ अनारनके वनमें, दाखनके वनमें, बादामनके वनमें, कदंबनके वनमें, नारियलनके वनमें, कुड़ाके वनमें ॥ २ ॥ वटवनमें, कटहरनके वनमें, पीपरनके
वनमें, तुलसीके वनमें, कचनारके वनमें, केतकीके वनमें, केलानके वनमें ॥ ३ ॥ करीलवनमें, कुंजवनमें, बकायनके वनमें, कल्पवृक्षनके वनमें, विचरत २ व्रजवधूनके संग कामवनमें

वैशाखचन्द्रकौमुद्यांमालतीगन्धवायुना ॥ स्फुरत्सौगन्धकल्हारपतद्रेणुकरेणवै ॥ ४० ॥ विकचन्माधवीवृन्दैःशोभितेनिर्जनेवने ॥ रेमे
गोपीगणैःकृष्णोनन्दनेवृत्रहायथा ॥ ४१ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांवृन्दावनखण्डेरासक्रीडानामसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ ॥ नारद
उवाच ॥ ॥ इत्थंकुन्दवनेरम्येमालतीनांवनेशुभे ॥ आम्राणांनागरंगाणांनिंबूनांसघनेवने ॥ १ ॥ दाडिमीनांचद्राक्षाणांबदामा
नांवनेनृप ॥ कदम्बानांश्रीफलानांकुटजानांतथैवच ॥ २ ॥ वटानांपनसानांचपिप्पलानांवनेशुभे ॥ तुलसीकोविदाराणांकेतकीकदलीव
ने ॥ ३ ॥ करिल्लकुंजबकुलमंदाराणांवनेहरिः ॥ चरन्कामवनंप्रागाद्राजन्व्रजवधूवृतः ॥ ४ ॥ तत्रैवपर्वतेकृष्णोननादमुरलीकलम् ॥
मूर्च्छिताविह्वलाजातास्तन्नादेनव्रजांगनाः ॥ ५ ॥ मनोजबाणभिन्नांगाःश्लथन्नीव्यःसुरैःसह ॥ कश्मलंप्रययूराजन्विमानेष्वमरांगनाः ॥६॥
चतुर्विधाजीवसंघाःस्थावरैर्मोहमास्थिताः ॥ नद्योनदाःस्थिरीभूताःपर्वताद्रवतांगताः ॥ ७ ॥ तत्पादचिह्नसंयुक्तोगिरिःकामवनेभवत् ॥
तस्यदर्शनमात्रेणनरोयातिकृतार्थताम् ॥ ८ ॥ अथगोपीगणैःसाकंश्रीकृष्णोराधिकापतिः ॥ नंदीश्वरबृहत्सानुतटेरासंचकारह ॥९॥ तत्रगो
प्योतिमानिन्योबभूवुर्मैथिलेश्वर ॥ तास्त्यक्त्वाराधयासार्धंतत्रैवान्तर्दधेहरिः ॥ १० ॥ गोप्यश्चसर्वाविरहातुराभृशंकृष्णंविनामैथिलनिर्जने
वने ॥ तावत्रमुश्चाश्रुकलाकुलाक्ष्योयथाहरिण्यश्चकिताइतस्ततः ॥ ११ ॥

आवत भये ॥४॥ तहां पर्वतके ऊपर श्रीकृष्णने मधुर मुरली बजाई, ताके नादते व्रजांगना आनंदमें विह्वल हैगई ॥५॥ मूर्च्छित हैगई, कामदेवके बाणनकी मारी देवांगना विमाननमें
बैठी मूर्च्छित हैगई, नाड़े इनके खुलगये और विमाननमें बैठे देवताऊ मोहकूं प्राप्त हैगये ॥ ६ ॥ चार प्रकारके जीवनके समूह स्थावर जंगम मोहकूं प्राप्त हैगये, नदी, नद थिर हैगये,
पर्वत पिघलन लगे ॥ ७ ॥ तहां श्रीकृष्ण चरणको चिह्नसों युक्त कामवनके पर्वतमें हैगयो ताते चरणपहाड़ी कहैहैं ताके दर्शनमात्रतेही मनुष्य कृतार्थ होय है ॥ ८ ॥ ताते
पीछे राधिकाके पति नन्दगामके पर्वतपै गोपीगणनके संग रास करतभये ॥ ९ ॥ हे मैथिलेश्वर ! तहां गोपी अति मानवती हैगई तिनकूं छोड़िके राधिकाकूं संग लेके हरि
भगवान् वहीं अन्तर्धान हैगये ॥ १० ॥ तब तो सब गोपी विरहमें आतुरी हैके श्रीकृष्ण विना वा निर्जन वनमें भ्रमन लगी, आंसू नेत्रनमें आय गये, हिरनीनकी नाईं इत

चित चोंकन लगी ॥ ११ ॥ श्रीकृष्णके देखेबिना जैसे वनमें हाथी विना हथिनी डोले है, जैसे कुररी कुररकूं देखे है तैसेही सवरी व्रजांगना अत्यन्त विरहमें आतुरी हैके
रोमनलगी ॥ १२ ॥ उन्मत्तकी नाई सबरी न्यारी २ वन २ में झुंडके झुंड पेड़नते, लतानते नन्दनन्दनकूं पूछन लगी कि, हे व्रजके वृक्ष हो ! श्रीनंदनंदन कहा विराजे है
सो हमसो कहौ ॥ १३ ॥ श्रीकृष्ण २ ऐसे पुकारें है, श्रीकृष्णके चरणकमलमें जिनको मन लग रह्यौ है, हे राजन ! ऐसी वे गोपी कृष्णमय हैगई, ये बात कुछ आश्चर्य नही है जैसे
भृंगीको मूंद्यो कीड़ा भृंगी हैजाय है ॥ १४ ॥ ऐसेही श्रीकृष्णके पादुकाकी नीचे रहनवारी गोपी वे श्रीकृष्णकी पादुकानेही शरणप्राप्ति हैगई ॥ १५ ॥ ताके अनन्तर वाही कृष्णके
अनुग्रहसों वाहीके चरणचिह्नके दर्शन पूजनते वा समय वहां गोपी श्रीकृष्णके चरणकरिके चिह्नित पृथ्वीकूं देखत भई ॥ १६ ॥ वीचमेंई राजा पूछे है—हे प्रभो ! राधाके ईश राधा

कृष्णंह्यपश्यन्त्यइतिव्यथांगतायथाकरिण्यःकरिणंविनावने ॥ यथाकुरर्य्यःकुररंव्रजांगनाःसर्वारुदन्त्योविरहातुराभृशम् ॥१२॥ उन्मत्तवद्वृक्षल
तकदम्बकंसर्वामिलित्वाचपृथग्वनेवने ॥ पप्रच्छुराजन्नृपनंदनंदनंक्वस्थितंतंवदताशुभूरुहाः ॥ १३ ॥ श्रीकृष्णकृष्णेतिगिरावदन्त्यःश्री
कृष्णपादाम्बुजलग्नमानसाः ॥ श्रीकृष्णरूपास्तुबभूवुरंगनाश्चित्रंनपेशस्कृतमेत्यकीटवत् ॥ १४ ॥ श्रीपादुकाधःस्थलगापिगोप्यःश्रीपा
दुकाब्जंशरणंप्रपन्नाः ॥ १५ ॥ ततस्तुतत्प्रसादेनतत्पादार्चनदर्शनात् ॥ ददृशुर्गांतदागोप्योभगवत्पादचिह्निताम् ॥ १६ ॥ ॥ बहुलाश्व
उवाच ॥ ॥ राधेशोराधयासार्धंहित्वागोपीर्ययौक्वभोः ॥ तद्दर्शनंकथंजातंगोपीनांवदमेप्रभो ॥ १७ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥
श्रीकृष्णोराधयासार्द्धंसंकेतवटमाविशत् ॥ प्रियायाःकबरीपुष्परचनांसचकारह ॥ १८ ॥ श्रीकृष्णकुन्तलेनीलेवक्रत्वंराधिकाकरोत् ॥
चित्रपत्रावलीःकृष्णापूर्णेन्दुमुखमण्डले ॥ १९ ॥ एवंकृष्णोभद्रवनंखदिराणांवनंमहत् ॥ बिल्वानांचवनंपश्यन्कोकिलाख्यंवनंगतः ॥
॥ २० ॥ गोप्यःकृष्णंविचिन्वन्त्योददृशुस्तत्पदानिच ॥ यवचक्रध्वजच्छत्रैःस्वस्तिकांकुशबिन्दुभिः ॥ २१ ॥ अष्टकोणेनवज्रेणपद्मेनाभि
युतानिच ॥ नीलशंखघटैर्मत्स्यत्रिकोणेषूर्ध्वधारकैः ॥ २२ ॥ धनुर्गोखुरचन्द्रार्द्धशोभितानिमहात्मनः ॥ तत्पदान्यनुसारेणव्रजन्त्योगोपि
कास्ततः ॥ २३ ॥ तद्रजःसततंनीत्वाधृत्वामूर्ध्निव्रजांगनाः ॥ पदान्यन्यानिददृशुरन्यचिह्नान्वितानिच ॥ २४ ॥

सहित सब गोपीनकूं छोड़िके कहां चलेगये ? फिर उन गोपीनकूं उनको कैसे दर्शन भयो ? ये मोसे कहो ॥ १७ ॥ नारदजी कहें हैं—श्रीकृष्ण राधिकाकूं संग लेके संकेत
वटकूं गये तहां राधिकाजीकी वेनी फूलनसों गुही ॥ १८ ॥ और राधिकाजी श्रीकृष्णके केशनकूं घूंघरवारे छल्लादार बनाय पूर्ण चन्द्रमासे मुखमें चित्रभंगी रचना करती भई
॥ १९ ॥ ऐसेही श्रीकृष्ण भद्रवन, खदिरवन, बिल्ववनकूं देखत २ कोकिलावनकूं गये ॥ २० ॥ गोपीनने श्रीकृष्णकूं ढूंढ़ती २ उनके चरणचिह्न फेर देखे चक्र, जौ, ध्वजा,
छत्र, स्वस्तिक और अंकुश, बिन्दु इन चिह्ननते युक्त देखे ॥२१॥ अष्टकोण, वज्र, पद्म, नील, शंख, कुम्भ, मत्स्य त्रिकोण, बाण, ऊर्द्धरेखा, ॥ २२ ॥ धनुष, गोखुर, अर्द्धचन्द्र ये
श्रीकृष्णके चरणचिह्न देखे, इन चरणचिह्ननकूं देखत २ गोपी आगे चलीं ॥ २३ ॥ गोपीजननने उन चरणनकी रजकूं उठायके मस्तकपे चढ़ाय लीनी, आगे चलके उन्ही

चरणचिह्नमें मिले औरहू चरण औरही जिनमें चिह्न पे देखे ॥ २४ ॥ तिने कहै हैं ध्वजा, कमल, छत्र, यव, ऊर्द्धरेखा, चक्र, चन्द्रार्द्ध और अंकुश, बिन्दु, इनसों शोभित हैं ॥
॥ २५ ॥ लौंगकी लता, गदा, मत्स्य, शंख, पर्वत, शक्ति ॥ २६ ॥ सिंहासन, रथ, दो बिंदु ये उन्नीस चिह्न देखिके यह बोली कि, सुनौ सखी हो ! राधिकाके संग नन्दनन्दन
गये ॥ २७ ॥ इन चरणनकूँ देखत २ कोकिलावनकूं गई, गोपीनको कोलाहल सुनिके श्रीकृष्ण राधिकाते बोले ॥ २८ ॥ हे कोटिचंद्रप्रकाशे ! हे प्रिये ! हे राधे ! जलदी चलौ
सबरी गोपी आमें हैं, ये सब औरते घेरिके तुमें लेजायँगी ॥ २९ ॥ ऐसे सुनि राधाहू मानवती ह्वैके रमापतिते बोली कैसीहै कि, रूप, यौवन, चतुराई, शील, गर्व इनकी भरी
है ॥ ३० ॥ प्यारे ! मेरी तो चलिवेकी सामर्थ्य नहीं है, कबहूं घरते बाहिरहू नहीं निकसीहूं, सुकुमारी हूं, पसीना आयरहे है, हे प्यारे ! मोकूँ कैसे लेचलौगे ॥ ३१ ॥ नारदजी कहै

केतुपद्मातपत्रैश्चयवेनाथोर्ध्वरेखया ॥ चक्रचन्द्रार्द्धांकुशकैर्बिन्दुभिःशोभितानिच ॥ २५ ॥ लवंगलतिकाभिश्चविचित्राणिविदेहराट् ॥ गदा
पाठीनशंखैश्चगिरिराजेनशक्तिभिः ॥२६॥ सिंहासनरथाभ्यांचबिन्दुद्वययुतानिच ॥ वीक्ष्यप्राहूराधिकयागतोसौनंदनंदनः ॥२७॥ पश्यन्त्य
स्तत्पादपद्मंकोकिलाख्यंवनंगताः ॥ गोपीकोलाहलंश्रुत्वाराधिकांप्राहमाधवः ॥ २८ ॥ कोटिचंद्रप्रतीकाशेराधेसर्पत्वरंप्रिये ॥ आगतागोपि
काःसर्वास्त्वांनेष्यन्तिहिसर्वतः ॥२९॥ तदामानवतीराधाभूत्वाप्राहरमापतिम् ॥ रूपयौवनकौशल्यशीलगर्वसमन्विता ॥ ३० ॥ ॥ राधो
वाच ॥ ॥ चलितुंनसमर्थाहंमन्दिरान्नविनिर्गता ॥ सुकुमारीस्वेदयुक्ताकथंमांनयसिप्रिय ॥ ३१ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इतिवाक्यं
ततःश्रुत्वाश्रीकृष्णोराधिकेश्वरः ॥ पीताम्बरेणदिव्येनवायुंतस्यैचकारह ॥ ३२ ॥ हस्तंगृहीत्वातामाहगच्छराधेयथासुखम् ॥ कृष्णेनापित
दाप्रोक्तानययौतेनवैपुनः ॥ ३३ ॥ पृष्ठंदत्त्वाथहरयेतूष्णींभूतास्थितापुनः ॥ प्रियांमानवतींराधांप्राहकृष्णःसतांप्रियः ॥ ३४ ॥ ॥ श्रीभग
वानुवाच ॥ ॥ विहायगोपीरिहकामयानाभजाम्यहंमानिनिचेतसात्वाम् ॥ यत्तेप्रियंतत्प्रकरोमिराधेमेस्कन्धमारुह्यसुखंव्रजाशु ॥ ३५ ॥
॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवंप्रियांप्रियतमःस्कन्धयानेप्सितांनृप ॥ विहायान्तर्दधेकृष्णोस्वच्छन्दगतिरीश्वरः ॥३६॥ गतमानाकीर्तिसुताभग
वद्विरहातुरा ॥ उच्चैरुरोदराजेन्द्रकोकिलाख्येवनेपरे ॥३७॥ तदैवयूथाःसंप्राप्तागोपीनांमैथिलेश्वर ॥ तद्रोदनंदुःखतरंश्रुत्वाजग्मुस्तपातुराः॥३८॥

हैं ऐसें राधिकाको वचन सुनिकै श्रीकृष्ण दिव्य पीतांबरते व्यार करनलगे ॥ ३२ ॥ हाथमें हाथ पकड़कै यह बोले हे प्यारी ! जैसे चल्यौजाय तैसे चलो, ऐसे कृष्णने कहीहू पन तोऊ
फिर उनके संग नहीं चली ॥ ३३ ॥ और श्रीकृष्णकूँ पीठि देके फिर चुप ठाढ़ी ह्वैगई, तब प्यारीकूँ मानवती देखिके सन्तनके प्यारे भगवान् यह बोले ॥ ३४ ॥ कि, हे मानिनि ! चाह करनवारी सब
गोपीनकूं छोड़िके बडे प्यारते तोकूँ मैं अपने चित्तते लोहि भजोहूँ याहीसे लेआयोहूँ जो तोकूँ अच्छो लगै सोई करूँहूं तुम मेरे कंधापै बैठिके सुखपूर्वक जलदीसों चलोचलो ॥ ३५ ॥ नारदजी कहै है
ऐसे प्यारे प्यारीते कहिके जब कंधापे चढिवेकूं उद्यत भयी तबही श्रीकृष्ण अंतर्धान ह्वैगये प्रभुकी इच्छारूप गति है याहीसें ईश्वर है ॥ ३६ ॥ तब तो गतभयो मान जाको ऐसी
कीर्तिसुता भगवानके विरहमे आतुर ह्वैगई, हे राजेंद्र ! वा कोकिलावनमें ऊंचे स्वरते रोमन लगी ॥ ३७ ॥ हे मैथिलेश्वर ! तबही सब गोपीनके यूथ दयाते आतुर ह्वैके वहीं

चले आये, जब प्यारीको अत्यन्त रोदन सुन्यो और अत्यंत लज्जित भई तब ॥ ३८ ॥ कोई तो अपनी स्वामिनीको अतरनते न्हवावन लगी, कोई चन्दन, अगर, केशर, कस्तूरी के घिसे अरगजासों लेपटन लगी और छींटा देनलगी ॥ ॥ ३९ ॥ कोई चमर बीजननते हवा करनलगी और खुसामद करनेमें चतुरा कोई वाणीनते समझावन लगी ॥ ४० ॥ और कोई गोपी अरी सखी हो ! मैने वा कृष्ण महात्माते कीयो जो मान वाको ये फल पायो या बातको वाहीके मुखसों सुनिके अति अचंभो करनलगी ॥ ४१ ॥ इति श्रीगर्गसंहितायां वृंदावनखंडे भाषाटीकायां रासवर्णनं नामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ नारदजी कहें हैं—अब सब सखी मिलिके श्रीकृष्णके रम्य जे गुण हैं तिन्हें रम्य स्वरतालते श्रीकृष्णके आयवेको लिये गामन लगी ॥ १ ॥ गोपी बोली कि, हे लोकाभिराम ! हे जनभूषण ! हे विश्वदीपक ! हे मदनमोहन ! हे जगतके आर्ति और दुःखनके हारी ! हे आनन्दकन्द ! हे

काश्चित्तांमकरन्दैश्चस्नापयांचक्रुरीश्वरीम् ॥ चन्दनागुरुकस्तूरीकुंकुमद्रवसीकरैः ॥ ३९ ॥ वायुंचक्रुस्तदंगेषुव्यजनान्दोलचामरैः ॥ आश्वास्य वाग्भिःपरमांनानाऽनुनयकोविदैः ॥ ४० ॥ तन्मुखान्मानिनोमानंश्रुत्वाकृष्णस्यगोपिकाः ॥ मानवत्योमैथिलेन्द्रविस्मयंपरमंययुः ॥ ४१ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायांवृन्दावनखण्डेरासक्रीडानामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ अथकृष्णगुणान्रम्यान्समेताःसर्वयोषितः ॥ जगुस्तालस्वरैरम्यैःकृष्णागमनहेतवे ॥ १ ॥ ॥ गोप्यऊचुः ॥ ॥ लोकाभिरामजनभूषणविश्वदीपकन्दर्पमोहनजगद्वृजिनार्तिहारिन् ॥ आनन्दकन्दयदुनन्दननन्दसूनोस्वच्छन्दपद्ममकरन्दनमोनमस्ते ॥ २ ॥ गोविप्रसाधुविजयध्वजदेववन्द्यकंसादिदैत्यवधहेतुकृतावतार ॥ श्रीनन्दराजकुलपद्मदिनेशदेवदेवादिमुक्तजनदर्पणतेजयोऽस्तु ॥ ३ ॥ गोपालसिन्धुपरमौक्तिकरूपधारिन्गोपालवंशगिरिनीलमणेपरात्मन् ॥ गोपालमण्डलसरोवरकंजमूर्तेगोपालचन्दनवनेकलहंसमुख्य ॥ ४ ॥ श्रीराधिकावदनपंकजषट्पदस्त्वंश्रीराधिकावदनचन्द्रचकोररूपः ॥ श्रीराधिकाहृदयसुन्दरचन्द्रहारःश्रीराधिकामधुलताकुसुमाकरोसि ॥ ५ ॥ योरासरंगनिजवैभवभूरिलीलोयोगोपिकानयनजीवनमूलहारः ॥ मानंचकाररहसाकिलमानवत्यांसोयंहरिर्भवतुनोनयनाग्रगामी ॥ ६ ॥

यदुनन्दन ! हे नन्दसूनो ! स्वच्छन्दपद्ममकरंद ! आपके अर्थ बारंबार नमस्कार है २ ॥२॥ गौ, ब्राह्मण, साधु, महात्मानकी आप ध्वजा हैं, आप देवतानके पूज्य हैं, कंसादि दैत्यनके वधके लीये आपने अवतार धारण कीन्हो है, कन्दर्पमोहन ! हे नंदराजकुलकमलके सूर्य ! हे देवादिमुक्तजननके दर्पण ! अपनो उत्कर्ष करौ ॥ ३ ॥ हे गोपालसमुद्रके उत्तम मोती ! हे गोपालवंशही जो भयो पर्वत ताकी नीलमणि ! हे परात्मन् ! हे गोपालमंडल रूप सरोवरके कमलरूप ! हे गोपालचन्दनवनके कलहंसनमें मुख्य ! ॥ ४ ॥ आप श्रीराधिकाके मुखकमलके भौंरा हौ, श्रीराधिकाके मुखचंद्रके चकोररूप हौ, श्रीराधिकाके हृदयके सुंदर चंद्रहार हौ, राधिकाही जो लता ताकूं वसंतऋतुके तरह प्रफुल्लित करनवारेहो ॥ ॥ ५ ॥ जो तुम रासरंग जो अपनो वैभव तामें अनेक लीलाके करनहारे हौ, जो गोपीनके नेत्रनके जीवनके मूलहार हौ, जो मानवती राधाकी मान बढायौ सो हरि हमारे

नेत्रनके आगाडी आओ ॥ ६ ॥ जो सम्पूर्ण गोपीनके यूथनकूं शोभायमान करतभयो, जाने अपने चरणकमलकी रजते वृंदावनकी शोभा बढाई और गोवर्द्धनकी शोभा बढाई, जो सब लोकके वैभव बढायवेकूं भूमिमें प्रकट भयेहो, बहोत लीलानके करनहारे हो और भुजगेंद्रकीसी सुढार श्याम भुजावारे हो ताकूं हम भजें हैं ॥ ७ ॥ हे प्यारे ! तेरे बिना चंद्रमा तो सूर्य और अग्नि सो तातो लगैहे; महल मन्दिर, अग्निसे जरते दीखें हैं; सम्पूर्ण वन असिपत्र वनसो लगैहै, शीतल, मंद, सुगंधित पवन बाणसी लगैहै; एक तुम बिना हम बडी दुःखी हैं ॥ ८ ॥ सौदास राजा वशिष्ठके शापते ब्रह्मराक्षस हैगयो तब वाकी मदयंती रानीकूं जैसा अत्यन्त दुःख भयो हो, ताते हजार गुनो नलराजाकी दमयंती रानीकूं भयो हो, ताते किरोडगुनो दुःख जनकनन्दिनीकूं भयो हो, ताते अनंतगुनो दुःख है हरे ! हमकूं है ॥ ९ ॥ नारदजी कहैहे–ऐसे जब गोपी रोमनलगीं तब कमललोचन श्रीकृष्ण कृपाकरिके आपही प्रकट हैतिभये जैसे अपनो अर्थ आपुही आवे है ॥१०॥ कैसे प्रकट भयेहें झलमलाय रहे किरीट, कुंडल, बाजू जाके, चिकनी स्वच्छ और सुगंधित नील घूँघुरवारी अलकावली

योगोपिकासकलयूथमलंचकारवृन्दावनंचनिजपादरजोभिरद्रिम् ॥ यःसर्वलोकविभवायबभूवभूमौतंभूरिनीलमुरगेन्द्रभुजंभजामः ॥ ७ ॥ चंद्रप्रतप्तकिरणज्वलनंप्रसन्नंसर्वंवनांतमसिपत्रवनप्रवेशम् ॥ बाणंप्रभंजनमतीवसुमन्दयानंमन्यामहेकिलभवन्तमृतेव्यथार्ताः ॥ ८ ॥ सौदास राजमहिषीविरहादतीवजातंसहस्रगुणितंनलपट्टराइयाः ॥ तस्मात्तुकोटिगुणितंजनकात्मजायास्तस्मादनन्तमतिदुःखमलंहरेनः ॥ ९ ॥ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्थंराजन्रुदन्तीनांगोपीनांकमलेक्षणः ॥ आविर्बभूवसहसास्वयमर्थमिवात्मनः ॥ १० ॥ स्फुरत्किरीटकेयूरकुंडलांगदभूषणम् ॥ स्निग्धामलसुगन्धाढ्यनीलकुंचितकुन्तलम् ॥ ११ ॥ आगतंवीक्ष्ययुगपत्समुत्तस्थुर्व्रजांगनाः ॥ तन्मात्राणियथंदृष्ट्वाथज्ञानेन्द्रियाणिच ॥ १२ ॥ हरिर्ननर्ततन्मध्येवंशीवादनतत्परः ॥ राधयासहितोराजन्यथारत्यारतीश्वरः ॥ १३ ॥ यावतीर्गोपिकाःसर्वास्तावद्रूपधरोहरिः ॥ गच्छंस्ताभिर्व्रजेरेमेस्वावस्थाभिर्मनोयथा ॥ १४ ॥ वनोद्देशेस्थितंकृष्णंगतदुःखाव्रजांगनाः ॥ कृतांजलिपुटाऊचुर्गिरा गद्गदयाहरिम् ॥ १५ ॥ ॥ गोप्यऊचुः ॥ ॥ क्वगतस्त्वंवदहरेत्यक्त्वागोपीगणोमहान् ॥ सर्वंजगत्तृणीकृत्यत्वत्पादेप्राप्तमानसः ॥ १६ ॥ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ हेगोप्यःपुष्करद्वीपेहंसोनाममहामुनिः ॥ समुद्रेदधिमंडोदेततापान्तर्गतस्ततः ॥ १७ ॥

छियकि रहीहें ऐसे रूपते आये ॥११॥ तब आये श्रीकृष्णकूं देखिके सबरी ब्रजगोपी एक साथ उठ ठाडी हैगइ, जैसे जीव बगदेर्प सब शब्दादितन्मात्र और ज्ञानइंद्री चेष्टा करन लगैहें ॥१२॥ तब श्रीकृष्ण तिनके बीचमें प्रसन्न हैके बंशी बजावत नृत्य करनलगे, राधा करिके सहित जैसे रतिके संग कामदेव नाचै है ॥ १३ ॥ जितनी गोपी ही तितनेंही श्रीकृष्णके रूप हैगये तिनके संग ब्रजमें उनके सग चलते विहार करनलगे जैसे अपनी अवस्थानके संग मन विहार करैहे ॥ १४ ॥ ता वनमें श्रीकृष्णकूं गईरिपै बैठारिकें प्रसन्न भयी जे गोपी वे सब हाथ जोडके गद्गद वाणीते कृष्णसों यह बोलीं ॥ १५ ॥ क्यों प्रभू ! सब गोपीगणनकूं छोडिके तुम कहां चलेगये हे ? जिन हमने सब जगतकूं तृणकी समान करिके तुम्हारे चरणकमलमें मन लगायो ॥ १६ ॥ सो तुम हमकूं छोडिके चलेगये, तब भगवान् बोले–हे गोपी हो !

पुष्करद्वीपमें एक हंस नाम मुनीश्वर दधिमंडोद समुद्रमें भीतर तप करैहो ॥१७॥ जो निष्काम भक्तिते मेरे ध्यानमें मग्न हो सो वाकूं तप करत २ हे गोपीहो ! द्वै मन्वंतर व्यतीत हैगये हैं ॥ १८ ॥ सो तब ऋषिको व दो कोशको मगर निगलि गयो, वा मगरकूं पौंड्र नाम एक मत्स्यरूपी असुर निगल गयो ॥ १९॥ या प्रकार हंसमुनि कष्टकूं प्राप्त हैगयो, तब वहां जायके मैंने दोनोंनके शिर काटिके सुदर्शन चक्रते मुनिकू छुडायो ॥२०॥ हे व्रजांगनाओ ! फिर मुनिकूं छुडायके मैं श्वेतद्वीपकूं चल्यो गयो तब मैं क्षीरसमुद्रमें शेषशय्यापै सोय रह्यो ॥ २१ ॥ फिर तुमकूं दुःखी जानके हे प्यारीयो ! नींदको त्यागके यहां चल्यो आयोहूं क्योंकि मैं भक्तवत्सल हूं सो याभी अकस्मात् फिर यहां आयगयो हूं ॥ २२ ॥ जे इंद्रियनके दमनवारे अपेक्षा रहित महान्त समदर्शी संत हैं ते मोकूं जानैहैं और वही महात्मा निरपेक्ष मेरे नैरपेक्ष्य सुखकूं जानैहैं जैसे ज्ञान इंद्रिय रसकूं जाने हैं ॥

चकाराहैतुकींभक्तिंममध्यानपरायणः ॥ व्यतीतंतस्यतपतोगोप्योमन्वन्तरद्वयम् ॥ १८ ॥ तमद्यैवग्रसन्मत्स्योयोजनार्द्धवपुर्द्धरः॥ तन्निर्जगारपौंड्रस्तुमत्स्यरूपधरोऽसुरः ॥ १९ ॥ एवंसंप्राप्तकष्टस्यहंसस्यापिमुनेरहम् ॥ गत्वाथशीघ्रंणतयोःशिरश्छित्त्वारिणामुनिम् ॥ २० ॥ मोचयित्वाथगतवाञ्श्वेतद्वीपंव्रजांगनाः ॥ क्षीराब्धौशेषपर्यंकेशयनंतुमयाकृतम् ॥ २१ ॥ दुःखिताभवतीर्ज्ञात्वानिद्रांत्यक्त्वाततःप्रियाः ॥ सहसाभक्तवश्योहंपुनरागतवानिह ॥ २२ ॥ जानन्तिसन्तःसमदर्शिनोयेदान्तामहान्तःकिलनैरपेक्ष्याः ॥ तेनैरपेक्ष्यंपरमंसुखंमेज्ञानेन्द्रियादीनिययारसादीन् ॥ २३ ॥ ॥ गोप्यऊचुः ॥ ॥ क्षीराब्धौशेषपर्यंकेयद्रूपंचत्वयाधृतम् ॥ तद्रूपदर्शनंदेहियदिप्रीतोसिमाधव ॥ २४ ॥ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ तथास्तुचोक्त्वाभगवान्गोपीव्यूहस्यपश्यतः ॥ दधाराष्टभुजंरूपंश्रीराधारूपमेवच ॥ २५ ॥ तत्रक्षीरसमुद्रोभूल्लोलकल्लोलमंडितः ॥ दिव्यानिरत्नसौधानिबभूवुर्मंगलानिच ॥२६॥ तत्रशेषोबिसश्वेतःकुण्डलीभूतसंस्थितः ॥ बालार्कमौलिसाहस्रफणाछत्रविराजितः ॥२७॥ तस्मिन्वैशेषपर्यंकेसुखंसुष्वापमाधवः ॥ यस्यश्रीरूपिणीराधापादसेवांचकारह ॥२८॥ तद्रूपंसुन्दरंदृष्ट्वाकोटिमार्तंडसन्निभम् ॥ नत्वागोपीगणाःसर्वेविस्मयंपरमंगताः॥ २९ ॥ गोपीभ्योदर्शनंदत्तंयत्रकृष्णेनमैथिल ॥ तत्रक्षेत्रंमहापुण्यंजातंपापप्रणाशनम् ॥ ३० ॥

॥ २३ ॥ गोपी बोली कि, हे प्रभो ! क्षीरसमुद्रमें शेषशय्यापै जो रूप तुमने धारण करचौ हो सो रूप हमकूं दिखाओ जो तुम प्रसन्न हो तौ ॥ २४ ॥ ऐसे जब गोपीननें श्रीकृष्णते कही तब सब गोपीनके देखत देखत अष्टभुजी रूप धारण करिलीयो और श्रीराधाजी लक्ष्मीरूप हैगई ॥ २५ ॥ तहीं क्षीरसमुद्र हैगयो जामें चंचल लहरी उठन लगी, दिव्य रत्नके महल बनिगये, अनेक मंगल होनलगे ॥ २६ ॥ तहां कमलनालके समान श्वेत वर्ण जिनको ऐसे कुंडली लगाय बैठे शेषजी प्रकट हैआये, बालसूर्यसे तेज जिनके ऐसे हजार फणनको छत्रसौ विराजित भये ॥ २७ ॥ ता शेषशय्यापै सुखते लक्ष्मीपति सोवत भये, जिनकी राधिका लक्ष्मीजी हैके चरणसेवा कर रही है ॥ २८ ॥ किरोड़ सूर्यकोसो जाको तेज ऐसे अतिसुंदर रूपकूं देखिके सब गोपीनके गणनें नमस्कार करी और अचंभेमें आयगई ॥ २९ ॥ हे मैथिल ! जहां श्रीकृष्णने गोपीनकूं दर्शन

दीनों वुह पापको नाश करनहारो पवित्र क्षेत्र हैगयो ॥ ३० ॥ फेर गोपिगणनकूं संग लेके श्रीकृष्ण यमुनापे आये कालिन्दीके जलकी धारानमें कलालीला करत भये ॥३१॥ तब राधाजीके हाथमेंते एकलाख दलके कमलको लेके श्रीकृष्ण हँसते भजे सो भागते २ जलमें चलेगये ॥ ३२ ॥ तब राधाजी श्रीकृष्णके हाथमेंते वंशी वेत और पीतांबरकूं लैके हँसत २ यमुनाजलमें प्रवेश हैगई ॥ ३३ ॥ जब श्रीकृष्णने कही कि, हे राधाजी ! हमारी वेत, मुरली, पीतांबर, देउ तब राधा कहन लगी कि, आप कमल वस्त्र देउ ॥ ३४ ॥ तब श्रीकृष्णने तो प्रियाजीकूं लक्षदल कमल और नीलांबर देदीनो और राधाजीने मुरली, वेत, पीतांबर देदीनो ॥ ३५ ॥ याके अनंतर श्रीकृष्ण घुटनेतक लट कती वैजयंती मालाकूं धारण करते मनोहर गान करते भांडीरवनकूं चलेआये ॥ ३६ ॥ यहां आयके चतुरनके ईश्वर श्रीकृष्ण राधाजीको, शृंगार करते भये, पत्रावलीकी रचनाते मेहदी, महावर, अंजन, कज्जल, केसर, फूल, फूलनके गहने, पहराये ॥ ३७ ॥ तब चंदन, अगर, केसर, कस्तूरि, इनते श्रीमतीजीने पत्रभंगी रचना अनेक रंगसों

अथगोपीगणैःसार्द्धंयमुनामेत्यमाधवः ॥ कालिन्दीजलवेगेषुकलांकेलिंचकारह ॥ ३१ ॥ राधाकराल्लक्षदलंपद्मंनीत्वांबरंतथा ॥ धावञ्जलेषु गतवान्प्रहसन्माधवःस्वयम् ॥ ३२ ॥ राधाहरेःपीतपटंवंशीवेत्रस्फुरत्प्रभम् ॥ गृहीत्वाप्रहसन्तीसागच्छन्तीयमुनाजले ॥ ३३ ॥ वंशींदेहीति वदतःश्रीकृष्णस्यमहात्मनः ॥ राधाजगादकमलंवासोदेहीतिमाधव ॥ ३४ ॥ कृष्णोददौराधिकायैपद्ममंबरमेवच ॥ राधाददौपीतपटंवेत्रंवं शींमहात्मने ॥ ३५ ॥ अथकृष्णःकलंगायन्मालामाजानुलंबिताम् ॥ वैजयन्तीमादधानःश्रीभांडीरंजगामह ॥ ३६ ॥ प्रियायास्तत्रशृंगारंच कारकुशलेश्वरः ॥ पत्रावलीयावकाद्यैःपुष्पैःकज्जलकुंकुमैः ॥ ३७ ॥ चन्दनागुरुकस्तूरीकेसराद्यैर्हरेर्मुखे ॥ पत्रंचकारशृंगारेमनोज्ञंकीर्तिन न्दिनी ॥ ३८ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायांवृंदावनखण्डेरासक्रीडानामैकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ अथकृष्णो गोपिकाभिर्लोहजंघवनंययौ ॥ वसन्तमाधवीभिश्चलताभिःसंकुलंनृप ॥ १ ॥ तत्पुष्पदामनिचयैःस्फुरत्सौगंधिशालिभिः ॥ सर्वासांहरिणा तत्रकबर्योगुंफितास्ततः ॥ २ ॥ भ्रमरध्वनिसंयुक्तेसुगन्धानिलवासिते ॥ कालिन्दीनिकटेकृष्णोविचचारप्रियान्वितः ॥ ३ ॥ करिलैःपीलुभिः श्यामैस्तालैश्चसंकुलद्रुमैः ॥ महापुण्यवनंकृष्णोथ्ययौरासेश्वरोहरिः ॥ ४ ॥

मुख कपोलादिको चीतनो तासों श्रीकृष्णको शृंगार कीनो ॥ ३८ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां वृंदावनखंडे भाषाटीकायां रासक्रीडावर्णनं नामैकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥ नारदजी कहेहैं याके अनंतर श्रीकृष्ण गोपीनकूं संग लेके लोहजंघवनकूं आये, जो वन वसंतमाधवीकी लतानते सघन हैरह्यो है ता वनमें ॥ १ ॥ तहां श्रीकृष्णने जिन फूलनकी सुगंधिके मारे वो सुगंधित वनीही तिन फूलनते सब गोपीनकी कबरी गुही ॥ २ ॥ ता वनमें मतवारे भौंरानकी गुंजारते वन झनकार रह्यो है, चारों बगलते फूलनकी बड़ी भारी सुगंधिते सुगंधित है, कालिंदीके निकट ता वनमें प्यारीको हाथ पकडे विचरन लगे ॥ ३ ॥ जो वन शाल, ताल, तमाल, केला, कदंब, पाडर, पीलू, करील, कचनार इत्यादिक वृक्षनते आकुल है रासके ईश्वर हरि ता महापुण्य वनमें आये ॥ ४ ॥

तहां रासेश्वरी राधिकाके संग रास करनलगे, तिनके यशकूं गोपी गावेंहैं, जैसें इंद्रके यशकूं अप्सरा गावैं हैं ॥ ५ ॥ तहां एक बड़ो अचंभो भयो ताहि तूं मेरे मुखते सुनि एक संखचूड नाम यक्ष कुवेरको चाकर महावली ॥ ६ ॥ पृथिवीमें जाकी समान कोई वली नहीं, गदायुद्धमें बडो प्रवीण मेरे मुखतें महदुत्कट कंसको बल सुनिके ॥ ७ ॥ एक लाख भारकी गदा अष्टधातुकी ताको लेके कंसकी सभामें आयके कंसको प्रणाम करके महायक्ष शंखचूड प्रचंड पराक्रमी बडो मदसो उद्धत ॥ ८ ॥ सभामें बैठ्यो जो कंस ताते यह बोल्यो कि, हे कंस ! तूं गदायुद्ध मोकूं दे तेंने त्रिलोकी जीती है ॥ ९ ॥ जो तूं जीतिजायगो तो मैं तेरो दास हैजाऊंगो और जो मैं जीतिजाऊं तो तूं मेरो दास हैजेयो ॥ १० ॥ अच्छो ऐसें कंस कहिके बड़ी भारी गदा लेके रंगभूमिमें हे विदेहराज ! शंखचूडके संग कंस लड्यो ॥ ११ ॥ तब दोनोंनको बडो घोर गदायुद्ध भयो जिनके शरीरमें

तत्ररासंसमारेभेरासेश्वर्यासमन्वितः ॥ गीयमानश्चगोपीभिरप्सरोभिःस्वराडिव ॥ ५ ॥ तत्रचित्रमभूद्राजञ्छृणुत्वंतन्मुखान्मम ॥ शंखचूडो नामयक्षोधनदानुचरोबली ॥ ६ ॥ भूतलेतत्समोनास्तिगदायुद्धविशारदः ॥ मन्मुखादौग्रसेनेश्चबलंश्रुत्वामहोत्कटम् ॥ ७ ॥ लक्षभारमयीं गुर्वींगदामादाययक्षराट् ॥ स्वसकाशान्मधुपुरीमाययौचण्डविक्रमः ॥ ८ ॥ सभायामास्थितंप्राहकंसंनत्वामदोद्धतः ॥ गदायुद्धंदेहिमह्यंत्वंलोक्यविजयीभवान् ॥ ९ ॥ अहंदासोभवेयंवैभवांश्चविजयीयदि ॥ अहंजयीचेद्भवंतंदासंशीघ्रंकरोम्यहम् ॥ १० ॥ तथास्तुचोक्त्वाकंसस्तुगृहीत्वामहतींगदाम् ॥ शंखचूडेनयुयुधेरंगभूमौविदेहराट् ॥ ११ ॥ तयोश्चगदयायुद्धंघोररूपंबभूवह ॥ ताडनाच्चटचटाशब्दंकालमेघतडिद्ध्वनिः ॥ ॥ १२ ॥ शुशुभातेरंगमध्येमल्लौनाट्यनटाविव ॥ इभेन्द्राविवदीर्घांगौमृगेन्द्राविवचोद्भटौ ॥ १३ ॥ द्वयोश्चयुध्यतोराजन्परस्परजिगीषया ॥ विस्फुलिंगान्क्षरन्त्यौद्वेगदेचूर्णीबभूवतुः ॥ १४ ॥ कंसःप्रकुपितंयक्षंमुष्टिनाऽभिजघानह ॥ शंखचूडोपितंकंसंमुष्टिनासंतताडच ॥ १५ ॥ मुष्टामुष्टियोरासीद्दिनानांसप्तविंशतिः ॥ द्वयोरक्षीणबलयोर्विस्मयंगतयोस्ततः ॥ १६ ॥ शंखचूडंसंगृहीत्वाकंसोदैत्याधिपोबली ॥ बलाद्विक्षेप सहसाव्योम्नितंशतयोजनम् ॥ १७ ॥ शंखचूडःप्रपतितःकिंचिद्व्याकुलमानसः ॥ कंसंगृहीत्वानभसिचिक्षेपायुतयोजनम् ॥ १८ ॥

परी प्रहार करी गदानको ऐसो चटचटा शब्द भयो जैसें प्रलयके मेघ गर्जें या जैसे विजुली तडतड़ायके पड़े है ॥ १२ ॥ उन दोनोंनकी वा रंगभूमिमें कैसी शोभा भई जैसें दो मल्ल अथवा नाचते दो नट अथवा पुष्ट अंगवाले दो हाथी अथवा जैसें उद्भट दो नाहर लडेंहैं ॥ १३ ॥ हे राजन् ! परस्पर जीतनेंकी इच्छाते दोनोनके लडत २ गदानमेंते पतंगा छुटि २ के दोनों गदा चूर्ण हे गई ॥ १४ ॥ कंसने कुपित भये शंखचूडके एक घूंसा मारयो तब शंखचूडने भी कंसके एक घूंसा मार्‍यो ॥ १५ ॥ या प्रकार विन दोनोंकी घूंसा घूंसी सत्ताईस दिनताई भयी पर बल काहूको न घट्यो दोनो अचंभो करनलगे ॥ १६ ॥ तब कंसने शंखचूडकूं पकडके बड़े जोरते आकाशमें सौ योजन ऊंचो फेंकि दीनों ॥ १७ ॥ तब नेक व्याकुल हेके शंखचूड पृथ्वीमें जायपड़ो, फेर कंसकूं पकड़िके फिरायके आकाशमें फेंकि दीनों तब कंस, आकाशमें दशहजार योजन ऊंचो चल्यो गयो ॥ १८ ॥

फिर कंस आकाशते धरतीमें आय पर्‍यो, कछू व्याकुल मन है गयो, फिर कंसने शंखचूडकूं लेके धरतीमें देमार्‍यो ॥ १९ ॥ फेर शंखचूडने उठायके कंसकूं भूमिमें देमार्‍यो, ऐसे जब दोनोनको युद्ध भयो तब भूमंडल काँपन लग्यो ॥ २० ॥ तब सर्वज्ञ मुनि साक्षात् गर्गाचार्य आये तब दोनोंनने दंडोत करी तब गर्गजी बडी गंभीर वाणीते कंसते बोले ॥ २१ ॥ हे राजेन्द्र ! तू युद्ध मतिकरे यामें कछू फल नहीं है ये शंखचूडभी तेरीही बराबर महाबली है ॥ २२ ॥ देख पहले तेरे घूंसाके मारे ऐरावत हाथी मूर्च्छा खाय घुटुअन धरतीमें जाय पर्‍यो ही और बडे खेदको प्राप्त भयो ॥ २३ ॥ औरहू बडे २ दैत्य तेरे घूंसाके मारे मरिगये पर शंखचूड नहीं मर्‍यो सो यामें कछू संदेहकी बात नहीं है ताहि तू सुनि ॥ २४ ॥ जो परिपूर्णतम भगवान् तोकूं मारेगो सोई याकूं मारेगो, यद्यपि महादेवके वरते ऊर्जित है तोऊ

आकाशात्पतितःकंसःकिंचिद्व्याकुलमानसः ॥ यक्षंगृहीत्वासहसापातयामासभूतले ॥ १९ ॥ शंखचूडस्तंगृहीत्वापोथयामासभूतले ॥ एवंयुद्धेसंप्रवृत्तेचकंपेभूमिमंडलम् ॥ २० ॥ मुनीन्द्रःसर्ववित्साक्षाद्गर्गाचार्यःसमागतः ॥ रंगेषुवन्दितस्ताभ्यांकंसंप्राहोर्जयागिरा ॥ २१ ॥ ॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ ॥ युद्धंमाकुरुराजेंद्रनिफलोयंरणोऽत्रवै ॥ त्वत्समानोह्ययंवीरःशंखचूडोमहाबलः ॥ २२ ॥ तवमुष्टिप्रहारेणभृशमैरावतोगजः ॥ जानुभ्यांधरणींस्पृष्ट्वाकश्मलंपरमंययौ ॥ २३ ॥ अन्येपिबलिनोदैत्यामुष्टिनातेमृतिंगताः ॥ शंखचूडोनपतितःसंदेहोनास्तितच्छृणु ॥ २४ ॥ परिपूर्णतमोयोवैसोपित्वांघातयिष्यति ॥ यथेनंशंखचूडाख्यंशिवस्यापिवरोर्जितम् ॥ २५ ॥ तस्मात्प्रेमप्रकर्तव्यंशंखचूडेयदूद्वह ॥ यक्षराट्चत्वयाकंसेकर्तव्यंप्रेमनिश्चितम् ॥ २६ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ गर्गेणोक्तौतदातौद्वौमिलित्वाथपरस्परम् ॥ परमांचक्रतुःप्रीतिंशंखचूडयदूद्वहौ ॥ २७ ॥ अथकंसमनुज्ञाप्यगृहंगन्तुंसमुद्यतः ॥ गच्छन्मार्गेशृणोद्रात्रौरासगानंमनोहरम् ॥ २८ ॥ तालशब्दानुसारेणसंप्रातेरासमण्डले ॥ रासेश्वर्यासमंरासेपश्यद्रासेश्वरंहरिम् ॥ २९ ॥ श्रीराधयालंकृतवामबाहुंस्वच्छन्दवक्रीकृतदक्षिणांघ्रिम् ॥ वंशीधरंसुन्दरमंदहासंभ्रूमंडलैर्मोहितकामराशिम् ॥ ३० ॥ व्रजांगनायूथपतिंव्रजेश्वरंसुसेवितंचामरछत्रकोटिभिः ॥ विज्ञायकृष्णंह्यतिकोमलंशिशुंगोपीसमाहर्तुमलंमनोकरोत् ॥ ३१ ॥

मारेगो ॥ २५ ॥ तातें हे यदुराज ! तूं शंखचूडते प्रीति करले, हे शंखचूड ! तूहूं कंसते प्रीति करिले ॥ २६ ॥ नारदजी कहें हैं-ऐसे गर्गजीके वचनते दोनोंने शंखचूड तथा कंसने आपसमें मिलके परमप्रीति करिलई ॥ २७ ॥ तब ये कंसपैते आज्ञा मांगके शंखचूड घर जायवेकूं उद्यत भयो तब वाने रस्तामें चलतेने रातिमें मनोहर वो रासमे गान सुनो ॥ २८ ॥ और तालशब्दके अनुसार रच्यो जो रासमंडल ता रासके विषय रासेश्वरी जो राधा ता करिके सहित रासेश्वर कृष्णकूं देखत भयो ॥ २९ ॥ राधा करिके अलंकृत है बांई भुजा जिनकी और अपनी इच्छाते टेढ्यो कीनोंहै दाहिनो चरण जिननने वंसीको धरनहारो सुंदर मंद २ हास जिनको भकुटी करिके मोहित कीनोंहै कामराशि जाने ॥ ३० ॥ व्रजकी अंगनाके यूथनके पति, किरोडन चमर छत्र जिनपै फिर रहेहै तिन श्रीकृष्णकूं अतिकोमल

बालक जानिके गोपी वाके हरिवेकूं मन करत भई ॥ ३१ ॥ बहुलाश्व राजा पूछे है–हे विप्रेंद्र ! जब वह शंखचूड रासमें गयो तब कहा भयो सो हमते कहौ ? तुम भविष्यके जाननेहारे हो ॥ ३२ ॥ नारदजी कहे हैं अंधेरेकोसो तो जाको मुख है, कालो जाको वर्ण, दश ताल लंबो भयंकर जीभ जाकी लफलफाय रही ऐसे वा शंखचूडके रूपकूं देखिके गोपी बहोत डरपी ॥ ३३ ॥ चारों बगलते भाजन लगीं, बड़ो कोलाहल मच्यो, हाहाकार शब्द भयो जा वखत शंखचूड पहुंच्यो ॥ ३४ ॥ दुष्ट बडो खल शंखचूड शतचन्द्रानना गोपीकूं लेके उत्तर दिशाकूं चल्यो, कामते पीडित है और बडो निःशंक है ॥ ३५ ॥ जो रोवत जाय ही, कृष्ण २ ऐसें कहत जाय ही, भयके मारे विह्वल ही ता शतचन्द्राननाकूं देखिके श्रीकृष्ण बडे क्रोधते शालवृक्षकूं उखाडिके हाथमें लेके याके पीछे भाजे ॥ ३६ ॥ यक्ष श्रीकृष्णकूं कालरूपके समान आयो जानिके सब गोपीनकूं छोड़िके जीवेकी इच्छा कर भाज्यो, भयमें विह्वल हैगयो ॥ ३७ ॥ जहां जहां महा दुष्ट यक्ष भाजे है तहां

॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ किंबभूवततोरासेशंखचूडेसमागते ॥ एतन्मेब्रूहिविप्रेंद्रत्वंपरावरवित्तमः ॥ ३२ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ ध्यामाननंकृष्णवर्णंतालवृक्षदशोच्छ्रितम् ॥ भयंकरंललज्जिह्वंदृष्ट्वागोप्योतित्रसुः ॥३३॥ दुद्रुवुःसर्वतोगोप्योमहान्कोलाहलोऽभवत् ॥ हाहाकारस्तदैवासीच्छंखचूडेसमागते ॥ ३४ ॥ शतचंद्राननांगोपींगृहीत्वायक्षराट्खलः ॥ दुद्राववाशूरारामाशांनिःशंकःकामपीडितः ॥ ३५ ॥ रुदतींकृष्णकृष्णेतिक्रोशन्तींभयविह्वलाम् ॥ तमन्वधावच्छ्रीकृष्णःशालहस्तोरुषाभृशम् ॥ ३६ ॥ यक्षोवीक्ष्यतमायान्तंकृतान्तमिवदुर्जयम् ॥ गोपींत्यक्त्वाजीवितेच्छुःप्राद्रवद्भयविह्वलः ॥ ३७ ॥ यत्रयत्रगतोधावञ्शंखचूडोमहाखलः ॥ तत्रतत्रगतःकृष्णःशालहस्तोभृशंरुषा ॥ ३८ ॥ हिमाचलतटंप्राप्तःशालमुद्यम्ययक्षराट् ॥ तस्थौतत्संमुखेराजन्युद्धकामोविशेषतः ॥ ३९ ॥ तस्मैचिक्षेपभगवाञ्शालवृक्षंभुजौजसा ॥ तेनघातेनपतितोवृक्षोवातहतोयथा ॥ ४० ॥ पुनरुत्थायवैकुंठंमुष्टिनातंजघानह ॥ जगर्जसहसादुष्टोनादयन्मण्डलंदिशाम् ॥ ४१ ॥ गृहीत्वातंहरिर्दोर्भ्यांभ्रामयित्वाभुजौजसा ॥ पातयामासभूपृष्ठेवातःपद्ममिवोद्धृतम् ॥ ४२ ॥ शंखचूडस्तंगृहीत्वापोथयामासभूतले ॥ एवंयुद्धेसंप्रवृत्तेचकम्पेभूमिमण्डलम् ॥४३॥ मुष्टिनातच्छिरश्छित्त्वातस्माच्चूडामणिंहरिः ॥ जग्राहमाधवःसाक्षात्सुकृतीशेवधिंयथा ॥ ४४ ॥

तहां श्रीकृष्ण शालको लट्ठा लीये बडे क्रोधते आवते दीखें हैं ॥ ३८ ॥ तब वे हिमाचल पर्वतके नीचे पोहँचो वहां शालके वृक्षको उखाडके विशेष करके युद्ध करिवेकी इच्छासो श्रीकृष्णके सन्मुख ठाडो भयो ॥ ३९ ॥ तब श्रीकृष्णने बडे जोरसे शालको लट्ठा मार्यो ता चोटके मारे धरतीमें जायपरो आँधीको मार्यो पेड जैसे जायपडे है ॥ ४० ॥ फेरि उठके श्रीकृष्णके एक घूंसा मार्यो और ऐसो गरज्यो जा शब्दसो दिशा झनकारन लगीं ॥ ४१ ॥ फिर श्रीकृष्णने दोनों हाथते पकरिके फिरायके याको धरतीमें देमार्यो जैसे खिलेहुए कमलकूं आँधी गेर देयहै ॥ ४२ ॥ शंखचूडनेऊ श्रीकृष्णको पकडके धरतीमें देमार्यो, ऐसे जब दोनोंनको युद्ध होनलग्यो तब पृथ्वीमण्डल कांपन लग्यो ॥ ४३ ॥ फिर श्रीकृष्णने याके माथेमें एक घूंसा मार्यो ताके मारे याको मूंड धडते अलग है धरतीमें जायपडो तब याके मूंडमें जो दिव्य मणि ही वो निकास

श्रीकृष्णने लेलई, सुकृती पुरुष जैसे शेवधि नामकी निधिको लेयहै ॥ ४४ ॥ ताकी देहमेंते बडी भारी एक ज्योति निकसी, दिशानमें उजीतो करत सो ज्योति श्रीकृष्णके सखा श्रीदामामें हे राजन ! समाय गई ॥ ४५ ॥ ऐसे मधुसूदन भगवान् शंखचूडकूं मारिके मणिकूं हाथमें लिये बहुत जलदी रासमंडलमें आये ॥ ४६ ॥ तब दीनवत्सल हरि वा मणिकूं चन्द्रानना गोपीकूं देके फेरि गोपीगणनकूं संग लेके रास करतेभये ॥ ४७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां वृंदावनखंडे भाषाटीकायां रासक्रीडायां शंखचूडवधो नाम विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ नारदजी कहै है याके अनंतर गोपीगणनके संग यमुनाजीके तटकूं देखत देखत विहार करिवेकूं अति मनोहर जो वृंदावन है ता वृंदावनमें आये ॥ १ ॥ जो औषधी लीन नाम नष्ट हैगई ही वे सबरी श्रीकृष्णके वरसों स्त्री है यूथ बनायके आई ॥ २ ॥ चित्र विचित्र रंग जिनके ऐसी लतारूपा गोपीके संग वृंदावनके ईश्वर तिस वृंदावनमें रमण

तज्ज्योतिर्निर्गतंदीर्घंद्योतयन्मंडलंदिशाम् ॥ श्रीदाम्निश्रीकृष्णसखौलीनंजातंव्रजेनृप ॥ ४५ ॥ एवंहत्वाशंखचूडंभगवान्मधुसूदनः ॥ मणिपाणिःपुनःशीघ्रमाययौरासमंडलम् ॥ ४६ ॥ चन्द्राननायैचमणिंदत्वातंदीनवत्सलः ॥ पुनर्गोपीगणैःसार्द्धंरासंचक्रेहरिःस्वयम् ॥ ४७ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांवृन्दावनखंडेरासक्रीडायांशंखचूडवधोनामविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ अथगोपीगणैःसार्द्धंपश्यञ्छ्रीयमुनातटम् ॥ विहर्तुमाययौकृष्णोवृन्दारण्यंमनोहरम् ॥ १ ॥ वृन्दावनेचौषधयोलीनाजाताहरेर्वरात् ॥ ताःसर्वाश्चांगनाभूत्वायूथीभूत्वासमाययुः ॥ २ ॥ लतागोपीसमूहेनचित्रवर्णेनमैथिल ॥ रेमेवृन्दावनेराजन्हरिर्वृंदावनेश्वरः ॥ ३ ॥ कलिन्दनन्दिनीतीरेकदम्बाच्छादितेशुभे ॥ त्रिविधेनसमीरेणसर्वतःसुरभीकृते ॥ ४ ॥ विलसत्पुलिनेरम्येवंशीवटविराजिते ॥ स्थितोभूद्राधयासार्धंरासश्रमसमन्वितः ॥ ५ ॥ वीणातालमृदंगादिमुरुयष्टियुतानिच ॥ वादित्राण्यंबरेनेदुःसुरैर्गोपीगणैःसह ॥ ६ ॥ देवेषुपुष्पं वर्षत्सुजयध्वनियुतेषुच ॥ तोषयन्त्योहरिंगोप्योजगुस्तद्यशउत्तमम् ॥ ७ ॥ काश्चिद्रैमेघमल्लारंदीपकंचतथापराः ॥ मालकोशंभैरवंचश्रीरागंचतथैवच ॥ ८ ॥ हिंदोलंचजगुःकाश्चिद्राजन्सप्तस्वरैःसह ॥ काश्चित्तासांप्रमुग्धाश्चकाश्चिन्मुग्धाःस्त्रियोनृप ॥ ९ ॥ काश्चित्प्रौढाःप्रेमपराःश्रीकृष्णेलग्नमानसाः ॥ जारधर्मेणगोविन्दंकाश्चिद्गोप्योभजन्तिहि ॥ १० ॥

करते बडी शोभाको प्राप्त होते भये ॥ ३ ॥ कलिन्दनंदिनीके तीरपै कदंबनकी छायासे जहां सब ओरते शीतल मंद मंद सुगंधित पवन चली आवै है ॥ ४ ॥ जो सुशोभित पुलिनसों अति रमणीय और वंशीवटमें विराजित है तहां रासके श्रमसो श्रमित है राधा कृष्ण बैठे हैं ॥ ५ ॥ तब आकाशमें वीणा, मृदंग, मंजीरा, मोहचंग आदि देवतानके गोपीगणनके बाजेनके संग बजे ॥ ६ ॥ देवता पुष्पनकी वर्षा करैं हैं, जय जय शब्द करि रहे हैं, ता समय गोपी श्रीकृष्णको यश गावैं हैं, श्रीकृष्णकूं प्रसन्न करैं हैं ॥ ७ ॥ कोई मेघ मल्लार राग गावै है, कोई दीपक राग गावै है, कोई मालकोश, कोई भैरव, कोई श्रीराग, गावै है ॥ ८ ॥ कोई सप्तस्वरनतें हिंडोल राग गावैं हैं, तिनमें कोई मुग्धा है, कोई प्रमुग्धा है ॥ ९ ॥ और प्रेममें परायण कोई प्रौढा है, कोई प्रगल्भा है, गोविन्दमें जिनको मन है और कोई गोपी जार धर्मतै गोविंदको भजन करैं हैं ॥ १० ॥

कोई श्रीकृष्णके संग गेंदते खेले हैं, कोई फूलनते श्रीकृष्णके संग खेले हैं ॥ ११ ॥ कोई आपुसमें खेले हैं, कोई लतानमें नूपुर बजावत डोलैं हैं, कोई जोरावरीतें श्रीकृष्णको अधरामृत पीमे हे ॥ १२ ॥ कोई भुजानमें भरिके हँसिके श्रीकृष्णको आलिंगन करैं हैं, जो योगीश्वरनकूँ दुर्लभ है ॥ १३ ॥ गोपीनकूँ मनोहर यदुराज भगवान् हरि वृंदावनके ईश्वर वृन्दावनमें रमत भये ॥ १४ ॥ कोई कृष्णकी वंशीके संग वीणा बजामें है, कोई मृदंग बजाय श्रीकृष्णके गुण गामें हे ॥ १५ ॥ श्रीकृष्णके सन्मुख कोई मधुर ताल बजामेंहै, और कोई माधवी लताके नीचे श्रीकृष्णके संग मोहचंग बजावे हैं ॥ १६ ॥ कोई पृथ्वीमें स्थिर बैठिके हे राजन्! जगत्के सुखकूं भूलिके श्रीकृष्णके गुणनकूं गावैं है, कोई लतानमें श्रीकृष्णकूं भुजानसों लपेटि आलिंगन करके ॥ १७ ॥ कोई इत वितमें वृंदावनकी शोभाकूं देखती रमण करे

काश्चिच्छ्रीकृष्णसहिताःकन्दुकक्रीडनेरताः ॥ काश्चित्पुष्पैश्चहरिणाक्रीडांचक्रुःपरस्परम् ॥ ११ ॥ काश्चित्परस्परंगोप्यः क्रीडन्त्योधृतनूपुराः नूपुरध्वनिसंयुक्तापिबंत्योह्यधरामृतम् ॥१२॥ काश्चिद्भुजाभ्यांश्रीकृष्णंयोगिनामपिदुर्लभम् ॥ संगृहीत्वाप्रहस्याराचक्रुरालिंगनंमहत् ॥१३॥ मनोज्ञोयदुराजाचगोपीनांभगवान्हरिः ॥ काश्मीरमुद्रितोरेमेवनेवृंदावनेश्वरः ॥ १४ ॥ काश्चिद्वीणांवादयन्त्यःसमंवंशीधरेणवै ॥ काश्चिन्मृदंगंवादयंत्योगायन्त्योभगवद्गुणम् ॥ १५ ॥ काश्चिद्वैमधुरंतालंताडयन्त्योहरेःपुरः ॥ मुरयष्टिंसंगृहीत्वाहरिणामाधवीतले ॥१६॥ गायन्त्यःसुस्थिराभूमौविस्मृत्यजगतःसुखम् ॥ काश्चिल्लतासुश्रीकृष्णंभुजेबाहुंनिधायच ॥१७॥ वृंदावनस्यपश्यन्तिशोभांराजन्नितस्ततः॥ तालजालैःसंवलितंगोपीनांहारसंचयम् ॥ १८ ॥ पृथक्चकारगोविन्दःस्पृष्ट्वातासामुरःस्थलम् ॥ गोपीनांनासिकामुक्तावलिंतत्कुंतलंस्वयम् ॥ १९ ॥ शनैःशनैःशोभनंतच्चक्रेश्रीनंदनन्दनः ॥ ताम्बूलंचर्वितंह्यर्द्धंनीत्वास्यात्थगोपिकाः ॥ २० ॥ चर्वयन्त्यःसुगन्धाढ्यमहोतासांतपोमहत् ॥ काश्चित्कृष्णामकपोलेषुद्व्यंगुलेनशनैःशनैः ॥ २१ ॥ हसन्त्यस्ताडयन्त्यस्ताःकदम्बेषुबलात्पृथक् ॥ पुंवेषनायकाःकाश्चिन्मौलिकुंडलमंडिताः ॥ २२ ॥ नृत्यन्त्यःकृष्णपुरतःश्रीकृष्णइवमैथिल ॥ राधावेषधरागोप्यःशतचन्द्राननप्रभाः ॥ २३ ॥ तोषयन्त्यश्चराधांतांतथाराधापतिंजगुः ॥ काश्चित्ताःसात्त्विकैर्भावैःसंयुक्ताःप्रेमविह्वलाः ॥ २४ ॥

हैं तब तालनके जालनते इनके गोपीनके हारनके समुदायको ॥ १८ ॥ श्रीगोविंद गोपीनके उरस्थलकूं स्पर्शकरते उनके हारनको सुरझायके पृथक् करै हैं या प्रकार श्रीनंदनंदन गोपीनके नकबेसरनको और अलकनके केशनकूं आप सह्मारें हैं ॥ १९ ॥ या प्रकार उनकी शोभाकूं बढामें हैं और हे राजन्! वे गोपी श्रीकृष्णके चबाये सुगंधित तांबूलकूं ॥ २० ॥ मुखते मुखमें ग्रहण करिके चबामें हैं, उनके या बडेभारी तपको कोन कहि सकेहै यासो उनको धन्य है कोई उनके कपोलनको अपनी दो दो अंगुलीनसों स्पर्श करें हैं ॥ २१ ॥ कोई हंसती २ और २ ताडना करे है कदंबनके विषय, कोई पुरुषरूप हके मुकुट कुंडल पहरि अलकावली छिटकामें है ॥ २२ ॥ कोई कृष्णके आगे नाचे है, कोई कृष्ण बनी डोले है, कोई राधा बनी डोले है. कोई शतचंद्रकीसी जिनके आननकी कांति है ॥ २३ ॥ राधाकूं और राधापतिकूं तुष्ट करती गामैंहै और दोनोनकूं रिझामें हे

और कोई सात्विक भावना करिके युक्त प्रेममें विह्वल ह्वैके ॥ २४ ॥ लतानमें, वृक्षनमें, भूमिमें, दिशानमें विदिशानमें योगीकी नाईं परमानंदमें पूर्ण ह्वैके भूमिमें स्थित होयहै ॥ २५ ॥ कोई लक्ष्मीके पति श्रीकृष्णकूं अपने हृदयमें देखती चुप ह्वैके बैठे हैं, ऐसें रासमें सबरी गोपवधू पूर्णमनोरथ ह्वैगई ॥ २६ ॥ ऐसें सब गोपी गोविंदमय ह्वैगई सर्वेश भक्तवत्सल श्रीकृष्णकूं प्राप्त ह्वैके ॥ हे महाबुद्धे ! श्रीकृष्णको जो प्रसाद गोपीनकूं प्राप्तभयो ॥ २७ ॥ सो जब ज्ञानीनहूंकूं नहीं भयो फिर कर्मठीनकूं तो कहां. जो राधापतिको प्रसाद गोपीनकूं प्राप्त भयौ ॥ २८ ॥ हे महामते ! जो रासमें एक अचंभो भयो ताहि सुनि, एक आसुरि नाम मुनीश्वर श्रीकृष्णके इष्ट हे बडे तपस्वी हे ॥ २९ ॥ उन्ने नारद नाम पर्वतमें ध्यानपरायण ह्वैके बडो तप तप्यौ, हृदयकमलमें ज्योतिके मंडलमें श्रीकृष्णको ध्यान करयो करतो हो ॥ ३० ॥ राधासहित नित्यही ध्यानमें

योगीवदास्थिताभूमौपरमानन्दसंप्लुताः ॥ काश्चिल्लतासुवृक्षेषुभूम्यांवैविदिशासुच ॥ २५ ॥ पश्यन्त्यःश्रीपतिंदेवंस्वस्मिन्वामौनमास्थिताः ॥ एवंरासेगोपवध्वःसर्वाःपूर्णमनोरथाः ॥ २६ ॥ बभूवुरेत्यगोविन्दंसर्वेशंभक्तवत्सलम् ॥ यत्प्रसादस्तुगोपीनांप्राप्तोराजन्महामते ॥ २७ ॥ ज्ञानिनामपिनास्त्येवकर्मिणांतुकुतश्चसः ॥ एवंश्रीकृष्णचन्द्रस्यहरेराधापतेःप्रभोः ॥ २८ ॥ रासेचित्रंयद्बभूवतच्छृणुष्वमहामते ॥ मुनीन्द्र आसुरिर्नामश्रीकृष्णेष्टोमहातपाः ॥ २९ ॥ नारदाद्रौतपस्तेपेहरौध्यानपरायणः ॥ हृत्पुंडरीकेश्रीकृष्णंज्योतिर्मण्डलमास्थितम् ॥ ३० ॥ मनोज्ञंराधयासार्द्धंनित्यंध्यानेददर्शह ॥ एकदाध्यानमध्येतुरात्रौकृष्णोनचागतः ॥ ३१ ॥ वारंवारंकृतंध्यानंखिन्नोजातोमहामुनिः ॥ ध्यानादुत्थायसमुनिःकृष्णदर्शनलालसः ॥ ३२ ॥ नारायणाश्रमंप्रागाद्बदरीखण्डमंडितम् ॥ नददर्शहरिंदेवंनरनारायणंमुनिः ॥ ३३ ॥ तदातिविस्मितोविप्रोलोकालोकगिरिंययौ ॥ सहस्रशिरसंदेवंनददर्शसतत्रवै ॥ ३४ ॥ पप्रच्छपार्षदांस्तत्रक्वगतोभगवानितः ॥ नविद्मोभोवयंचोक्तोमुनिःखिन्नमनास्तदा ॥ ३५ ॥ श्वेतद्वीपंययौदिव्यंक्षीरसागरशोभितम् ॥ तत्रापिशेषपर्यंकेनददर्शहरिंपुनः ॥ ३६ ॥ तदामुनिःखिन्नमनाःप्रेम्णापुलकिताननः ॥ पप्रच्छपार्षदांस्तत्रक्वगतोभगवानितः ॥ ३७ ॥ नविद्मोभोवयंचोक्तोमुनिश्चिन्तापरायणः ॥ किंकरोमिक्वगच्छामिदर्शनंतत्कथंभवेत् ॥ ३८ ॥

देख्यो करैहो, एकसमय रात्रिमें ध्यानमें नहीं आये ॥ ३१ ॥ मुनिने वेरवेर ध्यान कीनो खिन्नमन ह्वैगयो तोहू ध्यानमें न आये तब ध्यानमेंते उठ ठाडेभये कृष्णदर्शनकी लालसाते ॥ ३२ ॥ वेरनके समुदायसों मंडित बदरिकाश्रमकूं नारायणके आश्रममें गये, वहांहू नर नारायणके दर्शन न भये ॥ ३३ ॥ तब तो बडे अचंभेमें आयके ऋषि लोकालोक पर्वतकूं गये तहांहू सहस्रशीर्षा भगवान्कूं न देख्यो ॥ ३४ ॥ तहां पार्षदनतें पूछनलगे भगवान् कहां गयेहैं तब पार्षदने कही कि, हम नहीं जानेंहैं, तब तो औरहू खिन्नमन ह्वैगयो ॥ ३५ ॥ तब दिव्य श्वेतद्वीपकूं गये जो क्षीरसमुद्रमेंसों शोभित हे तहां शेषशय्यापैहूं न देखे ॥ ३६ ॥ तब तो मुनीश्वर अति दुःखी हे प्रेमते रोमावली ठाडी ह्वैआई ऐसो पार्षदनते पूछनलगे कि, भगवान् कहां गये हैं ॥ ३७ ॥ तब पार्षद बोले कि, हम नहीं जानेंहैं, तब तो मुनि चितापरायण ह्वैके यह बोले मैं अब कहा करूं, कहां जाऊं, कैसे मोकूं

दर्शन होय ॥ ३८ ॥ ऐसे कहत मनकोसो जाको वेग वो ऋषि वैकुंठकूं चलेगये तब इन्द्रें रमावैकुंठमें रहनवारे भगवान्कूंहूं न देख्यो ॥ ३९ ॥ ऐसे भक्त जे मुनि आसुरी हैं उन्ने जब कहूंही भगवान् नहीं देखे तब योगीनमें इंद्र जो ऋषि सो गोलोककूं गये ॥ ४० ॥ तहांहू वृंदावनकी निकुंजमें श्रीकृष्णके दर्शन न भये, तब तो बडेही दुःखी भये विरहमें आतुर हैगये ॥ ४१ ॥ तहां पार्षदनते पूछी कि, भगवान् यहांसो कहां गये तब पार्षद बोले वामनजीके फोडे मनोहर अंडामें हे ॥ ४२ ॥ जहां पृश्निगर्भ भगवाने जन्म लीनोहो, स्वयं भगवान् वहांही है, ऐसे सुनि आसुरि मुनि वा ब्रह्मांडमें आये ॥ ४३ ॥ हरिकूं नहीं देखके फिर कैलासपर्वतमें आये तहां कृष्णके ध्यानमें परायण महादेवकूं देख्यो ॥ ४४ ॥ खिन्नचेता मुनि तहां शिवजीको प्रणाम करके रातीकूं महादेवते बोले कि, हे भगवन्! शिव! इत चितते सब ब्रह्मांड मैंने देख्यो॥ ४५॥ वैकुंठते लेके गोलोक तलक श्रीकृष्णके देखिवे

एवंब्रुवन्मनोयायीवैकुंठंप्राप्तवांस्ततः ॥ नापश्यत्तत्रदेवेशंरमावैकुंठवासिनम् ॥३९॥ नदृष्टस्तत्रभक्तेषुमुनिनाऽसुरिणानृप ॥ ततोमुनीन्द्रोयो
गीन्द्रोगोलोकंसजगामह ॥ ४० ॥ वृन्दावनेनिकुंजेपिनददर्शपरात्परम् ॥ तदामुनिःखिन्नमनाःश्रीकृष्णविरहातुरः ॥ ४१ ॥ पप्रच्छपार्षदां
स्तत्रक्वगतोभगवानितः ॥ ऊचुस्तंपार्षदागोपावामनाण्डेमनोहरे ॥ ४२ ॥ पृश्निगर्भोयत्रजातस्तत्रैवभगवान्स्वयम् ॥ इत्युक्तआसुरिस्तस्मा
दस्मिन्नण्डेसमागतः ॥ ४३ ॥ हरिंह्यपश्यन्प्रचलन्कैलासंप्राप्तवान्मुनिः ॥ तत्रस्थितंमहादेवंकृष्णध्यानपरायणम् ॥ ४४ ॥ नत्वापप्रच्छतद्रा
त्रौखिन्नचेतामहामुनिः ॥ ॥ आसुरिरुवाच ॥ ॥ भगवन्सर्वब्रह्मांडंमयादृष्टमितस्ततः ॥ ४५ ॥ आवैकुण्ठाच्चगोलोकाद्भ्रमतातद्दिदृक्षुणा ॥
कुत्रापिदेवदेवस्यदर्शनंनबभूवमे ॥ ४६ ॥ कुत्रास्तेभगवानद्यवदसर्वविदांवर ॥ ॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ ॥ धन्यस्त्वमासुरेब्रह्मन्कृष्णभक्तोस्य
हैतुकः ॥ दिदृक्षुणात्वयाऽऽयासंकृतंवेद्मिमहामुने ॥ ४७ ॥ कर्मेन्द्रियाणीहयथारसादींस्तथासकामामुनयःसुखंयत् ॥ मनाङ्गजानन्तिजनैर
पेक्ष्यंगूढंपरंनिर्गुणलक्षणंतत् ॥ ४८ ॥ हंसंमुनिंदुःखगतंमहोदधौयःसर्वतोमोचयितुंगतस्त्वरम् ॥ सोद्यैववृंदाविपिनेसखीजनैःकरोतिरासंरसि
केश्वरःस्वयम् ॥ ४९ ॥ षण्मासिकीचाद्यकृतानिशीथिनीस्वमाययादेववरेणभोमुने ॥ अहंगमिष्यामितदेवद्रष्टुंत्वमेवगच्छाशुमनोरथंयथा
॥ ५० ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांवृन्दावनखण्डेश्रीनारदबहुलाश्वसंवादेरासक्रीडायामासुर्युपाख्याननंनामैकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

की इच्छा करिके मैं गयो पन मोकूं कहूं देवदेवके दर्शन नहीं भये ॥ ४६ ॥ हे सर्ववेत्तानमें श्रेष्ठ! अब भगवान् कहां है ? तब महादेव बोले आसुरिमुनि तुम धन्य हो तुम निष्काम भगवानके भक्त हो, दर्शनकी इच्छा करिके तुमने इतनो श्रम कीनो, हे मुने! या बातको मैं जानोंहूं ॥ ४७ ॥ जैसे कर्मइन्द्री रसादिक जे विषय हैं तिन नहीं जाने हैं तैसेई निष्काम जे मुनीश्वर हैं वे मनुष्यनको वांछित जो सुख हैं या सुखकूं नहीं जाने हैं, जो गूढ परम निर्गुण सुख है ॥ ४८ ॥ जो भगवान् दुःखकूं प्राप्तभये हंसमुनिकूं सब ओरतें छुडायवेके लिये समुद्रमें जलदीसो गयेहे सोई अब वृन्दावनमें सखीजनके संग रसिक जनके ईश्वर आप रास करे है ॥ ४९ ॥ हे मुने! उन्हीं भगवान्ने आज छः महीनाकी रात्री देववरने अपनी मायाकरिके करी है सो मैंहूं उनके देखिवेकूं वहीं जाऊंगो तैसे तेरो मनोरथ है तो तूंभी वहीं जल्दी जा ॥ ५० ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां

वृन्दावनखण्डे भाषाटीकायां श्रीनारदबहुलाश्वसंवादे रासक्रीडायामासुरिमन्युपाख्यानं नामैकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ नारदजी कहैं हैं ऐसे मनते विचार करिके महादेवजो आसुरि मुनिकूं संग लैके दोनों कृष्णके दर्शनकूं व्रजमंडलमें आये ॥ १ ॥ जहां दिव्य वृक्ष लता कुंजकी छवीनके समूह तिनते शोभित दिव्य भूमिकूं देखत कालिंदीके निकट आये ॥ २ ॥ तब गोलोकवासिनी स्त्री महाबली बेंत लीये द्वारपालिका अपने पराक्रमते रोकनलगी ॥ ३ ॥ तब दोनोंजने उनते बोले हमारे कृष्णदर्शनकी लालसा है तब तो हे राजसिंह ! रस्तामें ठाडी जे द्वारपालिका हैं ते दोनोंनते बोली ॥ ४ ॥ हे द्विज हो ! श्रीकृष्णकी आज्ञाते सब बगलते या वृन्दावनमें किरोडन हम गोपी रासकी रक्षा करें हैं ॥ ५ ॥ यहां एकही पुरुष श्रीकृष्ण या निर्जन रासमण्डलके विषे हैं और कोई या एकांतमें गोपीयूथके विना नहीं जाय है ॥ ६ ॥ तुम कृष्णके देखिवेकी चाहनावारे कौन हो जो उने देखो चाहो हो तो तुम या मानसरोवरमें स्नान करो तब तुम्हारो गोपीरूप हैजायगो, हे मुनि हो ! तब तुम भीतर चलेजैयो ॥ ७ ॥ नारदजी कहैं हैं—ऐसे जब कह्यो तब

॥ ॥ श्रीनारद उवाच ॥ ॥ एवं विचिन्त्य मनसा शिवो वासुरिणा सह ॥ तौ कृष्णदर्शनार्थाय जग्मतुर्व्रजमण्डलम् ॥ १ ॥ दिव्यद्रुमलताकुंजतोलिकापुंजशोभिताम् ॥ पश्यन्तौ तौ दिव्यभूमिं कालिन्दीनिकटे गतौ ॥ २ ॥ गोलोकवासिन्यो नार्यो वेत्रहस्ता महाबलाः ॥ चक्रुर्वेलात्तत्रिषेधं मार्गस्था द्वारपालिकाः ॥ ३ ॥ तावूचतुश्चागतौ ताः कृष्णदर्शनलालसौ ॥ ताऽऽहुर्नृपशार्दूल मार्गस्था द्वारपालिकाः ॥ ४ ॥ ॥ द्वारपालिका ऊचुः ॥ ॥ सर्वतो वृन्दकारण्यं कोटिशः कोटिशो वयम् ॥ रासरक्षां सदा कुर्मो न्यस्ता कृष्णेन भो द्विजौ ॥ ५ ॥ एकोऽस्ति पुरुषः कृष्णो निर्जने रासमण्डले ॥ अन्यो न याति रहसि गोपीयूथं विना क्वचित् ॥ ६ ॥ चेद्दिदृक्षू युवां तस्य स्नानं मानसगे त्वरे ॥ कुरुतं तत्र गोपीत्वं प्राप्य शुव्रजतं मुनी ॥ ७ ॥ नारद उवाच ॥ ॥ इत्युक्तौ तौ मुनि शिवौ स्नात्वा मानसरोवरे ॥ गोपीत्वं प्राप्य सहसा जग्मतू रासमण्डले ॥ ८ ॥ सौवर्णप्रखचितपद्मरागभूमिमनोहरे ॥ माधवीलतिकावृन्दकदम्बाच्छादिते शुभे ॥ ९ ॥ वसन्तचन्द्रकौमुद्याप्रदीप्ते सर्वकौशले ॥ यमुनारत्नसोपानतोलिकाभिर्विराजिते ॥ १० ॥ मयूरहंसदात्यूहकोकिलैः कूजिते परे ॥ यमुनानिलनीलैजत्तरुपल्लवशोभिते ॥ ११ ॥ सभामण्डपवीथीभिः प्रांगणस्तम्भपंक्तिभिः ॥ पतत्पताकैर्दिव्याभैः सौवर्णैः कलशैर्वृते ॥ १२ ॥ श्वेतारुणैः पुष्पसंघैः पुष्पमंदिरवर्त्मभिः ॥ अलिकोलाहलैर्व्याप्ते वादित्रमधुरस्वनैः ॥ १३ ॥

शिवजी और आसुरिमुनि दोनो मानसरोवरमें स्नान करतभये, तब गोपीरूपकूं प्राप्त हैके रासमंडलमें भीतर गये ॥ ८ ॥ जो रासमंडल कैसो है कि, जहां पुखराजके जडावकी सुवर्णभूमि है और मालती माधवीकी लतानके वृन्दनते ढकें जे कदंबनके वृक्ष तिनसों आच्छादित है ॥ ९ ॥ वसंत ऋतुके चन्द्रमाकी चांदनीते उज्ज्वल सब शोभा जामें ऐसी रत्ननकी सिढी और छत्री तिनसों विराजित है ॥ १० ॥ मोर, हंस, पपीहा, कोइल, कपोल, तोता, मैना, जहां बोलि रहे ऐसी यमुनाजीकी शीतल सुगंधित पवनते हलते वृक्षनके पत्र तिनकरिके शोभित है ॥ ११ ॥ सभामंडप, गली, आंगन, चौक, तिनकी पंगति जामें ध्वजा, पताका, जापै फैराय रही ऐसे सुनहैरी कलशा जहां झलकि रहे हैं ॥ १२ ॥ काले, पीले, लाल, सुपेद, सुनहैरी, सोसनी, पुष्पनके मन्दिर तिनके मार्गनसों और भौंरानके कोलाहलसे व्याप्त है और मनोहर बाजे जहां बजि रहे हैं ॥ १३ ॥

हजार २ दलनके कमलनकी मन्द २ चलती जो शीतल सुगंधित पवन ताते चारों औरते सुगंधित हैरह्यो है ॥ १४ ॥ ता निकुञ्जमें किशोर चंद्रमाकीसी कांति हंसकीसी जाकी चाल ऐसी पद्मिनी नायिका जो राधा ता करिकें अत्यंत शोभित जे श्रीकृष्ण तिनकूं देखतभये ॥ १५ ॥ सखीरूपी रत्ननकरिकें आवृत रासमंडलके बीचमें वर्तमान श्यामसुन्दर किरोड़ कामदेवसे मनोहर पीतांबर पहरे ॥ १६ ॥ वंशी बजावते, बेत लिये, मनोहर श्रीवत्सको चिह्न और कौस्तुभमणि धरे, वनमालाते भूषित, विराजित हैं ॥ १७ ॥ नूपुरनके घुंघुरा जिनके बजि रहे हैं, कोंधनी बाजूं जिनते शोभित रत्नके हार कंकण सूर्यसे कानमें कुंडल तिनसों भूषित ॥ १८ ॥ किरोड़ चन्द्रमाकीसी कांतिके मुकुटको धारण करे देवमें चतुर जे अपने कटाक्ष तिनकरिकें गोपीनके मनकूं हरें ॥ १९ ॥ ऐसे कृष्णको दूरतेंई देखिकें आसुरिमुनि और महादेवजी सब गोपीनके देखत २ हे राजन्! हाथ जोड ॥ २० ॥ हर्षसों

सहस्रदलपद्मानांवायुनामन्दगामिना ॥ शीतलेनसुपुण्येनसर्वतःसुरभीकृते ॥ १४ ॥ तस्मिन्निकुंजेश्रीकृष्णंकोटिचन्द्रप्रकाशया ॥ पद्मिन्या हंसगामिन्याराधयासमलंकृतम् ॥ १५ ॥ स्त्रीरत्नैरावृतंशश्वद्रासमण्डलमध्यगम् ॥ कोटिमन्मथलावण्यंश्यामसुंदरविग्रहम् ॥ १६ ॥ वंशीधरं पीतपटंवेत्रपाणिंमनोहरम् ॥ श्रीवत्सांककौस्तुभिनंवनमालाविराजितम् ॥ १७ ॥ क्वणन्नूपुरमंजीरकांचीकेयूरभूषितम् ॥ हारकंकणबाला र्ककुण्डलद्वयमंडितम् ॥ १८ ॥ कोटिचंद्रप्रतीकाशंमौलिनंनन्दनन्दनम् ॥ दानदक्षैःकटाक्षैश्चहरन्तंगोपितामनः ॥ १९ ॥ दूरादृपश्यतांरा जन्नासुरीशौकृतांजली ॥ गोपीजनानांसर्वेषांपश्यतांनृपसत्तम ॥ २० ॥ नत्वाश्रीकृष्णपादाब्जमूचतुर्हर्षविह्वलौ ॥ ॥ द्वावूचतुः ॥ ॥ कृष्णकृष्णमहायोगिन्देवदेवजगत्पते ॥ २१ ॥ पुण्डरीकाक्षगोविंदगरुडध्वजतेनमः ॥ जनार्दनजगन्नाथपद्मनाभत्रिविक्रम ॥ दामोदरहृ षीकेशवासुदेवनमोस्तुते ॥ २२ ॥ अद्यैवदेवपरिपूर्णतमस्तुसाक्षाद्भूरिभारहरणायसतांशुभाय ॥ प्राप्तोऽसिनन्दभवनेपरतःपरस्त्वंकृत्वाहि सर्वनिजलोकमशेषशून्यम् ॥ २३ ॥ अंशांशकांशककलाभिरुताभिरामंवेशप्रपूर्णनिचयाभिरतीवयुक्तः ॥ विश्वंबिभर्षिरसरासमलंकरोपिवृं दावनंचपरिपूर्णतमःस्वयंत्वम् ॥ २४ ॥ गोलोकनाथगिरिराजपतेपरेशवृन्दावनेशकृतनित्यविहारलील ॥ राधापतेव्रजवधूजनगीतकी र्तेगोविन्दगोकुलपतेकिलतेजयोऽस्तु ॥ २५ ॥

विह्वल है श्रीकृष्णके चरणकमलकूं दंडोत करिकें यह बोले हे कृष्ण २! हे महायोगिन्! हे देवदेव! हे जगत्पते! ॥ २१ ॥ हे पुंडरीकाक्ष! हे गोविंद! हे गरुडध्वज! तुम्हारे अर्थ नमस्कार है, हे जनार्दन! हे जगन्नाथ! हे पद्मनाभ! हे त्रिविक्रम! हे दामोदर! हे हृषीकेश! हे वासुदेव! तुम्हारे अर्थ नमस्कार है ॥ २२ ॥ हे देव परिपूर्णतम! तुम साक्षात् अबहीं पृथ्वीको भार उतारिवेकूं संतनके कल्याणके लीये परते परे तुम अपने सब वैकुंठलोकनकूं खाली करिकें नंदभवनमें आये हौ ॥ २३ ॥ अंश अंशके अंश कला आवेश पूर्ण तिनकरिकें युक्त विश्वको पालन करौहौ और परिपूर्ण आप वृंदावनकी शोभा बढावते रासरसकूं पुष्ट करौ हौ ॥ २४ ॥ हे लोकनाथ! हे गिरिराजपते! हे परेश! हे

वृंदावनेश ! कीनी है नित्य विहारलीला जिनने, हे राधापते ! हे व्रजजनगीतकीर्ते ! हे गोविन्द ! हे गोकुलपते ! तुम्हारी जय होय ॥ २५ ॥ शोभायमान निकुंज लतानके
प्रफुल्लित करनहारे तुम बसंतऋतु हो; श्रीराधिकाके हृदय कंठके भूषण तुमहीं हो; रासमंडलके पति, व्रजमंडलके पति, ब्रह्मांडमंडलके पति, पृथ्वीके पालक, तुमही हो ॥ २६ ॥
नारदजी कहैंहैं कि, तब राधा कृष्ण दोनों प्रसन्न ह्वैके मंदमुसक्यान करते गंभीर-वाणीते बोले ॥ २७ ॥ तुम दोनोंने सब ओरते निरपेक्ष ह्वैके साठहजारवर्ष तप कीनोंहै ताते
मेरो दर्शन तुमकूं भयो है ॥ २८ ॥ जो निष्किंचन है, शांत हैं, काऊते वैर नहीं करै है सो मेरो मित्र है, ताते तुम द्वौ जने जो इच्छा होय सोई वर मांगो ॥ २९ ॥ तब आसुरि
मुनि और महादेवजी यह बोले हे भूमन् ! तुमारे अर्थ नमस्कार है, हमारो तुमारे चरणकमलमें सदाही वृंदावनमें वास होउ, तुमारे चरणकमल बिना और वर हम नहीं

श्रीमन्निकुंजलतिकाकुसुमाकरस्त्वं श्रीराधिकाहृदयकण्ठविभूषणस्त्वम् ॥ श्रीरासमण्डलपतिर्व्रजमण्डलेशो ब्रह्मांडमंडलमहीपरिपालकोसि ॥
॥ २६ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ तदाप्रसन्नोभगवान्राधयासहितोहरिः ॥ मन्दस्मितोमुनिंप्राहमेघगंभीरयागिरा ॥ २७ ॥ ॥ श्रीभग
वानुवाच ॥ ॥ षष्टिवर्षसहस्राणियुवयोस्तपतोस्तपः ॥ मद्दर्शनंतेनजातंसर्वतोनैरपेक्षयोः ॥ २८ ॥ निष्किंचनोयःशान्तश्चाजातशत्रुःसम
त्सखा ॥ तस्माद्युवाभ्यांमनसावियतामीप्सितोवरः ॥ २९ ॥ ॥ शिवासुरीऊचतुः ॥ ॥ नमोस्तुभूमन्युवयोःपदाब्जेसदैववृन्दावनम
ध्यवासः ॥ नरोचतेन्योन्यमतस्त्वदंघ्रेर्नमोयुवाभ्यांहरिराधिकाभ्याम् ॥ ३० ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ तथास्तुचोक्काभगवान्वृ
न्दारण्येमनोहरे ॥ कालिन्दीनिकटेराजन्रासमण्डलमण्डिते ॥ ३१ ॥ निकुंजपार्श्वेपुलिनेवंशीवटसमीपतः ॥ शिवोपिचासुरिर्मुनिर्नित्यं
वासंचकारह ॥ ३२ ॥ अथकृष्णोरासलीलांचक्रेपद्माकरेवने ॥ पतत्सुगन्धिरजसिगोपीभिर्भ्रमराकुले ॥ ३३ ॥ एवंषाण्मासिकीरात्रिः
कृताकृष्णेनमैथिल ॥ गोपीनांरासलीलायांव्यतीताक्षणवत्सुखैः ॥ ३४ ॥ अरुणोदयवेलायांस्वगृहान्व्रजयोषितः ॥ यूथीभूत्वाययूराजन्सर्वाः
पूर्णमनोरथाः ॥ ३५ ॥ श्रीनन्दमन्दिरंसाक्षात्प्रययौनन्दनन्दनः ॥ वृषभानुपुरंप्रागाद्वृषभानुसुतात्विरम् ॥ ३६ ॥ एवंश्रीकृष्णचन्द्रस्यरासा
ख्यानंमनोहरम् ॥ सर्वपापहरंपुण्यंकामदंमंगलायनम् ॥ ३७ ॥

चाहे हैं, तुमारे राधा कृष्णके अर्थ हमारो नमस्कार है ॥ ३० ॥ नारदजी कहैंहैं तथास्तु तैसेई होउ ! ऐसे कहिकै भगवान् रासमंडलते शोभित कालिंदीके निकट ॥ ३१ ॥
निकुंजके पास वंशीवटके सन्मुख नित्य निवास करते भये, आसुरिमुनि और महादेवहू वहांही वास करते भये ॥ ३२ ॥ यांके अनंतर जामें सुगंधित कमलके फूलन
की रज उडिरही, भौंरा गुंजार रहे ता पद्माकर वनमें गोपीनकों संग लेके श्रीकृष्ण रासलीला करते भये ॥ ३३ ॥ हे मैथिल ! ऐसे श्रीकृष्णने छः महीनाकी राति गोपीनकी
रासलीलामें करिदीनी तोऊ गोपीनकूं वा सुखमें एक क्षणसी मालूम पड़ी ॥ ३४ ॥ जब अरुणोदय भयो तब व्रजसुंदरी अपने २ यूथ बनायके अपने २ मन्दिरनकूं जातभई,
क्योंकि उन सबनके पूर्णमनोरथ ह्वैगये हैं ॥ ३५ ॥ साक्षात् नंदनंदन श्रीनंदमंदिरकूं चलेगये और वृषभानुसुता बरसानेकूं चली गई ॥ ३६ ॥ यह श्रीकृष्णचंदको मनोहर रासको

आख्यान वर्णन कर्यो ये सब पापनका हरनहारो परम पवित्र कामको दाता और मंगल करनहारो है, ॥ २७ ॥ धर्म, अर्थ, कामको देनहारो और मुमुक्षू जननकूं मुक्ति देनहारो सो मैंने तेरे अगाडी कह्यो है तुम अब कहा सुनिवेकी इच्छा करौ हौ ॥२८॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां वृंदावनखंडे भाषाटीकायां रासक्रीडावर्णनं नाम द्वाविंशोऽध्यायः॥२२॥ तब बहुलाश्व राजा पूछै है कि, अघासुर आदि दैत्यनकी जोति श्रीकृष्णमें लीन हैगई और शंखचूड यक्षकी ज्योति श्रीदाममें लीन भई सो कैसे लीनभई सो कहो ॥ १ ॥ हे महाबुद्धे ! तुम पर अपरके वेत्तानमें श्रेष्ठ हो यह कहो? अहो ! श्रीकृष्णको परम अद्भुत चरित्र है ॥ २ ॥ नारदजी कहेहैं कि, पहलो गोलोकको वृत्तांत है नारायणके मुखते मैंने सुन्यो है ये सब पापनको हरनहारो है पवित्र है ताहि हे राजन् ! महामते ! तुम सुनो ॥ ३ ॥ राधा श्री विजया और भू ये तीन पत्नी ही तिनमें राधाजी श्रीकृष्ण महात्माकी अत्यंत प्यारी

त्रिवर्गदंजनानांतुमुमुक्षूणांमुमुक्तिदम् ॥ मयातवाग्रेकथितंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ २८ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांवृन्दावनखण्डेरासक्रीडावर्णनंनामद्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ अघासुरादिदैत्यानांज्योतिःकृष्णेसमाविशत् ॥ श्रीदाम्निशंखचूडस्यकस्माल्लीनंबभूवह ॥ १ ॥ एतद्वदमहाबुद्धेत्वंपरावरवित्तम ॥ अहोश्रीकृष्णचन्द्रस्यचरितंपरमाद्भुतम् ॥ २ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ पुरागोलोकवृत्तान्तंनारायणमुखाच्छ्रुतम् ॥ सर्वपापहरंपुण्यंशृणुराजन्महामते ॥ ३ ॥ राधाश्रीर्विजयाभूश्चतिस्रःपत्न्योऽभवन्हरेः ॥ तासांराधाप्रियातीवश्रीकृष्णस्यमहात्मनः ॥ ४ ॥ राधिकासवयाराजन्कोटिचन्द्रप्रकाशया ॥ कुंजेविरजयारेमेएकान्तेचैकदाप्रभुः ॥ ५ ॥ सपत्नीसहितंकृष्णंराधाश्रुत्वासखीमुखात् ॥ अतीवविमनाजातासपत्नीसौख्यदुःखिता ॥ ६ ॥ शतयोजनविस्तारंशतयोजनमूर्ध्वगम् ॥ कोटयश्विनीसमायुक्तंकोटिसूर्यसमप्रभम् ॥ ७ ॥ विचित्ररत्नसौवर्णमुक्तादामविलम्बितम् ॥ पताकाहेमकलशैःकोटिभिर्मण्डितंरथम् ॥ ८ ॥ समारुह्यसखीनांसार्द्धवेत्रहस्तैर्दशार्बुदैः ॥ हरिंद्रष्टुंजगामाशुश्रीराधाभगवत्प्रिया ॥ ९ ॥ तन्निकुंजेद्वारपालंश्रीदामानंमहाबलम् ॥ हरिन्यस्तंसमालोक्ययन्निर्भर्त्स्यसखीजनैः ॥ १० ॥ वेत्रैःसन्ताड्यसहसाद्वारिगन्तुंसमुद्यता ॥ सखीकोलाहलंश्रुत्वाहरिरंतरधीयत ॥ ११ ॥

ही ॥ ४ ॥ किरोड चंद्रमाकोसो प्रकाश जाको और श्रीराधाकी सवयानाम अवस्थामें बराबर विरजा नामकी एक सखी ही ताके संग एकांत कुंजमें विहार करते भये ॥ ५ ॥ तब श्रीराधाजी सौतिके संग श्रीकृष्णकूं विहार करत सखीके मुखते सुनिके अत्यन्त विमन हैके सौतके सुखते दुःखी भई ॥ ६ ॥ तब सौ योजन चौडो, सौ योजन ऊंचो, किरोड घोडी जामें लगी,किरोड सूर्यकोसा जाको तेज ॥ ७ ॥ चित्र विचित्र रत्न जामें लगे ऐसो सुवर्णको रथ, मोतीनकी झालर जामें लगी किरोडन पताका किरोडन जामें कलशा तिनसो भूषित ॥ ८ ॥ ता रथमें बैठिके दश अर्बुद वेतधारी सखीनकूं संग लेके श्रीकृष्णकूं देखिवेकूं हरिकी प्यारी राधा आई ॥ ९ ॥ ता निकुंजके द्वारका द्वारपाल श्रीदामा नाम महाबली गोप हो वाको राधिकाजी देखिके ललकारिके सखीजननके हाथ ॥ १० ॥ बेतनते मारिके भीतर जायवेकूं उद्यत भई, तब सखीनको कोलाहल

सुनिके हरि भीतर विरजाके पास है, सो अंतर्ध्यान हैगये ॥ ११ ॥ और राधाकी भयकी मारी विरजा सखी नदी हैके बह गई, गोलोकमें किरोड़ योजन चौंड़ी हैगई ॥ १२ ॥
सहसा अकस्मात कुंडली बाँधिके जैसे पृथ्वीपे समुद्र और रत्न पुष्पनते गुही भई उष्णिग् जैसे तैसेंही वो नदी गोलोकके चारों तरफ सुशोभित भई ॥ १३ ॥ तब हरिको अंत
र्धान भयो ,और विरजाकी नदी हैगई देखिके राधिका अपनी कुंजकूं चलीआई ॥ १४ ॥ याके अनन्तर हे नृपेश्वर ! श्रीकृष्णने नदी भई विरजाको निर्मल वस्त्र धारण करनहारी
अपनो वर देके सदेह करिदीनी ॥ १५ ॥ फिर विरजाके तीरके वनमें विरजाके संग रास करतभये, फिर वृंदावनकी निकुंजमें रास करतभये ॥ १६ ॥ विरजाके सात बेटा भये
कृष्णके तेजते वे अपनी बाललीलाते निकुंजकूं शोभित करते भये ॥ १७ ॥ एकदिन उन सातो बेटानमें लड़ाई हैपडी, बड़ेनने छोटे बेटाकूं मारयौ तब वो छोटा बेटा डरके

राधाभयाच्चविरजानदीभूत्वाऽवहत्तदा ॥ कोटियोजनमायामेगोलोकंसहसानदी ॥ १२ ॥ सहसाकुण्डलीकृत्वाशुशुभेब्धिरिवावनिम् ॥
रत्नपुष्पैर्विचित्रांगायथोष्णिक्सुद्रितातथा ॥ १३ ॥ हरिंगतंतंविज्ञायनदीभूतांचतांतथा ॥ आलोक्यतन्निकुंजंचस्वकुंजंराधिकाययौ ॥ १४ ॥
अथकृष्णोनदीभूतांविरजांविरजांबराम् ॥ सविग्रहांचकाराशुस्ववरेणनृपेश्वर ॥ १५ ॥ पुनर्विरजयासार्द्धंविरजातीरजेवने ॥ निकुंजवृन्दका
रण्येचक्रेरासंहरिःस्वयम् ॥ १६ ॥ विरजायांसप्तसुताबभूवुःकृष्णतेजसा ॥ निकुंजंतेह्यलंचक्रुःशिशवोबाललीलया ॥ १७ ॥ एकदातेःक
लिरभूल्लघुर्ज्येष्ठैश्चताडितः ॥ पलायमानोभयभृन्मातुःक्रोडंजगामह ॥ १८ ॥ तल्लालनंसमारेभेसमाश्वास्यसुतंसती ॥ तदैवभगवान्साक्षा
त्तत्रैवान्तरधीयत ॥ १९ ॥ रुषासुतंसशापेयंश्रीकृष्णविरहातुरा ॥ त्वंजलंभवदुर्बुद्धेकृष्णविच्छेदकारकः ॥ २० ॥ कदापित्वज्जलंमर्त्या
नपिबंतुकदाचन ॥ ज्येष्ठाञ्शशापव्रजतमेदिनींकलिकारकाः ॥ २१ ॥ जलरूपाःपृथग्यानानसमेताभविष्यथ ॥ नैमित्तिकंचभवतांमे
लनंस्यात्सदालये ॥ २२ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्थंतेमातृशापेनधरणींसमागताः ॥ प्रियव्रतरथांगानांपरिखासुसमास्थिताः
॥ २३ ॥ लवणेक्षुसुरासर्पिर्दधिदुग्धजलार्णवाः ॥ बभूवुःसप्ततेराजन्नक्षोभ्याश्चदुरत्ययाः ॥ २४ ॥ दुर्विगाह्याश्चगंभीराआयामंलक्षयोज
नात् ॥ द्विगुणंद्विगुणंजातंद्वीपेद्वीपेपृथक्पृथक् ॥ २५ ॥

मय्याकी गोदीमें गयौ ॥ १८ ॥ तब मैया पुचकारिके लाड लडावन लगी भगवान् तही अंतर्धान हैगये, ॥ १९ ॥ तब विरजा रोषकरिके श्रीकृष्णके विरहते वा बेटाको शाप
देती भई हे दुर्बुद्धी ! तूं जल हैजा, तैंने श्रीकृष्णको वियोग कराय दियो है ॥ २० ॥ तेरे जलकूं कबहूं कोई मनुष्य नहीं पीवेगो, बड़ेनकूं यह शाप दीनों, हे क्लेशके करनहारे
हो ! तुम पृथ्वीमें जाउ ॥ २१ ॥ जलरूप न्यारे २ रहोगे मिलोगे नहीं, तुमारो नैमित्तिक प्रलयमें मिलनो होय ॥ २२ ॥ नारद कहें हैं, ऐसे जे मैयाके शापते पृथ्वीमें आयेहे
वे प्रियव्रतके रथकी करी खाईमें आयके स्थित हैके समुद्र भये ॥ २३ ॥ खारी समुद्र १, ईखके रसको २, मदिराको ३, घृतको ४, दहीको ५, दूधको ६, मीठे जलको ७, ये
सात समुद्र बडे अक्षोभ्य तथा दुरत्यय भये ॥ २४ ॥ बडे दुर्विगाह्य और गहरे लाख योजनते लेके दूने १ एक लाख, २ लाख, ४ लाख, ८ लाख, १६ लाख, ३२ लाख, ६४

लाख, द्वीप ३ में न्यारे न्यारे भये ॥ २५ ॥ ऐसे जब पुत्र चलेगये तब पुत्रके विरहमें विह्वल हैगई जो अपनी प्यारी विरहिणी विरजा ताकूं श्रीकृष्ण समीप आयके वर देते
भये ॥ २६ ॥ हे भीरु ! मेरो तेरो कबहूं वियोग न होयगो, अपने तेजते अपने बेटानकी सदाई रक्षा करैगी ॥ २७ ॥ याके अनंतर विरहिणी राधिकाकूं जानिके श्रीदामाकूं
संग लेके हे वैदेह ! श्रीकृष्ण राधिकाके निकुंजकूं गये ॥ २८ ॥ सखाके संग निकुंजके दरवज्जेपै आये अपने प्राणवल्लभ तिनकूं देखिके मानवती हैके श्रीराधाजी यह वचन बोली
॥ २९ ॥ हे हरे ! जहां तुम्हारो नयो नेह जुर्यो है, तहीं जाउ वुह नदी हैगई है, तुम नद हैजाउ और वाही निकुंजमें वास करो मेरो तुम्हारो कहा प्रयोजन है ॥ ३० ॥ नार
दजी कहे हैं कि, भगवान् यह सुनके वाही निकुंजमें चलेगये ॥ ३१ ॥ तब श्रीकृष्णको मित्र श्रीदामा क्रोधसों राधाजीसों ये बोल्यो कि, परिपूर्णतम साक्षात् श्रीकृष्ण स्वयं भग

अथपुत्रेषुयातेषुपुत्रस्नेहातिविह्वला ॥ स्वप्रियांतांविरहिणीमेत्यकृष्णोवरंददौ ॥ २६ ॥ कदानतेमेविच्छेदोमयिभीरुभविष्यति ॥ स्वतेज
सात्वपुत्राणांसदारक्षांकरिष्यसि ॥ २७ ॥ अथराधांविरहिणींज्ञात्वाकृष्णोहरिःस्वयम् ॥ श्रीदामासहवैदेहतन्निकुंजंसमाययौ ॥ २८ ॥
निकुंजद्वारिसंप्राप्तंससखंप्राणवल्लभम् ॥ वीक्ष्यमानवतीभूत्वाराधाप्राहहरिंवचः ॥ २९ ॥ ॥ राधोवाच ॥ ॥ तत्रैवगच्छयत्राभूत्स्नेहस्ते
नूतनोहरे ॥ नदीभूताहिविरजानदोभवितुमर्हसि ॥ कुरुवासंतन्निकुंजेमयातेकिंप्रयोजनम् ॥ ३० ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वाथ
भगवांस्तन्निकुंजंजगामह ॥ ३१ ॥ श्रीकृष्णमित्रश्रीदामाराधाम्प्राहरुषावचः ॥ ॥ श्रीदामोवाच ॥ ॥ परिपूर्णतमःसाक्षाच्छ्रीकृष्णोभ
गवान्स्वयम् ॥ ३२ ॥ असंख्यब्रह्माण्डपतिर्गोलोकेशोविराजते ॥ त्वादृशीःकोटिशःशक्तीःकर्तुंशक्तःपरात्परः ॥ ३३ ॥ तंविनिन्दसिराधे
त्वंमानंमाकुरुमाकुरु ॥ ॥ राधोवाच ॥ ॥ हेमूढपितरंस्तुत्वामातरंमांविनिन्दसि ॥ ३४ ॥ राक्षसोभवदुर्बुद्धेगोलोकाच्चबहिर्भव ॥
॥ ॥ श्रीदामोवाच ॥ ॥ अनुकूलेनकृष्णेनजातंमानंशुभेतव ॥ ३५ ॥ तस्माद्धुविपरात्कृष्णात्परिपूर्णतमात्प्रभोः ॥ शतवर्षंतेवियोगो
भविष्यतिनसंशयः ॥ ३६ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवंपरस्परंशापात्स्वकृताद्द्वयभीतयोः ॥ अतीवचिंतांगतयोराविरासीत्स्वयंप्रभुः ॥
॥ ३७ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ वचनंवैस्वनिगमंदूरीकर्तुंक्षमोस्म्यहम् ॥ भक्तानांवचनंराधेदूरीकर्तुंनचक्षमः ॥ ३८ ॥

वान् ॥ ३२ ॥ गोलोकके पति, असंख्य ब्रह्मांडनके पति, विराजे है, परेतें परे है, तोसरीकी किरोड़न शक्तिके उत्पत्ति करिवेमें समर्थ है ॥ ३३ ॥ हे राधे ! तिनकी तूं निंदा
करैहै याते मान मति करै मति करै तब राधिका बोली–हे मूढ ! पिताकी स्तुति करिके मैयाकी मेरी निंदा करै है ॥ ३४ ॥ हे दुर्बुद्धे ! याते तूं राक्षस हैजा, गोलोकते निकसि
बाहिरै परि, फेर श्रीदामा बोल्यो–हे शुभे ! श्रीकृष्ण तो तेरे अनुकूल है तोऊ तैंनें मान कीनो ॥ ३५ ॥ याते परिपूर्णतम श्रीकृष्ण प्रभुते पृथ्वीमें जायके सौ वर्षको तेरो वियोग
होयगो यामें कछू संदेह नहीं है ॥ ३६ ॥ ऐसे अपने दोनें परस्पर शापते भयभीत भये और दोनोनकूं चिंता भई तबही हरि प्रगट भये ॥ ३७ ॥ और यह बोले कि,

हे राधे ! अपनो वचन तो चाहे मै दूरि करिसकूं पर भक्तनको वचन दूरि करिवेकूं मेरी सामर्थ्य नही है ॥ ३८ ॥ हे कल्याणी ! तूं शोच मति करे मेरे वरको सुन महीना महीनामें तोकूँ मेरो वियोगके अन्तमें दर्शन भयो करैगो ॥ ३९ ॥ वाराहकल्पमें पृथ्वीके भार उतारिवेके लीये, भक्तनकूं दर्शन देवेके लीये तोसहित मैं जाऊंगो ॥ ४० ॥ हे श्रीदामा ! तूं मेरो वचन सुन तूं अंश करिके राक्षस हैजा, वैवस्वत मन्वंतरमें तूं मेरो रासमें अपराध करैगो ॥ ४१ ॥ तब मेरे हाथते तेरी मृत्यु होयगी, निश्चय मेरे वरते फिर अपने स्वरूपकूं प्राप्त हैजायगो यामें संदेह नहीं ॥ ४२ ॥ नारदजी कहें हैं-हे राजन् ! जा शापते श्रीदामा पहिले यक्षनमें सुधन नामके यक्षके घर जन्म लेत भयो

माशोचंकुरुकल्याणिवरंमेशृणुराधिके ॥ मासंमासंवियोगांतेदर्शनंमेभविष्यति ॥ ३९ ॥ भुवोभारावतारायकल्पेवाराहसंज्ञके ॥ भक्तानां दर्शनंदातुंगमिष्यामित्वयासह ॥ ४० ॥ श्रीदामञ्छृणुमेवाक्यमंशेनत्वंसुरोभव ॥ वैवस्वतान्तरेरासेहेलनंमेकरिष्यसि ॥ ४१ ॥ मद्धस्ते नचतेमृत्युर्भविष्यतिनसंशयः ॥ पुनःस्वविग्रहम्पूर्वम्प्राप्स्यसित्वंवरान्मम ॥ ४२ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवंशापेनश्रीदामापुरापुण्य जनालये ॥ सुधनस्यगृहेजन्मलेभेराजन्महातपाः ॥ ४३ ॥ शंखचूडइतिख्यातोधनदानुचरोऽभवत् ॥ तस्माच्छ्रीदाम्नितज्ज्योतिर्लीनंजातंवि देहराट् ॥ ४४ ॥ स्वात्मारामोलीलयासर्वकार्यंस्वस्मिन्धाम्निह्यद्वितीयःकरोति ॥ यःसर्वेशःसर्वरूपोमहात्माचित्रंनेदंनौमिकृष्णायतस्मै ॥ ॥ ४५ ॥ इदंमयातेकथितंमनोहरंवैदेहवृन्दावनखण्डमग्रतः ॥ शृणोतिचैतच्चरितंनरोवरःपरम्पदम्पुण्यतमम्प्रयातिसः ॥ ४६ ॥ इतिश्रीमद्ग र्गसंहितायांवृंदावनखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेशंखचूडोपाख्यानंनामत्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ ॥ समाप्तश्चवृन्दावनखण्डः ॥ २ ॥

॥ ४३ ॥ जाते शंखचूड या नामते प्रसिद्ध भयो, ये कुबेरके अनुचर भयो याते हे राजन् ! बाकी जोति श्रीदामामें लीन हैगई श्रीकृष्णमें न भई ॥ ४४ ॥ आत्माराम भगवान् अपनेही विषय लीला करिके सब कार्यनकूं करें हैं, अद्वितीय सर्वेश्वर सर्वरूप महात्मा हैं सो कछू एसी लीला करिवेको अचंभो नहीं है ता, श्रीकृष्णके अर्थ मेरो नमस्कार है ॥ ४५ ॥ हे वैदेह ! यह मनोहर चरित्र वृंदावनखंड मैंने तेरे अगाडी कह्यो जो नरोत्तम या चरित्रकूं सुने वो मनुष्य अति पवित्र परमपदकूं प्राप्त होयहै ॥ ४६ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां वृंदावनखंडे भाषाटीकायां शंखचूडोपाख्यानं नाम त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ समाप्तोयं वृंदावनखंडः ॥ २ ॥

इदं पुस्तकं क्षेमराज-श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना मुम्बय्यां (खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लेन)
स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) मुद्रणयन्त्रालये मुद्रयित्वा
प्रकाशितम् । संवत १९६७, शके १८३२.

॥ इति गर्गसंहितायां वृन्दावनखण्डं भाषाटीकासमेतं समाप्तम् ॥

J१५८१
(५)

॥ अथ गर्गसंहितायां गिरिराजखण्डं भाषाटीकासहितं प्रारम्यते ॥

(तृतीयखण्डम् ३)

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ गिरिराजखंडः ॥ बहुलाश्व राजा नारदजीते पूछेहै कि भगवान् श्रीकृष्णने गोवर्द्धन पर्वतकूँ सहजमेंही एक हाथपै कैसें धारण करलीनों जैसे
बालक छत्तेनाकूँ उठाय लेय है ॥ १ ॥ हे मुनिसत्तम ! परिपूर्णतम साक्षात् महात्मा श्रीकृष्णको जो दिव्य यह अद्भुत चरित्र है ताकूं तो मोहि सुनाय देउ ॥ २ ॥ ऐसें
राजाकौ वचन सुनिकें नारदजी बोले कि सबरे गोप और किसान लोग जैसे कंसकूं वार्षिक कर देते है ऐसेही वर्षाके अन्तमें इन्द्रकूँहू बलि दियौ करते है ॥ ३ ॥ सो
इन्द्रके यज्ञकी सामग्री इकट्ठी करते उन गोपनको देखके एकदिन सभामें सब गोपनके सुनत सुनत श्रीकृष्ण नन्दजीते यह बोले ॥ ४ ॥ या इन्द्रके पूजनको कहा फल
है, यह याही लोककौ काम है अथवा ये परलोककौहू सहायक है यह मेरे आगे कहौ ॥ ५ ॥ तब नन्दजी बोले यह इन्द्रको जो पूजन है सो या लोकमें सर्वोत्तम भुक्ति (भोगकी)

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीसरस्वत्यैनमः ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ कथंदधारभगवान्गिरिंगोवर्द्धनंवरम् ॥ उच्छिलींध्रंयथाबालोहस्तेनैके
नलीलया ॥ १ ॥ परिपूर्णतमस्यास्यश्रीकृष्णस्यमहात्मनः ॥ तदेवचरितंदिव्यमद्भुतंमुनिसत्तम ॥ २ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ वार्षि
कंहिकरंराज्ञेयथाशक्रायवैतथा ॥ बलिन्ददुःप्रावृडंतेगोपाःसर्वेकृषीवलाः ॥ ३ ॥ महेन्द्रयागसंभारचयंदृष्ट्वैकदाहरिः ॥ नन्दंपप्रच्छसदसिव
ल्लभानांत्विशृण्वताम् ॥ ४ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ शक्रस्यपूजनंह्येतत्किम्फलंचास्यविद्यते ॥ लौकिकंवावदन्त्येतदथवापारलौकि
कम् ॥ ५ ॥ ॥ श्रीनन्दउवाच ॥ ॥ शक्रस्यपूजनंह्येतद्भुक्तिमुक्तिकरम्परम् ॥ एतद्विनानरोभूमौजायतेनसुखीक्वचित् ॥ ६ ॥ ॥ श्री
भगवानुवाच ॥ ॥ शक्रादयोदेवगणाश्चसर्वतोभुञ्जन्तियेस्वर्गसुखंस्वकर्मभिः ॥ विशन्तितेमर्त्यपदंशुभक्षयेतत्सेवनंविद्धिनमुक्तिकारणम्
॥ ७ ॥ भयंभवेद्वैपरमेष्ठिनेयतोवार्तातुकाकौकिलतत्कृतात्मनाम् ॥ तस्मात्परंकालमनंतमेवहिसर्वंबलिष्ठंसुधियाविदुःपरे ॥ ८ ॥ ततस्तमा
श्रित्यसुकर्मभिःपरंभजेद्धरिंयज्ञपतिंसुरेश्वरम् ॥ विसृज्यसर्वंमनसाकृतेःफलंव्रजेत्परंमोक्षमसौनचान्यथा ॥ ९ ॥ गोविप्रसाध्वग्निसुराःश्रुति
स्तथाधर्मश्चयज्ञाधिपतेर्विभूतयः ॥ धिष्ण्येषुचैतेषुहरिम्भजन्तियेसदात्विहामुत्रसुखंव्रजन्तिते ॥ १० ॥

देनहारो है और परलोकमें मुक्तिकौ दाता है याके पूजन विना मनुष्य पृथ्वीमें कबहूं सुखी नहीं होय हैं ऐसें नन्दजीकौ वचन सुनकें भगवान् बोले ॥ ६ ॥ इंद्रादिक सबरे
देवता अपने २ कर्मनते स्वर्गके सुखकूं भोगें हैं जब उनको पुण्य क्षीण हैजाय है तब फिर मनुष्यलोकमें आयकें जन्म लेय हैं यासो विनकौ सेवन मुक्तिको कारण
नहीं है ऐसो तुम जानो ॥ ७ ॥ जा परमेश्वरते ब्रह्माकूंहू भय होय है फिर वा ब्रह्माके बनाये जे देव मनुष्य तिनकी भूमिमें कहा गिनती है ताते एक केवल कालकोही
अनंतरूप और महाबली जे सुबुद्धि हैं ते जानें हैं ॥ ८ ॥ ताते ताकौ आश्रय लेकें और सबको छोडके मन लगायकें कर्मनके फलरूप वाही परमेश्वरको सुंदर कर्मनते
भजन सेवनकर जो यज्ञपति है देवतानको ईश्वर और सबते पेर है तो परम फल जो मोक्ष है ताकूँ पावें हैं और तरहते मोक्ष नहीं मिले है ॥ ९ ॥ वा भगवान्‌की

ये विभूति है कोन कोन कि, गौ, ब्राह्मण, साधु, अग्नि, देवता, वेद, और धर्म, ये सब याके निवासस्थान है याते इनकोही जे पूजन करें हैं वेही या लोकके और परलोकके दोनों सुखनकूं भोगे है ॥ १० ॥ सो हे राजेन्द्र ! देखो यह गोवर्द्धन पर्वत या भगवान्के वक्षःस्थलते पैदा भयो है ये सब पर्वतनको राजा है और पुलस्त्य ऋषिके तेजते यहां आयो है जो या गोवर्द्धनके दर्शन करते मनुष्यको या संसारमे फिर जन्म नहीं होय है ॥ ११ ॥ याते तुम गौ, ब्राह्मण और देवता इनको पूजन करिके अबही श्रीगिरिराजकूंही केवल बलि (भेट) धरो यह यज्ञ तो मोकूं प्यारो है सर्वोत्तम यज्ञ तो यही है आगे तुम्हारी इच्छा होय सो करो ॥ १२ ॥ नारदजी कहें है तब एक सन्नंद नामको गोपवृद्ध हो नीतिको वेत्ता हो सो अत्यंत प्रसन्न हैके नन्दजीके सुनत २ श्रीकृष्णसो यह बोले ॥ १३ ॥ हे नन्दसूनो ! हे तात ! तुम साक्षात् ज्ञानकी निधि हो कौनसी विधिते गोवर्द्धनकी पूजा करनी चाहिये सो तत्त्वते कहो ॥ १४ ॥ तब भगवान् बोले जाको पूजन यज्ञ करना हो तो या विधिको करे कि, पहलेही तो गिरिराजकी

समुत्थितोसौहरिवक्षसोगिरिर्गोवर्धनोनामगिरीन्द्रराजराट् ॥ समागतोह्यत्रपुलस्त्यतेजसायद्दर्शनाज्जन्मपुनर्नविद्यते ॥ ११ ॥ सम्पूज्यगोविप्रसुरान्महाद्रयेदातव्यमद्यैवपरंह्युपायनम् ॥ एषप्रियोमेमखराजएवहिनचेद्यथेच्छास्तितथाकुरुव्रज ॥ १२ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ तेषांमध्येऽथसन्नंदोगोपोवृद्धोऽतिनीतिवित् ॥ अतिप्रसन्नःश्रीकृष्णमाहनन्दस्यशृण्वतः ॥ १३ ॥ ॥ संनन्दउवाच ॥ ॥ हेनन्दसूनोहेतात त्वंसाक्षाज्ज्ञानशेवधिः ॥ कर्तव्याकेनविधिनापूजाऽद्रेर्वदतत्त्वतः ॥ १४ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ आलिप्यगोमयेनापिगिरिराजभुवंह्यधः ॥ धृत्वाथसर्वसम्भारम्भक्तियुक्तोजितेन्द्रियः ॥ १५ ॥ सहस्रशीर्षामंत्रेणाद्विपैस्नानंचकारयेत् ॥ गंगाजलेनयमुनाजलेनापिद्विजैःसह ॥१६॥ शुक्लगोदुग्धधाराभिस्ततःपंचामृतैर्गिरिम् ॥ स्नापयित्वागन्धपुष्पैःपुनःकृष्णाजलेनवै ॥ १७ ॥ वस्त्रंदिव्यंचनैवेद्यमासनंसर्वतोधिकम् ॥ मालालंकारनिचयंदत्त्वादीपावलिम्परम् ॥१८॥ ततःप्रदक्षिणांकुर्यान्नमस्कुर्यात्ततःपरम् ॥ कृतांजलिपुटोभूत्वास्विदमेवमुदीरयेत् ॥ ॥ १९ ॥ नमोवृन्दावनांकायतुभ्यंगोलोकमौलिने ॥ पूर्णब्रह्मातपत्रायनमोगोवर्द्धनायच ॥ २० ॥ पुष्पांजलिंततःकुर्यान्नीराजनमतःपरम् ॥ घंटाकांस्यमृदंगाद्यैर्वादित्रैर्मधुरस्वनैः ॥ २१ ॥ वेदाहमेतंमंत्रेणवर्षालाजैःसमाचरेत् ॥ तत्समीपेचान्नकूटंकुर्याच्छ्रद्धासमन्वितः ॥ २२ ॥

नीचे २ की धरतीको गोबरते लीपिलेय फिर जितेंद्री हैके सब सामिग्री तयारकर धरे ॥ १५ ॥ फिर सहस्रशीर्षा, मन्त्रते ब्राह्मणनको संग लेके गङ्गा, यमुनाजलते स्नान करावे ॥ १६ ॥ फिर सुपेद गौके दूधकी धारानते फिर पञ्चामृतते फिर यमुनाजलते स्नान करावे फिर केशर, कस्तूरी, कपूर, चन्दन लगावे ॥१७॥ फिर सुगंधित धूप देय, वस्त्र पहरावे, फूल माला पहरावे, गहने चढावे और दीपदान करे ॥ १८ ॥ फिर नमस्कार करके प्रदक्षिणा करे फिर हाथ जोड़के यह स्तुति करे कि ॥ १९ ॥ हे गिरिराज ! तुम वृंदावनकी गोदीमें बैठे हो तुम ही गोलोकके मुकुट हो तुमही पूर्ण ब्रह्म श्रीकृष्णके छत्र हो ऐसे गोवर्द्धनरूप तुम हो तिनके अर्थ हमारो नमस्कार है ॥ २० ॥ फिर पुष्पांजली करे फिर आरती करे आरती करे तब शांख, घंटा, मृदंग, सुंदर बाजे बजावे ॥ २१ ॥ फिर [वेदाहमेतं पुरुषं

महांतमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् । तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यः पंथा विद्यतेऽयनाय] या मंत्रते खील वर्षावे फिर श्रद्धाते श्रीगिरिराजको अन्नकूट करे ॥ २२ ॥ फिर चौसठ २ कटोरानकी पांच पंक्ति लगाके उने गंगाजल यमुनाजलते भरकें इनमें तुलसीदल डारके आगे धरै ॥ २३ ॥ फिर एक २ अन्नके छप्पन छप्पन सामग्री करके भोगनकों लगायके सावधान हैके सेवा करै पीछे होम करै फिर अग्नि ब्राह्मण देवतानकों पुष्प गंधादिकते पूजन करै ॥ २४ ॥ पीछे उत्तम ब्राह्मणनकूं सुगंधित मीठे भोजन करायके औरहू जो कोई यहां गरीबलोग शूद्रादिक चंडालपर्यंत आवे तिनकूं उत्तम भोजन देय ॥ २५ ॥ फिर गोपी, गोपाल तिनके द्वारा गौनको नृत्य करावे फिर मंगल वाणीनते जय जय शब्द करै ऐसे गोवर्द्धनके या उत्सवको करै ॥ २६ ॥ अब जहां गोवर्द्धन न होय तहांकी विधिकी कहे है सो सुनों, पहले तो गोवर्द्धनके आकारको एक गोबरको ऊंचो गोवर्द्धनकैसो पर्वत बनावे ॥ २७ ॥ वामें बहुतसी सींकनको लगायके लतानकी कल्पना करै फूलनसों ढके ऐसें पृथ्वीमें मनुष्यनकूं सदाही गोवर्द्धन पूजिबेयोग्य है ॥ २८ ॥

कचोलानांचतुःषष्टिपंचपंक्तिसमन्वितम् ॥ तुलसीदलमिश्रैश्चश्रीगंगायमुनाजलैः ॥ २३ ॥ षट्पंचाशत्तमैर्भोगैःकुर्यात्सेवांसमाहितः ॥ ततोऽग्नीन्ब्राह्मणान्पूज्यगाःसुरान्गन्धपुष्पकैः ॥ २४ ॥ भोजयित्वाद्विजवरान्सौगंधैर्मिष्टभोजनैः ॥ अन्येभ्यश्चश्वपाकेभ्योदद्याद्भोजनमुत्तमम् ॥ २५ ॥ गोपीगोपालवृन्दैश्चगवांनृत्यंचकारयेत् ॥ मंगलैर्जयशब्दैश्चकुर्याद्गोवर्द्धनोत्सवम् ॥ २६ ॥ यत्रगोवर्द्धनाभावस्तत्रपूजाविधिंशृणु ॥ गोमयैर्वर्द्धनःकुर्यात्तदाकारःपरोन्नतः ॥ २७ ॥ पुष्पव्यूहैर्लताजालैरीषिकाभिःसमन्वितः ॥ पूजनीयःसदामर्त्यैर्गिरिर्गोवर्द्धनोभुवि ॥ २८ ॥ शिलासमानस्वर्णदत्त्वाऽऽनीतच्छिलांनयेत् ॥ गृह्णीयाद्योविनास्वर्णंसमहारौरवंव्रजेत् ॥२९॥ शालग्रामस्यदेवस्यसेवनंकारयेत्सदा ॥ पातकंनस्पृशेत्तत्रैपद्मपत्रंयथाजलम् ॥ ३० ॥ गिरिराजशिलासेवांयःकरोतिद्विजोत्तमः ॥ सप्तद्वीपमहीतीर्थावगाहफलमेतिसः ॥ ॥ ३१ ॥ गिरिराजमहापूजांवर्षेवर्षेकरोतियः ॥ इहसर्वसुखंभुक्त्वाऽमुत्रमोक्षंप्रयातिसः ॥ ३२ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीगिरिराजखण्डे श्रीनारदबहुलाश्वसंवादेश्रीगिरिराजपूजाविधिवर्णनंनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ श्रुत्वावचोनन्दसुतस्यसाक्षाच्छ्रीनन्दसन्नन्दवराव्रजेशाः ॥ सुविस्मिताःपूर्वकृतंविहायप्रचक्रिरेश्रीगिरिराजपूजाम् ॥ १ ॥

और जो गोवर्द्धनकी लावे तो शिलाके समान सोनों धरके शिलाकूं लैजाय और विना सुवर्ण धरे जो कोई गोवर्द्धनकी शिलाको लावै तौ वो रौरव नरककूं जायहै ॥ ॥ २९ ॥ शालग्रामकी जो नित्य पूजन करयौकरे ताकूं पाप कवहू ऐसें स्पर्श नहीं करैहै जैसे कमलके फूलनकूं जल स्पर्श नहीं करैहै वैसेई ॥ ३० ॥ जो कोई द्विजोत्तम गिरिराज शिलाकी सेवा पूजन करै है वा पुरुषकोहू पाप किये स्पर्श नहीं करै है और वाको सातो द्वीपनके साढेतीन करोड़ तीर्थस्नान करेको फल प्राप्त होयहै ॥ ३१ ॥ जो मनुष्य वर्ष २ में ये गोवर्धनकी पूजा करैहै सो यहांहू सब सुखनको भोगकै अंतमें वो मुक्तिकों जायहै ॥ ३२ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां गिरिराजखंडे भाषाटीकायां गिरिराजपूजा वर्णनं नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ नारदजी कहैहैं कि, या प्रकार नंद संनंदते आदि लैकें सबरे व्रजके स्वामी जे गोप हैं वे नंदसुतको वचन सुनके अचंभेमें आयगये तब वे

सब पहिले किये इन्द्रके यज्ञकूं छोड़के श्रीगिरिराजकी पूजा करतभये ॥ १ ॥ हे मैथिल ! तब नंदराज बलि भेडनकों और दोनों बेटानकों और यशोदाजीकूं संग लैके
गर्गजीकूं संग लैके बड़ी प्रसन्नताते गिरिराजकी पूजा करवेकूं उद्यत भये ॥ २ ॥ तब बड़ी ऊंचो विचित्र जाको वर्ण सोनेकी सांकर जाके बंधी ऐसे हाथीपै बैठके
गोवर्द्धनकी पूजाके अर्थ गौनके गणनकूं संग लैकें गोवर्द्धनके समीप आये तब कैसी शोभा भई है, मानों इंद्राणीकूं लैकें शरदके सुपेद बादरनके संग ऐरावतपै चढ्यो इन्द्रही आवे
है ॥ ३ ॥ नौ नंद, नौ उपनन्द, छः वृषभानु और सब गोप, अपने २ बेटा, नाती, पन्ती, बेटी, नातनी, स्त्री सबनकूं संग लैकें गिरिराजके पास सब यज्ञसंभारको लैकें आये
॥ ४ ॥ हजारन बालसूर्य्यकोसो तेज जाको ऐसी पालकीमें चढ़क सब सखीजननकूं संग लैके दिव्य भूषण वस्त्रनकूं पहिरकें इन्द्राणीसी सजिकें श्रीराधिकाजी वहां ऐसें आईहैं जैसे
चकोरी भ्रमरीनके झुंडको संग लैके आवे हैं ॥ ५ ॥ और किरोड़ सखी अलंकृत हैके जिनके संग हैं, तिन सखीनको बीचमें शृंगारकिये चंद्रमाकेसे जिनके मुख चमरको फिरा

नीत्वाबलीन्मैथिलनन्दराजःसुतौसमानीयचरामकृष्णौ ॥ यशोदयाश्रीगिरिपूजनार्थसमुत्सुकोगर्गयुतःप्रसन्नः ॥ २ ॥ त्वरंसमारुह्यमनो
ज्ञमतंगजंविचित्रवर्णंधृतहेमशृंखलम् ॥ गोवर्द्धनान्तंप्रययौगवांगणैःशरद्घनैःशक्रइवप्रियायुतः ॥ ३ ॥ नन्दोपनन्दावृषभानवश्चपुत्रैश्चपौत्रै
श्चसहांगनाभिः ॥ समाययुःश्रीगिरिराजपार्श्वंसर्वंसमानीयचयज्ञभारम् ॥ ४ ॥ सहस्रबालार्कपरिस्फुरद्युतिमारुह्यराधाशिबिकांसखीगणैः ॥
शचीवदिव्याम्बररत्नभूषणावभौचकोरीभ्रमरीसमाकुला ॥ ५ ॥ समागतेपार्श्वगतेस्वलंकृतेराजन्सखीकोटिसमावृतेपरे ॥ सख्यौविभातेललि
ताविशाखेचन्द्राननेचालितचारुचामरे ॥ ६ ॥ एवंरमावैविरजाचमाधवीमायाचकृष्णानृपजह्नुनंदनी ॥ द्वात्रिंशदष्टौचतथाहिषोडशसख्य
श्चतासांकिलयूथआगतः ॥ ७ ॥ श्रीमैथिलानांकिलकोशलानांतथाश्रुतीनामृषिरूपकाणाम् ॥ तथात्वयोध्यापुरवासिनीनांश्रीयज्ञसीता
वनवासिनीनाम् ॥ ८ ॥ रमादिवैकुण्ठनिवासिनीनांतथोर्ध्ववैकुण्ठनिवासिनीनाम् ॥ तथाश्वेतद्वीपनिवासिनीनांध्रुवादिलोकाचलवासि
नीनाम् ॥ ९ ॥ समुद्रजादिव्यगुणत्रयाणामदिव्यवैमानिकऔषधीनाम् ॥ जालंधरीणांचसमुद्रकन्याबर्हिष्मतीजासुतलस्थितानाम् ॥ १० ॥
तथाप्सरःसर्वफणीन्द्रजानामासांचयूथाव्रजवासिनीनाम् ॥ समाययुःश्रीगिरिराजपार्श्वंस्वलंकृताःपाणिबलिप्रदीपाः ॥ ११ ॥

वतो ऐसी ललिता, विशाखा नामकी दोनों सखी जिनके संगमे है, या शोभाते श्रीराधिकाजी यहां शूमतभई आई है, ॥ ६ ॥ ऐसे ही रमा, विरजा, माधवी, माया, कालिंदी,
गंगा आदि आठ सखी सोलह सखी बत्तीस सखीनके यूथ आयेहैं ॥ ७ ॥ मैथिल देश वासिनीनके, कोशलदेश वासिनीनके, अयोध्या वासिनीनके, श्रुतिरूपानके, मुनिरूपानके,
वनवासिनीनके, और यज्ञसीतानके यूथ आयेहैं ॥ ८ ॥ रमा आदि वैकुंठ वासिनीनके और ऊर्ध्व वैकुंठ निवासिनीनके, तथा श्वेतद्वीप वैकुंठ निवासिनीनके, ध्रुवलोकवासिनीनके और
लोकालोकाचलवासिनी सखीनके यूथ आये ॥ ९ ॥ तैसेही जलंधरनगरवासिनीनके, बर्हिष्मतीनगरीकी रहनवारी, सुतलवासिनीनके, समुद्रकी दिव्य औषधीनके और अदिव्य
औषधीनके देवांगनारूपानके, दिव्य तीनो गुणके स्वभाववारीनके यूथ आये ॥ १० ॥ तैसेई नागकन्यानके, अप्सरानके और व्रजवासिनी सखीनके यूथ शृंगार करिके भेट लैकें

गये और प्रसन्नह्वैके यह बोले॥ २२॥ गोपनने आज गिरिराज देव जान लियो नंदके बेटाने साक्षात् दिखाय दीनो हम यही मांगैंहैं हमारो गोधन और हमारो बंधुवर्ग या व्रजभूमिमें दिनदिन बढ़ो॥ २३॥ दिव्यवपुधारी गोवर्द्धन किरीट, मुकुट जिनने धारण कररारूयो वे तथास्तु ऐसेई होय ऐसे कहिके क्षणभरमें अंतर्धान ह्वैगये ॥ २४ ॥ तब नंद, उपनंद, वृषभानुराज, बल, सुचंद्र, नंदराज, श्रीकृष्ण, गोप, गोपी अपने अपने गोधननकूं लैकें व्रजकूं आवतभये ॥ २५ ॥ सम्पूर्ण द्विज, योगेश्वर, सिद्धनके समूह, शिवादिक औरहू सब मनुष्य नमस्कार करकरकें गोवर्द्धनको पूजन करके प्रसन्न ह्वै ह्वैकें अपने अपने घरकूं चलेगये परंतु अंतःकरणमें उनकी जायवेकी इच्छा नहीं ही ॥ २६ ॥ यह श्रीकृष्णचंद्रको परमोत्तम चरित्र है महोत्सव है सो मैंने तेरे अगारी वर्णन करयो है पवित्र है मनुष्यनके पापको हरनहारो है ॥ २७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां गिरिराजखण्डे भाषाटीकायां गिरिराज

ज्ञातोसिगोपैर्गिरिराजदेवःप्रदर्शितोनन्दसुतेनसाक्षात् ॥ नोगोधनंवाकिलबन्धुवर्गोवृद्धिंसमायातुदिनेदिनेको ॥ २३ ॥ तथास्तुचोक्त्वागिरि
राजराजोगोवर्द्धनोदिव्यवपुर्दधानः ॥ किरीटकेयूरमनोहरांगःक्षणेनतत्रान्तरधीयतारात् ॥ २४ ॥ नन्दोपनन्दावृषभानवश्चबलःसुचन्द्रोवृष
भानुराजः ॥ श्रीनन्दराजश्चहरिश्चगोपागोप्यश्चसर्वानिजगोधनैश्च ॥ २५ ॥ द्विजाश्चयोगेश्वरसिद्धसंघाःशिवादयश्चान्यजनाश्चसर्वे ॥
नत्वाथसम्पूज्यगिरिंप्रसन्नाःस्वंस्वंगृहंजग्मुरनिच्छयात्र ॥ २६ ॥ श्रीकृष्णचन्द्रस्यपरंचरित्रंगिरीन्द्रराजस्यमहोत्सवंच ॥ मयातवाग्रेकथितं
विचित्रंनृणांमहापापहरंपवित्रम् ॥ २७ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीगिरिराजखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेगिरिराजमहोत्सववर्णनंनामद्विती
योऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ अथमन्मुखतःश्रुत्वास्वात्मयागस्यनाशनम् ॥ गोवर्द्धनोत्सवंजातंकोपंचक्रेपुरन्दरः ॥
॥ १ ॥ सांवर्तकंनामगणंप्रलयेमुक्तबंधनम् ॥ इन्द्रोव्रजविनाशायप्रेषयामाससत्वरम् ॥२॥ अथमेघगणाःक्रुद्धाध्वनंतश्चित्रवर्णिनः ॥ कृष्णा
भाःपीतभाःकेचित्केचिच्चहरितप्रभाः ॥ ३ ॥ इन्द्रगोपनिभाःकेचित्केचित्कर्पूरवत्प्रभाः ॥ नानाविधाश्चयेमेघानीलपंकजसुप्रभाः ॥ ४ ॥
हस्तितुल्यान्वारिबिन्दून्ववृषुस्तेमदोद्धताः ॥ हस्तिशुंडासमाभिश्चधाराभिश्चंचलाश्चये ॥ ५ ॥ निपेतुःकोटिशश्चाद्रिकूटतुल्योपलाभृशम् ॥
वातावयुःप्रचण्डाश्चक्षेपयंतस्तरून्गृहान् ॥ ६ ॥

महोत्सववर्णनं नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ श्रीनारदजी कहैं हैं याके अनंतर इन्द्र मेरे मुखतें अपने यज्ञको नाश सुनके और गोवर्द्धनको उत्सव सुनकें बड़ो कोप करतभयो ॥ १ ॥ मेघनको सांवर्तकनाम गण जो प्रलयमें छूटै है ता मेघनके गणकूं व्रजके नाश करवेके लिये इन्द्रने व्रजके ऊपर भेज्यो ॥ २ ॥ अब मेघनके गण गर्जते क्रोध करके युक्त चित्र विचित्र जिनके वर्ण तिनकी कारी, पीरी, लाल, सुपेद, हरी, घटाये ॥ ३ ॥ कोई वीरबहूटीसी अति लाल, कोई चितकबरी, अनेक रंगकी कोई कपूरी, कोई नीलकमलसी हैं ॥ ४ ॥ वे अतिचंचला मत्त हाथीकी सूँडकीसी धारनसों बरषामनलगी ॥ ५ ॥ और पर्वतकैसे शैल कोटन ओला पड़नलगे और अत्यन्त प्रचण्ड पवन

पेडनकूं उखाडती घरनकूं पटकती चलीहै ॥ ६ ॥ प्रचंड वज्रपात जिनमें ऐसे नाशके करनहारे मेघनमेंते हे मैथिलेन्द्र ! पृथ्वीमें बड़ो भारी भयंकर शब्द होतोभयो ॥ ७ ॥ जाते सातों द्वीप सातों पाताल हलनलगे, पृथ्वी हलनलगी, ब्रह्मांड गूंज उठ्यो, दिग्गज चलायमान हैगये, तारागण टूट टूटकें पृथ्वीमें गिरनलगे ॥ ८ ॥ सबरे गोप भयभीत हैके जीवेकी इच्छाते कुटुंबसहित अपने अपने बालकनकूं अगाडी करकें नन्दजीके मन्दिरकूँ आये ॥ ९ ॥ श्रीकृष्णकूँ बलदेवजी सहित नमस्कार करकें सबरे ब्रजवासी भयभीत हैकें यह बोले कि, हे महाराज ! हम तुम्हारी शरण आये हैं ॥ १० ॥ हे राम ! हे राम ! हे बड़ी भुजानवारे ! हे कृष्ण ! हे कृष्ण ! ब्रजके ईश्वर ! पाहि पाहि इन्द्रके दीयेभये कष्टते अपने जननकी रक्षा करौ ॥ ११ ॥ इन्द्रके यज्ञकूं छोडिके तुम्हारे वचनते गोवर्द्धनको यज्ञ करयो है अब इन्द्रनें बडो कोप कीनों है, अब हम कहा करें ये हमें बताओ ॥

प्रचण्डवज्रपातानांमेघानामंतकारिणाम् ॥ महाशब्दोभवद्भूमौमैथिलेन्द्रभयंकरः ॥ ७ ॥ ननादतेनब्रह्माण्डंसप्तलोकैर्बिलैःसह ॥ विचेलुर्दि
ग्गजास्ताराह्यपतन्भूमिमण्डलम् ॥ ८ ॥ भयभीतागोपमुख्याःसकुटुंबाजिगीषवः ॥ शिशून्स्वान्स्वान्पुरस्कृत्यनन्दमन्दिरमाययुः ॥ ९ ॥
श्रीनन्दनन्दनंनत्वासबलम्परमेश्वरम् ॥ ऊचुर्व्रजौकसःसर्वेभयार्ताःशरणंगताः ॥ १० ॥ गोपाऊचुः ॥ ॥ रामराममहाबाहोकृष्णकृष्णव्रजे
श्वर ॥ पाहिपाहिमहाकष्टादिन्द्रदत्तान्निजाञ्जनान् ॥ ११ ॥ हित्वेन्द्रयागंत्वद्वाक्यात्कृतोगोवर्द्धनोत्सवः ॥ अद्यशक्रेप्रकुपितेकर्तव्यंकिंवदा
शुनः ॥१२॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ व्याकुलंगोकुलंवीक्ष्यगोपीगोपालसंकुलम् ॥ सवत्सकंगोकुलंचगोपानाहनिराकुलः ॥१३॥ ॥ श्रीभ
गवानुवाच ॥ ॥ माभैष्टयातादितटंसर्वैःपरिकरैःसह ॥ वःपूजाप्रहतायेनसरक्षांसंविधास्यति ॥ १४ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वास्वज
नैःसार्द्धमेत्यगोवर्द्धनंहरिः ॥ समुत्पाट्यदधाराद्रिंहस्तेनैकेनलीलया ॥ १५ ॥ यथोच्छिलींध्रंशिशुरश्रमोगजःस्वपुष्करेणैवचपुष्करंगिरिम् ॥
धृत्वाबभौश्रीव्रजराजनन्दनःकृपाकरोसौकरुणामयःप्रभुः ॥ १६ ॥ अथाहगोपान्विशताद्रिगर्तहेतातमातर्व्रजवल्लभेशाः ॥ सोपस्करैःसर्वधनै
श्चगोभिर्नैवशक्रस्यभयंनकिंचित् ॥ १७ ॥ इत्थंहरेर्वचःश्रुत्वागोपागोधनसंयुताः ॥ सकुटुंबोपस्करैश्चविविशुःश्रीगिरेस्तलम् ॥ १८ ॥

॥ १२ ॥ नारदजी कहैं हैं कि, ऐसे गोपनकूं, गोपीनकूँ, गोकुलकूँ, बछरा बछिया बालक इनकूँ, व्याकुल देखके निराकुल भगवान् श्रीकृष्ण गोपनसों बोले ॥ १३ ॥ हे ब्रजवासियो ! भय मत करौ तुम अपनों सब परिवार लैकें गिरिराज पर्वतके किनारेपै चलौ जाने तुम्हारी पूजा खाई है सोई तुम्हारी रक्षा करैगो ॥ १४ ॥ नारदजी कहैं हैं ऐसें कह स्वजननकूं संग लैकें सहजमेंही गोवर्द्धनके पास आयके गिरिराजकूँ उखाडकें एक हाथपै धरि लीनो ॥ १५ ॥ जैसें बालक छतौनाको और जैसे हाथी कमलकूँ उठायलेय वैसेंही गोवर्द्धनको उठायके श्रीकरुणामय नन्दनन्दन शोभाको प्राप्त भये हैं ॥१६॥ अब गोपनते बोले—हे मैय्या ! हे बाबा ! हे गोपी हो ! हे गोप हो ! अपनी गौ, बिजार, बछडा, बछिया, बासन, वस्त्र, बालक, पलंग, पिटारे सब लैकें गोवर्द्धनके गढ़ेलामें चलेआओ, यहां इन्द्रको कछू भय नहीं है ॥ १७ ॥ ऐसे श्रीकृष्णको वचन सुनिके कुटुंब

समेत घरकी सामग्री सब लेके अपनी २ गौनकूँ लैके गोवर्द्धनके नीचे सब आयगये ॥ १८ ॥ बलदेवसमेत सबरे बराबरके बालकनने कृष्णके कहेसों अपनी २ लठियानकूँ लेले गोवर्द्धनके रोकवेको खंभकी नाईं टेवकी लगायदीने ॥ १९ ॥ जब भगवान्ने जलनके समूहको गोवर्द्धनके नीचे आमतो देखो तब अपने मनतेंई सुदर्शनचक्रकूँ और शेषजीकूँ ऊपर नीचेकी आज्ञा देते भये ॥ २० ॥ और किरोड़ सूर्यनको तेज धरिके सुदर्शनचक्र- गोवर्द्धनके ऊपर जाय बैठ्यो सो ऊपरकी सबरी वर्षा चक्र पीगयो जैसे अगस्त्यजी समुद्रकूं पीगये हैं ॥ २१ ॥नीचे तो गोवर्धनके चारों ओर कुंडली मारिके शेषजी बैठगये सो सब जल रोकलीनों जैसे वेला समुद्रकी मर्याद समुद्रकूँ रोक लेयहै ॥ २२ ॥ गोवर्द्धनके धरनहारे हरि सात दिन तक स्थिर हैके एकसे जैसेके तैसे ठाढे रहे नेकहू चलायमान नहीं भये और वे सब गोप गोपी श्रीकृष्णकूं ऐसे देखते खडे रहे जैसे चन्द्रमाकूँ रातै दिन चकोर देख्यौ करै है ॥ २३ ॥ और वा समय इन्द्र क्रोधको मार्यौ मत्त ऐरावत हाथीपै बैठिके सब सेनाको संग लेके व्रजमंडलकूँ आयो है ॥ २४ ॥ और

वयस्याबालकाःसर्वेकृष्णोक्ताःसबलानृप ॥ स्वान्स्वांश्चलगुडानद्रेरवष्टंभान्प्रचक्रिरे ॥ १९ ॥ जलौघमागतंवीक्ष्यभगवांस्तद्गिरेरधः ॥ सुदर्शनंतथाशेषंमनसाऽऽज्ञांचकारह ॥ २० ॥ कोटिसूर्यप्रभंचाद्रेरूर्ध्वंचक्रंसुदर्शनम् ॥ धारासंपातमपिबदगस्त्यइवमैथिल ॥ २१ ॥ अधोधस्त्वं गिरिंशेषःकुण्डलीभूतआस्थितः ॥ रुरोधतज्जलंदीर्घंयथावेलामहोदधिम् ॥ २२ ॥ सप्ताहंसुस्थिरस्तस्थौगोवर्द्धनधरोहरिः ॥ श्रीकृष्णचंद्रंपश्यंतःचकोराइवतेस्थिताः ॥ २३ ॥ मत्तमैरावतंनागंसमारुह्यपुरन्दरः ॥ ससैन्यःक्रोधसंयुक्तोव्रजमण्डलमाययौ ॥ २४ ॥ दूराच्चिक्षेपवज्रंस्वं नंदगोष्ठजिघांसया ॥ स्तंभयामासशक्रस्यसवज्रंमाधवोभुजम् ॥२५॥ भयभीतस्तदाशक्रःसांवर्तकगणैःसह ॥ दुद्रावसहसादेवैर्यथेभःसिंहताडितः ॥२६॥ तदैवार्कोदयोजातोगतामेघाइतस्ततः ॥ वाताउपरताःसद्योनद्यःस्वल्पजलानृप ॥ २७ ॥ विपंकंभूतलंजातंनिर्मलंखंबभूवह ॥ चतुष्पदाःपक्षिणश्चसुखमापुस्ततस्ततः ॥ २८ ॥ हरिणोक्तास्तदागोपानिर्ययुर्गिरिगर्ततः ॥ स्वंस्वंधनंगोधनंचसमादायशनैःशनैः ॥ २९ ॥ निर्यातेतिवयस्यांश्चप्राहगोवर्द्धनोद्धरः ॥ तेतमाहुश्चनिर्गच्छधारयामोऽद्रिमोजसा ॥ ३० ॥ इतिवादपरान्गोपान्गोवर्द्धनधरोहरिः ॥ तदद्रेश्चगिरेर्भारंप्रादात्तेभ्योमहामनाः ॥ ३१ ॥

नन्दजीके व्रजकूँ नाश करिवेकी इच्छा करिके फैंकके वज्र मारनलगौ सोही श्रीकृष्णने वज्रसमेत इन्द्रको हाथ जकड दीनों ॥ २५ ॥ तब तो इन्द्र डरके मारे सांवर्तक गणनकूँ संग लेके देवतानकूँ संग लैके ऐसे भाजिगयो जैसे सिंहको मार्यौ हाथी भाजे है ॥ २६ ॥ तबही सूर्य उदय है आयौ, बादल सब जहांके तहां विलाय गये, पवन बन्द हैगई नदीनके जल प्रमाणते बहलनलगे ॥ २७ ॥ पृथ्वीकी कीचड सूख गयी, निर्मल आकाश हैगयो, चौपाये जीव जन्तु पशु सुखी हैगये पक्षी सब सुखी हैगये ॥ २८ ॥ हरिकी आज्ञाते सब गोप पर्वतके गढेलाते अपने २ धनकू गौनकूं होलै २ निकासिके बाहर आयगये ॥ २९ ॥ जब सब निकसिगये तब भगवान् गोवर्द्धनधारी बराबरके सब ग्वालनते बोले कि, तुमहू निकसो तब सखा श्रीकृष्णते बोले कै, भैया तूं निकसिजा हम या गोवर्द्धनकूं अपने पराक्रमते धारण करलेंगे ॥ ३० ॥ ऐसे कहते जे गोप तिनके

ऊपर गोवर्द्धनधारीने आधीसों बोझ धरिदीनों ॥ ३१ ॥ ताही बोझके मारे निर्बल ह्वैकें सब गोपबालक पृथ्वीमें जायपरे ॥ ३२ ॥ तब एक हाथते सबनको उठाय सबनके देखत देखत जहांको तहांही पर्वत धरिदीनों ॥ ३३ ॥ तबही सबरे गोप और गोपीनने परब्रह्म श्रीकृष्णकूँ जानिके गन्ध, अक्षत, फूल, माला, दीप दही, दूधते श्रीकृष्णको पूजन कीनो और दंडोत करी ॥ ३४ ॥ तबही नन्द, उपनन्द, यशोदा, रोहिणी, बलदेव, संनन्दते आदि लैकें बूढे बूढे गोप श्रीकृष्णते मिलिकें आशीर्वाद देनेलगे और धन देतभये बडी दया करत भये ॥ ३५ ॥ गवैया बजवैया ता कृष्णकी बडाई करकें गावन लगे, बजावन लगे, नाचन लगे, दूरितेई श्रीकृष्णकूं आगे करके सब व्रजवासी अपने २ घरकूं आये मनोरथ सबके पूर्ण ह्वैगये ॥ ३६ ॥ तबही देवता प्रसन्न ह्वैके नंदनबनके पुष्पनकी वर्षा करनलगे और प्रसन्न भये गंधर्व

पतितास्तेनभारेणगोपबालाश्चनिर्बलाः ॥ ३२ ॥ करेणतान्समुत्थाप्यस्वस्थानेपूर्ववद्गिरिम् ॥ सर्वेषांपश्यतांकृष्णःस्थापयामासलीलया ॥ ॥ ३३ ॥ तदैवगोपीगणगोपमुख्याःसम्पूज्यकृष्णंनृपनन्दसूनुम् ॥ गन्धाक्षताद्यैर्दधिदुग्धभोगैर्ज्ञात्वापरंनेमुरतीवसर्वे ॥ ३४ ॥ नन्दोयशोदानृपरोहिणीचबलश्चसन्नन्दमुखाश्चवृद्धाः ॥ आलिंग्यकृष्णंप्रददुर्धनानिशुभाशिषासंयुयुजुर्घृणार्ताः ॥ ३५ ॥ संश्लाघ्यतंगायनवाद्यतत्परानृत्यन्तआरान्नृपनन्दनन्दनम् ॥ आजग्मुरेवस्वगृहान्व्रजौकसोहरिंपुरस्कृत्यमनोरथंगताः ॥ ३६ ॥ तदैवदेवाववृषुःप्रहर्षिताःपुष्पैःशुभैःसुन्दरनन्दनोद्भवैः ॥ जगुर्यशःश्रीगिरिराजधारिणोगन्धर्वमुख्यादिविसिद्धसंघाः ॥ ३७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीगिरिराजखण्डेश्रीनारदबहुलाश्वसंवादेगोवर्द्धनोद्धारणंनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ अथदेवगणैःसार्द्धंशक्रस्तत्रसमागतः ॥ गतमानोगिरौकृष्णंरहसिप्रणनामह ॥ १ ॥ ॥ इन्द्रउवाच ॥ ॥ त्वंदेवदेवःपरमेश्वरःप्रभुःपूर्णःपुराणःपुरुषोत्तमोत्तमः ॥ परात्परस्त्वंप्रकृतेःपरोहरिर्मांपाहिपाहिद्युपतेजगत्पते ॥ २ ॥ दशावतारोभगवांस्त्वमेवरिरक्षयाधर्मगवांश्रुतेश्च ॥ अद्यैवजातःपरिपूर्णदेवःकंसादिदैत्येन्द्रविनाशनाय ॥ ३ ॥ त्वन्माययामोहितचित्तवृत्तिंमदोद्धतंहेलनभाजनंमाम् ॥ पितेवपुत्रंद्युपतेक्षमस्वप्रसीददेवेशजगन्निवास ॥ ४ ॥

और सिद्धनके समूह गिरधारीको यश स्वर्गमें गावनलगे ॥३७॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां गिरिराजखंडे भाषाटीकायां नारदबहुलाश्वसंवादे गोवर्द्धनोद्धारणं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ नारदजी कहैहैं-याके अनंतर देवगणनके संग इंद्र आयौ गोवर्द्धनपै एकांतमें मान जाको भंग ह्वैगयो सो श्रीकृष्णकूं दंडोत करिके यह बोल्यो ॥ १ ॥ तुम देवतानके देवता हौ, परमेश्वर हौ, समर्थ हौ, पूर्ण हौ, पुराणपुरुष हौ, पुरुषोत्तम हौ, परेतें परे मायातें परे हरि आपही हौ, हे स्वर्गके पति ! हे जगत्के पति ! मेरी रक्षा करो २ ॥ २ ॥ हे भगवन् ! दशावतार तुमही हौ, धर्म, गौ, वेद इनकी रक्षाके लिये अभी आपने जन्म लियौ है; हे परिपूर्णदेव ! कंसादिक जे दैत्येंद्र तिनके नाश करिवेकूं आपको प्रादुर्भाव भयौ है ॥ ३ ॥ तुम मायाकरिके मोहितभई चित्तकी वृत्ति जाकी मैं इंद्र हौं या अभिमानसौं उद्धत तुम्हारे अपराधको करनहारो जैसे पिता पुत्रके अपराधकूं क्षमा करैं हैं तैसे मेरे अपराधकूं क्षमा करौ

हे देवेश ! हे स्वर्गपते ! हे जगन्निवास ! मेरे ऊपर प्रसन्न होओ ॥ ४ ॥ गोवर्द्धनके उठायवेवारे हौ तिनके अर्थ नमस्कार है, गोविंद हौ, गौनके इंद्र हौ, गोकुलमें निवास करनहारे गौनके पालन करनहारे गोपनके पति हौ, तिनके अर्थ नमस्कार है, गोपीजननके भर्ता हौ, गिरिराजके उद्धर्ता हौ, करुणाकी निधि हौ, जगतके विधान करिवेवारे हौ, तिनके अर्थ नमस्कार है, जगतकूं मंगलकारी हौ, जगतके निवास हौ, जगतके मोह करनहारे हौ, किरोड़न कामदेवनके मनके मथनहारे हौ, वृषभानुकी बेटीके वर हौ, नंदराजके कुलके दीपकके समान प्रकाश करनहारे हौ, श्रीकृष्ण हौ, तिनके अर्थ नमस्कार है, परिपूर्णतम हौ, असंख्य ब्रह्मांडनके पति हौ, गोलोकधामके पति हो, स्वयं भगवान् हौ, तिनकूं बलदेव सहित नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है ॥ ५ ॥ नारदजी कहैं है—या इंद्रके कीये स्तोत्रकूं जो प्रातःकाल उठिकरके पढैगो ताकै सबरी सिद्धि होयगी और वह अनेक संकट

ॐनमोगोवर्द्धनोद्धरणायगोविन्दायगोकुलनिवासायगोपालायगोपालपतयेगोपीजनभर्त्रेगिरिजोद्धर्त्रेकरुणानिधयेजगद्विधयेजगन्मङ्गलायजग
न्निवासायजगन्मोहनायकोटिमन्मथमन्मथायवृषभानुसुतावरायश्रीनन्दराजकुलप्रदीपायश्रीकृष्णायपरिपूर्णतमायत्वसंख्यब्रह्मांडपतयेगोलोक
धामधिषणाधिपतयेस्वयम्भगवतेसबलायनमस्तेनमस्तेनमस्ते ॥ ५ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इतिशक्रकृतंस्तोत्रंप्रातरुत्थाययः
पठेत् ॥ सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्यसंकटान्नभयम्भवेत् ॥ ६ ॥ इतिस्तुत्वाहरिंदेवःसर्वैर्देवगणैःसह ॥ कृतांजलिपुटोभूत्वाप्रणनामपुरन्दरः ॥ ७ ॥
अथगोवर्द्धनेरम्येसुरभिर्गौःसमुद्रजा ॥ स्नापयामासगोपेशंदुग्धधाराभिरात्मनः ॥ ८ ॥ शुंडादण्डैश्चतुर्भिश्चद्युगंगाजलपूरितैः ॥ श्रीकृष्णंस्ना
पयामासमत्तऐरावतोगजः ॥ ९ ॥ ऋषिभिःश्रुतिभिःसर्वैर्देवगन्धर्वकिन्नराः ॥ तुष्टुवुस्तेहरिंराजन्हर्षिताःपुष्पवर्षिणः ॥ १० ॥ कृष्णा
भिषेकेसंजातेगिरिर्गोवर्द्धनोमहान् ॥ द्रवीभूतोऽवहद्राजन्हर्षानन्दादितस्ततः ॥ ११ ॥ प्रसन्नोभगवांस्तस्मिन्कृतवान्हस्तपंकजम् ॥ तद्ध
स्तचिह्नमद्यापिदृश्यतेतद्गिरौनृप ॥ १२ ॥ तत्तीर्थंचपरम्भूतंनराणाम्पापनाशनम् ॥ तदेवपादचिह्नंस्यात्तत्तीर्थंविद्धिमैथिल ॥ १३ ॥

नके भयतें छूटिजायगो ॥ ६ ॥ ऐसें इंद्र सब देवगणनके संग स्तुति करके दोनों हाथ जोड़के दंडवत करतो भयो ॥ ७ ॥ ताके अनन्तर क्षीरसमुद्रकी भई जो सुरभी गौ है मनोहर गोवर्द्धनमें आई अपने दूधकी धारानते श्रीकृष्णकूं स्नान करावती भई ॥ ८ ॥ फिर इन्द्रको ऐरावत हाथी अपनी चार शुंडादंडनसों-मंदाकिनी स्वर्गकी गंगाके जलनते श्रीकृष्णको स्नान करावतभयो ॥ ९ ॥ देव, गंधर्व, किन्नर, ऋषीश्वर, सब वेदकी श्रुतिनते भगवान्‌की स्तुति करनलगे और हर्षित हैके पुष्पनकी वर्षा करनलगे ॥ १० ॥ जब श्रीकृष्णको गोविंदाभिषेक भयो तब गोवर्द्धन पर्वत हर्षके आनंदते इत चित द्रवीभूत हैके बहनलग्यो ॥ ११ ॥ तब भगवान्‌नें प्रसन्न हैके गोवर्द्धनके ऊपर अपनो हाथ धरदीनों ताको चिह्न ता गोवर्द्धन पर्वतमें हे नृप ! अबतक दीखे है ॥ १२ ॥ वोही मनुष्यनके पापनको दूर करनहारो तीर्थ हैगयो, ऐसेही जहां आपने पाँव धरो हो वहां चरणको चिह्न भयो है हे मैथिल !

वाहीकूं तीर्थ समझौ ॥ १३ ॥ और जहां भगवान्‌के चरणको चिह्न भयौ हौ तहांही सुरभीके चरणनके चिह्न भये हैं ॥ १४ ॥ और जो वा समय आकाशगंगामें जल गोवर्द्धनमें गिरौ वा स्वर्गकी गंगामें कृष्णके स्नानते वो मानसीगंगा पापकी नाश करनहारी प्रगट भई है ॥ १५ ॥ और जो सुरभीके दूधकी धारानते गोविंदनें स्नान कियो ताते गोवर्द्धनपै गोविंदकुंड उत्पन्न भयौ है जो महा पापनकौ स्नान पान करेते दूर करै है ॥ १६ ॥ कभी २ वा जलमें दूधकोसौ स्वाद आवै है या गोविंदकुण्डके स्नान करै तो मनुष्य साक्षात् गोविंदके पदकूं प्राप्त होय है ॥ १७ ॥ गोवर्द्धनकी परिक्रमा दैकें हरिकूं नमस्कार करकें सब इन्द्रादिक देवता बलि दैकें जय २ ध्वनि करकें पुष्पनकी वर्षा करते सुखी हैकें स्वर्गकूं चलेगये ॥ १८ ॥ जो कोई श्रीकृष्णकी या गोविंदाभिषेककी कथाकूं सुनें सो दश अश्वमेध यज्ञके फलते अधिक फलकूं प्राप्त होय है और परलोकमें ब्रह्मलोकसो हू ऊपर जो

एतावत्तस्यतत्रैवपादचिह्नंबभूवह ॥ सुरभेःपादचिह्नानिबभूवुस्तत्रमैथिल ॥ १४ ॥ द्युगंगाजलपातेनकृष्णस्नानेनमैथिल ॥ तत्रनैमानसीगंगागिरौजाताऽघनाशिनी ॥ १५ ॥ सुरभेर्दुग्धधाराभिर्गोविन्दस्नानतोनृप ॥ जातोगोविन्दकुण्डोद्रौमहापापहरःपरः ॥ १६ ॥ कदाचित्तस्मिन्दुग्धस्यस्वादुत्वंप्रतिपद्यते ॥ तत्रस्नात्वानरःसाक्षाद्गोविन्दपदमाप्नुयात् ॥ १७ ॥ प्रदक्षिणीकृत्यहरिंप्रणम्यवैदत्त्वाबलींस्तत्रपुरन्दरादयः ॥ जयध्वनिंकृत्यसुपुष्पवर्षिणोययुःसुराःसौख्ययुतास्त्रिविष्टपम् ॥ १८ ॥ कृष्णाभिषेकस्यकथांशृणोतियोदशाश्वमेधावभृथाधिकंफलम् ॥ प्राप्नोतिराजेन्द्रसएवभूयसःपरम्पदंयातिपरस्यवेधसः ॥ १९ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीगिरिराजखंडेश्रीनारदबहुलाश्वसंवादेश्रीकृष्णाभिषेकोनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ एकदासर्वगोपालागोप्योनन्दसुतस्यतत् ॥ अद्भुतंचरितंदृष्ट्वानन्दमाहुर्यशोदयम् ॥ १ ॥ ॥ गोपाऊचुः ॥ ॥ हेगोपराजत्वद्वंशेकोपिजातोनचाद्रिधृक् ॥ नक्षमस्त्वंशिलाधर्त्तुंसप्ताहंहेयशोमय ॥ २ ॥ क्वसप्तहायनोबालःक्वाद्रिराजस्यधारणम् ॥ तेननोजायतेशंकातवपुत्रेमहाबले ॥ ३ ॥ अयंलिभ्रद्गिरिवंरंकमलंगजराडिव ॥ उच्छिलींध्रंयथाबालोहस्तेनैकेनलीलया ॥ ४ ॥ गौरवर्णायशोदेत्वंनन्दत्वंगौरवर्णधृक् ॥ अयंजातःकृष्णवर्णएतत्कुलविलक्षणम् ॥ ५ ॥

परंपद है ताकूं प्राप्त होय है ॥ १९ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां गिरिराजखण्डे भाषाटीकायां कृष्णाभिषेको नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ नारदजी कहैहैं—एकसमयकी बात है कि, सबरी गोपी और गोप नंदके बेटाके वा अद्भुत चरित्रको देखिके नंदजीते यशके उदय करनेवारो यह बचन बोले ॥ १ ॥ हे गोपराज ! तेरे वंशमें आज तलक कोई ऐसौ नहीं भयौ जाने पर्वत उठायौ होय और हमारी तेरी तो यह सामर्थ्य नहीं है जो सात दिनताईं एक हाथपै एक शिलाकौ तौ उठायके धरै राखें ॥ २ ॥ कहां तो सात वर्षको बालक और कहां सातदिनताईं पर्वतराजको धारण करिबो ताते महाबली या तेरे बेटामें हमकूं शंका होयहै ॥ ३ ॥ जानें गिरिराजकूं एकही हाथते सहजमें ऐसे उठायलीनों जैसें हाथी कमलके फूलकूं और बालक छतौनाकूं उठाय लेयहै ॥ ४ ॥ हे यशोदा ! तुमहू गोरी हौ और नंदजीहू गोरे है यह बेटा तुम्हारौ कारौ काहेते है यहहू

कुलमें एक विलक्षण बात है ॥ ५ ॥ क्षत्रीनको बालक तौ ऐसौ होय है कि, जैसे बलदेव गोरो है तो यामें कछू दोष नहीहै क्योंकि यह चंद्रवंशमें भयो है यातें ॥ ६ ॥ जो तुम
सांच न कहौगे तो हम तुमें जातिमेंते छेकिदेंयेंगे सो याते याकी उत्पत्ति कहौ और जो याकी उत्पत्ति न कहोगे तो गोपनमें बडी लडाई होयगी ॥ ७ ॥ नारदजी कहे है गोपनको
वचन सुनिके यशोदा भयविह्वल हैगई और कुपितभये जे गोप है तिनते नंदराज बोले ॥ ८ ॥ हे गोप हो ! मैं सावधान हैके गर्गजीको वचन कहूंहूं जा वचनके सुनेते तुम्हारो
अभी सब संदेह मिट जायगो ॥ ९ ॥ पहले तो याके नामको अर्थ तुम सुनो ककारको अर्थ तो कमला लक्ष्मीके पति है ऋको अर्थ राम है षकारको अर्थ छःगुणके पति
श्वेतद्वीपवासी है ॥ १० ॥ णकारको अर्थ नृसिंह है अकारको अर्थ अक्षर जो सबके पहले भोक्ता है, विसर्गको अर्थ नरनारायण है ॥११॥ या प्रकार ये छः पूर्णभगवान् अवतार

यद्वाऽस्तुक्षत्रियाणांतुबालएतादृशोयथा ॥ बलभद्रेनदोषःस्याच्चन्द्रवंशसमुद्भवे ॥ ६ ॥ जातेस्त्यागंकरिष्यामोयदिसत्यंनभाषसे ॥ गोपेषुचा
स्यचोत्पत्तिंवदचेत्रकलिर्भवेत् ॥७॥ श्रीनारदउवाच ॥ श्रुत्वागोपालवचनंयशोदाभयविह्वला ॥ नन्दराजस्तदाप्राहगोपान्क्रोधप्रपूरितान् ॥
॥ ८ ॥ ॥श्रीनंदउवाच ॥ ॥ गर्गस्यवाक्यंहेगोपावदिष्यामिसमाहितः ॥ येनगोपगणायूयंभवताऽऽशुगतव्यथाः ॥९॥ ककारःकमलाकांतो
ऋकारोरामइत्यपि ॥ षकारःषड्गुणपतिःश्वेतद्वीपनिवासकृत् ॥ १० ॥ णकारोनारसिंहोयमकारोह्यक्षरोग्निभुक् ॥ विसर्गौचतथाह्येतौनरनारा
यणावृषी ॥ ११ ॥ सम्प्रलीनाश्चषट्पूर्णायस्मिञ्छब्देमहात्मनि ॥ परिपूर्णतमेसाक्षात्तेनकृष्णःप्रकीर्तितः ॥ १२ ॥ शुक्लोरक्तस्तथापीतोवर्णो
स्यानुयुगंधृतः ॥ द्वापरांतेकलेरादौबालोयंकृष्णतांगतः ॥१३॥ तस्मात्कृष्णइतिख्यातोनाम्नायंनंदनन्दनः ॥ वसवश्चेंद्रियाणीतितद्देवाश्चित्त
एवहि ॥ १४ ॥ तस्मिन्यश्चेष्टतेसोपिवासुदेवइतिस्मृतः ॥ १५ ॥ वृषभानुसुताराधायाजाताकीर्तिमंदिरे ॥ तस्याःपतिरयंसाक्षात्तेनराधापतिः
स्मृतः ॥ १६॥ परिपूर्णतमःसाक्षाच्छ्रीकृष्णोभगवान्स्वयम् ॥ असंख्यब्रह्मांडपतिर्गोलोकेधाम्निराजते ॥ १७ ॥ सोऽयंतवशिशुर्जातोभा
रावतरणायच ॥ कंसादीनांवधार्थायभक्तानांपालनायच ॥ १८ ॥ अनंतान्यस्यनामानिवेदगुह्यानिभारत ॥ लीलाभिश्चभविष्यंति
तत्कर्मसुनविस्मयः ॥ १९ ॥

जा शब्दमें प्रवेश होय सो परिपूर्णतम कृष्ण कहावै है ॥ १२ ॥ याको सतयुगमें श्वेतरूप हो, त्रेतामें लाल, द्वापरमें पीरो, अब द्वापरके अंतमे और कलियुगकी आदिमें
याने कृष्णरूप धर्‌यो है ॥ १३ ॥ याते ये कृष्ण या नामसो विख्यात भयेहैं, नाम तो याको नंदनंदन है और वसु नाम इंद्रीनको और इंद्रीनके देवता और चित्तको है ॥ १४ ॥
तिनमें जो चेष्टाकरे सोइ वासुदेव कहावै है ॥ १५ ॥ और जो वृषभानुकी बेटी राधा कीर्तिरानीके मंदिरमें प्रगट भईहै वाके जो ये साक्षात्पति है याते याको राधापति नाम
है ॥ १६ ॥ परिपूर्णतम साक्षात् श्रीकृष्ण स्वयं भगवान् है जो असंख्य ब्रह्मांडनके पति गोलोकधाममें विराजै है ॥ १७ ॥ सो यह तेरो बेटा पृथ्वीके भार उतारिवेकूं कंसादिक
दैत्यनके मारिवेकूं और भक्तनके पालन करिवेकूं भयो है ॥ १८ ॥ याके अनंत नाम है जे वेदमेंहू गुप्त हैं वे याके नाम लीला करेते प्रगट होयेंगे याते याके कर्मनमें तू अचंभो

मति करियो ऐसें गर्गजी मोते कहिगये हैं ॥ १९ ॥ सो हे गोप हो ! ऐसे गर्गके कहेको सुनिके, मैं अपने बेटामें संदेह नहीं करूंहूं, या धरतीपे दोही प्रमाण हैं के वेदको वचन
के ब्राह्मणको वचन ॥ २० ॥ तब गोप बोले–हे नंदराज ! जब तेरे घर गर्गजी मुनि आये और तैंने अपने बेटाको नामकरण करायो तब वा नामकरणमें तैंने हमकूं क्यों नहीं
बुलायो ॥ २१ ॥ अपने घरमें आपही आप नाम धरलीनों, भैया तेरी भली रीति है जो सब काम गुपचुप तूं अपने घरमेंई करिलीयो करेहै ॥ २२ ॥ नारदजी कहेहैं–ऐसें
कहते २ गोप नंदमहलमेंते निकरिके क्रोधमें भरेभये वृषभानुसों फिरादवेको चपनिकूं गये ॥ २३ ॥ क्योंकि वृषभानुजी नंदजीके सहायक हैं सो जातिके मदमें भरे ये सब जायके
वृषभानुसो यह वचन बोले ॥ २४ ॥ कि, देखो हे वृषभानुवर ! तुम जातिमें मुख्य हो और ऊंचे मनके हो सो हे गोपनके ईश्वर ! तुम हमारे राजा हो, नंदराजकूं जातिमेंते

इतिश्रुत्वात्मजेगोपाःसंदेहंनकरोम्यहम् ॥ वेदवाक्यंब्रह्मवचःप्रमाणंहिमहीतले ॥ २० ॥ ॥ गोपाऊचुः ॥ ॥ यद्यागतस्तवगृहेगर्गाचार्यो
महामुनिः ॥ तत्क्षणेनामकरणेनाहूताज्ञातयस्त्वया ॥ २१ ॥ स्वगृहेनामकरणंभवताचकृतंशिशोः ॥ तवचैतादृशीरीतिर्गुप्तंसर्वंगृहेपिधत्
॥२२॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ एवंवदंतस्तेगोपानिर्गतानंदमंदिरात् ॥ वृषभानुवरंजग्मुःक्रोधपूरितविग्रहाः ॥ २३ ॥ वृषभानुवरंसाक्षान्नंदरा
जसहायकम् ॥ प्राहुर्गोपगणाःसर्वेज्ञातेर्मदसमन्विताः ॥ २४ ॥ ॥ गोपाऊचुः ॥ ॥ वृषभानुवरत्वंवैज्ञातिमुख्योमहामनाः ॥ नंदराजंत्यजज्ञा
तेर्हेगोपेश्वरभूपते ॥ २५ ॥ ॥वृषभानुवरउवाच ॥ ॥ कोदोषोनंदराजस्यज्ञातेस्तंसंत्यजाम्यहम् ॥ गोपेष्टोज्ञातिमुकुटोनंदराजोममप्रियः
॥२६॥ ॥ गोपाऊचुः ॥ ॥ नचेत्त्यजसितंराजंस्त्यजामस्त्वांव्रजौकसः ॥ त्वद्गृहेवर्धिताकन्योद्वाहयोग्यामहामुने ॥ २७ ॥ भवताज्ञातिमुख्ये
नसंपदुन्मदशालिना ॥ नदत्तावरमुख्यायकलुषंतवविद्यते ॥ २८ ॥ अद्यत्वांज्ञातिसंभ्रंशंपृथक्मन्यामहेनृप ॥ नचेच्छीघ्रंनंदराजंत्यजत्यजम
हामते ॥ २९ ॥ ॥वृषभानुवरउवाच ॥ ॥ गर्गस्यवाक्यंहेगोपावदिष्यामिसमाहितः ॥ येनगोपगणायूयंभवताशुगतव्यथाः ॥ ३० ॥
असंख्यब्रह्माण्डपतिर्गोलोकेशःपरात्परः ॥ तस्मात्परोवरोनास्तिजातोनंदगृहेशिशुः ॥ ३१ ॥ भुवोभारावतारायकंसादीनांवधायच ॥ ब्रह्म
णाप्रार्थितःकृष्णोबभूवजगतीतले ॥ ३२ ॥

छेकिदेउ ॥ २५ ॥ तब वृषभानुवर बोले–नंदरायको कहा दोष है सो हम जातिमेंते छेकिदेय सब गोपनको प्यारो जातिको मुकुट मेरो प्यारो है, तब यह फेर गोप बोले ॥ २६ ॥
जो तुम न छेकोगे तो हम व्रजवासी तुमकूं छेकिदेंगे के मेरो कहा दोष है कि, तेरी कन्या ब्याहलायक हेगई है तें ब्याह ही नहीं करे है ॥ २७ ॥ तू जातिमें मुखिया है, तू
धनके मदमें चूर है, अच्छो वर देखिके तैंने कन्या नहीं दीनी यही तेरो दोष है ॥ २८ ॥ हे राजन ! हमने तो आजहीते तोकूं जातिते बाहर करिदीनों ऐसे हमने मानोहै नहीं तो
हे महामते ! तुम नंदराजकूं त्यागिदे ॥ २९ ॥ तब वृषभानु बोले–मैं सावधान हैके गर्गजीको वचन कहूंगो या वचनकूं सुनके हे गोपगण हो ! तुम्हारो संदेह जातो रहेगो ॥
॥ ३० ॥ ये असंख्य ब्रह्माण्डको पति परेतें परे गोलोकको नाथ परनसो पर है याते उत्तम और कोई वर नहीं है जो यह नन्दको बेटा भयोहै ॥३१॥ याने पृथ्वीको भार उतारवेके लिये

कंसादिनके मारिवेके लिये ब्रह्माजीकी प्रार्थनाते पृथ्वीमें जन्म लीनों है ॥ ३२ ॥ गोलोकमें जो श्रीकृष्णकी पटरानी राधिका है सो तेरे घरमें जन्मी है ताकूं तूं नहीं जाने है ॥ ३३ ॥ मैं इनको विवाह नहीं कराऊंगो इनको विवाह तो भांडीरवनमें यमुनाके किनारेपै होयगो ॥ ३४ ॥ वृंदावनके समीप निर्जन सुंदर स्थलमें ब्रह्माजी आयके इनको विवाह करावेंगे ॥ ३५ ॥ याते हे गोपवर ! राधाकूं तूं पर श्रीकृष्णकी अर्द्धांगी जानि गोलोकके चूडामणि श्रीकृष्ण तिनकी गोलोकमंदिरकी रानी है ॥ ३६ ॥ तुमहू सबरे गोपाल गोलोकते भूमिपै आयेहो तैसेई गोपी और गौ सब राधिकाकी इच्छाते यहां गोकुलमें आयेहें ॥ ३७ ॥ ऐसें कहिके जा दिनते गर्गाचार्य गये ता दिनते मैं राधिकाजीमें कछु संदेह नहीं करहूं ॥ ३८ ॥ वेदवाक्य तथा ब्रह्माके वचन सदाही सत्य हैं भूमिमें प्रमाण हैं, यह मैंने तुम्हारे आगे कह्यो अब कहा सुनवेकी इच्छा करोहो ॥ ३९ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां

श्रीकृष्णपट्टराज्ञीयागोलोकेराधिकाभिधा ॥ त्वद्गेहेसापिसंजातात्वंनजानासितांपराम् ॥ ३३ ॥ अहंनकारयिष्यामिविवाहमनयोर्नृप ॥ तयोर्विवाहोभविताभाण्डीरेयमुनातटे ॥ ३४ ॥ वृंदावनसमीपेचनिर्जनेसुंदरेस्थले ॥ परमेष्ठीसमागत्यविवाहंकारयिष्यति ॥ ३५ ॥ तस्माद्राधांगोपवरविद्धचर्द्धांगींपरस्यच ॥ लोकचूडामणेःसाक्षाद्राज्ञींगोलोकमंदिरे ॥ ३६ ॥ यूयंसर्वेपिगोपालागोलोकादागताभुवि ॥ तथागोपीगणागावोगोकुलेराधिकेच्छया ॥ ३७ ॥ एवमुक्त्वागतेसाक्षाद्गर्गाचार्येमहामुनौ ॥ तद्दिनादथराधायांसन्देहंनकरोम्यहम् ॥ ३८ ॥ वेदवाक्यंब्रह्मवचःप्रमाणंहिमहीतले ॥ इतिवःकथितंगोपाःकिम्भूयःश्रोतुमिच्छथ ॥ ३९ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीगिरिराजखण्डेगोपविवादोनाम पंचमोऽध्यायः ॥५॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ वृषभानुवरस्येदंवचःश्रुत्वाव्रजौकसः ॥ ऊचुःपुनःशान्तिगताविस्मितामुक्तसंशयाः ॥ ॥ १ ॥ ॥ गोपाऊचुः ॥ ॥ समीचीनंवचोराजन्राधेयंतुहरिप्रिया ॥ तत्प्रभावेणतेदीर्घंवैभवंदृश्यतेभुवि ॥ २ ॥ सहस्रशोगजामत्ताःकोटिशोश्वाश्वचंचलाः ॥ रथाश्चदेवधिष्ण्याभाःशिबिकाःकोटिशःशुभाः ॥ ३ ॥ कोटिशःकोटिशोगावोहेमरत्नमनोहराः ॥ मन्दिराणिविचित्राणिरत्नानिविविधानिच ॥ ४ ॥ सर्वसौख्यंभोजनादिदृश्यतेसांप्रतंतव ॥ कंसोपिधर्षितोजातोदृष्ट्वातेबलमद्भुतम् ॥ ५ ॥ कान्यकुब्जपतेःसाक्षाद्भलंदननृपस्यच ॥ जामातात्वंमहावीरकुबेरइवकोशवान् ॥ ६ ॥

गिरिराजखंडे भाषाटीकायां गोपविवादो नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥५॥ नारदजी कहै है–ऐसें वृषभानुवरको ये वचन सुनके सब व्रजवासी गोप शांत हैगये, संदेह दूर हैगयो, अचंभेमें आयके यह बोले ॥ १ ॥ तुम्हरो वचन साँचो है यह राधिका हरिकी प्रिया है ताहीके प्रभावते पृथ्वीमें तुम्हारो बड़ो वैभव बढ्यो है ॥ २ ॥ तुम्हारे सैकरन हजारन तो मतवारे हाथी हैं, किरोड़न चंचल घोड़ा हैं, किरोड़न स्वर्गके विमाननकेसे रथ हैं, किरोड़नही शुभ पालकी हैं ॥ ३ ॥ सुवर्णनकी माला पहिरें किरोड़न गौ मनोहर हैं विचित्र महल मंदिर हैं, अनेकन रत्न हैं ॥४॥ भोजनादिक सबरे सुख तुम्हारे घरमें वर्तमानमें दीखें हैं, तुम्हारे अद्भुत बलकूं देखके कंसहू धर्षित हैगयो है ॥ ५ ॥ और हे महावीर !

कन्नौजके पति भलंदन नाम राजा ताके तुम जमाई हौ तुम्हारौ कुंवेरकोसो वैभव है ॥ ६ ॥ तुम्हारी बराबर वैभव तौ नंदराजहूकें नहीं है, नंदराज तो किसान और गौनकौ पति बडे गरीब हैं ॥ ७ ॥ जो नंदकौ बेटा परिपूर्णतम साक्षात् हरि है तौ हे प्रभो ! हम सबनकूं हमारे देखते २ वाकी परीक्षा करकें दिखायदेउ ॥ ८ ॥ नारदजी कहेहैं ऐसे वृषभानुवर विनकौ वचन सुनकें नंदराजके वैभवकी परीक्षा करावतेभये ॥ ९ ॥ हे मैथिलेश्वर ! कोटीन किरोड़न माला बड़े २ मोतीनकी जिनमें एक २ मोती एक एक किरोडकौ पुहिरह्यौ है, जिनकी किरणे छुटरहीहै ॥ १० ॥ तिनकूं सोनेनके थारनमें धरके बडे कुशल जननके हाथन सबके देखते २ नंदजीकें वृषभानु भेजतभये राधिकाजीकी सगाई करवेकूं ॥ ११ ॥ बडे चतुर उन नेगी महमाननें नंदजीकी सभामें जायकें मोतीनके थार धरदीने और प्रणामकर नंदजीसे हाथ जोड्के यह बोले ॥ १२ ॥ कि, वृषभानुवर बरषानेके

त्वत्समंवैभवंनास्तिनन्दराजगृहेक्कचित् ॥ कृषीवलोनन्दराजोगोपतिर्दीनमानसः ॥ ७ ॥ यदिनन्दसुतःसाक्षात्परिपूर्णतमोहरिः ॥ सर्वेषाम्प श्यतांनस्तत्परीक्षांकारयप्रभो॥ ८ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ तेषांवाक्यंततःश्रुत्वावृषभानुवरोमहान् ॥ चकारनन्दराजस्यवैभवस्यपरी क्षणम् ॥ ९ ॥ कोटिदामानिमुक्तानांस्थूलानांमैथिलेश्वर ॥ एकैकायेषुमुक्ताश्चकोटिमौल्याःस्फुरत्प्रभाः ॥ १० ॥ निधायतानिपात्रेषुवृषभानुः कुशलैर्जनैः ॥ प्रेषयामासनन्दायसर्वेषांपश्यतांनृप ॥ ११ ॥ नन्दराजसभांगत्वावृणानाःकुशलाभृशम् ॥ निधायदामपात्राणिनन्दमाहुःप्र णम्यतम् ॥ १२ ॥ ॥ वृणानाऊचुः ॥ ॥ विवाहयोग्यांनवकंजनेत्रांकोटीन्दुबिम्बद्युतिमादधानाम् ॥ विज्ञायराधांवृषभानुमुख्यश्चक्रेवि चारंसुवरंविचिन्वन् ॥ १३ ॥ तवांगजंदिव्यमनंगमोहनंगोवर्द्धनोद्धारणदोःसमुद्भटम् ॥ संवीक्ष्यचास्मान्वृषभानुवंदितःसंप्रेषयामासविशाम्प तेप्रभो ॥ १४ ॥ वरस्यचांकेभरणायपूर्वंमुक्ताफलानांनिचयंगृहाण ॥ इतश्चकन्यार्थमलंप्रदेहिसैषाहिचास्मत्कुलजाप्रसिद्धिः ॥ १५ ॥ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ दृष्ट्वाद्रव्यंपरोनंदोविस्मितोपिविचारयन् ॥ पृष्टुंयशोदांतत्तुल्यंनीत्वाचान्तःपुरंययौ ॥ १६ ॥ चिरंदध्यौतदा नन्दोयशोदाचयशस्विनी ॥ एतन्मुक्तासमानंतुद्रव्यंनास्तिगृहेमम ॥ १७ ॥ लोकेलज्जागतासर्वाहासःस्याच्चेद्धनोद्धृतम् ॥ किंकर्तव्यंतत्प्र तियच्छ्रीकृष्णोद्वाहकर्मणि ॥ १८ ॥

राजा विवाहके लायक अपनी राधा कन्याको देखकें वरकूं ढूंढे है, कैसी कन्या है, किरोड़ चन्द्रमाकीसी कांति जाकी कमलसे नेत्रवारी है, ताके लिये बहुतकछु विचार कर ॥ १३ ॥ हे व्रजपति ! तुमारो बेटा दिव्य कामहूको मोह करनहारो, गोवर्द्धनकौ उठायवेवारो, महाबली विचारिके हे विशांपते ! हे प्रभो ! हम जे बंदीजन भाट हैं तिनकौं सगाईको भेजो हौ ॥ १४ ॥ सो वरकी गोद भरिवेकूं यह मोतीनकी माला भेजी हैं तिनैं तो लेउ और तुम अपनी ओरते कन्याकी गोद भरिवेकूं कछू देउ हमारे कुलकी यही रीति है ॥ १५ ॥ तब नंदजी वा द्रव्यकूं देखिकें अचंभेमें आयगये विचार करते उने लेके पूछवेको रणवासमें चलेगये यशोदाजीकूं पूछिवेके लिये कि, ऐसी अनोखी चीज देवेकौं कछू हमारेऊ है ? ॥ ॥ १६ ॥ तब नंदजी और यशोदाजी बडी देर तलक विचार करशोकरे फिर कही कि, ऐसी चीज तो हमारे कछू नहीं है ॥ १७ ॥ आज गोपनमें हमारी लाज न रहैगी

और हमारी हंसी होयगी अब हम कहा करें याके बदलेमें कहा देंय श्रीकृष्णको विवाह कैसे होयगो ॥ १८ ॥ ताते याको गोदको जो योग्य सगुनको लेवो चाहियेहै सो लैलेंइ पीछे कार्य विचारिके करनो चाहिये सो धनके आयेपे करैंगे ऐसें नंदजी और यशोदाजी विचार करि रहेंहैं इतनेहीमें ॥ १९ ॥ भगवान् दुःखहर्ता अलक्ष्य छिपके आय गये, तिनमेंते सौ मोती लैके बाहिर खेतनमें गये ॥ २० ॥ जैसे किसान खेतनमें बीज डारैहै तैसे एक २ मोती अपने हाथनसों अपने खेतनमें बोयदीनो ॥ २१ ॥ पीछे नंदजी जो गिननलगे तब तो उनमें सौ मोती कमती हैगये तब तो बडो संदेह करनलगे और यह बोले ॥ २२ ॥ हाल तो हमारे पहलेई याकी बराबर कछु चीज नहीं ही ताऊमें इनमेंहू सौ मोती कमती हैगये अहो! यह तो कलंक हमारी सबरी जातिमें होयगो ॥ २३ ॥ अथवा कहूं श्रीकृष्ण अथवा बलदेव खेलबेकूं तो न लेगये होंय तो

ततोयोग्यंतद्ग्रहणंपश्चात्कार्यंधनागते ॥ एवंचिन्तयतस्तस्यनन्दस्यैवयशोदया ॥ १९ ॥ अलक्ष्यआगतस्तत्रभगवान्वृजिनार्दनः ॥
नीत्वादामशतंतेषुबहिःक्षेत्रेषुसर्वतः ॥ २० ॥ मुक्ताफलानिचैकैकम्प्राक्षिपत्स्वकरेणवै ॥ यथाबीजानिचान्नानांस्वक्षेत्रेषुकृषीवलः ॥ २१ ॥
अथनन्दोपिगणयन्कलिकानिचयम्पुनः ॥ शतंन्यूनंचतद्दृष्ट्वासंदेहंसजगाममह ॥ २२ ॥ ॥ श्रीनन्दउवाच ॥ ॥ नास्तिपूर्वंय
त्समानंतत्रापिन्यूनतांगतम् ॥ अहोकलंकोभविताज्ञातिषुस्वेषुसर्वतः ॥ २३ ॥ अथवाक्रीडनार्थंहिकृष्णोयदिगृहीतवान् ॥ बलदेवोथवाबाल
स्तौपृच्छेदीनमानसः ॥ २४ ॥ ॥श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्थंविचार्यनंदोपिकृष्णम्पप्रच्छसादरम् ॥ प्रहसन्भगवान्नंदंप्राहगोवर्द्धनोद्धरः ॥
॥ २५ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ कृषीवलावयंगोपाःसर्वबीजप्ररोहकाः ॥ क्षेत्रेमुक्ताप्रबीजानिविकीर्णीकृतवानहम् ॥ २६ ॥
॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ श्रुत्वाथस्वात्मजेनोक्तंतंनिर्भर्त्स्यव्रजेश्वरः ॥ तानिनेतुंतत्सहितस्तत्क्षेत्राणिजगाममह ॥ २७ ॥ तत्रमुक्ताफलानांतु
शाखिनःशतशःशुभाः ॥ दृश्यंतेदीर्घवपुषोहरित्पल्लवशोभिताः ॥ २८ ॥ मुक्तानांस्तबकानांतुकोटिशःकोटिशोनृप ॥ संघाविलंबितारेजुर्ज्यो
तींषीवनभःस्थले ॥ २९ ॥ तदातिहर्षितोनन्दोज्ञात्वाकृष्णम्परेश्वरम् ॥ मुक्ताफलानिदिव्यानिपूर्णंस्थूलसमानिच ॥ ३० ॥

सहजमें पूछूंगो ॥ २४ ॥ नारदजी कहेंहैं कि, ऐसे विचारिके नंदजी बडे आदरते श्रीकृष्णते पूछनलगे कि, लाला! ये बात है तब गोवर्द्धनधारी भगवान् हंसते नंदजीते बोले ॥ २५ ॥ बाबा! हम तो किसान है, सब बीजनके बोयनेवारे गोप है सो हम तो जायके उन सब मोतिनकूं बीजकी नाई खेतनमें बिखेरि आये हैं ॥ २६ ॥ नारदजी कहेंहै ऐसे बेटाको वचन सुनिके बेटाकूं ललकारिके श्रीव्रजराज उन्हे संग लैके उन्ही खेतनपै चलेआये मोतीनकूं लैबेके लीये ॥ २७ ॥ तहां देखे तो मोतीनके सैकडन सुंदर हरे हरे पत्तानको बडे बडे पेडनमें झुग्गा लागिरहे है ॥ २८ ॥ मोतीनके किरोडन गुच्छानके गुच्छा झुंडनके झुंड झुग्गानके झुग्गा झलर झलर झुकि झुकि झुमि झुमि धरतीकूं चूमिरहे है, तिनकी सोनेनकी शाखा पन्नानके पत्ता, मोतीनके फल पुखराजके फूल, जैसे अंबरमें तारागण खिले है ये ऐसे खेत देखे ॥ २९ ॥ तब तो श्रीकृष्णको पर ईश्वर

जान और विनको ऐश्वर्य जानिके नंदजी अत्यंत प्रसन्न होतभये, दिव्य मोती पहलेनहूंसे मोटे उज्ज्वल ॥ ३० ॥ तिनके श्रीव्रजेश्वर नंदराजने विन नेगिनकूं एक किरोड़ भार मोती गाडानमें भरिके दिये राधिकाकी गोदी भरिवेकूं ॥ ३१ ॥ तब वे सगाई करनवारे मोतीनके गाडा लेके वृषभानुके पास बरसानेमें आये हे राजन् ! सबनके सुनतर नंद जीको ऐश्वर्य वर्णन करते भये ॥ ३२ ॥ तब सब व्रजवासी विस्मित हैगये, नंदके बेटाकूं साक्षात् हरि जानिके वृषभानुकूं दंडोत करिके सब निःसंदेह हैगये ॥ ३३ ॥ हरिकी प्यारी राधाको जानी और राधाके प्यारे हरि हैं ऐसें जानिके हे मैथिलेश्वर ! ताही दिनते सब व्रजवासी इनको जानि गये ॥ ३४ ॥ हे मैथिल ! जहां हरिने मोतीनको क्षेत्र करयोहो तहां मुक्ता सरोवरक्षेत्र हैगयो, वह तीर्थनको राजा है ॥ ३५ ॥ जो कोई वा तीर्थमें जायके एकभी मोतीको दान करे सो लाख मोतीनके दानके फलकूं प्राप्त होयहै यामें संदेह नहीं है ॥ ३६ ॥

तेषांतुकोटिभाराणिनिधायशकटेषुच ॥ ददौतेभ्योवृणानेभ्योनन्दराजोव्रजेश्वरः ॥३१॥ तेगृहीत्वाथतत्सर्वंवृषभानुवरंगताः ॥ सर्वेषांशृण्वतां नन्दवैभवंप्रजगुर्नृप ॥ ॥ ३२ ॥ तदातिविस्मिताःसर्वेज्ञात्वानन्दसुतंहरिम् ॥ वृषभानुवरंनेमुर्निःसन्देहाव्रजौकसः ॥ ३३ ॥ राधाहरेःप्रियाज्ञा ताराधायाश्चप्रियोहरिः ॥ ज्ञातोव्रजजनैःसर्वैस्तद्दिनान्मैथिलेश्वर ॥३४॥ मुक्ताक्षेपःकृतोयत्रहरिणानन्दसूनुना ॥ मुक्तासरोवरस्तत्रजातोमैथि लतीर्थराट् ॥ ३५ ॥ एकंमुक्ताफलस्यापिदानंतत्रकरोतियः ॥ लक्षमुक्तादानफलंसमाप्नोतिनसंशयः ॥३६॥ एवंतेकथितोराजन्गिरिराजमहो त्सवः ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदोनृणांकिम्भूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ३७ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीगिरिराजखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेहरिपरीक्षणं नामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ कतिमुख्यानितीर्थानिगिरिराजेमहात्मनि ॥ एतद्ब्रूहिमहायोगिन्साक्षात्त्वंदिव्य दर्शनः ॥ १ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ राजन्गोवर्द्धनःसर्वःसर्वतीर्थवरःस्मृतः ॥ वृन्दावनंचगोलोकंमुकुटोद्रिःप्रपूजितः ॥ २ ॥ गोपगोपीगवांरक्षाप्रदःकृष्णप्रियोमहान् ॥ पूर्णब्रह्मातपत्रंयस्तस्मात्तीर्थवरस्तुकः ॥ ३ ॥ इन्द्रयागंविनिर्भर्त्स्यसर्वैर्निजजनैःसह ॥ यत्पूज नंसमारेभेभगवान्भुवनेश्वरः ॥ ४ ॥ परिपूर्णतमःसाक्षाच्छ्रीकृष्णोभगवान्स्वयम् ॥ असंख्यब्रह्माण्डपतिर्गोलोकेशःपरात्परः ॥ ५ ॥

हे राजन ! ऐसे मैंने तेरे अगाडी गिरिराजको महोत्सव वर्णन करयो है या लोकमें भुक्तिको दाता और पर लोकमे मुक्तिको दाता है, अब तूं कहा और सुनिवेकी इच्छा करेहै ॥३७॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां गिरिराजखण्डे भाषाटीकायां हरिपरीक्षणं नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ बहुलाश्व राजा पूछे हे क्यों महाराज ! या महात्मा गिरिराजमें कितने तीर्थ हैं सो मेरे अगाड़ी कहो ? तुम साक्षात् दिव्यदर्शी हो ॥ १ ॥ नारदजी कहें हैं कि, हे राजन् ! गोवर्द्धन तो सम्पूर्णही सर्व तीर्थनसों श्रेष्ठ है और वृन्दावन हू सर्व तीर्थमय है और यह गिरिराज गोलोकको मुकुट है, जाको कृष्णने पूजो है ॥ २ ॥ गोप, गोपी, गौ इनको रक्षक है, कृष्णको प्रिय है । पूर्ण ब्रह्मको छत्र है; सब तीर्थनमें श्रेष्ठ है, कहो गिरिराज सों बडो तीर्थ कौनसो है ॥ ३ ॥ इंद्रयज्ञको तिरस्कार करिके सब अपने जननकरिके सहित जाको पूजन भुवनके ईश्वर भगवान्ने कीनो ॥ ४ ॥ परिपूर्णतम साक्षात् श्रीकृष्ण

स्वयं भगवान असंख्य ब्रह्माण्डनके पति गोलोकके ईश्वर परेते पर हैं ॥ ५ ॥ सो जा गोवर्द्धनपै वैतके बालकनके संग क्रीड़ा करैंहैं ताको माहात्म्य हे मैथिल ! चार मुखनसों ब्रह्माजीहू नहीं कहिसकैं हैं ॥ ६ ॥ जहां मानसीगंगा महापापकी नाश करनहारी है जहां विशद गोविन्दकुण्ड है, जहां शुभ चन्द्रसरोवर है ॥ ७ ॥ जहां राधाकुण्ड, कृष्णकुण्ड, ललिताकुण्ड, गोपालकुण्ड और कुसुमसरोवर है ॥ ८ ॥ और जहां श्रीकृष्णके मुकुटके स्पर्शते मुकुटशिला है ताके दर्शनमात्रते मनुष्य देवतानके मुकुटकी मणि होय है ॥ ९ ॥ और जा शिलामें श्रीकृष्णनें चित्र लिखे हैं सो आजतक बडी विचित्र चित्रशिला कहावै है ॥ १० ॥ और जा शिलाकूं बालकनके संग कृष्ण बजायो करते हैं,सो बाजनीशिला कहावैहै, यह महापापकी नाश करनहारी है ॥ ११ ॥ और जहां हे मैथिल ! श्रीकृष्णने बालकनके संग गेंदक्रीड़ा करी है वो कंदुकक्षेत्र है ॥ १२ ॥ जहां श्रीकृष्णके पास इन्द्र

यस्मिन्स्थितःसदाक्रीडामर्भकैःसहमैथिल ॥ करोतितस्यमाहात्म्यंवक्तुंनालंचतुर्मुखः ॥ ६ ॥ यत्रवैमानसीगंगामहापापौघनाशिनी ॥ गोविन्दकुण्डंविशदंशुभंचन्द्रसरोवरम् ॥ ७ ॥ राधाकुण्डःकृष्णकुण्डोललिताकुण्डएवच ॥ गोपालकुण्डस्तत्रैवकुसुमाकरएवच ॥ ८ ॥ श्रीकृष्णमौलिसंस्पर्शान्मौलिचिह्नशिलाऽभवत् ॥ तस्यादर्शनमात्रेणदेवमौलिर्भवेज्जनः ॥ ९ ॥ यस्यांशिलायांकृष्णेनचित्राणिलिखितानिच ॥ अद्यापिचित्रितापुण्यानाम्नाचित्रशिलागिरौ ॥ १० ॥ यांशिलामर्भकैःकृष्णोवादयन्क्रीडनेरतः ॥ वादनीसाशिलाजातामहापापौघनाशिनी ॥ ११ ॥ यत्रश्रीकृष्णचन्द्रेणगोपालैःसहमैथिल ॥ कृतावैकंदुकक्रीडातत्क्षेत्रंकंदुकंस्मृतम् ॥ १२ ॥ इन्द्रःशक्रपदंयातिनत्वाब्रह्मपदंचतत् ॥ विलुठन्यस्यरजसासाक्षाद्विष्णुपदंव्रजेत् ॥ १३ ॥ गोपानामुष्णिषाण्यत्रचोरयामाससमाधवः ॥ औष्णिषंनामतत्तीर्थंमहापापहरंगिरौ ॥ १४ ॥ तत्रैकदावैदधिविक्रयार्थविनिर्गतोगोपवधूसमूहः ॥ श्रुत्वाक्वणन्नूपुरशब्दमाराद्धरोधतन्मार्गमनंगमोही ॥ १५ ॥ वंशीधरोवेत्रवरेणगोपैः पुरश्चतासांविनिधायपादम् ॥ मह्यंकरादानधनायदानंदेहीतिगोपीर्निजगादमार्गे ॥ १६ ॥ ॥ गोप्यऊचुः ॥ ॥ वक्रस्त्वमेवासिसमास्थितःपथिगोपार्भकैर्गोरसलम्पटोभृशम् ॥ मात्राचपित्रासहकारयामोबलाद्भवंतंकिलकंसबन्धने ॥ १७ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ कंसंहनिष्यामिमहोग्रदण्डंसबांधवंमेशपथोगवांच ॥ एवंकरिष्यामियदोःपुरेबलान्नेष्येसदाहंगिरिराजभूमेः ॥ १८ ॥

आयौहै सो शक्रपद है सोई ब्रह्मपद है जाकी रजमें लोटै तौ साक्षात् विष्णुपदकूं वो मनुष्य जाय है ॥ १३ ॥ जहां श्रीकृष्णने बालकनकी पाग चुराई है सो पर्वतमें औष्णीषतीर्थ कहावैहै वो महापापको हर्ता है ॥ १४ ॥ तहां एक समय दही बेचवेकूं गोपीनको झुंड निकस्यो, उनके नूपुरनको शब्द सुनके कामके मोह करनहारे कृष्ण उनको मार्ग रोकलेते भये ॥ १५ ॥ बंशी बजावत बैंतलिये गोपनके संग उनके अगाड़ी पांव जायधर्यो और यह बोले—हे प्यारियो ! हमारो कछू कर लगै है सो देदीजिये, ये वाक्य रस्ताचलती गोपीनसों आपने कह्यौ ॥ १६ ॥ तब गोपी बोली कि, तुम बड़े टेढे हो जो गोपनकूं संग लैकें रस्ता घेरकें ठाड़े हौ कहा गोरसके लोभी हो सो हम तुमें तुमारे मैया बाप समेत कंसके बंधनमें धिरवाय देयगी ॥ १७ ॥ यह सुनकें भगवान् बोले—तुम कंसकी सेखी मत राखो कंसकूं बान्धवनसमेत मैं मारडारूंगो यह मोकूं गौनकी सोगंद है और मैं चुटिया पकडकें

कंसको गिरिराजमें खचेर लाऊंगी ॥ १८ ॥ अब नारदजी कहे हैं-ऐसे कहिके बालकनके हाथन दहीके बासन न्यारे २ सबपैते लेलीने, फेरि बड़े आनंदते नंदनंदनने वे सब बासन
पृथ्वीमें पटकिदीने ॥ १९ ॥ तब गोपी कहनलगी अहो देखो री! यह तौ बडो ढीट है नंदको बेटा कैसो निडर है, काहूकी कहीहू नाहिं माने और बतरायबो कैसो सीखिगयो है,
पुरमें तो कैसो गरीबसो बोलै है वनमें कैसो जोरावर बनिजाय है ॥ २० ॥ कहा डर है हम अबहीं व्रजरानीते और नंदराजते कहेंगी तब मालूम परेगी, ऐसें
कहतीं वे सब गोपी हँसती २ अपने २ घरकूं चलीआईं ॥ २१ ॥ तब कदंबके ढाकके पत्तानके दौना बनायके वे चीकने दहीनकूं दौनानमें धर २ के बालकनके
संग खानलगे ॥ २२ ॥ तबेते तहां दौनाके आकारके पत्ता अबतलक उपजे हैं, सब वृक्षनके दौनाकार पत्ता हैगये, हे नृपेश्वर! वह महापवित्र द्रोणक्षेत्र हैगयो ॥ २३ ॥

॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वादधिपात्राणिबालैर्नीत्वापृथक्पृथक् ॥ भूपृष्ठेपोथयामाससानंदंनन्दनन्दनः ॥१९॥ अहोएषपरंधृष्टोनिर्भ
योनन्दनन्दनः ॥ निरंकुशोऽभाषणीयोवनेवीरःपुरेऽबलः ॥ २० ॥ ब्रुवामहेयशोदायैनन्दायचकिलाद्यवै ॥ एवंवदंत्यस्तागोप्यःसस्मिताः
प्रययुर्गृहान् ॥ २१ ॥ नीपपालाशपत्राणांकृत्वाद्रोणानिमाधवः ॥ अघासबालकैःसार्द्धंपिच्छिलानिदधीनिच ॥ २२ ॥ द्रोणाकाराणिपत्रा
णिबभूवुःशाखिनांतदा ॥ तत्क्षेत्रंचमहापुण्यंद्रोणंनामनृपेश्वर ॥ २३ ॥ दधिदानंतत्रकृत्वापीत्वापत्रधृतंदधि ॥ नमस्कुर्यान्नरस्तस्यगोलोकान्नच्यु
तिर्भवेत् ॥ २४ ॥ नेत्रेआच्छाद्ययत्रैवलीनोभून्माधवोर्भकैः ॥ तत्रतीर्थंलौकिकंचजातंपापप्रणाशनम् ॥ २५ ॥ कदम्बखण्डतीर्थंचली
लायुक्तंहरेःसदा ॥ तस्यदर्शनमात्रेणनरोनारायणोभवेत् ॥ २६ ॥ यत्रवैराधयारासेशृङ्गारोकारिमैथिल ॥ तत्रगोवर्द्धनेजातंस्थलंशृङ्गा
रमण्डलम् ॥ २७ ॥ येनरूपेणकृष्णेनधृतोगोवर्द्धनोगिरिः ॥ तद्रूपंविद्यतेतत्रनृपशृङ्गारमण्डलम् ॥ २८ ॥ अब्दाश्चतुःसहस्राणितथाचाष्टौ
शतानिच ॥ गतास्तत्रकलेरादौक्षेत्रेशृङ्गारमण्डले ॥ २९ ॥ गिरिराजगुहामध्यात्सर्वेषाम्पश्यतांनृप ॥ स्वतःसिद्धंचतद्रूपंहरेःप्रादुर्भविष्य
ति ॥ ३० ॥ श्रीनाथंदेवदमनंतंवदिष्यंतिसज्जनाः ॥ गोवर्द्धनेगिरौराजन्सदालीलांकरोतियः ॥ ३१ ॥

तहां जायके जो कोई मनुष्य दहीको दान करै है उन पत्तानमें दही धरके खाय तौ गोलोकमें नित्य वाकी स्थिति रहीआवै वाकूं सब मनुष्य नमस्कार करें वाकी गोलो
कसों कभी च्युति नहीं होयहै ॥ २४ ॥ जहां श्रीकृष्णनें आँखमिचौनीकी लीला करीहै तहां लौकिक नाम तीर्थ महापापको नाश करनहारो हैगयो है ॥ २५ ॥
एक कदम्बखंडी तीर्थ है यह श्रीकृष्णकी लीलायुक्त तीर्थ है, ताके दर्शनमात्रतेही मनुष्य नारायणको रूप होयहै ॥ २६ ॥ हे मैथिल! जहां राधाको रासमें शृङ्गार कर्योहै सो
वही स्थल गोवर्द्धनमें शृङ्गारमंडल कहावै है ॥ २७ ॥ जा रूपते श्रीकृष्णनें गोवर्द्धन पर्वतकूं धारण कीनों है हे नृप! वही रूप शृंगारमंडलमें विराजै है ॥ २८ ॥ वाही शृंगारमण्डल
क्षेत्रमें कलियुगकी आदिमें चार हजार आठसौ वर्ष पीछें ॥२९॥ गिरिराजकी गुहाके मध्यते सबनके देखत २ भगवान्‌को एक स्वरूप स्वतःसिद्ध प्रगट होयगो ॥३०॥ ता रूपको श्रीनाथ

देवदमन सब श्रेष्ठ जन वर्णन करेंगे जो गोवर्द्धन पर्वतमें सदाही लीला करैहैं ॥३१॥ जे पुरुष नेत्रनसों नाथजीके दर्शन करैंगे वे पुरुष हे मैथिलेंद्र! कलियुगमें कृतार्थ होंयगे ॥ ३२ ॥ जगन्नाथ, रंगनाथ, द्वारिकानाथ और बदीनाथ ऐसे जे ये चार नाथ भरतखंडके चारों कोनेनपै विराजमान हैं ॥ ३३ ॥ गोवर्द्धनके बीचमेंहू सदाही ये नाथजी विराजैं हैं, या पवित्र भरतखण्डमें पांच नाथ हैं देवनके देव हैं ॥ ३४ ॥ सद्धर्मके मंडपके ये पांचों नाथ पांच खंभ हैं, दुखियानकी रक्षा करन हारे हैं तिनके दर्शनहीतें ये मनुष्य नारायणके रूपकूं प्राप्त होंय हैं ॥ ३५ ॥ जगन्नाथ, बदीनाथ, द्वारिकानाथ, रंगनाथ इनकी यात्रा करके जो देवदमनके श्रीनाथजीके दर्शन न करै तौ वा मनुष्यको यात्राको फल नहीं होयहै ॥ ३६ ॥ और जो देवदमन और श्रीनाथजीके गोवर्द्धन पर्वतमें दर्शन करलेय वाको चारों नाथनकी यात्राको फल प्राप्त हैजाय है ॥ ३७ ॥ जहां ऐरावत हाथीके और सुरभीगौके

येकरिष्यंतिनेत्राभ्यांतस्यरूपस्यदर्शनम् ॥ तेकृतार्थाभविष्यंतिमैथिलेन्द्रकलौजनाः ॥ ३२ ॥ जगन्नाथोरंगनाथोद्वारकानाथएवच ॥ बद्रिनाथश्चतुष्कोणेभारतस्यापिवर्तते ॥ ३३ ॥ मध्येगोवर्द्धनस्यापिनाथोयंवर्ततेनृप ॥ पवित्रेभारतेवर्षेपंचनाथाःसुरेश्वराः ॥ ३४ ॥ सद्धर्ममण्डपस्तंभाआर्तत्राणपरायणाः ॥ तेषांतुदर्शनंकृत्वानरोनारायणोभवेत् ॥ ३५ ॥ चतुर्णांभुविनाथानांकृत्वायात्रांनरःसुधीः ॥ नपश्येद्देवदमनंसनयात्राफलंलभेत् ॥ ३६ ॥ श्रीनाथंदेवदमनंपश्येद्गोवर्द्धनेगिरौ ॥ चतुर्णांभुविनाथानांयात्रायाःफलमाप्नुयात् ॥ ३७ ॥ ऐरावतस्यसुरभेःपादचिह्नानियत्रवै ॥ तत्रनत्वानरःपापीवैकुण्ठंयातिमैथिल ॥ ३८ ॥ हस्तचिह्नंपादचिह्नंश्रीकृष्णस्यमहात्मनः ॥ दृष्ट्वानत्वानरःकश्चित्साक्षात्कृष्णपदंव्रजेत् ॥ ३९ ॥ एतानिनृपतीर्थानिकुंडाद्यायतनानिच ॥ अंगानिगिरिराजस्यकिम्भूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ४० ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीगिरिराजखण्डेश्रीनारदबहुलाश्वसंवादेश्रीगिरिराजतीर्थवर्णनंनामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ केषुकेषुतदंगेषुकिंकिंतीर्थसमाश्रितम् ॥ वददेवमहाभागत्वम्परावरवित्तमः ॥ १ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ यत्रयस्यप्रसिद्धिःस्यात्तदंगम्परमंविदुः ॥ क्रमतोनास्त्यंगचयोगिरिराजस्यमैथिल ॥ २ ॥ यथासर्वगतंब्रह्मसर्वांगानिचतस्यवै ॥ विभूतेर्भावतःशश्वत्तथावक्ष्यामिमानद ॥ ३ ॥

चरण चिह्न हैं तिनके दर्शनकर दण्डवत करै तौ पापी पुरुषहू वैकुण्ठकूं प्राप्त होय है ॥ ३८ ॥ महात्मा श्रीकृष्णके हाथको और चरणको चिह्न है इनके दर्शन करके नमस्कार करै तो वो पुरुष साक्षात् कृष्णके पदकूं प्राप्त होय ॥ ३९ ॥ हे राजन्! ये चिह्न गिरिराजमें हैं जे सरोवर और स्थल है सो मैने तेरे आगे वर्णन करे है, अब आगे कहा सुनवेकी इच्छा है ॥ ४० ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां गिरिराजखण्डे भाषाटीकायां गिरिराजतीर्थवर्णनं नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ बहुलाश्व राजा प्रश्न करै है कि, कौन कौनसे अंगमें कौन कौनसे तीर्थ हैं सो तुम कहो हे नारदजी! तुम पर अपरके वेत्ता हौ ॥ १ ॥ यह सुनके नारदजी बोले कि, जहां जाकी प्रसिद्धि है ताहीकूं परम अंग कहै हैं, हे मैथिल! क्रम करके गिरिराजके अंगनकी गिनती नहीं हैं ॥ २ ॥ जैसे ब्रह्म सर्वगत है और वाहीके सब अंग है तैसेही गोवर्द्धनकेहू अङ्ग सब

ठौर है ॥ ३ ॥ शृंगारमण्डलके नीचे तौ गोवर्द्धनको मुख है जहां भगवान्ने व्रजवासीनके संग अन्नकूट करयौ है, यह भगवान्की विभूति है ॥ ४ ॥ मानसीगङ्गा नेत्र हैं चन्द्रसरोवर नासिका है, गोविन्दकुण्ड होठ है, कृष्णकुण्ड ठोड़ी है ॥ ५ ॥ राधाकुण्ड जीभ है, ललिताकुण्ड दोनों कपोल हैं, गोपालकुण्ड कान हैं, कुसुमसरोवर कनपटी है ॥ ॥ ६ ॥ और हे मैथिल ! मुकुटचिह्नकी शिला माथौ है, चित्रशिला शिर है, और वादिनीशिला ग्रीवा है ॥ ७ ॥ कंदुकतीर्थ पसली है, उष्णीषतीर्थ कमर है, द्रोणतीर्थ पीठ है, लौकिकतीर्थ पेट है ॥ ८ ॥ कदंबखण्डी वक्षस्थल है, शृंगारमण्डल गोवर्द्धनजीको जीव है, श्रीकृष्णको चरणचिह्न है सो या महात्मा गोवर्द्धनको मन है ॥ ९ ॥ हस्तचिह्न बुद्धि है, ऐरावतकौ चिह्न पांव हैं, सुरभीके पादचिह्न पंख हैं ॥ १० ॥ पूंछरीपै पूंछ है, वत्सकुण्ड है सो बल है, रुद्रकुण्ड है सो क्रोध है, इन्द्रसरोवर काम है ॥ ११ ॥ कुबेरतीर्थ उद्योग है,

शृंगारमण्डलस्याधोमुखंगोवर्द्धनस्यच ॥ यत्रान्नकूटंकृतवान्भगवान्व्रजवासिभिः ॥ ४ ॥ नेत्रेवैमानसीगंगानासाचन्द्रसरोवरः ॥ गोविन्दकुण्डोह्यधरश्चिबुकंकृष्णकुण्डकः ॥ ५ ॥ राधाकुण्डंतस्यजिह्वाकपोलौललितासरः ॥ गोपालकुंडःकर्णश्चकर्णांतःकुसुमाकरः ॥ ६ ॥ मौलिचिह्नाशिलातस्यललाटंविद्धिमैथिल ॥ शिरश्चित्रशिलातस्यग्रीवावैवादिनीशिला ॥ ७ ॥ कांदुकम्पार्श्वदेशांश्चऔष्णिषंकटिरुच्यते ॥ द्रोणतीर्थंपृष्ठदेशेलौकिकंचोदरेस्मृतम् ॥ ८ ॥ कदम्बखण्डमुरसिजीवःशृंगारमण्डलम् ॥ श्रीकृष्णपादचिह्नंतुमनस्तस्यमहात्मनः ॥ ९ ॥ हस्तचिह्नंतथाबुद्धिरैरावतपदंपदम् ॥ सुरभेःपादचिह्नेषुपक्षौतस्यमहात्मनः ॥ १० ॥ पुच्छकुण्डेतथापुच्छंवत्सकुंडेबलंस्मृतम् ॥ रुद्रकुंडे तथाक्रोधंकामंशक्रसरोवरे ॥ ११ ॥ कुबेरतीर्थंचोद्योगंब्रह्मतीर्थेप्रसन्नताम् ॥ यमतीर्थेह्यहंकारंवदन्तीत्थंपुराविदः ॥ १२ ॥ एवमंगानिसर्वत्रगिरिराजस्यमैथिल ॥ कथितानिमयातुभ्यंसर्वपापहराणिच ॥ १३ ॥ गिरिराजविभूतिंचयःशृणोतिनरोत्तमः ॥ सगच्छेद्धामपरमंगोलोकंयोगिदुर्लभम् ॥ १४ ॥ समुत्थितोसौहरिवक्षसोगिरिर्गोवर्द्धनोनामगिरीन्द्रराजराट् ॥ समागतोह्यत्रपुलस्त्यतेजसायद्दर्शनाज्जन्मपुनर्नविद्यते ॥ १५ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीगिरिराजखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेगिरिराजविभूतिवर्णनंनामाऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ अहोगोवर्द्धनःसाक्षाद्गिरिराजोहरिप्रियः ॥ तत्समानंनतीर्थंहिविद्यतेभूतलेदिवि ॥ १ ॥

ब्रह्मतीर्थ प्रसन्नता है, यमतीर्थ अहंकार है, जे पूर्वाचार्य गिरिराजके रूपको जानैहैं वे या प्रकारसो गोवर्द्धनको रूप बताते हैं ॥ १२ ॥ हे मैथिल ! ऐसे गिरिराजके सब जगह अङ्ग हैं जे सब पापके हरनहारे है वे मैंने तेरे अगाड़ी कहे हैं ॥ १३ ॥ जो कोई मनुष्य ये गिरिराजकी विभूतिकूँ श्रवण करै है सो योगीनकूँ दुर्लभ जो परमधाम है याकूं प्राप्त होयहै ॥ १४ ॥ यह गिरिराज हरिके वक्षस्थलते उत्पन्न भयौ है, गोवर्द्धन गिरीन्द्रनके राजानको राजा है, पुलस्त्यके तेजते यहां आयौ है, जो याको दर्शन करै तौ वाको फिर जन्म नहीं होय है ॥ १५ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां गिरिराजखण्डे भाषाटीकायां गिरिराजविभूतिवर्णनं नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ बहुलाश्व राजा कहै है अहो !

गोवर्द्धन तो साक्षात् पर्वतनकौ राजा हरिकौ प्यारो है ताके समान कोई तीर्थ पृथ्वीमें है न स्वर्गमें है ॥ १ ॥ सो कब यह श्रीकृष्णके वक्षस्थलते पैदा भयौ है ? यह मेरे आगे कहो ? तुम साक्षात् भगवान्के मन हौ ॥ २ ॥ तब नारदजी कहैं है कि, हे राजन् ! हे बड़ी बुद्धिवारे ! यह गोलोककी उत्पत्तिकौ वृत्तांत है ताहि तूँ सुन ये मनुष्यनको चार पदार्थको देनवारौ है जामें आदिलीला वर्णन करी है ॥ ३ ॥ जो अनादि आत्मा पुरुष निर्गुण मायाते परे परिपूर्णतम साक्षात् श्रीकृष्णभगवान् प्रभु ॥ ४ ॥ प्रत्यग्धामा स्वयंज्योति जो यहां निरन्तर रमण करै हैं जहां सबके चलायवेवारेनकोहू चलायवेवारौ काल सोहू प्रभु नहीं है ॥ ५ ॥ हेराजन् ! न यहां माया है न महत्तत्त्व है न तीनों गुण न मन बुद्धि है और न चित्त अहंकार है और न जामें बुद्धि प्रवेश करै है ॥ ६ ॥ वाने अपने स्वरूपमें साकार ब्रह्मकी इच्छा करी तब पहलेई शेषजी भये वो कमलतंतुसों सुपेद हैं और

कदान्वभूवश्रीकृष्णवक्षसोऽयंगिरीश्वरः ॥ एतद्वदमहाबुद्धेत्वंसाक्षाद्धरिमानसः ॥ २ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ गोलोकोत्पत्तिवृत्तान्तं शृणुराजन्महामते ॥ चतुष्पदार्थदंनृणामाद्यलीलासमन्वितम् ॥ ३ ॥ अनादिरात्मापुरुषोनिर्गुणःप्रकृतेःपरः ॥ परिपूर्णतमःसाक्षाच्छ्रीकृष्णोभगवान्प्रभुः ॥ ४ ॥ प्रत्यग्धामास्वयंज्योतीरममाणोनिरन्तरम् ॥ यत्रकालःकलयतामीश्वरोधाममानिनाम् ॥ ५ ॥ राजन्नप्रभवेन्मायानमहांश्चगुणाःकुतः ॥ नविशंतिकचिद्राजन्मनश्चित्तोमतिर्ह्यहम् ॥ ६ ॥ स्वधाम्निब्रह्मसाकारमिच्छयाचव्यचीकरत् ॥ प्रथमंचाभवच्छेषोविसश्वेतोबृहद्वपुः ॥ ७ ॥ तदुत्संगेमहालोकोगोलोकोलोकवन्दितः ॥ यंप्राप्यभक्तिसंयुक्तःपुनरावर्ततेनहि ॥ ८ ॥ असंख्यब्रह्माण्डपतेर्गोलोकाधिपतेःप्रभोः ॥ पुनःपादाब्जसंभूतागंगात्रिपथगामिनी ॥ ९ ॥ पुनर्वामांसतस्तस्यकृष्णाभूत्सरितांवरा ॥ रेजेशृंगारकुसुमैर्यथोष्णिड्मुद्रितानृप ॥ १० ॥ श्रीरासमण्डलंदिव्यंहेमरत्नसमन्वितम् ॥ नानाशृंगारपटलंगुल्फाभ्यांश्रीहरेःप्रभोः ॥ ११ ॥ सभाप्रांगणवीथीभिर्मंडपैःपरिवेष्टितः ॥ वसन्तमाधुर्यधरःकूजत्कोकिलसंकुलः ॥ १२ ॥ मयूरैःषट्पदैर्व्याप्तःसरोभिःपरिसेवितः ॥ जातोनिकुंजोजंघाभ्यांश्रीकृष्णस्यमहात्मनः ॥ १३ ॥ वृन्दावनंचजानुभ्यांराजन्सर्ववनोत्तमम् ॥ लीलासरोवरःसाक्षादूरुभ्यांपरमात्मनः ॥ १४ ॥

बड़ौ जाकौ शरीर है ॥ ७ ॥ ताकी गोदीमें लोकवंदित सब लोकनमें मुख्य गोलोक भयो जामें गयो हरिभक्त या लोकमें आयके फिर जन्म नहीं लेय है ॥ ८ ॥ फिर या असंख्य ब्रह्माण्डनके पति गोलोकके नाथ तिनके चरणकमलते तीन रस्ताकी गमन करनहारी श्रीगङ्गाजी प्रगट भई ॥ ९ ॥ फिर श्रीकृष्णके बांये अंगते नदिनमें मुख्य कालिंदी प्रगट भई वो शृंगारके पुष्पनकरिके ऐसी शोभित भई जैसे बँधी भई उष्णीष (पगडी) ॥ १० ॥ फिर भगवान्के टकनाते श्रीरासमण्डल प्रगट भयो जो रत्नजटित सुवर्णके नाना शृंगारनको समूह है ॥ ११ ॥ जो सभा, आंगन, चौक, गली, छजी इन करिके सहित है वसंतकी माधुर्यको धरैहै, जामें कोकिल, सारस कुहकि रहे है, जिनमें सुन्दर सरोवर हैं ॥ १२ ॥ जहां मोर नाचिरहे हैं, भौंरा गुंजार करै है, फिर कृष्णमहात्माकी जंघाते निकुंज पैदा भयौ ॥ १३ ॥ फिर भगवान्की पीडुरीते हे राजन् ! बननमें

उत्तम वृन्दावन प्रगटभयो और भगवान्‌की जांघनते लीलासरोवर भयो ॥ १४ ॥ भगवान्‌की कमरिते दिव्य रत्नमय सुनहरी भूमि भई, उदरसें जे रोमनकी पंगति तातें माधवी माधुरीकी लता भई ॥ १५ ॥ अनेक पखेरूनकी ध्वनिते भूषित है रही है, फूल फलके भारनते आकुल नाम युक्त है और नीचेको नयी है जैसे गुण पायके सत्कुलके उत्पन्नभये पुरुष नये हैं ॥ १६ ॥ और भगवान्‌की नाभिकमलते अनेक प्रकारके हजारन कमल पैदाभये जे सरोवरनमें खिले हैं ॥ १७ ॥ भगवान्‌की त्रिवलीते अति शीतल मंद सुगंध पवन भई, भगवान्‌की हँसुलीयानते मथुरा द्वारिका दोनों पुरी भई ॥ १८ ॥ भगवान्‌की भुजानते श्रीदामादिक आठ पार्षद भये, पहुंचेनते नौ नंद भये, करके अग्रते नौ उपनंद भये ॥ १९ ॥ हे नृप ! श्रीकृष्णके भुजानकी जड़मेंते सम्पूर्ण वृषभानु भये और श्रीकृष्णके रोमनमेंते सबरे गोपनके गण भये ॥

कटिदेशात्स्वर्णभूमिर्दिव्यरत्नखचित्प्रभा ॥ उदरेरोमराजिश्चमाधव्योविस्तृतालताः ॥ १५ ॥ नानापक्षिगणैर्व्याप्ताध्वनद्भ्रमरभूषिताः ॥
सुपुष्पफलभारैश्चनताःसत्कुलजाइव ॥ १६ ॥ श्रीनाभिपंकजात्तस्यपंकजानिसहस्रशः ॥ सरःसुहरिलोकस्यतानिरेजुरितस्ततः ॥ १७ ॥
त्रिवलिप्रांततोवायुर्मन्दगाम्यतिशीतलः ॥ जत्रुदेशाच्छुभाजातामथुराद्वारकापुरी ॥ १८ ॥ भुजाभ्यांश्रीहरेर्जाताःश्रीदामाद्यष्टपार्षदाः ॥
नन्दाश्चमणिबंधाभ्यामुपनन्दाःकराग्रतः ॥ १९ ॥ श्रीकृष्णबाहुमूलाभ्यांसर्वेवैवृषभानवः ॥ कृष्णरोमसमुद्भूताःसर्वेगोपगणान्नृप ॥ २० ॥
श्रीकृष्णमनसोगावोवृषाधर्मधुरन्धराः ॥ बुद्धेर्यवसगुल्मानिबभूवुर्मैथिलेश्वर ॥ २१ ॥ तद्वामांसात्समुद्भूतंगौरंतेजःस्फुरत्प्रभम् ॥ लीलाश्रीर्भू
श्चविरजातस्माज्जाताहरेःप्रियाः ॥ २२ ॥ लीलावतीप्रियातस्यतांराधांतुविदुःपरे ॥ श्रीराधायाभुजाभ्यांतुविशाखाललितासखी ॥ २३ ॥
सहचर्यस्तथागोप्योराधारोमोद्भवानृप ॥ एवंगोलोकरचनांचकारमधुसूदनः ॥ २४ ॥ विधायसर्वनिजलोकमित्थंश्रीराधयातत्ररराजराजन् ॥
असंख्यलोकाण्डपतिःपरात्मापरःपरेशः परिपूर्णदेवः ॥ २५ ॥ तत्रैकदासुन्दररासमण्डलेस्फुरत्क्वणन्नूपुरशब्दसंकुले ॥ सुच्छत्रमुक्ताफलदाम
जामृतस्रवद्बृहद्बिन्दुविराजितांगणे ॥ २६ ॥

॥ २० ॥ श्रीकृष्णके मनते गौ और धर्मके धुर उठावनवारे बैल भये, हे मैथिलेश्वर ! बुद्धिमेंते घास और गुल्म लता भई ॥ २१ ॥ वाही श्रीकृष्णके बांये अंगते गौर तेज श्रीराधिकाजी भई जो तेजःपुंज है, ताते लीला, श्री, भू, विरजा ये चार देवी उत्पन्न भई, जे हरिकी प्रिया हैं ॥ २२ ॥ लीलावती श्रीकृष्णकी प्यारी हैं, कोई २ तो लीलावती कहेहैं, कोई वाहीको राधा कहे हैं, वा राधिकाकी भुजानते ललिता विशाखा दो सखी होतभई ॥ २३ ॥ और जो सहचरी गोपी हैं, सो राधिकाजीके रोमते पैदाभई, हे नृप ! श्रीकृष्णनें ऐसे गोलोककी रचना करी ॥ २४ ॥ ऐसे सब अपनो लोक रचिके राधासहित हे राजन् ! श्रीकृष्ण वहां विराजे जो असंख्य लोक ब्रह्माण्डनके पति परात्मा परिपूर्ण देव हैं ॥ २५ ॥ तहां एकसमय रासमण्डलमें जामे बजने नूपुरनकी झनकार शब्द हैरहे तहां सुन्दर छत्रनके मोतीनमेंते अमृतकी बूंद झर रहीहै, ताते आंगन अत्यन्त शोभाकूं

भास हैरहे हैं ॥ २६ ॥ तहां मालतीके चंदोआनके जालते स्वतःसिद्ध झरना झरैहैं तिनके मकरन्दते सुगन्धित हैरह्योहै और मृदंग, ताल, वेणु, तिनके शब्द हैरहे हैं, सुंदर कंठके गानविद्या जामें हैरही तिनते अति मनोहर हैं ॥ २७ ॥ श्रीसुन्दरीनके रासके रससौं मनोहर है ताके बीचमें विराजमान किरोड़न कंदर्पकूं मोहनहारे ऐसे जो श्रीकृष्ण तिनते राधिकाजी कटाक्षरस देवेकी चतुराईते राजी करत अतिमनोहर वाणीते ये बोली ॥ २८ ॥ कि, हे प्यारे! तुम मोपै रासमें मेरे प्रेमते प्रसन्न भयेहो तो हे जगत्के पति! मेरे मनमें तुमते प्रार्थना करवेकी इच्छा है सो मैं करूंहूं ॥ २९ ॥ तब श्रीकृष्ण बोले–हे सुन्दर करूवारी! जो तेरी इच्छा होय सो मांग जो न देवेकी वस्तु होयगी सोऊ प्यारी तेरे प्रेमते मैं देदऊंगो ॥ ३० ॥ तब राधिकाजी बोली–हे देवदेव! मेरे लियें वृंदावनमें दिव्य निकुंजके पास यमुनाजीके किनारेपै कोई रासरसके योग्य सुन्दर एक

श्रीमालतीनांसुवितानजालतःस्वतःस्रवत्सन्मकरन्दगन्धिते ॥ मृदंगतालध्वनिवेणुनादितेसुकण्ठगीतादिमनोहरेपरे ॥ २७ ॥ श्रीसुन्दरीरासरसेमनोरमेमध्यस्थितंकोटिमनोजमोहनम् ॥ जगादराधापतिमूर्जयागिराकृत्वाकटाक्षंरसदानकौशलम् ॥ २८ ॥ ॥ श्रीराधोवाच ॥ ॥ यदिरासेप्रसन्नोसिममप्रेम्णाजगत्पते ॥ तदहंप्रार्थनांत्वांतुकरोमिमनसिस्थिताम् ॥ २९ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ इच्छांवरयवामोरुयातेमनसिवर्त्तते ॥ नदेयंयदियद्वस्तुप्रेम्णादास्यामितत्प्रिये ॥ ३० ॥ ॥ राधोवाच ॥ ॥ वृन्दावनेदिव्यनिकुंजपार्श्वेकृष्णातटेरासरसाययोग्यम् ॥ रहःस्थलंत्वंकुरुतान्मनोज्ञंमनोरथोयंममदेवदेव ॥ ३१ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ तथास्तुचोक्त्वाभगवान्रहोयोग्यंविचिन्तयन् ॥ स्वनेत्रपंकजाभ्यांतुहृदयंसंददर्शह ॥ ३२ ॥ तदैवकृष्णहृदयाद्गोपीव्यूहस्यपश्यतः ॥ निर्गतंसजलंतेजोऽनुरागस्येवचांकुरम् ॥ ३३ ॥ पतितंरासभूमौतद्ववृधेपर्वताकृति ॥ रत्नधातुमयंदिव्यंसुनिर्झरदरीवृतम् ॥ ३४ ॥ कदंबबकुलाशोकलताजालमनोहरम् ॥ मन्दारकुन्दवृन्दाढ्यंसुपक्षिगणसंकुलम् ॥ ३५ ॥ क्षणमात्रेणवैदेहलक्षयोजनविस्तृतम् ॥ शतकोटियोजनानांलंबितंशेषवत्पुनः ॥ ३६ ॥ ऊर्ध्वंसमुन्नतंजातंपंचाशत्कोटियोजनम् ॥ करीन्द्रवत्स्थितंशश्वत्पंचाशत्कोटिविस्तृतम् ॥ ३७ ॥ कोटियोजनदीर्घांगैःशृंगाणांशतकैःस्फुरत् ॥ उच्चैःस्वर्णकलशैःप्रासादमिवमैथिल ॥ ३८ ॥

एकांत मनकौ हरनवारो स्थल रचौ हे देवदेव! मेरे या मनोरथको करौ ॥ ३१ ॥ नारदजी कहैहे–तैसेंई होयगी ऐसें भगवान् कहकें एकांतके योग्य स्थलको विचार करते अपने नेत्रनते अपनो हृदय देखनलगे ॥ ३२ ॥ ताही समय गोपीनके देखत २ श्रीकृष्णके हृदयते एक सजल तेज निकस्यो मानो स्नेहको अंकुरही है ॥ ३३ ॥ सो वह रासभूमिमें गिरयो, फिर पर्वतके आकार बढ़नलग्यो दिव्य रत्नमय धातुमय हैगयो, झरना जिनमें झरें ऐसी गुहा वनगई ॥ ३४ ॥ कदम्ब, मौरछली, अशोक तिनकी लतानके जालनते मनोहर है, मंदार कुंदके वृक्षनके झुण्डते भरयो और सुंदर पक्षीनके गणनकरके सेवित है ॥ ३५ ॥ फिर हे वैदेह! वो एकही क्षणमें लाख योजनको विस्तीर्ण हैगयो और सौ किरोड़ योजन शेषसो लम्बो हैगयो ॥ ३६ ॥ और पचास किरोड़ योजन ऊंचो और हाथीकी तरह पचास किरोड़ योजन मोटो ऐसो ठाड़ो हैगयो ॥ ३७ ॥ जामें किरोड़ २

योजनके सौ शिखर दीखनलगे और हे मैथिल ! ऊँचे ऊँचे सोनेके कलशानसमेत वे शिखर महलसे दीखन लग्यौ ॥ ३८ ॥ कोई याकूं गोवर्द्धन कहेंहैं और कोई याकूं शतशृंग
कहैं हैं, या प्रकार जैसें मन चढेहै तैसें बढ़नलग्यौ ॥ ३९ ॥ तब तौ बड़ौ कोलाहल भयौ, गोलोक भयते विह्वल हैगयौ, तब तौ हरि देखकें उठे और वाके एक हाथसौं एक थप्पड़
मारचौ ॥ ४० ॥ और ये कही कि, अरे ! क्यों बढ्यौई चल्योजाय है लोकमें गुप्त हैकें रह, अरे ! और ये सब विश्वके जीव कहां बसेंगे ॥ ४१ ॥ तब वा गिरिवरकूं देखकें भगवान्की
प्यारी राधा बड़ी प्रसन्न भई, ता गोवर्द्धनमें एकांत स्थलमें हे राजन् ! हरिके संग विशेष करके राजती भई ॥ ४२ ॥ सो यह गिरिवर है ये साक्षात् श्रीकृष्णनें उदय कीनों है सब
तीर्थमय है घनसौं श्याम देवतानकौ प्यारो है ॥४३॥ भरतखण्डते पश्चिम दिशामें शाल्मलीद्वीपके बीचमें द्रोणाचलकी स्त्रीके याने जन्म लीनों है॥४४॥ तब पुलस्त्यजीनें भरतखंडमें व्रजमंडलमें

गोवर्धनाख्यंतचाहुःशतशृंगंतथापरे ॥ एवंभूतंतुतदपिवर्द्धितंमनसोत्सुकम् ॥ ३९ ॥ कोलाहलेतदाजातेगोलोकेभयविह्वले ॥ वीक्ष्योत्थाय
हरिःसाक्षाद्धस्तेनाशुतताडतम् ॥ ४० ॥ किंवर्द्धसेभोप्रच्छन्नंलोकमाच्छाद्यतिष्ठसि ॥ किंवानचैतेवसितुंतच्छान्तिमकरोद्धरिः ॥ ४१ ॥
संवीक्ष्यतंगिरिवरंप्रसन्नाभगवत्प्रिया ॥ तस्मिन्रहःस्थलेराजन्रराजहरिणासह ॥ ४२ ॥ सोयंगिरिवरःसाक्षाच्छ्रीकृष्णेनप्रणोदितः ॥
सर्वतीर्थमयः श्यामोघनश्यामोसुरप्रियः ॥ ४३ ॥ भारतात्पश्चिमदिशिशाल्मलिद्वीपमध्यतः ॥ गोवर्द्धनोजन्मलेभेपत्न्यांद्रोणाचलस्यच ॥
॥ ४४ ॥ पुलस्त्येनसमानीतोभारतेव्रजमण्डले ॥ वैदेहतस्यागमनंमयातुभ्यंपुरोदितम् ॥ ४५ ॥ यथापुरावर्द्धितुमुत्सुकोयंतथापिधानं
भवितामुवोवा ॥ विचिन्त्यशापंमुनिनापरेशोद्रोणात्मजायेतिददौक्षयार्थम् ॥ ४६ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीगिरिराजखंडेश्रीनारदबहु
लाश्वसंवादेश्रीगिरिराजोत्पत्तिवर्णनंनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ अत्रैवोदाहरंतीममितिहासम्पुरातनम् ॥
यस्यश्रवणमात्रेणमहापापम्प्रणश्यति ॥ १ ॥ विजयोब्राह्मणःकश्चिद्गौतमीतीरवासकृत ॥ आययौस्वमृणंनेतुंमथुराम्पापनाशिनीम् ॥ २ ॥
कृत्वाकार्यंगृहंगच्छन्गोवर्द्धनतटींगतः ॥ वर्तुलंतत्रपाषाणंचैकंजग्राहमैथिल ॥ ३ ॥ शनैःशनैर्वनोद्देशेनिर्गतोव्रजमंडलात् ॥ अग्रेददर्शचायांतं
तंराक्षसंघोररूपिणम् ॥ ४ ॥ हृदयेचमुखंयस्यत्रयःपादाभुजाश्चषट् ॥ हस्तत्रयंचस्थूलोष्ठोनासाहस्तसमुन्नता ॥ ५ ॥

लायके धरचौ है, हे वैदेह ! जाकौ आगमन मैंने तोते पहलेई वर्णन करिदीनों है ॥४५॥ जैसें पहले गोलोकमें बढ्यो है तैसेंई अब यह बढ़कर भूमिको ढकना होयगो पुलस्त्यमुनि ऐसे चिंतमन
करिके गोवर्द्धनके क्षयके अर्थ शाप दीनो है ॥४६॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां गिरिराजखण्डे भाषाटीकायां गोवर्द्धनोत्पत्तिवर्णनं नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ नारदजी कहैं हैं–कि, यहां एक
पहलो इतिहास वर्णन करें हैं जाके सुनेहीते महापाप नाशकूं प्राप्त होय हैं ॥ १ ॥ एक विजय नाम करिके ब्राह्मण हो वो गोमती नदीके तीरपै बसै हो, सो वो ऋषि अपनों ऋण
लेवेकूं पापनाशिनी मथुरामें आयौ ॥२॥ हे मैथिल ! अपनों काम करिके घरकूं जातेमें गोवर्द्धनकी तरहटीमें आयौ, गोवर्द्धनकों एक गोल पत्थर वानें लैलीनों ॥ ३ ॥ वो होलें होलें
व्रजमण्डलते निकसिकें एक वनमें आयौ आगे देखें तौ घोररूप एक राक्षस चल्यौ आवै है ॥ ४ ॥ हृदयमें तौ वाको मुख है, तीन पांव हैं और छः भुजा हैं, तीन हाथ मोटो जाको

होठ हैं और एक हाथकी नाक है ॥ ५ ॥ सात हाथ लंबी जाकी जीभ लफलफाय रही है, कांटेसे काले जाके रोंगटा हैं, लाल २ आंख है और बडे लंबे भयंकर टेढे जाके दांत है ॥ ६ ॥ घुर्र घुर्र करै है और बड़ो भूखो है, वह राक्षस ब्राह्मण बैठ्यौहो वाके सन्मुख आयो ॥ ७ ॥ तब वाके ब्राह्मणनें गिरिराजकी पत्थर मान्यो तब तो गिरिराजके पत्थरके स्पर्शते वा राक्षसकी देह छूटगई दैवी देह मिलगई ॥ ८ ॥ कमलसे नेत्र, श्यामसुंदर रूप बनमाला पहिरें, पीतांबर ओढें, मुकुट, कुण्डल, धारणकरें ॥ ९ ॥ वंशी धारणकरे बेंत लीये दूसरो कामदेवसो हाथ जोड़ ब्राह्मणकूं वेर २ दंडवत करनलग्यो ॥ १० ॥ तब वह सिद्ध यह बोल्यो—हे ब्राह्मणनमें श्रेष्ठ! तुम धन्य हो, पराई रक्षाके करनवारे, हे महाबुद्धि! तुमने मेरी राक्षसी देह छुटायदीनी ॥ ११ ॥ पत्थरके स्पर्शते मेरो कल्याण हेगयो, तुम बिना और काहूकी सामर्थ्य मोकूं छुड़ायवेकी नहीं ही ॥ १२ ॥ तब ब्राह्मण

सप्तहस्ताललज्जिह्वाकंटकाभास्तनूरुहाः ॥ अरुणेअक्षिणीदीर्घदंतावक्राभयंकराः ॥ ६ ॥ राक्षसोघुर्घुरंशब्दंकृत्वाचापिबुभुक्षितः ॥ आययौ संमुखेराजन्ब्राह्मणस्यस्थितस्यच ॥ ७ ॥ गिरिराजोद्भवेनासौपाषाणेनजघानतम् ॥ गिरिराजशिलास्पर्शात्त्यक्त्वासौराक्षसींतनुम् ॥ ८ ॥ पद्मपत्रविशालाक्षःश्यामसुन्दरविग्रहः ॥ वनमालीपीतवासामुकुटीकुंडलान्वितः ॥ ९ ॥ वंशीधरोवेत्रहस्तःकामदेवइवाऽपरः ॥ भूत्वाकृतांजलिर्विप्रंप्रणनाममुहुर्मुहुः ॥ १० ॥ ॥ सिद्धउवाच ॥ ॥ धन्यस्त्वंब्राह्मणश्रेष्ठपरत्राणपरायणः ॥ त्वयाविमोचितोहंवैराक्षसत्वान्महामते ॥ ११ ॥ पाषाणस्पर्शमात्रेणकल्याणंमेबभूवह ॥ नकोपिमांमोचयितुंसमर्थोहित्वयाविना ॥ १२ ॥ ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ ॥ विस्मितस्तववाक्येऽहंनत्वांमोचयितुंक्षमः ॥ पाषाणस्पर्शनफलंनजानेवदसुव्रत ॥ १३ ॥ ॥ सिद्धउवाच ॥ ॥ गिरिराजोहरेरूपंश्रीमान्गोवर्द्धनोगिरिः ॥ तस्यदर्शनमात्रेणनरोयातिकृतार्थताम् ॥ १४ ॥ गन्धमादनयात्रायांयत्फलंलभतेनरः ॥ तस्मात्कोटिगुणंपुण्यंगिरिराजस्यदर्शने ॥ १५ ॥ पंचवर्षसहस्राणिकेदारेयत्तपःफलम् ॥ तच्चगोवर्द्धनेविप्रक्षणेनलभतेनरः ॥ १६ ॥ मलयाद्रौस्वर्णभारदानस्यापिचयत्फलम् ॥ तस्मात्कोटिगुणंपुण्यंगिरिराजेहिमासिकम् ॥ १७ ॥ पर्वतेमंगलप्रस्थेयोदद्याद्धेमदक्षिणाम् ॥ सयातिविष्णुसारूप्यंयुक्तःपापशतैरपि ॥ १८ ॥ तत्पदंहिनरोयातिगिरिराजस्यदर्शनात् ॥ गिरिराजसमंपुण्यमन्यत्तीर्थंनविद्यते ॥ १९ ॥

बोल्यो—तेरे वचन सुनके मोकूं अचंभो आवै है, मेरी सामर्थ्य तो तेरे छुड़ायवे लायक नहीं हो, पाषाणके स्पर्शको फल मैं नहीं जानूंहूं हे सुव्रत! तूं कहि ॥ १३ ॥ तब सिद्ध बोल्यो—यह गिरिराज हरिको रूप है, या गोवर्द्धनके स्पर्शमात्रते नर कृतार्थ हेजाय हैं ॥ १४ ॥ गन्धमादन पर्वतकी यात्रामें जो फल मनुष्यको होयहै ताते किरोड़गुनो पुण्य गिरिराजके दर्शनमें है ॥ १५ ॥ हे विप्र! पांच हजार वर्षतक जो केदारमें तप करे ताकूं जो पुण्य होय सो गिरिराजमें एक क्षणमेंही प्राप्त होय है ॥ १६ ॥ मलयाचलमें एकभार सोनो पुण्य करेको जो फल होय है ताते किरोड़गुनो गिरिराजमें मासेहभर सोनेको होय है ॥ १७ ॥ जो गिरिराजमें मंगलीशिलापै सुवर्णको दक्षिणा देय सो विष्णुकी सायुज्य मुक्तिकूं प्राप्त होय, जो सैकड़नहूं पाप करेहोय तोभी ऐसोही फल मिलै है ॥ १८ ॥ और जो मनुष्य श्रीगिरिराजके दर्शन करै वो भगवानकेही पदकूं प्राप्त होय है, गिरिराजके

समान पुण्य और तीर्थ नहीं है ॥ १९ ॥ ऋषभ पर्वतमें, कूटक पर्वतमें, कोलक पर्वतमें, जो मनुष्य सोनेके सींगनकी किरोड गौ देवे ॥ २० ॥ भक्तिते ब्राह्मणनकूं पूजिके जो महाफल प्राप्त होय ताहूते लाख गुनो पुण्य गोवर्द्धनमें मिले है ॥ २१ ॥ ऋष्यमूक पर्वतकी यात्रा करे, सह्याचल पर्वतकी यात्रा करै और सम्पूर्ण पृथ्वीकी यात्रा करै ॥ २२ ॥ तिनको जो फल होय ताहूते किरोडगुनो गिरिराजकी यात्रामें फल होय है गिरिराजके समान कोई तीर्थ भयो न होयगो ॥ २३ ॥ श्रीशैलमें दशवर्ष रहै और विद्याधरकुण्डमें स्नान करै वह सुकृती सौ यज्ञ करेके फलकूं प्राप्त होय है ॥ २४ ॥ गोवर्द्धनमें पूंछरीपे अप्सराकुण्डमें एकहू दिना स्नान करै तौ वो मनुष्य किरोड यज्ञ करेके फलकूं प्राप्त होय है यामें संदेह नहीं है ॥ २५ ॥ वेंकट पर्वतमें, वारिधार पर्वतमें, महेन्द्र पर्वतमे और विंध्याचलमें जो अश्वमेध यज्ञ करै तौ वह मनुष्य स्वर्गको पति होय है ॥ २६ ॥ जो मनुष्य या

ऋषभाद्रौकूटकाद्रौकोलकाद्रौतथानरः ॥ सुवर्णशृंगयुक्तानांगवांकोटींददातियः ॥ २० ॥ महापुण्यंलभेत्सोपिविप्रान्संपूज्ययत्नतः ॥ तस्माल्लक्षगुणंपुण्यंगिरौगोवर्द्धनेद्विज ॥ २१ ॥ ऋष्यमूकस्यसह्यस्यतथादेवगिरेःपुनः ॥ यात्रायांलभतेपुण्यंसमस्तायाभुवःफलम् ॥ २२ ॥ गिरिराजस्ययात्रायांतस्मात्कोटिगुणम्फलम् ॥ गिरिराजसमंतीर्थंनभूतंनभविष्यति ॥ २३ ॥ श्रीशैलेदशवर्षाणिकुण्डेविद्याधरेनरः ॥ स्नानंकरोतिसुकृतीशतयज्ञफलंलभेत् ॥ २४ ॥ गोवर्द्धनेपुच्छकुण्डेदिनैकंस्नानकृन्नरः ॥ कोटियज्ञफलंसाक्षात्पुण्यमेतिनसंशयः ॥ २५ ॥ वेंकटाद्रौवारिधारेमहेन्द्रेविन्ध्यपर्वते ॥ यज्ञंकृत्वाह्यश्वमेधंनरोनाकपतिर्भवेत् ॥ २६ ॥ गोवर्द्धनेस्मिन्योयज्ञंकृत्वादत्त्वासुदक्षिणाम् ॥ नाकेपदंसंविधायसविष्णोःपदमाव्रजेत् ॥ २७ ॥ चित्रकूटेपयस्विन्यांश्रीरामनवमीदिने ॥ पारियात्रेतृतीयायांवैशाखस्यद्विजोत्तमः ॥२८॥ कुकुराद्रौचपूर्णायांनीलाद्रौद्वादशीदिने ॥ इन्द्रकीलेचसप्तम्यांस्नानंदानंतपःक्रियाः ॥ २९ ॥ तत्सर्वंकोटिगुणितंभवतीत्थंहिभारते ॥ गोवर्द्धनेतुतत्सर्वमनन्तंजायतेद्विज ॥ ३० ॥ गोदावर्यांगुरौसिंहेमायापुर्यांतुकुंभगे ॥ पुष्करेपुष्यनक्षत्रेकुरुक्षेत्रेरविग्रहे ॥ ३१ ॥ चन्द्रग्रहेतुकाश्यांवैफाल्गुनेनैमिषेतथा ॥ एकादश्यांशूकरेचकार्तिक्यांगणमुक्तिदे ॥ ३२ ॥ जन्माष्टम्यांमथोःपुर्यांखाण्डवेद्वादशीदिने ॥ कार्तिक्याम्पूर्णिमायांतुवटेश्वरमहावटे ॥ ३३ ॥

गोवर्द्धनमें यज्ञ करै और ब्राह्मणनकूं उत्तम दक्षिणा देय सो नर स्वर्गको राज्य करके विष्णुके पदकूं प्राप्त होयहै ॥ २७ ॥ रामनौमीके दिन चित्रकूट पर्वतमें पयस्विनी नदीमें जो स्नान करै और वैशाखमें अक्षयतृतीयाके दिन पारियात्र-पर्वतमें जाय ॥ २८ ॥ पूर्णमासीकूं कुकुट पर्वतमें जाय द्वादशीकूं नीलपर्वतमें जाय और सप्तमीकूं इन्द्रकील पर्वतमें स्नान, दान, तप करै ॥ २९ ॥ तौ यो सब किरोडगुनो होय है ऐसेही भरतखण्डके विषय गोवर्द्धनमें जाय गोवर्द्धनको दर्शन मानसीगंगामें स्नान करै तो अनन्तगुनो फल होय है ॥ ३० ॥ सिंहको बृहस्पतिमें गोदावरीमें स्नान दान तप करै, कुम्भको बृहस्पतिमें हरिद्वारमें स्नान दान तप करै, पुष्य नक्षत्रमें पुष्करमें और सूर्यग्रहणमें कुरुक्षेत्रमें ॥ ३१ ॥ चन्द्रग्रहणमें काशीमें, फाल्गुनमें नैमिषारण्यमें, एकादशीकूं सोरोंमें, कार्तिककी पूर्णमासीकूं गढमुक्तेश्वरमें यज्ञ, दान, तप, स्नानादिक करै ताके जो पुण्य होय ॥ ३२ ॥ जन्माष्टमीकूं

मधुपुरीमें द्वादशीकूँ खाण्डववनमें और कार्तिककी पूर्णमासीकूँ वटेश्वरमें ॥ ३३ ॥ मकरके सूर्यमें माघके महीनामें प्रयागमें और वैधृतिमें बर्हिष्मतीपुरीमें, रामनौमीकूँ अयोध्यामें सरयूके तीर ॥ ३४ ॥ ऐसेही शिवचतुर्दशीकूँ वैजनाथकी झाड़ीमें, सोमवतीकूँ गंगासागरमें ॥ ३५ ॥ दशमीकूँ सेतुबन्ध रामेश्वरमें, सप्तमीकूँ रंगजीमें, इनमें जो पुरुष कछू स्नान, दान, जप, यज्ञ, तप देव ब्राह्मणपूजन करे सो सब ॥ ३६ ॥ हे द्विजोत्तम ! तिन सबकी बराबर पुण्यको पुंज होय तासौं किरोडगुनों पुण्य गोवर्द्धन पर्वतमें प्राप्त होयहै ॥ ३७ ॥ श्रीकृष्णमें मन लगायके जो कोई गोविंदकुण्डमे स्नान करे सो श्रीकृष्णकी सारूप्य मुक्तिकूँ प्राप्त होय यामें संदेह नहीं है ॥ ३८ ॥ हजार अश्वमेध यज्ञ करेको जो फल, सौ राजसूय यज्ञ करेकौ जो फल होय सो एक बेरही मानसी गंगामे स्नान करेते वोही फल होय है ॥ ३९ ॥ हे ब्राह्मण ! तैने साक्षात् गिरिराजको दर्शन

मकरार्केप्रयागेतुबर्हिष्मत्यांहिवैधृतौ ॥ अयोध्यासरयूतीरेश्रीरामनवमीदिने ॥ ३४ ॥ एवंशिवचतुर्दश्यांवैजनाथशुभेवने ॥ तथादर्शेसोम वारेगंगासागरसंगमे ॥ ३५ ॥ दशम्यांसेतुबन्धेचश्रीरंगेसप्तमीदिने ॥ एषुदानंतपःस्नानंजपोदेवद्विजार्चनम् ॥ ३६ ॥ तत्सर्वंकोटिगुणितं भवतीहद्विजोत्तम ॥ तत्तुल्यम्पुण्यमाप्नोतिगिरौगोवर्द्धनेपिहि ॥ ३७ ॥ गोविन्दकुण्डेविशदेयःस्नातिकृष्णमानसः ॥ प्राप्नोतिकृष्णसारूप्यं मैथिलेन्द्रनसंशयः ॥ ३८ ॥ अश्वमेधसहस्राणिराजसूयशतानिच ॥ मानसीगंगयातुल्यानभवंत्यत्रनोगिरौ ॥ ३९ ॥ त्वयाविप्रकृतंसा क्षाद्गिरिराजस्यदर्शनम् ॥ स्पर्शनंचततःस्नानंनत्वत्तोप्यधिकोभुवि ॥ ४० ॥ नमन्यसेचेन्मांपश्यमहापातकिनम्परम् ॥ गोवर्द्धनशिला स्पर्शात्कृष्णसारूप्यतांगतम् ॥ ४१ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीगिरिराजखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेश्रीगिरिराजमाहात्म्यंनामदशमोऽ ध्यायः ॥ १० ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इति श्रुत्वासिद्धवाक्यंब्राह्मणोविस्मयंगतः ॥ पुनःपप्रच्छतंराजन्गिरिराजप्रभाववित् ॥ १ ॥ ॥ ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ ॥ पुराजन्मनिकस्त्वंभोस्त्वयाकिंकलुषंकृतम् ॥ सर्ववदमहाभागत्वंसाक्षाद्दिव्यदर्शनः ॥ २ ॥ ॥ सिद्धउवाच ॥ ॥ पुराजन्मनिवैश्योहंधनीवैश्यसुतोमहान् ॥ आबाल्याद्द्यूतनिरतोविटगोष्ठीविशारदः ॥ ३ ॥

कर्यो है, स्पर्श कर्यो है, और स्नान कर्यो है यासो तेरी बराबर पृथ्वीपे कोई नहीं है तू सबते बडो है ॥ ४० ॥ न माने तो तू मोकूँ देखिले अरे ! मोसे महापापीकूँ गोवर्द्धनकी शिलाके स्पर्शते राक्षसी देह छूटि कृष्णकोसो रूप मिलगयो ॥ ४१ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां गिरिराजखण्डे भाषाटीकायां गिरिराजमाहात्म्यं नाम दशमो ऽध्यायः ॥ १० ॥ नारदजी कहे हैं—हे राजन् ! ऐसे सिद्धको वचन सुनिके वह ब्राह्मण बडे अचंभेमें आयगयो, गिरिराजके प्रभावकूँ जानिके फिर वाते यह पूछनलग्यो ॥ १ ॥ ब्राह्मण बोलो कि, पहले जन्ममें तू कौन हो तैंने ऐसो कहा पाप कीनों, हे महाभाग ! तू साक्षात् दिव्यदर्शन है सो मोते तू अपनो सब वृत्त कहि ॥ २ ॥ तब सिद्ध बोल्यो—पहिले जन्ममें मैं वैश्य हो, बडो धनी हो, बालकपनेहीते जूआ खेल्यो करैहो और विट नाम रंडीबाज रांडबाजनकी गोष्ठी (सोबती) में बडो मे चतुर

कहावेहो ॥ ३ ॥ वेश्यामें रत हो, कुमार्गी हो मदिराके मदमें विह्वल रहे हो, मा, बाप, स्त्री ये सब मोकूँ ललकारवो करेहो ॥ ४ ॥ हे ब्राह्मण ! एकसमय मैंने विष देकें अपने माता पिता मारडारे और मार्गमें मैंने अपनी स्त्री खड्गते मारडारी हो ॥ ५ ॥ इनके सबरे धनकूं लेके वेश्याके संग खल मैं दक्षिण दिशाकूँ चल्यो गयो, मेरे दया नहीं ही, मैं चोरी करयो करै हो ॥ ६ ॥ एकसमय वेश्याकू मैने आंधरे कूआमें डारिदीनी, हे विप्र ! चोरने मैंने सैकरान मनुष्य फांसी देकें मारिडारे ॥ ७ ॥ धनके लोभकरिके सौ ब्रह्महत्या मैंने करी और क्षत्री वैश्य शूद्रनकी हजारन हत्या करी ॥ ८ ॥ एकसमय मांस लेवेकूँ मृगनकूं मारिवेके लिये वनमें गयो सो सांपपे मेरो पांव पडगयो, तब सांपने काटिखायो सो मैं मरिगयो ॥ ९ ॥ तबही यमके दूत आये सो दुष्ट जो मैंहूँ ताहि मुद्गरनेते मारिके बांधिके महाखल पाप मोकूँ नरकमें लेगये खल मैंने बडे दुःख भोगे

वेश्यारतःकुमार्गोऽहंमदिरामदविह्वलः ॥ मात्रापित्राभार्ययाहिभर्त्सितोऽहंसदाद्विज ॥४॥ एकदातुमयाविप्रपितरौगरदानतः॥ मारितौचतथाभार्याखड्गेनपथिमारिता ॥ ५ ॥ गृहीत्वातद्धनंसर्ववेश्ययासहितःखलः ॥ दक्षिणाशांचगतवान्दस्युकर्मातिनिर्दयः ॥ ६ ॥ एकदातुमयावेश्यानिःक्षिप्ताह्यंधकूपके ॥ दस्युनाहिमयापाशैर्मारिताःशतशोनराः ॥७॥ धनलोभेनभोविप्रब्रह्महत्याशतंकृतम् ॥ क्षत्रहत्याविश्यहत्याःशूद्रहत्याःसहस्रशः ॥ ८ ॥ एकदामांसमानेतुंमृगान्हंतुंवनेगतम् ॥ सर्पोऽदशत्पदास्पृष्टोदुष्टंमांनिधनंगतम् ॥ ९ ॥ संताड्यमुद्गरैर्वैर्यमदूताभयंकराः ॥ बद्ध्वाचनरकंनिन्युर्महापातकिनंखलम् ॥ १० ॥ मन्वन्तरंतुपतितःकुंभीपाकेमहाखले ॥ कल्पैकंतत्तमसिचमहादुःखंगतःखलः ॥ ॥ ११ ॥ चतुरशीतिलक्षाणांनरकाणाम्पृथक्पृथक् ॥ वर्षंवर्षंनिपतितोनिर्गतोऽहंयमेच्छया ॥ १२ ॥ ततस्तुभारतेवर्षेप्राप्तोऽहंकर्मवासनाम् ॥ दशवारंसूकरोऽहंव्याघ्रोऽहंशतजन्मसु ॥ १३ ॥ उष्ट्रोऽहंजन्मशतकंमहिषःशतजन्मसु ॥ सर्पोऽहंजन्मसाहस्रंमारितोदुष्टमानवैः ॥ १४ ॥ एवंवर्षायुतांतेतुनिर्जलेविपिनेद्विज ॥ राक्षसश्चेदृशोजातोविकरालोमहाखलः ॥ १५ ॥ कस्यशूद्रस्यदेहंवैसमारुह्यव्रजंगतः ॥ वृन्दावनस्यनिकटेयमुनानिकटाच्छुभात् ॥ १६ ॥ समुत्थितायष्टिहस्ताःश्यामलाकृष्णपार्षदाः ॥ तैस्ताडितोधर्षितोऽहंव्रजभूमौपलायितः ॥ १७ ॥ बुभुक्षितोबहुदिनैस्त्वांखादितुमिहागतः ॥ तावत्त्वयाताडितोऽहंगिरिराजाश्मनामुने ॥ श्रीकृष्णकृपयासाक्षात्कल्याणंमेबभूवह ॥ १८ ॥

॥ १० ॥ एक मन्वन्तर तो महाउग्र कुम्भीपाकमें पर्योरह्यो महादुःखी एक कल्प तमकर्मीमें पर्योरह्यो ॥ ११ ॥ चोरासीलाख नरकनमें एक एक वर्ष ताईं रहि रहिके यहां आयो यमराजकी इच्छाते ॥ १२ ॥ फिर यहां भरतखण्डमें अपनी कर्मवासनाते दशवेर तो सूकर भयो फिर सौ जन्म बघेरो भयो ॥ १३ ॥ सौ जन्म ऊंट भयो, सौ जन्म भैंसा भयो, हजार जन्म ताईं सर्प भयो तब दुष्ट मनुष्यने मोको मारिडारयो ॥ १४ ॥ या प्रकार दश हजार वर्ष पापको भोग भोगके फिर दश हजार वर्ष पीछे मैं हे द्विज ! निर्जल वनमें ऐसो विकराल महादुष्ट राक्षस भयो ॥ १५ ॥ फिर काहू पथिक शूद्रकी देहपै बैठिके व्रजमें आयो तब वृन्दावनमें यमुनाके किनारेपेते ॥ १६ ॥ श्रीकृष्णके पार्षद श्याम जिनके रूप लठीया लै लैके मोको मारनलगे ललकारनलगे, तब मैं भाजि आयो ॥ १७ ॥ बहुत दिनाको भूखो तोय खायवेकूँ यहां आयोहो तबतलक हे मुने ! तैंने मेरे

गिरिराजकौं पत्थर मारयौ साक्षात् श्रीकृष्णकी कृपातें मेरो कल्याण ह्वैगयो ॥ १८ ॥ नारदजी कहें हैं ऐसे कहिरह्यो हो कै तबही गोलोकसों हजार सूर्यकोसो जाको तेज दशहजार घोडा जामें लगे ऐसो एक रथ ॥ १९ ॥ हजार पहियाकी ध्वनि जामें लाख पार्षद जामें बैठे मंजीरा किंकिणीको जाल जामें ऐसो अति मनोहर ॥ २० ॥ २१ ॥ वा ब्राह्मणके देखते देखते वा सिद्धकूं लेनेको आयो तब उन दोनोननें वा रथकूं नमस्कार करी ॥ २२ ॥ तदनन्तर वा रथमें बैठिके वह सिद्ध अपने तेजतें दिशानमें उजीतो करतो हे मैथिल ! परेते परे श्रीकृष्णके लोककूं चल्यौ गयो जामें मनोहर निकुंजलीला है ॥ २३ ॥ फिर तहांतें वह ब्राह्मण सब पर्वतनके देवता गोवर्द्धनकूं चल्यो आयो, फिर गोवर्द्धनकी परिक्रमा देके दंडोत करिके अपने घरकूं चल्यो आयो, हे मैथिल ! गोवर्द्धनके प्रभावकूं वो जानिगयो ॥ २४ ॥ यह मोक्षको देनवारो विचित्र गोवर्द्धनखण्ड मैंने तेरे अगारी

॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ एवंप्रवदतस्तस्यगोलोकाच्चमहारथः ॥ १९ ॥ सहस्रादित्यसंकाशोहयायुतसमन्वितः ॥ २० ॥ सहस्रचक्रध्वनिभृल्लक्षपार्षदमण्डितः ॥ मंजीरकिंकिणीजालीमनोहरतरोनृप ॥ २१ ॥ पश्यतस्तस्यविप्रस्यतमानेतुंसमागतः ॥ तमागतंरथंदिव्यंनेमतुर्विप्रनिर्जरौ ॥ २२ ॥ ततःसमारुह्यरथंससिद्धोविरंजयन्मैथिलमण्डलंदिशाम् ॥ श्रीकृष्णलोकंप्रययौपरात्परंनिकुंजलीलाललितंमनोहरम् ॥ २३ ॥ विप्रोपितस्मात्पुनरागतोगिरिंगोवर्द्धनंसर्वगिरीन्द्रदेवतम् ॥ प्रदक्षिणीकृत्यपुनःप्रणम्यतंययौगृहंमैथिलतत्प्रभाववित् ॥ २४ ॥ इदंमयातेकथितंप्रचण्डंसुमुक्तिदंश्रीगिरिराजखण्डम् ॥ श्रुत्वाजनःपाप्यपिनप्रचण्डंस्वप्नेपिपश्येद्यमसुप्रदण्डम् ॥ ॥ २५ ॥ यःशृणोतिगिरिराजयशस्यंगोपराजनवकेलिरहस्यम् ॥ देवराजइवसोत्रसमेतिनन्दराजइवशान्तिमसुत्र ॥ २६ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीगिरिराजखंडे श्रीनारदबहुलाश्वसंवादे श्रीगिरिराजप्रभावप्रस्ताववर्णनेसिद्धमोक्षोनामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ इति श्रीगिरिराजखण्डःसमाप्तः ॥ ३ ॥ श्रीराधाकृष्णार्पणमस्तु ॥

वर्णन करयौ जाकूं जो मनुष्य सुनै सो प्रचण्ड पापी होय तोभी यमराजके उग्रदण्डकूं कबहूं स्वप्नमेंभी नहीं देखे है ॥ २५ ॥ जो मनुष्य यशकी वृद्धि करनवारी श्रीगिरिराजकी इन गुप्त कथानकौ श्रवण करै है कैसी यह अद्भुत कथा है कै जिनमें गोपराज जो श्रीकृष्ण तिनके नवीन गुप्त विहारनको वर्णन कियो है इन कथानको श्रवण करनहारो मनुष्य देवराज जो इन्द्र ताकी नाईं राज करै है और श्रीव्रजेश्वर नन्दराजकी नाईं परम शान्तिकूं प्राप्त करके या संसारमें अनन्त सुख भोगै है और परलोकमें योगीनकूं भी दुर्लभ जो मुक्ति पदार्थ ताकूं पावै है, यह बडोही अद्भुत चरित्र है ॥ २६ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां गिरिराजखण्डे भाषाटीकायां नारदबहुलाश्वसंवादे गोवर्द्धनमाहात्म्यं नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ इति श्रीगिरिराजखण्डः समाप्तः ॥ ३ ॥

॥ अथ गर्गसंहितायां माधुर्य्यखण्डं भाषाटीकासहितं प्रारभ्यते ॥

(चतुर्थखण्डम् ४)

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ माधुर्य्यखंडः प्रारभ्यते–वह वनमाली श्रीकृष्ण हमकूं मंगलनकूं करौ कैसो वनमाली है अलसीके फूलकीसी है कांति जाकी यमुनाके किनारेपै कदंबवृक्षनके बीचमें विचरनवारौ, नई नई गोपवधूनमें विलास करिवेकौ सुभाव जाको सो हमकूं मंगल करौ ॥ १ ॥ पीतांबरकी फेंट बांधे, मोरमुकुट सा झुकी ग्रीवाधारी, बांईओर वेणु बजायवेके लीये नवाईहै नाड़ जानैं, लकुट बांसुरीको धरनहारौ, चंचल जाके कुंडल, नटवरकौ शृंगार धारणकरें ब अति चतुर कृष्णकौ हम भजन करेहे ॥ २ ॥ बहुलाश्व राजा नारदजीतें पूछैहै हे मुनि! श्रुतिरूपादिक गोपी पहलै प्राप्त भये वरत श्रीकृष्णके संग कैसे कैसे उनकौ मनोरथ पूर्ण होतोभयो ॥ ३ ॥ यह गोपालकृष्णकौ परम अद्भुत चरित्र है परम पवित्र है, हे महाबुद्धे ! ताहि कहो तुम परावरके जाननहारे हो ॥ ४ ॥ अब नारदजी कहनलगे कि, श्रुतिरूपा जे गोपी हीं वे व्रजमें गोपनके सुंदर कुलमें

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीसरस्वत्यैनमः ॥ अतसीकुसुमोपमेयकांतिर्यमुनाकूलकदम्बमध्यवर्ती ॥ नवगोपवधूविलासशालीवनमालीवितनोतुमंगलानि ॥ १ ॥ परिकरीकृतपीतपटंहरिंशिखिकिरीटनतीकृतकंधरम् ॥ लकुटवेणुकरंचलकुण्डलंपटुतरंनटवेषधरंभजे ॥ २ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ श्रुतिरूपादयोगोप्योभूतपूर्वावरान्मुने ॥ कथंश्रीकृष्णचन्द्रेणजाताःपूर्णमनोरथाः ॥ ३ ॥ गोपालकृष्णचरितंपवित्रंपरमाद्भुतम् ॥ एतद्वदमहाबुद्धेत्वम्परावरवित्तमः ॥ ४ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ श्रुतिरूपाश्चयागोप्योगोपानांसुकुलेव्रजे ॥ लेभिरेजन्मवैदेहशेषशायिवराच्छुतात् ॥ ५ ॥ कमनीयंनन्दसूनुंवीक्ष्यवृन्दावनेचताः ॥ वृन्दावनेश्वरींवृन्दांभेजिरेतद्वरेच्छया ॥ ६ ॥ वृन्दादत्ताद्वरादाशुप्रसन्नोभगवान्हरिः ॥ नित्यंतासांगृहेयातिरासार्थंभक्तवत्सलः ॥ ७ ॥ एकदातुनिशीथिन्यांव्यतीतेप्रहरद्वये ॥ रासार्थंभगवान्कृष्णःप्राप्तवांस्तद्गृहेनृप ॥ ८ ॥ तदाउत्कंठितागोप्यःकृत्वातत्पूजनम्परम् ॥ पप्रच्छुःपरयाभक्त्यागिरामधुरयाप्रभुम् ॥ ९ ॥ ॥ ॥ गोप्यऊचुः ॥ ॥ कथंनचागतःशीघ्रंनोगृहान्वृजिनार्दन ॥ उत्कंठितानांगोपीनांत्वयिचन्द्रेचकोरवत् ॥ १० ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ योयस्यचित्तेवसतिनसदूरेकदाचन ॥ खेसूर्यंकमलंभूमौदृष्ट्वेदंस्फुरतिप्रियाः ॥ ११ ॥

शेषशायी भगवानके वरते हे वैदेह! आपके जन्म लेती भई ॥ ५ ॥ मनोहर नंदके पुत्रकूं देखिकें वृंदावनमें वे कृष्णकी प्राप्ति होनेके वरकी इच्छासों वृंदावनकी इश्वरी वृंदादेवीकी आराधन करतीभई ॥ ६ ॥ वृंदाके दिये वरते जलदी भगवान् प्रसन्न हैगये तब भक्तवत्सल कृष्ण रासकरिवेके लिये नित्यही उनके घर जायो करेहे ॥ ७ ॥ एकदिना आधीरातिके विषय हे नृप! भगवान् श्रीकृष्ण रास करिवेकूं उनके घरमें प्राप्त भये ॥ ८ ॥ तब उत्कंठित भई गोपी परम पूजन करिके परम भक्ति करिके मीठी वाणीतें भगवानसों यह बोली ॥ ९ ॥ हे वृजिनार्दन! कैसे आप जलदी नही आये उत्कंठित जो गोपी हैं ते आपुकी चाहना कसें करयौ हे जैसें चकोर चंद्माकूं देख्यो करेहें ॥ १० ॥ तब भगवान बोले–जो जाके चित्तमें बसैहै सो वाते कबहू दूर नही होयहै, देखो सूर्य तो आकाशमें रहैहै और कमल सरोवरमें रहैहे पर हे प्रिया हो ! सूर्यकूं देखिके कमल

खिलेहै ॥११॥ भांडीर वनमें हमारे गुरू साक्षात् दुर्वासामुनि आये हैं, तिनकी शुश्रूषा करिवेकूं मै चल्योगयो हो सो हे प्यारीओ ! मै अब आयो हूं ॥ १२ ॥ गुरुही ब्रह्मा है, गुरुही
विष्णु है, गुरुही महेश्वर है, गुरुही साक्षात्परब्रह्म है, ता श्रीगुरुके अर्थ नमस्कार है ॥१३॥ अज्ञानरूप अंधकारते आंधरी दृष्टि हैरहीही सो जिन गुरूने ज्ञानरूपी सलाईते खोलि
दई तिन गुरूनके अर्थ नमस्कार है ॥ १४ ॥ अपने गुरूनकूं भगवानही जाने, मनुष्यको चाहिये कभी अपमान न करै और मनुष्यबुद्धिते इनको सेवन न करे क्योंकि गुरूनके
शरीरमे संपूर्ण देवता वसें हैं, ॥ १५ ॥ ताते तिनको पूजन करकें तिनके चरणनको दंडवत करके हे प्यारियो ! आयोहूं याते तुम्हारे घर आयवेमे मोकूं देर लगगई है ॥ १६ ॥
नारदजी कहेहै-ऐसे श्रीकृष्णको वचन सुनके गोपी विस्मित हैगई नाड़ नवाय हाथ जोड़ श्रीकृष्णते बोली ॥१७॥ तुम परिपूर्णतम भगवान् हो जो तुमारेहू दुर्वासा गुरू है तो उनको दर्शन हमें

भाण्डीरेमेगुरुःसाक्षाद्दुर्वासाभगवान्मुनिः ॥ आगतोद्यप्रियास्तस्यसेवार्थंगतवानहम् ॥ १२ ॥ गुरुर्ब्रह्मागुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवोमहेश्वरः ॥ गुरुःसा
क्षात्परब्रह्मतस्मैश्रीगुरवेनमः ॥ १३ ॥ अज्ञानतिमिरांधस्यज्ञानांजनशलाकया ॥ चक्षुरुन्मीलितंयेनतस्मैश्रीगुरवेनमः ॥ १४ ॥ स्वगुरुं
मांविजानीयान्नावमन्येतकर्हिचित् ॥ नमर्त्यबुद्ध्यासेवेतसर्वदेवमयोगुरुः ॥ १५ ॥ तस्मात्तत्पूजनंकृत्वानत्वातत्पादपंकजम् ॥ आगतोहं
विलंबेनभवतीनांगृहान्प्रियाः ॥ १६ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ श्रुत्वातत्परमंवाक्यंगोप्यःसर्वास्तुविस्मिताः ॥ कृतांजलिपुटाऊचुः
श्रीकृष्णंनम्रकंधराः ॥ १७ ॥ ॥ गोप्यऊचुः ॥ ॥ परिपूर्णतमस्यापिदुर्वासास्तेगुरुःस्मृतः ॥ अहोतद्दर्शनंकर्तुमनोनश्चोद्यतंप्रभो ॥
॥ १८ ॥ अद्यदेवनिशीथिन्याव्यतीतेप्रहरद्वये ॥ कथंतद्दर्शनंभूयादस्माकम्परमेश्वर ॥ १९ ॥ तथामध्येदीर्घनदीयमुनाप्रतिबन्धिका ॥
कथंतत्तरणंनावमृतेदेवभविष्यति ॥ २० ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ अवश्यमेवगंतव्यंभवतीभिर्यदाप्रियाः ॥ यमुनामेत्यचैतद्वैवक्तव्यंमा
र्गहेतवे ॥ २१ ॥ यदिकृष्णोबाल्यतिःसर्वदोषविवर्जितः ॥ तर्हिनोदेहिमार्गंवैकालिन्दिसरितांवरे ॥ २२ ॥ इत्युक्तेवचनेकृष्णामार्गंवोदास्य
तिस्वतः ॥ सुखेनतेनव्रजतयूयंसर्वाव्रजांगनाः ॥ २३ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वाथतद्वाक्यंपात्रैर्दिव्यैर्व्रजांगनाः ॥ षट्पंचा
शत्तमान्भोगान्नीत्वासर्वाःपृथक्पृथक् ॥ २४ ॥

करावौ हमारेहू मन उनके दर्शन करवेको उद्यत है ॥ १८ ॥ हे देव ! आज कैसे रात व्यतीत होय कैसे दोपहर निकसे हे परमेश्वर ! रात बीत कैसे हमकूं दर्शन होय ॥१९॥ हे परमेश्वर ! बीचमें
तौ बड़ीभारी यमुना नदी पड़ैहैसो वह प्रतिबन्ध है यह यमुना कहौ नावबिना कैसे तरी जायगी ॥ २० ॥ तब भगवान् बोले-हे प्यारियो ! जो अवश्यही तुमकूं आनो है तो
यमुनाजीकूं प्राप्त हैके रस्ताके लिये यह कहो ॥ २१ ॥ कि हे यमुने ! नदीनमें श्रेष्ठ ! जो श्रीकृष्ण सब दोषरहित बालब्रह्मचारी है तो हे कालिंदि ! हमकूं रस्ता देदेउ ॥ २२ ॥ ऐसें
जब तुम कहौगी तब आपतेई यमुनाजी तुमे रस्ता देदेंयगी तब सुखते तुम सबरी ब्रजसुंदरी चलीजाउगी ॥ २३ ॥ नारदजी कहेहें कि, या प्रकार तिनको वाक्य सुनिके न्यारे २

बडे २ पात्रनमें छप्पनभोगकी न्यारी २ सामग्री करि हाथनमें लेकें यमुनाजीके पास पहुंची ॥ २४ ॥ यमुनाजीपै जायकें प्रणाम करिके जैसें श्रीकृष्णने कही हीं वैसेंही कही, हे मैथिलेश्वर ! तबही जमुनाजीने गोपीनकूं मार्ग देदीनो ॥ २५ ॥ ता मार्गमें ह्वैके सबरी गोपी विस्मित ह्वैकें भांडीरवनमें पहुंची तहां वो सब दुर्वासाकी परिक्रमा दैके ॥ २६ ॥ नमस्कार करिके ऋषिके दर्शन करतीभई फिर वे छप्पन भोग अगाडी धरिके बोली कि, हे मुने ! पहले मेरे या अपूर्व अन्नको भोजन करो ऐसेंई सब गोपी कहनलगीं ॥ २७ ॥ ऐसे सब गोपी विवाद करनलगी तिनकी भक्ति जानिके मुनिशार्दूल दुर्वासा ये निर्मल वचन बोले कै ॥ २८ ॥ हे गोपीयो ! मैं परमहंस हूं, निष्क्रिय हूं, कर्म कछू नहीं करूं हूं क्योंकि मै कृतकृत्य हूँ ताते तुमही अपने हाथते अपने २ पदार्थनकों मेरे मुखमें डारिदेउ ॥ २९ ॥ ऐसे कहिके जब दुर्वासाने मुख फाऱ्यो तब गोपी अतिहर्षित ह्वैकै अपने अपने

यमुनामेत्यहर्षयुक्तंजगुरानतकंधराः ॥ सद्यःकृष्णाददौमार्गंगोपीभ्योमैथिलेश्वर ॥ २५ ॥ तेनगोप्योगताःसर्वाभाण्डीरंचातिविस्मिताः ॥ ततःप्रदक्षिणीकृत्यमुनिंदुर्वाससंचताः ॥ २६ ॥ नत्वातद्दर्शनंचक्रुःपुरोधृत्वाऽशनम्बहु ॥ मेपूर्वंचापिमेपूर्वमन्नंभोज्यंत्वयामुने ॥ २७ ॥ एवंविवदमानानांगोपीनांभक्तिलक्षणम् ॥ विज्ञायमुनिशार्दूलःप्रोवाचविमलंवचः ॥ २८ ॥ ॥ मुनिरुवाच ॥ ॥ गोप्यःपरमहंसोहं कृतकृत्योहिनिष्क्रियः ॥ तस्मान्मुखेमेदातव्यंस्वंस्वंचाप्यशनंकरैः ॥ २९ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ एवंविदारितेतेनमुखेगोप्यो तिहर्षिताः ॥ षट्पंचाशत्तमान्भोगान्स्वान्स्वान्सर्वाःसमाक्षिपन् ॥ ३० ॥ क्षिपंतीनांचगोपीनांपश्यंतीनांमुनीश्वरः ॥ जघासकोटिशोभारा न्भोगान्सर्वान्क्षुधातुरः ॥ ३१ ॥ विस्मितानांचगोपीनांपश्यंतीनाम्परस्परम् ॥ इत्थंशून्यानिपात्राणिबभूवुर्नृपसत्तम ॥ ३२ ॥ अथगो प्योमुनिंशांतंनत्वातम्भक्तवत्सलम् ॥ विस्मिताःप्रणताःप्राहुःसर्वाःपूर्णमनोरथाः ॥ ३३ ॥ ॥ गोप्यऊचुः ॥ ॥ मुनेरागमनात्पूर्वंकृष्णो क्तवचसानदीम् ॥ तीर्त्वागतास्त्वत्समीपंदर्शनार्थंशुभेच्छया ॥ ३४ ॥ इतःकथंगमिष्यामःसन्देहोयंमहानभूत् ॥ तद्विधेहिनमस्तुभ्यंयेन पंथालघुर्भवेत् ॥ ३५ ॥ ॥ मुनिरुवाच ॥ ॥ सुखेनातःप्रगन्तव्यंभवतीभिर्यदास्वतः ॥ यमुनामेत्यचैतद्वैवक्तव्यंमार्गहेतवे ॥ ३६ ॥ यदि दूर्वारसंपीत्वादुर्वासाःकेवलंक्षितौ ॥ व्रतीनिरन्नोनिर्वारिर्वर्ततेपृथिवीतले ॥ ३७ ॥

छप्पन भोगनकूं दुर्वासाके मुखमें सब डारनलगी ॥ ३० ॥ गोपी सब देखत जायँहैं और डारत जायँहैं दुर्वासा मुनि किरोडन भार सब भोगनकूं भूखके मारे खायगये ॥ ३१ ॥ विस्मित ह्वैके गोपी सब परस्पर देखि रही हैं तब तिनके वे सब पात्र सूने ह्वैगये हे नृपसत्तम ! ॥ ३२ ॥ याके अनंतर वे भक्तवत्सल शांतिवृत्तिवाले मुनिकूं दंडोत करि विस्मित ह्वैके बोली पूर्ण भये है मनोरथ जिनके ॥ ३३ ॥ कि हे महाराज ! अब हम इतते कैसें जायं क्योंकि पहले तो हम कृष्णके वचनते नदीकूं तरकें तुम्हारे पास आयगयीं तुम्हारे दर्शनके अर्थ शुभकी इच्छाते ॥ ३४ ॥ अब इतते कैसें जायंगी यह हमें बडौ संदेह है जाको उपाय बताओ हम तुमको प्रणाम करै हैं जाते सहजमें पहुंच जायं ये मार्ग हमें हलको ह्वैजाय ॥ ३५ ॥ तब मुनि बोले कि, तुम सुखतेंई इतते चलीजाउ यमुनाके पास जायकें रस्ताके लिये तुम ये कहियो ॥ ३६ ॥ कि जो दुर्वासामुनि

केवल दूबको रस पीके व्रत करें हैं और निराहार निर्जल पृथ्वीतलपे वर्तें हैं ॥ ३७ ॥ तौ हे नदीनमें श्रेष्ठ ! हे कालिंदी ! हमकूं तू रस्ता देदे ऐसे जब तुम कहोगी तब अपने आप कालिंदी नदी तुमकूं रस्ता देदेयगी ॥ ३८ ॥ नारदजी कहें हैं-ऐसें मुनिको वचन सुनिकें मुनिकूं दंडात करिके जमुनाजीपे आयके मुनिको कह्यो वचन कहिके कालिंदीमें ह्वेकें अपने अपने घरनकूं चलीआई ॥ ३९ ॥ तब अचंभेमें डूबी वे मंगलरूप गोपी श्रीकृष्णके पास आइ ॥ ४० ॥ फिर रासमें सब गोपवधू मनमें उठे संदेहको एकांतमें हरिकूं देखिकें पूछनलगी कैसी गोपी हैं पूर्ण हेगये हैं मनोरथ जिनके ॥ ४१ ॥ कि हे प्रभो ! दुर्वासाको दर्शन हमनें कीनों तुम्हारे दोनोंनके वचनते हमकूं बडो संदेह भयो है ताहि आप दूरि करो ॥ ४२ ॥ जैसे गुरु तैसेई चेला दोनों मिथ्यावादी हो यामें संदेह नहीं है तुम तौ गोपीनके जार हो और बालकपनेहीते रसिक हो ॥ ४३ ॥ फिर तुम

तर्हिनोदेहिमार्गंवैकालिंदिसरितांवरे ॥ इत्युक्तेवचनेकृष्णामार्गंनोदास्यतिस्वतः ॥ ३८ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इति श्रुत्वावचोगोप्यो नत्वातंमुनिपुंगवम् ॥ यमुनामेत्यमुन्युक्तंचोक्त्वातीर्त्वानदींनृप ॥ ३९ ॥ श्रीकृष्णपार्श्वमाजग्मुर्विस्मितामंगलायनाः ॥ ४० ॥ अथरासे गोपवध्वःसन्देहंमनसोत्थितम् ॥ पप्रच्छुःश्रीहरिंवीक्ष्यरहःपूर्णमनोरथाः ॥ ४१ ॥ ॥ गोप्यऊचुः ॥ ॥ दुर्वाससोदर्शनंभोःकृतमस्मा भिरप्रतः ॥ युवयोर्वाक्यतश्चात्रसन्देहोयंप्रजायते ॥ ४२ ॥ यथागुरुस्तथाशिष्योमृषावादीनसंशयः ॥ जारस्त्वमसिगोपीनांरसिकोबाल्यतः प्रभो॥४३॥ कथंबालयतिस्त्वंवैवदतद्वृजिनार्दन ॥ कथंदूर्वारसंपीत्वादुर्वासावद्दुभुङ्मुनिः ॥ ४४ ॥ नोजातएषसन्देहःपश्यतीनांव्रजेश्वर ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ निर्ममोनिरहंकारःसमानःसर्वगःपरः ॥ सदावैषम्यरहितोनिर्गुणोहंनसंशयः ॥ ४५ ॥ तथापिभक्तान्भजतो भजेहंवैयथायथा ॥ तथैवसाधुर्ज्ञानीवैवैषम्यरहितःसदा ॥ ४६ ॥ नबुद्धिभेदंजनयेदज्ञानांकर्मसंगिनाम् ॥ ॥ जोषयेत्सर्वकर्माणिविद्वान्यु क्तःसमाचरेत् ॥ ४७ ॥ यस्यसर्वेसमारंभाःकामसंकल्पवर्जिताः ॥ ज्ञानाग्निदग्धकर्माणंतमाहुःपंडितंबुधाः ॥ ४८ ॥ निराशीर्यतचि त्तात्मात्यक्तसर्वपरिग्रहः ॥ शारीरंकेवलंकर्मकुर्वन्नाप्नोतिकिल्बिषम् ॥ ४९ ॥

बालयती कैसें हो और हे दुःखके दूर करनहारे ! जो मुनि मननके खवैया है वो दुर्वासा दूबकोही रस पीकें कैसें बैठे हैं ॥ ४४ ॥ हे व्रजेश्वर ! हमारे देखत देखत यह संदेह उठ ठाडो भयो है ॥ तब भगवान् बोले कि, मेरे ममता नहीं है, अहंकार नही है, समान हूं, सबजगह हूं, सबते परे हूं, सदाई विषमताते रहित हूं, निर्गुण हूं, यामे संदेह नही है ॥ ४५ ॥ तौहू मैं भजन करनवारे जो मेरे भक्त है तिनें मैं भजूहूं तैसेई साधु जे ज्ञानी हैं ते सदाही विषमताते रहित हैं ॥ ४६ ॥ ताहीते जे कोई संसारमें कर्मनमे आसक्त हेरहे है तिनकी बुद्धिमें भेद न डारे उनकूं कर्मकोही सेवन करावे और जो ज्ञानी आप विद्वान् हो सब कर्म आचरण करतो सब प्राणीनको कर्मही सेवन करावे ॥ ४७ ॥ जाके सबरे आरंभ कामनाके संकल्प करकें वर्जित हैं और जानें ज्ञानकी अग्निते सब कर्म जरायदीने है वाहीकूं बुधजन पंडित कहे हैं ॥ ४८ ॥ जो कछू मनोरथ

नहीं करे है, रोकी है बुद्धि और चित्त जानें और संग्रह कछू नहीं करे है जो केवल शरीर निर्वाहकेही लिये केवल कर्म करे है तो वो कर्मनको करनवारो हैकेहू शुभाशुभके फल पुण्य या पापकूं प्राप्त नहीं होयहै ॥ ४९ ॥ यो लोकमें ज्ञानकी बराबर और कोई पवित्र कर्म नहीं है सो योगके अभ्यासको करत करत वह अपने आत्माईमें ज्ञानकूं प्राप्त हैजायहै ॥ ५० ॥ आसक्ति छोड़कें ब्रह्मके अर्पण कर जो करैहै वो वा किये कर्मके पापते लिप्त नहीं होयहै जैसें कमलके फूल जलसो लिप्त नहीं होयहै ॥ ५१ ॥ ताते दुर्वासा ऋषि तौ तुम्हारे हित करवेके लिये वह भोक्ता हैगये ताके भोजनकी कुछ इच्छा नहीं है दूर्वाईकी रस पीमेंहूं सोऊ प्रमाणते ॥ ५२ ॥ नारदजी कहैहैं ऐसें श्रीकृष्णकी वचन सुनके वे श्रुतिरूपा गोपी निस्संदेह हैगईं और हे मैथिलेश्वर ! वे ज्ञानमयी हैगईं ॥ ५३ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां माधुर्यखंडे भाषाटीकायां नारदबहु

नहिज्ञानेनसदृशंपवित्रमिहविद्यते ॥ तत्स्वयंयोगसंसिद्धःकालेनात्मनिविन्दति ॥ ५० ॥ ब्रह्मण्याधायकर्माणिसंगंत्यक्त्वाकरोतियः ॥ लिप्यतेनसपापेनपद्मपत्रमिवांभसा ॥ ५१ ॥ तस्मान्मुनिस्तुदुर्वासाबहुभुक्चद्वितेरतः ॥ नतस्यभोजनेच्छास्याद्दूर्वारसमिताशनः ॥ ५२ ॥ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वावचोगोप्यःसर्वास्ताश्छिन्नसंशयाः ॥ श्रुतिरूपाज्ञानमय्योबभूवुर्मैथिलेश्वर ॥ ५३ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांमाधुर्यखण्डेश्रीनारदबहुलाश्वसंवादेश्रुतिरूपोपाख्यानंनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ गोपीनामृषिरूपाणामाख्यानंशृणुमैथिल ॥ सर्वपापहरम्पुण्यंकृष्णभक्तिविवर्धनम् ॥ १ ॥ वंगेषुमंगलोनामगोपआसीन्महामनाः ॥ लक्ष्मीवाञ्छ्रुतसम्पन्नोनवलक्षगवाम्पतिः ॥ २ ॥ भार्याःपंचसहस्राणिबभूवुस्तस्यमैथिल ॥ कदाचिद्दैवयोगेनधनंसर्वंक्षयंगतम् ॥ ३ ॥ चौरैर्नीतास्तस्यगावःकाश्चिद्राज्ञाहृताबलात् ॥ एवंदैन्येचसंप्राप्तेदुःखितोमंगलोऽभवत् ॥ ४ ॥ तदाश्रीरामस्यवराद्दण्डकारण्यवासिनः ॥ ऋषयःस्त्रीत्वमापन्नाबभूवुस्तस्यकन्यकाः ॥ ५ ॥ दृष्ट्वाकन्यासमूहंसदुःखीगोपोथमंगलः ॥ उवाचचैतद्दुःखाढ्यआधिव्याधिसमाकुलः ॥ ६ ॥ ॥ मंगलउवाच ॥ ॥ किंकरोमिक्वगच्छामिकोमेदुःखंव्यपोहति ॥ श्रीर्नभूतिर्नाभिजनंनबलंमेस्तिसाम्प्रतम् ॥ ७ ॥

लाश्वसंवादे श्रुतिरूपोपाख्यानं नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ नारदजी कहैहैं—हे राजन् ! श्रुतिरूपा जे गोपी हैं तिनको आख्यान सुनवो सब पापनको हरनहारो और कृष्णकी भक्तिको बढ़ायवेवारो है ॥ १ ॥ एक बंगदेशमें मंगलनाम गोप होतभयो वो लक्ष्मीवान् हो, श्रुतिसपन्न हो, और नौ लाख गौवनको पति हो ॥ २ ॥ हे मैथिल ! ताके पांचहजार स्त्री ही, ताको काहो समय दैवयोगते सब धन नाश हैगयौ ॥ ३ ॥ वाकी गौनकूं कछू तौ चोर लैगये, कछू राजानें हरलईं, ऐसें वा मंगलको दीनता प्राप्त हैवेसों ये दुःखी हैगयो ॥ ॥ ४ ॥ तब रामचंद्रके वरते जे दंडकारण्यवासी मुनि स्त्रीभावकूं प्राप्त भयेही वो मंगल गोपकी बेटी भई ॥ ५ ॥ कन्यानके समूहकूं देखिकें मंगल गोप दुःखी हैगयो और उनी कन्यानके दुःखकी आधि व्याधिसे ग्रस्त हैकें यह बोल्यौ ॥ ६ ॥ तब मंगल बोल्यौ—मैं कहा करूं कहां जाऊं मेरे दुःखकूं कौन दूर करे न तौ मेरे पास माया लक्ष्मी है न मेरे

वैभव है न मेरे भैया बंधु हैं न मेरे बल है ॥ ७ ॥ धन विना हाय इन बेटीनको विवाह कैसें होयगो देखो जहां भोजनमेंहू संदेह रहेहै तहां धनकी आशा कैसी ॥ ८ ॥ देखो या दीनतामें काकतालीय न्याय हैगयो जैसें एक तालको फल पकके गिरैहो रह्योहो इतनेहीमें एक कौआ वाके नीचे हैके निकस्यो सोई वो फल वा कौआके ऊपर गिरपऱ्यो जैसे वो कौआ मरगयो ऐसेही मेरे दरिद्र तो आमनहार होई पर इन कन्यानके शिरपरचो अब मै काहू राजाकूं जो धनी बली होयगो ॥ ९ ॥ ताकूं ये अपनी कन्या देदेऊंगो तो कन्यानकूं तो सुख होयगो नारदजी कैहेहैं कि, ऐसें विन कन्यानकी कुवड़ाई करकें स्थिर हैगयो तबही मथुराते एक गोप आयो ॥ १० ॥ वो तीर्थयात्राकूं जानवारो बड़ो बूढ़ो महाबुद्धिमान् जय नामको हो, ताके मुखते नंदराजको अद्भुत वैभव सुन्यो ॥ ११ ॥ दीनताके मारे वा मंगलने नन्दराजके महलनमें सुन्दर नेत्रवारी वे कन्या सब भेजदई ॥

धनंविनाकथंचासांविवाहोहाभविष्यति ॥ भोजनेयत्रसंदेहोधनाशातत्रकीदृशी ॥ ८ ॥ सतिदैन्येकन्यकाःस्युःकाकतालीयवद्धृहे ॥ तस्मात्कस्यापिराज्ञस्तुधनिनोबलिनस्त्वहम् ॥ ९ ॥ दास्याम्येताःकन्यकाश्चकन्यानांसौख्यहेतवे ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ कदर्थीकृत्यताःकन्याएवंबुद्ध्यास्थितोभवत् ॥ तदैवमाथुरादेशाद्गोपश्चैकःसमागतः ॥ १० ॥ तीर्थयायीजयोनामवृद्धोबुद्धिमतांवरः ॥ तन्मुखान्नन्दराजस्यश्रुतंवैभवमद्भुतम् ॥ ११ ॥ नन्दराजस्यवलयेमंगलोदैन्यपीडितः ॥ विचिन्त्यप्रेषयामासकन्यकाश्चारुलोचनाः ॥ १२ ॥ तानन्दराजस्यगृहेकन्यकारत्नभूषिताः ॥ गवांगोमयहारिण्योवभूवुर्गोव्रजेषुच ॥ १३ ॥ श्रीकृष्णंसुन्दरंदृष्ट्वाकन्याजातिस्मराश्चताः ॥ कालिन्दीसेवनंचक्रुर्नित्यंश्रीकृष्णहेतवे ॥ १४ ॥ अथैकदाश्यामलांगीकालिन्दीदीर्घलोचना ॥ ताभ्यःस्वदर्शनंदत्त्वावरंदातुंसमुद्यता ॥ १५ ॥ तावव्रिरेव्रजेशस्यपुत्रोभूयात्पतिश्चनः ॥ तथास्तुचोक्त्वाकालिन्दीतत्रैवांतरधीयत ॥ १६ ॥ ताःप्राप्तावृन्दकारण्येकार्तिक्यांरासमण्डले ॥ ताभिःसार्द्धंहरीरेमेसुरीभिःसुरराडिव ॥ १७ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमाधुर्यखण्डे श्रीनारदबहुलाश्वसंवादे ऋषिरूपोपाख्यानं नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ मैथिलीनांगोपिकानामाख्यानंशृणुमैथिल ॥ दशाश्वमेधतीर्थस्यफलदंभक्तिवर्धनम् ॥ १ ॥

॥ १२ ॥ वे कन्या नन्दराजके घरमें रत्नके गहनेनते भूषित गौवनके गोवर लायोकरे और थाप्योकरें ऐसी भई ॥ १३ ॥ पूर्वजन्मको स्मरण जिनको ऐसी वे सुन्दर श्रीकृष्णकूं देखके कामदेवके वश भयी तब तो वे श्रीकृष्णकी प्राप्तिके लिये नित्य कालिंदीको सेवन करनलगी ॥ १४ ॥ याके अनंतर एक दिना कमलसे नेत्र जाके ऐसी श्यामसुन्दरी बड़े नेत्रवारी कालिंदी तानें दर्शन दीनो और वर देवेकूं उद्यत भई ॥ १५ ॥ तब उन गोपीननें यही वर मांग्यो कि, नंदराजको बेटा श्रीकृष्ण हमारो पति होय तब कालिंदीजी बोली वैसेई होयगी ऐसें कहके अंतर्धान हैगई ॥ १६ ॥ ते गोपी वृन्दावनके रासमण्डलमें कार्तिककी पूर्णमासीकूं प्राप्तभई तिनके संग भगवान् रमण करते भये जैसें अप्सरानते इन्द्र रमे है ॥ १७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां माधुर्यखंडे भाषाटीकायामृषिरूपोपाख्यानं नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ नारदजी कैहेहैं हे ! मैथिल अब तुम मैथिल

(१) काकागमनमिव तालपतनमिव काकतालं काकतालमिव काकतालीयम्—समासाच्च तद्विषयादिति छः प्रत्ययः तेन काकतालीयमिति सिद्धम् ॥

देशवासी जे गोपी भईहैं तिनको उपाख्यान सुन याके सुनेते दश अश्वमेध तीर्थको फल होयहै और भक्ति बढैहे ॥ १ ॥ श्रीरामजीके वरते जे नौ नंदनके घरमें भई वे मनोहर नंदसुतकूं देखकें मोहित हेगई ॥ २ ॥ विनने मार्गशिरके महीनामें कात्यायनी देवीको व्रत कीनों और वाहीकी मृत्तिकाकी प्रतिमा बनायकें षोडशोपचार पूजा करतीभई ॥ ३ ॥ अरुणोदय वेलाके समय नित्य उठकें यमुनाजलमें न्हाय २ के इकट्ठी हेकें भगवानके गुण गावत नित्य यमुनाजीपे आतीही ॥ ४ ॥ एक समय वो सबरी व्रजांगना तीरपे अपने वस्त्रनकूं धरकें जमुनामें हाथनसों जलको आपसमें सींचती विहार करनलगी ॥ ५ ॥ तब प्रातःकालके समय भगवान् श्रीकृष्ण आयगये उनके वस्त्र लैकें कदंबपे चढिगये और चोरकी नाई चुप हे बैठगये ॥ ६ ॥ जब अपने वस्त्रनकूं नही देखे तब वे गोपकन्या विस्मित हेगई, वस्त्र लिये कदंबपे चढे श्रीकृष्णकूं देखिकें हँसनलगी और लज्जित भई

श्रीरामस्यवराज्जातानवनन्दगृहेषुयाः ॥ कमनीयंनन्दसूनुंदृष्ट्वातामोहमास्थिताः ॥ २ ॥ मार्गशीर्षेशुभेमासिचक्रुःकात्यायनीव्रतम् ॥ उपचारैःषोडशभिःकृत्वादेवींमहीमयीम् ॥ ३ ॥ अरुणोदयवेलायांस्नाताःश्रीयमुनाजले ॥ नित्यंसमेताआजग्मुर्गायन्त्योभगवद्गुणान् ॥ ४ ॥ एकदाताःस्ववस्त्राणितीरेन्यस्यव्रजांगनाः ॥ विजहुर्यमुनातोयेकराभ्यांसिंचतीर्मिथः ॥ ५ ॥ तासांवासांसिसंनीत्वाभगवान्प्रातरागतः ॥ त्वरंकदम्बमारुह्यचौरवन्मौनमास्थितः ॥ ६ ॥ तानवीक्ष्यस्ववासांसिविस्मितागोपकन्यकाः ॥ नीपस्थितंविलोक्याथसलज्जाजहसुर्नृप ॥ ७ ॥ प्रतीच्छंत्यःस्ववासांसिसर्वाआगत्यचात्रवै ॥ अन्यथानहिदास्यामिवृक्षात्कृष्णउवाचह ॥ ८ ॥ राजंस्यस्ताःशीतजलेहर्संत्यःप्राहुरानताः ॥ ९ ॥ ॥ गोप्यऊचुः ॥ ॥ हेनंदनंदनमनोहरगोपरत्नगोपालवंशनवहंसमहार्तिहारिन् ॥ श्रीश्यामसुन्दरतवोदितमद्यवयंकुर्मःकथंविवसनाःकिलतेपिदास्यः ॥ १० ॥ गोपांगनावसनमुण्नवनीतहारीजातोव्रजेऽतिरसिकःकिलनिर्भयोसि ॥ वासांसिदेहिनहिचेन्मथुराधिपायवक्ष्यामहेऽनयमतीवकृतंत्वयात्र ॥ ११ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ दास्योममैवयदिसुन्दरमन्दहासाइत्थंतुवैत्यकिलचात्रकदम्बमूले ॥ नोचेत्समस्तवसनानिनयामिगेहांस्तस्मात्करिष्यथममैववचोविलंबात् ॥ १२ ॥

॥ ७ ॥ तब वृक्षपें बैठ श्रीकृष्ण उन गोपीनते बोले कि, जो तुम वस्त्र लियोचाहोही तो तुम यहां कदंबके नीचे आयकें अपने अपने वस्त्रनकूं लेजाउ औरतरह नहीं देऊंगो ॥ ८ ॥ तब वे शीतल जलमें खड़ी हंसिकें हाथ जोड़के यह बोली ॥ ९ ॥ हे नन्दनन्दन ! हे मनोहर ! हे गोपरत्न ! हे गोपालवंशके नवीन हंस ! हे बड़ी पीडाके हरनहारे ! हे श्रीश्याम सुन्दर ! हे प्रभो ! हम तुम्हारी दासी हैं जो आप कहोगे सोई करेंगी पर नंगी हम जलमेंते कैसे निकसें ॥ १० ॥ हे गोपीनके वस्त्रनके हरनहारे ! हे माखनके चुरामनहारे ! हे व्रजके अतिरसिक ! तुम बड़े निर्भय हो, हमारे वस्त्र देदेउ जो न देउगे तो हम कंसते जायकें कहि देयँगी, तुम तो अब बड़ोही अन्याय करी हो ॥ ११ ॥ तब तो भगवान् बोले हे सुन्दर मन्द हँसनहारीहो ! जो तुम मेरी दासी हो तो या कदंबके नीचे आयके अपने २ वस्त्रनकूं लेजाओ जो तुम

देर लगाओगी तो तुम्हारे वस्त्रनकूं लैके मैं घर चल्यौ जाऊंगो यासौं तुम मेरे कहेको जलदी करौ ॥ १२ ॥ नारदजी कहै हैं–तब अति कांपति भई गोपी लाजकी मारी अति नीची हैकें दोनों हाथनते योनीनकूं ढकिके बाहिर निकसी ॥ १३ ॥ तब श्रीकृष्णने वस्त्र देदीने तब उनकूं पहरकें व्रजांगना मोहित हैकें ठाड़ी रही श्रीकृष्णके माऊं लज्योंही चितवनते देखें हैं ॥ १४ ॥ तब परम प्रेमको लक्षण तिनको अभिप्राय जानिकें सब ओर देखत मन्द मुसिक्यान करते भगवान् यह बोले ॥ १५ ॥ श्रीकृष्ण बोले–तुमने मार्गशिरके महीनामें कात्यायनीको व्रत कीनों है यो मेरे लिये कियो है सो सफल होयगो यामें सन्देह नहीं है ॥ १६ ॥ परलोके दिन कालिंदीके तीर मनोहर स्थानमे तुम्हारे संगमें रास करूंगो या रासमें तुम्हारो मनोरथ पूर्ण होयगो ॥ १७ ॥ ऐसे कहिकें परिपूर्णतम हरि चलेगये तब सब गोपी प्रसन्न हैके

॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ तदातानिर्गताःसर्वाजलाद्वेप्योतिवेपिताः ॥ आनतायोनिमाच्छाद्यपाणिभ्यांशीतकर्शिताः ॥ १३ ॥ कृष्णदत्तानिवासांसिदधुःसर्वाव्रजांगनाः ॥ मोहिताश्चास्थितास्तत्रकृष्णेलज्जायितेक्षणाः ॥ १४ ॥ ज्ञात्वातासामभिप्रायंपरमप्रेमलक्षणम् ॥ आहमन्दस्मितःकृष्णःसमंताद्वीक्ष्यतावचः ॥ १५ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ भवतीभिर्मार्गशीर्षेकृतंकात्यायनीव्रतम् ॥ मदर्थंतच्चसफलंभविष्यतिनसंशयः ॥ १६ ॥ परश्वोहनिचादव्यांकृष्णातीरेमनोहरे ॥ युष्माभिश्चकरिष्यामिरासंपूर्णमनोरथम् ॥ १७ ॥ इत्युक्त्वाथगतेकृष्णेपरिपूर्णतमेहरौ ॥ प्रातानन्दामंदहासागोप्यःसर्वागृहान्ययुः ॥ १८ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमाधुर्यखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेमैथिलुपाख्यानंनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ कौशलानांगोपिकानांवर्णनंशृणुमैथिल ॥ सर्वपापहरम्पुण्यंश्रीकृष्णचरितामृतम् ॥ १ ॥ नवोपनन्दगेहेषुजातारामवराद्व्रजे ॥ परिणीतागोपजनैरत्नभूषणभूषिताः ॥ २ ॥ पूर्णचन्द्रप्रतीकाशानवयौवनसंयुताः ॥ पद्मिन्योहंसगमनाःपद्मपत्रविलोचनाः ॥ ३ ॥ जारधर्मेणसुस्नेहंसुदृढंसर्वतोधिकम् ॥ चक्रुःकृष्णेनन्दसुतेकमनीयेमहात्मनि ॥ ४ ॥ ताभिःसार्द्धंसदाहास्यंव्रजवीथीषुमाधवः ॥ स्मितैःपीतपटादानैःकर्षणैःसचकारह ॥ ५ ॥

मन्द २ हँसती अपने अपने घरकूं चलीगई ॥ १८ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां माधुर्यखण्डे भाषाटीकायां नारदबहुलाश्वसंवादे मैथिलुपाख्यानं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ नारदजी कहैं हैं अब कौशलदेशवासिनी गोपीनको वर्णन है मैथिल ! तूं सुन यह श्रीकृष्णको चरितामृत मनुष्यनके सब पापनको हरनहारो है पवित्र है ॥ १ ॥ जनकनगरकी रहनवारी स्त्री हीं पे सब श्रीरामके वरते नौ उपनन्दनके घरमें उनने जन्म लीनो वे रत्ननके गहनेन करके भूषित हीं वे गोपनने व्याही ॥ २ ॥ पूर्णचन्द्रमाकोसो जिनको तेज, नयो जिनको यौवन, पद्मिनी नायिकानकेसे लक्षणवारी, कमलसे नेत्र, हंसिनीकीसी जिनकी चाल वे सब व्रजमें व्याहीगई ॥ ३ ॥ उनने जारधर्म करकें नंदके पुत्र श्रीकृष्णमें दृढ़ स्नेह कीनों जो अति मनोहर और महात्मा हो ॥ ४ ॥ तिनके संग व्रजकी गलीनमें सदाई श्रीकृष्ण हँसी करोकरे, मन्द मुसिक्यान पीताम्बरको उतारलेनो और परस्पर खेंचाखेंची भयी

करती हीं॥५॥जब ये दधि बेचवेकूं जायँ तब दही लेउ दही लेउ यह तो भूलजांय और कृष्ण लेउ कृष्ण लेउ ऐसे कहती श्रीकृष्णमें जिनको प्रेम ऐसी ये गोपी कुञ्जमण्डलमें डोल्यौ
करती हीं॥६॥ आकाशमें, पवनमें, जलमें, पृथ्वीमें, तेजमें, दिशानमें, वृक्षनमें और जननके समूहमें इनको श्रीकृष्णही दीखते हैं ॥७॥ प्रेमलक्षण करिके संयुक्तभई श्रीकृष्णने हरोहै
मन जिनको ऐसी जे गोपी ये आठ जे सात्विकभाव तिनकरिकें युक्त होती भई ॥८॥ प्रेम करिकें परमहंसनकी पदवीकूं प्राप्त हैगईहैं कृष्णको आनंद जिनकूं प्रकाशवारी व्रजकी गलीनमें
॥९॥ जड अजडकूं नहीं जानती जडसी उन्मत्तसी भूतलगीसी कबहूं बोलैंहैं कबहूं नहीं बोले, गई है लाज और व्यथा जिनकी ऐसी हैके रहती हीं॥१०॥ऐसे कृतार्थताकूं प्राप्तभई तन्मय
भई ये गोपी जोरावरी पकड़के श्रीकृष्णकें मुखको चुम्बन करें हैं ॥ ११ ॥ हे राजन् ! तिनके तपकी मै कहा वर्णन करों जे इन्द्रियादिकते लोकके व्यवहार लोकके मार्ग सबकूं छोडिकें

दधिविक्रयार्थयन्त्यः कृष्णकृष्णेतिचाब्रुवन् ॥ कृष्णेहिप्रेमसंसक्ताभ्रमंत्यः कुंजमंडले ॥ ६ ॥ खेवायौचाग्निजलयोर्मह्यांज्योतिर्दिशासुच ॥
द्रुमेषुजनवृन्देषुतासांकृष्णोहिलक्ष्यते ॥ ७ ॥ प्रेमलक्षणसंयुक्ताः श्रीकृष्णहृतमानसाः ॥ अष्टभिः सात्त्विकैर्भावैः सम्पन्नास्ताश्चयोषितः ॥ ८ ॥
प्रेम्णापरमहंसानांपदवींसमुपागताः ॥ कृष्णानन्दाः प्रभावन्त्योव्रजवीथीषुतानृप ॥ ९ ॥ जडाजडंनजानंत्योजडोन्मत्तपिशाचवत् ॥
अब्रुवंत्योब्रुवंत्योवागतलज्जागतव्यथाः ॥ १० ॥ एवंकृतार्थतांप्राप्तास्तन्मयायाश्चगोपिकाः ॥ बलादाकृष्यकृष्णस्यचुचुंबुर्मुखपंकजम् ॥ ११ ॥
तासांतपः किंकथयामिराजन्पूर्णेपरेब्रह्मणिवासुदेवे ॥ याश्चक्रिरेप्रेमहृदिंद्रियाद्यैर्विसृज्यलोकव्यवहारमार्गम् ॥ १२ ॥ यारासरंगेविनिधाय
बाहुंकृष्णांसयोः प्रेमविभिन्नचित्ताः ॥ चक्रुर्वशेकृष्णमलंतपस्तद्वक्तुंनशक्तोवदनैः फणीन्द्रः ॥ १३ ॥ योगेनसांख्येनशुभेनकर्मणान्यायादिवैशे
षिकतत्त्ववित्तमैः ॥ यत्प्राप्यतेतत्त्वपदंविदेहराट्संप्राप्यतेकेवलभक्तिभावतः ॥ १४ ॥ भक्त्यैववश्योहरिरादिदेवः सदाप्रमाणंकिलचात्रगो
प्यः ॥ सांख्यंचयोगंनकृतंकदापिप्रेम्णैवयस्यप्रकृतिंगताः स्युः ॥ १५ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमाधुर्यखण्डेश्रीनारदबहुलाश्वसंवादे
कौशलोपाख्यानंनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ अयोध्यावासिनीनांतुगोपीनांवर्णनंशृणु ॥ चतुष्पदार्थदंसाक्षा
त्कृष्णप्राप्तिकरंपरम् ॥ १ ॥ सिन्धुदेशेषुनगरीचंपकानाममैथिल ॥ बभूवतस्यांविमलोराजाधर्मपरायणः ॥ २ ॥

परिपूर्ण परब्रह्म वासुदेवमें प्रेम करतीभई ॥१२॥जे रासके रंगमे श्रीकृष्णके कंधाप अपनी भुजा धरिकें प्रेमते भिन्नहै चित्त जिनको ते श्रीकृष्णकूं अत्यंत वश करतभई, तिनको तप हजार
मुखते शेषजीहू नहीं वर्णन करसकें हैं ॥१३॥ योग करिकें, सांख्य करिकें, शुभ कर्म करिकें,न्यायते आदि लैकें जे वैशेषिक तत्त्वके वेत्ता हैं तिन करिकें जो पद प्राप्त होयहै हे विदेहराजा!
सो पद केवल भक्तिभावते प्राप्त होय है ॥ १४ ॥ आदिदेव हरि तो भक्तिहीते वश होयहैं यामें गोपीही सदा प्रमाण है जिनोंने न कबहूं सांख्य पढ्यो न जिनने योगको अभ्यास कियो
ऐसी ए गोपी देखो एक केवल भक्तिहीते वाके रूपकूं प्राप्त हैगई ॥ १५ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां माधुर्यखंडे भाषाटीकायां कौशलोपाख्यानं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ नारदजी
कहेहै–अब अयोध्यावासिनीनको वर्णन सुनौ जो धर्म, अर्थ, काम, मोक्षकौ देनहारो और श्रीकृष्णकी प्राप्तिको करनहारो है ॥ १ ॥ सिंधुदेशमें एक चंपका नाम नगरी ही है

मैथिल ! तामें बड़ौ धर्मात्मा विमल नाम राजा हौ जो अपने धर्ममें तत्पर हो ॥ २ ॥ कुबेरकोसो तो वाके खजानो हो, सिंहकोसो बडो मन हौ, विष्णुको भक्त हौ, साक्षात् प्रह्लादके समान हौ और शांत जाको चित्त हौ ॥ ३ ॥ ता राजाके छः हजार स्त्री हौ वे रूपवती और कमलसे नेत्र जिनके ऐसी हीं पर वे सब वंध्या हीं ॥ ४ ॥ कौनसे पुण्यते मेरे शुभ बेटा होय हे नृप ! या चिंताकूं करत करत राजाकूं बहुत वर्ष व्यतीत हैगये ॥ ५ ॥ एक समय याके घर याज्ञवल्क्य मुनींद्र चलेआये, तिनको पूजन करिकें दंडौत कर राजा इनके सन्मुख बैठिगयौ ॥ ६ ॥ चिन्तामें व्याकुल राजाकूं देखकें सर्वज्ञ महामुनि याज्ञवल्क्य सब जानवेवारे बड़े शांत या उत्तम राजाते यह बोले ॥ ७ ॥ राजा तूँ कैसे दुर्बल हैरह्यौ है ? कौनसी चिंता तेरे चित्तमें है ? तेरे सातों अंगनमें तौ या समय कुशल दीसै है ॥ ८ ॥ तब राजा विमल बोल्यौ-हे ब्रह्मन् ! आप अपने तपोबल और दिव्य चक्षुते कहा नही जानोहौ

कुबेरइवकोशाढ्योमनस्वीमृगराडिव ॥ विष्णुभक्तःप्रशांतात्माप्रह्लादइवमूर्तिमान् ॥ ३ ॥ भार्याणांषट्सहस्राणिबभूवुस्तस्यभूपतेः ॥ रूप
वत्यःकंजनेत्रावंध्यास्ताःसमागताः ॥ ४ ॥ अपत्यंकेनपुण्येनभूयान्मेत्रशुभंनृप ॥ एवंचिन्तयतस्तस्यबहवोवत्सरागताः ॥ ५ ॥
एकदायाज्ञवल्क्यस्तुमुनीन्द्रस्तमुपागतः ॥ तंनत्वाभ्यर्च्यविधिवन्नृपस्तत्संमुखेस्थितः ॥ ६ ॥ चिंताकुलंनृपंवीक्ष्ययाज्ञवल्क्योमहामुनिः ॥
सर्वज्ञःसर्वविच्छांतःप्रत्युवाचनृपोत्तमम् ॥ ७ ॥ ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ ॥ राजन्कृशोसिकस्मात्त्वंकाचिंतातेहृदिस्थिता ॥ सप्तस्वं
गेषुकुशलंदृश्यतेसांप्रतंतव ॥ ८ ॥ ॥ विमलउवाच ॥ ॥ ब्रह्मंस्त्वंकिंनजानासितपसादिव्यचक्षुषा ॥ तथाप्यहंवदिष्यामिभवतोवा
क्यगौरवात् ॥ ९ ॥ अनपत्येनदुःखेनव्याप्तोऽहंमुनिसत्तम ॥ किंकरोमितपोदानंवदयेनभवेत्प्रजा ॥ १० ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥
इतिश्रुत्वायाज्ञवल्क्योध्यानस्तिमितलोचनः ॥ दीर्घंदध्यौमुनिश्रेष्ठोभूतंभव्यंविचिंतयन् ॥११॥ ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ अस्मिञ्जन्मनिराजे
न्द्रपुत्रोनैवचनैवच ॥ पुत्र्यस्तवभविष्यंतिकोटिशोनृपसत्तम ॥ १२॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ पुत्रंविनापूर्वऋणान्नकोपिप्रमुच्यतेभूमितलेमुनीन्द्र ॥
सदाह्यपुत्रस्यगृहंव्यथास्यात्परत्रविहामुत्रसुखंनकिंचित् ॥ १३ ॥ ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ ॥ माखेदंकुरुराजेन्द्रपुत्र्योदेयास्त्वयाखलु ॥
श्रीकृष्णायभविष्यायपरंदायादिकैःसह ॥ १४ ॥ तेनैवकर्मणात्वंवैदेवर्षिपितृणामृणात् ॥ विमुक्तोनृपशार्दूलपरंमोक्षमवाप्स्यसि ॥ १५ ॥

तौहू मैं आपके वाक्यके बड़प्पनसों कहूंहूं ॥ ९ ॥ मेरे बेटा नहीं है याते हे मुनिसत्तम ! मोकूं दुःख है सो मैं कहा करूं ऐसो तप, दान, जप, यज्ञ कछू बताऔ जाते मेरे संतान होय सो करूं ॥ १० ॥ नारदजी कहे है ऐसें याज्ञवल्क्य सुनके ध्यान करनलगे नेत्र मीचके बहुत देरतलक मुनीश्वर भूतभव्यकूं सोचनलगे, फिर राजाते बोले ॥११॥ हे राजन् ! पुत्र तौ तेरे या जन्ममें नहीं होयगो नहीं होयगो परन्तु हे नृपसत्तम ! बेटी तेरे किरोड़न होंयगी ॥ १२ ॥ तब राजा बोलौ कि, हे मुनींद्र ! बेटा विना तौ कोई या पृथ्वीपै पित्रीश्वरनके ऋणते छूटे नहीं है, अपुत्रीके घरमें तौ सदाही दुःख रहै है और परलोकमेंहू कछू सुख नही है ॥ १३ ॥ तब फिर याज्ञवल्क्य बोले-राजा तू शोच मत करै तू सब बेटीनकूं भविष्य (अगारी होनवारे) श्रीकृष्णके अर्थ बहुतसे दायज सहित दैदीजियौ ॥ १४ ॥ ताही कर्मते तूं देव, ऋषि, पितृनके ऋणते छूट जायगो और नृपशार्दूल ! याही सो

तेरी मुक्ति ह्वैजायगी ॥१५॥ नारदजी कहैहैं ऐसें याज्ञवल्क्य मुनिकौ वचन सुनके राजा बड़ौ प्रसन्न ह्वैगयौ, फिर अपने मनको संदेह महामुनि याज्ञवल्क्यते पूछनलग्यौ ॥ १६ ॥ कि, मुनिजी कौनसे कुलमें कौनसे देशमें श्रीहरि स्वयं जन्म लेंयगे, कैसो रूप होयगौ, कैसी वर्ण होयगो और कितने वर्षनमें होयगो ॥ १७ ॥ तब याज्ञवल्क्य बोले कि, महाभुज ! या द्वापरयुगके जब तेरे राज्यते एकसौ पन्द्रह वर्ष बाकी रहेंगे ॥ १८ ॥ ताही वर्षमें यदुकुलमें मथुरापुरी यदुपुरमें भादोंवदी अष्टमी बुधवारकूं रोहिणी नक्षत्र हर्षणनामके योग वव करणमें ॥ १९ ॥ अँधेरी आधीरातमें चंद्रमाके उदयभये ये वसुदेवकी स्त्री देवकीमें वसुदेवके घरमें ॥ २० ॥ साक्षात् हरि यज्ञकी अरनीमें अग्नि जैसें तैसें प्रगट होंयगे वे घनसे श्यामसुन्दर वनमालाकूं धारण करें लक्ष्मीके चिह्न सहित ॥ २१ ॥ पीताम्बर ओढ़ें, कमलसे नेत्र और चतुर्भुज होंयगे तिनकूं तूं अपनी कन्या दीजो तेरी अवही बड़ी उमर है

॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ तदातिहर्षितोराजाश्रुत्वावाक्यंमहामुनेः ॥ पुनःपप्रच्छसंदेहंयाज्ञवल्क्यंमहामुनिम् ॥ १६ ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ कस्मिन्कुलेकुत्रदेशेभविताश्रीहरिःस्वयम् ॥ कीदृग्रूपश्चकिंवर्णोवर्षैश्चकतिभिर्गतैः ॥ १७ ॥ ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ ॥ द्वापरस्ययुगस्यास्यतवराज्यान्महाभुज ॥ अवशेषेवर्षशतेतथापंचदशेनृप ॥ १८ ॥ तस्मिन्वर्षेयदुकुलेमथुरायांयदोःपुरे ॥ भाद्रेबुधेकृष्णपक्षेचात्रेर्क्षेहर्षणेवृषे ॥ १९ ॥ ववेऽष्टम्यामर्द्धरात्रेनक्षत्रेशमहोदये ॥ अंधकारावृतेकालेदेवक्यांशौरिमन्दिरे ॥ २० ॥ भविष्यतिहरिःसाक्षादरण्यामध्वरेऽग्निवत् ॥ श्रीवत्सांकोघनश्यामोवनमाल्यतिसुन्दरः ॥ २१ ॥ पीतांबरःपद्मनेत्रोभविष्यतिचतुर्भुजः ॥ तस्मैदेयात्वयाकन्याआयुस्तेऽस्तिनसंशयः ॥ २२ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमाधुर्यखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेऽयोध्यापुरवासिन्युपाख्यानंनामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवमुक्त्वागतेसाक्षाद्याज्ञवल्क्येमहामुनौ ॥ अतीवहर्षमापन्नोविमलश्चंपकापतिः ॥ १ ॥ अयोध्यापुरवासिन्यःश्रीरामस्यवराज्ञया ॥ बभूवुस्तस्यभार्यासुताःसर्वाःकन्यकाःशुभाः ॥ २ ॥ विवाहयोग्यास्तादृष्ट्वाचिन्तयंश्चंपकापतिः ॥ याज्ञवल्क्यवचःस्मृत्वादूतमाहनृपेश्वरः ॥ ३ ॥ ॥ विमलउवाच ॥ ॥ मथुरांगच्छदूतत्वंगत्वाशौरिगृहंशुभम् ॥ दर्शनीयस्त्वयापुत्रोवसुदेवस्यसुन्दरः ॥ ४ ॥ श्रीवत्सांकोघनश्यामोवनमालीचतुर्भुजः ॥ यदिस्यात्तर्हिदास्यामितस्मैसर्वाःसुकन्यकाः ॥ ५ ॥

यामें संदेह नहीं है ॥ २२ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां माधुर्यखंडे भाषाटीकायामयोध्यावासिन्युपाख्यानं नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ नारदजी कहैं हैं ऐसें कहकें महामुनि याज्ञवल्क्य जब चलेगये तब चंपकापुरीकौ पति विमलराजा बड़े हर्षकूं प्राप्त ह्वैगयौ ॥ १ ॥ अयोध्यापुरवासिनी जे स्त्री ही रामके वरते वे सवरी वा विमलनाम राजाकी स्त्रीनमें होतीभई ॥ २ ॥ विमल राजानें जब विवाहके लायक कन्या देखी तब याज्ञवल्क्यके वचनको याद करकें चंपकानगरीको पति नृप राजदूतते ये बोल्यौ ॥ ३ ॥ हे दूत ! तूं मथुरापुरीमें शुभ जो वसुदेवकौ घर तहां जायकें वहां वसुदेवके सुन्दर बेटाकूं देखियो ॥ ४ ॥ श्रीवत्सकौ चिह्न होय, घनसो श्याम सुंदर

वनमाला पहिरें जो चतुर्भुज होय तौ वाकूं मैं अपनी सबरी कन्या देऊंगो ॥ ५ ॥ नारदजी कहेहै-ऐसे राजाको वचन सुनिकै दूत मथुरामें आयो मथुरामें आयके मथुरावासी महाजननते सबरो अभिप्राय पूछतोभयो ॥ ६ ॥ ता दूतको वचन सुनिकै कंसके डरके मारे सुबुद्धी पुरुष एकांतमें जायके वा दूतते कानमें बड़े धीरेसो यह वचन बोले ॥ ७ ॥ कि, वसुदेवके जो २ बेटा भये सोई २ बहुतसे कंसने मारडारे एक कन्या बचीही सोभी स्वर्गकूं चलीगई ॥ ८ ॥ वसुदेव तौ दीन मन अपुत्र है, यहाँ मथुरामें है, पन ये बात तूं काहूते मत कहियौ क्योंकि यहाँ नगरमें कंसको डर है, ॥ ९ ॥ वसुदेवकी जो कोई संतानकी चर्चा मथुरामे करे है तिनकूं कंस दंड देयहै क्योंकि वसुदेवको जो अष्टमपुत्र है, वो कंसको शत्रु यानी मारनवारो है ॥ १० ॥ नारदजी कहेहै-जननकौ वचन सुनके वो दूत चंपापुरीकूं चल्यौगयो जायके राजाते वह अद्भुत कारण सब कह्यौ ॥ ११ ॥

॥ नारदउवाच ॥ ॥ इतिवाक्यंततःश्रुत्वादूतोसौमथुरांगतः ॥ पप्रच्छसर्वाभिप्रायंमाथुरांश्चमहाजनान् ॥ ६ ॥ तद्वाक्यंमाथुराःश्रुत्वाकंसभीताःसुबुद्धयः ॥ तंदूतंरहसिप्राहुःकर्णांतेमंदवाग्यथा ॥७॥ ॥ माथुराऊचुः ॥ ॥ वसुदेवस्ययेपुत्राःकंसेनबहवोहताः ॥ एकावशिष्टावरजाकन्यासापिदिवंगता ॥ ८ ॥ वसुदेवोस्ति चात्रैवह्यपुत्रोदीनमानसः ॥ इदंनकथनीयंहित्वयाकंसभयंपुरे ॥ ९ ॥ शौरिसंतानवार्तांयोवक्तिचेन्मथुरापुरे ॥ तंदंडयतिकंसोसौशौर्यष्टमशिशोरिपुः ॥ १० ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ जनवाक्यंततःश्रुत्वादूतोवैचम्पकापुरीम् ॥ गत्वाथकथयामासराज्ञेकारणमद्भुतम् ॥ ११ ॥ ॥ दूतउवाच ॥ ॥ मथुरायामस्तिशौरिरनपत्योऽतिदीनवत् ॥ तत्पुत्रास्तु पुराजाताःकंसेननिहताःश्रुतम् ॥ १२ ॥ एकावशिष्टकन्यापिखंगताकंसहस्ततः ॥ एवंश्रुत्वायदुपुरान्निर्गतोहंशनैःशनैः ॥ १३ ॥ चरन्वृंदावनेरम्येकालिन्दीनिकटेशुभे ॥ अकस्माल्लतिकावृन्देदृष्टःकश्चिच्छिशुर्मया ॥ १४ ॥ तल्लक्षणसमोराजन्नोगोपगणमध्यतः ॥ श्रीवत्सांकोघनश्यामोवनमाल्यतिसुन्दरः ॥ १५ ॥ द्विभुजोगोपसूनुश्चपरंत्वेतद्विलक्षणम् ॥ त्वयाचतुर्भुजश्चोक्तोवसुदेवात्मजोहरिः ॥ १६ ॥ किंकर्तव्यंवदनृपमुनिवाक्यंमृषानहि ॥ यत्रयत्रयथेच्छातेतत्रमांप्रेषयप्रभो ॥ १७ ॥

दूत बोलो कि, महाराजजी मथुरामें वसुदेव तौ रहै है परन्तु वाके तौ बेटा नहीं है अति दीनकीसी नाई रहैहै, ताकै बेटा तौ पहिलें भयेहे पर कंसने मारडारे मैं यह चर्चा सुनआयौंहूं ॥ १२ ॥ एक कन्या बची ही सोहू आकाशकूं उड़गई, ऐसें मथुरापुरीमें सुनके मै हौलें हौलें चल्योआयौ हूं ॥ १३ ॥ पन मनोहर वृन्दावनमें विचरतेने मैंने कालिंदीके निकट अकस्मात् लतानके समूहनमें एक बालक देख्यौ है ॥ १४ ॥ हे राजन् ! वाके लक्षणके समान कोई गोप नहीं है, जो घनसौ श्यामसुन्दर, श्रीवत्सको जाके चिह्न, वनमाला को पहिरें, अति सुन्दर ॥ १५ ॥ दो भुजावारो, गोपको बेटा हो पन एक यह विलक्षणताही कि, तुमनें तो चतुर्भुज वसुदेवको बेटा बतायौ हो पन वाके तो भुजा दोही ही ॥ १६ ॥ हे राजन् ! ये कहौ अब कहा करनों चाहिये क्योंकि ऋषिको वचन तो झूंठो होय नहीं सो हे प्रभो ! जहां जहां तेरी इच्छा होय तहां तहां मोकूं भेजदे ॥ १७ ॥

नारदजी कहेंहै—ऐसे चिंतमन कर रह्योही और बडो विस्मित चित्त जाको ता राजाके विचार करतेमें हस्तिनापुरते सिंधुदेशके राजानकूं जीतवेकूं भीष्मजी आये ॥ १८ ॥ तिनकों देखिके विमल राजा भीष्मजीते बोल्यो कि, महाराज याज्ञवल्क्यने यह, कहीही कि, मथुरामें आप भगवान् वसुदेवकी स्त्री देवकीमें जन्म लेंगे यामें संदेह नही है ॥ १९ ॥ सो वो पर भगवान् वसुदेवकें नहीं भये ऋषिको वचन तो झूठो है नहीं सकै कहो अब मैं इन कन्यानकूं कौनकूं देऊं ॥ २० ॥ हे भीष्म ! तुम महाभागवत हो और भूत भविष्यके जाननवारेनमें मुख्य हो बालकपनेते तुमने इंद्री जीती हैं, वीर हो, धनुर्धारी हो, वसुनमें उत्तम हो, सो आप यह कहो कि, अब मोकूं कहा कर्तव्य है ॥ २१ ॥ नारदजी कहेंहै विमल राजाको वचन सुनकें भीष्मजी वह वेश महाभागवत ज्ञानी दिव्यदृष्टि धर्मके तत्त्वकूं जाननहारे भगवान्के प्रभावकूं जाननवारे भीष्मजी राजाते यह बोले ॥ २२ ॥

॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इतिचिन्तयतस्तस्यविस्मितस्यनृपस्यच ॥ गजाह्वयात्सिन्धुदेशाज्जेतुंभीष्मःसमागतः ॥ १८ ॥ ॥ विमल उवाच ॥ ॥ याज्ञवल्क्येनपूर्वोक्तोमथुरायांहरिःस्वयम् ॥ वसुदेवस्यदेवक्यांभविष्यतिनसंशयः ॥ १९ ॥ नजातोवसुदेवस्यसकाशेव्यहरिः परः ॥ ऋषिवाक्यंमृषानस्यात्कस्मैदास्यामिकन्यकाः ॥ २० ॥ महाभागवतःसाक्षात्त्वंपरावरवित्तमः ॥ जितेन्द्रियोबाल्यभावाद्वीरोधन्वी वसूत्तमः ॥ एतद्वदमहाबुद्धेकिंकर्तव्यंमयात्रवै ॥ २१ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ विमलम्प्राहगांगेयोमहाभागवतःकविः ॥ दिव्यदृग्धर्मतत्त्वज्ञःश्रीकृष्णस्यप्रभाववित् ॥ २२ ॥ ॥ भीष्मउवाच ॥ ॥ हेराजन्गुप्तमाख्यानंवेदव्यासमुखाच्छ्रुतम् ॥ सर्वपापहरंपुण्यंशृणुहर्षविवर्द्धनम् ॥ २३ ॥ देवानांरक्षणार्थायदैत्यानांहिवधायच ॥ वसुदेवगृहेजातःपरिपूर्णतमोहरिः ॥ २४ ॥ अर्धरात्रेकंसभयान्नीत्वाशौरिश्वर्तत्वरम् ॥ गत्वाचगोकुलेपुत्रंनिधायशयनेनृप ॥ २५ ॥ यशोदानन्दयोःपुत्रींमायांनीत्वापुरंययौ ॥ ववृधेगोकुलेकृष्णोगुप्तोज्ञातोनकैर्नृभिः ॥ ॥ २६ ॥ सोऽपिवृन्दकारण्येहरिर्गोपालवेषधृक् ॥ एकादशसमास्तत्रगूढोवासंकरिष्यति ॥ दैत्यंकंसंघातयित्वाप्रकटःसभविष्यति ॥ २७ ॥ अयोध्यापुरवासिन्यःश्रीरामस्यवराच्चयाः ॥ ताःसर्वास्तवभार्यासुबभूवुःकन्यकाःशुभाः ॥ २८ ॥ गूढायदेवदेवायदेयाःकन्यास्त्वया खलु ॥ नविलम्बःक्वचित्कार्योदिहःकालवशोह्ययम् ॥ २९ ॥

हे राजन् ! एक गुप्त आख्यान है, वेदव्यासजीके मुखते मैंने सुन्यो है, सब पापनको हरनहारो है, हर्षको बढायवेवारो है, ताहि तूं सुन ॥ २३ ॥ देवतानकी रक्षाके लिये दैत्यनके मारवेकूं परिपूर्णतम भगवान् हरिनें वसुदेवके घरमें जन्म लै लीनो हो ॥ २४ ॥ वाकूं वसुदेव आधीरातकूं कंसके भयसो बालककूं लैकें नंदके गोकुलमे ॥ २५ ॥ जायके यशोदाकी सेजपै स्वायके नंद यशोदाकी कन्या मायाकूं लैकें मथुपुरीकूं चलेआये ताके पीछे वो बालक नंदके गोकुलमे हो बढ्यो ये बात काऊनें नही जानी ॥ २६ ॥ सो वो हरि ऐसे वृन्दावनमे गोपालरूप धरें ग्यारह-वर्ष व्रजमे गुप्त वास करेंगो फिर कंसदैत्यकूं मारकें प्रगट होंयगो सो वो वृंदावनमें हैं ॥ २७ ॥ सो हे राजन् ! जे अयोध्यावासिनी स्त्री हो विनि रामचन्द्रके वरते तेरी स्त्रीनमें कन्यारूपसो जन्म लीनों है ॥ २८ ॥ सो वे देवतानके देवता भगवान् गूढ वसें हैं तिनके अर्थ

तुमे अपनी कन्या देनी योग्य है, निश्चयही तूं देर मत करै क्योंकि यह देह कालके वश है ॥ २९ ॥ ऐसे कहके सर्वज्ञ भीष्मजी जब हस्तिनापुरकूं चलेगये तब या विमल राजाने श्रीकृष्णके पास अपनो दूत भेज्यो ॥ ३० ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां माधुर्यखंडे भाषाटीकायामयोध्यापुरवासिन्युपाख्यानं नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ नारदजी कहै हैं यह राजाको भेज्यौ दूत सिंधुदेशते फिर मथुरामें आयो तब वाके वृन्दावनमे विचरनेको एकदिन कालिंदीके तीरपै श्रीकृष्णको दर्शन भयो ॥ १ ॥ तब वाने हाथ जोड श्रीकृष्णकूं दंडवत करी और परिक्रमा देके हौले हौले विमल राजाकी प्रार्थना करी ॥ २ ॥ कि, आप तो स्वयं ब्रह्म परम परमेश्वर हो, ब्रह्मादिकनके ईश्वर हो, सबते परे हो, सबकूं अदृश्य हो, परिपूर्ण हो, जो पुण्यके समूह तेऊ सदा दूरि हो, सज्जननकूं दर्शन देओ हो तिनको मेरो प्रणाम है ॥ ३ ॥ गौ, ब्राह्मण, देवता, वेद, साधु, धर्म

इत्युक्त्वाथगतेभीष्मेसर्वज्ञेहस्तिनापुरम् ॥ दूतंस्वंप्रेषयामासविमलोनन्दसूनवे ॥ ३० ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांमाधुर्यखण्डेऽयोध्यापुरवासिन्युपाख्यानंनामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ अथदूतःसिन्धुदेशान्माथुरान्पुनरागतः ॥ चरन्वृन्दावनेकृष्णातीरेकृष्णंददर्शह ॥ १ ॥ कृष्णंप्रणम्यरहसिकृतांजलिपुटःशनैः ॥ प्रदक्षिणीकृत्यदूतोविमलोक्तमुवाचसः ॥ २ ॥ ॥ दूतउवाच ॥ ॥ स्वयम्परंब्रह्मपरःपरेशःपरैरदृश्यःपरिपूर्णदेवः ॥ यःपुण्यसंघैःसततंहिदूरस्तस्मैनमःसज्जनगोचराय ॥ ३ ॥ गोविप्रदेवश्रुतिसाधुधर्मरक्षार्थमद्यैवयदोःकुलेऽजः ॥ जातोसिकंसादिवधाययोसौतस्मैनमोऽनंतगुणार्णवाय॥ ४ ॥ अहोपरंभाग्यमलंव्रजौकसांधन्यंकुलंनन्दवरस्यतेपितुः ॥ धन्योव्रजोधन्यमरण्यमेतद्यत्रैवसाक्षात्प्रकटःपरोहरिः ॥ ५ ॥ यद्राधिकासुन्दरकण्ठरत्नंकस्तूरिकामोदइवप्रसिद्धः ॥ यशश्चतेनिर्मलमाशुशुक्लीकरोतिसर्वंजगतंत्रिलोकीम् ॥ ६ ॥ जानासिसर्वंजनचेत्यभावंक्षेत्रज्ञआत्माकृतवृन्दसाक्षी ॥ तथापिवक्ष्येनृपवाक्यमुक्तंपरंरहस्यंरहसिस्वधर्मम् ॥ ७ ॥ यांसिन्धुदेशेषुपुरीप्रसिद्धाश्रीचम्पकानामशुभायथैन्द्री ॥ तत्पालकोसौविमलोयथेन्द्रस्त्वत्पादपद्मेकृतचित्तवृत्तिः ॥ ८ ॥ सदाकृतंयज्ञशतंत्वदर्थंदानंतपोब्राह्मणसेवनंच ॥ तीर्थंजपंयेनसुसाधनेनतस्मैपरंदर्शनमेवदेहि ॥ ९ ॥

इनकी रक्षाके अर्थ अजन्मा तुमने यदुकुलमें कंसादिकनके वधके लीये जन्म लीनो है वा अनन्तगुणके समुद्रके अर्थ मेरो नमस्कार है ॥ ४ ॥ अहो व्रजवासीनको अत्यन्त बडो भाग्य है तुम्हारे पिता नन्दरायजीको कुल धन्य है, यह व्रज धन्य है, यह वृन्दावन धन्य है, जहां साक्षात् हरि तुम प्रगट भये हो ॥ ५ ॥ जो राधिकाके सुन्दर कण्ठके आभूषण हो, कस्तूरीकी सुगंधिकी नाईं सर्वत्र प्रसिद्ध हो, आपको ये निर्मल यश सर्वत्र वर्तमान है जा तेरे यशसो ये त्रिलोकी उज्ज्वल हे रही है ॥ ६ ॥ तुम सब जननके चित्तके भाव (अभिप्राय) को जानो हो, क्षेत्रज्ञ हो, सब जीवनके किये कर्मनके साक्षी हो तोऊ राजाने जो धर्मको वचन कह्यो है ताकूं एकांतमे सुनो ॥ ७ ॥ जो सिन्धुदेशमे चम्पापुरी नामसों प्रसिद्ध है वो इन्द्रकीसी है ताको राजा विमल वो इन्द्रके समान है ताने तुम्हारे चरण कमलमें चित्तकी वृत्ति धरी है ॥ ८ ॥ तुम्हारे अर्थ सौ यज्ञ कीने है और दान, तप,

ब्राह्मणनको सेवन, तीर्थ, जप, तप, साधन, तुमारे लिये किये हैं ताके अर्थ आप दर्शन देउ ॥ ९ ॥ ताकी कन्या हैं कमलसे जिनके नेत्र हैं वे पूर्ण जे आप ही तिने पतिकी चाहना करे हैं आपके निमित्त नेम व्रतमें स्थित हैं और तुम्हारे चरणकमलकी सेवाते निर्मल कीने हैं अंग जिननने ऐसी हैं ॥ १० ॥ सो हे व्रजदेव ! आप तिनको पाणिग्रहण करो आप तिनको अपनो उत्तम दर्शन देउ सिंधुदेशकूं चलो ये सब आपको करनोंही है सो विचार करके जो विशद होय सो करो ॥ ११ ॥ नारदजी कहें हैं दूतको ये वचन सुनिके भगवान् हरि प्रसन्न हैगये सो दूतकूं संग लेके एकही क्षणमें चंपकापुरीमें आये ॥ १२ ॥ वेदकी ध्वनि करिके आकुल जो विमल राजाको यज्ञ तामे भगवान् जो श्रीकृष्ण सो दूतको संग लेके आकाशते उतरिकें आयें ॥ १३ ॥ श्रीवत्सांक हैं घनसे श्यामसुन्दर है, वनमालाकूं धारण करें हैं, पीतांबर ओढे और कमलसे जिनके नेत्र हैं सो आप

तत्कन्यकाःपद्मविशालनेत्राःपूर्णपतिंत्वांमृगयंत्यआरात् ॥ सदात्वदर्थंनियमव्रतस्थास्त्वत्पादसेवाविमलीकृतांगाः ॥ १० ॥ गृहाणतासां व्रजदेवपाणीन्दत्त्वापरंदर्शनमद्भुतंस्वम् ॥ गच्छाशुसिन्धून्विशदीकुरुत्वंविमृश्यकर्तव्यमिदंत्वयाहि ॥ ११ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ दूतवाक्यंचतच्छ्रुत्वाप्रसन्नोभगवान्हरिः ॥ क्षणमात्रेणगतवान्सदूतश्चंपकांपुरीम् ॥ १२ ॥ विमलस्यमहायज्ञेवेदध्वनिसमाकुले ॥ सदूतःकृष्णआकाशात्सहसाऽवततारह ॥ १३ ॥ श्रीवत्सांकंघनश्यामंसुन्दरंवनमालिनम् ॥ पीतांबरंपद्मनेत्रंयज्ञवाटागतंहरिम् ॥ १४ ॥ तंदृष्ट्वासहसोत्थायविमलःप्रेमविह्वलः ॥ पपातचरणोपांतेरोमांचीसकृतांजलिः ॥ १५ ॥ संस्थाप्यपीठकेदिव्येरत्नहेमखचितपदे ॥ स्तुत्वासम्पूज्यविधिवद्राजातत्संमुखेस्थितः ॥ १६ ॥ गवाक्षेभ्यःप्रपश्यंतीःसुन्दरीर्वीक्ष्यमाधवः ॥ उवाचविमलंकृष्णोमेघगंभीरयागिरा ॥ १७ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ महामतेवरंब्रूहियत्तेमनसिवर्त्तते ॥ याज्ञवल्क्यस्यवचसाजातंमद्दर्शनंतव ॥ १८ ॥ ॥ विमलउवाच ॥ ॥ मनोमेभ्रमरीभूतं सदात्वत्पादपंकजे ॥ वासं कुर्यादेवदेवनान्येच्छामेकदाचन ॥ १९ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वाविमलोराजासर्वंकोशधनंमहत् ॥ द्विपवाजिरथैःसार्द्धचक्रआत्मनिवेदनम् ॥ २० ॥ समर्प्यविधिनासर्वाःकन्यकाहरयेनृप ॥ नमश्चकारकृष्णायविमलोभक्तिविह्वलः ॥ २१ ॥

यज्ञवाटमें आये ॥ १४ ॥ ऐसे श्रीकृष्णकूं देखिकें विमल उठके ठाडो भयो, प्रेममें विह्वल हैगयो, हाथ जोड़ चरणनमें जाय पर्यो और रोंगटा अंगमें ठाड़े हैगये ॥ १५ ॥ सुवर्णके रत्नजटित दिव्य सिंहासनपे बैठारिके विधिपूर्वक पूजन करिके स्तुति करिके फेर सन्मुख बैठिगयो ॥ १६ ॥ झरोखानमेंते देखरही ऐसी सुन्दरीनकूं देखिकें भगवान् मेघकीसी गम्भीर वाणीते विमल राजाते ये बोले ॥ १७ ॥ हे महामति ! तूँ वर मांग जो तेरी इच्छामें होय सोई, याज्ञवल्क्यके वचनते मेरो दर्शन तोकूँ भयो है ॥ १८ ॥ तब राजा विमल बोल्यो कि, मेरो मन भौंराकी तरह तुम्हारे चरणकमलमें सदाही रम्यो करे है देवदेव ! येही आपसों मैं वर मागोंहो और मेरी कछु इच्छा नहीं है ॥ १९ ॥ नारदजी कहें हैं कि, ऐसें ये विमल राजा कहिकें सब खजानो, घोड़ा, हाथी, रथ, सहित और अपनों आत्मा ये सब श्रीकृष्णके निवेदन करतोभयो ॥ २० ॥ और विधिपूर्वक

सबरी कन्या भगवान्‌को समर्पण करके भक्तिमें विह्वल भयो विमलराजा श्रीकृष्णकूं साष्टांग दंडवत करतोभयो ॥ २१ ॥ तब तो जननके मण्डलमें जय २ शब्द भयो और स्वर्गके देवता आकाशमें ठाड़े ह्वैकें पुष्पनकी वर्षा करनलगगये ॥ २२ ॥ ताही समय विमलराजा कामदेवके सम दिव्यांगद्युति ह्वैके श्रीकृष्णकी सारूप्यताकूं प्राप्त ह्वैगयो तब याको सौ सूर्यकीसी तेज झलमलाय उठ्यो, दिशानमें उजीतो ह्वैगयो ॥ २३ ॥ गरुड़पै चढ़कें सब मनुष्यके देखते देखते गरुडध्वजकूं नमस्कार करकें अपनी स्त्रीन सहित विमलराजा वैकुंठकूं चल्योगयो ॥ २४ ॥ तब श्रीकृष्ण स्वयं भगवान् राजाकूं मुक्ति दैकें ताकी सुन्दरी जे बेटी है तिने व्याहिकें व्रजमण्डलकूं आयगये ॥ २५ ॥ तहां मनोहर जो कामवन है जो दिव्य मन्दिरसों युक्त है तामें गेंदनते खेले वे स्त्री सौभाग्यवती कृष्णकी प्यारी रहती भई ॥ २६ ॥ तब जितनी भगवान्‌की मुख्य प्यारी स्त्री ही उतनेई रूप अपने धारण करिकें तिनके मनकूं राजी करते श्रीव्रजराज रासमें उन सबनके मनको रंजन करते आप राजते भये ॥ २७ ॥ रासमें जो विमल राजाकी बेटीनके

तदाजयजयारावोबभूवजनमण्डले ॥ ववृषुःपुष्पवर्षाणिदेवतागगनस्थिताः ॥ २२ ॥ तदैवकृष्णसारूप्यंप्राप्तोनंगस्फुरद्युतिः ॥ शतसूर्यप्रतीकाशोद्योतयन्मंडलंदिशाम् ॥ २३ ॥ वैनतेयंसमारुह्यनत्वाश्रीगरुडध्वजम् ॥ सभार्यःपश्यतांनृणांवैकुण्ठंविमलोययौ ॥ २४ ॥ दत्त्वामुक्तिंनृपतयेश्रीकृष्णोभगवान्स्वयम् ॥ तत्सुताःसुन्दरीर्नीत्वाव्रजमंडलमाययौ ॥ २५ ॥ तत्रकामवनेरम्येदिव्यमन्दिरसंयुते ॥ क्रीडन्त्यःकंदुकैःसर्वास्तस्थुःकृष्णप्रियाःशुभाः ॥२६॥ यावतीश्चप्रियासख्यस्तावद्रूपधरोहरिः ॥ रराजरासेव्रजराड्रंजयंस्तन्मनःशुभः ॥ २७ ॥ रासेविमलपुत्रीणामानन्दजलबिन्दुभिः ॥ च्युतैर्विमलकुण्डोऽभूत्तीर्थानांतीर्थमुत्तमम् ॥ २८ ॥ दृष्ट्वापीत्वाचतंस्नात्वापूजयित्वानृपेश्वर ॥ छित्त्वामेरुसमंपापंगोलोकंयातिमानवः ॥ २९ ॥ अयोध्यावासिनीनांतुकथांयःशृणुयान्नरः ॥ सव्रजेद्धामपरमंगोलोकंयोगिदुर्लभम् ॥ ३० ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमाधुर्यखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेऽयोध्यापुरवासिन्युपाख्यानंनामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ गोपीनांयज्ञसीतानामाख्यानंशृणुमैथिल ॥ सर्वपापहरंपुण्यंकामदंमंगलायनम् ॥ १ ॥ उशीनरोनामदेशोदक्षिणस्यांदिशिस्थितः ॥ एकदा यत्रपर्जन्योनववर्षसमादश ॥ २ ॥

आनन्दके पसीनानकी जलकी बूंद गिरी तिनते विमलकुंड नाम तीर्थनमें उत्तम तीर्थ होतोभयो ॥ २८ ॥ जो मनुष्य विमलकुंडमें स्नान करै दर्शन करै जल पीवै या वाको पूजन करै तो हे नृपेश्वर ! वो मनुष्य सुमेरुकी बराबरहू पाप होय तिन्हें काटिके गोलोककूं प्राप्त होय ॥ २९ ॥ जो नर अयोध्यावासिनी जे गोपी तिनकी कथाकूं सुने सो योगीनकूं दुर्लभ जो गोलोक धाम ताकूं प्राप्त होय ॥ ३० ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां माधुर्यखंडे भाषाटीकायां नारदबहुलाश्वसंवादे अयोध्यावासिन्युपाख्यानं नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ नारदजी कहै है हे मैथिल ! जे रामचंद्रजीने यज्ञनमें सीताजी जब पृथ्वीमें समाय गईही तब पीछे जो यज्ञ रचे तिनमें सोनेकी सीता बनाय बनायके बैठारिलीनी तिनमें सीताको अंश आयगयो हो वेहू व्रजमें गोपी भई तिनको उपाख्यान सुनिये वो पापको हरनहारो कामदाता और मंगलकर्त्ता है ॥ १ ॥ दक्षिणमें एक उशीनर नामको देश हो तामें एक

समय दश वर्षताई मेह नहीं वर्षो ॥ २ ॥ तहांके बहुतसे धनी जे गऊवारे गोप हैं ते सब अपने अपने कुटुंबसमेत गौनकूं लैके व्रजमंडलमें आयगये ॥ ३ ॥ वे पवित्र वृंदावनमें रमणीय कालिंदीके निकट नंदरायकी सहायताते हे नृप ! वे सब गोप निवास करतेभये ॥ ४ ॥ तिनके घरमें यज्ञकी सीता ही वे गोपीरूप ह्वैके जन्मी, जिनको रामके वरते दिव्य ही तो रूप भयो और दिव्यही जिनको यौवन भयो ॥ ५ ॥ हे राजन् ! वे श्रीकृष्णकूं सुंदर देखिकें मोहित ह्वैगई, तब वे कृष्णकी प्रसन्नताके अर्थ व्रत पूछिवेकूं राधाजीके पास आई ॥ ६ ॥ और बोली–हे वृषभानुसुते ! हे दिव्ये ! हे राधे ! हे कंजलोचने ! आप श्रीकृष्णकी प्रसन्नताके लिये हमें कुछ शुभ व्रत बताओ ॥ ७ ॥ देवतानहूकूं दुर्लभ जो नन्दको बेटा है सो तेरे वशीभूत है, हे राधे ! तूं जगतकूं मोहवेवारी है और सम्पूर्ण शास्त्रनकी पारगामिनी है ॥ ८ ॥ तब राधिकाजी बोली कि, भैना हो ! तुम श्रीकृष्णकी

धनवंतस्तत्रगोपाअनावृष्टिभयातुराः ॥ सकुटुम्बागोधनैश्चव्रजमण्डलमाययुः ॥ ३ ॥ पुण्येवृन्दावनेरम्येकालिन्दीनिकटेशुभे ॥ नन्दराजसहायेनवासंतेचक्रिरेनृप ॥ ४ ॥ तेषांगृहेषुसंजातायज्ञसीताश्चगोपिकाः ॥ श्रीरामस्यवराद्दिव्यादिव्ययौवनभूषिताः ॥ ५ ॥ श्रीकृष्णंसुन्दरंदृष्ट्वामोहितास्तानृपेश्वर ॥ व्रतंकृष्णप्रसादार्थंप्रष्टुंराधांसमाययुः ॥ ६ ॥ ॥ गोप्यऊचुः ॥ ॥ वृषभानुसुतेदिव्येहेराधेकंजलोचने ॥ श्रीकृष्णस्यप्रसादार्थंवदकिंचिद्व्रतंशुभम् ॥ ७ ॥ तववश्योनन्दसूनुर्देवैरपिसुदुर्गमः ॥ त्वंजगन्मोहिनीराधेसर्वशास्त्रार्थपारगा ॥ ८ ॥ ॥ ॥ श्रीराधोवाच ॥ ॥ श्रीकृष्णस्यप्रसादार्थंकुरुतैकादशीव्रतम् ॥ तेनवश्योहरिःसाक्षाद्भविष्यतिनसंशयः ॥ ९ ॥ ॥ गोप्यऊचुः ॥ ॥ संवत्सरस्यद्वादश्यनामानिवदराधिके ॥ मासेमासेव्रतंतस्याःकर्तव्यंकेनभावतः ॥ १० ॥ ॥ राधोवाच ॥ ॥ मार्गशीर्षेकृष्णपक्षेउत्पन्नाविष्णुदेहतः ॥ मुखेसुरवधार्थायतिथिरेकादशीवरा ॥ ११ ॥ मासेमासेपृथग्भूतासैवसर्वव्रतोत्तमा ॥ तस्याःषड्विंशतिर्नाम्नांवक्ष्यामिहितकाम्यया ॥ १२ ॥ उत्पत्तिश्चतथामोक्षासफलाचततःपरम् ॥ पुत्रदाषट्तिलाचैवजयाचविजयातथा ॥ १३ ॥ आमलकीततःपश्चान्नाम्नावैपापमोचनी ॥ कामदाचततःपश्चात्कथितावैवरूथिनी ॥ १४ ॥

प्रीतिके अर्थ एकादशीको व्रत करौ या व्रतते साक्षात् हरि प्रसन्न होंयगे और तुमारे वश होंयगे यामें संदेह नहीं है ॥ ९ ॥ तब गोपी बोलीं कि हे राधिके ! संवत्की वर्षरोजकी एकादशीनके नाम तुम हमें बताओ महीना महीनामें कौनसी विधिते उनको व्रत करनो चाहिये ॥ १० ॥ राधिकाजी बोलीं कि, सुनो सखी हो ! मार्गशिरके कृष्णपक्षकी एकादशी विष्णुकी देहते मुखमेंते उत्पन्न भई है असुरके वधके अर्थ याहीते ये एकादशी सब तिथिनमें उत्तमा भई है ॥ ११ ॥ वो महीना महीनामें न्यारी न्यारी है वोही सब व्रतनमें उत्तम व्रत हैं ता एकादशीके छब्बीस नाम हैं उनकूं मैं हितकी इच्छाते कहूं हूं ॥ १२ ॥ उत्पन्ना १, मोक्षा २, सफला ३, पुत्रदा ४, षट्तिला ५, जया ६, विजया ७, ॥१३॥ आमलकी ८,

(१) धन गोधनवित्तयो. इत्यमरः ।

पापमोचनी ९, कामदा १०, वरूथिनी ११, ॥ १४ ॥ मोहिनी १२, अपरा १३, निर्जला १४, योगिनी १५, देवशयनी १६, कामिनी १७, ॥ १५ ॥ पवित्रा १८, अजा १९, पद्मा २०, इंदिरा २१, पाशांकुशा २२, रमा २३, प्रबोधनी २४, ॥ १६ ॥ दो मलमासकी हैं उन दोनोंनको सर्वसंपत्प्रदा नाम है वे सर्वसंपत्तिकी देनहारी हैं, जो एकादशीनके इन छव्वीसनको नाम लेय है सोऊ वर्षकी एकादशीके व्रतनके फलकूं प्राप्त होयहै ॥ १७ ॥ हे व्रजांगना हो ! अब तुम एकादशीनको नियम सुनो दशमीकूं एकबेर भोजन करे, धरतीमें सोवे, जितेंद्री रहे ॥ १८ ॥ एकबेर जल पीवे, धुवे वस्त्र पहरे, अति निर्मल रहे, एकादशीकूं हरिकूं दंडोत करे, चारघडीके तरके उठे ॥ १९ ॥ एकादशीके व्रत करनवारेको कूआको स्नान तो अधम है, बावरीको मध्यम, तालावको उत्तम, नदीको उत्तमोत्तम है ॥ २० ॥ ऐसे क्रोध लोभकूं छोडके स्नान करे और वो दिन नीचनते

मोहिनीचापराप्रोक्तानिर्जलाकथिताततः ॥ योगिनीदेवशयनीकामिनीचततःपरम् ॥ १५ ॥ पवित्राचाप्यजापद्माइंदिराचततःपरम् ॥ पाशांकुशारमाचैवततःपश्चात्प्रबोधिनी ॥ १६ ॥ सर्वसंपत्प्रदाचैवद्वेप्रोक्तेमलमासजे ॥ एवंषड्विंशतिनाम्नामेकादश्याःपठेच्चयः ॥ १७ ॥ संवत्सरद्वादशीनांफलमाप्नोतिसोपिहि ॥ एकादश्याश्चनियमंशृणुताथव्रजांगनाः ॥ भूमिशायीदशम्यांतुचैकभुक्तोजितेन्द्रियः ॥ १८ ॥ एकवारंजलंपीत्वाधौतवस्त्रोतिनिर्मलः ॥ ब्राह्ममुहूर्तउत्थायचैकादश्यांहरिंनतः ॥ १९ ॥ अधमंकूपिकास्नानंवाप्यांस्नानंतुमध्यमम् ॥ तडागेचोत्तमंस्नानंनद्यांस्नानंततःपरम् ॥२०॥ एवंस्नात्वानरवरःक्रोधलोभविवर्जितः ॥ नलपेत्तद्दिनेनीचांस्तथापाखंडिनोनरान् ॥ २१ ॥ मिथ्यावादरतांश्चैवतथाब्राह्मणनिन्दकान् ॥ अन्यांश्चैवदुराचारानगम्यागमनेरतान् ॥ २२ ॥ परद्रव्यापहारांश्चपरदाराभिगामिनः ॥ दुर्वृत्तान्भिन्नमर्यादान्नालपेत्सव्रतीनरः ॥ २३ ॥ केशवंपूजयित्वातुनैवेद्यंतत्रकारयेत् ॥ दीपंदद्यात्तदेतत्रभक्तियुक्तेनचेतसा ॥ २४ ॥ कथांश्रुत्वाब्राह्मणेभ्योदद्यात्सदक्षिणांपुनः ॥ रात्रौजागरणंकुर्याद्गायन्कृष्णपदानिच ॥ २५ ॥ कांस्यंमांसंमसूरांश्चकोद्रवंचणकंतथा ॥ शाकंमधुपरान्नंचपुनर्भोजनमैथुने ॥ २६ ॥ विष्णुव्रतेचकर्तव्येदशम्यांदशवर्जयेत् ॥ द्यूतंक्रीडांचनिद्रांचताम्बूलंदन्तधावनम् ॥ २७ ॥ परापवादंपैशुन्यंस्तेयंहिंसांतथारतिम् ॥ क्रोधादृचंह्यनृतंवाक्यमेकादश्यांविवर्जयेत् ॥ २८ ॥

पाखंडीनते संभाषण न करे ॥ २१ ॥ झूठनते ब्राह्मणके निंदकनते अगम्यागमनीनते या दुराचारीनते औरभी जे दुराचारी हैं उनते बात न करे ॥ २२ ॥ पराई द्रव्य, पराई स्त्री इनके हरनहारे परस्त्रीगामीनते खोटी जीविका करनवारेनते भिन्नमर्यादी व्रती मनुष्य बोले नहीं ॥ २३ ॥ केशवको पूजन करके नैवेद्य धरे दीपक जोडे भोग धरे भक्तियुक्तचित्त ते ॥ २४ ॥ एकादशीमाहात्म्यकी कथा सुने ब्राह्मणकूं दक्षिणा देय रात्रिकूं जागरण करे, हरिके पदनको गान करे ॥ २५ ॥ दशमीके दिन दश काम न करे कांसेके पात्रमें भोजन १, उरद २, मसूर ३, कोदों ४, चनाहरो ५, शाग ६, सहत ७, परायो अन्न ८, दूसरीबेर भोजन ९, स्त्रीसंग १०, इन दश चीजनको त्याग करे ॥ २६ ॥ विष्णुके व्रतकों धरनहारो दशमीकूं ये दश न करे, एकादशीकूं जूआ खेलनो १, निद्रा २, पान ३, दातन ४ ॥ २७ ॥ परनिंदा ५, चुगली, ६, चोरी ७,

हिंसा ८, रति ९ क्रोध १०, झूंठ ११, एकादशीकूं ये ग्यारह बात न करे ॥ २८ ॥ कास्यपात्र १, उरद २, सहत ३, तेल, ४, मसूर ५, पिष्ठा ६, साठीचांवल ७, काम ८, क्रोध ९, झूंठ १०, परान्न ११, मैथुन १२, द्वादशीकूं बारह नेम करे ॥ २९ ॥ या विधिते एकादशीको उत्तम व्रत करे ॥ ३० ॥ तब गोपी पूछें हैं कि, एकादशीके व्रतको समयको निर्णय बताओ और याको फल कहा है और माहात्म्य कहा है ये कहो ॥ ३१ ॥ अब राधिकाजी कहें हैं जो दशमी पचपनघड़ी होय तो एकादशीकूं छोड़िके द्वादशीको व्रत करे ॥ ३२ ॥ दशमीको एकपलकौऊ वेध होय तो एकादशी छोड़ि द्वादशी व्रत करे जैसें गङ्गाजलको भरो कलसा है और जो एकहू बूंद वामें मदिराकी जायपड़े तो वाहि छोड़ि देयहे ॥ ३३ ॥ जो एकादशी दो हैजायके द्वादशी चढ़िजाय तौऊ द्वादशीके व्रतमें पिछिली करे पहली न करे ॥ ३४ ॥ हे व्रजांगनाओ ! या एका

कांस्यंमांसंचक्षौद्रंचतैलंवितथभोजनम् ॥ पिष्टिपष्टिमसूरांश्चद्वादश्यांपरिवर्जयेत् ॥ २९ ॥ अनेनविधिनाकुर्याद्द्वादशीव्रतमुत्तमम् ॥ ३० ॥
॥ ॥ गोप्यऊचुः ॥ ॥ एकादशीव्रतस्यास्यकालंवदमहामते ॥ किंफलंवदतस्यास्तुमाहात्म्यंवदतत्त्वतः ॥ ३१ ॥ ॥ श्रीराधोवाच ॥ ॥
दशमीपंचपंचाशद्धटिकाचेत्प्रदृश्यते ॥ तर्हिचैकादशीत्याज्याद्वादशींसमुपोषयेत् ॥ ३२ ॥ दशमीपलमात्रेणत्याज्याचैकादशीतिथिः ॥
मदिराबिंदुपातेनत्याज्योगंगाघटोयथा ॥ ३३ ॥ एकादशीयदावृद्धिंद्वादशीचयदागता ॥ तदापराह्युपोष्यास्यान्नपूर्वाद्वादशीव्रते ॥ ३४ ॥
एकादशीव्रतस्यास्यफलंवक्ष्येव्रजांगनाः ॥ यस्यश्रवणमात्रेणवाजपेयफलंलभेत् ॥ ३५ ॥ अष्टाशीतिसहस्राणिद्विजान्भोजयतेतुयः ॥ तत्कृतं
फलमाप्नोतिद्वादशीव्रतकृन्नरः ॥ ३६ ॥ ससागरवनोपेतांयोददातिवसुन्धराम् ॥ तत्सहस्रगुणंपुण्यमेकादश्यामहाव्रते ॥ ३७ ॥ येसंसारार्णवे
मग्नाःपापपंकसमाकुले ॥ तेषामुद्धरणार्थायद्वादशीव्रतमुत्तमम् ॥ ३८ ॥ रात्रौजागरणंकृत्वैकादशीव्रतकृन्नरः ॥ नपश्यतियमंरौद्रंयुक्तःपाप
शतैरपि ॥ ३९ ॥ पूजयेद्योहरिंभक्त्याद्वादश्यांतुलसीदलैः ॥ लिप्यतेनसपापेनपद्मपत्रमिवांभसा ॥ ४० ॥ अश्वमेधसहस्राणिराजसूयशता
निच ॥ एकादश्युपवासस्यकलांनार्हंतिषोडशीम् ॥ ४१ ॥ दशनैमातृकेपक्षेतथावैदशपैतृके ॥ प्रियायादशपक्षेतुपुरुषानुद्धरेन्नरः ॥ ४२ ॥

दशीके व्रतको फल कहूंहूं जाके श्रवणमात्रहीते वाजपेय यज्ञको फल होयहे ॥ ३५ ॥ जो कोई अट्ठासीहजार ब्राह्मण भोजन करावे वाको जो फल मिले सो एकादशी व्रत करनवारेको फल प्राप्त होयहे ॥ ३६ ॥ सातों समुद्र सहित जो या पृथ्वीको दान करे ताते हजारगुनो पुण्य एकादशीके व्रतते होयहे ॥ ३७ ॥ पाप रूपी कीच जामें ऐसे संसार रूपी समुद्रमें जे फसिरहेहे तिनके उद्धारके लिये तो एकादशीको व्रत उत्तम है ॥ ३८ ॥ जो एकादशीको व्रत करिकें जागरण करे तो कैसो भी पापी होय तोभी वो भयंकर जो यमराज है ताकों दर्शन नहीं करे है ॥ ३९ ॥ जो द्वादशीके दिन तुलसीदलते भगवान्की पूजन करे तो पाप वाकूं स्पर्श नहीं करे कमलके पत्ताकूं जल जैसे स्पर्श नहीं करे है ॥ ४० ॥ हजार अश्वमेध यज्ञ करै और सौ राजसूय यज्ञ करे तो भी एकादशीके उपवासकी सोलहवी कलाकूं भी नहीं प्राप्त होयहे ॥ ४१ ॥ जो एकादशीको व्रत

करै है सो दश पीढी तो पिताके पक्षकी और दश पीढी माताके पक्षकी दशपीढी स्त्रीके पक्षकीनकूं उद्धार करै है ॥ ४२ ॥ जैसेई कृष्णपक्षकी एकादशी तैसेई शुक्लपक्षकी दोनोनको बराबर फल है जैसे काली गौ और श्वेत गौ इन दोनोंनको दूध एकसोही होयहै ॥ ४३ ॥ हे गोपीहो ! मेरुमन्दिरके समानहू जो सौजन्मके पाप होयँ तौहू एकही एकादशी सबकूं भस्म करै है कैसे जैसे सौमनहू रुई है पर अग्निको नेकसोई किनका भस्म करिसकै है ॥ ४४ ॥ विधितें अथवा विना विधितें जो द्वादशीकूं थोडोऊसो दान सुकृत करै तो हे गोपीहो ! सुमेरुकी तुल्य होयहै ॥ ४५ ॥ एकादशीके दिन जो कोई हरिकी कथा सुने तो वाकूं सप्तद्वीपवती पृथ्वीको दान करेको फल होयहै ॥ ४६ ॥ जो मनुष्य शंखोद्धार तीर्थमे स्नान करै और गदाधरके दर्शन करै तोऊ एकादशीकी सोलवी कलाहूकूं प्राप्त नही होयहै ॥ ४७ ॥ प्रभासमें, कुरुक्षेत्रमें, केदारनाथमें, बदरिकाश्रममें,

यथाशुक्लातथाकृष्णाद्वयोश्चसदृशंफलम् ॥ धेनुःश्वेतायथाकृष्णाद्वभयोःसदृशंपयः ॥ ४३ ॥ मेरुमन्दरमात्राणिपापानिशतजन्मसु ॥ एकाचै
कादशीगोप्योदहतेतूलराशिवत् ॥ ४४ ॥ विधिवद्विधिहीनंवाद्वादश्यांदानमेवच ॥ स्वल्पंवासुकृतंगोप्योमेरुतुल्यंभवेच्चतत् ॥ ४५ ॥
एकादशीदिनेविष्णोःशृणुतेयोहरेःकथाम् ॥ सप्तद्वीपवतीदानेयत्फलंलभतेचसः ॥ ४६ ॥ शंखोद्धारेनरःस्नात्वादृष्ट्वादेवंगदाधरम् ॥ एकादश्युप
वासस्यकलांनार्हतिषोडशीम् ॥ ४७ ॥ प्रभासेचकुरुक्षेत्रेकेदारेबद्रिकाश्रमे ॥ काश्यांचशूकरक्षेत्रेग्रहणेचन्द्रसूर्ययोः ॥ ४८ ॥ संक्रांतीनांचतु
र्लक्षंदानंदत्तंचयन्नरैः ॥ एकादश्युपवासस्यकलांनार्हतिषोडशीम् ॥ ४९ ॥ नागानांचयथाशेषःपक्षिणांगरुडोयथा ॥ देवानांचयथाविष्णु
र्वर्णानांब्राह्मणोयथा ॥ ५० ॥ वृक्षाणांचयथाऽश्वत्थःपत्राणांतुलसीयथा ॥ व्रतानांचतथागोप्योवरानैकादशीतिथिः ॥ ५१ ॥ दशवर्षसहस्रा
णितपस्तप्यतियोनरः ॥ तत्तुल्यंफलमाप्नोतिद्वादशीव्रतकृन्नरः ॥ ५२ ॥ इत्थमेकादशीनांचफलमुक्तंव्रजांगनाः ॥ कुरुताशुव्रतंयूयंकिंभूयःश्रो
तुमिच्छथ ॥ ५३ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमाधुर्यखण्डेश्रीनारदबहुलाश्वसंवादेयज्ञसीतोपाख्यानएकादशीमाहात्म्यंनामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥
॥ ॥ गोप्यऊचुः ॥ ॥ वृषभानुसुतेसुभ्रुसर्वशास्त्रार्थपारगे ॥ विडंबयंतीत्वंवाचावाचंवाचस्पतेर्मुनेः ॥ १ ॥

काशीमें, सोरोंमें, सूर्यचन्द्रमाके ग्रहणमें ॥ ४८ ॥ और चारिलाख संक्रांतिनमे जो दान करै तोऊ एकादशीकी सोलवी कलाकूं प्राप्त नही होयहै ॥ ४९ ॥ नागनमें शेष जैसे पक्षीनमें गरुड, देवतानमें जैसे विष्णु, वर्णनमें जैसे ब्राह्मण ॥ ५० ॥ वृक्षनमें जैसे पीपल, पत्रनमें जैसे तुलसी तैसेंही हे गोपीहो ! व्रतनमें एकादशी श्रेष्ठ है ॥ ५१ ॥ जाते तुम एकादशीके व्रतकूं करो जो दशहजार वर्ष तपस्या करै ताकी बराबर एकादशीके व्रतको फल है ॥ ५२ ॥ हे व्रजांगनाओ ! यह मैंने एकादशीनके व्रतको फल वर्णन कर्यो याते जल्दी तुम एकादशीको व्रत करौ, अगाडी कहा सुनिवेकी इच्छा करोहो ॥ ५३ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां माधुर्यखंडे भाषाटीकायां यज्ञसीतोपाख्यान एकादशी व्रतमाहात्म्यं नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ अब गोपी बोली–हे वृषभानुसुते ! हे सुभ्रु ! हे सर्वशास्त्रार्थपारगे ! तुम अपनी वाणीसों बृहस्पति मुनिकी वाणीकीहू हाँसी

करौहौ अर्थात् कहनेंमें आपके अगारी बृहस्पतिको कहनो बराबर नहीं है सके है ॥ १ ॥ हे राधे ! एकादशीको व्रत आगें कौन कौननें कीनों है यह तुम विशेष करिके कहौ, तुम साक्षात् ज्ञानकी निधि हौ ॥ २ ॥ तब राधिकाजी बोलीं—आगे पहलेई देवतानें एकादशीको व्रत कर्यो है अष्टभये राज्यके लाभके लिये और दैत्यनके नाशके लीये ॥ ३ ॥ वैशंतराजानें पहले अपने पिताके यमलोकसों उद्धारके लिये ये एकादशीको व्रत कर्यो है क्यों कि वाको पिता अपने कर्मनसो यम लोकमें गयो हो ॥ ४ ॥ और जातिके लोगननें जाकों त्यागिदीनों ऐसे लुंपकनेंहू अकस्मात् एकादशीको व्रत कियोहो जा व्रत करिवे वा लुंपककूं राज्य मिल्यो हो ॥ ५ ॥ ऐसे ही भद्रावतीपुरीमें केतुमान् राजानें एकादशीको व्रत कर्यो हो तब सन्तनके वाक्यते पुत्रहीन राजा केतुमानकूं पुत्र प्राप्त भयो हो ॥ ६ ॥ ब्राह्मणीनकूं देवतानकी स्त्रीननें

एकादशीव्रतंराधेकेनकेनपुराकृतम् ॥ तद्ब्रूहिनोविशेषेणत्वंसाक्षाज्ज्ञानशेवधिः[1] ॥ २ ॥ ॥ श्रीराधोवाच ॥ ॥ आदौदेवैःकृतंगोप्योवरमेकादशीव्रतम् ॥ भ्रष्टराज्यस्यलाभार्थंदैत्यानांनाशनायच ॥ ३ ॥ वैशंतेनपुराराज्ञाकृतमेकादशीव्रतम् ॥ स्वपितुस्तारणार्थाययमलोकगतस्यच ॥ ४ ॥ अकस्माल्लुंपकेनापिज्ञातित्यक्तेनपापिना ॥ एकादशीकृतायेनराज्यंलेभेसलुंपकः ॥ ५ ॥ भद्रावत्यांकेतुमताकृतमेकादशीव्रतम् ॥ पुत्रहीनेनसद्वाक्यात्पुत्रंलेभेसमानवः ॥ ६ ॥ ब्राह्मण्यैदेवपत्नीभिर्दत्तमेकादशीव्रतम् ॥ तेनलेभेस्वर्गसौख्यंधनधान्यंचमानुषी ॥ ७ ॥ पुष्पदंतीमाल्यवंतौशक्रशापात्पिशाचताम् ॥ प्राप्तौकृतंव्रतंताभ्यांपुनर्गन्धर्वतांगतौ ॥ ८ ॥ पुराश्रीरामचन्द्रेणकृतमेकादशीव्रतम् ॥ समुद्रेसेतुबंधार्थंरावणस्यवधायच ॥ ९ ॥ लयांतेचसमुत्पन्नधात्रीवृक्षतलेसुराः ॥ एकादशीव्रतंचक्रुःसर्वकल्याणहेतवे ॥ १० ॥ व्रतंचकारमेधावीह्यादश्याः पितृवाक्यतः ॥ अप्सरःस्पर्शदोषेणमुक्तोभून्निर्मलद्युतिः ॥ ११ ॥ गंधर्वोललितःपत्न्यागतःशापात्सरक्षताम् ॥ एकादशीव्रतेनापिपुनर्गंधर्वतांगतः ॥ १२ ॥ एकादशीव्रतेनापिमांधातास्वर्गतिंगतः ॥ सगरश्चककुत्स्थश्चमुचकुन्दोमहामतिः ॥ १३ ॥

एकादशी व्रत दीनों है ताते वा मानुषीकौं स्वर्गकौ सुख और धनधान्य मिल्यौ हो ॥ ७ ॥ और माल्यवान् गन्धर्व पुष्पदन्ती अप्सरा दोनों इन्द्रके शापते पिशाच हैगये हैं तिनकौ एकादशीके व्रतते अप्सरापन गंधर्वपनो प्राप्त हैगयो ॥ ८ ॥ और पहले रामचन्द्रनें समुद्रके सेतु बांधवेके लिये और रावणके मारवेके लिये एकादशीकौ व्रत कर्यौ हौ ॥ ९ ॥ और प्रलयके अन्तमें उत्पन्नभयौ जो धात्रीकौ वृक्ष ताके नीचे बैठ देवतानें कल्याणके लीये एकादशीकौ व्रत कर्यौ हौ ॥ १० ॥ ऐसेही पिताके वचनते मेधावी ऋषिने एकादशी करी तब वो अप्सराके स्पर्शके दोषते छूटगयो और निर्मल द्युतिमान् हैगयौ हौ ॥ ११ ॥ और ललित नामको गंधर्व शापसों स्त्री सहित राक्षस हैगयौ हौ सो एकादशीके व्रतके प्रभावते फिरहू गंधर्वताकूं प्राप्त हैगयो ॥ १२ ॥ और एकादशीहीके व्रतसों मांधाता राजाहू स्वर्गकूं गयौ और सगर, ककुत्स्थ महामति

1 निधिर्नो शेवधिर्भेदा इत्यमरः ।

मुचकुंद, येहू स्वर्गकूं गये ॥ १३ ॥ तैसेही धुंधुमारते आदि लैकें बहुतसे राजा स्वर्गकूं गये और एकादशीके प्रभावते महादेवहू ब्रह्मकपालते छूटे ॥ १४ ॥ धृष्टबुद्धि वैश्यको बेटा महादुष्ट जातकेनने त्यागदीनों एकादशीको व्रत करके वैकुंठकूं चल्योगयौ ॥ १५ ॥ राजा रुक्मांगदनेहू एकादशीको व्रतकर्यो हो सो वो या लोकके सुखकूं भोगि अपने पुरसमेत वैकुंठकूं चल्योगयौ ॥ १६ ॥ अंबरीष राजानेहू एकादशीको व्रत कीनों हो जाकूं दुर्वासाकी शापरूप कृत्याको करतब न लग्यो जो ब्राह्मणको शाप आजतकहो नष्ट नहीं भयो ॥ १७ ॥ हेममाली यक्ष कुबेरके शापते कोढ़ी हैगयो हो सो एकादसीके व्रतको करके चन्द्रमासो हैगयो ॥ १८ ॥ महीजित राजानेहू एकादशीको व्रत कीनों सो सुंदर पुत्रकूं पायकें वैकुंठकूं चल्योगयौ ॥ १९ ॥ और हरिश्चंद्र राजानेंहू कीनो ताकूं मही मिली राज्य मिल्यौ और अन्तमें वो वैकुंठपुरकूं प्राप्त भयौ ॥ २० ॥ पहले सत

धुंधुमारादयश्चान्येराजानोबहवस्तथा ॥ ब्रह्मकपालनिर्मुक्तोबभूवभगवान्भवः ॥ १४ ॥ धृष्टबुद्धिर्वैश्यपुत्रोज्ञातित्यक्तोमहाखलः ॥ एकादशीव्रतंकृत्वावैकुण्ठंसंजगामह ॥ १५ ॥ राज्ञारुक्मांगदेनापिकृतमेकादशीव्रतम् ॥ तेनभूमण्डलंभुक्त्वावैकुंठंसपुरोययौ ॥ १६ ॥ अंबरीषेणराज्ञापिकृतमेकादशीव्रतम् ॥ नास्पृशद्ब्रह्मशापोपियोनप्रतिहतःक्वचित् ॥ १७ ॥ हेममालीनामयक्षःकुष्ठीधनदशापतः ॥ एकादशीव्रतंकृत्वाचन्द्रतुल्योबभूवह ॥ १८ ॥ महीजितानृपेणापिकृतमेकादशीव्रतम् ॥ तेनपुत्रंशुभंलब्ध्वावैकुंठंसजगामह ॥१९॥ हरिश्चन्द्रेणराज्ञापिकृतमेकादशीव्रतम् ॥ तेनलब्ध्वामहीराज्यंवैकुण्ठंसपुरोययौ ॥ २० ॥ श्रीशोभनोनामपुराकृतेयुगेजामातृकोभून्मुचकुन्दभूभृतः ॥ एकादशींयःसमुपोष्यभारतेप्राप्तःसदेवैःकिलमंदराचले ॥ २१ ॥ अद्यापिराज्यंकुरुतेकुबेरवद्वाङ्ग्यायुतोसौकिलचन्द्रभागया ॥ एकादशींसर्वतिथीश्वरींपरांजानीथगोप्योनहितत्समान्या ॥ २२ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इतिराधामुखाच्छ्रुत्वायज्ञसीताश्चगोपिकाः ॥ एकादशीव्रतंचक्रुर्विधिवत्कृष्णलालसाः ॥ २३ ॥ एकादशीदिनेनापिप्रसन्नःश्रीहरिःस्वयम् ॥ मार्गशीर्षपूर्णिमायांरासंताभिश्चकारह ॥ २४ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमाधुर्यखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेयज्ञसीतोपाख्यानएकादशीमाहात्म्यंनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ पुलिंदकानांगोपीनांकरिष्येवर्णनंप्लुतः ॥ सर्वपापहरंपुण्यमद्भुतंभक्तिवर्द्धनम् ॥ १ ॥

युगमें मुचकुंदको जमाई शोभन नामको हो वो एकादशीके व्रतकों या भारतखंडमें उपवास करके वाके प्रभावते देवतान सहित मंदराचलकूं प्राप्त भयो ॥ २१ ॥ सो शोभन चन्द्रभागा स्त्री करिके सहित अबतलक मंदराचलपे कुबेरकी तरह राज्य करैहै, सो एकादशी सब तिथिनकी ईश्वरी है, हे गोपीहो ! याकी बराबर कोई तिथि नही है ऐसे तुम जानो ॥ २२ ॥ नारदजी कैहहै ऐसे राधाजीके मुखते यज्ञसीता गोपी सुनके विधिपूर्वक एकादशीको व्रत करतीभई श्रीकृष्णकी है लालसा जिनकें ॥ २३ ॥ एकादशीके दिनते भगवान् आपही प्रसन्न हैके मार्गशीरकी पूर्णमासीकूं तिनके संग रास करतेभये ॥ २४ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां माधुर्यखंडे भाषाटीकायां यज्ञसीतोपाख्यान एकादशीमाहात्म्यं नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ नारदजी कैहहै अब महांसो अगारी पुलिदजा गोपीनको वर्णन करूंगो, हे राजन ! ताहि तूं सुन जो सब पापनको हरनवारो अद्भुत पुण्यरूप और भक्तिको

बडामनवारो है ॥ १ ॥ कितने विंध्याचलवासी पुलिंद बड़े उद्भट हैं ये राजाके धनकूं लूट्यो करते हैं पन गरीबनकूं नहीं सतावें हैं ॥ २ ॥ तब विन्ध्यदेशको बलवान् राजा उनपै कोप करके दो अक्षौहिणी फौज लैके उनके ऊपर चढिआयो वा बलीने वे पुलिंद सब रोकलीने ॥ ३ ॥ तब वे पुलिंदहू वा राजाके संग खड्ग, भाला, कुंत, त्रिशूल, फरसा, बरछी, पोलादी, भुशुंडी, तीरनते कई दिनतलक बड़ो युद्ध करतेभये ॥४॥ तब उन भीलनने यदुनके राजा कंसराजाकूं चिट्ठी भेजी कंसके भेजो बली जो प्रलंबासुर हो सो आयो वो कैसो हो कि ॥ ५ ॥ आठ कोस ऊंचो कालीघटाकेसो जाको अंग हो, किरीट कुंडल पहिरें सर्पनके हार धारणकरें ॥ ६ ॥ पावनमें सोनेके सांकड़ा गदा हाथमें लीये कालसो जीभकूं लफलफावत, घोररूप पेड़नकूं पर्वतनकूं उखाड़त आवै है ॥ ७ ॥ अपने वेगते धरतीकूं कंपावत दुष्ट मद जाकूं सो चल्यो आवैहै, ताकूं देख राजा धर्षित हैगयो ॥ ८ ॥

पुलिंदाउद्भटाःकेचिद्विंध्याद्रिवनवासिनः ॥ विलुंपंतोराजवसुदीनानांनकदाचन ॥२॥ कुपितस्तेषुबलवान्विन्ध्यदेशाधिपोबली ॥ अक्षौहिणी
भ्यांतान्सर्वान्पुलिंदान्सरुरोधह ॥ ३ ॥ युयुधुस्तेपिखड्गैश्चकुन्तैःशूलैःपरश्वधैः ॥ शक्त्यृष्टिभिर्भुशुंडीभिःशरैःकतिदिनानि च ॥ ४ ॥ पत्रंते
प्रेषयामासुःकंसायायदुभूभृते ॥ कंसप्रणोदितोदैत्यःप्रलंबोबलवांस्तदा ॥ ५ ॥ योजनद्वयमुच्चांगंकालमेघसमद्युतिम् ॥ किरीटकुंडलधरंसर्पहा
रविभूषितम् ॥ ६ ॥ पादयोःशृंखलायुक्तंगदापाणिंकृतांतवत् ॥ ललज्जिह्वंघोररूपंपातयन्तंगिरीन्द्रुमान् ॥ ७ ॥ कंपयंतंभुवंवेगात्प्रलंबंयुद्धदु
र्मदम् ॥ दृष्ट्वाप्रधर्षितोराजाससैन्योरणमंडलम् ॥ ८ ॥ त्यक्त्वादुद्रावसहसासिंहंवीक्ष्यगजोयथा ॥ प्रलंबस्तान्समानीयमथुरामाययौपुनः ॥
॥ ९ ॥ पुलिन्दास्तेपिकंसस्यभृत्यत्वंसमुपागताः ॥ सकुटुंबाः कामगिरौवासंचक्रुर्नृपेश्वर ॥ १० ॥ तेषांगृहेषुसंजाताःश्रीरामस्यवरात्परात् ॥
पुलिंद्यःकन्यकादिव्यारूपिण्यःश्रीरिवार्चिताः ॥ ११ ॥ तद्दर्शनस्मररुजःपुलिंद्यःप्रेमविह्वलाः ॥ श्रीमत्पादरजोधृत्वाध्यायंत्यस्तमहर्निशम्
॥ १२ ॥ ताश्चापिरासेसंप्राप्ताःश्रीकृष्णंपरमेश्वरम् ॥ परिपूर्णतमंसाक्षाद्गोलोकाधिपतिंप्रभुम् ॥ १३ ॥ श्रीकृष्णचरणांभोजरजोदेवैःसुदुर्ल
भम् ॥ अहोभाग्यंपुलिंदीनांतासांप्राप्तंविशेषतः ॥ १४ ॥ यःपारमेष्ठ्यमखिलंनमहेन्द्रधिष्ण्यंनोसार्वभौममनिशंनरसाधिपत्यम् ॥ नोयोग
सिद्धिमभितोनपुनर्भवंवावांछत्यलंपरमपादरजःसुभक्तः ॥ १५ ॥

तब ये राजा सेनासहित रणकूं छोड़के भाजगयो सिंहकूं देखके हाथी जैसें भाजै है तब ये प्रलंबासुर उन पुलिंदनकूं संग लैके मथुरामें आयो ॥ ९ ॥ वे पुलिंद मथुरामें आयके सकुटुंब कंसके चाकर हैगये और हे नृपेश्वर ! कामवनमें वास करतेभये ॥ १० ॥ तिनके घरमें पर श्रीरामके वरते वे पुलिंदी उनके कन्या आयके भई तिन पुलिंदीनके दिव्य रूप लक्ष्मीसी सुन्दर भई ॥ ११ ॥ तिन पुलिंदीनकूं श्रीकृष्णके दर्शनते कामदेवको रोग उठ्यो और वे प्रेममें विह्वल हैगई, याके चरणकमलकी रज धारण करती रात दिन ध्यान करन लगी ॥ १२ ॥ तेऊ रासमें परिपूर्णतम साक्षात् गोलोकके पति श्रीकृष्णकूं प्राप्तभई ॥ १३ ॥ श्रीकृष्णके चरणकमलकी रज देवतानकूंहू दुर्लभ है अहोभाग्य पुलिंदीनको है तिनकूं विशेष करके वह रज प्राप्त भई ॥ १४ ॥ जे भगवान्की चरणरजकूं प्राप्त हैगये ऐसे जे भक्त हैं वे कबहू काहूकी इच्छा नहीं करैहै न चक्रवर्ती राज्य न स्वर्गको राज्य

न रसातलको राज्य न ब्रह्माकी पदवी न योगकी अणिमादिक सिद्धि न मुक्तिकी चाहना करेहैं ॥ १५ ॥ जे निष्किञ्चन सुकृत अपने कीये कर्म फलसों वैराग्यवारे है वे वा पदको सेवन करेहैं जा पदको हरिजन महात्मा मुनि हरिपद रजके सेवाके करनवारे भक्त सेवन करेहैं वाहीको निरपेक्ष सुख कहेहैं जे और है वे नैरपेक्ष्यको सुख नहीं बतावेहै ॥ १६ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां माधुर्यखंडे भाषाटीकायां पुलिन्द्युपाख्यानं नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ नारदजी कहेहैं औरहू गोपीनको जो उपाख्यान है ताहि हू सुन जो सब पापनको हरनहारो और हरिकी भक्तिको बढावनहारो है ॥ १ ॥ नीतिके वेत्ता, मार्गके दाता, गौरवर्ण, सूर्यके तुल्य दिव्य सवारी ये तो जिनके गुण अब नाम कहेहैं नीतिवित् १, मार्गद २, शुक्ल ३, पतग ४, दिव्यवाहन ५, गोपेष्ट ६, ये छः वृषभानु व्रजमें भये ॥ २॥ तिनके घरनमें लक्ष्मीपतिके वरतेई जे पुत्रीभई वे कोई रमा वैकुंठवासिनी लक्ष्मीकी सखी समुद्रते जिनको जन्म

निष्किंचनाःस्वकृतकर्मफलैर्विरागायत्तत्पदंहरिजनामुनयोमहांतः ॥ भक्ताजुषंतिहरिपादरजःप्रसक्ताअन्येवदंतिनसुखंकिलनैरपेक्ष्यम् ॥ १६ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमाधुर्यखंडेनारदबहुलाश्वसंवादेपुलिंद्युपाख्यानंनामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ अन्यासांचैवगोपीनांवर्णनंशृणुमैथिल ॥ सर्वपापहरंपुण्यंहरिभक्तिविवर्द्धनम् ॥ १ ॥ नीतिविन्मार्गदःशुक्लःपतंगोदिव्यवाहनः ॥ गोपेष्टश्च व्रजेराजञ्जाताःषड्वृषभानवः ॥ २ ॥ तेषांगृहेषुसंजातालक्ष्मीपतिवरात्प्रजाः ॥ रमावैकुंठवासिन्यःश्रीसख्योपिसमुद्रजाः ॥ ३ ॥ ऊर्ध्ववैकुंठवासिन्यस्तदाजनपदाश्रिताः ॥ श्रीलोकाचलवासिन्यःश्रीसख्योपिसमुद्रजाः ॥ ४ ॥ चिन्तयन्त्यःसदाश्रीमद्गोविन्दचरणांबुजम् ॥ श्रीकृष्णस्यप्रसादार्थंताभिर्माघव्रतंकृतम् ॥ ५ ॥ माघस्यशुक्लपंचम्यांवसन्तादौहरिःस्वयम् ॥ तासांप्रेमपरीक्षार्थंकृष्णोवैतद्गृहान्गतः ॥ ६ ॥ व्याघ्रचर्मांबरंबिभ्रज्जटामुकुटमंडितः ॥ विभूतिधूसरोवेणुंवादयन्मोहयञ्जगत् ॥ ७ ॥ तासांवीथीषुसंप्राप्तंवीक्ष्यगोप्योपिसर्वतः ॥ आययुर्दर्शनंकर्तुंमोहिताःप्रेमविह्वलाः ॥ ८ ॥ अतीवसुंदरंदृष्ट्वायोगिनंगोपकन्यकाः ॥ ऊचुःपरस्परंसर्वाःप्रेमानन्दसमाकुलाः ॥ ९ ॥ ॥ गोप्य ऊचुः ॥ ॥ कोयंशिशुर्नंदसुताकृतिर्वाकस्यापिपुत्रोधनिनोनृपस्य ॥ नारीकुवाग्बाणविभिन्नमर्माजातोविरक्तोगतकृत्यकर्मा ॥ १० ॥

॥ ३ ॥ और ऊर्ध्व वैकुंठवासिनी और हमी देशवासिनी लोकालोकाचलवासिनी सबभई ॥ ४ ॥ ये सदाही गोविंदके चरणकमलको चिन्तमन करेही, श्रीकृष्णकी प्रसन्नताके अर्थ तिनोंनेहू सबननें माह महिनाको व्रत कन्या है ॥ ५ ॥ माघके शुक्लपक्षकी पंचमीके दिन वसंतऋतुकी आदिमें उनके प्रेमकी परीक्षाके अर्थ आप श्रीकृष्ण उनके घरनमें योगीको रूप धरकें गये है ॥ ६ ॥ भस्म रमायके बाघम्बर ओढके जटाको मुकुट बांधिके वेणु बजावत जगतकूं मोहित करते गये ॥ ७ ॥ तिनकी गलीनमें प्राप्त भये वा जोगीको गोपी देखकें सब बगलते दर्शन करवेकूं आई प्रेममें मोहीभई विह्वल हैरही हैं ॥ ८ ॥ और गोपकन्याहू अतिसुन्दर वा योगीकूं देखके प्रेमके आनन्दमें व्याकुल हैरही है सो आपसमें यह बोली ॥ ९ ॥ यह बालक कौन है यह तो नन्दके बेटाको सदृश है, काहू बड़े धनाढ्यको या राजाको बेटा है काहू खोटी स्त्रीके कुवाक्यरूप बाणको मारयो विरक्त हैगयो है, सब कृत्यकर्म छोड़दीये है ॥ १० ॥

अतिही मनोहर है, कैसो सुकुमार देह है, कामदेवसो सुन्दर है, विश्वकूं मोहेंइ डारे है, हाय! याके विना याकी भैया कैसें जीवत होयगी, याको पिता याकी स्त्री याकी बहन याके विना कैसें जीवत होयगी ॥ ११ ॥ ऐसें चारों बगलते झुंडकेझुंड आय गये, ब्रजकी स्त्री अचंभेमें आयरही, प्रेममें विह्वलभई वे सब वा योगीतें पूछनलगी ॥ १२ ॥ हे योगीजी ! तुम कौन हौ ? तुम्हारौ कहा नाम है ? तुम्हारो कहां स्थान है ? कहा तुम्हारी जीविका है ? हे मुनि ! तुमको सिद्धि कहाहै हे कहनवारेनमें श्रेष्ठ ! हमते कहौ ॥ १३ ॥ तब सिद्ध बोले हम योगेश्वर हैं, हमारो निवास सदा मानसरोवरमें है, स्वयं प्रकाश हमारो नाम है, अपने पराक्रमसों अन्नको सदाही नहीं खायँ हैं ॥ १४ ॥ हे व्रजांगनाओ ! हम अपने स्वार्थमें परमहंस है, हम दिव्य दर्शी है, भूत भविष्यत वर्त्तमानकूं जानें है ॥ १५ ॥ मन्त्रविद्याहू हम जानें है, मारण, द्वेषण, उच्चाटन, मोहन, वशीकरण, स्तंभन ये सब

अतीवरम्यःसुकुमारदेहोमनोजवद्विश्वमनोहरोयम् ॥ अहोकथंजीवतिचास्यमातापिताचभार्याभगिनीविनेनम् ॥ ११ ॥ एवंताःसर्वतोयूथीभूत्वासर्वाव्रजांगनाः ॥ पप्रच्छुस्तंयोगिवरंविस्मिताःप्रेमविह्वलाः ॥ १२ ॥ ॥ गोप्यऊचुः ॥ ॥ कस्त्वंयोगिन्नामकिंतेकुत्रवासस्तुतेमुने ॥ कावृत्तिस्तवकासिद्धिर्वदनोवदतांवर ॥ ॥ १३ ॥ ॥ सिद्धउवाच ॥ ॥ योगेश्वरोहंमेवासःसदामानसरोवरे ॥ नाम्नास्वयंप्रकाशोऽहंनिरन्नःस्वबलात्सदा ॥ १४ ॥ स्वार्थेपरमहंसानांयाम्यहंहेव्रजांगनाः ॥ भूतंभव्यंवर्तमानंवेद्म्यहंदिव्यदर्शनः ॥ १५ ॥ उच्चाटनंमारणंचमोहनंस्तंभनंतथा ॥ जानामिमंत्रविद्याभिर्वशीकरणमेवच ॥ १६ ॥ ॥ गोप्यऊचुः ॥ ॥ यदिजानासियोगिंस्त्वंवार्ताकालत्रयोद्भवाम् ॥ किंवर्ततेनोमनसिवदतर्हिमहामते ॥ १७ ॥ ॥ सिद्धउवाच ॥ ॥ भवतीनांचकर्णांतेकथनीयमिदंवचः ॥ युष्मदाज्ञयावावक्ष्येसर्वेषांशृण्वतामिह ॥ १८ ॥ ॥ गोप्यऊचुः ॥ ॥ सत्यंयोगेश्वरोसित्वंत्रिकालज्ञोनसंशयः ॥ वशीकरणमंत्रेणसद्यःपठनमात्रतः ॥ १९ ॥ यदिसोत्रैवचायातिचिंतितोयोस्तिवैमुने ॥ तदामन्यामहेत्वांवैमंत्रिणांप्रवरंपरम् ॥ २० ॥ ॥ सिद्धउवाच ॥ ॥ दुर्लभोदुर्घटोभावोयुष्माभिर्गदितःस्त्रियः ॥ तथाप्यहंकरिष्यामिवाक्यंनचलतेसताम् ॥ २१ ॥ निमीलयतनेत्राणिमाशोचंकुरुतस्त्रियः ॥ भविष्यतिनसंदेहोयुष्माकंकार्यमेवच ॥ २२ ॥

जानें है ॥ १६ ॥ तब गोपी बोली हे योगिन् ! जो तुम सब विद्याकूं जानोंहौ और त्रिकालज्ञ हौ तो हे महामते ! बताओ हमारे मनमें कहा है ॥ १७ ॥ तब सिद्धजी बोले कि, ये बात तो तुम्हारे कानमें कहिवे लायक है और जो तुम्हारी मरजी होयतो सबके सुनत सुनत कहदेऊं ॥ १८ ॥ तब गोपी बोली तुम साँचेहू योगेश्वर हो और निःसंदेह तुम त्रिकालज्ञ हो पन साँचो मन्त्रशास्त्री हम तो तुमें तब जानें जब तुम्हारे वशीकरण मन्त्रके पढ़वेईते ॥ १९ ॥ जाकूं हम चितमन करें सोई यहां तत्कालही आयजाय तभी हम हे मुनिजी ! तुमकूं मंत्रशास्त्रीनमें श्रेष्ठ जानें ॥ २० ॥ तब सिद्धजी बोले हे स्त्रियौ ! यह तो तुमनें बड़ी दुर्लभ बड़ी दुर्घट बात कही है तौहू मैं तुमकूं करदिखाऊंगो क्योंकि सतपुरुषनकौ बचन झूंठौ नहीं परै है ॥ २१ ॥ हे स्त्रियौ ! अब तुम आंख मीचलेउ सोच कछू मत करौ तुम्हारौ काम

निःसंदेह ह्वैजायगो यामैं कछू विलम्ब नही है ॥ २२ ॥ नारदजी कहैं है कि, बहुत ठीक ऐसें कहिकै जो गोपीनने आंख मीची सोई भगवान् जोगीके रूपकूं छोडिकै जल्दीही नंदनंदन ह्वैगये ॥ २३ ॥ जो नेत्रनको खोलके गोपी देखें सोई आनन्दपूर्वक नन्दनन्दनकूं देखत भई ताके प्रभावकूं जानिकें विस्मित ह्वैगई और अति हर्षित है मोहकूं प्राप्त ह्वैगई ॥ २४ ॥ तब माघमासमें महारासके विषय वा पवित्र वृंदावनमें तिनके संग हरि विहार करतेभये, अप्सरानते इन्द्र जैसे विहार करै हैं ॥ २५ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां माधुर्यखंडे भाषाटीकायां रमावैकुंठश्वेतद्वीपोर्ध्ववैकुंठाजितपदश्रीलोकाचलवासिनीनामुपाख्यानं नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ नारदजी कहैं हैं यह मैंने गोपीनको शुभ चरित्र तेरे आगे कह्यो अब हे मैथिल ! औरहू गोपीनके चरित्र हैं तिनै मै तेरे अगारी कहहूं सो तू सुन ॥ १ ॥ वीतिहोत्र १, अग्निभुक् २, सांबु ३, श्रीकर ४,

॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ तथेतिमीलिताक्षीषुगोपीषुभगवान्हरिः ॥ विहायतद्योगिरूपंबभौश्रीनन्दनन्दनः ॥ २३ ॥ नेत्राण्युन्मील्यद दृशुःसानन्दंनन्दनन्दनम् ॥ विस्मितास्तत्प्रभावज्ञाहर्षितामोहमागताः ॥ २४ ॥ माघमासेमहारासेपुण्येवृन्दावनेवने ॥ ताभिःसार्द्धंहरीरे मेसुरीभिःसुराडिव ॥ २५ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमाधुर्यखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेरमावैकुण्ठश्वेतद्वीपोर्ध्ववैकुंठाजितपदश्रीलोकाचल वासिनीश्रीसखीनामुपाख्यानंनामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इदंमयातेकथितंगोपीनांचरितंशुभम् ॥ अन्या सांचैवगोपीनांवर्णनंशृणुमैथिल ॥ १ ॥ वीतिहोत्राग्निभुक्सांबुःश्रीकरोगोपतिःश्रुतः ॥ व्रजेशःपावनःशांतउपनन्दाव्रजेभवाः ॥ २ ॥ धनवंतोरूपवंतः पुत्रवंतोबहुश्रुताः ॥ शीलादिगुणसंपन्नाःसर्वेदानपरायणाः ॥ ३ ॥ तेषांगृहेषुसंजाताःकन्यकादेववाक्यतः ॥ काश्चिद्दिव्या अदिव्याश्चतथात्रिगुणवृत्तयः ॥ ४ ॥ भूमिगोप्यश्चसंजाताःपुण्यैर्नानाविधैःकृतैः ॥ ताराधिकासहचर्यःसख्योऽभूवन्विदेहराट् ॥ ५ ॥ एकदामानिनींराधांताःसर्वाव्रजगोपिकाः ॥ ऊचुर्वीक्ष्यहरिंप्राप्तंहोलिकायामहोत्सवे ॥ ६ ॥ ॥ गोप्यऊचुः ॥ ॥ रंभोरुचन्द्रवदनेमधु मानिनीशेराधेवचःसुललितंललनेशृणुत्वम् ॥ श्रीहोलिकोत्सवविहारमलंविधातुमायातितेपुरवनेव्रजभूषणोयम् ॥ ७ ॥ श्रीयौवनोन्मदविघू र्णितलोचनोसौनीलालकालिकलितांसकपोलगोलः ॥ सत्पीतकंचुकघनांतमशेषमारादाचालयन्ध्वनिमतास्वपदारुणेन ॥ ८ ॥

गोपति ५, श्रुत ६, व्रजेश ७, पवन ८, शांत ९ ये नौ उपनन्द व्रजमें भये है ॥ २ ॥ ये सब बडे धनवारे, रूपवारे, पुत्रवारे, बहुश्रुत, शीलादिगुणसम्पन्न और सबही दानी भये ॥ ३ ॥ तिनके घरनमे देवतानके वचनते जे बेटी भई वे सब कोई दिव्या हैं, कोई अदिव्या हैं और कोई त्रिगुणवृत्तिकी भईहैं ॥ ४ ॥ ये भूमिकी गोपी भई हैं, वे अनेकन किये पुण्यनके प्रभावतें, हे विदेह भई है जे सब राधिकाकी सहेली होतीभई ॥ ५ ॥ एक समय राधिकाजी मानिनी भई तब होलीके उत्सवमें भगवानको आये देखके वे सबरी व्रजकी स्त्री राधिकाजीते बोली ॥ ६ ॥ कि, हे रंभोरु ! हे चन्द्रवदने ! हे व्रजसुन्दरीशे ! हे राधे ! हे ललने ! हमारे सुन्दर मनोहर वचन तुम सुनौ कि, होलीके उत्सवको विहार करिवेकूं ये व्रजके भूषण हरि आपके नगरमें आये है ॥ ७ ॥ शोभायमान यौवनके मद करिके जाके नेत्र घूमरहेहैं, नीली अलकावलीनते

शोभित हैं कन्धा और गोल कपोल जिनके, पीली जामा पहरि रहे है, दूरतेही जाके चरणकमलके नूपुर बजत आमें हैं ॥ ८ ॥ बालक सूर्यकीसी कांति जाकी ता मुकुटकूं धारणकरें उज्ज्वल बाजू कंकण धारण करें हैं बिजलीकी चमककूं फीकी करनहारे हैं काननमें कुण्डल जाके और पीतांबरसो बिजलीको भात करे है अबीर कुंकुमाके रसते लिपरही है देह जाकी नवीन रंगको भरो पिचकारी जिनके हाथमें है दूरतेही तुम्हारी निकुञ्जपै चलाय रहे हैं पीतांबरते कैसी शोभा हैरही है मानों बिजलीमें लिपटी इन्द्रधनुष सहित नवीन घटाही वरस रही है ॥ ९ ॥ तुम्हारे रासरंगके खेलमें स्थित है रहे हैं, तुमारे निकसवेकी वाटको देखरहे हैं ॥ १० ॥ सो तुम फागुनके मिष करिकें निकसो मानकूं त्यागिये आज या होलीको जस देउ अब तो आपकूं अपने मन्दिरमें रंगको रंगीलो जल और अतर, चन्दन, चोवा, अबीर, केशर, गुलाल, कुंकुमाकी कींचते सुगंधित मंदिर करनो योग्यहै ॥ ११ ॥ सो हे प्यारीजी ! उठो और अपनी मण्डलीको संग लैके जहां वे हैं तहां निकसो श्रीकृष्णके पास जल्दी चलिये, हे महामते ! ऐसो वखत कभूं फिर न मिलैगी

बालार्कमौलिविमलांगदहारमुद्यद्विद्युत्क्षिपन्मकरकुंडलमादधानः ॥ पीतांबरेणजयतिद्युतिमण्डलोसौभूमण्डलेसधनुषेवघनोदिविस्थः ॥ ९ ॥
आबीरकुंकुमरसैश्चविलिप्तदेहोहस्तेगृहीतनवसेचनयंत्रआरात् ॥ प्रेक्षंस्तवाशुसखिवाटमतीवराधेत्वद्रासरंगरसकेलिरतःस्थितःसः ॥ १० ॥
निर्गच्छफाल्गुनमिषेणविहायमानंदातव्यमद्यचयशःकिलहोलिकायै ॥ कर्तव्यमाशुनिजमन्दिररंगवारिपाटीरपंकमकरन्दचयंचतूर्णम् ॥ ११ ॥
उत्तिष्ठगच्छसहसानिजमण्डलीभिर्यत्रास्तिसोपिकिलतत्रमहामतेत्वम् ॥ एतादृशोपिसमयोनकदापिलभ्यःप्रक्षालितंकरतलंविदितंप्रवाहे ॥
॥ १२ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ अथमानवतीराधामानंत्यक्त्वासमुत्थिता ॥ सखीसंघैःपरिवृताप्रकर्तुंहोलिकोत्सवम् ॥ १३ ॥
श्रीखंडागुरुकस्तूरीहरिद्राकुंकुमद्रुमैः ॥ पूरिताभिर्दृतीभिश्चसंयुक्तास्ताव्रजांगनाः ॥ १४ ॥ रक्तहस्ताःपीतवस्त्राःकूजन्नूपुरमेखलाः ॥ गायं
त्योहोलिकागीतीर्गालीभिर्हास्यसंधिभिः ॥ १५ ॥ आबीरारुणचूर्णानांमुष्टिभिस्ताइतस्ततः ॥ कुर्वंत्यश्चारुणंभूमिंदिगंतंचांबरंतथा ॥ १६ ॥
कोटिशःकोटिशस्तत्रस्फुरंत्याबीरमुष्टयः ॥ सुगंधारुणचूर्णानांकोटिशःकोटिशस्तथा ॥ १७ ॥ सर्वतोजगृहुःकृष्णंकराभ्यांव्रजगोपिकाः ॥
यथामेघंचदामिन्यःसंध्यायांश्रावणस्यच ॥ १८ ॥ तन्मुखंचविलिपंत्योऽथाबीरारुणमुष्टिभिः ॥ कुंकुमाक्तदृतीभिस्तमार्द्रींचक्रुर्विधानतः ॥ १९ ॥

बहती नदीमें हाथ पखारलेउ ॥ १२ ॥ नारदजी कहैं हैं कि, ऐसें सुनकें मानवती राधा मान छोड़के उठकें सखीनकूं संग लैकें होलीको उत्सव करवेकूं चली ॥ १३ ॥ चन्दन, अगर, कस्तूरी, हलदी, केशर, इनके रंगसों भरी पिचकारी और गुलाल भरी पोटरीनको हाथनमें लिये वे सखी इनके संगमें हैं ॥ १४ ॥ लाल जिनके हाथ हैं पीले जिनके वस्त्र जिनके नूपुर और कोंधनी वजे हैं, कोकिल कैसे कण्ठते होलीके गीत हँसीकी गारीनको गामती ॥ १५ ॥ अबीर गुलालकी मुट्ठी फेंकती धरतीकूं और आकाशकूं दिशानकूं लाल करती ॥ १६ ॥ अबीर और सुगंधित लाल गुलालनकी किरोड़न मुट्ठी चलावत चली आई गोपीनें ॥ १७ ॥ चारों वगलते श्रीकृष्णकूं घेरलीनों जैसे सामनकी सन्ध्यामें बिजली श्यामघटाते लिपट जायहै ॥ १८ ॥ श्रीकृष्णके मुखकूं मीडती अबीर गुलालनकी वर्षा करती कुंकुमा और रंगकी भरी पिचकारीनसों श्रीकृष्णको लालरंगते भिंजोयके तरवतर करदेती भई ॥ १९ ॥

भगवान् हू तहां जितनी गोपी हीं तितनेई अपने रूप धारण करके हे नृपेश्वर! विहार करते भये ॥ २० ॥ या होलीके महोत्सवमें राधा करके सहित श्रीकृष्णकी बड़ी शोभा होती भई बिजली करके श्याम घटाकी जैसी शोभा होयहै ॥ २१ ॥ तब श्रीकृष्णहू राधिकाके हस्तकमलसों अंजनसों अंजेहैं नेत्रकमल जाके सो अपने नवीन पीतांबररूप अपनी निसानी गोपीनके लिये देके देवतानके पुष्पनकी वर्षा करते सन्ते आप नन्दमहलकूं पधारे हैं ॥ २२ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां माधुर्यखण्डे भाषाटीकायां होलिकोत्सवे दिव्यात्रिगुणवृत्तिभूमिगोप्युपाख्यानं नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ नारदजी कहै है अब देवतानकी कन्या जे गोपी भई हैं तिनको उपाख्यान है ताहि सुनो जो मनुष्यनके लिये धर्म, अर्थ, काम, मोक्षको देनहारो और भक्तिको बढ़ावनहारो है॥१॥ मालवदेशमें एक दिवस्पति नामसो विख्यात नन्दको गोप भयो हजार जाके स्त्री भई बड़ो धनी और अत्यंत नीतिमान्

भगवानपितत्रैवयावतीर्व्रजयोषितः ॥ धृत्वारूपाणितावंतिविजहारनृपेश्वर ॥ २० ॥ राधयाशुशुभेतत्रहोलिकायामहोत्सवे ॥ वर्षासंध्या क्षणेकृष्णःसौदामिन्याघनोयथा ॥ २१ ॥ कृष्णोपितद्धस्तकृताक्तनेत्रोदत्त्वास्वकीयंनवमुत्तरीयम् ॥ ताभ्योययौनन्दगृहंपरेशोदेवेषुवर्षत्सुच पुष्पवर्षम् ॥ २२ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमाधुर्यखण्डे नारदबहुलाश्वसंवादे होलिकोत्सवेदिव्यात्रिगुणवृत्तिभूमिगोप्युपाख्याननामद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ अथदेवांगनानांचगोपीनांवर्णनंशृणु ॥ चतुष्पदार्थदंनॄणांभक्तिवर्धनमुत्तमम् ॥ १ ॥ बभूवमालवेदेशेगोपोनन्दोदिवस्पतिः ॥ भार्यासहस्रसंयुक्तोधनवान्नीतिमान्परः ॥ २ ॥ तीर्थयात्राप्रसंगेनमथुरायांसमागतः ॥ नन्दराजंव्रजाधीशंश्रुत्वाश्रीगोकुलंययौ ॥ ३ ॥ मिलित्वागोपराजंसदृष्ट्वावृन्दावनश्रियम् ॥ नन्दराजाज्ञयातत्रवासंचक्रेमहामनाः ॥ ४ ॥ योजनद्वयमाश्रित्यघोषंचक्रेगवांपुनः ॥ मुदंप्रापव्रजेराजञ्ज्ञातिभिःसदिवस्पतिः ॥ ५ ॥ तस्यदेवलवाक्येनसर्वादेवजनस्त्रियः ॥ जाताःकन्यामहादिव्याज्वलदग्निशिखोपमाः ॥ ६ ॥ श्रीकृष्णंसुन्दरंदृष्ट्वामोहिताःकन्यकाश्चताः ॥ दामोदरस्यप्राप्त्यर्थंचक्रुर्माघव्रतंपरम् ॥ ७ ॥ अर्धोदयेकेयमुनांनित्यंस्नात्वाव्रजांगनाः ॥ उच्चैर्जगुःकृष्णलीलांप्रेमास्पदसमाकुलाः ॥ ८ ॥ तासांप्रसन्नःश्रीकृष्णोवरंब्रूहीत्युवाचह ॥ ताऊचुस्तंपरंनत्वाकृतांजलिपुटाःशनैः ॥ ९ ॥

भयो ॥ २ ॥ वो तीर्थयात्राके प्रसंगते मथुरामें आयो तब व्रजके राजा नन्दरायकूं सुनके गोकुलमें आयो ॥ ३ ॥ नन्दरायते मिलके वृन्दावनकी शोभा देखके नन्दरायकी आज्ञाते बड़े उदारमनवारो सो दिवस्पति व्रजमेंही निवास करतभयो ॥ ४ ॥ वाने दो योजनमें अपनो गऊनको घोष बनायो ज्ञातिकेनमें बड़े आनंदते रह्यो जैसे स्वर्गमें इंद्र रहे हैं ॥ ५ ॥ वाके देवलऋषिके वचनते वाकी स्त्रीनके गर्भमें देवतानकी स्त्री जलती अग्निके समान जिनके तेज ऐसी दिव्य देवांगना कन्या भई॥६॥ सुंदर श्रीकृष्णकूं देखिकें वे कन्या मोहित हैगई, तब वे दामोदरकी प्राप्तिके लिये माघमहीनाको स्नान व्रत करतीभई ॥ ७ ॥ अर्द्धउदय जब सूर्य होय तब यमुनाजीपे स्नान करिवेकूं आमें प्रेममें आकुल ऊंचे स्वरते श्रीकृष्णकी लीलाकूं गायोकरें ॥ ८ ॥ तिनपे प्रसन्न हैके श्रीकृष्ण यह बोले मे प्रसन्न भयो हूं तुम वर मांगो तब हाथ जोड़कें हौलेसो वे यह बोली ॥ ९ ॥

हे प्रभो! आप तो योगीश्वरनकूंहू दुर्लभ हो, सर्वेश्वर हो, कारणकेहू कारण हो, तुम वंशीधर हो, हमारी आँखिनके अगाड़ी सदा रहौ, कामदेवके मनकौभी मथनहारे तुमारे अंग हैं॥ १० ॥ तथास्तु तैसेंही होउ ऐसें कहिकें आदिदेव हरि तिनकूं दर्शन देतेभये, नारदजी कहेहे कि, हे राजन् ! वोही भगवान् सदाही तुमारे नेत्रगोचर होउ और जब स्मरण करे तबही बुलाये भयेकी तरह चित्तमें आयजाउ ॥ ११ ॥ परिपूर्णतम साक्षात् श्रीकृष्णही है और कोई अवतार परिपूर्ण नहीहै, कैसे कि जो आप एक कामकूं आये और करोड़न काम करे ॥ १२ ॥ बांधी है पीतांबरकी फेंट जिननें, मोर चंद्रिकाको मुकुट धरवेसो नवी है नाड़ जिनकी, लकुट और बांसुरी है हाथमें जिनके, हालें हैं मकराकृत कुंडल जाके, नटवर वेषके धरनहारे अति चतुर शिरोमणि श्रीकृष्णकूं मैं भजूंहूं ॥ १३ ॥ आदिदेव भगवान् भक्तिहीते वश होयहै यहां गोपीही प्रमाण हैं जिन गोपीननें न तो सांख्य पढौ और न

॥ ॥ गोप्यऊचुः ॥ ॥ योगीश्वराणांकिलदुर्लभस्त्वंसर्वेश्वरःकारणकारणोसि ॥ त्वंनेत्रगामीभवतात्सदानोवंशीधरोमन्मथमन्मथांगः ॥ १० ॥ तथास्तुचोक्काहरिरादिदेवस्तासांतुयोदर्शनमाततान ॥ भूयात्सदातेहृदिनेत्रमार्गेतथासआहूतइवाशुचित्ते ॥ ११ ॥ परिपूर्णतमःसाक्षाच्छ्रीकृष्णोनान्यएवहि ॥ एककार्यार्थमागत्यकोटिकार्यंचकारह ॥ १२ ॥ परिकरीकृतपीतपटंहरिंशिखिकिरीटनतीकृतकंधरम् ॥ लकुटवेणुकरंचलकुंडलंपटुतरंनटवेषधरंभजे ॥ १३ ॥ भक्त्यैववश्योहरिरादिदेवःसदाप्रमाणंकिलचात्रगोप्यः ॥ सांख्यंचयोगंनकृतंकदापिप्रेम्णैवयस्यप्रकृतिंगताःस्युः ॥१४॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांमाधुर्यखण्डेदेवजनस्तुपाख्यानंनामत्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ जालंधरीणांगोपीनांजन्मानिशृणुमैथिल ॥ कर्माणिचमहाराजपापघ्नानिनृणांसदा ॥१॥ राजन्सप्तनदीतीरेरंगपत्तनमुत्तमम् ॥ सर्वसंपद्युतं दीर्घयोजनद्वयवर्तुलम् ॥ २ ॥ रंगोजिस्तत्रगोपालःपुराधीशोमहाबलः ॥ पुत्रपौत्रसमायुक्तोधनधान्यसमृद्धिमान् ॥ ३ ॥ हस्तिनापुरनाथायधृतराष्ट्रायभूभृते ॥ हैमानामर्बुदशतंवार्षिकंसददौसदा ॥ ४ ॥ एकदातत्रवर्षांतेव्यतीतेकिलमैथिल ॥ वार्षिकंतुकरंराज्ञेनददौसमदोत्कटः ॥ ५ ॥ मेलनार्थंनचायातेरंगोजौगोपनायके ॥ वीरादशसहस्राणिधृतराष्ट्रप्रणोदिताः ॥ ६ ॥

जिननें योगाभ्यास कीनों पर प्रेमहीते वाके रूपकूं प्राप्त है गई ॥ १४ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां माधुर्यखंडेभाषाटीकायां देवजनस्तुपाख्यानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ नारदजी कहैं हैं-जालंधरी जे गोपी हैं-तिनके जन्मको तुम सुनों और मनुष्यनके पाप दूरि करनहारे जे विनके कर्म हे तिन्हैं सुनों ॥ १ ॥ हे राजन् ! सप्तनदीके तीरपै एक अत्युत्तम रंगपत्तन नाम नगर हो, सबरी संपत्ति जामें ही बहुत लंबो और आठ कोसमें गोल हो ॥ २ ॥ रंगोजी नाम तहां एक गोपाल हो, पुरकौ मालिक हौ, महाबली हो बेटा नाती और धन धान्यकी सब समृद्धिसों युक्त हो ॥ ३ ॥ वे रंगोजी हस्तिनापुरके मालिक राजा धृतराष्ट्रको सौ किरोड मोहर वर्षपादिन कर दीयौ करैहो ॥ ४ ॥ हे मैथिल ! एकवेर मारे मदके वर्ष हैगयौ तौहू राजाकूं कर नहीं दीनों ॥ ५ ॥ और रंगोजी गोपनायक जब मिलवेहूकूं नहीं आयौ तब धृतराष्ट्रनें दशहजार योद्धा भेजे ॥ ६ ॥

ये योद्धा रंगोजीकूं बांधि कें हस्तिनापुरकूं लैगये तब ये रङ्गोजी कितनेक वर्षनतलक बन्दीखानेंमें रह्यौ ॥ ७ ॥ रुक्यौहू रह्यौ मारखौहू तौभी महालोभी ये रङ्गोजी डरप्यौ
नहीं और धृतराष्ट्रकूं कछू नही दीनों ॥ ८ ॥ फिर काहू समय महाभयंकर जो बन्दीखानों हौ तातें ये निकसगयौ फिर भाजआयौ रातमें रंगपुरकूं चल्यौआयौ ॥ ९ ॥ फिर वाकूं
पकडवेकूं धृतराष्ट्रनें तीन अक्षौहिणी सैना भेजी समर्थ है सेना बल वाहन जामें ॥ १० ॥ रङ्गोजी गोपको अक्षौहिणीनते चमकते पैने पैने बाणनते युद्ध भयो कवच पहिरकें
बारंबार रंगोजी लड्यौ धनुषकूं टंकारकें बेर बेर ॥ ११ ॥ वैरीननें जब कवच काटडारयौ, धनुष तोड्डारयौ, फौज मारडारी, फिर कोई दिनतलक पुरमें आपके लडनलग्यौ
॥ १२ ॥ फिर जब ये अनाथ हैगयौ तब शरण ढूंढनलग्यौ, तब भयकरके पीडित है कंसराजाके पास दूत भेज्यौ ॥ १३ ॥ वह दूत मथुरामें आयकें कंसकी सभामें गयौ नीचेकूं

बद्धातंदामभिर्गोपमाजग्मुस्तेगजाह्वयम् ॥ कतिवर्षाणिरंगोजिःकारागारेस्थितोऽभवत् ॥ ७ ॥ सन्निरुद्धस्ताडितोपिलोभीभीरुर्नचा
भवत् ॥ नददौसधनंकिंचिद्धृतराष्ट्रायभूभृते ॥ ८ ॥ कारागारान्महाभीमात्कदाचित्सपलायितः ॥ रात्रौरंगपुरंप्रागाद्रंगोजिर्गोपना
यकः ॥ ९ ॥ पुनस्तंहिसमाहर्तुंधृतराष्ट्रप्रणोदितम् ॥ अक्षौहिणीत्रयंराजन्समर्थबलवाहनम् ॥ १० ॥ तेनसार्द्धंसबाणौघैस्तीक्ष्णधारैःस्फुर
त्प्रभैः ॥ युयुधेदंशितोयुद्धेधनुष्टंकारयन्मुहुः ॥ ११ ॥ शत्रुभिश्छिन्नकवचश्छिन्नधन्वाहतस्वकः ॥ पुरमेत्यमृधंचक्रेरंगोजिःकतिभिर्दिनैः ॥
॥ १२ ॥ अनाथःशरणंचेच्छन्कंसाययदुभूभृते ॥ दूतंस्वंप्रेषयामासरंगोजिर्भयपीडितः ॥ १३ ॥ दूतस्तुमथुरामेत्यसभांगत्वानताननः ॥
कृतांजलिश्चोग्रसेनिंनत्वाप्राहगिराद्रया ॥ १४ ॥ रंगोजिनामानृपरंगपत्तनेगोपोस्तिनीतिज्ञवरःपुराधिपः ॥ स्वशत्रुसंरुद्धपुरोमहाधिभृद्दल
ब्धनाथःशरणंगतस्तव ॥ १५ ॥ त्वंदीनदुःखार्तिहरोमहीतलेभौमादिसंगीतगुणोमहाबलः ॥ सुरासुरानुद्भटभूमिपालकान्विजित्ययुद्धेसुरराडि
वस्थितः ॥ १६ ॥ चन्द्रंश्चकोरश्चरविंकुशेशयंयथाशरच्छीकरमेवचातकः ॥ क्षुधातुरोन्नंचजलंतृषातुरःस्मरत्यसौशत्रुभयेतथातव ॥ १७ ॥
॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्थंश्रुत्वावचस्तस्यकंसोवैदीनवत्सलः ॥ दैत्यकोटिसमायुक्तोमनोगंतुंसमादधे ॥ १८ ॥ गोमूत्रचयसिन्दूरकस्तूरी
पत्रभृन्मुखम् ॥ विंध्याद्रिसदृशंश्यामंमदनिर्झरसंयुतम् ॥ १९ ॥

गरदन करकें कंसकूं दण्डवत् करकें दया उपजावत यह बोल्यौ ॥ १४ ॥ हे नृप ! रंगनगरमें एक रंगोजी नाम गोप है, नीतिधारीनमें श्रेष्ठ है पुरको मालिक है, सो वैरीननें
वाको पुर घेरलीनो है, सो महादुःखी है सो कोई नाथ वाको नहीं है, सो हे महाराज ! वो आपकी शरण आयो है ॥ १५ ॥ और पृथ्वीतलमें दीनके दुःख हरनहारे तो आपही,
हौ, भौमादिक आपके गुण गावें है. महाबली हौ, जो जो सुर असुर उद्भट भये तिनें युद्धमें जीतकें इन्द्रकी नाईं विराज रहेहो ॥ १६ ॥ चकोर जैसें चन्द्रमाकूं देखे है,
कमल जैसें सूर्यकूं देखै है, चातक जैसे शरदऋतुके बूँदकूं भूखो जैसें अन्नकूं, प्यासो जैसें जलकूं, ऐसीही वैरीके भयते रंगोजी तुमकूं देखे हैं ॥ १७ ॥ नारदजी कहै हैं कि
कंसराज ऐसे दूतको वचन सुनके दीनवत्सलहै किरोड दैत्यनकूं संग लैकें चलवेकूं मन करतभयौ ॥ १८ ॥ गोमूत्र सिंदूर और कस्तूरी इनते भई है माथेकी रचना जाकी

विंध्याचलसौ ऊंचौ और कालौ मद जाकैं झरै है ॥ १९ ॥ पांवमें सोनेकी सांकर जाकैं घनसौ गरजै ऐसैं कुवलयापीड हाथीपै चढकें मदमें उत्कट ॥ २० ॥ चाणूर, मुष्टिक, केशी, व्योमासुर और वृषासुर इनकूं संग लैकें कंस कवच पहिरके रंगपत्तनमें आयौ ॥ २१ ॥ तब यादवनकी और कौरवनकी परस्पर बडीभारी बाणनते खड्गनतें और त्रिशूलनतें बड़ौ घोर युद्ध भयौ ॥ २२ ॥ जब बाणनकौ बड़ौ अंधकार भयौ तब कंस एक बडीभारी गदा लैकें कौरवनकी सेनामें चल्यौ ऐसें नाश करन लग्यो जैसें वनमें दौंकी आग लगै है ॥ २३ ॥ काहू २ वीरनकू तो वज्रकी तुल्य गदानते कवचसुद्धा मारिकें पृथ्वीपै ऐसें पटक देतभयौ जैसे इंद्र वज्रतें पर्वतकूं पटकै है ॥ २४ ॥ पांवनते तो रथनकूं मींडगेरे और एड़िनकी मारतें घोड़ानकूं हाथीनतें हाथीनकूं मारडारे और कितनेहू हाथीनकूं उनके पाव पकरकें उठारदेतभयौ ॥ २५ ॥ और कितनेक हाथी

पादेचशृंखलाजालंनदंतंघनवद्भृशम् ॥ द्विपंकुवलयापीडंसमारुह्यमदोत्कटः ॥ २० ॥ चाणूरमुष्टिकाद्यैश्चकेशीव्योमवृषासुरैः ॥ सहसादंशितः कंसःप्रययौरंगपत्तने ॥ २१ ॥ यदूनांचकुरूणांचबलयोस्तुपरस्परम् ॥ बाणैःखड्गैस्त्रिशूलैश्चघोरंयुद्धंबभूवह ॥ २२ ॥ बाणांधकारेसंजातेकंसो नीत्वामहागदाम् ॥ विवेशकुरुसेनासुवनेवैश्वानरोयथा ॥ २३ ॥ कांश्चिद्वीरान्सकवचान्गदयावज्रकल्पया ॥ पातयामासभूपृष्ठेवज्रेणेंद्रोयथा गिरिम् ॥ २४ ॥ रथान्ममर्दपादाभ्यांपार्ष्णिघातेनघोटकान् ॥ गजेगजंताडयित्वागजान्प्रोन्नीयचांघ्रिषु ॥२५॥ स्कन्धयोःकक्षयोर्धृत्वासनी डान्रत्नकंबलान् ॥ कांश्चिद्बलाद्भ्रामयित्वाचिक्षेपगगनेबली ॥२६॥ गजाञ्छुंडासुचोन्नीयलोलघंटासमावृतान् ॥ चिक्षेपसंमुखेराजन्नृपेव्यो मासुरोबली ॥ २७ ॥ रथान्गृहीत्वासाश्वांश्चशृंगाभ्यांभ्रामयन्मुहुः ॥ चिक्षेपदिक्षुबलवान्दैत्योदुष्टोवृषासुरः ॥२८॥ बलात्पश्चिमपादाभ्यां वीरानश्वानितस्ततः ॥ पातयामासराजेंद्रकेशीदैत्याधिपोबली ॥ २९ ॥ एवंभयंकरंयुद्धंदृष्ट्वातेकुरुसैनिकाः ॥ शेषाभयातुरावीराजग्मु स्तेपिदिशोदश ॥ ३० ॥ रंगोजिंसकुटुंबंतंनीत्वाकंसोथदैत्यराट् ॥ मथुरांप्रययौवीरोनादयन्दुंदुभीञ्शनैः ॥ ३१ ॥ श्रुत्वापराजयंस्वस्य कौरवाःक्रोधमूर्च्छिताः ॥ दैत्यानांसमयंदृष्ट्वासर्वेवैमौनमास्थिताः ॥ ३२ ॥ पुरंबर्हिषदंनामव्रजसीम्निमनोहरम् ॥ रंगोजयेददौकंसोदैत्या नामधिपोबली ॥ ३३ ॥

नको तो उनकी कंधानमें और बगलमें झूलौ अंबारीसुद्धा पकरकें बडेजोरसौं घुमायकें महाबली आकाशमें फेंकदेतो भयौ ॥ २६ ॥ और कितने हाथीनकी सूंड पकड़कें चंचल घंटा जिनमें बजरहे तिन्हें व्योमासुर बली हे राजन् ! फौजमेंही सन्मुख फेंकदेतभयौ ॥ २७ ॥ और दुष्ट वृषासुर सींगनपै घोडानसहित रथनकूं उठायकें भ्रमाय भ्रमाय दशों दिशानमें फेंकनलग्यौ ॥२८॥ और केशीदानव जोरतें पिछली दुलत्तीतें पकर २ कें घोड़ा हाथीनकूं और वीरनकूं पायनको पकर २ के इतवितमें पटकन लग्यौ ॥ २९ ॥ तब कौरवनकी सेना ऐसें भयंकर युद्धको देखकें बचे बचाये जे वीर हे ते भयके मारे दशौं दिशानमें भाजिगये ॥ ३० ॥ ऐसें कंसराजा कुटुंब सहित जीतकें नगाड़े बजावत रंगोजी गोपकूं मथुरामें लैआयौ ॥ ३१ ॥ ताके पीछें कौरव अपनी हार सुनकें क्रोधमें मूर्छित हैगये दैत्यनकी समय अच्छो जानकें चुप हैकें बैठिरहे ॥ ३२ ॥ तब दैत्यनकौ मालिक

चक्री जो कंस है सो व्रजकी सीमामें एक बडामनोहर बर्हिषद नाम नगर हो वो नगर कंसने दैत्यनके स्वामीने रंगोजी गोपकूं देदियो ॥ ३३ ॥ तब ये रंगोजी गोपनायक वहां
वास करतोभयो वाकी स्त्रीनके विषय जालंधरी गोपी भगवान्के वरतें होतीभई ॥ ३४ ॥ उत्तम गोपनने उनकूं व्याही वे रूप यौवन करिकें भूषित ही, वो जारधर्म करिकें
श्रीकृष्णमें स्नेह करती भई ॥ ३५ ॥ चैत्रके महीनामें वृंदावनके ईश्वर वृंदावनमें तिनके संग रासमें आप श्रीकृष्ण विहार करते भये ॥ ३६ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां माधुर्यखंडे
भाषाटीकायां जालंधर्युपाख्यानं नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ नारदजी कहेहैं कि, व्रजमें शोणपुरको मालिक एक नंदनाम गोप होतो भयो ये महाधनी हो हे मैथिल! ताके
पांचहजार स्त्री होतीभईं ॥ १ ॥ तिनके हे नृप! मत्स्यावतार के वरते समुद्रकी कन्या तथा औरभी गोपी होतभई, तैसेही औरहू पृथ्वीके दुहिवेमें जे अनेक विचित्र औषधी

वासंचकारतन्नैवरंगोजिर्गोपनायकः ॥ बभूवुस्तस्यभार्यासुजालंधर्योहरेर्वरात् ॥ ३४ ॥ परिणीतागोपजनैरूपयौवनभूषिताः ॥
जारधर्मेणसुस्नेहंश्रीकृष्णेताःप्रचक्रिरे ॥ ३५ ॥ चैत्रमासेमहारासेताभिःसाकंहरिःस्वयम् ॥ पुण्येवृन्दावनेरम्येरेमेवृन्दावनेश्वरः ॥ ३६ ॥
इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांमाधुर्यखण्डेजालंधर्युपाख्यानंनामचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ व्रजेशोणपुराधी
शोगोपोनन्दोधनीमहान् ॥ भार्याःपंचसहस्राणिबभूवुस्तस्यमैथिल ॥ १ ॥ जातामत्स्यवरात्तास्तुसमुद्रेगोपकन्यकाः ॥ तथान्या
श्चविचित्रापृथिव्यादोहनान्नृप ॥ २ ॥ बर्हिष्मतीपुरंध्र्योयाजाताजातिस्मराःपराः ॥ तथान्याप्सरसोऽभूवन्वरान्नारायणस्यच ॥ ३ ॥
तथासुतलवासिन्योवामनस्यवरात्स्त्रियः ॥ तथानागेन्द्रकन्याश्चजाताःशेषवरात्परात् ॥ ४ ॥ ताभ्योदुर्वाससादत्तंकृष्णापंचांगमद्भुतम् ॥
तेनसंपूज्ययमुनांवव्रिरेश्रीपतिंवरम् ॥ ५ ॥ एकदाश्रीहरिस्ताभिर्वृन्दारण्येमनोहरे ॥ यमुनानिकटेदिव्येपुंस्कोकिलतरुव्रजे ॥ ६ ॥ मधुपध्व
निसंयुक्तेकूजत्कोकिलसारसे ॥ मधुमासेमन्दवायौवसन्तलतिकावृते ॥ ७ ॥ दोलोत्सवंसमारेभेहरिर्मदनमोहनः ॥ कदम्बवृक्षेरहसिकल्पवृ
क्षमनोहरे ॥ ८ ॥ कालिन्दीजलकल्लोलकोलाहलसमाकुले ॥ तद्दोलाखेलंनचक्रुस्तागोप्यःप्रेमविह्वलाः ॥ ९ ॥

भई थे ॥ २ ॥ और बर्हिष्मती पुरीकी जे स्त्रीही वे पृथुके वरते और तैसेई नरनारायणके वरते अप्सरा ॥ ३ ॥ तैसेई सुतलवासिनी वामनजीके वरते, तैसेई नागेन्द्रकन्या
शेषजीके वरते ये सब शोणपुराधीश जो नंदनाम गोप कह्यो ताकी जे ५००० स्त्री कहीहैं उनके गर्भनसों इनको जन्म भयो ॥ ४ ॥ तिन गोपीनकूं दुर्वासा मुनिनें कालिंदीको
पंचांग दीनो ताते यमुनाजीकूं पूजिकें श्रीपति श्रीकृष्णकूं वरतीभईं ॥ ५ ॥ एक समय श्रीधर भगवान् उन गोपीनके संग वा मनोहर वृंदावनमें जहां वृक्षनपै यमुनाके निकट
पुंस्कोकिलनके समूह और सारस बोलि रहेहैं ॥ ६ ॥ भौरा जिनमें गुंजार रहे ऐसी वसंतकी लीलान करके आवृत मंदमंद पवन जहां चल रहीहै ता वृंदावनमें चैत्रके महीनामें ॥
॥ ७ ॥ तहां मदनमोहन हरि कल्पवृक्षके समान जे कदंबके वृक्ष तिनके नीचे एकांतमें हिंडोलाके उत्सवकी प्रारंभ करतेभये ॥ ८ ॥ कालिंदीके जलकी चंचल लहरनको कोलाहल

जामें तहाँ प्रेममें विह्वलभई वे सब गोपी हिंडोलके उत्सवसों आरम्भ करतीभई ॥ ९ ॥ किरोड़न चंद्रमाकीसी कान्ति जाकी ऐसी जो कीर्तिनन्दिनी राधा ताके संग या वृंदावनमें श्रीकृष्ण ऐसे रमणकरतभये जैसे रतिके संग कामदेव रमण करैहै ॥ १० ॥ याप्रकार जे सब गोपी परिपूर्णतम साक्षात् नंदनंदन श्रीकृष्णकूं प्राप्त होतभई तिनके तपकौ कहो कोई वर्णन करसके है कहा ॥ ११ ॥ और जो नागेंद्रनकी कन्या ही तेहू सब चैत्रके महीनामें मनोहर कालिंदीके तीरपै बलभद्रके संग विहार करतीभई १२ ॥ यह मैंने तेरे अगाड़ी गोपीनको शुभचरित्र वर्णन करौहै ये सब पापनकी हरनहारो और अत्यंत पवित्र है अब आगे तू कहा सुनिवेकी इच्छा करे है ॥ १३ ॥ तब बहुलाश्व राजा बोल्यो जो दुर्वासाने कालिंदीको पंचांग गोपीनकूं दीनो हो जाते विनको श्रीकृष्णकी प्राप्ति भई सो मेरे आगे कहो ॥१४॥ तब नारदजी कहैं हैं कि हे राजन् ! यहां एक बड़ो पुरानों इतिहास वर्णन

राधयाकीर्तिसुतयाचन्द्रकोटिप्रकाशया ॥ रेजेवृन्दावनेकृष्णोयथारत्यारतीश्वरः ॥ १० ॥ एवंप्राप्ताश्वयाःसर्वाःश्रीकृष्णंनंदनन्दनम् ॥ परिपूर्णतमंसाक्षात्तासांकिंवर्ण्यतेतपः ॥ ११ ॥ नागेन्द्रकन्यायाःसर्वाश्चैत्रमासेमनोहरे ॥ बलभद्रंहरिं प्राप्ताःकृष्णातीरेतुताःशुभाः ॥ १२ ॥ इदंमयातेकथितंगोपीनांचरितंशुभम् ॥ सर्वपापहरंपुण्यंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ १३ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ यमुनायाश्चपंचांगंदत्तंदुर्वाससामुने ॥ गोपीभ्योयेनगोविन्दःप्राप्तस्तद्ब्रूहिमांप्रभो ॥ १४ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ अत्रैवोदाहरंतीममितिहासंपुरातनम् ॥ यस्यश्रवणमात्रेणपापहानिःपराभवेत् ॥ १५ ॥ अयोध्याधिपतिःश्रीमान्मांधाताराजसत्तमः ॥ मृगयांविचरन्प्राप्तःसौभरेराश्रमंशुभम् ॥ ॥ १६ ॥ वृन्दावनेस्थितंसाक्षात्कृष्णातीरेमनोहरे ॥ नत्वाजामातरंराजासौभरिंप्राहमानदः ॥ १७ ॥ ॥ मांधातोवाच ॥ ॥ भगवन्सर्ववित्साक्षात्त्वंपरावरवित्तमः ॥ लोकानांतमसांधानांदिव्यसूर्यइवापरः ॥ १८ ॥ इहलोकेभवेद्राज्यंसर्वसिद्धिसमन्वितम् ॥ अमुत्रकृष्णसारूप्यंयेनस्यात्तद्वदाशुभे ॥ १९ ॥ ॥ सौभरिरुवाच ॥ ॥ यमुनायाश्चपंचांगंवदिष्यामितवाग्रतः ॥ सर्वसिद्धिकरंशश्वत्कृष्णसारूप्यकारणम् ॥ २० ॥ यावत्सूर्यउदेतिस्मयावच्चप्रतितिष्ठति ॥ तावद्राज्यप्रदंचात्रश्रीकृष्णवशकारकम् ॥ २१ ॥

करें है जाके स्मरण करेही ते पापकी हानि होयहै ॥ १५ ॥ पहले एक अयोध्याको पति बड़ो लक्ष्मीवान् मांधाताराजा होतो भयो सो सिकार खेलत खेलत सौभरि ऋषिके शुभ आश्रममें आयो ॥ १६ ॥ तब वो राजा वृन्दावनमें मनोहर कालिंदीके तीरपैं साक्षात् विराजमान जे जमाई सौभरि ऋषि तिनकूं नमस्कार करिकें मानको दाता राजा सौभरिजी अपने जमाई तिनते यह बोल्यो ॥ १७ ॥ तुम सर्वज्ञ हो साक्षात् भूत भविष्यके ज्ञाता हो अज्ञानसों आंधरे जे लोक है तिनकूं ज्ञान देवेकूं तुम दूसरे सूर्य हो ॥ १८ ॥ हे भगवन् ! या लोकमें सर्व सिद्धिको दाता राज्य मिलजाय और परलोकमें श्रीकृष्णको सारूप्य जैसे मिले सो मोसों कहो ॥ १९ ॥ तब सौभरि ऋषि बोले–हे राजन् ! मैं यमुनाजीको पंचांग तेरे आगे कहूंगो जो सर्व सिद्धिको करनहारो और कृष्णके सारूप्यको कारण है ॥ २० ॥ सूर्योदयते सूर्यास्त ताई तो राज्यको दाता और श्रीकृष्णको वश करनहारो है ॥ २१ ॥

पटल १, पद्धति २, कवच ३, स्तोत्र ४, और सहस्रनाम ५ हे सूर्यवंशइ ! पंडित यकूं पंचांग कहैं हैं ॥ २२ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां माधुर्यखंडे सौभरिमांधातृसंवादेभाषाटी
कायांवर्हिष्मतीपुरंध्यप्सरःसुतलवासिनीनागेंद्रकन्यानामुपाख्याने पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ मांधाता राजा कहै है कि श्रीकृष्णकी जो पटरानी श्रीयमुनाजी तिनको निर्मल जो
कवच है ताहि हे महाभाग ! मोहि देउ मैं सदा धारण करूंगो ॥ १ ॥ तब सौभरिमुनि बोले–यमुनाजीको कवच सबकी रक्षा करिवेवारो है मनुष्यनकूं धर्म, अर्थ, काम,
मोक्ष चार पदार्थनको देनहारो है हे राजन् ! हे महामते ! ताहि तू सुनि ॥ २ ॥ श्यामसुंदर जाको रूप कमलसे नेत्र चतुर्भुजी सुन्दरी रथमें बैठी ऐसी श्रीयमुनाजीको ध्यान
करिके कवचकूं धारणकरै ॥ ३ ॥ पहले स्नान करिकें मौन ह्वैके पूर्वमुख है कुशाके आसनपै बैठकें संध्या करकें पालथी मारिकें कुशनसों चुटिया बांधिके फिर ब्राह्मण कवचकूं

कवचंचस्तवंनाम्नांसहस्रंपटलंतथा ॥ पद्धतिंसूर्यवंशेन्द्रपंचांगानिविदुर्बुधाः ॥२२॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमाधुर्यखंडेनारदबहुलाश्वसंवादे
श्रीसौभरिमांधातृसंवादेबर्हिष्मतीपुरंध्यप्सरःसुतलवासिनीनागेंद्रकन्योपाख्याननामपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ ॥ मांधातोवाच ॥ ॥
यमुनायाः कृष्णराज्ञ्याःकवचंसर्वतोऽमलम् ॥ देहिमह्यंमहाभागधारयिष्याम्यहंसदा ॥ १ ॥ ॥ सौभरिरुवाच ॥ ॥ यमुनायाश्चकवचं
सर्वरक्षाकरंनृणाम् ॥ चतुष्पदार्थदंसाक्षाच्छृणुराजन्महामते ॥ २ ॥ कृष्णांचतुर्भुजांश्यामांपुंडरीकदलेक्षणाम् ॥ रथस्थांसुन्दरींध्यात्वाधा
रयेत्कवचंततः ॥ ३ ॥ स्नातःपूर्वमुखोमौनी कृतसंध्यःकुशासने ॥ कुशैर्बद्धशिखोविप्रःपठेद्वैस्वस्तिकासनः ॥ ४ ॥ यमुनामेशिरःपातुकृ
ष्णानेत्रद्वयं सदा ॥ श्यामाभ्रूभंगदेशंचनासिकांनाकवासिनी ॥ ५ ॥ कपोलौपातुमेसाक्षात्परमानन्दरूपिणी ॥ कृष्णवामांससंभूतापातुक
र्णद्वयंमम ॥ ६ ॥ अधरौपातुकालिन्दीचिबुकंसूर्यकन्यका ॥ यमस्वसाकन्धरांचहृदयंमेमहानदी ॥ ७ ॥ कृष्णप्रियापातुपृष्ठंतटिनीमेभुजद्व
यम् ॥ श्रोणीतटंचसुश्रोणीकटिंमेचारुदर्शना ॥ ८ ॥ ऊरुद्वयंतुरंभोरूर्जानुनीत्वंघ्रिभेदिनी ॥ गुल्फौरासेश्वरीपातुपादौपापापहारिणी ॥ ९ ॥
अंतर्बहिरधश्चोर्ध्वंदिशासुविदिशासुच ॥ समंतात्पातुजगतःपरिपूर्णतमप्रिया ॥ १० ॥ इदंश्रीयमुनायाश्चकवचंपरमाद्भुतम् ॥ दशवारंपठेद्भ
क्त्यानिर्धनोधनवान्भवेत् ॥ ११ ॥

पढै ॥ ४ ॥ यमुना सदा मेरे शिरकी रक्षा करौ, कृष्ण दोनों नेत्रनकी रक्षा करौ, श्यामा मेरी भ्रुकुटीनकी रक्षा करौ, स्वर्गवासिनी मेरी नाककी रक्षा करौ ॥ ५ ॥ साक्षात्
परमानन्दरूपिणी मेरे कपोलनकी रक्षा करौ, कृष्णवामांससंभूता मेरे दोनो काननकी रक्षा करौ ॥ ६ ॥ कालिंदी मेरे होठनकी रक्षा करौ, सूर्यकन्या मेरे चिबुककी रक्षा करौ,
यमकी बहन मेरी नाड़की रक्षा करौ, महानदी मेरे हृदयकी रक्षा करौ ॥ ७ ॥ कृष्णप्रिया मेरी पीठकी रक्षा करौ, तटिनी मेरी दोनों भुजानकी रक्षा करौ, सुश्रोणी मेरी श्रोणीकी
रक्षा करौ, चारुदर्शना मेरी कमरकी रक्षा करौ ॥ ८ ॥ रंभोरू मेरी दोनों जांघनकी रक्षा करौ, अंघ्रिभेदिनी मेरी गोड़ेनकी रक्षा करौ, रासेश्वरी मेरे टकुनानकी रक्षा करौ, पाप
पहारिणी मेरे पांवनकी रक्षा करौ ॥ ९ ॥ बाहिर, भीतर, ऊपर, नीचे, दिशा, विदिशानमें और चारों ओरसे जगतके परिपूर्णतमकी प्रिया रक्षा करौ ॥ १० ॥ यह श्रीयमुनाजी

कौ परम अद्भुत कवच है जो दशवेर निर्धनी पढै तौ धनवान् होय ॥ ११ ॥ जो कोई बुद्धिमान् मनुष्य ब्रह्मचर्यते तीन महीना पाठ करै लघु भोजन करै तौ वाको निःसंदेह चक्रवर्ती राज्य मिलै ॥ १२ ॥ जो एकसौदशवेर नित्य तीन महीना तलक भक्तिसों पाठ करै और सावधान रहै तौ वाकूं कहाकहा न मिलै अर्थात् वाको सबही वस्तु प्राप्त होंयहैं ॥ १३ ॥ जो प्रातःकाल उठके नित्य पाठकरै तौ सब तीर्थनके स्नान करेकौ फल प्राप्त होय है और अंतमें योगीनकोहूं दुर्लभ जो परगोलोकधाम ताकौ पावै ॥ १४ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां माधुर्यखंडेभाषाटीकायां सौभरिमांधातृसंवादे यमुनाकवचं नाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ मांधाता पूछै है कि हे मुनिशार्दूल ! हे वक्तानमें श्रेष्ठ ! यमुनाजीको जो दिव्य स्तव है जो सर्व सिद्धिको करनहारो है ताकूं हे सौभरे ! कृपा करके मोसे कहो ॥१॥ सौभरि ऋषि बोले–हे महामते ! तू सूर्यकी कन्याको जो स्तव है ताको सुन जो सब सिद्धिको

त्रिभिर्मासैःपठेद्धीमान्ब्रह्मचारीमिताशनः ॥ सर्वराज्याधिपत्यत्वंप्राप्यतेनात्रसंशयः ॥ १२ ॥ दशोत्तरशतंनित्यंत्रिमासावधिभक्तितः ॥ यःपठेत्प्रयतोभूत्वातस्यकिंकिंनजायते ॥ १३ ॥ यःपठेत्प्रातरुत्थायसर्वतीर्थफलंलभेत् ॥ अंतेव्रजेत्परंधामगोलोकंयोगिदुर्लभम् ॥ ॥ १४ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमाधुर्यखंडेश्रीसौभरिमांधातृसंवादेश्रीयमुनाकवचंनामषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ ॥ मान्धातोवाच ॥ ॥ यमुनायाःस्तवंदिव्यंसर्वसिद्धिकरंपरम् ॥ सौभरेमुनिशार्दूलवदमांकृपयात्वरच् ॥ १ ॥ ॥ श्रीसौभरिरुवाच ॥ ॥ मार्तंडकन्यकायास्तुस्तवंशृणुमहामते ॥ सर्वसिद्धिकरंभूमौचातुर्वर्ग्यफलप्रदम् ॥ २ ॥ कृष्णवामांससभूतायैकृष्णायैसततंनमः ॥ नमःश्रीकृष्णरूपिण्यैकृष्णेतुभ्यंनमोनमः ॥ ३ ॥यःपापपंकांबुकलंककुत्सितःकामीकुधीःसत्सुकलिंकरोतिहि ॥ वृन्दावनंधामददातितस्मैनदन्मिलिन्दादिकलिन्दनन्दिनी ॥ ४ ॥ कृष्णेसाक्षात्कृष्णरूपात्वमेववेगावर्तेवर्ततेमत्स्यरूपी ॥ ऊर्मावूर्मौकूर्मरूपीसदातेबिंदौबिंदौभातिगोविन्ददेवः ॥ ॥ ५ ॥ वन्देलीलावतींत्वांसघनघननिभांकृष्णवामांसभूतांवेगवैरजाख्यंसकलजलचयंखंडयंतींबलात्स्वात् ॥ छित्वाब्रह्मांडमारात्सुरनगरनगान्गंडशैलादिदुर्गान्भित्वाभूखंडमध्येतटिनिधृतवतीमूर्मिमालांप्रयांतीम् ॥ ६ ॥

करनहारो है और भूमिमें धर्म, अर्थ, काम मोक्षकौ दाता है ॥ २ ॥ कृष्णके वामाङ्गते भई हौ–हे कृष्णे ! कृष्णरूपिणी हौ तिनके अर्थ निरंतर मेरो नमस्कार है ॥ ३ ॥ जो पापकी कीचके जलके कलंकते कुत्सित है, कामी है, कुबुद्धी है, संतनते क्लेश करै है ऐसेही पापी है जो या स्तोत्रकौ पाठ करै तौ कालिंदनंदिनी वाकूं निज वृन्दावनधाम देय है, जामें सुगंधिमें मतवारे भौंरा गुंजारें हैं ॥ ४ ॥ हे कृष्णे ! साक्षात् कृष्णरूपा तूही है, तूही मलयके आवर्तमें मत्स्यरूप धरे है, ऊर्मी २ में कूर्मरूपा तूही है तेरे एक बूँदबूँदमें गोविंदरूप प्रकाश करे है ॥ ५ ॥ लीलावती जो तू है ताहि मैं दंडौत करूंहूं सघनमेघके तुल्य है श्रीकृष्णके वांये अंगते उत्पन्न भयीहो संपूर्ण जलको समूह जामें ऐसो जो विरजाको वेग ताहि अपने वेगते खंडन करत दूरितेई ब्रह्मांडकूं छेदिके और देवतानके नगर पर्वतनके शिखर दुर्ग तिन्हें भेदिके हे तटिनि ! भूमिखंडमंडलमें लहरीनकी मालानकूं

धारण करत जाय है ताकूं हमारो नमस्कार है ॥ ६ ॥ पृथ्वीमें दिव्य जो यमुना तेरो नाम है सो सुनो अथवा कह्यौ पापनके समूहनको खंडित करै है जासो तेरो नाम मेरी वाणीरूप मण्डलमें बसो जो वाणीतें यमुना नामकूं लेय तेरे भैयाके तो दण्ड लायक जे पापी हैं तिनकूं अदंड्य करै है अपनी पुरीमें यमराजहू प्रचंडा नाम राखे है ॥ ७ ॥ जे विषरूप आंधरे कुआमें परे है तिनकूं चढवेको लेज है, पापरूप मूसेनकूं बिलाव है, विराट् पुरुषके, शिरपै वेनी रूप माला है, जहां २ तूं विराजै है तिन पुरुषनको धन्य भाग्य है, तूं आदिकर्त्ताकी प्यारी है, गोलोकमेंहूं दुर्लभ ऐसी तूं अतिसुभगा अद्वितीया नदी है ॥ ८ ॥ गोकुल और गोप गोपी तिनके खेलते शोभित है—हे कालिंदि ! हे कृष्णप्रभे ! तेरे किनारेपै जलकी चंचल जो गोल लहरी तिनकी कलोलनको कोलाहल है, तेरो वृन्दावनमें जो खेल तामें जो भौंरानकी गुञ्जार और मोरनकी कोहकन और तोता मैंना

दिव्यंकौनामधेयंश्रुतमथयमुनेदंडयत्यद्रितुल्यंपापव्यूहंत्वखंडंवसतुममगिरामंडलेतुक्षणंतत् ॥ दंड्यांश्चाकार्यदंड्यान्सकृदपिवचसाखंडितंयद्गृहीतंभ्रातुर्मार्तंडसूनोरदतिपुरिदढस्तेप्रचण्डेतिदंडः ॥ ७ ॥ रज्जुर्वाविषयांधकूपतरणेपापाखुदर्वीकरीवेण्युष्णिक्चविराजमूर्तिशिरसोमालासितवासुन्दरी ॥ धन्यंभाग्यमतःपरंसुविनृणांयत्राविकृद्वल्लभागोलोकेप्यतिदुर्लभातिसुभगाभात्यद्वितीयानदी ॥ ८ ॥ गोपीगोकुलगोपकेलिकलितेकालिन्दिकृष्णप्रभेत्वत्कूलेजललोलगोलविचलत्कल्लोलकोलाहलः ॥ त्वत्कांतारकुतूहलालिकुलकृज्झंकारकेकाकुलःकूजत्कोकिलसंकुलोव्रजलतालंकारभृत्पातुमाम् ॥ ९ ॥ भवंतिजिह्वास्तनुरोमतुल्यागिरोयदाभूसिकताइवाशु ॥ तदप्यलंयातिनतेगुणांतंसंतोमहांतःकिलशेषतुल्याः ॥ १० ॥ कलिन्दगिरिनन्दिनीस्तवउपस्ययंवापरःश्रुतश्चयदिपाठितोभुवितनोतिसन्मंगलम् ॥ जनोपियदिधारयेत्किलपठेच्चयोनित्यशःसयातिपरमंपदंनिजनिकुंजलीलावृतम् ॥ ११ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमाधुर्यखण्डे श्रीसौभरिमांधातृसंवादेश्रीयमुनास्तवोनामसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ ॥ मान्धातोवाच ॥ ॥ कृष्णायाःपटलंपुण्यंकामदंपद्धतिंयथा ॥ वदमांमुनिशार्दूलत्वंसाक्षाज्ज्ञानशेवधिः ॥ १ ॥ ॥ सौभरिरुवाच ॥ ॥ पटलंपद्धतिंवक्ष्येयमुनायामहामते ॥ कृत्वाश्रुत्वाथजस्त्वाजीवन्मुक्तोभवेन्नरः ॥ २ ॥

कोइल पपीहाकी झंकारनते व्याप्त व्रजलतानकी आभूषित करनहारी तू सो मेरी रक्षा करौ ॥ ९ ॥ जितने शरीरमें रोम हैं तितनी जो जीभ होयँ और जितने धरतीमें रेणुके किनका हैं तितनी वाणी होय और जितने सन्त महंत हैं ते शेषकी तुल्य होंय तोऊ तेरे गुणनको अन्त नहीं पायसकें ॥ १० ॥ कलिंदगिरिनंदिनीको यह स्तोत्र है याकूं जो कोई प्रातः काल पाठ करै अथवा सुने तो पृथ्वीमें उत्तम मंगल करै है और जो जन नित्य पाठकरै अथवा या स्तवको यन्त्रमें धरके कण्ठमें धारण करै तो निज निकुंजलीलाते आवृत ऐसो जो गोलोकधाम है ताकूं प्राप्त होयहै ॥ ११ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां माधुर्यखण्डे भाषाटीकायां सौभरिमांधातृसंवादे कालिंदीस्तवो नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ मांधाता पूछै है कि, यमुनाजीको जो पटल पद्धति अतिपवित्र और कामदाता है तिन्हें कहो, हे मुनिशार्दूल ! तुम साक्षात् ज्ञानकी निधि हो ॥ १ ॥ सौभरि मुनि बोले—हे महाबुद्धी ! मैं

यमुनाजीकी पटल पद्धति कहूंगो याकूं कहे सुने जपै तो मनुष्य जीवनमुक्त हैजाय है ॥ २ ॥ पहले ॐकार कहै, फिर ह्रीं कहे फिर, श्री कहै, फिर क्लीं कहे ॥ ३ ॥ फिर कालिंदी कहै, फिर देव्यै कहै, फिर नमः कहै, ऐसे मन्त्र जपै ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्री क्लीं कालिंदी देव्यै नमः । ग्यारह लक्ष या मन्त्रकूं भूमिमें जपै तो सिद्धि होय, याहि मनुष्य जा जा कामनाकूं करै सोई सो याकूं प्राप्त होयहै ॥ ५ ॥ सिंहासनपै सोलह दलको कमल लिखै, फिर वा कमलकी कर्णिका (मकरंद) अर्थात् मध्यभागमें कलीपै तो कालिंदी श्रीकृष्णसहित लिखै ॥ ६ ॥ फिर वा कमलके दलनमें ये सोलह नदी लिखै–जाह्नवी १, विरजा २, कृष्णा ३, चन्द्रभागा ४, सरस्वती ५, गोमती ६, कौशिकी ७, वेणी ८, सिंधु ९, गोदावरी १०, वेदस्मृती ११, वेत्रवती १२, शतद्रु १३, सरयू १४, ऋषिकुल्या १५, ककुद्मिनी १६, इनको ॥ ७ ॥ ८ ॥ न्यारे न्यारे नामनते विधिसों पूजै, फिर चार

प्रणवंपूर्वमुद्धृत्यमायाबीजंततःपरम् ॥ रमाबीजंततःकृत्वाकामबीजंविधानतः ॥ ३ ॥ कालिन्दीतिचतुर्थ्यंतेदेवीपदमतःपरम् ॥ नमःपश्चात्सं विधायैजपेन्मंत्रमिमंनरः ॥ ४ ॥ जप्तैकादशलक्षाणिमंत्रसिद्धिर्भवेद्भुवि ॥ जनैःप्रार्थ्योश्चयेकामाःसर्वेप्राप्याःस्वतश्चते ॥ ५ ॥ विधाय षोडशदलंपद्मंसिंहासनेशुभे ॥ कर्णिकायांचकालिंदींन्यसेच्छ्रीकृष्णसंयुताम् ॥ ६ ॥ जाह्नवींविरजांकृष्णांचन्द्रभागांसरस्वतीम् ॥ गोमतीं कौशिकींवेणींसिंधुंगोदावरींतथा ॥ ७ ॥ वेदस्मृतिंवेत्रवतींशतद्रुंसरयूंतथा ॥ पूजयेन्मानवश्रेष्ठऋषिकुल्यांककुद्मिनीम् ॥ ८ ॥ पृथक्पृथक्तद् लेषुनामोच्चार्यविधानतः॥ वृन्दावनगोवर्द्धनंवृंदांचतुलसींतथा ॥ चतुर्दिक्षुविधायाशुपूजयेन्नामभिःपृथक् ॥ ९ ॥ ॐनमोभगवत्यैकलिन्दन न्दिन्यैसूर्यकन्यकायैयमभगिन्यैश्रीकृष्णप्रियायैयूथीभूतायैस्वाहा ॥ अनेनमंत्रेणावाहनादिषोडशोपचारान्समाहितउपाहरेत् ॥ १० ॥ इत्येवंपटलंविद्धितुभ्यंवक्ष्यामिपद्धतिम् ॥ यावत्संपूर्णतांयातिपुरश्चरणमेवहि ॥ ११ ॥ तावद्भवेद्ब्रह्मचारीजपेन्मौनव्रतोद्विजः ॥ यवभोजी भूमिशायीपत्रभुग्जितमानसः ॥ १२ ॥ कामंक्रोधंतथालोभंमोहंद्वेषंविसृज्यसः ॥ भक्त्यापरमयाराजन्वर्त्तमानस्तुदेशिकः ॥ १३ ॥ ब्राह्ममुहूर्ते उत्थायध्यात्वादेवींकलिंदजाम् ॥ अरुणोदयवेलायांनद्यांस्नानंसमाचरेत् ॥ १४ ॥ मध्याह्नेचापिसंध्यायांसंध्यावन्दनतत्परः ॥ समाप्तेनि यमेराजन्कालिंदीतीरमास्थितः ॥ १५ ॥ दशलक्षंब्राह्मणानांसपुत्राणांमहात्मनाम् ॥ पूजयित्वागंधपुष्पैर्दत्वातेभ्यःसुभोजनम् ॥ १६ ॥

दिशानमें वृन्दावन १, गोवर्द्धन २, वृन्दादेवी ३, और तुलसी ४, इनको पूर्वादिक चारों दिशानमें स्थापन कर इनइनके नाम मन्त्रनसों पूजन करै ॥ ९ ॥ या मन्त्रते आवाहनते आदि लैकें षोड़शोपचार पूजा करै ॐ नमो भगवत्यै कलिंदनंदिन्यै सूर्यकन्यकायै यमभगिन्यै कृष्णप्रियायै यूथीभूतायै स्वाहा ॥ १० ॥ यह पटल तौ मैनें तुम्हारे आगे कह्यौ, अब पद्धति कहूंहूं ताहि सुनों, जब तक यह पुरश्चरण संपूर्ण होय ॥ ११ ॥ तब तलक ब्रह्मचर्य करै, सावधान हैकें मौनते मन्त्र जपै, जौको भोजन करै, पृथ्वीमें सोवै, पत्तलमें खाय, मनकूं रोकै ॥ १२ ॥ काम, क्रोध, लोभ, मोह, द्वेष न करै मन्त्री परमभक्तिते वर्तमान रहै ॥ १३ ॥ चारघड़ी राततें उठै यमुनाजीको ध्यान करै फिर अरुणोदयके समय जीमें स्नान करै ॥ १४ ॥ मध्याह्नमें मध्याह्नसंध्या करै जब नियम समाप्त होय तब कालिंदीके तीरपै बैठै ॥ १५ ॥ बेटा सहित दशलाख ब्राह्मणनको महात्मानको पूजन करै

भोजन करावै ॥ १६ ॥ वस्त्र भूषण सोनेके पात्र उज्वल देय दक्षिणा शुभ देय तब सिद्धि निश्चय होय ॥ १७ ॥ हे राजन् ! हे महामते ! यह पद्धति मैंने तेरे आगे कही याकूं नियमते तैं कर, अब कहा सुनिवेकी इच्छा करै है ॥ १८ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां माधुर्यखण्डे भाषाटीकायां पटलपद्धतिवर्णनं नामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ राजा पूछै है सर्व सिद्धिकी करनहारो यमुनाजीको सहस्रनाम वर्णन करो, हे मुनिशार्दूल ! तुम सर्वज्ञ हो और निरामय हो ॥ १ ॥ सौभरि बोले—हे मांधातः ! अब मैं सर्व सिद्धिकी करनहारो यमुनाजीको सहस्रनाम तेरे अगाडी वर्णन करूंहूं जो श्रीकृष्णके वशकरिवेवारो और सब सिद्धिको करनवारो है ॥ २ ॥ ॐ अस्य श्रीकालिंदीसहस्रनामस्तोत्रमंत्रस्य सौभरिऋषिः श्रीयमुनादेवता अनुष्टुपछंदः मायाबीजम् इति कीलकं रमाबीजमितिशक्तिः श्रीकालिंदनन्दिनीप्रसादसिद्धयर्थं जपे विनियोगः । यह विनियोग है हाथमें

वस्त्रभूषणसौवर्णपात्राणिप्रस्फुरन्तिच ॥ दक्षिणाश्चशुभादद्यात्ततःसिद्धिर्भवेत्खलु ॥ १७ ॥ इतितेपद्धतिःप्रोक्तामयाराजन्महामते ॥ कुरुत्वंनियमंसर्वंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ १८ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांमाधुर्यखंडेपटलपद्धतिवर्णनंनामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ ॥ ॥ मांधातोवाच ॥ ॥ नाम्नांसहस्रंकृष्णायाःसर्वसिद्धिकरंपरम् ॥ वदमांमुनिशार्दूलत्वंसर्वज्ञोनिरामयः ॥ १ ॥ ॥ सौभरिरुवाच ॥ ॥ नाम्नांसहस्रंकालिंद्यामांधातस्तेवदाम्यहम् ॥ सर्वसिद्धिकरंदिव्यंश्रीकृष्णवशकारकम् ॥२॥ ॐ अस्यश्रीकालिंदीसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य ॥ सौभरिऋषिः ॥ श्रीयमुनादेवता ॥ अनुष्टुपछंदः ॥ मायाबीजमितिकीलकम् ॥ रमाबीजमितिशक्तिः ॥ श्रीकलिंदनन्दिनीप्रसादसिद्धयर्थंजपेविनियोगः ॥ अथध्यानम् ॥ श्यामामंभोजनेत्रांसघनघनरुचिरत्नमंजीरकूजत्कांचीकेयूरयुक्तांकनकमणिमयेबिभ्रतींकुंडलेद्वे ॥ भ्राजच्छ्रीनीलवस्त्रस्फुरदमलचलद्धारभारांमनोज्ञांध्यायेमार्तंडपुत्रींतनुकिरणचयोद्दीप्तदीपाभिरामाम् ॥ ३ ॥ इतिध्यानम् ॥ ॐ कालिन्दीयमुनाकृष्णाकृष्णरूपासनातनी ॥ कृष्णवामांससंभूतापरमानन्दरूपिणी ॥ ४ ॥ गोलोकवासिनीश्यामावृन्दावनविनोदिनी ॥ राधासखीरासलीलारासमंडलमंडिनी ॥ ५ ॥ निकुंजवासिनीवल्लीरंगवल्लीमनोहरा ॥ श्रीरासमंडलीभूतायूथीभूताहरिप्रिया ॥ ६ ॥ गोलोकतटिनीदिव्यानिकुंजतलवासिनी ॥ दीर्घोर्मिवेगगंभीरापुष्पपल्लववाहिनी ॥ ७ ॥

जल लेके अस्यश्री यहांसों लेके जपे विनियोगःताई पढके पानीको छोड़देय ॥ यह संकल्प करके फिर यह ध्यान करै । श्यामघनसी जाकी मूर्ति अथवा षोडश १६ वर्षकी अवस्थावारी सुंदर कमलसे जाके नेत्र नूपुर कांची बजनी पहरें हैं सुवर्णके बाजू मणिमयजडाऊ कुंडल धारण करें हैं देदीप्यमान नीलांबरकूं धारण करैं हैं जगमगाते गजमोतीनके हारनके भारसों युक्त मनकी हरनवारी सूर्यकी पुत्री शरीरकी किरणनकी दीप्तिते दीपावलीसी है प्रकाश करै ताको मैं ध्यान करौंहौं ॥ ३ ॥ अब नाम वर्णन करें हैं—कालिंदी यमुना कृष्णा कृष्णरूपा सनातनी कृष्णवामांससंभूता परमानन्दरूपिणी ॥ ४ ॥ गोलोकवासिनी श्यामा वृंदावनविनोदिनी राधासखी रासलीला रासमंडलमंडिनी ॥ ५ ॥ निकुंजवासिनी वल्ली रंगवल्ली मनोहरा श्रीरासमंडलीभूता यूथीभूता हरिप्रिया ॥ ६ ॥ गोलोकतटिनी दिव्या निकुंजतलवासिनी दीर्घोर्मिवेगगंभीरा पुष्पपल्लववाहिनी ॥ ७ ॥

घनश्यामा मेघमाला बलाका पद्ममालिनी परिपूर्णतमा पूर्णा पूर्णब्रह्मप्रिया परा ॥ ८ ॥ महावेगवती साक्षान्निकुंजद्वारनिर्गता महानदी मन्दगतिः विरजावेगभेदिनी ॥ ९ ॥ अनेकब्रह्मांडगता ब्रह्मद्रवसमाकुला गंगामिश्रा निर्जलाभा निर्मला सरितांवरा ॥ १० ॥ रत्नबद्धोभयतटी हंसपद्मादिसंकुला नदीनिर्मलपानीया सर्वब्रह्मांडपावनी ॥ ११ ॥ वैकुंठपरिखीभूता परिखापापहारिणी ब्रह्मलोकगता ब्राह्मी स्वर्गा स्वर्गनिवासिनी ॥ १२ ॥ उल्लसंती प्रोत्पतंती मेरुमाला महोज्ज्वला श्रीगंगांभःशिखरिणी गंडशैलविभेदिनी ॥ १३ ॥ देशान्पुनन्ती गच्छंती वहंती भूमिमध्यगा मार्तंडतनुजा पुण्या कलिंदगिरिनंदिनी ॥ १४ ॥ यमस्वसा मंदहासा सुद्विजा रचितांबरा नीलांबरा पद्ममुखी चरंती

घनश्यामामेघमालाबलाकापद्ममालिनी ॥ परिपूर्णतमापूर्णापूर्णब्रह्मप्रियापरा ॥ ८ ॥ महावेगवतीसाक्षान्निकुंजद्वारनिर्गता ॥ महानदीमंदगतिर्विरजावेगभेदिनी ॥ ९ ॥ अनेकब्रह्मांडगताब्रह्मद्रवसमाकुला ॥ गंगामिश्रानिर्जलाभानिर्मलासरितांवरा ॥ १० ॥ रत्नबद्धोभयतटीहंसपद्मादिसंकुला ॥ नदीनिर्मलपानीयासर्वब्रह्मांडपावनी ॥ ११ ॥ वैकुंठपरिखीभूतापरिखापापहारिणी ॥ ब्रह्मलोकगताब्राह्मीस्वर्गास्वर्गनिवासिनी ॥ १२ ॥ उल्लसन्तीप्रोत्पतंतीमेरुमालामहोज्ज्वला ॥ श्रीगंगांभःशिखरिणीगंडशैलविभेदिनी ॥ १३ ॥ देशान्पुनन्तीगच्छन्तीवहंतीभूमिमध्यगा ॥ मार्तण्डतनुजापुण्याकलिन्दगिरिनन्दिनी ॥ १४ ॥ यमस्वसामन्दहासासुद्विजारचिताम्बरा ॥ नीलांबरापद्ममुखीचरंतीचारुदर्शना ॥ १५ ॥ रंभोरूःपद्मनयनामाधवीप्रमदोत्तमा ॥ तपश्चरंतीसुश्रोणीकूजन्नूपुरमेखला ॥ १६ ॥ जलस्थिताश्यामलांगीखांडवाभाविहारिणी ॥ गांडीविभाषिणीवन्याश्रीकृष्णंवरमिच्छती ॥ १७ ॥ द्वारकागमनाराज्ञीपट्टराज्ञीपरंगता ॥ महाराज्ञीरत्नभूषागोमतीतीरचारिणी ॥ १८ ॥ स्वकीयाचसुखास्वार्थास्वभक्तकार्यसाधिनी ॥ नवलांगाबलामुग्धावरांगावामलोचना ॥ १९ ॥ अज्ञातयौवनादीनाप्रभाकान्तिर्द्युतिश्छविः ॥ सुशोभापरमाकीर्तिःकुशलाज्ञातयौवना ॥ २० ॥ नवोढामध्यगामध्याप्रौढिःप्रौढाप्रगल्भका ॥ धीराऽधीराधैर्यधराज्येष्ठाश्रेष्ठाकुलांगना ॥ २१ ॥ क्षणप्रभाचंचलार्चाविद्युत्सौदामिनीतडित् ॥ स्वाधीनपतिकालक्ष्मीःपुष्टास्वाधीनभर्तृका ॥ २२ ॥ कलहांतरिताभीरुरिच्छाप्रोत्कंठिताकुला ॥ कशिपुस्थादिव्यशय्यागोविंदहृतमानसा ॥ २३ ॥

चारुदर्शना ॥ १५ ॥ रंभोरू पद्मनयना माधवी प्रमदोत्तमा तपश्चरंती सुश्रोणी कूजन्नूपुरमेखला ॥ १६ ॥ जलस्थिता श्यामलांगी खांडवाभा विहारिणी गांडीविभाषिणी वन्या श्रीकृष्णंवरमिच्छती ॥ १७ ॥ द्वारकागमना राज्ञी पट्टराज्ञी परंगता महाराज्ञी रत्नभूषा गोमतीतीरचारिणी ॥ १८ ॥ स्वकीया सुखा स्वार्था स्वभक्तकार्यसाधिनी नवलांगा अबला मुग्धा वरांगा वामलोचना ॥ १९ ॥ अज्ञातयौवना दीना प्रभाकांतिः द्युतिः छविः सुशोभा परमा कीर्तिः कुशला अज्ञातयौवना ॥ २० ॥ नवोढा मध्यगा मध्या प्रौढिः प्रौढा प्रगल्भिका धीरा अधीरा धैर्यधरा ज्येष्ठा श्रेष्ठा कुलांगना ॥ २१ ॥ क्षणप्रभा चंचलार्चा विद्युत् सौदामिनी तडित् स्वाधीनपतिका लक्ष्मी पुष्टा स्वाधीनभर्तृका ॥ २२ ॥ कलहांतरिता भीरु इच्छा

मालकंठिता आकुला कशिपुस्था दिव्यशय्या गोविंदहृतमानसा ॥ २३ ॥ खंडिता अखंडशोभाढ्या विप्रलब्धा अभिसारिका विरहार्ता विरहिणी नारी प्रोषितभर्तृका ॥ २४ ॥ मानिनी मानदा प्राज्ञा मंदारवनवासिनी झंकारिणी झणत्कारी रणन्मंजीरनूपुरा ॥ २५ ॥ मेखलामेखला कांची कांचनी कांचनामयी कंचुकी कंचुकमणिः श्रीकंठाढ्या महामणिः ॥ २६ ॥ श्रीहारिणी पद्महारा मुक्ता मुक्ताफलार्चिता रत्नकंकणकेयूरा स्फुरदंगुलिभूषणा ॥ २७ ॥ दर्पणा दर्पणीभूता दुष्टदर्पविनाशिनी कंबुग्रीवा कंबुधरा ग्रैवेयकविराजिता ॥ २८ ॥ ताटंकिनी दंतधरा हेमकुंडलमंडिता शिखाभूषा भालपुष्पा नासामौक्तिकशोभिता ॥ २९ ॥ मणिभूमिगता देवी रैवताद्रिविहारिणी वृंदावनगता वृंदा वृंदारण्यनिवासिनी ॥ ३० ॥

खंडिताखण्डशोभाढ्याविप्रलब्धाभिसारिका ॥ विरहार्ताविरहिणीनारीप्रोषितभर्तृका ॥ २४ ॥ मानिनीमानदाप्राज्ञामन्दारवनवासिनी ॥ झंकारिणीझणत्कारीरणन्मंजीरनूपुरा ॥ २५ ॥ मेखलामेखलाकांच्यकांचनीकांचनामयी ॥ कंचुकीकंचुकमणिःश्रीकण्ठाढ्यामहामणिः ॥ ॥ २६ ॥ श्रीहारिणीपद्महारामुक्तामुक्तफलार्चिता ॥ रत्नकंकणकेयूरास्फुरदंगुलिभूषणा ॥ २७ ॥ दर्पणादर्पणीभूतादुष्टदर्पविनाशिनी ॥ कंबुग्रीवकंबुधराग्रैवेयकविराजिता ॥ २८ ॥ ताटंकिनीदंतधराहेमकुंडलमण्डिता ॥ शिखाभूषाभालपुष्पानासामौक्तिकशोभिता ॥ २९ ॥ मणिभूमिगतादेवीरैवताद्रिविहारिणी ॥ वृन्दावनगतावृन्दावृन्दारण्यनिवासिनी ॥ ३० ॥ वृन्दावनलतामाध्वीवृन्दारण्यविभूषणा ॥ सौंदर्यलहरीलक्ष्मीर्मथुरातीर्थवासिनी ॥ ३१ ॥ विश्रांतवासिनीकाम्यारम्यागोकुलवासिनी ॥ रमणस्थलशोभाढ्यामहावनमहानदी ॥ ३२ ॥ प्रणताप्रोन्नतापुष्टाभारतीभरतार्चिता ॥ तीर्थराजगतिर्गोत्रागंगासागरसंगमा ॥ ३३ ॥ सप्ताब्धिभेदिनीलोलासप्तद्वीपगताबलात् ॥ लुठंती शैलभिद्यंतीस्फुरंतीवेगवत्तरा ॥ ३४ ॥ कांचनीकांचनीभूमिःकांचनीभूमिभाविता ॥ लोकदृष्टिर्लोकलीलालोकालोकाचलार्चिता ॥ ३५ ॥ शैलोद्गतास्वर्गगतास्वर्गार्चास्वर्गपूजिता ॥ वृन्दावनीवनाध्यक्षारक्षाकक्षातटीपटी ॥ ३६ ॥ असिकुण्डगताकच्छास्वच्छन्दोच्छलितादिजा ॥ कुहरस्थारथप्रस्थाप्रस्थाशांततरातुरा ॥ ३७ ॥ अंबुच्छटासीकराभादर्दुरादार्दुरीधरा ॥ पापांकुशापापसिंहीपापद्रुमकुठारिणी ॥ ३८ ॥

वृन्दावनलता माध्वी वृंदारण्यविभूषणा सौंदर्यलहरी लक्ष्मी मथुरातीर्थवासिनी ॥ ३१ ॥ विश्रांतवासिनी काम्या रम्या गोकुलवासिनी रमणस्थलशोभाढ्या महावनमहानदी ॥ ३२ ॥ प्रणता प्रोन्नता पुष्टा भारती भरतार्चिता तीर्थराजगतिः गोत्रा गंगासागरसंगमा ॥ ३३ ॥ सप्ताब्धिभेदिनी लोला सप्तद्वीपगताबलात् लुठंती शैलभिद्यंती स्फुरंती वेगवत्तरा ॥ ॥ ३४ ॥ कांचनी कांचनीभूमिः कांचनीभूमिभाविता लोकदृष्टिः लोकलीला लोकालोकाचलार्चिता ॥ ३५ ॥ शैलोद्गता स्वर्गगता स्वर्गार्चा स्वर्गपूजिता वृंदावनी वनाध्यक्षा रक्षा कक्षा तटी पटी ॥ ३६ ॥ असिकुंडगता कच्छा स्वच्छंदा उच्छलिता आदिजा कुहरस्था रथप्रस्था प्रस्था शांततरा आतुरा ॥ ३७ ॥ अंबुच्छटा शीकराभा दर्दुरी दार्दुरी धरा

पापांकुशा पापसिंही पापद्रुमकुठारिणी ॥ ३८ ॥ पुण्यसंघा पुण्यकीर्ति पुण्यदा पुण्यवर्द्धिनी मधोर्वननदी मुख्या तुला तालवनस्थिता ॥ ३९ ॥ कुमुद्वननदी कुब्जा कुमुदांभोजवर्द्धिनी ध्रुवरूपा वेगवती सिंहसर्पादिवाहिनी ॥ ४० ॥ बहुली बहुला बह्वी बहुला वनवंदिता राधाकुंडकला आराध्या कृष्णकुंडजलाश्रिता ॥ ४१ ॥ ललिताकुंडगा घंटा विशाखाकुंडमंडिता गोविंदकुंडनिलया गोपकुंडतरंगिणी ॥ ४२ ॥ श्रीगंगा मानसीगंगा कुसुमांबरभाविनी गोवर्द्धनी गोधनाढ्या मयूरीवरवर्णिनी ॥ ४३ ॥ सारसी नीलकंठाभा कूजत्कोकिलपोतकी गिरिराजप्रभू भूरि आतपत्रा आतपत्रिणी ॥ ४४ ॥ गोवर्द्धनांका गोदंती दिव्यौषधिनिधि सृती पारदी पारदमयी नारदी सारदी भृती ॥ ४५ ॥ श्रीकृष्णचरणांकस्था कामा

पुण्यसंघापुण्यकीर्तिःपुण्यदापुण्यवर्द्धिनी ॥ मधोर्वननदीमुख्यातुलातालवनस्थिता ॥ ३९ ॥ कुमुद्वननदीकुब्जाकुमुदांभोजवर्द्धिनी ॥ ध्रुवरूपा वेगवतीसिंहसर्पादिवाहिनी ॥ ४० ॥ बहुलीबहुदाबह्वीबहुलावनवन्दिता ॥ राधाकुण्डकलाराध्याकृष्णकुण्डजलाश्रिता ॥ ४१ ॥ ललिताकुण्डगाघंटाविशाखाकुण्डमंडिता ॥ गोविन्दकुण्डनिलयागोपकुण्डतरंगिणी ॥४२॥ श्रीगंगामानसीगंगाकुसुमांबरभाविनी ॥ गोवर्धिनीगोधनाढ्यामयूरीवरवर्णिनी ॥ ४३ ॥ सारसीनीलकंठाभाकूजत्कोकिलपोतकी ॥ गिरिराजप्रभूर्भूरिरातपत्रातपत्रिणी ॥ ४४ ॥ गोवर्द्धनांका गोदंतीदिव्यौषधिनिधिःसृतिः ॥ पारदीपारदमयीनारदीशारदीभृतिः ॥ ४५ ॥ श्रीकृष्णचरणांकस्थाकामाकामवनांचिता ॥ कामाटवीनन्दिनीचनन्दग्राममहीधरा ॥ ४६ ॥ बृहत्सानुद्युतिःप्रोतानन्दीश्वरसमन्विता ॥ काकलीकोकिलमयीभांडीरकुशकौशला ॥ ४७ ॥ लोहार्गलप्रदाकाराकाश्मीरवसनावृता ॥ बर्हिषदीशोणपुरीशूरक्षेत्रपुराधिका ॥ ४८ ॥ नानाभरणशोभाढ्यानानावर्णसमन्विता ॥ नानानारीकदंबाढ्यारंगारंगमहीरुहा ॥ ४९ ॥ नानालोकगतावर्चिर्नानाजलसमन्विता ॥ स्त्रीरत्नंरत्ननिलयाललनारत्नरंजिनी ॥ ५० ॥ रंगिणीरंगभूमाढ्यारंगारंगमहीरुहा ॥ राजविद्याराजगुह्याजगत्कीर्तिर्घनाघना ॥ ५१ ॥ विलोलघंटाकृष्णांगाकृष्णदेहसमुद्भवा ॥ नीलपंकजवर्णाभानीलपंकजहारिणी ॥ ५२ ॥ नीलाभानीलपद्माढ्यानीलांभोरुहवासिनी ॥ नागवल्लीनागपुरीनागवल्लीदलार्चिता ॥५३॥ तांबूलचर्चिताचर्चामकरन्दमनोहरा ॥ सकेसराकेसरिणीकेशपाशाभिशोभिता ॥ ५४ ॥

कामवनांचिता कामाटवी नंदिनी नंदग्राममहीधरा ॥ ४६ ॥ बृहत्सानुद्युतिः प्रोता नंदीश्वरसमन्विता काकली कोकिलमयी भांडीरकुशकौशला ॥ ४७ ॥ लोहार्गलप्रदाकारा काश्मीरवसनावृता बर्हिषदी शोणपुरी शूरक्षेत्रपुराधिका ॥ ४८ ॥ नानाभरणशोभाढ्या नानावर्णसमन्विता नानानारीकदंबाढ्या नानारंगमहीरुहा ॥ ४९ ॥ नानालोकगता वर्चि नाना जलसमन्विता स्त्रीरत्नं रत्ननिलया ललना रत्नरंजिनी ॥ ५० ॥ रंगिनी रंगभूमाढ्या रंगा रंगमहीरुहा राजविद्या राजगुह्या जगत्कीर्ति घनाघना ॥ ५१ ॥ विलोलघंटा कृष्णांगा कृष्णदेहसमुद्भवा नीलपंकजवर्णाभा नीलपंकजहारिणी ॥ ५२ ॥ नीलाभा नीलपद्माढ्या नीलांभोरुहवासिनी नागवल्ली नागपुरी नागवल्लीदलार्चिता ॥ ५३ ॥ तांबूलचर्चिता चर्चा मकरन्दम

नोहरा सकेशरा केशरिणी केशपाशाभिशोभिता ॥ ५४ ॥ कज्जलाभा कज्जलाक्ता कज्जली कलितांजना अलक्तचरणा ताम्रा लाला ताम्रीकृतांबरा ॥ ५५ ॥ सिंदूरिता लिप्तवर्णा सुश्रीः श्रीखंडमंडिता पाटीरपंकवसना जटामांसी रुगंबरा ॥५६॥ आगरी अगरुगंधाक्ता तगराश्रितमारुता सुगंधतैलरुचिरा कुंतलालिः सकुंतला ॥ ५७ ॥ शकुंतला पांसुला पातिव्रत्यपरायणा सूर्यप्रभा सूर्यकन्या सूर्यदेहसमुद्भवा ॥ ५८ ॥ कोटिसूर्यप्रतीकाशा सूर्यजा सूर्यनंदिनी संज्ञा संज्ञासुता स्वेच्छा संज्ञामोदप्रदायिनी ॥ ५९ ॥ संज्ञापुत्री स्फुरच्छाया तपती तापकारिणी सावर्ण्यानुभवा देवी वाडवा सौख्यदायिनी ॥ ६० ॥ शनैश्चरानुजा कीला चंद्रवंशविवर्द्धिनी चंद्रवंशवधू चंद्रा चंद्रावलिसहायिनी ॥ ६१ ॥ चंद्रावती चन्द्रलेखा चन्द्रकांतानुगा अंशुका भैरवी पिंगला शंकी लीलावती आगरीमयी ॥ ६२ ॥ धनश्री देवगांधारी स्वर्मणि गुणवर्द्धिनी व्रजमल्ला बंधकारी विचित्रा

कज्जलाभाकज्जलाक्ताकज्जलीकलितांजना ॥ अलक्तचरणाताम्रालालाताम्रीकृतांबरा ॥ ५५ ॥ सिन्दूरितालिप्तवाणीसुश्रीःश्रीखंडमंडिता ॥ पाटीरपंकवसनाजटामांसीरुगम्बरा ॥ ५६ ॥ आगर्य्यगुरुगन्धाक्तातगराश्रितमारुता ॥ सुगन्धितैलरुचिराकुंतलालिःसकुंतला ॥ ५७ ॥ शकुंतलाऽपांसुलाचपातिव्रत्यपरायणा ॥ सूर्यप्रभासूर्यकन्यासूर्यदेहसमुद्भवा ॥ ५८ ॥ कोटिसूर्य्यप्रतीकाशासूर्यजासूर्यनंदिनी ॥ संज्ञासंज्ञासुतास्वेच्छासंज्ञामोदप्रदायिनी ॥ ५९ ॥ संज्ञापुत्रीस्फुरच्छायातपतीतापकारिणी ॥ सावर्ण्यानुभवादेवीवडवासौख्यदायिनी ॥ ६० ॥ शनैश्चरानुजाकीलाचन्द्रवंशविवर्द्धिनी ॥ चन्द्रवंशवधूश्चन्द्राचंद्रावलिसहायिनी ॥ ६१ ॥ चन्द्रावतीचन्द्रलेखाचन्द्रकांतानुगांशुका ॥ भैरवीपिंगलाशंकीलीलावत्यागरीमयी॥ ६२ ॥ धनश्रीदेवगान्धारीस्वर्मणिर्गुणवर्द्धिनी ॥ व्रजमल्लार्यंधकारीविचित्राजयकारिणी ॥ ६३ ॥ गान्धारीमंजरीटोडीगुर्ज्यर्य्याशावरीजया ॥ कर्णाटीरागिणीगौरीवैराटीगौरवाटिका ॥ ६४ ॥ चतुश्चन्द्राकलाहेरीतैलंगीविजयावती ॥ तालीतलस्वरागानाक्रियामात्रप्रकाशिनी ॥ ६५ ॥ वैशाखीचाचलाचारुर्माचारीघूघटीघटा ॥ वैरागरीसोरटीशाकेदारीजलधारिका ॥ ६६ ॥ कामाकरश्रीकल्याणीगौडकल्याणमिश्रिता ॥ रामसञ्जीविनीहेलामन्दारीकामरूपिणी ॥ ६७ ॥ सारंगीमारुतीहोढासागरीकामवादिनी ॥ वैभासीमंगलाचान्द्रीरासमंडलमंडना ॥ ६८ ॥ कामधेनुःकामलताकामदाकमनीयका ॥ कल्पवृक्षस्थलीस्थूलाक्षुधासौधनिवासिनी॥६९॥ गोलोकवासिनीसुभ्रूर्यष्टिभृद्द्वारपालिका ॥ शृंगारप्रकराशृंगास्वच्छाशय्योपकारिका ॥ ७० ॥

जयकारिणी ॥ ६३ ॥ गांधारी मञ्जरी टोडी गुर्जरी आशवरी जया कर्णाटी रागिणी गौरी वैराटी गौरवाटिका ॥ ६४ ॥ चतुश्चंद्रा कलाहेरी तैलंगी विजयावती ताली तालस्वरा गाना क्रियामात्रप्रकाशिनी ॥ ६५ ॥ वैशाखी चाचला चारु माचारी घूघटी घटा वैरागरी सोरटीशा केदारी जलधारिका ॥ ६६ ॥ कामाकरश्रीकल्याणी गौडकल्याणमिश्रिता रामसंजीविनी हेला मंदारी कामरूपिणी ॥ ६७ ॥ सारंगी मारुती होढा सागरी कामवादिनी वैभासी मङ्गला चांद्री रासमण्डलमंडना ॥ ६८ ॥ कामधेनुः कामलता कामदा कमनीयका कल्पवृक्षस्थली स्थूला क्षुधासौधनिवासिनी ॥ ६९ ॥ गोलोकवासिनी सुभ्रू यष्टिभृत् द्वारपालिका शृङ्गारप्रकरा शृङ्गारस्वच्छा शय्योपकारिका ॥ ७० ॥

पार्षदा सुसखीसेव्या श्रीवृन्दावनपालिका निकुंजभृत् कुंजपुंजा गुंजाभरणभूषिता ॥ ७१ ॥ निकुंजवासिनी प्रेष्या गोवर्द्धनतटीभवा विशाखा ललिता रामा नीरुजा मधुमाधवी ॥ ७२ ॥ एकानैकसखीशुक्ला सखीमध्या महामनाः श्रुतिरूपा ऋषिरूपा मैथिलाः कौशलाः स्त्रियः ॥ ७३ ॥ अयोध्यापुरवासिन्यः यज्ञसीताः पुलिंदकाः रमावैकुण्ठवासिन्यः श्वेतद्वीपसखीजनाः ॥ ७४ ॥ ऊर्ध्ववैकुण्ठवासिन्यः दिव्याजितपदाश्रिताः श्रीलोकाचलवासिन्यः श्रीसख्यः सागरोद्भवाः ॥ ७५ ॥ दिव्याः अदिव्याः दिव्यांगाः व्याप्ताः त्रिगुणवृत्तयः भूमिगोप्यः दिव्यनार्यः लताः औषधिवीरुधः ॥ ७६ ॥ जालंधर्यः सिंधुसुताः पृथुबर्हिष्मतीभवाः दिव्यांबराः अप्सरसः सौतलाः नागकन्यकाः ॥ ७७ ॥ परंधाम परंब्रह्म पौरुषा प्रकृतिः परा

पार्षदासुसखीसेव्याश्रीवृन्दावनपालिका ॥ निकुंजभृत्कुंजपुंजागुंजाभरणभूषिता ॥ ७१ ॥ निकुंजवासिनीप्रेष्यागोवर्द्धनतटीभवा ॥ विशाखाललितारामानीरुजामधुमाधवी ॥ ७२ ॥ एकानैकसखीशुक्लासखीमध्यामहामनाः ॥ श्रुतिरूपाऋषिरूपामैथिलाःकौशलाःस्त्रियः ॥ ॥ ७३ ॥ अयोध्यापुरवासिन्योयज्ञसीताःपुलिंदकाः ॥ रमावैकुंठवासिन्यःश्वेतद्वीपसखीजनाः ॥ ७४ ॥ ऊर्ध्ववैकुंठवासिन्योदिव्याजितपदाश्रिताः ॥ श्रीलोकाचलवासिन्यःश्रीसख्यःसागरोद्भवाः ॥ ७५ ॥ दिव्याअदिव्यादिव्यांगाव्याप्तास्त्रिगुणवृत्तयः ॥ भूमिगोप्योदेवनार्यो लताऔषधिवीरुधः ॥ ७६ ॥ जालंधर्य्यःसिन्धुसुताःपृथुबर्हिष्मतीभवाः ॥ दिव्यांबराअप्सरसःसौतलानागकन्यकाः ॥ ७७ ॥ परंधामपरंब्रह्मपौरुषाप्रकृतिःपरा ॥ तटस्थागुणभूर्गीतागुणागुणमयीगुणा ॥ ७८ ॥ चिद्घनासदसन्मालादृष्टिर्दृश्यागुणाकरी ॥ महत्तत्त्वमहंकारोमनोबुद्धिःप्रचेतना ॥७९॥ चेतोवृत्तिःस्वांतरात्माचतुर्थीचतुरक्षरा ॥ चतुर्व्यूहाचतुर्मूर्तिर्व्योमवायुरदोजलम् ॥८०॥ महीशब्दोरसोगन्धः स्पर्शोरूपमनेकधा ॥ कर्मेंद्रियंकर्ममयीज्ञानंज्ञानेंद्रियंद्विधा ॥ ८१ ॥ त्रिधाधिभूतमध्यात्ममधिदैवमधिस्थितम् ॥ ज्ञानशक्तिःक्रियाशक्तिः सर्वदेवाधिदेवता ॥ ८२ ॥ तत्त्वसंघाविराण्मूर्तिर्धारणाधारणामयी ॥ श्रुतिःस्मृतिर्वेदमूर्तिःसंहितागर्गसंहिता ॥ ८३ ॥ पाराशरीसैवसृष्टिः पारहंसीविधातृका ॥ याज्ञवल्कीभागवतीश्रीमद्भागवतार्चिता ॥ ८४ ॥ रामायणमयीरम्यापुराणपुरुषप्रिया ॥ पुराणमूर्त्तिःपुण्यांगाशास्त्रमूर्तिर्महोन्नता ॥ ८५ ॥ मनीषाधिषणाबुद्धिर्वाणीधीःशेमुषीमतिः ॥ गायत्रीवेदसावित्रीब्राह्मणीब्रह्मलक्षणा ॥ ८६ ॥

तटस्था गुणभू गीता गुणागुणमयी गुणा ॥ ७८ ॥ चिद्घना सदसन्माला दृष्टि दृश्या गुणाकरी महत्तत्त्वम् अहंकारः मनः बुद्धिः प्रचेतना ॥ ७९ ॥ चेतोवृत्तिः स्वांतरात्मा चतुर्थी चतुरक्षरा चतुर्व्यूहा चतुर्मूर्तिः व्योम वायुः अदः जलम् ॥८०॥ मही शब्दः रसः गन्धः स्पर्शः रूपं अनेकधा कर्मेंद्रियं कर्ममयी ज्ञानं ज्ञानेंद्रियं द्विधा ॥८१॥ त्रिधा अधिभूतम् अध्यात्मम् अधिदैवं ज्ञानशक्तिः क्रियाशक्तिः सर्वदेवाधिदेवता ॥ ८२ ॥ तत्त्वसंघा विराड्मूर्ति धारणा धारणामयी श्रुतिः स्मृतिः वेदमूर्तिः संहिता गर्गसंहिता ॥ ८३ ॥ पाराशरी सृष्टिः परहंसी विधातृका याज्ञवल्की भागवती श्रीमद्भागवतार्चिता ॥ ८४ ॥ रामायणमयी रम्या पुराणपुरुषार्चिता पुराणमूर्त्तिः पुण्यांगा शास्त्रमूर्ति महोन्नता ॥८५॥ मनीषा धिषणा बुद्धिः

वाणी धीः शेमुषी मतिः गायत्री वेदसाविती ब्रह्माणी ब्रह्मलक्षणा ॥ ८६ ॥ दुर्गा अपर्णा सती सत्या पार्वती चंडिका अंबिका आर्या दाक्षायणी दाक्षी दक्षयज्ञविघातिनी ॥ ८७ ॥ पुलोमजा शची इन्द्राणी देवी देववरार्पिता वयुना धारणी धन्या वायवी वायुवेगगा ॥ ८८ ॥ यमानुजा संयमनी संज्ञा छाया स्फुरद्द्युतिः रत्नदेवी रत्नवृन्दा तारा तरणिमण्डला ॥८९॥ रुचिः शांतिः क्षमा शोभा दया दक्षा द्युतिः त्रपा तलतुष्टिः विभा पुष्टिः संतुष्टिः पुष्टभावना॥९०॥चतुर्भुजा चारुनेत्रा द्विभुजा अष्टभुजा अबला शंखहस्ता पद्महस्ता चक्रहस्ता गदाधरा॥९१॥निष गधारिणीचर्मखड्गपाणिः धनुर्द्धरा धनुष्टंकारिणी योध्री दैत्योद्भटविनाशिनी॥९२॥रथस्था गरुडारूढा श्रीकृष्णहृदयस्थिता वंशीधरा कृष्णवेषा स्रग्विणी वनमालिनी॥९३॥ किरीटधारिणी याना

दुर्गापर्णासतीसत्यापार्वतीचंडिकांबिका ॥ आर्यादाक्षायणीदाक्षीदक्षयज्ञविघातिनी ॥ ८७ ॥ पुलोमजा शचीन्द्राणीदेवीदेववरार्पिता ॥ वयुनाधारिणीधन्यावायवीवायुवेगगा ॥ ८८ ॥ यमानुजासंयमनीसंज्ञाच्छायास्फुरद्द्युतिः ॥ रत्नदेवीरत्नवृन्दातारातरणिमण्डला ॥ ८९ ॥ रुचिःशान्तिःक्षमाशोभादयादक्षाद्युतिस्त्रपा ॥ तलतुष्टिर्विभापुष्टिःसन्तुष्टिःपुष्टभावना ॥ ९० ॥ चतुर्भुजाचारुनेत्राद्विभुजाष्टभुजाबला ॥ शंखहस्तापद्महस्ताचक्रहस्तागदाधरा ॥ ९१ ॥ निषंगधारिणीचर्मखड्गपाणिर्धनुर्द्धरा ॥ धनुष्टंकारिणीयोध्रीदैत्योद्भटविनाशिनी ॥ ९२ ॥ रथस्थागरुडारूढाश्रीकृष्णहृदयस्थिता ॥ वंशीधराकृष्णवेषास्रग्विणीवनमालिनी ॥ ९३ ॥ किरीटधारिणीयानामन्दमन्दगतिर्गतिः ॥ चन्द्रकोटिप्रतीकाशातन्वीकोमलविग्रहा ॥ ९४ ॥ भैष्मीभीष्मसुताभीमारुक्मिणीरुक्मरूपिणी ॥ सत्यभामाजांबवतीसत्याभद्रासुदक्षिणा ॥ ॥ ९५ ॥ मित्रवृन्दासखीवृन्दावृन्दारण्यध्वजोर्ध्वगा ॥ शृंगारकारिणीशृंगाशृंगभूःशृंगदाखगा ॥ ९६ ॥ तितिक्षेक्षास्मृतिःस्पर्धास्पृहाश्रद्धा स्वनिर्वृतिः ॥ ईशातृष्णाभिदाप्रीतिर्हिंसायाच्ञाक्रमाकृपिः ॥९७॥ आशानिद्रायोगनिद्रायोगिनीयोगदायुगा ॥ निष्ठाप्रतिष्ठाशमितिःसत्त्वप्र कृतिरुत्तमा ॥ ९८ ॥ तमःप्रकृतिदुर्मर्षीरजःप्रकृतिरानतिः ॥ क्रियाऽक्रियाकृतिर्ग्लानिःसात्त्विक्याध्यात्मिकीवृषा ॥ ९९ ॥ सेवाशिखा मणिर्वृद्धिराहूतिःपिंगलोद्भवा ॥ नागभाषानागभूषानागरीनगरीनगा ॥ १०० ॥ नौर्नौकाभवनौर्भव्याभवसागरसेतुका ॥ मनोमयीदारुम यीसैकतीसिकतामयी ॥ १०१ ॥

मंदमंदगतिर्गतिः चन्द्रकोटिप्रतीकाशा तन्वी कोमलविग्रहा ॥ ९४ ॥ भैष्मी भीष्मसुता भीमा रुक्मिणी रुक्मरूपिणी सत्यभामा जांबवती सत्या भद्रा सुदक्षिणा ॥ ९५ ॥ मित्रवृंदा सखीवृंदा वृंदारण्यध्वजोर्ध्वगा शृंगारकारिणी शृंगा शृंगभूः शृंगदा खगा ॥ ९६ ॥ तितिक्षा ईक्षा स्मृतिः स्पर्द्धा स्पृहा श्रद्धा स्वनिर्वृतिः ईशा तृष्णा भिदा प्रीतिः हिंसा याच्ञा क्रमा कृपिः ॥ ९७ ॥ आशा निद्रा योगनिद्रा योगिनी योगदा युगा निष्ठा प्रतिष्ठा शमितिः सत्त्वप्रकृतिः उत्तमा ॥ ९८ ॥ तमःप्रकृति दुर्मर्षी रजः प्रकृतिः आनतिः क्रिया अक्रियाऽकृतिः ग्लानिः सात्त्विकी अध्यात्मिकी वृषा ॥ ९९ ॥ सेवा शिखामणिः वृद्धिः आहूतिः पिंगलोद्भवा नागभाषा नागभूषा नागरी नगरी नगा ॥ १०० ॥ नौः नौका भवनौः भाव्या भवसा

गरसेतुका मनोमयी मणिमयी सैकती सिकतामयी ॥ १ ॥ लेख्या लेप्या मणिमयी प्रतिहेमविनिर्मिता शैली शैलभवा शीला शीकराभा चला अचला ॥ २ ॥ अस्थिता स्वस्थिता तूली वैदिकी तांत्रिकी विधिः संध्या संध्याभ्रवसना वेदसंधिः सुधामयी ॥ ३ ॥ सायंतनी शिखा वेध्या सूक्ष्मा जीवकलाकृतिः आत्मभूता भाविता अण्वी प्रह्वी कमलकर्णिका ॥ ४ ॥ नीराजनी महाविद्या कंदली कार्यसाधनी पूजा प्रतिष्ठा विपुला पुनंती पारलौकिकी ॥ ५ ॥ शुक्लशुक्तिः मौक्तिका प्रतीतिः परमेश्वरी विरजा उष्णिक् विराट् वेणी वेणुका वेणुनादिनी ॥ ६ ॥ आवर्तिनी वार्तिकदा वार्ता वृत्तिः विमानगा रासाढ्या रासिनी रासी रासमंडलवर्तिनी ॥ ७ ॥ गोपगोपीश्वरी गोपी गोपी गोपालवंदिता गोचारिणी गोपनदी गोपानंद

लेख्यालेप्यामणिमयीप्रतिहेमविनिर्मिता ॥ शैलीशैलभवाशीलाशीकराभाचलाचला ॥ १०२ ॥ अस्थितास्वस्थितातूलीवैदिकीतांत्रिकी विधिः ॥ संध्यासंध्याभ्रवसनावेदसंधिःसुधामयी ॥ १०३ ॥ सायंतनीशिखावेध्यासूक्ष्माजीवकलाकृतिः ॥ आत्मभूताभाविताऽण्वीप्रह्वीकमलकर्णिका ॥१०४॥नीराजनीमहाविद्याकंदलीकार्यसाधनी ॥ पूजाप्रतिष्ठाविपुलापुनंतीपारलौकिकी ॥१०५॥ शुक्लशुक्तिर्मौक्तिकाचप्रतीतिः परमेश्वरी ॥ विराजोष्णिकविराड्वेणीवेणुकावेणुनादिनी ॥ १०६ ॥ आवर्त्तिनीवार्तिकदावार्त्तावृत्तिर्विमानगा ॥ रासाढ्यारासिनीरासीरास मण्डलवर्तिनी ॥१०७॥ गोपगोपीश्वरीगोपीगोपीगोपालवन्दिता ॥ गोचारिणीगोपनदीगोपानन्दप्रदायिनी ॥ १०८ ॥ पशव्यदागोपसेव्या कोटिशोगोगणावृता ॥ गोपानुगागोपवतीगोविन्दपदपादुका ॥ १०९ ॥ वृषभानुसुताराधाश्रीकृष्णवशकारिणी ॥ कृष्णप्राणाधिकाशश्वद्रसिकारसिकेश्वरी ॥ ११० ॥ अवटोदाताम्रपर्णीकृतमालाविहायसी ॥ कृष्णावेणाभीमरथीतापीरेवामहापगा ॥ ११ ॥ वैयासकीचकावेरीतुंगभद्रासरस्वती ॥ चन्द्रभागावेत्रवतीऋषिकुल्याककुद्मिनी ॥ १२ ॥ गौतमीकौशिकीसिन्धुर्बाणगंगातिसिद्धिदा ॥ गोदावरीरत्नमालागंगामन्दाकिनीबला ॥ १३ ॥ स्वर्णदीजाह्नवीवेलावैष्णवीमंगलालया ॥ बालाविष्णुपदीप्रोक्तासिन्धुसागरसंगता ॥ १४ ॥ गंगासागरशोभाढ्यासामुद्रीरत्नदाधुनी ॥ भागीरथीस्वर्धुनीभूःश्रीवामनपदच्युता ॥ १५ ॥ लक्ष्मीरमारामणीयाभार्गवीविष्णुवल्लभा ॥ सीतार्चिर्जानकीमाताकलंकरहिताकला ॥ १६ ॥

प्रदायिनी ॥ ८ ॥ पशव्यदा गोपसेव्या कोटिशोगोगणावृता गोपानुगा गोपवती गोविंदपदपादुका ॥ ९ ॥ वृषभानुसुता राधा श्रीकृष्णवशकारिणी कृष्णप्राणाधिका शश्वद्रसिका रसिकेश्वरी ॥ ११० ॥ अवटोदा ताम्रपर्णी कृतमाला विहायसी कृष्णा वेणा भीमरथी तापी रेवा महापगा ॥ ११ ॥ वैयासकी कावेरी तुंगभद्रा सरस्वती चंद्रभागा वेत्रवती ऋषिकुल्या ककुद्मिनी ॥ १२ ॥ गौतमी कौशिकी सिंधुः बाणगंगा अतिसिद्धिदा गोदावरी रत्नमाला गंगा मंदाकिनी बला ॥ १३ ॥ स्वर्णदी जाह्नवी वेला वैष्णवी मंगलालया बाला विष्णुपदी प्रोक्ता सिंधुसागरसंगता ॥ १४ ॥ गंगासागरशोभाढ्या सामुद्री रत्नदा धुनी भागीरथी स्वर्धुनी भूः श्रीवामनपदच्युता ॥ १५ ॥ लक्ष्मीः रमा रामणीया भार्गवी

विष्णुवल्लभा सीता अर्चिः जानकी माता कलंकरहिता कला ॥ १६ ॥ कृष्णपादाब्जसंभूता सर्वा त्रिपथगामिनी धरा विश्वंभरा अनंता भूमिः धात्री क्षमामयी ॥ १७ ॥ स्थिरा धरित्री धारिणी उर्वी शेषफणास्थिता अयोध्या राघवपुरी कौशिकी रघुवंशजा ॥ १८ ॥ मथुरा माथुरी पंथा यादवी ध्रुवपूजिता मयायुः बिल्वनीलाद्रा गंगाद्वारविनिर्गता ॥ १९ ॥ कुशावर्तमयी ध्रौव्या ध्रुवमंडलमध्यगा काशी शिवपुरी शेषा विन्ध्या वाराणसी शिवा ॥ १२० ॥ अवंतिका देवपुरी प्रोज्ज्वला उज्जयिनी जिता द्वारावती द्वारकामा कुशभूता कुशस्थली ॥ २१ ॥ महापुरी सप्तपुरी नंदिग्रामस्थलस्थिता शालग्रामशिला आदित्या शंभलग्राममध्यगा ॥ २२ ॥ वंशगोपालिनी क्षिप्रा हरिमंदिरवर्तिनी बर्हिष्मती हस्तिपुरी शक्रप्रस्थनिवासिनी ॥ २३ ॥ दाडिमी सैंधवी जंबूः पौष्करी पुष्करप्रसूः उत्पला आवर्तगमना नैमिषी अनिमिषाहता ॥ २४ ॥ कुरुजांगलभूः काली हैमवती आर्बुदी

कृष्णपादाब्जसंभूतासर्वात्रिपथगामिनी ॥ धराविश्वंभरानंताभूमिर्धात्रीक्षमामयी ॥ १७ ॥ स्थिराधरित्रीधरणीउर्वीशेषफणास्थिता ॥ अयोध्याराघवपुरीकौशिकीरघुवंशजा ॥ १८ ॥ मथुरामाथुरीपंथायादवीध्रुवपूजिता ॥ मयायुर्बिल्वनीलाद्रागंगाद्वारविनिर्गता ॥ १९ ॥ कुशावर्तमयीध्रौव्याध्रुवमण्डलमध्यगा ॥ काशीशिवपुरीशेषाविन्ध्यावाराणसीशिवा ॥ १२० ॥ अवंतिकादेवपुरीप्रोज्ज्वलोज्जयिनीजिता ॥ द्वारवतीद्वारकामाकुशभूताकुशस्थली ॥ २१ ॥ महापुरीसप्तपुरीनन्दिग्रामस्थलस्थिता ॥ शालग्रामशिलादित्याशंभलग्राममध्यगा ॥ २२ ॥ वंशगोपालिनीक्षिप्राहरिमन्दिरवर्तिनी ॥ बर्हिष्मतीहस्तिपुरीशक्रप्रस्थनिवासिनी ॥ २३ ॥ दाडिमीसैंधवीजंबूःपौष्करीपुष्करप्रसूः ॥ उत्पलावर्तगमनानैमिष्यनिमिषाहता ॥ २४ ॥ कुरुजांगलभूःकालीहैमवत्यर्बुदीबुधा ॥ शूकरक्षेत्रविदिताश्वेतवाराहधारिता ॥ २५ ॥ सर्वतीर्थमयीतीर्थातीर्थानांतीर्थकारिणी ॥ हारिणीसर्वदोषाणांदायिनीसर्वसम्पदाम् ॥ २६ ॥ वर्द्धिनीतेजसांसाक्षाद्गर्भवासनिकृन्तिनी ॥ गोलोकधामधनिनीनिकुंजनिजमंजरी ॥ २७ ॥ सर्वोत्तमासर्वपुण्यासर्वसौंदर्य्यशृंखला ॥ सर्वतीर्थोपरिगतासर्वतीर्थाधिदेवता ॥२८॥ नाम्नांसहस्रंकालिंद्याःकीर्तिदंकामदंपरम् ॥ महापापहरम्पुण्यमायुर्वर्द्धनमुत्तमम् ॥२९॥ एकवारंपठेद्रात्रौचौरेभ्योनभयंभवेत् ॥ द्विवारंप्रपठेन्मार्गेदस्युभ्योनभयंक्वचित् ॥१३०॥ द्वितीयांतुसमारभ्यपठेत्पूर्णावधिंद्विजः ॥ दशवारमिदंभक्त्याध्यात्वादेवींकलिंदजाम् ॥३१॥

बुधा सूकरक्षेत्रविदिता श्वेतवाराहधारिता ॥ २५ ॥ सर्वतीर्थमयी तीर्था तीर्थानांतीर्थकारिणी ॥ हारिणी सर्वदोषाणां दायिनी सर्वसंपदाम् ॥ २६ ॥ वर्द्धिनी तेजसां साक्षात् गर्भवासनिकृंतिनी गोलोकधामधनिनी निकुंजनिजमंजरी ॥ २७ ॥ सर्वोत्तमा सर्वपुण्या सर्वसौंदर्यशृंखला सर्वतीर्थोपरिगता सर्वतीर्थाधिदेवता १००० ॥ २८ ॥ नाम्नां सहस्रं कालिंद्याः—ये कालिंदीके हजार नाम मैंने कहेहैं ये कीर्तिके देनहारे हैं, परम कामनाके देनहारे हैं, महापापके हरनहारे हैं, पवित्र हैं, आयुके बढ़ावनहारे हैं और अत्युत्तम हैं ॥ २९ ॥ एकबेर जो इन १००० नामनको रात्रिकूं पढ़ै तो चोरको भय नहीं होय जो दो बेर पढ़ै तो मार्गमें चोरनको भयही न होय॥१३०॥ और जो दोजते लेके

पूर्णमासी तलक प्रतिदिन भक्तिसे दश पाठ करै और कालिंदीको ध्यान करै ॥ ३१ ॥ तो रोगी रोगतें छूटि जाय, बँधुआ बंधनते छूटि जाय, गर्भिणीक पुत्र होय, विद्यार्थी पढै तो पंडित होय ॥३२॥ मोहन, स्तंभन, वशीकरण, उच्चाटन, मारण, शोषण, दीपन ॥३३॥ उन्मादन, तापन, गड़ी द्रव्य दीखै जो जो चित्तमें चाहना करै सोई सो मनुष्यकूं प्राप्त होयहै ॥ ३४ ॥ ब्राह्मण पाठकरै तो ब्रह्मतेज बढै, राजा करै तो पृथ्वीको पति होय वैश्य करै तो निधिको पति होय शूद्र सुनै तो निर्मल होय ॥ ३५ ॥ पूजाकालमें जो भक्ति भावते नित्य पाठ करै तो पापतें लिप्त न होय जैसे कमलके फूलकूं जल नहीं छीवे है ॥३६॥ जो एकवर्षताई नित्य सौ २ पाठ करै, पटल, पद्धति, स्तोत्र सहित ॥३७॥ तो निःसंदेह सातौ द्वीपनको राज्य मिलै ॥ ३८ ॥ जा यमुनाजीकी भक्तिते युक्त हैकै निष्कारण हैके पढै तौ धर्म, अर्थ, कामकूं प्राप्त हैकैं जीवन्मुक्त हैजाय ॥ ३९ ॥ जो याकूं पढै सुनै सुनावै सो

रोगीरोगात्प्रमुच्येतबद्धोमुच्येतबन्धनात् ॥ गुर्विणीजनयेत्पुत्रंविद्यार्थीपंडितोभवेत् ॥ ३२ ॥ मोहनंस्तंभनंशश्वद्वशीकरणमेवच ॥ उच्चाटनंघा तनंचशोषणंदीपनंतथा ॥३३॥ उन्मादनंतापनंचनिधिदर्शनमेवच ॥ यद्यद्वाञ्छतिचित्तेनतत्तत्प्राप्नोतिमानवः ॥ ३४ ॥ ब्राह्मणोब्रह्मवर्चस्वी राजन्योजगतीपतिः ॥ वैश्योनिधिपतिर्भूयाच्छूद्रःश्रुत्वातुनिर्मलः ॥ ३५ ॥ पूजाकालेतुयोनित्यंपठतेभक्तिभावतः ॥ लिप्यतेनसपापेनपद्मप त्रमिवांभसा ॥ ३६ ॥ शतवारंपठेन्नित्यंवर्षावधिततःपरम् ॥ पटलंपद्धतिंकृत्वास्तवंचकवचंतथा ॥ ३७ ॥ सप्तद्वीपमहीराज्यंप्राप्नुयान्नात्रसं शयः ॥ ३८ ॥ निष्कारणंपठेद्यस्तुयमुनाभक्तिसंयुतः ॥ त्रैवर्ग्यमेत्यसुकृतीजीवन्मुक्तोभवेदिह ॥ ३९ ॥ निकुंजलीलाललितंमनोहरंकलिंद जाकूललताकदम्बकम् ॥ वृन्दावनोन्मत्तमिलिंदशब्दितंव्रजेत्सगोलोकमिदंपठेच्चयः ॥१४०॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमाधुर्यखण्डेश्रीसौभरि मान्धातृसंवादेयमुनासहस्रनामकथनंनामैकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इतिकृष्णास्तवंश्रुत्वामान्धातानृपसत्तमः ॥ अयोध्यांप्रययौवीरोनत्वाश्रीसौभरिंमुनिम् ॥ १ ॥ इदंमयातेकथितंगोपीनांचरितंशुभम् ॥ महापापहरम्पुण्यंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ २ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ श्रुतंतवमुखाद्ब्रह्मन्गोपीनांवर्णनंपरम् ॥ यमुनायाश्चपंचांगंमहापातकनाशनम् ॥ ३ ॥ श्रीकृष्णःसबलःसा क्षाद्गोलोकाधिपतिःप्रभुः ॥ अग्रेचकारकांलीलांललितांव्रजमंडले ॥ ४ ॥

गोलोककूं प्राप्त होय कैसो गोलोक है निकुंजकी लीलातें ललित है मनोहर है और जो कालिंदीक किनारेकें लतायुक्त कदंबनसो युक्त है और जो गोलोक वृंदावनसे बंधी उन्मत्त भौंरानके गुंजारनसों युक्त है ता गोलोकमें प्राप्त होय ॥ १४० ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां माधुर्यखण्डे भाषाटीकायां यमुनासहस्रनामकथनं नामैकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥ नारदजी कहे है ऐसें यमुनाजीको पञ्चांग सुनिकें राजानमें श्रेष्ठ जो मांधाता राजा है सो सौभरि ऋषिकूं दंडात करिकें अयोध्याकूं चल्योगयो ॥ १ ॥ यह मैंनें तेरे अगारी गोपीनको शुभ चरित्र वर्णन कर्यो ये अति पवित्र और महा पापनको हरनहारो है अब तू फिर कहा सुनिवेकी इच्छा करेहै ॥ २ ॥ तब बहुलाश्व बोल्यो कि, हे ब्रह्मन् ! आपके मुखते ये गोपीनको चरित्र मैंनें सुन्यो और महा पापको दूरि करनहारो यमुनापंचांगहू सुन्यो ॥ ३ ॥ अब साक्षात् गोलोकके पति श्रीकृष्ण प्रभु व्रजमंडलमें आगे कहा मनोहर लीला करते

भये सो कहो ॥ ४ ॥ तब नारदजी बोले कि, एकदिन श्रीकृष्ण बलदेवजीके संग बालकनकूं लेके अपनी गौ चरावते भांडीरवनमें बाललीला करतेभये ॥ ५ ॥ बालकनके संग चढी चढाकौ खेल करावते मनोहर जे गौ हैं उन गौवनकूं दिखावते आप वनमें विहार करतेभये ॥६॥ तहां कंसकौ भेज्यौ प्रलंबासुर आयौ गोपबालकके रूपको धरके तब बालकननें तौ ये पहिचान्यौ नहीं परन्तु श्रीकृष्णनें पहिचान लीयौ ॥ ७ ॥ खेलमें जीतनहारे रामको कोई अपनी पीठपै बैठायके लेचलवेको बालक नहीं मानतौ हो सो प्रलंबासुरनें कही कि, दाउ जीको मै लेचलोगो सो प्रलंबासुर विनकूं चढायके भांडीरवनते यमुनातट तलक लेचल्यौ ॥ ८ ॥ तब ये दैत्य उतरवेकी ठौरते आगें मथुराकूं लेचलवेकूं उद्यत भयौ, तब याने अपनो कारो २ पर्वतसौ रूप धरलीनो ॥९॥ वा दैत्यके ऊपर बलदेवजीकी बडी शोभा भई कुंडल जिनके हलत जायँ हैं सुन्दर हैं कैसी शोभा भई कै बीजली सहित श्यामघटामें पूर्ण चंद्रमा

॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ एकदाचारयन्गाःस्वाःसबलोगोपबालकैः ॥ भाण्डीरेयमुनातीरेबाललीलांचकारह ॥ ५ ॥ विहारंकारयन्बालैर्वाह्यवाहकलक्षणम् ॥ विजहारवनेकृष्णोदर्शयन्गामनोहराः ॥ ६ ॥ तत्रागतोगोपरूपीप्रलंबःकंसनोदितः ॥ नज्ञातोबालकैःसोपिहरिणाविदितोऽभवत् ॥ ७ ॥ विहारविजयंरामंनेतुंकोपिनमन्यते ॥ उवाहतंप्रलंबोसौभाण्डीराद्यमुनातटम् ॥ ८ ॥ अवरोहणतोदैत्योमथुरांगंतुमुद्यतः ॥ दधारघनवद्रूपंगिरीन्द्रइवदुर्गमः ॥ ९ ॥ बभौबलोदैत्यपृष्ठेसुन्दरोलोलकुण्डलः ॥ आकाशस्थःपूर्णचन्द्रःसतडिज्जलदोयथा ॥१०॥ दैत्यंभयंकरंवीक्ष्यबलदेवोमहाबलः ॥ रुषाहनन्मुष्टिनातंशिरस्यद्रिंयथाद्रिभित् ॥ ११ ॥ विशीर्णमस्तकोदैत्योयथावज्रहतोगिरिः ॥ पपातभूमौसहसाचालयन्वसुधातलम् ॥ १२ ॥ तज्ज्योतिर्निर्गतंदीर्घंबलेलीनंबभूवह ॥ तदैववव्रुषुर्देवाःपुष्पैर्नन्दनसंभवैः ॥ १३ ॥ अभूज्जयजयारावोदिविभूमौनृपेश्वर ॥ एवंश्रीबलदेवस्यचरितंपरमाद्भुतम् ॥ १४ ॥ मयातेकथितंराजन्किंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ कोयंदैत्यःपूर्वकालेप्रलंबोरणदुर्मदः ॥ बलदेवस्यहस्तेनमुक्तिंप्रापकथंमुने ॥ १५ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ शिवस्यपूजनार्थंहियक्षराट्स्ववनेशुभे ॥ कारयामासपुष्पाणांरक्षांयक्षैरितस्ततः ॥ १६ ॥ तदप्यस्यातिजगृहुःपुष्पाणिप्रस्फुरंतिच ॥ ततःक्रुद्धोददौशापंयक्षराड्धनदोबली ॥ १७ ॥ येगृह्णंत्यस्यपुष्पाणियेचान्येसुरमानवाः ॥ भवितारोऽसुराःसर्वेमच्छापात्सहसाभुवि ॥ १८ ॥

जैसें ॥१०॥ तब या भयंकर दैत्यकूं देखकें महाबली बलदेव क्रोधते दैत्यके मूडमें एक घूंसा मारतेभये इन्द्र जैसें पर्वतकूं वज्रते फोरे है ॥११॥ तब तो शिर जाको खिलगयौ पृथ्वीकूं कंपावत मरिकें भूमिमें जायपर्यौ जैसें वज्रको मार्यौ पर्वत जायपडै है ॥ १२ ॥ ता समय वाकी देहमेंते ज्योति निकसी सो बलदेवजीमें लीन हैगई तब तो देवता नंदनवनके पुष्पनकी वर्षा करतेभये॥ १३ ॥ जयजय शब्द हौनलग्यौ, स्वर्गमे और भूमिमें या प्रकार बलदेवजीको अद्भुत चरित्र है ॥ १४॥ हे राजन् । यह मैंने तेरे आगे कह्यौ अब कहा सुनवेकी इच्छा करै है तब बहुलाश्व राजा बोल्यौ कि, हे महाराज ! यह दैत्य पहले जन्ममें कौन हो रणमें दुर्मद जो ये बलदेवजीके हाथते मुक्तिकूं प्राप्त भयो ॥ १५ ॥ तब नारदजी बोले कि, शिवके पूजनके अर्थ कुबेर अपने शुभ वनमे यक्षनते चारोंओरते पुष्पनकी रक्षा करावतोभयौ ॥१६॥ तहां याने फूले २ सब फूल तोडलीने तब कुबेर बलीनं याकूं क्रोधसो ये शाप दीनों ॥ १७॥ कि, जो कोई देवता,

मनुष्य, यक्ष, असुर, ह्वैकें या बगीचाके मेरेके पुष्पनको तोरेगो वो मेरे शापसों चाहे कोई क्यों न होय राक्षस ह्वैजायगो ॥ १८ ॥ सो हूहू गन्धर्वको विजय नाम एक बेटा हो सो वा तीर्थभूमिमें विचरत विचरत चैत्ररथ वनमें मार्गमें विष्णुपद गावतो गावतो आयौ ॥ १९ ॥ वीणा हाथमें लियेहो वाने विगर जानें फूल तोड़लीने सो असुर ह्वैगयौ तब वो गन्धर्व देह जातीरही ॥ २० ॥ तब वो महात्मा कुबेरकी शरण गयौ और हाथ जोड़ दंडवत करके वानें कुबेरकी प्रार्थना करी ॥ २१ ॥ तब हे राजेन्द्र ! कुबेर वाके ऊपर प्रसन्न ह्वैकें वर देतो भयो कि, तू विष्णुको भक्त है शांतात्मा है, हे मानके दाता ! तूँ शोच मत करै ॥ २२ ॥ द्वापरके अन्तमें बलदेवजीके हाथते भांडीरवनमें यमुनाके किनारेपै तेरी या शापते मुक्ति ह्वैजायगी यामें कछू सन्देह नहीं है ॥ २३ ॥ सो वो हूहू गन्धर्वको बेटा प्रलंबासुर भयौ ही सो नारदजी कहैं है कि, वो कुबेरके वरते हे राजन् ! परम मोक्षकूं प्राप्त ह्वैगयो ॥ २४ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां माधुर्यखण्डे भाषाटीकायां प्रलंबवधो नाम विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

हूहूसुतोथविजयोविचरन्तीर्थभूमिषु ॥ वनंचैत्ररथंप्राप्तोगायन्विष्णुगुणान्पथि ॥ १९ ॥ वीणापाणिरजानन्वैगन्धर्वःसुमनांसिच ॥ गृहीत्वासोऽसुरोजातोगन्धर्वत्वंविहायतत् ॥ २० ॥ तदैवशरणंप्राप्तःकुबेरस्यमहात्मनः ॥ नत्वातत्प्रार्थनांचकेकृतांजलिपुटःशनैः ॥ २१ ॥ तस्मैप्रसन्नोराजेन्द्रकुबेरोपिवरंददौ ॥ त्वंविष्णुभक्तःशांतात्मामाशोचंकुरुमानद ॥२२॥ द्वापरांतेचतेमुक्तिर्बलदेवस्यहस्ततः ॥ भविष्यतिनसन्देहोभाण्डीरेयमुनातटे॥२३ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ हूहूसुतःसगन्धर्वःप्रलंबोभून्महासुरः ॥ कुबेरस्यवराद्राजन्परंमोक्षंजगामह ॥२४॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमाधुर्यखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेप्रलंबवधोनामविंशोऽध्यायः ॥२०॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ अथक्रीडाप्रसक्तेषुगोपेषुसबलेषुच ॥ तृणलोभेनविविशुर्गावःसर्वामहद्वनम् ॥१॥ ताआनेतुंगोपबालाःप्राप्तामुंजाटवींपराम् ॥ संभूतस्तत्रदावाग्निःप्रलयाग्निसमोमहान् ॥२॥ गोभिर्गोपाःसमेतास्तेश्रीकृष्णंसबलंहरिम् ॥ वदन्तःपाहिपाहीतिभयार्ताःशरणंगताः॥ ३ ॥ वीक्ष्यवह्निभयंस्वानांकृष्णोयोगेश्वरेश्वरः ॥ न्यमीलयतमाभैष्टलोचनानीत्यभाषत ॥४॥ तथाभूतेषुगोपेषुतमग्निंभयकारकम् ॥ अपिबद्भगवान्देवोदेवानांपश्यतांनृप ॥५॥ एवंपीत्वामहावह्निंनीत्वागोपालगोगणम्॥प्राप्तोभूद्यमुनापारेशुभाशोकवनेहरिः॥६॥तत्रक्षुत्पीडितागोपाःश्रीकृष्णंसबलंहरिम्॥कृतांजलिपुटाऊचुःक्षुधार्ताःस्मोवयंप्रभो॥७॥

नारदजी कहैं हैं कि, वे सबरे बालक जब बलदेवजीसहित खेलमें लगगये हे तब तृणके लोभते सबरी गौ बड़ी भारी जो मूंजको वन हो तामें चलीगई ॥ १ ॥ विन गऊनके लैवेके लिये गोपबालकहू मूंजके वनमें चलेगये वा वनमें प्रलयकीसी दांकी अग्नि लगी ॥ २ ॥ तब सब गौ और गोप श्रीकृष्ण बलदेवकी शरण गये पाहिपाहि ऐसें कहैं हैं भयते दुःखी ह्वैगये हे ॥ ३ ॥ तब अपने गोपनकूं अग्निको भय देखकें योगेश्वरनके ईश्वर श्रीकृष्ण यह बोले—हे गोप हो ! आँख मीचलेउ भय मत करो ॥ ४ ॥ तैसेही जब उननें आँख मीचिलीनी तबही सब देवतानके देखते देखते श्रीकृष्णभगवान् वा भयकारी अग्निकूं पीगये ॥ ५ ॥ या प्रकार वा दाव अग्निकूं पीकें गौ गोपनकूं संग लैके यमुनाके पार शुभ अशोकवनमें प्राप्त होतेभये ॥ ६ ॥ तहां भूखके मारे गोप सब श्रीकृष्ण बलदेवके पास आयके हाथ जोडके यह बोले हे प्रभो ! हम भूखे हैं

है ॥ ७ ॥ तब श्रीभगवान् उन गोपनकूं मथुराके ब्राह्मण जहां आंगिरस यज्ञ करें हैं तहां भेजतभये तब वे जायके सबरे गोप यज्ञकूं और ब्राह्मणनकूं दंडोत करकें निर्मल वचन बोले ॥ ८ ॥ कि, हे माथुर हो ! आज सब गोपबालकनकूं संग लैके बलदेव सहित श्रीकृष्ण गौ चरावत रे ब्रजराजनन्दन कामके मोहनहारे भूखे है तिनकूं गणसहितनको अन्न दीजिये ॥ ९ ॥ नारदजी कहे है कि, हे नृप ! ऐसें गोपनकौ वचन सुनिके वे सब ब्राह्मण कछू नहीं बोले, निराश हैकें गोप बगदके आयके कृष्ण बलदेवतें कहते भये ॥ १० ॥ गोप बोले कि, तुम तो या ब्रजमण्डलके अधीश हो बली हो और श्रीगोकुलमें नन्दजीके आगे दण्डदाता तुमही हो . ऐसो तेज तुम्हारो मधुपुरीमें नहीं वर्ते है ॥ ११ ॥ नारदजी कहे हैं कि, तब भगवान् फिर उन गोपनकूं उन विप्रनकी स्त्रीनके पास भेजते भये तब बालक फिर यज्ञवाटीमें जायके

तदातान्प्रेषयामासयज्ञआंगिरसेहरिः ॥ तेगत्वातंयज्ञवरंनत्वोचुर्विमलंवचः ॥ ८ ॥ ॥ गोपाऊचुः ॥ ॥ गोपालबालैःसबलःसमागतो गाश्चारयन्श्रीव्रजराजनन्दनः ॥ क्षुत्संयुतोऽस्मैसगणायभूसुराःप्रयच्छताश्वन्नमनंगमोहिने ॥ ९ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ नाकिंचिदूचुस्तेसर्वेवचःश्रुत्वाद्विजानृप ॥ गोपानिराशाआगत्यइत्यूचुःसबलंहरिम् ॥ १० ॥ ॥ गोपाऊचुः ॥ ॥ त्वमस्यधीशोव्रजमंडलेबलीश्रीगोकुलेनंदपुरोग्रदण्डधृक् ॥ नवर्ततेदण्डमलंमधोःपुरिप्रचंडचंडांशुमहस्तवस्फुरत् ॥११॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ पुनस्तान्प्रेषयामासतत्पत्नीभ्योहरिःस्वयम् ॥ यज्ञवाटंपुनर्गत्वानत्वाविप्रप्रियास्तदा ॥ कृतांजलिपुटाऊचुर्गोपाःकृष्णप्रणोदिताः ॥ १२ ॥ ॥ गोपाऊचुः ॥ ॥ गोपालबालैःसबलःसमागतोगाश्चारयन्श्रीव्रजराजनन्दनः ॥ क्षुत्संयुतोऽस्मैसगणाश्चाग्नांगनाःप्रयच्छताश्वन्नमनंगमोहिने ॥१३॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ कृष्णंसमागतंश्रुत्वाकृष्णदर्शनलालसाः ॥ चक्रुस्तथान्नंपात्रेषुनीत्वासर्वद्विजांगनाः ॥ १४ ॥ त्यक्त्वासद्योलोकलज्जांकृष्णपार्श्वंसमाययुः ॥ अशोकानांवनेरम्येकृष्णातीरेमनोहरे ॥ १५ ॥ यथाश्रुतं तथादृष्टंश्रीहरेरूपमद्भुतम् ॥ प्राप्यानंदंगताःसर्वास्तुरीयंयोगिनोयथा ॥ १६ ॥ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ धन्यायूयंदर्शनार्थमागताहेद्विजांगनाः ॥ प्रतियातगृहाञ्शीघ्रंनिःशंकाभूमिदेवताः ॥ १७ ॥ युष्माकंतुप्रभावेणपतयोवोद्विजातयः ॥ सद्योयज्ञफलंप्राप्ययुष्माभिःसहनिर्मलाः ॥ १८ ॥

हाथ जोड ब्राह्मणीनकूं दंडोत करिके कृष्णके भेजे यह बोले ॥ १२ ॥ कि, हे अंगना हो ! गोपनसहित बलदेवके संग गौनकूं चरावत ब्रजराजनन्दन कामके मोहन आये है सो गोपन सहित भूखे है तिनकूं बहुत शीघ्रतासो अन्न देउ ॥ १३ ॥ नारदजी कहे है कि, कृष्णके दर्शनकी लालसा जिनकें ऐसी वे ब्राह्मणी कृष्णकूं आयो सुनिकें पात्रनमें चार प्रकारके अन्न धरिकें ॥ १४ ॥ जलदीही लोक लाजकूं छोडिकें कृष्णके पास आवती भई, तब वे माथुरी अशोकनके वनमें कालिन्दीके मनोहर तीरपे ॥ १५ ॥ श्रीहरिको अद्भुत रूप जैसो सुन्यो हो तैसोही देख्यो तब सबरी वे आनन्दकूं प्राप्त हैगई जैसे योगी जन तुरीय ब्रह्मको प्राप्त हैके आनन्दको प्राप्त होयहै ॥ १६ ॥ तब भगवान् बोले—हे ब्राह्मणी हो ! तुम धन्य हो जो मेरे दर्शनकूं आई हो, हे भूमिदेवी हो ! अब जलदीही निःशंक अपने घरकूं जाओ ॥ १७ ॥ तुम्हारे प्रभाव करिकें तुम्हारे पति सद्यही यज्ञके फलकूं प्राप्त हैके तुम करिके सहित निर्मल हैके ॥ १८ ॥

प्रकृतितें परे जो गोलोक धाम ताकूं प्राप्त होयँगे, नारदजी कहेहैं कि, तदनंतर श्रीकृष्णकी आज्ञातें वे सब श्रीकृष्णकूं दंडोत करिकें यज्ञवाटको आये ॥ १९ ॥ तब तिन स्त्रीनकूं सबरे ब्राह्मण आई देखिकें अपनेकूं धिक्कार देतेभये एकबेर श्रीकृष्णके देखिवेकी चाहनाहू भई तौहू कंसके भयतें नहीं आये ॥ २० ॥ तब श्रीकृष्ण बलदेव गोपन सहित अन्नकूं भोजन करिकें हे मैथिल ! गौअनकौ पालन करते मनोहर वृंदावनकूं आवतेभये ॥ २१ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां माधुर्यखंडे भाषाटीकायां दावानलपानविप्रपत्नीदर्शनं नामैकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ नारदजी कहेहैं कि, एकदिन नंदराय एकादशीकौ व्रत करिकें द्वादशीकें दिन यमुना स्नान करिवेकूं हे मैथिल ! गोपनकूं संग लेकें जलमें प्रवेश करते भये ॥ १ ॥ तहां एक वरुणकौ चाकर नन्दजीकूं पकड़के वरुणलोककूं लेगयौ तब तो हे राजन् ! गोपनमें बडौ कोलाहल भयौ ॥ २ ॥ तब तो भगवान् सबनकों आश्वासन

गमिष्यंतिपरंधामगोलोकंप्रकृतेःपरम् ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ अथनत्वाहरिंसर्वाआजग्मुर्यज्ञमण्डले ॥ १९ ॥ तादृष्ट्वाब्राह्मणाःसर्वेस्वात्मानंधिक्प्रचक्रिरे ॥ दिदृक्षवस्तेश्रीकृष्णंकंसाद्भीतानचागताः ॥२०॥ भुक्तान्नंसबलःकृष्णोगोपालैःसहमैथिल ॥ गाःपालयन्नाजगामवृंदारण्यंमनोहरम् ॥ २१ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमाधुर्यखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेदावाग्निमोक्षविप्रपत्नीदर्शनंनामैकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ एकदानंदराजोसौकृत्वाचैकादशीव्रतम् ॥ द्वादश्यांयमुनांस्नातुंगोपालैर्जलमाविशत् ॥१॥ तंगृहीत्वापाशिभृत्यःपाशिलोकंजगामह ॥ तदाकोलाहलेजातेगोपानांमैथिलेश्वर ॥२॥ आश्वास्यसर्वान्भगवान्गतवान्वारुणींपुरीम् ॥ भस्मीचकारसहसापुरीदुर्गंहरिःस्वयम् ॥ ३ ॥ कोटिमार्तंडसंकाशंदृष्ट्वाप्रकुपितंहरिम् ॥ नत्वाकृतांजलिःपाशीपरिक्रम्याहहर्षितः ॥ ४ ॥ ॥ वरुणउवाच ॥ ॥ नमःश्रीकृष्णचंद्रायपरिपूर्णतमायच ॥ असंख्यब्रह्मांडभृतेगोलोकपतयेनमः ॥ ५ ॥ चतुर्व्यूहायमहसेनमस्तेसर्वतेजसे ॥ नमस्तेसर्वभावायपरस्मैब्रह्मणेनमः ॥ ६ ॥ केनापिमूढेनममानुगेनकृतंपरंहेलनमाद्यमेव ॥ तत्क्षम्यतांभोःशरणंगतंमांपरेशभूमन्परिपाहिपाहि ॥ ७ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इतिप्रसन्नोभगवान्नंदंनीत्वासुजीवितम् ॥ सौख्यंप्रकाशयन्बंधून्व्रजमंडलमाययौ ॥ ८ ॥ नन्दराजमुखाच्छ्रुत्वाप्रभावंश्रीहरेस्तुतम् ॥ गोपीगोपगणाऊचुःश्रीकृष्णंनंदनंदनम् ॥९॥ यदित्वंभगवान्साक्षाल्लोकपालैःसुपूजितः ॥ दर्शयाशुपरंलोकंवैकुण्ठंतर्हिनःप्रभो॥१०॥

करिकें वरुणकी पुरीकूं चलेगये सहजमेंही आप हरि भगवान् वरुणकी पुरीकूं और दुर्गकूं भस्म करदेतभये ॥ ३ ॥ किरोड़ सूर्यकोसौ जिनको तेज ऐसे हरिकौ कुपित देखिकें हाथ जोड़ दंडोत करिकें वरुण हर्षित हैकें यह बोल्यो॥४॥हे श्रीकृष्णचंद ! तुम परिपूर्णतम हो तिनके अर्थ नमस्कार है, असंख्य ब्रह्मांडनके पति और गोलोकधामके पति हौ तिनके अर्थ नमस्कार है ॥ ५ ॥ चतुर्व्यूह हो तेजोरूप हो, सर्वतेजा हो, सर्वस्वरूप हो परब्रह्म हो तिनके अर्थ नमस्कार है ॥ ६ ॥ काहू मूढ़ मेरे चाकरनें आपकौ प्रथम अपराध कीनौहै ताहि अब आप क्षमा करौ, हे परेश ! हे भूमन् ! शरणागत जो मैं हूं ताहि पाहिपाहि रक्षा करौ रक्षा करौ ॥ ७ ॥ नारदजी कहेहै तब भगवान् प्रसन्न हैकें जीवित नंदजीकूं लेकें अपने बंधूनकूं सुखकौ प्रकाश करते व्रजमण्डलकूं आवतेभये ॥ ८ ॥ नंदजीके मुखतें हरिकौ वो प्रभाव सुनिकें गो गोपीनके गण नन्दनन्दन श्रीकृष्णतें ये बोले ॥ ९ ॥ कि, हे प्रभो ! लोक

पालन करकें जो तुम पुजौहौ सो तुम साक्षात् भगवान् हौ तौ हे प्रभू ! हमकूं अपनो वैकुंठलोक दिखाओ ॥ १० ॥ तव तौ श्रीकृष्ण सवकूं वैकुंठमें लैगये फिर ज्योतिर्मंडलके भीतर वर्तमान जो अपनो रूप है सो दिखायौ ॥ ११ ॥ जो रूप हजार भुजासो युक्त किरीट कंकणते उज्ज्वल शंख चक्र गदा पद्म और वन मालासो शोभित ॥ १२ ॥ असंख्य कोटि सूर्यकीसो प्रकाश, शेषपै विराजमान चमर ढुरें हैं, दिव्य जाकी कान्ति और ब्रह्मादिक जाकी सेवा करें है ॥ १३ ॥ तहां तिन गोपगणनकूं गदाधारी पार्षद सूधे करकें दण्डवत करायके पवते तिनको दूर बैठारके ॥१४॥ चोकते जे गोप हैं तिनें देखकें वे पार्षद बोले कि, चुप्प रहो रे चुप्प रहो रे वनचरहो बकवाद मत करो ॥ १५ ॥ बोलो मति का तुमने कभू हरिकी सभा नही देखी यहां तौ साक्षात् देव भगवान्के अगारी वेदपै वेदही बोलेहै यहां और कोई बोले नही है ॥१६॥ ऐसी शिक्षा दीनी तब सब गोप हर्षित हैके चुप्प है गये और मनही मनमे बोले कि, जो ये ऊंचे सिंहासनपै बैठ्यो है ये तौ श्रीकृष्ण है ॥ १७ ॥ हमकूं दूरसो नीचे बैठारकें

नीत्वा सर्वांस्ततः कृष्ण एत्य वैकुंठमंदिरम् ॥ दर्शयामास स्वं रूपं ज्योतिर्मंडलमध्यगम् ॥११॥ सहस्रभुजसंयुक्तं किरीटकटकोज्ज्वलम् ॥ शंखचक्रगदापद्मवनमालाविराजितम् ॥ १२ ॥ असंख्यकोटिमार्तंडसंकाशं शेषसंस्थितम् ॥ चामरांदोलदिव्याभं ब्रह्माद्यैः परिसेवितम् ॥ १३ ॥ तदैव तान्गोपगणान्पार्षदास्ते गदाधराः ॥ ऋजुं कृत्वा नतिं धृत्वा तिदूरे स्थाप्य प्रयत्नतः ॥ १४ ॥ चकितानिवतान्वीक्ष्य प्रोचुस्ते पार्षदा गिरा ॥ रे रे तूष्णीं प्रभवत मा वक्तृत्वं वनेचराः ॥ १५ ॥ भाषणं मा प्रकुरुत न दृष्टा किं सभा हरेः ॥ वेदा वदंति चात्रैव साक्षाद्देवे स्थिते प्रभौ ॥ १६ ॥ इति शिक्षां गता गोपा हर्षिता मौनमास्थिताः ॥ मनस्यूचुरयं कृष्ण उच्चसिंहासने स्थितः ॥ १७ ॥ अस्मानाराद्धः कृत्वास्माभिर्वक्ति न कर्हिचित् ॥ तस्माद्व्रजाद्वरं नास्ति कोपि लोको न सौख्यदः ॥ १८ ॥ यत्रानेन स्व भ्रात्रापि वार्त्ता स्याद्धि परस्परम् ॥ इति प्रवदतस्तान्वै नीत्वा श्रीभगवान्हरिः ॥ व्रजमागतवान्व्राजन्परिपूर्णतमः प्रभुः ॥ १९ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां श्रीमाधुर्यखण्डे नारदबहुलाश्वसंवादे नन्दादिवैकुंठदर्शनं नाम द्वाविंशोऽध्यायः ॥२२॥ ॥ ॥ श्रीनारद उवाच ॥ ॥ एकदा नृप गोपालाः शकटै रत्नपूरितैः ॥ वृषभानूपनन्दाद्या आजग्मुश्चांबिकावनम् ॥ १ ॥ भद्रकालीं पशुपतिं पूजयित्वा विधानतः ॥ ददुर्दानं द्विजातिभ्यः सुप्तास्तत्र सरित्तटे ॥ २ ॥ तत्रैको निर्गतो रात्रौ सर्पो नन्दं पदेऽग्रहीत् ॥ कृष्ण कृष्णेति चुक्रोश नन्दो भीतिभयविह्वलः ॥ ३ ॥ तदोल्मुकैर्गोपबालास्तोदुराजगरं नृप ॥ पदं सोपि न तत्याज सर्पो र्थं स्वमणिं यथा ॥ ४ ॥

मोहडेते बोलेहू नहीहै यासो भैया हो !- हमारे जानतो व्रजते परें और कोई लोक श्रेष्ठ नहीहै और न सुखकारी है॥१८॥जा व्रजमें हमारी भैयाते परस्पर वतरामन तो होतीही, ऐसे कहते तिन व्रजवासीनको संग लेके श्रीकृष्ण व्रजमें आयगये ॥ १९ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां माधुर्यखंडे भाषाटीकायां नन्दादिगोपवैकुंठदर्शनं नाम द्वाविंशोऽध्यायः ॥२२॥ नारदजी कहैहै कि, हे राजन् ! एक समय सबरे गोप गाडानमें अन्न रत्न भरिकें नन्द, उपनन्द, वृषभानु आदिक सब अंबिका महाविद्याके वनकूं आवतेभये ॥ १ ॥ तहां भद्रकाली जो महाविद्या ताको पूजन कीनो और पशुपति जो भूतेश्वर तिनको पूजन कीनो, ब्राह्मणनकूं दान दीनों, फिर वहीं सरस्वतीके किनारेपै सोय रहेहै ॥ २ ॥ कि, तहां रात्रिमें एक सर्प अजगरने निकसिकें नन्दजीको पाँव पकड लीनो तव भयते विह्वल हैकें नंदजो हे कृष्ण ! हे कृष्ण ! ऐसे पुकारन लगे ॥३॥ तहां गोपबालक जलती लकडी लैलेकें मारन लगे तौऊ वो नंद

बाबाके पाँवको छोडे नहीं जैसे सर्प मणिकूं नही छोडैहै ॥४॥ तब तो लोकपावन श्रीकृष्णने बाँये पाँवकी एक ठोकर मारी तब वह सर्प सर्पदेहकूं छोडके विद्याधर हैगयो फिर श्रीकृष्णकी परि क्रमा देके दंडोत करि स्तुतिकरन लगगयो ॥५॥ हे प्रभो ! मैं सुदर्शन विद्याधर सब विद्याधरनमें श्रेष्ठ हूं मैं महाबली हूं अष्टावक्र मुनिकूं देखिकें हँस्यो ॥६॥ तब अष्टावक्रने मोकूं यह शाप दीनो कि, हेदुष्ट ! तूं सर्प हैजाउ, सो हे माधव ! उनके शापते अब मैं तुम्हारी कृपाते छूटिगयो ॥७॥ तुम्हारे चरणकमल मकरंदकी रजके किनकाके स्पर्शते मैं सहजमेंही दिव्य पदवीकूं प्राप्त हैगयो ता भुवनेश्वर भगवान्कूं मेरी नमस्कार है जाने बड़ो भार उतारवेकूं भूमिमें अवतार लीनों है ॥ ८ ॥ नारदजी कहैं हैं—ऐसे वह विद्याधर श्रीकृष्णकूं दंडोत करिकें जामें कोई उपद्रव नहीं ऐसे वैकुंठलोककूं चल्यो गयो ॥ ९ ॥ नन्दादिक सब गोप विस्मित हैगये श्रीकृष्णकूं परमेश्वर जानिकें फिर अंबिकाके वनते जल्दीही व्रजमण्डलकूं चलेआये ॥ १० ॥ यह मैंने तेरे अगाड़ी पवित्र श्रीकृष्णको चरित्र वर्णन करचो जो सब पापनको हरनवारो और परमपवित्र है अब अगाड़ी कहा सुनिवेकी चाहना करे है ॥ ११ ॥ राजा

तलाडस्वपदासर्पंभगवाँल्लोकपावनः॥ त्यक्त्वातदेहसर्पत्वंभूत्वाविद्याधरःकृती॥५॥नत्वाकृष्णंपरिक्रम्यकृतांजलिपुटोवदत्॥॥ सुदर्शनउवाच ॥॥ अहंसुदर्शनोनामविद्याधरवरःप्रभो॥ अष्टावक्रंमुनिंदृष्ट्वाहसितोस्मिमहाबलः ॥६॥ मह्यंशापंददौसोपित्वंसर्पोभवदुर्मते ॥ तच्छापादद्यमुक्तोहंकृपयातवमाधव ॥ ७ ॥ त्वत्पादपद्ममकरंदरजःकणानांस्पर्शेनदिव्यपदवींसहसागतोस्मि॥तस्मैनमोभगवतेभुवनेश्वराययोभूरिभारहरणायभुवोवतारः ॥८॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इतिनत्वाहरिंकृष्णंराजन्विद्याधरस्तुसः॥ जगामवैष्णवंलोकंसर्वोपद्रववर्जितम् ॥९॥ नंदाद्याविस्मिताः सर्वेज्ञात्वाकृष्णंपरेश्वरम्॥ अंबिकावनतःशीघ्रमाययुर्व्रजमंडलम् ॥१०॥ इदंमयातेकथितंश्रीकृष्णचरितंशुभम्॥ सर्वपापहरम्पुण्यंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥११॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ अहोश्रीकृष्णचंद्रस्यचरितंपरमाद्भुतम्॥श्रुत्वामनोमेतच्छ्रोतुंसंप्राप्तेपुनरिच्छति ॥१२॥ अग्रेचकारकांलीलांलीलयाव्रजमंडले॥ हरिर्व्रजेशःपरमोवददेवर्षिसत्तम॥ १३ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमाधुर्यखण्डेसुदर्शनोपाख्यानंनामत्रयोविंशोऽध्यायः ॥२३॥ ॥ श्रीनारदउवाच॥ ॥एकदाशैलदेशेषुसबलोभगवान्हरिः॥ कृत्वाविलायनंक्रीडांचोरपालकलक्षणाम्॥१॥तत्रव्योमासुरोदैत्योबालान्मेषायितान्बहून्॥नीत्वानीत्वाद्रिदर्यांचविनिक्षिप्यपुनःपुनः॥२॥शिलयापिदधेद्वारंमयपुत्रोमहाबलः॥सत्यचौरंचतंज्ञात्वाभगवान्म
२ धुसूदनः॥३॥गृहीत्वापातयामासभुजाभ्यांभूमिमंडले॥४॥तदामृत्युंगतोदैत्यस्तज्ज्योतिर्निर्गतंस्फुरत्॥दशदिक्षुभ्रमद्राजन्श्रीकृष्णेलीनतांगतम्॥५

कहै हैं कि, अहो ! श्रीकृष्णको जो बडो अद्भुत चरित्र है जाको सुनिके मेरो मन फिर सुनिवेकूं इच्छा करै है वहांते आयके फिर ॥ १२ ॥ आगे व्रजमण्डलमें नित्य नवीन खेलनसों कहा लीला करते भये व्रजके ईश्वर हे देवर्षिसत्तम ! सो कहो ॥ १३ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां माधुर्यखंडे भाषाटीकायां सुदर्शनोपाख्यानं नाम त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ नारदजी कहै हे कि, एकसमय गोवर्द्धनके पास कृष्ण बलदेव आंखमिचौनीकी क्रीड़ा करते भये कोई जामें चोर और कोई जामें साह बने हैं ॥ १ ॥ तहां मयको बेटा महाबली व्योमासुर दैत्य गोपरूप धरिकें आयो वो भेड़ बने जे बालक हे तिनकूं चुरायकें बेर बेर कामवनकी गुहामें मूँदके ॥ २ ॥ शिलाते ढकि आयो, तब मधुसूदन भगवान् श्रीकृष्णने याकूं सांचो चोर जानके ॥ ३ ॥ दोनौं भुजानते पकरिकें याको पृथ्वीमें देमारी ॥ ४ ॥ तबही वह दैत्य मृत्युकूँ प्राप्त हैगयो, ताही समय वाकी देहमेंते एक ज्योतिसी

चमन्नमाती निकसी जो दशों दिशानमें उजीती करती श्रीकृष्णमें लीन हैगई ॥ ५ ॥ तबही भूमिमें और स्वर्गमें जयजय शब्द होतोभयो देवता परम आनंदकूं प्राप्त हैके फूलनकी वर्षा करनलगे ॥ ६ ॥ यह सुनिके राजा बहुलाश्व बोल्यो—हे महाराज ! यह व्योमासुर पूर्वजन्मको कौन हो और कहा यानें उत्तम कर्म करयो हो याते श्रीकृष्ण रूप घनश्याममें बीजुरीसा लीन हैगयो ॥ ७ ॥ नारदजी कहे है कि, काशीपुरीमें एक भीमरथ नाम राजा होतोभयो या यज्ञको कर्ता मानको दाता धनुषधारी और विष्णुमें परायण भयो ॥ ८ ॥ बेटाकूं राज्य देके मलयाचलकूं चल्योगयो तहां लाख वर्ष ताई तप करयो ॥ ९ ॥ ताके आश्रममें एकदिन पुलस्त्यजी शिष्यन सुद्धां चलेगये तिनकूं देखके ये बडो अभिमानी राजर्षि भीमरथ न तो उठयो न दंडौत करी ॥ १० ॥ तब पुलस्त्यजी शाप देते भये कि, हे महाखल ! तू दैत्य हैजा तब यो उनके चरणनमें जायपरयो तब शरणागत भयेको देखके ॥ ११ ॥ दीनवत्सल मुनिशार्दूल पुलस्त्यजी यह बोले कि, द्वापरके अन्तमें अतिपुनीत श्रीमाथुर

तदाजयजयारावोदिविभूमौबभूवह ॥ पुष्पाणिववृषुर्देवाःपरमानंदसंवृताः॥६॥ ॥बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ कोऽयंपूर्वंकुशलकृद्व्योमोनामाथतद्वद॥ येनकृष्णेघनश्यामेलीनोभूद्दामिनीयथा ॥७॥ ॥नारदउवाच ॥ ॥ आसीत्काश्यांभीमरथोराजादानपरायणः॥यज्ञकृन्मानदोधन्वीविष्णुभक्तिपरायणः ॥८॥ राज्येपुत्रंसन्निवेश्यजगाममलयाचलम् ॥ तपस्तत्रसमारेभेवर्षाणांलक्षमेवहि ॥९॥ तस्याश्रमेपुलस्त्योसौशिष्यवृन्दैःसमागतः॥ तंदृष्ट्वानोत्थितोमानीराजर्षिर्ननतोऽभवत् ॥१०॥ शापंददौपुलस्त्योपिदैत्योभवमहाखल ॥ ततस्तच्चरणोपांतेपतितंशरणागतम्॥११॥ उवाच मुनिशार्दूलःपुलस्त्योदीनवत्सलः ॥ द्वापरान्तेमाथुरेचपुण्येश्रीव्रजमण्डले ॥१२॥ यदुवंशपतेःसाक्षाच्छ्रीकृष्णस्यभुजौजसा ॥ ईप्सितायोगिभिर्मुक्तिर्भविष्यतिनसंशयः ॥१३॥ ॥श्रीनारदउवाच॥ ॥ सोयंभीमरथोराजामयदैत्यसुतोभवत् ॥ श्रीकृष्णभुजवेगेनमुक्तिंप्रापविदेहराट्॥१४॥ एकदागोपबालेषुदैत्योऽरिष्टोमहाबलः ॥ आगतोनादयन्खंगांतटाञ्छृंगैर्विदारयन् ॥ १५ ॥ गोप्योगोपागोगणाश्चवीक्ष्यतंदुद्रुवुर्भयात् ॥ भगवान्दैत्यहादेवोमाभैष्टेत्यभयंददौ ॥ १६ ॥ गृहीत्वातंतुशृंगेषुनोदयामाससमाधवः ॥ सोपितंनोदयामासश्रीकृष्णंयोजनद्वयम् ॥ १७ ॥ पुच्छेगृहीत्वातंकृष्णोभ्रामयित्वाभुजौजसा ॥ भूपृष्ठेपोथयामासकमण्डलुमिवार्भकः ॥ १८ ॥ अरिष्टःपुनरुत्थायक्रोधसंरक्तलोचनः ॥ शृंगैश्चरोहितंशैलंसमुत्पाट्यमहाबलः ॥ १९ ॥

व्रजमण्डलमें ॥ १२ ॥ यदुवंशके पति साक्षात् श्रीकृष्णकी भुजानके पराक्रमते योगीनकूं वांछित ऐसी तेरी मुक्ति होयगी यामें संदेह नहींहै ॥ १३ ॥ सोई भीमरथ राजा मयदैत्यको बेटा होतभयो, हे विदेहराज ! श्रीकृष्णकी भुजाके वेगते मुक्तिको प्राप्त हैगयो ॥ १४ ॥ एकसमय गोप बालकनमें महाबली अरिष्टासुर आयो पृथ्वीकूं और आकाशकूं शब्दयुक्त करतो और सींगनते मेंड़नकूं फोड़न लग्यो ॥ १५ ॥ गौ गोप गोपी याकूं देख भयके मारे भाजन लगे तब भगवान् दैत्यनके हंता तिने अभय देतेभये कि, डरोमती ॥ १६ ॥ फिर भगवान् याके दोनों सींग पकड़के पीछेकूँ हटावत लेगये तब ये हू भगवानकूँ दो योजन पिछाड़ी हटावत लेगयो ॥ १७ ॥ फिर श्रीकृष्णने याकी पूंछ पकडके अपने भुजबलसों भ्रमाय भ्रमाय पृथ्वीमें देमारयो जैसे बालक लोटाकूं देमारे ॥ १८ ॥ फिर अरिष्टासुर उठयो कोपकरके लालनेत्र हैआये सींगनते रोहित

जो पर्वत ताकूँ उखाडकें महादुष्ट ॥ १९ ॥ घनसौ गर्जत श्रीकृष्णके ऊपर फेंकतभयो, श्रीकृष्ण वा पर्वतकुं पकडके वाहीके ऊपर फेंकदेतभये ॥ २० ॥
तब पर्वतके प्रहारकें मारें कछू व्याकुलमन हैगयो सींगनते पृथ्वीकूं खोदनलग्यो जिन सींगनके मारेते पृथ्वीमें जल निकस आयो ॥ २१ ॥ फिर श्रीकृष्णने वाके सींग पकड
भ्रमाय भ्रमायके धरतीमें दैमारचौ जैसें कमलकूं पवन पटकैहै ॥ २२ ॥ ताही समय बैलके रूपकूं छोडके ब्राह्मण है गयौ श्रीकृष्णके चरणकमलमें दण्डवत कर गद्गदवाणीते
बोल्यौ ॥ २३ ॥ हे महाराज ! मैं बृहस्पतिजीको चेला हो वरतंतु मेरो नाम हो, सो मैं बृहस्पतिजीपें पढवेकूं गयोहो ॥ २४ ॥ मैं उनकी ओर पाँव पसारकें उनके सामने बैठ्योहो
तब रोषते मुनि बोले अरे ! जो तूं बैलकीसी नाईं मेरे आगें बैठ्यो है ॥ २५ ॥ और गुरूनकी अवज्ञा करै है यातें तूं दुर्बुद्धि बैल हैजा ऐसै तिनके शापते हे माधव ! मैं वंगदेशमें

गर्जयन्घनवद्धीरःकृष्णोपरिसमाक्षिपत् ॥ कृष्णःशैलंसंगृहीत्वातस्योपरिसमाक्षिपत् ॥ २० ॥ शैलस्यापिप्रहारेणकिंचिद्व्याकुलमानसः ॥
भूमौतताडशृंगाग्रान्निर्गतंतैर्जलंभुवः ॥ २१ ॥ श्रीकृष्णस्तंचशृंगेषुगृहीत्वाभ्रामयन्मुहुः ॥ भूपृष्ठेपोथयामासवातःपद्ममिवोद्धतम् ॥ २२ ॥
तदैववृषरूपंस्त्यक्त्वाविप्रवपुर्द्धरः ॥ नत्वाश्रीकृष्णपादाब्जम्प्राहगद्गदयागिरा ॥ २३ ॥ ॥ द्विजउवाच ॥ ॥ बृहस्पतेश्वशिष्योहंवरतंतुर्द्विजो
त्तमः ॥ बृहस्पतिसमीपेचपठितुंगतवानहम् ॥ २४ ॥ पादौकृत्वास्थितोऽभूवंपश्यतस्तस्यसंमुखे ॥ तदारुषाहसमुनिर्वृषवत्त्वंस्थितःपुरः ॥ २५ ॥
गुरुहेलनकृत्तस्मात्त्वंवृषोभवदुर्मते ॥ तेनशापाद्वृषोऽभूवंवंगदेशेषुमाधव ॥ २६ ॥ असुराणांप्रसंगेनासुरस्त्वंगतवानहम् ॥ त्वत्प्रसादाद्विमुक्तो
हंशापतोऽसुरभावतः ॥ २७ ॥ श्रीकृष्णायनमस्तुभ्यंवासुदेवायतेनमः ॥ प्रणतक्लेशनाशायगोविंदायनमोनमः ॥ २८ ॥ ॥ श्रीनारद
उवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वाश्रीहरिंनत्वसाक्षाच्छिष्योबृहस्पतेः ॥ द्योतयन्भुवनंराजन्विमानेनदिवंययौ ॥ २९ ॥ इदंमयातेकथितंखण्डंमाधुर्य्य
मद्भुतम् ॥ सर्वपापहरंपुण्यंकृष्णप्राप्तिकरंपरम् ॥ ३० ॥ कामदंपठतांशश्वत्किंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ३१ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमाधुर्य्य
खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेव्योमासुरारिष्टासुरवधोनामचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ शुभं भवतु ॥

जायके बैल हैगयो ॥ २६ ॥ असुरनके प्रसंगते मैं असुर हैगयौ तुम्हारी कृपाते शापते छूट्यौ और असुरभावते हू छूट्यौ ॥ २७ ॥ तुम श्रीकृष्ण हौ तिनकूं मेरी नमस्कार है,
वासुदेव हौ शरणागत आये मनुष्यनके क्लेशके नाश करनहारे हौ गोविंद हौ तिनके अर्थ नमस्कार है ॥ २८ ॥ नारदजी कहैंहैं ऐसें कहिकें श्रीकृष्णकूं दंडवत करकें साक्षात् बृहस्पतिको
शिष्य जगत्में प्रकाश करत विमानमें बैठ स्वर्गकूं चल्यो गयौ ॥ २९ ॥ यह मैंने तेरे अगाडी अद्भुत माधुर्यखंड वर्णन करचौ, पवित्र है सब पापनको हरन हारो है और केवल
श्रीकृष्णकी प्राप्ति करनहारो है ॥ पाठ करनवारेकूं सब कामनाको देनवारो है, अब तुम कहा सुनिवेकी इच्छा करो हो ॥ ३१ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां माधुर्यखंडे भाषाटीकायां
नारदबहुलाश्वसंवादेव्योमासुरारिष्टासुरवधो नाम चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां माधुर्यखंडः समाप्तः ॥

इद पुस्तकं क्षेमराज-श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना मुम्बय्या (खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लेन) स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) मुद्रणयन्त्रालये मुद्रयित्वा प्रकाशितम् । संवत् १९६७, शके १८३२.

॥ इति गर्गसंहितायां माधुर्य्यखण्डं भाषाटीकासमेतं समाप्तम् ॥

॥ अथ गर्गसंहितायां मथुराखण्डं भाषाटीकासहितं प्रारभ्यते ॥

(पञ्चमखण्डम् ५)

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ मथुराखंडः ॥ गर्गजी मंगलाचरण करैहैं कि, वसुदेवके बेटा कंसके चाणूरके मर्दन करनहारे देवकीकूं परम आनंदके देनहारे ऐसे श्रीकृष्ण तिनकूं मैं दंडोत करूंहूं ॥ १ ॥ बहुलाश्व राजा नारदजीतें पूछैहैं कि, हे मुने ! मथुरामें भगवान्ने कहा कहा चरित्र कऱ्यौ और कंसकूं कैसे माऱ्यौ ताहि मोसे तत्त्वतें कहौ ॥ २ ॥ तब नारदजी बोले कि, एक दिन मैं उत्तम जो मथुरापुरी ताकूं देखिवेकूं हे राजन् ! चल्यौगयो साक्षात् हरिके मनको प्रेऱ्योभयो दैत्यनके मारिवेके उपाय करिवेकूं ही गयोहो ॥ ३ ॥ जो इंद्रपेतें सिंहासन लायौहो तापै बैठ्यो इंद्रकेही चमर छत्र जापैं हैरहे सपसों दुःसह ऐसे कंसके पास गयौ तब वाने मेरो सत्कार कऱ्यो पूजन कऱ्यो तब मैं यह बोल्यो ताहि तू सुन ॥४॥ अरे कंस ! यशोदाके तो बेटी भई है जो तेरे हाथमेंते छूटिके स्वर्गकूं चलीगई और देवकीके कृष्णको जन्म भयोहै और रोहिणीके बलदेवको जन्म भयो हो ॥५॥ नंदराजकी और

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ अथमथुराखण्डः ॥ ॥ वसुदेवसुतंदेवंकंसचाणूरमर्दनम् ॥ देवकीपरमानंदंकृष्णंवन्देजगद्गुरुम् ॥ १ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ मथुरायांकिंचरित्रंकृतवान्भगवान्मुने ॥ कथंजघानकंसाख्यमेतन्मेब्रूहितत्त्वतः ॥२॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ अथैकदाहंमथुरांपुरींपरांविलोकितुंचागतवान्नृपेश्वर ॥ कर्तुंपरंदैत्यवधोद्यमंहरेःपरस्यसाक्षान्मनसाप्रणोदितः ॥३॥ सिंहासनेचप्रहतेपुरंदरात्सितातपत्रेचलचारुचामरे ॥ स्थितंनृपंकंससुरंगदुःसहंप्रावोचमेवंशृणुतत्प्रपूजितः ॥ ४ ॥ यशोदायाःसुताजातायात्वद्धस्तादिवंगता ॥ देवक्यांकृष्णउत्पन्नोरोहिणीनंदनोबलः ॥ ५ ॥ स्वमित्रेनंदराजेचन्यस्तौपुत्रौभवद्भयात् ॥ तवारीरामकृष्णौद्वौवसुदेवेनदैत्यराट् ॥ ६ ॥ पूतनाद्याह्यरिष्टान्तादैत्यायेत्वद्बलोत्कटाः ॥ याभ्यांहतावनोद्देशेतेमृत्यूतौस्मृतौकिल ॥७॥ एवमुक्तोभोजपतिःक्रोधाच्चलितविग्रहः ॥ जग्राहनिशितंखड्गंशौरिंहंतुंसभातले ॥ ॥८॥ मयानिवारितःसोपिविस्तृतैर्निगडैर्दृढैः ॥ बद्ध्वातंभार्ययासार्द्धंकारागारेरुरोधह ॥ ९ ॥ इत्युक्त्वातंमयिगतेकेशिनंदैत्यपुंगवम् ॥ रामकृष्णवधार्थायप्रेषयामाससदैत्यराट् ॥ १० ॥ चाणूरादीन्समाहूयमहामात्रंद्विपस्यच ॥ कार्यभारकरांछोकान्प्राहेदंभोजराड्बली ॥ ११ ॥ ॥ ॥ कंसउवाच ॥ ॥ हेकूटहेतोशलकहेचाणूरमहाबल ॥ रामकृष्णौचमेमृत्युर्दर्शितौनारदेनतु ॥ १२ ॥

वसुदेवकी मित्रता ही सो वसुदेवने तेरे डरके मारे अपने मित्र नंदको अपने दोनों बेटा सौंपिदीनेहैं हे दैत्यनके राजा ! वे दोनों तेरे वैरी हैं ॥ ६ ॥ और पूतनाते लैके वृषभासुरताईं जे तेरे बली दैत्य हैं ते सब कृष्ण, बलदेवने ही मारे हैं, वेही तेरी मौत हैं ॥ ७ ॥ ऐसे जब मैंने कही तब तो कंसको कोपके मारे शरीर कांपनलगो और सभामेंही वसुदेवके मारिवेकूं पैनो खड्ग लीनो ॥ ८ ॥ तब मारततें तो मैंने बंद करदीनो तो उनके बडी मजबूत बेडी डारिके स्त्रीसमेत बंदीखानेमें देदीने ॥ ९ ॥ ऐसे कहिके मैं तो चल्यौआयो मेरे आये पीछे कंसने केशीदानवकूं बुलाय कृष्णबलदेवके मारिवेकूं भेजिदियो ॥ १० ॥ फिर चाणूरादिक मल्लनकूं बुलायो और कुवलयापीड हाथीके महावतकूं बुलायो और जिनपैं कामको बोझ हो तिने बुलायके भोजराज बली कंस यह बोल्यौ ॥ ११ ॥ हे कूट ! हे तोशल ! हे चाणूर ! तू महाबली है सो देखो भाई हो ! रामकृष्ण मेरी मौत हैं ये बात मोकूं

नारदजी बतायगयेहैं ॥ १२ ॥ यहां आमें तब तुम मल्ललीलामें विनें मारिडारियो सो तुम बहुत जलदी अब कुस्तीके अखाडे सुंदर २ तैयार करो ॥ १३ ॥ और अरे ओ महा मत भाई ! तू रंगभूमिके दरवज्जेपै कुवलयापीड हाथीकूं मस्त करकें ले आइयो आवते खेमही मेरे वैरी दोनो भैया कृष्ण बलदेवकूं हाथीपे मरवायडारियो ॥ १४ ॥ और हे लोक हौ ! तुम चौदशके दिन तो शांतिके अर्थ धनुर्यज्ञकूं करो और अमावास्याकूं मल्लयुद्ध होय ताय देखो ॥ १५ ॥ नारदजी कहें हैं ऐसें कंसने अपने स्वजननते कहिके जलदीसे अक्रूरजीकूं बुलायो फिर एकांतमें लेगयो तहां हे राजेंद्र ! मंत्रीजननको प्यारो मतो करनलग्यो ॥ १६ ॥ हे दानपति ! हे मंत्रिन् ! तुम मेरो परमवचन सुनो तुम बडे प्रातः काल नंदके व्रजकूं चलेजाउ मेरो एक काम है ताहि करलाओ क्योंकि तुम बडे बुद्धिमान् हौ अर्थात् तुमारे विना या कामको और कोई नहीं करसकेहै ॥ १७ ॥ वहां मेरे दो वैरी

भवद्भिरिहसंप्राप्तौहन्येतांमल्ललीलया ॥ मल्लभूमिंचसंयुक्तांकुरुताशुशुभावहाम् ॥ १३ ॥ द्विपंकुवलयापीडंरंगद्वारिमदोत्कटम् ॥ प्रस्थाप्यते नहंतव्यौमहामात्रममाऽहितौ ॥ १४ ॥ चतुर्दश्यांतुकर्तव्योधनुर्यागःप्रशान्तये ॥ अमावास्यादिनेलोकामल्लयुद्धंभवेदिह ॥१५॥ ॥ नारद उवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वास्वजनान्कंसोक्रूरमाहूयसत्वरम् ॥ रहसिप्राहराजेंद्रमंत्रंमंत्रिजनप्रियम् ॥ १६ ॥ ॥ कंसउवाच ॥ ॥ भोभो दानपतेमंत्रिञ्छृणुमेपरमंवचः ॥ गच्छनंदव्रजंप्रातःकुरुकार्यंमहामते ॥ १७ ॥ आसातेतत्रमेशत्रूवसुदेवसुतौकिल ॥ दर्शितौनारदेनापिदेवदेवर्षिणाभृशम् ॥ १८ ॥ सोपायनैर्गोपगणैर्नन्दराजादिभिःसह ॥ मथुरादर्शनमिषाद्रथेनानयमाचिरम् ॥ १९ ॥ द्विपेनवामहामल्लैर्घातयिष्यामितौशिशू ॥ तत्पश्चान्नंदराजंचवसुदेवसहायकम् ॥२०॥ वृषभानुवरंपश्चान्नवनन्दोपनन्दकान् ॥ पश्चाच्छौरिंहनिष्यामिदेवकंतत्सहायकम् ॥ ॥ २१ ॥ उग्रसेनंचपितरंवृद्धंराज्यसमुत्सुकम् ॥ तत्पश्चाद्यादवान्सर्वान्हनिष्यामिनसंशयः ॥ २२ ॥ एतेदेवगणाःसर्वेजातामंत्रिन्महीतले ॥ शकुनिर्मेमहामित्रंबलीचन्द्रावतीपतिः ॥ २३ ॥ भूतसंतापनोहृष्टोवृकःसंकरएवच ॥ कालनाभोमहानाभोहरिश्मश्रुस्तथैवच ॥ २४ ॥ एतेमित्राणिमेसंतिमदर्थंप्राणदाबलात् ॥ श्वशुरोपिजरासंधोद्विविदोमेसखास्मृतः ॥ २५ ॥

हैं जे वसुदेवके बेटा कृष्ण बलदेव हैं देवऋषि नारदजीनें अच्छी तरह समझाके बतायेहैं ॥ १८ ॥ सो तुम नंदराजते आदिलेके सब गोपनके संग भेंटसहित मथुराके दिखाय वेके मुंडेते कृष्णबलदेवकूं रथमें बेठारिके ले आओ देर मत करो ॥ १९ ॥ तब में कुवलयापीड हाथीते या महामल्लनते विन दोनो बालकनकूं मरवाऊंगो विनके मरवाये पीछे वसुदेवके सहायक नंदको मरवाऊंगो और ताके पीछे ॥ २० ॥ वृषभानुकूं नौ नंद नौ उपनंदकूं फिर वसुदेवकूं देवककूं और तिनके सहायकनकूं भी मरवायडारोंगो ॥ २१ ॥ उग्रसेन पिताकूं जा बूढेकूंभी राज्यकी चाहना है ताकूं और ताके पीछे सब यादवनकूं मारूंगो यामें कछु संदेह नहीं है ॥ २२ ॥ हे मंत्री हो ! पृथ्वीमे ये सब देवतानके गण जनमेहैं बडो बली शकुनी चंद्रावतीको पति मेरो महा मित्र है ॥ २३ ॥ भूतसंतापन, हृष्ट, वृक, संकर, कालनाभ, महानाभ, और हरिश्मश्रु ॥ २४ ॥ इतने मेरे मित्र हैं, ये मेरे

अर्थ प्राणनके देबेवारे हैं और मेरो श्वशुर जरासंधभी द्विविदवंदर मेरो सखा है ॥२५॥ बाणासुर नरकासुरभी मेरे परम सुहृद् है सो ये हम सब पृथ्वीकूं जीतके इन्द्रसहित देवनकूं और धनाधिप कुबेरको बांधिके॥२६॥सुमेरुकी गुहामें पटकिदेंगे फिर त्रिलोकीको राज्य सदा करेंगे यामे संदेह नहीं है ॥२७॥ ज्ञानीनमें तो तुम शुक्रसे हो वक्तानमें तुम बृहस्पतिसे हो सो हे दानपते ! यह कार्य तुमकूं जलदी कर्तव्य है॥२८॥तब अक्रूरजी कहेहैं कि, हे यादवनके पति! तुमने महा मनोरथरूप समुद्र कीनोंहै सो यह तुमारो मनोरथ दैवकी इच्छाते येही गोखुरवत् होयगो नहीं तो समुद्र है ही याते गुप्त राखो जबतलक न होय काहूसों कहो मती ॥ २९ ॥ तब कंस बोल्यो कि, बलीपुरुष तो प्रारब्धके भरोसे नहीं रहे हैं और जो निर्बल है वो दैवकूंही देख्यो करेहै और जो कर्मको मुख्यमाननवारो कर्मयोगी है वो तो कालरूप आत्मा नित्य है ऐसो मानके कर्मको कर्ता कभी आकुल नहीं होय है ॥३०॥ नारदजी कहे हैं कि, ऐसे उत्तम मन्त्री अक्रूरते

बाणासुरश्चनरकोमय्येवकृतसौहृदः ॥ एतेसर्वांमहींजित्वाबद्ध्वादेवान्सवासवान् ॥ २६ ॥ क्षिप्त्वामेरुगुहादुर्गेकुबेरंद्रव्यनायकम् ॥ त्रैलोक्यराज्यंतुसदाकरिष्यंतिनसंशयः ॥ २७ ॥ कवीनांत्वंकविरिवगिरांगीष्पतिवद्भुवि ॥ एतत्कार्यंचकर्त्तव्यंत्वयादानपतेत्वरम् ॥ ॥ २८ ॥ ॥ ॥ अक्रूरउवाच ॥ ॥ त्वयाकृतोयदुपतेमनोरथमहार्णवः ॥ दैवेच्छयाऽयंभवतिगोष्पदंतद्विनार्णवम् ॥ २९ ॥ ॥ ॥ कंसउवाच ॥ ॥ विसृज्यदैवंकुरुतेबलिष्ठोदैवंसमाश्रित्यहिनिर्बलश्च ॥ कालात्मनोनित्यहरिप्रभावान्निराकुलस्तिष्ठतुकर्मयोगी ॥ ॥ ३० ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवमुक्तामंत्रिवरंसमुत्थायसभास्थलात् ॥ किंचित्प्रकुपितःकंसःशनैरंतःपुरंययौ ॥ ३१ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमथुराखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेकंसमंत्रोनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ अथकेशीमहादैत्योहयरूपीमदोत्कटः ॥ राजन्वृन्दावनंरम्यंजगर्ज्जघनवद्बली ॥ १ ॥ यस्यपादप्रताडेननिपेतुःशाखिनोदृढाः ॥ पुच्छघातेनगगनेखंडंखंडंययुर्घनाः ॥ २ ॥ तंवीक्ष्यदुःसहजवंगोपगोपीगणाभृशम् ॥ भयातुरामैथिलेन्द्रश्रीकृष्णंशरणंययुः ॥ ३ ॥ माभैष्टेत्यभयंदत्त्वाभगवान्वृजिनार्दनः ॥ कटौपीतांबरंबद्ध्वाहंतुंदैत्यंप्रचक्रमे ॥४॥ हरिंपश्चिमपादाभ्यांसतताडमहासुरः ॥ चालयन्पृथिवींराजन्नादयन्व्योममंडलम् ॥५॥ गृहीत्वापादयोर्दैत्यंभ्रमयित्वाभुजेनखे ॥ चिक्षेपयोजनंकृष्णोवातःपद्ममिवोद्धृतम् ॥ ६ ॥

कहिके कंस सभास्थलते उठिके कछु कुपित हैके रणवासकूं चलोगयो ॥३१॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां मथुराखंडे भाषाटीकायां नारदबहुलाश्वसंवादे कंसमंत्रो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥१॥ नारदजी कहें हैं याके पीछे केशी महादैत्य घोडारूपी बडो मदोत्कट हे राजन् ! मनोहर जो वृंदावन है तामें जायके बली बादलसो गर्ज्यो ॥ १ ॥ जाकी टापनके मारे बडे बडे मजबूत वृक्ष जडसे उखड पडे और जाकी पूछकी फटकारनते बदरनके खंड खंड हैगये ॥ २ ॥ ताकूं देखिके गोपगोपीनके गण अत्यंत भयभीत हैके हे राजन् ! श्रीकृष्णकी शरण वेगवाको नहीं सह्योगयो ॥ ३ ॥ तब भगवान् दुःखके दूरि करनहारे भय मति करो ऐसे अभयदान देके पीतांबरते कमरि बांध केशीके मारिबेको उद्यम करतेभये ॥ ४ ॥ तब गते और आकाशमंडलको शब्दते भरते या केशी महादैत्यने भगवान्के पिछाडीकी दुलत्तीसो प्रहार कियो ॥ ५ ॥ तब दैत्यके दोनो पिछारीके पांव पकरिके

आकाशमें फिरायके श्रीकृष्ण याकूं चारि कोसपै फेंकिदेतेभये जैसे ऊंचे उठे कमलकूं आंधी पटकदेय है ॥ ६ ॥ तब फिर क्रोध करिके केशी आयो एक पूंछ श्रीकृष्णके फिरायके व्रजके आंगनमें खडेके मारी ॥ ७ ॥ फिर श्रीकृष्ण याकी पूंछको पकरिके अपने भुजबलते आकाशमें घुमायके सौयोजनपै फेंकिदेते भये ॥ ८ ॥ आकाशते आय पर्यो कछू एक व्याकुल मन हैगयो परंतु ये बडो बली दैत्य उठिकरके फिर घनसो गर्ज्यो ॥ ९ ॥ अपनी अयालनकूं और रोमनकूं वेर वेर हलावतो फड फडाय वारंवार पाउनते धरतीकूं खोदत कृष्णके सन्मुख उछरके आयो ॥ १० ॥ तबही मधुसूदन श्रीकृष्णने याके एक घूंसा मार्यो वा घूंसाके मारे दो घडीतलक मूर्च्छा खायके जाय पर्यो ॥ ११ ॥ तो ये दैत्य अपने माथेते श्रीकृष्णकूं नाडपै धरिके पृथ्वीमंडलते लाखयोजन ऊंचो लै उड्यो ॥ १२ ॥ तहां दोनोनको दो पहरताई आकाशमें बडो भारी दुलत्तीनते खुरनते अयालनते पूंछते और दांतनते युद्धभयो ॥ १३ ॥ तब श्रीकृष्णने दोनो भुजानते वाकूं पकरिके इतमें वितमें घुमायके आकाशमेंते नीचे पटकिदीनो बालक जैसे

पुनरागतवान्सोपिक्रोधपूरितविग्रहः ॥ पुच्छेनश्रीहरिंदेवंसंतताडव्रजांगणे ॥ ७ ॥ पुच्छेगृहीत्वातंकृष्णोभ्रामयित्वाभुजौजसा ॥ योजनानांशतंराजन्चिक्षेपगगनेबलात् ॥ ८ ॥ आकाशात्पतितःसोपिकिंचिद्व्याकुलमानसः ॥ समुत्थायपुनर्दैत्योजगर्जघनवद्बली ॥ ९ ॥ सटाविधुन्वन्रोमाणिबालंखेचालयन्मुहुः ॥ महींविदारयन्पादैरुत्पपातहरेःपुरः ॥ १० ॥ तताडमुष्टिनातंवैभगवान्मधुसूदनः ॥ तस्यमुष्टिप्रहारेणमूर्च्छितोघटिकाद्वयम् ॥ ११ ॥ मस्तकेनगलोद्देशेसमुद्धृत्यहरिंहयः ॥ भूमंडलादुत्पपातगगनेलक्षयोजनम् ॥ १२ ॥ तयोर्युद्धमभूद्घोरंगगनेप्रहरद्वयम् ॥ पादैर्दद्भिःसटाभिश्चपुच्छतीक्ष्णखुरैर्नृप ॥ १३ ॥ गृहीत्वातंहरिर्दोर्भ्यांभ्रामयित्वात्वितस्ततः ॥ आकाशात्पातयामासकमंडलुमिवार्भकः ॥ १४ ॥ भुजंप्रवेशयामासतन्मुखेभगवान्हरिः ॥ तस्योदरेगतोबाहुर्ववृधेरोगवद्भृशम् ॥ १५ ॥ तदातुलेंडंकृतवान्रुद्धवायुर्महासुरः ॥ खंडीभूतोदरःसद्योममारहयरूपधृक् ॥ १६ ॥ देहाद्विनिर्गतःसद्योमुकुटीकुंडलान्वितः ॥ दिव्यरूपधरःकृष्णंप्रांजलिःप्रणनामह ॥ १७ ॥ ॥ कुमुदउवाच ॥ ॥ शक्रस्यानुचरोहंवैकुमुदोनाममाधव ॥ तेजस्वीरूपवान्वीरोजिष्णुंच्छत्रभ्रमिंदधत् ॥ १८ ॥ वृत्रासुरवधेपूर्वंब्रह्महत्याप्रशांतये ॥ यज्ञंचकारनाकेशोवाजिमेधंक्रतूत्तमम् ॥ १९ ॥ अश्वमेधहयंशुभ्रंश्यामकर्णंमनोजवम् ॥ तमारुरुक्षुर्दृष्टोहंचोरयित्वातलंगतः ॥ २० ॥

कमंडलकूं पटकि देयहै ॥ १४ ॥ फिर मुख फारि भगवान्के सन्मुख आयो तब श्रीकृष्णने वाके मुखमें अपनी भुजा प्रवेश करिदीनी जब चबावन लग्यो तब दांत झरिपरे और वो भगवान्की भुजा याके मुखमें उपेक्षा किये रोगकी नाई बढी ॥ १५ ॥ जब भुजा बढी तब ही लेंड (लीद) निकसपरी वायु रुकगई पेट फटगयो देह खिलगयो जलदी ही केशी मरिगयो ॥ १६ ॥ तब ही ताके देहते एक दिव्यरूप पुरुष किरीट, कुंडल पहरे दिव्यदेह धरे निकस्यो श्रीकृष्णकूं हाथ जोरि दंडौत करके यह कहन लग्यो ॥ १७ ॥ कुमुददेवता बोल्यो कि, हे माधव ! मैं कुमुदनाम देवता हौ इंद्रको चाकर हौं इंद्रपै छत्र लगावो करै हौ तेजस्वी हौ रूपवान् हो बडो वीर हौ ॥ १८ ॥ पहले वृत्रासुरके वधमें ब्रह्महत्याकी शांतिके लिये इंद्रने अश्वमेधयज्ञ कर्यो ॥ १९ ॥ सुपेद अश्वमेधको घोडा श्यामकर्ण मनकीसो वेग जाको ताकूं देखि मैं प्रसन्न है यापै चढिवेकी चाहनाते वाकूं चुरायके तल

लोककूं चलेगयो ॥ २० ॥ तब तो मरुद्गण मोकूं दुष्टकूं फांसीमें बांधिके लेआये तब मोकूं इंद्रने शाप दीनो हे दुर्बुद्धे ! तू राक्षस हैजा ॥ २१ ॥ द्वैमन्वंतरतलक तू घोडा होयगो सो वा शापते मैं अब आपके स्पर्श करेते छूट्यौ हूं ॥ २२ ॥ मेरो मन आपके चरणनमें लग्यौ है याते आप मोय अपनो चाकर करि लेव तुम सब लोकके साक्षी हो भगवान् हो तिनके अर्थ नमस्कार है ॥ २३ ॥ नारदजी कहें हैं ऐसे कहिके हरिकी परिक्रमा करिके उज्ज्वल विमानमें बैठि दिशानमें उजीतो करत ये कुमुद बैकुंठकूं चल्यो गयो ॥ २४ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां मथुराखण्डे भाषाटीकायां नारदबहुलाश्वसंवादे केशिवधो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ नारदजी कहे हैं अक्रूरजी रथमें बैठिके राजा कंसको कार्य करिबेकूं हे मैथिलेंद्र ! हर्षित हैके नन्दगोकुलकूं जातेभये ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण पुरुषोत्तममें परमभक्ति जिनकूं प्राप्त हैगई महाबुद्धी रस्तामें चलत २ यह विचार करन

ततोमरुद्गणैर्नीतंपाशबद्धंमहाखलम् ॥ शशापमांबलारातिस्त्वंरक्षोभवदुर्मते ॥ २१ ॥ हयाकृतिस्त्वंसंभूयाद्वैमन्वंतरद्वयम् ॥ तच्छापा द्द्यमुक्तोहंसद्यस्त्वत्स्पर्शनात्प्रभो ॥ २२ ॥ किंकरंकुरुमांदेवत्वदंघ्रौलग्नमानसम् ॥ नमस्तुभ्यंभगवतेसर्वलोकैकसाक्षिणे ॥ २३ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ प्रदक्षिणीकृत्यहरिंपरेश्वरंविमानमारुह्यमहोज्ज्वलंपरम् ॥ वैकुण्ठलोकंकुमुदोययौत्वरंविराजयन्मैथिलमंडलंदिशाम् ॥ ॥ २४ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमथुराखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेकेशिवधोनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ अक्रूरोरथमारुह्यकर्तुंकार्यंनृपस्यवै ॥ प्रहर्षितोमैथिलेन्द्रप्रययौनंदगोकुलम् ॥ १ ॥ परांभक्तिंह्युपगतःश्रीकृष्णेपुरुषोत्तमे ॥ एवंविचारयन्बुद्ध्यापथिगच्छन्महामतिः ॥ २ ॥ ॥ अक्रूरउवाच ॥ ॥ किंभारतेवासुकृतंकृतंमयानिष्कारणंदानमलंकतूत्तमम् ॥ तीर्थाटनंवाद्विजसेवनंशुभंयेनाद्यद्रक्ष्यामिहरिंपरेश्वरम् ॥ ३ ॥ तपःसुतप्तंकिमलंपुराकृतंसत्सेवनंभक्तियुतंमयाकृतम् ॥ येनैवमेदर्शनमद्यदुर्लभंश्रीकृष्णदेवस्यपुरोभविष्यति ॥ ४ ॥ तेषांभवोवैसफलोमहीतलेयन्नेत्रगामीभगवान्सुरेश्वरः ॥ कृत्वाथतद्दर्शनमद्यदुर्लभंसद्यःकृतार्थोभवितास्मिसर्वतः ॥ ॥ ५ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्थंसंचिंतयन्कृष्णंपश्यञ्छकुनमुत्तमम् ॥ संध्यायांगोकुलंप्राप्तोरथस्थोगांदिनीसुतः ॥ ६ ॥ कृष्णपादाब्जचिह्नानियवांकुशयुतानिच ॥ तद्रागयुक्परागाणिरजांसिसददर्शकौ ॥ ७ ॥

लगे ॥ २ ॥ कि, मैंने या भरतखण्डमें कहा सुकृत कीनो है कै कोई निष्कामदान कीनो है कोई उत्तम यज्ञ कीनोंहै कै कोई उत्तम तीर्थ कीनो है कै ब्राह्मणनकी सेवा करी है जाके प्रतापते आज मैं परेश्वर श्रीकृष्णके दर्शन करूंगो ॥ ३ ॥ कै तप अत्यन्त कर्यो है पहले कै सत्सेवन कीनो है भक्ति सहित याते दुर्लभ श्रीकृष्णको दर्शन मोकूं होयगो ॥ ४ ॥ इनहींको जन्म सुलभ है जिनके नेत्रनके अगाडी भगवान् सुरेश्वर आमें है आज मैं दुर्लभ श्रीकृष्णको दर्शन करिके सब ओरते कृतार्थ हैजाऊंगो ॥ ५ ॥ नारदजी कहे हैं ऐसे श्रीकृष्णकूँ चिंतमन करत उत्तम शकुन देखत २ रथमें बैठे २ गांदिनीके बेटा सन्ध्या समयमें गोकुलमें प्राप्त भये ॥ ६ ॥ यव, अंकुश, वज्र, कमलादिक

चिह्न जिनमें ऐसे श्रीकृष्णके चरणचिह्न पृथ्वीकी रजमें देखत भये ॥ ७ ॥ ताके दर्शनकी उत्कण्ठाते जो भक्तिभाव ताके आनन्द करिके समाकुल सो अक्रूर रथते उतरिके तिन रजमें लोटन लग्यो आंसू बहन लगे ॥ ८ ॥ हे मैथिल ! जिनके हृदयमें श्रीकृष्णकी भक्ति है तिनकूं ब्रह्मलोकपर्यंतको सुख सब जगत्को सुख तिनुकाकी समान है ॥ ९ ॥ रथमें चढे अक्रूरजी थोरेही देरके अन्तर नन्दपुरमें गये व्रजमें तब वनते आये श्रीकृष्ण बलदेवकूं देखत भये ॥ १० ॥ कैसेहैं पुराण पुरुष हैं ब्रह्मादिकनके ईश हैं एक श्याम है एक गौर है कमलसे नेत्र हैं जैसे नील पर्वत और हीराको पर्वत सोनेमें जड़े भयेहैं ॥ ११ ॥ सूर्यकोसो तेज ऐसे मुकुटको पहरे भये है बिजुलीसो पीतांबर नील मणिसो नीलांबर धारण करे है देखतही रथमें उतरि भक्तिते चरणनमें जायपरे ॥ १२ ॥ तब आंसू जामें बहिरहे रोमांचित अक्रूरके मुखकूं देखिके

तद्दर्शनौत्सुक्यभक्तिभावानन्दसमाकुलः ॥ रथात्समुत्पत्त्यतेपुलुठंश्चाश्रुमुमोचसः ॥ ८ ॥ येषांश्रीकृष्णदेवस्यभक्तिःस्याद्धृदिमैथिल ॥ तेषामाब्रह्मणःसर्वंतृणवज्जगतःसुखम् ॥ ९ ॥ रथारूढस्ततोक्रूरःक्षणान्नन्दपुरंगतः ॥ घोषेषुसबलंकृष्णमागच्छंतंददर्शह ॥ १० ॥ देवौपुराणौपुरुषौपरेशौपद्मेक्षणौश्यामलगौरवर्णौ ॥ यथेंद्रनीलध्वजवज्रशैलौसमाश्रितौतौपथिरामकृष्णौ ॥ ११ ॥ बालार्कमौलीवसनंतडिद्युवर्षाशरन्मेघरुचंदधानौ ॥ दृष्ट्वासतूर्णंस्वरथाद्गतोथोतयोर्नतोभक्तियुतःपपात ॥ १२ ॥ तदाननंबाष्पकलाकुलेक्षणंरोमांचितंवीक्ष्यहरिःपरेश्वरः ॥ दोर्भ्यांसमुत्थाप्यघृणातुरोश्रुमुमोचभक्तंपरिरभ्यमाधवः ॥ १३ ॥ एवंमिलित्वासबलश्चतंहरिःसद्यःसमानीयवरासनंददौ ॥ निवेद्यगांचातिथयेसुभोजनंरसावृतंप्रेमयुतोह्युपाहरत् ॥ १४ ॥ तमाहनंदःपरिरभ्यदोर्भ्यांमहोकथंजीवसिकंसराज्ये ॥ गतत्रपोयोनिजधानबालान्स्वसुःकथंसोन्यजनेषुमोही ॥ १५ ॥ गृहंगतेनंदवरेहरिस्तंपप्रच्छसर्वंकुशलंस्वपित्रोः ॥ तथायदूनांकिलबांधवानांकंसस्यसर्वांविपरीतबुद्धिम् ॥ १६ ॥ ॥ ॥ अक्रूरउवाच ॥ ॥ परश्वोहनिहेदेवहंतुंशौरिंससुद्यतः ॥ खड्गपाणिर्भोजराजोनारदेननिवारितः ॥ १७ ॥ दुःखिताबांधवाःसर्वेयादवाभयविह्वलाः ॥ सकुटुंबाःकंसभयाद्गमन्देशांतरंगताः ॥ १८ ॥

परेश जो श्रीकृष्ण सो दोनों भुजानते उठायके आलिंगन करन लगे भक्तवत्सलके प्रेमके आंसू छोडन लगे ॥ १३ ॥ ऐसे कृष्ण बलदेव दोनो भैया मिलिके अक्रूरजीकूं घर लिवाय लेगये उत्तम आसन दीनो फिर अतिथि अक्रूरको गौ निवेदनकरिके प्रेमयुक्त हरिने रसीलो सुन्दर भोजन करायो ॥ १४ ॥ तब नन्दजीने दोनो भुजानते आलिंगन कियो फिर मिलिके यह बोले क्यों भैया ! कंसके राज्यमें कैसे जीवो हो देखो जो बेशरम है जाने बहनके बेटा भानजेई मारिडारे सो और कोनसे मोह करेगो ॥ १५ ॥ जब नंदजी भीतर घरमें चलेगये तब श्रीकृष्णने अपने मा बापनकी कुशल पूंछी और तैसेई यादव बांधवनकी और कंसकी विपरीत बुद्धिकी बात पूछतेभये ॥ १६ ॥ तब अक्रूरजी बोले कि, परसोंके दिन हे देव ! कंस खांडो लेके वसुदेवकूं मारन लग्यो हो तब नारदजीने बचायदीनो ॥ १७ ॥ सबरे बांधव दुःखी हैं और यादव भयभीत

हैरहे हैं और बहुतसे यादव तो कुटुंबसहित कंसके डरते देशांतरमें चलेगये है ॥ १८ ॥ आजही यादवनकूं मारिवेकूं और देवतानकूं जीतिवेकूं उद्यत भयोहै औरहू कछू पृथ्वीपे बली कंसराजा करिवेकूं इच्छा करे है ॥ १९ ॥ ताते आपुकूं चलनो योग्य है वहां चलके सबको अव्यय कुशल करौ क्यों कि, तुमारे बिना तो संतनको कार्य नेकहू नहीं होयगो ॥ २० ॥ नारदजी कहें हैं कि, अक्रूरको वचन सुनिके बलदेवसहित श्रीहरि नंदजीते सलाह करिके कार्यके करनहारे गोपनते ये बोले ॥ २१ ॥ नंदराजहू बलदेवसहित बूढे २ गोपनकूं संग लेके और नौ नन्दनौ उपनन्द, छः वृषभानुको संग ले ॥ २२ ॥ प्रातःकाल उठिके सब गोप मथुराकूं जायँगे सबरेही यासो गोरस दही, दूध और घृत ॥ २३ ॥ इकट्ठा करिके सब लेचलो और भेंट भेज सब लेचलो. रथ, गाडा जोड़के चलो जलदी करौ ॥ २४ ॥ नारदजी कहें है ऐसे

अद्यैनयादवान्हंतुंदेवाञ्जेतुंसमुद्यतः ॥ अन्यत्किमपिकोकर्तुमिच्छतेदैत्यराड्बली ॥ १९ ॥ तस्माद्भवद्भ्यांगंतव्यंकुशलंकर्तुमव्ययम् ॥ भवंतौ हिविनाकार्यंकिंचिन्नस्यात्सतांप्रभू ॥ २० ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ अथतस्यवचःश्रुत्वासबलोभगवान्हरिः ॥ नन्दराजमतेनाहगोपान्कार्यक रानिदम् ॥ २१ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ नंदराजोपिसबलोवृद्धैर्गोपगणैरहम् ॥ नन्दानवोपनन्दाश्चतथाषड्वृषभानवः ॥ २२॥ मथुरांतुगमि ष्यंतिसर्वेप्रातःसमुत्थिताः ॥ सर्वेतुगोरसंतस्माद्दधिदुग्धघृतादिकम् ॥ २३ ॥ गृहीत्वैकत्रकर्त्तव्यंसोपायनमतःपरम् ॥ रथांश्चशकटैःसार्द्धंसम र्थान्कुरुताशुवै ॥ २४ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वाकार्यकरागोपाःसर्वेगृहेगृहे ॥ शृण्वंतीनांगोपिकानामूचुःसर्वंयथोदितम् ॥ २५ ॥ तच्छ्रुत्वोद्विग्नहृदयागोप्योविरहविह्वलाः ॥ परस्परंवाक्यमूचुःसर्वास्तादिगृहेगृहे ॥ २६ ॥ प्रस्थानस्यचवार्तेयंश्रीकृष्णस्यमहात्मनः ॥ वृष भानुवरस्यापिगृहेप्राप्तानृपेश्वर ॥ २७ ॥ गमिष्यतोभर्तुरतीवदुःखिताश्रुत्वाथवार्तासदसिह्यकस्मात् ॥ संप्रापमूर्च्छांवृषभानुनंदिनीरंभेवभूमौ पतितामरुद्धता ॥ २८ ॥ काश्चित्परिम्लानमुखश्रियोभवन्प्रकंकणीभूतकरांगुलीयकाः ॥ सद्यःश्लथद्भूषणकेशबंधनाश्चित्रार्पितारंभइवावतस्थिरे ॥ २९ ॥ श्रीकृष्णगोविंदहरेमुरारेकाश्चिद्वदन्त्यःस्वगृहेऽतिविह्वलाः ॥ विसृज्यकर्माणिगृहस्यसर्वतोयोगीनचानन्दगतानृपेश्वर ॥ ३० ॥

सुनिके ये कारिंदा गोप घर २ में कहिआये तब सब गोपीनने यह बात सुनी ॥ २५ ॥ तब गोपीनसो कृष्णके जायवेको हवाल कह्यौ तब या बातकूं सुनि गोपीनको उद्विग्न मन हैगयो, विरहमें विह्वल है गई, घरघरमें आपुसमें कहनलगी ॥ २६ ॥ ऐसे श्रीकृष्ण महात्माके प्रस्थानकी वार्ता घर घर होनलगी तब श्रीकृष्णके प्रयाणकी चर्चा वृषभानुवरके घरमेंहू गई ॥ २७ ॥ तब भर्ताके गमनकी बात वृषभानुनन्दनी श्रीराधा सुनिके सभामें अकस्मात् मूर्छाखायके भूमिमें आयपरी आंधीको मार्यो केलाको वृक्ष जैसे आय पड़े है ॥ २८ ॥ और काऊ २ गोपीनके तो मुख मैले हैगये और अंगुलीनकी पहरवेकी अगूठी हाथके पहरवेके कड़ल हैगये जलदी ही ढीली हैगयो हैं भूषण और केशनके बांधवेकी गाठै जिनकी वे गोपीं चित्रकी लिखीसी रहिगई ॥ २९ ॥ कोई कोई हे श्रीकृष्ण ! हे गोविंद ! हे हरे ! हे मुरारे ! ऐसे अपने २

घरमें कहती कहती अति विह्वल ह्वैगई घरके काम सब छोंड़िके हे नृपेश्वर ! योगीकी नाईं आनन्दकूं प्राप्त ह्वैगई ॥ ३० ॥ और जे कोई गोपी समर्थ रहीं वे सब गोपी हे राजन् ! इकट्ठी ह्वैके आपुसमें एकसाथ यह वचन बोलीं विक्लवबाणी ह्वैगई कण्ठ रुकिगये आंसू गिरनलगे ॥ ३१ ॥ अहो निर्मोही जनको चरित्र बड़ो विचित्र होयहै वो कछु कह्यो नही जाय है जिनके हृदयमें और है और मुखमें और है उनके अभिप्रायकूं देवताहू नही जानेहैं फिर मनुष्य कहांते जानेगो ॥ ३२ ॥ देखो मैना हो ! जो याने रासमेंहूं जो जो कछू कह्यो ही ताहूकूं छोड़िके अब चलिवेकी तैयारी करिदीनी है जब प्राणपति मधुपुरीकूं चले जायगे तब न जाने कहा २ कछु हमको होयगो ॥ ३३ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां मथुराखण्डे भाषाटीकायां नारदबहुलाश्वसंवादेऽक्रूरागमनं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ऐसे कहती गोपीनकी परमविरहिणी

काश्चित्समर्थास्तुपरस्परंवचःसमेत्यराजन्युगपत्सखीजनम् ॥ ऊचुःस्खलद्गद्गदकंठवाचःस्वतःस्रवद्बाष्पकलाविह्वलदृशः ॥३१॥ गोप्यऊचुः ॥ ॥ अहोतिनिर्मोहिजनस्यचित्रंपरंचरित्रंगदितुंनयोग्यम् ॥ मुखेनचान्यंहृदिभाव्यमन्यद्देवोनजानातिकुतोमनुष्यः ॥ ३२ ॥ रासेपियद्गदितंतु तत्तद्विहायगंतुंसमवस्थितोयम् ॥ गतेपुरींप्राणपतावहोस्मिन्किकिंनकष्टंवतनोभविष्यत् ॥३३॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांमथुराखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेऽक्रूरगमनंनामतृतीयोध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ राजन्नेवंवदंतीनांगोपीनांविरहंपरम् ॥ विज्ञायभगवान्देवःशीघ्रंतासांगृहान्ययौ ॥ १ ॥ यावंत्योगोपितोराजंस्तावद्रूपधरोहरिः ॥ स्वयंसंबोधयामासवाग्भिःसर्वाःपृथक्पृथक् ॥ २ ॥ श्रीराधामंदिरंगत्वाद्दृष्ट्वाराधांचमूर्च्छिताम् ॥ रहःस्थितांसखीसंघेननादमुरलीकलम् ॥ ३ ॥ श्रुत्वावंशीध्वनिंराधासहसोत्थायचातुरा ॥ नेत्रउन्मील्यददृशेश्रीगोविंदंसमागतम् ॥ ४ ॥ पद्मिनीवगतानन्दंपद्मिनीपद्मिनीपतिम् ॥ वीक्ष्योत्थायागतायस्मैसादरेणासनंददौ ॥ ५ ॥ अश्रुपूर्णमुखींदीनांराधांकमललोचनाम् ॥ शोचंतींभगवानाहमेघगंभीरयागिरा ॥ ६ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ विमनास्त्वंकथंभद्रेमाशोचंकुरुराधिके ॥ अथवागंतुकामंमांश्रुत्वासिविरहातुरा ॥७॥ भुवोभारावतारायकंसादीनांवधायच ॥ ब्रह्मणाप्रार्थितःसाक्षाज्जातोहंवैत्वयासह ॥ ८ ॥

जानिके श्रीकृष्ण बहुतशीघ्र उनके घर आवते भये ॥१॥ हे राजन् ! जितनी गोपी हीं तितनेई अपने रूप धरिके न्यारे २ घरनमें जायके सबनकूं आप मीठी बाणीते समझातेभये ॥२॥ फिर राधिकाके मन्दिरमें गये वहां राधिकाकूं मूर्छित भई सखीनके बीचमें परी तिने देखके तब आपने मधुर मुरली बजाई है॥३॥ तब श्रीराधाजी मुरलीकी ध्वनि सुनिके हड़बरायके उठि बैठी बड़ी आतुर जो नेत्र खोलिके देखे तो आयेभये श्रीकृष्णकूं आगे बैठेदेखे है ॥ ४ ॥ पद्मिनी नायिका जो श्रीराधा है सो कमलनी जैसे चंद्रमाकूं देखिके प्रफुल्लित होय है तैसे श्रीकृष्णचंद्रको देख प्रफुल्लित ह्वैके उठके बैठी है श्रीकृष्णकूं आसन देती भई ॥५॥ तब आंसू आंके आय रहे कमलसे जाके नेत्र शोच करि रही ऐसी जो राधा ताते मेघसी गंभीर बाणीते भगवान् यह बोले॥६॥ हे भद्रे ! तू विमन क्यों है रहीहै हे राधिके ! तू शोच मति करे अथवा हे प्रिये ! तू मेरे जायवेको सुनके वाके विरहमें आतुर ह्वैके शोच करेहै ॥७॥ पृथ्वीको भार

उतारिवेके लिये और कंसादिक राक्षसनके मारिवेके लिये ब्रह्माकी प्रार्थनाते लोकनिके सहित मैंने जन्म लीनों है ॥ ८ ॥ सो मैं मथुरा जाऊंगो और पृथ्वीको भार उतारूंगो फिर जल्दीही मैं यहां आऊंगो तेरो कल्याण करूंगो ॥ ९ ॥ नारदजी कहेंहैं ऐसे कहते जो जगदीश्वर हरि अपने पति हैं तिनके वियोग करिकै विह्वल जो राधा है सो रोंगटा ठाडे हैंआये कांपि कांपिके मूर्च्छा खायके जायपड़ी, दौंकी आगते वनकी लता जैसी है ऐसी हैके, फिर बड़ी देरमें उठके यह बोली ॥ १० ॥ हे प्यारे ! पृथ्वीको भार उतारवेकूं भलेई मथुपुरी जाओ परि मेरी सोंगंद सुनो हे प्राणपतिजी ! जो तुम यहांसे चले जाओगे तो मैं अपने शरीरकूं कैसेंऊ न राखूंगी ॥ ११ ॥ जो मेरी या सोंगंदकूं न मानोगे तो दूसरो वचन सुनो जो प्राणनकूं न छोडूंगी तो यह देह तुम्हारे विरहते विह्वल कपूरकी धूलकी नाईं विखर जायगो ॥ १२ ॥ अब श्रीकृष्ण कहें हैं कि, हे राधे !

मथुरांहिगमिष्यामिहरिष्यामिभुवोभरम् ॥ शीघ्रमत्रागमिष्यामिकरिष्यामिशुभंतव ॥ ९ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्तवंतंजगदीश्वरंहरिंराधापतिंप्राहवियोगविह्वला ॥ दावाग्निनादावलतेवमूर्छितासुकंपरोमांचितभावसंवृता ॥ १० ॥ ॥ राधोवाच ॥ ॥ भुवोभरंहर्तुमलंपुरींव्रजकुर्तंपरमेशपथंशृणुत्वतः ॥ गतेत्वयिप्राणपतेचविग्रहंकदाचिदत्रैवनधारयाम्यहम् ॥ ११ ॥ यदास्थमेत्वंशपथंनमन्यसेद्वितीयवारंवदयामिवादपथम् ॥ प्राणोधरेगंतुमतीवविह्वलःकर्पूरधूलेःकणवद्गमिष्यति ॥ १२ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ वचनंवैस्वनिगमंदूरीकर्तुंक्षमोस्म्यहम् ॥ भक्तानांवचनंराधेदूरीकर्तुंनचक्षमः ॥ १३ ॥ श्रीदामशापात्पूर्वंस्माद्गोलोकेकलहान्मम ॥ शतवर्षंतेवियोगोभविष्यतिनसंशयः ॥ १४ ॥ माशोचंकुरुकल्याणिवरंमेस्मरराधिके ॥ मासंमासंवियोगांतेदर्शनंमेभविष्यति ॥ १५ ॥ ॥ राधोवाच ॥ ॥ मासंप्रतिवियोगंमेदातुंत्वंदर्शनंहरे ॥ चेन्नागमिष्यसितदाऽसून्दुःखात्संत्यजाम्यहम् ॥ १६ ॥ लोकाभिरामजनभूषणविश्वदीपकंदर्पमोहनजगद्वृजिनार्तिहारिन् ॥ आनन्दकन्दयदुनन्दननन्दसूनोअद्यागमस्यशपथंकुरुमेपुरस्त्वम् ॥ १७ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ रंभोरुमासंप्रतितेवियोगंचेन्नागमिष्येशपथंगवांमे ॥ निःसंशयंनिष्कपटंवचस्त्वमवेहिराधेकथितंमयायत् ॥ १८ ॥

अपनी प्रतिज्ञा तो मैं चाहैं झूंठी करहु देऊं परि अपने भक्तनको वचन झूंठो नहीं करि सकूंहूं ॥ १३ ॥ श्रीदामाको शापसो तोकूं मेरो गोलोकमें जो तेरी और श्रीदामानाम मेरे सखाकी लडाई भई ही सो जो पहले श्रीदामाने तुमको शापदियो हो वासों सौवर्षको वियोग होयगो ॥ १४ ॥ हे कल्याणि ! तू शोच मति करे । हे राधिके ! मेरे वरको स्मरण करि महीना २ के अंतमें तोको मेरो दर्शन होयगो ॥ १५ ॥ तब राधिकाजी बोली कि, महीना २ कें अंतमें जो आप मोकूं महीना २ में आयके दर्शन न देउगे तो मैं प्राणनकूं त्यागि देऊंगी ॥ १६ ॥ हे लोकाभिराम ! हे जनभूषण ! हे विश्वदीप ! हे कंदर्पमोहन ! हे जगद्वृजिनार्तिहारिन् ! हे आनन्दकन्द ! हे यदुनन्दन ! हे नंदसूनो ! आज मेरे आगे तुम सोंगंद खायजाउ कि, मैं जल्दी आऊंगो ॥ १७ ॥ तब भगवान् बोले कि, हे रंभोरु ! जो महीनामें वियोग हैजाय मैं न आऊं तो मोकूं गौनकी सौगंद है ।

हे राधे ! यह मेरो वचन निःसंशय निष्कपट है जो मैंने कह्यो है याकूं ऐसे तुम समझो ॥ १८ ॥ जो मित्रताकों निष्कपट करै और निष्कारण करे वोही धन्यतम है और जो मित्रताकरिकै कपट करै वह लोभी और हेतुपट महालंपट नट है ताकूं धिक्कार है ॥ १९ ॥ कर्मेन्द्रिय जैसे शब्द, रस, रूप, गंध, स्पर्शकूं नहीं जाने हैं तैसेई सकामी जे मुनि हैं ते निरपेक्ष निर्गुण सुख है ताकूं किंचित्‌भी नहीं जाने हैं ॥ २० ॥ जे समदर्शी ब्रह्मदर्शी जे संत निरपेक्ष हैं वेही निरपेक्षनकों जो मेरो सुख है ताहि जाने हैं जैसे ज्ञानइन्द्रिय जीभ स्वादकूं, नेत्र रूपकूं, कान शब्दकूं, नाक सुगंधकूं, त्वचा ताते सीरेकूं जाने हैं तैसे वे जानेंहैं ॥ २१ ॥ सबनके भावकों आपुसमें सब जानेंहैं प्रीति दोनों वगलते होयहै एक वगलतें नहीं होय है याते अपनी आरते प्रेम मोमें करनो चाहिये प्रेमके समान और पृथ्वीपें कछू नही है ॥ २२ ॥ सो हे राधे ! जैसे तेरो मनोरथ भांडीरवटमें भयो हो तैसेइ अब होयगो निष्काम जो प्रेम है वोही संतनने आश्रय कर्यो है वहीं सुखको संत निर्गुणसुख जानें है ॥ २३ ॥ जे मनुष्य राधिकामें तोमें और

योमित्रतांनिष्कपटंकरोतिनिष्कारणोधन्यतमःसएव ॥ विधायमैत्रींकपटंविदध्यात्तंलंपटंहेतुपटंनटंधिक् ॥ १९ ॥ कर्मेन्द्रियाणीह्यथारसादीं
स्तथासकामामुनयःसुखंयत् ॥ मनाङ्न्जानंतिहिनैरपेक्ष्यंगूढंपरंनिर्गुणलक्षणंतत् ॥२०॥ जानंतिसंतःसमदर्शिनोयेदांतामहांतःकिलनैरपेक्षाः॥
तेनैरपेक्ष्यंपरमंसुखंमेज्ञानेंद्रियादीनियथारसादीन् ॥ २१ ॥ सर्वंहिभावंमनसःपरस्परंनह्येकतोभामिनिजायतेततः ॥ प्रेमैवकर्तव्यमतोम
यिस्वतःप्रेम्णासमानंभुविनास्तिकिंचित् ॥ २२ ॥ यथाहिभांडीरवटेमनोरथोबभूवरावेहितथाभविष्यति ॥ अहैतुकंप्रेमचसद्भिराश्रितंतच्चापि
संतःकिलनिर्गुणंविदुः ॥ २३ ॥ येराधिकायांत्वयिकेशवेमयिभेदंनकुर्वंतिहिदुग्धशौक्ल्यवत् ॥ तएवमेब्रह्मपदंप्रयांतितदहैतुकस्फूर्जितभक्तिल
क्षणाः ॥ २४ ॥ हेराधिकायांत्वयिकेशवेमयिपश्यंतिभेदंकुधियोनराभुवि ॥ तेकालसूत्रंप्रपतंतिदुःखितारंभोरुयावत्किलचंद्रभास्करौ ॥ २५ ॥
॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवमाश्वास्यतांराधांसर्वगोपीगणंतथा ॥ आययौनंदभवनंभगवान्नयकोविदः ॥२६॥ अथसूर्योदयेजातेनंदाद्याःशक
टैर्बलिम् ॥ नीत्वारथान्समारुह्यसर्वेश्रीमथुरांययुः ॥ २७ ॥ आरुह्यरामकृष्णाभ्यांस्वरथंगांदिनीसुतः ॥ प्रयाणमकरोद्राजन्मथुरांद्रष्टुमु
द्यतः ॥ २८ ॥ कोटिशःकोटिशोगोप्योमार्गेमार्गेसमास्थिताः ॥ पश्यंत्यस्तन्निर्गमनंक्रोधाढ्यामोहविह्वलाः ॥ २९ ॥

केशव जो मै हूं ता मोमें भेद नही देखे है जैसे दूध और श्वेततामें भेद नहीं ऐसेही मोमें तोमें भेद नही देखेहैं वई मनुष्य मेरे ब्रह्मपदकूं प्राप्तहोंयहैं वे कैसेहैं कि, निरपेक्षताते दीप्यमान हैं भक्तलक्षण धर्म जिनको ॥ २४ ॥ और जे कोई कुबुद्धि मनुष्य मोमें तोमें या पृथ्वीके विष भेद देखेंहैं ते मनुष्य महादुःखी हैके कालसूत्रनरकमें परे हैं हे रंभोरु! जबतलक सूर्य चंद्रमा रहैहैं तबताई ॥ २५ ॥ नारदजी कहै हैं कि, ऐसे इन राधिकाजीकूं समुझायके और सब गोपीगणनकूं समुझायके नीतिमें चतुर भगवान् नंदके भ वनको चलेआये ॥ २६ ॥ ताके पीछे सूर्यके उदय भयेपै नंदादिक सब गोप वलि भेट लैके रथनमें बैठके मथुराजीकूं आवत भये ॥ २७ ॥ तब अक्रूरजी रामकृष्णकूं संग लैके रथमें बैठ प्रस्थान करते भये मथुराकूं देखिबेकूं उद्यत होतेभये ॥ २८ ॥ वा समय जो किरोडन गोपीनके झुंड रस्ता रस्तामें ठाडे हैं वे वा श्रीकृष्णके निकसिबेकूं देखि रही हीं वे

क्रोधमें भरी और मोहमें विह्वलभई ॥ २९ ॥ अरे क्रूर २ ऐसे अक्रूरसों कठोर वचन कहती सब औरते रथकूँ घेरलेती भई जैसे रथ सहित सूर्यकी घन घेर लेयहें ॥ ३० ॥ नारदजी कहे हैं कि, हे मैथिल ! वा समय जब अक्रूर कृष्णको लेके चले तब कृष्णविरहमें आतुर जे गोपी हे तिननें अक्रूरके रथको रथके घोडा और सारथी इन सबको बडे बडे लट्ठनसों खूब पीटो है ॥ ३१ ॥ मारे जे वे घोडा हें वे इतमें वितमें जाय परे और गोपीनको दोई उंगरीयानके मारे सारथीहू रथमेंसो पडिके दीनों ॥ ३२ ॥ लोककी लाजकूँ छोडिके बलते अक्रूरकूँ रथते खैंचिके रामकृष्णके देखत देखत अक्रूरके ककनीयानकी मारते विह्वल करदियो ॥ ३३ ॥ गोपीनके पूथनको बल देखिके भगवान् बलदेव सहित अक्रूरकी रक्षा करिके गोपीनकूं समुझावत भये ॥ ३४ ॥ हे अंगना हो ! तुम शोचमति करो मैं संध्याहीकूँ वगदि आऊंगो जैसे याके देखते व्रजवासी मेरी हाँसी न

क्रूरक्रूरेतिचाक्रूरंवदन्त्यःपरुषंवचः ॥ रुरुधुःसर्वतोयानंयथार्कंसरथंघनाः ॥३०॥ अक्रूरस्यरथंराजन्निजघ्नुर्यष्टिभिर्भृशम् ॥ अश्वांस्तथासारथिंचभगवद्विरहातुराः ॥ ३१ ॥अश्वास्तत्रसमुत्पेतुस्ताडितास्तइतस्ततः ॥ गोपीद्व्यंगुलिघातेनसारथिःपतितोरथात् ॥ ३२ ॥ विहायलज्जांलोकस्यसमाकृष्यरथाद्बलात् ॥ कंकणैस्तेडुरक्रूरंपश्यतोःकृष्णरामयोः ॥ ३३ ॥ गोपीयूथबलंदृष्ट्वासबलोभगवान्हरिः ॥ गोपीःसंबोधयामाससरक्षित्वागांदिनीसुतम् ॥ ३४ ॥ संध्यायामागमिष्यामिमाशोचंकुरुतांगनाः ॥ पश्यतश्चास्यमद्धास्यंमाकुर्यास्तद्व्रजौकसः ॥ ३५ ॥ इत्येवमुक्त्वासरथःसमागतोक्रूरेणकृष्णोबलदेवसंयुतः ॥ तुरंगमैर्वेगमयैर्मनोहरैर्ययौपुरींयादववृन्दमंडिताम् ॥ ३६ ॥ यावद्रथःकेतुरुताश्वरेणुरालक्ष्यतेतावदतीवमोहात् ॥ स्थिताह्यभूवन्पथिचित्रवत्ताःस्मृत्वाहरेर्वाक्यमुतागताशाः ॥ ३७ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांमथुराखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेश्रीमथुरार्थप्रयाणंनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ हरिरक्रूररामाभ्यांमथुरोपवनंगतः ॥ यमुनानिकटेस्थित्वावारिपीत्वारथंययौ ॥ १ ॥ अक्रूरस्तावनुज्ञाप्यस्नातुंश्रीयमुनांगतः ॥ नित्यनैमित्तिकंकर्तुंविवेशविमलेजले ॥ २ ॥ जलेचागाधगंभीरेमहावर्तसमाकुले ॥ ददर्शरामकृष्णौतौविदंतौगांदिनीसुतः ॥ ३ ॥

करैं सो तुम करौ ॥ ३५ ॥ ऐसे कहिके बलदेवजीसहित भगवान् अक्रूरकूँ संग लेके मनकेसे जिनके वेग ऐसे घोडेनकरके यादवनके समूहकरिके मंडित जो मथुरापुरी है तामें आवते भये ॥ ३६ ॥ जबतलक रथकेतु दीखी और जबतक रथके घोडानकी रेणु उडत दीखी तबतलक तो अति मोहित भई चित्रकीसी लिखी ठाडीरहीं क्योंकि हरिके वचनकूं यादि करती श्रीकृष्णकी आयवेकी आशाते फिर सब घरदगई ॥ ३७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां मथुराखंडे भाषाटीकायां मथुरागमनं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥
ो कहेहें कि, अक्रूर और रामसहित श्रीकृष्ण मथुराके बागमें आयके ठहरे तब कृष्ण बलराम तो यमुनाके निकट ठहरके जल पीके रथमें जाय बैठे ॥ १ ॥ और अक्रूर
…ते आज्ञा मांगिके यमुनापै स्नान करिवेकूँ गये नित्य नैमित्तिक कर्म करिवेकूँ निर्मल जलमें प्रवेश करतेभये ॥ २ ॥ तब अक्रूरजी वा अथाह गंभीर जलमें

भमर जामें परें ता जलमें श्रीकृष्ण बलदेवकूं बतराते देखते भये ॥ ३ ॥ तब विस्मित ह्वैके अक्रूरजी रथमें देखें तो रथमें हू बैठे दीखें फिर जलमें देखें तो जलमें हू देखी फिर जो देखें तो कुंडलीमारे शेषजी बैठे हैं ॥ ४ ॥ तिनकी गोदीमें लोक जाकूं दंडोत करे ऐसो गोलोक दख्यो गोवर्द्धन देख्यो और मनोहर वृंदावन देख्यो ॥ ५ ॥ तामें असंख्यकिरोड सूर्यमंडलकोसो तेज जिनको ऐसे परिपूर्णतम पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण देखे ॥ ६ ॥ किरोड़कामदेवसे सुंदर रासमंडलके बीचमें राधासहित श्रीकृष्णकूं अक्रूरजी देखतेभये ॥ ७ ॥ तब श्रीकृष्णकूं परब्रह्म जानिके बेर बेर दंडवत करिके प्रसन्न ह्वैके हाथ जोड़ बडे हर्षित है स्तुति करनलगे ॥ ८ ॥ तुम परिपूर्णतम श्रीकृष्ण हो तिनके अर्थ नमस्कार है असंख्य ब्रह्मांडनके पति गोलोकपति हो तिनकूं मेरो नमस्कार है ॥ ९ ॥ श्रीराधाके पति ब्रजके अधीश नंदके पुत्र यशोदानन्दन तिनके अर्थ नमस्कार है ॥ १० ॥

विस्मितस्तौरथेपश्यत्पुनर्वारिस्थितौनृप ॥ ददर्शतत्रसर्पेन्द्रंकुंडलीभूतमास्थितम् ॥ ४ ॥ तस्योत्संगेमहालोकंगोलोकंलोकवन्दितम् ॥ गोवर्द्धनाद्रिंयमुनांवृन्दारण्यंमनोहरम् ॥ ५ ॥ असंख्यकोटिमार्तंडज्योतिषांमंडलंप्रभुम् ॥ परिपूर्णतमंसाक्षाच्छ्रीकृष्णंपुरुषोत्तमम् ॥ ६ ॥ कोटिमन्मथलावण्यंरासमंडलमध्यगम् ॥ राधयासहितंदेवंतत्राक्रूरोददर्शह ॥ ७ ॥ ज्ञात्वाकृष्णंपरंब्रह्मनत्वानत्वापुनःपुनः ॥ कृतांजलिपुटोक्रूरःस्तुतिंचक्रेतिहर्षितः ॥ ८ ॥ ॥ अक्रूरउवाच ॥ ॥ नमःश्रीकृष्णचंद्रायपरिपूर्णतमायच ॥ असंख्यांडाधिपतयेगोलोकपतयेनमः ॥ ९ ॥ श्रीराधापतयेतुभ्यंव्रजाधीशायतेनमः ॥ नमःश्रीनंदपुत्राययशोदानंदनायच ॥ १० ॥ देवकीसुतगोविंदवासुदेवजगत्पते ॥ यदूत्तमजगन्नाथपाहिमांपुरुषोत्तम ॥ ११ ॥ वाणीसदातेगुणवर्णनेस्यात्कर्णौकथायांममदोश्चकर्मणि ॥ मनःसदात्वच्चरणारविंदयोर्दृशौस्फुरद्धामविशेषदर्शने ॥ १२ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवंसंस्तुवतस्तस्यपश्यतोविस्मितस्यच ॥ तत्रैवांतर्दधेकृष्णःसलोकोभगवान्प्रभुः ॥ १३ ॥ नत्वातंचतदाक्रूरःकृत्वानैमित्तिकंविधिम् ॥ ज्ञात्वाकृष्णम्परंब्रह्मविस्मितोरथमाययौ ॥ १४ ॥ दिनात्ययेरामकृष्णावनयद्गांदिनीसुतः ॥ रथेनवायुवेगेनस्निग्धगंभीरनादिना ॥ १५ ॥ पुरस्योपवनेतत्रवीक्ष्यनंदंयदूत्तमः ॥ अक्रूरंप्राहविहसन्मेघगंभीरयागिरा ॥ १६ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ मथुरायांहिगंतव्यंभवतास्वरथेनवै ॥ गोपालैःसहितःपश्चादागमिष्यामिमानद ॥ १७ ॥

देवकीके सुत वासुदेव जगत्के पति हो हे यदूत्तम ! जगन्नाथ ! हे पुरुषोत्तम ! मेरी रक्षा करो ॥ ११ ॥ वाणी मेरी सदाई तुम्हारे गुण वर्णन करो मेरे हाथ तुम्हारे कर्म करे मेरो मन तुम्हारे चरणकमलमें लगो मेरे नेत्र तुम्हारे दर्शन कर्यो करो ॥ १२ ॥ नारदजी कहैहैं ऐसे स्तुति करही रहेहैं अक्रूरजी विस्मित ह्वैके देखही रहे हैं कि, तबही भगवान् गोलोकसमेत वहांही अन्तर्धान ह्वैगये ॥ १३ ॥ इनकूं दंडोत करिके नित्य, नैमित्तिक कर्म करिके श्रीकृष्णकूं परब्रह्म जानिके विस्मित ह्वैके अक्रूरजी फिर रथमें आय बैठे ॥ ॥ १४ ॥ तीसरे पहरके समय अक्रूरजी मीठी गंभीर आवाज जामें पवनकोसो जाको वेग ऐसे रथमें कृष्ण बलदेवकूं बैठारिके मथुराजीमें लेआये ॥ १५ ॥ तब पुरके पासके बागमें नंदजीको देखिके श्रीकृष्ण मेघके समान गंभीर वाणीते हँसिके अक्रूरजीते ये बोले ॥ १६ ॥ तुम अपने रथकूं लैके मथुराकूं जाओ हम गोपनकूं संग लेके पीछे आवेंगे ॥ १७ ॥

तब अक्रूरजी बोले हे देवदेव ! हे जगन्नाथ ! हे गोविंद ! हे पुरुषोत्तम ! आप गोपनसहित बलदेवजीकूँ संग लेके हे प्रभो ! मेरे घर चलो ॥ १८ ॥ अपने चरणकमलकी रजकरिके हमारे घरकूं पवित्र करो हे जगत्‌के पति ! तुम बिना मैं अपने घरकूँ नही जाऊंगो ॥ १९ ॥ तब भगवान् बोले कि, मैं तुमारे घर तबही आऊंगो जब यादवनके वैरी कंसकूं मारिलूंगो और बलदेवसहित तथा गोपनसहित तुमारो प्रिय करूंगो ॥ २० ॥ नारदजी कहें हैं कि, श्रीकृष्ण तो नन्दबाबाकेही पास रहे अक्रूरजी अपने घर चले गये तब कंसतें कहिगये कि, श्रीकृष्ण, बलदेव और नंदादिक सब गोप आयगये यह कहिके अपने घरकूँ चलेगये ॥ २१ ॥ तदनन्तर बलदेवजीसहित गोपनको संग लेके मथुरा पुरीके देखिबेकूं उत्कंठित श्रीकृष्णकूं देखिके नंदजी यह बोले ॥ २२ ॥ कि, सूधीतरेते पुरीको देखिके चले आइयो यह गोकुल नही है यामें भयंकर कंसको राज है ॥ २३ ॥ तब

॥ ॥ अक्रूरउवाच ॥ ॥ देवदेवजगन्नाथगोविंदपुरुषोत्तम ॥ सहाग्रजःसगोपालोगच्छमेमंदिरंप्रभो ॥ १८ ॥ पादारविंदरजसापवित्रीकुरुमद्गृहम् ॥ त्वांविनानगमिष्यामिमंदिरंस्वंजगत्पते ॥ १९ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ गृहंतवागमिष्यामिहत्वावैयादवाहितम् ॥ सबलोबांधवैःसार्द्धंकरिष्यामितवप्रियम् ॥ २० ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ अथतत्रस्थितेकृष्णेसोक्रूरोमथुरांगतः ॥ निवेद्यचेदंकंसायततःस्वभवनंययौ ॥२१॥ अथापराह्णेसबलंगोविन्दंबालकैःपुरीम् ॥ द्रष्टुमभ्युदितंवीक्ष्यनंदोवाक्यमथाब्रवीत् ॥ २२ ॥ आर्जवेनपुरींवीक्ष्यागंतव्यंभवताकिल ॥ नगोकुलंविद्धिचैनांकंसराज्येमहाभये ॥ २३ ॥ तथास्तुचोक्त्वाभगवान्वृद्धैर्नन्दप्रणोदितैः ॥ गोपालैर्बालकैःसार्द्धंसबलोगतवान्पुरीम् ॥ २४ ॥ प्रासादैर्गगनस्पर्शैर्हेमरत्नखचिह्वदैः ॥ शोभितांदुर्गसंयुक्तांदेवधानीमिवस्थिताम् ॥ २५ ॥ कालिंदीरत्नसोपानैश्चलदूर्मिकुतूहलैः ॥ अलकामिवशोभाढ्यांदिव्यनारीनरैर्युताम् ॥ २६ ॥ प्रेक्षञ्छ्रीमथुरांकृष्णोधनिनांमंदिराणिच ॥ पश्यन्गोपालकैःसार्द्धराजमार्गंविवेशह ॥ २७ ॥ श्रुत्वाऽऽगतंतंवसुदेवनंदनंबहुश्रुतावैमथुरापुरीगताः ॥ त्यक्त्वाथकर्माणिविसृज्यताःशिशून्द्रष्टुंव्यधावन्नुदधिंयथापगाः ॥ २८ ॥ काश्चिद्गुहर्म्यात्किलजालदेशात्कुड्याद्गुकाश्चित्पटतोगवाक्षात् ॥ विनिर्गताद्वारकपाटदेशात्तच्चत्वरात्तंददृशुःपुरंध्र्यः ॥ २९ ॥

भगवान्‌ने कही कि, ऐसेंही करेंगे ये कहिके फिर नन्दने जिनकी आज्ञा दीनी ऐसे बूढे २ गोपनको और बालकनकूं संग लेके बलदेवजीकूं संग लेके मथुरापुरीके देखबेकूँ गये ॥ २४ ॥ आकाशके छीवनहारे बड़े ऊंचे २ रतननके जड़े सुनहरी रूपेहरी महलनते किलेते ऐसी लगे हैं मानो मूर्तिमान इन्द्रकी देवधानी नाम पुरीही है ॥ २५ ॥ और कालिंदीकी रत्ननकी सिढी लेहरिदार तरंग तिनतें कैसी शोभित है जैसी कुबेरकी अलकापुरीही है दिव्य है स्त्री पुरुष जामें ॥ २६ ॥ ऐसी श्रीमथुराकूं देखत २ धनीनके महलनको देखत २ गोपनके संग बजारमें आये ॥ २७ ॥ बोहोतदिननते सुनती जे मथुरापुरीकी रहनवारी ही तिने जब वसुदेवनन्दनकूं आये सुने तब अपने अपने कामनको छोडि और बालकनकूं छोडिके कृष्णके दर्शनकूँ आई जैसे समुद्रमें नदी उमड़िके जामेहें ॥ २८ ॥ तब कोई कोई माथुरी तो महलनपेते कोई कोई जारी झरोखा गोखा

मोखामेंते कोई चिकनमेंते और कोई अपने द्वारनपैतें श्रीकृष्ण चलदाटको देखनलगी ॥ २९ ॥ जा श्रीकृष्णकी मुखके ऊपर चलायमान अलकावली अगाडीकेनको मन हरै है और पिछाडीको मुकुटके नीचेकी झलके पिछारीकेनको मन हरै है ॥ ३० ॥ आधे पीतांबरते कमर बंधी है आधो कंधापै पर्यो है जैसे श्यामघटामें विजुरी हाथमें कमलको लिये और कण्ठमें वैजयंती माला पहरे वसुदेवनन्दन देखे ॥ ३१ ॥ चंचल है मकराकृत कुण्डल जाके बालसूर्यकोसो तेज जिनमें ऐसे बाजूनतें शोभित है भुजदण्ड जाके अखिल ब्रह्मांडनके पति ऐसे श्रीकृष्णकूं देखि मथुरावासिनी सब मोहकूं प्राप्त हैगई ॥ ३२ ॥ तब यह बोली अहो ये वृन्दावन बड़ो रमणीय है जामें ये श्रीकृष्ण विराजे है और वे गोप गोपी धन्य है जे नित्य या श्रीकृष्णकूं देखे हैं जो कृष्ण मनको हरनहारो है ॥ ३३ ॥ वे गोपनकी रमणी स्त्री धन्य हैं इनने ऐसो कहा सुकृत कीनो है

एकंचलत्कुंतलमाननेस्वेकिमग्रगानांतुमनांसिहर्तुम् ॥ पश्चात्कृतंमौलितलेदधानंकिंपृष्ठगानांहरणंद्वितीयम् ॥ ३० ॥ पीतांबरार्द्धवलिनं स्फुरत्कटावर्द्धतदंसेजलदेयथातडित् ॥ पद्मंकरेस्वांहृदिवैजयंतीस्रजंदधानंवसुदेवनन्दनम् ॥ ३१ ॥ विलोक्यसर्वामुमुहुःपुरस्त्रियोविलोलपाठीननवीनकुंडलम् ॥ बालार्कहैमांगदबाहुमंडलंराजन्नसंख्यांडपतिंपरात्परम् ॥ ३२ ॥ ॥ पुरस्त्रियऊचुः ॥ ॥ अहोवृंदावनंरम्यंयत्रसन्निहितोह्ययम् ॥ धन्यागोपगणाःसर्वेपश्यंत्येनंमनोहरम् ॥ ३३ ॥ धन्यागोपरमण्यस्तास्ताभिःकिंसुकृतंकृतम् ॥ पिबंतियारासरंगेमुहुश्चास्याधरामृतम् ॥ ३४ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ राजमार्गेरंगकारंरजकंयांतमुन्मुदम् ॥ गोपालानुमतेनैवप्राहतंमधुसूदनः ॥ ३५ ॥ देहिनोमित्रवासांसिरुचिराणिमहामते ॥ दातुस्तेहिपरंश्रेयोभविष्यतिनसंशयः ॥ ३६ ॥ प्रज्वलन्कृष्णवाक्येनघृतेनाग्निर्यथाभृशम् ॥ कंसभृत्योमहादुष्टःप्राहेदंपथिमाधवम् ॥ ३७ ॥ ॥ रजकउवाच ॥ ॥ ईदृशान्येववस्त्राणिपितृभिर्वःपितामहैः ॥ धारितानिकिमुद्दत्तास्तेनकौपीनधारकाः ॥ ३८ ॥ याताशुवन्यानगरात्सर्वेवैजीवितेच्छया ॥ कारागारेकारयामियुष्मान्वस्त्रहरानहम् ॥ ३९ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवंप्रवदतस्तस्यरजकस्ययदूत्तमः ॥ जहारमस्तकंसद्यःकराग्रेणैवलीलया ॥ ४० ॥

जे गोपी रास रंगमें बारंबार याको अधरामृत पीवे है ॥ ३४ ॥ नारदजी कहै हैं कि, ऐसे आप चले जामें है कि, सामनेंते आवतो आपने बजारमें एक धोबी देख्यो वो रंगरेजहू हो वाहि देखि गोपनकी इच्छाते मधुदैत्यके मारनहारे आप यह बोले ॥३५॥ और मित्र हे महामते ! तोपै तो बड़े २ सुन्दर कपड़ा हैं इनमेंसो हमकूंहू देउ तो देनवारेको तेरो निश्चय बड़ो कल्याण होयगो ॥ ३६ ॥ तो यह धोबी श्रीकृष्णको वचन सुनि एकसंग भभकिउठ्यो घीते अग्नि जैसे क्योंकि, राजा कंसको चाकर है महादुष्ट है वो बजारमें श्रीकृष्णते यह बोल्यो ॥ ३७ ॥ ऐसे कपड़ा तुम्हारे बाप दादिनेंहू कभी पहिरे है क्यों उभराय चले हो अरे ! तनीपानके पहरनहारे हो बहुत इतराओ मती ॥ ३८ ॥ अरे मूर्ख वनवासी हो जलदी शहरमेंते निकरिजाउ जो जीयो चाहोही नहीं तो कपरानके चोरनको तुमको मैं अभी बंदीखानेमें दिवाय देऊंगो ॥ ३९ ॥ नारदजी कहै हैं ऐसे बकतो जो

धोबी है ताके श्रीकृष्णने एक तमाचो मारयोसोई शिर वाको दूटिके अलग जाय पर्यो ॥ ४० ॥ हे विदेहराज ! ताके शरीरमें एक ज्योति निकसी सो कृष्णमें लीन ह्वैगई तबही सब याके चाकर वस्त्रनकी गठरियानकूं छोड़िके ॥ ४१ ॥ चारों बगलको भाजिगये शरदऋतुमें बादर जैसे तब कृष्णबलरामने तिनके सुन्दर २ वस्त्र लीने और बालकननेहू लेलीने और रस्ताके आदमीनेहू लिये ४२ ॥ पर उनै पहरी नहीं जाने श्रीकृष्णके देखत अस्त व्यस्त वस्त्र पहरन लगे ॥ ४३ ॥ तब वायकनामके दरजीने श्रीकृष्ण बलदेवको विचित्र रंग २ के वस्त्रनसो विचित्र वेष बनायो और सब बालकनकोहू विचित्र वस्त्र पहराये ॥ ४४ ॥ फिर गोपनको और श्रीकृष्णको उनही वस्त्रनसो यथायोग्य शृंगार करके कृष्णके दर्शन कियो ॥ ४५ ॥ तब भगवान्ने वापै प्रसन्न ह्वैके अपनी सारूप्य मुक्ति दई बलदेवजीनेऊ बल लक्ष्मी ऐश्वर्य दीनो ॥ ४६ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां मथुराखंडे भाषाटीकायां श्रीकृष्णमथुराप्रवेशनं नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

तज्ज्योतिःश्रीघनश्यामेलीनंजातंविदेहराट् ॥ सद्यस्तदनुगाःसर्वेवासःकोशान्विसृज्यवै ॥ ४१ ॥ दुद्रुवुःसर्वतोराजञ्शरत्कालेयथाघनाः ॥ गृहीत्वात्मप्रियेवस्त्रेस्थितयोरामकृष्णयोः ॥ ४२ ॥ जगृहुर्गोपबालास्तेराजमार्गजनाअपि ॥ तद्वारणाविदोबालावासांसिरुचिराणिच ॥ अ स्तव्यस्तंपरिदधुःश्रीकृष्णस्यप्रपश्यतः ॥ ४३ ॥ वीक्ष्यतौबालकःकश्चिच्छ्रीकृष्णबलदेवयोः ॥ विचित्रवर्णैर्वासोभिर्दिव्यंवेषंचकारह ॥ ४४ ॥ तथान्येषांशिशूनांचयथायोग्यंविधायसः ॥ राजन्परमयाभक्त्यापुनःकृष्णंददर्शह ॥ ४५ ॥ प्रसन्नोभगवांस्तस्मैप्रादात्सारूप्यमात्मनः ॥ बलंश्रियंतथैश्वर्यंबलदेवोददौपुनः ॥ ४६ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमथुराखण्डेश्रीनारदबहुलाश्वसंवादेश्रीकृष्णमथुराप्रवेशोनामपंचमो ध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ अथगोपालकैःसार्द्धंश्रीकृष्णोनंदनंदनः ॥ गृहंजगामसबलःसुदाम्नोदाममालिनः ॥ १ ॥ दृष्ट्वातौचस मुत्थायनमस्कृत्यकृतांजलिः ॥ पुष्पसिंहासनेस्थाप्यप्राहगद्गदयागिरा ॥ २ ॥ ॥ सुदामोवाच ॥ ॥ धन्यंकुलंमेभवनंचजन्मत्वय्यागते देवकुलानिसप्त ॥ मातुःपितुःसप्ततथाप्रियायावैकुंठलोकंगतवंतिमन्ये ॥ ३ ॥ भूभारमाहर्तुमलंयदोःकुलेजातौयुवांपूर्णतमौपरेश्वरौ ॥ नमो युवाभ्याममदीनदीनंगृहंगताभ्यांजगदीश्वरौपरौ ॥ ४ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वापुष्परचनालंकारंमधुपध्वनीन् ॥ निवेद्यमकरंदा श्रमालाकारोननामह ॥ ५ ॥ धृत्वातत्पुष्पनिचयंसबलोभगवान्हरिः ॥ दत्त्वागोपेभ्यआरात्तंप्राहप्रहसिताननः ॥ ६ ॥

नारदजी कहें हैं कि, बलदेव सहित और गोपन सहित श्रीकृष्ण माली सुदामाके घर गये ॥ १ ॥ सुदामामाली दोनोंनकूं देखतही उठके ठाढोभयो फूलनके सिंहासनपै बैठारि दंडवत करके हाथ जोडके गद्गदवाणीते यह बोल्यो ॥ २ ॥ आजु मेरो कुल जन्म धन्य भयो आजु मेरो भवन पवित्र भयो आज आपके आयेते मेरी सात पीढी पवित्र भई मेरे पिताको कुलकी माताके कुल स्त्रीके कुलकी सात ७ पीढी बैकुंठकूं गयी ॥ ३ ॥ पृथ्वीको भार उतारवेकूं पूर्णपुरुष परमेश्वर तुम दोनो यदुकुलमें प्रकटभयेहो सो जगत्के ईश्वर मेरे घर आये मै तो दीनते दीन हूं नीच हूं मेरी दोनों पुरुषनकूं नमस्कार है ॥ ४ ॥ नारदजी कहै हैं कि, ऐसे कहिके फूलनकी माला गुच्छाहार गहने पहरावत भयो जिनपै सुगंधिके मारे भौंरा गुंजारि रहे हैं अनेक फूलनके अतर निवेदन करिके दंडवत करतो भयो ॥ ५ ॥ वाके फूलनके गहने मालानको बलदेवजी सहित भगवान हरि पहरिके और

गोपनकूं देके हँसते हँसते मालीते बोले ॥ ६ ॥ मेरे चरणकमलमे तेरी उत्कट भक्ति सदा होयगी और मेरे भक्तनको संग होयगो और याही लोकमें तोको मेरी सारूप्य मुक्ति प्राप्त होयगी ॥ ७ ॥ और बलदेवजी या मालीको अन्वयवर्द्धिनी लक्ष्मी देतेभये फेर वहांते दोनो भैया उठिके और गलीमें चलेगये ॥ ८ ॥ तहां एक कमलनयनी तरुण स्त्री चन्दन लीये कूबरी रस्तामे देखी आवतीते वाते लक्ष्मीके पति श्रीकृष्ण पछनलगे ॥ ९ ॥ तुम कौन हो कौनकी बेटी हो कौनकी बहू हो यह चन्दन कौनकूं लीये जाओहो हमकूं या चंदनकूं देउ तो तुम्हारो जल्दी ही कल्याण हैजायगो ॥१०॥ तब वह कुब्जा बोली हे सुंदरवर ! हे महामते ! मे दासी हूं मेरो कुब्जा नाम है ये मेरो घिस्यो चंदन कंसकूं अच्छो लगैहै ॥११॥ अबतलक तो मै कंसकी दासी ही अब हाथीकी सूड़से तुमारे सुढार भुजदंड देखिके में आपकी दासी हूं ॥ १२ ॥ तुम दोनो विना और को चंदन लगायबेलायक

गरीयसीमत्पदाब्जेभक्तिर्भूयात्सदातव ॥ मद्भक्तानांतुसंगःस्यान्मत्स्वरूपमिहैवहि ॥ ७ ॥ बलदेवोददौतस्मैश्रियंचान्वयवर्द्धिनीम् ॥ उत्था यतौततोराजनन्यांवीथींप्रजग्मतुः ॥८॥ यांतींस्त्रियंपद्मनेत्रांपाटीरालेपभाजनम् ॥ बिभ्रतींयुवतींकुब्जांपथिपप्रच्छमाधवः ॥ ९ ॥ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ कात्वंकस्यप्रियासुभ्रुकस्यार्थेचंदनंत्विदम् ॥ देह्यावयोर्येनतवाचिरंश्रेयोभविष्यति ॥ १० ॥ ॥ सैरंध्र्युवाच ॥ ॥ दास्यस्मिसुन्दरवरकुब्जानाममहामते ॥ मद्धस्तोत्थंचपाटीरंजातंभोजपतेःप्रियम् ॥ ११ ॥ अद्यापिकंसदास्यस्मिसांप्रतंतवचाग्रतः ॥ हस्तिशुंडादण्डसमेभुजदण्डेस्तिमेमनः ॥ १२ ॥ युवांविनाकोन्यतमोऽनुलेपंकर्तुमर्हति ॥ युवयोस्तुसमंरूपंत्रैलोक्येनहिविद्यते ॥ १३ ॥ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ उभाभ्यांसाददौसांद्रंहर्षिताह्यनुलेपनम् ॥ अथतावंगरागेणरामकृष्णौविरेजतुः ॥ १४ ॥ जगृहुश्चन्दनंदिव्यंकिंचित्किंचिद्व्रजार्भकाः ॥ त्रिवक्रामथतांकृष्णऋज्वींकर्तुमनोदधे ॥ १५ ॥ आक्रम्यपद्भ्यांप्रपदेंगुलिद्वयंप्रोत्तानहस्तेनविभुःपरेश्वरः ॥ प्रगृह्यनूणांचुबुकेप्रपश्यतांवक्रांततुंतामुदनीनमद्धरिः ॥ १६ ॥ तदैवसायष्टिसमानविग्रहार्द्धांग्याचरंभांक्षिपतीवरूपिणी ॥ भूत्वागृहीत्वाहहरिं तुवाससिशुचिस्मिताजातमनोजविह्वला ॥ १७ ॥ ॥ सैरन्ध्र्युवाच ॥ ॥ गच्छाशुहेसुंदरवर्यमद्गृहंत्यक्तुंभवंतंकिलनोत्सहेहम् ॥ प्रसीदसर्वज्ञरसज्ञमानदत्वयाभृशंप्रोन्मथितंमनोमम ॥ ॥ १८ ॥

है ? तुम्हारे समान रूप त्रिलोकीमें काहूको नहीं है इनीमें मन मेरो फसगयोहै ॥ १३ ॥ नारदजी कहेहैं ऐसे प्रसन्न हैके याने दोनोनकूं सुन्दर चंदन दीयो तब वा चंदनते कृष्ण बलदेवकी बड़ी शोभा होतीभई ॥ १४ ॥ तब थोड़ी २ वो दिव्य चंदन गोपननेऊ लगायो तब भगवान् तीन जगहसो टेढी वा कुब्जाकूं सूधी करिवेकूं आप मन करते भये ॥ ॥ १५ ॥ विभु परमेश्वर हरि अपने पांवते वाके दोनो पांवनके अग्रभागको दाबिके एक हाथ कमरमें देके दाहिने हाथकी दोनो उंगरियानसों वाकी ठोडी पकरिके एक झटका रूप रको दीनो ॥ १६ ॥ ताई समय वो सूधी छडीकी नाई समान शरीरवारी सुन्दर रूपा हैगयी अपने लावण्य सौंदर्यसो मानों साक्षात् रंभाकोहू मात करैहै तब श्रीकृष्णको पीतांबर पकरिके मुसिक्यात करत यह बोली काममे विह्वल हैगई ॥ १७ ॥ हे सुन्दरवर्य ! मेरे घर चलो मे आपकूं छोडूंगी नहीं हे सर्वज्ञ ! हे रसज्ञ ! हे मानद ! आपने मेरो

मन मथिडाऱ्यो काम चढ़ाय दीनों अत्यंत मन वश करि लीनो ॥ १८ ॥ नारदजी कहैंहैं कि, ताई समय गोप सब तारी बजाय हँसी करनलगे कि, यह कहा भयो बलदेवके
देखते २ कुब्जाने याचना करी तब तो भगवान् यह वचन बोले ॥ १९ ॥ अहो! यह मथुपुरी अति धन्य है जामें ऐसे २ भलेमानसमनुष्य बसैंहैं जे आदमी रस्ताहू नहीं जाने तिने घरकूं
लिवायके लेजाय है हे प्यारी! तेरे घर तौ निश्चयही आवेंगे पर मथुरापुरीकूं देखिके आवेंगे॥२०॥नारदजी कहैंहैं कि,ऐसी मीठी वाणी कहिके वाके हाथमेंते,अपने पीताम्बरको खैंचिके बजारमें
चलते२ श्रीभगवान् बडे २ साहूकार धनी जे बनियां हैं तिने देखतभये॥२१॥तब वे मथुराके रहीस वैश्य गंध,पुष्प,फल, तांबूल, दुध इनते हरिकी पूजा कर आसनपै बैठारिके नमस्कार करते भये
क्योंकि वे उत्तम बुद्धिवारे हैं बैठारी है ॥२२॥ तब वे बनियां बोले महाराज ! जो आपको यहां राज होय तो हमारी यादि राखियों हे देव ! हम तुम्हारी रय्यत है पर राजा भयेपै

॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ तदैवगोपाजहसुःपरस्परमहोकिमेतत्करतालनिःस्वनैः ॥ प्रहस्यरामस्यहरिःप्रपश्यतस्तद्याच्यमानोह्यव
दत्परंवचः ॥ १९ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ अहोतिधन्यामधुरापुरीयंवसंतियत्रैवजनास्तुसौम्याः ॥ येऽज्ञातपंथान्स्वगृहंनयंतिदृष्ट्वापु
रींधामतवागमिष्ये ॥ २० ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवमुक्त्वोत्तरीयांतंसमाकृष्यगिराद्रया ॥ राजमार्गंव्रजन्कृष्णोवैश्यानाढ्यान्ददर्शह
॥ २१ ॥ पुष्पताम्बूलगंधाढ्यैःफलैर्दुग्धफलैर्हरिम् ॥ सम्पूज्यस्वासनेस्थाप्यनेमुरग्र्यधियोविशः ॥ २२ ॥ ॥ वैश्याऊचुः ॥ ॥ भवे
च्चेदत्रतेराज्यंतावकान्स्मरतात्सदा ॥ वयंतवप्रजादेवराज्येप्राप्तेनकःस्मरेत् ॥ २३ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ पप्रच्छसुस्मितोवैश्यान्कोदं
डस्थानमच्युतः ॥ नतेतमूचुःसुधियःकोदंडेभंगशंकया ॥ २४ ॥ तद्रूपगुणमाधुर्य्यमोहितायेचमाथुराः ॥ कुमारपश्यैहिधनुरित्यूचुस्तदिह
क्षवः ॥ २५ ॥ तैर्दृष्टेनपथाकृष्णःप्रविष्टोधनुषःस्थलम् ॥ मैत्रींकुर्वन्वयस्यैश्चमाथुरैःपुरबालकैः ॥ २६ ॥ यथेंद्रहेमचित्राढ्यंकोदंडंसप्त
तालकम् ॥ पुरुषैःपंचसाहस्रैर्नेतुंयोग्यंबृहद्वरम् ॥ २७ ॥ अष्टधातुमयंक्लिष्टंलक्षभारसमंपरम् ॥ चतुर्दश्यांपौरजनैरर्चितंयज्ञमंडले ॥
॥ २८ ॥ भार्गवेणपुरादत्तंयदुराजायमाधवः ॥ददर्शकुण्डलीभूतंसाक्षाच्छेषमिवस्थितम् ॥ २९ ॥ वार्य्यमाणोनृभिःकृष्णःप्रसह्यधनुराददे ॥
पश्यतांतत्रपौराणांसज्यंकृत्वाथलीलया ॥ ३० ॥

कौन यादि राखे हैं ॥ २३ ॥ तब मंद मुसिक्यान करते भगवान् इन बनियांनते धनुषको स्थान पूंछन लगे सो वे धनुषके तोडवेके डरके मारे नहीं बतामें हें ॥ २४ ॥ वाके रूप गुण
माधुर्यताते मोहे जे मथुरावासी हैं वो बोले कि, हे कुमार ! देखो हम तुमें धनुष दिखामें आये ऐसे कहिके लेगये ॥ २५ ॥ तिनके बताये रस्तासो भगवान् धनुषके स्थानमें,पहुँ
चिगये बराबरके मथुराके बालकनते मित्रता करते जाय पहुँचे ॥ २६ ॥ इंद्रकोसो धनुष सुनहेरी बेल बूटा चित्र जामें सात तालनकी बराबर लंबो पांचहजार मनुष्यपे उठवेलायक
भारी ॥ २७ ॥ अष्टधातुको एक लाख भारको और चौदशकू पुरवासीननें पूज्यो यज्ञमंडपमें धरौ ॥ २८ ॥ परशुरामने यदुराजको दीयो ताहि श्रीकृष्ण देखतभये कुंडली मारे मानो
शेष नागही बैठ्यो है ॥ २९ ॥ मनुष्य तो बर्जतही रहे परि श्रीकृष्णने जात जात जबरदस्तीसो धनुष उठायलीनो और सब पुरवासीनके देखते देखते सहजमेंई खेलकरके चढाय

दीनो ॥ ३० ॥ फेर दोनों भुजानते कानताई खैंचिके बीचमेते तोरडाऱ्यो जैसे ईखके गांडेकूं हाथी सहजही तोरिडारै है ॥३१॥ जब धनुष टूट्यो तब वाकी टंकोर ऐसी भई मानो कडकडाय बीजुरी परी जाके शब्दसों सात लोक और सातों बिलनसहित ब्रह्मांड सबरे गूँजउठे ॥ ३२ ॥ दिग्गज चलायमान हैगये तारे टूटन लगे पृथ्वीमंडल कांपन लग्यो वा ईसमय पृथिवीमे सब जनमंडली बहरीसी हैगई ॥ ३३ ॥ कंसको हृदय दो घडी तलक कांप्यो कऱ्यो ताके रक्षक आततांई लडिबेकूं ठाडे हैगये ॥ ३४ ॥ श्रीकृष्णकूं पकऱ्यो चाहें हे पकरि लेउ बांधिलेओ ऐसे कहनलगे फिर शस्त्र लैलैके वे आये तिनो कृष्ण बलदेव दोनों देखे ॥३५॥ धनुषके दोनो टूकनकूं लैके दुर्मद जे वीर तिनकूं अत्यंत मारनलगे तब धनुषके टूकनके मारे कितनेऊ तो मूर्च्छा खायके जाय परे ॥ ३६ ॥ टूटे हे कंधा भुजा नख और पांव जिनके ऐसे पांचहजार वीर भूमंडलमें मरिके जाय परे ॥ ३७ ॥ जे मथुरावासी तमासे देखनवारे हे वे सब भागगये पुरीमें बडो कोलाहल भयो मनुष्यनको बडो कोलाहल मचो ॥ ३८ ॥ भोजराज कंसको छत्र अकस्मात् जाय पऱ्यो मथुरापुरीमे कोलाहल मचिगयो

आकृष्यकर्णपर्यंतंदोर्दंडाभ्यांहरिर्धनुः ॥ बभंजमध्यतोराजन्निक्षुदंडंगजोयथा ॥३१॥ भज्यमानस्यधनुषष्टंकारोभूत्तडित्स्वनः ॥ ननादतेनब्रह्मांडंसप्तलोकैर्बिलैःसह ॥ ३२ ॥ विचेलुर्दिग्गजास्तारापेतुर्भूखण्डमंडलम् ॥ तदैवबधिरीभूतापृथिव्यांजनमंडली ॥ ३३ ॥ कंसस्यहृदयेशब्दोविददारघटीद्वयम् ॥ तद्रक्षिणःप्रकुपिताउत्थिताआततायिनः ॥३४॥ गृहीतुकामाःश्रीकृष्णंप्रत्यूचुर्बध्यतामिति ॥ अथतानागतान्वीक्ष्यसशस्त्रान्बलकेशवौ ॥ ३५ ॥ कोदंडशकलेनीत्वाजघ्नतुर्दुर्मदान्भृशम् ॥ शकलातिप्रहारेणकेचिद्वीरास्तुमूर्च्छिताः ॥ ३६ ॥ भिन्नपादाभिन्ननखाः केचिच्छिन्नांसबाहवः ॥ वीराःपंचसहस्राणिनिपेतुर्भूमिमण्डले ॥ ३७ ॥ विचेलुर्माथुराःसर्वेदुद्रुवुस्तद्दिदृक्षवः ॥ पुर्य्यांकोलाहलेजातेनृणांजातंमहद्भयम् ॥ भोजराजसभाछत्रमकस्मान्निपपातह ॥३८॥ गोपालैःसबलःकृष्णोधावश्चापस्थलान्नृप ॥ आययौनंदनिकटंसन्ध्याकालेऽतिभीतवत् ॥३९॥ निरीक्ष्यगोविंदसुरूपमद्भुतंविमोहितास्तेमथुरापुरांगनाः ॥ विस्रस्तवासःकबराःस्मरार्दयःपरस्परंप्राहुरिदंसखीजनम् ॥४०॥ ॥ पुरंध्र्यऊचुः ॥ ॥ कंदर्पकोटिद्युतिमाहरंस्त्वरंस्वैरंचरन्वैमथुरापुरेहरिः ॥ निरीक्ष्यतेकाभिरतीवसाक्षादंगेषुसर्वेष्वपिनःसमादिशत् ॥ ४१ ॥ ॥ कुशलाऊचुः ॥ ॥ क्रूराःस्त्रियःकिंनहिसंतिपत्तनेनिरीक्ष्यतेयाभिरनंगमोहनः ॥अंगेषुसर्वेष्वपिसर्वसुन्दरोनास्माभिरानन्दमयोनिरीक्ष्यते४२॥

और कोई मनुष्य भयभीत हैके गिरपडे और गोपनसहित बलदेवजीकूँ संग लेके श्रीकृष्ण धनुषके स्थानते संध्यासमय अति डरपोकासे भयभीतसे भागके नंदजीके पास आये ॥ ॥ ३९ ॥ वा समय वो गोविंदको अद्भुत स्वरूप देखिके मथुरावासिनी सब स्त्री मोहित हैगई शिथिल भयेहें वस्त्र, भूषण, केशबंध जिनके कामदेवकी जिनको पीडा उत्पन्न भई ऐसी वे आपसमे ये बोली ॥ ४० ॥ हे सहेली हो ! देखो किशोर कामदेवकी कांतिको हरनहारो श्रीकृष्ण इच्छापूर्वक मथुरापुरीमें विचरतो जाने देख्यो तिन स्त्रीनके और हमारे सबनके अंगनमे कामरूप हैके प्रवेश हैगयोहे ॥ ४१ ॥ तब जे बडी कुशल माथुरी हीं वे बोली कि, री भैना हो ! क्रूर स्त्री का शहरमे नही हे पर इननेहूं कामकूं मोह करन हारो श्रीकृष्ण देखिलीये वोही मोहित भई हे क्योंकि काऊ स्त्री पुरुष एके एक अंग नेत्र नासिका मुख कपोल हाथ पांव बोली चालि सुंदर होय तो जब एकही अंगते सब

मोहित हैजायँहैं फिर कहो जाके सबरेही अंग सुंदर हैं सो कहो कैसे देखिबेमें आवें और या सर्वांगसुंदरको देखके कैसे चित्त स्थिर रहे क्योंकि जाके मुखको नेत्रको या नाकको या कपोलको या ओठको देखे है ताईमें चित्त गढिजाय है ॥ ४२ ॥ जैसे कोई चोर चोरी करिवे गयो सब छोडि रुपैया बांधे जब देखी मोहर तब रुपैया छोडि मोहर बांधी फिर देखे मोती तब मोहर छोडि मोती बांधे फिर देखे हीरा पन्ना तब हीरा पन्ना बांधे मोती छोडि दीने जब देखी मणि तब हीरा पन्नाऊ छोडिदीन ऐसेही हम याके कौन कौनसे अंगकी बडाई करें जा जा अंगको देखे हैं वाही वाहीमें मन दूरढजाय है त्रिलोकीमें और कोई सुन्दर हैही नही या श्रीकृष्णके बिना जाय कोई देखे ॥ ४३ ॥ अंग अंगमें सुंदर नंदकुमार है जा अंगकूं देखे सोई सुन्दरताको समुद्र तामें नेत्र डूबिजाय वे वामेंते निकसे नही तो कैसे दूसरे अंगकूं देखे ॥ ४४ ॥ जा माधुरीने दिनमें व्रजराजनंदन देख्यो ताने स्वप्नमेंहू वही देख्यो फिर हे मैथिल ! जिन गोपीननें जाके संग रासमंडल कीनो वे गोपी वाहि कैसे न याद करेंगी ॥ ४५ ॥

कस्यैकदेशेमधुरत्वमीक्ष्यतेतत्रास्तिनेत्रंप्रपतत्पतंगवत् ॥ यस्त्वेवसर्वांगमनोहरःसखिसएवनेत्रेणकथंसमीक्ष्यते ॥ ४३ ॥ अंगेष्वंगेसुन्दरेनंदसू नोःप्राप्तंप्राप्तंयत्रयत्रापिनेत्रम् ॥ तस्मात्तस्मान्नामवल्लब्धसौख्यंलावण्याब्धौमग्नवल्लग्नचित्तम् ॥ ४४ ॥ दृष्टादिनेयंव्रजराजनन्दनंस्वप्नेपितद्रष्टुः पुरस्त्रियः ॥ गोप्यःकथंतंमधुरंनसस्मरुर्याभिःकृतंमैथिलरासमण्डलम् ॥ ४५ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमथुराखण्डेनारदबहुलाश्वसंवा देमथुरादर्शनंनामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ रजकस्यशिरश्छेदंकंसोवैरक्षिणांवधम् ॥ धनुर्भंगंततःश्रुत्वापरंत्रासमु पागमत् ॥ १ ॥ तत्क्षणाद्दुर्निमित्तानिवामांगस्फुरणानिच ॥ अपश्यदंगभंगानिननिद्रांप्रापदैत्यराट् ॥ २ ॥ स्वप्नेप्रेतैःसमायुक्तस्तै लाभ्यक्तोदिगंबरः ॥ जपास्रग्विषाद्धोदक्षिणाशांजगामसः ॥३॥ प्रातःकालेसमुत्थायकार्यभारकराञ्जनान् ॥ आहूयकारयामासमल्लक्री डामहोत्सवम् ॥ ४ ॥ विशालाजिरसंयुक्तेहेमस्तंभसमन्विते ॥ सभामण्डपदेशाग्रेरंगभूमिर्बभूवह ॥ ५ ॥ वितानैर्हेमसंकाशैर्मुक्तादामविलं बिभिः ॥ सोपानैर्हेममंचैश्चरंगभूमिर्बभौनृप ॥ ६ ॥ राजमंचेरत्नमयेमकरन्दाचितेशुभे ॥ शक्रसिंहासनंतत्रसोपबर्हणमंडलम् ॥ ७ ॥

इति श्रीमद्गर्गसंहितायां मथुराखंडे भाषाटीकायां मथुरादर्शनं नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ नारदजी कहैहैं कि, धोबीको शिर कट्यो सुनिके और धनुषको टूटिबो और रक्षक पांचहजार वीर तिनको वध सुनके कंसकूं बड़ो भय भयो ॥ १ ॥ ताही समयसो कंस खोटे निमित्त अशगुन देखन लग्यो वांये अंग फरकन लगे रातिमें निद्रा नही आई और अपने अंग भंग देखतोभयो ॥ २ ॥ स्वप्नमें तेल लगाय दुपहरियाके फूलनकी माला पहरि नंग धरंगो भैंसापै चढ खोपड़ीमें खायवेकूँ विष लेके प्रेतनके संग दक्षिण दिशाकूं जायरहौंहूं ऐसे स्वप्नमें दीखो है ॥ ३ ॥ प्रातःकाल कंस उठिके अपने कामदारनकूं बुलायके मल्लक्रीड़ाको उत्सव करावतो भयो ॥ ४ ॥ बड़ो जामें चौक सुवर्णके जामें खंभ ऐसे सभाके मंडपके अगारी रंगभूमि करावतो भयो ॥ ५ ॥ सुन्देरी चन्दोहा जिनमें मोतीनकी मालाकी झालर लगी सिढीन सहित सुन्हेरी तखतनसों वा रंगभूमिकी बड़ी शोभा होतीभई ॥ ६ ॥ राजाको तखत रतनमय अतरते छिरक्यो वह बड़ो शुभ तापे इन्द्रासन है जापै चंदोहा झालर लगिरहीहैं तकियां

गेंदुआ ॥ ७ ॥ चन्द्रमण्डलसौ दिव्य छत्र हंससे सुफेद चमर पंखा जिनकी हीरानकी डंडी ॥ ८ ॥ दश हाथ ऊंचो विश्वकर्माको बनायो तापै बैठ्यो जो कंस ताकी कैसी शोभा भई जैसे पर्वतपै सिंह बैठे है ॥ ९ ॥ तहां गवैया गावन लगे वेश्या नाचन लगी मृदंग, ढोल, भेरी, नगाड़े, मजीरा आदि बाजे बजनलगे ॥ १० ॥ मण्डलेश राजा पुरवासी और देशवासी ये सब तखत २ पै बैठे देश २ को मनुष्य या मल्लयुद्धके देखिबेकूं बैठे हैं ॥ ११ ॥ तहां चाणूर, मुष्टिक, कूट शल, तोशल ये सब दण्ड करन लगे मुगदर भाननलगे और आपुसमें कुश्ती करन लगे ॥ १२ ॥ नन्दराजते आदि लेके सबरे गोप बली कंसको भेंट देके नीची नारिते एक तखतपै येभी जाय बैठे ॥ १३ ॥ बाणासुर, नरकासुर, जरासन्ध इनके यहांसे औरहू बड़े २ शंबरासुर आदि राजानकेते भेंट आई कंसराजाकूं ॥ १४ ॥ याके अनन्तर

आतपत्रेणदिव्येनचंद्रमंडलचारुणा ॥ हंसाभैर्व्यजनैर्युक्तैश्चामरैर्वज्रमुष्टिभिः ॥ ८ ॥ दशहस्तोच्छ्रितंशश्वद्विश्वकर्मविनिर्मितम् ॥ तदारुह्यव भौकंसोऽद्रिशृंगंमृगराडिव ॥ ९ ॥ गायकाःप्रजगुस्तत्रननृतुर्वारयोषितः ॥ नेदुर्मृदंगपटहतालभेर्य्यानकादयः ॥ १० ॥ राजानोमण्डलेशाश्च पौराजानपदानृप ॥ ददृशुर्मल्लयुद्धंतेमंचेमंचेसमास्थिताः ॥११॥ चाणूरोमुष्टिकःकूटःशलस्तोशलएवच ॥ व्यायाममुद्गरैर्युक्तायुयुधुस्तेपरस्परम् ॥ १२ ॥ नन्दराजादयोगोपाःकंसाहूतानताननाः ॥ दत्त्वाबलिंपरंतस्माएकस्मिन्मंचमाश्रिताः ॥ १३ ॥ बाणासुरजरासंधनरकाणांपुरान्नृप॥ अन्येषांशंबरादीनांसकाशाद्भुजांतथा ॥ १४ ॥ बलयश्चाययूराजन्यदुराजाथतत्रवै ॥ अथतौरामकृष्णौद्वौमायाबालकविग्रहौ ॥ १५ ॥ मल्ललीलादर्शनार्थंययतूरंगमण्डलम् ॥ गोमूत्रचयसिंदूरकस्तूरीपत्रभृन्मुखम् ॥ स्रवन्मदंमहामत्तंरत्नकुंडलमण्डितम् ॥ १६ ॥ गजंकुवलयापीडंरंगद्वारमवस्थितम् ॥ वीक्ष्यकृष्णोमहामात्रंप्राहगंभीरयागिरा ॥ १७ ॥ आकर्षयांगनागेन्द्रंमार्गंकुरुममेच्छया ॥ नचेत्त्वांपातयिष्यामि सनागंभूमिमण्डले ॥ १८ ॥ महामात्रस्तदाक्रुद्धोनोदयामासतंगजम् ॥ चीत्कारमुत्कटंदिक्षुकुर्वंतंनन्दसूनवे ॥ १९ ॥ गृहीत्वातंहरिंसद्यःशुंडादंडेननागराट् ॥ उज्जहारततस्तस्मान्निर्गतोभारभृद्धरिः ॥ २० ॥

मायाकरिके बालरूपधारी कृष्ण बलदेव दोनो भाई रंगभूमिमें ॥ १५ ॥ मल्ललीला देखिबेकूं आये सोई द्रवज्जेपै देखें तो कुवलयापीड हाथी ठाडो है कैसो है गोमूत्र, पेवरी, कस्तूरी, सिंदूरते पत्रभंगी रचना जाके माथेपै हेरही है मद जाके चुचाय रह्यो है महामत्त है रत्नके कुण्डलनसों शोभित है ॥ १६ ॥ कुवलयापीड जाको नाम है वो हाथी रंगके दरवज्जेपै ठाडो है ताकूं देखि श्रीकृष्ण मेघकीसी गंभीर वाणीते महावतसे बोले ॥ १७ ॥ हे महावत ! या नागेंद्रकूं खेंचिले मेरे इच्छानुसार रस्ता करिदे नही तो तोकूं या हाथी सुद्धा धरतीमें दे मारूंगो ॥ १८ ॥ यह सुनिके महावत बडे क्रोधमें भर्यो तब श्रीकृष्णके ऊपर हाथीकूं पेल्यो दिशानमें चिंघारी मारत उत्कट कुवलयापीड श्रीकृष्णके ऊपर आयो ॥ १९ ॥ सो जलदीही सूंडिते श्रीकृष्णकूं पकरिके उठायलीनो सोही श्रीकृष्ण याकी झड़ाकदेना सूंडिमेंते

निकासिगये ॥ २० ॥ ताके पांवनमें छिपिगये इत उतमें भ्रमणन लगे जैसे वृन्दावनकी निकुंजमें और वृक्षनमें भ्रमते हैं ॥ २१ ॥ फिर हाथीने सूंडिते भगवान्के हाथमें पकरिलीने तब श्रीकृष्ण वाकी सूंडिको हाथनसों मरोड पीछेकूं चलेगये ॥ २२ ॥ तब हाथी तिरछो ह्वैके कृष्णको पकरन लग्यो तब वाके घूंसा मारिके आप आगेकूं भाजे ॥ २३ ॥ तब ये हाथी श्रीकृष्णके पीछे भाज्यो तब हे विदेहराट्! मथुरामें बड़ो कोलाहल मच्यो तब भगवान् हाथीके दूसरे बगल ह्वैगये ॥ २४ ॥ तब महाबली बलदेव हाथीकी पूंछ पकरि पीछेको खैंचन लगे दोनो हाथनते ऐसे खैंचन लगे सर्पकूं गरुड़ जैसे खैंचे है ॥ २५ ॥ तब हँसके भगवान् श्रीकृष्ण वाकी सूंड पकरके खैंचन लगे जैसे कूँआमेंते बरतकूं खेंचैंहैं ॥ २६ ॥ जब दोनों बगलते नाग खिंचनलग्यो तब घबड़ान्यो विह्वल ह्वैगयो तब बड़े बलते सात महावत या हाथीपै चढे

तत्पादेषुविलीनोभूत्भ्रमन्सन्निहितस्ततः ॥ वृन्दावननिकुंजेषुवृक्षेषुचयथाहरिः ॥ २१ ॥ करेजग्राहतन्नागःशुंडादण्डेनचांघ्रिषु ॥ निष्पीड्यशुं
डांहस्ताभ्यांहरिःपश्चाद्विनिर्गतः ॥ २२ ॥ तिर्यग्भूतश्चतंनागोगृहीतुमुपचक्रमे ॥ मुष्टिनातंघातयित्वापुरोदुद्रावमाधवः ॥ २३ ॥ तमन्वधा
वन्नागेन्द्रोमथुरायांविदेहराट् ॥ कोलाहलेतदाजातेहरिस्तस्मादितोययौ ॥ २४ ॥ पुच्छेगृहीत्वातन्नागंबलदेवोमहाबलः ॥ चकर्षभुजदंडा
भ्यांफणिनंगरुडोयथा ॥ २५ ॥ प्रहसन्भगवान्कृष्णोगृहीत्वातंकरेबलात् ॥ चकर्षभुजदंडाभ्यांकूपरज्जुंयथानरः ॥ २६ ॥ द्वयोराकर्ष
णान्नागोविह्वलोभून्नृपेश्वर ॥ महामात्रास्तदासप्तरुरुहुस्तंगजंबलात् ॥ २७ ॥ नीतागजास्तथान्यैःकृष्णंहंतुंशतत्रयम् ॥ अंकुशास्फाल
नात्क्रुद्धंमत्तेभंपुनरागतम् ॥ २८ ॥ श्रीकृष्णोभगवान्साक्षाद्बलदेवस्यपश्यतः ॥ २९ ॥ शुंडादंडेसंगृहीत्वाभ्रामयित्वात्वितस्ततः ॥ पातया
मासभूपृष्ठेकमंडलुमिवार्भकः ॥ ३० ॥ दूरेप्रपतितास्तस्यमहामात्राइतस्ततः ॥ सतांप्रपश्यतांनागःसद्योवैनिधनंगतः ॥ ३१ ॥ तज्ज्योतिः
श्रीघनश्यामेलीनंजातंविदेहराट् ॥ दंतावुत्पाट्यतस्यापिरामकृष्णौमहाबलौ ॥ निजघ्नतुर्महामात्रान्मृगान्केशरिणौयथा ॥ ३२ ॥ द्विपेहते
पित्रेचान्येमहामात्राइतस्ततः ॥ विदुद्रुवुर्यथामेघावर्षाकालेगतेसति ॥ ३३ ॥ एवंहत्वाद्विपंगोपैःशेषैस्तैःप्रेक्षणोत्सुकैः ॥ जयारावैरामकृष्णौ
श्रमवारिमदांकितौ ॥ ३४ ॥

॥२७॥ फेर तीनसो हाथी श्रीकृष्णके ऊपर और महावतने तीनसो हाथी कुवलयापीडकी सहायकूँ औरपेले॥ २८॥ अंकुशके छिवायेते क्रोध जाकूँ आयो वह हाथी श्रीकृष्णके ऊपर फिर आयो तब श्रीकृष्णभगवान् बलदेवके देखत देखत ॥ २९ ॥ वा हाथीकी सूंडि पकरिके फिराय २ धरतीमें दैमारयो जैसे बालक कमण्डलुकूं मारे है ॥३०॥ और सातों महावत दूरि जाय परे या प्रकार संतनके देखत २ यह कुवलयापीड मरिके जाय पर्यो ॥ ३१ ॥ वाके दांत दोनो उखारिके कृष्ण राम दोनो भाईनने उनी दांतनते महावत सब मारिडारे जैसे मृगनकूं सिंह मारे है वा हाथीकी देहमेंते जो ज्योति निकसी सो श्रीकृष्णमें लीन ह्वैगई ॥ ३२ ॥ जब हाथी मरिगयो तब जितने महावत हैं वे सब डरके मारे इत उत भाजिगये शरदऋतुके आनेमें मेघ जैसे भाजजायहै ॥ ३३ ॥ ऐसे गोपनके संग हाथीकूं मारिके तमासगीर सब जय २ शब्द करे हैं परिश्रमके पसीना कछू मदके कछू हाथीके

मारिवेते नहनी २ रुधिरकी बूंद तिनकरिके शोभित मुखकमल जिनको ऐसे कृष्ण बलराम ॥ ३४ ॥ परिश्रमते लाल जिनके मुख हाथीके दांतनकूं कंधापै धरे या शोभाते रंगभूमिमें पहुंचे जैसे अग्निके संग आंधी ॥ ३५ ॥ या प्रकार वा रंगभूमिमें जब दोनों भैया गये तब कृष्णके अङ्गको देखके मल्लननें तो मल्ल जाने नरननें नरेंद्र जाने स्त्रीननें कामदेव जाने गोपनने व्रजेश जाने पिताने पुत्र जाने असन्तनने यमराज जाने कंसने मौत जाने देवतानने विराट् पुरुष जाने ॥ ३६ ॥ योगीननें परम तत्त्व पुरुष जाने या प्रकार अपनी २ भावनाते न्यारो २ रूप परिपूर्ण देवको देखनलगे ॥ ३७ ॥ यद्यपि कंस बड़ो धीरजधारी हो तोउ कुवलयापीडकूं मरयो जानिके और महाबली ! दोनोनकूं जानिके चित्तमें बहुत डरप्यो मंचाननपै बैठे जे नगरवासी ते बड़े प्रसन्न भये सुखी भये जैसे चकोर चन्द्रमाकूं देखे तैसे देखनलगे ॥ ३८ ॥ अब नगरवासी परस्पर कान कानमें

परिश्रमारुणमुखौरंगंविविशतुस्त्वरम् ॥ दंतपाणीमहावेगौयथाशामनिलानलौ ॥३५॥ मल्लाश्चमल्लंचनरानरेंद्रंस्त्रियःस्मरंगोपगणाव्रजेशम् ॥ पितासुतंदंडधरंह्यसंतोमृत्युंचकंसोविबुधाविराजम् ॥ ३६ ॥ तत्त्वंपरंयोगिवराश्चभोगादेवंतदारंगगतंबलेन ॥ पृथक्पृथग्भावनयाह्यपश्यन्सर्वे जनास्तंपरिपूर्णदेवम् ॥ ३७ ॥ हतंद्विपंवीक्ष्यचतौमहाबलौकंसोमनस्वीभयमापचेतसि ॥ मंचस्थिताहर्षितमानसाश्चयौचंद्रंचकोराइवतेसुखं ययुः ॥ ३८ ॥ कर्णंचकर्णेविनिधायनागरामहोत्सुकास्तेह्यवदन्परस्परम् ॥ एतौहिसाक्षात्परमेश्वरौपरौबभूवतुर्वैवसुदेवनंदनौ ॥ ३९ ॥ अहो तिरम्यंव्रजमंडलंपरंयत्रैषसाक्षाद्विचचारमाधवः ॥ कृत्वाहियद्दर्शनमद्यदुर्लभंवयंकृतार्थास्तुभवेमसर्वतः ॥ ४० ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ वदत्सुपौरलोकेषुनदत्सूर्येषुमैथिल ॥ चाणूरस्तावुपव्रज्यरामकृष्णावुवाचह ॥ ४१ ॥ ॥ चाणूरउवाच ॥ ॥ हेरामहेकृष्णयुवांमहाबलौराज्ञःपुरोवैकुरुतंमृधंबलात् ॥ प्रहर्षितेराजनिचेद्यदूत्तमेकिंकिंनभद्रंभवतीहवश्चनः ॥ ४२ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ पुरैवभद्रंनृपतेःप्रसादतो बालावयंतुल्यबलैश्चबालकैः ॥ भूयान्मृधोनोबलवान्यथोचितमधर्मयुद्धंकिलमाभवेदिह ॥ ४३ ॥ ॥ चाणूरउवाच ॥ ॥ भवान्नबालो नचवाकिशोरोबलश्चसाक्षाद्बलिनांबलीयान् ॥ सहस्रमत्तेभबलंदधानोद्विपोभवद्भ्यांनिहतःसलीलम् ॥ ४४ ॥

यह बतरानलगे कि, ये दोनों तो पर परमेश्वरही वसुदेवके भयेहैं ॥ ३९ ॥ अहो व्रजमण्डल बड़ो मनोहर है जहां साक्षात् भगवान् विचरेहैं जिनके दुर्लभ दर्शन करिके हमहूं आज सबतरह कृतार्थ हेगये हैं ॥ ४० ॥ पुरवासी ऐसे कहिरहे हे और नगाडे बजिरहे हैं कि, नारदजी कहैंहैं कि, हे मैथिल ! चाणूर आयके रामकृष्णते यह बोल्यो ॥ ॥ ४१ ॥ हे राम ! हे कृष्ण ! तुम महाबली हो याते राजाके अगाडी अपने बलते युद्ध करो यदुराज राजाके प्रसन्न भयेपै हमकूं और तुमकूं न जाने कहा २ लाभ न होयगो ? ॥ ४२ ॥ तब भगवान् बोले कि, राजाके प्रसादते हमारो तो पहलेईते भलो हैरह्योहै पर हम बालक है बराबरके बालकनते लड़ेंगे जबराईते युद्ध मति करो जैसो युद्ध उचित होय तैसो करो राजाकी सभामें अधर्मते युद्ध करनो उचित नहीं ॥ ४३ ॥ तब चाणूर बोल्यो तुम न तो बालक हो न किशोर हो न बलदेव बालक है तुम तो बलीनमें बली

ही हजार मतवारे हाथीनको बल जामें सो कुवलयापीड हाथी तुमने खेलते २ ही मारिडारयो फिर तुम बालक कैसे हौ ॥ ४४ ॥ नारदजी कहें हैं कि, ऐसे चाणूरको वचन
सुनिकें भगवान् दुःखके हर्ता चाणूरते लडनलगे बलदेवजी मुष्टिकते लडनलगे ॥ ४५ ॥ भुजानते भुजदंडनको खेंचिबो इत्यादिक दाव पेच करनलगे सबके देखत देखत हाथी
जैसे लडै है तैसे जीतनेकी इच्छा करके लडतेभये ॥ ४६ ॥ श्रीकृष्णने चाणूरकूं उठायके याके देहको बोझ तोलनलगे जैसे पुण्यके भारकूं ब्रह्मा तोलेंहै ॥ ४७ ॥ फिर चाणूर
नेहू श्रीकृष्णकूं एकही हाथते उठायलीनो जैसे शेषजीनें भूमंडल उठायोहै ॥ ४८ ॥ श्रीकृष्णने चाणूरकी नाड दाबिके भुजाते याकी कमर पकर एक उखेड मार धरतीमें
देमारयो ॥ ४९ ॥ हाथनते घोंदुनते पायनसो भुजानते छातीनते ऊँगरीयनते और घूंसानते कृष्ण चाणूर प्रहार करनलगे और ऐसेही बलदेव मुष्टिक प्रहार करनलगे ॥ ५० ॥

॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ एवंतस्यवचःश्रुत्वाभगवान्वृजिनार्दनः ॥ चाणूरेणापियुयुधेमुष्टिकेनबलोबली ॥४५॥ आकर्षणंनोदनंचभु
जाभ्यांभुजदंडयोः ॥ चक्रतुःपश्यतांनृणांगजाविवजिगीषया ॥ ४६ ॥ हस्ताभ्यांवपुरुत्थाप्यचाणूरस्यहरिःस्वयम् ॥ अतोलयद्देहभारंपुण्य
भारंयथाविधिः ॥ ४७ ॥ चाणूरस्तंहरिंदेवंकरेणैकेनलीलया ॥ उज्जहारमहावीरोभूखंडंनागराडिव ॥ ४८ ॥ ग्रीवायांकिलचाणूरंभुजवेगेनमा
धवः ॥ कट्यांचोद्धृत्यसहसापातयामासभूतले ॥ ४९ ॥ हस्तैश्चजानुभिःपादैर्भुजोरोंगुलिमुष्टिभिः ॥ जघ्नतुःकृष्णचाणूरौतथैवबलमुष्टिकौ ॥
॥ ५० ॥ श्रमवारियुतेदृष्ट्वाश्रीमुखेरामकृष्णयोः ॥ सानुकंपास्तदाप्राहुर्गवाक्षस्थानृपस्त्रियः ॥ ५१ ॥ ॥ स्त्रियऊचुः ॥ ॥ अहोअधर्मः
सुमहत्सभायांजातःपुरोराजनिवर्तमाने ॥ क्ववज्रतुल्यांगवृतौहिमल्लौक्वपुष्पतुल्यौवतरामकृष्णौ ॥ ५२ ॥ अहोअभाग्यंहिपुरौकसांनोयुद्धेत
योर्दर्शनमत्रजातम् ॥ अहोतिधन्यंबतभूरिभाग्यंव्रजौकसांरासरसेनजातम् ॥ ५३ ॥ अहोस्थितेराजनिदुष्टचित्तेनकोपिवक्तुंक्षमएवसख्यः ॥
तस्माद्धिनः पुण्यबलेनचेत्तौत्वरंमृधेवैजयतामरीन्स्वान् ॥५४॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमथुराखण्डेमल्लयुद्धवर्णनंनामसप्तमोऽध्यायः ॥७॥
॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ आर्द्रचित्तंनंदराजंवनितानांमनोरथम् ॥ स्मृत्वाशत्रून्हन्तुकामश्चक्रेयुद्धंबलाद्धरिः ॥ १ ॥

जब कृष्ण बलदेवके परिश्रमके पसीना आयगये तब जारी झरोखानमें बैठी जे राजानकी रानी इनके स्वेदयुक्त मुखनको देखिके दयाते यह बोलीं ॥ ५१ ॥ देखो राजाकी सभामें
तो राजाके आगेही बडो अधर्म होनलग्यो कहां तो वज्रसे अंगवारे मल्ल और कहां ये फूलसे बालक हैं ॥ ५२ ॥ अहो या सभामें पुरवासीनको हमारो बडोही
अभाग्य है जो लडते कृष्ण, बलदेवको दर्शन भयोहै और अहो ब्रजवासीनकोही बडो भाग्य है जो रासरसमें उनकूं कृष्ण बलदेवके दर्शनसो आनंद भयोहै ॥ ५३ ॥
देखो सखी हो ! यह राजा कंस बडो दुष्ट है और जाके अगाडी कोई बोलिसकै है नही ताते हम अपनों पुण्य देंय हैं हमारे पुण्यते कृष्ण बलदेवकी जय होउ ये दोनों भैया
शीघ्रही अपने वैरीनको मारके फते करौ ॥ ५४ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां मथुराखंडे भाषाटीकायां सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ नारदजी कहैं है कि, तब श्रीहरि (कृष्ण) स्त्रीनके वचनते

दुःखितचित्त नंदराजको देखिके और स्त्रीनके मनोरथको जानिके शत्रुकूं मारिवेके लिये जोरते युद्ध करनलगे ॥ १ ॥ तब श्रीकृष्ण भुजानते चाणूरकूं पकरिके बडे जोरसे आकाशमें फेंकदेतभये सहजमेंई पवन जैसे कमलकूं तोडके फेंके है ॥ २ ॥ तब ये चाणूर आकाशमेंते औंधो मौहडे आयपर्यो जैसें तारो टूटैहै फिर उठके याने बडे जोरते श्रीकृष्णके एक घूंसा मार्यो ॥ ३ ॥ श्रीकृष्ण तो परात्पर हैं याके वा घूसाते कछू चलायमान नहीं भये फिरि झडाक चाणूरकूं पकरिके धरतीमें देमार्यो ॥ ४ ॥ तब चाणूरके दांत टूटि गये तोहू बडो मदमत्त ये क्रोध युक्त है उछरिके दोनों मुट्ठीनके घूंसा श्रीकृष्णके मारे ॥ ५ ॥ जो मारिवेको आयो देखो सोई श्रीकृष्णने याके दोनों हाथ पकरि घुमायके सबनके देखत देखत कंसके आगे धरतीमें देमार्यो ॥ ६ ॥ ऐसो मार्यो जैसें लोटाकूं बालक मारे है श्रीकृष्णके प्रहारते चाणूरको माथो फूटिगयो ॥ ७ ॥

गृहीत्वाभुजदण्डाभ्यांचाणूरंगगनेबलात् ॥ चिक्षेपसहसाकृष्णोवातःपद्ममिवोद्धृतम् ॥ २ ॥ आकाशात्पतितःसोपितारकेवह्यधोमुखः ॥
उत्थायमुष्टिनाकृष्णंताडयामासवेगतः ॥ ३ ॥ तस्यमुष्टिप्रहारेणनचचालपरात्परः ॥ सद्योगृहीत्वाचाणूरंपातयामासभूतले ॥ ४ ॥ भिन्नदं
तस्तुचाणूरःक्रोधयुक्तोमदोत्कटः ॥ मुष्टिद्वयेनश्रीकृष्णंतताडहृदिमैथिल ॥ ५ ॥ गृहीत्वाकरयोस्तंवैकराभ्यांभगवान्स्वयम् ॥ कंसस्याग्रेभ्रा
मयित्वासर्वेषांपश्यतांनृप ॥ ६ ॥ पातयामासभूपृष्ठेकमण्डलुमिवार्भकः ॥ श्रीकृष्णस्यप्रहारेणचाणूरोभिन्नमस्तकः ॥ ७ ॥ उद्वमन्रुधिरं
राजन्सद्योवैनिधनंगतः ॥ तथैवमुष्टिकंमल्लंमुष्टिभिर्युधिदुर्गमम् ॥ ८ ॥ धृत्वांघ्रीभ्रामयित्वाखेबलदेवोमहाबलः ॥ पातयामासभूपृष्ठेफणिनंग
रुडोयथा ॥ मुष्टिकोनिधनंप्रापप्रोद्वमद्रुधिरंमुखात् ॥९॥ कूटंसमागतंवीक्ष्यबलदेवोमहाबलः ॥ मुष्टिनापातयामासवज्रेणेन्द्रोयथागिरिम् ॥
॥ १० ॥ प्राप्तंशलंनंदसूनुर्लत्तयातंतताडह ॥ तीक्ष्णयातुंडयाराजन्कद्रुजंगरुडोयथा ॥ ११ ॥ गृहीत्वातोशलंकृष्णोमध्यतःसंविदार्यच ॥
प्राक्षिपत्कंसमंचाग्रेविटपंसिन्धुरोयथा ॥ १२ ॥ एतेनिपातितारंगेसद्योवैनिधनंगताः ॥ तेषांज्योतींपिवैकुंठेविविशुः पश्यतांसताम् ॥१३॥
एवंश्रीरामकृष्णाभ्यांमल्लेषुनिहतेषुच ॥ शेषाःप्रदुद्रुवुर्मल्लाभयार्ताजीवनेच्छया ॥ १४ ॥

मोहडेते रुधिर वमन करतो तबही मरिके जायपर्यो तैसेंई मुष्टिक घूंसानते युद्ध करनेको ॥ ८ ॥ महाबल बलदेवजीनेऊ याके पांव पकरिके फिरायके धरतीमें देमार्यो जैसें गरुड सर्पकूं मारे है ये तब मुष्टिकहू मुखते रुधिर वमन करतो मरिके जायपर्यो ॥ ९ ॥ फिर कूटकूं आयो देखिके बलदेव महाबली घूंसा मारिके पटकिदेतभये जैसे इंद्र वज्रते पर्वतकूं पटकेहै ॥ १० ॥ फिर प्राप्तभयो जो शल है ताकूं श्रीकृष्णने लातते मारिके पटकिदीनो तीक्ष्ण चोंचते गरुड जैसे सर्पकूं मारेहै ॥ ११ ॥ फिर तोशल आयो ताको श्रीकृष्णने बीचतेई तोडके कंसके अगाडी फेंकिदीयो जैसें हाथी पेडकूं चीरके शाखाकूं फेंके है ॥ १२ ॥ इतने जे मल्ल है तिनको जब या प्रकार पटके वे सब तभी मरगये तिनकी सबनको ज्योति संतनके देखते २ कृष्णमे समाय गई ॥ १३ ॥ ऐसें कृष्ण बलदेवने जब सब मल्ल मारिडारे तब औरहू जे बचिरहेहैं वे सब भयभीत हूंके

जीवेंको इच्छा करिके भाजिगये ॥ १४ ॥ तब श्रीकृष्ण श्रीदामादिक अपनी बराबरके जे गोप हैं तिनकूं खेंचिके तिनके संग सबनके देखत २ कुस्ती लडन लागिगये ॥ १५ ॥ तब किरीट कुण्डलनकी पहरें बालक बराबरनके संगमें रंगभूमिमें विहारकरते दोनो भैया कृष्ण बलदेवको देखके सब मथुरावासी लोग लुगाई विस्मयको प्राप्त होतभये ॥ १६ ॥ तब तो एक फकत कंसके बिना सबके मुखमेंते जय जय शब्द स्याबास स्याबास शब्द निकसो और आकाशमें नगाडे बजे ॥ १७ ॥ तब कंस अपनी अजयशब्द सुन बड़ो क्रोधित भयो तब जे नगाड़े बजतेहे तिने बंद करवायके होठ जाके फरकतेजायँहे सो यह बोल्यो ॥ १८ ॥ अरे ! जे वसुदेवके बेटा हैं ये बड़े दुर्बुद्धि हैं सो इने जलदीही मेरे पुरते जबरदस्तीते बाहर निकारिदेउ और व्रजवासीनको सबनको धन लूटलेउ और या दुर्बुद्धि नंदकूं जलदी मारिडारो ॥ १९ ॥ और अबही या दुर्बुद्धि मेरे बाप उग्रसेनको तथा

श्रीदामादीन्वयस्यांश्चगोपानाकृष्यमाधवः ॥ तैःसार्द्धंयुद्धमारेभेसर्वेषांपश्यतांसताम् ॥ १५ ॥ किरीटकुण्डलधरौरामकृष्णौसहार्भकैः ॥ विहरंतौवीक्ष्यरंगेविस्मिताःपुरवासिनः ॥ १६ ॥ कंसंविनासर्वमुखाज्जयशब्दोविनिर्गतः ॥ साधुसाध्वितिवादोऽभून्नेदुर्दुंदुभयस्ततः ॥ १७ ॥ स्वस्याऽजयंवीक्ष्यकंसोमहाक्रोधसमाकुलः ॥ वर्जयित्वातूर्यघोषंप्राहप्रस्फुरिताधरः ॥ १८ ॥ ॥ कंसउवाच ॥ ॥ दुर्बुद्धियुक्तौवसुदेवनन्दनौप्रसह्यनिःसारयताशुमत्पुरात् ॥ हरंतुसर्वंव्रजवासिनांधनंबध्नीतनंदंसहसातिदुर्मतिम् ॥ १९ ॥ अद्योग्रसेनस्यपितुःकुबुद्धेःशौरेःशिरश्चाशुहिछिंधिछिंधि ॥ कोयत्रतत्रापितथात्रवृष्णिजातान्सुरांशान्किलसूदयध्वम् ॥ २० ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवंविकत्थमानस्यकंसस्ययदुनंदनः ॥ सहसोत्पत्यतंमंचमारुहत्क्रोधपूरितः ॥ २१ ॥ मृत्युंसमागतंवीक्ष्यमंचादुत्थायसत्वरम् ॥ मदोद्धतोभर्त्सयंस्तंजगृहेखड्गचर्मणी ॥ २२ ॥ अग्रहीत्सहसाकंसंदोर्भ्यांचर्मासिसंयुतम् ॥ यथातुंडविभागाभ्यांसविषंफणिनंविराट् ॥ २३ ॥ पतत्खड्गश्चलच्चर्माभुजबंधाद्गलाद्गली ॥ विनिर्ययौतार्क्ष्यतुंडात्पुंडरीकोयथाफणी ॥ २४ ॥ मंचेतौबलिनौवेगान्मर्दयंतौपरस्परम् ॥ शैलशृंगेयथासिंहौशुशुभातेयथातथम् ॥ २५ ॥ उत्पतंतंबलात्कंसंशतहस्तंमहांबरे ॥ अग्रहीच्चोत्पतन्कृष्णःश्येनंश्येनोयथांबरे ॥ २६ ॥

वसुदेवको शिर काटि डारो और जितने ये यादव देवतानके अंश हैं इनमेंते जो कोई धरतीपे जहां मिले उन सबनकूं वहांही मारिडारो ॥ २० ॥ नारदजी कहे हैं ऐसे जब कंस बकन लग्यो तब श्रीकृष्ण सहजही क्रोधमें पूरित है उछरि कंसके तखतपे चढिगये ॥ २१ ॥ तब कंस अपनी मृत्यु आई देखिके जलदीही उठके ठाडोभयो मदमें उद्धत ललकारके ढाल तरवार लैलई ॥ २२ ॥ तब तो श्रीकृष्णने कंसको दोनों भुजानते ढाल तरवार लियेको ऐसे पकरलियो जैसे विषधारी सर्पकूं चोंचके दोनों फलानते गरुड पकरलेयहै ॥ ॥ २३ ॥ ढाल तरवार तो जायपरी फणफणायके श्रीकृष्णकी भुजानमेंते निकसिगयो गरुडकी चोंचते पुंडरीकनामको नाग जैसे निकसजाय ॥ २४ ॥ वा समय वा मचानपे ये दोनों आपुसमें परस्पर ऐसे लरनलगे जैसे पहाड़के ऊपर दो सिंह लड़ेहैं ॥ २५ ॥ तब बलते आकाशमें सौसो हाथ उछरै ऐसे कंसकूं उछरके श्रीकृष्णने ऐसे पकरिलीनो सिकरा

जैसे सिकराकूं पकरैहै ॥ २६ ॥ तब प्रचंड जो ये दैत्यपुंगव है ताकूं भुजदंडनते पकरिके त्रैलोक्यके बलकूं धारण करनहारे कृष्णने इत वित फिरायके ॥ २७ ॥ बड़े क्रोधते आकाशते मचानपै दैमाऱ्यो जाते मचानके पाये टूटिगये जैसे बीजुरीसों पेड़ टूटजायहै॥२८॥धरतीमें गिरपरो वो वज्रांग कंस कछू व्याकुलमन है उठिके फिर श्रीकृष्ण महात्माते लड़नलग्यो ॥२९॥ फिर भुजानते कंसकूं पकरिके मचानपै देमाऱ्यो फिर वाकी छातीपै चढिके मुकुट उतारि लीनो ॥ ३० ॥ फिर श्रीकृष्णने चुटिया पकरिके मचानपैते रंगभूमिमें देमाऱ्यो पर्वतपैते ढोरकूं जैसे पटकैहै ॥ ३१ ॥ ताके ऊपर त्रिलोकीको बोझ लैके आपु जायपरे अनन्त भगवान् अनन्त जिनको पराक्रम ॥ ३२ ॥ ऐसे दोनोनके पड़वेते पृथ्वी नीचेकूं धसकिगई थालीकीसी दोघड़ी तलक कांप्यो करी ॥ ३३ ॥ मऱ्यो जो भोजराज कंस है ताही सबनके देखते २ जैसे सिंहराज हाथीको घसीटै ऐसेही श्रीकृष्ण पृथ्वीमें

गृहीत्वाभुजदण्डाभ्यांप्रचण्डंदैत्यपुंगवम् ॥ त्रैलोक्यबलधृग्देवोभ्रामयित्वास्थितस्ततः ॥ २७ ॥ आकाशात्पातयामासमंचोपरिरुषान्वितः ॥
भग्नदंडोभवन्मंचस्तडित्पातेयथाद्रुमः ॥ २८ ॥ पतितोपिसवज्रांगःकिंचिद्व्याकुलमानसः ॥ सहसोत्थाययुयुधेश्रीकृष्णेनमहात्मना ॥२९॥
नीत्वातंभुजदण्डाभ्यांमंचेक्षिप्त्वापुनःप्रभुः ॥ आरुह्यहृदयंतस्यमौलिंजग्राहमाधवः ॥ ३० ॥ सद्यःप्रगृह्यकेशेषुरंगोपरिहरिःस्वयम् ॥
मंचात्तंपातयामासशैलाद्वंडशिलामिव ॥ ३१ ॥ तस्योपरिष्टाच्छ्रीकृष्णःसर्वाधारःसनातनः ॥ निपपातस्वयंवेगादनंतोनंतविक्रमः ॥
॥ ३२ ॥ इत्थंद्वयोर्निपातेननिम्नंभूखण्डमंडलम् ॥ स्थालीवसहसाराजन्नकंपेघटिकाद्वयम् ॥ ३३ ॥ संपरेतंभोजराजंभूमिंतंविचकर्षह ॥
यथामृगेन्द्रोनागेन्द्रंसर्वेषांपश्यतांनृप ॥ ३४ ॥ हाहाकारस्तदैवासीद्धावतांभूभुजांनृप ॥ वैरभावेनदेवेशंभजन्कंसोमहाबलः ॥ ३५ ॥
जगामतस्यसारूप्यंभृंगिणःकीटकोयथा ॥ कंसंप्रपतितंदृष्ट्वाभ्रातरोष्टौमहाबलाः ॥ सुनामसृष्टिन्यग्रोधतुष्टिमद्राष्ट्रपालकाः ॥ ३६ ॥ सुना
माकंकशंकुभ्यांक्रोधप्रस्फुरिताधराः ॥ खड्गचर्मधरायोद्धुंकृष्णोपरिसमाययुः ॥ ३७ ॥ वीक्ष्यतान्सुदृढंनीत्वारोहिणीनन्दनोबलः ॥
आरावकारहुंकारंयथासिंहोमृगान्प्रति ॥ ३८ ॥ हुंकारेणैवशस्त्राणितेषांहस्तेभ्यआभयात् ॥ पेतुराम्रफलानीवदंडवातैश्चमैथिल ॥ ३९ ॥
निःशस्त्रास्तेमहावीरामुष्टिभिःसर्वतोबलम् ॥ तेदुःशैलंयथानागाःशुंडादंडैरितस्ततः ॥ ४० ॥

खेंचनलगे ॥ ३४ ॥ तब हाहाकार होंन लग्यो राजा रजवाड़े भाजनलगे महाबली या कंसने जो वैरभावते भगवानकूं भज्योहै ॥ ३५ ॥ सो कंस वाकी सारूप्यताकूं प्राप्त हैगयो मुर्दो झींगर जैसे भृंगीके रूपकूं प्राप्त होयहै ॥ ३६ ॥ कंसकूं पऱ्यो देखिके ताके आठ भैया बड़ेबली ढाल तरवार लैके युद्ध करवेकूं श्रीकृष्णके ऊपर आये ॥३७॥ तिनकूं देखिके रोहिणीके बेटा बलदेवजीने एकहा ऐसी ललकार मारी जैसे सिंह हुंकारै ये कौन २ से है तिन आठोनके नाम कहै है सुनाम १ सृष्टि २ न्यग्रोध ३ तुष्टिमान ४ राष्ट्रपालक ५ सुनामा ६ कंक ७ शंकु ८ जे तब ये ॥ ३८ ॥ बलदेवजीकी या हुंकारतेई डरके मारे हाथमेंते शस्त्र गिरिपरे जैसे पके आम आपुही लकड़ियांपैते गिरपरैहै ॥३९॥ तब निहत्ते ये आठोजने

चारों बगलते धूँसानते बलदेवजीकूँ ऐसे मारनलगे जैसें पर्वतकूँ हाथी सूंडिनते मारे तैसें ॥ ४० ॥ सुनामाकूं और सृष्टिकूँ तो मुद्गरतें मारे न्यग्रोधको भुजाके वेगते कंककूं बांये हाथते ॥ ४१ ॥ शंकु सुहु तुष्टिमान इनकूं बांये पांवते, राष्ट्रपालकूं दाहिने पांवते मारके बलदेवने पटकदिये ॥ ४२ ॥ सहजमेंई आठों जायपरे पवनके मारे वृक्ष जैसे हे विदेहराज ! तिनकी ज्योति भगवान्में लीन हैगई ॥ ४३ ॥ ता समय देवतानकी दुंदुभी बजनलगी जय जय शब्द होन लग्यो देवता नन्दनवनके पुष्पनकी वर्षा करनलगे ॥ ४४ ॥ विद्याधरी और गन्धर्वी हर्षमें विह्वल हैके नाचन लगी विद्याधर गन्धर्व किन्नर ये सब भगवान्को यश गामनलगे ॥ ४५ ॥ ब्रह्मादिक देवता मुनि सिद्ध ये सब विमाननमें बैठिके भगवान्के दर्शनकूँ आये वेदमें परायण वेदवाणीकरिके भगवान् रामकृष्णकी स्तुति करन लगे ॥ ४६ ॥ याके पीछे

सृष्टिंतथासुनामानंमुद्गरेणबलोहनत् ॥ न्यग्रोधंभुजवेगेनकंकंवामकरेणवै ॥ ४१ ॥ शंकुंसुहुंतुष्टिमंतंवामपादेनमाधवः ॥ राष्ट्रपालंदक्षिणेनपादेनाभिजघानह ॥ ४२ ॥ अष्टौनिपेतुःसहसावृक्षावातहताइव ॥ तेषांज्योतिर्भगवतिलीनंजातंविदेहराट् ॥ ४३ ॥ देवदुंदुभयोनेदुर्जयध्वनिरभूत्तदा ॥ सद्योवैववृषुर्देवाःपुष्पैर्नंदनसंभवैः ॥ ४४ ॥ विद्याधर्यश्चगंधर्व्योननृतुर्हर्षविह्वलाः ॥ विद्याधराश्चगंधर्वाःकिन्नरास्तद्यशोजगुः ॥४५॥ ब्रह्माद्यामुनयःसिद्धाविमानैर्द्रष्टुमागताः ॥ तुष्टुवूरामकृष्णौतौवाग्भिःश्रुतिपरायणाः ॥ ४६ ॥ ताडयंत्यउरोहस्तैरस्तिप्राप्त्यादयस्त्रियः ॥ विनिर्गतास्तारुरुदुर्जातवैधव्यदुःखिताः ॥ ४७ ॥ ॥ स्त्रियऊचुः ॥ ॥ हानाथहेयुद्धपतेक्वगतोसिमहाबल ॥ त्रैलोक्यविजयीसाक्षाद्देवानामपिदुर्जयः ॥ ४८ ॥ जातमात्राःस्वसुःपुत्रानिर्घृणेनत्वयाहताः ॥ आनिर्दशानिर्दशाश्चाऽपरेपिनिहताबलात् ॥ ४९ ॥ तेनपापेनघोरेणदशामेतांदृशींगतः ॥ ५० ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवमश्रुमुखीर्दीनाआश्वास्यनृपयोषितः ॥ विधाययमुनातीरेचिताःश्रीखंडसंयुताः ॥ ॥ ५१ ॥ हतानांकारयित्वासौक्रियांवैपारलौकिकीम् ॥ सर्वान्संबोधयामासभगवाँल्लोकभावनः ॥ ५२ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांमथुराखण्डे नारदबहुलाश्वसंवादेकंसवधोनामाष्टमोध्यायः ॥ ८ ॥

अस्ति प्राप्ति लैके जे कंसकी रानी ही वे हाथनसों अपनी छाती पीटतीभई महलनमेंतें निकरिके विधवापनेके दुःखते रोमनलगी ॥ ४७ ॥ कंसकी स्त्री कहनलगी हा नाथ ! हे युद्धपते ! हे महाबली ! तू कहां गयो त्रिलोकीको जीतनहारो साक्षात् देवतानकूंहू दुर्जय ॥ ४८ ॥ जो हालके भये बहनके बेटा तेंने निर्दयीने मारिडारे और जे दश दिनाके हे और जे दशदिनकेहू न हे वे बहुतसे बालक तेंने औरनकेहू मारिडारे ॥ ४९ ॥ याही घोर पापकरिके तेरी यह गति भईहै ॥ ५० ॥ नारदजी कहें हैं कि, भगवान् श्रीकृष्णने रोमरही बडी दीन कंसकी रानीनकूं समुझाय सावधान करिके यमुनाजीके तीरपै चन्दनकी चिता चिनवाई ॥ ५१ ॥ मरेभये जे कंसादिक तिनकी परलोककी क्रिया करवायके सबकूं समुझायो सावधान करचो क्योंकि, आप तो त्रिलोकीके पालक हैं ॥ ५२ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां मथुराखण्डे भाषाटीकायां कंसवधो नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

अथ नारदजी राजा बहुलाश्वते बोले कि, याके अनन्तर राम कृष्ण दोनो देव यादवनकूं संग लेके देवकी वसुदेवके पास जातभये ॥ १ ॥ इनके देखतही देवकी वसुदेवके बंधन आपुही शिथिल हैके जायपरे जैसे गरुडकूं देखिके नागपाश खुल जाय हैं तैसे ॥ २ ॥ तब अपने प्रभावकूं जानगये ऐसे जे माता पिता तिनको देखके विनके ऊपर सबल श्रीकृष्ण अपनी जगन्मोहिनी मायाको डारिदेते भये ॥ ३ ॥ तब मोहमें आकुल हैगये ऐसे देवकी वसुदेव दोनो मोहमें मग्न है उठिके कृष्ण बलदेवको पुत्र जानके मिले और आनंदके आंसु बहनलगे ॥ ४ ॥ भगवान् श्रीकृष्ण तिनको आश्वासकरके सब यादवनको संग लेके नाना उग्रसेनके पास गये उन्हे समुझायके राज्यगद्दीपै बैठार मथुराके मालिक किये ॥५॥ फिर कंसके भयते जे देशांतरनमे भाजिगयेहे उन सब यादवनकूं कुटुंबसहित प्रेमते फिर बुलायकेके मथुरामें बसावतेभये॥६॥तदनंतर गोपगणनकरिके सहित ब्रजकूं चल्यो चाहे ऐसे नंदबाबा तिनके पास

॥ श्रीनारदउवाच ॥ अथदेवौरामकृष्णौदेवकीवसुदेवयोः ॥ समीपंजग्मतुःसाक्षाद्वृष्णिभिःपरिवारितौ ॥१॥ स्वतस्तयोर्बंधनानिपेतुःशिथिलतांनृप ॥ तौवीक्ष्यगरुडंप्राप्तंनागपाशगुणायथा ॥२॥ स्वप्रभावविदौवीक्ष्यपितरौसबलोहरिः॥ सद्यस्ततानस्वांमायांजगन्मोहकरींबलात्॥३॥ रामकृष्णौसुतौज्ञात्वाशौरिर्मोहसमाकुलः ॥ देवक्यासहसोत्थायसस्वजेचाश्रुपूरितः ॥ ४ ॥ तावाश्वास्यहरिःसद्योवृष्णिभिःपरिवारितः ॥ मातामहंतूग्रसेनंचकारमथुराधिपम् ॥ ५ ॥ आहूययादवान्कंसभयाद्देशांतरंगतान् ॥ प्रेम्णानिवासयामाससकुटुंबान्यदोःपुरि ॥ ६ ॥ नन्दराजंगोपगणैःस्वगृहान्गंतुमुद्यतम् ॥ नत्वातंसबलःप्राहमोहयन्निजमायया ॥ ७ ॥ अत्रैववासंकुरुतातपुर्य्यांगंतुंयदीच्छामनसोत्थितास्यात् ॥ पश्चादहंवैसबलोयदून्वाविधायपार्श्वंतवचागमिष्ये ॥८॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवंश्रीरामकृष्णाभ्यांनन्दराजःप्रपूजितः ॥ आलिंग्यशौरिंगोपालैर्ययौप्रेमातुरोव्रजम् ॥ ९ ॥ दत्तंश्रीकृष्णजन्मर्क्षेधेनूनांनियुतंपुरा ॥ ब्राह्मणेभ्योददौशौरिर्वस्त्रमालास्वलंकृतम् ॥ १० ॥ शौरिर्गर्गंसमाहूयश्रीकृष्णबलदेवयोः ॥ यज्ञोपवीतंविधिवत्कारयामासधर्मवित् ॥ ११ ॥ रामकृष्णौसर्वविद्याध्ययनंकर्तुमुद्यतौ ॥ गुरोःसांदीपनेःपार्श्वंजग्मतुर्जनवत्परौ ॥ १२ ॥ कृत्वापरांगुरोःसेवांलघुकालेनमाधवौ ॥ सर्वविद्यांजगृहतुःसर्वविद्याविदांवरौ ॥ १३ ॥

बलभद्र सहित भगवान् गये मायाते मोह करतसे दंडोत करके बोले ॥७॥ कि, हे पिताजी ! आप मधुपुरीमाई बसो जो जायवेकी इच्छा मनमे उठी होय तो जाओ मैहू यादवनकी सब सलसौंज बांधिके बलदेवकूं संग लैके आपके पास आऊंगो ॥ ८ ॥ नारदजी कहेहैं कि, ऐसे रामकृष्णने बड़ो सत्कार जिनको करयो ऐसे नंदराज प्रेममें आतुर वसुदेवते मिलिके गोपनकूं संग लैके ब्रजकूं आवतेभये ॥ ९ ॥ तब श्रीकृष्णके जन्मसमें वसुदेवजीने जो दशहजार गौअनको संकल्प करयो हो विनको दान ब्राह्मणनकूं वस्त्रमालाते अलंकृत करिके देतेभये ॥ १० ॥ फिर धर्मज्ञ वसुदेवजीने गर्गाचार्यकूं बुलायके श्रीकृष्ण बलदेवके यज्ञोपवीत विधिपूर्वक कराये ॥ ११ ॥ तब रामकृष्ण सब विद्या पढिवेकूं उद्यत भये सो सामान्य जननकी नाईं सांदीपनगुरूके पास विद्या पढिवेकूं गये ॥ १२ ॥ वहां गुरूनकी परम सेवा करिके थोड़ेई कालमे सब विद्या पढिलीनी है तो आपु सब

विद्याके वेत्तानमे श्रेष्ठ पर मनुष्यलीला करेहे ॥ १३ ॥ फिर हाथ जोड़के जब गुरुनके आगे ठाडेभये कि हे गुरुजी ! तुमे जो चहिये सो दक्षिणा मांगो तब दोनों स्त्री पुरुषने समुद्रमें जो बेटा मरिगयो सो मांग्यो ॥ १४ ॥ तबही सुन्हेरी रथमें बैठि भीमपराक्रमी दोनों भैया प्रभासक्षेत्रमें समुद्रके पास आये ॥ १५ ॥ तबही समुद्र कांपिके रत्ननकी भेंट लेके चरणनमे आय पर्यो हाथ जोडके खडो हैगयो ॥ १६ ॥ तब भगवान्ने कही कि, हे समुद्रजी ! जो तुमने अपनी प्रचण्ड हिलोरनसो हमारो गुरुपुत्र मारोहै सो शीघ्रही लायके मोहि देउ ॥ १७ ॥ तब समुद्र यह बोल्यो कि, हे भगवन् ! हे देवदेवेश ! मैंने बालक नही मार्योहै पंचजन दैत्य मेरे भीतर बसेंहै वाने मार्यो है ॥ १८ ॥ मेरे उदरमें सदा बसेंहै बली दैत्यपुंगव हे वो आपुकूं मारिवेयोग्य है वो देवतानकूं भयकारी है ॥ १९ ॥ नारदजी कहेहैं जब समुद्रने यह भगवानसूं कही तबही भगवान् पीतांबरकी

गुरवेदक्षिणांदातुमुद्यतौतौकृतांजली ॥ मृतंपुत्रंदक्षिणायांताभ्यांवव्रेगुरुर्द्विजः ॥ १४ ॥ रथमारुह्यतौदांतौशातकुंभपरिच्छदम् ॥ प्रभासेचाब्धिनिकटंजग्मतुर्भीमविक्रमौ ॥ १५ ॥ सद्यःप्रकंपितःसिन्धूरत्नोपायनमुत्तमम् ॥ नीत्वातच्चरणोपांतेनिपपातकृतांजलिः ॥ १६ ॥ तमाहभगवाञ्शीघ्रंपुत्रंदेहिगुरोर्मम ॥ प्रचण्डोर्मिघटाटोपैस्त्वयातद्ग्रहणंकृतम् ॥ १७ ॥ ॥ समुद्रउवाच ॥ ॥ भगवन्देवदेवेशनमयाबालकोहतः ॥ हतःपंचजनेनासौशंखरूपासुरेणवै ॥१८॥ वसन्सदामदुदरेबलिष्ठोदैत्यपुंगवः ॥ जेतुंयोग्यस्त्वयादेवदेवानांभयकारकः ॥ १९ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ तेनोक्तोभगवान्कृष्णोवासोबद्ध्वाकटौदृढम् ॥ निपपातमहावेगात्समुद्रेभीमनादिनि ॥ २० ॥ श्रीकृष्णस्यनिपातेनत्रिलोकीभारधारिणः ॥ चकंपेब्धिर्भृशंवज्रकूटेनेवविदेहराट् ॥ २१ ॥ ततःपंचजनोदैत्योयोद्धुंश्रीकृष्णसंमुखे ॥ आगतःसहसावीरःशूलंचिक्षेपमाधवे॥ २२ ॥ हस्तेगृहीत्वातच्छूलंतेनैवाभिजघानतम् ॥ तद्घातेनप्रपतितोमूर्च्छितोवारिमण्डले ॥ २३ ॥ सहसोत्थायदेवेशंकिंचिद्व्याकुलमानसः ॥ मूर्ध्नाताडपक्षीन्द्रंस्वफणेनफणीयथा ॥ २४ ॥ परिपूर्णतमःसाक्षाच्छ्रीकृष्णोभगवान्हरिः ॥ क्रुद्धोमूर्द्ध्निवेगेनमुष्टिनातंतताडह ॥ २५ ॥ कृष्णमुष्टिप्रहारेणसद्योवैनिधनंगतः ॥ तज्ज्योतिःश्रीघनश्यामेलीनंजातंविदेहराट् ॥ २६ ॥ एवंहत्वापंचजनंशंखंनीत्वातदंगजम् ॥ महार्णवान्निर्गतोसौसहसारथमागमत् ॥ २७ ॥

फेंट बांधिके बडी गर्जन जाकी ता समुद्रमें कूदिपड़े ॥ २० ॥ श्रीकृष्णके कूदिवेते अत्यंत समुद्र कांप्यो त्रिलोकीके बोझके धरनहारे श्रीकृष्ण तिनको बोझ पर्वतकोसो हैगयो हे विदेहराट्! ॥ २१ ॥ ताके अनन्तर पञ्चजन दैत्य युद्ध करिवेकूं श्रीकृष्णके सन्मुख आयो आयके सहसा करके ये वीर श्रीकृष्णके ऊपर त्रिशूल फेंकतभयो ॥ २२ ॥ श्रीकृष्णवाई त्रिशूलकूं पकड़के शंखासुरकूं मारतभये ताके मारे ये दैत्य मूर्च्छित हैके जलमंडलमें जाय पर्यो कछू एक व्याकुलमन हैगयो ॥ २३ ॥ फिर अकस्मात् उठिके अपने शिरकरिके देवेश श्रीकृष्णके ताड़ना करतोभयो जैसे सर्प गरुड़कूं ताडना करै है ॥ २४ ॥ तब परिपूर्णतम साक्षात् श्रीहरि भगवान् श्रीकृष्ण क्रोध करिके शंखके शिरमें एक घूंसा मारतभये ॥ २५ ॥ हे विदेहराट् ! श्रीकृष्णके घूंसाके मारे हालही मरिके जायपर्यो ताके शरीरमेंते ज्योति निकसी सो श्रीकृष्णमें लीन हैगई ॥ २६ ॥ ऐसे पंचज

नकूं मारिके वाके पेटमेंसो निकसे शंखकूं लेके समुद्रमेंते निकसि रथमें आवतेभये ॥ २७ ॥ फिर पवनकोसो जाको वेग ता रथमें बैठके यमकी संयमनी पुरीमें जातेभये शंख बजावत भये ॥ २८ ॥ वो पांचजन्यकी मेघकी गर्जनकीसी बडी प्रचंड ध्वनि सुनिके त्रिलोकी पूर्ण हैगई ता ध्वनिते सभासहित यमराज कांपत भयो ॥ २९ ॥ वहां चौरासी लक्ष नरकनमें परे जे जीव तिनमें जितनेनने शंखकी ध्वनि सुनी तेते पापी दुःखते छूटिके मोक्षको प्राप्त हैगये ॥ ३० ॥ यमराजहू शीघ्रही बलि भेंट लेके डरपिके हाथ जोडके कृष्ण बलदेवके चरणनमें आयपरो ॥ ३१ ॥ यमराज बोलो हे हरे! हे कृपासिंधो! हे रामराम! हे महाबली! तुम असंख्य ब्रह्मांडके पति परिपूर्णतम दोनों हो ॥ ३२ ॥ तुम पुराणपुरुष हो सर्वेश्वर हो जगज्जननके ईश हो सबके ऊपर वर्तमान हो ब्रह्मादिकनके ईश हो सो मोकूँ अब कछू आज्ञा करिये ॥३३॥ तब भगवान् बोले कि, हे लोकपाल!

वायुवेगेनयानेनरामकृष्णौमनोहरौ ॥ जग्मतुःशमनस्यापिदीर्घांसंयमनींपुरीम् ॥ २८ ॥ पांचजन्यध्वनिर्लोकंप्रचण्डोमेघघोषवत् ॥ पूरयामासतंश्रुत्वाचकंपेससभोयमः ॥ २९ ॥ चतुरशीतिलक्षेषुनरकेषुनिपातिताः ॥ येयेश्रुताध्वनिंतेतेजग्मुर्मोक्षंतुपापिनः ॥ ३० ॥ यमःसद्यो बलिंनीत्वाश्रीकृष्णबलदेवयोः ॥ पपातचरणोपांतेभयभीतःसन्कृतांजलिः ॥ ३१ ॥ ॥ यमउवाच ॥ ॥ हेहरेहेकृपासिंधोरामराममहाबल ॥ असंख्यब्रह्मांडपतीपरिपूर्णतमौयुवाम् ॥ ३२ ॥ देवौपुराणौपुरुषौमहांतौसर्वेश्वरौसर्वजगज्जनेशौ ॥ अद्यैवसर्वोपरिवर्तमानौगिरानिजाज्ञांवदतंपरेशौ ॥ ३३ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ गुरुपुत्रंलोकपालआनयस्वमहामते ॥ राज्यंकुरुयथान्यायंमदुक्तंमानयन्क्वचित् ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ तदैवतेनोपानीतंगुरुपुत्रंहरिःस्वयम् ॥ गृहीत्वावंतिकामेत्यददौश्रीगुरवेशिशुम् ॥३५॥ गुर्वाशिषासंयुतौतौनत्वातंहिकृतांजली ॥ रथमारुह्यमथुरामागतौयदुपूजितौ ॥ ३६ ॥ एकदासबलःकृष्णःसर्वकारणकारकः ॥ पांडवान्संस्मरन्भक्तानक्रूरभवनंययौ॥३७॥अक्रूरःसहसोत्थायपरिरभ्यमुदान्वितः ॥ उपचारैःषोडशभिःपूजयित्वाथतौनृप ॥३८॥ कृतांजलिःपुरःस्थित्वाजातपूर्णमनोरथः ॥ उवाचानंदजनितान्मुंचन्बाष्पकलान्नृप ॥ ३९ ॥ अक्रूरउवाच ॥ युवाभ्यांरामकृष्णाभ्यांताभ्यांनित्यंनमोनमः ॥ याभ्यांमामेयदुक्तंमेपूर्णंतच्चकृतंप्रभू ॥ ४० ॥ लोकाभिरामौजनभूषणोत्तमौचांतर्बहिःसर्वजगत्प्रदीपकौ ॥ गोविप्रसाधुश्रुतिधर्मदेवतारक्षार्थमद्यैवयदोःकुलेगतौ ॥ ४१ ॥

हे महामते! तुम हमारे गुरुनके बेटाकूं लेआओ यथान्यायसे राज्य करो मेरी आज्ञाको पालन करो ॥ ३४ ॥ नारदजी कहैहै ताई समे भगवान् यमराजके लाये गुरुपुत्रकूं लेके अवंतिकापुरीमें आयके वा पुत्रकूं गुरुनकूं देतेभये ॥ ३५ ॥ गुरुनको आशीर्वाद ले हाथ जोड गुरुनकूं दंडोत करिके यदुनकरके पूजित श्रीकृष्ण दाऊजी रथमें बैठि मथुपुरीकूँ आवतेभये ॥ ३६ ॥ एकसमे बलदेवकूं संग लैके सब कारणनके कारण भगवान् भक्त पांडवनकी यादि करते अक्रूरके भवनकूं गये ॥ ३७ ॥ तब अक्रूरजी वाई क्षण उठिके प्रसन्न हैके मिले षोडशोपचार पूजा करी हे नृप! ॥ ३८ ॥ हाथ जोड आगे खडे हैके मनोरथ पूर्ण हैगये सो आनंदके आंसू छोडतो यह बोले ॥ ३९ ॥ अक्रूरजी कहैहै कि, तुम जे रामकृष्ण हो तिनके अर्थ नमस्कार है २ जो आपुने रस्तामें मोसो कहीहो सोई तुमने सत्य करी ॥ ४० ॥ लोकाभिराम हो जनभूषण हो सबमे उत्तम हो बाहिर

भा. टी.
म. खं. ५
अ० ९

भीतरसो सब जगतके दीपक हो गौ, ब्राह्मण, साधु, वेद, धर्म, देवता इनकी रक्षाके अर्थ यदुकुलमें जन्म लीनो है ॥ ४१ ॥ कंसादिक दैत्येंद्रनके वधके अर्थ गोलोकते परिपूर्ण
तेजवारे तुम या भारतभूमिमण्डलमें आये हो परेश जे तुम हो तिनके अर्थ नमस्कार है ॥ ४२ ॥ तब भगवान् बोले तुम आर्यवृद्ध हो धृतिमान् हौ मैं तो तुम्हारे अगारीको
बालक हूँ हे महामते ! संतजन कबु अपनी बड़ाई नहीं करें हैं ॥ ४३ ॥ पांडवनकी कुशल देखिवेकूं आपु हस्तिनापुरकूं जाउ हे दानपते ! तिन सबनकूं देखिके जलदी आयजाउ ॥
॥ ४४ ॥ नारदजी कहेहैं कि, ऐसे भक्तवत्सल भगवान् अक्रूरते कहिके सब कामके करनहारे बलदेवसहित अपने भवनकूं चले आवतेभये ॥ ४५ ॥ अक्रूर हस्तिनापुरमें गये
सबते मिले सबके मनको अभिप्राय लेके पांडवनको देखके फिर आयके हस्तिनापुरको सब हवाल श्रीकृष्णते कहतेभये ॥ ४६ ॥ अक्रूर बोले कि हे प्रभो ! तुम दोनोंनके बिना
कौरवनके दीने दुःखनकूं भोगिरहे जे पांडव तिनको और कोई नहीं है पांडुके मरे पीछे कुंतीके बेटा तुम्हारोई पैंड़ो देख रहे हैं रात दिन तुमारेही चरणनको ध्यान करें हैं ॥ ४७ ॥

कंसादिदैत्येन्द्रविनाशहेतवेगोलोकलोकात्परिपूर्णतेजसौ ॥ समागतौभारतभूमिमंडलेयुवांपरेशौसततंनतोऽस्म्यहम् ॥ ४२ ॥ ॥ श्रीभगवानु
वाच ॥ ॥ त्वमार्य्यवृद्धोधृतिमानहंतवपुरःशिशुः ॥ संतोनस्वात्मनःश्लाघ्यंकुर्वंतिहिमहामते ॥४३॥ पांडवानांहिकुशलंद्रष्टुंगच्छगजाह्वयम् ॥
शीघ्रमागच्छतान्दृष्ट्वासर्वान्दानपतेभवान् ॥ ४४ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवमुक्त्वातदाक्रूरंभगवान्भक्तवत्सलः ॥ सबलःशौरिभवनमाययौ
सर्वकार्यकृत् ॥ ४५ ॥ कौरवेन्द्रपुरंगत्वाक्रूरोदृष्ट्वाथपांडवान् ॥ पुनरागत्यकृष्णायवार्तांसर्वामवर्णयत् ॥ ४६ ॥ ॥ अक्रूरउवाच ॥ ॥ विना
युवांकोपिनपांडवानांसहायकृत्कौरवदुःखभोगिनाम् ॥ मृतेचपांडौभवतोःपदांबुजेविलग्नचित्ताहिपृथात्मजाये ॥ ४७ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥
इतिश्रुत्वाक्रूरमुखाच्छ्रीकृष्णोभगवान्हरिः ॥ अर्द्धराज्यंपांडवेभ्योकौरवाणांबलाद्ददौ ॥४८॥ अथोक्तंवचनंस्मृत्वातदोद्धवसमन्वितः ॥ महामंगल
संयुक्तंकुब्जायाभवनंययौ ॥ ४९ ॥ दृष्ट्वाराच्छ्रीहरिंप्राप्तंकुब्जारूपवतीत्वरम् ॥ भक्त्यासमर्हयामासपाद्यार्घैःप्राणवल्लभम् ॥ ५० ॥ हेमर
त्नखचित्कुड्येकुब्जायाभवनोत्तमे ॥ बभौहरीरूपवत्यावैकुंठेरमयायथा ॥ ५१ ॥ परिपूर्णतमःसाक्षाच्छ्रीकृष्णोभगवान्स्वयम् ॥ यस्याः
पतिरभूद्राजन्नहोतस्यास्तपोमहत् ॥ ५२ ॥ तत्रस्थित्वाहरिर्देवोदिनान्यष्टौविदेहराट् ॥ आययौशौरिभवनंलीलामानुषविग्रहः ॥ ५३ ॥

नारदजी कहेहैं कि, या प्रकार अक्रूरके मुखते सुनिके श्रीकृष्ण भगवान् आधौ राज्य कौरवनपैते अपने पराक्रमते पांडवनकूं जबरदस्ती दिवाय देतेभये ॥ ४८ ॥ याके अनंतर
कह्यो जो वचन ताकी यादि करके ऊद्धवकूँ संग लेके महामांगलिक जो कुब्जाको घर है ताकूँ श्रीकृष्ण जातेभये ॥ ४९ ॥ कुब्जा हरिकूं आवत देखिके बहुत जलदी दूरतेई
रूपवती अर्घ पाद्य करिके प्राणवल्लभ जे श्रीकृष्ण तिनको सत्कार करतीभई ॥ ५० ॥ रत्नजड़ी जामें सुवर्णकी भीति ऐसो उत्तम भवन तामें कुब्जाके संग श्रीकृष्णकी कैसी
शोभा भई वैकुंठमें लक्ष्मीते जैसे नारायणकी शोभा होय है ॥ ५१ ॥ परिपूर्णतम साक्षात् श्रीकृष्ण स्वयं भगवान् एकांतमें जा कुब्जाके पति होतभये हे राजन् ! वा कुब्जाको
बड़ो भारी तप है ॥ ५२ ॥ हरि भगवान् आठ दिन वाके घरमें बसिके हे विदेहराट् ! अपने घर आवतेभये लीलाकरिके मनुष्यदेह धन्यो है जिनने ॥ ५३ ॥

या प्रकार मथुराके विषे ये कृष्णको चरित्र वर्णन कऱ्यो है ये सब पापनको हरनहारो परम पुण्य और आयुको बढावनहारो है ॥ ५४ ॥ मनुष्यनकूं चारि पदार्थको देनहारो
श्रीकृष्णके वशको करनहारो ये चरित्र सो मैंने तेरे आगे कह्यो अब तू कहा सुनिवेकी चाहना करे है ॥ ५५ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां मथुराखंडे भाषाटीकायां यदुसौख्यं नाम
नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ बहुलाश्व राजा बोल्यो कि, श्रीकृष्णको पवित्र चरित्र मैंने तुम्हारे मुखतें सुन्यो फेरि सुनिवेकी चाहना करूंहूं जैसे प्यासो जलकी चाहना करे है ॥ १ ॥
कंसके जन्म कर्म तुमने कहे सो सुने और केश्यादिकनके पूर्वजन्मके कर्महू सुने ॥ २ ॥ अब कहौ कि, यह धोबी कौन हो जो भगवान्ने अपने हाथते मारचो और
आश्चर्य है कि, जाकी बडी ज्योति श्रीकृष्णमें लीन हैगई ॥ ३ ॥ नारदजी कहेहे हे विदेहराज ! त्रेतायुगमें अयोध्यामें रामके राज्यमें हलकारानके सुनत सुनत एक धोबीने सीताजी

इतिश्रीकृष्णचरितंमथुरायांविदेहराट् ॥ सर्वपापहरंपुण्यमायुर्वर्द्धनमुत्तमम् ॥ ५४ ॥ चतुष्पदार्थदंनृणांश्रीकृष्णवशकारकम् ॥ मयातेक
थितंपूर्वंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ५५ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमथुराखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेयदुसौख्यंनामनवमोध्यायः ॥ ९ ॥ ॥
बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ श्रीकृष्णचरितंपुण्यंमयातवमुखाच्छ्रुतम् ॥ पुनःश्रोतुंमनश्चात्तृषितोवाजलंगतः ॥ १ ॥ कंसस्यजन्मकर्माणित्व
योक्तानिश्रुतानिमे ॥ केश्यादिदैत्यवर्याणांपूर्वजन्मकृतंश्रुतम् ॥ २ ॥ कोयंतुरजकःपूर्वंमवधीद्यंहरिःकथम् ॥ अहोयस्यमहज्ज्योतिःकृष्णे
लीनंबभूवह ॥ ३ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ त्रेतायुगेत्वयोध्यायांरामराज्येविदेहराट् ॥ चारणांशृण्वतांकश्चिद्रजकोह्यवदत्प्रियाम् ॥ ४ ॥
नाहंबिभर्मित्वांदुष्टामुशक्तांपरवेश्मगाम् ॥ स्त्रीलोभीबिभृयात्सीतांरामोनाहंभजेपुनः ॥ ५ ॥ इतिलोकाद्दूतमुखाद्वाक्यंश्रुत्वाथराघवः ॥
सीतांतत्याजसहसावनेलोकापवादतः ॥ ६ ॥ तस्मैदण्डंदातुमिच्छांनचक्रेराघवोत्तमः ॥ मथुरायांद्वापरांतेरजकःसबभूवह ॥ ७ ॥ कुवाक्य
दोषशांत्यर्थंतंजघानहरिःस्वयम् ॥ तदपिप्रददौमोक्षंतस्मैश्रीकरुणानिधिः ॥ ८ ॥ दयालोःकृष्णचन्द्रस्यचरित्रंपरमाद्भुतम् ॥ एतत्तेकथि
तंराजन्किंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ९ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ पुरावैवायकःकोयंनितरांमुनिसत्तम ॥ यस्मैददौचसारूप्यंश्रीकृष्णो
भगवान्हरिः ॥ १० ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ मिथिलानगरेपूर्वंवायकोहरिभक्तिकृत् ॥ श्रीरामोद्वाहसमयेसीरध्वजनृपाज्ञया ॥ ११ ॥

की निंदाको वचन कह्यो ॥ ४ ॥ वा धोबीकी स्त्री लडिके दिनमें चलीगई रातिमें आई तब वा धोबीने यह कही के मे का राम हूं सो रावणके घरमें वसिआई ता सीताकूं
घरमें राखिलीनी सो स्त्रीको लोभी राम मे नहीं हो ॥ ५ ॥ ऐसें बोहोत लोगनके मुखते सुनिकें रामचंद लोकके अपवादते तत्काल सीताकूं त्यागिदेतभये ॥ ६ ॥
तासूं दंडदेवेकी इच्छा ही पर दंड नहीं दीनो सो द्वापरके अन्तमें मथुरामें वह धोबी होतोभयो ॥ ७ ॥ कुवाक्यदोषशांतिके अर्थ भगवान्ने अपने हाथते मारचो तोऊ करुणा
निधिने वाकूं मोक्ष देदई ॥ ८ ॥ दयालु कृष्णचन्द्रको चरित्र परम अद्भुत है यह मैने तेरे अगाडी कह्यो राजा अब तू कहा सुनिवेकी इच्छा करे है ॥ ९ ॥ बहुलाश्व राजा बोलो
हे मुनिसत्तम ! पूर्वजन्ममें यह दरजी कौन हो जाकूं श्रीकृष्णभगवान्ने सारूप्य मुक्ति दीनी ॥ १० ॥ नारदजी कहे है कि, पहले मिथिलानगरीमें एक दरजी हरिभक्त

रहती हो श्रीरामके विवाहसमें सीरध्वज जो जनकराजा ताकी आज्ञाते ॥ ११ ॥ राम लक्ष्मणके पहरवेके वस्त्र सींमेंहो, मिहीन डोरानते वस्त्र सीवेमें बड़ो चतुर हो ॥ १२ ॥ करोड़ कामदेवकी समान शोभावारे राम लक्ष्मणकूं देखिके वायक बड़े मनवारो अपने मनमें मोहित हैगयो ॥ १३ ॥ तबे यह मनोरथ कीनो कि, मैं अपने हाथनते राम लक्ष्मणकूं वस्त्र पहराऊं ॥ १४ ॥ तब सबके मनकी जाननेहारे श्रीराम मनकरिके वर देतभये के द्वापरके अन्तमें भरतखण्डमें तेरो मनोरथ पूरो होयगो ॥ १५ ॥ श्रीरामचंद्रके वरते मथुरामें वो वायक दरजी जन्म लेतभयो तिन दोनोंनके वस्त्र सम्हारिके पहरायके वाही भगवानके सारूप्यकूं प्राप्त होतो भयो ॥ १६ ॥ बहुलाश्वराजा फिर पूछेहै कि, या सुदामा मालीने कहा सुकृत कीनो है सो कहो जाके घर मनोहर कृष्ण बलराम दोनों भैया गये ॥ १७ ॥ नारदजी कहेहैं कि, कुबेरको

रामलक्ष्मणवेषार्थंवासांसिरचयन्किल ॥ लघुसूत्रैःपरिचयन्कुशलोवस्त्रकर्मसु ॥ १२ ॥ कोटिकन्दर्पलावण्यौसुन्दरौरामलक्ष्मणौ ॥ तौवीक्ष्यवायकोराजन्मोहितोभून्महामनाः ॥ १३ ॥ अहंस्वहस्तैर्वस्त्राणितयोरंगेषुसर्वतः ॥ परिधानंकारयामिचक्रेचेत्थंमनोरथम् ॥ ॥ १४ ॥ मनसापिवरंरामोददौतस्मादशेषवित् ॥ द्वापरांतेभारतेचभविष्यतिमनोरथः ॥ १५ ॥ श्रीरामस्यवरात्सोयंमथुरायांबभूव ह ॥ तयोर्वेषंकारयित्वातत्सारूप्यंजगामह ॥ १६ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ सुदाम्नामालिनाब्रह्मन्किंकृतंसुकृतंवद ॥ यद्गृहंजग्मतुः साक्षाद्रामकृष्णौमनोहरौ ॥ १७ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ राजराजवनंरम्यंनाम्नाचैत्ररथंशुभम् ॥ तस्यवैपुष्पबटुकोहेममालीतिनामभाक् ॥ १८ ॥ विष्णुभक्तिरतःशान्तोदानीसत्संगकृन्महान् ॥ श्रीकृष्णदेवप्राप्त्यर्थंदेवपूजांचकारह ॥ १९ ॥ समाःपंचसहस्राणिपद्मानांचशतत्रयम् ॥ नित्यंनीत्वापूजंदयेपुरोधृत्वाननामह ॥ २० ॥ एकदातिप्रसन्नोभूत्त्र्यंबकःकरुणानिधिः ॥ मालाकारमहाबुद्धेवरंब्रूहीत्युवाचह ॥ २१ ॥ हेममालीतदादेवंनमस्कृत्यकृतांजलिः ॥ प्रदक्षिणीकृत्यपुरःस्थित्वाप्राहनताननः ॥ २२ ॥ ॥ हेममाल्युवाच ॥ ॥ परिपूर्णतमंकृष्णंकचिन्नोगृहमागतम् ॥ पश्यामिहग्भ्यांतंसाक्षात्त्वद्वरेणभवेदिदम् ॥ २३ ॥ ॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ ॥ द्वापरांतेभारतेचमथुरायांमहामते ॥ मनोरथस्तेसफलोभविष्यतिनसंशयः ॥ २४ ॥

चैत्ररथ नामकरिके एक वन हो तामें फूलनको लगायवेवारो हेममाली नाम माली हो ॥ १८ ॥ वो विष्णुभक्त हो शांत हो दानी हो सत्संगको कर्ता हो महत् पुरुष हो वाने श्रीकृष्णकी प्राप्तिके लिये महादेवकी पूजा करीही ॥ १९ ॥ सो वह तीनसौ कमलके फूल नित्य महादेवजीके आगे धरिके दंडौत करै ही ऐसे पूजा करत करत वाको पांचहजार वर्ष व्यतीत हैगये ॥ २० ॥ एक समें त्रिनेत्र महादेवजी करुणानिधि यह बोले कि, तू वर मांगिले जो चहिये सो हे मालाकार ! हे महाबुद्धे ! ॥ २१ ॥ तब हेममाली महादेवकूं दंडोत करिके प्रदक्षिणा दैके आगे ठाडो हैके मूंड़ नीचो करके यह बोल्यो ॥ २२ ॥ कि, कबहूं परिपूर्णतम श्रीकृष्ण मेरे घर आमें उनें में अपनी आंखिनते साक्षात् देखूं तुम्हारे वर करिके यही इच्छा करूँहूं ॥ २३ ॥ तब महादेवजी बोले हे महामते ! द्वापरके अन्तमें भरतखण्डमें मथुरापुरीमें तेरो

मनोरथ पूर्ण होयगो जामें संदेह नहीं है ॥ २४ ॥ नारदजी कहैंहैं वह महामना हेममाली यहां द्वापरके अंतमें सुदामा नाम माली होतोभयो ॥ २५ ॥ ताते राम कृष्ण दोनों सुदामा मालीके घर जातभये ये शिवके वाक्यकूं सांचोकरिवेकूं गयेहैं हे राजा ! अब तुम कहा सुनिवेकी इच्छा करोहो सो कहो ॥ २६ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां मथुराखंडे रजकवायकसुदामोपाख्याने दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ अब बहुलाश्व राजा प्रश्न करैंहैं या कुब्जाने ऐसो कौनसो दुर्घट तप कीनो है जाते भगवान् श्रीकृष्ण प्रसन्न भये जो देवतानकूं दुर्लभ है ॥ १ ॥ नारदजी कहैंहैं किरोड़ कामदेवसे सुन्दर रामचंद्र पंचवटीमें विराजेहैं तहां रावणकी बेहन शूर्पनखा देखिके अत्यंत मोहित हैगई ॥ २ ॥ एकस्त्रीको व्रत जिनके ऐसे मोहे नहीं जाय तिनकूं राम जानिके शूर्पणखा सीताकूं खायवेकूं दौड़ी ॥ ३ ॥ तब रामके छोटे भैया लक्ष्मण तिनने क्रोधकरके

॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ महेश्वरवरेणासौहेममालीमहामनाः ॥ मालाकारोद्वापरांतेसुदामासंबभूवह ॥२५॥ तस्माद्स्यगृहंसाक्षाज्जग्मतूरामकेशवौ ॥ शिववाक्यामृतंकर्तुंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ २६ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमथुराखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेरजकवायकसुदामोपाख्यानंनामदशमोऽध्यायः ॥१०॥ ॥ श्रीबहुलाश्वउवाच ॥ ॥ सैरन्ध्र्याकिंकृतंपूर्वंतपःपरमदुर्घटम् ॥ येनप्रसन्नःश्रीकृष्णोदेवैरपिसुदुर्लभः ॥१॥ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ पंचवट्यांस्थितंरामंकोटिकन्दर्पसन्निभम् ॥ वीक्ष्यशूर्पणखानामराक्षसीमोहिताभृशम् ॥ २ ॥ निर्मोहंराघवंदृष्ट्वाऽथैकपत्नीव्रतस्थितम् ॥ क्रोधात्सीतांभक्षयितुंधावतीरावणस्वसा ॥ ३ ॥ खड्गेनशितधारेणलक्ष्मणोराघवानुजः ॥ जहारतस्याःकर्णौचनासांसद्योरुपान्वितः ॥ ४ ॥ छिन्ननासागतालंकांरावणायनिवेद्यतत् ॥ भूयःपुष्करतीर्थंसाजगामविमनाभृशम् ॥ ५ ॥ तपश्चक्रेशूर्पणखावर्षाणामयुतंजले ॥ ध्यायंतीत्र्यंबकंदेवंश्रीरामंवरमिच्छती ॥ ६ ॥ ततःप्रसन्नोभगवान्देवदेवउमापतिः ॥ एत्यतत्पुष्करंतीर्थंवरंब्रूहीत्युवाचह ॥ ७ ॥ ॥ शूर्पणखोवाच ॥ ॥ श्रीरामोमेवरोभूयाद्वरंदेहिसतांप्रियः ॥ त्वंदेवदेवपरमसर्वासामाशिषांप्रभुः ॥ ८ ॥ ॥ शिवउवाच ॥ ॥ अद्यैवसफलोनस्याद्वरस्तेशृणुराक्षसि ॥ द्वापरांतेमाथुरेचभविष्यतिनसंशयः ॥ ९ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ सैवशूर्पणखानामराक्षसीकामरूपिणी ॥ अभूच्छ्रीमथुरायांतुकुब्जानाममहामते ॥ १० ॥ महादेववरेणापिश्रीकृष्णस्यप्रियाभवत् ॥ इदंमयातेकथितंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ११ ॥

पैनेखड्गते नाक कान काटलिये ॥ ४ ॥ जब नाक कटिगई तब रावणपै जायके रोई फेर मन जाको बिगरिगयो सो वह पुष्करतीर्थकूं चलीगई ॥ ५ ॥ तब याने पुष्करके जलमें दश हजारवर्षताईं तप कीनो त्र्यंबक महादेवको ध्यान किये और रामचंद मेरे पति होयँ यह चाहना करीही ॥ ६ ॥ तब भगवान् पार्वतीपति प्रसन्न भये देव २ पुष्करतीर्थमें आयके प्रभू यह बोले हे राक्षसी ! तू वर मांग ॥ ७ ॥ तब शूर्पनखा बोली कि, संतनके पति श्रीराम मेरे वर होयँ तुम देवतानकेऊ परम देवता हो सब मनोरथनके प्रभू हो ॥ ८ ॥ तब महादेवजी बोले कि, अबहीं तो हे राक्षसी ! तेरो मनोरथ होयगो नहीं द्वापरके अंतमें मथुरामें होयगो निश्चय यामें संदेह नहीं ॥ ९ ॥ नारदजी कहे हैं कि, सोई शूर्पणखा राक्षसी कामरूपिणी मथुरामें आयके कुब्जा भई ॥ १० ॥ महादेवके वरते

श्रीकृष्णकी प्यारी भई यह चरित्र मैंने तेरे अगाडी कह्यो अब फिर कहा सुनिवेकी इच्छा करै है ॥ ११ ॥ अब बहुलाश्व राजा बोल्यो हे नारद ! यह कुवलयापीड हाथी पूर्वजन्ममें कौन हो कैसे हाथी भयो कैसे भगवानमें लीन भयो ॥ १२ ॥ अब नारदजी कहैं हैं कि, बलिराजाको बेटा महाकाया जाको मंदगति जाको नाम बड़ो बली सर्वशस्त्रधारीनमें श्रेष्ठ एक लाख हाथीको बल जामें ॥ १३ ॥ सो एक समय रंगयात्राके दिन मनुष्यनमें निकस्यो सो मतवारे हाथीकीसी भुजानसो जननकूं मर्दन करतो चल्यो ॥ १४ ॥ ताकी भुजाके वेगते त्रित नाम बूढे मुनीश्वर रस्तामें जायपरे तब क्रोध हैके विप्रने वा बलिके बेटाको यह शाप दियो ॥ १५ ॥ कि, अरे जो तू हाथीकी नाई मदोन्मत्त रंगयात्रामें जननकूं मर्दन करतोचले है याते हे दुर्बुद्धी ! तू हाथी हैजा ॥ १६ ॥ ऐसे मुनिने जब शाप दीनो तब काचुरीसो देह जायपरयो भ्रष्टतेज

॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ कोयंकुवलयापीडःपूर्वजन्मनिनारद ॥ कथंगजत्वमापन्नःश्रीकृष्णेलीनतांगतः ॥ १२ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ बलिपुत्रोमहाकायोनाम्नामन्दगतिर्बली ॥ सर्वशस्त्रभृतांश्रेष्ठोलक्षनागसमोबली ॥ १३ ॥ एकदानिर्गतःसोपिरंगयात्रांजनेषुच ॥ मत्तेभवज्ञ नाम्भुजाभ्यांपरिमर्दयन् ॥ १४ ॥ तद्बाहुवेगात्पतितःपथिवृद्धस्त्रितोमुनिः ॥ क्रुद्धःशशापतंमत्तंबलिपुत्रंबलिनन्दनम् ॥ १५ ॥ ॥ त्रित उवाच ॥ ॥ गजवत्त्वंमदोन्मत्तोभूजनान्परिमर्दयन् ॥ विचरन्रंगयात्रायांत्वंगजोभवदुर्मते ॥ १६ ॥ एवंशप्तस्तदादैत्योनाम्नामन्दगतिर्बली ॥ पतत्कंचुकवद्देहोभ्रष्टतेजाबभूवह ॥१७॥ मुनेःप्रभाववित्सद्योदैत्योभूत्वाकृतांजलिः॥ नत्वाप्रदक्षिणीकृत्य त्रितंमुनिमुवाचह ॥ १८ ॥ ॥ मन्दग तिरुवाच ॥ ॥ हेमुनेहेकृपासिन्धोत्वंयोगीन्द्रोद्विजोत्तमः ॥ गजत्वान्मेकदामुक्तिर्भविष्यतिवदाशुमाम् ॥ १९ ॥ त्वादृशानांसतांमाभूद्धेलनंमे क्वचिन्मुने ॥ त्वादृशामुनयोब्रह्मन्समर्थावरशापयोः ॥ २० ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवंप्रसादितस्तेनत्रितोनाममहामुनिः ॥ गतक्रोधोब्रवी दैत्यंकृपालुर्ब्राह्मणोत्तमः ॥ २१ ॥ ॥ त्रितउवाच ॥ ॥ वचनंमेमृषानस्यात्त्वद्भक्त्याहर्षितोस्म्यहम् ॥ ददास्यामिवरंदिव्यंदेवानामपिदुर्ल भम् ॥ २२ ॥ माशोचंकुरुदैत्येन्द्रमथुरायांहरेःपुरि ॥ श्रीकृष्णहस्तात्तेमुक्तिर्भविष्यतिनसंशयः ॥ २३ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ सोयं मन्दगतिर्दैत्योगजोभूद्विंध्यपर्वते ॥ नाम्नाकुवलयापीडोनागायुतसमोबले ॥ २४ ॥

हैगयो ॥ १७ ॥ जलदीही मुनिके प्रभावको जाननवारो दैत्य हाथ जोड़के परिक्रमाकरि दंडोत करिके त्रित मुनिते बोल्यो ॥ १८ ॥ हे मुने ! हे कृपासिंधो ! तुम योगींद्र हो द्विजोत्तम हो गजदेहते मेरी कब मुक्ति होयगी ये कहो ॥ १९ ॥ हे मुने ! हे कृपासिंधो ! तुमसरीके सन्तनको मोपे अपराध कबहू मति होउ, तुमसरीके मुनिवर शाप देवेमें समर्थ हैं ॥ २० ॥ नारदजी कहैहैं ऐसे त्रितनाम महामुनि जब प्रसन्न कीने तब क्रोध जात रह्यो तब दयालु ब्राह्मणोत्तम यह बोले ॥ २१ ॥ मेरो वचन झूठो तो है नहीं पर तेरी भक्तिते मैं प्रसन्न भयो तोकूं देवतानहूकूं दुर्लभ ऐसो दिव्य वर देउहूं ॥ २२ ॥ हे दैत्येंद्र ! शोच मति करे हरिकी पुरी मथुरामें श्रीकृष्णके हाथते तेरी मुक्ति होयगी यामें सन्देह नहीं है ॥ २३ ॥ अब नारदजी कहैं हैं सोई मन्दगति दैत्य विन्ध्याचलपर्वतमें हाथी होतभयो नाम करिके कुवलयापीड भयो जा कुवलपीडमें दश हजार

हाथीको बल भयो ॥ २४ ॥ जा कुवलयापीडको जरासन्धने वलते लाख हाथीनते पकरचो सोई हाथी जरासन्धने कंसकूँ दायजमें दीनो हे विदेहराजा ! ॥ २५ ॥ त्रितऋषीके वाक्यते वाको तेज श्रीकृष्णमें लीन हैगयो यह मैंने तेरे आगे कह्यो अब तू कहा सुनिवेकी इच्छा करेहे ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां मथुराखण्डे भाषाटीकायां कुब्जाकुवलयापीडवर्णनं नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ बहुलाश्व राजा पूछे हैं कि, चाणूरादिक जे मल्ल हैं ते पूर्वजन्ममें कौन हैं जे यहां आये तिनको श्रीकृष्णचन्द्रते युद्ध होत भयो ॥ १ ॥ सोई नारदजी कहे हे कि, हे राजन् ! पहले अमरावती पुरीमें उतथ्यनाम महामुनि हे बृहस्पतिजीके भैया तिनके पांच बेटा भये जिनकी कामदेवके समान प्रभा है ॥ २ ॥ पढ़ीभई विद्याऊ छोडिदई और पढिवोऊ छोडिदियो और जपहू छोडिदियो और वे बलिके यहां जायके मल्लयुद्ध सीखनलगे, मदमें उद्धत हो ॥ ३ ॥ ब्रह्मकर्मते

गृहीतोमागधेन्द्रेणवलाल्लक्षगजैर्वने ॥ सोयंदत्तस्तुकंसायपारिवर्हेविदेहराट् ॥ २५ ॥ त्रितवाक्यात्तस्यधामश्रीकृष्णेलीनतांगतम् ॥ इदंमयातेकथितंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ २६ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांमथुराखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेकुब्जाकुवलयापीडवर्णनंनामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ चाणूराद्याश्चयेमल्लास्तेकेपूर्वमिहागताः ॥ अहोश्रीकृष्णचन्द्रेणयेषांयुद्धंबभूवह ॥ ॥ १ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ राजन्पुरामरावत्यामुतथ्योस्तिमहामुनिः ॥ तस्याभवन्पंचपुत्राःकामदेवसमप्रभाः ॥ २ ॥ हित्वाविद्यांचाध्ययनंजपंतेनसहैवते ॥ गत्वाबलेर्मल्लयुद्धंसदाशिक्षन्मदोद्धताः ॥ ३ ॥ ब्रह्मकर्मपरिभ्रष्टान्वेदाध्ययनवर्जितान् ॥ रुषाप्राहसुतान्मत्तानुतथ्योमुनिसत्तमः ॥ ४ ॥ ॥ उतथ्यउवाच ॥ ॥ शमोदमस्तपःशौचंक्षांतिरार्जवमेवच ॥ ज्ञानंविज्ञानमास्तिक्यंब्रह्मकर्मस्वभावजम् ॥ ५ ॥ शौर्यंतेजोधृतिर्दाक्ष्यंयुद्धेचाप्यपलायनम् ॥ दानमीश्वरभावश्चक्षात्रंकर्मस्वभावजम् ॥ ६ ॥ कृषिगोरक्ष्यवाणिज्यंवैश्यकर्मस्वभावजम् ॥ परिचर्यात्मकंकर्मशूद्रस्यापिस्वभावजम् ॥ ७ ॥ ब्रह्मकर्मपरित्यक्ताभवंतोब्राह्मणःसुताः ॥ मल्लयुद्धंक्षात्रयुद्धंकथंकुरुतदुर्जनाः ॥ ८ ॥ तस्माद्भवंतोभूयासुर्मल्लावैभारताजिरे ॥ असुराणांप्रसंगेनदुर्जनाभवताशुहि ॥ ९ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ उतथ्यस्यसुतास्तेवैजातामल्लामहीतले ॥ श्रीकृष्णांगस्पर्शमात्रात्परंमोक्षंययुर्नृप ॥ १० ॥

परिभ्रष्ट भये, वेदके अभ्यासते परिभ्रष्ट भये तब मुनिसत्तम जे उतथ्य हे वे यह बोले ॥ ४ ॥ शम, दम, तप, शौच, शांति, आर्जव, ज्ञान, विज्ञान, आस्तिक्य ये ब्राह्मणके स्वाभाविक कर्म हे ॥ ५ ॥ शूरता, तेज, धैर्य, चतुराई, युद्धमें नहीं भाजिवो, दान, ईश्वरकी भक्ति, तेज ये क्षत्रीके स्वाभाविक कर्म हे ॥ ६ ॥ खेती, व्योहार, गौकी रक्षा, ब्याज चलायवौ, यह बनियानको स्वाभाविक कर्म धर्म हे, टहल करिवो यह शूद्रको स्वाभाविक कर्म हे ॥ ७ ॥ तुम ब्राह्मणके बेटा हैके ब्रह्मकर्मको परित्याग करिके क्षत्रीको कर्म युद्धकर्म ताहि तुम कैसो करोहो ॥ ८ ॥ ताते तुम भरतखण्डमें मल्ल होऊ असुरनके संगते जलदी दुर्जन होऊ ॥ ९ ॥ नारदजी कहे हे वे उतथ्यके बेटा मल्ल भये हे नृप ! श्रीकृष्णके अंगस्पर्शते

मोक्षकूं प्राप्त हेगये ॥ १० ॥ चाणूर, मुष्टिक, कूट, शल, तोशल इनको चरित्र तो कह्यो अब कहा सुनिवेकी इच्छा करे हे ॥ ११ ॥ फिर बहुलाश्व पूछेहै कंसके छोटे भैया आठ कंक न्यग्रोधते
आदिक वे पूर्वजन्ममें कौन हे सो कहो हे मुनि ! ॥ १२ ॥ नारदजी कहेहैं कि, अलकापुरीमें देवयक्ष नाम एक यक्ष हो वो बड़ो ज्ञानी ज्ञानमें तत्पर मान्य हो शिवकी भक्तिते बड़ी
कांति हो ॥ १३ ॥ ताके आठ बेटा भये देवकूट, महागिरि, गंड, दंड, प्रचंड, खंड, अखंड और पृथु ॥ १४ ॥ एकसमें महादेवके पूजनके लिये पिताने भेजे कि, तुम अरुणोदयपै
हजार कमल लाओ ॥ १५ ॥ तब ये मानसरोवरते फूल लाये वे बडे सुगंधित हैं भौंरा जिनपै गुंजार करतेहैं तिने सुगंधिके लोभते सूंघिके पीछे पिताकूं दे दीने ॥ १६ ॥ झूठे
करिवेके दोषते शिवपूजाके तिरस्कारते तीन जन्म असुरयोनिकूं प्राप्तभये ॥ १७ ॥ सो वे कल्याणकरनहारे वे बलदेवजीके हाथते मोक्षकूं प्राप्त हेगये हे विदेहराज ! ॥ १८ ॥ हे

चाणूरोमुष्टिकःकूटःशलस्तोशलएवच ॥ एषांचरित्रंकथितंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ११ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ कंसानुजाभ्रातरोऽ
ष्टौकंकन्यग्रोधकादयः ॥ तेकेपूर्वंवदमुनेयेपिमोक्षंपरंगताः ॥ १२ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ अलकायांपुरायक्षोदेवयक्षइतिस्मृतः ॥
ज्ञानीज्ञानपरोमान्यःशिवभक्त्यामहाद्युतिः ॥ १३ ॥ तस्यचाष्टौसुताजातादेवकूटोमहागिरिः ॥ गण्डोदण्डःप्रचण्डश्चखण्डोऽखण्डःपृथु
स्तथा ॥ १४ ॥ एकदाशिवपूजायांदेवयक्षेणनोदिताः ॥ सहस्रंपुंडरीकाणिचाहर्तुमरुणोदये ॥ १५ ॥ पुष्पाणिमानसान्नीत्वाशब्दिता
निमधुव्रतैः ॥ आघ्रायगंधलोभेनददुस्तेजनकायवै ॥ १६ ॥ उच्छिष्टीकृतदोषेणशिवपूजातिरस्कृताः ॥ आसुरींयोनिमापन्नामूढास्ते
जन्मभिस्त्रिभिः ॥ १७ ॥ हस्ताभ्यांशंकराभ्यांचबलदेवस्यमैथिल ॥ परंमोक्षंगतास्तेवैदोषान्मुक्ताविदेहराट् ॥ १८ ॥ कंसानुजानांव्याख्या
नंपूर्वजन्मभवंनृप ॥ इदंमयातेकथितंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ १९ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ कोऽयंपुरापंचजनोदैत्यःशंखवपुर्द्धरः॥ तस्यशं
खोबभौप्रक्षन्कृष्णकरपंकजे ॥ २० ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ पुरेंद्रैतान्युपांगानिचक्रादीनिविदेहराट् ॥ त्रैलोक्यनाथस्यहरेर्बभुस्तेजसाह
ताः ॥ २१ ॥ तेषांशंखःपांचजन्यःप्राप्तोराजन्महत्पदम् ॥ पपौतन्मुखलग्नोसौश्रीकृष्णस्याधरामृतम् ॥ २२ ॥ अकरोच्चैकदामानंमनसिप्रा
हशंखराट् ॥ गृहीतोहंहिहरिणाराजहंससमद्युतिः ॥ २३ ॥

राजा ! कंसके भैयानको पूर्वजन्मको व्याख्यान तेरे आगे वर्णन कर्यो अब तू कहा सुनिवेकी इच्छा करेहे ॥ १९ ॥ बहुलाश्व राजा पूछे है कि, यह पंचजन दैत्य शंखशरीर
धारी पूर्वजन्ममें कौन हो जाको शंख श्रीकृष्णके हस्तकमलमें शोभित होयहै ॥ २० ॥ तब नारदजी बोले कि, हे विदेहराट् ! पहले जे चक्रादिक भगवान्के उपांग हैं त्रिलोकी
के नाथ जे हरि तिनके तेजते ताडित हे ॥ २१ ॥ तिनके बीचमें हे राजन् ! ये पांचजन्य शंख महत् पदकूं प्राप्त हेगयो क्योंकि वे शंख ना भगवान्के मुखतें लगिके भगवान्को
अधरामृत पीवन लग्यो ॥ २२ ॥ एकसमें वो शंखने अपने मनमें बड़ो मान कीनो मनमें बोल्यो कि, मैं शंखनको राजा हूं मोकूं हरिने ग्रहण कीनो है राजहंसको बराबर मेरी कांति है ॥ २३ ॥

दक्षिणावर्त्त जो में हूं ताकूं श्रीकृष्ण विजयके समय बजावें है और जो लक्ष्मीजीकूं दुर्लभ है सो अधरामृत में पिऊंहूं ॥ २४ ॥ याहीते में सबनमें मुख्य हूं रातिदिन
अधरामृत पीऊंहूं हे विदेहराज ! ऐसे पांचजन्यकूं अभिमान भयो ॥ २५ ॥ तब लक्ष्मीजीने याकूं क्रोधसों शाप दीनो कि, हे दुर्बुद्धे ! तू दैत्य हैजा ऐसे वो पांचजन्यशंख पंचजन
नाम दैत्य भयो समुद्रमें ॥ २६ ॥ सो वैरभावकरिके फिर देवेशको प्राप्त भयो शंखनको ईश्वर-जाकी ज्योति भगवान्में लीन भई फिर करमें शोभित भयो अहो ! बडो भाग्य
या शंखको राजा तू जानि अब तू कहा सुनिवेकी इच्छा करे है ॥ २७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां मथुराखण्डे भाषाटीकायां चाणूरादिकंसभ्रातृपंचजनपूर्वाख्यानं नाम द्वादशोऽध्यायः
॥ १२ ॥ बहुलाश्व राजा बोलो आगे यदूत्तम मथुरामें कहा लीला करते भये अपनी जातिके जे यादव हैं तिने बसायके हे मुनिसत्तम ! सो कहो ॥ १ ॥ नारदजी कहे हैं कि,

श्रीकृष्णोदक्षिणावर्तंदध्मौमांविजयेसति ॥ यद्दुर्लभंचाब्धिपुत्र्याःश्रीकृष्णस्याधरामृतम् ॥ २४ ॥ तत्तस्मात्सर्वमुख्योस्मिपिबाम्यहमहर्नि
शम् ॥ इतिमानयुतंशंखंपांचजन्यंविदेहराट् ॥ २५ ॥ शशापलक्ष्मीस्तंक्रोधात्त्वंदैत्योभवदुर्मते ॥ सोयंपंचजनोनामदैत्योभूत्सरितांपतौ ॥
॥ २६ ॥ वैरभावेनदेवेशंपुनःप्राप्तोदरेश्वरः ॥ ज्योतिर्लीनंतुदेवेशेवपुर्यस्यकरेत्वभौ ॥ अहोभाग्यंविद्धितस्यकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ २७ ॥
इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमथुराखण्डेश्रीनारदबहुलाश्वसंवादेचाणूरादिकंसभ्रातृपञ्चजनपूर्वाख्यानंनामद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ ॥ बहुलाश्वउ
वाच ॥ ॥ अग्रेचकारकिंकार्यंमथुरायांयदूत्तमः ॥ निवासयित्वास्वज्ञातीन्वदैतन्मुनिसत्तम ॥ १ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ परिपूर्णतमःसाक्षा
द्भगवान्भक्तवत्सलः ॥ सस्मारगोकुलंदीनंगोपीगोपालसंकुलम् ॥ २ ॥ एकदाहूयरहसिसखायंभक्तमुद्धवम् ॥ उवाचभगवान्देवःप्रेमगद्गदया
गिरा ॥ ३ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ गच्छशीघ्रंव्रजंहेसखेसुन्दरंश्रीलताकुंजपुंजादिभिर्मंडितम् ॥ शैलकृष्णाप्रभाचारुवृंदावनंगो
पगोपीगणैर्गोकुलंसंकुलम् ॥ ४ ॥ एकपत्रंतुनंदायवैदीयतांवाद्वितीयंयशोदाकरेएवभोः ॥ वातृतीयंत्विदंराधिकायैसखेतत्रगत्वाहितन्मंदिरंसु
दरम् ॥ ५ ॥ वाचतुर्थंसखिभ्यःशिशुभ्यःशुभंकौशलंदीयतांपत्रमेवंपृथक्च ॥ गोपिकानांशतेभ्यश्चयूथेभ्यउन्मोहितानांचदेयानिपत्राणिच
॥ ६ ॥ मेपितानंदराजोघृणीमन्मनामेचमातायशोदास्मरत्याशुमाम् ॥ वाक्यवृन्दैःशुभैर्नीतिवित्त्वंतयोर्मेपरांप्रीतिमाराद्धयोरावह ॥ ७ ॥

परिपूर्णतम भगवान् साक्षात् भक्तवत्सल गोप गोपीन करिके सहित दीन जो गोकुल है ताहि स्मरण करते भये ॥ २ ॥ एक दिन सखा जो उद्धव परमभक्त ताहि बुलायके भगवान्
प्रेमते गद्गद वाणी करिके बोले ॥ ३ ॥ हे सखे ! तुम व्रजकूं जलदी जाउ कैसो व्रज है जो व्रज लता कुंज निकुंजके पुंजते आवृत है श्रीयमुनाजी और गोवर्धन तामें मनोहर है
और जो गोप गोपीनके गुणसों आवृत है ॥ ४ ॥ एक चिट्ठी तो नंदजीकूं दीजो दूसरी यशोदाजीकूँ दीजो तीसरी राधिकाजीकूँ तिनके सुंदर मंदिरमें जायके ॥ ५ ॥ वाणीकी
चतुराईते गोपीनते गोपनते माता पितानते कुशल पूंछि सबकूं चौथी चिट्ठी दीजो अत्यंत मोहित जे सो गोपीनके यूथनकूँ दीजियो ॥ ६ ॥ मेरे पिता नंदराज अति स्नेह करें हैं मोहीमे
मन है मेरी मैया यशोदा राति दिन मेरोही याद करे है नीतिके सुंदर वचनन करिके विनको मेरी परम प्रीति धारण करियो क्योंकि तू नीतिको जाननवारो है ॥ ७ ॥

मेरी प्यारी राधिका मेरे वियोगमें आतुरी मो विना सब जगतकूं सूनो मान हे मेरे वियोगके दुःखकूं मेरे बचननते छुडैयो तू कहनेमें बडो चतुर है ॥८॥ याव्रजके विषे सुदामादिक गोपबालक मेरे सखा मेरे विना प्रेमातुर हैरहेहैं तिनकूं मित्रकी नाईं व्रजमें सुख देउ और थोरेई दिनमें मैं व्रजमें आऊंगो ॥९॥ गोपी मेरे वियोगमें आतुरी हैं मोहीमें हैं मन, देह, प्राण जिनके मेरे अर्थ त्यागेहैं लोकव्यवहार जिनने उनकूं हे मैत्रिन! मैं कैसे नहीं धारण करूं ॥१०॥ ते अब प्राणनकूं त्याग करवेकूं उद्यत हैं हे उद्धव! तिननने बडे कष्टते आजतक प्राण धारण करेहैं उनकूं मेरे वियोगकी मानसी व्यथा है तिनकों मेरे कहेभये पदनकरिके व्यथाकूं दूरि करो तुम वाणीनके कहिवेमें बडे चतुर हो ॥ ११ ॥ जा रथमें बैठिके मैं व्रजते आयो हौ वाही रथमें बैठिके वेई घोडा वेही सारथी वेई घंटा मेरोई सो रूप मेरोई पीतांबर मेरीही वैजयंती माला मेरोही हजार दलको कमल लैके तुम जाउ ॥ १२ ॥ दिव्य रत्ननकी प्रभाकरिके मंडित मेरे मकराकृत कुंडल

मत्प्रियाराधिकामद्वियोगातुरामन्यतेमांविनाखंजगन्मोहतः ॥ मद्वियोगाधिमासांमदुक्तैःपदैर्मोचयत्वंभवान्दक्षिणोवाक्पथे ॥ ८ ॥ गोपबालाःसुदामादयोमत्प्रियामांसखायंविनातेपिमोहातुराः ॥ देहितेषांसुखंमित्रवच्छ्रीव्रजेस्वल्पकालेनतत्रागमिष्याम्यहम् ॥ ९ ॥ गोपिकामद्वियोगाधिवेगातुरामन्मनस्काश्चमत्प्राप्तदेहासवः ॥ यामदर्थेचसंत्यक्तलोकाबलास्ताःकथंनात्रमंत्रिन्बिभर्मिस्वतः ॥ १० ॥ ताअसून्त्यक्तुमन्नोद्यताउद्धवप्रभिरद्यापिकृच्छ्रैर्धृताश्चासवः ॥ मद्वियोगाधिमासांमदुक्तैःपदैर्मोचयत्वंभवान्दक्षिणोवाक्पथे ॥ ११ ॥ येनपूर्वंव्रजादागतोहंसतंत्वंरथंसाश्वसूतंरणद्घंटिकंवै ॥ मेचसारूप्यमद्यैवपीतांबरंवैजयंतींसहस्रच्छदंपंकजम् ॥ १२ ॥ कुंडलेदिव्यरत्नप्रभामंडितेकोटिबालार्कदीप्तंमणिंकौस्तुभम् ॥ मेमहानादिनींचारुवंशींशुभांपुष्पयुक्तांचयष्टिंजगन्मोहिनीम् ॥ १३ ॥ चंदनंसुंदरंदिव्यगंधावृतंबर्हमच्छादिवेषंक्वणन्नूपुरम् ॥ मौलिमेवंगृहाणांगदेउद्धवगच्छगच्छाशुचाद्येवमद्वाक्यतः ॥ १४ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्तउद्धवःशीघ्रंनमस्कृत्यकृतांजलिः ॥ कृष्णंप्रदक्षिणीकृत्यरथारूढोव्रजंययौ ॥ १५ ॥ कोटिशःकोटिशोगावोयत्रयत्रमनोहराः ॥ श्वेतपर्वतसंकाशादिव्यभूषणभूषिताः ॥ १६ ॥ पयस्विन्यस्तरुण्यश्चशीलरूपगुणैर्युताः ॥ सवत्साःपीतपुच्छाश्चव्रजंत्योभव्यमूर्तिकाः ॥ १७ ॥ घंटामंजीरझंकाराःकिंकिणीजालमंडिताः ॥ हेमतुल्याहेमशृंग्योहारमालाःस्फुरत्प्रभाः ॥ १८ ॥

पहर जाउ किरीट सूर्यकोसो तेज ऐसी कौस्तुभमणिकूं पहरि जाउ मेरीही सुंदर वंशीकूं लेजाउ जो मनोहर नादवारी वंशी मेरीही फूलनकी मेरी जगन्मोहिनी छडी ताकूं लेजाउ ॥ १३ ॥ मेरोई सुगंधित चंदन लगायजाउ दिव्य है गंध जामें मेरेई बजने नूपर पहरजाउ मेरो मोरनको मुकट लेउ मेरेही बाजू लेहु हे उद्धव! जल्दी जाउ २ मेरे कहेते ॥ १४ ॥ नारदजी कहेहैं ऐसे जब कही तबही उद्धवजी जल्दीही हाथ जोड़ नमस्कार करिके श्रीकृष्णकी परिक्रमा करिके रथमें बैठिके व्रजमें आये ॥ १५ ॥ किरोडन २ गौ जहां मनोहर डोले हैं जे श्वेतपर्वतसी हैं दिव्य गहनेनकरिके भूषित हैं ॥ १६ ॥ बहुत दूधकी तरुणी शील रूप गुणनकरिके युक्त बछरा जिनके संग हैं भव्य मूर्ति पीरी जिनकी पूंछि है ॥ १७ ॥ घंटा मंजीरानके झंकारशब्दकरिके हैं किंकिणीनके जालनसों मंडित हैं सोनेके रंगकी सुवर्णके सींग जिनके कोई सुवर्णसी है पर हार माला पहरे जिनकी

कांति किरण छूटिरहीहैं ॥ १८ ॥ कोई २ श्वेत लाल रंगकी मिली भईहैं कोई हरी हैं कोई तामेके रंगसी हे कोई पीरी हे कोई श्याम हैं कोई चितकवरी हैं कोई धूमरी कोई कोइलवर्णी जहां अनेक प्रकारकी गौ विचरेहैं ॥ १९ ॥ अथाह जिनके दूध हैं अर्थात् दूधकी समुद्र तरुणीनके करनकरिके चिह्नित हैं बछरान सहित हिरनसी कूदेहे जे सिगरी भई बडी शुभ है ॥ २० ॥ इत उत गौनके गणनमे जहाँ विजार डोले हे बडा मोटी नारि जिनकी धर्मधुरंधर हे ॥ २१ ॥ बेत लिये गोप डोलेहैं वे श्यामसुंदर हैं वंशी बजावते मदनमोहन नामके रागनते श्रीकृष्णलीलानकूं गामैंहै ॥ २२ ॥ दूरते आये उद्धवकूं देखि श्रीकृष्ण आये ऐसे जानतेभये व्रजके बालक कृष्णदर्शनकी लालसाते परस्पर यह बोले ॥ २३ ॥ निश्चैकरिकें नंदकुमार आवे है जो हमारो सखा है मेघसो श्याम पीतांबर धरे वनमाला पहरे मकराकृत कुंडल पहरेहैं ॥ २४ ॥ कौस्तुभमणि धरे हजार दलको

पाटलाहरितास्ताम्राःपीताःश्यामविचित्रिताः ॥ धूम्राःकोकिलवर्णाश्चयत्रगावस्त्वनेकधा ॥ १९ ॥ समुद्रवद्दुग्धदाश्चतरुणीकरचिह्निताः ॥ कुरंगवद्विलंघद्भिर्गोवत्सैर्मंडिताःशुभाः ॥ २० ॥ इतस्ततश्चलंतश्चगोगणेषुमहावृषाः ॥ दीर्घकन्धरशृंगाढ्यायत्रधर्मधुरंधराः ॥ २१ ॥ गोपालावेत्रहस्ताश्चश्यामवंशीधराःपराः ॥ कृष्णलीलाःप्रगायंतोरागैर्मदनमोहनैः ॥ २२ ॥ दूरात्तमागतंवीक्ष्यज्ञात्वाकृष्णंव्रजार्भकाः ॥ ऊचुःपरस्परंतेवैकृष्णदर्शनलालसाः ॥ २३ ॥ ॥ गोपाऊचुः ॥ ॥ नंदसूनुःकिलायातिसखायोर्नःसंशयः ॥ मेघश्यामःपीतवासाःस्रग्वीकुंडलमंडितः ॥ २४ ॥ कौस्तुभीमण्डलीविभ्रत्सहस्रदलपंकजम् ॥ तदेवमुकुटंबिभ्रत्कोटिमार्तंडसन्निभम् ॥ २५ ॥ तएवाश्वारथःसोयंकिंकिणीजालमंडितः ॥ बलोनास्तिरथेचास्मिन्नेकाकीनंदनंदनः ॥ २६ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवंवदंतोगोपालाःश्रीदामाद्याविदेहराट् ॥ कृष्णाकृतिंकृष्णसखमाययुःसर्वतोरथम् ॥ २७ ॥ कृष्णोनास्तीतिवदतःकोयंसाक्षात्तदाकृतिः ॥ तान्नमस्कृत्यौपगविःपरिरभ्यावदत्पतिम् ॥ ॥ २८ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ गृहाणपत्रंश्रीदामन्कृष्णदत्तंनसंशयः ॥ शोचंमाकुरुगोपालैःकुशल्यास्तेहरिःस्वयम् ॥ २९ ॥ यादवानांमहत्कार्यंकृत्वाथसबलःप्रभुः ॥ स्वल्पकालेनचात्रापिभगवानागमिष्यति ॥ ३० ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ पठित्वातद्धस्तपत्रंश्रीदामाद्याव्रजार्भकाः ॥ भृशमश्रूणिमुंचंतःप्राहुर्गद्गदयागिरा ॥ ३१ ॥

कमल लिये और देखो वुही मुकुट है जामें किरोर सूर्यकोसो तेज ॥ २५ ॥ वुही रथ वुही सारथी वेई घोडा बलदेव तो या रथमें है नही फकत इकिला श्रीकृष्ण ही है ॥ ॥ २६ ॥ नारदजी कहे हे ऐसो गोप कहि रहे है श्रीदामादिक कृष्णकीसी आकृति कृष्णके सखा उद्धवके रथके पास चारो बगलते आये ॥ २७ ॥ कृष्ण तो नही है यह कृष्णको उनिहार कौन है उद्धवजी तिनकूं नमस्कार करिके उनसो प्यार कर कृष्णकी वार्ता करनलगे ॥ २८ ॥ उद्धवजी बोले हे श्रीदामाजी ! यह अपने मित्रको दियो पत्र लेउ पे श्रीकृष्णने दीनो है गोपनकरिके सहित तुम शोच मति करो श्रीकृष्ण बहुत प्रसन्न हे ॥ २९ ॥ बलदेवके संग यादवनको महत्कार्य करिके जलदीही बलदेवजी सहित श्रीकृष्ण यहां आमेंगे ॥ ३० ॥ नारदजी कहे हैं श्रीदामादिक व्रजके बालक श्रीकृष्णके हाथकी चिट्ठीको बांचके बहुत आंसूनकूं छोडते गद्गद वाणीते यह बोले ॥ ३१ ॥

हे पांथ ! हे बटोही ! हमने निर्मोही नंदके बेटाके विषे तन, धन, बल, वैभव, मन, बुद्धि धारण करीही वा श्रीकृष्णके विना ये व्रज सब सूनो हैगयो है और एक व्रजही कहा सब जगतही सूनो हैगयो ॥ ३२ ॥ हे महामते ! हमको कृष्णके विना एक छिन एक युगकी बराबर, एक घडी एक मन्वंतरकी बराबर, एक पहर कल्पकी बराबर और दिन द्वै परार्द्धकी बराबर वियोगके दुःखते बीतेहै ॥ ३३ ॥ रातिदिन हम वाकूं भूले नही है कोई हे उद्धव! न जानें,वो कोनसो दुष्ट घडी ही जा घडीमें यहांसो गये सदाही हम तो वाको अपराधही कर्यो करेहैं तोहू वो अपनी मित्रताके नातेते हमारो व्रजवासीनको मन हरेहै ॥ ३४ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां मथुराखंडे भाषाटीकायामुद्धवागमनं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ऐसे प्रेममें भरे गोप कृष्णके विरहमे आतुर तिनते गयो है अचंभो जाको सो उद्धव प्रेमते ये बोल्यो ॥ १ ॥ मैं श्रीकृष्णको दास हूं ताको प्यारो हूं एकांती हूं अर्थात् सदा उनके शुभ कामनको करनवारो हौं तुम्हारी कुशल देखि

॥ ॥ गोपाऊचुः ॥ ॥ पांथेतिनिर्मोहिनिनन्दसूनौतनुर्विभूतिश्चधनंबलंच ॥ सर्वाधियःकृष्णमृतेव्रजोनःशून्यंप्रजातंद्विजगत्समस्तम् ॥ ३२ ॥ क्षणोयुगत्वंचघटीमहामतेप्रयातिमन्वन्तरतांव्रजौकसाम् ॥ यामश्चकल्पंचदिनंविनाहरेर्वियोगदुःखैर्द्विपरार्द्धतांगतम् ॥ ३३ ॥ अहर्निशंतंनहिविस्मरामहेदुष्टाघटीसाप्रययौयथाहियः ॥ मनोहरत्युद्धवनोवनौकसांवयस्यभावेनसाकृतदागसाम् ॥ ३४ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमथुराखंडेनारदबहुलाश्वसंवादउद्धवागमनंनामत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ एवंप्रेमभरान्गोपान्श्रीकृष्णविरहातुरान् ॥ उवाचप्रेमसंयुक्तउद्धवोगतविस्मयः ॥ १ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ अहंश्रीकृष्णदासोस्मितत्प्रियस्तद्रहस्करः ॥ भवतांकुशलंद्रष्टुंप्रेषितोहरिणात्वरम् ॥२॥ पुरींगत्वाथहरयेनिवेद्यविरहंतुवः॥ तंप्रसन्नंकरिष्यामितदंघ्रौनेत्रवारिभिः ॥३॥ नीत्वाहरिंहिभवतांसमीपंहेव्रजौकसः॥ आगमिष्याम्यहंशीघ्रंशपथोनमृषामम ॥४॥ यूयंप्रसन्नाभवतमाशोकंकुरुताथवै ॥ अस्मिन्व्रजेपिगोपालाद्रक्ष्यथश्रीपतिंहरिम् ॥५॥ ॥नारदउवाच ॥ ॥ एवमाश्वास्यगोपालान्रथस्थोयदुनंदनः॥ श्रीदामाद्यैश्चगोपालैःसहितोहर्षपूरितः ॥६॥ विवेशनन्दनगरंसूर्येसिन्धुगतेसति ॥ आगतंह्युद्धवंश्रुत्वानन्दराजोमहामतिः॥ परिरभ्यमुदाशीघ्रंपूजयामासहर्षितः ॥ ७ ॥ कशिपुस्थंस्थितंशांतमुद्धवंकृतभोजनम् ॥ कशिपुस्थोनंदराजःप्राहगद्गदयागिरा ॥८॥ ॥ नंदउवाच ॥ ॥ कच्चित्सखामेपुरिशूरसेनआस्तेस्वपुत्रैःकुशलीमहामते ॥ कंसेमृतेयादवपुंगवानांजातंसखेसौख्यमतःपरंभुवि ॥९॥

वेकूं हरिने आप भेजोहूं ॥२॥ मथुरापुरीमें जायके तुमारो विरह जतायके ताके चरणनमें अपनो शिर धरिके नेत्रनके आंसूनते वाके चरणनको धोयके श्रीकृष्णकूं प्रसन्न करूंगो ॥ ३ ॥ हे व्रजवासियो ! भगवान्को लेके जल्दीही तुमारे पास आऊंगो मेरी ये शपथ झूटी नहीं है ॥ ४ ॥ तुम प्रसन्न रहो सोच मतिकरो याही व्रजमें तुम सबरे गोप वा श्रीपति कृष्णकूं देखोगे ॥ ५ ॥ नारदजी कहे है कि, ऐसे रथमें बैठ्योई बैठ्यो उद्धव गोपनकूं समुझाय श्रीदामादिक गोपनकूं संग लेके हर्षमे पूर्ण है नन्दनगरमें आवतो भयो ॥६॥ सूर्यके अस्तभयेको संध्या समें नन्दनगरमें आये उद्धवकूं आयो सुनिके महाबुद्धी नन्दराज राजी हैके मिले सत्कार कर्यो ॥ ७ ॥ उद्धवजीकूं भोजन कराय शांत हैके सेजपै बैठारे नन्दराजहू ब्यारू करि सेजपै बैठे तब गद्गद वाणीते नन्दजी यह बोले ॥ ८ ॥ कहो उद्धवजी ! हमारे सखा वसुदेवजी प्रसन्न हैं अपने बेटानकरिके सहित एक कंसके विना श्रेष्ठ यादवनकूं सबकूं अब

अगारी पृथ्वीपै सुख होयगो ॥ ९ ॥ मैं यह पूछूँहूँ कि, बलदेव करिके सहित श्रीकृष्ण अपनी मैया यशोदाकोहू यादि कभी करे हैं गोपनकी गोवर्द्धनकी गौअनके गणकी
व्रजकी वृन्दावनकी पुलिननकी यमुनाकी कबहू यादि करेहैं के नहीं ॥ १० ॥ फिर यह बोले कि, हाय दैव ! मैं श्यामसुन्दर कमलदललोचन कंदूरीसे लाल जाके होठ ताको
बलदेव सहित बालकनके संग जा महलके आंगनमे अथवा चौरायेमें खेलत अपने बेटाकूँ कब देखुंगो ॥ ११ ॥ ये कुञ्ज, ये निकुञ्ज, यह यमुना नदी, यह गोवर्द्धन, यह वृंदावन,
ये वन, ये नदी, ये महल, ये लता, ये वृक्ष, ये गौअनके गण एक मुकुन्द विना सब विषसे दीखें हैं ॥ १२ ॥ कमललोचन श्रीकृष्ण विना मेरो जीवन धिक्कार धिक्कार है
भोजन करिवो और सोयवोहू धिक् है चन्द्र विना भूमिमें चकोर जैसे ऐसेही वाके विना हम जीवेहै सो वाके आयवेकी आशाते जीमे है ॥ १३ ॥ हे महामते ! पृथ्वीको भार

कच्चित्कदाचित्सबलोहिमाधवःस्मरत्यसौव्राजननींयशोमतीम् ॥ गोपालगोवर्द्धनगोगणान्व्रजंवृन्दावनंवापुलिनंतरंगिणीम् ॥ १० ॥ हादैव
कस्मिन्समयेस्वनन्दनंबिंबाधरंसुंदरमंबुजेक्षणम् ॥ द्रक्ष्याम्यहंमन्दिरचत्वराजिरेऽर्भकैर्लुठंतंसबलंमुहुर्मुहुः ॥ ११ ॥ कुंजोनिकुंजोयमुनामहान
दीगोवर्द्धनोरण्यमिदंवनानि ॥ गृहंलतावृक्षगवांगणैःसहविनामुकुंदंविषवन्निदंजगत् ॥ १२ ॥ धिग्जीवनंमेशयनंचभोजनंकृष्णंविनापद्मदलाय
तेक्षणम् ॥ चन्द्रंविनाभूमितलेचकोरवज्जीवामितस्यागमनाशयाभृशम् ॥ १३ ॥ हर्तुंभुवोभारमतीवदैवतैःसंप्रार्थितंपूर्णतमंमहामते ॥ जातंस
तांरक्षणतत्परंस्वयंमन्येहिकृष्णंसबलंपरात्परम् ॥ १४ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ संस्मृत्यसंस्मृत्यहरिंपरेशंबभूवतूष्णीनवनन्दराजः ॥ शिरो
निधायाप्युपबर्हणेस्वेह्युत्कंठरोमांचितविह्वलांगः ॥ १५ ॥ श्रीनन्दनेत्रांबुजवारिसंततीराजन्तदाकृष्णसखस्यपश्यतः ॥ शय्यांसवस्त्रामुपबर्हे
णांतांकृत्वार्द्रतांप्रांगणआचचाल ॥ १६ ॥ श्रुत्वोद्धवंश्रीमथुरापुरागतंकपाटमेत्याशुयशोमतीसती ॥ शृण्वंत्यलंस्वस्यसुतस्यवर्णनंस्नेहस्रवस्तु
स्तननेत्रपंकजा ॥ १७ ॥ विहायलज्जांघृणयासुतस्यसापप्रच्छसर्वंकुशलंतदोद्धवम् ॥ अपोच्छयवस्त्रेणदृगश्रुसंततिंस्थितेचनन्देहरिभावविह्व
ले ॥ १८ ॥ ॥ श्रीयशोदोवाच ॥ ॥ कच्चित्स्मरतिमांकृष्णोनन्दराजमथापिवा ॥ भ्रातरंनंदराजस्यसन्नन्ददर्शनोत्सुकम् ॥ १९ ॥

उतारवेकूँ देवतानकी प्रार्थनाते सन्तनकी रक्षाके लिये जन्म लीनोहै मथूने मैं तो यह जानूँहूँ ॥ १४ ॥ नारद कहे हैं ऐसे याद करि २ के परेश भगवान्कूँ नन्दराज याद करके
चुप्प हैगये अपनो शिर तकियापै धरिके उत्कण्ठाते रोमाञ्च हैआये और विह्वल अंग हैगयो ॥ १५ ॥ नन्दराजकी नेत्रकी धाराप्रवाह वा समै उद्धवके देखत २ गद्दी तकिया
और बिछोनानकूँ भिजोयके आंगनकूँ चली ॥ १६ ॥ मथुराते आये उद्धवजीकूँ सुनिके यशोदा रानी किवारनते आय ठाडी भई अत्यन्त बेटाकी बात सब सुनी तबही नेत्रनते
जल और स्तननते दूध चुचावन लग्यौ ॥ १७ ॥ तब लाज छोडि बेटाके स्नेहते यशोदा उद्धवजीते बेटाकी कुशल पूछनलगी वा समय नन्दजीहू विह्वलभये बैठे हैं तिनके
आगे बहुधा करिके चुचावे जो आँखिनते आँसूनकी धार ताहि ओढनीते पोछती यह बोली ॥ १८ ॥ कि, हे उद्धव ! श्रीकृष्ण कबहू मेरीहू यादि करे हैं या कबहू व्रजराजकी

हू यादि करे हैं कबहू संनन्द नन्दजीके भैया जिनकूं दर्शनकी उत्कण्ठा तिनहूकी यादि करेहे ॥ १९ ॥ नौ नन्द नौ उपनन्द छै वृषभानु इनहूकी याद करें हैं जिनकी गोदीमें बैठि वनवनमें बाललीला करीही ॥ २० ॥ जिन गोपनके संग गेंद खेल्यो करेहो वे अत्यन्त स्नेह करनहारे गोप तिनहूंकी कबहू याद करेहे ॥ २१ ॥ देखो उद्धव ! एकही बेटा जा मोकूं प्राप्त भयो हो वहोतसे नही सोऊ मो दीन मैय्याकूं छोड़िके देशांतरकूं चल्यो गयो ॥ २२ ॥ हे महामते ! स्नेहवारेनको कष्टकूं कोई दूरि नही करिसकेहे हे मानके देनवारे ! पुत्रके विना मैं कहा करूं मे कैसे जीऊं हे मानद ! ॥ २३ ॥ हे मैय्या ! मोकूं दही दे, माखन दे ऐसे कहिके जो सदा घरमें हठ कर हो ॥ २४ ॥ सो मध्याह्नमें भोजन कैसे करत होयगो मेरो आत्मज बेटा श्रीकृष्ण व्रजवासीनको जीवन है व्रजको तो धन है, कुलको दीपक है और बाललीला करिके सबको मोहन है ॥ २५ ॥ वाके लालन पालन करि

नंदान्नवोपनन्दांश्चवृषभानून्व्रजेषुपद् ॥ येषमारोहमास्थायबालकेलिर्वनेवने ॥ २० ॥ कंदुकक्रीडयारेमेसानन्दंनन्दनन्दनः ॥ तान्गोपान्स्नेहसंयुक्तान्कदाचित्स्मरतिस्वतः ॥ २१ ॥ एकोयंमेसुतःप्राप्तोनसुतावहवश्चमे ॥ सोपिमांजननींदीनांययौत्यक्त्वादिगंतरम् ॥ २२ ॥ अहोकष्टंस्नेहवतांदुर्निवारंमहामते ॥ किंकरोमिविनापुत्रंकथंजीवामिमानद ॥ २३ ॥ मातर्मह्यंदेहिदधिमातर्हैयगवंनवम् ॥ एवंवदन्समधुरं हठंचक्रेसदागृहे ॥ २४ ॥ मध्याह्नेसकथंकृष्णोभोजनंकर्तुमर्हति ॥ ममात्मजोयंश्रीकृष्णोजीवनंव्रजवासिनाम् ॥ व्रजेधनंकुलेदीपोमोहनोबाललीलया ॥ २५ ॥ लालनैःपालनैस्तस्यदिनंमेक्षणवद्गतम् ॥ तद्दिनंकल्पवज्जातंविनाहोनन्दनन्दनम् ॥ २६ ॥ वत्सांश्चारयितुंकृष्णोग्रामसीम्निनदीतटे ॥ नकारितोभैकैःसार्द्धसचाहोमथुरांगतः ॥ २७ ॥ हेमोहनेतिदूरात्तमंकंनीत्वाथलालनम् ॥ चकारनंदराजोयंतंविनाखिन्नतांगतः ॥ २८ ॥ अहोदाम्नामयाबद्धोनिर्मोहिन्यैकदाशिशुः ॥ भांडेभग्नीकृतेदध्नःशोचामिचरितंचतत् ॥ २९ ॥ तत्प्रांगणंसर्वसभाचमन्दिरंसरश्चवीथीव्रजहर्म्यपृष्ठयः ॥ शून्यंसमस्तंममजीवनंधिग्विनामुकुंदंविषवच्चिदंजगत् ॥ ३० ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ यशोदानन्दयोर्वीक्ष्यपरंप्रेमलक्षणम् ॥ उद्धवोनितरांराजन्विस्मितोभूद्गतस्मयः ॥ ३१ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ रोममात्रंममतनौजिह्वाचजायतेत्वहो ॥ युवयोस्तदपिश्लाघांकर्तुंनालंमहाप्रभू ॥ ३२ ॥

वेमें सब दिन मेरो क्षणकी बराबर व्यतीत हैजातो सो दिन मेरो नन्दनन्दन विना कल्पसो मालूम परैहे ॥ २६ ॥ बछरानके चरायवेकूंभी जो श्रीकृष्णको यमुनाजीके किनारेपै गामकी सीमामेंहू मैं नही भेजतीही सो कृष्ण देखो मथुराको चल्योगयो है ॥ २७ ॥ नंदराज जाकूं हे मोहन ! ऐसे कहिके दूरतेंई गोदीमें लैके लाड लडावते हे सो नंदराज वा कृष्ण विना खिन्नमन हैरहे हैं ॥ २८ ॥ हाय ! मैंने एक दिन निर्मोहिनीने रस्सीते बालक बांधिदियो दहीको माट वाने फोडडाल्यो हो वा चरित्रकूं मैं शोच करूं हूं ॥ २९ ॥ वही आंगन, सभा, सबरो मंदिर, सरोवर व्रजकी गली और महलनकी छत्त और सबरो जगत् श्रीकृष्ण विना मोय विषके तुल्य दीखे है ॥ ३० ॥ नारदजी कहे हैं कि, नंदयशोदाको परम प्रेमको लक्षण देखिके उद्धव अत्यंत अचंभेमें आयगयो और यह कहनलग्यो ॥ ३१ ॥ उद्धवजी बोले कि, जितने मेरो शरीरमें रोंगटा हैं तितनी जीभ हैजाय

तोक हे महाप्रभु ! तुम दोनोंकी बडाई करिवेमें मैं समर्थ नहीं होऊं ॥ ३२ ॥ परिपूर्णतम साक्षात् पुरुषोत्तम श्रीकृष्णमें तुमारी प्रेमलक्षणा ऐसी भक्ति है ॥ ३३ ॥ तीर्थाटन तप, दान, सांख्य योग इनतेऊ ते जो दुर्लभ प्रेमभक्ति है सो प्रेमलक्षणा भक्ति तुमकूंनिरंतर प्राप्त भईहै ॥ ३४ ॥ हे नंदराज ! हे यशोदे ! व्रजेश्वरी तुम शोच मति करो आपु माता पितानकूं द्वै चिट्ठी कृष्णने दीनी है तिने लेउ ॥ ३५ ॥ बडे भैयासहित तुमारो बेटा मधुपुरीमें प्रसन्न है बलदेवके संग यादवनको बडो काम करिके स्थित है ॥ ३६ ॥ थोडेई दिननमें आवेगो तुमारो बेटा श्रीकृष्ण साक्षात् परिपूर्ण परब्रह्म है कंसादि दैत्यनके मारिवेके लिये और संतनकी रक्षाके लिये ॥ ३७ ॥ ब्रह्माजीकी प्रार्थनाते तुमारे घरमें जन्म लीनोंहै जन्म लेतही बलदेवजीके संग अद्भुत लीला जिनने करी ॥ ३८ ॥ पूतनाके प्राण हरे, शकटासुर मार्यो, तृणावर्तकूं आकाशते गेर्यो, यमलार्जुन वृक्ष

परिपूर्णतमेसाक्षाच्छ्रीकृष्णेपुरुषोत्तमे ॥ ईदृशीचकृताभक्तिर्युवाभ्यांप्रेमलक्षणा ॥ ३३ ॥ तीर्थाटनतपोदानसांख्ययोगैश्चदुर्लभा ॥ शाश्वती
युवयोःप्राप्तायाभक्तिःप्रेमलक्षणा ॥ ३४ ॥ माशोचंकुरुहेनन्दहेयशोदेव्रजेश्वरि ॥ पत्रद्वयंगृहाणाशुकृष्णदत्तंनसंशयः ॥ ३५ ॥ सहाग्रजो
नन्दसूनुःकुशल्यास्तेयदोःपुरि ॥ यादवानांमहत्कार्यंकृत्वाथसबलःशुभः ॥ ३६ ॥ स्वल्पकालेनचात्रापिभगवानागमिष्यति ॥
परिपूर्णतमंविद्धिश्रीकृष्णंनन्दनन्दनम् ॥ कंसादीनांवधार्थायभक्तानांरक्षणायच ॥ ३७ ॥ ब्रह्मणाप्रार्थितःकृष्णोवतताररगृहेतव ॥ जातमा
त्रोऽद्भुतांलीलांचकारसबलोहरिः ॥ ३८ ॥ पूतनाप्राणहरणंशकटस्यनिपातनम् ॥ तृणावर्त्तनिपातश्चयमलार्जुनभंजनम् ॥ ३९ ॥ स्वमुखे
चयशोदायैविश्वरूपस्यदर्शनम् ॥ वृन्दावनेचभगवान्गोवत्सांश्चारयन्प्रभुः ॥ ४० ॥ वधंचकारगोपानांपश्यतांवकवत्सयोः ॥ अघासुर
स्यचवधोधेनुकस्यविमर्दनम् ॥ ४१ ॥ मर्दनंकालियस्यापिवह्निपानंचकारह ॥ प्रलंबस्यवधंपश्चाद्बलदेवश्चकारह ॥ ४२ ॥ गोवर्द्धनं
समुत्पाट्यहस्तेनैकेनलीलया ॥ युष्माकंपश्यतांबिभ्रत्पुष्करंगजराडिव ॥ ४३ ॥ चूडामणिंशंखचूडाज्जहारजगतांपतिः ॥ अरिष्टस्य वधंकृत्वा
केशिनंनिजघानह ॥ ४४ ॥ व्योमासुरंमहादैत्यंमुष्टिनातंममर्दह ॥ तथात्रैवमथुरायांतुचक्रेचित्रंमहामते ॥ ४५ ॥ विकथ्यमानंरजकंकरेणाभि
जघानतम् ॥ प्रचण्डंकंससकोदंडंमध्यतस्तद्बभंजह ॥ इक्षुदण्डंयथानागःसर्वेषांपश्यतांनृणाम् ॥ ४६ ॥

उखारे ॥ ३९ ॥ मैयाकूं अपने मुखमें सब विश्व दिखायो वृंदावनमें जाते गौ बछरा चराये ॥ ४० ॥ गोपनके देखत वत्सासुर, बकासुर मारे अघासुर मार्यो, धेनुकासुर मार्यो ॥ ४१ ॥ कालीनागको मर्दन कर्यो जैसे दावानलको पान कर्यो पीछे बलदेवने प्रलंबासुर मार्यो ॥ ४२ ॥ गोवर्द्धन उखारिके सात दिन ताईं एक हाथपै धर्यो हमारे देखते देखते जैसें मतवारो हाथी कमलके फूलकूं उठायलेहै ॥ ४३ ॥ शंखचूडकी चूडामणि लेके मारि डार्यो अरिष्टासुरकूं मार्यो केशीको मार्यो ॥ ४४ ॥ व्योमासुर महादैत्यकूं घूसाहीते मार्यो तैसेई मथुरामें हे महामते ! कैसो अचंभो कीनो ॥ ४५ ॥ बकवाद करते धोबीकूं जाने तमाचेहीते मार्यो और सबनके देखत २ प्रचंड कोदंडकूं गांडेकी

नाई जाने तोडडार्यो ॥ ४६ ॥ दशहजार हाथीनको बल जामें ता कुवलयापीड हाथीकूं सूंडि पकरिके देमार्यो ॥ ४७ ॥ मल्लयुद्धमें चाणूर, मुष्टिक, शल, तोशल इन सबनकों माधवने कुश्तीमें जाने मारके धरतीमें गेरादिये ॥ ४८ ॥ लाख हाथीको बल मदमें उत्कट ऐसे कंसकूं मचानपेंते चुटिया पकरिकें अपनी भुजानके बलते फिरायके ॥ ४९ ॥ धरतीमें देमार्यो बालक जैसे कमंडलुकूं देमारे है फिर आपहू वाके ऊपर जाय परे हाथीके ऊपर जैसे सिंह ॥ ५० ॥ ऐसेई कंकादिक कंसके आठ भैयानकूं महाबल बलदेवने मुद्गरते मीडिडारे मृगनकूं मृगराज जैसे ॥ ५१ ॥ गुरूनकूं दक्षिणा देवेके लिये शंखरूपी पंचजन दैत्यकूं समुद्रमें कूदके मारतो भयो ॥ ५२ ॥ हे महानंद अद्भुत चरित्र हरि विना कहो कौन करै ता हरिके अर्थ मेरो नमस्कार है ॥ ५३ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां मथुराखंडे भाषाटीकायामुद्धवमेलनं नाम चतुर्दशोऽध्या

द्विपंकुवलयापीडंनागायुतसमंबले ॥ शुंडादण्डेसंगृहीत्वापातयामासभूतले ॥ ४७ ॥ चाणूरंमुष्टिकंकूटंशलंतोशलमेवच ॥ पातयामासभूपृष्ठे मल्लयुद्धेनमाधवः ॥ ४८ ॥ कंसंमदोत्कटंदैत्यंनागलक्षसमंबले ॥ मंचाद्गृहीत्वातंकृष्णोभ्रामयित्वाभुजौजसा ॥ ४९ ॥ पातयामासभूपृष्ठेकमंडलुमिवार्भकः ॥ इभोपरियथासिंहस्तस्योपरिपपातह ॥ ५० ॥ कंसानुजांश्चकंकादीन्बलदेवोमहाबलः ॥ ममर्दमुद्गरेणाशुमृगान्हैमृगराडिव ॥ ५१ ॥ गुरवेदक्षिणांदातुंसमुत्पत्यमहार्णवे ॥ शंखरूपंपंचजनंनिजघानहरिःस्वयम् ॥५२॥ अद्भुतानिचरित्राणिचैतानिश्रीहरिंविना ॥ कःकरोतिमहानंदतस्मैश्रीहरयेनमः ॥ ५३ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमथुराखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेनंदराजोद्धवमेलनंनामचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवंहिनंदोद्धवयोर्हरेःकथयतोःकथाम् ॥ व्यतीताक्षणवद्राजन्क्षणदाहर्षवर्द्धिनी ॥ १ ॥ ब्राह्मेमुहूर्तेचोत्थायगोप्यःसर्वागृहेगृहे ॥ देहल्यंगणमालिप्यदीपांस्तत्रनिरूप्यच ॥ २ ॥ प्रक्षाल्यहस्तपादौचमथन्यांनेत्रंनिधायच ॥ ममंथुःसर्वतोयुक्ताःपिच्छिलानिदधीनिताः ॥ ३ ॥ नेत्राकर्षचलद्बाहुभुजकंकणकंकणाः ॥ वेणीभ्योविगलत्पुष्पाःस्फुरत्कुंडलमंडिताः ॥ ४ ॥ चंद्रमुख्यःकंजनेत्राश्चित्रवर्णैर्मनोहराः ॥ मंगलानिचरित्राणिश्रीकृष्णबलदेवयोः ॥ ५ ॥ गायंत्यःप्रेमसंयुक्तायत्रयत्रगृहेगृहे ॥ घोषेघोषेशुभागावोरंभमाणा इतस्ततः ॥ ६ ॥ सर्वत्रगोपिकागीतंदधिशब्देनमिश्रितम् ॥ वीथ्यांवीथ्यांततःशृण्वन्विस्मितश्चोद्धवोब्रवीत् ॥ ७ ॥

यः ॥ १४ ॥ नारद कहैहैं ऐसे नंदजीकूं और उद्धवजीकूं बतरात २ हर्षमें सबरी राति एक छिनकी बराबर व्यतीत हैगई ॥ १ ॥ अब ब्राह्ममूहूर्तमें गोपी अपने २ घरमें उठिकें देहरी आंगन लीपिके देहरीनपै दीपक ओरि २ के धरत भई ॥ २ ॥ हाथ पांउ धोय दांतिन करि स्नान करि मथनीयानमें रई धारि चीकने दहीनकूं मथनलगीं ॥ ३ ॥ नेतीके खेचिवेते चलायमान जे भुजदंड तिनमें बजेहैं कंकण कंकनिया छन पछेली चुडी जिनकी और वेनीमेंते फूल झरतजायहैं और झलमलाते कुंडलनते मंडित हैं मुखचंद्र जिनके ॥ ४ ॥ वे चंद्रमुखी कमलनैनी चित्र विचित्र चमकनी चूंदरी ओढे श्रीकृष्ण बलदेवके मंगल चरित्रनकूं गामती ॥ ५ ॥ जहां तहां घर घरमे प्रेमभरी कृष्णलीला गामेंहैं खिरक २ मे गौं रम्हाय रहीहैं इत वितमें ॥ ६ ॥ सब जगह गोपीनको गीत दधिमंथनके शब्दसों

मिल्यौ सुनिके गली गलीमें विस्मित है उद्धवजी बोले ॥ ७ ॥ अहो ! बडे अचंभेकी बात है कि, या नंदनगरमें, तो भक्तिरानी सब जगह नृत्य करैहै ऐसे कहत नगरके बाहिर निकरि जमुनाजीपै स्नान करिवेकूं गये ॥ ८ ॥ तब रथकूं देखिके गोपी बोली कि, यह रथ कौनको आयोहै कहूं वह क्रूर अक्रूरही तौ फिर नहीं आयोहै जो कम ललोचन नंदनंदनकूं मधुपुरीकूं लैगयोहो ॥ ९ ॥ कोनसी खोटी घडीमें मैय्याने स्नेही जे सत्पुरुष तिनके ताप देवेकूं जन्यो हो जैसे कद्रूने विषधरनागनको समुदाय वृथा लोक जननको नाशकर्ता जनो ॥ १० ॥ सो कंसको मतलब करिवेवारो कंसको सखा वो अक्रूर सोई निर्दयी तो कहूं व्रजमंडलमें नहीं आयौहै हमारे प्राणनते कहूं भर्ता कंसकी परलोककी क्रिया तो नहीं करैगो ॥ ११ ॥ नारदजी कहैहैं कि, ऐसे कहती व्रजकी गोपवधू सोवतो गतबुद्धि बडो आर्त जो सारथी ताको द्वै उंगरीयानते हलायके पूछन

अहोवैनंदनगरेभक्तिर्नृत्यतियत्रच ॥ एवंवदन्बहिर्ग्रामाद्ययौस्नातुंनदीजले ॥ ८ ॥ ॥ गोप्यऊचुः ॥ ॥ कस्यायमद्यात्ररथःसमागतोक्रूरोथवाक्रू
रतागतःपुनः ॥ येनैवनीतोमधुरांमहापुरींश्रीनंदसूनुर्नवकंजलोचनः ॥ ९ ॥ कस्मिन्कुकालेजननीससर्जयंदातुंसतांस्नेहवतांप्रतापनम् ॥
कद्रूर्यथानागचयंविषावृतंहंतुंवृथालोकजनानितस्ततः ॥ १० ॥ कंसार्थकृत्कंससखोतिनिर्घृणोसोयंपुनःकिंव्रजमंडलंगतः ॥ भर्तुर्मृतस्यापि
हिपारलौकिकीमस्माभिरद्यैवकरिष्यतिक्रियाम् ॥ ११ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवंवदंत्योव्रजगोपवध्वःसंताड्यसूतंचमुखेंगुलिभ्याम् ॥ पप्र
च्छुराराद्गतबुद्धिमार्तस्वरंवदैतत्किलकस्ययानम् ॥ १२ ॥ घनप्रभंपद्मदलायतेक्षणंकृष्णाकृतिंकोटिमनोजमोहनम् ॥ पीतांबरंषट्पदसंघसंकु
लांमालांदधानंनववैजयंतीम् ॥ १३ ॥ स्फुरत्सहस्रच्छदपद्मपाणिंवंशीधरंवेत्रकरंमनोहरम् ॥ बालार्ककोटिद्युतिमौलिमंडनंमहामणिकुंडलमं
डितानम् ॥ १४ ॥ गत्याकृतिश्रीतनुहाससुस्वरैःश्रीकृष्णसारूप्यधरंतमुद्धवम् ॥ विलोक्यसर्वानृपविस्मितास्ततोविज्ञायगोविंदसखंययुः
पुरः ॥ १५ ॥ ज्ञात्वाथसन्देशहरंहरेःप्रभोःसुवाक्यनीत्यापरमादरेणतम् ॥ गुप्तंहिपृष्ट्वाकुशलंसतांपतेर्नीत्वोद्धवंताःकदलीवनंगताः ॥ १६ ॥
यत्रैवराधावृषभानुनन्दिनीकृष्णातटेचारुनिकुंजमन्दिरे ॥ समास्थितातद्विरहातुराभृशंखंमन्यतेसातुजगद्धरिंविना ॥ १७ ॥

लगी अरे ! यह कौनको रथ है जलदी बोलि ॥ १२ ॥ इतनेईमें उद्धवजी न्हायके चले आये कैसे है उद्धवजी घनसे श्यामसुंदर, कमलसे लोचन, श्रीकृष्णकी उनिहार किरोड कामदेवके मोहन, मुकुट, पीतांबर, ओढें वैजयंती माला फूलनकी माला पहरे तिनपे भौंरा गुंजारे ॥ १३ ॥ हजारा कमल जिनके हाथमें, बांसुरी लीये, बेत धरे, बालकसे किरीट मुकुट पहरें, मणि धरें, कुंडलनते मंडित मुख जिनको मनोहर ॥ १४ ॥ चालिते, उनिहारते, शोभाते, शरीरते, हँसीते, बोलीते श्रीकृष्णसोई मालूम परैहै तिनकूं देखि हे नृप । सबरी गोपी विस्मित हैके श्रीकृष्णको सखा जानि अगाडी आयगई ही ॥ १५ ॥ हरिको संदेशेको हरनहारो जानिके सुंदर नीतिकी वाणीकी रीतिते बडे आदरते गुप्त संतनके पतिकी कुशल पूछिवेकूं सब गोपी उद्धवजीकूं कदलीवनमे लेगई ॥ १६ ॥ जहां वृषभानुनंदिनी श्रीराधिकाजी कालिन्दीके किनारेपे निकुंज मंदिरमें

श्रीकृष्णके विरहमें अत्यंत आतुरी कृष्ण विना सब जगत्कूं शून्य मानती विराज रही हीं ॥ १७ ॥ केलाके पत्तानतें चंदनकी कीचतें पहले जुह मेघमंदिर अत्यंत शीतल हो और यमुनाजीकी लहरीकी बूंदनतें और चंद्रमाकी किरणतें चुचावत जो अमृत तातें अत्यंत सुगंधित शीतल हो ॥ १८ ॥ ऐसो जो कदलीवनसो राधाके वियोगकी अग्नितें संपूर्ण अत्यन्त भस्म हैगयो एक कृष्णागमनकी आशातें शरीरकूं राखिरही है ॥ १९ ॥ कृष्णको सखा उद्धवकूं आयो सुनिके अपनी सखीनतें अर्घ, पाद्य, आसन, जल, मधुपर्क, भोजन, पान बीरी, इलायची, अतर, माला, गुंजा औरहू मंगलवस्तुनतें सत्कार करावतीभई श्रीकृष्ण २ ऐसें वारंवार कहत ॥ २० ॥ जैसे चन्द्रमाकी कलाके विना अमावास्याकी रात्रि खिन्न होय है ऐसी गोविन्दके विरहसो विरहिनी व्याकुलताके मारे झुकगयेहैं कंधा जाके और अत्यन्त कृश हैगईहै ऐसी राधातें हाथ जोड परिक्रमा कर प्रसन्न

रंभादलैश्चंदनपंकसंचयंपुरास्फुरच्छीतलमेघमंदिरम् ॥ कृष्णाचलच्चारुतरंगसीकरंस्वतःसुधारश्मिगलत्सुधाचयम् ॥ १८ ॥ एतादृशंयत्कदलीवनंचतद्राधावियोगानलवर्चसाभृशम् ॥ बभूवसर्वंसततंहिभस्मसात्कृष्णागमाशात्मतनुंहिरक्षति ॥ १९ ॥ श्रुत्वोद्धवंकृष्णसखंसमागतंचकाराराधास्वसखीभिरादरम् ॥ जलाशनाद्यैर्मधुपर्कमंगलैःश्रीकृष्णकृष्णेतिमुहुर्वदंत्यलम् ॥ २० ॥ राधांहिगोविन्दवियोगखिन्नांकुहूंयथाचन्द्रकलांतदोद्धवः ॥ नतांकृशांगींकृतहस्तसम्पुटःप्रदक्षिणीकृत्यजगादहर्षितः ॥ २१ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ सदास्तिकृष्णःपरिपूर्णदेवोराधेसदात्वंपरिपूर्णदेवी ॥ श्रीकृष्णचन्द्रःकृतनित्यलीलोलीलावतीत्वंकृतनित्यलीला ॥ २२ ॥ कृष्णोस्तिभूमात्वमसींदिरासदाब्रह्मास्तिकृष्णस्त्वमसिस्वरासदा ॥ कृष्णःशिवस्त्वंचशिवाशिवार्थाविष्णुःप्रभुस्त्वंकिलवैष्णवीपरा ॥ २३ ॥ कौमारसर्गेहरिरादिदेवतत्वमेवहिज्ञानमयीस्मृतिःशुभा ॥ लयांभसाक्रीडनतत्परोहरिर्यज्ञोवराहोवसुधात्वमेवहि ॥ २४ ॥ देवर्षिवर्योमनसाहरिःस्वयंत्वंतत्रसाक्षान्निजहस्तवल्लकी ॥ नारायणोधर्मसुतोनरेणहिशांतिस्तदात्वंजनशांतिकारिणी ॥ २५ ॥ कृष्णस्तुसाक्षात्कपिलोमहाप्रभुःसिद्धिस्त्वमेवासिचसिद्धसेविता ॥ दत्तस्तुकृष्णोस्तिमहामुनीश्वरोराधेसदाज्ञानमयीत्वमेवहि ॥ २६ ॥

हैके बोले ॥ २१ ॥ तब उद्धवजी बोले कि, परिपूर्ण देव श्रीकृष्ण तो सदाई विराजै हैं परिपूर्ण देवी श्रीराधिका तुमहू सदाही विराजो हो श्रीकृष्णचंद्र नित्यही लीला करैहैं तुमहू लीलावती नित्य लीला करोहो ॥ २२ ॥ जब कृष्ण भूमा होय है तब तुम लक्ष्मी हैजाओ हो, जब कृष्ण ब्रह्मा बनैहैं तब तुम स्वरा होओहो, जब श्रीकृष्ण शिव होयहैं तब तुम पार्वती बनो हो, और जब श्रीकृष्ण विष्णु होयहैं तब तुम वैष्णवी होओहो ॥ २३ ॥ जब श्रीकृष्ण सनक, सनंदन, सनातन, सनत्कुमार बनैहै तब तुम आदि देवता बनोहो ज्ञानमयी स्मृति होओहो जब जलक्रीडामें तत्पर श्रीकृष्ण यज्ञवाराह बनैहैं तब तुम पृथ्वी बनोहो ॥ २४ ॥ जब मन करिके श्रीकृष्ण नारद बनैहैं तब तुम वीना बनोहो जब श्रीकृष्ण धर्मके बेटा नरनारायण होंय, हैं तब तुम मनुष्यकी शांति करनवारी शांति होवोहो ॥ २५ ॥ जब महाप्रभु श्रीकृष्ण कपिल होयहैं तब तुम सिद्धनकी सेवनकरी सिद्धि होवहो जब श्रीकृष्ण महामुनि दत्तात्रेय

होयँहैं तब तुम ज्ञानमयी सिद्धि होउहो ॥ २६ ॥ जब श्रीकृष्ण यज्ञ होंयँहैं तब तुम दक्षिणा होउहो जब हरि उरुक्रम वामन होंयँहैं तब तुम जयंती होउहो जब श्रीकृष्ण सर्व नृपे
श्वर पृथु बनेहैं तब तुम अर्चि नृपपटरानी होउहो ॥ २७ ॥ जब श्रीकृष्ण शंखासुरकूं मारिबेकूं मत्स्य अवतार धरेहै तब तुम श्रुतिरूप भयोहो जब हरि समुद्रके मथनमें
कछुवाको रूप धरेहैं तब तुम सर्परूपी नेती बनौहो ॥ २८ ॥ जब श्रीकृष्ण पीडाके हरनहारे धन्वंतरि बनेहैं तब हे शुभे ! तुम संजीवनी औषधी बनौहो जब श्रीकृष्ण मोहनी रूप
धरेहै तब जगतमोहनी तुमही होउहो ॥ २९ ॥ नृसिंहलीलाकरिके जब श्रीकृष्ण नृसिंह बनेहैं तब तुम भक्तवत्सला लीलारूपा होउहो जब वामन बनेहै तब तुम कीर्ति बनौहो
जो अपने लोकमें कीर्तन करीहो ॥ ३० ॥ हरि जब परशुराम होंयहै तब कुठारकी धारा तुमही होउहो जब श्रीकृष्ण रघुवंश चंद्रमा होयेंहै तब तुम जानकी होउहो ॥ ३१ ॥ जब

यज्ञोहरिस्त्वंकिलदक्षिणाहरिरुरुक्रमस्त्वंहिसदाजयंत्यतः ॥ पृथुर्यदासर्वनृपेश्वरोहरिरर्चिस्तदात्वंनृपपट्टकामिनी ॥ २७ ॥ शंखासुरंहंतुमभूद्ध
रिर्यदामत्स्यावतारस्त्वमसिश्रुतिस्तदा ॥ कूर्मोहरिर्मंदरसिन्धुमंथनेनेत्रीकृतात्वंशुभदाहिवासुकेः ॥ २८ ॥ धन्वंतरिश्चार्तिहरोहरिःपरस्त्वमौ
षधीदिव्यसुधामयीशुभे ॥ श्रीकृष्णचन्द्रस्तुबभूवमोहिनीत्वंमोहिनीतत्रजगद्विमोहिनी ॥ २९ ॥ हरिर्नृसिंहस्तुनृसिंहलीलयालीलातदात्वंनि
जभक्तवत्सला ॥ बभूवकृष्णस्तुयदाहिवामनःकीर्तिस्तदात्वंनिजलोककीर्तिता ॥ ३० ॥ हरिर्यदाभार्गवरूपधृग्वपुमान्धाराकुठारस्यतदात्वमे
वहि ॥ श्रीकृष्णचन्द्रोरघुवंशचंद्रमायदातदात्वंजनकस्यनंदिनी ॥ ३१ ॥ श्रीशार्ङ्गधन्वामुनिबादरायणोवेदांतकृत्त्वंकिलवेदलक्षणा ॥ संक
र्षणोमाधववृष्णिरेवत्वंरेवतीब्रह्मभवासमास्थिता ॥ ३२ ॥ बुद्धोयदाकौणपमोहकारकोबुद्धिस्तदात्वंजनमोहकारिणी ॥ कल्कीयदाधर्मपतिर्भ
विष्यतिहरिस्तदात्वंतुकृतिर्भविष्यसि ॥ ३३ ॥ श्रीकृष्णचंद्रोस्तिहिचंन्द्रमंडलेराधेसदाचन्द्रमुखीतिचन्द्रिका ॥ श्रीकृष्णसूर्योदिविसूर्यमंड
लेसूर्य्यप्रभात्वंपरिधिःप्रतिष्ठिता ॥ ३४ ॥ इंद्रःसदास्तेकिलयादवेन्द्रस्त्वमेवराधेतुशचीशचीश्वरी ॥ हिरण्यरेताहिहरिःपरेश्वरोहितिःसदात्वं
हिहिरण्मयीपरा ॥ ३५ ॥ श्रीराजराजोहिविराजतेहरिर्विराजतेत्वंतुनिधीनिधीश्वरी ॥ क्षीराब्धिरूपीतुहरिस्त्वमेवहितरंगितक्षौमसितातरंगि
णी ॥ ३६ ॥ बिभ्रद्वपुःसर्वपतिर्यदायदातदातदात्वंविदितानुरूपिणी ॥ जगन्मयोब्रह्ममयोहरिःस्वयंजगन्मयीब्रह्ममयीत्वमेवहि ॥ ३७ ॥

शार्ङ्गधन्वा हरि बादरायण व्यास होयेहै तब तुम वेदांतवाणी होवहो जब संकर्षण होयेंहै तब तुम रेवती होऔहो ॥ ३२ ॥ जब श्रीकृष्ण राक्षसनकू मोह करबेको बुद्ध होयेहे तब
तुम जगन्मोहनी बुद्धि होउहो जब भगवान् कल्कि होयगे धर्मके पति तब तुम कृति होउगी ॥ ३३ ॥ श्रीकृष्ण जब चंद्रमंडल होंयगे तब हे चंद्रमुखि ! हे राधे ! तुम चांदनी
होउगी जब श्रीकृष्ण सूर्य्यमंडल होयगे तब तुम सूर्यकी प्रभा धूप होउगी ॥ ३४ ॥ जब ये इन्द्र हैके विराजेहै तब तुम शची होउहो जब हिरण्यरेता हरि होयेंहै तब तुम
हिरण्यमयी होवहो ॥ ३५ ॥ जब हरि कुबेर होयेंहै तब तुम निधि होउहो जब क्षीरसमुद्र हरि होयेंहै तब तुम सुपेद सूक्ष्म तरंग होवहो ॥ ३६ ॥ सोई प्रभू अब व्रजराजनंदन
भये है तब तुम वृषभानुनंदनी राधा भई हो या प्रकार जब जब सर्वपति [भगवान् जैसो जैसो] रूप धारण करेहै तब तब तुम तदनुसारि रूप धारण करौहो जगन्मय ब्रह्ममय

हरि हे सोई जगन्मयी ब्रह्ममयी तुम हो जिन तुम दोनोंने सबकी शांतिके अर्थ सत्यमयी लीला चरित्रनकरिकै मनोहर सतोगुणी लीला करीहै ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ श्रीकृष्ण तो स्वयं ब्रह्म परब्रह्म हे पुराणपुरुष हैं तुम तो श्रीकृष्णकी इच्छारूप प्रकृतिरूप लीलाशक्ति हो तुम दोनोनको परस्पर शरीर मिल्योभयो हे ऐसे जे तुम श्रीकृष्ण राधिका हो तिनकूं मेरी नमस्कार है ॥ ३९ ॥ अब या पत्रकूं लीजिये तुमारे नाथने दीनो हैं हे राधिके ! तुम परम शोचकूं मति करो और थोडेई दिननमें वहांको काम करिके आमेंगे ये बात मोंत आपुने कहिदीनी है ॥ ४० ॥ औरहू श्रीकृष्णने सैकरन मंगल चिट्ठी दीनी है तिनकुं लीजिये कृष्णकी प्यारी ब्रजसुंदरीनके यूथ हें तिनकूं दीजिये ॥ ४१ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां मथुराखंडे भाषाटीकायां नारदबहुलाश्वसंवादे श्रीराधादर्शनं नाम पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ नारदजी कहेंहें तब राधा श्रीकृष्णके पत्रकुं हाथमें लैके माथेते नेत्रनते

अथैवसोयंव्रजराजनंदनोजातासिराधेवृषभानुनंदिनी ॥ याभ्यांकृतासत्त्वमयीप्रशांतयेलीलाचरित्रैर्ललितादिलीलया ॥ ३८ ॥ कृष्णःस्वयंब्रह्मपरंपुराणोलीलात्वदिच्छाप्रकृतिस्त्वमेव ॥ परस्परंसंधितविग्रहाभ्यांनमोयुवाभ्यांहरिराधिकाभ्याम् ॥ ३९ ॥ गृहाणपत्रंनिजनाथदत्तंशोकंपरंमाकुरुराधिकेत्वम् ॥ ह्रस्वेनकालेनविधायकार्यंतत्रागमिष्यामितदुक्तवाक्यम् ॥ ४० ॥ गृह्णीध्वमद्यैवशतानिकृष्णदत्तानिपत्राणिसुमंगलानि ॥ प्रत्यर्पितंयूथशतंचगोप्यःकृष्णप्रियाणांव्रजसुन्दरीणाम् ॥ ४१ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांमथुराखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेश्रीराधादर्शनंनामपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ राधापत्रंसंगृहीत्वाशिरोनेत्रंतथाचहृत् ॥ निधायवाचयित्वातत्स्मृत्वातत्पादपंकजम् ॥ १ ॥अतिप्रेमातुराराजन्मोचयित्वाश्रुसंततिम् ॥ मूर्च्छामापपरांराधायादवस्यप्रपश्यतः ॥२॥ कुंकुमागरुपाटीरद्रवैःपुष्परसैश्चसा ॥ अर्चिताचामरांदोलैःपुनश्चैतन्यतांगता ॥ ३ ॥ वियोगसिन्धुसंमग्नांराधांकमललोचनाम् ॥ वीक्ष्योद्धवस्तथागोप्योमुमुचुश्चाश्रुसंततिम् ॥४॥तासामश्रुप्रवाहेणराजन्वृन्दावनेवने ॥ सद्यःकह्लारसंयुक्तोजातोलीलासरोवरः ॥ ५ ॥ दृष्ट्वापीत्वाचसुस्नात्वाश्रुत्वाचेमांकथांनरः ॥ कर्मबंधविनिर्मुक्तःश्रीकृष्णंप्राप्नुयान्नृप ॥ ६ ॥ अथोद्धवमुखाच्छ्रुत्वाश्रीकृष्णागमनम्पुनः ॥ पप्रच्छुःकुशलंसर्वंश्रीकृष्णस्यमहात्मनः ॥ ७ ॥

हृदयते लगायके बांचिके धरिलीनो फिर कृष्णके चरणको स्मरण करनलगी ॥ १ ॥ हे राजन् ! अतिप्रेममें आतुरी आँखिनमेंते आंसू गेरत उद्धवजीके देखत २ राधा परम मूर्च्छाकूं प्राप्त हैगई ॥ २ ॥ केशर, कपूर, अगर, चंदन, अतर, गुलाब, चमेली, सेवती, केवडे, इनके जलनते छिरकी और बीजना, चौंर, बहुत कीने तब राधिका चैतन्य भई ॥ ३ ॥ जब राधिका कमलनयनी कृष्णवियोगके समुद्रमें डूबिगई तब तो गोपीहू रोमनलगीं और उद्धवजीहू रोमन लगे ॥ ४ ॥ ता राधिकाके आंसूनके प्रवाहकरिके हालही हे राजन् ! वृन्दावनमें एक लीलासरोवर भरिगयो लाल २ कमल जामें उपजि आये ॥ ५ ॥ जा सरोवरकूं देख जाको जल पीवे स्नान करै और या कथाकूँ सुने तो हे नृप ! कर्मबन्धनते छूटिके श्रीकृष्णकूँ प्राप्त होय ॥ ६ ॥ जब उद्धवजीके मुखते श्रीकृष्णको फिर आगमन सुन्यो तब तो फिरहू महात्मा श्रीकृष्णकी कुशल

पुछनलगी ॥ ७ ॥ राधा बोली आनंदके दाता श्रीव्रजराजनंदन श्यामसुंदर तिनकूं में कब देखूंगी मोरिनी घनकूं जैसे उत्कंठित और चकोरी चंद्रमाकूं देखवेकों जैसे उत्कंठित होयहै ॥ ८ ॥ कौनसी कुघडीमें मेरो श्रीकृष्णते वियोग भयो जा वियोगते मोकूं छिन छिन एक २ कल्पकी बराबर बीतेहै और ये राति मोको गोविंदके पदद्वयके विना द्विपरार्धका लकी हांसी करेहै विकलता होयहै ॥ ९ ॥ में यह पुछुहूं कबहूं श्रीकृष्ण व्रजमें आयेंगे तो आपके कहा करेंगें ये कहो अबतलक तो बडे जतनते प्राण राखे है अब आमेंगे ऐसे इन झूंठी वाणीनते आतुर हैके ये मेरे प्राण जोरावरी निकरिजायेंगे ॥ १० ॥ हे उद्धव ! तोहि देखिके क्षणभर मेरो हृदय सीरो भयो है तेरे आयवेते मे ऐसी प्रसन्न भई जैसे पहले हनूमानके लंकापुरीमें आयेते जानकी प्रसन्न भईही ॥ ११ ॥ आशा देके अपने मोहरूपी धनकूं छोडिके अपने वचनकूं भूलिके जे मथुराकूं चलेगये ताको लिख्यो जो

॥ ॥ राधोवाच ॥ ॥ आनंददंश्रीव्रजराजनंदनंद्रक्ष्यामिकस्मिन्समयेघनप्रभम् ॥ घनंमयूरीवसमुत्सुकाभृशंचंद्रंचकोरीवतदीक्षणोत्सुका ॥८॥
कस्मिन्कुकालेविरहोबभूवमेयेनैवकोकल्पसमःक्षणःक्षणः॥ निशीथिनीयंद्विपरार्द्धहेलनंकरोतिगोविंदपदद्वयंविना ॥९॥ कच्चित्कदाचिद्व्रजमाग
मिष्यतिकरोतिकिंतन्नहरिर्वदाशुमे ॥ अद्यैवयत्नेनधृताःकिलासवःप्रसह्यनिर्यातिमृषागिरातुराः ॥१०॥ दृष्ट्वाक्षणंत्वांममहृच्छीतलंजातंप्रसन्ना
स्मिसमागतेत्वयि ॥ यथाप्रसन्नाजनकात्मजापुरालंकापुरंवायुसुतेसमागते ॥ ११ ॥ आशांविधायनिजमोहधनंविसृज्यविस्मृत्यवाक्यगदितं
मधुरांगतोयः ॥ तस्यापिपत्रलिखितंशमृतंनमन्येतंचानयस्वकिलमंत्रविदांवरिष्ठ ॥ १२ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ गत्वापुरींतवपरंविरहंनिवे
द्यार्थार्घविधायनिजनेत्रजलेनराधे ॥ नीत्वाहरिंतवपुरःपुनरागतोस्मिमाशोकमत्रकुरुमेशपथस्त्वदंघ्रेः ॥ १३ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ अथप्र
सन्नाश्रीराधाचन्द्रकांतौमणीशुभौ ॥ रासरंगेचन्द्रदत्तौउद्धवायददौनृप ॥ १४ ॥ सहस्रदलपद्मंद्वेदत्तेचंद्रमसापुरा ॥ उद्धवायददौराधाप्रसन्ना
भक्तवत्सला ॥ १५ ॥ छत्रंसिंहासनंदिव्यंचामरेद्वेमनोहरे ॥ श्रीकृष्णमनसोद्भूतेददौतस्मैहरिप्रिया ॥ १६ ॥ ऐश्वर्यंज्ञानसंपन्नंसर्वदेशिकदेशि
कम् ॥ कृष्णसंयोगकर्तृत्वंसदातत्रभविष्यति ॥१७॥ भक्तिंनिर्गुणभावाढ्यांप्रेमलक्षणसंयुताम् ॥ ज्ञानंविज्ञानसहितंवैराग्यंसाददौपुनः ॥१८॥

पत्र है ताहि कल्याणकर्ता सत्य नहीं मानूहूं हे मन्त्रीनमें श्रेष्ठ ! तू उनें लेआऊ ॥ १२ ॥ अब उद्धवजी बोले मधुपुरीमें जायके तुमारो परम विरह निवेदन करिके और अपने नेत्रनके पानीसो उनको अर्घ देके श्रीकृष्णकूं संग लेके तुमारे पास आऊंगो हे राधिके ! तुम सोच मतिकरो मोकूं तुमारे चरणनकी सौगंद है ॥ १३ ॥ नारदजी कहे है ऐसे उद्धवके वचन सुनिके राधिकाजी प्रसन्न हैगई और महारासमें जो चन्द्रमाने चन्द्रकांतनाम मणी दीनीही वे दोनों उद्धवजीकूं देदीनी ॥ १४ ॥ और पहले चन्द्रमाने हजार दलके द्वे कमल दीनेहै तेऊ प्रसन्न हैके राधिकाने उद्धवजीकूं देदीने क्योंकि, वे भक्तवत्सला है ॥ १५ ॥ तब छत्र, चमर, द्वे दिव्य सिंहासन जे श्रीकृष्णके मनते पैदा भयेहै वे श्रीकृष्णकी प्यारी राधिका उद्धवको देतीभई ॥ १६ ॥ फिर ये वर दीनो कि, उपदेश करनवारेनकोहू उपदेशक और कृष्णके संयोगको करनवारो ज्ञान, ऐश्वर्य तोको सदा होयगो ॥ १७ ॥ और निर्गुण

जो शंखचूडपैंते मणि लीनी ही सो चन्द्रानना गोपीने उद्धवजीकूं दीनी हे विदेहराज ! ॥ १९ ॥
भाववारी प्रेमा भक्ति दीनी ज्ञान दीनो विज्ञान दीनो वैराग्य दीनो ॥ १८ ॥ तब पास आयके
तैसेई सब गोपीगणननें भूषणनको समूह प्रसन्न ह्वैके उद्धव महात्माकूं दीनो ॥ २० ॥ नारदजी बोले कि, उद्धवजीको शुभ वचन सुनिके राधिकाजी प्रसन्न ह्वैगई जाननेवारेनमें
सभामें बैठे जे श्रीउद्धवजी तिनतें न्यारी २ बोलीं ॥ २१ ॥ गोपी कहें हैं जाकूं जो २ श्रीकृष्णने अद्भुत लिख्यो है सो तुम जल्दी कहो तुम अगारी पिछारीके स्मरण करें
उत्तम हो श्रीकृष्णके सखा बडे हो और कृष्णकीसीही तुमारी आकृति है ॥ २२ ॥ तब उद्धवजी बोले जैसे तुम श्रीकृष्णको स्मरण करोहो तैसेई श्रीकृष्ण तुम्हारो संदेशो दो
हैं हे गोपवधू हो ! मेरे अगाडी एक २ घडीमें एक २ छिनमें यामें संदेह नहीं ॥ २३ ॥ एक समय मोकूं बुलायके एकांतमें तुमकूं यादि करके जो उनके चित्तमें
शंखचूडाच्चहरिणानीतंचूडामणिंशुभम् ॥ चन्द्राननाददौतस्माउद्धवायविदेहराट् ॥ १९ ॥ तथागोपीगणाःसर्वेभूषणानांचयंशुभम् ॥
ददुःप्रसन्नाहेराजन्नुद्धवायमहात्मने ॥ २० ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ श्रुत्वावचश्चौपगवेःशुभार्थंसुखंगतायांकिलराधिकायाम् ॥ ऊचुस्त
माराद्व्रजगोपवध्वःसदःस्थितंकृष्णसखंपृथक्ताः ॥ २१ ॥ ॥ गोप्यऊचुः ॥ ॥ यद्यद्यत्रलिखितंवदाशुनःकिंतुतच्चहरिणोक्तमद्भुतम् ॥
त्वंपरावरविदांहरेःसखामंत्रवित्तमतदाकृतिर्महान् ॥ २२ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ यथास्मरथदेवेशंतथायुष्मान्स्मरत्यसौ ॥ अनुवेलं
गोपवध्वःपश्यतोमेनसंशयः ॥ २३ ॥ एकदामांसमाहूयस्मृत्वायुष्मान्रहस्करः ॥ कथयामाससंदेशंचित्तस्थंनंदनंदनः ॥ २४ ॥ ॥ श्रीभग
वानुवाच ॥ ॥ गुणेषुसक्तंकिलबन्धनायरक्तंमनःपुंसिचमुक्तयेस्यात् ॥ मनोद्वयोःकारणमाहुराराज्जित्वाथतत्कौविचरेदसंगः ॥ २५ ॥
यदास्वयंब्रह्मपरात्परंमामध्यात्मयोगेनविशारदेन ॥ जानातिसर्वत्रगतंविवेकीतदाविजह्यान्मनसःकषायम् ॥ यावद्घनोमध्यगतस्तदुत्थितः
स्वकर्मरूपंनहिदक्प्रपश्यति ॥ २६ ॥ स्थूलाच्चदूरोस्मिनतत्त्वतोंगनास्तस्माद्वियोगंकुरुताप्रसाधनम् ॥ यत्सांख्यभावैःकिलगम्यतेपदंतद्योग
भावैरपिगम्यतेस्वतः ॥ २७ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमथुराखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेराधागोप्याश्वासनंनामषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥
॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ श्रुत्वाश्रीकृष्णसंदेशंप्रसन्नागोपवल्लभाः ॥ अश्रुमुख्योबाष्पकंठ्यऊचुरौपगविंनृप ॥ १ ॥
सो नन्दनन्दनने हमते कह्यो है ताहि सुनो ॥ २४ ॥ श्रीभगवान् कहें हैं जो या चित्तकूं विषयनमें लगावे तो संसारमें बन्धन होयहै और जो या चित्तकूं पुरुष भगवान्में लगावें तो
संसारतें मुक्ति ह्वैजायहै यह मनही बन्धमोक्षको कारण है ताते या मनकूं जीतिके निष्काम पृथ्वीमें विचरे ॥२५॥ जब परात्पर परब्रह्म जो सर्वत्र गमन करनहारो ताहि विशारद
अध्यात्मयोग करके मोकूं सर्वगत जानिलेयहै तब ये ज्ञानी मनके मैलनकूं त्यागै है जबतलक नेत्रके और सूर्यके बीचमें सूर्यसेंही उत्पन्नभयो घन रहै तबतलक सूर्यकूं दृष्टि नहीं
देखे है ॥ २६ ॥ या स्थूल शरीरतें हे अंगना हो ! मैं दूर हूं पन तत्त्वतें देखो तो मैं दूरि नहीं हूं याते यहां वियोग है सोई मिलिवेको साधन है जो सांख्यभावतें पद मिलै है
सो योगतें आपुहीतें मिलै है ॥२७॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां मथुराखण्डे भाषाटीकायां राधागोप्याश्वासनं नाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ नारदजी कहे हैं श्रीकृष्णको संदेशो सुनिके

सब गोपवधू प्रसन्न हैगई आंसू जिनकी आंखिनमें गद्गद कण्ठ हैके फेर उद्धवजीते बोलीं हे नृप ! ॥ १ ॥ पहले गोलोकवासिनी बोलीं देखौ ! पहले प्यारे जननकूं त्यागिके श्रीकृष्ण परदेशकूं चले गये ऊपरते योग लिखे हैं अहो निर्मोह ताको बल देखो ॥ २ ॥ अब द्वारपालिका बोलीं कि, देखो चंदमा तो चकोरते प्रीति नही करे है सूर्य कमलते प्रीति नही करे है कमल भौंराते प्रीति नही करे है घन चातकते प्रीति नही करे है चाहे वे मरिही क्यों न जायँ ॥ ३ ॥ शृंगारकरिवेवारी गोपी बोली चंद्रमाको मित्र चकोर है जो चंद्रमाईकी किरन अंगारसी हैजांय तो चकोर कहा करै जो विधाताने लिख्यो है सो कमती नही होय है ॥ ४ ॥ शय्या रचनहारी बोली वधिक मृगकूं मारिके जलदी वाकी खबरि लेयहै और श्रीकृष्ण कटाक्षनते अपने प्यारेनकूं मारिके निर्मोही यादहू नही करैहै ॥ ५ ॥ पास रहनहारी बोली विरहके दुःखकूं विरही जानेहै कांटेके दुःखकूं वही जानैहै जाके कांटो लग्यो होयहै ॥ ६ ॥ वृंदावनपालिका बोली

॥ ॥ गोलोकवासिन्यऊचुः ॥ ॥ विदेशंगंतवान्कृष्णस्त्यक्त्वापूर्वंप्रियाञ्जनान् ॥ तदुपर्यऽलिखद्योगमहोनिर्मोहताबलम् ॥ २ ॥ ॥द्वारपालिका ऊचुः ॥ ॥ चकोरेग्लौःपंकजेऽर्कोभ्रमरेपंकजंयथा ॥ चातकेचघनःप्रीतिंनकरोतिकदाचन ॥३॥ ॥ शृंगारप्रकारिकाऊचुः ॥ ॥ चंद्रमित्रंचकोरोऽतिसख्योवह्निकरंसदा ॥ विधात्रायद्धिलिखितंतन्न्यूनंनभवेदिह ॥ ४ ॥ ॥ शय्योपकारिकाऊचुः ॥ ॥ व्याधोपिहत्वाहिमृगान्स्मरतित्वरसातुरः ॥ कटाक्षैःस्वप्रियान्हत्वानिर्मोहीनस्मरेदहो ॥ ५ ॥ ॥ पार्षदाख्याऊचुः ॥ ॥ जातंविरहजंदुःखंनान्योवेत्तिकदाचन ॥ यथाकंटकविद्धांगोविद्धान्वाविद्धकंटकः ॥ ६ ॥ ॥ वृन्दावनपालिकाऊचुः ॥ ॥ अनिमित्तंप्रेमसौख्यमनिमित्तोहिवेत्तितत् ॥ सनिमित्तोनजानातिरसंकर्मेंद्रियंयथा ॥ ७ ॥ ॥ गोवर्द्धनवासिन्यऊचुः ॥ ॥ पुरंध्रीप्रेमकृद्योवैसैरंध्रीनायकोभवत् ॥शैलौकोभिस्तुकिंतस्यबहुनाकथितेनकिम् ॥ ८ ॥ ॥कुंजविधायिकाऊचुः ॥ ॥ हामाधवीकुंजपुंजेगुंजन्मत्तमधुव्रते ॥ स्वदृग्लक्षीकृतोयोवैतस्येयंश्रूयतेकथा ॥ ९ ॥ ॥ निकुंजवासिन्यऊचुः ॥ ॥ वृंदावनेमत्तमिलिंदपुंजेकलिन्दजातीरकदंबकुंजे ॥ शनैश्चलंतंसबलंसगोपंसगोधनंनंदसुतंभजामः ॥ १० ॥ ॥ यमुनायूथाऊचुः ॥ ॥ कदातथास्मत्समयोभविष्यतियथापुरंध्रीसमयःप्रदृश्यते ॥ शोकंपरंमाकुरुतव्रजांगनाःसदानकस्यापिजयःपराजयः ॥ ११ ॥

निष्काम प्रेमके सुखकूं निष्काम प्रेमी ही जानैहै और सकामी नही जानैहै जैसे खाटो, मीठो, चरपरो, तातो, सीरो, कारो, पीरो नेत्र, जीभही जानैहै हाथ पांव नही जानै है ॥ ७ ॥ गोवर्द्धनवासिनी बोली जे कोई पुरंध्रीनते प्रेम करेहै ते पुरंध्रीनायक कहामे हैं सो पुरंध्रीनायक हैं आज अचंभो है कि, वो सैरंध्रीनायक कहावे है वाकूं पर्वतवासिनीनते कहा मतलब है अब बोहोत कहिवेते कहा है ॥ ८ ॥ कुंजबनायवेवारी बोली हाय ! जो माधवीकी कुंजके पुंजमे मतवारो भोरा जामे गूँजिरहे तामे अपनी आँखिनसो देखो हो ताकी आज ये कथा सुनिवेमे आमे है ॥ ९ ॥ निकुंजवासिनी बोली मतवारे भोरानके पुंज जामें कालिंदीके तीर कदंबकी कुंज जामें ता वृंदावनमें होले होले बलदेवजीके संग गोपनकूं लिये गौ चरामे ऐसे नंदनंदनकूं हम भजे है ॥ १० ॥ यमुनायूथ बोली ! कबहू तो हमारो दैव दाहिनो होइगी जैसो आज दिन वा कुब्जाको भाग्य चेतरह्योहै

हे व्रजांगनाओ ! शोच मति करो न तो सदा काहूकी जीति रहै और न सदा काहूकी हार रहैहै ॥ ११ ॥ विधाताके नेकहू दया नही जो कबहू तो प्यारेनको संयोग करावे है और कबहू वियोग करावेहै बालक जैसे कबहू खिलोइना इकट्ठे करैं हैं कबहू न्यारे २ करे हैं ॥ १२ ॥ कुब्जा पहले कंसकी दासी ही और टेढी ही अब कूबर निकसिगयो और कुलीन हैगई कुरूपिणी ही सो रूपवती हैगई सो वोहू अपने चारि दिन जीतिके नगारे बजाय लेउ ॥ १३ ॥ विरजाके यूथकी गोपी कहैहैं कि, सदा न काहूकी रही पीतमके गलबांह और न सदा बसंत रहै न सदा ज्वानी रहै न इन्द्रको राजही सदा रहैहै यह तौ चार दिनकी चांदनी है सो चार दिनके लिये भलेई कोई मान करलेउ ॥ १४ ॥ ललिता के यूथकी गोपी कहैहै कि, अयोध्यापुरीमें पहले रामचन्द्रकूं गादी होनहार थी सो मंथरा दासीके कहिवेते कैकयीने विघ्न करिदीनो सोई मंथरा आज दिन कुब्जा बनके मथुरापुरी में आईहै सो हे गोपीओ ! अब कूबरी कहा कहा न करैगी ॥ १५ ॥ विशाखाके यूथकी सखी बोली गौ चरायवेकूं गोपनके संग बनमें चरायके जब ब्रजकूं आमैहैं तब बंशीकी

विधातुर्नदयाकिंचिद्युनक्तिवियुनक्तियः ॥ भूतानिसकलान्येवक्रीडनानियथार्भकः ॥ १२ ॥ कुब्जापुराधवृजुसमानविग्रहादासी त्विदानींतुकुलीनतांगता ॥ कुरूपिणीरूपवतीवभावहोचतुर्दिनैर्दुंदुभिनादकारिणी ॥१३॥ ॥ विरजायूथाऊचुः ॥ ॥ सदानकस्यापिभुजा प्रियांसेसदावसंतोनसदायुवास्यात् ॥ इन्द्रोनराज्यंकुरुतेसदायंचतुर्दिनैर्मानमलंकरोतु ॥ १४ ॥ ॥ ललितायूथउवाच ॥ ॥ रामाभिषे कंविनिवार्य्यमंथराचकारविघ्नंकिलकोसलेपुरे ॥ कुब्जैवसेयंमथुरापुरेगताकुब्जैवकिंकिंनकरोतिगोपिकाः॥१५॥ ॥ विशाखायूथउवाच ॥ ॥ गोचारणायानुचरैर्व्रजंतंप्रबोधयंतंस्वधुरंविरावैः ॥ मत्तेभयानंहिविडंबयंतंश्रीनन्दसूनुंनहिविस्मराम ॥ १६ ॥ ॥ मायायूथाऊचुः ॥ ॥ संकोचवीथीषुपटेप्रगृह्यप्रसह्यदोर्भ्यांहृदयेनिधाय ॥ अन्योन्यमाकर्षणहर्षभीतिर्गृहान्हरिंतंहिकदानयामः ॥ १७ ॥ ॥ अष्टसख्यऊचुः ॥ ॥ वीक्ष्यनन्दसुतमंगसुन्दरंनेत्रमद्यनजगद्विपश्यति ॥ नन्दराजतनयेपुरींस्थितेकिंभविष्यतिवदाशुनस्त्वरम् ॥ १८ ॥ ॥ षोडशसख्यऊचुः ॥ ॥ वेणुनादमधुरध्वनिंवनेसंनिशम्यकुसुमेषुवर्द्धनम् ॥ श्रोत्रयुग्ममिहनःशृणोतिनोविश्वगीतमुतवायसःपरम् ॥ १९ ॥ ॥ द्वात्रिंशत्सख्य ऊचुः ॥ ॥ प्रीत्यास्वमित्रंहिरिपुंनयेनलुब्धंधनैश्चद्विजमादरेण ॥ गुरुंप्रणामैरसिकंरसेननिर्मोहनंकेनवशीकरोति ॥ २० ॥

ध्वनितें अपने ब्रजकूं जगावत मत्त हाथीकीसी चालिते चले ऐसो जो नंदकुमार ताहि हम नहीं भूलेंहैं ॥ १६ ॥ मायायूथकी बोली कि, साकरी गलीमें पीतांबर पकरिके जोरा वरीते भुजानमें भरिके आपुसकी खेंचातनीते सुख भयपूर्वक खेंचिके हम वा श्यामको कब अपने घरकूं लेजायंगी, ॥ १७ ॥ अष्टसखी बोलीं कि, अंग २ सुंदर जाके ता नंदके बेटाकूं देखिके हमारे नेत्र कहा अब जगतकूं देखेंगे सो नंदसुत मथुरापुरीमें बैठ्योहै अब कहा होयगो सो तो जलदी कहो ॥ १८ ॥ षोडश सखी बोलीं कि, जे कान बनमें श्रीकृष्णकी बाँसुरीकी ध्वनि कामकी बढायवेवारीको सुनतेहैं वे कान वा ध्वनिमें चलेगये अब बिन काननते कहा लोकके गीत सुनेजायहैं जैसे तोता, मैना, हंस कोयलकी वाणी सुनिके कौआकी काँव २ कहा अच्छी लगैहै ॥ १९ ॥ बत्तीस सखी बोलीं कि, प्रीतिते मित्रकूं राजी करे नीतिते वैरीकूं राजी करे लोभीको धनते राजी करे ब्राह्मणकूं भोजनते

आदरते राजी करें गुरूनकूं दंडोतते राजी करे रसिककूं रसिकताते राजी करे परंतु कहो निर्मोहीकूं कैसे राजी करे ॥ २० ॥ श्रुतिरूपा बोली जो जागरादि अवस्थानके विषे कारण नहीं है और जो या जगतको हेतु है और जाके प्रेरण किये ये तीनो गुण विचरेंहैं और ये महत्तत्त्वादिक इंद्री तथा देवता जामें नहीं प्रवेश होंय हैं विस्फुलिंग अग्निमें जैसे ता भगवानके अर्थ हमारो नमस्कार है ॥ २१ ॥ ऋषिरूपा बोली यह बलीनकों बली काल वशकरबेको समर्थ नही होयहै माया और वेदहू जाकूं अपनो विषय नही बनायसके है सो यह पूर्णब्रह्म अमृतरूप परम प्रशांत शुद्ध परेतें परे श्रीकृष्ण है ताकी हम शरण प्राप्तभईहैं ॥ २२ ॥ देवांगना बोली जा परके चार अंश अंशांश कला आवेश और पूर्ण जे अवतारनके भेद हैं तिन करिके या जगतके उत्पत्ति, पालन, संहार ये सब होयहैं ता परिपूर्णतम कृष्णकी शरण प्राप्तभईहैं ॥ २३ ॥ यज्ञसीता बोली कि, जो श्रीमान् शोभायमान जे निकुंजनकी लता तिनकूं प्रफुल्लित करनहारो वसंत है और श्रीराधिकाको हृदय कंठको भूषण है रासमंडलको पति है व्रजमंडलको ईश्वर है ब्रह्मां

॥ ॥ श्रुतिरूपा ऊचुः ॥ ॥ यज्जागरादिषु भवेषु परं ह्यहेतुर्हेतुस्त्विदस्य विचरंति गुणाश्रयेन ॥ नैतद्विशंति महदिंद्रियदेवसंघास्तस्मै नमोऽग्निमिव विस्तृत विस्फुलिंगाः ॥ २१ ॥ ॥ ऋषिरूपा ऊचुः ॥ ॥ नैवेशितुं प्रभुरयं बलिनां बलीयान्माया न शब्द उत नो विषयीकरोति ॥ तद्ब्रह्म पूर्णममृतं परमं प्रशांतं शुद्धं परात्परतरं शरणं गताः स्मः ॥ २२ ॥ ॥ देवांगना ऊचुः ॥ ॥ अंशांशकांशककलाद्यवतारवृन्दैरावेशपूर्णसहिताश्च परस्य यस्य ॥ सर्गादयः किल भवंति तमेव कृष्णं पूर्णात्परं तु परिपूर्णतमं नताः स्मः ॥ २३ ॥ ॥ यज्ञसीता ऊचुः ॥ ॥ श्रीमन्निकुंजलतिकाकुसुमाकरोयं श्रीराधिकाहृदयकंठविभूषणोयम् ॥ श्रीरासमंडलपतिर्व्रजमंडलेशो ब्रह्मांडमंडलमहीपरिपालकोयम् ॥ २४ ॥ ॥ रमा वैकुंठवासिन्य ऊचुः ॥ ॥ यो गोपिका सकलयूथमलंचकार वृन्दावनं च निजपादरजोभिरद्रिम् ॥ यः सर्वलोकविभवाय बभूव भूमौ तं भूरिलीलमुरगेन्द्रभुजं भजामः ॥ २५ ॥ ॥ श्वेतद्वीपसखीजना ऊचुः ॥ ॥ यथा शिलींध्रं शिशुरश्रमो गजः स्वपुष्करेणैव च पुष्करं गिरिम् ॥ धृत्वा बभौ श्रीव्रजराजनन्दनः कृपाकरो सौ न हि विस्मृतः क्वचित् ॥ २६ ॥ ॥ ऊर्द्ध्ववैकुंठवासिन्य ऊचुः ॥ ॥ श्यामवर्णमये नेत्रे जगच्छ्यामं विपश्यतः ॥ नद्वैतं दृश्यते यासां ताभिः किं योगसेवनम् ॥ २७ ॥ ॥ लोकाचलवासिन्य ऊचुः ॥ ॥ स्नेहपाशो दृढोच्छिन्नो नच्छिन्नो हरिणा विना ॥ छित्त्वा तु मथुरां प्रागान्नागपाशं यथा खगः ॥ २८ ॥

डमंडलकी पृथ्वीको परिपालक है सो कृष्ण है ॥ २४ ॥ रमा वैकुंठवासिनी बोली जो गोपीनके सकल यूथनकूं शोभायमान करतभयो अपनी चरणरज करिके वृन्दावनकूं और गोवर्द्धनकूं शोभायमान करतभयो जो सब लोकके वैभवके अर्थ भूमिमें जन्म लेतभयो सो बहुत है लीला जाकी सुहार हैं भुजदंड जाके ता श्रीकृष्णकूं हम स्मरण करेंहैं ॥ २५ ॥ श्वेतद्वीपकी सखी बोली जैसे बालक बिनाई श्रम छत्तेकूं उठायले जैसे मतवारो हाथी कमलकूं उठायलेय है तैसेही जो व्रजराजनंदन गिरिराजकूं उठा लेतभयो सो कृपाको करनहारो श्रीकृष्ण हमपै भुल्यो नहीं जायहै ॥ २६ ॥ ऊर्द्ध्ववैकुंठवासिनी बोली कि, हमारे तो नेत्र श्याममर्णमय हैं सबरो जगत हमकूं तो श्यामही दीखेहै इन नेत्रनकूं द्वैत तो दीखिही नहीं है तिन हमकूं योग सेवनते कहा है ॥ २७ ॥ लोकाचलवासिनी बोली स्नेहकी फाँसी बडो जबर है यह हरि बिना काहूपै

नहीं करीहैं ता मोहकी फाँसीकूं काटिके जे मथुराकूं चलेगये जैसे गरुड नाग फाँसीको काटेहै ॥ २८ ॥ अजितपदवासिनी बोली कि, नेत्र तो दोनों हमारे देखौ कृष्णमें लगिगये वे दशौं दिशामें धामें हैं परि कहूं नहीं लगेंहैं जैसे कमलकों लग्यो भौंरा और जगे नहीं बैठेहै ॥ २९ ॥ श्रीजीकी सखी बोली लोभतें तो यशको नाश होयहै और क्रोधतें गुणको नाश होयहै खोटे व्यसननतें धनको नाश होयहै कपटतें मित्रताको नाश होयहै ॥ ३० ॥ मैथिली बोली धन देकै तनकी रक्षा करै तन देके लाज राखे धन तन लाज इन तीनोंनको देकर मित्रको काम करै ॥ ३१ ॥ कौशला बोली कोई वियोगकी दशाकूं नहीं जाने है वो वियोग जीव विना कह्यो नहीं जायहै तौरतें करेजा फटिनो तो भलो पर प्रियको वियोग हो तो अति कठिन है सो वो वियोग परमेश्वर करै तो काहूको न होय वो सबतें बुरो है ॥ ३२ ॥ अयोध्यावासिनी बोली कि, पहले निराशा करिके फिर आशा

॥ अजितपदाश्रिताऊचुः ॥ ॥ कृष्णलग्नंनेत्रयुग्मंधावद्दशदिशांतरम् ॥ अहोनलग्नंकुत्रापिपद्मलग्नोयथाह्यलिः ॥ २९ ॥ ॥ श्रीसख्यऊचुः ॥ ॥ कार्पण्येनयशोहंतिक्रुधागुणगणोदयम् ॥ धनानिव्यसनैर्लोकःकपटेनतुमित्रताम् ॥ ३० ॥ ॥ मैथिलाऊचुः ॥ ॥ धनंदत्त्वातनुंरक्षेत्तनुंदत्त्वात्रपांचवै ॥ धनंतनुंत्रपांदद्यान्मित्रकार्यार्थमेवहि ॥ ३१ ॥ ॥ कौशलाऊचुः ॥ ॥ नकोपिजानातिवियोगजांदशांजीवंविनावक्तुमलंनसोहि ॥ भूयाद्दुरोबाणविभिन्नमारान्माभूत्कदापिप्रियविप्रयोजनम् ॥ ३२ ॥ ॥ अयोध्यापुरवासिन्यऊचुः ॥ ॥ कृत्वानिराशांविनिधायचाशांजगामचाशांमथुरापुरस्य ॥ योगंचतस्योपरिचालिखन्नोनिर्मोहिनांचित्रमहोविचित्रम् ॥ ३३ ॥ ॥ पुलिंदिकाऊचुः ॥ ॥ एनंवरंकर्तुमतीवविह्वलांसमागतांशूर्पणखांपुरावने ॥ यःकारयामासविरूपिणींबलात्सौमित्रिणातेनतुनःकृपाकथम् ॥३४॥ ॥ सुतलवासिन्यऊचुः ॥ ॥ भक्तंबलिंसत्यपरंचभूरिदंनीत्वाबलिंयःकुपितोबबन्धह ॥ अहोकथंतस्यकरोतिसेवनंमायाबटोर्वामनरूपधारिणः ॥ ३५ ॥ ॥ जालंधर्य्यऊचुः ॥ ॥ पुरातिकष्टंप्रगतेऽसुरोत्तमेकायाधवेभक्तवरेततोह्ययम् ॥ भूत्वानृसिंहःकृतवान्सहायमहोपरंनिष्ठुरताप्रदृश्यते ॥ ३६ ॥

लगायके आपु मथुराकी दिशाकूँ चल्योगयो ताके ऊपर हमें योग बतावे हैं हाय ! निर्मोहीनको कैसो विचित्र चरित्र है ॥ ३३ ॥ पुलिंदिनी गोपी कहे हैं कि, जाकूं वरिवेके लिये वनमें पहले शूर्पणखा राक्षसी आई अति विह्वल हैगईही सो जाने लक्ष्मणके हाथन वाके नाक कान कटवाय कुरूप करिदई जोरवारी भलो वाके हमारी दया काहेकूं आवेगी ॥ ३४ ॥ सुतलवासिनी गोपी बोली भक्त बलिराजा बडो दाता बडो सत्यवादी तापेंते ये भूमि बलिलेके फिर कोप करिके जाने बांधिलीनो ताको सेवन को करेगो जो कपटको ब्रह्मचारी बौना बनिगयो ॥ ३५ ॥ जलंधरपुरवासिनी गोपी बोली देखो पहले भक्तवर प्रह्लाद असुरनमें उत्तम ताकी कैसी कैसी

कुगति कराई पीछे जब सब निंदा करनलगे तब नृसिंह बनिके वाकी सहाय कीनी जामें कठोरता तो प्रत्यक्षही दीखे है ॥ ३६ ॥ भूमिगोपी बोली कि, जाके मुखमें और मनमें और अहो निर्मोही जगको चरित्र बडे अचंभेको है कछू कहिवेलायक नहीं है देवता तो जानेही नायहो फिर मनुष्य कहांते जानेगो ॥ ३७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां मथुराखंडे भाषाटीकायां श्रीकृष्णस्मरणे गोपिकावाक्यं नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ बर्हिष्मती नगरीकी रहनवारी गोपी बोली अहो ! प्रलयके समुद्रमें जो कृपाकरके वाराहरूपधारिके जो पृथ्वीकूं उठायके लायो हो सोई दयालु पृथु हैके आदि राजा पृथ्वीको पालन करत भयो ॥ १ ॥ लतारूप गोपी बोली कि धन्वंतरि भगवान् अमृत लैके समुद्रमेंते निकरे परि अपने हाथते अमृत न बांट्यो विश्वके वैद्य महात्मा फिर जब वैर जिनने चांचो एसो दैत्य देवता रोये झीके तब स्त्री बनिके देवतानकूं प्यायदीनो दूसरेको रोपवो अच्छो लगैहे ॥ २ ॥ नागेंद्रकन्या गोपी बोली कि, जो वरवेकी इच्छा करे वनमें आपुते आई ता शूर्पनखाको जाने कुरूपिणी

॥ ॥ भूमिगोप्यऊचुः ॥ ॥ अहोतिनिर्मोहजनस्यचित्रंपरंचरित्रंगदितुंनयोग्यम् ॥ मुखेनचान्यद्धृदिभाव्यमन्यद्देवोनजानातिकुतोमनुष्यः ॥ ३७ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमथुराखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेश्रीकृष्णस्मरणेगोपीवाक्यंनामसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ ॥ ॥ बर्हिष्मतीभवाऊचुः ॥ ॥ अहोलयाब्धौकृपयाहरिर्यामुद्धृत्यवाराहतनुर्महात्मा ॥ तामन्वधावद्धृतमंजनीश्वरोभूत्वादयालुःपृथुरादिराजः ॥ १ ॥ ॥ लतागोप्यऊचुः ॥ ॥ स्वयंसुधांवानविभज्यपूर्वंधन्वंतरिर्विश्वभिषङ्महात्मा ॥ तद्बद्धवैरेषुसुरासुरेषुभूत्वाथयोषित्प्रददौकलिप्रियः ॥ २ ॥ ॥ नागेंद्रकन्याऊचुः ॥ ॥ अथेच्छतीमेनमहोवरंहरिःसमागतांशूर्पणखांमहावने ॥ चकारसौमित्रिसखःकुरूपिणीमहोकुतंतस्यतयाकिमप्रियम् ॥ ३ ॥ ॥ समुद्रकन्याऊचुः ॥ ॥ नित्यंगृहंशतंयांतीदात्रीदुःखंसुखंजनान् ॥ स्त्रीयाकथंसुशीलाचचंचलास्मिन्कथंस्थिता ॥ ४ ॥ ॥ अप्सरसऊचुः ॥ ॥ अस्यप्रीत्याकर्णनासेगतेवैरावणस्वसुः ॥ त्यजंतुवार्तांतेनापिभवतीनांकृपाकृता ॥ ५ ॥ ॥ ॥ दिव्याऊचुः ॥ ॥ सर्वेश्वरोबलिंनीत्वाबलिंबद्धादयापरः ॥ अधोक्षिपन्मुक्तिनाथश्चित्रंतत्कथयाभवत् ॥ ६ ॥ ॥ अदिव्याऊचुः ॥ ॥ शतरूपायुतंशांततपस्यंतंमनुंपुरा ॥ दैत्यैर्बाधागतंपश्चाद्ररक्षासौदयानिधिः ॥ ७ ॥

करिदीनी नेक दया न आई वा लक्ष्मणके मित्रके अप्रिय कहा है ॥ ३ ॥ समुद्रकन्या गोपी बोली नित्यही सौघर डोलें काहूकूं सुख दे काहूकूं दुःख दे सो जाकी स्त्री बडी चंचला लक्ष्मी वह जाने वाके पास कैसे ठहरी ॥ ४ ॥ अप्सरा गोपी बोली–जाकी प्रीतिते रावणकी बहिनके नाक कान गये अब वाकी बात मति करो तुमपै वाने बडी कृपा करी जो तुम्हारे वाने नाक कान छोडिदिये हैं ॥ ५ ॥ दिव्या गोपी बोली कि, सबको ईश्वर हैके जाने पहले बलि लेके और दया पर हैके देखो बलिकूं बांध्यो और मुक्ति देवेवारो हैके बलिके रसातलमें पटको ये सब वाकी अचंभेकी कथा है ॥ ६ ॥ दिव्या गोपी बोली कि, शतरूपा रानीकूं संग लेके शांत हैके जब स्वायंभवमनु सुनंदानदीपै तप करते हैं जब विने यक्ष राक्षस खान लगे तब यज्ञरूपधारी जा श्रीकृष्णने मनकी रक्षा करीही सो कबहूं तो बो

दयानिधि या विरह दुःखते हमेंहू बचावेंगे ॥ ७ ॥ सतोगुणी गोपी बोली कि, पहले तो बड़ो कष्ट प्रह्लादने और ध्रुवने पायो पीछे कृपा करिके विनकी रक्षा करी है तो दीनवत्सल परन्तु पहले रक्षा न करी ऐसेई हमेंहू पहले दुःख देके पीछे रक्षा करेंगे ॥ ८ ॥ रजोवृत्तिवारी गोपी बोली रुक्मांगद, हरिश्चंद्र अंबरीष इनकी पहले सत्यकी परीक्षा करिलीनी तब भागवती गति दीनी ऐसेई हमारी परीक्षा करेहै ॥ ९ ॥ तमोवृत्तिवारी बोली वृंदा जलंधरकी स्त्री छली फेर बलि राजा छल्यो ठगिनी कुब्जाने येहू ठगिलीने कियो जैसो पायो ॥ १० ॥ देखो तरवार एक जगेतेई टेढ़ी बहुतनकूं मारे है फिर बाहि टेढ़ी चलावे तब देखो कैसो करतब दिखावे यहां एक तो कुब्जाई तीन ठौरते टेढ़ी फिर त्रिभंगी श्रीकृष्ण मिलिगए अब जो चाहे सो करे ॥ ११ ॥ श्रीकृष्णकी रस्ता देखत २ नेत्र दुखि परे अभीमें आऊंहूं या अवधिको पारही नाहि मिले वो कृष्णके आयवेकी जो अवधि है सो तो वामनजीको पादविक्षेप हैगयो फिर कहो वाको अन्त कैसे पाऊँ अर्थात् जैसे वामनजीके डगको

॥ ॥ सत्ववृत्तयऊचुः ॥ ॥ पूर्वंकष्टगतंभक्तंध्रुवंकायाधवंचवै ॥ पश्चाद्ररक्षकृपयानपूर्वंदीनवत्सलः ॥ ८ ॥ ॥ रजोवृत्तयऊचुः ॥ ॥ रुक्मांगदहरिश्चन्द्रांबरीषाणांसतांहरिः ॥ सत्यंपरीक्षन्प्रददौपुनर्भागवतींश्रियम् ॥ ९ ॥ ॥ तमोवृत्तयऊचुः ॥ ॥ वृन्दायेनच्छलंप्रात्ताछलिनाबलिनापुरा ॥ छलमप्याबलिन्याद्यकुब्जयाछलितोह्ययम् ॥ १० ॥ कृपाणीह्येकतोवक्राघातयंतीजनान्बहून् ॥ किमुकुब्जात्रिवक्राच श्रीकृष्णेनत्रिभंगिना ॥११॥ पश्यंतीनांकृष्णमार्गंनेत्रेदुःखंगतेभृशम् ॥ अवधिःपादविक्षेपंवामनस्यकरोतिहि ॥ १२ ॥ पीतत्वंत्वग्गता पादौशैथिल्यंप्रगतौचनः ॥ मनोविभ्रमतांप्राप्तंमाधवेमाधवंविना ॥ १३ ॥ सपत्नीहारचिह्नाढ्यमागतन्तमुषःक्षणे ॥ हादैवकस्मिन्समयेद्रक्ष्यामोनन्दनन्दनम् ॥ १४ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इतिकृष्णंचिंतयंत्योगोपिकाःप्रेमविह्वलाः ॥ उत्कंठितास्तारुरुदुर्मूर्च्छिताधरणींगताः ॥ १५ ॥ पृथक्पृथक्समाश्वास्यवचोभिर्नयनैर्गुणैः ॥ संबोध्यगोपिकाःसर्वाःप्राहराधांतदोद्धवः ॥ १६ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ परिपूर्णतमेकृष्णेवृषभानुवरात्मजे ॥ गंतुमाज्ञांदेहिमह्यंनमस्तुभ्यंव्रजेश्वरि ॥ १७ ॥ प्रतिपत्रंदेहिशुभेश्रीकृष्णायमहात्मने ॥ तेनतंचप्रणम्याशु समानेष्येतवांतिकम् ॥ ॥ १८ ॥

अन्त नहीं आयो ऐसेही या कृष्णके आयवेकी अवधिको अन्त नहीं मिले है ॥ १२ ॥ हे माधवे ! माधवके विना रस्ता देखत २ पीरी तो खाल परिगई पावं हमारे दुखि परे मन बावरो हैगयो पन प्यारेको खोज नहीं है ॥ १३ ॥ सौतिके हारके चिह्न जाके गलेमें प्रातः कालमें आये हाय दैव ! ऐसे नन्दनन्दनकूं हम कब देखेंगी हा नाथ ! हा रमण ! हा महाबाहो ! कहां हो कहां हो ॥ १४ ॥ नारदजी कहे है ऐसे कृष्णकूं चिंतमन करत प्रेममें विह्वल हैगई उत्कंठित हैके रोमनलगीं फिर मूर्च्छा खाय धरतीमें जायपरी ॥ १५ ॥ तब उद्धवजी न्यारी २ गोपीनकूं समुझाय अनेकन नीतिनके वचन तिनकरिके सब गोपीनकूं संबोधन देके उद्धवजी राधिकाजीते बोले ॥ १६ ॥ हे परिपूर्णतमे हे कृष्ण ! हे वृषभानुवरात्मजे ! मोकूं आज्ञा देव मैं जाऊं हे व्रजेश्वरी ! तुमारे हेत मेरी नमस्कार है ॥ १७ ॥ हे शुभे ! न्यारे २ गोपीनके पत्र और तुम अपने हाथको पत्र श्रीकृष्ण महात्माकूं दीजिये याते मैं उनकूं दंडौत

करिके आपुके पास लेआऊं ॥ १८ ॥ नारदजी कहेहैं तब राधिकाजी कागद, कलम, दावात मंगाय समाचार विचारनलगीं तब ही आंसू चुवावन लगे ॥ १९ ॥ तब राधा जा जा पत्रकूं लिखिवेकूं लेयहैं सोई सोई आंसूनते भीजि जायहै ॥ २० ॥ आंसूनके प्रवाहकूं छोडेहैं कृष्णके दर्शनकी जाकी लालसा है ता राधाते उद्धवजी अचंभो करत कम लनयनीते ये बोले ॥ २१ ॥ हे राधिके ! तुम क्यों लिखो हो क्यों दुःख करोहो तुमारे लिखेई विना मैं श्रीकृष्णते सब तुमारी व्यथाको कहूंगो ॥ २२ ॥ नारदजी कहेहै ऐसें उद्धवजीको वचन सुनिके जा राधाकी बाधा सब जातिरही ता राधाने और सब गोपीनने उद्धवजीको पूजन करचो ॥ २३ ॥ तब उद्धवजी दंडोत करिके रासेश्वरी राधिकाकी परिक्रमा देके गोपीगणनपै आज्ञा मांगिके बेर बेर दंण्डवत करिके ॥ २४ ॥ रतननके भूषणन करिके भूषित दिव्य कांतिवारे रथपै चढिके गयेहैं अतिमान जाको ऐसो उद्धव

॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ अथराधालेखनींचनीत्वापात्रंमषेस्त्वरम् ॥ समाचारंचिंतयंतीतावदश्रूणिसुस्रुवुः ॥ १९ ॥ यद्यत्पत्रं समानीतंराधयालेखनीयुतम् ॥ तत्तदार्द्रीकृतंजातंनयनांबुजवारिभिः ॥ २० ॥ अश्रुप्रवाहंमुंचंतींकृष्णदर्शनलालसाम् ॥ उद्धवोविस्मयन्प्राहराधांकमललोचनाम् ॥ २१ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ कथंलिखसिराधेत्वंकथंदुःखंकरोषिहि ॥ सर्वतस्मैवदिष्यामिव्यथांत्वल्लेखनंविना ॥ २२ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वावचस्तस्यराधयागतबाधया ॥ सर्वाभिर्गोपिकाभिश्चपूजितोभूत्तदोद्धवः ॥२३॥ नत्वाप्रदक्षिणीकृत्यराधांरासेश्वरींपराम् ॥ गोपीगणमनुज्ञाप्यनत्वानत्वापुनःपुनः ॥ २४ ॥ रथमारुह्यदिव्याभंरत्नभूषणभूषितम् ॥ गतस्त्वतिमानोसौसंध्यायांनंदमाययौ ॥ २५ ॥ मार्तंडउदयंप्राप्तेनत्वागोपींयशोमतीम् ॥ नन्दराजमनुज्ञाप्यनवनंदांस्तदोद्धवः ॥ २६ ॥ वृषभानूपनंदांश्चसमनुज्ञाप्यलोकतः ॥ तथाकृष्णसखान्सर्वान्रथमारुह्यनिर्गतः ॥ २७ ॥ दूरंतमनुगाःसर्वेगोपागोपीगणास्तथा ॥ सन्निवृत्याथतान्स्नेहादुद्धवोमथुरांययौ ॥ २८ ॥ एकांतेचाक्षयवटेकृष्णातीरेमनोहरे ॥ नत्वाकृष्णंपरिक्रम्यप्रेमगद्गदयागिरा ॥ प्राहस्रवन्नेत्रपद्मउद्धवोबुद्धिसत्तमः ॥ २९ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ किंदेवकथनीयंमेभवतोशेषसाक्षिणः ॥ विधत्स्वशंराधिकायागोपीनांदेहिदर्शनम् ॥ ३० ॥ श्रीकृष्णंदेवदेवेशंसमानेष्येतवांतिकम् ॥ इत्थंवाक्यंचमेभूतंरक्षरक्षकृपानिधे ॥ ३१ ॥

संध्यासमें नंदजीपै आये ॥ २५ ॥ जब सूर्योदय भयो तब यशोदाजीपै आज्ञा मांगि दंडोत करिके नंदराजपै आज्ञा मांगि तैसेंई नौनंदनपै ॥ २६ ॥ तः वृषभानु नौ उपनंद तैसेंई कृष्णके सखानपै आज्ञा मांगि रथमें बैठिके चले ॥ २७ ॥ तब मोहवशसों दूरतलक गोप गोपीगण पौंहचायवे आये तिनें बगदायके मथुराकूं आवत भये ॥ २८ ॥ एकांतमें अक्षयवटेपे मनोहर जमुनाजीके किनारेपै बैठे श्रीकृष्णकूं दंडोत करिके परिक्रमा देके आंखिनमेंते आंसू चुचातजाय प्रेमकी गद्गद वाणीते बुद्धिमान् उद्धव ये बोले ॥ २९ ॥ हे देव ! मैं कहा कहूं तुम सबके साक्षी हो हे नाथ ! आप राधाको कल्याण करो और गोपीनकूं दर्शन देउ ॥ ३० ॥ हे देवदेव ! श्रीकृष्णकूं मैं तेरे पास लेआऊंगो ऐसें कहि

आयो हूं सो मेरी रक्षा करो मेरी प्रतिज्ञा राखो ॥ ३१ ॥ जैसे प्रह्लादको, रुक्मांगदको, बलिको, खट्वांगको, अंबरीषको, ध्रुवको वचन राख्यौ हे नाथ! हे भक्तेश्वर! तैसेंई मेरी कहीकी रक्षा करो ॥ ३२ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां मथुराखंडे भाषाटीकायां गोपीवाक्य उद्धवागमनं नामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ नारदजी कहें हैं कि, ऐसे भक्तवत्सल भगवान् भक्त उद्धवको वचन सुनिके अपने कहेभये वचनकी याद करिके भगवान् चलिवेकूं मन करतेभये ॥ १ ॥ राज्यादिकको जितनो कामको भार तापे बलदेवजीकूं स्थापन करिके सुनहरी रथ जामें किंकिणी बंधिरही चंचल जामें घोडा जुते ॥ २ ॥ सूर्यकीसी कांतिवारे वा रथमें बैठि उद्धवकूं संग लेके भक्तनकूं दर्शन देवेके लिये भगवान् नंदव्रजकूं आवते भये ॥ ३ ॥ गोवर्द्धन, गोकुल, वृंदावनकूं देखत मनोहर यमुनाके तीर पुलिनमें आवते भये ॥ ४ ॥ लाखन किरोडन गौ व्रजके पति श्रीकृष्णकूं देखिके चारों तरफ

प्रह्लादरुक्मांगदयोःप्रतिज्ञांबलेश्चखट्वांगनृपस्यसाक्षात् ॥ यथांबरीषध्रुवयोस्तथामेकृताचभक्तेश्वररक्षरक्ष ॥ ३२ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमथुराखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेगोपीवाक्यउद्धवागमनंनामाऽष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्थंनिशम्यभक्तस्यवचनंभक्तवत्सलः ॥ स्मृत्वावाक्यंस्वकथितंगंतुंचक्रेच्युतोमतिम् ॥ १ ॥ बलदेवंस्थापयित्वाकार्यभारेषुसर्वतः ॥ हेमाढ्यंकिंकिणीजालंचंचलाश्वनियोजितम् ॥ २ ॥ रथमारुह्यसूर्याभमुद्धवेनसमन्वितः ॥ भक्तानांदर्शनंदातुंप्रययौनंदगोकुलम् ॥३॥ गोवर्द्धनंगोकुलंचपश्यन्वृन्दावनंवनम् ॥ प्राप्तोभूत्पुलिनेकृष्णःकृष्णातीरेमनोहरे ॥ ४ ॥ कोटिशःकोटिशोगावोदृष्ट्वाकृष्णंव्रजाधिपम् ॥ आधावंत्यःसर्वतस्तंस्नेहस्नुतपयोधराः ॥ ५ ॥ उदास्यकर्णवालाश्चरंभमाणाःसवत्सकाः ॥ मुखेकवलसंयुक्ताअश्रुमुख्योगतव्यथाः ॥ ६ ॥ सरथंसारुगंसाश्वंशरदर्कंयथाघनाः ॥ रुरुधुस्तंरथंराजन्नुद्धवस्यप्रपश्यतः ॥ ७ ॥ श्रीगोपालोहरिस्तासांवदन्नामपृथक्पृथक् ॥ श्रीहस्तेनतदंगानिस्पृशन्हर्षंजगामह ॥ ८ ॥ तत्समीपेगवांवृन्दंगतंवीक्ष्यव्रजार्भकाः ॥ श्रीदामाद्याविस्मिताश्चदूरादूचुःपरस्परम् ॥ ९ ॥ ॥ गोपाऊचुः ॥ ॥ रथंसकुंभध्वजवायुवेगंसुकांस्यपत्रध्वनिनिःस्वनंतम् ॥ शताश्वयुक्तंशतसूर्यशोभंगावःकथंवारुरुधुःसखायः ॥ १० ॥ अन्योनचास्मिन्हिगवांप्रहर्षणेरायातिकिंतुव्रजराजनंदनः ॥ स्फुरंतिचांगानिहिदक्षिणानिनःश्रीनीलकण्ठःप्रतनोतितोरणम् ॥ ११ ॥

लते भाजी स्नेह करिके दूध जिनके चुचावत जायँ सब ओरते कृष्णके पास आईं ॥ ५ ॥ रँभातीभई कान और पूंछि उठायके बछरानसहित प्रेमके आंसू बहाती मुखमें ग्रास लिये व्यथा जिनकी जातरही ॥ ६ ॥ तिन गौअनने घोडानसमेत उद्धवके देखत २ रथ आयघेर्‌यो शरदऋतुके सूर्यकूं जैसे घन आय घेरे हैं ॥ ७ ॥ तब श्रीगोपाल उन गौअनके न्यारे २ नाम लेलेके सबनपै हाथ फेर गौअनकूं हर्ष देत आप हर्षकूं प्राप्तहोतभये ॥ ८ ॥ श्रीकृष्णके समीप गौअनको समूह आयो देखिके व्रजके बालक श्रीदामादिक विस्मित हैके आपुसमें यह कहनलगे ॥ ९ ॥ हे सखा हो! यह कुंभकी ध्वजा है जामें पवनकोसी वेग है कांसेकी झांझ जामें बजिरही हैं सौ घोडा जामें लगिरहेहैं सौ सूर्यकोसो तेज है या रथकूं गौ क्यों घेररही हैं ॥ १० ॥ और तो कोई गौअनकूं हर्षको दाता है नहीं कहूं व्रजराजनन्दन तो नहीं आयो है हमारे दाहिने अंग फडकें हैं

नीलकंठ चंदनवारसी करें हैं यानी हमारे चारों तरफ तोरणकी नाईं परिकम्मा देती डोलरयोहै ॥ ११ ॥ नारदजी कहेहैं ऐसे मनते विचारिकें सबरे गोप आये श्रीकृष्णकूं देखवेको गई वस्तुके देखवेको जन जैसे आवें ॥ १२ ॥ तब तो स्वयं परिपूर्णतम श्रीकृष्ण रथमेंते उतरिपरे स्वयं भगवान् सबनको आगे करिकें भुजा पसारिकें सबनसों मिले और प्रेममें विह्वल हैगये ॥ १३ ॥ नेत्रनमेंते प्रेमके आंसु बहावते श्रीकृष्ण न्यारे २ सबते मिलेहैं अहो या भक्तिको माहात्म्य पृथ्वीमें को कहिसकेहै ॥ १४ ॥ तब सब गोप आंखिनमेंते आंसू छोड़त रोमन लगे तब हे मैथिल ! कछू कहिवेकी सामर्थ्य नहीं भई श्रीकृष्णके विक्षेपते विह्वल हैगये ॥ १५ ॥ तब परिपूर्णतम साक्षात् श्रीकृष्ण प्रेमानन्दभरे तिन गोपनको आश्वास कीनो मीठी वाणीते ॥ १६ ॥ फिर कृष्णने उद्धवजीकूं बालकनके संग नन्दभवनकूं भेज्यो तब नंदजीतें उद्धवजी बोले हे व्रजनाथ ! आपके पुत्र श्रीकृष्ण आये हैं

॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्थंविचार्य्यमनसागोपाःसर्वेसमागताः ॥ ददृशुर्माधवंमित्रंगतंवस्तुयथाजनाः ॥ १२ ॥ अवप्लुत्यरथा त्कृष्णःपरिपूर्णतमःस्वयम् ॥ पुरोनिधायतान्सर्वान्दोर्भ्यांतत्प्रेमविह्वलः ॥ १३ ॥ मुंचन्नेत्राम्बुजवारीणिपरिरेभेपृथक्पृथक् ॥ अहोभक्तेश्च माहात्म्यंवक्तुंकोस्तिमहीतले ॥ १४ ॥ तेसर्वेरुरुदुर्गोपामुंचंतोश्रूणिमैथिल ॥ प्रवक्तुंनसमर्थास्तेकृष्णविक्षेपविह्वलाः ॥ १५ ॥ परिपूर्ण तमःसाक्षाद्देवोमधुरयागिरा ॥ आश्वासयामासचतान्प्रेमानन्दसमाकुलान् ॥ १६ ॥ उद्धवःप्रेषितोवक्तुंश्रीकृष्णेनार्भकैःसह ॥ आगतंकथ यामासश्रीकृष्णंनंदपत्तने ॥ १७ ॥ श्रुत्वागतंनंदसूनुंश्रीकृष्णंगोपवल्लभम् ॥ आनेतुंनिर्गताःसर्वेपरिपूर्णमनोरथाः ॥ १८ ॥ भेरीमृदंगैःपटहैः कलस्वनैरापूर्णकुंभैर्द्विजवेदघोषणैः ॥ गन्धाक्षतैर्मंगललाजमिश्रितैःश्रीनंदराजोभिययौयशोदया ॥ १९ ॥ ततःपुरस्कृत्यमदोन्नतंगजंसिन्दूर शुंडाधृतहेमशृंखलम् ॥ समाययौश्रीवृषभानुमुख्योभान्वाकृतिस्तत्रकलावतीयुतः ॥ २० ॥ नंदोपनन्दावृषभानवश्चगोपाश्चवृद्धास्तरुणार्भ काश्च ॥ सम्रेणुगुञ्जापरिपिच्छयुक्ताविनिर्गताःपूर्णमनोरथास्ते ॥ २१ ॥ गायंतआराद्रूपनन्दनंदनंनृत्यंतआचालितपीतवाससः ॥ वंशीध रावेत्रविषाणपाणयःप्रहर्षितादर्शनलालसाभृशम् ॥ २२ ॥ सखीमुखेभ्योहरिमागतंपरंनिशम्यराधाशयनात्समुत्थिता ॥ ताभ्यःस्वभूषाःप्र ददौप्रहर्षिताप्रीतास्वगन्धिनवपद्मिनीयथा ॥ २३ ॥

॥ १७ ॥ श्रीकृष्ण नन्दकुमार गोपवल्लभकूं आये सुनिकें जिनके परिपूर्ण मनोरथ हैगये ऐसे नंदादिक गोप बड़ी प्रीतिते कृष्णके लिवायवेकूं निकसे ॥ १८ ॥ मनोहर जिनके शब्द ऐसे भेरी, नगाड़े, ढोल बजत जायहैं जलके भरे कलश लिये ब्राह्मण वेदध्वनि करते जाय हैं गन्ध, अक्षत, राई, मंगलवस्तुकू लैके यशोदासहित नन्दराज आये ॥ १९ ॥ अगाड़ी सजेभये हाथीकूं करिकें सिंदूरते सूंडि जाकी रंगिरही है सोनेकी सांकर बंधी है ऐसेई शोभा कलावतीकूं संग लैके सूर्यकांतसो जिनको तेज ऐसे वृषभानुवर आये ॥ २० ॥ ऐसेई छः वृषभानु, नौ नंद, नौ उपनन्द, बालक, तरुण और बड़े बूढ़े सब आये माला पहरे बेत लिये मुरली बजावत निरमिठीनके मोर पंखनके शृंगार करें परिपूर्णमनोरथ निकसे ॥ २१ ॥ श्रीकृष्णके समीप गावत, नचावत, पीरे पिछोरा फिरावत, वेणु, बेत, सींगरी जिनके हाथनमें दर्शनकी लालसाते हर्षित चले आमे हैं ॥ २२ ॥ सखीनके मुखते

कृष्णको आगमन सुनिके शयनतैते उठिके तिन सखीनकूं भूषण देकैं प्रसन्न भई राधा नवीन कमलिनी जैसे सुगन्ध देय है ॥ २३ ॥ बत्तीस सोल्हे आठ और द्वे यूथकूं संग लेके मनोहर पालकीमें बैठिके राधा श्रीधरके दर्शनकू आई ॥ २४ ॥ तैसेई किरोड़न गोपी अपने २ घरके काम काज सब छोडिके अस्तव्यस्त गहने वस्त्र जिनके प्रेमते चलायमान आमें हैं ॥ २५ ॥ वृक्ष, लता, गौ मृग पक्षी सब व्रज प्रेममें आतुरी हैरह्यौहै आयौहै ताहि पिता नन्दराजकूं देखि और जा यशोदाजी तिनकूं हाथ जोरि माथेपै धरि दंडोत करते भये ॥ २६ ॥ श्रीनन्दराज बहुत दिननमें आयो अपनो बेटा ताकूं दोनों भुजा पसारि हृदयते लगाय मिले यशोदासहित नन्दने आनन्दके आंसूनतें कृष्णकूं न्हवायदीने ॥ २७ ॥ नन्द उपनन्द वृषभानु सबनकूं दंडोत करी उनने आशीर्वाद दियौ तैसेई बराबरके गोपनको हाथमें हाथ पकरि छोटे बडेनते यथायोग्य मिले ॥ २८ ॥

द्वात्रिंशदष्टौकिलषोडशद्वेयूथैर्युतामैथिलगोपिकानाम् ॥ आरुह्यराधाशिबिकांमनोज्ञांसमाययौश्रीधरदर्शनार्थम् ॥ २४ ॥ तथाहिगोप्यःकिलकोटिशश्चत्यक्त्वाथसर्वस्वगृहस्यकृत्यम् ॥ व्यस्तस्तवस्त्राभरणानृपेशसमाययुःप्रेमचलन्मनोगाः ॥ २५ ॥ सर्वव्रजंपादपगोमृगद्विजंप्रेमातुरंवीक्ष्यसमागतंकिसु ॥ श्रीनंदराजंपितरंचमातरंननामकृष्णःकृतमस्तकांजलिः ॥२६॥ श्रीनन्दराजस्तनयंचिरागतंप्रगृह्यदोर्भ्यांहृदयेनिधायतम् ॥ संस्नापयामाससुनेत्रजैर्जलैर्यशोदयाप्राप्तमनोरथश्चिरात् ॥२७॥ नन्दोपनन्दान्वृषभानुवृद्धान्सर्वान्नमस्कृत्यचतत्कृताशीः ॥ तथावयस्यैश्चपरस्परंबालवृंश्चहस्तग्रहणैःस्थितोभूत् ॥ २८ ॥ ततःसमारुह्यरथंहरिःस्वयंनिधायनंदंचगजेयशोदया ॥ नंदोपनंदैःसहितोगवांगणैःश्रीनंदराजस्यपुरंविवेशसः ॥ २९ ॥ तदैवदेवाःकिलपुष्पवर्षामाचारलाजान्पुरगोपिकाश्च ॥ प्रचक्रिरेतत्रजयेतिमंगलंशब्दंचगोपागृहमागतेहरौ ॥३०॥ धन्यःसखातेपरमुद्धवोयमनेनसाक्षात्किलदर्शितोत्र ॥ त्वंजीवनंगोपजनस्यगोपाऊचुर्गिरागद्गदयेदमार्ताः ॥३१॥ इदंमयातेकथितंनृपेशपुनर्व्रजेह्यागमनंहरेश्च ॥ किमिच्छसिश्रोतुमथोसुरासुरैःपरंचरित्रंशुभदंविचित्रम् ॥ ३२ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांमथुराखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेश्रीकृष्णागमनोत्सवंनामैकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ अग्रेचकारकिंसाक्षाद्भगवान्व्रजमण्डले ॥ राधायैगोपिकाभ्यश्चकथंस्विद्दर्शनंददौ ॥ १ ॥

फिर आप रथमें बैठे नन्द यशोदाजीकूँ हाथीपै बैठारि नन्द उपनन्द सबकूँ लेके गौअनकूं लेके नन्दनगरमे प्राप्त भये ॥ २९ ॥ तब देवता पुष्पनकी वर्षा करनलगे गोपी खील वर्षावन लगी जब महलमें आये तब सब गोप जय जय शब्द करनलगे ॥ ३० ॥ तब तो सब गोप यह कहनलगे हे कृष्ण ! यह तेरो सखा उद्धव धन्य जाने तोकूँ दिखाय दीनो तुम गोप जननके जीवन हौ ऐसे आर्त बोले ॥ ३१ ॥ नारदजी कहे है हे नृपेश ! यह मैने तेरे आगे कथा कही हरिको फिर करिके व्रजको आयवो परम विचित्र यह चरित्र है सुर असुर सबकूं शुभदाता है अब और कहा सुन्यो चाहो हो ॥ ३२ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां मथुराखण्डे भाषाटीकायां श्रीकृष्णागमनं नामैकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥ बहुलाश्वराजा नारदजीते पूछे है कि, साक्षात् भगवान व्रजमण्डलमें अगाडी कहा लीला करते भये राधिकाकूं और गोपीनकुं कैसे दर्शन

देतभये ॥ १ ॥ गोपिनको मनोरथ कारके फिर मथुरामे कैसे आये हे विप्रेंद्र! यह मेरे आगे कहो तुम, भूत, भविष्यके वेत्ता हो ॥ २ ॥ नारदजी कहे हैं सन्ध्यासमय राधिकाजीने बुलाये तब श्रीकृष्ण भगवान् एकांतमे शीतल जो कदलीवन तामें जातभये ॥ ३ ॥ फुहारे जामें चलें ऐसो जो मेघमहल चन्दनते छिरक्यो तामें गयो कालिन्दीकी फुहार पहां चली आमें चन्द्रमण्डलमेंते जहां अमृत झरे ॥ ४ ॥ ऐसो वन सो राधाके वियोगकी अग्नितें भस्म भयोहो जायहो केवल श्रीकृष्णके आगमनकी आशाही या वनकी रक्षा करिरहीही ॥ ५ ॥ तहांही तब गोपीनके सौ यूथ हैं वे सब प्रियाजीसो श्रीकृष्णको आगमन कहिवेकूं आये ॥ ६ ॥ श्रीकृष्णकूं आयो देखि अकस्मात् उठके ठाडीभई वृषभानुवरकी बेटी श्रीराधिका सब सखीनकुं संग लेके श्रीकृष्णके लिवायवेकूं आई ॥ ७ ॥ तब आसन, अर्घ्य, पाद्य, सुंदर २ उपचार दीने आदरते मीठी २ वाणीते कुशल पूछन लगी

गोपीमनोरथंकृत्वामथुरामाजगामह ॥ एतन्मेब्रूहिविप्रेंद्रत्वंपरावरवित्तमः ॥ २ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ सन्ध्यायांराधयाहूतःश्रीकृष्णो भगवान्स्वयम् ॥ एकांतेशीतलंशश्वज्जगामकदलीवनम् ॥ ३ ॥ स्फारास्फुरन्मेघगृहंरंभाचन्दनचर्चितम् ॥ कृष्णामरुत्सीकरंचसुधारश्मिगल त्सुधम् ॥४॥ एतादृशंवनंराधावियोगानलवर्चसा ॥ भस्मीभूतंहिसततंकृष्णाशातांहिरक्षति ॥ ५ ॥ तत्रैवसर्वंगोपीनांशतयूथाःसमागताः॥ तस्यैनिवेदनंचक्रुर्माधवागमनस्यहि ॥ ६ ॥ उत्थायसहसासाक्षाद्वृषभानुवरात्मजा ॥ आनेतुमाययौकृष्णंसखीभिःपरिवारिता ॥ ७ ॥ दत्वा वासनपाद्यार्घानुपचारान्मनोहरान् ॥ वदंतीसादरंवाक्यंकुशलंकुशलाधिका ॥ ८ ॥ युवकंदर्पकोटीनांमाधुर्य्यहारिणंहरिम् ॥ दृष्ट्वाराधाज हौदुःखंब्रह्मज्ञात्वागुणंयथा ॥ ९ ॥ प्रसन्नातत्रशृंगारमकरोत्कीर्तिनन्दिनी ॥ तथानोकारिशृंगारःपार्श्वेकृष्णेगतेसति ॥ १० ॥ नचन्दनंच तांबूलंभोजनंचसुधासमम् ॥ नकृतंदिव्यशयनंहास्यंवानकृतंक्वचित् ॥ ११ ॥ परिपूर्णतमंकृष्णंपरिपूर्णतमप्रिया ॥ आनन्दाश्रूणिमुंचंती प्राहगद्गदयागिरा ॥ १२ ॥ ॥ राधोवाच ॥ ॥ कियद्दूरेयदुपुरीनागतंकिंकरोषिहि ॥ किंवदेहंस्तोदुःखंभवतोऽशेषसाक्षिणः ॥ १३ ॥ सौदासराजमहिषीदमयंतीचमैथिली ॥ नास्त्यन्नकांपुरस्कृत्यनदेहंविरहंरिपुम् ॥ १४ ॥

कुशल पूछिवेमे अति चतुर हे ॥ ८ ॥ तरुण किरोडन कामदेवकी धैर्यकूं हरनहारे हरिकूं देखि श्रीराधिका अपने दुःखकूं त्यागतभई ब्रह्मकूं प्राप्त हैके गुणनकूं जैसे त्याग देयहे ॥ ९ ॥ तब श्रीकीर्तिनंदिनी प्रसन्न हैके अपने शृंगार करनलगी जबतलक श्रीकृष्ण मथुरामें रहे तबतलक शृंगार नहीं कीनो ॥ १० ॥ न चंदन लगायो, न तांबूल खायो, न अमृतसो भोजन कीनो, न दिव्य सेज बनाई, कबहूं हासह नही कीनो ॥ ११ ॥ परिपूर्णतम साक्षात श्रीकृष्णसो परिपूर्णतम प्यारी राधिका आनन्दके आंसूनकूं छोडती गद्गदवाणीते बोली ॥ १२ ॥ राधा बोली मधुपुरी कितनी दूर है सो आप नही आये वहां कहा कर्यो करे हैं एकांतको दुःख मे तुमते कहा कहूं आप तो सबके साक्षी हो ॥ १३ ॥ सौदासराजाकी रानी मदयंती, नलकी रानी दमयंती, रामचन्द्रकी रानी सीता इन तीनोंमेते मेरे पास वैरी विरहके दुःखकूं जानिवेवारी पहां कोऊ नहीं

हैं मैं अब कौनके अगारी कहूं ॥ १४ ॥ मेरे समान है आश्रय जिनको ऐसी गोपीहूं कहिवेकूं समर्थ नही है ये तो शरदऋतुके चंद्रमाकूं चकोरी, जल भरे बादरकूं मोरनी जैसे देखेहैं ॥ १५ ॥ ऐसेही श्रीवृंदावनके चंद्रमा जे घनश्याम तुम हो तिनकूं देखिवेकूं हम उत्कंठित रहेहैं तुमारो सखा उद्धवहू धन्य हैं जाने तुम्हारे दर्शन कराये और कोई व्रजमें ऐसो नही है जाके प्रेमते तुम आये हो ॥ १६ ॥ नारदजी कहैं हैं ऐसे कहतीजायँ निरंतर रोवतीजायं ऐसी परमा लक्ष्मी श्रीराधिकाकूं देखिके दयाते आतुर अंग जिनके कमलसे नेत्रनमेंते अश्रुपात चलेजायँहि दोनों भुजानते पकरिके नीतिके वचनते दिलासा देतेभये यह बोले ॥ १७ ॥ भगवान् बोले हे राधे! तुम शोच मति करो मैं तुमारीही प्रीतिते आयोहूं हममें तुममें कछू भेद नही एकही तेज है पर द्वे जनने मानिराखे हैं ॥ १८ ॥ जैसे दूधमें सुफेदी न्यारी नही होय है तैसेई हमारो तुमारो संयोग है जहां मैं हूं तहांही सदा तू है जहां तू है तहां मैं हूं हमारो तुम्हारो कबहूं वियोग हैई नही ॥ १९ ॥

मत्समानाश्रयागोप्योगदितुंनक्षमाःक्वचित् ॥ शरच्चन्द्रचकोरीवमयूरीवघनंनवम् ॥ १५ ॥ श्रीवृन्दावनचंद्रंत्वांघनश्यामंसमुत्सहे ॥ तवसख्योद्धवेनाशुधन्येनत्वंप्रदर्शितः ॥ अन्यःकोपिव्रजेनास्तियस्यप्रेम्णात्वमागतः ॥ १६ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवंवदंतींसततंरुदंतींपरांश्रियंवीक्ष्यघृणातुरांगः ॥ आश्वासयामासनयेनसद्यःप्रगृह्यदोर्भ्यांस्रवदंबुनेत्रः ॥ १७ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ माशोकंकुरुराधेत्वंत्वत्प्रीत्याहंसमागतः ॥ आवयोर्भेदरहितंतेजश्चैकंद्विधाजनैः ॥ १८ ॥ यथाहिदुग्धधावल्येतंथावांसर्वदाशुभे ॥ यत्राहंत्वंसदातत्रविश्लेषोनहिचावयोः ॥ १९ ॥ पूर्णब्रह्मपरंचाहंतटस्थात्वंजगत्प्रसूः ॥ विश्लेषआवयोर्मध्येमूषाज्ञानेनपश्यतत् ॥ २० ॥ यथाकाशस्थितोनित्यंवायुःसर्वत्रगोमहान् ॥ तथाजलंसूक्ष्मरूपंतेजोव्याप्तंयथैधसि ॥ २१ ॥ अंतर्बहिर्यथापृथ्वीपृथग्भूतावरानने ॥ तथाविकाररहितोजलवत्त्रिगुणैरहम् ॥ ॥ २२ ॥ तथात्वंपश्यमद्भावंसदानन्दोभवेत्ततः ॥ अहंममेतिभावेनद्वितीयोस्तिवरानने ॥ २३ ॥ यावद्रनेमध्यगतस्तदुत्थितःस्वंरूपमर्कंनहिदृक्प्रपश्यति ॥ तावत्परात्मानमसौप्रधानजेर्गुणैस्तथातेषुगतेषुपश्यति ॥ २४ ॥ गुणेषुसक्तंकिलबन्धनायरक्तंमनःपुंसिचमुक्तयेस्यात् ॥ मनोद्वयोःकारणमाहुराराज्ञित्वाथतत्कौविचरेदसंगः ॥ २५ ॥

परिपूर्ण ब्रह्म मैं हूं जगत्की प्रसूतिकरनवारी तटस्थ तू है हमारो तुमारो जो पृथक् माननो है सो विश्लेष अज्ञानते देखो है ॥ २० ॥ जैसे आकाश नित्यरूप सर्वत्र व्याप्त ह्वैके स्थित है और जैसे महान् वायु सर्वत्र नित्य है जैसे सूक्ष्मरूपते जल सर्वत्र रहैहै जैसे काठमें अग्नि रहैहै ॥ २१ ॥ जैसे बाहर भीतर पृथ्वी है देहके और न्यारीहू है तैसेई त्रिगुण विकारसो मैं रहित हूं तोहू जलकी तरह त्रिगुणते मैं मैलो दीखूं हूं ॥ २२ ॥ तैसेही तू सदानंदमय मेरे स्वरूपकूं देखि हे वरानने! अहंता मम ताते मैं दूसरो हूं ॥ २३ ॥ सूर्यते उत्पत्तिभई जो दृष्टि है सो मध्यगत अपनो स्वरूप जो सूर्य है ताकूं जबतलक नहीं देखे है तबतलक तीनों गुणमें गयो जो अपनो आत्मा है ताकूं नहीं देखैहै ॥ २४ ॥ जा ये मन जब विषयनमें लगो होय तो बंधन करनवारो हैजाय है और जो परमेश्वरमें लगो होय है तो मुक्तिको कारण हैजायहै

बंध मोक्षको कारण ये मनही है जाते मनकूं जीतिके अनासक्त ह्वैके पृथ्वीमें विचरे ॥ २५ ॥ या मनकी परस्पर दोनों ओरतेही प्रीति होय है एक बगलसे नहीं होयहै याते मेरे विषे प्रेमही कर्तव्य है प्रेमके समान पृथ्वीमें और कोई उपाय नहीं है ॥ २६ ॥ नारदजी कहेहैं ऐसे हरिको वचन सुनिकरिके कीर्तिनंदिनी प्रसन्न ह्वैके गोपी नके संग श्रीकृष्णको पूजन करतीभयी ॥ २७ ॥ याके अनंतर कार्तिककी पूर्णमासीकूं रात्रिके समय गोपीनको और राधाको संग लेके श्रीकृष्ण रासमंडलमें मुरली बजावते भये ॥ २८ ॥ यमुनाके निकट रात्रीके संग राधाके पति रमण करनवारी जे सुंदरी गोपी तिनके संग रासमें सुशोभित भयेहैं ॥ २९ ॥ जितनी रासमें गोपी ही तितनेई अपने रूप धारण कर विन गोपीनके संग वृंदावनके ईश्वर वृंदावनमे रमण करतेभये ॥ ३० ॥ बजत है नूपुर और घूंघरू जिनके वनमाला पहरे पीतांबर ओढे कमलको लिये सूर्यको तेज

सर्वद्विभावंमनसःपरस्परंनह्येकतोभामिनिजायतेतः ॥ प्रेमैवकर्तव्यमतोमयिस्वतःप्रेम्णासमानंभुविनास्तिकिंचित् ॥ २६ ॥ ॥ नारदउवा
च ॥ ॥ इतिवाक्यंहरेःश्रुत्वाप्रसन्नाकीर्तिनंदिनी ॥ गोपिकाभिःसमंकृष्णंपूजयामाससाधवम् ॥ २७ ॥ अथरात्र्यांहरिःसाक्षात्कार्तिक्यां
रासमंडले ॥ गत्वाननादमुरलींगोपीभीराधयासह ॥ २८ ॥ यमुनानिकटेराजन्राधयाराधिकापतिः ॥ रमाभिःसुन्दरीभिश्चरासरंगेरराजह
॥ २९ ॥ यावतीर्गोपिकारासेतावद्रूपधरोहरिः ॥ रेमेवृंदावनेदिव्येहरिर्वृन्दावनेश्वरः ॥ ३० ॥ क्वणन्नूपुरमंजीरोवनमालाविराजितः ॥ पीतां
बरःपद्मधारीप्रभातार्ककिरीटभृक् ॥ ३१ ॥ विद्युल्लतास्फुरत्प्रोद्यद्धेमकुंडलमंडितः ॥ वेत्रभृद्वादयन्वंशींनटवेषोघनद्युतिः ॥ ३२ ॥
स्फुरत्कौस्तुभरत्नाढ्यःप्रचलत्स्निग्धकुंडलः ॥ रराजराधयारासेयथारत्यारतीश्वरः ॥ ३३ ॥ शच्याशक्रोयथास्वर्गेघनश्चंचलयायथा ॥
वृन्दयावृन्दकारण्येतथावृन्दावनेश्वरः ॥ ३४ ॥ वृन्दावनंचपुलिनंवनान्युपवनानिच ॥ पश्यन्गोपीगणैःसार्द्धगिरिंगोवर्द्धनंययौ ॥ ३५ ॥
गोपीनांशतयूथानांमानंवीक्ष्यव्रजेश्वरः ॥ भगवान्राधयासाकंतत्रैवांतरधीयत ॥ ३६ ॥ अथगोवर्द्धनाद्दूरेसुंदरंयोजनत्रयम् ॥ श्रीखण्डगन्धसं
युक्तंसश्यौरोहिताचलम् ॥ ३७ ॥ लताकुंजनिकुंजाश्चपश्यन्जल्पंस्तयासह ॥ विचचारगिरौरम्येकांचनीलतिकालये ॥ ३८ ॥ तत्रदेवसरोर
म्यंबद्रीनाथेननिर्मितम् ॥ पाठीनकूर्मनक्रादिहंससारससंकुलम् ॥ ३९ ॥

जामें ऐसे मुकुटको पहरे ॥ ३१ ॥ कौस्तुभमणिकूं पहरे चलायमान घूंघुरवारी अलक जिनकी ॥ विजुरीसे प्रकाशमान सोनेके चंचल है कुंडल जिनके बेत लिये बंशी बजावत नटवर शृंगार श्यामसुंदर राधासहित रासमें ऐसे शोभितभये रतिके संग कामदेव जैसे शोभित होयहै ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ स्वर्गमें इंद्राणीते इंद्रकी जैसे बिजुरीते घन जैसे तैसे वृंदावनमें वृंदाते वृंदावनके ईश्वरकी शोभा होतीभई ॥ ३४ ॥ वृंदावनकूं यमुनाके पुलिनकूं वन उपवनकूं देखते २ गोपीगणनके संग गोवर्द्धनकूं आवतेभये ॥ ३५ ॥ गोपीनको सौयूथवारीनको मान भयो देखिके व्रजेश्वर भगवान् राधासहित यहांही अंतर्धान ह्वैगये ॥ ३६ ॥ तदनंतर गोवर्द्धनते चारे कोश दूर जहां चंदनको घन है ता रोहिताचलनाम पर्वत पै चलेगये ॥ ३७ ॥ लता, कुंज, निकुंजनकूं देखते २ राधिकाते बतरातभये वो मनोहर पर्वतमे सुनहरी लतानको है स्थान जामें ता पर्वतमें विचरतभये ॥ ३८ ॥ तहां एक देव

सरोवर है बद्रीनाथको रच्यो है जो बड़े २ मगर, नाके, हंस, सारस इनते भन्योभयोहै ॥ ३९ ॥ हजारदलके कमल जामें फूलिरहे तिनसो सब ओरसो शोभित है भौंरानकी ध्वनि और कोकिला जामें बोलिरहीहैं ॥ ४० ॥ फूले २ कमलनकी सुगंधि जामें सो शीतल, मंद, सुगंधित पवन जाके किनारेपे चलिरह्योहै तहां रमण करावनवारी राधाजीके संग माधवभगवान् विराजे हैं ॥ ४१ ॥ ताके किनारेपे एक ऋभुनाम मुनीश्वर एक पांवते ठाडो तप करिरह्यो हो और निरंतर श्रीकृष्णके ध्यानमें तत्पर हो ॥ ४२ ॥ छयासठ ६६ हजार वर्षताई जाने निर्मल निरन्न व्रत कर्‍यो हो वा ऋषिको श्रीकृष्ण देखतेभये ॥ ४३ ॥ हंसती श्रीराधा वा मुनिकूं देखिके पूछती भई ताते श्रीकृष्ण यह बोले कि, याको तुम माहात्म्य करो और या महामुनिकी तुम भक्तिको देखो ॥ ४४ ॥ हे ऋभो ! ऐसे श्रीकृष्ण ऊंचे स्वरते पुकारे पर मुनीश्वरने मुनी नही काहेते कि, वाकी वा समय समाधि लगिरही ही ॥४५॥ तब हरि वाके हृदयमेंते निकसिआये जब ध्यानमें न दीखे तब तो विस्मित हैके वा मुनीन्द्रने नेत्र खोलिदिये ॥४६॥ तब नेत्र खोलि राधासहित श्रीकृष्णकूं

सहस्रदलपद्मैश्चमंडितंतदितस्ततः ॥ भ्रमरध्वनिसंयुक्तंपुंस्कोकिलरुतावृतम् ॥ ४० ॥ विकसत्पद्मगन्धाढ्यंतत्तीरेमन्दमारुतम् ॥ रमयाराधयासार्द्धंमाधवोनिषसादह ॥ ४१ ॥ तत्तीरेप्रतपस्यंतंऋभुंनाममहामुनिम् ॥ पदैकेनस्थितंशश्वच्छ्रीकृष्णध्यानतत्परम् ॥ ४२ ॥ षष्टिवर्षसहस्राणिषष्टिवर्षशतानिच ॥ निरन्नंनिर्जलंशांतंश्रीकृष्णस्तंददर्शह ॥ ४३ ॥ पप्रच्छवीक्ष्यतंराधाहसंतीप्राहमाधवः ॥ माहात्म्यंकुरुभक्तोयंपश्यभक्तिंमहामुनेः ॥ ४४ ॥ हेऋभोइतिकृष्णेनप्रोक्तमुच्चैर्वचःशुभम् ॥ नशुश्रावतेनकिंचिद्वाचरमंप्रापितेनवै ॥ ४५ ॥ हरिस्तदातद्धृदयाद्भूवाशुतिरोहितः ॥ ध्यानादृतंहरिंवीक्ष्यमुनीन्द्रश्चातिविस्मितः ॥ ४६ ॥ नेत्रउन्मील्यददर्शश्रीकृष्णंराधयागतम् ॥ घनंचंचलयेवाद्यंरंजयंतंदिशोदश ॥ ४७ ॥ उत्थायसद्योहरिभक्तितत्परःप्रदक्षिणीकृत्यहरिंसराधिकम् ॥ प्रणम्यमूर्ध्नानिपपातपादयोरुवाचकृष्णंबहुगद्गदाक्षरः ॥ ४८ ॥
॥ ॥ श्रीऋभुरुवाच ॥ ॥ नमःकृष्णायकृष्णायैराधायैमाधवायच ॥ परिपूर्णतमायैचपरिपूर्णतमायच ॥ ४९ ॥ घनश्यामायदेवायश्यामायैसततंनमः ॥ रासेश्वरायसततंरासेश्वर्य्यैनमोनमः ॥ ५० ॥ गोलोकातीतलीलायलीलावत्यैनमोनमः ॥ असंख्यांडाधिदेव्यैचासंख्यांडनिधयेनमः ॥५१॥ भूभारहारायभुवंगताभ्यांमच्छान्तयेचात्रसमागताभ्याम् ॥ परस्परंसंधितविग्रहाभ्यांनमोयुवाभ्यांहरिराधिकाभ्याम् ॥ ५२ ॥

देख्यो जैसे बिजुरीसहित बादर होय अपने तेजते दशों दिशानकूं रंगिरहेहैं ॥ ४७ ॥ तब उठिके हरिकी भक्तिमें तत्पर राधासहित हरिकी परिक्रमा देके शिरतें दंडोत करि चरणनमें जायपरो गद्गदवाणीते स्तुति करनलग्यो ॥४८॥ ऋभुऋषि बोले श्रीकृष्णके अर्थ और श्रीकृष्णाके अर्थ मेरी नमस्कार है राधाके अर्थ और माधवके अर्थ नमस्कार है परिपूर्णतम और परिपूर्णतमा दोनों हो तिनके अर्थ मेरी नमस्कार है ॥ ४९ ॥ घनश्याम देव घनश्यामा देवी तिनके अर्थ रासेश्वर तुम और रासेश्वरी प्रिया है तिनके अर्थ निरंतर नमस्कार है ॥ ५० ॥ गोलोकते अतिलीला जिनकी तिनके अर्थ और लीलावतीके अर्थ नमस्कार है असंख्य ब्रह्मांडनकी अधिदेवी और असंख्य ब्रह्मांडनके निधि तिनको नमस्कार है ॥ ५१ ॥ पृथ्वीको भार उतारिवेकूं पृथ्वीमें आये मेरे उद्धारकूं यहां आये परस्पर मिलिरह्योहै विग्रह जिनको ऐसे राधाकृष्ण हो तिनके अर्थ नमस्कार है ॥ ५२ ॥

नारदजी कहें हैं कृष्णके चरणनकूं आंसुनते धोवतो प्रेमानन्दसों युक्त वो मुनि प्राणनकूं त्यागिदेतौभयो ॥ ५३ ॥ तबही वाकी देहमेंते ज्योति निकसी दश सूर्यकोसो तेज जाको दशों दिशानमें भ्रमत २ श्रीकृष्णमें लीन हैगई ॥ ५४ ॥ तब श्रीकृष्ण वा भक्तकी प्रेमलक्षणा भक्ति देखिके आनंदके आंसूनको छोडते वाकूं बुलावते भये ॥ ५५ ॥ फिर श्रीकृष्णके चरणकमलते कृष्णरूप हैके निकस्यो किरोड़ कंदर्पसो सुंदर अत्यंत नयो है मुख जाको ॥ ५६ ॥ तब कृपाके करनहारे भगवानने ऋषिको अपने हृदयते लगाय आश्वास करिके कल्याणकर्ता अपनो हस्तकमल वाके माथेपै धर्यो ॥ ५७ ॥ तब राधा कृष्णकी परिक्रमा देके दंडोत करिके मनोहर रथमें चढिके ऋभु मुनि दिशानमें हे मैथिल ! उजीतो करतो गोलोककूं चल्योगयो ॥ ५८ ॥ राधिकाजी ऋभु मुनिकी परम मुक्ति देखिके अत्यन्त अचंभो करती आनन्दके आंसू छोडती

॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वाकृष्णपदाब्जेप्रक्षरद्बाष्पलोचनः ॥ प्रेमानंदसमायुक्तोजहौप्राणान्महामुनिः ॥ ५३ ॥ तदैवनिर्गतंज्यो
तिर्दशसूर्यसमप्रभम् ॥ परिभ्रमद्दशदिशःश्रीकृष्णेलीनतांगतम् ॥ ५४ ॥ भक्तस्यभक्तिंश्रीकृष्णोवीक्ष्यवैप्रेमलक्षणाम् ॥ आनन्दाश्रुकलांमुंच
न्प्रेम्णातंचाजुहावह ॥ ५५ ॥ पुनःश्रीकृष्णपादाब्जात्कृष्णसारूप्यवान्मुनिः ॥ निर्गतःकोटिकंदर्पसन्निभोतिनताननः ॥ ५६ ॥ दोर्भ्यांप्र
गृह्यहृदयेतंनिधायकृपाकरः ॥ आश्वास्यकल्याणकांकरंदिव्यंदधारह ॥ ५७ ॥ प्रदक्षिणीकृत्यहरिंचराधिकांप्रणम्यचारुह्यरथंमनोहरम् ॥
गोलोकलोकंप्रययावृभुर्मुनिर्विरंजयन्मैथिलमंडलंदिशाम् ॥ ५८ ॥ श्रीराधिकाविस्मयमागताभृशंदृष्ट्वापरांमुक्तिमृभोर्महामुनेः ॥ आनंदवारी
णिविमुंचतीचिरंजगादकृष्णंवृषभानुनंदिनी ॥ ५९ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांमथुराखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेरासोत्सवेऋभुमोक्षोनामविंशो
ऽध्यायः ॥ २० ॥ ॥ राधोवाच ॥ ॥ धन्योयंमुनिशार्दूलस्त्वद्भक्तःप्रेमवान्महान् ॥ त्वत्सारूप्यंजगामासौत्वमप्यश्रुमुखोयतः ॥ १ ॥
अस्यदेहक्रियांकर्तुंयोग्योसिवृजिनार्दन ॥ तपसाचास्यदेहोयंप्रस्फुरत्यमलाकृतिः ॥ २ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ वदंत्यांतत्रराधायांतद्दे
होप्यभवत्सरित् ॥ वहंतीपापहंत्रीचदृश्यतेरोहितेगिरौ ॥ ३ ॥ तद्देहस्यापिसरितंवीक्ष्यराधातिविस्मिता ॥ नन्दराजात्मजंप्राहवृषभानु
वरात्मजा ॥ ४ ॥

श्रीकृष्णसे बोली ॥ ५९ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां मथुराखण्डे भाषाटीकायां रासोत्सवे ऋभुमोक्षो नाम विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ राधिकाजी कहे है कि यह जो मुनिनमें श्रेष्ठ ऋभु मुनि हैं सो धन्य है तुम्हारो भक्त और तुमारो बडो प्रेमी सो तुम्हारी सारूप्यमुक्तिकूं प्राप्त भयो जाके प्रेमते तुम्हारेहू आंसु आयगये ॥ १ ॥ हे दुःखनाशन ! याकी देहक्रिया करिवेकूं आपु योग्य हो तपकरिके याको देह निर्मल फुरैहै निर्मल आकृति है ॥ २ ॥ नारदजी कहे हैं कि, ऐसे राधिकाजी कहिरहीही तबही मुनिको देह नदी हैके बहन लग्यो जो पाप नाशकरनवारी नदी रोहितगिरिपर बहिरही है ॥३॥ ऋषिके देहकी नदीकूं देखिके राधा अत्यन्त विस्मयकूं प्राप्त हैगई और वृषभानुकी बेटी नन्दनन्दनते ये बोली ॥४॥ ६

राधिकाजी बोली कैसे या महामुनिको देह जल ह्वैगयो यह मेरे बड़ो सन्देह है याहि दूरि करिवेकूं योग्य हौ ॥ ५ ॥ भगवान् बोले कि, प्रेमलक्षणा भक्तिसों ये मुनि युक्त हो हे रंभोरु ! याते याको देह द्रव ह्वैगई ॥ ६ ॥ हे राधे ! तेरे संग वरको दाता जो मैं हूं ताहि देखिके हर्षित भयो जो महामुनि है वो जलरूप ह्वैके बहिगयो जैसे मैं पहले जलरूप ह्वैगयो हौ ॥ ७ ॥ तब राधाजी पूछन लगी कि, हे देवदेव ! हे दयाकी निधे ! तुम द्रवताकूं कैसे प्राप्त भये हे यह मोकूं बड़ो अचंभो है सो आपु विस्तारते मोते कहो ॥ ८ ॥ भगवान् बोले यहां एक पुरानो इतिहास वर्णन करें हैं याके सुनेईते पापकी परम हानि होयहै ॥ ९ ॥ जाकी नाभिकमलते प्रजापति ब्रह्मा भयो जो निरंतर या सृष्टिकूं रचतोभयो तपते मेरे वरते बडो प्रभु हो ॥ १० ॥ जब ब्रह्मा सृजन लग्यो तब ब्रह्माकी गोदीमेंते नारद भयो जो भक्तिकरिके उन्मत्त मेरे पदनकूं गावत पृथ्वीमें विचरे है

॥ ॥ राधोवाच ॥ ॥ कथंजलत्वमापन्नोदेहोयंवैमहामुनेः ॥ एतन्मेसंशयंदेवछेत्तुमर्हस्यशेषतः ॥ ५ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ प्रेमलक्षणयाभक्त्यासंयुतोयंमुनीश्वरः ॥ तस्मादस्यतुदेहोयंरंभोरुद्रवतांगतः ॥ ६ ॥ दृष्ट्वात्वयामांवरदंहर्षितोभून्महामुनिः ॥ जलत्वंप्रापतद्देहोयथाहंद्रवतांपुरा ॥ ७ ॥ ॥ श्रीराधोवाच ॥ ॥ द्रवतांत्वंकथंप्राप्तोदेवदेवदयानिधे ॥ एतच्चित्रंहिमेजातंसर्वंत्वंवदविस्तरात् ॥ ८ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ अत्रैवोदाहरंतीममितिहासंपुरातनम् ॥ यस्यश्रवणमात्रेणपापहानिःपरंभवेत् ॥ ९ ॥ यन्नाभिपंकजाज्जातःपुराब्रह्माप्रजापतिः ॥ असृजत्प्रकृतंश्श्वत्तपसामद्वरोर्जितः ॥ १० ॥ उत्संगान्नारदोजज्ञेब्रह्मणःसृजतःशुभः ॥ भक्त्युन्मत्तोमत्पदानिनिजगौपर्य्यटन्महीम् ॥ ११ ॥ एकदानारदंप्राहदेवोब्रह्माप्रजापतिः ॥ प्रजासृजमहाबुद्धेवृथाचंक्रमणंत्यज ॥ १२ ॥ नारदस्तद्वचःश्रुत्वाप्राहेदंज्ञानतत्परः ॥ नसृजामिपितःसृष्टिंशोकमोहादिकारिणीम् ॥ १३ ॥ करिष्यामिहरेर्भक्तिंतत्कीर्त्तनसमन्विताम् ॥ त्वमपिसृष्टिरचनांत्यजदुःखातुरोभृशम् ॥ १४ ॥ क्रुद्धःशशापतंब्रह्माप्राहप्रस्फुरिताधरः ॥ सदागानपरःकल्पंगन्धर्वोभवदुर्मते ॥ १५ ॥ एवंतच्छापतोराधेगन्धर्वउपबर्हणः ॥ बभूवगन्धर्वपतिःकल्पमात्रंसुरालये ॥ १६ ॥ एकदाब्रह्मणोलोकेस्त्रीभिःपरिवृतोगतः ॥ सुन्दरीषुमनःकृत्वाजगौतालविवर्जितम् ॥ १७ ॥ पुनर्ब्रह्मातंशशापत्वंशूद्रोभवदुर्मते ॥ अथासौब्रह्मशापेनदासीपुत्रोबभूवह ॥ १८ ॥

॥ ११ ॥ एक बेर प्रजाको पति ब्रह्मा नारदते बोल्यो हे महाबुद्धे ! तू प्रजा सृज वृथा क्यों डोले है मति डोल्यो करे ॥ १२ ॥ तब ज्ञानमें तत्पर नारद ब्रह्माको वचन सुनिके यह बोल्यो हे पितः ! मैं प्रजा न सृजूंगो क्योंकि, ये सृष्टि शोक, मोह आदिकी कारिणी है ॥ १३ ॥ मैं तो वाही भगवान्के कीर्तनसहित हरिकी भक्ति करूंगो आपहू सृष्टिकी रचना छोडिदेउ याते आपु बडे दुःखी रहो हो ॥ १४ ॥ तब तो ब्रह्माकूं क्रोध आयगयो होठ फडकन लगे और ये शाप दीनो कि, जा तू एक कल्पतलक सदाही गानमें तत्पर गन्धर्व ह्वैजा हे दुर्बुद्धे ! ॥ १५ ॥ हे राधे ! ऐसे वाके शापते गन्धर्वनको पति स्वर्गमें एक कल्पतक उपबर्हणनाम गंधर्व ह्वैगयो ॥ १६ ॥ एक समै ब्रह्माजीके लोकमें स्त्रीनकरिके युक्त गयो सुन्दरीनमें मनकरिके गान कर्यो सोई ताल चूकिगयो ॥ १७ ॥ तब फिर ब्रह्माने शाप दीनो कि, हे दुर्बुद्धे ! तू शूद्र ह्वैजा तब ब्रह्माके शापते दासीपुत्र भयो ॥ १८ ॥

चौ सत्संगते फिर ब्रह्माको बेटा भयो भक्तिते उन्मत्त मेरे पद गावत पृथ्वीमें विचरन लग्यो॥१९॥फिर सो मुनीनमें इंद्र वैष्णवनमें श्रेष्ठ मेरो प्यारो ज्ञानको सूर्य परम भागवत मेरो
मन है गयो ॥ २० ॥ एक समें नारद लोकनमें विचरतो गानमें तत्पर सब जगह जाकी गति सो इलावृतखण्डमें गयो ॥ २१ ॥ जहां श्यामा जंबूनदी श्यामा जामिनके रसकी
नदी हैगई तहां जाम्बूनद सुवर्ण होयहै हे प्रिये ! ॥ २२ ॥ ता देशमे एक वेदनामको नगर है ताम रतननके महल है और दिव्य नारी नरनसो युक्त हैं वाय नारद योगी देखते
भये ॥ २३ ॥ कोई तो पांवरहित हैं काऊके टकुना नहीं हैं काऊके पींडुरी नहीं है काऊके जांघ नहीं है काऊके घोंटू नहीं है कोईके ऊरु नहीं है कोईके कमर नहीं है और कोई
कुबरे हैं ॥ २४ ॥ काऊके दांत हाले है काऊके कंधा ऊंचे कोई नविरहे हैं काऊके नाड़ि नहीं है या प्रकार स्त्रीजन और पुरुष हैं इन सबनको अंगभंग भये देखे हैं ॥ २५ ॥

सत्संगेनपुराराधेप्रातोब्रह्मपुत्रताम् ॥ भक्त्युन्मत्तोमत्पदानिनिजगौपर्यटन्महीम् ॥ १९ ॥ मुनीन्द्रोवैष्णवश्रेष्ठोमत्प्रियोज्ञानभास्करः ॥ परं
भागवतःसाक्षान्नारदोमन्मनाःसदा ॥ २० ॥ एकदानारदोलोकान्पश्यन्वैगानतत्परः ॥ इलावृतंनामखंडंगतवान्सर्वतोगतिः ॥ २१ ॥ यत्र
जंबूनदीश्यामाजंबूफलरसोद्भवा ॥ तथाजांबूनदंनामसुवर्णंभवतिप्रिये ॥ २२ ॥ तद्देशेवेदनगरंरत्नप्रासादनिर्मितम् ॥ ददर्शनारदोयोगीदिव्य
नारीनरैर्युतम् ॥ २३ ॥ कांश्चिद्वैपादरहितान्विगुल्फाञ्जानुवर्जितान् ॥ विजंघाञ्जघनव्यंगान्कृशोरून्कुब्जमध्यकान् ॥२४॥ अथदंतोन्नतस्कं
धान्नतानन्नविकंधरान् ॥ स्त्रीजनान्पुरुषांश्चासर्वांगभंगान्ददर्शह ॥ २५ ॥ अहोकिमेतच्चित्रंहिसर्वान्दृष्ट्वावदन्मुनिः ॥ सर्वेयूयंपद्ममुखादिव्यदे
हाःशुभांबराः ॥ २६ ॥ किंदेवाउपदेवावायूयंकिंऋषिसत्तमाः ॥ वादित्रसहिताःसर्वेरम्यगानपरायणाः ॥ २७ ॥ अंगभंगाःकथंयूयंवदताशुम
मेवहि ॥ इत्युक्तास्तेनतेसर्वेप्रत्यूचुर्दीनमानसाः ॥ २८ ॥ ॥ रागाऊचुः ॥ ॥ महादुःखंमुनेजातमस्माकंतनुषुस्वतः ॥ तस्याग्रेकथनीयंवैदूरी
कर्तुंचयःक्षमः ॥ २९ ॥ रागावयंवेदपुरेवसामःसर्वदामुने ॥ अंगभंगावयंजाताःकारणंशृणुमानद ॥ ३० ॥ जातोहिरण्यगर्भस्यपुत्रोनारदनाम
भाक् ॥ प्रेमोन्मत्तोविकालेनगायन्ध्रुवपदानिच ॥३१॥ विचचारमहीमेतांस्वेच्छयासमहामुनिः ॥ विकालेतस्यगानैश्चविस्वरैस्तालवर्जितैः ॥
॥ ३२ ॥ विगानैश्चवयंसर्वेअंगभंगाबभूविम ॥ इतिश्रुत्वाथतद्वाक्यंनारदोविस्मितोऽभवत् ॥ उवाचगतमानोसौरागान्परिहसन्निव ॥ ३२ ॥

सबनकूं देखि मुनि बोले कि, यह कहा अचंभो है कि, तुम सबरे कमलमुख हो दिव्यदेह और दिव्य वस्त्रवारे हो ॥ २६ ॥ तुम देवता हो कि, गंधर्व हो कि, कोई ऋषि हो
बाजेनकरिके सहित हो मनोहर गान करो हो ॥ २७ ॥ पन अंगभंग तुम कैसे हो सो मोते कहो जलदी, ऐसे जब उन्ने पूछी तब वे दीन मनते बोले ॥ २८ ॥ कि, हे मुनिजी !
हमारे शरीरमें बड़ो दुःख है कौनके आगे कहें कोई दूरि तो नहीं करिसके है ॥ २९ ॥ हे मुनि ! हम सब राग हैं सो वेदपुरमें सदा बसे हैं हम अंगभंग हैगये हैं हे मानद !
ताको कारण सुनो ॥ ३० ॥ हिरण्यगर्भ ब्रह्माके एक नारद नाम बेटा भयो है वो प्रेम करिके उन्मत्त है सो वो वे समय ध्रुवपद गावे है ॥ ३१ ॥
अपनी इच्छापूर्वक पृथ्वीमें विचरे है ताके अकालके गायवेते बेसुरेते बितालेते हम अंगभंग हैगये हैं ॥ ३२ ॥ विगानते हम सब अंगभंग हैगये हैं ऐसे सुनिके

नारदजी बडे अचंभेमें आयगये मान जात रह्यो हँसकरीके सब रागनतें बोले ॥ ३३ ॥ कौन प्रकारतें रागनको वखत, ताल, सुर जानोजाय सो बताओ
ताल सुरतें वखत २ पै राग गायवेमें आवे सो बात मोकूं बताओ ॥ ३४ ॥ तब राग बोले कि, वैकुंठनाथकी प्यारी स्त्री मुख्य सरस्वती है वह जाकूं सिखावै
ताकूं सवरो ज्ञान होय ॥ ३५ ॥ उनके वचननकूं सुनिके दीनदयाल नारदजी सरस्वतीकूं प्रसन्न करिवेकूं जलदीही शुभ्र पर्वतकूं चलेगये ॥ ३६ ॥ तहां दिव्य सौवर्षतलक
हे व्रजेश्वरि ! नारदने उग्र तप करयो निराहार निर्जल रह्यो सरस्वतीको ध्यान करत तप कर्यो ॥ ३७ ॥ तब वो शुभ्र नामकूं छोडिके नारदके तपते पवित्र भयो जो
पर्वत हो वाको नारदनामको पर्वत हैगयो ॥ ३८ ॥ तब तपके अंतमें नारद आइ जो दिव्यवर्णा सरस्वती विष्णुकी प्यारी ताहि देखतोभयो ॥ ३९ ॥ तब तत्काल उठके वाकूं

॥ ॥ मुनिरुवाच ॥ ॥ तस्यकेनप्रकारेणज्ञानंवैकालतालयोः ॥ भवेदिहस्वरैर्युक्तंवदताशुममैवहि ॥ ३४ ॥ ॥ रागाऊचुः ॥ ॥
वैकुंठस्यपतेःसाक्षात्प्रियामुख्यासरस्वती ॥ कुर्याच्छिक्षांयदातस्मैतदास्यात्कालविन्मुनिः ॥३५॥ तेषांवाक्यंततःश्रुत्वानारदोदीनवत्सलः ॥
सरस्वत्याःप्रसादार्थंत्वरंशुभ्रंगिरिंययौ ॥ ३६ ॥ दिव्यवर्षशतंशश्वत्तपस्तेपेसुदुष्करम् ॥ निरन्नंनिर्जलंवाणीध्यानयुक्तंव्रजेश्वरि ॥ ३७ ॥
शुभ्रंनामविसृज्याथपवित्रीकृतभूधरम् ॥ नारदोनामशैलोभूत्तपसानारदस्यच ॥ ३८ ॥ तपोंतआगतांसाक्षाद्वाग्देवींश्रीसरस्वतीम् ॥ विष्णोः
प्रियांदिव्यवर्णामपश्यन्नारदोमुनिः ॥ ३९ ॥ सहसोत्थायतांनत्वापरिक्रम्यनताननः ॥ तद्रूपगुणमाधुर्यैस्तुतिंचक्रेमुनीश्वरः ॥ ४० ॥
॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ नवार्कबिंबद्युतिमुद्गलद्दलत्ताटंककेयूरकिरीटकंकणाम् ॥ स्फुरत्क्वणन्नूपुररावरंजितांनमामिकोटींदुमुखींसरस्व
तीम् ॥ ४१ ॥ वंदेसदाहंकलहंसउद्गतेचलत्पदेचंचलचंचुसंपुटे ॥ निर्धौतमुक्ताफलहारसंचयंसंधारयंतींसुभगांसरस्वतीम् ॥ ४२ ॥ वराभयं
पुस्तकवल्लकीयुतंपरंदधानांविमलेकरद्वये ॥ नमाम्यहंत्वांशुभदांसरस्वतींजगन्मयींब्रह्ममयींमनोहराम् ॥ ४३ ॥ तरंगितक्षौमसितांबरेपरेदेहि
स्वरज्ञानमतीवमंगले ॥ येनाद्वितीयोहिभवेयमक्षरेसर्वोपरिस्यांपररासमण्डले ॥ ४४ ॥

नमस्कार कर नीचो मुख करके दिव्य जिनको वर्ण ता सरस्वतीके रूप, गुण, माधुर्यताकी स्तुति करनलगे ॥ ४० ॥ नारद बोले नवीन सूर्यकी कांतिकूं उगिलते और हलते
जे कर्णफूल, भूमिका, किरीट, कंकण तिनकूं धारण करोहो चमकने बजनें नूपुरनके शब्दकरके रंगीली किरोड चंद्रोदयसो मुख जिनको तिनकूँ मैं नमस्कार करूंहूं ॥ ४१ ॥
नारदजी बोले हे कलहंसकी गतिवारी ! तुमकूँ मैं सदाही दंडोत करूंहूं चलायमान चरणनमें बजेंहैं नूपुरनके घूंघुरू जिनके अति उज्वल मोतीनके हारनके समूह जिने धारण करो
हो ऐसी सौभाग्यवती सरस्वतीकूं मैं नमस्कार करूंहूं ॥ ४२ ॥ निर्मल हाथनसें वर, अभय, पुस्तक, वीणा, तिने धारण करोहो जगन्मयी ब्रह्ममयी मनोहर सौभाग्यमयी शुभकी
दाता जो तुम सरस्वती हो तिनकूँ मैं नमस्कार करूंहूं ॥ ४३ ॥ तरंग जिनमें उठे ऐसे अतिमहीन जो श्वेत वस्त्र जिनकी धारण करनहारी हे अत्यन्त मंगले ! मोकूं स्वरको ज्ञान

वेद यातें मैं सबके ऊपर अद्वितीय होऊं हे अक्षरे ! रासमंडलमें गाऊं ॥ ४४ ॥ भगवान् कहैं हैं यह जड़ता हरनहारो स्तोत्र है नारदको कह्यो याकूं जो कोई प्रातःकाल उठिके पाठकरे सो या लोकमें विद्यावान् होय है ॥ ४५ ॥ ताके अनंतर वाग्वाणी प्रसन्न हैके नारद महात्माकूँ मेरो दीनो सुर, ब्रह्म करिके भूषित जो वीणा ताहि देतभयी ॥ ४६ ॥ राग, रागिनी इनके बेटा तिनको समयज्ञान देशज्ञान, सुर, ताल, मान सब देतभयी ॥ ४७ ॥ छप्पन करोड जिनके भेद हैं और अंतर्भेद जिनके असंख्य हैं तिनैं और उनके ग्राम, नृत्य, बाजे, मूर्च्छना ये सब नारदकूं देतीभयी ॥ ४८ ॥ साक्षात् वैकुंठनाथकी प्रिया सरस्वती जिनतें स्वर जाने परे ऐसे सिद्धपद नारदकूं पढावती भइ ॥ ४९ ॥ रासमंडलमें अद्वितीय रागकर्त्ता नारदकूँ करिके विष्णुकी प्यारी वाग्देवी वैकुंठकूं चलीगई ॥ ५० ॥ इति श्रीगर्गसंहितायां मथुराखंडे भाषाटीकायां नारदोपाख्यानं नामैक

॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ स्तोत्रंजाड्यापहंदिव्यंप्रातरुत्थाययःपठेत् ॥ नारदोक्तंसरस्वत्याःसविद्यावान्भवेदिह ॥ ४५ ॥ ततःप्रसन्ना वाग्देवीनारदायमहात्मने ॥ देवदत्तांददौवीणांस्वरब्रह्मविभूषिताम् ॥ ४६ ॥ रागैश्चरागिणीभिश्चतत्पुत्रैश्चतथैवच ॥ देशकालादिभेदैश्चतालमानस्वरैःसह ॥ ४७ ॥ षट्पंचाशत्कोटिभेदैरंतर्भेदैरसंख्यकैः ॥ ग्रामैर्नृत्यैःसवादित्रैर्मूर्च्छनासहितैःशुभैः ॥ ४८ ॥ वैकुण्ठस्यपतेःसाक्षात्प्रियामुख्यासरस्वती ॥ स्वरगम्यैःपदैःसिद्धैःपाठयामासनारदम् ॥ ४९॥ अद्वितीयंरागकरंकृत्वातंरासमण्डले ॥ वैकुण्ठंप्रययौराधेवाग्देवीविष्णुवल्लभा ॥ ५० ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांमथुराखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेनारदोपाख्यानंनामैकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ कस्मैदेयमिदंगुह्यंरागरूपंमनोहरम् ॥ बुद्ध्याविचारयन्नित्यंगंधर्वनगरंययौ ॥ १ ॥ तुंबुरुंनामगन्धर्वंकृत्वाशिष्यंसनारदः ॥ कलंजगौमद्गुणांश्चवीणावाद्यपरायणः ॥ २ ॥ केषामग्रेगेयमिदंरागरूपंमनोहरम् ॥ श्रोतुंपात्रंविचिन्वन्सनारदःशक्रमाययौ ॥ ३ ॥ अनिर्गुतंचतंदृष्ट्वानारदोमुनिसत्तमः ॥ सख्यातुंबुरुणासार्द्धंसूर्यलोकंजगामह ॥ ४ ॥ रथेनतंप्रधावंतंसूर्यंवीक्ष्यमहामुनिः ॥ शिवपार्श्वंजगामाशुततोदेवर्षिसत्तमः ॥५॥ भूतेशंज्ञानतत्त्वज्ञंध्यानस्तिमितलोचनम् ॥ वीक्ष्यतंनारदोराधेब्रह्मलोकंजगामह ॥ ६ ॥ सृजंतंसृष्टिरचनाव्यग्रंवीक्ष्यविधिंमुनिः ॥ वैकुण्ठंप्रययौविष्णोःसर्वलोकनमस्कृतम् ॥७॥ भक्तार्थंकुत्रगच्छन्तंभक्तेशंभक्तवत्सलम् ॥ वीक्ष्यतुंबुरुणासार्द्धंयोगीन्द्रःप्रययौततः॥८॥

विंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ भगवान् कहैहैं कि, यह गुह्य रागको रूप मनोहर कौनकूं देवेयोग्य है ऐसे नित्य बुद्धिसे विचार करत गंधर्वनगरकूं नारद चलेगये ॥ १ ॥ तब तुंबुरुनाम गंधर्वकूं शिष्य करिके नारद वीणा बजावते मेरे गुण गावते मनोहर गान करतेभये ॥ २ ॥ ये मनोहर रागरूप कौनके अगारी गायवेयोग्य है यह मनोहर राग सुनिवेलायक पात्र कौन है ताकूं ढूंढते नारदजी इंद्रके पास गये ॥ ३ ॥ जब नारदने इंद्रकूं सुनावेयोग्य नहीं देखो तब मित्र तुंबुरू गंधर्वकूं लेके सूर्यलोककूं चलेगये ॥ ४ ॥ फिर सूर्यकूं देख्यो कि, रथमें बैठे भाजे चलेजायहैं तब देवऋषिनमें श्रेष्ठ नारद मुनि शिवके पास चलेगये ॥ ५ ॥ भूतनके ईश ज्ञानतत्त्वके जाननहारे तिनके ध्यानते मिचे नेत्र देखिके नारद ब्रह्मलोककूं चलेगये ॥ ६ ॥ वहां सृष्टिकी रचनामें व्यग्र हैरहेहैं ऐसे ब्रह्माकूं देखिके नारद वैकुंठलोककूं चलेगये जाकूँ सब लोक दंडोत करेहैं ॥ ७ ॥ भक्तवत्सल भक्तनके ईश भक्तनके

रथमें बैठे भाने चलिमागह सब देवकोपनिम ... देखे उनाशं देखिके नारद वैकुंठलोककूं चलेगये ...
चलेगये ॥ ९ ॥ यहां सूर्यकी रत्नामें ... देखेहैं ...

लिये रक्षाकरत डोलिरहें तिनें देख तुंबुरूकूँ संग लेके वहांते वगदिआये ॥ ८ ॥ योगीश्वर जे संत हैं तिनकी त्रिलोकीके बाहिर गति और भीतरहू गति है हे राधे ! कर्महीनकूं यह गति नहीं मिलै है ॥ ९ ॥ तब नारद योगी किरोडन ब्रह्मांडनकूं उल्लंघन करिके मायाते परे गोलोक जो परमधाम है ताकूं जातभयो ॥ १० ॥ बड़ी बड़ी लहरि जामें ऐसी विरजानदीकूं तरिके मनोहर वृंदावनमें पहुंचे जहां भौंरा गुंजार रहेहैं ॥ ११ ॥ जहां सदा वसंत ऋतु रहे है और पवनते चंचल है कुंजलता जामें ऐसे गोवर्द्धनकूं देखिके मेरी निकुंजमें आयो ॥ १२ ॥ तब सखीने पूछी तुम कोन हो कहांतें आयेहो तुमारो मतलब कहा है सो हमते कहो ऐसे सखीने जब पूछी तब नारद और तुंबुरू गंधर्व दोनों बोले ॥ १३ ॥ हे रामाओ ! हम गवैया हैं गायवेमें बड़े चतुर हैं हमारे वीणाकी बड़ी मनोहर ध्वनि है सो परिपूर्णतम साक्षात् श्रीकृष्ण राधिकाके

योगीश्वराणांहिसतांत्रैलोक्यामंतरंबहिः ॥ गतिमाहुर्नाप्नुवंतिकर्मभिर्वृषभानुजे ॥ ९ ॥ कोटिशोब्रह्मांडनिचयान्समुल्लंघ्यमुनीश्वरः ॥ गोलोकंपरमंधामप्रययौप्रकृतेःपरम् ॥ १० ॥ समुत्तीर्याशुविरजांनदींकल्लोलशालिनीम् ॥ ययौवृन्दावनंरम्यंभ्रमरध्वनिसंकुलम् ॥ ११ ॥ सदावसंतर्तुयुतंमरुदंजल्लताद्रुमम् ॥ दृष्ट्वागोवर्द्धनंशैलंमन्निकुंजंसमाययौ ॥ १२ ॥ कौयुवांकुतआयातौकिंकार्यंवदतंचनः ॥ इत्थंसखीभिः संपृष्टावूचतुर्मुनितुंबुरू ॥ १३ ॥ गायकौकुशलौरामाआवांवीणाकलध्वनिम् ॥ परिपूर्णतमंसाक्षाच्छ्रीकृष्णंराधिकापतिम् ॥ १४ ॥ कुलंपरेश्रावयितुमागतौवंदिनांवरौ ॥ कथनीयमिदंवाक्यंश्रीकृष्णायमहात्मने ॥ १५ ॥ श्रुत्वासख्यस्तथामह्यंनिवेद्याथमदाज्ञया ॥ आगत्याज्ञांददुर्यातुंवंदिभ्यांश्लक्ष्णयागिरा ॥ १६ ॥ मन्निकुंजांगणेभ्राजत्कोट्यर्कज्योतिराकुले ॥ खचित्कौस्तुभरत्नाढ्येप्रचलच्चारुचामरे ॥ १७ ॥ लोलन्मुक्ताफलच्छत्रेसखीकोटिसमन्विते ॥ महापद्मस्थितंसाक्षात्त्वयामांतावपश्यताम् ॥ १८ ॥ नत्वाप्रदक्षिणीकृत्यतत्रस्थित्वामदाज्ञया ॥ स्तुत्वामांमद्गुणान्वक्तुंतेनारावुपचक्रमे ॥ १९ ॥ आतोद्यंवितुदन्वीणांदेवदत्तांस्वरामृतम् ॥ कलांजगामाद्वितीयांनारदःसहतुंबुरुः ॥ २० ॥ संतुष्टोहंशिरोधुन्वंस्तेनश्लाघ्यंचतत्स्वरम् ॥ दत्त्वात्मानंप्रेमपरोजलत्वंगतवानहम् ॥ २१ ॥ यज्जलंमद्वपुर्जातंतद्ब्रह्मद्रवंविदुः ॥ कोटिशः कोटिशोंडानांराशयःसंलुठंतिहि ॥ २२ ॥

पति ॥ १४ ॥ तिनकूं सुनायवेकूं आयेहैं बंदीजननमें श्रेष्ठ हैं यह बात हमारी श्रीकृष्ण महात्माते कहो ॥ १५ ॥ या वचनकूं सखी सुनिके मोते पूछिके मेरी इच्छाते सखीने मेरे पास भीतर आयवेकूं आज्ञा दीनी सरल वाणीते ॥ १६ ॥ तब मेरी निकुंजकी आंगनमें कैसो आंगन है किरोड़ सूर्यनकोसो जामें तेज है कौस्तुभ मणि जामें जड़ी है चमर हैरहें ॥ १७ ॥ लटकि रहेहैं मोती जिनमें ऐसो छत्र है किरोड़ हे सखी जामें महापद्मपै हमें तुमें बैठे तिन हमको विन दोनोननें देखे ॥ १८ ॥ तब हम तुमकूं नमस्कार करिके परिक्रमा करिके हमारी आज्ञाते बैठे तुमते मोते मेरे गुण कहिवेको प्रारंभ कीनो ॥ १९ ॥ देवको दियो वीणा ताकूं बजायके तुंबुरुके संग नारद अद्वितीय कला गामनलगे ॥ २० ॥ मैं प्रसन्न भयो मेरो शिर हलन लग्यो बड़ाई करिवेयोग्य स्वरकूं सुनिके प्रेममें तत्पर हैके आत्माकूं देके मैं जल हैगयो ॥ २१ ॥ वुह मेरो शरीर जल

हैगयो ताकूं ब्रह्मद्रव कहैंहैं जामें किरोड़न ब्रह्मांड डूबके डोलैहैं ॥ २२ ॥ उन्नत जलमें फरफैंदुआसो यह मेरो ब्रह्मांड ताको पृश्निगर्भ नाम विख्यात है ॥ २३ ॥
हा या ब्रह्मांडकूं भेदिके हे शुभे ! वो ब्रह्मद्रव जल जो आयो ताको या मन्वंतरमें पापहारिणी गंगा स्वर्धुनी ऐसें कहैंहैं ॥ २४ ॥ जाको स्वर्गमें तो मंदाकिनी पृथ्वीमें
भागीरथी और पातालमे भोगवती नाम है इन तीन मार्गनमें चलनहारी हैवेसो त्रिपथगा भई है ॥ २५ ॥ जामे न्हान करिवेकूं जो जाय ताकूं एक एक
पैरमें राजसूय, अश्वमेधयज्ञको फल, दुर्लभ नही होयहै ॥ २६ ॥ जो कोई या गंगासो न्यारिसे कोशपेक दैस्योंहैके गंगा गंगा ऐसे कहै तोऊ सब पापनते छूटिके
विष्णुलोककूं जायहै ॥ २७ ॥ या कलियुगमें गंगाजलको पीवै तो दोसो जन्मका पाप नाश होयं है दर्शन करेते सौ जन्मको पाप नाश होयहै स्नानकरेते हजारजन्मको पाप

इंद्रायणफलानीवोन्नतेतस्मिञ्जलेशुभे ॥ पृश्निगर्भमिदंराधेब्रह्मांडंमत्पदंस्फुटम् ॥२३॥ भित्त्वातत्त्वागतंसाक्षादस्मिन्मन्वंतरेशुभे ॥ तत्स्वर्धुनीवि
दुःपूर्वेश्रीगंगांपापहारिणीम् ॥२४॥ दिविमंदाकिनीप्रोक्तागंगाभागीरथीक्षितौ ॥ अधोभोगवतीप्रोक्तात्रिधात्रिपथगामिनी ॥२५॥ यत्स्नातुंगच्छ
तःपुंसःप्रणतस्यपदेपदे ॥ राजसूयाश्वमेधानांफलमस्तिनदुर्लभम् ॥ २६ ॥ गंगागंगेतियोब्रूयाद्योजनानांशतैरपि ॥ मुच्यतेसर्वपापेभ्योविष्णु
लोकंसगच्छति ॥ २७ ॥ द्विशजन्मशतंपापंपीत्वाजन्मशतद्वयम् ॥ स्नात्वाजन्मसहस्रेणहंतिगंगाकलौयुगे ॥ २८ ॥ सफलंजन्मवैतेषांयेपश्यं
तिहिजाह्नवीम् ॥ वृथाजन्मगतंतेषांयेनपश्यंतिजाह्नवीम् ॥ २९ ॥ यथाहिद्रवतांप्राप्तोविरजात्वद्भयाद्यथा ॥ प्रापुर्द्रवत्वंरंभोरुविरजायाःसु
तायथा ॥ ३० ॥ यथाकृष्णानदीविष्णुर्वेणीदेवःशिवोयथा ॥ ब्रह्माककुद्मिनीगंगागंडकीचयथाप्सराः ॥ ३१ ॥ तथाद्रवत्वंसंप्राप्तऋभुर्नामा
प्ययंमुनिः ॥ प्रेमलक्षणयाभक्त्याऋभोर्वानात्रसंशयः ॥ ३२॥ यःशृणोतिकथामेतांपवित्रांपापहारिणीम् ॥ उल्लंघ्यसर्वलोकांश्चमल्लोकंयातिमा
नवः ॥ ३३ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवमुक्त्वाप्रियांराधांप्रभोराश्रमतोहरिः ॥ राधयासहितोराजन्नाययौमालतीवनम् ॥ ३४ ॥ गोपी
नांविरहंज्ञात्वाभगवान्भक्तवत्सलः ॥ राधयाप्रययौकृष्णःपुलिनंमंगलायनम् ॥ ३५ ॥ तदागोपीगणाःसर्वेगतमानागतव्यथाः ॥ जगृहुस्तंघ
नश्यामंसौदामिन्योघनंयथा ॥ ३६ ॥

नाश होयहै ॥ २८ ॥ उनकोई जन्म सफल है जे गङ्गाके दर्शन करैहैं जे गङ्गाको दर्शन नही करैहै तिनको जन्म निष्फल है ॥ २९ ॥ जैसें विरजा तेरे भयतें द्रव हैगई
ऐसेंई हे रंभोरु ! विरजाके बेटाऊ द्रवके रूप हैके येहू समुद्र हैगये ॥ ३० ॥ जैसें विष्णु तो कृष्णानदी हैगये शिव वेणी हैगये ब्रह्मा ककुद्मिनी गङ्गा हैगये और अप्सरा गंडकी
नदी हैगई ॥ ३१ ॥ तैसेंई ऋभुनाम मुनि प्रेमलक्षणा भक्तिते द्रवरूप हैके नदी हैगयो ॥ ३२ ॥ जो कोई मनुष्य पापहारिणी पवित्र या कथाकूं सुनेगो सो सब लोकनकूं
उल्लंघन करिके मेरे लोककूं जायगो ॥ ३३ ॥ नारदजी कहैंहैं ऐसे प्यारी जो राधा तासो कहिके ऋभुऋषीके आश्रमते श्रीकृष्ण राधाकूँ संग लेके मालतीवनकूँ चलेगये ॥
॥ ३४ ॥ भक्तवत्सल भगवान् गोपीनको विरह जानिके राधासहित मंगलायन पुलिनकूँ चलेआये ॥ ३५ ॥ तब सब गोपीगणनको मानहू जातरह्यो और दुःखहू जातरह्यो

श्रीकृष्णते लिपटगई जैसे घनते बिजुरी लिपिटजायहै ॥ ३६ ॥ तब श्रीकृष्णने वृंदावनमें मन हरनवारे यमुनाके तटपे बांसुरीमें मनोहर राग गायो कैसे है कि, वंशीके बजायवेमें तत्पर है ॥ ३७ ॥ ताते सब गोपी मूर्च्छित हैगई नदी थकित हैगई पक्षी अचल हैगये ॥ ३८ ॥ सब देवतानकी देवी चुप्प हैगई देवता स्तंभित हैगये वृक्षनके मद चुचानलगे और सब जगतकूं निद्रा आयगई ॥ ३९ ॥ रास करिकै गोपीनको और राधिकाको मनोरथ पूरो करिकै ब्राह्म मुहूर्तमें भगवान् नंदमंदिरमें आयगये ॥ ४० ॥ तब राधिकाजी गोपीनसहित आनंद मनोरथकूं प्राप्त हैके वृषभानुवरके सुंदर मंदिरकूं आवत भई ॥ ४१ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां मथुराखंडे भाषाटीकायां नारदोपाख्याने नाम द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥ नारदजी कैहहैं कि, श्रीकृष्ण भगवान् कई दिननतलक ब्रजमें बसिके अपने दर्शन देके मथुराकूं गमन करिवेकूं उद्यत होतेभये ॥ १ ॥ नौ नंद, नौ उपनंद, छः वृष

वृंदावनेहरिःसाक्षात्कृष्णातीरेमनोहरे ॥ जगौकलंगोपिकाभिर्वंशीवादनतत्परः ॥ ३७ ॥ भगवत्कलरागेणमूर्च्छितागोपकन्यकाः ॥ नद्योवेगस्त्वरहिताअचरत्वंहिपक्षिणः ॥ ३८ ॥ मौनत्वंदेवताःसर्वास्तंभत्वंदेवनायकाः ॥ सजलत्वंचतरवोनिद्रात्वंप्रगतंजगत् ॥ ३९ ॥ कृत्वारासंराधिकायागोपीनांचमनोरथम् ॥ ब्राह्ममुहूर्तेभगवानाययौनन्दमन्दिरम् ॥ ४० ॥ राधिकागोपिकाभिश्चप्राप्तानन्दमनोरथा ॥ वृषभानुवरस्यापि सुन्दरंमंदिरंययौ ॥ ४१ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांमथुराखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेनारदोपाख्यानंनामद्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ श्रीकृष्णोभगवान्साक्षाद्व्रजेकतिदिनानिच ॥ स्थित्वास्वदर्शनंदत्त्वामथुरांगंतुमुद्यतः ॥ १ ॥ नन्दान्नवोपनन्दांश्चवृषभानून्व्रजेषुषट् ॥ वृषभानुवरंचैवनन्दराजंव्रजेश्वरम् ॥ २ ॥ कलावतींयशोदांचगोपीगोपान्गवांगणान् ॥ मिलित्वाश्वास्यज्ञानंचदत्त्वानुज्ञाप्यमाधवः ॥ ॥ ३ ॥ रथमारुह्यदिव्याभंचंचलाश्वनियोजितम् ॥ मथुरांगंतुकामोसौनिर्गतोनन्दगोकुलात् ॥ ४ ॥ दूरंतमनुगाःसर्वेमोहिताव्रजवासिनः ॥ नसेहिरेकष्टतरंविरहंमाधवस्यहि ॥ ५ ॥ युगपद्दर्शनंविष्णोर्दुःसहंभूमिमण्डले ॥ येषांनित्यंहिभवतितेषांतुकिमुवर्णनम् ॥ ६ ॥ वीक्षंतःश्रीधरमुखंनेत्रैरनिमिषैर्नृप ॥ सर्वेवैस्नेहसंबन्धात्तमूचुःप्रेमविह्वलाः ॥ ७ ॥ ॥ गोपाऊचुः ॥ ॥ शीघ्रमागच्छहेकृष्णसर्वान्पाहिव्रजवासिनः ॥ पाहिसंदर्शनन्देहिदेवेभ्योह्यमृतंयथा ॥ ८ ॥ त्वमेवसर्वदादेवयशोदानन्ददायकः ॥ श्रीनन्दनन्दनस्त्वंवैजीवनंव्रजवासिनाम् ॥ ९ ॥

भानु, वृषभानुवर, नंदराज ब्रजके ईश्वर तिनें ॥ २ ॥ और कलावती, यशोदाजी, गोप, गोपी, गौअनके गण श्रीकृष्ण इनते मिलिके ज्ञान देके आज्ञा मांगिके ॥ ३ ॥ दिव्य रथमें बैठिके जामें चंचल घोडा लगे मथुराकूं जायवेकूं नंदगोकुलते निकसे ॥ ४ ॥ तिनके पीछे सब गउ और मोहिभये ब्रजवासी दूरतलक पहुँचायवेकूं आये वे माधवको विरहको नही सहिसके ॥ ५ ॥ एक संग विष्णुको दर्शन भूमिमें बडो दुर्लभ है जिनकूं नित्य होयहै तिनकी महिमाको कहा पार है ॥ ६ ॥ जे अनिमिषनेत्रनते नित्य श्रीधरको मुख देखेहैं वे हे नृप ! स्नेहके संबंधते प्रेममें विह्वल हैके विनते ये बोले ॥ ७ ॥ हे कृष्ण ! तुम जल्दी ऐओ हम सब ब्रजवासीनकी रक्षा करो और दर्शन दियोकरो जैसे देवतानकूं अमृत दीनो हो तैसे ॥ ८ ॥ तुमही सब कालमें यशोदाके आनंददाता हो तुमही श्रीनंदनन्दन हौ सब ब्रजवासीनके जीवन हो ॥ ९ ॥

व्रजके धन हौ कुलके दीपक हौ महत्पुरुषनके मोह करनहारे हो जैसें गरमीके मारेकूं निवनीको शीतल जल ॥ १० ॥ शीतके मारेकूं अग्नि और ज्वरातकूं औषधि मरे मनुष्यकूं जैसे अमृत वैसेही तुम हमकूं हो ॥ ११ ॥ तैसेंई सब व्रजकूं तुमारो दर्शनही जीवन है ताते आप यहांही अपनी स्थिति राखो बहुत कहिवेतें कहा है ॥ १२ ॥ जो कछू हमारो सुकृत होय या जन्मको के और जन्मको ताके फलकरिके हमारो चित्त सदाही तुमारे चरणकमलमेंई रहो ॥ १३ ॥ जिनको चित्त तुमारे चरणकमलमें रहेहै वे तुम्हारे भक्त तुमे प्यारे हैं सदाही भक्तनके अर्थ सगुण होओ हो स्वतःसिद्ध निर्गुण और प्रकृतितें परे हो ॥ १४ ॥ तुमकूं भक्ततें प्यारो कोई नही है न शिव है न ब्रह्मा है न लक्ष्मी है याहीते निष्काम भक्त ब्रह्मादिकनकूं छोडिके तुमारो भजन करेहै नैरपेक्ष सुखकूं वेई जानेहै और मुक्तचित्त है ॥ १५ ॥ नारदजी कहे है ऐसे कहिके सब प्रेममे विह्वल है रोम

व्रजेधनंकुलेदीपोमोहनोमहतामपि ॥ यथानिदाघदग्धस्यप्राणिनःशीतलंजलम् ॥१०॥ शीतार्तस्ययथावह्निर्ज्वरार्तस्ययथौषधम् ॥ मृतस्यमानवस्यापिपीयूषंमंगलंयथा ॥ ११ ॥ तथाव्रजस्यसर्वस्यजीवनंतवदर्शनम् ॥ तस्मादत्रस्थितिंकुर्याद्बहुनाकथितेनकिम् ॥ १२ ॥ यन्नोस्तिकिंचित्सुकृतमस्मिन्वापूर्वजन्मनि ॥ तत्फलेनसदाचेतोभूयात्त्वत्पादपंकजे ॥ १३ ॥ येषांचेतस्त्वत्पदाब्जेतेभक्तास्तवप्रियाःसदा ॥ भक्तार्थंसगुणोसित्वंनिर्गुणःप्रकृतेःपरः ॥ १४ ॥ तवभक्तात्प्रियोनास्तिशिवोब्रह्मानचेंदिरा ॥ विसृज्यपारमेष्ठ्यादिनिष्कामास्त्वांभजंतिये ॥ नैरपेक्ष्यंसुखंशांतंतेविदुर्मुक्तचेतसः ॥ १५ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवमुक्त्वाथतेसर्वेरुरुदुःप्रेमविह्वलाः ॥ आनन्दाश्रूणिमुंचंतःश्रीकृष्णस्यप्रपश्यतः ॥१६॥ अश्रुपूर्णमुखःकृष्णोभगवान्भक्तवत्सलः ॥ गोपानाहप्रसन्नात्मानतान्विरहविह्वलान् ॥१७॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ मत्प्राणामत्प्रियायूयंसर्वेवैव्रजवासिनः ॥ हृदयंमेस्तियुष्मासुदेहोन्यत्रविलक्ष्यते ॥१८॥ मासंप्रत्यागमिष्यामियुष्मान्द्रष्टुंवचोमम ॥ मनसानहिदूरोस्मिमनःसर्वस्यकारणम ॥१९॥ हेगोपायदुभिर्योद्धुमागतोहिजरासुतः ॥ यदूनांतुसहायार्थयामिमाभूच्छुचश्चवः ॥२०॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवमाश्वास्यतान्देवःसंनिवृत्यपुनःपुनः ॥ रथेद्वितीयेसंस्थाप्यनन्दराजंयशोदया ॥ २१ ॥ श्रीदामादीन्सखीन्नीत्वाभगवान्रथमास्थितः ॥ सोद्धवोमथुरांप्रागात्सर्वकारणकारणः ॥२२॥ यावद्रथश्चाश्वशतंसुवेगंकेतुस्त्रिवर्णःप्रचलत्पताकः ॥ आलक्ष्यतेवीररजश्चतावत्स्थित्वाऽन्यआजग्मुरतःसकाशम् ॥२३॥

नलगे श्रीकृष्णके देखत २ आनंदके उनके आँसू टपकनलगे ॥ १६ ॥ आँसूनते भरचोहे मुख जिनको ऐसे प्रसन्नात्मा भगवान् नम्र हैरहे विरहमे विह्वल जे गोप है तिनतें आप बोले ॥ १७ ॥ तुम मेरे प्राण हो मेरे प्यारे हो सबरे व्रजवासीनमें मेरा हृदय तो तुममेंई रहेहै देह और जगे दीखेहै ॥ १८ ॥ महीना २ पीछे तुमे देखिवेकूं मै व्रजमे आऊंगो यह मेरो वचन है मै मनतें दूर नही हूं मनही सबको कारण है ॥ १९ ॥ हे गोपो ! जादवनते युद्ध करिवेकूं जरासंध आयेहि तिनकी सहाय करिवेकूं जाऊंहूं तुम शोच मति करो ॥ २० ॥ भगवान् ऐसे तिनकूं समुझायके बेर २ फिर चमरके नंद यशोदाकूं दूसरे रथमे बैठारिके ॥ २१ ॥ श्रीदामादिक सखानकूं लेके उद्धवकूं लेके रथमे बैठ मथुराकूं आवतभये जो आप सब कारणकेहु कारण है ॥ २२ ॥ जबतलक चडे वेगवारो वो रथ और रथके सौ घोडा पताका रजको रज दीखतरही तबतलक व्रजवासी

ठाडेरहे जब सब दीखबेते बंद हेगये तब वे अपने २ घरकूं चलेगये ॥ २३ ॥ यह श्रीकृष्णचंद्रको परम चरित्र है विचित्रहै मनुष्यनके पापको हरनहारो है जो मनुष्य भूमिमें याकूं सुनेगो सो गोलोकधामकूं जायगो ॥२४॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां मथुराखंडे भाषाटीकायां श्रीकृष्णस्य व्रजयात्रामथुरागमनं नाम त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ बहुलाश्वराजा पूछेहैं गोपीनकूं और गोपनकूं भगवान् दर्शन देके जब चले आये फिर भगवान् और दाऊजी मथुरामें कहा चरित्र करतेभये सो कहो ॥१॥ श्रीकृष्ण बलदेवको चरित्र बडो मीठो है सब पापनको हरनहारो है बडो पवित्र और धर्म, अर्थ, काम, मोक्षको देनहारो है ॥ २ ॥ नारदजी कहेहै कि, और चरित्र कृष्ण बलदेवको सुनो सब पापनको हर्ता चतुर्वर्गको दाता है ॥ ३ ॥ एक कोलनाम दैत्य हो बाने प्रजानकूं बडो दुःख दीनो तब हे नृप ! कौशारवि नामके पुरते सब प्रजा सब ब्राह्मण मथुरामें आये दीन है मन जिनको ॥ ४ ॥ तब जलदी चलनवारो जो घोडा

श्रीकृष्णचन्द्रस्यपरंचरित्रंनृणांमहापापहरंविचित्रम् ॥ शृणोतियोभक्तवरःपृथिव्यांगोलोकलोकंसचयातिसम्यक् ॥ २४ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांमथुराखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेव्रजयात्रायांश्रीकृष्णागमनंनामत्रयोविंशोऽध्यायः ॥२३॥ ॥बहुलाश्वउवाच॥ गोपीनांचैवगोपानांदत्त्वा संदर्शनंपरम् ॥ मथुरायांकिंचकारश्रीकृष्णोरामएवच ॥ १ ॥ चरित्रंपरमंमिष्टंश्रीकृष्णबलदेवयोः ॥ सर्वपापहरंपुण्यंचतुर्वर्गफलप्रदम् ॥२॥ ॥ नारदउवाच ॥॥ अन्यच्चरित्रंशृणुताच्छ्रीकृष्णबलदेवयोः ॥ सर्वपापहरंपुण्यंचतुर्वर्गफलप्रदम् ॥ ३ ॥ कोलेनपीडितालोकाःकौशारविपुरान्नृप ॥ मथुरामाययुःसर्वेसद्विजादीनमानसाः ॥ ४ ॥ अश्वमाशुसमारुह्यरोहिणीनन्दनोबलः ॥ स्वल्पैःपुरःसरैःसार्द्धंमृगयार्थीविनिर्गतः ॥ ५ ॥ तंनत्वाभ्यर्च्यविधिवत्तदंघ्रयोःपतिताःपथि ॥ कृतांजलिपुटाऊचुर्हर्षगद्गदयागिरा ॥ ६ ॥ ॥ प्रजाऊचुः ॥ ॥ रामरामहाबाहोदेवदेवमहाबल ॥ कोलेनपीडिताःसर्वेआगताःशरणंवयम् ॥ ७ ॥ दैत्यःकंससखःकोलोजित्वाकौशारविंनृपम्॥कौशारवेःपुरेराज्यंकरोतिसमहाबलः ॥ ॥ ८ ॥ कौशारविस्तद्भयाद्विगंगातीरंगतोनृपः ॥ राज्यार्थंत्वत्पदांभोजंभजतेसुजितेंद्रियः ॥ ९ ॥ तत्सहायंकुरुविभोवयंयस्यप्रजाःशुभाः ॥ पुत्रवत्पालितास्तेनमहासौख्यसमन्विताः ॥ १० ॥ कोलेनाद्यैवदुष्टेनपीडिताःसततंप्रभो ॥ त्रैलोक्यविजयीवीरःकंसोपिनिहतस्त्वया॥११॥ कोलोजीवतिदेवेंद्रकंसोपिनमृतःस्मृतः ॥ रक्षार्थंसगुणोसित्वंभक्तानांप्रकृतेःपरः ॥ १२ ॥

तापे बलदेवजी चढिके थोरेसेई चाकरनकूं लेके सिकारकूं निकसे ॥ ५ ॥ तब तिनकूं दंडोत करिके विधिपूर्वक पूजन करिके हाथ जोरि चरणनमें जाय परे और गद्गदवाणीते वे यह बोले ॥ ६ ॥ हे राम ! हे राम ! हे बडी भुजानवारे ! हे देवदेव ! हे महाबल ! कोल नाम दैत्य करिके पीडित हम आपुकी शरणमें आये हैं ॥ ७ ॥ कंसको सखा, एक कोल दैत्य है वो बडो बली है सो कौशारवीराजाकूं जीतिके कौशारवी पुरमें राज्य करेहै ॥ ८ ॥ ताके भयते कौशारवीराजा गंगाके तीरपे जायके जितेंद्री हैके राज्यकी प्राप्तिके अर्थ आपके चरणकमलको भजन करेहै ॥ ९ ॥ हे विभो ! ताकी आप सहाय करो हम वाकी प्रजा है वाने पुत्रकी नाई हमारी पालन करयोहै ॥ १० ॥ हमको बडो सुख दीनो है अब वा कोल दुष्टने निरंतर दुःख दीनो है त्रिलोकीको जीतबेवारो कंसहू आपुने मार्यो है ॥ ११ ॥ जबतक ये कोल जीवै है तबतक कंस नहीं मर्योहै आपु मायाते परे हो पर भक्तनके लिये सगुण भये

हो एसाके अर्थ ॥ १२ ॥ नारदजी कहेहै कि, भक्तवत्सल बलदेवजी ऐसे इनको वचन सुनिके गंगा यमुनाके बीच कौशांबी जो पुरी है ताकूं आवतभये ॥ १३ ॥ कोलदैत्यते युद्ध करिबेकूं बलदेवजी आये या बातकूं सुनिके दश अक्षौहिणी फौज लेके चंड पराक्रमी कोलहू निकसो ॥ १४ ॥ चंचल घोडानकी तरंगनते युक्त रथ, हाथी जामे मगर नदीसी फौज चली आवैहै प्रलयके समुद्रसी गर्जत आवे है ॥ १५ ॥ बडे बडे वीर तेई जामे भमर है महाबल बलदेवजी वा नदीको सेतु बांधिके हलाग्रते खेंचि २ के मूसलते मारनलगे ॥ १६ ॥ एकसंगही ताके प्रहारते बडे बडे वीर घोडा, हाथी, रथ शुद्धा चारों बगलते किरोडन मरिके जाय परे और किरोडन फलकी नाईं रणमे पिचमरे ॥ १७ ॥ बाकीके वीर भयके मारे रणमेंते भाजिगये इकिलो कोलही शस्त्र धरे रामते लरतरह्यो ॥ १८ ॥ गोमूत्र पेवरी सिंदूर

॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वावचस्तेषांश्रीरामोभक्तवत्सलः ॥ गंगायमुनयोर्मध्येकौशांबींनगरींययौ ॥ १३ ॥ योद्धुंसमागतंरामंश्रुत्वा कोलोपिनिर्गतः ॥ अक्षौहिणीभिर्दशभिर्मंडितश्चंडविक्रमः ॥ १४ ॥ चंचलाश्वतरंगाढ्यांरथेभाश्वतिमिंगिलाम् ॥ नदीमिवागतांसेनांप्रलया र्णवनादिनीम् ॥ १५ ॥ वीरावर्तांचतांवीक्ष्यबद्धासेतुंहलंबलः ॥ आकृष्यतांतदग्रेणमुसलेनाहनद्दृढम् ॥ १६ ॥ युगपत्तत्प्रहारेणवीराअश्वार थागजाः ॥ सर्वतःकोटिशःपेतुःपेपिताःफलवद्रणे ॥ १७ ॥ शेषाःप्रदुद्रुवुर्वीराभयार्तारणमण्डलात् ॥ एकाकीयुयुधेदैत्यःकोलोरामेणशस्त्रभृत्॥ ॥ १८ ॥ गोमूत्रचयसिंदूरकस्तूरीपत्रभृन्मुखम् ॥ सुवर्णशृंखलायुक्तंप्रखचित्कटिबंधनम् ॥ १९ ॥ स्रवन्मदंचतुर्दंतंघण्टाटङ्कारभीषणम् ॥ प्रोन्नतंदिग्गजमिवनदत्कालघनप्रभम् ॥ २० ॥ शितमंकुशमादायकोलआरुह्यकर्णतः ॥ स्वगजंनोदयामासबलदेवायदैत्यराट् ॥२१॥ आग तंवीक्ष्यतंनागंमत्तंकोलेननोदितम् ॥ तताडमुसलेनासौवज्रेणेन्द्रोयथागिरिम् ॥२२॥ मुसलस्यप्रहारेणविशीर्णोभून्महागजः ॥ मृद्घटोनैकधै वाशुदण्डघातेनमैथिल ॥२३॥ कोलःक्रोडमुखोदैत्योरक्ताक्षःपतितोगजात्॥शूलंचिक्षेपनिशितंमाधवायमहात्मने ॥२४॥ मुसलेनतदारामस्त च्छूलंशतधाच्छिनत्॥काचपात्रंयथाबालोदण्डेनचविदेहराट्॥२५॥सहस्रभारसंयुक्तांगदांगुर्वींप्रगृह्यच॥बलंतताडहृदयेजगर्जघनवत्खलः॥२६॥

कस्तूरीते पत्रभंगीरचना जाने अपने मुखमें कररासीहै सोनेकी सांकर जाके बंधी है जड़ाउ कमरपेच जाने बांधोहै ॥ १९ ॥ चारि दांत मद जाके चुचाय घंटाके बाजेते भयंकर दिग्गज सो ऊंचे प्रलयके घनसो गर्जत ॥ २० ॥ वा हाथीपे बैठि कोल दैत्यने पैनो अंकुश लेके मारिके बलदेवजीके ऊपर हाथी पेल्यो ॥ २१ ॥ वा कोलके पेले मत्त हाथीकूं देखि बलदेवजीने वाके एक मूसर मार्यो जैसे इंद्र वज्रसों पर्वतकूं मारैहै ॥ २२ ॥ मूसरके मारे वो हाथी अनेकधा खिलिगयो है मैथिल ! जैसे लडके मारते माटीको घडा खिलजायहै ॥ ॥ २३ ॥ तब कोलदैत्य सूकरको मुख जाको लाल लाल नेत्र जाके सो वा हाथीपेते गिरि पर्यो फिरि बडो पैनो त्रिशूल लेके महात्मा बलदेवजीके ऊपर चलायो ॥ २४ ॥ तहँ सेंम बलदेवजीने वा शूलके मूसलते सौ टूक करिडारे है विदेहराज ! कांचके बासनकूं जैसे बालक लठियाते फोरे है ॥ २५ ॥ फेर दैत्यने हजार मनकी गदा लेके बलदेवजीके

हृदयमें मारी फिर वुह दुष्ट गरज्यो घनके समान ॥ २६ ॥ फिर महाबल बलदेवजीने याकी गदाके प्रहारको खायके काजलकोसो जाको शरीर ताके माथेमें एक मूसर मार्यो ॥ ॥ २७ ॥ मूसरके मारे मूंड फूटिगयो रणमंडलमे जायपर्यो फिर उठके दैत्यने बलदेवजीके एक घूँसा मार्यो फिर वुह दैत्य अंतर्धान है गयो ॥ २८ ॥ वा मायावीने दैतेयी माया कीनी जो अति भयंकर करीही प्रलयकेसे मेघ महापवनके प्रेरे है आये ॥ २९ ॥ अंधकार करनवारे मेघसो सब आकाश छायगयो ॥ ३० ॥ दुपेरीयाकी फूलकी बराबर रुधिरकी बूंद निरंतर परनलगी और बडे गहरे बिन घननेंमसो विष्ठा, मूत्र, चिनामनी वर्षा होनलगी ॥ ३१ ॥ रुधिर, राधि, विष्ठा, मेदा, मूत्र, मदिरा, मांस इनकी वर्षाते हाहाकार होनलग्यो ॥ ३२ ॥ महाप्रभु बलदेवजीने वा असुरकी करी मायाकू जानिके पराई सेनाको विदीर्ण करनहारो मूसर फेंक्यो ॥ ३३ ॥ सब अस्त्रनको घात करनहारो स्वच्छ अष्ट

तद्गदायाःप्रहारेणकोलंकज्जलवत्तनुम् ॥ मुसलेनाहनन्मूर्ध्निबलदेवोमहाबलः ॥२७॥ मुसलाहतमूर्द्धापिपतितोरणमण्डले॥मुष्टिघातंघातयित्वा तत्रैवांतरधीयत ॥२८॥ चकारमायांमायावीदैतेयीमतिभीषणाम् ॥ प्रलयप्रभवैर्मेघैर्महावातप्रणोदितैः॥२९॥ अंधकारंप्रकुर्वद्भिरभूदाच्छादितं नभः ॥३०॥ जपापुष्पसमान्विंदूनजस्रंरुधिरस्यच ॥ मोचयित्वाथबीभत्सवर्षांश्चक्रुर्घनाघनाः॥३१॥पूयमेदोविण्मूत्रसुरामांससमन्विताः॥ इष्वाताभिश्चवर्षाभिर्हाहाकारोबभूवह ॥ ३२ ॥ ज्ञात्वाथतत्कृतांमायांबलदेवोमहाप्रभुः ॥ चिक्षेपमुसलंदीर्घंपरसैन्यविदारणम् ॥ ३३ ॥ स र्वास्त्रघातकंस्वच्छमष्टधातुमयंदृढम् ॥ शतयोजनविस्तीर्णंप्रलयाग्निसमप्रभम् ॥ ३४ ॥ बलास्त्रंमुसलंरेजेभ्रमद्दशदिगंतरे ॥ विदारयद्घना न्व्योम्निर्नीहारंचयथारविः ॥ ३५ ॥ तद्व्योम्निप्रगतंदृष्ट्वाहलाग्रेचस्वतःप्रभुः ॥ सभृत्याकृष्यचबलान्मध्येतान्विददारह ॥ ३६ ॥ नाशंगता यांमायायांबलदेवोमहाबलः ॥ गृहीत्वाभुजदण्डाभ्यांभुजदण्डेमदोत्कटे ॥ ३७ ॥ भ्रामयन्बालइवतंप्रतूलंसइतस्ततः ॥ पातयामासभूपृष्ठेक मण्डलुमिवार्भकः ॥ ३८ ॥ तस्यदैत्यस्यपातेनसाब्धिशैलवनैःसह ॥ चकंपेनाडिकामात्रंसर्वभूखंडमण्डलम् ॥३९॥ भग्नदंतश्चलन्नेत्रोमूर्च्छि तोनिधनंययौ ॥ कोलोनाममहादैत्योवृत्रोवज्रहतोयथा ॥ ४० ॥ तदाजयजयारावोदिविभूमौबभूवह ॥ देवदुंदुभयोनेदुःपुष्पवर्षाःसुरैःकृताः ॥ ४१ ॥ इत्थंकोलंघातयित्वाबलदेवोच्युताग्रजः ॥ दत्त्वाथकौशारवयेकौशांबींचपुरींततः ॥ ४२ ॥

धातुको दृढ सौ योजनको लंबो प्रलयकी अग्निके समान प्रभा जाकी ॥ ३४ ॥ वह बलदेवको अस्त्र दिशानमे फिरतो दीखो वो आकाशमें मायाके मेघनकूं विदीर्ण करताभयो जैसे कुहरकूं सूर्य दूर करे है ॥ ३५ ॥ अपने वा मूसलकूँ आकाशमे देखि फिर हलते खेंचि वा दैत्यकी मायाको विदीर्ण करतेभये अपने वैभवते ॥ ३६ ॥ माया जब नाश हैगई तब महाबली बलदेवजीने अपने भुजदंडनते असुरको भुजा दोनो पकर ॥ ३७ ॥ इत उत घुमाय २ के पृथ्वीमें देमार्यो बालक जैसे रुईके गालेकूं घुमावे है ऐसे फिरायके धरतीमें मारो जैसे बालक लोटाको मारे है॥ ३८॥वाकी देहके मारते पर्वत समुद्रनसुद्धा सबरो पृथ्वीमंडल एकघड़ीतलक कांपतो रह्यो॥ ३९॥दांत टूटिगये नेत्र फूटिगये मूर्च्छितहै मरिके जायपर्यो कोलनाम महादैत्य वज्रको मार्यो वृत्रासुर जैसे ॥ ४० ॥ तब तो स्वर्ग और पृथ्वीमे जय २ शब्द भयो दुंदुभी बजनलगी देवता पुष्पनकी वर्षा करतेभये ॥ ४१ ॥ ऐसे कोल दैत्यकूं

मारिके श्रीकृष्णके बड़े भैया बलदेवजी कौशारवीराजाकूँ कौशांबीपुरीको राज्य देके ॥ ४२ ॥ भागीरथी गंगाकूँ चलेआये स्नान करिवेकूँ गर्गादिक मुनिनकूं संग लेके लोककूं
सिखायवेके लिये सब दोष दूरि करिवेकूं ॥ ४३ ॥ तब बलदेवजीकूँ विधिते मंगलकारी वेदके मन्त्रनते गर्गादिक मुनीश्वर गङ्गास्नान करावतेभये ॥ ४४ ॥ हे विदेह ! एक
लाख हाथी, दो लाख रथ, एक करोड़ घोड़ा, दश अर्बुद गौ ॥ ४५ ॥ सुवर्णखचित सौ अर्बुद रत्नके भार ब्राह्मणनकूं दान करिके बलदेवजी मथुरापुरीकूँ आये ॥ ४६ ॥ हे
विदेह ! बलदेवजीने जहां गंगापै स्नान कियो है वहां रामतीर्थ नामको बड़े पुण्यफल देनवारो तीर्थ होतोभयो ॥ ४७ ॥ कार्तिकमहीनामे कार्तिककी पूर्णमासीकूँ जो कोई मनुष्य
रामतीर्थमें गङ्गास्नान करैहै वाकूं निश्चयही हरिद्वारसो सौगुनो पुण्य होयहै ॥ ४८ ॥ बहुलाश्व राजा पूछै है कि, हे महामुने ! कौशाम्बीनगरीसू कितनी दूर और कोनसे स्थल

स्नातुंभागीरथींप्रागाद्गर्गाचार्यादिभिर्वृतः ॥ लोकानांसंग्रहंकर्तुंसर्वदोषक्षयायच ॥ ४३ ॥ स्नापयांचक्रुराचार्यास्तेगंगायांमाधवंबलम् ॥ वेदमं
त्रैर्मंगलैश्चगर्गाचार्यादयोद्विजाः ॥ ४४ ॥ लक्षंगजानांविदेहस्यंदनानांद्विलक्षकम् ॥ हयानांचतथाकोटिंधेनूनामर्बुदंदश ॥ ४५ ॥ शतार्बुदंच
रत्नानांभारंजांबूनदावृतम् ॥ रामोदत्त्वाब्राह्मणेभ्यःप्रययौमथुरांपुरीम् ॥ ४६ ॥ यत्ररामेणगंगायांकृतंस्नानंविदेहराट् ॥ तत्रतीर्थंमहापुण्यंराम
तीर्थंविदुर्बुधाः ॥ ४७ ॥ कार्तिक्यांकार्तिकेस्नात्वारामतीर्थेतुजाह्नवीम् ॥ हरिद्वाराच्छतगुणंपुण्यंवैलभतेजनः ॥ ४८ ॥ ॥ बहुलाश्व
उवाच ॥ ॥ कौशांबेश्चकियद्दूरंस्थलेकस्मिन्महामुने ॥ रामतीर्थंमहापुण्यंमह्यंवक्तुंत्वमर्हसि ॥ ४९ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ कौशांबे
श्चतदीशान्यांचतुर्योजनमेवच ॥ वायव्यांसूकरक्षेत्राच्चतुर्योजनमेवच ॥ ५० ॥ कर्णक्षेत्राच्चषट्कोशैर्नलक्षेत्राच्चपंचभिः ॥ आग्नेय्यांदिशिराजें
द्ररामतीर्थंवदंतिहि ॥ ५१ ॥ वृद्धकेशीसिद्धिपीठाद्बिल्वकेशवनात्पुनः ॥ पूर्वस्यांचत्रिभिःक्रोशैरामतीर्थंविदुर्बुधाः ॥ ५२ ॥ दृढाश्वोवंगराजो
भूत्कुरूपंलोमशंमुनिम् ॥ दृष्ट्वाजहाससततंतंशशापमहामुनिः ॥ ५३ ॥ विकरालःक्रोडमुखोऽसुरोभवमहाखल ॥ इत्थंसमुनिशापेनकोलः
क्रोडमुखोभवत् ॥ ५४ ॥ बलदेवप्रहारेणत्यक्त्वास्वामासुरींतनुम् ॥ कोलोनाममहादैत्यःपरमोक्षंजगामह ॥ ५५ ॥ ततोराममोमंत्रिभिश्चउद्धवा
दिभिरन्वितः ॥ जह्नुतीर्थंजगामाशुयत्रदक्षश्रुतेर्भुत ॥ ५६ ॥

विशेषमे यह महापुण्य रामतीर्थ है यह आप मेरे सामने कहो ॥ ४९ ॥ नारदजी बोले कौशाम्बीनगरीसू ईशान दिशामें चार योजनपै है और सूकरक्षेत्रसू वायव्य दिशामें चारयो
जनपै है ॥ ५० ॥ कर्णक्षेत्रसे छःकोसपै नलक्षेत्रसे पांच कोसपै आग्नेयदिशामें हे राजेन्द्र ! यह रामतीर्थ है ॥ ५१ ॥ वृद्धिकेशी सिद्धपीठसू और बिल्वकेशवनसू पूर्वदिशामे
तीन कोसपै यह रामतीर्थ है ऐसो बुद्धिमान् मनुष्य जानैंहै ॥ ५२ ॥ यहां दृढाश्वनामक एक वंगराजा होतोभयो सो लोमशमुनिकूँ महाकुरूप देखके हँसपड्यो तब मुनीश्वरने वाकूं
ये शाप देदीनो ॥ ५३ ॥ ॥ हे महाखल ! तू विकराल असुर हैजा तेरो मुख सूअरकैसो हैजायगो या प्रकार वा शापते राजाको मुख सूअरकोसो हैगयो ॥ ५४ ॥ सो बो बल
देवके प्रहार करिके कोलनामको दैत्य आसुरी तनुकूं छोडिके परम मोक्षकूं प्राप्त हैगयो ॥ ५५ ॥ तब राम उद्धवादिक मन्त्रीनकूं लेके जह्नुतीर्थकूँ चलेगये जहां ब्राह्मणमुख्यके

दक्षिणकर्णसे गंगाजी प्रादुर्भाव भई या हेतुसो गंगाको ॥ ५६ ॥ जाह्नवी नाम भयो तहां ब्राह्मणकूं दान देके जनसहित रात्रिकूं बसे ॥ ५७ ॥ ताके पीछे ताते पश्चिमभागमें
आहारस्थान नामको स्थान है जो पांडवनको अति प्यारो है तहां रात्रिकूं बसे ॥ ५८ ॥ तहां ब्राह्मणनकूं दान देके सुन्दर गुणयुक्त भोजन देके ताते चारि कोसपै मांडूकनाम
एक देव है ॥ ५९ ॥ वहां जाने देवकी कृपाके लिये बडो तप कीनो है ताके दर्शनके अर्थ अपने समाजकूं लेके बलदेवजी तहां गये ॥ ६० ॥ एक पावते ठाडो ऊपरकूं मुख
ध्यानते नेत्र मिचिरहे अपनो भक्त है अपनो हृदयमें ध्यान करेहै अपनी मूर्तिकी देखिवेकी जाके लालसा है ॥ ६१ ॥ तब आपने वाके भीतरते मूर्तिकूं खेंचिलीनी तब ये
वाही मूर्तिको बाहिर दर्शन करतोभयो तब ये सुन्दर अनंत देवके रूपको देखतो भयो ॥ ६२ ॥ माला पहरे हैं एक कानमें कुण्डल है गौर वर्ण तालको ध्वजा जामें ता रथमें
बैठेहे तिनें देखि चरणनमें जाय पर्यो परम भक्तिते स्तुति करनलग्यो ॥ ६३ ॥ तब ताके मूंडपै हाथ धरिके बोले कि, तू वर मागि जो चाहिये सो ॥ ६४ ॥ तब वुह बोल्यो

गंगाब्राह्मणमुख्यस्यजाह्नवीयेनकथ्यते ॥ दत्त्वादानंद्विजातिभ्यऊषूरात्रौजनैःसह ॥ ५७ ॥ ततस्तत्पश्चिमेभागेपांडवानामतिप्रियम् ॥ आ
हारस्थानकंप्राप्यरात्रौवासंचकारह ॥ ५८ ॥ तत्रदानंद्विजातिभ्योदत्त्वासद्गुणभोजनम् ॥ ततोयोजनमेकंचदेवंमांडूकसंज्ञकम् ॥ ५९ ॥ तप
स्तप्तंमहत्तेनचातिदेवकृपातये ॥ तद्दर्शस्वसमाजेनबलदेवोजगामह ॥ ६० ॥ ऊर्ध्वास्यमेकपादस्थंध्यानस्तिमितलोचनम् ॥ स्वभक्तंहृदय
स्थंस्वंमूर्तिदर्शनलोलुपम् ॥ ६१ ॥ तांजहारतदानंतस्ततोबाह्येददर्शह ॥ सदृष्ट्वानंतदेवस्यरूपंपरमसुन्दरम् ॥ ६२ ॥ स्रग्व्येककुण्डलंगौरंता
लांकरथसंस्तुतम् ॥ स्तुत्वापरमयाभक्त्यापपातचरणौपुनः ॥ ६३ ॥ तस्यशीर्षिणकरंदत्त्वावरंब्रूहीत्युवाचह ॥ यदिप्रसन्नोभगवाननुग्राह्योस्मि
वायदि ॥ ६४ ॥ सर्वोत्तमांभागवतींसंहितांशुकवक्त्रतः ॥ निर्गतांदेहिमेस्वामिन्कलिदोषहरांपराम् ॥ ६५ ॥ ॥ बलदेवउवाच ॥ ॥ उद्धव
द्वारतःप्राप्तिर्भविष्यतितवानघ ॥ श्रीमद्भागवतीकीर्तिरधिकायाकलौयुगे ॥ ६६ ॥ ॥ मांडूकउवाच ॥ ॥ कथंभगवतादत्तामुख्यातस्या
धिकारिता ॥ कदायोगोममस्वामिन्कुरुसंदेहभंजनम् ॥ ६७ ॥ ॥ बलदेवउवाच ॥ ॥ कथयामिपरंगोप्यंरहस्यंपरमाद्भुतम् ॥ अद्यापिम
मसामीप्यउद्धवोयंविराजते ॥ ६८ ॥ तद्दर्शनंकुरुपरंपारमार्थप्रदायकम् ॥ अद्यतीर्थस्ययात्रायामुपदेशोनतेभवेत् ॥ ६९ ॥ यथोपदेष्टाभवति
तेनतेकथयाम्यहम् ॥ उद्धवःस्थापितःश्रीमदाचार्यैःसंहितामयः ॥ ७० ॥

कि, हे स्वामिन् ! आप जो मोपे प्रसन्न भयेहो और जो मोकूं अनुग्रह करवेलायक आप जानो हौ तो सर्वोत्तमा शुकदेवके मुखतें निकरी जो भागवती संहिता ताहि देउ जो कलियुगके
दोषकी हरनहारी है ॥ ६५ ॥ तब बलदेवजी बोले कि, हे अनघ ! वुह भागवती संहिता तोकूं उद्धवके मुखते प्राप्त होयगी जो भागवतीकीर्ति कलियुगमें अधिक है ॥ ६६ ॥ तब
वे मांडूक बोले कि, उद्धवजीकूं वाकी मुख्य अधिकारता कैसे भगवान्ने दीनी और मेरो मिलाप उद्धवजीते कब होयगो हे स्वामिन् ! या मेरे सन्देहकूं दूरिकरो ॥ ६७ ॥ बलदेवजी बोले
में तोते कहूंहूं ये परम गोप्य अद्भुत रहस्य इतिहास है अद्यापि मेरे समीप ये उद्धव विराजे है ॥ ६८ ॥ वा उद्धवको तू दर्शन कर परम अर्थको देनहारो है
तीर्थयात्रामें तोकूं उपदेश नहीं होयगो ॥ ६९ ॥ जैसे वो उपदेश करनवारो होयगो ताते मैं तोते कहूंहूं मैंने उद्धवही आचार्य स्थापित कर्यो है क्योंकि, वो संहितामय है ॥ ७० ॥

नंदादिक व्रजवासीनकी और गोपनकी प्रीतिके लिये कीनो है अपने स्वरूपको जो कछू परिकर है सो सब भगवान् ॥ ७१ ॥ कृष्ण परमात्माने अपनोसो स्वभाव
गुणकर्मवारो आत्मा उद्धव कोई कर्यो है उद्धवको और अपने आत्माको एकरूपकरकेही आचरण कियो है ॥ ७२ ॥ साक्षात्कार कर्यो है श्रीकृष्णमें और उद्धवमें नेकहू अंतर
नही है तब उन्ने उद्धवको श्रीकृष्णही समझके आदरसो पूजो है ॥ ७३ ॥ वा उद्धवने वसंत ऋतु और ग्रीष्मऋतुमे व्रजमे रहिके राधाको शोक और उद्धवकुण्डके पास वसनहारे
नको शोक जाने दूरि कर्यो है ॥ ७४ ॥ व्रजके अनुगामीनके संग सब भूमंडलमें विचरै है गौअन और नंदादिक गोपनके दुःखके हरनहारे है ॥ ७५ ॥ मन्त्रीके अधिकारमें कुशल
है सब परिकरमे अग्रणी है जब भगवान् अन्तर्धान होयगे तब धर्मके रक्षा करनहारे ॥ ७६ ॥ भगवान् अपनो अद्भुत तेज उद्धवकूं देंगे सब जगह मुद्राधिकार देंगे उद्धव

नन्दादिव्रजवासिनांगोपिनांप्रीतयेकृतः ॥ स्वस्वरूपंपरिकरंयत्किंचिद्भगवत्तमम् ॥७१॥ सर्वस्वभावगुणकंकृष्णेनपरमात्मना ॥ उद्धवंचैवस्वा
त्मानमेकएवाचरद्विभुः ॥७२॥ साक्षात्कारंचकारासौनस्वीयमंतरंक्वचित् ॥ श्रीकृष्णमेवतेज्ञात्वापूजयामासुरादरात् ॥७३॥ वसन्तर्तुश्चग्रीष्मो
पिसच्चचारव्रजात्मकौ ॥ शमयामासराधायाःशोकंतत्कुण्डपार्श्वजाः ॥७४॥ सर्वभूमण्डलंतत्रविचचारव्रजानुगैः ॥ वियोगार्तिहरःप्रोक्तोगवांनं
दादिगोपिनाम् ॥ ७५ ॥ मंत्राधिकारकुशलःसर्वपरिकराग्रणीः ॥ अथांतर्धानवेलायांभगवान्धर्मगुप्तनुः ॥ ७६ ॥ तस्मैस्वतेजसमर्पिदास्यतेप
रमाद्भुतम् ॥ मुद्राधिकारंसर्वत्रसर्वदैवविराजते ॥ ७७ ॥ अंतर्धानेतुस्वस्थानेदत्तातस्याधिकारिता ॥ बदरीस्थंसपरिकरंधर्मंजंबोधयिष्यति
॥ ७८ ॥ अर्जुनादिवियोगार्तिहारीसैवभविष्यति ॥ वज्रनाभोयादवानांमाथुरेसंभविष्यति ॥ ७९ ॥ श्रीकृष्णस्यैवपौत्रेषुमहाराज्ञीगणेषुच ॥
वियोगार्तिहरश्चैवस्थाप्यतेश्रीहरिःस्वयम् ॥ ८० ॥ कौरवाणांकुलेराजापरीक्षिदितिविश्रुतः ॥ तस्यपुत्रोतितेजस्वीविख्यातोजनमेजयः॥ ८१ ॥
पितुःशत्रुहणंयज्ञंकरिष्यतिनसंशयः ॥ तस्यापिसर्वसामग्रीउद्धवद्वारतोभवेत् ॥ ८२ ॥ श्रीमद्भागवतंदिव्यंपुराणंवाचनंतदा ॥ गौरान्वय
स्त्रसंप्राप्तिर्भविष्यतिनसंशयः ॥ ८३ ॥ श्रीमत्प्रसादाद्विप्रर्षेमहाभागवतोत्तमात ॥ तद्द्वारसर्पयज्ञस्यनिवृत्तिःसंभविष्यति ॥ ८४ ॥ यज्ञसं
स्कारकर्तृणांब्राह्मणानांचपूजनम् ॥ सदास्यतिमहाराजाग्रामणांशतकंतथा ॥ ८५ ॥

हमेसही विराजै है ॥ ७७ ॥ जाने अन्तर्धान हैवेके समयमें अपने स्थानकूं जायवेके समय उद्धवकूंही अधिकारिता देयगे और जब आप चलेजायंगे तब उद्धव बदरिकाश्रममे
बैठिके धर्मते भयो जो परिकर है ताकूं स्थापना करि ज्ञान देयगो ॥ ७८ ॥ श्रीकृष्णके नाती और रानीनके गण तिनके वियोगजनित दुःख हरिवेकूं श्रीहरि उद्धवकूंही स्थापन करेंगे
॥ ७९ ॥ अर्जुनादिकनकी वियोगपीडाकूं उद्धवही हरेगो यादवनमें वज्रनाभि मथुरामें होयगो ॥ ८० ॥ कौरवनके कुलमें राजा परीक्षित् होयगो ताको पुत्र तेजस्वी जनमेजय विख्यात
होयगो ॥८१॥ पिताके वैरी सर्पनको मारनहारो यज्ञ करेगो निश्चय ताकूंहू सब सामिग्री उद्धवकेई रास्ता मिलेगी यामें सन्देह नही है ॥ ८२ ॥ श्रीमद्भागवत पुराण जाको बाचनो और
निःसंदेह गौरवंशोत्पन्न चैतन्यवंशकूं प्राप्त होयगो ॥ ८३ ॥ महाभागवत ब्रह्मऋषि बृहस्पतिके अनुग्रहते सर्पयज्ञकी निवृत्ति होयगी ॥ ८४ ॥ यज्ञ संस्कार कर्ता ब्राह्मणनकूं राजा पूजन करके गाम

महीना रहैगो ॥ ८६ ॥ तहां हाथी, घोड़ा, गौ, रथ, वस्त्र, भोज
देयगो एक २ कूँसो २ ग्राम देयगो ॥ ८७ ॥ ताके अनन्तर आचार्यनमें श्रेष्ठ जो श्रीप्रसाद तिनकी आज्ञातें सोरोंमें जायके एक संतन सहित ॥ ८८ ॥ अनुचरनसहित शयान नगरमें स्थिति करै
इनके दान यहच्छासों ब्राह्मणनको देके ॥ ८७ ॥ ता स्थलते नगादिके गुरुके संग गंगातीरके स्थलमें आवेगो संतन सहित ॥ ८८ ॥ अनुचरनसहित शयान नगरमें स्थिति करै
इनके दान यहच्छासों ब्राह्मणनको देके ॥ ८७ ॥ ता स्थलते नगादिके गुरुके संग गंगातीरके स्थलमें आवेगो फिर एकछत्र राज्य करनवा
तहां गुरुनकी आज्ञाते सामग्रीकी साधना करेगो ॥ ८९ ॥ ताके अनन्तर वो अश्वमेधनामको यज्ञ करेगो तब सब भूमिको जीतनवारो होयगो फिर एकछत्र राज्य करनवा
तहां गुरुनकी आज्ञाते सामग्रीकी साधना करेगो ॥ ९१ ॥ तहां भागवतकी बात संसारके रोगन
हैके श्रीगुरुके शरण प्राप्त होयगो ॥ ९० ॥ फिर मनोहर गंगातटपे पूर्वकूं पांचकोसपे परम एकांतरूप करिके साधन करेगो ॥ ९१ ॥ तहां भागवतकी बात संसारके रोगन
नाश करनहारी बड़े आनंदते सुधर्मानकी सभामें होयगी ॥ ९२ ॥ तिनके पूर्ण समाजमें तू भागवतधर्म सुनेगो और निर्मल पदकूं जायगो ॥ ९३ ॥ तेने मेरे अर्थ बड़ो

ततस्त्वाचार्य्यवर्यस्यश्रीप्रसादस्यचाज्ञया ॥ सगंतासूकरक्षेत्रंमासमेकंस्थितोभवेत् ॥ ८६ ॥ दत्त्वादानान्यनेकानिगोमहागजवाजिनः ॥ रत्नं
वासोब्राह्मणेभ्योभोजनंचयदृच्छया ॥ ८७ ॥ ततस्मात्तत्स्थलात्सोपिनिवर्त्यगुरुणासह ॥ गंगातीरस्थलान्पश्यन्नागमिष्यतिसद्धृतः ॥८८॥
शयाननगरेसंस्थांकारिष्यतिसहानुगः ॥ श्रीगुरोराज्ञयातत्रसामग्रींसाधनैःसह ॥ ८९ ॥ अश्वमेधंकरोतिस्मसर्वजेताभविष्यति ॥ एकच्छत्र
धरोभूत्वाश्रीगुरोःशरणंगतः ॥ ९० ॥ ततोगंगातटेरम्येपूर्वस्यांक्रोशपंचके ॥ परमैकांतरूपेणसेवनंतत्करिष्यति ॥ ९१ ॥ तत्रभागवतीवार्ता
भवरोगविनाशिनी ॥ भविष्यतिमुदायुक्तासमाजेषुसुधर्मिणाम् ॥ ९२ ॥ तत्रपूर्णसमाजेषुतेषांमध्येभवानपि ॥ शृणोषिभागवद्धर्मंगंताश्च
निर्मलंपदम् ॥ ९३ ॥ तपस्तत्त्वंमदर्थंतेतस्मादेतत्प्रकाशितम् ॥ एवंदेववरंदत्त्वागतोरामःसहानुगः ॥ ९४ ॥ शयाननगराच्छुद्धादीशान्य
दिशिसंस्थितम् ॥ स्थानंगंगातटेरम्यंकंटकादुत्तरेभवत् ॥ ९५ ॥ पुष्पवत्यादक्षिणेतुक्रोशैकंविस्तरेणच ॥ तत्रसंकर्षणोदेवःस्थित्वादानप
भवत् ॥ ९६ ॥ घोटकंदशसाहस्रंरथानांशतकंतथा ॥ द्विपसहस्रंगाश्चैवदिक्सहस्रंददौमुदा ॥ ९७ ॥ तत्रसंकर्षणंदेवंपूजयामासुरादरात् ॥
देवाःसमाययुःसर्वेऋषयश्चतपोधनाः ॥ ९८ ॥ नमःकोलेशघातायखरासुरविघातिने ॥ हलायुधनमस्तेस्तुमुसलास्त्रायतेनमः ॥ नमःसौंद
रूपायतालांकायनमोनमः ॥ ९९ ॥ इतिश्रुत्वास्तुतिंतेषांसंकर्षणउवाचह ॥ वरंवृणुतुमांसर्वेभवतांयदभीप्सितम् ॥ १०० ॥ ॥ द्विजदे
ऊचुः ॥ ॥ यदायदापदायुक्ताःस्मरामोभवतःपदम् ॥ सर्वबाधाविनिर्मुक्ताभवामश्चतवाज्ञया ॥ १ ॥

कीनोहै ताते मैंने तेरे आगे प्रकाश कीनोहै या प्रकारसो बलदेवजी वर देके अपने भृत्यवर्गनको ॥ ९४ ॥ शुद्धशयाननगरते ईशानमें गंगाके किनारेपै कंटकतीर्थते उत्तरदि
वा मनोहर स्थानपे चलेगये ॥ ९५ ॥ पुष्पवतीनदीके दक्षिणदिशामे एक कोसको है तहां देव संकर्षण रहिके दान करन लगे ॥ ९६ ॥ दशहजार घोड़ा, सौ रथ, हजार ह
दशहजार गौ, आनंदते देतेभये ॥ ९७ ॥ तहां देवता और तपोधन ऋषीश्वर आयके बड़े आदरते बलदेवजीको पूजन करतेभये ॥ ९८ ॥ स्तुति करनलगे कोलेशके
करनहारे खरके मारनहारे हल, मूसलके धारण करनहारे सुंदररूपवारे तालके चिह्नकी जिनकी ध्वजा तिन तुम्हारे अर्थ नमस्कार है ॥ ९९ ॥ ऐसे तिनकी स्तुति सुनिके सं
बोले सबरे तुम मोंपते वर मांगो जो तुम्हारे मनमें होय सो ॥ १०० ॥ तब वे बोले हे प्रभो ! जब २ हमपै आपत्ति आवे जब तुम्हारो स्मरण करें तबही हमारि सहाय

और हम सब बाधाते विनिर्मुक्त होंय ॥ १ ॥ तब संकर्षणजी बोले कि, जब जब तुम मेरो स्मरण करोगे तबई २ मैं शरणागत आयेनकी तुमारी रक्षा करूंगो कलियुगमें यह मेरो वचन सत्य है ॥ २ ॥ या स्थलमें तुमने वर पायोहै और मुनिश्रेष्ठनने मेरो पूजन करयोहै सो याते कलियुगमें यह संकर्षणको स्थान कहावेगो ॥ ३ ॥ जो या जगह गंगामें स्नान करेंगे देवपूजन करेंगे अनेक प्रकारके दान देयगे ब्राह्मणनको भोजन करावेंगे और विष्णुको पूजन करेंगे ॥ तिनको जन्म सफल होयगो स्वर्गमें जायंगे और जो कामना करेंगे उनके मनोरथ पूरे होयंगे ॥ ४ ॥ ५ ॥ ताके अनंतर सबनकूं संग लेके संकर्षण मथुराकूं चलेगये, कोल राक्षसकूं मारि गंगामें स्नान करिके ॥ ६ ॥ जो नर राम बलदेवकी कथाकूं सुनै सो सब पापनते छूटिके परम गतिकूं प्राप्त होयहै ॥१०७॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां मथुराखण्डे भाषाटीकायां कोलदैत्यवधो नाम चतुर्विंशोऽध्यायः॥२४॥

॥ ॥ रामउवाच ॥ ॥ यदायदामांस्मरथतदाहंशरणागतान् ॥ रक्षितास्यांकलौनूनमितिसत्यंवचोमम ॥ २ ॥ अत्रस्थलेवरंप्राप्तंपूजितंमुनिपुंगवैः ॥ अतःसंकर्षणस्थानंभविष्यतिकलौयुगे ॥ ३ ॥ येस्मिन्स्नास्यंतिगंगायांदेवान्संपूजयंतिये ॥ दास्यंतिदानंविप्रेभ्योभोजनंकारयंतिये ॥ ४ ॥ विष्णुंसंपूजयंतिस्मसफलंजीवितंक्षितौ ॥ तेयान्तिदैवतस्थानंकामीप्राप्नोतिकामनाम् ॥ ५ ॥ ततःपरिवृतोरामःस्वांपुरींसंजगामह ॥ कोलरक्षोवधंकृत्वास्नात्वाविष्णुपदीजले ॥ ६ ॥ रामस्यबलदेवस्यकथांयःशृणुयान्नरः ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तःसयातिपरमांगतिम् ॥ १०७ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांमथुराखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेकोलदैत्यवधोनामचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ अकस्मादागतेरामेतत्रतीर्थमिदंश्रुतम् ॥ अहोमधुपुरीधन्यायत्रसन्निहितश्वसः ॥१॥ मथुरायास्तुकोदेवःकःक्षत्ताकश्चरक्षति ॥ कश्चारःकोमंत्रिवरःकैर्भूमिस्तत्रसेविता ॥ २ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ परिपूर्णतमःसाक्षाच्छ्रीकृष्णोभगवान्हरिः ॥ स्वयंहिमथुरानाथःकेशवःक्लेशनाशनः ॥ ३ ॥ साक्षाद्भगवताप्राप्तःकपिलायद्विजायच ॥ कपिलःप्रददौयंवैप्रसन्नःशतमन्यवे ॥ ४ ॥ जित्वादेवान्राक्षसेंद्रोरावणोलोकरावणः ॥ संस्तुत्वापुष्पकेस्थाप्यलंकायांतमपूजयत ॥ ५ ॥ जित्वालंकांरावणेंद्रस्तमानीयप्रयत्नतः ॥ अयोध्यायांचवाराहमर्चयामासमैथिल ॥ ६ ॥ स्तुत्वारामंचशत्रुघ्नोयमानीयप्रयत्नतः ॥ मथुरायांमहापुर्यांस्थापयित्वाननामह ॥ ७ ॥

बहुलाश्व राजा कहैहै जहां अकस्मात् बलदेवजी चलेआये तहां तीर्थ ऐसो सुनिवेमें आयो परंतु जहां राति दिन रहै सो मधुपुरी तो बडी धन्य है ॥ १ ॥ या मथुराको को देवता है को क्षत्ता है को रक्षक है को चार है को मंत्री है को सेवन करैहै ॥ २ ॥ तब नारदजी बोले परिपूर्णतम साक्षात् श्रीकृष्ण भगवान् तो हरि केशवदेव क्लेशके नाश करनहारे मथुराके नाथ है ॥ ३ ॥ जिनको वाराहदेव कहैंहै जो केशवदेवजीकी मूर्ति पहले तो साक्षात् भगवान्ने तो कपिलदेव ब्राह्मणकू दीनी फिर जो मूर्ति कपिलदेवने प्रसन्न हैके इंद्रकूं दीनी ॥ ४ ॥ फिर वाई मूर्तिको लोकको रुवायवेवारो रावण देवतानकूं जीतिके ले आयो या रावणने पुष्पकविमानमें बैठारके लंकामें लायके स्थापन करके वा मूर्तिको पूजन कियो ॥५॥ फिर रावणकूं मार लंकाकूं जीतिके रामचंद्रजी वाई मूर्तिको अयोध्यामें लेआयके पूजी है मैथिल!॥६॥ रामकी स्तुति करिके शत्रुघ्नजी याही श्रीकेशवभगवान् वाराहजीकी मूर्तिको लायें उन्हें

मथुरामें स्थापन करि नमस्कार करी ॥७॥ जो सबनकूं वरदाता है वोही वाराह सब मथुरावासीन पूजे वेई साक्षात्कपिलवाराह या मथुराके श्रेष्ठ मंत्री हैं ॥ ८ ॥ मथुराजीके क्षेत्रपाल भूतेश्वर शिव हैं जे पापीनकूं दंड देयहैं भक्तनकूं मंत्र देयहैं ॥ ९ ॥ महाविद्या चंडिकादेवी दुःखनाशिनी सिंहपै चढी सदा मथुराकी रक्षा करे है ॥ १० ॥ और मथुराके हलकारो मैं हूं इत वित लोकनकूं देखिके सब वृत्तान्त महात्मा श्रीकृष्णतें जायके कहूंहूं ॥ ११ ॥ बीचमें शुभकी दाता मथुरादेवी है जो करुणामयी है हे राजन् ! सब भूखेनकूं अन्न देयहै ॥ १२ ॥ जा मथुरामें श्यामसुन्दर चतुर्भुज भगवान्के पार्षद डोल्यौ करैहैं जो मरैहैं ताहि विमानमें बैठार स्वर्गकू लेजांयहैं ॥१३॥ भगवानके अंगते ये मथुरापुरी भई है याके दर्शनतेंई मनुष्य कृतार्थ होय हैं ॥ १४ ॥ पहले ब्रह्माजीनें मथुरामें आयके अन्न छोडिके दिव्य सौ वर्षताईं तप कीनो हरिकू भजनेंते ब्रह्मपर ह्वेके तब स्वायंभूमनु बेटा पायो ॥ १५ ॥ भूतेश्वर देवतानमें श्रेष्ठ

सेवितोमाथुरैःसर्वैःसर्वेषांचवरप्रदः ॥साक्षात्कपिलवाराहःसोयंमंत्रिवरःस्मृतः ॥ ८ ॥ क्षत्ताश्रीमथुरायाश्चनाम्नाभूतेश्वरःशिवः ॥ दत्त्वादण्डंपातकिनेभक्तेभ्यश्चमंत्रदंव्रजत ॥ ९ ॥ चंडिकातुमहाविद्यादेवीदुर्गार्तिनाशिनी ॥ सिंहारूढासदारक्षांमथुरायाःकरोतिहि ॥ १० ॥ चारोहंमथुरायाश्चपश्यँल्लोकानितस्ततः ॥ वदामिवार्तांसर्वेषांश्रीकृष्णायमहात्मने ॥ ११ ॥ मध्येकेमथुरादेवीशुभदाकरुणामयी ॥ बुभुक्षितेभ्यःसर्वेभ्योददात्यन्नंविदेहराट् ॥ १२ ॥ चतुर्भुजाश्यामलांगाव्रजंतिप्रव्रजंतिच ॥ मथुरायांमृतंनेतुंविमानैःकृष्णपार्षदाः ॥ १३ ॥ श्रीकृष्णस्यांगसंभूतामथुरावैमहापुरी ॥ यस्यादर्शनमात्रेणनरोयातिकृतार्थताम् ॥ १४ ॥ पुराविधिःश्रीमथुरामुपेत्यतप्त्वातपोवर्षशतंनिरन्नः ॥ जपन्हरिंब्रह्मपरंस्वयंभूःस्वायंभुवंप्रापसुतंप्रवीणम् ॥ १५ ॥ भूतेश्वरोदेववरःसतीपतिस्तप्त्वातपोदिव्यशरन्मधोर्वने ॥ कृष्णप्रसादान्नृपराजसत्तमःस्याःपुरेमाथुरमंडलस्य ॥ १६ ॥ कृष्णप्रसादादहमेवचारोभ्रमन्सदामाथुरमंडलस्य ॥ तथाहिदुर्गामथुरांप्रयातिश्रीकृष्णदास्यंप्रकरोतिनूनम् ॥१७॥ तप्त्वातपःशक्रपदंचशक्रःसूर्योमनुंनित्यनिधिंकुबेरः ॥ पाशीचपाशंसमवाप्यसम्यङ्मधोर्वनेविष्णुपदंध्रुवश्च ॥ १८ ॥ तथांबरीषःसमवापमुक्तिंरामोजयंचालवणाज्जयंच ॥ रघुश्चसिद्धिंकिलचित्रकेतुस्तप्त्वातपोत्रैवमधोर्वनेच ॥ १९ ॥ तप्त्वातपोत्रैवमधोर्वनेशुभेभूत्वाबलिष्ठश्चमधुर्महासुरः ॥ श्रीमाधवेमासिचमाधवेनयुयोधयुद्धेमधुसूदनेनसः ॥ २० ॥

सतीके पति मधुवनमें दिव्य सौवर्षतक तप करके कृष्णके प्रसादतें हे नृपराजसत्तम ! जलदीही मथुरामण्डलके क्षेत्रपाल भये ॥ १६ ॥ श्रीकृष्णकेई प्रसादतें मैं हलकारा भयो सदा श्रीमथुरामंडलमें भ्रमण करौहौं तैसेंई दुर्गा मथुरामें आयके श्रीकृष्णको दासीपनो करैहै ॥१७॥ याही मथुरामें इन्द्र तप करिके इन्द्रपदवीकूं प्राप्तभयो सूर्यकू मनु पुत्र मिल्यौ कुबेरकू निधि मिली वरुणकू फांस तथा जलपतित्व मिल्यौ और याही मथुराके प्रतापते ध्रुवकू ध्रुवपदवी मिली॥१८॥अंबरीषकूं मुक्ति मिली रामको लवणासुरको जय मिल्यो और रघुराजाको मिली और चित्रकेतुको याही मथुरामें तप करिवेसो सिद्धि ह्वेगयी ॥ १९ ॥ यहाँही तप करिके महासुर मधुदैत्य महाबली भयो वैशाखमें जानें मधुसूदनतें युद्ध करयो ॥२०॥

सप्तऋषिहू मथुरामें तप करिके योगकी सिद्धिकूँ प्राप्तभये और गोकर्ण नाम वैश्यहू निधिकूँ प्राप्तभयो ॥ २१ ॥ पहले रावणहू यहां तप करिके स्वर्गके देवतानकूँ जीततोभयो लंका
बनाय राक्षसनकूं राखि विराजतभयो ॥ २२ ॥ याही मधुवनमें तप करिके हस्तिनापुरके राजा शंतनुने तत्त्वार्थसागरको मलाह अति उत्तम भीष्म बेटा पायो ॥ २३ ॥ अब
राजा बहुलाश्व बोल्यो कि, हे देवर्षिनमें उत्तम ! अब मथुराको माहात्म्य कहो कि, मथुरामें वास करनेमें मनुष्यको कहा फल होयहै ॥ २४ ॥ तब नारद बोले कि, पहले अगारी
वाराहजीने बडी बडी लहरीनकी शंका जासो दूरभई ता समुद्रमें डूबी पृथ्वीकूँ डाढपै धरि निकासके जब लाये जैसे हाथी कमलकूँ निकासके लावे है तब भूमिसे वाराहजीने
मथुराको माहात्म्य कह्योहो ॥ २५ ॥ मथुराको नाम लेय तो हरिनाम लेबेको फल मिले और मथुरानामके सुनेते कृष्णकी कथाके सुनेको फल मिले स्पर्श करेते संतनके स्पर्शको

सप्तर्षयःश्रीमथुरांसमेत्यतस्वातपोनैवचयोगसिद्धिम् ॥ प्रापुःपुरानैमुनयःसमंताद्गोकर्णवैश्योपिमहानिधिंच ॥ २१ ॥ तस्वातपोनैवमधोर्वनेशु
भेविजित्यदेवान्दिविलोकरावणः ॥ निधायरक्षांसिविधायमंदिरमास्थायलंकांविरराजरावणः ॥ २२ ॥ तस्वातपोनैवमधोर्वनेशुभेगजाग्रेशो
मिथिलेशशंतनुः ॥ लेभेसुतंभीष्ममतीवसत्तमंतत्त्वार्थवारांनिधिकर्णधारम् ॥ २३ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ मथुरायाश्चमाहत्म्यंवददेव
र्षिसत्तम ॥ निवासेकिंफलंप्रोक्तंमथुरायाःसतांनृणाम् ॥ २४ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ आदौवराहोधरणीनिमग्नांमहाजलेप्रोज्झितवीचि ॥
शंकेस्वदंष्ट्रयोद्धृत्यकरीवपद्मंकरेणमाहात्म्यमिदंजगाद ॥ २५ ॥ ब्रुवञ्जनोनामफलंहरेर्लभेच्छृण्वँल्लभेत्कृष्णकथाफलंनरः ॥ स्पृशन्सतांस्पर्श
नजंमधोःपुरीजिघ्रंस्तुलस्यादलगंधजंफलम् ॥ २६ ॥ पश्यन्हरेर्दर्शनजंफलंस्वतोभक्षश्चनैवेद्यभवंरमापतेः ॥ कुर्वन्भुजाभ्यांहरिसेवयाफलंग
च्छंल्लभेत्तीर्थफलंपदेपदे ॥ २७ ॥ राजेंद्रहंतानिजगोत्रघातकीत्रैलोक्यहंतापिचकोटिजन्मसु ॥ राजञ्शृणुत्वंमथुरानिवासतोयोगीश्वराणां
गतिमाप्नुयान्नरः ॥ २८ ॥ पादौचधिग्यौनगतौमधोर्वनंदृशौचधिग्येनकदापिपश्यतः ॥ कर्णौचधिग्यौशृणुतोनमैथिलवाचंचधिग्यानकरो
त्यलंमनाक् ॥ २९ ॥ त्रिसप्तकोटीनिवनानियत्रतीर्थानिवैदेहसमास्थितानितु ॥ एकैकमेतेषुविमुक्तिदानिवदामिसाक्षान्मथुरांनमामि ॥
॥ ३० ॥ गोलोकनाथःपरिपूर्णदेवःसाक्षादसंख्यांडपतिःस्वयंहि ॥ श्रीकृष्णचन्द्रोवततारयस्यांतस्यैनमोन्यासुपुरीषुकिंवा ॥ ३१ ॥

फल मिले सूंघिवेमें तुलसीदलके सूंघिवेको फल मिले है ॥ २६ ॥ मथुराके दर्शन करेते हरिदर्शनको फल मिले यहां भोजन करे तो हरिके नैवेद्यके भोजनको फल मिले कामकरेते
हरिसेवाको फल मिले मथुरामें डोले तो पैरपैरमें तीर्थयात्राको फल मिले ॥ २७ ॥ राजको हंता गोत्रघाती अपने गोत्रको मारनवारो त्रैलोक्यहंता तीनों लोकनको मारनवारो
हे राजन् ! ऐसोऊ पापी होय तो हू वो किरोड जन्मताईं योगीश्वरनकी गतिकूं प्राप्त होय है ॥ २८ ॥ उन पांवनकों धिक्कार है जो पांय मधुवनमें न गये जिन नेत्रनते मथुरा न
देखी तिन नेत्रनको धिक्कार है, जिन कानन सों कबहू मथुराको नाम न सुन्यो उन काननको धिक्कार है और वा वाणीको धिक्कार है जाने कभी मथुरानाम न कह्यो ॥ २९ ॥ हे
विदेह ! जा मथुरामें चौदहकिरोड वनमें चौदह किरोड तीर्थ हैं एक २ तीर्थ मुक्तिको दाता है ता मथुराकूं मैं नमस्कार करूंहूं ॥ ३० ॥ गोलोकके नाथ परिपूर्ण साक्षात् असंख्य

ब्रह्मांडनके पति श्रीकृष्ण तिनने जामें अवतार लियो है ता मथुराकूँ नमस्कार है मोकूं और धुरीनसों कहा है ॥ ३१ ॥ या मथुराको नाम तत्क्षणही पापनकूं दूरि करैहै जाके नाम लियेते मुक्ति होयहै जाकी गली गलीमें मुक्ति परी डोलै है याहीते या मथुराकूँ ज्ञानी श्रेष्ठ कहैहै ॥ ३२ ॥ जो लोकमें काशीते आदिलेके पुरी है तो भलेही वे पुरी होउ परन्तु तिन में तो मथुराई धन्य है क्योंकि जो मथुरा चारि प्रकारते मुक्ति देयहै मथुरामें जन्म होय या जनेऊ होय या मृत्यु होय अथवा दाह होय एकहू बात होय तो मुक्ति हैजाय है ॥ ३३ ॥ जो यह मधुवनमें कृष्णकी पुरी है ये पुरीनकी ईश्वरी, व्रजकी ईश्वरी, तीर्थनकी ईश्वरी, यज्ञ और तपोनिधि इनकी ईश्वरी, मोक्षकी दाता, धर्मके धुर (भार) को धारनवारी वा मथुरा कूं मेरो नमस्कार है ॥ ३४ ॥ जे कोई मथुराके माहात्म्यको सुने हैं कृष्णमें मन लगायके वे मनुष्य पृथ्वीकी परिक्रमाके फल पामेंगे हे विदेहराज ! यामें संदेह नहीं है ॥ ३५ ॥ जे या मथुराखण्डकूं सुने है गामे है या पढें है तिनकूं याही लोकमें अपने आप सबरी समृद्धि और सिद्धि मिलेंगी ॥ ३६ ॥ जे बड़े वैभवके चाहकरनवारे मनुष्य या मथुराके महातम

यन्नामपापंविनिहंतितत्क्षणंभवत्यलंयांगृणतोपिमुक्तयः ॥ वीथीषुवीथीषुचमुक्तिरस्यास्तस्मादिमांश्रेष्ठतमांविदुर्बुधाः ॥ ३२ ॥ काश्यादिपु र्योयदिसंतिलोकेतासांतुमध्येमथुरैवधन्या ॥ याजन्ममौजीव्रतमृत्युदाहैर्नृणांचतुर्धाविदधातिमुक्तिम् ॥ ३३ ॥ पुरीश्वरींकृष्णपुरींव्रजेश्वरींती र्थेश्वरींयज्ञतपोनिधीश्वरीम् ॥ मोक्षप्रदांधर्मधुरंधरांपरांमधोर्वनेश्रीमथुरांनमाम्यहम् ॥ ३४ ॥ शृण्वंतिमाहात्म्यमिदंमधोःपुरःकृष्णैकचित्ता नियताश्चयत्नये ॥ व्रजंतितेतत्रपरिक्रमात्फलंवैदेहराजेंद्रनचात्रसंशयः ॥ ३५ ॥ खण्डंत्विदंश्रीमथुरापुरस्ययेशृण्वंतिगायंतिपठंतिसर्वतः ॥ इहै वतेषांहिसमृद्धिसिद्धयोभवंतिवैदेहनिसर्गतःसदा ॥ ३६ ॥ त्रिःसप्तकृत्वोबहुवैभवार्थिनःशृण्वंतिचैनंनियताश्चयेभृशम् ॥ तेषांगृहद्वारमलं करोतिभृंगावलीकुंजरकर्णताडिता ॥ ३७ ॥ विप्रोथविद्वान्विजयीनृपात्मजोवैश्योनिधीशोवृषलोपिनिर्मलः ॥ श्रुत्वेदमाराचमनोरथोभवेत्स्त्री र्णांजनानामतिदुर्लभोपिहि ॥ ३८ ॥ निष्कारणोभक्तियुतोमहीतलेशृणोतिचेदंहरिलग्नमानसः ॥ विजित्यविघ्नान्प्रविजित्यनाकपान्गोलोक धामंसचवैप्रयाति ॥ ३९ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमथुराखण्डेश्रीनारदबहुलाश्वसंवादेश्रीमथुरामाहात्म्यंनामपंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

॥ श्रीराधाकृष्णार्पणमस्तु ॥ शुभंभवतु ॥ इतिमथुराखण्डः समाप्तः ॥

कृष्णमें मनलगायके एकाग्रचित्त हैके २१ बार सुने हैं तिनके दरवज्जेपै मतवारे हाथी झूमेंगे जिनपै भौंरा गुंजान्योकरें ॥ ३७ ॥ परम पवित्र या कथाकूं मन लगायके जो ब्राह्मण श्रवण करैगो सो निश्चय करिके पंडित हैजायगो और जो क्षत्री सुने तो संग्रामके बीचमें विजयको प्राप्त होय और वैश्य जो मन लगाके श्रवणकरै तो सब प्रकारसूं धनकरके युक्त होय ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य इन तीनों वर्णनसे भिन्न शूद्र श्रवणकरै तो ताकी बुद्धि निर्मल हैजाय और सब स्त्री, पुरुषनके जे अतिदुर्लभ मनोरथ हैं वेहू या कथाके श्रवणकरैतें पूर्ण हैजाय हैं ॥ ३८ ॥ और जो मनुष्य सम्पूर्ण कामनाओंकूँ त्याग करिके भक्तिभावसे श्रीभगवान्में अपनो मन लगायके या मथुराजीके माहात्म्यको सुनैगो सो सम्पूर्णही विघ्नकूं और देवतानकूं जीतिके श्रीकृष्णके परम धाम साक्षात् गोलोकधामकूं चल्योजायगो ॥ ३९ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां मथुराखंडे भाषाटीकायां नारदबहुलाश्वसंवादे मथुरामाहात्म्यवर्णनं नाम पञ्चविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

इद पुस्तक क्षेमराज-श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना मुम्बय्यां (खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लेन) स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) मुद्रणयन्त्रालये मुद्रयित्वा प्रकाशितम् । संवत् १९६७, शके १८३२.

सप्तऋषिहू मथुरामें तप करिके योगकी सिद्धिकूँ प्राप्तभये और गोकर्ण नाम वैश्यहू निधिकूँ प्राप्तभयो ॥ २१ ॥ पहले रावणहू यहां तप करिके स्वर्गके देवतानकूँ जीततोभयो लंका बनाय राक्षसनकूं राखि विराजतभयो ॥ २२ ॥ याहीं मधुवनमें तप करिके हस्तिनापुरके राजा शंतनुने तत्त्वार्थसागरको मलाह अति उत्तम भीष्म बेटा पायो ॥ २३ ॥ अब राजा बहुलाश्व बोल्यो कि, हे देवर्षिनमें उत्तम ! अब मथुराको माहात्म्य कहो कि, मथुरामें वास करनेमें मनुष्यको कहा फल होयहै ॥ २४ ॥ तब नारद बोले कि, पहले अगारी वाराहजीने बड़ी बड़ी लहरीनकी शंका जासों दूरभई ता समुद्रमे डूबी पृथ्वीकूँ डाढ़पे धरि निकासके जब लाये जैसे हाथी कमलकूँ निकासके लावै है तब भूमिसे वाराहजीने मथुराको माहात्म्य कह्योहो ॥ २५ ॥ मथुराको नाम लेय तो हरिनाम लीयेको फल मिले और मथुरानामके सुनेते कृष्णकी कथाके सुनेको फल मिले स्पर्श करेते संतनके स्पर्शको

सप्तर्षयःश्रीमथुरांसमेत्यतस्वातपोत्रैवचयोगसिद्धिम् ॥ प्रापुःपुरावैमुनयःसमंताद्गोकर्णवैश्योपिमहानिधिंच ॥ २१ ॥ तस्वातपोत्रैवमधोर्वनेशुभेविजित्यदेवान्दिविलोकरावणः ॥ निधायरक्षांसिविधायमंदिरमास्थायलंकांविरराजरावणः ॥ २२ ॥ तस्वातपोत्रैवमधोर्वनेशुभेगजाह्वयेशो मिथिलेशशंतनुः ॥ लेभेसुतंभीष्ममतीवसत्तमंतत्त्वार्थवारांनिधिकर्णधारम् ॥ २३ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ मथुरायाश्चमाहात्म्यंवददेवर्षिसत्तम ॥ निवासेकिंफलंप्रोक्तंमथुरायाःसतांनृणाम् ॥ २४ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ आदौवराहोधरणींनिमग्नांमहाजलेप्रोज्झितवीचि ॥ शंकेस्वदंष्ट्रयोद्धृत्यकरीवपद्मंकरेणमाहात्म्यमिदंजगाद ॥ २५ ॥ वदञ्जनोनामफलंहरेर्लभेच्छृण्वंल्लभेत्कृष्णकथाफलंनरः ॥ स्पृशन्सतांस्पर्शनजंमधोःपुरिजिघ्रंस्तुलस्यादलगंधजंफलम् ॥ २६ ॥ पश्यन्हरेर्दर्शनजंफलंस्वतोभक्षन्नैवेद्यभवंरमापतेः ॥ कुर्वन्भुजाभ्यांहरिसेवयाफलंगच्छंल्लभेत्तीर्थफलंपदेपदे ॥ २७ ॥ राजेंद्रहंतानिजगोत्रघातकोत्रैलोक्यहंतापिचकोटिजन्मसु ॥ राजन्शृणुत्वंमथुरानिवासतोयोगीश्वराणां गतिमाप्नुयान्नरः ॥ २८ ॥ पादौचधिग्यौनगतौमधोर्वनंदृशौचधिग्येनकदापिपश्यतः ॥ कर्णौचधिग्यौशृणुतोनमैथिलवाचंचधिग्यानकरोत्यलंमनाक् ॥ २९ ॥ द्विसप्तकोटीनिवनानियत्रतीर्थानिवैदेहसमास्थितानितु ॥ एकैकमेतेषुविमुक्तिदानिवदामिसाक्षान्मथुरांनमामि ॥ ॥ ३० ॥ गोलोकनाथःपरिपूर्णदेवःसाक्षादसंख्यांडपतिःस्वयंहि ॥ श्रीकृष्णचन्द्रोवततारयस्यांतस्यैनमोन्यासुपुरीषुकिंवा ॥ ३१ ॥

फल मिले सूंघिवेमें तुलसीदलके सूंघिवेको फल मिले है ॥ २६ ॥ मथुराके दर्शन करेते हरिदर्शनको फल मिले यहां भोजन करे तो हरिके नैवेद्यके भोजनको फल मिले कामकरेते हरिसेवाको फल मिले मथुरामें डोले तो पेंडपेंडमें तीर्थयात्राको फल मिले ॥ २७ ॥ राजको हंता गोत्रघाती अपने गोत्रको मारनवारो त्रैलोक्यहंता तीनों लोकनको मारनवारो हे राजन् ! ऐसोऊ पापी होय तो हू वो किरोड़ जन्मताईं योगीश्वरनकी गतिकूं प्राप्त होय है ॥ २८ ॥ उनपांवनको धिक्कार है जो पांव मधुवनमें न गये जिन नेत्रनते मथुरा न देखी तिन नेत्रनको धिक्कार है, जिन काननसों कबहूं मथुराको नाम न सुन्यो उन काननको धिक्कार है और वा वाणीको धिक्कार है जाने कभी मथुरानाम न कह्यो ॥ २९ ॥ हे विदेह ! जा मथुरामें चौदहकिरोड़ वनमें चौदह किरोड़ तीर्थ हैं एक २ तीर्थ मुक्तिको दाता है ता मथुराकूँ मैं नमस्कार करूंहूं ॥ ३० ॥ गोलोकके नाथ परिपूर्ण साक्षात् असंख्य

ब्रह्मांडनके पति श्रीकृष्ण तिनने जामें अवतार लियो है ता मथुराकूँ नमस्कार है मोकूं और पुरीनसों कहा है ॥ ३१ ॥ या मथुराको नाम तत्क्षणही पापनकूं दूरि करैहै जाके नाम लियेते मुक्ति होयहै जाकी गली गलीमें मुक्ति परी डोले है याहीतें या मथुराकूँ ज्ञानी श्रेष्ठ कहेहै ॥ ३२ ॥ जो लोकमें काशीते आदिलेके पुरी हैं तो भलेही वे पुरी होउ परन्तु तिन में तो मथुराई धन्य है क्योंकि जो मथुरा चारि प्रकारते मुक्ति देयहै मथुरामें जन्म होय या जनेऊ होय या मृत्यु होय अथवा दाह होय एकहू बात होय तो मुक्ति हैजाय है ॥ ३३ ॥ जो यह मधुवनमें कृष्णकी पुरी है ये पुरीनकी ईश्वरी, ब्रजकी ईश्वरी, तीर्थनकी ईश्वरी, यज्ञ और तपोनिधि इनकी ईश्वरी, मोक्षकी दाता,धर्मके धुर (भार) की धारनवारी वा मथुरा कूँ मेरो नमस्कार है ॥ ३४ ॥ जे कोई मथुराके माहात्म्यको सुने हैं कृष्णमें मन लगायके वे मनुष्य पृथ्वीकी परिक्रमाके फल पामेगे हे विदेहराज ! यामें संदेह नही है ॥ ३५ ॥ जे या मथुराखण्डकूं सुने है गामें है या पढे है तिनकूं याही लोकमें अपने आप सबरी समृद्धि और सिद्धि मिलेंगी ॥ ३६ ॥ जे बड़े वैभवके चाहकरनवारे मनुष्य यां मथुराके महातम

यन्नामपापंविनिहंतितत्क्षणंभवन्त्यलंयांगृणतोऽपिमुक्तयः ॥ वीथीषुवीथीषुचमुक्तिरस्यास्तस्मादिमांश्रेष्ठतमांविदुर्बुधाः ॥ ३२ ॥ काश्यादिपुर्योयदिसंतिलोकेतासांतुमध्येमथुरैवधन्या ॥ याजन्मभौंजीव्रतमृत्युदाहैर्नृणांचतुर्धाविदधातिमुक्तिम् ॥ ३३ ॥ पुरीश्वरींकृष्णपुरींव्रजेश्वरींतीर्थेश्वरींयज्ञतपोनिधीश्वरीम् ॥ मोक्षप्रदांधर्मधुरंधरांपरांमधोर्वनेश्रीमथुरांनमाम्यहम् ॥ ३४ ॥ शृण्वंतिमाहात्म्यमिदंमधोःपुरःकृष्णैकचित्तानियताश्चयेनराः ॥ व्रजंतितेतत्रपरिक्रमात्फलंवैदेहराजेंद्रनचात्रसंशयः ॥ ३५ ॥ खण्डंत्विदंश्रीमथुरापुरस्ययेशृण्वंतिगायंतिपठंतिसर्वतः ॥ इहैवतेषांहिसमृद्धिसिद्धयोभवंतिवैदेहनिसर्गतःसदा ॥ ३६ ॥ त्रिःसप्तकृत्वोबहुवैभवार्थिनःशृण्वंतिचैनंनियताश्चयेभृशम् ॥ तेषांगृहद्वारमलंकरोतिभृंगावलीकुञ्जरकर्णताडिता ॥ ३७ ॥ विप्रोथविद्वान्विजयीनृपात्मजोवैश्योनिधीशोवृषलोऽपिनिर्मलः ॥ श्रुत्वेदमाराद्यमनोरथोभवेत्स्त्रीणांजनानामतिदुर्लभोऽपिहि ॥ ३८ ॥ निष्कारणोभक्तियुतोमहीतलेशृणोतिचेदंहरिलग्नमानसः ॥ विजित्यविघ्नान्प्रविजित्यनाकपान्गोलोकधामंसचवैप्रयाति ॥ २९ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीमथुराखण्डेश्रीनारदबहुलाश्वसंवादेश्रीमथुरामाहात्म्यंनामपंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

॥ श्रीराधाकृष्णार्पणमस्तु ॥ शुभंभवतु ॥ इतिमथुराखण्डः समाप्तः ॥

कृष्णमें मनलगायके एकाग्रचित्त हैके २१ वार सुने हैं तिनके दरवजेपै मतवारे हाथी झूमेंगे जिनपै भौंरा गुंजार्योकरें ॥ ३७ ॥ परम पवित्र या कथाकूं मन लगायके जो ब्राह्मण श्रवण करैगो सो निश्चय करिके पंडित हैजायगो और जो क्षत्री सुने तो संग्रामके बीचमें विजयको प्राप्त होय और वैश्य जो मन लगाके श्रवणकरै तो सब प्रकारसूं धनकरके युक्त होय ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य इन तीनों वर्णनसे भिन्न शूद्र श्रवणकरै तो ताकी शुद्धि निर्मल हैजाय और सब स्त्री, पुरुषनके जे अतिदुर्लभ मनोरथ हैं वेहू या कथाके श्रवणकरैतें पूर्ण हैजाय है ॥ ३८ ॥ और जो मनुष्य सम्पूर्ण कामनाओंकूँ त्याग करिके भक्तिभावसे श्रीभगवान्‌में अपनो मन लगायके या मथुराजीके माहात्म्यको सुनेगो सो सम्पूर्णही विघ्नकूं और देवतानकूं जीतिके श्रीकृष्णके परम धाम साक्षात् गोलोकधामकूं चल्योजायगो ॥ २९ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां मथुराखंडे भाषाटीकायां नारदबहुलाश्वसंवादे मथुरामाहात्म्यवर्णनं नाम पञ्चविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

इद पुस्तक क्षेमराज-श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना मुम्बय्यां (खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लेन) स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) मुद्रणयन्त्रालये मुद्रयित्वा प्रकाशितम् । संवत् १९६७, शके १८३२.

॥ इति गर्गसंहितायां मथुराखण्डं भाषाटीकासमेतं समाप्तम् ॥

॥ अथ गर्गसंहितायां द्वारकाखण्डं भाषाटीकासहितं प्रारभ्यते ॥

(षष्ठखण्डम् ६)

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ द्वारकाखण्डः प्रारभ्यते ॥ श्रीकृष्ण वासुदेव देवकीनन्दन नन्दगोपके कुमार जो गोविन्द है तिनके अर्थ नमस्कार है ॥ १ ॥ बहुलाश्व राजा नारदजीतें पूछेहै कि, आपके मुखतें मैंने अद्भुत मथुराखण्ड सुन्यो अब श्रीकृष्णको चरितामृत जामें ऐसो जो द्वारकाखण्ड है ताहि हमारे आगे कहो ॥ २ ॥ रमापतिके कितने विवाह भये कितने बेटा, कितने नाती भये और द्वारिकाके बसवेको कारण कहा है सो कहो ॥ ३ ॥ तब नारदजी बोले कि, जब महाबली कंस मरिगयो तब अस्ति प्राप्ति दो कंसकी स्त्री जरासन्धकी बेटी ही वे महादुःखके मारे हे मिथिलेश्वर ! जरासन्धके घर चलीगई ॥ ४ ॥ तिनके मुखतें कंसको मरण सुनिके जरासन्ध महाबली अत्यन्त कोप करतोभयो और अयादवी पृथ्वी करिवेकूँ उद्यत भयो ॥ ५ ॥ तब तेईस अक्षौहिणी सेनाको लेके मनोहर जो मथुरापुरी तापै वह बली चढ़िके आयो ॥ ६ ॥ भगवान् भयातुर मथुरा पुरीकूँ देखिके और समुद्रसी गर्जती वाकी सेनाकूँ देखिके सभामें बैठे बलदेवजीतें बोले ॥ ७ ॥ हे राम ! याकी सेना तो सम्पूर्ण निःसंदेह निवटाय देनी चहिये परंतु जरास

श्रीगणेशायनमः ॥ अथद्वारकाखण्डः ॥ कृष्णायवासुदेवायदेवकीनन्दनायच ॥ नन्दगोपकुमारायगोविंदायनमोनमः ॥ १ ॥ ॥ बहुलाश्व उवाच ॥ ॥ श्रुतंतवमुखाद्ब्रह्मन्मथुराखण्डमद्भुतम् ॥ वदमांद्वारकाखण्डंश्रीकृष्णचरितामृतम् ॥२॥ विवाहाःकतिपुत्राश्चकतिपौत्रारमापतेः ॥ सर्वं वदमहाबुद्धेद्वारकावासकारणम् ॥ ३ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ अस्तिप्राप्तीमहिष्यौद्वेमृतेकंसेमहाबले ॥ जरासन्धगृहंदुःखाज्जग्मतुर्मैथि लेश्वर ॥ ४ ॥ तन्मुखात्कंसमरणंश्रुत्वाक्रुद्धोजरासुतः ॥ अयादवींमहींकर्तुमुद्यतोभून्महाबलः ॥५॥ अक्षौहिणीभिर्विंशत्यातिसृभिश्चापिसंवृ तः ॥ रम्यांमधुपुरींराजन्नाययौबलवान्नृपः ॥६॥ भयातुरांपुरींवीक्ष्यतत्सेनांसिंधुनादिनीम् ॥ सभायांभगवान्साक्षाद्बलदेवमुवाचह ॥७॥ सर्वं चास्यबलंगमहंतव्यंवैनसंशयः ॥ मागधस्तुनहंतव्योभूयःकर्ताबलोद्यमम् ॥ ८ ॥ जरासंधनिमित्तेनभारंवैभूभुजांभुवः ॥ सर्वंचात्रहरिष्यामि करिष्यामिप्रियंसताम् ॥ ९ ॥ एवंवदतिकृष्णेवैवैकुण्ठाद्रथौशुभौ ॥ अभूतामागतौराजन्सर्वेषांपश्यतांचतौ ॥ १० ॥ समारुह्यरथौसद्योरा मकृष्णौमहाबलौ ॥ यादवानांबलैःसूक्ष्मैस्त्वरंनिर्जग्मतुःपुरात् ॥ ११ ॥ यादवानांमागधानांपश्यद्भिर्दिविजैर्दिवि ॥ बभूवतुमुलंयुद्धमद्भुतंरो महर्षणम् ॥१२॥ अक्षौहिणीभिर्दशभीरथारूढोमहाबलः ॥ श्रीकृष्णस्यपुरःपूर्वंयुयुधेमागधेश्वरः ॥ १३ ॥ पंचभिश्चाक्षौहिणीभिर्धार्तराष्ट्रःसुयो धनः ॥ युयोधयादवैःसार्द्धंजरासंधसहायकृत् ॥१४॥ पंचभिश्चतथाराजन्विंध्यदेशाधिपोबली ॥ तिसृभिश्चमहायुद्धेवंगनाथोमहाबलः ॥१५॥

न्धकूँ मति मारो यह बच जायगो तो फिर सेना समेटवेको उद्योग करैगो ॥ ८ ॥ जरासन्धके निमित्ततें पृथ्वीके राजारूपी सब भारकूँ यहांही उतारूंगो और सन्तनको प्यार करूंगो ॥ ९ ॥ ऐसे श्रीकृष्ण कहिरहेहैं के तबही वैकुण्ठलोकतें बड़े शुभ दो रथ सबनके देखत देखत आये ॥ १० ॥ तब अतिबली राम कृष्ण दोनों भैय्या उन रथनपै चढ़ थोड़ीसी यादवनकी सेना लेके जलदीसो पुरके बाहर निकसे ॥ ११ ॥ स्वर्गमेंतें देवतानके देखते २ मागधनको और यादवनको ऐसो भयंकर अद्भुत युद्ध भयो जाय देखके रोंगटा ठाढ़े होयँ ॥ १२ ॥ तब महाबली ये मगधदेशको राजा रथपै चढ़के दश अक्षौहिणी सेना लेके प्रथम श्रीकृष्णके सन्मुख युद्ध करतोभयो ॥ १३ ॥ और पांच अक्षौहिणी फौजको संग लेके धृतराष्ट्रको बेटा दुर्योधन जरासन्धकी सहायके लिये यादवनते युद्ध करतोभयो ॥ १४ ॥ और पांचही अक्षौहिणीनको संग लेके विंध्यदे

शको राजा बली युद्ध करताभयो और तीन अक्षौहिणीको संग लेके बंगदेशको राजा महाबली आयो ॥ १५ ॥ हे मैथिल ! ऐसे औरहू राजा जरासन्धके वशवर्ती अपने
प्राणन करिके जरासन्धकी सहाय करिवेकूं आये ॥ १६ ॥ जब वैरीनकी सेनाको समाकुल भयो और बाणनको अन्धकार भयो तब शार्ङ्गधन्वा भगवान्ने शार्ङ्गधनुष टंकारयो ॥
॥ १७ ॥ तब तो सातों लोक नीचेके और सातो लोक ऊपरकेनके सहित ब्रह्माण्ड झंकार उठ्यो, सातो पाताल झंकार उठे, तब दिग्गज चलायमान हैगये, तारे चलिगये, पृथ्वी
मण्डल कांपन लग्यो ॥ १८ ॥ तब वैरीनकी सेना बहरी हैगई, घोड़ा युद्धमेंते भाजन लगे, हाथी मुख फेरके भाजन लगे ॥ १९ ॥ धनुषकी टंकारते विह्वल हैके द्वै कोसपै
फौज उलटी भाजगई, फिर आयके ठाढ़ी भई ॥ २० ॥ ऐसे बीजुरीसो पीरो, बीजुरीसो चमकत, ता शार्ङ्गधनुषकूं चढ़ाय टंकारके बाणनते जरासन्धकी सब सेनाकूं ढंकिदेते

एवमन्येपिराजानोजरासन्धवशानुगाः ॥ प्राणैःसाहाय्यंकुर्वंतोजरासंधस्यमैथिल ॥ १६ ॥ बाणांधकारेसंजातेशत्रुसेनासमाकुले ॥ टंकारंशा
र्ङ्गधनुषःशार्ङ्गधन्वाचकारह ॥ १७ ॥ ननादतेनब्रह्मांडंसतलोकैर्बिलैःसह ॥ विनेदुर्दिग्गजास्ताराराजन्भूखण्डमण्डलम् ॥ १८ ॥ तदैवबधि
रीभूतंशत्रूणांसैन्यमण्डलम् ॥ उत्पेततोहयायुद्धाद्गजास्तुविमुखास्ततः ॥ १९ ॥ दुद्रावतद्बलंसर्वंटंकाराद्भयविह्वलम् ॥ प्रतीपमेत्यगव्यूतिःपुन
स्तत्राजगामह ॥ २० ॥ एवंशार्ङ्गंसमुच्चार्यतडित्पिंगस्फुरत्प्रभम् ॥ बाणौघैश्छादयामासजरासंधबलंहरिः ॥ २१ ॥ चूर्णीभूतारथाराजन्बा
णौघैःशार्ङ्गधन्वनः ॥ चूर्णचक्रानिपेतुःक्वौहतसूताश्वनायकाः ॥ २२ ॥ द्विधाभूतागजाबाणैश्चलितागजिभिःसह ॥ साश्ववाहास्तथाश्वाबा
णैःसंछिन्नकंधराः ॥ २३ ॥ तथावीरामहायुद्धेभिन्नोरश्छिन्नमस्तकाः ॥ विशीर्णकवचाःपेतुर्बाणौघैश्छिन्नसंशयाः ॥ २४ ॥ अधोमुखाऊर्ध्व
मुखाश्छिन्नदेहानृपात्मजाः ॥ रेजुरणांगणेराजन्भांडव्यूहाइवाहताः ॥ २५ ॥ क्षणमात्रेणतद्युद्धेशतक्रोशविलंबिता ॥ आपगाभून्महादुर्गारु
धिरस्रावसंभवा ॥ २६ ॥ द्विपग्राहाचोष्ट्रखरकबन्धाश्वादिकच्छपा ॥ शिशुमाररथाकेशशैवालाभुजसर्पिणी ॥ २७ ॥ करमीनामौलिरत्न
हारकुण्डलशर्करा ॥ शस्त्रशुक्तिश्छत्रशंखाचामरध्वजसैकता ॥ २८ ॥

भये ॥ २१ ॥ शार्ङ्गधनुषके बाणनकरिके पैय्या जिनके टूटिगये, घोड़ा मरगये, सारथी जिनके मरगये, रथी मरगये, ऐसे रथ धरतीमें गिरपरे ॥ २२ ॥ बाणनके समूहते
हथिनीसहित हाथी चलायमान भये बीचमेंते द्वै द्वै टूक हैगये, सवारनके घोड़ानके शिर कटगये सवार मरिगये ॥ २३ ॥ तैसेही वा महायुद्धमें कटिगयेहैं ऊरु, भुजा, मस्तक, कवच
जिनके और कटगयेहैं संदेह जीवेको जिनको ऐसे वीर भूमिमें जापरे ॥ २४ ॥ ऊपरकूं मुख नीचेकूं मुख फटीहै देह जिनकी ऐसे राजा राजकुमार रणअंगणमें राजते भये
जैसे लुढे घरके फूटे बासन होयहैं ॥ २५ ॥ एक छिनमें सबरी सेनाकूं मार सौ कोसकी बड़ी भयंकर रुधिरकी नदी बहायदई ॥ २६ ॥ जामें हाथी तो ग्राहसे दीखे है, ऊंट,
गधा, कबंध जामें कछुआ है, रथ जामें शिशुमार हैं केश जामें शिवार है, भुजा सर्प है ॥ २७ ॥ हाथ जामें मछली है, बहुमोल गहने जामें कंकर पत्थर है, शस्त्र

जामें सीप हैं, छत्र जामें शंख हैं चमर, ध्वजा जामें वारू हैं ॥२८॥ रथके पइया जामें भ्रमर हैं, दोनों सैना जामें नदीके तट हैं, ऐसी सौ योजन लम्बी रुधिरकी नदी वैतरणीसी बहनलगी है ॥ २९ ॥ प्रमथ भैरव, भूत, वेताल, योगिनीनके गण गावें अट्टहास करें हैं रणमण्डलमें नाचैंहैं ॥ ३० ॥ हे नृपेश्वर ! खोपडीमें भरिभरिके रुधिर पीवें हैं महादेवकी मुंडमालाके लिये वीरनके शिरकूं बीनें हैं ॥ ३१ ॥ सैंकडन् डाकिनी जाके संगमें ऐसी भद्रकाली ताते ताते रुधिरकूं पीवत अट्टहास करें हैं ॥ ३२ ॥ स्वर्गकी विद्याधरी, गंधर्वी, अप्सरा क्षात्रधर्ममें स्थित जे देवतारूपी वीरा हे तिने वरणकरती भई ॥ ३३ ॥ उनमें आपुसमें झगडो होनलग्यो यह तो मेरे रूप हैं, याहि तौ मैंहीं वरूंगी दूसरी कहेहै मैंही वरूंगी ॥ ३४ ॥ कोई कोई वीर रणरंगते धर्मात्मा चलायमान न भये वे सूर्यमण्डलकूं भेदिके विष्णुलोककूं चलेगये ॥ ३५ ॥ बलदेवजी बाकीकी

रथांगावर्तसंयुक्तासेनाद्वयतटावृता ॥ शतयोजनविस्तीर्णाबभौवैतरणीयथा ॥ २९ ॥ प्रमथाभैरवाभूतावेतालायोगिनीगणाः ॥ अट्टहासंप्रकुर्वंतोनृत्यंतोरणमण्डले ॥ ३० ॥ पिबंतोरुधिरंशश्वत्कपालेननृपेश्वर ॥ हरस्यमुण्डमालार्थंजगृहुस्तेशिरांसिच ॥ ३१ ॥ सिंहारूढाभद्रकाली डाकिनीशतसंवृता ॥ पिबंतीरुधिरंचोष्णंसाट्टहासंचकारह ॥ ३२ ॥ विद्याधर्यश्चस्वर्गस्थागन्धर्व्योऽप्सरसस्तथा ॥ क्षात्रधर्मस्थितान्वीरान्ववव्रिरेदेवरूपिणः ॥ ३३ ॥ गृहीत्वातान्कलिर्भूत्तासांपत्यर्थमंबरे ॥ ममानुरूपानेमेचइतितद्गतचेतसाम् ॥ ३४ ॥ केचिद्वीराधर्मपरारणरंगात्रचालिताः ॥ ययुर्विष्णुपदंदिव्यंभित्त्वामार्तंडमण्डलम् ॥ ३५ ॥ शेषंबलंसमाकृष्यबलदेवोहलेनवै ॥ मुशलेनाहनत्क्रुद्धस्त्रैलोक्यबलधारकः ॥ ॥ ३६ ॥ एवंसैन्येक्षयंयातेजरासंधस्यसर्वतः ॥ सुयोधनोविंध्यनाथोवंगनाथस्तथैवच ॥ ३७ ॥ सर्वेविदुद्रुवुर्युद्धाद्भयभीताइतस्ततः ॥ जरासन्धोमहावीर्योनागायुतसमोबले ॥ ३८ ॥ रथेनागतवान्राजन्बलदेवस्यसंमुखे ॥ समाकृष्यहलाग्रेणजरासंधरथंशुभम् ॥ ३९ ॥ चूर्णयामासससहसामुशलेनयदूत्तमः ॥ जरासंधोपिविरथोहताश्वोहतसारथिः ॥ ४० ॥ जग्राहबलिनन्दोर्भ्यांसंत्यक्तशस्त्रसंहतिः ॥ तयोर्युद्धमभूद्घोरंबाहुभ्यांरणमण्डले ॥ ४१ ॥ पश्यतांदिविदेवानांनराणांभुविमैथिल ॥ उरसाशिरसाचैवबाहुभ्यांपादयोःपृथक् ॥ ४२ ॥ युयुधातेमल्लयुद्धेसिंहाविवमहाबलौ ॥ तयोश्चयुद्ध्यतोःसर्वंक्षुण्णंभूखण्डमंडलम् ॥ ४३ ॥

फौजकूं त्रिलोकीको बल जिनमें सो हलसूं खैंचिके मूसरते मारतेभये ॥ ३६ ॥ ऐसे जरासन्धकी सब सेनाको जब नाश हैगयो और सब बगलते सुयोधन, विंध्यनाथ, वंगनाथ ये सब ॥ ३७ ॥ डरके मारे जब युद्धते भाजिगये तब जरासन्ध दश हजार हाथीनको बल जामें महापराक्रमी ॥ ३८ ॥ रथमें बैठि बलदेवजीके सन्मुख लडिवेकूं आयो, तब बलदेवजीने जरासन्धके रथकूं हलते खैंचि ॥ ३९ ॥ यदूत्तम बलदेवजीने मूशलते चूर्ण करिडारचो, तब विरथ हैगयो, घोड़ा मरिगये, सारथी जाको मरिगयो ॥ ४० ॥ ऐसे जरासंधने सब शस्त्रनकूं छोड़ बलदेवजीकूं दोनों भुजानते पकरिलीनो तिन दोनोंनको रणमण्डलमें भुजानते बडो घोर युद्ध होतोभयो ॥ ४१ ॥ हे मैथिल ! ऊपरते देवतानके देखते देखते और नीचेते मनुष्यनके देखते देखते छातीते शिरन और भुजानते ॥ ४२ ॥ मल्लयुद्ध होनलग्यो महाबली दो सिंहनकी नाई लडन लगे, तिन दोनोंनके युद्धते

पृथ्वी खुदगई ॥ ४३ ॥ और थालीकी नाई दो घड़ी तलक कांपनलगी, तब तो बलदेवजीने जरासंधकूं पकरिके ॥ ४४ ॥ फिरायके धरतीमें देमारयो जैसे बालक घड़ाकूं देमारे है, फेर वाकूं मारिवेकूं वाकी छातीपै चढके ॥ ४५ ॥ क्रोधमें शरीर जिनको भरिगयो ऐसें देखने तब मारिवेकूं मूशल लीनों सोई परिपूर्णतम श्रीकृष्णने निवारण करदीने ॥ ४६ ॥ तब बलदेवजीने वाकूं छांड़िदीनों, तब ये जरासंध लज्जित है तप करिवेकूं चल्यो ॥ ४७ ॥ सोई मंत्रीने निवारण कीनो तब ये जरासंध अपने मगधदेशकूं चल्योगयो ऐसे मधुसूदन माधव जरासन्धकूं जीतिके ॥ ४८ ॥ रणको सब धन लेके यादवनकूं आगे करिके बलदेवकूं संग लेके मथुराकूं आवतभये ॥ ४९ ॥ सूत, मागध, बन्दीजन, जस गावत आमे हैं, ब्राह्मण वेदध्वनि करे है, शंख दुंदुभी आदि बाजे बजते बड़े मंगल होते आमें हैं ॥ ५० ॥ ऐसे परिपूर्ण भगवान् मथुरामें आवतेभये ॥ ५१ ॥ अपनी अपनी अटा अटारिनपै चढी

स्थालीवसहसाराजंश्चकंपेघटिकाद्वयम् ॥ गृहीत्वाभुजदण्डाभ्यांजरासंधंयदूत्तमः ॥ ४४ ॥ भूपृष्ठेपातयामासकमंडलुमिवार्भकः ॥ रामस्तदुपरिस्थित्वाहंतुंशत्रुंजरासुतम् ॥ ४५ ॥ जग्राहमुसलंघोरंक्रोधपूरितविग्रहः ॥ परिपूर्णतमेनाथश्रीकृष्णेनमहात्मना ॥ ४६ ॥ निवारितस्तदेवाशुतंमुमोचयदूत्तमः ॥ तपसेकृतसंकल्पोव्रीडितोपिजरासुतः ॥ ४७ ॥ निवारितोमंत्रिमुख्यैर्मागधान्मागधोययौ ॥ इत्थंजित्वाजरासंधंमाधवोमधुसूदनः ॥ ४८ ॥ आयोधनगतंवित्तंसर्वंनीत्वासुखावहम् ॥ यादवानग्रतःकृत्वाबलदेवसमन्वितः ॥ ४९ ॥ उपगीयमानविजयःसूतमागधवंदिभिः ॥ शंखदुंदुभिनादेनब्रह्मघोषेणभूयसा ॥ ५० ॥ विवेशमधुरांसाक्षात्परिपूर्णतमःस्वयम् ॥ ५१ ॥ समर्चितोमंगललाजपुष्पैःपश्चन्पुरींमंगलकुंभयुक्ताम् ॥ पीतांबरःश्यामतनुःशुभांगःस्फुरत्किरीटांगदकुण्डलप्रभः ॥ ५२ ॥ शार्ङ्गादिशस्त्रास्त्रधरोहसन्मुखस्तालांकयुक्तोगरुडध्वजस्स्वयम् ॥ उच्चद्विलोलाश्वरथःसुरार्चितः समेत्यराजानमसौबलिंददौ ॥५३॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीद्वारकाखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेजरासन्धपराजयोनामप्रथमोध्यायः ॥ १ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ पुनस्तत्रजरासंधस्तावत्यक्षौहिणीबलः ॥ युयुधेयदुभिःशीघ्रंपुनःकृष्णपराजितः ॥ १ ॥ श्रीकृष्णतेजसासर्वेयादवावृद्धिमागताः ॥ धनुर्गजादिभिःशश्वत्प्राप्तलुंठनसाहसाः ॥ २ ॥ प्राप्तेचसाहसेराजन्विनायुद्धंपुरेवहि ॥ अर्भकाजलहारिण्यश्चक्रुःशस्त्रपहारणम् ॥ ३ ॥ शत्रुद्रव्यंचसंहर्तुंवीक्षंतःक्रीतयासस‍ः ॥ नागरामाथुराःसर्वेपरंहर्षमुपागताः॥४॥

नर नारी पुष्पनकी खीलनकी वर्षा करे हैं, मंगलके कलश धरे आमे मा मथुराकी शोभा देखते देखते श्यामसुंदर पीताम्बर पहरे झलकि रहे है किरीट, कुण्डल, बाजूं जिनके ॥५२॥ शार्ङ्गादि शस्त्र धर,प्रसन्नमुख, मंद मंद हसतें गरुड़ध्वज तालकी ध्वजाके रथमें चढ़े जिनमें चंचल घोड़ा लगे, देवता जिनको पूजन करें सो श्रीकृष्ण संग्रामको धन उग्रसेनकी भेट करतभये ॥५३॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां द्वारकाखण्डे भाषाटीकायां जरासन्धपराजयो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥१॥ नारदजी कहेहैं—फेरहू जरासन्ध उतनीही२३ अक्षौहिणी फौज लेके जलदी यादवनते लड़िवेकूँ आयगयो, तब फेरहू कृष्णने जीतिलीनो ॥ १ ॥ श्रीकृष्णके तेजते सब यादवनकी बड़ी वृद्धि भई, धनुषनते गजनते प्राप्त भयोहै लूटवेको साहस जिनकूं ॥२॥ जब साहस हेगयो तब हे राजन् ! बालक पनिहारी शस्त्र छीनन लगी विनाई युद्ध करे ॥ ३ ॥ शत्रुकी द्रव्य हरिवेकूं कोरीयाहू फौजकूं लूटनलगे तब मथुरानगरवासी मंद

परम हर्षकूं प्राप्त हैगये ॥ ४ ॥ ऐसे जरासन्ध सत्रह बेर आपके हारि हारिके चल्योगयो, अठारही बेर फिर आयवेकूं वाने मन कर्यो ॥ ५ ॥ तब मेरे प्रेरेभये कालयवन महाव
लीने तीन किरोड़ म्लेच्छनकूं (मुसलमान) संग लेके मथुराको आयघेरो ॥ ६ ॥ म्लेच्छनकी सेनाको बल देखिके भयविह्वल अपने पुरकूं देखिके तब दोनों ओरते भय देखि बल
देवके संग श्रीकृष्ण मनमें चितमन करतेभये ॥ ७ ॥ अपनी जातिके बंधु सुहृद तिनकी रक्षाके लिये कृष्णने भयंकर लहरी जामें ता समुद्रमें एक राति मेंई द्वारका दुर्ग
रच्यो ॥ ८ ॥ जहां आठो लोकपालनकी सिद्धि विश्वकर्माने रचिदई, जहां मोक्षकांक्षीनकूं सबरी वैकुण्ठकी संपत्ति दीसैहै ॥ ९ ॥ हरि भगवान् योगबलते राति रातिमेंही
द्वारकामे सबकूं बैठारके रामपै आज्ञा मांगि शस्त्रविनाही कालयवनसों लडवेकों बाहिर निकसे ॥ १० ॥ तब कालयवन निहत्ते कृष्णकों मेरे कहे लक्षणनते जानिके आपहू

एवंसप्तदशकृत्वाक्षीणसैन्योजरासुतः ॥ अष्टादशमेसंग्रामआगंतुंचमनोऽकरोत ॥ ५ ॥ मयाप्रणोदितःकालयवनोवैमहाबलः ॥ रुरो
धमथुरांकुद्धोम्लेच्छकोटिसमावृतः ॥ ६ ॥ म्लेच्छानांचबलंवीक्ष्यस्वपुरंभयविह्वलम् ॥ भयंचोभयतःप्राप्तंरामेणाचिंतयद्धरिः ॥ ७ ॥ स्वज्ञा
तिबंधुरक्षार्थसमुद्रेभीमनादिनि ॥ चकारद्वारकादुर्गमेकरात्रेणमाधवः ॥ ८ ॥ यत्राष्टदिक्पालसिद्धिर्विश्वकर्मविनिर्मिता ॥ सर्ववैकुण्ठसंपत्ति
र्दृश्यंतेमोक्षकांक्षिभिः ॥ ९ ॥ हरिःसर्वजनंतत्रनीत्वायोगेनमैथिल ॥ पुराद्रामममनुज्ञाप्यनिर्गतोभून्निरायुधः ॥ १० ॥ निरायुधंहरिंज्ञात्वामयो
क्तैर्लक्षणैःखलः ॥ निरायुधःसतंयोद्धुंपदातिःस्वयमागतः ॥११॥ पराङ्मुखंप्राद्रवंतंदुरापंयोगिनामपि ॥ जिघृक्षुस्तंचान्वधावत्सैनिकानांप्र
पश्यताम् ॥१२॥ हस्तप्राप्तंवपुस्तस्मैदर्शयन्निवमाधवः॥दूरंगतःश्यामलाद्रेःप्राविशत्कंदरंत्वरम्॥१३॥मुचुकुंदोयत्रचास्तेमांधातृतनयोमहान् ॥
असुरेभ्यःपुरारक्षांदेवानांयश्चकारह ॥ १४ ॥ अहर्निशंनसुष्वापदेवसेनापरोनृप ॥ तमूचुर्देवताःसर्वेप्रसन्नाराजसत्तमम् ॥ १५ ॥ वरंवरयभो
राजन्यत्तेमनसिवर्त्तते ॥ नत्वातान्प्राहराजेंद्रःकरोमिशयनंपरम् ॥ १६ ॥ शयनांतेहरेःसाक्षाद्दर्शनंमेभवत्वलम् ॥ योमध्येबोधयेन्मांवैशयन
स्थाप्यचेतनः ॥ १७ ॥ समयादृष्टमात्रस्तुभस्मीभवतुतत्क्षणात् ॥ तथासचोक्तःसुष्वापराजाकृतयुगेपुरा ॥ १८ ॥

निरायुध हैके कृष्णते युद्ध करवेको पांयप्यादो श्रीकृष्णके पीछे भाज्यो ॥ ११ ॥ पीठि फेरिके भाजे जायहै जो योगीनपेहू नहीं पकड़े जाय तिनके पीछे पकरिवेकूं सब सेनाके
देखते २ कालयवन भज्यो ॥ १२ ॥ एक हाथपैई पकड़ लिये जायंगे ऐसे अपने रूपकूं दिखावत २ दूर जायके एक श्यामल नामके पर्वतकी गुफामें जलदी धसिगये ॥ १३ ॥
वहां मान्धाताको बेटा मुचुकुन्द सोय रह्योहो, जाने पहले असुरनते देवतानकी रक्षा करीही ॥ १४ ॥ पहले देवसेनाकी रक्षा करवेमे तत्पर बहुत दिनताई राति दिन सोयो नहीं
हो तब देवता प्रसन्न हैके श्रेष्ठ जो राजा है ताते बोले ॥ १५ ॥ हे राजन् ! तुम वर मांगो तुम्हारे मनमें होय सो, तब विनकूं दण्डवत करि राजा यह बोल्यो कि, मैं तो
सोऊंगो ॥ १६ ॥ सोयवेके अंतमें मोकूं भगवान्को दर्शन होउ जो कोऊ अचेतन मनुष्य सोवतेको मोकूं आयके जगावे ॥ १७ ॥ सो मेरी दृष्टिमात्रतेई वाईक्षण भस्म हैजाय,

ऐसो वर मांगिके सतयुगमें पहिले सोयोहो ॥ १८ ॥तहां ही कालयवन गयो सो पीताम्बर ओढे मुचुकुन्दकूं श्रीकृष्ण जानिके महादुष्ट ये कालयवन लात मारत भयो ॥ १९ ॥ मुचुकुंदने उठिके आंखि खोल दिशानकूं देखतेंन पास ठाडे कालयवनकूं देख्यो ॥ २० ॥ सोपते जो मुचुकुन्दने देख्यो सांई वाकी देहते जो निकसी अग्नि ताते ताईक्षण कालयवन भस्म हैगयो ॥ २१ ॥ म्लेच्छके भस्म होतेही परिपूर्णतम श्रीकृष्ण मुचुकुन्द बुद्धिमान्को दर्शन देतभये ॥ २२ ॥ किरोड़ सूर्य्यकोसो तेजको मण्डल तामें ठाडे, झलके रहेहैं किरीट, कुण्डल, कंकण, नूपुर, बाजू, किंकिणी जिनके ॥ २३ ॥ चतुर्भुज श्रीवत्सको जिनके चिह्न, वनमाला पहरे, कमलसे नेत्र, किरोड़ कामसे सुंदर, प्रलयके सघन घटासे श्याम ॥ २४ ॥ राजा तिन्हें देखि हर्षित हैगयो, हाथ जोड़ ठाडो हैगयो, पूर्ण ब्रह्मकूं जानि दंडोत कर स्तुति करनलग्यो ॥ २५ ॥ तुम कृष्ण हो, वासुदेव हो, देवकीनंदन

तत्रप्रविश्ययवनोमत्वापीतांबरंच्युतम् ॥ तताडयवनःक्रुद्धःपादेनाशुमहाखलः ॥ १९ ॥ मुचुकुंदः समुत्थायशनैरुन्मील्यसोक्षिणी ॥ आशाः प्रपश्यंस्तंपार्श्वेस्थितंकालंददर्शह ॥ २० ॥ सतावत्तस्यरुष्टस्यदृष्टिपातेनमैथिल ॥ देहजेनाग्निनादग्धोभस्मसादभवत्क्षणात् ॥ २१ ॥ भस्मीभूतेचयवनेपरिपूर्णतमःस्वयम् ॥ स्वरूपंदर्शयामासमुचुकुंदायधीमते ॥ २२ ॥ कोटिसूर्यप्रतीकाशेज्योतिषांमण्डलेप्रभुम् ॥ स्थितंस्फुरत्किरीटार्ककुंडलांगदनूपुरम् ॥२३॥ श्रीवत्सांकंचतुर्बाहुंपद्माक्षंवनमालिनम् ॥ कोटिकंदर्पलावण्यंकालमेघसमप्रभम् ॥२४॥ दृष्ट्वाराजाहर्षितोपिसमुत्थायकृतांजलिः ॥ परिपूर्णतमंज्ञात्वाभक्त्यातंप्रणनामह ॥२५॥ ॥ मुचुकुन्दउवाच ॥ ॥ कृष्णायवासुदेवायदेवकीनन्दनायच ॥ नंदगोपकुमारायगोविंदायनमोनमः ॥ २६ ॥ नमःपंकजनाभायनमःपंकजमालिने ॥ नमःपंकजनेत्रायनमस्तेपंकजांघ्रये ॥ २७ ॥ नमःकृष्णायशुद्धायब्रह्मणेपरमात्मने ॥ प्रणतक्लेशनाशायगोविंदायनमोनमः ॥ २८ ॥ नमोस्त्वनंतायसहस्रमूर्तयेसहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ॥ सहस्रनाम्नेपुरुषायशाश्वतेसहस्रकोटीयुगधारिणेनमः ॥२९॥ हरेमत्समःपातकीनास्तिभूमौतथात्वत्समोनास्तिपापापहारी ॥ इतित्वंचमत्वाजगन्नाथदेवयथेच्छाभवेत्तथामांकुरुत्वम् ॥ ३० ॥

हो, नंदगोपके कुमार गोविंद हो, तिनके अर्थ मेरो वारंवार नमस्कार है ॥ २६ ॥ कमल तुम्हारी नाभिमें, कमलकी माला धारण करोहो, प्रणतनके क्लेशके नाश करनहारे, कमलनेत्र, कमलसे चरण जिनके तिनकूं मेरो नमस्कार है ॥ २७ ॥ कृष्ण हो, शुद्ध परमात्मा परब्रह्म नम्रनके क्लेशके नाशकर्ता गोविंद हो तिनके अर्थ नमस्कार है ॥ २८ ॥ अनंत हो, अनंतमूर्ति हो, हजारन हाथ, पांव, नेत्र, नासिका, कर्ण, कटि, ऊरु, उर, भुजा, जिनके; हजारन नाम जिनको हजारन किरोड़न युगके धारण करनहारे तिनके अर्थ मेरो नमस्कार है ॥ २९ ॥ या पृथ्वीपै मो समान कोई पापी नहीं तुम समान कोई पापहारी नहीं ऐसे तुम मानिके मेरे ऊपर दया करो और इच्छा होय सो करो ॥ ३० ॥

नारदजी कहैंहै-परमानंदस्वरूप भगवान्‌कीं जब ऐसे स्तुति करी तब याकों अपनो निर्गुण भक्त जानिके गंभीर वाणीते भगवान् बोले ॥ ३१ ॥ हे राजशार्दूल ! तू धन्य है, धन्य तेरी निर्मल मति है, जो निरपेक्ष दिव्य भक्तिभावते भरी है ॥ ३२ ॥ अबही तू बदरिकाश्रम जो मेरो धाम ताकूं जा मेरो आश्रय लेके तप कर, तब तूं उत्तम ब्राह्मण होयगो ॥ ३३ ॥ फिर प्रेमलक्षण भक्तिते प्रकृतिते परे जो मेरो धाम ताकूं, हे महाराज ! तूं प्राप्त होयगो, जहांको गयो फेर नहीं बगदे है ॥ ३४ ॥ नारदजी कहैंहै-ऐसें मुचुकुन्द स्तुति करके, नमस्कार करिके, परिक्रमा करिके, कृष्णके प्रेममें विह्वल है दुर्गगुहामेंते निकस्यो ॥ ३५ ॥ द्वापरके छोटे छोटे मनुष्य सौ ताल ऊंचे वा मुचुकुन्दकूं देखिके भयभीत हैके इत उत भाजन लगे ॥ ३६ ॥ तुम भय मति करो ऐसें कहके मुचुकुन्द राजा उत्तर दिशाकूं चल्योगयो ऐसे भगवान्

॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ एवंस्तुतोहरिःसाक्षात्परमानन्दविग्रहः ॥ ज्ञात्वातंनिर्गुणंभक्तंप्राहगंभीरयागिरा ॥ ३१ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ धन्यस्त्वंराजशार्दूलधन्यातेविमलामतिः ॥ नैरपेक्षेणदिव्येनभक्तिभावेनपूरिता ॥ ३२ ॥ अद्यैवगच्छमद्धामबदर्याख्यंमदाश्रमम् ॥ तत्रैवतुतपस्तप्त्वाभूत्वाब्राह्मणपुंगवः ॥ ३३ ॥ प्रेमलक्षणयाभक्त्यामद्धामप्रकृतेःपरम् ॥ प्राप्स्यसित्वंमहाराजयतोनावर्ततेगतः ॥ ३४ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्थंस्तुत्वाहरिंनत्वापरिक्रम्यनताननः ॥ निश्चक्रामगुहादुर्गाच्छ्रीकृष्णप्रेमविह्वलः ॥ ३५ ॥ द्वापरेक्षुल्लकामर्त्यास्तालवृक्षशतोच्छ्रितम् ॥ दृष्ट्वातंदुद्रुवुर्मार्गेभयभीताइतस्ततः ॥ ३६ ॥ माभैष्टेत्यभयंयच्छञ्जगामदिशमुत्तराम् ॥ एवंदत्त्वावरंतस्मैमुचुकुंदायधीमते ॥ ३७ ॥ भगवान्पुनराव्रज्यमथुरांम्लेच्छवेष्टिताम् ॥ हत्वाम्लेच्छबलंसर्वंतद्धनान्यच्छिनद्बलात् ॥ ३८ ॥ अथराजाजरासंधोयोद्धुमभ्युदितःपुनः ॥ आहूयमागधान्विप्रान्मुहूर्तादेशकारिणः ॥ ३९ ॥ प्राहेदंवासुदेवाख्यंजित्वायद्यागतोह्यहम् ॥ सर्वान्संपूजयिष्यामिसदायुष्मत्पदाश्रये ॥ ४० ॥ कारागारेषुयावद्वैस्थिताभवतभोद्विजाः ॥ पराजितोहंवायुष्मान्हनिष्यामिनसंशयः ॥ ४१ ॥ एवमुक्त्वाद्विजान्राजाजरासंधोमहाबलः ॥ आजगामाशुमथुरांत्रयोविंशत्यनीकपः ॥ ४२ ॥ ब्रह्मवाक्यमृतंकर्तुंस्वप्रतिज्ञांविहायच ॥ मनुष्यचेष्टामापन्नौस्वपुराद्भीतभीतवत् ॥ ४३ ॥ रामकृष्णौपरौदेवौपद्भ्यांदुद्रुवतुर्द्रुतम् ॥ पलायमानौतौवीक्ष्यमागधःप्रहसन्भृशम् ॥ ४४ ॥

वा बुद्धिमान् राजा मुचुकुन्दकूं वर देके ॥ ३७ ॥ फिर म्लेच्छ जाके चारों ओर ऐसी मथुरामें आयके याकी सबरी फौजकूं मारिके कालयवनको सब धन लेलेतेभये ॥ ३८ ॥ फेरहू राजा जरासन्ध लडिबेकूं उद्यत भयो तब मुहूर्तके देनहारे मगधदेशके ब्राह्मणनकूं बुलायके ॥ ३९ ॥ यह वचन बोल्यो-अबके तुम्हारे चरणके आश्रयते वासुदेवकूं जीतिके जो मैं आऊंगो तो तुम्हारो पूजन सदा करूंगो ॥ ४० ॥ हे ब्राह्मणहो ! जबतलक मैं आऊं तबतलक तुम बंदीखानेमें रहो जो मैं हारिगयो तो मैं तुमें आवत खेम मारि डारूंगो यामें संदेह नहीं है ॥ ४१ ॥ ऐसे जरासन्ध महाबली ब्राह्मणनते कहिके बडी शीघ्र तेईस अक्षौहिणी फौज लेके मथुराकूं आवतो भयो ॥ ४२ ॥ ताहीते भगवान् ब्राह्मणनको वाक्य सांचो करिबेकूं अपनी प्रतिज्ञा छोडिके मनुष्यनकीसी चेष्टा करते अपने पुरते डरपोसाते डरपोसा जैसो हैके ॥ ४३ ॥ राम कृष्ण दोनों भैया पांयनही

भाजे हैं तब इनको पांयप्यादे भजते देखिके जरासन्ध बहुत हँस्यो ॥ ४४ ॥ जरासंध ब्रह्मवाक्यकी यादि करिके रथनकी फौज लेके ब्राह्मणनके कहेको याद करते दक्षिण दिशाकूं भाजेहैं सो भागते भागते प्रवर्षणगिरिपै दोनों भैय्या चढ गये हैं ॥ ४५ ॥ या पर्वतमें गुप्तभये दोनों भैयानको जानिके चारयों बगलते ईंधन लगाय आग देदेतोभयो जब बन भस्म ह्वैगयो और पर्वत जरनलग्यो ॥ ४६ ॥ तब ईश्वरनके ईश्वर ग्यारह योजन ऊंचे पर्वतके एक शिखरपेते दोनों भैया ऐसे कूदे के वैरीनते अलक्ष्य ह्वैके द्वारिकाके बीच बजारमें जायके कूदे ॥ ४७ ॥ तब ये मागधदेशको इन्द्र ऐसे मानिके कि, कृष्ण बलदेव दोनों जलगये होंगे सोई नगाड़े बजावत सब फौजकूं खेंचि मगधदेशकूं चलदोगयो ॥ ॥ ४८ ॥ वहां जायके बडी भक्तिते विन ब्राह्मणनको पूजन करतोभयो जाके ब्राह्मण सहायक हैं ताकी हारि कैसे होयगी ॥ ४९ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां द्वारकाखण्डे

अन्वधावद्रथानीकैर्ब्रह्मवाक्यमनुस्मरन् ॥ दक्षिणाशांगताविथ्थंप्रवर्षणगिरौहरी ॥ ४५ ॥ तस्मिन्निलीनौज्ञात्वातावेधोभिस्तंददाहह ॥ भस्मीभूतेवनेजातेदह्यमानतटाद्रिरे ॥४६॥ दशैकयोजनोत्तुंगात्समुत्पत्यसुरेश्वरौ ॥ अलक्ष्यमाणावरिभिर्द्वारकायांनिपेततुः ॥ ४७ ॥ सोपि दग्धौचतौमत्वामागधेंद्रोमहाबलः ॥ मागधान्प्रययौवीरोवादयञ्जयदुंदुभीन् ॥ ४८ ॥ ब्राह्मणान्पूजयामासभक्त्यापरमयानृप ॥ यस्यविप्राः सहायोस्तिकुतस्तस्यपराजयः ॥ ४९ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीद्वारकाखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेद्वारकावासकथनंनामद्वितीयोध्यायः ॥ ॥ २ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्थंमयातेकथितंद्वारकावासकारणम् ॥ विवाहादिकथाःसर्वावदिष्यामिपरेशयोः ॥ १ ॥ पूर्वंश्रीबलदेवस्यविवाहंशृणुमैथिल ॥ सर्वपापहरंपुण्यमायुर्वर्द्धनमुत्तमम् ॥ २ ॥ आनर्त्तोनामराजाभूत्सूर्यवंशेमहामनाः ॥ यत्रत्वानर्तदेशःस्यात्समुद्रेभीमनादिनि ॥ ३ ॥ रैवतोनामतत्पुत्रश्चक्रवर्तीगुणाकरः ॥ राज्यंचकारसपुरींविनिर्मायकुशस्थलीम् ॥ ४ ॥ तस्यपुत्रशतंचासीद्रेवतीनाम कन्यका ॥ सर्वोत्तमंचिरंजीवंसुन्दरंवरमिच्छती ॥ ५ ॥ एकदारथमास्थायहेमरत्नविभूषितम् ॥ आरोप्यस्वांदुहितरंरैवतःपर्यटन्भुवम् ॥ ॥ ६ ॥ प्रातोयोगबलेनापिब्रह्मलोकंशुभावहम् ॥ कन्यावरंपरिप्रष्टुंब्रह्माणंप्रणनामह ॥ ७ ॥

भाषाटीकायां द्वारकावासकथनं नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ नारदजी कहैं हैं यह मेने तेरे अगाड़ी द्वारिकावासको कारण कह्यो, अब विन विवाहादिक कथा विन परेशकी वर्णन करूंहूं ॥ १ ॥ हे मैथिल ! अब तू पहले बलदेवजीको विवाह सुनि जो सब पापनको हरनहारो और आयुको बढावनवारो अत्युत्तम है ॥ २ ॥ एक आनर्त नाम राजा सूर्यवंशमें बडे मनवारो होतोभयो, भयंकर लहरी जामें ता समुद्रमें वाही राजाके नामको आनर्तदेश होत भयो ॥ ३ ॥ रैवत नाम वाको बेटा गुणनकी खान चक्रवर्ती राजा होतोभयो, सो समुद्रमें द्वारिकापुरी बनाय राज्य करतोभयो ॥ ४ ॥ ताके सौ तो बेटा भये और एक रेवती नामकी कन्या भई, सो सर्वोत्तम चिरंजीवी सुंदर वरकी इच्छा करतीभई ॥ ५ ॥ एकसमय सुन्देरी रत्ननसों भूपित रथमें बैठिके कन्याकूं संग लेके पृथ्वीमें विचरतो ॥ ६ ॥ योगबलते कन्यासहित शुभ देनवारे ब्रह्मलोककूं गयो, कन्याकूं वर

पूछिवेके लिये, जायके ब्रह्माजीकूं दण्डोत करी और अपनो अभिप्राय निवेदन करतोभयो ॥ ७ ॥ तहां पूर्वचित्ती अप्सरा गाय रहीही एक क्षण पीछे स्वस्थचित्त ब्रह्माजीकूं जानिके फिर अपनो अभिप्राय कह्यो ॥ ८ ॥ रैवत राजा बोलो—पहिले, पुराणपुरुष पूर्ण परमात्मा परमेश्वर, जगत्के अंकुर हो तुमही पारमेष्ठ्य धाममें स्थित हौ, जगत्की उत्पत्ति, पालन, संहार करोहो ॥ ९ ॥ वेद तुम्हारो मुख है, धर्म हृदय है, अधर्म पीठि है, मनुराजा बुद्धि हैं, देवता अंग हैं, असुर पांव हैं, सब सृष्टि आपको तनु है ॥ १० ॥ तुमही हस्तामलककी तरह सब विश्वकूं करो हौ, विचयनमें तुमही प्रवृत्ति करवेको समर्थ हो सारथिकी नाईं तुमही एक मकडीकी नाईं जाल बिछायके विश्वको ग्रसी हौ ॥ ११ ॥ ये इन्द्रपद भी तुमारे वशमें है फिर चक्रवर्ती राज्य, योगकी सिद्धि ये सब आपके वशमें हैं ये तो आश्चर्यही कहा है क्योंकि आपही पारमेष्ठी पदपै बैठे

गायंत्यांपूर्वचित्त्यांचस्थितोलब्धक्षणःक्षणम् ॥ एकचित्तंविधिंज्ञात्वास्वाभिप्रायंन्यवेदयत् ॥ ८ ॥ ॥ रैवतउवाच ॥ ॥ परःपुराणोजगदंकुरोभूःपूर्णःपरात्मापरमेश्वरोसि ॥ स्थितःसदाधामनिपारमेष्ठ्येसृजस्यलंपासिचहिंससीदम् ॥ ९ ॥ वेदामुखंधर्मउरस्तथैवपृष्ठंह्यधर्मश्चमनुर्मनीषा ॥ अंगानिदेवाअसुराश्चपादाःसर्वासृतिर्दैवततुस्तवस्यात् ॥ १० ॥ करोपिहस्तामलकंचविश्वंनेतुंप्रभुःसारथिवद्गुणेषु ॥ एकस्त्वमेकंचविधायजालंग्रसिष्यसेसर्वमिवोर्णनाभिः ॥ ११ ॥ महेंद्रधिष्ण्यंतववश्यमस्तिकिंसार्वभौमंकिमुयोगसिद्धिः ॥ यःपारमेष्ठ्यंचसदास्थितोसितस्मैनमोनंतगुणायभूम्ने ॥ १२ ॥ भवान्स्वयंभूर्जगतांपितामहोविधेसुरज्येष्ठइतिप्रभावतः ॥ अस्यावरंसर्वगुणंचिरायुषंवदाशुमांदिव्यमशेषदर्शनः ॥ १३ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एतच्छ्रुत्वाततोब्रह्मास्वयंभूःसर्वदर्शनः ॥ रैवतंप्राहराजानंप्रहसन्निवमैथिल ॥ १४ ॥ ॥ श्रीब्रह्मोवाच ॥ ॥ अनक्षणेनकेराजन्भुविकालोमहाबली ॥ स्वरंव्यतीतस्त्रिनवचतुर्युगविकल्पितः ॥ १५ ॥ नसंतिमर्त्यलोकेत्वत्पुत्राःपौत्राःसबांधवाः ॥ तत्पुत्रपौत्रनप्तॄणांगोत्राणिचनशृण्महे ॥ १६ ॥ तद्गच्छसर्वमुख्यायनररत्नायशाश्वते ॥ कन्यारत्नमिदंराजन्बलदेवायदेहिभोः ॥ १७ ॥ परिपूर्णतमोसाक्षाद्गोलोकाधिपतीप्रभू ॥ भुवोभारावतारायावतीर्णौबलकेशवौ ॥ १८ ॥

हौ, अनन्त गुणवारे भूमापुरुष आपही हौ तिनके अर्थ मेरो नमस्कार है ॥ १२ ॥ आपही स्वयंभू जगत्के पितामह हौ, देवतानके पूज्य आपही हो ऐसो आपको ये प्रभाव है, हे विधे ! तुमही अशेष विश्वके दर्शन हो अर्थात् द्रष्टा हौ सो या मेरी कन्याकूं सब गुण जामें होंय ऐसो चिरंजीवी सुंदर दिव्य वर याके लिये बताओ आपकूं सब दीखे हैं ॥ १३ ॥ नारदजी कहें हैं कि, हे मैथिल ! या बातकूं सर्वदर्शन स्वयंभू ब्रह्माजी सुनिके हँसतसे रैवत राजाते ये बोले ॥ १४ ॥ हे राजन् ! यहां तो एकही क्षण भयोहै पर भूमिमें तो बली कालके चारों युग सत्ताईसबेर व्यतीत हैगये हैं ॥ १५ ॥ मर्त्यलोकमें तेरे बेटा, नाती, बांधव, कोई नही रह्यो है, तिनके बेटा, नाती, पंती, संतीनके गोत्रहू नहीं रहे हैं ॥ १६ ॥ ताते तू जलदी जा आजदिन सबनमें मुख्य नररत्न चिरंजीव बलदेव हैं तिनकूं या कन्यारत्नकूं देदे ॥ १७ ॥ परिपूर्णतम साक्षात्

गोलोकके पति प्रभू पृथ्वीको भार उतारिवेकूँ कृष्ण बलदेवने अवतार लीनो है ॥ १८ ॥ वसुदेवके बेटा भये हैं वे असंख्य ब्रह्मांडनके पति है वे यादवनके संग भक्तवत्सल द्वारिकामें विराजै है ॥ १९ ॥ नारदजी कहै है कि, रैवत राजा ऐसे ब्रह्माजीको वचन सुनि ब्रह्माजीको दंडवत् करिके फिर समृद्धिनते भरी जो द्वारिकापुरी है ताकूँ आवतोभयो ॥ २० ॥ तव रेवती कन्याकूं बलदेवजीकूं व्याहतोभयो, दायजेमें विश्वकर्माको बनायो हजार जामें घोडा चारि कोसको चौडो दिव्य ऐसे रथ दीनो ॥ २१ ॥ हे मैथिल ! दिव्य वस्त्र और ब्रह्माके दीये रत्न देके शुभ फल देनवारे तप करिवेकूँ बदरिकाश्रमकूं चल्योगयो॥ २२ ॥जा समें रेवतीके संग बलदेवजी विराजे तव यदुपुरीमें घरघरमें बडो उत्सव भयो ॥ २३ ॥ ये बलदेवजीके विवाहकी जो नर कथा सुनै है सो सब पापनते छूटिके परम सिद्धिकूँ प्राप्त होयहै ॥ २४॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायां द्वारकाखण्डे भाषाटीकायां नारदबहुलाश्वसंवादे बलदेव

असंख्यब्रह्मांडपतीवसुदेवात्मजौहरी ॥ द्वारकायांविराजेतेयदुभिर्भक्तवत्सलौ ॥ १९ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ अथश्रुत्वाविधिंनत्वारैवतोनृपसत्तमः ॥ आययौद्वारकांभूयःसमृद्धांतांसमृद्धिभिः ॥ २० ॥ पारिबर्हंरथंदत्त्वाविश्वकर्मविनिर्मितम् ॥ सहस्रहयसंयुक्तंदिव्यंयोजनविस्तृतम् ॥ २१ ॥ दिव्यांबराणिरत्नानिब्रह्मदत्तानिमैथिल ॥ दत्त्वाययौतपस्तप्तुंबदर्याख्यंशुभावहम् ॥ २२ ॥ तदामहोत्सवश्चासीद्यदुपुर्यांगृहेगृहे ॥ संकर्षणोथभगवान्रेवत्याविरराजह ॥ २३ ॥ बलदेवविवाहस्यकथांयःशृणुयान्नरः ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तःपरांसिद्धिमवाप्नुयात् ॥ २४ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीद्वारकाखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेबलदेवविवाहोत्सवोनामतृतीयोध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ अथश्रीकृष्णदेवस्यविवाहंशृणुमैथिल ॥ सर्वपापहरंपुण्यंचतुर्वर्गफलप्रदम् ॥ १ ॥ भीष्मकोनामराजाभूद्विदर्भेषुप्रतापवान् ॥ कुंडिनाधिपतिःश्रीमान्सर्वधर्मविदांवरः ॥ २ ॥ रुक्मिणीतत्सुताजाताश्रियोमात्रातिसुन्दरी ॥ कोटिचन्द्रप्रतीकाशागुणभूषणभूषिता ॥३॥ श्रुत्वैकदापुरासावैमन्मुखाच्छ्रीहरेर्गुणान् ॥ परिपूर्णतमंतंवैसामेनेसदृशंपतिम् ॥ ४ ॥ तद्रूपंसगुणंश्रुत्वामन्मुखात्प्रीतिवर्द्धनात् ॥ सदृशींश्रीहरिस्तांवैसमुद्वोढुंमनोदधे ॥ ५ ॥ कृष्णभावविदाराज्ञासर्वधर्मविदाभृशम् ॥ भीष्मकेणैवकृष्णायदातुंतांनिश्चयःकृतः ॥ ६ ॥ युवराजस्तोरुक्मीतंनिवार्य्यप्रयत्नतः ॥ कृष्णशत्रुर्महावीरंशिशुपालममन्यत ॥ ७ ॥

विवाहोत्सवो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ नारदजी कहैहै कि, हे राजन् ! अब तूं श्रीकृष्णको विवाह सुन जो पापनको हरनहारो, धर्म, अर्थ, काम, मोक्षको देनहारो है ॥ १ ॥ एक विदर्भ देशमें भीष्मक जाको नाम बडो प्रतापी कुण्डिनपुरमें रहनवारो सब धर्मके वेत्तानमें श्रेष्ठ राजा हो ॥ २ ॥ रुक्मिणी नाम लक्ष्मीके अंशते जाके एक बेटी भई वा अतिसुंदरी ही किरोड चंद्रमाकीसी जाकी कांति गुणनके भूषणते शोभित ही ॥ ३ ॥ वो पहले एकवेर मेरे मुखते श्रीकृष्णके गुण सुनिके परिपूर्णतम श्रीकृष्णकूं अपने समान पति मानतीभई ॥ ४ ॥ ऐसे ही मेरेई मुखते रुक्मिणीके गुण रूप प्रीतिके बढायवेवारे तिने सुनके श्रीकृष्णहूँ ताकूँ अपने समान स्त्री जानिके व्याहिवेकूं मन कीनो ॥ ५ ॥ कृष्णके भावको जाननहारो सब धर्मको वेत्ता राजा भीष्मक तानेहू यही विचार कीनो कि, श्रीकृष्णकूंही रुक्मिणीकूं व्याहूंगो ॥ ६ ॥ तव कृष्णको

वैरी युवराज जो रुक्मी भीष्मककौ बड़ो बेटा है ताने यतनतें निवारन करके शिशुपालकूं ब्याहदेवेको विचार कीनो ॥ ७ ॥ हे मिथिलेश्वर ! तब तो रुक्मिणीको मन बिगड़गयो और श्रीकृष्णके पास अपने एक ब्राह्मण दूत भेज्यो ॥ ८ ॥ जब वुह दूत दिव्य द्वारिकापुरीमें गयो तब श्रीकृष्णने बड़ो सत्कार कीनो, हरिके मंदिरमें बैठिके वाने विश्राम लेके भोजन कियो ॥ ९ ॥ श्रीकृष्णने सब कुशल पूछी तब तिनकी आज्ञातें वे ब्राह्मण सबरी बात वर्णन करतोभयो ॥ १० ॥ रुक्मिणीजीकी चिट्ठी बांचन लग्यो,–स्वस्ति श्रीद्वारका शुभस्थान श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीनित्यानन्दसमुद्र दिव्यगुणपरिपूर्ण वसुदेवनन्दन श्रीकृष्ण योग्य लिखि कुण्डिनपुरतें भीष्मकपुत्री रुक्मिणीकी किरोड़न दण्डोत बंचने ॥ ११ ॥ अत्र कुशलं तत्रास्तु। आपको पत्र आयो नारदजीके वचनतें मैंने जानी कि, आप प्रकृतितें परे हो ॥ १२ ॥ हे सर्वज्ञ ! तुम सर्व जानोहो तोऊ एकांतकी बात कहूं हूं, मोकूं वीरको

ततःखिन्नमनाभैष्मीश्रीकृष्णायमहात्मने ॥ दूतंस्वंप्रेषयामासब्राह्मणंमिथिलेश्वर ॥ ८ ॥ सद्वारकांगतोदिव्यांश्रीकृष्णेनप्रपूजितः ॥ भुक्तवांस्तत्रचासीनोविश्रांतोमंदिरेहरेः ॥ ९ ॥ पृच्छतेकुशलंसर्वंश्रीकृष्णायमहात्मने ॥ ब्राह्मणस्तदनुज्ञातस्तस्मैसर्वमवर्णयत् ॥ १० ॥ स्वस्तिश्रीकारपंचाढ्येनित्यानंदमहोदधौ ॥ श्रीमद्दिव्यगुणैः पूर्णेकोटिशोनतयोमम ॥ ११ ॥ शमत्रास्तिचतत्रास्तुततस्त्वत्पत्रमागतम् ॥ नारदोक्तेनवचसाज्ञातोसिप्रकृतेःपरः ॥ १२ ॥ सर्वंजानासिसर्वज्ञस्तथावक्ष्येवचोरहः ॥ वीरभागंतुमांविद्धित्वंगृहाणमहामते ॥ १३ ॥ मांचैद्यःप्रतिगृह्णीयाद्यथासिंहबलिंमृगः ॥ कथंत्वामुद्वहेदुर्गेस्थितामितिचतच्छृणु ॥ १४ ॥ पूर्वेद्युःकुलदेव्यास्तुयात्रास्तिमहतीहरे ॥ आगमिष्याम्यहंयत्रतत्रमांत्वंगृहाणभोः ॥ १५ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ रुक्मिण्यास्तमभिप्रायंश्रुत्वाब्राह्मणभाषितम् ॥ रथःसंयुज्यतामाशु दारुकंप्राहमानदः ॥ १६ ॥ पश्चिमायांतदारात्रौवैकुण्ठप्रभवंपरम् ॥ किंकिणीजालसंयुक्तंहेमरत्नखचित्प्रभम् ॥ १७ ॥ सदश्वैःशैब्यसुग्रीवमेघपुष्पबलाहकैः ॥ नियोजितैर्दारुकेणचंचलैश्चारुचामरैः ॥ १८ ॥ युक्तंमहारथंदिव्यंसहस्रादित्यवर्चसम् ॥ आरुह्यसारथेःपृष्ठेधृत्वाश्रीपादपंकजम् ॥ १९ ॥ स्वहस्तेनद्विजंतस्मिन्समारोप्यरमापतिः ॥ विदर्भान्प्रययौराजञ्श्रीकृष्णोभगवान्हरिः ॥ २० ॥

भाग जानो जातें तुम मोकूं ग्रहण करो ॥ १३ ॥ शिशुपाल मोकूं कहूं न लेजाय तुम सिंह हो सो तुम्हारो भाग शिशुपाल स्यारिया न लेय जो तुम यह कहो के तूं किलेके महलमें बैठीकूं कैसे हरूं ताको उपाय बताऊं हूं ॥ १४ ॥ ब्याहके १ दिन पहले हमारे १ कुलदेवीकी यात्रा होय है तहां मैं आऊंगी तहीं मोहि आप ग्रहण करिलीजो ॥ १५ ॥ नारदजी कहैहैं कि, ऐसे रुक्मिणीको अभिप्राय ब्राह्मणके मुखतें सुनिके मानके दाता भगवान् दारुक सारथीतें बोले कि, तूं रथको जलदी जोड़ ॥ १६ ॥ पिछली रातिको वैकुण्ठमें बनो जो रथ रत्नजटित, सुनहेरी, किंकिणी, झांझ, मंजीरा, जामें बंधे ॥ १७ ॥ तामें शैब्य, सुग्रीव, मेघपुष्प, बलाहक, घोड़ानकूं जोड़ चंचल सुन्दर चमर ॥ १८ ॥ दिव्य रथ, हजार सूर्यकोसो तेज जामें ता रथपै दारुककी पीठिपै पांव धरिके चढ़तेभये ॥ १९ ॥ फिर लक्ष्मीके पति वा ब्राह्मणको हाथ पकरि चढ़ायके विदर्भदेशकूं आवत

भये ॥ २० ॥ राजनके मण्डलमेंते कन्याकूं हरिवेकूं इकले श्रीकृष्ण गयेहैं ये सुनके युद्धते शंकित बलदेवजी भैयाकी सहाय करनवारे ॥ २१ ॥ समर्थ यादवनकी सेनाकूं लेके अपने विपक्ष वैरी राजनकूं जीतिवेके लिये पीछेते आवतेभये ॥ २२ ॥ श्रीकृष्ण कुण्डिनपुरके बगीचामें ब्राह्मणके संग घोड़ानकी अल बिछाय इमलीके वृक्षके नीचे बेठिगये ॥ २३ ॥ दूरतेई कुण्डिनपुर दीखैहै, बड़ो भारी जामें किलो, सात योजनको गोल ॥ २४ ॥ जाकी खाई जलते भरी, सौ धनुष चौड़ी चोमासेम नदी जैसी बहैहै ॥ २५ ॥ पचास हाथको परिकोटा, ऊंचो जाके, भीतर मनोहर महल जिनके, सुन्हेरी शिखर ॥ २६ ॥ सोनेके कलश, ध्वजा, पताका, दरवाजे, छजिरी तिनपै मोर; परेवा बैठ रहे हैं ॥ २७ ॥ शिशुपालके अर्थ अपनी कन्या देवेकूं भीष्मक राजा विवाहकी सामिग्री रत्नमण्डपमें इकट्ठी करतो

कृष्णंचैकंगतंहर्तुंकन्यांतुनृपमण्डलात् ॥ कलिप्रशंकितोरामःश्रुत्वाभ्रातृसहायकृत् ॥ २१ ॥ नीत्वायदुबलंसर्वंसमर्थंबलवाहनम् ॥ विपक्षी यान्नृपाञ्जेतुंबलःपश्चाद्ययौत्वरम् ॥ २२ ॥ कुण्डिनोपवनंप्राप्तःसद्विजःसरथोहरिः ॥ संतस्थौतिंतिणीवृक्षेआस्तीर्याश्वपरिच्छदम् ॥ २३ ॥ दूरात्संदृश्यतेतस्मात्कुण्डिनन्तुपुरम्परम् ॥ दीर्घंदुर्गसमायुक्तंसप्तयोजनवर्तुलम् ॥ २४ ॥ दुर्लंघ्यादुर्गमायत्रपरिखाजलपूरिता ॥ धनुःशतंविस्तृतास्तिचातुर्मास्यनदीवसा ॥ २५ ॥ पंचाशद्धस्तमानेनदुर्गभित्तिस्तथोर्ध्वगा ॥ यत्ररम्याणिहर्म्याणिस्फुरद्धेमशिखानिच ॥ २६ ॥ हेमकुम्भध्वजस्फूर्जत्तोलकाभिर्विरेजिरे ॥ पारावतामयूराश्चयत्रतत्रपतंतिच ॥ २७ ॥ शिशुपालायस्वांकन्यांदास्यन्राजातुभीष्मकः ॥ चक्रेविवाहसंभारसंचयंरत्नमण्डपे ॥ २८ ॥ गीतमंगलसंयुक्तेनारीभिर्भवनोत्तमे॥रराजरुक्मिणीराजन्सिद्धिभिर्भूर्यथाभुवि ॥२९॥ अथर्वविद्द्विजाभैष्मीसुस्नातांरत्नवाससम् ॥ चक्रुर्मंत्रैस्तथारक्षांबध्वाशांतिंविधायच ॥ ३० ॥ हैमानांभारलक्षंचमुक्तानांद्विगुणंतथा ॥ सहस्रभारंवस्त्राणांधेनूनामर्बुदानिषट् ॥ ३१ ॥ गजायुतंरथानांचदशलक्षंमनोहरम् ॥ दशकोटिहयानांचगुडादितिलपर्वतान् ॥ ३२ ॥ सहस्रस्वर्णपात्राणांभूषणानांतथायुतम् ॥ विप्रेभ्यःप्रददौराजाभीष्मकोतिमहामनाः ॥ ३३ ॥ तथावेदमघोषस्यशिशुपालायवैद्विजाः ॥ चक्रुःशांतिंपरांपूर्वंरक्षाबंधनरूपिणीम् ॥ ३४ ॥ ब्राह्मणैर्मंगलस्नातंपीतकंचुकशोभितम् ॥ मुकुटोपरिविभ्राजत्पुष्पमौलिधरंशुभम् ॥ ३५ ॥

भयो ॥ २८ ॥ मंगलगीत जामें स्त्री गामें ऐसे उत्तम भवनमे रुक्मिणीजीकी बड़ी शोभा होतीभई, सिद्धिन करिके भूमि जैसे शोभित होयहै ॥ २९ ॥ अथर्वण वेदके वेत्ता ब्राह्मण शांति करिके बहूकूं सुन्दर गहने वस्त्र पहराय मन्त्रनते रक्षा करै है ॥ ३० ॥ लाख भारतो मुहर, दो लाख भर मोती और हजारन भार वस्त्र, साठ किरोड़ गौ ॥ ३१ ॥ दश हजार हाथी, दश लाख मनोहर रथ, दश किरोड़ घोड़ा, गुड़ तिलनके पर्वत ॥ ३२ ॥ हजार पात्र सोनेके, दश हजार गहने, इतने दान अति बडमना राजा भीष्मक ब्राह्मणनकूं देतभयो ॥ ३३ ॥ तैसेई दमघोषके बेटा शिशुपालके अर्थ ब्राह्मणनपै रक्षाबन्धनरूपिणी शांति करायके ॥ ३४ ॥ ब्राह्मणनपै मंगल स्नान कराय पीरो जामा पहरायो, पाग,

शिरपेच मुकुट ताके ऊपर पाग, फूलनको सेहरो ॥ ३५ ॥ हार, कंकण, केयूर, किंकिणी, चूड़ामणि पहिराय मंगलके गीत, बाजे, गन्ध, अक्षतनते पूजतो भयो ॥ ३६ ॥ आचारकी पंडितनते या प्रकारको शोभाकरी और शिशुपालको हथिनीपे चढ़ाय दमघोष निकस्यो ॥ ३७ ॥ जरासन्ध, शाल्वराजा, दन्तवक्र, विदूरथ, पौण्ड्रक, जे युद्धमारिया हैं वे संग चले ॥ ३८ ॥ बड़ी सेनाकूं लेके दुन्दुभीनकूं बजावतो महाबली दमघोष कुण्डिनपुरकूं आयो॥३९॥ आगेते श्रीकृष्णको उद्योग सुनिके औरहू हजारन राजा शिशुपालकी सहायकूं आये ॥ ४० ॥ भीष्मक राजा आगेते जायके विधिपूर्वक पूजा करतोभयो रुक्मीने बनात और लालनते ॥ ४१ ॥ मोतीनकी मालाते भूषित सब भये अतरनते सुगन्धित सब मार्ग तथा देश भये ॥ ४२ ॥ वेश्यानके नृत्य अगाड़ी होतभये, मृदंग बजतभये, ऐसे विदर्भराजने पुरमें प्रवेश करायो ॥ ४३ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां द्वार

हारकंकणकेयूरशिखामणिविभूषितम् ॥ मंगलैर्गीतवादित्रैर्गन्धाक्षतविचर्चितम् ॥ ३६ ॥ आचारलाजैः सुवरं शिशुपालं विधाय च ॥ आरोप्य करिणं घोषं दमघोषो विनिर्ययौ ॥ ३७ ॥ जरासंधेन शाल्वेन दंतवक्रेण धीमता ॥ विदूरथेन पौंड्रेण पार्ष्णिग्राहेण मैथिल ॥ ३८ ॥ विकर्षन्महतीं सेनां दमघोषो महाबलः ॥ दुंदुभीन्नादयन्दीर्घानाययौ कुण्डिनं पुरम् ॥ ३९ ॥ संमुखाद्यदुदेवस्य श्रुत्वोद्योगं नृपाः परे ॥ सहस्रशः समाजग्मुः शिशुपालसहायिनः ॥ ४० ॥ भीष्मकोऽग्रतो गत्वा संपूज्य विधिवन्नृपम् ॥ कारमीरकंबलैर्दिव्यारुणैः सामुद्रसंभवैः ॥ ४१ ॥ मंडितेषु च सर्वेषु मुक्तादामविलंबिषु ॥ मार्गवीथिकैः पुष्पगंधैरापूर्णेषु शिविरेषु च ॥४२॥ वारांगनानृत्यकलमन्मृदंगेषु ध्वनत्सु च ॥ निवेशयामास नृपं विदर्भाधिपतिर्महान् ॥ ४३ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां श्रीद्वारकाखण्डे नारदबहुलाश्वसंवादे कुण्डिनपुरयानं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ श्रीनारद उवाच ॥ ॥ ध्यायन्ती कृष्णपादाब्जं भैष्मी कमललोचना ॥ मोघं वा मनुते ह्येव श्याममचिंतयत् ॥ १ ॥ ॥ रुक्मिण्युवाच ॥ ॥ अहो त्रियामांतरितो विवाहो ममैव नागच्छति कृष्णचन्द्रः ॥ न वेद्मि किं कारणमत्र यातं नायाति सोऽद्यापि च भूमिदेवः ॥२॥ यदूत्तमो देववरो मयैष द्वा दि किंचित्कलुषं विधातः ॥ कृतो यमो नूनमतीव हस्तं यदीश आगच्छति किं करोमि ॥ ३ ॥ हा दुर्भगायाश्च न मे विधाता न सानुकूलः किल चन्द्रमौलिः ॥ न चैकदन्तो विमुखा च गौरी गावो द्विजाश्च न सानुकूलाः ॥४॥ ॥ श्रीनारद उवाच ॥ एवं विचिंतयंती सा भैष्मी गेहाट्टभूमिषु ॥ परिभ्रमंती श्रीकृष्णं पश्यंती गृहशेखरात् ॥५॥

कारखण्डे भाषाटीकायां कुण्डिनपुरयानं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ नारदजी कहे हैं कि, कमलनयनी रुक्मिणी श्रीकृष्णके चरणकमलको ध्यान करती मनकूं निष्फल मानती श्यामकूं चिंतमन करती यह बोली ॥ १ ॥ अहो ! मेरे विवाहको एक रात्रि रहगई है कृष्णचन्द्र नहीं आये, हे विधातः ! यह कहा कारण होगो, वह ब्राह्मणहू अबही नहीं आयो ये भी नहीं जानो हैं ॥ २ ॥ यदूत्तम देववरने कोइ मोमें कारण दूषी उद्यम करिके बैठिरहे और शिशुपाल तो आयहू गयो है ॥ ३ ॥ हाय ! मो अभागीकूं विधाताहू अनुकूल नहीं है न चन्द्रमौली शिव न गणेश अनुकूल हैं, गौरीहू विमुख है और गौ ब्राह्मणहू अनुकूल नहीं हैं ॥ ४ ॥ ऐसे चिंतमन करिरही रुक्मिणी अटाकी भूमिपर बहुत ऊंची चढ़िके शिखरपेते

श्रीकृष्णकूं देखती भ्रमण करती ही ॥ ५ ॥ वाई समें रुक्मिणीको बायों अंग फड़कन लग्यो सुचाव देनलग्यो कि, आये, ताई समें कालकी जाननहारी प्रसन्न हेगई वो पूर्ण
मंगलरूपिणी है ॥ ६ ॥ ताई समे कृष्णको प्रेरचोभयो ब्राह्मण आयगयो, श्रीकृष्णके आयवेको हौले २ यो वर्णन करतोभयो ॥ ७ ॥ तब तो भैष्मी प्रसन्न हेगई
या ब्राह्मणके चरणनमें दण्डवत करिके बोली कि, हे ब्राह्मण ! तेरे वंशमेंते मै कबहूं नहीं जाऊंगी ॥ ८ ॥ राम कृष्ण मेरी बेटीको व्याह देखिवेकूँ आये हैं ऐसे
सुनिके भीष्मक राजा श्रीकृष्णके प्रभावको जाननहारो ब्राह्मणनकूं संग लेके लिवायवेकूँ आयो ॥ ९ ॥ अत्यन्त मंगल पात्रनमे गंध, अक्षत, धरे जो, खीर, वस्त्र,
रत्न इनकूं धरिके गाजे बाजेके मंगलते आयो ॥ १० ॥ किरोडन मधुपर्कनके घट संग लेके विधिते राम कृष्णकूँ परमेश्वर जानके पूजन करतोभयो ॥ ११ ॥ अहो ! मैंने श्री
कृष्णकूं अपनी कन्या न दीनी ऐसे जाको खिन्न मन है आनंदवनमें श्रीकृष्णके डेरा करायके प्रणामकर अपने घरकूँ चल्योआयो ॥ १२ ॥ वसुदेवनंदन श्रीकृष्ण त्रिलोकीकी

तद्दैवतस्यावामांगमस्फुरत्प्रतिभापणम् ॥ तेनप्रसन्नाश्रीभैष्मीकालज्ञासर्वमंगला ॥६॥ कृष्णप्रणोदितोविप्रःसद्यश्चागतवांस्तदा ॥ श्रीकृष्णा
गमनंतस्यैशनैःसर्वशशंसह ॥ ७ ॥ ततःप्रसन्नाश्रीभैष्मीतदंघ्र्योःप्रणिपत्यसा ॥ प्राहत्वद्वंशतोविप्रनयास्यामिवचोमम ॥ ८ ॥ श्रुत्वागतौरा
मकृष्णौविवाहप्रेक्षणोत्सुकौ ॥ भीष्मकोनिर्गतोनेतुंब्राह्मणैस्तत्प्रभाववित् ॥ ९ ॥ भृशंमंगलपात्रेषुगंधाक्षतयुतेषुच ॥ वासोरत्नचयंधृत्वागीत
वादित्रमंगलैः ॥१०॥ कोटिशोमधुपर्काणांकुम्भव्यूहान्विधायच ॥ पूजयित्वाथविधिवद्रामकृष्णौपरेश्वरौ ॥११॥ अहोचास्मैनदत्तेयमितिखि
न्नमनाःपरम् ॥ आनंदनवनेस्थाप्यनत्वास्वगृहमाययौ ॥ १२ ॥ श्रुत्वागतंश्रीवसुदेवनंदनंत्रैलोक्यलावण्यनिधिंपरेश्वरम् ॥ आगत्यनेत्रांजलि
भिःपुरौकसःपपुःपरंतन्मुखपंकजामृतम् ॥ १३ ॥ अस्यैवभार्याभवितुंहिरुक्मिणीयोग्यास्तिनान्येत्यवदन्पुरौकसः ॥ दत्त्वास्वपुण्यानिविवा
हहेतवेश्रीकृष्णलावण्यकलानिबंधकाः ॥ १४ ॥ कदापिसाक्षाच्छ्वशुरस्यमंदिरंसंप्रागतंचैवमहोवयंजनाः ॥ द्रक्ष्यामआरात्कृतकृत्यतांतदात्रजे
मलोकेबहुजीवितेनकिम् ॥ १५ ॥ वृद्दस्सुलोकेषुचभीष्मकन्यकाद्रिकन्यकापूजनहेतवेनृप ॥ अंतःपुरात्सर्वसखीसमन्विताविनिर्ययौकृष्णगृ
हीतमानसा ॥ १६ ॥ भेरीमृदंगैर्बहुदुंदुभिस्वनैःसुगायकैर्बंदिजनैश्चमागधैः ॥ वारांगनानृत्यमनोज्ञभावैर्जयेत्यभून्मंगलशब्दउच्चकैः ॥ १७ ॥

सुंदरताकी निधि परमेश्वर तिनकूं आयो सुनिके पुरवासी नरनारी आयके नेत्रनते केवल ताके मुखकमलके सौंदर्य अमृतको पीवतेभये ॥ १३ ॥ पुरके निवासी ये बोले कि, रुक्मिणी
या कृष्णकीही स्त्री हैवेकूं योग्य है और कोई नहीं जो हमारो कछू पूर्वजन्मको पुण्य है ताको फल हम चाहते यही माँगे है कि, रुक्मिणीको पाणिग्रहण कृष्णही करे ॥ १४ ॥
कबहूं साक्षात् श्वसुरके घर जब आवेंगे तब श्रीकृष्णको आयो देखेंगे हे मनुष्य हो ! तब हम कृतार्थ हेजायंगे और बहुतही जीये तो कहा ॥ १५ ॥ हे नृप ! ऐसे पुरवासी कहिही
रहे कि, इतनेमेंही रुक्मिणी पार्वतीको पूजन करिवेकूं सखीनकूं संग लेके रणवासते निकसी कृष्णने ग्रहण कीयो है मन जाको ॥ १६ ॥ तब भेरी, मृदंग, बहुतसी दुंदुभीके शब्द
तिन करिके गवैया जे मागध बंदीजन गावत चले है, वेश्या नृत्य करती चली है, तिनको बडे उच्चस्वरसो जय होय जय होय ऐसो मंगलको शब्द भयो है ॥ १७ ॥

किरीट चंद्रमाकी कांतिको धारण कररही बालसूर्य्यसे कुण्डलनको पहरे हैं ता रुक्मिणीकी ऊपर श्वेत चमर, छत्र और पैरवानसो पासके गण जाकी सेवन करें हैं ॥ १८ ॥ म्यानसों निकासे नंगी तरवारवारे प्यादे और बडे वीरजन दोनों और उनके पीछे सवार, सवारनके पीछे रथी, रथीनके पीछे हाथी, ऐसे दोनों बगलते बराबर रणवासते लेके गौरीके मंदिर ताई ठाडे अपने अपने शस्त्रनकों उठाये रक्षा करतेभये ॥ १९ ॥ देवीको मठको प्राप्त हैके चौराहेमें ठाडी है हाथ पांव धोयके शुद्ध हैके मौन लिये हाथ जोडि संसारकी भय हरनहारी भवानीको पूजन करतीभई और ये प्रार्थना करतीभई कि, ॥ २० ॥ हे दुर्गे! हे शुभे! हे शिवे! हे भवानि! मैं गणेशपुत्र सहित तोकूं निरंतर नमस्कार करूं हूं, परमेश्वर भगवान् मायाते परे जो स्वयं श्रीकृष्ण हैं सो मेरो पति होउ ॥ २१ ॥ तब सखी बोली कि, हे शुभे! ऐसे तू मति कहै शिशुपाल मेरो वर होउ ऐसे कहि इन सखीनके

कोटींदुबिंबद्युतिमादधानांबालार्कतांटंकधरांश्रियंताम् ॥ सितातपत्रव्यजनैःस्फुरद्भिःसुचामरैःपार्श्वगणःसिषेवे ॥ १८ ॥ कोशाद्विनिष्कृ ष्यसितासिलक्षंपदातयोवीरजनाइतस्ततः ॥ तथाश्वगोभीरथिनोगजस्थिताःसमुद्यतास्त्राजुगुपुर्विदूरतः ॥ १९ ॥ देवीमठंप्राप्यसुचत्वरेस्थि ताशांताशुचिर्धौतकरांघ्रिपंकजा ॥ गत्वासमीपंयतवाक्कृतांजलिर्भेजेभवानींभवभीतिहारिणीम् ॥ २० ॥ दुर्गेस्वसंतानयुतेशिवेशुभेनमामि तुभ्यंसततंभवानिते ॥ भूयात्पतिर्मेभगवान्परेश्वरःश्रीकृष्णचन्द्रःप्रकृतेःपरःस्वयम् ॥२१॥ एवंशुभेमावदकृष्णनामचैद्यंसमुद्दिश्यवरंगृहाण ॥ इत्थंवदंतीषुसखीषुभैष्मीभूयोभवानीभवनेजगाद ॥ २२ ॥ अजानतीयंतवचांबबालातथावदंतीषुसखीषुभैष्मी ॥ गंधाक्षतैर्धूपनिभूषणाद्यैः स्रङ्माल्यदीपावलिभोगवस्त्रैः ॥ २३ ॥ अपूपतांबूलफलेक्षुभिश्चभेजेभवानींपरयाचभक्त्या ॥ नत्वाथतांवाबहुभूषणाद्यैः संपूज्यसौभाग्यवती र्ननाम ॥ २४ ॥ सर्वाःस्त्रियस्ताःप्रददुर्वराणिसुमंगलाशीर्वचनानितस्यै ॥ रूपंसदातेशतरूपयासमंशीलंसदाशैलसुतासमंप्रभो ॥ २५ ॥ शु श्रूषणंभर्तुररुंधतीसमंक्षमाहिभूयाज्जनकात्मजासमा ॥ सौभाग्यमेवंतवदक्षिणासमंसुवैभवंभीष्मसुतेशचीसमम् ॥ सरस्वतीतेचसरस्वतीसमा भक्तिःपतौस्याच्चसतांहरौयथा ॥ २६ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीद्वारकाखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेरुक्मिणीनिर्गमनंनामपंचमोऽध्यायः ॥५॥

कहते संते रुक्मिणी भवानीके भवनमें फेर बोली ॥ २२ ॥ हे अंब! यह बाला कछु जाने नहीं है सखी तो ऐसे कहि रही हैं रुक्मिणीजी गंध, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य, वस्त्र, भूषण, पुष्प, माला, बलि ॥ २३ ॥ पूआ, तांबूल, फल, गांडे इन सामिग्रीनते और भूषण रत्ननते देवीको पूजिके नमस्कार कर फिर सब सौभाग्यवती स्त्रीनको नमस्कार करती भई ॥ २४ ॥ तब वे सबरी स्त्री वर देतीभई और वाकूं मंगलके आशीर्वाद देतीभई कि, तेरो रूप शतरूपा रानीकोसो होउ, शील तेरो पार्वतीकोसो होउ और हे भीष्मसुते! ॥ २५ ॥ अरुंधतीकी नाईं पतिके शुश्रूषण करनवारी पतिव्रता होउ, क्षमा तोकूं सीताकीसी होउ, सौभाग्य तेरो दक्षिणाकोसो होउ इंद्राणीकोसो वैभव तेरे होउ सरस्वतीकीसी तेरी सरस्वती होउ, संतनकी जैसी हरिमें भक्ति है तैसी तेरी पतिमें भक्ति होउ ॥२६॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां द्वारकाखण्डे भाषाटीकायां रुक्मिणीनिर्गमनं नाम पंचमोऽध्यायः ॥५॥

नारदजी कहेहैं कि, ऐसे ब्राह्मणीनके उत्तम साचे आशीर्वादनसों अभिनंदन कीनी रुक्मिणी देवीकूं और ब्राह्मणीनकूं वेरवेर दण्डवत करतीभई ॥ १ ॥ अब रुक्मिणी मौन छोड़िके गौरीके मन्दिरते निकसी हौले हौले सखीनके संग चली ॥ २ ॥ किरोड़ चन्द्रमाकीसी जाकी कांति, कमलसे जाके नेत्र, ऐसी रुक्मिणीको अकस्मात् वीर राजा देखन लगे, निर्द्धनी जैसे निधिकूं देखेहैं ॥ ३ ॥ प्यादे, सवार, रथी, हाथीके सवार जे रक्षक सब वहां इकट्ठे खडे हैं वे रुक्मिणीको देखके मोहित हैगये ॥ ४ ॥ ताके कटाक्षके सोर और मंद मुसकानरूप कामके बाणनके मारे उनके शस्त्र हाथनमेंते गिरिपरे, रथनपैते, हाथीपैते, घोड़ापैते मूर्च्छा खाय खायके वे सेनाके मनुष्य धरतीमें आयपरे ॥ ५ ॥ तब पवनकोसो जाको वेग घंटानके मनोहर शब्दसों युक्त नैश्रेयस वैकुण्ठके वनके जामें घोड़ा, गरुड़की जामें ध्वजा, ॥ ६ ॥ ता रथमें बैठिके अपनी सेनाके संघट्टते पराई सेनाकूं

॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्थंविप्रवधूनांसदाशीर्भिरभिनंदिता ॥ देवींपुनर्विप्रवधूःप्रणनामपुनःपुनः ॥ १ ॥ त्यक्त्वाथमुनिव्रतंभैष्मीगिरिजागृहतस्ततः ॥ सहालिभिःसखीभिश्चनिश्चक्रामशनैः शनैः ॥ २ ॥ कोटिचन्द्रप्रतीकाशांभैष्मींकमललोचनाम् ॥ अकस्माद्ददृशुर्वीराः सुनिर्धिनिर्धनायथा ॥ ३ ॥ अश्वारूढाश्चरथिनोगजिनश्चपदातयः ॥ समागतारक्षितास्तेमुमुहुर्वीक्ष्यरुक्मिणीम् ॥ ४ ॥ तदपांगस्मितैस्तीक्ष्णैर्बाणैःकामधनुश्च्युतैः ॥ उज्झितास्त्रानिपेतुःकावर्दिताःसैनिकास्तदा ॥ ५ ॥ रथेनवायुवेगेनघंटामंजीरनादिना ॥ नैश्रेयसंभवैरश्वैर्युतेनातिपताकिना ॥ ६ ॥ शीघ्रंस्वसैन्यसंघट्टात्तत्सैन्यंसंविदारयत् ॥ वायुर्यथापद्मवनंहरिर्दारुकसारथिः ॥ ७ ॥ स्त्रीकदंबकमेत्याशुपश्यतांद्विपतांप्रभुः ॥ समारोप्यरथंभैष्मींतार्क्ष्यपुत्रःसुधामिव ॥ ८ ॥ देवानांपश्यतांराजन्राजकन्यांजहारह ॥ दिव्यंशार्ङ्गोत्तमंशार्ङ्गधनुष्टंकारयन्मुहुः ॥ ९ ॥ ततोवेगेनमहतास्वसैन्यंचागतेहरौ ॥ देवदुंदुभयोनेदुर्यदुदुंदुभयस्तदा ॥ १० ॥ सिद्धाश्चसिद्धकन्याश्चश्रीकृष्णस्यरथोपरि ॥ हर्षितावपुर्देवाःपुष्पैर्नंदनसंभवैः ॥ ११ ॥ ततोययौजयारावैःशनैरामयुतोहरिः ॥ शृगालसंघमध्याच्चकेसरीभागहृद्यथा ॥ १२ ॥ तदाकोलाहलेजातेरुक्मिणीहरणेसति ॥ बभूवरक्षकाणांचशस्त्राशस्त्रिपरस्परम् ॥ १३ ॥ जरासंधवशाःसर्वेमानिनोनृपसत्तमाः ॥ नसेहिरेस्वामिभवंपराजातंयशःक्षयम् ॥ १४ ॥

विदीर्ण करते भये जैसे कमलनकूं उखारे तैसे दारुक जिनको सारथि ऐसे भगवान् ॥ ७ ॥ स्त्रीनके झुंडमें आयके वैरीनके देखत देखत रुक्मिणीकूं रथमें बैठारि रथके वेगते फौजकूं लड़कावत लेगये गरुड़ जैसे अमृतकलशकूं उठायके लेगयो ॥ ८ ॥ हे राजन् ! शार्ङ्गधनुषको वारंवार टंकार करते देव दैत्यराजनके देखते २ राजकन्याको हरते भये॥९॥ तदनंतर पवनवेगके रथते जब भगवान् अपनी सेनामें आयगये तब देवतानकी दुन्दुभी बजी और यादवनकी बंब बजी ॥ १० ॥ सिद्ध और सिद्धनकी कन्या श्रीकृष्णके रथके ऊपर नंदनवनके पुष्पनकी वर्षा करतेभये ॥ ११ ॥ तब जय जय शब्दके संग रामसहित फौज लैके श्रीकृष्ण हौले हौले रुक्मिणीको लेके गये जैसे स्यारियानके बीचमेंते सिंह अपने भागको लेजाय है ॥ १२ ॥ जब रुक्मिणीको हरण हैगयो और कोलाहल मच्यो तब आपुसमें शस्त्राशस्त्री युद्ध भयो ॥ १३ ॥ तब जरासन्धके वशवर्ती सब मानी

वार, रथ, हाथी सबको चूर्ण ह्वैके पृथ्वीमें आयपरे ॥ ४३ ॥ जरासन्धते आदि दैके जे मृत्युते बचे राजा ते सब भागगये अत्यन्त नष्ट भयोहै उत्सव जाको या निकट पहुंचे और यह बोले ॥ ४४ ॥ भो भो पुरुषनमें शार्दूल ! मैलो मन मत करै और या एक ब्याहमें कहा है तेरे सौ ब्याह उंगरिया २ के नोह २ के होयँगे ॥ ४५ ॥ जरासन्ध कहै है कि, अबही मैं द्वारिकाकूं जाऊंगो कृष्ण बलदेवकूं बांधिलाऊंगो सप्तद्वीपवती सागरमेखलावाली या पृथ्वीको अयादवी करिदेउंगो ॥ ४६ ॥ ऐसे जब सब मित्रने समुझायो आंसू जाके पोछे तब ऐसो शिशुपाल चन्द्रिकापुर (चँदेली) कूं चल्योगयो और बचे कुचे राजाहू अपने २ पुरनको चलेगये ॥ ४७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां द्वारकाखण्डे भाषाटीकायां रुक्मिणीहरणे यदुविजयो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ नारदजी कहै हैं कि, रुक्मिणीको हरण सुनिके और मित्रनको मरण तिरस्कार सुनिके सब

जरासन्धादयःसर्वेमृत्युशेषानृपाःपरे ॥ पलायिताश्चैद्यमेत्यप्रोचुर्नष्टोत्सवंभृशम् ॥ ४४ ॥ भोभोःपुरुषशार्दूलदौर्मनस्यमिदंत्यज ॥ किमेकेन विवाहेनभवितातेशतंभुवि ॥ ४५ ॥ अद्यैवद्वारकांगत्वाबध्वारामंसमाधवम्॥ अयादवींकरिष्यामःपृथ्वींसागरमेखलाम् ॥ ४६ ॥ एवंसंबोधितोमित्रैश्चैद्योगाच्चंद्रिकापुरम् ॥ ययुःस्वंस्वंपुरंसर्वेहतशेषानृपास्ततः ॥ ४७ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांद्वारकाखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेरुक्मिणीहरणेयदुविजयोनामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ रुक्मिण्याहरणंश्रुत्वामित्राणांचपराभवम् ॥ प्रतिज्ञामकरोद्रुक्मीशृण्वतांसर्वभूभुजाम् ॥ १ ॥ अहत्वासमरेकृष्णमप्रत्यूह्यचरुक्मिणीम् ॥ कुंडिनंनप्रवेक्ष्यामिसत्यमेतद्ब्रवीमिवः ॥ २ ॥ इत्युक्त्वाकवचंदिव्यंघनमम्बुदनिर्मितम् ॥ शिरस्त्राणंसिंधुजंचसदधारमहोद्भटः ॥ ३ ॥ सौवीरस्यधनुःशालिलाटजंचेषुधिद्वयम् ॥ आदायम्लेच्छदेशस्यखड्गंचर्मचकौटजम् ॥ ४ ॥ येठरस्यमहाशक्तिंगुर्जराटभवांगदाम् ॥ परिघंवंगजंधृत्वाहस्तत्राणंचकौंकणम् ॥ ५ ॥ बद्धगोधांगुलित्राणःकिरीटीरत्नकुण्डलः ॥ रुक्मांगदस्तदारुक्मीयुद्धंकर्तुमनोदधे ॥ ६ ॥ जैत्रंरथंसमारुह्यचंचलाश्वनियोजितम् ॥ पृष्ठतोन्वगमत्कृष्णंकर्षन्नक्षौहिणीद्वयम्॥ ७ ॥ पुनःसमागतांदृष्ट्वासेनांरामोमहाबलः ॥ तयायुयोधसमरेयदुसेनासमन्वितः ॥ ८ ॥

राजानके सुनत सुनत रुक्मी ये प्रतिज्ञा करतोभयो ॥ १ ॥ कि, जो संग्राममें श्रीकृष्णकूं मारिके और रुक्मिणीकूं वगदायके न आऊं तौ मैं कुण्डिनपुरमें न बसूंगो ये मैं तुमसों सत्य कहहूं ॥ २ ॥ ऐसे कहि दिव्य कवच पहिर घन अम्बुदसों रच्यो सिंधुदेशको शिरस्त्राण धारण करयो यह रुक्मी बड़ो महोद्भट है ॥ ३ ॥ सौवीर देशको धनुष लीनो, शालिलाट देशको तर्कस द्वै लीने, म्लेच्छ देशको खड्ग (तलवार) लीनो और ढाल कुटज देशकी लीनी ॥ ४ ॥ येठर देशकी बरछी लीनी, गुर्जराटकी गदा लीनी, परिघ वंग देशको, कौंकण देशको हस्तत्राण ॥ ५ ॥ बांधे है गोधाके, अंगुलित्राण, किरीट, रत्नके कुण्डल, सुवर्णके बाजू पहरिके ये रुक्मी युद्ध करिवेकूं मन करतोभयो ॥ ६ ॥ जैत्र रथमें बैठके चंचल घोड़ा जामें लगाये हैं द्वै अक्षौहिणी फौज लेके कृष्णके पीछेसों आयो ॥ ७ ॥ तब महाबली बलराम फिर आयी सेनाको देखिके यादवनकी सेनाकूं लेके तिनसों युद्ध

कटेरीके फल जायपडेंहें ॥ २८ ॥ गदके बाणनते हाथी निरके दो दो टूक हैके ऐसे भूमिमें जायपरे जैसे पेठेके टूक हैके जायपडे ॥ २९ ॥ तब तो फौजकूं भगी देखि महाबली शाल्व आयो जो गदायुद्धमें चतुर है जाने गदके एक गदा मारी ॥ ३० ॥ गदाको मारयो गद गदाके युद्धके प्रभावको जानेवारो सो वाही समय मनसों धनुष युद्धको छोडि ॥ ३१ ॥ अत्यंत व्यथाको प्राप्त भयोहो तोहू मूर्च्छित हैके फिर उठ्यो बलदेवकी दीनी गदा लैके युद्धमें ठाढोभयो ॥ ३२ ॥ जो गदा लाख मनकी भारी बडी दृढ जैसी कौमोदिकी तैसी गदा सो गदा गदने शाल्वके मारी जैसे इन्द्रने पर्वतके वज्र मारयोहो ॥ ३३ ॥ वा गदाके प्रहारते मथित भये शाल्व जब भूमिमे जाय परे तब पौंड्रक, जरासन्ध, दन्तवक्र और विदूरथ ॥ ३४ ॥ ये चारों रोष करिके गदके ऊपर धाये और पौंड्रकहू महावीर गदके रथकी ध्वजाकूं दश बाणन करिके

गदबाणैर्भिन्नकुंभामध्येमध्येविदारिताः ॥ विरेजुःपतिताभूमौकूष्मांडशकलाइव ॥ २९ ॥ ततः पलायितंसैन्यंदृष्ट्वाशाल्वोमहाबलः ॥ गदंताडगदयागदायुद्धविशारदः ॥ ३० ॥ गदाविद्धोगदोधन्वीगदायुद्धप्रभाववित् ॥ धनुर्युद्धंतुसंत्यज्यतत्कालान्मनसात्वरम् ॥ ३१ ॥ पराव्यथांगतोयुद्धेपतितोपिसमुत्थितः ॥ तदोग्रजनयादत्तांतांगदांतुगदोग्रहीत् ॥ ३२ ॥ लक्षभारमयीगुर्वीदृढांकौमोदकींयथा ॥ तयागदोहनच्छाल्वंवज्रेणेंद्रोयथागिरिम् ॥ ३३ ॥ गदाप्रहारमथितेशाल्वेनिपतितेभुवि ॥ पौंड्रकोथजरासंधोदंतवक्रोविदूरथः ॥ ३४ ॥ चत्वारआययुस्तत्रगदोपरिरुषान्विताः ॥ पौंड्रकोपिमहावीरोगदस्यरथगंध्वजम् ॥ ३५ ॥ चिच्छेददशभिर्बाणैःकुवाक्यैर्मित्रतामिव ॥ दंतवक्रस्तुगदयागदस्यापिरथंशुभम् ॥ चूर्णयामासराजेंद्रदंडेनेवसुमृद्घटम् ॥ ३६ ॥ तथाश्वांश्वजरासंधःसारथिंचविदूरथः ॥ पातयामासभूपृष्ठेशितैर्बाणैर्विदेहराट् ॥ ३७ ॥ ततोमुसलमादायबलदेवस्त्वरन्बली ॥ विकरालेमुखेभीमेदंतवक्रमताडयत् ॥ ३८ ॥ ततोमुसलघातेनदंतवक्रस्ययुध्यतः ॥ मुखेवक्रोपियोदंतःसतुभूमौपपातह ॥ ३९ ॥ तदाहसतिदैत्यारौरुक्मिणीसहितेहरौ ॥ पौंड्रकंचजरासंधंतथादुष्टंविदूरथम् ॥४०॥ जघानमुसलेनाशुबलदेवोरुषान्वितः ॥ त्रयोपिपतितायुद्धेमूर्च्छिताश्रसृगाप्लुताः ॥ ४१ ॥ सेनांसमागतांसर्वांसमाकृष्यहलेनवै ॥ मुसलेनाहनत्क्रुद्धोबलदेवोमहाबलः ॥ ४२ ॥ दशयोजनपर्यंतरथेभाश्वपदातयः ॥ पेशिताश्चूर्णिताभूमौशयानाघरणींगताः ॥ ४३ ॥

काटतोभयो ॥ ३५ ॥ कुवाक्यनते जैसे मित्रता नाश होय है, तब दन्तवक्र गदाते गदको रथ तोरतोभयो ताको ऐसो चूर्ण करिदियो जैसे दण्डते मट्टीके घटकूं फोडेंहे ॥३६॥ तैसेंई गदके घोडा जरासन्धने मारे, विदूरथने सारथीको हे विदेहराज ! पैने पैने बाणनते मारडारो ॥ ३७ ॥ तब तो बडे बलवान् बलदेवजी मूसरकूं लैके विकराल भयंकर मुख जाको ता सेनामें दन्तवक्रकूं मारतोभयो ॥ ३८ ॥ तब युद्ध करते २ दंतवक्रको मूसरके मारे मुखको जो टेढो दन्त हो वो भूमिमें जायपरयो ॥ ३९ ॥ तब तो रुक्मिणीसहित श्रीकृष्ण, हँसे तबही बलदेवजी पौंड्रककूं, जरासन्धकूं, दुष्ट विदूरथकूं ॥४०॥ शीघ्रही मूसरते क्रोधसो दाऊजी मारतेभये रोषके कारण वे मूसरते मारेभये ताते ताते रुधिरते न्हायगये फिर मूर्च्छित हैके ये तीनोंही पृथ्वीमें जायपरे घाव आयगये ॥४१॥ फेर हल लैके तुलते आईभई सब सेनाकूं खैंचिके क्रोधभये बलदेवजी मूसरते मारतभये जो महाबली हैं ॥ ४२ ॥ चालीस कोस ताई

सेनाके प्यादे, सवार, रथ, हाथी सबको चूर्ण हैके पृथ्वीमें जायपरे ॥ ४३ ॥ जरासन्धते आदिदेके जे मृत्युते बचे राजा ते सब भागगये अत्यन्त नष्ट भयोहै उत्सव जाको या शिशुपालके निकट पहुंचे और यह बोले ॥ ४४ ॥ भो भो पुरुषनमें शार्दूल ! मैलो मन मत करै और या एक व्याहपै कहा है तेरे सौ व्याह ढंगरिया २ के नोह २ के होयँगे ॥ ४५ ॥ जरासन्ध कहै है कि, अवही मैं द्वारिकाकूँ जाऊंगो कृष्ण बलदेवकूं बांधिलाऊंगो सप्तद्वीपवती सागरमेखलावाली या पृथ्वीको अयादवी करिदेऊंगो ॥ ४६ ॥ ऐसे जब सब मित्रने समुझायो आंसू जाके पोंछे तब ऐसो शिशुपाल चन्द्रिकापुर (चंदेली) कूँ चल्योगयो और बचे कुचे राजाहू अपने २ पुरनको चलेगये ॥ ४७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां द्वारकाखण्डे भाषाटीकायां रुक्मिणीहरणे यदुविजयो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ नारदजी कहै हैं कि, रुक्मिणीको हरण सुनिके और मित्रनको मरण तिरस्कार सुनिके सब

जरासन्धादयःसर्वेमृत्युशेषानृपाःपरे ॥ पलायिताश्चेद्यमेत्यप्रोचुर्नष्टोत्सवंभृशम् ॥ ४४ ॥ भोभोःपुरुषशार्दूलदौर्मनस्यमिदंत्यज ॥ किमेकेन विवाहेनभवितातेशतंभुवि ॥ ४५ ॥ अद्यैवद्वारकांगत्वाबध्वारामंसमाधवम्॥ अयादवींकरिष्यामःपृथ्वींसागरमेखलाम् ॥ ४६ ॥ एवंसंबोधितोमित्रैश्चैद्योगाचंद्रिकापुरम् ॥ ययुःस्वंस्वंपुरंसर्वेहतशेषानृपास्ततः ॥ ४७ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांद्वारकाखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेरुक्मिणीहरणेयदुविजयोनामषष्ठोध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ रुक्मिण्याहरणंश्रुत्वामित्राणांचपराभवम् ॥ प्रतिज्ञामकरोद्रुक्मीशृण्वतांसर्वभूभुजाम् ॥ १ ॥ अहत्वासमरेकृष्णमप्रत्यूह्यचरुक्मिणीम् ॥ कुंडिनंनप्रवेक्ष्यामिसत्यमेतद्ब्रवीमिवः ॥ २ ॥ इत्युक्त्वाकवचंदिव्यंघनमम्बुदनिर्मितम् ॥ शिरस्त्राणंसिंधुजंचसदधारमहोद्भटः ॥ ३ ॥ सौवीरस्यधनुःशालिलाटजंचेषुधिद्वयम् ॥ आदायम्लेच्छदेशस्यखड्गंचर्मचकौटजम् ॥ ४ ॥ येठरस्यमहाशक्तिंगुर्जराटभवांगदाम् ॥ परिघंवंगजंधृत्वाहस्तत्राणंचकौंकणम् ॥ ५ ॥ बद्धगोधांगुलित्राणःकिरीटीरत्नकुण्डलः ॥ रुक्मांगदस्तदारुक्मीयुद्धंकर्तुमनोदधे ॥ ६ ॥ जैत्रंरथंसमारुह्यचंचलाश्वनियोजितम् ॥ पृष्ठतोन्वगमत्कृष्णंकर्षन्नक्षौहिणीद्वयम्॥ ७ ॥ पुनःसमागतांदृष्ट्वासेनांरामोमहाबलः ॥ तथायुयोधसमरेयदुसेनासमन्वितः ॥ ८ ॥

राजानके सुनत सुनत रुक्मी ये प्रतिज्ञा करतोभयो ॥ १ ॥ कि, जो संग्राममें श्रीकृष्णकूँ मारिके और रुक्मिणीकूँ बगदायके न आऊं तौ मैं कुण्डिनपुरमें न धसूंगो ये मैं तुमसों सत्य कहूंहूं ॥ २ ॥ ऐसे कहि दिव्य कवच पहिर घन अम्बुदसों रच्यो सिंधुदेशको शिरस्त्राण धारण करयो यह रुक्मी बड़ो महोद्भट है ॥ ३ ॥ सौवीर देशको धनुष लीनो, शालिलाट देशको तर्कस द्वै लीने, म्लेच्छ देशको खड्ग (तलवार) लीनो और ढाल कुटज देशकी लीनी ॥ ४ ॥ येठर देशकी बरछी लीनी, गुर्जराटकी गदा लीनी, परिघ वंग देशको, कौंकण देशको हस्तत्राण ॥ ५ ॥ बांधे हैं गोधांके, अंगुलित्राण, किरीट, रत्नके कुण्डल, सुवर्णके बाजू पहरिके ये रुक्मी युद्ध करिवेकूँ मन करतोभयो ॥ ६ ॥ जैत्र रथमें बैठके चंचल घोड़ा जामें लगाये हैं द्वै अक्षौहिणी फौज लेके कृष्णके पीछेसों आयो ॥ ७ ॥ तब महाबली बलराम फिर आयी सेनाको देखिके यादवनकी सेनाकूं लेके तिनसों युद्ध

करतेभये ॥ ८ ॥ ठाडो रहि २ ऐसे कठोर वचन कह्यो ये रुक्मी बेर २ धनुषकूं टंकारतो सन्मुख आवतोभयो ॥ ९ ॥ जो जीयो चाहे तो जलदी मेरी बहनकूं छोड़िदे जो नैं
छोड़ेगो तो मैं सेनासहित तोकूं अभी यमलोककूं पहुंचायदेउंगो ॥ १० ॥ तूं ययातिराजाके शापते भ्रष्ट हैगयो हौ और तूं ग्वारियानकी जूठिन खानवारो है और तूं जरासन्धके
भयते समुद्रमें दुबके हो और कालयवनके भयसो भाजते डोले हो ॥ ११ ॥ ऐसे कहिके तर्कसते तीर निकासके धनुषमें लगायके कानतलक खेंचिके हरिके हृदयमें मारतो
भयो ॥ १२ ॥ बाण ताडित श्रीकृष्णने बाणते बजनी जो याकी प्रत्यंचा है सो काटिडारी गरुड जैसे सांपकूं काटडारे है ॥ १३ ॥ फिर ये रुक्मी सुवर्णमयी दूसरी प्रत्यंचा
धनुषपै चढायके संग्राममें दश बाण श्रीकृष्णके मारतोभयो ॥ १४ ॥ तब हरि भगवान् एकही बाणते रुक्मैयाको शिंजिनी प्रत्यंचा सहित धनुषको काटतेभये जैसे ज्ञानते गुणमय

तिष्ठतिष्ठेतिदेवेशंविसृजन्परुषंवचः ॥ संप्राप्तोतिरथंरुक्मीधनुष्टंकारयन्मुहुः ॥ ९ ॥ त्वरंमुंचस्वसारंमेयदिजीवितुमिच्छसि ॥ नचेत्त्वां
सबलंसद्योनयामियमसादनम् ॥ १० ॥ ययातिशापसंभ्रष्टोगोपालोच्छिष्टभुग्भवान् ॥ जरासंधभयाद्भीतोयवनाग्रात्पलायितः ॥ ११ ॥
इत्युक्त्वेषुधितःकृष्यबाणंचापेनिधायसः ॥ नियम्यकर्णपर्यंतंनिचखानदरेहृदि ॥ १२ ॥ संताडितोपिभगवान्धनुर्ज्यांतस्यनादिनीम् ॥
चिच्छेदसायकेनाशुगरुडःपन्नगींयथा ॥ १३ ॥ निधायशीघ्रंकोदंडंशिंजिनींस्वर्णभूषिताम् ॥ रुक्मीतुदशभिर्बाणैःसंजघानहरिंरणे ॥
॥ १४ ॥ हरिरेकेनबाणेनशिंजिनीसहितंधनुः ॥ चिच्छेदरुक्मिणःसद्योज्ञानेनेवागुणामयम् ॥ १५ ॥ कृष्णोमोघेनबाणेनमध्यतस्तांद्विधा
करोत् ॥ रुक्मिणंतुःशतैर्बाणैःसंतताडमृधेहरिः ॥ १६ ॥ छिन्नधन्वाथवैदर्भोमहाशक्तिंस्फुरत्प्रभाम् ॥ प्राहरद्धरयेशक्तिंविज्ञानाययथामुनिः
॥ १७ ॥ तताडगदयातांवैगदाधारीगदाग्रजः ॥ द्विधाभूतामहाशक्तीरुक्मेःसूतंजघानह ॥ १८ ॥ कौमोदकीगदागुर्वीपतंतीवेगधारिणी ॥ तद्र
थंचूर्णयामाससाश्वंशैलंयथापविः ॥ १९ ॥ प्राहरद्धरयेसोपिगदांस्वांभीष्मकात्मजः ॥ चक्रेणचूर्णयामासभगवानपितांपुनः ॥ २० ॥ परि
घंवंगजंनीत्वारुक्मीरुक्मांगदोबली ॥ जघानश्रीहरेस्कंधेजगर्जघनवन्मृधे ॥ २१ ॥ सन्ताडितोपिभगवान्मालाहतइवद्विपः ॥ तेनैवपरि
घेणापितंजघानरणांगणे ॥ २२ ॥

संसार कटे हैं ॥ १५ ॥ तब श्रीकृष्णने अमोघ बाणते बीचमेंते दो टूक करिके फिर संग्राममें सैकडन बाणनते रुक्मीकूं मारतेभये ॥ १६ ॥ रुक्मीको जब धनुष कटिगयो
तब याने बडी चमकनी शक्ति श्रीकृष्णपे चलाई विज्ञानके लिये मुनि जैसे अपनी शक्तिकूं चलावेहै ॥ १७ ॥ तब गदाधारी, गदाग्रज भगवान् गदाते वा शक्तिके दो टूक
करिके याके सारथीकूं मारडारतेभये ॥ १८ ॥ कौमोदकी बडी भारी गदा जो बडे वेगते परी सोई वा भगवान्की गदाते याके घोडानसहित रथको चूर्ण हैगयो जैसे बज्रसों
पर्वतको चूर्ण हैजायहै ॥ १९ ॥ फेर रुक्मीने और गदा लेके श्रीकृष्णकूं चलाई ताकू गदाको चक्रते हरिने चूर्ण करिडारी ॥ २० ॥ तब स्वर्णके बाजूबंदवारे रुक्मीने वंगदेशके परिघकूं लेके
श्रीकृष्णके कंधामें मारिके बडी गरजना करी ॥ २१ ॥ वा परिघते ताडितहू हरि, कांपे नहीं मालाके मारेते हाथी जैसे नहीं कांपै फिर भगवान्ने याही परिघते रणांगणमें रुक्मीकूं मारो २२ ॥

परिघको मारचो रुक्मी कछू व्याकुल ह्वैके फिर ढाल तलवार लैके भगवान्को तिरस्कार करतो ललकारतोभयो आयो ॥ २३ ॥ वाकी ढाल सहित तरवार श्रीकृष्णने अपने खड्गते काटिके वाही अपने खड्गके अग्रसों रुक्मीको कवच और शिरस्त्राण (किरीट) दोनों काटडारे ॥ २४ ॥ और याके दस्तानेहू साथमें छेदन किये तब मुठीमें खड्ग लिये पासमें आये रुक्मीको देखके ॥ २५ ॥ भगवान् श्रीकृष्णने दोनों हाथनते याकूँ पकरिके धरतीमें देमारचो वाके ऊपर चढि बैठे जैसे सिंह मृगके ऊपर चढे फिर रोषसों अपनी पैनी धारको नन्दक खड्ग निकासके ग्रहणकरो ॥ २६ ॥ ऐसे जब भैयाके मारिवेको उद्योग देख्यो तब भयविह्वल रुक्मिणी भर्ताके चरणनमें आयपरी और सती बड़ी करुणासे यह बोली ॥ २७ ॥ हे अनन्त ! हे देवेश ! हे जगन्निवास ! हे योगेश्वर ! हे अचिन्त्य ! हे जगत्पते ! हे करुणासमुद्र ! शाल्कैसे लंबे बडे भुजवाले मेरे भैयाकूँ तुम मारिवेकूँ योग्य

परिघाभिहतोरुक्मीकिंचिद्व्याकुलमानसः ॥ भर्त्सयन्माधवंह्याजौजग्राहखड्गचर्मणी ॥ २३ ॥ तत्खड्गंचर्मणाछित्वास्वखड्गंप्राहरद्धरिः ॥ खड्गाग्रेणशिरस्त्राणंकंचुकंचिच्छिदेमहत् ॥२४॥ हस्तत्राणेपियुगपद्देतेछिन्नीकृतेमृधे ॥ खड्गमुष्टिकरंदृष्ट्वारुक्मिणंसमुपस्थितम् ॥२५॥ गृहीत्वा भुजदण्डाभ्यांपातयित्वामहीतले ॥ तस्योपरिहरिःस्थित्वायथासिंहोमृगोपरि ॥ शितधारंनन्दकाख्यंखड्गंजग्राहरोषतः ॥ २६ ॥ दृष्ट्वाभ्रातृवधोद्युक्तंरुक्मिणीभयविह्वला ॥ पतित्वापादयोर्भर्तुरुवाचकरुणंसती ॥ २७ ॥ ॥ श्रीरुक्मिण्युवाच ॥ ॥ अनन्तदेवेशजगन्निवासयोगेश्वराचिंत्यजगत्पतेत्वम् ॥ हंतुंनयोग्यःकरुणासमुद्रमद्भ्रातरंशालभुजम्महाभुजम् ॥ २८ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ परित्रासैर्विलपतींदुःखशुष्यन्मुखींप्रियाम् ॥ रुद्धकण्ठींसतींवीक्ष्यन्यवर्त्ततहरिःस्वयम् ॥ २९ ॥ बद्ध्वातंकटिबंधेनखड्गेनशितधारिणा ॥ वपनंश्मश्रुकेशानांचकारार्द्धमुखेहरिः ॥ ३० ॥ अक्षौहिणीद्वयंजित्वारामःप्राप्तःससैनिकः ॥ बद्धंविरूपिणंदीनंरुक्मिणन्तुददर्शह ॥ ३१ ॥ विमुच्यबद्धंसदयःप्राहनिर्भर्त्सयन्हरिम् ॥ असाध्विदंत्वयाकृष्णकृतंलोकजुगुप्सितम् ॥ ३२ ॥ हास्यंवैशालिभद्राणांनहिचैतादृशंभवेत् ॥ यस्याःसहोदरेमुख्येविरूपेचत्वयाकृते ॥ ३३ ॥ किंवदिष्यतिसापित्वांभ्रातुर्वैरूप्यचिंतया ॥ माशोकंकुरुकल्याणिस्वस्थाभवशुचिस्मिते ॥ ३४ ॥

नहीं हो यह आपुको सारो है ॥ २८ ॥ नारदजी कहैं हैं कि, या प्रकार परित्रासते विलाप कररही हैं दुःखते मुख जाको सूखिगयो, कंठ जाको रुकिगयो, ऐसी सती प्यारीकूँ देखि आपु निवृत्त ह्वैगयो ॥ २९ ॥ याहीके कमरफेंटाते याकूँ बांधिके फिर पैनी धारके खड्गते एक बगलकी डाढ़ी मूँछ और आधो मूँड मूँडिलीनो ॥ ३० ॥ इतनेमें दो अक्षौहिणी याकी सेनाको जीति बलरामजी अपनी सेनाकूँ संग लैके वहांही आयगये रुक्मीको बंध्योभयो विरूप ह्वैरह्यो अतिदीन ताकूं देखतेभये ॥ ३१ ॥ तब दाऊजीको दया आयगई सो बंधनेत याकूँ छुडाय श्रीकृष्णकूं ललकारते यह बोले, हे कृष्ण ! तुमने ये लोकनिंदित बडो बुरो कर्म कीनोहै ॥ ३२ ॥ सारेनते ऐसी हँसी नहीं करैहैं, जाके सहोदर (एक पेटको) भैया ताको तैने ऐसो विरूप करयो ॥ ३३ ॥ तुह रुक्मिणी तेरी बहू तुम्हारी कहा बडाई करेगी, फिर रुक्मिणीते बोले कि, हे कल्याणी ! हे शुचि

जो कन्या है ताकूं वेदविधिते परम मंगलको विस्तार करत पाणिग्रहण करतेभये ॥१५॥ अवंतीके राजाकी बेटी मनोहरा मित्रविंदा है ताकूं स्वयंवरमेंते कृष्ण हरिलाये जैसे रुक्मिणीकूं लाये हैं ॥ १६ ॥ और नग्नजित् राजाकी कन्या सत्या (नाग्नजिती) ताकूं आप भगवान् सब लोकनके देखते देखते सात बैलनकूं नाथिके ब्याहि लाये ॥ १७ ॥ ऐसेही कैकेय देशके राजाकी बेटी जो भद्रा है ताहि भगवान् कालिन्दीकी नाईं ब्याहतेभये ॥ १८ ॥ बृहत्सेन राजाकी बेटी लक्ष्मणा जो सब शुभ लक्षणन करिके युक्त ही ताकूं स्वयम्वरमें मत्स्यकूं बेधके बैरीनकूं जीतके ब्याहि लाये ॥ १९ ॥ तैसेई सुन्दर है दर्शन जिनको ऐसी सोलह हजार एकसौ राजानकी कन्यानकूं भौमासुरकूं मारिके लैआये ॥ २० ॥ तिनको अपनी मायाते एकही मुहूर्तमें न्यारे २ महलनमें न्यारे २ रूप धरिके विधिपूर्वक पाणिग्रहण करतेभये ॥ २१ ॥ वे सबरी श्रीकृष्णकी स्त्री एक एक, पिताकेसे जिनमें सब गुण ऐसे दश दश बेटा

आवंत्यराजतनुजांमित्रविन्दांमनोहराम् ॥ स्वयंवरेतांजहारभगवान्रुक्मिणींयथा ॥ १६ ॥ नग्नजित्कन्यकांसत्यांदमित्वासप्तगोवृषान् ॥
पश्यतांसर्वलोकानामुपयेमेहरिःस्वयम् ॥ १७ ॥ कैकेयराजतनुजांभद्रांतुभगवान्हरिः ॥ कालिंदीमिवतांशश्वदुपयेमेविधानतः ॥ १८ ॥
बृहत्सेनसुतांराजन्लक्ष्मणांलक्षणैर्युताम् ॥ छित्वामत्स्यमरीञ्जित्वाजग्राहभगवान्हरिः ॥ १९ ॥ तथाषोडशसाहस्रंशतंचनृपकन्यकाः ॥
भौमंहत्वातन्निरोधादाहृताश्चारुदर्शनाः ॥ २० ॥ तासांमुहूर्तएकस्मिन्नानागारेषुयोषिताम् ॥ सविधंजगृहेपाणीन्नानारूपःस्वमायया ॥२१॥
एकैकशस्ताःकृष्णस्यपुत्रान्दशदशाबलाः ॥ अजीजनन्ननवमान्पितुःसर्वात्मसंपदा ॥ २२ ॥ रुक्मिण्यांभीमकन्यायांप्रद्युम्नःप्रथमोभवत् ॥
कामदेवावतारोयंपितृवत्सर्वलक्षणः ॥ २३ ॥ शंबरोनिर्दयस्तोकंहृत्वाब्धौतंसमाक्षिपत् ॥ मत्स्योदरेगतःसोपिनममारहरेःसुतः ॥ २४ ॥
मत्स्योदरान्निर्गतोसौभार्ययापरिपालितः ॥ ज्ञात्वाशत्रुकृतांवार्तांसकार्ष्णिरूढयौवनः ॥ २५ ॥ हत्वातंशंबरंशत्रुंभार्ययावरयायुतः ॥ द्वारका
मययौराजंश्चित्रंकर्मचतस्यतत् ॥ २६ ॥ सरुक्मिणःदुहितरंहृत्वाभोजकटात्पुरात् ॥ स्वयंवरस्थलाद्राजन्नुपयेमेमहारथः ॥ २७॥ तस्मात्सु
तोनिरुद्धोभून्नागायुतबलान्वितः ॥ सुरज्येष्ठावतारोयंशारदेंदीवरप्रभः ॥ २८ ॥ चतुर्व्यूहावतारस्यपरिपूर्णतमस्यहि ॥ एवंविचित्रंचरितं
विवाहानांसुमंगलम् ॥ २९ ॥

उत्पन्न करतीभईं ॥ २२ ॥ रुक्मिणी जो भीष्मक राजाकी बेटी ही ताको पहलो बेटा प्रद्युम्न भयो वुह कामदेवको अवतार हो, पिता श्रीकृष्णकेसे जामें सबरे गुण भये ॥ २३ ॥ तब निर्दई शंबरासुर या बालककूं दश दिनाके भीतरही चुरायके समुद्रमें फेंकिआयो वाकूँ एक मछली निगलगई पर वो मछलीके पेटमें गयोहू मरो नहीं ॥२४॥ फिर वो मगरके पेटमेंते निकस्यो, भार्या मायावतीने वाको पोषण करयो तब याने शत्रुके करतबकूं जानिके जब तरुण भयो ॥ २५ ॥ तब ये अपनेशत्रु शंबरासुरकूं मारिके आकाशमें विचरनहारी अपनी भार्याको संग लैके द्वारिकामें आयो, यह याने विचित्र कर्म करयो ॥ २६ ॥ सो कृष्णको पुत्र प्रद्युम्न रुक्मीकी कन्याकूं स्वयम्वरमेंते भोजकटपुरमेंते हरके ब्याहतो भयो ॥ २७ ॥ ताके शरदऋतुके नीलकमलकीसी शोभा जाकी ऐसो अनिरुद्ध बेटा भयो तामें दसहजार हाथीनको बल भयो, यह ब्रह्माको अवतार है ॥ २८ ॥ परिपूर्ण भगवानको

या प्रकार यह चतुर्व्यूहावतार है यह विचित्र चरित्र व्याहनको मंगल रूप है ॥ २९॥ सब पापनकूँ हरनहारो है पवित्रनमें पवित्र है आयुको बढावनहारो अति उत्तम है वो मैंने ते
आगे वर्णन कर्यो अब तूँ कहा सुनिबेकी चाहना करै है ॥ ३० ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां द्वारिकाखण्डे भाषाटीकायां सर्वमहिष्यद्वाहवर्णनं नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥
बहुलाश्व राजा पूछे है—तीनों लोकनमें विख्यात यह द्वारकापुरी धन्य है परिपूर्णतम साक्षात् श्रीकृष्ण यहां बसे हैं ॥ १ ॥ श्रीकृष्णके अंगते द्वारिकापुरी उत्पन्न भई है, यह हम
सुने है सो यहां कैसे आई ? कौनसे कालमें आई ? हे महान् ! ये मोसों कहो ॥ २ ॥ नारदजी बोले तैंने भली बात पूछी द्वारिकाके आयवेको जो कारण है वाय सुनिके लोकको
घातीहू जो पापी है वो हू पवित्र ह्वैजायहै ॥ ३ ॥ आगे एक मनुको बेटा शर्याति नाम राजा चक्रवर्ती भयोहो, जाने धर्मते पृथ्वीपै दश हजार वर्ष राज्य कर्यो ॥ ४ ॥ वा शर्यातिके

सर्वपापहरंपुण्यमायुर्वर्द्धनमुत्तमम् ॥ मयातेकथितंराजन्किंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ३० ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीद्वारकाखण्डेना
रदबहुलाश्वसंवादेसर्वमहिष्युद्वाहोनामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ त्रिषुलोकेषुविख्याताधन्यावैद्वारकापुरी ॥ परिपूर्ण
तमःसाक्षाच्छ्रीकृष्णोयत्रवासकृत् ॥ १ ॥ श्रीकृष्णस्यांगसंभूतापुरीद्वारावतीश्रुता ॥ कस्मादिहागताब्रह्मन्कस्मिन्कालेवदप्रभो ॥ २ ॥
॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ साधुसाधुत्वयापृष्टंद्वारकागमकारणम् ॥ यच्छ्रुत्वाशुद्धतांयातिलोकघात्यपिपातकी ॥ ३ ॥ शर्यातिर्नामराजा
भूच्चक्रवर्तीमनोःसुतः ॥ चकारराज्यंधर्मेणवर्षाणामयुतंभुवि ॥ ४ ॥ उत्तानबर्हिरानर्तोभूरिषेणइतित्रयः ॥ शर्यातेरभवन्पुत्राःसर्वधर्मभृतांवराः
॥ ५ ॥ उत्तानबर्हिषेपूर्वांभूरिषेणायदक्षिणाम् ॥ पश्चिमांचदिशंसर्वामानर्तायददौनृपः ॥ ६ ॥ ममेयंहिमहीकृत्स्नामयाधर्मेणपालिता ॥ बला
ज्जिताबलिष्ठेनयूयंतांपालयिष्यथ ॥ ७ ॥ पितुर्वचःसमाकर्ण्यआनर्तोमध्यमःसुतः ॥ ज्ञानीज्ञानमयंवाक्यमुवाचप्रहसन्निव ॥ ८ ॥ ॥ आन
र्तउवाच ॥ ॥ तवेयंनमहीकृत्स्नानत्वयापालिताक्वचित् ॥ नत्वद्बलाज्जिताराजन्बलिष्ठोभगवान्विभुः ॥९॥ महीश्रीकृष्णदेवस्यतेनैवपरिपा
लिता ॥ तत्तेजसाजिताकृत्स्नाबलिष्ठोनहरेःसमः ॥१०॥ सएवविश्वंस्वकृतंसृजत्यत्तिचपातिच ॥ सएवब्रह्मपरमंकालःकलयतांप्रभुः ॥११॥

तीन बेटा भये उत्तानबर्हि, आनर्त और भूरिषेण जे सर्व धर्मधारीनमें श्रेष्ठ हैं ॥ ५ ॥ तब शर्यातिने पूर्वदिशा तो उत्तानबर्हिकूँ दीनी, दक्षिण दिशा भूरिषेणकूँ दई और पश्चिम
दिशा सबरी आनर्तकूँ दई ॥ ६ ॥ राजा शर्याति आनर्तते बोल्यो कि, यह सबरी पृथ्वी मेरी है, मैंनेही धर्मसों पाली है मैंने बलते जीतिके संपादन कीनी है, अब तुम याको पालन
करोगे ॥ ७ ॥ तब आनर्त नामको मझलो बेटा पिताको वचन सुनिके बडो ज्ञानी ये हँसिके ज्ञानमय वाक्य पितते बोल्यो ॥ ८ ॥ कि, देखो पिताजी ! यह पृथ्वी सबरी तुम्हारी
नहीं है न तुमने कबहूं पालन करी है न तुम बली हो न तुमने बलते जीती है, बली तो भगवान् हरि हैं ॥ ९ ॥ यह सबरी पृथ्वी श्रीकृष्णदेवकी है, वाहीने पालनकरी है, वाहीके
तेजते तुमने ये सब भूमि जीती है, वा हरिकी बराबर कोई बली नहीं है ॥ १० ॥ वही भगवान् स्वकृत नाम अपने बनाये विश्वकी उत्पत्ति पालन संहार करैहै सोई परब्रह्म है

और चलायवेवारेनको प्रभु कालरूप साक्षात् वोही है॥ ११ ॥ जो प्राणिनके भीतर प्रवेश ह्वैके सबको आश्रय है, सोई विश्वरूप अधियज्ञस्वरूप स्वयं परिपूर्ण है ॥ १२ ॥ जाके भयते राति दिन पवन चल्योकरै है, जाके भयते सूर्य तपै है, जाके भयते इन्द्र वर्षा करै है, जाके भयते मृत्यु सबको मारैहै ॥ १३ ॥ हे राजन् ! वा परिपूर्णतम साक्षात् श्रीकृष्ण परमेश्वरकूं अहंकार छोडिके सर्वात्मा करिके भजो ॥ १४ ॥ नारदजी कहैं हैं कि, ज्ञानकूं प्राप्त भयो जो शर्याति राजा है वो पुत्रके वाणीरूप तीरनते छिद्यो क्रोधसों होठ जाके फडकनलगे ऐसो राजा शर्याति अपने आनर्त बेटाते बोल्यो ॥ १५ ॥ कि, हे असद्बुद्धे ! दूरि चल्योजा गुरूनकी नाई मोंको तूं शिक्षा कहा देयहै जहांतलक मेरो राज्य है तामें तूं मति वसै ॥ १६ ॥ जा कृष्णको तैंने आराधन करयो है सोई सब बातकी सहाय करेगो सोई भगवान् तोकूं नई पृथ्वी देदेयगो ॥ १७ ॥ नारदजी कहैं है–मानको दाता आनर्त

योंतःप्रविश्यभूतानिभूतैरप्यखिलाश्रयः ॥ सविश्वाख्योधियज्ञोसौपरिपूर्णतमःस्वयम् ॥ १२ ॥ यद्भयाद्वातिवातोयंसूर्य्यस्तपतियद्भयात् ॥ यद्भयाद्वर्षतेदेवोमृत्युश्चरतियद्भयात् ॥ १३ ॥ परिपूर्णतमंसाक्षाच्छ्रीकृष्णंपरमेश्वरम् ॥ भजसर्वात्मनाराजन्नहंकारविवर्जितः ॥ १४ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ ज्ञानंप्राप्तोपिशर्य्यातिराक्षिप्तःपुत्रवाक्छरैः ॥ आनर्त्तंस्वसुतंप्राहरुषाप्रस्फुरिताधरः ॥ १५ ॥ ॥ शर्य्यातिरुवाच ॥ ॥ दूरंगच्छअसद्बुद्धेगुरुवच्छासेकथम् ॥ यावद्भूतंतुमेराज्यंतावत्त्वंमामहीवस ॥ १६ ॥ यस्त्वयाराधितःकृष्णःसोपिसर्वसहायकृत् ॥ नवीनां किंमहींतेवैभगवानेवदास्यति ॥ १७ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्तस्तुतदानर्तोराजानंप्राहमानदः ॥ यत्रतेत्वमहीराज्यंतत्रवासोनमे भवेत् ॥ १८ ॥ पित्रानिःसारितोराज्ञाप्यानर्तोब्धितटंगतः ॥ वेलामेत्यतपस्तेपेवर्षाणामयुतंजले ॥ १९ ॥ प्रेमलक्षणयाभक्त्यासंतुष्टो भगवान्हरिः ॥ तस्मैस्वंदर्शनंदत्त्वावरंब्रूहीत्युवाचह ॥ २० ॥ कृतांजलिपुटोभूत्वाऽऽनर्तउत्थायशीघ्रतः ॥ ननामकृष्णपादाब्जेरोमांचीप्रेम विह्वलः ॥ २१ ॥ ॥ आनर्त्तउवाच ॥ ॥ नमस्तेवासुदेवायनमःसंकर्षणायच ॥ प्रद्युम्नायानिरुद्धायसात्वतांपतयेनमः ॥ २२ ॥ पित्रा निष्कासितोदेवत्वामहंशरणागतः ॥ देहिमह्यंभूमिमन्यांयत्रवासोहिमेभवेत् ॥ २३ ॥ ध्रुवोपियत्प्रसादेनययौसर्वोत्तमंपदम् ॥ तस्मैनमोभग वतेप्रणतक्लेशहारिणे ॥ २४ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ आनर्तमानतंदीनंभगवान्दीनवत्सलः ॥ प्रसन्नःश्रीमुखेनाहमेघगंभीरयागिरा ॥२५॥

पिताके कहेको सुनके यह बोल्यो कि, जहांताई तुम्हारी पृथ्वी है और राज्य है वामें मेरो वास नहीं होयगो ॥ १८ ॥ ऐसे जब ये आनर्तकूं पिताने देशसों निकासदीनो तब ये समुद्रके किनारेपे जायके जलमें दश हजार वर्षताई तप करतो भयो ॥ १९ ॥ तब याकी प्रेमलक्षणा भक्तिते भगवान् प्रसन्न ह्वैके याकूं दर्शन देके तूं मोपैते वर मांग यह बोले ॥ २० ॥ तब हाथ जोडके आनर्त ठाडो ह्वैगयो, श्रीकृष्णके चरणकमलमें जायपरयो, रोमांच ह्वैआये, प्रेममें विह्वल ह्वैगयो, स्तुति करनलग्यो ॥ २१ ॥ तुम वासुदेव हो, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध हो, सात्वतनके पति हो, तिनके अर्थ मेरो नमस्कार है ॥ २२ ॥ पिताने मोय निकास दीनों है, तुम्हारी शरण आयोहूं, मोकूं न्यारी भूमि देउ जामें मैं वसूं ॥ २३ ॥ ध्रुवहू तुम्हारे प्रसादते सर्वोत्तम पदकूं प्राप्त भयो वा भगवान्के अर्थ मेरो नमस्कार है जो प्रणतनके क्लेशको दूर करै हैं ॥ २४ ॥ नारदजी कहैं हैं–दीन जो आनर्त

ताप भक्तवत्सल प्रसन्न हैके मेघसी गंभीर वाणीते श्रीमुखते यह बोले ॥ २५ ॥ हे नृप ! धरती तो और न्यारी नहीं है अब हमकूं कहा कर्तव्य है पर तेरो वचन मैं साँचो करूंगो
तेरी भक्तिते मैं प्रसन्न हूं ॥ २६ ॥ ताते देवलोक वैकुण्ठते मैं सौ योजन पृथ्वी विमल शुभ देऊंगो ॥ २७ ॥ नारदजी कहे हैं-ऐसे आनर्तते कहिके सौ योजन पृथ्वी वैकुण्ठमेंते
उखाडके दई और सुदर्शन दीनों ॥ २८ ॥ भयंकर जामें लहरीनके शब्द ता समुद्रमें सुदर्शनचक्रकूं धरिके भगवान्ने हे विदेहराजा ! ताके ऊपर भूमिको
स्थापन करी ॥ २९ ॥ तहां आनर्त राजा पुत्र पौत्रन करिके युक्त वैकुण्ठकी संपत्ति भोगत एक लाख वर्षताई राज्य करतोभयो ॥ ३० ॥ यह बात
सुनके आनर्तको पिता शर्याति बड़े अचंभेमें आयगयो वह आनर्तही देश कहायो आनर्तके प्रसादते ॥ ३१ ॥ रैवत नाम वाके बेटा भयो जो रैवत

॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ अन्यानमेदिनीलोकेकिंकर्तव्यंमयानृप ॥ स्ववचस्तदृतंकर्तुंत्वद्भक्त्यापरितोषितः ॥ २६ ॥ तस्माद्देवस्य
लोकस्यवैकुण्ठस्यपरंतप ॥ भूखण्डंयोजनशतंददामिविमलंशुभम् ॥ २७ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वानर्तनृपतिंभगवान्भक्तव
त्सलः ॥ वैकुण्ठाच्चसमुत्पाट्यभूखण्डंशतयोजनम् ॥ २८ ॥ चक्रंसुदर्शनंधृत्वासमुद्रेभीमनादिनि ॥ दधारभगवान्देवस्तस्योपरिविदेह
राट् ॥ २९ ॥ आनर्तोलक्षवर्षांतंतत्रराज्यंचकारह ॥ पुत्रपौत्रसमायुक्तोराजन्वैकुण्ठसंपदम् ॥ ३० ॥ इदंश्रुत्वाथशर्यातिःपितावैविस्मि
तोऽभवत् ॥ आनर्तोनामदेशोभूदानर्तस्यप्रसादतः ॥ ३१ ॥ रैवतस्तस्यपुत्रोभूच्छ्रीशैलस्यगिरेःसुतम् ॥ समुत्पाट्यस्वहस्ताभ्यामानर्तेष्वन्य
पातयत् ॥ ३२ ॥ सोभूद्रैवतनाम्नापिरैवतोनामपर्वतः ॥ कुशस्थलींविनिर्मायराज्यंकृत्वाथरैवतः ॥ ३३ ॥ समादायस्वकांकन्यांब्रह्मलोकंज
गामह ॥ बलदेवविवाहेपितत्कथाकथितामया ॥ ३४ ॥ तस्माद्द्वारावतींपुण्यांमोक्षद्वारंविदुःसुराः ॥ ३५ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीद्वारका
खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेद्वारकागमनकारणंनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्थंमयातेकथितंद्वारकागमनकारणम् ॥
सर्वपापहरंपुण्यंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ १ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ सर्वतीर्थमयीभूमिर्द्वारकानगरीशुभा ॥ तत्रमुख्यानितीर्थानिवदमां
मुनिसत्तम ॥ २ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ आप्रभासात्तीर्थमयीमर्यादीकृत्ययद्दिशम् ॥ भूमिर्मोक्षप्रदाराजन्द्वारकायोजनैःशतम् ॥ ३ ॥

श्रीशैलके बेटा पर्वतकूं अपने हाथनते उखारिके लायके आनर्त देशमें स्थापन करतोभयो ॥ ३२ ॥ सो रैवतके लायेते वो पर्वत रैवत नामको होतो भयो, द्वारिकापुरी
बनाय रैवतने राज्य कीनो ॥ ३३ ॥ सो रैवत अपनी कन्याको लेके ब्रह्मलोककूं गयो सो कथा बलदेवजीके विवाह समयमें मैंने तुमसों कहीही ॥ ३४ ॥ याहीते देवता या
द्वारिकापुरीकूं मोक्षको दरवज्जो बतावैंहैं ॥ ३५ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां द्वारकाखण्डे द्वारकागमनकारणं नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ नारदजी कहैहैं कि, यह मैंने तेरे आगे
द्वारिकाके आगमनको कारण कह्यो ये पवित्र और सब पापनको हरनहारो है अब तूं फिर कहा सुनिवेकी चाहना करैहै ॥ १ ॥ बहुलाश्व राजा कहैहैं कि, ये द्वारकाकी सब
तीर्थमयी भूमि है, हे मुनिश्रेष्ठ ! तहांके मुख्य २ तीर्थ मेरे आगे सब कहो ॥ २ ॥ तब नारदजी बोले कि, हे राजन् ! प्रभासक्षेत्रते लेके सबरी सौ योजनकी द्वारकाभूमि यह

करवेकी और मोक्षकी देनहारी है ॥ ३ ॥ द्वारिका नगरीके दर्शन करिके नर जो मनुष्य है नारायण हैजायहै, द्वारकामें मरोभयो गधाहू चतुर्भुज हैजायहै ॥ ४ ॥ द्वारिकाकी कथाके सुनेते द्वारकाके देखेते और द्वारका २ ऐसे कहतो जो मनुष्य तृणभी देके मृत्युकूं प्राप्त होय वो हू परमगतिको प्राप्त होयहै ॥ ५ ॥ एक समय प्रेमानन्दमें समाकुल रैवत भक्तकूं देखिके वाय अपनो दर्शन देके श्रीकृष्णके नेत्रमेंते आंसू गिरचो ॥ ६ ॥ वा नेत्रकी बूंदते गोमती नाम नदी होतीभई जाके दर्शनमात्रतेई ब्रह्महत्या छूट जायहै ॥७॥ गोमतीके तीरकी जो मृत्तिका गोपीचंदन वाकूं जो धारण करैहै वो सौ जन्मके किये पापनसों छुटि जायहै यामें संदेह नहीं है ॥ ८ ॥ और स्नानकालमें यदि मनुष्य गोमतीको नामहू लेलेय तो निःसंदेह वाको गोमतीके स्नानको फल मिलजाय है ॥९॥ मकरके सूर्यमें मायके महीनामें जो प्रयागमें स्नान करै तो हे विदेह ! सौ अश्वमेध यज्ञको फल प्राप्त

द्वारकांनगरींदृष्ट्वानरोनारायणोभवेत् ॥ द्वारकायांमृतःकोपिगर्दभोपिचतुर्भुजः ॥ ४ ॥ पश्यञ्छृण्वन्कथांतस्याद्वारकेतिवदन्कचित् ॥ दृष्टाद्यान्तृणंमृत्युंगतोयातिपरांगतिम् ॥५॥ एकदारैवतंभक्तंप्रेमानन्दसमाकुलम् ॥ प्रेक्ष्यस्वंदर्शनंदत्त्वाहरिरश्रुमुखोभवत् ॥६॥ तन्नेत्रबिंदुसंभूतागोमतीसामहानदी ॥ यस्यादर्शनमात्रेणब्रह्महत्याप्रमुच्यते ॥ ७ ॥ गोमतीतीरजंपुण्यंरजोयोधारयेन्नरः ॥ शतजन्मकृतात्पापान्मुच्यतेनात्रसंशयः ॥८॥ स्नानकालेगोमतीतिवदत्यपिनरःक्कचित् ॥ गोमत्यांस्नानजंपुण्यंलभतेवैनसंशयः ॥९॥ मकरस्थेरवौमाघेप्रयागेस्नानमाचरेत् ॥ शताश्वमेधजंपुण्यंसंप्राप्नोतिविदेहराट् ॥१०॥ तत्सहस्रगुणंपुण्यंगोमत्यांमकरेरवौ ॥ गोमत्याश्चैवमाहात्म्यंवक्तुंनालंचतुर्मुखः ॥११॥ गोमत्यांचक्रतीर्थेषुपाषाणनिचयाश्चये ॥ तेसर्वेचक्रतांयांतिपूजनीयाःप्रयत्नतः ॥ १२ ॥ चक्रचिह्नेचक्रतीर्थेद्वादश्यांस्नानमाचरेत् ॥ चक्रपाणिपदंयातिपापानांभाजनोपिहि ॥ १३ ॥ कोटिजन्मकृतैः पापैःपतितोयोपिपातकी ॥ चक्रतीर्थस्यसोपानमेत्यमुक्तिंसमारुहेत् ॥ १४ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ गोमत्यांहिमहानद्यांचक्रतीर्थंशुभार्थदम् ॥ कथंजातंबहुमतंतन्मेब्रूहिमहामते ॥ १५ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ अत्रैवोदाहरंतीममितिहासंपुरातनम् ॥ यस्यश्रवणमात्रेणपापहानिःपरंभवेत् ॥ १६ ॥ अलकेशोराजराजोनिधीशोधर्मभृत्प्रभुः ॥ वैष्णवंयज्ञमारेभेकैलासोत्तरभूमिषु ॥ १७ ॥

होय ॥ १० ॥ तातें हजारगुणो पुण्य मकरके सूर्यमें गोमतीस्नानको है, मकरके सूर्यमें गोमतीके माहात्म्यकूं तो ब्रह्माजीहू नहीं कहिसकैहैं ॥ ११ ॥ गोमतीमें चक्रतीर्थके विषै जे पाषाण हैं वे सब चक्ररूप हैजाय हैं वे पूजन करिवेयोग्यहैं ॥ १२ ॥ चक्रके चिह्नहैं जामें ऐसे चक्रतीर्थमें जो द्वादशीके दिन स्नान करै तो कैसोऊ पापी होय तोऊ चक्रपाणिके पदकूं प्राप्त होयहै ॥ १३ ॥ जो किरोड़ जन्मनके पातकनते पापी पतितहू होय तोऊ गोमती चक्रतीर्थकी सिढीपै पाय धरेते मुक्तिपदवीकूं आरोहण करै है ॥ १४ ॥ बहुलाश्व पूछैहै कि, गोमती महानदीमें ये चक्रतीर्थ शुभ अर्थको देनवारो काहेते भयोहै हे महामते ! ये आप मोसों कहो ॥ १५ ॥ तब नारदजी बोले कि, यहां एक बडो पुरानो इतिहास वर्णन करैहैं-जाके सुनेईते अतिशय पापकी हानि होयहै ॥ १६ ॥ एक समय अलकापुरीके मालिक नौ निधिनको स्वामी बडो धर्मात्मा जो कुबेर है वाने

कैलासकी उत्तर दिशाकी भूमिमें वैष्णव यज्ञको प्रारम्भ कीनो ॥ १७ ॥ ताके यज्ञमें विष्णुभगवान् अपने धाम वैकुण्ठते आये और इनके संग ब्रह्माजी, शिवजी, इंद्र, जलको पति वरुण ॥ १८ ॥ वायु, यम, सूर्य, चन्द्रमा, सर्वजनेश्वरी पृथ्वी, गन्धर्व, अप्सरा, सिद्ध ये सब वहां आये ॥ १९ ॥ और देवऋषि, ब्रह्मऋषि, धनाध्यक्ष कुबेर और कुबेरको बेटा नलकूबर येभी सब आये ॥ २० ॥ तब वहां यज्ञकी रक्षाकूँ तो वीरभद्र ठाड़ो भयो, सेवामें गणेशजी रहे और उणचास मरुद्गण परोसिवेको रहे ॥ २१ ॥ और धर्ममें तत्पर स्वामिकार्तिकजी सभाकी पूजामें तत्पर रहे ऐसोही घण्टानाद और पार्श्वमौलि जे दोनों कुबेरके मंत्री ॥ २२ ॥ जे सब शास्त्रवेत्तानमें श्रेष्ठ हैं वे दानाध्यक्षके काममें मालिक रहें ऐसे ये यज्ञ विधिपूर्वक और परमोत्सवसों भयो ॥ २३ ॥ जब महामना कुबेरने यज्ञांतस्नान कऱ्यो तब परमभाग देवतानकूँ दीन्हों और ब्राह्मणनकूं दक्षिणा दीनी ॥

तस्ययज्ञेस्वयंविष्णुरागतोवैस्वधामतः ॥ ब्रह्माशिवोजंभभेदीवरुणोयादसांपतिः ॥ १८ ॥ वायुर्यमोरविःसोमःक्षितिःसर्वजनेश्वरी ॥ गन्धर्वाप्सरसःसिद्धाःसर्वेतत्रसमाययुः ॥ १९ ॥ देवर्षयःसमाजग्मुस्तथाब्रह्मर्षयोनृप ॥ धनाध्यक्षोभवत्तस्यपुत्रस्तुनलकूबरः ॥ २० ॥ रक्षायांवीरभद्रोभूत्सत्सेवार्थंगजाननः ॥ यथामरुद्गणाःसर्वेपरिवेषणकारिणः ॥ २१ ॥ बाहुलेयः सभापूजामकरोद्धर्मतत्परः ॥ घण्टानादःपार्श्वमौलिःकुबेरस्यतुमंत्रिणौ ॥ २२ ॥ सर्वशास्त्रविदांश्रेष्ठौदानाध्यक्षौबभूवतुः ॥ एवंहिविधिवद्यज्ञोबभूवपरमोत्सवः ॥ २३ ॥ अध्वरावभृथस्नातोराजराजोमहामनाः॥ परंभागंचदेवेभ्योविप्रेभ्योदक्षिणामदात् ॥२४॥एवंपूर्णेध्वरेमुख्येतुष्टेदेवर्षिसत्तमे ॥ आजगामाथदुर्वासादण्डीछत्रीजटाधरः ॥ २५ ॥ क्रोधीकृशःपादुकांघ्रिर्दीर्घश्मश्रुःकृशोदरः ॥ दर्भासनसमित्पात्रमृगचर्मधरःपरः ॥ २६ ॥ तमागतंसमागम्यपूजयित्वाविधानतः ॥ भयभीतःपरिक्रम्यकुबेरःप्रणनामह ॥ २७ ॥ अद्यमेसफलंजन्मसफलंमंदिरंचमे ॥ अद्यमेसफलोयज्ञोब्रह्मंस्त्वय्यागतेसति ॥ २८ ॥ इत्थंसंतोषितस्तेनदुर्वासाभगवान्मुनिः ॥ देवंमनुष्यधर्माणंप्राहप्रहसिताननः ॥ २९ ॥ त्वंराजराजोधर्मात्मादानीविप्रपरायणः ॥ कृतस्तेवैष्णवोयज्ञोविष्णुसंतोषकारणः ॥ ३० ॥ नयाचितोमयात्वंवैक्वापिवैश्रवणप्रभो ॥ अद्यैवयाचनांकुर्वेज्ञात्वात्वांदानिसत्तमम् ॥ ३१ ॥

॥ २४ ॥ ऐसे जब यज्ञ पूर्ण भयो सब देव ऋषि प्रसन्न भये इतनेईमें वहां दुर्वासा नाम ऋषि दण्ड लीये, छत्री लगाये, जटाधारी ॥ २५ ॥ क्रोधकी मूर्ति खडाम पहरे, बड़ी २ डाढी लटकाये लट्यो पेट, दाभको आसन, कमण्डलु, समिधा लिये मृगचर्म ओढ़े आये ॥ २६ ॥ तिनकूं आयो देखिके कुबेर उठिके आय विधिपूर्वक पूजा करिके भयभीत है परिक्रमा देके दण्डोत करिके यह बोले कि, ॥ २७ ॥ आज मेरो जन्म सफल भयो, मेरो मन्दिर सफल भयो, मेरो यज्ञ सफल भयो, हे ब्रह्मन् ! जो तुम मेरे घर आये हैं याते ॥ २८ ॥ ऐसे कुबेरने प्रसन्न किये भगवान् दुर्वासा मुनि हँसते २ मनुष्यधर्मा कुबेरते ये बोले ॥ २९ ॥ कि, हे राजराज ! तुम बडे धर्मात्मा हो, दानी हो, ब्रह्मभक्त हो तुमने विष्णुकूं प्रसन्न करनहारो ये विष्णुयज्ञ कऱ्योहै ॥ ३० ॥ मैंने आजताईं तोपै कबहूं याचना नहीं करीहै—हे वैश्रवण प्रभो ! तोकूँ दानीनमें श्रेष्ठ जानिके आज तोपै मैं याचना

करूंहूं ॥३१॥ सो मेरी याचनाकूं जो तूं सफल करैगो तौ मैं तोकूं उत्तम वर देऊंगो और जो मेरे याचितको न देयगो तो अतिभयंकर शापते तोकूं भस्म करिदेऊंगो ॥३२॥ आज तेरे घरमें तीनो लोकनकी जे निधि है वे सब नौ निधि तेरे हैं तिनकूं मोय देदे तेरो कल्याण होउ, जाके लीये मैं आयोहूँ ॥ ३३ ॥ नारदजी कहैंहैं–ऐसे सुनिके राजराज उदार बुद्धि कुबेर बोल्यो–अच्छो मैं तुमकूं दूंगो तुम लेउ ये बात कुबेरने कही ॥३४॥ ऐसे निधिनकूं देवेको उद्यतभये धनाध्यक्ष कुबेरते निधिनको ईश्वर जे घंटानाद और पार्श्वमौलि दोनों दाना ध्यक्ष है वे लोभमें मोहित हैके बोले ॥ ३५ ॥ यह ब्राह्मण तो इकिलो है और लोभी है, निधिनकूं कहा करैगो, एक दिव्य लक्ष याकूं देदेउ जाकीते अपनी जीविकाकी रक्षा करो ॥ ३६ ॥ नारदजी कहैंहैं कि, तिनके कठोर वचन सुनिके दुर्वासाकूं कोप आयगयो, भौंहें चढाय लीनी और लाल लाल नेत्र हैआये ॥ ३७ ॥ तब स्थाली

मद्याच्ञांसफलीकुर्यास्तुभ्यंदास्यामिसद्वरम् ॥ नोचेत्त्वांभस्मसात्कुर्वेंशापेनातिभयेनवै ॥ ३२ ॥ वर्ततेत्वद्गृहेसर्वेंत्रैलोक्यनिधयोनव ॥ तान्मे प्रयच्छभद्रंतेतदर्थंगतवानहम् ॥ ३३ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एतच्छ्रुत्वाराजराजोदानशीलउदारधीः ॥ ओमितिप्रतिगृह्णीष्वप्राहतंगुह्य केश्वरः ॥ ३४ ॥ एवंनिधीन्प्रदास्यंतंदानाध्यक्षोनिधीश्वरम् ॥ घण्टानादःपार्श्वमौलिरूचतुर्लोभमोहितौ ॥ ३५ ॥ ॥ द्वावूचतुः ॥ ॥ एकोयंब्राह्मणोलोभीनिधिभिःकिंकरिष्यति ॥ लक्षंदिव्यंदेहिचास्मैवृत्तिरक्षतथोत्तराम् ॥ ३६ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ तद्वचःपरुषंश्रुत्वा दुर्वासाःक्रोधविग्रहः ॥ भ्रूभंगकुटिलीभूतेरक्तनेत्रेचकारह ॥ ३७ ॥ स्थालीवसर्वब्रह्मांडंचचालनिमिषद्वयम् ॥ प्रणतंधनदंवीक्ष्यताभ्यांशापं ददौमुनिः ॥ ३८ ॥ ॥ मुनिरुवाच ॥ ॥ घण्टानादमहादुष्टपापबुद्धेतिलुब्धक ॥ ग्राहवत्त्वंधनग्राहीग्राहोभवमहाखल ॥ ३९ ॥ पार्श्व मौलेपापबुद्धेधनलोभमदान्वितः ॥ गजवत्प्रेरणांकुर्वंस्त्वंगजोभवदुर्मते ॥ ४० ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ ताभ्यांशापंमुनिर्दत्त्वानिधिंनी त्वाकुबेरतः ॥ वरंददौपुनस्तस्मैदुर्वासादुर्लभंपरम् ॥ ४१ ॥ अस्माद्दानाच्चद्विगुणाभवंतुनिधयोनव ॥ इत्युक्त्वासनिधिःप्रागाद्दहोतेजीयसां बलम् ॥ ४२ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीद्वारकाखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेगोमत्युपाख्यानेचक्रतीर्थमाहात्म्यंनामदशमोध्यायः ॥ १० ॥ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ कुबेरमन्त्रिणौदीनौविप्रशापविमोहितौ ॥ तत्रसाक्षात्स्वयंविष्णुःप्राहतौशरणंगतौ ॥ १ ॥

की नाईं दो छिनतक ब्रह्मांड हालनलग्यो, तब कुबेरने दंडोत करी तब कुबेरको प्रणाम करत देखके दुर्वासाने उन दोनों मंत्रीनकूं शाप दियो ॥ ३८ ॥ कि, ये घंटानाद महादुष्ट पापी लोभी ग्राहकी नाईं धनग्राही है ताते ये ग्राह हैजायगो ॥ ३९ ॥ और हे पार्श्वमौले ! पापबुद्धि ! धनलोभी ! मतवारे गजकी नाईं प्रेरणा करै है जाते तूं हाथी हैजा ॥ ४० ॥ नारदजी कहे हैं कि, तिन दोनोनकूं शाप देके कुबेरपेते निधि लेके परम दुर्लभ कुबेरकूं वर देतभये ॥ ४१ ॥ कि, या दानते तेरे दूनी नौ निधि हैजायगी ऐसे कहिके कुबेरने दीनी नौ निधिनको दुर्वासा लेआये, अहो ! देखो तेजस्वीनको बल ऐसो है ॥ ४२ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां द्वारकाखण्डे भाषाटीकायां गोमत्युपाख्याने चक्रतीर्थमाहात्म्यं नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ नारदजी कहे हैं–अब वे दोनों कुबेरके मंत्री ब्राह्मणके शापते दीन हैगये, मोहकूं प्राप्तभये विष्णुकी शरण गये ॥ १ ॥

तब साक्षात् स्वयं विष्णु भगवान् शरणआये उन दोननसों बोले कि, मेरी पूजा युक्त यज्ञमें नाहकमें तुम दोनों दुःखी हेगये, देखौ ब्राह्मणको वचन दूरि करिबेकूं मैंहू समर्थ नहीं हूं ॥ ॥ २ ॥ जब तुम ग्राह और हाथी होउगे फिर जब आपुसमें तुम्में युद्ध होयगो तब तुम मेरी कृपाते फिर ऐसेई हैजाउगे ॥ ३ ॥ नारदजी कहैं हैं-ऐसे जब भगवान्ने कही तब वे दोनो कुबेरके मंत्री ग्राह हाथी तो भये पर उनके अपने पूर्वजन्मकी यादि बनीरही ॥ ४ ॥ घंटानाद तो गोमतीमें ग्राह बन्यो सौ वर्षताई और पार्श्वमौलि बडो विकराल भयंकर शरीर जाको ऐसो हाथी भयो ॥ ५ ॥ रैवत पर्वतके वनमें चारि जाके दांत काजरते कारो सौ धनुष ऊंचो पीठि जाकी ऐसो गजेन्द्र भयो ॥ ६ ॥ कैसो वन है जामें वंजुलके, कुडाके, कुन्दके, बेर, वेत, बांसकेरा, भोजपत्र, बड़, कचनार, विजैसार, अर्जुन ॥ ७ ॥ कल्पवृक्ष, बकाइन, अशोक, आम, चंपा, चंदन, कटहर, गूलर, पीपर,

॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ मदर्चासंयुतेयज्ञेभवंतौदुःखसंयुतौ ॥ ब्राह्मणानांवचोहंवैदूरीकर्तुंनचक्षमः ॥ २ ॥ भवंतंग्राहमातंगौयुद्धंहि युवयोर्यदा ॥ तदावैमत्प्रसादेनप्रकृतिंस्वांगमिष्यथः ॥ ३ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्तौहरिणातौद्रौराजराजस्यमंत्रिणौ ॥ बभूवतुर्ग्राहगजौजातिस्मरणसंयुतौ ॥ ४ ॥ घण्टानादोभवद्ग्राहोगोमत्यांचशतंसमाः ॥ विकरालोमहाभीमःशश्वद्रौद्रवपुर्द्धरः ॥ ५ ॥ पार्श्वमौलि र्गजेंद्रोभूद्रैवतस्यगिरेर्वने ॥ चतुर्दंतःकज्जलाभःपृष्ठप्रोच्चोधनुःशतम् ॥ ६ ॥ वंजुलैःकुरबैःकुन्दैर्बदरैर्वेत्रवेणुभिः ॥ रंभभूर्जवटैर्युक्तेकोविदारासनार्जुनैः ॥ ७ ॥ मन्दारपाटलाशोकचूतचंपकचन्दनैः ॥ पनसोदुम्बराश्वत्थखर्जूरैर्बीजपूरकैः ॥ ८ ॥ प्रियालाम्रातकाम्रैश्चक्रमुकैः परि मंडिते ॥ रैवतस्यवनेदीर्घेविचचारमहागजः ॥ ९ ॥ एकदामाधवेमासिगजेंद्रोगिरिगह्वरात् ॥ स्नातुंतांगोमतींगंगामयथौसगणोनदन् ॥ ॥ १० ॥ चिरंसमवगाह्याप्सुशुण्डादंडैरितस्ततः ॥ करेणकलभान्सर्वान्स्नापयामासनागराट् ॥ ११ ॥ महान्ग्राहोपितत्रस्थोबलीयान्दैवनोदितः ॥ अग्रहीच्चरणेनागंक्रोधपूरितविग्रहः ॥ १२ ॥ तेनैवतद्ध्रदेनीतोगजेंद्रोबलदर्पितः॥ समाकृष्यबहिःप्रासंपुनस्तेनविकर्षितः ॥१३॥ करेणवश्चकलभास्तंसंतारयितुमक्षमाः ॥ एवंतयोर्युध्यतोश्चकर्षतोर्हिबहिर्मिथः ॥ १४ ॥

खजूर, बिजौरे, ॥ ८ ॥ चिरौंजी, लोदन, आम, सहतूत और सुपारी इन वृक्षन करके मंडित जो रैवत पर्वतको वन, बडो दीर्घ तामें वुह हाथी विचरतोभयो ॥ ९ ॥ एक दिना वैशाखके महीनामें वो गजेंद्र वा गह्वर वनमेंते गोमती गंगा न्हायवेकूं गणसहित बडो नाद करतो आयो ॥ १० ॥ पहले बहुत देरतक आप न्हायके फिर सूंडते बहुत देरतक पानी उछारत इतमें उतमें हथिनीनकूं और अपने छोटे छोटे बचानको न्हवावत भयो ॥ ११ ॥ इतनेहीमें जो एक बडो बली ग्राह वहां रहैहो सो दैवको भेज्यो कोधमें भर्यो आयौ और वाने हाथीको पाव पकरलियो ॥ १२ ॥ और बलके गर्ववार वा हाथीकूं वसीटके नीचे अपने घरकूं लैगयो फिर गजेंद्र वा मगरको बाहिर खेंचिके लेआयो फिर वो वाय खेंचिके भीतर लेगयो ॥ १३ ॥ हथिनीनकी और बचानकी सामर्थ्य वाके बचायवेकी न भई, ऐसे बाहिर भीतर खेंचातानीमें ॥ १४ ॥

जब सबनके देखते देखते तिनको पचपन वर्ष व्यतीत हैगये तब गजकूं बडो कष्ट भयो पहले जन्मकी यादि आयगई ॥ १५ ॥ सो प्रेमलक्षणा भक्तिकरिके भगवान्के चरणको
आश्रय जाको मृत्युकी फांसीमें पर्यो गजराज हरिको स्मरण करतोभयो ॥ १६ ॥ गजेन्द्र बोले–हे श्रीकृष्ण ! हे कृष्ण ! हे सखे ! हे कृष्णवपुर्धारी ! हे सुरेश ! हे विष्णो !
हे पूर्णप्रभो ! हे परमपावन ! हे पुण्यकीर्ते ! हे परमेश्वर ! तुम्हारे अर्थ मेरी नमस्कार है या पापकी फांसीतें मेरी रक्षा करो करो ॥ १७ ॥ नारदजी कहे हैं–ऐसें ग्राहने पकरचोहै अंग
जाको और हरिको स्मरण करैहै ऐसे गजको जानिके दीनवत्सल भगवान् गरुडपै चढिके बडे वेगसों आये ॥ १८ ॥ फिर आपही गरुडपैतें उतरि दौरके चक्र चलावतेभये, चक्रके
लगेके पहलेंई ग्राहको वो अद्भुत शिर धडते न्यारो हैगयो जैसे दीनताके आयेके पहलेंई धन जातो रहैहै ॥ १९ ॥ शिरके जुदेभयेपीछे गोमतीमें जो शब्द करतो चक्र गिरचो सो सब

पंचाशत्पंचवर्षाणिव्यतीयुःपश्यतांसताम् ॥ एवंकश्मलमापन्नोगजोजातिस्मरोमहान् ॥ १५ ॥ प्रेमलक्षणयाभक्त्याहरिपादकृताश्र
यः ॥ सस्मारश्रीहरिंदेवंमृत्युपाशवशंगतः ॥ १६ ॥ ॥ गजेंद्रउवाच ॥ ॥ श्रीकृष्णकृष्णसखकृष्णवपुर्दधानकृष्णायतेप्रणति
रस्तुसुरेशविष्णो ॥ पूर्णप्रभोपरमपावनपुण्यकीर्तेमांपाहिपाहिपरमेश्वरपापपाशात् ॥ १७ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवंग्राहगृहीतां
गंस्मरंतंचहरिंहरिः ॥ ज्ञात्वारुह्यखगंवेगादधावद्दीनवत्सलः ॥ १८ ॥ स्वयंखगात्समुत्तीर्य्यधावंश्चक्रंसमाक्षिपत् ॥ चक्रेप्राप्तेपूर्वमेवग्राह
स्यापिशिरोद्भुतम् ॥ १९ ॥ दैन्यंप्राप्तेधनमिवदेहाच्छिन्नंबभूवह ॥ पश्चात्प्रपतितंचक्रंगोमत्यांचह्रदेनदत् ॥ पाषाणनिचयान्सर्वांश्चक्राकारां
श्चकारह ॥ २० ॥ तन्नेमिसंघर्षभवंचक्रतीर्थंशुभावहम् ॥ तच्चक्रदर्शनाद्राजन्ब्रह्महत्याप्रमुच्यते ॥ २१ ॥ ग्राहश्छिन्नशिराभूत्वापूर्वरूपंद
धारह ॥ श्रीकृष्णानुग्रहाद्धस्तीदिव्यरूपोबभूवसः ॥ २२ ॥ परिक्रम्यहरिंनत्वास्तुत्वादेवंकृतांजली ॥ कुबेरमंत्रिणौतौद्वौजग्मतुःस्वपदंपु
नः ॥ २३ ॥ देवेषुपुष्पंवर्षत्सुजयध्वनिंनदत्सुच ॥ जगामभगवान्साक्षात्स्वंधामप्रकृतेःपरम् ॥ २४ ॥ चक्रतीर्थकथामेनांयःशृणोतिनरोत्त
मः ॥ चक्रतीर्थस्नानफलंसंप्राप्नोतिनसंशयः ॥ २५ ॥ गजग्राहकथांपुण्यांयःशृणोतिसमाहितः ॥ दुःस्वप्नंनश्यतेतस्यसुस्वप्नंभवतिध्रु
वम् ॥ २६ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीद्वारकाखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेचक्रतीर्थोत्पत्तौगजग्राहमोक्षोनामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

पाषाणनकूं चक्राकार करिदेतोभयो ॥ २० ॥ ता चक्रकी धारके घिसवेते शुभदाता चक्रतीर्थ हैगयो, या चक्रके दर्शनतेंई ब्रह्महत्याको नाश हैजाय है ॥ २१ ॥ ग्राहको शिर जब कटि
गयो तब याको वोही पहिलो रूप हैगयो और श्रीकृष्णके अनुग्रहते या हाथीकोहू दिव्य रूप हैगयो ॥ २२ ॥ तब दोनों कुबेरके मंत्री भगवान्को प्रणामकर परिक्रमा कर हाथ जोड
हरिकी स्तुति करिके अपने धामको चले गये ॥ २३ ॥ देवता हरिके ऊपर पुष्पनकी वर्षा करनलगे, जयजय शब्द करैहैं तब भगवानहू मायाते परे जो अपनो धाम ताकूं जातभये
॥ २४ ॥ जो कोई नरोत्तम चक्रतीर्थकी या कथाकूं सुने सो चक्रतीर्थके स्नानके फलकूं प्राप्त हैजाय यामें संदेह नहीं है ॥ २५ ॥ या गज ग्राहकी कथाकूं जो कोई सावधान हैके
सुने ताके दुःस्वप्नको फल नष्ट हैके वो वाको सुस्वप्न हैजाय ॥ २६ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां द्वारकाखण्डे भाषाटीकायां चक्रतीर्थोत्पत्तौ गजग्राहमोक्षणं नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

नारदजी कहेहै कि. तीर्थनमें मुख्य शंखोद्धारमें जो सोनेको दान करे सो सब उपद्रवन करिकै वर्जित जो विष्णुलोक है ताकूं प्राप्त होयहै ॥ १ ॥ श्रीकृष्णको भक्त शान्तात्मा त्रित नामको महामुनि तीर्थयात्राके प्रसंगते आनर्त देशमें आयो ॥ २ ॥ सुन्दर सरोवर देखिके वाने स्नान करो, हरिकी पूजा करी तिनकी पूजामें एक बहुत सुंदर शंख हो जामें शुभ लक्षण हैं ॥ ३ ॥ तिनको कोई एक कक्षीवान् शिष्य हो वो अतिलोभते वा शंखको चुरायके लेगयो, पूजाको शंख जब जातरह्यो तब त्रितकों क्रोध आयगयो सो यह बोलो ॥ ४ ॥ जाने हमारो पूजाको शंख लीनोहोय सो अवश्य शंखही हैजाऊ ताई समें कक्षीवान् शापको मारचो शंख हैगयो ॥ ५ ॥ तब गुरूनके चरणनमें गिरपरचो और कही कि, हे प्रभो ! मेरी रक्षा करो, तब शीघ्रही शांत हैके त्रित बोले कि, रे दुर्बुद्धी ! यह तैनें कहा कन्यो ? चोरीके दोषते तूं पापकूं भोग मेरो वचन झूंठो नहीं होयगो ॥ ६ ॥

॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ शंखोद्धारेतीर्थमुख्येस्वर्णदानंददातियः ॥ सगच्छेद्वैष्णवंलोकंसर्वोपद्रववर्जितम् ॥ १ ॥ श्रीकृष्णभक्तःशांतात्मा त्रितोनाममहामुनिः ॥ तीर्थयात्राप्रसंगेनप्राप्तआनर्तभूमिषु ॥ २ ॥ दृष्ट्वाशुभंसरःस्नात्वाहरेःपूजांचकारह ॥ तत्पूजायांमहाशंखंसुन्दरंलक्षणै र्वृतम् ॥ ३ ॥ चोरयामासकक्षीवांस्तस्यशिष्योतिलोभतः ॥ पूजार्शंखंगतंवीक्ष्यक्रुद्धःप्राहत्रितोमुनिः ॥ ४ ॥ येननीतस्तुमेशंखःसशंखोभ वतुध्रुवम् ॥ तदैवशंखरूपोभूत्कक्षीवाञ्छापपीडितः ॥ ५ ॥ तत्पादयोर्निपतितःपाहिमामित्युवाचह ॥ शीघ्रंशांतस्त्रितःप्राहदुर्मतेकिंकृतंत्व या ॥ स्तेयदोषाद्भुंक्ष्वपापंमद्वचोनोमृषाभवेत् ॥ ६ ॥ भजश्रीकृष्णपादाब्जंसतेमोक्षंकरिष्यति ॥ इत्युक्त्वाथगतेराजन्त्रितेदेवेमहामुनौ ॥ ७ ॥ सरोवरेनिपतितःकक्षीवाञ्छंखरूपधृक् ॥ प्रवदन्कृष्णकृष्णेतिशतवर्षस्थितोभवत् ॥ ८ ॥ परिपूर्णतमःसाक्षाद्भगवान्भक्तवत्सलः ॥ आगत्य सरसस्तीरंमाभैरित्यभयंददौ ॥ ९ ॥ तंमेघनादगंभीरांगिरंश्रुत्वाजलेचरः ॥ चुक्रोशपाहिपाहीतिदेवदेवजगत्पते ॥ १० ॥ भुजगेंद्रभोग रुचाभुजेनभगवान्प्रभुः ॥ शंखंभक्तंगजमिवप्रोज्जहारदयापरः ॥ ११ ॥ तदैवदिव्यरूपोभूच्छंखरूपंविहायसः ॥ कृतांजलिर्हरिंनत्वास्तुतिं चक्रेयदाचसः ॥ १२ ॥ ॥ कक्षीवानुवाच ॥ ॥ वासुदेवनमस्तेस्तुगोविंदपुरुषोत्तम ॥ दीनवत्सलदीनेशद्वारकेशपरेश्वर ॥ १३ ॥ ध्रुवेध्रुवपदंदात्रेप्रह्लादस्यार्तिहारिणे ॥ गजस्योद्धारिणेतुभ्यंबलेर्बलिविदेनमः ॥ १४ ॥

तूं श्रीकृष्णके चरणकमलको भजन कर, तेरी मोक्ष हैजायगी हे राजन् ! ऐसे कहिके जब त्रित चलेगये ॥ ७ ॥ तब कक्षीवान् शंखरूप हैके सरोवरमें जाय परचो, कृष्ण कृष्ण ऐसे कहत सौ वर्ष व्यतीत हैगये ॥ ८ ॥ परिपूर्णतम भक्तवत्सल भगवान् सरोवरके तीरपै आयके यह बोले कि, तूं भय मति करै ऐसे अभय देतेभये ॥ ९ ॥ तब वुह शंख मेघकीसी गर्जन जो वो वाणी है ताकूं सुनिके पुकान्यो, हे देव ! हे जगत्पते ! (पाहि २) रक्षा करो २ ॥ १० ॥ तब सर्पसी सुढार अपनी भुजानते दयापर प्रभु गजराजकी नाईं शंख जो भक्त है ताहि उद्धार करतेभये ॥ ११ ॥ ताई समे वो दिव्यरूप हैगयो शंखरूप छोडिदियो प्रणाम कर हाथ जोड भगवान्की स्तुति करनलग्यो ॥ १२ ॥ कक्षीवान् बोलो–हे वासुदेव ! तुमारे अर्थ नमस्कार है, हे गोविन्द ! हे पुरुषोत्तम ! हे दीनवत्सल ! हे दीनेश ! हे द्वारिकेश ! हे परेश्वर ॥ १३ ॥ ध्रुवकूं ध्रुवपदके देनहारे, प्रह्लादकी पीड़ा

हरनवारे, गजको उद्धार करनहारे, बलिकी बलिकूं जाननहारे तुमकूं नमस्कार है ॥ १४ ॥ द्रौपदीके चीरके बढावनहारे विष, अग्नि और वनवासते पांडवनकी रक्षा करनहारे तुम तिनके अर्थ नमस्कारहै ॥ १५ ॥ यादवनकी रक्षा करनहारे, इंद्रते गोपनकी रक्षा करनहारे, गुरु, माता, ब्राह्मण इनकूं पुत्र देनहारे तुम तिनके अर्थ नमस्कार है ॥ १६ ॥ जरासंधके रोकेसे आर्त राजानके मोक्ष करनहारे, नृग राजाके उद्धार करनहारे, सुदामाकी दीनता हरनहारे तुम तिनके अर्थ नमस्कार है ॥ १७ ॥ वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध या चतुर्व्यूहके अर्थ नमस्कार है ॥ १८ ॥ तुमही माता हो तुमही पिता हो तुमही बन्धु सखा हो तुमही विद्या हो तुमही द्रव्य हो, हे देवदेव ! तुमही मेरे सब हो ॥ १९ ॥ नारदजी कहैं हैं–ऐसे कक्षीवान् भगवान्की स्तुति करिके प्रेमसों

द्रौपदीचीरसंत्राणकारिणेहरयेनमः ॥ गराग्निवनवासेभ्यःपांडवानांसहायिने ॥१५॥ यादवत्राणकर्त्रेचशक्रादाभीररक्षिणे ॥ गुरुमातृद्विजानांचपुत्रदात्रेनमोनमः ॥ १६ ॥ जरासंधनिरोधार्तनृपाणांमोक्षकारिणे ॥ नृगस्योद्धारिणेसाक्षात्सुदाम्नोदैन्यहारिणे ॥१७॥ वासुदेवायकृष्णायनमःसंकर्षणायच ॥ प्रद्युम्नायानिरुद्धायचतुर्व्यूहायतेनमः ॥ १८ ॥ त्वमेवमाताचपितात्वमेवत्वमेवबन्धुश्चसखात्वमेव ॥ त्वमेवविद्याद्रविणंत्वमेवत्वमेवसर्वंममदेवदेव ॥१९॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ एवंस्तुत्वाहरिंराजन्कक्षीवान्प्रेमपूरितः ॥ विमानवरमास्थाययादवानांचपश्यताम् ॥२०॥ विभ्राजयन्दशदिशःशतसूर्यसमप्रभः ॥ जगामवैष्णवंलोकंसर्वोपद्रववर्जितम् ॥२१॥ शंखोद्धारःकृतोयस्मिन्हरिणामैथिलेश्वर ॥ तस्मात्तीर्थंमहापुण्यंशंखोद्धारप्रथांगतम् ॥ २२ ॥ शंखोद्धारकथामेतांयःशृणोतिनरोत्तमः ॥ शंखोद्धारस्नानफलंलभतेनैनसंशयः ॥ २३ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीद्वारकाखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेशंखोद्धारमाहात्म्यंनामद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ प्रभासस्यापिमाहात्म्यंशृणुराजन्महामते ॥ सर्वपापहरंपुण्यंतेजसांवर्द्धनंपरम् ॥ १ ॥ गोदावर्यांगुरौसिंहेहरक्षेत्रेचकुंभगे ॥ रविग्रहेकुरुक्षेत्रेकाश्यांचन्द्रग्रहेतथा ॥ २ ॥ यत्पुण्यंलभतेराजन्स्नानतोदानतोनरः ॥ तस्माच्छतगुणंपुण्यंप्रभासेचदिनेदिने ॥ ३ ॥

पूर्णभयो वो विमानमें बैठिके यादवनके देखत २ वैकुण्ठकूं गयो ॥ २० ॥ दशौं दिशानमें उजीतो करतो सौ सूर्यकोसो जाको तेज ऐसो वो निरुपद्रव जो विष्णुलोक ताकूं गयो ॥२१॥ हे मिथिलेश्वर ! हरिने जो या तीर्थमें शंखको उद्धार कीनो है यासों या तीर्थको नाम शंखोद्धार तीर्थ करयो है याते ये बड़ो पवित्र शंखोद्धारतीर्थ भयो है ॥ २२ ॥ या शंखोद्धार तीर्थकी जो कोई मनुष्य कथा सुने वाकूं निःसंदेह शंखोद्धारके स्नानको फल होय ॥ २३ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां द्वारकाखण्डे भाषाटीकायां शंखोद्धारवर्णनं नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ नारदजी कहैं हैं कि, हे राजन् ! अब प्रभासको माहात्म्य सुनि, हे महामते ! जो सब पापको हरनहारो और तेजको बढावनवारो है ॥१॥ गोदावरीमें तो सिंहकी बृहस्पतिमें हरिद्वारमें कुंभकी बृहस्पतिमें और सूर्यग्रहणमें कुरुक्षेत्रमें, काशीमें चन्द्रग्रहणमें ॥ २ ॥ इनमें स्नान दान करवेसों जो कछू पुण्य होयहै तिनते सौगुनो पुण्य

प्रभासक्षेत्रमें दिन २ में होयहै ॥ ३ ॥ याही प्रभासतीर्थमें न्हायके दक्षके शापते खईके रोगसों चन्द्रमा छूटगयो और कला नष्ट हैगईही सो फिर प्राप्त हैगई ॥ ४ ॥ ये महापुण्यतम तीर्थ है जहां पश्चिमवाहिनी सरस्वती है तामें जो पापीहू स्नान करे तो ब्रह्ममय हैजाय है ॥ ५ ॥ ताके तीरपै एक बोधि पीपल है तहां श्रीकृष्णने उद्धवकूं भागवत दान करयो है ॥ ६ ॥ तहां स्नान करि विधिते पूजन कर बोधि पीपलकूं छीके वेदके तुल्य जो भागवत पुराण याकूं सुनें ताके हाथमें विष्णुपद धरयो है ॥ ७ ॥ एक श्लोक आधो चौथाई मनकूं जीत मौन लेके सुने तौ विष्णुपदकूँ जाय ॥ ८ ॥ याही प्रभासमें भादोंकी पूर्णमासीकूं सोनेके सिंहासनपै धरिके जो मनुष्य भागवतकूं पुण्य करै सो परम गतिकूं प्राप्त होय है ॥ ९ ॥ जाने अपने कानन्ते श्रीमद्भागवत न सुनी तिन नरनको भूमिमें वृथाही जन्म है ॥ १० ॥ जाने भागवत पुराण न सुन्यो न पुराणपुरुषको आराधन करयो और

यत्रस्नात्वादक्षशापाद्गृहीतोयक्ष्मणोडुराट् ॥ विमुक्तःकिल्बिषात्सद्योभेजेभूयःकलोदयम् ॥ ४ ॥ महापुण्यतमाराजन्यत्रप्रत्यक्सरस्वती ॥ तस्यांस्नात्वानरःपापीसाक्षाद्ब्रह्ममयोभवेत् ॥५॥ तत्तीरेवर्ततेराजन्नाम्नावैबोधपिप्पलम् ॥ कृष्णेनयत्रोद्धवायदत्तंभागवतंशुभम् ॥ ६ ॥ तेनत्वा भ्यर्च्यविधिवत्स्पृष्ट्वाश्रीबोधपिप्पलम् ॥ शृणोतियोभागवतंपुराणंब्रह्मसंमितम् ॥ ७ ॥ श्लोकार्धश्लोकपादंवामौनीनियतमानसः ॥ तस्यपाणौ भवेद्राजन्वैष्णवंपरमंपदम् ॥ ८ ॥ प्रौष्ठपद्यांपूर्णिमायांहेमसिंहसमन्वितम् ॥ ददातियभागवतंसयातिपरमांगतिम् ॥ ९ ॥ पुराणंनश्रुतंयैस्तु श्रीमद्भागवतंक्वचित् ॥ तेषांवृथाजन्मगतंनराणांभूमिवासिनाम् ॥ १० ॥ यैर्नश्रुतंभागवतंपुराणंनाराधितोयैःपुरुषःपुराणः ॥ हुतंमुखेनैवधरा मराणांतेषांवृथाजन्मगतंनराणाम् ॥ ११ ॥ द्वारावत्यांतीर्थराजंगोमतीसिंधुसंगमम् ॥ यत्रस्नात्वानरोयातिवैकुण्ठंविमलंपदम् ॥१२॥ शताश्व मेधजंपुण्यंगंगासागरसंगमे ॥ तस्मात्सहस्रगुणितंगोमतीसिंधुसंगमे ॥१३॥ अत्रैवोदाहरंतीममितिहासंपुरातनम् ॥ यस्यश्रवणमात्रेणपापतापा त्प्रमुच्यते ॥ १४ ॥ आसीद्गजाह्वयेवैश्योराजमार्गपतिःपरः ॥ महागौरवसंयुक्तोनिधीशोधनदोयथा ॥ १५ ॥ वेश्याप्रसंगनिरतोविटगोष्ठीवि शारदः ॥ द्यूतक्रीडनकासक्तोलोभमोहमदान्वितः ॥ १६ ॥ मृषावादीमहादुष्टःकुकर्मनिरतःसदा ॥ ब्राह्मणेभ्योनपितृभ्योनदेवेभ्योधनंददौ ॥ १७ ॥ हरेःकथांप्रेक्ष्यदूराद्दूरंवैनिर्ययौत्वरम् ॥ पित्रोःसेवापिनकृतानपुत्रेभ्योधनंददौ ॥ १८ ॥

अमृतसे अन्नते विधिपूर्वक ब्राह्मणनको जिनने भोजन सत्कार न करयो तिन मनुष्यनको जन्म वृथाही गयो ॥ ११ ॥ द्वारिकामें तीर्थराज गोमती सिंधुसंगम है यहां स्नान करिके निर्मल वैकुण्ठ पदकूं जायहै ॥ १२ ॥ सौ अश्वमेध यज्ञको फल तो गंगासागरके न्हायेते होयहै ताळते हजारगुनो फल गोमतीसागरसंगममें होय है ॥ १३ ॥ यहां एक पुरानो इतिहास वर्णन करै है जाके श्रवणमात्रतेंही सब पापनको ताप क्षय हैजायहै ॥ १४ ॥ आगे हस्तिनापुरमें एक बनियां चौधरी हो, बड़ो याको बड़प्पन हो और कुबेरके समान धनवान् हो ॥ १५ ॥ वो वेश्यानके प्रसंगमें निरत हो, भडुआनमें बडो प्रवीण हो, जुआको खेलो करतोहो, लोभ, मोह, मदसों युक्त हो ॥ १६ ॥ झूंठ बोलनेवारो महादुष्ट सदाई कुकर्ममें निरत रहै, ब्राह्मण, पितर और देवता इनके लिये धन कबहूं नहीं देय ॥ १७ ॥ कहूं कथा बचती देखे तो दूरतेई भाजिजाय न

तो कबहूं माता पिताकी सेवा करी न पुत्रनकूं धन दीनो ॥ १८ ॥ वो स्त्रीकूं त्यागिके न्यारो हैगयो धनाढ्य दुर्बुद्धी दुष्ट, वेश्याके प्रसंगते वाको आधो धन नष्ट हैगयो ॥ १९ ॥ और आधो धन चोरें लेगये और कछु पृथ्वीमेंही अपने आप नाश हैगयो क्योंकि पुण्यते तो लक्ष्मी बढेहै पापते नाश होयहै ॥ २० ॥ ऐसे वो निर्धनी हैगयो, वेश्यामें आसक्त बडो दुष्ट वो वा मनोहर हस्तिनापुरमें चोरी करनलग्यो ॥ २१ ॥ जब चोरी करनलग्यो तब शंतनु राजाने रस्सानते बांधिके देशते निकारदीनो ॥ २२ ॥ वनमें रहतोहू वनके जीवनकी हिंसा करनलग्यो जब वहां बारहहजार वर्षतलक मेह नहीं बरष्यो ॥ २३ ॥ तब वो वैश्य ! अकालसे पीडित होकर पश्चिम दिशाकूं चल्योगयो, तब वनमेंहू वुह वैश्यकूं सिंहने थाप देके मारडार्यो ॥ २४ ॥ तबही यमराजके दूत पाशोंमें बांधि कोड़ानते मारत नीचेकूं मोहड़ो कराय यममार्गकूं लेचले ॥ २५ ॥

त्यक्त्वाभार्यांसभिन्नोभूद्धनाढ्योदुर्मतिःखलः ॥ वेश्याप्रसंगात्तस्यापिधनार्द्धंप्रक्षयंगतम् ॥ १९ ॥ अर्धंतुतस्करैर्नीतंकिंचित्पृथ्व्यांगतंस्वतः ॥ पुण्येनवर्द्धतेलक्ष्मीःपापेनक्षीयतेध्रुवम् ॥ २० ॥ एवंसनिर्धनोजातोवेश्यासक्तोमहाखलः ॥ तस्मिन्गजाह्वयेरम्येचौर्यकर्मचकारह ॥ २१ ॥ चौर्यकर्मप्रकुर्वंतंबद्ध्वातंदामभिर्नृपः ॥ देशान्निःसारयामासशंतनुर्नृपतीश्वरः ॥ २२ ॥ वनेपिनिवसन्सोपिजीवहिंसांचकारह ॥ समाद्वादशसाहस्रंनववर्षयदाघनः ॥ २३ ॥ पश्चिमांतुदिशंप्रागाद्वैश्योदुर्भिक्षपीडितः ॥ वनेवैमारितःसोपिसिंहेनतलघाततः ॥ २४ ॥ तदैवयमदूतास्तंबद्ध्वापाशैरधोमुखम् ॥ कशाघातैस्ताडयंतोनिन्युर्मार्गंयमस्यच ॥ २५ ॥ अथकश्चिन्महान्गृध्रोमांसंतस्यभुजस्यच ॥ गृहीत्वाखंगतःसद्यःखादंश्चंचुपुटेनतम् ॥ २६ ॥ निरामिषाःखगाश्चान्येस्त्वामिषंजगृहुरातुराः ॥ एवंकोलाहलेजातेशंखचिह्नादिभिःकृते ॥ २७ ॥ नजहौमुखतोमांसंपश्चिमाशांजगामह ॥ तत्समेनापिगृध्रेणतीक्ष्णतुंडेनताडितात् ॥ २८ ॥ तन्मुखात्प्रपतन्मांसंगोमतीसिंधुसंगमे ॥ तीर्थप्लुतेतस्यमांसेवैश्योयंपातकीमहान् ॥ २९ ॥ तेषांपाशान्स्वयंछित्त्वाभूत्वादेवश्चतुर्भुजः ॥ पश्यतांयमदूतानांविमानमधिरुह्यसः ॥ ३० ॥ विराजयन्दिशःसर्वाःपरंधामहरेर्ययौ ॥ ३१ ॥ गोमतीसिंधुसंगस्यमाहात्म्यंशृणुतेनरः ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तोविष्णुलोकंप्रयातिसः ॥ ३२ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीद्वारकाखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेप्रभाससरस्वतीबोधपिप्पलगोमतीसिंधुसंगममाहात्म्यंनामत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

इतनेमें कोई एक गीध वाकी भुजाको मांस लेके आकाशमें उड़िगयो चोंचते खानलग्यो ॥ २६ ॥ औरहू पखेरू बिगर मांसवारे आतुर आयके छिड़ामनलगे ऐसो कोलाहल शंख, चीन्हनने जब कर्यो ॥ २७ ॥ तोऊ वाने अपने मुखमेंसो मांस न छोड्यो और पश्चिम दिशाकूं चल्यो तब वाकी बराबरके बड़े पैनी चोंचवारे गीधने वाकूं मार्यो ॥ २८ ॥ तब वाके मुखते वह मांस गोमतीसिंधुके संगममें जाय पर्यो हो तो वो महापातकी जो वाको मांस वा तीर्थमें पर्यो सोई वा गोमतीसागरसंगमके जलमें वा मांसके पड़तेही ये महापातकी वैश्य ॥ २९ ॥ तिनके पाशनकूं आपही काटिके चतुर्भुज हैके विन सब यमदूतनके देखत २ विमानपै चढ़िके ॥ ३० ॥ दशों दिशानमें उजीतो करतो हरिके परमधामकूं चल्योगयो ॥ ३१ ॥ गोमतीसिंधुसंगमके या माहात्म्यकूं सुने तो सब पापनते छूटिके वो विष्णुलोककूं जायहै ॥ ३२ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायां द्वारकाखण्डे

भाषाटीकायां प्रभा० गोमतीसिंधुसंगममाहात्म्यं नामत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ नारदजी कहैं हैं कि, हे राजन्! अब हम द्वारावतीको और समुद्रको माहात्म्य वर्णन करें हैं ताको हे मानद! तुम सुनो जो सब पापनको हरनहारो और स्नानके फलकूं देनहारोहै ॥ १ ॥ जो चैत सुदी पूर्णमासीको व्रती हैके स्नान करै समुद्रको पूजनकरिके प्रणाम करके रत्नको दान करै ॥ २ ॥ तौ वाकी देहमें ब्रह्मा विष्णु महेश तीनों देवता आयके बसैं हैं और वाके दर्शनहीते मनुष्य कृतार्थ है जायहै ॥ ३ ॥ और वाके देह के स्पर्शतेही ब्रह्महत्या तत्काल नाश होयहै और जहां जहां वो जायहै तहां २ पृथ्वी शुभ होयहै ॥ ४ ॥ ताकूं देखिके जगद्वधकारीहू पापी होय तोहू पापनके पटल छूटके मोक्ष है जायहै ॥ ५ ॥ हे मानके दाता राजा! अब रैवत पर्वतकोहू तौ फल सुन जो सब पापनको नाश करनहारो और भुक्ति मुक्तिको देनवारो है ॥ ६ ॥ गौतमको बेटा मेधावी नाम

॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ द्वारावत्यासमुद्रस्यमाहात्म्यंशृणुमानद ॥ सर्वपापहरंपुण्यंतत्स्नानफलदंस्मृतम् ॥ १ ॥ माधव्यांपूर्णमास्यां योव्रतीस्नात्वानदीपतिम् ॥ नत्वासम्पूज्यविधिवद्रत्नदानंकरोतियः ॥ २ ॥ तस्यदेहेत्रयोदेवानिवसंतिमहीपते ॥ यस्यदर्शनमात्रेणनरोयातिकृतार्थताम् ॥ ३ ॥ तद्देहस्पर्शनात्सद्योब्रह्महत्याप्रमुच्यते ॥ यत्रयत्रगतःसोपितत्रतत्रचभूःशुभा ॥ ४ ॥ दृष्ट्वातंचनृतःपापीजगद्वधकरोपिहि ॥ छिनत्तिपापपटलंपरंमोक्षंप्रयातिहि ॥ ५ ॥ रैवतस्याथशैलस्यमाहात्म्यंशृणुमानद ॥ सर्वपापहरंपुण्यंमुक्तिभुक्तिप्रदायकम् ॥ ६ ॥ गौतमस्यसुतोधीमान्मेधावीनामवैष्णवः ॥ विंध्याचलेतपस्तेपेवर्षाणामयुतंशतम् ॥ ७ ॥ तंद्रष्टुमागतःसाक्षादपांतरतमोमुनिः ॥ नोच्चचालासनात्सोपि मेधावीतपसोत्कटः ॥८॥ अपांतरतमस्तंवैशशापक्रोधपूरितः ॥ सतामभक्तपापात्मंस्तपोबलविगर्वितः ॥९॥ शैलवत्तोस्थितिश्चात्रत्वंशैलोभव दुर्मते ॥ इत्युक्त्वाथगतेसाक्षादपांतरतमेमुनौ ॥ १० ॥ मेधावीशैलतांप्राप्तःश्रीशैलस्यसुतोऽभवत् ॥ जातिस्मरोमहाबुद्धिर्विष्णुभक्तेःप्रभावतः ॥ ११ ॥ एकदामन्मुखाच्छ्रुत्वामाहात्म्यंद्वारकापुरः ॥ प्रोवाचसोपिराजानंरैवतंगच्छसत्वरम् ॥ १२ ॥ वदमत्प्रार्थनासुकार्त्वंमहादीनवत्सलः ॥ सोयंमहाबलोराजाप्रसन्नोयदिवाभवेत् ॥ १३ ॥

को एक विष्णुभक्त हो वाने विन्ध्याचल पर्वतपै लाख बर्षताईं तप कीनो ॥ ७ ॥ ताकूं देखिवेकूं अपांतरतम मुनीश्वर आये तब वो तपोत्कट मेधावी उनकूं देखिके उठ्यो नहीं ॥ ८ ॥ तब अपांतरतमकूं क्रोध आयगयो सोई ऋषि अपांतरतमने शाप दियो कि, हे संतनके अभक्त पापी तपको तोकूं ऐसे गर्व आयगयो है ॥ ९ ॥ और पर्वतसो बैठ्योरह्यो याते हे दुर्बुद्धी! तू पर्वतही हैजा, ऐसे कहिके अपांतरतम मुनि चलेगये ॥ १० ॥ तब मेधावी ऋषि शैलताकूं प्राप्त भयो सो श्रीशैलको बेटा भयो पर विष्णुकी भक्तिके प्रभावते वा महाबुद्धिको अपने पूर्वजन्मकी याद बनीरही ॥ ११ ॥ नारदजी कहैं हैं कि, एकसमें द्वारकापुरको माहात्म्य मेरे मुखसे सुनिके वो श्रीशैलको पुत्र मोसों बोलो कि, हे महाराज! तुम रैवतराजाके पास जलदी जाओ ॥ १२ ॥ तुम दीनवत्सल हो मेरी कही प्रार्थनाको करो, यदि वो महाबली राजा मोपै प्रसन्न होय तो ॥ १३ ॥

जो वा रैवत राजा मोकूं ले जायगो तो मेरो द्वारकामें वास होयगो तब नारदजी कहेहैं कि, विष्णुभक्तनकी शांतिकर्ता मैंने ॥ १४ ॥ ये सुनिके रैवतराजाते आयके जो श्रीशैल के पुत्रने कहीही सो कही, तब रैवत राजा प्रसन्न हैके मोसे यह बोल्यो कि, ठीक है यहां कोई पर्वतहू नहीं है ॥ १५ ॥ सो मैं वा पर्वतकूं अपनी भुजानके बलते उखारिके यहां लायके द्वारकामें स्थापना करूंगो ये प्रतिज्ञा रैवतराजाने करी ॥ १६ ॥ फिर रैवत राजा वा पर्वतकूं चुरायबेकूं गयो ताते पहलेही श्रीशैलके पास में गयो ॥ १७ ॥ युद्ध देखबेके लिये मैंने श्रीशैलते चोरीको सब वृत्तांत कहिदीनो कि, हे श्रीशैल ! रैवत नामको राजा यहां आवै है वो तेरे बेटाकूं यहांसो चुरायके लेजायगो तूं सावधान रहियो ॥ १८ ॥ तब ये श्रीशैल पर्वत पुत्रके स्नेहके मारे और तूं कहां जायगो ? ऐसे पुत्रकूं ललकारके हिमाचल और सुमेर इन दोनोंनकी शरणमें गयो ॥ १९ ॥ और धर्मात्मा श्रीशैल पर्वत पुत्रस्नेहमें आतुर है दोनोंनसे ये बोले कि, हे पर्वतराज हो ! यह एकही बेटा देवने मोकूं दीनो है, मेरे बोहतसे तो हैही नहीं ॥ २० ॥ ताय लैबेकूं

तेननीतस्यमेवासोभविष्यतिहरेःपुरि ॥ इतिश्रुत्वामयाविष्णुभक्तानांशांतिकारिणा ॥ १४ ॥ रैवतायाशुकथितंतथोक्तंपरमंवचः ॥ सप्रसन्नः प्राहराजन्नत्रकोपिनपर्वतः ॥ १५ ॥ तत्स्थापनंकरिष्यामिसमुत्पाट्यभुजाबलात् ॥ समुन्नीयद्वारकायांप्रतिज्ञामकरोदिमाम् ॥ १६ ॥ एतस्मिन्स्तंचोरयितुंप्रयातेनृपसत्तमे ॥ तत्पूर्वस्मादहंप्राप्तःश्रीशैलस्यपुरेनृप ॥ १७ ॥ कलिप्रियेणापिमयाश्रीशैलायमहात्मने ॥ कथितःसर्ववृत्तांतोनृपचौर्यसमन्वितः ॥ १८ ॥ श्रीशैलःपुत्रमोहेननिर्भर्त्स्यैतिक्वयासिहि ॥ सुमेरुंगिरिराजंचहिमवंतंनगेश्वरम् ॥ १९ ॥ श्रीशैलःप्राहधर्मात्मापुत्रस्नेहसमाकुलः ॥ एकोदैवेनदत्तोयंनपुत्राबहवश्चमे ॥ २० ॥ तंहर्तुमागतेराज्ञिरैवतेवैमहाबले ॥ विदेशंयातिपुत्रोमेतेनराज्ञामहात्मना ॥ २१ ॥ पुत्रस्नेहाभिभूतोहंयुवयोःशरणंगतः ॥ जित्वातंरैवतंशीघ्रंपुत्रंमांदातुमर्हथ ॥ २२ ॥ जातेश्वकारणात्तौद्वौसुमेरुश्चहिमाचलः ॥ शैललक्षैःपरिवृतौयोद्धुमाजग्मतुर्द्रुतम ॥ २३ ॥ ततोभुजाभ्यामुत्पाट्यहनुमानिवतंगिरिम् ॥ ऊर्ध्वंकृत्वाबलाद्राजायदागंतुंमनोदधे ॥ २४ ॥ तदैवचागतान्वीक्ष्यगिरीन्शस्त्रास्त्रधारिणः ॥ अट्टहासंचकारोच्चैस्तडित्पातमिवात्मनः ॥ २५ ॥ ननादतेनब्रह्मांडंसप्तलोकैर्बिलैःसह ॥ तदैवतेपांशस्त्राणिहस्तेभ्योन्यपतन्स्वतः ॥ २६ ॥ निःशस्त्रास्तेयदाशैलाःकुर्वंतःप्रध्वनिंमुहुः ॥ गच्छंतंसगिरिंजघ्नुर्मुष्टिभिर्जानुभिःपथि ॥ २७ ॥

रैवत राजा आयो है वो महाबली है सो महात्मा वो राजा मेरे पुत्रको विदेशकूं लिये जायहै पुत्र मेरो जानेको तयार है सो ॥ २१ ॥ पुत्रस्नेहमें अभिभूत मैं तुम दोनोंनकी शरण प्राप्त भयोहूं सो तुम दोनों वा रैवतकूं जीतिके मोकूं बेटा देउ ॥ २२ ॥ तब जातिके कारणते वो दोनों हजारन लाखन पर्वतनकूं संग लेके रैवत राजासों युद्ध करिबेकूं आये ॥ २३ ॥ तब तक राजा रैवत भुजानते उखाड़के या पर्वतकूं बड़े बलसों हनुमान्‌की नाईं ऊपरकूं उठायके चलबेकूं मन करतोभयो ॥ २४ ॥ तबही लड़बेको आये शस्त्रास्त्रधारी पर्वतनकूं देखिके राजा रैवतने अट्टहास शब्द कीन्हो जैसे बीजुरी परे है ॥ २५ ॥ ताते सातों बिल सातों लोकनसमेत ब्रह्माण्ड झंकार उठ्यो ताई समें विन पर्वतनके हाथनमेंते अपने आप सब अस्त्र शस्त्र जायपरे ॥ २६ ॥ जब वे पर्वत निःशस्त्र हैगये तब बारंबार शब्द करते पर्वत लेजाते राजाते घूंसानते, घोंटनते, पत्थरनते, लड़नलगे ॥ २७ ॥

जैसे पहिले हनूमान् महाबलीके पीछे ताड़ना करते द्रोणके रखवारे आये हैं तोऊ राजाने पर्वतकूं अपने हाथते नही छोड्यो ॥ २८ ॥ तब मेरे मुखते श्रीहरि पर्वतनके पा
इत्योगको सुनके जलदीही भक्तकी सहायकूँ भक्तवत्सल ॥ २९ ॥ आकाश मार्गसो आयके अपनो तेज देतभये और तूं भय मति करे ऐसे अभय देके अंतर्धान हेगये ॥ ३० ॥
जब भगवान् चलेगये तब भगवान्के तेजते युक्त भयो राजा रैवत एक हाथमें तो पर्वत लेलीन्हों और दूसरे हाथकी मुट्ठी बांधि वज्रसे धूँसानते ॥ ३१ ॥ इन्द्रकी नाई सुमेरकूं
मारतोभयो, वा राजाके घूंसानके मारे सुमेरु विह्वल हेगयो ॥ ३२ ॥ फिर हिमाचलकूँ भुजाके वेगते मारके धरतीमें पटके जितने और विन्ध्यादिक पर्वतहैं तिनकूँ पार्वनते
मीड़ि डारतोभयो ॥ ३३ ॥ तब विन्ध्यादिक सबरे पर्वत जे पार्वनते मीड़िडारेहैं वे सब भयभीत है रणको छोडिके दशों दिशानमें भाजिगये ॥ ३४ ॥ ऐसे पर्वतनके संघकूं

यथापुराहनूमंतमनुयातामहाबलम् ॥ तैस्ताडितोपिनजहौगिरिंराजाकराग्रतः ॥ २८ ॥ मन्मुखाच्छ्रीहरिःश्रुत्वाशैलोद्योगंनृपोपरि ॥ सद्यो
भक्तसहायार्थंभगवान्भक्तवत्सलः ॥ २९ ॥ आगत्याकाशमार्गेणदत्त्वातेजःस्वकंपरम् ॥ माभैरित्यभयंदत्त्वात्वरमन्तरधीयत ॥ ३० ॥
गतेहरौभगवतिभगवत्तेजसान्वितः ॥ एकहस्तेगिरिंधृत्वामुष्टिनावज्रपातिना ॥ ३१ ॥ सुमेरुंसंतताडाशुवज्रीवबलवत्तरः ॥ तस्यमुष्टिप्रहारे
णमेरुर्विह्वलतांगतः ॥ ३२ ॥ हिमवंतंबाहुवेगात्पातयित्वामहीतले ॥ ममर्दपद्भ्यांचान्यांश्चविंध्यादीन्रणदुर्मदः ॥ ३३ ॥ विंध्यादयश्चतेसर्वेपा
दघातेनमर्दिताः ॥ भयभीतारणंत्यक्त्वादुद्रुवुस्तेदिशोदश ॥ ३४ ॥ एवंजित्वाशैलसंघंतंशैलंशैलसन्निभः ॥ रैवतोविजयारवैरानर्तेषुन्यपात
यत् ॥ ३५ ॥ सोभूद्रैवतनामापिराजन्रैवतकोचलः ॥ हरिभक्तःशैलमुख्योद्वारावत्यांविराजते ॥ ३६ ॥ तस्यदर्शनमात्रेणब्रह्महत्याप्रमुच्यते॥
स्पर्शनाच्छतयज्ञानांफलमाप्नोतिमानवः ॥३७॥ यात्रांकृत्वाचयस्यापिपरिक्रम्यनतानरः ॥ भोजनंब्राह्मणेदत्त्वायातिविष्णोःपरंपदम् ॥३८॥
इतिश्रीमद्गर्गसंहितायां श्रीद्वारकाखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेरत्नाकररैवतकाचलमाहात्म्यंनामचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ ॥ श्रीनारद
उवाच ॥ ॥ तस्मिन्गिरौयज्ञतीर्थंरैवतेनकृतंपुरा ॥ यत्रकृत्वायज्ञमेकंकोटियज्ञफलंलभेत् ॥ १ ॥ कपिटंकंनामतीर्थंकपिपातसमुद्भवम् ॥
गिरौरैवतकेराजन्सर्वपापप्रणाशनम् ॥ २ ॥ भौमासुरसखोदुष्टोद्विविदोनामवानरः ॥ मारितोयत्ररामेणमुष्टिनावज्रपातिना ॥ ३ ॥

जीतिके पर्वतनके समान वो राजा पर्वतकूँ लेआयो, जयजय शब्दके संग आनर्त देशमें लायके स्थापन करदियो ॥ ३५ ॥ सो वो रैवत राजाको पर्वत रैवत नामको होतभयो
सो वो पर्वतनमें मुख्य भगवान्को भक्त पर्वत अबतक द्वारावतीमें विराजेहै ॥ ३६ ॥ ताके दर्शनमात्रते ब्रह्महत्या नाश होयहै और छीयेते सौ यज्ञनको फल मिलेहै ॥ ३७ ॥
वाकी यात्रा करे परिकमा देय दण्डोत करे ब्राह्मणनकूं भोजन करावे तो वो मनुष्य विष्णुके परम्पदकूँ जाय है ॥ ३८ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां द्वारकाखण्डे भाषाटीकायां
रत्नाकररैवताचलमाहात्म्यंनाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ नारदजी कहेहै कि, वा पर्वतमें रैवत राजाने पहले यज्ञतीर्थ करयोहै तामें जो एक यज्ञ करे तो वाकूँ किरोड़
यज्ञको फल होय ॥ १ ॥ वहांही कपिटंक एक तीर्थ है कपिपातते भयो है वो रैवत गिरिमेंई है वो है राजन सब पापनको नाश करनहारो है ॥ २ ॥ भौमासुरको सखा

द्विविदनामको बंदर हो सो रामने जहां घूंसाते मारचोहो तब वो वा वज्रसे घूंसाके मारे सद्यही मुक्तिकूं प्राप्त हैगयो ॥ ३ ॥ संतनकी अवज्ञाहू करनहारो हो तोऊ जामें न्हायवेकूं देवता आयोकरेंहे॥४॥कलविककी यात्रामें किरोड़ गोदानको फल होयहै,जाते चौगुनो फल दण्डकारण्यमें होयहै ॥ ५ ॥ ताते चौगुनो पुण्य सैंधवयवनमें है, ताते पाँचिगुनो फल जंबू मार्गमें मनुष्यकूं प्राप्त होयहै ॥ ६ ॥ ताते दशगुनो पुण्य पुष्कर वनमें मानो है, ताते दशगुनो पुण्य उत्पलावर्तकी यात्रामें है ॥ ७ ॥ ताते नैमिषारण्यमें दशगुनो पुण्य है ताते सौगुनो पुण्य है राजन् ! कपिटंकमें है ॥ ८ ॥ द्वारिकामें नृगकूप है तीर्थनमें उत्तम तीर्थ है जाके दर्शनतेई ब्रह्महत्या छूटेहै ॥ ९ ॥ जहां बिगरजाने नृगने काऊ ब्राह्मणकी गौ और काऊ ब्राह्मणकूं देदई ही ताते वो नृग राजा कर्कैटा भयोहो ॥ १० ॥ जा कूपमें दानीनमें श्रेष्ठहू राजा नृग चारि युगतक परचो रह्यो जाको संतनके देखत देखत श्रीकृष्णने

सद्योमुक्तिंगतःसोपिसतांहेलनवानपि ॥ तत्रस्नातुंसदादेवाआगच्छंतिनरेश्वर ॥ ४ ॥ कलविंकस्ययात्रायांकोटिगोदानजंफलम् ॥ एतच्चद्विगुणंपुण्यंदण्डकारण्येवनेशुभे ॥ ५ ॥ तस्माच्चतुर्गुणंपुण्यंसैंधवाख्येमहावने ॥ जंबुमार्गेपंचगुणंपुण्यंप्राप्नोतिमानवः ॥ ६ ॥ तस्माद्दशगुणंपुण्यंपुष्कराख्येवनेस्मृतम् ॥ तस्माद्दशगुणंपुण्यमुत्पलावर्तयात्रया ॥ ७ ॥ तस्माच्चनैमिषारण्येपुण्यंदशगुणंस्मृतम् ॥ तस्माच्छतगुणंपुण्यंकपिटंके विदेहराट् ॥ ८ ॥ नृगकूपंद्वारकायांतीर्थानांतीर्थमुत्तमम् ॥ यस्यदर्शनमात्रेणविप्रघातात्प्रमुच्यते ॥ ९ ॥ अज्ञानाद्ब्राह्मणस्यापिगांददौब्राह्मणायसः ॥ तेनपापेनकूपेवैकृकलासवपुर्द्धरः ॥ १० ॥ नृगोपिदानिनांश्रेष्ठःपतितोथचतुर्युगम् ॥ श्रीकृष्णेनतदुद्धारःकृतोवैपश्यतांसताम् ॥ ॥ ११ ॥ तद्दिनान्नृगकूपंतुतीर्थीभूतंमहीपते ॥ कार्तिकेपूर्णिमायांतुतस्मिन्स्नानंसमाचरेत् ॥ १२ ॥ कोटिजन्मकृतात्पापान्मुच्यतेनात्रसंशयः ॥ एकंयत्रापिगोदानंकरोतिविधिवन्नरः ॥१३॥ कोटिगोदानजंपुण्यंलभतेवैनसंशयः ॥ गोपीभूमेश्चमाहात्म्यंशृणुपापहरंपरम् ॥१४॥ यस्यश्रवणमात्रेणकर्मबंधात्प्रमुच्यते ॥ गोपीनांयत्रवासोभूत्तेनगोपीभुवःस्मृताः ॥ १५ ॥ गोप्यंगरागसंभूतंगोपीचन्दनमुत्तमम् ॥ गोपीचन्दनलिप्तांगोगंगास्नानफलंलभेत् ॥ १६ ॥ महानदीनांस्नानस्यपुण्यंतस्यदिनेदिने ॥ गोपीचन्दनमुद्राभिर्मुद्रितोयःसदाभवेत् ॥ ॥ १७ ॥ अश्वमेधसहस्राणिराजसूयशतानिच ॥ सर्वाणितीर्थदानानिव्रतानिचतथैवच ॥ कृतानितेननित्यंवैसकृतार्थोनसंशयः ॥ १८ ॥

उद्धार करचो ॥ ११ ॥ ता दिनते वुह नृगकूप तीर्थरूप हैगयो, हे महीपति ! कार्तिककी पूर्णमासीको जामें स्नान करै तो ॥ १२ ॥ किरोड़ जन्मनके पापते वो निःसंदेह छूटि जायहै जामें जो एकहू गोदान करे तो वाको ॥ १३ ॥ निःसंदेह कोटि गोदानको फल होय, अब गोपीभूमिको माहात्म्य सुनो जो पापको हरनहारो है ॥ १४ ॥ जाके श्रवण मात्रतेही मनुष्य कर्मनके बंधनते छूट जायहै जहाँ गोपीनको वास भयोहो याहीसो वाको गोपीभुव नाम भयोहो जहाँ गोपीनके अंगरागते गोपीचन्दन भयोहै जा गोपीचन्दनके लगायेते गंगास्नानको फल होयहै ॥ १५ ॥ १६ ॥ वाको महानदीनके स्नानको फल दिन दिनमें होय है, जो नित्य गोपीचन्दनके छापे लगायो करै तो नित्य गंगास्नानको फल होय ॥ १७ ॥ हजार अश्वमेध यज्ञ करे और सौ राजसूय यज्ञ करे, सब तीर्थ करे, सब दान करे गोपीचन्दन लगायवेवारेको इतनो फल निःसंदेह होयहै और वो पुरुष

नित्य कृतार्थ गिनो जायहै ॥ १८ ॥ गंगाकी रजते तो चित्रकूटकी रजको द्विगुनो फल है ताते पंचवटीकी रजको दशगुनो फल है ॥ १९ ॥ ताते सौगुनो गोपीचन्दनको फल है, गोपीचन्दनको और वृन्दावनकी रजको बराबर फल है ॥ २० ॥ गोपीचन्दनते लिप्यो है अंग जाको सो सैकरन पापनते युक्तहू है तौऊ वाके लेजायवेकूँ यमराजकीहू सामर्थ्य नहीं है यमदूतनकी तो कहा बात है ॥ २१ ॥ यद्यपि पापीऊ होय और जो नित्य गोपीचन्दनको धारण करैहै सो नर प्रकृतिते परे जो गोलोक ताकूँ जायहै ॥ २२ ॥ आगे सिंधुदेशमें एक दीर्घबाहु नाम राजा होतभयो वो अन्यायवर्ती दुष्टात्मा वेश्यागामी नित्य रहै ॥ २३ ॥ ताने भरतखण्डमें सौ ब्रह्महत्या करी ही और वा दुष्टने दश गर्भवतीकी हत्या करी ही ॥ २४ ॥ सिकार खेलवेमें सिंधुदेशके घोड़ापै चढ़िके गयो है तब पानें एक कपिला गौ मारी ही ॥ २५ ॥ एक समयमें वा दुष्ट राजाकूं मंत्रीने

गंगामृद्द्विगुणंपुण्यंचित्रकूटरजःस्मृतम् ॥ तस्माद्दशगुणंपुण्यंरजःपंचवटीभवम् ॥ १९ ॥ तस्माच्छतगुणंपुण्यंगोपीचन्दनकंरजः ॥ गोपी
चन्दनकंविद्धिवृन्दावनरजःसमम् ॥ २० ॥ गोपीचन्दनलिप्तांगयदिपापशतैर्युतम् ॥ तंनेतुंनयमःशक्तोयमदूतःकुतःपुनः ॥ २१ ॥ नित्यं
करोतियःपापीगोपीचन्दनधारणम् ॥ सप्रयातिहरेर्धामगोलोकंप्रकृतेःपरम् ॥ २२ ॥ सिंधुदेशस्यराजाभूद्दीर्घबाहुरितिश्रुतः ॥ अन्यायवर्ती
दुष्टात्मावेश्यासंगरतःसदा ॥ २३ ॥ तेनवैभारतेवर्षेब्रह्महत्याशतंकृतम् ॥ दशगर्भवतीहत्याःकृतास्तेनदुरात्मना ॥ २४ ॥ मृगयायांतुबाणौ
घैःकपिलागोवधःकृतः ॥ सैंधवंहयमारुह्यमृगयार्थीगतोभवत् ॥२५॥ एकदाराज्यलोभेनमंत्रीकुद्धोमहाखलम् ॥ जघानारण्यदेशेतंतीक्ष्णधा
रेणचासिना ॥ २६ ॥ भूतलेपतितंमृत्युंगतंवीक्ष्ययमानुगाः ॥ बध्वायमपुरींनिन्युर्हर्षयंतःपरस्परम् ॥ २७ ॥ संमुखेवस्थितंवीक्ष्यपापिनंयम
राड्बली ॥ चित्रगुप्तंप्राहतूर्णंकायोग्यायातनास्यवै ॥ २८ ॥ ॥ चित्रगुप्तउवाच ॥ ॥ चतुराशीतिलक्षेषुनरकेषुनिपात्यताम् ॥ निःसंदेहंमहारा
जयावच्चंद्रदिवाकरौ ॥ २९ ॥ अनेनभारतेवर्षेक्षणंनसुकृतंकृतम् ॥ दशगर्भवतीघातःकपिलागोवधःकृतः ॥ ३० ॥ तथावनमृगाणांचकृत्वा
हत्याःसहस्रशः ॥ तस्मादयंमहापापीदेवताद्विजनिंदकः ॥ ३१ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ तदायमाज्ञयादूतानीत्वातंपापरूपिणम् ॥
सहस्रयोजनायामेतप्ततैलमहाखले ॥ ३२ ॥ स्फुरदत्युच्छलत्फेनेकुंभीपाकेन्यपातयन् ॥ प्रलयाग्निसमोवह्निःसद्यःशीतलतांगतः ॥ ३३ ॥

राज्यके लोभते पैने खड्गते मारिडारो है ॥ २६ ॥ मरिके ये जब धरतीमें जायपऱ्यो, तब ताको यमके दूत बहुतसे देखिके आपुसमें हर्ष करत यमपुरीकूँ लैचले ॥२७॥ सन्मुख आयो वा पापीकूँ यमराज देखिके चित्रगुप्तते बोल्यो याकूँ कौन कौनसी यातना देनी चहिये ॥ २८ ॥ तब चित्रगुप्तबोल्यो कि, चौरासी लाख नरकनमें याकूँ डारो, हे महाराज निःसंदेह जबतक सूर्य चन्द्रमा रहैं ॥ २९ ॥ याने भरतखण्डमें एक क्षणहू सुकृत नहीं कऱ्यो है, दश गर्भवती मारी है और कपिला गौ मारी है ॥ ३० ॥ तैसेई वनमें वनके जीवनकी हजारन हत्या करी है, याते ये महापापी है द्विज देवनको निंदक है ॥ ३१ ॥ नारदजी कहैहैं—तब यमराजकी आज्ञाते वा महापापीकूँ लेके चले हजार योजनको कुंभीपाक नरक तातो तेल जामें औटिरह्यो ॥ ३२ ॥ जामें फेन उठि रहे वा कुंभीपाकमें डारिदीनो सोई प्रलयकी आगिके समान कुंभीपाककी अग्नि सब शीतल हैगई ॥ ३३ ॥

ताके परतेंई ऐसो ह्वैगई जैसी प्रह्लादके परतेते ह्वैगई ही, ता अचम्भेकूँ देखिके दूत यमराजते कहतेभये ॥ ३४ ॥ कि, महाराज! याने सुकृत तो भूमिमें नेकहू नहीं कीनो है ऐसे यमराज चित्रगुप्तके संग विचार करतोभयो ॥ ३५ ॥ हे राजन्! तवही सभामें व्यासजी आये तिनको महामति धर्मराज विधिते पूजन कर और नमस्कार कर यह पूछनलगे ॥ ३६ ॥ देखो महाराजजी! या पापीने पहले कभी कोई सत्कर्म नहीं कियो ता याको फैन जामें तेलके उठे वा कुंभीपाकमें पटको सो वो शीतल ह्वैगयो, याही संदेहते मेरे मनकूं खेद है यामें संदेह नहीं है ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ तब व्यासजी बोले—हे धर्मराज! पाप पुण्यकी बड़ी सूक्ष्म गति है जैसे ब्रह्मकी गति शास्त्रज्ञ बुद्धिमान्ने कही है ॥ ३९ ॥ दैवयोगते याकूं अपने आप अर्थवत् दृश्य पुण्य प्राप्त भयोहै जा पुण्यते यह शुद्ध ह्वैगयो है सो हे महामते! ताहि तूं सुनि ॥४०॥ काहूके हाथते जहां गोपीचन्दनकी मृत्तिका गिरिपरी ही

वैदेहतन्निपतनात्प्रह्लादक्षेपणाद्यथा ॥ तदैवचित्रमाचख्युर्यमदूतामहात्मने ॥ ३४ ॥ अनेनसुकृतंभूमौक्षणवन्नकृतंकचित् ॥ चित्रगुप्तेनतसतंधर्मराजोव्यचिंतयत् ॥ ३५ ॥ सभायामागतंव्यासंसंपूज्यविधिवन्नृप ॥ नत्वापप्रच्छधर्मात्माधर्मराजोमहामतिः ॥ ३६ ॥ ॥ यम उवाच ॥ ॥ अनेनपापिनापूर्वंनकृतंसुकृतंकचित् ॥ स्फुरदत्युच्छलत्फेनेकुंभीपाकेमहाखले ॥ ३७ ॥ अस्यक्षेपणतोवह्निःसद्यःशीतलतांगतः ॥ इतिसन्देहतश्चेतःखिद्यतेमेनसंशयः ॥ ३८ ॥ ॥ श्रीव्यासउवाच ॥ ॥ सूक्ष्मागतिर्महाराजविदितापापपुण्ययोः ॥ अथब्रह्मगतिःप्राज्ञैःसर्वशास्त्रविदांवरैः ॥ ३९ ॥ दैवयोगाद्दृश्यपुण्यंप्राप्तंवैस्वयमर्थवत् ॥ येनपुण्येनशुद्धोसौतच्छृणुत्वंमहामते ॥ ४० ॥ कस्यापिहस्ततोयत्रपतिताद्वारकामृदः ॥ तत्रैवायंमृतःपापीशुद्धोभूत्तत्प्रभावतः ॥ ४१ ॥ गोपीचन्दनलिप्तांगोनरोनारायणोभवेत् ॥ एतस्यदर्शनात्सद्योब्रह्महत्याप्रमुच्यते ॥ ४२ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वाधर्मराजस्तमानीयविशेषतः ॥ विमानेकामगेस्थाप्यवैकुण्ठंप्रकृतेःपरम् ॥ ४३ ॥ प्रेषयामाससहसागोपीचन्दनकीर्तिवित् ॥ एवंतेकथितंराजन्गोपीचन्दनकंयशः ॥ ४४ ॥ गोपीचन्दनमाहात्म्यंयःशृणोतिनरोत्तमः ॥ सयातिपरमंधामश्रीकृष्णस्यमहात्मनः ॥ ४५ ॥ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायां श्रीद्वारकाखण्डे कपिंटकनृगकूपगोपीभूमिमाहात्म्यंनाम पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

तहां ही यह पापी मरते समय वाके ऊपरही मरचोहो सो वाके प्रभावते शुद्ध ह्वैगयो ॥ ४१ ॥ गोपीचन्दनते लिप्त अंग जाको होय सो नर नारायण ह्वैजायहै जाके गोपीचंदनलगो है ताके दर्शनतेही ब्रह्महत्या नाश होय है ॥ ४२ ॥ नारदजी कहेहैं ऐसे सुनिके धर्मराज वाकूँ कामग विमानमें बैठारि प्रकृतिते परे वैकुंठकूं भेजतो भयो ॥ ४३ ॥ क्योंकि यमराज गोपीचन्दनकी कीर्तिको जाननहारो है, यह तेरे अगारी हे राजन्! गोपीचन्दनको माहात्म्य वर्णन करचो ॥ ४४ ॥ गोपीचन्दनके माहात्म्यको जो कोई नरोत्तम सुने सो श्रीकृष्ण महात्माके परम धामकूं प्राप्त होयहै ॥४५॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां श्रीद्वारकाखण्डे भाषाटीकायां कपिंटकनृगकूपगोपीभूमिमाहात्म्यवर्णनं नाम पंचदशोऽध्यायः ॥१५॥

नारदजी कैहेंहै कि, हे महामते ! हे राजन् ! अब सिद्धाश्रमको तुं माहात्म्य सुनि जाके स्मरणमात्रंते सब पापनतें छूटिजाय है ॥१॥ जाके स्पर्शते हरिको वियोग कबहू नहीं होयहै वाकूं पुराने मुनि सिद्धाश्रम वर्णन कैरेहै ॥ २ ॥ जाके दर्शनते तो सालोक्य मुक्ति मिलैहै, स्पर्शते सामीप्य मुक्ति मिलैहै, स्नानते सारूप्य मुक्ति मिलैहै और जहांके वासिवेते सायुज्यमुक्ति मिलैहै ॥ ३ ॥ श्रीराधाजी सिद्धाश्रम वा तीर्थके माहात्म्यकूं चंद्राननाके मुखते सुनिके कृष्णके वियोगते विह्वल भई कदली वनमेंसे उठके स्नान करिवेकूं मन करतीभई ॥ ४ ॥ तब श्रीराधाजी सिद्धाश्रममें यात्रा करवेके लिये सूर्यपर्वके विषे कदलीवनते उठिके चलिवेकूं मन करतीभई ॥ ५ ॥ सौ यूथ गोपीनके संग लेके और सब गोपगणनकूं संग लेके श्रीदामाके शापके कारणते जब सौवर्ष व्यतीत हैगये तब ॥ ६ ॥ रंती श्रीराधिका पालकीमें बैठिके छत्र चमर जापे होलजाय ऐसी आनर्तदेशनमें महातीर्थ जो सिद्धाश्रम है ताकूं गई ॥ ७ ॥ हे नृप ! तहांही साक्षात् भगवान् कृष्णहू यादवनके गणते मण्डित सोल्है हजार स्त्रीनकूं संग लेके यात्रा करवेको आपहू

॥॥ श्रीनारदउवाच ॥॥सिद्धाश्रमस्यमाहात्म्यंशृणुराजन्महामते ॥ यस्यस्मरणमात्रेणसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥१॥ यत्स्पर्शनाद्धरेःसाक्षान्नवियोगो भवेत्क्वचित्॥ तंचसिद्धाश्रमंनामवदंतीहपुराविदः॥२॥दर्शनाद्यस्यसालोक्यंसामीप्यंस्पर्शनात्तथा ॥ सारूप्यंस्नानतोयातिसायुज्यंतन्निवासतः ॥३॥ तत्तीर्थस्यापिमाहात्म्यंश्रुत्वाचंद्राननामुखात् ॥ राधास्नातुंमनश्चक्रेकृष्णविक्षेपविह्वला ॥४॥ श्रीसिद्धाश्रमयात्रायांसूर्यपर्वणिमाधवे ॥ राधागंतुंमनश्चक्रउत्थायकदलीवनात्॥५॥गोपीनांशतयूथेनसर्वगोपगणैःसह॥शतवर्षव्यतीतेतुश्रीदाम्नःशापकारणात्॥६॥ श्रीराधाशिबिकारूढाछत्रचामरवीजिता ॥ आनर्तेषुमहातीर्थंययौसिद्धाश्रमंसती ॥७॥ तत्रैवभगवान्साक्षाद्यादवैःपरिमंडितः॥ स्त्रीणांषोडशसाहस्रैर्यात्रार्थंचाययौ नृप ॥ ८ ॥ बलिष्ठायेचगोपालाकोटिशःशस्त्रपाणयः ॥ सिद्धाश्रमंतेजुगुपुःसर्वतोराधिकाज्ञया ॥ ९ ॥ शतयूथास्तथागोप्योवेत्रहस्तामहाबलाः ॥ सिद्धाश्रमेचविधिवत्स्नातींराधांसिषेविरे ॥ १० ॥ द्वारकावासिनांतेषांस्थितानांस्नानमिच्छताम् ॥ शस्त्रवेत्रैस्ताडितानांविविशुर्भगवत्स्त्रियः ॥ ११ ॥ केयंस्नातीतिपप्रच्छुर्यस्यावैभवमद्भुतम् ॥ यद्गौरवात्रसन्तीहसर्वेयादवपुंगवाः ॥ १२ ॥ अहोकस्यप्रियाचेयंकानामाक्कवासिनी ॥ त्वंसर्वज्ञोहिभगवान्वदनोदेवकीसुत ॥ १३ ॥

आये हैं ॥ ८ ॥ वा समें बड़े २ बली किरोड़न गोपाल शस्त्रनकूं हाथनमें लिये श्रीराधिकाजीकी आज्ञाते चारों ओरते सिद्धाश्रमकी रक्षा करते भये ॥ ९ ॥ और बली जे गोपीनके सौ १०० यूथ हैं वेत्रधारी हैंकैं सिद्धाश्रममें विधिवत्स्नान करती जो श्रीराधा ताको सेवन करतेभये ॥ १० ॥ स्नान करिवेकूं आये जे द्वारकावासी वे शस्त्र वेत्रनते ताडित वहां स्थित हैं अर्थात् इन द्वारकावासीनको जहां कोई शस्त्र और वेतनते मारमारके आदमी रोक रहे हैं तिनके बीचमें भगवान्की स्त्रीहू न्हायवेको आई हैं ॥ ११ ॥ तब पे सब रानी श्रीभगवान्ते पूछन लगी कि, हे प्रभो ! यह कौन स्नान कररही है ? जाको ये ऐसो वैभव अद्भुत है जा याके गौरवते ये सबेर यादव जहांके तहां ठाडे डर रहे हैं ॥ १२ ॥ अहो ! यह कौनकी प्रिया है, याको कहा नाम है, यह कहां रहैहै, हे देवकीसुत ! तुम सर्वज्ञ हौ, भगवान् हो, सो तुम कहो ॥ १३ ॥

ऐसे जब रानीने पूछी तब भगवान् बोले—यह वृषभानु गोपकी बेटी कीर्तिनन्दिनी साक्षात् राधा है ये व्रजकी ईश्वरी है सब गोपीनमें श्रेष्ठ और मेरी प्यारी है ॥ १४ ॥
सिद्धाश्रममें न्हायवेकूं व्रजते गोपीनके गणनकूं संग लेके आईहै, याके गौरवते सब यादव डरपेसे ठाड़े है, याको ऐसोई अद्भुत वैभव है ॥ १५ ॥ श्रीकृष्णको ऐसो वचन सुनिके
मानिनी सत्यभामा जो सब रानीनमे रूपकी और जोबनकी गरबोली है वो सब रानीनके बीचमें होले होले यह बोली ॥ १६ ॥ कहा एक ये राधाई केवल रूपवती है मैं सुन्दरी
नही हूं ? जो मै पहले रूप उदारता और गुण इनते अन्वित हो याही हेतुते मेरी पहिले बहुतनने याचना करीहै ॥ १७ ॥ और हे सखी हो ! देखो याही मेरे रूपके कारणते शत
धन्वा मारचोगयो और याही मेरे कारणते पहले अक्रूर और कृतवर्मा द्वारिकाते भागिगये है ॥ १८ ॥ और जो दिन दिनमें आठ भार सोनो नित्य उगिले और अकाल

॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ वृषभानुसुतासाक्षाद्राधेयंकीर्तिनंदिनी॥ व्रजेश्वरीमद्दयितागोपिकाधीश्वरीवरा॥१४॥ स्नातुंसिद्धाश्रमंप्राप्ताव्रजाद्गो
पीगणैःसह ॥ यद्गौरवाद्रसंत्येतेतस्यावैभवमद्भुतम् ॥१५॥ श्रीकृष्णस्यवचःश्रुत्वासत्यभामाथभामिनी॥ शनैःप्राहसपत्नीनांरूपयौवनगर्विता
॥१६॥ किंतुराधारूपवतीनाहंरूपवतीकिंतु ॥ बहुभिर्याचितापूर्वंरूपौदार्यगुणान्विता ॥१७॥ मद्रूपकारणात्सख्यःशतधन्वामृतोभवत्॥अक्रूरः
कृतवर्माचपुरात्तौद्वौपलायितौ ॥१८॥ दिनेदिनेस्वर्णभारानष्टौसमृजतिस्वतः ॥ दुर्भिक्षमार्यरिष्टानिसर्पाधिव्याधयोऽशुभाः ॥१९॥ नसंतिमा
यिनस्तत्रयत्रास्तेभ्यर्चितोमणिः ॥ मत्पित्रापारिबर्हेपिदत्तःसाक्षात्स्यमंतकः ॥ २० ॥ तेनजातंमद्गृहेपिसर्ववैभवमद्भुतम्॥ प्रेम्णापरेणश्रीकृष्णं
गरुडोपरिगामिनी ॥ २१ ॥ भौमासुरमहायुद्धंदृष्टंप्राग्ज्योतिषंपुरम् ॥ ममापिकृपयायूयंतत्पुराच्चसमागताः॥ २२ ॥ प्राप्ताःश्रीकृष्णपत्नीत्वं
समाएवनसंशयः ॥ मद्गौरवाच्चशक्रायच्छत्रंदत्तमनेनवै ॥ २३ ॥ कुण्डलेदेवमात्रेचदत्तेवैमत्प्रियेच्छया ॥ ऐरावतभवानागाभौमासुरसमृद्धयः
॥ २४ ॥ मदिच्छयासमानीताःश्रीकृष्णेनमहात्मना ॥ मत्कारणान्महावैरंशक्रेपिकृतवान्हरिः ॥ २५ ॥ मद्वारेवर्ततेनित्यंवृक्षेंद्रः पारिजात
कः॥ पातिव्रत्येनैवमयाश्रीकृष्णोऽयंवशीकृतः ॥ २६ ॥

मरी, सर्प, रोग कोई उपद्रव वहां नहीं रहै है जहां जा मणिको पूजन होय ॥ १९ ॥ तहां कोई अशुभ नही होय मायावीनकी माया नहीं चलै है सो स्यमन्तक मणि मेरे पिताने
दायजेमे दईहै ॥ २० ॥ ताते मेरे घरमेंहूं सबरो अद्भुत वैभव है और परम प्रेमते श्रीकृष्णके संग गरुड़पे चढ़ीहूं ॥ २१ ॥ भौमासुरको बड़ो युद्ध मैंने प्राग्ज्योतिःपुरमें श्रीकृष्ण
की कृपाते सब देख्यो और मेरीही कृपाते तुमहूं सब यहां वहींतआई हो ॥ २२ ॥ श्रीकृष्णकी पत्नी भई हो सो तुमहूं सब बराबरही भई हो, मेरेही गौरवते इन्द्रकूं इनने छत्र
दीनो है ॥२३॥ और मेरेई प्यारके लिये इनने इन्द्रकी मैय्याकूं कुण्डल दीने हैं और ऐरावत कुलके हाथी औरहू भौमासुरकी समृद्धि ॥ २४ ॥ मेरीही इच्छाते महात्मा श्रीकृष्ण
लेआये है मेरेही कारण हरिने इन्द्रते महावैर करचो ॥२५॥ मेरे दरवजेपै वृक्षनमें इन्द्र कल्पवृक्ष विराजे है और मैंने अपने पातिव्रत्य धर्मतेई श्रीकृष्णको वश कीनो है ॥ २६ ॥

और मैंने श्रीकृष्णकूं सब सामिग्रीसहित नारदजीकूं दान करदिये है सो मेरे समान, न तो काहूको गौरव है न वैभव है ॥ २७ ॥ और न काहूको मेरोसो रूप है न उदारता है फिर मेरे अगारी राधाकी कहा चर्चा है और जा तेरे लिये शिशुपालादिकनते याको ऐसो युद्ध भयौ ॥ २८ ॥ सो हे सुभ्रु ! हे रुक्मिणी ! क्या तू रूपवती नहीं है ? और हे सखीहो ! राधा तो गोपकन्या है तुम राजकुमारी हो तथा धन्य हो मान्यहो मानवतीनमें सदा श्रेष्ठ हो ॥ २९ ॥ हे मैथिल ! ऐसे सत्यभामाके कहते २ रुक्मिणीते आदि दैके सब श्रेष्ठ स्त्री मानवती हेगई ॥ ३० ॥ कुल, चातुरई, शील, अर्थ, रूप, यौवनते गरबीली हैके मानके दाता श्रीकृष्णते आठों पटरानी ये बोलीं ॥ ३१ ॥ कि, हे प्रभो ! पहले हमने आपके मुखते राधिकाको परम उत्तम रूप सुन्यो हो जामें तुम नित्यही रँगे रहते हे और तुममें वह नित्य रँगी रहती ही ॥ ३२ ॥ जो तुम्हारी प्यारी ब्रजवासिनी है, जो तुम्हारे

सर्वोपस्करसंयुक्तोनारदायसमर्पितः ॥ मत्समाननकस्यास्तुगौरवंवैभवंतथा ॥ २७ ॥ रूपौदार्य्यंनकस्यास्तुराधायाःकिमुवर्णनम् ॥ यद्रूपो परिचैद्याद्याअनेनयुयुधुर्युधि ॥ २८ ॥ हेसुभ्रुरुक्मिणीसात्वंकथंरूपवतीनहि ॥ सागोपकन्यकासख्योयूयंवैराजकन्यकाः ॥ धन्यामान्याश्च सर्वाःयूयंमानवतीवराः ॥ २९ ॥ एवंतुसत्यभामायांवदंत्यांमैथिलेश्वर ॥ भूत्वामानवतीसर्वारुक्मिण्याद्यास्त्रियोवराः ॥ ३० ॥ कुलकौशल शीलार्थरूपयौवनगर्विताः ॥ श्रीकृष्णंमानदंप्राहुरष्टपट्टमहास्त्रियः ॥ ३१ ॥ ॥ राज्ञ्यऊचुः ॥ ॥ श्रुतंतवमुखात्पूर्वंराधारूपंपरंस्मृतम् ॥ यस्यांरक्तःसदात्वंवैत्वयिरक्ताचयासदा ॥ ३२ ॥ तांराधांद्रष्टुमिच्छामस्त्वत्प्रियांव्रजवासिनीम् ॥ त्वद्वियोगेनसंखिन्नांस्नातुंचात्रसमागताम् ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ तथास्तुचोक्त्वाश्रीकृष्णःपट्टस्त्रीपरिवेष्टितः ॥ षोडशस्त्रीसहस्राढ्योद्रष्टुंराधांजगामह ॥ ३४ ॥ श्रीहेमशि बिरेरम्येपताकाध्वजमंडिते ॥ चन्द्रमंडलशोभाढ्यवितानतनितेशुभे ॥ ३५ ॥ मुक्ताजवनिकायन्त्रवस्त्रैरास्तरणंशुभम् ॥ मालतीमकरंदाढ्यं सर्वतोगंधिसंकुलम् ॥ ३६ ॥ तेनभृंगावलीचक्रेकलंकोलाहलंपरम् ॥ तत्रराधापट्टराज्ञीश्रीकृष्णहृतमानसा ॥ ३७ ॥ हंसाभैर्व्यजनैर्दिव्यैर्वी ज्यमानासखीजनैः ॥ छत्रदोलाधरैस्तत्रव्रजद्भिस्तामितस्ततः ॥ ३८ ॥ बालार्ककुण्डलधराविद्युद्दाममनोहरा ॥ कोटिचन्द्रप्रतीकाशातन्वी कोमलविग्रहा ॥ ३९ ॥

वियोगते खिन्न भई यहां स्नान करिवेकूं आई है ता राधाकूं हम देखिवेकी इच्छा करे है ॥ ३३ ॥ नारदजी कहे हैं कि, तथास्तु सोई करो ऐसे कहिके पटरानी और सोलह हजार रानीनकूं संग लेके श्रीकृष्ण राधिकाकूं देखिवेकूं गये ॥ ३४ ॥ सुन्हेरी डेरा कनातन जामें ध्वजासों शोभित चन्द्रमण्डलकीसी शोभा जाकी ऐसे चंदोवा जामें तन रहे है ॥ ३५ ॥ मोतीनकी चिक लग रहीहैं, सुपेद बिछौना बिछ रहे हैं, चमेलीके अतरनते छिरके चारों ओरते सुगंधि उठि रही है ॥ ३६ ॥ तहां सुगंधिके मारे भौंरा मनोहर गुंजारि रहे हैं, श्रीकृष्णमें है आदरपट जाको श्रीकृष्णने हरयो है मन जाको सो राधा पटरानी ॥ ३७ ॥ हंसकीसी कांति जिनकी ऐसे छत्र, चमर, बीजनानते सखीनके द्वारा वीजित होरही है चमर वीजना लिये सखी इत चित डोलि रही है ॥ ३८ ॥ बालार्कसे बिजुरीकीसी झलक जिनमें ऐसे कुण्डल पहरे हैं किरोड़न चन्द्रमाकीसी जाकी अंगकांति है

अतिकोमल जाको शरीर है ॥ ३९ ॥ पांवनकी डँगरीयानके आगेकी फूलनकी भूमिमें हौले हौले कोमल चरणकमलकूं धरती भरती चलें हैं ॥ ४० ॥ ऐसी दूरिहीते वा राधिकाकूं देखिके श्रीकृष्णकी रानी पटरानी हजारन ताके रूपमें मोहित हैके मूर्च्छा खाय जायपरी ॥ ४१ ॥ ताके तेजते सबकी कांति फीकी परिगई, सूर्योदयपे तारागण जैसे फीके परिजाय हैं, सबको रूपवतीको अभिमान जातरह्यो सत्यभामादिकनको तब वे आपुसमें कहनलगी ॥ ४२ ॥ अहो ! ऐसो अद्भुत रूप तो त्रिलोकीमें काहूको नहीं है जैसो सुनेहे तैसोई अद्वितीय मनोहर देख्यो ॥ ४३ ॥ ऐसे कहत कहत श्रीकृष्णके आगे आई तब गोपीनके और रानीनके नेत्रनते नेत्र मिले ॥ ४४ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां द्वारकाखण्डे भाषाटीकायां सिद्धाश्रमे राधारूपदर्शनं नाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ नारदजी कहें हैं कि, पटरानी रानीन सहित श्रीकृष्णकूं आयो देखिके तासमें सब गोपी

अंगुल्यग्रैःशोभनैःस्वैःपुष्पभूमिमनोहराम् ॥ शनैःशनैःपादपद्मंधारयंत्यतिकोमलम् ॥ ४० ॥ दूरात्तांराधिकांवीक्ष्यकृष्णपत्न्यःसहस्रशः ॥ जग्मुर्मूर्च्छांमहाराजतद्रूपेणातिमोहिताः ॥ ४१ ॥ तत्तेजसाहृतरुचःसूर्यात्तारागणायथा ॥ गतरूपाभिमानास्ताऊचुःसर्वाःपरस्परम् ॥ ४२ ॥ अहोएतादृशंरूपंत्रिलोक्यांनहिचाद्भुतम् ॥ श्रुतंयथातथादृष्टमद्वितीयंमनोहरम् ॥४३॥ एवंवदंत्यस्तांप्राप्ताःश्रीकृष्णस्यपुरःसराः ॥ गोपीनांराजपुत्रीणांनेत्राणिपरिरेभिरे ॥ ४४ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीद्वारकाखण्डेसिद्धाश्रममाहात्म्येराधारूपदर्शनंनामषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ श्रीकृष्णमागतंवीक्ष्यपट्टराज्ञीसमन्वितम् ॥ तदाजयजयारावंचक्रुर्गोप्योतिहर्षिताः ॥ १ ॥ सहसाश्रीहरिंराधापरिक्रम्यकृतांजलिः ॥ पद्माभाभ्यांतुनेत्राभ्यामानन्दाश्रूणिमुंचती ॥ २ ॥ स्यमन्तकखचितपादंचिंतामणिखचितासनम् ॥ पद्मरागलसन्मध्यंचन्द्रमण्डलवर्तुलम् ॥ ३ ॥ कौस्तुभैःप्रखचितप्रोष्ठंकुण्डमण्डलमंडितम् ॥ पारिजातकपुष्पाढ्यंपीयूषस्राविछत्रमत् ॥ ४ ॥ दत्त्वासिंहासनंतस्मैप्राहप्रहसितानना ॥ अद्यमेसफलंजन्मअद्यमेसफलंतपः ॥ ५ ॥ अद्यमेसफलोधर्मोहरेत्वय्यागतेसति ॥ धन्यंसिद्धाश्रमस्थानंसफलीभूतमद्भुतम् ॥ मयापिनकृताभक्तिस्तवभक्तसहायिनः ॥ ६ ॥ वहवश्चसहायान्मेत्वयादेवकृताभुवि ॥ कंसोपिलोकविजयीयेनभीतोवभूवह ॥७॥

अति हर्षित हैके जयजय शब्द करती भई ॥ १ ॥ तब श्रीराधिका अकस्मात् उठिके श्रीकृष्णकी परिक्रमा देके दण्डवत करि विधिपूर्वक पूजन करि हाथ जोर कमलसे नेत्रनमेंसो आनन्दके आंसूनको बहाती ॥ २ ॥ स्यमन्तक मणिके तो जाके पाये जडे चिंतामणिकी जडी पटुली, बीचमें पद्मराग मणि जडी चंद्रमाके मंडलके समान गोल ॥ ३ ॥ कौस्तुभ मणिकी किनारी कुण्डमण्डलते मण्डित पारिजातके पुष्पनको जामें आविष्ट अमृत जामें झरे ऐसो जापे छत्र और कल्पवृक्षके फूल जापे बिछ रहे ॥ ४ ॥ ऐसे सिंहासनपे श्रीकृष्णकूं बैठारके हँसते मुखते यह कहतीभई कि, आजु मेरो जन्म सफल भयो, आजु मेरो तप सफल भयो ॥ ५ ॥ हे हरि ! तुमारे आयनेते आजु मेरो धर्म सफल भयो, और धन्य है ये सिद्धाश्रमको स्थान अद्भुत सफलीभूत है भक्तनके सहायक जे तुम तिनकी मैंने भक्ति नहीं कीनी, ॥ ६ ॥ मेरी सहायके लिये

बहोत असुर आपुने मारिडारे, त्रिलोकीको जीतनहारो कंसहू जा तोतें भयभीत हैगयो ॥ ७ ॥ सोऊ मेरे कहेते आपुने मारचो और शंखचूडहू आपुने मारचो, मेरे प्रेमते व्रजमें आपुने वैभवहू दिखायो ॥ ८ ॥ और हे देव ! अपने बलकरिकै आपुने इंद्रको मान भंग करचो, मेरे प्रेमके कारणते व्रजकी रक्षा करवेको गोवर्द्धन पर्वतकूँ धारण कीनो ॥ ९ ॥ इच्छानुसार रासमें आलिंगन करिकै गोपीननें आपकूँ वश कीनो यह आपको चरित्र नरलोककी विडंबना करे है ॥ १० ॥ नारदजी कहे हैं कि, ऐसें कहती राधिकाजी चंद्रानना गोपीकी आज्ञाते श्रीकृष्णकी स्त्रीनकूँ आदरपूर्वक बड़प्पन देतीभई ॥ ११ ॥ रुक्मिणीते, जांबवतीते, नाग्निजितीते, भद्राते, लक्ष्मणाते, कालिंदीते, मित्र विंदाते, श्रीराधिका और दोनो परस्पर आपुसमें सबनसों मिली है ॥ १२ ॥ और रोहिणी आदि सोलहें हजारनसोंहू प्रेमानन्दमयी श्रीराधा सबसो भुजा पसारिकै मिली

समारितोमद्वचनाच्छंखचूडस्त्वयाहरे ॥ मत्प्रेम्णापित्वयादेववैभवंदर्शितंव्रजे ॥ ८ ॥ शक्रस्यमानभंगोपिकृतोदेवत्वयाबलात् ॥ मत्कारणाद्व्रजंरक्षन्धृत्वागोवर्द्धनाचलम् ॥ ९ ॥ यथेच्छालिंगितोरासेगोपीभिस्त्वंवशीकृतः ॥ इदंतेचरितंदेवनरलोकविडंबनम् ॥ १० ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ एवंवदंतीसाराधात्वरंचन्द्राननाज्ञया ॥ सादरेणहरेःपत्नीर्वीक्ष्यतागौरवंददौ ॥ ११ ॥ भैष्मींजांबवतींभामांसत्यांभद्रांचलक्ष्मणाम् ॥ कालिंदींमित्रविंदांचमिलित्वासापरस्परम् ॥ १२ ॥ षोडशस्त्रीसहस्रंचरोहिणीमुखमेवच ॥ प्रेमानन्दमयीदोर्भ्यांपरिरेभेमुदान्विता ॥ १३ ॥ ॥ राधोवाच ॥ ॥ चन्द्रोयथैकोबहवश्चकोराःसूर्योयथैकोबहवोदृशःस्युः ॥ श्रीकृष्णचन्द्रोभगवांस्तथैकोभक्ताभगिन्योबहवोवयंच ॥ १४ ॥ पद्मप्रभावंमधुपोयथाहिरत्नप्रभावंकिलतत्परीक्षित् ॥ विद्याप्रभावंचयथाहिविद्वान्काव्यप्रभावंचयथाकवीन्द्रः ॥ १५ ॥ यथासहस्रेषुजनेषुसत्सुरसप्रभावंरसिकस्तथाहि ॥ जानातितत्त्वेननरेंद्रपुत्र्यःकृष्णप्रभावंभुविकृष्णभक्तः ॥ १६ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ राधावाक्यंतदाश्रुत्वारुक्मिणीभीष्मनंदिनी ॥ सपत्नीसहिताप्राहराधांकमललोचनाम् ॥ १७ ॥ ॥ रुक्मिण्युवाच ॥ ॥ धन्यासिराधेवृषभानुपुत्रित्वद्भक्तिभावेनवशीकृतोयम् ॥ वदत्यलंयस्यकथांत्रिलोकीसएववार्तांवदतित्वदीयाम् ॥ १८ ॥

है ॥ १३ ॥ तब तो श्रीराधिकाजी यह बचन बोली–हे प्यारी हो ! जैसें चन्द्रमा तो एक है चकोर बहुत हैं, सूर्य तो एक है नेत्र बहुत हैं ऐसें श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् तो एक हैं और बहिन हो ! भक्त हम तुम बहुतसी हैं ॥ १४ ॥ कमलको प्रभाव जैसे भौंराही जाने हैं, रत्नको प्रभाव जैसे जोहरीही जाने है विद्याको प्रभाव जैसे पण्डितही जाने है काव्यको प्रभाव जैसे कवींद्रही जानें हैं ॥ १५ ॥ और जैसे हजारनमें रसको प्रभाव तो कोई रसिकही जानें है, हे राजकुमारी हो ! तैसेंई कृष्णको प्रभाव तो या पृथ्वीपै कोई कृष्णको भक्तही जानें हैं ॥ १६ ॥ नारदजी कहे हैं राधाके वचनकूँ सुनिकै भीष्मनन्दिनी जो रुक्मिणी है वो सब रानीनसहित कमलनयना जो राधा है तासे यह वचन बोली ॥ १७ ॥ हे वृषभानुकुमारी ! हे राधे ! तुम धन्य हो श्रीकृष्ण तुमारेई भक्तिभावते वश भये हैं सब त्रिलोकी तो जा श्रीकृष्णकी कथा कहे हैं सो श्रीकृष्ण तुमारी कथा राति दिन कह्यो

करै हैं ॥ १८ ॥ तुमारो जैसो हरिमें भावको लक्षण सुनो हो तैसोई देख्यो सो कछू अचम्भो नहीं है अब आपु हमारे डेरानमें चलिये जहांते हम आपुको लिवाईवेकूं आई हैं ॥ १९ ॥ नारदजी कहे हे-ऐसे कहिके रुक्मिणीजी राधिकाजीकूं बड़े आदरते अपने डेरानमें लिवायलावतीभई ॥ २० ॥ कैसो डेरा है कि, सर्वतोभद्र जाको नाम है कमलनकी जामें सुगन्धि है जामें सुनहेरी पलिकापै शिरिसके फूलसी कोमल गादी तकिया गेंदूआ जापै धरे हैं ॥ २१ ॥ तहां बैठारि फूल, माला, चन्दन, वस्त्र, आभूषण, भक्ष्य, भोज्यते बहुत सत्कारते राधिकूं निवास करावती भई ॥ २२ ॥ गोपिनके जैसो यूथ तिनको न्यारो न्यारो सत्कार करिके रुक्मिणीजी बहुत प्रकारकी वार्तालापते प्यारी प्यारी करि करिके राधिकाजीको स्वावतीभई तब फिर रुक्मिणी आदि सब रानी अपने अपने डेरानकूं चलीगई ॥ २३ ॥ जब रुक्मिणी श्रीकृष्णके पास गई सो कृष्णको

श्रुतंयथातेहरिभावलक्षणंतथाहिदृष्टंनहिचित्रमेवहि ॥ गच्छाशुचास्मच्छिबिराणियत्रहित्वांनेतुमत्रागतवत्यआदृताः ॥ १९ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवमुक्त्वाभीष्मसुताराधांकीर्तिसुतांतदा ॥ समानीयस्वशिबिरेसादरेणमहात्मना ॥२०॥ शिबिरेसर्वतोभद्रेपद्मकिंजल्कवासिते ॥ हैमेशिरीषमृदुलेपर्यंकेसोपबर्हणे ॥ २१ ॥ सुखंनिवासयामासवस्त्रसंभूषणादिभिः ॥ संपूज्यविधिवद्राज्ञीसपत्नीसहितासती ॥ २२ ॥ गोपीनांशतयूथंचसंपूज्यचपृथक्पृथक् ॥ वार्तालापान्बहुविधान्कृत्वाकृष्णप्रियास्ततः ॥ २३ ॥ स्वापयित्वाथतांजग्मुःस्वंस्वंवैशिबिरंमुदा ॥ कृष्णपार्श्वंगताभैष्मीदृष्ट्वाजाग्रदुपस्थितम् ॥ कथंनशेषेभोस्वामिन्नितिकृष्णमुवाचह ॥ २४ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ प्रद्युम्नप्रश्रवणैराश्वासेनव्रजेश्वरी ॥ अर्चिताहित्वयासुभ्रुप्रसन्नासाभवत्परम् ॥ २५ ॥ साचनित्यंहिपिबतिशयनादौपयःशुभम् ॥ पयःपानंतुनकृतमद्यसुभ्रुतयाकिल ॥ २६ ॥ तेननिद्रानयनयोर्नजातास्यामहामते ॥ तस्मान्ममापिप्रस्वापोनजातोभीष्मकन्यके ॥ २७ ॥ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वापरंभैष्मीसपत्नीभिःसमन्विता ॥ नीत्वादुग्धंतत्समीपंप्रययौपरमादरात् ॥ २८ ॥ उष्णंदुग्धंसिताशुक्लंकचोलेहैमनेकृते ॥ अपाययत्परंप्रीत्याराधांभीष्मकनंदिनी ॥ २९ ॥ एवमभ्यर्च्यविधिवद्दत्वाताम्बूलवीटकम् ॥ सत्यभामादिभिःशश्वत्सपत्नीभिःसमन्विता ॥ ३० ॥ आगत्यकृष्णसामीप्यंवदंतीस्वकृतंशुभा ॥ भेजेश्रीरुक्मिणीसाक्षाच्छ्रीकृष्णपदपंकजम् ॥ ३१ ॥

जागतोही देखो सो ये नहीं है तब रुक्मिणीजीने कही कि हे स्वामी ! आपु सोये क्यों नहीं हे ? ऐसे श्रीकृष्णते बोली ॥ २४ ॥ तब भगवान् बोले कि, हे सुभ्रू ! तुमने प्रद्युम्न और प्रश्रवण तातें व्रजेश्वरीको आश्वासन और सत्कार बड़ो कीनो यातें परमप्रसन्न भई ॥ २५ ॥ परन्तु वो नित्य सोवतीबेर दूध पीवतीही सो आज वाने दूध नहीं पीयो, हे सुभ्रू ! याहीतें वाको आज अबतक निश्चेई नींद नहीं आई ॥ २६ ॥ तातें मेरे नेत्रनमेंहू नींद नहीं आई,हे महामते ! हे भीष्मकन्ये ! तातें मैं सोयो नहीं हूं ॥ २७ ॥ तब तो नारदजी बोले कि, श्रीकृष्णको ये वचन ऐसे सुनिके सौतिनसहित बड़े आदरते रुक्मिणी दूध लेके राधाके समीप गई ॥ २८ ॥ तातो गरम २ दूध मिश्री डारिके सोनेके कटोरामें परम प्रीतिते जायके रुक्मिणीजी राधाकूं प्यावतीभई ॥ २९ ॥ ऐसे श्रीराधाजीको विधिपूर्वक सत्कार करिके पानकी बीरी देके सत्यभामादिक अपनी सपत्नीनके संग ॥ ३० ॥ श्रीकृष्णके पास आयके अपनो

कर्तव सब कह्यो फिर श्रीकृष्णके चरणकमल दाबन लगी ॥ ३१ ॥ तब अपने कोमल करपल्लवनते चरण लव्याय रही ही सो श्रीकृष्णके चरणकमलमें छाले परे देखिके बड़े अचम्भेमे आयगई ॥ ३२ ॥ और ये बोली कि, हे प्रभो ! तुमारे चरणमें छाले कैसे परिगये हैं अबही भये हैं इनको कारण मैं नहीं जानूहूं ॥ ३३ ॥ नारदजी कहैंहैं कि, भगवान् तब सोल्है हजार स्त्रीनके सुनते रे आपु हरि राधाकी भक्तिके प्रकाशके अर्थ प्रसन्न हैके रुक्मिणीते ये बोले ॥ ३४ ॥ कि, हे प्रिया हो ! श्रीराधिकाके हृदयकमलमें मेरे चरणकमल रहे आवैहै, राति दिन स्नेहकी रस्सीमें बंधे एकक्षण या अधिक छिन चलायमान नहीं होयहैं ॥ ३५ ॥ सो आजु तातो दूध पियेतें मेरे पांवनमें छाले उछरैहैं देखो मैं तो इनको नेकहू तातो नाहि प्याऊं हूं और तुमने तातो दूध प्याय दियो ॥ ३६ ॥ नारदजी कहैंहैं कि, श्रीकृष्णको ये वचन सुनिके रुक्मिणीते आदि दैके जे श्रेष्ठ स्त्री हीं वे प्रेमते

संलालयंतीसततंकोमलैःकरपल्लवैः ॥ कृष्णपादतलोच्छालान्वीक्ष्यसाविस्मिताभवत् ॥ ३२ ॥ उच्छालकाःकथंजातास्तवपादतलेप्रभो ॥ अद्यैवभूताभगवन्नवेद्म्यत्रहिकारणम् ॥ ३३ ॥ षोडशस्त्रीसहस्राणांशृण्वंतीनांहरिःस्वयम् ॥ राधाभक्तिप्रकाशार्थंप्रसन्नःप्राहरुक्मिणीम् ॥ ॥३४॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ श्रीराधिकायाहृदयारविंदेपादारविंदंहिविराजतेमे ॥ अहर्निशंप्रश्रयपाशबद्धंलवंलवार्द्धंनचलत्यतीव॥३५॥ अद्योष्णदुग्धप्रतिपानतोंघ्रावुच्छालकास्तेममप्रोच्छलंति ॥ मन्दोष्णमेवंहिनदत्तमस्यैयुष्माभिरुष्णंतुपयःप्रदत्तम् ॥ ३६ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ श्रीकृष्णस्यवचःश्रुत्वारुक्मिण्याद्यास्त्रियोवराः ॥ प्रेम्णापादंविमृज्याथविसिष्मुःसर्वतोनृप ॥ ३७ ॥ श्रीराधायाःपराप्रीतिर्माधवेमधुसूदने ॥ तत्समानानचैकैषाअद्वितीयामहीतले ॥ ३८ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीद्वारकाखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेसिद्धाश्रमेश्रीराधाकृष्णसमागमेराधाप्रेमप्रकाशोनामसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ श्रीराधायाःपरांप्रीतिंज्ञात्वागोपीगणस्यच ॥ ऊचुर्हरिंराजपुत्र्यस्तद्रासप्रेक्षणोत्सुकाः ॥ १ ॥ ॥ पट्टराज्यऊचुः ॥ ॥ धन्यागोप्यस्तुतेभक्ताप्रेमलक्षणसंयुताः ॥ याःप्राप्तारासरंगेवैतासांकिंवर्ण्यतेतपः ॥ २ ॥ वृन्दावनेकृतोरासोविधिनायेनमाधव ॥ तंविधिंद्रष्टुमिच्छामोयदित्वंमन्यसेप्रभो ॥३॥ त्वंचात्रैवतथाराधागोप्यःसर्वाव्रजांगनाः ॥ वयंचात्रैवदेवेशरासोयोग्योभवेदिह ॥ ४ ॥

चरणनकूं छोड़िके हे नृप ! सब ओरते अत्यन्त विस्मित हैगई ॥ ३७ ॥ और ये कहनलगी कि, श्रीराधिकाकी परम प्रीति माधव मधुसूदनमें है ताके समान हमारी काहूकीहू ऐसी एक अद्वितीय प्रीति नहीं है ॥ ३८ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां द्वारकाखण्डे भाषाटीकायां सिद्धाश्रमे राधाप्रेमप्रकाशो नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ श्रीनारदजी बहुलाश्वते कहैं हैं कि, श्रीराधिकाकी श्रीकृष्णमें परम प्रीति देखिके और तैसेई गोपीनकी कृष्णमें अद्वितीय प्रीति देखिके सब राजकुमारी हरिते बोली, ये सब कैसी हैं कि, जिनको रास देखिवेके लिये उत्कण्ठिता-हैं ॥ १ ॥ तब ये पटरानी बोली–गोपी धन्य हैं जे तुम्हारी प्रेम लक्षणा भक्तिमें भरी ये रासरंगमें प्राप्त भईहैं तिनके तपको कहा वर्णन करैं ॥ २ ॥ हे माधव ! वृन्दावनमें कौन विधिते आपने रास कीनोहो वा विधिकूं हम देखिवे की इच्छा करैहैं जो आपुकी इच्छा होय तो ॥ ३ ॥ आपुहू यहीं हो श्रीराधिकाजूहू यहीं हैं गोपीहू सब यहीं हैं ताते वो रास यहीं हैवो योग्य है ॥ ४ ॥

हे भगतके नाथ ! ये हमारो मनोरथ आपु पूर्ण करिवेयोग्य हो, हे मनोहर ! और हमारो कछू मनोरथ नहीं है ॥ ५ ॥ ऐसो उनको वचन सुनिके भगवान् हंसतेसे तिनते प्रेमभरी अपनी वाणी नते मोहसो करत यह बोले ॥ ६ ॥ रासकी ईश्वरी राधा है सो यहां तो तब रास होय जब वाकी इच्छा होय ताते तुम श्रीराधाते पूछि देखो ॥ ७ ॥ ऐसे रुक्मिणीते आदि दे सब रानी या वचनकूं सुनिके परम प्रेमते राधाके पास जायके हँसत २ यह बोली ॥ ८ ॥ रानी बोलीं—हे रम्भोरू ! हे चन्द्रवदने ! हे व्रजसुन्दरीशे ! हे रासेश्वरी ! हे सखि ! हे शीलरूपे ! हे राधे ! हे सुकीर्तिकुलकीर्तिकरे ! हे शुभांगि ! तुमकूं पूछिवेकूं हम सब आई है ॥९॥ रसके दाता यहां रासेश्वरहू है, रासेश्वरी तुमहू हो और गोपवरनकी अंगनाऊ यहांही है, रसके अर्थ सब विधिमें हमहू हैं याते आपु रास करिये, रास हमहू बड़ो प्यारो है ॥ १० ॥ तब राधिकाजी बोली कि, रासके ईश्वर सबते परे संतनपै

पूर्णीकुरुजगन्नाथअस्माकंतुमनोरथम् ॥ कृतोमनोरथोन्योनरासक्रीडांमनोहर ॥ ५ ॥ इतितासांवचःश्रुत्वाभगवान्प्रहसन्निव ॥ प्राहताः प्रेमसंयुक्तोगीर्भिःसंमोहयन्निव ॥ ६ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ रासेश्वर्यास्तुराधायामनश्चेद्रंतुमंगनाः ॥ तदारासोभवेदत्रभवती भिस्तुपृच्छताम् ॥ ७ ॥ इतिश्रुत्वावचस्तस्यरुक्मिण्याद्यानृपात्मजाः ॥ राधामेत्यपरंप्रेम्णाप्राहुःप्रहसिताननाः ॥ ८ ॥ ॥ श्रीराज्ञ्य ऊचुः ॥ ॥ रंभोरुचन्द्रवदनेव्रजसुन्दरीशेरासेश्वरिप्रियतमेसखिशीलरूपे ॥ रासेसुकीर्तिकुलकीर्तिकरेशुभांगेत्वांप्रष्टुमागतवतीःसकलावयं स्म ॥ ९ ॥ रासेश्वरोपिकिलचात्ररसप्रदातारासेश्वरीत्वमपिगोपवरांगनाश्च ॥ एवंवयंस्मइतिसर्वविधौरसार्थेरासंकुरुप्रियतमेचतथाप्रियंनः ॥ ॥ १० ॥ ॥ श्रीराधोवाच ॥ ॥ रासेश्वरस्यपरमस्यसतांकृपालोरंतुंमनोयदिभवेत्तुतदात्ररासः ॥ शुश्रूषयापरमयापरयाचभक्त्यासंपूज्यतं किलवशीकुरुतप्रियेष्टाः ॥ ११ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ राधायावचनंश्रुत्वाश्रीकृष्णोक्तंतथावदत् ॥ तथास्तुचोक्तासाराधाप्रसन्नाभू न्महामनाः ॥ १२ ॥ माधवेपूर्णिमायांतुपुण्येसिद्धाश्रमेशुभे ॥ प्रदोषकालेचन्द्राभेरासारंभोबभूवह ॥ १३ ॥ रासेश्वरस्यरासार्थेरासेश्वर्या समन्वितः ॥ रराजरासेरसिकोयथारत्यारतीश्वरः ॥ १४ ॥ यावतीर्गोपिकाःसर्वायावतीराजकन्यकाः ॥ तावद्रूपधरोरेजेएकःकृष्णोद्व योर्द्वयोः ॥ १५ ॥ तालवेणुमृदंगानांकलकण्ठैःसखीजनैः ॥ वल्गुनूपुरकांचीनांमिश्रशब्दोमहानभूत् ॥ १६ ॥

कृपा करनहारे श्रीकृष्ण जो रमिवेकूं मन करे तो यहाँ रास होय सो परम शुश्रूषा करिके और परम भक्तिते उन्हें पूजिके हे प्यारी हो ! वश करो ॥ ११ ॥ नारदजी कहेहैं कि ऐसो राधाको वचन सुनिके श्रीकृष्णको कथन कह्यो तब तथास्तु ऐसे कहिके बड़े मनवारी राधिकाजी प्रसन्न होतभई ॥ १२ ॥ तब वैशाखकी पूर्णमासीकूं शुभ पवित्र वा सिद्धाश्रममें प्रदोषकालमें चंद्रोदयके समे रासको प्रारंभ होतभयो ॥ १३ ॥ रासेश्वरीके संग रसिक रासेश्वरकी बड़ी शोभा होतभई, रतिके संगमें कामदेवकी जैसे ॥ १४ ॥ तब जितनी गोपी और जितनीही राजकन्या तितनेई रूप एक श्रीकृष्णके हैगये तब द्वैदेनके बीचमें एक एक कृष्ण दीसे ॥१५॥ मृदंग, मंजीरा, वेणु, वीणा इनके शब्द और मनो

तरकण्ठी सखीजननके शब्द मनोहर नूपुर कोंधनीनके मिलेभये मनोहर शब्द होतभयो ॥ १६ ॥ कोटि कंदर्पसे लावण्य वनमाला पेहेरें, मकराकृत कुंडल धरे, पीतांबर धारी, किरीट, कंकण, बाजूबंद ऐसो शृंगार करे ॥ १७ ॥ रासेश्वरीके संग रासेश्वरकी बडी शोभा होतीभई तारागणनते चंद्रमाकी जैसी शोभा होय है ॥ १८ ॥ ऐसे सबरी राति एक क्षणकी बराबर रासमंडलमें व्यतीत हैगई वो रात महाआनंदमयी भई ॥ १९ ॥ तब रुक्मिणीते आदि देके उत्तम स्त्री श्रीरासमंडलकूं देखिकें परम आनंदकूं प्राप्त हैगई ओर सबनके पूर्ण मनोरथ हैगये ॥ २० ॥ परिपूर्णतम साक्षात् श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम तिनते रासके अंतमें रुक्मिणीते आदि देके सब रानी पटरानी प्रेममें परायण हैके यह बोली ॥ २१ ॥ कि, हे नाथ ! या मनोहर रासरंगमें आपको अति सुंदर रूप ताकूं देखिके हमारो मन परमानंदकूं प्राप्त हैगयो है जैसे ब्रह्मानंदकूं प्राप्त भयो जो मुनि हैं सो ॥

कोटिकंदर्पलावण्यःस्रग्वीकुण्डलमंडितः ॥ पीतांबरधरोराजन्किरीटकटकांगदः ॥ १७ ॥ रासेश्वर्यासमंगायत्रासेरासेश्वरःस्वयम् ॥ स्त्रीगणैः सहितोराजंश्चंद्रस्तारागणैर्यथा ॥ १८ ॥ एवंसर्वानिशाराजन्क्षणवद्रासमण्डले ॥ व्यतीताभून्महाराजमहानंदमयीःशुभाः ॥ १९ ॥ श्रीरासमण्डलंदृष्ट्वारुक्मिण्याद्यास्त्रियोवराः ॥ जग्मुस्ताःपरमानंदंसर्वाःपूर्णमनोरथाः ॥ २० ॥ परिपूर्णतमंसाक्षाच्छ्रीकृष्णंपुरुषोत्तमम् ॥ रासांतेरुक्मिणीमुख्याःप्राहुःप्रेमपरायणाः ॥ २१ ॥ ॥ राज्यऊचुः ॥ ॥ दृष्ट्वात्वद्रूपमाधुर्य्यंरासरंगेमनोहरे॥ गतंमनोनःस्वानंदंब्रह्मानंदंयथा मुनिः ॥ २२ ॥ एतादृशोपिरासोन्योनभूतोनभविष्यति ॥ शतयूथस्तुगोपीनामत्रमाधववर्तते ॥ २३ ॥ पत्न्यःषोडशसाहस्रंसखीभिःसहितावयम् ॥ सखिकोटियुताश्चात्रअष्टपट्टमहास्त्रियः ॥ २४ ॥ वृन्दावनेपिनैतादृग्भूतोवामाधवेश्वर ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवंकृताभिमानानांराज्ञीनांप्रहसन्हरिः ॥ प्राहेदंपृच्छतांराधाभवतीभिःपरात्परम् ॥ २५ ॥ सत्यभामादिकाःसर्वाःपृच्छंतितांमनोहराम् ॥ किंचिद्धसंतीमनसिप्राहराधापरंवचः ॥ २६ ॥ ॥ श्रीराधोवाच ॥ ॥ ननुरासःपरंचात्रबहुस्त्रीगणसंकुलः ॥ पूर्वरासरसमोनस्याद्यस्तुवृन्दावनेभवत् ॥ २७ ॥ क्वचात्रवृन्दारण्यंहिदिव्यद्रुमलताकुलम् ॥ प्रेमभारानतलतंमधुमत्तमधुव्रतम् ॥ २८ ॥

॥ २२ ॥ ऐसो रास न कबहूं भयो न होय, हे माधव ! जो या रासमें गोपीनके सौ यूथ हैं ॥ २३ ॥ और सोल्है हजार हम रानी पटरानी और किरोड़ सखीनसहित जहां आठ पटरानी हैं ॥ २४ ॥ हे माधव ! हे ईश्वर ! ऐसो चाहे वृंदावनमेंऊ न भयो होयगो, नारदजी कहेहैं कि, ऐसे कीनोहै अभिमान जिन्ने तिन रानीनते हँसते हँसते भगवान् बोले कि, गोपी हौ ! यह बात तो तुमें राधाजीते पूछनी चाहिये ॥ २५ ॥ तब तो सत्यभामादिक जे रानी हैं वे मनोहर जो श्रीराधा है ताते पूछनलगीं, तब मनमें हँसत भई जो राधा सो ये परम वचन कहतीभई ॥ २६ ॥ कि, रास यहांहू सुंदर भयो बोहत स्त्रीगणनको समूह जामें पन पेहले रासकी बराबर ये न भयो जो कि, वृन्दावनमें भयो हो ॥ २७ ॥ वुह वृंदावन कहां जामें दिव्य वृक्ष लतानते आकुल प्रेमके भारते जिनकी

लता झुक रही है, सुगंधिते मत्त भौंरानकी गुंजार जामें ॥ २८ ॥ पुष्पभारकूं वहती हंस और कमलनतें संयुक्त रत्ननते भरी सिंदूरकी जैसी सो यमुना यहां कहा ॥ २९ ॥ पुष्प
भारते नविरही ऐसी माधवी लता कहां, ये वृन्दावनके प्रेमी पक्षी, तुह मधुरध्वनि गामें सो कहां ॥ ३० ॥ चंचल भौंरा जिनमे गुंजारें ऐसी कुंज निकुंजके दिव्य मन्दिर कहां,
उन निकुंजनमें चलत तुह शीतल मन्द कमलरजसों सुगंधित पवन कहां ॥ ३१ ॥ मनोहर ऊंचे शिखर जामें, फल फूलनते भरी है दरी गुफा जाकी सो गोवर्द्धन कहां
॥ ३२ ॥ कालिंदीके मनोहर पुलिनमें चमकनी रेतीमें वेत लीयें बांसुरी बजावंत मोरपंखते बांधी जो मल्लकीसी फेंट ताते राजत श्याम कहां ॥ ३३ ॥ वनमालाते भूषित
श्रीकृष्णको यो शृंगार यहां कहां, श्यामसुन्दर सचिक्कन जो छल्लादार अलकावलीकी सुगंधि जामें चिरमिटीनते पुष्पनको कृष्णको शृंगार कहां ॥ ३४ ॥ श्रीकृष्णके मुख

पुष्पव्यूहान्वहंतीयायथोष्णिङ्सुद्रिताशुभा ॥ हंसपद्मसमाकीर्णाक्वचात्रयमुनानदी ॥ २९ ॥ माधव्यस्तुलताःक्वात्रपुष्पभारनताःपराः ॥ क्व
पक्षिणःप्रेमपरागायंतिमधुरास्वनम् ॥ ३० ॥ लोलालिपुंजाःकुंजाःक्वनिकुंजादिव्यमंन्दिराः ॥ क्ववायुःशीतलोमन्दोवातिपद्मरजोहरन् ॥
॥ ३१ ॥ शृंगैर्मनोहरैरुच्चैर्गिरिर्गोवर्द्धनोचलः ॥ सर्वत्रफलपुष्पाढ्योदरीभिःक्वकरीवसः ॥ ३२ ॥ कालिंदीपुलिनेरम्येवालुकाचितसैकते ॥
वंशीवेत्रधरोमल्लपरिबर्हविराजितः ॥ ३३ ॥ क्वात्रकृष्णशृंगारोवनमालाविभूषितः ॥ श्यामानामलकानांचवक्राणांगन्धधारिणाम् ॥ ३४ ॥
वलितंहरितंक्वात्रकुण्डलाभ्यांपरस्परम् ॥ श्रीमुखेकृष्णचन्द्रस्यगण्डस्थलमनोहरे ॥ ३५ ॥ पत्रावलीगन्धलोभाद्भ्रमद्भृंगावलीयुते ॥ क्वप्रेम्णा
दर्शनंचैवस्पर्शनंहर्षणंतथा ॥ ३६ ॥ कामेषुतिग्मकोणैश्चनेत्रैःक्वापांगजोरसः ॥ आकर्षणंक्वहस्ताभ्यांहस्ताद्धस्तविसर्जनम् ॥ ३७ ॥ विलीन
त्वंनिकुंजेषुसंमुखेनतुदर्शनम् ॥ ग्रहणंक्वात्रचीराणांहरणंवेणुवेत्रयोः ॥ ३८ ॥ क्वप्रेम्णाचात्रबाहुभ्यांकर्षणंचपरस्परम् ॥ पुनःपुनस्तद्ग्रहणंभुजे
चन्दनचर्चितम् ॥ ३९ ॥ यत्रयत्रचयालीलातत्रतत्रैवशोभते ॥ यत्रवृन्दावनंनास्तितत्रमेनमनःसुखम् ॥ ४० ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ राधा
वाक्यंततःश्रुत्वासर्वाःपट्टमहास्त्रियः ॥ जहुर्मानंस्वरासस्यविस्मिताहर्षिताश्चताः ॥ ४१ ॥ एवंसिद्धाश्रमेरासंकृत्वाश्रीराधिकेश्वरः ॥ नीत्वा
गोपीगणान्सर्वान्राधयासहितोहरिः ॥ ४२ ॥

कमलपे हलत चलत जो परस्पर वीझुरीसे कुण्डलनकी शोभा सो कहां ॥ ३५ ॥ पत्रावलीकी सुगंधिके लोभते भ्रमत जो भृंगावली जामें ऐसो कृष्णको दर्शन कहां, तुह
स्पर्शन हर्षण कहां ॥ ३६ ॥ कामके पैने बान ऐसे जे कटाक्ष तिनको रस कहां, हाथनते खैंचिके हाथते हाथ छुड़ायवो कहां ॥ ३७ ॥ विन निकुंजनमें दुबकनो ढूंढ़नो तुह
चीरहरण तुह वेत बांसुरीको चुरायवो कहां ॥३८॥ प्रेम करिके गलमुखमें भुजानते खैंचिवो कहां, वेरवेर भुजानते चंदन लगायवो कहां ॥ ३९ ॥ जहां जहां जो जो लीला है ताकी
तहांही तहां शोभा है, जहां वृन्दावन नहीं है तहां मेरे मनकूं सुख नहीं है ॥ ४० ॥ नारदजी कहें है-ऐसे पटरानी रानी राधाको वाक्य सुनिके अपने रासको मान त्याग देतभईं
और विस्मित हैके हर्षित होतभईं ॥ ४१ ॥ ऐसे सिद्धाश्रममें राधिकेश्वर रास करिके सब गोपीगणनकूं लेके राधिकाकूं रानी पटरानीनकूं संग लेके द्वारिकामें प्रवेश होतभये ॥४२॥

स्त्रीनसहित जब द्वारिकामें आये तब राधिकाकूँ और न्यारो मन्दिर बनवावत भये ॥ ४३ ॥ तिनमें सब व्रजसुन्दरीनकूं बसावत भये यह सिद्धाश्रमकी कथा मैंने तेरे अगाड़ी कही, हे नृप ! ॥४४॥ सो सब पापनकी हरनहारी सबकूं मोक्ष देनहारी है ॥ ४५ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां द्वारकाखण्डे भाषाटीकायां सिद्धाश्रममाहात्म्ये रासोत्सवो नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ नारदजी कहें हैं द्वारावतीको मण्डल चारिसै कोशको है ताकी चारिसैई कोशकी परिक्रमा है ॥ १ ॥ ताके बीचमें कृष्णको रच्यो बारह जोजनको किलो है दूसरो बाहिरको किलो नब्बह कोशको है श्रीकृष्णमहात्माने बनायो है ॥ २ ॥ तीसरो किलो द्वैकम दोसै कोशको है यामें रत्नके महल मन्दिर हैं ॥३॥ तिनके भीतर श्रीकृष्णको दुर्ग है तामें नौ लाख विचित्र मंदिर बनें है ॥ ४ ॥ तहां राधाको मंदिर है ताके दरवाजेपै लीलासरोवर है सब तीर्थनमें उत्तम है गोलोकते आयो है ॥ ५ ॥ जामें जो कोई पापी

सभार्य्योभगवान्साक्षाद्वारिकांप्रविवेशह ॥ कारयामासराधायैमन्दिराणिपराणिच ॥ ४३ ॥ निवासयित्वासुसुखंसर्वास्ताश्चव्रजौकसः ॥ इत्थंसिद्धाश्रमकथामयातेकथितानृप ॥ ४४ ॥ सर्वपापहरापुण्यासर्वेषांचैवमोक्षदा ॥ ४५ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायां श्रीद्वारकाखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेसिद्धाश्रममाहात्म्येरासोत्सवोनामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ द्वारावतीमण्डलंतुशतयोजनविस्तृतम् ॥ तस्यप्रदक्षिणासर्वायोजनानांचतुःशतम् ॥ १ ॥ तन्मध्येकृष्णरचितंदुर्गंद्वादशयोजनम् ॥ द्वितीयंचबहिर्दुर्गंनवतिंचदुरुत्तरम् ॥ क्रोशैःसंघट्टितंराजञ्छ्रीकृष्णेनमहात्मना ॥ २ ॥ तृतीयंचतथादुर्गंयूनैश्चद्विशतैर्नृप ॥ क्रोशैःसंघट्टितंराजन्रत्नप्रासादसंयुतम् ॥ ३ ॥ तेषामंतरदुर्गेपिश्रीकृष्णस्यमहात्मनः ॥ मंदिराणिविचित्राणिनवलक्षाणिसंतिहि ॥ ४ ॥ तत्रराधामंदिरस्यद्वारेलीलासरोवरम् ॥ सर्वतीर्थोत्तमंराजन्गोलोकाचसमागतम् ॥ ५ ॥ यस्मिन्स्नात्वानरःपापीव्रतीभूत्वासमाहितः ॥ अष्टम्यांहेमदानंचदत्त्वानत्वाविधानतः ॥ ६ ॥ कोटिजन्मकृतैःपापैर्मुच्यतेनात्रसंशयः ॥ प्राणांतेतन्नरंनेतुंगोलोकाचमहारथः ॥ ७ ॥ सहस्रादित्यसंकाशआगच्छतिनसंशयः ॥ दशकंदर्पलावण्योरत्नकुण्डलमंडितः ॥ ८ ॥ स्रग्वीपीतांबरःश्यामःसहस्रार्कस्फुरद्द्युतिः ॥ सहस्रपार्षदैर्युक्तश्चामरांदोलराजितः ॥९॥ जयध्वनिसमायुक्तोवेणुदुंदुभिनादितः ॥ भूत्वैवंरथमास्थायगोलोकंयात्यसंशयम् ॥१०॥ अथतीर्थानिचान्यानिशृणुराजन्महामते ॥ शतोत्तराणितत्रैवसहस्राणिचषोडश ॥११॥ अष्टभिःसहितान्येवपत्नीनांभवनानिच ॥ तानिप्रदक्षिणीकृत्यनत्वानत्वापृथक्पृथक् ॥ १२ ॥

नर स्नान करे सावधान ह्वैके व्रती ह्वैके अष्टमीकूँ विधानते सुवर्ण दान करे और प्रणाम करै ॥ ६ ॥ तौ कोटि जन्मके पापते छूटिजाय और प्राणांतमें वा नरकूं लेवेको गोलोकते रथ आवे ॥ ७ ॥ जाको हजार सूर्यकोसो तेज यामें सन्देह नहीं और दश कंदर्पसों सुन्दर ह्वैके रत्नकुंडलते मंडित ॥८॥ माला पेहरे पीतांबरधारी श्यामरूप हजार सूर्यकोसो जाको तेज हजार पार्षदन करिके युक्त चामरन ढुरवेसों सुशोभित ॥ ९ ॥ वेणु दुंदुभी बजती जायँ जय जयकी ध्वनिसहित वो गोलोककूँ जायहै यामें कछु संदेह नहीं है ॥ १० ॥ हे राजन् ! हे महामते ! अब या द्वारकामें जे औरहू तीर्थ है तिने तूं सुनि सोल्हे हजार और एकसौ आठ तीर्थ हैं ॥ ११ ॥ पटरानीनसहित तिनके महल हैं तिनकूं न्यारी २

दंडौत करिकें परिक्रमा करे ॥ १२ ॥ जो ज्ञानतीर्थमें स्नान करिकें कल्पवृक्षको स्पर्श करे ताकूं ज्ञान, वैराग्य, भक्ति तीनो बातें तत्क्षण प्राप्त होयहैं ॥ १३ ॥ और प्रसन्न हैकें श्रीकृष्ण वाकें हृदयमें सदा वसे है और समृद्धि सिद्धि सब वाकूं आपुही प्राप्त होयहैं ॥ १४ ॥ जो मनुष्य हरिमंदिरको दर्शन करे सो जीवन्मुक्त हैके कृतार्थ होयहै ताके समान कोई वैष्णव नही है और ताके समान कोई तीर्थ भी नहीं है ॥ १५ ॥ पांच योजनपे भगवान्के मंदिरते सौ धनुषपे एक कृष्णकुंड है वो कृष्णके तेजते उत्पन्न भयोहे ॥ १६ ॥ जामे स्नान करिकें सांब जांबवतीको बेटा कुष्ठते मुक्त हैगयो ताके दर्शनमात्रतेंहि सब पापनते छूटिजायहै ॥ १७ ॥ हे मैथिल ! ताते अठारह पैडपे पूर्व दिशामे सब तीर्थनमें उत्तम बडो पुण्य एक बलभद्र सरोवर है ॥ १८ ॥ जहाँ पृथ्वीकी प्रदक्षिणा करके बलदेव महाबली यज्ञ रचिके रेवतीसहित विराजते भये ॥ १९ ॥ तहां

ज्ञानतीर्थेसमाप्लुत्यस्पृशेद्यःपारिजातकम् ॥ तस्यज्ञानंचवैराग्यंभक्तिर्भवतितत्क्षणात् ॥ १३ ॥ श्रीकृष्णोहृदयेतस्यवसेद्धृष्टमनाःसदा ॥ समृद्धिसिद्धयःसर्वास्तंभजंतिनिसर्गतः ॥१४॥ समुक्तःसकृतार्थःस्याद्यःपश्येद्धरिमंदिरम् ॥ तत्समोवैष्णवोनास्तितीर्थंनतत्समंनहि ॥ १५ ॥ पंचयोजनविस्तीर्णाद्भगवन्मंदिरात्ततः ॥ धनुःशतेकृष्णकुण्डःकृष्णतेजःसमुद्भवः ॥ १६ ॥ यत्रस्नात्वाकुष्ठतोमुक्तःसांबोजांबवतीसुतः ॥ तस्यदर्शनमात्रेणसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ १७ ॥ तस्मादष्टादशपदेपूर्वस्यांदिशिमैथिल ॥ सर्वतीर्थोत्तमंपुण्यंबलभद्रसरोमहत् ॥ १८ ॥ पृथ्वीप्रदक्षिणांकृत्वाबलदेवोमहाबलः ॥ यज्ञंयत्रविनिर्मायरेवत्याविरराजह ॥ १९ ॥ तत्रस्नात्वानरःसद्योमुच्यतेसर्वपातकात् ॥ पृथ्वीप्रदक्षिणायाश्चफलंतस्यनदुर्लभम् ॥ २० ॥ भगवन्मंदिराद्राजन्सहस्रंधनुरग्रतः ॥ दक्षिणस्यांमहातीर्थंगणनाथस्यवर्तते ॥ २१ ॥ अनिर्दशेगतेराजन्प्रद्युम्नेस्वसुतेतदा ॥ गणेशपूजनंयत्रपूजयामासरुक्मिणी ॥ २२ ॥ तत्रस्नात्वाहेमदानंयोददातिनृपेश्वर ॥ पुत्रप्राप्तिर्भवेत्तस्यवंशस्तस्यविवर्द्धते ॥ ॥ २३ ॥ भगवन्मंदिराद्राजन्दिग्विभागेचपश्चिमे ॥ धनुर्द्विशतेचास्तेदानतीर्थंपरंशुभम् ॥ २४ ॥ यत्रश्रीकृष्णचन्द्रस्यनित्यंदानंकरोतियः ॥ तत्रस्नात्वानरोराजन्द्विपलंकांचनंतथा ॥ २५ ॥ चतुर्गुणंतुरजतंपट्टांबरशतंतथा ॥ तथासहस्रमौल्यानिनवरत्नानियानिच ॥ २६ ॥ योददातिनरश्रेष्ठस्तस्यपुण्यफलंशृणु ॥ अश्वमेधसहस्राणिराजसूयशतानिच ॥ २७ ॥

स्नान करे तो सब पापनते छूटिजाय और पृथ्वीकी परिक्रमाको फल याकूं दुर्लभ नहीं है ॥ २० ॥ हे राजन् ! भगवान्के मंदिरके हजार धनुषपे अगारी एक दक्षिण दिशामें गणनाथ तीर्थ है ॥ २१ ॥ जब पहले दश दिनाके भीतर प्रद्युम्न अपनो बेटा जातरह्यो तब गणेशको पूजन रुक्मिणीजी करतभई ॥ २२ ॥ तहां स्नान करिके हे नृपेश्वर ! जो हेमदान करे तो वाकूं पुत्रकी प्राप्ति होय और वंशकी बढवार होय ॥ २३ ॥ और भगवान्के मंदिरते पश्चिम दिशामे दुसै धनुषपे एक अतिशुभ दानतीर्थ है ॥ २४ ॥ जहां श्रीकृष्ण नित्य दान कर्योकरतेहै जहां स्नान करिके द्वै टकाभरि सोनों दान करे और ॥ २५ ॥ ताते चौगुनी चांदीको दान करे और सौ १०० रेसमी वस्त्र को दान करे, हजार मोहरके तथा नौ रत्नको दान करे ॥ २६ ॥ जो इतनो दान देय ताको पुण्य फल सुनि हजार अश्वमेध और सौ राजसूय यज्ञ ॥ २७ ॥

ये दानतीर्थके पुण्यके सोलहवीं कलाकूँ नहीं प्राप्त होय है, बदरिकाश्रमकी यात्रामें आदमीको जो फल प्राप्त होय हैं ॥२८॥ और सैंधवारण्यकी यात्रामें मेषके सूर्यमें जो फल प्राप्त होय ॥ २९ ॥ और उत्पलावर्तकी यात्रामें वृषके सूर्यमें जो फल प्राप्त होय सोही फल प्राप्त यहाँ स्नान दान करे तो वाते निःसंदेह लक्षगुनो फल होय ॥ ३० ॥ हे विदेहराट्! ताते किरोर गुनो पुण्य दानतीर्थमें होय है, जो एक महीना दानतीर्थमें स्नान करे ॥ ३१ ॥ तो वाको इतनो पुण्य होयहै जाकूँ चित्रगुप्तहू नहीं जानेंहै ता तीर्थके माहात्म्यकूं ब्रह्माहू नहीं वर्णन करि सकेंहैं ॥ ३२ ॥ सब दाननमें अश्वदान बडो है, ताते गजदानते रथदान बडो है॥ ३३॥रथदानते भूमिदान विशेष है, हे राजन्! भूमिदानते अन्नदान बडो उत्तम है ॥ ३४ ॥ अन्नदानके समान कोई दान न भयो न होय क्योंकि देव, ऋषि, पितर, भूत सबकी अन्नदानते तृप्ति होय है ॥ ३५ ॥ जो दानतीर्थमें अन्नदान करे तो तीनों ऋणकूँ छुडाय

दानतीर्थस्यपुण्यस्यकलांनार्हतिषोडशीम् ॥ बद्रिकाश्रमयात्रायांयत्फलंलभतेनरः ॥ २८ ॥ सैंधवारण्ययात्रायांमेपस्थेचदिवाकरे ॥ २९ ॥ उत्पलावर्तयात्रायांवृषस्थेभास्करेसति ॥ स्नानंदानंलक्षगुणंभवतीहनसंशयः ॥ ३० ॥ तस्मात्कोटिगुणंपुण्यंदानतीर्थेविदेहराट् ॥ मासमेकं चयत्स्नानंदानतीर्थेकरोतिह ॥ ३१ ॥ तस्यजातंचयत्पुण्यंचित्रगुप्तोनवेत्तितत् ॥ तस्यतीर्थस्यमाहात्म्यंवक्तुंनालंचतुर्मुखः ॥ ३२ ॥ सर्वेषांचै वदानानामश्वदानंपरंस्मृतम् ॥ अश्वदानाद्गजस्याधिगजदानाद्रथस्यच ॥ ३३ ॥ रथदानात्परंराजन्भूमिदानंविशिष्यते ॥ भूमिदानाद न्नदानंमहादानंप्रकथ्यते ॥ ३४ ॥ अन्नदानसमंदानंनभूतंनभविष्यति ॥ देवर्षिपितृभूतानांतृप्तिरन्नेनजायते ॥ ३५ ॥ दानतीर्थेऽन्न दानंयःकरोतिमहामनाः ॥ ऋणत्रयंविमुच्याथयातिविष्णोःपरंपदम् ॥ ३६ ॥ दशैवमातृकेपक्षेराजेंद्रदशपैतृके ॥ प्रियायादशपक्षेतुपुरु षानुद्धरेन्नरः ॥ ३७ ॥ चतुर्भुजादिव्यरूपानागारिकृतकेतनाः ॥ स्रग्विणःपीतवस्त्रास्तेप्रयांतिहरिमंदिरम् ॥ ३८ ॥ भगवन्मंदिराद्रा जन्नुत्तरस्यांदिशिश्रुतम् ॥ क्रोशार्द्धंनृपशार्दूलमायातीर्थंमनोहरम् ॥ ३९ ॥ विराजतेयत्रनित्यंदुर्गादुर्गतिनाशिनी ॥ सिंहारूढाभद्रकालीचंड मुण्डविनाशिनी ॥ ४० ॥ स्यमंतकंसमाहर्तुमृक्षराजबिलंगते ॥ पुत्रेचदेवकीदेवीपूजयामाससत्फलैः ॥ ४१ ॥ तदाजगामप्रिययासमणिर्भग वान्हरिः ॥ तद्बिलात्तत्प्रसिद्धंस्यान्मायातीर्थंफलप्रदम् ॥ ४२ ॥

के विष्णुके परम पदकूं जाय ॥ ३६ ॥ दश तो माताके पक्षके दश पिताके पक्षके, दश स्त्रीके पक्षके, पुरुषनकूँ उद्धार करे है ॥ ३७ ॥ ते चतुर्भुज दिव्य रूप हैके पीतांबरधारी मालाधारी गरुडपै बैठके विष्णुलोककूँ जाय है ॥ ३८ ॥ भगवान्के मंदिरतें उत्तरदिशामें आधकोशपै मायातीर्थ है वो बडो मनोहर है ॥ ३९ ॥ यहां दुर्गा दुर्गति नाशिनी सदाई विराजै है सिंहपै चडी भद्रकाली चंडमुंडकी नाश करनहारी ॥ ४० ॥ जब स्यमंतकमणिकूँ लेबेके लिये ऋक्षराज जाम्बवान्की गुफामें श्रीकृष्ण गये हैं तब देवकीने श्रेष्ठ फलनते देवीकी पूजा करी ही ॥ ४१ ॥ तब भगवान् मणि लेके स्त्रीसहित आयगये वा बिलते ता दिनते वो मायातीर्थ फलको दाता प्रसिद्ध भयो है ॥ ४२ ॥

मायातीर्थमें स्नान करिके मायाको पूजन करे तो सबरे वाके मनोरथ निःसंदेह पूर्ण होजायँ ॥ ४३ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां द्वारकाखण्डे भाषाटीकायां प्रथमदुर्गे द्वारकातीर्थमाहात्म्यवर्णनंनामैकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥ नारदजी कहे हैं—हे विदेहराज ! दुर्गके पूर्वके दूसरे दरवज्जेपै बड़ो पवित्र एक इंद्रतीर्थ है यो कामनाको देवेवारो सिद्धिको देवेवारे है ॥ १ ॥ तहां न्हाय तो इंद्रलोककूं जाय याह लोकमें चंद्रमाके समान वैभव हैजाय ॥ २ ॥ तहांई दक्षिणके दरवज्जेपै सूर्यकुण्ड है यहां सत्राजित्नें स्यमंतकमणिके लिये सूर्यको पूजन कियो है ॥ ३ ॥ तहां स्नान करिके पद्मरागमणि पुखराज देय तो वो सूर्यसे विमानमें बैठिके सूर्यलोककूं जाय ॥ ४ ॥ तहांई पश्चिमके दरवज्जेपै ब्रह्मतीर्थ है तहां न्हायके सोनेके पात्रमें खीरको दान करे ॥ ५ ॥ तो याको जो फल होय सो सुनो ब्राह्मणको मारिवेवारो होय, पितृहन्ता होय, मातृहन्ता, गोहन्ता, गुरुहन्ता कैसोहू पापी होय वोहू पवित्र

मायातीर्थेचयःस्नात्वामायांसंपूज्यमानवः ॥ सर्वान्मनोरथप्राप्तिंप्राप्नुयान्नात्रसंशयः ॥४३॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीद्वारकाखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेप्रथमदुर्गेलीलासरोवरहरिमंदिरज्ञानतीर्थकृष्णकुण्डबलभद्रसरोगणेशतीर्थमाहात्म्यंनामैकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥ ॥ श्रीनारद उवाच ॥ ॥ द्वितीयस्यापिदुर्गस्यपूर्वद्वारेविदेहराट् ॥ इन्द्रतीर्थंमहापुण्यंकामदंसिद्धिदायकम् ॥ १ ॥ तत्रस्नात्वानरोराजन्निंद्रलोकंप्रयातिहि ॥ इहैवचन्द्रसादृश्यंवैभवंप्राप्यतेनरः ॥ २ ॥ तथावैदक्षिणेद्वारेसूर्यकुण्डोभिधीयते ॥ यत्रसत्राजितेनापिपूजितोभूत्स्यमंतकः ॥ ३ ॥ तत्रस्नात्वापद्मरागंयोददातिनृपेश्वर ॥ सूर्यप्रभविमानेनसूर्यलोकंप्रयातिहि ॥ ४ ॥ तथावैपश्चिमेद्वारेब्रह्मतीर्थविशिष्यते ॥ तत्रस्नात्वानरोराजन्स्वर्णपात्रेचपायसम् ॥ ५ ॥ योददातिमहाबुद्धिस्तस्यपुण्यफलंशृणु ॥ ब्रह्महापितृहागोघ्नोमातृहाचार्यहाघवान् ॥ ६ ॥ इन्द्रलोकेपदंधृत्वा बिभ्रद्ब्रह्ममयंवपुः ॥ चन्द्राभेनविमानेनयातिब्रह्मपदंसच ॥७॥ तथावैउत्तरेद्वारेक्षेत्रंस्यान्नीललोहितम् ॥ यत्रसाक्षान्महादेवोराजतेनीललोहितः॥ ॥८॥ देवतामुनयःसर्वेतथासप्तर्षयःपरे ॥ वसंतियत्रवैदेहतथासर्वेमरुद्गणाः ॥९॥ नीललोहितलिंगंतुयत्रसंपूज्ययत्नतः॥ऐश्वर्यमतुलंलेभेरावणोलोकरावणः ॥१०॥ कैलासस्यापियात्रायांयत्फलंलभतेनृप ॥ तस्माच्छतगुणंपुण्यंनीललोहितदर्शनात् ॥११॥ नीललोहितकुण्डेवैस्नातियस्त्रिदिनंनरः ॥ सयातिशिवलोकाख्यंपापायुतयुतोपिहि॥१२॥सप्तसामुद्रकंनामतीर्थयत्रविराजते॥तत्रस्नात्वानरःपापीपापसंघैःप्रमुच्यते॥१३॥

हैजाय ॥ ६ ॥ प्रथम इंद्रलोकमें अपनो पद धारण करके ब्रह्ममय देहकूं धारण करिके चन्द्रतुल्य विमानमें बैठिके ब्रह्मपदको प्राप्त होय है ॥ ७ ॥ तहां उत्तरके दरवज्जेपै नीललोहित तीर्थ है जहां साक्षात् नीललोहित नाम महादेव विराजे है ॥ ८ ॥ तहां सब देवता मुनि सबरे सप्तऋषि जहां वसे हैं तैसेही सबरे मरुद्गण वसे हैं ॥ ९ ॥ तहां नीललोहितलिंगको पूजन करिके लोकरावण रावण अतुल ऐश्वर्यको प्राप्त हैगयो ॥ १० ॥ कैलासकी यात्रामें जो फल प्राप्त होय ताते सौगुनो फल नीललोहितके दर्शनते प्राप्त होयहै ॥ ११ ॥ तहां नीललोहितकुंडमें जो नर तीन दिन स्नान करे तो दश हजारहू पापको कर्ता होय तोऊ शिवलोकमें निश्चय जाय ॥ १२ ॥ तहांही सप्तसामुद्रतीर्थ

है पापी वहां स्नान करे तो सब पापनतें छूटिजाय ॥ १३ ॥ और बहुत शीघ्रही सातों समुद्रके स्नानको फल वाकूं मिले और विष्णु, ब्रह्मा, महादेव, इंद्र, वायु, यमराज, सूर्य ॥ १४ ॥ पर्जन्य,कुवेर,चंद्रमा,पृथ्वी, अग्नि,वरुण इतने देवता हे मनुजेश्वर ! वाके पासही रहे हैं ॥ १५ ॥ या ब्रह्माण्डमें सात किरोड तीर्थ हैं वे सबरे या सप्त सामुद्रिकतीर्थमें बसे हैं ॥ १६ ॥ तहां स्नान करिके फिर परिक्रमा करे तो द्वारकापुरीकी यात्राको सब फल मिले॥ १७॥ सप्तसामुद्रिकके विना यात्राको फल नहींमिलैहै सप्तसामुद्रिकतीर्थकूं देवता विष्णुको रूप वर्णन करे हैं ॥ १८ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां द्वारकाखण्डे भाषाटीकायां द्वि०दुर्गे०इ० सप्तसमुद्रमाहात्म्यं नाम विंशोऽध्यायः॥२०॥ हे राजन्! तीसरे दुर्गके पूर्वके दरवज्जेपर रातिदिन अंजनीसुत हनूमान् रक्षा करे है ॥ १ ॥ या भगवान्को भक्त हनूमान्को दर्शन करे तो वह भगवान्को भक्त होय जैसो कि, हनूमान् है ॥ २ ॥ तैसेही दक्षिणके दरवज्जेपै सुदर्शनचक्र विराजे है

समानंचसप्तसमुद्राणांस्नानपुण्यंलभेत्त्वरम् ॥ विष्णुर्विरिंच्योगिरिशइन्द्रोवायुर्यमोरविः ॥१४॥ पर्जन्योधनदःसोमःक्षितिरग्निरपांपतिः ॥ तत्पार्श्वेषुसदाह्येतेतिष्ठंतिमनुजेश्वर ॥१५॥ सप्तकोटीनितीर्थानिब्रह्मांडेयानिकानिच ॥ सर्वाणितत्रतिष्ठंतिसप्तसामुद्रकेनृप ॥ १६ ॥ तत्रस्नात्वानरःपश्चात्कृत्वासर्वपरिक्रमम् ॥ आप्नोतिद्वारकायाश्चयात्रायाःसफलंफलम् ॥१७॥ सप्तसामुद्रकमृतेनयात्राफलदास्मृता ॥ सप्तसामुद्रकतीर्थंविष्णुरूपंविदुःसुराः ॥ १८ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीद्वारकाखण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेद्वितीयदुर्गेइन्द्रतीर्थब्रह्मतीर्थसूर्यकुण्डनैललोहितसप्तसमुद्रमाहात्म्यंनामविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ तृतीयस्यापिदुर्गस्यपूर्वद्वारेमहाबलः ॥ रक्षत्यहर्निशंराजन्हनूमानंजनीसुतः ॥१॥ तंप्रेक्ष्यभगवद्भक्तंहनूमंतंमहाबलम् ॥ जायतेभगवद्भक्तोहनूमानिवमानवः ॥२॥ तथावैदक्षिणद्वारंचक्रंनामसुदर्शनम् ॥ रक्षत्यहर्निशंराजन्श्रीकृष्णगतमानसम् ॥३॥ तस्यदर्शनमात्रेणभवेद्भक्तोहरेःपरः ॥ भक्तस्यापिसदारक्षांकरोतिहिसुदर्शनम् ॥४॥ तथावैपश्चिमंद्वारंजांबवानृक्षराड्बली ॥ रक्षत्यहर्निशंराजन्भगवद्भक्तिसंयुतः ॥५॥ तंप्रेक्ष्यभगवद्भक्तंजांबवंतंमहाबलम् ॥ चिरंजीवीहरेर्भक्तोभवतीहचमानवः ॥ ६ ॥ तथावैचोत्तरंद्वारंविष्वक्सेनोमहाबलः॥ रक्षत्यहर्निशंराजन्श्रीकृष्णहृदयोमहान् ॥७॥ तस्यदर्शनमात्रेणनरोयातिकृतार्थताम् ॥ शृणुराजन्बहिर्दुर्गात्तीर्थंपिंडारकंस्मृतम् ॥ ८ ॥ पिंडारकस्यमाहात्म्यंशृणुताद्राजसत्तम ॥ यस्यस्मरणमात्रेणमहापापात्प्रमुच्यते ॥ ९ ॥ अर्थसिद्धेरिवद्वारंरैवताद्रिसमुद्रयोः ॥ मध्येपिंडारकक्षेत्रंतीर्थानांतीर्थमुत्तमम् ॥१०॥ क्रतुराजंराजसूयंयदुराजोमहाबलः ॥ चकारयत्रवैदेहपरिपूर्णतमाज्ञया ॥११॥

श्रीकृष्णमें है मन जाको सो रातिदिन रक्षा करै है ॥ ३ ॥ ताके दर्शनतेही श्रीकृष्णको परम भक्त होयहै जो भगवान्के भक्तकोहू सुदर्शन हमेशाही रक्षा करै है ॥४॥ तहां पश्चिमके दरवज्जेपै जांबवान् रीछनको राजा बडो बली भगवद्भक्तिसों युक्त राति दिन रक्षा करै है ॥ ५ ॥ वा भगवान्को भक्त महाबल जाम्बवान्के दर्शन करै तो वो मनुष्य भगवान्को भक्त होय और चिरंजीवी होय ॥ ६ ॥ हे राजन् ! तैसेंई उत्तरके दरवज्जेपै विष्वक्सेन महाबली राति दिन रक्षा करै है, शुद्द श्रीकृष्णको हृदय है ॥ ७ ॥ ताके दर्शनमात्रतेंई नर कृतार्थ हैजायहै, अब हे राजन् ! तूं सुनि दुर्गके बाहर जो पिण्डारकतीर्थ है ताको वर्णन करूं हूं ॥८॥ हे राजसत्तम ! पिण्डारकतीर्थको माहात्म्य सुनि जाके स्मरणमात्रतेंई महापापतें छूटि जाय है ॥९॥ (अर्थसिद्धेरिवद्वारम्) अर्थकी सिद्धिको मानों द्वार है ऐसो रैवत पर्वत और समुद्र इनके बीचमें पिण्डारक नामको तीर्थहै वो तीर्थनमें उत्तम है॥१०॥ हे वैदेह ! जहां

परिपूर्ण भगवान्की आज्ञाते यदुराज उग्रसेनने यज्ञनको राजा राजसूय यज्ञ करचो है ॥ ११ ॥ तहां सब ओरते सगरे तीर्थ बुलाये हैं तहां उग्रसेनकी प्रीतिते सब तीर्थ उग्रसेनके यज्ञोत्तममें आयके बसे है ॥ १२ ॥ सब तीर्थनको जो पिण्ड नाम इखट्ठो होनों ताते पे पिण्डारक नाम भयो है तहां स्नान करेते मनुष्यको तत्काल राजसूय यज्ञको फल होयहै ॥ १३ ॥ यहां तीन दिन जितेंद्रिय व्रत करिके रहे, सावधान ब्राह्मणनकूं दण्डवत करे, सोनेको दान देय ॥ १४ ॥ तो यहांई मनुष्यलोकमेंही वुह मनुष्य राजा हैजायहै और वो नित्यही वंदीजननपैते अपनो यश सुन्यो करै ॥ १५ ॥ और सुवर्ण रत्ननके भूषण, सुन्दर वस्त्रकी धारण करनवारी चन्द्रवदनी मृगनयनी ऐसी बहुतसी स्त्री जाको नित्य सेवन करें ऐसो होय और महाबली सबतरह हृष्ट पुष्ट रहनवारो वो होय ॥ १६ ॥ और राति दिन जाके द्वारपै नगाड़े वज्यो करे, हाथी चिक्कारचो करे, घोड़ा हिस्यो करे ऐसो होय है ॥ १७ ॥ और राजानके झुण्डनसों विराजमान होय और रत्ननके महलनके समूह जिनपै बड़ी ध्वजा तिनसे युक्त जाके आंगण तिनको देखनवारे वो होय॥ १८॥

सर्वाणियत्रतीर्थानिसमाहूतानिसर्वतः॥ निवासंचक्रिरेराजन्नुग्रसेनक्रतूत्तमे ॥ १२ ॥ तेनपिंडारकंनामसर्वतीर्थस्यपिंडतः ॥ तत्रस्नात्वानरःसद्योराजसूयफलंलभेत् ॥१३॥ यत्रैवत्रिदिनंस्नात्वाव्रतीभूत्वासमाहितः ॥ ब्राह्मणेभ्यःस्वर्णदानंदत्त्वायःप्रणतोभवेत् ॥ १४ ॥ इहैवनरदेवःस्यात्समहात्मानसंशयः ॥ नित्यंशृणोतिसततंबन्दिवद्भिर्यशःस्वयम्॥१५॥सुवर्णरत्नवस्त्राढ्यैःसुचन्द्रवदनैःपरैः ॥ स्त्रीसंघैःसेवितोनित्यंहृष्टपुष्टोमहाबलः॥१६॥अहोरात्रंप्रताडचंतेद्वारिदुन्दुभयोघनाः ॥ करींद्राणांचचीत्कारैरश्वहेषैस्समन्वितम् ॥१७॥ विराजतेराजसंघैःप्रेक्षयन्प्रांगणाजिरम् ॥ रत्नप्रासादनिचयंध्वजमण्डलमंडितम् ॥ १८ ॥ मत्तकुञ्जरकर्णाभ्यांताडिताभृंगमण्डली ॥ अलंकरोतितद्द्वारंमंडितंमंडलेश्वरैः ॥१९॥ पिंडारकस्नानमृतेकथंराज्यंभवेदिह ॥ अन्तेमोक्षंकथंयातिनरःपापयुतोपिहि ॥ २० ॥ पिंडारकस्नानमृतेनशर्मपिंडारकस्नानमृतेनकर्म ॥ पिंडारकस्नानमृतेनधर्मःपिंडारकस्नानमृतेनवर्म ॥ २१ ॥ पिंडारकस्नानमृतेवियोगीपिंडारकस्नानकरोवियोगी ॥ पिंडारकस्नानकरःसुभोगीपिंडारकस्नानकरोनरोगी॥ २२ ॥ द्वारावतींमाधवमासमध्येप्रदक्षिणीकृत्यनमस्करोति ॥ सर्वाइहामुत्रचसिद्धयोपिवैदेहतस्याणितले भवन्ति॥२३ ॥ तीर्थाप्लुतोधःशयनःशुचिश्चमौनीव्रतीवायवभोजनेन ॥ आरभ्यचैत्रीकिलपौर्णमासींयोमाधवीमेत्यकरोतियात्राम् ॥ २४ ॥ तत्पुण्यसंख्यांगदितुंनशक्यश्चतुर्मुखोवेदमयोविधाता ॥ योमेघधारांगणयेत्कदाचित्कालेनपुण्यानिनकृष्णपुर्याः ॥ २५ ॥

मतवारे हाथीनके काननकी मारी भौंरानकी मण्डली और मण्डलेश्वर राजानकी मण्डली जाके द्वारपै रही आवे ॥ १९ ॥ पिंडारक तीर्थके न्हायेबिना कैसे तो यहां पृथ्वीपै राज्य मिलेगो और कैसे पापी नर अन्तमें मोक्षकूं जायँगे ॥ २० ॥ पिण्डारकके स्नान विना न तो सुख मिले और न पिण्डारकके न्हाये विना कर्म होय न धर्म होय और न पिण्डारक न्हायेबिना या मनुष्यकी रक्षा होय ॥ २१ ॥ पिण्डारकके स्नान करेके विना मनुष्य वियोगी नाम वियोगसो युक्त होयहै और जो पिण्डारकमें स्नान करे तो याके स्नानते मनुष्य योगी होयहै अर्थात् वो कभी वियोगी नहीं होयहै और या पिण्डारकके स्नानते नर भोगी होयहै और पिण्डारकके स्नानसो मनुष्य रोगी नहीं होयहै ॥ २२ ॥ वैशाखके महीनामें द्वारिकाकी परिक्रमा देके नमस्कार करे तो है वैदेह ! या लोककी सिद्धि और परलोककी सिद्धि सब वा पुरुषके हाथमें आय जाय है ॥ २३ ॥ तीर्थमें तो न्हाय, पृथ्वीमें सोवे, पवित्र रहे, मौन रहे, व्रत करे, जौ खायके रहे तो केवल चैतकी पूर्णमासीते तो यात्रा उठावे और वैशाखकी पूर्णमासीकूं पूरी करे ॥ २४ ॥ तो वाके पुण्यकी

संख्याको चतुर्मुख जो वेदमय विधाता है वोहू वर्णन नहीं करिसकैहैं जो कालसों मेहकी बूंदनकूं गिनो चाहे तो गिनलेय पर कृष्णपुरीके पुण्यकूं नहीं गिनसकैहै ॥२५॥ जैसे तिथिनमें एकादशी उत्तम है, फणीनमें शेष उत्तम है पक्षीनमें गरुड़ ॥ २६ ॥ पुराणनमें भारत जैसे देवतानके देवता यदुदेवनके देव श्रीवासुदेव श्रेष्ठ हैं तैसेहि सब क्षेत्रनमें तथा पुरिनमें द्वारावती नामकी पुरी श्रेष्ठ है ॥ २७ ॥ अहो ! या भूमिमें द्वारिका अतिधन्य है जामें यादवनकी मण्डली विराजै है जो वैकुण्ठ भगवान्की लीलाकी अधिकारिणी है जैसे बीजुरी सहित घनावली सोहै है तैसीही द्वारावती पुरी सुशोभित है ॥ २८ ॥ जहां साक्षात् परमेश्वर परमपुरुष चतुर्व्यूह रूप धरके विराजे हैं जाने उग्रसेनकूं राज्य दीनो वा भगवान् कृष्ण हरिकूं नमस्कार है नमस्कार है ॥ २९ ॥ जब अपने लोककूं भगवान् गमन करेंगे तबही समुद्र या द्वारिकापुरीकूं डुबाय देयगो हे वैदेह ! एक केवल दिव्य हरिमंदिरके विना, वाही मंदिरमें भगवान् निवास करेंगे ॥ ३० ॥ अबतलक कलियुगमेंहू जहां जलमें यह ध्वनि भयो करै है वो ध्वनि सबको सुनाई परैहै कि, सविद्य होय चाहे अविद्य

यथातिथीनांहरिवासरंचयथाहिशेषोफणिनांफणीन्द्रः ॥ यथागरुत्मान्द्विपक्षिणांचयथापुराणेषुचभारतंच ॥ २६ ॥ यथाहिदेवेषुचदेवदेवः श्रीवासुदेवोयदुदेवदेवः ॥ तथापुरीक्षेत्रसमस्तमध्येद्वारावतीपुण्यवतीप्रशस्ता ॥ २७ ॥ अहोतिधन्यायदुमंडलीभिर्विराजतेभूमितलेमनोहरा ॥ वैकुण्ठलीलाधिकृताकुशस्थलीयथातडिद्भिर्जलदावलिर्दिवि ॥ २८ ॥ यत्रैवसाक्षात्पुरुषःपरेश्वरोधृत्वाचतुर्व्यूहमलंविराजते ॥ यस्तूग्रसेनाय ददौनृपेशतांकृष्णायतस्मैहरयेनमोनमः ॥ २९ ॥ यदास्वलोकंभगवान्गमिष्यतिसंप्लावयिष्यत्यथतांतदार्णवे ॥ वैदेहदिव्यंहरिमंदिरंविनात स्मिन्निवासंभगवान्करिष्यति ॥ ३० ॥ शृण्वंतितत्रैवकलौजलध्वनिंकृष्णोक्तमित्थंसततंदिनेदिने ॥ भवेदविद्योयदिवासविद्योयोब्राह्मणोवैस तुमामकीतनुः ॥ ३१ ॥ भूत्वाथविप्रोब्धितटादगाधंगत्वागृहीत्वाप्रतिमांपरस्य ॥ कृत्वाप्रतिष्ठांचविधायसौधंकरिष्यतेस्थापनमर्कएषः ॥ ॥ ३२ ॥ श्रीद्वारकानाथमितिस्वरूपंपश्यंतियेभक्तजनाःकलौयुगे ॥ गच्छंतितेविष्णुपदंनृदेवयोगीश्वराणामपिदुर्लभंयत् ॥ ३३ ॥ इदंमयाते कथितंनृदेवमाहात्म्यमेतत्किलकृष्णपुर्याः ॥ शृणोतियःश्रावयतेचभक्त्याश्रीद्वारकावासफलंलभेत्सः ॥ ३४ ॥ श्रीद्वारकायानृपखण्डमेतन्म यातवाग्रेकथितंसुपुण्यम् ॥ कीर्तिंकुलंभक्तिमतीवमुक्तिंददातिराज्यंचसदैवशृण्वताम् ॥ ३५ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीद्वारकाखण्डेनारद बहुलाश्वसंवादेतृतीयदुर्गेपिंडारकमाहात्म्यंनामैकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ इतिश्रीद्वारकाखंडःसमाप्तः ॥ ॥

होय वो ब्राह्मण मेरो शरीर है ॥ ३१ ॥ ब्राह्मण हैके समुद्रके अगाध तटते परमेश्वरकी प्रतिमा लायके प्रतिष्ठा करे महल बनावे ताकूं सूर्य जानिये ॥ ३२ ॥ जे जन कलियुगमें द्वारिकानाथके दर्शन करैगे, हे नृदेव ! वे योगीश्वरनकूंहू दुर्लभ जो विष्णुपद ताकूं जायंगे ॥ ३३ ॥ हे नृदेव ! यह कृष्णपुरी द्वारिकाको माहात्म्य तेरे अगाड़ी मैंने वर्णन कर्यो है जो कोई भक्तिसों या माहात्म्यको सुने अथवा सुनावे तो वो मनुष्य द्वारिकाके वासके फलको पावे है ॥ ३४ ॥ हे नृदेव ! यह पवित्र करनहारो द्वारिकाखण्ड मैंने तेरे अगाड़ी वर्णन कर्यो ये भक्तिको मुक्तिको दाता है और कुल कीर्तिको बढायवेवारो है, सुनिवेवारेनकूं सदाई राज्य देवेवारो है ॥३५॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां द्वारकाखण्डे भाषाटीकायां नारदबहुलाश्वसंवादे तृतीयदुर्गे पिण्डारकमाहात्म्यं नामैकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ इति श्रीद्वारकाखण्डः समाप्तः ॥ ॥

इदं पुस्तकं क्षेमराज–श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना मुम्बय्यां (खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लैन) स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) मुद्रणयन्त्रालये मुद्रयित्वा प्रकाशितम् । संवत् १९६७, शके १८३२.

॥ इति गर्गसंहितायां द्वारकाखण्डं भाषाटीकासमेतं समाप्तम् ॥

॥ अथ गर्गसंहितायां विश्वजित्खण्डं भाषाटीकासहितं प्रारभ्यते ॥

(सप्तमखण्डम् ७)

श्रीगणेशायनमः ॥ अथ विश्वजित्खंडः प्रारभ्यते ॥ भगवान् जो तुम हो तिनके अर्थ नमस्कारहै वासुदेव हो साक्षी हो संकर्षण हो प्रद्युम्न हो अनिरुद्ध हो तिनके अर्थ नमस्कार है॥ १॥ अज्ञानरूप अन्धकारतें आंधरी जो मैं ताकूँ ज्ञानरूप सलाईते खोली हैं आंखि जिनने तिन गुरुनकूँ मेरो नमस्कार है ॥ २ ॥ अब शौनकादिक ऋषिनतें गर्गजी कहैं हैं हे मुने ! या प्रकार श्रीकृष्णको चरित्र मैंने तुम्हारे अगाड़ी कह्यो जो मनुष्यनकूँ धर्म अर्थ काम मोक्षको देनहारो है अब आगे तुम कहा सुनिवेकी इच्छा करौहौ ॥ ३ ॥ तब शौनक ऋषि बोले-हे तपोधन ! बहुलाश्व राजा मैथिलदेशको इन्द्र श्रीकृष्णको इष्टी हरिको प्यारो आगे नारदजीते कहा पूछतोभयो ये मोसे कहौ ॥ ४ ॥ तब श्रीगर्गजी कहैहैं कि, हे मुने ! उग्रसेनकूं यादवनको इन्द्र श्रीकृष्णनें कीनो याकूँ सुनिकें बड़ो विस्मित भयो जो राजा मैथिल है वो नारदजीते पूछनलग्यो ॥ ५ ॥ बहुलाश्व राजा बोले-यह महत राजा कौन

श्रीगणेशायनमः ॥ अथविश्वजित्खण्डःप्रारभ्यते ॥ नमोभगवतेतुभ्यंवासुदेवायसाक्षिणे ॥ प्रद्युम्नायानिरुद्धायनमःसंकर्षणायच ॥ १ ॥ अज्ञानतिमिरांधस्यज्ञानांजनशलाकया ॥ चक्षुरुन्मीलितंयेनतस्मैश्रीगुरवेनमः ॥ २ ॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ ॥ इत्थंश्रीकृष्णचरितंमयातेकथितंमुने ॥ चतुष्पदार्थदंनृणांकिंभूयः श्रोतुमिच्छसि ॥ ३ ॥ ॥ शौनकउवाच ॥ ॥ बहुलाश्वोमैथिलेंद्रःश्रीकृष्णेष्टोहरिप्रियः ॥ किंपप्रच्छाथ देवर्षिंतन्मेब्रूहितपोधन ॥ ४ ॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ ॥ उग्रसेनंयादवेंद्रंश्रीकृष्णेनकृतंमुने ॥ श्रुत्वातिविस्मितोराजानारदंप्राहमैथिल ॥ ५ ॥ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ कोवाथंमरुतोराजाकेनपुण्येनभूतले ॥ यादवेंद्रोमहाबुद्धिरुग्रसेनोबभूवह ॥ ६ ॥ यस्यश्रीकृष्णचन्द्रोपिसहायोभूद्धरिःस्वयम् ॥ तस्याहोमहिमानंमेब्रूहिदेवर्षिसत्तम ॥ ७ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ सूर्यवंशोद्भवोराजाचक्रवर्तीकृतेयुगे ॥ यज्ञंचकारविधिवन्मरुतोयोजगज्जितम् ॥ ८ ॥ महासंभृतसंभारैर्हिमाद्रेःपार्श्वउत्तरे ॥ संवर्तमुनिशार्दूलंगुरुंकृत्वाहिदीक्षितः ॥९॥ पञ्चयोजनविस्तीर्णःकुण्डोभूद्यस्यचाध्वरे ॥ योजनंब्रह्मकुण्डस्तुगव्यूतिःपञ्चकुण्डकाः ॥ १० ॥ मेखलागर्तविस्तारवेदिभिर्निर्मितादश ॥ सहस्रहस्तमुच्चांगोयज्ञस्तंभोबभौमहान् ॥ ११ ॥ विंशद्योजनविस्तीर्णःसौवर्णोयज्ञमण्डपः ॥ वितानतोरणैरेजेकदलीखंडमण्डितः ॥ १२ ॥ ब्रह्मरुद्रादयोदेवाःसगणास्तत्रचागताः ॥ ऋषयोमुनयःसर्वेतस्ययज्ञंसमाययुः ॥ १३ ॥

हो कौनसे पुण्यते भूतलमें यादवनको इन्द्र महाबुद्धी उग्रसेन भयो ॥ ६ ॥ जाके श्रीकृष्णचन्द्र हरि आप सहायक भये ताकी महिमा हे देवर्षिसत्तम ! मेरे अगाड़ी कहिये ॥ ७ ॥ तब श्रीनारदजी बोले कि, सतयुगमें एक सूर्यवंशी राजा चक्रवर्ती होतभयो मरुत जाको नाम हो जाने विधिपूर्वक विश्वजित् नाम यज्ञ करो हो ॥ ८ ॥ हिमालय पर्वतके उत्तरकी बगलमें बड़े संभार इकट्ठे कीने हैं मुनिनमें शार्दूल संवर्तमुनिकूँ गुरू करि उनपैते यज्ञकी दीक्षा लीनी ॥ ९ ॥ याके यज्ञमें वीस कोसको विस्तीर्ण तो कुंड बन्यो हो और चारकोसको ब्रह्मकुंड हो और दो दो कोसमें पांच कुंडिका बनी हीं ॥ १० ॥ मेखलागर्तनको विस्तार जामें वेदीनते दशगुणो बनो हो और हजार हाथ ऊंचो जामें यज्ञस्तंभ बन्यो हो ॥ ११ ॥ और जाको अस्सी कोसमें यज्ञमंडप सुन्हैरी बन्यो हो जो चँदोवा बंदनवार केलानके खंभन करके मंडित हो ॥ १२ ॥ जा यज्ञमें ब्रह्मा रुद्रादिक सब देवतानके

गण अपने २ गण समेत आये और ऋषि मुनि सब या यज्ञमें आये ॥ १३ ॥ दश लाख तौ होता भये दश लाख दीक्षित भये पांच लाख अध्वरी भये और उद्गाता जामें च्यार भये ॥ १४ ॥ बड़े बड़े पंडित चारों वेदके वक्ता सब शास्त्रनके जाननहार आये तथा औरहू किरोडन ब्राह्मण जामें पूजे ॥ १५ ॥ और हे मैथिल ! हाथीकी सूंडसी मोटी घृतकी धारा जा यज्ञमें अग्निने पीई सो हे मैथिल ! यह कछु अचंभौ नहीं है जो अग्निकूं अजीर्ण हैगयौ ऐसो तू जान ॥ १६ ॥ विश्वेदेवा सभासद् ये जिन जिनकूं भाग बतावे है तिन तिनकेही अर्थ भाग देतेभये वेही सब परिवेष्टा होतेभये हैं ॥ १७ ॥ जीवमात्र कोईभी त्रिलोकीमें भूखौ न रह्यौ सब देवतानकूँ सोमते अजीर्ण हैगयौ ॥ १८ ॥ या अध्वरमें संवर्तमुनिकूँ जम्बूद्वीपकौ राज्य देदीनौं और चौदह लाख हाथी चौदह लाख भार सोनौं यज्ञके अन्तमें यज्ञ करायवेवारे महात्मा गुरुनकूँ इतनी दक्षिणा दीनी और सौ अर्बुद

होतारोदशलक्षाणिदशलक्षाणिदीक्षिताः ॥ अध्वर्यवःपञ्चलक्षमुद्गातारस्तथापरे ॥ १४ ॥ आहूतास्तत्रविद्वांसश्चतुर्वेदविदोद्विजाः ॥ सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञाःकोटिशोऽन्येप्रपूजिताः ॥ १५ ॥ हस्तिशुण्डासमांधारांभुक्त्वाज्यस्यहुताशनः ॥ अजीर्णप्रापतद्यज्ञेनचित्रंविद्धिमैथिल ॥ १६ ॥ येभ्योभागंवदंतीहविश्वेदेवाःसभासदः ॥ तेभ्यस्तेभ्योददुर्वीताःपरिवेष्टारएवते ॥ १७ ॥ केपिजीवास्त्रिलोक्यांतुनबभूवुर्बुभुक्षिताः ॥ सर्वेदेवास्तुसोमेनह्यजीर्णत्वमुपागताः ॥ १८ ॥ संवर्तायददौराज्यंजंबूद्वीपस्यचाध्वरे ॥ गजानांहैमभाराणांनियुतानिचतुर्दश ॥ १९ ॥ शतार्बुदंहयानांतुयज्ञांतेदक्षिणांनृप ॥ कोटिशोनवरत्नानांमहार्हाणांमहात्मने ॥ २० ॥ हयानांपञ्चसाहस्रंगजानांशतमेवच ॥ शतभारंसुवर्णानांब्राह्मणंब्राह्मणेददौ ॥ २१ ॥ जलभोजनपात्राणिहैमानिप्रस्फुरंतिच ॥ भुक्त्वातानिविसृज्याशुगतास्तुष्टाद्विजातयः ॥ २२ ॥ विप्रत्यक्तैःस्वर्णपात्रैरुच्छिष्टैर्नृपवर्जितैः ॥ हिमाद्रिपार्श्वेशैलोभूदद्यापिशतयोजनम् ॥ २३ ॥ मरुत्तस्ययथायज्ञोनतथान्यस्यकर्हिचित् ॥ त्रिलोक्यांशृणुराजेंद्रनभूतोनभविष्यति ॥ २४ ॥ यज्ञकुण्डाद्विनिर्गत्यपरिपूर्णतमःस्वयम् ॥ आत्मानंदर्शयामासमरुत्तायमहात्मने ॥२५॥ तमालोक्यहरिंनत्वाकृतांजलिपुटोनृपः ॥ गदितुंनसमर्थोभूद्रोमांचीप्रेमविह्वलः ॥२६॥ तंप्रेमपूरितंदृष्ट्वापतितंपादयोर्नतम् ॥ उवाचभगवान्साक्षान्मेघगंभीरयागिरा ॥२७॥

घोडा और बहुमूल्य किरोडन किरोडन रत्न दीने ॥ १९ ॥ २० ॥ और पांच हजार घोडा सौ हाथी सौ भार सोनो ये एक एक ब्राह्मणकूँ इतनी इतनी दक्षिणा दीनी ॥२१॥ या यज्ञमें जलके और भोजनके पात्र सब सुवर्णकेही हैं उनमें भोजन करि २ के प्रसन्न हैके ब्राह्मण चलेगये तिन पात्रनकूँ झूठेनकों वहाँही छोड़िगये ॥ २२ ॥ ब्राह्मणनने त्यागे जे सोनेके पात्र झूठे और राजा दैछुक्यो हो तिनको हिमालयके पास सौ योजनको पर्वत अद्यापि हैगयो ॥ २३ ॥ जैसो मरुत राजाको यज्ञ भयो ऐसो यज्ञ काहूको न भयो और हे राजेंद्र ! न त्रिलोकीमें ऐसो यज्ञ काहूको होयगो ॥ २४ ॥ याके यज्ञमें अग्निकुंडमेंते निकसिकें साक्षात् परिपूर्णतम स्वयं भगवान् मरुत राजाको अपनो दर्शन देतेभये ॥ २५ ॥ तिनकूं देखिकें हरिकूँ नमस्कार करिकें हाथ जोड़ स्तुति करिवेकूँ ठाढ़ो भयो फिर प्रेम करिके विह्वल रोंगटा उठिआये सो स्तुति करवेकों समर्थ न भयो ॥ २६ ॥ तब चरणमें परचो प्रेममें भरो

मरुतको देखिकें साक्षात् भगवान् मेघसी गंभीर वाणीतें ये बोले ॥ २७ ॥ हे राजन् ! तैंनें मैं नम्रतातें वश करलीनों और निष्काम यज्ञ कीनों तिनतें मेरो पूजन कीनों सो हे महामते ! तू परम वर मांगि जो देवतानकूंहू दुर्लभ है सो वर मैं तोकूं देऊंगो ॥ २८ ॥ तब नारदजी कहेहैं कि, मरुत राजा ऐसें सुनिकें हाथ जोड़ बड़ी भक्तिसों विशद उपचारनतें पूजन करि साष्टांग प्रणाम करके प्रदक्षिणा देके गद्गद वाणीतें परमेश्वर श्रीहरिसों यह बोल्यौ ॥ २९ ॥ मरुत राजा बोल्यो—हे श्रीपुरुषोत्तमोत्तम ! तुम्हारे चरणकमलतें परें मैं और वर नहीं जानूंहूं जैसें गंगाजीकूं प्राप्त हैकें प्यासौ नरनमें पशु अत्यन्त दुर्बुद्धी कूआंकूं खोदेहै ॥ ३० ॥ तौ हू मैं आपके वाक्यके गौरवतें वर मांगूंहूं, हे व्रजके ईश्वर ! मेरे हृदयकमलतें आपके चरणकमल कबहूं दूर मति होउ कैसें आपके चरणकमल हैं धर्म अर्थ काम मोक्ष और सर्व संपदानके मूल हैं ॥ ३१ ॥ तब भगवान् बोले—

॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ राजंस्त्वयाहंविनयेनतोषितोनिष्कारणैर्यज्ञपरैःसमर्चितः ॥ वरंपरंब्रूहिमहामतेवरंदास्यामिदेवैरपिदुर्लभंदिवि ॥ २८ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ श्रुत्वातुराजामरुतःकृतांजलिःप्रदक्षिणीकृत्यहरिंपरेश्वरम् ॥ संपूज्यभक्त्याविशदोपचारकैर्नत्वाभृशंगद्गदयागिराब्रवीत् ॥ २९ ॥ ॥ मरुतउवाच ॥ ॥ नवेद्म्यहंत्वच्चरणारविंदतोवरंपरंश्रीपुरुषोत्तमोत्तम ॥ समेत्यगंगांतृषितातिदुर्धियःखनंतिकूपंहियथानरेतराः ॥ ३० ॥ तथापियाचेतववाक्यगौरवात्पादारविन्दंहृदयारविंदात् ॥ कदापिमेमाव्रजतुव्रजेश्वरमूलंचतुर्णांविदुरर्थसंपदाम् ॥ ३१ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ धन्याऽसितराजंस्तवनिर्मलामतिः प्रलोभितस्यापिवरैर्नकामभृत् ॥ तथापिमत्तोवरयेप्सितंपरंविनाफलंभक्तसुखान्नमेसुखम् ॥ ३२ ॥ ॥ मरुतउवाच ॥ ॥ देयंयदामेवरमीप्सितंप्रभोवैकुण्ठलोकंकुरुताद्धरातले ॥ रक्षस्थितंमांनिजभक्तवत्सलतस्मिन्पुरेभक्तजनैःपरैःसह ॥ ३३ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ अस्मिन्मनौदैवमनेरथाब्धिगतेषुविंशेषुयुगेषुचाष्टौ ॥ गत्वाथनाकंधरणींसमेत्यमयाहिगोवत्सपदंकरिष्यति ॥ ३४ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वाभगवान्साक्षात्तत्रैवांतरधीयत ॥ सोऽयंतुमरुतोराजाउग्रसेनोबभूवह ॥ ३५ ॥ तंयज्ञंकारयामासराजसूयंहरिःस्वयम् ॥ किंदुर्लभंत्रिलोक्यांतुभक्तानांमैथिलेश्वर ॥ ३६ ॥

हे राजन् ! तू धन्य है तेरी बड़ी निर्मल बुद्धि है वरनतें लुभाई हू चलायमान न भई तोऊ मोतें कछू उत्तम वर मांगि मेरे भक्तकूं फल दिये विना मोहूकूं कछू सुख नहीं होयहै ॥ ३२ ॥ तब मरुत राजा बोल्यो—हे प्रभो ! जो मोकूं वर देनोई है तो ये वर देउ कि, वैकुंठलोककूं धरतीमें धरिदेउ हे भक्तवत्सल ! मैं तहां तुम्हारे भक्तनसहित बसूं ताकूं तुम रक्षा करौ ॥ ३३ ॥ तब भगवान् बोले कि, या मन्वंतरके विषय अठाईस युग जब बीतिजायँगे तब तू पहलें स्वर्गके सुख भोगिके फेर पृथ्वीमें आयकें मेरे संगको प्राप्त हैके या मनोरथ समुद्रको गऊके खुरके समान करके सहजमें तरिजायगो ॥ ३४ ॥ नारदजी कहेहैं कि, ऐसें कहिके साक्षात् भगवान् तहां अंतर्धान हैगये सोई वह मरुत राजा उग्रसेन आयके भयौहै ॥ ३५ ॥ ताकूं राजसूय यज्ञ भगवान् आप करावत भये हे मैथिलेश्वर ! भगवानके भक्तनकूं त्रिलोकीमें कछू दुर्लभ नहीं है ॥ ३६ ॥

या मरुतके चरित्रको जो कोई नरोत्तम सुनैगो ताकूं ज्ञान वैराग्य भक्ति तीनों प्राप्त होयगे ॥ ३७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खण्डे भाषाटीकायां नारदबहुलाश्वसंवादे मरुतोपाख्यानं नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ बहुलाश्व राजा पूछैहै कि, हे मुने ! राजा उग्रसेन कैसे राजसूय यज्ञ करतोभयौ श्रीकृष्णकी सहायते याहि अतिशय करके कहो ॥ १ ॥ नारदजी कहैहैं कि, एक समय उग्रसेन सुधर्मा सभामें श्रीकृष्णकों पूजन करकें प्रसन्न हैके हाथ जोड़ दंडवत् करकें यह बोल्यौ ॥ २ ॥ हे भगवन् ! नारदजीके मुखते मैंने जाकौ बड़ौ फल सुन्यौहै जो आप आज्ञा देउ तौ मैं वो राजसूय यज्ञ करूं ॥ ३ ॥ हे पुरुषोत्तम ! प्राचीन समयमें पहले बहुतसे राजा आपकी चरणसेवाते निर्भय हैके जगत्कूं तृणवत् मानकें अपने मनोरथके समुद्रकूं तरगये ॥ ४ ॥ तब भगवान् बोले कि, हे राजन् ! हे यादवनके ईश्वर ! तुमने भलौ विचार कीनों यज्ञते तेरी

मरुतस्यापिचरितंयःशृणोतिनृपोत्तम ॥ तस्यज्ञानंसवैराग्यंभक्तियुक्तंप्रजायते ॥ ३७ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेश्रीमरुतोपाख्यानंनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ कथंचकारविधिवद्राजसूयाध्वरंनृपः ॥ श्रीकृष्णेनसहायेनवदैतन्नितरांमुने ॥ १ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ उग्रसेनःसुधर्मायांकृष्णंसंपूज्यचैकदा ॥ नत्वाप्राहप्रसन्नात्माकृतांजलिपुटःशनैः ॥ २ ॥ ॥ उग्रसेनउवाच ॥ ॥ भगवन्नारदमुखाच्छ्रुतंयस्यमहत्फलम् ॥ तंयज्ञंराजसूयाख्यंकरिष्यामितवाज्ञया ॥ ३ ॥ त्वत्पादसेवयापूर्वेमनोरथमहार्णवं ॥ तेरुर्जगत्तृणीकृत्यनिर्भयाःपुरुषोत्तम ॥ ४ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ सम्यग्व्यवसितंराजन्भवतायादवेश्वर ॥ यज्ञेनतेजगत्कीर्तिस्त्रिलोक्यांसंभविष्यति ॥ ५ ॥ आहूययादवान्साक्षात्सभांकृत्वाथसर्वतः ॥ तांबूलवीटिकांधृत्वाप्रतिज्ञांकारयप्रभो ॥ ६ ॥ ममांशायादवाःसर्वेलोकद्वयजिगीषवः ॥ जित्वारीनागमिष्यंतिहरिष्यंतिबलिंदिशाम् ॥ ७ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ अथांधकादीनाहूयशक्रसिंहासनेस्थितः ॥ सुधर्मायांप्राहनृपोधृत्वातांबूलवीटिकाम् ॥ ८ ॥ ॥ उग्रसेनउवाच ॥ ॥ योजयेत्समरेसर्वाञ्जंबूद्वीपस्थितान्नृपान् ॥ मनस्वीशक्रकोदंडीसोत्तितांबूलवीटिकाम् ॥ ९ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ नृपेषुतूष्णींप्रगतेषुसत्सुश्रीरुक्मिणीनन्दनएत्यमग्रात् ॥ जग्राहतांबूलचयंमहात्मानत्वानृपंमैथिलशंबरारिः ॥ १० ॥

जगत्कीर्ति त्रिलोकीमें होयगी ॥ ५ ॥ सब यादवनकूं बुलायकें सबनकी सभा करकें पानकौ बीड़ा धरकें हे प्रभो ! यादवनको प्रतिज्ञा करायलेउ ॥ ६ ॥ सबरे यादव मेरे अंश है दोनों लोकनकी जिनको जीतवेकी इच्छा है वैरीनकूं जीतकें आवेंगे दिशानमेंते बलि (भेट) को लावेंगे वे सब जाकी सामर्थ्य होय वो बीड़ाका उठावे ॥ ७ ॥ नारदजी कहै है कि, तब राजा उग्रसेन अंधकादिक जे यादव है तिन सबनकूं बुलायकें इन्द्रसिंहासनपै बैठ्यो सुधर्मा सभामे पानको बीड़ा धरके यह वचन बोल्यो ॥ ८ ॥ उग्रसेनने कही कि, हे वीर हो ! जो संग्रामके विषय जंबूद्वीपके राजानकूं जीते बड़े मनको होय इन्द्रकीसौ धनुष जाको सो या बीड़ाकूं खाय ॥ ९ ॥ नारदजी कहैहै कि, ऐसे सुनके जब सब राजा और यादव चुप हैगये तब रुक्मिणीकौ बेटा प्रद्युम्न उठकैं सबके आगे उग्रसेन राजाकूं दंडवत् करकें हे मैथिल ! शंबरको मारनवारे बीड़ा उठायतो

भयौ ॥१०॥ तब प्रद्युम्न यह बोल्यौ कि, सुनौ मैं संग्राममें सबरे जम्बूद्वीपके राजानकूं जीतिकें उनसों बलि (भेंट) लैकें अपने पराक्रमते मैं आऊंगो ॥ ११ ॥ जो मैं इतनौं कर्म करिकें न दिखायदेऊं तो अगम्याते गमन करै ताकूँ जो पाप होय, कपिला गौके मारेकौ जो पाप होय, ब्राह्मणके मारेकौ, गुरुके मारेकौ, गर्भहत्याकौ जो पाप होय सो मोकूँ होय जो मैं सबको दिग्विजय करके न आऊं ॥ १२ ॥ नारदजी कहैहैं-ऐसे शंबरके वैरी प्रद्युम्नकौ वचन सुनिकें स्याबास स्याबास ऐसे सब यूथपति बोले तब तिन सबनके देखते २ प्रद्युम्नने वो बीड़ा उठायलीनौं ॥ १३ ॥ फिर अपने कुलाचार्य गर्गजीते पलसों मुहूर्त पूछिकें फिर मुनिनके द्वारा वेदनकी सूक्तिते प्रद्युम्नकूँ स्नान करायौ ॥ १४ ॥ फिर उग्रसेननें प्रद्युम्नकें तिलक करयौ और बलिदान देकें सब यादवननें नमस्कार करी ॥ १५ ॥ प्रद्युम्न महात्माकूं उग्रसेननें तौ खड्ग दीनों महाबली साक्षात् बलदेवनें कवच दीनौ ॥ १६ ॥

॥ ॥ प्रद्युम्नउवाच ॥ ॥ विजित्यसमरेसर्वाञ्जंबूद्वीपस्थितान्नृपान् ॥ गृहीत्वाचबलिंतेभ्यआगमिष्याम्यहंबलात् ॥ ११ ॥ अगम्यागमनंबभ्रोर्ब्राह्मणस्यगुरोस्तथा ॥ हत्याभ्रूणस्यमेभूयान्नकुर्यांकर्मचेदिदम् ॥ १२ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ श्रुत्वावचःशंबरारेःसाधुसाध्वितियूथपाः ॥ ऊचुस्तेषांपश्यतांचतंजग्राहयदूत्तमः ॥ १३ ॥ गर्गाद्यदुकुलाचार्यान्मुहूर्तंबोध्ययत्नतः ॥ तत्स्नानंकारयामासमुनिभिर्वेदसूक्तिभिः ॥ १४ ॥ उग्रसेनोऽथतिलकंप्रद्युम्नस्यचकारह ॥ बलिंदत्त्वानमश्चक्रुःसर्वेयादवयूथपाः ॥ १५ ॥ उग्रसेनोददौखड्गंप्रद्युम्नायमहात्मने ॥ कवचंप्रददौसाक्षाद्बलदेवोमहाबलः ॥ १६ ॥ स्वतूणाभ्यांविनिष्कृष्यतूणावक्षयसायकौ ॥ धनुश्चशार्ङ्गंधनुषःसमुत्पाद्यददौहरिः ॥१७॥ किरीटकुण्डलेदिव्येपीतंवासोमनोहरम् ॥ छत्रंचचामरेसाक्षाच्छूरोवृद्धोददौपुनः ॥ १८॥ शतचन्द्रंददौतस्मैवसुदेवोमहामनाः ॥ उद्धवःप्रददौसाक्षान्मालांकिंजल्किनींशुभाम् ॥ १९ ॥ अक्रूरोदक्षिणावर्त्तंशङ्खंविजयदंददौ ॥ श्रीकृष्णकवचंयंत्रंगर्गाचार्योददौमुनिः ॥ २० ॥ तदैवह्यागतःशक्रोलोकपालैःसकौतुकः ॥ आजग्मतुर्ब्रह्मशिवौदेवर्षिगणसंवृतौ ॥ २१ ॥ प्रद्युम्नायददौशूलीत्रिशूलंज्वलनप्रभम् ॥ ब्रह्माददौमहाराजपद्मरागंशिरोमणिम् ॥ २२ ॥ पाशीपाशंशक्तिधरःशक्तिंशत्रुविमर्दिनीम् ॥ वायुश्चव्यजनेदिव्येयमोदंडंददौपुनः ॥ २३ ॥ रविर्गदांमहागुर्वीं कुबेरोरत्नमालिकाम् ॥ चंद्रकांतमणिंचन्द्रःपरिघंचतनूनपात् ॥ २४ ॥

और अपने तर्कसमेते निकासके दो अक्षय तरकस और शार्ङ्गधनुषमेंतें निकासके धनुष श्रीकृष्ण देतेभये ॥ १७ ॥ और दिव्य किरीट, कुंडल, मनोहर पीताम्बर और चमर छत्र ये वृद्ध सूरसेननें दीनें ॥ १८ ॥ और महामना वसुदेवने शतचन्द्र नामकी ढाल दई उद्धवनें किंजल्किनी शुभ माला दीनी ॥ १९ ॥ अक्रूरनें विजयकी देनहारी दक्षिणावर्त शंख दीनों और श्रीकृष्णकवच और यंत्र यह मुनि गर्गाचार्यने दीनो ॥ २० ॥ इतनेहीमें सब लोकपालनके संग इंद्र आयगयो तमाशेके लिये और ऋषिगणनकूं संग लेके ब्रह्माजी तथा महादेवजी आयगये ॥ २१ ॥ तब रुद्रने तौ देदीप्यमान अग्निके समान कांतिवारो त्रिशूल दीनौं ब्रह्माजीनें पद्मरागमणिको शिरोमणि शिरपेचकी मणि दीनों ॥ ॥ २२ ॥ वरुणने पाश दीनौं स्वामिकार्तिकने शत्रुनकी मर्दन करनवारी शक्ति दई पवननें दो बीजना और यमनें कालदण्ड दीनौं ॥ २३ ॥ सूर्यनें बड़ी बोझल गदा दई कुबेरनें

रत्ननकी माला दई चन्द्रमानें चन्द्रकांति मणि दीनी अग्निनें परिघ दीनों ॥ २४ ॥ पृथ्वीने योगमयी दिव्य पादुका दीनी और तरस्विनी भद्रकालीनें माला दीनी ॥ २५ ॥ इंद्रने प्रद्युम्न महात्माकूं रथ दीनो कैसो रथ है सुनहरी है ऊंचो जाकी शिखर है हजार जामें घोड़ा हैं विश्वकर्माकी रचो ब्रह्मांडके बाहर भीतर गति जाकी ॥ २६ ॥ हजार पहिया जामें मनकोसो जाको वेग घनकोसो जाको शब्द मंजीरा, घंटा, घंटीनके जालनको जामें भूषण है ॥ २७ ॥ महादिव्य हजार ध्वजान करिकें शोभित जीतको दाता रत्नमय ऐसो रथ इंद्रने दीनों ॥ २८ ॥ जब प्रद्युम्न चले तब शंख, दुंदुभी, मृदंग, मंजीरा, मोहचंग, वीणा, वैन, बांसुरी बजनलगी जय जय शब्द होनलगे ॥ २९ ॥ वेदध्वनि होनलगी खील, फूल, मोती प्रद्युम्नपै वर्षनलगे देवता पुष्पनकी वर्षा करनलगे ॥ ३० ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटीकायां प्रद्युम्नविजयाभिषेको

क्षितिश्च पादुके प्रादाद्दिव्ये योगमये परे ॥ प्रद्युम्नाय ददौ कुंतं भद्रकाली तरस्विनी ॥ २५ ॥ हेमाढ्यमुच्चशिखरं सहस्रहयसंयुतम् ॥ विश्वकर्मकृतं साक्षाद्ब्रह्मांडांतर्बहिर्गतम् ॥२६॥ सहस्रचक्रसंयुक्तं मनोवेगं घनस्वनम् ॥ मञ्जीरकिंकिणीजालं घंटाटंकारभूषणम् ॥ २७ ॥ रथं ददौ महादिव्यं सहस्रध्वजशोभितम् ॥ जैत्रं रत्नमयं शक्रः प्रद्युम्नाय महात्मने ॥ २८ ॥ शंखदुंदुभयो नेदुस्तालवीणादयस्तदा ॥ मृदंगवेणुसन्नादैर्जयध्वनिसमाकुलैः ॥ २९ ॥ वेदघोषैर्लाजपुष्पैर्मुक्तावर्षसमन्वितैः ॥ प्रद्युम्नस्योपरि सुराः पुष्पवर्षं प्रचक्रिरे ॥ ३० ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे नारदबहुलाश्वसंवादे प्रद्युम्नविजयाभिषेको नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ श्रीनारद उवाच ॥ ॥ अथ नत्वा हरिं कार्ष्णिरुग्रसेनं बलं गुरुम् ॥ नीत्वाज्ञां रथमारुह्य कुशस्थल्या विनिर्ययौ ॥ १ ॥ तथा तमनुगाः सर्वे यादवा उद्धवादयः ॥ भोजवृष्ण्यंधकमधुशूरसेनदशार्हकाः ॥ २ ॥ तथा स्वभ्रातरः सर्वे गदाद्याः कृष्णमोदिताः ॥ सपुत्राः सबलाः सर्वे सांबाद्याश्च महारथाः ॥ ३ ॥ किरीटिनः कुंडलिनो लोहकंचुकमंडिताः ॥ चतुरंगबलोपेताः कोटिशस्ते विनिर्ययुः ॥ ४ ॥ कलापिहंसगरुडमीनतालध्वजै रथैः ॥ सूर्यमण्डलसंकाशैश्चंचलाश्वनियोजितैः ॥५॥ हेमकुंभैः सशिखरैर्मुक्तातोरणराजितैः ॥ विडंबयद्भिर्नितरां वायुवेगमतः परम् ॥६॥ चामरांदोलितैर्दिव्यैर्वीरमंडलमंडितैः ॥ सौवर्णैर्देवधिष्ण्याभैरेजुर्वीरा मनोहराः ॥७॥

नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ नारदजी कहैं हैं, तब प्रद्युम्न श्रीकृष्णकूं बलदेवजीकूं उग्रसेनकूं गर्गगुरुकूं नमस्कार करिके आज्ञा मांगि रथमें बैठि द्वारकाते बाहर निकसे हैं ॥ १ ॥ ताके पीछे उद्धवादिक यादव सब गोत्रके चले भोज, वृष्णि, अंधक, मधु, सूरसेन, दशार्ह ये सब चले हैं ॥ २ ॥ तैसेही गदादिक सबरे भैया कृष्णके भेजे पुत्र, बल, वाहन सहित सांबादिक महाबली सब चले ॥ ३ ॥ किरीट, कुंडलधारी लोहेकी जंजीरकी कमरी पहरे चतुरंगिणी सेना लेके किरोडन निकसे ॥ ४ ॥ मोर हंस मगर गरुड़ तालकी ध्वजावारे रथनमें जिनमें चंचल घोडे जुड़रहे सूर्यकैसो तेज जिनको तिन रथनमें बैठि बैठिकें निकसतभये ॥ ५ ॥ सोनेनके कलश जिनपै सुन्दर गुमटी मोतीनकी झालर वे पवनके वेगकी नकल करनहारे ॥ ६ ॥ चमर जिनमें ढुरें है दिव्य वीरनके मण्डलनकरकें मंडित सुनहरी वीरनकें मनके हरनवारे देवतानकेसे विमान

ऐसे रथ राजतभये ॥ ७ ॥ हाथी जा सेनामें कैसे चले हैं, मद जिनकें सुचावैहै चित्र विचित्र मुखपै रचना जिनकें सोनेनकी सांकर परी है बड़े उद्भट ऊंचे लाल बनात जिनपै परी हैं और घंटा जिनकें बजते जायँ है ॥ ८ ॥ पर्वतकैसे टौल दिग्गजनकी नकल करनहारे राजाकी सेनामें ऐसे हाथी दीखें हैं ॥ ९ ॥ कोई भद्र है कोई भद्रमृग हैं कोई विंध्याचलके हैं काश्मीरके हैं ॥ १० ॥ कोई मलयाचलके हैं कोई हिमालयके हैं कोई मौरंगके पैदाभये हैं कोई कैलासपर्वतके हैं ॥ ११ ॥ कोई ऐरावतके कुलके हैं कोई कोई चारचार दांतके कलापी है कोई तीनतीन सूंडनके ऊर्ध्वभागी जो पृथ्वीमें चलें हैं और आकाशमें उडैंहैं ॥ १२ ॥ ऐसे किरोड़ हाथी तो ध्वजाधारी हैं किरोड दुंदुभी भरें हैं किरोड हाथी सेनामें रत्नके मंडलतें शोभित चलें हैं ॥ १३ ॥ गर्जना करती बदासे उठे चलेआमें है अंबरमें शोभित इतवितमें राजें है सेनारूपी समुद्रमें मगरसे डोलें हैं ॥ १४ ॥

मदच्युताश्चित्रमुखाहेमजालसमन्विताः ॥ महोद्भटागजाश्चारणद्धंटारुग्णांबराः ॥८॥ गिरीन्द्रशिखराभद्राद्विपेंद्रान्दिग्विभावितान् ॥ विडंबयंतोदृश्यंतेराजसैन्येद्विपानृप ॥ ९ ॥ केचिद्भद्रास्तुकथिताःकेचिभद्रमृगाःपरे ॥ विंध्याचलभवाःकेचित्केचित्काश्मीरसंभवाः ॥ १० ॥ मलयप्रभवाःकेचिद्धिमाद्रिप्रभवाःपरे ॥ मौरंगप्रभवाःकेचित्कैलासवनसंभवाः ॥ ११ ॥ ऐरावतकुलेभाश्चचतुर्दंताःकलापिनः ॥ त्रिशुंडाऊर्द्धभागाश्चगच्छंतिभुविचांबरे ॥१२॥ ध्वजायुक्ताःकोटिगजाःकोटिदुंदुभिसंयुताः ॥ कोटिसैन्यामहामात्यैरत्नमण्डलमंडिताः ॥ १३ ॥ गर्जयंतोघनश्यामानीलाम्बरविराजिताः ॥ इतस्ततोविरेजुस्तेबलाब्धौमकराइव ॥ १४ ॥ करैर्गुल्मान्समुत्पाट्यचक्षेपयंतोर्कमण्डलम् ॥ कंपयंतोभुवंपादैर्मदैराद्रीकृताचलाः ॥ १५ ॥ दुर्गाद्रिगंडशैलादीन्पातयंतःशिरःस्थलैः ॥ खंडयंतश्चशत्रूणांबलमेतादृशागजाः ॥१६॥ तुरंगानिर्गताराजन्केचिन्मात्स्याः कलिंदजाः ॥ औशीनराःकौशलाश्चवैदर्भाःकुरुजांगलाः ॥ १७ ॥ कांबोजजाःसृंजयजाःकैकेयाःकुंतिसंभवाः ॥ दारदाःकेरलाआंगावांगाविकटसंभवाः ॥ १८ ॥ कौंकणाःकौटकाःकेचित्कार्णाटागौर्जराहयाः ॥ सौवीराःसैंधवाःकेचित्पांचालाअर्बुदाःपरे ॥ १९ ॥ काच्छाश्चकेचिदानर्तागांधारामालवादयः ॥ महाराष्ट्रभवाःकेचित्तैलंगाजलसंभवाः ॥ २० ॥ परिपूर्णतमस्यापिश्रीकृष्णस्यमहात्मनः ॥ वाजिशालासुवर्त्तन्तेतेपिसर्वेविनिर्गताः ॥ २१ ॥ श्वेतद्वीपाच्चवैकुण्ठात्तथाजितपदान्नृप ॥ रमावैकुण्ठलोकाच्चप्राप्तायेतेपिनिर्गताः ॥ २२ ॥

सूंडते गुल्मनकूं उखाडउखाडके सूर्यमंडलकूँ फेंकें हैं पांवनते भूमिकूं चलामैंहैं मदते पृथ्वीकूँ भिजोमें हैं ॥ १५ ॥ दुर्गस्थान पर्वतनकी शिला और टौलनकूं शिरनते फेंकत चलेंहैं शत्रुनकी फौजकूं खंडन करनवारे ऐसे हाथी चलेंहैं ॥ १६ ॥ घोडा कैसे निकसेहैं, कोई मत्स्यदेशके हैं कोई कलिंदके हे कोई उशीनरके हैं कोई कौशलदेशके हैं कोई विदर्भके हैं कोई कुरुजांगलके हैं ॥ १७ ॥ कोई कांबोजदेशके, सृंजयके, कैकयदेशी, कुंतदेशी, दारददेशी, केरलदेशके, अंगदेशके, वंगदेशके, विकट देशके ॥ १८ ॥ कौंकण कौटक, कर्णाटक, गुर्जरदेशके, सौवीर, सिंधु, पांचाल, अर्बुद इन देशनके हैं ॥ १९ ॥ कच्छदेशके, आनर्तदेशके, गांधारदेशके, मालवदेशके, महाराष्ट्रदेशके तैलंगदेशके, जलमैं भये हैं इतने देशनके पैदाभये घोडे ॥ २० ॥ परिपूर्णतम श्रीकृष्ण महात्माकी वाजिशालाके सब प्रकारके घोडे निकसे ॥ २१ ॥ श्वेतद्वीपते, वैकुंठते, अजितपदते, रमावैकुंठते जे घोडे आये

हैं सो वेभी सब निकसेहैं ॥ २२ ॥ सोनेनके हारसो युक्त है मोतीनकी मालासे मनोहर हैं शिखामणिसों जिनके बड़े प्रकाश और कलंगी, तुर्रा, चौंरनके गजगारसों शोभित है ॥ २३ ॥ पूंछ, खुर, मुख, पाद इनके प्रभाते शृंगार कियेभये यादवनके घोडे ऐसे निकसे ॥ २४ ॥ वायुकेसे और मनकेसे जिनके वेग खुरनते मानों धरतीकूं छीमेंइ नहींहैं कच्चे सूतपे और पानीके बबूलापे चलनवारे हैं ॥ २५ ॥ और हे मैथिल! पारेकेसे चंचल मकडीके जालेपै और जलकी फुहारनपै निराधार चलवेवारे बडे हल्के खुर जिनके परेहैं ॥ २६ ॥ टीला, शिला, गडेला, टीले, नदी और महल इनकूं उलाँघतभये बड़े चंचल चपलासे तुरंगम चले है ॥ २७ ॥ हे मैथिल! मोरकी चाल, तीतरकी चाल, खंजनकी चाल, कौंचकी चाल, हंसकी चाल, दिखावत धरतीपै नाचते इतउतमें चलेजायँ हे ॥ २८ ॥ कोई तौ पंखवारे हैं दिव्य जिनके अंग हैं कोई श्यामकर्ण ऐसे मनोहर हैं कोई पीरी पूंछके चन्द्रमासे

हेमहारसमायुक्तामुक्तामालामनोहराः ॥ शिखामणिमहारश्मिसेविताःसुपरिच्छदाः ॥ २३ ॥ चामरैर्मंडिताःपुच्छमुखपादस्फुरत्प्रभाः ॥ यादवानांमहासैन्येदृश्यतेचेदृशाहयाः ॥ २४ ॥ वायुवेगामनोवेगानस्पृशंतःपदैर्भुवम् ॥ अपक्वसूत्रेष्वतिगाबुद्बुदेष्वपिमैथिल ॥ २५ ॥ व्रजंतःपारदमनुजालेधूर्णाभवेषुच ॥ दृश्यंतेपिनिराधाराःस्फारावारिषुमैथिल ॥ २६ ॥ गण्डशैलनदीदुर्गगर्तप्रासादसंचयान् ॥ विलंघयंतःसततंचचलास्तेतुरंगमाः ॥ २७ ॥ मायूरींतैत्तिरींकौंचींहंसींयेखांजनींगतिम् ॥ कुर्वंतोभुविनृत्यंतोमैथिलेन्द्रइतस्ततः ॥ २८ ॥ केचित्सपक्षादिव्यांगाःश्यामकर्णामनोहराः ॥ पीतपुच्छाश्चंद्रवर्णावाजिशालाविनिर्गताः ॥ २९ ॥ उच्चैःश्रवःकुलेजाताःसूर्यवाजिभवाःपरे ॥ अश्विनीसुतविद्याढ्यावरुणेनप्रयोजिताः ॥ ३० ॥ केचिन्मंदारभाःकेचिच्चित्रवर्णामनोहराः ॥ अश्विनीपुष्पसंकाशाःस्वर्णाभाहरितप्रभाः ॥ ३१ ॥ पद्मरागप्रभाःकेचित्सर्वलक्षणलक्षिताः ॥ कोटिशःकोटिशोराजन्नन्येपिनिर्गताहयाः ॥ ३२ ॥ धनुर्भृतोभटाःसैन्येसंग्रामेलब्धकीर्त्तयः ॥ शक्तित्रिशूलासिगदाधर्मपाशधराःपरे ॥ ३३ ॥ वर्षतःशस्त्रधाराभिःप्रलयाब्धिसमानृप ॥ दिग्गजाइवदृश्यंतेमर्दयंतोह्यरीन्मृधे ॥३४॥ एवंविनिर्गतंराजन्यदूनांविपुलंबलम् ॥ दृष्ट्वासुरासुराःसर्वेविसिष्मुःपरमाद्भुतम् ॥ ३५ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खंडेनारदबहुलाश्वसंवादेयादवसैन्यगमनंनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्थंसेनावृतंवीरंप्रद्युम्नंधन्विनांवरम् ॥ श्रीकृष्णबलदेवाभ्यामुग्रसेनउवाचह ॥ १ ॥

हैं वे अश्वशालासो निकसे हैं ॥ २९ ॥ उच्चैःश्रवाके कुलके भये सूर्यके घोड़नते भये कोई अश्विनीकुमारकी विद्याकरिके आढ्य वरुणके भेजेभये हैं ॥ ३० ॥ कोई कल्पवृक्षकीसी कांतिवारे कोई चित्र विचित्र कांतिवारे मनोहर अश्विनीके पुष्पकीसी है कांति जिनकी कोई सोनेकीसी कांतिके है कोई हरे हैं ॥ ३१ ॥ कोई पद्मरागकीसी प्रभावारे सबरे लक्षणनसों लक्षित ऐसे किरोड़न घोडा औरहू चले हैं ॥ ३२ ॥ तिनपै धनुधारी योद्धा सेनामें संग्राममें पाई है कीर्ति जिनने शक्ति, त्रिशूल, तरवार, गदा, वर्म पाशके धरनहारे ॥ ३३ ॥ शस्त्रकी धारा करिके वर्षनहारे प्रलयके समुद्रके समान दिग्गजसे दीखें हैं संग्राममें वैरीनके मारनहारे दीखें है ॥ ३४ ॥ ॥ हे राजन्! या प्रकार यादवनकी विपुल सेना परम अद्भुत निकसी है ताहि देखिके सुर असुर सब अचंभौ करनलगे॥३५॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटीकायां सैन्यगमनं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥३॥ नारदजी कहेहैं याप्रकारकी

सेना करिके आवृत ऐसो जो धनुर्धरनमें श्रेष्ठ प्रद्युम्न वीर है तातें रामकृष्ण सहित उग्रसेन बोल्यो ॥ १ ॥ हे प्रद्युम्न महाभाग ! श्रीकृष्णकी कृपातें तुम जलदी ही सब राजानकूं जीतिके द्वारकाकूं आयजाउगे ॥ २ ॥ मत्तकूं प्रमत्तकूं उन्मत्तकूं सुप्तकूं बालककूं जड़कूं स्त्रीकूं शरणागतकूं विरथकूं डरपेकूं ऐसे वैरीहूंकूं धर्मके वेत्ता नहीं मारें हैं ॥ ३ ॥ राजानको यह धर्म है के दुखियानके दुःखनको दूरिकरिवो ऊभट मार्गमें चलनहारेनकूं मारिवो और ऐसेई आततांई मारिवे योग्य हैं ॥ ४ ॥ पुरुष होय चाहे स्त्री होय चाहे हीजडा होय जो अधम आप तो अपनी इंद्रीनकूं सुख देय औरनकी दया न करे ताको मारिवो राजानकूं दोष नहीं है वा पापीको मारिवो वध नहीं होयहै ॥ ५ ॥ प्रजानके भर्ता राजाकूं युद्धमें वैरीनको मारिवो धर्म है पाप नहीं है ऐसे पहले राजानतें स्वायंभू मनुने कह्योहै ॥ ६ ॥ जो रणमें आगे पांव धरे निर्भयहैके वह रणमें मरिजाय तो सूर्यमंडल कूं भेद्के परमपदकूं प्राप्त होयहै ॥ ७ ॥ जो क्षत्री भयकरिकें रणतें उपरामकूं प्राप्त हैजाय और पतिकूं छोडिके चल्योआवे सो रौरवनरकमें पड़ैहै ॥ ८ ॥ राजाको धर्म तो यह

॥ ॥ उग्रसेनउवाच ॥ ॥ हेप्रद्युम्नमहाप्राज्ञश्रीकृष्णकृपयात्वरम् ॥ विजित्यनृपतीन्सर्वान्द्वारकामागमिष्यसि ॥ २ ॥ मत्तंप्रमत्तमुन्मत्तंसुप्तंबालंजडंस्त्रियम् ॥ प्रपन्नंविरथंभीतंमारिपुंहंतिधर्मवित् ॥ ३ ॥ राज्ञोहिपरमोधर्मआर्तानामार्तिविग्रहः ॥ उत्पथानांवधश्चेत्थमाततायीवधार्हणः ॥ ॥४॥ पुमान्योषिदुतक्लीबआत्मसंभावितोधमः ॥ भूतेषुनिरनुक्रोशोनृपाणांतद्वधोवधः ॥ ५ ॥ नैनोराज्ञःप्रजाभर्तुर्धर्मंयुद्धेवधोद्विषाम् ॥ आदिराजोनुपान्पूर्वंप्राहस्वायंभुवोमनुः ॥ ६ ॥ योरणेनिर्भयोभूत्वाकृत्वांघ्रिंप्रागतोव्यसुः ॥ सगच्छेद्धामपरमंभित्त्वामार्तंडमण्डलम् ॥७॥ भयाद्रणादुपरतस्त्यक्त्वायुद्धेपतिंचयः ॥ व्रजेद्यःक्षत्रियोभूत्वासमहारौरवंव्रजेत ॥८॥ सेनांरक्षेत्तुराजाहिसेनाराजानमेवहि ॥ सूतःकृच्छ्रगतंरक्षेद्रथिनंसारथिंरथी ॥९॥ यूयंचयादवाःसर्वेसमर्थबलवाहनाः ॥ कार्ष्णिमेवाभिरक्षंतुकार्ष्णिर्वःपरिरक्षतु ॥१०॥ गावोविप्राःसुराधर्मश्छंदांसिभुविसाधवः ॥ पूजनीयाःसदासर्वैर्मनुष्यैर्मोक्षकांक्षिभिः ॥११॥ वेदाविष्णुवचोविप्रामुखंगावस्तनुर्हरेः ॥ अंगानिदेवताःसाक्षात्साधवोह्यसवःस्मृताः ॥१२॥ श्रीकृष्णोऽयंहरिःसाक्षात्परिपूर्णतमःप्रभुः ॥ येषांचित्तेस्थितोभक्त्यातेषांतुविजयःसदा ॥ १३ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ शिरसाजगृहुःसाक्षादुग्रसेनस्यशासनम् ॥ प्रणेमुर्यादवाःसर्वेकृतांजलिपुटानृप ॥१४॥ उग्रसेनंनृपंशूरंवसुदेवंबलंहरिम् ॥ ननामकार्ष्णिःशिरसागर्गाचार्यमहामुनिम् ॥१५

है कि, सेनाकी रक्षा करै सेनाको धर्म यह है कि, राजाकी रक्षा करै सारथीकूं कष्ट परे तो रथी रक्षा करे रथीकूं कष्ट परे तो सारथी रक्षा करै ॥ ९ ॥ तुम सबरे यादवसेना वाहनतें समर्थ हो सो प्रद्युम्नकी रक्षा करो और प्रद्युम्न तुमारी रक्षा करैगो ॥ १० ॥ गौ, ब्राह्मण, देवता, धर्म, वेद, साधू, ये पृथ्वीमें मनुष्यनकूं सदाई पूजिवे योग्य हैं जो मुक्तिकी कांक्षा करें तो ॥ ११ ॥ वेद तो विष्णुको वचन है ब्राह्मण मुख है गौ है ते शरीर है देवता अंग हैं साधू हैं ते प्राण हैं ॥ १२ ॥ यह श्रीकृष्ण साक्षात् परिपूर्णतम हरि हैं और समर्थ हैं ये जिनके चित्तमें विराजें हैं तिनकी सदाई विजय है ॥ १३ ॥ नारदजी कहे हैं कि, ऐसें उग्रसेनकी आज्ञा सबननें माथेपै धारण करी और हाथ जोड़ सब यादवन नें हे नृप ! उग्रसेनकूं दंडवत् करी ॥ १४ ॥ तब प्रद्युम्ननें उग्रसेन राजाकूं शूरसेनकूं वसुदेवकूं बलदेवकूं श्रीकृष्णकूं और गर्गमुनिकूं शिरतें दंडवत् करीहै ॥ १५ ॥

जब श्रीकृष्ण और बलदेवजी पुरीकूं चलेगये तब श्रीकृष्णको बेटा प्रद्युम्न दिग्विजयकूं निकस्यो यादवनकरिके सहित ॥ १६ ॥ चारि योजन लंबी फौजके डेरापे रहे हे मैथिलेश्वर ! सबके सुन्हेरी डेरा हे ॥ १७ ॥ आगे तो फौजके संगमे कृतवर्मा हे पिछाडी महाबली धनुर्धारी अक्रूरजी हैं ॥ १८ ॥ तिनके पिछारी मंत्री पांच प्रतिमा सहित उद्धवजी तिनके पिछारी कृष्णचन्द्रके अठारह बेटा हे ॥ १९ ॥ हे राजन् ! जे महारथी हैं वे अक्षौहिणी सेना लेकें चलेहे वे कौनसे अठारह महारथी हे, प्रद्युम्न १, अनिरुद्ध २, दीप्तिमान् ३, भानु ४, ॥ २० ॥ सांब ५, मधु ६, बृहद्भानु ७, चित्रभानु ८, वृक ९, अरुण १०, पुष्कर ११, देवबाहु १२, श्रुतदेव १३, सुनन्दन १४, ॥ २१ ॥ चित्रभानु १५, विरूप १६, कवि १७, न्यग्रोध १८, तिनके पीछे गद आदि देकें कृष्णके भेजे औरहू चले हे ॥ २२ ॥ भोज, वृष्णि, अंधक, मधु, शूरसेन, दशार्ह ऐसें सब

श्रीकृष्णबलदेवाभ्यांपुरींयातेनृपेश्वर ॥ दिग्जयार्थंहरेःपुत्रःप्रययौयादवैःसह ॥ १६ ॥ चतुर्योजनलंबीत्थंराजमार्गोपियस्यवै ॥ वर्भौहेममयैः सर्वैःशिबिरैर्मैथिलेश्वर ॥ १७ ॥ अग्रतोवाहिनीयुक्तःकृतवर्मामहाबलः ॥ ध्वजिनीसहितःपश्चादक्रूरोधन्विनांवरः ॥ १८ ॥ तत्पश्चादुद्धवोमंत्रीप्रतिमापंचसंयुतः ॥ तत्पश्चात्कृष्णचंद्रस्यसुतास्त्वष्टादशस्मृताः ॥ १९ ॥ यद्युर्महारथाराजन्येशताक्षौहिणीयुताः ॥ प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्चदीप्तिमान्भानुरेवच ॥ २० ॥ सांबोमधुर्बृहद्भानुश्चित्रभानुर्वृकोरुणः ॥ पुष्करोवेदबाहुश्चश्रुतदेवःसुनन्दनः ॥ २१ ॥ चित्रभानुर्विरूपश्चकविर्न्यग्रोधएवच ॥ तत्पश्चात्प्रययुःसर्वेगदाद्याःकृष्णनोदिताः ॥ २२ ॥ भोजवृष्ण्यंधकमधुशूरसेनदशार्हकाः ॥ ऋतुबाणकोटिसंख्यायादवानांप्रकथ्यते ॥ तत्सैन्यसंख्यांनृपतेकःकरिष्यतिभूमिषु ॥ २३ ॥ इत्थंयदूनांचलतांनृपाणांविकर्षतांतांमहतींचसेनाम् ॥ कोदंडटंकारयुतोभवत्कौधुंकारआताडितदुंदुभीनाम् ॥२४॥ इभेंद्रचीत्कारहयेंद्रहेषणैर्नदद्धुशुण्डीदृढवीरगर्जनैः ॥ ढक्कानिनादैर्यदवस्तडित्स्वनैःप्रचण्डमेघाइवतेविडिंडिरे ॥ २५ ॥ राजद्भुवोमण्डलमेवदिग्गजामहत्स्वनैस्तेबधिरीकृताइव ॥ सद्योथदुर्गारिपवोविदुद्रुवुर्नैःसाहसाःकौचलतांमहात्मनाम् ॥ २६ ॥ कूर्मास्तुकिंकाबितिकेवदंतःकुतःक्वगच्छामइतिद्रवंतः ॥ उपद्रवोद्धोषविधेक्कयातिचचालल्लोकैःसहिताचलेति॥२७॥

छप्पन किरोड़ यादव चले हे इनके सैन्यसंख्याको हे नृप ! भूमिमें कौन करसके हे ॥ २३ ॥ ऐसें जब यादवराजकी सेना चली. बड़ी सेनाकूं खेंचत राजा चले तब धनुषकी टंकार और दुंदुभीनकी बड़ी भारी धुंधुकार भई ॥ २४ ॥ हाथीनकी चिकार, घोडानकी हींसन, तोपनकी गर्जन, हढवीरनकी गर्जन, ढोलनकी बजन, तिन शब्दन करिके जब यादवनकी सेना चलीहे तब भूमि मेघसी गर्जनलगी ॥ २५ ॥ भूमंडल राजतभयो वा शब्दते दिग्गज बहेरे हेगये जा समयमे महात्मा यादव चले तब वैरी किलेनकूं छोडिके भाजिगये ॥ २६ ॥ कछु वा किरि २ करिके भाजे डोलेहें कहा जायँ कैसी करें बडी उपद्रव भयो हे विधातः ! उपद्रव कहा जायहे लोकन सहित पृथ्वी चलायमान हेगई हे ॥ २७ ॥

जो यज्ञके मिस करिके परेश्वर भगवान् पृथ्वीको भार उतारेंगे जो चतुर्व्यूह, वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध रूपते हैं मिथिलेश! यादवनमें आयेहैं ता अनंतगुण भूभृतकूं नमस्कार है ॥ २८ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडेभाषाटीकायांप्रद्युम्नदिग्विजयगमनं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥ तदनन्तर बहुलाश्व राजा पूछैहै कि, हे देवर्षिसत्तम! भगवान्कौ पुत्र प्रद्युम्न क्रमसे कौनकौनसे देशनकूं जीतवेकूं गयौ वाके उदार कर्मनकूं मेरे सामने कहो ॥ १ ॥ अहो देखो भक्तनके प्रति श्रीकृष्णचन्द्रकी ऐसी कृपा है जो वक्ता श्रोता तथा पापी जननकूं कुलसहित पवित्र करे है ॥ २ ॥ यह सुनके नारदजी बोले कि, धन्य है तोकूं तैने बडौ उत्तम प्रश्न कीनो है धन्य है तेरी निर्मल बुद्धिकूं जो कृष्णभक्तनकी चरित्र त्रिलोकीकूं पवित्र करन हारो है ॥ ३ ॥ वा समय कोई कवि मेघकी धारा, रेतके कणनकूं गिनभी सकैहै परन्तु श्रीमान् हरिके गुणनकूं नहीं गिनसके है ॥ ४ ॥ चार योजन तक

छलेनयज्ञस्यहरिःपरेश्वरोभारंविदेहेशभुवोवतारयन् ॥ योऽभूच्चतुर्व्यूहधरोयदोःकुलेतस्मैनमोऽनंतगुणायभूभृते ॥ २८ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेप्रद्युम्नदिग्विजयार्थगमनंनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ श्रीबहुलाश्वउवाच ॥ ॥ कान्कान्देशान्ययौजेतुंक्रमतःश्रीहरेःसुतः ॥ तस्यकर्माण्युदाराणिब्रूहिदेवर्षिसत्तम ॥ १ ॥ अहोश्रीकृष्णचन्द्रस्यकृपाभक्तेषुचेदृशी ॥ पुनातिप्रश्रुताध्यातापापिनंसकुलंजनम् ॥ २ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ साधुसाधुत्वयापृष्टंसाधुतेविमलामतिः ॥ चरितंकृष्णभक्तानांपुनातिभुवनत्रयम् ॥ ॥ ३ ॥ तत्कालेमेघधाराश्चभूमेःसर्वरजांसिच ॥ कविश्चेद्गणयेद्राजन्नहरेःश्रीमतोगुणान् ॥ ४ ॥ चतुर्योजनमात्रंहिछायायस्यप्रदृश्यते ॥ तेनश्वेतातपत्रेणशोभितोरुक्मिणीसुतः ॥ ५ ॥ रथेनशक्रदत्तेनस्वसैन्यपरिवारितः ॥ कच्छदेशान्ययौजेतुंत्रिपुरान्गिरिशोयथा ॥ ६ ॥ कच्छदेशाधिपःशुभ्रोमृगयार्थीविनिर्गतः ॥ सेनांसमागतांज्ञात्वापुरींहालांसमाययौ ॥ ७ ॥ प्रद्युम्नस्यागतासेनागजपादप्रताडनैः ॥ चूर्णयंतीतरून्देशान्पातयंतीचमैथिल ॥ ८ ॥ उत्थितैस्तद्रजोवृन्दैरंधीभूतंनभोऽभवत् ॥ भयंप्रापुर्जनाःसर्वेकच्छदेशनिवासिनः ॥ ९ ॥ तदातिहर्षितःशुभ्रोगजानांहेममालिनाम् ॥ नीत्वापञ्चशतंसद्योहयानामयुतंतथा ॥ १० ॥ विंशद्भारंसुवर्णानामागतस्तस्यसंमुखे ॥ दत्त्वाबलिंननामाशुसज्जावद्धाकरद्वयम् ॥ ११ ॥ तस्मैतुष्टःशंबरारिःप्रददौरत्नमालिकाम् ॥ संस्थाप्यराज्येतंराजंस्तेषांहिप्रकृतिःसताम् ॥ १२ ॥

जाकी छाया पडै ऐसे श्वेत छत्रके नीचे रुक्मिणीको पुत्र शोभितभयो विराजैहै ॥ ५ ॥ सो इंद्रके दीनो रथमें बैठि सेना समेत कच्छदेशनके जीतिवेकूं जातभयो त्रिपुरके जीतिवेकूं जैसे महादेवजी चले है ॥ ६ ॥ कच्छदेशको अधिप शुभ्रनामको राजा सिकारकूं निकस्यो हो सेनाकूं आई देखिके हालानामकी पुरीकूं चल्यौगयो ॥ ७ ॥ आई जो प्रद्युम्नकी सेना ताके हाथीनके पांवनते देशनके वृक्ष जायपडे चूर्ण ह्वैगये हे मैथिल! ॥ ८ ॥ उडे जे रजके समूह तिनते आकाश आंधरो ह्वैगयो और कच्छदेशवासी सब भयभीत ह्वैगये ॥ ॥ ९ ॥ तब शुभ्रराजा अति हर्षित भयो सुवर्णमालाधारी पांच सौ हाथी और दशहजार घोडा लेके ॥ १० ॥ बीस भार सोनो लेके प्रद्युम्नके सन्मुख आयके भेंट देतोभयो और मालाते दोनों हाथ बाँधिके शीघ्रही नमस्कार करतोभयो ॥ ११ ॥ तब प्रद्युम्नने प्रसन्न ह्वैके शुभ्रको रत्नकी माला देतभयो और राज्यपे बैठारिके प्रसन्न होतोभयो संतनकी ऐसी

हैं प्रकृति है ॥ १२ ॥ फिर कच्छदेशते बडो बली रुक्मिणीनंदन कलिंगदेशकूं जीतिवेकूं चल्यो ध्वजापताका जामें फैरायहै ऐसी फौज लैके जैसे मेघनकी फौजमें इंद्रकी शोभा हो यहै ॥ १३ ॥ तब तौ कलिंगदेशको राजा अपने गज, वाजि, योद्धा लैके प्रद्युम्नके सन्मुख युद्ध करिवेकूं निकस्यौ ॥ १४ ॥ कलिंगराजकूं आयौ देखिकें धनुर्धारीनमें श्रेष्ठ अनिरुद्ध इकलो रथमें बैठि सेनाकूं संग लेके यादवनके अगाडी युद्ध करतोभयो ॥ १५ ॥ सौ बाण तो कलिंगराजके मारे और दश दश बाण रथीनके और हाथीनके, सवारनके मारेफिर धनुषकी प्रत्यंचाकूं फटकारतें ये पराक्रम कियो ॥ १६ ॥ तब अपनी सेनाकेन्ने और वैरीननेहू सबनने भले भले ऐसे कही तब प्रद्युम्नके देखत देखत अनिरुद्ध युद्ध करनलगो ता समय ॥ १७ ॥ अनिरुद्धके बाणनके समूहकरिके कोई २ तो दो २ टूक हैगये हाथीनके शिर कटिकें जायपरें, घोडानके पांव कटिकें जायपरे ॥ १८ ॥ रथनके पहिया चूर्ण हैगये

कलिंगान्प्रययौजेतुंरुक्मिणीनंदनोबली ॥ पतत्पताकैःसत्सैन्यैर्मेघैरिंद्रइववज्रभृत् ॥ १३ ॥ कलिंगराजःस्वबलैःसमर्थद्विपवाहनैः ॥ निर्ययौसंमुखंयोद्धुंप्रद्युम्नस्यमहात्मनः ॥ १४ ॥ कलिंगमागतंवीक्ष्यानिरुद्धोधन्विनांवरः ॥ रथेनैकेनतत्सैन्यैर्युयुधेयादवाग्रतः ॥ १५ ॥ शतबाणैश्चकालिंगं दशभिर्दशभीरथान् ॥ अताडयद्गजान्वीरश्चापंटंकारयन्मुहुः ॥ १६ ॥ स्वशत्रवश्चस्वेसर्वेसाधुसाध्वितिवादिनः ॥ अनिरुद्धःप्रयुयुधेप्रद्युम्नस्य प्रपश्यतः ॥ १७ ॥ अनिरुद्धस्यबाणौघैःकेचिद्वीराद्विधाकृताः ॥ गजाश्चभिन्नशिरसःपादभिन्नाहयानृप ॥ १८ ॥ रथाश्चचूर्णचरणाहताश्वा हतनायकाः ॥ रथिसारथयोवातैर्निपेतुःपादपाइव ॥ १९ ॥ पलायमानांतांसेनांकालिंगोवीक्ष्यमैथिल ॥ आजगामगजारूढोविच्छिन्न कवचोरुषा ॥ २० ॥ द्विसप्ततिभारयुतांगदांचिक्षेपसत्वरम् ॥ गजेनपातयन्वीराञ्जगर्जघनवद्बली ॥ २१ ॥ गदाप्रहारपतितंकिंचिद्व्याकुलमानसम् ॥ अनिरुद्धंमृधेवीक्ष्ययादवाःक्रोधपूरिताः ॥ २२ ॥ तदैवतेद्भुःकालिंगंबाणैस्तीक्ष्णैःस्फुरत्प्रभैः ॥ समांसमुद्दंदश्येनंकुरराश्चंचुभिर्यथा ॥ २३ ॥ कालिंगोपितदाक्रुद्धःसज्जंकृत्वाधनुःस्वयम् ॥ टंकारयन्मुहुर्बाणैर्बाणांश्चूर्णीचकारह ॥ २४ ॥ गदोगदांसमादायबलदेवानुजोबली ॥ तद्गजंताडयामासवामहस्तेनमैथिल ॥ २५ ॥ अर्धचन्द्रप्रहारेणविशीर्णोऽभूद्गजस्तथा ॥ इंद्रवज्रप्रहारेणगंडशैलोयथानृप ॥ २६ ॥

घोडा मरगये सारथी मरगये रथी मरगये औरहू रथी सारथी ऐसे जायपडे जैसे पवनके वेगते वृक्ष जायपडें है ॥ १९ ॥ भाजी सेनाकूं देखिके कलिंगको राजा हाथीपै चढिके कवच पहरे बडे रोषते आयौ ॥ २० ॥ तब एकसौ चालीस मनकी गदा लैकें अनिरुद्धके ऊपर फैंकी और हाथीते वीरनकूँ मारतो बडो बली घनकी नाईं गरज्यो ॥ २१ ॥ वा गदाके प्रहारतें अनिरुद्ध जायपरयौ कछू व्याकुलमन हैगयो ऐसे संग्राममें अनिरुद्धकूं देखकें यादव क्रोधपूरित हैगये ॥ २२ ॥ तब तौ चमकते पैने २ बाणनते कलिंगराजाकूं छेदनलगे जैसें कुरर पक्षी मांसवारे शिकारकूं चोंचनते छेदेंहे ॥ २३ ॥ तब कलिंगहू क्रोधी हैके अपनों धनुष चढायकें टंकारत बाणनते बाणनको चूर्ण करतभयौ ॥ २४ ॥ तब तौ बलदेवको छोटो भैया गद गदाकूं वांये हाथमें लैके कलिंगराजाके हाथीकूं मारतभयौ वा गदाते महाबली ॥ २५ ॥ फिर गदने अर्धचन्द्र बाण मारयो ताते हाथी बिखर

गयौ इंद्रके वज्रको माऱ्यौ पर्वतकौ ढील जैसे बिखरजाय ॥ २६ ॥ कलिंगराजहू धरतीमें जायपऱ्यौ फिर गदा लैकें गदको मारत भयौ और गद कलिंगकूं मारताभया ॥ ॥ २७ ॥ ऐसें कलिंगको और गदकौ घोरयुद्ध होतभयौ तब पतंगा छोड़ती दोनों गदा चूर्ण हैगई ॥ २८ ॥ गद तौ फिर कलिंगराजकूं पटकिकें रणके आँगनमें अपने हाथते खचेरन लग्यौ गरुड़ जैसें सर्पकूं खचेरैहै ॥ २९ ॥ जब गदाके महारते दुःखी हैगयौ हाड़ जाके चूर्ण हैगये तब ये कलिंगराज महात्मा प्रद्युम्नकी शरण आवतोभयौ ॥ ३० ॥ तब ये कलिंगराज प्रद्युम्नकौ भेंट दैकें यह वचन बोल्यौ आप तो देवनके देव परमेश्वर हो या पृथ्वीपे ऐसौ कौन है जो क्रोध भये तुमकूं सहिलेय जैसें क्रोधित यमराजकूं नर नहीं सहिसके ता भगवान्कूं मेरी नमस्कार है ॥ ३१ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटीकायां कच्छकलिंगदेशविजयो नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

कलिंगःपतितोभूत्वागृहीत्वामहतींगदाम् ॥ गदंचताडयामासकालिंगंचगदस्तदा ॥ २७ ॥ कालिंगगदयोस्तत्रघोरंयुद्धंबभूवह ॥ विस्फुलिंगान्क्षरंत्यौद्वेगदेचूर्णीबभूवतुः ॥ २८ ॥ गदोगृहीत्वाकालिंगंपातयित्वारणांगणे ॥ चकर्षस्वकरेणाशुफणिनंगरुडोयथा ॥ २९ ॥ गदाप्रहारव्यथितश्चूर्णितास्थिःकलिंगराट् ॥ आययौशरणंसोपिप्रद्युम्नस्यमहात्मनः ॥ ३० ॥ दत्त्वाबलिंप्राहकलिंगराजस्त्वंदेवदेवःपरमेश्वरोऽसि ॥ कःक्रोधवन्तंप्रसहेतकोत्वांजनोयथादंडधरंनमस्ते ॥ ३१ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेकच्छकलिंगदेशविजयोनामपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्थंजित्वाथकालिंगंप्रद्युम्नोयादवेश्वरः ॥ जगाममरुधन्वानंजलंवैश्वानरोयथा ॥ ॥ १ ॥ गिरिदुर्गसमायुक्तंधन्वदेशाधिपंगयम् ॥ उद्धवंप्रेषयामासज्ञात्वातंयादवेश्वरः ॥ २ ॥ गिरिदुर्गंगतःसाक्षादुद्धवोबुद्धिसत्तमः ॥ सभामेत्यगयंप्राहशृणुराजन्महामते ॥ ३ ॥ उग्रसेनोयादवेन्द्रोराजराजेश्वरोमहान् ॥ जंबूद्वीपनृपाञ्जित्वाराजसूयंकरिष्यति ॥ ४ ॥ परिपूर्णतमःसाक्षाच्छ्रीकृष्णोभगवान्स्वयम् ॥ असंख्यब्रह्मांडपतिर्मंत्रीतस्याभवद्धरिः ॥ ५ ॥ तेनवैप्रेषितःसाक्षात्प्रद्युम्नोधन्विनांवरः ॥ शीघ्रंतस्मैबलिंनीत्वाकुलकौशलहेतवे ॥ ६ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ श्रुत्वाकिंचित्प्रकुपितोवीर्यशौर्यमदोद्धतः ॥ उद्धवंप्राहनृपतिर्गयोनाममहाबलः ॥ ७ ॥ ॥ गयउवाच ॥ बलिंतस्मैनदास्यामिविनायुद्धंमहामते ॥ अल्पकालेनयदवोगतावृद्धिंभवादृशाः ॥ ८ ॥

नारदजी कहे हैं-ऐसें यादवनको ईश्वर प्रद्युम्न कलिंगराजकूं जीतिके मारवाडदेशकूं जातभयौ जैसें अग्नि जलमें जायहै ॥ १ ॥ पर्वतकौ किलो जाकौ ऐसौ धन्वदेशकौ राजा गय ताके पास यादवेश्वर प्रद्युम्न वाय जानकें उद्धवजीकूं भेजतोभयौ ॥ २ ॥ साक्षात् बुद्धिमान् उद्धव वो पर्वतके दुर्गमें गयो सभामें जायकें गयराजाते बोलो कि, हे महामते ! हे राजन् ! तुम सुनौ ॥ ३ ॥ यादवनमें इन्द्र राजराजेश्वर उग्रसेन महाराज जंबूद्वीपके राजानकूं जीतकें राजसूय यज्ञ करेंगे ॥ ४ ॥ परिपूर्णतम साक्षात् स्वयं श्रीकृष्णचंद्र अखिल ब्रह्मांडनके पति स्वयं भगवान् हरि ताके मंत्री भयेहैं ॥ ५ ॥ तिनने धनुषधारीनमें श्रेष्ठ प्रद्युम्न भेज्यौहै साक्षात् ताकूं अपने कुलकी कुशलके कारण जलदी भेंट लैकें चलौ ॥ ६ ॥ नारदजी कहेंहै-ऐसें सुनिकें बल, वीर्य, मदते उद्धत ये गय राजा कछू एक कुपित हैकें महाबली उद्धवते यह बोल्यौ ॥ ७ ॥ गयराज बोलो कि

हे महामते ! युद्ध करे विना भेद तो मैं नही देउंगो तुमसरीके यादवनको अब थोडे दिनते बहुवार भईहै ॥ ८ ॥ ऐसें सुनिकें उद्धवजी सब यादवनके सुनत प्रद्युम्नते गयराजाके वचन सब कहतोभयो ॥ ९ ॥ ताही समय रुक्मिणीको बेटा गिरिदुर्गकूं गयो तब गयराजा वाकी सेनाते और यादवनकी सेनाते घोर युद्ध होतोभयो ॥ १० ॥ तब हाथीनके पांयनते वृक्षनको और नगरवासीनको चूर्ण करतो दो अक्षौहिणी सेना लैके ये गयराजा युद्ध करिवेकूं आयो ॥ ११ ॥ तब रथीनते रथी लडे हाथीके सवारनते हाथीवारे प्यादेनते प्यादे और सवारनते सवार लडनलगे ॥ १२ ॥ पैने पैने बाणनतें ढाल, तरवार, खड्ग, पोलादी गदा, पटा, फरसा, बर्च्छी, तोप इनते लडनलगे ॥ १३ ॥ यादवनके मारेभये गयराजाके योद्धा भयभीत हैगये अपने अपने रथनकूं छोडिछोडिकें दशों दिशानमें भाजिगये ॥ १४ ॥ तब महाबली गय अपनी सेनाको भजी देखिकें इकलौही

इत्युक्तउद्धवोराजन्रुक्मिणीरस्मेत्यसः ॥ सर्वेषांयादवानांचशृण्वतांप्रशशंसह ॥९॥ तदैवरुक्मिणीपुत्रोगिरिदुर्गंसमाययौ ॥ तत्सैन्यैर्यादवैःसार्द्धंघोरंयुद्धंबभूवह ॥ १० ॥ चूर्णयन्गजपादैश्चनागरान्भूजनान्द्रुमान् ॥ अक्षौहिणीभ्यांसंयुक्तोगयोयोद्धुंविनिर्ययौ ॥११॥ रथिनोरथिभिस्तत्र गजवाहागजैःसह ॥ अश्ववाहैरश्ववाहावीरावीरैःपरस्परम् ॥ १२ ॥ युयुधुस्तीक्ष्णबाणौघैश्चर्मखड्गगदर्ष्टिभिः ॥ पाशैःपरश्वधैराजञ्छतघ्नीभिर्भुशुंडिभिः ॥ १३ ॥ मन्यमानाश्चयदुभिर्गयवीराभयातुराः ॥ सर्वेस्वंस्वंरथंत्यक्त्वादुद्रुवुस्तेदिशोदश ॥ १४ ॥ पलायमानेस्वबलेगयोनामममहाबलः ॥ एकाकीप्रययौयोद्धुंधनुष्टंकारयन्मुहुः ॥ १५ ॥ दीप्तिमान्कृष्णपुत्रस्तुधनुर्बाणैरिपोर्हयान् ॥ एकेनसारथिंजघ्नेद्वाभ्यांकेतुंसमुच्छ्रितम् ॥ १६ ॥ रथंचबाणविंशत्याकवचंपंचभिःपुनः ॥ धनुस्तस्यापिचिच्छेदशतबाणैर्महाबलः ॥१७॥ गयोन्यद्धनुरादायदीप्तिमंतंहरेःसुतम् ॥ जघानबाणविंशत्याजगर्जघनवद्बली ॥ १८ ॥ तत्प्रहारेणसमरेकिंचिद्व्याकुलमानसः ॥ दीप्तिमानथजग्राहशक्तिंज्योतिर्मयींदृढाम् ॥ १९ ॥ चिक्षेपभ्रामयित्वातांगयाख्यायमहात्मने ॥ सापितद्धृदयंभित्त्वापपौचरुधिरंमहत् ॥ २० ॥ गयोपिपतितोराजन्मूर्च्छितोऽभूद्रणांगणे ॥ दीप्तिमांश्चधनुष्कोट्याकर्षयंस्तद्बलेरिपुम् ॥ २१ ॥ प्रद्युम्नस्यपुरःप्रागात्कद्रुजंगरुडोयथा ॥ नरदुंदुभयोनेदुर्देवदुंदुभयस्तदा ॥ आकाशाद्ववृषुर्देवाःपुष्पवर्षाणिपार्थिवाः ॥ २२ ॥

वारंवार धनुषकूं टंकार करतो युद्ध करिवेकूं आयो ॥ १५ ॥ तब दीप्तिमान् नामको श्रीकृष्णको बेटा चार बाणनते तो घोडानकूं मारतभयो एक बाणते सारथीकूं और दो बाणनते ऊंची ध्वजाकूं काटतोभयो ॥ १६ ॥ पच्चीस बाणनते रथकूं पांच बाणनते कवचकूं और सौ बाणनते धनुषकूं काटके डारदेतोभयो ॥ १७ ॥ तब गयराजा और धनुषकूं लैकें वीस बाणनते भगवानकें पुत्र दीप्तिमानकूं मारतभयो फिर मेघसों गर्जनलग्यो ॥ १८ ॥ तिन बाणनते नेक व्याकुलमन हैकें तेजोमयी जो दृढ शक्ति है ताहि लेतोभयो ॥ १९ ॥ भ्रमायके यह शक्ति गयके मारी सो शक्ति वाके हृदयकूं फाडकें बहुत रुधिर पीवतीभयी ॥ २० ॥ गय वा शक्तिके मारे मूर्च्छित हैके रणके आंगनमें जायपर्यो तब दीप्तिमान् अपने धनुषकी नोंकते गरेमें डारि खचेरतो ॥ २१ ॥ प्रद्युम्नके अगारी लैगयो जैसें सर्पकूं गरुड लैजायहै तब तो नरदुंदुभीहू बजनलगी और देव

दुंदुभीहू बजनलगी आकाशमेंते देवता पृथ्वीमेंते पार्थिव पुष्पनकी वर्षा करनलगे ॥ २२ ॥ जब गयराजा होशमें आयो. फेर आयकें प्रद्युम्नके चरणनकों पूजन कर्यो भेट दीनी फिर श्रीकृष्णको बेटा शंबरासुरको मारनवारो प्रद्युम्न अवंतिका पुरीकूं चल्योगयो जैसें सुनहरी कलीपै भौंरा जायहै ॥ २३ ॥ वहांको मालवेको जयसेन राजा प्रद्युम्नकूं आयौ सुनिकें पूजन करतभयो और मालव देशको राजा बूढेनकूं संग लेकें भेट देतोभयो हे मैथिल ! प्रद्युम्नके प्रभावको जाननहारो है ॥ २४ ॥ कृष्णको बेटा महात्मा अपने बाबाकी बहन जो राजाधिदेवी है ताकूं नमस्कार करिकें विंद अनुविंद जे वाके बेटा तिनते मिलकें और जे मालवेके मनुष्य हैं तिनते मिलकें शोभित भयो ॥ २५ ॥ तब धनुर्धारी नमें श्रेष्ठ जो प्रद्युम्न है सो माहिष्मती पुरीकूं जातोभयो अपनी सेना जो यादव तिनकूं संग लेकें नर्मदानदीकूं देखतोभयो ॥ २६ ॥ जो नर्मदा जलनकी लहरीनते राजिरहीहै शृंगारतिलका जैसे और पुष्पनके समूहनकूं वहेहै बँधी भई उष्णिष् (पगडी) की जैसे ॥ २७ ॥ बेतनके बांसोंके वृक्षनते माधवीके प्रफुल्लित वृक्षनकरकें अत्यंत शोभित है

तदैवतेनापिसमर्चितांघ्रिः श्रीकृष्णपुत्रोनृपशंबरारिः ॥ अवंतिकांसप्रययौमहात्माश्रीकर्णिकांस्वर्णमयीमिवालिः ॥ २३ ॥ श्रुत्वागतंतंजयसेनराजः समर्चयामाससमालवाधिपः ॥ आनीयवृद्धान्सुबलिंमहात्मनेप्रधर्षितोमैथिलतत्प्रभाववित् ॥ २४ ॥ राजाधिदेवींस्वपितुःपितुःस्वसांप्रणम्यतांकृष्णसुतोमहामनाः ॥ विंदानुविंदौपरिरभ्यतत्सुतौबभौवृतोमालवदेशसंभवैः ॥ २५ ॥ प्रद्युम्नोधन्विनांश्रेष्ठःपुरींमाहिष्मतींययौ ॥ यादवैःस्वबलैःसार्द्धंनर्मदांसददर्शह ॥ २६ ॥ राजितामंबुकल्लोलैःशृंगारतिलकामिव ॥ वहंतींपुष्पनिचयमुष्णिष्मुद्रिकामिव ॥ ॥ २७ ॥ वेतसीवेणुतरुभिःपुष्पितैर्माधवैर्वृतैः ॥ स्फुरद्भिर्मूर्तिमद्भिश्चदेवैःस्वर्गनदीमिव ॥ २८ ॥ तत्तीरेशिबिरैर्युक्तःप्रद्युम्नोयादवेश्वरः॥ स्थितोभूद्यादवैःसाकंदेवैरिंद्रइवप्रभुः॥२९॥ इंद्रनीलोमहाराजज्ञानीमाहिष्मतीपतिः ॥ स्वदूतंप्रेषयामासप्रद्युम्नायमहात्मने॥३०॥ प्रद्युम्नराजशिबिरेदूतोनत्वाकृतांजलिः ॥ उवाचवचनंतत्रसर्वेषांशृण्वतांनृप ॥३१॥ ॥ दूतउवाच ॥ ॥ हस्तिनापुरनाथेनधार्तराष्ट्रेणधीमता ॥ स्थापितोऽतिबलोवीरोबलिंकस्मैनदास्यति ॥३२॥ सुयोधनायचेच्छाभिर्द्रव्यंयच्छतिमाबलात्॥योद्धव्यंचभवद्भिश्चविफलोहिरणोऽत्रवै ॥३३॥ ॥श्रीप्रद्युम्नउवाच ॥ ॥ यथागयोद्धतकलिंगराड्यथातथाभिभूतोपिबलिंप्रदास्यति ॥ नृपंनजानातिमहोग्रसेनकंमाहिष्मतीशोऽयमतीवराजराट् ॥३४॥

जैसें देवतानकरकें मंदाकिनी शोभाकूं प्राप्त होयहै ॥ २८ ॥ ताके तीरपै यादवेश्वर प्रद्युम्ननें यादवनके संग डेरा करदीने जैसें देवतानके प्रभु इन्द्र डेरा करदेयहै ॥ २९ ॥ तब इन्द्रनील नाम है महाराज ! बडो ज्ञानी माहिष्मतीको पति प्रद्युम्न महात्माके पास अपने दूतकूं भेजतोभयो ॥ ३० ॥ तब ये दूत प्रद्युम्नके डेरानमें आयकें हाथ जोड दंडवत् करकें सबनके सुनत हे नृप ! यह वचन बोल्यो ॥ ३१ ॥ कि, हस्तिनापुरके मालिक बुद्धिमान् धृतराष्ट्रनें अतिबली वीर बैठारचोहै सो काहूकूं भेट नहीं देयहै ॥ ३२ ॥ सुयोधनकूं अपनी इच्छाते द्रव्य देयहै कछू जबरदस्ती नहीं देयहै तुम युद्ध करौ पर ये रण तुम्हारो यहां निफल है ॥ ३३ ॥ तब प्रद्युम्न बोले कि, हे दूत ! जैसें कलिंगराजको जब मानजनों बिगडचौ तब भेंट दई तैसेंही यह अपनों तिरस्कार करायकें भेट देयगो उग्रसेनराजाकूं नहीं जानें है क्योंकि, ये माहिष्मतीको राजा राजानकोहू राजा है॥ ३४॥

नारदजी कहें है कि, ऐसें दूत सुनकें सभामें आयकें माहिष्मतीके पतिते प्रद्युम्नको कह्यौ वचन कहतौ भयौ ॥ ३५ ॥ फिर यादवनकी उद्भट सेनाकूं देखकें माहिष्मतीको पति पांच हजार हाथी दश लक्ष घोड़ा जीतनहारे दश हजार रथ लेकें निकस्यौ ॥ ३६ ॥ फेर प्रद्युम्नके निकट आयकें महात्मा प्रद्युम्नकूं भेट देतभयौ ॥ ३७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खण्डे भाषाटीकायां माहिष्मतीविजयो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ नारदजी कहें हैं कि, प्रद्युम्न महावीर्य माहिष्मतीके पतिकूं जीतकें अनंतर बड़ी फौजकूं खेंचतो गुजरातके राजाके यहां आवतोभयौ है ॥ १ ॥ गुर्जरदेशको महाबली ऋष्य नाम राजा हो ताकूं सेनाते चारों बगलते घेरलीनों जैसे गरुड़ चोंचते सर्पकूं घेरलेयहै ॥२॥ जल्दीही वाते भेट लेकें यादवेंद्र महाबली बड़ी फौजकूं लिये चेदिदेशकूं आयौ ॥ ३ ॥ वहां दमघोष चंदेलीको राजा वसुदेवको बहनेऊ हो शिशुपाल वाको बेटा कृष्णको शत्रु

॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ उक्तोदूतस्तदैवाशुगत्वामाहिष्मतीपतिम् ॥ सभायांकथयामासप्रद्युम्नकथितंवचः ॥ ३५ ॥ यदूनामुद्भटं सैन्यंवीक्ष्यमाहिष्मतीपतिः ॥ गजानांपंचसाहस्रंहयानांनियुतंशुभम् ॥ ३६ ॥ रथानामयुतंजैत्रंनीत्वाराजाविनिर्गतः ॥ बलिंददौस मेत्याशुप्रद्युम्नायमहात्मने ॥ ३७ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेमाहिष्मतीविजयोनामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ श्रीनारद उवाच ॥ ॥ प्रद्युम्नोथमहावीर्योजित्वामाहिष्मतीपतिम् ॥ विकर्षन्महतींसेनांगुर्जरराजंसमाययौ ॥ १ ॥ गुर्जरस्याधिपंवीरमृष्यंनामम हाबलम् ॥ जग्राहसेनयाकार्ष्णिस्तुंडेनाहिंयथाविराट् ॥ २ ॥ सद्यस्तस्माद्बलिंनीत्वायादवेंद्रोमहाबलः ॥ विकर्षन्महतींसेनांचेदिदेशांस्त तोययौ ॥ ३ ॥ दमघोषश्चेदिराजोवसुदेवस्वसुःपतिः ॥ शिशुपालस्तस्यपुत्रःकृष्णशत्रुःप्रकीर्तितः ॥ ४ ॥ अभीयायमहाबुद्धिर्दमघोषंमहाब लम् ॥ नत्वाप्राहमहाबुद्धिमुद्धवोबुद्धिसत्तमः ॥ ५ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ राजन्देहिबलिंतस्माउग्रसेनायभूभृते ॥ विजित्यनृपतीन्यो ऽसौराजसूयंकरिष्यति ॥ ६ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्थंनिशम्यवचनंदमघोषसुतःखलः ॥ स्फुरदोष्ठोमन्युपरःप्राहेदंसदसित्वरम् ॥ ७ ॥ ॥ शिशुपालउवाच ॥ ॥ दुरत्ययाकालगतिरहोचित्रमिदंजगत् ॥ विधेःकालात्मकस्यापिप्राजापत्येभवेत्कलिः ॥ ८ ॥ क्वराजहंसःकाकःक्वमूर्खःक्वचपण्डितः ॥ भुत्याविजेष्यंतिनृपंचक्रवर्तिनमीश्वरम् ॥ ९ ॥ ययातिशापाद्यदवोभ्रष्टराज्यपदाःस्मृताः ॥ रा ज्यंस्वल्पंजलंप्राप्यप्रोच्छलंत्यापगाइव ॥ १० ॥ अवंशसंभवोराजामूर्खपुत्रोहिपंडितः ॥ निर्धनश्चधनंप्राप्यतृणवन्मन्यतेजगत् ॥ ११ ॥

विख्यात है ॥ ४ ॥ तब महाबुद्धि उद्धवजी बुद्धिमाननमें श्रेष्ठ दमघोषके पास आयकें दंडवत् कर बोले है ॥ ५ ॥ उद्धवजी बोले कि, हे राजन्! उग्रसेन राजाकूं बलि दीजिये जो सब राजनकूं जीतकें राजसूय यज्ञ करैं है ॥ ६ ॥ नारदजी कहें है-ऐसे सुनिके दमघोषको बेटा बड़ो दुष्ट क्रोधमें भरिआयो होठ फड़कनलगे क्रोधमें मग्न हैके सभामें जल्दीते यह बोल्यो ॥ ७ ॥ शिशुपाल बोलो अहो! कालकी गति बड़ी दुरत्यय है यह जगत् बड़े अचंभेको है जो कालात्मा ब्रह्माते कुम्हार झगड़ै है के प्रजापति मैं हूं के तू है ॥ ८ ॥ कहां राजहंस कहां कौआ कहां मूर्ख कहां पण्डित देखौ चक्रवर्ती राजानकूं आज चाकर जीत्यो चाहे है ॥ ९ ॥ ययाति राजाके शापते यादवनको भ्रष्ट राज्य हैगयो है सो थोड़ोसो राज्य पायके ऐसे उछले है जैसे थोरेसो जलको पायके तुच्छ नदी उछले है ॥ १० ॥ अवंशमें उत्पन्नभयो राजा और मूर्खको बेटा पंडित और दरिद्री धन

पापकें ये तीनों जगतकूं तिनकाके समान गिनें हैं ॥ ११ ॥ उग्रसेन कै दिनकौ राजा है जाको श्रीकृष्ण मन्त्री बन्यो है सो कृष्णनेहीं वाहि जोरावरी राजा बनाय दीनो है ॥१२॥ जाकौ मंत्री वासुदेव है जो जरासन्धके भयके मारे अपनी मथुरापुरीकूं छोडकें समुद्रमें जाय दुबक्यौ है ॥ १३ ॥ जाको नन्द नाम अहीरकौ बेटा कह्यौ कहेंहैं और वसुदेव जाकों अपनोही बेटा मानें है जाकूं नेंकहू शरम नहीं आवे है ॥ १४ ॥ और वसुदेव तो गोरो है यह कारो कहाते आयो और बाबाहू गोरो है सो देखो ये एक दुःख एक हँसी है ॥१५॥ मैं ताके बेटा प्रद्युम्नकूं यादवनकूं और वाकी सेनाकूं जीतकें अयादवी पृथ्वी करिवेकूं द्वारकाकूं जाऊंगो ॥ १६ ॥ नारदजी कहें हैं कि, ऐसे कहिके धनुष लेकें अक्षय बाणनके तर्कस लैकें चलबेकूं जब उद्यत भयौ तब दमघोष बेटाते बोल्यौ कि, ॥ १७ ॥ बेटा मैं कहूं ताहि तू सुन क्रोध मति करै ,मति करै हाल विगर समझे जो कोई काम करे है

उग्रसेनःकतिदिनैराजत्वंसमुपागतः ॥ मंत्रिणावासुदेवेनपूजितःसबलान्नृपः ॥ १२ ॥ तस्यमंत्रीवासुदेवोजरासंधभयाद्द्रुतः ॥ मथुरांस्वपुरींत्यक्त्वासमुद्रंशरणंगतः ॥ १३ ॥ आभीरस्यापिनन्दस्यपूर्वंपुत्रःप्रकीर्तितः ॥ वसुदेवोमन्यतेतंमत्पुत्रोयंगतत्रपः ॥ १४ ॥ वसुदेवाद्गौरवर्णादयंश्यामःकुतोऽभवत् ॥ पितामहोऽपिगौरश्चदुःखहास्यमिदंवचः ॥ १५ ॥ प्रद्युम्नंतत्सुतंजित्वासबलंयादवैःसह ॥ कुशस्थलींगमिष्यामिमहींकर्तुमयादवीम् ॥ १६ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वाधनुरादायतूणौचाक्षयसायकौ ॥ गंतुमभ्युद्यतंवीक्ष्यचेदिराजस्तमब्रवीत् ॥१७॥ ॥ ॥ दमघोषउवाच ॥ ॥ शृणुपुत्रप्रवक्ष्यामिक्रोधंमाकुरुमाकुरु ॥ अकस्मादाचरेत्कार्यंनसिद्धिंविंदतेह्यसौ ॥ १८ ॥ धर्मार्थकाममोक्षाणांसाधनंनक्षमासमम् ॥ तस्मात्सामप्रकर्तव्यंसाम्नोनसदृशंसुखम् ॥ १९ ॥ दानेनराजतेसामदानंसत्क्रिययापुनः ॥ सत्क्रियापियथायोग्यंगुणंसंप्रेक्ष्यराजते ॥ २० ॥ यादवाश्चेदिपाश्चैवज्ञातिसंबंधिनःस्मृताः ॥ चेदिपानांचवृष्णीनांकलिंनेच्छामितत्त्वतः ॥ २१ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ शिशुपालोबोधितोपिदमघोषेणधीमता ॥ नोवाचकिंचिद्विमनास्तूष्णींभूतोमहाखलः ॥ २२ ॥ श्रुतिश्रवाश्चेदिपराजराज्ञीस्वसाशुभाशूरसुतस्यराजन् ॥ समेत्यपुत्रंशिशुपालसंज्ञंप्रत्याहसम्यग्विनयान्वितासा ॥ २३ ॥ ॥ श्रुतिश्रवाउवाच ॥ ॥ मापुत्रखेदंकुरुतात्कदाचिन्माभूत्कलिश्चेदिपयादवानाम् ॥ तेमातुलोयंकिलशूरसूनुर्भ्राताचतेतत्सुतएवकृष्णः ॥ २४ ॥

वाकौ वो काम सिद्धि नहीं होयहै ॥ १८ ॥ धर्म अर्थ काम मोक्ष सबकौ साधन क्षमाकी बराबर दूसरो कोई नहीं है ताते शांतिही करनी योग्य है, शांतिके समान अन्य सुख नहीं हैं ॥ १९ ॥ दानकरकें तौ सामको शोभा होयहै श्रेष्ठ कियाते दानकी शोभा है वा सत्क्रियाहूकी यथायोग्य गुणनतेही शोभा होयहै ॥ २० ॥ यादव और चेदिप जे हैं वे सब जातिके संबन्धी है याते यादवनकी और चैद्यनकी मैं तत्त्वते क्लेशकी इच्छा नहीं करूंहूं ॥ २१ ॥ नारदजी कहें हैं कि, शिशुपालकूं दमघोष बुद्धिमाननें ज्ञानहू करायौ तौहू चुप्प ह्वैगयो महादुष्ट उदास ह्वैके कछू नहीं बोल्यौ ॥ २२॥ तब श्रुतिश्रवा चँदेलीके राजाकी रानी वसुदेवकी बहन वो है राजन् ! अपने बेटा शिशुपालके निकट आयकें बड़ी नम्रताते यह वचन बोली ॥ २३ ॥ श्रुतिश्रवा बोली कि, हे पुत्र ! तू रंज मत करै देखि काहू चेदिपनमें और यादवनमें क्लेश नहीं होय और देख ये वसुदेव तेरो मामा है और वाको बेटा जो

श्रीकृष्ण है सो तेरौ भैया है ॥ २४ ॥ वा कृष्णके बेटा प्रद्युम्न आदिलेकें जे यहां बडेबडे वीर शतशः आये हैं तिनकी मोय सत्कार करनों और लाड लडायवोही योग्य है
लडवेके योग्य नही है ॥ २५ ॥ मेरी स्नेह है मैं आपेनकूं उनको तेरे संग लेकेंकूं जाऊंगी क्योंकि, बहुत दिनानते मेरी उनको देखवेकी उत्कंठा है सो उत्सवते लाऊंगी ऐसो
वखत फेर न मिलैगो २६ ॥ तब शिशुपाल यह बोल्यौ कि, राम कृष्ण मेरे वैरी हैं और यादवहू मेरे वैरी हैं उन सबकूं मारूंगो जिननें मेरो तिरस्कार करयोहै ॥ २७ ॥
पहिलें कुंडिनपुरमें इननें मेरो अपराध-कीनो है मेरो विवाह बन्द करदीनों याते राम कृष्ण मेरे वैरी हैं ॥ २८ ॥ जो तुम दोनों यादवनकी पक्ष करौगे तो तोकूं और पिताकूं
बेडी डारके बंदीखानेमें देदेऊंगो ॥ २९ ॥ जैसें कंसनें अपने मावापकूं देदीने हे या के तुमकूं मारडारूंगो मेरी सौगंद बहुत बुरी है कभी झूठी होती नहीं है ॥ ३० ॥ नारदजी

तस्यात्मजायेऽत्रसमागतास्तेप्रद्युम्नमुख्याःशतशोमहांतः ॥ सम्पूजनीयाश्चमयाभवद्भिःसंलालनीयानहियुद्धयोग्याः ॥ २५ ॥ अहंगमिष्या
मिसहार्द्रचित्तानेतुंत्वयातातसमागतांस्तान् ॥ द्रष्टुंचिरोत्कण्ठमनामहोत्सवैर्नैताद्दशोयंसमयःकदाचित् ॥ २६ ॥ ॥ शिशुपालउवाच ॥ ॥
ममशत्रूरामकृष्णौयदवःशत्रवश्चमे ॥ घातयिष्यामितान्सर्वान्यैरहंतुतिरस्कृतः ॥ २७ ॥ पुरावैकुंडिनपुरेयाभ्यांमेहेलनंकृतम् ॥ विवाहोवा
रितोमेवैरामकृष्णावरीमम ॥ २८ ॥ यदितेपांयादवानांयुवांपक्षंकरिष्यथः ॥ तदात्वांसहपित्राचनिगृह्यनिगडैर्दृढैः ॥ २९ ॥ कारागारेकार
येदिये ॥ तद्वचःस्वबलंप्राप्यप्राहसर्वंयथोदितम् ॥ ३१ ॥ वाहिनीध्वजिनीचैवपृतनाक्षौहिणीयुता ॥ चतुर्धाशिशुपालस्यसेनायुक्ताबभूवह ॥
॥ ३२ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ वाहिन्याद्याश्चयासेनास्तत्संख्यांवदमेप्रभो ॥ ऋषयोहित्रजानंतिभूतंभव्यंभवत्परम् ॥ ३३ ॥ ॥
श्रीनारदउवाच ॥ ॥ शतंद्विपानांरथिनांसहस्रंशतसंयुतम् ॥ अयुतंतुरगाणांचपत्तीनांलक्षमेवच ॥ ३४ ॥ सेनायालक्षणंस्वल्पंद्विगुणंचतु
रंगिणी ॥ चतुःशतंद्विपानांचरथानामयुतंतथा ॥३५॥ चतुर्लक्षंहयानांचपत्तीनामेककोटयः ॥ लोहकंचुकसंयुक्ताःसमर्थबलवाहनाः ॥३६॥
शस्त्रास्त्रज्ञायत्रशूरावाहिनीसाबुधैःस्मृता ॥ वाहिन्याद्विगुणीभूताध्वजिनीसाप्रकीर्तिता ॥ ३७ ॥

कहेंहे कि, ऐसें वाको कठोर वचन सुनकें जब ये दोनों चुप्प हेरहे तब वा वचनकूं सुनकें उद्धवजीने अपनी सेनामें आयकें सब ज्योंकोत्यों हाल कह्यो ॥ ३१ ॥ वाहिनी और
ध्वजिनी और पृतना और अक्षौहिणी ये चार प्रकारकी शिशुपालकी सेना सजी ॥ ३२ ॥ बहुलाश्व राजा पूछेंहे कि, हे प्रभो ! जो वाहिनी आदि चार बताईं इन चारोंनकी
संख्या कहो ऋषीश्वर भूत भविष्य वर्तमान तीनो कालकूं जानेंहे ॥ ३३ ॥ नारदजी केहेंहें–सौ हाथी ग्यारहसो रथ दशहजार घोडा एक लाख प्यादे ॥ ३४ ॥ यह तो सैना
है और दूनी अर्थात् दोसौ हाथी, बाईससौ रथ, बीसहजार सवार, दो लाख प्यादे यह चतुरंगिणी है चारसौ हाथी, दश हजार रथ ॥ ३५ ॥ चार लाख घोडा, किरोड प्यादे, लोहेकी
जंजीरके अंगरखा वारे समर्थ जामें वल वाहन ॥ ३६ ॥ शस्त्र अस्त्रके जाननहारे जामें शूर वाको बुद्धिमान् वाहिनी कहेंहे वाहिनीते द्विगुणी ध्वजिनी कहावेंहे ॥ ३७ ॥

भा. टी.
वि. खं.
अ० ७

ध्वजिनीते द्विगुणी पृतना कहावैहै और पृतनाते दूनी अक्षौहिणी कहीजायहै और साहसी होयहै वो शूर कहावैहै और सौ शूरनते लडै सो सामंत होयहै॥३८॥जो सौ सामंतनको धारण करै सो संग्राममे गजी कह्योहै सारथीको, रथको, घोड़ानको संग्राममें रक्षा करै सो रथी होयहै ॥३९॥और जो सेनाकी बाणनसों रक्षा करै और वैरीनकूं रणमें मारतोजाय सो महारथी॥ ४०॥ और जो इकलोही एक अक्षौहिणीके संग युद्ध करै और अपनी सेनाकी रक्षा करै सो अतिरथी मानो है ॥ ४१ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटीकायां गुजरातचेदिदेशगमने नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ नारदजी कहेहैं कि, अब ये शिशुपाल ऐसे चन्द्रिकापुरते निकस्यो माता पिताको तिरस्कार करिकें खोटेनको ऐसोही स्वभाव होयहै ॥ १ ॥ वाहिनी और ध्वजिनीकूं लैकें द्युमत् और शक्र ये दोनो निकसे पृतना और अक्षौहिणीकूं लैकें तब रंग, पिंग इनके संगमें दोनों मंत्री चलेहै ॥

ध्वजिन्याद्द्विगुणीज्ञेयाकविभिःकथितापुरा ॥ ससाहसोपिशूरःस्यात्सामंतःशतशूरभृत् ॥ ३८ ॥ सामंतानांशतंबिभ्रत्सगजीकथितोमृधे ॥ समरेसारथिंचाश्वान्रथंरक्षेद्रथीचयः ॥ ३९ ॥ सेनांरक्षतियोबाणैःकथ्यतेसमहारथी ॥ स्वसेनांरक्षयञ्छत्रून्सूदयन्रणमण्डले ॥ ४० ॥ योक्षौहिण्यासमंयुद्धंचेत्सदासोऽतिरथीस्मृतः ॥ ४१ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेश्रीनारदबहुलाश्वसंवादेगुर्जरचेदिदेशगमनंनामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ निर्गतःशिशुपालोऽसौसबलश्चंद्रिकापुरात् ॥ पितरौतौतिरस्कृत्यस्वभावोह्यसतामयम् ॥ ॥ १ ॥ वाहिनीध्वजिनीभ्यांचद्युमच्छक्रौविनिर्गतौ ॥ पृतनाक्षौहिणीभ्यांतौरंगपिंगौचमंत्रिणौ ॥ २ ॥ शिशुपालमहासैन्यंप्रलयाब्धिसमंनृप ॥ संवीक्ष्ययदवस्तत्तुचाजग्मुःकृष्णपोतकाः ॥ ३ ॥ वाहिनीसहितःपश्चाद्द्युमान्नाममहाबलः ॥ युयुधेयादवैःसार्द्धंशिशुपालप्रणोदितः ॥ ४ ॥ द्वयोश्चसैन्ययोर्बाणैरंधकारोऽभवद्रणे ॥ हयपादरजोवृन्दैःप्रोत्थितैश्छादयन्नभः ॥ ५ ॥ हयाश्चनृपधावंतःप्रोत्पतंतोद्विपान्प्रति ॥ द्विपाश्चसक्षतायुद्धेपातयंतःपदैर्द्विषः ॥ ६ ॥ शुण्डादण्डस्यफूत्कारैर्मर्दयंतइतस्ततः ॥ कस्तूरीपत्रसिंदूररक्तकंबलमंडिताः ॥ ७ ॥ बाणैर्गदाभिःपरिघैःखड्गैःशूलैश्चशक्तिभिः ॥ छिन्नांगाःपतयःपेतुश्छिन्नबाह्वंघ्रिजानवः ॥ ८ ॥ कश्चित्तीक्ष्णासिनाराजन्हयान्युद्धेद्विधाकरोत् ॥ केचिद्दंतान्संगृहीत्वाकुंभेषुकारिणांगताः ॥ ९ ॥

तब शिशुपालकी बडी सेनाको प्रलयको जैसो समुद्र तैसीकों देखकें यादव तरिबेको समर्थ होतेभये श्रीकृष्णही है महान जिनको ॥ ३ ॥ वाहिनी करिके सहित द्युमान यादवनके संग युद्ध करतभयो शिशुपालको प्रेर्योभयो ॥ ४ ॥ दोनोंनकी सेनानके बाणनकरिकें रणमें अंधकार हैगयो घोडानके खुरनकी रजके उठे जो उड़े गयो ॥ ५ ॥ हे नृप ! घोड़ा जे हैं वे धावते वैरीनके हाथीनपै पडैहैं और घायल भये हाथी वे पायनते वैरीनकूं पटकते भाजैहैं ॥ ६ ॥ सूंड़की फुंकारनते कस्तूरीकी पत्रभंगी रचना सिंदूर और लाल बनात करिकें मंडित है ॥ ७ ॥ बाण, गदा, परिघ, खड्ग, त्रिशूल, बरछी, तिनते कटेहैं भुजा, चरण, प्यादे आप परैहैं ॥ ८ ॥ कोई पैनी तरवारते घोडानके दो २ टूक करदेतेभये और कोई दांत पकर हाथीनपै चढ़िगये ॥ ९ ॥

कोई २ महावत समेत सिंहकी नाईं हाथी हाथीके सवारनकूं मारैहैं कोई२महाबली हाथीनके शुंडनकूं फाँदफाँदकें प्रहार करैहैं॥ १०॥पराई सेनानपै खड्गके प्रहार करैहैं कोई२घोड़ान की पीठनपै नहीं दीखेहैं नटसे दीखेहैं ॥ ११ ॥ तब वैरीकी सेनाकौ वेग देखकें अक्रूरजी आये तिनने बाणनते आकाश ढकदीनौं तब बाणनके समूहनते वैरीनने अक्रूरकूं इक दिपौ जैसे वर्षा सूर्यकूं ढकदेयहै ॥ १२ ॥ तब गांदिनीके बेटा अक्रूर तरवारते बाणनके पटलकूं काटकें क्रोधते मूर्च्छितभये वा द्युमानकूं बरछीते मारतेभये ॥ १३ ॥ ता प्रहारते घायल हैकें दो घड़ी तक ये द्युमान् मूर्च्छा खायकें जायपरयौ फिर ये शिशुपालकौ सखा उठके युद्ध करनलग्यौ॥ १४ ॥ तब द्युमान्ने १ लाख भारकी गदा लैके अक्रूरकें हृदयमे मारी फिर घनसौ गर्जन लग्यौ ॥ १५ ॥ या चोटके मारे जब अक्रूरकौ कछू व्याकुल मन देखो तब युयुधान सात्यकि धनुष टंकारत चल्यौ आयो ॥ १६ ॥ सो एकही

आमात्यंहस्तिवाहंचमर्दयंतोमृगेंद्रवत् ॥ उल्लंघयंतःसहयागजवृन्दंमहाबलाः ॥ १० ॥ खड्गप्रहारंकुर्वंतोविदार्यपरसैनिकान् ॥ हयस्पृष्ठानदृश्यंतेदृश्यंतेतेनटाइव ॥ ११ ॥ सैन्यवेगंचशत्रूणांदृष्ट्वाक्रूरःसमाययौ ॥ चकारदुर्दिनंबाणैर्बाणौघैश्चापिनिर्गतैः ॥ छादयामास चाक्रूरंवर्षासूर्यमिवांबुदः ॥ १२ ॥ जित्वातद्बाणपटलमसिनागांदिनीसुतः ॥ शक्त्याततांडतंवीरंद्युमंतंक्रोधमूर्च्छितम् ॥ १३ ॥ तत्प्रहारेणभिन्नांगोमूर्च्छितोघटिकाद्वयम् ॥ पुनरुत्थाययुयुधेशिशुपालसखाबली ॥ १४ ॥ गृहीत्वाथगदांगुर्वीलक्षभारविनिर्मिताम् ॥ तताडहृदिचाक्रूरंजगर्जघनवद्द्युमान् ॥ १५ ॥ अक्रूरेतत्प्रहारेणकिंचिद्व्याकुलमानसे ॥ युयुधानस्तदाप्रागाज्ज्याशब्दंकारयन्मुहुः ॥ १६ ॥ शिरस्तस्याशुचिच्छेदबाणेनैकेनलीलया ॥ पतितेद्युमतिह्याजौवीरास्तस्यविदुद्रुवुः ॥ १७ ॥ तदैवशक्रःसंप्राप्तोदृष्ट्वासेनांपलायिताम् ॥ शूलंचिक्षेपसहसायुयुधानायधीमते ॥ १८ ॥ युयुधानश्चबाणौघैस्तच्छूलंशतधाकरोत् ॥ शक्रोगृहीत्वापरिघंयुयुधानंतताडह ॥ १९ ॥ युयुधानोऽर्जुनसखःक्षणंमूर्च्छामवापह ॥ तदैववीरःसंप्राप्तःकृतवर्मामहाबलः ॥ २० ॥ शक्रस्यापिरथंसाश्वंबाणैश्चूर्णीचकारह ॥ शक्रोऽपिचूर्णयामासगदयातद्रथंपरम् ॥ २१ ॥ कृतवर्मारथंत्यक्त्वाशक्रंजग्राहरोषतः ॥ पातयित्वाभुजाभ्यांतंचिक्षेपनृपयोजनम् ॥ २२ ॥ शक्रेचपतितेयुद्धेशिशुपालप्रणोदितौ ॥ रंगपिंगौमंत्रिणौतौपूतनाक्षौहिणीयुतौ ॥ २३ ॥

बाणते युयुधानने द्युमान्की शिर काटके गेरदीनौ द्युमानके मरेपै वाके वीर सब भाजगये ॥ १७ ॥ तबही सेनाकूं भजी देख शक्र आयौ आयके याने युयुधानके एक त्रिशूल मारयौ ॥ १८ ॥ वा त्रिशूलकें युयुधानने बाणनते सौ टूक करदीने तब ये शक्र परिघ लैकें युयुधानकूं मारतोभयौ ॥ १९ ॥ तब ये युयुधान अर्जुनकौ सखा एक क्षणकूं मूर्च्छा खायगयौ तबही और कृतवर्मा महाबली आयो॥२०॥तब याने शक्रके रथकौ घोड़ान समेत चूर्ण करदियौ तब शक्रनेहू कृतवर्माके रथकौ गदाते चूर्ण करडारयौ॥२१॥तब कृतवर्माने रथकूं छोड़िके रोषते शक्रकं पकड़लीनो और पकरिके भुजानते हे नृप ! कृतवर्माने शक्रको चार कोसपै फेंकिदीयौ ॥२२॥ जब शक्र युद्धमें जायपरयौ तब शिशुपालके प्रेरेभये रंग,

पिंग दो मंत्री पूतना और अक्षौहिणी सेना लैके आये ॥ २३ ॥ बाणनकी वर्षा करते वैरीनको मर्दन करते संग्राममें आये हे मैथिलेंद्र ! जैसे अग्नि और आंधी आवेहे ॥ २४ ॥ तब उद्भट सेनाकूं देखिके यादवेंद्र प्रद्युम्न कृष्णके समान पराक्रमी सभामें धनुष लैके वचन बोल्यो ॥ २५ ॥ कि, हे जन हो ! अगारी युद्धमें मै चलूंहूं क्योंकि, ये दोनों रंग पिंग महाबली दीखेहे ॥ २६ ॥ श्रीनारदजी कहेहे कि, ऐसे सुनिकें बडी भुजानवारो जो भानु बडो बली कृष्णको बेटा नीतिको वेत्ता है वो सबके अगारी हैके भैयाते यह बोल्यो ॥ २७ ॥ भानु बोलो कि, जो त्रैलोक्य आयो दीखे तुमारे सन्मुख तोभी हे प्रभो ! तुमारे धनुषकी टंकार होयगी यामें संदेह नही ॥ २८ ॥ मै केवल एक या खड्गतेंई जैसे तरबूजेको काटे ऐसेंही इन दोनों रंगपिंगके शिरनकी काटिके आऊंगो ॥ २९ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटीकायां द्युमच्छक्तवधो नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

बाणवर्षंप्रकुर्वंतौमर्दयंतावरीन्मृधे ॥ आजग्मतुर्मैथिलेंद्रयथावातहुताशनौ ॥२४॥ उद्भटंतद्बलंवीक्ष्ययादवेंद्रपितुःसमः ॥ आदायचापंसदसि प्रद्युम्नोवाक्यमब्रवीत् ॥ २५ ॥ ॥ प्रद्युम्नउवाच ॥ ॥ अहंगमिष्यामिपुरोरंगपिंगमृधेजनाः ॥ रंगपिंगौचदृश्येतेमहाबलपराक्रमौ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ एतच्छ्रुत्वामहाबाहुर्भानुःकृष्णसुतोबली ॥ सर्वेषामग्रतोभूत्वाभ्रातरंप्राहनीतिवित् ॥ २७ ॥ ॥ भानुरुवाच ॥ ॥ त्रैलोक्यंदृश्यतेप्राप्तंयदातेसंमुखेप्रभो ॥ तदातेचापटंकारोभविष्यतिनसंशयः ॥ २८ ॥ केवलेनापिखड्गेनशिरसीरंगपिंगयोः ॥ छित्त्वाचागमिष्यामिकलिंगशकलाविव ॥ २९ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेद्युमच्छक्तवधोनामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वाशत्रुहाभानुर्गृहीत्वाखड्गचर्मणी ॥ पदातिःप्रययौसैन्येवनेवन्यकरीवसः ॥ १ ॥ भानुखड्गेनशत्रूंस्ताञ्छिन्नबाहूंश्चकारह ॥ द्विपान्हयान्संमुखस्थान्पार्श्वस्थांश्चद्विधाकरोत् ॥२॥ खड्गद्वितीयोह्येकाकीरेजेछिंदन्नरीन्मृधे ॥ नीहारमेघपटलेर्भानुर्भानुरिवस्फुरन् ॥ ३ ॥ हस्तिनांछिन्नकुंभानांभानुखड्गेनमैथिल ॥ मुक्तानिपेतुश्चयथातारकाःक्षीणकर्मणाम् ॥ ४ ॥ लक्षमात्रेणतत्सैन्यंपातयित्वारणांगणे ॥ रंगपिंगोपरिप्रागाद्भानुर्वीरोमहाबलः ॥ ५ ॥ कृष्णदत्तेनखड्गेनरथौतौरंगपिंगयोः ॥ छित्त्वाहयान्सनेतृंश्चभानुर्युद्धेद्विधाकरोत् ॥ ६ ॥ खड्गौनीत्वारंगपिंगौतेडतुस्तमहोद्भटौ ॥ भानुचर्मगतौखड्गौभंगीभूतौबभूवतुः ॥ ७ ॥ भानुखड्गप्रहाणरेशिरसी रंगपिंगयोः ॥ युगपत्पेततुर्युद्धेतदद्भुतमिवाभवत् ॥ ८ ॥

नारदजी कहै है ऐसे कहिके शत्रुहंता भानु ढाल, तरवार, लैके सेनामे प्यादेही चल्यो जैसे वनमें वनको हाथी जायहै ॥ १ ॥ तब ये भानु वा खड्ग करिके तिन शत्रूनकूं, छिन्नभुजा करतोभयो हाथीनकूं घोडानकूं जो जो सन्मुख आये और और पासवारेनकूं दोदो टूक करतोभयो ॥ २ ॥ खड्गही है दूसरो जाके ऐसो ये इकलोही युद्धमे वैरीनकूं काटतो भानु ऐसें राजतभयो जैसे कुहरकूं दूरि करिके सूर्य राजेहै ॥३॥ भानुके खड्गते कटे जे हाथीनके माथे तिनमेते गिरे जे मोती तिनकी टूटते जे क्षीणपुण्यवारे तारागण होयँ तैसी शोभा होतीभई ॥ ४ ॥ क्षणमात्रमेंई रणके आंगनमे वा सेनाकू पटकिके फिर ये भानु रंगपिंगके ऊपर आवतोभयो ॥ ५ ॥ कृष्णने दियो जो खड्ग है ताते रंगपिंगके घोडा सारथी समेत रथ तिनके दोदो टूक करतोभयो ॥ ६ ॥ तब उद्भट दोनो रंगपिंग खड्ग लैके वे भानुके खड्ग मारतेभये तब महोत्कट भानुकी ढालमें आयके दोनोंनके खड्ग खिलगये ॥ ७ ॥ फिर जो भानुने खड्ग

मारयौ ताके महारतें रंगपिंग दोनोनके शिर एक संग काटिकें जायवेर नद वा युद्धमें बडो अचंभो भयो ॥ ८ ॥ तब वे भानु विन दोनोनके शिरनको लैकें प्रद्युम्नके सन्मुख विजय करिकें आवतो भयो तब सेनाके नायक या वीर भानुको बडी बडाई करनलगे ॥ ९ ॥ आकाशमें और पृथ्वीमें दुंदुभी बजनलगी जय जय शब्दते सबने सत्कार कर्यौ देवतानकों करी पुष्पनकी वर्षा होनलगी ॥ १० ॥ रंगपिंगको मार्यौ सुनिके शिशुपालकूं बडो क्रोध आयो तब वे जीतवे रथमें बैठके शिशुपाल यादवनके सन्मुख आयो ॥ ११ ॥ मद जिनके चुचावहै, रत्ननते और बनातनतें मंडित, सुनहरी अंबारी तिनकरके युक्त चंचल घंटानके शब्द करते जे हाथी ॥ १२ ॥ और विमानसे रथ, जिनमें वायुवेग घोडा जुडेभये, विद्याधरनके समान वीर, तिनके नादतें पृथ्वीकूं शब्दित करत आयो ॥ १३ ॥ तब शिशुपालकी सेनाकूं देखके इन्द्रके दिये रथपै बैठके धनुर्धारीनमें

भानुस्तयोश्चशिरसीनीत्वाप्रद्युम्नसंमुखे ॥ आययौविजयीवीरःश्लाघितःसैन्यनायकैः ॥९॥ दिविदुंदुभयोनेदुर्नदुंदुभिभिःसमम् ॥ अभूज्जयजयारावःपुष्पवर्षाःसुरैःकृताः ॥ १० ॥ रंगपिंगेमृतेश्रुत्वाशिशुपालोरुषान्वितः ॥ जैत्रंरथंसमारुह्ययदूनांसंमुखंययौ ॥११॥ मदच्युद्भिर्गजेंद्रैर्वैरत्नकंबलमंडितैः ॥ स्वर्णनीडसमायुक्तैर्लोलघंटाकणत्स्वनैः ॥ १२ ॥ रथैश्चदेवधिष्ण्याभैर्वायुवेगैस्तुरंगमैः ॥ विद्याधरसमैर्वीरैर्नादयन्वसुधातलम् ॥ १३ ॥ शिशुपालबलंदृष्ट्वाशक्रदत्तेरथेततः ॥ सर्वेषामग्रतःकार्ष्णिः प्रययौधन्विनांवरः ॥१४॥ शंखंदध्मौहरेःपुत्रोदिशःखंनादयन्नृपः ॥ तेननादेनशत्रूणांकंपोऽभूद्धृदिमानद ॥ १५॥ शिशुपालमहासैन्येप्रासादइवदुर्गमे ॥ चक्रेनाराचसोपानंसद्यसारुक्मिणीसुतः ॥ १६ ॥ दमघोषसुतोधीमान्धनुष्टंकारयन्मुहुः ॥ ब्रह्मास्त्रंसंदधेयद्वैदत्तात्रेयेणशिक्षितम् ॥ १७ ॥ प्रचंडंसर्वतस्तेजोदृष्ट्वाथरुक्मिणीसुतः ॥ ब्रह्मास्त्रेणापितद्युद्धेसंजहारसलीलया ॥ १८ ॥ शिशुपालोमहाधीमानंगारास्त्रंसमादधे ॥ जामदग्न्येनयद्दत्तंमहेंद्रेपर्वतेनृप ॥ १९॥ तस्मादंगारवर्षाभिःकार्ष्णिसेनातिविह्वला ॥ पर्जन्यास्त्रंमहादिव्यंतदाकार्ष्णिःसमादधे ॥ २० ॥ स्थूलाभिर्मेघधाराभिरंगाराःशांतिमाययुः ॥ शिशुपालस्तदाक्रुद्धोगजास्त्रंतंसमादधे ॥ २१ ॥ यदगस्त्येनमुनिनाशिक्षितंमलयाचले ॥ महोद्भटागजादीर्घाःकोटिशस्तद्विनिर्गताः ॥ २२ ॥

श्रेष्ठ प्रद्युम्न सबके आगे जातोभयो ॥ १४ ॥ हरिको बेटा शंख बजावतभयो दिशानकें और आकाशको नादित करतो, ता नादते हे मानद ! शत्रुनके हृदयमें बडो कंप भयो ॥ १५ ॥ शिशुपालकी यो महासेना महलसी दुर्गम तामें सहजमेंही बाणनकी सिढी बनाय रुक्मिणीको बेटा चढिगयो ॥ १६ ॥ तब दमघोषको बेटा बडो बुद्धिमान् बेरबेर धनुषकूं टंकारत ब्रह्मास्त्र चलायदेतभयो जो ब्रह्मास्त्र याने दत्तात्रेयते सीख्यो हो ॥ १७ ॥ तब सब ओरतें प्रचंड तेज देखकें या रुक्मिणीनंदनने अपने ब्रह्मास्त्रकरके सहजमेंही टारलेतभयो ॥ १८ ॥ तब शिशुपाल बुद्धिमानने अंगारास्त्र चलायो जो परशुरामने महेंद्र पर्वतमें दीनों हो ॥ १९ ॥ तब अँगारनकी वर्षा करिके प्रद्युम्नकी सेना अति विह्वल हेगई तब प्रद्युम्नने पर्जन्यास्त्र चलायदीनों ॥ २० ॥ तब मोटी जो मेघकी वर्षा ता करिके अंगार शांत हेगये तब शिशुपालने क्रोधी हैके गजास्त्र चलायो ॥ २१ ॥ जो अगस्त्यमुनिने मलयाचलपे सिखायो हो

तामेंते बड़े बड़े अद्भुत चिंघाड़न हाथी निकसे ॥ २२ ॥ वे प्रद्युम्न महात्माकी सेनाकूं मारनलगे यादवनकी सेनामें बडो हाहाकार शब्द भयो ॥ २३ ॥ तब रणमें बड़ाई करवे लायक प्रद्युम्न नृसिंहास्त्र चलावतभयो वा अस्त्रमेंते पृथ्वीकूं झंकारत नृसिंह निकसे ॥ २४ ॥ कैसे हैं वे कि, दीप्यमान् हे शिखा जिनकी, लंबे जिनके बाल, नखनते भयंकर, हुंकार शब्दनते नाद करत तिन हाथीनकूं भक्षण करते एकदमसों हुंकारन लगे ॥ २५ ॥ उछरत उछरत गजकुंभनकूं चीरके हाथीनके समूहकूं मर्दन कर वहीं अन्तर्धान हैगये ॥ २६ ॥ तब शिशुपाल महाबलीनें परिघ चलायौ सोहु यमदंडकरकें प्रद्युम्नने काटडार्यौ ॥ २७ ॥ ताके अनन्तर शिशुपाल रोषमें भर्यौ खांडो ढाल लेकें प्रद्युम्नके ऊपर धायौ, पतंगा जैसे अग्निमें धावै है ॥ २८ ॥ तब प्रद्युम्ननें कालदंडते वो खड्ग और ढाल दोनोंनको चूर्ण करडार्यौ ॥ २९ ॥ फेर प्रद्युम्नने वरुणकी दीनी जो पाश ताते

तेसैन्यंपातयामासुःप्रद्युम्नस्यमहात्मनः॥हाहाकारोमहानासीद्यदूनांवाहिनीषुच॥२३॥प्रद्युम्नोथरणश्लाघीनृसिंहास्त्रंसमादधे ॥ नृसिंहोनिर्गत स्तस्मान्नादयन्वसुधातलम् ॥२४॥ स्फुरत्सटोदीर्घबालोनखलांगलभीषणः ॥ ननादहुंकृतैःशब्दैर्भक्षयंस्तान्गजान्रणे॥२५॥विदार्यगजकुंभांत मुत्पतन्भगवान्हरिः ॥ गजवृंदंमर्दयित्वातत्रैवांतरधीयत ॥ २६ ॥ चिक्षेपपरिघंरोषाच्छिशुपालोमहाबलः ॥ चिच्छेदपरिघंतद्वैयमदंडेनमाधवः ॥ २७ ॥ ततश्चैद्योरुषाविष्टोगृहीत्वाखड्गचर्मणी ॥ प्रद्युम्नंतमुपाधावत्पतंगइवपावकम् ॥ २८ ॥ कार्ष्णिस्तताडतंखड्गंयमदंडेनवेगतः ॥ चूर्णीबभूवतेनापिनिस्त्रिंशश्चर्मणासह ॥२९॥ पाशिदत्तेनपाशेनसहसायादवेश्वरः ॥ दमघोषसुतंबद्ध्वाविचकर्षरणांगणे ॥ ३० ॥ शिशुपालंघातयितुंखड्गंजग्राहरोषतः ॥ तदैवतत्करौसाक्षाद्गदोजग्राहवेगतः॥ ३१ ॥ ॥ गदउवाच ॥ ॥ परिपूर्णतमेनापिश्रीकृष्णेनमहात्मना ॥ वध्यो यंदेववचनंवचनंमामृथाकुरु ॥ ३२ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ तदाकोलाहलेजातेशिशुपालस्यबंधने ॥ दमघोषोबलिंनीत्वाप्रागात्प्रद्युम्नसंमुखे ॥ ३३ ॥ कार्ष्णिस्तमागतंदृष्ट्वात्यक्त्वाशस्त्राणिशीघ्रतः ॥ अग्रतश्चेदिपंशश्वन्ननामशिरसाभुवि ॥ ३४ ॥ मिलित्वाचाशिषंदत्त्वाप्रद्युम्नायमहात्मने ॥ दमघोषोमहाराजःप्राहगद्गदयागिरा ॥ ३५ ॥ ॥ दमघोषउवाच ॥ ॥ प्रद्युम्नत्वंतुधन्योऽसिश्रीयदूनांशिरोमणे ॥ तत्पुत्रेणकृतंयद्वैतत्क्षमस्वदयानिधे ॥ ३६ ॥ ॥ श्रीप्रद्युम्नउवाच ॥ ॥ ममदोषोनतेचायंनतेपुत्रस्यहेप्रभो ॥ सर्वंकालकृतंमन्येप्रियमप्रियमेववा ॥ ३७ ॥

दमघोषके बेटाकूं बांधके रणके आंगनमें खेंचनलग्यो ॥ ३० ॥ फिर क्रोध करके शिशुपालकूं मारवेकूं खड्ग लीनों तबही गदनें आयकें दोनों प्रद्युम्नके हाथ पकड़लीने ॥ ३१ ॥ और गद बोल्यो कि, परिपूर्णतम महात्मा श्रीकृष्णके हाथते याकी मुक्ति लिखी है सो यह देवतानकी वचन है ता वचनकूं तुम झूठो मत करो ॥ ३२ ॥ जब शिशुपाल बंधगयो तब बड़ो कोलाहल मच्यो तब दमघोष भेट लेकें प्रद्युम्नके सन्मुख आयो ॥ ३३ ॥ तब प्रद्युम्न दमघोषको सन्मुख आयो देखकें सब शस्त्रनकूं धरिके आगे जाय पृथ्वीमें लोटके शिरतें दमघोषको दंडौत करतोभयो ॥ ३४ ॥ तब तो दमघोष जो महाराज है सो प्रद्युम्नते मिलिके आशीर्वाद देके गद्गद वाणीते प्रद्युम्नते यह बोल्यो ॥ ३५ ॥ दमघोष बोलो कि, बेटा प्रद्युम्न तू धन्य है हे श्रीयादवनमें शिरोमणि, हे दयानिधि ! जो कछू मेरे बेटाने कीनो है ताहि तू क्षमा करि ॥ ३६ ॥ तब प्रद्युम्न बोल्यो कि, देखो न तो मेरो दोष है न

तुमारो दोष है और हे प्रभो ! न शिशुपालको दोष है प्रिय और अप्रिय ये सब मे कालको कियोही मानूंहूं ॥ ३७ ॥ नारदजी कहे हे-ऐसे कहिके दमघोष प्रद्युम्नके वश भये शिशुपालकूं छुड़ायके चंद्रिकापुरीकूं आवतोभयो ॥ ३८ ॥ श्रीकृष्णकोसो तेज जामें ऐसो प्रद्युम्नको बल सुनिके फिर कोई राजा प्रद्युम्नते नही लड्यो सब भेट देतेभये ॥ ३९ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटीकायां शिशुपालयुद्धे चेदिदेशविजयो नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ नारदजी कहेहैं-ताके अनन्तर मनुतीर्थमें स्नान करिके प्रद्युम्न यादवनकरिके सहित फेर नगाड़े बजावत कौंकणपुरकूं चलोगयो ॥ १ ॥ कौंकण देशको राजा मेधावी गदायुद्धमें प्रवीण सो मल्लयुद्धते परीक्षाकेलिये इकलोई चलोआयो ॥ २ ॥ सेनाकरिके सहित प्रद्युम्नते वचन बोल्यो कि, हे यादवेश्वर ! मेरे कहेको सुनो तुम गदायुद्ध मोकूं देउ हे प्रभो ! मेरे बलको नाश करो ॥ ३ ॥ तब प्रद्युम्न बोल्यो कि, देखो एकते अधिक एक बलवान् वीर होय है

॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्तोदमघोषोऽपिप्रद्युम्नेनप्रयंत्रितः ॥ शिशुपालंमोचयित्वानीत्वागाच्चंद्रिकांपुरीम् ॥ ३८ ॥ प्रद्युम्नस्यबलंश्रुत्वा साक्षाच्छ्रीकृष्णतेजसः ॥ नकेऽपियुयुधुस्तेनराजानश्चबलिंददुः ॥ ३९ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डे नारदबहुलाश्वसंवादेरंगपिंगवधेशिशुपालयुद्धेचेदिदेशविजयोनामनवमोऽध्यायः ॥९॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ मनुतीर्थेततःस्नात्वाप्रद्युम्नोयदुभिःसह ॥ प्रययौकौंकणान्देशान्दुंदुभीन्नादयन्मुहुः ॥१॥ कौंकणस्थोऽथमेधावीगदायुद्धविशारदः॥ एकाकीमल्लयुद्धेनपरीक्षन्नाययौबलम् ॥२॥ प्रद्युम्नंसबलंप्राहशृणुमेयादवेश्वर ॥ गदायुद्धंदेहिमह्यंमद्बलंनाशयप्रभो ॥ ३ ॥ ॥ प्रद्युम्नउवाच ॥ ॥ एकतोह्येकतोवीराबलवंतोमहीतले ॥ मानंमाकुरुहेमल्लविष्णुमायातिदुर्गमा ॥ ४ ॥ वयंतुबहवोवीरास्त्वमेकाकीसमागतः ॥ अधर्मोऽयंमहामल्लदृश्यतेयाहिसांप्रतम् ॥ ५ ॥ ॥ मल्लउवाच ॥ ॥ यदायुद्धंनकुरुतभवंतोबलशालिनः ॥ मत्पादोधोऽत्रनिर्यांतुतदायास्यामिसांप्रतम् ॥ ६ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ एवंवदतिमल्लेवैसर्वेयादवपुंगवाः ॥ बभूवुःक्रोधसंयुक्ताःपश्यतस्तस्यमैथिल ॥ ७ ॥ गदोगदांसमादायबलदेवानुजोबली ॥ तस्थौसोऽपिगदांनीत्वासर्वेषांपश्यतांनृप ॥ ८ ॥ गदोपरिक्षांचिक्षेपगदायसमहाबलः ॥ गदोपरिगदांनीत्वास्वगदांप्राक्षिपद्गदः ॥ ९ ॥ गदस्यगदयासोऽपिताडितःपतितोभुवि ॥ नृपेच्छांनचकाराशुउद्वमन्रुधिरंमुखात् ॥१०॥ कौंकणस्थोऽथमेधावीनत्वाप्राहहरेःसुतम्॥ परीक्षार्थंचभवतामेतत्कार्यमयाकृतम् ॥११॥

पृथ्वीतलमे तातें हे मल्ल ! तू मान मति करे, विष्णुकी माया अति दुर्गम है ॥ ४ ॥ हम तो बहुतसे वीर है तू इकलोंही आयो है सो हे महामल्ल ! यह अधर्म दीखे है याते चल्योजा हम अब नही लड़ेंहें ॥ ५ ॥ तब मल्ल बोल्यो जो तुम बली हैकें युद्ध नहीं करोहो तो मेरी टांगके नीचे हेके निकरिजाउ तो मै अबहीं चल्योजाऊंगो ॥ ६ ॥ नारदजी कहे है-ऐसे जब मल्ल कहनलाग्यो तब तो सब यादवनकूं क्रोध आयगयो हे मैथिल ! ताके देखते २ ॥ ७ ॥ ता समय बलदेवको भैया बली गद गदा लैकें सबके देखत देखत अगाड़ी आय ठाड़ोभयो ॥ ८ ॥ तब वह मल्ल महाबली गदके ऊपर बड़ी उत्तम गदा फेंकतभयो तब गदनें गदाके ऊपर गदा रोकि अपनी गदा मल्लकें मारी ॥ ९ ॥ तब गदकी गदाको
८१ मार्यो मल्ल पृथ्वीमें जायपड्यो मुखते रुधिर वमन करत फिर युद्धकी चाहना नही करतोभयो ॥ १० ॥ तब कौंकण देशको राजा मेधावी हरिके बेटा प्रद्युम्नकूं नमस्कार करिके

यह बोल्यो तुम्हारी परीक्षाके अर्थ मैंने यह काम कीनों है ॥ ११ ॥ तुम साक्षात् भगवान् कहां और मैं प्राकृत मनुष्य कहां, मेरे अपराधकूं क्षमा करौ मै आपकी शरण आयोहूं ॥ १२ ॥ तब नारदजी बोले–ऐसे कहिके बलि देके प्रद्युम्नकूं नमस्कार करिके क्षत्रीनमें उत्तम मेधावी अपनी पुरीकूं जातभयो ॥ १३ ॥ फिर कुटक देशको अधिपति मौलि जाको नाम सो सिकारकूं निकस्यो हो ताकूं सांब जांबवतीको बेटा पकरिलायो ॥ १४ ॥ तब प्रद्युम्न तापैते बलि लेकें दंडकवनकूं चलेगये अपनी सेनाकूं लिये मुनीनके आश्रमनकूं देखते ॥ १५ ॥ तब प्रद्युम्न निर्विंध्या, पयोष्णी, तापी इनमें स्नान करत २ शूर्पारक क्षेत्रकूं गये फेर द्वैपायनी आर्या देवीकूं गये ॥ १६ ॥ फिर ऋष्यमूक पर्वतकूं देखत प्रवर्षण पर्वतकूं गये जहां पर्जन्य भगवान् नित्यही वर्षा करयो करे हैं ॥ १७ ॥ फिर गोकर्ण नामके शिव क्षेत्रपै गये सेना समेत फिर वा शिवक्षेत्रते त्रिगर्त केरलदेशके जीतिवेकूं चले

त्वमेवभगवान्साक्षात्कुतोहंप्राकृतोजनः ॥ क्षमस्वमेपराधंभोस्त्वामहंशरणंगतः ॥ १२ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्ताथबलिंदत्वा नमस्कृत्यहरेःसुतम् ॥ कौंकणस्थःपुरींप्रागान्मेधावीक्षत्रियोत्तमः ॥ १३ ॥ कुटकाधिपतिंमौलिंमृगयायांविनिर्गतम् ॥ जग्राहसमहा बाहुःसांबोजांबवतीसुतः ॥ १४ ॥ कार्ष्णिस्तस्माद्बलिंनीत्वादंडकाख्यंवनंययौ ॥ मुनीनामाश्रमान्पश्यन्स्वसैन्यपरिवारितः ॥ १५ ॥ निर्विंध्यांचपयोष्णींचतापींस्नात्वाहरेःसुतः ॥ शूर्पारकंमहक्षेत्रमार्यांद्वैपायनींततः ॥ १६ ॥ ऋष्यमूकंततःपश्यन्प्रवर्षणगिरिंगतः ॥ पर्ज न्योभगवान्साक्षान्नित्यदायत्रवर्षति ॥ १७ ॥ गोकर्णाख्यंशिवक्षेत्रंदृष्ट्वाकार्ष्णिःस्वसैन्यकैः ॥ त्रिगर्तान्केरलान्देशान्ययौजेतुंमहाबलः ॥ ॥ १८ ॥ अंबष्ठःकेरलाधीशःश्रुत्वावार्तांतुमन्मुखात् ॥ ददौतस्मैबलिंशीघ्रंप्रद्युम्नायमहात्मने ॥ १९ ॥ कृष्णांवेणींतदोत्तीर्यतैलंगान्विषयान्ययौ ॥ सैन्यपादरजोवृंदैरंधीकुर्वन्नभःस्थलम् ॥ २० ॥ तैलंगस्याधिपोराजाविशालाक्षःप्रकीर्तितः ॥ पुरस्योपवनेरेमेसुंदरीगणसंवृतः ॥ २१ ॥ मृदंगाद्यैश्चवादित्रैर्मधुरध्वनिसंकुलैः ॥ परैरप्सरसांरागैर्गीयमानोयथाराडिव ॥ २२ ॥ तंप्राहसुन्दरीरामाराज्ञीमंदारमालिनी ॥ रजो व्याप्तंनभोवीक्ष्यशुष्यद्बिंबाधरापरा ॥ २३ ॥ ॥ मंदारमालिन्युवाच ॥ ॥ राजन्नजानासिसदाविहारादहर्निशंकामविशाललोलः ॥ अहंन जानामिकदापिदुःखंमुखालकालिभ्रमरास्तवेषा ॥ २४ ॥

गये ॥ १८ ॥ केरलदेशको राजा अंबष्ठ मेरे मुखते बात सुनिके शीघ्रही प्रद्युम्न महात्माकूं भेट देतोभयो ॥ १९ ॥ फेर कृष्णावेणी नदीकूं उतरकें तैलंगदेशकूं चलेगये सेनाके पांवनकी रजके समूहसों आकाशकूं धूंधरो करते ॥ २० ॥ तैलंगदेशको राजा विशालाक्ष अपने बागमें सुन्दरी स्त्रीनके गणनकूं संग लीये विहार करै हो ॥ २१ ॥ मधुर जिनकी ध्वनि ऐसें जे मृदंगादि बाजे इनके शब्द सहित जो परम अप्सरानके राग तिनकरके गाई हैं इन्द्रकीसी कीर्ति जाकी ॥ २२ ॥ ताकी एक मंदारमालिनी रानी ही वो राजाते बोली कि, रजकरके व्याप्त आकाशकूं देखकें सूखगये हैं बिंबसे अधर जाके ॥ २३ ॥ मंदारमालिनी बोली हे राजन् ! मैं सदा विहारके निमित्तसों और नहीं जानोंहो

रातदिन काममेंही अत्यन्त चंचल रहौंहौं आजतक मैं ये नहीं जानूंहूं कि, जाने दुःख कहा होयहे मैं केवल तुम्हारे मुखकी अलकावलीनकी भ्रमरी हूं ॥ २४ ॥ द्वारावतीको राजा उग्रसेन ताके राजसूय यज्ञको बीड़ा उठायकें सब राजानकूं जीतवेके लिये दशौ दिशानके जीतवेकूं शिशुपालादिकनकूं जीतकें प्रद्युम्न आयोहे ॥ २५ ॥ नगाड़ेनकी धुंधुकार शब्द सुनौ हाथीनकी चिक्कार फुंकार सुनौ ये शत्रुनके धनुषकी टंकारको प्रलयकौसो नाद होयहे ॥ २६ ॥ शंबरदैत्यके वैरीकूं जल्दी भेट भिजवाओ देखौ ये राजानकी रानी भयभीत हैकें भागरही हे तिनैं देखौ जिनकें पसीना वहिरहे है और मांगमेंते फूल झरें हैं और वनके प्रवेशते नहीं दीखे है केशनके शृंगार जिनके ये भाजी डोलें हैं ॥ २७ ॥ पत्नीको वचन सुनकें विशालाक्ष राजा अति हर्षित हैकें वलि (भेट) लेकें प्रद्युम्नके सन्मुख आयौ ॥ २८ ॥ धनुर्धारीनमें श्रेष्ठ प्रद्युम्नको वानें भलीतरह सत्कार कीनो फिर प्रद्युम्न पंपा सरोवरमें स्नान करके महाराष्ट्र देशकूं जातोभयो ॥ २९ ॥ तब महाराष्ट्रको विमलराजा वैष्णव हो वानें परम भक्तिते प्रद्युम्नको पूजन करयोहे ॥ ३० ॥ तैसेंही कर्णाटकके पति

द्वारावतीशाध्वरनागवल्लीचर्यंसमुत्थाप्यदिशोजयार्थम् ॥ विजित्यसर्वान्नृपचेदिपान्ससमागतोऽसौयदुराजराजः ॥ २५ ॥ धुंकारशब्दंशृणु दुंदुभीनांचीत्कारफूत्कारयुतंद्विपानाम् ॥ कोदंडटंकारमयंपराणांकल्पांतसारस्वतनादकारम् ॥ २६ ॥ त्वरंवलिंप्रेषयशंवरारयेप्रधावतीःप श्यनरेंद्रसुन्दरीः ॥ च्युतप्रसूनाःश्रमवारिवर्षिणीर्वनप्रवेशास्फुटकेशमंडनाः ॥ २७ ॥ पत्नीवाक्यंततःश्रुत्वाविशालाक्षोऽतिहर्षितः ॥ प्रद्युम्न संमुखेसोपिबलिंनीत्वासमाययौ ॥ २८ ॥ तेनसंपूजितःसाक्षात्प्रद्युम्नोधन्विनांवरः ॥ स्नात्वापंपासरस्तीर्थंमहाराष्ट्रंततोययौ ॥ २९ ॥ महा राष्ट्राधिपोराजाविमलोनामवैष्णवः ॥ भक्त्यापरमयाकार्ष्णिपूजयामाससर्वतः ॥३०॥ तथाहिकर्णाटपतिःसहस्रजित्स्वतःसमानीयबलिंमहात्म ने॥ सम्पूजयामासशुभार्थहेतवेश्रीशंबरारिंजगतःप्रभुंपरम् ॥३१॥ प्रद्युम्नोभगवान्साक्षाद्यादवैःसहमैथिल॥ कामरूपान्विषयान्प्रागाज्जेतुंयोगीवदे हजान् ॥ ३२ ॥महारंगपुरेतत्रवृद्धशर्मामहामतिः ॥ भर्ताथश्रुतदेवायावसुदेवस्वसुर्नृप ॥ ३३ ॥ तस्यपुत्रोदंतवक्रःकृष्णशत्रुःप्रकीर्तितः ॥ शि शुपालइवक्रुद्धोयोद्धुंचक्रेमनःस्वयम् ॥ ३४ ॥ मात्रापित्रावारितोपिदैत्योदैत्यानुव्रतः ॥ यादवान्घातयिष्यामिकोपमित्थंचकारह ॥३५॥ आदायसगदांगुर्वींलक्षभारविनिर्मिताम् ॥ एकाकीप्रययौयोद्धुंप्रद्युम्नबलसंमुखे ॥ ३६ ॥ दंतवक्रंकृष्णवर्णकज्जलाद्रिसमप्रभम् ॥ ललज्जिह्वं घोररूपंतालवृक्षदशोच्छ्रितम् ॥ ३७ ॥ किरीटकुण्डलधरंहेमवर्मविभूषितम् ॥ किंकिणीजालसंयुक्तंचलच्चरणनूपुरम् ॥ ३८ ॥

सहस्रजित् राजानें आपहीते प्रद्युम्नकूं बुलायकें भेट दैकें अपने शुभके अर्थ जगत्के प्रभु प्रद्युम्नको बड़ो पूजन कीनो ॥ ३१ ॥ तब प्रद्युम्नभगवान् साक्षात् हे मैथिल ! याद वनके संग कामरूदेशनकूं जीतवेकूं चले गये हैं योगी जैसें देहज विकारनकूं ॥ ३२ ॥ तहां महारंगपुरमें वृद्धशर्मा राजा महामति वसुदेवकी बहन श्रुतिदेवाको पति हो ॥ ३३ ॥ ताको बेटा दन्तवक्र कृष्णको बैरी हो सो शिशुपालकी नाई क्रोध करिकें युद्धकूं मन करतोभयो ॥ ३४ ॥ दन्तवक्र दैत्य दैत्यनको अनुव्रत मातापितानें निवारणहू कीनो परन्तु यह बोल्यौ, मैं यादवनकूं मारडारूंगो यह कौन है कहा करैगो ऐसें कोप करतोभयो ॥ ३५ ॥ सो दन्तवक्र बड़ी भारी लाख भारकी गदाकूं लेकें अकेलोही प्रद्युम्नकी सेनाके सन्मुख आयौ ॥ ३६ ॥ कैसो दन्तवक्र है कारो जाको वर्ण कारो पहाड़ जैसो, जीभ लफलफायरही घोररूप दश तालकी बराबर ऊंचो ॥ ३७ ॥ किरीट कुण्डल पहरें, सुनहरी कवच पहरें,

कौंधनी, पहरें बजने नूपुर पहरें ॥ ३८ ॥ अपने वेगतें पृथ्वीकूं कँपावत पर्वतनकूं और वृक्षनकूं गेरत अपनी गदातें मारत चल्यौ आवे है जैसे दुर्जननकूं यमराज मारतो आवे तैसें ॥३९॥ ताकूं रणके आँगनमें देखकें यादव सब भयकूं प्राप्त हैगये ता समय दन्तवक्रके आयेपे बडो कोलाहल मच्यो॥४०॥ तब प्रद्युम्नने वाके ऊपर बहुत सेना भेजदई धनुषकूं टंकारत अठारह अक्षौहिणी सेना पेली ॥ ४१ ॥ हे राजन् ! बाणनतें, फरसानतें, शतघ्नीनतें (तोपनतें) बन्दूकनतें, यादव वाकों मारनलगे, सब वगलतें जैसे पर्वतपें घन वर्षें है ॥ ४२ ॥ तब दन्तवक्रनें अपनी गदातें उत्कट जे हाथी हे तिनके कुम्भस्थल फारिफारिके संग्राममें पटकदिये ॥ ४३ ॥ कितनेनकूं किंकिणीजाल जिनके बजिरहे, साँकर लटकरही बड़े २ घंटा बजिरहे तिन्हें अम्बारी समेत पाँवनतें उचकाय २ कें ॥ ४४ ॥ आकाशमें चारचार कोश ऊंचौ फेंकदेतोभयौ काहूकाहूकी सूंड़ पकरिकें जैसें पवन रुईके गालेनकूं ॥४५॥

कंपयंतंभुवंवेगात्पातयंतंगिरीन्द्रुमान् ॥ घातयंतंस्वगदयाकृतांतमिवदुर्जनान्॥३९॥ तंदृष्ट्वायादवाःसर्वेभयंप्रापुर्मृधांगणे ॥ आगतेदंतवक्रेचम हान्कोलाहलोह्यभूत् ॥४०॥ प्रद्युम्नःप्रेषयामासतस्योपरिमहद्बलम् ॥ अष्टादशाक्षौहिणीनांधनुष्टंकारयन्मुहुः ॥४१॥ बाणैःपरश्वधैराजञ्छत घ्नीभिर्भुशुंडिभिः ॥ ततेडुर्यादवाःसर्वेसर्वतोद्रिंयथागजाः ॥ ४२ ॥ दंतवक्रःस्वगदयाकरीद्रानुत्कटान्बहून् ॥ पातयामासराजेंद्रभिन्नकुम्भस्थ लान्मृधे ॥ ४३ ॥ कांश्चित्पादेषुचोत्नीयकिंकिणीजालनादितान् ॥ सशृंखलान्सनीडांस्तोँश्चोलघंटारणत्स्वरान् ॥ ४४ ॥ वातस्तूलमिवा काशेचिक्षेपशतयोजनम् ॥ शुंडादण्डेषुकांश्चिद्गृहीत्वादैत्यपुंगवः ॥ ४५ ॥ भ्रामयित्वागजान्दिक्षुनदन्तःप्राक्षिपद्रुषा ॥ कांश्चिद्गजान्वेशयो श्चकक्षयोरुभयोरपि ॥ ४६ ॥ पद्भ्यामाक्रम्यशुशुभेदैत्यःकालाग्निरुद्रवत् ॥ रथान्ससूतान्साश्वांश्चसध्वजान्समहारथान् ॥ चिक्षेपगगनेवी रःपद्मानीवप्रभंजनः ॥ ४७ ॥ तुरगांश्चपदातींश्चप्राक्षिपद्गगनेबलात् ॥ अधोमुखाऊर्ध्वमुखाराजपुत्रामहाबलाः ॥ ४८ ॥ सशस्त्रारत्नकेयूरसं युक्तास्तारकाइव ॥ आकाशात्प्रपतंतस्तेवमंतोरुधिरंमुखात् ॥ ४९ ॥ बलंविलोडयामासगदयादैत्यपुंगवः ॥ दंष्ट्रयाप्रलयाब्धिश्रीवराहइवमै थिल ॥ ५० ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादे कौंकणकुटकत्रिगर्तकेरलतैलंगमहाराष्ट्रकर्णाटविजयकारूषदेशगम नंनामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ तदाश्रीकृष्णपुत्राणामष्टादशमहारथाः ॥ सक्षतंकारयामासुर्दंतवक्रंमहाबलम् ॥ १ ॥

तैसें फिराय २ दशो दिशनमे हाथीनकूं फेंकनलग्यौ काहूनकूं पीठके बांसनमें काहूकूं कूंखनमें पकरिपकरिकें फेंकनलग्यौ ॥ ४६ ॥ पाँवनतें दाबकें दैत्य कालकी अग्निसों रुद्रसो शोभित होतभयो, घोड़ा, सारथी, सवार समेत रथनकूं आकाशमें फेंकनलग्यो जैसें कमलनकों पवन फेंकदे और ऐसेही घोंड़ेनकों पदातीनकों बलात्कारसों आकाशमें फेंके हे तब नीचेकों तथा ऊंचेकों मुख जिनके ऐसें बडे बलवान राजकुमार शस्त्रसहित रत्ननके केयूर पहरें रुधिरकी उलटी करते आकाशतें तारागण जैसें गिरें ऐसेंही गिरते दीखें हैं ॥४७॥ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ दैत्यनमें पुंगव सेनाकूं मथेई डारे है जैसें वाराहनें डाढतें प्रलयके समुद्रकूं बिलोयो हो हे मैथिल ! तैसेंई बिलोयो ॥ ५० ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजि त्खण्डे भाषाटीकायां कौंकणकुटकत्रिगर्तकेरलतैलंगमहाराष्ट्रकर्णाटककारूषदेशविजयो नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ श्रीनारदजी कहें है—तब श्रीकृष्णके जे अठारह बेटा महारथी हे वे

महारथी दन्तवक्रकूं घायल करतेभये ॥ १ ॥ तब दन्तवक्रके घावनके रुधिरकी धारकी बड़ी शोभा होतीभई लाखकी धारते महलकी जैसे, वा प्रहारकूं नेकहू चिंतमन न कीनों ॥ २ ॥ तब कृतवर्मा बाणनके समूहते दन्तवक्रकों संग्राममें मारतोभयो युयुधानने खड्गते और अक्रूरनें बरछीते प्रहार कियो ॥ ३ ॥ सारणनें कुठारते, हलते रोहिणीसुतनें प्रहार कियो तब दन्तवक्र गदाते युयुधानकूं मारतोभयो ॥ ४ ॥ हाथते कृतवर्माकूं लातते अक्रूरकूं भुजवेगते सारणकूं रणमें बड़ो दुर्मद दन्तवक्र मारतोभयो ॥ ५ ॥ अक्रूर, कृतवर्मा, युयुधान, सारण ये सब मूर्च्छित हैके ऐसे जायपरे, पवनके मारे पेड़ जैसे ॥ ६ ॥ तब तो गदा लैके सांब जांबवतीको बेटा गदाके ऊपर गदा लैकें गदाते दन्तवक्रको मारतो भयो ॥ ७ ॥ तब दन्तवक्र गदाकूं छोड़िके सांबकूं पकरिके भुजानते भूमिमें पटकदेतो भयो ॥ ८ ॥ तब सांबहू उठिके पांव पकरिके दन्तवक्रकूँ पृथ्वीमें पछारतभयो तब ये बड़ो अचंभोसो भयो ॥ ९ ॥ फिर दन्तवक्र उठिके बड़ो गरज्यो, बड़ो अट्टहास कीनों ताके अट्टहासते सातो लोक, सातो पातालन समेत ब्रह्मांड हालउठ्यो ॥ १० ॥

दंतवक्रोतिशुशुभेसक्षतोरक्तधारया ॥ लाक्षयेवयथासौधंप्रहारंनानुचिंतयन् ॥ २ ॥ कृतवर्माचबाणौघैस्तंजघानरणांगणे ॥ युयुधानश्चखड्गेनश
क्त्याक्रूरोमहाबलम् ॥३॥ सारणस्तंकुठारेणाहनत्तंरोहिणीसुतः ॥ दन्तवक्रोपिगदयायुयुधानंतताडह ॥४॥ करेणकृतवर्माणमक्रूरंस्वांघ्रिणाऽह
नत् ॥ सारणंभुजवेगेनकाष्णोरणदुर्मदः ॥५॥ अक्रूरःकृतवर्माचयुयुधानोऽथसारणः ॥ निपेतुर्मूर्च्छिताभूमौमरुतापादपाइव ॥६॥ ततोगदांसमाद
यसांबोजांबवतीसुतः ॥ गदोपरिगदांनीत्वागदयातंतताडह ॥७॥ दंतवक्रोगदांत्यक्त्वासांबंजांबवतीसुतम् ॥ गृहीत्वापातयामासभुजाभ्यांरणमण्डले
॥८॥ सांबस्तदासमुत्थायगृहीत्वापादयोश्चतम् ॥ अपोथयद्भूमिपृष्ठेतदद्भुतमिवाभवत् ॥९॥ दंतवक्रःसमुत्थायसाट्टहासंतदाकरोत् ॥ ननादतेन
ब्रह्मांडंसप्तलोकैर्बिलैःसह ॥१०॥ पताकाढ्येनदिव्येनसहस्रादित्यवर्चसा ॥ सहस्रहययुक्तेनप्रद्युम्नंधन्विनांवरम् ॥ दन्तवक्रोपितंवीक्ष्यप्राहेदंपरुषंव
चः ॥११॥ ॥ दंतवक्रउवाच ॥ ॥ यूयंचयादवाःसर्वेवृष्णयोऽन्धकादयः ॥ अल्पसत्त्वजनास्तुच्छाविद्रुतायुद्धभीरवः ॥१२॥ ययातिशापसंभ्रष्टा
भ्रष्टराज्यागतत्रपाः ॥ एकोऽहंवहवोयूयंयुष्माभिश्चकृतंमृधम् ॥१३॥ अधर्मवर्तिभिस्तुच्छैर्धर्मशास्त्रविलोपिभिः ॥ पूर्वंपितातेश्रीकृष्णोनन्दस्य
पशुरक्षकः ॥ १४ ॥ गोपालोच्छिष्टभोजीचसोऽभवद्यादवेश्वरः ॥ हैय्यंगवीनदध्याज्यदुग्धतक्रादिकंरसम् ॥१५॥ चोरयामासगोपीनांरसिकोरा
समण्डले ॥ जरासंधभयात्सोपिसमुद्रंशरणंगतः ॥१६॥ सोऽद्यैवयदुनाथोऽभूद्योभीरुःकालसंमुखे ॥ तेनदत्तंस्वलपराज्यमुग्रसेनःसमेत्यसः ॥१७॥

तब दिव्य जामें पताका, हजार सूर्यकोसो तेज, हजार घोडा जामें लगे ता रथमें बैठ्यो जो प्रद्युम्न आयो ताहि देखिके दन्तवक्र वाते अति कठोर वचन बोल्यो ॥ ११ ॥ दंतवक्र कहा कहनलग्यो? अरे ! तुम सबरे यादव, वृष्णि, अंधक, बड़े तुच्छ, बडे निर्बली, बडे डरपोसे, बडे भजोरा हौ ॥ १२ ॥ ययातिके शापते भ्रष्ट हैगयेहौ, भ्रष्टराज्य हौ बेशरम हौ अरे ! मैं एक हौ तुम बहुत हौ मुझे सब मारे हौ ॥ १३ ॥ अधर्मवर्ती हौ तुच्छ हौ धर्मशास्त्र जिन तुमने लोपं करिदीनों है पहले तेरो पिताक देख्योहो जो नंद गोपकी गैयानको रखवारो हो ॥ १४ ॥ ग्वारियानको जूठन खातो हो, दही, दूध, माखन चुरावत चुरावत यादवनको राजा बनबैठ्योहै ॥ १५ ॥ पहले चोरी करी फिर रास मंडलमें गोपीनको रसिक बन्यो, जरासंधके डरको मार्यो समुद्रको शरणमें जायपर्यो ॥ १६ ॥ सो अब यदुराज हैगयो अरे ! कछु तो कालयवनके मारे भाज्यो दबकलही

डोलो हो तानें नेकसो राज्य देदीनों तापै उग्रसेन कूदि बैठयो ॥ १७ ॥ अब वे राजसूय यज्ञ करनलगे कालकी गति बडी दुरत्यय है यह जगत् बडे तमासेको है देखो अति दुर्बल शृगाल सिंहशार्दूलते लडवेको तैयार है ॥ १८ ॥ तब प्रद्युम्न बोल्यो कि, पहले कुंडिनपुरमें यादवनको ऊर्जित बल तैंने नहीं देख्यो, अरे निंदक बेशरम ! हे अब मेरो बल देखिले ॥ १९ ॥ अरे करूषप ! हम तुमें संबंधी जानिके नातेके मारे युद्धकी इच्छा नही करें हैं परे बलते जो युद्ध तैंने कीनो है सोये धर्मशास्त्रही तो कीनोंहे ॥ २० ॥ नंदराम साक्षात् द्रोणनाम वसु है जिनने गोपकुलमें जन्म लियो गोकुलमे जे गोप हैं वे सब भगवान्के रोमते भयेहैं वे गोलोकवासी हैं ॥ २१ ॥ और राधाके रोमते सब गोपी भई है ते सब यहाँ आई हैं, कोई कोई पूर्वतप करिके श्रीकृष्णके वर करिके कृष्णको प्राप्त भई है ॥ २२ ॥ परिपूर्णतम साक्षात् श्रीकृष्ण भगवान हैं, अखिल ब्रह्मांडपति माया

करिष्यत्यल्पसारार्थेराजसूयंक्रतूत्तमम् ॥ दुरत्ययाकालगतिर्जातंचित्रमहोजगत् ॥ अध्यास्तेसिंहशार्दूलंशृगालोह्यतिदुर्बलः ॥ १८ ॥ ॥ श्रीप्रद्युम्नउवाच ॥ ॥ पुरावैकुंडिनपुरेयदूनांबलमूर्जितम् ॥ त्वयाहष्टंनकिंत्वत्रपश्याद्यैवविनिंदक ॥ १९ ॥ युष्मान्संबंधिनो ज्ञात्वानेच्छेयुद्धंकरूषप ॥ बलात्त्वंयुद्धमाकार्षीर्धर्मशास्त्रंत्वयाकृतम् ॥ २० ॥ नन्दोद्रोणोवसुःसाक्षाज्जातोगोपकुलेपिसः ॥ गोपालायेच गोलोकेकृष्णरोमसमुद्भवाः ॥ २१ ॥ राधारोमोद्भवागोप्यस्ताश्चसर्वाइहागताः ॥ काश्चित्पुण्यैःकृतैःपूर्वैःप्राप्ताःकृष्णंवरैःपरैः ॥ २२ ॥ परिपूर्णतमःसाक्षाच्छ्रीकृष्णोभगवान्स्वयम् ॥ असंख्यब्रह्मांडपतिर्गोलोकेशःपरात्परः ॥ २३ ॥ यस्मिन्सर्वाणितेजांसिविलीयंतेस्वतेजसि ॥ तंवदंतिपरेसाक्षात्परिपूर्णतमःस्वयम् ॥ २४ ॥ उग्रसेनोऽथराजेंद्रोमरुत्तोनामयःपुरा ॥ श्रीकृष्णस्यवरेणासौयादवेंद्रोबभूवह ॥ २५ ॥ निरंकुशो महामूर्खोविनिंदसिमहद्गुणम् ॥ सनःप्रार्थयतेकिंचिद्यथासिंहःशिवारुतम् ॥ २६ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ एवंवचस्तदाश्रुत्वादंतवक्रोमदोत्कटः ॥ गदांगुर्वींसमादायप्राद्रवत्तद्रथोपरि ॥ २७ ॥ गदयापातयामाससहस्रंघोटकान्नदन् ॥ घोटकादुद्रुवुःसर्वेदृष्ट्वारूपंभयंकरम् ॥ ॥ २८ ॥ प्रद्युम्नोपिगदांनीत्वातंताडहढंहृदि ॥ तत्प्रहारेणदैत्येंद्रःकिंचिद्व्याकुलमानसः ॥ २९ ॥ तयोश्चगदयायुद्धंघोररूपंबभूवह ॥ गदाभ्यांप्रहरंतौद्वौमर्दयंतौपरस्परम् ॥ नदंतौसंगरेराजन्गिरौकेसरिणौयथा ॥ ३० ॥

ते परे हैं ॥ २३ ॥ जाके तेजमें सबरे तेज लीन होयहै ताकूं ब्रह्मादिक साक्षात् परिपूर्णतम कहें हैं ॥ २४ ॥ उग्रसेन राजानको इंद्र है जो आगे मरुत्त राजा भयो हो सो श्रीकृष्णके वरते यादवेंद्र भयो है ॥ २५ ॥ तू निरंकुश महामूर्ख है महद्गुणनकी निंदा करैहै सो हम तेरी बातकूं ख्याल नही करैहैं जैसे सिंह स्यारियाके रोयवेकूं ॥ २६ ॥ नारदजी कहैहैं-ऐसे प्रद्युम्नको वचन सुनिके दंतवक्र लाख मनकी गदा लैके प्रद्युम्नके रथके ऊपर धायो ॥ २७ ॥ गदाके मारे हजार घोडा पटकिदियो फिर गरज्यो भयंकर रूपकूं देखि घोडा भाजिगये ॥ २८ ॥ प्रद्युम्ननेहू गदा लैके बडी कठोर हृदयमें मारी ता प्रहारते कछू व्याकुल हैगयो ॥ २९ ॥ फिर दोनोंनकी घोररूप गदा

युद्ध भयो गदानते दोनों महार परस्पर करनलगे नारद कहनलगे जैसे पर्वतपै दो केहरी लडै हैं ॥ ३० ॥ दंतवक्र भुजानते प्रद्युम्नकूं पकरिके पृथ्वीमें पटाके देतभयो सिंह जैसे सिंहकूं बडे जोरते पटके ॥ ३१ ॥ प्रद्युम्ननेहू उठिके बडे बलते दंतवक्रकूं पकरिके भ्रमायके पृथ्वीमें देमारचौ ॥ ३२ ॥ प्रद्युम्नके प्रहारके मारे मुखते रुधिर वमन करत मूर्च्छितहै हाडनको चूर चूर हैके जायपरचौ विह्वल है गयो आंखें नेंटरहई ॥ ३३ ॥ ताई समय कारूष देशको पति धरतीमें जायपरौ जैसें इंद्रकौ मारचौ पर्वत गिरै है ताके गिरवेसों, वसुधा समुद्रसमेत चलायमान हैगई ॥ ३४ ॥ दिग्गज चलायमान हैगये तारागण चलायमान हैगये समुद्र काँपगये परेके शब्द करिके त्रिलोकी बहरी हेगई ॥ ३५ ॥ ताही समय कारूष देशको अधिपति महात्मा वृद्धशर्मा श्रुतदेवा रानीकूं संग लैके महारंगपुरते यादवनके संग्राममें आवतभयौ सुन्दर मिलापकौ करनहारो है ॥ ३६ ॥ हे मैथिल ! शंबरके

दंतवक्रोभुजाभ्यांतंगृहीत्वाश्रीहरेःसुतम् ॥ भूमौनिपातयामाससिंहःसिंहमिवौजसा ॥ ३१ ॥ प्रद्युम्नोपिसमुत्थायगृहीत्वाभुजयोर्बलात् ॥ भ्रा
मयित्वाभुजाभ्यांतंपातयामासभूतले ॥ ३२ ॥ प्रद्युम्नस्यप्रहारेणसोपतद्रुधिरंवमन् ॥ चूर्णितास्थिःखिन्नगात्रोमूर्च्छितोविह्वलाकृतिः ॥ ३३ ॥
गिरीन्द्रइवभूपृष्ठेरेजेशक्रायुधाहतः ॥ तत्प्रहारेणवसुधाचचालसजलाभवत् ॥ ३४ ॥ विचेलुर्दिग्गजास्ताराःसमुद्राश्चचकंपिरे ॥ पातशब्देनरा
जेंद्रत्रिलोकीबधिरीकृता ॥ ३५ ॥ तदैवकारूषपतिर्महात्माश्रीवृद्धशर्मासुतदेवयाच ॥ राज्ञामहारंगपुराद्यदूनांसमाययौसुन्दरसंधिकारी ॥
॥ ३६ ॥ दत्त्वाबलिंमैथिलशंबरारयेसुतंगृहीत्वाकृतसंधिरग्रतः ॥ तथायदूनांप्रवरैःप्रपूजितःपुनर्महारंगपुरंसमाययौ ॥ ३७ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसं
हितायांविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेदंतवक्रयुद्धेकरूपदेशविजयोनामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ अर्णवंद
क्षिणंस्नात्वाप्रद्युम्नोयादवाधिपः ॥ उशीनरांस्ततोजेतुमाजगामबलैःसह ॥ १ ॥ कोटिशःकोटिशोगावोयत्रदेशेचरंतिहि ॥ गोपालमण्डलैर्मुक्ता
व्रजंत्योभव्यमूर्तयः ॥२॥ औशीनराःक्षीरपानागौरवर्णमनोहराः ॥ हैयंगवीनमादायतेप्रद्युम्नःकार्ष्णिसम्मुखे ॥३॥ तैःपूजितःशंबरारिर्ददौतेभ्यो
महाधनम्॥ गजान्रथान्हयान्रत्नवस्त्रभूषादिहर्षितः॥४॥ चम्पावतीनामपुरीमणिरत्नसमन्विता ॥ विराजतेयत्रनृपैःसर्पभोगवतीयथा ॥५॥

वैरीकूं बलि देकें आगेते मिलाप करिके बेटाकूं लैकें यादवनने कीनो है बडौ सत्कार जाकौ सो रंगपुरकूं चल्यौआयौ ॥ ३७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खण्डे भाषाटीकायां दन्तवक्रयुद्धे कारूषविजयो नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ नारदजी कहै है कि, यादवनको अधिप प्रद्युम्न दक्षिणके समुद्रमें स्नान करिके उशीनर देशनकूं जीतवेकूं सेनासहित आतोभयो ॥ १ ॥ किरोड किरोड़ गौ जा देशमें चरैं है गोपनके मंडलन करिके मुक्त विचरैं है भव्य जिनकी मूर्ति हैं ॥ २ ॥ उशीनरके नर दूधही पीवैंहैं गौर वर्ण है मनोहर है वे माखन लैकें प्रद्युम्नके सन्मुख आये ॥ ३ ॥ तिनने प्रद्युम्नको पूजन करचो प्रद्युम्नने तिनकूं बडौ धन दियौ हाथी, घोड़ा, रथ, रत्न, भूषण प्रसन्न हैके दीने ॥ ४ ॥ जहां मणि रत्न करिकें शोभित चम्पावती पुरी है जामें हेमांगद नामको राजा राजानसहित विराजै है सर्प जैसे भोगवती पुरीमें ॥ ५ ॥

चम्पावतीको राजा हेमांगद बलि भेट लैके आयो ताने प्रद्युम्नकूं दंडोत करी ॥ ६ ॥ तापै प्रसन्न ह्वैके प्रद्युम्नने किंजल्किनी माला दीनी सहस्र दलनकी शोभाको कमल दीनों ॥ ७ ॥ याके अनन्तर ,महाबाहु कृष्णको बेटा समर्थ अपनी सेना समेत धनुषधारी नगाडे बजावत विदर्भ देशकूं जातभयो ॥ ८ ॥ कुंडिन पुरको राजा भीष्मक आयो जो रुक्मिणीको बेटा प्रद्युम्न ताकूं सुनिके अपने घर बुलायके सेना सहित बहुतसे धन करिकें पूजन करतोभयो ॥ ९ ॥ तब बली रुक्मिणीको नन्दन नानाकूँ नमस्कार करिके यादवेश्वर कुंत देश और दरद देशनकूं जातभयो ॥ १० ॥ मलयाचलके चंदनकी पवन करिके सेवित चंदन, केतकीके पुष्प गंधते लिपिरह्यो जो मलयाचल ॥ ११ ॥ तापे अगस्त्यजीकूँ देखतोभयो जो मुनिनमें शार्दूल समुद्रकूं पीगये हैं तिनकूं नमस्कार करि हाथ जोड आश्रममें ठाडोभयो तब अगस्त्यजीने आशीर्वादते प्रसन्न कीनो ॥ १२ ॥

चम्पावतीपतिर्वीरोनाम्नाहेमांगदोनृपः ॥ नीत्वाबलिंसमेत्याशुश्रीकार्ष्णिंप्रणनामह ॥ ६ ॥ तस्मैतुष्टःशंबरारिर्मालांकिंजल्किनींददौ ॥
सहस्रदलशोभाढ्यंपद्मंदिव्यंददौपुनः ॥ ७ ॥ अथकार्ष्णिर्महाबाहुःस्वसैन्यपरिवारितः ॥ विदर्भान्प्रययौधन्वीदुंदुभीन्नादयन्मुहुः ॥ ८ ॥
भीष्मकःकुण्डिनपतिरागतंरुक्मिणीसुतम् ॥ आनीयपूजयामाससससैन्यंबहुभिर्धनैः ॥ ९ ॥ मातामहंततोनत्वारुक्मिणीनन्दनोबली ॥ कुंत
देशांश्चदरदान्प्रययौयादवेश्वरः ॥१०॥ मलयाचलपाटीरवायुभिःपरिसेवितः ॥ श्रीखण्डकेतकीपुष्पगंधाक्तेमलयाचले ॥ ११ ॥ अगस्त्यंमु
निशार्दूलंपीताब्धिंसदर्शह ॥ कृतांजलिपुटःकार्ष्णिर्नमस्कृत्यमहामुनिम् ॥ स्थितोभूदुटजेसाक्षादाशीर्भिरभिनंदितः ॥१२॥ ॥ श्रीप्रद्युम्नउ
वाच ॥ ॥ दृश्यंपदार्थंतुजगत्सत्यवद्वर्ततेकथम् ॥ मुक्तोब्रह्मांशकोभूत्वाबद्ध्यतेयंकथंगुणैः ॥१३॥ एतत्प्रश्नंममब्रूहिनितरांमुनिसत्तम ॥ त्वंसर्व
विद्दिव्यचक्षुःसर्वब्रह्मविदांवरः ॥१४॥ ॥ अगस्त्यउवाच ॥ ॥ त्वंसाक्षात्कृष्णचन्द्रस्यपरिपूर्णतमस्यच ॥ पुत्रोसिपृच्छसेमांवालीलामात्रमिदं
वचः ॥ १५ ॥ लोकसंग्रहमेवार्थंकुर्वन्देवोहरिर्यथा ॥ तथानृणांचकल्याणंकुर्वन्विचरसिप्रभो ॥ १६ ॥ यथासत्यस्यसूर्यस्यबिंबंवारिषुसत्य
वत् ॥ दृश्यतेसत्यवद्दृश्यंप्रधानपुरुषयोस्तथा ॥ १७ ॥ काचेमुखंगुणेसर्पःसैकतेजीवनंयथा ॥ तथायंसन्देहगुणैर्बध्यतेप्रेक्षतात्स्वयम् ॥ १८ ॥

प्रद्युम्न तब बोल्यो कि, यह जो जगत् है सो दृश्य पदार्थ है सो सांचोसो कैसे वर्ते है ? और यह जो जीव है सो ब्रह्मको अंश है और मुक्त है सो कैसे गुणन करिके बंधे है ? ॥ १३ ॥ हे मुनिसत्तम ! या मेरे प्रश्नकूं अतिशय करिके कहो तुम सर्वज्ञ हौ दिव्यचक्षु हौ और सब ब्रह्मवेत्तानमें श्रेष्ठ हौ ॥ १४ ॥ तब अगस्त्यजी बोले-तुम साक्षात परिपूर्णतम कृष्णचंद्रके पुत्र हो सो तुम मोते पूछौहो यह लीलामात्र तुम्हारो वचन है ॥ १५ ॥ लोकसंग्रहके अर्थ तुम करोहो हे प्रभो ! जैसे हरि तैसेही मनुष्यनके कल्याणके अर्थ तुम विचरौहो ॥ १६ ॥ जैसे सांचे सूर्यको प्रतिबिंब जलमें सांचोसो दीखैहै तैसेही प्रधान पुरुषको दृश्य यह जगत् सांचोसो दीखैहै ॥ १७ ॥ जैसे दर्पणमें मुख सांचोसो दीखैहै रस्सीमें जैसे सर्प सांचोसो दीखैहै जैसे रेतीमें सूर्यकी चमकते जल सांचोसो दीखैहै तैसेई झूंठो जगत् सांचोसो दीखैहै तैसेई देहमें अहंबुद्धिते देहके गुणन

करिके बंधे है ॥ १८ ॥ प्रद्युम्न पूछै है कि, यह देहधारी जीव कैसे न बंधे सो उपाय कहो ? हे ब्रह्मविदांवर ! कि, दृढ वैराग्यते नही बंधेहैं सो कहो ॥ १९ ॥ अगस्त्यजी बोले–जो विवेकको आश्रय करिके सनातन ब्रह्मकूं भजैहै जगत्कूं मनोमय जानलिये हैं सो परमपदकूं प्राप्त होयहै ॥ २० ॥ जन्म, मृत्यु, जरा, बाल, युवा, शोक, मोह, अहंता, ममता, मद, रोग, भय, सुख, दुःख, भूख, प्यास, रति, आधि ये आत्माकूं नही होयहैं ॥ २१ ॥ हे राजन् ! आत्मा निरीह है, चेष्टा नही करैहै, शरीर जाके नही, है, सर्वत्र है, अहंकार नही है, शुद्ध है, गुणनको आश्रय है, साक्षात् मायाते परे है, निष्कल है, आत्मदृष्टा है, ताको कभीभी आधि भय नही होयहै ॥ २२ ॥ ज्ञानरूप है, सदाई पूर्ण है, मुनीश्वरन करिके जान्योजाय है, ता ब्रह्म परमात्माकूं ऐसो जानिके सुखपूर्वक विचरे ॥ २३ ॥ जब यह जगत् सोवैहै तब जो पुरुष जागैहै और देखैहै पर देखतो जो पुरुष है ताहि यह जगत् नही देखैहै और न जानैहै ॥ २४ ॥ जैसे आकाश तो कोठेमें नही बंधैहै अग्नि काठमे नही बंधेहै और पवन रेणुसों नही बंधेहै और जैसे

॥ ॥ प्रद्युम्नउवाच ॥ ॥ कथंनबद्ध्यतेदेहीयेनोपायेनतद्वद ॥ वैराग्येणदृढेनापिब्रूहिब्रह्मविदांवर ॥ १९ ॥ ॥ अगस्त्यउवाच ॥ ॥ विवेकंयःसमाश्रित्यभजेद्ब्रह्मसनातनम् ॥ मनोमयंजगन्मत्वासव्रजेत्परमंपदम् ॥ २० ॥ जन्ममृत्यूशोकमोहौजराबालयुवादयः ॥ अहंमदो व्याधिभयंसुखंशोकःक्षुधारतिः ॥ २१ ॥ आधिर्भयंतस्यराजन्नभवतिकदाचन ॥ आत्मानिरीहोह्यतनुःसर्वतश्चानहंकृतिः ॥ शुद्धोगुणाश्रयःसा क्षात्परोनिष्कलआत्मदृक् ॥ २२ ॥ ज्ञानात्मकःसदापूर्णोविदितोयोमुनीश्वरैः ॥ तंब्रह्मपरमात्मानंज्ञात्वायंविचरेत्सुखी ॥ २३ ॥ अस्मिन्स्व यानेजागर्तिसर्वंपश्यतियःपुमान् ॥ नायंतंवेत्तिपश्यंतंनपश्यंतिकदाचन ॥ २४ ॥ नभोग्निपवनाःकोष्ठकाष्ठप्रोद्भूतरेणुभिः ॥ नसज्जंतेगुणैर्ब्रह्म वर्णैश्चस्फटिकोयथा ॥ २५ ॥ लक्षणाभिर्ध्वनिव्यंग्यैर्ज्ञायतेनकदाचन ॥ कुतस्तुलौकिकैर्वाक्यैस्तस्मैश्रीब्रह्मणेनमः ॥ २६ ॥ केचित्कर्मवदं त्येनंकेचित्कालंतथापरे ॥ कर्तारंयोगमपरेसांख्यंब्रह्मवदंतिके ॥ २७ ॥ केचित्तंपरमात्मानंवासुदेवंवदंतिके ॥ प्रत्यक्षेणानुमानेननिगमेनात्म संविदा ॥ २८ ॥ विचार्यतद्ब्रह्मपरंनिःसंगोविचरेदिह ॥ यथांभसाप्रचलतातरवोपिचलाइव ॥ २९ ॥ चक्षुषाभ्राम्यमाणेनदृश्यतेचलतीवभूः ॥ तथागुणानांभ्रमणैर्भ्रमतामनसायतः ॥ ३० ॥

रंगनसों स्फटिकमणि नही लिप्त होयहै ऐसेही आत्मा गुणनते नही बंधे है ॥ २५ ॥ और जो लक्षण, ध्वनि, व्यंग तिन करिके कबहूं नही जान्यौपरे है फिर कहो लौकिक वाक्य नसो कैसे जानसकैहै वा ब्रह्मके अर्थ हमारो नमस्कार है ॥ २६ ॥ कोई याकूं कर्म कहैहैं कोई काल कहैहैं कोई कर्त्ता कहैहै कोई योग कहैहैं कोई ज्ञान कहैहै कोई सुख कहैहै ॥ २७ ॥ कोई परमात्मा कहै है कोई वासुदेव कहैहै कोई प्रत्यक्ष प्रमाणते कहैहै कोई अनुमानते कोई वेदते कोई आत्मज्ञानते कहैहै ॥ २८ ॥ घटमे मठमे जैसे बाहिर भीतर आकाश रहैहै ऐसे वा परब्रह्मको विचार करिके निःसंग विचरै जैसे बहते पानीसों वृक्षहू चलते मालूम परै हैं ॥ २९ ॥ जैसे चाईमाईके खेलिवेमे नेत्रनके फिरवेते धरती फिरती दीखैहै तैसेई गुणन करिके भ्रमायो जो मन ताते आत्मामें जन्म मरणादि दुःख प्रतीत होयहै ॥ ३० ॥

जैसें हाथते घुमाई जलती बनेठी घूमै है यह करतुक्यौ यह करूंहूं यह करूंगो यह मेरी है यह तेरी है ऐसे बोलत तूं मैं सुखी हूं दुःखी हूं ऐसे अज्ञानमें मोहित भयो घूमै है ॥ ३१ ॥ सत्त्वगुण, रजोगुण, तमोगुण ये तीन मायाके गुण हैं आत्माके नहीं हैं तिनहीते जगत् व्याप्त हेरह्यो है जैसें सूतते कपड़ा ॥ ३२ ॥ जे सत्त्वगुणमें स्थित रहैहैं ते तो ऊपर स्वर्गादि लोकनमें जायैहैं रजोगुणी बीचमें मनुष्यलोकमे रहैहैं तमोगुणी नरकादि लोकनमें जायैहैं ॥ ३३ ॥ हे कार्ष्णि नाम हे कृष्णनंदन ! अंधकारमें रज्जुमें सर्पकी भ्रांति होयहै रेतीमे जलकी भ्रांति होयहै तैसेही झूंठे जगत्में सांची भ्रांति होयहै ॥ ३४ ॥ यह सुख आवैहै और जातरहैहै जैसे छोटे राजनकी राज्य तैसेही मनुष्यनको सुख दुःख आमैं हैं और जायैहै ऐसेही नरकवासीनकूं जैसे बदलनकी पंक्ति देहके गुण और दिन रात स्थिर नही है, ॥ ३५ ॥ ऐसेही देहादिकनको समझनो जैसे रस्ताको संग सदा नहीं रहैहै तैसेही ये जगत् है जैसे पंख भयेपै घोंसुआते कहा मतलब रहैहै पार भयेपै नावते कहा मतलब रहैहै ॥ ३६ ॥ तैसेही ज्ञानभयेपै संसारते कहा मतलब रहैहै तैसेही अपने

भ्राम्यमाणाःसदाराजन्करेणालातचक्रवत् ॥ करिष्यामिकरोमीतिममेदंतवचाब्रुवन् ॥ त्वमहंचसुखीदुःखीसदाज्ञानविमोहितः ॥ ३१ ॥ सत्त्वं रजस्तमइतिप्रकृतेर्नात्मनोगुणाः ॥ तैरिदंजगद्व्याप्तमोतप्रोतपटंयथा ॥ ३२ ॥ ऊर्ध्वंगच्छंतिसत्त्वस्थामध्येतिष्ठंतिराजसाः ॥ जघन्यगुणवृत्तिस्थाअधोगच्छंतितामसाः ॥ ३३ ॥ अंधकारेगुणात्कार्ष्णेसर्पबुद्धिर्भवेद्यथा ॥ आरान्मरीचिकावारितथेदंसन्यतेजगत् ॥ ३४ ॥ गतागतं सुखंविद्धियथामण्डलवर्तिनाम् ॥ तथानृणांचतद्दुःखंयथानरकवासिनाम् ॥ घनावलिर्देहगुणाअहोरात्रमृतेर्यथा ॥ ३५ ॥ यथासार्थतथादृश्यं नकिंचित्सर्वदैवहि ॥ पक्षेजातेयथानीडात्पारेयातेयथोडुपात् ॥ ३६ ॥ ज्ञानेप्राप्तेतथालोकाद्दर्पणात्किंप्रयोजनम् ॥ तथामार्गंनिधायाशुविचरेत्समदृङ्मुनिः ॥३७॥ यथेंदुरुदपात्रेषुयथाग्निःकाष्ठसंचये ॥ तथैकोभगवान्साक्षात्परमात्माव्यवस्थितः ॥ ३८ ॥ घटेमठेयथाकाशोवर्ततेंतर्बहिर्महान् ॥ तथापरात्मानिर्लिप्तोदेहिषुस्वकृतेषुच ॥ ३९ ॥ यःकृष्णभक्तःशांतात्माज्ञाननिष्ठोविरागवान् ॥ तंनस्पृशंत्येवगुणाःकानीवबिसिनीदलम् ॥४०॥ ज्ञानीसदानंदमयोबालवद्विचरेत्तनुम् ॥ नपश्यतिधृतंवासोमदिरामदमत्तवत् ॥ ४१ ॥ सूर्योदयेयथावस्तुगृहेराजन्प्रदृश्यते ॥ दूरीकृत्यतथाज्ञानंसाक्षात्तत्त्वंततोबृहत् ॥ ४२ ॥ यथेंद्रियैःपृथग्द्वारैरर्थोबहुगुणाश्रयः ॥ नानेयतेतथाब्रह्मवाचिभिःशास्त्रवर्त्मभिः ॥ ४३ ॥

मार्गको विचार करिके विचरै ॥ ३७ ॥ जैसे जलके पात्रनमें चंद्रमा जैसे काष्ठमें अग्नि तैसेही एक भगवान् परमात्मा सब जगत्में स्थित है ॥ ३८ ॥ घटमें और मठमें जैसे बाहिर भीतर आकाश रहैहै पर लिप्त नही होयहै तैसेही परमात्मा अपनी बनाई देहनमें रहैहै परन्तु लिप्त नहीं होयहै ॥ ३९ ॥ जो कृष्णभक्त हैं शान्तात्मा हैं ज्ञाननिष्ठ हैं वैराग्यवान् हैं ताकूं ये गुण स्पर्श नही करैहै जैसे कमलके पत्ताकूं जल स्पर्श नहीं करसकै है ॥ ४० ॥ जो ज्ञानी है वो सदानन्दमय है बालककी नाई विचरै वो तनुको नही देखै है जैसे मदिरामत्त धोतीकी खबर नहीं राखैहै ॥ ४१ ॥ सूर्योदयपै जैसे घरकी सब चीज दीखैहै तैसेही ज्ञान भयेपै सब तत्त्व दीखै हैं ॥ ४२ ॥ जैसे न्यारी न्यारी इन्द्रीन करिके एक वस्तु अनेक प्रकारकी वर्णन करीजायहै तैसेही एक ब्रह्म अनेक रूपते शास्त्रकी रीतिते वर्णन करियैहै जैसे दूध है ताहि नेत्र तो सफेद बतामैहै उंगलिया तो तातो सीरो बतावै

हैं जीभ मीठो फीको बतावेहै नाक सुगंध दुर्गंध बतावेहै बुद्धि पथ्य कुपथ्य बतावेहै कान खलभलातो बतावेहै ॥ ४३ ॥ हे नृप ! कोई तो याय परमपद कहेहैं कोई वैष्णवधाम कहेहै कोई व्याप्य कहेहै कोई वैकुंठ कोई शान्त ॥ ४४ ॥ कोई कैवल्य कोई ब्रह्म कोई परमधाममें कोई अव्यय कोई अक्षर कोई पराकाष्ठा कोई गोलोक और कोई प्रकृतिते परे कहेहै ॥ ४५ ॥ कोई पुराने वेत्ता विशद कोई निकुंज कहेहै सो पदज्ञान वैराग्य भक्तिते प्राप्त होयहै और तरह नहीं प्राप्त होयहै ॥ ४६ ॥ श्रीकृष्णको भक्त परेते परे कैवल्यके नाथ पुरुषोत्तम श्रीकृष्णचन्द्र ताके पदकूं प्राप्त हैके फिर नहीं बगदैहै ॥ ४७ ॥ नारदजी कहेहैं या भागवत ज्ञानकूं सुनके प्रद्युम्न अगस्तिजीकूं भक्तिसों नमस्कार करकें पूजन करतोभयो ॥ ४८ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटीकायांमगस्तिज्ञानप्रस्तावो नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ नारदजी कहेहैं याके अनन्तर प्रद्युम्न] कृतमाला

परंपदंवदंत्येतत्केचिद्वैष्णवंनृप ॥ केचिद्व्याप्यंवैकुण्ठंशांतंकेपिततःपरम् ॥ ४४ ॥ कैवल्यंतद्ब्रह्मकेचित्परमंधामचाव्ययम् ॥ अक्षरंचपरांका
ष्ठांगोलोकंप्रकृतेःपरम् ॥ ४५ ॥ केचिन्निकुंजंविशदंवदंतीहपुराविदः ॥ ज्ञानवैराग्यभक्तिभ्यःप्राप्नोतीहनचान्यतः ॥ ४६ ॥ श्रीकृष्णचन्द्र
स्यहरेःपरस्यकैवल्यनाथस्यपरात्परस्य ॥ व्रजेत्पदंश्रीपुरुषोत्तमस्ययत्प्राप्यभक्तोननिवर्ततेथ ॥ ४७ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इतिभागवतं
ज्ञानंश्रुत्वाकार्ष्णिर्महामुनिम् ॥ अगस्त्यंपूजयामासभक्त्यानत्वाकृतांजलिः ॥ ४८ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसं
वादेश्रीनरविदर्भकुन्तदरददेशविजयेअगस्त्यकार्ष्णिज्ञानप्रस्तावोनामद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ कृतमालांताम्रप
र्णींस्नात्वाश्रीयादवेश्वरः ॥ यदुभिःसैनिकैःसार्द्धंराजन्राजपुरंययौ ॥ १ ॥ शाल्वोराजपुराधीशःश्रुत्वासन्मुखतोयदून् ॥ आगतान्सययौशीघ्रं
द्विविदंवानराधिपम् ॥ २ ॥ द्विविदोह्यतिसंक्रुद्धोवीरोमित्रसहायकृत् ॥ शंबरारिबलंप्रागाच्चालयन्वसुधातलम् ॥ ३ ॥ विददारनखैर्दन्तैःपता
काध्वजपट्टकान् ॥ काश्मीरकंबलैर्युक्तान्समुद्रान्स्वर्णभूषितान् ॥ ४ ॥ रथानुत्पातयामासगजानारुह्यवेगतः ॥ अश्वान्विद्रावयामासभ्रूभं
गैर्वानरस्वनैः ॥ ५ ॥ इत्थंकोलाहलेजातेप्रद्युम्नोधन्विनांवरः ॥ आजगामरथेनासौधनुष्टंकारयन्मुहुः ॥ ६ ॥ द्विविदस्तद्रथस्यारादुत्क्रामन्मदो
त्कटः ॥ छत्रंध्वजंस्वपुच्छेनकंपयन्सहयंरथम् ॥ ७ ॥ प्रद्युम्नःस्वधनुष्कोट्याधृत्वाकण्ठेचकर्षह ॥ कपिस्तदातिकुपितोमुष्टिनातंतताडह ॥८॥

ताम्रपर्णीमें स्नान करके सैनिक जे यदु हैं उन यादवनके संग राजपुरकूं जातोभयो ॥ १ ॥ तब राजपुरको अधीश जो शाल्व है वो यादवनकूं सन्मुख आयो सुनके बंदरनको अधिप जो द्विविद तापै जातोभयो ॥ २ ॥ तब द्विविद बंदर मित्रको सहाय करतो बड़ो क्रोध करतभयो फिर क्रोध करके पृथ्वीकूं चलायमान करत प्रद्युम्नकी सेनाकूं आयो ॥ ३ ॥ द्विविद बंदर सेनामें जायके नखनते दांतनते ध्वजा पताकानकी पट्टनको बनातके मुद्रा सहितनको सबै चीरनलग्यो जे सुवर्णकरके भूषित है ॥ ४ ॥ भौंहनके चढ़ायबे नसो और बंदरनके किलकार शब्दकेबेनसो हाथीनपै चढ़ि २ के रथनकूं फेंकनलग्यो और घोड़ानकूं भजावनलग्यो ॥५॥ ऐसे जब सेनामें कोलाहल भयो तब धनुषधारीनमें श्रेष्ठ प्रद्युम्न रथमें बैठ धनुष टंकारतो आवतोभयो ॥ ६ ॥ तब द्विविद मदोत्कट उछरके दूरतेही रथपै जाय चढ्यो पूंछते ध्वजा छत्र रथकूं कंपावन लग्यो ॥७॥ तब प्रद्युम्नने वाकी नाड़में धनुष डार खैंचलीनो

तब अतिकुपित द्विविदने प्रद्युम्नके एक घूंसा मारयो॥ ८॥ प्रद्युम्नहू विधिसों धनुषकूँ चढ़ाय कानतलक खैंच द्विविदके एक विशिख (बाण) मारतोभयो ॥ ९॥ बिगर विशिख वो बाण आकाशमें चार घडीतक फिराय फिरायके आधे प्रहरमें सौ योजनपै द्विविदको लंकामें फैंक देतो भयो ॥ १०॥ तब फिर वहां याको राक्षसनते दो घडी युद्ध भयो प्रद्युम्न और ये द्विविद वहाँ बहुतसे राक्षसनको मारतोभये इतनेमें यदूत्तम ॥ ११ ॥ जीतके भेडलैकें नगाड़े बजावत दक्षिण मथुराकूँ देखके त्रिकूटाचलपै चढ़गयो ॥ १२ ॥ तब द्विविद फिर त्रिकूटाचलपैते मैनाकपै चढ़गयो फिर मैनाकपैते सिंहलदेशमें हैके ये द्विविद भरतखंडमें आयगयो ॥ १३ ॥ फिर हौलें २ वह बंदरनको इंद्र हिमालयमें आयो फिर हिमालयके शिखरसों प्राग्ज्योतिप पुरमें आयो ॥ १४ ॥ तब प्रद्युम्न मत्सारदेशके राजापै हैकें रामकृष्ण क्षेत्रपै हैकें सेतुबन्धपै आवतोभयो ॥ १५ ॥ सौ योजनको समुद्र मगरनको घर ताकूं देखकें ताके किनारेपै

प्रद्युम्नोधनुरादायसज्यंकृत्वाविधानतः ॥ आकृष्यकर्णपर्यंतंविशिखेनतताडतम् ॥ ९ ॥ त्रिशिखीभ्रामयित्वातंगगनेशतयोजनम् ॥
प्रहरार्द्धेनराजेंद्रलङ्कायांसंन्यपातयत् ॥ १० ॥ रक्षोभिःसहतद्युद्धंबभूवघटिकाद्वयम् ॥ न्यपातयत्सरक्षांसिप्रद्युम्नोथयदूत्तमः ॥ ११ ॥
नादयन्दुन्दुभिंराजन्विजित्यजगृहेबलिम् ॥ दक्षिणांमथुरांदृष्ट्वात्रिकूटंचारुरोहह ॥ १२ ॥ प्रोचक्रामत्रिकूटात्समैनाकशिखरोपरि ॥
मैनाकात्सिंहलंचैत्यभारतंचाययौपुनः ॥ १३ ॥ शनैःशनैर्वानरेंद्रोहिमाचलगिरिंगतः ॥ हिमाचलस्यशिखरात्प्राग्ज्योतिषपुरंययौ ॥
॥ १४ ॥ मत्सारदेशाधिपतिंप्रद्युम्नोयादवेश्वरः ॥ महाक्षेत्रंरामकृष्णंप्रययौसेतुबन्धनम् ॥ १५ ॥ शतयोजनविस्तीर्णंसमुद्रंमकरालय
म् ॥ वीक्ष्यकार्ष्णिर्महावीरस्तस्थौवेलांसमेत्यसः ॥ १६ ॥ सांबादीन्ससमाहूयाक्रूराद्यान्यादवान्स्वकान् ॥ समायामुद्धवंप्राहकार्ष्णिर्योगेश्व
रेश्वरः ॥ १७ ॥ ॥ प्रद्युम्नउवाच ॥ ॥ विभीषणोद्वीपपतिर्महोज्ज्वलोलंकापतिःकौणपवृन्दमुख्यः ॥ वदाथकिंभोजवरात्रमंत्रिन्नचेद्बलिंयच्छ
तिमेतदाशु ॥ १८ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ त्वंदेवदेवःपुरुषोत्तमोत्तमःश्रीकृष्णचन्द्रःपरमंत्वमेवहि ॥ त्वंपृच्छसेलोकइवप्रभोमांमायापिते
योगिवरैर्दुरत्यया ॥ १९ ॥ ब्रह्मादयोयस्यपरानुशासनंवहंतिमूर्ध्नासततंप्रधर्षिताः ॥ सएवसाक्षात्पुरुषोसिभूमन्दासानुदासोस्मिवदामिकिंते ॥
॥ २० ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्तःपश्यतांतेषांप्रद्युम्नोभगवान्हरिः ॥ पत्रंगृहीत्वाव्यलिखत्संदेशंमैथिलेश्वर ॥ २१ ॥

प्रद्युम्न ठहरगयो ॥ १६ ॥ वहां सांब अक्रूर उद्धवादिक अपने यादवनकूं बुलायके योगेश्वरेश्वर जो प्रद्युम्न है वो उद्धवते ये बोल्यो ॥ १७ ॥ देखो उद्धवजी ! विभीषण या उपद्वीपको पति है वो लंकाको पति राक्षसनके समूहमें मुख्य है सो हे मंत्रिन् ! कहो यह मोकूँ बलि जल्दी नहीं देयगो ? ॥ १८ ॥ तब उद्धवजी बोले—तुम देवदेव पुरुषोत्तम श्रीकृष्णही हौ सो तुम मनुष्यकी नाई मोसूं पूछौहो और आपकी माया बडे बड़े योगीनकूंहू दुरत्यय है ॥ १९ ॥ ब्रह्मादिक धर्षित हैके तुम्हारी आज्ञाकूँ अपने शिरपै धारण करैहै सो तुम साक्षात् पुरुष हो मैं तौ तुम्हारो दासानुदास हूं मैं आपके आगे कहा कहूं ॥ २० ॥ नारदजी कहै है—ऐसे उद्धवने कही तब सबके देखत देखत हे मैथिल !

प्रद्युम्नजी विभीषणकूं पत्रमें संदेशो लिखतेभये ॥ २१ ॥ हे विभीषण ! श्रीभोजराज उग्रसेनकूं वलि देउ जो बल करिके भेट न देउगे तो धनुपते निकसे वाणनते समुद्रको सेतु
बांधिके सेनाके समूहसहित मैं आऊंहूं ॥ २२ ॥ ऐसे पत्र लिखके चंड पराक्रम जाको सो धनुष लैके बाणपै पत्रकूं धरिके कानतलक खैंचिके छोड़ देतोभयो ॥ २३ ॥
ता धनुषकी प्रकट टंकारते विजुरीकोसो शब्द भयो ता शब्दते सातो लोकन तथा सातों पातालन सहित ब्रह्मांड झंकार उठ्यो ॥ २४ ॥ धनुषते छूट्यौ बाण दशों दिशानमें
उंजीतो करत विभीषणकी सभामें विजलीसी तड़तड़ापके जायपर्‍यो ॥२५॥ तबही सबरे राक्षस चौंक उठे कवच पहर शस्त्र लैलीने बडे वेगते इुष्टनें ॥ २६ ॥ महाबली राक्षसनको
इन्द्र विभीषण सभाके बीचमें पत्रकूं पढिके विस्मित हैगयो ॥ २७ ॥ ताही समय सभामें शुक्राचार्य आयगये तिने अर्घ पाद्यते पूजन करके नमस्कार कर हाथ जोड़ पूजन करके

श्रीभोजराजायबलिंप्रयच्छबलान्नचेन्मेवचनंशृणुत्वम् ॥ कोदंडमुक्तैर्विशिखैश्चसेतुंबध्वागमिष्यामिससैन्यसंघः ॥ २२ ॥ लिखित्वेदंसमादा
यकोदंडंचण्डविक्रमः ॥ बाणेपत्रंसमाधायकर्णांतंतंततानह ॥ २३ ॥ प्रस्फुटंस्फोटतेनैवटंकारोभूत्तडित्स्वनः ॥ ननादतेनब्रह्मांडंसप्तलोकैर्वि
लैःसह ॥ २४ ॥ कोदंडमुक्तोविशिखोद्योतयन्मण्डलंदिशाम् ॥ विभीषणसभामध्येसंपपाततडित्स्वनः ॥ २५ ॥ तदैवराक्षसाःसर्वेप्रोत्थिता
श्चकिताइव ॥ सकंचुकानिशस्त्राणिजगृहुर्वेगतःखलाः ॥ २६ ॥ पत्रंबाणात्समाकृष्यपठित्वाथविभीषणः ॥ विस्मितोभूत्सभामध्येराक्षसेंद्रो
महाबलः ॥ २७ ॥ प्राप्तंतदैवसदसिशुक्राचार्यंविभीषणः ॥ पूजयामासपाद्याद्यैर्नत्वाप्राहकृतांजलिः ॥ २८ ॥ ॥ विभीषणउवाच ॥ ॥
भगवन्कस्यबाणोयंभोजराजस्तुकःक्षितौ ॥ किंबलंतस्यमेब्रूहित्वंसाक्षाद्दिव्यदर्शनः ॥ २९ ॥ ॥ श्रीशुक्रउवाच ॥ ॥ अत्रैवोदाहरंतीममि
तिहासंपुरातनम् ॥ यस्यश्रवणमात्रेणराजन्पापंप्रशाम्यति ॥ ३० ॥ पुराहिब्रह्मणःपुत्राःसनकाद्यादिवंगताः ॥ विष्णोर्लोकंययुर्दिव्यंचरंतोभु
वनत्रयम् ॥ ३१ ॥ दिगंबरान्शिशून्मत्वाजयोविजयएवतान् ॥ द्वारपालौरुरुधतुर्वेत्रेणांतःपुरस्थितौ ॥ ३२ ॥ अशपंस्तौचतेक्रुद्धाःकृष्णद
र्शनलालसाः ॥ भूयास्तमसुरौदुष्टौशुद्धौहिजन्मभिस्त्रिभिः ॥ ३३ ॥ एवंशप्तौस्वभवनात्पततौभूमिमंडले ॥ जज्ञातेतोदितेःपुत्रौदैत्यदानवपू
जितौ ॥ ३४ ॥ हिरण्यकशिपुर्ज्येष्ठोहिरण्याक्षोनुजस्तथा ॥ भगवान्यज्ञवाराहोभूत्वाक्ष्मामुद्धरज्जलात् ॥ ३५ ॥

यह बोल्यो ॥ २८ ॥ हे भगवन् ! यह कौनको बाण है या पृथ्वीपै भोजराज कौन है? वाको कहा बल है सो तुम मोते कहो ? तुम साक्षात् दिव्यदर्शन हो ॥ २९ ॥ तब शुक्राचार्य
बोले कि, हे राजन ! यहां एक पुरानो इतिहास वर्णन करै है जाके श्रवणमात्रतेही पापको नाश होय है ॥ ३० ॥ पहले ब्रह्माजीके बेटा सनकादिक सत्यलोकमें रहनहारे वैकुण्ठकूं
गये हे वे तीनो लोकमे विचरैं है ॥ ३१ ॥ दिगंबर हैं उनकूं बालक जानके जय विजय पार्षदनने रोके, द्वारपाल है याते रणवासके जानहारेनकों बेंत आड़ो करके रोकदीने ॥३२॥
उनकूं श्रीकृष्णदर्शनकी लालसा ही ते क्रोध हैकें शाप देतेभये कै तुम असुर हैजाओ दुष्टहो तीन जन्ममें शुद्ध हैजाओगे ॥ ३३ ॥ अपने भवनते भूमिमंडलमें परे जब ऐसें शरापे
तब दितिके बेटा भये दैत्य दानवन करके वंदित भये ॥ ३४ ॥ बडो हिरण्याक्ष भयो, छोटो हिरण्यकशिपु भयो, भगवान् यज्ञवाराह भये जलते पृथ्वीको उद्धार करयो ॥ ३५ ॥

तव महावली हिरण्याक्षकूं मुकाते मारचौ फिर चंडविक्रम नृसिंह भये ॥ ३६ ॥ जो प्रह्लादके सहायकर्ता तिनने उदर चीरके हिरण्यकशिपुकूं मारडारचो वे दोनों भैया फेर केशिनीमें विश्रवाके बेटा भये ॥ ३७ ॥ रावण, कुम्भकर्ण सब लोककूँ ताप देनहारे रामवाणनते ते युद्धमें जायमरे ॥ ३८ ॥ राक्षसनमें इंद्र सेना सहित तेरे देखत देखत तीसरे जन्ममें क्षत्रीके कुलमें फिर भये ॥ ३९ ॥ शिशुपाल दंतवक्र महावली अब वर्तमान हैं परिपूर्णतम भगवान् श्रीकृष्ण साक्षात् ॥ ४० ॥ असंख्य ब्रह्मांडनके पति गोलोकेश परात्पर तिनके मारवेके लिये यदुवंशमें भये हैं ॥ ४१ ॥ यादवेंद्र बहुत है लीला जाकी सो द्वारकामें विराजैं हैं युधिष्ठिरके महायज्ञमें और शाल्वके युद्धमें माधव ॥ ४२ ॥ शिशुपालकूं मारेंगे ताको बेटा शंबर दैत्यको वैरी दिग्विजयकूं निकस्यौ है ॥ ४३ ॥ सो जंबूद्वीपके सब राजानकूं जीतेगो, जब सब राजा जीतलीयेजांयगे

जघानमुष्टिनादैत्यंहिरण्याक्षंमहावलम् ॥ हिरण्यकशिपुंसाक्षान्नृसिंहश्चण्डविक्रमः ॥ ३६ ॥ ददारजठरेतंवैकायाधवसहायकृत् ॥ भ्रातरौतौपुनर्जातौकेशिन्यांविश्रवःसुतौ ॥ ३७ ॥ रावणःकुंभकर्णश्चसर्वलोकैकतापनौ ॥ सायकैराघवस्यापिपेततुर्युद्धमण्डले ॥ ३८ ॥ राक्षसेंद्रौमहावेगौससैन्यौपश्यतस्तव ॥ तृतीयेस्मिन्भवेजातौक्षत्रियाणांकुलेकिल ॥ ३९ ॥ शिशुपालोदंतवक्रोवर्तमानौमहावलौ ॥ परिपूर्णतमःसाक्षाच्छ्रीकृष्णोभगवान्स्वयम् ॥ ४० ॥ असंख्यब्रह्मांडपतिर्गोलोकेशःपरात्परः ॥ जातस्तयोर्वधार्थाययदुवंशेहरिःस्वयम् ॥ ॥ ४१ ॥ यादवेंद्रोभूरिलीलोद्वारकायांविराजते ॥ युधिष्ठिरमहायज्ञेयुद्धेशाल्वस्यमाधवः ॥ ४२ ॥ शिशुपालंदंतवक्रंहनिष्यतिनसंशयः ॥ तस्यपुत्रःशंबरारिर्दिग्जयार्थंविनिर्गतः ॥ ४३ ॥ विजेष्यतिनृपान्सर्वाञ्जंबुद्वीपस्थितान्नृपान् ॥ जितेषुसत्सुदेवेषुद्वारकायांयदूत्तमः ॥ उग्रसेनोभोजराजोराजसूयंकरिष्यति ॥ ४४ ॥ तस्यापिकोदंडविनिर्गतोबलात्प्रचण्डवेगोविशिखस्त्विहागतः ॥ तन्नामचिह्नोतितडित्स्वनोबभौप्रद्योतयन्राक्षसमण्डलंदिशाम् ॥ ४५ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ श्रीरामभक्तोथविभीषणोसौविज्ञायकृष्णंनृपरामचन्द्रम् ॥ नीत्वाबलिंकौणपवृंदमुख्यःसमाययौसुन्दरशत्रुसेनाम् ॥ ४६ ॥ तदावतीर्यांशुमहांबरात्स्फुरद्घनद्युतिर्दीर्घवपुर्जयेक्षणः ॥ प्रदक्षिणीकृत्यहरेःसुतंपुनःकृतांजलिःसंमुखआस्थितोभूत् ॥ ४७ ॥ ॥ विभीषणउवाच ॥ ॥ नमोभगवतेतुभ्यंवासुदेवायवेधसे ॥ प्रद्युम्नायानिरुद्धायनमःसंकर्षणायच ॥ ४८ ॥ नमोमत्स्यायकूर्मायवराहायनमोनमः ॥ नमःश्रीरामचन्द्रायभार्गवायनमोनमः ॥ ४९ ॥

तब भोजराज उग्रसेन राजसूय यज्ञ करैगो ॥ ४४ ॥ ता प्रद्युम्नके कोदंडते निकस्यौ बडे जोरते प्रचंडवेग बाण यहां आयोहै ताके नामको चिह्न जामें सो बीजुरीसो दिशानमें राक्षसमण्डलमें उजीतो करत आयोहै ॥ ४५ ॥ नारदजी कहैं हैं श्रीरामभक्त विभीषण श्रीकृष्णकूं रामचन्द्र जानकें राक्षसवृंदमें मुख्य बलि लैके प्रद्युम्नकी सेनामें आवत भयो ॥ ४६ ॥ फेर आकाशमेंते धनसो उतरिके प्रद्युम्नकी परिक्रमा दैके हाथ जोड सन्मुख ठाडो होतभयो ॥ ४७ ॥ स्तुति करनलग्यो—भगवान्, वासुदेव, वेधा हौ तिनके अर्थ नमस्कार है संकर्षण हौ प्रद्युम्न हौ अनिरुद्ध हौ तिनके अर्थ नमस्कार है ॥ ४८ ॥ मत्स्य हो कूर्म हौ वाराह हौ रामचन्द्र हौ परशुराम हौ तिनके अर्थ नमस्कार है ॥ ४९ ॥

वामन हौ नृसिंह हौ शुद्ध बुद्ध हौ कल्किभगवान् हौ तिनके अर्थ नमस्कार है ॥ ५० ॥ ऐसे कहिकें मानदाता विभीषण पूजन करतभयो षोडशोपचार परमभक्ति करकें ॥ ५१ ॥
तापै प्रसन्न हैके शंबरारि ज्ञान वैराग्य देत भये शांति दई प्रेमलक्षणा भक्तिदई ॥ ५२ ॥ ब्रह्माकी दीनी पद्मराग मणि दिव्य शिरोमणि पौलस्त्यने दीनी जो रत्नमाला चमत्कृत
सो देतभये ॥ ५३ ॥ फिर चन्द्रकांति मणिहू दीनी जो चन्द्रमानें दीनीही फेर साक्षात् प्रभू प्रद्युम्ननें पीतांबर दीनों ॥ ५४ ॥ विभीषण प्रद्युम्नकूं भेट दैके नमस्कार करिके
राक्षसेंद्र महाबली गणनकूं संग लैकें लंकापुरीकूं आवतभयो ॥ ५५ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटीकायां नारदबहुलाश्वसंवादे शाल्वमल्लारलंकाविजयो
नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ नारदजी कहै है—फेर प्रद्युम्नजी ऋषभादि पर्वतकूं देखिके श्रीरंगजीकूं, कांचीकूं प्राची सरस्वतीकूं देखिके ॥ १ ॥ कावेरीकूं उतरिके

वामनायनमस्तुभ्यंनृसिंहायनमोनमः ॥ नमोबुद्धायशुद्धायकल्कयेचार्तिहारिणे ॥ ५० ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वाश्रीहरेःपुत्रंपूजया
मासमानदः ॥ उपचारैःषोडशभिर्भक्त्यापरमयाद्भुवाक् ॥ ५१ ॥ तस्मैतुष्टःशंबरारिर्ददौज्ञानंविरक्तिमत् ॥ भक्तिंशांतिकरींसाक्षाद्यांतिदुष्प्रे
मलक्षणाम् ॥ ५२ ॥ ब्रह्मदत्तंमहादिव्यंपद्मरागंशिरोमणिम् ॥ पौलस्त्येनपुरादत्तांरत्नमालांस्फुरत्प्रभाम् ॥ ५३ ॥ चंद्रकांतमणिंतस्मैचन्द्र
दत्तंददौपुनः ॥ पीतांबरंपरंसाक्षात्प्रद्युम्नःपरमःप्रभुः ॥५४॥ विभीषणोथप्रद्युम्नंनत्वादत्त्वाबलिंततः ॥ जगामलंकांसगणोराक्षसेंद्रोमहाबलः॥
॥ ५५ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेशाल्वमल्लारलंकाविजयोनामत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ श्रीनार
दउवाच ॥ ॥ ऋषभाद्रिंततोदृष्ट्वाश्रीरंगाख्यंहरेःसुतः ॥ कामःकार्ष्णिःपुरींकांचींनदींप्राचींसरिद्वराम् ॥ १ ॥ कावेरींचतदोत्तीर्यसह्याद्रिवि
पर्ययौ ॥ यादवैःसहितःसाक्षात्प्रद्युम्नोभगवान्हरिः ॥ २ ॥ शिबिरेषुसमायांतंमुक्तकेशंदिगंबरम् ॥ अवधूतंप्रधावंतंपुष्टांगंरजसावृतम् ॥३॥
बालास्तमनुधावंतस्तलशब्दैरितस्ततः ॥ कोलाहलंप्रकुर्वंतोहसंतोमैथिलेश्वर ॥ ४ ॥ तंदृष्ट्वाचोद्धवंप्राहकार्ष्णिर्बुद्धिमतांवरः ॥ ॥ प्रद्युम्नउ
वाच ॥ ॥ कोऽयंपुष्टवपुर्धावन्बालोन्मत्तपिशाचवत् ॥ ५ ॥ तिरस्कृतोपिहसतिजनैरानंदवान्महान् ॥ ६ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ अयंप
रमहंसाख्योवधूतोवाहरेःकला ॥ सदानंदमयःसाक्षाद्दत्तात्रेयोमहामुनिः ॥ ७ ॥ यस्यप्रसादात्परमांसिद्धिंप्रापुःपरेनृपाः ॥ सहस्रार्जुनमुख्या
येयदुकायाधवादयः ॥ ८ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वाशंबरारिर्नत्वासंपूज्यतंमुनिम् ॥ संस्थाप्यचासनेदिव्येपप्रच्छेदंयदूत्तमः ॥९॥

सह्याचलके देशकूं आवतेभये यादवनके संग भगवान् हरि प्रद्युम्न ॥ २ ॥ तब डेरानमें आवते एक अवधूत दिगम्बर, खुले केश, पुष्ट अंग धूरिमें लिपटे भागोजाय ॥ ३ ॥
ताली बजावत बालक जाके पीछे भागेआमें है कोलाहल करते हँसते हे मैथिलेश्वर ! ॥ ४ ॥ ताकी देखि कृष्णको बेटा बडो बुद्धिमान् प्रद्युम्न उद्धवजीते बोल्यो कि, यह
पुष्टशरीर बालककी नाईं उन्मत्त पिशाचसो कौन भागोजाय है ? ॥ ५ ॥ देखो ये मनुष्यनने तिरस्कारहू कीयो तौहू हँसतो बडो आनन्दभरयो कौन है ? ॥ ६ ॥ उद्धवजी बोले—ये
परमहंस अवधूत हरिकी कला सदा आनन्दमय दत्तात्रेय महामुनि हैं ॥७॥ इनके प्रसादतें बहुतसे राजा सिद्धिकूं प्राप्त हैगये सहस्रार्जुन यदु प्रह्लादादिक ॥८॥ नारदजी कहै है—ऐसें

सुनिके कृष्णपुत्र उनको दंडोत करि पूजन करिके सिंहासनपै बैठारिके यह वचन बोल्यौ ॥ ९ ॥ हे भगवन्! मेरे हृदयमें स्थित एक सन्देह है ताहि नाश करौ, जगतकूं और ब्रह्मके मार्गको और तत्त्व जे हैं तिन्हें कहो ॥ १० ॥ तब दत्तात्रेय बोले—जबतलक वस्तु नहीं दीखै तबतलकही चालीते प्रयोजन है महा आनन्द प्राप्त भयेपै वत्तीते कहा मतलब है ॥ ११ ॥ तबतलक जगत् है जबतलक तत्त्व नहीं जाने परब्रह्मकूं जाने पीछे जगतते कहा प्रयोजन है ॥ १२ ॥ मोहडेको प्रतिबिंब है नहीं पर दर्पणमें दीखै है और शरीर नहीं दीखैहै ऐसेही प्रधानार्थके विषे जीवको जानो ज्ञानते ये परात्पर है ॥ १३ ॥ जैसे सूर्योदय भयेपै सब वस्तु आंखिनते दीखै है जैसेई ज्ञान सूर्यके उदयभयेपै जीव करके ब्रह्मतत्त्व दीखैहै सबतरफ नहीं दीखै है ॥ १४ ॥ नारदजी कहे है ऐसे यादवेश्वर प्रद्युम्न सुनके तिनकूं नमस्कार करिके द्रविड देशनमें जो वैकुंठ पर्वत है

॥ ॥ प्रद्युम्नउवाच ॥ ॥ भगवन्मेहृदिस्थंवैसन्देहंनाशयप्रभो ॥ जगतोब्रह्ममार्गांश्चहेत्वंतंब्रूहितत्त्वतः ॥ १० ॥ ॥ दत्तात्रेयउवाच ॥ ॥ दृश्यतेनवसुर्यावत्तावदुल्काप्रयोजनम् ॥ प्राप्तेवशेमहानंदेधोल्कायाःकिंप्रयोजनम् ॥ ११ ॥ तावदास्तेजगत्साधोयावत्तत्त्वंनवेद्यते ॥ परस्मिन्ब्रह्मणिप्राप्तेजगतःकिंप्रयोजनम् ॥ १२ ॥ आस्यबिंबोयथादर्शेपश्यतेनपरंवपुः ॥ प्रधानार्थेतथाजीवोज्ञानेनासौपरात्परम् ॥ १३ ॥ यथासूर्योदयेसर्ववस्तुनेत्रेणदृश्यते ॥ तथाज्ञानोदयेब्रह्मतत्त्वंजीवेनसर्वतः ॥ १४ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वाथतंनत्वाप्रद्युम्नोयादवेश्वरः ॥ वैकुण्ठाद्रिंद्राविडेषुययौसेनासमन्वितः ॥ १५ ॥ सत्यवाग्धर्मतत्त्वज्ञोराजर्षिर्द्राविडेश्वरः ॥ प्रद्युम्नंपूजयामासभक्त्यापरमयायुतः ॥ १६ ॥ श्रीशैलदर्शनंकृत्वागिरिशालयमद्भुतम् ॥ स्कंदंवीक्ष्यततोराजन्ययौपंपासरोवरे ॥ १७ ॥ गोदावरींभीमरथींगतःश्रीद्वारकेश्वरः ॥ प्रदर्शयन्हरेस्तीर्थंमहेंद्राद्रिंततोययौ ॥ १८ ॥ महेंद्राद्रिस्थितंरामंभार्गवंक्षत्रियांतकम् ॥ नत्वाप्रदक्षिणीकृत्यतत्रतस्थौहरेःसुतः ॥ १९ ॥ रामस्तस्याशिषंदत्त्वायादवानांबलायवै ॥ चतुरंगायराजेंद्रयोगेनार्हणमाचरत् ॥ २० ॥ भक्तसूपःप्रलेहश्चरुदिकादधिशाकजाः ॥ शिखरिण्यवलेहश्चवालुकाचक्षुखेरिणी ॥ २१ ॥ त्रिकोणशर्करायुक्तोपट्कोमधुशीर्षकः ॥ फेणिकाचोपरिष्टश्चशतपत्रःसच्छिद्रकः ॥ २२ ॥ चक्राभचिह्नकाचेत्थंसुधाकुंडलिकाःस्मृताः ॥ घृतपूरोवायुपूरस्तथाचन्द्रकलाःस्मृताः ॥ २३ ॥

ताको सेनासहित चलेगये ॥ १५ ॥ सत्य वाणी जाकी ऐसो सत्यवाक् नाम राजा धर्मतत्त्वको जानिबेवारो राजऋषि द्रविडदेशको ईश्वर परम भक्तिते प्रद्युम्नको पूजन करतो भयो ॥ १६ ॥ फिर महादेवको आलय श्रीशैल नामको पर्वत ताको दर्शन करके तहां स्वामिकार्तिकको दर्शन करके पंपासरोवरकूं चलेगये ॥ १७ ॥ फेर गोदावरी भीमरथीपै प्रद्युम्न गये फेर द्वारकानाथके दर्शन करते महेंद्राचलपै आये ॥ १८ ॥ ता पर्वतपै स्थित जो परशुराम भृगुवंशी क्षत्रीनके काल तिनकूं दंडवतकर प्रदक्षिणा करके उनके सन्मुख प्रद्युम्न बैठे ॥ १९ ॥ परशुराम प्रद्युम्नकूं आशीर्वाद दैके यादवनकी चतुरंगिणी सेनाके लिये अपने योगबलते भोजन प्रकट करतेभये ॥ २० ॥ भात, दाल, चटनी, दहीकी सामिग्री अनेक शाग, सिखरन, शरबत मुरब्बा ॥ २१ ॥ त्रिकोण गुझिया, घेवर, खजला, फेनी, पूआ, मालपुआ, शतपत्र, ॥ २२ ॥ रामचक्रचन्द्रिका, अमृतकुंडली, घृतपूर,

वाघपूर, बड़ा, चन्द्रकला ॥ २३ ॥ दधिस्थूली, कर्पूर नाडी. सुरमा, गोधूमपरिखा, सुफलाढ्या, ॥ २४ ॥ दधिरूप, मोदक, शाक, अचार, मासे, रबड़ी, माड़े, मलाई, खोर, खीरसा, दही, माखन ॥ २५ ॥ घृत, मन्डूरी, कूपिका, पापड़, शक्तिका, लसिका, सुवृत्तसंधाय ॥ २६ ॥ अचार, मुरब्बा, अनेक फल, मोहनभोग, नोनकी सामिग्री ॥ २७ ॥ कसैलो, मीठो, फीको, चरपरो, खट्टो, करुओ, अनेक प्रकारके ये छप्पन भोग प्रकट करे ॥ २८ ॥ अपने योगबलते इनसबनकूं पर्वतकेसे ढेर लगाये तिनतें सब सेनाकूं भोजन करायौ कोई वस्तु कमती न भई ॥ २९ ॥ परशुरामजीकौ वैभव देखिकें सब विस्मय करन लगे यादवन करकें सहित प्रद्युम्न नमस्कार करिकें ॥ ३० ॥ सबनके सुनत सुनत यह पूछन लगे कि, हे भगवन् ! आपने सबकूं परम उत्तम भोजन दीनों ॥ ३१ ॥ जितनी समृद्धि है और सिद्धि है ते सब तुम्हारे चरणनमें बसें हैं क्यों महाराज ! सब भक्तनमें हरिकौ प्यारौ भक्त कौनसौ है यह

दधिस्थूलीश्चकर्पूरनाडीस्थंखण्डमण्डलम् ॥ गोधूमपरिखाश्चैवसुफलाढ्यास्तथैवच ॥ २४ ॥ दधिरूपोमोदकश्चशाकसौधानएवच ॥ मण्डकापायसंयुक्तंदधिगोघृतमेवच ॥ २५ ॥ हैयंगवीनमंडूरीकूपिकापर्पटस्तथा ॥ शक्तिकालसिकाचैवसुवृत्तसंधायएवहि ॥ २६ ॥ सुफलैश्चसिताद्युक्तैःफलानिविविधानिच ॥ यथामोहनभोगैश्चलवणंचतथैवच ॥ २७ ॥ कषायोमधुरस्तिक्तःकटुरम्लस्त्वनेकधा ॥ षट्पंचाशत्तमश्चैवह्येतेभोगाःप्रकीर्तिताः ॥ २८ ॥ एतेषांभार्गवःशैलानकार्षीद्योगमास्थितः ॥ सैन्येसंभोजितेतत्रह्रस्तन्न्यूनानतेभवन् ॥ २९ ॥ वैभवंभार्गवस्यापिदृष्ट्वासर्वेतिविस्मिताः ॥ प्रद्युम्नस्तंनमस्कृत्ययादवैःसहितस्तदा ॥ ३० ॥ सर्वेषांशृण्वतांराजन्पप्रच्छेदंहरेःसुतः ॥ ॥ प्रद्युम्नउवाच ॥ ॥ भगवन्भवतादत्तंसर्वेभ्योभोजनंपरम् ॥ ३१ ॥ समृद्धयःसिद्धयश्चत्वदंघ्रावास्थिताःप्रभो ॥ सर्वेषांहरिभक्तानांप्रियोभक्तस्तुकोहरेः ॥ एतन्मेब्रूहिविप्रेंद्रत्वंपरावरवित्तमः ॥ ३२ ॥ ॥ परशुरामउवाच ॥ ॥ त्वंप्रभोकिंनजानासिलोकवत्पृच्छसेथमाम् ॥ लोकसंग्रहमेवारात्कुर्वन्विचरसिक्षितौ ॥ ३३ ॥ निष्किंचनोहरिपदाब्जपरागलुब्धःश्रीमत्कथाश्रवणकीर्तनतत्परोयः ॥ तद्रूपसिंधुलहरीविनिमग्नचित्तःश्रीकृष्णचन्द्रदयितःकथितःसभक्तः ॥ ३४ ॥ दांतोमहानखिलजंगमवत्सलोयःशांतस्तितिक्षुरतिकारुणिकःसुहृत्सन् ॥ लोकंपुनातिनिजपादरजोभिरारात्श्रीकृष्णचन्द्रदयितःकथितःपरेश ॥ ३५ ॥ यःपारमेष्ठ्यमखिलंनमहेंद्रधिष्ण्यंनोसार्वभौममनिशंनरसाधिपत्यम् ॥ नोयोगसिद्धिमभितोनपुनर्भवंवावांछत्यलंपरमपादरजःसभक्तः ॥ ३६ ॥

मोते कहो हे विप्रेन्द्र ! तुम परावरवित्तम हो ॥ ३२ ॥ तब परशुरामजी बोले हे प्रभो ! तुम कहा जानो नहीं हो सो लोककी नाईं मोते पूछो हो लोकनकूं सिखायवेके लिये संग्रह करत पृथ्वीमें विचरो हो ॥ ३३ ॥ निष्किंचन होय हरिचरण कमलको भौंरा होय कथाको सुनिवौ नाम कीर्तनमें तत्पर होय ताके रूपसमुद्रकी लहरीमें डूब्यौ जाको चित्त होय सो हरिकौ प्यारौ है ॥ ३४ ॥ इंद्रियनको दमन करनवारौ होय महापुरुष होय सब जीवनपै प्यारकरै शांत तितिक्षु करुणावान् अतिकरुणावान् सुहृत् वह अपने चरणकमलकी रजते भुवनकूं पवित्र करै है सो हरिकूं प्यारौ है ॥ ३५ ॥ जो ब्रह्माके पदकी चक्रवर्ती राज्यकी रसातलकी इन्द्रपदवीकी योगसिद्धिकी मुक्तिकी काहूकी चाहना नहीं करै है ये वाके

चरणरजकूं प्राप्त भयेहैं सो भक्त हरिको प्यारो है ॥ ३६ ॥ वे निष्किंचन कर्मफलकी चाहना नहीं करें हैं वे हरिजन मुनीश्वर महत्पुरुष हरिके चरणरजकूं प्राप्त भयेहैं वेही या पद
रजकूं भोगें हैं और या नैरपेक्ष सुखकूं जानेंहैं तिनसे अन्य जे अभक्त हैं वे या सुखकूं नहीं जानै हैं ॥ ३७ ॥ भक्तते सिवाय प्यारो पुरुषोत्तमकें कोई नहींहै न ब्रह्माजी न शिवजी न
लक्ष्मीजी न संकर्षणजी भक्तनके पीछे पीछे डोलेंहैं भक्तनते बँध्योहै चित्त जिनको सो श्रीकृष्ण सकल लोक जनके चूडामणि हैं ॥३८॥ निज जनके पीछे गमन करत लोकनकूं पवित्र
करैहैं हरि भगवान् अपने जननमें अपनी रुचिको दिखाते विचरैंहैं याहीते अत्यंत भजन करिवेवारेनकूं मुक्ति तो देदेयहैं पर भक्तियोग नहीं देयहैं ॥ ३९ ॥ नारदजी कहेहैं-या प्रकार
सुनिकें प्रद्युम्न परशुरामकूं नमस्कार करिकें पूर्व दिशामें गंगासागरसंगमकूं चले गये ॥४०॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डे नार०भाषाटीकायां द्राविडदेशविजयोनामचतुर्दशोऽध्यायः

निष्किंचनाःस्वकृतकर्मफलैर्विरागायत्तत्पदंहरिजनामुनयोमहांतः ॥ भक्ताजुषंतिहरिपादरजःप्रसक्ताअन्येविदंतिनसुखंकिलनैरपेक्ष्यम् ॥३७॥
भक्तात्प्रियोनविदितःपुरुषोत्तमस्यशंभुर्विधिर्नचरमानचरौहिणेयः ॥ भक्तानतुव्रजतिभक्तनिबद्धचित्तश्चूडामणिःसकललोकजनस्यकृष्णः ॥
॥ ३८ ॥ गच्छन्निजंजनमनुप्रपुनातिलोकानावेदयन्हरिजनेस्वरुचिंमहात्मा ॥ तस्मादतीवभजतांभगवान्मुकुंदोमुक्तिंददातिनकदापिसुभक्ति
योगम् ॥ ३९ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वाययादेवेंद्रोनत्वाश्रीभार्गवोत्तमम् ॥ प्राच्यांदिशिययौराजन्गंगासागरसंगमम् ॥ ४० ॥
इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेद्राविडदेशविजयोनामचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥
दिग्जयस्यमिषेणासौभूभारंहारयन्मुहुः ॥ प्रद्युम्नोभगवान्साक्षादंगदेशंततोययौ ॥ १ ॥ अंगेशोंतःपुराधीशोगृहीतोयादवैर्वने ॥ सोपितस्मैब
लिंप्रादात्प्रद्युम्नायमहात्मने ॥ २ ॥ उड्डीशडामराधीशोबृहद्बाहुर्महाबलः ॥ नददौसबलिंतस्मैप्रद्युम्नायमदोत्कटः ॥ ३ ॥ प्रद्युम्नप्रेषितोवीरः
सांबोजांबवतीसुतः ॥ एकाकीप्रययौधन्वीरथेनादित्यवर्चसा ॥ ४ ॥ छादयामासबाणौघैर्डामरंनगरंनृप ॥ गिरिंतुषारपटलैर्जीमूतइवसर्वतः ॥
॥ ५ ॥ तदातुडामराधीशोधर्षितःसन्कृतांजलिः ॥ बलिंददौनमस्कृत्यप्रद्युम्नायमहात्मने ॥ ६ ॥ वङ्गदेशाधिपोवीरोवीरधन्वामदोत्कटः ॥
आययौसंमुखेयोद्धुमक्षौहिण्यावृतोबली ॥ ७ ॥ चन्द्रभानुर्हरेःपुत्रःप्रद्युम्नस्यप्रपश्यतः ॥ बिभेदतद्बलंबाणैःकुवाक्यैर्मित्रतामिव ॥ ८ ॥

॥१४॥ नारदजी कहेहैं कि, या प्रकार दिग्विजयके मिष करिके बारंवार पृथ्वीको भार उतारते प्रद्युम्न भगवान् तदनंतर अंगदेशकूं चलेगये ॥१॥ अंग देशको अधीश यादवननें वनमें
पकरलीनों सो आपके प्रद्युम्नकूं बलि देतभयो ॥ २ ॥ उड्डीश डामर देशको मालिक बृहद्बाहु महाबली वह मदोत्कट प्रद्युम्नकूं बलि नहीं देतोभयो ॥ ३ ॥ तब प्रद्युम्नको प्रेरयोभयो
सांब जांबवतीको बेटा इकलोही सूर्यकोसो तेज ता रथमें बैठके धनुषधारी जातभयो ॥ ४ ॥ सो हे नृप ! ये अपने बाणनके समूह करके डामर नगरकूं ढक देतभयो जैसें घन तुषा
रपटलनते चारों ओरते पर्वतको ढके है ॥५॥ तबही डामराधीश धर्षित हैके हाथ जोड़ प्रद्युम्नकूं बलि दैके दंडवत करतोभयो॥६॥फिर वंगदेशको राजा वीरधन्वा मदोत्कट बडो बली
एक अक्षौहिणी सेना लैकें सन्मुख हैकें युद्धकूं आयो ॥७॥ तब चन्द्रभानु हरिको बेटा प्रद्युम्नके देखत२ अपने बाणनकरके ताकी सेनाकूं बेधतो भयो कुवाक्यनते मित्रताकूं जैसें बेधें हैं॥८॥

बाणते कटे जे हाथीनके शिर तिनते गिरे जे मोती ते झलकते भूमिमें परे ऐसे लगें रात्रिमें खिले तारागण जैसे ॥ ९ ॥ अनेक रथी, अनेक घोडा, अनेक हाथी अनेक प्यादे ताके बाणनके मारे शिर कटकटके पेठेकेसे टूक परनलगे ॥ १० ॥ क्षणमात्रमेंही सेनाके घावनके निकसे रुधिरकी नदी बहनलगी जे मनस्वीनकूं हर्षकरी है कायरनकूं भयकरी है ॥ ११ ॥ उडे डोले कबंधन करके मूंडन करके हार, केयूर, कुंडलन करके किरीट, कंकण, शस्त्रन करके महामारीसी पृथ्वी शोभित होतभई ॥ १२ ॥ तहां कूष्मांड, उन्माद, वेताल, भैरव, ब्रह्मराक्षस ये सब महादेवजीकी रुंडमाला बनायवेके लिये बडे बडे वीरनके मुंडनको लेने लगे ॥ १३ ॥ ऐसे जब सब सेना मारीगई तब वीरधन्वा आयो तब शीघ्रही वज्रके तुल्य गदा लेके चन्द्रभानुके मारतोभयो ॥ १४ ॥ गदाके प्रहारके मारे चन्द्रभानु नेकहू चलायमान न भयो फिर चन्द्रभानु गदा लैके वीरधन्वाकूं भुजांतरमें मारतोभयो ॥ १५ ॥ तब

करिणांबाणभिन्नानांशिरसोमौक्तिकानिच ॥ प्रस्फुरंतिनिपेतुःक्वौरात्रौतारागणाइव ॥ ९ ॥ निपेतूरथिनोनेकागजाश्वाश्वपदातयः ॥ तद्बाणैश्छिन्नशिरसःकूष्मांडशकलाइव ॥ १० ॥ क्षणमात्रेणतत्सैन्यक्षतजानांनदीह्यभूत् ॥ मनस्विनांहर्षकरीत्रस्तानांभयकारिणी ॥ ॥ ११ ॥ मुण्डैःकबन्धैर्धावद्भिर्हारकेयूरकुंडलैः ॥ किरीटैःकङ्कणैःशस्त्रैर्महामारीवभूर्बभौ ॥ १२ ॥ कूष्मांडोन्मादवेतालभैरवाब्रह्मराक्षसाः ॥ शिरांसिजगृहुर्वेगाद्रुद्रमालार्थहेतवे ॥ १३ ॥ इत्थंनिपातितेसैन्येवीरधन्वासमागतः ॥ चन्द्रभानुंतताडाशुगदयावज्रकल्पया ॥ १४ ॥ तद्गदातिप्रहारेणनचचालहरेःसुतः ॥ चंद्रभानुर्गदांनीत्वातंतताडभुजांतरे ॥ १५ ॥ गदाप्रहारव्यथितोमूर्च्छितोधरणीतले ॥ पपातपाद पइवप्रोद्गमन्नुधिरंमुखात् ॥ १६ ॥ लब्धसंज्ञोमुहूर्तेनवंगदेशाधिपोनृपः ॥ प्रययौशरणंसोपिप्रद्युम्नस्यमहात्मनः ॥ १७ ॥ यातेदत्तबलौराजन्न गरंवीरधन्वनि ॥ ब्रह्मपुत्रंसमुत्तीर्यप्रद्युम्नोमितविक्रमः ॥ १८ ॥ आशीमाधिपतिंबिम्बंगृहीत्वायादवेश्वरः ॥ बलिमादाययदुभिःकामरूपंस मासयौ ॥ १९ ॥ कामरूपेश्वरःपुंड्रऐंद्रजालविशारदः ॥ निर्गतःसेनयासार्द्धंयोद्धुंप्रद्युम्नसंमुखे ॥ २० ॥ आशीमानांयदूनांचघोरंयुद्धंबभूवह ॥ बाणैःकुठारैःपरिघैःशूलैःखड्गर्ष्टिशक्तिभिः ॥ २१ ॥ पुण्ड्रोविद्याश्चकाराशुपैशाचोरगराक्षसीः ॥ ततोगुह्यकगंधर्वाःसर्वतोमैथिलेश्वर ॥ ॥ २२ ॥ प्रधावंतोरणेराजन्पिशाचाःपिशिताशनाः ॥ कोटिशःकोटिशोंगारान्क्षेपयंतोमुहुर्मुहुः ॥ २३ ॥

पै वीरधन्वा चंद्रभानुकी गदाके प्रहार करके मूर्च्छित हैके मुखते रुधिर वमन करतो पेड़सो जायपर्यो ॥ १६ ॥ जब एक मुहूर्तमें याकी संज्ञा जगदी तब ये वंगदेशको राजाहू महात्मा प्रद्युम्नकी शरण आयो ॥ १७ ॥ जब पै बलि दैके वीरधन्वा अपने नगरकूं चलोगयो तब ब्रह्मपुत्र नामके नदकूं उतरिके अमित पराक्रमी प्रद्युम्न ॥ १८ ॥ फिर आशीमको राजा बिम्ब ताकूं पकरिके भेट लैके यदुपति यादवनसहित कामरू देशकूं चल्यो गयो ॥ १९ ॥ कामरूको राजा पुंड्र इंद्रजालमें चतुर सेना लैके प्रद्युम्नके सन्मुख युद्ध करिवेकूं आयो ॥ २० ॥ तब बाण, कुठार, बडे त्रिशूल, खड्ग, पोलादी बरछी इनते आशीमनको और यादवनको बडो युद्ध होतोभयो ॥ २१ ॥ तब पौंड्र राजानें पिशाची, सार्पी, राक्षसी बडी २ माया करी तब तो हे मैथिलेश्वर! गुह्यक गंधर्व सब ओरते ॥ २२ ॥ निकसि २ आमनलगे मांसके खानहारे किरोड़न पिशाच वारम्बार अंगार फेंकनलगे ॥ २३ ॥

एकही क्षणमें सब सेना विषको वमन करनलगी सर्प आयगये फुंकार मारनलगे ॥ २४ ॥ फिर राक्षस आये गधानपै चढे टेढे दांत जीभ जिनकी लटक रहीहैं वेड भयंकर युद्धमें नरनकूं
चर्वन करत इत वितमें धावें हैं ॥ २५ ॥ नाहरके मुखके यक्ष आये, कोई घोडाके मुखके त्रिशूल लीये छेदलेउ भेदलेउ ऐसें गर्जेहैं ॥ २६ ॥ एकही क्षणमें मेघनते आकाश भरगयो
पवनते उडी जो रज तातें आकाशमें अंधकार हैगयो ॥ २७ ॥ भोज, वृष्णि, अंधक, मधु, शूरसेन, दशार्हक ये सब यादवनमें उत्तम भयभीत हैगये शस्त्र डारदीने ॥ २८ ॥ तब
कृष्णको दीयो धनुष प्रद्युम्न लैके प्रतिकार करनलग्यो, हे मैथिल! वैष्णवी सत्वात्मिका नामकी जो माया है ताहि बाणनमें जोड़के चलाई ॥ २९ ॥ बाणन करके पिशाचनकूं, उर
गनकूं, यक्षनकूं, राक्षसनकूं, गन्धर्वनकूं, अंधकारकूं दिव्य प्रभाव बाणनतें सबकूं नाश करतभये जैसे किरणनते सूर्य कुहरके मेघनकूं नाश करैहै ॥ ३० ॥ बाणन करके पुण्ड्र राजाकूं

क्षणमात्रेणतत्सैन्यंववमंतोगरलंमुखात् ॥ फूत्कारमपिकुर्वंतोदंतशूकाःसमागताः ॥२४॥ खरारूढादंतवकाललज्जिह्वाभयंकराः ॥ चर्वयंतोनरा
न्युद्धेधावंतोराक्षसास्ततः ॥२५॥ यक्षाश्चसिंहवदनातुरंगवदनानृप ॥ छिंधिभिंधीतिगर्जंतःशूलहस्ताइतस्ततः ॥ २६ ॥ क्षणमात्रेणमेघानांस
मूहैश्छादितंनभः ॥ अन्धकारोह्यभूद्राजन्नजसावातवेगतः ॥ २७ ॥ भोजवृष्ण्यंधकमधुशूरसेनदशार्हकाः ॥ भयंप्रापुर्महायुद्धेन्यस्तशस्त्रायदूत्त
माः ॥ २८ ॥ कृष्णदत्तंधनुःकार्ष्णिरादायप्रतिकारवित् ॥ सत्त्वात्मिकांमहाविद्यांवाणैःप्रायुंक्तमैथिल ॥२९॥ बाणैःपिशाचानुरगान्सयक्षान्र
क्षांसिगन्धर्वघनांधकारान् ॥ बिभेददिव्यैःप्रभवैर्यथाहिनीहारमेघान्किरणैर्विवस्वान् ॥ ३० ॥ बाणैश्चपुण्ड्रंसरथंसवाहनंतंभ्रामयित्वाघटिका
द्वयंखे ॥ निपातयामासरणेसपत्नंपद्मंपृथिव्यामिवमारुतःकिल ॥३१॥ वुद्धस्तदातंशरणंसमेत्यप्रधर्षितःसद्यउपायनानि ॥ लक्षैर्हयानामयुतैर्ग
जानांयुतानिदत्त्वाप्रणनामकार्ष्णिम् ॥ ३२ ॥ विपाशांसतदोत्तीर्यसैन्यैःशोणनदंनृप ॥ कैकयानाययौधन्वीप्रद्युम्नोयदुनन्दनः ॥३३॥ कैकय
स्याधिपोराजाधृतकेतुर्महाबलः ॥ वसुदेवस्वसुःसाक्षाच्छ्रुतकीर्तेःपतिर्महान् ॥ ३४ ॥ प्रद्युम्नमर्हयामासधृतकेतुःसयादवम् ॥ भक्त्यापरमयारा
जन्श्रीकृष्णस्यप्रभाववित् ॥ ३५ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेकैकयविजयोनामपञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥
॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ दुंदुभीन्नादयंस्तस्मात्प्रद्युम्नोयदुनन्दनः ॥ मैथिलानाययौराजंस्तवदेशान्सुखावृतान् ॥ १ ॥

रथ घोडानसमेत दो घड़ी भ्रमायके रणमें पटक देतभयो जैसे पवन कमलके फूलकूं पटके है ॥ ३१ ॥ जब प्रबोध भयो तब आयके भेंट देतभयो लाख घोडा, दश हजार हाथी देके
पुंड्र राजा प्रद्युम्नकूं नमस्कार करतभयो ॥३२॥ फिर विपाशा नदीकूं, शोनभद्र, नदकूं सेनासहित उतारिके यदुनन्दन प्रद्युम्न कैकय देशकूं चल्योगयो ॥ ३३ ॥ कैकय देशको राजा धृष्ट
केतु महाबली श्रुतकीर्ति वसुदेवकी बहनको पति ॥३४॥ श्रीकृष्णके प्रेमभावका जाननवारो सेनासहित प्रद्युम्नको बडो सत्कार करतभयो ॥३५॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खण्डे
भाषाटीकायां कैकयविजयो नाम पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ तदांतै नगाडे बजावत सुखावृत यदुनंदन प्रद्युम्न जे तुमारे मैथिल देश हैं तिन देशनमें आवतोभयो ॥ १ ॥

सुवर्णके महल बड़े ऊंचे कलशादार तिनतें शोभित या मिथिलापुरीकूं देखिकें प्रद्युम्न उद्धवतें ये बोले ॥ २ ॥ हे मानद मंत्रीजी ! यह मेरे सन्मुख कौनकी पुरी दीखे है जो बहुत महलनतें शोभित है जैसी भोगवती नागनकी पुरी होय ॥ ३ ॥ तब उद्धवजी बोले कि, हे मानद ! यह जनक राजाकी मिथिलापुरी है धृति नाम करिकें या पुरीको राजा है ये महाभागवत है ज्ञानी है सो विराजैहै ॥४॥ सर्व धर्मधारीनमें श्रेष्ठ है श्रीकृष्णको इष्टी हरिको प्यारो है ताको बेटा बहुलाश्व है जो बालकपनेतें हरिको भक्तहै ॥५॥ ताकूं अपनों दर्शन देवेकूं भगवान् आप आमेंगे बहुलाश्वकूं राजपुत्रकूं और श्रुतदेव ब्राह्मणकूं ॥ ६ ॥ द्वारकामें श्रीकृष्ण भगवान् इनकी अत्यन्त याद करयौ करहें देवेंद्रह वाहि जीत नहीं सकै मनुष्यनकी तो कहा कथा है ॥ ७ ॥ यह धृति राजा परम भक्ति करिकें श्रीकृष्णको वश करिवेवारो है, नारदजी कहैहें—ताकूं सुनिकें भगवान प्रद्युम्न उद्धवजीकूं संग लके अपनों

सुवर्णसौधैरत्युच्चैःसघटैराजितांपुरीम् ॥ मिथिलांवीक्ष्यतामारादुद्धवंप्राहमाधवः ॥ २ ॥ ॥ प्रद्युम्नउवाच ॥ ॥ कस्यैपानगरीमंत्रिन्दृश्यतेसां प्रतंमया ॥ राजतेवहुसौधैश्चपुरीभोगवतीयथा ॥ ३ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ जनकस्यपुरीह्येपामिथिलानाममानद ॥ मिथिलेंद्रोधृतिस्त स्यांमहाभागवतःकविः ॥४॥ सर्वधर्मभृतांश्रेष्ठःश्रीकृष्णेष्टोहरिप्रियः ॥ वहुलाश्वस्तस्यसुतआबाल्याद्भक्तिकृद्धरेः ॥ ५ ॥ तस्मैस्वंदर्शनंदातुंभ गवानागमिष्यति ॥ वहुलाश्वंराजपुत्रंश्रुतदेवंद्विजंतथा ॥ ६ ॥ स्मरत्यलंद्वारकायांश्रीकृष्णोभगवान्हरिः ॥ जेतुंनशक्योदेवेंद्रैर्मनुजैश्चकु तःप्रभो ॥ ७ ॥ धृतिःपरमयाभक्त्याश्रीकृष्णवशकारकः ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ तच्छ्रुत्वाभगवान्कार्ष्णिरुद्धवेनसमन्वितः ॥ स्वशि ष्यमुद्धवंकृत्वाधृतिंद्रष्टुंसमाययौ ॥ ८ ॥ भक्तेरेवपरीक्षाहिकर्तुंतस्यनृपस्यच ॥ ददर्शमिथिलांकार्ष्णिरुद्धवेनसमन्वितः ॥ ९ ॥ चर्मशस्त्रधृ तावीरामालातिलकशोभिताः ॥ जपंतःकृष्णनामानिसर्वेवैयत्रमालया ॥ १० ॥ लिखितानिचनामानिद्वारिद्वारिहरेर्नृणाम् ॥ तथाश्रीकृ ष्णचित्राणिलिखितानिशुभानिच ॥ ११ ॥ कुड्येकुड्येगृहाणांचगदापद्मानिमानद ॥ दशावतारचित्राणिशंखचक्राणियत्रवै ॥ १२ ॥ तुलसीमंदिराणीत्थंप्रांगणेचगृहेगृहे ॥ एवंपश्यन्ससौधानिमिथिलायांजनान्बहून् ॥ १३ ॥ मालातिलकसंयुक्तान्सर्वान्भक्तान्ददर्शह ॥ तिल कैर्द्वादशाख्यैश्चयुक्तैःकुंकुमजैर्वृतान् ॥ १४ ॥ गोपीचंदनमुद्राभिश्चर्चितान्शांतविग्रहान् ॥ ऊर्ध्वपुंड्रधरान्विप्रान्हरिमंदिरचिन्हितान् ॥१५॥

शिष्य बनायकें धृति राजाकूं देखिवेकूं आये ॥ ८ ॥ ता राजाकी भक्तिकी परीक्षा करिवेकूं उद्धवसहित प्रद्युम्न मिथिलापुरीकूं देखतेभये उद्धवकूं शिष्य बनायौ आप ब्रह्मचारी बने ॥ ९ ॥ जाके निवासी सब वीर चर्मके शस्त्रनको बांधे हैं और माला तिलक धारण करे हैं सबरेही यहां माला लिये कृष्णके नाम जपे हैं॥ १० ॥ और जाके द्वार द्वारपै हरिके नाम लिखे है और तैसेही श्रीकृष्णके शुभ चित्र लिखेहै॥ ११ ॥ घरनकी भीत भीतपै गदा, पद्म, शंख, चक्र और दशावतारनके चित्र लिखेहैं॥ १२ ॥ आंगण २ और घर घरमें तुलसीके मंदिर बनेहैं तिन महलनके बहुतसे जनननकूं देखत २ मिथिलामें गये ॥ १३ ॥ जे माला तिलक धरे सब भक्त हैं जिनके केसरके बारह बारह तिलक लगेहै ॥ १४ ॥ गोपीचन्दनके छापेनते चर्चित शांतिस्वरूप ऊर्ध्वपुंड्र

॥२

धारी ब्राह्मण हरिमन्दिरनतें चिते ॥ १५ ॥ ऊर्द्धपुंड्र गदाकी मुद्राको जे ललाटमें धारण करैंहैं और हरिके नाम, शंख, चक्र, पद्म, मत्स्य, कूर्म दोनों भुजानपे धारण करैंहैं ॥१६॥ कोई धनुष बाणको शिरपे और हृदयमें नंदक, हल, मुसल धरैंहैं तिने प्रद्युम्न देखतोभयो ॥ १७ ॥ काहू गलीमें भागवत सुनैहैं काहूमें महाभारत इतिहास हरिवंश सुनैहैं ॥ ॥ १८ ॥ काहूमें सनत्कुमारसंहिता, वसिष्ठसंहिता, याज्ञवल्क्यसंहिता, पराशरसंहिता, गर्गसंहिता, पुलस्त्यसंहिता, धर्मसंहिता पढैहैं सुनैहैं ॥ १९ ॥ कहीं ब्रह्मपुराण १, पद्मपुराण २, विष्णुपुराण ३, शिवपुराण ४, लिंगपुराण ५, गरुडपुराण ६, नारदपुराण ७, भागवतपुराण ८, अग्निपुराण ९, स्कंदपुराण १० ॥ २० ॥ भविष्य पुराण ११, ब्रह्मवैवर्तपुराण १२, मार्कंडेयपुराण १३, वामनपुराण १४ वाराहपुराण १५, मत्स्यपुराण १६, कूर्मपुराण १७ और ब्रह्मांडपुराण १८ इन अठारह पुराणनकूं

गदांमुद्रांललाटेचऊर्ध्ववाहरिनामतः ॥ चक्रंशंखंचकमलकूर्ममत्स्यंभुजद्वये ॥१६॥ दधतश्चधनुर्बाणंमूर्ध्निश्रीनन्दकंहृदि ॥ मुसलंचहलंराज ग्रथकार्ष्णिर्ददर्शह ॥ १७ ॥ तस्यांवीथ्यांभागवतंकेचिच्छृण्वन्तिमानवाः ॥ इतिहासंभारतंचहरिवंशंतथापरे ॥ १८ ॥ सनत्कुमारवासिष्ठया ज्ञवल्क्यपराशराः ॥ गर्गपौलस्त्यधर्मादिसंहिताःकेपठंतिवै ॥ १९ ॥ ब्राह्मंपाद्मंवैष्णवंचशैवंलैंगंसगारुडम् ॥ नारदीयंभागवतमाग्नेयंस्कंदसं ज्ञितम् ॥ २० ॥ भविष्यंब्रह्मवैवर्तंमार्कण्डेयंसवामनम् ॥ वाराहमात्स्यकौर्माणिब्रह्मांडाख्यंतथैवच ॥ २१ ॥ वीथ्यांवीथ्यांस्मशृण्वंतिजनाः सर्वेगृहेगृहे ॥ वाल्मीकिकाव्यंकेचिद्वैश्रीरामचरितामृतम ॥ २२ ॥ स्मृतीःपठंतिकेचिद्वैकेचिद्वेदत्रयींद्विजाः ॥ केचित्कुर्वंतियज्ञंवैवैष्णवंमंगला यनम् ॥ २३ ॥ राधाकृष्णेतिकृष्णेतिकेवदंतिमुहुर्मुहुः ॥ केचिन्नृत्यंतिगायंतिहरिकीर्तनतत्पराः ॥ २४ ॥ मृदंगतालवादित्रैःकांस्यवीणामनो हरैः ॥ मंदिरेमंदिरेविष्णोःकीर्तनंश्रूयतेजनैः ॥ २५ ॥ नवलक्षणसंयुक्तांभक्तिंचप्रेमलक्षणाम् ॥ कुर्वंतिमैथिलाराजन्मिथिलायांगृहेगृहे ॥ ॥ २६ ॥ एवंतुनगरींदृष्ट्वाप्रद्युम्नोभगवान्हरिः ॥ राजद्वारंसमेत्याशुमैथिलेशंददर्शह ॥ २७ ॥ मैथिलेशसभायांतुवेदव्यासःशुकोमुनिः ॥ याज्ञवल्क्योवसिष्ठश्चगौतमोहंबृहस्पतिः ॥ २८ ॥ अन्येचमुनयस्तत्रवेदमूर्तिधराइव ॥ दृश्यंतेधर्मवक्तारोहरिनिष्ठाइतस्ततः ॥ २९ ॥ मैथिलेंद्रधृतिस्तत्रभक्तिभावनताननः ॥ बलस्यपादुकापूजांकुरुतेविधिवन्नृप ॥ ३० ॥

सुनैहै ॥ २१ ॥ गली गलीमें घर घरमें वाल्मीकीय रामायण रामचरित्रनकूं सबही मनुष्य पढैहैं सुनैहैं ॥ २२ ॥ कोई द्विज स्मृति पढैहैं, कोई वेदत्रयी पढैहैं, कोई मंगलायन, वैष्णवयज्ञ करैंहैं ॥ २३ ॥ कोई राधाकृष्ण २ या मन्त्रकूं वारंवार जपैहैं, कोई गावैहैं, कोई नाचैहैं और कोई हरिकीर्तनमें तत्पर ॥ २४ ॥ मृदंग, झांझ, मँजीरा, वीणा, सितार मनोहर बाजे बजाय मंदिरमें हरिको कीर्तन कररहेहैं ॥ २५ ॥ नव लक्षणा भक्ति सहित प्रेमलक्षणा भक्तिकूं मैथिलजन मिथिलापुरीमें घर २ में करैंहैं ॥ २६ ॥ या प्रकारकी नगरीको प्रद्युम्न भगवान् देखके राजद्वारपै जायके मिथिलेशकूं देखतभये ॥ २७ ॥ मिथिलेशकी सभामें वेदव्यास, शुकदेवजी, याज्ञवल्क्य, वशिष्ठ, गौतम, नारद, बृहस्पति ये बैठेहैं ॥ २८ ॥ औरहू मुनीश्वर वेदमूर्तिके धारण करनहारे धर्मके वक्ता हरिनिष्ठ इत उतमे दीखैहैं ॥ २९ ॥ हे मैथिलेन्द्र ! जहाँ धृति नामको राजा भक्तिभावनामें तत्पर बल

देवजीकी पादुकाको विधिपूर्वक पूजन करत्यो है ॥ ३० ॥ मुक्तिके करवेवारे कृष्ण बलदेवके नामकूं जपैंहो सो शिष्यसहित ब्रह्मचारीको आयो देखके उठके ठाडो भयो नमस्कार करतोभयो ॥ ३१ ॥ हे मैथिलेश्वर ! पाद्य, अर्घादिकनतें वाको पूजन करके हाथ जोड ठाढो होतभयो तब ब्रह्मचारीसो-ये राजा यह वचन बोल्यो ॥ ३२ ॥ कि, आज मेरो जन्म सफल भयो, आज मेरो मंदिर विशद भयो, देव, ऋषि, पितर सब आपके आयवेते प्रसन्न भये ॥ ३३ ॥ निर्विकल्प समदृष्टी तुमसरीके साधु पृथ्वीपै हम सरीके गृहस्थी दीननपै कृपा करिवेके लियेंही विचरैंहै ॥ ३४ ॥ तब ब्रह्मचारी बोले कि, हे नृपशार्दूल ! तुम धन्यहो तुम्हारी मिथिलापुरी धन्य है तुम्हारी प्रजा सब धन्य है जा तुम्हारी प्रजाके ऐसी विष्णुकी भक्ति है ॥ ३५ ॥ तब जनक बोले-यह नगरी मेरी नगरी नहीं है न मेरी प्रजा है न गृह है स्त्री पुत्र पौत्र ये सब श्रीकृष्णकोही है मेरो यामें कछूभी नहीं

जपन्मुक्तिकरंनामश्रीकृष्णबलदेवयोः ॥ दृष्ट्वोत्थायनमश्चक्रेसशिष्यंब्रह्मचारिणम् ॥ ३१ ॥ तंपूजयित्वाविधिवत्पाद्याद्यैर्मैथिलेश्वरः ॥
कृतांजलिपुटोराजातदग्रेचास्थितोभवत् ॥ ३२ ॥ ॥ जनकउवाच ॥ ॥ अद्यमेसफलंजन्ममंदिरंविशदीकृतम् ॥ देवर्षिपितरःसर्वेसंतुष्टा
आगतेत्वयि ॥ ३३ ॥ निर्विकल्पाःसमदृशस्त्वादृशाःसाधवःक्षितौ ॥ निःश्रेयसायभगवन्दीनानांविचरंतिहि ॥ ३४ ॥ ॥ ब्रह्मचार्य्यु
वाच ॥ ॥ धन्योसिराजशार्दूलधन्यातेमिथिलापुरी ॥ धन्याःप्रजाश्चतेसर्वाविष्णुभक्तिसमन्विताः ॥ ३५ ॥ ॥ जनकउवाच ॥ ॥
ममेयंनगरीनास्तिनप्रजानगृहंधनम् ॥ कलत्रपुत्रपौत्रादिसर्वंकृष्णस्यचैवहि ॥ ३६ ॥ परिपूर्णतमःसाक्षाच्छ्रीकृष्णोभगवान्स्वयम् ॥ असंख्य
ब्रह्मांडपतिर्गोलोकेधाम्निराजते ॥ ३७ ॥ वासुदेवःसंकर्षणःप्रद्युम्नःपुरुषःस्वयम् ॥ अनिरुद्धस्तथाचैकश्चतुर्व्यूहोभवत्क्षितौ ॥ ३८ ॥ काये
नमनसावाचाबुद्ध्याचेंद्रियैःकृतम् ॥ तस्मैसमर्पितंशौक्ल्यंमयाब्रह्मन्महामुने ॥ ३९ ॥ ॥ श्रीब्रह्मचार्य्युवाच ॥ ॥ हेवैदेहमहाभागवि
ष्णुभक्तिमतांवर ॥ त्वद्भक्त्यातोषितःकृष्णस्तवैकत्वंप्रदास्यति ॥ ४० ॥ ॥ जनकउवाच ॥ ॥ दासोहंकृष्णभक्तानांत्वादृशानांमहात्म
नाम् ॥ मुक्तिनेच्छामिहेब्रह्मन्नेकताहेतुवर्जितः ॥ ४१ ॥ ॥ ब्रह्मचार्युवाच ॥ ॥ करोष्यहेतुकींभक्तिंराजंस्त्वंहेतुवर्जितः ॥ निर्गुणेभक्तिभा
वैश्चप्रेमलक्षणसंयुतः ॥ ४२ ॥

है ॥ ३६ ॥ परिपूर्णतम साक्षात् श्रीकृष्ण स्वयं भगवान् है असंख्य ब्रह्मांडपति गोलोकमें विराजैंहै ॥ ३७ ॥ जो वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध यह चतुर्व्यूह पृथ्वीमें भयेहैं ॥ ३८ ॥ कायातें, मनतें, वाणीतें, बुद्धितें, इंद्रीनतें जो कछू करत्योहै ताको मोल मैंने हे ब्रह्मन् ! सब श्रीकृष्णकूं अर्पण कर्योहै ॥ ३९ ॥ तब ब्रह्मचारी बोले-हे वैदेह ! हे महाभाग ! हे विष्णुभक्तनमें श्रेष्ठ ! तेरी भक्तिते प्रसन्न श्रीकृष्ण तोकूं अपने रूपमें मिलामेंगे ॥ ४० ॥ जनक कहेहैं कि, तुम सरीके कृष्णभक्त महात्मानको मैं दास हूं मैं मुक्ति और ऐक्यताहूकी इच्छा नहीं करूंहूं ॥ ४१ ॥ तब ब्रह्मचारी बोले-हे राजन् ! तुम अहेतुकी भक्ति करौहो, निर्गुण जे भक्तिके भाव है तिन करके प्रेमलक्षणयुक्त हो ॥ ४२ ॥

प्रद्युम्न साक्षात् दिग्विजयके अर्थ निकसे हैं वे तुम्हारे घरमें नहीं आये हैं सो यह बड़ो संदेह है ॥ ४३ ॥ तब जनक बोले कि, प्रद्युम्न भगवान् साक्षात् अन्तर्यामी हैं सर्वत्र रहैहैं सब जानैहैं सो हे प्रभो ! कहा वे यहां नहीं हैं ॥ ४४ ॥ तब ब्रह्मचारी बोले कि, जो ज्ञानदृष्टिते प्रद्युम्नको सर्वत्र निरन्तर मानोहो तौ प्रह्लादकी नाई हमें प्रत्यक्ष दिखायदेउ ॥ ४५ ॥ नारदजी कहैहैं या बातकूं सुनके महाभागवत राजा धृति अश्रुपूर्णमुख ह्वैके गद्गद वाणीते बोल्यो ॥ ४६ ॥ जो मैंने निष्काम हरिकी भक्ति करीहै तो प्रद्युम्न भगवान् मेरे आगे साक्षात् प्रकट होउ ॥ ४७ ॥ जो मैं श्रीकृष्णके भक्तनको दास हूं और जो मोपै हरिकी कृपा है सर्वत्र मेरो भाव है तो मेरो मनोरथ होउ ॥ ४८ ॥ नारदजी कहैहैं

प्रद्युम्नोभगवान्साक्षाद्दिग्जयार्थविनिर्गतः ॥ नायातस्तवगेहेषुसंदेहोमेमहानभूत् ॥४३॥ जनकउवाच ॥ ॥ प्रद्युम्नोभगवान्साक्षादंतर्यामीहरिः स्वयम्॥सर्वगःसर्वविच्छश्वदत्रनास्तिचकिंप्रभो ॥ ४४ ॥ ॥ ब्रह्मचार्युवाच ॥ ॥ ज्ञानदृष्ट्यापिचेत्कार्ष्णिमन्यसेत्रनिरंतरम् ॥ तर्हिदर्शयतंदेवं प्रह्लादइवदिव्यदृक् ॥ ४५ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ एतच्छ्रुत्वातदाराजामहाभागवतोधृतिः ॥ अश्रुपूर्णमुखोभूत्वाप्राहगद्गदयागिरा ॥४६॥ ॥ ॥ जनकउवाच ॥ ॥ यदिमेश्रीहरेर्भक्तिरनिमित्ताकृताभुवि ॥ तर्हिकार्ष्णिर्हरेःपुत्रःप्रादुर्भूयान्ममाग्रतः ॥ ४७ ॥ यदिश्रीकृष्णभक्तानांदासो हंयदितत्कृपा ॥ सर्वत्रयदितद्भावस्तर्हिभूयान्मनोरथः ॥४८॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ प्रादुर्बभूवाशुतदैवकार्ष्णिर्विसृज्यसद्यःकिलवर्णरूपम् ॥ पश्यत्सुसर्वेषुजनेषुशिष्यःसगद्गदोभूद्धरिभक्तिनिष्ठः ॥ ४९ ॥ घनप्रभंपद्मदलायतेक्षणंप्रलंबबाहुंजगतांमनोहरम् ॥ पीतांबरंनीलगुडालकालिभिःस्वलंकृतंश्रीमुखपद्ममंडलम् ॥ ५० ॥ शीतर्तुबालार्ककिरीटकुंडलंकांच्यंगदस्फूर्जितदिव्यविग्रहम् ॥ विलोक्यतंकृष्णसुतंकृतांजलिर्ननामसाष्टांगमलंधृतिर्नृपः ॥५१॥ ॥ जनकउवाच ॥ ॥ अहोतिधन्यंममभूरिभाग्यंदत्तंत्वयामेनिजदर्शनंहि ॥ जातोद्यकायाधवतुल्यआराद्भवंकृतार्थोस्मिकुलेनभूमन् ॥५२॥ ॥ श्रीप्रद्युम्नउवाच ॥ ॥ धन्यस्त्वंनृपशार्दूलभक्तस्त्वंमत्प्रभाववित् ॥ भक्तिभावपरीक्षार्थंप्राप्तोहंतवसांप्रतम् ॥ ५३ ॥ अद्यैवममसारूप्यंभूयात्तेमैथिलेश्वर ॥ बलमायुर्यशःकीर्तिरिहलोकेभवत्वलम् ॥ ५४ ॥

तब कृष्णके पुत्र प्रकट होतभये वर्ण रूपकूं छोड़के सब जननके देखत २ तब हरिभक्तिनिष्ठ शिष्य सगद्गद ह्वैगयो ॥ ४९ ॥ श्यामसुन्दर कमलसे नेत्र बड़ी भुजा जगतकूँ मनोहर पीताम्बर धरे नीली अलकावलीसे शोभायमान मुखकमल जिनको ॥ ५० ॥ शीत ऋतुको बालसूर्य जैसोहै किरीट, कुंडल जिनके कौंधनी, बाजू, नूपुर तिनते ऊर्जित विग्रह जिनको तिन्हें देखि हाथ जोड़ साष्टांग नमस्कार करतो राजा यह बोले ॥ ५१ ॥ अहो ! मेरो अति धन्य भाग्य है जो आपने मोकूँ दर्शन दीनों सद्यही आपने मोकूँ प्रह्लादकी तुल्य करिदीनो, हे भूमन् ! या कुल करिके कृतार्थ ह्वैगयो ॥ ५२ ॥ तब प्रद्युम्न बोले—हे नृपशार्दूल ! तूं धन्य है तेरे भक्तिभावकी परीक्षाके अर्थ मैं प्राप्त भयोहूं ॥५३॥ अबही मेरी सारूप्यता

तोकूँ होय और हे मैथिलेश्वर ! या लोकमें बल, आयु, कीर्ति, अतिशय यश होउ ॥ ५४ ॥ नारदजी कहेहैं–हे राजन् ! तेरो पिता जो धृति ताने पूजे ऐसे जो भक्तवत्सल
प्रद्युम्न सो सबनके देखत २ अपने डेरानकूं चलेगये ॥५५॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटीकायां जनकोपाख्यानं नाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ नारदजी कहेहैं कि,
फिर याके अनन्तर मीनध्वज प्रद्युम्न मगध देशके जीतिबेकूं सेना लैके गिरिव्रजकूं जातभये ॥ १ ॥ श्रीकृष्णको बेटा दिग्विजयके लिये आयोहै यह सुनके जरासन्धने बडो कोप कीनों ॥ २ ॥
जरासंध बोल्यो–जे यादव बडे तुच्छ हैं युद्धमें विक्लवचित्त हैं ते निर्बुद्धि पृथ्वीकूं जीतिबेकूं निकसेहैं ॥ ३ ॥ जाको पिता दुरात्मा वह माधव मेरे डरके मारे मथुराकूं छोड
समुद्रमें जायके दुबक्यो है ॥ ४ ॥ मैंने अपने बलते प्रवर्षण पर्वतमें कृष्ण बलदेव दोनों भस्म करदीने छलते दुबकके निकसआये द्वारकामें चलेगये ॥ ५ ॥ मैं इन दोनोंनकूं

॥ ॥ नारद उवाच ॥ ॥ तत्रपित्राचधृतिनापूजितःपश्यतांसताम् ॥ प्रययौशिबिरंराजन्प्रद्युम्नोभक्तवत्सलः ॥ ५५ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसं
हितायांविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेजनकोपाख्यानंनामषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ अथातोमगधाञ्जेतुं
प्रद्युम्नोमीनकेतनः ॥ गिरिव्रजंजगामाशुस्वसैन्यैःपरिवारितः ॥ १ ॥ श्रुत्वागतंहरेःपुत्रंदिग्जयार्थंविशेषतः ॥ जरासंधोमागधेंद्रोमहाकोपंच
कारह ॥ २ ॥ ॥ जरासंधउवाच ॥ ॥ तुच्छायेयादवाःसर्वेयुधिविक्लवचेतसः ॥ तेह्यवैजगतींजेतुंनिर्गतागतबुद्धयः ॥ ३ ॥ मथुरांस्वपु
रींत्यक्त्वामद्भयान्माधवोपिहि ॥ समुद्रंशरणंप्रागात्पिताचास्यदुरात्मनः ॥ ४ ॥ प्रवर्षणेरामकृष्णौमयाभस्मीकृतौबलात् ॥ छलाद्दुद्रुवतुस्तौ
हिद्वारकायांसमाश्रितौ ॥ ५ ॥ बध्वातौचानयिष्यामिसोग्रसेनौकुशस्थलीम् ॥ अयादवींकरिष्यामिपृथ्वींसागरमेखलाम् ॥ ६ ॥ ॥ नार
दउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वानिर्गतोराजागिरिव्रजपुराद्बहिः ॥ अक्षौहिणीभिर्विंशत्यातिसृभिःसंयुतोबली ॥ ७ ॥ गोमूत्रचयसिंदूरकस्तूरीपत्रभृ
न्मुखैः ॥ स्रवन्मदैश्चतुर्दंतैरैरावतकुलोद्भवैः ॥ ८ ॥ शुंडादंडस्यफूत्कारैःक्षेपयद्भिस्तरून्बहून् ॥ बभौगजैर्मागधेंद्रोमेघैरिंद्रइवप्रभुः ॥ ९ ॥
रथैश्चदेवधिष्ण्याभैःसध्वजैरश्वनेतृभिः ॥ चामरैर्दोलितैराजल्लोलचक्रध्वनिद्युतिः ॥ १० ॥ तुरंगमैर्वायुवेगैश्चित्रवर्णैर्मदोत्कटैः ॥ सौवर्णपट्ट
हाराढ्यैःशिखारश्म्यूर्द्ध्वचामरैः ॥ ११ ॥ सकंचुकैर्वीरजनैःखड्गचर्मधनुर्धरैः ॥ विद्याधरसमैःप्रागान्मागधेंद्रोमहाबलः ॥ १२ ॥

और उग्रसेनकूं बांधिके द्वारकासूं लेआऊंगो फिर सब पृथ्वीकूं समुद्रपर्यन्त अयादवी करदेऊंगो ॥ ६ ॥ नारदजी कहैं हैं कि, हे राजन् ! ऐसे कहिके बडो बली जरासंध तेईस
अक्षौहिणी सेना लैके गिरिव्रज पुरते बाहिर निकस्यो ॥ ७ ॥ गोमूत्र, पेवडी, सिंदूर, कस्तूरी इनते माथेपै चित्रभंगी रचना जिनके, जिनके मद चुचाय चार चार दांतके ऐरावतके
कुलके उत्पन्नभये ॥ ८ ॥ सूंडते फुंकारत वृक्षनकूं पटकत जायँ ऐसे हाथीनकूं लैके जरासंध शोभित होतभयो मेघनते इन्द्र जैसे शोभित होयहै ॥ ९ ॥ देवतानके विमानसे
सुन्दर रथ जिनपै ध्वजा फहराय रही है दिव्य घोडे और सारथि युक्त चमर ढुरैंहैं और सुन्दर शब्द होतचलै हैं ॥ १० ॥ वायुकेसे वेगवारे अनेकन रंगके घोडा बडे मदोत्कट
सुनहरी मुहरा पट्टे चौरनके गजगाह सहित एक कलंगी धरें ॥ ११ ॥ कवच, बख्तर पहरें ढाल तलवारलीये बडे बडे वीर जिनके सवार विद्याधरके समान जिनके रूप तिनकूं

लैके महाबली जरासंध निकस्यौहै ॥ १२ ॥ दुंदुभीनकी धुंकारते और धनुषनकी टंकारतें दिशा झंकारउठी पृथ्वी हालनलगी रजतें आकाश छायगयौ ॥ १३ ॥ जरासन्धकी वो सेना प्रलयकीसी समुद्र महाभयंकर ताकूं हे मैथिल ! सब यादव देखिके आश्चर्यमें आयगये ॥ १४ ॥ तब प्रद्युम्न भगवान् जरासंधकी फौज प्रलयकोसो समुद्र ताकों देखिके शंख बजावतेभये वो दक्षिणावर्त है और डरपो मती ऐसे अभयदान देतेभये ॥ १५ ॥ तब तो सांब बडी भुजानवारौ प्रद्युम्नके देखत दश अक्षौहिणी फौज लेके जरासंधते लड़तभयो ॥ १६ ॥ हे मैथिलेश्वर ! रथीनते रथी हाथीनते हाथी सवारनते सवार और प्यादेनते प्यादे लडतेभये ॥ १७ ॥ मागध यादवनको बडो भयंकर रोमहर्षण युद्ध जामें रोंगटाठाडे होंय जैसे देवतानको दैत्यनसों होयहै तैसो भयो ॥ १८ ॥ बर्छी लीये कोई वीर घोडापे चढे हैं कोई हाथीनपे चढे भाला लीये इत उतें फेंकत मर्दन करते डोलें हैं ॥१९॥

धुंकारैर्दुंदुभीनांचदिशोनेदुर्धनुःस्वनैः ॥ चचालवसुधासैन्यैरजोभिश्छादितंनभः ॥ १३ ॥ जरासंधस्यतत्सैन्यंप्रलयाब्धिमिवोल्बणम् ॥ विस्मितायादवाःसर्वेबभूवुर्वीक्ष्यमैथिल ॥ १४ ॥ प्रद्युम्नोभगवान्वीक्ष्यमागधेंद्रबलार्णवम् ॥ शंखंदध्मौदक्षिणाख्यंमाभैष्टेत्यभयंददत् ॥ ॥ १५ ॥ ततःसांबोमहाबाहुःप्रद्युम्नस्यप्रपश्यतः ॥ अक्षौहिणीनांदशभिर्युयुधेमागधेनसः ॥ १६ ॥ गजागजैर्युयुधिरेरथिभीरथिनो मृधे ॥ हयाहयैःपत्तयश्चपत्तिभिर्मैथिलेश्वर ॥ १७ ॥ बभूवतुमुलंयुद्धमद्भुतंरोमहर्षणम् ॥ मागधानांयदूनांचसुराणांनिर्जरैर्यथा ॥ १८ ॥ अश्वारूढाःकेपिवीराभल्लहस्ताइतस्ततः ॥ मर्दयंतोगजारूढाःकरिकुंभगताश्चये ॥ १९ ॥ केचिच्छक्तीस्तडिद्वर्णागृहीत्वाचिक्षिपुर्बलात् ॥ ताःशक्तयस्त्वरीन्भित्त्वादंशितान्धरणींगताः ॥ २० ॥ केचिद्वीरानदंतःक्रौरथांगानिचचिक्षिपुः ॥ चिच्छिदुर्वीरपटलंनीदारंत्रयोयथा ॥ ॥ २१ ॥ भिंदिपालैर्मुद्गरैश्चकुठारैरसिपट्टिशैः ॥ अच्छुरिकार्ष्टिभिस्तीक्ष्णैर्निस्त्रिंशैर्युयुधुश्चके ॥ २२ ॥ तोमरैश्चगदाभिश्चबाणैश्छिन्नानिभू तले ॥ निपेतुर्वीरकरिणामश्वानांचशिरांसिच ॥ २३ ॥ कबंधास्तत्रचोत्पेतुःपातयंतोहयान्नरान् ॥ खड्गहस्ताःप्रधावंतःसंग्रामेषुभयंकराः ॥ ॥ २४ ॥ वीरोपरिगतावीरानिपेतुश्छिन्नबाहवः ॥ हयोपरिहयाःकेचिद्बाणैःसंच्छिन्नकंधराः ॥ २५ ॥ विद्याधर्यश्चगंधर्व्योवव्रिरेह्यंबरेगतान् ॥ वीरान्पतीन्समिच्छंत्यस्तासांचाभूत्कलिर्महान् ॥ २६ ॥ क्षत्रधर्मपराःकेचिद्युद्धदत्तासवोनृप ॥ नचलंतःपदंपृष्ठेसदासंग्रामशालिनः ॥ २७ ॥

कोई वीर बीजुरीसी चमकनी शक्ति लैके बडे बलते वैरीनके शरीरमें मारैहै वे शक्ति कवच समेत वैरीनके शरीरकूं भेदिके धरतीमे समायगई ॥ २० ॥ कोई वीर नाद करे पृथ्वीमें खडे चक्रनकूं फेंकें हैं वे वीरनके समूहकी ऐसे छेदतेभये जैसे सूर्यमंडलकूं हिरको ॥ २१ ॥ भिंदिपालनते मुद्गरनते कुठारानते, तरवारनते, पटेनते, ढाल, पोलादी पैने पैने भालानते युद्ध करतभये ॥ २२ ॥ तोमर, गदा, बाण इनते कटेभये वीरनके हाथीनके घोडानके प्यादेनके शिर परन लगे ॥ २३ ॥ वीरनके धड़ उछरें हैं खांडे हाथनमें लीये संग्राममें महाभयंकर वे घोड़ानकूं प्यादेनकूं पटकतेभये डोलें हैं ॥ २४ ॥ वीरनके ऊपर वीर पडे हैं कटिगई हैं भुजा जिनकी और बाणनते कटीहैं नाड़ जिनकी ऐसे घोड़ानके ऊपर घोड़ा परेहैं ॥ २५ ॥ विद्याधरी गंधर्वी अंबरमें गये जे वीर तिन्हे बरें हैं वीरनकूं पति करिवेकी इच्छा जिनके ते आपसमें लडें हैं ॥२६॥ कितनेई क्षत्रधर्ममें तत्पर युद्धमें दीने

हैं बाण जिनने सदाई संग्रामशाली पीछेकूं पांय नही धरे है ॥२७॥ वे सूर्यमंडलकूं भेदिके परमपदकूं जातभये वे शिशुमारचक्रमें नाचें हे मंडलमें जैसे नट ॥ २८ ॥ ऐसे सांबआदि महावीरनने जरासंधकी सेनाकी बडी मर्दन करयो तब तिनके देखत देखत फौज भाजनलगी जैसे कृष्णकी भक्तिसों अमंगल भागे है ॥२९॥ कोई कोई कटे है कवच, धनुष जिनके छोडेहै खड्ग म्ष्टी जिनने ते भाजेभये चलेजायेंहे ॥३०॥ या प्रकार जरासंध अपनी भजती फौजकूं देखिके अरे ! मति डरपौ ऐसे कहत धनुषको टंकारतो आयो ॥३१॥ तब जरासंध अपनो बल सेनाकूं धनुषकी किनोरते प्रेरणा करतोभयो जैसे महावत अंकुशते हाथीकूं प्रेरणा करैहै ॥३२॥ तब सांब धनुषसों निकसे दश बाणन करिके संग्राममें जरासंध महाबलीकूं बेधतोभयो ॥३३॥ और दश बाणन करिके समुद्रकी लहरकोसो शब्द जामें ता धनुषकी प्रत्यंचाकूं काटतो भयो ॥३४॥ तब जरासंध महाबली और धनुष लेके दश बाणनते सांबके

जग्मुःपरपदंतेवैभित्त्वामार्तंडमंडलम् ॥ ननृतुःशिशुमारेवैमंडलेचनटाइव ॥ २८ ॥ एवंसांबमहावीरैर्मर्दितंमागधंबलम् ॥ दुद्रावपश्यतां तेषांकृष्णभक्त्यायथाशुभम् ॥ २९ ॥ केचिद्वैव्रणवर्माणश्छिन्नचापास्तथापरे ॥ पलायमानाबभूवुस्त्यक्तखड्गर्ष्टिपाणयः ॥ ३० ॥ पलायमानंस्वबलंवीक्ष्यतन्मागधेश्वरः ॥ धनुष्टंकारयन्प्रातोमाभैरित्यभयंददौ ॥ ३१ ॥ स्वबलंनोदयामासजरासंधोधनुर्ज्यया ॥ महामात्यःप्रेरयतिह्यंकुशेनगजंयथा ॥ ३२ ॥ सांबस्तदैवसंप्राप्तोदशभिश्चापनिर्गतैः ॥ बाणैर्विव्याधसमरेमागधेंद्रंमहाबलम् ॥ ३३ ॥ धनुर्ज्यामब्धिकल्लोलभीमसंघर्षनादिनीम् ॥ चिच्छेददशभिर्बाणैःसांबोजांबवतीसुतः ॥ ३४ ॥ धनुरन्यत्समादायजरासंधोमहाबलः ॥ धनुःसांबस्यचिच्छेदबाणैर्दशभिरग्रतः ॥ ३५ ॥ चतुर्भिश्चतुरोवाहान्द्वाभ्यांकेतुंरथंत्रिभिः ॥ एकेनसारथिंजघ्नेमागधेंद्रोजरासुतः ॥ ३६ ॥ सच्छिन्नधन्वाविरथोहताश्वोहतसारथिः ॥ पुनरन्यंसमास्थायरथंसांबोमहाबलः ॥ ३७ ॥ गृहीत्वाचापमत्युग्रंसज्यंकृत्वाविधानतः ॥ तद्रथंचूर्णयामाससांबोबाणशतैरपि ॥ ३८ ॥ रथंत्यक्त्वाजरासंधोगजमारुह्यवेगतः ॥ बभौगजेमागधेंद्रइन्द्रऐरावतेयथा ॥ ३९ ॥ चित्रपत्रविचित्रांगं कालांतकयमोपमम् ॥ सांबायनोदयामासमत्तेभंक्रुद्धमानसः ॥ ४० ॥ गृहीत्वासरथंसांबंशुण्डादण्डेननागराट् ॥ कुर्वञ्शीत्कारविकलश्चिक्षेपनवयोजनम् ॥ ४१ ॥

धनुषकूं अगाडीसो काटतोभयो ॥३५॥ तब मागधेंद्र जराके बेटाने चार बाणनते चार घोडा मारे, दो बाणनते ध्वजा, तीन बाणनते रथ और एक बाणते सारथीकूं काटगेरे ॥३६॥ तब रथ टूटगयो, धनुष टूटगयो, घोडा मरगये, सारथी मरगयो तब बली सांब और रथमें चढतोभयो ॥ ३७ ॥ फिर सांबने अतिउग्र धनुष लेके विधानते चढाके सौ बाणनते जरासन्धके रथको चूर्ण करदीनों ॥ ३८ ॥ तब रथकूं छोड जरासन्ध वेगसो हाथीपै चढके शोभित भयो मानों ऐरावतपै इन्द्रही चढ्योहै ॥ ३९ ॥ पत्रभंगी रचनाते विचित्र अंग जाको कालांतक जमसो कोधते साम्बके ऊपर वो हाथी हूलिदीनों ॥ ४० ॥ वह नागराज हाथी चिक्कारतभयो, हे मानद ! सूंडते विकल हैके रथसमेत सांबकूं नौ

योजनपै फेंक देतोभयो ॥ ४१ ॥ हे मैथिल ! तब तो सांबकी सेनामें बड़ो कोलाहल भयो ताही समय प्रद्युम्नके पासते गद सेनामें आवतभयो ॥ ४२ ॥ जैसे सूर्य उदयाचलपै उदय ह्वैके सब अन्धकारकूँ दूर करैहै तैसेही आयके गद जरासंधके हाथीकूँ घूँसाते मारतोभयो ॥ ४३ ॥ जैसे इन्द्रके व्रजको मारचो ऊंचो पर्वत गिरैहै तैसेही घूँसाको मारचो हाथी विह्वल ह्वैके धरतीमें जायपरचो ॥ ४४ ॥ हे राजन् ! गदके घूँसाको मारो वह हाथी मरगयो तब बड़ो अचम्भो भयो जरासंध उठिके गदा लैके बड़े वेगते ॥ ४५ ॥ गदकूं मारतोभयो फिर घनकी नाई गरज्यो ता गदाके मारे गद रणमेंते नेकहू चलायमान न भयो ॥ ४६ ॥ फेर गदने लाख भारकी गदा लैके जरासंधके मारी फिर सिंह सो गरज्यो ॥ ४७ ॥ ता गदाके महारते जरासंध बली बृहद्रथको बेटा व्यथित है फिर उठिके गदासहित गदकूं पकरिके फेंकतभयो ॥ ४८ ॥ बड़ो रोषते सौ योजन ऊंचो आका

तदाकोलाहलेजातेसांबसेनासुमैथिल ॥ प्रद्युम्नपार्श्वाच्चगदःप्राप्तोभूद्वेगतोबलम् ॥ ४२ ॥ विनाशयन्नंधकारंयथार्कउदयाचलात् ॥ जरासंधस्यापिगजंमुष्टिनावसुदेवजः ॥ ४३ ॥ जघानशक्रोवज्रेणयथाप्रोच्चंदरीभृतम् ॥ गजोमुष्टिप्रहारेणविह्वलोधरणींगतः ॥ ४४ ॥ जगामयंचतांराजंस्तदद्भुतमिवाभवत् ॥ जरासन्धःसमुत्थायगदामादायवेगतः ॥ ४५ ॥ गदंतताडसहसाजगर्जघनवद्बली ॥ तत्प्रहारेणसगदोनचचालरणांगणात् ॥ ४६ ॥ त्वरंगदांसमादायलक्षभारविनिर्मिताम् ॥ अताडयज्जरासन्धंसिंहनादमथाकरोत् ॥ ४७ ॥ तत्प्रहारेणव्यथितोबृहद्रथसुतोबली ॥ जरासंधःसमुत्थायगृहीत्वासगदंगदम् ॥ ४८ ॥ चिक्षेपरोषतोराजन्नाकाशेशतयोजनम् ॥ गदोपिमागधंनीत्वाभ्रामयित्वामहाबलः ॥ ४९ ॥ चिक्षेपगगनेतंवैयोजनानांसहस्रकम् ॥ आकाशात्पतितोराजामागधोविंध्यपर्वते ॥ ५० ॥ उत्थाययुयुधेतेनगदेनापिमहाबलः ॥ तदैवसांबःसंप्राप्तोगृहीत्वामागधेश्वरम् ॥ ५१ ॥ भूपृष्ठेपोथयामाससिंहःसिंहमिवौजसा ॥ एकेनमुष्टिनासांबंद्वितीयेनगदंतथा ॥ ॥ ५२ ॥ तताडमागधोराजाजगर्जाशुरणांगणे ॥ मुष्टिप्रहारव्यथितौगदःसांबश्चमूर्च्छितौ ॥ ५३ ॥ हाहाकारोमहानासीत्तदैवाशुरणांगणे ॥ रथेनातिपताकेनप्रद्युम्नोयादवेश्वरः ॥ ५४ ॥ अक्षौहिणीयुतःप्राप्तोमाभैष्टत्यभयंददौ ॥ जरासंधोगदांनीत्वालक्षभारविनिर्मिताम् ॥ ५५ ॥

शमें फेंकदेतोभयो तब गदहू महाबली जरासंधकूँ पकरिके फिरायके ॥ ४९ ॥ आकाशमें हजार योजन ऊंचो फेंकिदेतोभयो तब आकाशते जरासंध विंध्याचल पर्वतपै आयके परचो ॥ ५० ॥ फिर उठिके महाबली जरासंध गदते युद्ध करनलग्यो तबही सांबने आयके जरासंधकूँ पकरके धरतीमें दैमारचो सिंहकूँ सिंह जैसे ॥ ५१ ॥ फिर जरासंधने उठिके एक घूँसा तो सांबके मारचो और एक गदके मारचो ॥ ५२ ॥ मारिके रणके आंगनमें गरज्यो घूँसाके मारे गद और सांब दोनों मूर्च्छित ह्वैके जायपरे ॥ ५३ ॥ तब तो रणांगणमें बड़ो हाहाकार मच्यो तब बड़ी ध्वजा जामें ता रथमें बैठि प्रद्युम्न आयो ॥ ५४ ॥ एक अक्षौहिणी फौज लैके मति डरपो ऐसे अभयदान देके जरासंधहू लाख भारकी

गदा लैके ॥ ५५ ॥ यदुसेनामें धस्यो वनमें जैसे अग्नि धसैहै तब बहुतसे हाथीनकूं घोडानकूं रथनकूं पटकतभयो ॥ ५६ ॥ हे राजन् ! हाथी जैसे कमलनकूं तोडैहै और जरा संधकी सैनाक सब आयगई ॥ ५७ ॥ तब जरासंध पैने २ बाणन करके यादवनकी सैनाकूँ मारतोभयो तब यादवनको ईश्वर प्रद्युम्न निर्भय हैके युद्ध करैहै ॥ ५८ ॥ धनुषकूं टंकारत वैरीनकूं मारत ताहीसमय यदुपुरीते श्रीबलदेवजी आयगये ॥ ५९ ॥ सबनके देखत २ प्रकट हैगये तबही हलके अग्रते महाबली जरासंधकूं ॥ ६० ॥ खैंचलीनो और क्रोध करके एक मूसल मार्यो और चारसौ कोशतक रथ, हाथी, घोडा प्यादे ॥ ६१ ॥ सबनके शिर कट कटके मरके जायपरे तब देवतानकी और मनुष्यनकी दुंदुभी बजन लगी ॥ ६२ ॥ बलदेवजीके ऊपर देवता पुष्पनकी वर्षा करतभये यादवनकी फौजमें बडो जय जय शब्द भयो ॥ ६३ ॥ प्रद्युम्नादिक सब सुखी हैके बलदेवजीकूँ दंडोत करनलगे ऐसे

विवेशयदुसेनायामरण्येऽग्निरिवप्रभुः ॥ रथान्गजान्सवीरांश्चतुरंगान्सैंधवान्बहून् ॥ ५६ ॥ पातयामासराजेंद्रपद्मानीवमहागजः ॥ जरासंधस्ययासेनासापिसर्वासमागता ॥ ५७ ॥ जघाननिशितैर्बाणैर्यदूनांसर्वतोबलम् ॥ प्रद्युम्नोयुयुधेयुद्धेनिर्भयोयादवेश्वरः ॥ ॥ ५८ ॥ निपातयन्नरीन्बाणैर्धनुष्टंकारयन्मुहुः ॥ तदैवयदुपुर्यास्तुबलदेवःसमागतः ॥ ५९ ॥ प्रादुर्बभूवतत्रापिसर्वेषांपश्यतांसताम् ॥ स माकृष्यहलाग्रेणमागधेंद्रंमहाबलम् ॥ ६० ॥ मुसलेनाहनत्क्रुद्धोबलदेवोमहाबलः ॥ शतयोजनपर्यंतंरथाश्वगजपत्तयः ॥ ६१ ॥ पतिता भिन्नशिरसःसर्वेवैनिधनंगताः ॥ देवदुन्दुभयोनेदुर्नरदुन्दुभयस्तदा ॥ ६२ ॥ बलदेवोपरिसुराःपुष्पवर्षंप्रचक्रिरे ॥ तदाजयजयारावोयदूनांस्व बलेमहान् ॥ ६३ ॥ प्रद्युम्नाद्यास्ततोनेमुःकामपालंगतव्यथाः ॥ इत्थंजित्वामागधेन्द्रंबलदेवोमहाबलः ॥ ६४ ॥ प्रययौद्वारकांराजन्भग वान्भक्तवत्सलः ॥ जरासन्धसुतोधीमान्सहदेवउपायनम् ॥ ६५ ॥ नीत्वापुरःशंबरारेर्गिरिदुर्गाद्विनिर्गतः ॥ अश्वार्बुदंरथानांचद्विलक्षंहस्ति नांतथा ॥ ६६ ॥ ददौषष्टिसहस्राणिनत्वाकार्ष्णिप्रभाववित् ॥ ६७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खंडेनारदबहुलाश्वसंवादेमागधविज योनामसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ अथकार्ष्णिर्गयांमेत्यफल्गुंस्नात्वाससैनिकः ॥ अन्यान्देशांस्ततोजेतुंप्रस्थानमकरो त्पुनः ॥ १ ॥ श्रुत्वाजितंजरासन्धंतदातंकान्नृपाःपरे ॥ उपायनंददुस्तेवैभयार्ताःशरणंगताः ॥ २ ॥ गौतमींसरयूंपुण्यामनुस्रोतंततोऽगमत् ॥ ततोभागीरथीतीरेकाशीमभिजगामह ॥ ३ ॥ पार्ष्णिग्राहःकाशिराजोगृहीतोमृगयांगतः ॥ सोपितस्मैबलिंप्रादाच्छ्रुत्वातस्यबलंमहत् ॥ ४ ॥

महाबल बलदेवजी जरासंधकूँ जीतिके ॥ ६४ ॥ वेभगवान् भक्तवत्सल बलदेव द्वारिकाकूं गये तब जरासंधको बेटा सहदेव बडो बुद्धिमान् ॥ ६५ ॥ बलदेवजीको भेंट लैके गिरिदुर्गते निकस्यो दश किरोड घोडा दो लाख हाथी और साठ हजार दिव्य रथ ॥ ६६ ॥ कृष्णके प्रभावको जाननहारो सहदेव श्रीप्रद्युम्नको देतभयो ॥ ६७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटीकायां मागधविजयो नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ नारदजी कहैं है कि, फिर प्रद्युम्न गयामें जाय फल्गु नदीमें स्नान करके सैनासहित और देश जीतबेकूँ जातभये ॥ १ ॥ जब और राजानने यह सुनी कै जरासन्धकूं जीतलीनों तब वे सबरे भयके मारे शरणमें आय आयके भेंट धरतेभये ॥ २ ॥ तापीछे गोमती पवित्र सरयूके अनुस्रोत और भागीरथीके तीर काशीमें आवतेभये ॥ ३ ॥ पार्ष्णिग्राही

काशीको राजा शिकारखेलबे गयोहो सो पकरलीनों सोक बड़ो बली सुनके प्रद्युम्नकूं भेट देतोभयो ॥ ४ ॥ फिर प्रद्युम्न सेनासहित कौशल देशकूं जातेभये सो अयोध्याके निकट नंन्दिग्राममें स्थित होतेभये ॥ ५ ॥ तब कौशलको राजा नग्नजित् हाथी, घोड़ा, रथ और बहुत धनतें प्रद्युम्नको पूजन करतोभयो चतुरंगिणी सेनाते ॥ ६ ॥ उत्तरको राजा दीपतम, नेपालको राजा गज, विशालाको बर्हिण ये तीनों राजा प्रद्युम्नको भेंट देतेभये ॥७॥ नैमिषको राजा हरिभक्त कृष्णके प्रभावको जाननवारो हाथ जोड़के भेंट देतोभयो॥८॥ फिर कृष्णको बेटा प्रयागमें गयो पापनाशिनी त्रिवेणीमें स्नान करिके महादान देतभयो क्योंकि, ये तीर्थराजके प्रभावकूं जानतो हो ॥ ९ ॥ बीस हजार हाथी, दश लाख घोड़ा, चार लाख रथ दश अर्बुद गौ देतोभयो ॥ १० ॥ सोनेकी माला और सुनहरी वस्त्र सहित दश भार सोनों और एक लाख मोती देतोभयो ॥ ११ ॥ दो लाख नवरत्न, दश लाख

प्रद्युम्नःसैनिकैःसार्द्धंकौशलान्प्रगतोबली ॥ अयोध्यानिकटेराजन्नंदिग्रामेस्थितोभवत् ॥ ५ ॥ कोशलेंद्रोनग्नजिच्चतुरंगैश्वगजैरथैः ॥
महाधनैः शंबरारिमर्हयामासतत्त्ववित् ॥ ६ ॥ उत्तरेशोदीपतमोनयपालाधिपोगजः ॥ विशालेशोबर्हिणश्चएतेवैतंबलिंददुः ॥ ७ ॥
नैमिषेशोहरेर्भक्तःश्रीकृष्णस्यप्रभाववित् ॥ कृतांजलिपुटोभूत्वाददौतस्मैबलिंनृपः ॥ ८ ॥ प्रयागंगतवान्कार्ष्णिस्त्रिवेणींपापनाशिनीम् ॥
स्नात्वाददौमहादानंतीर्थराजप्रभाववित् ॥ ९ ॥ गजाविंशतिसाहस्रमश्वानांदशलक्षकम् ॥ रथानांचचतुर्लक्षंगवांतत्रदशार्बुदम् ॥ १० ॥
हेममालासमायुक्तंहेमांबरसमन्वितम् ॥ दशभारंसुवर्णानांमुक्तानांलक्षमेवहि ॥ ११ ॥ द्विलक्षंनवरत्नानांवस्त्राणांदशलक्षकम् ॥ काश्मीरकंबलानांचद्विलक्षंनवकंबलम् ॥१२॥ ब्राह्मणेभ्योददौकार्ष्णिस्तीर्थराजेहरिप्रिये ॥ कारूषाधिपतिस्तत्रपौंड्रकोनाममैथिल ॥ १३ ॥ कृष्णशत्रुः
सोपिकार्ष्णिंपूजयामासशंकितः ॥ प्रद्युम्नंचागतंवीक्ष्यपांचालेकान्यकुब्जके ॥ १४ ॥ भयंप्रापुर्नृपाःसर्वेदुर्गेदुर्गेकृतार्गलाः ॥ विवेशुर्यादवात्सर्वेभयात्तेदुर्गमाश्रिताः ॥ १५ ॥ बिंदुदेशाधिपोराजादीर्घबाहुर्महाबलः ॥ शंबरारेःपरंसंधिंकर्तुंसैन्येसमाययौ ॥ १६ ॥ ॥ दीर्घबाहुरुवाच ॥ ॥ यूयंसर्वेयादवेंद्राआगताजयिनोदिशाम् ॥ मनोरथंमेकुरुतांभवेयंतुष्टमानसः ॥ १७ ॥ सजलस्यापिकाचस्यपात्रस्यशरवेधतः ॥
नक्षरेद्बिंदुरेकोपिबाणस्तदधितिष्ठति ॥ १८ ॥ नपात्रंशकलीभूतंतन्मध्येहस्तलाघवम् ॥ येकुर्वंतिप्रतिज्ञांमेतेभ्योदास्यामिकन्यकाः ॥ १९ ॥

वस्त्र, कश्मीरी बनात, दो लाख नवकम्बल ॥ १२॥ हे मैथिल ! ये सब प्रयागमें ब्राह्मणनकूं प्रद्युम्न देतेभये जो हरिको प्यारो तीर्थ है वाही तीर्थमें कारूष देशको अधिपति पौंड्रक हो ॥१३॥ नारदजी कहे हैं कि, हे मैथिल ! ये कृष्णको वैरी हो सोक प्रद्युम्नको पूजन करतोभयो पांचाल देशमें और कन्नौजमें प्रद्युम्नकूं आयो देखके ॥१४॥ सब राजा किले किलेमें भयकूं प्राप्त होतेभये वे सब प्रद्युम्नके भयसों किलेनमें दुबकगये कोई भाजगये ॥ १५ ॥ बिंदुदेशको राजा महाबली दीर्घबाहु वो प्रद्युम्नते मिलाप करबेकूं सेनामें आयो ॥ १६ ॥ दीर्घबाहु राजा बोल्यो कि, तुम सबही यादवनमें इन्द्र हो दिशानके जीतनहारे आये हो प्रसन्न होउ मेरो मनोरथको करोगे तब मैं तुष्टमन होउँगो ॥ १७ ॥ जलके भरे कांचके पात्रमें तीर गाड़िदेय और एकहू बूंद पानी न गिरे और बाण वहां गाड्यो रहे ॥ १८ ॥ और पात्रभी फूटे नहीं बीचमें बाण ठाडो रहे ये हाथकी हलकापन जाको होय और जो

मेरी या प्रतिज्ञाकूँ पूरी करिदेय तिनकूं मैं अपनी कन्यानकूं देदेऊं ॥ १९ ॥ तुम सबरे यादव धनुर्विद्यामें विशारद हो मैंनेऊ पहले नारदके मुखतें महाबली सुने हैं ॥ २० ॥ नारदजी कहे हैं अब सब अचंभेमें आयगये तब धनुषधारीनमें श्रेष्ठ प्रद्युम्न बिंदुदेशके राजातें हांमी भरतेभये ॥ २१ ॥ एक बडे बाँसको धरतीमें गाडके वामें डोरी बांधिके डोरीमें कांचको वासन बांध्यो जल भरिके सबके देखत २ ॥ २२ ॥ तब प्रद्युम्नने धनुषमें बाण लेके ओरयो कांच पात्रके शिरको बेधिके बाण बीचमें आयो निकसो ठाडो रह्यो ॥ २३ ॥ फोकते और फलते किरन जामें छूटिरही ऐसो बाण शोभित भयो बादलमें सूर्य जैसे तब बडो अचंभो भयो ॥ २४ ॥ न तो पात्र फूट्यो न चल्यो न हल्यो न बूंद परी त्रिकुशको फल जैसे होयहै ॥ २५ ॥ प्रद्युम्नने फिर दूसरो बाण लेके मारयो वह बाण पहले बाणकूं छोडिके तैसेई स्थित हेगयो ॥ २६ ॥ फिर सांबनेहू पांच बाण मारे वेहू बाण

यूयंसर्वेयादवेंद्राधनुर्वेदविशारदाः ॥ मयापिनारदमुखाच्छ्रुताःपूर्वंमहाबलाः ॥ २० ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ सर्वेषांविस्मितानांचप्रद्युम्नो धन्विनांवरः ॥ तथेत्युवाचसदसिविंदुदेशाधिपंनृपम् ॥ २१ ॥ दीर्घवंशंभुविस्थाप्यगुणंवध्वातदंतरे ॥ गुणेबध्वाकाचकुंभंसजलंपश्यतांसताम् ॥ ॥ २२ ॥ धनुर्गृहीत्वातद्वीक्ष्यबाणंकार्ष्णिःसमादधे ॥ काचपात्रंशिरोभित्वातस्थौमध्येर्द्धनिःसृतः ॥ २३ ॥ एकतोमुखएंखाभ्यांरविरश्मिरिवांबुदे ॥ काचपात्रेबभौबाणस्तदद्भुतमिवाभवत् ॥ २४ ॥ नपात्रंशकलीभूतंत्रिकुशस्यफलंयथा ॥ नचालनंकंपनंचबिंदुस्रावोपिनाभवत् ॥ २५ ॥ प्रद्युम्नोभगवान्बाणंद्वितीयंसंदधेपुनः ॥ सोपिपूर्वंसमुत्सृज्यतत्रतस्थौनिदेहराट् ॥ २६ ॥ सांबोपिधनुरादायबाणान्पंचसमाददे ॥ काचपात्रंचतेभित्वातस्थुस्तत्रार्धनिःसृताः ॥ २७ ॥ युयुधानोधनुर्नीत्वाबाणमेकंसमाक्षिपत् ॥ सर्वेषांपश्यतांतेषांपात्रंचूर्णीबभूवह ॥ २८ ॥ उच्चकैर्जहसुःसर्वेयादवाःपरसैनिकाः ॥ त्वंमहान्बाणधारीहकार्तवीर्यार्जुनोयथा ॥ २९ ॥ अर्जुनोभरतोरामस्त्रिपुरघ्नोहिवाभवान् ॥ द्रोणोभीष्मोथवाकर्णोजामदग्न्यइवाभवत् ॥ ३० ॥ अन्यत्पात्रंसमाधायानिरुद्धोधन्विनांवरः ॥ अधोगत्वाथतद्दृष्ट्वाबाणंचिक्षेपलाघवात् ॥ ॥ ३१ ॥ सोपिपात्रतलंभित्वातस्थौतत्रार्धनिःसृतः ॥ तत्पात्राद्धस्तपंचोर्ध्वंबध्वापाषाणमंबरे ॥ ३२ ॥ दीप्तिमान्धनुरादायबाणमेकंसमादधे ॥ सोपिपात्रतलंभित्वाबाणमुत्सृज्यचाग्रतः ॥ ३२ ॥

वा कांचके पात्रको भेदके आधे २ निकसते ठाडेरहे ॥ २७ ॥ तब युयुधानने धनुष ले सबनके देखत एक बाण मारयो सो वा बाणके मारे पात्र फूटिगयो ॥ २८ ॥ तब ऊंचे स्वर करिके सब सेनाके यादव हँसिपरे तुम बडे बाणधारी हो जैसो कि, कार्तवीर्यार्जुन ॥ २९ ॥ अर्जुन, भरत, परशुराम, त्रिपुरहंता रुद्र, द्रोण, भीष्म, कर्ण, रामचन्द्र जे बडे धनुषधारी हैं कि, वे तुम हो ॥ ३० ॥ तब और पात्र धरयो तब धनुषधारीनमें श्रेष्ठ अनिरुद्ध नीचे जायके वाकूं देखिके हलके हाथतें बाण मारतभयो ॥ ३१ ॥ सोऊ बाण पात्रकूं नीचेतें छेदिके आधो निकसो गडिगयो ता पात्रतें पांच हाथ ऊंचो आकाशमें एक पत्थर लटकाय दियो ॥ ३२ ॥ तब दीप्तिमानने धनुष लेके एक बाण मारयो सोऊ पात्रतलकूं भेदिके वा बाणके आगेते ॥ ३३ ॥

... धनुषकूं ... के ... बाणन्ते ... तब ताकी एकहू बूंद न गिरी ॥ ३२ ॥ जब यादवके ... पाषाणमें एकहू बूंद न गिरी तब सबरे वीर ... स्याम ... देते कहन लगे
॥ ३३ ॥ तब भानु कृष्णके बेटाने ... देखिके ... देखत देखत एक बाण मारयो ॥ ३६ ॥ लोक ... फिर सूधो
करिके बाण ... तब बूंद एकहू न गिरी ॥ ३७ ॥ न बूंद गिरी न पाषाण फूट्यो ... तब सबनकूं बड़ो अचंभो भयो ॥ ३८ ॥ ऐसे श्रीकृष्णके जो अठारह
बेटा हैं वे सब महारथी ... पाषाणमें एक जलको एक बूंद नहीं गिरी ॥ ३९ ॥ तब सिंधुदेशको अधिप ... राजा ... हैके सुंदर नेत्र जिनको ऐसी अठारह
कन्या अठारहनकूं ब्याहि देतभयो ॥ ४० ॥ तिनके विवाहके समयमें शंख, भेरी, नगाड़े, ढोल बजनलगे गन्धर्व गावनलगे अप्सरा नाचनलगीं ॥ ४१ ॥ तिनके ऊपर देवता

ताडयित्वाचपाषाणंपुनस्तानसनाश्रितः ॥ बाणवेगेनतदपिबिन्दुमात्रोपिनाभवत् ॥ २४ ॥ गतागतेनयावद्वैबिन्दुमात्रोपिनाभवत् ॥ ततस्ती
राश्चलेसर्वेसाधुसाध्विति वादिनः ॥ २५ ॥ भानुर्वेणुंसंगृहीत्वा ... कलोचनः ॥ आरात्क्षेपनराचंतंसर्वेपापंस्वतांलताम् ॥ २६ ॥ सोपि
पाषाणान्निस्सार्य ... ॥ पुनरुद्धृत्य ... निःसृतः ॥ २७ ॥ बाणवेगेनतदपिबिन्दुमात्रोपिनाभवत् ॥ नपाषाण
कलीभूतेतद्धृतनिशाभवत् ॥ २८ ॥ एवंश्रीकृष्णपुत्रानेअष्टादशमहारथाः ॥ सर्वेतेबिन्दुःपाषाणजलमात्रोपिनाभवत् ॥ २९ ॥ सिन्धुदेशा
धिपोराजाविवाहःसुचिस्मितः ॥ तेभ्योददौकन्यकाःसुष्ठाअष्टादशसुलोचनाः ॥ ३० ॥ तेषांविवाहसमयेशंखभेर्यानकादयः ॥ नेदुर्जगुश्चगन्ध
र्वानृत्युश्चाप्सरोगणाः ॥ ३१ ॥ तेषामुपरिदेवास्तेजयध्वनिसमाकुलाः ॥ ववृषुःपुष्पवर्षाणिचक्रुःस्वार्थादितिस्थिताः ॥ ३२ ॥ गजानां
चसहस्राणिहयानामर्बुदंतथा ॥ दशलक्षंरथानांचदासीनांलक्षमेवच ॥ ३३ ॥ शिबिकानांचतुर्लक्षंपारिबर्हंददौनृपः ॥ ताभ्याहियोद्धारवतीं
श्रीकार्ष्णिर्वैकृत्तमः ॥ ३४ ॥ दीर्घबाहुमनुप्राप्यनिषधान्प्रययौततः ॥ निषधाधिपतिर्वीरसेनजिन्नाममैथिल ॥ ३५ ॥ उपायनंददौसोपिमधु
श्रायसहात्मने ॥ तथाहिभद्राधिपतिःश्रीकृष्णेष्टोहरिप्रियः ॥ ३६ ॥ पूजयामाससबलंबृहत्सेनोहरेःसुतम् ॥ माथुराञ्छूरसेनांश्चसधून्मातःस
सैनिकः ॥ ३७ ॥ स्वागतैःपूजितःकार्ष्णिर्मथुरायांययौपुनः ॥ ततःप्रदक्षिणीकृत्यमथुरांसवनांकिल ॥ ३८ ॥

पुष्पनकी वर्षा करतभये और स्वर्गस्थित सबरे जय २ शब्द करनलगे सबने बड़ाई करी ॥ ४२ ॥ फिर राजा दायजो देतभये लाख हजार हाथी दीने १० क्रोड़ घोड़ा
दीने. दश लाख रथ दीने. एक लाख दासी दीनी ॥ ४३ ॥ चार लाख पालकी. पिंनस, डोला. चंडोला दीने इतनो दायजो प्रद्युम्न लेके द्वारकाकूं भेजतेभये ॥ ४४ ॥ ऐसे दीर्घ
बाहुको जीतके फिर सलाह करके प्रद्युम्न निषध देशकूं चलेगये. हे मैथिल ! हे वीर ! निषध देशको राजा सेनजित् वाको नाम हो ॥ ४५ ॥ वेहू राजा प्रद्युम्नकूं भेट देत
भयो ऐसेही भद्र देशको राजा श्रीकृष्णको इष्टी हरिको प्यारो ॥ ४६ ॥ बृहत्सेन राजा सेनासहित हरिके बेटाको पूजन करत भयो फिर प्रातःकालके समयही पे माथुर शूर
सेन देशकूं आवतभयो सेनासहित ॥ ४७ ॥ जब मथुरामें गये तब स्वागत कहिके बड़ो सत्कार करयौ तब प्रद्युम्न मथुरामें आयो तब सबरे वनसहित मथुराकी परिक्रमा

कारके ॥ ४८ ॥ गोकुलमें आये तहां गोप गोपीनतें मिले, तहां नंदराजकूँ, यशोदाजीकूँ, वृषभानु, नंद, उपनन्द तिनकूँ दण्डवत करके बडी शोभा होतभई ॥ ४९ ॥ नन्दराजकूँ भेट देंदेके बेर बेर नमस्कार करतभये तिनने बडो सत्कार कीनों तहां प्रद्युम्न कई दिन नन्दके गोकुलमें बसे ॥ ५० ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटीकायां शूरसेनदेशविजयो नामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ नारदजी कहेहैं कि, याके अनंतर कृष्णको बेटा बडी भुजानवारो बडो जाको वेग सो फौजकूँ संग लेके नगाडे बजावत कुरु देशकूं जातभयो ॥ १ ॥ बीस योजनके बीचमें जाकी सेनाको विस्तार है दश योजनमें झण्डा लगेहैं ॥ २॥ पांच योजनमें बजार लगोहै जहां बडे २ साहूकारनकी दुकानें सैकडन हजारन लग रहीहैं ॥ ३ ॥ तहां जौहरीनकी दुकान, बजाजनकी कांचकारनकी दुकान, दरजीनकी रंगरेज और कुम्हारनकी ॥४॥ कंदार, खटीक, कंडेरे, कोरिया, टेकीवारे, चितेरे, पत्तरवारे,

गोपान्गोपीर्यशोदांचनंदराजंव्रजेश्वरम् ॥ वृषभानूपनन्दांश्चनत्वाकार्ष्णिर्बभौनृप ॥ ४९ ॥ बलिंचनन्दराजायदत्त्वादत्त्वापुनःपुनः ॥ तैःपूजितःकतिदिनैःस्थितोभून्नंदगोकुले ॥ ५० ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेमाथुरशूरसेनदेशविजयोनामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ अथकार्ष्णिर्महाबाहुर्ध्वजिनीभिःसमन्वितः ॥ नादयन्दुंदुभीन्दीर्घान्दीर्घवेगःकुरून्ययौ ॥१॥ विंशतियोजनानांचमर्यादीकृततद्बले ॥ तस्यौतच्छिबिराणांचविस्तारोदशयोजनम् ॥ २ ॥ पञ्चयोजनमाश्रित्यतद्बलेराजपद्धतिः ॥ धनाढ्यानांचवैश्यानामापणानिसहस्रशः ॥३॥ तथारत्नपरीक्षाणांवस्त्रव्यापारकारिणाम् ॥ काचकारावायकाश्चरंगकाराःकुलालकाः ॥ ४ ॥ कन्दकारास्तूलकाराःपटकारास्तथैवच ॥ टङ्ककाराश्चित्रकाराःपत्रकाराश्चनापिताः॥५॥ पट्टकाराहेतिकाराःपर्णकाराश्चशिल्पिनः॥ लाक्षाकारामालिनश्चरजकास्तैलिनस्तथा ॥ ६ ॥ तांबूलशोधिनस्तत्रचित्रपाषाणकर्मकाः ॥ अन्नभर्जकरास्तत्रकाचभेदिनएवहि ॥७॥ मुक्तादीनांचरत्नानांसूक्ष्माणांरत्नवेधिनः ॥ एतेकारुजनाःसर्वेदृश्यंतेराजपद्धतौ ॥८॥ क्वचिद्वानुमतीलीलाऐंद्रजालविधायकाः ॥ क्वचिन्नटाश्चनृत्यंतेयुद्धंभल्लूकयोःक्वचित् ॥ ९ ॥ क्वचित्तुवानरीलीलाडमरूवाद्यसंयुताः ॥ गायंतिकुत्रचिद्राजन्सूतमागधबन्दिनः ॥ १० ॥ वारांगनाश्चनृत्यंतिभूषैर्द्वादशभिर्युताः ॥ दिव्यैःषोडशशृंगारैर्हरंत्यप्सरसांमनः ॥ ११ ॥ बन्धूनामपिसेनानांमहातंकागजाह्वये ॥ चालनंसंभ्रमोपेतंविह्वलैश्चजनैरभूत् ॥१२॥

नाऊ ॥ ५ ॥ पटवा, चारी, राज, संगतरास, लखेरे, माली, धोबी, तेली ॥ ६ ॥ तमोली, चितेरे, कसेरे, भरभूंजा, कांचबनायबेवारे ॥ ७ ॥ और मोती रत्नमें छेद करनेवारे ते आदि लेके जितने कारबारे दुकानदार हैं वे वा बजारमें सब कारीगर रहेहैं ॥ ८ ॥ कहूं बाजीगर, कहूं इंद्रजालवारे, कहूं नट नाचैं हैं, कहूं रीछनको युद्ध होय है ॥ ९ ॥ कहूं डौरू बजायके बन्दरनकी लीला, कहूं सूत, मागध, बंदीजन गामैंहै ॥ १० ॥ और कहूं बारह प्रकारके भूषणन सहित अनेक भावनतें वेश्या राजानके आगे नाचैंहै जे सोलह शृंगारनतें अपसरानकोहू मन हरेहैं ॥ ११ ॥ तब हस्तिनापुरमें निज बन्धूनको सेनानको बडो आतंक भयो चौंकतेसे चलैहैं और विह्वल भये जननतें बडो संभ्रम भयो ॥ १२ ॥

कोई २ भाजके अपने २ घरनमें दरवजेनमें अगरेंडा लगाय भाजिगये और घर घरमें जन २ में बडो कोलाहल भयो ॥ १३ ॥ वीर्य शूरता बल जिनमें ऐसे चक्रवर्ती कौरव समुद्रलाई जिनको राज्य तोऊ शंकित हैगये ॥ १४ ॥ तब प्रद्युम्नके भेजे बडे बुद्धिमान् उद्धवजी हस्तिनापुरमें जायके धृतराष्ट्रकूं देखतेभये ॥ १५ ॥ मद जिनके चुचाय कस्तूरी केशर सिंदूरते मण्डित गण्डस्थल जिनके सिंदूरसों चिती सूँडये चैठे काननते ताडे भौंरान करिके मण्डित है मंदिरको आंगन जाको ता धृतराष्ट्रके पास गये ॥ १६ ॥ भीष्म, कर्ण, द्रोणाचार्य, शल्य, कृपाचार्य, भूरिश्रवा, बाह्लीक, धौम्यऋषि, शकुनी, संजय, दुश्शासन, विदुर, लक्ष्मण, दुर्योधन, अश्वत्थामा, सोमदत्त ॥ १७ ॥ और यज्ञकेतु इन करिके सहित सोनेके सिंहासनपै विराजमान छत्र लगिरह्यो है चौंर हैरहेहैं हस्तिनापुरको मालिक जो धृतराष्ट्र ताकूं दंडोत करिके हाथ

विदुद्रुवुर्जनाःसर्वेगृहेष्वापातितार्गलाः ॥ कोलाहलोमहानासीद्गृहेगेहेजनेजने ॥१३॥ वीर्य्यशौर्य्यबलोपेताःकौरवाश्चक्रवर्तिनः ॥ आसमुद्राःक्षितीशेंद्राजातास्तदपिशंकिताः ॥ १४ ॥ प्रद्युम्नप्रेषितःसाक्षादुद्धवोबुद्धिसत्तमः ॥ कौरवेंद्रपुरंप्राप्तोधृतराष्ट्रंददर्शह ॥१५॥ मदच्युतामस्यनृपस्यदंतिनांकस्तूरिकाकुंकुमगण्डशालिनाम् ॥ सिन्दूरशुण्डास्पदकर्णताडितैःषडंघ्रिभिर्मंडितमंदिराजिरम् ॥१६॥ यंभीष्मकर्णगुरुशल्यकृपैश्चभूरिबाह्लीकधौम्यशकुनैःसहसंजयेन ॥ दुःशासनेनविदुरेणचलक्ष्मणेनदुर्योधनेनचकृपीसुतसोमदत्तैः ॥ १७ ॥ श्रीयज्ञकेतुसहितैःसहितंनृपेंद्रंलीलातपत्रसितचामरहेमपीठैः ॥ संसेवितंपरिसमेत्यगजाह्वयेशंनत्वोद्धवःप्रणतआहकृतांजलिस्तम् ॥ १८ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ प्रद्युम्नेनप्रकथितंशृणुराजेंद्रसत्तम ॥ उग्रसेनःक्षितीशेंद्रोयादवेंद्रोमहाबलः ॥ १९ ॥ विजित्यनृपतीन्सर्वान्राजसूयंकरिष्यति ॥ प्रेषितस्तेनसेनाभिःप्रद्युम्नोरुक्मिणीसुतः ॥ २० ॥ जेतुंमहोद्भटान्वीराञ्जंबूद्वीपस्थितान्नृपान् ॥ चैद्यशाल्वजरासन्धदंतवक्रादिभूपतीन् ॥२१॥ विजित्यचागतःकार्ष्णिस्तस्मैयच्छबलिंबहु ॥ उपायनंचदातव्यंबंधूनामैक्यकाम्यया ॥ २२ ॥ माभूत्कुरूणांवृष्णीनांकलिर्नोचेद्भविष्यति ॥ तेनोदितंमेकथितंतत्क्षमस्वनृपेश्वर ॥ २३ ॥ दूतस्यहीनदोषस्यत्वयोक्तंयद्वदामितत् ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ तच्छ्रुत्वाकौरवाःसर्वेराजन्संजातमन्यवः ॥ वीर्य्यशौर्य्यमदोन्नद्धाऊचुःप्रस्फुरिताधराः ॥ २४ ॥

जोरि उद्धवजी बोले ॥ १८ ॥ हे राजेंद्रसत्तम ! प्रद्युम्ननें जो कछू कहिदई है ताहि सुनो उग्रसेन पृथ्वीको ईश यादवनमें इंद्र महाबली है ॥ १९ ॥ वो सवरी पृथ्वीके राजानकूं जीतिके राजसूय यज्ञ करैगो ताने सेना देके रुक्मिणीको बेटा भेज्योहै ॥ २० ॥ उद्भट जे वीर तिनकूं जीतिवेके लीये जंबूद्वीपके राजानकूं शिशुपाल, जरासंध, शाल्व, दंतवक्रादिक भूपति हैं ॥ २१ ॥ तिने कृष्णको बेटा प्रद्युम्न जीतिके भेट लेके आयोहै ताके अर्थ तुमहू बहुतसी भेट देउ और भेट तो तुमकूं देनी चहिये क्योंकि बंधूनमें एको बन्यो रहेगो ॥ २२ ॥ जो भेट न देउगे तो कौरवनमें और यादवनमें लड़ाई होयगी जो प्रद्युम्नने कही है सो मैंने तुमते कहिदीनी है मेरो अपराध तो क्षमा करियो जामें दूतको कछू दोष नहीं है तुम कहो सो उनते जायकहौं ॥ २३ ॥ नारदजी कहेहैं–हे राजन् ! या बातकूं सुनिके सबरे कौरव कोपमें भरिगये वीर्य शूरता ताके मदते उन्मत बोले–क्रोधते होठ

जिनके फड़कनलगे है ॥ २४ ॥ कालकी गति बड़ी दुरत्यय है अहो ! यह जगत् बड़े अचंभेको है देखो ये दुर्बल शिरकटा वनमें नाहरकी नाड़पै चढे आमें हैं ॥ २५ ॥ जिनको हमारे मुखतें हमारी दयातें हमारो दीयो राज्यसिंहासन है सो अब हमपैही हुकम चलामैंहै इनको देखो ऐसो भयो जैसो सांपनको दूध प्यायबो ॥ २६ ॥ यादव सब डरपोंका है युद्धमें घबड़ाय जायँहै तोऊ हुकम चलायवेकूं हाल ठाडे हैगये शरम जातिरही ॥ २७ ॥ थोडोसो पराक्रमी उग्रसेन जंबूद्वीपके राजानकूं जीतिके भेट लेके यज्ञ राजसूय करगोचाहै है देखो बड़े अचंभेकी बात है ॥ २८ ॥ जहां भीष्म, कर्ण, द्रोणाचार्य और दुर्योधन विराज रहेहैं तहां प्रद्युम्नने तोकूं मंत्री बनायके भेज्योहै न जानें याकूं कहा कुबुद्धि लगी है ॥ २९ ॥ जाते द्वारकाकूं चलेजाउ जो कोई दिन जीऔ चाहोहौ तो जो न मानोगे तो सबनको मारिके हम जमराजके घर पहुंचाय देयँगे ॥ ३० ॥

॥ ॥ कौरवाऊचुः ॥ ॥ दुरत्ययाकालगतिरहोचित्रमिदंजगत् ॥ सिंहोपरिप्रधावंतिशृगालादुर्बलावने ॥ २५ ॥ अस्मत्सकाशात्संबन्धाअस्मद्दत्तनृपासनाः ॥ दातॄणांप्रतिकूलास्तेदातॄणांफणिनोयथा ॥ २६ ॥ वृष्णयोभीरवःसर्वेयुधिविक्लवचेतसः ॥ तथैवशासनंकर्तुंप्रवृत्ताहिगतह्रियः ॥ २७ ॥ उग्रसेनोल्पवीर्यश्चजंबूद्वीपस्थितान्नृपान् ॥ विजित्याहोबलिंनीत्वाराजसूयंकरिष्यति ॥ २८ ॥ यत्रभीष्मश्चकर्णश्चद्रोणोदुर्योधनादयः ॥ तत्रत्वंप्रेषितोमन्त्रीप्रद्युम्नेनकुबुद्धिना ॥ २९ ॥ तस्माद्यातपुरींमध्येयूयंचेज्जीवनेच्छया ॥ नचेद्यास्यथवःसर्वान्नयामोयमसादनम् ॥ ३० ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्थंश्रीकृष्णविमुखैःकौरवैःपरिभाषितम् ॥ श्रुत्वोद्धवःशंबरारिमेत्यसर्वमुवाचह ॥ ३१ ॥ कौरवोक्तंवचःश्रुत्वाप्रद्युम्नोधन्विनांवरः ॥ प्रतिशार्ङ्गंसंगृहीत्वारोषात्प्रस्फुरिताधरः ॥ ३२ ॥ ॥ प्रद्युम्नउवाच ॥ ॥ कौरवान्घातयिष्यामिबन्धूनपिमदोद्धतान् ॥ बाणैस्तीक्ष्णैर्यथायोगीनियमैर्देहजारुजः ॥ ३३ ॥ यदूनांसैन्यचक्रेषुबलिंयोनप्रदास्यति ॥ कौरवेभ्योपिसपुमान्पितुर्मातुर्नचौरसः ॥ ३४ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ तदैवयादवाःसर्वेभोजवृष्ण्यंधकादयः ॥ गजाह्वयंययुःसैन्यैराजन्संजातमन्यवः ॥ ३५ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेकौरवेभ्योदूतप्रेषणंनामैकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ तदैवकौरवाःसर्वेनिर्गतादीप्तमन्यवः ॥ स्वैःस्वैर्बलैःसमायुक्तायोद्धुंप्रद्युम्नसंमुखे ॥ १ ॥

नारदजी कहेहैं–ऐसे श्रीकृष्णतें विमुख जे कौरव ते बकिउठे ताहि उद्धवजी सुनिके चलेआये शंबरके वैरी प्रद्युम्नके आगे सब कहदई ॥ ३१ ॥ कौरवनको कह्यो वचन सुनके धनुषधारीनमें श्रेष्ठ प्रद्युम्नके रोषतें होठ फडकनलगे और शार्ङ्ग धनुष उठाइलीनो और यह बोले ॥ ३२ ॥ हे तो हमारे बंधु पर बडे मतवारे हैगये हैं सो अब में इन कौरवनको मारूंगो पैने पैने बाणनतें जैसे योगी नियमनतें देहके रोगनकूं मारे है ॥ ३३ ॥ यादवनकी फौजमे जो कोई कौरवनपैतें भेट न लेय सो अपने माता पितातें पैदा नहीं है ॥ ३४ ॥ नारदजी कहे है तबही सबरे यादव, भोज, वृष्णि, अंधक सब सेनाकूं लेके क्रोध करिके हस्तिनापुरकूं चलेगये ॥ ३५ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटीकायां नारदबहुलाश्वसंवादे कौरवेभ्योदूतप्रेषणंनामैकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥ नारदजी कहेहैं–ताही समय कौरवहू क्रोधके मारे सब निकसे अपनी अपनी सेना लेके युद्ध करिवेकूं प्रद्युम्नके

सन्मुख आये ॥ १ ॥ रत्ननके गहने पहरे दुसाले ओढे विजयकी ध्वजानसों भूषित साठि हजार ऐसे हाथी पहलेई निकसे सोनेकी सांकर जिनके पावँनमें बंधी हैं ॥ २ ॥ प्रलयके समुद्रकी घर्राहट जिनकी ऐसी बंब जिनपै बजतआमें ऐसे साठि हजार हाथी निकसे ॥ ३ ॥ हाथी, बैल और बडे मल्ल लोहेकी जंजीर पहरे शिरस्त्राण मुकट पहरे दो लाख निकसे ॥ ४ ॥ फेर सुन्हेरी कडे बाजू किरीट कुंडल पहरे सुन्हेरी अँगरखानको पहरे हाथीनपै चढे ऐसे दो लाख वीर निकसे ॥ ५ ॥ पीरे जिनके जामा टेढी २ पाग पहरे बडे २ नामी वीर हाथीनपै सवार है द्वै लाख निकसे हैं ॥ ६ ॥ लाल वस्त्र लालनके गहने पहरे लाल बनातनकी जिनकी झूल ऐसे बड़े ऊँचे हाथीनपै बैठे निकसे हैं ॥ ७ ॥ कोइ कारे वस्त्र पहरे, कोई हरे वस्त्र पहरे, कोई शुक्लवस्त्र पहरे, कोई कुछ लाल कुछ सुफेद वस्त्र पहरे निकसे हैं ॥ ८ ॥ विमानसे रथमें

विजयध्वजसंयुक्तारत्नकंबलमण्डिताः ॥ गजाःषष्टिसहस्राणिनिर्ययुःस्वर्णशृंखलाः ॥२॥ प्रलयाब्धिमहावर्तसङ्घर्षध्वनिकारिणाम् ॥ गजाः-षष्टिसहस्राणिदुंदुभीनांविनिर्गताः ॥ ३ ॥ गजागावोबृहन्मल्लालोहकंचुकमण्डिताः ॥ शिरस्त्रमौलिसंयुक्ताद्विलक्षाणिविनिर्ययुः ॥ ४ ॥ हेमकंकणकेयूरकिरीटवरकुण्डलाः ॥ गजस्थांश्चद्विलक्षाणिनिर्ययुःस्वर्णकंचुकाः ॥ ५ ॥ पीतकंचुकसंयुक्तास्तिर्यगुष्णीषशालिनः ॥ गजस्थाश्च द्विलक्षाणिसंग्रामेलब्धकीर्तयः ॥ ६ ॥ रक्तांबरधराःकेचिद्रक्तभूषणभूषिताः ॥ रक्तकम्बलसंयुक्तैर्गजैरुच्चैर्विनिर्गताः ॥ ७ ॥ कृष्णांबरधरानागैर्हरिद्वस्त्रसमावृताः ॥ केचिच्छुक्लांबराःकेचिन्निर्ययुःपाटलांबराः ॥ ८ ॥ रथैश्चदेवधिष्ण्याभैर्मृगेंद्रध्वजशोभितैः ॥ पतत्पताकैरत्युच्चैर्निर्ययुःकोटिशोनृपाः ॥ ९ ॥ आंगैर्वांगैःसैंधवैश्चचंचलैस्तुरगैर्नृपाः ॥ मनोजवैःस्वर्णभूषैर्निर्ययुःशस्त्रसंवृताः ॥ १० ॥ समंतान्निर्ययुर्वीरालोहकंचुकमंडिताः ॥ विद्याधरसमाराजन्संकुलायुद्धशालिनः ॥ ११ ॥ जगुर्यशःकौरवाणांसूतमागधवंदिनः ॥ भेरीमृदंगपटहैरानकैर्युद्धनिःस्वनैः ॥ १२ ॥ मृगेंद्रध्वजसंयुक्तैःशुक्लवाहनियोजितैः ॥ व्यजनैर्वज्रदंडैश्चचामरांदोलिराजितैः ॥१३॥ चतुर्योजनमात्रेणचंद्रमंडलचारुणा ॥ छत्रेणमंडितेराजभिर्दत्तेनमनोहरे ॥ १४ ॥ दुर्योधनोबभौसैन्येमहतिस्यंदनेस्थितः ॥ तथान्येधार्तराष्ट्राश्चस्यंदनेस्यंदनेस्थिताः ॥ १५ ॥ चतुर्योजनमानैश्चछत्रैर्मुक्ताविलंबिभिः ॥ सुरथेनातिभीष्मेणकृपेणगुरुणासह ॥ १६ ॥

बैठके सिंहकी ध्वजा और बडी ऊंची पताकानसों शोभित ऐसे किरोड़न वीर निकसे हैं ॥ ९ ॥ अंग, वंग, सिंधु इन देशनके घोड़ा चंचल मनकेसे वेगवारे सुन्हेरी जिनपै साज चढ़ेभये शस्त्र लिये हे नृप ! निकसे हैं ॥ १० ॥ चारों बगलते वीर लोहेनकी जंजीरके अंगरखा पहरे विद्याधरनके समान युद्धके कर्त्ता निकसे हैं ॥ ११ ॥ सूत मागध, बंदीजन कौरवनको यश गावत चलैहैं भेरी, ढोल, मृदंग, नगाड़े युद्धके बाजे बजते चलेहैं ॥ १२ ॥ सिंहकी ध्वजा जिनमें श्वेत घोड़ा जिनमें जुड़े हीराकी डंडीके चमर, छत्र जिनपै होते आमें बीजना होत आमें ॥ १३ ॥ चार योजनको चंद्रमाकोसो जाको मंडल राजानने दीने जे छत्र तिनमें शोभित मंडलमें ॥ १४ ॥ वा सेनामें बड़े रथमें बैठ्यो दुर्योधन बडो शोभित होतोभयो औरहू धृतराष्ट्रके बेटा अपने २ रथनमें बैठे आये ॥ १५ ॥ सोलह कोस ताईं मोती जिनमें लटके ऐसे छत्रनकी छायामें बैठी सुरथ,

गुरु कृपाचार्य द्रोण, भीष्मके संग दुर्योधन आवतभयो ॥ १६ ॥ औरहू वाल्हीक, कर्ण, शल्य, बुद्धिमान् सोमदत्त, अश्वत्थामा, कर्ण, धौम्य, धनुषधारी लक्ष्मणकुमार ॥ १७ ॥ वीर शकुनी मामा, दुःशासन, संजय, भूरि यक्षकेतु, भूरिश्रवा ॥ १८ ॥ इनके संग दुर्योधन कैसो शोभित भयो मरुद्गणनते इंद्र जैसे शोभित होय तबही इंद्रप्रस्थते पांडवनकी भेजी दो पृतना सेना आई ॥ १९ ॥ जो सोलह अक्षौहिणी सेनाको संग लिये वर्तमान जे कौरव हैं तिनकी रक्षा करनेको आईहै ॥ २० ॥ तब पृथ्वी हालनलगी रजते आकाश भरिगयो दिशागूंजनलगीं हाथी, घोड़ा, रथ इनकी रेणुते तारेकी बराबर सूर्य दीखनलग्यो ॥ २१ ॥ भूमिमें अन्धकार हैगयो देवताहू सब शंकित हैगये जहां तहां हाथीनके मारे वृक्ष जाय परे ॥ २२ ॥ घोड़ान सहित वीरनके वेगसों भूमण्डल क्षुब्धिगयो तब कौरवनकी और यादवनकी सेना परस्पर ॥ २३ ॥ पैने पैने शस्त्रनते जैसे लहरीनते सातों समुद

वाह्लीककर्णशल्यैश्चसोमदत्तेनधीमता ॥ अश्वत्थाम्नाचधौम्येनलक्ष्मणेनधनुष्मता ॥ १७ ॥ शकुनिनाचवीरेणतथादुःशासनेनच ॥ संजयेन तथासाक्षाद्भूरिणायक्षकेतुना ॥ १८ ॥ सुयोधनोनृपोरेजेयथाशक्रोमरुद्गणैः ॥ इंद्रप्रस्थात्पांडुपुत्रैःप्रेषितंपृतनाद्वयम् ॥१९॥ तदैवचागतंराजन्कौरवाणांसहायकृत् ॥ अक्षौहिणीभिःषोडशभिःकुरूणांचलतांतदा ॥२०॥ चचालभूर्दिशोनेदूरजोव्याप्तंनभोभवत् ॥ तारकेवबभौसूर्योगजाश्वरथरेणुभिः ॥ २१ ॥ अंधकारोभवद्भूमौदेवाःसर्वेपिशंकिताः ॥ यत्रतत्रगजानांचचोदनाभिश्चभूरुहाः ॥२२॥ निपेतुस्तुरगैर्वीरैःक्षुण्णभूखंडमंडलम् ॥ सेनाकुरूणांवृष्णीनांयुयुधुश्चपरस्परम् ॥ २३ ॥ तीक्ष्णैःशस्त्रैर्यथासप्तसमुद्रास्तरलैर्लये ॥ हयाहयैरिभाश्चेभैरथिनोरथिभिःसह ॥ २४ ॥ श्येनैःश्येनाइवक्रव्येपत्तयःपत्तिभिर्मृधे ॥ महामात्यैर्महामात्याःसूताःसूतैर्नृपैर्नृपाः ॥२५॥ युयुधुःक्रोधसंयुक्ताःसिंहैःसिंहाइवौजसा ॥ खड्गैःकुंतैःशक्तिभिश्चभल्लैःपट्टिशमुद्गरैः ॥ २६ ॥ गदाभिर्मुसलैश्चक्रैस्तोमरैर्भिंडिपालकैः ॥ शतघ्नीभिर्भुशुंडीभिःकुठारैश्चस्फुरत्प्रभैः ॥२७॥ चिच्छिदुर्बाणपटलैःशिरांसिक्रोधमूर्च्छिताः ॥ बाणांधकारेसंजातेप्रद्युम्नोधन्विनांवरः ॥ २८ ॥ दुर्योधनेनयुयुधेधनुष्टंकारयन्मुहुः ॥ अनिरुद्धश्चभीष्मेणदीप्तिमांश्चकृपेणवै ॥ २९ ॥ भानुर्द्रोणेनसांबस्तुवाह्लीकेननृपेश्वर ॥ मधुःकर्णेनचायुध्यद्बृहद्भानुःशलेनवै ॥ ३० ॥

अपनी तरंगनसों प्रलयमें लड़ैहैं तैसे लड़नलगे सवारनते सवार, रथीनते रथी, हाथीनते हाथी ॥ २४ ॥ और पत्तिनते पत्ति लड़नलगे मांसके लीये शिकरा पखेरू जैसे लड़ैहै महावतनते महावत, सारथीनते, सारथी रथीनते रथी और राजानते राजा ॥ २५ ॥ क्रोधके भरेभये बड़े जोरते नाहरते नाहर जैसे लड़ैहैं तैसे लड़ैहै खड्गनते, बरछीनते, भल्लनते, पटेनते, मुद्गरनते ॥ २६ ॥ गदानते, मूसलनते, चक्रनते, तोमरनते, भिंदिपालनते, शतघ्नीनते, तोपनते, कुठारनते, चमकने शस्त्रनते लड़न लगेहैं ॥ २७ ॥ क्रोधमें मूर्च्छित भये बाणनके झुंडनते शिर काटि काटिके गेरहै जब बाणनको बड़ो अंधकार भयो तब धनुषधारीनमें मुख्य प्रद्युम्न ॥ २८ ॥ धनुषकी बारंबार टंकार करत दुर्योधनते युद्ध करतो भयो, अनिरुद्ध भीष्मते, दीप्तमान् कृपाचार्यते ॥ २९ ॥ भानु द्रोणाचार्यते, वाल्हीकते सांब, मधु कर्णते और हे नृपेश्वर ! बृहद्भानु शलते युद्ध करतेभये ऐसेही ॥ ३० ॥

चित्रभानु हरिको बेटा सोमदत्त बुद्धिमानते, वृक अश्वत्थामाते, अरुण धौम्यते लडतोभयो ॥ ३१ ॥ पुष्कर दुर्योधनको बेटा लक्ष्मणते, वेदबाहु कृष्णको बेटा शकुनीते ॥ ३२ ॥
श्रुतदेव हरिको बेटा दुःशासनते, तैसेंई संजयते सुनंदन लडतोभयो ॥ ३३ ॥ विदुरते साक्षात् गद, भूरिश्रवाते कृतवर्मा, यक्षकेतुते अक्रूर युद्ध करतोभयो ॥ ३४ ॥ ऐसे परस्पर
बडोभारी घोर युद्ध होतोभयो तब प्रद्युम्नने देखा कि, दुर्योधनकी बडी सेना है ॥ ३५ ॥ तब बाणनके समूहते फौजकूं बिलोमन लग्यो जैसे वाराह प्रलयके समुद्रकूं डाढते
बिलोवेहै बाणनके मारे हाथीनके कुंभस्थल आकाशमेंते कढि कढिके गिरेहैं ॥ ३६ ॥ तिनमेंते मोती गिरेहैं गिरे जे मोती तिनकी पृथ्वीमें रात्रिके विषय कैसी शोभा भई जैसे
आकाशमें तारागण शोभित होयहै बाणनते रथीनने रथनकूं और सारथीनको ऐसे पटके हैं जैसे ॥ ३७ ॥ वा महासंग्राममें हे मैथिलेंद्र ! वायु अपने वेगते तरुनकूं पटकैहै वा समय

चित्रभानुर्हरेःपुत्रःसोमदत्तेनधीमता ॥ अश्वत्थाम्नावृकश्चैवारुणोधौम्येनमैथिल ॥ ३१ ॥ पुष्करोलक्ष्मणेनाशुदुर्योधनसुतेनवै ॥ वेदबाहुःकृ
ष्णसुतःशकुनेनमहामृधे ॥ ३२ ॥ दुःशासनेनसमरेश्रुतदेवोहरेःसुतः ॥ तथाहियुयुधेयुद्धेसंजयेनसुनंदनः ॥ ३३ ॥ विदुरेणगदःसाक्षात्कृतव
र्माचभूरिणा ॥ अक्रूरोयुयुधेराजन्नाहवेयक्षकेतुना ॥ ३४ ॥ एवंपरस्परंयुद्धंबभूवतुमुलंमहत् ॥ कार्ष्णिर्विलोकयामासदुर्योधनबलंमहत् ॥३५॥
बाणसंघेनवाराहोदंष्ट्रयाचयथार्णवम् ॥ बाणसंभिन्नकुंभानांकरिणांप्रपतंतिखात् ॥३६ ॥ मुक्ताफलानिरेजुःकौरात्रौतारागणाइव ॥ बाणैःसंपा
तयामासरथिनःसारथीन्रथान् ॥ ३७ ॥ महामृधेमैथिलेंद्रवेगैर्वातोयथातरून् ॥ दुर्योधनस्तदाप्राप्तोधनुष्टंकारयन्मुहुः ॥ ३८ ॥ प्रद्युम्नंताड
यामाससायकैर्दशभिर्मृधे ॥ तान्प्रचिच्छेदभगवान्प्रद्युम्नोयादवेश्वरः ॥३९॥ दुर्योधनःपुनस्तस्यकवचेसायकान्दश ॥ निचखानस्वर्णपुंखा
न्भित्त्वावर्मतनौगताः ॥ ४० ॥ सहस्रैर्बाणपटलैःसहस्राश्वाञ्जघानह ॥ चिच्छेदबाणशतकैःकोदंडंसगुणंपरम् ॥ ४१ ॥ शंबरारेर्महावीरोधृत
राष्ट्रसुतोबली ॥ प्रद्युम्नस्तंरथंत्यक्त्वाथान्यमारुह्यसत्वरम् ॥ ४२ ॥ कृष्णदत्तंधनुर्नीत्वासज्यंकृत्वाविधानतः ॥ एकंबाणंसमाधायकर्णांतंतच
कर्षह ॥ ४३ ॥ भुजदंडस्यवेगेनतद्रथेनिचकर्षह ॥ गृहीत्वातद्रथंबाणोभ्रामयित्वाघटीद्वयम् ॥ ४४ ॥ आकाशात्पातयामासकमंडलुमिवा
र्भकः ॥ पतनेनरथः सद्यश्चूर्णीभूतोबभूवह ॥ ४५ ॥ समृताश्वहयाःसर्वेपंचतांप्रापुरग्रतः ॥ अन्यंरथंसमास्थायधार्तराष्ट्रोमहाबलः ॥ ४६ ॥

बेर २ धनुषकूं टंकारतो दुर्योधन प्राप्त भयो है ॥ ३८ ॥ आवतेंही याने वा संग्राममें दश बाण प्रद्युम्नके मारे वे बाण भगवान् प्रद्युम्नने काटिडारे ॥ ३९ ॥ फिर दुर्योधनने दश
बाण प्रद्युम्नके कवचमें मारेहैं वे बाण कवचकूं छेदके प्रद्युम्नके शरीरमें धसिगये ॥ ४० ॥ फिर हजार बाणनके पटलनतें दुर्योधनने हजारन घोड़ा मारिडारे और सौ बाणनतें
॥ ४१ ॥ शंबरारि प्रद्युम्नको महाबली धृतराष्ट्रके बेटाने धनुष काटडारो तब प्रद्युम्न वा रथकूं छोडिके और रथमें चढिके ॥ ४२ ॥ कृष्णके दीये धनुषकूं लेके विधानतें चढा
यके काननतलक खैंचिके एक बाण मारचो ॥ ४३ ॥ भुजदंडके वेगते वो बाण दुर्योधनके रथमें जायगड्यो सो वा रथकूं लेके आकाशमें दोघडी तलक घुमायके ॥ ४४ ॥
आकाशते धरतीमें पटकदियो जैसे कमंडलुकूं बालक पटकैहै पटकेतेही रथको तो शीघ्रही चूर्ण हैगयो ॥ ४५ ॥ सबरे सूत सबरे घोडाऊ मरिगये तब बडो बली ये धृतराष्ट्रको

बेठा और रथमें बैठ्यो ॥ ४६ ॥ फेर दश बाण याने प्रद्युम्नके मारे ते बाण ऐसे लगे जैसे हाथीके कोई माला मारेहै ॥ ४७ ॥ फिर प्रद्युम्नने कृष्णके दीये धनुषमें एक बाण संधानो सो बाण जबतक दुर्योधनके रथकूं लैके आकाशमें उडैहीहै ॥ ४८ ॥ कि फेर दूसरो बाण मारयो वुह वा रथकूं और ऊंचो लैगयो फिर तीसरो बाण मारयो सो वा रथकूं लेके दुर्योधनके मंदिरके आंगनमें ॥ ४९ ॥ धृतराष्ट्रके आगे रथसमेत सारथी समेत सुयोधनकूं आकाशमेंते पटकिदियो जैसे पवन कमलके फूलकूं पटके ॥ ५० ॥ ऐसे वुह बाण दुर्योधनकूं पटकिके संग्राममें फेर प्रद्युम्नके पास आयगयो ॥ ५१ ॥ पड़वेते रथको चूर्ण हैगयो अंगार जैसे विखर जायहै और दुर्योधन मुखते रुधिर वमन करत मूर्च्छित हैके जाय पर्यो ॥ ५२ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटीकायां कौरवयुद्धवर्णनं नाम विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ नारदजी कहैहैं-कि, ऐसे जब संग्राममेंते दुर्योधन

प्रद्युम्नंताडयामासदशभिःसायकैर्मृधे ॥ तैस्ताडितोहरेःपुत्रोमालाहतइवद्विपः ॥ ४७ ॥ कृष्णदत्तेचकोदंडेतथैकंबाणमादधे ॥ बाणस्तंसरथं नीत्वायावत्प्रागान्महांबरे ॥ ४८ ॥ तावद्बाणोद्वितीयोपितंगृहीत्वाययौत्वरम् ॥ तावत्तृतीयःसंप्राप्तोनीत्वातंमंदिराजिरे ॥४९॥ धृतराष्ट्रस मीपेचसरथंसाश्वसारथिम् ॥ आकाशात्पातयामासपद्मकोशमिवानिलः ॥५०॥ बाणस्तंपातयित्वातुरणेकार्ष्णिसमाययौ ॥ ५१ ॥ पतनेनविशीर्णोभूदंगारइवतद्रथः ॥ सुयोधनोमूर्च्छितोभूदुद्वमन्रुधिरंमुखात् ॥ ५२ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खंडेनारदबहुलाश्व संवादेकौरवयुद्धवर्णनंनामविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ दुर्योधनेगतेतत्रहाहाकारोमहानभूत् ॥ तदादेवव्रतोभीष्मोगांगे यःप्रययौत्वरम् ॥ १ ॥ यदूनांपश्यतांतेषांधनुष्टंकारयन्मुहुः ॥ भस्मीकर्तुंयदुबलंवनंवह्निरिवज्वलन् ॥ २ ॥ सर्वधर्मभृतांश्रेष्ठोमहाभागवतः कविः ॥ वीरयूथाग्रणीर्येनरामोपियुधितोषितः ॥ ३ ॥ शिरस्त्रीमुकुटीगौरःसितश्मश्रुःपितामहः ॥ यथाषोडशवर्षीयोयुद्धांतेविचरन्बलात् ॥ ॥ ४ ॥ बाणैर्निपातयामासानिरुद्धस्यबलंमहत् ॥ करिणश्छिन्नशिरसोहयास्तेभिन्नकन्धराः ॥ ५ ॥ खड्गहस्ताभिन्नबाणैःपत्तयोपिद्विधाभ वन् ॥ रथाश्चूर्णीकृतायेनहतसूताश्वनायकाः ॥६॥ अधोमुखाऊर्ध्वमुखाश्छिन्नपादाङ्घ्रिपात्मजाः ॥ खड्गहस्ताधनुर्हस्ताःपतिताश्छिन्नबाहवः ॥ ॥ ७ ॥ केचिद्वैच्छिन्नकवचानिपेतुर्भूमिमण्डले ॥ अश्वैर्वीरैरथैर्नागैःपतितैःस्वर्णभूषितैः ॥ ८ ॥

चल्योगयो तब कौरवनकी सेनामे बडो हाहाकार मच्यो ता समय देवव्रत भीष्म गंगापुत्र बडी जलदी आये ॥ १ ॥ तब उन यादवनके देखत २ वारंवार धनुषकूं टंकारते यादवनकी सेनाकूं भस्म करयो चाहैहै जैसे अग्नि वनकूं तैसे ॥ २ ॥ सब धर्मधारीनमें श्रेष्ठ महाभागवत बडे ज्ञानी और वीरनके यूथाग्रणी परशुरामको जाने युद्धमें प्रसन्न कीनो ॥ ३ ॥ शिरस्त्राण (मुकुट) पहरे, गौर जिनको वर्ण, श्वेत डाढी, मूंछवारे जैसे सोलह वर्षको ज्वान तैसे जो बलसों युद्धमें विचरैहै ॥ ४ ॥ ऐसे भीष्मजी बाणनते अनिरुद्धकी बडी सेनाकूं पटकते भये नाड़ कटे हाथी, कंधरा कटे घोड़ा जाय परे ॥ ५ ॥ खड्ग हाथमें लीये बाणनते छिदे दो २ टूक हैके प्यादे जायपरे, रथ चूर्ण हैगये, रथी, सारथी, घोड़ा जिनके मरिगये ॥ ६ ॥ ऊंचेकूं मुख, नीचेकूं मुख, पांव कटे, शिर कटे, खड्ग लीये, धनुष लीये, भुजा कटे, बहुत राजा कटके जायपरे ॥ ७ ॥ कितनेही कटे हैं कवच जिनके ऐसे भूमि

मं जायपरे और सुवर्णसों शृंगार कियेभये घोड़ा, हाथी, रथ, रथी जायपरे ॥ ८ ॥ तब युद्धमण्डलकी बड़ी शोभा भई जैसे गिरभये फलदार वृक्षनते वनकी शोभा होयहै ॥ ९ ॥ शस्त्रही हैं दांत जाके, ध्वजा है वस्त्र जाके, हाथी हैं स्तन जाके रथनके पैया हैं कर्णफूल जाके ऐसी जो भूमि है वा मूर्तिमती महामारीसी शोभित भई फेर रुधिरकी नदी बही ता नदीमें रथ, घोड़ा, मनुष्य बहिनलगे ॥ १० ॥ बड़ी भयंकर नदी बही जैसी वैतरणी नदी होयहै जाके तटपै कूष्मांड, उन्माद, वेताल, भैरव गर्जनलगे भयंकर शब्द बोलनलगे ॥ ११ ॥ महादेवकी मालाके लीये वीरनके शिर बीनहैं यह रंग देखिके बडी पताकाके रथमें बैठके अनिरुद्ध आयो ॥ १२ ॥ सो धनुषधारीनमें श्रेष्ठ अपनी सेनाकूं पड़ी देखिके रणमें भीष्मकूं देखिके मलयके समुद्रसी गहरात चली आवे सो पराई सेनाकूं देखिकें ॥ १३ ॥ अनिरुद्धने एकही बाणतें भीष्मके धनुषकी प्रत्यंचा काटडारी चोंचतें गरुड जैसे

युद्धमण्डलमारेजेवनंवृक्षैर्हतैर्यथा ॥ शस्त्रदंताबाणकेशाध्वजवस्त्राकारिस्तना ॥ ९ ॥ रथांगकुशलाराजन्महामारीवभूर्वभौ ॥ क्षतजस्रावसंभूता रथाश्वनरवाहिनी ॥ १० ॥ आपगाभून्महादुर्गानरैर्वैतरणीयथा ॥ कूष्मांडोन्मादवेतालानदंतोभैरवंस्वनम् ॥ ११ ॥ हरमालार्थमागत्यज गृहुर्नृशिरांसिच ॥ रथेनातिपताकेनानिरुद्धोधन्विनांवरः ॥ १२ ॥ स्वबलंपतितंदृष्ट्वाप्रागाद्भीष्मंमृधेमहान् ॥ प्रलयाब्धिमहावर्तभीमसंघर्ष नादिनीम् ॥ १३ ॥ धनुर्ज्यांतस्यचिच्छेदबाणेनैकेनकार्ष्णिजः ॥ तुण्डयातीक्ष्णयाराजन्गरुडःसर्पिणींयथा ॥ १४ ॥ भीष्मोन्यद्धनुरादायस ज्यंकृत्वातदात्मवान् ॥ सर्वेषांपश्यतांतत्रब्रह्मास्त्रंसंदधेमृधे ॥ १५ ॥ ततःप्रादुष्कृतंतेजःप्रचण्डंवीक्ष्यमाधवः ॥ स्वबलस्यापिरक्षार्थंब्रह्मास्त्रंस न्दधेस्वयम् ॥ १६ ॥ द्वादशादित्यसङ्काशेयुयुधातेपरस्परम् ॥ त्रींल्लोकान्दहतीद्वीपंनिरुद्धस्तंजहारह ॥ १७ ॥ गांगेयस्यापिकोदण्डंतडिद्वर्ण यदूत्तमः ॥ चिच्छेदसायकैःसूर्योनीहारमिवरश्मिभिः ॥ १८ ॥ भीष्मोगृहीत्वाथगदांलक्षभारमयींदृढाम् ॥ प्राहिणोदनिरुद्धायसिंहनादंतदा करोत् ॥ १९ ॥ गृहीत्वावामहस्तेनगरुत्मानिवपन्नगीम् ॥ प्रद्युम्नोभगवान्साक्षात्प्राहिणोत्स्वगदांहृदि ॥ २० ॥ गदाप्रहारव्यथितोमूर्च्छितः पतितोरथात् ॥ बभौसूर्योयथाकाशाद्गांगेयोमृधमण्डले ॥ २१ ॥

सर्पिणीकूं करतहै ॥ १४ ॥ तब भीष्मने और धनुष लै वापै प्रत्यंचा चढाय सबनके देखत २ अपनी सेनाकी रक्षाके लिये संग्राममें ब्रह्मास्त्र चलायो ॥ १५ ॥ तब वामेंते निकसे प्रचंड तेजकूं देखिके अनिरुद्धनेभी अपनी सेनाकी रक्षाके निमित्त ब्रह्मास्त्र चलायो ॥ १६ ॥ तब बारह सूर्यनकोसो जिनको तेज ऐसे दोनों वे अस्त्र आपुसमें लड़नलगे तब त्रिलोकीकी जलती देखके अनिरुद्धने वे दोनों अस्त्र सैंचलीने ॥ १७ ॥ फिर भीष्मके बीजरीसे धनुषकूं अनिरुद्ध बाणते काटतोभयो जैसे सूर्य किरणनते कुहरकूं काटेहै ॥१८॥ तब भीष्महू १ लाख भारकी दृढ गदाकूं अनिरुद्धपै चलाय सिंहनाद करतो भयो ॥ १९ ॥ अनिरुद्ध भगवानने बांये हाथते वा गदाकूं ऐसे पकड़लीनी जैसे गरुड़ सर्पिणीकूं पकड़ैहै और फिर अपनी गदा भीष्मके हृदयमें मारी ॥ २० ॥ भीष्मजी गदाके प्रहारते दुःखी हैके मूर्च्छित है रथमेते नीचे जायपड़े जैसे आकाशमेंते सूर्य तैसेंही

रणमें भीष्म गिरिपरचो ॥ २१ ॥ तब कृपाचार्यभी अनिरुद्ध महात्माके ऊपर बर्छी लेके चलावतेभये रोषते होठ जिनके फड़कैंहैं ॥ २२ ॥ तब दीप्तिमान् कृष्णको बेटा या बर्छीकूं पैने खांडेते बीचहीमे फाटतो भयो जैसे कुवाक्यनसों मित्रताकी कोई काटै ॥ २३ ॥ तब द्रोणाचार्य बड़ी भुजानवारे भानुके ऊपर क्रोध करिके पर्वतास्त्र फेंकत भये और धनुषकूं बारंबार टंकारतेभये ॥ २४ ॥ तब हे राजेंद्र! पर्वतास्त्रसों आकाशते पर्वत गिरे वे पराई फौजकूं पीसनलगे तिन पर्वतनके पड़वेते फौजमें बड़ो हाहाकार भयो ॥ २५ ॥ तब हरिको बेटा भानु वायव्यास्त्रकूं फेंकतभयो ता पवनकरिके पर्वत सब रणमेंसे उडिगये ॥ २६ ॥ तब बाह्लीकने क्रोध करिके अग्निको अस्त्र चलायो तब सेना सब भस्म होनलगी जैसे बड़ो वन अग्निते भस्म होयहै ॥ २७ ॥ तब सांब जांबवतीको बेटा पर्जन्यास्त्र चलावतभयो तातें अग्नि सब शांत

कृपाचार्योपितत्रैवानिरुद्धायमहात्मने ॥ शक्तिंनिक्षेपसहसारुषाप्रस्फुरिताधरः ॥ २२ ॥ दीप्तिमान्कृष्णपुत्रस्तुपथिचिच्छेदतांनृप ॥ खड्गे

नशितधारेणकुवाक्येनेवमित्रताम् ॥ २३ ॥ द्रोणाचार्योमहाबाहुर्भानूपरिरुषान्वितः ॥ चिक्षेपपार्वतंचास्त्रंधनुष्टंकारयन्मुहुः ॥ २४ ॥

पतंतःपर्वताव्योम्नश्चूर्णयंतोद्विषद्बलम् ॥ तेषांपातेनराजेन्द्रहाहाकारोमहानभूत् ॥ २५ ॥ तदाहरेःसुतोभानुर्वायव्यास्त्रंसमाददे ॥ तद्वातेनाद्र

यःसर्वेउड्डीताह्यभवन्रणात् ॥ २६ ॥ बाह्लीकस्तुतदाक्रुद्धोवह्न्यस्त्रंसंदधेततः ॥ भस्मीभूतंबलंजातंवह्निनेवमहद्वनम् ॥ २७ ॥ पार्जन्यमाद

देतत्रसांबोजांबवतीसुतः ॥ तेनशांतिंगतोवह्निर्ज्ञानेनेवत्वहंकृतिः ॥ २८ ॥ कर्णस्ततोमधुंहित्वासांबोपरिरुषान्वितः ॥ जघानबाणर्विंश

त्याजगर्जैघनवद्बली ॥ २९ ॥ तद्बाणैःसरथःसांबोबभ्रामघटिकाद्वयम् ॥ क्रोशंपुनःप्रपतितःकिंचिद्व्याकुलमानसः ॥ ३० ॥ पुनर्गदांसमा

दायरथंत्यक्त्वासमेत्यसः ॥ तताडगदयाकर्णसांबोजांबवतीसुतः ॥ ३१ ॥ तत्प्रहारव्यथितःपतितोधरणीतले ॥ मूर्च्छांप्रापरणेराजन्कर्णो

वीरोमहाबलः ॥ ३२ ॥ सांबोपिस्वधनुर्नीत्वारथमारुह्यवेगतः ॥ शूलंजघानविंशत्यासोमदत्तंचपञ्चभिः ॥ ३३ ॥ द्रौणिंचदशभिर्बाणै

र्धौम्यंषोडशभिस्तथा ॥ लक्ष्मणंदशभिस्तत्रशकुनिंपञ्चभिस्तथा ॥ ३४ ॥ दुःशासनंचविंशत्याविंशत्यासंजयंपृथक् ॥ भूरिंबाणशतैराज

न्यक्षकेतुंशतैःशितैः ॥ ३५ ॥

हैगई जैसे अहंकार ज्ञानतें शांत होयहै ॥ २८ ॥ तब कर्ण मधुकूं छोड़के सांबके ऊपर धायो सो सांबके बीस बाण मारिके बली कर्ण घनसो गर्जनलग्यो ॥ २९ ॥ तिन बाणन करिके रथसहित सांब कोसभरपै जायपरचो और दो घड़ी भ्रम्यो कछु व्याकुलमन ह्वैगयो ॥ ३० ॥ फेर रथकूं छोड़ गदा लैके पास आय कर्णके मारतभयो सांब जांबवतीको बेटा ॥ ३१ ॥ तब गदाके प्रहारते कर्ण महाबली मूर्च्छित ह्वैके हे राजन्! पृथ्वीमें जायपरचो ॥ ३२ ॥ तब सांबनेहू धनुष लैके बड़े वेगते रथमें बैठके बीस बाण या शूलके मारे और पांच बाण सोमदत्तके मारे ॥ ३३ ॥ दश बाण अश्वत्थामाके मारे, धौम्यके सोलह बाण, दश लक्ष्मणके और पांच बाण शकुनीके मारे ॥ ३४ ॥ बीस दुःशासनके, बीस संजयके, सौ बाण भूरिश्रवाके, यक्षकेतुके सौ बाण पैने पैने मारे ॥ ३५ ॥

दश दश बाण नेतानके, एक एक बाण घोड़ा हाथीनके और पांच पांच बाण सब वीरनके सांब मारतोभयो ॥ ३६ ॥ तब सांबकी या हस्तलाघवताको देखिके अपनी पराई सेनाके सब वीर बड़ाई करनलगे ॥ ३७ ॥ और बड़े विस्मयकूं प्राप्त भये तब भीष्मजी उठिके उत्तम धनुषकूं लेके ॥ ३८ ॥ दश बाणनते सांबके कोदंडकूं काटते भये फिर भीष्म और महाबली द्रोणाचार्यहू बाणनते ॥ ३९ ॥ और हे मानद ! कर्ण ये सब यादवनकी सेनानकूं मारनलगे जैसे विषय ज्ञानको मारेंहैं दुर्योधन फिर रथमें बैठिके ॥ ४० ॥ दश अक्षौहिणी सेना लेके नाद करतो युद्ध करिबेकूं आयो ॥ ४१ ॥ हे मैथिल ! ताही समय राम कृष्ण दोनों पुराणपुरुष प्रकट होतेभये गरुडकी ध्वजा और तालकी ध्वजाके रथनमें बैठेभये दिशानमें उजीतो करते प्रकट भये ॥ ४२ ॥ तब जय जय शब्द होनलग्यो देवता पुष्पनकी वर्षा करनलगे गंधर्वनमें जे मुख्य हैं वे मनोहर गान गामनलगे

बाणैर्जघानसमरेजगर्जघनवद्बली ॥ दशभिर्दशभिर्नेतॄनेकैकेनगजान्हयान् ॥ ३६ ॥ पंचभिःपंचभिर्वीरान्बाणैःसांबस्तताडह ॥ वीक्ष्यजांबवतीसूनोःसांबस्यकरलाघवम् ॥ ३७ ॥ स्वेपरेसैनिकाःसर्वेविस्मयंपरमंगताः ॥ तदाभीष्मःसमुत्थायगृहीत्वाधनुरुत्तमम् ॥ ३८ ॥ चिच्छेददशभिर्बाणैःसांबकोदंडमुत्तमम् ॥ भीष्मोमहाबलोवीरोद्रोणाचार्यश्चसायकैः ॥ ३९ ॥ कर्णःसद्योयदुबलंजघ्नुर्ज्ञानंयथागुणाः ॥ दुर्योधनःपुनर्योद्धुंरथमारुह्यमानद ॥ ४० ॥ अक्षौहिणीभिर्दशभिर्नादयन्नाययौमृधे ॥ ४१ ॥ देवौपुराणौपुरुषौतदाविर्बभूवतुर्मैथिलरामकृष्णौ ॥ सुपर्णतालध्वजशालियानौप्रद्योतयंतौपरितोदिशस्तौ ॥ ४२ ॥ तदाजयारावसमाकुलाःसुरागंधर्वमुख्याश्चजगुर्मनोहरम् ॥ सुरानकादुंदुभयोविनेदुःश्रीलाजपुष्पैर्ववृषुःसुरस्त्रियः ॥ ४३ ॥ तदैवनेमुर्यदवःपरेश्वरौदुर्योधनाद्याःकुरवस्तुसर्वतः ॥ निधायशस्त्राणिदधुर्वलिंपरंसर्वेप्रसन्नाःकृतहस्तसंपुटाः ॥ ४४ ॥ प्रद्युम्नमुख्यान्स्वसुतान्मदोद्धतान्निर्भर्त्स्यवाग्भिःपरमेश्वरोहरिः ॥ प्रणम्यदेवव्रतमुख्यकौरवान्समेत्यदुर्योधनमूचतुःपरौ ॥ ४५ ॥ ॥ श्रीरामकृष्णावूचतुः ॥ ॥ राजन्यदेभिःकिलबालबुद्धिभिस्तत्क्षम्यतांमाभवदुर्मनाःस्वतः ॥ यदात्तुकिंचित्परुषंप्रकीर्तितंप्रकीर्तितंनोभवतांनृपेश्वर ॥ ४६ ॥ माभूत्कुरूणांभुवियादवानांकदापिकिंचित्कलिरेवराजन् ॥ संबंधिनोह्यालयएवसर्वेनिचोलवस्त्रांतरवत्स्थिरार्थाः ॥ ४७ ॥

और सुरस्त्री खील और पुष्पनकी वर्षा करनलगीं देवतानके नगाड़े बजे ॥ ४३ ॥ तब पर ईश्वर जे कृष्ण बलदेव हैं तिने आये देखके तबही सब यादव तो नमस्कार करनलगे और दुर्योधनादिकहू कौरव सबरे सब ओरते अपने अपने हथियारनको धरतीमें धर नमस्कार करनलगे और सबने हाथ जोड़लीने ॥ ४४ ॥ तब अपने ये जो प्रद्युम्नते आदि लेके मदोद्धत बेटा हैं तिनकूं वाणीसों ललकारिके भीष्मजीते आदि देके जितने वृद्ध कौरव हैं तिनकूं नमस्कार करिके श्रीराम कृष्ण दुर्योधनते ये बोले ॥ ४५ ॥ हे राजन् ! जो इन बालबुद्धीने कर्योहै ताकूं क्षमा करो और हे नृपेश्वर ! अपनो मन मति बिगाड़ो और आपते जो कोई कछू कठोर वचन इनने कह्यो है तुमारे सन्मुख ताकूं क्षमा करो और जो तुमारे मनमें आवे वे दुर्वाक्य तुम हम दोनोंनसों कहिलेउ ॥ ४६ ॥ और हे राजन् ! कौरवनमें और यादवनमें कबहू नेकसोहू कलह मति होउ तुम हम सब

जातिके और संबंधीही तो हैं और निचोल जो अंतर वस्त्र तद्वत् जो हमारो तुमारो अर्थ है वो चोलीदामनको संग है ॥ ४७ ॥ नारदजी कहैं हैं कि, हे मैथिलेश्वर ! ता समय निरंतर कौरवनने राम कृष्णकी पूजा करी प्रद्युम्नादिक जे यादव हैं वे तिनके संग हैं तिनते राम कृष्णकी बडी शोभा भई ॥ ४८ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटीकायां कौरवमेलापनं नामैकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ नारदजी कहै हैं कि, फिर श्रीकृष्ण बलराम दोऊ जने ऐसें दुर्योधनकूं शांत करिके छोटे भैयानकूं और कौरवनकूं संग लैके पांडवनकूं देखिवेकूं दिल्लीकूं चले गये ॥ १ ॥ तब अजातशत्रु राजा युधिष्ठिर दिल्लीते अपने जनको संग ले सब भैयानसहित श्रीकृष्णकूं लिवायवेकूं आवत भयो ॥ २ ॥ शंख, दुंदुभी बजावत वेदध्वनि करावत बासुरी बजाति आमे है दिल्लीवासी पुष्पनकी वर्षा करते आमे है या प्रकार राजा युधिष्ठिर श्रीराम कृष्णते भुजा

॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ पूजितौकुरुभिःशश्वद्रामकृष्णौसुरेश्वरौ ॥ प्रद्युम्नाद्यैःसयदुभीरेजतुर्मैथिलेश्वर ॥ ४८ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खंडेनारदबहुलाश्वसंवादेकौरवमेलापनंनामैकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ दुर्योधनंशांतयित्वासानुजैःकुरुभिःसह ॥ जग्मतुःपांडवान्द्रष्टुमिंद्रप्रस्थंयदूत्तमौ ॥ १ ॥ इंद्रप्रस्थात्ततोराजाजातशत्रुर्युधिष्ठिरः ॥ भ्रातृभिःस्वजनैःसार्द्धंनेतुंकृष्णंसमाययौ ॥ २ ॥ शंखदुंदुभिनादेनब्रह्मघोषेणवेणुभिः ॥ पुष्पवर्षंप्रकुर्वद्भिरिंद्रप्रस्थनिवासिभिः ॥ रामकृष्णौपरिष्वज्यदोर्भ्यांराजायुधिष्ठिरः ॥ ३ ॥ परमांनिर्वृतिंलेभेयोगीवानंदसंवृतः ॥ प्रद्युम्नाद्याहरिसुताःप्रणेमुःश्रीयुधिष्ठिरम् ॥ ४ ॥ युधिष्ठिरोनिजग्राहकराभ्यांतान्कृताशिषः ॥ अर्जुनंभीमसेनंचपरिरभ्यहरिःस्वयम् ॥ ५ ॥ पप्रच्छकुशलंतेपांयमाभ्यांचाभिवंदितः ॥ परिपूर्णतमौसाक्षाच्छ्रीकृष्णौचस्वयंहरी ॥ ६ ॥ असंख्यब्रह्मांडपतीहरिदासेनपूजितौ ॥ प्रस्थाप्ययदुमुख्यांश्चप्रद्युम्नादीन्ससैनिकान् ॥ ७ ॥ समग्रांजगतींजितुंचाज्ञांदत्त्वाविधानतः ॥ मिलित्वासानुजंधर्मंसर्वेशौभक्तवत्सलौ ॥ ८ ॥ द्वारकांजग्मतूराजन्गौरश्यामौमनोहरौ ॥ इत्थंश्रीकृष्णचरितंमयातेकथितंनृप ॥ ९ ॥ चतुष्पदार्थदंनृणांकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ कुशस्थलींगतेकृष्णेसबलेपुरुषोत्तमे ॥ १० ॥

पसारिके मिल्यो है ॥ ३ ॥ कृष्णते मिलके योगीकी नाई परम आनंदकूं प्राप्त भयो और प्रद्युम्नादिक हरिपुत्र राजाकूं दंडोत करतभये हैं ॥ ४ ॥ तब युधिष्ठिरने उने आशीर्वाद दैके हाथसों पकडलीने फिर आप भगवान् अर्जुन भीमसेनते मिले ॥ ५ ॥ तिनकी कुशल पूछी है फिर नकुल सहदेवनें श्रीरामकृष्णकूं दंडवत करी है जो परिपूर्णतम साक्षात् श्रीराम कृष्ण स्वयं हरि हैं ॥ ६ ॥ असंख्य ब्रह्मांडनके पति हैं तिनकी हरिदासने पूजे हैं तब प्रद्युम्नादिकनकूं सेनासहित ॥ ७ ॥ सबरी पृथ्वीके जीतिवेकूं विधानते आज्ञा दैके छोटे भैयान सहित धर्मराजते मिलके सर्वेश भक्तवत्सल ॥ ८ ॥ गौर श्याम मनोहर दोनों भैया द्वारकाकूं आवते भये हे नृप ! या प्रकार कृष्णचरित्र मैंने तेरे अगाडी कह्यो ॥ ९ ॥ ये मनुष्यनको चार पदार्थको देनहारो है अब तूं कहा सुनवेकी इच्छा करैहै तब बहुलाश्व राजा बोल्यो कि, जब पुरुषोत्तम बलदेव सहित द्वारकाकूं

चलेगये ॥ १० ॥ तब भगवान्प्रद्युम्नने कहा कीनों ये प्रद्युम्नभगवानकौ चरित्र अद्भुत है सुनवेलायक मनोहर है ॥ ११ ॥ जब मुक्तनहूंकूं अर्थद है तो फिर जिज्ञासु भक्तनकूं अर्थ देनवारो होय तौ कहा अचंभो है ये अर्थार्थिनकूंहु अर्थको देनहारो है और दुखियानके दुःखको नाश करनहारो है ॥ १२ ॥ चार प्रकारके सब जीवनके पापनको नाश करनहारो है वाय हमते कहो कि, दिशा जीतवेकी इच्छावारो प्रद्युम्न अगाडी जायके फिर कैसे दिग्विजय करतोभयो ॥ १३ ॥ और फिर सैनासहित कैसे आयो सो मेरे आगे यथार्थ जैसे होय सो कहो हे देवर्षिजी ! तुम ब्रह्माजीके पुत्र हो सर्वदर्शी हो, श्रीकृष्णके मन ही हरिकी मूर्ति ही ता तुम्हारे अर्थ मेरी नमस्कार है ॥ १४ ॥ नारदजी कहे हैं कि, हे राजन् ! तैने भली बात पूछी तूं धन्य है श्रीकृष्णके प्रभावको जाननहारो है या भूतलमें कृष्णचरित्रनके सुनिवेवारो पात्र तुही है ॥ १५ ॥ श्रीकृष्ण जब द्वारिकाकूं चलेगये तब राजा युधिष्ठिर वैरीनते शंकित हैके प्रद्युम्नकी रक्षाके अर्थ जलदीही अर्जुनकूं भेजतोभयो ॥ १६ ॥ याके अनंतर कृष्णको बेटा

ततश्चकारकिंसाक्षात्प्रद्युम्नोभगवान्हरिः ॥ अद्भुतंतस्यचरितंश्रवणीयंमनोहरम् ॥ ११ ॥ मुक्तानामपिभक्तानाजिज्ञासूनांपुनःकिमु ॥ अर्थार्थिनामर्थदंसदार्तानामार्तिनाशनम् ॥ १२ ॥ चतुर्विधानांजीवानांसर्वेषांपापनाशनम् ॥ कथंदिग्विजयंकृत्वादिग्जयार्थीहरेःसुतः ॥ ॥ १३ ॥ आजगामपुनःसैन्यैरेतन्मेवदतत्त्वतः ॥ देवर्षेत्वंब्रह्मसुतोभगवान्सर्वदर्शनः ॥ श्रीकृष्णस्यनमःपूर्वंतस्मैतेहरयेनमः ॥ १४ ॥ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ साधुपृष्टंत्वयाराजन्धन्यस्त्वंतत्प्रभाववित् ॥ श्रीकृष्णचरितंश्रोतुंपात्रंत्वमसिभूतले ॥ १५ ॥ कृष्णेयातेजातशत्रूरक्षार्थंस्नेहतोनृप ॥ शत्रुभ्यःशंकितःकार्ष्णिप्रायुंक्ताशुकिरीटिनम् ॥ १६ ॥ अथकार्ष्णिर्यदुश्रेष्ठःफाल्गुनेनसमंनृप ॥ विकर्षन्महतींसेनांत्रिगर्तान्प्रययौत्वरम् ॥ १७ ॥ त्रिगर्ताधीश्वरोधन्वीसुशर्मातेनशंकितः ॥ उपायनन्ददौतस्मैप्रद्युम्नायमहात्मने ॥ १८ ॥ विराटेनतथाराज्ञापूजितोयादवेश्वरः ॥ सरस्वतींनदींस्नात्वाकुरुक्षेत्रंददर्शह ॥ १९ ॥ पृथूदकंबिंदुसरस्त्रितंकूपंसुदर्शनम् ॥ स्नात्वासरस्वतींप्रागादत्त्वादानान्यनेकशः ॥ २० ॥ सारस्वताधिपोराजाकुशांबोनददौबलिम् ॥ कौशांबीनगरीमेत्यदुर्योधनवशानुगः ॥ २१ ॥ चारुदेष्णःसुदेष्णश्चचारुदेहश्चवीर्यवान् ॥ सुचारुश्चारुगुप्तश्चभद्रचारुस्तथापरः ॥ २२ ॥ चारुचन्द्रोविचारुश्चचारुश्चदशमस्तथा ॥ रुक्मिणीनन्दनाह्येतेप्रद्युम्नेनप्रणोदिताः ॥ ॥ २३ ॥सिन्धुदेशहयारूढाःसर्वेषांपश्यतांगताः ॥ कौशांबींनगरीमेत्यरुरुधुःसर्वतस्तदा ॥ २४ ॥

प्रद्युम्न अर्जुनके संग बडी सेनाकूँ खेचते त्रिगर्त देशनकूं जलदीही जातभयो ॥ १७ ॥ तब त्रिगर्त देशको अधिपति सुशर्मा नाम राजा शंकित हैके प्रद्युम्न महात्माकूं भेट देतोभयो ॥ १८ ॥ तैसेही विराद् राजाने प्रद्युम्नको पूजन कर्यो फेर सरस्वती नदीकूं तरिके कुरुक्षेत्रके दर्शन करतोभयो ॥ १९ ॥ पृथूदक, बिंदुसर, त्रितकूप, सुदर्शन इन क्षेत्रनमें न्हायके सरस्वतीमें स्नान करिके अनेकन दान दैके अगाडी गयो तब ॥ २० ॥ सारस्वत देशको राजा कुशांब ताने भेट न दई कौशांबी नगरीमें आयो वह दुर्योधनकी वशवर्ती राजा हो ॥ २१ ॥ तब चारुदेष्ण, सुदेष्ण, चारुदेह, वीर्यवान् सुचारु, चारुगुप्त, भद्रचारु ॥ २२ ॥ चारुचंद्र, विचारु, चारु जे रुक्मिणीके बेटा दश प्रद्युम्नके भेरे कौशांबी नगरीकूँ चारों ओरते घेरतेभये ॥ २३ ॥ सिन्धुदेशके घोडानपै चढिके सबनके देखत २ गये कौशांबी नगरीकूँ जायके

घेरतभये ॥ २४ ॥ बाणनते महलनके शिखर, ध्वजा, कलश, तोलिका चूर्ण ह्वैके जायपरे जैसे लंकाके अट्टालक बंदरनने पटके हैं ॥ २५ ॥ जब रुक्मिणीके बेटानने बाण
नको अन्धकार कीनों तब भेट लैके कुशांब राजा नगरसों निकस्यो ॥ २६ ॥ हाथ जोड़ शंबरारिकूं बहुतसी भेट बलि देके भयार्त भयकरिके विह्वल भयो ॥ २७ ॥
अपनी नगरीको पालन करतोभयो तबही सौवीर देशको पति सुदेव और आभीरदेशको पति विचित्र नामको राजा और सिन्धुदेशको पति चित्रांगद महौजा नाम
काश्मीर देशको राजा और जांगल देशको पति सुमेरु ॥ २८ ॥ लाक्ष देशको पति धर्मपति नामको राजा गांधारको राजा बिडौजा ये सबरे जे राजा हैं वे दुर्योधनके
वश हैं पर येहू सब डरकरिके प्रद्युम्नकी भेट करते दंडोत करते भये ॥ २९ ॥ फिर आजानु भुजवारो प्रद्युम्न श्रीकृष्णको बेटा समर्थ अपनी सेनासहित अर्बुद देशनके और

बाणैःप्रासादशिखराध्वजकुंभादितोलिकाः ॥ चूर्णीभूतानिपेतुस्तेलंकाट्टालायथामृगैः ॥ २५ ॥ बाणांधकारेचकृतेरुक्मिणीनन्दनैर्यदा ॥
तदोपायनपाणिःसन्कुशांबोनिर्गतःपुरात् ॥ २६ ॥ कृतांजलिःशंबरारिंदत्त्वानत्वाबलिंबहु ॥ जुगोपनगरींराजाभयार्तोभयविह्वलः ॥ २७ ॥
तदैवसौवीरपतिःसुदेवआभीरनाथोपिविचित्रनामा ॥ चित्रांगदःसिंधुपतिर्महौजाःकाश्मीरपोजांगलपःसुमेरुः ॥ २८ ॥ लाक्षेश्वरोधर्मपतिर्बिडौ
जागांधारमुख्योपिसुयोधनस्य ॥ वशेस्थितास्तेपिभयात्किलैतेदत्त्वाबलिंनेमुरतीवकार्ष्णिम् ॥ २९ ॥ ययौकार्ष्णिर्महाबाहुःस्वसैन्यपरिवारितः ॥
अर्बुदान्म्लेच्छदेशांश्चजेतुंकल्किरिवोद्भटः ॥ ३० ॥ कालस्यापिसुतश्चंडोयवनेंद्रोमहाबलः ॥ कार्ष्णिंसमागतंश्रुत्वासंमुखात्कोपपूरितः ॥ ३१ ॥
पितृहंतुःसुतंहत्वायास्याम्यपचितिंपितुः ॥ इत्थंविचार्य्यमनसाम्लेच्छानांदशकोटिभिः ॥ ३२ ॥ मदच्युतंप्रोन्नदन्तंगजमारुह्यरक्तदृक् ॥
निर्ययौसंमुखेयोद्धुंप्रद्युम्नस्यमहात्मनः ॥ ३३ ॥ आगतांमहतींसेनांशितबाणप्रवर्षिणीम् ॥ चण्डप्रणोदितांदृष्ट्वाप्रद्युम्नोवाक्यमब्रवीत् ॥ ३४ ॥
॥ ॥ प्रद्युम्नउवाच ॥ ॥ सेनांहत्वापियश्चंडंशिरस्त्रसहितंशिरः ॥ आनेष्यतेतंस्वबलेकरिष्येध्वजिनीपतिम् ॥ ३५ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥
एवंकार्ष्णौवदत्यारात्फाल्गुनोवानरध्वजः ॥ एकोविवेशगांडीवीधनुष्टंकारयन्मुहुः ॥ ३६ ॥

म्लेच्छ देशनके जीतिवेकूं कल्कि भगवान्कोसो बडो उद्भट है ॥ ३० ॥ तब कालयवनको बेटा चण्डनामको महाबली प्रद्युम्नकूं आयो सुनिके बडो कोपमें पूरित ह्वैगयो ॥ ३१ ॥
और पिताके मारनहारेके बेटाकूं जो मारिलेऊंगो तो पिताके ऋणते उऋण ह्वैजाऊंगो ॥ ऐसे मनमें विचारके दश किरोड़ म्लेच्छनकूं संग लैके ॥ ३२ ॥ मद जाके चुचाय
और ऊंचे जाके दांत ऐसे हाथीपे चढिके लाल लाल जाके नेत्र सो चण्ड राजा महात्मा प्रद्युम्नके सन्मुख युद्ध करवेको आवतोभयो ॥ ३३ ॥ आवती जो बड़ी सेना पैने
बाणनकी वर्षा करनहारी चण्डकी प्रेरी ताकूं देखिके प्रद्युम्न ये वाक्य बोल्यो ॥ ३४ ॥ कि, जो कोई याकी सेनाकूं मारिके और या चण्डकूं मारिके शिरस्त्राणसहित याके शिरकूं
काटिके यहां लावेगो वाको मै अपनी सेनाको पति करूंगो ॥ ३५ ॥ नारदजी कहै हैं-ऐसे प्रद्युम्न कहिरह्योहो ताही समय वानर जाकी ध्वजामें ऐसो अर्जुन इकिलोही गांडीव

धनुषकूँ वारंवार टंकारत म्लेच्छनकी फौजमें धसिगयो ॥ ३६ ॥ तब रणमें बडो दुर्मद गांडीवी अर्जुन गांडीव धनुषके छूटे बाणनते जे २ सन्मुख आये वीर, रथी, सवार, प्यादे, घोडा और हाथी तिन्हें दो २ टूक करिके डारिदेतोभयो ॥ ३७ ॥कोई कटी भुजानके कोई खड्ग लीये, कोई बर्छी लीये, कोई पोलादी लीये, कोई पांव कटे, कोई नख कटे, कोई वीर कवच पहिरेके पहिरे मर मरकें जायपरे ॥ ३८ ॥ ॥ युद्धके विषय जब हाथी घायल हैगये, अंबारी जिनकी खिसलगई, घंटा टूटपरे, कक्षा टूटगई वे हाथी सूंडनते हाथीनकूं पटकते भाजगये ॥ ३९ ॥ अर्जुनके बाणन करके दो दो टूक जिनके हैगये ऐसे हाथी, घोडा, नर तिनते रणभूमिको क्षेत्र शोभित होतभयो जैसे सरोतासे कटे पेठेके टूक-पड़े होय ॥ ४० ॥ ताही समय अपने २ रणके आंगनकूं छोडके सबरे म्लेच्छ भाजगये सूर्यकी किरणते जैसे आकाशको कुहर जातरहै है ॥ ४१ ॥ तब हाथीपै चढ्यो

वीरान्रथान्गजानश्वान्संमुखस्थान्द्विधाकरोत् ॥ गांडीवमुक्तैर्विशिखैर्गांडीवीरणदुर्मदः ॥ ३७ ॥ केचिच्छिन्नभुजाःपेतुःशक्तिखड्गर्ष्टिपाणयः ॥ भिन्नपादाभिन्ननखाःकेचिद्वीराःसकंचुकाः ॥ ३८ ॥ दुद्रुवुःकरिणोयुद्धेभिन्नकक्षाश्चसक्षताः ॥ गतघण्टाःश्लथग्रीडाःपातयंतःकरैर्गजान् ॥३९॥ जिष्णुबाणैर्द्विधाभूतैर्गजैरश्वैरणांगणम् ॥ बभौक्षेत्रंशकुल्याकूष्मांडशकलैरिव ॥ ४० ॥ तदैवदुद्रुवुर्म्लेच्छास्त्यक्त्वास्वंस्वंरणांगणम् ॥ नभोर्क रश्मिसंभिन्नानीहारपटलाइव ॥ ४१ ॥ गजारूढोम्लेच्छपतिःशक्तिंचिक्षेपजिष्णवे ॥ भ्रामयित्वामैथिलेंद्रसिंहनादमथाकरोत् ॥ ४२ ॥ विद्युल्लतामिवायांतींबाणैःकृष्णसखोबली ॥ गांडीवमुक्तैराजेंद्रलीलयाशतधाच्छिनत् ॥ ४३ ॥ यावच्चण्डोमहाम्लेच्छोधनुर्जग्राहरोषतः ॥ तावच्छिच्छेदगांडीवीबाणेनैकेनलीलया ॥ ४४ ॥ द्वितीयंधनुरादायसचण्डश्चण्डविक्रमः ॥ प्रलयाब्धिमहावर्तभीमसंवर्षनादिनीम् ॥ ४५ ॥ चिच्छेदशिंजिनींजिष्णोर्गरुत्मानिवपन्नगीम् ॥ बीभत्सुःस्वमासिंनीत्वास्फुरंतंचर्मणासह ॥ ४६ ॥ जघानतद्गजंकुंभेशैलमिंद्रोयथापविः ॥ अग्निदत्तेनखड्गेनभिन्नकुंभोगजोनदन् ॥ ४७ ॥ जानुभ्यांधरणींस्पृष्ट्वाकश्मलंपरमंययौ ॥ चण्डःखड्गंगृहीत्वाथप्राहरत्पांडुनन्दनम् ॥ ४८ ॥ तत्खड्गंचर्मणोग्रीयप्राहिणोत्तंकुरूद्वहः ॥ सशिरस्त्रंशिरस्तस्यदेहाच्छिन्नंबभूवह ॥ ४९ ॥

भयो म्लेच्छपति चण्ड तानें फिराय फिरायके अर्जुनकूं बर्च्छी चलाई फिर सिंहसो गरज्यो ॥ ४२ ॥ बिजलीसी चमकत जब वह बर्छी आई तब कृष्णसखा अर्जुनने सहजमेंही गांडीवके छूटे बाणनते सौ टूक करडारे ॥ ४३ ॥ जबतलक म्लेच्छपति धनुषकूँ लेनलग्यो तबतलक अर्जुनने एकही बाणते सहजमेंही याको धनुष काटडारयो ॥ ४४ ॥ चण्ड पराक्रमी चण्डने जब दूसरो धनुष लीयो तब अर्जुननें प्रलयके समुद्रकीसी गर्जन जाकी वो शिंजिनी प्रत्यंचा धनुषकी काटडारी ॥ ४५ ॥ जैसे गरुड़ सर्पिणीकूँ कतरै है तब अर्जुनने अपनी ढाल तलवार लैके ॥ ४६ ॥ याके हाथीके कुम्भमें जैसे इन्द्र वज्र मारै है तैसे मारी तब वा अग्निके दीये खड्गते कुम्भस्थल फटिगयो और ये हाथी चिक्कार उठ्यो ॥ ४७ ॥ फिर घुडुअनते धरतीमें आयपरयो मूर्च्छा खायगयो तब चण्ड अपनी खड्ग लैके अर्जुनके मारतोभयो ॥ ४८ ॥ तब अर्जुननें वाके खड्गकूँ अपनी ढालपै लैके

अपनो खड्ग मारी ताते शिरस्त्राणसमेत याको शिर काटके धडते अलग करदियो ॥ ४९ ॥ फिर अर्जुनने धनुषकूं चढाय बाणके ऊपर वा चंडके शिरकूं धरके वा बाणको धनुष में खेंचके बाणसहित याको वो शिर प्रद्युम्नकी सेनामें फेंकदियो ॥ ५० ॥ तबही नगाडे बजनलगे जय जय शब्द होनलग्यो और सब देवता अर्जुनके ऊपर पुष्पनकी वर्षा करनलगे ॥ ५१ ॥ तबही श्रीकृष्णको बेटा प्रद्युम्न अर्जुनकूं सब सेनाको पति करतभयो तब मुख्य यादव अर्जुनके ऊपर चमर छत्र करनलगे ॥ ५२ ॥ तब अर्बुद देशको अधिप वेगवान् नामको राजा प्रद्युम्नकी शरण आयो भेट देके दण्डवत करतभयो और डरके हाथ जोड खडो हैगयो ॥ ५३ ॥ सौरंग देशको राजा मन्दहास दश लाख घोडा भेट देके भयभीत है प्रद्युम्न महात्माकूं नमस्कार करतोभयो ॥ ५४ ॥ या प्रकार सब भरतखण्डकूं जीतके श्रीकृष्णको बेटा प्रद्युम्न यादवनमें उत्तम हिमालयकी परिक्रमा देके प्राक् उदीची दिशाकूं नाम ईशान दिशाको चलोगयो ॥ ५५ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटीकायां नारदबहुलाश्वसंवादे दिग्विजयो नाम द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

सज्यंकृत्वाधनुर्जिष्णुर्निधायविशिखंचतत् ॥ आकृष्यपातयामासप्रद्युम्नस्यबलेमहत् ॥ ५० ॥ तदादुन्दुभिनादोभूज्जयारावसमाकुलः ॥ अर्जुनस्योपरिसुराःपुष्पवर्षंप्रचक्रिरे ॥ ५१ ॥ तदैवकार्ष्णिःसबलस्यजिष्णुंचकारनाथंविजयध्वजस्य ॥ संवीज्यमानंसितचामराद्यैःकपिध्वजंयादववृन्दमुख्यैः ॥ ५२ ॥ वेगवानर्बुदाधीशःप्रद्युम्नंशरणंगतः ॥ उपायनंददौभीरुर्नमस्कृत्यकृतांजलिः ॥ ५३ ॥ सौरंगेशोमंदहासोहयानांदशलक्षकम् ॥ दत्त्वाभीरुर्नमश्चक्रेप्रद्युम्नायमहात्मने ॥ ५४ ॥ इत्थंखण्डंभारताख्यंजित्वाकार्ष्णिर्यदूत्तमः ॥ हिमाद्रिंदक्षिणीकृत्यप्रागुदीचींदिशंययौ ॥ ५५ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेयदुदिग्विजयोनामद्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

॥ नारदउवाच ॥ ॥ नदानद्यःसमुद्राश्चरथवीथिंददुर्नृप ॥ धर्षितास्तेजसातस्मैससैन्यायमहात्मने ॥ १ ॥ कैलासगिरिपार्श्वेचवरवीरश्चमानुपः ॥ बाणस्यशोणितपुरंप्रययौयादवेश्वरः ॥ २ ॥ बाणासुरोतिसंक्रुद्धोयदून्वीक्ष्यागतान्पुनः ॥ अक्षौहिणीभिर्द्वादशभिर्युद्धंकर्तुमनोदधे ॥ ३ ॥ तदैवसाक्षात्पुरुषःपुराणोमहेश्वरोनंदिवृषस्थितोसौ ॥ हिमाद्रिपुत्रीसहितस्त्रिशूलीसमेत्यबाणंनृपमाहदेवः ॥४॥ ॥ शिवउवाच ॥ ॥ परिपूर्णतमःसाक्षाच्छ्रीकृष्णोभगवान्स्वयम् ॥ असंख्यब्रह्मांडपतिर्गोलोकेशःपरात्परः ॥ ५ ॥ त्रयोवयंतत्कलाहिब्रह्मविष्णुशिवादयः ॥ मूर्ध्न्याज्ञांयस्यबिभ्रतित्वद्दशानांचकाकथा ॥ ६ ॥ तस्यपौत्रस्त्वयाबद्धोनिरुद्धोयेनतेजसा ॥ छिन्नाभुजानजानासिसंग्रामेतंहरिःस्वयम् ॥ ७ ॥

नारदजी कहे हैं—नदनदी और समुद्र सबने हे नृप ! प्रद्युम्नके तेजते धर्षित हैके महात्मा प्रद्युम्नके रथकूं रस्तो देदई ॥ १ ॥ कैलास पर्वतके पास ये वरवीर नाम प्रद्युम्न यादवनको ईश्वर बाणासुरके शोणितपुरकूं आतभयो ॥ २ ॥ तब यादवनकूं आगो देखि बाणासुर बडो क्रोध भयो बारह अक्षौहिणी फौज संग लेके यादवनते युद्ध करिवेकूं मन करतोभयो ॥ ३ ॥ ताही समय साक्षात् पुराणपुरुष महेश्वर नन्दीश्वरपै चढके पार्वतीसहित त्रिशूलधारी बाणासुरके पास आयके यह बोले ॥ ४ ॥ कि, रे ! देख परिपूर्णतम साक्षात् स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण पुराणपुरुष असंख्य ब्रह्मांडनके पति गोलोकके ईश्वर परात्पर हैं ॥ ५ ॥ हम तीनोंजने ब्रह्मा, विष्णु, महेश वाकी कला हैं जाकी आज्ञाकूं शिरपै धारण करैहैं फिर तो सबैनकी तो कहा कथा है ॥ ६ ॥ जाको नाती अनिरुद्ध तैंने बांधि लीयो हो ताहीते जाने तेरी भुजा काटडारी ही संग्राममें सोई हरि है तूं नहीं जानैहै का ? ॥ ७ ॥

तातें तुम दानवनकूं हरि सदाही पूजनीय हैं और अनिरुद्ध तेरो जमाई है सो तो सदाही पूजनीय है यामें सन्देह नहीं है ॥८॥ हे असुरपुंगव ! ताते मैं तोकूं युद्ध करवेकी आज्ञा नहीं करहूं जो तूं युद्ध बलते करैगो तो वृथाही है ॥ ९ ॥ नारदजी कहैं है—ऐसे जब शिवजीने आज्ञा करी समझायो तब धनुषधारीनमें श्रेष्ठ जो अनिरुद्ध है ताकों बुलाय बाणासुर पूजन सत्कार करतभयो और जमाईको दायजो देतोभयो ॥ १० ॥ सेनासहित बंधुकी तरह प्रद्युम्नकी पूजन करके दश हजार हाथी, पांच लाख रथ और एक किरोड़ घोड़ा ॥ ११ ॥ समर्थ बाणासुर महात्मा प्रद्युम्नकूं देतभयो फिर प्रद्युम्न अपनी सेना जे यादव तिनके संग ॥ १२ ॥ वह धनुषधारी यक्षनते शोभित मनोहर जो अलकापुरी है ताकूं जातभयो जाके चारों तरफ नंदा, अलकनन्दा ये दोनों गंगा वहि रहीहैं ॥ १३ ॥ रत्ननकी है सिढ़ी जिनकी तिन दोनों नदीनते और यक्षिणी, विद्याधरी, किन्नरीन करके

तस्मात्तेषांदानवानांपूजनीयाहरेःसुताः ॥ अनिरुद्धःपूजनीयोजामातातेनसंशयः ॥ ८ ॥ नददामित्वनुज्ञांतेयुद्धायासुरपुंगव ॥ नचेद्युद्धं कुरुबलाद्वृथाहर्षमनस्तव ॥ ९ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ शिवप्रबोधितोबाणोनिरुद्धंधन्विनांवरम् ॥ समाहूयचसंपूज्यपारिबर्हंददौ पुनः ॥ १० ॥ ससैन्यंसादरेणापिप्रद्युम्नंपूज्यबंधुवत् ॥ गजायुतंचाश्वकोटिंहयानांपंचलक्षकम् ॥ ११ ॥ ददौबाणोमहाबाहुःप्रद्युम्नाय महात्मने ॥ अथकार्ष्णिर्महाराजस्वसैन्यैर्यदुभिःसह ॥ १२ ॥ अलकांप्रययौधन्वीपुरींगुह्यकमंडिताम् ॥ श्रीनंदालकनंदाभ्यांगंगाभ्यां परिखीकृता ॥ १३ ॥ रत्नसोपानयुक्ताभ्यांयक्षीभिःपरिशोभिताम् ॥ विद्याधरीभिःपरितःकिन्नरीभिर्मनोहराम् ॥ १४ ॥ दिव्याभिर्नाग कन्याभिःपुरींभोगवतीमिव ॥ धनदोनददौतस्मैप्रद्युम्नायबलिंनृप ॥ १५ ॥ हरेःप्रभावविदपिविष्णोर्मायाबलंत्वहो ॥ लोकपालोस्म्यहं नित्यमित्यज्ञानविमोहितः ॥ १६ ॥ नोदितोबलिभिर्यक्षैर्युद्धंकर्तुमनोदधे ॥ निर्धनोहिधनंप्राप्यतृणवन्मन्यतेजगत् ॥ १७ ॥ नवानांतु निधीनांकोपतीनांकिमुवर्णनम् ॥ तदैवहेममुकुटोदूतोधनदनोदितः ॥ १८ ॥ कार्ष्णिमेत्यसभामध्येनत्वेदंप्राहमानदः ॥ ॥ हेममुकुट उवाच ॥ ॥ धनेश्वरोराजराजोलोकपालोलकेश्वरः ॥ तेनयत्कथितंराजञ्छृणुत्वंतद्यदूत्तम ॥ १९ ॥ देवराजोयथाशक्रःस्मृतोदिवियथाप्रभुः ॥ तथैकोराजराजोहंकथितोभूतलेमहान् ॥ २० ॥ मनुष्यधर्माराजेंद्रैःपूजितोहंसदाभुवि ॥ उग्रसेनेनदातव्यंमह्यंसोपायनंपरम् ॥ २१ ॥

चारों तरफसों अति शोभित है ॥ १४ ॥ दिव्य नागकन्यानते भोगवती जैसी, हे नृप ! तब कुबेरने प्रद्युम्नकूं बलि नहीं दीनी ॥ १५ ॥ ये हरिके प्रभावकूं जानैभी हो पर देखो अहो ! विष्णुकी मायाको बल बड़ो भारी है, मैं नित्यही लोकको पालन करनवारो हों या अज्ञानमें मोहित हैगयो ॥ १६ ॥ बली यक्षनको प्रेरयोभयो युद्ध करवेकूं मन करतोभयो, नारद कहैहै कि, निर्धनीकूं धन मिले तो जगत्कूं तिनुकाकी तरह समझैहै ॥ १७ ॥ ॥ फिर जो नव निधिको मालिक हैजाय तो वाको कहा कहनो है, तबही हेममुकुट दूत कुबेरको भेज्यो आयो ॥ १८ ॥ वो प्रद्युम्नके पास आयके यह बोल्यो कि, धनको ईश्वर, राजानको राजा, लोकपाल, लोकको ईश्वर कुबेर है, हे राजन् ! वाने जो कुछ कह्यो है ताहि तूं सुन ॥ १९ ॥ देवतानको राजा जैसे इन्द्र है स्वर्गमें तैसेही पृथ्वीमें मैं राजानकोहू बड़ो राजा हूं याहीते मेरो राजराज नाम है ॥ २० ॥ मनुष्यकोसो

मेरो धर्म है पृथ्वीमें सब राजानन मोकूं पूज्योहि याते मैं उग्रसेनकूं भेट नही देऊँगो ॥ २१ ॥ यादवनके राजाकूं मैं भेट नहीं देऊँगो कुछभी और जो न मानेंगो तो मै निःसंदेह संग्राम करूंगो ॥ २२ ॥ नारदजी कहैहै कि, प्रद्युम्न भगवान्ने ऐसे दूतको वचन सुनके बड़ो कोप कीनों रोप करके होठ फड़कनलगे लाल नेत्र हैगयो ॥ २३ ॥ तब प्रद्युम्न ये कहतेभये कि, यादवनको इन्द्र, राजानको राजा, इन्द्रादिक देवतानके मुकुटन करके सेयो है चरणकमल जाको ता उग्रसेनकूं कुबेर नही जानैहै ॥ २४ ॥ सुधर्मा सभा और कल्पवृक्ष जाके भयते इंद्र देगयो और श्यामकर्ण घोड़ानकूं देके वरुण दण्डवत करतोभयो ॥ २५ ॥ और याही राजराज उग्रसेनने नौ निधि भेजीहैं सो यह कुबेर वा उग्रसेनके बलकूं नही जानैहै ॥ २६ ॥ ताकी सभाके बीचमें परिपूर्णतम हरि असंख्य ब्रह्मांडनके पति श्रीकृष्ण आप विराजैहै ॥ २७ ॥ और जाके हजार शिरनके मध्यमें एक

धराकृतस्मैनदास्यामियदुराजायभूभृते ॥ नमन्यसेचेत्संग्रामंकरिष्यामिनसंशयः ॥ २२ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवंदूतवचःश्रुत्वा प्रद्युम्नोभगवान्हरिः ॥ चकारकोपंरक्ताक्षोरुषाप्रस्फुरिताधरः ॥ २३ ॥ ॥ प्रद्युम्नउवाच ॥ ॥ वृष्णींद्रंराजराजेंद्रंराजराजोनवेत्तितम् ॥ शक्रादीनांतुयःसाक्षान्मुकुटैर्घृष्टपादुकः ॥ २४ ॥ सुधर्मापारिजातंचतस्माइंद्रोददौभयात ॥ श्यामवर्णान्हयान्पाशीतस्मैदत्त्वाननामह॥२५॥ अनेनराजराजेनभीरुणानिधयोनव ॥ प्रापास्तंहिनजनातिराजाराजोमहाबलम् ॥ २६ ॥ वर्ततेतत्सभामध्येपरिपूर्णतमोहरिः ॥ असंख्य ब्रह्मांडपतिःश्रीकृष्णोभगवान्स्वयम् ॥२७॥ यस्यैकमूर्ध्नितिलकंदृश्यतेमंडलंभुवः ॥ उग्रसेनसभामध्येसोपिनित्यंविराजते ॥ २८ ॥ उग्रसेन प्रेषितोहंकुबेरायमहात्मने ॥ नाराचानांबलिंदातुंतत्करिष्यामिसांप्रतम् ॥ २९ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवमुक्त्वागृहीत्वास्वंकोदंडंचंड विक्रमः ॥ चकारभुजदंडाभ्यांटंकारंवादयन्गुणम् ॥ ३० ॥ प्रत्यंचास्फोटनेनैवमंडितोभूत्तडित्स्वनः ॥ ननादतेनब्रह्मांडंसप्तलोकैर्बिलैःसह ॥ ३१ ॥ विचेलुर्दिग्गजास्ताराराजन्भूखंडमंडलम् ॥ निषंगाच्छरमाकृष्यप्रद्युम्नोधन्विनांवरः ॥ ३२ ॥ प्रतिसज्यस्वधनुषिबाणमेकं समादधे ॥ द्वादशादित्यसंकाशंद्योतयन्मंडलंदिशाम् ॥ ३३ ॥ चिच्छेदगुह्यकेशस्यबाणंछत्रंचचामरे ॥ तदाक्रुद्धोराजराजोदृष्ट्वाचित्र मिदंमहत् ॥ ३४ ॥ आरुह्यपुष्पकेसैन्यैर्युद्धकामोविनिर्ययौ ॥ घंटानादेनयक्षेणमंत्रिणापार्श्वमौलिना ॥ ३५ ॥

शिरपै सवरो भूमंडल तिलकसो दीखैहै सो शेष भगवान् उग्रसेनकी सभामे नित्य विराजैहैं ॥ २८ ॥ वाही उग्रसेनको भेज्यो मैं आयोहूं सो मै कुबेर महात्माकूं बाणनकी भेट देऊंगो ॥ २९ ॥ नारदजी कहैहै–ऐसे-कहिके प्रद्युम्न अपनो कोदंड लैके चंड पराक्रमी टंकारके धनुष बजावन लग्यो ॥ ३० ॥ प्रत्यंचाहीके बजायवेते बीजुरीसी परनलैगी ताते चौदह लोकन समेत सबरो ब्रह्मांड झंकारनलग्यो ॥ ३१ ॥ -सबरो भूमंडल, आठों दिग्गज, तारागण सब चलायमान हैगये तब प्रद्युम्न धनुषधारीनमें श्रेष्ठ तर्कसते बाण निकासतोभयो ॥ ३२ ॥ अपने धनुषपै धरिके एक बाण लगायो जो सूर्यकी नाई दशों दिशानमें उजीतो करनहारो है और जो द्वादशादित्यके समान है ॥ ३३ ॥ ता बाणते कुबेरके बाण छत्र चमर सब काटिके डारदेतोभयो तब या अचंभेकूं देखिके कुबेर बड़ो कोपित भयो ॥ ३४ ॥ तब पुष्पक विमानमें बैठिके सैन्यको लेके युद्धके लीये निकस्यो

पार्श्वमौलि और घंटानाद मंत्रीकूँ लेके ॥ ३५ ॥ नलकूबर, मणिग्रीव जे द्वौ बेटा ध्वजाके अगारीते शोभित होतेभये और घोडाके मुखके, नाहरके मुखके, यक्ष, किन्नर निकसे ॥ ३६ ॥ सिरियाके मुखके, मगरके मुखके, आधे पीरे, आधे कारे, ऊंचेकेश, बडे उत्कट ॥ ३७ ॥ टेढे दांत, लटकती जीभ, महाबली, बडी बडी जिनकी डाढ ऐसे भयंकर मुख, कवच पहरे, ढाल, तलवार धरे ॥ ३८ ॥ बर्छीवारे, पोलादीवारे, तोप लीये, बेड़ा लीये, धनुष, बाण लीये, फरसा लैके यक्ष निकसे ॥ ३९ ॥ हाथीनपै चढे, रथनपै चढे, घोडानपै चढे, तिनके हजारन मंडल निकसे; तिन मंडलनकी शोभा भई ॥ ४० ॥ शंख, नगाडे बजेंहैं, सूत, मागध, बंदीजन यश गावत जायहैं, कुबेरके वीर पृथ्वीमें बडे शोभित होते भये जैसे बीजुरीनसों बादर ॥ ४१ ॥ या प्रकार किरोडन वे यक्ष बडे मतवारे दिव्य जो योगमय सिद्धक्षेत्र है ताते निकसेहैं हे विदेहराज ! ॥

नलकूबरमणिग्रीवौशुशुभातेध्वजाग्रतः ॥ तुरंगवदनाःकेचिन्मृगेंद्रवदनाःपरे ॥ ३६ ॥ शिशुमारमुखाःकेचित्केचिन्नक्रमुखाइव ॥ अर्धपिंगा अर्द्धकृष्णाऊर्ध्वकेशामदोत्कटाः ॥ ३७ ॥ वक्रदंताललज्जिह्वाबृहद्दंष्ट्रमहाबलाः ॥ करालास्याःसकवचाःखड्गचर्मधराःपराः ॥ ३८ ॥ शक्तिहस्ताऋष्टिहस्ताभुशुंडिपरिघायुधाः ॥ धनुर्बाणधरायक्षाःकेचित्परशुपाणयः ॥ ३९ ॥ यक्षाणांहस्तिवाहानांरथिनामश्विनांतथा ॥ विरेजुर्निर्गतानांचमंडलानिसहस्रशः ॥ ४० ॥ शंखदुंदुभिनादैश्चसूतमागधबंदिभिः ॥ रेजिरेश्रीदवीराःकौमेघाइवतडित्स्वनैः ॥ ४१ ॥ एवंयक्षेषुमत्तेषुकोटिशोनिर्गतेषुच ॥ दिव्यान्महायोगमयात्सिद्धक्षेत्राद्विदेहराट् ॥ ४२ ॥ आययौतत्सहायार्थप्रमथानांबलंमहत् ॥ भूताश्चप्रमथाःकेचित्करालास्यामदोत्कटाः ॥ ४३ ॥ डाकिन्योयातुधानाश्चवेतालाःसविनायकाः ॥ कूष्मांडोन्मादसंयुक्ताःप्रेताःमातृगणाःपरे ॥ ४४ ॥ निशाचरपिशाचाश्चब्रह्मराक्षसभैरवाः ॥ नदंतोभैरवंनादैश्छिंधिभिंधीतिवादिनः ॥ ४५ ॥ इत्थंतुभूतावलयःकोटिशश्चाययुस्तदा ॥ रोदस्याच्छादितेभूतांमेघैःसांवर्तकैरिव ॥ ४६ ॥ मयूरस्थःकार्तिकेयोमूषकस्थोगणेश्वरः ॥ प्रमथैर्गीयमानौतौढक्कावादित्रनिःस्वनैः ॥ ४७ ॥ सर्वेषामग्रतःप्राप्तौवीरभद्रेणसंयुतौ ॥ इत्थंपुण्यजनानांतुगणानांयदुभिःसह ॥ ४८ ॥ बभूवतुमुलंयुद्धमद्भुतंरोमहर्षणम् ॥ रथिनोरथिभिस्तत्रपत्तिभिःसहपत्तयः ॥ ४९ ॥ हयाहयैरिभाश्चेभैर्युयुधुस्तेपरस्परम् ॥ रथेभाश्वपदातीनांचरणैरुत्थितंरजः ॥ ५० ॥

॥ ४२ ॥ ता कुबेरकी सहायकूँ प्रमथनकी बडी भारी सेना आई है भूत, प्रमथ, भयंकर मुखवारे बडे मदोत्कट ॥ ४३ ॥ डाकिनी, राक्षस, बेताल, विनायक, कूष्मांड, उन्माद युक्त मातृगण, प्रेत औरहू आयेंहैं ॥ ४४ ॥ निशाचर, पिशाच, ब्रह्मराक्षस, भैरव भयंकर नादकूँ करते छेदिडारो, भेदिडारो ऐसे कहते चले आमेंहैं ॥ ४५ ॥ या प्रकार भूतनकी पंगतिकी पंगति किरोडन चलीआमैंहैं तिनते धरती और आकाश छायगयो जैसे प्रलयके मेघ चले आमैंहैं ॥४६॥ मोरपै बैठे स्वामि कार्तिक, मूसेपै बैठे गणेश प्रमथ उनको यश गावत आमैंहैं,ढोल बजावत चलेआमैंहैं॥४७॥सबके अगारी वीरभद्रकूँ संग लेके ये दोनों आये,ऐसे पुण्यजननके गणको और यादवनको युद्ध होतोभयो ॥४८॥ दो घड़ी तो बड़ो भारी युद्ध भयो जाय देखि रोंगटा ठाडे हैआये रथीते रथी, प्यादेते प्यादे॥४९॥घोडाते घोडा,हाथीते हाथी इनको परस्पर बड़ो भारी संग्राम भयो तब रथ,घोडा,हाथी प्यादेनके पांवनकी बड़ी भारी रज उठी ॥५०॥

ताते सब आकाशमंडल और सूर्य ढकगयो ॥ ५१ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खण्डे भाषाटीकायां यक्षदेशगमनं नाम त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ नारदजी कहैं हैं कि, शस्त्रनको अंधकार भये संते मणिग्रीव महाबली बाणनते प्रद्युम्नकी सेनाकूं बेधतोभयो कुवाक्यनते जैसे मित्रताकूं बेधे हैं ॥ १ ॥ मणिग्रीवके बाणनके समूहते हाथी, घोड़ा, रथ, प्यादे घायल ह्वैके भूमिमें जाएपरे पवनके जोरते पेड़ जैसे जायपडें हैं ॥ २ ॥ तब चन्द्रभानु हरिको बेटा सत्यभामाको आत्मज बड़ो बली पांच बाणनते मणिग्रीवको धनुष काटतोभयो ॥ ३ ॥ और दश बाणनते ताके रथकूं छेदके घनसो गर्ज्यो फिर मणिग्रीवने चन्द्रभानुकूं ऊपर बर्च्छी चलाई ॥ ४ ॥ सो बर्च्छी दशों दिशानमें उजीतो करती बिजलीसी चली आई तब चन्द्रभानुने बायें हाथमें वो सहजमेंही पकरलीनी ॥ ५ ॥ वही बर्च्छी मणिग्रीव बलीके मारी फिर चन्द्रभानु महाबली गर्ज्यो ॥ ६ ॥ ता बर्च्छीके

छादयामासराजेंद्रससूर्यंव्योममंडलम् ॥ ५१ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खंडेनारदबहुलाश्वसंवादेयक्षदेशप्रयाणंनामत्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ शस्त्रांधकारेसंजातेमणिग्रीवोमहाबलः ॥ बिभेदारिबलंबाणैःकुवाक्यैर्मित्रतामिव ॥ ॥ १ ॥ मणिग्रीवस्यबाणौघैर्गजाश्वरथपत्तयः ॥ निपेतुःसक्षताभूमौवृक्षावातहताइव ॥ २ ॥ चंद्रभानुर्हरेःपुत्रःसत्यभामात्मजोबली ॥ मणिग्रीवस्यकोदंडंपंचबाणैस्तदाच्छिनत् ॥ ३ ॥ दशभिस्तद्रथंछित्वाजगर्जघनवद्बली ॥ मणिग्रीवोपिचिक्षेपशक्तिंस्वांचंद्रभानवे ॥ ॥ ४ ॥ भासयंतींदिशःशश्वन्महोल्कामिवमैथिल ॥ अग्रहीच्चंद्रभानुस्तांवामहस्तेनलीलया ॥ ५ ॥ तयाजघानसमरेमणिग्रीवंमहाबलम् ॥ पुनर्जगर्जसमरेचंद्रभानुर्महाबलः ॥ ६ ॥ तत्प्रहारेणपतितेमणिग्रीवेप्रमूर्च्छिते ॥ चंद्रभानुंबाणजालैर्नलकूबरनोदिताः ॥ ॥ ७ ॥ छादयामासुरसुरावर्षादित्यंयथांबुदाः ॥ दीप्तिमान्कृष्णपुत्रस्तुखड्गमुद्यम्यवेगवान् ॥ ८ ॥ विवेशयक्षसेनासुनीहारेषुयथारविः ॥ तस्यखड्गप्रहारेणकेचिद्यक्षाद्विधाभवन् ॥ ९ ॥ केचिद्वैच्छिन्नशिरसश्छिन्नपादांसबाहवः ॥ भिन्नहस्ताश्छिन्नकर्णाश्छिन्नोष्ठाःपेतुराहवे ॥ १० ॥ तेषांशिरोभिर्बीभत्सैःसकिरीटैःसकुंडलैः ॥ सशिरस्त्रैःसवद्रक्तैर्महामारीवभूर्बभौ ॥ ११ ॥ शेषाविदुद्रुवुर्यक्षाःसक्षताभयविह्वलाः ॥ हाहाकारस्तदाजातोयक्षसेनासुमैथिल ॥ १२ ॥ धनुष्टंकारयन्प्राप्तोदंशितोनलकूबरः ॥ रथेनातिपताकेनमाभैष्टेत्यभयंददौ ॥ १३ ॥

प्रहारते मणिग्रीव मूर्च्छा खायके जायपर्यो तब नलकूबरके प्रेरेभये असुरनने ॥ ७ ॥ चन्द्रभानुकूं ढकलीनो जैसे वर्षामें सूर्यकूं मेघ ढकैहैं तब दीप्तिमान् कृष्णको बेटा खड्ग लैके आयो ॥ ८ ॥ यक्षनकी सेनामें प्रवेश हैगयो कोहरमें सूर्य जैसे ताके खड्गके प्रहार करिके कितनेक यक्षनके दो दो टूक ह्वैके जायपरे ॥ ९ ॥ कोई शिर कटे, कोई बाहु कटे पांव कटे, होठ कटे, हाथ कटे और कान कटे भूमिमें जायपरे ॥ १० ॥ किरीट, कुंडल और शिरस्त्राणयुक्त तिनके घिनामने शिरनके रुधिरनतें महामारीसी भूमिकी शोभा होतीभई ॥ ११ ॥ बाकी घायल जे यक्ष हैं वे सब भयसों विह्वल ह्वैके भाजगये हे मैथिल । तब यक्षनकी सेनामें बड़ो हाहाकार मच्यो ॥ १२ ॥ तब नलकूबर कवच पहरे

बडी पताकाके रथमें बैठ धनुष टंकारती सेनाकूं अभय दे आवतोभयो ॥१३॥ तब नलकूबरने पांच बाण तो कृतवर्माके दश अर्जुनके और बीस बाण दीप्तिमान्के मारे ॥ १४ ॥ तब महाभुज कृतवर्मा पांच बाण नलकूबरके मारतोभयो ताके नादते दशोंदिशा झंकारउठी ॥ १५ ॥ वे बाण कवचकूं छेद सबनके देखत देखत पृथ्वीमें प्रवेश हेगये जैसे बमईमें सर्प प्रवेश होयहै ॥ १६ ॥ जब कृतवर्माके बाणनते नलकूबर मूर्च्छित हैगयो तब हेममाली सारथी नलकूबरको रणमेंते एकांतमें लेगयो ॥ १७ ॥ तब घंटानाद और पार्श्वमौलि ये दोनों कुबेरके मन्त्री वे दोनों बाणनके समूहते उद्भट यादवनकी सेनाकूं मारतेभये ॥ १८ ॥ जिनके स्वर्णके पुंख ऐसे तीक्ष्णमुख और गृध्रपक्ष मनोजव बाणनते दशो दिशानमें उजीतो करते चले सूर्य जैसे किरणनते प्रकाश करैहै तैसें प्रकाश करते ॥ १९ ॥ तब अर्जुन महावीर बाणनके सन्मुख बाण फेंकतोभयो तब बाणनके संघर्षते

पंचभिःकृतवर्माणमर्जुनंदशभिःशरैः ॥ दीप्तिमंतंचविंशत्याताताडनलकूबरः ॥१४॥ कृतवर्मामहाबाहुर्जघाननलकूबरम् ॥ पंचभिर्विशिखै राजन्नादयन्मंडलंदिशाम् ॥ १५ ॥ तेबाणाःकवचंभित्त्वातत्तुंभित्त्वाधरातलम् ॥ विविशुःपश्यतांतेषांवल्मीकेफणिनोयथा ॥ १६ ॥ वीक्ष्य तद्बाणभिन्नांगंमूर्च्छितंनलकूबरम् ॥ अपोवाहरणात्सूतोहेममालीतिनामभाक् ॥ १७ ॥ घंटानादःपार्श्वमौलिःकुबेरस्यचमंत्रिणौ ॥ जघ्नतु र्बाणपटलैर्यदूनामुद्भटंबलम् ॥ १८ ॥ स्वर्णपुंखैस्तीक्ष्णमुखैर्गृध्रपक्षैर्मनोजवैः ॥ द्योतयद्भिर्दिशःसर्वामार्तंडकिरणैरिव ॥ १९ ॥ ततोर्जुनोमहा वीरःप्रतिबाणान्समादधे ॥ बाणसंघर्षजायुद्धेविस्फुलिंगाःसहस्रशः ॥ २० ॥ विरेजुर्नृपखद्योतचंचलालातचक्रवत् ॥ सर्वंतद्बाणपटलंक्षणमा त्रेणचाच्छिनत् ॥ २१ ॥ गांडीवमुक्तविशिखैर्गांडीवीरणदुर्मदः ॥ योजनद्वयमात्रेणतद्रथौसध्वजौबलात् ॥ २२ ॥ अर्जुनोबाणपटलैश्चकारश रपंजरे ॥ हताविमावितिज्ञात्वासर्वेपुण्यजनास्त्वरम् ॥ २३ ॥ दुद्रुवुःस्वंरणंत्यक्त्वापरंहाहेतिवादिनः ॥ तदाद्भुतभूतावल्यःकोटिशश्चाययु र्मृधे ॥ २४ ॥ डाकिन्यःकोटिशोराजंश्चिक्षिपुर्वारणान्मृधे ॥ भक्षयंत्योनरानश्वांश्चर्वयंत्योरथान्पृथक् ॥ २५ ॥ नरेनरेपृथग्भूताधावंतोदश भिर्दश ॥ प्रमथाःपातयामासुःखड्गांगेनजनान्मुहुः ॥ २६ ॥ यातुधान्यश्चर्वयंतःशिरांसिरणमंडले ॥ वेतालाश्चकपालेनपिबंतोरुधिरंबहु ॥ २७ ॥ विनायकाश्चनृत्यंतःप्रेतागायंतएवहि ॥ कूष्मांडाश्चतथोन्मादाःशिरांसिजगृहुर्मृधे ॥ २८ ॥

युद्धमें हजार विस्फुलिंग उठतेभये ॥ २० ॥ वे हे नृप ! पटबीजनासे राजतेभये बिजलीसे उठे तिन बाणनसों उन सब बाणनके समूहनकूं काटतोभयो ॥ २१ ॥ तब गांडीवी अर्जुनने गांडीवमेंते निकसे जे बाण तिनते आठ कोशपै तिन दोनोंनके रथ उडायदीने ध्वजासहित अपने बलते ॥ २२ ॥ अर्जुननें अपने बाणनके समूहते बाणनके पींजरामें करदीने मारेगये ऐसे जानिके सबरे यक्ष जलदी ॥ २३ ॥ भाजिगये रणकूं छोड हाय हाय करते तब फिर भूतनकी किरोड़न पंक्ति संग्राममें आई ॥ २४ ॥ किरोड़न डाकन हाथीनकूं फेंकती मनुष्य, घोड़ा, हाथी, रथनकूं भक्षण करती न्यारी न्यारी ॥ २५ ॥ एक एक आदमीके पीछे एक२और दशनके पीछे दश भागे खड्गांगतें मनुष्यनको प्रमथ मारनलगे बारंबार ॥ २६ ॥ और राक्षसी रणमें शिरनकूं चर्वण करनलगीं और वेताल खोपडीनमें रुधिर पीवनलगे ॥ २७ ॥ विनायक नाचैहैं, प्रेत गावैहैं, उन्माद कूष्मांड, संग्राममें शिरनकूं ग्रहण

करैहैं ॥ २८ ॥ शिवकी मुण्डमालाके लिये स्वर्गवासी जे वीर हैं तिनके शिर, तैसेही मातृगण, ब्रह्मराक्षस बडे भैरव ॥ २९ ॥ वारंवार शिरनकूं गेंदकी नाईं उछारैं हैं बडे बडे अट्टहास करैहैं हसैं हैं फिर खिलखिलायके हसैं हैं ॥ ३० ॥ भयंकर मोहडेके पिशाच कुरीतिते कूदैहैं पिशाचिनी अपने बालकनकूं गरम गरम रुधिर प्यावैं हैं ॥ ३१ ॥ रोवै मत बेटा नेक और देउंगी तोकूं ऐसे कहती पिशाची उन बच्चानकूं रुधिर पिवावैं हैं या प्रकार गणको बल देखके बलदेवको छोटा भैया गद ॥ ३२ ॥ गदा लैकें घनकी नाईं गर्जनलग्यो लाख भारकी गदा लैके वाकी सैनाकूं मारनलग्यो ॥ ३३ ॥ गद ऐसे मारनलग्यो जैसे इन्द्र पर्वतकूं मारे है, कूष्मांड, उन्माद, वेताल, पिशाच, ब्रह्मराक्षस ॥ ३४ ॥ वाकी गदाके मारे छिन्न हैगये मस्तक जिनके और टूटगये हैं दाँत जिनके ऐसी डाकिनी तथा भिन्न हैगये हैं कन्धा जिनके ऐसे प्रमथ मूर्च्छित हैके पृथ्वीपर जायपरे

शिवस्यमुण्डमालार्थंवीराणांस्वर्गगामिनाम् ॥ तथामातृगणाब्रह्मराक्षसाभैरवामृधे ॥ २९ ॥ शिरांसिकंदुकानीवक्षेपयंतोमुहुर्मुहुः ॥ हसंतःप्रहसन्तश्चसाट्टहासंसमाकुलाः ॥ ३० ॥ पिशाचाविकलास्याश्चकूर्दंतःकेपिकुत्सितम् ॥ पिशाच्यःक्षतजंतूर्णंपाययंत्यःशिशून्मृधे ॥ ३१ ॥ मारोदीरितिवादिन्योनेत्राण्यपिददामउत् ॥ इत्थंगणबलंदृष्ट्वाबलदेवानुजोबली ॥ ३२ ॥ गदोगदांसमादायजगर्जघनवद्बली ॥ लक्षभारभृतामौर्व्यागदयातद्बलंमदत् ॥ ३३ ॥ पोथयामासहिगदोवज्रेणेंद्रोयथागिरीन् ॥ कूष्मांडोन्मादवेतालाःपिशाचाब्रह्मराक्षसाः ॥ ३४ ॥ निपेतुर्मूर्च्छिताभूमौतद्गदाभिन्नमस्तकाः ॥ डाकिनीभिन्नदंताश्चप्रमथाभिन्नकन्धराः ॥ ३५ ॥ यातुधानांश्छिन्नमुखांश्चकारसमरेगदः ॥ गदयामर्दिताःप्रेतादुद्रुवुस्तेदिशोदश ॥ ३६ ॥ वाराहदंष्ट्र्याभग्नाल्ययैदैत्यायथानृप ॥ पलायितेभूतगणेवीरभद्रःसमागतः ॥ ३७ ॥ गदंतताडगदयाबलदेवानुजंबली ॥ गदोपरिगदांनीत्वागदःस्वांप्राहिणोद्गदाम् ॥ ३८ ॥ तयोर्युद्धमभूद्घोरंगदाभ्यांमैथिलेश्वर ॥ विस्फुलिंगान्क्षरंत्योद्वेगदेचूर्णीबभूवतुः ॥ ३९ ॥ मल्लयुद्धंतयोरासीन्नोदयंतंपरस्परम् ॥ भुजैश्चजानुभिःपादैःपातयंतोगिरीन्वहून् ॥ ४० ॥ करवीरंसमुत्पाट्यवीरभद्रोगिरिंबलात् ॥ अट्टहासंतदाकुर्वन्गदोपरिसमाक्षिपत् ॥ ४१ ॥ गदोगिरिंसंगृहीत्वातस्योपरिसमाक्षिपत् ॥ गृहीत्वाथगदंवीरंवीरभद्रोबलाद्बली ॥ ४२ ॥

॥ ३५ ॥ वह गद युद्धमें यातुधान अर्थात् राक्षसनको, कटगये हैं मुख जिनके ऐसे करतो भयो और गदासे मारेभये प्रेत दशहू दिशानमति भागतेभये ॥ ३६ ॥ वाराहकी डाढते जैसे दैत्य भाजगये ऐसे सब भूतगण जब भाजगये तब वीरभद्र लडवेकूं आयो ॥ ३७ ॥ वा बलीने बलदेवके छोटे भाई गदके एक गदा मारी ता समय गदने अपनी गदापै गदाकूं रोकके अपनी गदा वीरभद्रकें मारी ॥ ३८ ॥ हे मैथिलेश्वर ! तब दोनोंनको घोर गदायुद्ध होतोभयो दोनों गदानमेंते अग्निकी चिनगारी छूटत २ दोनों गदानको चूर्ण हैगयो ॥ ३९ ॥ फिर मल्लयुद्ध गदको और वीरभद्रको दोनोंनको होतोभयो परस्पर प्रेरण करै हैं भुजानते, घोंटूनते, पांवनते वह दोनों पर्वतनकूं पटकते लडतेभये ॥ ४० ॥ तब करवीर पर्वतकूं वीरभद्रने उखाडके गदके ऊपर फेंको और अट्टहास करी ॥ ४१ ॥ तब गदने वा पर्वतकूं पकडके वीरभद्रकेहू ऊपर फेंकदीयो तब वीरभद्र महाबलीने गदकूं

पकड़के अपने बलसों आकाशमें लाख योजन ऊंचो फेंकदीयो ॥ ४२ ॥ जब गद भूमिमें आयके पर्यो तब कछू व्याकुलमन हैगयो ॥ ४३ ॥ तब महाबली गदने उठके वीरभद्रकूं उठायकें घुमायके पराक्रमते लाख योजन ऊंचो फेंकदीयो ॥ ४४ ॥ तब वीरभद्र कैलासके शिखरपै आयकें पर्यो गदाके प्रहारनको मार्यो व्यथित हैके दो घड़ीकूं मूर्च्छा खायगयो ॥ ४५ ॥ तब तो बर्छी उठायके स्वामिकार्तिक आये अनिरुद्धके ऊपर बर्छी फेंकी ॥ ४६ ॥ तब वो बर्छी अनिरुद्धके रथकूं तोड़के सांबकूं और सांबके रथकूं तोड़के और हजार हाथी और हजार रथनकूं, लाख वीरनकूं ॥ ४७ ॥ भेदकें छेदकें शब्द करती बिजलीसी चमकती दशों दिशानमें उजीतो करती फुंकारती भई सांपिनसी धरतीमें समायगई ॥ ४८ ॥ तब तो बड़ी भुजानवारो सांब जांबवतीको बेटा अपने धनुषकूं टंकार एक बाण क्रोधते लगावतोभयो ॥ ४९ ॥ एकही वो बाण तर्कसते

चिक्षेपचौजसाराजन्नाकाशेलक्षयोजनम् ॥ गदोपिपतितोभूमौकिंचिद्व्याकुलमानसः ॥ ४३ ॥ गृहीत्वावीरभद्राख्यंभ्रामयित्वामहाबलः ॥ ओजसाप्राक्षिपच्छीघ्रमाकाशेलक्षयोजनम् ॥ ४४ ॥ वीरभद्रस्तुपतितःकैलासशिखरोपरि ॥ गदाप्रहारव्यथितोमूर्च्छितोघटिकाद्वयम् ॥ ४५॥ कार्तिकेयस्तदाप्राप्तःशक्तिमुद्यम्यवेगवान् ॥ अनिरुद्धायसांबायशक्तिंचिक्षेपसत्वरम् ॥ ४६ ॥ अनिरुद्धरथंभित्त्वासांबंसांबरथंपुनः ॥ गजाश्वान्सहस्रंचवीरलक्षंमृधांगणे ॥ ४७ ॥ भित्त्वानदंतीस्फूर्जंतीचपलेवदिशोदश ॥ विवेशभूमौफूत्कारंकुर्वतीपन्नगीवसा ॥ ४८ ॥ तदाक्रुद्धोमहाबाहुःसांबोजांबवतीसुतः ॥ कृत्वाथशिंजिनीघोषंनिषंगाद्बाणमाददे ॥ ४९ ॥ एकोपिसद्बाहिस्तूणाद्दशरूपीबभूवह ॥ चापेशतंकर्षणेचसहस्रंरूपमादधे॥५०॥मोक्षणेलक्षरूपाणिकोटिरूपाणिकोटिषु॥अनेकरूपीविशिखःशिखिनंशिखिवाहनम् ॥५१॥ भित्त्वाविभेदवीराणांकोटिशःकोटिशोरणे ॥ कार्तिकेयेचभिन्नांगेकिंचिद्व्याकुलमानसे ॥ गणेश्वरस्तदाप्राप्तोमूषकस्थोगजाननः ॥ ५२ ॥ गोमूत्रपत्रमृगनाभिविचित्रकुंभंश्रीकुंकुमाकलितसुन्दरवक्रतुण्डम् ॥ सिन्दूरपूरितकपोलमनोहराभंकर्पूरधूलिधवलीकृतकर्णवर्णम् ॥ ५३ ॥ व्यालोलकर्णहतमत्तमधुव्रतैस्तैःश्रीगण्डजातमदिरामदविह्वलांगैः ॥ संगीततालकुसुमाकरगीतरागैःसंसेवितङ्गणपतिंकृतभालचन्द्रम् ॥ ५४ ॥ बालार्कवर्णममलांगदहेमहारग्रैवेयमौलिकिरणैःपरितःस्फुरंतम् ॥ आखुस्थमेकदशनंगजभव्यमूर्तिंपाशांकुशांबुजकुठारचयंदधानम् ॥ ५५ ॥

निकरके दश गुनो हैगयो, फिर धनुषपै धर्यो तब सौगुनो हैगयो, खैंचतमें हजारगुनो हैगयो ॥ ५० ॥ छुड़ावतमें लाखगुनो और परतेमें किरोड़गुनो अनेकरूपी बाण मोरकूं और स्वामिकार्तिककूं छेदके किरोड़न किरोड़न वीरनकूं छेदतोभयो ॥ ५१ ॥ स्वामिकार्तिकको अंग छिदिगयो व्याकुलमनं हैगयो तब गजानन गणेशजी मूसेपै बैठके युद्ध करिवेकूं आये ॥ ५२ ॥ गोमूत्र, पत्र, कस्तूरी ताते चित्र्यो है कुम्भस्थल जिनको और केशरते रंग्यो है सुन्दर मुख जिनको और सिन्दूरपूरित जो कपोल ताते अति शोभित मनोहर शोभा होतभई और कपूरके चूर्णते कीनो हैं काननको सुन्दर वर्ण जिनको ॥ ५३ ॥ चंचल काननते मारे जे मतवारे भौंरा तथा कपोलनकी मदिराके मदते विह्वल हैं अंग जिनके तिनने गाये जे संगीत तालते वसंती राग तिनते सेवित है जिनके माथेमें चन्द्रमा ऐसे गणेशजी दीखतभये ॥ ५४ ॥ बाल सूर्यकोसो वर्ण जिनको और

निर्मल जे सुवर्णके हार, बाजू, कंकण, तोड़ा, शौक, किरीट, मुकुट तिनकी चारचों वगल फैली जे किरण तिनते चारों तरफ देदीप्यमान है एक दांतवारे मूसेपे सवार भव्य गजकीसी मूर्ति और पाश, अंकुश, कमल, कुठारनके समूहकूं धारण करे हैं ॥ ५५ ॥ ऐसो स्वरूप चतुर्भुजसो संग्राममें आये काहूकूं सूंडिमें पकरिके अंकुशते मर्दन करे हैं काहूकूं फरसाते परशुरामकी नाईं सब शस्त्रधारीनकों मारे हैं ॥ ५६ ॥ वीरनकूं, हाथीनकूं, रथनकूं, घोडानकूं, सब सेनाकूं पटकिके रथसमेत फेंकि देतभये तिनकूं देखि गणनसमेत प्रद्युम्न अचंभेमें आयगयो तब विचारिके सुबुद्धि जो अनिरुद्ध है ताते बोल्यो ॥ ५७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खण्डे भाषाटीकायां यक्षयुद्धवर्णनं नाम चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥ प्रद्युम्नजी अनिरुद्धते कहे हैं कि, ये गणेश तो श्रीकृष्णकी साक्षात् कला है महाबली है इन्हें देवताहू नहीं जीतिसके फिर या भूमिमें मनुष्यनकी तो चर्चाही कहा है ॥ १ ॥ जहां ये निकट रहे ताकी हार नहीं होय क्योंकि शंकरके मंदिरमें कैलासमें श्रीकृष्णने इनकूं वर दीनो है ॥ २ ॥ सो जो ये यहां ठाडेहू रहेंगे तो हमारी जीत नहीं होयगी

प्रांशुंचतुर्भुजमतीवमृधेप्रवृत्तंकांश्चित्प्रगृह्यचकरेणधृतांकुशेन ॥ संमर्दयंतमुरुधारपरश्वधेनश्रीभार्गवेंद्रमिवशस्त्रभृतःसमस्तान् ॥५६॥ वीरेभवाजिरथसंघबलंनिपात्यसांबंप्रगृह्यसरथंप्रधनात्क्षिपंतम् ॥ तंवीक्ष्यविस्मितमनाःसगणोथकार्ष्णिःपुत्रंसुबुद्धिमनिरुद्धमुवाचसम्यक् ॥ ५७ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेयक्षयुद्धवर्णनंनामचतुर्विंशोऽध्यायः ॥२४॥ ॥ प्रद्युम्नउवाच ॥ ॥ श्रीकृष्णस्यकलासाक्षाद्गणेशोयंमहाबलः ॥ जेतुंनशक्योदिविजैर्मनुष्यैस्तुकुतोभुवि ॥ १ ॥ वर्ततेयत्रनिकटेतत्रनास्तिपराजयः ॥ श्रीकृष्णेनवरोदत्तोपुरास्मैशंकरालये ॥ २ ॥ यद्ययंवर्ततेचात्रतदानस्याज्जयश्चनः ॥ शत्रुपक्षगतोयंवैश्रीकृष्णस्यवरोर्जितः ॥ ३ ॥ तस्मात्त्वंचंडमार्जारोभूत्वासंयुद्धतोबलात् ॥ विद्रावयमहायुद्धेफूत्कारैश्चदिशोदश ॥ ४ ॥ यावद्बलंविजेष्यामितावद्विद्रावयत्वरम् ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ अथानिरुद्धोभगवांश्चंडमार्जाररूपधृक् ॥५॥ अलक्षितोगणेशेननज्ञातोविष्णुमायया ॥ फूत्कारमुत्कटंकुर्वन्संपपाताखुसंमुखे ॥६॥ विदारयन्मुखंराजन्सततंनखरैःपरैः ॥ विशेषेणसहैवाखुर्बभूवाशुभयविह्वलः ॥७॥ दुद्रावत्वरितंराजन्कंपितोरणमंडलात् ॥ तमन्वगच्छत्कुपितोमार्जारःस्थूलरूपधृक् ॥८॥ मूषकंस्वमपोनाद्गणेशोपिमुहुर्मुहुः ॥ नाययौस्वंरणंचाखुश्चंडमार्जारपीडितः ॥९॥ सप्तद्वीपान्सप्तसिंधून्दिशासुविदिशासुच ॥ धावन्वैसप्तलोकेषुनलेभेशर्ममैथिल ॥१०॥

श्रीकृष्णके वर करिके ऊर्जित हैं पर ये वैरीको पक्षपै ठाडे हैं ॥ ३ ॥ ताते तूं प्रचण्ड बिलाव बनिजा महायुद्धमें बल करिके युद्ध करदे या गणेशके मूसेकूं भजायदे अपनी फूंकारनते दशों दिशानमें भजाये डोलि ॥ ४ ॥ जबतलक मैं या सेनाकूं जीतूं तबतलक भजाये डोलि, नारदजी कहेहैं—तब अनिरुद्ध भगवान्ने चण्डमार्जारको रूप धरचो ॥ ५ ॥ गणेशने लख्यो नहीं विष्णुकी मायाते जान्यो नहीं उत्कट फूंकार करत मूसेके सन्मुख परयो ॥ ६ ॥ मोंहड़ेकूं फारि फारिके नोंहडा मारन लग्यो ताकूं देख विशेष करिके मूसो भयविह्वल हैगयो ॥ ७ ॥ तुरंतही हे राजन्! रणमेते कॉपतो भाज्यो ताके पीछे कुपित मार्जार बडो मोंहडो फाड़त भाज्यो ॥ ८ ॥ मूसेकूं गणेशजी बेर बेर बगदावे हैं पर मूसो अपने रणमें न आयो चंडमार्जारते पीडित भयो ॥ ९ ॥ हे मैथिल! सातों द्वीपनमें, सातों समुद्रनमें, दिशानमें, विदिशानमें सातो लोकनमें

भाज्यो भाज्यो डोल्यो पर सुख कहूं नहीं पायो हे मैथिल ! ॥ १० ॥ जहां जहां गणेशकूं लैके मूसो पोहंचो तहां तहां चंडपराक्रमी मार्जार पोहंच्यो ॥ ११ ॥ ऐसे गणेशको मूसो जब भाजिगयो विदिशोतर गणेशकूं लेगयो तब तो सब गण प्रमथ अपने पक्षके सबही अचंभो करनलगे ॥ १२ ॥ तब पुष्पक विमानमें बैठ्यो कुबेर यक्षनकी माया करतोभयो अपनो धनुष लैके महेश्वरकूं नमस्कार करिके ॥ १३ ॥ मंत्रनते कवचको पहरिके मंत्र पढिके बाण छोड्यो ताई समय प्रलयकेसे मेघ चलेआये तिनते आकाश छाय गयो ॥ १४ ॥ बीजुरीकीसी तड़कन जिनकी ऐसे बडे भयंकर मेघनते अंधकार छायगयो तिनमेंते हाथीकी सूंडिकीसी बूंदे ओलानसमेत संग्राममें पडनलगीं ॥ १५ ॥ और अतिघोर धारानते बादर बर्षनलगे एक छिनमें सातों समुद्र इकट्ठे हैके धरतीकूं डुबावनलगे ॥ १६ ॥ जीवसहित पर्वत रणमण्डलमें दीखनलगे प्राकृत मनुष्य तो प्रलय

यत्रयत्रगतश्चाखुर्गणेशेनसमन्वितः ॥ तत्रतत्रगतोराजन्मार्जारश्चण्डविक्रमः ॥ ११ ॥ एवंसमूषकेयातेगणेशेविदिशोत्तरम् ॥ विस्मितेषुसपक्षेषुगणेषुप्रमथेषुच ॥ १२ ॥ पुष्पकस्थःकुबेरोसौमायांचक्रेथगौह्यकीम् ॥ गृहीत्वास्वंधनुर्दिव्यंनमस्कृत्यमहेश्वरम् ॥ १३ ॥ समन्त्रंकवचंधृत्वाबाणसंधंसमादधे ॥ तदैवच्छादितंव्योममेघैःसांवर्तकैरिव ॥ १४ ॥ तडित्स्वनैर्महाभीमैस्तमोभूतस्तनयित्नुभिः ॥ बिन्दवोहस्तिसदृशानिपेतुःसोपलामृधे ॥ १५ ॥ धाराभिरतिघोराभिर्ववृषुर्वारिदास्ततः ॥ क्षणेनसिंधवःसर्वेप्लावयंतोधरातलम् ॥ १६ ॥ पर्वतैर्जीवसहितैर्दृश्यंतेरणमण्डले ॥ प्राकृताःप्रलयंमत्वायादवाभयविह्वलाः ॥ १७ ॥ त्यक्त्वाशस्त्राणितेऽथोचुःश्रीकृष्णेतिमुहुर्मुहुः ॥ ज्ञात्वातांगौह्यकींमायांप्रद्युम्नोभगवान्हरिः ॥ १८ ॥ सत्त्वात्मिकांचस्वांविद्यांसर्वमायोपमर्दिनीम् ॥ जप्त्वाकृत्वाकामबीजंबाणमध्येनिधायतत् ॥ १९ ॥ मुखेचप्रणवंधृत्वामुखेश्रीबीजमेवच ॥ आकृष्यकर्णपर्यंतंकृष्णंस्मृत्वाचतुर्भुजम् ॥ २० ॥ चिक्षेपविशिखंचापाद्दोर्दंडाभ्यांतडित्स्वनात् ॥ कोदण्डमुक्तोविशिखोद्योतयन्मण्डलंदिशाम् ॥ २१ ॥ जघानगौह्यकींमायामंधकारंयथारविः ॥ भयभीतोराजराजोपुष्पकस्थोरणांगणात् ॥ २२ ॥ पलायमानोयक्षैश्चकंपितःस्वपुरींययौ ॥ प्रद्युम्नस्योपरिसुराःपुष्पवर्षंप्रचक्रिरे ॥ २३ ॥ जहसुर्यादवाःसर्वेजयारावसमाकुलाः ॥ तदातिहर्षितोराजन्राजराजःकृतांजलिः ॥ २४ ॥

जाननलगे और यादव भयविह्वल हैगये ॥ १७ ॥ तब सब यादव शस्त्रनकूं छोडि छोड़िके बेर बेर श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण कहतेभये तब प्रद्युम्न भगवान् हरि गुह्यकनकी मायाको जानिके ॥ १८ ॥ कामबीजको जप करिके बाणके बीचमें लिखिके सब मायानके मीडिवेवारी अपनी सतोगुणी मायाकूं छोडतेभये ॥ १९ ॥ वाके मुखमें ॐ श्री लिखिके चतुर्भुज श्रीकृष्णको ध्यान करिके कानतलक बाण खैंचिके ॥ २० ॥ बिजलीकोसो जामें शब्द या धनुषते बाण छोडतेभये दोनों भुजानते तब धनुषते निकसो बाण ॥ २१ ॥ दिशानके मंडलमें उजीतो हैगयो गुह्यककी माया सब नाश करिदई जैसे सूर्य अंधकारकूं नाश करैहै तब तो कुबेर पुष्पक विमानमें बैठ्यो भयभीत हैगयो रणके आंगनते भाज्यो ॥ २२ ॥ यक्षनसहित कांपिके अपनी पुरीकूं चल्योगयो तब प्रद्युम्नके ऊपर देवता पुष्पनकी वर्षा करतेभये ॥ २३ ॥ सब यादव प्रसन्न हैगये हसनलगे जय जय शब्द

करनलगे तब अत्यंत हर्षित ह्वैके राजराज कुबेर हाथ जोड़के आयो ॥ २४ ॥ शीघ्रही भेट लैके प्रद्युम्नके सन्मुख आयो द्वै लाख सो हाथी लागे दै सूंडिके ॥ २५ ॥ चारि चारि इनके दांत पर्वतसे मद इनके चुचाय दश लाख रथ दीने जिनमें मोतीनकी वंदनवार झालर बँधी ॥ २६ ॥ सौ सौ जिनमें घोडा लगे सुवर्णके बने सूर्यकोसो जिनको तेज और चंद्रमाकोसो जिनको वर्ण ऐसे दश अर्बुद घोड़ा दीने ॥ २७ ॥ और चार लाख माणिकनकी जडी पिनस, पाल्की, डोला, चंडोली दीने, पींजरामें बैठे ऐसे द्वै लाख नाहर दीने ॥ २८ ॥ हे विदेहराज ! एक किरोड़ चीते, एक किरोड़ मृग, एक किरोड़ रोज, एक किरोड़ शिकारी कुत्ता दिये ॥ २९ ॥ पींजरामें बैठे मनोहर जिनके कंठ ऐसे एक लाख तोता, एक लाख मैना, एक लाख सुनहरी हंस दीने और औरहू अनेक प्रकार पक्षीनके पींजरामें स्थित लाख लाख दीने फिर विष्णुने दीनो जो विमान है सो जामें

बलिनीत्वाययौशीघ्रंप्रद्युम्नस्यापिसंमुखे ॥ गजेंद्राणांद्विलक्षंचद्विशुण्डादण्डशालिनाम् ॥ २५ ॥ दद्भिश्चतुर्भिर्युक्तानामद्रीन्स्पर्धयतांमदैः ॥ दशलक्षंरथानांचमुक्तातोरणशालिनाम् ॥ २६ ॥ शताश्वयोजितानांचरौक्माणांसूर्यवर्चसाम् ॥ दशार्बुदंतथाराजन्हयानांचन्द्रवर्चसाम् ॥ ॥ २७ ॥ शिबिकानांचतुर्लक्षंमाणिक्यैरग्र्यवर्चसाम् ॥ पञ्जरस्थायिनांराजन्शार्दूलानांद्विलक्षकम् ॥ २८ ॥ चित्रकाणांमृगाणांचगवयानां तथैवच ॥ मृगयासारमेयानांकोटिकोटीर्विदेहराट् ॥ २९ ॥ शुकानांसारिकाणांचकलकण्ठप्रवादिनाम् ॥ हंसानांस्वर्णवर्णानामन्येषांचि त्रपक्षिणाम् ॥ ३० ॥ पञ्जरस्थायिनांराजँल्लक्षंलक्षंनृपेश्वरम् ॥ विमानंविष्णुदत्ताख्यंमुक्तादामविलंबितम् ॥ ३१ ॥ अष्टयोजनमुच्चांगंनवयो जनविस्तृतम् ॥ लक्षकुम्भध्वजोपेतंनिर्मितंविश्वकर्मणा ॥ ३२ ॥ कामगंस्वर्णशिखरंसहस्रादित्यसुप्रभम् ॥ सहस्रंकुलवृक्षाणांकामधेनुशतं तथा ॥ ३३ ॥ चिन्तामणीनांचशतंशतंदिव्याश्मनांतथा ॥ यत्स्पर्शेनापिलोहस्तुहेमत्वंयातिमैथिल ॥ ३४ ॥ छत्राणांचामराणांचहैमसिंहा सनंशतम् ॥ तथाहिदिव्यपद्मानांमालांकिंजल्किनींशुभाम् ॥ ३५ ॥ शतंद्रोणंपीयूषस्यफलानिविविधानिच ॥ खचिद्रत्नसुवर्णानांभूषणा नांतुवाससाम् ॥ ३६ ॥ दिव्यानांकंबलानांचकोटिशःपात्रसञ्चयम् ॥ अमोघानांचशस्त्राणांकोटिर्सौवर्णशालिनाम् ॥ ३७ ॥

मोतीनकी झालर चंदोहा लटकि रहेहैं ॥ ३० ॥ ३१ ॥ बत्तीस कोस ऊंचो, छत्तीस कोस लम्बो जामें लाख ध्वजा और लाख सुनहरी कलशा लगि रहेहैं विश्वकर्माको बनायो ॥ ३२ ॥ इच्छागमन जाके सोनेनके शिखर, हजार सूर्यकोसो जाको तेज, जहाँ इच्छा करो तहीं जाय, हजार जातिके जामें वृक्ष, सौ कामधेनु जामें गौ ॥ ३३ ॥ सौ जामें चिंतामणि, सौ जामें पारस पत्थर हैं मैथिल ! जाके छिवायेते लोहा सुवर्ण हैजाय ॥ ३४ ॥ छत्र, चमर समेत सौ सुनहरी सिंहासन, तैसेही दिव्य कमलनकी किंजल्किनी माला दीने जे कबहूं कुम्हिलायँ नहीं ॥ ३५ ॥ अमृतके सौ घट दीने, अनेक प्रकारके फल दीने, जड़ाऊ सोनेके किरोड गहने और वस्त्र ॥ ३६ ॥ किरोड़ बनात, किरोड़ बासन, अमोघ शस्त्र

किरोड़ मोहोरनके थार दीने ॥ ३७ ॥ किरोड़ हाथी दीने फेर हाथीनपे पलेदारनपै लदवायके नौ निधि दीनी प्रद्युम्न महात्माकूं इतनी भेट दीनी ॥ ३८ ॥ फिर प्रद्युम्नको प्रणाम करके प्रदक्षिणा देके आनन्दभरो कुबेर यह बोलो कि, तुम भगवान् पुरुष महात्मा हो तिनके अर्थ हमारो नमस्कार है ॥ ३९ ॥ तुम अनादि हो, सबके जाननेवारे हो, निर्गुण हो महात्मा हो, प्रधानपुरुषके ईश हो, प्रत्यग्धामा हो तिनके अर्थ नमस्कार है ॥ ४० ॥ स्वयं ज्योतिःस्वरूप श्यामल अंग जिनको ऐसे जो वासुदेव संकर्षण हो तिनके अर्थ नमस्कार है ॥ ४१ ॥ प्रद्युम्न अनिरुद्ध तिनके अर्थ नमस्कार है, सात्वतनके पति तिनके अर्थ नमस्कार है, मदन हो, मार हो, कंदर्प हो तिनके अर्थ हमारो नमस्कार है ॥ ४२ ॥ दर्पक हो, काम हो, पञ्चबाण हो, अनंग हो, शंबर दैत्यके वैरी हो तिनके अर्थ नमस्कार है ॥ ४३ ॥ हे मन्मथ ! तुमारे अर्थ नमस्कार है, मीनकेतन, मनोभव, देव

गजेन्द्रैर्भारवाहैःप्रेरितानिधयोनव ॥ दत्त्वाबलिंराजराजःप्रद्युम्नायमहात्मने ॥ ३८ ॥ दक्षिणीकृत्यतंनत्वाप्राहेदंहर्षपूरितः ॥ ॥ कुबेरउवाच ॥ ॥ नमस्तुभ्यंभगवतेपुरुषायमहात्मने ॥ ३९ ॥ अनादयेसर्वविदेनिर्गुणायमहात्मने ॥ प्रधानपुरुषेशायप्रत्यग्धाम्नेनमोनमः ॥ ४० ॥ स्वयंज्योतिःस्वरूपायश्यामलांगायतेनमः ॥ नमस्तेवासुदेवायनमःसंकर्षणायच ॥ ४१ ॥ प्रद्युम्नायानिरुद्धायसात्वतांपतयेनमः ॥ मदनायचमारायकंदर्पायनमोनमः ॥ ४२ ॥ दर्पकायचकामायपञ्चबाणायतेनमः ॥ अनङ्गायनमस्तुभ्यंनमस्तेशंबरारये ॥ ४३ ॥ हेमन्मथनमस्तुभ्यंनमस्तेमीनकेतन ॥ मनोभवायदेवायनमस्तेकुसुमेषवे ॥ ४४ ॥ अनन्यजनमस्तुभ्यंरतिभर्त्रेनमोनमः ॥ नमस्तेपुष्पधनुषेमकरध्वजतेनमः ॥ ४५ ॥ स्मरायप्रभवेनित्यंजगद्विजयकारिणे ॥ नमोरुक्मवतीभर्त्रेसुन्दरीपतयेनमः ॥ ४६ ॥ इदंकरिष्यामिकरोमिभून्ममेदमस्तीतितवेदमाब्रुवन् ॥ अहंसुखीदुःखयुतःसुहृज्जनोलोकोह्यहंकारविमोहितोखिलः ॥ ४७ ॥ प्रधानकालाशयदेहजैर्गुणैःकुर्वन्विकर्माणिजनोनिबद्ध्यते ॥ काचेर्भकंसैकतएवजीवनंगुणेचसर्पप्रतनोतिसोक्षिभिः ॥ ४८ ॥ कृतंमयाहेलनमद्यमौढ्यतस्त्वन्माययामोहितचेतसाप्रभो ॥ नमन्यसेबालकृतंपितेवहिमाभूत्पुनर्मेमतिरीदृशीमनाक् ॥ ४९ ॥ सदाभवेत्त्वच्चरणारविंदयोर्भक्तिपरायांचत्रिदुर्गरीयसीम् ॥ ज्ञानंचवैराग्ययुतंशिवास्पदंदेहिप्रशस्तंनिजसाधुसङ्गमम् ॥ ५० ॥

कुसुमशर हो तिनके अर्थ नमस्कार है ॥ ४४ ॥ अनन्यज हो, रतिके भर्ता हो, पुष्पधन्वा हो, मकरध्वज हो तिनके अर्थ नमस्कार है ॥ ४५ ॥ स्मर हो, प्रभु हो, नित्यही जगत्की विजय करनहारे हो, रुक्मवतीके भर्ता हो, सुंदरीके पति हो तिनको नमस्कार है ॥ ४६ ॥ यह करूंगो याहि करूंहूं हे भूमन् ! यह मेरो है यह तेरो है ऐसो कहतो भै सुखी मैं दुःखी मेरे सुहृज्जन या प्रकार ये सब लोक अहंकारसें मोहित हैं ॥ ४७ ॥ मायाकाल, प्रकृतिकाल और अंतःकरण देह इनते भये जे विषयकर्म इंद्री तिनते कुकर्मकूं करतो यह जन बंधैहै जैसे काचमें बालक रेतीमें जल और रस्सीमें सर्प देखें हैं ॥ ४८ ॥ मैंने मूढता करिके आपको बड़ो अपराध कीनो, हे प्रभो ! तुमारी मायाते चित्त मोहित हैगयो पर आप अपराधकूं क्षमा करोहो पिता जैसे पुत्रके अपराधकूँ याते फेर मेरी ऐसो बुद्धि मति हो ॥ ४९ ॥ तुमारे चरणकमलमें

मेरी पराभक्ति होउ वैराग्यसहित कल्याणकर्त्ता ज्ञान होउ और उत्तम अपनो साधुसंग यह मोकूँ देउ ॥ ५० ॥ नारदजी कहेहैं—यह प्रद्युम्नको शुभ स्तोत्र है याकूं जो कोइ संकटमे प्रातःकाल उठिके पढे ताके हरि आप सहायक होयहै ॥ ५१ ॥ यक्षनके पतिको वचन सुनिके प्रद्युम्न भगवान्ने तथास्तु—तैसेई होउ ऐसे कहिके पद्मराग माणिक शिरोमणि दीनी ॥ ५२ ॥ भय मति करो ऐसे अभय दान देके लीला छत्र, चमर, सुन्दरी मणिजटित सिंहासन ये सब यादवेश्वर देतेभये ॥ ५३ ॥ तब तो राजराज धनके ईश्वर कृष्णके बेटाकी परिक्रमा देके जातभये तब महात्मा प्रद्युम्न करके कुबेर जीत्यो सुनिके ॥ ५४ ॥ काऊ राजाने युद्ध न कीनो सबने भेट दीनी तब तो प्रद्युम्न नगाडे बजावत ॥ ५१ ॥ सब सेनाकूं लेके प्राग्ज्योतिषपुरकूं गये तहां भौमासुरको बेटा नील हो सो प्रद्युम्नके तेजते धर्षित हेगयो ॥ ५६ ॥ तब जल्दीही प्रद्युम्नकूं भेट

॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ प्रद्युम्नस्यशुभंस्तोत्रंप्रातरुत्थाययःपठेत् ॥ संकटेतस्यसततंसहायःस्याद्धरिःस्वयम् ॥ ५१ ॥ इत्युक्तवंतंयक्षेशं प्रद्युम्नोभगवान्हरिः ॥ तथेत्युक्त्वाददौराजन्पद्मरागशिरोमणिम् ॥ ५२ ॥ माभैरित्यभयंदत्त्वालीलाछत्रंसचामरम् ॥ सिंहासनंमणिमयंप्रादाच्छ्रीयादवेश्वरः ॥ ५३ ॥ कार्ष्णिंप्रदक्षिणीकृत्यराजराजोधनेश्वरः ॥ जितंश्रुत्वाराजराजंप्रद्युम्नेनमहात्मना ॥ ५४ ॥ नकेपियुयुधुस्तेनराजानश्चबलिंददुः ॥ अथकार्ष्णिर्महाबाहुर्नादयन्दुंदुभीन्बहून् ॥ ५५ ॥ समस्तवाहिनीयुक्तःप्राग्ज्योतिषपुरंययौ ॥ भौमासुरसुतोनीलोधर्षितस्तस्यतेजसा ॥ ५६ ॥ सद्यस्तस्मैबलिंप्रादात्प्रद्युम्नायमहात्मने ॥ प्राग्ज्योतिषपुरद्वारेद्विविदोनामवानरः ॥ ५७ ॥ पुराप्रद्युम्नबाणेनताडितोयोमहाबलः ॥ समुत्थायरुषाविष्टोदशनैर्नखरैःखरैः ॥ ५८ ॥ विदार्यवीरानश्वांश्चभ्रूभंगैःप्रजगर्जह ॥ लांगूलेनरथान्बद्ध्वाप्राक्षिपल्लवणांभसि ॥ ५९ ॥ गृहीत्वासगजान्दोर्भ्यांविचिक्षेपांबरेबलात् ॥ शत्रुंज्ञात्वाकपिंकार्ष्णिःप्रतिशार्ङ्गेशरंदधे ॥ ६० ॥ नीत्वाशरस्तंसहसाभ्रामयित्वांबरेबलात् ॥ पूर्ववत्पातयामासकिष्किंधायांमहाकपिम् ॥ ६१ ॥ पुनरागतवान्बाणःप्रद्युम्नस्येषुधौस्फुरन् ॥ ६२ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेयक्षदेशविजयोनामपंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ अथकार्ष्णिःपरान्देशान्दिव्यद्रुमलताकुलान् ॥ सहस्रपत्रवद्भिश्चसरोभिःशोभितान्ययौ ॥ १ ॥

देतभयो फिर यहही प्राग्ज्योतिषपुरके दरवजेपै द्विविद बंदर हो ॥ ५७ ॥ सो महाबली पहले प्रद्युम्नके बाणते ताडित भयोहो सो रोषको मारयो उठके दांतनते और पैने नोहनते ॥ ५८ ॥ वीरनकूँ घोडानकूं चीर चीरके फेंकनलग्यो और पूंछमे रथनकूँ लपेटके खारी समुद्रमे फेंकनलग्यो फिर बडी गर्जना करी ॥ ५९ ॥ हाथीनकूं भुजानते पकरिके आकाशमे फेंकनलग्यो तब प्रद्युम्नने बंदरकूं वैरी जानके शार्ङ्ग धनुषपै बाण धर्यो ॥ ६० ॥ वह बाण या बन्दरकूं उठायके आकाशमें घुमाय घुमायके जबरदस्तीसों किष्किंधामें फेंक देतोभयो ॥ ६१ ॥ फिर वह बाण प्रकाश करतो प्रद्युम्नके तर्कसमें आयगयो ॥ ६२ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटीकायां यक्षदेशविजयो नाम पंचविंशोध्यायः ॥ २५ ॥ श्रीनारदजी कहेहैं कि, फिर ये कृष्णको बेटा दिव्य वृक्ष लता है जिनमें तिन देशनकूँ जातभयो हजार दलके कमल जिनमे फूले है ऐसे सरोवरन करिके सेवित

और देश हैं तिनकूँ जातेभये ॥ १ ॥ सौ अक्षौहिणी फौजकूं संग लेके चंडपराक्रम है जिनमें ऐसे प्रद्युम्न यक्षने बतायो जो मार्ग तामें हैके किंपुरुषखंडकूँ जातभये ॥ २ ॥ हेमकूट पर्वतके नीचे जहाँ रंगवल्ली नाम पुर है तहां किंपुरुष रहेंहैं ते किंपुरुष प्रद्युम्नको आगमन सुनके यह वचन बोले ॥ ३ ॥ महो! मथुरापुरी अति धन्य है बड़ी श्रेष्ठ है यामें हरि भगवान्को जन्म भयोहै अहो! निरंतर यादवनको कुल धन्य है जा कुलमें अखिल ब्रह्मांडके नायक पालक भये हैं ॥ ४ ॥ और वसुदेवको मंदिर धन्य है जो गोलोकनाथने मनोहर कीनोहै और माथुरहू मंडल धन्य है जो देवतानकूँहू दुर्लभ है जहां लक्ष्मीपति विचरेहैं ॥ ५ ॥ और महावन तो अति धन्य है और मनोहर है जहां पिताके घरते बालक कृष्ण बलदेवजी सहित गये गोप बालकनके संग खेले यशोदाने दूध प्यायके लाड़ लड़ाये ॥ ६ ॥ देखो वृंदावन वाहूसो अति धन्य है जो परात्पर श्रीकृष्णके

अक्षौहिणीशतयुतःप्रद्युम्नश्चंडविक्रमः ॥ यक्षैर्दिष्टेनमार्गेणखंडंकिंपुरुषंययौ ॥ २ ॥ रंगवल्लीपुरंयत्रहेमकूटगिरेरधः ॥ तस्यकिंपुरुषाऊचुःशंबरारेश्चशृण्वतः ॥ ३ ॥ ॥ किंपुरुषाऊचुः ॥ ॥ अहोतिधन्यामथुरापुरीवराबभूवयस्यांपरमेश्वरोहरिः ॥ अहोतिधन्यंसततंयदोःकुलंजातोहियस्मिन्नखिलांडपालकः ॥ ४ ॥ धन्यंचतच्छूरसुतस्यमंदिरंगोलोकनाथेनमनोहरंकृतम् ॥ धन्यंपरंमाथुरमंडलंसुरैःसुदुर्लभंयत्रचचारमाधवः ॥ ५ ॥ महावनंधन्यतमंमनोहरंपितुर्गृहाद्यत्रगतोहरिःशिशुः ॥ चचारकृष्णःशिशुनाबलेनहियशोदयादुग्धमुखःसुलालितः ॥ ६ ॥ वृंदावनंपुण्यतमंपरात्परश्रीकृष्णपादांबुजरेणुराजितम् ॥ गाःपालयन्यत्रचचारबालोगोपालबालैःसबलःस्वयंहरिः ॥ ७ ॥ योदानलीलांकिलमानलीलांश्रीरासलीलांव्रजसुंदरीभिः ॥ वृन्दावनेयत्रचचारकृष्णोयस्यापिगायंतियशस्त्रिलोकाः ॥ ८ ॥ अहोतिधन्यावृषभानुनंदिनीलीलावतीसानिजलोकशालिनी ॥ चचारकृष्णेनकलिंदनंदिनीतटेमिलिंदध्वनिसंकुलेवने ॥ ९ ॥ अहोतिधन्यास्तिकलिंदनंदिनीश्रीकृष्णवामांससमुद्भवाया ॥ तटेमिलिंदध्वनिसंकुलेवटेतत्स्पर्शनाद्यातिनरःकृतार्थताम् ॥ १० ॥ समुद्भवोयोहरिवक्षसोगिरिर्गोवर्द्धनोनामगिरींद्रराजराट् ॥ विराजतेसव्रजमण्डलेपरोयद्दर्शनाज्जन्मपुनर्नविद्यते ॥ ११ ॥ अहोतिधन्यायदुमण्डलीभिर्विराजतेभूमितलेमनोहरा ॥ वैकुण्ठलीलाधिकृताकुशस्थलीयथातडिद्भिर्जलदावलिर्दिवि ॥ १२ ॥

चरणकमलकी रेणुते शोभायमान है जहां गोपबालकनके संग स्वयं कृष्ण बलदेव गाय चरावते भये ॥ ७ ॥ जो श्रीकृष्ण श्रीवृंदावनके विषे व्रजसुंदरीनके संग दानलीला, मानलीला, रासलीला, तिन्हे करतभये जाके यशकूं त्रिलोकी गावेंहै ॥ ८ ॥ अहो! वृषभानुनंदिनी आप धन्य हैं लीलावती जो निज लोककी बसनहारी है जो कृष्णके संग कालिंदीके तीरपै विहार करतीभई जहां भौंरानके झुंडनकी झंकार है ॥ ९ ॥ अहो! कालिंदीजी बड़ी धन्य है जो कृष्णके बायें अंगते उत्पत्ति भई है तहां भ्रमर ध्वनि युक्त बंशीवट है जाके स्पर्शमात्र तेही मनुष्य कृतार्थताको प्राप्त होयहै ॥ १० ॥ जो पर्वत हरि भगवान्के वक्षःस्थलते उत्पन्न भयो है वो गोवर्द्धन पर्वत पर्वतनके राजानको राजा है सो हे राजराट मैथिल! व्रजमण्डलमें विराजै है जाके दर्शन करवेते फिर जन्म नहीं होय है ॥ ११ ॥ अहो! अति धन्या द्वारकापुरी भूमितलमें बड़ी मनोहर है वैकुण्ठलीलाको

अधिकार जाको ऐसी जो यादवनकी मण्डली तामें विराजैहैं जैसें घन यौतुर्गनि आकाशमें शोभाको प्राप्त होयहै ॥ १२ ॥ जहां साक्षात् पर ईश्वर पुरुष चतुर्व्यूह रूप धारिकै अतिशय विराजैहैं जो उग्रसेनकूं चक्रवर्ती राज्य देतोभयो ता हरि भगवान्कूं हमारी नमस्कार है नमस्कार है ॥ १३ ॥ या बुद्धिमान् राजाने जगत् जीतिबेकूं प्रेरणा कीनों महान् मकरध्वज प्रद्युम्न जाके दुर्लभ दर्शनकूं करके हम आज सब ओरते कृतार्थ भयेहैं ॥ १४ ॥ नारदजी कहैहैं कि, हे नृप ! ऐसे प्रद्युम्न अपने यशसों विशद (उज्ज्वल) चरित्र नसों उदय होतो अमल या त्रिलोकको औरहू विशद करतोभयो जैसे पूर्ण चंद्रकी किरणनसें प्रकाश करतो उठी हाथीकीसी तरंगनसों निर्मल समुद्रके दुग्धको जैसे करैहै ॥ १५ ॥ ऐसे अपने निर्मल यशकूं सुनिकै हर्षितभये जे शंबरारि प्रद्युम्न हैं सो उनकूं बहुत धन देतभये तिने कहैहैं कि, हार, बाजू, नौरत्न, मनोहर किरीट, मणिनके कुंडल और

यत्रैवसाक्षात्पुरुषःपरेश्वरोधृत्वाचतुर्व्यूहममलंविराजते ॥ यस्तूग्रसेनायददौनृपेशतांकृष्णायतस्मैहरयेनमोनमः ॥ १३ ॥ प्रणोदितस्तेननृपेणधी
मताजगद्विजेतुंमकरध्वजोमहान् ॥ कृत्वाथतद्दर्शनमद्यदुर्लभंवयंकृतार्थाद्भिवेमसर्वतः ॥ १४ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्थंहरिर्नृपयशो
विशदैश्चरित्रैरुद्यत्रिलोकममलंविशदीचकार ॥ पूर्णेंदुरश्मिमिलितैस्तरलैःस्फुरद्भिःप्रोद्यद्द्विकद्रजडवामलसिंधुदुग्धम् ॥ १५ ॥ इत्थंयशःस्वम
मलंनृपशंबरारिःश्रुत्वातिहर्षिततनुःप्रददौधनानि ॥ केयूरहाररत्नवररत्नमनोहराणितेभ्यःकिरीटमणिकुण्डलकंकणानि ॥ १६ ॥ रंगवल्लीपुराधी
शःसुबाहुश्चन्द्रवंशजः ॥ नत्वाबलिंददौसोपिप्रद्युम्नायमहात्मने ॥ १७ ॥ तस्मैप्रसन्नोभगवान्प्रद्युम्नोमीनकेतनः ॥ दत्त्वाचूडामणिंदिव्यंपप्र
च्छेदंमहामनाः ॥ १८ ॥ ॥ प्रद्युम्नउवाच ॥ ॥ रंगवल्लीपुरस्यापिनामकेनप्रकाशितम् ॥ एतद्धिसुबाहोमेश्रुतंपूर्वंत्वयाकिल ॥ १९ ॥
॥ ॥ सुबाहुरुवाच ॥ ॥ देवासुरैःपुराराजन्मथितःक्षीरसागरः ॥ विनिर्गतानिमथनाद्रत्नानिचचतुर्दश ॥ २० ॥ निस्सृतंकलशंतस्मात्सु
धापूर्णंमनोहरम् ॥ तंददर्शहरिःसाक्षान्नेत्राभ्यांपुष्करेक्षणः ॥ २१ ॥ तन्नेत्रहर्षबिन्दुश्चकलशेनिपपातह ॥ तस्माद्वृक्षःसमुद्भूतस्तुलसीतिप्रक
थ्यते ॥ २२ ॥ रंगवल्लीतितन्नामचकारमधुसूदनः ॥ अत्रकिंपुरुषेखण्डेहेमकूटगिरेरधः ॥ २३ ॥ तस्याश्चरंगवल्याःकोस्थापनांसचकारह ॥
रंगवल्लीमहावृक्षःसदाऽत्रैवविराजते ॥ २४ ॥

कंकण ॥ १६ ॥ फिर या रंगवल्लीपुरको राजा चन्द्रवंशी सुबाहु यह महात्मा प्रद्युम्नकूं नमस्कार करके बली जो भेट ताय देतोभयो ॥ १७ ॥ ताके ऊपर प्रसन्नभये प्रद्युम्न भग वान् मकरध्वज दिव्य चूडामणि देके यह पूछनलगे ॥ १८ ॥ प्रद्युम्नजी कहैहैं कि, रंगवल्लीपुर यह नाम कौनने प्रकाश कीनोहै हे सुबाहु ! यह मेरे आगे कहि तैने आगे निश्चय तो सुन्यो होयगो ॥ १९ ॥ सुबाहु कहैहै–हे राजन् ! पहलें देवतानने और असुरनने यह क्षीरसागर मथ्यो हो तब जामेंते चौदह रत्न निकसे ॥२०॥ फिर तामेंते अमृतको पूर्ण भरयो मनो हर कलशा निकस्यो तब पुष्करेक्षण हरि भगवान्ने वाकूं देख्यो ॥ २१ ॥ तिनके नेत्रते एक हर्षकी बूंद या अमृतके कलशमें गिरी तातें एक वृक्ष उत्पन्न भयो ताको तुलसी कहैहैं ॥ २२ ॥ तब मधुसूदन भगवान्ने वाको नाम रंगवल्ली धरयो सो यहां किंपुरुषखण्डमें हेमकूटके नीचे ॥ २३ ॥ या रंगवल्लीको प्रभुने

भूमिमें स्थापन कीनो है रंगवल्ली बडी भारी वृक्ष है वो सदा यहां विराजै है ॥ २४ ॥ ताहीके नामते यहां रंगवल्लीपुर प्रसिद्ध होतभयो यहां नित्यही हनूमान्जी आर्ष्टि
सेन गन्धर्वसहित ॥ २५ ॥ महात्मा रामपूजक दर्शनार्थ आमैंहैं नारदजी बोले या प्रकार कि, शंबरके वैरी प्रद्युम्न मनोहर रंगवल्लीकूं सुनिके ॥ २६ ॥ दर्शनार्थ
आये ताको देखिके पूजन प्रदक्षिणा करिके और देशनकूं चलेगये हेमकूटकी तटीमें एक भयंकर वन देख्यौ ॥२७॥ जामें झिल्लीनकी बड़ी झंकार सिंह चीते जामें हुंकारे हैं वनके
हाथी डोलैंहैं स्यार और उल्लू जामें रोमैंहैं ॥ २८ ॥ और जो सछिद्र बाँस, पीपर, बकायन, वड़, भोजपत्र, छोटी हरड़की बेल, वेर, मोथा तिनते सघन वन है ॥ २९ ॥ ता
वनमेंते एक बड़ो सर्प निकस्यो चालीस कोस लम्बो फुंकार मारतो जाय है सो हाथीनकूं निगलतोभयो ॥ ३० ॥ हे मैथिलेश्वर ! तब तौ सेनामें हाहाकार मच्यौ प्रचण्ड विषकी

तत्राभ्राप्रसिद्धमभूद्रंगवल्लीपुरंत्विदम् ॥ अत्रनित्यंहिहनुमानार्ष्टिषेणेनरागिणा ॥ २५ ॥ दर्शनार्थसमायातिमहात्मारामपूजकः ॥ ॥ नारद उवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वाशंबराररिंगवल्लींमनोहराम् ॥२६॥ दृष्ट्वाप्रदक्षिणीकृत्यदेशानन्याञ्जगामह ॥ हेमकूटतटीभूतंवनंप्राप्तंभयंकरम् ॥२७॥ झिल्लीझंकारसंयुक्तंसिंहचित्रकनादितम् ॥ वन्यैःकरीन्द्रैःसंयुक्तंशिवोलूकरुतावृतम् ॥ २८ ॥ कीचकाश्वत्थमन्दारवटभूर्जसमाकुलम्॥ कृष्णाहरीतकीवल्लीबदरैःसघनंवनम् ॥ २९ ॥ तस्माद्विनिर्गतःसर्पोदशयोजनलंबितः ॥ अग्रसद्गजवृन्दानिफूत्कारंकारयन्मुहुः ॥ ३० ॥ हाहाकारे तदाजातेसेनायांमैथिलेश्वर ॥ प्रचण्डगरलैर्वातैर्भस्मीभूतेदिशांतरे ॥ ३१ ॥ भानुःसुभानुःस्वर्भानुःप्रभानुर्भानुमांस्तथा ॥ चन्द्रभानुर्बृहद्भानुरतिभानुस्तथाष्टमः ॥ ३२ ॥ श्रीभानुःप्रतिभानुश्चसत्यभामात्मजादश ॥ एतेजघ्नुःशरैस्तीक्ष्णैःसर्पंरौद्रंमदोत्कटम् ॥ ३३ ॥ बाणैःसंभिन्नसर्वांगःपतितोधरणीतले ॥ सर्परूपंविहायाशुगंधर्वोभूत्स्फुरद्द्युतिः ॥३४॥ नत्वाश्रीकृष्णपुत्रांस्तान्द्योतयन्मण्डलंदिशाम् ॥ पुष्पैर्वर्षत्सुदेवेषुविमानेनदिवंययौ ॥ ३५ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ गंधर्वोयंतुकःपूर्वंकेनपापेनसर्पताम् ॥ प्राप्तःकथंवदमुनेत्वंपरावरवित्तमः ॥ ३६ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ आर्ष्टिषेणस्ययोभ्रातासुमतिर्नामसुंदरः ॥ रामायणंहनुमतापठितुंससमागतः ॥ ३७ ॥ हेमकूटेहनुमतःकुर्वतोरामसेवनम् ॥ प्रातःकालात्समारभ्यघटिकाश्चचतुर्दश ॥ ३८ ॥

पवनते दिशान्तर भस्म होनलगे ॥ ३१ ॥ तब तौ भानु, सुभानु, स्वर्भानु, प्रभानु, भानुमान्, चन्द्रभानु, बृहद्भानु, अतिभानु ॥ ३२ ॥ श्रीभानु, प्रतिभानु ये दश सत्यभामाके बेटा
मदोत्कट वा भयंकर सर्पकूं देखिके पैने २ बाणनते मारनलगे ॥ ३३ ॥ तब बाणनते छिन्न भिन्न भयो है अंग जाको सो पृथ्वीमें आयपर्यौ सर्परूप देहको छोड़ झलमलातो
गन्धर्व हैगयो ॥ ३४ ॥ श्रीकृष्णके उन बेटानकूं दण्डौत करते दशों दिशानमें उजीतो करतो देवता पुष्पनकी वर्षा कर रहे हैं ता समय विमानमें बैठिके स्वर्गकूं चल्यो गयो
॥ ३५ ॥ तब बहुलाश्व राजा पूछनलग्यो कि, गन्धर्व पहले जन्मको कौन हो ! और कौनसे पापते याकूं सर्पकी देह मिलीही है मुने ! आपतो भूत भविष्यके जाननहारे हो सो
कहो ॥ ३६ ॥ तब नारदजी बोले–आर्ष्टिसेन गन्धर्वको भैया एक सुमती हो बड़ो सुन्दर हो वो रामायण पढिवेकूं हनूमानजीके पास आयो हो ॥ ३७ ॥ और हेमकूट पर्वतपै

हनूमान्‌जी प्रातःकालते लैके दुपहरतक्क रामको सेवन करैहैं ॥ ३८ ॥ लक्ष्मणसहित जानकीपति रामचन्द्रजीको ध्यान करैहैं सो यह सुमति गन्धर्वने सांपकीसी फुंकार लेके ध्यानमें भंग करदीनो ॥ ३९ ॥ तब महावीर जे हनुमान् वानरेश्वर हैं तिनकूं क्रोध आयगयो तब सुमतिकूँ शाप देतेभये कि, हे दुर्बुद्धे ! तूं सर्प हैजा ॥ ४० ॥ ताई समय तिनके चरणनमें जायपर्‍यो और हाथ जोड़के यह बोल्यो हे देव ! पाहि पाहि मैं दीन हूं तुम्हारी शरण आयो हूं ॥ ४१ ॥ तब तो धर्मात्मा भगवान् प्रसन्न हैके सुमतिते बोले—द्वापरके अन्तमें हरिके बेटानके धनुषमेंते छूटे पैने २ बाणनते तेरो देह कटि २ के जाय परैगो तब तोकूँ निःसन्देह गन्धर्वदेह मिल जायगो ॥ ४२ ॥ हे विदेहराज ! ऐसे सुमति गन्धर्वकूं शापते छूटगयो सन्तनको शापहू जब वरके तुल्य है तब फिर वर मुक्तिके तुल्य होय तो कहा आश्चर्य है ॥ ४३ ॥ अब प्रद्युम्न चैत्र देशनकूं जातेभये जे वसन्त

सलक्ष्मणंरामचन्द्रंध्यायताजानकीपतिम् ॥ फूत्कारैःसर्पवत्तस्यध्यानभंगंचकारह ॥ ३९ ॥ तदाक्रुद्धोमहावीरोहनुमान्वानरेश्वरः ॥ शापंददौसुमतयेत्वंसर्पोभवदुर्मते ॥ ४० ॥ तदैवतस्यचरणौनत्वाप्राहकृताञ्जलिः ॥ हेदेवपाहिपाहीतिदीनंमांशरणंगतम् ॥ ४१ ॥ अथप्रसन्नोभगवान्सुमतिंप्राहधर्मवित् ॥ द्वापरांतेशरैस्तीक्ष्णैर्हरिपुत्रधनुश्च्युतैः ॥ भिन्नदेहःस्वांप्रकृतिंयास्यसित्वंनसंशयः ॥ ४२ ॥ गंधर्वः सुमतिर्नामविमुक्तोभूद्विदेहराट् ॥ सतांशापोपिवरवद्वरोमोक्षार्थदःकिमु ॥ ४३ ॥ अथकार्ष्णिर्महाबाहुश्चैत्रदेशान्मनोहरान् ॥ वसन्तमाधवीवृन्दैःशोभितान्सजगामह ॥ ४४ ॥ सहस्रदलपद्मानांषट्पदध्वनिशालिनाम् ॥ पतंतिरेणवोयत्रसरःस्वाबीरचूर्णवत् ॥ ४५ ॥ एलालवंगलतिकाःक्षुण्णाःसैन्यांघ्रिभिःपथि ॥ तेनभृंगावलीरेजेकरिकर्णप्रताडिता ॥ ४६ ॥ यत्रवैपुरुषाराजन्नागायुतसमाबले ॥ बलीपलितदौर्गंध्यस्वेदक्लमविवर्जिताः ॥ ४७ ॥ त्रेतायुगसमःकालोवर्ततेयत्रनित्यशः ॥ आयुश्चायुतवर्षाणांदिव्यौषधिनदीगुणैः ॥ ४८ ॥ पीयूषतुल्यंतोयंचहेमभूमिर्विराजते ॥ मुक्ताविद्रुमवैडूर्यरत्नोत्पत्तिश्चयत्रवै ॥ ४९ ॥ सुन्दर्यःप्रमदारामानित्ययौवनभूषिताः ॥ स्फुरंत्युपवनेष्वारात्सौदामिन्योघनेष्विव ॥ ५० ॥ यत्रवैनगरीरम्यावसंततिलकाशुभा ॥ शृंगारतिलकोनामराजायत्रमहाबलः ॥ ५१ ॥

और मालतीके वृक्षन करके शोभित है ॥ ४४ ॥ भौंरा इनपै गुंजारै ऐसे हजार दलके कमलनकी रज सरोवरनमें बर्षेहैं जैसे अबीरको चूरो बर्षे ॥ ४५ ॥ इलायची लोंगनकी लता सेनाके पांयनते खुदिगई और हाथीनके कानते ताडित भौंरानकी पंगति शोभित भई ॥ ४६ ॥ हे राजन् ! जहांके पुरुषनमें दश दश हजार हाथीनको बल है और सुपेद बार उनके नहीं आमें शरीरमें जो गली गुजलट नहीं परे हैं और पसीना खेद नहीं होयहै ॥ ४७ ॥ जहां नित्यही त्रेतायुग वर्तेहै दिव्योषधी और नदीनके गुणते दश २ हजार वर्षकी आयु होयहै ॥ ४८ ॥ जहां अमृतके तुल्य जल होयहै और सुवर्णकी भूमि है मोती, मूंगा, वैडूर्य मणिकी जहां खान है ॥ ४९ ॥ स्त्री जहांकी अतिसुन्दरी है नित्य है जोबन जिनको वे शृंगार करे बाग बगीचानमें कैसी सोहै हैं जैसे घनमें बीजुरी ॥ ५० ॥ जहां अति सुन्दर वसंततिलका नामकी नगरी है जाको शृंगारतिलक

नामको राजा महाबली है ॥ ५१ ॥ जीतनहारे जे वीर हैं तिने बुलायके कवच पहरि हाथीपै चढि प्रद्युम्नके सन्मुख युद्ध करवेकूँ आयो ॥ ५२ ॥ तहां सांब, सुमित्र, पुरुजित, शतजित, सहस्रजित, विजय, चित्रकेतु, वसुमान, द्रविण, क्रतु, ॥ ५३ ॥ ये जे सब जाम्बवतीके बेटा हैं वे अपने बाणनते दुर्दिन करतेभये जब इनके बाणनके मारे हे मैथिल ! घायल हैके सब शत्रु सेनाके भागगये ॥ ५४ ॥ और बाणनके मारे जब अँधेरो हैगयो तब बडो कोलाहल भयो तब हाथीपर बैठो राजा शृंगारतिलक बडो बलवान् ॥ ५५ ॥ बड़े रोषते त्रिशूल लेके सांबको हृदयमें मारतोभयो बाकी रहे जो और हैं तिने धनुषमेंते निकसे बाण हैं तिनसों मारके धरतीमें गेरतो भयो ॥ ५६ ॥ और इकलोही युद्धमें ऐसे विचरतोभयो जैसे वनमें अग्नि विचरै, तब गद आयके वो मदमत्त गजको ॥ ५७ ॥ शुंडादंडमें पकरके धरतीमें गेरदेतोभयो तब दूर

जैत्रान्वीरान्समाहूयगजमारुह्यदंशिनः ॥ योद्धुंविनिर्ययौयत्रप्रद्युम्नस्यापिसंमुखे ॥ ५२ ॥ सांबःसुमित्रःपुरुजिच्छतजित्सहस्रजित् ॥ विजयश्चित्रकेतुश्चवसुमान्द्रविडःक्रतुः ॥ ५३ ॥ जांबवत्याःसुताह्येतेचक्रुर्नाराचदुर्दिनम् ॥ पलायितेषुचैतेषुबाणैर्भिन्नेषुमैथिल ॥ ५४ ॥ बाणान्धकारेसंजातेमहान्कोलाहलोह्यभूत् ॥ तदाशृंगारतिलकोगजारूढोमहाबलः ॥ ५५ ॥ त्रिशूलेनतदासाम्बंहृदिविव्याधरोषतः ॥ अन्यान्संपातयामासशरैःकोदंडनिर्गतैः ॥ ५६ ॥ एकाकीविचरन्युद्धेवलेवैश्वानरोयथा ॥ तदागदःसमागत्यतद्गजंसुमदोत्कटम् ॥ ५७ ॥ शुंडादण्डेसंगृहीत्वापातयामासभूतले ॥ दूरेप्रपतितःशीघ्रंशृंगारतिलकोनृपः ॥ ५८ ॥ सद्योभयातुरोभूत्वायुद्धेबद्धांजलिःस्वतः ॥ तुरंगाणामर्बुदंचरथानांलक्षमेवच ॥ ५९ ॥ गजानामयुतंराजाप्रद्युम्नायबलिंददौ ॥ ६० ॥ इत्थंकिंपुरुषंखण्डंजित्वाकार्ष्णिर्महाबलः ॥ निषाददर्शितैर्मार्गैर्हरिवर्षंततोययौ ॥ ६१ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेकिंपुरुषखण्डविजयोनामषड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ हरिवर्षनामखण्डंसर्वसंपत्तिसंयुतम् ॥ तस्यसीमागिरिःसाक्षान्निषधोनाममैथिल ॥ १ ॥ वीरकोदण्डटंकारघोषैर्व्याप्तवनांतरात् ॥ उड्डितास्तुमहागृध्राःक्रोशमात्रवपुर्धराः ॥ २ ॥ तीक्ष्णतुंडास्सगरुडाःसर्वेदीर्घायुषोनृप ॥ अग्रसन्सैनिकान्नागान्हयांस्तेपिक्षुभुक्षिताः ॥ ३ ॥

जायके परे जो राजा शृंगारतिलक है ॥ ५८ ॥ सो भयभीत हैके बहुत शीघ्रतासों युद्धमें हाथ जोरके प्रद्युम्नके आगे आयके खडो हैगयो और दश किरोड तो घोडा एक लाख रथ ॥ ५९ ॥ और दश हजार हाथी ये सब प्रद्युम्नकी भेट किये ॥ ६० ॥ या प्रकार कृष्णके पुत्र प्रद्युम्न बडे बलवान् किंपुरुषखंडको जीतके निषादनके बताये मार्गनकी रस्तासे हरिवर्ष नामके खंडके जीतवेको चलेगये ॥ ६१ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटीकायां नारदबहुलाश्वसंवादे किंपुरुषखंडविजयो नाम षड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥ तब नारदजी बोले कि, हे मैथिल ! ये हरिवर्ष नाम खंड सब संपत्ति जामें ताकी मर्यादाको निषध नाम पर्वत हो ॥ १ ॥ तहाँ वीरपुरुषनके धनुषनकी टंकारनके शब्दनते प्राप्तभये जे वन तिनमेंते एक एक कोशके जिनके शरीर ऐसे गीध उडेहैं ॥ २ ॥ पैनी जिनकी चोंच गरुडके समान है नृप ! सब बडी बडी उमरके बडे भूखे

वे सेनाके हाथिनको और घोड़ानको ग्रस निगल गये ॥ ३ ॥ जब आकाश पक्षिनसों भरगयो और तिनके पांखनको पवन जो निकसो तब सेनामें वा अंधकारके मारे बड़ो भारी हाहाकार भयो ॥ ४ ॥ तब आजानु भुजावारे प्रद्युम्नने गरुडास्त्र हाथमें लियो वा बाणमेंते साक्षात् विनताके पुत्र गरुडजी निकसे ॥ ५ ॥ जब वो सेना अंधकारसों भरगई ही तब कितनेनको तो चोंचनके मारे और कितनेनको स्फुरत्प्रभ पक्षनसों गरुडजीने ॥ ६ ॥ जितने वे गीध कुलिंगादिक पक्षी आकाशमें छाय रहे है वे सब मारगेरे तब दर्प जिनके नष्ट भये और घायल भये वे पक्षी कटगये पंख जिनके ॥ ७ ॥ वे भयातुर हैके दशहू दिशानमें भागगये ताके पीछे प्रद्युम्न महाबाहु इने छोडके दशार्ण देशनको चलोगयो ॥ ८ ॥ तब दशार्ण देशको राजा शुभांग नामको सूर्यवंशमें जाको जन्म भयो दश हजार हाथीको जाको पराक्रम निष्कौशांबी नगरीको पति ॥ ९ ॥ वो वेदव्यासजीके

आकाशेपक्षिभिर्व्याप्तेजातेपक्षप्रभंजने ॥ सेनायामंधकारेणहाहाकारोमहानभूत् ॥ ४ ॥ तदाकार्ष्णिर्महाबाहुस्तार्क्ष्यमस्त्रंसमाददे ॥ तद्बाणान्निर्गतःसाक्षाद्वैनतेयःखगेश्वरः ॥ ५ ॥ सेनायामंधकारेणव्याप्तायांपतगेश्वरः ॥ कांश्चित्तुण्डप्रहारेणकांश्चित्पक्षैःस्फुरत्प्रभैः ॥ ६ ॥ गृध्रान्कुलिंगान्गरुडान्पातयामासभूतले ॥ भग्नदर्पाश्छिन्नपक्षास्सक्षताःपक्षिणश्चते ॥ ७ ॥ भयातुराद्रुद्रुवुस्तेतार्क्ष्येणापिदिशोदश ॥ ततः कार्ष्णिर्महाबाहुर्दशार्णान्विषयान्ययौ ॥ ८ ॥ दशार्णदेशाधिपतिःशुभांगःसूर्यवंशजः ॥ नागायुतसमोयुद्धेनिष्कौशाम्बीपुरीपतिः ॥ ९ ॥ वेदव्यासमुखाच्छ्रुत्वाप्रद्युम्नंचण्डपौरुषम् ॥ दशार्णातांनदींदीर्वांसमुत्तीर्यसमाययौ ॥ १० ॥ कृतांजलिःशुभांगोसौकिरीटेननताननः ॥ ददौबलिंसुरत्नानांप्रद्युम्नायमहात्मने ॥ ११ ॥ प्रद्युम्नोभगवान्साक्षात्सर्वगःसर्वदर्शनः ॥ पप्रच्छेदंशुभांगंतंलोकसंग्रहकाम्यया ॥ १२ ॥ ॥ प्रद्युम्नउवाच ॥ ॥ दशार्णोयंकथंदेशःकेननाम्नाबभूवह ॥ एतन्मेब्रूहिहेराजन्निष्कौशांबिपुरीपते ॥ १३ ॥ ॥ शुभांगउवाच ॥ ॥ हिरण्यकशिपुंहत्वानृसिंहोभगवान्पुरा ॥ प्रह्लादेनविहागत्यहरिवर्षेस्थितोभवत् ॥ १४ ॥ प्रह्लादंभगवान्प्राहनृसिंहोभक्तवत्सलः ॥ ॥ नृसिंहउवाच ॥ ॥ शांतस्यतवभक्तस्यमयापुत्रपिताहतः ॥ तस्मान्नघातयिष्यामिवंशंतेहिमहामते ॥ १५ ॥ ॥ शुभांगउवाच ॥ ॥ इतिप्रवदतोक्षिभ्यामानंदजलबिंदवः ॥ पतिताःक्वौचतैराजन्सरोभून्मंगलायनम् ॥ १६ ॥

मुखते चंड पराक्रमी प्रद्युम्नको जानिके या बड़े फाटवारी दशार्णा नदीकूं तरके आवतोभयो ॥ १० ॥ तब ये शुभांग राजा हाथ जोड अपनो किरीट नवाय सुन्दर रत्नकी बलि प्रद्युम्न महात्माकूं देतोभयो ॥ ११ ॥ तब प्रद्युम्न महात्मा सर्वग, सर्वदर्शी लोकसंग्रहके लीये शुभांगराजाते यह पूछनलगे ॥ १२ ॥ प्रद्युम्न बोले कि, या देशको नाम दशार्ण कैसे भयो कौनके नामते भयो यह तुम मेरे आगे कहो ? हे निष्कौशांबीपुरीके पति ॥ १३ ॥ तब शुभांग राजा बोल्यो कि, नृसिंह भगवान् पहले हिरण्यकशिपुकूं मारके प्रह्लादकूं लेके हरिवर्ष खण्डमें आयके विराजे तब भक्तवत्सल प्रह्लादजीते नृसिंहजी यह बोले ॥ १४ ॥ हे पुत्र ! शांत जो तूं मेरो भक्त ताको पिता मैंने मारयो है ताते हे महामति ! अब तेरे वंशकूं मैं न मारूंगो ॥ १५ ॥ ऐसे कहते जे भगवान् नृसिंहजी तिनकी आंखिनमेंते आनन्दकी आंसुनकी बूंदे गिरीं तिन बूंदनते पृथ्वीमें एक मंगलायन

सरोवर ह्वैगयो ॥ १६ ॥ जब प्रह्लादकूं वर मिल्यो तब प्रह्लाद प्रसन्न ह्वैके नृसिंहजीते यह बोल्यो हाथ जोड़ि दंडोत करिके ॥ १७ ॥ हे भक्तनके पति ! मैंने माता पिताकी कछु सेवा नहीं कीनी सो हे परमेश्वर ! उनके ऋणते मैं कैसे छूटूं ॥ १८ ॥ तब नृसिंहजी बोले-मेरे नेत्रके जलते जो यह मङ्गलायन तीर्थ भयो है तामें तूं स्नान करि तब हे महाभाग ! तूं दशों ऋणनते छूटि जायगो ॥ १९ ॥ माताके ऋणते, पिताकेते, स्त्रीकेते, बेटानकेते, गुरुनकेते, देवतानकेते, ब्राह्मणनकेते, ऋषिनकेते, पितरनकेते, शरणागतनकेते, मनुष्यनकेते दशोंऋणनते छूटैहै ॥ २० ॥ जो सबको अवज्ञा करनहारोहू होय और या महातीर्थमें आयके स्नान करे सोऊ निः संदेह दशों ऋणनते छूटिजायहै ॥ २१ ॥ शुभांग कहैहै कि, दशार्णमोचन तीर्थमें प्रह्लाद न्हायके अऋणी ह्वैगयो सो अबतलकहू या निषधपर्वतमें न्हायवेकूं आवैहै ॥ २२ ॥ दशार्णमोचन तीर्थते या देशको दशार्ण नाम ह्वैगयो ताके प्रवाहनते यह

तदाप्रसन्नोराजन्प्रह्लादोहर्षविह्वलः ॥ नृसिंहंप्राहधर्मात्मानत्वाभूत्वाकृतांजलिः ॥ १७ ॥ ॥ प्रह्लादउवाच ॥ ॥ मातुःपितुर्मयासेवानकृतासात्त्वतांपते ॥ ऋणात्तयोःकथंमुच्येवदैतत्परमेश्वर ॥ १८ ॥ ॥ नृसिंहउवाच ॥ ॥ मन्नेत्रजलसंभूतेतीर्थेवैमंगलायने ॥ स्नानंकुरुमहाभागमुच्यसेदशभिर्ऋणैः ॥ १९ ॥ मातुःपितुश्चभार्यायाःसुतानांगुरुदेवयोः ॥ विप्राणांचप्रपन्नानामृषीणांपितॄणामृणम् ॥ २० ॥ यःस्नास्यति महातीर्थेसर्वहेलनतत्परः ॥ ऋणैश्चदशभिःसोपिमुच्यतेनात्रसंशयः ॥ २१ ॥ ॥ शुभांगउवाच ॥ ॥ दशार्णमोचनेतीर्थेस्नात्वाकायाधवोनृणी ॥ भूत्वाद्यापिसमायातिस्नातुंतन्निषधाद्रिरेः ॥ २२ ॥ दशार्णमोचनेतीर्थेदशार्णोदेशउच्यते ॥ तत्स्रोतःसुसमुद्भूतादशार्णेयंनदीस्मृता ॥ ॥ २३ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ तच्छ्रुत्वाभगवान्कार्ष्णिःसर्वैःपरिचरैःसह ॥ दशार्णमोचनेतीर्थेदानंस्नानंचकारह ॥ २४ ॥ दशार्णमोचनस्यापिकथांयःशृणुयान्नृप ॥ ऋणैश्चदशभिःसोपिमुच्यतेमुक्तिभाग्भवेत् ॥ २५ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेदशार्णदेशविजयोनामसप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ अथकार्ष्णिर्महाबाहुःसुमेरोरुत्तरान्कुरून् ॥ ययौशृंगवतःपार्श्वेविचित्रानृद्धिसंवृतान् ॥ १ ॥ भद्रांगंगांततःस्नात्वावाराहींनगरींययौ ॥ कुरुखण्डाधिपस्तस्यांचक्रवर्तीगुणाकरः ॥ २ ॥ महासंभृतसंभारोदेवर्षिगणसंवृतः ॥ अश्वमेधंसमारेभेदशमंसगुणाकरः ॥ ३ ॥

नदी चली है याते याको नाम दशार्णा है ॥ २३ ॥ नारदजी कहै हैं-ताकूं सुनिके कार्ष्णि परिजनसहित दशार्ण तीर्थमें स्नान दान करतोभयो ॥ २४ ॥ हे नृप ! जो पुरुष या दशार्णकी कथाकूं भी सुनेगो सोऊ दश ऋणनते छूटके मुक्तिको भागी होयगो ॥ २५ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खण्डे भाषाटीकायां दशार्णदेशविजयो नाम सप्तविंशो ऽध्यायः ॥ २७ ॥ नारदजी कहै हैं-फेर कृष्णको बेटा सुमेरते उत्तरमें उत्तरकुरु देशनमें शृंगवान् पर्वतके पास विचित्र ऋद्धियुक्त देशनमें गयो ॥ १ ॥ फेरि भद्रा जो गंगा है तामें स्नान करिके वाराही नगरीकूँ चलोगयो तहां कुरुखंडको राजा चक्रवर्ती गुणाकर नाम हो ॥ २ ॥ बड़ी सामग्री जाके देव ऋषीनके गण जाके ताने दशमों अश्वमेध यज्ञको प्रारंभ

कीनो हो ॥ ३ ॥ तानें श्यामकर्णश्वेत घोड़ा छोड्यो हो वीरधन्वा ताको बेटा घोड़ाकी रक्षाकूं निकस्यो हो ॥ ४ ॥ चण्डपराक्रमी दश अक्षौहिणी फौज लेके महावीर घोडाकूं देखत पृथ्वीमें विचरे हो ॥ ५ ॥ वीर, चन्द्र, अश्वसेन, चित्रगुरु, वेगवान, आम, शंकु, वसु, श्रीमान, कुन्ती ये नामजितके बेटा ॥ ६ ॥ इनने चारों बगलते घोडाकूं घेरके पकड लीनो यह घोडा कौनने छोड्यो है ऐसे कहत २ अपनी सेनामें चलेआये ॥ ७ ॥ तब प्रद्युम्न वाके माथेके पत्रकूं वांचिके बडे अचंभेमें आयगये, सब अचंभेमें आयगये अपने हथियार सम्हारनलगे ॥ ८ ॥ ताई समै सब सेना चलीआई घोड़ाकूं ढूंढतभई यादवनकी सेनाकी धूर उड़ती देखिके सेना अचंभो करत दूर ठाडीरही ॥ ९ ॥ चण्डविक्रमे गुणाकर राजाके राज्यमें चोरी कोई करि नहीं सके जा कुरुखंडमंडलमें गौको बगदिवेको वखत नहीं है चभूरोऊ नही उठ्यी है यह रज कहांते आई ताने सूर्यमंडल ढकलीनो ॥

तेनोत्सृष्टंहयंश्वेतंश्यामकर्णमनोहरम् ॥ तस्यपुत्रोवीरधन्वारक्षितुंनिर्गतोऽभवत् ॥ ४ ॥ अक्षौहिणीभिर्दशभिर्मंडितश्चंडविक्रमः ॥ विचचार महावीरोवीक्ष्यमाणस्तुरंगमम् ॥ ५ ॥ वीरश्चंद्रश्चसेनश्चचित्रगुर्वेगवान्नृप ॥ आमःशंकुर्वसुःश्रीमान्कुंतीनामजितेःसुताः ॥ ६ ॥ सर्वतस्तंहयं शुभ्रंगृहीत्वाहर्षपूरिताः ॥ कस्योत्सृष्टंवदंतस्तेकार्ष्णिसैन्यंसमाययुः ॥ ७ ॥ प्रद्युम्नस्तद्भालपत्रंपठित्वाविस्मितोऽभवत ॥ सर्वेविसिस्मुर्यदवोगृही तपरमायुधाः ॥ ८ ॥ तदैवसेनासंप्राप्ताविचिन्वंतीहयंनृप ॥ दृष्ट्वारजोयदुबलाद्दूरतस्थौसुविस्मिता ॥ ९ ॥ गुणाकरेराजनिचण्डविक्रमेनद स्यवःस्युःकुरुखण्डमण्डले ॥ गवांनकालोनहिचक्रवातकःकुतोरजःप्रातमहोर्कमण्डलम् ॥ १० ॥ एवंवदंतीपरवाहिनीस्वतःकोदंडचोपंद्रद स्वनंपरम् ॥ करींद्रचीत्कारतुरंगहेषणंवादित्रमिश्रंसमुपाशृणोत्ततः ॥ ११ ॥ तदोद्धवःकृष्णसुतप्रणोदितोबलंसमेत्याशुसवीरधन्वनः ॥ प्रणम्यतंप्राहरथस्थितंनृपंगुणाकरस्यौरसमर्कतेजसम् ॥ १२ ॥ उग्रसेनःक्षितीशेंद्रोद्वारकेशोयदूत्तमः ॥ जंबूद्वीपनृपाञ्जित्वाराजसूयंकरिष्यति ॥ १३ ॥ तेनप्रणोदितोवीरःप्रद्युम्नोधन्विनांवरः ॥ जित्वातंभारतंखण्डंतथाकिंपुरुषंनृपः ॥ १४ ॥ हरिवर्षंततोजित्वाकुरुखण्डंसमागतः ॥ प्रदास्यतिवलिंसोपिप्रद्युम्नायमहात्मने ॥ १५ ॥ अक्षौहिणीदशयुतोधनदेनापिपूजितः ॥ उपायनंत्वयादेयंप्रद्युम्नायमहात्मने ॥ १६ ॥ तेननीतंयज्ञपशुमाहर्तुंकःक्षमःक्षितौ ॥ श्रीकृष्णचन्द्रोभगवान्सहायस्तस्यविद्यते ॥ १७ ॥

॥ १० ॥ ऐसे पराई सेनावारे कहि रहेहे इतनेहीमें धनुषकी टंकार होनलगी हाथी चिंकारनलगे घोडा हीसनलगे बाजेनकी अवाज आमनलगी ॥ ११ ॥ तब तो प्रद्युम्नके भेजे उद्धवजी वीरधन्वाकी फौजमें जायके रथमें बैठ्यो जो वीरधन्वा गुणाकरको बेटा सूर्यकोसो जाको तेज ताकूं दंडवत्कर यह बोले ॥ १२ ॥ उग्रसेन राजा द्वारिकाको ईश्वर है यादवनमें उत्तम है वो जम्बूद्वीपके राजानकूं जीतिके राजसूय यज्ञ करेगो ॥ १३ ॥ ताको भेज्योभयो प्रद्युम्न धनुषधारीनमें श्रेष्ठ भरतखंडकूं जीतिके तैसेई किंपुरुष खंडकूं जीतिके ॥ १४ ॥ फिरि हरिवर्षखंडकूं जीतिके कुरुखंडमें आयो है सो भेटकी चाहना करे है ताको प्रद्युम्न महात्माको वोभी वलि भेट देयगो ॥ १५ ॥ क्योंकि वो दश अक्षौहिणीते युक्त है और कुबेरनेहू याको सत्कार कर्यो है यासो या प्रद्युम्न महात्माकूं भेट तुमेंकूं देनी चाहिये ॥ १६ ॥ वो प्रद्युम्न जा यज्ञके घोड़ाको लायोहै ता यज्ञके

पशुके पकड़वेको पृथ्वीमें कौनकी सामर्थ्य है क्योंकि जाकी सहायकूं श्रीकृष्णचंद विराजैंहैं ॥ १७ ॥ दान सन्मान करेते आपको भलो होयगो और जो इनको तुम सत्कार न करोगे तो युद्ध होयगो तब सुधन्वा बोल्यो कि, जो गुणाकर राजा है सो तो इन्द्रनेंहू पूज्योहै ॥ १८ ॥ सो भी प्रद्युम्न महात्माकूं भेट न देयगो शृंगवान् पर्वतपै भगवान् वाराहजीके रूपते विराजेहैं ॥ १९ ॥ जिनकी सेवा भूमि हमेशा करैहै बड़े आदरते ताके क्षेत्रमें गुणाकर राजाने देवको ध्यान करके तप कीनोहै ॥ २० ॥ जब दश हजार वर्ष व्यतीत हैगये तब वाराहरूपते भगवान् प्रकट भये प्रसन्न हैके भक्तते बोले तू वर मांग ॥२१॥ तब राजा रोमांचित प्रेमविह्वल हैगयो और ये बोलो–हे भगवन् ! एक तुम विना नर होय चाहै देवता होय ॥ २२ ॥ पृथ्वीपै कोई मोकूं जीति न सकै यही मेरी इच्छा है तब तथास्तु–तैसेंही होउ ऐसे कहि भगवान् अंतर्धान हैगये ॥२३॥ जाते वा राजाको घोड़ा तुमकूं जल्दीही

शुभंस्याद्दानमानाभ्यांनचेद्युद्धंभविष्यति ॥ ॥ वीरधन्वोवाच ॥ ॥ गुणाकरोनृपेशोयःशक्रेणापिप्रपूजितः ॥ १८ ॥ नदास्यतिबलिंसो पिप्रद्युम्नायमहात्मने ॥ शृंगवत्पर्वतेरम्येवाराहोविद्यतेहरिः ॥ १९ ॥ यस्यसेवांसदाभूमिःकरोतिपरमादरात् ॥ यस्यक्षेत्रेतपस्तेपेध्या त्वादेवंगुणाकरः ॥ २० ॥ वर्षाणामयुतेपूर्णेहरिर्वाराहरूपधृक् ॥ सन्तुष्टोनृपतिंभक्तंवरंब्रूहीत्युवाचह ॥ २१ ॥ राजोवाचहरिंनत्वारोमांच प्रेमविह्वलः ॥ भगवंस्त्वामृतेदेवोसुरोन्योपिनरोथवा ॥ २२ ॥ मांजेतानभवेद्भूमावीप्सितोयंवरोमया ॥ तथास्तुचोक्त्वाभगवांस्तत्रैवांतर धीयत ॥ २३ ॥ तस्मात्तस्ययशःशीघ्रंकर्तव्यंमोचनंस्वतः ॥ नचेद्भवद्भिश्चकालिंकरिष्यामिनसंशयः ॥ २४ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्तउद्धवस्तस्मात्स्वांसेनामेत्यभूपते ॥ शशंससर्वंयदूनांसदसित्वरम् ॥ २५ ॥ श्रुतकर्मावृषोवीरःसुबाहुर्भद्रएकलः ॥ शांतिर्दर्शःपूर्ण मासःसोमकोवरएवच ॥ २६ ॥ कालिन्दीनंदनाह्येतेप्रद्युम्नस्यप्रपश्यतः ॥ अक्षौहिणीभिर्दशभिर्वृतायोद्धुंसमागताः ॥ २७ ॥ उत्तरैःकुरुभिः सार्द्धंयदूनांचंडविक्रमैः ॥ बभूवतुमुलंयुद्धमब्धीनामब्धिभिर्यथा ॥ २८ ॥ स्फुरद्भिर्निशितैःशस्त्रैरेजिरेवीरपुंगवाः ॥ क्षणमात्रेणरुधिरप्रभवा रौद्ररूपिणी ॥ २९ ॥ नदीबभूवराजेंद्रशतयोजनविस्तृता ॥ विदुद्रुवुस्तदाशेषाउत्तराःकुरवोजनाः ॥ ३० ॥ शरत्कालेयथाप्राप्तेमेघसंघाइत स्ततः ॥ पूर्णमासोमहावीरःकालिंदीनंदनोबली ॥ ३१ ॥

छोड़िदेनो योग्य है न छोड़ोगे तो मैं युद्ध करूंगो ॥२४॥ हे भूपते! ये सुनिके उद्धव अपनी सेनामें आयके सब यादवनकी सभामें सबनके सुनत सुनत सबरो वृत्तांत कह्यो है ॥२५॥ तब सुनिके कालिंदीके दश बेटा श्रुतकर्मा, वृष, वीर, सुबाहु, भद्र, एकल, शांति, दर्श, पूर्णमास और अवर नाम छोटो सोमक ॥ २६ ॥ जे दश कालिंदीके बेटा हैं वे दश अक्षौहिणी सेना लैके प्रद्युम्नके देखत युद्धकूं आये ॥ २७ ॥ तब चंडपराक्रमी जे उत्तर कुरुवासी हैं तिनकी और यादवनकी भयंकर युद्ध भयो जैसे समुद्रते समुद्र लड़ैहैं ॥ ॥ २८ ॥ देदीप्यमान् जे पैने शस्त्र तिनते युद्ध भयो तब विन वीरनकी बड़ी शोभा होतीभई एक क्षणमात्रमेंही रुधिरकी महाघोर ॥ २९ ॥ सौ योजनकी विस्तृत नदी बह नलगी तब सबरे उत्तरकुरुजन भागगये जे बाकीरहे ते ॥ ३० ॥ शरद ऋतुमें जैसे मेघ तैसे इत वित भाजजाय हैं तब ये पूर्णमास महावीर बलो कालिंदीको बेटा ॥ ३१ ॥

वाणनके समूहते वीरधन्वाको रथ तोड़के गेरदेतोभयो वीरधन्वाहू विरथ भयो वारंवार धनुष टंकारतो ॥ ३२ ॥ बीस बाण पूर्णमासके मारतोभयो तब पूर्णमास अपने बाणनते इन बाणनके दो दो टूक कर देतोभयो ॥ ३३ ॥ फिर वीरधन्वाने एकही बाणते धाकी नादिनी प्रत्यंचा काटडारी जैसे कुवाक्यनते मित्रताकूं काटेहैं ॥ ३४ ॥ तब पूर्णमास महाबली जलदोही लाख भारकी गदा लैके वीरधन्वाकूं मारतोभयो ॥ ३५ ॥ तब गदा खायकेऊ मदमत्त वीरधन्वा महाबली पूर्णमासकूं बेणते मारतोभयो ॥ ३६ ॥ तब पूर्णमास हरिको बेटा वा पवन नामके पर्वतकूं उठायके हाथनते उखाड़ ठाड़ो भयो ॥ ३७ ॥ फिर घुमायके वो पर्वत वाराहीपुरीमें फेंक दीनों वीरधन्वाहू पर्वतपैते गुणाकरके यज्ञस्थलमें जायपर्यो ॥ ३८ ॥ भग्न हैगयो वेग जाको ऐसो ये वीरधन्वा रुधिरकी मुखते वमन करतो मूर्च्छित हैगयो ॥ ३९ ॥ तब तो वाराहीपुरीमें बड़ो हाहाकार मच्यो

चूर्णयामासबाणौघैःस्यंदनंवीरधन्वनः ॥ वीरधन्वापिविरथोधनुष्टंकारयन्मुहुः ॥ ३२ ॥ जघानबाणविंशत्यापूर्णमासंमहाबलम् ॥ पूर्णमासः स्वबाणेनमध्यतस्तान्द्विधाऽकरोत् ॥ ३३ ॥ वीरधन्वाथचिच्छेदधनुर्ज्यांतस्यनादिनीम् ॥ बाणेनैकेनराजेंद्रकुवाक्येनेवमित्रताम् ॥ ३४ ॥ लक्षभारमयींगुर्वींगदामादायसत्वरम् ॥ जघानवीरधन्वानंपूर्णमासोमहाबलः ॥ ३५ ॥ गदाप्रहारव्यथितोवीरधन्वामदोत्कटः ॥ परिघेणजघानाशुपूर्णमासंहरेःसुतः ॥ ३६ ॥ पूर्णमासःसमुत्थायपवनंनामपर्वतम् ॥ समुत्पाट्यस्थितोभूत्वाहस्ताभ्यांश्रीहरेःसुतः ॥ ३७ ॥ भ्रामयित्वाथचिक्षेपवाराह्यांपुरिवेगतः ॥ ३८ ॥ वीरधन्वाप्रपतितोगुणाकरक्रतुस्थले ॥ मूर्च्छितोभग्नवेगोभूदुद्वमन्रुधिरंमुखात् ॥ ३९ ॥ हाहाकारोमहानासीद्वाराह्यांपुरिवेगतः ॥ देवदुंदुभयोनेदुर्नरदुंदुभयस्तदा ॥ ४० ॥ पूर्णमासोपरिसुराःपुष्पवर्षंप्रचक्रिरे ॥ यज्ञादुत्थायनृपतिःपुत्रंदृष्ट्वाचमूर्च्छितम् ॥ ४१ ॥ गृहीत्वादिव्यकोदंडंयुद्धंकर्तुंमनोदधे ॥ होताधर्मविदांश्रेष्ठोमुनींद्रःसर्ववित्कविः ॥ गंतुमभ्युत्थितंवीक्ष्यवामदेवस्तमब्रवीत् ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ वामदेवउवाच ॥ ॥ राजंस्त्वंहिनजानासिपरिपूर्णतमंहरिम् ॥ सुराणांमहदर्थायजातंयदुकुलेस्वयम् ॥ भुवोभारावतारायभक्तानांरक्षणायच ॥ ४३ ॥ भूत्वायदुकुलेसाक्षाद्द्वारकायांविराजते ॥ तेनकृष्णेनपुत्रोयंप्रद्युम्नोयादवेश्वरः ॥ उग्रसेनमखार्थायजगज्जेतुंप्रणोदितः ॥ ४४ ॥ ॥ गुणाकरउवाच ॥ ॥ परिपूर्णतमस्यापिश्रीकृष्णस्यमहात्मनः ॥ लक्षणंवदमेब्रह्मंस्त्वंपरावरवित्तमः ॥ ४५ ॥

तब नरनके और देवतानके यादवनकी फौजमें नगाड़े बजनलगे ॥ ४० ॥ पूर्णमासके ऊपर देवता फूलनकी वर्षा करनलगे तब गुणाकर राजाने बेटाकूँ मूर्च्छित देख ॥ ४१ ॥ यज्ञमेंते उठके धनुष लीनो युद्धके लिये मन करतोभयो तब राजाकूँ उठ्यो देखिके होता धर्मके जाननवारेनमें श्रेष्ठ सबके वेत्ता बडे पंडित जो वामदेव ऋषि हैं ते राजाको जायवेको तयार भयो देखिके राजाते बोले ॥ ४२ ॥ हे राजन् ! तुम या बातको नहीं जानोहो कि, परिपूर्णतम जे हरि हैं वे देवतानके बड़े मतलबके लीये यदुकुलमें आप उत्पन्न भयेहैं पृथ्वीको भार उतारिवेके लिये और भक्तनकी रक्षाके लिये ॥ ४३ ॥ साक्षात् यदुकुलमें जन्म लैके द्वारकामें विराजेहैं ता कृष्णने प्रद्युम्न अपनो बेटा यादवेश्वर उग्रसेनके यज्ञके अर्थ जगत्के जीतिवेकूँ भेजोहै ॥ ४४ ॥ राजा बोल्यो–परिपूर्णतम श्रीकृष्ण महात्माको लक्षण मेरे आगे कहो तुम भूत भविष्यके जाननहारे हो ॥ ४५ ॥

तब वामदेव बोले कि, जाके तेजमें सब तेज समायजायं वाकूं परिपूर्णतम हरि कहैंहैं ॥ ४६ ॥ कोई तो अंश हैं, कोई अंशांश हैं, कोई आवेश है कोई कला हैं, कोई पूर्णावतार हैं और छठवो स्वयं परिपूर्णतम है, व्यासादिकने कहे हैं ॥ ४७ ॥ सो परिपूर्णतम तो साक्षात् श्रीकृष्णही है और कोई अवतार नहीं हैं एक कामके लिये आये हैं और किरोरन काम करें हैं ॥ ४८ ॥ श्रीकृष्णको माहात्म्य सुनिके गुणाकर राजा वैर छोडि भेट लैके प्रद्युम्नके दर्शनकूं आयो ॥ ४९ ॥ प्रद्युम्नकी परिक्रमा दैके दंडोत करि बलि दैके आंशूनते मुख भरिके गद्गद वाणिते यह बोल्यो ॥५० ॥ आज मेरो जन्म सफल भयो, कुल मेरो पवित्र भयो ! तुमारे दर्शनते यज्ञ सफल भयो, क्रिया सफल भई ॥ ५१ ॥ प्रेमलक्षणा तुमारी भक्ति मोकूं तुमारे भक्तनके संगते प्राप्त होउ, हे परेश ! तुम साक्षात् निज भक्तवत्सल हो सो हे भगवन् ! पाहि पाहि ॥ ५२ ॥ तब प्रद्युम्न बोले-

॥ ॥ वामदेवउवाच ॥ ॥ यस्मिन्सर्वाणितेजांसिविलीयंतेस्वतेजसि ॥ तंवदंतिपरंसाक्षात्परिपूर्णतमंहरिम् ॥ ४६ ॥ अंशांशोंशस्तथावेशःकलापूर्णःप्रकथ्यते ॥ व्यासाद्यैश्चस्मृतः षष्ठःपरिपूर्णतमःस्वयम् ॥ ४७ ॥ परिपूर्णतमःसाक्षाच्छ्रीकृष्णोनान्यएवहि ॥ एककार्यार्थमागत्यकोटिकार्यंचकारह ॥ ४८ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ श्रुत्वाकृष्णस्यमाहात्म्यंबलिंनीत्वागुणाकरः ॥ वैरंविसृज्यप्रद्युम्नदर्शनार्थंसमाययौ ॥ ४९ ॥ कार्ष्णिंप्रदक्षिणीकृत्यनत्वादत्त्वाबलिंततः ॥ अश्रुपूर्णमुखोभूत्वाप्राहगद्गदयागिरा ॥ ५० ॥ ॥ गुणाकरउवाच ॥ ॥ अद्यमेसफलंजन्मकुलंमेद्यदिनेशुभम् ॥ अद्यक्रतुक्रियाःसर्वाःसफलास्तवदर्शनात् ॥५१॥ त्वदंघ्रिभक्तिःपरमार्थलक्षणासदाभवेत्सज्जनसंगमात्परा ॥ त्वमेवसाक्षान्निजभक्तवत्सलःपरेशभूमन्परिपाहिपाहि ॥ ५२ ॥ ॥ प्रद्युम्नउवाच ॥ ॥ ज्ञानवैराग्यसंयुक्ताभक्तिस्तेप्रेमलक्षणा ॥ मद्भक्तसंगमोभूयाच्छ्रीःस्याद्भागवतांत्विह ॥ ५३ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वाभगवन्कार्ष्णिःप्रसन्नोभक्तवत्सलः ॥ ददौतस्मैनृपतयेहयमेधतुरंगमम् ॥ ५४ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खंडेनारदबहुलाश्वसंवादउत्तरकुरुखंडविजयोनामाष्टाविंशोध्यायः ॥ २८ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ प्रद्युम्नोथमहाबाहुर्जित्वाराद्उत्तरान्कुरून् ॥ हिरण्मयंनामखंडंजेतुंकार्ष्णिर्जगामह ॥१॥ यत्रसीमागिरिर्दीर्घःस्रोतोनामस्फुरद्द्युतिः ॥ तत्रकूर्मोहरिःसाक्षादर्यमायस्यदेशिकः ॥ २ ॥ पुष्पमालानदीतीरेनाम्नाचित्रवनंमहत् ॥ सपुष्पफलभाराढ्यंकंदमूलनिधिःस्वतः ॥ ३ ॥

ज्ञान वैराग्य सहित तुमारे प्रेमलक्षणाभक्ति होयगी मेरे भक्तनको संग होयगो और मेरे भागवतनमें तुम्हारी शोभा होयगी ॥ ५३ ॥ नारदजी कहैंहैं ऐसे भक्तवत्सल प्रद्युम्न कहिके फिर वा राजाकूं यज्ञको घोडा देतभये ॥ ५४ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटीकायामुत्तरकुरुखंडविजयो नामाष्टाविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥ नारदजी कहैंहैं कि, प्रद्युम्न महाबाहु ऐसे उत्तर कुरुखंडनकूं जीतिके हिरण्मय खंडनके जीतिवेकूं जातेभये ॥ १ ॥ तामें स्रोत नामको सीमाको पर्वत है जो बडो प्रकाशवारो है, तहां कूर्मभगवान् विराजैहैं तहां अर्यमा नाम पितर पुजारी है ॥२॥ और पुष्पमाला नदीके तीरपे एक बडो चित्रवन है पुष्प फलनके भारसों युक्त है और कंद मूलनकी जो स्वतः

निधि है ॥ ३ ॥ तहां नल नीलके वंशके बंदर बोहोत हैं हे मैथिलेश्वर ! जे त्रेतामें रामचंद्रने राखिदीने है ॥ ४ ॥ वे वा सेनाकी आहट सुनिके युद्ध करिबेकूँ बाहिर निकसे और मदकावत प्रद्युम्नकी सेनापै उछरि उछरिके परे ॥ ५ ॥ हे नृप ! नखनते, दांतनते, पूंछनते, घोडा, हाथी, मनुष्य, रथनकूं बांधि बांधिके बलते आकाशमें फेंकनलगे ॥ ६ ॥ हे नृप ! विजयध्वजके नाथको और अर्जुनको रथ लैके पूंछिमें लपेट कोई २ आकाशमें उडिगये ॥ ७ ॥ अर्जुनकी ध्वजामें साक्षात् हनुमानजी विराजैहैं समर्थ है क्रोधमें भरि आये चारो दिशानमेंते सब बंदरनकूं ॥ ८ ॥ पूंछमें लपेटि पृथ्वीमें फेंकिदीने तब तो वे रामके किंकर जानिगये सब झुरिके ॥ ९ ॥ हाथनको जोर हनुमानजीकूं दंडोत करन लगे, कोई मिलनलगे, कोई पराक्रमते उछरनलगे ॥ १० ॥ कोई पूंछ चूमनलगे, कोई पांय चूमनलगे, तब महावीर तिनकूं आलिंगन करिकै हाथ पकरिके कुशल पूछनलगे ॥

वानराःसंतितत्रापिवंशजानलनीलयोः ॥ न्यस्ताःश्रीरामचंद्रेणत्रेतायांमैथिलेश्वर ॥ ४ ॥ सैन्यघोषंचतंश्रुत्वायुद्धकामाविनिर्गताः ॥ प्रद्युम्न सैन्येचोत्पेतुर्भ्रूभंगैःक्रोधमूर्च्छिताः ॥ ५ ॥ नखैर्दंतैश्चलांगूलैर्गजानश्वान्नरान्नृप ॥ लांगूलैश्चरथान्बध्वाचिक्षिपुश्चांबरेबलात् ॥ ६ ॥ विजय ध्वजनाथस्यविजयश्चार्जुनस्यच ॥ रथंबद्ध्वाथलांगूलेकेचिदुत्पेतुरंबरे ॥ ७ ॥ कपिध्वजध्वजेसाक्षात्कपींद्रोभगवान्प्रभुः ॥ क्रोधाढ्यःफाल्गु नसखःसमग्रंसर्वतोदिशम् ॥ ८ ॥ लांगूलेनचतान्बद्ध्वापातयामासभूतले ॥ तदाप्रहर्षिताःसर्वेज्ञात्वाश्रीरामकिंकराः ॥ ९ ॥ नेमुस्तंसर्वतो राजन्कृतांजलिपुटाःशनैः ॥ केचिदालिंगनंचक्रुःकेचिदुत्पेतुरोजसा ॥ १० ॥ केचिच्चुचुम्बुर्लांगूलंकेचित्पादंचवानराः ॥ तानालिंग्यमहा वीराःस्पृष्ट्वास्वपाणिनापुनः ॥ ११ ॥ दत्त्वाशिषंतत्कुशलंपप्रच्छाथांजनीसुतः ॥ नत्वातंवानराःसर्वेजग्मुश्चित्रवनंनृप ॥ १२ ॥ हनुमानर्जु नस्यापिध्वजेह्यंतरधीयत ॥ मकराख्यात्ततोदेशात्प्रद्युम्नोमीनकेतनः ॥ १३ ॥ ययौवृष्णिवरैःसार्द्धंदुंदुभीन्वादयन्मुहुः ॥ मकरस्यगिरेः पार्श्वेदुंदुभिध्वनिभिस्ततः ॥ १४ ॥ मधुमक्ष्यामधुकराःकोटिशःप्रोत्थिताःकिल ॥ तैर्दंशितंबलंसर्वंहस्तिचीत्कारसंयुतम् ॥ १५ ॥ तदाका र्ष्णिर्महाबाहुःपवनास्त्रंसमादधे ॥ तद्वातताडिताराजन्गतास्तेपिदिशोदश ॥ १६ ॥ तत्रदेशेजनाराजन्सर्वेवैमकराननाः ॥ ततस्तुडिंडिभो देशस्तत्रहस्तिमुखाजनाः ॥ १७ ॥ एवंदेशांस्ततःपश्यंस्त्रिशृंगविषयान्गतः ॥ कार्ष्णिर्ददर्शतत्रापिमनुष्याःशृंगधारिणः ॥ १८ ॥

॥ ११ ॥ तिनकी कुशल पूछि आशीर्वाद दैके तब हनुमानकूं नमस्कार करिकै बंदर सबरे चित्रवनकूं चलेगये ॥ १२ ॥ हनुमान् अर्जुनकी ध्वजामें अंतर्धान हैगये तब मकर देशते मकरध्वज प्रद्युम्न ॥ १३ ॥ यदुवरनकूं संग लैके बारंबार नगाडे बजावत मकरपर्वतके पासमें पहुंचे तहां नगाडेनके शब्दनते ॥ १४ ॥ मुहारके भौंरा किरोडन उड उडे भये तिनने सब सैना काटखाई हाथी चिकारनलगे ॥ १५ ॥ हे राजन् ! तब समर्थ प्रद्युम्नने पवनास्त्रको प्रयोग कीनों ता पवनके ताडेभये दशों दिशानमें चलेगये ॥ १६ ॥ हे राजन् ! ता देशके मनुष्य सब मगरके मुखके हैं ताते फिर डिंडिम देशमें आये तहां हाथीके मुखके मनुष्य है ॥ १७ ॥ ऐसे देशनकूं देखत त्रिशृंग नामके पर्वतके देश

नकूं जातभयो तहां प्रद्युम्नने सींगधारी मनुष्य देखे ॥ १८ ॥ त्रिशृंग पर्वतके पास एक स्वर्णचर्चिका नगरी देखी जामें सोनेनके महल रत्ननको परकोटा ताते शोभित है ॥ ॥ १९ ॥ चन्द्रकान्ता नदी वाके ओर पास वहैहै तिनते शोभित और मंगलकी निवासभूमि है तहां प्रद्युम्न गये जैसे इन्द्र अमरावतीमें जायहै ॥ २० ॥ यहांके स्त्री पुरुष नकी सुवर्णकीसी कांति बिजलीसी स्त्री जैसें नागकन्यानते और नागनते भोगवती पुरी लगैहै ॥ २१ ॥ तहांको राजा महावीर देवसखा नामको बडो बली सो मेरे मुखते पुरमें सेना आई सुनके सुवर्णमय भेट लेके प्रद्युम्नके सन्मुख आयो ॥ २२ ॥ परमभक्तिते प्रद्युम्नको पूजन कीनों तब महाबाहु प्रद्युम्न राजाते यह पूछनलगे ॥ २३ ॥ तुम्हारी सबनकी चंद्रमाकीसी शोभा काहेते है ये सब तुम जलदी मोते कहो तब देवसखा बोल्यो कि, पितरनके पति अर्यमाने कूर्म भगवान्के ॥ २४ ॥ चरण बहुत जलते धोयेहैं

त्रिशृंगस्यगिरेःपार्श्वेनगरींस्वर्णचर्चिकाम् ॥ हेमसौधमयींदिव्यांरत्नप्राकारमंडिताम् ॥ १९ ॥ चन्द्रकांतानदीतीरेशोभितांमंगलालयाम् ॥ कार्ष्णिःसमाययौराजन्यथाशक्रोमरावतीम् ॥ २० ॥ हिरण्यवर्णैःपुरुषैःस्त्रीजनैश्चतडिद्द्युभिः ॥ नागैश्चनागकन्याभिःपुरींभोगवतीमिव ॥ ॥ २१ ॥ तत्रराजामहावीरोनाम्नादेवसखोबली ॥ समन्मुखाद्बलंश्रुत्वाबलिंनीत्वाहिरण्मयम् ॥२२॥ प्रद्युम्नंपूजयामासभक्त्यापरमयापुनः ॥ तंपप्रच्छमहाबाहुःप्रद्युम्नोभगवान्हरिः ॥ २३ ॥ चन्द्रवत्तेकथंशोभासर्वेषांचवदाशुमे ॥ ॥ देवसखउवाच ॥ ॥ अर्यम्णापितृपतिनाकूर्मरूपस्यमापतेः ॥ २४ ॥ अंघ्रीप्रक्षालितौतेनवारिणाभून्महानदी ॥ श्वेतपर्वतशृंगाच्चावतरंतीयदूत्तम ॥ २५ ॥ प्रमेधाख्योमनुसुतोगोपालोगुरुणाकृतः ॥ जघानकपिलांरात्रावसिनासिंहशंकया ॥२६॥ वसिष्ठेनतदाशप्तःशूद्रत्वंसमुपागतः ॥ कुष्ठेनपीडिततनुःपर्यटंस्तीर्थमाचरन् ॥ ॥ २७ ॥ अस्यांनद्यांयदास्नातोगलत्कुष्ठान्मनोःसुतः ॥ मुक्तोभूच्चन्द्रवत्तस्यदेहशोभाबभूवह ॥२८॥ चन्द्रकांतानदीचेयंप्रसिद्धाभूद्धिरण्मये ॥ तस्यांमुक्तोयतःस्नात्वागलत्कुष्ठान्मनोःसुतः ॥ २९ ॥ ततःस्नानंचकर्तारोवयंसर्वेनृपोत्तम ॥ रूपेणचन्द्रतुल्याःस्मोभवामोत्रनसंशयः ॥ ३० ॥ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वामहाबाहुःप्रद्युम्नोयादवैःसह ॥ चन्द्रकांतानदींस्नात्वाददौदानान्यनेकशः ॥ ३१ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेहिरण्मयखण्डविजयोनामैकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥

ता जलकी एक बडी भारी नदी हैगई वो श्वेतपर्वतके शिखरते उतरी ॥ २५ ॥ हे यदूत्तम! आगे प्रमेधा नाम एक मनुको बेटा हो सो गुरुनने गौनके पालवेपै राखदीनों हो वो गौनमें सिंह आयो तब गौ रम्हानी ता समय खड्ग लेके सिंहकूं मारिवेकूं गयो रातिमें सिंह तो दीख्यो नहीं सिंहके धोखेते कपिला गौ मारिगई ॥ २६ ॥ तब वशिष्ठजीने शाप दीनो ताते शूद्र हैगयो कोढी हैगयो तब तीर्थनमे विचरनलग्यो ॥२७॥ जब वो मनुको बेटा जा नदीमें न्हायो तब शापते छूटि चंद्रमासो हैगयो ॥२८॥ तबते ये चंद्रकांता नाम नदी है वहैहै,हिरण्मयखंडमें प्रसिद्ध है यामें न्हायके गलत्कुष्ठ मनुके बेटाको जातरह्यो ॥ २९ ॥ हम सब जामें स्नान करेंहैं याते हमारो रूप चंद्रमाके तुल्य है यामें संदेह नहीं है ॥ ३० ॥ नारदजी कहेहैं-ऐसे सुनिकै प्रद्युम्न यादवनसहित चंद्रकांता नदीमें स्नान करिके अनेकन दान देतोभयो॥ ३१॥इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खण्डे भाषाटीकायां नारदबहुलाश्वसंवादे हिरण्मय

खण्डविजयो नामैकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥२९॥ नारदजी कहेहैं कि, महाबली प्रद्युम्न हिरण्मयखंडकूँ जीतके रम्यकखंडकूं चलेगये जो स्वर्गसो झलमलाय रह्योहै ॥१॥ ताकी सीमाको नील पर्वत है ताके उत्तरकी ओर भीमनादिनी नाम नगरी है॥२॥ तहां कालनेमिको बेटा कलंक नाम राक्षस हो त्रेतायुगमें रामचंद्रके भयते युद्धमेंते भाजिआयो हो ॥३॥ लंकाते राक्षसन समेत यहां आयके बसो है वाने दश हजार राक्षसनकूं संग लेके युद्धको निश्चय कीनो ॥४॥ वो गधापै चढ़ो कारो जाको वर्ण वो राक्षस यादवनकी फौजमें आयो तब यादवनको और राक्षसनको घोर युद्ध होतभयो ॥ ५ ॥ तहां प्रघोष, गात्रवान्, सिंह, बल, प्रबल, ऊर्ध्वग, सह, ओज, महाशक्ति, अपराजित ॥ ६ ॥ ये लक्ष्मणाके कुमार श्रीकृष्णके बेटा पैने पैने तेजस्वी बाणनकूं लेके सबके आगे आये ॥ ७ ॥ राक्षसनकी फौजकूं मारनलगे पवन जैसे बादरनकूं उड़ावेंहै रणमें दुर्मद जे राक्षस छिन्न भिन्न हैं अंग जिनके ॥ ८ ॥ तब तो

॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवंहिरण्मयंखण्डंजित्वाकार्ष्णिर्महाबलः ॥ जगामरम्यकंखंडंदेवलोकमिवस्फुरन् ॥ १ ॥ तस्यसीमागिरिःसाक्षान्नीलोनामनगाधिराट् ॥ तत्रोत्तरेकालदेशेनगरीभीमनादिनी ॥ २ ॥ कालनेमिसुतस्तत्रकलंकोनामराक्षसः ॥ त्रेतायुगेरामचन्द्राद्भीतोयुद्धपलायितः ॥ ३ ॥ लंकापुर्याइहागत्यवासकृद्राक्षसैःसह ॥ रक्षसामयुतेनासौयुद्धायकृतनिश्चयः ॥ ४ ॥ खरारूढःकृष्णवर्णोयदूनांबलमाययौ ॥ यदूनांराक्षसानांचघोरंयुद्धंबभूवह ॥ ५ ॥ प्रघोषोगात्रवान्सिंहोबलःप्रबलऊर्ध्वगः ॥ सहओजोमहाशक्तिरपराजितएवच ॥ ६ ॥ लक्ष्मणानंदनाह्येतेश्रीकृष्णस्यसुताःशुभाः ॥ सर्वेषामग्रतःप्राप्ताबाणैस्तीक्ष्णैःस्फुरत्प्रभैः ॥ ७ ॥ राक्षसानांबलंजघ्नुर्वायुर्वेगैर्यथाघनम् ॥ बाणैश्छिन्नभिन्नांगाराक्षसारणदुर्मदाः ॥८॥ त्रिशूलानांमुद्गराणांवर्षंचक्रुर्मदोत्कटाः ॥ कलंकस्तुतदाप्राप्तश्चर्वयन्वारणान्रथान् ॥ ९ ॥ हयान्नरान्सशस्त्रास्त्रान्मुखेचिक्षेपसत्वरम् ॥ गजान्पादेषुचोन्नीयसनीडान्रत्नकंबलान् ॥ १० ॥ घण्टानादसमायुक्तान्प्राक्षिपच्चांबरेबलात् ॥ प्रघोषःश्रीहरेःपुत्रःकपींद्रास्त्रंसमादधे ॥ ११ ॥ तद्बाणनिर्गतःसाक्षाद्वायुपुत्रोमहाबलः ॥ वातस्तूलमिवाकाशेचिक्षेपशतयोजनम् ॥ १२ ॥ हनुमन्तंतदाज्ञात्वाकलंकोराक्षसेश्वरः ॥ लक्षभारमयींगुर्वींगदांचिक्षेपनादयन् ॥१३॥ उत्पपातकपिर्वेगाद्गदाभूमौपपातह ॥ उत्पतन्वानराधीशोभ्रूभंगंकारयन्मुहुः ॥१४॥ मुष्टिनाघातयित्वातंकिरीटंतस्यचाददे ॥ कलंकोपितदातस्मैत्रिशूलंस्वंसमाददे॥१५॥

मदमें उत्कट त्रिशूलनकी और मुद्गरनकी वर्षा करनलगे ताही समय कलंक राक्षसनको राजा आयो हाथीनकूं और रथनकूं चाबावतभयो ॥ ९ ॥ घोड़ानकूं मनुष्यनकूं शस्त्र अस्त्रन समेत जल्दीही मुखमें डारेहै हाथीनके पांवनकूं पकरके घंटा रत्न कंबल अंबारी समेत आकाशमें फेंकनलग्यो जब प्रघोष हरिके बेटाने वाको कर्म देखके कपीन्द्रास्त्र चलायो ॥ १० ॥ ११ ॥ ता बाणमेंते वायुपुत्र महाबली हनूमान् प्रकट भये पकरके वाकूं सौ योजनपै फेंक दीयो जैसे पवन रुईके फोआकूं फेंकदेयहै ॥ १२ ॥ कलंक राक्षसनको ईश्वर हनूमान्कूं जानके लाख भारकी गदा फेंकके मारी और फिर गर्जनलग्यो ॥ १३ ॥ तब हनूमान् वहे वेगते उछरगये गदा पृथ्वीमें जायपरी तब वारंवार भृकुटी चलामते ॥ १४ ॥ हनूमान्ने याके एक घूंसा मारके मुकुट उतारलियो फिर कलंक अपनो त्रिशूल लेके आयो ॥ १५ ॥

तब हनूमान् उछरके वाकी पीठपै चढ़गये भुजानते पकड़ धरतीमें देमार्यो ॥ १६ ॥ फिर वैडूर्यपर्वतको लायके वाके ऊपर पटकादियो ताके मारे शरीरको चूर्ण हैगयो और ये कलंक मृत्युकूं मात हैगयो ॥ १७ ॥ तब तो जय जय शब्द हैानलग्यो शंख बजनलगे तब हनूमान् भगवान् तहांही अंतर्धान हैगये ॥१८॥ तब प्रद्युम्नके ऊपर देवता पुष्पनकी वर्षा करनलगे तब कृष्णको बेटा बड़ी भुजानवारो अपनी सेनासमेत मनुराजाकी पुरीकूं जातभयो ॥ १९ ॥ जो पुरी मनोहरा और सुवर्णकी है जहां नैःश्रेयस नामको वन है कल्पवृक्षनकी लतासों आवृत है ॥ २० ॥ हरिचन्दन, मंदार, पारिजात, संतान जे कल्पवृक्षनकी जाति तिनते सुगंधित और शोभित है ॥ २१ ॥ केतकी चंपाकी लतानते और गुडहरते शोभित फूली फली जे फलनकरके सहित माधवीनकी लतानके जाल तिनतें व्याप्त है ॥ २२ ॥ जामें नाद करते पखेरू और भ्रमरकुल तिनसो वैकुण्ठसो सुंदर है पांचसौ योजन लंबो

उत्पतन्सकपिर्वेगात्पृष्ठदेशंपपातह ॥ हनुमांस्तंतदादोर्भ्यांपातयित्वामहीतले ॥ १६ ॥ वैदूर्यपर्वतंनीत्वातस्योपरिसमाक्षिपत् ॥ गिरिपातेनचूर्णांगोमर्दितःपञ्चतांययौ ॥ १७ ॥ तदाजयजयारावःशंखध्वनियुतोभवत् ॥ हनूमान्भगवान्साक्षात्तत्रैवांतरधीयत ॥ १८ ॥ प्रद्युम्नस्योपरिसुराःपुष्पवर्षंप्रचक्रिरे ॥ अथकार्ष्णिर्महाबाहुःस्वसैन्यपरिवारितः ॥ १९ ॥ मनोहरांस्वर्णमयींमानवींनगरींययौ ॥ नैःश्रेयसव नंतत्रकल्पवृक्षलतावृतम् ॥ २० ॥ हरिचन्दनमन्दारपारिजातोपशोभितम् ॥ सन्तानामोदसंमिश्रवायुभिःसुरभीकृतम् ॥ २१ ॥ केतकीचंपक लताकुटजैःपरिसेवितम् ॥ माधवीनांलताजालैःपुष्पितैःसफलैर्वृतम् ॥ २२ ॥ नदद्विहंगालिकुलैर्वैकुंठमिवसुन्दरम् ॥ योजनानांपञ्चशतं लंबितंचारुधिगिरिम् ॥ २३ ॥ अधोधःशोभितंराजञ्शतयोजनविस्तृतम् ॥ पुंस्कोकिलैःकोकिलैश्चमयूरैःसारसैःशुकैः ॥ २४ ॥ चकवा कैश्चकोरैश्चहंसैर्दात्यूहकूजितम् ॥ सर्वर्तुपुष्पशोभाढ्यमाक्षिपन्नन्दनंवनम् ॥ २५ ॥ मृगशावारमंतेत्रैःशार्दूलैःसहमैथिल ॥ नकुलाःफणिभिःसा र्द्धंयत्रवैरविवर्जिताः ॥ २६ ॥ अयुतंसरसांयत्रभ्रमरध्वनिसंयुतम् ॥ सहस्रपत्रैःकमलैःशतपत्रैःस्फुरत्प्रभैः ॥ २७ ॥ इतस्ततोवर्तमानमानन्दमि वमूर्तिमत् ॥ तद्वनंसुन्दरंदृष्ट्वानिर्गतान्नगरीजनान् ॥ २८ ॥ पप्रच्छवांच्छितंसाक्षात्प्रद्युम्नःसर्ववित्कविः ॥ ॥ प्रद्युम्नउवाच ॥ ॥ कस्येयं नगरीरम्याकस्येदंवनमद्भुतम् ॥ वदताशुसविस्तारंहेलोकाःपुण्यशासनाः ॥ २९ ॥

ऐसो अरुधिपर्वत है ॥ २३ ॥ हे राजन् ! नीचे २ सौ योजन चौड़ोहै पुरुषकोइल, कोइल, और सारस, तोता, मोर ॥ २४ ॥ चकोर, चकई, चकवा, हंस, पपीहा जामें बोलें है सो सब ऋतुके फलफूलोंकी शोभासे आढ्य इन्द्रके नंदनवनकी शोभाकूं फीकी करै है ऐसो सुन्दर है ॥ २५ ॥ और हे मैथिल ! मृगके बच्चा सिंहनके संग खेलैहैं और नोला सर्पके संग खेलें है वैर नहीं करेंहै ॥ २६ ॥ यामें दश हजार सरोवर हैं तिनपै भौंरा गुंजार करेंहैं जिनमें सौ सौ दलके हजार हजार दलके कमल फूलि रहेहै ॥ २७ ॥ इत चितमें मूर्ति मान् आनन्दही मानो डोलैहै ता वनकूं सुन्दर देख्यो और नगरीमेंते निकरे जे जन तिनतें ॥ २८ ॥ सबके वेत्ता ज्ञानी प्रद्युम्न इनको वांछित पूछन लगे, कौनकी यह मनोहर

नगरी है कौनकी यह अद्भुत वन है हे पवित्र मनुष्यहो ! विस्तारते कहो ॥ २९ ॥ तब ये जन बोले कि वैवस्वतमनु जिनको नाम जो अब वर्त्तमान है जा मानव पर्वतके ऊपर
मत्स्यभगवान्को पूजन करेंहै ॥ ३० ॥ सदाही विराजमान भगवानकूं नमस्कार करिकें तप करेंहैं तिनकी यह नगरी तिनकोही नैश्रेयस वन है ॥ ३१ ॥ यह भूमिहू और ये नगरी वैकुंठते
लायेंहै तुम सबरे राजा पृथ्वीपे जितनें हो सो वाहीके वंशके हो सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी ॥ ३२ ॥ नारदजी कहेंहै कि, सब क्षत्रीनके परदादे बूढे श्राद्धदेव मनुकूं जानिकें श्रीकृष्णको
बेटा बड़े अचम्भेमें आयो ॥ ३३ ॥ उनको वचन सुनिकें भैयानकूं और यादवनकूं संग लैकें मानव पर्वतपे चढिकें श्राद्धदेव मनुको दर्शन करतेभये ॥ ३४ ॥ सौ सूर्यकीसी
कांति जिनकी दशों दिशानमें उजीतो करिरहे महायोगमय साक्षात् राजेन्द्र शांतरूपी ॥ ३५ ॥ वेदव्यास शुकदेव वशिष्ठ बृहस्पति इनके संग आपसमें हे महाराज ! हरिको

॥ ॥ जनाऊचुः ॥ ॥ वैवस्वतोमनुर्नामयोह्येवंवर्ततेनृप ॥ मानवेचगिरौरम्येमत्स्यंनारायणंहरिम् ॥ ३० ॥ वर्तमानंसदानत्वा
करोतिविपुलंतपः ॥ तस्येयंनगरीरम्यातस्यनैःश्रेयसंवनम् ॥ ३१ ॥ वैकुण्ठाच्चसमानीताभूमिश्चायंगिरिस्तथा ॥ यूयंसर्वेपिराजान
स्तस्यवंशभवाःक्षितौ ॥ सूर्यवंशांतरेराजंश्चंद्रवंशांतरेहिभोः ॥ ३२ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ क्षत्रियाणांचसर्वेषांवृद्धंतंप्रपिता
महम् ॥ श्राद्धदेवंमनुंज्ञात्वाविस्मितोभूद्धरेःसुतः ॥ ३३ ॥ श्रुत्वावचस्तदासद्योभ्रातृभिर्यदुभिर्वृतः ॥ मानवाद्रिंसमारुह्यश्राद्धदेवंददर्शह
॥ ३४ ॥ शतसूर्यप्रभंकांत्याद्योतयंतंदिशोदश ॥ महायोगमयंसाक्षाद्राजेंद्रंशांतरूपिणम् ॥ ३५ ॥ वेदव्यासशुकाद्यैश्चवसिष्ठर्षिपर्षादि
भिः ॥ परस्परंमहाराजशृण्वंतःश्रीहरेर्यशः ॥ ३६ ॥ ननामकार्ष्णिर्यदुभिःसहैवतंकृतांजलिस्तत्रसमास्थितोभवत् ॥ मनुःसमुत्थायहरेः
प्रभावविद्दत्त्वासनंगद्गदयागिराब्रवीत् ॥ ३७ ॥ ॥ मनुरुवाच ॥ ॥ नमस्तेवासुदेवायनमःसंकर्षणायच ॥ प्रद्युम्नायानिरुद्धायसात्त्वतां
पतयेनमः ॥ ३८ ॥ अनादिरात्मापुरुषस्त्वमेवत्वंनिर्गुणोसिप्रकृतेःपरस्त्वम् ॥ सदावशीकृत्यबलात्प्रधानंगुणैःसृजस्यत्सिचपासिविश्वम् ॥
॥ ३९ ॥ ततोविवेकंसविहायसर्वतोमत्वाखिलंचात्रमनोमयंजगत् ॥ मायापरंनिर्गुणमादिपुरुषंसर्वज्ञमाद्यंपुरुषंसनातनम् ॥ ४० ॥ जागर्ति
योस्मिन्शयनंगतेसतिनायंजनोवेदसतःपरंतम् ॥ पश्यंतमाद्यम्पुरुषंहियज्जनोनपश्यतिस्वच्छमलंचतंभजे ॥ ४१ ॥

यश सुनेंहैं ॥ ३६ तहां प्रद्युम्नने जायकें नमस्कार करी यादवनके संग हाथ जोड़ दंडोत करिकें आगें बैठिगये तब मनुराजा हरिके प्रभावको जाननवारो आसन देकें गद्गद
वाणीते यह वचन बोल्यो ॥ ३७ ॥ तुम वासुदेव हो संकर्षण हो प्रद्युम्न हो अनिरुद्ध हो भक्तनके पति हो तिनके अर्थ हमारी नमस्कार है ॥ ३८ ॥ तुम अनादि आत्मा हो पुरुष
हो निर्गुण हो मायाते परे हो अपने बलते मायाकूं वश करिकें गुणनते जगत्की उत्पत्ति पालन संहार करोहो ॥ ३९ ॥ तातें अविवेकी जो यह जगत् संपूर्ण मनोमय
ताकूं छोडिकें मायाते परे निर्गुण आदि पुरुष सर्वज्ञ आद्य सनातन तिन्हें मैं भजूंहूं ॥ ४० ॥ जब यह विश्व सोवैहै तब आप जागौहौ यह जन लोक आपकूं नहीं जानैहै

याते परेहो याकूं देखोहो यह जगत् आपकूं नहीं देखेहै स्वच्छ निर्मल जो तुम हो तिनकूं में भजूंहूं ॥ ४१ ॥ जैसे आकाश तो घटते, रजते पवन, काष्ठते अग्नि लिप्त नहीं होय है तैसेही निर्मल तुम गुणनते विषयनते लिप्त नहीं होयहो जैसे स्फटिकमें रंग लिप्त नहीं होयहै ॥ ४२ ॥ व्यंग्यते लक्षणाते वाणीकी चतुराईते स्फोटपरायण मनुष्यन करके अर्थ परमार्थ पद नहीं जान्योजायहै उत्तम ध्वनी करिकें वाच्य करिकें जो ब्रह्म नहीं जान्योजाय है सो कहो लौकिक वाक्यनते ब्रह्म कैसें जान्योजायहै ॥ ४३ ॥ कोई तो पृथ्वीमें कर्मकूं वर्णन करेहै कोई कर्त्ताकूं कहेहै कोई कालकूं कहेहै कोई योगकूं कहेहै कोई विचारकूं ब्रह्म बतावें है वाहीकूं वेदांती ब्रह्म कहेहैं ॥ ४४ ॥ जाकूं कालके गुण स्पर्श नहीं करि सकैहैं और ज्ञान इंद्रिय, चित्त, मन, बुद्धि, महत्तत्त्व नहीं जानेहैं जाको वेद कहेहै फिर सब वाहीमें प्रवेश होय है अग्निमें विस्फुलिंगा जैसें ॥ ४५ ॥ संत जाकूं हिरण्यगर्भ आत्म

यथानभोग्निःपवनोनसज्जतेघटेनकाष्ठेनरजोभिरावृतैः ॥ तथाभवान्सर्वगुणैश्चनिर्मलोवर्णैर्यथास्यात्स्फटिकोमहोज्ज्वलः ॥४२॥ व्यंग्येनवाल
क्षणयाचवाक्पथैरर्थंपदंस्फोटपरायणैःपरम् ॥ नज्ञायतेयद्ध्वनिनोत्तमेनसद्वाच्येनतद्ब्रह्मकुतस्तुलौकिकैः॥ ४३ ॥ वदंतिकेचिद्भुविकर्मकर्तृयत्का
लंचकेचित्परयोगमेवतत् ॥ केचिद्विचारंप्रवदंतियच्चतद्ब्रह्मेतिवेदांतविदोवदंति ॥ ४४ ॥ यंनस्पृशंतीहगुणानकालजाज्ञानेंद्रियंचित्तमनोनबुद्ध
यः ॥ महान्नवेदोवदतीतितत्परंविशंतिसर्वेंग्निनलेस्फुलिंगवत् ॥ ४५ ॥ हिरण्यगर्भंपरमात्मतत्त्वंयद्वासुदेवंप्रवदंतिसंतः ॥ एवंविधंत्वांपुरुषोत्तमो
त्तमंमत्वासदाहंविचराम्यसंगः ॥ ४६ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ मनोर्वाक्यंतदाश्रुत्वाप्रद्युम्नोभगवान्हरिः ॥ मन्दस्मितोमनुंप्राहगीर्भिःसं
मोहयन्निव ॥ ४७ ॥ ॥ प्रद्युम्नउवाच ॥ ॥ त्वन्नोगुरुःक्षत्रियाणामादिराजःपितामहः ॥ मत्पूजनीयोवृद्धोसिश्लाघ्योधर्मधुरंधरः ॥४८॥
वःप्रजाश्चवयंराजन्रक्ष्याःपाल्याश्चसर्वतः ॥ भवतातप्यतेदिव्यंतपस्तेनजगत्सुखम् ॥ ४९ ॥ मृग्यस्त्वत्सदृशःसाधुःपरमात्माहरिःस्वयम् ॥
नृणामंतस्तमोहारीसाधुरेवनभास्करः ॥ ५० ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वाभगवान्कार्ष्णिरनुज्ञाप्यप्रणम्यतम् ॥ परिक्रम्यमनुंराज
न्स्वयंभूमौजगामह ॥ ५१ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खंडेनारदबहुलाश्वसंवादेमानवदेशविजयोनामत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥

तत्त्व वासुदेव ऐसे कहेहैं ऐसे जे तुम पुरुषोत्तम हो तिनकूं जानिके मैं असंग हैके विचार करूंहूं ॥ ४६ ॥ नारदजी कहेहै—मनुराजाके वचनकूं सुनिके प्रद्युम्न हरि भगवान् मंद मुसिक्यान करिके वाणीनते मोह करत बोले ॥ ४७ ॥ आपतो क्षत्रीनके गुरु हो आदि राजा हो सबके दादे हो मोकूं पूजनीय हो वृद्ध हो बडाई करिवे लायक हो धर्मके उठा यवे वारे हो ॥ ४८ ॥ हे राजन् ! हम तो आपके बेटा, नाती, पंती, संती हैं हम सब तेरे पालवे लायक और रक्षा करवेलायक हैं आप जो तप करो हो जाते सब जगतकूं सुख है ॥ ४९ ॥ तुमसरीके साधु तो ढूंढिवेयोग्य हैं तुम तो परमात्मा हरि आप ही हो मनुष्यनके भीतरके अंधकारकूं तुमही हरो हो सूर्य नहीं हरेहै ॥ ५० ॥ नारदजी कहें हैं ऐसे कहिके आज्ञा मांगि परिक्रमादेके दंडोत करिके प्रद्युम्न पर्वतपेते भूमिमें आवतेभये ॥५१॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खडे भा० नारदबहुलाश्वसंवादे मानवदेशविजयो नाम त्रिंशो

ध्याय: ॥ ३० ॥ नारदजी कहेहैं—ऐसे रम्यक खंडकूं जीतिके महाबली कृष्णको बेटा सुमेरुके पूर्वदिशाकूं केतुमालखंडमें जातभयो ॥ १ ॥ हे मैथिल ! ताको माल्यवान् पर्वत सीमाके है यहीं चतुर्नाम्नी गंगा बहैहै जो महापातककी नाश करनहारी है ॥ २ ॥ माल्यवानके पास मन्मथशालिनी पुरी है रत्ननको जाको परिकोटा है और मणिनकेही जामें महल बनेहै देवधानीकीसी जाकी शोभा है ॥ ३ ॥ यहां पुरुष कामदेवसे सुंदर हैं शरदऋतुके नील कमलकेसे जिनके श्याम अंग हैं और पद्मदलसे जिनके नेत्र है ॥ ४ ॥ पीतांबरधारिणी नारी है पुष्पनके हार पहरे मनोहर नये जोवनवारी गेंदते खेलैहै ॥ ५ ॥ जिनको देहकी सुगंधिते मत्त भये भौंरा गुंजारैहै वह सुगंधि चारिसौ कोस ताई फैलै है ॥ ६ ॥ ता पुरीके बसनहारे लोग निकसे प्रद्युम्नके सुनत सुनत हरिको यश गामन लगे ॥ ७ ॥ केतुमाल खंडके निवासी बोले—शेषशायी भगवान् देवतानकी प्रार्थनाते जगत्की आर्ति हरनहारे साक्षात्

॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्थंतुरम्यकंखंडंजित्वाकार्ष्णिर्महाबलः॥ सुमेरोःपूर्वदिग्भागेकेतुमालंजगामह ॥ १ ॥ तस्यसीमागिरिःसाक्षान्माल्यवान्नाममैथिल ॥ चतुर्नाम्नीयत्रगंगामहापातकनाशिनी ॥ २ ॥ गिरेर्माल्यवतःपार्श्वेपुरीमन्मथशालिनी ॥ रत्नप्राकारसौधैश्चदेवधानीवशोभिता ॥३॥ यत्रवैपुरुषाराजन्कामदेवसमप्रभाः ॥ शारदेंदीवरश्यामाःपद्मपत्रनिभेक्षणाः ॥ ४ ॥ पीतांबरधरानार्यःपुष्पहारमनोहराः ॥ क्रीडंतिकन्दुकैर्यत्रकामिन्योनवयौवनाः॥ ५ ॥ यद्देहामोदपवनोमत्तालिकुलनादितः ॥ गंधीकरोतिभूभागंसमंताच्छतयोजनम् ॥ ६ ॥ तत्पुरीवासिनोलोकानिर्गतास्तेबहुश्रुताः ॥जगुर्यशःश्रीमुरारेःप्रद्युम्नस्यापिशृण्वतः ॥ ७ ॥ ॥ केतुमालवासिनऊचुः ॥ ॥ आसीत्तुशेषशयनोजगदार्तिहारीसाक्षात्प्रधानपुरुषेश्वरआदिदेवः ॥ यःप्रार्थितःसुरवरैर्भुवनावनायतस्मैनमोभगवतेपुरुषोत्तमाय ॥ ८ ॥ जातोगतःपितृगृहात्पितरौविमोक्ष्यनंदालयंशिशुतनुःसतुनंदपत्न्या ॥ संलालितःसघृणयाबहुमंगलश्रीःप्राणप्रहारमकरोत्किलपूतनायाः ॥ ९ ॥ बालोबभंजशकटंशयनंप्रकुर्वन्दैत्यंनिपात्यमहदद्भुतकंचपृष्ठे ॥ मात्रेप्रदर्श्यनिजरूपमलंकृतोभूद्गर्गेणसंकथितसुंदरभाग्यलक्ष्मीः ॥ १० ॥ संलालितोव्रजजनैर्नवनीतचौरःश्यामोमनोहरवपुर्मृदुलःसबालः ॥ भित्त्वाजघासदधिपात्रमतीवबद्धोवृक्षौबभंजजननीलघुदामबद्धः ॥ ११ ॥ वृंदावनेसविचरन्सहवत्सगोपैर्वत्सासुरंचविनिपात्यकपित्थवृक्षैः ॥ सद्योविगृह्यखरतुंडपुटेचदोर्भ्यांदैत्यंददारसबकंतृणवत्तटिन्याम् ॥ १२ ॥

प्रधान पुरुष ईश्वर आदिदेव हो और जे देवतानकी प्रार्थनासो भुवनकी रक्षाके लीये प्रकट होतभये विन पुरुषोत्तम भगवान्के अर्थ हमारी नमस्कार है ॥ ८ ॥ जो आप माता पितानकूं बंधनते छुडायके पिताके घरते नंदके घरकूं गये सो बालरूप बडी प्रीतिसे नंदरानीने लाड लडाये और जे बडे मंगल तथा बडी शोभाकेही लक्ष्मी देनवारे वहां जाने पूतनाके प्राण हरे ॥ ९ ॥ फिर बालकनेई सोवत २ शकट तोरिडारचो अद्भुत तृणावर्तकी पीठिपै चढिके मारिडारचो और माताकूं अपनो निजरूप दिखायके अलंकृत भयो गर्गजीने जाकी सुंदर भाग्यलक्ष्मी वरणी ॥ १० ॥ माखनके चुरामनवारेकों ब्रजवासीनने बहुत लाड लडाये श्यामसुन्दर मनोहर अतिकोमल बालक दहीनके पात्रनकूं फोरिकें दही खात भये तब मैयाने उलूखलते बाँधिदिये तब यमलार्जुन वृक्ष उखारत भये ॥ ११ ॥ बछरा और गोपबालकनके संग वृंदावनमें विचरतेने वत्सासुरकूं मारिके वाई वत्सासुरसो कैथके वृक्षनको

उसारो फिर यमुनाके किनारेपै पैनी चोंचके बकासुरकूं तिनुकाकी नाई चीरतोभयो ॥ १२ ॥ बालकनके संग बहुत बछरानकूं घेरत बांसुरी बजावत कामकूं मोहिवेवारो स्वरूप धारण कर्यो अघासुरके मुखमें गये बालकनकूं जिवाये फिर बालक बछरानकों जब ब्रह्माजी लेगयो तब जो सबरूप बने ॥ १३ ॥ क्षेत्रज्ञ हैं आत्मा पुरुष हैं भगवान् हैं अनन्त है पूर्ण हैं प्रधान पुरुषके ईश्वर हैं अजन्मा भगवान् शरीर धारण करिकें ब्रह्मासहित सबकूं मोह करते श्रीकृष्ण ब्रजके बालकनमें विचरतेभये ॥ १४ ॥ फिर बली जो धेनुकासुर ताकूं तालके वृक्षपै मारतेभये फिर काली नागकूं दंड देकें वाके फण फणपै नृत्य करतेभये फिर जो दावानलको पीवतोभयो फिर बलदेव सहित दृढ मुक्कातें प्रलंबासुरको मरवावतोभयो ॥ १५ ॥ फिर गऊ चरावतो वनमें व्रजवधूनको मोहनवारो वेणु बजावतभयो व्रजवधूने जाकी कीर्ति गाई फिर गोपवधूनके वस्त्र चुराय ब्राह्मणनकी भात भोजन करतोभयो ॥ १६ ॥ जब इंद्रने बड़ी भारी वर्षा करी तब कृपाकरिकें पशूनकी रक्षा करिवेकूं

संधारयंश्चशिशुभिर्बहुवत्ससंघान्वेणुंक्वणन्मदनमोहनवेषभृद्यः ॥ गोपानघासुरमुखेप्रहिताञ्जुगोपगोगोपवत्सपवपुःसचकारसद्यः ॥ १३ ॥ क्षेत्रज्ञआत्मपुरुषोभगवाननंतःपूर्णःप्रधानपुरुषेश्वरआदिदेवः ॥ धृत्वावपुःसविहरन्व्रजबालकेषुसंमोहयन्विधिमजोविचचारकृष्णः ॥१४॥ चिक्षेपधेनुकमसौबलिनंबलेनतालान्प्रगृह्यसहसाफणिकालियाख्यम् ॥ बभ्रामवह्निमपिवद्दनुजंप्रलंबंसद्योजघानसबलोदृढमुष्टिनाच ॥१५॥ संचारयन्व्रजवधूर्मधुरंक्वणन्योवेणुंवनेव्रजवधूनिजगीतकीर्तिः ॥ दिव्यांबराणिसजहारवरांगनानांविप्रांगनाभिरभितःकृतभक्तभोजः ॥१६॥ देवेषुवर्षतिपशून्कृपयारिरक्षुर्गोवर्धनंप्रकृतबालइवोच्छिलींध्रम् ॥ बिभ्रद्गिरिंसगजराडिवकंजमेकहस्तेशचीपतिवचोभिरतस्तुतोभूत् ॥१७॥ नन्दंजुगोपवरुणात्स्वजनायलोकंदिव्यंपरंचतमसोदिविदर्शयित्वा ॥ श्रीरासमण्डलगतोव्रजसुन्दरीणांरेमेपुलिन्दतटिनीपुलिनेंगनाभिः ॥ १८ ॥ मानंहरन्मदनयौवनमानिनीनामंतर्दधेव्रजवधूनिजगीतकीर्तिः ॥ स्रग्वीमनोहरवपुर्विरहातुराणांसाक्षाद्धरिर्मदनमोहनआविरासीत् ॥ १९ ॥ वृन्दावनेशबरराजवरांगनाभिर्विष्णुर्विभूतिभिरिवोद्युभिरादिदेवः ॥ रेमेस्तुतःसुरवरैःसचरासरंगेकेयूरकुण्डलकिरीटविटंकवेषः ॥ २० ॥ नन्दंविमोक्ष्यफणिनेप्रददौचमोक्षंदिव्यंमणिंसचजहारहशंखचूडात् ॥ गोपैस्तुतोवृषभरूपधरंह्यरिष्टंभूमौनिपात्यनिजघानकरेणशृंगे ॥ २१ ॥

प्रकृत बालककी नाई गोवर्धन पर्वतकूं छतोनाकी नाई उठावतोभयो हाथी जैसे कमलकूं वैसेही जाने सात दिनतक एक हाथसों गिरिराज उठायो तब इंद्र आयके जाकी स्तुति करतोभयो ॥ १७ ॥ नंदजीकूं वरुणकी फाँसीते रक्षा करिके व्रजवासीनकूं मायाते परे वैकुंठ दिखाये फिर यमुनाकिनारेपै यमुनाजीके पुलिनमें रासमण्डलमें व्रजसुन्दरीनके संग रमण करतभयो ॥ १८ ॥ कामदेवके जोरते भयो जो यौवनको व्रजसुन्दरीनकूं मान ताकूं हरत अन्तर्धान हैगयो तब व्रजसुन्दरीनने गोपीगीत गायो जब वे अत्यन्त विरहातुरा भयी तब मनोहर स्वरूप धारण करिके वनमाला पहरि जो प्रकट होतोभयो ॥ १९ ॥ वृन्दावनमें शबरराजकी जे श्रेष्ठ अंगना तिनके संग जैसे अपनी विभूति तिनके संग आदिदेव विष्णु रमे तैसो जो रमण करतोभयो देवता जिनकी स्तुति करैं सो रासरंगमें केयूर, कुण्डल, किरीट तिनने मनोहर शृंगार धरिके रमण करतोभयो ॥ २० ॥ नन्दकूं सर्पते

छुड़ाय सर्पकूँ मोक्ष दीनी फिर शंखचूडपैते दिव्य मणि हरलीनी गोपननें जाकी स्तुति करी बैलके रूप अरिष्टासुरकूँ सींगते पकरके धरतीमें मारयो ॥ २१ ॥ कंसने जा भगवा
नते परम भय पायके सघन मेघसो शरीर जाको ऐसो प्रचड केशीकूँ भेज्यो ताकूं छोड़ि बडे वेगते परयो जो केशी ताहि मुखमें भुजा प्रवेश कर मारतभये ॥ २२ ॥ जो नार
दने वर्णन कियेहैं बहुपराक्रम और भाग्यलक्ष्मी जाकी सो व्योमासुरकूं विगतप्राण करतभयो और अक्रूरने वर्णन कीनोहै महोदय जाको सो विरहातुर गोपीजनको चित्तचोर आदि
देव ॥ २३ ॥ अक्रूरहित करनवारेके लिये जलमें स्वरूप दिखाय अन्तर्धान करलीनो सो मथुरेश मथुराके बागमें आय बलदेवसहित गोपनकूँ संग लेके मथुराकूं देखतोभयो ॥
॥ २४ ॥ तहां इच्छापूर्वक विचरत धोबीकूँ मारि दरजीकूँ वर देतोभयो सुदामा मालीपै दया करिके कुब्जाकूँ सूधी करि सहजमेंई धनुषकूँ उठाय तोरिडारतोभयो ॥ २५ ॥

कंसःपरंभयमवापचतेनकेशीसंप्रेपितःसघनमेघवपुःप्रचण्डः ॥ उत्सृज्यतंचतरसापुनरापतंतंश्रीबाहुनामुखगतेनजघानकृष्णः ॥ २२ ॥ योना
रदेनबहुवर्णितभाग्यलक्ष्मीर्व्योमासुरोव्यसुरकारिपरेणयेन ॥ अक्रूरवर्णितमहोदयआदिदेवोगोपीजनातिविरहातुरचित्तचौरः ॥ २३ ॥ श्वाफ
ल्कयेहितकरायनिजंस्वरूपमंतर्दधेजलचयेसचदर्शयित्वा ॥ संप्रापतत्रमथुरोपवनंपरेशोगोपालकैश्चसबलोमथुरांददर्श ॥ २४ ॥ स्वैरंचरन्म
धुपुरेरजकंनिकृत्यकृष्णःप्रदायचवरानथवायकाय ॥ मालाकृतंसमनुकंप्यचकारकुब्जामृज्वींधनुश्चसहसानमयन्बभञ्ज ॥ २५ ॥ द्वारिद्विप
श्चविनिहत्यनरेंद्रमल्लौहत्वाप्रगृह्यविनिपात्यसरंगभूमौ ॥ कंसंहरिस्तुपितरावथमोचयित्वाबंधान्नृपंपुरिचकारमहोग्रसेनम् ॥ २६ ॥ नन्दंप्र
साद्यबहुदानकरोयदुस्तानाहूयतथ्यसुधनैश्चनिवेदयित्वा ॥ विद्यामधीत्यसददौमृतंद्व्यपत्यंकृत्वावधंदनुजपञ्चजनस्यकृष्णः ॥ २७ ॥ गोपीज
नान्समनुगृह्यसचोद्धवेनाक्रूरेणहास्तिनपुरेत्वथपांडुपुत्रान् ॥ कृष्णोविजित्यबलिनंचजरासुतंचभस्मीचकारमुचुकुंददृशात्मकालम् ॥ २८ ॥
निर्मायचाद्भुतपुरंस्थितयेत्रकृष्णोनिन्येचकुंडिनपुरात्किलभीष्मकन्याम् ॥ पुत्रेणशंबरमरिंनिजघानचादाद्राज्ञेमणिंयुधिविजित्यसऋक्षराज
म् ॥ २९ ॥ भामापतिःसचशिरःशतधन्वनस्तुहृत्वाहुवाहसवितुश्चसुतांपरेशः ॥ आवंत्यराजतनुजांसजहारकृष्णःसत्यांस्वयंवरगृहेवृषभा
न्दमित्वा ॥ ३० ॥

हे नरेंद्र ! फिर दरवाजेपै कुवलयापीड हाथीकूँ मारि कंसके मल्लनकूं मारि कंसकूं पकरि रंगभूमिमें देमारयो ऊपरते आप जायपरे फिर माता पिताकूँ बन्धनते छुड़ाय उग्रसेनकूं
राज्य देतभये ॥ २६ ॥ नन्दजीकूं बहुत दान देके यादवनकूं मथुरामें बुलाय धन देके बसायके गुरूनपैते विद्या पढ़ि पंचजन दैत्यकूँ मारि मरयो बेटा गुरूनकूं देतेभये ॥ २७ ॥
फिर उद्धवकूँ भेजि गोपीजनपै कृपा करिके अक्रूरकूं हस्तिनापुरमें भेजि पांडुपुत्रनकूं राजी करि बली जरासंधकूं जीतके मुचुकुंदकी दृष्टिते कालयवनकूं जरावतेभये ॥ २८ ॥ फिर
समुद्रमें अद्भुत पुरकूं रचिके स्थितिके लिये तहां कुंडिनपुरते भीष्मककी कन्याकूं लाय पुत्रते शंबर वैरीकूँ मरवावत भये फिर युद्धमें रीछनको राजा जांबवान् ताहि जीति ताकी
बेटी जाम्बवतीकूँ व्याहि स्यमन्तक मणि लाय उग्रसेनकूं देतेभये ॥ २९ ॥ सो सत्यभामाके पति शतधन्वाको शिर काट परेश श्रीकृष्ण सूर्यसुता कालिंदीकूं विवाहतेभये फिर

अवंत्यराजकी बेटी सत्याकूँ सात बैलनकूं जीतिके ब्याहते भये ॥ ३० ॥ कैकेयराजकी बेटी भद्राकूं और अखिलभद्रकी तनुजा लक्ष्मणाकूँ हरतेभये फिर संग्राममें सेनासहित
भौमासुरकूं शस्त्रनते मारि सोलह हजार कन्या विवाहते भये ॥ ३१ ॥ फिर सत्यभामाकी इच्छा करिके स्वर्गमेंते कल्पवृक्षकूँ और सुधर्मा सभाकूं जीतिके लावते भये जो गोष्ठीमें
बलदेवके हाथन रुक्मीकूँ मारते भये और बाणासुरकी १००० भुजानके सौ २ टूक करतेभये ॥ ३२ ॥ ता कृष्णने उग्रसेनके यज्ञके लिये जगत्के जीतबेकूं शंबरकौ वैरी अपनौ
बेटा प्रद्युम्न भेज्योहै सो पृथ्वीके सब राजानकूं जीति केतुमालमें आयो है ताके अर्थ हमारी नमस्कार है ॥ ३३ ॥ नारदजी कहेहैं–तब तो कृष्णपुत्र प्रद्युम्न उनके ऊपर प्रसन्न
हैके कुंडल, कड़े, हीरा, मणि, मोती, घोड़ा, हाथी देतेभये ॥ ३४ ॥ तहां मन्मथशालिनीपुरीमें प्रद्युम्नकूँ वर्ष रोज व्यतीत हैगयो प्रजापति प्रद्युम्नकूं नमस्कार करिके बलि

कैकेयराजतनुजांसजहारभद्रांश्रीलक्ष्मणामखिलभद्रपतेःसुतांच ॥ भौमंविजित्यसबलंयुधिशस्त्रसंघैर्निन्येचषोडशसहस्रवरांगनाश्च ॥ ३१ ॥
भामेच्छयासुरतरुंचसभांसुधर्मांशक्रंविजित्यसजहारकलत्रमित्रः ॥ योरुक्मिणंचनिजघानबलेनगोष्ठ्यांबाणस्यबाहुनिचयंशतधाच्छिनत्सः ॥
॥ ३२ ॥ तेनोग्रसेनकृतवेथजगद्विजेतुंसंप्रेषितोनिजसुतःकिलशंबरारिः ॥ योत्रागतोभुविविजित्यनृपान्समस्ताञ्छ्रीकेतुमालपतयेचनमो
स्तुतस्मै ॥ ३३ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ प्रसन्नःश्रीहरिःकार्ष्णिःकुण्डलेकटकानिच ॥ हीरान्मणीन्गजानश्वान्ददौतेभ्योमहामनाः ॥
॥ ३४ ॥ पुर्य्यांमन्मथशालिन्यांव्यतिसंवत्सरोमहान ॥ प्रद्युम्नायबलिंप्रादान्नमस्कृत्यप्रजापतिः ॥ ३५ ॥ अथकार्ष्णिर्महाबाहुर्दिव्यंका
मवनंययौ ॥ जनैरगम्यंगम्यंचप्रजापतिदुहितृभिः ॥ ३६ ॥ सुन्दरंमन्मथाक्रीडंवृतंकामास्त्रतेजसा ॥ नारीणांयत्रपततिव्यसुर्गर्भोनवत्स
रम् ॥ ३७ ॥ तदापरात्कामवनाद्विनिर्गतःश्रीपुष्पधन्वानुपपञ्चसायकः ॥ पीतांबरःश्यामतनुर्मनोहरस्ततानकोदण्डगुणध्वनिंस्म
रः ॥ ३८ ॥ यद्बाणतोयादवपुंगवाःस्वतःससैनिकाःसाश्वगजाःपदातिभिः ॥ निपेतुरारात्किलकामविह्वलास्तद्बाणवेगस्यनवर्णनंभवेत् ॥
॥ ३९ ॥ अथाशुकार्ष्णिर्जगदीश्वरेश्वरःप्रलीनतांप्राप्जलेजलंयथा ॥ सद्योविसिस्मुर्यदवःससैनिकाविज्ञायपूर्णंनृपरुक्मिणीसुतम् ॥ ४० ॥
इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डे नारदबहुलाश्वसंवादेमन्मथदेशविजयोनामैकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥

देतभयो ॥ ३५ ॥ याके अनंतर बड़ी भुजावारो प्रद्युम्न दिव्य कामवनकूं जातभयो जो प्रजापतिकी बेटीनकूं तो गम्य है अन्य जननकूँ अगम्य है ॥ ३६ ॥ सुन्दर मन्मथाक्री
डन कामास्त्रनके तेज करिके भरयोहै तहां स्त्रीनको गर्भ जायपरै है वर्ष रोज नहीं रहैहै ॥ ३७ ॥ तहां कामवनमेंते पुष्पनको धनुष लैके पांच बाण लैके निकस्यो श्यामसुन्दर
पीतांबर मनोहर अपने धनुषनकूं तानिके टंकारतोभयो ॥ ३८ ॥ जाके बाणनके मारे सबरे यादवनमें अश्व घोड़ा हाथीसहित भूमिमें जायपरे काममें विह्वल हैगये ताके बाणको
वर्णन नहीं करसके है ॥ ३९ ॥ फिर जगदीश्वर कृष्णको बेटा कामदेवमें लीन हैगयो जलमें जल जैसे मिलिजाय है तब सबरे यादव अचंभेमे आयगये प्रद्युम्नकूं पूर्ण जानिके
॥ ॥ ४० ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटीकायां नारदबहुलाश्वसंवादे मन्मथदेशविजयो नामैकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥

नारदजी कहे हैं—अब प्रद्युम्न केतुमालखंडकी विजय करके योगकी समृद्धिमान् जो भद्राश्वखंड तहां जातभये ॥ १ ॥ जाकी सीमाको पर्वत गंधमादन विराजे है सीता नाम गंगा जहां पापकी नाशिनी वहै है ॥ २ ॥ सब पापनको छुडायवेवारो तहां वेदक्षेत्र है जो महातीर्थ है जहां हयग्रीव महाबाहु नित्य विराजे है ॥ ३ ॥ भद्रश्रवा धर्मको बेटा तिनकी सेवा करे है गंगातीरके पुलिनमें प्रद्युम्न महात्माके सुनहरी वस्त्रनके डेरा होतेभये ॥ ४ ॥ भद्रश्रवा धर्मको बेटा महात्मा भद्राश्व देशको मालिक बडो पराक्रमी प्रद्युम्नकी परिक्रमा देके नमस्कार करिके भेट देतोभयो फिर यह बोल्यो ॥ ५ ॥ भद्रश्रवा बोलो कि, तुम साक्षात् परिपूर्णतम भगवान् हो साधुनकी रक्षाके लिये जगत् जीतिवेकूं निकसे हो ॥ ६ ॥ हे भगवन्! शंबर नाम दैत्य जो पहले तुमने मारयो हो ताको भैया छोटो महादुष्ट उत्कच नामको है ॥ ७ ॥ गोकुलमें कृष्णचंद्रने मारयो शकटासुर ताको भैया बडो शकुनी महादुष्ट बडो बली है हे देव! आप वाकूं जीतिसको

॥ नारदउवाच ॥ ॥ अथकार्ष्णिर्महाबाहुःकेतुमालंविजित्यसः ॥ भद्राश्वंप्रययौधन्वीखंडंयोगसमृद्धिमत् ॥ १ ॥ यस्यसीमागिरिःसा
क्षाद्राजतेगन्धमादनः ॥ सीतानाम्नीयत्रगंगावहंतीपापनाशिनी ॥ २ ॥ वेदक्षेत्रेमहातीर्थेसर्वपापप्रमोचने ॥ हयग्रीवोमहाबाहुर्यत्रसंनिहितोह
रिः ॥३॥ भद्रश्रवाधर्मसुतस्तस्यसेवांकरोतिहि ॥ गंगातीरस्यपुलिनेप्रद्युम्नस्यमहात्मनः ॥ बभूवुःशिबिरव्यूहाहेमांबरमनोहराः ॥४॥ भद्रश्रवा
धर्मसुतोमहात्माभद्राश्वदेशाधिपतिर्महौजाः ॥ प्रदक्षिणीकृत्यननामभक्त्यादत्त्वाबलिंकृष्णसुतायचाह ॥ ५ ॥ ॥ भद्रश्रवाउवाच ॥ ॥ त्वंसा
क्षाद्भगवान्पूर्णःपरिपूर्णतमःस्वयम् ॥ साधूनांरक्षणार्थायजगज्जेतुंविनिर्गतः ॥ ६ ॥ भगवञ्छंबरोनामदैत्यःपूर्वजितस्त्वया ॥ तस्यभ्रातामहादु
ष्टःकनीयानुत्कचःस्मृतः ॥ ७ ॥ गोकुलेकृष्णचन्द्रेणमारितःशकटस्थितः ॥ तस्यभ्रातामहादुष्टोज्येष्ठोस्तिशकुनिर्बली ॥ ८ ॥ जेतुंयोग्यस्त्व
यादेवनान्यैरपिकदाचन ॥ ॥ प्रद्युम्नउवाच ॥ ॥ कस्यवंशेसमुद्भूतःशकुनिर्नामदैत्यराट् ॥ ९ ॥ कस्मिन्पुरेस्थितिस्तस्यबलंकिंवदधर्मज ॥
॥ भद्रश्रवाउवाच ॥ ॥ कश्यपस्यमुनेर्दित्यामादिदैत्यौबभूवतुः ॥१०॥ हिरण्यकशिपुर्ज्येष्ठोहिरण्याक्षोनुजस्तथा ॥ हिरण्याक्षस्यतस्यापिबभू
वुर्नवपुत्रकाः ॥११॥ शकुनिःशंबरोहृष्टोभूतसंतापनोवृकः ॥ कालनाभोमहानाभोहरिश्मश्रुस्तथोत्कचः ॥१२॥ देवकूटाद्दक्षिणाद्दिजठरस्यगि
रेरधः ॥ पुरीचन्द्रावतीनामदैत्यानांदुर्गमंडिता ॥१३॥ शकुनिस्तत्रवसतिभ्रातृभिःषड्भिरावृतः ॥ यदायदाहिमुनयोयज्ञारंभंप्रकुर्वते ॥१४॥

हो और कोई नहीं जीतिसके है ॥ ८ ॥ तब प्रद्युम्न बोले—कौनके वंशमें उत्पत्ति भयो है वह शकुनी दैत्यनको राजा ॥ ९ ॥ कौनसे पुरमें रहैहै कैसो वाको बल है हे धर्मके बेटाजी! तुम कहो तब भद्रश्रवा बोल्यो कि, कश्यपजीकी स्त्री दिति हो तामें आदि दैत्य दो भये ॥ १० ॥ हिरण्यकशिपु तो बडो भयो हिरण्याक्ष छोटो हो वा हिरण्याक्षके नौ बेटा भये ॥ ११ ॥ शकुनि १, शंबर २, हृष्ट ३, भूतसंतापन ४, वृक ५, कालनाभि ६, महानाभ ७, हरिश्मश्रु ८, उत्कच ९ ॥ १२ ॥ देवकूटके दहिनी ओर जठर पर्वतके नीचे चंद्रावती नामकी दैत्यनकी पुरी है जाके चारों तरफ किला है ॥ १३ ॥ तहां वह शकुनी छै भैयानके संग बसैहै जब जब मुनीश्वर यज्ञको आरम्भ करैहैं ॥ १४ ॥

हे यदूत्तम ! हे सात्वतांपते ! तब तब युद्ध भंग करेहै और ताके मारे इंद्रादिक देवता उद्विग्न रहे आयेहै ॥ १५ ॥ हे देव ! देवतानको वैरी यो दैत्य तुमकूं जीतनो योग्यहै
तुमने तो भक्तनकी शांतिके लिये सब जगत् जीत्योहै ॥ १६ ॥ तुम प्रद्युम्न चतुर्व्यूह हो गौ, विप्र, सुर, साधु और वेद इनके पति हो तिनकूं नमस्कार है ॥ १७ ॥ नारदजी
कहैहै कि, ऐसे भद्रश्रवाने जब प्रार्थनाकरी तब साक्षात् प्रद्युम्न भगवान् भद्रश्रवा देवकूं तू भय मति करै ऐसे अभय दान देते भये ॥ १८ ॥ तब समर्थ प्रद्युम्न भगवान् चंद्रावती
पुरीकूं सेनासहित प्रस्थान करतेभये ॥ १९ ॥ सोई मेरे मुखते शकुनी 'प्रद्युम्न आवेहै' ऐसे सुनके वह दैत्यनकी सभामें शूल उठायके यह बोल्यो ॥ २० ॥ बडो मंगल भयो मेरो
वैरी प्रद्युम्न यहीं आयगयो हे दैत्य हो ! मोकूं जीतनो योग्य है मोपै भैयाको ऋण चढि रह्योहै ॥ २१ ॥ मेरो भैया शंबर पहले जाने मार्योहै ताते सब यादवनसहित प्रद्युम्नकूं

तदातदाहितेनापिभंगोकारियदूत्तम ॥ यस्माच्चसंतिशक्राद्याउद्विग्नाःसात्वतांपते ॥ १५ ॥ जेतुंयोग्यस्त्वयादेवदेवध्रुग्दैत्यपुङ्गवः ॥ त्वयाजितं
जगत्सर्वंभक्तानांशांतिकारणात् ॥ १६ ॥ प्रद्युम्नायनमस्तुभ्यंचतुर्व्यूहायतेनमः ॥ गोविप्रसुरसाधूनांछन्दसांपतयेनमः ॥ १७ ॥ ॥ नारद
उवाच ॥ ॥ एवंसंप्रार्थितःसाक्षात्प्रद्युम्नोभगवान्हरिः ॥ देवायभद्रश्रवसेमाभैष्टेत्यभयंददौ ॥ १८ ॥ अथकार्ष्णिर्महाबाहुःस्वसैन्यपरिवा
रितः ॥ पुरींचन्द्रावतींगन्तुंप्रस्थानमकरोत्तदा ॥ १९ ॥ मन्मुखाच्छकुनिःश्रुत्वाप्रागच्छंतंयदूत्तमम् ॥ दैत्यानांसदसिप्राहशूलमुद्यम्यदैत्य
राट् ॥ २० ॥ ॥ शकुनिरुवाच ॥ ॥ दिष्ट्यादिष्ट्याहिशत्रुर्मेप्रद्युम्नोत्रसमागतः ॥ जेतुंयोग्योमयादैत्याभ्रातुर्मेऽप्यस्तिप्राग्रणम् ॥२१॥ भ्रातामे
शंबरोनामयेनपूर्वंचमारितः ॥ तस्मात्तंघातयिष्यामिप्रद्युम्नंयदुभिःसह ॥२२॥ तस्माद्यातबलंतस्यविध्वस्तंकुरुतासुराः ॥ पश्चात्पुरंदराधीशं
घातयिष्यामिनिर्जरान् ॥ २३ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वावचस्तस्यदैत्योहृष्टोमहाबलः ॥ आययौसंमुखेयोद्धुंदैत्यकोटिसमा
वृतः ॥ २४ ॥ प्रद्युम्नोभगवान्साक्षाल्लीलामानुषविग्रहः ॥ महत्यास्स्वसेनायागृध्रव्यूहंचकारह ॥ २५ ॥ गृध्रचंचौवर्तमानोनिरुद्धोधन्वि
नांवरः ॥ ग्रीवायामर्जुनःपृष्ठेसांबोजांबवतीसुतः ॥ २६ ॥ पादयोरुभयोराजन्नास्थितौदीप्तिमद्गदौ ॥ पार्ष्णिःसाक्षात्तदुदरेपुच्छेभानुर्हरेःसुतः
॥ २७ ॥ बभूवतुमुलंयुद्धंसीतागंगातटेनृप ॥ दैत्यानांयदुभिःसार्धमब्धीनामब्धिभिर्यथा ॥ २८ ॥

मैं मारूंगो ॥ २२ ॥ याते तुम जाओ वाकी सेनाको विध्वंस करो मैं इंद्रको और देवतानकूं मारूंगो ॥ २३ ॥ नारदजी कहैहै कि, ऐसे वाके वचनको सुनके वो बडो बलवान्
दैत्य प्रसन्न भयो और एक करोड दैत्यनको संग लेके संमुख युद्ध करिवेको आयो ॥ २४ ॥ तब प्रद्युम्न भगवान् लीला करके जिनने मनुष्य देह धरो है सो अपनी बडी भारी सेना
सो गृध्रव्यूह बनावतेभये ॥ २५ ॥ वा गीधकी चोंचकी जगह तो धनुर्धारीनमें मुख्य अनिरुद्धजी स्थितभये ग्रीवाके स्थानमें अर्जुन स्थितभयेहै और पीठके स्थानमें जांबवतीके
पुत्र सांब ठाडे कियेहै ॥ २६ ॥ हे राजन् ! दोनों पाँवनकी जगह दीप्तिमान् और गद स्थित भयेहैं या गीधके पेटकी जगह प्रद्युम्न आपही खडे भयेहैं और गीधकी पूँछकी जगह
कृष्णके पुत्र भानु खडे भयेहैं ॥२७॥ तब हे नृप ! सीता नामकी गंगाके तटमें दैत्यनको यादवनसों घोर संग्राम भयोहै जैसे दो समुद्रनको परस्पर हिलोरनते संग्राम होय ॥२८॥

बाण, त्रिशूल, मूसल मुद्गर, तोमर और पोलादी आदि शस्त्रनकी या प्रकार संग्राममें वर्षा होनलगी जैसे बादलनमेंसो बूंद बर्षे ॥ २९ ॥ तब सैन्यकी पावनकी धूरसे सूर्य और आकाश दोनों ढकगये हैं राजन् ! जैसे वर्षाके बादल सूर्यको और आकाशको ढकेहै ॥ ३० ॥ वृक, हर्ष, अनिल, गृध्र, वर्धन, उन्माद, महाश, पावन, वह्नि और शुद्धि ॥ ३१ ॥ जे मित्रविंदाके दश बेटा हैं वे दैत्यनते लडे जब बाणनको अन्धकार मच्यौ तब हरिको बेटा वृक ॥ ३२ ॥ सबके आगे आय धनुष टंकारतो बाणनते दैत्यन कूं छेदत भयो जैसे कुवाक्यनते मित्रताकूं ॥ ३३ ॥ हाथीनकूं, रथीनकूं, घोड़नकूं, वीरनकूं, पृथ्वीमें पटकतोभयो कटेहैं कवच, धनुष जिनके ऐसे वीर रणांगणमें जायपरे ॥ ३४ ॥

बाणैस्त्रिशूलैर्मुसलैर्मुद्गरैस्तोमरर्ष्टिभिः ॥ ववृषुर्दानवाःसर्वेधाराभिरिववारिदाः ॥ २९ ॥ रुरोधसूर्यंचाकाशंसैन्यपादरजोभृशम् ॥ राजन्स्व बाणंचयथवारिदाप्रावृड्भवाः ॥ ३० ॥ वृकोहर्षोनिलोगृध्रोवर्धनोन्मादएवच ॥ महाशःपावनोवह्निःशुद्धिश्चदशमःस्मृतः ॥ ३१ ॥ मित्रविं दात्मजाह्येतेयुयुधुर्दानवैः सह ॥ बाणांधकारेसंजातेवृकोनामहरेः सुतः ॥ ३२ ॥ सर्वेषामग्रतः प्राप्तोधनुष्टंकारयन्मुहुः ॥ दैत्यान्विभेदबा णौघैःकुवाक्यैर्मित्रतामिव ॥ ३३ ॥ गजान्रथान्हयान्वीरान्पातयामासभूतले ॥ निपेतुश्छिन्नकवचाश्छिन्नचापारणांगणे ॥ ३४ ॥ वृकबा णैर्भिन्नपादावृक्षावातहताइव ॥ अधोमुखाऊर्ध्वमुखाबाणौघैश्छिन्नबाहवः ॥ ३५ ॥ रेजूरणांगणेराजन्भांडव्यूहाइवाहताः ॥ द्विधाभूतागजा बाणैःपतितारणमंडले ॥ ३६ ॥ विरेजुच्छुरिकाविद्धाःकूष्मांडशकलाइव ॥ तदैवदृष्टःसंप्राप्तःसिंहारूढोमहाबलः ॥ ३७ ॥ बिभेदकवचंतस्य शिंजिनींदशभिःशरैः ॥ चतुर्भिश्चतुरोवाहान्द्वाभ्यांसूतंध्वजंतथा ॥ ३८ ॥ त्रिभीरथंचबाणानांविंशत्यादनुजाधिपः ॥ छिन्नधन्वावृकोभूत्वा हताश्वोहतसारथि ॥ ३९ ॥ अन्यंरथंसमारूढोधनुर्जग्राहरोपतः ॥ तावत्तस्यधनुर्दृष्टश्चिच्छेदसमरेसुरः ॥ ४० ॥ तदागदांसमादायवृकोया दवपुंगवः ॥ तताडमूर्ध्निपंचास्यंदैत्यंपुरस्थितंपुनः ॥ ४१ ॥

वृकके बाणनते कटेहै पांव और भुजा जिनके ऐसे वीर औंधे मोहड़े ऊंचे मोहड़े जायपरे जैसे जड़के कटेते वृक्ष ॥ ३५ ॥ रणके आंगनमें फूटे भांडे जैसे तैसे देदे टूकके हाथी रणमण्डलमे जायपरे ॥ ३६ ॥ छुरीके कटे पेठेके खंड जैसे पडैं तैसेंही पडे दीखे तबही दृष्ट नाम दैत्य सिंहपे चढिके आयो ॥ ३७ ॥ तानें दश बाणनते तो प्रत्यंचा और कवच वृकको चारनते चार घोड़ा द्वैनते सारथी और तीनते ध्वजा काटतोभयो ॥ ३८ ॥ बीस बाणनते रथ काटिडारो तब ये वृकके धनुष बाण, रथ, घोड़ा, कवच, सारथी सब कटि गये विरथ ह्वैगयो ॥ ३९ ॥ तब वृक और रथपे बैठि रोषते धनुष लैके ठाडो भयो तब वह धनुष दुष्टने काटि डारो ॥ ४० ॥ तब यादवनमें पुंगव वृकने गदा लैके पांछे खडे

पांच मुखके हृष्ट दैत्यके मारो ॥ ४१ ॥ तब हृष्टको सिंह क्रोधतें छर २ के नखनतें, दांतनतें, हाथनतें अनेकनकूं पटकन लग्यौ ॥ ४२ ॥ हुंकारतें डर पायके जीभ लफलफाते के शरानकूं हलावतें सिंहने वृकर्कू आयके पटक दीनों केराके दंडकूं हाथी जैसे पटकेहै ॥ ४३ ॥ तब वृक सिंहकूं पकरिके पृथ्वीमें पटकि वाके ऊपर गाजिके चढ़ि बैठ्यो मल्लके ऊपर मल्ल जैसे चढ़ैहै ॥ ४४ ॥ फिर चलते उछरते बलात्कारसे शरीरकूं चबाते वा सिंहको देखके बली मित्रविंदाके बेटाने वा सिंहके घूंसा मारयो ॥ ४५ ॥ ता घूंसाके मारे केहरी मरिगयो तब तो हृष्ट दैत्यने क्रोधके मारे त्रिशूल फेंक्यो ॥ ४६ ॥ जो बिजलीसो चमकत आवे ता त्रिशूलकूं पैनी तरवारते काटतभयो सर्पकूं गरुड जैसे ॥ ४७ ॥ तब हृष्ट दैत्यभी अपनी पैनी तरवार लैके पृथ्वीको कँपावतो महाबली वृकके शिरमें मारतो भयो ॥ ४८ ॥ तब चली वृक अपने खड्गके कोश (म्यान)पै तरवारकूं रोकि पैने खड्गकूं हृष्ट दैत्यकी नाड़में

मृगेंद्रःक्रोधसंपूर्णःसमुत्पत्यरणांगणे ॥ अनेकान्पातयामासनखैर्दंतैःकरैरपि ॥ ४२ ॥ हुंकारभीषणंकृत्वाललज्जिह्वःस्फुरत्सटः ॥ वृकंसंपातयामासरंभादंडंगजोयथा ॥ ४३ ॥ गृहीत्वातुवृकोदोर्भ्यांपातयित्वामहीतले ॥ तस्योपरिनदंस्तस्थौमल्लोमल्लंयथानृप ॥ ४४ ॥ उत्पतंतंपुनःसिंहंचर्वयंतंतनुंबलात् ॥ तताडमुष्टिनातंवैमित्रविंदात्मजोबली ॥ ४५ ॥ तस्यमुष्टिप्रहारेणकेसरीपंचतांगतः ॥ तदाक्रुद्धोहृष्टदैत्यःशूलंचिक्षेपसत्वरम् ॥ ४६ ॥ शूलंस्फुरन्महोल्काभंचिच्छेदत्वसिनावृकः ॥ तीक्ष्णयातुंडयाराजन्फणिनंगरुडोयथा ॥ ४७ ॥ हृष्टोपिस्वमसिंनीत्वा नादयन्स्वंमहाबलम् ॥ जघानतंवृकंमूर्ध्निकंपयन्वसुधातलम् ॥ ४८ ॥ खड्गकोशेततःखड्गमुपधार्यवृकोबली ॥ कंधरेस्वेनखड्गेनतंतताडस्फुरच्छुचम् ॥ ४९ ॥ खड्गच्छिन्नंशिरस्तस्यदैत्यस्यपतितंभुवि ॥ रेजेकमंडलुमिवसकिरीटंसकुंडलम् ॥ ५० ॥ हृष्टेमृतेतद्दैत्याःशेषाःसर्वेपलायिताः ॥ भयातुरामहाराजययुश्चन्द्रावतींपुरीम् ॥ ५१ ॥ देवदुंदुभयोनेदुर्नरदुंदुभयस्तदा ॥ श्रीवृकस्योपरिसुराःपुष्पवर्षंप्रचक्रिरे ॥ ५२ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खंडेनारदबहुलाश्वसंवादेहृष्टदैत्यवधोनामद्वात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३२ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ हृष्टंनिपतितंश्रुत्वाशकुनिःक्रोधमूर्च्छितः ॥ भ्रातॄन्संप्रेषयामासदेवानांभयकारकान् ॥ १ ॥ भूतसंतापनंनामगजमारुह्यनिर्गतः ॥ वृकःखरंसमारुह्यकालनाभोथसूकरम् ॥ २ ॥ महानाभोमत्तपुष्टं हरिश्मश्रुस्तिमिंगिलम् ॥ वैजयंतंरथंजैत्रंमयदैत्यविनिर्मितम् ॥ ३ ॥

मारत भयो ॥ ४९ ॥ तबही खड्गते कटिके दैत्यको शिर पृथ्वीमें आयपरयो किरीट कुण्डल सुद्धा वो शिर कमण्डलुसो शोभित भयो ॥ ५० ॥ दुष्टके मरपे हे महाराज ! सबरे दैत्य भयके मारे भाजिके चन्द्रावतीपुरीकूं चलेगये ॥ ५१ ॥ तब देवतानके और मनुष्यनके नगाड़े बजनलगे और वृकके ऊपर देवता पुष्पनकी वर्षा करनलगे ॥ ५२ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खण्डे भाषाटीकायां हृष्टदैत्यवधोनामद्वात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३२ ॥ नारदजी कहेहैं–हृष्टकूं मरयो सुनिके शकुनी क्रोधते मूर्च्छा खाय देवतानकूं भय करजहारे भैयानकूं भेजतोभयो ॥ १ ॥ तब भूतसन्तापन नाम दैत्य हाथीपै चढ़िके निकस्यौ वृक दैत्य गधापै चढ़िके और कालनाभ दैत्य सूअरपै चढ़िके निकस्यौ ॥ २ ॥ महानाभ नाम दैत्य हो सो मत्त पुष्ट हाथीपै बैठके निकसो और हरिश्मश्रु दैत्य मगरपै बैजयंत दैत्य रथपै मयदैत्यके रथपै चढ़िके आयेहैं ॥ ३ ॥

हजार घोडा जामें लगे पांच योजनको जाको विस्तार सौ पताका जामें लगी मायामय है इच्छापूर्वक चले है ॥ ४ ॥ हजार कलशा जामें मोतीनकी माला करके शोभित रत्नके भूषणन करके भूषित सो चन्द्रमासो उज्ज्वल ॥ ५ ॥ जामें हजार पैया लगे बहुतसे घंटा जामें तापे चढिके शकुनी लडिबेकी कामनासों पीछेसों आयो है ॥ ६ ॥ हे मैथिलेश्वर! दैत्यनकी बारह अक्षौहिणी फौज लेके आयो धनुषनकी टंकार, हाथीनकी चिकार, घोडनकी हीसन, रथनको खनखनाटके शब्द होते आमेहें ॥ ७ ॥ हाथीनकी चिकारनते दिशा झंकारती चली आमेहें ऐसे दैत्यनकी सेनाते भूमंडल कांपनलग्यो ॥ ८ ॥ अनेक पर्वत जायपरे, समुद्र चलायमान हैगये और हे नृप! देवतानने अमरावती पुरीमें अगरेणा डारिदीये ॥ ९ ॥ वा भयंकर सेनाकूं देखिके प्रद्युम्न धनुषधारीनमें श्रेष्ठ बडो बली धर्मधारी मुख्य यादवनते यह बोले ॥ १० ॥ यह शरीर पंच

पंचयोजनविस्तीर्णसहस्राश्वनियोजितम् ॥ मायामयंकामगंचपताकाशतसंवृतम् ॥ ४ ॥ सहस्रकलशाढ्यंचमुक्तादामविलंबितम् ॥ रत्नभूषणभूषाढ्यंशतचंद्रसमुज्ज्वलम् ॥ ५ ॥ सहस्रचक्रसंयुक्तंघंटाकारविभूषणम् ॥ आरुह्यशकुनिःपश्चाद्योद्धुकामोविनिर्ययौ ॥ ६ ॥ अक्षौहिणीभिर्द्वादशभिर्दैत्यानांमैथिलेश्वर ॥ धनुःस्वनैर्वीरशब्दैरश्वह्रेषारथस्वनैः ॥ ७ ॥ चीत्कारैर्हस्तिनामाशामंडलंतुजगर्जह ॥ दैत्यसेनाप्रयाणेनचकंपेमंडलंभुवः ॥ ८ ॥ निपेतुर्गिरयोनेकाविचेलुःसिंधवोनृप ॥ निपातितार्गलादेवैर्बभूवास्वमरावती ॥ ९ ॥ तत्सैन्यंभीषणंदृष्ट्वाप्रद्युम्नोधन्विनांवरः ॥ बलीधैर्यकरःकार्ष्णिःप्राहेदंयदुपुंगवान् ॥ १० ॥ ॥ प्रद्युम्नउवाच ॥ ॥ इदंशरीरंखुविपांचभौतिकंफेनोपमंकर्मगुणादिनिर्मितम् ॥ गतागतंकालवशंकदापिहिबुधानशोचंतियथार्भकैःकृतम् ॥ ११ ॥ गच्छंतिचोर्ध्वंकिलसात्त्विकाजनामध्येचतिष्ठंतिहिराजसानराः ॥ अधःप्रगच्छंतिहितामसाःपरेमुहुर्मुहुस्तेविचरंतिकर्मभिः ॥ १२ ॥ बिभेत्ययंवाकिलसर्वतोयथानेत्रभ्रमेणाचलतीवभूर्यथा ॥ तथाचसर्वंमनसाकृतंजगत्काचेभकंह्यर्भकआवृतोयथा ॥ १३ ॥ यथासुखंमण्डलवर्तिनांचलंतथास्तिपातालनिवासिनामपि ॥ तथामराणांक्रतुभिःकृतंस्मरेत्सर्वंत्यजेत्तत्तृणवत्परोजनः ॥ १४ ॥ ऋतोर्गुणादेहगुणाःस्वभावाअहर्दिनंयांतियथातथाजनाः ॥ दृश्यंचयद्यत्रहिकिंचिदस्तितद्यथात्रजेगच्छतिपांथसंगमम् ॥ १५ ॥

भूतको बनो है जलके फेनके समान है कर्म और गुणादिकसो निर्मित है सो ये सब कालके वश है यासो आनो जानो है ये जगत् बालककोसो खेल है याहीसो बुद्धिमान् मनुष्य शोच नही करेंहें ॥ ११ ॥ सत्त्वगुणी तो स्वर्गकूं जायहै, रजोगुणी बीचमें रहेंहें तमोगुणी पातालकूं जायहें ऐसे बारंबार कर्मनते विचरेंहें ॥ १२ ॥ जैसे नेत्रके घूम भरवेसो धरती घूमती दीखेहै तैसेही मनको कियो ये सब जगत् है और सब ओरते याकूं भय है सो ये भयभीत रहेहै पर करेंहै जैसे बालक काचमें अपनेही रूपते भ्रमेंहै ॥ १३ ॥ जैसे मण्डलवर्ती राजानको सुख चलायमान है तैसेही पातालवासीनको है तैसेही यज्ञादिकको कीनो स्वर्गको सुख स्वर्गवासीनको है जाकूं परमजन तृणकी नाई त्याग देयहे ॥ १४ ॥ जैसे ऋतुके और गुण देहके गुण अमित है नित्य आमें जायें हैं तैसेही जन आमें जायें है रस्ताको सो संग है जितनो कछु दृश्य है सो सब है नहीं

वो सब मिथ्याही है वास्तवमें ॥ १५ ॥ जो वस्तु देखैंहै वो सब बिजलीकी तरह क्षणिक है और पर भगवान् प्राप्तभयेसंते तो दोनों लोकते कहा प्रयोजन है कल्याणके मार्गकूं बनायके विचरै सर्वत्र हरिकूं देखे ॥ १६ ॥ जैसे बोहोत जलके वढानमें एकही चंद्रमा अनेकरूप दीखै है तैसेई भगवान् अपने बनाये देहनमें एक भगवान् अनेक रूप दीखैहै जैसे एक अग्नि सौ ऊपरानमें सौ रूपसौ दीखैहै ऐसेही परमात्मा भगवान् अपने बनाये देहधारीनमें एक रूप हैं पन अनेकरूपसौ सबके बाहिर भीतर दीखैहै ॥ १७ ॥ जो ज्ञाननिष्ठ है वैराग्ययुक्त है कृष्णको भक्त है और जाको चाहना नहीं है वो चाहे तपोवनमें प्राप्त भयो होय अथवा वनही घर जाके होय वाकूं तीनों गुण स्पर्श नही करैहै ॥ १८ ॥ ताते यती जो सन्यासी है सो परात्पर जो ब्रह्म ताहि प्राप्त होयहै सदा आनंदमय सुखरूप बालककी नाईं रहैहै सब कारणकूं देहते देखेंक है,

दृष्टंयथावस्तुयदोल्कयातथापरेगतेकिंह्युभयप्रयोजने ॥ विधायमार्गंविचरेच्छिवस्यतंपश्यन्हिसर्वत्रहरिंपरेश्वरम् ॥ १६ ॥ यथैंदुरेको जलपात्रवृन्दगोयथाग्निरेकोविदितःसमिद्धये ॥ तथापरात्माभगवाननेकवत्सोंतर्बहिःस्यात्सुकृतेषुदेहिषु ॥ १७ ॥ योज्ञाननिष्ठोति विरागमाश्रितःश्रीकृष्णभक्तस्त्वनपेक्षकोपियः ॥ तपोवनंवापिगृहंगृहंवनंस्पृशंतिनंतंत्रिगुणानसर्वतः ॥ १८ ॥ ततोयतिस्त्वध्यगमत्परात्परं सुखीसदानन्दमयस्तुबालवत् ॥ देहेनपश्यत्युतसर्वकारणंधृतंचवासोमदिरामदांधवत् ॥ १९ ॥ सूर्योदयेसर्वतमोविलीयतेप्रदृश्यतेवस्तुगृहे यथाजनैः ॥ ज्ञानोदयेऽज्ञानतमःपलायतेसंभ्राजतेब्रह्मपरंतनौतथा ॥ २० ॥ यथेंद्रियाणांचपृथक्चवर्त्मभिर्नौलीयतेर्थस्त्रिगुणाश्रयःपरः ॥ एकंब्रह्मनंतस्यपरस्यधामतत्तथामुनीनांकिलशास्त्रवर्त्मभिः॥ २१ ॥ परंपदंकेपिवदंतिवैष्णवंकेवापिवैकुण्ठपरंपरेशम् ॥ शांतिंचयत्केपितमःपरंबृहत्कैवल्यमेकेप्रवदन्तिधामके ॥२२॥ यदक्षरंकेपिदिशंवदंतिकेगोलोकमाद्यंप्रवदंत्यथापरे ॥ केचिन्निकुंजंनिजलीलयावृतंप्राप्नोतिकृष्णस्यपदंच तन्मुनिः ॥ २३ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इतिकार्ष्णेर्वचःश्रुत्वासर्वेयादवपुंगवाः ॥ शस्त्राणिजगृहुर्हृष्टातज्ज्ञानेधैर्यवर्द्धने ॥ २४ ॥

पन मदिरा मदांधकी नाईं वाकूं अपने देहकी खबर नही रहैहै जैसे मत्त मनुष्यनको अपने वस्त्रकी खबर नहीं होयहै ॥ १९ ॥ सूर्योदयपै जैसे अंधकार निवृत्त होवैसो घरकी वस्तु सब जननकूं दीखे हैं तैसेई ज्ञानके उदयपै अज्ञान अंधकारके नाश भयेपै ब्रह्मको प्रकाश होयहै ॥ २० ॥ जैसे इंद्रीनके न्यारे न्यारे ज्ञानकरि त्रिगुणाश्रय जो अर्थ है सो न्यारो न्यारो दीखै है हाथते तातो सीरो, जीभते खट्टो मीठो, नेत्रते कारो पीरो, नाकते गंध दुर्गंध, तैसेई मुनिनके मार्गते एक ब्रह्म अनेक तरहते कह्यो जायहै ॥ २१ ॥ कोई तो वैष्णव परंपद कहै है, कोई वैकुंठ, कहैहै, कोई शांतस्वरूप कहै हैं, कोई मायाते परे ब्रह्म कहै हैं, कोई कैवल्यधाम कहै है ॥ २२ ॥ कोई अक्षर, कोई आद्य, कोई निकुंजलीलावृत गोलोकवासी, कोई कृष्ण कहै हैं, वाही पदको मुनि प्राप्त होयहै ॥ २३ ॥ नारदजी कहैहैं—ऐसे कृष्णके बेटा प्रद्युम्नको वचन सुनि धैर्यको बढावनवारो ज्ञान सुनिके सबरे यादव

नमें श्रेष्ठ प्रसन्न हैके शस्त्र ग्रहण करतेभये ॥ २४ ॥ तब दैत्यनको और यादवनको भयंकर युद्ध होतोभयो सीतागंगाके किनारेपै जैसो कि, बंदरनको और राक्षसनको समुद्रके तटपै लंकामें युद्ध भयोहो ॥ २५ ॥ समुद्रके किनारेपै रथीते रथी, सवारते सवार, प्यादेते प्यादे, हाथींते हाथी, युद्ध करतेभये ॥ २६ ॥ कोई उन्मत्त हाथी महावतनके प्रेरेभये मेघडंबरसो छूटे पर्वतसे दीखनलगे ॥ २७ ॥ सूंडनते पकरके फुंकारनते, चिकारनते, सांकरनते रथ, घोडा, वीर, प्यादेनकूं रणमें पटकतेभये ॥ २८ ॥ सूंडनते रथनकूं घोडानकूं वा रथीनकूं पकरिके पृथ्वीमें मारके फिर बलते उने उठायके आकाशमें फेंकतेभये ॥ २९ ॥ और हे राजन् ! घायल हैगये बहुतसे हाथी रणांगणते भागते कोई कोईनके सूंडनते चीरके पावनसों हाथी रथ घोडानकूं मर्दन करतेभये ॥ ३० ॥ और हे राजन् ! उडने घोडा सवारनके प्रेरेभये रथनकूं फांदि फांदिके हाथीनके माथेपै चढेहे ॥ ३१ ॥ कोई

बभूवतुमुलंयुद्धंदैत्यानांयदुभिःसह ॥ सीतागंगातटेचाब्धौरक्षसांकपिभिर्यथा ॥ २५ ॥ रथिनोरथिभिस्तत्रपत्तिभिःपत्तयोनृप ॥ अश्ववाहैर श्ववाहायुयुधुश्चगजागजैः ॥ २६ ॥ केचित्करींद्राउन्मत्तामहामात्यैःप्रणोदिताः ॥ गिरींद्राइवदृश्यंतेमुक्तानांमेघडंबरैः ॥ २७ ॥ शुण्डादण्डैश्च फूत्कारैःसचीत्कारैःसशृंखलैः ॥ पातयंतोरथानश्वान्वीरान्राजन्रणांगणे ॥२८॥ शुण्डादण्डैःसंगृहीत्वारथान्साश्वान्ससारथीन् ॥ निपात्यभू मावुत्थाप्यचिक्षिपुश्चांबरेबलात् ॥२९॥ कांश्चिन्ममर्दुःपादाभ्यांसंविदार्यकरैर्दृढैः ॥ सक्षताश्चगजाराजन्प्रधावंतोरणांगणे ॥३०॥ सपक्षास्तुर गाराजन्नश्ववाहप्रणोदिताः ॥ उल्लंघयन्तोऽथरथान्गजकुंभांतरेगताः ॥ ३१ ॥ केचिदश्वैर्महावीराःशक्तिहस्तामदोत्कटाः ॥ जघ्नुर्गजस्था न्नृपतीन्मृगेन्द्रानथयूथपान् ॥ ३२ ॥ अश्वारूढाःकेपिसेनांसंविदार्य्यविनिर्गताः ॥ खड्गवेगैःपद्मवनंलीलाभिर्वायवोयथा ॥ ३३ ॥ केचि त्परस्परंसाश्वैरुत्पततोरणांगणे ॥ खड्गैर्जघ्नुर्यथाकव्येचंचुभिःपक्षिणोंबरे ॥ ३४ ॥ केचित्खड्गैःपरशुभिःकेचिच्चक्रैःपदातयः ॥ चिच्छिदु र्निशितैर्भल्लैः फलानीवशिरांसिच ॥ ३५ ॥ संग्रामजिद्बृहत्सेनःशूरःप्रहरणोविजित् ॥ जयःसुभद्रोवामश्चसत्यकोश्वयुरेवहि ॥ ३६ ॥ भद्रा याश्चसुताह्येतेश्रीकृष्णस्यौरसाःशुभाः ॥ सर्वेषामग्रतःप्राप्तायुयुधुर्दैत्यपुंगवैः ॥ ३७ ॥ भूतसंतापनोनामगजारूढोमहासुरः ॥ यदुसैन्येमहारा जचक्रेनाराचदुर्दिनम् ॥ ३८ ॥ बाणांधकारेचकृतेभूतसंतापनेनवै ॥ संग्रामजित्तदाप्राप्तःश्रीकृष्णस्यसुतोबली ॥ ३९ ॥

कोई महावीर मदसो उत्कट घोडानके सवार बरछीनको हाथनमें लिये हाथीनपे बैठे राजानकूं मारतभये जैसे सिंह किरणनको और हाथीनकूं मारेहे ॥ ३२ ॥ घोडाके सवार खड्गके वेगते सेनाकूं काटत काटत बाहिर निकरि आमेंहें जैसे पवन कमलवनकूं ॥ ३३ ॥ कोई आपुसमें घोडानसमेत उछरि उछरिके खड्गनते वा रणांगणमें मारेहें मांसको आकाशमें चोचनसो पखेरू जैसे ॥ ३४ ॥ कोई कोई प्यादे खड्गनते, फरसानते, चक्रनते पैने भालेनते फलकी नाई शिरनकूं काटेहे ॥ ३५ ॥ अब दश कृष्णके औरस भद्राके बेटा सबते आगे दैत्यनते लडिवेकूं आये संग्रामजित, बृहत्सेन, शूर, प्रहरण, विजित, जय, सुभद्र, वाम, सत्यक, अश्वयु वे बडे बडे दैत्यनते लडतेभये ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ तब भूतसंतापन नाम दैत्य हाथीपै चढिके आयो सो याने हे महाराज ! महाबलीने यादवनकी सेनामें बाणनते दुर्दिन करिदीनो ॥ ३८ ॥ ऐसे जब भूतसंतापनने बाणनको अंधकार करदियो

तब श्रीकृष्णको बेटा बली संग्रामजित् प्राप्त होतभयो ॥ ३९ ॥ तब रणके विषे संग्रामजित्ने सौ बाण भूतसंतापनके मारे जाकी प्रत्यंचाको शब्द कैसो है जैसो प्रलयको समुद्र गर्जै है ॥ ४० ॥ तब बली भूतसंतापनने संग्रामजित्की प्रत्यंचा काटिडारी तब संग्रामजित्ने और धनुष लैलीनो जाकी बिजुरीकीसी प्रभा है ॥ ४१ ॥ विधानते चढायके सौ बाण जोरे वे बाण जो चले ते वाकी प्रत्यंचा और लोहमय कवचकूं ॥ ४२ ॥ भेदिके छेदिके हाथीकूं भेदिके भूतसन्तापनके शरीरकूं छेदिके पृथ्वीमें चलेगये बाणनके प्रहारते कछू व्याकुल हैगये ॥ ४३ ॥ भूतसंतापननें अपनो हाथी पेल्यो कालांतकके समान हाथीकूं देखि बली जो संग्रामजित् है तानें ॥ ४४ ॥ रणांगणमें अपनी पैनी तरवार जो मारी वा खड्गके प्रहारते हाथीकी सूंडके द्वै टूक हैगये ॥ ४५ ॥

विव्याधबाणशतकैर्भूतसंतापनंरणे ॥ प्रलयार्णवसंक्षोभभीमसंघट्टनादिनीम् ॥ ४० ॥ धनुर्ज्यांतस्यचिच्छेदभूतसंतापनोबली ॥ संग्रामजिद्धनुश्चान्यद्गृहीत्वास्वंतडित्प्रभम् ॥ ४१ ॥ सज्यंकृत्वाविधानेनशतंबाणान्समादधे ॥ तेबाणास्तद्धनुर्ज्यांचकवचंलोहनिर्मितम् ॥ ४२ ॥ भित्त्वाछित्त्वातनुंतस्यगजंभित्त्वावनिंगताः ॥ बाणप्रहारव्यथितःकिंचिद्व्याकुलमानसः ॥ ४३ ॥ गजंस्वंनोदयामासभूतसंतापनोबली ॥ कालांतकसमंनागंदृष्ट्वासंग्रामजिद्बली ॥ ४४ ॥ गृहीत्वास्वमसिंदिव्यंसंजघानरणांगणे ॥ तस्यखड्गप्रहारेणशुंडादंडोद्विधाभवत् ॥ ४५ ॥ चीत्कारमुत्कटंकुर्वन्मदंसंस्रावयन्कटात् ॥ भूतसंतापनंत्यक्त्वाभुवनंकंपयन्गजः ॥ ४६ ॥ निपातयन्महावीरान्घंटानादैर्नदन्मुहुः ॥ नबलात्स्तंभितोदैत्यःपुरींचंद्रावतींययौ ॥ ४७ ॥ कोलाहलोमहानासीद्गजन्नेवंगजेच्युते ॥ भूतसंतापनश्चक्रंश्रीकृष्णस्यसुतायवै ॥ ४८ ॥ चिक्षेपनिशितंशीघ्रंग्रीष्ममार्तंडवत्स्फुरत् ॥ तदागतंप्रमहद्दृष्ट्वाचक्रंभद्रात्मजोबली ॥ ४९ ॥ स्वचक्रेणमहाराजलीलयाशतधाच्छिनत् ॥ जठरस्यगिरेःशृंगंसमुत्पाट्यमहासुरः ॥ ५० ॥ चिक्षेपकृष्णपुत्रायनादयन्व्योममंडलम् ॥ संग्रामजिच्चतच्छृंगंगृहीत्वाभुजयोर्बलात् ॥ ५१ ॥ तताडतेनराजेंद्रभूतसंतापनंरणे ॥ भूतसंतापनोदैत्यःसंपूर्णजठरंगिरिम् ॥ ५२ ॥ गृहीत्वासंगरेतस्थावुद्भटोदैत्यपुंगवः ॥ अनेनघातयिष्यामित्वांरणेप्रवदन्मुखात् ॥ ५३ ॥

तब उत्कट चिकारी मारतो, माथेते मद गेरतो, भूतसंतापनकूं छोडि भुवनकूं कँपावत ये हाथी ॥ ४६ ॥ बडे बडे वीरनकूं पटकत, घंटानादनते नदत, दैत्यनने बहुत रोक्योहू परन्तु रुक्यो नहीं चन्द्रावतीपुरीकूं चल्योगयो ॥ ४७ ॥ जो हाथी छूट्यो सोई बडो कोलाहल भयो तब भूतसन्तापनने कृष्णके बेटाके ऊपर बडो पैनो चक्र फेंक्यो ॥ ४८ ॥ वो बडो पैनो ग्रीष्म ऋतुकोसो सूर्यचक्र भ्रमतभयो, आयेकोकूं देखि बली जो भद्राको बेटा है सो ॥ ४९ ॥ अपने चक्रते सहजमेंही सौ टूक करिके गेरदेतभयो तब वह महा असुर जठर पर्वतको शिखर उखार ॥ ५० ॥ आकाशमण्डलकूं बजावत संग्रामजित्के ऊपर फेंकतभयो संग्रामजित्नें दोनों भुजानतें पकरिकें ॥ ५१ ॥ वही पर्वत भूतसन्तापनके मसकें मार्‍यो रणमें, फिर भूतसन्तापन सबरे जठरपर्वतकूं उखाडकें ॥ ५२ ॥ संग्राममें ठाडो भयो और यह बोल्यो, या रणमें मैं तोहि या पर्वतके मारे मारिडारूंगो ॥ ५३ ॥

तब संग्रामजित् चली देवकूट पर्वतकूं उखाड यह कहतोभयो कि, याते मैं तोहि मारडारूंगो ये कहिके ॥ ५४ ॥ वाके सन्मुख ठाडो भयो तब बड़ो अचंभो भयो जब भूतसन्तापन पर्वत फैंकनलग्यो ॥ ५५ ॥ तबही संग्रामजितनें अपनों पर्वत फैंक्यो तब जठर और देवकूट दोनों पर्वत दैत्यके मस्तकपै परे ॥ ५६ ॥ दोनों पर्वत बडे बोझते बीजुरीसे तडतडायकें परे ॥ ५७ ॥ हे विदेहराज ! तिन दोनों पर्वतनके मारे भूतसन्तापन मरिके जायपरचो ताकी ज्योति हे विदेहराज ! संग्रामजितके विषे लीन हैगई ॥ ५८ ॥ तब संग्रामजितकी सेनामें नगाडे बजनलगे, भद्राके बेटाके ऊपर देवता पुष्पनकी वर्षा करतेभये ॥ ५९ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटीकायां भूतसंतापनदैत्यवधो, नाम त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३३ ॥ नारदजी कहैंहें–हे मैथिल ! संग्रामजितके युद्धमें जब भूतसंतापन मरिगयो तब हे मिथिलेश ! दैत्यसेनामें बडो हाहाकार मच्यो ॥ १ ॥ फिर शकुनि,

देवकूटंसमुत्पाट्यगिरिंचश्रीहरेःसुतः ॥ अनेनघातयिष्यामित्वांरणेप्रवदन्मुखात् ॥ ५४ ॥ तस्थौतत्संमुखेराजंस्तदद्भुतमिवाभवत् ॥ क्षिपंतं पर्वतंदैत्यंभूतसंतापनंनृप ॥ ५५ ॥ तताडगिरिणास्वेनरणेसंग्रामजिद्बली ॥ जठरोदेवकूटश्चद्वौगिरीदैत्यमस्तके ॥५६॥ पतितौभूरिभाराढ्यौ वज्रसंघर्षनादिनौ ॥ ५७ ॥ भूतसंतापनस्ताभ्यांपतितःपंचतांगतः ॥ तज्ज्योतिःसंग्रामजितिलीनंजातंविदेहराट् ॥ ५८ ॥ श्रीसंग्रामजितः सैन्येनेदुर्दुंदुभयस्तदा ॥ भद्रात्मजोपरिसुराःपुष्पवर्षंप्रचक्रिरे ॥ ५९ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खंडेनारदबहुलाश्वसंवादेभूतसन्तापनदैत्यवधोनामत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३३ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ संग्रामजिन्महायुद्धेभूतसंतापनेमृते ॥ हाहाकारोमहानासीद्दैत्यसेनासुमैथिल ॥ १ ॥ शकुनिर्वृकःकालनाभोमहानाभस्तथैवच ॥ हरिश्मश्रुश्चपंचैतेसंप्राप्तारणमंडले ॥ २ ॥ कार्ष्णिःशकुनिनायुद्धंचदनिरुद्धोवृकेणवै ॥ कालनाभेनसांबस्तुमहानाभेनदीप्तिमान् ॥ ३ ॥ हरिश्मश्रुसुरेणापिभानुःकृष्णसुतोबली ॥ सर्वेषामग्रतःप्राप्तोऽनिरुद्धोधन्विनांवरः ॥ ४ ॥ विभेदबाणैर्दैत्यांश्चवज्रेणेंद्रोयथागिरीन् ॥ अनिरुद्धशरैर्दैत्याश्छिन्नपादांसजानवः ॥ ५ ॥ निपेतुर्मूर्च्छिताभूमौवृक्षावातहताइव ॥ अनिरुद्धशरैस्तीक्ष्णैःसंच्छिन्नामेचडंबराः ॥ ६ ॥ छिन्नकुंभाभिन्नशुंडाःपतितारणमंडले ॥ रुग्णदंताश्छिन्नकक्षाःशैलावज्रहताइव ॥ ७ ॥

वृक, कालनाभ, महानाभ और हरिश्मश्रु ये पांचो रणमंडलमें आये ॥ २ ॥ तब प्रद्युम्नको और शकुनिको, वृकको और अनिरुद्धको युद्ध भयो, कालनाभको और सांबको महानाभको और दीप्तिमानको द्वंद्वयुद्ध होतोभयो ॥ ३ ॥ ऐसेही हरिश्मश्रुको और भानुको युद्ध भयो, सबते पहले धनुषधारीनमें श्रेष्ठ अनिरुद्ध आये ॥ ४ ॥ बाणनते दैत्यनकूं भेदनलगे वज्रते इंद्र जैसे पर्वतनकूं भेदेहैं तब अनिरुद्धके बाणनते कटे हे पावँ, कंधा, जानु जिनके ऐसे दैत्य हैगये ॥ ५ ॥ मूर्च्छित हैकें पृथ्वीमें जायपरे पवनके मारे वृक्ष जैसे, अनिरुद्धके बाणनते मेघसे वे हाथी ॥ ६ ॥ छिन्न भयेहैं कुंभ, सूंड जिनके टूटेहैं दाँत जिनके कटगई झूल, अंबारी जिनकी ऐसे वे जायपरे जैसे वज्रके मारे पर्वत ॥ ७ ॥

द्वै द्वै टूक ह्वैकें हाथी जायपरे जिनकी बनात झलक रहीहैं, कटे कुम्भनमेंते बिखरे जो मोती वे ऐसे झलकन लगे ॥ ८ ॥ या बाणनके अन्धकारमें जैसे रात्रिमें आकाशमें तारे चमकें, कितनेई वीर अनिरुद्धके बाणनतें धर्षित ह्वैगये ॥ ९ ॥ मूर्च्छित ह्वैकें जायपरे तब बडौ अचंभौ भयो और कितनेई रथी धरतीमें गिरे रथ उनके ऐसे रीतें रहिगये ॥ १० ॥ जैसे हाथीके पेटमें गये कैथके फल । हे राजेन्द्र ! रीते रहिजायहैं तब एक क्षणमात्रमेंही दैत्यनकी सेनाके विषें ॥११॥ संग्राममें रुधिरकी नदी बड़ी भयंकर बही है द्विप (हाथी) तो जामें ग्राह, ऊंट, खिचर, घडमुख, कवन्धादि जिनमे कछुआ है ॥ १२ ॥ शिशुमार रथ जामें, जामें, केश सिवार, भुजा हैं सर्प जामें, कटे हाथ हैं मीन (मछरी) जामें, मुकुट, हार, कुंडल वेही हैं कंकर, पत्थर जामें ॥ १३ ॥ शस्त्र, शक्ति, छत्र, शंख, चमर, ध्वजा वेही हैं बारू जामें रथनके पैया वेही भ्रमर जामें, दोनों सेनाहीहैं तट जामें सो वो संग्रामनदी ॥ १४ ॥ सौ योजनकी

द्विधाभूतागजाःपेतुःस्फुरत्काश्मीरकंबलाः ॥ करीणांभिन्नकुंभानांमुक्तारेजुःस्फुरत्प्रभाः ॥ ८ ॥ बाणांधकारेराजेंद्ररात्रौतारागणाइव ॥ प्रधर्षिताःकेपिवीराअनिरुद्धशराग्निताः ॥ ९ ॥ निपेतुर्मूर्च्छिताभूमौतदद्भुतमिवाभवत् ॥ केचित्कोरथिनःपेतुस्तेषांशून्यारथाःस्थिताः ॥ ॥ १० ॥ कपित्थस्यफलानीवहस्तिकोष्ठगतानिच ॥ क्षणमात्रेणराजेंद्रदैत्यानांवाहिनीषुच ॥ ११ ॥ नदीबभूवसंग्रामेभीपणाक्षतजस्रवात् ॥ द्विपग्राहाचोष्ट्रखरकबंधास्यादिकच्छपा ॥ १२ ॥ शिशुमाररथाकेशशैवालाभुजसर्पिणी ॥ करमीनामौलिरत्नहारकुंडलशर्करा ॥ ॥ १३ ॥ शस्त्रशक्तिच्छत्रशंखचामरध्वजसैकता ॥ रथांगावर्तसंयुक्तासेनाद्वयतटावृता ॥ १४ ॥ शतयोजनविस्तीर्णाबभौवैतरणीयथा ॥ प्रमथाभैरवाभूतावेतालायोगिनींगणाः ॥ १५ ॥ अट्टहासंप्रकुर्वंतोनृत्यंतोरणमंडले ॥ पिबंतोरुधिरंशश्वत्कपालेननृपेश्वर ॥ १६ ॥ हरस्यमुंडमालार्थंजगृहुस्तेशिरांसिच ॥ सिंहारूढाभद्रकालीडाकिनीशतसंवृता ॥ १७ ॥ भक्षयंतीरणेदैत्यानट्टहासंचकारह ॥ विद्याधर्योविमानस्थागंधर्व्योप्सरसस्तथा ॥ १८ ॥ क्षत्रधर्मस्थितान्वीरान्वव्रिरेदेवरूपिणः ॥ परस्परंकलिर्भूत्वातासांपत्यर्थमंबरे ॥ १९ ॥ ममानुरूपोनायंवइतिविह्वलचेतसाम् ॥ केचिद्वीराधर्मपरारणरंगान्नचालिताः ॥ २० ॥ ययुर्विष्णुप्रदंदिव्यंभित्त्वामार्तंडमंडलम् ॥ अनिरुद्धंरिपुंदृष्ट्वा केचिद्दैत्याःपलायिताः ॥ २१ ॥

लम्बी वैतरणी नदी जैसी होय तैसी होतीभई प्रमथ, भैरव, भूत, बेताल, योगिनीनके गण ॥ १५ ॥ वे अट्टहास करते नाचते रणमण्डलमें निरन्तर रुधिरको खोपडीनमें भरिभरिकें पीवते हे नृपेश्वर । ॥ १६ ॥ शिवकी मुण्डमालाकूं शिरनको ग्रहण करेहैं, सिंहपै चढी भद्रकाली सैंकरन डाकिनी जाके संग ॥ १७ ॥ सो रणमंडलमें दैत्यनकूं भक्षण करती अट्टहास करेहै और विमाननपै बैठी विद्याधरी, गन्धर्वी अप्सरा हैं ॥ १८ ॥ वो क्षत्रीनके धर्ममें स्थित देवरूप भये जे वीर हैं तिनकूं वरेंहैं और वरवेके लिये आपसमें कलह करेंहैं ॥ १९ ॥ कि, यह तो तेरे अनुरूप नहीं है मेरे अनुरूप है ऐसे विह्वल चित्त जिनके, कोईकोई वीर धर्मपर रणरंगते जे नहीं चलायमान भये ॥ २० ॥ वे दिव्य सूर्यमण्डलकूं

भेदिके विष्णुपदकूं प्राप्त हैगये, अनिरुद्ध वैरीकूं देखिकें कितनेहू दैत्य भाजिगये ॥ २१ ॥ कोई अपने रणहूं छोड़ि दशों दिशानमें भाजिगये तब वृक नाम महादैत्य भयंकर गधापे चढ्यो गर्जतो आवतोभयो ॥ २२ ॥ युद्धके विषें धनुषकूं टंकारत वारंवार अनिरुद्धकी शिंजिनी सहित धनुषकूं दश बाणनते वृक काटतोभयो ॥ २३ ॥ ये रणमें दुर्मद है, जब अनिरुद्धको धनुष कटिगयो तब और धनुष लेतोभयो ॥ २४ ॥ महाबली अनिरुद्ध दश बाणनते वृकके धनुषकूं काटतभयो, कोपकरिके फड़कतहैं होठ जाके सो वृक त्रिशूल उठायके ठाडो भयो ॥ २५ ॥ लपलपायरहीहै जीभ जाकी सो धनुषधारीनमें श्रेष्ठ वृक अनिरुद्धते ये बोलो कि, मैं क्षत्रीकूं स्वस्थविक्रमकूं तोकों अबही मारूँगो तैंने मेरी सेना मारी है अब मेरो विक्रम पराक्रम देखि ॥ २६ ॥ तब अनिरुद्ध बोले, मैं बकवाद मुखसे करेंहैं ते कछु नहीं करेंहैं अबहीं, तोकूं मारूंगो मेरो परम पराक्रम देखि

केचित्स्वंस्वंरणंत्यक्त्वादुद्रुवुस्तेदिशोदश ॥ तदावृकोमहादैत्यःखरारूढोभयंकरः ॥ २२ ॥ आजगामनदन्युद्धेधनुष्टंकारयन्मुहुः ॥ अनिरुद्धस्यापिचापंशिंजिनीसहितंधनुः ॥ २३ ॥ चिच्छेददशभिर्बाणैर्वृकोपिरणदुर्मदः ॥ छिन्नधन्वानिरुद्धस्तुद्वितीयंधनुराददे ॥ २४ ॥ चिच्छेददशभिर्बाणैर्वृकचापंमहाबलः ॥ वृकस्त्रिशूलमुद्यम्यरुषाप्रस्फुरिताधरः ॥ २५ ॥ ललज्जिह्वःप्रत्युवाचानिरुद्धंधन्विनांवरम् ॥ ॥ दैत्यउवाच ॥ ॥ अद्यैवत्वांहनिष्यामिक्षत्रियंस्वस्थविक्रमम् ॥ त्वयासेनाहतामेद्यपश्यविक्रममद्भुतम् ॥ २६ ॥ ॥ अनिरुद्धउवाच ॥ ॥ येवदंतिमुखेनेहतेकुर्वंतिनकिंचन ॥ अद्यैवत्वांहनिष्यामिपश्यमेविक्रमंपरम् ॥ २७ ॥ नचेत्त्वांघातयिष्यामिशृणुताच्छपथंमम ॥ विप्रगोभ्रूणबालानांहत्यामेस्यात्सदैवहि ॥ २८ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ वृकोपिशपथंकृत्वाखरारूढोमहाखलः ॥ जघानतंत्रिशूलेनानिरुद्धंधन्विनांवरम् ॥ २९ ॥ तच्छूलंवामहस्तेनगृहीत्वाकार्ष्णिनंदनः ॥ तताडसहसाराजन्वृकंदैत्यंमहाबलम् ॥ ३० ॥ तदासुरःकोपपूर्णोमुक्त्वाथमहतींगदाम् ॥ चूर्णयामाससहसानिरुद्धस्यरथंबलात् ॥ ३१ ॥ प्राद्युम्निःशितधारेणखड्गेनारिभुजद्वयम् ॥ चिच्छेदभिदुरेणाशुशैलपक्षौयथावृषा ॥ ३२ ॥ तदाभिन्नभुजोदैत्यःपद्भ्यामाकंपयन्भुवम् ॥ ३३ ॥ विस्तीर्णवदनंकृत्वाललज्जिह्वंभयंकरम् ॥ करालदंष्ट्रःप्रपिबन्नाकाशंदैत्यपुङ्गवः ॥ ३४ ॥

॥ २७ ॥ जो मैं तोकूं न मारूँ तो मेरी ये सौगंद है सुनि, ब्राह्मण, गौ, बालक, गर्भ इनकी हत्या मोकूं होउ जो तोकों न मारों ॥ २८ ॥ नारदजी कहेंहै तब ये वृकहू सौगंद खायक गधापै चढो महादुष्ट अनिरुद्धके त्रिशूल मारतोभयो, जो अनिरुद्ध धनुषधारीनमें श्रेष्ठ है ॥ २९ ॥ सो वाके त्रिशूलकूं अनिरुद्ध बायें हाथमें पकरिकें वाही त्रिशूलतें वृक महाबलीकूं मारतोभयो ॥ ३० ॥ तब ये असुर कोपसों पूर्ण बडी गदा लेकें अनिरुद्धके रथकूं वा गदासों बल करिके चूर्ण करतोभयो ॥ ३१ ॥ तब अनिरुद्ध पैनी धारके खड्गते शत्रुकी दोनों भुजानकूं काटतभयो जैसे इंद्र वज्रते पर्वतके पंखनकूं काटैहै ॥३२॥ तब कटी है भुजा जाकी ऐसो जो दैत्य है सो पायनते धरतीकूं कँपावतो ॥ ३३ ॥ बड़ो मुख फाड़के

महाभयंकर जीभ निकारि, भयंकर डाढा जाकी, मानो आकाशको पीजायगो ऐसो दैत्यनमें पुंगव ॥ ३४ ॥ तिमिंगल जैसें मकरको ऐसे अनिरुद्धकूं निगलिगयो तब दैत्यके पेटमें गयो जो श्रीकृष्णको नाती सो श्रीकृष्णकी कृपाते ॥ ३५ ॥ हे महाराज ! मरयौ नहीं जैसे प्रद्युम्न मगरके उदरमे नहीं मरो हो और जैसे अघके उदरमें गोप और कृष्ण मरे नहीं हैं ॥ ३६ ॥ बकके उदरमें जैसे कृष्ण वृत्रासुरके उदरमें जैसें इंद्र नहीं मरो हो ऐसेही हे विदेहराज ! वृकके पेटमे अनिरुद्ध नहीं मरो तब यादवनकी सेनामें बडो हाहाकार मच्यो ॥ ३७ ॥ तब बलदेवजीको छोटो भैया गद गदा लेके महाबली वृकासुरके माथेमें मारतोभयो ॥ ३८ ॥ तब मूंड जाको फूटिगयो सो दैत्य लोहूकी बूंदन करिके बड़ो शोभित भयो, गेरूकी जलधारातें विन्ध्याचल जैसें शोभायमान होय है ॥ ३९ ॥ फिर अर्जुनने अपनी तरवारतें वाके पाउँ बेपरिश्रम काटिडारे जब पाउँ कटिगये तब ये पृथ्वीमें

तिमितिमिंगिलइवप्राग्रसत्कार्ष्णिनंदनम् ॥ दैत्योदरेकृष्णपौत्रःश्रीकृष्णस्यानुकंपया ॥ ३५ ॥ नममारमहाराजकार्ष्णिर्मीनोदरेयथा ॥ वृकोदरेयथाकृष्णोयथागोपाह्यघोदरे ॥ ३६ ॥ बकोदरेयथाकृष्णोयथावृत्रोदरेवृषा ॥ हाहाकारेतदाजातेयदुसैन्येविदेहराट् ॥ ३७ ॥ गदोगदांसमादायबलदेवानुजोबली॥तताडमस्तकेदैत्यंवृकंनाममहाबलम् ॥ ३८ ॥ तदाहतशिरादैत्योरेजेक्षतजबिंदुभिः ॥ गैरिकैर्जलधाराभिर्यथाविंध्याचलोनृप ॥ ३९ ॥ फाल्गुनःस्वमसिंनीत्वातत्पादौचाजसाहरत् ॥ छिन्नांघ्रिःसपपातोर्व्यांछिन्नपक्षोयथागिरिः ॥ ४० ॥ अनिरुद्धस्तदुदरंभित्त्वाखड्गेननिर्गतः ॥ जहारतच्छिरश्चायंयथावज्रेणवृत्रहा ॥ ४१ ॥ तदाजयजयारावोयदुसैन्येबभूवह ॥ देवदुंदुभयोनेदुर्नरदुंदुभयस्तथा ॥ ४२ ॥ अनिरुद्धोपरिसुराःपुष्पवर्षंप्रचक्रिरे ॥ कथितंह्यद्भुतंचैतत्किंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ४३ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेवृकदैत्यवधोनामचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ अहोअत्यद्भुतंयुद्धंमुनेप्राद्युम्निनाकृतम् ॥ वृकेहतेमहादैत्येकिंबभूवरणेपुनः ॥ १ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ वृकदैत्यंहतंवीक्ष्यकालनाभोमहासुरः ॥ क्रोडारूढोरणंप्रागाद्धनुष्टंकारयन्मुहुः ॥ २ ॥ अक्रूरंबाणविंशत्यागदंचदशभिःशरैः ॥ अर्जुनंदशभिर्बाणैर्युयुधानंचपंचभिः ॥ ३ ॥

जायपरयो कटे पंखको पर्वत जैसे जाय पड़ेहै ॥ ४० ॥ फिर अनिरुद्ध खड्गते वाके उदरकूँ फाड़के निकस्यो फिर वाके शिरकूँ काटतभयो वज्रते इंद्र जैसे काटैहै ॥ ४१ ॥ तब तो जय जय शब्द यादवनकी सेनामें होतभयो, देव मनुष्यनकी दुंदुभी बजनलगी ॥ ४२ ॥ अनिरुद्धके ऊपर देवता फूलनकी वर्षा करनलगे, हे मैथिल ! यह अद्भुत चरित्र मैंने कह्यो अब तू कहा सुनिवेकी इच्छा करैहै ॥ ४३ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटीकायां वृकदैत्यवधो नाम चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥ बहुलाश्व राजा पूछनलग्यो कि, हे महाराज ! प्रद्युम्नके बेटा अनिरुद्धने बड़ो अद्भुत युद्ध कीनों महादैत्य वृकके मरेपै फिर रणमे कहा होतोभयो सो मेरे साम्हने आप कहवेकूं योग्य है ॥ १ ॥ नारदजी कहैहैं कि, वृककूँ मरयौ सुनिके कालनाभ महादैत्य गधापै चढि धनुष टंकारतो रणमें आवतभयो ॥ २ ॥ ताने बीस बाण तो अक्रूरके मारे, दश बाण

गदकूं मारे, दश अर्जुनकूं मारे और पांच बाण युयुधानकूं मारे ॥ ३ ॥ दश कृतवर्माके मारे, सौ बाण प्रद्युम्नके बीस बाण अनिरुद्धके और पांच बाण दीप्तिमान्के ॥४॥ सौ बाण सांबके संग्राम
में ये असुर मारतोभयो ताके बाणनते सबरे वीर दोघडीकूं विह्वल ह्वैगये ॥ ५ ॥ घोडा मरिगये रथ चूर्ण ह्वैगये ताकी हस्तलाघवता देखिके प्रसन्नभयो रुक्मिणीको बेटा
प्रद्युम्न ॥ ६ ॥ संग्राममें उत्तम वाक्यपदनते कालनाभकी बडी बडाई करतोभयो फिर प्रद्युम्नने अपनो धनुष लैके वामें एक बाण चढायो ॥ ७ ॥ धनुषते छूटे वह बाणने
दीर्घरूपी वाके गदाको उठायलीनो और घुमाय घुमायके लाखयोजन ऊंचो लेगयो ॥ ८ ॥ फिर आकाशमेंते भयंकर गर्जे समुद्रमें याके वा गदाको डारिदीनो, प्रद्युम्न भगवान्ने
फिर दूसरो बाण लीयो ॥ ९ ॥ सोऊ बाण कालनाभ बलीकूं उठायके घुमाय घुमायके चंद्रावती पुरीमें चलते फेंकिदेतोभयो ॥ १० ॥ तब ये कालनाभ पृथ्वीमें आयपरयो, कि

दशभिःकृतवर्माणंकार्ष्णिबाणशतेनवै ॥ अनिरुद्धंचविंशत्यादीप्तिमंतंचपंचभिः ॥ ४ ॥ सांबंचशतबाणैश्चविव्याधसमरेसुरः ॥ तद्बाणै
र्व्याकुलावीराबभूवुर्घटिकाद्वयम् ॥ ५ ॥ हयाश्चपञ्चतांयाताश्चूर्णीभूतारणांगणे ॥ तद्धस्तलाघवंदृष्ट्वाप्रसन्नोरुक्मिणीसुतः ॥ ६ ॥ काल
नाभंसाधुपदैःपूजयामाससंगरे ॥ प्रद्युम्नःस्वधनुर्नीत्वाबाणमेकंसमादधे ॥ ७ ॥ कोदण्डमुक्तोविशिखस्तत्कोदंडंदीर्घरूपिणम् ॥ समुड्डीय
भ्रामयित्वास्वलोकेलक्षयोजनम् ॥ ८ ॥ आकाशात्पातयामाससमुद्रेभीमनादिनि ॥ प्रद्युम्नोभगवान्साक्षाद्द्वितीयंबाणमादधे ॥९॥ सोपिवा
णःसमुड्डीयकालनाभंमहाबलम् ॥ भ्रामयन्पातयामासचन्द्रावत्यांबलात्पुरि ॥ १० ॥ कालनाभःप्रपतितःकिंचिद्व्याकुलमानसः ॥ मूर्छी
त्वाथगदांगुर्वीलक्षभारविनिर्मिताम् ॥ ११ ॥ रणंप्राप्तोयदुबलंपोथयामासदैत्यराट् ॥ गजानश्वान्हयान्वीरान्गदयावज्रकल्पया ॥ १२ ॥
पातयामासवेगेनमहावातोयथातरून् ॥ काश्चित्कराभ्यांप्रोन्नीयचिक्षेपगगनेबलात् ॥ १३ ॥ अंबरांतेनिपेतुःकौराजन्वर्षोपलाइव ॥ तदाग
दांसमादायसांबोजांबवतीसुतः ॥ १४ ॥ तताडमूर्ध्नितंदैत्यंकालनाभंमहासुरम् ॥ तयोर्युद्धमभूद्घोरंगदाभ्यांरणमण्डले ॥ १५ ॥ विस्फुलिं
गान्क्षरंत्यौद्वेगदेचूर्णीबभूवतुः ॥ अन्येगदेसमादायतस्थतुःसंगरेचतौ ॥ १६ ॥ कालनाभस्तदाप्राहसांबंजांबवतीसुतम् ॥ एकेनापिप्रहारे
णहन्मित्वांनात्रसंशयः ॥ १७ ॥ पूर्वंप्रहारंकुरुमेइतिसांबोब्रवीद्रणे ॥ कालनाभोथगदयासांबंमूर्ध्नितताडह ॥ १८ ॥

चित् व्याकुल ह्वैगयो फिर लाख भारकी १ गदा लैके ॥ ११ ॥ रणमें आय यादवनकी सेनामें युद्ध करतोभयो वा वज्रसी गदाते प्यादेनकूं, सवारनकूं, हाथीनकूं मारि मारिके
॥ १२ ॥ पृथ्वीमें पटकनलग्यो, बडो पवन वृक्षनकूं जैसें पटकैहै, काहू काहूकूं हाथनतें उठायके आकाशमें फेंकनलग्यो ॥ १३ ॥ तब वे आकाशमेंते ओलाकी नाईं वर्षनलगे
तब गदाकूं लैके जांबवतीको बेटा सांब आयो ॥ १४ ॥ आयके एक गदा कालनाभके मूंडमें मारी तब तिन दोनोंनकी रणमें गदानते घोर युद्ध होतोभयो ॥ १५ ॥ आखर
विस्फुलिंगनकूं छोडत छोडत वे दोनों गदा चूर्ण ह्वैके आयपरीं फिर और गदा लैके दोनों संग्राममें ठाढे होतभये ॥ १६ ॥ कालनाभ तब जांबवतीके बेटा सांबते यह बोल्यो,
एकही प्रहारतें मैं तोकूं मारिडारूंगो यामें कछू संदेह नहीं है ॥ १७ ॥ तब सांब बोल्यो, पहले तू मेरे ऊपर प्रहार करले तब कालनाभ सांबके शिरमें गदा मारतोभयो ॥ १८ ॥

तब सांब गदाके ऊपर गदा लैकैं फिर कालनाभकी छातीमें गदा मारतभयो ॥ १९ ॥ तबही गदाके मारें हृदय जाको फटिगयो मुखते रुधिर वमन करत कालनाभ दैत्य मरिकैं धरतीपै जायपरयो, वज्रको मारयो पर्वत जैसें जायपड़ैहै ॥ २० ॥ तब तो हे नृप ! सन्तनमें जय जय शब्द और साधु साधु शब्द होतभयो, देवतानकी दुन्दुभी बजतीभई, मनुष्यनकी दुंदुभी बजनलगी ॥ २१ ॥ देवता सांबकी सेनाके ऊपर पुष्पनकी वर्षा करनलगे, विद्याधरी, अप्सरा, नृत्य करतीभई और आनंदते गंधर्व गावनलगे ॥ २२ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटी० कालनाभवधो नाम पञ्चत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३५ ॥ नारदजी कैहहैं-कालनाभके मरेपै बडो कोलाहल होतोभयो तब महानाभ दैत्य ऊंटपै चढिकैं रणमें प्राप्त होतभयो ॥ १ ॥ वह मायावी दैत्यपुंगव मुखते अग्निकूं सृजतौभयौ ता अग्नितें सब भूमिके वृक्ष और दशों दिशा जरनलगी ॥ २ ॥ वीरनके जामा, पाग,

गदोपरिगदांनीत्वासांबोजांबवतीसुतः ॥ जघानगदयादैत्यंकालनाभमुरस्थले ॥१९॥ गदयाभिन्नहृदयउद्वमन्रुधिरंमुखात् ॥ व्यसुःपपातभूपृष्ठे वज्राहतइवाचलः ॥२०॥ अभूज्जयजयारावःसाधुवादःसतांनृप॥ देवदुन्दुभयोनेदुर्नरदुन्दुभयस्तथा॥२१॥ सांबसेनोपरिसुराःपुष्पवर्षंप्रचक्रिरे॥ विद्याधर्यश्चगंधर्वानृतुश्चजगुर्मुदा ॥२२॥ इतिश्रीमद्गर्गसं० विश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेकालनाभदैत्यवधोनामपञ्चत्रिंशोऽध्यायः॥३५॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ कालनाभेथपतितेमहान्कोलाहलोभवत् ॥ उष्ट्रारूढोमहानाभोदैत्यःप्रातोरणांगणे ॥१॥ मुखादग्निंसमसृजन्मायावीदैत्य पुंगवः॥ तेनाग्निनाभूमिवृक्षाजज्वलुश्चदिशोदश ॥२॥ वीराणांकंचुकोष्णीषकटिबंधांगरक्षकाः ॥ प्रजज्वलुर्महाराजमुञ्जपुष्पतूलवत् ॥ ३ ॥ समुद्रपट्टनभवैःपीतारुणसितासितैः॥ हरितैश्चित्रवर्णैश्चसूक्ष्मैःकाश्मीरजैरपि ॥ ४ ॥ हेमरत्नखचद्भिश्चकंबलैःसहितागजाः ॥ प्रजज्वलुर्मृधेराज न्वृक्षैःशैलाइवाग्निना ॥५॥ शिखारत्नैश्चामरैश्चहारैर्हैमैःपरिच्छदैः ॥ उत्पतंतेहयायुद्धेमृगाइवदवाग्निना ॥६॥ सैन्यंभयातुरंदृष्ट्वादीप्तिमान्कृष्णनन्दनः ॥ मायावह्निप्रशांत्यर्थंपर्जन्यास्त्रंसमादधे ॥ ७ ॥ बाणाद्विनिर्गतामेघाःसांवर्तकगणाइव ॥ ववृषुर्जलधाराभिर्नदंतोभैरवंरवम् ॥ ८ ॥ आसारेणमहाराजप्रावृट्कालोभवत्क्षितौ ॥ पुंस्कोकिलाःकोकिलाश्चमयूराःसारसादयः॥ ९ ॥ मण्डूकाःप्रजगुर्गीभिरिंद्रगोपाश्चरेजिरे ॥ इन्द्र चापेनदामिन्यामैथिलेन्द्रबभौनभः ॥ १० ॥ इत्थंशांतिंगतेवह्नौमहानाभोमहासुरः ॥ प्राहिणोत्रिशितंशूलंरुपादीप्तिमतेत्वरम् ॥ ११ ॥

दुपट्टा, अँगरखा, मूंजके फूल और रुईकी नाईं जरनलगे ॥ ३ ॥ और समुद्रके पट्टनके भये रेशमी, पीले, लाल, सुपेद, हरे, कश्मीरके कम्बल ॥ ४ ॥ सुनहरी, रत्न, जडी बनात सहित हाथी संग्राममें जरनलगे, वृक्षन सहित पर्वत जैसे अग्निसे जरैहै ॥ ५ ॥ रत्नकी कलंगीन सहित, चौंरी सहित, सुनहरी हार और जीन सहित घोड़ा उछरैं हैं दौकी अग्निके मारें मृग जैसें उछरैं है ॥ ६ ॥ ता समें दीप्तिमान् कृष्णको बेटा सेनाको भयातुर देखके मायाकी अग्निकी शांतिके अर्थ मेघको अस्त्र छोडतोभयो ॥ ७ ॥ वा बाणमेंते जे मेघ निकसे वे सांवर्तकके गणसे भयंकर नाद करते जलधारानतें वर्षनलगे ॥ ८ ॥ धाराके परवेते पृथ्वीमें वर्षाऋतु हैगई, कोइल बोलनलगी, पपीहा झंकारनलगे, मोर कुहकनलगे, सारस बोलनलगे ॥ ९ ॥ मेंडका टरानलगे, गुडियाँ डोलनलगी इन्द्रधनुप और बिजुलीते आकाश शोभित हैगयो ॥ १० ॥ ऐसें जब अग्नि शांत हैगयो तब महानाभ

असुर दीप्तिमानपै पैनो त्रिशूल चलावतभयो ॥ ११ ॥ सर्पसो आवतो जो त्रिशूल है ताहि देखिक रोहिणीको बेटा दीप्तिमान् अपने खड्गते वा त्रिशूलकूं काटतोभयो, गरुड जैसे सर्पकूं काटैहै ॥ १२ ॥ तब मोंडेते डसते महानाभके वाहन वा दुर्मदनामके कंठको दीप्तिमान् अपने खड्गते मारतोभयो ॥ १३ ॥ तब या कंठके द्वै टूक ह्वैके पृथ्वीमें जायपरे खड्गते नाड़ कटिगई और महानाभके देखत २ मरिगयो ॥ १४ ॥ तब वे महानाभ महादैत्य हाथीपै चढि त्रिशूल लैके नादते आकाशकूं झंकारत फिर आयो ॥ १५ ॥ तब दीप्तिमान सिंधुदेशके चंचल काले घोडेपै चढिके बैसुरोंसे खड्गते बडी शोभाकूं प्राप्त होतभयो ॥ १६ ॥ तब दीप्तिमान् घोडाकूं एडीते आकाशमें उडाय हाथीके कुंभस्थलपै चढि गयो जैसे सिंह पर्वतके ऊपर चढिजायहै ॥ १७ ॥ तब दीप्तिमान् कृष्णको पुत्र पैने खड्गते महानाभ असुरको शिर काटिके कायाते न्यारो फेंकिदेतोभयो ॥ १८ ॥ तब वा दुरात्मा

शूलंसर्पमिवायांतंदीप्तिमान्रोहिणीसुतः ॥ चिच्छेदत्वसिनायुद्धेफणिनंगरुडोयथा ॥ १२ ॥ दशंतंचोद्भटंचोग्रंमहानाभस्यवाहनम् ॥ दीप्तिमा न्स्वेनखड्गेनसंग्रामानरणांगणे ॥ १३ ॥ द्विधाभूतःपपातोर्व्यांखड्गसंछिन्नकंधरः ॥ जगामपञ्चतामुग्रोमहानाभस्यपश्यतः ॥ १४ ॥ महाना भोमहादैत्योगजमारुह्यवेगतः ॥ शूलहस्तःपुनःप्रादान्नादयन्व्योममण्डलम् ॥१५॥ दीप्तिमानश्वमारुह्यसैंधवंचंचलासितम् ॥ तडित्प्रभेणखड्गेन बभौश्रीकृष्णनन्दनः ॥ १६ ॥ तुरगंपार्ष्णिघातेनप्रोत्पतन्धरणीतलात् ॥ आरूढोगजकुंभांतंगिरिशृंगंयथाहरिः ॥ १७ ॥ खड्गेनशितधारेण दीप्तिमान्कृष्णनंदनः ॥ महानाभस्यसहसाशिरःकायादपाहरत् ॥ १८ ॥ बाणवर्षंप्रकुर्वंतीसेनांतस्यदुरात्मनः ॥ जघानदीप्तिमान्सिंहोगजयू थंयथासिना ॥ १९ ॥ केचित्खड्गेनाभिहताःशेषदैत्याःपलायिताः ॥ देवादीप्तिमतोमूर्ध्निपुष्पवर्षंप्रचक्रिरे ॥ २० ॥ जगुःकिन्नरगन्धर्वानन्नृतु श्चाप्सरोगणाः ॥ ऋषयोमुनयोदेवास्तुष्टुवुःश्रीहरेःसुतम् ॥२१॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेमहानाभवधोनामषड् विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ महानाभंमृतंश्रुत्वासेनांवीक्ष्यपलायिताम् ॥ दैत्यस्तिमिंगिलारूढोहरिश्मश्रुःसमाययौ ॥ १ ॥ हरिश्मश्रुस्तदादैत्योरुषाप्रस्फुरिताधरः ॥ उवाचपरुषंवाक्यंयादवानांचशृण्वताम् ॥२॥ ॥ हरिश्मश्रुरुवाच ॥ ॥ यूयंसर्वेपिमेशक्त्यामनुष्याः स्वल्पविक्रमाः ॥ शस्त्रैर्जयंतोदीनावैपौरुषंकिंभवादृशे ॥ ३ ॥ भवतांबलवान्कोपिविनाशस्त्रंमयासह ॥ करोतिमल्लयुद्धंवैपौरुषंयेनदृश्यते॥४॥

की सेना बाणनकी वर्षा करतीको दीप्तिमान् खड्गते ऐसे मारतोभयो, सिंह जैसे हाथीनके यूथकूं मारैहै ॥ १९ ॥ कितनेक खड्गते मारे बाकीके दैत्य भाजिगये तब देवता दीप्ति मानके ऊपर पुष्पनकी वर्षा करतेभये ॥ २० ॥ किन्नर, गंधर्व, गायनलगे, अप्सरा नाचनलगी, ऋषि, मुनि, देवता कृष्णके बेटाकी स्तुति करनलगे ॥ २१ ॥ इति श्रीमद्गर्गसं हितायां विश्वजित्खंडे भाषाटी० महानाभवधो नाम षड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥ नारदजी कहैहैं कि, महानाभकूं मरयो सुनिके सेनाकूं भाजीभई सुनिके हरिश्मश्रु नाम दैत्य तिमिंगिलपै बैठो आवतोभयो ॥ १ ॥ हरिश्मश्रु दैत्य रोषके मारे होंठ फड़कावत यादवनके सुनत सुनत कठोर वचन बोल्यो ॥ २ ॥ तुम सबरे मेरे अगारी तुच्छ पराक्रमी हो, दीन हो नर शस्त्रनते जीतौहो, तुमसरीकेनको कहा पराक्रम है ॥ ३ ॥ कोई तुममें ऐसो बली है जो शस्त्र विना मोते मल्लयुद्ध करे जाते तुम्हारो पुरुषार्थ दीखे । ॥ ४ ॥

नारदजी कहेहैं—ऐसे दैत्यको वचन सुनिकें और उद्भट शरीर वाको देखिके आपसमें बडाई करत सब चुप्प हेगये ॥ ५ ॥ तब सबनके देखत २ सत्यभामाको बेटा बडो बली भानु शस्त्रनकूं त्यागि श्रीकृष्णको स्मरण करतो युद्धमे ठाडोहोतभयो ॥ ६ ॥ तब महाबली ये हरिश्मश्रु तिमिंगिलते उतरिके खंभ फटकार सन्मुख भयो ॥ ७ ॥ भुजानते भुजा जोरि भानु लडतभयो, दाँतनते हाथी जैसें लडेहैं तैसें प्रहार करनलगे ॥ ८ ॥ तब ये दैत्य भानुको सौ योजनताई भुजाते ढकेलतोभयो लेगयो, हे राजराजेंद्र ! सिहकूं सिह जैसे पराक्रमतें ढकेलतो लेजाय है ॥ ९ ॥ तब भानु हरिश्मश्रु दैत्यकूं हजार योजनताई ढकेलतो लेगयो अपने पराक्रमतें ॥ १० ॥ तब दैत्यराज कंधरापै (नाडपै) हाथ धरि कमर पकड पीडुरी पकड भानुको धरतीमें पटकतोभयो ॥ ११ ॥ तब भानु वाके पिछाडी जाय पीठपै चढि पींडुरी पकड दैत्यकूं पृथ्वीमें देमारतोभयो ॥ १२ ॥

॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्थंदैत्यवचःश्रुत्वादृष्ट्वातत्प्रोद्भटंवपुः॥सर्वेबभूवुस्तेतूष्णींप्रशंसंतःपरस्परम् ॥ ५ ॥ सर्वेषांपश्यतांभानुःसत्यभात्मजोबली ॥ त्यक्त्वाशस्त्राणिसहसातस्थौकृष्णंस्मरन्रणे ॥ ६ ॥ तिमिंगिलात्समुत्तीर्यंहरिश्मश्रुर्महाबलः ॥ तस्थौतत्संमुखेराजन्भुजमास्फोट्ययत्नतः ॥ ७ ॥ भुजाभ्यांचभुजौबध्वानोदनंचक्रतुर्बलात् ॥ दंतैर्गजाविववनेप्रहरंतौपरस्परम् ॥ ८ ॥ नोदयामासतंभानुंसदैत्यःशतयोजनम् ॥ भुजाभ्यांराजराजेंद्रसिंहःसिंहमिवौजसा ॥ ९ ॥ ततःपुनःकृष्णसुतोहरिश्मश्रुंमहासुरम् ॥ नोदयामाससहसासहस्रंयोजनंबलात् ॥ १० ॥ कंधरंस्वभुजांकृत्वाकटौचविनिधायतम् ॥ भानुंजानौसंगृहीत्वापातयामासदैत्यराट् ॥ ११ ॥ भानुस्तंपृष्ठदेशेपिसंनिधायभुजौजसा ॥ गृहीत्वाजंघयोर्दैत्यंपातयामासभूतले ॥ १२ ॥ अथतौपुनरुत्थायभुजावास्फोट्यचतस्थतुः ॥ त्वरंतौवलिनौराजन्सुपर्णफणिनाविव ॥ १३ ॥ दैत्योभुजौजसानीत्वाभानुंश्रीकृष्णनंदनम् ॥ चिक्षेपधृत्वाचरणावाकाशेलक्षयोजनम् ॥ १४ ॥ आकाशात्पतितोभानुःकिंचिद्व्याकुलमानसः ॥ प्रह्लादइवशैलांगाद्रक्षितःकृपयाहरेः ॥ १५ ॥ हरिश्मश्रुंसंगृहीत्वादीर्घश्मश्रौहरेःसुतः ॥ भ्रामयित्वाथचिक्षेपव्योम्नितंलक्षयोजनम् ॥ १६ ॥ आकाशात्पतितःसोपिकिंचिद्व्याकुलमानसः ॥ मुखेकृत्वास्वकंकूर्चंमुष्टिनातंतताडह ॥ १७ ॥ मुष्टामुष्टिरणंराजन्बभूवघटिकाद्वयम् ॥ निष्पिष्टांगोहरिश्मश्रुर्भ्रांवाणंभानुमूर्द्धनि ॥ १८ ॥

फिर दोनों उठ ठाडे भये, खंभ फटकारिकें जल्दीही बली फिर आय लडे, सर्प, गरुड जैसे लडैहैं ॥ १३ ॥ तब ये दैत्य दोनो भुजानते कृष्णनंदन भानुके दोनों पावं पकरिके आकाशमे लाख योजनपै फेंकिदेतोभयो ॥ १४ ॥ जब भानु आकाशते गिरचौ तब कछू व्याकुल हेगयो पन प्रह्लादकी नाई पर्वतके अंगते भगवान्ने भानुकी रक्षा करी ॥ १५ ॥ तब हरिके बेटाने हरिश्मश्रुकी दीर्घ मूंछनकूं पकरके आकाशमे घुमाय घुमायके लक्ष योजनपै फेंकिदीयो ॥ १६ ॥ फिर आकाशते जब परचौ तब ये हरिश्मश्रु कछू व्याकुलनेत्र विमन हैगयो सो फिर मूंछनकूं सम्हारि वाने भानुके एक घूँसा मारचो ॥ १७ ॥ तब दोनोंनको दो घडी तलक मुष्टामुष्टि युद्ध भयो, हरिश्मश्रुके

अंग पिसिगये तब भानुके शिरमें बड़े वेगते एक पत्थर मार्यो ॥ १८ ॥ और लाल नैन जाके ऐसो क्रोधते मूर्च्छित हैगयो तब भानु एक वृक्षकूं उखार दैत्यके मस्तकमे मारत
भयो ॥ १९ ॥ तब दैत्यहू वृक्ष लैके भानुके शिरमें मारतोभयो फिर लालनेत्र क्रोधमे मूर्च्छित ह्वैके ॥ २० ॥ दैत्य हाथीकी सूंडि पकड़ भानुके ऊपर डारतोभयो तब भानुहू एक दूसरे
हाथीकूं लैके याकी सूंड पकरके दैत्यकूं मारतोभयो॥२१॥ तब हरिश्मश्रुकूं हाथीते मार्यो तब हाथी चिकार उठ्यो चिकारते हाथीके दांत उखारि॥२२॥ जिनो दांतनते हरिश्मश्रु भानुकूं मारतो
भयो तब भानुते आकाशवाणी बोली कि, याकी मृत्यु कूर्च मूछनमेही है ॥२३॥ महादेवके वरते यह दैत्य बडो प्रबल है यह वचन सुनि भानु क्रोधमे भरिगयो ॥२४॥ और दोनो भुजानते खेंचके
दोनो पांव पकरिके भ्रमायभ्रमाय सबनके देखतदेखत हे महाराज ! ॥ २५ ॥ पृथ्वीपै देमार्यौ जैसे बालक कमंडलुको देमारै फिर याके मुखपैते दोनों मूंछ पकरिके अपने

चिक्षेपचमहावेगाद्रक्ताक्षःक्रोधमूर्च्छितः ॥ भानुर्द्रुमंसंगृहीत्वाप्राक्षिपत्तस्यमस्तके ॥ १९ ॥ सोपिद्रुमंसंगृहीत्वाप्राहिणोद्भानुमूर्द्धनि ॥ हरिश्म
श्रुर्महादैत्योरक्ताक्षःक्रोधमूर्च्छितः ॥ २० ॥ गजंगृहीत्वाशुंडायांतेनभानुंतताडह ॥ भानुश्चान्यगजंनीत्वागृहीत्वातद्द्विजंकरे ॥ २१ ॥ हरिश्म
श्रुर्महादैत्यंगजेनाभ्यहनद्दृढम् ॥ चीत्कारमथकुर्वंतंगजंनीत्वानिपात्यतम् ॥ २२ ॥ तस्यदंतौसमुत्पाट्यताभ्यांभानुंतताडह ॥ भानुमाकाश
वागाहकूर्चेमृत्युःकिलास्यच ॥ २३ ॥ वरेणशिवदत्तेनप्रोज्झितोयंमहासुरः ॥ इतिश्रुत्वावचोभानुर्धावन्क्रोधप्रपूरितः ॥ २४ ॥ संगृहीत्वाशु
जाभ्यांतंपादयोःप्रणदन्मुहुः ॥ भ्रामयित्वामहाराजसर्वेषांपश्यतांसताम् ॥ २५ ॥ पातयामासभूपृष्ठेकमण्डलुमिवार्भकः ॥ मुखात्कूर्चसमुन्नी
यसमुत्पाट्यकरौजसा ॥२६॥ तताडमुष्टिनामूर्ध्निहरिश्मश्रुंमहासुरम् ॥ तदामृत्युंगतेदैत्येहरिश्मश्रौनृपेश्वर ॥ २७ ॥ देवदुंदुभयोनेदुर्नदुंदु
भयस्तथा ॥ अभूज्जयजयारावोननृतुर्देवनायकाः ॥ २८ ॥ प्रसन्नादिविजराजन्पुष्पवर्षंप्रचक्रिरे ॥ इत्थंश्रीकृष्णपुत्राणांविक्रमःपरमाद्भुतः
॥ २९ ॥ मयातेकथितःपुण्यःकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ३० ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेहरिश्मश्रुदैत्यवधो
नामसप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३७ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ हरिश्मश्र्वादिकान्भ्रातॄन्मृताञ्ज्ञात्वामहासुरः ॥ शकुनिःकिंचकाराथवदत
न्मुनिसत्तम ॥ १ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ हरिश्मश्रौहतेराजञ्छकुनिःक्रोधमूर्च्छितः ॥ रणांगणेप्राहदैत्यान्भ्रातृशोकपरिप्लुतः ॥ २ ॥

पराक्रमते उखारिलीनो और एक घूंसा मूंडमे मार्यो महाअसुरके हे नृपेश्वर ! तब हरिश्मश्रु दैत्य मरिकैं जायपर्यौ ॥ २६ ॥ तब देवतानकी दुंदुभी बजनलगी जय जय
शब्द होनलग्यौ देवतानके नायक नाचनलगे ॥ २७ ॥ प्रसन्न ह्वैके देवता पुष्पनकी वर्षा करनलगे या प्रकार श्रीकृष्णके बेटानको अद्भुत पराक्रम है ॥ २८ ॥ सो मैने तेरे
आगे वर्णन कर्यौ अब आगे कहा सुनिवेकी इच्छा करैहै ॥ २९ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटीकायां हरिश्मश्रुदैत्यवधो नाम सप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३७ ॥ बहुलाश्व
राजा बोल्यौ कि, हरिश्मश्रुते आदि दैकैं सब भैयानकूं मर्यौ जानिकें महा असुर शकुनी आगे कहा करतभयौ सो हे मुनिसत्तम ! कहौ ॥ १ ॥ तब नारदजी बोले कि,

हरिश्मश्रु जब मरिगयौ तब शकुनीकूं बडौ क्रोध आयौ भैयाके शोकमें डूबौ रणके आँगनमें दैत्यनते ये बोल्यौ ॥ २ ॥ हे पौलोमा ! हे कालकेया ! सबरे मेरौ वचन सुनौं अहो देवको बल बडौ भारी है देव कहा नहीं करै ॥ ३ ॥ जा कालनाभने मेरे भैयानें समुद्रमथनमें पहले यमराज जीत्यौ हो सो कालनाभ मनुष्यननें मारि डारचौ ॥ ४ ॥ सूर्यकौ जीतनहारौ शम्बर, सो प्रद्युम्न छोरानें जीतिलीनों और उत्कच इन्द्रकौ जीतनवारो बडौ तेजस्वी महाबल, पराक्रमी ॥ ५ ॥ सोहू बालकसे कृष्णनें मारिडारचौ ये मैनें नारदते सुन्यौ समुद्रमथनमें सब देवतानके देखतदेखत ॥ ६ ॥ जा दुष्टनें अग्निकूं जीत्यौ हो सोहू मारिडारचौ और युद्धमें जाके अगारीतें वरुण भयभीत ह्वेके भाजिगयौ ॥ ७ ॥ सो भूतसन्तापन तुच्छ पराक्रमीननें मारिडारचौ और जानें पहिले पराक्रमनते महायुद्धमें महादेवकूं राजी करिदीनों ॥ ८ ॥ सो वृक तुच्छ

हेपौलोमाःकालकेयाःसर्वेशृणुतमद्वचः ॥ अहोदैवबलंयेनकिन्नभूयाद्विपर्ययः ॥ २ ॥ कालनाभेनमेभ्रात्रासमुद्रमथनेयमः ॥ जितःपूर्वंसोपिदेवा न्मनुष्यैरिहमारितः ॥ ४ ॥ शंबरःसूर्यजित्साक्षात्कार्ष्णिनाशिशुनाजितः ॥ उत्कचःशक्रजेतापिमहाबलमहाबलः ॥ ५ ॥ सोपिबालेनकृष्णे नमारितोलास्यदच्छ्रुतम् ॥ समुद्रमथनेपूर्वमसुराणांचपश्यताम् ॥ ६ ॥ वह्निर्जितोहियेनापिदुष्टःसोपिनिपातितः ॥ यस्याग्रेवरुणःपूर्वंयुद्धभी तःपलायितः ॥ ७ ॥ भूतसंतापनःसोपिमारितस्तुच्छविक्रमैः ॥ येनपूर्वंमहायुद्धेविक्रमैस्तोषितःशिवः ॥ ८ ॥ सवृकोवृष्णिभिस्तुच्छैर्मा रितःसंगरेऽनवे ॥ महानाभेनमेभ्रात्रादिविवायुर्विनिर्जितः ॥ ९ ॥ मानुषैर्यादवैरत्रमारितःसोपिसांप्रतम् ॥ हादैवयेनस्वर्लोकेजितःशक्रसुतो बली ॥ १० ॥ निपातितःसोपिचात्रहरिश्मश्रुश्चमानवैः ॥ तस्मादयादवींपृथ्वींकरिष्येशपथोमम ॥ ११ ॥ जरासंधेनशाल्वेनदंतवक्रेणधी मता ॥ शिशुपालेनमित्रेणयुष्माभिःसहितोह्यहम् ॥ १२ ॥ सुतलाचसमाहूतैर्दानवैश्चंडविक्रमैः ॥ देवाञ्जेतुंगमिष्यामिबाणासुरसमन्वितः ॥ ॥ १३ ॥ कार्ष्ण्यादीनुद्भटान्सर्वान्वृष्णीञ्जित्वादुरात्मनः ॥ सस्त्रीकानमरान्बध्वाक्षिपेमेरुगुहासुखे ॥ १४ ॥ गोविप्रसुरसाधूंश्चछंदांसिच तपस्विनः ॥ यज्ञंश्राद्धंतितिक्षूंश्चनानातीर्थकरान्पुनः ॥ १५ ॥ हनिष्यामिनसंदेहश्चरिष्यामिसुखंततः ॥ धन्यःकंसोमहावीर्योदेवानां विजयीबली ॥ १६ ॥

यादवनने संग्राममें मारिडारचौ और जा महानाभ मेरे भैयानें स्वर्गमें पवनकूं जीति लीनों ॥ ९ ॥ मनुष्य यादवननें सोहू हाल मारिडारचौ हाय दैव हाय ! जानें स्वर्गमें इन्द्रको बेटा जीतिलीनो ॥ १० ॥ सोहू हरिश्मश्रु यहां मनुष्यनने मारि डारचौ तातें अब मोकूं सौगन्द हैं जो अयादवी पृथ्वी न करडारूं तो ॥ ११ ॥ जरासंध, शाल्व, बुद्धिमान् दन्तवक्र, मित्र शिशुपाल और तुम और मैं ॥ १२ ॥ और सुतलते मैंने दानव बुलाये हैं प्रचण्ड पराक्रमी वे और बाणासुरकूं संग लैके देवतानकूं जीतवेकूं जाऊंगो ॥ १३ ॥ प्रद्युम्नादि जे उद्भट हैं और दुरात्मा जे यादव हैं तिन्हें जीतके और स्त्रीनसुद्धा सब देवतानकूं बाँधिके सुमेरुकी गुफामें करि देऊंगो ॥ १४ ॥ फिर गौ, ब्राह्मण, देवता, साधु, वेद, तपस्वी, यज्ञ, श्राद्ध, तितिक्षु, नाना तीर्थकर्तानकूं ॥ १५ ॥ मारूंगो यामें सन्देह नहीं है फिर सुखतें विचरूंगो कंस धन्य हो

देवतानके विजयी हो, बली हो ॥ १६ ॥ ऐसो मेरो मित्र सुहृद पृथ्वीपे और कोई नहीं है नारदजी कहैंहैं—ऐसे कहिके शकुनि दानवेन्द्र महाबली ॥ १७ ॥ प्रद्युम्नके सन्मुख सहसा चल्यो आयो लाख भारके कठोर धनुषकूं लैके ॥ १८ ॥ मय दैत्यने जाकी प्रत्यंचा बनाई ही ताकूं टंकारत जाकी टंकारके मारे दिग्गज बहरे हैगये ॥ १९ ॥ कितनेहूँ पर्वत गिरपडे, समुद्र खलबलायउठे, ब्रह्मांड संकार उठ्यो, पृथ्वीमण्डल कांपनलग्यो ॥ २० ॥ वा शकुनिके धनुषकी टंकारते वीरनके ऊपर वीर पडनलगे, प्रत्यंचाके घोषते विह्वल हैगये हाथी रणमेंते भाजिगये, घोडा संग्राममें ठठ्ठनलगे ॥ २१ ॥ ऐसे अकस्मात् सब भाजिउठे भयमे विह्वल हैगये तब गदादिक वीर रथमें बैठिके आये ॥ २२ ॥ महाबली पराक्रमी धनुषकूं टंकारते तब शकुनि संग्राममें दश बाणते अर्जुनकूं मारतोभयो ॥ २३ ॥ तब अर्जुन रथसुद्धा चारि कोसपै जायपरयो फिर रणमे दुर्मद शकुनि बीस

नविद्यतेभूमितलेमित्रंमेपरमःसुहृत् ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वाशकुनिर्युद्धेदानवेंद्रोमहाबलः ॥१७॥ आययौसहसादैत्यःप्रद्युम्नस्यापिसंमुखे ॥ महाधनुःसमादायलक्षभारसमंदृढम् ॥ १८ ॥ मयेननिर्मितंतज्ज्याटंकारंसचकारह ॥ धनुष्टंकारशब्देनदिग्गजाबधिरीकृताः ॥ १९ ॥ निपेतुर्गिरयोनेकाविचेलुःसिंधवोनृप ॥ ननादसर्वंब्रह्मांडंचकंपेमंडलंभुवः ॥ २० ॥ वीरोपरिगतावीराज्याघोषेणातिविह्वलाः ॥ रणाद्विदुद्रुवुर्नागाउत्पतंतोहयामृधे ॥ २१ ॥ एवंपलायिताःसर्वेअकस्माद्भयविह्वलाः ॥ तदागदादयोवीराआजग्मुःस्यंदनेस्थिताः ॥२२॥ धनुष्टंकारयंतस्तेमहाबलपराक्रमाः ॥ शकुनिर्दशभिर्बाणैर्विव्याधार्जुनमाहवे ॥२३॥ गांडीवीसरथस्तस्माच्चतुष्कोशेपपातह ॥ गदंत्रबाणविंशत्याशकुनिर्युद्धदुर्मदः ॥ २४ ॥ चिक्षेपसरथंराजन्नादयन्व्योममंडलम् ॥ चत्वारिंशच्छरैर्वीरोनिरुद्धंधन्विनांवरम् ॥२५॥ विव्याधसरथंराजन्नादयन्व्योममंडलम् ॥ साम्बोरथोनिरुद्धस्यषोडशक्रोशमास्थितः ॥ २६ ॥ सांबंचशितबाणैश्चतताडशकुनिर्मृधे ॥ सांबोपिसरथोराजन्नंबरेसमरांगणात् ॥ २७ ॥ द्वात्रिंशद्योजनंमार्गेनिपपातविदेहराट् ॥ कार्ष्णिंसमागतंदृष्ट्वाशकुनिःक्रोधपूरितः ॥ २८ ॥ सहसाबाणपटलैःसंजघानरणांगणे ॥ प्रद्युम्नस्यरथोराजन्संभ्रमन्घटिकाद्वयम् ॥ २९ ॥ शतक्रोशेपपातोर्व्यांकमंडलुरिवाहतः ॥ सर्वेविसिस्मुःशकुनेर्बलंदृष्ट्वाथयादवाः ॥ ३० ॥ जघ्नुर्नानाविधैःशस्त्रैर्दैत्यमद्रिंयथागजाः ॥ गदोर्जुनोनिरुद्धस्तुसांबोजांबवतीसुतः ॥ ३१ ॥

बाण गदकें मारतभयो ॥ २४ ॥ याकूं रथके सहित आकाशमंडलमे फेंकतोभयो आकाशको नादयुक्त करतो चालीस बाणनते अनिरुद्ध धनुषधारीकूं ॥ २५ ॥ मारतभयो और रथसुद्धा अनिरुद्धकूं सोलहै कोशपै डारतोभयो ॥ २६ ॥ फिर ये शकुनि पैने पैने बाणनकरिके संग्राममे सांबकूं ताडना करतोभयो तब सांबहू रथसुद्धा रणके आंगनमेंते हे राजन् ! आकाशमें ॥ २७ ॥ बत्तीस योजनपै जायपरयो फिर प्रद्युम्नकूं आयो देखिके शकुनि क्रोधमें पूरित हैगयो ॥ २८ ॥ और सहसा बाणनके समूहते प्रद्युम्नको मारतो भयो तब हे राजन् ! प्रद्युम्नको रथ दैघडी ताईं आकाशमें घूमनलग्यो ॥ २९ ॥ सौ योजनपै पृथ्वीमे पर्यो तब शकुनिको बल देखिके अचंभेमें सबरे यादव आयगये ॥ ३० ॥ सबरेही यादव अनेक प्रकारके

शस्त्रनते या दैत्यको मारनलगे गद, अर्जुन, सांब, अनिरुद्ध, जैसे पर्वतके ऊपर हाथी प्रहार करै ॥ ३१ तब धनुषकूं टंकारत वे फेर युद्धमें आये फिर प्रद्युम्न पवनकोसो वेग ता रथमें बैठिके ॥ ३२ ॥ धनुषकूं टंकारत रणमण्डलमें आयो प्रलयके समुद्रकोसो गर्जन जाको ॥ ३३ ॥ ऐसो जो शकुनिकी प्रत्यंचा ताकूं दश बाणनते काटतोभयो हजार बाणनते हजार घोडा मारे सौ बाणनते रथनको तोड़तोभयो ॥ ३४ ॥ बीस बाणनते सारथीकूं मारिके पृथ्वीमें गेरदीनों तब और घोडा लगाय और रथमें ॥ ३५ ॥ और सारथीकूं करिके दैत्यनको राजा और रथमें बैठिके चंड विक्रम कोदंडमें प्रत्यंचा चढावतभयो ॥ ३६ ॥ पिछारीते तर्कसमेते सौ बाण निकार धनुषपै धरि कानलतक खैंचिके प्रद्युम्नते बोल्यो ॥ ३७ ॥ सबनमें मुख्य वैरी जो तूं है ताकूं पहले मारूंगो पीछे अपने तेजसे यादवनकी सेनाकूं मारूंगो ॥ ३८ ॥ तब प्रद्युम्न बोले कि, सदाही यह अवस्था

धनुष्टंकारयंतस्तेपुनर्युद्धंसमागताः ॥ अथकार्ष्णिर्महाबाहुर्वायुवेगरथेस्थितः ॥ ३२ ॥ धनुष्टंकारयन्राजन्प्रातोभूद्रणमंडले ॥ प्रलयार्णवसंव द्भीमसंघर्षनादिनीम् ॥ ३३ ॥ धनुर्ज्यांशकुनेःकार्ष्णिश्चिच्छेददशभिःशरैः ॥ सहस्रैश्चसहस्राश्वान्रथंचविशिखैःशतैः ॥ ३४ ॥ सारथिंबाण विंशत्यापातयामासभूतले ॥ ततोरथंसमुत्थाप्यहयैरन्यैर्नियोजितम् ॥३५॥ अन्यंसूतंरथेकृत्वारथमारुह्यदैत्यराट् ॥ संदधेशिंजिनींराजन्को दंडेचंडविक्रमे ॥ ३६ ॥ शतंबाणान्त्समाकृष्यनिषंगात्पृष्ठतोगतान् ॥ चापेनिधायकर्णांतमाकृष्यप्राहमन्मथम् ॥ ३७ ॥ ॥ शकुनिरु वाच ॥ ॥ सर्वेषांघातयिष्यामिशत्रुमुख्यंमदोत्कटम् ॥ पश्चात्सेनांहनिष्यामियदूनांस्वस्थतेजसाम् ॥ ३८ ॥ ॥ प्रद्युम्नउवाच ॥ ॥ सदावयःकालबलेनदेहिनांप्रयातिछायेवसुखेमुहुर्मुहुः ॥ तथाचदुःखंचसुखंगतागतंघनावलिर्वायुबलेनखेयथा ॥ ३९ ॥ कृतांकृषिंसिंचतियांहि सर्वतश्छिनत्तिदात्रेणयथाकृषीवलः ॥ तथाहिकालःस्वकृतांजनावलींदुरत्ययःपातिगुणैर्विलुम्पति ॥ ४० ॥ इदंकरिष्यामिकरोमिभूयोममेद मस्तीतितदेवमाब्रुवन् ॥ अहंसुखीदुःखयुतःसुहृज्जनोलोकस्त्वहंकारविमोहितोसुर ॥ ४१ ॥ धन्यस्त्वंराजशार्दूलमुनीन्वाग्भिर्विडंबयन् ॥ स्वभावोदुस्त्यजोनॄणांपृथग्भूतस्त्रिभिर्गुणैः ॥ ४२ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवंब्रुवाणावन्योन्यंप्रद्युम्नशकुनीमृधे ॥ युयुधातेमैथिलेंद्रशक्र वृत्राविवस्थितौ ॥ ४३ ॥ इतितौधनुषोमुक्तान्विशिखान्सूर्यरश्मिवत् ॥ चिच्छेदकार्ष्णिर्बाणैनकुवाक्येनेवमित्रताम् ॥ ४४ ॥

कालके बल करिके सुखके विषे बारंबार छायाकी नाई जायहै तैसेही यह काल अपनी बनाई जो यह जननकी पंगति ताको सुख दुःखको गतागत करैहै रक्षा करैहै फिर नाश करैहै ॥ ३९ ॥ जैसे किसान खेती करिके चारो ओरते सींचैहै पके पीछे दरांतते काटैहै तैसेही ये काल अपने तीन गुणते बनाये जननकूं बढ़ायके फिर नाश करे है ॥ ४० ॥ यह करूंगो यह करूंहूं फिर मेरे यह है यह होयगो ऐसो कहत मैं सुखी मैं दुःखी यह मित्र है यह शत्रु है रे असुर ! या प्रकार यह लोक अहंकारते मोह्यो है ॥ ४१ ॥ हे राजशार्दूल ! तूं धन्य है तूं वाणीनकरिके मुनीनकी नकल करैहै परन्तु मनुष्यनको स्वभाव दुस्त्यज है जो तीनों गुणनते न्यारो है ॥ ४२ ॥ नारदजी कहैंहै—ऐसे प्रद्युम्न और शकुनि आपसमें बोलते बतराये हैं संग्राममें फिर युद्ध करन लगिगये जैसे इंद्र और वृत्रासुर ॥ ४३ ॥ या प्रकार धनुषते छूटे जे सूर्यकी किरणसे बाण तिन्हें अपने

बाणनते प्रद्युम्न काटतोभयो जैसे कुवाक्य करिके मित्रताकूं ॥ ४४ ॥ तब तो युद्धमें दुर्मद शकुनि लाख भारकी गदा लैके प्रद्युम्नके शिरमें मारतभयो ॥ ४५ ॥ प्रद्युम्न भग
वान् अपनी वज्रसी गदाते वा गदाके कांचके पात्रकी नाईं सौ टूक करिडारतोभयो ॥ ४६ ॥ फिर दैत्य रोषमें भरिके चमकतो त्रिशूल प्रद्युम्नके शिरमें मारि बडो गर्ज्यो ॥
॥ ४७ ॥ तब प्रद्युम्न त्रिशूलते त्रिशूलके सौ टूक करतोभयो फिर एक भाला खैंचिके प्रद्युम्नने शकुनिके मारयो ॥ ४८ ॥ भालाते हृदय फटिगयो कछू व्याकुलमन ह्वैके शकुनि
बेणेते कृष्णके पुत्रकूं मारतोभयो ॥ ४९ ॥ तब तो यम दंडकूं लैके बली रुक्मिणीनंदन दैत्यके बेणेको चूर्ण करतोभयो ॥ ५० ॥ वा यमदंडतेई चंचल घोडानको सारथीनको
दिव्य रथकूं सबकूं चूर्ण करिदेतोभयो ॥ ५१ ॥ घोडानसमेत सूत मरयो, रथ, टूट्यो, बेणो टूटिगयो तब वह दैत्य रोषते खड्ग लेतोभयो ॥ ५२ ॥ तब प्रद्युम्न महावीर यमदंडते

लक्षभारमयींगुर्वींगृहीत्वामहतींगदाम् ॥ जघानमूर्ध्निप्रद्युम्नंशकुनिर्युद्धदुर्मदः ॥ ४५ ॥ प्रद्युम्नोभगवान्साक्षाद्गदयावज्रकल्पया ॥ काचपात्रंय
थादंडस्तद्गदांशतधाकरोत् ॥ ४६ ॥ अथदैत्योरुषाविष्टस्त्रिशूलंचस्फुरद्रुचा ॥ प्रद्युम्नस्याहनन्मूर्ध्निशब्दमुच्चैःसमुच्चरन् ॥ ४७ ॥ त्रिशू
लेनहरेःपुत्रस्त्रिशूलंशतधाच्छिनत् ॥ कुन्तंतीक्ष्णंशकुनयेप्राहिणोद्रुक्मिणीसुतः ॥ ४८ ॥ कुन्तेनविद्धहृदयःकिंचिद्व्याकुलमानसः ॥
परिघेणहरेःपुत्रंसंतताडरणांगणे ॥ ४९ ॥ यमदण्डंततोनीत्वारुक्मिणीनन्दनोबली ॥ चूर्णंचकारदैत्यस्यपरिघंपरमाद्भुतम् ॥ ५० ॥
चचालाश्वांश्चसहसायमदण्डेनवेगतः ॥ सारथिंस्यंदनंदिव्यंपातयामासभूतले ॥ ५१ ॥ सूतेमृत्युंगतेसाश्वेचूर्णीभूतेरथेनृप ॥ परिघेचभ
ग्नेदैत्यःखड्गंजग्राहरोषतः ॥ ५२ ॥ प्रद्युम्नोपिमहावीरोयमदण्डेनमैथिल ॥ द्विधाचकारतत्खड्गंपन्नगंगरुडोयथा ॥ ५३ ॥ यमदण्डेनतंदै
त्यंस्कंधेकार्ष्णिस्तताडह ॥ तस्यघातेनशकुनिःसद्योमूर्च्छामवापह ॥ ५४ ॥ दैत्यसेनांविवेशाशुश्रीकृष्णःक्रोधमूर्च्छितः ॥ निपातयन्महा
वीरान्वनेवैश्वानरोयथा ॥ ५५ ॥ गजांस्तुरंगांश्चरथान्दैत्यांस्तानाततायिनः ॥ पातयामासयमवद्यमदण्डेनमाधवः ॥ ५६ ॥ छिन्नपादा
श्छिन्नमुखाश्छिन्नांगाश्छिन्नबाहवः ॥ दैतेयादनुजास्तेनमूर्च्छितानिधनंगताः ॥ ५७ ॥ यमरूपधरंदृष्ट्वाप्रद्युम्नंभीमविक्रमम् ॥ त्यक्त्वास्वंस्वंरणं
केचिद्दुद्रुवुस्तेदिशोदश ॥ ५८ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेशकुनियुद्धवर्णनंनामाष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३८ ॥

वाके खड्गके दो टूक करिदेत भयो गरुड जैसे सर्पकूं काटैहै ॥ ५३ ॥ तब यमदंड प्रद्युम्नने शकुनिके कंधामें मारयो ताकी चोटते शकुनि वाही समय मूर्च्छा खाय जायपरयो
॥ ५४ ॥ ता समै अंतर्यामी श्रीकृष्णकूं क्रोध आयो तब दैत्यसेनामें प्रवेश ह्वैके बडे बडे वीरनकूं पटकनलगे जैसे अग्नि वनकूं पटकैहै ॥ ५५ ॥ तब माधव (श्रीकृष्ण) हाथी
नकूं घोडानकूं रथनकूं और आततायी तिन दैत्यनकूं यमदंडते यमराज जैसे तैसे पटकनलगे ॥ ५६ ॥ ताके मारे पाँवकटे, हाथकटे, शिरकटे, भुजाकटे, दैतेय दनुज मूर्च्छित ह्वैके
मरिके जायपरे ॥ ५७ ॥ यमरूपधारी भीम पराक्रमी प्रद्युम्नको देखके कोई २ अपने २ रणकूं छोडके दशों दिशानमें भजिगये ॥ ५८ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्व

विश्वजित्खंडे भाषाटीकायां शकुनियुद्धवर्णनं नामाष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३८ ॥ नारदजी कहेहैं कि, शकुनी जो है सो अपनी सेनाकूं मरीभई देखिके फिर लाख भारके धनुषकूं उठावतो भयो ॥ १ ॥ प्रचंड कोदंडमें पैनो बाण लगायके रणमें शकुनि दैत्यनको राजा प्रद्युम्नते बोल्यो ॥ २ ॥ जगत्में कर्महीं प्रधान है, कर्महीं साक्षात् गुरु ईश्वर प्रभू है कर्महीते ऊंचे नीचे पदकूं प्राप्त होयहै और हे राजन्! कर्महीते जीत हार होयहै ॥ ३ ॥ जैसे हजार गौनमें जा गौको जो बछरा होय वो वाईके थनते जायलगे है वाको सब देखेहै तैसेही जाने जो शुभाशुभ कर्म करयोहै अन्य हजारों मनुष्यके होंते वो कर्म ताहीकूं प्राप्त होयहै ॥ ४ ॥ सो मैंने शपथ करीहै कि, हे प्रद्युम्न! मैं अपने दृढकर्मते प्रद्युम्न वैरीकूं जीतूंगो वाको तूं यो उपाय करि जाते तेरी भूमिमें हारि न होय ॥ ५ ॥ तब प्रद्युम्नने कही कि, जो तूं कर्महीकूं प्रधान मानेहै तो देख कर्मको फल तो समयपैही होय है कर्तव

॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ शकुनिःपुनरुत्थायस्वबलंवीक्ष्यपोथितम् ॥ जग्राहसमहाराजलक्षभारसमंधनुः ॥ १ ॥ निधायबाणंनिशितंकोदण्डेचण्डविक्रमे ॥ कार्ष्णिंप्राहरणेराजन्शकुनिर्दैत्यराड्बली ॥ २ ॥ ॥ शकुनिरुवाच ॥ ॥ कर्मप्रधानंजगतीतलेमहत्कर्मैवसाक्षाद्गुरुरीश्वरःप्रभुः ॥ उच्चावचत्वंभवतीहकर्मणातेनैवराजन्विजयःपराजयः ॥ ३ ॥ गवांसहस्रेषुयथाहिवत्सकःस्वमातरंविन्दतिपश्यतांसताम् ॥ तथाहियेनापिकृतंशुभाशुभंनरेषुतिष्ठत्सुतमेवगच्छति ॥ ४ ॥ ततोविजेष्यामिदृढेनकर्मणारिपुंभवन्तंशपथःकृतोमया ॥ सद्यःकुरुत्वंप्रतिकारमेवतद्येनापिनस्याद्भुवितेपराजयः ॥ ५ ॥ ॥ प्रद्युम्नउवाच ॥ ॥ कर्मप्रधानंयदिमन्यसेभवान्कालंविनातर्हिफलंनविद्यते ॥ कृतेचपाकेयदिविघ्नताक्वचित्सदाबलिष्ठंसमयंविदुःपरे ॥ ६ ॥ पाकप्रकारेसतिपाकसाधनंकदापिकर्तारमृतेनजायते ॥ वदंतिकर्तारमतःपरंपरेनकमेकालंशृणुदैत्यपुंगव ॥ ७ ॥ योगंविदुःकेपियदाह्ययोगतःकथंभवेत्कौकिलपाकसाधनम् ॥ सर्वंहिवायोगमृतेवृथाभवेत्कालेतथाकर्मणिभर्तरिस्थिते ॥ ८ ॥ योगंतथाकर्मणिकर्तरिस्थितेकालेविधिंसांख्यमृतेवृथाभवत् ॥ पाकप्रकाराद्यविचारकृद्यदानतर्हिपाकस्ययथाप्रसाधनम् ॥ ॥ ९ ॥ योगकर्मविधिकारकसांख्यैर्ब्रह्मपुरुषमृतेनहिकिंचित् ॥ तन्नमामिपरिपूर्णतमांशंयेनविश्वमखिलंविदितंखलु ॥ १० ॥ ॥ शकुनिरुवाच ॥ ॥ हेप्रद्युम्नमहाबाहोत्वंसाक्षाज्ज्ञानशेवधिः ॥ तवदर्शनमात्रेणनरोयातिकृतार्थताम् ॥ ११ ॥

करेऊपे जो विघ्न आयजाय तो कालहीकूं कोई आचार्य बलवान् कहेहैं ॥ ६ ॥ फलके वखतपै तो फल होय है पर कर्ता विना नहीं होय है याते बहुतसे कर्ताहीकी बडाई करें हैं अर्थात् मुख्य मानेंहै और हे दैत्यपुंगव! कालको तथा कर्मको मुख्य नहीं मानेंहैं ॥ ७ ॥ कोई उपायहूं कहे हैं कि, उपायके बिना पृथ्वीमें कोई कार्य नहीं होयहै काल कर्मके वश है पर उद्योगविना फल सिद्ध नहीं होय है ॥ ८ ॥ देखो कर्म, कर्ता और काल इनके विद्यमान होतेहू विधि और सांख्यके विना कछू उपाय नहीं होयहै जैसे पाकके प्रकारके विचारके करनवारेके विना पाककी सिद्धि नहीं होयहै ॥ ९ ॥ ऐसेही योग, कर्म, विधि, कारक और सांख्य तिनके समूहनतेहू ब्रह्म पुरुषके विना कछू नहीं होयहै ता परिपूर्णतम भगवान्कूं नमस्कार है जा करिकै सब विश्व रच्यो गयोहै ॥ १० ॥ तब शकुनि बोल्यो–हे प्रद्युम्न! हे बडी भुजानवारे! तूं साक्षात् ज्ञानको अवधि है तेरे दर्शनतेई

नर कृतार्थ होयहैं ॥ ११ ॥ जे तेरे संगमें नित्य वार्ता करैंहैं तिनकी महिमा कहिवेकूँ ब्रह्मादिककी सामर्थ्य नहीं है ॥ १२ ॥ नारदजी कहैहैं—ऐसे कहिके मायावी दैत्यराज शकुनि सीख्यो जो मयदैत्यपैते रौरवास्त्र ताकूं संधान करतोभयो ॥ १३ ॥ ताईसमें बडे बडे सर्प दंदशूक बडे विषैले बीछू किरोडन निकरे वे बडे भयंकर रौद्ररूप जिनके रूप है ॥ १४ ॥ तिनने सब फौज डसी और तिनकी फुंकारनते मतवारी हैगई ताको महाबुद्धि प्रद्युम्नने देखके गरुडास्त्र चलायो ॥ १५ ॥ किरोडन गरुड बाणमेंते निकसे मोर नीलकंठ निकसे और भयंकर पखेरू ताके देखत निकसे ॥ १६ ॥ वे सर्पनकूं, दंदशूकनकूं, बीछूनकूं, ग्रसनलगे बडी चोंचि, बडे पंख छिनमें दीखे छिनमें अदृश्य हैजायँ ॥ ॥ १७ ॥ फिर वो दैत्यहू पिशाचनकी गंधर्वनकी, गुह्यकनकी राक्षसनकी मायाकूँ छोडनलग्यो बडो युद्धमें दुर्मद है ॥ १८ ॥ ताके बाणमेंते तैसेई प्रेत और किरोडन भूत निकसे

येत्वत्संगंसमासाद्यवार्तांकुर्वन्तिनित्यशः ॥ तेषांतुमहिमानंहिवक्तुंनालंचतुर्मुखः ॥ १२ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्ताशकुनिर्दैत्यो
मायावीदैत्यराड्बली ॥ शिक्षितंमयदैत्येनरौरवास्त्रंसमादधे ॥ १३ ॥ महोरगादंदशूकावृश्चिकाश्चविषोत्कटाः ॥ कोटिशोनिर्गताराजन्करा
लारौद्ररूपिणः ॥ १४ ॥ तैर्दंशितंबलंसर्वंफूत्कारैर्मत्ततांगतम् ॥ वीक्ष्यकार्ष्णिर्महाबुद्धिर्गारुडास्त्रंसमादधे ॥ १५ ॥ कोटिशोगरुडाबाणान्नील
कण्ठाःकलापिनः ॥ अन्येचपक्षिणोभीमानिर्गतास्तस्यपश्यतः ॥ १६ ॥ अग्रसन्नुरगान्क्रुद्धेदंदशूकान्सवृश्चिकान् ॥ तीक्ष्णतुण्डाबृहत्पक्षाः
क्षणात्तेऽदृश्यतांगताः ॥ १७ ॥ दैत्योपिराक्षसींमायांगांधर्वींगौह्यकींपुनः ॥ पैशाचींसंदधेराजञ्शकुनिर्युद्धदुर्मदः ॥ १८ ॥ तद्बाणान्निर्गताभू
तास्तथाप्रेताश्चकोटिशः॥ अंगारान्मुमुचुस्तेवैकरालाःकृष्णरूपिणः ॥१९॥ ज्ञात्वाथतामसींमायांपैशाचींमीनकेतनः ॥ सत्त्वास्त्रंसंदधेबाणेयु
द्धाकांक्षीहरेःसुतः ॥ २० ॥ तस्माद्विनिर्गताराजन्कोटिशोविष्णुपार्षदाः ॥ जघ्नुःपिशाचींतांमायांपन्नगींगरुडोयथा ॥ २१ ॥ मायांदैत्यो
पिमायावीगौह्यकींसंदधेपुनः ॥ संभूताकोटिशोमेघागर्जंतोभीमरूपिणः ॥२२॥ विष्ठामूत्रंचरुधिरंमेदोमज्जास्थिवर्षिणः ॥ ज्ञात्वाथगौह्यकींमा
यांप्रद्युम्नोभगवान्हरिः ॥२३॥ तन्नाशार्थंमहाराजकोलास्त्रंसंदधेत्विषो ॥ तद्बाणाद्यज्ञवाराहोनिर्गतोघर्घरस्वनः ॥२४॥ सटाविधूयवेगेनदंष्ट्रया
तीक्ष्णयाघनान्॥विदारयन्रणेरेजेवेणून्मत्तगजोयथा॥२५॥दैत्योथमायांगांधर्वींचकाररणमण्डले॥युद्धंनदृश्यतेतद्धेमसौधानिकोटिशः ॥२६॥

वे किरोडन अंगारनकूं डारते वे बडे कारे कारे भयंकर हैं ॥ १९ ॥ तब तामसी या पिशाची मायाकूं देखि प्रद्युम्नने सत्त्वास्त्रको संधान कियो युद्धाकांक्षी हरिको बेटा ॥ २० ॥ तामेंते किरोडन विष्णुके पार्षद निकसे ते सबरी या पिशाची मायाको नाश करनलगे जैसे गरुड सर्पनको नाश करै है ॥ २१ ॥ मायावी दैत्यने फिर गुह्यकनकी माया कीनी तामेंते किरोडन बडे भयंकर रूपवाले गर्जनकरते मेघ निकसे ॥ २२ ॥ विष्ठा, मूत्र, मेद, मांसकी वर्षा करैहै तब याको गुह्यकनकी माया प्रद्युम्न भगवान् जानिके शूकरास्त्रकूं चलावतोभयो ॥ २३ ॥ ताके नाशके अर्थ ता बाणनते यज्ञवाराह निकसे घर्र घर्र शब्द करतो ॥ २४ ॥ अपनी सटा (गर्दनबाल) तिनकूं बिखेर घननकूँ विदीर्ण करतो मतवारे हाथी जैसे वेणनको विदीर्ण करैहै तैसे शोभित भयो ॥ २५ ॥ फिर ये दैत्य गंधर्वी मायाकूं करतो भयो युद्ध नहीं दीखे

है किन्तु सोंनेनके महल ॥ २६ ॥ वस्त्र, अलंकारनसो युक्त सबनके देखते देखते हैगये विद्याधरी, गंधर्वी हैं वे नृत्य करनलगीं मंगल होंनलगे ॥ २७ ॥ मृदंग, ताल, बाजे, मोहन रागनसहित बजनलगे हाव भाव कटाक्षते जननकूं तुष्ट करती देखेहैं ॥ २८ ॥ मोहिनी सुन्दरी रामा श्यामा कमललोचना तिनके लावण्य रागनते जब सब यादव मोहमें आयगये ॥ २९ ॥ तब वा गांधर्वी मोहिनी मायाकूं जानिके महावली प्रद्युम्न ताके प्रहारके अर्थ रणमण्डलमें ज्ञानास्त्रको प्रयोग करतोभयो ॥ ३० ॥ हे नृपेश्वर ! ज्ञानके उदयपै मोहको नाश होयहै जब माया नाश हैगई तब शकुनी क्रोधमें मूर्च्छित हैगयो ॥ ३१ ॥ तब वह दैत्यपुंगव राक्षसी मायाको संधान करतोभयो ता समय हे राजन् ! सपक्ष पर्वतनते आकाश छायगयो ॥ ३२ ॥ पृथ्वीमें बडो अन्धकार हैगयो तब जरे वृक्ष, कबंध, रुधिर, और शिला, हाड़, ये वर्षन लगे ॥ ३३ ॥ हे विदेहराज ! गदा, परिघ, निस्त्रंश,

वस्त्रालंकारयुक्तानिबभुःपश्यतांसताम् ॥ विद्याधर्य्यश्चगन्धर्वोगायंतोनृत्यतत्पराः ॥ २७ ॥ मृदंगतालवादित्रैर्मोहनैरागमिश्रितैः ॥ हाव भावकटाक्षैश्चतोषयंत्योजनान्नृप ॥ २८ ॥ मोहिन्यःसुंदरीरामाःश्यामाःकमललोचनाः ॥ तासांलावण्यरागाभ्यांमोहंयातेषुवृष्णिषु ॥ ॥ २९ ॥ गांधर्वींमोहिनींमायांज्ञात्वाकार्ष्णिर्महाबलः ॥ संदधेतत्प्रहारार्थंज्ञानास्त्रंरणमंडले ॥ ३० ॥ ज्ञानोदयेतदाजातेमोहनाशोनृपेश्वर ॥ नाशंगतायांमायायांशकुनिःक्रोधमूर्च्छितः ॥ ३१ ॥ राक्षसींसंदधेमायांमायावीदैत्यपुंगवः ॥ सपक्षैःपर्वतैराजन्क्षणात्संछादितंनभः ॥ ३२ ॥ महांधकारोऽभूत्पृथ्व्यांपरार्द्धंवचनैरिव ॥ दग्धवृक्षशिलास्थीनिकबंधरुधिराणिच ॥ ३३ ॥ गदापरिघनिस्त्रिंशमुसलादीनि सर्वतः ॥ अंबराद्भ्रमुःशैलमेघाइवविदेहराट् ॥ ३४ ॥ रक्षोगणाःशूलहस्ताछिंधिभिंधीतिवादिनः ॥ यातुधानाश्चशतशोभक्षयंतोद्विपान्हयान् ॥ ३५ ॥ सिंहव्याघ्रवराहाश्चदृश्यंतेरणमंडले ॥ मर्दयंतोनखैर्नागांश्चर्वयंतोवपूंषिवै ॥ ३६ ॥ पलायमानंस्वबलंदृष्ट्वाकार्ष्णिर्महाबलः ॥ जेतुंतांराक्षसींमायांनृसिंहास्त्रंसमादधे ॥ ३७ ॥ आविर्भूतोहरिःसाक्षान्नृसिंहोरौद्ररूपधृक् ॥ स्फुरत्सटोलल्जिह्वोनखलांगूलभूषितः ॥ ३८ ॥ चलद्वालोभीषणास्योहुंकारेणातिभीषणः ॥ सिंहनादंचकुर्वन्वैसंस्थितोरणमंडले ॥ ३९ ॥ ननादतेनब्रह्मांडंसतलोकैर्बिलैःसह ॥ विचेलुर्दिग्गजास्ताराएजद्भूखंडमंडलम् ॥ ४० ॥

मुसल ये सब ओरते परनलगे, और आकाशमें मेघनकी नाईं पर्वत भ्रमनलगे ॥ ३४ ॥ और राक्षसनके गण शतशः यातुधान त्रिशूल हाथनमें लिये छेदलेउ भेदलेउ ऐसे कहते ये हजारन राक्षस घोड़ा हाथीनकूं खानलगे ॥ ३५ ॥ और सिंह, बघेरे, वराह रणमंडलमें दीखनलगे नखनते हाथीनकूं खोंसनलगे वीरनके शरीरनको चबावनलगे ॥ ३६ ॥ तब पलायमान रणमेंते अपनी सेनाकूं देखिके महावली प्रद्युम्न वा राक्षसी मायाकूं जीतवेके लिये नृसिंहास्त्रको प्रयोग करतोभयो ॥ ३७ ॥ तब साक्षात् नृसिंहजी भयंकर रूपकूं धरे प्रकट होतेभये गर्दनके बाल बिखरि रहे हैं जीभ निकसि रहीहै, नख, पूंछ करिके शोभित हैं ॥ ३८ ॥ चलायमान पूंछ जिनकी भयंकर मुख हुंकारते अति भयंकर सिंहनाद करते रणमण्डलमें स्थित हैगये ॥ ३९ ॥ जो आपके गर्जे सो सातों स्वर्ग, सातों पातालसहित ब्रह्मांड झंकारउठ्यो, दिग्गज चलायमान हैगये, तारे चलिगये, भूखंडमण्डल चलायमान

हैगयो ॥ ४० ॥ वे नृसिंह दैत्यनके देखत देखत वृक्षनसहित पर्वतनकूं तीक्ष्ण नखनते पृथ्वीमें फेंकनलगे ॥ ४१ ॥ राक्षसनके गणनकूं पकारिके बडे वेग करिके पांवनते वे नृसिंह यातुधाननके गणनको मर्दन करतेभये ॥ ४२ ॥ सिंह, बघेरे, सूअर तिनकूं तीक्ष्ण नखनते चीर चीरके आकाशमें फेंकिदीने फिर अन्तर्धान हैगये ॥ ४३ ॥ जब राक्षसी माया नाश हैगई तब प्रद्युम्न रणके आँगनमें विजयके देनवारो मौलेंद्र शंखकूं बजावतभयो ॥ ४४ ॥ चारों ओरते जय जय शब्द होनलग्यो, दुंदुभी बजनलगी, देवता प्रद्युम्नके ऊपर पुष्पनकी वर्षा करनलगे ॥ ४५ ॥ जब अपनी माया निकसिगई तब दैत्यनको राजा शकुनी रथसुद्धा सेनासहित अंतर्धान हैगयो ॥ ४६ ॥ फिर मय दैत्यकी बताई मायाकूं दैत्य करतोभयो हाथीकी सूंडसी मोटी धारनते मेह वर्षनलगे, बीजुरी तडकनलगी ॥ ४७ ॥ और सांवर्त्तक नाम गण मेघनके आये सब सत्पुरुषनके देखत देखत एक क्षणमें सबरे

गृहीत्वाह्यम्बरेशैलान्सवृक्षान्नखरैःखरैः ॥ पातयामासभूपृष्ठेदैत्यानांचप्रपश्यताम् ॥४१॥ रक्षोगणान्संगृहीत्वापादयामासवेगतः ॥ यातुधानगं णान्पद्भ्यांसममर्दहरिर्मृधे ॥ ४२ ॥ सिंहान्व्याघ्रान्वराहांश्चसंविदार्यनखैःखरैः ॥ चिक्षेपगगनेविष्णुस्तत्रैवांतर्दधेपुनः ॥४३॥ नाशंगतायां मायायांराक्षस्यांरुक्मिणीसुतः ॥ शंखंदध्मौविजयदंमौलेंद्रंचरणांगणे ॥ ४४ ॥ अभूज्जयजयारावोदुंदुभिध्वनिमिश्रितः ॥ प्रद्युम्नस्योपरि सुराःपुष्पवर्षप्रचक्रिरे ॥४५॥ स्वमायायांनिर्गतायांशकुनिर्दैत्यपुंगवः ॥ सरथःसैनिकैःसार्द्धंतत्रैवांतर्हितोभवत् ॥४६॥ मायांचकारदैतेयींम यदैत्यप्रदर्शिताम् ॥ हस्तिशुण्डासमांधारांवर्षतोतितडित्स्वनाः ॥४७॥ सांवर्त्तकगणामेघाआजग्मुःपश्यतांसताम् ॥ क्षणात्सर्वेसमुद्रास्तेचंड वातेनवेपिताः ॥ ४८ ॥ क्षुभिताब्धिसंघर्षावर्तैःप्लावितभूरुहाः॥ भूमंडलंसपदितत्प्लावितंचात्मभिःसमम् ॥ ४९ ॥ दृष्ट्वाथयादवाःसर्वेप्राप्तु स्तत्रभयंबहु ॥ वदंतोरामकृष्णेतिविस्मृतस्वपराक्रमाः ॥ ५० ॥ क्षणमात्रेणराजेंद्रतूष्णींभूताःपराजिताः ॥ तदाकार्ष्णिर्महाबाहुःकोदंडेचंडवि क्रमे ॥ बाणंनिधायसहसाश्रीकृष्णास्त्रंसमादधे ॥ ५१ ॥ नवार्ककोटिद्युतिमन्महन्महोवीरंजयन्मैथिलवैदिशोदश ॥ समागतंतत्रकुशस्थली पुरःस्वयंपरंस्वार्थमिवात्मवांछितम् ॥ ५२ ॥ तस्मिन्परेतेजसिनूतनांबुदच्छविंसुवर्णांबुजरेणुवाससम्॥ भृङ्गावलीकूजितकुंतलावलिंस्रजंदधानं नववैजयंतीम् ॥ ५३ ॥ श्रीवत्सरत्नोत्तमचारुवक्षसंचतुर्भुजंपद्मविशालवीक्षणम् ॥ स्फुरत्किरीटंवरहारनूपुरंलसन्नवार्कद्युतिहेमकुण्डलम्॥५४॥

समुद्र चंडपवनके भैरभये घिरगये ॥ ४८ ॥ क्षोभकूं प्राप्त हैगये वृक्ष पृथ्वीके सब डूबिगये अपनपे करिके सहित सबरो भूमण्डल डूबिगयो ॥ ४९ ॥ या बातको यादव देखिके सबरे भयकूं प्राप्त हैगये रामकृष्ण रामकृष्ण कहते अपनो पराक्रम भूलगये ॥ ५० ॥ हे राजेंद्र ! एक क्षणमें सब चुप्प हैगये हारिगये तब प्रद्युम्न महाबाहु अपने प्रचण्ड धनुषपै बाण चढाय श्रीकृष्णास्त्रको प्रयोग करतोभयो ॥ ५१ ॥ नवीन किरोड सूर्यकोसो तेज हे मैथिल ! दशों दिशानके वीरनको जीतनहारो तहां द्वारकाके निकट आयगयो जो वांछित अपनो अर्थ हो ॥ ५२ ॥ ता पुरके तेजके विषें नवीन मेघकीसी छबि सुवर्णके कमलके मकरंदके रंगकोसो पीतांबर ओढे भौरानकी पंक्तिनकरके शब्दित कुंतल अलकावलिको धारण करें देदीप्यमान किरीट, कुंडल, हार, नूपुर तिनकी कांतिते देदीप्यमान वैजयन्ती मालाकूं धारण करें ॥ ५३ ॥ वक्षस्थलमें श्रीवत्सको चिह्न जिनके चार

भुजाधारी कमलसे विशाल नेत्र और अति सुशोभित सूर्यकेसे कुंडल जाके ता श्रीकृष्णकूं देखतभयो ॥ ५४ ॥ तब श्रीकृष्णकूं देखि यादव सब हर्षकूं प्राप्तभये हाथजोरि नमस्कार करिके पुष्पनकी वर्षा करनलगे चारोंओरते जय जय शब्द करनलगे ॥ ५५ ॥ ताई समें आयके शार्ङ्ग धनुषके एकही बाणते शकुनिके धनुषकूं सहजमेंई श्रीकृष्ण काटिडारतभये ॥ ५६ ॥ तबही डरपिके शकुनि कट्यो है धनुष जाको सो शत्रुनको समूह लेकेकूं चंद्रावतीपुरीकूं चल्योगयो ॥ ५७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटीकायां श्रीकृष्णागमनं नामैकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ३९ ॥ नारदजी कहैंहैं—जब शकुनि दैत्य चल्योगयो तब भगवान् कमलेक्षण प्रद्युम्नादिक सब यादवनकूं बुलायके यह बोले ॥ १ ॥ तब भगवान् बोले—पहले या दैत्य शकुनिनें सुमेरके उत्तरमाऊं चार युगतलक अन्न छोड़िके तप करिके महादेवकूं प्रसन्न कीनों ॥ २ ॥ जब चार युग व्यतीत हैगये तब साक्षात् महेश्वर

विलोक्यदेवंयदवोतिहर्षिताःपरंप्रणेमुःकृतहस्तसंपुटाः ॥ प्रचक्रिरेमैथिलपुष्पवर्षिणोमराजयारावमतीवसर्वतः ॥ ५५ ॥ तदैत्यशकुनेःसज्यंकोदण्डंप्राच्छिनद्रुषा ॥ शार्ङ्गमुक्तेनतच्छार्ङ्गीबाणेनैकेनलीलया ॥ ५६ ॥ सच्छिन्नधन्वाशकुनिस्त्यक्त्वायुद्धंप्रधर्षितः ॥ हेतिसंहतिमानेतुंययौचन्द्रावतींपुरीम् ॥ ५७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेश्रीकृष्णागमनंनामैकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ दैत्येगतेथशकुनौभगवान्कमलेक्षणः ॥ कार्ष्ण्यादियादवान्सर्वानाहूयेत्थमुवाचह ॥ १ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ दैत्योयंशकुनिःपूर्वंसुमेरोः पार्श्वउत्तरे ॥ चतुर्युगंवर्जितान्नस्तपसातोषयच्छिवम् ॥ २ ॥ चतुर्युगेव्यतीतेतुसाक्षाद्देवोमहेश्वरः ॥ प्रसन्नोदर्शनंदत्त्वावरंब्रूहीत्युवाचह ॥ ३ ॥ नत्वाथशकुनिर्दैत्यःकृतांजलिपुटःशनैः ॥ हृष्टरोमाश्रुपूर्णाक्षः प्राहगद्गदयागिरा ॥ ४ ॥ मृतःसन्भूमिसंस्पर्शाद्भूयात्संजीवितःप्रभो ॥ आकाशेमेमृतिर्देवमाभूयाद्घटिकाद्वयम् ॥ ५ ॥ दैत्येनोक्तोहरःसाक्षाद्दत्वातस्मैवरद्वयम् ॥ पंजरस्थंशुकंदत्त्वाप्राहदैत्यंनताननम् ॥ ६ ॥ जीवकल्पंशुकंचैनंरक्षदैत्यसदानघ ॥ अस्मिन्मृतेचज्ञातव्यंनिधनंस्वंत्वयासुर ॥ ७ ॥ इति दत्त्वावरंतस्मैरुद्रश्चांतरधीयत ॥ तस्मात्तस्यवधोदुर्गेभविष्यतिशुकेमृते ॥ ८ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वावीरसदसिभगवान्देवकीसुतः ॥ सुपर्णंशीघ्रमाहूयप्राहप्रहसिताननः ॥ ९ ॥

देवने प्रसन्न हैके दर्शन दीनें और यह वचन बोले कि, वर मांग ॥ ३ ॥ तब शकुनि दैत्य दंडौत करिके हाथ जोरि आंसू जाके आयगये रोमांच हैआये सो गद्गद वाणीते यह बोल्यो ॥ ४ ॥ मैं मरजाऊं तौहू भूमिके स्पर्शते फिर जीपरुं और आकाशमेंहू द्वै घड़ी तलक मेरी मृत्यु मति होउ ॥ ५ ॥ दैत्यको वचन सुनिके महादेवजी ये दोऊ वर देतभये और पींजरामें एक तोता देके शकुनिदैत्यते बोले, ॥ ६ ॥ हे दैत्य ! जीवके तुल्य या तोताकी रक्षा करि याके मरिवेपै तूं अपनों मरिवो जानि लीजो ॥ ७ ॥ ऐसे वर दैके रुद्र अन्तर्धान हैगये ताते तोताके मरेपै दुर्गमें वो शकुनि मरेगो ॥ ८ ॥ नारदजी कहैंहैं ऐसे देवकीनंदन भगवान वीरसभामें कहिके बड़ी जल्दी

गरुडकूं बुलायके हंसिके यह वचन बोले ॥ ९ ॥ हे गरुड ! महाबुद्धे ! तूं चन्द्रावती पुरीकूं चल्यो जा जो पुरी दैत्यसेनाकरिके आवृत सौ योजनकी है ॥ १० ॥ बडे २ ऊंचे आकाशके स्पर्श करनवारे जामें महल हैं सोनेनके रत्ननके मनोहर विचित्र बाग बगीचानते और दैत्यपुंगवनते शोभित है ॥ ११ ॥ किले २ पै श्रेष्ठ दैत्य रक्षा करि रहेहैं ताकूं देखिवेकूं गरुडजी सूक्ष्म रूप धरलेतेभये ॥ १२ ॥ दैत्य न लखे जैसें तैसें महलनकी गलीनको देखत तिनमें उडत २ गरुड शकुनिके मन्दिरमें गयो ॥ १३ ॥ दैत्यको जीव जो वो तोता ताकूं देखत २ एक क्षण ठहरगयो युद्धके लिये रह्यौ जो शकुनि ताहि देखतोभयो ॥ १४ ॥ नाना हथियारनकूं धरें बडो वीर क्रोधमे भर्यौ ताकूं वाकी मदालसा नाम स्त्री गोदमें बैठारिके समझावै ही यह कहिरही ही ॥ १५ ॥ हे राजन् ! सबरे सुहृद तुमारे भैया सब तुमारे अनुकूल हैं बडे २ उद्भट दैत्यपुंगव तुमने

॥॥श्रीभगवानुवाच॥॥ शृणुतार्क्ष्यमहाबुद्धेगच्छचन्द्रावतींपुरीम्॥ शतयोजनविस्तीर्णांदैत्यसेनासमाकुलाम्॥१०॥ प्रासादैर्गगनस्पर्शैर्हेमरत्न
मनोहरैः ॥ विचित्रोपवनारामैःशोभितांदैत्यपुंगवैः ॥११॥ दुर्गेदुर्गेद्वारदेशेरक्षितांदैत्यपुंगवैः ॥ तांद्रष्टुंगरुडोराजन्सूक्ष्मरूपंदधारह ॥ १२ ॥
अलक्षितोदैत्यवृंदैःपश्यन्प्रासादतोलिकाः॥ तेषूत्पतन्नुत्पतंश्चशकुनेर्मंदिरेगतः ॥१३॥ प्रेक्षञ्शुकंदैत्यजीवंक्षणंतत्रस्थितोभवत् ॥ युद्धार्थंदंशि
तंतत्रशकुनिंदैत्यपुंगवम्॥१४॥नानाशस्त्रधरंवीरंक्रोधपूरितमानसम् ॥ गृहीत्वातंपरिकरेप्राहराजन्मदालसा ॥१५॥ ॥ मदालसोवाच ॥ ॥
राजन्सर्वेपिसुहृदोनुकूलाभ्रातरस्तव ॥ मारिताःसंगरेभर्त्तःप्रोद्भटादैत्यपुंगवाः ॥ १६ ॥ मायाहियोद्धुंयदुभिरागतोभगवान्हरिः ॥ देहितस्मै
बलिंसद्योयेनश्रेयोह्यवाप्स्यसि ॥ १७ ॥ ॥ शकुनिरुवाच ॥ ॥ हनिष्यामियदून्सैन्यैर्महताभ्रातरोबलात् ॥ मृत्युर्मेनास्तिभूमध्येशिव
स्यापिवरेणमे ॥ १८ ॥ उपद्वीपेचन्द्रनाम्निपतंगेपर्वतेशुभे ॥ मेजीवरूपीतुशुकोवर्ततेसांप्रतंप्रिये ॥ १९ ॥ शंखचूडेनसर्पेणरक्षितोहर्निशं
शुकः ॥ एतत्कोपिनजानातिकथंमृत्युश्चमेभवेत् ॥ २० ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ शुकवार्तांततःश्रुत्वागरुडोदिव्यवाहनः ॥ उपद्वीपंतु
चन्द्राख्यंगंतुंतस्मान्मनोदधे ॥ २१ ॥ उत्पतन्गरुडोवेगात्समुद्रस्यतटेगतः ॥ द्वीपंविचिन्वंश्चंद्राख्यमाकाशेविचरन्खगः ॥ २२ ॥

युद्धमे मारे हैं ॥ १६ ॥ अब तुम यादवनते युद्ध करिवेकूं मति जाउ अब वहां भगवान् हरि आयगये है उनकूं जल्दी भेट देउ जाते तुमारो कल्याण होयगो ॥ १७ ॥ तब शकुनि बोल्यो सेनासहित मैं यादवनकूं मारूंगो क्योंकि जबरदस्तीसो वाने भैया मेरे मारेहैं मेरी भूमिमें मृत्यु नही है मोकूं महादेवको वर है ॥ १८ ॥ हे प्यारी ! एक चन्द्र नाम करिके उपद्वीप है तहां पतंग पर्वत है तापै मेरो जीवरूपी तोता रहैहै ॥ १९ ॥ तहां शंखचूड सर्प वाकी रात दिन रक्षा करयो करैहै या बातकूं कोई नही जानैहै मेरो मृत्यु कैसे होयगी ॥ २० ॥ नारदजी कहैं है तोताकी बात सुनिकें दिव्य वाहन गरुडजी चन्द्रनाम उपद्वीपकूं जायवेकूं मन करतेभये ॥ २१ ॥ वहांते बडे वेगते

उडिके समुद्रके किनारेपै गये चन्द्रद्वीपकूं देखिबेके लिये आकाशमे उडनलगे ॥ २२ ॥ भयंकर गर्जिरह्यो सौ योजनको चौडो जो समुद्र तामें देखत २ सिंहलद्वीपमें
पहुंचे वह लताके समूहनते बडो मनोहर हैरह्योहै ॥ २३ ॥ तहां जननते गरुडजी पूछनलगे याको कहा नाम है ? वे कहे सिंहल है ऐसे सुनिके वहांते उडे ॥ २४ ॥ तब महावेगते
लंकामें प्राप्त भये त्रिकूटाचलके शिखरपै लंकाते फिर पांचजन्य द्वीपमे गये ॥ २५ ॥ पांचजन्यके निकट भूख लागी तब तीक्ष्ण चोंचते मछरीनकूं बलते खानलगे ॥ २६ ॥ तहां एक बडो
लंबो मगर दो योजन लंबो गरुडको पांव पकरिके जलमें खैचनलग्यो ॥ २७ ॥ तब गरुड बलते किनारेपै खैंचन लग्यो हे राजन् ! उनकी दो घटी ताईं खेंचाखेंची भई ॥ २८ ॥
प्रचंड वेग गरुडजी पैनी चोंचते पीठिमें मारतभये जैसे दंडते यमराज ॥ २९ ॥ तबही मगररूपकूं छोडिके विद्याधर हैगयो गरुडजीकूं नमस्कार करिके हंसत २ यह बोल्यो ॥ ३० ॥

शतयोजनविस्तीर्णेसमुद्रेभीमनादिनि ॥ पक्षिराट्सिंहलंप्रापलतावृन्दमनोहरम् ॥ २३ ॥ तत्रपप्रच्छगरुडःकिंनामास्यजनान्प्रति ॥ सिंहलो
यमितिश्रुत्वागरुडःप्रोत्पतन्खगः ॥ २४ ॥ लंकांप्राप्तोमहावेगात्त्रिकूटशिखरेनृप ॥ लंकांप्राप्यततोवेगात्पांचजन्यंजगामह ॥ २५ ॥ पांचज
न्याब्धिनिकटेक्षुधितःपक्षिराड्बली ॥ प्रसह्यमीनाञ्जग्राहतीक्ष्णयातुंडयाभृशम् ॥ २६ ॥ तत्रैकोमहानक्रोलंबितोयोजनद्वयम् ॥ पादेगृही
त्वागरुडंविचकर्षजलांतरे ॥ २७ ॥ बलेनगरुडस्तस्यचकाराकर्षणंतटे ॥ तयोराकर्षणंराजन्मिथोभूद्घटिकाद्वयम् ॥२८॥ प्रचण्डवेगोगरुड
स्तीक्ष्णयातुंडयाचतम् ॥ तताडपृष्ठेधृष्टांगंदंडेनयमराड्यथा ॥२९॥ नक्ररूपंविहायाशुसोभूद्विद्याधरोमहान् ॥ नत्वाश्रीगरुडंसाक्षात्प्राहप्रह
सिताननः॥ ३० ॥ ॥ विद्याधरउवाच ॥ ॥ अहंविद्याधरःपूर्वंनाम्नावैहेमकुण्डलः ॥ आकाशगंगायांस्नातुंगतोदिविजमण्डले ॥ ३१ ॥ तत्र
स्नानंप्रकुर्वन्तंककुत्स्थंमुनिसत्तमम् ॥ पादेगृहीत्वाहास्येनजलांतर्गतवानहम् ॥ ३२ ॥ मांशशापककुत्स्थोपित्वंनक्रोभवदुर्मते ॥ मयाप्रसादितः
शीघ्रंप्रसन्नःसन्वरंददौ ॥ ३३ ॥ तार्क्ष्यतुण्डप्रहारेणनक्रत्वात्त्वंविमुच्यसे ॥ तस्यशापादद्यमुक्तःकृपयातवसुव्रत ॥३४॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥
इत्युक्त्वाचगतेस्वर्गंविद्याध्रेहेमकुण्डले ॥ उड्डितोगरुडस्तस्मात्पक्षाभ्यांव्योममण्डले ॥ ३५ ॥ हरिणाख्यंचोपद्वीपंप्राप्तवान्वेगतःखगः ॥
अपांतरतमास्तत्रकरोतिविपुलंतपः ॥ ३६ ॥ तस्याश्रमेखगेशस्यपक्षमेकंपपातह ॥ तंदृष्ट्वाप्राहगरुडमपांतरतमोमुनिः ॥ ३७ ॥

हे गरुडजी ! मै पहले हेमकुंडल नाम विद्याधर हो सो मैं स्वर्गमें आकाशगंगापै न्हायवे गयो हो ॥ ३१ ॥ तहां ककुत्थ मुनिपुंगव न्हायरहे हे हंसीमें मैं उनके पांव पकरिके
जलमें लेगयो ॥ ३२ ॥ तब उन्ने मोकूं शाप दीनों कि हे दुर्बुद्धे ! तूं मगर हैजा तब मैंने हालही उनकूं प्रसन्न कीनों तब उन्ने मोकूं वर दीनों कि ॥ ३३ ॥ जब गरुडकी चोंच
तेरी पीठिते लगेगी तब तेरी मगरकी योनि छूटि जायगी सो हे सुव्रत ! आज मैं उनके शापते आपके अनुग्रहते छूटगयो ॥ ३४ ॥ नारदजी कहैं हैं–ऐसे कहिके हेमकुंडल
विद्याधर स्वर्गकूं चल्योगयो तब गरुडजी आकाशमें उडे ॥ ३५ ॥ तब फिर गरुडजी हरिणाख्य द्वीपमें गये तहां अपांतरतमा नाम मुनि तप करि रहे हे ॥ ३६ ॥ ताके आश्रममें

गरुडको एक पंख गिरिपरयो वा पंखकू देखि अपांतरतमा मुनि गरुडतें यह बोले ॥ ३७ ॥ हे पक्षिन् ! मेरे मूँडपै पंख धरिके तुम सुखतें चलेजाओ तब गरुड उनके मूडपै पंख धरिके चलगये ॥ ३८ ॥ तब वहां तैसेई बहुतसे चंद्रके समान अनेक पंखनको देखि गरुडजी बहुत अचंभेमें आये तब अति विस्मितभये गरुडतें अपांतरतमा मुनि बोले ॥ ३९ ॥ कि, हे खग ! जब जब श्रीकृष्णको अवतार होयहै तब तब यहां गरुडको एक पक्ष सदा गिरै है ॥ ४० ॥ कल्प कल्पमें श्रीकृष्णको अवतार होयहै तबही तब मेरे मूँडपै एक एक पंख परे है सो अनंत पंख मेरे मूँडपै परे है सो हे पक्षिन् ! वा कृष्णकू शिरतें मेरो नमस्कार है ॥ ४१ ॥ नारदजी कहै है– या बातकूं सुनिके विस्मित ह्वैके गरुड, मुनिकूं नमस्कार करके आकाशमें उडत रमणकद्वीपमे चलेगये ॥ ४२ ॥ वहां सर्पनते बलि लैके आवर्तकद्वीपकूं चले गये तहां दिव्य सुधाकुंडमे सुधा पीके बडो बलवान्

पक्षंनिधायमेमूर्ध्निगच्छपक्षिन्यथासुखम् ॥ पक्षंनीत्वागतस्ताक्ष्योंधृत्वातन्मस्तकेचतम् ॥ ३८ ॥ तत्समानान्पक्षचन्द्राननेकान्सदद्दर्शह ॥ प्राहा तिविस्मितंतार्क्ष्यमपांतरतमोमुनिः ॥ ३९ ॥ यदायदाहिश्रीकृष्णावतारोभूत्तदातदा ॥ पक्षोपिगरुडस्यात्रपतत्येकःसदाखग ॥ ४० ॥ कल्पेकल्पेकृ ष्णचन्द्रावतारःपक्षःपक्षोमूर्ध्निमेसोपिसोपि ॥ आनंत्याद्राद्यंतवंतंवदंतिपक्षिन्मूर्ध्नानौमिकृष्णायतस्मै ॥ ४१ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ तच्छ्रुत्वावि स्मितस्तार्क्ष्योनत्वातंमुनिपुङ्गवम् ॥ द्वीपंरमणकंप्रागादुत्पतन्व्योममण्डलात् ॥ ४२ ॥ सर्पेभ्योपिबलिंनीत्वाद्वीपमावर्तकंगतः ॥ तत्रदिव्येसुधा कुण्डेसुधांपीत्वाविराड्बली ॥ ४३ ॥ शुकद्वीपंतुसंप्राप्तोपप्रच्छद्वीपचन्द्रभाक् ॥ मयाप्रणोदितःपक्षीप्रययावुत्तरांदिशम् ॥ ४४ ॥ चन्द्रद्वीपन्तु संप्राप्तःपर्वतेपतगेश्वरः ॥ जलदुर्गंवह्निदुर्गंवैनतेयोददर्शह ॥ ४५ ॥ जलदुर्गंचंचुपुटेसर्वंकृत्वाविराड्बली ॥ वह्निदुर्गंचतेनापिसांत्वयामास मैथिल ॥ ४६ ॥ दरीमुखेशयानायेदैत्यालक्षंसमुत्थिताः ॥ तैःसार्द्धंसमभूद्युद्धंतार्क्ष्यस्यघटिकाद्वयम् ॥ ४७ ॥ कांश्चित्पादनखैर्युद्धेविददारख गेश्वरः ॥ कांश्चिद्दैत्यान्स्वपक्षाभ्यांपातयामासभूतले ॥ ४८ ॥ कांश्चिच्चंचुपुटेनापिगृहीत्वापक्षिराड्बली ॥ पातयित्वागिरेःपृष्ठेचिक्षेपगगने बलात् ॥ ४९ ॥ केचिन्मृतास्तथाशेषादुद्रुवुस्तेदिशोदश ॥ इत्थंदैत्यवधंकृत्वादरीमध्येगतःखगः ॥ ५० ॥ चकारपादविक्षेपंशंखचूडोपरिस्फु रन् ॥ शंखचूडोपिगरुडंदृष्ट्वासोतिप्रधर्षितः ॥ ५१ ॥ शुकंजलेपञ्जरस्थंशीघ्रंत्यक्त्वापलायितः ॥ चंचुदेशेनतंनीत्वाशुकंसद्यःसपञ्जरम् ॥ ५२ ॥

गरुड ॥ ४३ ॥ शुक द्वीपमें आये तहां चंद्रद्वीपकूं पूछनलगे तब मेरे कहेते उत्तर दिशाकूं चलेगये ॥ ४४ ॥ तब वा द्वीपमें पर्वत देख्यो फिर जलको किलो, अग्निको किलो गरुड देखतोभयो ॥ ४५ ॥ हे मैथिल ! तब वा सब जलके किलेकूँ तो चोंचमें करलीनो फिर वाही चोंचकेई जलतें अग्निके किलेकूं शांतकियो ॥ ४६ ॥ ताकी गुफाके मुखपै एक लाख दैत्य सोय रहेहे सो वे उठे तिनके संग गरुडको दो घडी युद्ध भयो ॥ ४७ ॥ तिनमेंतें कितनेनकूँ तो चरणते नखते और कितनेनकूं पंखनते भूमिपै पटकतोभयो ॥ ४८ ॥ और कितेननकूं चोंचमें पकरिके बलवान् पक्षिराट् पर्वतके ऊपर फेंकके बलतें आकाशमें फेंकदेतोभयो ॥ ४९ ॥ कितनेक मारेगये कितनेक जे बचे वे दशों दिशानमें भाजिगये ऐसें दैत्यनको वध करिके गुफामें धसगयो ॥ ५० ॥ वहां शंखचूडके ऊपर गरुडने पादविक्षेप किये तब शंखचूड गरुडकूँ देखि धर्षित ह्वैगयो ॥ ५१ ॥ तब पींजराके तोताकूं

भा. टी.
वि. खं. ७
अ० ४०

जलमें छोडि भाजिगये तब गरुडने पींजरासुद्धा तोताकूं चोंचमें दैलीयो ॥ ५२ ॥ आकाशमें उडिके युद्धभूमिमें आयबेकूं मन करतोभयो तब भाजे जे दैत्य तिनको बडो कोलाहल होतोभयो ॥ ५३ ॥ तोता ये लेगयो तोता ये लेगयो, यह शब्द दैत्यनकी सेनामें और दिशानमें भयो याते सुनन्वारेनको शब्द जातरह्यो ॥ ५४ ॥ वो शब्द स्वर्गमें, भूमिमें ब्रह्मांडमें पूरिगयो तब तोताकूं लेगयो ऐसे देवतानपैते सुनि शकुनिकूं बड़ी शंका भई ॥ ५५ ॥ तब वे त्रिशूल लैके चंद्रावतीमें उठ्यो गरुडने तोता लेलीनों ये सुनके तब क्रोधकरिके पीछेते आयो ॥ ५६ ॥ सो त्रिशूल गरुडके मारचोहू पर गरुडने मुखमेंते तोताकूं न छोडचौ फिर सातों द्वीप और सातों समुद्रनको देखतो २ गरुड गयो ॥ ५७ ॥ तब शकुनि गरुडके पीछे पीछे दिशा दिशानमें आकाशमें गरुडजी किरोर योजनताई भ्रमें ॥ ५८ ॥ दैत्यके त्रिशूलते घायलहू हैगयो परि तोताको न छोडचो आकाशमें

ग्रोत्पतन्नंबरेराजन्युद्धेगन्तुंमनोदधे ॥ पलायितानांदैत्यानांतावत्कोलाहलोमहान् ॥ ५३ ॥ शुकोनीतःशुकोनीतोवदतामंबरेनृप ॥ तच्छब्दोदिक्षुसैन्यानांगतःशब्दस्तुशृण्वताम् ॥ ५४ ॥ दिविभूमौसर्वतोपिब्रह्मांडेपिप्रपूरितः ॥ शुकोनीतइतिश्रुत्वाशकुनिःशंकितोसुरैः ॥ ॥ ५५ ॥ शूलंधृत्वाततःसद्यश्चन्द्रावत्यांसमुत्थितः ॥ गरुडेनशुकोनीतःश्रुत्वाक्रुद्धःसमन्वयात् ॥ ५६ ॥ तच्छूलताडितस्तार्क्ष्योनजहौमुखतःशुकम् ॥ सप्तद्वीपान्सप्तसिन्धून्निरीक्षन्सगतःखगः ॥ ५७ ॥ तमन्वधावद्दैत्येंद्रोदिक्षुदिक्षुनभोंतरे ॥ भ्रमन्नागांतकोराजन्नाकाशे कोटियोजनम् ॥ ५८ ॥ दैत्यत्रिशूलक्षतभून्नजहौमुखतःशुकम् ॥ सपञ्जरःशुकोराजन्नाकाशेलक्षयोजनम् ॥ ५९ ॥ पपातोपलवद्वेगात्सुमेरोर्गिरिमूर्द्धनि ॥ पञ्जरोगात्खगस्तत्रव्यशीर्णोभूद्व्यसुःशुकः ॥ ६० ॥ गरुडोथमहायुद्धेकृष्णपार्श्वंसमागतः ॥ दैत्यःखिन्नमनाराजन्पुरींचन्द्रावतींययौ ६१ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादे गरुडागमनोनामचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४० ॥ ॥ नारद उवाच ॥ ॥ दैत्याञ्शेषान्समानीयनानायुद्धधरोबली ॥ उच्चैःश्रवसमाहूयहयंदिव्यंमनोहरम् ॥१॥ धनुष्टंकारयन्वीरःशकुनिःक्रोधमूर्च्छितः ॥ आययौसंमुखेयोद्धुंश्रीकृष्णस्यापिसंमुखे ॥ २ ॥ पुनःप्राप्तंदैत्यसैन्यंशकुनियुद्धदुर्मदम् ॥ तंवीक्ष्यवृष्णयःसर्वेजगृहुःस्वायुधानिच ॥ ३ ॥

पींजरासमेत तोताको लिये आकाशमे लक्षयोजन ऊंचो भ्रमतो आकाशमें चढिगयो ॥ ५९ ॥ फिर वेगकरिके पत्थरकी नाई सुमेरुपर्वतके माथेपै परो सो पींजरा तो टूटगयो और तोताके प्राण निकसिगये ॥ ६० ॥ गरुडजी तो युद्धमें श्रीकृष्णके पास आये दैत्यको मन दुःखी हैगयो सो चंद्रावती पुरीकूँ चल्योगयो ॥ ६१ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटीकायां गरुडागमो नाम चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४० ॥ नारदजी कहैंहैं कि, फिर शकुनि दैत्य बाकी रहे जे दैत्य तिनकूँ लेके अनेक प्रकारके आयुधको धरनहारो बली उच्चैःश्रवा दिव्य मनोहर घोड़ाकूँ मंगायके ॥ १ ॥ वापे चढिके क्रोधते मूर्च्छित शकुनि धनुषकूँ टंकारतो युद्ध करिवेकूं महादुष्ट श्रीकृष्णहूके सन्मुख आवतोभयो ॥ २ ॥ फिर दैत्यसेना आई युद्धमें

दुर्मद शकुनि आयो ताकूं देखि सबरे यादव अपने २ शस्त्रनकूं ग्रहण करतेभये ॥ ३ ॥ तब दैत्यनको यादवनके संग घोर युद्ध होतोभयो तब या युद्धमें वीरनते वीर जुरिगये जैसे सिंहनते सिंह ॥ ४ ॥ तब सबनके अगारी धनुष टंकारतो मेघसो गर्जतो शकुनि आयो सो आवतेही वानें बाणनके मारे आकाशमें अंधेरो करिदियो ॥ ५ ॥ जब बाण नको अंधकार हैगयो तब भगवान् गरुडध्वज शार्ङ्गधनुधारी शार्ङ्ग धनुषते इंद्र धनुषसहित जैसे घन है तैसो लगनलगो ॥ ६ ॥ तब श्रीकृष्ण भगवान् साक्षात् शकुनिके बाणनके समूहकूं एकही बाणते लीलाकरिकेही छेदन करिदेतेभये ॥ ७ ॥ हे मैथिल ! तब शकुनि कानतलक धनुषकूं खैंचिके युद्धमे दश बाण श्रीकृष्णके हृदयमें मारतोभयो ॥ ८ ॥ तब प्रलयके समुद्रकीसी हिलोर गर्जन जामें ऐसी जो शकुनिकी प्रत्यंचा ताहि दश बाणनते श्रीकृष्ण काटिडारतेभये ॥ ९ ॥ तब मायावी शकुनि दैत्य सौ रूप हैगयो

दैत्यानांयदुभिःसार्द्धंघोरंयुद्धंबभूवह ॥ वीरैः संयुयुधुर्वीराःसिंहासिंहैरिवाहवे ॥ ४ ॥ सर्वेषामग्रतःप्रातःकोदण्डंनादयन्मुहुः ॥ शकुनिर्मेघवद्गा
जंश्चक्रेनाराचदुर्दिनम् ॥ ५ ॥ बाणांधकारेसंजातेभगवान्गरुडध्वजः ॥ शार्ङ्गीशार्ङ्गेणधनुषान्वैथेदेणघनोवभौ ॥ ६ ॥ श्रीकृष्णोभगवान्सा
क्षाच्छकुनेरसुरस्यच ॥ चिच्छेदबाणपटलंबाणेनैकेनलीलया ॥ ७ ॥ आकृष्यकर्णपर्यंतंकोदण्डंशकुनिर्मृधे ॥ तताडदशभिर्बाणैःश्रीकृष्णंहृ
दिमैथिल ॥ ८ ॥ प्रलयाब्धिमहावर्तभीमसंवर्पनादिनीम् ॥ धनुर्ज्यांशकुनेःशौरिश्चिच्छेददशभिःशरैः ॥ ९ ॥ मायावीशकुनिर्दैत्यःशतरू
पीबभूवह ॥ युयोधहरिणायुद्धेसर्वेषांपश्यतांनृप ॥ १० ॥ सहस्राणिस्वरूपाणिधृत्वासाक्षाद्धरिःस्वयम् ॥ युयुधेतेनदैत्येनतदद्भुतमिवाभव
त् ॥ ११ ॥ मयदैत्येनरचितंत्रिशूलंज्वलनप्रभम् ॥ भ्रामयित्वाथहस्तेप्राहिणोद्दैत्यराड्बली ॥ १२ ॥ ततःक्रुद्धोमहाबाहुःपरिपूर्णतमोहरिः ॥
चिच्छेदतंतीक्ष्णतुण्डंपन्नगंगरुडोयथा ॥ १३ ॥ ततःक्रुद्धोमहाबाहुर्गदांचिक्षेपमूर्द्धनि ॥ हयात्तंपातयामासगदयावज्रकल्पया ॥ १४ ॥ ग
दाप्रहारव्यथितःक्षणंमूर्च्छांगतोसुरः ॥ गृहीत्वास्वांगदांयुद्धेयुयुधेमाधवेनवै ॥ १५ ॥ तयोर्युद्धमभूद्घोरंगदाभ्यांरणमण्डले ॥ अभूच्चटचटारा
वोवज्रनिष्पेषवत्किल ॥ १६ ॥ श्रीकृष्णगदयातस्यचूर्णीभूतागदाभुवि ॥ विरेजेंगारवत्तत्रसर्वेषांपश्यतांमृधे ॥ १७ ॥

और सबनके देखत २ भगवान्ते सौ १०० शकुनि लडनलगे ॥ १० ॥ तब साक्षात् भगवान् हजार रूप धरिके तिन दैत्यनते लडे तब बडो अचंभोसो भयो ॥ ११ ॥ मय दैत्यको रच्यो देदीप्यमान त्रिशूल ताकूं फिराय २ के दैत्यनको राजा बली कृष्णके ऊपर फेंकतोभयो ॥ १२ ॥ तब परिपूर्णतम बडी भुजावारे हरि वा अति पैने त्रिशूलकूं काटिडारतभये गरुड जैसे तीक्ष्ण मुखवारे सर्पकूं काटडारै है ॥ १३ ॥ तब क्रोध हैके महाबाहु श्रीकृष्ण वज्रके तुल्य शिरमें गदाको मारिके शकुनिको घोडापैते नीचे पटकि देतेभये ॥ १४ ॥ तब ये असुर गदाके प्रहारसे क्षणभरि मूर्च्छा खायके फिर अपनी गदा लैके माधवते युद्ध करनलग्यो ॥ १५ ॥ फिर तिन दोनोंनके गदानते बडो घोर युद्ध होतोभयो जिनको बीजुरीकोसो चटचटा शब्द होतोभयो ॥ १६ ॥ श्रीकृष्णकी गदाते वाकी गदाको चूर्ण हैके पृथ्वीमें जायपरी तब वा संग्राममें सबनके देखते वो कढीभई दैत्यकी गदा अँगारसी

दहकनलगी ॥ १७ ॥ पर्वतकी गुहामें जैसे द्वै सिंह और वनमें जैसे मत्त दो हाथी लडेहैं तैसे रणके मध्यमें दोनों आपसमें लडेहैं ॥ १८ ॥ तब ये शकुनि दैत्य श्रीकृष्णकूं सौ योजन ताईं पीछेकूँ हटाय लेगयो तब श्रीकृष्ण वाकूं हजार योजनताईं हटायलेगये ॥ १९ ॥ तब भगवानने वाकी दोनों जाँघनको दोनों भुजानसों पकरि फिराय फिराय धरतीमें देमारचौ कमण्डलुकूं बालक जैसें फिरामें है ॥ २० ॥ तब कछू एक व्याकुल हैके फिर जारुधि पर्वतकूं ये दैत्य युद्धमें दुर्मद बडो दुराचारी हाथनते उठायके श्रीकृष्णके ऊपर फेंकतोभयो ॥ २१ ॥ आये पर्वतकूं श्रीकृष्ण देखिके कमललोचन वाहीके ऊपर फेंकदेतभये ऐसें आपसमें पर्वतकूं फेंकैं जय २ शब्द बोले हैं ॥ २२ ॥ हे राजन् ! तैसेही चन्द्रावती पुरीकोहू चूर्ण हैगयो तब ये दैत्य अत्यन्त क्रोधमें हैके ढाल तलवार लैके कृष्णके सन्मुख आयो ॥ २३ ॥ तब शार्ङ्गीने शार्ङ्गधनुषमें अर्द्धचन्द्राकार बाण जोरचो जो

गिरिदर्यांयथासिंहौवनेमत्तौगजावुभौ ॥ रणमध्येतथातौद्वौयुयुधातेपरस्परम् ॥ १८ ॥ श्रीकृष्णंनोदयामासशकुनिःशतयोजनम् ॥ हरिस्तं प्रेषयामाससहस्रंयोजनंभुवि ॥ १९ ॥ गृहीत्वाभुजयोस्तंवैजंघाभ्यांभुवनेश्वरः ॥ पातयामासभूपृष्ठेकमंडलुमिवार्भकः ॥ २० ॥ किंचिद्व्यथांगतोदैत्योगृहीत्वाजारुधिंगिरिम् ॥ प्राहिणोच्चदुराचारःशकुनिर्युद्धदुर्मदः ॥ २१ ॥ समागतंगिरिंवीक्ष्यभगवान्कमलेक्षणः ॥ जयशब्दंप्रकुर्वंतावन्योन्यंताडयन्गिरिम् ॥ २२ ॥ चूर्णयामासतुराजंस्तथाचंद्रावतींपुरीम् ॥ तदादैत्योतिसंक्रुद्धोगृहीत्वाखड्गचर्मणी ॥ २३ ॥ आययौसंमुखेराजञ्छ्रीकृष्णस्यमहात्मनः ॥ शार्ङ्गीशार्ङ्गंसंगृहीत्वाथार्द्धचंद्रमुखंशरम् ॥२४॥ संदधेसहसायुद्धेग्रीष्ममार्तंडसन्निभम् ॥ शार्ङ्गमुक्तोदिव्यबाणोद्योतयन्मंडलंदिशाम् ॥ २५ ॥ शकुनेर्मस्तकंछित्त्वाभूमिंभित्त्वातलंगतः ॥ व्यसुर्भूत्वातदादैत्यःपतितोरणमंडले ॥ २६ ॥ भूमिस्पर्शात्सजीवोभूत्क्षणमात्रेणमैथिल ॥ करेणादायमुंडंस्वंस्वकबंधेनिधायसः ॥ २७ ॥ युद्धंकर्तुंसमुत्तस्थौतदद्भुतमिवाभवत् ॥ इत्थं कृष्णेननिहतःसप्तवारंमहासुरः ॥ २८ ॥ भूमिस्पर्शात्सजीवोभूद्राहुवत्पुनरुत्थितः ॥. एकाकीयादवकुलंसंहारंकर्तुमुद्यतः ॥ २९ ॥ विवेशाशुमहादैत्योवनेवह्निरिवप्रभुः ॥ सतुरंगान्महावीरान्सशस्त्रानुत्कटान्गजान् ॥ ३० ॥ संगृहीत्वाभुजाभ्यांवप्राक्षिपल्लक्षयोजनम् ॥ कांश्चिद्गजान्मुखेधृत्वास्कंधयोरुभयोरपि ॥ ३१ ॥ कक्षयोरुभयोर्दैत्योबभौकालाग्निरुद्रवत् ॥ पद्भ्यांकराभ्यांदैत्यस्यत्रासंयातेमहामृधे ॥ ३२ ॥

बाण ग्रीष्म ऋतुके सूर्यके समान हो ॥२४॥ सो शार्ङ्गमेंते युद्धमें जब वो बाण चलायो तब दिशानकूं उजेरी करतो छूट्यो ॥२५॥ तब वो बाण शकुनीके मस्तकको काटिके भूमिकूं भेद तललोककूं चल्योगयो और दैत्य शकुनि रणमंडलमें निष्प्राण हैके गिरपरो ॥२६॥ भूमिके स्पर्श करिके क्षणमात्रमेंही जीपरचो हे मैथिल ! अपने हाथते अपने शिरकूं अपने धडपै धरि ॥२७॥ फिर युद्धमें लडिवेकूँ आयगयो तब ये बडो अचंभो भयो ऐसें श्रीकृष्णने वह असुर सातबेर मारि मारिके गेरदीनो ॥२८॥ पन भूमिके स्पर्शते राहुकी नाईं फिर जीके उठि आयो तब इकलोई यादवकुलके संहारकूं उद्यत भयो ॥ २९ ॥ सेनामें प्रवेश हैगयो वनमें जैसें अग्नि, घोडा और शस्त्र सुद्धा बडे बडे उत्कट वीरनकूं और शस्त्रनसहित उत्कट हाथीनकूं ॥३०॥ भुजानते पकरि२ लाख लाख योजनपै फेंकिदिये और कितनेई हाथीनकूं मुखमें और कितनेई हाथीनके दोनों कंधानको पकरि २ के ॥३१॥दोनों कांखनमें

दवायके दैत्यनी कालामिकीसी शोभा भई पांवनते हाथनते जब युद्धमें बडो त्रास भयो ॥ ३२ ॥ तब श्रीकृष्ण महात्माकी सेनामें बडो हाहाकार मच्यो तबहीं भगवान् साक्षात् श्रीकृष्णने विश्वके रक्षक साधूनकी रक्षाके लिये सुदर्शनास्त्रको प्रयोग कीयो ॥ ३३ ॥ जब श्रीकृष्णके हाथते वो तीक्ष्ण सुदर्शन छुट्यो जाको प्रलयके किरोड सूर्यनकोसो तेज हो वो बाणही शकुनीके शिरको काटतोभयो जैसे वृत्रासुरको शिर युद्धमें वज्रने फाट्यो हो ॥ ३४ ॥ तब वा महायुद्धमें श्रीकृष्णचंद्र मरेभये वा शकुनीकूं बलते आकाशमें फेंकके यादवनते भगवान् बोले कि, बाणनते याकूं ऊपरकूंही फेंको भूमिमें परन न पावे ॥ ३५ ॥ नारदजी कहेहै कि, ऐसे हरिको वचन सुनिके सबरे यादव जब आकाशमेंते गिरते वो बाणनते छेदतेभये ॥ ३६ ॥ तब ये दैत्य चमकने बाणनते छिन्नोभयो आकाशमें सौ योजनपै गयो लोकके देखते २ गेंदकी नाईं शोभित भयो ॥ ३७ ॥

हाहाकारोमहानासीच्छ्रीकृष्णस्यमहात्मनः ॥ तदैवभगवान्साक्षाच्छ्रीकृष्णोविश्वरक्षकः ॥ सुदर्शनास्त्रंप्रायुंक्तसाधूनांरक्षणायवै ॥ ३३ ॥ तद्धस्तमुक्तंनिशितंसुदर्शनंलयार्ककोटिद्युतिमज्ज्वलत्प्रभम् ॥ जहारसद्यःशकुनेर्हठंशिरोयथाचवृत्रस्यपविर्महामृधे ॥ ३४ ॥ तावद्गृहीत्वाशकुनिंमहामृधेचिक्षेपसद्योमृतमंबरेबलात् ॥ उत्क्षेपणंभोःकुरुतेषुभिर्दिवियदून्गिराश्रीपतिरित्युवाच ॥ ३५ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्थंहरेर्वचःश्रुत्वासर्वेयादवपुंगवाः ॥ अंबरात्प्रपतंतंतेतंबाणैःस्फुरत्प्रभैः ॥ ३६ ॥ दैत्योदीप्तिमतोलाग्नैरंबरेशतयोजनम् ॥ गतःकंदुकवद्राजन्नूर्ध्वलोकस्यपश्यतः ॥ ३७ ॥ सांबस्यापिसबाणेनसहस्रंयोजनंगतः ॥ पुनस्तमापतंतंखात्संघानत्विषुणार्जुनः ॥ ३८ ॥ तेनबाणेनदैत्येंद्रोयोजनंचायुतंगतः ॥ अनिरुद्धस्यबाणेनलक्षयोजनमास्थितः ॥ ३९ ॥ प्रद्युम्नस्यापिबाणेननियुतंयोजनंगतः ॥ पुनस्तमापतंतंखाद्दृष्ट्वायोगेश्वरेश्वरः ॥ ४० ॥ बाणंसमादधेतेनगतःखेकोटियोजनम् ॥ एवंखेसंस्थितेदैत्येव्यतीतेप्रहरद्वये ॥ ४१ ॥ द्वितीयेनापिबाणेनतंजघानहरिःस्वयम् ॥ सबाणस्तंभ्रामयित्वादिक्षुवैकोटियोजनम् ॥ ४२ ॥ समुद्रेपातयामासवातःपद्ममिवप्रभुः ॥ एवंमृतेतदादैत्येतज्ज्योतिर्निर्गतंस्फुरत् ॥ ४३ ॥ सर्वतोपिभ्रमद्राजञ्छ्रीकृष्णेलीनतांगतम् ॥ तदाजयजयारावोदिविभूमाववर्तत ॥ ४४ ॥ विद्याधर्य्यश्चगंधर्व्योननृतुःखेसुखान्विताः ॥ जगुःकिन्नरगंधर्वास्तुष्टुवुःसिद्धचारणाः॥४५॥ ऋषयोमुनयःसर्वेप्रशशंसुर्हरिंपरम्॥ ब्रह्मरुद्रेंद्रसूर्याद्याःसर्वेतत्रसमागताः॥४६॥

तब सांबके बाणते ये दैत्य हजार योजनपै गयो फिर आकाशमेंते गिरतेके अर्जुनने बाण मार्यो॥३८॥ता बाणते दश हजार योजन ऊंचो चल्योगयो फिर अनिरुद्धके बाणते लाख योजन ऊंचो चल्योगयो॥३९॥ प्रद्युम्नके बाणते दश लाख योजन ऊंचो चल्योगयो फिर आकाशते गिर्यो देखिके योगीश्वरनके ईश्वर॥४०॥ श्रीकृष्ण बाण मारत भये तब आकाशमें किरोड़ योजन ऊंचो चल्योगयो ऐसे याको आकाशमें दो पहर व्यतीत हैंगये ॥४१॥ तब दूसरे बाणकरिके हरि याकूं मारतभये सो बाण याकूं आकाशमें किरोड़ योजन भ्रमायके दिशानमें ॥ ४२ ॥ समुद्रमें पटकतभये पवन कमलकूं जैसे ऐसे जब दैत्य मर्यो तब याकी ज्योति निकसी देदीप्यमान ॥ ४३ ॥ वो चारों ओर भ्रमत २ श्रीकृष्णमें लीन हैगई तब स्वर्गमें और पृथ्वीमें जयजय शब्द हौनलग्यो ॥ ४४ ॥ विद्याधरी और गंधर्वी आकाशमें बड़े आनंदते नाचनलगीं किन्नर गंधर्व गावनलगे सिद्ध चारण स्तुति करनलगे ॥४५॥ ऋषि मुनि (६)

भगवान्‌की परमप्रशंसा करतेभये ब्रह्मा,रुद्र, इंद्र, सूर्य सब देवता तहां आये ॥४६॥ श्रीकृष्णके ऊपर पुष्पनकी वर्षा करतेभये ॥ ४७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खण्डे भाषाटीकायां शकुनिदैत्यवधो नामैकचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४१ ॥ नारदजी कहेहैं कि, जब बाकीके दैत्य रणमंडलते भागगये तब वीणा, वेणु मृदंग दुंदुभी बजाते ॥ १ ॥ सूत, मागध, वंदीजनोंसे गानकिये श्रीभगवान् यादव और अपने पुत्रनसहित और यादव तथा अपनी सेनासहित ॥ २ ॥ शंख, चक्र, गदा, पद्म, शार्ङ्गधनुष इनते विराजमान देवतानसहित प्रभू चन्द्रावती पुरीमें प्रवेश होतभये ॥ ३ ॥ भर्ताके मरेसों दुःखार्त करुणा पैदाकरती रोवती शकुनिके बेटाकूं गोदीमें धरिके मदालसा रानी ॥ ४ ॥ बहुत शीघ्रतासों श्रीकृष्णके चरणमें बालककूं कुदायके हाथ जोरि आंसू भरिके बडी दीनतासे हरिकूं दंडोत करिके यह बोली ॥ ५ ॥ कि हे प्रभो ! भार उतारिवेकूं भूमिमें तुम यादवनके कुलमें हे आदिदेव !

श्रीकृष्णस्योपरिसुराःपुष्पवर्षंप्रचक्रिरे ॥ ४७ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेशकुनिदैत्यवधोनामैकचत्वारिंशोऽध्यायः ॥४१॥ ॥नारदउवाच ॥ ॥ पलायितेषुशेषेषुदैत्येषुरणमण्डलात् ॥ वीणावेणुमृदंगादीन्नादयन्दुंदुभीन्हरिः॥१॥ गीयमानोयादवेंद्रः सूतमागधवंदिभिः॥स्वपुत्रैर्यादवैःसार्द्धंस्वसैन्यपरिवारितः ॥२॥ शंखचक्रगदापद्मशार्ङ्गचापविराजितः ॥ प्रविवेशसुरैःसार्द्धंपुरींचन्द्रावतींप्रभुः ॥३॥ दुःखार्ताभर्तरिमृतेरुदंतीकरुणंबहु ॥ अंकेगृहीत्वाशकुनेःसुतंराज्ञीमदालसा ॥४॥ श्रीकृष्णचरणेबालंनिधायाशुकृतांजलिः॥ अश्रुपूर्णमुखीदीनाहरिंनत्वाजगादह ॥ ५ ॥ ॥ मदालसोवाच ॥ ॥ भारावतारायभुविप्रभोत्वंजातोयदूनांकुलआदिदेव ॥ प्रसिष्यसेयानिभवंनिधाय गुणैर्नलिप्तोसिनमामितुभ्यम् ॥ ६ ॥ मदात्मजंपालयभीतभीतमसुष्यहस्तंकुरुशीर्षिणदेव ॥ भर्त्राकृतंमेकिलतेपराधंक्षमस्वदेवेशजगन्निवास ॥ ॥ ७ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्तोभगवांस्तस्यमूर्ध्निकृत्वाकरद्वयम् ॥ सर्वंचन्द्रावतीराज्यंददौतस्मैमहामुनिः ॥ ८ ॥ दत्त्वाकल्पांतमायुष्यंभक्तिज्ञानंविरक्तिमत् ॥ शकुनेःशिशवेकृष्णःस्वमालांप्रददौशुभाम् ॥ ९ ॥ उच्चैःश्रवोहयोरत्नकामधेनुसुरद्रुमाः ॥ आहतायेशकुनिनापुरायुद्धेपुरंदरात ॥ १० ॥ पुरंदरायतान्प्रादात्प्रयत्नाच्छ्रीजनार्दनः ॥ गोविप्रसुरसाधूनांछंदसांपालकःस्वयम् ॥ ११ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ केमीदैत्याःपूर्वकालेशकुन्याद्यामहाबलाः ॥ देवर्षेमेपरंचित्रंकस्मान्मोक्षमुपागताः ॥ १२ ॥

जन्मे हो फिर या जगत्‌कूं उत्पत्ति करके प्रसोहो पर जो गुणनते लिप्त नहीं होउहो तिनके अर्थ मेरी नमस्कार है ॥ ६ ॥ हे देव ! मेरे बेटाको पालन करो यह डरपैत डरप्यो है हे देवेश ! हे जगन्निवास ! याके मूंडपै अपनो हाथ धरो मेरे भर्ताने आपको अपराध कियो हो ताहि क्षमा करो ॥ ७ ॥ नारदजी कहैहैं–ऐसे जब कही तब भगवान्‌ने या बालकके मूंडपै दोनों हाथ धरिके सवरी चन्द्रावती नगरीको राज्य देदीनों ॥८॥ कल्पान्त आयु तथा भक्ति, ज्ञान और वैराग्य देके फिर शकुनिके बेटाकूं श्रीकृष्ण अपनी शुभ माळाको देतेभये ॥ ९ ॥ हयरत्न उच्चैःश्रवा घोडा, कामधेनु गौ, कल्पवृक्ष जिने शकुनि इंद्रपैते पहले युद्धमें हरि लायो हो ॥ १० ॥ सो भगवान् बडे प्रयत्नते इंद्रके अर्थ, सब देतेभये गौ, ब्राह्मण, वेद, देवता, साधु इनके रक्षक पालक तो आपही हो ॥ ११ ॥ बहुलाश्व राजा पूछैहै हे देवऋषि ! जे शकुनिते आदि लेके दैत्य हैं वे पूर्व जन्ममें महाबली कौन हे इनको

मोकूं बडो अचंभो है ये कैसे मोक्षकूं प्राप्त हैगये ॥ १२ ॥ तब नारदजी कहैहैं कि, हे राजन् ! ब्रह्मकल्पमें वसु नाम गंधर्वनको राजा हो ताके औरस बडे शुभ नौ बेटा भये ॥ १३ ॥ कंदर्पसे सुन्दर दिव्य गहनेन करिके भूषित गायवे बजायवेमें चतुर ब्रह्मलोकमें गायवेकूं जायो करते है ॥ १४ ॥ मन्दार१, मंदर२, मंद ३, मंदहास४, महाबल५, सुदेव ६, सुधन ७, सौध ८, श्रीभानु ९ ये इनके नाम भये ॥ १५ ॥ एकसमें ब्रह्माजीकी बेटी जो सरस्वती ताहि देखिके ये वसुके पुत्र अपने मनमें हँसे ॥ १६ ॥ ये ब्रह्माजीके अपराधते आसुरी योनिकूं प्राप्त होतभये वाराहकल्पमें हिरण्यकशिपुकी स्त्रीमे ये नौ जन्म लेतेभये ॥ १७ ॥ शकुनि१, शम्बर२, हृष्ट३, भूतसंतापन४, वृक ५, कालनाभ ६, महानाभ ७, हरिश्मश्रु ८ और उत्कच ९ ये इनके नाम होतभये ॥ १८ ॥ एक दिन अपांतरतमा मुनि आये तिनकूं नमस्कार करिके विधिपूर्वक पूजिके परम आदरते ये नौओ

॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ ब्रह्मकल्पेपुराराजन्गन्धर्वेशःपुरावसुः ॥ आसीत्तस्यशुभाःपुत्राबभूवुर्नवचौरसाः ॥ १२ ॥ कंदर्पसमलाव ण्याःदिव्यभूषणभूषिताः ॥ नित्यंजगुर्ब्रह्मलोकेगीतवाद्यविशारदाः ॥ १४ ॥ मंदारोमंदरोमंदोमन्दहासोमहाबलः ॥ सुदेवःसुधनःसौ धः श्रीभानुरितिविश्रुताः ॥ १५ ॥ एकदामोदतःपुत्रींवाग्देवींवीक्ष्यवेधसः ॥ जहसुस्तेस्वमनसिपुरावसुसुताश्चये ॥ १६ ॥ सुरज्येष्ठापरा धेनगतायोनिंचतामसीम् ॥ वाराहेथहिरण्याक्षपत्न्यांतेजज्ञिरेनव ॥ १७ ॥ शकुनिःशंबरोहृष्टोभूतसंतापनोवृकः ॥ कालनाभोमहानाभोहरि श्मश्रुस्तथोत्कचः ॥ १८ ॥ एकदाश्रममायांतमपांतरतमंमुनिम् ॥ नत्वासंपूज्यविधिवत्पप्रच्छुरिदमादरात् ॥ १९ ॥ ॥ दैत्याऊचुः ॥ ॥ शृणुत्वंवसुधाद्ब्रह्मन्कैवल्येशोहरिःस्वयम् ॥ ददातिमोक्षंभगवान्भक्तानांभक्तवत्सलः ॥ २० ॥ अस्माभिर्नकृताभक्तिरासुरींयोनिमास्थितैः ॥ दुःसंगनिरतैर्दुष्टैःकथंमोक्षोभवेदिह ॥ २१ ॥ उपायंवदनोब्रह्मन्कल्याणस्यपरस्यच ॥ कल्याणार्थंविचरसिदीनानांजगतिप्रभो ॥ २२ ॥ ॥ अपांतरतमाउवाच ॥ ॥ गुणानामपृथग्भावैर्येभजंतिहरिंपरम् ॥ तेतेप्रापुःपरंदैत्यानिर्गुणंमोक्षनायकम् ॥ २३ ॥ ऐक्यंचसौहृदंस्नेहंभयंक्रोधं स्मयंतथा ॥ विधायपूर्वंसततंश्रीकृष्णेलीनतांगताः ॥ २४ ॥ पृश्निगर्भस्यसंबंधात्प्रजानांपतयोयथा ॥ कायाधवःसौहृदाच्चस्नेहाच्चसुतपा मुनिः ॥ २५ ॥ भयाद्धिरण्यकशिपुःक्रोधाद्धिपितासुरः ॥ स्मयाच्चश्रुतयःप्रापुर्योगिनांदुर्लभंपरम् ॥ २६ ॥

पूछतभये ॥ १९ ॥ दैत्य बोले-तुम सुनो हे ब्रह्मन् ! अपने मुखते कहो हो के मुक्तिके दाता केवल हरि है सो वेही भक्तवत्सल भगवान् अपने भक्तनकूं मोक्ष देयहै ॥ २० ॥ सो हमने भक्ति नहीं कीनी है क्योंकि हम असुरयोनिमें भयेहैं और हम बडे दुष्ट दुःसंगमें निरत है कहो हमारी मुक्ति कैसे होयगी ॥ २१ ॥ सो हे ब्रह्मन्! परम कल्याणको हमें उपाय बताओ हे प्रभो! जगत्के विषे दीननके कल्याणके अर्थ आप विचरोहो ॥ २२ ॥ तब अपांतरतमा मुनि बोले कि गुणनके न्यारे २ भावनको छोडके जे हरिकूं भजैहै हे दैत्यहो ! ते वे परम निर्गुण मोक्षके दायक हरिकूं प्राप्त होयहैं ॥ २३ ॥ ऐक्यताते, सुहृदताते, स्नेहते, भक्तिते, क्रोधते, गर्वते श्रीकृष्णमें जिनने मन लगायो वे वाहीको प्राप्त हैगये ॥ २४ ॥ पृश्निगर्भके संबंधते जैसें प्रजापति और प्रह्लाद सुहृदताते, स्नेहते सुतपा मुनि ॥ २५ ॥ भयते हिरण्यकशिपु, क्रोधते तुम्हारो पिता हिरण्याक्ष,

स्मयते श्रुति प्राप्त होतभई जो योगीनकूं दुर्लभ है ॥ २६ ॥ जा काऊ भाव करिके श्रीकृष्णमें ही मन धारण करै जो भक्तियोग करिके ही देवता वाके धामकूं प्राप्त होतेभये ॥ २७ ॥ ऐसे कहिके अपांतरतम मुनि अन्तर्धान हैगये याहीते शकुन्यादिक असुर परिपूर्णतम श्रीकृष्णते वैर करतेभये ॥ २८ ॥ याहीसों वे वैरभाव करिके श्रीकृष्ण परमेश्वरकूं प्राप्त होतेभये हे राजेन्द्र ! यासों यामें कछू अचंभो नही है भृंगीके भयते जैसे भृंगी होयहै ॥ २९ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटीकायां शकुनिवधोनाम द्विचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४२ ॥ नारदजी कहैहैं-ऐसे यादवन के ईश्वर भद्राश्व खंडकूं जीतिकै श्रीयादवेश्वर भगवान् सेनाकें यादवन करिके सहित इलावृत खंडमें आवते भये ॥ १ ॥ जा इलावृतखंडमें हे मैथिल ! पर्वतनको राजा भूगोल कमलकी मानों कर्णिका झलमलातो, सुवर्णमय देवतानको स्थान, रत्नके शिखर जाको ऐसो सुमेरु पर्वत विराजे है ॥ २ ॥

येनकेनापिभावेनश्रीकृष्णेधारयेन्मनः ॥ भक्तियोगेनतद्धामयदेभिःप्राप्यतेसुराः ॥ २७ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वांतर्हितेराजन्नपांतरतमेमुनौ ॥ चक्रुर्वैरंशकुन्याद्याःपरिपूर्णतमेहरौ ॥ २८ ॥ तेप्रापुर्वैरभावेनश्रीकृष्णंपरमेश्वरम् ॥ नचित्रंविद्धिराजेंद्रकीटःपेशस्कृतंयथा ॥ ॥ २९ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेशकुनिवधोनामद्विचत्वारिंशोऽध्यायः॥ ४२ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्थंखण्डंतुभद्राश्वंजित्वाश्रीयादवेश्वरः ॥ यदुभिःसैनिकैःसार्द्धमिलावृतमथाययौ ॥ १ ॥ विभातियत्रैवगिरींद्रराजोभूपद्मगोलस्यचकर्णिकेव ॥ स्फुरद्द्युतिःस्वर्णमयःसुमेरुः सुरालयोमैथिलरत्नसानुः ॥ २ ॥ तंसर्वतोमन्दरमेरुमन्दरौसुपार्श्वएवंकुमुदश्चतुर्थकः ॥ विभातिसैकोगिरिभिर्नगेश्वरश्चतुष्पदार्थैश्चमनोरथाइव ॥ ३ ॥ जांबूनदंजंबुभवंहियत्रयतःस्वतःसिद्धिभवंसुवर्णम् ॥ यत्रारुणोदाख्यनदीचजातायद्वारिपानाद्धुविनामयित्वम् ॥ ४ ॥ कदंबजामधुधाराश्चपञ्चयासांतुपानेननृणांकदापि ॥ शीतोष्णवैवर्ण्यपरिश्रमाद्यादौर्गन्ध्यभावानभवंतिराजन् ॥ ॥ ५ ॥ यदुद्भवाःकामदुघानदाश्चरत्नान्नवासःशुभभूषणानि ॥ शय्यासनादीनिफलानियानिदिव्यानितानित्वथचार्पयंति ॥ ६ ॥ एवंचयत्रोर्ध्ववनंप्रसिद्धंसंकर्षणोयत्रविराजतेऽथ ॥ शिवःसदास्तौरमतेप्रियाभिस्त्रीभावतांयांतिजनास्तुतत्र ॥ ७ ॥ हेमांबुजैःशीतवसंतवायुभिः काश्मीरवृक्षैश्चलवंगजालैः ॥ देवद्रुमामोदमदांधषट्पदैरिलावृतंखंडमतीवरेजे ॥ ८ ॥

ताके चारयो बगलते मंदर, मेरुमंदर, सुंदर सुपार्श्व और कुमुद इन चारि पर्वतनते शोभित है चारि पदार्थनते मनोरथ जैसे ॥ ३ ॥ जहां जामिनके पेड़ते जांबूनद सुवर्ण स्वतः सिद्ध होयहै जहां अरुणोदा नाम नदी है जाके जल पीयेते निरोगिलता पैदा होयहै ॥ ४ ॥ जहां कदंबते पांच मधुधारा परैहें जिनके पान करिके कबहू मनुष्यनकूं जाडो, गरमी, देहको विवर्ण, परिश्रम, दुर्गंध ये भाव नही होयहैं ॥ ५ ॥ इनते कामके दुहनहारे नद भयेहैं ते अन्न, वास, शुभ भूषण, सेज, आसनादिक दिव्य फलनकूँ देयहै ॥ ६ ॥ ऐसेही जहां प्रसिद्ध ऊर्द्ध वन है, जहां संकर्षण भगवान् विराजैं हैं जहां शिवजी सदाई प्यारीनकरके रमैहैं और जहां गये मनुष्य स्त्री हैजायहैं ॥ ७ ॥ जहां सुन्दैरि कमलनसों

सोंधी बसंत ऋतुकी पवन केशरके वृक्ष, लौंगनकी लता, कल्पवृक्षनकी सुगंधि ताके मदते आँधरे जे भौंरा तिनते जो इलावृत अत्यन्त शोभायमान है ॥ ८ ॥ यहां सोनेकी भूमि वैदूर्य रत्ननके अंकुरके समूह ताते विचित्र है अलंकृत जो देवता तिनते पूर्ण जो इलावृतखंड ताहि जायके भगवान् बलि लेतेभये ॥ ९ ॥ पहले मुचुकुन्द नाम राजाको जमाई शोभन हो सो भरतखण्डमें एकादशीको व्रत करके देवतानके संग मंदराचलपै वास पावतभयो ॥ १० ॥ वुह राजा शोभन अद्यापि कुबेरकी नाईं चन्द्रभागाके संग है मैथिल ! राज्य करैहै सो परम सुन्दर भेट लैके हे मैथिल ! भगवानके सन्मुख आवतभयो ॥ ११ ॥ वो यदूत्तम हरिकी परिक्रमा करके चरणकमलमें लोटिके भक्तिते फिर दंडोत कर भेट देके मंदराचलकूं चल्योआयो ॥ १२ ॥ बहुलाश्व राजा बोल्यो कि, हे देवर्षिसत्तम ! जब शोभन नृप चल्योगयो तब भगवान् मधुसूदन कहा करतेभये ॥ १३ ॥ नारदजी

पश्यन्भुवंस्वर्णमयींमनोहरंविडूर्यरत्नांकुरवृन्दचित्रिताम् ॥ इलावृतंपूर्णमलंकृतैःसुरैर्विजित्यखण्डंजगृहेबलिंहरिः ॥ ९ ॥ श्रीशोभनोनामपुरा
कृतेनजामातृकोभून्मुचुकुंदभूभृतः ॥ एकादशींयःसमुपोष्यभारतेप्राप्तःसदेवैःकिलमन्दराचले ॥ १० ॥ अद्यापिराज्यंकुरुतेकुबेरवद्राज्ञःसुतोसौ
किलचन्द्रभागया ॥ नीत्वाबलिंदेववरस्यसंमुखेसमाययौमैथिलसुन्दरःपरः ॥ ११ ॥ प्रदक्षिणीकृत्यहरिंयदूत्तमंपादारविंदेपतितोथशोभनः ॥
भक्त्याप्रणम्याशुबलिंमहात्मनेदत्त्वाययौमैथिलमन्दराचलम् ॥ १२ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ शोभनेचनृपेयातेभगवान्मधुसूदनः ॥
अग्रेचकारकिंदेवोवददेवर्षिसत्तम ॥ १३ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ सरोवरंपरंदिव्यंतस्मिन्मंदरसानुनि ॥ सौवर्णपंकजंवीक्ष्यकिरीटी
प्राहमाधवम् ॥ १४ ॥ ॥ अर्जुनउवाच ॥ ॥ कांचनीभिर्लताभिश्चसौवर्णैःपंकजैर्वृतम् ॥ वदमांदेवकीपुत्रकस्येदंकुण्डमद्भुतम् ॥ १५ ॥
॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ पृथुःपूर्वोराजराजःस्वायंभुवकुलोद्भवः ॥ ततापसतपोदिव्यंतस्येदंकुण्डमद्भुतम् ॥ १६ ॥ अस्यपीत्वाजलंसद्यः
सर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ स्नात्वातद्धामपरमंयातिपार्थनरेतरः ॥ १७ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ अत्रैवभगवान्साक्षात्तपोभूमिंजगामह ॥ सरू
पास्तत्रनृत्यंतिसर्वास्ताह्यष्टसिद्धयः ॥ १८ ॥ तावीक्ष्यचोद्धवःप्राहभगवंतंसनातनम् ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ कस्येयंसुतपोभूमिर्मंदराच
लसन्निधौ ॥ मूर्तिमत्योविराजंत्यःकाःस्त्रियोवदहेप्रभो ॥ १९ ॥

बोले कि, ता मंदराचलपै परम दिव्य सरोवर देखिके और सुनहैरी कमल देखिके अर्जुन भगवानते बोल्यो ॥ १४ ॥ कि, हे देवकीके पुत्र ! सुनहैरी जामें लता, सुनहैरी कमल जामें फूलें यह अद्भुत कुंड कौनको है ये मोते कहो ॥ १५ ॥ तब भगवान् बोले कि, पहले स्वायंभू मनुके कुलमें पृथु राजा भयो हो ताने दिव्य तप कीनो हो ताको यह अद्भुत कुंड है ॥ १६ ॥ याको जल पीवे तो सब पापनतें छूटिजाय जो कोई स्नान करै तो हे पार्थ ! वो परमधामकूं प्राप्त होय ॥ १७ ॥ नारदजी कहै है कि, यहांही साक्षाद्भगवान् तपोभूमिकूं प्राप्त होतेभये आठों सिद्धि रूपवान् यहां नाचैंहै ॥ १८ ॥ तिनें देखिके उद्धवजी भगवानते बोले कि, यह तपोभूमि कौनकी है मंदराचलके निकट और मूर्तिमान् जे स्त्री है वे

कौन है सो हे प्रभो ! मोते कहो? ॥ १९ ॥ तब भगवान् बोले कि, स्वायंभू मनुने पहले यहां तप कीनोहो ताकी यह तपोभूमि है ये भूमि परम कल्याणकारी है ॥ २० ॥ यहां सदाही स्त्रीरूपते आठों सिद्धि रह्यो करैहे यहां जो कोई आवैहे ताकूं वे अष्टसिद्धि प्राप्त होयहै ॥ २१ ॥ यहां क्षणभरकेई तपतें मनुष्य देवता होयहै या तपोभूमिके माहात्म्यकूं कहिवेकूँ ब्रह्माहूकी सामर्थ्य नही है ॥ २२ ॥ ऐसें कहिके भगवान् श्रीकृष्ण अपनी सेनाकूं संग लेके दुंदुभी बजावत प्रोत्कट देशनकूं चलेगये ॥ २३ ॥ हिरण्यकशिपुने जहां पहले तप तप्योहो तहां लीलावती नामकी एक सोनेकी पुरी है ॥ २४ ॥ वाको ईश्वर साक्षात् वीतिहोत्र अग्नि है तहां मूर्तिमान् नित्य राज्य करैहै जो भूमिमे सुंदर व्रतवारो हो ॥ २५ ॥ सोऊ श्रीकृष्णचंद्र परमात्माकूं बलि भेट देके निरंतर स्तुति करतोभयो ॥ २६ ॥ ऐसे देवदेव सबरे इलावृत खंडकूं देखत जंबूद्वीप मनोहर वेदनगरकूं जातभये ॥ २७ ॥

॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ स्वायंभुवेनमनुनातपश्चात्रकृतंपुरा ॥ तस्येयंसुतपोभूमिरद्यापिश्रेयसीबहु ॥ २० ॥ सदात्रैवहिवर्ततेनारीरूपा ष्टसिद्धयः ॥ अत्रप्राप्तस्यकस्यापितस्ताश्चभवंतिहि ॥ २१ ॥ अत्रक्षणेनतपसादेवत्वंयातिमानवः ॥ तपोभूमेश्चमाहात्म्यंवक्तुंनालंचतुर्मुखः॥ ॥ २२ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वाभगवान्कृष्णःस्वसैन्यपरिवारितः ॥ जगामप्रोत्कटान्देशान्दुंदुभीन्नादयन्मुहुः ॥ २३ ॥ हिरण्यकशिपुर्दैत्योयत्रतेपेतपःपुरा ॥ यत्रलीलावतीनामवर्ततेकांचनापुरी ॥ २४ ॥ लीलावतीश्वरः साक्षाद्वीतिहोत्रोहुताशनः ॥ नित्यंराज्यंप्रकुरुते मूर्तिमान्भुविसुव्रतः ॥ २५ ॥ सोपिश्रीकृष्णचन्द्रायपुरुषायमहात्मने ॥ बलिंदत्त्वापरांशश्वत्स्तुतिंचक्रेधनंजयः ॥ २६ ॥ इत्थंपश्यन्देवदेवः सर्ववर्षमिलावृतम् ॥ जगामवेदनगरंजंबूद्वीपमनोरमम् ॥ २७ ॥ मूर्तिमान्यत्रनिगमोदृश्यतेसर्वदैवहि ॥ तत्सभायांसदावाणीवीणापुस्तकधारिणी ॥ २८ ॥ गायंतीकृष्णचरितंशुभगंमंलायनम् ॥ उर्वशीपूर्वचित्त्याद्यानृत्यंत्योप्सरसोनृप ॥२९॥ हावभावकटाक्षैश्चतोषयंत्यःश्रुतीश्वरम्॥ अहंविश्वावसुश्चैवतुंबुरुश्चसुदर्शनः ॥३०॥ तथाचित्ररथोह्येतेवादित्राणिमुहुर्मुहुः ॥ वेणुवीणामृदंगानिमुरुयष्टिधृतानिच ॥ ३१ ॥ तालदुंदुभिभिःसार्द्धंवादयंतियथाविधि ॥ ह्रस्वदीर्घप्लुतोदात्तानुदात्तस्वरितानृप ॥ ३२ ॥ सानुनासिकभेदश्चतथानिरनुनासिकः ॥ एतैरष्टादशैर्भेदैर्गीयंतेश्रुतयःपरैः ॥ ३३ ॥ मूर्तिमंतोविराजंतेतत्रवेदपुरेनृप ॥ अष्टतालाःस्वराःसप्ततथाग्रामत्रयंनृप ॥ ३४ ॥ वसंतिवेदनगरेमूर्तिमंतःसदैवहि ॥ भैरवोमेघमल्लारोदीपकोमालकोशकः ॥ ३५ ॥

मूर्तिमान् जहां वेद रहैहै जाकी सभामें साक्षात् वाणी वीणापुस्तकधारिणी रहै है ॥ २८ ॥ तहां उर्वशी पूर्वचित्ती इत्यादिक अप्सरा श्रीकृष्णको मंगलायन चरित्रकूँ गावती नृत्य करैहै ॥२९॥ हाव, भाव, कटाक्षते वेदनके ईश्वर ब्रह्माकूं प्रसन्न करैहैं मै, विश्वावसु, तुंबुरु, सुदर्शन ॥ ३० ॥ और चित्ररथ ये बारंबार गामें है और वीणा, बांसुरी, मृदंग, मोहचंग ॥ ३१ ॥ हे नृप ! मँजीरा, दुंदुभीनके सहित यथाविधि ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत, उदात्त, अनुदात्त, स्वरित पूर्वक स्वरसों बाजे बजामेंहै ॥ ३२ ॥ सानुनासिक, निरनुनासिक इन अठारह भेदन करिके श्रुतिनकूं गामेंहू हैं ॥ ३३ ॥ जा वा वेदपुरमे आठों ताल तीनों ग्राम सातों स्वर मूर्तिमान् विराजें हैं ॥ ३४ ॥ वा वेदनगरमें मूर्तिमान् सदाई सब राग रहैं हैं भैरव,

मेघमल्लार, दीपक, मालकोश ॥ ३५ ॥ श्रीराग, हिंडोल ये जे छः राग हैं और पांच पांच इनकी स्त्री आठ आठ इनके न्यारे न्यारे बेटा ॥ ३६ ॥ मूर्तिमान् जहां विचरें हे हे नरेश्वर! भैरवको तो म्योलाकोसो वर्ण है, मालकोशको तोताकोसो हरो वर्ण है ॥ ३७ ॥ मेघमल्लारको मोरसो है, दीपकको सुवर्णसो है, श्रीरागको लाल है ॥ ३८ ॥ हिंडोलाको हंससो है, हे मिथिलेश्वर! ये ऐसे राजेहैं तब बहुलाश्व बोल्यो कि, हे मुनिसत्तम! तालनके स्वरनके ग्रामनके नृत्यनके कितने नाम भेद हैं तिने कहो ॥ ३९ ॥ नारदजी कहेहैं कि, रूपक, चंचरीक, परमठ, विराड, कमठ, मल्लक, झटि, और जुटा ये तो आठ ताल हैं ॥ ४० ॥ निषाद, ऋषभ, गांधार, षड्ज, मध्यम, धैवत और पंचम हे राजन्! ये सात स्वर कहेहैं ॥ ४१ ॥ माधुर्य, गांधार, धौव्य, ये तीन ग्राम हैं रास, तांडव, नाग, गांधर्व, कैन्नर ॥ ४२ ॥ वैद्याधर, गौल्लक, आक्रूरस, हाव, भाव और

श्रीरागश्चापिहिंडोलोरागाः षट्संप्रकीर्तिताः ॥ पंचभिश्चप्रियाभिश्चतनुजैरष्टभिःपृथक् ॥ ३६ ॥ मूर्तिमंतस्तुतेतत्रविचरंतिनरेश्वर ॥ भैरवो बभ्रुवर्णश्चमालकंसःशुकद्युतिः ॥ ३७ ॥ मयूरद्युतिसंयुक्तोमेघमल्लारएवहि ॥ सुवर्णाभोदीपकश्चश्रीरागोरुणवर्णभृत् ॥ ३८ ॥ हिंडोलो दिव्यहंसाभोराजतेमिथिलेश्वर ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ तालानांचस्वराणांचग्रामाणांमुनिसत्तम ॥ नृत्यानांकतिभेदायेनामभिः सहितान्वद ॥ ३९ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ रूपकश्चंचरीकश्चतालःपरमठःस्मृतः ॥ विराडकमठश्चैवमल्लकश्चझटिर्जुटा ॥ ४० ॥ निषादर्षभगांधारषड्जमध्यमधैवताः ॥ पंचमश्चेत्यमीराजन्स्वराःसप्तप्रकीर्तिताः ॥ ४१ ॥ माधुर्यमथगांधारंध्रौव्यंग्रामत्रयंस्मृतम् ॥ रासंचतांडवंनाट्यंगांधर्वंकैन्नरंतथा ॥ ४२ ॥ वैद्याधरंगौल्लकंचनृत्यमाक्रूरसंनृप ॥ हावभावानुभावैश्चदशभिश्चाष्टभेदवत् ॥ ४३ ॥ सारेगमपधनीतिस्वरसम्यंपदंस्मृतम् ॥ एतत्तेकथितंराजन्किंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ४४ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेवेदनगरवर्णनंनामत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४३ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ रागिणीनांचनामानिवददेवऋषेमम ॥ तथावैरागपुत्राणांत्वंपरावरवित्तमः ॥ १ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ कालेनदेशभेदेनक्रिययास्वरमिश्रया ॥ भेदाबुधैःषट्पंचाशत्कोट्योगीतस्यकीर्तिताः ॥ २ ॥ अंतर्भेदाअनन्ताहितेषांसंतिनृपेश्वर ॥ विद्धचेनंरागमानंदंशब्दब्रह्ममयंहरिम् ॥ ३ ॥

अनुभाव इन दश भेदन करिके आठ प्रकारको नृत्य है ॥ ४३ ॥ सा रे ग म प ध नी ये सात निषाद, ऋषभ, गांधार, षड्ज, मध्यम, धैवत और पंचम सातो रागनकरके आप्य पद नाम आश्रय कहेहैं हे राजन्! अब कहा सुनिवेकी इच्छा करेहै ॥ ४४ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटीकायां वेदनगरवर्णनं नाम त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४३ ॥ बहुलाश्व राजा पूछैहैं कि, हे देवऋषे! रागिणीके नाम और रागनके बेटानके नाम मेरे आगे कहो तुम अगारी पिछारीके बेत्तानमें श्रेष्ठ हो ॥ १ ॥ तब नारदजी बोले कि, कालभेद करिके और देशके भेदते स्वरमें मिली जो किया ता करिके ज्ञानीनने गीतके छप्पन किरोड़ भेद वर्णन करेहैं ॥ २ ॥ हे नृपेश्वर! और अंतर्भेद इनके अनंत हैं रागको

रूपतो एक फकत आनंद ब्रह्म हरि है ॥ ३ ॥ तातें मुख्य भेद तेरे आगे वर्णन करूंहूं कि, भैरवी १, पिंगला २, शंकी ३, लीलावती ४, और अगरी ५ ॥ ४ ॥ ये भैरवरागकी रागिनी पांच स्त्री हैं और महर्षि १, समृद्ध २, पिंगल ३, मागध ४, ॥ ५ ॥ बिलावल ५, वैशाख ६, ललित ७, पंचम ८, ये आठ राग भैरवरागके न्यारे न्यारे बेटा गाये जायहैं ॥ ६ ॥ और चित्रा १, जयजयावंती २, विचित्रा ३, वृजल्ला ४ ध्यंधकाकारी ५, ये पांच मनोहर रागिनी ॥ ७ ॥ मेघमल्लारकी स्त्री है और ये श्यामकार १, सोरठ २, नट ३, उड्डायन ४ ॥ ८ ॥ हे मैथिलेन्द्र ! केदार ५, व्रजरंहस्य ६, जलधार ७ और विहाग ८ ये मेघमल्लार रागके आठ पुत्र हैं॥ ९ ॥ तथा कुंचुकी १, मंजरी २, टोडी ३, गुर्जरी ४, शावरी ५ ॥ १० ॥ ये दीपक रागकी पांच स्त्रियां है तथा कल्याण १, शुभकाम २, गौडकल्याण ३, ॥ ११ ॥ कामरूप ४, कान्हरा ५, रामसंजीवन ६, सुखनामा ७,

तस्मान्मुख्याश्चभेदाःकौंवदिष्यामितवाग्रतः ॥ भैरवीपिंगलाशंकीलीलावत्यगरीतथा ॥ ४ ॥ भैरवस्याऽपिरागस्यरागिण्यःपंचकीर्तिताः ॥ मर्हर्षिश्चसमृद्धश्चपिंगलोमागधस्तथा ॥ ५ ॥ बिलावलश्चवैशाखोललितःपंचमस्तथा ॥ भैरवस्याष्टपुत्रायेगीयंतेचपृथक्पृथक् ॥ ६ ॥ चित्राजयजयावंतीविचित्राकथितापुनः ॥ वृजल्लाध्यंधकाकारीरागिण्योपिमनोहराः ॥ ७ ॥ मेघमल्लाररागस्यकथिताःपंचमैथिल ॥ श्यामकारःसोरठश्चनटोडायनएवच ॥८॥ केदारोव्रजरंहस्योजलधारस्तथैवच ॥ विहागश्चेत्यष्टपुत्राः कथिताःपूर्वसूरिभिः ॥९॥ कंचुकीमंजरीटोडीगुर्जरीशावरीतथा ॥१०॥ दीपकस्यापिरागस्यरागिण्यःपंचविश्रुताः ॥ कल्याणःशुभकामश्चगौडकल्याणएवच ॥११॥ कामरूपःकान्हरेतिरामसंजीवनस्तथा ॥ सुखनामामन्दहासःपुत्राश्चाष्टौविदेहराट् ॥१२॥ रागस्यदीपकस्यापिकथितारागपण्डितैः ॥ गांधारीवेदगांधारीधनाश्रीस्वर्मणिस्तथा ॥ १३ ॥ गुणागरीतिरागिण्यःपंचैतामैथिलेश्वर ॥ मालकोशस्यरागस्यकथितारागमण्डले ॥ १४ ॥ मेघश्चमचलोमारुमाचारःकौशिकस्तथा ॥ चन्द्रहारोघुंघुटश्चविहारोनंदएवच ॥ १५ ॥ मालकोशस्यरागस्यचाष्टपुत्राःप्रकीर्तिताः ॥ वैराटीचैककर्णाटीगोरीगोरावटीतथा ॥ १६ ॥ चतुश्चंद्रकलाचैवरागिण्यः पश्चविश्रुताः ॥ श्रीरागस्यापिराजेंद्रकथिताःपूर्वसूरिभिः ॥ १७ ॥ सारंगःसागरोगौरोमरुस्पंचशरस्तथा ॥ गोविंदश्चहमीरश्चगंभीरश्चतथैवच ॥१८॥ श्रीरागस्यापिराजेंद्रअष्टौपुत्रामनोहराः ॥ वसंतीएरजाहेरीतैलंगीसुंदरीतथा ॥१९॥

और मन्दहास ८ हे विदेहराज ! ये आठ पुत्र ॥ १२ ॥ रागपंडितोंने दीपक रागके कहे हे तथा गान्धारी १, वेद गान्धारी २, धनाश्री ३, स्वर्मणी ४ ॥ १३ ॥ और गुणागरी ५, हे मैथिलेश्वर ! ये पांच रागिनी मालकोश रागकी कही हैं ॥ १४ ॥ तथा मेघ १, मचल २, मारुमाचार ३, कौशिक ४, चन्द्रहार ५, घुंघुट ६, विहार ७, नन्द ८ ॥ १५ ॥ ये मालकोश रागके आठ पुत्र कहे हैं तथा वैराटी १, कर्णाटी २, गोरी ३, और गोरावटी ४ ॥ १६ ॥ चार चन्द्रकला ५, ये पांच स्त्री श्रीरागकी पंडितोंने कहीहैं ॥ १७ ॥ सारंग १, सागर, २, गौर ३, मरुत ४, पंचशर ५, गोविंद ६, हमीर ७, और गंभीर ८ ॥ १८ ॥ श्रीरागके ये आठ पुत्र मनोहर कहे हैं तथा वसंती

१, एरजा २, हेरी ३, तेलंगी ४, और सुंदरी ५ ॥ १९ ॥ हिंडोलकी ये पांच स्त्रियां हैं तथा मंगल, १, वसंत २, विनोद ३, कुमुद ४ ॥ २० ॥ विभास, ५ स्वरमण्डल, ६ इत्यादि नामनसों ये विख्यात आठ बेटा हैं हे राजेन्द्र ! ये वर्णन करेहे ॥ २१ ॥ अब बहुलाश्व राजा पूछैहै कि; शब्दब्रह्म वेद महात्माको और साक्षात् रासमण्डल रूप जो हिंडोलराग हैं ताको न्यारो न्यारो वर्णन कऱ्यो ॥ २२ ॥ और वेदके अंग पृथ्वीपै कौन कौनसे हैं सो कहो ॥ २३ ॥ तब नारदजी कहेहैं कि, वेदको मुख तो व्याकरण है, पिंगल चरण है मीमांसा शास्त्र हाथ है, ज्योतिष नेत्र है ॥ २४ ॥ आयुर्वेद (वैद्यक) पीठ है, धनुर्वेद वक्षस्थल है गांधर्व वेद जीभ है, वैशेषिक शास्त्र मन है ॥ २५ ॥ सांख्य (तत्त्वज्ञान) बुद्धि है, न्यायवाद अहंकार है और महात्मा वेदको वेदांत चित्त है ॥ २६ ॥ राग है सो विहार है,

हिंडोलस्यापिरागस्यरागिण्यःपंचविश्रुताः ॥ मंगलश्चवसंतश्चविनोदःकुमुदस्तथा ॥ २० ॥ एवंचविहितंनामविभासःस्वरमण्डलः ॥ पुत्रा श्चाष्टौसमाख्यातामैथिलेंद्रविचक्षणैः ॥ २१ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ शब्दब्रह्महरेःसाक्षान्निगमस्यमहात्मनः ॥ रासमण्डलइत्येवंहिण्डो लस्यपृथक्पृथक् ॥ २२ ॥ अंगानिवदमेदेवकानिकानिमहीतले ॥ २३ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ मुखंव्याकरणंप्रोक्तंपिंगलःपादउच्यते ॥ मीमांसाशास्त्रंहस्तौचज्योतिर्नेत्रंप्रकीर्तितम् ॥ २४ ॥ आयुर्वेदःपृष्ठदेशोधनुर्वेदउरस्थलम् ॥ गांधर्वरसनंविद्धिमनोवैशेषिकंस्मृतम् ॥ २५ ॥ सांख्यंबुद्धिरहंकारोन्यायवादःप्रकीर्तितः ॥ वेदांतंतस्यचित्तंहिवेदस्यापिमहात्मनः ॥ २६ ॥ रागरूपमिमंराजन्विहारंविद्धिमैथिल ॥ एत त्तेकथितंराजन्किंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ २७ ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ तस्मिन्वेदपुरेरम्येकिंचकारहरिःस्वयम् ॥ एतन्मेवददेवर्षेत्वंसा क्षाद्दिव्यदर्शनः ॥ २८ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ आयांतंवेदनगरंश्रीकृष्णंयादवेश्वरम् ॥ निगमोपिबलिंनीत्वासरस्वत्यातयासह ॥ २९ ॥ गन्धर्वैरप्सरोभिश्चग्रामतालैःस्वरैःसह ॥ रागैःसभेदैःसहितःप्रणनामकृतांजलिः ॥ ३० ॥ प्रसन्नोभगवान्साक्षादेवदेवोजनार्दनः ॥ वेदंप्राहयदूनांचसर्वेषांशृण्वतांसताम् ॥ ३१ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ निगमत्वंवरंब्रूहियत्तेमनसिवर्तते ॥ दुर्लभंकिंत्रिलोकेषु भक्तानांहर्षितेमयि ॥ ३२ ॥

हे राजन् ! हे मैथिल ! यह मैने तेरे अगारी वर्णन कऱ्यो अब तू कहा सुनिवेकी इच्छा करेहे ॥ २७ ॥ तब बहुलाश्व राजा बोल्यो कि, वा रम्य वेदपुरके विषे हरि भगवान् कहा करतेभये हे देवऋषे ! यह तुम मोते कहो तुम दिव्यदर्शन हो ॥ २८ ॥ नारदजी बोले जब वेदनगरमें श्रीकृष्ण आये तिनकूं देखके निगम नाम वेदहू वा सरस्वतीकूं संग लेके ॥ २९ ॥ गंधर्व अप्सरानकूं संग लेके ग्राम, ताल, स्वर, राग और रागनके भेद इन करके सहित सन्मुख जायके हाथ जोर नमस्कार करतोभयो ॥ ३० तब साक्षात् भगवान् देवदेव जनार्दन प्रसन्न हैके वेदते सब यादवनके सुनत २ यह वचन बोले ॥ ३१ ॥ कि, हे निगम ! तू वर मांग

जो तेरे मनमें होय सो जब अपने भक्तपै में प्रसन्न होऊं हौं तब कोई बात वाकूं दुर्लभ नहीं होय है ॥ ३२ ॥ तब वेद बोल्यो कि हे देव ! जो तुम प्रसन्न हो तो ज मेरे सब पार्षद हैं विनकूं अपने निज रूपको दर्शन करायदेव ॥ ३३ ॥ जो तेरो तेजःपुंज रूप गोलोकमें हो अपने धाममें और जो रूप वृन्दावनमें रासमण्डलमें हो हम ताके दर्शना कांक्षी हैं ॥ ३४ ॥ तब नारदजी कहै हैं कि, ऐसे श्रीपरिपूर्णतम स्वयं श्रीकृष्ण वेदको वचन सुनिके राधिकासहित अपनो रूप दिखावतेभये ॥ ३५ ॥ ता सुन्दर रूपकूं देखिके सबरेही मूर्च्छाकूं प्राप्त हैगये सात्त्विक भावनमें परिपूर्ण ह्वैके अपनों सुख और अपनों तनु सब भूलिगये ॥ ३६ ॥ तब अत्यन्त हर्षित ह्वैके मधुर ध्वनिते बाजे बजाय श्रीकृष्णके आगे सब वेद गावनलगे और नृत्य करनलगे ॥ ३७ ॥ जैसो सुन्यो हो तैसोही देख्यो तेरो माधुर्य रूप अद्भुत है तथैव नाम तैसेही वेदादिकनको वर्णनहू अद्भुत है ॥ ३८ ॥ वेद स्तुति करैं हैं–हे ब्रह्मन् ! मैं तुमकूं नमस्कार करूंहूं सत् हो, ज्ञानमात्र हो, कार्यकारणते परे हो, बडे हो, निरन्तर हो, प्रशांत हो, विभु हो, अज हो, सम हो, महत् हो, पर हो

॥ ॥ वेदउवाच ॥ ॥ यदिदेवप्रसन्नोसिसर्वेयेमेसुपार्षदाः॥तेषांदेवनिजंरूपंदर्शयात्रपरेश्वर॥ ३३॥ यद्रूपंतेचगोलोकेस्वधाम्निप्रस्फुरद्द्युतौ ॥ वृन्दावनेचतद्रासेतस्यदर्शनकांक्षिणः॥ ३४॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ श्रुत्वादेववचःकृष्णःपरिपूर्णतमःस्वयम्॥ स्वरूपंदर्शयामासराधयासहितंपरम्॥ ३५॥ तद्रूपंसुंदरंदृष्ट्वासर्वेवैमूर्च्छनांगताः ॥ पूरिताःसात्त्विकैर्भावैर्विस्मृत्यस्वतनुंसुखम् ॥ ३६॥ तदापिहर्षिताःसर्वेवादित्रैर्मधुरस्वनैः ॥ जगुस्तत्पुरतो राजन्ननृतुःपश्यतांसताम् ॥ ३७ ॥ यथाश्रुतंतथादृष्टंमाधुर्यंरूपमद्भुतम् ॥ तथैवचक्रुर्वेदाद्यावर्णनंमैथिलेश्वर ॥ ३८ ॥ ॥ वेदउवाच ॥ ॥ सज्ज्ञानमात्रंसदसत्परंबृहच्छश्वत्प्रशांतंविभवंसमंमहत् ॥ त्वांब्रह्मवंदेवसुदुर्गमंपरंसदास्वधाम्नापरिभूतकैतवम् ॥ ३९ ॥ ॥ सरस्वत्युवाच ॥ ॥ महःपरंत्वांकिलयोगिनोविदुःसविग्रहंतन्नवदंतिसात्वताः ॥ दृष्टंतुयत्तेपदयोर्द्वयंमेक्षेमस्यभूयान्महसामधीश्वरम् ॥ ४० ॥ ॥ गन्धर्वाऊचुः ॥ ॥ श्यामंचगौरंविदितंस्वधाम्नाकृतंत्वयाधामनिजेच्छयाहि ॥ विराजसेनित्यमलंचताभ्यांघनोयथामेचकदामिनीभ्याम् ॥ ४१॥ ॥ ॥ अप्सरसऊचुः ॥ ॥ यथातमालःकलधौतवल्ल्यावनोयथाचंचलयाचकास्ति ॥ नीलोद्रिराजोनिकषाश्मखन्याश्रीराधयाद्यस्तुतथा रमण्या ॥ ४२ ॥ ॥ ग्रामाऊचुः ॥ ॥ यस्यपदस्यपरागंशंभूमारमाकविदेवैः ॥ इच्छतिचेतसिराधातंभजमाधवपादम् ॥ ४३ ॥

दुर्गम हो, घन हो, अपने तेजते दूर कियो है छल जानें तिनको नमस्कार है ॥ ३९ ॥ अब सरस्वती स्तुति करैं हैं कि, तेजते परे आपकूं योगीश्वर वर्णन करैं हैं और भक्त आपकूँ मूर्तिमान् वर्णन करैं हैं मैंने दोनों स्थान आपके देखे वे क्षेमके तेजके स्थान हो, ईश्वर हो ॥ ४० ॥ फिर गन्धर्व स्तुति करै हैं कि, श्याम गौर जे दोनों वो आपने रूप अपने तेजसों अपनीही इच्छाकरके राधाकृष्ण रूप धारण करें हैं विन रूपनसों नित्य विराजोहो श्याम घटा जैसे बीजुरीसहित विराजैं हैं तिनकूं हमारी नमस्कार है ॥ ४१ ॥ अप्सरा स्तुति करैं हैं कि, जैसे तमालको वृक्ष सुनहरी लतामें लिपिट्यो शोभित होयहै जैसे घन बीजुरीसों लिपिट्योभयो और जैसे कसोटीके खानिमें सोनेको पर्वत सोहैहै तैसेही राधा करिके शोभित जो श्रीकृष्ण हो तिनके अर्थ हमारी नमस्कार है ॥ ४२ ॥ तीनों ग्राम स्तुति करैं हैं कि, जाके चरणकमलके परागकूँ शंभु, पार्वती, लक्ष्मी और ज्ञानी तथा देव

तान करिके सहित श्रीराधा चित्तमें धारण करें हैं वा माधवकूँ तुम दंडोत करो ॥ ४३ ॥ फिर ताल कहैं है कि, या करिके बलि श्रेष्ठ विहरे ता बलिकूं हरे ता भगवान्के चरण कमलकूँ भजो चित्तको अन्धकार दूर भये संते ॥ ४४ ॥ फिर मान कहे हैं कि, जा भगवान्की शरण प्राप्त हैके संत संसार दुःखकूं बाहिर फेकै हे ता राधामाधवके दिव्य चरण कमलकूँ हम धारण करैं हैं ॥ ४५ ॥ फिर स्वर बोले शरद् ऋतुको प्रफुल्लित कमल ताकी शोभाकूं फीकी करनहारो जो श्रीकृष्णको चरणकमल जो मुनिनने चाख्यो है वज्र, अंकुश, कमल तिनते चिह्नित हैं, देदीप्यमान सुवर्णके नूपुर जिनमें विराजमान दूरि कियोहै भक्तनको तापत्रय जानें चलायमान है कांति जिनकी ऐसे राधापतिके चरणद्वय तिन्हें हम धारण करे हे ॥४६॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटीकायां वेदादिस्तुतिवर्णनं नाम चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४४ ॥ नारदजी कैहेहें–भैरवते आदि दैके जे रागगण हैं वे हरि भगवान्के

॥ ॥ तालाऊचुः ॥ ॥ येनबलिःसद्भिहरेतद्वलिमेवहरेत् ॥ तंभजपादंतुहरेश्चेतसितमेकुहरे ॥ ४४ ॥ ॥ मानाऊचुः ॥ ॥ उत्क्षिपंतिबहिर्दुःखंसंतोयच्छरणंगताः ॥ राधामाधवयोर्दिव्यंदधामपदपंकजम् ॥ ४५ ॥ ॥ स्वराऊचुः ॥ ॥ शरद्विकचपंकजश्रियमतीवविद्वेषकंमिलिंदमुनिलेढितंकुलिशकंजचिह्नावृतम् ॥ स्फुरत्कनकनूपुरंदलितभक्ततापत्रयंचलद्द्युतिपदद्वयंहृदिदधामिराधापतेः ॥ ४६ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खंडेनारदबहुलाश्वसंवादेवेदादिस्तुतिवर्णनंनामचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४४ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ भैरवाद्यारागगणाःपुरःप्राप्ताहरेःप्रभोः ॥ रूपानुरूपावयवांतनुंदृष्ट्वातिहर्षिताः ॥ १ ॥ यत्रयत्रचतेषांवैदृष्टिःप्राप्ताहरेस्तनौ ॥ तत्रस्थिताचनिर्गंतुंलावण्याच्नशशाकह ॥ २ ॥ अहोश्रीकृष्णचन्द्रस्यरूपमत्यद्भुतंहरेः ॥ दृष्ट्वोपवर्णनंतस्यचक्रुस्तेपिपृथक्पृथक् ॥ ३ ॥ ॥ भैरवउवाच ॥ ॥ भजहरिजानुद्वयमितिलक्ष्मीः ॥ भजेतिसदांकेकमलकराभ्याम् ॥ ४ ॥ ॥ मेघमल्लारउवाच ॥ ॥ ऊरूविष्णोरंभाखंडौहेमस्तंभौध्यायेवन्द्यौ ॥ ओजःपूर्णौशोभायुक्तौवस्त्रापीतौकृष्णस्योभौ ॥ ५ ॥ ॥ दीपकउवाच ॥ ॥ सकलसुखकरंकनकरुचिधरम् ॥ प्रथितहरिपदंभजतकटितले ॥ ६ ॥ ॥ मालकोशउवाच ॥ ॥ कटीकेशवस्याहरेरस्तितन्वीनृणांनेत्रयोर्दृष्टिमानंहरंति ॥ परंकंपितामंदगच्छत्समीरैः सुनम्रेणसासर्वचेतोहरेत्थम् ॥ ७ ॥

आगे प्राप्त भये रूपके अनुरूप है अंग जामे या तनुकूं देखिके अत्यंत हर्षित होतेभये ॥ १ ॥ जहां जहां हरिके अंगनमें दृष्टि परी तिनी तिनी अंगनमेंते लावण्यताके मारे फँसी दृष्टि फिर तिनमेंसो निकस नही सकी ॥ २ ॥ अहो ! श्रीकृष्णचंद्र हरिको बडो अद्भुत रूप है वाकूं देखिके अब न्यारो न्यारो वर्णन करैहैं ॥ ३ ॥ भैरव कैहेहें कि, हरिकी दोनो जंघानको भजन करो जिनें लक्ष्मीजी गोदीमें धरके अपने कमल हाथनसो दाबे है ॥ ४ ॥ मेघमलार कैहेहें कि, विष्णुके दोनों ऊरू केलाके खंभसे है अथवा सुवर्णके खंभसे है वंद्य है तिनकूं मै ध्यान करूंहूं जे ओजसो पूर्ण है शोभासो युक्त हैं और पीताम्बरसे लिपटे हैं ॥ ५ ॥ दीपकराग बोल्यो कि, सम्पूर्ण सुखनकूं करनहारे सुवर्णकी कान्तिके समान देदीप्यमान जो हरिके विख्यात दोनों चरण हैं तिनको कटितटके नीचे ध्यान करो ॥ ६ ॥ मालकोश बोल्यो कि, भगवान्की जो केशकीसी पतली कटि है वाको

मैं ध्यान करूंहूं जो कोटि मनुष्यनके नेत्रनकी दृष्टिमानको हरैहै और जो केवल मंद पवनसोंहू हलैहै और अति नम्र हैवेसो या प्रकार सबके चित्तको हरनवारी है ॥ ७ ॥ श्रीराग बोल्यो कि, भगवान् राधापतिकी नाभिरूप सरोवरको ध्यान करूंहूं जो नाभिसर शोभित त्रिवलीरूप हिलोरनसों मनोहर है और रोमावलीसों कामदेवके वनको जाने प्रगट कियोहै वा नाभिसरको मैं ध्यान करूंहूं ॥ ८ ॥ हिंडोल बोलो कि, जो पिप्पलपत्रमें बैठी भ्रमरपंक्तिके समान शोभित हैं वा भगवान्की अक्षरपंक्ति (त्रिवली) ताको ध्यान करूंहूं जो कमलमें श्यामरेखासी दीखैहै ॥ ९ ॥ भैरवी बोली कि, कटितें लिपट्यो जो पीतपट हरिको है जाकी इन्द्रधनुषकीसी शोभा है कांचनके तारनतें मनोहर कांति जाकी है सब दुःखनके हरनहारे वा पीतपटको ध्यान करो ॥ १० ॥ भैरवके बेटा बोले–श्रीकृष्णकी चार भुजानको ध्यान करो जे भुजा चार समुद्रनकी नाईं विश्वकी पूर्ण करनहारी

॥ ॥ श्रीरागउवाच ॥ ॥ नाभेःसरःपुष्करकुंडवच्चतद्लसत्त्रिवल्ल्यूर्मिमनोहरंपदम् ॥ रोमावलिप्रोज्झितकामकाननंभजामिनित्यंहृदि राधिकापतेः ॥ ८ ॥ ॥ हिण्डोलउवाच ॥ ॥ अक्षरपंक्तिः किन्नलिपंक्तिःपिप्पलपत्रेमोहनमाला ॥ किंकमलेयच्छ्यामलरेखा किंह्युदरेरोमावलिरेखा ॥ ९ ॥ ॥ भैरवरागिण्यऊचुः ॥ ॥ पीतपटंयत्कृष्णहरेरिंद्रधनुर्वाद्दीप्तियुतम् ॥ काञ्चनशिल्पैश्चारुरुचितद्व्रज नृणांदुःखहरम् ॥ १० ॥ ॥ भैरवपुत्राऊचुः ॥ ॥ चतुःसमुद्राइवविश्वपूरकाआनन्ददाएवचतुःपदार्थवत् ॥ तेबाहवोलोकवितानदंड वन्मयंतिभूधारणदिग्गजाइव ॥ ११ ॥ ॥ मेघमल्लाररागिण्यऊचुः ॥ ॥ अरुणबिंबफलद्युतिमण्डितंभजहरेरधरंमधुरंमनः ॥ नवजपादल मल्लसुविग्रहंसकलवल्लभभूमिपतेःप्रभोः ॥ १२ ॥ ॥ मेघमल्लारपुत्राऊचुः ॥ ॥ कर्पूरकेतकसुमौक्तिकहीरकाणांश्रीखण्डचन्द्रचपलामृतम ल्लिकानाम् ॥ तेषांरुचेश्चपरिभावमकारिपूर्वंयादंतपंक्तिरमलास्मरतांपरस्य ॥ १३ ॥ ॥ दीपकरागिण्यऊचुः ॥ ॥ नयनयुगलजातंयातुनोह र्निशन्तेमदनशरपरीक्षंसर्वलावण्यदीक्षम् ॥ परिहतसुरवृक्षंकोटिशोलक्ष्यलक्षंनिजजनकुलरक्षंदानदक्षंकटाक्षम् ॥१४॥ ॥ दीपकपुत्राऊचुः ॥ ॥ किंवाकुलिंगयुगलंनवपद्ममध्येदुःखक्षयायवसतांनिशितासियुग्मम् ॥ जैत्रंधनुर्जयतिकिंमकरध्वजस्यभ्रूमण्डलंकिमथचन्द्रमुखेपरस्य ॥ १५ ॥

हैं चार पदार्थसी आनंद देनेवारी हैं लोककूँ चँदोहाकी दंडसी रक्षक है और दिग्गजनकीसी भूमिकी रक्षा करैहैं ॥ ११ ॥ मेघमल्लाररागिणी बोली कि, कंदूरीके फलसे लाल हरिके मधुर अधरनको अरे मन! ध्यान कर जे नये दुपहरियाके फूलकीसी कान्तिवारे और सबके प्यारे हैं पृथ्वीके पति प्रभु हैं ॥ १२ ॥ मेघमल्लारके बेटा बोले कि, अरे! मेरे मन कपूर, केतकी, मोती, हीरा, चन्दन, चंद्रमा बीजुरी इनकी अमरमल्लिकाकी जो कान्ति ताकूं फीकी करनहारी कान्ति जाकी ता हरिकी दांतनकी पंगतिको स्मरण करो ॥ १३ ॥ दीपककी रागिणी बोली कि, मैं श्रीकृष्णके नेत्रद्वयके कटाक्षको स्मरण करूंहूं सो रात्रि दिन मेरी रक्षा करो वो कैसो हैं कि, सब लावण्यके दीक्षित हैं कामके जानों परीक्ष बाण है दानमें चतुर कल्पवृक्षके न्यून करनवारे कोटिन लक्षके लखनवारे और अपने जनके रक्षक है ॥ १४ ॥ दीपकके पुत्र बोले कि, नवीन कमलमें मानों खंजनको जोडा बैठ्यो है ऐसे नेत्र चंद्रमासे श्रीकृष्णके मुखमें ऐसे दीखैहैं जगत्कूँ जीतिवेकूँ मानों कामदेवने दो धनुष तानेहैं ऐसी भृकुटीके मंडलकूँ स्मरण करैहैं ॥ १५ ॥

मालकोशकी रागिणी बोली कि, काननके कुंडल कैसे हैं कि, मानों चंद्रमंडलमें कारी सर्पिणी लहराती नाचिरही है अथवा मकरंदके भरे कमलसे कपोलमंडलमें मानों भौंरानकी पंगति डोलैहै ॥ १६ ॥ मालकोशके पुत्र बोले कि, श्यामसुंदरके काननमें कुंडल कैसे झलकि रहेहैं मानों दो सूर्य उदय भयेहैं के श्यामघटामें दो बीजुरी हैं ऐसे सुन्दरी कुंडल है ॥ १७ ॥ श्रीरागिणी बोली कि, दो कुलिंग पक्षी दो खंजन मानों दूरते आय लैढेहें लाल डोरानके कमलनपे अरुणावली ऐसी नेत्रनकी चंचलताकूं स्मरण करेहैं ॥ १८ ॥ श्रीरागके बेटा बोले-फेटते बांध्योहै पीतांबर जाने मोर पंखको मुकुट धरे बेणचजावतमें नवाईहै नाड़ जिनने लकुट वेणुकूं धारण करे ऐसे नटवेषधारी श्रीकृष्णकूँ हम भजेहैं ॥ १९ ॥ हिंडोलकी रागिनी बोली-अतसीके कुसुमसी कांति जाकी यमुनाके कूलके कंदवनमें ठाडे नई गोपीनके विहारमें विकल ऐसे वनमाली आली हो हमारे मंगलनकूं रचो ॥ २० ॥ हिंडोलके

॥ ॥ मालकोशरागिण्यऊचुः ॥ ॥ परिनृत्यतइन्दुमण्डलेफणिपत्न्याविवलोलकुण्डले॥ कमलेमकरंदनिर्भरेभ्रमरालीवसुगण्डमण्डले ॥१६॥
॥ ॥ मालकंसपुत्राऊचुः ॥ ॥ रविरेखसमण्डलेकिमुयद्दुभर्तुस्त्वथवायतेतडित् ॥ अधितिष्ठतिगण्डमण्डलंद्युतिखंडकलधौतकुण्डलम् ॥१७॥
॥ श्रीरागिण्यऊचुः ॥ ॥ कुलिंगयोःखंजनयोःकिलारादापत्यतांयुद्धमभूद्दलीनाम् ॥ तेपांगतःकीरदपप्रफुल्लेचकास्तिपद्मेरुणविंबलिप्सुः॥१८॥
॥ ॥ रागपुत्राऊचुः ॥ ॥ परिकरीकृतपीतपटंहरिंशिखिकिरीटनतीकृतकन्धरम् ॥ लगुडवेणुकरंचलकुण्डलंपटुतरंनटवेषधरंभजे ॥ १९ ॥
॥ ॥ हिण्डोलरागिण्यऊचुः ॥ ॥ अतसीकुसुमोपमेयकांतिर्यमुनाकूलकदम्बमध्यवर्ती ॥ नवगोपवधूविहारशालीवनमालीवितनोतुमङ्गलानि ॥ २० ॥
॥ हिण्डोलपुत्राऊचुः ॥ ॥ हरेमत्समःपातकीनास्तिभूमौतथात्वत्समोनास्तिपापापहारी ॥ इतित्वांचमत्वाजगन्नाथदेवंयथेच्छाभवेत्तेतथामांकुरुत्वम् ॥ २१ ॥
॥ नारदउवाच ॥ ॥ इतिरागकृतंध्यानंयःशृणोतिपठेत्सदा ॥ तंप्रेत्नगोचरोयातिभगवान्भक्तवत्सलः ॥ २२ ॥
इत्थंस्वदर्शनंदत्त्वावेदादिभ्योहरिःस्वयम् ॥ वभूवपश्यतांतेपांशार्ङ्गपाणिश्चतुर्भुजः ॥ २३ ॥ कृत्वातुदर्शनंविष्णोर्गतेदेवेगणैःसह ॥ सैन्येसुतंशंबरारिंस्थापयित्वायदूत्तमम् ॥ २४ ॥ द्वारकांस्वांपुरींगंतुमनश्चक्रेपरात्परः ॥ २५ ॥ मञ्जीरघण्टाकलकिंकिणीकलंसुकांस्यपात्रध्वनिनारथेन ॥ सुग्रीवमुख्यैःसचचंचलाश्वैर्नियोजितैर्मैथिलदारुकेण ॥ २६ ॥

बेटा बोले-हे हरे ! मेरे समान तो कोई पातकी नहीं है तुमारे समान कोई पापहारी नहीं है ऐसें मानिके जगतके नाथ जे तुम तिनकूं नमस्कार है जैसे आपकी इच्छा होय तैसेंई मोइ करो ॥ २१ ॥ नारदजी कहेहै-यह रागनको कियो ध्यान है ताकूं जो पाठ करे वा सुनै ताकूं भक्तवत्सल भगवान् दर्शन देय है ॥ २२ ॥ ऐसे स्वयं हरि वेदादिकनकूं अपनो दर्शन देके तिनके देखत देखत शार्ङ्गपाणि चतुर्भुज अन्तर्धान हैगये ॥ २३ ॥ ऐसे देवतानके गणन करके सहित सब राग जब विष्णुको दर्शन करके चलेगये तब सेनामें यदूत्तम प्रद्युम्न अपने पुत्रकूं स्थापित करके ॥ २४ ॥ भगवान् परात्पर द्वारका जायवेकूं मन करतेभये ॥ २५ ॥ हे मैथिल ! मंजीर, घंटा, मनोहर किंकिणी, झांझ तिनकी ध्वनि जामें और कांस्यपात्रकी ध्वनिवाले और सुग्रीवादिक चंचल घोड़ा जामें लगे दारुक सारथीनें जोरयो ॥ २६ ॥

सुन्दर रत्न जड़े चंदध्वनि जामें होय पवनसे हलनेवारी ऐसे गरुडध्वज रथमें बैठ परात्मा श्रीकृष्ण वा वेदपुरीकूँ छोड़ि यादवनके वृन्दसों शोभित जो द्वारिकापुरी ताकूँ आवते भये ॥ २७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खण्डे भाषाटीकायां श्रीकृष्णध्यानवर्णनं नाम पंचचत्वारिंशोऽध्यायः ॥४५॥ नारदजी कहैं हैं कि, जब श्रीकृष्ण द्वारिकापुरीकूं चलेगये तब प्रद्युम्न सेनासहित कामदुघ नदकूँ जातभये ॥ १ ॥ तहां सौ योजनकी गन्धर्वनकी पुरीहै रत्ननकी जड़ी सोनेकी वसन्तमालती जाको नाम है ॥ २ ॥ जामे लौंगनकी लतानते इलायची, केशर, जावित्री, जायफल, चन्दन, कल्पवृक्ष ॥ ३ ॥ इन करके शोभित मतवारे भौंरा जहां गुंजारे, चित्र विचित्र पखेरू जहां बोलरहे, भव्य गन्धर्वनते शोभित जैसे नागनते भोगवती ॥ ४ ॥ जामें पतंग नाम करके गन्धर्वनको राजा राज्य करैहै जो सुकृती इन्द्रकोसो बल पुरुषार्थ है ॥ ५ ॥ वो प्रद्युम्न दिग्विजयकूं निकस्यो है या

श्रुतेनसद्रत्नमताश्रुतिस्वनैःप्रभंजनैजद्गरुडध्वजेन ॥ विहायतांवेदपुरींपरात्माययौपुरींयादववृन्दमंडिताम् ॥ २७ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडेनारदबहुलाश्वसंवादेश्रीकृष्णध्यानवर्णनंनामपंचचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४५ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ अथकृष्णेभगवति पुरींद्वारावतींगते ॥ प्रद्युम्नःसैनिकैःसार्द्धनदंकामदुघंययौ ॥ १ ॥ शतयोजनविस्तीर्णागन्धर्वाणांमनोहरा ॥ वसन्तमालतीनाम्नाहेमरत्नमयी पुरी ॥ २ ॥ लवंगलतिकाजालैरेलाकाश्मीरदेशकैः ॥ जातीफलादिजावित्रीश्रीखण्डपारिजातकैः ॥ ३ ॥ मत्तालिनादिताभृंगैःशब्दिताचि त्रपक्षिभिः ॥ गन्धर्वैराजिताभव्यैर्नागैर्भोगवतीयथा ॥ ४ ॥ पतंगोनामतत्रैवगन्धर्वेशोमहाबलः ॥ करोतिराज्यंसुकृतोशक्रवद्बलपौरुषम् ॥ ॥ ५ ॥ श्रुत्वाप्रद्युम्नमायातंदिग्जयार्थंविनिर्गतम् ॥ गन्धर्वैरुद्भटैर्युक्तोयुद्धंकर्तुंमनोदधे ॥ ६ ॥ रथाश्वगजवीरैश्चगंधर्वैर्दशकोटिभिः ॥ पतंगआगतोयोद्धुंप्रद्युम्नस्यापिसंमुखे ॥ ७ ॥ गंधर्वैर्यदुभिःसार्द्धंघोरंयुद्धंबभूवह ॥ भल्लैर्गदाभिःपरिघैर्मुद्गरैस्तोमरर्ष्टिभिः ॥ ८ ॥ बाणांधका रेसंजातेपतंगोतिरथोबली ॥ धनुष्टंकारयन्प्रासोजगर्जघनवद्बली ॥ ९ ॥ गदोगदांसमादायबलदेवानुजोबली ॥ तद्बलंपोथयामासवज्रेणेंद्रो यथागिरीन् ॥ १० ॥ गदस्यगदयाकेचिद्गंधर्वाःपतितारणे ॥ रथाश्चूर्णीकृताःसर्वेमातंगाभिन्नमस्तकाः ॥ ११ ॥ अश्वारूढाःकेपिवीराः पतितारणमूर्द्धनि ॥ अधोमुखाऊर्ध्वमुखागंधर्वाश्छिन्नबाहवः ॥ १२ ॥

बातकूं सुनिके उद्भट गन्धर्वनकूं संग लेके युद्ध करवेकूँ मन करतोभयो ॥ ६ ॥ हाथी, रथ, अश्व और वीरनके सहित दश किरोड गन्धर्वनकूँ लेके पतंग प्रद्युम्नके सन्मुख युद्धको आयो ॥ ७ ॥ तब गन्धर्वनकी और यादवनको भाले, गदा, तोमर, बैंणे, मुद्गर और ऋष्टीनते घोर युद्ध होतभयो ॥ ८ ॥ जब बाणनको अन्धकार भयो तब पतंग अतिरथी धनुषको टंकारतो आपके बडो बलवान् मेघकोसो गर्ज्यो ॥ ९ ॥ तब तो बलदेवको भैया गद गदा लेके गन्धर्वनकी सेनाकूं मारतोभयो जैसे वज्र लेके इन्द्र ॥ १० ॥ गदकी गदाते कितनेक गन्धर्व रणमें जायपरे सब रथ चूर्ण हैगये हाथीनके माथे टूटगये ॥ ११ ॥ घोडानके सवार कितनेई घोडानपेते औंधे मोहडे रणमें गिरपडे ऊंचेकूं मुख

नीचेकूं मुख कटी भुजा जिनकी ऐसे कितनेई गंधर्व रणमें गिरपड़े ॥ १२ ॥ क्षणमात्रमें रुधिरकी नदी बहनलगी रुद्रकी मालाके लिये प्रमथ शिरनकूं बीननलगे ॥ १३ ॥ सिंहपै चढी भद्रकाली सैकडन डाकिनीनकूं संग लेके खोपडीमें भर भर रुधिरकूं पीवती संग्राममें दीखे है ॥ १४ ॥ ऐसे गदके युद्धमें जब गन्धर्व भाजगये तब लाख हाथीको बल जामें सो पतंग गंधर्व आयो ॥ १५ ॥ हे मैथिल ! पतंगने बडे पराक्रमते गदके हृदयमें गदा मारी गदनेऊ पतंगके हृदयमें गदा मारी ॥ १६ ॥ ऐसे बिन दोनोंनको दो घडी गदायुद्ध होतभयो विस्फुलिंगा झरत झरत दोनों गदा चूर्ण हैगई ॥ १७ ॥ लाख भारकी बडीभारी गदा लेके रणमें दुर्मद पतंग गदके शिरमें मारतोभयो ॥ १८ ॥ गदाके प्रहारते गद क्षणभर मूर्च्छाकूं प्राप्त हैगयो ऐसे महात्मा पतंगने जब घोर युद्ध कर्यो ॥ १९ ॥ ताई समय द्वारिकापुरीते तेजःपुंज चल्योआयो जो किरोड सूर्यकोसो है वाको सब यादवने

क्षणमात्रेणतत्सैन्येरुधिराणांनदीह्यभूत् ॥ प्रमथाहरमालार्थंशिरांसिजगृहुर्मृधे ॥ १३ ॥ सिंहारूढाभद्रकालीडाकिनीशतसंवृता ॥ कपाले नापिबच्छिरंपिबंतीदृश्यतेमृधे ॥ १४ ॥ एवंयुद्धेगदकृतेगन्धर्वाणांपलायताम् ॥ गंधर्वेशस्तदाप्रातोहस्तिलक्षबलान्वितः ॥ १५ ॥ गदंत ताडगदयापतंगोहृदिमैथिल ॥ गदोपितंस्वगदयापतंगंहृदिचौजसा ॥ १६ ॥ तयोश्चगदयायुद्धंबभूवघटिकाद्वयम् ॥ विस्फुलिंगान्क्षरंत्यौद्वे गदेचूर्णीबभूवतुः ॥ १७ ॥ लक्षभारमयींगुर्वींगदामादायसत्वरम् ॥ गदंतताडशिरसिपतंगोरणदुर्मदः ॥ १८ ॥ गदाप्रहारेणगदःक्षणंमूर्च्छाम वापह ॥ एवंकृतेघोरमृधेपतंगेनमहात्मना ॥ १९ ॥ तदैवद्वारकापुर्यास्तेजःसंचक्रमागतम् ॥ ददृशुर्यादवाःसर्वेकोटिमार्तण्डसन्निभम् ॥२०॥ तस्मिंस्तेजसिगौरांगोबलदेवोमहाबलः ॥ आविर्बभूवसहसाभगवान्भक्तवत्सलः ॥ २१ ॥ गंधर्वाणांबलंसर्वंसमाकृष्यहलेनवै ॥ तताडमु सलंक्रुद्धोबलोनीलांबरोबली ॥ २२ ॥ रथान्गजांस्तुरंगांश्चवीराःशस्त्रभृतांवराः ॥ निपेतुर्युगपत्सर्वेचूर्णिताश्चोपलाइव ॥ २३ ॥ पतंगोवि रथस्तस्माद्भीतभीतःपुरींययौ ॥ पुनर्योद्धुंयादवैश्चसेनाव्यूहंचकारह ॥ २४ ॥ शतयोजनविस्तीर्णांगंधर्वाणांमहापुरीम् ॥ वसंतमालतींसर्वा मुद्धिदार्यहलेनवै ॥ २५ ॥ विचकर्षबलःक्रुद्धोनदेकामदुघेनृप ॥ हाहाकारस्तदैवासीन्नगर्यांपतितेगृहैः ॥ २६ ॥

देखो ॥ २० ॥ ता तेजमेंते गौरांग महाबल बलदेवजी अकस्मात् प्रकटभये क्योंकि आप भक्तवत्सल भगवान् हैं ॥ २१ ॥ नीलाम्बरधारी बडे बलवान् बलदेव क्रोध करके गंधर्वनकी सब सेनाको हलते खैंचिके मूसलते मारतेभये ॥ २२ ॥ तब वा मूसलके मारे रथ, घोडा, हाथी और शस्त्रधारी वीर सब एकसंग ऐसे जायपरे जैसे चूर्ण हैके पत्थर जायपरें ॥ २३ ॥ तब भयभीत हैके विरथभयो पतंग पुरीकूं भाजगये फिर पाछे यादवनते युद्ध करवेकूं सेनाको व्यूह रच्यो ॥ २४ ॥ तब गंधर्वनकी शतयोजनकी लंबी पुरी वसन्तमालती ताकूं उखाडके हलते खेंचनलगे ॥ २५ ॥ खेंचके क्रोधते कामदुघ नदमें डारनलगे तब नगरीमें घर घरमें बडो हाहाकार शब्द

मच्यो ॥ २६ ॥ जब तिरछी नावसी ह्वैके चारों बगल घूमनलगी पुरी ताकूं देखि ये पतंग गन्धर्वनकूं संग लैके आपो हाथ जोडि ठाडो भयो ॥२७॥ द्वै लाख विमान बलदेवजीकी भेट कीने, सुवर्णके जड़ाऊ जिनमें मोतीनके चँदोहा चालीस २ कोसके विस्तीर्ण विश्वकर्माके रचे ॥ २८ ॥ इच्छानुसार चलनवारे पताकानसों युक्त एक किरोड़ कलश जिनमें एक हजार सूर्यके समान प्रकाशवारे वे विमान हैं ॥ २९ ॥ और चारि लाख गौ, १ अर्ब घोडा, लौंग, इलायची, केशर, जायफल इन करिके सहित ॥ ३० ॥ अमृतभरे किरोडन पात्र धर्षित ह्वैके इतनी भेट लायके दीनी और नमस्कार करी ॥ ३१ ॥ हाथ जोडके बलभद्रके प्रसादके जाननहारो बलदेवजीको स्तुति करनलग्यो कि, हे राम २ ! हे महावीर्य ! आपको पराक्रम मैने नहीं जान्यो जा तुमारे शिरपै धरो सबरो भूमण्डल तिलसों मालूम परै है ॥ ३२ ॥ देवतानके अधिदेव कामपाल हो जिनको नाम तिनके अर्थ नमस्कार

तिर्यक्पोतमिवाघूर्णानगरींवीक्ष्यसत्वरम् ॥ पतंगःसर्वगंधर्वैर्हर्षितःसन्कृतांजलिः ॥ २७ ॥ खचिद्धेमसवर्णानांमुक्तातोरणशालिनाम् ॥ दश योजनविस्तीर्णांकृतानांविश्वकर्मणा ॥ २८ ॥ कामगानांपताकाभिर्युतानांकुंभकोटिभिः ॥ सहस्रार्कप्रकाशानांविमानानांद्विलक्षकम् ॥ ॥ २९ ॥ चतुर्लक्षंगवांचैवतुरंगाणांदशार्बुदम् ॥ एलालवंगकाश्मीरजातीफलफलैःसह ॥ ३० ॥ सुधाफलानांदिव्यानांकोटिशोभाजनानि च ॥ नीत्वाबलिंसमादायदत्त्वानत्वाप्रधर्षितः ॥ ३१ ॥ कृतांजलिःप्राहबलंबलभद्रप्रसादवित् ॥ ॥ पतंगउवाच ॥ ॥ रामराममहावीर्यनजानेतवविक्रमम् ॥ यस्यैकमूर्ध्नितिलवद्दृश्यतेभूमिमण्डलम् ॥ ३२ ॥ देवाधिदेवभगवन्कामपालनमोस्तुते ॥ नमोनंतायशेषाय साक्षाद्रामायतेनमः ॥ ३३ ॥ जयजयाच्युतदेवपरात्परस्वयमनंतदिगंतगतश्रुते ॥ सुरमुनींद्रफणींद्रवरायतेमुसलिनेबलिनेहलिनेनमः ॥३४॥ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ एवंस्तुतःपतंगेनबलभद्रोमहाबलः ॥ प्रसन्नचेतागंधर्वमाभैष्टेत्यभयंददौ ॥ ३५ ॥ स्थापयित्वाबलेकार्ष्णिंप्रणतंयादवेश्वरः ॥ यादवैःप्रस्तुतःशीघ्रंपुरींद्वारावतींययौ ॥ ३६ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेवसंतमालतीकर्षणंनामषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४६ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ प्रद्युम्नोथमहावीरोनादयञ्जयदुंदुभिम् ॥ यदुभिःसैनिकैःसार्द्धंमधुपुरातटंययौ ॥ १ ॥

है साक्षात् अनन्त शेषस्वरूप राम हो तिनके अर्थ नमस्कार है ॥ ३३ ॥ हे अच्युत ! हे देव ! हे परात्पर ! जय २ आप अनन्त हो, दिशानमें है जश जिनको, सुरनमें, मुनीन्द्रनमें, नागनमें श्रेष्ठ हल, मुशलधारी बलदेव तिनकूं नमस्कार है ॥ ३४ ॥ नारदजी कहैहैं ऐसे पतंगने जब महाबल बलभद्रकी स्तुति करी तब प्रसन्न ह्वैके याको अभयदान देतेभये कि, तूं मत डरपे ॥ ३५ ॥ फिर यादवनके स्वामी आप सेनामें अति नम्र प्रद्युम्नकूँ स्थापन करके यादवनने जिनकी स्तुति करी तब जल्दीही द्वारिकाकूँ चलेगये ॥ ३६ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खण्डे भाषाटीकायां वसन्तमालतीकर्षणं नाम षट्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४६ ॥ नारदजी कहैं हैं कि, प्रद्युम्नजी महापराक्रमी जीतके नगाडे

बजावत सेनाके यादवनकूं संग लेके मधुधारा नदीके तटपै जातभयो ॥ १ ॥ सुमेरुके किनारेपै कुबेरके शुभ वनमें जामें सुनहरी लता और सुनहरी हंस हैं ॥ २ ॥ हे मैथिल ! देवतानकूंहू दुर्गम दानवनको अगम्य है हेमावती गुफानमें वेत्रवती गङ्गा जिनमें तामें प्राप्त होतभये ॥ ३ ॥ दानवनके भयके मारे देवता आठों लोकपाल कभी स्वर्गसो भागे आयके उनमें वसैंहें तातें उनकी निधि जिनमें रहे हैं ॥ ४ ॥ तहां शक्रसख नाम देवराजा है सो उनको रक्षक है सो प्रद्युम्नकूं आयो सुनिके युद्ध करिबेकूं मन करतोभयो ॥ ५ ॥ प्रद्युम्नके भेजे भये बुद्धिमें श्रेष्ठ उद्धवजी मार्गके जाननेवाले जननते पूछिके वा पुरमें चलेगये ॥ ६ ॥ तब शक्रसख नामके देवकूं नमस्कार करिके मन्त्रीनमें श्रेष्ठ प्रभु उद्धवजी प्रद्युम्नके कहेकूं विस्तारते कहतेभये ॥ ७ ॥ उद्धवजी बोले द्वारिकाके राजा यादवेंद्र उग्रसेन नृपनके ईश्वर जम्बूद्वीपके राजानकूं जीतिके राजसूय यज्ञ करेंगे ॥ ८ ॥ तिननने जगत्के

सुवर्णाद्रितटीभूतेवनेवैश्रवसेशुभे ॥ सुवर्णवर्णहंसाढ्येकांचनीलतिकावृते ॥ २ ॥ हेमावतीषुद्रोणीषुदेवदुर्गासुमैथिल ॥ दानवानामगम्यासु गंगावेत्रवतीषुच ॥ ३ ॥ दानवेभ्यःप्रभीतानांकचित्स्वर्गात्पलायिनाम् ॥ अष्टानांलोकपालानांनिधयोयत्रसंतिहि ॥ ४ ॥ तत्रशक्रसखो देवआधिपत्याभिरक्षकः ॥ श्रुत्वागतंचप्रद्युम्नंयुद्धंकर्तुंमनोदधे ॥ ५ ॥ प्रद्युम्नप्रेषितःसाक्षादुद्धवोबुद्धिसत्तमः ॥ पप्रच्छदृष्टमार्गैश्चजनै स्तस्यपुरंययौ ॥ ६ ॥ नत्वादेवंशक्रसखंसभायामुद्धवःप्रभुः ॥ प्रद्युम्नकथितंप्राहविस्तरान्मंत्रिणांवरः ॥ ७ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ उग्रसेनोयदुवेंद्रोद्वारकेशोनृपेश्वरः ॥ जंबूद्वीपनृपाञ्जित्वाराजसूयंकरिष्यति ॥ ८ ॥ तेनप्रणोदितोजेतुंरुक्मिणीनंदनोबली ॥ जित्वासभा रतादीनिखण्डानिस्वस्यतेजसा ॥ ९ ॥ अद्यैवेलावृतंप्राप्तोजेतुंकार्ष्णिर्महाबलः ॥ तस्मैयच्छबलिंशीघ्रंकुलकौशलहेतवे ॥ १० ॥ नचयुद्धं हिभवताराजन्सर्वविदांवर ॥ ॥ शक्रसखउवाच ॥ ॥ शृणुदूतसदादेवैःपूजितोहंनरैःकिमु ॥ सिद्धोहंवैमहावीरोनागलक्षसमोबले॥ ११ ॥अष्टा नांलोकपालानामाधिपत्याभिरक्षकः ॥ कुबेरइवकोशाढ्यःपुरंदरइवोद्भटः ॥ १२ ॥ उग्रसेनेनदातव्यंमह्यंचोपायनंपरम् ॥ पुराकस्मैनदास्या मियदुराजायभूभृते ॥ १३ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ यथातिरस्कृतिंप्राप्तःकुबेरोयदुतेजसा ॥ यथाशृंगारतिलकश्चैत्रदेशाधिपोबली ॥ १४ ॥

जीतिबेकूं बली प्रद्युम्न वीर भेज्यो है जो रुक्मिणीको बेटा है सो अपने तेजते भरतादिक खण्डनकूं जीतिके ॥ ९ ॥ सो आज इलावृत खण्डके जीतिबेकूं आयोहै जो कृष्णको बेटा महाबली है ताकूं आपुहू शीघ्र भेट देउ अपने कुलके भलेके लिये ॥ १० ॥ तुम सब जाननवारेनमें श्रेष्ठ हौ नहीं देउगे तो युद्ध होयगो तब शक्रसखा बोले कि, हे दूत ! देवताहू मेरो सदा पूजन करेंहें तब मनुष्यहू पूजें तो कहा अचंभो है मैं सिद्ध हूं और एक लाख मत्त हाथीनको मेरेमें बल है ॥ ११ ॥ आठों लोकपालनको जो राज्य तिनको मैं रक्षक हूं कुबेरकोसो खजानो मेरे है और मैं इन्द्रसो उद्भट हूं ॥ १२ ॥ उग्रसेनकूं मैं बड़ी भेट नहीं देऊंगो क्योंकि, आजतक पहलेक काहू राजाकूं मैंने भेट नहीं दीनीहै ॥ १३ ॥ तब उद्धवजी बोले कि, जैसे कुबेर यादवनके तेजते तिरस्कारको प्राप्त हैके भेट देतोभयो जैसेई शृंगारतिलक चैत्र देशको राजा भेट देतोभयो ॥ १४ ॥

राक्षसेश्वर ॥ १५ ॥ संवत्सर, केतुमाल औरहू शकुनात आदि लैके महा असुर
हरिवर्षको राजा शुभांग, उत्तराखण्डको राजा गुणाकर जैसे दैत्यसख लंकेश राक्षसेश्वर ॥ १६ ॥ नारदजी कहैंहैं ऐसे उद्धवको वचन सुनके शकसखा बली कुपित है उद्धवते
अपनों तिरस्कार करायके जैसे भेट देतेभये तैसेंई तू भी भेट देयगो ॥ १६ ॥ जबतलक मैं बलि देऊं तबतलक तूं यहीं बैठ्यो रहि और तरह तोय न जानदेऊंगो हे महामते ! ये सत्य है सत्य है ॥ १८ ॥
यह वचन बोलो कि, हे भागवतोत्तम ! तूँ सुनले ॥ १७ ॥ जबतलक मैं बलि देऊं तबतलक तूं यहीं बैठ्यो रहि और तरह तोय न जानदेऊंगो हे महामते ! ये सत्य है सत्य है ॥ १८ ॥
तब उद्धवजी बोले-हम तो मंत्रीनमें श्रेष्ठ हैं पूर्ण ज्ञानके देनवारे हैं जे हमारी सीख नहीं मानेहैं तिनको भलो नहीं होयहै ॥ १९ ॥ नारदजी कहैंहैं कि, हे राजन् ! जब शक
सखाने ऐसे नजरकैद उद्धवजीकूं राखे जब उद्धवजी न आये तब यादवनकूं शोच भयो ॥ २० ॥ कितनेहूं दिन जब व्यतीत हैगये उद्धव न दीखे तब मेरे मुखते सुनिकें प्रद्युम्न

शुभांगोहरिवर्षेशउत्तरेशोगुणाकरः ॥ यथादैत्यसखोराजालंकेशोराक्षसेश्वरः ॥ १५ ॥ संवत्सरःकेतुमालःशकुन्याद्यामहासुराः ॥ तथा
भूतस्त्वंहिराजन्बलिंतस्मैप्रदास्यसि ॥ १६ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ इत्युद्धववचःश्रुत्वाक्रुद्धःशकसखोबली ॥ उद्धवंप्रत्युवाचा
थशृणुभागवतोत्तम ॥ १७ ॥ यावद्बलिंप्रदास्यामितावत्त्वंसंस्थितोभव ॥ अन्यथातेगतिर्नास्तिसत्यंसत्यंमहामते ॥ १८ ॥ ॥
॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ वयंतुमंत्रिप्रवराःपूर्णज्ञानप्रदावराः ॥ मच्छिक्षणंनमन्यंतेतेषांनोमंगलंभवेत् ॥ १९ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥
एवंसदृष्टरोधेनरोधयामासचोद्धवम् ॥ उद्धवंनागतंराजन्यदूनामनुशोचताम् ॥ २० ॥ दिनानिकतिचित्तत्रव्यतीयुस्तमपश्यताम् ॥ मन्मु
खात्तदुपाकर्ण्यप्रद्युम्नोभगवान्हरिः ॥ २१ ॥ जेतुंशकसखंप्रागात्त्रिपुरंत्र्यंबकोयथा ॥ यदुभिर्भ्रातृभिःसार्द्धंससैन्यपरिवारितः ॥ २२ ॥
सुवर्णाद्रिगुहाद्वारात्संप्राप्तोमकरध्वजः ॥ वीरकोदंडटङ्कारैर्दुंदुभिध्वनिमिश्रितैः ॥ २३ ॥ अश्वह्रेषैर्हस्तिनादैर्विनेदुश्चदिशोदश ॥ सैन्यपा
दरजोभिश्चयुयुधेयादवैःसह ॥ २४ ॥ बभूवतुमुलंयुद्धंछादितंव्योममण्डलम् ॥ वीक्ष्यसर्वेमेरुदेवाभयंप्रापुर्नृपेश्वर ॥ २५ ॥ अथशकस
खःक्रुद्धोरथारूढोमहाबलः ॥ अक्षौहिणीभिर्दशभिर्युयुधेयादवैःसह ॥ २६ ॥ बभूवतुमुलंयुद्धंदेवानांयदुभिःसह ॥ प्राकृतप्रलयेराजन्नुद
धीनांध्वनिर्यथा ॥ २७ ॥ शस्त्रांधकारेसञ्जातेसारणोरोहिणीसुतः ॥ बलदेवानुजोवीरोदंशितोगजसंस्थितः ॥ २८ ॥

भगवान् ॥ २१ ॥ तब शकसखाकूं जीतिबेकूं जातभये शिव जैसे त्रिपुरकूं जीतिबेकूं यादवनकूं भैयानकूं संग लैकें सेनासहित गये ॥ २२ ॥ तब सुमेरु पर्वतकी गुफामेंते वीर
नकी धनुषनकी टंकार होती, नगाड़े बजाते मकरध्वज आयो ॥ २३ ॥ तब घोड़ानकी हींसन, हाथीनकी चिकारते दशों दिशा झंकार उठी सेनाकी चरणरजतेंहू दशों दिशा
भरगई तब यादवनते युद्ध होतभयो ॥ २४ ॥ तब आकाशमण्डल छायगयो ऐसो भयंकर युद्ध भयो जाय देखके सुमेरके देवता भयभीत हैगये ॥ २५ ॥ तदनंतर वो शकसखा
महाबली क्रोधते रथमें बैठि दश अक्षौहिणीनको संग लेके युद्ध करतोभयो यादवनके संग ॥ २६ ॥ तब देवतानको और यादवनको बडो भयंकर युद्ध होतोभयो प्राकृत प्रल
यके समुद्रकीसी गर्जना होतीभई ॥ २७ ॥ शस्त्रनको जब अंधकार भयो तब रोहिणीको बेटा सारण बलदेवको छोटो भैया बडो वीर कवच पहरिकें हाथीपै चढ़िकै आयो ॥ २८ ॥

सबके आगे आय धनुष टंकारतो वारंवार शक्रसखाकी सेनाकूं धनुषके निकरे बाणनते मारतोभयो ॥ २९ ॥ सारणके बाणनते कितनेहू वीर तो द्वै टूक हैगये और तिरछे हैके रथ जायपरे जैसे वृक्ष जायपरे हैं ॥ ३० ॥ जब हाथीनके कुंभस्थल फटिगये तब उनमेंते मोती झरे सो बाणनके अंधकार हैवेसो जैसे रातमें तारागण तैसे मालूम परेहैं ॥ ३१ ॥ जब घोड़ा, हाथी, रथ, प्यादे, वीर ये कटिकटिके जायपरे तब वो रणांगण भूतगणन करिके युक्त जैसी महादेवके खेलिवेकी भूमि होय तैसी हैगई ॥ ३२ ॥ सारणको वल देखिके सबरे देवता भाजिगये छिन्न भिन्न हैं धनुष जिनके और सब ओरसो शीर्ण भये हैं कवच और जामा जिनके ॥ ३३ ॥ अपनी भजी सेनाकूं देखिके बली जो शक्रसखा है वो धनुषकूं टंकारके आयो और बडे बलसो गर्ज्यो ॥ ३४ ॥ दश बाण तो अर्जुनके मारे, बीस बाण भानुके मारे, सांबके सौ बाण मारे और तीस्रे सौ बाण

सर्वेषामग्रतःप्राप्तोधनुष्टंकारयन्मुहुः ॥ तद्बलंपोथयामासबाणैःकोदंडनिर्गतैः ॥२९॥ श्रीसारणस्यबाणौघैःकेचिद्वीराद्विधाकृताः ॥ तिर्यग्भूता रथायुद्धेनिपेतुःपादपाइव ॥३०॥ गजानांभिन्नकुंभानांमौक्तिकान्यपतंस्तदा ॥ बाणांधकारेसंजातेरात्रौतारागणाइव ॥३१॥ संछिद्यमानैरश्वैश्ववीरैर्नागैरणांगणम् ॥ बभौभूतगणैर्युक्तंयथाक्रीडभुमापतेः ॥३२॥ सारणस्यबलंदृष्ट्वासर्वेदेवाःपलायिताः ॥ संछिन्नभिन्नकोदंडाअभितःशीर्णकंचुकाः ॥ ३३ ॥ पलायमानंस्वबलंदृष्ट्वाशक्रसखोबली ॥ धनुष्टंकारयन्प्राप्तोजगर्जघनवद्बलात् ॥३४॥ अर्जुनंदशभिर्बाणैर्विंशत्याभानुमेव च ॥ सांबंबाणशतैर्युद्धेऽनिरुद्धंचशतैःशरैः ॥३५॥ द्विशतैश्चगदंवीरंसहस्रैःसारणंतथा ॥ तताडसमरेवीरोधन्वीशक्रसखोबली ॥३६॥ तद्बाणैः सरथावीराबभ्रमुर्घटिकाद्वयम ॥ चक्रवत्कुंभकारस्यतदद्भुतमिवाभवत् ॥३७॥ हयाश्वपंचतांप्राप्ताश्लथद्बंधारथाभ्रमात् ॥ रथिनःखिन्नमनसःसुतामूर्च्छांगतामृधे ॥ ३८ ॥ सचान्यंरथमारुह्यधनुष्टंकारयन्बलात् ॥ धनुःशक्रसखस्यापिचिच्छेददशभिःशरैः ॥ ३९ ॥ द्वाभ्यांसूतंशतैरश्वान्सहस्रैस्तद्रथंशरैः ॥ चूर्णयामासराजेंद्रसांबोजांबवतीसुतः ॥ ४० ॥ सच्छिन्नधन्वाविरथोहताश्वोहतसारथिः ॥ नागेंद्रंमत्तमारुह्यशूलंजग्राहरोषतः ॥ ४१ ॥ विव्याधसांबंशूलेनहृदिशक्रसखोबली ॥ तेनघातेनसांबोपिकिंचिद्व्याकुलमानसः ॥ ४२ ॥

अनिरुद्धके मारे ॥ ३५ ॥ दोसौ बाण गद वीरके, हजार बाण सारणके मारे या प्रकार धनुषधारी बली शक्रसखानें सबकूं ताडना करी ३६ ॥ ताके बाणन करिकें रथसुद्धा सब वीर द्वै घड़ीतलक कुम्हारके चक्रकी नाईं घूमनलगे तब बड़ो अचंभो भयो ॥ ३७ ॥ घोडा तो मरिगये, रथनके बन्धन शिथिल हैगये, रथीनके मन दुःखी हैगये और सारथी या संग्राममें मूर्च्छा खायगये ॥ ३८ ॥ तब जांबवतीको बेटा सांब और रथमें बैठिकें धनुषकूं बलते टंकारतो दश बाणनते तो शक्रसखाके धनुषको काटतोभयो ॥३९॥ और द्वै बाणनते सूत मारयो सौ बाणनते घोडा मारे और हजार बाणनते रथको चूर्ण करिडारयो ॥ ४० ॥ जब याको धनुष कटिगयो, विरथ हैगयो घोड़ा मरिगये, सारथी मरिगये तब मत्त हाथीपै चढ़िकें रोषते याने १ त्रिशूल हाथमें लीनो ॥ ४१ ॥ सो शूल बली शक्रसखाने सांबके हृदयमें मारयो वा शूलके मारे सांब कछू व्याकुल हैगयो ॥ ४२ ॥

फिर शक्रसखने हाथी पेल्यो वो हाथी कैसो है कि, जैसो काजलको पर्वत चार योजन ऊंचो जाको अंग दो दो कोशके लंबे जाके दांत ॥ ४३ ॥ बडी जाकी चिक्कार ताको करतो चार योजन लंबी लीन जाकी सूंडि तिनसों सांकरनको तोरतो ॥ ४४ ॥ हाथीनकूं, वीरनकूं, रथनकूं, घोडानकूं दांतनते, पांवनते, मर्दन करतो घायल करतो वैरीको प्रेरो चल्यो आवे है सो ये ऐसो दीखेहै जैसो काल होय अथवा यम होय वा मृत्यु होय ॥ ४५ ॥ वैरीके प्रेरे वा हाथीकूं आवतो देखि इतचित विचरतो देखि ताते भीतभई यादवनकी सेना भाजी ॥ ४६ ॥ तब बलदेवजीको छोटो भैया गद गदा लेके ता वज्रसी गदाते कुम्भस्थलमें वा हाथीकूं मारतोभयो ॥ ४७ ॥ ता गदाको मार्यो फूटगयो है कुम्भस्थल जाको ऐसो वो हाथी युद्धमें ऐसे जायपर्यो कटे पंखको पर्वत जैसे तब ये बडो अचंभोसो होतोभयो ॥ ४८ ॥ तदनंतर जबतलक ये शक्रसखा रोषते गदकूं

योजनेपादविक्षेपंकज्जलाद्रिसमप्रभम् ॥ चतुर्योजनमुच्चांगंयोजनार्द्धरदद्वयम् ॥ ४३ ॥ महच्चीत्कारंकुर्वंतंत्रिशुण्डादण्डमण्डलैः ॥ शृंखलेपातयंतंतंचतुर्योजनविस्तृतैः ॥ ४४ ॥ गजान्वीरान्मर्दयंतंरथानश्वानितस्ततः ॥ दन्तैःपादैर्घातयंतंकालांतकयमोपमम् ॥ ४५ ॥ आगतंवीक्ष्यनागेंद्रंशत्रुणानोदितंपरम् ॥ विचरंतंमृधाद्भीतायदुसेनाविदुद्रुवुः ॥ ४६ ॥ गदोगदांसमादायबलदेवानुजोबली ॥ जघानतद्गजंकुंभेगदयावज्रकल्पया ॥ ४७ ॥ तद्घातभिन्नकुम्भोहिगजोयुद्धेपपातह ॥ छिन्नपक्षोयथाशैलस्तदद्भुतमिवाभवत् ॥ ४८ ॥ अथशक्रसखोयावद्गदांजग्राहरोषतः ॥ तावत्तताडगदयागदोशक्रसखंहृदि ॥ ४९ ॥ तेनघातेनसगजोपतितोमूर्च्छितोभवत् ॥ पुनरुत्थायसगदांभुजाभ्यांजगृहेमृधे ॥ ५० ॥ गदशक्रसखौयुद्धेयुयुधातेपरस्परम् ॥ रंगेमल्लाविववनेवन्यौतौवारणाविव ॥ ५१ ॥ भुजाभ्यांतंसमुत्थाप्यबलदेवानुजोबली ॥ चिक्षेपतत्पुरेवीरंबलात्तंशतयोजनम् ॥ ५२ ॥ तदाजयजयारावोयदुसैन्येबभूवह ॥ जयदुन्दुभयोनेदुःप्रशशंसुर्मुहुर्जनाः ॥ ५३ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेशक्रसखयुद्धंनामसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४७ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ स्वपुरेपतितोमूर्च्छांगतःशक्रसखोभृशम् ॥ उत्तस्थौचक्षणंतत्रकिंचिद्व्याकुलमानसः ॥ १ ॥ अथकार्ष्णिपरंब्रह्मज्ञात्वाशक्रसखस्त्वरन् ॥ स्वसकाशाद्बलिंनीत्वायदूनांचबलंययौ ॥ २ ॥

उठावेही हैं तबतलक गदने शक्रसखाके हृदयमें गदा मारी ॥ ४९ ॥ ता गदाको मार्यो ये गज गदाशुद्धा मूर्च्छा खायके जायपर्यो फिर उठिके ये दोनों हाथनते गदाकूं लेतोभयो ॥ ५० ॥ तब शक्रसखा और गद ये दोनों ऐसे युद्ध करनलगे जैसे रंगभूमिमें मल्ल और वनमें हाथी ॥ ५१ ॥ तब बलदेवको छोटो भाई गद भुजानते वीर शक्रसखाकूं उठायके बडे बलते सौ योजनपै वाके पुरमें फेंकि देतभयो ॥ ५२ ॥ तब सेनामें जय जय शब्द होतोभयो जन बेर २ बड़ाई करतेभये और नगाडे बजे ॥ ५३ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खण्डे भाषाटीकायां शक्रसखयुद्धं नाम सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४७ ॥ नारदजी कहेहैं कि, अपने पुरमें पर्यो अत्यंत मूर्च्छा खायगयो कछू व्याकुलमन हेगयो जो शक्रसखा हो वो फिर क्षणभरमेंही उठके ठाडोभयो ॥ १ ॥ तब जलदी करतो शक्रसखा प्रद्युम्नकूं परब्रह्म जानिके अपने घरते भेट लेके यादवनकी

सेनामें आवतोभयो ॥ २ ॥ ऐरावतके कुलके तीन ३ सूडके चार ४ दांतनके श्वेत वर्णके मद चुचावते हजारन हाथी लैके ॥ ३ ॥ और हिमालय पर्वतके पैदाभये आठ ८ कोसके देहवारे पर्वतसे किरोडन उन्मत्त हाथी उत्तम दिग्गजसे लैके ॥ ४ ॥ दिव्य मुखवारे दिव्य गतिवारे ऐसे किरोडन हाथी और सौ किरोड सुनहरी रथ लैके ॥ ५ ॥ द्वै द्वै योजनके दश हजार विमान लैके हजार कल्पवृक्ष और एक लाख कामधेनु गौ लैके ॥ ६ ॥ और किरोडन शय्या कैसी कि, हाथीदांतके पायेवारी सुवर्ण रत्न नते जडे पायेवारी मोतीनकी झालरके चंदोहा, रेशमी कलाबत्तूके डोरा, तुकमादार डोरनते कसे जिनमें मोतीनके सच्चा तारेसे चमकिरहे ॥ ७ ॥ चमेलीके अतरते छिडकी दूधके झागसे बिछोना जिनमें सुन्दर तकिया गेंदुआ लगेहैं किरोडन ऐसी सेज लैके ॥ ८ ॥ विचित्र चंदोहा किरोडन परदा पिछवाई अनेक रंगके कोमल स्पर्शवारी विचित्र

ऐरावतकुलेभाश्चत्रिशुण्डादंडदंतिनः ॥ चतुर्दंताःश्वेतवर्णाःसहस्राणिमदच्युतः ॥ ३ ॥ हेमाद्रिप्रभवानागायोजनद्वयविग्रहाः ॥ कोटिशःपर्वताकाराउन्मत्तादिग्गजाइव ॥ ४ ॥ दिव्यास्यादिव्यगतयःकोटिशःकोटिशोनृप ॥ शतार्बुदारथादिव्याःशातकौंभमयाःपराः ॥ ५ ॥ अयुतानिविमानानांयोजनद्वयशालिनाम् ॥ नियुतंकामधेनूनांपारिजातसहस्रकम् ॥ ६ ॥ करिदंतखचित्स्तंभहेमरत्नखचितपदाः ॥ मुक्तास्तडागसंवृद्धागुणयंत्रस्फुरत्प्रभाः ॥ ७ ॥ मल्लिकामकरंदार्द्राःशिरीषकुसुमाकुलाः ॥ पयःफेननिभाःशय्याःकोटिशःसोपबर्हणाः ॥ ८ ॥ "वितानानिविचित्राणिभित्तिवस्त्राणिकोटिशः ॥ आसनानिमृदुस्पर्शचित्रवर्णानिसर्वशः ॥ ९ ॥ दीर्घाणिचोपबर्हाणिविश्वकर्मकृतानिच ॥ मुक्तास्तबकहेमाद्यैःखचितानिसहस्रशः ॥ १० ॥ सहस्रशोजवनिकाःशिबिकाश्चैवकोटिशः ॥ छत्राणांचामराणांचदिव्यसिंहासनैःसह ॥ ११ ॥ व्यजनानांतथाकोटीराज्यश्रीभूषणानिच ॥ पीयूषाणांद्रोणकोटिःसुधर्मांचसभातथा ॥ १२ ॥ एवंचसर्वतोभद्रपद्मानीतिसहस्रकम् ॥ हीरकाणांचहरितांमुक्तानांचतथैवहि ॥ १३ ॥ गोमेदानांकोटिभारानीलकानांतथैवच ॥ आदित्यचन्द्रकांतीनांवैडूर्याणांसहस्रशः ॥ १४ ॥ स्यमंतकमणीनांचकोटिभाराःसमागताः ॥ तथवैपद्मरागाणांभाराविद्यर्बुदंनृप ॥ १५ ॥ जांबूनदसुवर्णानांहाटकानांतथैवच ॥ सुवर्णाद्रिसुवर्णानांकोटिभाराश्चकोटिशः ॥ १६ ॥ राज्यंनवनिधीन्सर्वान्दैवानांमैथिलेश्वर ॥ अष्टानांलोकपालानामाधिपत्याधिरक्षकः ॥ १७ ॥

आसन ॥ ९ ॥ बडे बडे तकिया विश्वकर्माके बनायेभये मोतीनके गुच्छा रत्नजडित हजारन तिनै और ॥ १० ॥ हजारन चिक किरोडन पिनस पालकी किरोडन छत्र, चमर, सिंहासन सहित ॥ ११ ॥ राज्यलक्ष्मीके किरोडन बीजना और भूषण अमृतनके घडा किरोडन और सुधर्मा सभा ॥ १२ ॥ ऐसेही सर्वतोभद्र सहस्रदलके कमल और हीरा, पन्ना, मोती ॥ १३ ॥ किरोड भार गोमेद (लहसनिया) नीलक और सूर्य चंद्रकीसी प्रकाशवाली किरोडन मणि और हजारन वैदूर्य जे ॥ १४ ॥ पुखराज दश किरोड मणि सूर्यमुखी चन्द्रमुखी स्यमंतक मणि किरोडन मन ॥ १५ ॥ जाम्बूनद सुवर्ण किरोड मन सुवर्णादिकी सुन्दर वर्णनकी वस्तु किरोडन लैके ॥ १६ ॥ राज्यकी नौनिधि सब निधि देवतानकी

आठों लोकपालनको अधिपति ॥ १७ ॥ इतनी भेट लैके और उद्धवजीकूँ लैके अद्भुत वस्तु लैके प्रद्युम्नकूं नमस्कार करतोभयो ॥ १८ ॥ तब प्रद्युम्न प्रसन्न ह्वैके रत्नकी माला देतेभये फिर वाय राज्यपै बैठारचो हे राजन् ! सन्तनकी ऐसीही प्रकृति है ॥ १९ ॥ ऐसे शक्रसखाकूं जीत्यो तब प्रद्युम्नकूं बलि दीनी ता बलिकूं लैके अरुणोदा नदीके किनारेपै डेरा होतेभये ॥ २० ॥ बहुमूल्य जडाऊ सुनहरी जिनमें ध्वजा, पताका चारसौ कोशमें डेरा परे जिनमें विजयकी ध्वजा फहराय रही है ॥ २१ ॥ डेरानकी बडी शोभा भई लहरीनते समुद्रकी जैसी शोभा होय है आकाशते हाथीपै चढे इंद्र देवता ॥ २२ ॥ सेनासहित बाजे बजत आवें हैं दुंदुभीनकी ध्वनिसहित सेनाकूं देखि सब यादव वीरजने शस्त्रसमूह ले लिये ॥ २३ ॥ फिर इन्द्रकूं जानिके राजा बडे हर्षित भये तब देवता प्रद्युम्नकी सभामें जायके जतावत भये कि, हे युवराज ! इन्द्र देवता

नीत्वोद्धवंशक्रसखोदत्त्वैवंबलिमद्भुतम् ॥ कौशल्यहेतवेकार्ष्णिंप्रणनामकृतांजलिः ॥ १८ ॥ तस्मैतुष्टःशंबरारिःप्रददौरत्नमालिकाम् ॥ संस्थाप्यराज्येतंराजन्नेषाहिप्रकृतिःसताम् ॥ १९ ॥ इत्थंशक्रसखंजित्वाप्रद्युम्नायबलिंददौ ॥ शिबिराणांसमूहोभूदरुणोदानदीमनु ॥ २० ॥ महाधनखचिद्भिश्चवितानैःशतयोजनम् ॥ पतत्पताकैर्दिव्याभैर्भून्यस्तविजयध्वजैः ॥ २१ ॥ विरेजेशिबिरव्यूहोलहरीभिःपयोदधिः ॥ आकाशादागतंतत्रगजारूढंपुरंदरम् ॥ २२ ॥ ससैन्यंसहसाराजन्दुन्दुभिध्वनिसंयुतम् ॥ संवीक्ष्यवेगतोवीराजगृहुःशस्त्रसंहतिम् ॥ २३ ॥ पुनरिंद्रंचतंज्ञात्वाबभूवुर्हर्षितानृपाः ॥ श्रीप्रद्युम्नंसभामध्येकथयन्मघवातदा ॥ २४ ॥ शृणुराजन्महाबाहोत्वंपरावरवित्तमः ॥ लीलावतीनामपुरीशुभाहेमाद्रिसानुषु ॥ २५ ॥ विद्याधरेशःसुकृतीतत्रराज्यंकरोतिहि ॥ तत्कन्यासुंदरीनामशतचन्द्रनिभाशुभा ॥ २६ ॥ आगतादेवताःसर्वास्तस्याराजन्स्वयंवरे ॥ लोकपालास्तथासर्वेसंप्राप्तादिव्यविग्रहाः ॥ २७ ॥ यंदृष्ट्वामूर्च्छिताहंस्यांसमेभर्ताभविष्यति ॥ गिरेत्येवंप्रजल्पंतीसुन्दरंवरमिच्छती ॥ २८ ॥ तत्रापिगच्छसहसाभ्रातृभिःसहकौतुके ॥ स्वयंवरंपश्यवरंदेवलोकैश्चमंडितम् ॥ २९ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ तच्छ्रुत्वाभगवान्कार्ष्णिर्यादवैर्भ्रातृभिःसह ॥ पुरंदरेणसहसापुरींलीलावतींययौ ॥ ३० ॥ विशालाजिरसंयुक्तेखचिद्रत्नमनोहरे ॥ चंदनागुरुकस्तूरीकुंकुमद्रवचर्चिते ॥ ३१ ॥ मुक्तायुक्तैस्तोरणैश्चवितानैःसुमहाधनैः ॥ जांबूनदासनैःसाक्षादिंद्रलोकइवापरे ॥ ३२ ॥

आयेहैं तब इन्द्र मिले प्रद्युम्नते यह बोले ॥ २४ ॥ कि, हे राजन् ! हे महाबाहो ! तुम सुनो तुम परावर जानोहो एक हेमाद्रिपर्वतके शिखरपै लीलावती नाम पुरी है ॥ २५ ॥ तहां एक विद्याधरनको राजा सुकृती राज्य करैहै ताकी एक सुंदरी नाम कन्या है शतचंद्रानना है बडी शुभा है ॥ २६ ॥ हे राजन् ! ताके स्वयंवरमें सबरे देवता आये हैं और दिव्य शरीर जिनके ऐसे सब लोकपाल आये हैं ॥ २७ ॥ वह यह कहै है कि, जाकी सुंदरता देखिकै मैं मूर्च्छित ह्वैजाऊंगी सो मेरो भर्ता होयगो ऐसे कहैहै सुंदर वरकी इच्छा करैहै ॥ २८ ॥ तहां तुम भैयानकूँ संग लैके चलो देवलोकते मंडित स्वयंवरकूँ देखो ॥ २९ ॥ ताहि सुनके प्रद्युम्न भैयानकूं और यादवनकूं संग लैके इन्द्रके संगँ लीलावती पुरीकूँ जातभये ॥ ३० ॥ विशाल ऑंगनयुक्त रत्न जडचो मनोहर चन्दन, केशर, कस्तूरी, कपूर, अगर इनको चौका लगो ॥ ३१ ॥ सलाईदार मोतीनकी झालर

जिनमें ऐसे बहुमूल्य चंदोहा जामें सुनहरी आसनसों दूसरो जानो इन्द्रलोक है ॥ ३२ ॥ हे नृप ! ता स्वयंवरमें दिव्य आसनपै प्रद्युम्न जायके बैठे सबनके देखत देखत पर्वतके शिखरपै जैसे सिंह बैठेहै ॥३३॥ व्रजेश मुनि बैठे हैं, देवता ११ रुद्रगण बैठेहैं १२ सूर्यगण, ४९ मरुद्गण बैठेहैं ८ वसु, ३ अग्नि, २ अश्विनीकुमार ॥३४॥ यमराज, वरुण, चंद्रमा, कुबेर, इंद्र, सिद्ध, विद्याधर, गंधर्व, किंनर ॥ ३५ ॥ औरहू रत्नके गहने पहरके आये ते सबेर प्रद्युम्नकूं देखिके विवाहकी आशा छोडि देतेभये ॥ ३६ ॥ ताहीसमय सो सुन्दरी रत्नकी माला लैके रतिकूँ रंभाकूँ फीकी करती निकसी वाणीसी, लक्ष्मीसी, इंद्राणीसी शोभित भई ॥३७॥ याहि देखिके सबरी सभा मोहकूँ प्राप्त हैगई हे मैथिल ! मानों सब लोककी शोभा जिही है सरकूं ढूंढे है बीजुरी जैसें घनकूं ढूंढै हैं ॥३८॥ ता समय दिव्य अंबर पहरे कमलसे जाके नेत्र नरलोकमें एकही सुंदर साक्षात् कामदेवको अंश सुंदर प्रद्युम्नकूं देखिके

तस्मिन्स्वयंवरेतस्थौप्रद्युम्नोदिव्यआसने ॥ गिरिशृंगेयथासिंहःसर्वेषांपश्यतांनृप ॥ ३३ ॥ व्रजेशामुनयस्तत्रदेवारुद्रगणास्तथा ॥ मरुतोरव यश्चैववसवोह्यग्नयोश्विनौ ॥ ३४ ॥ यमोथवरुणःसोमोधनदःशक्रएवहि ॥ सिद्धाविद्याधराश्चैवगंधर्वाःकिन्नरास्तथा ॥ ३५ ॥ अन्येतत्र गताःसर्वेरत्नाभरणभूषिताः ॥ जहुर्वैवाहिकीमाशांप्रद्युम्नंवीक्ष्यमैथिल ॥ ३६ ॥ सासुन्दरीतत्रसुरत्नमालयारतिंचरंभांक्षिपतीविनिर्गता ॥ वाणींरमांरूपवतींपुलोमजांविडंबयंतीवबभौवरांगना ॥ ३७ ॥ यांवीक्ष्यसर्वेषुसदःसुसर्वतोमोहंप्रयातेषुतथैवमैथिल ॥ श्रीसर्वलोकस्यचप श्यतोवरंविचिन्वतीसाचपलेवचांबुदम् ॥ ३८ ॥ दिव्यांबरंपद्मदलायतेक्षणंप्रद्युम्नवीरंनरलोकसुन्दरम् ॥ समेत्यमूर्च्छांसमवापसुंदरीविद्याध रीसापुनरापसंज्ञाम् ॥ ३९ ॥ समुत्थितासात्वतहर्षविह्वलातस्थौसुमालांविनिधायतद्गले ॥ विद्याधरेशःसुकृतीचसुंदरींसुतांददौमैथिलशंब रायै ॥ ४० ॥ नदत्सुतुर्येषुतदैवनिर्जरानसेहिरेवीक्ष्यविवाहमंगलम् ॥ तंसर्वतःसंरुरुधुःस्वयंवरंप्रचंडमेघाइवभास्करंपरम् ॥ ४१ ॥ क्रोधा त्प्रभैश्छिन्नायुधामैथिलशीर्णकंचुकाः ॥ विदुद्रुवुस्तेचदिशोदशामरानीहारमेघाइवसूर्यरश्मिभिः ॥४३॥ प्रद्युम्नोभगवान्साक्षादित्थंजित्वास्व यंवरम् ॥ विजित्येलावृतंखंडंभारतंगंतुमुद्यतः ॥४४॥ भ्रातृभिर्यदुभिःसैन्यैःसर्वमंत्रिजनैःसह ॥ आययौभारतंखंडंनादयञ्जयदुंदुभीन् ॥४५॥

सो सुंदरी विद्याधरी मूर्च्छा खायके जायपरी वडी देरमें होस आयो ॥ ३९ ॥ फिर भले प्रकारते उठी हर्षमें विह्वल ठाडी हैगई वह रत्नकी माला प्रद्युम्नके गलेमें डारतीभई तब सुकृती विद्याधर अपनी सुन्दरी बेटीकूँ प्रद्युम्नके अर्थ विवाह देतोभयो ॥ ४० ॥ तबही तासे, तुरई, मृदंग, शंख बजनलगे जा विवाहमंगलकूँ देवता नहीं सहतेभये तब चारों तरफते स्वयंवर घेरलीयो मेघ जैसें सूर्यकूँ घेरेहै ॥ ४१ ॥ धनुष चढाये क्रोधमें भये मदमें उद्धत देवतानकूं देखि श्रीकृष्णके दिये धनुषकूं लैके यादवनके समूहमें गर्जतोभयो ॥ ४२ ॥ वाके धनुषमेंते छूटे जे चमकते बाण तिनते सब देवतानके धनुष काटिडारे शिर, जामा, दुपट्टा जिनके ते भयके मारे दशों दिशानमें भाजगये सूर्योदयसों कुहरके मेघ जैसे भागजाय है ॥ ४३ ॥ प्रद्युम्न भगवान् ऐसे स्वयंवरकूं और इलावृतखण्डकूं जीतिके भरतखण्डकूं आयवेकूं मन करतोभयो ॥ ४४ ॥ भैयानकूं, सैनाकूं, यादवनकूं, सबरे मन्त्रीनकूं

संग ले भरतखण्डकूं आवतभये जीतिके नगाड़ेको बजावते आये ॥ ४५ ॥ अनेक देशनकूं देखत जम्बूद्वीप जीतनहारो बली प्रद्युम्न आनर्त जे द्वारकाके देश हैं तिनकूं सो हरिको बेटा आयो ॥ ४६ ॥ प्रद्युम्नको भेज्यो उद्धव बुद्धिमाननमें श्रेष्ठ तानें आयके उग्रसेनकूं नमस्कार करिके और सभामें बैठे श्रीकृष्ण बलदेवकूं नमस्कार करिके ॥ ४७ ॥ खण्ड खंडमें जो जो बात भई सो सो सबरी कथा कही जैसे सबरे जम्बूद्वीपकी जय भई सो सो सब यथायोग्य उद्धवने वर्णन करी ॥ ४८ ॥ तब उग्रसेन श्रीकृष्ण बलदेवकूं संग लेके और बूढ़नकूं संग लेके प्रद्युम्नकूं लिवायवेके लिये निकसे ॥४९॥ बाजे बजतजायं हैं, गीत गावतजायं हैं, वेदध्वनि होतजायं हैं मोती, फूल और खील बर्षतजायं हैं अनेक पाठ मंगलके होतेजायं हैं ॥ ५० ॥ हाथीकूं सजायं अगारी करिके सुवर्णके कलश भरिके पञ्चपल्लव धरिके आगे चले गन्धर्व गावतजायें हैं, वेश्या नृत्य करतजायें हैं, शंख, दुंदुभी, बांसुरी बजतजायं हैं ॥ ५१ ॥ सुवर्णके थारनमें गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, हरे हरे जौके अंकुर धरिके या मंगलते उग्रसेन प्रद्युम्नके सन्मुख आये ॥ ५२ ॥ तब तो प्रद्युम्न

पश्यन्देशाननेकांश्चजंबूद्वीपजयोबली ॥ आनर्तान्द्वारकादेशान्प्राप्तोभूत्सहरेःसुतः ॥ ४६ ॥ प्रद्युम्नप्रेषितःसाक्षादुद्धवोबुद्धिसत्तमः ॥ प्रणनामोग्रसेनंतंसभायांश्रीहरिंबली ॥ ४७ ॥ वर्षेवर्षेपियज्जातंजंबुद्वीपजयंतथा ॥ तत्सर्वंहिश्रथायोग्यंकथयामासचोद्धवः ॥ ४८ ॥ श्रीकृष्णबलदेवाभ्यांसर्वैर्वृद्धजनैःसह ॥ प्रद्युम्नंतंसमानेतुमुग्रसेनोविनिर्गतः ॥ ४९ ॥ गीतवादित्रघोषेणब्रह्मघोषेणभूयसा ॥ मुक्तालैलाजपुष्पैःपाठारावैःसुमंगलैः ॥ ५० ॥ वारणेंद्रंपुरस्कृत्यसौवर्णैःकलशैर्नृप ॥ गंधर्वैर्वारमुख्याभिःशंखदुंदुभिवेणुभिः ॥ ५१ ॥ गंधाक्षतैर्हेमपात्रैःपुष्पधूपैर्यवांकुरैः ॥ उग्रसेनःशंबरारेःसंमुखंचाजगामह ॥ ५२ ॥ खड्गंनीत्वोग्रसेनस्यपुरोधृत्वाकृतांजलिः ॥ ननामकार्ष्णिर्यदुभिर्भ्रातृभिःसहमैथिल ॥ ५३ ॥ श्रीकृष्णंसबलंनत्वासर्वान्वृद्धान्प्रणम्यच ॥ गर्गाचार्यंननामाशुप्रद्युम्नोमीनकेतनः ॥ ५४ ॥ सम्पूज्याभ्यर्च्यविधिवद्ब्राह्मणैर्वेदसूक्तिभिः ॥ आरोप्यवारणेकार्ष्णिमुग्रसेनःपुरायर्यौ ॥५५॥ मंगलंद्वारकायांचसर्वत्राभूद्गृहेगृहे ॥ इत्थंनृपतेकथितंकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ५६ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खंडेनारदबहुलाश्वसंवादेप्रद्युम्नद्वारकागमनंनामाष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ॥४८॥ ॥॥बहुलाश्व उवाच॥॥कथंचकारविधिवद्राजसूयाध्वरंनृपः॥ एतन्मेब्रूहिविप्रेन्द्रत्वंपरावरवित्तमः॥१ ॥॥नारदउवाच॥॥अथोग्रसेनोनृपतिःसर्वधर्मभृतांवरः ॥ श्रीकृष्णेनसहायेनक्रतुराजंचकारह ॥२॥ गर्गाद्यदुकुलाचार्य्यान्मुहूर्तंबोध्ययत्नतः॥बंधुभ्यःप्रददौराजन्सुहृद्‌भ्योपिनिमंत्रयन्॥३॥

यादव तथा भैयान करिके सहित उग्रसेनके आगे खड्ग धरिके हाथ जोर नमस्कार करतोभयो ॥ ५३ ॥ श्रीकृष्णकूं बलदेवजीकूं और बूढे २ सब यादवनकूं नमस्कार करिके मीनके तन गर्गाचार्यकूं नमस्कार करतोभयो ॥ ५४ ॥ तब उग्रसेन प्रद्युम्नकी बड़ी बड़ाई करिके विधिपूर्वक ब्राह्मणनकी वेदस्तुतिसे पूजन करिके हथिनीपै बैठारि द्वारकाकूं लावतभयो ॥ ५५ ॥ तब द्वारिकामें घर घरमें सर्वत्र मंगल भये हे नृपते ! ये प्रद्युम्नको विजय मैंने कही अब बताय तूं कहा सुनो चाहै है ॥ ५६ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खण्डे भाषाटीकायां प्रद्युम्नद्वारकागमनंनामाष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ॥४८॥ बहुलाश्व राजा पूछतो भयो कि–हे विप्रेन्द्र! आप परावरके जाननेहारे हो इसलिये कि, राजा उग्रसेन किस प्रकारसो राजसूययज्ञ करतोभयो सो मोसों कहो ॥१॥ नारदजी कहैं हैं याके अनन्तर उग्रसेन सब धर्मधारीनमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णकी सहायते राजसूय यज्ञ करतोभयो॥२॥यदुकुलके आचार्य जो

गर्गाचार्य तिनतें यलते मुहूर्त पूछिके अपने भैया, बन्धु, इष्ट, मित्र तिनकूं नोतो देतोभयो ॥ ३ ॥ बड़ी भक्तिते ऋषि, मुनि, ब्राह्मण तिनकूं बुलावतभयो तब शिष्यनकूं वेदानकूं संग लैके सबही ऋषि आवतेभये ॥ ४ ॥ वेदव्यास आये, साक्षात् शुकदेव आये और पराशर, मैत्रेय, पैल, सुमन्तु, दुर्वासा, वैशंपायन ये आये ॥ ५ ॥ जैमिनि, भार्गव, परशुराम, दत्तात्रेय, असित, अंगिरा, वामदेव, अत्रि, वसिष्ठ, कण्व, ॥ ६ ॥ विश्वामित्र, शतानंद, भारद्वाज, गौतम, कपिल, सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार, विभांड, पतंजलि आये ॥ ७ ॥ और द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, माड्रिपाक, शांडिल्य औरहू शिष्यसहित मुनि आये ॥ ८ ॥ ब्रह्माजी, महादेव, इन्द्र, देवता, रुद्रगण, आदित्य सब मरुद्गण, वसु, अग्नि, अश्विनीकुमार ॥ ९ ॥ यमराज, वरुण, कुवेर, चन्द्र, गणेश, सिद्ध, विद्याधर, गन्धर्व, किन्नर ॥ १० ॥ गन्धर्वी, अप्सरा, विद्याधरी आई, वैताल, दानव, दैत्य,

भक्त्यापरमयाहूताऋषयोमुनयोद्विजाः ॥ आजग्मुर्द्वारकांसर्वेपुत्रशिष्यसमावृताः ॥ ४ ॥ वेदव्यासःशुकःसाक्षान्मैत्रेयोथपराशरः ॥ पैलस्सुमंतुर्दुर्वासावैशंपायनइत्यपि ॥ ५ ॥ जैमिनिर्भार्गवोरामोदत्तात्रेयोसितोमुनिः ॥ अंगिरावामदेवोत्रिर्वसिष्ठःकण्वएवच ॥ ६ ॥ विश्वामित्रःशतानंदोभारद्वाजोथगौतमः ॥ कपिलःसनकाद्याश्चविभांडश्चपतंजलिः ॥ ७ ॥ द्रोणःकृपः माड्रिपाकःशांडिल्योमुनिसत्तमः ॥ अन्येचमुनयोराजन्सशिष्याश्चसमागताः ॥ ८ ॥ ब्रह्माशिवोजंभभेदीदेवारुद्रगणस्तथा ॥ आदित्यामरुतःसर्वेवसवोग्नयोश्विनौ ॥ ९ ॥ यमोथवरुणःसोकोधनदोगणनायकः ॥ सिद्धाविद्याधराश्चैवगंधर्वाःकिन्नरादयः ॥ १० ॥ गंधर्व्योप्सरसः सर्वाविद्याधर्य्यः समागताः ॥ वेतालादानवादैत्याःप्रह्लादोबलिनासह ॥ ११ ॥ रक्षोभिर्भीषणैःसार्द्धंलंकाधीशोविभीषणः ॥ सर्वैश्चवानरैःसार्द्धंहनूमान्वायुनंदनः ॥ १२ ॥ ऋक्षैश्चदंष्ट्रिभिःसार्द्धंजांबवानृक्षराड्बली ॥ सर्वैश्चपक्षिभिःसार्द्धंगरुडःपक्षिराड्बली ॥ १३ ॥ सर्वैःसरीसृपैःसार्द्धंवासुकिर्नागराड्बली ॥ गोरूपधारिणीपृथ्वीसर्वाभिःकामधेनुभिः ॥ १४ ॥ सर्वैःशैलैर्मूर्तिमद्भिःसमेरुश्चहिमाचलः ॥ गुल्मवृक्षलताभिश्चवटःसाक्षात्प्रयागराट् ॥१५॥ महानदीभिःसहिताश्रीगंगायमुनानदी ॥ पारावाराःसप्ततथारत्नोपायनसंयुताः ॥१६॥ आजग्मुरुग्रसेनस्यराजसूयस्यचाध्वरे ॥ सप्तस्वरास्त्रयोग्रामानवारण्यानवोषराः ॥१७॥ चतुर्दशैवगुह्यानिविख्यातानिमहीतले ॥ तीर्थराजःप्रयागश्चपुष्करंबद्रिकाश्रमः ॥१८॥

प्रह्लाद, बलिसमेत ॥ ११ ॥ भयंकर राक्षसनके संग लंकेश विभीषण, सब वन्दरनके संग वायुनन्दन हनुमान् आये ॥ १२ ॥ ऋक्षनकरके सहित जाम्बवान् आयो, दंष्ट्री औरहू आये, सब पक्षीनके संग पक्षिराट् गरुडजी आये ॥ १३ ॥ सब सर्पनकूं संग लिये वासुकी नागनको राजा आयो, कामधेनुनके संग पृथ्वी गौरूपी आई ॥ १४ ॥ सब पर्वतनकूं लीये सुमेरु और हिमाचल आयो वृक्ष, गुल्म, लतानके संग अक्षयवट आयो ॥ १५ ॥ सब नदीनकूं संग लीये गंगा, यमुना आई, सातो समुद्र रत्न लेके आये ॥ १६ ॥ राजानमें सूर्य उग्रसेनके यज्ञमें ये आये सातों सुर, तीनों ग्राम, नौ अरण्य, नौ ऊषर ॥ १७ ॥ चौदह गुह्य जे पृथ्वीमें विख्यात है, तीर्थराज प्रयाग, पुष्कर, बदरिकाश्रम ॥ १८ ॥

सिद्धाश्रम, विनशन सब कुण्ड, सरोवरनसहित और दंडकारण्यादिक वन, सब आश्रम, उपवनसहित आये ॥ १९ ॥ सबरे विमलक्षेत्र आये, गोवर्द्धन पर्वत गिरिराज व्रजते हरिके पास आयो ॥ २० ॥ वृन्दावन व्रजजनन करके सहित कुण्ड सरोवरसहित आयो, कीर्तिरानी, यशोदारानी, गोप, गोपीनकी ईश्वरी आई ॥ २१ ॥ किरोडन सखीनकूं संग लिये श्रीराधिका पालकीमें बैठी आई, सौ यूथ गोपीनके द्वारिकामें आये ॥ २२ ॥ तिनको जहां जहां वास भयो तहां २ गोपीभूमि हैगई तिनके अंगरागते गोपीचन्दन भयो ॥ २३ ॥ गोपीचन्दनते लिप्तांग नर होय सो नर नारायणके रूप होयहै और चारों वर्णहू या यज्ञमें आये ॥ २४ ॥ बुद्धिचक्षु (अंधो) धृतराष्ट्र, कलिरूप दुर्योधन, शाल्व, भीष्म, कर्ण, कुंतीको बेटा, युधिष्ठिर ॥ २५ ॥ भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव, दमघोष, वृद्धशर्मा, जयसेन, महानृप येहू सब आये ॥ २६ ॥ धृष्टकेतु, भीष्मक, नाग्नजित, कोशलेश्वर, बृहत्सेन,

सिद्धाश्रमोविनशनंकुंडैः सर्वैः सरोवरैः ॥ वनानिदंडकादीनिसर्वैश्चोपवनैः सह ॥ १९ ॥ क्षेत्रैःसमस्तैर्विमलैरेतेतत्रसमाययुः ॥ श्रीमद्गोवर्द्धनोनामगिरिराजोव्रजाद्धरिम् ॥ २० ॥ वृंदावनंव्रजवनैःसरःकुंडःसमाययौ ॥ कीर्तिर्यशोमतिःसाक्षाद्गोपीभिर्गोपिकेश्वरी ॥ २१ ॥ श्रीराधाशिबिकारूढासखीसंघैश्चकोटिभिः ॥ शतयूथश्चगोपीनांद्वारकांप्रययौमुदा ॥ २२ ॥ तासांवासोयत्रगोपीभूमिर्यत्रचसाभवत् ॥ तदंगरागसंजातंगोपीचंदनमेवहि ॥ २३ ॥ गोपीचंदनलिप्तांगोनरोनारायणोभवेत् ॥ चतुर्वर्णास्तथासर्वेआजग्मुस्तस्यचाध्वरे ॥ २४ ॥ धृतराष्ट्रोबुद्धिचक्षुः साक्षाद्दुर्योधनःकलिः ॥ शाल्वोभीष्मश्चकर्णश्चकुंतीपुत्रोयुधिष्ठिरः ॥ २५ ॥ भीमोर्जुनोथनकुलःसहदेवस्तथापरे ॥ दमघोषोवृद्धशर्माजयसेनोमहानृपः ॥ २६ ॥ धृष्टकेतुर्भीष्मकश्चनाग्नजित्कोशलेश्वरः ॥ बृहत्सेनोधृतिःसाक्षान्मैथिलेशःपितामहः ॥ २७ ॥ अन्येपितत्रराजानःसुहृत्संबंधिबान्धवाः॥ सहस्त्रीभिस्तथापौत्रैःपुत्रैराजग्मुरध्वरम्॥२८॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खंडेनारदबहुलाश्वसंवादेस्वजननिमंत्रणंनामैकोनपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ४९ ॥ नारदउवाच ॥ अर्थसिद्धेरिवद्वाररैवतादिसमुद्रयोः ॥ मध्येपिंडारकेक्षेत्रेयज्ञारंभोबभूवह ॥ १ ॥ पंचयोजनविस्तीर्णः कुंडोभूद्यस्यचाध्वरे ॥ योजनंब्रह्मकुंडस्तुगव्यूतिःपंचकुंडकाः ॥ २ ॥ मेखलागर्तविस्तारवेदिभिर्निर्मिताःशुभाः॥ सहस्रहस्तमुच्चांगोयज्ञस्तंभोबभौमहान् ॥ ३ ॥ पंचयोजनविस्तीर्णःसौवर्णोयज्ञमंडपः॥ वितानतोरणैरेजेकदलीखंडमंडितः॥४॥

धृति, मैथिलेश, पितामह ॥ २७ ॥ औरहू राजसुहृद, संबंधी, बांधव, स्त्री, बेटा, नातीनसहित यज्ञमें आये ॥ २८ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खण्डे भाषाटीकायां स्वजननिमन्त्रणं नामैकोनपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ४९ ॥ नारदजी कहै हैं कि, मानो अर्थसिद्धिके द्वारपै रैवत पर्वत और समुद्र ताके बीचमें पिंडारक तीर्थमें यज्ञको आरंभ होतो भयो ॥ १ ॥ पांच योजनमें जा यज्ञको कुण्ड होतोभयो एक योजनको ब्रह्मकुण्ड होतोभयो और दो २ कोसके पांच कुण्ड होतेभये ॥ २ ॥ जे कुण्ड मेखला गर्तके विस्तारकी वेदीनकरिके रचे हैं और हजार हाथ ऊंचो यज्ञस्तंभ शोभित भयो ॥ ३ ॥ पांच योजन विस्तारको सुन्हेरी यज्ञमंडप

८॥

बन्यो जो केलाके खंभ, चन्दोहा, बंदनवार सहित शोभित हो ॥ ४ ॥ भोज, वृष्णि, अंधक, मधु, शूरसेन, दशार्ह और देवता इन करिके सहित राजा यज्ञमें इन्द्रयज्ञकीसी शोभा भई ॥५॥ यज्ञावतार श्रीकृष्ण परिपूर्णतम बेटा, नाती, पंतीनसहित विराजें हैं विभूतिसहित परमात्मा जैसें ॥ ६ ॥ बडी जामें सामग्री ऐसे वा राजसूय यज्ञमें गर्गाचार्यकूं गुरु करिके यदुराज दीक्षा लेतेभये ॥ ७ ॥ दश लाख तौ होता भये, दश लाख दीक्षित भये, पांच लाख अध्वर्यु भये और ऐसेही उद्गाता भये ॥ ८ ॥ हाथीकी सूंडिको बरावर घीकी धारा पडी वा घीकी धारातें हे मैथिल ! अग्निकूं अजीर्ण हैगयो यह अचंभो भयो ॥ ९ ॥ त्रिलोकीमें कोई जीव भूखो न रह्यो सबरे देवता सोमते अजीर्णकूं प्राप्त हैगये ॥ १० ॥ रुचिमती धर्मपत्नीके संग उग्रसेन यदुराज पिंडारक तीर्थमें यज्ञांत स्नान करतेभये ॥ ११ ॥ व्यासादिक मुनिनने विधितें वेदसूक्तनतें स्नान करायो जैसें दक्षिणाके संग

भोजवृष्ण्यंधकमधुशूरसेनदशार्हकैः ॥ देवैश्चसहितोराजावभौशक्रइवाध्वरे ॥ ५ ॥ यज्ञावतारःश्रीकृष्णःपरिपूर्णतमोध्वरे ॥ बभौपुत्रैश्चपौत्रै
श्चपरमात्मेवभूतिभिः ॥ ६ ॥ महासंभृतसंभारेराजसूयेध्वरेवरे ॥ गर्गाचार्यंगुरुंकृत्वायदुराजोहिदीक्षितः ॥ ७ ॥ होतारोदशलक्षाणिदशल
क्षाणिदीक्षिताः ॥ अध्वर्य्यवःपंचलक्षमुद्गातारस्तथापरे ॥ ८ ॥ हस्तिशुंडासमाधाराभुक्ताज्यस्यहुताशनः ॥ अजीर्णप्रापतद्यज्ञेचित्रंविद्धिमै
थिल ॥ ९ ॥ केपिजीवास्त्रिलोक्यांतुनबभूवुर्बुभुक्षिताः ॥ सर्वेदेवास्तुसोमेनह्यजीर्णत्वमुपागताः ॥ १० ॥ रुचिमत्याधर्मपत्न्योग्रसेनोयदुरा
ड्बली ॥ अध्वरावभृथस्नानंतीर्थेपिण्डारकेकरोत् ॥ ११ ॥ व्यासाद्यैर्मुनिभिःस्नातोविधिवद्वेदसूक्तिभिः ॥ यथादक्षिणयायज्ञोरुचिमत्या
बभौनृपः ॥ १२ ॥ देवदुंदुभयोनेदुर्नरदुंदुभयस्तदा ॥ उग्रसेनोपरिसुराःपुष्पवर्षंप्रचक्रिरे ॥ १३ ॥ गजानांहेमभाराणांनियुतानिचतुर्दश ॥
शतार्बुदंहयानांतुयज्ञांतेदक्षिणांपराम् ॥ १४ ॥ कोटिशोनवरत्नानांमहाहारांवरैःसह ॥ गर्गाचार्यायमुनयेगृहोपस्करसंयुताम् ॥ १५ ॥ उग्रसे
नोददौराजायादवेंद्रोमहामनाः ॥ गजानांतत्रसाहस्रंहयानामयुतंतथा ॥ १६ ॥ त्रिंशद्भारंसुवर्णानांब्राह्मणेब्राह्मणेददौ ॥ मरुत्तस्यमहायज्ञेत्य
क्तपात्रायथाद्विजाः ॥१७॥ तथोग्रसेनस्यक्रतौसंतुष्टाहर्षितागताः ॥ सन्तुष्टादेवताःसर्वाःप्राप्तभागादिवंगताः ॥ १८ ॥ भूरिद्रव्यावंदिनश्चज
यारावागृहंगताः ॥ रक्षोदैत्यावानराश्चदंष्ट्रिणःपक्षिणस्तथा ॥ १९ ॥

यज्ञ तैसे रुचिमतीके संग उग्रसेन शोभित भये ॥ १२ ॥ देवतानकी दुंदुभी और नरनकी दुंदुभी बजी उग्रसेनके ऊपर देवता पुष्पनकी वर्षा करतेभये ॥ १३ ॥ सोनेनकी मालानकूं पहराय चौदह लाख हाथी दान करे सौ किरोड घोडा यज्ञांतमें दक्षिणा दई ॥ १४ ॥ किरोड़न नौरत्नकी माला, हार, वस्त्र दीने, गर्गाचार्यमुनिकूं सब गृह सामिग्री सहित दक्षिणा ॥ १५ ॥ उग्रसेन महामना देतभये हजार हाथी, दश हजार घोड़ा, वीस भार सोना एक २ ब्राह्मणकूं देतेभये ॥१६॥ जैसे मरुत्त राजाके यज्ञमें ब्राह्मणनपे सोनो नहीं चल्यो तब छोडि छोडिके चलेगये तैसेही गति उग्रसेनके यज्ञमें भई ॥ १७ ॥ तैसेई उग्रसेनके यज्ञमें संतुष्ट हैके हर्षित हैके गये और देवताऊ सब सन्तुष्ट भाग लेके स्वर्गकूं गये ॥ १८ ॥ और डोम, भांड, भाटहू जैजैकारो बोलत अपने २ घरकूं गये राक्षस, दैत्य, वन्दर, रीछ तैसेही दाढवारे और पक्षी प्रसन्न हैके गये ॥ १९ ॥

नागद्द प्रसन्न हैके अपने २ घरकूं गये गौ, पर्वत, वृक्ष, नदी, तीर्थ, समुद्र ॥ २० ॥ सब भाग पाय पाय प्रसन्न हैके अपने २ घरको गये जे राजा बुलायेहैं तिनकूं बडो दायजो दीनों ॥ २१ ॥ दान मानते सत्कार पायके येभी अपने अपने घरको गये नंदादिक गोप तो श्रीकृष्णने भले पूजे ॥ २२ ॥ प्रेमते दानते बडे हर्षित ब्रजकूं गये यह महायज्ञको मंगल मैंने तोते कह्यो ॥ २३ ॥ जहां श्रीकृष्ण विराजे हैं सो यज्ञ क्यों नहीं सफल होयगो जे नर या कथाकूं निरंतर सुनेंगे पढेंगे ॥ २४ ॥ तिनकूं धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पदार्थ

नागाःसन्तुष्टमनसःसर्वेस्वंस्वंगृहंययुः ॥ गावःशैलावृक्षसंघानद्यस्तीर्थाश्चसिन्धवः ॥ २० ॥ सन्तुष्टाःप्राप्तभागायेसर्वेस्वंस्वंगृहंययुः ॥ राजानोयेसमाहूताःपारिबर्हेणभूयशः ॥ २१ ॥ पूजितादानमानाभ्यांतेपिस्वंस्वंगृहंगताः ॥ नन्दाद्यागोपमुख्यायेश्रीकृष्णेनप्रपूजिताः ॥ २२ ॥ हर्षिताःप्रेमदानाभ्यांतेपिसर्वेव्रजंययुः ॥ एतत्तेकथितंराजन्महायज्ञस्यमण्डलम् ॥ २३ ॥ यत्रश्रीकृष्णचन्द्रोस्तितत्रकिंसफलंनहि ॥ येशृण्वंतिकथामेतांपठंतिसततंनराः ॥ २४ ॥ धर्मश्चार्थश्चकामश्चमोक्षस्तेषांप्रजायते ॥ २५ ॥ पूर्णःपरेशःपरमेश्वरःप्रभुःपुनातुयोयःपुरुषःपुराणः ॥ शृण्वंतियेतस्यकथांविचित्रांकुर्वंतितीर्थंस्वकुलंनरास्ते ॥ २६ ॥ छलेनयज्ञस्यहरिःपरेश्वरोभारंविदेहेशभुवोवतारयत् ॥ योभूच्चतुर्व्यूहधरोयदोःकुलेतस्मैनमोनंतगुणायभूभृते ॥ २७ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविश्वजित्खण्डेनारदबहुलाश्वसंवादेउग्रसेनमहोदयेराजसूययज्ञोत्सववर्णनंनामपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५० ॥ ॥ श्रीगोपालकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥

मिलेंगे ॥ २५ ॥ पूर्ण, परेश, परमेश्वर, पुराणपुरुष, तुमकूं पवित्र करें ताकी जे विचित्र कथाकूं सुनेंहैं ते अपने कुलकूं पवित्र करेंहैं ॥ २६ ॥ ब्रह्मादिकनको ईश्वर हे विदेह ! यज्ञके छल करके पृथ्वीको भार उतारतभये जो चतुर्व्यूह रूप धरके यदुकुलमें प्रकट भये ता पृथ्वीपति अनन्तगुणकूं मेरो नमस्कार है ॥ २७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विश्वजित्खंडे भाषाटीकायां नारदबहुलाश्वसंवाद उग्रसेनमहोदये राजसूययज्ञोत्सववर्णनं नाम पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५० ॥ ॥ ॥

इदं पुस्तकं क्षेमराज-श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना मुम्बय्यां (खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लैन)
स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम) मुद्रणयन्त्रालये मुद्रयित्वा
प्रकाशितम्। संवत १९६७, शके १८३२.

॥ इति गर्गसंहितायां विश्वजित्खण्डं भाषाटीकासमेतं समाप्तम् ॥

॥ अथ गर्गसंहितायां बलभद्रखण्डं भाषाटीकासहितं प्रारभ्यते ॥

(अष्टमखण्डम् ८)

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ अथ बलभद्रखण्डः प्रारभ्यते ॥ ॥ बहुलाश्व राजा नारदजीते पूछैहैं कि हे ब्रह्मन् ! आपके मुखते मैंने विश्वजित्खण्ड सुन्यौ जो परम अद्भुत मङ्गलरूप है और अमृतखण्डतेहू परम मीठो है ॥ १ ॥ परिपूर्णतम श्रीकृष्ण महात्माकी सोलह हजार स्त्रीनमें एक एकके दश दश बेटा भये ॥ २ ॥ हे ब्रह्मन् ! तिनके बेटा नाती किरोड़न भये चाहै कोई कवि पृथ्वीके किणका गिनलेय पर हरिके कुलकी गिनती नहीं हैसकैहै ॥ ३ ॥ जे श्रीराम बलदेवजी महात्मा हैं तिनकी रेवती नाम स्त्रीमें पुत्रनको उदय कैसें न भयौ सो तत्त्वते कहौ ॥ ४ ॥ तब नारदजी बोले कि हे राजन् ! तैंने कही सो ठीक है हमनें मानी भगवान् संकर्षण अच्युताग्रज बलभद्र राम कामपाल तिनकी कथा सर्वथा तेरे अगाड़ी कहूंगो ॥ ५ ॥ काहू समय प्राड्विपाक नाम एक मुनीश्वर बड़े योगीद दुर्योधनके गुरु हे सो हस्तिनापुरमें आये ॥ ६ ॥ तब दुर्योधननें उनकी विधिपूर्वक पूजा करिकें परम

श्रीगणेशायनमः ॥ अथ बलभद्रखण्डः प्रारभ्यते ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ श्रुतंतवमुखाद्ब्रह्मन्मंगलंपरमाद्भुतम् ॥ सुधाखंडात्परंमिष्टंखंडंविश्वजित्परम् ॥ १ ॥ परिपूर्णतमस्यापिश्रीकृष्णस्यमहात्मनः ॥ षोडशस्त्रीसहस्राणांपुत्रादशदशाभवन् ॥ २ ॥ तेषांपुत्राश्चपौत्राश्चबभूवुःकोटिशोमुने ॥ रजांसिभूमेर्गणयेत्क्वकविश्चेद्धरेःकुलम् ॥ ३ ॥ रेवत्यांबलदेवस्यरामस्यापिमहात्मनः॥ पुत्रोदयःकथंनासीदेतन्मेब्रूहितत्त्वतः ॥ ४ ॥ ॥ ॥ श्रीनारद उवाच ॥ ॥ बाढमुक्तंभगवतःसंकर्षणस्याच्युताग्रजस्यबलभद्रस्यरामस्यकामपालस्यकथांसर्वथातवाग्रेकथयिष्यामि ॥ ५ ॥ अथकदाचित्प्राड्विपाकोनाममुनींद्रोदुर्योधनगुरुर्गजाह्वयंनामपुरमाजगाम ॥ ६ ॥ सुयोधनेनसंपूजितःपरमादरेणसोपचारेणमहार्हसिंहासनेस्थितोभूत् ॥ ७ ॥ तंप्रदक्षिणीकृत्यप्रणिपत्यकृतांजलिःपुरःस्थितोमनःसंदेहंस्मृत्वाधार्तराष्ट्रइतिहोवाच ॥ ८ ॥ संकर्षणःसाक्षाद्बलभद्रःकिंकारणात्कस्माल्लोकात्केनप्रार्थितोभूलोकानाजगामयेनेदंपुरंतिर्यग्भूतमभवत्तस्यममगुरोर्गदाशिक्षाकरस्याहोतत्प्रभावंनितरांवदतात् ॥ ९ ॥ ॥ प्राड्विपाक उवाच ॥ ॥ युवराजकुरूद्वहयदुवरस्यप्रभावंशृणुयच्छ्रवणेपापहानिःपरंभूयात् ॥ १० ॥ अस्मिन्द्वापरांतेनृपव्याजदैत्यानीककोटिभिर्भूरिभाराक्रांताभूर्गौर्भूत्वास्वयम्भुवंशरणंजगाम ॥ ११ ॥ तदुपरिचारीसुरश्रेष्ठःससर्वसुरगणःसमृडोवैकुंठनाथंपुरस्कृत्यश्रीवामनवामपादांगुष्ठनखनिर्भिन्नोर्ध्वांडकटाहविवरमार्गेणबहिर्निर्गत्यकोटिशोंडनिचयंब्रह्मद्रवेसंप्रेक्षन्विरजातीरंप्राप्तवान् ॥ १२ ॥

आदरते बहुमूल्य सिंहासनपै बैठारे ॥ ७ ॥ तिनकी परिक्रमा दैके दंडौत करिके हाथ जोड़ आगें ठाड़ेहैं मनके संदेहकूं स्मरण कर सावधान हैकें दुर्योधन ये बोल्यौ ॥ ८ ॥ कि, हे ब्रह्मन् ! संकर्षण साक्षाद्बलभद्र कौनसे कारणते कौनसे लोकते कौनकी प्रार्थनाते भूलोकमें आये जिननें यह हस्तिनापुर तिरछौ करिदीनों जिननें मोकूं गदायुद्ध सिखायो तिनकौ प्रभाव अतिशय करिके मेरे आगे कहौ ॥ ९ ॥ तब प्राड्विपाक बोले कि, हे युवराज ! कुरूद्वह यदुवरकौ प्रभाव सुनि याके सुनवेसौं पापकी हानि होयहै ॥ १० ॥ या द्वापरके अन्तमें राजानके मिसतें भये जे दैत्य किरोड़न तिनके बड़े भारते दबीभई पृथ्वी गौ हैके ब्रह्माजीकी शरण गई ॥ ११ ॥ तब सबके ऊपर रहनहारे, ब्रह्माजी सब देवगणनकूं संग लैकें महादेवकूं वैकुंठनाथकूं अगाड़ी करिकें वामनजीके बायें पावंके अंगूठाके नखते फूट्यौ जो अंडकटाह ताके छेदमें हैकें बाहिर ब्रह्मांडके निकसिकें ब्रह्मद्रवमें

किरोड़न ब्रह्मांडनकूं देखत विरजानदीके तीरपें पोंहनें ॥ १२ ॥ ताके आगे असंख्य किरोड़ सूर्योदयकोसों तेजमंडल ताकूं देखिके ब्रह्माजी, नमस्कार करिके, ध्यान करिके गुण लक्षणते लखेजाय ऐसें हजार मुखके संकर्षणकूं देखते भये ॥ १३ ॥ ताकी शरीर कुंडलीकी गोदीमें वृन्दावन, कालिन्दी, गोवर्द्धन, कुंज, निकुंज, लता, वृक्षपुंज, गऊ, गोप, गोपीनते संकुल मनोहर गोलोक सर्वलोक नमस्कृतकूं देखि तामें भाप हैकें तहां भगवान्की आज्ञाते जायके साक्षात्परिपूर्णतम स्वयं अखिलब्रह्मांडपति श्रीकृष्णकूं देखतभये कैसे श्रीकृष्ण हैं श्यामसुन्दर हैं राधाके पति हैं पीतांबरधारी वनमाला पहरें वंशी बजावते नूपुर बजिरहे कोंधनी बाजू हार कौस्तुभ कंकण अंगूठीनसों चारों बगलते किरोड़ सूर्यमंडलसे मुकुट, कुंडल तिनते शोभित गंडस्थलयुत जाको मुखारविन्द ऐसे गोविंदकूं नमस्कार करिके ब्रह्माजी सबरो भूमिके बोझको वृत्तांत वर्णन करते भये ॥ १४ ॥ तिनकी

अथाग्रेऽसंख्यकोटिमार्तंडज्योतिषांमंडलमवेक्ष्यधातानत्वाध्यात्वातत्रानंतंसहस्रवदनंसंकर्षणंगुणलक्षणलक्षितंदेवैःसहददर्श॥१३॥तद्भोगकुंडली भूतोत्संगेवृंदारण्यकालिंदीगोवर्द्धनादिकुंजनिकुंजलतातरुपुंजगोपालगोपीगोकुलसंकुलंललितंगोलोकंसर्वलोकनमस्कृतंसमेत्यतत्रनिजकुंजेनि जाज्ञांनीत्वान्तःप्राप्यसाक्षात्परिपूर्णतमंस्वयंश्रीकृष्णचंद्रमसंख्यब्रह्मांडपतिंश्रीराधापतिंश्यामलच्छविंपीतांबरवनमालावंशीधरंक्वणत्कनकनूपुर किंकिणीकटकांगदहारस्फुरत्कौस्तुभांगुलीयकैःसर्वतःपरिस्फुरत्कोटिबालमार्तंडमंडलंकिरीटकुंडलमंडितगंडस्थलमलकालिभिर्विभ्राजमानमु खारविंदंनमस्कृत्यविधिःसर्वैःसर्वभूभारवृत्तांतंकथयांबभूव॥१४॥तेषांविज्ञप्तिंविज्ञायभूमिभारहरणार्थंभगवान्स्वजनान्सर्वदेवान्यथायथमाज्ञां दत्त्वाऽनंतंसहस्रवदनमितिहोवाच ॥१५॥ अंगपुरात्वमपिवसुदेवस्यदेवक्यांभूत्वारोहिण्युदरादाविर्भवपश्चादेवक्याःपुत्रतामहंप्राप्स्यामि ॥१६॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांबलभद्रखंडेदुर्योधनप्राड्विपाकसंवादेबलदेवावतारकारणंनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ प्राड्विपाकउवाच ॥ ॥ इत्युक्तः सहस्रवदनोगंतुमभ्युदितःस्वसभायांस्थितोभूत्तदैवसिद्धचारणगन्धर्वाःसर्वतस्तंनतकंधराबभूवुः ॥ १ ॥ अथसुगतिःसारथिर्दिव्यंरथंतालां कंसाश्वंसमानीयसम्मुखंस्थितोऽभूत् ॥ २ ॥ परसैन्यविदारणंमुसलंदैत्यदमनंहलंतेतूर्णंपुरस्तादुपतस्थतुःब्रह्ममयंनामवर्मचोपतस्थे ॥ ३ ॥

विज्ञापनाकूं सुनिकें भूमिको भार उतारवेकूं भगवान् सब देवतानकूं यथायोग्य आज्ञा देकें हजारमुख जिनके ऐसे जे अनन्त तिनते यह बोले ॥ १५ ॥ अंग हे राजन् ! पहले तुम वसुदेवकी स्त्री देवकी ताके उदरमें वसके फिर रोहिणीके उदरते जन्म लेउ फिर देवकीको बेटा मैंक होउंगो ॥ १६ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां बलभद्रखण्डे भाषाटीकायां
१ दुर्योधनप्राड्विपाकमुनिसंवादे बलदेवावतारकारणं नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ प्राड्विपाक बोले कि, ऐसे जब बलदेवजीते कही तब सहस्रमुख शेषजी चलिवेकूं उद्यतभये अपनी सभामें बैठे तब ही सिद्ध चारण गन्धर्व सब ओरसे उनके हाथ जोड़ नीची नार करके आय ठाडेभये ॥ १ ॥ फिर सुगति सारथी तालध्वज रथमें घोड़ा जोड सजायके
(१) सन्मुख आय ठाडो भयो ॥ २ ॥ पर सेनाको विदारण जो मुसल और दैत्यदमन हल तूर्ण दोनों आगे आय खडेभये ब्रह्ममय कवचहू सन्मुख आयो ॥ ३ ॥

तहां बलभद्रकी सभामें सबनके देखते देखते रमावैकुण्ठते आये जे शेष जिनकी पाणिनि और पतञ्जलि मुनि स्तुति करें हैं हजारनफणनके मुकुटन करके सिद्ध चारण चमर करें हैं अनन्त शेषजी तिनकी स्तुति करके सब शेषमें लीन हैगये ॥ ४ ॥ याके अनंतर अजित वैकुण्ठते अजैकपात् अहिर्बुध्न्य बहुरूप महदादिक और घोर प्रेत विनायक तिनके संग शेष सहस्रमुख सभामें आयके अनंतकी स्तुति करिके ताहीमें लीन हैगये ॥ ५ ॥ याके अनन्तर श्वेतद्वीपते और शेष आये कुमुद कुमुदाक्षादि पार्षदनमें श्रेष्ठ तिन करिकें सेवित हैं सहस्र फणनमें मुकुट धरे तिनसों विराजमान श्वेतपर्वतसे नीलांबरधारी नीलकुन्तलकीसी आभा जाकी भयंकर है प्रभा जाकी सोइ सबनकें देखत देखत अनन्तमें लीन हैगये ॥ ६ ॥ और शेष इलावृतखण्डते आये हजार किरोड़ स्त्रीगणनकूं संग लैकें वे स्त्री भवानीकी दासी हैं तिनकरिके सहित शेष हजार मुख

अथतत्रश्रीबलभद्रसभायांसर्वेषांपश्यतांरमावैकुंठात्समागतःपाणिनिपतंजलिभिर्मुनिभिःस्तूयमानःसहस्रफणमौलिविराजमानःसिद्धचारणचामरसंसेव्यमानःशेषस्तमनंतंसंकर्षणंस्तुत्वातद्विग्रहेसंलीनोभूत् ॥ ४ ॥ अथाजितवैकुंठात्समागतोजैकपादहिर्बुध्न्यबहुरूपमहदादिभिःसंवेष्टितोघोरैःप्रेतविनायकैःसंवेष्टितःशेषःसहस्रवदनःसमागत्यससभायामनंतंस्तुत्वातस्मिन्संलीनोभूत् ॥५॥ अथश्वेतद्वीपात्समागतः कुमुदकुमुदाक्षादिभिःपार्षदप्रवरैःसंसेव्यमानःसहस्रफणमौलिविराजमानःसिताचलाभोनीलांबरोनीलकुंतलाभोभीमाभः सर्वेषांपश्यतामनंतविग्रहेसोपिसंलीनोभूत् ॥६॥ अथतदैवेलावृतखंडात्समागतस्त्रीगणार्बुदसहस्रैर्भवानीनाथैःसमावृतःशेषः सहस्रवदनमौलिमंडलमंडितःप्रस्फुरत्किरीटकटकांगदःसभायांत्यानंतविग्रहेसंप्रलीनोभूत् ॥ ७ ॥ अथपातालस्याधस्ताद्द्वात्रिंशद्योजनसहस्रांतरात्समागतोभगवतस्तामसीकलः साक्षात्सहस्रवदनकिरीटमार्तंडमंडलामंडितोवेदव्यासपराशरसनकसनंदनसनातनसनत्कुमारनारदसांख्यायनपुलस्त्यबृहस्पतिमैत्रेयादिमहर्षिभिःसंशोभितोवासुकिमहाशंखश्वेतधनंजयधृतराष्ट्रकुहककालियतक्षककंबलाश्वतरदेवदत्तादिभिर्नागेंद्रैश्चामरपाणिभिःसंसेव्यमानोमृगमदागुरुकुंकुमचन्दनपंकावलिप्यमानाभिर्नागकन्याभिःसिद्धचारणगन्धर्वविद्याधरगणैरुपगीयमानोहाटकेश्वरत्रिपुरबलकालकेयकलिनिवातकवचैरनुयायिभिःपुरःसरैरुद्रैकादशव्यूहैर्नाभिकामधेनुवरुणैःपश्चात्प्रयायिभिर्वीणावेणुमृदंगतालदुन्दुभिध्वनिशब्दायमानःफणींद्रोनागेंद्रइवतुंगगतिर्विराजतेयस्यैकफणेचेदंक्षितिमण्डलंसिद्धार्थइवलक्ष्यतेसोऽप्यागत्यमहानंतविग्रहेसंलीनोभूत् ॥ ८ ॥

हजार मुकुट धरें देदीप्यमान है किरीट, कुंडल, कडे, कोंधनी, बाजू जिनकें सोइ अनन्त भगवान्में लीन हैगये ॥ ७ ॥ फिर पातालके बत्तीस हजार योजनपै नीचे जो तामसी कला शेष हैं सोइ साक्षात् सहस्रमुख हजार सूर्यसे किरीटन करिके शोभित आये, वेदव्यास, पराशर, सनक, सनंदन, सनातन, सनत्कुमार, नारद, सांख्यायन, बृहस्पति, मैत्रेयादि महर्षि तिन करिके शोभित और वासुकी, महाशंख, श्वेत, धनंजय, धृतराष्ट्र, कुहक, कालीय, तक्षक, कंमलाश्वतर, देवदत्त, धनंजय इन करिके चौंरनते वीज्यमान कस्तूरी, अगर, केशर, चंदन इनते नागकन्याननें लीप्यो है अंग जिनको तिन कन्यानकरिके सहित सिद्ध, चारण, गंधर्व, विद्या

धर तिनने गायेहैं यश जिनकौ हाटकेश्वर महादेव और कालकेय निवातकवच दैत्य ये पीछे चलें, आगे ग्यारह रुद्र कामधेनु वरुण पीछे चलनहारे वीणा, वेणु, मृदंग, ताल, दुंदुभीकी ध्वनि ताते शब्दायमान फणीद्र, नागेंद्रवत् शीघ्रगति विराजें हैं जाके एक फणपै सबरो पृथ्वीमण्डल सरसोंसो धर्योहै सोहू शेष आपके संकर्षणके विग्रहमें लीन हैजात भये ॥ ८ ॥ ता अचंभेकूं देखिके ता सभाके सबरे पार्षद वाकूं परिपूर्णतम जानके विस्मित हैके नम्र हैगये ॥ ९ ॥ याके अनंतर अनंत मुखवारे महाअनंत संकर्षण भगवान सिद्ध पार्षदनते बोले ॥ १० ॥ कि, मैं भूमिभार उतारवेकूं भूमिमे जाऊंगो तुमहू यादवनमें जन्म लेउगे ॥ ११ ॥ भो प्रबल उद्भट सारथी ! तुम यहीं रहौ शोच मति करो जब युद्धार्थी मै तेरो स्मरण करूंगो तब तूं दिव्य तालांक रथकूं लेके मेरे पास आय जाउगे ॥ १२ ॥ हे हल मुसल हो ! मैं जब जब तुमारी यादि करूंगो तब तब तुम

तच्चित्रंदृष्ट्वातत्सभापार्षदाःसर्वेतंपरिपूर्णतमंज्ञात्वावनताविस्मिताबभूवुः ॥९॥ अथानंतवदनोमहानंतःसंकर्षणोभगवान्पार्षदान्सिद्धानुवाच ॥ ॥ १० ॥ अहंभूमिभारहरणार्थंभुविगमिष्यामितस्माद्यूयंयादवेषुभविष्यथ ॥ ११ ॥ भोःप्रबलोद्भटसुमतेसारथेभवतात्रैवस्थीयतांशोकम्मा कुरुतायदायुद्धार्थीत्वत्स्मरणंकरिष्यामितदात्वंदिव्यंतालांकंरथंनीत्वामत्समीपमागमिष्यसि ॥ १२ ॥ हेहलमुसलेयदायदायुवयोःस्मरणंकरि ष्यामितदातदामत्पुरआविर्भूतेभवतम् ॥ १३ ॥ भोवर्मंत्वमपिचाविर्भवहेमुनयःपाणिन्यादयोहेव्यासादयोहेकुमुदादयोहेकोटिशोरुद्राहेभवानी नाथहेएकादशरुद्राहेगंधर्वाहेवासुक्यादिनागेंद्राहेनिवातकवचाहेवरुणहेकामधेनोभुम्यांभरतखण्डेयदुकुलेऽवतरंतंमांयूयंसर्वेसर्वदाप्रत्यमदर्शनंकु रुत ॥ १४ ॥ ॥ प्राड्विपाकउवाच ॥ ॥ इत्याज्ञप्ताःसर्वेस्वंस्वंधामसमाजग्मुस्तेषुगतेषुनागकन्यायूथम्भगवाननन्तःप्राहयुष्माकमभिप्रा योमयाज्ञातस्तपसागोपालानांगृहेषुजन्मानिप्राप्यमद्दर्शनंकुरुत ॥ १५ ॥ कदाचित्कलिंदनंदिनीकूलेविहारमाधुर्य्यमूलेयुष्माभिःसहरासम ण्डलंकरिष्यामियुष्माकंमनोरथःसफलोभविष्यति ॥ १६ ॥ अथनिवातकवचानांराजाकलिःस्वामिपादकृतमस्तकांजलिःप्रदत्तपुष्पांजलिः श्रीभगवन्तंप्रत्युवाच ॥ १७ ॥

मेरे पास अगारी आयजैयो ॥ १३ ॥ भो वर्म कवच ! तुहूं जब चाहूं तब प्रगट हूजो, हे मुनिहो ! पाणिन्यादय ! हे व्यासादय ! हे कुमुदादय ! हे किरोडनरुद्र हौ ! हे भवानीनाथ ! हे एकादशरुद्रहो ! हे गंधर्व हो ! हे वासुक्यादि नागेंद्रहो ! हे निवातकवच ! हे वरुण ! हे कामधेनु ! भूमिमें भरतखंडमें यदुकुलमें अवतार लेउ जो मै ताके दर्शन नित्य आय आपके करि जैयो ॥ १४ ॥ प्राड्विपाक कहैहै ऐसे सबनकूं जब आज्ञा दीनी तब सबरे अपने २ धामकूं चलेगये जब वो सब चलेगये तब भगवान् अनंत नाग कन्यानके यूथते बोले तुम्हारो अभिप्राय मैंने जान्यो तुम तप करिके गोपनके घरमे जन्म लैके मेरे दर्शन करौगी ॥ १५ ॥ कबहूं कालिंदीके कूलपै मधुर विहारनके अनुकूल तुमारे संग रास करूंगो तब तुमारो मनोरथ सफल हैजायगो ॥ १६ ॥ याके अनंतर निवातकवचनको राजा कलिस्वामिके चरणनमें शिर धरिके पुष्पांजली देके भग

वानते बोल्यो ॥ १७ ॥ हे भगवन् ! मैं कहा करूं मोकूँ आज्ञा करो जहां तुम चलोगे तहां मोकूं हूं लैचलो तुमारे वियोगमें मोकूँ बडो दुःख होयगो हे भक्तवत्सल ! संगही मोकूँ लेचलो ॥ १८ ॥ ऐसे जब भगवान् अनंतकी प्रार्थना करी तब अपने भक्त कलिराजाते बोले—सुखेन तूं मेरे संग चल्यो चल भरतखण्डमें कौरवनके कुलमें धृतराष्ट्रको बेटा हैके दुर्योधन नाम चक्रवर्ती राजा होयगो तेरी सहाय करूंगो गदायुद्ध तोकूँ शिखाऊंगो ॥ १९ ॥ ऐसे सुनिके कलि राजा दंडवत् प्रणाम कर अपने धामकूं चल्यो गयो सोई कलियुग तूं पैदा भयोहै विष्णुकी मायाते अपने स्वरूपकूं नहीं जानैहै ॥ २० ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां बलभद्रखण्डे भाषाटीकायां प्राड्विपाकदुर्योधनसंवादे संकर्षणागमनतन्त्रं नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ प्राड्विपाक बोले—याके अनंतर किरोड़ शरदके चंद्रमाकोसो प्रकाश जाको सो नागलक्ष्मी बडे रथमें बैठी किरोड़ सखीमंडलमें

अहंकिंकरिष्यामिमय्याज्ञांकुरुभगवन्यत्रत्वंगमिष्यसितत्राप्यहंगमिष्यामिहवावत्वद्वियोगेनमहान्खेदोभविष्यतिसहैवमांनयत्वंभक्तवत्सलोसि ॥ १८ ॥ एवंसंप्रार्थितोभगवाननन्तःकलिराजानंस्वभक्तंप्रसन्नःप्रत्युवाचसुखेनत्वंमत्सहैवागच्छभरतखण्डेकौरवेंद्राणांकुलेधृतराष्ट्रस्यपुत्रोभूत्वा दुर्योधनोनामचक्रवर्तीभविष्यसित्वत्सहायमहंकरिष्यामिगदाशिक्षांदास्यामि ॥ १९ ॥ इत्युक्तःकलिस्तंनमस्कृत्यस्वधामगतवान्सैषकलिस्त्वमेवजातोसिविष्णुमाययास्वात्मानंनस्मरसि ॥ २० ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांबलभद्रखण्डेप्राड्विपाकदुर्योधनसंवादेसंकर्षणागमनतंत्रंनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ प्राड्विपाकउवाच ॥ ॥ अथागताकोटिशरच्चंद्रमंडलप्रतीकाशानागलक्ष्मीर्महारथस्थासखीकोटिमण्डलमंडितासंकर्षणंमहानंतंभर्तारंसभायांप्राह ॥ १ ॥ अहमपित्वयासहैवभगवन्भुवमागमिष्यामित्वद्वियोगातुराप्राणान्नधारयामि ॥ २ ॥ इति बाष्पकण्ठींप्रियांसंप्रेक्ष्यभगवाननन्तःसर्वजगत्कारणकारणःसर्वभक्तदुःखनिवारणोमहेंद्रवारणइवभोगवारणइतिहोवाच ॥ ३ ॥ रंभोरुत्वं रेवतीविग्रहेसंलीनाभूत्वाभूलोकंभजतात्माशोकंकुरुतात् ॥ ४ ॥ तच्छ्रुत्वानागलक्ष्मीःप्रत्युवाचरेवतीकाकस्यसुताक्ववर्तमानानितरांवदे तत्तच्छ्रुत्वाभगवाननन्तःसस्मितःस्वप्रियांप्रत्युवाच ॥ ५ ॥ आदिसर्गेकश्यपस्यकद्रूसुतोह्यहंजातःश्रीकृष्णाज्ञयाखण्डंभूखंडमण्डलंगजराडिवचैकफणेकमंडलुमिवधृत्वासर्वतोधस्ताद्विराजमानोहंबभूव ॥ ६ ॥

शोभिता संकर्षण अनंत अपने भर्ताते सभामें यह वचन बोली ॥ १ ॥ हे भगवन् ! तुमारे संग पृथ्वीमें मैंहू चलूंगी नहीं तुमारे वियोग भयेपै मैं प्राण नहीं धारण करूंगी ॥ २ ॥ ऐसे आंसू हैं नेत्रमें जाके ता प्यारीकूं देखिके अनंत भगवान् जगत्कारणके कारण सब भक्तनके दुःख निवारक इंद्रके गजेंद्रकोसो शरीर जिनको सो बोले ॥ ३ ॥ हे रंभोरू ! तू रेवतीके शरीरमें लीन हैके भूलोकमें आओ शोच मति करो ॥ ४ ॥ यह सुनके नागलक्ष्मी बोली—महाराज ! रेवती कौन हो कौनकी बेटी है कहां घर है सो कहो यह सुनके भगवान् अनन्त हँसके अपनी प्यारीसे बोले ॥ ५ ॥ पहले सर्गमें कश्यपकी स्त्री कद्रू तामें मैंने जन्म लीनों सो श्रीकृष्णकी आज्ञाते गजराजकी नाई एक फणपै सबरे भूमंडलकूं धारण

करिके सबके नीचे बैठ्यो हूं ॥ ६ ॥ ऐसें मैं जब स्थित भयो तब चक्षुको बेटा चाक्षुषमन्वंतर सप्तद्वीपखंड मंडलपतिन करके थिसैंहैं चरणकमल जाके वो भूमंडलकूं शिक्षा देतो भयो इंद्रादिक जाके आज्ञावर्ती अपने भुजाबलते खंडित करे वैरी सो तीव्र आज्ञाते पृथ्वीको पालन करतो चक्रवर्ती भयो ॥ ७ ॥ ता मनुके सुद्युम्नादि बेटा भये और ताके यज्ञकुंडते एक कन्या ज्योतिष्मती नामकी होतीभई ॥ ८ ॥ एक दिन स्नेहते चाक्षुष बेटीते पूछनलग्यो कि, तूं कैसे वरकूं व्याहेगी ये मोसे कहि तब वह कन्या बोली कि, सबनमें जो बली होय सो मेरो वर होउ ॥ ९ ॥ ऐसे सुनिके राजाने सबसे बलवान् जानके इंद्रकूं बुलायो तबही वो जलदी आयगयो तब राजा वज्री इंद्रकूं आयके आगे खडेको देखके दंडोत करिके मनु बोल्यो ॥ १० ॥ और यह पूछी तोते हू सिवाय औरहू कोई बली हे के नहीं ? सत्य बोलियो झूठते परे कोई पाप नहीं है क्योंकि पृथ्वी कहेहै कि, सत्यते

अथमयिस्थितेचक्षुषः पुत्रोऽतिबलश्चाक्षुषोनाममनुःसप्तद्वीपभूखंडमंडलेषुमंडलपतिभिर्घृष्टपादपुंडरीकःपुरंदरादिभिर्लंघितचंडशासनःप्रचंडदोर्दण्डविखंडितारिदोर्दण्डःसर्वगुणमंडितःसम्राड्बभूव ॥७॥ तस्यमनोःसुद्युम्नाद्याःपुत्राबभूवुःतस्ययज्ञकुंडसमुद्भवाकन्याज्योतिष्मतीजाता॥८॥ एकदास्नेहाच्चाक्षुषःपुत्रींपप्रच्छकीदृशंवरमिच्छसीतिवदसातदोवाचयःसर्वेषांबलवान्समेवरोभूयात् ॥९॥ तच्छ्रुत्वाराजाशक्रंबलवंतंज्ञात्वातमाजुहावतदेवसद्यःसमागतंवज्रिणंपुरःस्थितंसादरेणासनंदत्त्वामनुःप्राह ॥ १० ॥ त्वत्तःकोपिबलवान्वर्ततेनवातत्सत्यंवदनचेत्स्मृतिर्नहिसत्यात्परोधर्मइतिहोवाचभूरियंसर्वंसोढुमलंमन्येऽनृतलीकपरंनरम् ॥ ११ ॥ ॥ इंद्रउवाच ॥ ॥ अहंबलवान्नास्मिमत्तोबलवान्वायुरस्तियेनसहायेनकार्यंकारयिष्यामीत्युक्त्वागतेशक्रे राजावायुमाजुहावाहचत्वराः कोपिबलवान्वर्ततेसत्यंवदतात् ॥ १२ ॥ ॥ वायुरुवाच ॥ ॥ मत्तोबलवंतःपर्वताःसंतिमद्वेगेननोड्डीयमानाइत्युक्त्वागतेवायौराजापर्वतानाजुहावाहचभवद्भ्यःकोपिकोबलवान्वर्ततेतत्सत्यंवदत॥ १३ ॥ पर्वताःप्राहुरस्मद्धारणाद्भूखंडंबलवद्वर्ततेयत्रवयंस्थिताःस्मःपर्वतेषुगतेषुभूखंडमंडलंसमाहूयराजाप्राहत्वत्तःकोपिबलवान्वर्ततेनवासत्यंवद ॥१४॥ ॥तच्छ्रुत्वाभूखंडउवाच ॥ ॥ मत्तोबलवान्संकर्षणोभगवान्वर्ततेसोयंसदानंतोनंतगुणार्णवआदिदेवोवासुदेवःसहस्रवदनोनागेंद्रइवभव्यवपुःकैलासइवशुक्लप्रकाशःकोटिसूर्यप्रतिभासःकोटिकंदर्पदर्पहारिलावण्येनविभ्राजमानःकमलपत्राक्षःकमलकर्णिकादिव्यविमलमालानिर्मलपरिमलपरिलोभितमधुकरनिकरसंगीयमानःसिद्धचारणगन्धर्वविद्याधरवरगणैरुपगीयमानः सुरासुरोरगमुनिगणैःसंध्यायमानःसर्वोपरिविराजमानआस्ते॥१५॥

परे कोई धर्म नहीं है सबको बोझ मैं सहिलेऊंहूं पर झूंठाको नहीं सह्योजाय है ॥ ११ ॥ तब इंद्र बोल्यो कि, मैं बलवान् नहीं हों क्योंकि मोते सिवाय पवन बली है पवनके सहारेते सब काम करूंहूं ऐसे कहिके जब इंद्र चल्योगयो तब राजाने पवनकूं बुलायो तब पवनते पूछी तोते सिवाय कोई औरहू बली है सत्य बोलियो ॥ १२ ॥ तब पवन बोल्यो कि, मोते तो बली पर्वत है जे मेरे उडाये नहीं उडैहै ये कहिके जब पवन चलोगयो तब पर्वतनकूं बुलायके पूछी तुमते कोई बलवारो है पृथ्वीमें सत्य कहो ॥ १३ ॥ तब पर्वत बोले हमते बडो भूमंडल है तापै हम बैठे हैं तब भूमंडलकूं बुलायके पूछी के तुमते कोई बडो है या नहीं ये सत्य कहो ॥ १४ ॥ तब भूमण्डल बोल्यो मोते बडे भगवान् संकर्षण है

सो सदा अनन्तरूप हैं अनंत गुणनके समुद्र आदि देव सहस्रमुख हाथीसी भव्य मूर्ति कैलाससे सफेद किरोड़ सूर्यकोसा प्रकाश कोटि कामके गर्वहंताके नाशक सौंदर्यसो प्रकाशमान कमलसे नेत्रवारे कमलकलीकी दिव्य-माला ताके निर्मल सुगन्धिके लोभी भौंरा तिनते गानकिये सेव्यमान सिद्ध, चारण, विद्याधर तिनके गणन करके गायो है जस जाको सुर, असुर, मुनि और नागनके गण जाको ध्यान धरें सो सर्वोपरि विराजें हैं ॥ १५ ॥ जाके एक शिरके विषे पर्वत, नदी, समुद्र, वन सहित किरोड़न जीवन करके मण्डित भूमण्डल धरचो हम देखें हैं जाके नाम कीर्त्तनते त्रिलोकीमें त्रिलोकीको कोक मारनहारो पापीहू मोक्षकूं प्राप्त होयहै ॥ १६ ॥ ऐसे प्रभाववारो सबते बलवान् कारणको कारण सबको ईश्वर पातालके नीचे बैठो है इनते बली कोई नहीं है ॥ १७ ॥ महा अनन्त बोले कि, ऐसे कहिके जब भूमण्डल चल्योगयो तब चाक्षुषमनुकी ज्योतिष्मती कन्या मेरी माधुर्य प्रभाव जानके पिताकी आज्ञा पायके विंध्याचलपै जायके मेरी प्राप्तिके अर्थ लाख वर्षताईं ब्रह्मतप करतीभई ॥ १८ ॥ ग्रीष्ममें तो पञ्चाग्नि तपी, वर्षामें धारासम्पात

यस्यैकस्मिन्मूर्ध्नि सगिरिसरित्समुद्रवनजीवकोटिमंडितंभूखंडमण्डलमहंदृश्येयन्नामानुकीर्तनात्त्रिलोक्यांत्रैलोक्यघात्यपिकैवल्यंप्राप्नोति ॥ ॥ १६ ॥ एवंप्रभावोभगवान्सर्वतोबलवान्सर्वकारणकारणःसर्वेश्वरोदुरंतवीर्य्योमूलेरसायाःस्थितस्तस्मात्परःकोपिनास्ति ॥ १७ ॥ ॥ ॥ महानन्तउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वागतेभूखण्डेचाक्षुषकन्याज्योतिष्मतीममभाधुर्यप्रभावंविज्ञायपित्राज्ञांगृहीत्वाविंध्याचलेमत्प्राप्त्यर्थंवर्षाणांलक्षाणिब्रह्मतपस्तेपे ॥ १८ ॥ ग्रीष्मेपंचाग्नितप्तावर्षासुसर्वासारिणीशिशिरआकण्ठमग्नाशीतोदकेभूत्वास्थंडिलशायिनीबभूव ॥ १९ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांबलभद्रखण्डेज्योतिष्मत्युपाख्यानंनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ श्रीमहानन्तउवाच ॥ ॥ अथज्योतिष्मतींशतचन्द्रप्रतीकाशांनवयौवनांसुन्दरींतपस्विनींवीक्ष्यशक्रयमधनदाग्निवरुणसोमसूर्यमङ्गलबुधबृहस्पतिशुक्रशनयः सर्वेतद्रूपोद्दीपितकामसंमोहितचित्तास्तदाश्रममेत्यतामूचुः ॥ १ ॥ हेसुन्दरिरंभोरुधन्यासिकस्यार्थंतपः करोपितेवयस्तपोयोग्यंनास्तिमनोभिप्रायंस्वकमस्माकंवदेतितच्छ्रुत्वाज्योतिष्मत्युवाचभगवाननन्तःसहस्रवदनोममभर्ताभूयादेतदर्थंतपस्तपामीतितद्वचःश्रुत्वासर्वेजहसुःपृथक्पृथक्तेषांपूर्वमिंद्रइदमाह ॥ २ ॥ ॥ ॥ इंद्रउवाच ॥ ॥ सर्पराजंवरंकर्तुंकिंवृथातपसेशुभे ॥ देवराजंवरयमांस्वतःप्राप्तंशतक्रतुम् ॥ ३ ॥

सह्यो, जाडेमें जलके बीचमें कण्ठतलक बूडी रही, पृथ्वीमें सोयवेवारी भई ॥ १९ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां बलभद्रखण्डे भाषाटीकायां ज्योतिष्मत्युपाख्यानं नाम तृतीयोऽध्यायः॥ ॥ ३ ॥ महाअनन्त कहें है कि, याके अनन्तर ज्योतिष्मती सौ चन्द्रमाकोसो प्रकाश जाको नये जोबनवारी सुन्दरी ताहि तप करतीको देखिके इन्द्र, यमराज, कुबेर, अग्नि, वरुण, सोम, सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि जे सब है वे ताके रूप करिके प्रज्वलित जो कामदेव ताते मोहित हैं चित्त जिनके ते सबरे देवता ताके आश्रममें आयके ज्योतिष्मतीते बोले ॥ १ ॥ हे सुन्दरी ! हे रंभोरू ! तूं धन्य है कौनके लिये तूं तप करे है ? तेरी अवस्था तपके लायक नहीं है, अपनो अभिप्राय हमारे आगे कहि ताकूं सुनि ज्योतिष्मती बोली भगवान् अनंत सहस्र मुख शेष मेरे पति होउ तिनके अर्थ तप करूंहूं, या वचनकूं सुनिके सब हंसिवे तिनमें पहलेई इन्द्र बोल्यो ॥ २ ॥ कि, हे शुभे ! सर्पनके राजाकूं

वरिवेके लोये तूं क्यों वृथा तप करैहै देवतानके राजाकूं मोकूं वरिले देख मैं आपते आयोहूं ॥ ३ ॥ फिर यमराज बोले कि, मैं यमराजहूँ सब जगतकूं दंडको देनहारोहूं तूं सर्वोत्तमा मेरी पत्नी पितृलोकमें होयगी ॥ ४ ॥ फिर कुबेर बोल्यौ कि, हे वरानने ! मैं राजराज कुबेर हूं मोकूं जान सब निधिनको मैं ईश हूं, हे बडे नेत्रवारी ! हे वरांगने ! तूं मोकूं वरि और संकर्षणमें जो रति है वाको छोड़िदे ॥ ५ ॥ अग्नि बोल्यो कि मैं सब देवतानको मुख हूं सब यज्ञनमें प्रतिष्ठित हूं सो हे विशालाक्षि ! सब वासनानकूं छोड़िके मेरो भजन करि ॥ ६ ॥ वरुण बोल्यो कि, मैं लोकपाल जलजीवनको पति पाशशस्त्रधारी हूं सो तू मोकूं वरलें और सातों समुद्रनको वैभव मेरो है हे भामिनि ! तूं देखि ॥ ७ ॥ सूर्य बोले कि, हे चाक्षुषकी बेटी ! जगतको नेत्र मैं हूं प्रचंड मेरी किरण है सो पातालकी गतिकूं छोडिदे मैं स्वर्गको भूषण हूं मोहि वरले ॥ ८ ॥ चन्द्रमा बोल्यो

॥॥ यमउवाच ॥ ॥ यमराजंवरयमांदंडनेतारमागतम् ॥ सर्वोत्तमात्वंमत्पत्नीपितृलोकेभविष्यसि ॥४॥॥ धनदउवाच ॥॥ राजराजंहिमांविद्धिनिधीशंहेवरांगने॥त्वंभजाशुविशालाक्षित्यजसंकर्षणेरतिम् ॥५॥ ॥ अग्निरुवाच ॥ ॥ सर्वदेवमुखंविद्धिसर्वयज्ञप्रतिष्ठितम् ॥ भजमांत्वंविशालाक्षिविहायान्यन्नवासनाम् ॥ ६ ॥ ॥ वरुणउवाच ॥ ॥ लोकपालंवरयमांपाशिनंयादसांपतिम् ॥ सप्तानांहिसमुद्राणांवैभवंपश्यभामिनि ॥ ७ ॥ ॥ सूर्यउवाच ॥ ॥ जगच्चक्षुःसदाहंवैचण्डांशुश्चाक्षुषात्मजे ॥ विहायपातालगतिंवरमांस्वर्गभूषणम् ॥ ८ ॥ ॥ सोमउवाच ॥ ॥ द्विजराजश्चौषधीशोनक्षत्रेशःसुधाकरः ॥ कामिनीबलदोहंवैभजमांगजगामिनि ॥ ९ ॥ ॥ मंगलउवाच ॥ ॥ इयंमहीहिमेमातापितासाक्षादुरुक्रमः ॥ मंगलंभजमांभद्रेभूत्वाभूरिभवार्थिनी ॥ १० ॥ ॥ बुधउवाच ॥ ॥ बुधोहंबुद्धिमान्वीरःकामिनीरसवर्द्धनः ॥ विसृज्यसर्वानाकेशान्नमस्वत्वंमयासह ॥ ११ ॥ ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ ॥ गीष्पतिर्धिषणोहंवैसुराचार्योबृहस्पतिः ॥ साक्षाद्देवगुरुंलोकेभजमांमन्यसेशुभे ॥ १२ ॥ ॥ शुक्रउवाच ॥ ॥ साक्षाद्दैत्यगुरुःकाव्योभार्गवोहंमहामते ॥ स्वश्रेयस्तुविचार्य्यैवंभवमद्भामिनीभृशम् ॥ १३ ॥ ॥ शनिरुवाच ॥ ॥ सर्वेषांबलवान्भद्रेअहंदेवोपरिस्थितः ॥ त्यजशोकंवरयमांलोकभस्मकरंदृशा ॥ १४ ॥ ॥ महानन्तउवाच ॥ ॥ अथज्योतिष्मतीतेषांवचांसिश्रुत्वारुणनेत्रास्फुरदधराचलद्भ्रूभंगाप्रोद्यद्दोषाग्निप्रकर्षोच्छलच्छटामांपरंसस्मारपरंक्रोधंचचकार ॥ १५ ॥

कि, मैं द्विजराज औषधीनको ईश नक्षत्रनको ईश अमृतको करनवारो मैं कामिनीनकूं सुखको देनहारो हो, हे गजगामिनी ! मोकूं भजि ॥ ९ ॥ मंगल बोल्यो कि, यह पृथ्वी तो मेरी मैया है वामनजी मेरे पिताहैं मैं मंगलरूप हूं बडे अर्थ मोते होयंगे सो हे भद्रे ! तूं बहुत वृद्धिकी चाहनेवारी है तो मेरो पाणिग्रहण कर ॥ १० ॥ बुध बोल्यो–मैं बुद्धिमान् वीर हूं कामिनीके रसकूं बढावनवारो हूं ब्रह्मादि देवतानकूं छोडिके तूं मोकूं भजि ॥ ११ ॥ बृहस्पति बोले कि, वाणीनको पति मैं बृहस्पति हूं सुरनको आचार्य बृहस्पति हूँ साक्षात् देवतानको गुरुहूं जो तेरी इच्छा होय तो मोकूं वरि ॥ १२ ॥ शुक्र बोले–साक्षात् दैत्यनको गुरु काव्य भार्गव हूं हे महामते ! तूं अपनो सुख भलो विचारिले मेरी स्त्री हैजा ॥ १३ ॥ शनि बोले–सबनमें बली मैं हूं हे भद्रे ! मैं देवतानके ऊपर रहूं हूं शोच छोडिदे मोकूं भजि मैं दृष्टितेई सब लोककूं भस्म करूंहूं ॥ १४ ॥ महा अनन्त कहे हैं कि,

अब ज्योतिष्मती उनको वचन सुनिके लाल नेत्र हैआये, होठ फडकनलगे, भौंहें चढि गई, उद्यत भई जो रोषकी अग्नि ताकी प्रकर्ष कारिके उछरी है छटा जाकी सो केवल भरोहि स्मरण करती भई फिर बडो क्रोध करयो ॥ १५ ॥ ताके क्रोधते भूमण्डल चौदहकू लोक सुद्धा ब्रह्मांड कांप्यो, चारयों वगलते बडी भय भई ॥ १६ ॥ तबही इन्द्रादिक शापके भयसों भीत हैगये कांपनलगे भेट लैलैके हाथ जोरि चरणनमें जायपरे त्राहि २ करनलगे तिनने ऐसे शांतिहू करी तोऊ ज्योतिष्मती सबकूं न्यारौ २ शाप देती भई ॥ १७ ॥ अरे शनिश्चर ! तूं मोकूं छलिवेकूं आयौ याते हे दुष्ट ! तूं लूलौ हैजा और नीची दृष्टि हैजा, लच्यौ शरीर कारौ बुरी कांतिको हैजा, कारे तिल, कारे उरद, तेल इनको भक्षी हैजा ॥ १८ ॥ और हे शुक्र ! तूं कानों हैजा और हे बृहस्पते ! तूं स्त्रीसंज्ञक हैजा, हे बुध ! तेरौ वार दिन सूनो होयगो तेरे वारकूं कोई कहूं न जायगो ॥ १९ ॥ हे

तेनसखंडंमहीमण्डलंब्रह्मांडमपिरपरंचाब्रह्मलोकान्दढमेजत्सर्वतोमहद्भयंबभूव ॥१६॥ तदैवशक्राद्याःशापभयभीताःप्रकंपिताःकृत ।णयः पादपद्मेपरितोनिपेतुःपाहिपाहीतिजगुस्तैरित्थंशांतापिज्योतिष्मतीपृथक्पृथक्ताञ्छशाप॥१७॥ ॥ ज्योतिष्मत्युवाच ॥ ॥ छलयितुमिहमां समागतस्त्वंभवखलपंगुरधःसमीक्षणश्च ॥ कृशतनुरतिकृष्णकुत्सिताभोभवसहसासितमाषतैलभक्षी ॥ १८ ॥ हेशुक्रअक्ष्णाभवकाणआशुस्त्री संज्ञकस्त्वंभवगीष्पतेत्र ॥ हेसौम्यतेवारदिनंहिशून्यंवदंतिगच्छंतिनकेकदाचित् ॥ १९ ॥ हेमंगलत्वंभववानराननोनिशाकरत्वंभवराजयक्ष्म वान् ॥ त्वंभग्नदंतोभवभोदिवाकरपाशिन्नुचिरस्तोभवताज्जलंधरी ॥ २० ॥ त्वंसर्वभक्षीभवतादुपर्बुधमनुष्यधर्मन्हतपुष्पकोभव ॥ वैवस्वतत्वंब हुमानभंगोभवाशुयुद्धेप्रबलेनरक्षसा ॥ २१ ॥ मांहर्तुमागत्यसुराधमस्थितःकरोषिनिंदांपरमात्मनोगिरा ॥ तवप्रियांकोपिनृपोहरिष्यतिक रिष्यतिस्वर्गसुखंगतेत्वयि ॥ २२ ॥ पाशेनबद्धंयुधिनिर्जितंत्वांबलाद्गृहीत्वाखलुकोपिराक्षसः ॥ लंकांपुरीमेत्यदिवस्पतेवैकारागृहेंधेकिलका रयिष्यति ॥ २३ ॥ ॥ श्रीमहानन्तउवाच ॥ ॥ अथहवावतयाशतानांदेवानांमध्येकुपितःशक्रोपितांशशापकोपकारिणिसंकर्षणंवरमपिप्रा प्यानजन्मन्यन्यत्रवाकदाचित्तवपुत्रोत्सवोमाभूत् ॥ एवमुक्त्वाशक्रोपितत्तेजसाधर्षितःसर्वदेवगणैःसहस्वर्गंजगामपुनःसातपस्तेपे ॥ २४ ॥

मंगल ! तेरौ बन्दरकोसो मुख हैजायगो, हे चन्द्रमा ! तोकूं राजक्षयीको रोग हैजायगो, हे सूर्य ! तेरे दांत टूटैंगे, हे वरुण ! तूं जलंधर नामके रोगवारो हैजा ॥ २० ॥ हे अग्नि ! तूं सर्वभक्षी हैजा, हे कुबेर ! तूं मनुष्यधर्मा हैजा, तेरो विमान छिन जायगो हे यमराज ! युद्धमें प्रबल राक्षस तेरौ मान भंग करैगो ॥ २१ ॥ हे सुराधम ! इन्द्र तूं मोकूं हरिवेकूं आयौ और जो तूं सबकी निंदा करै है याते तेरी स्त्रीकूं कोई राजा हरैगो और तेरे गयेपै वोही स्वर्गके सुखकूं भोगैगो ॥ २२ ॥ और कोई राक्षस युद्धमें पाशीसो तेरी मुसकें बांधि जबरन लंकामें लायके हे स्वर्गपते ! अंधेरे बंदीखानेमें तोय कैद करके राखेगो ॥ २३ ॥ महा अनन्त कहैं हैं कि, ऐसें जब सब देवतानकूं शाप दीनों तब तिन सब देवतानके बीचमें इन्द्र कुपित हैके शाप देन लग्यौ कि, हे कोपकी करनहारी ! संकर्षण वरकूं पायकेहू या जन्ममें या और जन्ममें पुत्रको उत्सव तोकूं नहीं होयगो ॥ २४ ॥

ऐसे कहिके इन्द्र ताके तेजतें धर्षित है सर्व देवतानको संग ले स्वर्गकूँ चल्योगयौ और ये ज्योतिष्मती फिर तप करनलगी ॥ २४ ॥ ताके तपकूं देखिके ब्रह्मा ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मणनकूं संग लेके सब जगतके कारणभूत अपने भवनतें हंसपै चढिके आये ॥ २५ ॥ आकाशमें ठाडे हैके बोले—हे ज्योतिष्मती ! चाक्षुषकी बेटी ! तेरो तप सफल हैगयो मैं परम प्रसन्न भयोहूं तेरी सिद्धि भई तूँ वर मांगि ॥ २६ ॥ ताकूं सुनिके कण्ठभर जलमेंते निकसिके ब्रह्माजीकूँ दंडोत करिके हाथ जोरिके यह बोली हे भगवन् ! जो मोपै प्रसन्न भयेहो तो संकर्षण भगवान् सहस्रवदन भगवान् मेरे पति होउ ऐसे सुनिके ब्रह्माजी बोले ॥ २७ ॥ हे बेटी ! तेरो मनोरथ तो बडो दुर्लभ है तोहू मैं पूर्ण करूंगो अबही वैवस्वत मन्वन्तर प्राप्त भयौ है याकी जब सत्ताईश चौकडी हैजायँगी तब संकर्षण भगवान् तोकूँ वर मिलेंगे ॥ २८ ॥ ताहि सुनिके ज्योतिष्मती ब्रह्माजीते बोली कि, हे देवदेव ! हे

अथतत्तपोदृष्ट्वाब्रह्माब्रह्मविद्भिर्ब्राह्मणैर्ब्रह्मचादिभिःसंवृतःसर्वजगत्कारणभूतःस्वभवनाद्धंसयानेनागतवान् ॥ २५ ॥ अंबरेस्थितस्तामाहहे ज्योतिष्मतिचाक्षुषात्मजेत्वत्तपःसफलंजातंतेनंसिद्धासिपरमहंप्रसन्नोस्मिवरंब्रूहीति ॥ २६ ॥ तच्छ्रुत्वाकण्ठजलाद्विनिर्गत्यब्रह्माणंप्रणिपत्यस्तु त्वाकृतांजलिरित्यब्रवीत् ॥ हेभगवन्यदिप्रसन्नोसिकिलेहसंकर्षणोभगवान्सहस्रवदनोममवरोभूयादितिश्रुत्वाह्वावविबुधर्षभःप्रत्युवाच ॥२७॥ हेपुत्रितवमनोरथोदुर्लभोस्तितथापिपूर्णंकरिष्याम्यद्यवैवस्वतमन्वंतरप्राप्तोस्त्यस्यत्रिनवचतुर्युगविकल्पितेकालेसतितत्रवरःसंकर्षणोभगवान्भ विष्यति ॥ २८ ॥ तच्छ्रुत्वाज्योतिष्मतीब्रह्माणमाहदेवदेवभगवन्महान्कालोवर्ततेमेमनोरथःशीघ्रंभूयात्त्वंसर्वकार्यंकर्तुंसमर्थोनचेत्तुभ्यं शापंदास्यामियथादेवेभ्योदत्तः ॥ २९ ॥ इतिप्रोक्तोब्रह्माशापभीतःक्षणंविचार्यपुनराहहेराजपुत्रित्वमानर्तपतेरेवतस्यकुशस्थल्यांपुत्रीभव तस्मिञ्जन्मनित्रिनवचतुर्युगविकल्पितःकालःकेनचित्कारणेनक्षणवद्भविष्यतीतितस्यैवरंदत्त्वाब्रह्मातत्रैवान्तरधीयत ॥ ३० ॥ अथसाप्यानर्ते षुकुशस्थलीपतेरेवतस्यभार्यायांजन्मलेभेतत्रज्योतिष्मतीरेवतीनामरूपौदार्यगुणमंडितानवशरत्कंजनेत्राविवाहयोग्याबभूव ॥३१॥ तांरेवतः स्नेहेनांतःपुरेसभार्यउवाचकीदृशंवरमिच्छसीतिवचःश्रुत्वासातदोवाचसर्वेषांबलवान्समेवरोभूयात् ॥ ३२ ॥

भगवन् ! या बातकूं तो बहुत दिन हैं मेरो मनोरथ तो जलदी भयौ चहिये तुम सब काम करिबेकूँ समर्थ हौ जो न करौगे तो मै आपकंभी शाप देऊंगी जैसे देवतानकूं दीनो है ॥ २९ ॥ ऐसे जब ब्रह्माते कही तब ब्रह्माजी शापके डरके मारे कुछ क्षण विचार करिके यह बोले—हे राजपुत्री ! तूं आनर्त देशके पति रैवत राजाकी द्वारिकामें पुत्री हो ताही जन्ममे काहू कारणते एकही क्षणमें सत्ताईश चौकड़ी बितीत हैजायँगी तब तेरो मनोरथ जलदीही हैजायगो, ऐसे वर देके ब्रह्माजी तहीं अन्तर्धान हैगये ॥ ३० ॥ याके अनन्तर सो ज्योतिष्मती आनर्त देशमें द्वारिकाम रैवत राजाकी स्त्रीमे जन्म लेतीभई ताको नाम रेवती भयौ रूप औदार्यता गुणनसों मंडिता भई शरदके कमलसे नेत्रसों रेवती विवाहयोग्य भई ॥ ३१ ॥ एक समय स्नेहते स्त्री सहित राजा रैवत बेटीते बोलो—हे बेटी ! तूँ कैसो वरकूँ बरैगी सो कहि यह सुनिके रेवती बोली—जो सबनमें बलवान्

होय ताहि बरंगी ॥ ३२ ॥ ऐसे रैवत राजा सुनिके भार्यासहित बेटीकूँ लेके दिव्य रथमें बैठिके बलवान् दीर्घायु वरकूँ ब्रह्माजीकूँ पूछिवेके लिये सब लोकनकूं उल्लंघन करिके ब्रह्मलोकमें गये॥ ३३॥ जो वहां एक क्षण बैठे सोई यहां चार युगकी सत्ताईस चौकड़ी व्यतीत हैगई सो वहां ब्रह्मलोकमे है तामें तूं आवेशावतारिणी लीन हैके हे रंभोरु ! द्वारिकामें मेरे संग रमि ॥ ३४ ॥ प्राड्विपाक कहे है कि, ऐसे संकर्षणको वचन सुनिके नागलक्ष्मी संकर्षण भर्तासे आज्ञा मांगिके ब्रह्मलोकमें आयके रैवतीमें अपनो आवेश करतीभई ॥ ३५ ॥ याके अनन्तर संकर्षण भगवान् भूमिको भार उतारिवेकूँ लोकनमस्कृत गोलोक धामते उतरत भये यह बलभद्र भगवान्को आयवो मैने तेरे आगे कह्यो ये सब पापनको हरनहारो और मंगलरूप है युवराज कौरवेंद्र फिर अब तूं कहा सुनिवेकी इच्छा करैहै ॥ ३६ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां बलभद्रखंडे भाषाटीकायां ज्योतिष्म

इतिश्रुत्वाराजारैवतःसभार्योपिसुतांनीत्वादिव्यंरथमारुह्यबलवंतंवरंदीर्घायुषंपरिप्रष्टुंलोकानुल्लंघ्यब्रह्मलोकंगतवान् ॥३३॥ तत्रक्षणमास्थितो भूत्तेनक्षणेनभूलोकेऽष्टैवत्रिनवचतुर्युगविकल्पितःकालोजातःसाद्यैवब्रह्मलोकेवर्ततेरंभोरुतस्यांत्वंसंलीनाभूत्वाऽऽवेशावतारिणीद्वारकांप्राप्यरमस्व ॥ ३४ ॥ ॥ प्राड्विपाकउवाच ॥ ॥ इत्थंतद्वाक्यंश्रुत्वानागलक्ष्मीःसंकर्षणंभर्तारमनुज्ञाप्यब्रह्मलोकमेत्यरेवतीविग्रहेस्वावेशंचकार ॥३५॥ अथसंकर्षणोभगवान्भूरिभूमिभारहरणार्थंलोकनमस्कृताद्गोलोकधामसकाशादवततारेदंबलभद्रस्यभगवतआगमनंमयातेकथितंसर्वदुरितापहरणंमंगलायनंयुवराजकौरवेंद्रकिंभूयःश्रोतुमिच्छसीति ॥ ३६ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीबलभद्रखंडेज्योतिष्मत्युपाख्यानेरेवत्युपाख्यानं नामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ दुर्योधनउवाच ॥ ॥ मुनींद्राहोअहंधन्योस्मिपुरासंकर्षणस्यभक्तोस्मित्वयास्मारितोभगवतोवासुदेवस्यसप्रभावम्माहात्म्यंपरमाद्भुतं श्रुतमत्रावतारौभूत्वाभूम्यांरामकृष्णौपितुःपुरात्कथंव्रजेगतवंतौव्रजवासिभिर्नज्ञातौगुप्तौकथमभूतांचतदुच्यताम् ॥ १ ॥ ॥ प्राड्विपाकउवाच ॥ ॥ अथैकदामथुरायांयदुपुर्यामुग्रसेनाग्रजोदेवकोदेवकींसुतांवसुदेवायददावथवरवध्वोःप्रयाणकालेकंसउग्रसेनात्मजस्तयोःस्यंदनंनोदयामास ॥ २ ॥ तदैवदेववाणीकंसमाहरेयांवहसेऽस्याश्चाष्टमोगर्भोहित्वांहनिष्यतीतिश्रुत्वासमहासुरः कालनेमिसुतःखड्गपाणिर्भगिनींहंतुंप्रवृत्तः ॥ ३ ॥

त्युपाख्याने रेवत्युपाख्याने चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ दुर्योधन बोल्यो कि, हे मुनींद्र ! अहो ! मैं धन्यहूं पहलो संकर्षणको भक्त हूं तुमने यादि दिवाई है, भगवान् वासुदेवको प्रभाव माहात्म्य अद्भुत मैंने सुन्यो कि, राम कृष्ण पृथ्वीमे अवतार लेके पिताके घरते ब्रजकूँ क्यों चले गये ! ब्रजवासीनने नहीं जाने और गुप्त क्यों रहे ! सो कहो ॥ १ ॥ तब प्राड्विपाक बोले कि, एक समय मथुरा पुरीमें उग्रसेनको बडो भैया देवक सो अपनी देवकी बेटीकूं वसुदेवके अर्थ देतोभयो तब विदाके वखत उग्रसेनको बेटा कंस उनको रथ हांकनलग्यो ॥ २ ॥ ताई समय आकाशवाणी कंसते बोली–अरे कंस ! जाय तू लेये जायहै ताको आठमो गर्भ तोकूँ मारेगो ऐसे सुनिके कालनेमि बेटा महाअसुर कंस खड्ग लेके बहनकूं मारिवेकूँ

ठाडो ह्वैगयो ॥ ३ ॥ तब ही समुझायके कंसकूं वसुदेव बोले-हे कंस ! तूं मति मारे याके बेटानको मैं तुमकूंही देदेऊंगो जिनते तुमकूं भय भई है ऐसे सुनिके वसुदेवके वाक्यको सार जानिके देवकी वसुदेवकूं बंदीखानेमें देके निश्चित ह्वैगयो ॥ ४ ॥ फिर देवकीके पेहलो बेटा भयो ताकूं वसुदेव कंसकूं दे आये तब सत्यवादी वसुदेवकूं जानिके कंसने बालककूं नहीं मारचो ॥ ५ ॥ तब नारदजीने समुझायो कि, अंकनकी उलटी चालि है पिछारीके गिनेते पेहलोई आठमो होयहै और सबरे देवता सब यादव तेरे मारिवेकी चाहना करे हैं ऐसे नारदके कहेते जो जो बालक भयो सोई सोई कंसने मारिडारचो ॥ ६ ॥ अब कंसके भयते यादवनको बडो कष्ट भयो सो भाजिगये अब देवकीके सातमे गर्भमें भगवान् संकर्षण आये ताकूं वा तेज श्रीभगवान्की आज्ञाते योगमायाने देवकीके गर्भमेंते खैंचिके रोहिणीके गर्भमें धरिदीने जो कंसके भयते नन्दके गोकलमें

तदैववसुदेवस्तंबोधयित्वाप्राहेनंमामारयअस्याःपुत्रान्समर्पयिष्येयतस्तेभयंजातंममापि ॥ इतिश्रुत्वातद्वाक्यसारवित्कंसस्तौकारागारेकारयित्वानिश्चितोप्यभवत् ॥ ४ ॥ अथदेवक्याःप्रथमंजातंपुत्रंकंसायवसुदेवःप्रददौतंसत्यवादिनंज्ञात्वाकंसोर्भकंनजघान ॥ ५ ॥ अंकानांवामतोगतिस्तथादेवानांतस्मादयंवाशत्रुःसर्वेयादवादेवाः संतितद्वधमिच्छंतीतिनारदवाक्यात्पुनर्जातंजातमपिनिर्जघान ॥६॥ अथकंसभयात्पलायितानांयदूनांमहान्कष्टोबभूवअथसप्तमोगर्भोदेवक्याभगवाननंतोह्यभवत्तत्तेजःश्रीकृष्णाज्ञयायोगमायादेवक्युदरात्संनिकृष्यवसुदेवस्यभार्यायांकंसभयाद्गोकुलस्थितायांरोहिण्यामर्पयितुमाजगाम ॥ ७ ॥ तत्रैतेश्लोकाः ॥ देवक्याःसप्तमेगर्भेहर्षशोकविवर्द्धने ॥ व्रजंप्रणीतेरोहिण्यामनंतेयोगमायया ॥ अहोगर्भःक्वविगतइत्यूचुर्माथुराजनाः ॥ ८ ॥ अथव्रजेपंचदिनेषुभाद्रेस्वातौचषष्ठ्यांचसितेबुधेच ॥ उच्चैर्ग्रहैःपंचभिरावृतेचलग्नेतुलाख्येदिनमध्यदेशे ॥९॥ सुरेषुवर्षत्सुचपुष्पवर्षंघनेषुमुंचत्सुचवारिबिंदून् ॥ बभूवदेवोवसुदेवपत्न्यांविभासयन्नंदगृहंस्वभासा ॥१०॥ नंदोपिकुर्वन्शिशुजातकर्मददौद्विजेभ्योनियुतंगवांच ॥ गोपान्समाहूयसुगायकानांरावैर्महामंगलमाततान ॥ ११ ॥ अथाष्टमोदेवक्याःपरिपूर्णतमोभगवाञ्छ्रीकृष्णचन्द्रोवततार ॥ तदैवतदाज्ञयानिशीथेतंप्रस्वेनिधायनंदपत्न्यांजातायांयोगनिद्रायांसंसुतेजगतिसतियमुनामुत्तीर्यमहावनमेत्ययशोदाशयनेसुतंनिधायतांसुतामादायपुनर्वसुदेवोगृहानायथौ ॥ १२ ॥

रहतीही ॥ ७ ॥ तहां ये श्लोक हैं कि, देवकीको सातमौ गर्भ हर्ष शोक बढायवेवारो भयो सो योगमायाने रोहिणीमें प्रवेश करिदीनो तब मथुरावासी सब जन यह कहनलगे अहो ! गर्भ कहां गयो? ॥ ८ ॥ याके पीछे भादोंके पांच दिन गये पीछे भादों सुदी ६ षष्ठीके दिन बुधवारकूं तुला लग्नमें दुपहरकूं जामें उच्चके पांच ग्रह परेहें ता लग्नमें ॥ ९ ॥ देवतानके पुष्पनकी वर्षा करते सते मेघनकी फुहार परनलगी तब अपने तेजते नन्दभवनमें उजीतौ करते वसुदेवकी पत्नी रोहिणीमें प्रगट होतेभये ॥ १० ॥ नन्दजीने बालकको जातकर्म करचो, ब्राह्मणकूं लाख गौ दीनी गोपनकूं बुलाय गवैयानकूं बुलाय बडो उत्सव मंगल करचौ ॥ ११ ॥ अब आठमो गर्भ परिपूर्णतम भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अवतार होतेभये तब उन्हीं भगवान्की आज्ञाते आधीरातके समय जब नंदकी पत्नी यशोदाके योगमाया जन्म लेचुकी और जगत् सब सोयगयो तब वसुदेव श्रीकृष्णकूं लेके यमुनाके

पार उतरके महावनमें जायके कृष्णकूं यशोदाकी सेजपै स्वायके माया कन्याकूं लैके वसुदेव फिर अपने घरकों चले आये ॥ १२ ॥ फिर बंदीखानेमें बालककी अवाज सुनिके आयके कंस शत्रुके भयसों हालकी भई कन्याकूं शिलापै मारनलग्यो ॥ १३ ॥ सो माया तबही कंसके हाथमेंते छूटि वो योगमाया है्के आकाशमें जाय ठाडीभई, तहां सिद्ध, चारण, विद्याधर, मुनि जाकी स्तुति करैं सो देवी कंसते पे बोली हे दुष्ट ! तेरौ पहलौ वैरी तो जहां कहूं जन्म लैचुक्यौ तू वृथा दीन देवकी वसुदेवकूं क्यों मारैहै ? ऐसे कहिके वो विन्ध्याचलकूं चलीगई ॥ १४ ॥ ऐसे सुनिकें कंस बडो विस्मित है देवकी वसुदेवकूं छुडाय पूतनादिक दैत्यनकूं बुलाय यह बोल्यौ कि, दश दिनते न्यून वा सिवाय दिनके बालकनकूं मारो तब वे मारनलगे ॥ १५ ॥ अब नंदजी पुत्रोत्सवकूं सुनिकें बडो उत्सव करतेभये ऐसे कंसके भयके बहानेते कृष्ण राम दोनों व्रजमें गये अपनी मायाते राम कृष्ण अलक्षित

अथकारागारेबालध्वनिंश्रुत्वाशत्रुभीतःकंसःसमागत्यजातमात्रांकन्यांगृहीत्वाशिलापृष्ठेपातयामास॥१३॥तदैवतद्धस्तात्समुत्पत्यांबरेयोगनिद्राभूत्वासिद्धचारणगंधर्वविद्याधरमुनिगणैःस्तूयमानाकंसमिदमाह हेखलतवपूर्वशत्रुर्यत्रक्वाजातोवृथादेवकीवसुदेवौदीनौदुनोषिइत्युक्त्वासाविंध्याचलंजगाम ॥ १४ ॥ इत्युक्तोविस्मितःकंसोदेवकीवसुदेवंचविमुच्यपूतनादीन्दैत्यान्समाहूयचानिर्दशान्निर्दशान्बालान्हंतुमाज्ञांचकारतेपि तथाचक्रुः ॥ १५ ॥ अथनंदोपिपुत्रोत्सवंश्रुत्वामहोत्सवंचकार ॥ एवंकंसभयमिषेणव्रजंप्राप्तौरामकृष्णौस्वमाययालक्षितौव्रजवासिनांकृपांकर्तुंजातमात्रावद्भुतांबाललीलांचक्रतुःकौरवेंद्रभूयःश्रोतुमिच्छसिकिम् ॥ १६ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांबलभद्रखंडेश्रीकृष्णजन्मोत्सवोनाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ दुर्योधनउवाच ॥ ॥ मुनींद्ररामोऽनन्तोऽनंतलीलःश्रीकृष्णोपिचभूम्यांभूत्वाराजतस्यसंक्षेपेणचरित्रंवदव्रजेकिंमथुरायांकिंद्वारकायांकिमत्रकिमन्यत्रकिंचकार ॥१॥ प्राड्विपाकउवाच ॥ अथएवावश्रीकृष्णोजातमात्रोऽद्भुतांलीलांपूतनामोक्षशकटासुरतृणावर्तवधयुतांविश्वरूपदर्शनदधिचौर्य्यब्रह्मांडदर्शनयमलार्जुनद्रुमखंडभंगादिसंयुक्तांदुर्वाससोमायादर्शनवैभवां श्रीमद्गर्गाचार्यवर्णितराधाकृष्णनामौदार्य्यमाहात्म्ययुक्तांसुरज्येष्ठकारितवृषभानुवरनंदिनीविवाहरासमंडलकथामंडितांचकार ॥ २ ॥ ततःश्रीवृंदावनागमनेसतिवत्सासुरबकासुराद्यसुराणांवधंकृत्वागोपालैःसहगोचारणैर्वृंदावनादिवनेषुविचचार ॥ ३ ॥

रहे व्रजवासीनके ऊपर कृपा करिवेकूं अद्भुत बाललीला करतेभये अब हे कौरवेंद्र ! फिर तूँ कहा सुनिवेकी इच्छा करैहै ॥ १६ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां बलभद्रखण्डे भाषाटीकायां कृष्णजन्मोत्सवंनाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ फिर दुर्योधन बोलो–हे मुनीन्द्र ! अनन्त लीलावारे राम और कृष्ण अनन्त लीला जिनकी ते भूमिमें विराजे तिनके चरित्र संक्षेपते कहो व्रजमें कहा लीला करी मथुरामें कहा लीला करी और द्वारकामें कहा लीला करी और जगह कहा लीला करी? ॥ १ ॥ तब प्राड्विपाक बोले–श्रीकृष्णने जन्म लैतेही ते अद्भुत लीला करी पूतनाकी मोक्ष, शकटासुर, तृणावर्त इनकौ वध, मैयाकूं विश्वरूपदर्शन, दधिकी चोरी, ब्रह्मांडदर्शन, यमलार्जुनकौ उखारिवौ, दुर्वासाकूँ माया दिखायबौ, गर्गाचार्यवर्णित राधाकृष्णके नामके माहात्म्य और ब्रह्माजीने करायो राधाकृष्णकौ विवाह और फिर रासमंडल इतनी लीला करतेभये ॥ २ ॥ ताके अनन्तर जब

वृन्दावनमें आये तब वत्सासुर बकासुरादि असुरनको वध करिके गोपालन करिके सहित गऊ चरायबेकी लीलामें वृन्दावनादि वननमें विचरतेभये ॥ ३ ॥ फिर तालवनमें दुलत्ती फेंकै और गधाकी तरह रेंकै ताकूं भुजानते पकरिके बलदेवजीने ताल वृक्षपै मारिके फिर आयौ देखि पृथ्वीमें मारो तब मूर्च्छित ह्वैगयौ मूँड़ फूटिगयौ तौहू फिर एक घूंसा मारौ तब मरिके जायपर्यौ ॥ ४ ॥ फिर श्रीकृष्णने कालीकौ दमन कीनों, दौंकी अग्निकौ पान कर्यो, राधाकी प्रेमपरीक्षा, वृन्दावनविहार, दानलीला, मानलीला हाव-भावयुक्त शंखचूड वध, शिवासुर उपाख्यान, लहिवेलायक लीला करतेभये ॥ ५ ॥ फिर गिरिराजपूजन भयेपै इन्द्रके यज्ञको भंग ह्वैगयो तब इन्द्र मेघमण्डल करिके व्रजमण्डलमें वर्षा करतभयौ तब भयातुर व्रजकूं देखि अभयदान देके गोवर्धनकूं उखारि बालक जैसे छतोनाकूं उठायले तैसे धारण करतेभये, सात वर्षके जो कृष्ण सो सात दिनताईं

अथतालवनेधेनुकासुरंखरस्वनंस्वपद्भ्यांताडयंतंभुजदंडाभ्यांगृहीत्वामहाबलोबलदेवस्तालवृक्षेतंपातयित्वापुनरापततंतंभूपृष्ठेपोथयामाससमू च्छितोभग्नमस्तकःसद्यस्तन्मुष्टिप्रहारेणनिधनंजगाम ॥४॥ अथश्रीकृष्णःकालियदमनदावाग्निपानादीनिचरित्राणिकृत्वाश्रीराधाप्रेमप्रकाश प्रीतिपरीक्षणवृंदावनविहारदानमानलीलाहावभावयुक्तांशंखचूडवधादिशिवासुरोपाख्यानकथांकथनीयांलीलांचकार॥५॥अथैकदागिरिराज पूजनेकृतेभग्नबलिरिंद्रः सांवर्तमेघमंडलैर्व्रजमंडलेववर्षतदाभगवान्भयातुरंव्रजंवीक्ष्यमाभैष्टेत्यभयंदत्त्वाएककरेणगिरिराजंसमुत्पाट्योच्छिलींध्रं बालइवदधारद्वावसप्तवर्षोयःसप्ताहंसुस्थिरंस्थितः॥६॥अथद्रःसर्वदेवगणैर्भयभीतःश्रीकृष्णचन्द्रश्रीमत्पादारविंदद्वयंप्रणम्यकिरीटेननतःस्तुत्वा तदभिषेकंकृत्वामहेंद्रात्सुरभिसुरमुनिभिःसार्द्धंस्वर्गंजगाम ॥७॥ तदद्भुतंगोवर्द्धनोद्धारणंदृष्ट्वागोपाविसिष्मुस्तेऽभ्यमुक्तारोपणादिवैभवंसंदर्श यामासुः ॥८॥ अथश्रुतिरूपार्षिरूपामैथिलाकौशलाऽयोध्यापुरवासिनीयज्ञसीतापुलिंदकारमावैकुण्ठश्वेतद्वीपोर्ध्ववैकुण्ठाजितपदश्रीलोकाच लवासिनीसखीदिव्यादिव्यात्रिगुणवृत्तिभूमिगोपीजनदेवश्रीजालंधरीबर्हिष्मतीपुरंध्र्यप्सरासुतलवासिनीनागेंद्रकन्यादिभिर्गोपीयूथैःपृथक्पृथ क्छ्रीकृष्णोव्रजमण्डलेरासमण्डलंचकार ॥९॥ एकदागाश्चारयन्सबलःश्रीकृष्णोगोपालबालैर्भांडीरेबाललीलांवाह्यवाहकलक्षणांकृतवांस्तत्र प्रलंबोगोपरूपीदैत्योविहारेविहारविजयंरामंस्वपृष्ठेनिधायोवाह ॥ १० ॥

स्थिर ठाढ़े रहे ॥ ६ ॥ फिर इंद्र देवगण सहित भयभीत ह्वैके श्रीकृष्णके श्रीमत्पादारविंदद्वयमें दंडौत करिके स्तुति करिके, गोविंदाभिषेक करिके सुरभी सहित सुर मुनि सहित स्वर्गकूं जातेभयो ॥ ७ ॥ वह अद्भुत गोवर्द्धनको धारण देखि अचंभौ करनलगे तब वे मुक्ता बोयबेकी लीला करके दिखावतेभये ॥ ८ ॥ याके अनंतर श्रुतिरूपा, मुनिरूपा, मैथिला, कौशला, अयोध्यावासिनी, यज्ञसीता, पुलिंदका, रमावैकुंठवासिनी, श्वेतद्वीपवासिनी, ऊर्ध्ववैकुंठवासिनी, अजितपदवासिनी, श्रीलोकाचल वासिनी सखी, दिव्या, अदिव्या, त्रिगुणवृत्ति, भूमिगोपीजन, देवश्री, जालंधरी, बर्हिष्मती, पुरंध्री, अप्सरा, सुतलवासिनी और नागेंद्रकन्या इन सब गोपीयूथनके संग व्रजमंडलमें रासमंडल करतेभये ॥ ९ ॥ एकदिन गौनकूं चरावत बलदेवजीके संग बालकनकूं लेके भांडीरवनमें चढ़ी चढ़ाकी लीला करतेभये तहां प्रलंबासुर गोपरूपी दैत्य विहारमें जीते

जो श्रीराम तिनकूं पीठिपै चढायके लेजातोभयो ॥ १० ॥ मथुराकूं लेजायवेकूं उद्यत भयो वाके पहाडसे रूपकूं देखि पीठिपै चढे पर्वतमें इंद्र जैसे तैसे बलदेवने एक घूँसा माथेमें मारचो ताते माथो फटिगयो मरिके भूमिमें जायपरचो इंद्रके वज्रको मारचो पर्वत जैसे तैसे जायपरचो ॥ ११ ॥ एकसमय गरमीकी ऋतुमें मूँजके वनमें गौ गोपाल सब चलेगये तहां दौंकी अग्नि चारों ओरते बढी तब गोप पुकारें—हे कृष्ण ! हे राम ! त्राहि २ ऐसे शरण आये तिनै देखिके सबनकी आंखि मिचवाय अभय देके सब अग्निकूं पीगये ॥ १२ ॥ फिर भांडीरवनते यमुनाके तीर गौ, गोपनकूं लायके तहां फिर अशोकवनमें यज्ञपत्नी लाई वा भोजनकूं करतेभये ॥ १३ ॥ फिर एक समें ब्रजमें नंदराजकूं वरुणके गण लेगये तब नंदजीकूं वरुणलोकते लाये वरुणको मान भंग करिके फिर गोपनकूं सर्वलोकनमस्कृत वैकुंठलोक दिखायो ॥ १४ ॥ फिर अंबिकावनमें सरस्वतीके

अथहत्वावमथुरांगंतुमुद्यतंगिरींद्रस्यसदृशदेहंतमुद्वीक्ष्यपृष्ठगतोबलदेवोमहाबलोरुपामुष्टिनाशिरसिमहाद्रिंयथाद्रिभित्ताडतेनसद्योविशीर्णम स्तकोवज्रहतोगिरिरिवसदैत्योभूम्यांनिपपात ॥ ११ ॥ एकदाग्रीष्मेमुञ्जारण्यगतासुगोषुगोपालेषुचसत्सुसद्यःसंभूतोदावाग्निःप्रलयाग्निरिव बभूवेततःकृष्णरामेतिवदतःपाहिपाहीतिगोपालाञ्शरणंगतान्वीक्ष्यलोचनानिनिमीलयततामाभैष्टेत्युक्त्वातमग्निमपिबत् ॥ १२ ॥ अथहत्वा वभांडीरावयमुनातीरेगोपालगोगणंनीत्वाप्राप्तोऽभूत्तत्राशोकवनेयज्ञपत्न्यानीतंभोजनंकृतवान् ॥ १३ ॥ अथचैकदाब्रजेनन्दराजेवरुणग्रस्तेवरु णस्यमानभंगंकृत्वानन्दादिभ्योपिसर्वलोकनमस्कृतंवैकुण्ठंदर्शयामास ॥ १४ ॥ अथांबिकावनेश्रीकृष्णःसरस्वतीतीरेनन्दंग्रसन्तंसुदर्शनंसर्प्प किलाखिललोकपालवंदितेनश्रीमच्चरणारविन्देनस्पृष्ट्वासर्प्पदेहात्तंमोचयामास ॥ १५ ॥ अथसबलःश्रीकृष्णोनिलायनक्रीडायांचोरपालक लक्षणायांचोररूपंव्योमासुरं कंससखंभुजदण्डाभ्यांगृहीत्वादशदिशासुभ्रामयन्भूपृष्टेपोथयामास ॥ १६ ॥ तथारिष्टासुरंकंसप्रणोदितंवृषरूपं शृंगयोःसमुद्धृत्यपातयामासअथनारदमुखाच्छ्रुतश्रीकृष्णकथेनकंसेनप्रणोदितंकेशिनंश्रीकृष्णस्तन्मुखस्वभुजप्रवेशेनसंममर्देत्थमनेकालीलाः सहसाव्रजमंडलेबलेनकारयामास ॥ १७ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीबलभद्रखंडेप्राड्विपाकदुर्योधनसंवादेरामकृष्णव्रजलीलावर्णनंनामषष्ठो ऽध्यायः ॥६॥ ॥ प्राड्विपाकउवाच ॥ ॥ अथमथुरायांरामकृष्णौयानिचरित्राणिकृतवंतौतानिसंक्षेपेणयुवराजशृणुतात् ॥ अथकालनेमिसुते नकंसेनप्रयुक्तोऽक्रूरोरामकृष्णौसमानेतुंब्रजमंडलमागतवान् ॥ १ ॥

किनारेपै नंदकूं ग्रसे जाय जो सुदर्शन नाम सर्प सो लोकवंदित श्रीकृष्णके चरणको स्पर्श करिके सर्पदेहते छूटिगयो ॥ १५ ॥ फिर बलदेवसहित श्रीकृष्ण चोरपालक लक्षण वारे आंखिमिचौनीके खेलमें चोररूप कंससखा व्योमासुरकूं भुजानते पकरिके दशों दिशानमें भ्रमायके भूमिमें मारतेभये ॥ १६ ॥ तैसेई अरिष्टासुर कंसको भेज्यो वृषरूप आयो ताके सींग पकरिकें मारतेभये फिर नारदके मुखते श्रीकृष्णकी कथा सुनिके कंसने भेज्यो जो केशी ताके मुखमें भुजा प्रवेश करी मारतेभये ऐसें अनेक लीला व्रजमंडलमें बलदेवके संग करतेभये ॥ १७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां बलभद्रखंडे भाषाटीकायां रामकृष्णलीलावर्णनं नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ प्राड्विपाक कहैहैं—याके अनन्तर मथुरामें राम

कृष्ण जो चरित्र करतेभये तिन्हें संक्षेपते हे युवराज ! तूं सुनि कालनेमिके बेटा कंसने जब अक्रूर भेज्यौ तब राम कृष्णकूँ लैवेकूं व्रजमण्डलमें आयो ॥ १ ॥ तहां चलिवेकूँ उद्यतभये जे नन्दनन्दन तिनकूं देखिके गोप गोपीनके गण विरहातुर ह्वैगये न्यारे न्यारे सबनकूं समुझायके बलदेवसहित भगवान् अक्रूरके संग मधुपुरीकूँ गमन करते रस्तामें यमुनाजलके विषे अक्रूरको अपनो धाम दिखायो ॥ २ ॥ तब पूर्वाह्नके विषे मथुराके बागमें टिकिके अपराह्नके विषे मथुरा पुरीको सब बगलते देखतेभये पीछे रामकृष्ण देव पुराणपुरुष लीला करिके नटवरको वेष धरे तिनकूं देखिवेके लिये पुरकी स्त्री पुरुष अपने २ कामनकूं छोडिके दौडे नदी जैसे समुद्रको दौडैहै, उन्हें किरोड़ कामसे सुन्दर अपने रूपकूं दिखावते उनके चित्तको हरते विचरतेभये ॥३॥ पीछे भगवान् राजमार्गमें रंगरेज जो धोबी तापै वस्त्र माँगे तब वाने न दीयें तब सबनके देखते २ कराग्रते वाकूं मारतेभये

तत्रगंतुमभ्युदितंनंदराजसूनुंवीक्ष्यगोपीगणाविरहातुराबभूवुःपृथक्पृथक्तानाश्वास्यभगवान्रथमारुह्यसबलोऽक्रूरेणयदुपुरींगच्छन्मार्गेयमुनाजलेषुश्वाफल्कायस्वधामदर्शयामास॥२॥ अथपूर्वाह्णेमथुरोपवनेस्थित्वाऽपराह्णेमथुरापुरींसर्वतोददर्श॥अथरामकृष्णौदेवौपुराणौपुरुषौलीलयानटवरवेषधरौदिदृक्षवःपौराश्चपुरंध्र्यःकर्माणित्यक्त्वाभ्यधावन्नापगाउदधिमिवतौकोटिकंदर्पहरंसौंदर्यस्वंसंदर्शयंतौचेतोहरंतौविचेरतुःस्म ॥३॥ अथभगवान्राजमार्गेतद्याचितवस्त्राण्यदास्यंतंरजकंरंगकारंकराग्रेणसर्वेषांपश्यतांनिर्जघानतथावस्त्रलेपंकुर्वतेवायकायस्वसारूप्यंप्रादात्॥ ४ ॥ ततःसैरंध्रींकुब्जांत्रिवक्रांचंदनादानमिषेणर्ज्वींत्रिलोकसुंदरींकृत्वाततोवैश्यजनान्समाभाष्यमथुरार्भकैःसहितोधनुःस्थलेविवेश ॥ अथहेमचित्रंसप्ततालकंसहस्रशःपुरुषैर्नेतुमशक्यंवृहद्वारंचाष्टधातुमयंलक्षभारसमंयज्ञमंडपधृतंकंसायभार्गवेणदत्तंसाक्षाच्छेषमिवकुंडलीभूतंकोदंडंवैष्णवंवीक्ष्यप्रसह्याददे ॥ ५ ॥ तदैवपश्यतांलोकानांसज्यंकृत्वालीलयाकृष्यकर्णपर्यंतंदोर्दंडाभ्यांयथेक्षुदंडंवेतंडःशुंडादंडेनकोदंडमध्यतोबभंज ॥ ६ ॥ भज्यमानधनुषष्टंकारेणसप्तलोकबिलैःसहसर्वब्रह्मांडंननादततस्ताराश्चदिग्गजाश्चविचेलुःसर्वभूखंडमण्डलंस्थालीवघटिकाद्वयमात्रंप्रचकंपे ॥ ७ ॥ अथापराह्णेरंगभूमिद्वारिद्विपंकुवलयापीडंसमेत्यक्षणंबाललीलयायुद्धंकृत्वाशुंडादंडेसंगृहीत्वात्वितस्ततोभ्रामयित्वाबालकःकमंडलुमिवभूपृष्ठेतंपातयामास ॥ ८ ॥

फिर वस्त्रनके शृङ्गारको बनामनहारो दर्जी ताकूं अपनो सारूप्य देतेभये ॥ ४ ॥ ताके पीछे सैरंध्री कुब्जा त्रिवक्रा ताकूं चंदनदानके मिष करके सूधी त्रिलोकसुन्दरी करके वैश्य जननते बतराय मथुराके बालकनके संग धनुस्थलमें गये तहां सुवर्णते चित्र्यौ सात तालको हजार पुरुषनपैहू न उठ्यौ अष्टधातुको लाखमनभारको यज्ञमंडपमें धरो जो कंसकूं परशुरामने दीनों शेषकी कुण्डलीसो विष्णुको धनुष ताय देखके जबरदस्तीसो उठाय लेतेभये ॥ ५ ॥ तबही सब लोकनके देखते प्रत्यंचा चढायके कानतक खैंचके बीचते तोरिडारते भये जैसे गाढेको सूँडते हाथी तोरडारे ॥ ६ ॥ जब धनुष टूट्यौ तब सातों लोक सातों पातालनसहित ब्रह्माण्ड झंकारयो सबरे ता समय तारागण और दिग्गज चलायमान भये और पृथ्वीमंडलहू द्वै घडी तलक स्थालीकी तरह कांप्योकरयो ॥ ७ ॥ याके अनंतर अपराह्नके समय रंगभूमिके दरवज्जेपे कुवलयापीड हाथीते

बाललीलाकी युद्ध करिके शूंड पकरिके इत उतमें भ्रमायके भूमिमें देमारतेभये जैसे बालक कमंडलुकूं ॥ ८ ॥ ता हाथीकूं ऐसे मारिके रंगभूमिमें कंसकी सभामें जनसमू-
हको यथाभाव रुच्यनुसार दर्शन देके मल्लयुद्ध करिके चाणूर, मुष्टिक, कूट, शल, तोशल इन सबनकूं सबके देखते २ कंसके अगारी धरणीमें मारके पटकतेभये ॥ ९ ॥ तब
कंस इनकी कर्म देखिके दुर्वचन बकिरह्यो ता कंसके बडे उच्च मंचानपै उछरके मधुसूदन चढतेभये ॥ १० ॥ ताके अनंतर जल्दीसों मृत्युही मानों आई यह जानिके कंस
मांचेपै उठि उसे ललकारतो शीघ्रही ढाल, तरवार लेतोभयो हरि सहजमेंई ढाल, तरवारसहित कंसको विषधारी सर्पकूं गरुड जैसे तैसें पकरिलेतेभये ॥ ११ ॥ जैसे गरु-
डकी चोंचते सर्प निकसजाय तैसेही कंस कृष्णकी भुजानमेंते निकस ढाल, तरवार लैके ठाडो होतभयो तब तखतपै युद्ध करते दोनो ऐसे शोभित भये जैसे पर्वतपै दो

तमित्थंनिहत्यरंगभूमौकंससभायांजनतायायथाभावंदर्शनंदत्त्वामल्लयुद्धंकृत्वाचाणूरमुष्टिककूटशलतोशलकान्कंसस्याग्रेसर्वेषांपश्यतांभूपृष्ठेरा
मकृष्णौपातयामासतुः ॥ ९ ॥ अथतत्कर्मवीक्ष्यदुर्वचनानिविकत्थमानस्यकंसस्यमधुसूदनःसहसोत्पत्यमंचंमहोन्नतंसमारुरोह ॥
॥ १० ॥ ततःसत्वरंमृत्युमिवागतंवीक्ष्यमंचादुत्थायतंनिर्भर्त्सयन्नुन्मनाद्रुतंकंसःखड्गचर्मणीजगृहेहरिःसहसाचर्मासिसंयुक्तंकंसंसविषंफणी-
द्रमिवतुंडविभागाभ्यांविराडिवदोर्दंडाभ्यांबलात्समग्रहीत् ॥ ११ ॥ यथातार्क्ष्यतुंडात्फणीवकंसोभुजबंधाद्बलाद्विनिर्गत्यपतत्खड्गचर्मापु-
नरुद्यतोभूत्पुनर्मंचेबलिनौवेगान्मर्दयंतौशैलेसिंहाविवशुशुभाते ॥ १२ ॥ ततोबलादुत्पतंतंकंसंशतहस्तमंबरेकृष्णउत्पतञ्श्येनंश्येनइवतं
समग्रहीत्पुनर्गच्छंतंदैत्यपुंगवंप्रचण्डभुजदंडाभ्यांगृहीत्वात्रैलोक्याधारइतस्ततोभ्रामयित्वामहांबरान्मंचोपरिपातयामास ॥ १३ ॥ ततस्तडि-
त्पाताद्द्रुमखंडइवभग्नदंडोमंचोबभूवसवज्रांगःपतितोपिकिंचिद्व्याकुलःसहसोत्थायमहात्मनापुनर्युयुधेपुनस्तंभुजदंडाभ्यांभगवान्गृहीत्वामंचेक्षि-
प्त्वाहृदयमारुह्यतन्मौलिंगृहीत्वासद्यःकेशेषुप्रगृह्यमंचाद्रंगोपरिपातयित्वाशैलाद्गंडशिलामिवतस्योपरिस्थात्सनातनःसर्वाधारोनंतोनंतविक्रमोवे-
गात्स्वयंनिपपाततयोर्निपातेननिम्नीभूतंभूखंडमंडलंस्थालीवद्दंडत्रयंसहसाचकंपे ॥१४॥ अथसंपरेतंभोजराजंयदुराजोभूमिगतंनागेन्द्रंमृगेंद्र
इवसर्वेषांपश्यतांविचकर्षतदैवभूभुजांहाहाकारआसीदहोवैरभावेनयंभजन्कंसोपितस्यसारूप्यंभृंगिणःकीटकइवजगाम ॥ १५ ॥

सिंह लडते होंय ॥ १२ ॥ तब बलसों उछरतो जो कंस सो १०० हाथ ऊंचौ उछरो ताकूं सिकराकूं सिकरा जैसे तैसेही कृष्ण पकरलेतेभये, फिर निकसतो जो दैत्यपुंगव
ताकूं मचंड अपने भुजदंडनते पकर त्रैलोक्याधार श्रीकृष्ण इत उत भ्रमायके आकाशते मंचानपै मारतेभये ॥ १३ ॥ फिर बीजुरीके पातसों वृक्षखंडकी तरह आहट करि
मांचो भग्नदंडहै टूटिगयो पन वो वज्रांग कंस जायहू परचो पर, फिर किंचित् व्याकुल भयो उठिके श्रीकृष्णते फिर युद्ध करनलग्यो फिर भगवान् भुजानते पकरिके मंचानपै पटकिके
छातीपै चढिके वाको मुकुट उतारिके चूटिआ पकरके मंचानते रंगभूमिमें पटकिके पर्वतते टौरनकूं जैसे तैसे विश्वके आधार अनंत पराक्रमी अनंत भगवान् वेगते आपुहू वाके
ऊपर जायपरे तिन दोनोंनके परिवेते पृथ्वी नविगई तीन घडीतलक भूमंडल थालीकी नाई कांप्यो करयो ॥१४॥ जब कंस मरिगयो तब मरे हाथीको सिंह जैसे तैसे वाको सबनके

देखत २ खचेरतेभये–तवही राजानके हाहाकार मच्यो अहो! वैरभावते कृष्णके भजतो जो कंस सो श्रीकृष्णकी सारूप्यताकूं प्राप्त होतोभयो भृंगीके भयते कीड़ा जैसे तद्रूप होयहै ॥ १५ ॥ ताके पीछे कंसकूं मरयो देखिके ताके छोटे भैया आठ ढाल तरवार लेके आये तिनकूं बलभद्रजी मुद्गरते मारतेभये तवही देवतानके नगाड़े बजनलगे, जयजयको ध्वनि भई देवता पुष्पनकी वर्षा करनलगे विद्याधरी नाचनलगीं, विद्याधर किंनर गंधर्व गामनलगे ॥ १६ ॥ फिर श्रीकृष्ण सबनकूं समुझाय माता पिताकूं छुडाय उग्रसेनकूं राज्य देके जनेऊ कराय संदीपनते विद्या पढ़िके तिनकूं मरयो बेटा दक्षिणामें देके शंखासुरकूं मारि मथुरामें आयके बसते व्रजवासीनकी शांतिके लिये उद्धवकूं भेजि फिर आप व्रजमें जाय राधिकाकूं और गोपीनकूं दर्शन देके रासमें भूमोक्षको करके फिर मथुरामें मथुरेश राजतभये रामहू कोलासुरकूं मारि मथुरामें आयगये तिन रामकृष्णने मथुरामें अनेकन पवित्र

ततःकंसंमृतंसहसावीक्ष्यसमागतांस्तस्यानुजान्खड्गचर्मधरान्दृष्ट्वाबलभद्रोमुद्गरंनीत्वासर्वतोभिजघानतदादेवदुंदुभयोनेदुर्जयध्वनिश्चाभूद्देवाः पुष्पैर्ववृषुर्विद्याधर्योननृतुर्विद्याधरगंधर्वकिन्नराजगुः ॥ १६ ॥ अथसर्वानाश्वास्यपितरौविमोक्ष्योग्रसेनायराज्यंदत्त्वोपवीतंप्राप्यसंदीपनाद्विद्या अधीत्यतस्मैमृतंसुतंदक्षिणांदत्त्वाशंखंहत्वामथुरामेत्यवसन्व्रजशांत्यैचोद्धवंप्रेषयित्वापुनःस्वयंव्रजंगत्वाराधायैगोपीभ्योदर्शनंदत्त्वारासमध्येभूमोक्षंकृत्वापुनर्मथुरायांमाथुरेशोरराजरामोपिकोलवधंकृत्वातस्यांविरराजेतितयोर्मथुरायांसहस्रशः पवित्राणिविचित्राणिचरित्राणिवभूवुः ॥ १७ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीवलभद्रखंडेमथुरालीलावर्णनंनामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ प्राड्विपाकउवाच ॥ ॥ अथयुवराजधार्तराष्ट्रतयोर्द्वारकालीलांसंक्षेपेणशृणुतात् ॥ ततःकंसस्यपारोक्ष्यंसौहृदंकुर्वंतंसमागतंजरासंधंजित्वाद्वारकाख्यंसमुद्रेदुर्गंनिर्मायतत्रैकरात्रेणज्ञातीन्समाधायमुचुकुंददृशाकालंघातयित्वापुनश्चरामकृष्णौप्रवर्षणाद्रिमेत्यतस्माद्वारकायांजग्मतुः ॥ १ ॥ अथब्रह्मलोकात्समागतोसुतांरत्नयुतांविधिवद्बलशालिनेबलभद्रायदत्त्वातपःकर्तुंबदर्याख्यंगतवान् ॥ २ ॥ अथश्रीकृष्णःशत्रूणांपश्यतांकुंडिनपुराद्रुक्मिणींजहारतथाजांबवतींसत्यभामांकालिंदींमित्रविंदांनाग्निजितींभद्रांलक्ष्मणांचभौमंहत्वाषोडशसहस्रंशतंचराजकन्याउवाह ॥ ३ ॥

चरित्र कीने ॥ १७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां बलभद्रखण्डे भाषाटीकायां मथुरालीलावर्णनं नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ प्राड्विपाक बोले कि, अनंतर हे युवराज धृतराष्ट्रके बेटा! अब तिनकी द्वारिकाकी लीलाको संक्षेपते तूं सुनि फेर कंसके मरे पीछेको सुहृदता करतोआयो जो जरासंध ताकूं जीतिके समुद्रमें द्वारकापुरी किलो रचिके तामें एक रात्रिमेंही जातिवेनकूं बैठारके मुचुकुंदकी दृष्टिते कालयवनकूं मरवायके फिर प्रवर्षण पर्वतमें आयके फिर द्वारकाकूं आवतेभये ॥ १ ॥ याके पीछे जब ब्रह्मलोकते रैवत राजा आयो तब विधिपूर्वक रत्नसहित रेवती कन्याकूं बली जे बलभद्र तिनकूं देके तप करिवेकूं बदरिकाश्रमकूं चलोगयो ॥ २ ॥ याके पीछे श्रीकृष्ण सब वैरीनके देखते देखते कुंडिनपुरते रुक्मिणी हरिलाये तैसेई जांबवती, सत्यभामा, कालिंदी, मित्रविंदा, नाग्निजिती, भद्रा, लक्ष्मणा इनकूं व्याहतेभये फिर भौमासुरकूं मारिके सोलह हजार एकसौ राज

कन्यानकूं व्याहतेभये ॥ ३ ॥ हे राजन् । भीष्मककी कन्या रुक्मिणी तामें श्रीकृष्णको पेहलो बेटा कामदेवको अवतार प्रद्युम्न पिताके समान सुंदर होतोभयो ताके अनिरुद्ध बेटा होतभयो जो ब्रह्माको अवतार है ॥ ४ ॥ याके पीछे एक दिन उग्रसेनके राजसूय यज्ञको बीरा खाय प्रद्युम्न यादव और भैयानके संग जम्बूद्वीपके नौ खंडकी विजय करतो कामदुघ नदके किनारेपै रहनवारे मालतीपुराधीश गंधर्वराज पतंगके संग युद्ध करतोभयो ॥ ५ ॥ तहां गदायुद्धके विषे बलदेवको भैया गद गदा लैके गदाधारी जो पतंग है ताकूं मारतोभयो पतंगनेहू गदकूं छातीमें मार्यो ऐसे द्वै घड़ी उनको गदायुद्ध भयो पीछे पतंगके गदाके प्रहारते गद मूर्च्छित हैके जायपर्यो ॥ ६ ॥ तब हाहाकार होनलग्यो तब कोटि सूर्यप्रकाशवारे बलभद्र प्रगट भये तब हलते गंधर्वनकी सब सेनाकूं खैंचिके मूसलते मारदेतेभये तब वा मूसलते हाथी घोड़ा रथ और पदाति समेत सब

राजन्भीष्मककन्यायांरुक्मिण्यांश्रीकृष्णस्यपुत्रःप्रथमंकामदेवावतारः पितृसमसुंदरआसीत्तस्मादनिरुद्धःसुरज्येष्ठावतारोभूत् ॥ ४ ॥ अथैक दोग्रसेनराजसूयाध्वरेनागवल्लींगृहीत्वादिग्विजयार्थीनिर्गतःप्रद्युम्नोयादवैर्भ्रातृभिःसहजंबूद्वीपेनवखंडविजयंकुर्वन्कामदुघनदसमीपेवसंतमाल तीपुराधीशेनपतंगेनगंधर्वराजेनयुयुधे ॥ ५ ॥ तत्रगदायुद्धेगदामादायगदोबलदेवानुजोगदाधरंस्वगदयापतंगंताडयामासपतंगोपिगदयातंहृदिचौजसाजघाने त्थंतयोर्गदायुद्धंघटिकाद्वयंबभूवपतंगगदाप्रहारेणगदोयुद्धेक्षणंमूर्च्छांजगाम ॥ ६ ॥ तदाहाहाकारेजातेकोटिमार्तंडसन्निभोबलभद्रआविर्भूत्वा गंधर्वाणांसर्वबलंहलाग्रेणसमाकृष्यतदुपरिक्लिष्टमुशलताडनंचकारतेनयुगपत्सर्वसैन्यंसभटद्विपरथंचूर्णंबभूव ॥ ७ ॥ अथपतंगोपिविरथोभ यभीतस्तस्मात्पुरींगत्वापुनर्योद्धुंयादवैःसेनाव्यूहंचकारतच्छ्रुत्वाक्रुद्धोबलभद्रोगंधर्वाणांमहापुरींशतयोजनविस्तीर्णांवसंतमालतीनाम्नींसर्वांहृ लेनसंविदार्यसहसाकामदुघेनसंकर्षणोविचकर्ष ॥ ८ ॥ अथद्रवावपतितेगृहेहाहाकारेजातेतिर्यक्पोतसिवाघूर्णांसमस्तांनगरींवीक्ष्यगं धर्वैर्गंधर्वेशःपतंगःकृतांजलिर्धर्षितोविश्वकर्मकृतानांविमानानांद्विलक्षंगजानांचतुर्लक्षंचाश्वशतार्बुदंचदिव्यानांरत्नानांभारंदशशतार्बुदंचबलिं नीत्वाबलशालिनेबलायदत्त्वाप्रदक्षिणीकृत्यप्रणनाम ॥ ९ ॥ अथतथासांबमोक्षार्थंबलभद्रइहागतोभवतांपश्यतांपुरमिदंहलाग्रेणसंवि दार्यश्रीगंगांसाक्षात्संकर्षणोविचकर्षतथैवनागकन्याभिर्गोपीभिर्निर्मितेरासमंडलेकालिंदींहलाग्रेणविचकर्ष ॥ १० ॥

सेनाको चूर्ण हैगयो ॥ ७ ॥ तब विरथ है पतंग भयभीत तहांते पुरीमें जायके फिर लड़बेकूं यादवनके संग सेनाको व्यूह बांधतो भयो ताय सुनिके क्रोध करिके बलभद्र हलते वाकी सौ योजनकी बसंतमालती पुरीकूं सबरीको हलसों उखारि कामदुह नदमें संकर्षणजी खैंचनलगे ॥ ८ ॥ जब घर परनलगे हाहाकार मच्यो तब तिर्छी नावकी नाईं घूमती पुरी हैगई ताको घूमती देख पतंग गंधर्व गंधर्वनको संगले हाथ जोरिके धर्षित है बलदेवजीकूं विश्वकर्माके बनाये दो लाख विमान, चार लाख हाथी, किरोड़ घोड़ा, दश किरोड़ भार दिव्य रत्न सौ किरोड़ मोहर बलशाली बलभद्रकूं भेट देके परिक्रमा देके दंडौत करतोभयो ॥ ९ ॥ फिर सांबके छुड़ायबेकूं यहां आये बलदेव तुमारे देखत देखत हलते या

हस्तिनापुरकूं खैंचिके गंगामें डारनलगे फिर नागकन्या गोपीनके संग रासमंडलमें कालिंदीकूं हलके अग्रभागसों खैंचते भये ॥ १० ॥ फिर एकसमें द्विविद नाम बंदर सुग्रीवको मंत्री भौमासुरको सखा नारदको भेज्यो रैवत पर्वतमें युद्धको आयो तब बलभद्रके संग चारि घड़ी युद्ध करतोभयो वृक्ष, पत्थर, शिला और मुक्कानते युद्ध करतो जो द्विविद ताकूं मूडते मूसलते शिरमें मारतेभये पन जब न मरचो तब घूंसाते मारिके भागनेको भुजानसों पकरिके रैवत पर्वतपै पटकके बलदेवजीने हृदयमें घूंसा मारचो तब वाके परिवर्त तलावन सुदा पर्वत हाल्यो चटकी नाई ॥ ११ ॥ हे राजन्! फिर तुमारो और पांडवनको युद्धको उद्यम सुनिके तीर्थयात्राके मिष करिके नगरके ब्राह्मणकूं संग लेके तीर्थयात्राकूं निकसे तब पुरके बाहरनिकसि द्वारकाकी परिक्रमा करिके सिद्धाश्रममें और प्रभासमें स्नान करिके पश्चिम दिशामें सरस्वती, प्रतिस्रोता, सैंधवारण्य, जंबूमार्ग, उत्पलावर्त, अर्बुद,

अथैकदाद्विविदोनामवानरःसुग्रीवसचिवोभौमसखोनारदेनप्रेरितोहरिर्योद्धुकामोऽवतरद्रैवतकाचलमेत्यबलेनघटिकाचतुष्टयंयुयुधेद्रुमदंडशि
लामुष्टिभिर्विनिघ्नंतंतंबलभद्रोमुसलेनमूर्ध्निजघानपुनर्नमृतंमुष्टिनाघातयित्वापलायंतंभुजदंडाभ्यांगृहीत्वारैवतकाचलपृष्ठेपातयित्वाच्युता
ग्रजोहृदेनमुष्टिनाहृदितंतताडतत्पतनेनसटंकःशैलेंद्रःकमण्डलुरिवचकंपे ॥ ११ ॥ अथहवावराजन्नयभवतांपांडवैःसहयुद्धोद्यमंश्रुत्वाती
र्थाभिषेकव्याजेनब्राह्मणैर्नागरैःसहितःपुराद्विनिर्गतोद्वारकांप्रदक्षिणीकृत्यसिद्धाश्रमप्रभासयोःस्नात्वापश्चिमायांदिशिसरस्वतीप्रतिस्रोतःसैंधवा
रण्यजंबूमार्गोत्पलावर्तार्बुदहेमवंतसिन्धूनुपस्पृश्यपृथग्बिंदुसरस्त्रितकूपसुदर्शनत्रितौशनसाग्नेयवायवसौदासगुहतीर्थश्राद्धदेवादीनितीर्थानिस्ना
त्वोत्तरस्यांदिशिकैलासकरवीरमहायोगगणेशकौबेरप्राग्ज्योतिषरंगवल्लीसीतारामक्षेत्रचैत्रदेशवसन्ततिलकादशार्णभद्राकूर्मतीर्थपुष्पमालाचित्र
वनचन्द्रकांतानैःश्रेयसमनुपर्वतचक्षुःकामशालिनीकामवनवेदक्षेत्रसीतापृथुतीर्थतपोभूमिलीलावतीवेदनगरगांधर्वशक्रभीमरथीश्रीजाह्नवीका
लिंदीहरिद्वारकुरुक्षेत्रमथुरापुष्करेषुस्नात्वापुनस्तस्माच्छांभलंसौकरंप्राप्यचान्यानिकुर्वन्तीर्थानिसाक्षात्संकर्षणोनैमिषारण्यंजगाम ॥ १२ ॥
तंसमागतंवीक्ष्यशौनकादयोमुनयःसमुत्थायववंदिरेचार्चयन् ॥ १३ ॥ तत्रवेदव्यासशिष्यरोमहर्षणमप्रत्युत्थायिनंवीक्ष्यकरस्थेनकुशाग्रेण
तंजघानेतितदाहाहेतिवादिनोमुनीन्वीक्ष्यलोकपावनोपिलोकसंग्रहार्थंद्वादशमासान्तीर्थस्नानेनविशुद्धयेमनोदधे ॥ १४ ॥

हेमवंत, सिंधुनदी इनमें स्नान करिके बिंदुसर, त्रितकूप, सुदर्शन, त्रित, औशनस, आग्नेय, वायव, सौदास, गुहतीर्थ, श्राद्धदेवादिक तीर्थनमें स्नान करिके फिर उत्तर दिशामें कैलास, करवीर, महायोगगणेश, कौबेर, प्राग्ज्योतिष, रंगवल्ली, सीताराम क्षेत्र, चैत्रदेश, वसंततिलका, दशार्ण भद्रा, कूर्मतीर्थ, पुष्पमाला, चित्रवन, चन्द्रकांता, नैःश्रेयस, मनुपर्वत, चक्षुः कामशालिनी, कामवन, वेदक्षेत्र, सीतागंगा, पृथुतीर्थ, तपोभूमि, लीलावती, वेदनगर, गांधर्व, शक्रतीर्थ, भीमरथी, जाह्नवी, कालिंदी, हरिद्वार, कुरुक्षेत्र, मथुरा, तीनो पुष्कर इनमें स्नान करिके फिर सांभल सोरों औरहू तीर्थ करते करते साक्षात् संकर्षणजी नैमिषारण्यकूं जातेभये ॥ १२ ॥ तिनकूं शौनकादि मुनि देखिके उठ ठाडेभये पूजन करिके नमस्कार करतभये ॥ १३ ॥ पन तहां वेदव्यासको चेला रोमहर्षण उठ्यो नहीं ताकूं देखि हाथमें जो कुशाको अग्र ताते वाको मारतेभये तब हाहाकार करते जे मुनि तिन्हें देखिके

लोकके पवित्र कर्ताहु है पर लोकके सिखायवेकूं बारह महीना तीर्थयात्रा करनी यह मनमें करतभये ॥ १५ ॥ तहां इल्वलको बेटा बल्वल नाम दैत्य पर्व पर्वपै आयके प्रचंड पवनते धूरि वर्षावत रुधिर, राधि, विष्ठा, मूत्र, मदिरा, मांस वर्षावतो दुर्गंधि करतो आयो दीख्यो तब जीभ लटकि रहीहै वज्रसे अंग काजरसों कारो लाल मूंछे भयंकरकूं देखि ब्राह्मणनकी शांतिके अर्थ आकाशमेंते हलते खैंचिके बलदेवजी मूसलते मारदेतेभये तब ये बल्वल मूसलको मारयो आकाशते घडासों फूटिके मरिके जायपरयो ॥ १५ ॥ तब मुनीश्वर प्रसन्न ह्वैके रामकूं स्तुति करिके सांचे आशीर्वाद देके देवता जैसे इन्द्रको अभिषेक करैहै तैसे अभिषेक करतेभये फिर तिनपैते आज्ञा मांगिके सरयू, कौशिकी, मानससरोवर, गंडकी, गौतमी इनमे स्नानकरि अयोध्या, नन्दिग्राम, बर्हिष्मती, ब्रह्मावर्तादिकनमें स्नान करके तीर्थराज जो प्रयाग तामे आयके तहां दश हजार हाथीनको दान करतेभये ॥ १६ ॥

तत्रेल्वलसुतोबल्वलोनामदैत्यउपावृत्तेपर्वणिपांसुवर्षणप्रचण्डेनवायुनापूयशोणितविण्मूत्रसुरामांसदुर्गन्धेनसमागतःखेदृष्टोभूदथलललज्जिह्वत्रां गंभिन्नकज्जलांजनचयकृष्णंतप्तताम्रश्मश्रुभयंकरंब्रह्मशांतयेहलाग्रेणसमाकृष्यगगनान्मुसलेनमूर्ध्निबलभद्रस्तंतताडतत्ताडनेनाकाशात्सोपिकमं डलुरिवध्वसुःपपात ॥ १५ ॥ अथप्रसन्नामुनयोपिरामंसंस्तुत्याऽवितथाशिषःप्रयुज्यवृत्रघ्नंविबुधाइवाभ्यषिंचन्तैरभ्यनुज्ञातःसरयूकौशिकी मानससरोवरगण्डकीगौतमीषुस्नात्वाऽयोध्यानंदिग्रामबर्हिष्मतीब्रह्मावर्तादीन्युपस्पृश्यतीर्थराजंप्रयागंजगामयत्रायुतगजदानंचकार ॥ १६ ॥ ततश्चित्रकूटविंध्याचलकाशीविपाशाशोणमिथिलागयादिषुस्नात्वागंगासागरसंगमंजगामतत्रसुवर्णशृंगांबरसंयुक्तंपृथक्सुवर्णरत्नभारसहितंग वांकोटिशतंब्राह्मणेभ्यःप्रादात्ततःक्रमशोदक्षिणस्यांदिशिमहेन्द्राद्रिसप्तगोदावरीवेणीपंपाभीमरथीस्कंदक्षेत्रश्रीशैलवेंकटकांचीकावेरीश्रीरंगर्षभा द्रिसमुद्रसेतुकृतमालाताम्रपर्णीमलयाचलकुलाचलदक्षिणसिंधुफाल्गुनपंचाप्सरोगोकर्णशूर्पारकतापीपयोष्णीनिर्विंध्यादण्डकरेवामाहिष्मत्य वंतिकादीनितीर्थानिसाक्षात्संकर्षणःकरिष्यतिस्मततस्त्वत्सहायार्थंविशसनेचागमिष्यति ॥ १७ ॥ इदंबलभद्रचरित्रंपवित्रंसर्वपापापहर णंतीर्थयात्रावर्णनंनितरांमयावर्णितंसर्वमंगलकरणंकौरवेंद्रकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ १८ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीबलभद्रखण्डेश्रीद्विपा कदुर्योधनसंवादेद्वारकालीलावर्णनंनामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

फिर चित्रकूट, विन्ध्याचल, काशी, विपाशा, शोण, मिथिला, गया, गंगासागरसंगममें आये तहां सुवर्णके सींगनकी सुनहरी वस्त्र उढाय न्यारे २ एक २ भार रत्नसहित ब्राह्मणनकूं सौ किरोड गौअनको दान करतेभये तब तो क्रमते दक्षिण दिशामे महेन्द्राचलपर्वत, सप्त गोदावरी, वेंणी, पंपा, भीमरथी, स्कन्दक्षेत्र, श्रीशैल, वेंकट, कांचीपुरी, कावेरी, रंगनाथ, ऋषभाद्रि, समुद्रसेतु, कृतमाला, ताम्रपर्णी, मलयाचल, कुलाचल, दक्षिणसिंधु, फाल्गुनतीर्थ, पंचाप्सर, गोकर्ण, सूर्पारक, तापी, पयोष्णी, निर्विंध्या, दंडक, रेवा, माहिष्मती, अवंतिका इतने तीर्थनकूं साक्षात् संकर्षण करेंगे फिर तुमारे सहायताके अर्थ आमेंगे ॥ १७ ॥ यह बलभद्रजीको चरित्र पवित्र सब पापनको हरनहारो तीर्थयात्राको वर्णन अतिशयसों मैने वर्णन करयो ये सब मंगलको करनहारो है कौरवेंद्र अब तूं कहा सुनिबेकी इच्छा करै है ॥ १८ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां बलभद्रखण्डे भाषाटीकायां द्वारका

लीलावर्णनं नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ दुर्योधन बोल्यो कि, हे मुनिशार्दूल ! भगवान् बलभद्र नागकन्या गोपीन करिके कालिंदीके तीर कब विहार करते भये ? ॥ १ ॥ तब प्राड्विपाक बोले कि, एकसमें द्वारका नगरते तालांक रथमें बैठिके सुहृदनकूं देखिबेके लिये उत्कण्ठित नन्दराज गोकुल, गौ, गोपाल, गोपीनके गण तिनमें संकुल संकर्षण आये बहुत दिननते उत्कण्ठित भये जो नन्दराज, यशोदा, गोपी, गोपाल, गऊनके गणनसों युक्त संकर्षण पधारे तब सबसों मिले दो महीना चैत्र वैशाखको बसे ॥ २ ॥ जो वे नाग कन्या हीं ते गोपकन्या ह्वैके बलभद्रकी प्राप्तिके लिये गर्गाचार्यपैते बलभद्रपंचांग लैके सिद्ध ह्वैगई उन्हींके संग प्रसन्न ह्वैके बलभद्र कालिंदीके कूलपै रासमण्डल करतेभये तबही चैत्रकी पूर्णमासीके दिन पूर्ण चन्दोदय लाल लाल भयो संपूर्ण वनकूं रंगत राजतभयो ॥ ३ ॥ शीतल, मन्द, सुगंधि कमलकी सुगंधि लिये ऐसी पवन सब ओरते चली कलि

॥ ॥ दुर्योधनउवाच ॥ ॥ मुनिशार्दूलभगवान्बलभद्रोनागकन्याभिर्गोपीभिःकदाकालिंदीकूलेविजहार ॥१॥ ॥ प्राड्विपाकउवाच ॥ ॥ एकदाद्वारकानगराद्धितालांकरथमास्थायसुहृद्दिदृक्षुरुत्कण्ठोनन्दराजगोकुलगोगोपालगोपीगणसंकुलःसंकर्षणआगतश्चिरोत्कण्ठाभ्यांनन्दराजयशोदाभ्यांपरिष्वक्तोगोपीगोपालगोभिर्मिलित्वातत्रद्वौमासौवासंतिकौचावात्सीत् ॥२॥ अथचयानागकन्याःपूर्वोक्तास्तागोपकन्याभूत्वाबलभद्रप्राप्त्यर्थंगर्गाचार्याद्बलभद्रपंचांगंगृहीत्वातेनैवसिद्धावभूवुःताभिर्बलदेवएकदाप्रसन्नःकालिंदीकूलेरासमंडलंसमारेभेतदैवचैत्रपूर्णचन्द्रोरुणवर्णःसम्पूर्णवनंरंजयन्विरेजे ॥ ३ ॥ शीतलामन्दयानाःकमलमकरंदरेणुवृन्दसंवृताःसर्वतोवायवःपरिवुःकलिन्दगिरिनन्दिनीचललहरीभिरानंददायिनीपुलिनंविमलंव्याप्तंचकार ॥ तथाचकुञ्जप्रांगणनिकुञ्जपुञ्जैःस्फुरल्ललितपल्लवपुष्पपरागैर्मयूरकोकिलपुंस्कोकिलकूजितैर्मधुमत्तमधुपमधुरध्वनिभिर्व्रजभूमिर्विभ्राजमानाबभूव ॥ ४ ॥ तत्रक्वणद्घंटिकनूपुरःस्फुरन्मणिमयकटककटिसूत्रकेयूरहारकिरीटकुण्डलयोरुपरिकमलपत्रैर्नीलांबरोविमलकमलपत्राक्षोयक्षीभिर्यक्षराडिवगोपीभिर्गोपराड्रासमण्डलेरेजे ॥ ५ ॥ अथवरुणप्रेषितावारुणीदेवीपुष्पभारगंधिलोभिर्मिलिन्दनादितवृक्षकोटरेभ्यःपतंतीसर्वतोवनंसुरभीचकारतत्पानमदविह्वलःकमलविशाललताक्षोमकरध्वजांशश्चलद्भ्रूयुग्मभङ्गोविहारखेदप्रस्वेदांबुकणैर्गलद्गण्डस्थलपत्रभङ्गोगजेंद्रगतिर्गजेंद्रशुण्डादंडसमदोर्दंडमंडितोगजीभिर्गजराजेंद्रइवोन्मत्तःसिंहासनेन्यस्तहलोमुसलपाणिःकोटींदुपूर्णमण्डलसंकाशःप्रोद्दामद्रत्नमंजीरप्रचलन्नूपुरप्रक्वणत्कनककिंकिणीभिःकंकणस्फुरत्ताटंकपुरटहारश्रीकण्ठांगुलीयशिरोमणिभिःप्रविडंबिनीकृतसर्पिणीश्यामवेणीकुन्तलललितगण्डस्थलपत्रावलिभिःसुन्दरीभिर्भगवान्भुवनेश्वरोविभ्राजमानोविरराजअथचरेमे ॥६॥

न्दगिरिनंदिनी अपनी चंचल लहरीन करिके आनन्ददायिनी निर्मल पुलिनकूं व्याप्त करतीभयी तैसेई कुञ्जके आंगन निकुंजके पुंज तिन करिके स्फुरत मनोहर पल्लव पुष्पपराग तिन करिके और कोकिल, मोर, पुंस्कोकिल तिनके कूजित और मधुके मतवारे जे भौंरा तिनकी गुंजार तिन करिके व्रजकी भूमि विराजमान होतभई ॥ ४ ॥ तहां बजती जो घंटी, नूपुर और देदीप्यमान मणिमय मुकुट, कंकण, कौंधनी, बाजू, हार और किरीट, केयूर, कुण्डल तिनके ऊपर कमलपत्र तिन करिके शोभित नीलांबरधारी विमल कमल पत्रसे नेत्रसों बलभद्र रासमण्डलमें गोपीनकरिके शोभित भये यक्षिणीनते कुबेर जैसे ॥ ५ ॥ याके अनन्तर वरुणकी भेजी वारुणी देवी (मदिरा) पुष्पनके भारते सुगंधिके

लोभी भौंरा तिन करिके नादित जो वृक्ष ताकी खोंतरमेंते पांच धार परी सो सब वनकूं सुगंधित करतीभई ता वारुणी (मदिरा) को पीवो ताके मदते विह्वल हैं नेत्र जिनके कमल पत्रसे बड़े बड़े लाल २ नेत्र कामदेवके आवेशते चलायमान और विहारके परिश्रमते पसीनानकी जो छोटी २ बूंद तिनते गलितभई है पत्रभंगीकी रचना जिनकी और गजराजकी चालि हाथीकी सूंडिसे भुजदण्ड तिनते शोभित हथिनीनके संग मत्त गजेंद्रसे उन्मत्त सिंहासनपै धारण करेंहै हल जाने मूसलको हाथमें लिये किरीट चन्द्रमण्डलकोसो प्रकाश प्रकाशित करत जो रत्नके घूंघुरा जिनमें ऐसे बजे हैं नूपुर तिनके और सुवर्णकी कौंधिनी, कंकण, कुण्डल, सुवर्णके हार, श्रीकंठ, अंगूठी, शिरोमणि सर्पिणीसी श्याम वेणी और अलकावलीते शोभित गंडस्थल जिनके और पत्रावली तिनते अत्यन्त सुन्दर जे व्रजसुन्दरी तिनते देदीप्यमान श्रीबलभद्र राजतभये उनीके संग रमण करतेभये ॥ ३ ॥ फिर कालिंदीके किनारेके जे वन तिनमें विहार करिवो ताके परिश्रमते जो आये पसीनानके बिंदु तिनते व्याप्त है मुखारविंद जिनको ता परिश्रमकूं दूर करिवेके लिये स्नान जल विहारके लिये दूरतेई यमुनाकूं बुलावतभये तव नहीं आई जो नदी ताकूं कोप करिके हलते खैंचिके यह बोले ॥ ७ ॥ कि, हे मुने ! मैंने तोकूं बुलाई सो तूं मेरी अवज्ञा करिके

अथवावकालिन्दीकूलकांतारपर्यटनविहारपरिश्रमोद्यत्स्वेदबिन्दुव्याप्तमुखारविंदः स्नानार्थंजलक्रीडार्थंयमुनांदूरात्सआजुहावततस्त्वनागतांतटिनींहलाग्रेणकुपितोविचकर्षइतिहोवाचच ॥ ७ ॥ अद्यमामवज्ञायनायासिमयाहूतापिमुसलेनत्वांकामचारिणींशतधानेष्येएवंनिर्भर्त्सिता साभूरिभीतायमुनाचकितातत्पदयोः पतितोवाच ॥ ८ ॥ रामरामसंकर्षणबलभद्रमहाबाहोतवपरंविक्रमंनजानेयस्यैकस्मिन्मूर्ध्निसर्षपवत्सर्वंभूरिभूखंडमंडलंदृश्यतेतस्यतवपरमनुभावमजानंतींप्रपन्नांमांमोक्तुंयोग्योसित्वंभक्तवत्सलोसि ॥ ९ ॥ इत्येवंयाचितोबलभद्रोयमुनांततोव्यमुंचत्पुनःकरेणुभिःकरीवगोपीभिर्गोपराड्जलंविजगाहेपुनर्जलाद्विनिर्गत्यतटस्थायबलभद्रायसहसायमुनाचोपायनंनीलांबराणिहेमरत्नमयभूषणानिदिव्यानिचददौहवावतानिगोपीयूथायपृथक्पृथग्विभज्यस्वयंनीलांबरंवसित्वाकांचनींमालांनवरत्नमयींधृत्वामहेंद्रोवारणेंद्रइवबलभद्रोविरेजे ॥ १० ॥

नहीं आई याते इच्छाचारिणी जो तूं है ताहि मूसलते सौ टूक करूंगो ऐसे ललकारी तब भयभीत हैके यमुना तिनके चरणनमें जायपरी और यह बोली ॥ ८ ॥ हे राम ! हे राम ! हे संकर्षण ! हे बलभद्र ! हे महाबाहो ! तुमारे परम पराक्रमकूं मैं नहीं जानूंहूं जा तुमारे हजार शिरनके बीचमें एक शिरपै सबरो भूमण्डल सरसोंकी बराबर धरचो दीखे है ता तुमारो परम प्रभाव मैंने नहीं जान्यो सो अब मैं तुमारे शरणमें आई हूं सो तुम अब मोइ छोडिवेकूं योग्य हो तुम भक्तवत्सल हो ॥ ९ ॥ ऐसे जब प्रार्थना करी तब यमुनाजीको छोडिदेते भये फिर जैसे हथिनीनते हाथी विहार करै है तैसेही गोपीनको संग लेके गोपेश्वर दाऊजी यमुनाजलकूं विलोवते भये फिर जब जलते बाहिर निकसे यमुनाके तटपै बैठे दाऊजीके लिये यमुनाजीने नीलांबर रत्नकी माला दिव्य रत्नके गहने बलदेवजीकी भेट किये तिने गोपीनके जूथनकूं न्यारे २ बांटिके आप सबनकूं धारण करावतेभये और आपहूने नील दोनों वस्त्र पहरे नवरत्नकी सोनेकी माला पहरी तब बलदेवजीकी इन्द्रके हाथीकीसी बड़ी शोभा होती भई ॥ १० ॥

या प्रकार हे कौरवेंद्र ! यादवेंद्रको रमत रमत सबरी वसंतऋतुकी राति व्यतीत हैगई भगवान् बलभद्रके पराक्रमकूं अबतलक हस्तिनापुरकी नाई श्रीयमुना बलदेवजीके खैंचेभये मार्गते जतावे है यह रामकी रासकी कथाकूं सुने सुनावै सो सब पापनके समूहकूं काटिके याईके परमानन्दके पदकूं प्राप्त होयहै अब तू कहा सुनोचाहै है ॥ ११ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां बलभद्रखण्डे भाषाटीकायां बलभद्ररासक्रीडावर्णनं नाम नवमोऽध्यायः ॥९॥ अब दुर्योधन पूछै है—हे भगवन ! गर्गाचार्यने गोपीनकूं बलभद्रपंचांग कैसे दीनो सो हमारे आगे कहो ? आपु तो सर्वज्ञ हो॥१॥ तब प्राड्विपाक बोले कि, हे कौरवेंद्र ! एकसमय गर्गाचार्य गर्गाचलते यमुनाके स्नान करिवेकू ब्रजमंडलमें आये तहां एकांतमें पवनते डोलत जे मनोहर लता और वृक्षनके पत्ता फूल तिनकी सुगंधिते मतवारे भौंरा जामें ऐसी कालिंदीको जे निकुंज तिनमें बैठे राम कृष्णके ध्यानमें तत्पर जे गर्गाचार्य तिनकूं नमस्कार करिके हम नागेंद्रकी कन्याही बेई हम

इत्थंकौरवेंद्रयादवेन्द्रस्यरमतःसर्वावासंतिकीनिशाव्यतीताबभूवुर्भगवतोबलभद्रस्यहस्तिनापुरमिववीर्यंसूचयतीवह्यद्यापिचकृष्टवर्त्मनायमुना
वहतिइमांरामस्यरासकथांयःशृणोतिश्रावयतिचससर्वपापपटलंछित्वातस्यपरस्परमानंदपदंप्रतियातिकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ११ ॥ इति
श्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीबलभद्रखंडेप्राड्विपाकदुर्योधनसंवादेरासक्रीडावर्णनंनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥ दुर्योधनउवाच ॥ ॥ भग
वन्गर्गाचार्येणगोपीयूथायकथंदत्तंबलभद्रपंचांगंतत्कृपयावदतात्त्वंसर्वज्ञोसि ॥ १ ॥ ॥ प्राड्विपाकउवाच ॥ ॥ कौरवेंद्रएकदागर्गःक
लिंदनंदिनींस्नातुंगर्गाचलाद्व्रजमंडलंचाजगामतत्रैकतिमरुल्लोलजल्ललितलतातरुपल्लवपुष्पगंधमत्तमिलिंदपुंजेकालिंदीकूलकलितनिकुंजेश्री
रामकृष्णध्यानतत्परंगर्गाचार्यप्रणम्यनागेंद्रकन्याःस्मइतिजातिस्मरागोपकन्याःश्रीमद्बलभद्रप्राप्त्यर्थसेवनंपप्रच्छुस्तासांपरमांभक्तिंवीक्ष्यपद्ध
तिपटलस्तोत्रकवचसहस्रनामानिगोपीयूथायसप्रददौकिंभूयस्त्वंतद्ग्रहणंकर्तुमिच्छसिवदतात् ॥ २ ॥ ॥ दुर्योधनउवाच ॥ ॥ राम
स्यपद्धतिंब्रूहिययासिद्धिंव्रजाम्यहम् ॥ त्वंभक्तवत्सलोब्रह्मन्गुरुदेवनमोस्तुते ॥३॥ ॥ प्राड्विपाकउवाच ॥ ॥ राममार्गस्यनियमंशृणुपा
र्थिवसत्तम ॥ येनप्रसन्नोभवतिबलभद्रोमहाप्रभुः ॥४॥ सहस्रवदनोदेवोभगवान्भुवनेश्वरः॥ नदानैर्नचतीर्थैश्चभक्त्यालभ्यस्तवनन्यथा ॥५॥

अब यहां वृंदावनमें आयके गोपी भईहैं या प्रकार जिनको अपने पूर्वजन्मको स्मरण हैआयो ऐसी अपने पूर्वजन्मकी याद करनवारी जे गोपकन्या हैं वे श्रीबलदेवजीकी प्राप्तिके लिये गर्गमुनिसों सेवन करनेकी विधिको पूछतीभई तब श्रीगर्गाचार्यने उनकी श्रीकृष्णमें परमा भक्तिको देखके श्रीबलदेवजीकी पद्धति, पटल, स्तोत्र, कवच और सहस्र नाम गोपीनके यूथनके आगे निरूपण कियो सो अब तू उन्हीं पद्धति आदिकनको फिर सुनो चाहैहै कहा यदि सुनो चाहतहै तो कहो ॥ २ ॥ तब दुर्योधनने कही कि, हे प्राड्विपाकजी जाके सुनेते मैं सिद्धिको प्राप्त होऊं सो पहले श्रीबलदेवजीकी पद्धतिको मोसों कहिये हे ब्रह्मन् ! हे गुरुदेव ! मैं आपको प्रणाम करूंहूं आप भक्तवत्सल हो ॥ ३ ॥ तब प्राड्विपाक बोले कि, हे पार्थिवसत्तम ! तू श्रीबलदेवजीकी पद्धतिके नियमको सुन जाके सुनेते महाप्रभु बलभद्रजी प्रसन्न होयहैं ॥ ४ ॥ हजार जिनके मुख ऐसे देव भगवान्

भुवनके स्वामी बलदेवजी केवल अनन्या भक्तिंतेही मिलैहैं दानके करवेसो और तीर्थनमें विचरवेसों नहीं मिलैहैं ॥ ५ ॥ सत्संगको प्राप्त हैके श्रीहरि गुरुकी भक्तिको बहुत जल्दीते सीखे फिर जाके प्रेमलक्षणा भक्तियोग उत्पन्न हैजाय सोही सिद्ध कह्योगयो है ॥ ६ ॥ चार घडीके सबेरे उठै राम कृष्ण ऐसे कहतो भूमिको और गुरुको प्रणाम करके पीछे भूमिको स्पर्श करै ॥ ७ ॥ फिर जलको स्पर्श करके एकांतमें कुशाके आसनपै वैठके अपनी गोदमें दोनों हाथनको धर अपनी नासिकाके अग्रभागको देखतो रहे ॥ ८ ॥ फिर सनातनदेव हरि बलभद्रको ध्यान करै-और जिनको अंग नील जिनको वस्त्र अत्यंत प्रिय वनमालासों विभूषित ॥ ९ ॥ ऐसे प्रभु बलदेवजीके ध्यानमें विनकी प्रसन्नताके लियें ध्यानमें तत्पर त्रिकाल संध्याको करनवारो शुद्ध मौन लेकें क्रोधको परित्याग कर ॥ १० ॥ कामनासों रहित लोभको छोडके मोहरहित हैके सत्यवाक् होय एक बेर भोजन करै जल पीवे तो दो बेरसो अधिक न पीवै ॥ ११ ॥ रेसमी वस्त्र पहरै धरतीमें सोवे खीरको भोजन करै ऐसे षडिंद्रियनको जीतके एकाग्रमन करै ॥ १२ ॥ ताके

सत्संगमेत्याशुशिक्षेद्भक्तिंवैश्रीहरेर्गुरोः ॥ ससिद्धःकथितोजातंयस्यनैप्रेमलक्षणम् ॥ ६ ॥ ब्राह्मेमुहूर्तेउत्थायरामकृष्णेतिचब्रुवन् ॥ नत्वागुरुं भुवंचैवततोभूम्यांपदंन्यसेत् ॥ ७ ॥ ह्यपस्पृश्यरहसिस्थितोभूत्वाकुशासने ॥ हस्तावुत्संगआधायस्वनासाग्रनिरीक्षणः ॥ ८ ॥ ध्यायेत्परं हरिंदेवंबलभद्रंसनातनम् ॥ गौरंनीलांबरंहृद्यंवनमालाविभूषितम् ॥ ९ ॥ एवंध्यानपरोनित्यंप्रीत्यर्थंहलिनःप्रभोः ॥ त्रिकालसंध्याकृच्छुद्धोमौनीक्रोधविवर्जितः ॥ १० ॥ अकामीगतलोभश्चनिर्मोहःसत्यवाग्भवेत् ॥ द्विवारंजलपानार्थीएकभुक्तोजितेंद्रियः ॥ ११ ॥ क्षौमांबरोभूमिशायीभूत्वापायसभोजनः ॥ एवंनिर्जितषड्वर्गोभवेदेकाग्रमानसः ॥ १२ ॥ तस्यप्रसन्नोभवतिसदासंकर्षणोहरिः ॥ परिपूर्णतमः साक्षात्सर्वकारणकारणः ॥ १३ ॥ इत्थंश्रीबलभद्रस्यकथितापद्धतिर्मया ॥ कौरवेंद्रमहाबाहोकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ १४ ॥ ॥ दुर्योधनउवाच ॥ ॥ मुनींद्रदेवदेवस्यपटलंब्रूहिमेप्रभोः ॥ येनसेवांकरिष्यामितत्पदांबुजयोःसदा ॥ १५ ॥ ॥ प्राड्विपाकउवाच ॥ ॥ बलस्यगुह्यंपटलंविद्धिसिद्धिप्रदायकम् ॥ एकांतेब्रह्मणादत्तंनारदायमहात्मने ॥ १६ ॥ प्रणवंपूर्वमुद्धृत्यकामबीजंततःपरम् ॥ कालिंदीभेदनपदंसंकर्षणमतःपरम् ॥ १७ ॥ चतुर्थ्यंतंद्वयंकृत्वास्वाहापश्चाद्विधायच ॥ मन्त्रराजमिमंराजन्ब्रह्मोक्तंषोडशाक्षरम् ॥ १८ ॥ जपेल्लक्षंव्रती भूत्वासहस्राणिचषोडश ॥ इहामुत्रपरांसिद्धिंसंप्राप्नोतिनसंशयः ॥ १९ ॥

ऊपर भगवान् हरि संकर्षण सदा प्रसन्न होयहैं जो साक्षात् परिपूर्णतम सब कारणकेहू कारण आपही हैं ॥ १३ ॥ या प्रकारसों श्रीबलभद्रजीकी पद्धति मैंने कहीहै अब हे कौरवेंद्र ! हे महाबाहो ! फिर तू कहा सुनो चाहे है ॥ १४ ॥ तब दुर्योधनने प्रश्न कियो कि, हे मुनींद्र ! मेरे आगे देवदेव प्रभुको पटल मोसों कहो जाके लेखानुसार विनके पादांबुजनकी मैं सदा सेवा करूंगो ॥ १५ ॥ तब प्राड्विपाक बोले कि, बलदेवके सिद्धि देनवारे पटलको तू जान जो पटल महात्मा नारदके आगे एकांतमें ब्रह्माजीने निरूपण कियोहै ॥ १६ ॥ पहले ॐकार कहे फिर कामबीज (क्लीं) को पढे तदनंतर कालिंदीभेदन फिर संकर्षण पद पढे ॥ १७ ॥ इन दोनों पदनको चतुर्थ्यंत करके पीछे स्वाहा पदको पढे- "ॐ क्लीं कालिंदीभेदनाय संकर्षणाय स्वाहा" यह मंत्रराजको उद्धार है ब्रह्माजीनें नारदते कह्योहै या प्रकार १६ वर्णको मंत्र है ॥ १८ ॥ या मंत्रको व्रती हैके एक लक्ष सोलह

हजार जप करै या लोकमें परलोकमें परम सिद्धि प्राप्त होय यामें संदेह नहीं है ॥ १९ ॥ फिर जपे मंत्रकी महापूजा करै बत्तीस पाँखुरीको कमल लिखै कर्णीका केसरा सुद्धा बडो उज्ज्वल ॥ २० ॥ शुभ स्थंडिलपै भव्य कमल पचरंग लिखै तापै सुवर्णको सिंहासन स्थापन करै ॥ २१ ॥ तापै बलदेवजीकी प्रतिमा धरिके पूजन करै—"ॐ नमो भगवते पुरुषोत्तमाय वासुदेवाय संकर्षणाय सहस्रवदनाय महानन्ताय स्वाहा" या मंत्रते शिखा बाँधिके नमस्कार करिके ताके सन्मुख ह्वैके पूजे फिर आप नमस्कार करै "ॐ जय

अथजप्तस्यमन्त्रस्यमहापूजांसमाचरेत् ॥ द्वात्रिंशत्पत्रसंयुक्तंकर्णिकाकेसरोज्ज्वलम् ॥२०॥ भव्यंकंजंपंचवर्णंलिखित्वास्थंडिलेशुभे ॥ तस्यो परिन्यसेद्राजन्हेमसिंहासनंशुभम् ॥ २१ ॥ तस्मिन्श्रीबलदेवस्यपरामर्चाम्प्रपूजयेत् ॥ ॐनमोभगवतेपुरुषोत्तमायवासुदेवायसंकर्षणायस हस्रवदनायमहानंतायस्वाहा ॥ अनेनमन्त्रेणशिखाबंधनंकृत्वासर्वतस्तंप्रणम्यतत्संमुखोभूत्वास्वयंनतोभवेत् ॥ ॐजयजयानंतबलभद्रका मपालतालांककालिंदीभंजनआविराविर्भूयममसंमुखोभवेति ॥ अनेनमंत्रेणावाहनंकुर्यात् ॥ ॐनमस्तेस्तुसीरपाणेहलमुसलधररौहिणेयनी लांबररामरेवतीरमणनमस्तेस्तु ॥ अनेनमंत्रेणासनपाद्यार्घ्यस्नानमधुपर्कधूपदीपयज्ञोपवीतनैवेद्यवस्त्रभूषणगन्धपुष्पाक्षतपुष्पांजलिनीराज नादीनुपचारान्प्रकल्पयेत् ॥ ॐविष्णवेमधुसूदनायवामनायत्रिविक्रमायश्रीधरायहृषीकेशायपद्मनाभायदामोदरायसंकर्षणायवासुदेवायप्रद्यु म्नायानिरुद्धायाधोक्षजायपुरुषोत्तमायश्रीकृष्णायनमः ॥ इतिपादगुल्फजानूरुकटत्युदरपार्श्वपृष्ठभुजाकन्धरनेत्रशिरांसिपृथक्पृथक्पूजयामी तिमंत्रेणसर्वांगपूजांकुर्यात् ॥ अथशंखचक्रगदापद्मासिधनुर्बाणहलमुसलकौस्तुभवनमालाश्रीवत्सपीतांबरनीलांबरवंशीविचित्रगरुडांकतालां करथदारुकसुमतिकुमुदकुमुदाक्षश्रीदामादीन्प्रणवपूर्वेणचतुर्थ्यंतेननमःसंयुक्तेननाममंत्रेणपृथक्पृथक्संपूज्यतथाविष्वक्सेनदेव्यासदुर्गाविनाय कदिक्पालग्रहादीन्कमलंसर्वतःस्वेस्वेस्थानेसंपूजयेत् ॥ पुनःपरिसमूहनादिस्थालीपाकविधानेनवैश्वानरंसंपूज्यपूर्वोक्तेनमूलमन्त्रेणपंचविंश तिसहस्राण्याहुतीर्जुहुयात् ॥ तथाष्टौसहस्राणिद्वादशाक्षरेणतथाष्टौसहस्राणिचतुर्व्यूहमन्त्रेणाहुतीर्जुहुयात् ॥ ततोग्निंप्रदक्षिणीकृत्यनम स्कृत्याचार्यमहादेवंवस्त्रसुवर्णाभरणताम्रपात्रसवत्सगोसुवर्णदक्षिणाभिःसंपूज्यतथाब्राह्मणान्भोजनाद्यैःसम्पूज्यनगरजनेभ्योभोजनंदत्त्वाचाग्न्यौ न्प्रणमेत् ॥ इत्थंबलस्यपटलानुसारेणयोनुस्मरतिइहामुत्रसिद्धिसमृद्धिभिःसंयुतोभवति ॥ श्रीरामपटलंगुह्यंमयातेह्यनुवर्णितम् ॥ सर्वसिद्धि प्रदंराजन्किंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ २२ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीबलभद्रखण्डेपद्धतिपटलवर्णनंनामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

जय अनन्त बलभद्र कामपाल तालांक कालिन्दीभंजन आविराविर्भव मम सन्मुखो भव" या मंत्रते आवाहन करै—"ॐ नमोस्तुते शीरपाणे मुसलधर रौहिणेय नीलाम्बर राम रेवतीरमण नमस्तेऽस्तु" या मंत्रते आसन, पाद्य, अर्घ्य, स्नान, मधुपर्क, धूप, दीप, यज्ञोपवीत, नैवेद्य, वस्त्र, भूषण, गंध, पुष्प, अक्षत, पुष्पांजली, आरती; पान, सुपारी दक्षिणा, प्रदक्षिणा इत्यादिक सामिग्रीनकूं धरै याही मंत्रते देय—"ॐ विष्णवे मधुसूदनाय वामनाय त्रिविक्रमाय श्रीधराय हृषीकेशाय पद्मनाभाय दामोदराय संकर्षणाय वासुदेवाय

प्रद्युम्नाय अनिरुद्धाय अधोक्षजाय पुरुषोत्तमाय श्रीकृष्णाय नमः" याते चरण, ढकुना, पीड़री, जांघ, कमर, पेट, पार्श्व,पीठ, भुजा, ग्रीवा, वक्षस्थल, हृदय, कंठ, नेत्र, कर्ण, शिर न्यारे न्यारे सब अंगनको पूजन करै फिर शंख, चक्र, गदा, पद्म, खड्ग, धनुष, बाण, हल, मुसल, कौस्तुभ, वनमाला, श्रीवत्स, पीतांबर, नीलाम्बर, वेणु, वेत, गरुड़ध्वज, तालध्वज, रथ, दारुक, सुमति, कुमुद, कुमुदेक्षण, श्रीदामादिकनकूं प्रणवपूर्व चतुर्थ्यंत नमः युक्त नाम युक्तसों पूजै-"ॐ विष्णवे नमः । ॐ मधुसूदनाय नमः" ऐसें सबकूं पूजै तैसेंही विष्वक्सेन, वेदव्यास, दुर्गा, विनायक, दिक्पाल, नवग्रह तिनकूं कमलके ओर पास अपने २ स्थानपै पूजन करै ॥२२॥ फिर समूहनादि स्थालीपाकते अग्निको पूजन करि पहले कहे मूलमंत्रते पचीस हजार आहुति देय तैसेंही आठ हजार आहुति द्वादशाक्षर मंत्रते आठ हजार आहुति चतुर्व्यूह मंत्रते होमैं फिर अग्निकी परिक्रमा देके नमस्कार करै तैसेंही बहुमूल्य वस्त्र, सुनहरी भूषण, ताम्रपात्र, बछरा सुद्धा गौ, सुवर्ण इनते आचार्यको पूजन करै फिर ब्राह्मणनको भोजनादिकनसो पूजन करके नगरवासी जननको भोजनादिक देके ऋत्विजनकूं नमस्कार करै या प्रकार पटलकी रीतिते जो बलभद्रको पूजन करै सो या लोकमें और परलोकमें सिद्धि समृद्धि वाके सब होयगी यह गुप्त रामको पटल मैंने तेरे

॥ ॥ दुर्योधनउवाच ॥ ॥ स्तोत्रंश्रीबलदेवस्यप्राड्विपाकमहामुने ॥ वदमांकृपयासाक्षात्सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥ १ ॥ ॥ प्राड्विपाक उवाच ॥ ॥ स्तवराजंतुरामस्यवेदव्यासकृतंशुभम् ॥ सर्वसिद्धिप्रदंराजञ्छृणुकैवल्यदंनृणाम् ॥ २ ॥ देवादिदेवभगवन्कामपालनमोस्तुते॥ नमोनन्तायशेषायसाक्षाद्रामायतेनमः ॥ ३ ॥ धराधरायपूर्णायस्वधाम्नेसीरपाणये ॥ सहस्रशिरसेनित्यंनमःसंकर्षणायते ॥ ४ ॥ रेवतीरमणत्वंवैबलदेवोच्युताग्रजः ॥ हलायुधप्रलंबघ्नपाहिमांपुरुषोत्तम ॥ ५ ॥ बलायबलभद्रायतालांकायनमोनमः ॥ नीलांबरायगौरायरौहिणेयायतेनमः ॥ ६ ॥ धेनुकारिर्मुष्टिकारिःकूटारिर्बल्वलांतकः ॥ रुक्म्यरिःकूपकर्णारिःकुंभांडारिस्त्वमेवहि ॥ ७ ॥ कालिन्दीभेदनोसित्वंहस्तिनापुरकर्षकः ॥ द्विविदारिर्यादवेंद्रोव्रजमण्डलमण्डनः ॥ ८ ॥

आगे वर्णन करयो हे राजन् ! ये सब सिद्धिको देवेहारो है अब कहा सुनिवेकी इच्छा है ॥ २३ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां बलभद्रखंडे भाषाटीकायां पद्धतिपटलवर्णनं नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ दुर्योधन पूछैहै कि, हे प्राड्विपाक ! हे महामुने ! सब सिद्धिको देनहारो श्रीबलदेवजीको स्तोत्र मेरे आगे वर्णन करो ॥ १ ॥ प्राड्विपाक बोले कि, श्रीरामको स्तवराज है वेदव्यासको कीनो सब सिद्धिको देनहारो और मनुष्यनकूं मोक्षदाता है वाको सुन ॥ २ ॥ हे देवाधिदेव ! भगवन् ! हे कामपाल ! तुमारे अर्थ नमस्कार है, अनंत हो, शेष हो, साक्षात् राम हो तिनके अर्थ नमस्कार है ॥ ३ ॥ धराधर हो, स्वधामा हो, सीरपाणि हो, सहस्रशीर्षा हो, संकर्षण हो तिनकूं नमस्कार है ॥ ४ ॥ तुम रेवतीरमण हो, बलदेव हो, अच्युतके अग्रज हो, हलायुध हो, प्रलंबघ्न हो—हे पुरुषोत्तम ! मेरी रक्षा करो ॥५॥ बल हो, बलभद्र हो, तालांक हो नीलांबर हो, रौहिणेय हो तिनके अर्थ नमस्कार है ॥६॥ धेनुकके, मुष्टिकके, कूटके, बल्वलके, रुक्मीके, कुंभांड कूपकर्णके वैरी तुमही हो॥७॥ कालिंदीभेदन हो, हस्तिनापुरके खेंचिवेवारे हो, द्विविदके वैरी यादवेंद्र व्रजमंडलके मंडन हो ॥८॥

कंसके भैयानके मारनहारे हो, तीर्थयात्रा करनहारे हो, दुर्योधनके गुरु मेरी रक्षा करो ॥ ९ ॥ हे अच्युत ! हे देव ! हे परात्पर ! तेरी जय जय, हे अनंत ! हे दिगंतगतयश ! सुर मुनींद्र फणींद्र तिनमें श्रेष्ठ ! हल मुसलधारी तुमकूं नमस्कार है ॥ १० ॥ जो निरंतर या स्तोत्रकूं पढेगो सो परंपदकूं प्राप्त होयगो जगत्में अरिमर्दन बल होयगो और स्वजन होयगो धन होयगो ॥ ११ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां बलभद्रखण्डे भाषाटीकायां बलभद्रस्तवराजवर्णनं नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ दुर्योधन बोल्यो कि, बडे बुद्धिमान् गर्गाचार्यने गोपीनकूं सर्व रक्षाको करनहारो कवच दीनो हो सो हे महामुने ! मोकूं देउ ॥ १ ॥ तब प्राड्विपाक बोले कि, जलमें स्नान करिके रेशमी वस्त्र पहर कुशाके आसनपै बैठके मंत्र मार्जनकरि पवित्री पहरि बलभद्रको स्मरण करि नमस्कार कर सावधान हैके कवचकूं धारण करे ॥ २ ॥ गोलोकपति परमेश्वर पवित्रकीर्तन

कंसभ्रातृप्रहंतासितीर्थयात्राकरःप्रभुः ॥ दुर्योधनगुरुःसाक्षात्पाहिपाहिप्रभोत्वतः ॥ ९ ॥ जयजयाच्युतदेवपरात्परस्वयमनंतदिगंतगतश्रुत ॥ सुरमुनींद्रफणींद्रवरायतेमुसलिनेबलिनेहलिनेनमः ॥१०॥ यःपठेत्सततंस्तवनंनरःसतुहरेःपरमंपदमाव्रजेत् ॥ जगतिसर्वबलंत्वारिमर्दनंभवति तस्यधनंस्वजनंधनम् ॥ ११ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांबलभद्रखंडेबलभद्रस्तवराजवर्णनंनामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ दुर्योधनउवाच ॥ ॥ गोपीभ्यःकवचंदत्तंगर्गाचार्येणधीमता ॥ सर्वरक्षाकरंदिव्यंदेहिमह्यंमहामुने ॥ १ ॥ ॥ प्राड्विपाकउवाच ॥ ॥ स्नात्वाजलेक्षौमधरःकुशासनःपवित्रपाणिःकृतमंत्रमार्जनः ॥ स्मृत्वाथनत्वाबलमच्युताग्रजंसंधारयेद्वर्मसमाहितोभवेत् ॥२॥ गोलोकधामाधिपतिःपरेश्वरःपरेषुमांपातुपवित्रकीर्तनः ॥ भूमंडलंसर्षपवद्विलक्ष्यतेयन्मूर्ध्निमांपातुसभूमिमंडले ॥ ३ ॥ सेनासुमांरक्षतुसीरपाणिर्युद्धेसदारक्षतुमांहलीच॥ दुर्गेषुचाव्यान्मुसलीसदामांवनेषुसंकर्षणआदिदेवः ॥४॥ कालिंदजावेगहरोजलेषुनीलांबरोरक्षतुमांसदाग्नौ ॥ वायौचरामोवतुखेबलश्चमहार्णवेनंतवपुःसदामाम् ॥ ५ ॥ श्रीवासुदेवोवतुपर्वतेषुसहस्रशीर्षाचमहाविवादे ॥ रोगेषुमांरक्षतुरौहिणेयोमांकामपालोवतुवाविपत्सु ॥ ६ ॥ कामात्सदारक्षतुधेनुकारिःक्रोधात्सदामांद्विविदप्रहारी ॥ लोभात्सदारक्षतुबल्वलारिर्मोहात्सदामांकिलमागधारिः ॥ ७ ॥ प्रातःसदारक्षतुवृष्णिधुर्यःप्राह्णेसदामांमथुरापुरेंद्रः ॥ मध्यंदिनेगोपसखःप्रपातुस्वराट्पराह्णेवतुमांसदैव ॥ ८ ॥

भगवान् वैरीनते मेरी रक्षा करो, जाके शिरपै सरसोंसो भूमंडल दीखै है सो भूमंडलमें मेरी रक्षा करो ॥ ३ ॥ सेनामे हलधारी मेरी रक्षा करो, हली युद्धस्थानमें रक्षा करो और दुर्गस्थानमे मुसली मेरी रक्षा करो संकर्षण आदिदेव वनमे मेरी रक्षा करो ॥ ४ ॥ कालिंदीके वेगहारी मेरी जलमें रक्षा करो, नीलांबर अग्निते मेरी रक्षा करो, पवनते राम रक्षा करो, आकाशमें बलदेव रक्षा करो, समुद्रमें अनंतवपु मेरी सदा रक्षा करो ॥ ५ ॥ पर्वतनमें वासुदेव रक्षा करो, महाविवादमें सहस्रशीर्षा रक्षा करो, रोगनते रौहिणेय रक्षा करो, विपत्तिमें कामपाल रक्षा करो ॥ ६ ॥ धेनुकारी कामते सदा रक्षा करो, क्रोधते मेरी द्विविदप्रहारी सदा रक्षा करो, बल्वलारी लोभते सदा रक्षा करो, मागधारी मेरी सदा मोहते रक्षा करो ॥ ७ ॥ वृष्णिधुर्य मेरी प्रातःकाल रक्षा करो, पहर दिन चढे मथुरेन्द्र मेरी रक्षा करो, गोपसखा मध्याह्नमें रक्षा करो, स्वराट् भगवान्

मेरी सदा पराह्नमें रक्षा करो ॥ ८ ॥ फणींद्र सायंकालमें रक्षा करो, मध्यरात्रिमें परात्पर रक्षा करो, दुरंतवीर्य अर्द्धरात्रिमें और प्रत्यूषमें रक्षा करो ॥ ९ ॥ विदिशानमें रेवतीपति मेरी रक्षा करो, दिशानमें प्रलंबारि रक्षा करो बलभद्र ऊपरते रक्षा करो नीचेते यदूद्वह रक्षा करो दूरते वा पासते सब ओरते बलदेव रक्षा करो ॥ १० ॥ भीतरते पुरुषोत्तम बाहिरते नागेंद्रकीसी लीलावारे महाबल मेरी रक्षा करो और अन्तरात्मा हरि भगवान् पूर्ण परमेश्वर मेरी सदा रक्षा करो ॥ ११ ॥ देवासुरके भयको नाश करनहारो पाप ईंधनकूं अग्निरूप विघ्नघटके विनाशन सिद्धासनरूप ये बलदेवजीको कवच है ॥ १२ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां बलभद्रखण्डे भाषाटीकायां कवचवर्णनं नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ दुर्योधन बोल्यौ कि, हे प्राड्विपाक ! हे महामुने ! बलदेवजीको सहस्रनाम हमारे अगारी कहो ? जो देवतानकूं हू दुर्लभ है ॥ १ ॥ तब प्राड्विपाक बोले कि, हे महाराज !

सायंफणींद्रोवतुमांसदैवपरात्परोरक्षतुमांप्रदोषे ॥ पूर्णेनिशीथेचदुरंतवीर्यःप्रत्यूषकालेवतुमांसदैव ॥ ९ ॥ विदिक्षुमांरक्षतुरेवतीपतिर्दिक्षुप्रलं बारिरधोयदूद्वहः ॥ ऊर्द्धंसदामांबलभद्रआरात्तथासमंताद्बलदेवएवहि ॥ १० ॥ अंतःसदाव्यात्पुरुषोत्तमोबहिर्नागेंद्रलीलोवतुमांमहाबलः ॥ सदांतरात्माचवसन्हरिःस्वयंप्रपातुपूर्णःपरमेश्वरोमहान् ॥ ११ ॥ देवासुराणांभयनाशनंचहुताशनंपापचयेंधनानाम् ॥ विनाशनंविघ्न घटस्यविद्धिसिद्धासनंवर्मवरंबलस्य ॥ १२ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीबलभद्रखंडेस्तोत्रकवचवर्णनंनामद्वादशोध्यायः ॥ १२ ॥
॥ ॥ दुर्योधनउवाच ॥ ॥ बलभद्रस्यदेवस्यप्राड्विपाकमहामुने ॥ नाम्नांसहस्रंमेब्रूहिगुह्यंदेवगणैरपि ॥ १ ॥ ॥ प्राड्विपाकउवाच ॥ ॥ साधुसाधुमहाराजसाधुतेविमलंयशः ॥ यत्पृच्छसेपरमिदंगर्गोक्तंदेवदुर्लभम् ॥ २ ॥ नाम्नांसहस्रंदिव्यानांवक्ष्यामितवचाग्रतः ॥ गर्गाचार्येणगोपीभ्योदत्तंकृष्णातटेशुभे ॥ ३ ॥ ॐअस्यश्रीबलभद्रसहस्रनामस्तोत्रमंत्रस्यगर्गाचार्यऋषिःअनुष्टुप्छंदःसंकर्षणःपरमात्मादेव ताबलभद्रइतिबीजंरेवतीतिशक्तिःअनंतइतिकीलकंबलभद्रप्रीत्यर्थेजपेविनियोगः ॥ अथध्यानम् ॥ स्फुरदमलकिरीटंकिंकिणीकंकणार्हंचल दलककपोलंकुंडलश्रीमुखाब्जम् ॥ तुहिनगिरिमनोज्ञंनीलमेघांबराढ्यंहलमुसलविशालंकामपालंसमीडे ॥ ४ ॥ ॐबलभद्रोरामभद्रोरा मःसंकर्षणोच्युतः ॥ रेवतीरमणोदेवःकामपालोहलायुधः ॥ ५ ॥

स्याबास २ तेरौ निर्मल यश है जो गर्गके कहे देवतानकूं दुर्लभ सहस्रनामकूं तुम पूछोहो ॥ २ ॥ दिव्य सहस्रनाम तेरे आगे कहूंगो जो गर्गाचार्यने गोपीनकूं यमुनाके किनारेपै दीनोंहो ॥ ३ ॥ ॐ अस्य श्रीबलभद्रसहस्रनाममंत्रस्य गर्गाचार्य ऋषिः अनुष्टुप्छंदः संकर्षणः परमात्मा देवता बलभद्रेति बीजं रेवती शक्तिः अनन्तेति कीलकं बलभद्रप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ध्यान ऐसो करै कि, देदीप्यमान हैं अमल किरीटकुंडल, कौंधनी, कंकण जिनके चलायमान है अलक जामें ऐसे कपोल हैं कुंडलते शोभित है मुखकमल जिनको हिमाचलसे मनोहर नील मेघकोसो नीलांबर ओढे हलमूसलधारी जो श्रीकामपाल तिनको मैं ध्यान करूंहूं ॥ ४ ॥ अब नामावली कहूंहूं–बलभद्र, रामभद्र, राम, संकर्षण,

अच्युत, रेवतीरमण, देव, कामपाल, हलायुध ॥ ५ ॥ नीलाम्बर, श्वेतवर्ण, बलदेव, अच्युताग्रज, प्रलंबघ्न, महावीर, रौहिणेय, प्रतापवान् ॥ ६ ॥ तालांक, मुसली, हली, हरि, यदुवर, बली, सीरपाणि, पद्मपाणि, लकुटी, वेणुवादक ॥ ७ ॥ कालिंदीभेदन, वीर, बल, प्रबल, ऊर्ध्वग, वासुदेवकला, अनन्त, सहस्रवदन, स्वराट् ॥ ८ ॥ वसु, वसुमतीभर्ता, वासुदेव, वसूत्तम, यदूत्तम, यादवेंद्र, माधव, वृष्णिवल्लभ ॥ ९ ॥ द्वारकेश, माथुरेश, दानी, मानी, महामना, पूर्ण, पुराण, पुरुष, परेश, परमेश्वर ॥ १० ॥ परिपूर्णतम, साक्षात्परम, पुरुषोत्तम, अनन्त, शाश्वत, शेष, भगवान्, प्रकृतिपर ॥ ११ ॥ जीवात्मा, परमात्मा, अन्तरात्मा, ध्रुव, अव्यय, चतुर्व्यूह, चतुर्वेद, चतुर्मूर्ति,

नीलांबरःश्वेतवर्णोबलदेवोच्युताग्रजः ॥ प्रलंबघ्नोमहावीरोरौहिणेयःप्रतापवान् ॥६॥ तालांकोमुसलीहलीहरिर्यदुवरोबली ॥ सीरपाणिःपद्म
पाणिर्लकुटीवेणुवादनः ॥ ७ ॥ कालिंदीभेदनोवीरोबलःप्रबलऊर्ध्वगः ॥ वासुदेवकलानंतःसहस्रवदनःस्वराट् ॥ ८ ॥ वसुर्वसुमतीभर्तावासु
देवोवसूत्तमः ॥ यदूत्तमोयादवेंद्रोमाधवोवृष्णिवल्लभः॥९॥ द्वारकेशोमाथुरेशोदानीमानीमहामनाः॥ पूर्णःपुराणःपुरुषःपरेशःपरमेश्वरः॥१०॥
परिपूर्णतमःसाक्षात्परमःपुरुषोत्तमः ॥ अनंतःशाश्वतःशेषोभगवान्प्रकृतेःपरः ॥ ११ ॥ जीवात्मापरमात्माचह्यंतरात्माध्रुवोव्य
यः ॥ चतुर्व्यूहश्चतुर्वेदश्चतुर्मूर्तिश्चतुष्पदः ॥ १२ ॥ प्रधानंप्रकृतिःसाक्षीसंघातःसंघवान्सखी ॥ महामनाबुद्धिसखश्चेतोहंकारआवृतः
॥ १३ ॥ इंद्रियेशोदेवतात्माज्ञानंकर्मचशर्मच ॥ अद्वितीयोद्वितीयश्चनिराकारोनिरंजनः ॥ १४ ॥ विराट्सम्राण्महौघश्चाधारःस्था
स्नुश्चरिष्णुमान् ॥ फणींद्रःफणिराजश्चसहस्रफणमंडितः ॥ १५ ॥ फणीश्वरःफणिस्फूर्तिःफूत्कारीचीत्करःप्रभुः ॥ मणिहारोम
णिधरोवितलीसुतलीतली ॥ १६ ॥ अतलीसुतलेशश्चपातालश्चतलातलः ॥ रसातलोभोगितलःस्फुरद्दंतोमहातलः ॥ १७ ॥ वासु
किःशंखचूडाभोदेवदत्तोधनंजयः ॥ कंबलाश्वोवेगतरोधृतराष्ट्रोमहाभुजः ॥ १८ ॥ वारुणीमदमत्तांगोमदघूर्णितलोचनः ॥ पद्माक्षः
पद्ममालीचवनमालीमधुश्रवाः ॥ १९ ॥ कोटिकंदर्पलावण्योनागकन्यासमर्चितः ॥ नूपुरीकटिसूत्रीचकटकीकनकांगदी ॥ २० ॥

चतुष्पद ॥ १२ ॥ प्रधान, प्रकृति, साक्षी, संघात, संघवान्, सखी, महामना, बुद्धिसख, चित्त, अहंकार, आवृत ॥ १३ ॥ इंद्रियेश, देवतात्मा, ज्ञान, कर्म, शर्म, अद्वितीय, द्वितीय, निराकार, निरंजन ॥ १४ ॥ विराट्, सम्राट्, महौघ, आधार, स्थाणु, चरिष्णु, फणीन्द्र, फणिराज, सहस्रफणमण्डित ॥ १५ ॥ फणीश्वर, फणिस्फूर्ति, स्फूत्कारी, चीत्कर, प्रभु, मणिहार, मणिधर, वितली, सुतली, तली ॥ १६ ॥ अतली, सुतलेश, पाताल, तलातल, रसातल, भोगितल, स्फुरद्दंत, महातल ॥ १७ ॥ वासुकी, शंखचूडाभ, देवदत्त, धनंजय, कंबलाश्व, वेगतर, धृतराष्ट्र, महाभुज ॥ १८ ॥ वारुणीमदमत्तांग, मदघूर्णितलोचन, पद्माक्ष, पद्ममाली, वनमाली, मधुश्रवा ॥ १९ ॥ कोटिकंदर्पलावण्य, नागकन्यासमर्चित

नूपुरी, कटिसूत्री , कटकी, कटकांगदी ॥ २० ॥ मुकुटी, कुंडली, दंडी, शिखंडी, खंडमंडली, कलि, कलिप्रिय, काल, निवातकवचेश्वर ॥ २१ ॥ संहारकद्रु, द्रवयु, कालाग्नि, प्रलय,
लय, महाहि, पाणिनि, शास्त्र, भाष्यकार, पतंजलि ॥ २२ ॥ कात्यायनी, पक्विमाभ, स्फोटायन, उरंगम, ॥ वैकुंठ, याज्ञिक, यज्ञ, वामन, हरिण, हरि ॥ २३ ॥ कृष्ण, विष्णु, महा
विष्णु, प्रभविष्णु, विशेषवित, हंस, योगेश्वर, कूर्म, वाराह, नारदमुनि, ॥ २४ ॥ सनक, कपिल, मत्स्य, कमठ, देवमंगल, दत्तात्रेय, पृथु, वृद्ध, ऋषभ, भार्गवोत्तम ॥ २५ ॥
धन्वंतरि, नृसिंह, कल्कि, नारायण, नर, रामचन्द्र, राघवेंद्र, कोशलेन्द्र, रघूद्वह ॥ २६ ॥ काकुत्स्थ, करुणासिन्धु, राजेंद्र, सर्वलक्षण, शूर, दाशरथी, त्राता, कौसल्यानन्दवर्द्धन ॥२७॥
सौमित्रि, भरत, धन्वी, शत्रुघ्न, शत्रुतापन, निषंगी, कवची, खड्गी, शरी, ज्याहतकोष्ठक ॥ २८ ॥ बद्धगोधांगुलित्राण, शंभुकोदण्डभंजन, यज्ञत्राता, यज्ञभर्ता, मारीचवधकारक ॥२९॥

मुकुटीकुंडलीदंडीशिखंडीखंडमंडली ॥ कलिःकलिप्रियःकालोनिवातकवचेश्वरः ॥२१॥ संहारकद्रुद्रवयुःकालाग्निःप्रलयोलयः ॥ महाहिः
पाणिनिःशास्त्रोभाष्यकारःपतंजलिः॥२२॥ कात्यायनीपक्विमाभःस्फोटायनउरंगमः ॥ वैकुंठोयाज्ञिकोयज्ञोवामनोहरिणोहरिः॥२३॥ कृष्णो
विष्णुर्महाविष्णुःप्रभविष्णुर्विशेषवित् ॥ हंसोयोगेश्वरःकूर्मोवाराहोनारदोमुनिः ॥२४॥ सनकःकपिलोमत्स्यःकमठोदेवमंगलः ॥ दत्तात्रेयः
पृथुर्वृद्धऋषभोभार्गवोत्तमः ॥२५॥ धन्वंतरिर्नृसिंहश्चकल्किर्नारायणोनरः ॥ रामचंद्रोराघवेंद्रःकोशलेंद्रोरघूद्वहः ॥२६॥ काकुत्स्थःकरुणासिं
धूराजेंद्रःसर्वलक्षणः ॥ शूरोदाशरथिस्त्राताकौसल्यानंदवर्द्धनः ॥ २७ ॥ सौमित्रिर्भरतोधन्वीशत्रुघ्नःशत्रुतापनः ॥ निषंगीकवचीखड्गीशरी
ज्याहतकोष्ठकः ॥ २८ ॥ बद्धगोधांगुलित्राणःशंभुकोदंडभंजनः ॥ यज्ञत्रातायज्ञभर्तामारीचवधकारकः ॥ २९ ॥ असुरारिस्ताडकारि
र्विभीषणसहायकृत् ॥ पितृवाक्यकरोहर्षीविराधारिर्वनेचरः ॥ ३० ॥ मुनिर्मुनिप्रियश्चित्रकूटारण्यनिवासकृत् ॥ कबंधहादंडकेशोरामो
राजीवलोचनः ॥ ३१ ॥ मतंगवनसंचारीनेतापंचवटीपतिः॥ सुग्रीवःसुग्रीवसखोहनुमत्प्रीतमानसः ॥ ३२ ॥ सेतुबंधोरावणारिर्लंकादहनत
त्परः ॥ रावण्यारिःपुष्पकस्थोजानकीविरहातुरः ॥ ३३ ॥ अयोध्याधिपतिःश्रीमाँल्लवणारिःसुरार्चितः ॥ सूर्यवंशीचंद्रवंशीवंशीवाद्यविशा
रदः ॥३४॥ गोपतिर्गोपवृन्देशोगोपोगोपीशतावृतः ॥ गोकुलेशोगोपपुत्रोगोपालोगोगणाश्रयः ॥३५॥ पूतनारिर्बकारिश्चतृणावर्तनिपातकः॥
अघारिर्धेनुकारिश्चप्रलंबारिर्व्रजेश्वरः ॥ ३६ ॥ अरिष्टहाकेशिशत्रुर्व्योमासुरविनाशकृत् ॥ अग्निपानोदुग्धपानोवृन्दावनलताश्रितः ॥ ३७ ॥

असुरारि, ताडकारि, विभीषणसहायकृत, पितृवाक्यकर, हर्षी, विराधारि, वनेचर ॥ ३० ॥ मुनि, मुनिप्रिय, चित्रकूटारण्यनिवासकृत, कबंधहा, दण्डकेश, राम, राजीव
लोचन ॥ ३१ ॥ मतंगवनसंचारी, नेता, पंचवटीपति, सुग्रीव, सुग्रीवसख, हनुमत्प्रीतिमानस ॥ ३२ ॥ सेतुबंध, रावणारि, लंकादहनतत्पर, रावण्यरि, पुष्पकस्थ, जानकीविरहातुर,
॥ ३३ ॥ अयोध्याधिपति, श्रीमान, लवणारि, सुरार्चित, सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी, वंशीवाद्यविशारद ॥ ३४ ॥ गोपति, गोपवृंदेश, गोप, गोपीशतावृत, गोकुलेश, गोपपुत्र,
गोपाल, गोगणाश्रय ॥ ३५ ॥ ॥ पूतनारि, बकारि, तृणावर्तनिपातक, अघारि, धेनुकारि, प्रलंबारि, व्रजेश्वर ॥ ३६ ॥ अरिष्टहा, केशिशत्रु, व्योमासुरविनाशक, अग्निपान,

दुग्धपान, वृंदावनलताश्रित ॥ ३७ ॥ यशोमतीसुत, भव्य, रोहिणीलालित, शिशु, रासमण्डलमध्यस्थ, रासमंडलमंडन ॥ ३८ ॥ गोपिकाशतयूथार्थी, शंखचूडवधोद्यत, गोवर्द्धन समुद्धर्ता, शक्रजित, व्रजरक्षक ॥ ३९ ॥ वृषभानुवर, नंद, आनंद, नंदवर्द्धन, नंदराजसुत, श्रीश, कंसारि कालियांतक ॥ ४० ॥ रजकारि, मुष्टिकारि, कंसकोदंडभंजन, चाणूरारि, कूटहंता, शलारि, तोशलांतक, ॥ ४१ ॥ कंसभ्रातृनिहंता, मल्लयुद्धप्रवर्तक, गजहंता, कंसहंता, कालहंता, कलंकहा ॥ ४२ ॥ मागधारि, यवनहा, पांडुपुत्रसहायकृत, चतुर्भुज, श्यामलांग, सौम्य, औपगविप्रिय ॥ ४३ ॥ युद्धभृत, उद्धवसखा, मंत्री, मंत्रविशारद, वीरहा, वीरमथन, शंखचक्रगदाधर ॥ ४४ ॥ रेवतीचित्तहर्ता, रेवतीहर्षवर्द्धन, रेवती

यशोमतीसुतोभव्योरोहिणीलालितःशिशुः ॥ रासमंडलमध्यस्थोरासमंडलमंडनः ॥ ३८ ॥ गोपिकाशतयूथार्थीशंखचूडवधोद्यतः ॥ गोवर्द्धनसमुद्धर्ताशक्रजिद्व्रजरक्षकः ॥ ३९ ॥ वृषभानुवरोनंदआनंदोनंदवर्धनः ॥ नंदराजसुतःश्रीशःकंसारिःकालियांतकः ॥ ४० ॥ रजकारिर्मुष्टिकारिः कंसकोदंडभंजनः॥ चाणूरारिःकूटहंताशलारिस्तोशलांतकः ॥४१॥ कंसभ्रातृनिहंताचमल्लयुद्धप्रवर्तकः॥ गजहंताकंसहंताकालहंताकलंकहा ॥ ४२ ॥ मागधारिर्यवनहापांडुपुत्रसहायकृत् ॥ चतुर्भुजःश्यामलांगःसौम्यश्चौपगविप्रियः ॥४३॥ युद्धभृदुद्धवसखामंत्रीमंत्रविशारदः ॥ वीरहावीरमथनःशंखचक्रगदाधरः ॥४४॥ रेवतीचित्तहर्ताचरेवतीहर्षवर्द्धनः ॥ रेवतीप्राणनाथश्चरेवतीप्रियकारकः ॥४५॥ ज्योतिर्ज्योतिष्मतीभर्तारैवताद्रिविहारकृत् ॥ धृतिनाथोधनाध्यक्षोदानाध्यक्षोधनेश्वरः ॥ ४६ ॥ मैथिलार्चितपादाब्जोमानदोभक्तवत्सलः ॥ दुर्योधनगुरुर्गुर्वीगदाशिक्षाकरःक्षमी ॥ ४७ ॥ मुरारिर्मदनोमंदोनिरुद्धोधन्विनांवरः ॥ कल्पवृक्षःकल्पवृक्षीकल्पवृक्षवनप्रभुः ॥४८॥ स्यमंतकमणिर्मान्योगांडीवीकौरवेश्वरः ॥ कुभांडखंडनकरःकूपकर्णप्रहारकृत ॥ ४९ ॥ सेव्योरैवतजामातामधुमाधवसेवितः ॥ बलिष्ठः पुष्टसर्वांगोहृष्टःपुष्टःप्रहर्षितः ॥ ५० ॥ वाराणसीगतःक्रुद्धःसर्वःपौंड्रकघातकः ॥ ॥ सुनंदीशिखरीशिल्पीद्विविदांगनिषूदनः ॥ ५१ ॥ हस्तिनापुरसंकर्षीरथीकौरवपूजितः ॥ विश्वकर्माविश्वधर्मादेवशर्मादयानिधिः ॥ ५२ ॥ महाराजच्छत्रधरोमहाराजोपलक्षणः ॥ सिद्धगीतःसिद्धकथःशुक्लचामरवीजितः ॥ ५३ ॥

प्राणनाथ, रेवतीप्रियकारक ॥ ४५ ॥ ज्योति, ज्योतिष्मतीभर्ता, रैवताद्रिविहारकृत, धृतिनाथ, धनाध्यक्ष, दानाध्यक्ष, धनेश्वर ॥ ४६ ॥ मैथिलार्चितपादाब्ज, मानद, भक्तवत्सल, दुर्योधनगुरु, गुर्वी, गदाशिक्षाकर, क्षमी ॥ ४७ ॥ मुरारि, मदन, मन्द, अनिरुद्ध, धन्विनांवर, कल्पवृक्ष, कल्पवृक्षी, कल्पवृक्षवनप्रभु ॥४८॥ स्यमंतकमणि, मान्य, गांडीवी, कौरवेश्वर, कुंभांडखण्डनकर, कूपकर्णप्रहारकृत ॥ ४९ ॥ सेव्य, रैवतजामाता, मधुमाधवसेवित, बलिष्ठ, पुष्टसर्वांग, हृष्ट, पुष्ट, प्रहर्षित ॥ ५० ॥ वाराणसीगत, क्रुद्ध, सर्व पौंड्रकघातक, सुनन्दी, शिखरी, शिल्पी, द्विविदांगनिषूदन ॥ ५१ ॥ हस्तिनापुरसंकर्षी, रथी, कौरवपूजित, विश्वकर्मा, विश्वधर्मा, देवशर्मा, दयानिधि ॥ ५२ ॥ महाराजछत्रधर, महाराजोपलक्षण,

सिद्धगीत, सिद्धकथ, शुक्लचामरवीजित ॥ ५३ ॥ ताराक्ष, कीरनास, बिंबोष्ठ, सुस्मितच्छवि, करीन्द्रकरदोर्दंड, प्रचण्ड, मेघमंडल ॥ ५४ ॥ कपाटवक्षा, पीनांस, पद्मपादस्फुरद्द्युति, महाविभूति, भूतेश, बंधमोक्षी, समीक्षण ॥ ५५ ॥ चैद्यशत्रु, शत्रुसंध, दन्तवक्त्रनिषूदक, अजातशत्रु, पापघ्न, हरिदाससहायकृत् ॥ ५६ ॥ शाल्वबाहु, शाल्वहंता, तीर्थयायी, जनेश्वर, नैमिषारण्ययात्रार्थी, गोमतीतीरवासकृत् ॥ ५७ ॥ गंडकीस्नानवान्, स्रग्वी, वैजयन्तीविराजित, अम्लानपंकजधर, विपाशी, शोणसंप्लुत, प्रयागतीर्थराज ॥ ५८ ॥ सरयूसेतुबंधन, गयाशिर, धनद, पौलस्त्य, पुलहाश्रम ॥ ५९ ॥ गंगासागरसंगार्थी, सप्तगोदावरीपति, वेणी, भीमरथी, गोदा, ताम्रपर्णी, वटोदका ॥ ६० ॥ कृतमाला, महापुण्या, कावेरी, पयस्विनी, प्रतीची, सुप्रभा, वेणी, त्रिवेणी, सरयूपमा ॥ ६१ ॥ कृष्णा, पंपा, नर्मदा, गंगा, भागीरथी, नदी, सिद्धाश्रम, प्रभास, बिंदु, बिंदुसरोवर ॥ ६२ ॥ पुष्कर, सैंधव, जम्बू, नरनारायणाश्रम, कुरुक्षेत्रपति, राम, जामदग्न्य, महामुनि ॥ ६३ ॥ इल्वलात्मजहंता, सुदामासौख्यदायक, विश्वजित, विश्वनाथ, त्रिलोकविजयी, जयी ॥ ६४ ॥ वसंतमालतीकर्षी, गद, गद्य, गदाधर, गुणार्णव, गुणनिधि, गुणपात्री, गुणाकर ॥ ६५ ॥ रंगवल्ली, जलाकार, निर्गुण, सगुण, बृहत्, दृष्ट, श्रुत, भवत, भूत, भविष्य, अल्पविग्रह ॥ ६६ ॥ अनादि, आदि, आनन्द, प्रत्यग्धामा, निरन्तर, गुणातीत, सम, साम्य, समदृक्, निर्विकल्पक ॥ ६७ ॥ गूढ, व्यूढ, गुण, गौण, गुणाभास, गुणावृत, नित्य, अक्षर, निर्विकार, क्षर, अजस्रसुख, अमृत ॥ ६८ ॥ सर्वग, सर्ववित्, सार्थ, समबुद्धि, समप्रभ, अक्लेद्य, अच्छेद्य, आपूर्ण, अशोष्य, अदाह्य, अनिवर्तक ॥ ६९ ॥

ताराक्षः कीरनासश्च बिंबोष्ठः सुस्मितच्छविः ॥ करींद्रकरदोर्दंडः प्रचंडो मेघमंडलः ॥ ५४ ॥ कपाटवक्षाः पीनांसः पद्मपादस्फुरद्द्युतिः ॥
महाविभूतिर्भूतेशो बंधमोक्षी समीक्षणः ॥ ५५ ॥ चैद्यशत्रुः शत्रुसंधो दंतवक्त्रनिषूदकः ॥ अजातशत्रुः पापघ्नो हरिदाससहायकृत् ॥ ५६ ॥
शाल्वबाहुः शाल्वहंता तीर्थयायी जनेश्वरः ॥ नैमिषारण्ययात्रार्थी गोमतीतीरवासकृत् ॥ ५७ ॥ गंडकीस्नानवान्स्रग्वी वैजयंतीविराजितः ॥
अम्लानपंकजधरो विपाशी शोणसंप्लुतः ॥ ५८ ॥ प्रयागतीर्थराजश्च सरयूः सेतुबंधनः ॥ गयाशिरश्च धनदः पौलस्त्यः पुलहाश्रमः ॥ ५९ ॥
गंगासागरसंगार्थी सप्तगोदावरीपतिः ॥ वेणी भीमरथी गोदा ताम्रपर्णी वटोदका ॥ ६० ॥ कृतमाला महापुण्या कावेरी च पयस्विनी ॥
प्रतीची सुप्रभा वेणी त्रिवेणी सरयूपमा ॥ ६१ ॥ कृष्णा पंपा नर्मदा च गंगा भागीरथी नदी ॥ सिद्धाश्रमः प्रभासश्च बिन्दुर्बिन्दुसरोवरः ॥ ६२ ॥
पुष्करः सैंधवो जंबूर्नरनारायणाश्रमः ॥ कुरुक्षेत्रपती रामो जामदग्न्यो महामुनिः ॥ ६३ ॥ इल्वलात्मजहंता च सुदामासौख्यदायकः ॥
विश्वजिद्विश्वनाथश्च त्रिलोकविजयी जयी ॥ ६४ ॥ वसन्तमालतीकर्षी गदो गद्यो गदाग्रजः ॥ गुणार्णवो गुणनिधिर्गुणपात्री गुणाकरः
॥ ६५ ॥ रंगवल्ली जलाकारो निर्गुणः सगुणो बृहत् ॥ दृष्टः श्रुतो भवद्भूतो भविष्यश्चाल्पविग्रहः ॥ ६६ ॥ अनादिरादिरानंदः प्रत्यग्धा
मा निरंतरः ॥ गुणातीतः समः साम्यः समदृङ्निर्विकल्पकः ॥ ६७ ॥ गूढो व्यूढो गुणो गौणो गुणाभासो गुणावृतः ॥ नित्योऽक्षरो निर्विका
रः क्षरोऽजस्रसुखोऽमृतः ॥ ६८ ॥ सर्वगः सर्ववित्सार्थः समबुद्धिः समप्रभः ॥ अक्लेद्योऽच्छेद्य आपूर्णोऽशोष्योऽदाह्योऽनिवर्तकः ॥ ६९ ॥

ब्रह्म, ब्रह्मधर, ब्रह्मा, ज्ञापक, व्यापक, कवि, अध्यात्मक, अधिभूत, अधिदैव, स्वाश्रय, आश्रय ॥ ७० ॥ महावायु, महावीर, चेष्टारूप, तनुस्थित, प्रेरक, बोधक, बोधी, त्रयोविंशतिक, गण ॥ ७१ ॥ अंशांश, नरावेश, अवतार, भूपरिस्थित, मह, जन, तप, सत्य, भूः, भुवः, स्वर ॥ ७२ ॥ नैमित्तिक, प्राकृतिक, आत्यंतिक, सर्ग, विसर्ग, सर्गादि, निरोध, रोध, ऊतिमान् ॥ ७३ ॥ मन्वंतरावतार, मनु, मनुसुत, अनघ, स्वयंभू, शांभव, शंकु, स्वायंभुव, सहायकृत् ॥ ७४ ॥ सुरालय, देवगिरि, मेरु, हेमार्चित, गिरि, गिरीश, गणनाथ, गौरीश, गिरिगह्वर ॥ ७५ ॥ विंध्य, त्रिकूट, मैनाक, सुवेल, पारिभद्रक, पतंग, शिशिर, कंक, जारुधि, शैलसत्तम ॥ ७६ ॥ कालंजर, बृहत्सानु, दरीभृत, नंदिकेश्वर

ब्रह्मब्रह्मधरोब्रह्माज्ञापकोव्यापकःकविः ॥ अध्यात्मकोधिभूतश्चाधिदैवःस्वाश्रयाश्रयः ॥ ७० ॥ महावायुर्महावीरश्चेष्टारूपतनुस्थितः ॥ प्रेरकोबोधकोबोधीत्रयोविंशतिकोगणः ॥ ७१ ॥ अंशांशश्चनरावेशोवतारोभूपरिस्थितः ॥ महर्जनस्तपःसत्यंभूर्भुवःस्वरितित्रिधा ॥ ७२ ॥ नैमित्तिकःप्राकृतिकआत्यंतिकमयोलयः ॥ सर्गोविसर्गःसर्गादिर्निरोधोरोधऊतिमान् ॥ ७३ ॥ मन्वंतरावतारश्चमनुर्मनुसुतोनघः ॥ स्वयंभूःशांभवःशङ्कुःस्वायंभुवसहायकृत् ॥ ७४ ॥ सुरालयोदेवगिरिर्मेरुर्हेमार्चितोगिरिः ॥ गिरीशोगणनाथश्चगौरीशोगिरिगह्वरः ॥ ७५ ॥ विंध्यस्त्रिकूटोमैनाकःसुवेलःपारिभद्रकः ॥ पतङ्गःशिशिरःकंकोजारुधिःशैलसत्तमः ॥ ७६ ॥ कालंजरोबृहत्सानुर्दरीभृन्नंदिकेश्वरः ॥ सन्तानस्तरुराजश्चमंदारःपारिजातकः ॥ ७७ ॥ जयंतकृज्जयंतांगोजयंतीदिग्जयाकुलः ॥ वृत्रहादेवलोकश्चशशीकुमुदबांधवः ॥७८॥ नक्षत्रेशःसुधासिन्धुर्मृगःपुष्यःपुनर्वसुः ॥ हस्तोभिजिच्छ्रवणोवैधृतिर्भास्करोदयः ॥ ७९ ॥ ऐंद्रःसाध्यःशुभःशुक्लोव्यतीपातोध्रुवःसितः ॥ शिशुमारोदेवमयोब्रह्मलोकोविलक्षणः ॥ ८० ॥ रामोवैकुण्ठनाथश्चव्यापीवैकुण्ठनायकः ॥ श्वेतद्वीपोजितपदोलोकालोकाचलाश्रितः ॥८१॥ भूमिर्वैकुण्ठदेवश्चकोटिब्रह्मांडकारकः ॥ असंख्यब्रह्मांडपतिर्गोलोकेशोगवांपतिः ॥ ८२ ॥ गोलोकधामधिषणोगोपिकाकण्ठभूषणः ॥ श्रीधारःश्रीधरोलीलाधरोगिरिधरोधुरी ॥ ८३ ॥ कुंतधारीत्रिशूलीचबीभत्सीघर्घरस्वनः ॥ शूलसूच्यर्पितगजोगजचर्मधरोगजी ॥ ८४ ॥

संतान, तरुराज, मंदार, पारिजातक ॥ ७७ ॥ जयंतकृत्, जयंतांग, जयंती, दिग्जयाकुल, वृत्रहा, देवलोक, शशि, कुमुदबांधव, ॥ ७८ ॥ नक्षत्रेश, सुधासिंधु, मृग, पुष्य, पुनर्वसु, हस्त, अभिजित, श्रवण, वैधृति, भास्करोदय ॥ ७९ ॥ ऐंद्र, साध्य, शुभ, शुक्ल, व्यतीपात, ध्रुव, सित, शिशुमार, देवमय, ब्रह्मलोक, विलक्षण ॥ ८० ॥ राम, वैकुंठनाथ, व्यापी, वैकुंठनायक, श्वेतद्वीप, अजितपद, लोकालोकाचलाश्रित ॥ ८१ ॥ भूमि, वैकुंठदेव, कोटिब्रह्मांडकारक, असंख्यब्रह्मांडपति, गोलोकेश, गवांपति ॥ ८२ ॥ गोलोकधामधिषण, गोपिकाकंठभूषण, श्रीधार, श्रीधर, लीलाधर, गिरिधर, धुरी ॥ ८३ ॥ कुंतधारी, त्रिशूली, बीभत्सी, घर्घरस्वन, शूलसूच्यर्पितगज, गजचर्मधर, गजी ॥ ८४ ॥

अंत्रमाली, मुंडमाली, व्याली, दंडकमंडलु, वैतालभृत, भूतसंघ, कूष्मांडगणसंवृत ॥ ८५ ॥ प्रमथेश, पशुपति, मृडानीश, मृड, वृष, कृतांत, कालसंघारि, कूट, कल्पांतभैरव ॥
॥ ८६ ॥ षडानन वीरभद्र, दक्षयज्ञविघातक, खर्पराशी, विषाशी, शक्तिहस्त, शिवार्थद ॥ ८७ ॥ पिनाकटंकारकर, चलज्झंकारनूपुर, पंडित, तर्कविद्वान, वेदपाठी, श्रुतीश्वर ॥
॥ ८८ ॥ वेदांतकृत, सांख्यशास्त्री, मीमांसी, कणनामभाक, कणादि, गौतम, वादी, वाद, नैयायिक, नय ॥ ८९ ॥ वैशेषिक, धर्मशास्त्री, सर्वशास्त्रार्थतत्त्वग, वैयाकरणकृत,
छंद, वैयास, प्राकृति, वच ॥ ९० ॥ पाराशरीसंहितावित, काव्यकृत, नाटकप्रद, पौराणिक, स्मृतिकर, वैद्य, विद्याविशारद ॥ ९१ ॥ अलंकार, लक्षणार्थ, व्यंगवित, ध्वनिवित,

अंत्रमालीमुण्डमालीव्यालीदंडकमण्डलुः ॥ वेतालभृद्भूतसंघःकूष्मांडगणसंवृतः ॥८५॥ प्रमथेशःपशुपतिर्मृडानीशोमृडोवृषः ॥ कृतांतकाल
संघारिःकूटःकल्पांतभैरवः ॥ ८६ ॥ षडाननोवीरभद्रोदक्षयज्ञविघातकः ॥ खर्पराशीविषाशीचशक्तिहस्तःशिवार्थदः ॥८७॥ पिनाकटंकार
करश्चलज्झंकारनूपुरः ॥ पंडितस्तर्कविद्वान्वैवेदपाठीश्रुतीश्वरः ॥ ८८ ॥ वेदांतकृत्सांख्यशास्त्रीमीमांसीकणनामभाक् ॥ कणादिर्गौतमो
वादीवादोनैयायिकोनयः ॥ ८९ ॥ वैशेषिकोधर्मशास्त्रीसर्वशास्त्रार्थतत्त्वगः ॥ वैयाकरणकृच्छंदोवैयासःप्राकृतिर्वचः ॥९०॥ पाराशरीसंहि
तावित्काव्यकृन्नाटकप्रदः ॥ पौराणिकःस्मृतिकरोवैद्योविद्याविशारदः ॥९१॥ अलंकारोलक्षणार्थोव्यंग्यविद्ध्वनिविद्ध्वनिः ॥ वाक्यस्फोटःपद
स्फोटःस्फोटवृत्तिश्चसार्थवित् ॥९२॥ शृंगारउज्ज्वलःस्वच्छोद्भुतोहास्योभयानकः ॥ अश्वत्थोयवभोजीचयवक्रीतोयवाशनः ॥ ९३ ॥ प्रह्लादर
क्षकःस्निग्धऐलवंशविवर्द्धनः ॥ गताधिरंबरीषांगोविगाधिर्गाधिनांवरः ॥९४॥ नानामणिसमाकीर्णोनानारत्नविभूषणः ॥ नानापुष्पधरःपु
ष्पीपुष्पधन्वाप्रपुष्पितः ॥९५॥ नानाचन्दनगन्धाढ्योनानापुष्परसार्चितः ॥ नानावर्णमयोवर्णोनानावस्त्रधरःसदा ॥९६॥ नानापद्मकरःकौ
शीनानाकौशेयवेषधृक् ॥ रत्नकंबलधारीचधौतवस्त्रसमावृतः ॥ ९७ ॥ उत्तरीयधरःपर्णोघनकंचुकसङ्घवान् ॥ पीतोष्णीषःसितोष्णीषोरक्तो
ष्णीषोदिगम्बरः ॥ ९८ ॥ दिव्यांगोदिव्यरचनोदिव्यलोकविलोकितः ॥ सर्वोपमोनिरुपमोगोलोकांकीकृतांगणः ॥ ९९ ॥

ध्वनि, वाक्यस्फोट, पदस्फोट, स्फोटवृत्ति, सार्थवित ॥ ९२ ॥ शृंगार, उज्ज्वल, स्वच्छ, अद्भुत, हास्य, भयानक, अश्वत्थ, यवभोजी, यवक्रीत, यवाशन ॥ ९३ ॥ प्रह्लादर
क्षक, स्निग्ध, ऐलवंशविवर्द्धन, गताधि, अंबरीषांग, विगाधि, गाधिनांवर ॥ ९४ ॥ नानामणिसमाकीर्ण, नानारत्नविभूषण, नानापुष्पधर, पुष्पी, पुष्पधन्वा, प्रपुष्पित ॥ ९५ ॥
नानाचंदनगंधाढ्य, नानापुष्परसार्चित, नानावर्णमय, वर्ण, नानावस्त्रधर, ॥ ९६ ॥ नानापद्मकर, कौशी, नानाकौशेयवेषधृक, रत्नकंबलधारी, धौतवस्त्रसमावृत ॥ ९७ ॥ उत्तरीय
धर, पर्ण, घनकंचुकसंघवान, पीतोष्णीष, सितोष्णीष, रक्तोष्णीष दिगंबर ॥ ९८ ॥ दिव्यांग, दिव्यरचन, दिव्यलोकविलोकित, सर्वोपम, निरुपम, गोलोकांकी, कृतांगण ॥ ९९ ॥

कृतस्वोत्संग, गोलोक, कुण्डलीभूत, आस्थित, माथुर, माथुरादर्शी, चलत्खंजनलोचन ॥ १०० ॥ दधिहर्ता, दुग्धहर, नवनीतसिताशन, तक्रभुक्, तक्रहारी, दधिचौर्यकृतश्रम ॥ १ ॥ प्रभावतीबद्धकर, दामी, दामोदर, दर्मी, सिकताभूमिचारी, बालकेलि, व्रजार्भक ॥ २ ॥ धूलिधूसरसर्वांग, काकपक्षधर, सुधी, मुक्तकेशी, वत्सवृन्द, कालिन्दीकूलवीक्षण ॥ ३ ॥ जलकोलाहली, कूली, पंकप्रांगणलेपक, श्रीवृंदावनसंचारी, वंशीवटतटस्थित ॥ ४ ॥ महावननिवासी, लोहार्गलवनाधिप, साधु, प्रियतम, साध्य, साध्वीश, गतसाध्वस ॥ ५ ॥ रंगनाथ, विट्ठलेश, मुक्तिनाथ, अघनाशन, सुकीर्ति, सुयशा, स्फीत, यशस्वी, रंगरंजन ॥ ६ ॥ रागषट्क, रागपुत्र, रागिणीरमणोत्सुक, दीपक, मेघमल्हार, श्रीराग, मालकोशक ॥ ७ ॥ हिंडोल, भैरवाख्य, स्वरजातिस्मर, मृदु, ताल, मानप्रमाण, स्वरगम्य, कलाक्षर ॥ ८ ॥ शमी,

कृतस्वोत्संगगोलोकःकुण्डलीभूतआस्थितः॥ माथुरोमाथुरादर्शीचलत्खञ्जनलोचनः॥१००॥ दधिहर्तादुग्धहरोनवनीतसिताशनः ॥ तक्रभुक्तक्रहारीचदधिचौर्यकृतश्रमः ॥१॥ प्रभावतीबद्धकरोदामीदामोदरोदर्मी ॥ सिकताभूमिचारीचबालकेलिर्व्रजार्भकः॥२॥ धूलिधूसरसर्वांगःकाकपक्षधरःसुधीः ॥ मुक्तकेशीवत्सवृंदःकालिन्दीकूलवीक्षणः ॥ ३ ॥ जलकोलाहलीकूलीपंकप्रांगणलेपकः ॥ श्रीवृन्दावनसंचारीवंशीवटतटस्थितः ॥ ४ ॥ महावननिवासीचलोहार्गलवनाधिपः ॥ साधुःप्रियतमःसाध्यःसाध्वीशोगतसाध्वसः ॥ ५ ॥ रंगनाथोविट्ठलेशोमुक्तिनाथोऽघनाशकः ॥ सुकीर्तिःसुयशाःस्फीतोयशस्वीरंगरंजनः ॥६॥ रागषट्कोरागपुत्रोरागिणीरमणोत्सुकः ॥ दीपकोमेघमल्हारःश्रीरागोमालकोशकः॥७॥ हिन्दोलोभैरवाख्यश्चस्वरजातिस्मरोमृदुः॥ तालोमानप्रमाणश्चस्वरगम्यःकलाक्षरः॥८॥ शमीश्यामीशतानन्दःशतयामःशतक्रतुः॥ जागरःसुप्तआसुप्तःसुषुप्तःस्वप्नऊर्वरः ॥ ९ ॥ ऊर्जःस्फूर्जोनिर्जरश्चविज्वरोज्वरवर्जितः ॥ ज्वरविज्वरकर्ताचज्वरधृक्त्रिज्वरोज्वरः ॥११०॥ जांबवाञ्जंबुकाशंकीजंबूद्वीपोद्विपारिहा ॥ शाल्मलिःशाल्मलिद्वीपःप्लक्षःप्लक्षवनेश्वरः ॥ ११ ॥ कुशधारीकुशःकौशीकौशिकःकुशविग्रहः ॥ कुशस्थलीपतिःकाशीनाथोभैरवशासनः ॥ १२ ॥ दाशार्हःसात्वतोवृष्णिर्भोजोंधकनिवासकृत् ॥ अंधकोदुन्दुभिर्द्योतःप्रद्योतःसात्वतांपतिः ॥ १३ ॥ शूरसेनोनुविषयोभोजवृष्ण्यंधकेश्वरः॥ आहुकःसर्वनीतिज्ञउग्रसेनोमहोग्रवाक् ॥१४॥ उग्रसेनप्रियःप्रार्थ्यःपार्थोयदुसभापतिः ॥ सुधर्माधिपतिःसत्त्वंवृष्णिचक्रावृतोभिषक् ॥१५॥ सभाशीलःसभादीपःसभाग्निश्चसभारविः॥ सभाचन्द्रःसभाभासःसभादेवःसभापतिः॥१६॥

श्यामी, शतानंद, शतयाम, शतक्रतु, जागर, सुप्त, आसुप्त, सुषुप्त, स्वप्न, ऊर्वर ॥९॥ ऊर्ज, स्फूर्ज, निर्जर, विज्वर, ज्वरवर्जित, ज्वरजित, ज्वरकर्ता, ज्वरघ्न, त्रिज्वर, अज्वर ॥११०॥ जांबवान्, जंबुकाशंकी, जंबूद्वीप, द्विपारिहा, शाल्मलि, शाल्मलिद्वीप, प्लक्ष, प्लक्षवनेश्वर ॥ ११ ॥ कुशधारी, कुश, कौशी, कौशिक, कुशविग्रह, कुशस्थलीपति, काशीनाथ, भैरवशासन ॥ १२ ॥ दशार्ह, शाश्वत, वृष्णि, भोज, अन्धक, निवासकृत, अन्धक, दुन्दुभि, द्योत, प्रद्योत, सात्वतांपति ॥ १३ ॥ शूरसेन, अनुविषय, भोजवृष्ण्यन्धकेश्वर, आहुक, सर्वनीतिज्ञ, उग्रसेन, महोग्रवाक् ॥ १४ ॥ उग्रसेनप्रिय, प्रार्थ, प्रार्थ्य, यदुसभापति, सुधर्माधिपति, सत्त्व, वृष्णि, चक्रावृत, भिषक् ॥ १५ ॥ सभाशील, सभादीप, सभाग्नि,

सभारवि, सभाचन्द, सभाभास, सभादेव, सभापति ॥ १६ ॥ प्रजार्थद, प्रजाभर्ता, प्रजापालनतत्पर, द्वारकादुर्गसंचारी, द्वारकाग्रहविग्रह ॥ १७ ॥ द्वारकादुःखसंहर्ता, द्वारकाजनमंगल, जगन्माता, जगत्त्राता, जगद्भर्ता, जगत्पिता ॥ १८ ॥ जगद्बन्धु, जगद्धाता, जगन्मित्र, जगत्सख, ब्रह्मण्यदेव, ब्रह्मण्य, ब्रह्मपादरजोदधत् ॥ १९ ॥ ब्रह्मपादरजस्पर्शी, ब्रह्मपादनिषेवक, ब्रह्मांघ्रिजलपूतांग, विप्रसेवापरायण ॥ ११० ॥ विप्रमुख्य, विप्रहित, विप्रगीतमहाकथ, विप्रपादजलार्द्रांग, विप्रपादोदकप्रिय ॥ २१ ॥ विप्रभक्त, विप्रगुरु, विप्र, विप्रपदानुग, अक्षौहिणीवृत, योद्धा, प्रतिमापंचसंयुत ॥ २२ ॥ चतुरंगिरा, पद्मवर्ती, सामन्तोद्धृतपादुक, गजकोटिप्रयायी, रथकोटिजयध्वज ॥ २३ ॥ महारथ, अतिरथ, जैत्रस्यंदनमास्थित, नारायणास्त्री, ब्रह्मास्त्री, रणश्लाघी, रणोद्भट ॥ २४ ॥ मदोत्कट, युद्धवीर, देवासुरभयंकर, करिकर्णमरुत्प्रेज, कुन्तलव्याप्तकुण्डल ॥ २५ ॥ अग्रग,

प्रजार्थदःप्रजाभर्ताप्रजापालनतत्परः ॥ द्वारकादुर्गसंचारीद्वारकाग्रहविग्रहः॥ १७॥ द्वारकादुःखसंहर्ताद्वारकाजनमंगलः ॥ जगन्माताज गत्त्राताजगद्भर्ताजगत्पिता ॥ १८ ॥ जगद्बंधुर्जगद्धाताजगन्मित्रोजगत्सखः ॥ ब्रह्मण्यदेवोब्रह्मण्योब्रह्मपादरजोदधत् ॥ १९ ॥ ब्रह्मपा दरजःस्पर्शीब्रह्मपादनिषेवकः ॥ विप्रांघ्रिजलपूतांगोविप्रसेवापरायणः ॥ १२० ॥ विप्रमुख्योविप्रहितोविप्रगीतमहाकथाः ॥ विप्रपादज लार्द्रांगोविप्रपादोदकप्रियः ॥ २१ ॥ विप्रभक्तोविप्रगुरुर्विप्रोविप्रपदानुगः ॥ अक्षौहिणीवृतोयोद्धाप्रतिमापंचसंयुतः ॥ २२ ॥ चतु रंगिराःपद्मवर्तीसामंतोद्धृतपादुकः ॥ गजकोटिप्रयायीचरथकोटिजयध्वजः ॥ २३ ॥ महारथश्चातिरथोजैत्रस्यंदनमास्थितः ॥ नारायणा स्त्रीब्रह्मास्त्रीरणश्लाघीरणोद्भटः ॥ २४ ॥ मदोत्कटोयुद्धवीरोदेवासुरभयंकरः ॥ करिकर्णमरुत्प्रेजत्कुन्तलव्याप्तकुण्डलः ॥ २५ ॥ अग्रगोवीर संमर्दोमर्दलोरणदुर्मदः ॥ भटःप्रतिभटःप्रोच्योबाणवर्षीषुतोयदः ॥ २६ ॥ खड्गखंडितसर्वांगःषोडशाब्दःषडक्षरः ॥ वीरघोषःक्लिष्टवपुर्वज्रांगो वज्रभेदनः ॥ २७ ॥ रुग्णवज्रोभग्नदंडःशत्रुनिर्भर्त्सनोद्यतः ॥ अट्टहासःपट्टधरःपट्टराज्ञीपतिःपटुः ॥ २८ ॥ कलःपटहवादित्रोहुंकारोगर्जि तस्वनः ॥ साधुभक्तपराधीनःस्वतंत्रःसाधुभूषणः ॥ २९ ॥ अस्वतंत्रःसाधुमयःसाधुग्रस्तमनामनाक् ॥ साधुप्रियःसाधुधनःसाधुज्ञातिः सुधाधनः ॥ १३० ॥ साधुचारीसाधुचित्तःसाधुवासीशुभास्पदः ॥ इतिनाम्नांसहस्रंतंबलभद्रस्यकीर्तितम् ॥ ३१ ॥ सर्वसिद्धिप्रदंनृणांचतुर्वर्ग फलप्रदम् ॥ शतवारंपठेद्यस्तुसविद्यावान्भवेदिह ॥ ३२॥ इंदिरांचविभूतिंचाभिजनंरूपमेवच ॥ बलमोजश्चपठनात्सर्वंप्राप्नोतिमानवः॥३३॥

वीरसम्मर्द, मर्दल, रणदुर्मद, भट, प्रतिभट, प्रोच्य, बाणवर्षी, इषुतोयद ॥ २६ ॥ खड्गखंडितसर्वांग, षोडशाब्द, षडक्षर, वीरघोष, क्लिष्टवपु, वज्रांग, वज्रभेदन ॥ २७ ॥ रुग्णवज्र, भग्नदंत, शत्रुनिर्भर्त्सनोद्यत, अट्टहास, पट्टधर, पट्टराज्ञीपति, पटु ॥ २८ ॥ कल, पटहवादित्र, हुंकार, गर्जितस्वन, साधुभक्तपराधीन, स्वतंत्र, साधुभूषण ॥ २९ ॥ अस्वतंत्र, साधुमय, साधुग्रस्तमना, मनाक्, साधुप्रिय, साधुधन, साधुज्ञाति, सुधाधन ॥ १३० ॥ साधुचारी, साधुचित्त, साधुवासी, शुभास्पद (१०००) या प्रकार बलभद्रके सहस्रनाम कीर्तन किये हैं ॥ ३१ ॥ मनुष्यनकूं सब सिद्धिनके दाता हैं और धर्म, अर्थ, काम, मोक्षके दाता हैं ॥ जो मनुष्य सौवेर पाठ करे तो विद्यावान् होय ॥३२॥ याके नित्य पाठ करते

लक्ष्मीकी भांति होय विभूति मिलै अभिजन बढे और रूप बढे देहबल इंद्रियबल सब प्राप्त होय ॥ ३३ ॥ गंगाके किनारेपै या यमुनाके किनारेपै देवालयमें
हजार पाठ करे तो बलते सिद्धि प्राप्त होय ॥ ३४ ॥ पुत्रकी चाहनावारेकूं पुत्र मिले, धनार्थीकूं धन मिले, बंध्यो होय तो बंधनते छूटै, रोगी होय तो रोगते छूटै ॥ ३५ ॥
पुरश्चरणकी विधिते दश हजार पाठ करे होम, तर्पण, गोदान, ब्राह्मणनको पूजन करे भोजन करावे ॥ ३६ ॥ पटल, पद्धति, स्तोत्र, कवच विधानते करे तो मंडलेश्वरनते
शोभित सब पृथ्वीको चक्रवर्ती राजा होय ॥ ३७ ॥ मतवारे हाथीन करिके शोभित द्वार जाको होय जिन हाथीनके मदतें मतवारे भौरा वाके द्वारपै गुंजारौ करें ॥ ३८ ॥ जो
निष्काम ह्वैके रेवतीपतिकी प्रीतिके अर्थ या सहस्रनामको पाठ करे तो जीवन्मुक्त होजायहै ॥ ३९ ॥ और वाके घरमें अच्युतके बड़े भैया बलदेव सदा निवास करें महा

गंगाकूलेथकालिंदीकूलेदेवालयेतथा ॥ सहस्रावर्तपाठेनबलात्सिद्धिःप्रजायते ॥३४॥ पुत्रार्थीलभतेपुत्रंधनार्थीलभतेधनम् ॥ बंधात्प्रमुच्यतेब
द्धोरोगीरोगान्निवर्तते ॥३५॥ अयुतावर्तपाठेचपुरश्चर्याविधानतः ॥ होमतर्पणगोदानविप्रार्चनकृतोद्यमात् ॥३६॥ पटलंपद्धतिंस्तोत्रंकवचंतुवि
धायच ॥ महामंडलभर्तास्यान्मंडितोमंडलेश्वरैः ॥३७॥ मत्तेभकर्णप्रहितामदगंधेनविह्वला ॥ अलंकरोतितद्द्वारंभ्रमद्भृङ्गावलीभृशम् ॥३८॥
निष्कारणःपठेद्यस्तुप्रीत्यर्थंरेवतीपतेः ॥ नाम्नांसहस्रंराजेंद्रसजीवन्मुक्तउच्यते ॥३९॥ सदावसेत्तस्यगृहेबलभद्रोच्युताग्रजः ॥ महापातक्यपि
जनःपठेन्नामसहस्रकम् ॥४०॥ छित्त्वामेरुसमंपापंभुक्त्वासर्वसुखंत्विह ॥ परात्परंमहाराजगोलोकंधामयातिहि ॥४१॥ ॥ नारदउवाच ॥
॥ गद्ये ॥ इतिश्रुत्वाच्युताग्रजस्यबलदेवस्यपंचांगंधृतिमान्धार्तराष्ट्रःसपर्ययासहितयापरयाभक्त्याप्राड्विपाकंपूजयामासतमनुज्ञाप्याशिषंदत्त्वा
प्राड्विपाकोमुनींद्रोगजाह्वयात्स्वाश्रमंजगाम ॥४२॥ भगवतोनन्तस्यबलभद्रस्यपरब्रह्मणःकथांयःशृणुतेश्रावयतेतथानन्दमयोभवति ॥ ४३ ॥
इदंमयातेकथितंनृपेंद्रसर्वार्थदंश्रीबलभद्रखण्डम् ॥ शृणोतियोधामहरेःसयातिविशोकमानन्दमखंडरूपम् ॥ १४४ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायां
श्रीबलभद्रखण्डेप्राड्विपाकदुर्योधनसंवादेबलभद्रसहस्रनामवर्णनंनामत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ समाप्तश्चायंबलभद्रखण्डोष्टमः ॥ ८ ॥

पापीहू जो जन योहू सहस्रनामको पाठ करै तो ॥ ४० ॥ मेरुके समान पापकूं काटिकै यहां सबरे जे सुख है तिन भोगिकें हे महाराज ! वो परते परे गोलोक धामकूं
जाय ॥ ४१ ॥ नारदजी कहैहैं—धृतराष्ट्रको बेटा ऐसे बलदेवजीको पंचाग सुनिके बड़ी भक्तिते बड़ी भारी पूजा करिके प्राड्विपाकको पूजन करतोभयो तब प्राड्विपाक मुनि
दुर्योधनपैतें अनुज्ञा मांगिकें आशीर्वाद दैके हस्तिनापुरते अपने आश्रमकूं चलेगये ॥ ४२ ॥ भगवान् अनंत बलभद्र परब्रह्म तिनकी कथाकूं जो सुने जो सुनावे तो वो मनुष्य वा
कथासेही सदानंदमय होयहै ॥ ४३ ॥ हे नृपेन्द्र ! यह मैंने सब अर्थनको देनवारो बलभद्रखण्ड तेरे आगे कह्यो याकूं जो कोई सुनेगो सो विशोक अखण्डानन्द हरिके
धामकूं जायगो ॥ ४४ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां श्रीबलभद्रखण्डे भाषाटीकायां प्राड्विपाकदुर्योधनसंवादे बलभद्रसहस्रनामवर्णनं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥

इदं पुस्तकं क्षेमराज—श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना मुम्बय्यां (खेतवाडी ७ वी गल्ली खम्बाटा लेन) स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) मुद्रणयन्त्रालये मुद्रयित्वा प्रकाशितम् । संवत् १९९७, शके १८६२.

J/ १८९१
(१०)

॥ अथ गर्गसंहितायां विज्ञानखण्डं भाषाटीकासहितं प्रारभ्यते ॥

(नवमखण्डम् ९)

भक्तिमार्ग है ताहि हे मुने! मेरे अगाडी
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ विज्ञानखण्डः ॥ बहुलाश्व राजा नारदजीते पूछे है कि, हरि जो श्रीकृष्ण तिनको जो परम सर्वोत्तम
कहो जाते मैं भक्त होऊं ॥ १ ॥ तब नारदजी बोले कि, भक्तिमार्गकूं मैं तेरे अगाडी कहूंहूं जो वेदव्यासके मुखते सुन्यो है जा भक्तिमार्गते भक्तवत्सल भगवान् प्रसन्न
होयहैं ॥ २ ॥ भुजदण्डके बलते उद्धत जो शंखासुर ताकूं मारके श्रीकृष्णने जो समुद्रमें बारह योजनकी द्वारिका रची तामें हे मैथिल! सुधर्मा नामकी जो दिव्य सभा ही
॥ ३ ॥ जाके मंडपके नीचे वैदूर्यमणिके खंबनकी पंगति किरोड़न शोभित है रहीहैं जे विश्वकर्माकी रची भई हैं ॥ ४ ॥ जहां पुखराजकी जटितभूमिमें मूंगानकी श्रेणी
नसैनी लगरहीहैं और जिनमें चित्र विचित्र चँदोहा टंगे हैं जिनमें सराईदार मोतीनकी झालर लटकिरही ऐसे जहां सिंहासन बिछे हैं बीजुरी सहित घनकीसी कांति जिनकी

श्रीगणेशायनमः ॥ अथविज्ञानखण्डःप्रारभ्यते ॥ ॥ बहुलाश्वउवाच ॥ ॥ हरेःश्रीकृष्णचंद्रस्यभक्तिमार्गस्तुयःपरः ॥ तंवद्‌ मुनेमह्यंयेनभक्तोभवाम्यहम् ॥ १ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ भक्तिमार्गंवदिष्यामिवेदव्यासमुखाच्छुतम् ॥ येनप्रसन्नोभवतिभगवान्भक्तवत्सलः ॥ २ ॥ शंखंविजित्यकृष्णेनभुजदंडबलोद्धतम् ॥ द्वारावत्यांसभादिव्यासुधर्मानाममैथिल ॥ ३ ॥ यत्रमंडपदेशस्य वैडूर्यस्तंभपंक्तयः ॥ राजंतेकोटिशोराजन्विश्वकर्मविनिर्मिताः ॥ ४ ॥ पद्मरागखनिद्रूमौश्रेण्योवैविद्रुमाचिताः ॥ यत्रचित्रवितानानिभ्राजंतेमौक्तिकालिभिः ॥ ५ ॥ सिंहासनानिकुड्यानिकालमेघतडिद्‌वुभिः ॥ जांबूनदसुवर्णानांस्फुरत्कुण्डलकोटिभिः ॥६॥ बालार्करत्नकेयूरकांचीकंकणनूपुरैः ॥ शतचंद्रप्रतीकाशाःस्फुरत्कुण्डलमंडिताः ॥७॥ गायंतियत्रगंधर्व्योविद्याधर्योमुदान्विताः ॥ नृत्यंत्यःकलनादिन्नैःस्पर्द्धावत्यःपरस्परम् ॥८॥ यस्याश्चतुर्षुकोणेषुदेववृक्षैर्मनोरमैः ॥ नन्दनंसर्वतोभद्रंध्रौव्यंचैत्ररथंवनम् ॥९॥ लक्षाणियत्रराजेंद्रसरांसिविमलानिच ॥ सहस्रदलपद्मानिभ्रमरैःसंकुलानिच ॥१०॥ दशयोजनविस्तीर्णापञ्चयोजनमूर्द्धगा ॥ एतादृशीसुधर्मास्तेपताकध्वजमंडिता ॥ ११ ॥ यत्रप्रविष्टःपुरुषआत्मानंमन्यतेपरम् ॥ यत्सिंहासनमासाद्यशक्रोहमितिमन्यते ॥ १२ ॥

ऐसी इन्द्रनीलमणिकी भीत जहां बनि रहीं है ॥ ५ ॥ तहां जांबूनद सुवर्णकी जो देदीप्यमान कुंडलकी कोटि तिन करिके ॥ ६ ॥ बालार्कतेजसे रत्नके बाजूं कंकण कोंधनी नूपुर जिनके सौ चन्द्रमाकी कांति जिनके मुखकी और झलक रहे हैं काननमें कुंडल तिनकरके मंडित ॥ ७ ॥ ऐसी गन्धर्वी विद्याधरी जहां गाय रही हैं आनन्दते नाच रही हैं मनोहर बाजेनते आपसमें अपनी २ बडाई चाहैं हैं ॥ ८ ॥ जाके चारों कोनेनपै मनोहर देववृक्षनते इन्द्र, वरुण, कुबेर, यमनंदन, सर्वतोभद्र, ध्रौव्य और चैत्ररथ इनके वन लगि रहे हैं ॥ ९ ॥ लाखन जहां निर्मल सरोवर हैं जिनमें हजारों कमल फूलिरहे हैं तिनपै भौंरा गुंजारि रहे हैं ॥ १० ॥ दश योजन चौडी पांच योजन ऊंची ऐसी सुधर्मा सभा ध्वजा पताकानते मंडित है ॥ ११ ॥ जहां प्रवेश हैके पुरुष अपनपेकूं उत्तम माने है जा सिंघासनपै बैठिके पुरुष अपनपेकूं इंद्र माने है ॥ १२ ॥

जो जो त्रिलोकीकी चतुराई है सो सो वा पुरुषकी देहमें आयजाय हैं और जबतलक वा सभामें रहे हैं तबतलक जाडो गरमी भूख प्यास बुढापो मृत्यु ये नहीं होय हैं ॥ १३ ॥ हे नरोत्तम ! जितने मनुष्य यामें प्रवेश होयहैं तितनीई ठौर वामें बढिजायहै ॥ १४ ॥ कैसे कि, छप्पन किरोड़ यादव जामें चाकरसमेत जायके जब बैठे हैं तब वे सबरे एकही कोनेमें जामें समाय जायँ हैं ॥ १५ ॥ परिपूर्णतम साक्षात् श्रीकृष्ण भगवान स्वयं जहां विराजे हैं ताको कौन वर्णन करिसके है ॥ १६ ॥ जा सुधर्मा सभामें किरोडन यादवनके संग उग्रसेन सूत मागध बंदीजन करिके गीयमान विराजे है ॥ १७ ॥ एकदिना आकाशमार्गमें हैके वेदव्यासजी महामुनी पराशरके बेटा श्यामसुंदर बीजुरीसी पीरी जटानकूं धारणकरे आये ॥ १८ ॥ तिनकूं देखिके यादवनको राजा उग्रसेन हाथ जोड ठाडो हैगयो आसन दैकैं विधिपूर्वक पूजा करि सन्मुख बैठि यह बोल्यो ॥१९॥

यच्चत्रैलोक्यचातुर्यंतस्यदेहेप्रवर्तते ॥ यावत्तिष्ठंस्तत्रतावत्तूर्मिषट्कंनचैवहि ॥ १३ ॥ यावंतश्चजनास्तत्रप्रविशंतिनरोत्तम ॥ स्वप्रभावेणसहसा तावतीसाप्रकाशते ॥ १४ ॥ षट्पंचाशत्कोटिसंख्यायादवायत्रसानुगाः ॥ तत्रत्वरस्यैकदेशेहश्यंतेतेचमैथिल ॥ १५ ॥ परिपूर्णतमः साक्षाच्छ्रीकृष्णोभगवान्स्वयम् ॥ यत्रास्तितस्यराजेंद्रवर्णनंकःकरोतिहि ॥ १६ ॥ अथतस्यांसुधर्मायांयदुकोटिसमावृतः ॥ उग्रसेनोगीयमानःसूतमागधबंदिभिः ॥ १७ ॥ आकाशादागतःसाक्षाद्वेदव्यासोमहामुनिः ॥ पाराशर्योघनश्यामस्तडित्पिंगजटाधरः ॥ १८ ॥ तंदृष्ट्वासहसोत्थाययदुराजःकृतांजलिः ॥ नत्वासनंस्वोपचारंदत्त्वातत्संमुखोभवत् ॥१९॥ ॥ उग्रसेनउवाच ॥ ॥ अद्यमेसफलंजन्मसफलंगेहमद्यमे ॥ अद्यमेसफलोधर्मोब्रह्मंस्त्वय्यागतेसति ॥२०॥ सदानंदेषुकुशलंकृष्णेनेष्टंभवत्सुहि ॥ वदमेकुशलंदेवयेनस्वस्थोभवाम्यहम् ॥२१॥ यत्रयत्रव्रजंतश्चत्वादृशाःसाधवःप्रभो ॥ तत्रतत्रभवेत्सिद्धिर्लौकिकीपारलौकिकी ॥ २२ ॥ यत्रक्षणंस्थिताःसंतस्तत्रसाक्षात्स्वयंहरिः ॥ किमुलोकगुणाब्रह्मन्पाराशर्यमहामुने ॥ २३ ॥ मयातुपुण्यंयज्ञोवाकिंकृतंपूर्वजन्मनि ॥ येनवैद्वारकाराज्यंप्राप्तोहंमुनिपुंगव ॥ २४ ॥ भवादृशाविप्रमुख्यागृहमायांतिनित्यशः ॥ तस्मात्परंहिसुकृतंजानेस्वस्यनसंशयः ॥ २५ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ ॥ धन्योसिराजशार्दूलधन्यातेविमलामतिः ॥ परंकृतंत्वयाराजन्सुकृतंपूर्वजन्मनि ॥ २६ ॥

आज मेरो जन्म सफल हैगयो आज मेरो घर सफल भयो आज मेरो धर्म सफल भयो हे ब्रह्मन् ! जो तुम मेरे घर आये ॥ २० ॥ सदाई आप तो आनंदरूप हो आपते कुशल पूछनी अयोग्य है मेरे कुशल है यह पूछूंहूं जाते मे स्वस्थ होऊं ॥ २१ ॥ जहां २ आप सरीखे संत महात्मा साधु जायँहे तहां २ या लोककी और परलोककी सिद्धि होयहै ॥२२॥ जहां एक क्षणकूं संत ठैरेहे तहां साक्षात् भगवान् आमे है फिर हे पाराशर्य ! हे महामुनि ! भूलोकके सब गुण वहीं आमें तो कहा अचंभो हे ॥ २३ ॥ मैने कोई पुण्य कि यज्ञ पूर्वजन्ममें कीनोहै हे मुनिपुंगव ! जाते मोको द्वारिकाको राज्य प्राप्त भयोहै ॥ २४ ॥ तुम सरीके ब्राह्मणनमें मुख्य नित्य जो घर आमें तो याते परे में अपनो सुकृत और नहीं मानूहूं ॥ २५ ॥ तब व्यासजी बोले कि, हे राजशार्दूल ! तू धन्य है तेरी बडो निर्मल बुद्धि है तैने पूर्व जन्ममें कोई बडो सुकृत कीनो है ॥ २६ ॥

पहले जन्ममें तू मरुत नाम राजा हो तैंनें विश्वजित् नाम यज्ञ निष्काम कीनोंहो ताते भगवान् तोपै प्रसन्न भये ॥ २७ ॥ निष्काम कर्मतेही यह राज्य तोकूं प्राप्त भयोहै परिपूर्णतम साक्षात् श्रीकृष्ण अपने वशवर्ती तेने वश करलीनेहैं ॥ २८ ॥ जे असंख्य ब्रह्मांडनके पति गोलोकके पति परेते परे सो तेरी भक्तिके वश हैके तेरे मंदिरमें बसे हैं ॥२९ ॥ अहो हे भोजपते ! भजन करनहारेनकूं भगवान् मुक्ति तो देदेयहैं परंतु भक्ति कबहू नहीं देयहैं सो राजा भक्ति ऐसी दुर्लभ है ॥ ३० ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायां विज्ञानखंडे नारदबहुलाश्वसंवादे भाषाटीकायां व्यासागमनं नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ उग्रसेन कहैहैं कि, मैं धन्य हूं मोपै आपने अनुग्रह कीनो तुमारे वर्णनते मैं प्रसन्न भयो मनके संदेह दूरि करिवेकूं तुमारी ही सामर्थि है ॥ १ ॥ सकाम कर्मनते कोनसी गति होयहै और उन कर्मनको कहा लक्षण है और कितने भेद हैं सो हे ब्रह्मन् ! आप जैसो होय सो कहिये

पुरात्वंमरुतोराजन्कृत्वायज्ञंजगज्जितम् ॥ निष्कारणोभूर्मनसाप्रसन्नोभूद्धरिस्तदा ॥२७॥ अनिमित्तेनभावेनप्राप्तंचेदंपरंतप ॥ परिपूर्णतमःसाक्षाच्छ्रीकृष्णोभगवान्हरिः ॥२८॥ असंख्यब्रह्मांडपतिर्गोलोकेशःपरात्परः ॥ सोयंभक्त्यावशीभूतःस्ववशस्तवमंदिरे ॥२९॥ अहोभोजपतेमुक्तिंददातिभजतांहरिः ॥ नकर्हिचिद्भक्तियोगंदुर्लभंविद्धितंनृप ॥३०॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविज्ञानखंडेवेदव्यासोग्रसेनसंवादेव्यासागमनंनामप्रथमोऽध्यायः ॥१॥ ॥ उग्रसेनउवाच ॥ ॥ धन्योस्म्यनुगृहीतोस्मितवर्णननिर्वृतः ॥ हृदुद्भूतंचसंदेहंदूरीकर्तुंभवान्क्षमः ॥१॥ कर्मणांसनिमित्तानांकागतिःकिंचलक्षणम् ॥ कतिभेदाहितेषांवैवदब्रह्मन्यथातथा ॥२॥ ॥ व्यासउवाच ॥ ॥ गुणैःसर्वाणिकर्माणिसनिमित्तानिसंतिहि ॥ तान्येवचानिमित्तानिराजंस्त्यक्तफलानिहि ॥३॥ सनिमित्तंचयत्कर्मबंधनंविद्धियादव ॥ अनिमित्तंचयत्कर्ममोक्षदंपरमंशुभम् ॥४॥ सत्त्वंरजस्तमइतिगुणाःप्रकृतिसंभवाः ॥ तैर्व्याप्तंहिजगत्सर्वंसर्वात्मिवविष्णुना ॥५॥ सत्त्वेप्रलीनाःस्वर्यांतिनरलोकंरजोलयाः ॥ तमोलयास्तुनरकंयांतिकृष्णंहिनिर्गुणाः ॥ ६ ॥ पंचाग्नितप्ताःप्रतप्येराजन्व्रजवासिनः ॥ लोकंसप्तऋषीणांतुतेयांतिगतकल्मषाः ॥ ७ ॥ संन्यासाश्रमकर्तारस्त्रिदंडधृतपाणयः ॥ जितेंद्रियमनोधर्माःसत्यलोकंव्रजंतिहि ॥ ८ ॥ अष्टांगयोगयोगींद्रानिर्मलाऊर्ध्वरेतसः ॥ जनलोकंमहर्लोकंयांति तेनात्रसंशयः ॥ ९ ॥

॥ २ ॥ तब व्यासजी बोले रजोगुण तमोगुणतें सबरे सकाम कर्म होयहैं जो उनमें फलकी चाहना न करे तो वेई निष्काम होयहैं ॥ ३ ॥ हे यादव! जो सकाम कर्म है सो तो बंधन है जो निष्काम कर्म है सो मोक्षको दाता है याहीसो वो अति शुभ है ॥ ४ ॥ सत्त्वगुण रजोगुण तमोगुण ये तीनों गुण प्रकृतिते भये हैं तिनतेंई सब जगत् व्याप्त हैरह्यो है जैसे विष्णुसे जगत् व्याप्त है ॥ ५ ॥ मरती वेर जे सत्त्वगुणमें लीन होयहैं ते स्वर्गकूं जायहै रजोगुणमें लीन होयहैं ते मनुष्यलोकमें आमेहैं और जे तमोगुणमें लीन होयहैं ते नरकमें जायहैं जे निर्गुण गुणसंबंधरहित हैं वे श्रीकृष्णकूं प्राप्त होयहैं ॥ ६ ॥ हे राजन् ! जे व्रजवासी पंचाग्नि तपै हैं ते निष्पाप हैके सप्त ऋषिनके लोककूं जायहैं ॥ ७ ॥ जे सन्यास आश्रमकूं धारण करै हैं त्रिदण्ड धारण करै हैं जीती हैं इन्द्री और मनके धर्म जिनने ते सत्यलोककूं जायहैं ॥ ८ ॥ जे योगींद्र अष्टांग योग

कूँ धारण कर निर्मल है ऊर्द्धरेता हैं वे निःसंदेह जनलोकको या महर्लोककूं जायँहैं ॥ ९ ॥ जे यज्ञकर्ता हैं ते बहुत वर्षनताईं स्वर्गमें वसैंहैं जे दानी हैं वे चन्द्रलोककूँ जायँ हैं और जे व्रती है वे सूर्यलोककूं जायँहैं ॥ १० ॥ तीर्थ करनहारे अग्निलोककूं जायँहै सत्यवादी वरुणलोककूं जायँहैं विष्णुके भक्त वैकुंठलोककूं जायँहैं शिवके भक्त शिवलोककूं जायँहैं ॥ ११ ॥ सुख ऐश्वर्य पुत्र इनकी इच्छा करनहारे पितरनकूं पूजैंहैं वे दक्षिणमार्ग अर्यमाकेमें हैके पितरनके संग पितृलोककूं जायँहैं ॥ १२ ॥ गणेश, सूर्य, शिव, दुर्गा, विष्णु इनके पूजक धर्मशास्त्री स्मार्तलोग स्वर्गकूं जायँहैं और प्रजापतिनके पूजक दक्षादिक प्रजापतिनके लोककूं प्राप्त होयँहैं ॥ १३ ॥ भूतनकूं पूजैंहैं ते भूतनकूं जायँहैं यक्षनके पूजक यक्षलोककूं जायँहैं जे जिनके भक्त हैं ते तिनहींकूँ प्राप्त होयँहैं यामें संदेह नहीं ॥ १४ ॥ तैसेही जे पापरत हैं दुस्संगी हैं वे दारुण नरक जिनमें ऐसे यमलोककूं जायँहैं

यज्ञकर्ताशक्रलोकेवसतेशाश्वतीःसमाः ॥ दानीचान्द्रमसंलोकंव्रतीसौरंव्रजत्यलम् ॥ १० ॥ तीर्थयायीचाग्निलोकंसत्यसंधश्चवारुणम् ॥ वैष्णवाश्चापिवैकुण्ठंशैवाःशैवंव्रजंतिहि ॥ ११ ॥ पितॄन्यजंतियेनित्यंसुखैश्वर्यप्रजेप्सवः ॥ दक्षिणेनपथार्यम्णापितृलोकंव्रजंतिते ॥ १२ ॥ स्वर्लोकंवैतथास्मार्ताःपंचपूजनसंयुताः ॥ प्रजापतियजोयांतिदक्षादींश्चप्रजापतीन् ॥ १३ ॥ भूतानियांतिभूतेज्यायक्षान्यक्षयजस्तथा ॥ येयस्यभक्तास्तल्लोकान्यांतिराजन्नसंशयः ॥ १४ ॥ तथापापरताराजन्दुःसंगवशवर्तिनः ॥ यमलोकंचतेयांतिनिरयैर्दारुणैर्वृतम् ॥ १५ ॥ पुनरावर्तिनोलोकाःसर्वेचाब्रह्मलोकतः ॥ पुनरावर्तिनोलोकान्विद्धिराजन्महामते ॥ १६ ॥ कर्मणांसनिमित्तानांमार्गएषगतागतः ॥ तावत्प्रमोदतेस्वर्गेयावत्पुण्यंसमाप्यते ॥ १७ ॥ क्षीणपुण्यःपतत्यर्वागनिच्छन्कालचालितः ॥ यदवेन्द्रमहाबाहोतस्मात्कर्मफलंत्यजेत् ॥ १८ ॥ भक्तोनिष्कारणोभूत्वाज्ञानवैराग्यसंयुतम् ॥ प्रेमलक्षणयावाचाहरिभक्तजनप्रियः ॥१९॥ भजेच्छ्रीकृष्णपादाब्जमभयंहंससेवितम् ॥ योमृत्युःसर्वलोकानांवलात्संहारकारकः ॥ २० ॥ सयन्नभगवद्धाम्निगतःसन्मृत्युमाप्नुयात् ॥२१॥ ॥ उग्रसेनउवाच ॥ ॥ सर्वेलोकाहिभगवन्पुनरावर्तिनःस्मृताः ॥ तेभ्योजातंचवैराग्यंमनसोमेनसंशयः ॥ २२ ॥ श्रीकृष्णधामपरमंयतोनावर्ततेगतः ॥ तल्लोकंवदमेब्रह्मन्श्चास्तेसर्वतःपरम् ॥ २३ ॥

॥ १५ ॥ ब्रह्माके लोकतलक जितने लोक हैं तिनमें वेर वेर जायँहैं और वेर वेर आमेंहैं हे राजन् ! ये पुनरावर्ती लोक हैं ऐसो तू जान ॥ १६ ॥ ये सकामनको मार्ग मैने कह्यो जामें आनो जानो है जब तलक पुण्य रहे तब तलक स्वर्गमें रहे है ॥ १७ ॥ जब क्षीणपुण्य है जायँहैं तब कालको प्रेरयो नीचे आय परै इच्छा नहीं करेहै तोऊ गिरेहै यासो हे यादवेंद्र ! हे महाबाहो ! या कर्मनके फलको छोडनोही ठीक है ॥१८॥ याते जो निष्काम भक्त हैके ज्ञानवैराग्यसों संयुक्त प्रेमलक्षणा वाणीसो युक्त है हरिके भक्तजननमें प्रीति करै॥ १९॥ कृष्णके चरणकमलको भजै जो परमहंसनने सेवन करचौहै और अभय है जो सब लोकनकी मृत्यु है बलते संहार करनवारो ॥ २० ॥ सो मृत्यु जाके धाममें जायके मरिजायहै ॥ २१ ॥ तब उग्रसेनजी बोले कि, हे भगवन् ! सबरे लोक पुनरावर्तीमानेहै इनते तो मोकूँ निःसंदेह मनसे वैराग्य आयगयो है ॥ २२ ॥ जो श्रीकृष्णको परम

धाम है जहां जायके फिर संसारमें नही आवे या लोकको मोसे कहो वो लोक सबते पड़ो और कहां है ॥ २३ ॥ व्यासजी कहेंहैं कि ब्रह्मांडते बाहिर श्रीकृष्ण महात्माको धाम है जहांको गयो फेर नहीं आवे ताकूं पर गोलोक कहेंहैं ॥ २४ ॥ यह ब्रह्मांड जीवनको समूह यह पचास किरोड़ योजनको चारों तरफते विस्तृत है और सौ किरोड़ लंबो है ॥ २५ ॥ सो ब्रह्मांड जाके भीतर परमाणुसो दीखैहै और जाके भीतर औरहू किरोड़न ब्रह्मांड है ॥ २६ ॥ जहां सूर्यको प्रकाश नही पहुँचैहै न चंद्रमाको न अग्निको प्रकाश है और काम क्रोध लोभ मोहभी जहाँ नहीं पहुंचैहैं ॥ २७ ॥ और जहाँ शोक, जरा, मृत्यु, पीड़ा, प्रकृति और काल नही है फिर कहो तीनों गुण जहाँ नहीं पोहँचैहैं, तो कहा आश्चर्य है ॥ २८ ॥ कहिबेमें नही आवैहै वेदहू जाकूं नही कहि सकैहैं जहाँ श्रीकृष्णके तेजते भये पार्षद ही विराजैहैं ॥ २९ ॥ जे अकिंचन हैं दांत हैं शांत हैं, समानचित्त

॥ ॥ श्रीव्यासउवाच ॥ ॥ ब्रह्मांडेभ्योबहिर्द्धामश्रीकृष्णस्यमहात्मनः ॥ यद्गत्वाननिवर्तन्तेतद्गोलोकंविदुःपरम् ॥ २४ ॥ ब्रह्मांडोयंजीवसंघःपंचाशत्कोटियोजनैः ॥ विस्तृतःपरतोव्द्यभ्यांशतकोटिविलंघितः ॥ २५ ॥ यदंतरगतोराजल्लँक्ष्यतेपरमाणुवत् ॥ तदंतरगताश्चान्येकोटिशोब्रह्मांडराशयः ॥ २६ ॥ नतद्भासयतेसूर्योनशशांकोनपावकः ॥ कामक्रोधश्चलोभश्चनमोहोयत्रयातिच ॥ २७ ॥ नयत्रशोकोनजरानमृत्युर्नार्तिरेवच ॥ नप्रधानंनकालश्चविशंतेचगुणाःकुतः ॥ २८ ॥ शब्दब्रह्माप्यनिर्वाच्यंतद्वर्णयितुमक्षमः ॥ श्रीकृष्णतेजःसंभूतास्तत्रसंतिचपार्षदाः ॥ २९ ॥ अकिंचनाश्चयेदांताःशांतास्तैसमचेतसः ॥ श्रीकृष्णचन्द्रपादाब्जमकरंदरसालयाः ॥ ३० ॥ प्रेमलक्षणयाभक्त्यासदानिष्कारणाःपराः ॥ लोकानुल्लंघ्यतद्धामयांतिराजन्नसंशयः ॥ ३१ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीविज्ञानखंडे श्रीव्यासोग्रसेनसंवादेलोकगतिनिरूपणंनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ उग्रसेनउवाच ॥ ॥ श्रुतंतवमुखाद्ब्रह्मन्गुणकर्मगतिर्मया ॥ पुनरावर्तिनोलोकास्तथासंतिविनिश्चिताः ॥ १ ॥ निष्कारणाद्धरेःसाक्षात्सेवनाद्धामसुत्तमम् ॥ लभंतेदुर्लभंदिव्यंभक्तास्तच्छ्रुतंमया ॥ २ ॥ भक्तियोगःकतिविधोवदमेवदतांवर ॥ येनप्रसन्नोभवतिभगवान्भक्तवत्सलः ॥ ३ ॥ ॥ श्रीव्यासउवाच ॥ ॥ द्वारावतीशधन्योसिश्रीकृष्णेष्टोहरिप्रियः ॥ पृच्छसेभक्तियोगंत्वंधन्यातेविमलामतिः ॥ ४ ॥

हे श्रीकृष्णचंद्रके चरणकमलके मकरंदमें ही घर है, जिनको ॥ ३० ॥ जे प्रेमलक्षणा भक्तिते निष्काम चित्त हैं वे सब लोकनको उल्लंघन करिके या लोककूं जायहैं हे राजन् ! यामें संशय नही है ॥ ३१ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विज्ञानखण्डे भाषाटीकायां व्यासोग्रसेनसंवादे लोकगतिनिरूपणं नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ अब उग्रसेन पूछे है कि हे ब्रह्मन् ! तुमारे मुखते गुण कर्मनकी गति मैंने सुनी और पुनरावृत्ति लोकहू निश्चयकरे ॥ १ ॥ और निष्कारण भक्तिते साक्षात् भगवान्के सेवनते दुर्लभ जो दिव्य गोलोक सो भक्तनकूं मिलैहै सोऊ मैंने सुन्यौ ॥ २ ॥ अब हे वदतांवर ! सो भक्तियोग कै प्रकारको है हे वक्तानमें श्रेष्ठ ! जाते भक्तवत्सल भगवान् प्रसन्न होयहैं सो कहो ॥ ३ ॥ तब व्यासजी बोले कि, हे द्वारकाके ईश ! तू धन्य है श्रीकृष्णको इष्ट तू हरिको प्यारो जो तू भक्तियोगकूं पूछैहै याते धन्य है तेरी निर्मल मतिकूं ॥ ४ ॥

जाकूं सुनिकें विश्वघातीहू पातकी निर्मल हैजायहै वा विसद भक्तियोगकूं हे यादव ! मैं तेरे अगारी कहूंहूं ॥ ५ ॥ हे राजन् ! वो भक्तियोग द्वै प्रकारको है एक सगुण... जायँ है तामें सगुण भक्तियोग बहुत प्रकारको है और निर्गुण एकही प्रकारको है ॥ ६ ॥ तिन देहिनको गुणनके मार्गकरिके सगुण भक्तियोग बहुविध है पन उनी गुणनसों तीन प्रकारके ... होयहैं उन्हें तूं न्यारे न्यारेको सुन ॥७॥ कोईकी हिंसा या दंभ अथवा मत्सर (असहनता) इनमेंसे कोई बातको अनुसंधान करके भिन्न दृष्टि है जो हरिमें भक्ति करै वो क्रोधी भक्त तमोगुणी भक्त है ॥ ८ ॥ और यशके लिये विषयके लिये ऐश्वर्यके लिये यत्नते हरिकौ पूजन करै सो रजोगुणी भक्त है ॥९॥ कर्मनाशके लिये और पृथग्भावको छोडके एकदृष्टि हैके मोक्षके अर्थ भगवान्को भजन करै वह सात्विक भक्त है ॥ १० ॥ हे महामते ! और हू चार प्रकारके भक्त हैं एक आर्त जैसे द्रौपदी या गजराज, एक जिज्ञासु जैसे राजा परीक्षित् वा पृथु एक अर्थार्थी जैसे कि, देवता और एक ज्ञानी जैसे जनक विदेह प्रह्लाद ये सबही उत्तम हैं जे कृतमंगल विष्णुको भजे हैं पर ज्ञानी इनमें महाउत्तम है ॥ ११ ॥

यंश्रुत्वानिर्मलोभूयाद्विश्वघात्यपिपातकी ॥ तंभक्तियोगंविशदंतुभ्यंवक्ष्यामियादव ॥ ५ ॥ भक्तियोगोद्विधाराजन्सगुणश्चैवनिर्गुणः ॥ सगुणः स्याद्बहुविधोनिर्गुणश्चैकलक्षणः ॥ ६ ॥ सगुणःस्याद्बहुविधोगुणमार्गेणदेहिनाम् ॥ तैर्गुणैस्त्रिविधाभक्ताभवन्तिशृणुतान्पृथक् ॥ ७ ॥ हिंसां दंभंचमात्सर्यंचाभिसन्धायभिन्नदृक् ॥ कुर्याद्भावंहरौक्रोधीतामसः परिकीर्तितः ॥ ८ ॥ यशऐश्वर्यविषयानभिसंधाययत्नतः ॥ अर्चयेद्योहरिंराजन्राजसःपरिकीर्तितः ॥ ९ ॥ उद्दिश्यकर्मनिर्हारमपृथग्भावएवहि ॥ मोक्षार्थंभजतेविष्णुंसभक्तः सात्त्विकःस्मृतः ॥ १० ॥ जिज्ञासुरार्तोज्ञानीचतथार्थार्थीमहामते ॥ चतुर्विधाजनाविष्णुंभजंतेकृतमंगलाः ॥११॥ एवंबहुविधेनापिभक्तियोगेनमाधवम् ॥ भजंतिसनिमित्तास्ते जनाःसुकृतिनःपरे ॥ १२ ॥ लक्षणंभक्तियोगस्यनिर्गुणस्यतथाशृणु ॥ तद्गुणश्रुतिमात्रेणश्रीकृष्णेपुरुषोत्तमे ॥ १३ ॥ परिपूर्णतमेसाक्षात्सर्वकारणकारणे ॥ मनोगतिरविच्छिन्नाखंडिताहैतुकीचया ॥ १४ ॥ यथाब्धावंभसागंगासाभक्तिर्निर्गुणास्मृता ॥ निर्गुणानांचभक्तानांलक्षणं शृणुमानद ॥ १५ ॥ सार्वभौमंपारमेष्ठ्यंशक्रधिष्ण्यंतथैवच ॥ रसाधिपत्यंयोगर्द्धिनवांच्छंतिहरेर्जनाः ॥ १६ ॥ हरिणादीयमानंवासालोक्यं यादवेश्वर ॥ नगृह्णंतिकदाचित्तेसत्संगानन्दनिर्वृताः॥१७॥सामीप्यंतेनवांच्छंतिभगवद्विरहातुराः ॥ सन्निकृष्टेनतत्प्रेमयथादूरतरेभवेत् ॥१८॥

ऐसे बहुत प्रकारके भक्तियोगते जे कृष्णको भजे हैं वे सनिमित्त (सकाम) भक्त कहामे हैं इनते जे पृथक् हैं वे भक्त सुकृती भक्त कहावे हैं ॥ १२ ॥ अब हे राजा ! तू निर्गुण भक्तियोगको लक्षण सुनि जिनकी वाके गुण सुनेहीते परिपूर्णतम श्रीकृष्णमें ॥ १३ ॥ सबके कारणकेहू कारण परिपूर्णतममें अविच्छिन्न अखण्डित निष्काम मनकी गति चल्यौ करै वे निर्गुण भक्त हैं ॥ १४ ॥ जैसे समुद्रमें गंगाजीकी धार चले हैं तैसे जिनकी मनोवृत्ति कभू रुके नहीं है वे निर्गुण भक्त हैं हे मानद ! अब तू निर्गुण भक्तनके लक्षण सुनि ॥१५॥ देखो जे निर्गुण भक्त हैं वे चक्रवर्ती राज्यको रसातलको राज्य इन्द्रलोकको राज्य ब्रह्माकी पदवी अणिमादिक सिद्धि काहूकी इच्छा नहीं करै है ॥ १६ ॥ और तो कहा हरि वकुण्ठह उनकूं देय हैं पर वे कभू कछु चाहना नहीं करै हैं हे यादवेश्वर ! क्योंकि, वे सदा सत्संगके आनन्दमें पूर्ण रहै है ॥ १७ ॥ कोई २ सामीप्य मुक्तिकूंहू नहीं चाहै है वे

भगवान्के विरहातुर हैकेही रहनो चाहे हैं क्योंकि, पास रहेते ऐसो स्नेह नहीं रहै है जैसो दूरते रहे है ॥ १८ ॥ कोई २ सारूप्य, भगवान्कोसो रूप हैजाय ताकूंहू ग्रहण नही करें हैं वे केवल वाकी सेवा करवेमेंही उत्सुक हैं वे भक्तजन बराबरीके अभिमानते बचे हैं ॥ १९ ॥ कोई २ सायुज्य मुक्तिकी हू कभू इच्छा नही करे हैं क्योंकि वे जानेंहैं कि, यामें स्वामिसेवकभावकी हानि होयहै ॥ २० ॥ जे निरपेक्ष शांत निर्वैर समदर्शी हैं वे मोक्षते लेके जितने लोकपदनको ग्रहण है ताकूं कारणही कहैं हैं ॥ २१ ॥ निरपेक्षता है सोही बडो आनन्द है या आनन्दकूं हरिके जे भक्त निरपेक्ष हैं वेई जानें हैं जैसे सुगंधिकूं नाकही जानै है नेत्र नहीं जानै है ॥ २२ ॥ सकामी भक्त वा आनन्दकूं नही जानै हैं जैसे रसकर्ता हाथ है परंतु रसके स्वादकूं नहीं जानै है ॥ २३ ॥ याते हे राजन्! अत्यन्त पद तौ भक्तियोगही है ऐसे तुम जानौ अब निरपेक्ष भक्तनकी जो पद्धति (रस्ता) है ताकी तेरे आगे कहूंहूं ॥ २४ ॥ श्रवण १ कीर्तन २ स्मरण ३ पादसेवन ४ अर्चन ५ वंदन ६ दास्य ७ सख्य ८ आत्मनिवेदन ९ ये नवधा भक्ति हैं तिनमेंते श्रवण

साऋप्यंदीयमानंवासमानत्वाभिमानिनः ॥ नैरपेक्ष्यान्नवांच्छंतिभक्तास्तत्सेवनोत्सुकाः ॥ १९ ॥ एकत्वंचापिकैवल्यंनवांच्छंतिकदाचन ॥ एवंचेत्तर्हिदासत्वंकस्वामित्वंपरस्यच ॥२०॥ निरपेक्षाश्चयेशांतानिर्वैराः समदर्शिनः ॥ आकैवल्याल्लोकपदग्रहणंकारणंविदुः ॥२१॥ नैरपेक्ष्यं महानन्दंनिरपेक्षाजनाहरेः ॥ जानंतिहियथानासापुष्पामोदंनचक्षुषी ॥ २२ ॥ सकामाश्चतदानन्दंजानंतिहिकथंचन ॥ रसकर्तातथाहस्तो रसास्वादंनवेत्तिहि ॥ २३ ॥ तस्माद्राजन्भक्तियोगंविद्धिचात्यंतिकंपदम् ॥ भक्तानांनिरपेक्षाणांपद्धतिंकथयामिते ॥ २४ ॥ स्मरणंकीर्तनंविष्णोःश्रवणंपादसेवनम् ॥ अर्चनंवंदनन्दास्यंसख्यमात्मनिवेदनम् ॥ २५ ॥ कुर्वंतिसततंराजन्भक्तिंयेप्रेमलक्षणाम् ॥ तेभक्तादुर्लभाभूमौभगवद्भावभावनाः ॥ २६ ॥ कुर्वंतोमहतोपेक्षांदयांहीनेषुसर्वतः ॥ समानेषुतथामैत्रींसर्वभूतदयापराः ॥ २७ ॥ कृष्णपादाब्जमधुपाःकृष्णदर्शनलालसाः ॥ कृष्णंस्मरंतिप्राणेशंयथाप्रोषितभर्तृकाः ॥२८॥ श्रीकृष्णस्मरणाद्येषांरोमहर्षःप्रजायते ॥ आनन्दाश्रुकलाश्चैववैवर्ण्यंतुकचिद्भवेत ॥ २९ ॥ श्रीकृष्णगोविन्दहरेब्रुवंतःश्लक्ष्णयागिरा ॥ अहर्निशंहरौलग्नास्तेहिभागवतोत्तमाः ॥ ३० ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीविज्ञानखंडेश्रीवेदव्यासोग्रसेनसंवादेनिर्गुणभक्तियोगवर्णनंनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

परीक्षित्ने करयो १ कीर्तन शुकदेवजीने २ स्मरण प्रह्लादने ३ पादसेवन लक्ष्मीजीने ४ अर्चन पृथुने ५ वंदन अक्रूरने ६ दास्य हनूमानने ७ सख्य अर्जुन और उद्धवने ८ आत्मनिवेदन बलिने ९ और नौक भक्ति गोपीननें कीनी ॥ २५ ॥ हे राजन्! जे निरंतर प्रेमलक्षणा भक्ति करें हैं वे भगवान्के भावकी भावना वारे भक्त भूमिमें दुर्लभ हैं ॥ २६ ॥ महान् पुरुषनते तो मुनिवेकी इच्छा रक्खे अपनेते न्यूननपै दया और बराबरकेनते मित्रता और सब दीननपै दया ॥ २७ ॥ कृष्णचरणकमलके जे भौंरा हैं कृष्णदर्शनकी जिनके लालसा हैं प्राणपति और कृष्णकूंही प्राणेश जानके ऐसे भजें हैं जैसे प्रोषितभर्तृका पतिको ॥ २८ ॥ जिनके श्रीकृष्णके स्मरण करतही रोमांच है आवें हैं आनंदके आंसू आयजायँ हैं देहको विवर्ण हैजाय ॥ २९ ॥ हे श्रीकृष्ण! हे गोविंद! हे हरे! ऐसे मधुरवाणीते कहते रातिदिन हरिमें लगेरहे वे भागवतनमें उत्तम हैं ॥ ३० ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विज्ञानखण्डेभाषाटीकायां निर्गुणभक्तियोगवर्णनं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

व्यासजी कहैहै कि, आकाशमे पवनमे जलमे अग्निमें पृथ्वीमे सूर्य चंद्रमा ग्रह नक्षत्र तारागण सबमें श्रीकृष्णकूंही देखैहै हर्षित हैके वरंवर रहैहै ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण राधिकानाथ
किरोडकंदर्पके मोह करनहार नंदनंदन बोलतेभये उनके आंखिनके अगाड़ी आमें हैं ॥ २ ॥ तब वे वा सदा आनंदकूं देखके हर्षित है रहैहैं कबहू बोलैहैं कबहू भाजेहैं कबहू मसन्न
होयहै ॥ ३ ॥ कबहू गावैहै कबहू नाचैहै कबहू चुप हैजायहै वे कृतार्थ वैष्णवोत्तम कृष्णचंद्रको स्वरूप है ॥ ४ ॥ तिन भक्तनके दर्शनतेही नर कृतार्थ हैजायहै न तौ काल
और न यमराज उनको दंड दै सकैहै ॥ ५ ॥ बाई ओर तौ कौमोदिकी गदा दाहिनी ओर सुदर्शन आगेते शार्ङ्गधनुष पिछारीते गंभीरशब्दवारो पांचजन्य शंख ॥ ६ ॥ नंदकनाम
खड्ग और शत चंद्रनामक ढाल पैने बाण ये सब आयुधनमें मुख्य रात्रि दिन विन भक्तनकी रक्षा करेहै ॥ ७ ॥ तिनके ऊपर कमल छाया करैहै गरुडजी अपने पंखनकी ब्यारते उनको

॥ ॥ श्रीव्यासउवाच ॥ ॥ खेवायौसलिलेवह्नौमह्यांज्योतिर्गणेषुच ॥ श्रीकृष्णदेवंपश्यंतोहर्पिताश्चपुनःपुनः ॥ १ ॥ श्रीकृष्णोराधिका
नाथःकोटिकंदर्पमोहनः ॥ तत्रैवगोचरोयातिश्रुवञ्छ्रीनंदनंदनः ॥ २ ॥ सदानंदंचतेदृष्ट्वाप्रहसंतिप्रहर्पिताः ॥ क्वचिद्वदंतिधावंतिनंदंतिचक्वचि
त्तथा ॥ ३ ॥ क्वचिद्गायंतिनृत्यंतिक्वचित्तूष्णींभवंतिच ॥ कृष्णचंद्रस्वरूपास्तेकृतार्थावैष्णवोत्तमाः ॥ ४ ॥ तेषांदर्शनमात्रेणनरोयातिकृता
र्थताम् ॥ नकालोनयमस्तेषांदंडंदातुंनचक्षमः ॥ ५ ॥ गदाकौमोदकीवामेदक्षिणेचसुदर्शनम् ॥ अग्रेशार्ङ्गंधनुःपश्चात्पांचजन्योघनस्वनः ॥
॥ ६ ॥ नंदकश्चमहाखड्गःशतचंद्रेषवःशिताः ॥ एतान्यायुधमुख्यानितांश्चरक्षंत्यहर्निशम् ॥ ७ ॥ तथोपरिमहापद्मंछायांकर्तुंपुनःपुनः ॥
गरुडःपक्षवातेनश्रमहर्तासतामपि ॥ ८ ॥ यत्रयत्रगताःसंतस्तत्रतत्रस्वयंहरिः ॥ तीर्थीकुर्वन्भूमिभागंश्रीमत्पादाब्जरेणुभिः ॥ ९ ॥ क्षणंयत्र
स्थिताःसंतस्तत्रतीर्थानिसंतिहि ॥ तत्रकोपिमृतःपापीयातिविष्णोःपरंपदम् ॥ १० ॥ दूरात्संप्रेक्ष्यकृष्णेशानाधयोव्याधयस्तथा ॥ भूतप्रेत
पिशाचाश्चपलायंतेदिशोदश ॥ ११ ॥ नद्योनदाःपर्वताश्चसमुद्राश्चतथापरे ॥ मार्गंददुश्चसाधुभ्योनपेक्षेभ्यःसमंततः ॥ १२ ॥ साधूनांज्ञा
ननिष्ठानांविरक्तानांमहात्मनाम् ॥ अजातशत्रूणांतेषांदुर्लभंपुण्यवर्जितैः ॥ १३ ॥ यस्मिन्कुलेकृष्णभक्तोजायतेब्रह्मलक्षणम् ॥ तत्कुलंवि
मलंविद्धिमलीमसमपिस्वतः ॥ १४ ॥ राजन्श्रीकृष्णभक्तस्तुपितन्दशकुलोद्भवान् ॥ प्रियापक्षेपिदशचमातृपक्षेतथादश ॥ १५ ॥

श्रम हरैहै ॥ ८ ॥ जहां जहां संत जायहै तहां तहां हरि आप जायहैं अपने चरणकमलकी रेणुते या भूमिकूं पवित्र करते उनके पीछे भगवान् डोलैहै ॥ ९ ॥ एकहू क्षण जहां
संत ठैरे तहांही तीर्थ होयहै तहां कोई पापीहू मरिजाय तौ विष्णुलोककूं जायहै ॥ १० ॥ श्रीकृष्णके इशनकूं दूरितेई देखिके मनके दुःख रोग भूत प्रेत पिशाच दशों दिशानमें
भागजायहै ॥ ११ ॥ नद नदी पर्वत समुद्र जे सब अनपेक्ष्य साधूनकूं चारोओरते रस्ता देयहै ॥ १२ ॥ जे सहनशील है ज्ञाननिष्ठ विरक्त महात्मा अजातशत्रु है तिनको
दर्शन पुण्यवान् पुरुषनकूंही होयहै । पुण्यवर्जित पुरुषनको विन भक्तनको दर्शन दुर्लभ है ॥ १३ ॥ जा कुलमें श्रीकृष्णको भक्त ब्रह्मको लक्षण जन्म लेयहै वो कुल मैलो है तो
हू वा कुलकूं निर्मल जानो और जामे भक्त न होय ताकूं मलीन कुल जानिये ॥ १४ ॥ हे राजन्! श्रीकृष्णको भक्त अपनी दश पीढ़ीनको उद्धार करैहै और दश पीढ़ी मय्याके

पक्षकी और दश पीढी खीके पक्षकीनको ॥ १५ ॥ जो हरिको भक्त है वो भक्त नरकके बंधनते पापके बंधनते उद्धार करेहै जे साधुनके सम्बन्धी हैं चाकर हैं दास हैं सुहृद हैं ॥ १६ ॥ वैरी है पल्लेदार हैं उनके घरके पक्षी हैं चेंटा चेंटी भौंरा कीडा पतंग मच्छर तिन्हेंहू पवित्र करेहैं ॥ १७ ॥ अब्रह्मण्य देश है जामें, कालौ मृग नहीं है जामें, वीर नहीं है अथवा सौवीरदेश कीकट देश है असंस्कृत देश है म्लेच्छ देश है इनमेंहू जो भक्त है इन सब देशनको वो पवित्र करैहै ॥ १८ ॥ ज्ञान विना योग विना यज्ञ करे विना तीर्थ करे विना जे साधुनके संगी हैं वे हरिमन्दिरकूं जांयहैं ॥ १९ ॥ याप्रकार श्रीकृष्ण भक्तनको मैंने माहात्म्य तेरे अगाडी वर्णन करयो धर्म अर्थ काम मोक्षकी देनहारो है अब तूं कहा सुनिवेकी इच्छा करैहै ॥ २० ॥ उग्रसेन बोल्यो परिपूर्णतम साक्षात् श्रीकृष्ण महात्मा तिनमें दंतवक्र दुष्टकी ज्योति कैसे लीन हैगई ॥ २१ ॥ यह बडो अचंभो है महापुरु

पुरुषानुद्धरेद्राजन्निरयात्पापबंधनात् ॥ साधुसंबंधिनश्चान्येभृत्यादासाःसुहृज्जनाः ॥१६॥ शत्रवोभारवाहाश्चतद्गृहेपक्षिणस्तथा॥पिपीलिकाश्च मशकास्तथाकीटपतंगकाः ॥१७॥ अब्रह्मण्येऽकृष्णसारेसौवीरेकीकटेतथा ॥ म्लेच्छदेशेपिदेवेशभक्तोलोकान्पुनातिहि ॥१८॥ सांख्ययोगंविनाराजंस्तीर्थधर्ममखैर्विना ॥ साधुसंसर्गिनस्तेपिप्रयांतिहरिमंदिरे ॥१९॥ इत्थंश्रीकृष्णभक्तानांमाहात्म्यंकथितंमया ॥ चतुःपदार्थदंनृणांकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ २० ॥ ॥ उग्रसेनउवाच ॥ ॥ परिपूर्णतमेसाक्षाच्छ्रीकृष्णेपरमात्मनि ॥ दंतवक्रस्यदुष्टस्यज्योतिर्लीनंबभूवह ॥२१॥ अहोमहदिदंचित्रंसायुज्यंमहतामपि ॥ योन्यंस्याद्विप्रमुख्येंद्रकथंचान्येनशत्रुणा ॥२२॥ ॥ श्रीव्यासउवाच ॥ ॥ ममाहमितिवैषम्यंभूतानांत्रिगुणात्मनाम् ॥ क्रोधाद्येवर्ततेराजन्नहरौपरमात्मनि ॥ २३ ॥ हरौकेनापिभावेनमनोलग्नंकरोतियः ॥ यातितद्रूपतांसोपिभृंगिणःकीटकोयथा ॥ २४ ॥ स्नेहंकामंभयंक्रोधमैक्यंसौहृदमेवच ॥ कृत्वातन्मयतांयांतिसांख्ययोगंविनाजनाः ॥ २५ ॥ स्नेहान्नंदयशोदाद्यावसुदेवादयोऽपरे ॥ कामाद्गोप्योहरिंप्राप्तानतुब्रह्मतयानृप ॥ २६ ॥ तद्रूपगुणमाधुर्यभावसँल्लग्नमानसाः ॥ भयात्कंसस्त्वत्सुतस्तत्सायुज्यंजगामह ॥ ॥ २७ ॥ क्रोधादयंदंतवक्रःशिशुपालादयोऽपरे ॥ ऐक्याच्चयादवायूयंसौहृदाच्चवयंतथा ॥ २८ ॥

षनकी ज्योति कृष्णमें लीन हैजाय तो योग्य है वैरीकी कैसे लीन हैगई ॥ २२ ॥ व्यासजी बोले—मैं ऐसौ हूं यह मेरो वैभव है यह जो वैषम्य (विषमता) है सो त्रिगुणात्मा जे जीव हैं तिनकूं है काम क्रोध लोभ मोह इनते वर्ते है सो हे राजन् ! यह परमात्माके विषे नहीं है ॥ २३ ॥ जो काहू भाव करके हरिमें मन लगावैहै वो ता भगवान्के रूपकूं प्राप्त होयहै जैसे भृंगीके भयतें कीडा भृंगी होयहै ॥ २४ ॥ स्नेहते कामसौं भयसौं क्रोधसौं ऐक्यतासौं और सुहृदतासौं चाहे काहू तरहसौं भगवान्में मन लगावै तो वो ज्ञानके विना योगके विनाहू तन्मयताकूं प्राप्त होयहै ॥२५॥ स्नेहते तौ नन्दयशोदादिक और वसुदेवादिक और हू कामते गोपी हरिकूँ प्राप्त हैगई ब्रह्मताते प्राप्त नहीं भई हैं ॥२६॥ ताके रूप गुण माधुर्यके भावसौं इनको मन लगगयो भयते तेरो बेटा कंस सायुज्यकूं प्राप्त हैगयो ॥ २७ ॥ क्रोधते दन्तवक्र और हू शिशुपालते आदिदैके प्राप्तभये ऐक्यताते तुम यादव और

सुहृदताते नारदजी कहेंहैं कि हम प्राप्तभये ॥ २८॥ ताते काहू उपायते मन कृष्णमें लगावे राति दिन मन तो वैरीकोही लगैहै औरको नहीं ॥ २९ ॥ याहीते असुरादिक हरिमें शत्रु कौई भाव करेंहै ॥ ३० ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विज्ञानखंडे भाषाटीकायां व्यासोपाख्याने भक्तमाहात्म्यं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ व्यासजी कहेंहैं—वत्सासुर अघासुर धेनुकासुर बकासुर पूतना केशी कालनेमि अरिष्टासुर प्रलंबासुर द्विविदबंदर बल्वल शंख शाल्व ये वैरतेई जब प्रकृतिपुरुषते परे जो हरि ताकूं प्राप्तभये कछु भक्त नहीं हैं फिर भक्ति करनवारे भक्त भगवान्को प्राप्त होयँ तो आश्चर्य कहा है ॥१॥ पहले मधु कैटभ अतिबली हिरण्यकशिपु हिरण्याक्ष रावण कुंभकर्ण सब वैरतेई विष्णुके या परंपदकूं प्राप्त हैगये ॥२॥ और कोन कोन नहीं विष्णुपदकूं प्राप्त भये देखो प्रह्लाद बाणासुर शंखचूड विभीषणते आदिक सत्संगतेही प्राप्त हैगये ये भगवान्के चरणकमलकी रजके लोभी हैं ॥ ३ ॥ और

तस्मात्केनाप्युपायेनमनःकृष्णेनिवेशयेत् ॥ अहर्निशंहिस्मरणंभवेच्छत्रोर्नकर्हिचित् ॥ २९ ॥ शत्रुभावंहरौतस्मात्कुर्वंतिदनुजादयः॥ ३० ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविज्ञानखण्डेश्रीव्यासोग्रसेनसंवादेभक्तमाहात्म्यंनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ श्रीवेदव्यासउवाच ॥ ॥ वत्साघधेनुकनकीबककेशिकालारिष्टप्रलंबकपिवल्वलशंखशाल्वाः ॥ वैरेणयंकिमुतभक्तियुतानरेन्द्रप्रापुःपरंप्रकृतिपूरुषयोःपुमांसम् ॥१॥ पूर्वासुराबतिबलौमधुकैटभाख्यौस्वर्णाक्षहेमकशिपूचतथापरौच ॥ वैरंविधायनृपरावणकुंभकर्णौविष्णोःकिलापतुरलंपरमंपदंहि ॥ २ ॥ केकेनविष्णुपदमागतवंतआदौप्रह्लादबाणबलियक्षविभीषणाद्याः ॥ सत्संगसंगनिरतावहुमानपात्रश्रीमत्पदाब्जमकरंदरजोविलुब्धाः ॥ ३ ॥ देवर्षिगीष्पतिवसिष्ठपराशराद्याःसांख्यायनासितशुकाःसनकादयश्च ॥ निष्कारणाभुविचरंत्यरविंदनेत्रपादारविंदमकरंदमिलिंदमुख्याः ॥ ४ ॥ यत्युत्कलांगभरतार्जुनमैथिलाश्चगाधिप्रियव्रतयदुप्रमुखांबरीषाः ॥ निष्कारणाःपरमहंसवराश्चरंतिश्रीकृष्णचन्द्रचरितामृतपानमत्ताः ॥ ५ ॥ मन्दोदरीचशबरीचमतंगशिष्यास्ताराततथात्रिवनितानिपुणात्वहल्या ॥ कुन्तीतथाद्रुपदराजसुतासुभक्ताएताः परंपरमहंससमाःप्रसिद्धाः ॥ ६ ॥ सुग्रीववालिसुतवातसुतर्क्षराजनागारिगृध्रवरकाकभुशुंडिमुख्याः ॥ कुब्जादिवायकसुदामगुहादयोन्येतत्संगमेत्यहरिभक्तवराबभूवुः ॥ ७ ॥ कृष्णंनरोधयतिधर्मतपोनयोगःसांख्यंनयज्ञउततीर्थयमव्रतानि ॥ छन्दांसिपूर्तनियमाव्रथदक्षिणाश्चनेष्टंनदानमथभक्तिमृतेनकश्चित् ॥ ८ ॥

नारद बृहस्पति वसिष्ठ पराशर सांख्यायन असित शुकदेव सनकादिक जे निष्काम पृथ्वीमें विचरें हैं और जे अरविंदनेत्र श्रीकृष्णके चरणकमलकी सुगंधिके भौरा हैं ॥४॥ यति उत्कल अंग भरत अर्जुन जनक गाधि प्रियव्रत यदु अंबरीष जे निष्काम भक्त है श्रीकृष्णके चरित सोई भयो अमृत ताके पानते मत्त भये पृथ्वीपै विचरेहैं ॥ ५ ॥ और मंदोदरी शबरी मतंगकी चेली तारा, अत्रिकी स्त्री अनुसूया अहिल्या कुंती द्रौपदी इतनी स्त्री परमहंसनके समान हैं वे प्रसिद्ध हैं ॥ ६ ॥ सुग्रीव अंगद हनुमान जांबवान् गरुड जटायु काकभुशुंडी कुब्जा वायक इंद्रपुत्र सुदामा गुह ये भक्तनको संग पायके हरिभक्तनमें श्रेष्ठ हैगये ॥ ७ ॥ धर्म तप योग सांख्य यज्ञ तीर्थयात्रा यम नेम चांद्रायणादिक व्रत वेदपाठ कूआ बावरी

तलाव बाग प्याऊ सदावर्त अग्निहोत्र दान ये सब एकभक्ति बिना श्रीकृष्णकूं कोई नहीं वश करिसकें हैं ॥ ८ ॥ यज्ञ व्रत वेदपाठ तप तीर्थयात्रा योग इष्टापूर्त नियमादिक इनते जो कछु फल मिलेहै सो एक केवल भक्तिते सब मिलेहै और जो भक्तिते मिलेहै सो इनते काहूते नहीं मिलेहै ॥ ९ ॥ भक्ति कैसी है यमपुरते उद्धार करन वारी है विश्वरूपते उतारिवेवारी है संसारसमुद्रमें पार करिवेवारी है विषयते जोडे जे कर्म तिनकी नाश करनवारी है परेते परे जो हरि तिनके पदकी देनवारी है ॥ १० ॥ श्रीकृष्णके दर्शनके रसमें उत्सुकका जो भाव तासे राजित जो उद्यत परमोत्सव ताकी ये भक्ति वसंतपश्चमी है कामदेवको मित्र जो वसंत ताकी फल फूल पात्र मंजरीके भारते झुकी भई ये भक्ति लता है ॥ ११ ॥ संमोह रूप जो कालो घन ताके बीचमें चमकती बीजरी है शास्त्रके अर्थकूं दिखवेवारे जे वचन ताकी दीपिका है और जयरूप कार्तिककी

यज्ञव्रताध्ययनतीर्थतपोनियोगैरिष्टस्वधर्मनियमादिकसांख्ययोगैः ॥ यत्प्राप्यतेतदखिलंभवतीहभक्त्याभक्तेःपदंहिकर्हिचिन्नभवेत्किलैभिः ९॥ उद्धारिणीयमपुरस्यचविश्वरूपादुत्तारिणीभवमहार्णववारिवेगात् ॥ संहारिणीविषयसंचितकर्मणांचसत्कारिणीहरिपदस्यपरात्परस्य ॥१०॥ श्रीकृष्णदर्शनरसोत्सुकभावराजदुद्यद्वसंतपरमोत्सवपंचमीयम् ॥ दिव्यालतातिफलपल्लवभारनम्रासंराजतेहिसततंकुसुमाकरस्य ॥ ११ ॥ संमोहकालघनमध्यतडित्स्फुरंतीशास्त्रार्थदर्शवचसांपददीपिकेयम् ॥ दीपावलिर्विजयतेजयकार्तिकस्यजेतुंगुणान्त्रिजयिनोदशमीजयस्य ॥ ॥ १२ ॥ सांख्यंचयोगइतिपार्श्वगतेहिदंडकीलानिचात्रशतशोगुणभावभेदाः ॥ अस्याःक्रमान्नवकथाश्रवणादयश्चश्रेणीयमस्तिसरलाभगवत्पदस्य ॥ १३ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांश्रीविज्ञानखंडेव्यासोग्रसेनसंवादेभक्त्युत्कर्षवर्णनंनामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ उग्रसेनउवाच ॥ ॥ कर्मग्रहोगृहस्थोयंश्रीकृष्णस्यमहात्मनः ॥ सेवांकेनविधिनाकुर्यात्तद्ब्रूहिमेमुने ॥ १ ॥ भक्त्यंकुरोयस्यनास्तिवास्तितस्यनवर्द्धते ॥ तस्यकेनप्रकारेणप्रसन्नःस्याद्धरिःस्वयम् ॥ २ ॥ ॥ श्रीव्यासउवाच ॥ ॥ यदिभक्त्यंकुरोनस्यात्सत्संगेनचजायते ॥ बलाद्विवर्द्धतेतस्मात्सतांसंगंसमाचरेत् ॥ ३ ॥ कृष्णसेवाविधिंतुभ्यंवक्ष्यामिसुलभंपरम् ॥ ययागृहस्थोयंशीघ्रंश्रीकृष्णंप्राप्नुयान्नृप ॥ ४ ॥

दीपावली है और तीनों गुणनकूं जीतिवेकूं कारकी विजयदशमी है ॥ १२ ॥ सांख्य और योग ये तो दोनों जाके अगल बगलके दंड हैं गुण भावनके शतशः भेद जाके किला हैं और यह जो नवधा भक्तिके श्रवणते आदिलेके नव भेद हैं वेही जाके नौ बीचके डंडाहै सो ये गोलोककूं जायवेकूं मानो नौ डंडाकी नसैनीही है ॥ १३ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विज्ञानखंडे भाषाटीकायां भक्त्युत्कर्षवर्णनं नाम पंचमोऽध्यायः ॥५॥ उग्रसेन फिर पूछे है कि, कर्मरूप ग्रह जाकूं लगिरह्यो ऐसो जो गृहस्थी है सो हे मुने ! कौन विधिते भगवानकी पूजा करै सो मुने ! हमते कहो ॥ १ ॥ भक्तिको अंकुर जाके नहीं है और है तो बढे नहीं है तापै भगवान् कैसे प्रसन्न होंय ॥ २ ॥ व्यासजी कहें हैं जो भक्तिको अंकुर नहीं होंय तो सत्संगते भक्तिको अंकुर होयहै फिर वो बलते बढेहै याते सत्संग करै सत्संगते ही बढे हैं ॥ ३ ॥ अब कृष्णसेवाकी विधिको मैं परमसुलभ तेरे आगे कहहूं जाते गृहस्थी

जलदी ही श्रीकृष्णकूँ प्राप्त हैजाय ॥ ४ ॥ आचार्यके कुलमें भयो होय श्रीकृष्णके ध्यानमें तत्पर होय ऐसे गुरुकूं करिके मनुष्य सिद्ध होयहै ॥ ५ ॥ गुरुनते श्रीकृष्ण महात्माकी सेवाविधि सीखे ॥ ६ ॥ जाकूँ विष्णुकी दीक्षा नहीं है ताको सबरो कर्तव्य निष्फल है निगुरेको दर्शनहु पहले पुण्यको नाश करै है ॥ ७ ॥ उत्तराभिमुख हरिको मंदिर बनावै तहां ऊंचो सिंहासन तापै पीठ कलश युक्त बनवावै ॥ ८ ॥ सच्चिदानंद नाम जाको तामें तीन सिढी बनवावै ता सिंहासनके तुल्य बहुमोल वस्त्र बिछावै कोमल ॥ ९ ॥ तकीया गदूआ सुनहरीकामके नानाचित्र जामें अंतर्पट जामें ऐसी भीति बनावे ॥ १० ॥ सब ओरते मंडल चंदनवार जारी झरोखा फुहारे चतुःशाला और सुंदर जारी ॥ ११ ॥ और सभामंडपनके मण्डल तिन करके बडो आंगन सुशोभित है वा अंगनमें सुंदर तुलसीजीको मंदिर बनरह्योहै ॥ १२ ॥ वा मंदिरके बाहिर दो हाथी बनवावै

आचार्य्यकुलसंभूतंश्रीकृष्णध्यानतत्परम् ॥ एतादृशंगुरुंकृत्वासिद्धोभवतिमानवः ॥ ५ ॥ गुरोःसेवाविधिंशिक्षेच्छ्रीकृष्णस्यमहात्मनः ॥६॥ विष्णुदीक्षाविहीनस्यसर्वंभवतिनिष्फलम् ॥ निर्गुरोर्दर्शनंकृत्वाहतपुण्योभवेन्नरः ॥ ७ ॥ उत्तराभिमुखंशश्वत्कारयेद्धरिमंदिरम् ॥ तत्रसिंहासनंप्रोच्चंसपीठंकुंभमंडितम् ॥ ८ ॥ सच्चिदानंदनामस्यात्सोपानत्रयभूषितम् ॥ महार्हवस्त्रैराच्छन्नंतत्तुल्यासनंमृदु ॥ ९ ॥ पार्श्वोपबर्हणयुतंस्फुरद्धेमांबरावृतम् ॥ नानाचित्रयुतैःकुड्यैरंतःपटसमन्वितैः ॥१०॥ सर्वतोमंडलैस्तद्वत्तोरणैःसमलंकृतम् ॥ गवाक्षवारियंत्राढ्यंचतुःशालसुजालकैः ॥ ११ ॥ राजतेप्रांगणोद्देशःसभामंडपमंडलैः ॥ तत्रप्रांगणमध्येतुतुलसीमंदिरंशुभम् ॥१२॥ मंदिरस्यबहिर्द्वारिकारयेच्चद्विपद्वयम्॥ तथैवकृत्रिमंराजन्सिंहद्वयमधिष्ठितम् ॥ १३ ॥ सुवर्णशिखरस्याधश्चक्रंचशिखरोपरि ॥ द्वारेपिहरिनामानिप्रालेख्यानिशुभानिच ॥१४॥ शंखंपद्मंगदांशार्ङ्गमालेख्यंभित्तिपार्श्वयोः ॥ इषुधीचतथाबाणःसव्येदक्षिणएवच ॥ १५ ॥ तथामंदिरपृष्ठेवैशतचंद्रंचनंदकम् ॥ हलंचमुसलंचैवलेखनीयंप्रयत्नतः ॥ १६ ॥ सिंहासनस्यपृष्ठेतुगोप्योगावस्तथैवच ॥ गोपालास्तत्रसोपानेकपाटेविजयोजयः ॥ १७ ॥ देहल्यांकल्पवृक्षश्चस्तंभेषुचलताःशुभाः ॥ यत्रतत्रचकुड्येषुश्रीगंगापापहारिणी ॥ १८ ॥ वृंदावनंगोवर्धनंयमुनापुलिनानिच ॥ तथैवचीरहरणमालेख्यंरासमंडलम् ॥ १९ ॥

और तैसेंही दो सिंहनको बनवायके स्थापन करै ॥ १३ ॥ फिर सुवर्णके शिखरके नीचै और शिखरके ऊपर एक चक्रको बनवायके स्थापन करै और दरवाजेके दोनों बगल शुभ जे भगवान्के नामतिननको लिखै ॥ १४ ॥ तिन नामनके दोनों बगल भीतनमें शंख कमल गदा और शार्ङ्ग इनको लिखै बाई बगलमें दो तरकस और दहिनी बगल बाणनको लिखै ॥ १५ ॥ तैसेंही मंदिरके पीछे शतचंद्रनामकी ढाल और नंदकनामके खड्गको लिखै तिनीके पास प्रयत्नसो हल मूसलको भी लिखै ॥ १६ ॥ और भगवान्के सिंहासनके पीछे गोपीनको गऊनको लिखै और सिंहासनकी सिढीनमें गोपाल श्रीकृष्णके सखानको और दोनों किवाडनमें जय विजय पार्षदनको लिखै ॥ १७ ॥ देहलीमें कल्पवृक्षको लिखै खंभनमें सुंदर लतानको लिखै और भीतनमें जहां तहाँ पापहारिणी गंगाको लिखै ॥ १८ ॥ और वृंदावन गोवर्धन और यमुनाजीके पुलिन चीरहरणकी लीला और

रासमंडलको भी पिछवाईमें लिखे ॥ १९ ॥ और चित्रकूटको पंचवटीको और रामरावणके युद्धको लिखे पर जानकीहरणकी लीलाको नहीं लिखे ये सब पिछवाईमें लिखे ॥ २० ॥ और दशो अवतारके चित्रनको नरनारायणके आश्रमको सातों पुरीनको तीनों ग्रामनको (संभलग्राम नंदिग्राम और कलापग्राम) और दंडकारण्य आदि जो अरण्य है तिनको और नौ ऊषरनको लिखे ॥ २१ ॥ या प्रकार भगवान्की पिछवाईमें इनके चित्रनको लिखके फिर बुद्धिमान् पुरुष मंदिरको बनवामें वा मंदिरमें भगवान्की मूर्तिको स्थापनकरै यो मूर्ति वंशीको हाथमें लिये होय और दक्षिण पार्व जाको टेढो होय ॥ २२ ॥ किशोर अवस्थाकी आकृतिकी कृष्णकी मूर्ति अतिशय करके सेवाके योग्य मानीहै वा मूर्तिकी गुरुजीके हाथते प्रतिष्ठा करायके मंदिरमें स्थापन करावै ॥ २३ ॥ फिर भक्त हैके पराभक्तिते प्रतिष्ठा करायके उनके सेवनमें तत्पर होय भगवा-

चित्रकूटःपंचवटीलेखनीयंप्रयत्नतः ॥ रामरावणयोर्युद्धंजानकीहरणंविना ॥ २० ॥ दशावतारचित्राणिनरनारायणाश्रमः ॥ सप्तपुर्यं-
स्त्रयोग्रामानवारण्यंनवोषराः ॥ २१ ॥ एवंलिखित्वाचित्राणिमंदिरंकारयेद्बुधः ॥ वंशीभावोद्यतकरंवक्रीभूतांघ्रिदक्षिणम् ॥ २२ ॥ किशो-
राकृतिकृष्णस्यरूपंसेव्यतमंस्मृतम् ॥ तत्प्रतिष्ठांविधायाशुगुरुहस्तेनमंदिरे ॥ २३ ॥ भक्तःपरमयाभक्त्यास्थापयेत्तत्परोभवेत् ॥ तत्प्रसा-
देचरसनांघ्राणंतत्तुलसीदले ॥ न्यसेत्कर्णौतच्छ्रवणेएवंसेवापरोभवेत् ॥ २४ ॥ अहर्निशंकृष्णसेवांयःकरोतिचभाववित् ॥ तंप्रेमलक्षणंभक्तं
विदुर्भागवतोत्तमम् ॥ २५ ॥ अश्वमेधसहस्राणिराजसूयशतानिच ॥ राजञ्छ्रीकृष्णसेवायाकलांनार्हंतिषोडशीम् ॥ २६ ॥ श्रीकृष्णदेशिक-
स्यापियःकुर्याद्दर्शनंनरः ॥ कोटिजन्मकृतैःपापैर्मुच्यतेनात्रसंशयः ॥ २७ ॥ देहांतेतंसमानेतुंश्यामसुंदरविग्रहाः ॥ रथंनीत्वाप्रधावंति
गोलोकात्कृष्णपार्षदाः ॥ २८ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविज्ञानखण्डेश्रीवेदव्यासोग्रसेनसंवादेसेवाविधिवर्णनंनामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

॥ ॥ श्रीवेदव्यासउवाच ॥ ॥ ब्राह्मेमुहूर्तेचोत्थायकशिपोश्चसदानृप ॥ गुरोर्नामचगोविन्दनामानिप्रवदन्मुहुः ॥ १ ॥

न्के प्रसादमें अपने जिह्वाको अपनी नासिकाको वाके प्रसादी तुलसीदलकी गंधमें लगावे कानको भगवान्के कथाश्रवणमें लगावे या प्रकार भगवान्की सेवामें तत्पर होय ॥ २४ ॥ जो भावको जाननवारो भक्त श्रीकृष्णकी सेवामें अहर्निश तत्पर होयहै वाको भागवतनमें उत्तम प्रेमलक्षणा भक्तिके करनवारो जानैहैं ॥ २५ ॥ एकहजार अश्वमेध और सौ १०० राजसूयको करनो श्रीकृष्णकी सेवाके सोलहवीं कलाको भी नहीं पावेहै ॥ २६ ॥ जो श्रीकृष्णके सेवनके बतावनवारो आचार्य है वाको जो दर्शन करै वो मनुष्य कोटिजन्मके पापनसो छूटिजायहै ॥ २७ ॥ और वाके देहके अंतमें वाके लिवायवेको श्यामसुंदर जिनकी मूर्ति ऐसे भगवत्पार्षद गोलोकते दिव्य रथ लेके आवेहै ॥ २८ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विज्ञानखंडे भाषाटीकायां षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

॥ श्रीवेदव्यासजी कहतभये कि, हे नृप ! बडे आनंदसो शय्यापैते

चारघडीके सबेरे उठै गुरुको नाम और गोविंदको नाम उच्चारण करके वारंवार अनेक भगवान्‌के नामनको लेतो ॥ १ ॥ भूमिको प्रणाम कर चरणामृत पीके पीछे धरतीमें पावं धरै फिर आसनपै बैठके सुखसों ॥ २ ॥ अपने दोनों हाथनको गोदीमें धरके श्वासको जीतके ध्यानमें स्थित होय फिर स्वस्तिकासनसों बैठके ज्ञानमुद्रासों बैठे गुरुजीको ध्यान करै ॥ ३ ॥ फिर गुरुके ध्यानको धरके श्रीकृष्णको एकाग्रमनसों ध्यान करै किशोररूप श्यामसुंदर वेत्र और वंशीसों विभूषित ॥ ४ ॥ ऐसे ध्यान करके फिर वही स्थलको-जाय अर्थात् शौचको जाय हे राजेंद्र! गृहस्थके लिये जो शौचविधि करनीचाहिये सो सुनो ॥ ५ ॥ प्रथम (अश्वक्रांते रथक्रान्ते) या मंत्रको उच्चारण कर मृत्तिकाको लावे एक वेर लिंगमें तीन वेर गुदामें वाम हाथमें दश वेर ॥ ६ ॥ दोनों हाथनमें सात वेर और दोनों पायनमें तीन तीन वेर मृत्तिका लगायके धोवे याते दूनो तो ब्रह्मचारी तिगुनो वानप्रस्थ ॥ ७ ॥ और यति याते चौगुनो शौच करै याते आधौ रोगी तथा मार्गमें चलनवारो और याते आधो शूद्र जाति होय सो शौच करे ॥ ८ ॥

भूमिंनत्वान्यसेत्पादंजलंस्पृष्ट्वाहरेर्जनः॥ उपविश्यासनेशीघ्रंसकामोयोयथासुखम् ॥२॥ हस्तावुत्संगआधायश्वासजिद्ध्यानमास्थितः॥ ज्ञानमुद्राधरंशांतंश्रीगुरुंस्वस्तिकासनम् ॥३॥ ध्यात्वाकृष्णंपरंध्यायेद्भक्तएकाग्रमानसः॥ किशोरंश्यामलंह्यंवंशीवेत्रविभूषितम् ॥४॥ एवंध्यात्वाहरेर्ध्यानंपुनर्गच्छेद्बहिस्थलम् ॥ तच्छौचंशृणुराजेंद्रगृहस्थस्ययथातथम् ॥५॥ अश्वक्रांतेतिमन्त्रेणमृत्स्नयाचजलेनच ॥ एकालिंगेगुदेतिस्रस्तथा वामकरेदश ॥ ६ ॥ उभयोर्हस्तयोःसप्ततिस्रःतिस्रःपदेपदे ॥ एतस्माद्द्विगुणंप्रोक्तंब्रह्मचारिवनस्थयोः॥७॥ यतेश्चतुर्गुणंराज्ञोतदर्धंशौचमाचरेत्॥ तदर्धंरोगिपांथानांस्त्रीशूद्राणांतदर्धकम् ॥८॥ शौचकर्मविहीनस्यसकलानिष्फलाःक्रियाः ॥ मुखशुद्धिविहीनस्यनमन्त्राःफलदाःस्मृताः॥९॥ आयुर्बलंयशोवर्चःप्रजाःपशुवसूनिच ॥ ब्रह्मप्रज्ञांचमेधांचत्वन्नोदेहिवनस्पते ॥ १० ॥ इतिमन्त्रंसमुच्चार्यकुर्याद्वैदंतधावनम् ॥ कण्टकीक्षीरिकार्पासानगुडीब्रह्मवृक्षकान् ॥ ११ ॥ वटैरण्डविगन्धाढ्यान्वर्जयेद्दंतधावने ॥ हरितद्द्यंमन्त्रेणसूर्यंनत्वाकृतांजलिः ॥ १२ ॥ प्रणमेद्धरिभक्तांश्चप्रह्लादादीन्समाहितः ॥ तुलसीमृत्तिकांनीत्वाततःस्नानंसमाचरेत् ॥ पठितव्यंप्रयत्नेनश्रीगंगायमुनाष्टकम् ॥ १३ ॥ अयोध्यामथुरामायाकाशीकांचीअवन्तिका ॥ पुरीद्वारावतीचैवसप्तैतामोक्षदायिकाः ॥ शालिग्रामोमहायोगेशंभलोहरिमंदिरे ॥ १४ ॥

शौच कर्म करे विना सब क्रिया (कर्म) निष्फल होयहै और मुखशुद्धिके विना जप करनो फलको देनवारो नहीं होयहै याते फिर मुखशुद्धि करै ॥ ९ ॥ तब ये मंत्र पढै कि ये आयुबल यश और तेज प्रजा पशु धन ब्रह्मसंबंधिनी बुद्धि और मेधा इन सबनको हे वनस्पते! तू दे ॥ १० ॥ या प्रकार या मंत्रको उच्चारण करके दंतधावन करै धन धतूर आदि कांटेके वृक्षको दूधके वृक्षको कपासके वृक्षको निर्गुंडीके वृक्षको और ब्रह्माजीके वृक्षको ॥ ११ ॥ वडके वृक्षको अंडके वृक्षको और जामें दुर्गंधि आवतीहोय वाको दांतन न करै फिर (हरितद्द्यं) या वेदके मंत्रको पढके हाथ जोरके सूर्यको नमस्कार करै ॥ १२ ॥ फिर हरिके भक्त प्रह्लादादिकनको सावधान होकर प्रणाम करै फिर तुलसीकी मृत्तिकाको लेकर अंगमें लगाकर स्नान करै फिर प्रयत्नसें श्रीगंगाजीके अष्टकका और श्रीयमुनाके अष्टकका पाठ करै ॥ ॥ १३ ॥ फिर अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका और द्वारावती ये सातों पुरी मोक्षकी देनवारी हैं इन सातों पुरीनको स्मरण करै फिर

शंभलको हरिमंदिरमें ॥ १४ ॥ नन्दिग्रामको कौशलमें स्मरण करै ये तीन ग्राम कहे हैं दंडकारण्य सैंधवारण्य जंबूमार्ग पुष्कल
तीन गामनको स्मरण करे शालग्रामको महायागमें शंभलको हरिमंदिरमें ॥ १४ ॥ नन्दिग्रामको कौशलमें स्मरण करै ये तीन ग्राम कहे हैं दंडकारण्य सैंधवारण्य जंबूमार्ग पुष्कल
॥ १५ ॥ उत्पलावर्त नैमिषारण्य कुरुजांगल अर्बुद हेमवंत ये नौ अरण्य हैं तिनको स्मरण करै ॥ १६ ॥ इन तीर्थनके नामनको वारंवार उच्चारण करे फिर शुद्ध पीतांबर पहरै
॥ १७ ॥ बारह तिलक लगायके आठ मुद्रा धरिके संध्या करि पवित्र है मौन लेके हरिमन्दिरमें जाय ॥ १८ ॥ घंटा बजाय जयशब्द करि ताल बजाय हे गोविंद ! उठो २
योगनिद्राकूं छोडो ॥ १९ ॥ या स्तुतिकूं कहिके भक्त भगवान्‌को उठावे मंगल आर्तिकूं मुखके ऊपर भ्रमावे ॥ २० ॥ वेर २ नमस्कार करिके अनेक पकान्नको भोग लगावे
फिर स्नान करावै देशकालके प्रभावको जाननवारो ॥ २१ ॥ शृंगारके भावको जानिके वस्त्र गहने मंगल वस्तुते भोग्य अन्नकूं देके आरती करै ॥ २२ ॥ ताके अनन्तर

नंदिग्रामःकौशलेतुत्रयोग्रामाःप्रकीर्तिताः ॥ दंडकंसैंधवारण्यंजंबूमार्गंचपुष्कलम् ॥ १५ ॥ उत्पलावर्तमारण्यंनैमिषंकुरुजांगलम् ॥ अर्बुदंहैमव
न्तंचनवारण्यानिवैविदुः ॥ १६ ॥ एतानितीर्थनामानिसमुच्चार्यपुनःपुनः ॥ इत्थंस्नात्वाततोबिभ्रद्दंवरंक्षौममुत्तमम् ॥ १७ ॥ द्वादशतिलका
न्बिभ्रदष्टमुद्राधरःपरः ॥ कृतसंध्यःशुचिर्मौनीगत्वाश्रीकृष्णमंदिरम् ॥ १८ ॥ घण्टावाद्यंजयारावंतलशब्दंविधायच ॥ उत्तिष्ठोत्तिष्ठगोविन्द
योगनिद्रांविहायच ॥ १९ ॥ उच्चार्यैमांस्तुतिंराजन्भक्तउत्थापयेद्धरिम् ॥ मंगलार्तिसमादायभ्रामयंस्तन्मुखोपरि ॥२०॥ निवेद्यबहुपक्वान्नंन
त्वानत्वापुनःपुनः ॥ ततःस्नानंकारयित्वादेशकालप्रभाववित् ॥ २१ ॥ शृंगारंभाववित्कृत्वावस्त्रभूषणमंगलैः ॥ आर्तिक्यंतुततःकृत्वाभोग्या
न्नंचविधायच ॥ २२ ॥ ततोधृत्वामहाभोगंनानारसमयंपरम् ॥ महाभोगार्तिकंकृत्वाकारयेच्छयनंहरेः ॥२३॥ ततःप्रसादंपरमंतुलसीगन्ध
मिश्रितम् ॥ भुञ्जीतयोहरेर्नित्यंसकृतार्थोनसंशयः ॥ २४ ॥ राजभोगार्तिकंकृत्वाकारयेच्छयनंहरेः ॥ शंखनादेनविधिवद्भोगंधृत्वायथाविधि
॥ २५ ॥ ततः सन्ध्यार्तिकंकृत्वादुग्धादीन्विनिवेद्यच ॥ ततः प्रदोषसमयेपुनरार्तिकमाचरेत् ॥२६॥ धृत्वाभोगंपरंमिष्टंकारयेच्छयनंहरेः ॥
राजसीचैवराजेन्द्रराजसेवेयमस्तिवै ॥ २७ ॥ सर्वंश्रीकृष्णचन्द्रस्यसेवासंलग्नमानसः ॥ तारयित्वाकुलशतंयातिचात्यंतिकंपदम् ॥ २८ ॥
जन्माष्टमीचकृष्णस्यश्रीरामनवमीतथा ॥ राधाष्टम्यन्नकूटंचद्वादशीवामनस्यच ॥ २९ ॥ चतुर्दशीनृसिंहस्यतथानन्तचतुर्दशी ॥ एषुकाले
षुकृष्णस्यमहापूजांसमाचरेत् ॥ ३० ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविज्ञानखंडेव्यासोग्रसेनसंवादेराजसेवावर्णनंनामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

नानारसमय महाभोग धरै फिर महाभोगकी आरती करिके धीरेते शयन करावै ॥ २३ ॥ ताके अनन्तर जो परम प्रसाद तुलसीकी गंध मिल्यो भोजन करे वो कृतार्थ
होयहै ॥ २४ ॥ राजभोगकी आर्ती करिके हरिकूं शयन करावै शंख बजाय विधिते भोग लगावै ॥ २५ ॥ फेर संध्याकी आर्ती करे फेर दुग्धादिकको भोग लगावे फिर प्रदोष
समयमें आरती करे ॥ २६ ॥ फेर शयनसमै मीठो भोग लगाय आरती कर शयन करावै हे राजेंद्र ! यह राजसी सेवा वर्णन करी है ॥ २७ ॥ या प्रकार श्रीकृष्णकी सेवाकों
करनहारो पुरुष अपने सौकुलको उद्धार करिके मोक्षकूं प्राप्त होयहै ॥ २८ ॥ जन्माष्टमी रामनवमी राधाष्टमी अन्नकूट वामनद्वादशी ॥ २९ ॥ नृसिंहचतुर्दशी अनन्तचतुर्दशी इन

कालनमें श्रीकृष्णकी महापूजा करे ॥ ३० ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विज्ञानखण्डे भाषाटीकायां राजसेवावर्णनं नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ व्यासजी कहे हैं याके अनंतर स्नान करिके
नित्यक्रिया नैमित्तिकी क्रिया करिके शुभ स्थंडिलमण्डलमें पांच रंगको बत्तीस दलको कमल बनावै वेदसूक्त विधित कली केशरा सब बनावे ॥ १ ॥ २ ॥ वा कमलकी कर्णिका
मे श्रीकृष्णको सिंहासन बिछावै तहां राधा रमा भूदेवी विरजा इनको स्थापन करे ॥ ३ ॥ तिनके बीचमें पुरुषोत्तम श्रीकृष्णको स्थापन करे ॥ ४ ॥ अष्टदलमें अष्टसखी
षोडशदलमे षोडशसखी बत्तीसदलमें बत्तीससखीनको स्थापन करे ॥ ५ ॥ कमलके पास शंख चक्र गदा पद्म नन्दक, खड्ग शार्ङ्ग धनुष बाण हल मुसल इनको स्थापन करे
॥ ६ ॥ कौस्तुभमणि बनमाला श्रीवत्स, पीताम्बर नीलांबर वेणु बेत्र इनको स्थापन करे ॥ ७ ॥ तिनके पास तालध्वज गरुडध्वज दोनों रथनको स्थापन करे सुमति

॥ ॥ व्यासउवाच ॥ ॥ अथस्नात्वाचकृत्वाचनित्यंनैमित्तिकींक्रियाम् ॥ पंचवर्णसमायुक्तंशुद्धेस्थंडिलमंडले ॥ १ ॥ द्वात्रिंशद्दलसंयु
क्तंकर्णिकाकेसरोज्वलम् ॥ विधायकमलंदिव्यंविधिवद्वेदसूक्तिभिः ॥ २ ॥ कर्णिकायांन्यसेद्राजन्हरेःसिंहासनंशुभम् ॥ तत्रराधांरमांस्थाप्य
भूदेवींविरजांतथा ॥ ३ ॥ तन्मध्येस्थापयेत्साक्षाच्छ्रीकृष्णंपुरुषोत्तमम् ॥ तथाष्टदलमध्येतुराधिकाष्टसखीःशुभाः ॥ ४ ॥ ततोष्टदलमध्येतु
श्रीकृष्णस्यतथासखीन् ॥ तथाषोडशपर्णेषुसखीनांचद्वयंद्वयम् ॥ ५ ॥ कमलस्यचपार्श्वेषुशंखंचक्रंगदांतथा ॥ पद्मंचनंदकंशार्ङ्गंबाणांश्च
मुसलंहलम् ॥ ६ ॥ कौस्तुभंवनमालांचश्रीवत्संनीलमंबरम् ॥ पीतांबरंतथावंशींवेत्रंचस्थापयेद्बुधः ॥ ७ ॥ ततःपार्श्वेषुतालांकंगरुडांकंरथं
तथा ॥ सुमतिंदारुकंसूतंगरुडंकुमुदंतथा ॥ ८ ॥ चंडंचैवप्रचंडंचबलंचैवमहाबलम् ॥ कुमुदाक्षंबलंचैवस्थापयेद्यत्नतःसुधीः ॥ ९ ॥ तथा
दिक्षुचदिक्पालान्संस्थाप्यचपृथक्पृथक् ॥ विष्वक्सेनंशिवंमांचविधिंदुर्गांविनायकम् ॥१०॥ नवग्रहांश्चवरुणंतथाषोडशमातृकाः ॥ तत्पश्चा
ग्रेवीतिहोत्रंस्थंडिलेस्थापयेद्बुधः ॥ ११ ॥ आवाहनमासनंचपाद्यमर्घ्यंविशेषतः ॥ स्नानंचमधुपर्कंचधूपंदीपंतथैवच ॥ १२ ॥ यज्ञोपवीतंवस्त्रं
चभूषणंगंधमेवच ॥ पुष्पंतथाक्षतांश्चैवनैवेद्यंचमनोहरम् ॥ १३ ॥ आचमनंप्रदातव्यंतांबूलंदक्षिणांतथा ॥ प्रदक्षिणांप्रार्थनांचतथानीराजनंस्तु
तम् ॥ १४ ॥ नमस्कारंततःकुर्यात्क्रमेणात्रपृथक्पृथक् ॥ आवाहनेतुपुष्पाणिआसनेतुकुशद्वयम् ॥ १५ ॥

दारुक दोनो सारथीनको स्थापन करे गरुडको कुमुदको स्थापन करे ॥ ८ ॥ चंड प्रचंड बल महाबल कुमुदाक्ष बल इनको यत्नते स्थापन करे ॥ ९ ॥ फिर दशों
दिशानमें दश दिक्पालनको पृथक्पृथक् स्थापन करे विष्वक्सेन शिव लक्ष्मी ब्रह्मा दुर्गा विनायक इनको स्थापन करे ॥ १० ॥ नवग्रह वरुण षोडश मातृकानको स्थापन करे फिर
कमलके अगाडी बुद्धिमान् अग्निको स्थापन करे स्थंडिलपै ॥११॥ आवाहन पाद्य आसन अर्घ आचमन मधुपर्क स्नान धूप दीपक ॥१२॥ यज्ञोपवीत वस्त्र भूषण गंध पुष्प अक्षत और
मनोहर नैवेद्य निवेदन कर फिर ॥ १३ ॥ आचमन तांबूल दक्षिणा प्रदक्षिणा प्रार्थना स्तुति आरती ॥ १४ ॥ नमस्कार ये सब पृथक् २ करे आवाहन कर्ममें पुष्प

धरे आसनमें द्वै कुशा धरे ॥ १५ ॥ पाद्यमें श्यामा दूब विष्णुकांता और सुगंधके पुष्प ये सब अर्घमें धरे ॥ १६ ॥ और चंदन, खस, कपूर, केशर, अगरसों मिलो है हे राजन् ! हे महामते ! स्नानमें ऐसो जल चाहिये ॥ १७ ॥ मधुपर्कमें आमरे और कमल, धूपमें अष्टगन्ध और दीपकमें कपूर ॥ १८ ॥ पीरो यज्ञोपवीत, और वस्त्रमें पीतांबर, भूषणमें सुवर्ण, गंधमें केशर चन्दन ॥ १९ ॥ पुष्पनमें तुलसीकी मंजरी अक्षतनमें तंदुल नैवेद्यमें छः रस खट्टे, मीठे, फीके, नोनके, चरपरे, मधुर, रसीले नानाप्रकारके भोग माने हैं ॥ २० ॥ जलमें गंगाजल, यमुनाजल और हे नृप ! पीछे जायफल लोंग कंकोल मिरच ये आचमनमें डारे ॥ २१ ॥ बीडामें मिरच, इलायची, दक्षिणा सुवर्णकी, प्रदक्षिणा

पाद्येश्यामांचदूर्वांचविष्णुक्रांतांतथैवच ॥ सौगंधिकानिपुष्पाणिअर्घ्येयोग्यानियादव ॥ १६ ॥ चंदनोशीरकर्पूरकुंकुमागुरुमिश्रितम् ॥ एतादृशंजलंयोग्यंस्नानेराजन्महामते ॥ १७ ॥ मधुपर्केह्यामलकमरविंदंतथामतम् ॥ धूपेगंधाष्टकंदेयंदीपेकर्पूरमेवच ॥ १८ ॥ यज्ञोपवीतं पीतंचवस्त्रेपीतांबरंमतम् ॥ भूषणेचैवसौवर्णंगंधेकुंकुमचंदने ॥ १९ ॥ तुलसीमंजरीपुष्पेक्षतेषुस्यात्तुतंडुलाः ॥ नैवेद्येतुरसाःषट्चभोगाना नाविधामताः ॥ २० ॥ जलेगंगाजलंयोग्यंयमुनाजलमेवच ॥ जातीफलंचकंकोलमंतेआचमनेनृप ॥ २१ ॥ तांबूलेचोपणंत्वेलादक्षिणा यांतुहाटकम् ॥ प्रदक्षिणायांभ्रमणंघृतंनीराजनेगवाम् ॥ २२ ॥ प्रार्थनायांहरेर्भक्तिःप्रेमलक्षणसंयुता ॥ नमस्कारेमहाराजसाष्टांगनतविग्रहः ॥ २३ ॥ द्वादशाक्षरमंत्रेणशिखांबद्ध्वाशुचिःपुमान् ॥ उपचारान्पुरस्कृत्यश्रीसुखेसंमुखोभवेत् ॥ २४ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविज्ञानखंडेव्या सोग्रसेनसंवादेमहापूजाविधिवर्णनंनामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ श्रीव्यासउवाच ॥ ॥ उपचारस्यमंत्राणिवेदोक्तानिशुभानिच ॥ तुभ्यंवक्ष्या मिराजेंद्रशृणुष्वैकाग्रमानसः ॥ १ ॥ अथावाहनम् ॥ गोलोकधामाधिपतेरमापतेगोविंददामोदरदीनवत्सल ॥ राधापतेमाधवसात्त्वतांप तेसिंहासनेस्मिन्ममसंमुखोभव ॥ २ ॥ अथासनम् ॥ श्रीपद्मरागस्फुरदूर्ध्वपृष्ठंमहार्हवैडूर्यखचित्पदाब्जम् ॥ वैकुंठवैकुंठपतेगृहाणपीतंत डिद्धाटककुंभखंडम् ॥ ३ ॥

में भ्रमण, आरतीमें गौको घृत ॥ २२ ॥ प्रार्थनामें प्रेमलक्षणा हरिकी भक्ति, नमस्कारमें आठ अंगनते नविवो ॥ २३ ॥ द्वादशाक्षर मंत्रते शिखा बांधे पवित्र रहे सामग्री सब अगारी धरिके श्रीपतिके सन्मुख बैठे ॥ २४ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विज्ञानखण्डे भाषाटीकायां पूजाविधिवर्णनं नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ व्यासजी कहे हैं अब जे षोडशोपचार नके मन्त्र वेदोक्त हैं उन्हें तेरे आगे कहूहूं हे राजेन्द्र ! एकाग्रचित्त करिके सुनो ॥ १ ॥ आवाहनम् । हे गोलोकधामके पति ! हे लक्ष्मीके पति ! हे गोविंद ! हे दामोदर ! हे दीन वत्सल ! हे राधापते ! हे माधव ! हे सात्त्वतांपते ! या सिंहासनपै विराजमान मेरे सन्मुख होउ इति ॥ २ ॥ अथ आसनम् । पुखराजकी जाकी ऊपरकी पीठ श्रीपद्मराग स्फुरत

ऊर्ध्वपृष्ठ बहुमूल्य वैदूर्यमणिको जड्यौ कमल जामें बीजुरीसी पीरे सुवर्णके कलश जामें ता सिंहासनकूं हे वैकुण्ठपते ! ग्रहण करौ ॥ ३ ॥ अथ पाद्यम्—निर्मल सुवर्णके पात्रमें स्थित बिंदुसरोवरते लायौ भयो हे लोकेश ! देवेश ! जगन्निवास ! या पाद्यकूं ग्रहण करौ मैं तुम्हारे चरणकमलकूं नमस्कार करूंहूं ॥ ४ ॥ अथ स्नानमन्त्रः—केशर, चन्दन, मिल्यो चमेली, केसरके जलते हे यदुदेव ! गोविंद ! गोपाल ! हे तीर्थपाद ! तुम स्नान करौ ॥ ५ ॥ अथ मधुपर्कमन्त्रः—मध्याह्नमें सूर्य चन्द्रते भयो मल दूरिकर्ता मिश्रीके मिलेते परममनोहर दर्शनयोग्य पीतांबर जाको हे भक्तनके पति ! हे विष्णो ! या मधुपर्ककूं ग्रहण करो ॥ ६ ॥ हे विभो ! सब ओरते प्रकर्ष करिके देदीप्यमान छूटैहैं किरन जामें अत्यंत उज्ज्वल परम दुर्लभ आपहीने रच्यौ कमलके केशराकोसो वर्ण जाको ता पीतांबरकूं ग्रहण करो ॥ ७ ॥

॥ अथपाद्यम् ॥ परंस्थितंनिर्मलरोक्मपात्रेसमाहृतंबिंदुसरोवराद्धि ॥ योगेशदेवेशजगन्निवासगृहाणपाद्यंप्रणमामिपादौ ॥ ४ ॥ अथ स्नानम् ॥ काश्मीरपाटीरविमिश्रितेनसुमल्लिकोशीरसुताजलेन ॥ स्नानंकुरुत्वंयदुनाथदेवगोविंदगोपालकतीर्थपाद ॥ ५ ॥ अथमधुपर्कस्नानम् ॥ मध्याह्नचंद्रार्कभवंमलापहंसितांगसंपर्कमनोहरंपरम् ॥ गृहाणविष्णोमधुपर्कमेनंसंदर्श्यपीतांबरसात्त्वतांपते ॥ ६ ॥ अथ वस्त्रम् ॥ विभोसर्वतःप्रस्फुरत्प्रोज्ज्वलंचस्फुरद्रश्मिशून्यंपरंदुर्लभंच ॥ स्वतोनिर्मितंपद्मकिंजल्कवर्णंगृहाणांबरंदेवपीतांबराख्यम् ॥ ७ ॥ अथयज्ञोपवीतम् ॥ सुवर्णाभमापीतवर्णंसुमन्त्रैःपरंप्रोक्षितंवेदविन्निर्मितंच ॥ शुभंपंचकार्येषुनैमित्तिकेषुप्रभोयज्ञयज्ञोपवीतंगृहाण ॥ ८ ॥ अथभूषणम् ॥ कनकरत्नमयंमयनिर्मितंमदनरुक्कदनंसदनंरुचाम् ॥ उषसिपूषसुवर्णविभूषणंसकललोकविभूषणगृह्यताम् ॥ ९ ॥ अथगंधम् ॥ सन्ध्येंदुशोभंबहुमंगलंश्रीकाश्मीरपाटीरकपंकयुक्तम् ॥ स्वमण्डनंगन्धचयंगृहाणसमस्तभूमण्डलभारहारिन् ॥ १० ॥ अथक्षतान् ॥ ब्रह्मावर्तेब्राह्मणार्पूर्वसुतान्ब्राह्मैस्तोयैःसिंचितान्विष्णुनांच ॥ रुद्रेणाराद्रक्षितान्राक्षसेभ्यःसाक्षाद्भूमन्नक्षतांस्त्वंगृहाण ॥ ११ ॥ ॥ अथपुष्पाणि ॥ ॥ मन्दारकंजातकपारिजातकल्पद्रुमश्रीहरिचन्दनानाम् ॥ गृहाणपुष्पाणिहरेतुलस्यामिश्राणिसाक्षान्नवमंजरीभिः ॥ १२ ॥ अथधूपम् ॥ लवंगपाटीरजचूर्णमिश्रंमनुष्यदेवासुरसौख्यदंच ॥ सद्यःसुगन्धीकृतहर्म्यदेशंद्वारावतीभूपगृहाणधूपम् ॥ १३ ॥

फिर यज्ञोपवीत । सुवर्णकोसी आभा जाकी पीतवर्ण वेदमंत्रनते छिरको और बनायो नैमित्तिक पञ्चकार्यमें शुभ हे प्रभो ! हे यज्ञ ! यज्ञोपवीतकूं ग्रहण करो ॥ ८ ॥ फिर भूषण । सुवर्ण, रत्ननसों मयको रच्यो मदनकी कांतिको नाश और रुचको घर प्रातःकालीन सूर्यकोसो तेज जाको हे सकललोकविभूषण ! ऐसे भूषणकूं ग्रहण करो ॥ ९ ॥ अथ गंध । संध्याके चंद्रमाकीसी शोभा जाकी बहुमंगलरूप केशर, चंदन, कपूरसों युक्त अपनो मंडल ऐसो जो गंधको चय है ताहि हे समस्तभूमंडलभारके खंडन करनवारे ! ग्रहण करो ॥ १० ॥ फिर अक्षत । ब्रह्मावर्तमें पूर्व ब्राह्मणनने बोये वेदमंत्रते विष्णुने सींचे रुद्रने राक्षसनते राखे, हे भूमन् ! तुम साक्षात् अक्षतनकूं ग्रहण करो ॥ ११ ॥ अथ पुष्प । मंदार, जातक, पारिजात, कल्पवृक्ष, हरिचंदन इनके पुष्प और तुलसीकी नई मंजरी जिनमें मिली ऐसे पुष्पनकूं ग्रहण करो ॥ १२ ॥ अथ धूप । लोंग चंदनचूरो

मिल्यो जामें मनुष्य देवता असुर सबकूँ सुखकारी सबही मंदिरकूं सुगंधित करनहारी धूपकूं हे द्वारिकेश ! आप ग्रहण करो ॥ १३ ॥ अथ दीप । अंधकारकूँ हरन हारी ज्ञानकी
मूर्ति मनोहर शोभित बत्ती कपूर गौको घृत जामें जाकी देदीप्यमान ज्योति ताकूँ दीपककूं हे विश्वदीपक ! हे जगन्नाथ ! ग्रहण करो ॥ १४ ॥ अथ नैवेद्य । छः रसन करिके
युक्त और रसनते रसीलो यशोदाजीनें बनायो गौके अमृत करिके युक्त और रुचिकारी नैवेद्य है ताहि हे नंदनंदन ! तुम ग्रहण करो॥ १५॥ अथ जल । हे राधाके वर हे भक्तवत्सल !
यह गंगोतरीको जल बड़ी कठिनतासो लायोगयो अमृतसौ मीठो सुवर्णपात्रमें हिमसो शीतल ताहि हे भक्तवत्सल ! आप ग्रहण करो ॥ १६ ॥ अथ आचमन । हे राधापते ! हे
विरजापते ! हे प्रभो ! हे लक्ष्मीपते ! हे पृथ्वीपति ! हे सर्वपते ! हे भूपते ! कंकोल, जायफल, मिरच इनते सुगंधित हे दयानिधे ! ऐसे आचमनकूं ग्रहण करो ॥ १७ ॥

अथदीपम् ॥ तमोहारिणंज्ञानमूर्तिमनोज्ञंलसद्वर्तिकर्पूरपूरंगवाज्यम् ॥ जगन्नाथदेवप्रभोविश्वदीपस्फुरज्ज्योतिषंदीपमुख्यंगृहाण ॥ १४ ॥ अथ
नैवेद्यम् ॥ रसैःषड्भिर्भेदविधिव्यवस्थितंरसैरसाढ्यंचयशोमतीकृतम् ॥ गृहाणनैवेद्यमिदंसुरोचकंगव्यामृतंसुन्दरनन्दनन्दन ॥ १५॥ अथजलम् ॥
गङ्गोत्तरीवेगबलात्समुद्धृतंसुवर्णपात्रेणहिमांशुशीतलम्॥सुनिर्मलाभोह्यमृतोपमंजलंगृहाणराधावरभक्तवत्सल॥ १६॥ अथाचमनम् ॥ राधापते
श्रीविरजापतेप्रभोश्रियःपतेसर्वपतेचभूपते ॥ कंकोलजातीफलपुष्पवासितंपरंगृहाणाचमनन्दयानिधे ॥ १७॥ अथतांबूलम्॥जातीफलैलासुलवं
गनागवल्लीदलैःपूगफलैश्चसंयुतम् ॥ मुक्तासुधाखादिरसारयुक्तंगृहाणतांबूलमिदंरमेश ॥ १८॥ अथदक्षिणा ॥ नाकपालवसुपालमौलिभिर्वंदितां
घ्रियुगलप्रभोहरे ॥ दक्षिणांपरिगृहाणमाधवलोकदक्षवरदक्षिणापते ॥ १९ ॥ अथनीराजनम् ॥ प्रस्फुरत्परमदीप्तिमंगलंगोघृताक्तनवपंचवर्ति
कम् ॥ आर्तिकंपरिगृहाणचार्तिहन्पुण्यकीर्तिविशदीकृतावने ॥ २० ॥ अथनमस्कारः ॥ नमोस्त्वनंतायसहस्रमूर्तयेसहस्रपादाक्षिशिरोरुबा
हवे ॥ सहस्रनाम्नेपुरुषायशाश्वतेसहस्रकोटीयुगधारिणेनमः ॥ २१ ॥ अथप्रदक्षिणा ॥ समस्ततीर्थयज्ञदानपूर्तकादिजंफलम् ॥ लभे
त्परस्यशाश्वतंकरोतियःप्रदक्षिणाम् ॥ २२ ॥ अथप्रार्थना ॥ हरेमत्समःपातकीनास्तिभूमौतथात्वत्समोनास्तिपापापहारी ॥ इतित्वंचम
त्वाजगन्नाथदेवंयथेच्छाभवेत्तेतथामांकुरुत्वम् ॥ २३ ॥

अथ तांबूल । जायफल, इलायची, लौंग, और सुपारीको चूरो जामें धरो मुक्तासुधा खैरसारयुक्त वा तांबूलकूं ग्रहण करो ॥ १८ ॥ अथ दक्षिणा । नाकपाल,
वसुपालनके मुकुटन करके दंडौत कीनेंहैं चरणकमल जिनको हे लोकदक्षवर ! हे दक्षिणापते ! हे प्रभो ! हे माधव ! यह दक्षिणा ग्रहण करो ॥ १९ ॥ अथ आरती । प्रस्फुरत है
परम दीप्ति जाकी और मंगलरूप गौके घृतमें सनी ऐसी पांच सात नौ बाती जामें हे आर्तिहर ! हे विशदकीर्ते ! ता आरतीकूँ ग्रहण करो ॥ २० ॥ अथ नमस्कार । अनंत हौ हजार
हैं मूर्ति जिनकी हजारन हैं पांव, नेत्र, शिर, ऊरू, भुजा और नाम जिनके पुरुष हो शाश्वत हो हजारन किरोड़न युगनके धारण करनहारे तिनके अर्थ नमस्कार है ॥ २१ ॥ अथ
प्रदक्षिणा । जो आपुकी प्रदक्षिणा करे ताकूं सब तीर्थनको यज्ञ, दान, कूआ, बावरी, तलाव, प्याऊ, सदावर्त ता सबको फल प्राप्त होयहै ॥ २२ ॥ अथ प्रार्थना । हे हरे ! मेरे

समान तो या पृथ्वीमें कोई पापी नहीं है तुमारे समान कोई पापहारी नहीं है ऐसे तू मानिके हे देव ! हे जगन्नाथ ! जो इच्छा होय तैसी मोइ करिये ॥ २३ ॥ अथ स्तुति। ज्ञानमात्र सत् असत्तें परें महत्, निरंतर, प्रशांत, विभव, सम, परम, दुर्गम दूरि भयो है छल जातें ता परब्रह्मकूं मैं नमस्कार करूं हूं ॥ २४ ॥ एवं इन मंत्रनतें देवेशको हे महामते ! पूजन करै ऐसे फिर देवेशको इन मंत्रनतें सर्वांगतें पूजनकर विष्णुकूं नमस्कार करे ॥ २५ ॥ ॐ नारायणायनमः। पुरुष हो महात्मा हो विशुद्ध सत्त्वगुणके स्थान हो महाहंस हो तिनको ध्यान करूंहूं ॥ २६ ॥ या मंत्रतें प्राणायाम करै फिर इन मंत्रनतें एक एक अंगकी पूजा करे चरण १ टकुना २ पींडुरी ३ जाँघ ४ कमर ५ उदर ६ पीठि ७ भुजा ८ नाड़ ९ कान १० नासिका ११ होठ १२ नेत्र १३ शिर १४ विष्णवेनमःचरणौ पूजयामि १ मधुसूदनायनमः गुल्फौ पूजयामि २ वामनाय नमः जंघे पूजयामि ३ त्रिविक्रमाय नमः ऊरू पूजयामि ४ श्रीधराय नमः कटिं पूजयामि ५ हृषीकेशायनमःउदरं पूजयामि ६ पद्मनाभाय नमः पृष्ठं पूजयामि ७ दामोदराय नमः भुजौ पूजयामि ८ संकर्षणायनमः कंधरां पूजयामि ९

॥ अथस्तुतिः ॥ संज्ञानमात्रंसदसत्परंमहच्छश्वत्प्रशांतंविभवंसमंमहत् ॥ त्वांब्रह्मवंदेहिसुदुर्गमंपरंसदास्वधाम्नापरिभूतकैतवम् ॥ २४ ॥ एवंसंपूज्यदेवेशमेभिर्मंत्रैर्महामते ॥ प्रणम्यविष्णुंसर्वांगपूजांकुर्यात्प्रयत्नतः ॥ २५ ॥ ॐ नमोनारायणायपुरुषायमहात्मने ॥ विशुद्धसत्त्वधीस्थायमहाहंसायधीमहि ॥ २६ ॥ इतिमंत्रेणप्राणायामंकृत्वा ॥ ॐ विष्णवेमधुसूदनायवामनायत्रिविक्रमायश्रीधरायहृषीकेशायपद्मनाभायदामोदरायसंकर्षणायवासुदेवायप्रद्युम्नायअनिरुद्धायअधोक्षजायपुरुषोत्तमायश्रीकृष्णायनमः ॥ इतिपादगुल्फजान्वूरुकट्युदरपृष्ठभुजाकंधरकर्णनासिकाधरनेत्रशिरस्सुपृथक्पृथक्पूजयामीतिसर्वांगपूजांकुर्यात् ॥ तथासखीसखशंखचक्रगदापद्मासिधनुर्बाणहलमुसलादीन्तथाकौस्तुभवनमालाश्रीवत्सपीतांबरनीलांबरवंशीवेत्रादीन्तथातालांकगरुडांकरथदारुकसुमतिसारथिगरुडकुमुदकुमुदाक्षनंदसुनंदचंडप्रचंडबलमहाबलादीन् ॥ प्रणवपूर्वेणचतुर्थ्यंतेननमःसंयुक्तेननाम्नातथाविष्वक्सेनशिवाविधिदुर्गाविनायकदिक्पालवरुणनवग्रहमातृकादीन्मंत्रैःपूजयेत् ॥ ॐनमोवासुदेवायनमःसंकर्षणायच ॥ प्रद्युम्नायानिरुद्धायसात्वतांपतयेनमः ॥ २७ ॥ इतिमंत्रेणशतमाहुतीर्जुहुयात ॥ देवंप्रदक्षिणीकृत्यमहाभोगंनिधायच ॥ प्रणमेद्दंडवद्भूमौमंत्रमेतमुदीरयेत् ॥ २८ ॥

वासुदेवाय नमः कर्णौ पूजयामि १० प्रद्युम्नाय नमः नासिकां पूजयामि ११ अनिरुद्धाय नमः अधरोष्ठौ पूजयामि १२ अधोक्षजाय नमः कृष्णनेत्रौ पूजयामि १३ पुरुषोत्तमाय नमः कृष्णशिरः पूजयामि १४ श्रीकृष्णाय नमः सर्वांगानि पूजयामि १५ तैसेही सखी, सखा, शंख, चक्र, गदा, पद्म, खड्ग, धनुष, बाण, हल, मूसल, तर्कस, कौस्तुभ, वनमाला, श्रीवत्स, पीतांबर, नीलांबर, तालांक, गरुडांक, रथ, दारुक, सुमति, सारथी, गरुड, कुमुद, कुमुदेक्षण, नन्द, सुनन्द, चण्ड, प्रचण्ड, बल, महाबल, ॐ सखीभ्यो नमः ॐ सखाभ्यो नमः ॐ शंखाय नमः या रीतितें सबकों पूजे जय, विजय, विष्वक्सेन, शिव, विधि, दुर्गा, विनायक, दिक्पाल, नवग्रह, मातृका आदिकनकूं पूजे ॐ नमो वासुदेवाय नमः संकर्षणाय च। प्रद्युम्नायानिरुद्धाय सात्वतांपतये नमः ॥ २७ ॥ या मन्त्रतें एकसें आठ १०८ आहुति देय फिर परिक्रमा करि महाभोग लगावे ॥ २८ ॥

"ध्येयं सदा" या मंत्रते नमस्कार करै अष्टांगते ॥ २९ ॥ फिर भक्त जननके संग आरती करे ॥ ३० ॥ घड़ी घंटा वीणा बांसुरी अलगोजा करताल मृदंग इत्यादि बाजे बजाय कीर्तन करे ॥ ३१ ॥ श्रीहरिके अगारी भक्तजन प्रेममें विकल ह्वैके नृत्य करे कथा सुनें गान करें जय २ शब्द करें ॥ ३२ ॥ फिर प्रभूकूं नमस्कार करिके उज्ज्वल मंदिरमें महात्मा श्रीकृष्णकूं शयन करावै ॥ ३३ ॥ ऐसे मन लगाय श्रीकृष्णकी सेवा करे तो वाकूं स्वर्गके देवताऊ आयके नमस्कार करैहें ॥ ३४ ॥ सो हू हे राजेंद्र ! हरिका जन अंतसमें स्वर्गमें जाकर सब योगीनकूं दुर्गम जो गोलोक ताकूं प्राप्त होयहै ॥ ३५ ॥ या प्रकार कृष्णसेवाकी विधि मैंने तेरे आगे वर्णन करी चारि पदार्थकी देनहारी है अब तू फिर कहा सुनिबेकी

ध्येयंसदापरिभवघ्नमभीष्टदोहंतीर्थास्पदंशिवविरिंचिनुतंशरण्यम् ॥ भृत्यार्तिहन्प्रणतपालभवाब्धिपोतंवंदेमहापुरुषतेचरणारविंदम्॥२९॥ इति नत्वाहरिंराजन्पुनर्नीराजनंहरेः ॥ कारयेद्विधिवद्भक्तोहरिभक्तजनैःसह ॥३०॥ घटीवाद्यरणद्घंटाकांस्यवीणादिकीचकैः॥ करतालमृदंगाद्यैःकीर्तनंकारयेद्बुधः ॥ ३१ ॥ नृत्यंतिश्रीहरेरग्रेभक्ताःप्रेमविह्वलाः ॥ जयध्वनिसमायुक्ताःसत्कथागानतत्पराः ॥ ३२ ॥ पुनःप्रभुंनमस्कृत्यमंदिरेतपनोज्ज्वले ॥ शयनंकारयेत्सम्यक्छ्रीकृष्णस्यमहात्मनः ॥ ३३ ॥ एवंकरोतिश्रीकृष्णसेवांयोलग्नमानसः ॥ प्रणमंतिचतंराजन्देवताःस्वर्गसंभवाः ॥ ३४ ॥ सोपिराजेंद्रनाकेपिपदंधृत्वाहरेर्जनः ॥ अंतेयातिपरंधामगोलोकंयोगिदुर्लभम् ॥ ३५ ॥ इतिश्रीकृष्णसेवायाविधानंवर्णितंमया ॥ चतुःपदार्थदंनॄणांकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ३६ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविज्ञानखंडेव्यासोग्रसेनसंवादेकृष्णसेवाविधानवर्णनंनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥ उग्रसेनउवाच ॥ ॥ सिद्धोस्म्यनुगृहीतोस्मित्वयाश्रीकृष्णरूपिणा ॥ श्रीकृष्णपद्धतिःसाक्षाच्छ्रुतानैविधिवन्मया ॥ १ ॥ अहोलोकामहामूढालोभमोहमदान्विताः ॥ नाप्नुवंतिहिवैराग्यंभजंतिनहरिंकचित् ॥ २ ॥ भगवन्नस्यजगतोमोहकारणमद्भुतम् ॥ कथंजातंवदविभोकथमेतन्निवर्तते ॥ ३ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ ॥ यथांभसिप्रशान्तमदोविधोश्चखंतत्प्रेक्षतेकेवलमेववेगतः ॥ तथाहिविंबःपरमस्यमाययाममेत्यहंभावगतेप्रवर्तते ॥ ४ ॥

इच्छा करैहै ॥ ३६ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विज्ञानखंडे भाषाटीकायां व्यासोग्रसेनसंवादे कृष्णसेवाविधानवर्णनं नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ अब उग्रसेन व्यासजीते कहैहैं कि, हे प्रभू ! कृष्णरूप जे तुम हो तिनने मेरे ऊपर बडो अनुग्रह करचो जो श्रीकृष्णपद्धति मैंने तुमारे मुखते विधिपूर्वक सुनी तासों मैं कृतार्थ ह्वैगयो मेरो जन्म सफल ह्वैगयो ॥ १ ॥ अहो आश्चर्य है कि महामूढ लोक हैं लोभ, मोह, मदके भरे हैं जे न तो वैराग्यकूं प्राप्त होयहैं और न हरिकूं भजैहैं ॥ २ ॥ हे भगवन् ! या जगत्कूं मोहको कारण बडो अद्भुत है सो कैसे भयोहै और याकी निवृत्ति कैसे होयहै ॥ ३ ॥ व्यासजी कहैहैं जैसे जलमें चंद्रमाको बिंब परैहै सो हालतोसो दीखैहै तैसेई परमेश्वरको प्रतिबिंब अहंता ममतासे संसारमें

प्रवृत्त होयहे ॥ ४ ॥ माया, काल, अंतःकरण और देहके जे गुण हे जाडो, गरमी, भूख, प्यास, जरा, मरण तिनते कुकर्म करतो भयो जो जन है ते बँधि जायहे काचमें जैसे बालक बालूमें जैसे जल और रस्सीमें जैसे सर्पको इंद्रीनते विस्तार है ॥ ५ ॥ हे राजन् ! रजोमय तमोमय कभी सत्त्वमयभी यह जगत् मोहमय है मनको खेल है और अनेक विकारमय है चंचल है अलातचक्रकी नाई भ्रमेहे ॥ ६ ॥ यह करूंगो यह करूहूं यह करिलीनेहे यह मेरो है मैं ऐसोहूं मैं जानूहूं मैं सुखीहूं मैं दुःखीहूं मैं पंडितहूं ऐसे यह लोक अहंकारमें मोह्योहे ॥ ७ ॥ उग्रसेन बोल्यो हे ब्रह्मन् ! परमात्माको लक्षण मेरे आगे कहो जपके मार्गमें भगवान् कृष्णकूं कितने प्रकारको वर्णन करेहे ॥ ८ ॥ व्यासजी कहेहे सनातन भगवान्की न मृत्यु है न जन्म है न शोक है न मोह है न जरा है न मृत्यु है न तरुणादिक अवस्था है न अहंकार है, न मद है, न रोग है, न भय है, न सुख है, न दुःख है,

प्रधानकालाशयदेहजैर्गुणैःकुर्वन्विकर्माणिजनोविवद्ध्यते ॥ काचेर्भकंसैकतएनजीवनंगुणेचसर्पंप्रतनोतिसोक्षिभिः ॥ ५ ॥ राजन्जगन्मोहमयंरजोमयंतमोमयंसत्त्वमयंतथाक्वचित् ॥ मनोविलासंविकृतंचविभ्रमंविद्ध्याधिदंलोलमलातचक्रवत् ॥ ६ ॥ इदंकरिष्यामिकरोम्यभूवंममेदमस्तीतिचवेदमाब्रुवन् ॥ अहंसुखीदुःखयुतःसुहृज्जनोलोकस्त्वहंकारविमोहितोमतः ॥ ७ ॥ ॥ उग्रसेनउवाच ॥ ॥ वदमेकृपयाब्रह्मंल्लक्षणंपरमात्मनः ॥ कतिधाकवयःकृष्णंवदंतिजपवर्त्मनि ॥ ८ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ ॥ सनातनस्याऽनमृत्युजन्मनीनशोकमोहौनजरायुनावयः ॥ अहंमदोव्याधियुतोभयंसुखंशुचःक्षुधेच्छानरतिर्नचाधयः ॥ ९ ॥ आत्मानिरीहोव्यतनुःससर्वगोनाहंकृतिःशुद्धबलोगुणाश्रयः ॥ स्वयंपरोनिष्फलआत्ममंगलोज्ञानात्मकोयोविदितोमुनीश्वरैः ॥ १० ॥ जागर्तियोस्मिन्छयनंगतेसतिनायंजनोवेदसवेदतंहितम् ॥ पश्यंतमाद्यंपुरुषंहियंजनोनपश्यतिस्वच्छमलंचतंभजे ॥ ११ ॥ यथानभोग्निःपवनोनसज्जतेघटेनकाष्ठेनरजोभिरावृतः ॥ तथापुमान्सर्वगुणैश्चनिर्मलोनगुणैर्यथास्यात्स्फटिकोमदोज्ज्वलः ॥ १२ ॥ व्यंग्येनवालक्षणयाचवाक्यथैरर्थैःपदस्फोटपरायणैःपरम् ॥ नज्ञायतेयद्गुणिनोत्तमेनसद्वाच्यंततोनब्रह्मकुतस्तुलौकिकैः ॥ १३ ॥ वदंतिकेचिद्भुविकर्मकर्तृयत्कालंचकेचित्परमेवशोभनम् ॥ केचिद्विचारंप्रवदंतियच्चतद्ब्रह्मेतिवेदांतविदोवदंतिहि ॥ १४ ॥

न भूख है, न प्यास है, न रति है, न व्याधि है, ऐसोहे ॥ ९ ॥ आत्मा निरीह है अदेह है सर्वत्र है अहंकारहीन है शुद्ध बलवारोहै गुणनको आश्रय है निष्फल है स्वयंसिद्ध है सबते परेहै स्वयं मंगल है ज्ञानात्मा है ऐसो मुनीश्वरने जान्योहे ॥ १० ॥ जगत सोवे है आत्मा जागे है यह जन वाकूं नहीं जाने है वह या जीवकूं जाने है यह सबकूं देखे वाकूं कोई नहीं देखे है और जो अतिस्वच्छ है वा परमेश्वरकूं मैं भजूं हूं ॥ ११ ॥ जैसे घटमें आकाश, काष्ठमें अग्नि, रजमें पवन नहीं लिप्त होयहे तैसे ही निर्मल जो आत्मा है वो गुणनमें नहीं बंधेहे जैसे रंगनते स्फटिकमणि लिप्त नही होयहे ॥ १२ ॥ व्यंग्यते लक्षणाते वाकूं वाणीनके मार्गनते अर्थनते पदस्फोटपरायण जे शब्द है तिनते वह पर जानिवेमें नहीं आवेहे और जो उत्तमज्ञानतेऊ जानवेमें नही आवेहे फिर कहीं यह ब्रह्मलोकके वाक्यनते काहेकूं जान्योजायगो ॥ १३ ॥ याहीकूं पृथ्वीके विषे कोई कर्म कहेहे कोई कर्ता कहे है

कोई काल कहै है कोई विचार कहेहैं कोई यतन जो है सो वही है कोई जे वेदांतवेत्ता है वे वाहीको ब्रह्म कहेहैं ॥ १४ ॥ जाकूं समयानुसार होनेवाले तीनों गुण नहीं स्पर्श करें हैं और माया जाकूं स्पर्श नहीं करिसकै है इंद्री, चित्त, मन, बुद्धि, महत्तत्त्व ये भी सब जाकूं नहीं जानसकैहैं और वेदभी जाको नहीं कहै हैं जैसे अग्निके विस्फुलिंगा अग्निमें प्रवेश होयहैं ऐसेही यह सब वाही ब्रह्ममें प्रवेश होयहैं वोही ब्रह्म है ॥ १५ ॥ हिरण्यगर्भ ब्रह्मा जाकूं परम आत्मतत्त्व वर्णन करैहैं संत जाकूं वासुदेव वर्णन करैहैं ता देववरके स्वरूपकूं विचारिके मोह छोडि असंग ह्वैके विचरै ॥ १६ ॥ जैसे एक चंद्रमा सौ वडानमें प्रतिबिंबरूपते सौ रूप दीखैहै और जैसे एक अग्नि सौ काठनमें सौरूप दीखैहै तैसेही आत्मा अपने रचे देहधारीमें बाहिर भीतर एक है पन अनेकसो दीखैहै ॥ १७ ॥ जैसे सूर्योदयसौं अंधकार नष्ट ह्वैजायहै मनुष्यनकूं घरकी वस्तु सब दीखन लगैहैं ऐसेही ज्ञानके उदयमें अज्ञानको तम नष्ट ह्वैजायहै और तनुमें ब्रह्म दीखन लगैहै ॥ १८ ॥ जैसे एक वस्तु है सो इन्द्रीनकी वृत्तिते अनेक प्रकारकी दीखैहै जैसे दही नेत्रनने तौ सुपेद

यंनस्पृशंतीहगुणानकालजामायेंद्रियंचित्तमनोनबुद्धयः ॥ महन्नवेदोवदतीतितत्परंविशंतिसर्वेनलविस्फुलिंगवत् ॥ १५ ॥ हिरण्यगर्भः
परमात्मतत्त्वंयद्वासुदेवंप्रवदंतिसंतः ॥ विचार्यतद्देववरस्वरूपंविसृज्यमोहंविचरेदसंगः ॥ १६ ॥ यथेंदुरेकोजलपात्रवृन्दगोयथाग्निरेको
विदितःसमिद्धये ॥ तथापरात्माभगवाननेकवदंतर्बहिःस्यात्स्वकृतेषुदेहिषु ॥ १७ ॥ सूर्योदयेनैशतमोविलीयतेप्रदृश्यतेवस्तुगृहेयथा
जनैः ॥ ज्ञानोदयेज्ञानतमःप्रलीयतेसंप्राप्यतेब्रह्मपरंतनौतथा ॥ १८ ॥ यथेंद्रियाणांचपृथक्प्रवृत्तिभिर्नानेयतेर्थोतिगुणाश्रयःपरः ॥ एकंह्यन
न्तस्यपरस्यधामतत्तथामुनीनांकिलशास्त्रधर्मिभिः ॥ १९ ॥ साक्षाद्धरिर्यःपुरुषोत्तमोत्तमःश्रीकृष्णचन्द्रोनिजभक्तवत्सलः ॥ कैवल्यना
थोनृगमुक्तिहारतंपूर्णस्वयंब्रह्मपरंनमाम्यहम् ॥ २० ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वातमनुज्ञाप्यभगवान्बादरायणः ॥ पश्यतांयादवा
नांचतत्रैवांतरधीयत ॥ २१ ॥ इदंमयातेकथितंहरिभक्तिविवर्द्धनम् ॥ विज्ञानखण्डंविशदंश्रोतृणांमोक्षदंस्मृतम् ॥ २२ ॥ गर्गाचार्येणक
थितानाम्नेयंगर्गसंहिता ॥ सर्वदोषहरापुण्याचतुर्वर्गफलप्रदा ॥ २३ ॥ गोलोकवृंदावनयोर्गिरीश्वरमाधुर्ययोःश्रीमथुरापुरस्यच ॥ द्वारावती
विश्वजितोर्हलायुधविज्ञानयोःखण्डचयाःपृथक्त्व ॥ २४ ॥

कह्योहै हाथनें ताती सीरी कह्यो जीभने खट्टो मीठो कह्यो नाकने सुगंधि दुर्गंधि कह्यो तैसेही परमअनंतको तेजःस्वरूप मुनीननें शास्त्रनके मार्ग करिके अनेक प्रकारको कह्योहै ॥ १९ ॥ साक्षात् हरि जो पुरुषोत्तमोत्तम है निजभक्तवत्सल कैवल्यनाथ स्वयं ब्रह्म सो श्रीकृष्णचन्द्र है ताकूं हम नमस्कार करैहैं जानें नृग राजाकी मुक्ति करी है ॥ २० ॥ नारदजी कहैहैं ऐसे व्यास भगवान् उग्रसेनकूं उपदेश करिकें आज्ञा मांगि सब यादवनके देखत २ अन्तर्धान ह्वैगये ॥ २१ ॥ यह मैंने हरिभक्तिकौ बढावनहारो विज्ञानखंड वर्णन करयो ये बड़ो विशद है श्रोतानके पापको नाश करके मोक्ष देन हारोहै ॥ २२ ॥ गर्गाचार्यने यह कही है यासो याको नाम गर्गसंहिता है ये सब दोषनकी हरनहारी चतुर्वर्ग फलकी देनहारी है ॥ २३ ॥ गोलोकखण्ड १ वृंदावनखण्ड २ गोवर्द्धनखण्ड ३ माधुर्यखण्ड ४ मथुराखण्ड ५ द्वारकाखण्ड ६

विश्वजित्खण्ड ७ वलभद्रखण्ड ८ विज्ञानखण्ड ९ ये न्यारे न्यारे नौ खण्ड वर्णन करेहैं ॥ २४ ॥ श्रीकृष्णकी मूर्ति जैसे नौरसनते शोभित है जैसे भरतादिक नौ खण्डनते भूमि शोभित है तैसेई हे नृपेश्वर ! नौ खंडनते गर्गसंहिता शोभित है ॥ २५ ॥ जैसे देवताकी अंगूठी नौ रत्नन करिके शोभाकूँ प्राप्त होयहै तैसेई चारि वर्गकी देनवारी जे विधि हैं तिनमे सर्गविसर्गनते गर्गसंहिता शोभितहै ॥ २६ ॥ हे नरेंद्र ! जे मनुष्य या गर्गसंहिताकूं सुनैहै वे पवित्र हैं भक्तजन हैं वे याहू लोकमे सुख पामेंगे और अंतमें गोलोक धामकूँ प्राप्त होयगे ॥ २७ ॥ जो वंध्या स्त्री पीतांबर पहरके चंदन लगायके याकूँ अत्यंत लालसाते सुने तौ थोरेई कालमे घरके आंगनमें बालकनकूं खिलावत डोलेगी ॥ २८ ॥ रोगी पुरुष सुनैतें रोग गणते छूटिजाय डरप्यौ नर डरते छूटिजाय बंध्यो सुनै तौ बंधनतें छूटिजाय निर्धनी सुनै तौ वैभव होय मूर्ख सुनै तौ शीघ्रही पंडित होयहै ॥ २९ ॥ जो

श्रीकृष्णमूर्तिःपरमैरसैर्यथायथाचभूमिर्भरतादिभिर्भृशम् ॥ तथाहिशश्वन्मुनिगर्गसंहिताविभातिखण्डैर्नवभिर्नृपेश्वर ॥ २५ ॥ यथाहिरत्नैर्नवभिर्विराजतेदेवांगुलौतत्सुवर्णमुद्रिका ॥ तथाचतुर्वर्गफलप्रदैर्विधौसर्गोर्विसर्गैर्मुनिगर्गसंहिता ॥ २६ ॥ नरेन्द्रशश्वन्मुनिसंहितांयेशृण्वंतिभक्त्याहिजनाःपुनीताः ॥ इहैवसौख्यंपरमाप्नुवन्तस्ततस्तुगोलोकपुरंप्रयांति ॥ २७ ॥ कृत्वाथपीतांबरबन्धनंत्विमांशृणोतिवंध्यावहुलालसाभृशम् ॥ ह्रस्वेनकालेनगृहांगणेशिशून्संचारयन्तीविचरत्यहर्निशम् ॥ २८ ॥ रोगीपुमान्रोगगणात्प्रमुच्यतेभीतोभयाद्बन्धगतश्चबन्धनात् ॥ श्रुत्वाकथांनिर्धनएतिवैभवंमूर्खोभवेत्पंडितएवसत्वरम् ॥ २९ ॥ यःकार्तिकेमासिनृपःश्रियायुतःशृणोतिशश्वन्मुनिगर्गसंहिताम् ॥ सचक्रवर्तीभवितानसंशयोनगेन्द्रहस्तोद्धृतचारुपादुकः ॥ ३० ॥ मनोजवैःसिंधुतुरंगमैर्नवैर्द्विपैश्चविंध्याचलसंभवैःपरैः ॥ वैतालिकोद्गीतयशामहीतलेनिषेवितोवारवधूजनैःसह ॥ ३१ ॥ सुवर्णशृंगंवरताम्रपृष्ठंसभूषणंरौप्यखुरंसवत्सम् ॥ ददातिखंडंप्रतिगोद्वयंयःप्राप्नोतिसर्वंहिमनोरथंसः ॥ ३२ ॥ निष्कारणोसौशृणुतेविदेहराट्सर्वामिमांवैमुनिगर्गसंहिताम् ॥ हृत्पुण्डरीकेवसतेस्यसर्वदाश्रीकृष्णचन्द्रोनिजभक्तवत्सलः ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वातमनुज्ञाप्यनारदोदेवदर्शनः ॥ सर्वेषांपश्यतांव्रह्मन्नंवरंगतवान्मुनिः ॥ ३४ ॥ बहुलाश्वोमहाराजःश्रीकृष्णेलग्नमानसः ॥ सर्वतस्तुकृतार्थोभूच्छ्रुत्वेमांसंहितांहरेः ॥ ३५ ॥

कार्तिकके महीनामे राजलक्ष्मी युक्त राजा मुनिगर्गसंहिताको सुनै तौ वो चक्रवर्ती होय और राजा वाकी जोड़ी उठायो करे ॥ ३० ॥ मनकेसे वेगवारे सिंधुदेशके नये घोड़ा और विंध्याचलके हाथी ऐसो वैभव जाके होय वैताल आको जस गामे वेश्या जाके नृत्य करें ऐसो राजा होयहै ॥ ३१ ॥ जो एक एक खंडको सुनिके द्वै द्वै गोदान करे सोनेकी सींगरी रूपेकी खुरी तांबेकी पीठि वस्त्र ओढ़े वछरा सहित सो याके फलकूं पावे सब मनोरथ वाके पूर्ण होयँ ॥ ३२ ॥ और हे विदेहराज ! जो निष्काम या गर्गसंहिताकूं सुनै ताके हृदयमे भक्तवत्सल श्रीकृष्ण सदाई वास करैहैं ॥ ३३ ॥ गर्गजी शौनकादिक मुनीनते कहै हैं कि, देवदर्शन नारदजी राजा बहुलाश्वते ऐसे कहिके सबके देखते देखते आकाश मार्गमे हैके राजाते पूछिके चलेगए ॥ ३४ ॥ सब बहुलाश्व राजा श्रीकृष्णमें लग्योहै मन जाको वो या गर्गसंहिताकूँ सुनिके सब औरते कृतार्थ

ह्वैगयो ॥ ३५ ॥ हे ब्रह्मन् ! तुमारे प्रश्नते मैंने यह गर्गसंहिता कहीहै ताकूं जोई कहेगो कै सुनेगो ताकूं कोटियज्ञको फल होयगो ॥ ३६ ॥ शौनकऋषि गर्गजीते बोले हे मुने ! हे गर्ग ! तुमारे प्रसंगते मैं धन्य हूं मैं कृतार्थ ह्वैगयो मेरी श्रीकृष्णमें प्रेमवर्द्धिनी भक्ति ह्वैगई ॥ ३७ ॥ मुनीनके विशद हृदयसरके बीचमें जो राजहंस है सकल सुखसों विराजत जो नाद माधुर्य सोई जामें वंश है वंसी जाकी जगत्में विकलदंश है वो शूरवंशको कुंडल है संत जाकी प्रशंसा करें सो श्रीकृष्ण हमारी रक्षा करो ॥ ३८ ॥ ऐसे कहि सब मुनिनपैंतें आज्ञा मांगि प्रसन्नमनवारे गर्गाचार्यजी चलिवेकूं उद्यतभये ॥ ३९ ॥ नौ जे सर्ग तिनको विसर्ग जामें तिनसों युक्त स्वर्गदात्री चतुर्वर्गदात्री

तवप्रश्नोपरिब्रह्मन्कथितासंहितामया ॥ श्रुतावापाठिताकैश्चित्कोटियज्ञफलप्रदा ॥३६॥ ॥ श्रीशौनकउवाच ॥ ॥ धन्योहंचकृतार्थोहंत्वत्संगे नमहामुने ॥ प्राप्नोमिपरमांभक्तिंश्रीकृष्णप्रेमवर्द्धिनीम् ॥ ३७ ॥ विशदहृदिमुनीनांमानसेराजहंसःसकलसुखविराजन्नादमाधुर्यवंशः ॥ जगतिविकलदंशःशूरवंशावतंसःकरबलहतकंसःपातुवःसत्प्रशंसः॥३८॥ इत्युक्त्वातान्मुनीन्सर्वान्गर्गाचार्योमहामुनिः ॥ अनुज्ञाप्यप्रसन्नात्मागंतुमभ्युद्यतोभवत् ॥ ३९ ॥ नवसर्गविसर्गाढ्यांस्वर्गभूद्गर्गसंहिताम् ॥ चतुर्वर्गप्रदामुक्त्वागर्गोगर्गाचलंययौ ॥ ४० ॥ शरद्विकचपंकजश्रियमतीवविद्वेषकंमिलिंदमुनिलेढितंकुलिशकंजचिह्नावृतम् ॥ स्फुरत्कनकनूपुरंदलितभक्ततापत्रयंचलद्द्युतिपदद्वयंहृदिदधामिराधापतेः ॥ ४१ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांविज्ञानखण्डेश्रीनारदबहुलाश्वसंवादांतर्गतव्यासोग्रसेनसंवादेपरब्रह्मनिरूपणंनामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

संहिताको सुनायके गर्गजी गर्गाचल पर्वतकूं चलेगये ॥ ४० ॥ चलतीवेर यह बोले शरदऋतुके फूले कमलकी शोभाकूं फीकी करनहारे मुनिरूप भौंराते सेवनकीनो वज्र कमल, यव ध्वजा चिह्नते शोभित दूरकीनो है भक्तनको तापत्रय जाने बजते हैं सुवर्णके नूपुर जामें चंचल है चांदनी जाकी ऐसे राधापतिको जो चरणद्वंद्व ताहि मैं ध्यान करूंहूं ॥ ४१ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां विज्ञानखण्डे भाषाटीकायां नारदबहुलाश्वसंवादे परब्रह्मनिरूपणं नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

इदं पुस्तकं क्षेमराज-श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना मुम्बय्यां (खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लेन)
स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम) मुद्रणयन्त्रालये मुद्रयित्वा
प्रकाशितम्। संवत् १९६७, शके १८३२.

॥ इति गर्गसंहितायां विज्ञानखण्डं भाषाटीकासमेतं समाप्तम् ॥

॥ अथ गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डं भाषाटीकासहितं प्रारभ्यते ॥

(दशमखण्डम् १०)

॥ श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ॥ अथाश्वमेधखण्डः ॥ ॥ श्रीनारायणको तथा नरोत्तम नरावतार भगवान्‌को देवी सरस्वतीको और श्रीमुनि व्यासजीको नमस्कार करकें संसारके जन्म मरण रूप दुःखनके जीतनेवारे जयशास्त्रको (उदीरयेत्) निरूपण करे ॥ १ ॥ श्रीकृष्णचन्द्र भगवान्‌को नमस्कार करहुं संकर्षणजीको देव प्रद्युम्नको और अनिरुद्धजीको वारंवार नमस्कार है नमस्कार है नमस्कार है ॥ २ ॥ श्रीगर्गजी बोले कि, सभामें आये रोमहर्षण नाम ऋषिके पुत्र उग्रश्रवा नाम सूतजीको देख उन्हे प्रणाम अभिवादन करके शौनकजी प्रश्न करतेभये ॥ १ ॥ शौनकऋषि बोले कि, हे महामते ! आपके मुखते सब शास्त्र पुराण और निर्मल श्रीहरिके अनेक प्रकारके चरित्र मैंने श्रवण किये ॥ २ ॥ और पहले गर्गऋषिने मेरे आगे गर्गसंहिता कही जामें श्रीराधामाधवजीकी महिमा आपने बहुत कछु वर्णन करी ॥ ३ ॥ अब हे सूतनन्दनजी ! आपके मुखते सब दुःखनकी दूर करनवारी श्रीकृष्णकथाको फिर सुनो चाहुंहुं सो विचारकर कहो ॥ ४ ॥ तब गर्गजी बोले कि, जब अट्ठासी हजार मुनिनते रोमहर्षणके पुत्र (उग्रश्रवाजी) पूछेगये तब कृष्णके

श्रीगणपतयेनमः ॥ ॥ अथाश्वमेधखण्डःप्रारभ्यते ॥ नारायणंनमस्कृत्यनरंचैवनरोत्तमम् ॥ देवींसरस्वतींव्यासंततोजयमुदीरयेत् ॥ १ ॥ नमः श्रीकृष्णचन्द्रायनमःसंकर्षणायच ॥ नमःप्रद्युम्नदेवायानिरुद्धायनमोनमः ॥२॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ ॥ सभायामागतंवीक्ष्यरोमहर्षणनन्दनम् ॥ शौनकःपरिपप्रच्छप्रणिपत्याभिवाद्यच ॥ १ ॥ ॥ शौनकउवाच ॥ ॥ त्वन्मुखात्सर्वशास्त्राणिपुराणानिमहामते ॥ नानाहरिचरित्राणिश्रुतानि विमलानिमे ॥२॥ पुरागर्गेणकथितामममाग्रेगर्गसंहिता ॥ राधामाधवयोर्यस्यांमहिमाबहुवर्णितः ॥ ३ ॥ अथाहंश्रोतुमिच्छामित्वत्तःकृष्णकथां पुनः ॥ सर्वदुःखहरांसौतेकथयस्वविचार्यच ॥४॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ ॥ अष्टाशीतिसहस्रैश्चमुनिभीरोमहर्षणिः ॥ पृष्टःप्रोवाचकृष्णस्यस्मरन्पादांबुजंहरेः ॥५॥ ॥ सौतिरुवाच ॥ ॥ अहोशौनकधन्योसियस्यतेमतिरीदृशी ॥ कृष्णचंद्रपदद्वंद्वमकरंदस्पृहावती ॥६॥ संगमंवैष्णवानां चदेवाःश्रेष्ठंवदंतिहि ॥ पापक्षयकरीयस्माच्छ्रीकृष्णस्यकथाभवेत् ॥ ७ ॥ अनंतंकृष्णचंद्रस्यचरितंकल्मषापहम् ॥ किंचिज्जानातिब्रह्माचतथा किंचिदुमापतिः ॥ ८ ॥ मशकोमादृशःकोपिवासुदेवकथार्णवे ॥ मोहितानवदिष्यन्तियत्रब्रह्मादयःसुराः ॥९॥ श्रीगर्गोयादवेंद्रस्यह्युग्रसेनस्य भूपतेः ॥ अश्वमेधंक्रतुवरंदृष्ट्वाप्रत्याहचैकदा ॥ १० ॥ धन्योराजायादवेंद्रोयश्चकारक्रतूत्तमम् ॥ श्रीकृष्णस्याज्ञयापुर्यांतेनाहंविस्मयंगतः ॥११॥

चरणकमलको स्मरण करते उग्रश्रवाजी बोले ॥ ५ ॥ सूतनन्दनजी बोले कि, हे शौनकजी ! तुम बडे धन्य हौं जिन आपकी ऐसी बुद्धि है जो श्रीकृष्णचन्द्रके चरणकमलके मकरंदकी चाहना करनवारी है ॥ ६ ॥ देवतालोगभी श्रीकृष्णके भक्त वैष्णवनके संगको श्रेष्ठ बतामें है क्योंकि जिन वैष्णवनके समागममें पापनकी नाश करनवारी श्रीकृष्णकी कथा होयहै ॥ ७ ॥ पापनके नाशकरनवारे कृष्णचन्द्रके अनंत चरित्र हैं तिनमेते कछुक चरित्रनको ब्रह्माजी जाने हैं और तैसोही कछु चरित्रनको उमापति नाम शिवजी जानेंहैं ॥ ८ ॥ फिर कहो कि जिनमें ब्रह्मा आदिक देवताहू मोहित होयहैं उनको मो सरीको मच्छर वासुदेवके गुणरूप समुद्रनकी कैसे कोऊ कहिसके हैं ॥ ९ ॥ एकसमय श्रीगर्गजी यादवनके राजा उग्रसेनके अश्वमेध यज्ञको देखके कहतेभये ॥ १० ॥ कि भाई यादवेंद्रराजा बडे धन्य हैं जिनने अश्वमेध नाम यज्ञ मथुरापुरीमें कृष्णकी

आज्ञाते कियो में यासों बडो विस्मयको प्राप्त भयोहों ॥ ११ ॥ मैंने अपनी संहितामें कृष्णकी कथा कही है जे कथा परिपूर्णतमकी मैंने देखी सुनी है ॥ १२ ॥ परन्तु या संहितामें मैंने अश्वमेधयज्ञकी कथा नहीं कही है सो अब में उग्रसेनके अश्वमेधकी कथाको फिर कहौंगो ॥ १३ ॥ जा कथाके श्रवणमात्रसोंही भगवान् मनुष्यनको या कलिमें बहुत शीघ्रही भोग और मोक्ष देयहैं ॥ १४ ॥ सूतजी कहे है कि, या प्रकार गर्गनामके मुनि ऐसे कहिके हे शौनकजी ! श्रीकृष्णकी बडी भक्तिसों गर्गजीने उग्रसेनके यज्ञके वृत्तांतको बनायके निरूपण कियो ॥ १५ ॥ तब गर्गनाम मुनि भगवान् अश्वमेधयज्ञके वृत्तांतको जो बनावतभये सो मानो गर्गसंहिताको सुमेरु बनायके धरो तब मुनिने अपने आपेको कृतकृत्य मानो ॥ १६ ॥ ये अश्वमेधकी सब कथा मुनि गर्गजीनें यादवनके गुरुनने आठ दिनमें बनाई फिर बडे बुद्धिमाननमें श्रेष्ठ गर्गजी वज्रनाभके देखवेको श्रीभगवान्‌की मथुरापुरीको आये ॥ १७ ॥ तब ज्ञानीनमें मुख्य श्रीगर्गजीको आकाशमेते आतेको देखके वज्रनाभजीने ब्राह्मणनसहित उठके नमस्कार कियो ॥ १८ ॥

मयावैसंहितायांचकथाःकृष्णस्यवर्णिताः ॥ परिपूर्णतमस्यापियथादृष्टायथाश्रुताः ॥ १२ ॥ तस्यांवैवाजिमेधस्यकथानकथितामया ॥ अद्याहंकथयिष्यामिहयमेधकथांपुनः ॥ १३ ॥ यस्याःश्रवणमात्रेणनराणांहिकलौयुगे ॥ भुक्तिंमुक्तिंचभगवाञ्छीघ्रमेवप्रयच्छति ॥ १४ ॥ इत्युक्त्वाश्रीमुनिर्गर्गोकृष्णभक्त्याचशौनक ॥ उग्रसेनस्ययज्ञस्यचरित्रंसद्वचीकृपत् ॥ १५ ॥ हयमेधचरित्रस्यसुमेरुर्नामसुन्दरम् ॥ धृत्वागर्गस्तुभगवान्कृतकृत्योभवन्मुने ॥ १६ ॥ कृत्वाकथामष्टदिनेनश्रीमुनिर्यदोर्गुरुर्बुद्धिमतांवरःपरः॥ अथाययौवैमथुरांहरेःपुरींवज्रंनृपेंद्रंचनिरीक्षितुंखलु ॥ १७ ॥ अंबरादागतंतत्रगर्गंज्ञानवतांवरम् ॥ वीक्ष्योत्थायनमश्चक्रेवज्रनाभोद्विजैःसह ॥ १८ ॥ स्वर्णसिंहासनंदत्त्वावनिज्यतत्पदांबुजे ॥ अर्चयित्वापुष्पस्रग्भिर्मिष्टान्नंचनिवेदयत् ॥ १९ ॥ तत्पादसलिलंनीत्वाशीर्षेधृत्वाकृतांजलिः ॥ भूत्वाश्रीवज्रनाभस्तुश्यामःपंकजलोचनः ॥ २० ॥ पुष्टदेहोवृहद्बाहुर्वीरःषोडशवार्षिकः ॥ इतिहोवाचस्वगुरुंशतसिंहसमोद्भटः ॥ २१ ॥ ॥ वज्रनाभउवाच ॥ ॥ नमस्तुभ्यंस्वागतंतेब्रह्मन्किंकरवामते ॥ मन्येत्वांभगवद्रूपंब्रह्मर्षीणांवरंपरम् ॥ २२ ॥ गुरुर्विधिर्गुरुरुद्रोगुरुरेववृहस्पतिः ॥ गुरुर्नारायणःसाक्षात्तस्मैश्रीगुरवेनमः ॥ २३ ॥ नराणांचमुनिश्रेष्ठदर्शनंतवदुर्लभम् ॥ अस्माकंनितरांदेवविषयासक्तचेतसाम् ॥ २४ ॥ गर्गाचार्यकुलाचार्यतेजस्विन्योगभास्कर ॥ त्वद्दर्शनादपिवयंपाविताःसकुटुंबकाः ॥ २५ ॥

गर्गजीके पाँवनको धोयके बैठनेको सुवर्णको सिंहासन दियो पुष्पमालानसों पूजके मिष्टान्न निवेदन कियो ॥ १९ ॥ फिर इनके पाँवनधोवनके जलको शिरपे धरके श्यामसुन्दर श्रीवज्रनाभ कमलसे नेत्रवारे दोनो हाथ जोर माथेपे धरे ॥ २० ॥ पुष्ट जिनको देह आजानुलंबित भुजावारे षोडशवर्षके सौ १०० सिंहके बराबर बलवारे वज्रनाभ अपने गुरुजीसों ये बोले ॥ २१ ॥ वज्रनाभजी स्तुति करनलगे कि, आपके अर्थ नमस्कार है हे ब्रह्मन् ! भले पधारे में कहा करूँ में आपको ब्रह्मर्षीनमें श्रेष्ठ साक्षात् पर भगवानको रूप मानोंहो ॥ २२ ॥ जिन गुरुनको में ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु भगवान् और बृहस्पतिजीको साक्षाद्रूप मानोंहों तिन गुरुनको मेरो नमस्कार है ॥ २३ ॥ हे मुनिवर ! मनुष्यको आपको दर्शन होनो अतिदुर्लभ है और हे देव ! हमको तो आपको दर्शन अत्यन्त ही दुर्लभ है क्योंकि, हम विषयासक्तचित्त है ॥ २४ ॥ हे गर्गाचार्य ! हे कुलाचार्य ! हे तेज

स्विन् ! हे योगभास्कर ! आपके दर्शनसों हम कुटुंबसहित पवित्रभये ॥ २५ ॥ तब महात्मा मुनिवर्य यदुश्रेष्ठ वज्रनाभके कहे वाक्यको सुनके चरणारविंदनको स्मरणकरते
गर्गजी राजेंद्रवज्रनाभसों यह बोले ॥ २६ ॥ हे युवराज ! हे महाराज ! हे यदुवंशशिरोमणे ! आपने ये बहुत अच्छो कियो जो कि, भूमिके जन आपने पाले ॥ २७ ॥ और हे
वत्स, ! आपने भूतलमें धर्मस्थापन कियो विष्णुरातराजा (परीक्षित) तुमारे मित्र हैं और सब राजा तुमारे वशमें हैं ॥ २८ ॥ हे राजशार्दूल ! तुम धन्य हौ और तुमारी
मथुरापुरी धन्य है सब प्रजा तुमारी धन्य है और आपकी व्रजभूमि धन्य है॥२९॥कृष्णको भजन करते बलदेवजीको प्रद्युम्नको और अनिरुद्धको भजन करते निःशंक हैके हे नृप !
तुम राज्य करो ॥३०॥ सूतजी कहे हैं कि,नृपश्रेष्ठ वज्रनाभजी गर्गके कहे वचनको सुनकर संकर्षण श्रीकृष्ण पिताजी और पितामह ॥३१॥ इन सबको स्मरण कर विरहके निमित्तसों

श्रुत्वायदूनामृषभस्यवाक्यंमुनींद्रवर्यस्तुमहान्महात्मा ॥ स्मरन्हरेःश्रीचरणारविंदंमुदानृपेंद्रंनिजगादसद्यः ॥२६॥ युवराजमहाराजयदुवंशशि
रोमणे ॥ त्वयासाधुकृतंसर्वंपालितापृथिवीजनाः ॥२७ ॥ स्थापिताचत्वयावत्सधर्मेवैपृथिवीतले ॥ विष्णुरातश्चतेमित्रंनृपाश्चान्येवशाःस्मृताः
॥ २८ ॥ धन्यस्त्वंराजशार्दूलधन्यातेमथुरापुरी ॥ धन्याश्चतेप्रजाःसर्वाधन्यावैव्रजभूश्चते ॥ २९ ॥ भुंक्ष्वभोगान्भजन्कृष्णंबलंप्रद्युम्नमेवच ॥
अनिरुद्धंचनिःशंकोभूत्वाराज्यंकुरुनृप ॥ ३० ॥ ॥ सूतउवाच ॥ ॥ इतिवाक्यंसमाकर्ण्यगर्गस्यनृपसत्तमः ॥ संकर्षणंचश्रीकृष्णंपितरंच
पितामहम् ॥ ३१ ॥ विरहेणस्मरन्राजाचाश्रुपूर्णमुखोभवत् ॥ तंनृपंदुःखितंदृष्ट्वास्थितंभूमावधोमुखम् ॥३२॥ गर्गस्तुविस्मितःप्राहदुःखंप्रशम
यन्निव ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ कस्माद्रोदिषिराजेंद्रभयंकिंतेमयिस्थिते ॥ ३३ ॥ कारणंस्वस्यदुःखस्यवदसर्वंममाग्रतः ॥ इतितद्वचनंश्रु
त्वाराजानप्राहदुःखितः ॥ ३४ ॥ पुनःपृष्टश्चगुरुणाप्राहगद्गदयागिरा ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ मांत्यक्त्वायादवाःसर्वेकृष्णसंकर्षणादयः ॥३५॥
गतादेवपरंलोकंतेनाहंदुःखितोभवम् ॥ स्वाम्यमात्यसुहृद्राष्ट्रकोशदुर्गबलानिच ॥ एकाकिनश्चमेब्रह्मन्नेतेप्रीतिकरानहि ॥ ३६ ॥ मयाचरित्रं
कृष्णस्यनदृष्टंनश्रुतंवद ॥ दृष्टंयादवसंहारंतस्माद्दुःखंनयातिमे ॥ ३७ ॥ चतुर्व्यूहेनहरिणायापुरीशोभितापुरा ॥ सापिमयासमुद्रेतुकृष्णो
भक्तेःपरंगतः ॥ ३८ ॥

आँसुआनसों अश्रुपूर्णमुख हैगये तब राजाको दुःखीभयो नीचेको धरतीमें मुखकिये बैठो देखके ॥ ३२ ॥ गर्गाचार्यजी बडे विस्मित हैके दुःखको शमन करतेसे ये वचन बोले कि हे
राजेंद्र ! तुम क्यो रुदन करतेहौ मेरे विद्यमान होते तुमको कोनसो भय है ॥ ३३ ॥ अपने दुःखका कारण मेरे आगे सब बताओ ये ऋषिजी गर्गजीके वचनको सुनकर दुःखीभये
राजा वज्रनाभने कछु जवाब नहीं दियो ॥३४॥ जब फिर गुरुजीनेपूछी तब गद्गद होकर राजाने कही कि, कृष्ण संकर्षणते आदिलेके सब यादव मोकूँ परित्याग करके ॥ ३५ ॥ हे
देव ! परलोकको गये यासों में दुःखी भयोहूं देखो स्वामी, मंत्रीजन, सुहृद्वर्ग, देश, खजानो, किलो और सैन्य ये सब इकले मोकूँ प्रीति करनेवारे नहीं हैं ॥ ३६ ॥ मैंने कृष्णके
चरित्र न तो सुने और न देखे सो इने मोसे कहौ मैने तो केवल यादवनको संहारमात्र आंखिनसो देखोहै सो मेरे मनमें सो दुःख जाय नहींहै ॥ ३७ ॥ चतुर्व्यूहमूर्तिवारे

भगवान्‌सो जो द्वारकापुरी पहले शोभित ही सो पुरी भी समुद्रमें डूबगई और कृष्णहू भक्तिते परंगतभये ॥ ३८ ॥ अब मैं काहेके हेतुते हे शिष्यवत्सल ! कोनके लिये जीऊँ यासो अब मैं बनमें जाउंगो अब राज्य करबेकूँ मेरो मन नहीं है ॥ ३९ ॥ सूतजी कहैहैं कि ताके पीछे मुनीनमें श्रेष्ठ बड़े महात्मा गर्गजी यादवनमें श्रेष्ठ वज्रनाभजीके कहे वचनको सुनके उनकी बड़ाई करके प्रसन्न होकर गर्गजी दुःखको शमन करते राजा वज्रनाभजीसे ये बोले ॥ ४० ॥ हे यदुश्रेष्ठ ! शोकके नाश करनेवाले सब पापोंके नाश करबेवारे बड़े पवित्र मेरे वाक्यको तू सावधान होकर सुन जो वाक्य सब तरह शुभ है ॥ ४१ ॥ जो भगवान् श्रीकृष्ण पहले द्वारकामें विराजमान हैं वेही भगवान् सर्वत्र विराजमान हैं विनें तुम भक्तिसो देखो हे भूपते ! ॥ ४२ ॥ अब मैं तेरे आगे भोग और मोक्षकी दैनवारी कथाको कहूँगो हे वसुधानाथ ! (भूपते) श्रीकृष्णबलरामकी जे उत्तम

कस्यहेतोःकिमर्थंचजीवामिशिष्यवत्सल ॥ अथयास्यामिगहनंराज्यंकर्तुंनमेमनः ॥ ३९ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ ॥ ततोमुनीनामृष भोमहात्माश्रुत्वागिरंयादवसत्तमस्य ॥ संश्लाघ्यदुःखंशमयन्हितुष्टोगर्गोब्रवीद्भूपतिवज्रनाभम् ॥ ४० ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ वृष्णिप्रव रमद्वाक्यंशृणुशोकविनाशनम् ॥ सर्वपापहरंपुण्यंसावधानतयाशुभम् ॥ ४१ ॥ योराजतेकुशस्थल्यांकृष्णचन्द्रोहरिःपुरा ॥ विराजतेससर्वत्रभक्त्यातंपश्यभूपते ॥ ४२ ॥ अथतेकथयिष्यामिभुक्तिमुक्तिप्रदांकथाम् ॥ शृणुत्वंवसुधानाथश्रीकृष्णबलयोःपराम् ॥ ४३ ॥ ॥ सूत उवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वाभगवान्गर्गोवज्रायस्वांचसंहिताम् ॥ कथयामासविप्रेंद्रपुण्यांनवदिनैःकिल ॥ ४४ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधचरित्रसुमेरौगर्गवज्रनाभसंवादेप्रथमोध्यायः ॥ १ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वावज्रनाभिर्मुनेःश्रीगर्गसंहिताम् ॥ भृशंमुमोदाथगुरुंप्रत्युवाचप्रणम्यच ॥ १ ॥ अद्यश्रीकृष्णचन्द्रस्यचरित्रंतुश्रुतंमया ॥ त्वन्मुखान्मुनिशार्दूलतेनदुःखाश्चमेगताः ॥ २ ॥ मेमनस्तुकृपानाथपुनःश्रोतुंहरेर्यशः ॥ अतृप्तस्यापिकृष्णस्यवदस्वचरितंपरम् ॥ ३ ॥ द्वार्वत्यामुग्रसेनेनहयमेधःकृतःपुरा ॥ तच्चरित्रंवदमुनेकिंचित्पूर्वंश्रुतंमया ॥ ४ ॥ अनुव्रतानांशिष्याणांसुतानांचमुनीश्वर ॥ ब्रूयुर्गुह्यमनापृष्टंगुरवःकरुणामयाः ॥ ५ ॥

कथा है तिनें सुनो ॥ ४३ ॥ तब सूतजी बोले कि हे विप्रेंद्र ! (शौनक) भगवान् गर्गजी ऐसे वज्रनाभतें कहिकै अपनी संहिताको नौ ९ दिनमें समग्र निरूपण करतेभये ॥ ४४ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां हयमेधखण्डे भाषाटीकायां गर्गवज्रनाभसंवादे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ सूतजी बोले कि या प्रकार वज्रनाभजी गर्गसंहिताको सुनके अतिप्रसन्न भये तदनंतर हे मुने ! गुरुजीको प्रणामकर ये बोले ॥ १ ॥ कि आज मैंने श्रीकृष्णको चरित्र सुनो आपके मुखसे सुनके मेरे सब दुःख दूर हैगये ॥ २ ॥ हे कृपानाथ ! अब भगवान्के यश सुनबेको फिर मेरो मन करैहै क्योंकि मैं तृप्त नहीं भयो सो अब फिर कृष्णके चरित्रको निरूपण करो ॥ ३ ॥ हे मुने ! उग्रसेन राजानें जो द्वारकामें पहले अश्वमेध यज्ञ कियो हो वो कछु मैंने पहले सुनोहो हे मुने ! वाही अश्वमेधके वृत्तांतको कहो ॥ ४ ॥ जो दयालु गुरु होयहैं वे अपने सेवक शिष्य और पुत्रनके आगे बिनाही पूछे गुप्त बातकोहू कहै

है ॥५॥ सूतजी बोले कि ऐसे यादवनके गुरु मुनि गर्गजी वज्रनाभके कहेको सुनके बड़े प्रसन्न हैके हे राजेंद्र ! हरिके चरणकमलको स्मरणकरते राजा वज्रनाभते बोले ॥६॥ गर्गजी बोले कि तुम धन्य हो जो कृष्णके चरणनमें तुमारी ऐसी भक्ति है हे यादवश्रेष्ठ ! कृष्णमें मनुष्यनकी भक्ति होनो अति कठिन है सो भक्ति तुमारी भई ये बड़े आनंदकी बात भई है ॥ ७ ॥ हे राजन् ! या प्रसंगमें तुमारे अगारी एक इतिहास में कहूँगो जाके श्रवणमात्रसो ही सब पाप छूटजाय है ॥ ८ ॥ हे राजन् ! जब द्वापरयुगमें भूमि पापिनके बोझसो पीडित भई तब भूमिने ब्रह्मासो प्रार्थना करी तब ब्रह्माजी सुनके भगवान्की शरण गये ॥ ९ ॥ और भगवानसो भूमिकी प्रार्थना निवेदन करी तब श्रीराधिकापति सुनके भूमिको आश्वासन करके देवतानको संग लेके भूमिको भार उतारवेको मन करतेभये ॥ १० ॥ तदनंतर यहाँ मथुराजीमें वसुदेवजीको विवाह भयो तब आकाशमेंसो शब्द भयो कि रे कंस ! या देवकीको आठवों पुत्र तोय मारेगो तब कंसने देवकीवसुदेवको बंदीमें करके देवकीके छः पुत्र मारे और कंसको भयके मारे सर्वत्र कृष्ण दीखनलगे ॥ ११ ॥ फिर भगवान्ने

॥ ॥ सूतउवाच ॥ ॥ एवंभाषितमाकर्ण्ययादवानांगुरुर्मुनिः ॥ प्रीतःप्रत्याहराजेन्द्रंस्मरन्पादांबुजंहरेः ॥ ६ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ धन्यस्त्वंकृष्णचन्द्रस्यपादयोर्भक्तिरीदृशी ॥ जातातेयादवश्रेष्ठदिष्ट्यातुदुर्लभानृणाम् ॥ ७ ॥ कथयाम्यत्रतेराजन्नितिहासंशृणुष्ववै ॥ यस्य श्रवणमात्रेणसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ८ ॥ द्वापरेपीडिताराजन्धराभारेणपापिनाम् ॥ ब्रह्माग्रेकथयामाससोपिश्रुत्वाहरिंययौ ॥ ९ ॥ गत्वाचकथयामासश्रुत्वाश्रीराधिकापतिः ॥ महीमाश्वास्यदेवैश्चभारंहर्तुंमनोदधे ॥ १० ॥ विवाहोवसुदेवस्यमधुपुर्यामभूत्ततः ॥ कंसबोधनषट्पुत्रवधः कंसभयंनृप ॥ ११ ॥ मायाज्ञामनुदेवादिस्तुतिःकृष्णसमुद्भवम् ॥ वर्णनंरूपकृष्णस्यवसुदेवस्यसंस्तुतिः ॥ १२ ॥ देवक्यादिपुराकृत्यकथनंजगदीशितुः ॥ गोकुलानयनंकन्यापालनंतद्विभाषणम् ॥ १३ ॥ सांत्वनंवसुदेवस्यमोचनंभार्ययासह ॥ कंसदुर्मंत्रदैत्येषुसाधुबालउपद्रवः ॥ १४ ॥ प्रादुर्भूतेव्रजेकृष्णेव्रजराजमहोत्सवः ॥ मथुरागमनंनंदवसुदेवसमागमः ॥ १५ ॥ पूतनासुपयःपानंनंदगोपादिविस्मयः ॥ शकटध्वंस्त्येदैत्यचक्रवातवधःशिशोः ॥ १६ ॥ संलालनेमुखेधात्र्याजृंभणेविश्वदर्शनम् ॥ रामकेशवयोर्नाम्नोःकरणंकेलिरेतयोः ॥ १७ ॥

योगमायाको आज्ञा दीनी तब योगमायाने देवकीके गर्भको रोहिणीगर्भमें प्रवेशकर आपने यशोदाके गर्भमें प्रवेश कियो तब भगवान्को देवकीके गर्भमें आयो देख ब्रह्मादिकनने स्तुति करी फिर कृष्णचंद्रको जन्म लियो देख वसुदेवने स्तुति करी ॥ १२ ॥ फिर देवकी वसुदेवको पूर्वजन्मको वृत्त कह्यो तदनंतर जगदीशको गोकुलमें पहुँचामनो योगमायाको मथुरामें लामनो योगमायाको पटकनो और योगमायाको वचन कि तेरो मारनवारो जन्म लेचुकोहै ॥ १३ ॥ तब कंसने वसुदेवको सांत्वन कियो और बंदीमें सो दोनोंनको छोडि फिर कंसको दुष्टमंत्रीनसो सलाह करके बालवध करवेको उनको हुकम देनो ॥ १४ ॥ फिर व्रजमें कृष्णको नंदबाबाके घरमें प्रादुर्भाव होनो और नंदके घरमें पुत्रजन्मके महोत्सवको निरूपण फिर नंदबाबाको मथुराजीमें कंसको कर देवेको आमनो और वसुदेवजीको नंद बाबाके पास जायके मिलनो और उनसो बतरामनो॥१५॥ फिर पूतनाको प्राणसहित दूध पीवनो ये देखके नंदगोपादिकको विस्मय करनो फिर शकटासुरको पटकनो और बालकको तृणावर्तको मारनो ॥ १६ ॥ फिर खिलायवेमें दूध पीवतमें

मताको मुखमें विश्वको दिखामनो और राम कृष्ण नामको धरनो और तिनकी बालक्रीडाको निरूपण ॥ १७ ॥ गोपीनके घरमें दही माखनकी चोरी आदि ऊधमको निरूपण याही प्रसंगमें मृद्भक्षण और माताको विश्व दिखामनो और नंद यशोदाके पूर्वजन्मको वृत्तांत कहनो ॥ १८ ॥ फिर माखनचोरीको निरूपण तामें दहीके माटके फोरनेके निमित्तसो कृष्णको बांधनो फिर यमलार्जुन पेडनको उखारनो और उनके नारदके शापको निरूपण, उनकी स्तुतिको निरूपण ॥ १९ ॥ फिर बालक्रीडाको निरूपण फिर उपनंदादि गोपनकी सलाहसो वृंदावनको गमन, वृंदावन बसामनो और अपने मित्र गोपबालकनके संग वृंदावनमे वत्सचारण क्रीडा करनो ॥ २० ॥ फिर वत्सासुर और बकासुरादिकनको वध फिर यमुनाजीके तटपे मित्रनके संगमें भोजन करनो ॥ २१ ॥ फिर ब्रह्माको बालकनको चुरायके ब्रह्मलोकमें लेजानो फिर कृष्णको बालक बछरा बननो फिर ब्रह्माजीको सब बालक बछरानको कृष्णरूप देखके स्तुति करनो फिर कृष्णको उनके संग रमण और वृंदावनमें गमन ॥ २२ ॥ फिर गोचारणरूप बडीभारी क्रीडामें धेनुकादिकनको वध

धौत्यंगोपवधूगेहेप्रसंगान्मृद्भक्षणम् ॥ दर्शनंविश्वरूपस्यनन्दभाग्यपुराकथा ॥ १८ ॥ चौर्यंहैयंगवस्याथबंधनन्दामभिर्बलात् ॥ यम
लार्जुनयोःशापोभंगश्चैवस्तुतिस्तयोः ॥ १९ ॥ बालक्रीडोपनन्दादिमंत्रणंगमनंततः ॥ वृन्दावनेतयोःक्रीडावयस्यैर्वत्सचारिणोः ॥ २० ॥
वत्सासुरस्यचवधोबकाघासुरयोरपि ॥ भोजनंसखिभिस्तीरेयमुनायाहरेर्मुदा ॥ २१ ॥ वत्साबाहरणंधात्राकृष्णात्वंवत्सपालयोः ॥ ब्रह्मणोग
मनंपश्चात्स्तुतिःकृष्णरतिर्गतिः ॥ २२ ॥ गोचारणेमहाक्रीडाधेनुकादिवधस्तथा ॥ व्रजआगमनंकृष्णगोपीनेत्रमहोत्सवः ॥ २३ ॥
मृतान्विषांभःपानेनगोपान्हरिरजीवयत् ॥ कालीयदमनेस्तोत्रंतद्भार्याणांप्रलापनम् ॥ २४ ॥ ह्रदेकालीयसंबंधकथनंवह्निमोचनम् ॥
क्रीडाप्रलंबनिधनंदावाग्नेर्मोचनंगवाम् ॥ २५ ॥ वर्षाशरद्वर्णनंचगोपीनांवचनामृतम् ॥ व्रतंगोकुलकन्यानांवस्त्राणांहरणंमुदा ॥ २६ ॥
वनभाग्यकथागोपप्रार्थनाप्रेषणंमखे ॥ विप्रभार्याप्रसादश्चपश्चात्तापोद्विजन्मनाम् ॥ २७ ॥ यागभंगोमहेंद्रस्यधृतिर्गोवर्धनस्यच ॥ सुरेन्द्रग
र्वहरणंगर्गजातकवर्णनम् ॥ २८ ॥ गोपशंकापगमनमिंद्रधेन्वाभियाचितम् ॥ नंदस्यमोक्षणंगोपवैकुंठगमनंततः ॥ २९ ॥

फिर श्रीकृष्णको व्रजमें आगमन और गोपीनके नेत्रनको दर्शनमें आनंद देनो ॥ २३ ॥ फिर कालीदहके जलको पीके मरे गोप गौको जिवावनो फिर कालीके दमन करनेमें नागपत्नीनको स्तुति और उनको विलाप करनो ॥ २४ ॥ फिर कालीको यमुनामें रहिवेको कारण कहनो और अग्निमेंसो सबको छुडामनो फिर क्रीडामें प्रलंबासुरको मारनो और मुंजारण्यमेंते दावानलको पीके गउ और गोपनको जिवावनो ॥ २५ ॥ फिर वर्षाऋतु और शरदऋतुको वर्णन फिर गोपीनके वचनामृतको निरूपण फिर गोकुलकी कन्यानको कात्यायनीको अर्चनव्रत और उनके वस्त्र चुरामनो ॥ २६ ॥ फिर वृंदावनको सौभाग्यवर्णन फिर गोपनको भात मांगवेको भेजनो और गोपन मांगनो, यज्ञपत्नीनके ऊपर अनुग्रह करनो और माथुर ब्राह्मणनको पश्चात्ताप करनो ॥ २७ ॥ फिर इंद्रके यज्ञको उठायके गउ गोवर्द्धनके यज्ञको प्रवृत्त करनो फिर इंद्रको कोप और गोवर्द्धनको धारण इंद्रके गर्वको खंडन और गोपनके आगे गर्गके कहे वचननको निरूपण करनो ॥ २८ ॥ तासो गोपनकी शंकाको दूर करके इंद्र और सुरभिकी स्तुति करनो फिर नंदबाबाको

वरुणलोकमेंते छुडायके लामनो फिर गोपनको वैकुंठको दर्शन करामनो ॥ २९ ॥ फिर पंचाध्यायीसो रासलीलाको करनो और नंदबाबाको सुदर्शनसर्पसो छुडामनो फिर पीछे शंखचूडको मारनो फिर गोपीनके युगलगीतको वर्णन और वृषासुरको वध करनो ॥ ३० ॥ फिर नारदजीको कंसके पास जानो और उनको संवाद फिर कंसकी और अक्रूरकी बातचीत फिर श्रीकृष्णते केशीको वध होनो फिर नारदको कृष्णको बतरामन ॥ ३१ ॥ तदनंतर व्योमासुरको वध फिर अक्रूरको वृंदावनको जानो फिर नंदकी और अक्रूरकी बातचीत और आनन्दसो रोमांचित ह्वैके गद्गद होनो ॥ ३२ ॥ फिर अक्रूरको कृष्णबलरामसो संवाद और कंसको चेष्टित रामकृष्णको प्रयाण और गोपीनको विलाप ये सब वर्णन कियो ॥ ३३ ॥ फिर कृष्णको मथुरामें आनो रस्तामें यमुनाह्रदमें कृष्णको दर्शन वहां अक्रूरकी स्तुतिको करनो फिर मथुरामें प्रवेश और मथुराकी संपत्तिको वर्णन ॥ ३४ ॥ फिर धोबीके शिरको छेदन और वायक अर्थात् दरजीको वरप्रदान तथा सुदामामालीको वरप्रदान फिर कुब्जाको कृष्णको दर्शन ॥ ३५ ॥ फिर रंगभूमिमें धनुष तोरनो

पंचाध्यायनिशाक्रीडासर्पान्नंदस्यमोक्षणम् ॥ शंखचूडवधःपश्चाद्गोपीगीतंवृषार्दनम् ॥ ३० ॥ कंसनारदसंवादःकंसाक्रूरकथाततः ॥
केशिनोनिधनंकृष्णान्नारदर्षिकथाततः ॥ ३१ ॥ व्योमासुरवधोक्रूरागमनंगोकुलेषुच ॥ दर्शनानंदहृष्टात्मारोमांचोगद्गदद्गिरः ॥ ३२ ॥
संवादोरामकृष्णाभ्यांवर्णितंकंसचेष्टितम् ॥ रामकृष्णप्रयाणंचतथागोपीप्रलापनम् ॥ ३३ ॥ मथुरागमनंमध्येह्रदेकृष्णस्यदर्शनम् ॥
स्तुतिःपुरागतिःपश्चाद्दर्शनंपुरसंपदः ॥ ३४ ॥ रजकस्यशिरश्छेदोवायकस्यवरादयः ॥ सुदाम्नोवरदानंचकुब्जासंदर्शनंहरेः ॥३५॥ धनुर्भंगः
सैन्यवधःकंसदुर्हेतुदर्शनम् ॥ रंगोत्सवःकुवलयापीडयुद्धविघातनम् ॥ ३६ ॥ दर्शनंरामकृष्णस्यपौराणांप्रेमवर्धनम् ॥ मल्लानांनिधनंरङ्गेकं
सस्यसहबंधुभिः ॥ ३७ ॥ पित्रोश्चसांत्वनंसर्वसुहृदांचैवतोषणम् ॥ उग्रसेनाभिषेकंचनंदादिव्रजप्रेषणम् ॥ ३८ ॥ ईषद्विजातिसंस्कारं
पठनंचगुरोर्गृहे ॥ मृतपुत्रप्रदानंचगुरोःपञ्चजनार्दनम् ॥ ३९ ॥ पुनरागमनंशौरेर्मधुपुर्यामहोत्सवः ॥ उद्धवप्रेषणंगोपीविलापपरिसांत्वनम्
॥ ४० ॥ मेलनार्थंतुकृष्णस्यागमनंनंदगोकुले ॥ पुनर्वैकोलदैत्यस्यवधःपश्चात्प्रकीर्तितः ॥ ४१ ॥ कुब्जारतिस्तथाक्रूरप्रेषणंगजसाह्वये ॥
पांडवेषुचवैषम्यंधृतराष्ट्रस्यबोधनम् ॥ ४२ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधचरित्रसुमेरौकृष्णलीलावर्णनंनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

(धनुषरक्षक) और कंसकी भेजी सैन्यको वध और कंसको दुःशकुन दीखनो फिर रंगभूमिके उत्सवको वर्णन फिर युद्धमें कुवलयापीडको मारनो ॥ ३६ ॥ पुरवासिनको कृष्णको दर्शन, इनके स्नेहको वर्णन, मल्ल, चाणूरादिकनको मारनो और भाइनसहित कंसको पछारनो ॥ ३७ ॥ फिर देवकीवसुदेवको सांत्वन और सब सुहृदनको तोषण करनो फिर उग्रसेनको राज्याभिषेक और नंदादिकनको व्रजमें विदाकरके भेजनो ॥ ३८ ॥ कछु द्विजातिसंस्कार करनो फिर संदीपन गुरुके पास पढनो फिर पंचजनको मारके गुरुको मृतपुत्र लायके भेंट करनो ॥ ३९ ॥ फिर श्रीकृष्णको मधुपुरीमें आनो और मधुपुरीमें उत्सव होनो फिर उद्धवको नंदग्रामको भेजनो और गोपीनको विलाप और उनको सांत्वन ॥ ४० ॥ फिर मिलवेको नंदगोकुलमें कृष्णको आमनो फिर कोलदैत्यको वध करनो ॥ ४१ ॥ फिर कुब्जासो रमण फिर अक्रूरको हस्तिनापुरको भेजनो वहां धृतराष्ट्रको पांडवनमें वैषम्ययुक्त देखकर विनको अक्रूरको समझामनो ॥ ४२ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधचरित्रसुमेरौ भाषाटीकायां कृष्णलीलावर्णनं नाम

द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ गर्गमुनिजी कहै हैं कि, फिर जमाई जो कंस ताके मरवेसो दुःखीभये जरासंधकी सेनाको वध निरूपण कियो तदनंतर जब अनेकवार लड़ाई भई तब द्वारकापुरी किलो बनायो सोभी कह्यौ ॥ १ ॥ फिर कालयवनके वधको देखके मुचुकुंदकी स्तुति फिर मुचुकुंदको वर देके कालयवनको मारके जब याके धनको लेके चले ॥२॥ तब आये गर्वीले जरासंधके आगेते दोनों भैयानको भागके द्वारकामें जानो फिर रैवतने रेवतीको बलदेवजीको समर्पण करनो ॥ ३ ॥ फिर रुक्मिणीके प्यारे संदेशको सुनके अखिलराजानको जीतके देवीके मठपेते कृष्णचन्द्रने रुक्मिणी हरी ॥ ४ ॥ फिर राजानकरके शिशुपालको समझायवो फिर रुक्मी और कृष्णको युद्ध फिर कृष्णने रुक्मीको मुंडन करके विरूप करनो ॥ ५ ॥ फिर दाऊजीके वाक्यनसो रुक्मिणीको समुझायके दुःख दूर कर रुक्मीको छुड़ायवो फिर द्वारिका आयके विधिसो रुक्मिणीको विवाह ॥ ६ ॥ फिर प्रद्युम्नकी उत्पत्तिको कथन फिर सोवरमेंसों ही प्रद्युम्नको हरण फिर मायावतीको कह्यौ वृत्तांत और शंबरासुरको वध निरूपण ॥ ७ ॥ फिर मायावतीसहित

॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ जामातृवधसंतप्तजरासंधचमूवधः ॥ बहुशःसेनयोर्युद्धेद्वारकादुर्गकारणम् ॥ १ ॥ यवनस्यवधंदृष्ट्वामुचुकुंदस्य संस्तुतिः ॥ वरंदत्त्वाततोम्लेच्छवधंकृत्वाधनेततः ॥ २ ॥ नीयमानोवनेदृप्तजरासंधात्पलायनम् ॥ रैवतोरेवतींकन्यांबलदेवसमर्पणम् ॥ ३ ॥ रुक्मिणीप्रियसंदेशश्रवणादखिलान्नृपान् ॥ निर्जित्यनिर्गमोगेहःहृतवानंबिकागृहात् ॥ ४ ॥ नृपैःसांत्वनंचैद्यस्यततोरुक्मीसमागमः ॥ युद्धापेक्षपराधाद्धैमुंडनंतस्यकृष्णतः ॥ ५ ॥ रुक्मिणीदुःखशमनंरामवाक्याच्चमोक्षणम् ॥ ततोविवाहोरुक्मिण्याविधिवत्स्वपुरेमुदा ॥ ६ ॥ प्रद्युम्नोत्पत्तिकथनंहरणंसूतिकागृहात् ॥ मायावत्योक्तवृत्तांतंशंबरस्यवधस्ततः ॥ ७ ॥ पुनरागमनंगेहेसंतोषोद्वारकौकसाम् ॥ सूर्यात्स्यमंतकप्राप्तिर्याचनंतस्यवैहरेः ॥ ८ ॥ तत्संबन्धात्प्रसेनस्यवधःकीर्तिर्हरेस्तथा ॥ तन्मार्जनाच्चऋक्षस्यगृहेयुगमनंतयोः ॥ ९ ॥ युद्धंज्ञात्वालोकनाथंजांबवत्याःसमर्पणम् ॥ सत्राजितायचमणिःप्राप्ताश्रीहरिणाबिलात् ॥ १० ॥ विवाहःसत्यभामायाःपारिबर्हंतथामणिः ॥ रामेणसहकृष्णस्यगमनंहस्तिनापुरे ॥ ११ ॥ अक्रूरकृतवर्मभ्यांशतधन्वातुप्रेरितः ॥ सत्राजितंजघनाशुसोपिकृष्णेनमारितः ॥ १२ ॥ रामस्तुमिथिलायांचगदाशिक्षासुयोधने ॥ अक्रूरेमणिदानंचशक्रप्रस्थेहरेर्गतः ॥ १३ ॥ कालिन्द्यासंगतिःशौरेर्विवाहःस्वपुरेततः ॥ विवाहोमित्रविन्दायाःसत्यायाश्चतथैवच ॥ १४ ॥

प्रद्युम्नको द्वारिकामे आयबो और पुरवासीनको आनन्द फिर सत्राजितको सूर्यसो स्यमंतकमणिको मिलबो और वा मणिको कृष्णको मांगबो ॥ ८ ॥ ता मणिके संबन्धसो प्रसेनको मरनो और कृष्णकी अकीर्ति ता अकीर्तिके दूर करवेको जाम्बवान्के घरको जायबो ॥ ९ ॥ युद्धमें परमें जानके कृष्णको जाम्बवतीको समर्पण करनो फिर बिलमें ते मणि लायके सत्राजितको मणिको देनो ॥ १० ॥ फिर सत्यभामाको विवाह और दायजमें वा मणिको कृष्णको निवेदन करबो फिर दाऊजी सहित कृष्णको हस्तिनापुरको गमन ॥ ११ ॥ तब अक्रूर और कृतवर्माके कहिवेसो शतधन्वाके हाथसो सत्राजितको वध और याही पापसो कृष्णने शतधन्वाको मारगेरो यह सब निरूपण कियोहै ॥ १२ ॥ फिर दाऊजीको मिथिलागमन और वहां दुर्योधनको गदायुद्धको सीखनो फिर भगवान्को अक्रूरकोही मणि देके इन्द्रप्रस्थको जायबो ॥ १३ ॥ और वहां श्रीकृष्णको

कालिंदीको समागम और द्वारकामें जायके कालिंदीको विवाह फिर मित्रविंदा तथा सत्याको विवाह ॥ १४ ॥ फिर भद्राको और लक्ष्मणाको कृष्णके संग विवाह फिर
इन्द्रको जीतकर पारिजातको हरणकर सत्यभामाके घरमें लगायबो ॥ १५ ॥ वज्रनाभिजीने कही कि, इन्द्रको जीतके कल्पवृक्षको भगवान्ने क्यों दीनों हे मुने ! ये सब मोसो
विस्तारसों कहो ॥ १६ ॥ गर्गजी बोले कि, एक दिन नारदजीने एक पारिजातको फूल श्रीकृष्णको दीयो वो फूल कृष्णने श्रीरुक्मिणीको देदियो तब सत्यभामा दुःखीभई
॥ १७ ॥ तब सत्यभामा कुपित हैके कोपागारमें गई देखके भगवान्ने कही कि तुम शोच मत करो मैं तुमारे घरमें पारिजातको-वृक्ष लायके लगाय देउँगो ॥ १८ ॥ गर्ग मुनि
बोले कि, तभी इंद्रने आयके भगवान्से भौमासुरको सब हवाल कह्यो तब भगवान्ने सुनके हाथ जोर खडे इन्द्रसे ये कही कि, हे वृत्रसूदन ! ॥ १९ ॥

भद्रायालक्ष्मणायाश्चविवाहोहरिणाततः ॥ पारिजातंतुसत्यायैशक्रंजित्वाददौहरिः ॥ १५ ॥ ॥ वज्रनाभिरुवाच ॥ ॥ प्रियायैदत्त
वान्कस्माच्छक्रंजित्वासुरद्रुमम् ॥ श्रीकृष्णस्तत्कथांसर्वांमुनेमेब्रूहिविस्तरात् ॥ १६ ॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ ॥ पारिजातैककुसुमेचा
नीतेनारदात्कदा ॥ दत्तेसतिश्रीरुक्मिण्यैसत्यासुदुःखिताभवत् ॥ १७ ॥ तांदृष्ट्वाकुपितांप्राहकोधागारगतांहरिः ॥ माशोचंकुरुदास्या
मिपारिजातद्रुमंचते ॥ १८ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ तदैवकथितंसर्वंकृष्णाग्रेभौमचेष्टितम् ॥ शक्रेणश्रुत्वाभगवान्प्राहपश्यन्कृतां
जलिम् ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ मत्प्रियांदुःखितांपश्यरुदन्तींवृत्रसूदन ॥ १९ ॥ पारिजातस्यवृक्षार्थेकिंकरिष्याम्यहंवद ॥ यदा
स्यैपारिजातस्यवृक्षंदास्यसित्वंहरे ॥ २० ॥ तदाभौमंससैन्यंचहनिष्यामिनसंशयः ॥ कृष्णभाषितमाकर्ण्यप्रहसन्प्राहवासवः ॥ २१ ॥
॥ ॥ इन्द्रउवाच ॥ ॥ पारिजातद्रुमाःसर्वेवर्ततेनन्दनेचये ॥ गृहाणतान्स्वतःकृष्णस्त्वंहत्वानरकासुरम् ॥ २२ ॥ तथास्तुचोक्त्वाभगवा
न्सत्यभामासमन्वितः ॥ गरुडस्कंधमारूढःप्राग्ज्योतिषपुरंययौ ॥ २३ ॥ सत्यभामाहरिंप्राहस्वर्गेमिंद्रेगतेसति ॥ ॥ सत्योवाच ॥ ॥
पूर्वंगृहाणशक्रात्त्वंद्रुमराजंजगत्पते ॥ २४ ॥ कार्येभूतेसतिहरेनकरिष्यतित्वत्प्रियम् ॥ प्रियावाक्यंसमाकर्ण्यप्रियःप्राहप्रियांवचः ॥ २५ ॥

पारिजातके वृक्षके लिये रुदनकरती दुःखयुक्त मेरी प्यारीको तुम देखो कहो मैं क्या करूं हे हरे ! (इन्द्र) जब इनके लिये तुम कल्पवृक्ष देउगे ॥ २० ॥ तब मैं
सेनासहित भौमासुरको निःसंदेह मारूँगो या प्रकार कृष्णके कहेको सुनके हँसतोभयो इन्द्र बोलो ॥ २१ ॥ कि हे महाराजजी ! मेरे नंदन नामके बागमें जितने पारिजातके
वृक्ष हैं उन सबनको आप भलेई लेजैयो जब नरकासुरको मारोगे तब ॥ २२ ॥ तब भगवान्ने कही कि बहुत ठीक है फिर सत्यभामासहित गरुडपर सवार हैके भगवान
प्राग्ज्योतिष नाम नगरमें जामें भौमासुर रहतोहो तहाँ गये ॥ २३ ॥ तब सत्यभामाने इंद्रको स्वर्गमें गयो देखके भगवान्सो कही कि हे प्रभो ! हे जगत्पते ! आप इंद्रसे कल्पवृक्षको
पहले लेलेउ पीछे ये आपको कामभयेपै पारिजातको नहीं देयगो सत्यभामाप्रियाको ये वचन सुनके श्रीकृष्णचंद्रजी प्यारी सत्याभामाजीसो ये वचन बोले ॥ २४ ॥ २५ ॥

कि सुनो प्यारीजी जो कदाचित् मेरे मांगनेपर देवराज इंद्र मेरेलिये पारिजातके वृक्षको नहीं देयगो तो मैं शचीके स्तननके चंदनसो लिप्त इंद्रकी छातीमें अपनी गदाको मारूँगो ॥२६॥
इतनी बातको श्रीभगवान् कहिके भौमासुरके पुरको गये जो नगर अग्नि, जल, वायु और शस्त्रनके बने पृथक् २ सात किलेनसों और चारों तरफ अनेकन बड़े बड़े प्रतापी
असुरोंते वेष्टित नाम रक्षित है ॥ २७ ॥ भगवान्ने जायके अपने चक्र, गदा और बाणनसों सब किले तोड़गेरे और मुर नाम दैत्यको और अनेकन शस्त्रलिये या मुरदैत्यके
पुत्रनको भगवान् मारतेभये ॥ २८ ॥ फिर अनेकन अस्त्रशस्त्रनकी वर्षा करते सेनासहित नरकनाम दैत्यको चक्रके मारे दो टूक करके पटकदियो इतनेमें गरुडने याकी सब
सेना मारगेरी ॥ २९ ॥ ऐसे यदुनाथने भौमको मारके उत्तम उत्तम रत्न सब आपने ग्रहणकिये और याके घरके भीतर जो गये सो आपने कन्यावनको देखो ॥ ३० ॥ तब उन
दैत्य सिद्ध राजा आदिकनकी शताधिक षोडशहजार १६०० कन्यानको इकट्ठी देखके वाही समय डोलानमें बैठार बैठारके सब द्वारकाको भेजदीनी ॥ ३१ ॥ फिर इंद्रको

॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ सपारिजातंयदिनप्रदास्यतिप्रयाच्यमानस्तुसयामरेश्वरः ॥ ततःशचीव्याप्तुदितानुलेपनेगदांविमोक्ष्यामि
पुरंदरोरसि ॥ २६ ॥ इत्युक्त्वाभगवान्कृष्णोभौमासुरपुरंगतः ॥ नानादुर्गैःसप्तभिश्चवेष्टितंचमहासुरैः ॥ २७ ॥ सर्वान्विभेददुर्गान्वैगदाचक्र
शरादिभिः ॥ जघानमुरुदैत्यंचतत्पुत्रान्शस्त्रसंयुतान् ॥ २८ ॥ शस्त्रास्त्रवर्षंमुंचंतंससैन्यंनरकंहरिः ॥ छित्वाचक्रंद्विधाचक्रेगरुडेनजघानच
॥ २९ ॥ हत्वाभौमंजगन्नाथोवररत्नानियादवः ॥ जग्राहतत्रकन्यानांसमूहंवैददर्शह ॥ ३० ॥ दैत्यसिद्धनृपाणांचसहस्राणिचषोडश ॥ श
ताधिकानिकन्याश्चप्रेषयामासस्वांपुरीम् ॥ ३१ ॥ गृहीत्वाथमणिंछत्रंदेवमातुश्चकुण्डले ॥ पारिजातद्रुमार्थंवैययाविंद्रपुरींहरिः ॥ ३२ ॥ इ
तिश्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधचरित्रसुमेरौकृष्णकथावर्णनंनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ गत्वास्वर्गंतुशक्रायदत्त्वाछ
त्रंमणिंतथा ॥ अदित्यैकुण्डलेकृष्णोदत्त्वाभिप्रायमब्रवीत् ॥१॥ अभिप्रायंहरेर्ज्ञात्वावासवोनददौद्रुमम् ॥ देवाञ्जित्वातदापारिजातंजग्राहमाध
वः ॥ २ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वाकथांराजायादवोविस्मयान्वितः ॥ पप्रच्छस्वगुरुंभूयःश्रद्दधानोहरेर्गुणे ॥ ३ ॥ ब्रह्मञ्शक्रस्तु
देवेंद्रोजानन्कृष्णंहरिंपरम् ॥ अपराधंतुकृतवान्सकथंब्रूहितत्त्वतः ॥ ४ ॥

छत्र, मणि और देवमाता अदितिके कुंडलनको लेके फिर पारिजातवृक्षके लेवेके लिये आप वैसे इंद्रकी पुरीको पधारे ॥ ३२ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधचरित्रसुमेरौ
भाषाटीकायां कृष्णकथावर्णनं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ गर्गमुनि बोले कि ऐसे श्रीकृष्ण स्वर्गमें जायके छत्र, मणि इंद्रको देके और अदितिके लिये कुंडल देके फिर आपने
इंद्रसो अपनो जो अभिप्राय हो सो निवेदन कियो ॥ १ ॥ तब कृष्णके अभिप्रायको जानके इन्द्रने पारिजातको वृक्ष कृष्णको नहीं दियो तब सब देवनको जीतके माधव श्रीकृष्णने
पारिजातके वृक्षको उखार द्वारिकामें प्राप्तकियो ॥ २ ॥ सूतजी कहेहैं कि शौनकजी, यादव वज्रनाभ या कथाको सुन बड़े विस्मित हैके कृष्णचरित्र सुननेमें श्रद्धायुक्त है फिर
अपने गुरुजीसे प्रश्न करतेभये ॥ ३ ॥ वज्रनाभजी बोले कि हे ब्रह्मन् ! देवेंद्र इंद्र तो श्रीकृष्णको परमेश्वर जानतोहो फिर जानबूझके वाने कृष्णको अपराध कैसो कियो सो

कहो ॥ ४ ॥ कृष्णके आगे तो पहिलेई सत्यभामाजी इंद्रके चेष्टितको कहिचुकी ही यासो इंद्रको और श्रीकृष्णको जो युद्ध है ताको मेरे आगे कहो ॥ ५ ॥ तब गर्गमुनि बोले कि अदितिने कृष्णकी स्तुति कीनी और इन्द्रने जब कही तब आप नंदनवनको आयगये वहाँ आपने अनेकन पारिजातके वृक्ष देखे ॥ ६ ॥ तिनके मध्यमें एक मंजरीनके पुंजको धारण करनवारो क्षीरसमुद्रके मंथनमेंते उत्पन्नभयो कमलकीसी गंधसो युक्त वृक्ष देखो ॥ ७ ॥ देवतानको सुख देनवारो लाल लाल जामें कोंपल वा वनभरको आभूषण सुवर्णकीसी जाकी छाल ॥ ८ ॥ ता वृक्षको देखके सत्यभामाजी कृष्णसों बोली कि हे प्राणनाथ ! सब वनके आभूषण या वृक्षको मैं लेउँगी ॥ ९ ॥ जब प्रियाजीने ऐसे कही सोही आपने हंसके वो वृक्ष उखारके गरुडपर धरलियो और जगदीश्वर आप हँसनलगे ॥ १० ॥ सोही तो सब बागके

कृष्णाग्रेकथितंसत्यभामयाशक्रचेष्टितम् ॥ तस्मान्मेविस्तराद्युद्धमिन्द्रमाधवयोर्वद ॥ ५ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ अदित्यासंस्तुतःकृष्णोशक्रवाक्याच्चनन्दनम् ॥ वनंगत्वापारिजातान्सददर्शबहून्द्रुमान् ॥ ६ ॥ तेषांमध्येमहावृक्षंमंजरीपुंजधारिणम् ॥ क्षीरोदमथनाज्जातंपद्मगंधसमन्वितम् ॥ ७ ॥ सुराणांसुखदंताम्रपल्लवैःपरिवेष्टितम् ॥ वनेविभूषणंदिव्यंवरंस्वर्णसमत्वचम् ॥ ८ ॥ तंदृष्ट्वामाधवंप्राहसत्यभामाचमानिनी ॥ एनंगृह्णाम्यहंकृष्णश्रेष्ठंसर्ववनेद्रुमम् ॥ ९ ॥ इत्युक्तःप्रिययोत्पाट्यपारिजातंगरुत्मति ॥ लीलयारोपयामासप्रहसञ्जगदीश्वरः ॥ ॥ १० ॥ तदैवकुपिताःसर्वेवनपालाःसमुत्थिताः ॥ धनुर्बाणधराःकृष्णमूचुःप्रस्फुरिताधराः ॥ ११ ॥ इन्द्रप्रियायावृक्षश्चहृतःकस्मात्त्वयानर ॥ यदृच्छयाकिलास्माकंतृणीकृत्यक्वयास्यसि ॥ १२ ॥ इन्द्राणीप्रीतयेदेवैःपुराह्युदधिमंथने ॥ उत्पादितोयंनक्षेमीगृहीत्वेनंभविष्यसि ॥ १३ ॥ गिरीणांयेनसर्वेषांपक्षाःपूर्वंनिपातिताः ॥ तंकिंवृत्रहणंवीरंजित्वावृक्षंनयिष्यसि ॥ १४ ॥ तस्माद्गच्छमहावीरपारिजातंविहायच ॥ नदास्यामोद्रुमंतुभ्यंशक्रस्यानुचरावयम् ॥ १५ ॥ यदादास्यतितुभ्यंवैपारिजातंपुरंदरः॥ननिषेधंकरिष्यामोवनपालावयंतदा ॥ १६ ॥ तेषांभाषितमाकर्ण्यसत्यभामारुषान्विता ॥ तूष्णींभूतेसतिहरावभीताप्राहतान्नृप ॥ १७ ॥

रखवारे कुपित हैके उठे धनुषबाणनको लिये कृष्णसों बोले, होठ जिनके फड़कन लगे ॥ ११ ॥ अरे ओ मनुष्य ! तैंने ये इन्द्रकी पत्नीको वृक्ष कैसे उखारयो है अब तू बताय अपनी इच्छासो बिना पूछे या पेड़को उखारके कहाँ जायगो तैंने हमको कछु नहीं जानो एक तिनकाको बराबर समझे है ॥ १२ ॥ देख ये वृक्ष इंद्राणीकी प्रीतिके लिये पहले समुद्रमंथनके समय देवतानने समुद्रमेंते निकासो है सो तू याको लेके कुशलसों नहीं जायगो ॥ १३ ॥ जा इंद्रने सब पर्वतनके पंख पहले काटेहैं वा वृत्रासुरके मारनवारे वीरको जीतके वृक्षको कहा तू ले जायगो ॥ १४ ॥ यासो महावीर पारिजातको छोडके तू चलोजा हम इंद्रके अनुचर हैं सो तोकूँ या पारिजातको नही देयँगे ॥ १५ ॥ और जब तोकूं इंद पारिजातवृक्ष देयगो तब या वनके रखवारे हम तोको नाहीं नहीं करेंगे ॥ १६ ॥ तिनके कहेको

सुनके सत्यभामा कुपित भई और कृष्णभगवान्को चुपभयो देखके विन वनके रखवारेनते ये कहतीभई ॥ १७ ॥ सत्यभामाजीने कही कि रे या पारिजातकी शची कोन है और इंद्र कोन है ? क्योंकि ये पारिजात समुद्रमेंते उत्पन्न भयोहै ये तो सब लोकको सामान्य है ॥ १८ ॥ फिर याके लेवेको इकले इंद्रको कहा अधिकार है जैसो अमृत जैसो चंद्रमा जैसी लक्ष्मी सबकी है ॥ १९ ॥ ऐसेही ये पारिजातवृक्षहू सबको है जो कोई अपनो बतावे वोही मूर्ख है केवल अपने पतिके भुजबलके गर्वसो शची या वृक्षको रोकैहै सो झूठहै॥२०॥ सो तुम क्षमा मत करो सत्यभामा जा वृक्षको लियेजाय है ता या वृक्षके विषयमें याही समय शचीसो जायके मेरो कह्यो वचन कहिदेउ ॥ २१ ॥ कि ऐसे गर्वके भरे वचन सत्यभामा कहिरहीहै कि जो तू पतिको प्यारी है और जो तेरो पति तेरे वशमें है तो ॥ २२ ॥ मेरो पति तेरे वृक्षको उखाडके लिये जाय है जो तोपे रुकवायोजाय तो अपने पतिते रुकवायले

॥ ॥ सत्योवाच ॥ ॥ काशचीपारिजातस्यकःशक्रोवासुरेश्वरः ॥ सामान्यःसर्वलोकानांयदीशोमृतमंथने ॥ १८ ॥ समुत्पन्नःसुरः कस्मादेकोगृह्णातिवासवः ॥ यथासुधायथैवेंदुर्यथाश्रीर्वनचारिणः ॥ १९ ॥ सामान्यःसर्वलोकस्यपारिजातस्तथाद्रुमः ॥ भर्तृबाहुमहागर्वा रुणद्ध्येनंमृषाशची ॥ २० ॥ तत्कथ्यतामलंक्षान्त्यासत्याहारयतिद्रुमम् ॥ कथ्यतांचद्रुतंगत्वापौलोम्यांवचनंमम ॥ २१ ॥ सत्यभामाव दत्येतदतिगर्वोद्धताक्षरम् ॥ यदित्वंदयिताभर्तुर्यदिवश्यःपतिस्तव ॥ २२ ॥ मद्भर्तुर्हरतोवृक्षंतत्कारयनिवारणम् ॥ जानामितेपतिंशक्रंयुष्मा ञ्जानामितत्त्वतः ॥ २३ ॥ पारिजातंतथाप्येनंमानुषीहरयामिते ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ कृष्णप्रियायावचनंवनपालानिशम्यच॥ २४ ॥ इन्द्राणीनिकटंगत्वाप्रोचुःसर्वंयथोदितम ॥ रक्षकाणांवचःश्रुत्वाशचीप्राहरुषान्विता ॥ २५ ॥ कृष्णंनिवारणार्थायनयास्यंतंपुरंदरम् ॥ ॥ ॥शच्युवाच ॥ ॥ मदीयंपारिजातंवैमाधवेनबलीयसा ॥ २६ ॥ गृहीतंस्वप्रियार्थेवैत्वांतृणीकृत्यवज्रिणम् ॥ तस्मान्मोचयवृक्षेशंपा कसूदनवृत्रहन् ॥ २७ ॥ सत्यभामावशंकृष्णंविनिर्जित्यमहारणे ॥ त्वयावैपूर्वमद्रीणांपक्षावज्रेणनाशिताः ॥ २८ ॥ भयंविसृज्ययुद्धायगच्छ तस्मात्सुरैर्वृतः ॥ इतिश्रुत्वाशचीवाक्यंशक्रोनमुचिसूदनः ॥ २९ ॥

मैं तोको और तेरे पतिकूं खूब जानों हौं तौहू देख मनुष्यजाति हैके या तेरे पारिजातकूं लिवायके लियेजाऊहूँ गर्गजी कहेहैं कि ऐसे कृष्णप्रियाके वचन सुनके वो रखवारे ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ वाही समय इंद्राणीके पास गये और जो सत्यभामा कही ही सो सब जायके इंद्राणीके आगे कहतेभये तब बागके रक्षकनकी कही सुन कुपित हैके शची बोली ॥ २५ ॥ जो कृष्णके रोकवेको नहीं जायरह्योहो ता इंद्रते जायके ये बोली कि हे स्वामिन् ! मेरे पारिजातको बली कृष्णने ॥२६॥ अपनी धरवारीके लिये तुमको एक तिनकाकी तुल्य गिनके ग्रहण करलियोहै सो हे पाकसूदन ! हे वृत्रहन् ! आज विनसों मेरे वृक्षको बचावो ले न जाय ॥ २७ ॥ सो सत्यभामाके वशमें भये कृष्णको जीतके वृक्षको रोको तुमने तो पहले अपने वज्रसो पर्वतनके पंख काटेहे ॥ २८ ॥ जलदी भयको छोडके देवतानको संग लेके युद्धके लिये आओ ॥ नमुचिको मारनवारो इंद्र शचीके या कहेको सुनके ॥ २९ ॥

भयभीत है कृष्णते युद्ध करवेको मन नहीं करतोभयो तब कुपित होकर इंद्राणीने बहुतही इंदको प्रेरणकियो ॥ ३० ॥ तब क्रोधसों मदमें आयके कृष्णकी निंदा करतो इंद्र यह बोलो कि हे सुंदरानने ! जाने तेरो पारिजात लीनोहै ॥ ३१ ॥ वाको आज मैं शतपर्ववारे वज्रसों संग्राममें गेरोंगो इतनी कहिके हे राजन् ! इंद्र ऐरावतहाथीपें बेठके ॥ ३२ ॥ जो तीन शुंडादंडनतें युक्त है और लाल रंगके कंबलसों शोभित है और चार दांतनसों मंडित है जो हाथी कैलासपर्वतके समान दीखेहै ॥ ३३ ॥ सुवर्णकी शंकल जाके पायनमें पडी है तापे बैठो देवतानसों युत इंद्र अतिशोभित भयो तैसेही सब मरुद्गण, यम, अग्नि, और वरुण आदिक ॥ ३४ ॥ देवता और ग्यारह रुद्र, बारह सूर्य, आठ वसु, कुबेर आदिक, गंधर्व विद्याधर, साध्यगण, पितृगण ॥३५॥ ऐसे गणनाके तेंतीसकोटि इंदके अनुचर देवता ये सब अतिक्रुद्ध हैके श्रीकृष्णजीके संमुख युद्ध करवेको आये ॥३६॥ और कितनेई अपनी रक्षाके

नचकारतुयुद्धायमनोभयसमन्वितः ॥ ततश्चबहुशःपत्न्याप्रेरितःकोपयुक्तया ॥ ३० ॥ तदाकोपेनश्रीकृष्णंनिन्दन्प्राहमदान्वितः ॥ ॥ इन्द्रउवाच ॥ ॥ येनतेपारिजातंवैगृहीतंसुन्दरानने ॥ ३१ ॥ मृधेतंपातयिष्यामिवज्रेणशतपर्वणा ॥ इत्युक्त्वावासवोराजन्नारुह्यैरावतंगजम् ॥ ३२ ॥ शुण्डादंडैस्त्रिभिर्युक्तंरक्तकंबलमंडितम् ॥ चतुर्भिःशोभितंदन्तैर्हिमाद्रिसदृशंशुभम् ॥ ३३ ॥ स्वर्णशृंखलयाबद्धंशुशुभेनिर्जरैर्वृतः ॥ तथामरुद्गणाःसर्वेयमाग्निवरुणादयः ॥ ३४ ॥ रुद्राश्चद्वादशात्मानोवसवोधनदादयः ॥ विद्याधराश्चगंधर्वाःसाध्याःपितृगणादयः ॥ ३५ ॥ त्रयस्त्रिंशत्कोटिसंख्याःशक्रस्यानुचराःसुराः ॥ एतेसमागताक्रुद्धायोद्धुंश्रीकृष्णसंमुखे ॥ ३६ ॥ आहूताःकेपिशक्रेणसहायार्थंतुस्वात्मनः ॥ तथातुनारदेनापिकेचिद्देवास्तुप्रेषिताः ॥३७॥ ततःपरिघनिस्त्रिंशगदाशूलपरश्वधैः ॥ बभूवुस्त्रिदशाःसज्जाःशक्रेवज्रकरेस्थिते ॥ ३८ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधचरित्रसुमेरौपारिजातहरणंनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ अथदृष्ट्वाकृष्णचन्द्रोगजेन्द्रोपरिशोभितम् ॥ इंद्रंदेवपरीवारंयुद्धायसमुपस्थितम् ॥ १ ॥ शंखंदध्मौस्वयंकृष्णोशब्देनापूरयन्दिशः ॥ मुमोचचशरव्रातंसहस्रायुधसंमितम् ॥ २ ॥ ततोदिशश्चगगनंदृष्ट्वाबाणशतान्वितम् ॥ मुमुचुर्विबुधाःसर्वेशरांश्चक्रायुधोपरि ॥ ३ ॥ एकैकमस्त्रशस्त्रंचसुरैर्मुक्तंसहस्रधा ॥ स्वबाणैर्भगवान्कृष्णोचिच्छेदनृपलीलया ॥ ४ ॥

लिये इंद्रने बुलाये थे और कितनेई नारदजीने भेजे देवता ॥३७॥ वे सब परिघ, निस्त्रिंश, गदा, त्रिशूल, परश्वध, फरसानको हाथनमें लेके सब देवता सावधान हैके युद्ध करवेको और वज्रको हाथमें लेके इंद्र खडो भयो ॥ ३८ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधचरित्रसुमेरौ भाषाटीकायां पारिजातहरणं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ गर्गजी बोले कि तदनंतर श्रीकृष्णचंद्रने गजराजके ऊपर बैठे इंद्रको और युद्धके लिये तयारभये इन्द्रके परिवारको देखो ॥ १ ॥ तब आप श्रीकृष्णजी शब्दसों दिशानको पूर्ण करते पांचजन्यको शब्द करतेभये और वज्रके समान बाणनको व्रात (समूह) चलायो ॥ २ ॥ तदनंतर दिशा और आकाशको हजारन बाणनसों व्याप्त देखके सब देवतान्ने चक्रायुधश्रीकृष्णके ऊपर हजारन बाण फेंके ॥ ३ ॥ हे नृप ! तब भगवान् श्रीकृष्णने देवतानके चलायेभये एकएक अस्त्रशस्त्रको खेलकरकेंही अपने बाणनसों छेदन करदिये ॥ ४ ॥

और वा समय वरुणके चलाये नागनकी फाँसीको गरुडजीने अपनी चोंचसो कतरके डारदीयो और यमराजके फेंकेभये लोकभयंकर दंडको ॥ ५ ॥ श्रीकृष्णने अपनी कौमोदकी गदा सो काटके भूमिमें गेरदीनी और कुबेरकी पालकीको अपने चक्रसो लीला करकेंही तिलकी बराबर टूक कर गेरदीनी ॥ ६ ॥ और श्रीकृष्णने अपनी कोपदृष्टिसो सूर्यको हततेजा करदियो इतनेमेंही महान् अग्निको सन्मुख आयो देखके श्रीकृष्णचंद्र मुखसो पीगये ॥ ७ ॥ तदनंतर रुद्रके गणनके मारे त्रिशूलनको चक्रसो काटके फिर उन रुद्रगणनको भुजानसो धरणीपर पटकदिये ॥ ८ ॥ तदनंतर मरुद्गण नामके देवता साध्य देव और विद्याधरने श्रीकृष्णके ऊपर बाणनके पटल बरषाये ॥ ९ ॥ तब हे भूपते! शर (बाण) नको वर्षावती चलीआई ऐसी देवसेनाको देखके वा रणमें सत्यभामा भयभीत हैगई ॥ १० ॥ तब डरीभई सत्यभामाको देखके भगवानने कही कि हे सत्ये

पाशिनश्चाहिपाशंचचिच्छिदेपन्नगासनः ॥ यमराजेनप्रहितंदंडंलोकभयंकरम् ॥ ५ ॥ गदयापातयामासभूमौकृष्णस्तुलीलया ॥ चक्रे
णधनदस्यापिशिबिकांतिलशोबहु ॥ ६ ॥ चकारकृष्णःसूर्यंचकोपदृष्ट्याहतौजसम् ॥ महाग्निमागतंवीक्ष्यमुखेनचपपौहरिः ॥ ७ ॥
ततोरुद्रगणैर्मुक्तान्शूलांश्चिच्छेदवैरुषा ॥ चक्रेणचहरीरुद्रान्पातयामासबाहुना ॥ ८ ॥ ततोमरुद्गणादेवाःसाध्याविद्याधरास्तथा ॥ मुमु
चुर्बाणपटलान्माधवोपरिभूपते ॥ ९ ॥ शरवर्षंप्रमुंचंतींसेनांसर्वांसमागताम् ॥ विलोक्यसत्यभामातुभयंप्रापतदामृधे ॥ १० ॥
तांभीतांप्राहगोविंदोसत्येत्वंमाभयंकुरु ॥ आगतांशक्रसेनांविहनिष्यामिनसंशयः ॥ ११ ॥ इत्युक्त्वाभगवान्क्रुद्धोबाणैःशार्ङ्गधनुश्च्युतैः॥ ताड
यामासविबुधान्कोपैर्नृसिंहोनखैर्यथा ॥ १२ ॥ ततःप्रत्याहगरुडंकंसहाकोपपूरितः ॥ वैनतेयत्वयायुद्धंनकृतंरणमंडले ॥ १३ ॥ तच्छ्रुत्वातुस
भार्यंचस्कंधेसंधारयन्हरिम् ॥ कोपाद्विष्णुरथःसद्यःपक्षाभ्यांनखरांकुरैः ॥ १४ ॥ तुंडेनभक्षयन्देवांस्ताडयन्विचचार वै ॥ ततश्चदुद्रुवुर्देवाह
न्यमानागरुत्मता ॥ १५ ॥ अथबाणैर्महीपालइंद्रोपेन्द्रौमहाबलौ ॥ परस्परंचवर्षंतौधाराभिरिवतोयदौ ॥ १६ ॥ ऐरावतेनराजेंद्रसुपर्णोयुयु
धेतदा ॥ गजस्तार्क्ष्यंतुदशनैर्जघानगरुडस्तथा ॥ १७ ॥ गजंतुतुंडपक्षैश्चछिन्नंभिन्नंचकारह ॥ सुरैःसमस्तैर्युयुधेवज्रिणाचयदूत्तमः ॥ १८ ॥

डरो मति, मैं आतेही या इंद्रकी सेनाको निःसंदेह मारोंगो ॥ ११ ॥ ऐसे कहिके कुपित हैके भगवान्ने शार्ङ्गधनुषमेंसो निकसे अपने बाणनसो देवतानको मारके ऐसे भगाये जैसे कुत्तानको सिंह भगावे ॥ १२ ॥ तब कंसके मारनवारे भगवान् कोपसो पूर्ण हैके गरुडते बोले कि हे वैनतेय! तैंने रणमंडलमें कछु युद्ध नही कियो ॥ १३ ॥ तब ये बात सुनके सत्यभामासहित कृष्णको अपने कंधापे चिठारे गरुड वाही समय बडे कोधसो अपने पंख और नखनसो मारतो और अपनी चोंचसो भक्षण करतो संग्राममें विचरतोभयो तब गरुडको मारके मारे सब देवता जितमें मोडोपरेहैं तिनमेंही भागेहै ॥ १४ ॥ १५ ॥ तब तो हे महीपाल! बडे बलवान् कृष्ण और इंद्र दोनों बाणनको ऐसे बरषावते विचरेहैं जैसे बूँदनको बरषाते दो बदल विचरें ॥ १६ ॥ वा समय ऐरावत करके गरुड युद्ध करतोभयो तब ऐरावतने गरुडके दाँतनको प्रहार कियो तैसेही गरुडने ॥ १७ ॥ चोंच और पंखनके

मारे वा ऐरावत हाथीको मारकें घायल करदियो और सब देवतानसों और इंद्रसों यदूत्तम श्रीकृष्ण युद्ध करतोभयो ॥ १८ ॥ तब भगवान् तो इंद्रके ऊपर और इंद्र कृष्णके ऊपर क्रोधकरके परस्पर जीतवेकी इच्छासों बाणनकी वरषातेभये ॥ १९ ॥ जब सब बाण और अस्त्र शस्त्र कटगये तब इंद्रने तो वज्र और भगवान्ने अपनो चक्र हाथमें लियो ॥ २० ॥ तब चराचर या त्रिलोकीमें वज्रको हाथमें लिये इन्द्र तथा चक्रको ग्रहण किये श्रीकृष्णको देखके बडो हाहाकार भयो ॥ २१ ॥ तब इंद्रके फेंके वज्रको भगवान्ने वामहाथसो पकरलीनो और भगवान्ने चक्र छोडो नहीं किन्तु ठहोरहि ठहोरहि ऐसे कही ॥ २२ ॥ तब वज्र जाके पास रह्यो नहीं सो इन्द्र बड़ो लज्जित भयो और गरुडने जाके हाथीको घायल करदियो तथा जो भीत भाजोचलोजायहै ऐसे वा इंद्रको देखके सत्यभामाजी बड़ी हाँसीहै ॥ २३ ॥ तब या हवालते भाजते इंद्रको देखके क्रोधसो पूर्ण हैके शची

भगवान्मघवंतंवैमघवामधुसूदनम् ॥ बाणैर्ववृषतुःक्रुद्धावन्योन्यविजिगीषिणौ ॥ १९ ॥ छिन्नष्वस्त्रेषुबाणेषुशस्त्रेष्वस्त्रेषुचत्वरम् ॥ वज्रंज ग्राहमघवाभगवाञ्चक्रमेवच ॥ २० ॥ हाहाकारस्तदेवासीत्त्रैलोक्येसचराचरे ॥ वज्रचक्रधरौवीक्ष्यसुरेश्वरनरेश्वरौ ॥ २१ ॥ जग्राहवामहस्तेन क्षिप्तंवज्रंचवज्रिणा ॥ नमुमोचहरिश्चक्रंतिष्ठतिष्ठेत्युवाचच ॥ २२ ॥ लज्जितंवज्रहीनंचताक्ष्र्येणक्षतवाहनम् ॥ भीतंपलायमानंचालोक्यसत्या जहासवै ॥ २३ ॥ शचीवीक्ष्यागतंशक्रंप्राहकोपेनपूरिता ॥ एकाकिनामाधवेनप्रधनेतुविनिर्जितः ॥ २४ ॥ महासैन्ययुतस्त्वंवैतस्मात्तेधि ग्बलंसुर ॥ अहंगत्वारणेकृष्णंविनिर्जित्यसुरद्रुमम् ॥ २५ ॥ मोचयामिनसंदेहःपश्यत्वंचसुराधम ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वाशि विकांशीघ्रमारुह्यकुपिताशची ॥ २६ ॥ योद्धुकामाययौराजन्पुनःसुरगणैर्वृता ॥ तामागतांवीक्ष्यकृष्णोयुद्धायनदधेमनः ॥ २७ ॥ ततःस त्याहरिंप्राहरुषास्फुरिताधरा ॥ अद्ययुद्धंकरिष्यामिशच्यासार्द्धमहंप्रभो ॥ २८ ॥ तच्छ्रुत्वाप्रहसन्कृष्णोदत्त्वातस्यैसुदर्शनम् ॥ स्थापयि त्वासुपर्णेचजग्राहद्युतरुंस्वयम् ॥ २९ ॥ यदाहरिप्रियाक्रुद्धायुद्धंकर्तुंसमागता ॥ तदासर्वेब्रह्मांडेचासीत्कोलाहलोमहान् ॥ ३० ॥

बोली कि, हाय ! इकले कृष्णने तुमको संग्राममें जीतलियोहो ॥ २४ ॥ तुम इतनी देवसेनासहित हो यासो हे देवराज ! तेरे या बलको धिक्कार है अब मैं संग्राममें जायके कृष्णको जीतके कल्पवृक्षको छुड़ायके लाऊंगी ॥ २५ ॥ यामें संदेह नहीं है हे सुराधम ! या मेरे पराक्रमको तू देख । श्रीगर्गजी कहैहैं कि इतना कहिके अत्यंत कुपित हैके शची बहुत जलदी पालकीमें बैठके ॥ २६ ॥ सब देवगणनको संग लैके युद्ध करनेकी जाकी इच्छा सो आई तब श्रीकृष्ण शचीको आई देखके युद्ध करवेको मन नहीं करतेभये ॥ २७ ॥ तब सत्यभामाके क्रोधसों होठ फड़कनलगे और कृष्णसो बोली कि महाराज शचीते आज मैं युद्ध करोंगी ॥ २८ ॥ ये सुनके भगवान् हँसते २ अपनो दिव्यरूप सुदर्शन देके पारिजातको गरुडपे धर आप वृक्षको पकर बैठगये ॥ २९ ॥ ऐसे जब सत्यभामाको कुपित हैके युद्ध करवेको आई देखी तब ब्रह्मांडमें सर्वत्र बडो

कोलाहल भयो ॥ ३० ॥ और महेंद्रादिक सब देवता भयभीत हैगये सोंही तो दौरेभये श्रीबृहस्पतिजी इंद्रके भेजेभये आये ॥ ३१ ॥ आवतेई युद्ध करवेकी इच्छा जाके या शचीको रोकतेभये और बृहस्पतिजीने कही कि हे शचि ! तुम बहुत बुद्धिदेनवारे मेरे वचनको सुनो॥ ३२॥देखो ये कृष्ण जो हैं सो साक्षात् भगवान् हैं और सत्यभामा जो है ये साक्षात् लक्ष्मी है हे इंद्रप्रिये ! भलो तू इनसो कैसें युद्ध करैगी ॥ ३३ ॥ यासो या अवज्ञाको छोड़के हे ऋभुक्षे ! (इंद्राणि) तू घरको जा और पारिजातको सत्यभामाके लिये देके सब देवतानको भयसो रक्षाकर॥ ३४॥ जाके भयते पवन चलैहै जाके भयते अग्नि जलावैहै जाके भयते मृत्यु मारैहै जाके भयते सूर्य प्रकाश करैहै ॥ ३५॥ जाको ब्रह्मा, शिव और इंद्र डरैहैं या कृष्णको तू नहीं जानेहै जो भौमासुरको मारके हालही आयोहै ॥ ३६ ॥ श्रीगर्गजी बोले कि, या प्रकार बृहस्पतिजीके कहे वचनको शची सुनके भामाको और कृष्णको नमस्कार कर लज्जित हैके अपनी निंदा

भयंप्राप्तुःसुराःसर्वेविधिशक्रादयोनृप ॥ तदैवगीष्पतीराजन्नाययौशक्रचोदितः ॥३१॥ आगत्यवारयामासयोद्धुकामांपुलोमजाम् ॥ ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ ॥ शचिशृणुमदीयंवैवचनंबहुबुद्धिदम् ॥ ३२ ॥ कृष्णस्तुभगवान्साक्षात्सत्यभामाचधीमती ॥ तयासार्द्धंकथंयुद्धंकरिष्यसिहरिप्रिये ॥ ३३ ॥ तस्मादवज्ञांसंत्यज्यऋभुक्षेत्वंगृहंव्रज ॥ सत्यायैपारिजातंचदत्त्वारक्षसुरान्भयात् ॥ ३४ ॥ यद्भयाद्वातिश्वसनोवह्निर्दहतियद्भयात् ॥ भयाद्यन्मृत्युश्चरतिप्रभोव्रजतियद्भयात् ॥ ३५ ॥ यस्माद्बिभेतिब्रह्मावैकपर्दीचपुरंदरः ॥ तंनजानासिकृष्णंवैभौमंहत्वासमागतम् ॥ ॥३६॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वाशचीवाक्यंभामांकृष्णंचलज्जया ॥ नत्वाजगामसदनमात्मानंचविगर्हयन् ॥ ३७ ॥ ततःशक्रंनमंतंचव्रीडितंवीक्ष्यमाधवः ॥ उवाचशक्रमाव्रीडांगतेचभिदुरेकुरु ॥ ३८ ॥ द्वंद्वयुद्धेहिचैकस्यभविष्यतिपराजयः ॥ इतिश्रुत्वाचप्रोवाचवचनंपाकशासनः ॥ ३९ ॥ ॥ इंद्रउवाच ॥ ॥ यस्मिञ्जगत्सकलमेतदनादिमध्येयस्माद्यतश्चनभविष्यतिसर्वभूतात् ॥ तेनोद्भवप्रलयपालनकारणेनव्रीडाकथंभवतिदेवनिराकृतस्य ॥ ४० ॥ सकलभुवनसूतेर्मूर्तिरन्यातिसूक्ष्माविदितसकलवेद्यैर्ज्ञायतेयस्यनान्यैः ॥ तमजमकृतमीशंशाश्वतंस्वेच्छयैनंजगदुपकृतिमर्त्यंकोविजेतुंसमर्थः॥४१॥इत्युक्त्वासत्यभामांवैशक्रस्तूष्णींबभूवच ॥ ततःप्रहस्यभगवान्प्राहगंभीरयागिरा ॥४२॥

आपही करती अपने घरको चलीगई ॥ ३७ ॥ तदनंतर लज्जित हैके प्रणाम करते इंद्रको देख भगवान् बोले कि, हे इन्द्र ! वज्रके गयेपै तुम लज्जा मत करो ॥ ३८ ॥ देखो दोयनकी लडाईमे एकको तो पराजय होयही है यह सुनके इन्द्र यह वचन बोलो ॥ ३९ ॥ इन्द्र बोलो कि, न जाको आदि न मध्य और न जाको अन्त और जामे ये सब जगत् है और जाते ये सब जगत् होयहै और सृष्टि, पालन, प्रलयको कारण है ताते हारवेकी मोकूँ भलो लाज क्यों होयगी ॥ ४० ॥ जो सकलभुवनकी उत्पत्तिको स्थान है जाकी अति सूक्ष्म मूर्ति औरही है और जे जानवे लायकको जानेहै वेही जाकी मूर्तिको जानसकैहैं अन्य कोई जाकी मूर्तिको नहीं जानसके है और जगतको उपकार करनवारो है वाको जीतवेको भलो कौन समर्थ हैसके है जो अज है स्वतःसिद्ध है ईश्वर और अनादिसिद्ध है ॥४१॥ इतनी कहिके सत्याभामाते इन्द्र चुप हैगयो तब भगवान् हँसके गंभीरवाणीसो ये बोले॥४२॥

कि, देखो देवराज तुम देवतानके स्वामी हो और हम भूमिके रहनवारहें यासों ये हमारो [illegible] या पारिजातको उचित स्थानपर लेजाउ याको मैंने सत्यभामाके कहेते ग्रहण कियो है ॥ ४४ ॥ और तुमने मेरे ऊपर जो वज्र चलायो वाकूं तुम ग्रहण करो हे शुनासीर ! ये तुमारो वज्र वैरीनको निवारण करनवारो है ॥ ४५ ॥ ये सुनके इन्द्र बोलो कि, हे कृष्ण ! जो तुम कहो हो कि, मैं मनुष्य हो सो मोको आप मोह करौहो कहा ? हम सूक्ष्म बातके जाननवारे हैं पर तुम जो जगत्के नाथ हो तिनको नही जाने हैं ॥ ४६ ॥ हे नाथ ! जो तू है सो है परन्तु या जगत्की रक्षा करवेको आपकी स्थिति है या विश्वके काँटेके निकासवेको हे गरुडध्वज ! आपकी विश्वमें स्थिति है ॥ ४७ ॥ या पारिजातको द्वारिकामें ले जाउ पर जब आप मनुष्यलोकको परित्याग करोगे तब ये वृक्ष मनुष्यलोकमें

भवान्देवाधिपःशक्रवयंभूमिनिवासिनः ॥ क्षंतव्यमपराधंतद्भवताचकृतंमया ॥ ४३ ॥ भोःशक्रपारिजातश्चनीयतामुचितास्पदम् ॥ गृहीतोयंमयासत्यभामावचनकारणात् ॥ ४४ ॥ गृहाणकुलिशंचेदंप्रहितंयत्त्वयामयि ॥ तवैवास्त्रंशुनासीरतद्वैरिषुनिवारणम् ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ इन्द्रउवाच ॥ ॥ कृष्णकिंमोहयसिमांनरोहमितिकिंवद ॥ जानीमस्त्वांजगन्नाथंनतुसूक्ष्मविदोवयम् ॥ ४६ ॥ योसिसोसिजगत्त्राणप्रवृत्तौनाथसंस्थितिः ॥ विश्वस्यशल्यनिष्कर्षंकरोषिगरुडध्वज ॥ ४७ ॥ अयंचनीयतांकृष्णपारिजातःकुशस्थलीम् ॥ नरलोकेत्वयात्यक्तेनायंसंस्थास्यतेभुवि ॥ ४८ ॥ आगमिष्यतिगोविन्दस्वयमेवत्रिविष्टपम् ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ तच्छ्रुत्वावज्रिणेवज्रंदत्त्वासोप्याजगामकौ ॥ ४९ ॥ द्वारकांद्वारकानाथोस्तूयमानःसुरेश्वरैः ॥ उपाध्मायततःकंबुंसंस्थितोद्वारकोपरि ॥ ५० ॥ उत्पादयामासमुदंद्वारकावासिनांनृप ॥ सुपर्णादवतीर्याथकृष्णोभामासमन्वितः ॥ ५१ ॥ पारिजातंचनिष्कूटेस्थापयामासलीलया ॥ जुष्टंसुरद्रुमंकृष्णोभ्रमरैःस्वर्गपक्षिभिः ॥ ५२ ॥ अथैकस्मिन्मुहूर्तेवैमाधवेमाधवःस्वयम् ॥ उवाहराजकन्याश्चपृथग्गेहेषुधर्मतः ॥ ५३ ॥ षोडशस्त्रीसहस्राणिशताधिकानिचाष्टच ॥ तावंतिचक्रेरूपाणिपरिपूर्णतमोहरिः ॥ ५४ ॥

नहीं रहेगो ॥ ४८ ॥ जा दिन आप मनुष्यलोकको त्यागोगे वाही दिन ये वृक्ष स्वर्गमें अपने आप आय जायगो गर्गजी कहेहैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र इंद्रके कहेको सुनके इन्द्रको वज्र देके आपे द्वारिकापुरीको चले आये ॥ ४९ ॥ जब द्वारकानाथ द्वारकाको आये तब देवतानने स्तुति करी जब द्वारकाको चले तब शंख बजायो ॥ ५० ॥ हे नृप ! तब द्वारिकानिवासीनके मनमें हर्षको उत्पादन करतेभये तदनन्तर सत्यभामाजी सहित श्रीकृष्ण गरुडपेतें उतरके ॥ ५१ ॥ वा पारिजातके वृक्षको सत्यभामाजीके निष्कुट (मंदिरकी बगीचा) में लगाय देतभये जो वृक्ष स्वर्गके निवासी भ्रमरपक्षिनसों सेवित है ॥ ५२ ॥ तदनंतर वैशाखके महीनामें एकदिन एकही उत्तम लग्नवारे शुभमुहूर्तमें स्वयं श्रीकृष्ण पृथक् २ घरनमें उन समग्र राजकन्यानको पाणिग्रहण करतेभये ॥ ५३ ॥ वा समय जो अष्टोत्तराधिक सहस्र कन्या हीं उतनेही रूप परिपूर्णतम श्रीकृष्ण धारण करतेभये ॥५४॥

अमोघ है गति जिनकी ऐसे श्रीकृष्णकी जितनी भार्या हीं तिनमें एकएकमें दशदश पुत्र उत्पन्न किये ॥ ५५ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डे भाषाटीकायां पारिजातान यनं नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ गर्गजी बोले कि अब मैं फिर तेरे आगे संक्षेपते कृष्णके यशको कहौंगो जे श्रीकृष्णने रुक्मिणीके संगमें अद्भुत हास्य कियो हो ॥ १ ॥ फिर अनिरुद्धके विवाहमे बलदेवजीके हाथते रुक्मीको वध करायो फिर ऊषाकी स्वमकथामें चित्रलेखा करके कृष्णके नातीको हरनो ॥ २ ॥ और बंधन फिर बाणासुरको और यादवनको संग्राम फिर श्रीकृष्णको और शिवजीको संग्राम तामें ज्वरनकी स्तुति ॥ ३ ॥ बाणासुरबाहुनके छेदन फिर रुद्रकी स्तुति बाणासुरकी रक्षाके लिये, फिर ऊषाकी प्राप्ति और नृगको आख्यान फिर बलदेवको व्रजमें आगमन ॥ ४ ॥ गोपीनको विलाप और गोपीनकरके बलदेवजीकी स्तुति फिर यमुनाजीको खैंचनो और काशीपति तथा

एकैकस्यांदशदशकृष्णोजीजनदात्मजान्॥ यावत्यआत्मनोभार्याअमोघगतिरीश्वरः ॥५५॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डेपारिजातान
यनंनामपञ्चमोऽध्यायः ॥५॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ पुनस्तेकथयिष्यामियशःसंक्षेपतोहरेः ॥ चकारहास्यंभगवान्रुक्मिण्यासहचाद्भुतम् ॥१॥
अनिरुद्धविवाहेचावधीद्रामात्रुक्मिणम् ॥ ऊषास्वप्नकथाचित्रलेखयाहरणंहरेः ॥ २ ॥ पौत्रस्यबन्धनंचापिबाणयादवसंयुगः ॥ कृष्णशंकर
योर्युद्धेज्वरसंस्तवनंततः ॥ ३ ॥ बाणबाहुच्छिदीरुद्रस्तुतिर्बाणस्यरक्षणे ॥ ऊषाप्राप्तिर्नृगाख्यानंबलस्यचव्रजागमम् ॥ ४ ॥ गोपीविलापोरा
मस्यस्तुतिर्गोपीभिरेवच ॥ यमुनाकर्षणंकाशीपतिपौंड्रकघातनम् ॥ ५ ॥ कृत्योत्पत्तिर्दाहनंचकाश्याःकपिवधस्ततः॥ सांबस्यबन्धनेरामवि
क्रमोगजसाह्वये ॥ ६ ॥ उग्रसेनराजसूयेजघानशकुनिंहरिः ॥ नारदेनहरेर्लीलादर्शनंगृहमेधिनाम् ॥ ७ ॥ आह्निकंवासुदेवस्यराजदूतेननेस्तु
तिः ॥ इन्द्रप्रस्थेचगमनमुद्धवेनचयादवैः ॥ ८ ॥ जरासन्धंचभीमेननिजघानगिरिव्रजे ॥ सहदेवाभिषेकंचराजभिश्चकृतास्तुतिः ॥ ९ ॥
राजसूयेहरेःपूजाशिशुपालवधस्तथा ॥ दुर्योधनाभिमानस्यभंगःप्रद्युम्नशाल्वयोः ॥ १० ॥ युद्धंत्रिनवरात्रंचकृष्णस्यागमनंततः ॥ शाल्व
स्यदन्तवक्रस्यतद्भ्रातुर्लीलयावधः ॥ ११ ॥ ततोगजाह्वयेराजन्दुर्द्यूतेनचकौरवैः ॥ विनिर्जितोभ्रातृयुक्तोसभार्यस्तुयुधिष्ठिरः ॥ १२ ॥

पौंड्रकको मरवामनो ॥ ५ ॥ कृत्याकी उत्पत्ति काशीपुरीको जलानो द्विविद नामक बंदरको वध तदनंतर सांबके बंधनमें हस्तिनापुरमे जायके बलदेवजीको पराक्रम ॥ ६ ॥ फिर उग्रसेनके राजसूयमें कृष्णने शकुनिको मारौ सो, फिर नारदजी आयके गृहस्थीनकी लीलानको देखनो ॥ ७ ॥ फिर श्रीकृष्णको आह्निक और सभामें आयके राजानके दूतकी राजानकी औरते अर्जी उद्धवकी सलाहसो यादवनको लेके इंद्रप्रस्थको कृष्णको आमनो ॥ ८ ॥ फिर भीमसेनके हाथन ते गिरिव्रजमें जायके जरासंधको वध करामनो और सहदेवको राज्य देनो और राजनकी स्तुति ॥ ९ ॥ राजासूययज्ञमें कृष्णको पूजन और शिशुपालको वध फिर दुर्योधनके अभिमानको खंडन होनो फिर प्रद्युम्नको शाल्वके संग सत्ताईस दिन ताईं युद्ध फिर श्रीकृष्णको आमनो आयके शाल्वको दंतवक्रको और विदूरथको लीला करके वध ॥ १० ॥ ११ ॥ तदनंतर हस्तिनापुरमें हे राजन् !

कौरवनकरके भायो और भयानसमेत दुर्द्यूतमें युधिष्ठिरको हारनो ॥ ... ॥ फिर वनमें निवास किये दुःखम् ...
निवास करनो ॥ १३ ॥ तब दुर्योधनको आनंदसो राज्य करनो और युधिष्ठिरके वन जानेपै प्रजानको दुःख पामनो ॥ १४ ॥ फिर वनमें निवास किये दुःखम् ... सो वो सब वृत्तांत
पांडवनते मिलके एक दिन बलदेवजीने आश्वासन कियो ॥ १५ ॥ फिर पांडवनको देखके कृष्णचंद्र द्वारकामें आयगये और उग्रसेनकी सुधर्मा सभामें वो सब वृत्तांत
निवेदन कियो ॥ १६ ॥ ताकों सुनके सब यादव विस्मित हैके बोले कि अरे देखो या धृतराष्ट्रने कैसो कियो ॥ १७ ॥ जो कपटके जूआते जीतके अधर्मते पांडवनको
घरते निकासे सो राज्यमें इच्छावारे कौरव नाशको प्राप्त होयँगे ॥ १८ ॥ और दुर्योधनसो लेके सब संपत्तिको भगवान् पांडवनको देयँगे गर्गजी कहैहैं कि या प्रकार

॥ प्रजास्तंना
वनंजगामसंस्थाप्यपृथांचविदुरगृहे ॥ गत्वारण्येनिवासंवैचकारबहुभिर्दिनैः ॥ १३ ॥ ततश्चपालयामासमहींदुर्योधनोमुदा ॥ १४ ॥ इ
भ्यनन्दन्स्मपांडुपुत्रेगतेसति ॥ १४ ॥ अरण्येवर्तमानान्वैपांडवान्दुःखकर्शितान् ॥ मिलित्वाश्वासयामासह्यनंतश्चैकदाहरिः ॥ १५ ॥ ॥
ष्ट्वाथपांडवान्कृष्णोह्याजगामकुशस्थलीम् ॥ उग्रसेनसुधर्मायांशशंसचेष्टितंचतत् ॥ १६ ॥ तच्छ्रुत्वायादवाश्चप्रोचुःसर्वेहिविस्मिताः ॥ ॥
यादवाऊचुः ॥ ॥ किंकृतंधृतराष्ट्रेणदीनाभ्रातृसुताअहो ॥ १७ ॥ दुर्द्यूतेनविनिर्जित्याधर्मान्निष्कासितागृहात् ॥ स्वाधर्मेणविनश्यंति
कौरवाराज्यलोलुपाः ॥ १८ ॥ पांडवेभ्यस्तुभगवांस्तस्माद्दास्यतिसंपदम् ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वायादवानांवाक्यंचमधुसूद
नः ॥ १९ ॥ आययौवैस्वभवनंसायंकालेनृपेश्वरः ॥ आगतंस्वात्मजंवीक्ष्यनमंतंदेवकीमुदा ॥ २० ॥ दत्त्वाशिषंभोजनंचकारयामासवै
सती ॥ २१ ॥ ततःसचाययौकृष्णःस्वस्त्रीणांमंदिराणिच ॥ प्रियाभिपूजितस्तत्रचकारशयनंकिल ॥ २२ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहिताया
मश्वमेधखण्डेश्रीकृष्णचरित्रवर्णनंनामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ देवर्षिश्चैकदाराजन्दृष्ट्वारामंचकेशवम् ॥ स्ववीणांवादय
न्कृष्णगाथांगायन्समाययौ ॥ १ ॥ ब्रह्मलोकात्सर्वलोकान्पश्यन्भास्करसन्निभः ॥ साकंतुंबुरुणापिंगजटाभारेणशोभितः ॥ २ ॥

नारदजी वीणा बजावते कृष्णगुणानुवादकथाको गावते ॥ १ ॥ मार्गमें अनेक लोकनकी सेल करते सूर्यके समान जटानके भारसो सुशोभित तुंबुरुगंधर्वको संग लिये ब्रह्मलोकको
शयन करतेभये ॥ २२ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डे भाषाटीकायां श्रीकृष्णचरित्रवर्णनं नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ श्रीगर्गजी कहैहैं कि हे राजन् ! एकदिन कृष्णबलरामको देखकर
श्रीकृष्णको देख ॥ २० ॥ आशीर्वाद देके सती देवकी श्रीकृष्णको भोजन करातीभई ॥ २१ ॥ तदनंतर श्रीकृष्ण अपनी पत्नीनके मंदिरनको पधारे तब पत्नीनने पूजन कियो फिर आप
भगवान् यादवनके वाक्यको सुनके ॥ १९ ॥ सायंकालके समय हे नृपेश्वर ! अपने घरको आये देवकीजीको बड़े आनंदसो प्रणाम करनलगे तब देवकीजी प्रणाम करते

पधारे ॥ २ ॥ कुछकुछ श्याम मृगकेसे जाके नेत्र हैं केशरियाचंदनकी जिनके सौर लगीरहीहै पीरे रंगको पीतांबर एक ओढेहैं एक पहरेहैं ॥ ३ ॥ रंगवल्ली और मालासो विराजमान हैं व्रजस्त्रीनके चंदनसों वृद्धभयो पंद्रह अब्द (मेघ) न करके मंडित अतिशोभित भयो ॥ ४ ॥ ता नारदको उग्रसेन राजा आयो देखके सुधर्मासभामें आसनपै बैठेहे सो उठके विनको दंडवत् प्रणाम कर बैठवेको सिंहासन देतेभये ॥ ५ ॥ फिर दोनों पाँवनको धोयके पूजनकर फिर उत्तम पाँवधोवनके पानीको माथेपै डारकर ये बोले ॥ ६ ॥ उग्रसेन बोले कि नारदजी आपके आनेसे आज मेरो जन्म सफल भयो मेरो घर और मेरी आत्मा आपके दर्शन करवेसो सफल भयो ॥ ७ ॥ भगवान् वा नारद महात्माको मेरो प्रणाम है जो ऋषीनमें प्रवर (श्रेष्ठ) हैं कामक्रोधसों रहित हैं ॥ ८ ॥ महाराज आपको आमनो कैसे भयोहै मेरे ऊपर आज्ञा देउ या उग्रसेनके वचनको सुनके देवतानकोसो

रंगवल्लीमालयाचव्रजस्त्रीचंदनेनच ॥ वृद्धःपंच किंचिच्छ्यामोमृगाक्षश्चकाश्मीरतिलकैर्वृतः ॥ पीतेनधौतवस्त्रेणतथापीतांबरेणच ॥ ३ ॥ दशाब्दैश्चमंडितःशुशुभेबहु ॥ ४ ॥ दृष्ट्वातमागतंराजाशक्रसिंहासनेस्थितः ॥ सुधर्मायांसचोत्थायनत्वासिंहासनंददौ ॥ ५ ॥ तदंघ्रीचावनिज्याथकृत्वापूजनमुत्तमम् ॥ तज्जलंमस्तकेधृत्वाचोग्रसेनस्तमब्रवीत् ॥ ६ ॥ ॥ उग्रसेनउवाच ॥ ॥ अद्यमेसफलंजन्मसफलंसदनंचमे ॥ अद्यमेसफलश्चात्मादेवर्षेतवदर्शनात् ॥ ७ ॥ नमस्तस्मैभगवतेनारदायमहात्मने ॥ कामक्रोधविहीनायऋषीणांप्रवरायच ॥ ८ ॥ किमर्थमागतोसित्वमाज्ञांकुरुममोपरि ॥ निशम्यवचनंतस्यऋषिर्निर्जरदर्शनः ॥ ९ ॥ उवाचनृपशार्दूलंमनसानोदितोहरेः ॥ ॥ नारद उवाच ॥ ॥ यादवेंद्रमहाराजधन्यस्त्वंपृथिवीपते ॥ १० ॥ त्वद्भक्त्याकौनिवसतिबलेनसहकेशवः ॥ राजसूयःक्रतुवरःपुरामह्यचनात्वया ॥ ११ ॥ कृतःश्रीकृष्णकृपयाद्वारकायांसुखेनच ॥ येनत्रिलोकेतेकीर्तिर्नृपविस्तारिताभुवि ॥ १२ ॥ राजसूयाश्वमेधौचकठिनौमंडलेश्वरैः ॥ हरिभक्तस्यराजेंद्रसुलभौचक्रवर्तिनः ॥ १३ ॥ द्वयोर्मध्येकृतश्चैकोराजसूयस्त्वयानृप ॥ तथायुधिष्ठिरेणापिकृतःकृष्णाज्ञयाततः ॥ १४ ॥ द्वापरांतेभारतेतुहयमेधःक्रतूत्तमः ॥ नकृतःकेनराज्ञापिमुक्तिदस्त्वघनाशनः ॥ १५ ॥

जिनको दर्शन ऐसे श्रीऋषिनारदजी ॥ ९ ॥ श्रीभगवान्ने जिनको मनसों प्रेरणा करी सो राजशार्दूल उग्रसेनजीते ये बोले कि हे महाराज ! हे यादवेंद्र ! आप या भूतलमें धन्य हौ हे पृथिवीपते ! ॥ १० ॥ तुमारेंही भक्तिके वशभये भगवान् भूतलमें निवास करैहै और पहले मेरे कहेते तुमने यज्ञनमें मुख्य राजसूय नामको यज्ञ ॥ ११ ॥ श्रीकृष्णकी कृपाते सुखपूर्वक द्वारकामें कियो जा यज्ञसो हे नृप ! आपकी ये कीर्ति तीनों लोकनमें भूमिमें फैली ॥ १२ ॥ देखो उग्रसेनजी, राजसूय और अश्वमेध ये दोनों यज्ञ मंडलेश्वरराजानको करने कठिन हैं ये दोनो यज्ञ हरिभक्त होय और चक्रवर्ती होय वाको करने सुगम होयहै ॥ १३ ॥ सो इन दोनों यज्ञनमेंते राजसूय यज्ञको तो हे नृप ! तुम करिहीचुकेहो और कृष्णकी आज्ञाते युधिष्ठिरहू करचुकोहै ॥ १४ ॥ और काऊने द्वापरके अंतमें या भारतखंडमें यज्ञनमें उत्तम अश्वमेध नहीं कियोहै ये अश्वमेध पापनको नाश करनवारो और

मोक्षको देनवारो है ॥ १५ ॥ जो द्विजको मारनवारो विश्वको मारनवारो गऊको मारनवारो होय वोहू अश्वमेध करेते पवित्र होयहै यासो सब यज्ञनमें अश्वमेधको करवो उत्तम है ऐसे कहेहैं ॥ १६ ॥ और हे नृपश्रेष्ठ ! जो कोई निष्काम हैके अश्वमेधको करेहै वो गरुडध्वजके लोकमें जायहै जो लोक बडे २ सिद्धनकोहू दुलभ है ॥ १७ ॥ ये नारदजीके कहेको उग्रसेन सुनके अश्वमेधयज्ञके करवेको मन करतभये हे नृप ! ॥ १८ ॥ इतनेमेंही उग्रसेनने दाऊजीसमेत कृष्णको आयो देखके पूजन कियो आसनपै दोनोंनको बैठो देखके नारदसहित ये बोले ॥ १९ ॥ उग्रसेन बोले कि हे देव ! हे देव ! हे जगन्नाथ ! हे जगदीश जगन्मय ! हे वासुदेव ! हे त्रिलोकेश ! मेरे कहेको आप सुनो ॥ २० ॥ महाराज देखो मेरे बेटा या कंसने विना अपराधके हजारन बालक मरवाये असुरनके हाथनसो ॥ २१ ॥ सो हे गोविंद ! वा पापी मेरे पुत्र कंसकी मुक्ति कैसो होय ये आप मोकूं बताओ और बालघाती ये मेरो बेटा कंस कौनसे लोकनमें गयो होयगो सो मेरे आगे आप कहो ॥ २२ ॥ हे जगदीश्वर ! वा कंसके पापसो मैंभी भयभीत हूं क्योंकि पुत्रके पापसो पिताभी

द्विजहाविश्वहागोघ्नोवाजिमेधेनशुद्ध्यति ॥ तस्माद्वरंचयज्ञानांहयमेधंवदंतिहि ॥ १६ ॥ निष्कारणंनृपश्रेष्ठवाजिमेधंकरोतियः ॥ व्रजेत्सुपर्णकेतोःससदनंसिद्धदुर्लभम् ॥१७॥ इतिदेवर्षिवचनमुग्रसेनोनिशम्यच ॥ हयमेधंयज्ञवरंकर्तुंचक्रेमतिंनृप ॥ १८ ॥ तदैवसहरामेणकृष्णंवीक्ष्यागतंनृपः ॥ पूजयित्वासनेस्थाप्यसाकंचऋषिणाब्रवीत् ॥ १९ ॥ ॥ उग्रसेनउवाच ॥ ॥ देवदेवजगन्नाथजगदीशजगन्मय ॥ वासुदेवत्रिलोकेशशृणुष्ववचनंमम ॥ २० ॥ मत्पुत्रेणचकंसेनबालकाश्चसहस्रशः ॥ विनापराधेनहरेमारिताश्चमहासुरैः ॥ २१ ॥ तस्यमुक्तिश्चगोविंदकथंभवतिपापिनः ॥ कस्मिँल्लोकेगतः कंसोबालघातीवदस्वमे ॥ २२ ॥ तस्यपापेनाहमपिभीतोस्मिजगदीश्वर ॥ पुत्रस्यपापेनपितानरकेपततिध्रुवम् ॥ २३ ॥ पितुःपापेनपततिनिरयेहितथासुतः ॥ तस्माच्चकिंकरिष्येहमुपायंवदमाधव ॥ २४ ॥ कथितंनारदेनाद्यतच्छृणुष्वजगत्पते ॥ विप्रहाविश्वहागोघ्नोहयमेधेनशुध्यति ॥ २५ ॥ तस्मिन्यज्ञेमनोमेस्तियदिचाज्ञांप्रदास्यति ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वासुदामदनमोहनः ॥ २६ ॥ मनसिप्राहसंपश्यन्धरांभारेणपीडिताम् ॥ अहोमयातुबहुशोधराभारोवतारितः ॥ २७ ॥ तथापिसतिकौमध्येसोश्वमेधेननश्यति ॥ नाहंहनिष्येशत्रून्वैस्वहस्तेनमृधांगणे ॥२८॥ इतिप्रतिज्ञातुकृता विदूरथवधेमया ॥ तस्माच्चप्रेषयिष्यामिस्वपुत्रान्यादवांस्तथा॥२९॥

अवश्य नरकमें पडैहै ॥ २३ ॥ तैसेही पिताके पापसो पुत्र नरकमें जायहै यासो हे माधव ! मैं कहा उपाय करौ सो कहो ॥ २४ ॥ हे जगत्पते ! जो आज नारदजीने मोसो कहीहै सो सुनो, विप्रहा, विश्वहा और जो गऊको मारनवारो होय वोभी अश्वमेधके करवेसो पवित्र हैजायहै ॥ २५ ॥ सो मेरोहू अश्वमेधयज्ञ करवेकी इच्छा है जो आप आज्ञादेउ तो, गर्गजी कहेहैं कि ऐसे उग्रसेनके कहेको सुनके मदनमोहन भगवान्ने बडे आनंदसो ॥ २६ ॥ भूमिको बोझसो पीडित जानके मनमें विचार कियो कि मैंने कईवेर धरतीको बोझ उतारो ॥ २७ ॥ तोहू वो भूमिमें भार हैही सो भार या अश्वमेध करवेसो नाश होयगो क्योंकि मैंने राजा विदूरथके मारवेके समयमें प्रतिज्ञा कीनीहै कि अब मैं अपने हाथसो रणांगणमें शत्रूनको नही मारोंगो यासो अपने पुत्रनको और यादवनको सब भूमिके जीतवेको अश्वमेधके मिषसो भेजोंगो हे वज्रनाभे ! या प्रकार

विष्वक्सेन भगवान् विचारके सुधर्मासभामें उग्रसेनसो बोले कि सुनो नानाजी मेरे हाथते मरो जो कंस हो सो अद्भुत मेरे वैकुंठमंदिरको गयो ॥ २८ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ सो अब मेरे समानरूप हैके नित्य वैकुण्ठमें निवास करेहै तैसेही हे राजेन्द्र ! आपहूँ मेरे दर्शनसो विपाप हो ॥ ३२ ॥ तथापि आप यज्ञके लिये हे भूपते ! अश्वमेधयज्ञको करो जा यज्ञते पृथिवीमें आपकी बडीभारी कीर्ति विख्यात होयगी ॥ ३३ ॥ गर्गजी कहें हें कि हे नृप ! ऐसे अक्लिष्टकर्मवारे श्रीकृष्णके कहेको सुनके उग्रसेन बडे प्रसन्न हैके यह बोले ॥ ३४ ॥ कि हे देव ! आज में यज्ञोत्तम जो अश्वमेध है ताय करूँगो और हे गोविन्द ! वो यज्ञ मेरो आपकी कृपासो शीघ्रही पूर्ण होयगो ॥ ३५ ॥ परंतु आप वा अश्वमेधकी सब विधिको विस्तारसों कहो ये उग्रसेनके कहेको सुनके भगवान

जेतुंवसुंधरांसर्वांहयमेधमिषेणच ॥ इतिवार्तांवज्रनाभेविष्वक्सेनोविचार्यच ॥ ३० ॥ सुधर्मायांचप्रहसन्नुग्रसेनमुवाचवै ॥ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ॥ मयाहतोमहाराजकंसोवैकुंठमंदिरम् ॥ ३१ ॥ गतोभूत्वाममाकारःनित्यंवसतितत्रवै ॥ तथात्वमपिराजेंद्रविपापोदर्शनान्मम ॥ ३२ ॥ तथापिहयमेधंत्वंयशोर्थंकुरुभूपते ॥ यज्ञेनतेमहत्कीर्तिःपृथिव्यांचभविष्यति ॥ ३३ ॥ इतितत्कथितंश्रुत्वाकृष्णस्याक्लिष्टकर्मणः ॥ उवाचपरमंवाक्यमुग्रसेनोमुदान्नृप ॥ ३४ ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ अद्यदेवकरिष्येहमश्वमेधंक्रतूत्तमम् ॥ सभविष्यतिशीघ्रंवैगोविंदकृपयातव ॥ ३५ ॥ हयमेधस्यचविधिंसर्वमेब्रूहिविस्तरात् ॥ इतिश्रुत्वाचतद्वाक्यमवोचद्विष्टरश्रवाः ॥ ३६ ॥ हयमेधविधिंपृच्छदेवर्षिंनारदंप्रति ॥ सतवाग्रेचवदतिसर्वंज्ञातायदूद्वह ॥ ३७ ॥ इतिवाक्यंहरेःश्रुत्वायदुराजोमुदान्वितः ॥ सभायांसंस्थितंराजन्देवर्षिंनिजगौनृप ॥ ॥ ३८ ॥ तुरंगःकीदृशोभाव्यःकतिसंख्याद्विजोत्तमाः ॥ दक्षिणाकीदृशीब्रह्मन्वदमेकीदृशंव्रतम् ॥ ३९ ॥ उग्रसेनस्यवचनमाकर्ण्यदेवदर्शनः ॥ स्मयमानइवप्राहप्रीत्याकृष्णंविलोकयन् ॥ ४० ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ चंद्रवर्णंरक्तमुखंपीतपुच्छंमनोहरम् ॥ सर्वांगसुंदरंदिव्यंश्यामकर्णंसुलोचनम् ॥ ४१ ॥ प्रवदंतिमहाराजयज्ञेस्मिन्हयमीदृशम् ॥ मधुमासेपूर्णिमायांमोच्योयंघोटकोनृप ॥ ४२ ॥

विष्टरश्रवा आप बोले ॥ ३६ ॥ सुनो नानाजी आप नारदजीसो अश्वमेधकी विधिको पूछो ये सब विधिको जानेंहें सो वे सब विधि आपको बतामेंगे ॥ ३७ ॥ कृष्णके ये वचन सुनके उग्रसेन बडे प्रसन्न हैके और सभामें बैठे नारदजीसो हे नृप ! ये बोले ॥ ३८ ॥ उग्रसेनजी बोले कि नारदजी ! कैसो तो घोडा होयहै और कितनी गिनती यज्ञ करानेवाले ब्राह्मण होने चाहिये कैसी दक्षिणा होनी चाहिये और कौन प्रकारसो धारण करनो चाहिये ॥ ३९ ॥ उग्रसेनजीके या वचनको सुनके श्रीनारदजी मंद मुसक्यान करते और श्रीकृष्णको दर्शन करते ये बोले ॥ ४० ॥ नारदजी बोले सुनो उग्रसेनजी चंद्रमाकोसो श्वेत तो जाको रंग, पीत पुच्छ, लाल मुख, श्याम जाके कान सुन्दर जाके नेत्र, दिव्य सब जाके अङ्ग सुन्दर ऐसो घोडा हे महाराज ! जब होय तब वो अश्वमेधयज्ञके कामको होयहै ऐसे यज्ञके जाननेवारेनमें श्रेष्ठजन कहेंहें और चैत सुदी पूनोके दिन घो

घोडा छोडनो चाहिये ॥४१॥ ४२ ॥ महावीर पुरुष वाकी एकवर्षतक रक्षा करै जबतक वो घोडा अपने नगरमें लौटिके न आवै ॥ ४३ ॥ तबतक बडो वीर धैर्यकरके युक्त वा घोडेके पास रहै तबतक बडे यत्नते कर्ता रहै और जहाँजहाँ वो घोडा मूते या लीदकरै तहाँतहाँ॥४४॥ब्राह्मणनके द्वारा अग्निमें हवन करै और एक हजार गोदान करै और सुवर्णको पत्र लिखके माथेमें बाँधे वामें अपनो नाम अपने बलसो चिह्नित करके लिखे ॥ ४५ ॥ और वा पत्रमें ये लिखै कि भाई सबरे राजाहौ सुनौ कि ये घोडा हमने छोडाहै ॥ ४६ ॥ जो कोई राजा बलवान् होय वो या श्यामकर्ण घोडेके रक्षा करनेवाले जबरन जीतेंगे ॥४७॥ और या यज्ञमें बीस हजार ब्राह्मण यज्ञकी आदिमें कहेहैं वे ब्राह्मण वेदके जाननेवाले सर्वशास्त्रके जाननेवाले कुलीन और तपके करनेवाले हौं ॥ ४८ ॥ याही विषयमें मैं तेरे अगारी कहौंगो तुम समर्थ हो सो सुनौ कि या अश्वमेधमें हे महाराज ! एक एक ब्राह्मणको ये

महावीरैःपालनीयोवर्षमात्रंहयोत्तमः॥ अश्वस्यागमनंयावद्भविष्यतिस्वकेपुरे ॥४३॥ निवसेद्धैर्यसंयुक्तस्तावत्कर्ताप्रयत्नतः ॥ यत्रयत्रपुरीषंच मूत्रंचकुरुतेहयः ॥ ४४ ॥ कर्तव्यंहवनंविप्रैर्दातव्यंगोसहस्रकम् ॥ संलिख्यकांचनंपत्रंस्वनामबलचिह्नितम् ॥ ४५ ॥ हयस्यभालेबध्वाचक थनीयमिदंवचः ॥ सर्वेशृणुतराजानोविमुक्तोस्तिहयोमया ॥ ४६ ॥ कश्चिद्बलयः श्यामकर्णप्रतिगृह्णातुचेद्बलम् ॥ गृह्णातियस्तंमानेनसजेतव्यो बलात्स्वयम् ॥ ४७ ॥ विप्राविंशतिसाहस्रायज्ञादौकीर्तितानृप ॥ वेदज्ञाःसर्वशास्त्रज्ञाःकुलीनाश्चतपस्विनः ॥ ४८ ॥ अग्रतेकथयिष्यामिसम र्थस्त्वंशृणुष्वच ॥ वाजिमेधेमहाराजविप्राणांदीर्घदक्षिणाम् ॥ ४९ ॥ तुरगाणांसहस्रंचगजानांशतमेवच ॥ द्विशतंस्यंदनानांचसहस्रंचगवां तथा ॥ ५० ॥ विंशद्भारंसुवर्णानांप्रदातव्यंद्विजेद्विजे ॥ यज्ञस्यादौतथाचांतेईदृशीदक्षिणामता ॥ ५१ ॥ असिपत्रव्रतंकृत्वाब्रह्मचर्यसम न्वितः ॥ कौपत्न्यासार्द्धमेकत्रकुर्याच्चशयनंनिशि ॥ ५२ ॥ वर्षमात्रंमहाराजकर्तव्यंव्रतमीदृशम् ॥ दीनानांचप्रदातव्यमन्नंवाबहुशोधनम् ॥ ॥ ५३ ॥ विधिनानेनराजेंद्रक्रतुरेषोभविष्यति ॥ असिपत्रव्रतयुतोबहुपुत्रफलप्रदः ॥ ५४ ॥ भीष्मंविनाहिमदनंकोविजेतुंभवेन्नरः ॥ तस्मा द्व्रीतानकुर्वंतिकठिनंचैनमद्भुतम् ॥ ५५ ॥ कामंप्रतिविजेतुंवैशक्तिस्तेविद्यतेयदि ॥ कुरुगर्गंसमाहूययज्ञारंभंनृपोत्तम ॥ ५६ ॥ इतिश्रीमद्गर्ग संहितायामश्वमेधखण्डेयज्ञोद्योगवर्णनं नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

बडी दक्षिणा देनी चाहिये ॥ ४९ ॥ एकएक ब्राह्मणनको एकएक हजार घोडे, सौसौ हाथी, दोदोसौ रथ और एकएक हजार गौ और बीसभार सुवर्ण इतनी दक्षिणा यज्ञके प्रारंभमें और इतनीही दक्षिणा यज्ञके अंतमें एकएक ब्राह्मणको देनी मानीहै ॥५०॥ ५१॥ फिर असिपत्र नामको व्रत ब्रह्मचर्यसहित करै और अपनी पत्नीको संग लेके भूमिमें हे महाराज ! शयन करै ॥ ५२ ॥ ऐसे हे महाराज ! एकवर्ष पर्यंत व्रत करै दीनमनुष्यनको अन्न तथा बहुत धन देय ॥ ५३ ॥ हे राजेंद्र ! या विधिसे यज्ञ होयगो असिपत्रव्रत सहित ये यज्ञ बहुपुत्रफलको देनेवारोहै ॥ ५४ ॥ जैसे भीष्मजीके बिना काम जीतवेको कोई समर्थ नहीं है ऐसेही याको करनो कठिन है याही डरसो कोई मनुष्य या कठिन अद्भुत व्रतको नहीं करैहै ॥ ५५ ॥ यदि तेरी जीतवेकी शक्ति है तो गर्गजीको बुलायके हे नृपोत्तम ! तुम यज्ञारम्भ करौ ॥५६॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डे भाषाटीकायां यज्ञोद्योगवर्णनं

नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ श्रीगर्गजी बोले कि या प्रकार तिनके स्पष्ट अक्षरयुक्त वाक्यको सुनके राजर्षि उग्रसेन नारदजीते बोले मंदमुसकान करते ॥ १ ॥ कि हे मुने ! मैं यज्ञ करोंगो यज्ञके योग्य घोडेको मेरे घुडशालते ढूँढके लाओ ॥ २ ॥ राजाके कहेको सुनके नारदजीने कही कि ठीक है फिर श्रीकृष्णको संग लेके घोडेके देखनेको तवेलामें गये ॥ ३ ॥ सो नारद वाजिशालामें जायके धूआँके रंगके मनोहर घोडे और कोई काले रंगके कोई कमलके रंगके जे घोडा हैं उनको देखतेभये ॥ ४ ॥ फिर और तवेलामें गये तो कोई दूधके रंगके कोई जलकेसे रंगके कोई हलदीके रंगके कोई कुंकुमके रंगके कोई ढाकके फूलके रंगके ॥ ५ ॥ तैसेही चित्रविचित्र अंगवारे कोई स्फटिककेसे अंगवारे मनकेसे जिनके वेग कोई हरे रंगके कोई तामेके रंगके कोई कसूमल रंगके कोई तोतई रंगके ॥ ६ ॥ कोई वीरबौहट्टीके रंगके कोई गौररंगके

॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ ॥ इतितद्वाक्यमाकर्ण्यस्पष्टाक्षरसमन्वितम् ॥ राजर्षिःप्राहदेवर्षिविस्मितःप्रहसन्निव ॥ १ ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ मुनेयज्ञंकरिष्येहंयज्ञयोग्यतुरंगमम् ॥ गत्वाममाश्वशालायांहयानांत्वंविलोकय ॥ २ ॥ नृपस्यवचनंश्रुत्वातथेत्युक्त्वाचनारदः ॥ वाजिशालां ययौतेनद्रष्टुंकृष्णेनघोटकम् ॥ ३ ॥ सगत्वातत्रतुरगान्धूम्रवर्णान्मनोहरान् ॥ श्यामवर्णान्कृष्णवर्णान्पद्मवर्णान्ददर्शवै ॥ ४ ॥ तथाचान्यत्र शालायांदुग्धाभाञ्जलसन्निभान् ॥ हरिद्राभान्कुंकुमाभान्पलाशकुसुमप्रभान् ॥ ५ ॥ तथाचित्रविचित्रांगान्स्फटिकांगान्मनोजवान् ॥ हरिद्व र्णांस्ताम्रवर्णान्कौसुंभांगाञ्छुकप्रभान् ॥ ६ ॥ इंद्रगोपनिभान्गौरान्दिव्यान्पूर्णशशिप्रभान् ॥ सिंदूरांगानग्निवर्णान्बालसूर्यसमान्नृप ॥ ७ ॥ ईदृशाश्वहयान्दृष्ट्वानारदोविस्मयान्वितः ॥ उवाचकृष्णसहितमुग्रसेनंहसन्निव ॥ ८ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ वाजिनस्तेमहाराजसर्वे ह्यतिसुंदराः ॥ ईदृशानैवस्वर्लोकेपृथिव्यांचरसातले ॥ ९ ॥ वर्ततेवाजिशालायांकृष्णस्यकृपयातव ॥ एकोपिश्यामकर्णस्तुतेषांमध्येनदृ श्यते ॥ १० ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ निशम्यवाक्यंदेवर्षेर्नृपस्तुदुःखितोभवत् ॥ यज्ञोभविष्यतिकथंमनसीतिविचारयन् ॥ ११ ॥ उदा सीनंनृपंदृष्ट्वाभगवान्मधुसूदनः ॥ अवोचत्प्रहसञ्शीघ्रंमेघगंभीरयागिरा ॥ १२ ॥ ॥ कृष्णउवाच ॥ ॥ शृणुमद्वचनंराजन्सर्वशोकंवि हायच ॥ गत्वाममाश्वशालांविश्यामकर्णंविलोकय ॥ १३ ॥

दिव्य और पूर्णमासीके चंद्रमासे कोई सिंदूरियारंगके कोई अग्निके रंगके और बालसूर्यकेसे रंगके हे नृप ! ॥ ७ ॥ ऐसे अनेकन रंगनके घोडेनको देखके नारद बडे विस्मयान्वित हैके श्रीकृष्णचन्द्रसहित उग्रसेनसो ये बोले ॥ ८ ॥ कि, हे महाराज ! ये सब घोडे बहुतही सुन्दर हैं ऐसे घोडे पृथिवीमें स्वर्गमें और रसातलमें कहीं भी नहीं है ॥ ९ ॥ ऐसे घोडे कृष्णकी कृपाते आपकी अश्वशालामें वर्तमान हैं परन्तु इनमें श्यामकर्ण जासो कहेहैं सो एकहू नहीं दीखेहै ॥ १० ॥ गर्गजी कहेहैं ये नारदके कहेको सुनके राजा उग्रसेनको बडो दुःख भयो और विचारन लगे कि अब यज्ञ कैसे होयगो ॥ ११ ॥ तब मधुदैत्यके मारनवारे भगवान् श्रीकृष्ण राजा उग्रसेनको उदास देख हँसके मेघके समान गंभीरवाणीसो ये बोले ॥ १२ ॥ कि हे उग्रसेन ! तुम मेरे कहे वचनको सुनो और सब शोकको छोडो तुम

मेरी अश्वशालामें चलौ वहाँ श्यामकर्ण घोडेको देखौ ॥ १३ ॥ ये भगवान् श्रीकृष्ण और नारदके कहेको सुनके वाही समय राजानके शिरोमणि उग्रसेनजी श्रीकृष्णके तबेलामें गये ॥ १४ ॥ वा अश्वशालामें जायके हजारन घोड़ानको देखो जे सब घोडे श्यामकर्ण हैं और यज्ञके योग्य हैं श्याम जिनके कर्ण, पीत जिनकी पूछ, चंद्रमाकेसे जिनके वर्ण और मनकेसे जिनके वेग हैं ॥ १५ ॥ सर्वांगसों सुंदर, दिव्य और तप्त सुवर्णकेसे जिनके मुख उन बड़े शुभ घोडेनको देखके राजा उग्रसेनको बडो विस्मय भयो ॥ १६ ॥ बडे हर्षसो कृष्णको प्रणाम करके ये बोले कि महाराज मैंने आज बहुतसे श्यामकर्ण घोडे देखे ॥ १७ ॥ सो नाथ तुमारे भक्तनको या भूमंडलमें कहा दुर्लभ है हे कृष्ण ! जैसे पहले प्रह्लाद और ध्रुवको आपने मनोरथ पूरो कियो॥१८॥ तैसेही आपकी कृपासो मेरो मनोरथ पूरो होयगो यह सुनके हे राजन् ! शार्ङ्गधनुषधारी भगवान्

इत्युदीरितमाकर्ण्यकृष्णेनचसुरर्षिणा ॥ हरेश्ववाजिशालांहिजगामनृपसत्तमः ॥ १४ ॥ ददर्शतांसगत्वाचयज्ञयोग्यान्सहस्रशः ॥ श्यामकर्णान्पीतपुच्छांश्चन्द्रवर्णान्मनोजवान् ॥ १५ ॥ सर्वांगसुंदरान्दिव्याँस्तप्तहेममुखाञ्शुभान् ॥ एतान्दृष्ट्वाहयान्राजाविस्मयंपरमंगतः ॥ १६ ॥ हर्षेणमहतायुक्तोकृष्णंनत्वाब्रवीद्वचः ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ श्यामकर्णाश्वबहुशोमयाद्यनिरीक्षिताः ॥ १७ ॥ दुर्लभंकिंजगन्नाथत्वद्भक्तानांधरातले ॥ यथामनोरथःपूर्वंप्रह्लादस्यध्रुवस्यच ॥ १८ ॥ आसीत्त्वत्कृपयाकृष्णतथाममममनोरथः ॥ इतिश्रुत्वाहरीराजञ्शार्ङ्गीभूपमवोचत ॥ १९ ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ एकंत्वंश्यामकर्णानामश्वानांचन्द्रवर्चसाम् ॥ गृहीत्वानृपशार्दूलकुरुयज्ञंममाज्ञया ॥ २० ॥ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ श्रुत्वावाक्यंहरिंप्राहकरिष्येहंक्रतूत्तमम् ॥ इत्युक्त्वातेनसहितोनारदेनसभांययौ ॥ २१ ॥ ततःकृष्णमनुज्ञाप्यनारदःसहतुंबुरुः ॥ राजानमाशिषंदत्त्वास्वयंभूसदनंययौ ॥ २२ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डेतुरंगदर्शननामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ अथराजाकुशस्थल्यांगतेदेवर्षिसत्तमे ॥ स्वदूतान्प्रेषयामासमामानेतुंनृपेश्वरः ॥ १ ॥ तऊचुरुग्रसेनस्यममाग्रेवचनंनराः ॥ ॥ दूताऊचुः ॥ ॥ देवदेवमुनेब्रह्मन्भूदेवानांशिरोमणे ॥ २ ॥ अस्माकंवचनंसर्वंकृपयाशृणुविस्तरात् ॥ कृष्णेच्छयाद्वारकायामुग्रसेनेनभोमुने ॥ ३ ॥

ये बोले ॥ १९ ॥ कि हे नृपशार्दूल ! ये चंद्रमाकेसे तेजवारे श्यामकर्ण घोडे हैं तिनमेंसो एक घोड़ेको लेके आप मेरी आज्ञासो यज्ञ करौ ॥ २० ॥ श्रीगर्गजी कहेहैं ये कृष्णके कहेको सुनके उग्रसेनने श्रीकृष्णते कही कि मैं या यज्ञोत्तमको करौंगो ये कहिके कृष्णके संग नारदजीको लेके सभामें गये ॥ २१ ॥ तदनंतर श्रीकृष्णसो आज्ञा लेके तुंबुरुगंधर्व सहित नारदजी राजा उग्रसेनको मनोरथ पूर्णकर ब्रह्मलोकको चलेगये ॥ २२ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डे तुरङ्गदर्शनं नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ गर्गजी कहेहैं कि नारदजीके द्वारकाको गये पीछे राजा उग्रसेनने अपने दूत मेरे बुलायवेको भेजे ॥ १ ॥ तब वे दूत मेरे पास आयके मोसे कहतेभये कि हे देवदेव ! हे मुने ! हे ब्राह्मणनके मुकुटमणे ! ॥ २ ॥ कृपा करके हमारे कहे वचनको विस्तारसे आप सुनौ हे मुनिजी ! आपके बुद्धिमान् शिष्य महाराज उग्रसेननें कृष्णकी इच्छासो द्वारकापुरीमें यज्ञनमें उत्तम

जो अश्वमेध नाम यज्ञ है सो प्रारंभ कियो है हे मुने ! या यज्ञमहोत्सवमें आप बहुत शीघ्रतासो आवो ॥ ३ ॥ ४ ॥ हे नृपश्रेष्ठ ! मैं उनके कहेको सुनके द्वारकापुरीको जाताहुआ
गर्गाचलपर्वततें यज्ञका उत्सव देखनेकी आयो ॥ ५ ॥ तब मैंने आनर्त नाम देशोंमें द्वारकापुरी दूरसे देखी जो अनेक प्रकारके वृक्षोंके गणोंसे युक्त और बागबगीचानसो
घिरीहुई है ॥ ६ ॥ और नाना तडाग तथा वापी और अनेक पक्षियोंके गणोंसे युक्त है और नील, रक्त, श्वेत और पीत रंगवारे कमलनसो युक्त सरोवर जिसमें विद्यमान
हैं ॥ ७ ॥ और नृपेश्वर ! कुमुद और शुकपुष्प, बिल्व, कदंब, वट, शाल, ताल, तमाल, मोलसरी, नागकेशर, केशर, कचनार, पीपल, जँभीरी, हारसिंगार, आम, आम्रातक ॥ ८ ॥
केतकी, दाख, केला, जामन, नारियल, पिंडखजूर, खैर, नीव ॥९॥ अगर, तगर, चंदन, रक्तचंदन, ढाक,कपित्थ, पाकर, वेत, बांस॥१०॥मल्लिका, जुही, मोदिनी, आदिवृक्ष तथा मदन

तेषामहं वचः श्रुत्वा जगिमवान्द्वारकांपुरीम् ॥ गर्गाचला
निरूपितंक्रतुवरंतवशिष्येणधीमता ॥ त्वमागच्छमुनेशीघ्रंतस्मिन्यज्ञमहोत्सवे ॥ ४ ॥ तेषामहंवचःश्रुत्वाजगिमवान्द्वारकांपुरीम् ॥ गर्गाचला
न्नृपश्रेष्ठयज्ञकौतुकसंयुतः ॥ ५ ॥ ततोदृष्टापुरीदूराच्चानर्तेद्वारकामया ॥ नानाद्रुमगणैर्युक्तानानाचोपवनैर्युता ॥ ६ ॥ नानातडागैर्वापीभि
र्नानापक्षिगणैस्तथा ॥ नीलरक्तसितांभोजैःपीतपद्मैःसरोवराः ॥ राजंतेकुमुदैश्चैवशुकपुष्पैर्नृपेश्वर ॥ ७ ॥ बिल्वैःकदंबैर्न्यग्रोधैःशालैस्तालैस्त
मालकैः ॥ बकुलैर्नागपुन्नागैःकोविदारैश्चपिप्पलैः ॥ जम्बीरैर्हारसिंगारैराम्रैराम्रातकैरपि ॥ ८ ॥ केतकीभिर्गोस्तनीभिःकदलीभिश्चजंबुभिः ॥
श्रीफलैःपिंडखर्जूरैःखदिरैःपिचुमंदुभिः ॥ ९ ॥ अगरैस्तगरैश्चैवचन्दनैरक्तचन्दनैः ॥ पलाशैश्चकपित्थैश्चप्लक्षैर्वेत्रैश्चवेणुभिः ॥ १० ॥ मल्लि
काभिर्यूथिकाभिर्मोदिनीभिर्महीरुहैः ॥ तथामदनबाणैश्चसहस्रांशुमुखद्रुमैः ॥ ११ ॥ प्रियावंशैर्गुल्मवंशैःकर्णिकारैश्चपुष्पितैः॥ सहस्राख्यैः
कन्दुकैश्चैवागस्त्यैश्चसुदर्शनैः ॥ १२ ॥ चन्द्रकाख्यैश्चकुन्दैश्चकर्णपुष्पैश्चदाडिमैः ॥ अनुर्जीरैर्नागरंगैराड्रुकीजानकीफलैः ॥ १३ ॥ पूगी
फलैर्बदामैश्चतूलैराजादनैर्द्रुमैः ॥ एलाभिःसेवतीभिश्चतथावैदेवदारुभिः ॥ १४ ॥ ईदृशैश्चमहावृक्षैःशोभितानगरीहरेः ॥ कूजंतियत्रराजेन्द्र
मयूराःसारसाःशुकाः ॥ १५ ॥ हंसाःपारावताश्चैवकपोताःकोकिलास्तथा ॥ सारिकाश्चकवाकाश्चखंजनाश्चटकाःकिल ॥ १६ ॥ एतेपक्षि
गणाःसर्ववैकुण्ठाच्चसमागताः ॥ कृष्णकृष्णेतिमधुरांवाणींगायंतियत्रहि ॥ १७ ॥ इत्थंपश्यन्व्रजन्राजन्ददर्शद्वारकामहम् ॥ ताम्ररौप्यसुव
र्णैश्चत्रिभिर्दुर्गैश्चवेष्टिताम् ॥ १८ ॥

बाण॥११॥पियावाश, गुल्मावाश, कर्णिकार, सहस्र, कंदुक, अगस्तिआ,सुदर्शन ॥१२॥ चंद्रक, कुंद, कर्णपुष्प अनार,अञ्जीर, नारंगी, आड़ू,जानकीफल॥१३॥सुपारी, बादाम, चिरोंजी,
इलायची, सेवती, देवदारु ॥ १४ ॥ इनसे आदि जे महावृक्ष हैं तिनसों वा हरिकी नगरी शोभित है और हे राजेंद्र ! मोर सारस तथा तोता जहाँ बोल रहेहैं ॥ १५ ॥
हंस, कबूतर, कपोत, कोकिल, मेना, चकवा, खंजन, और चिडिया ॥ १६ ॥ इत्यादिक सब पक्षी वैकुंठसों आयेभये जा द्वारिकामें हे कृष्ण हे कृष्ण या मधुरवाणी को गाय रहेहैं
॥ १७ ॥ ऐसें देखतो रस्तामें चलतो मैं द्वारकाको देखतोभयो, जो द्वारिका एक तांबेको एक चांदीको और ताके भीतर एक सुवर्णको ऐसी तीन किलेनतें आवृत है ॥ १८ ॥

और देवतानके वृक्ष जामे लगरहे ऐसे रैवतनाम पर्वतसों युक्त है और समुद्र, गोमती नदी येही एक बडी खाई तासों वेष्टित (लिपटी) है ॥ १९ ॥ कौतुक (उत्सव) के लिये जामे वंदनवार तिनसो युक्त, बडी रम्य, प्रसन्नमनुष्य और सुवर्णके मंदिर (घर) तिनसो युक्त है ॥ २० ॥ और सोनेकी दुकान तथा ध्वजापताकानसो भूषित है बडे २ विष्णु मंदिर और शिवालयनसों भररहीहै ॥ २१ ॥ वडे शूरवीर यादव और हजारन विमान, सेकरन चौपरके बजार जिनमें सुवर्णके कलश तिनसो युक्त है ॥ २२ ॥ अनेकन गली और हाथीनकी झूल तथा हस्तिशाला, गोशाला, सभागृह और सुंदर रौप्य (रजतमय) मार्ग (सडक) नसों युक्त है ॥ २३ ॥ नौ लाख गिनतीके घर और षोडशसहस्र एकसौ आठ श्रीकृष्णके महल मंदिर तिनसो वेष्टित है ॥ २४ ॥ जा द्वारिकाके एक एक द्वारपे कोटि कोटि शूरवीर शस्त्रनको लिये कमर बाँधे तयार खडे चारों तरफसे रक्षा

गिरिणारैवतेनापिदैववृक्षमयेनच ॥ रत्नाकरेणगोमत्यावृतांपरिखभूतया ॥ १९ ॥ कृष्णस्यनगरींरम्यांकृतकौतुकतोरणाम् ॥ मुदायुक्त जनाकीर्णांसुवर्णभवनैर्युताम् ॥ २० ॥ तथाहाटकहट्टाभिःपताकाभिश्चमंडिताम् ॥ विष्णोश्चमंदिरैःप्रोच्चैर्महेशस्यालयैर्युताम् ॥ २१ ॥ यदुभिश्चमहाशूरैर्विमानैश्चसहस्रशः ॥ शतशृंगाटकैश्चैवकलशैर्भर्मकर्बुरैः ॥ २२ ॥ रथ्याभिर्मंदुराभिश्चदंतिशालाभिरेवच ॥ गोशाला भिश्चशालाभिःसुरौप्यपथिभिर्युताम् ॥ २३ ॥ प्रासादैर्नवलक्षैश्चकृष्णस्यपरमात्मनः ॥ तथाषोडशसाहस्रैर्भवनैर्वेष्टितांपुरीम् ॥ २४ ॥ द्वारेद्वारेद्वारकायांशूरावीराश्चकोटिशः ॥ रक्षंत्यहर्निशंराजन्सर्वेशस्त्रधराःकिल ॥ २५ ॥ प्रगायंतिजनाःसर्वेश्रीकृष्णबलदेवयोः ॥ गृहेगृ हेचनामानिशृण्वंतिचरितानिच ॥ २६ ॥ इत्थंविलोकयन्सर्वान्सुधर्मायामहंगतः ॥ कृष्णेतिपादुकारूढस्तुलसीमालयाजपन् ॥ २७ ॥ अथोग्रसेनोराजर्षिर्दृष्ट्वामांचसमागतम् ॥ समुत्थायमुदायुक्तःशक्रसिंहासनात्किल ॥ २८ ॥ षट्पंचाशत्कोटिसंख्यैर्यादवैःसहभूपते ॥ नत्वासिंहासनेस्थाप्यपूजयामासचाहुकः ॥ २९ ॥ मदंघ्रीचावनिज्याथयादवानांचसन्निधौ ॥ पादोदकंस्वशिरसिधृत्वाप्राहनृपेश्वरः ॥ ॥ ३० ॥ ॥ उग्रसेनउवाच ॥ ॥ विप्रेंद्रनारदमुखाच्छ्रुतंयस्यमहत्फलम् ॥ तंयज्ञमश्वमेधाख्यंकरिष्येहंतवाज्ञया ॥ ३१ ॥ यस्यां घ्रिसेवयापूर्वंमनोरथमहार्णवम् ॥ तेरुर्जगत्तृणीकृत्यसकृष्णश्चात्रवर्तते ॥ ३२ ॥

करतेहैं ॥ २५ ॥ और जा द्वारकाके घर घरमें सब मनुष्य श्रीकृष्ण बलदेवके मंगलरूप नामनको श्रवण करतेहैं ॥ २६ ॥ या प्रकार सब द्वारकाकी शोभाको देखतो २ मैं सुधर्मा सभामें गयो खडाउनपे चढो तुलसीकी मालाको हाथमें लिये कृष्णनामको जप करतो ॥ २७ ॥ तब उग्रसेन राजा मोको आयो देख आनंदसो युक्तहै इंद्रासनके समान अपने सिंहासनसो हे भूपत ! छप्पन किरोड यादवनके सहित उठके नमस्कार कर सिंहासनपे बैठायके पूजा करतोभयो ॥ २८ ॥ २९ ॥ और मेरे पामनको यादवनके आगे धोयके और पादोदकको अपने माथेपे धर ये वचन बोले ॥ ३० ॥ उग्रसेनजी बोले कि सुनो महाराज ! ब्राह्मणनके मुकुट नारदजीके मुखसों जाको बडो फल मैंने सुनोहै ता अश्वमेधयज्ञको तुमारी आज्ञासों करोंगो ॥ ३१ ॥ जाके चरणोको सेवा करके अगारीके राजा मनोरथरूप बडे समुद्रको जगत्को तिनका बनायके पार हेगये सो श्रीकृष्ण यहां

वर्तमान है ॥ ३२ ॥ गर्गजी बोले कि हे यादवेंद ! हे महाबाहो ! आपको विचार बहुत ठीक है अश्वमेध यज्ञके करवेसों त्रिलोकीमें आपकी बडीभारी कीर्ति होयगी ॥ ३३ ॥ परन्तु ये कहो कि या अश्वमेधके घोडेकी रखवारी करवेको सङ्ग कौन जायगो क्योंकि हे नृपेश्वर ! शत्रु अपने बहुत हैं यासों घोडेकी रक्षा करवेके लिये सङ्ग आनवारेको निश्चय करलेनो चाहिये ॥ ३४ ॥ और आपको वर्षपर्यंत असिपत्र नामको व्रत करनो चाहिये तब यह यज्ञोत्तम निर्विघ्न समाप्त होयगो ॥ ३५ ॥ पहले राजसूय यज्ञके समयमें प्रद्युम्नने सब राजानको जय कीनोहो सो आज घोडेकी रक्षाके लिये उनकोही हुकुम देउहो का ॥ ३६ ॥ गर्गजी कहै है कि ऐसे मेरे कहेको सुनके चिन्तामें मग्नभये राजा उग्रसेनने मनुष्यनके सब दुःखनके हरनवारे हरिको अगारी खडे देखे ॥ ३७ ॥ तब श्रीकृष्णने उग्रसेनको शोकमें पूर्ण देखके पानके बीडाको लेके हँसते हँसते कही ॥ ३८ ॥

॥ श्रीगर्ग उवाच ॥ ॥ यादवेंद्रमहाराजसम्यग्व्यवसितंत्वया ॥ हयमेधेनतेकीर्तिस्त्रिलोक्यांसंभविष्यति ॥३३॥ कःप्रयास्यतिरक्षार्थंतुरगस्यनृपेश्वर ॥ बहवःशत्रवःसंतितस्मात्तंनिश्चयंकुरु ॥ ३४ ॥ वर्षमात्रंप्रकर्त्तव्यमसिपत्रव्रतंत्वया ॥ तदातुकुशलेनापिभविष्यतिक्रतूत्तमः ॥ ३५ ॥ प्रद्युम्नेनराजसूयेजितासर्वामहीपुरा ॥ तुरंगस्याद्यरक्षार्थंतंपुनःकिंनियोजसि ॥ ३६ ॥ इतिमद्वचनंश्रुत्वाराजाचिंतापरायणः ॥ ददर्शसंस्थितंनृणांसर्वदुःखहरंहरिम् ॥ ३७ ॥ तदैवभगवान्दृष्ट्वाशोकेनापूरितंनृपम् ॥ तांबूलवीटकंनीत्वाप्रहसन्निदमब्रवीत् ॥ ३८ ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ भोःशूरायादवाःसर्वेबलिनोरणकोविदाः ॥ उग्रसेनस्यचाग्रेवैशृण्वंतुममभाषितम् ॥ ३९ ॥ योमोचयतिराजभ्योहयमेधतुरंगमम् ॥ महारथीमनस्वीचसोयंगृह्णातुवीटकम् ॥ ४० ॥ इतिश्रुत्वाहरेर्वाक्यंयादवायुद्धकोविदाः ॥ परस्परंप्रपश्यन्तोगतमानाःपुनःपुनः ॥ ४१ ॥ संस्थितोघटिकामात्रंरेजेतांबूलवीटकः ॥ कृष्णस्यसुंदरेहस्तेयथातामरसेशुकः ॥ ४२ ॥ ततश्चसर्वेषुगतेषुतूष्णीमूषापतिश्चापधरोमहात्मा ॥ प्रगृह्यतांबूलचयंनृपेन्द्रंनत्वाचकृष्णंनिजगादसद्यः ॥ ४३ ॥ ॥ श्रीअनिरुद्धउवाच ॥ ॥ अहंहिश्यामकर्णस्यराजन्येभ्यश्चपालनम् ॥ करिष्यामिजगन्नाथतस्मान्मांत्वंनियोजय ॥ ४४ ॥

हे यादव हो ! तुम सब शूरवीर हो बडे बलवान् और रणप्रवीण हो सो तुम उग्रसेनके अगारी मेरे कहेको सुनो ॥ ३९ ॥ जो कोई अश्वमेधके या अश्वको राजानसों छुडावे वो महारथी धीरपुरुष या बीडाको ग्रहण करे ॥ ४० ॥ ये कृष्णके वाक्यको सुनके युद्धमें बडे कोविद वार २ परस्पर देखते वे सबरे यादव मानते रहित हैगये ॥ ४१ ॥ तब वो पानको बीडा एक घडी धरो रह्यो कृष्णके हाथमें ऐसो दीखो जैसो कमलमें बैठो तोता दीखे ॥ ४२ ॥ जब ऐसे सब यादव वा बीडाको देखके चुप्प हैगये तब बडो महात्मा धनुर्धारी ऊषाको पति अनिरुद्ध या पानके बीडाको उठायके उग्रसेनको प्रणाम करके यह वचन बोलो ॥ ४३ ॥ अनिरुद्धने कही कि हे जगन्नाथ ! मैं या श्यामकर्ण घोडेको राजानसों रक्षा करौंगो यासों या घोडेके रक्षा करनेमें मोकूं आप नियुक्त करो ॥ ४४ ॥

हे कृष्ण महाराज ! देखो ये आपको नाती अभी बालक है ये बडे २ राजानतें या अश्वमेधके अश्वकी कैसे रक्षा करैगो ॥ ८ ॥ यासो आप या बालकको घोडेकी रक्षा करवेको
मत भेजो क्योंकि यामें बहुत विघ्न है सो भेजोहो तो आप प्रद्युम्नको भेजो ॥९॥ अथवा दाउजीको भेजो अथवा आप जाओ ये ब्रह्माजीके कहे वचनको सुनके श्रीकृष्णचंद्रने हँसके
कही कि ॥१०॥ भाई मै कहा करूँ अनिरुद्ध जायहै सो अपने हठसो जायहै मेरे किये निषेधको नहीं मानेहै यासो जा कोईको निषेध करनो होय सो वाके पास जायके निषेध करौ
॥ ११ ॥ कृष्णके कहेको सुनके ब्रह्माजी और चंद्रमा दोनों प्रद्युम्नके पुत्र अनिरुद्धके निकट गये ॥ १२ ॥ और जब ब्रह्मा और चंद्रमा ये दोनों अनिरुद्धके समीपमें प्राप्तभये तब
सबके देखते देखतेई अनिरुद्धके शरीरमें लीन-हैगये ॥ १३ ॥ या बातको देखकें सब इंद्रादिक देवता, उग्रसेनादिक राजा, यादव और सब मुनि विस्मयमें मग्न हैगये और ये कही

॥ ब्रह्मोवाच ॥ ॥ पौत्रस्तेबालकःकृष्णराजन्येभ्यश्वपालनम् ॥ कठिनंश्यामकर्णस्यकरिष्यतिकथंहरे ॥८॥ मातंप्रेषयतस्मात्त्वंरक्षणायहय
स्यवै ॥ विघ्नाश्चबहवःसंतिप्रद्युम्नंप्रेषयस्वच ॥९॥ संकर्षणंवागोविन्दमथवारक्षत्वंहयम्॥इतितद्वचनंश्रुत्वानिजगौप्रहसन्हरिः॥१०॥ ॥ श्रीभ
गवानुवाच ॥ ॥ अनिरुद्धोहठाद्यातिमन्निषेधंनमन्यते ॥ तस्मात्तन्निकटेगत्वानिषेधंकुरुयत्नतः ॥ ११ ॥ कृष्णस्यवाक्यमाकर्ण्यविधिश्चंद्र
समन्वितः॥ ययौनिवारणार्थायानिरुद्धंकार्ष्णिनन्दनम् ॥ १२ ॥ यदागतौसमीपेतुसुरज्येष्ठकलानिधी ॥ विग्रहेह्यनिरुद्धस्यसद्यस्तौलीनतां
गतौ ॥ १३ ॥ बभूवुर्विस्मिताःसर्वेशिवशक्रादयःसुराः ॥ यादवामुनयश्चैवह्युग्रसेनादयोनृपाः ॥ १४ ॥ वज्रनाभत्वत्पितरंसंस्तुवन्तिगणाः
किल ॥ परिपूर्णतमंतस्मादनिरुद्धंवदंतिहि ॥ १५ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ अथोग्रसेनोनृपतिःसभातलादुत्थायकृष्णंमनसाप्रणम्यच ॥
स्वांतःपुरंसुन्दररत्नवेष्टितंजगामराजन्क्रतुकौतुकावृतः ॥ १६ ॥ गत्वाह्यंतःपुरेराजासुरेन्द्रसदनोपमे ॥ पर्यंकस्थांरुचिमतींशचीतुल्यांवरान
नाम् ॥ १७ ॥ दासीभिःसेवितांराज्ञींवस्त्रालंकारवेष्टिताम् ॥ वीजितांचामरैःशुक्लैर्ददर्शनृपसत्तमः ॥ १८ ॥ साविलोक्यागतंतत्रस्वपतिं
यादवेश्वरम् ॥ उत्थायचादरंराजश्चकारविधिनाकिल ॥ १९ ॥ ततःस्थित्वासपर्यंकेवृष्णीशोस्वांप्रियांपराम् ॥ प्रोवाचप्रहसन्वाण्याघनश
ब्दगंभीरया ॥ २० ॥ हयमेधंकरिष्येहंप्रियेकृष्णाज्ञयाद्यवै ॥ नरोयस्यप्रतापेनलभतेवाञ्छितंफलम् ॥ २१ ॥

॥ १४ ॥ कि हे वज्रनाभजी ! सबरे मुनिगण तुमारे पिता अनिरुद्धको याहीते साक्षात्परिपूर्णतम कहैहै ॥१५॥ गर्गजी कहैहै याके पीछे राजा उग्रसेन सभाते उठके मनसो कृष्णको
प्रणाम करके बडे आश्चर्यमें मग्न हैके सुन्दररत्ननके बने दिव्य अपने मंदिरमें चलेगये ॥ १६ ॥ वहाँ जो इन्द्रके घरके समान रनिवास है तामें पलँगपे बैठी अनेक दासी जाकी
सेवा कररहीहै वस्त्राभूषणसो शृंगारकिये श्वेतचमर जापे ढुररहे ऐसी शचीके समान दिव्यमुखी अपनी पत्नी रुचिमतीको देखतेभये ॥ १७ ॥ १८ ॥ तब रानी यादवेश्वर अपने
पतिको देखके हे राजन् ! उठके विधिसो आदर करतीभई ॥ १९ ॥ तदनंतर उग्रसेन पलँगपे बैठके हँसते २ अपनी प्रिया रुचिमतीसे मेघगंभीरवाणीसो बोले ॥ २० ॥ कि हे
प्रिये ! मैं कृष्णकी आज्ञासो आज अश्वमेधयज्ञ करौंगो जा यज्ञके प्रतापसो मनुष्य मनोवांछित फलको प्राप्त होयहै ॥ २१ ॥

स्वर्गमें देवतानकी तरह रहेहैं सो वे अब नहीं आये सकेंहैं यासों तुम पुत्रशोकको छोडके ॥ ३५ ॥ धीरज धरके अश्वमेधयज्ञको करो जो यज्ञ सब यज्ञनमें श्रेष्ठ है सो हे नृपते ! मैं यज्ञके अंतमें तुमारे मरगये पुत्रनको तुमें दिखाय देऊंगो ॥ ३६ ॥ ऐसे राजा उग्रसेन कृष्णके कहेको सुनके अपनी प्रिया (रानी) को समझायके फिर अपने सुजन जननके सङ्ग सभामें गये ॥ ३७ ॥ श्रीकृष्ण सहित उग्रसेनको सभामें आयो देखके सब दिक्पाल देवतान सहित दाऊजी और शिवजीने प्रणाम करी ॥ ३८ ॥ राजा उग्रसेनको और वज्रनाभको तपमें कहा तुमारे आगे कहाँ जिनको श्रीकृष्णचंद्रादिक नमस्कार करेंहें ॥ ३९ ॥ तब उग्रसेनजी सब देवतानको प्रणाम करके लज्जित ह्वैके मनमें विचार करते दिव्य इंद्रासनपें नहीं विराजे ॥ ४० तब श्रीकृष्णने अपने हाथते हाथ पकरके उग्रसेन निज भक्तको इंद्रासनपें बैठारे ॥ ४१ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डेभाषाटीकाया

अश्वमेधंक्रतुवरंकुरुधैर्येणभूपते ॥ दर्शयिष्याम्यहंसर्वान्यज्ञस्यांतेचतेसुतान् ॥३६॥ निशम्यकृष्णवचनमुर्वीशःस्वांप्रियांमुदा ॥ आश्वास्यच शुभैर्वाक्यैःसुधर्मांसुजनैर्ययौ ॥ ३७ ॥ आगतंतुनृपंवीक्ष्यश्रीकृष्णेनसमन्वितम् ॥ दिक्पालाश्चप्रणेमुर्वैरामेशानादयःसुराः ॥३८॥ उग्रसेनस्य भूपस्यवज्रनाभेतपःपरम् ॥ किंवर्णयामियंसर्वेश्रीकृष्णाद्यानमंतिहि ॥ ३९ ॥ यादवेंद्रस्तुसर्वान्वैदेवान्नत्वाविलज्जितः ॥ शक्रसिंहासनेदिव्ये नारुरोहविचारयन् ॥ ४० ॥ तदैवकृष्णोभगवान्गृहीत्वापाणिनानृपम् ॥ स्वभक्तंस्थापयामासतस्मिन्वैवासवासने ॥ ४१ ॥ इतिश्रीमद्गर्ग संहितायांहयमेधखंडेराजराज्ञीसंवादेदशमोऽध्यायः ॥१०॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ ॥ अथराजासुधर्मायांवासुदेवेननोदितः ॥ संस्थितानृत्विजो वंशेमूर्ध्नानम्यप्रसाद्यच ॥ १ ॥ पराशरश्चव्यासश्चदेवलश्च्यवनोऽसितः ॥ शतानन्दोगालवश्चयाज्ञवल्क्योबृहस्पतिः ॥ २ ॥ अगस्त्योवा मादेवश्चमैत्रेयोलोमशःकविः ॥ अहंक्रतुर्जैमिनिश्चवैशंपायनएवच ॥ ३ ॥ पैलःसुमंतुःकण्वश्चभृगूरामोकृतव्रणः ॥ मधुच्छंदावीतहोत्रोकव षोधौम्यआसुरिः ॥ ४ ॥ जाबालिर्वीरसेनश्चपुलस्त्यःपुलहस्तथा ॥ दुर्वासाश्चमरीचिश्चह्येकतश्चद्वितस्त्रितः ॥ ५ ॥ अंगिरानारदश्चैवपर्व तःकपिलोमुनिः ॥ जातुकर्ण्योह्युतथ्यश्चसंवर्तश्चमृगीसुतः ॥ ६ ॥ शांडिल्यःशाड्गिपाकश्चकहोडःसुरतोमनुः ॥ कचःस्थूलशिराश्चैवस्थू लाक्षःप्रतिमर्दनः ॥ ७ ॥

मश्वमेधप्रारम्भोपक्रमवर्णनं नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ गर्गजी बोले कि तदनंतर राजा उग्रसेन कृष्णके प्रेरणासों सुधर्मा सभामें बैठे ऋत्विज ब्राह्मणनको माथेसों प्रणाम करके प्रसन्न करके वरण किये ॥ १ ॥ पराशर, व्यास, देवल, च्यवन, असित, शतानन्द, गालव, याज्ञवल्क्य, बृहस्पति ॥ २ ॥ अगस्त्य, वामदेव, मैत्रेय, लोमश, कवि, मै गर्ग, जैमिनि, वैशंपायन, पैल, ॥ ३ ॥ सुमंतु, कण्व, भृगु, परशुराम, अकृतव्रण, मधुच्छंदा, वीतहोत्र, कवष, धौम्य, आसुरि ॥ ४ ॥ जाबालि, वीरसेन, पुलस्त्य, पुलह, दुर्वासा, मरीचि, एकत, द्वित, त्रित ॥ ५ ॥ अंगिरा, नारद, पर्वत, कपिल, जातूकर्ण्य, उतथ्य, संवर्त, ऋष्यशृंग ॥ ६ ॥ शांडिल्य, शाड्गिपाक, कहोड, सुरत, मनु कच, स्थूलशिरा, स्थूलाक्ष, प्रतिमर्दन ॥ ७ ॥

बकदाल्भ्य, कौंडिन्य, रैभ्य, द्रोण, कृप, प्रकटाक्ष, यवक्रीत, वसुधन्वा, मित्रभू ॥ ८ ॥ अपांतरतमा, दत्तात्रेय, मार्कंडेय, जमदग्नि, कश्यप, भरद्वाज, गौतम ॥ ९ ॥ अत्रि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, पतंजलि, कात्यायन, पाणिनि और वाल्मीकि इनसो आदि लेके सब ऋषिनको ऋत्विजवर्ण किये यादवेंद्र उग्रसेनकी पूजासो हे नृप ! वे सब ऋषिलोग प्रसन्नभये तदनन्तर उग्रसेनकरके निमंत्रण किये वे ऋत्विज उग्रसेनसो बोले ॥ १० ॥ ११ ॥ कि हे उग्रसेन ! हे महाराज ! हे सुरासुरनमस्कृत ! तुम यज्ञ करौ सो तुमारो यज्ञ कृष्णकी कृपाते पूर्ण होयगो ॥ १२ ॥ ऐसे विनके कहेको सुनके सर्वेंद्रियनसहित प्रसन्न हैके उग्रसेनने सब यज्ञकी सामग्री तयार करी ॥ १३ ॥ तब ब्राह्मणनने सोनेके हलसो यज्ञभूमि जोती फिर पिंडारकनामके तीर्थमें यथाविधिसो दीक्षा दीनी ॥ १४ ॥ तब चार योजन ताईं बहुत

बकदाल्भ्यश्चकौंडिन्योरैभ्योद्रोणःकृपस्तथा ॥ प्रकटाक्षोयवक्रीतोवसुधन्वाचमित्रभूः ॥ ८ ॥ अपांतरतमोदत्तोमार्कंडेयोमहामुनिः ॥ जमदग्निःकश्यपश्चभरद्वाजश्चगौतमः ॥ ९ ॥ अत्रिर्मुनिर्वसिष्ठश्चविश्वामित्रःपतंजलिः ॥ कात्यायनिःपाणिनिश्चवाल्मीक्याद्याश्चऋत्विजः ॥ १० ॥ पूजितायादवेंद्रेणप्रसन्नास्तेभवन्नृप ॥ ततःसर्वेऋत्विजश्चनृपमूचुर्निमंत्रिताः ॥ ११ ॥ ॥ मुनयऊचुः ॥ ॥ उग्रसेनमहाराजसुरासुरनमस्कृत ॥ यज्ञंकृष्णस्यकृपयाकुरुसोपिभविष्यति ॥ १२ ॥ इतितेषांवचःश्रुत्वापरितुष्टाखिलेंद्रियः ॥ सर्वान्वैक्रतुसंभारानाजहारांधकेश्वरः ॥ १३ ॥ ततःकृष्टायज्ञभूमिर्विप्रैःकनकलांगलैः ॥ पिंडारकेयथान्यायंदीक्षांचक्रिरेनृपम् ॥ १४ ॥ चतुर्योजनपर्यंतंविलिख्यबहुशोमहीम् ॥ यज्ञस्यार्थेनृपस्तत्ररचयामासमंडपान् ॥ १५ ॥ योनिमेखलयायुक्तंमध्यकुंडंविधायच ॥ तस्मिन्वैस्थापयामासविधिनाजातवेदसम् ॥ १६ ॥ रत्नानेकैर्विरचितांपताकाभिर्युतांसभाम् ॥ ममवाक्याद्वज्रनाभेरचयामासचाहुकः ॥ १७ ॥ अथदृष्ट्वासभांकृष्णोनिजगौस्वसुतंप्रति ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ प्रद्युम्नशृणुमद्वाक्यंतन्निशम्यकुरुत्वरम् ॥ १८ ॥ गत्वाशस्त्रधरैःशूरैर्यत्नेनहयमानय ॥ ॥ गर्ग उवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वाहरेर्वाक्यंप्रद्युम्नोधन्विनांवरः ॥ १९ ॥ तथेत्युक्त्वाहयंनेतुंवाजिशालांजगामह ॥ ततःकृष्णेनरक्षार्थंस्वपुत्राश्चहयस्यवै ॥ २० ॥ प्रेषितावाजिशालायांभानुसांबादयोनृप ॥ सगत्वावाजिशालायांरुक्मिणीनन्दनोबली ॥ २१ ॥

सी धरतीको जोतके वाके यज्ञके लिये मंडप रचौ ॥ १५ ॥ ताकें वीचाबीचमें योनि और मेखलासहित कुंड बनायके वामें विधिसो अग्निस्थापन करायो ॥ १६ ॥ फिर गर्गजी कहेहैं कि मेरे कहेसो हे वज्रनाभजी ! उग्रसेनने वाही भूमिमें सभा बनवाई जो अनेक ध्वजापताकानसों युक्त है ॥ १७ ॥ तब वा सभाको देखके श्रीकृष्ण अपने पुत्रसो बोले कि हे प्रद्युम्न ! तुम मेरे कहेको सुनौ और वाय जलदीसो करौ ॥ १८ ॥ देखो शस्त्रधारी वीरनको संग लेके पहले जायके घोडेको ले आओ तब श्रीकृष्णके कहेको सुनके धनुर्धरनमें मुख्य जे प्रद्युम्न हैं ॥ १९ ॥ वे बहुत ठीक है ऐसे कहिके घोडेके लेवेकें लिये अश्वशाला (घुडसाल) में गये तब श्रीकृष्णने अश्वकी रक्षाके लिये भानुसांबादि अपने पुत्र भेजे कि जाओ बडी बंदोबस्तीसो घोडेको लाओ ॥ २० ॥ तब हे नृप ! बडो बली रुक्मिणीनंदन प्रद्युम्नने अश्वशालामें जायके सोननके

शाँकरनमें बँधे हजारन घोड़ानकौं देखें उनमेंसे यज्ञके योग्य एक घोडेको देखके अपने हाथसे हँसतेने खेलकरके बंधनसे खोलके छोड़दियो वो छोडोभयो घोडा धीरेधीरे शालाके बाहिर आयो ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ लाल जाको मुख है पीली जाकी पूँछ है श्याम जाको एक कर्ण है मोतिनकी मालासो शोभित है और बडो दिव्य जाको दर्शन है ॥ २४ ॥ श्वेतछत्रसो युक्त है शृंगार जाको हैरह्योहै और आगे पीछे तथा बीचमें तो कृष्णके पुत्रनसो अच्छीतरहसों रक्षित है ॥ २५ ॥ जैसे भगवान्‌की देवता सेवा करें ऐसे जाकी सेवा कररहेहैं और अनेक खंडमंडलेश्वर राजनकरके वो घोडा रक्षित है ॥ २६ ॥ वो अश्व अपने खुरनसो भूतलको विदीर्ण करतो आयोहै तब प्रसन्नभये राजा उग्रसेनने श्याम जाको कान है या घोडेको आयो देख ॥ २७ ॥ वाकी करनेलायक विधिके लिये मोको आज्ञा दीनी कि महाराज याकी कर्तव्यार्थविधिको

स्वर्णशृंखलयाबद्धाञ्छ्यामकर्णान्सहस्रशः ॥ विलोक्यैकंस्वहस्तेनयज्ञयोग्यंतुरंगमम् ॥२२॥ प्रहसन्मोचयामासबंधनान्नृपलीलया ॥ सहयो
निर्ययौमुक्तोशालायाश्शनैःशनैः ॥ २३ ॥ रक्ताननोपीतपुच्छःश्यामकर्णोमनोहरः ॥ स्रग्भिर्मुक्ताफलानाञ्चशोभितोदिव्यदर्शनः ॥ २४ ॥
श्वेतातपत्रेणयुतोचामरैःसमलंकृतः ॥ अग्रतोमध्यतश्चैवपृष्ठतश्चहरेःसुताः ॥ २५ ॥ सेवंतेहरिराजंवैसुराःसर्वेहरिंयथा ॥ तथान्यैरक्ष्यमाणस्तुम
ण्डलेशैस्तुरंगमः ॥ २६ ॥ प्राप्तोर्थमंडपंकुर्वन्खुरक्षततलांमहीम् ॥ नृपोवीक्ष्यागतंतत्रश्यामकर्णंमुदान्वितः ॥२७॥ प्रेषयामाससमांराजन्क्रिया
कर्तव्यतांप्रति ॥ सोहंनृपंचसंस्थाप्यरुचिमत्यासमन्वितम् ॥२८॥ पिंडारकेप्रयोगंवैकारयामासधर्मतः ॥ नृपश्चैत्रेपूर्णिमायांदीक्षितोजिनसं
वृतः ॥ २९ ॥ असिपत्रव्रतंराजन्सचकारमदाज्ञया ॥ अहंतुयादवेन्द्रस्यकुलपूज्यगुरुर्मुनिः ॥ ३० ॥ सर्वेषांचैवविप्राणामाचार्योह्यभवन्नृप ॥
अथविप्राब्रह्मघोषैःश्रीकृष्णस्याज्ञयास्थिताः ॥ ३१ ॥ सर्वेप्रपूजयामासुर्हेरंबादीन्सुरान्पृथक् ॥ ततःसर्वेमुनिगणाःसंस्थाप्यतुरगंनृप ॥ का
श्मीरचन्दनेनापिपुष्पस्रग्भिश्चतंदुलैः ॥ ३२ ॥ नीराजनादिभिर्धूपैःसुधाकुण्डलकादिभिः ॥ पूजयित्वाहयंभूपंदानार्थंतुह्यनोदयन् ॥ ३३ ॥
ततःश्रुत्वाहुकःशीघ्रंपूर्वंमह्यंददौधनम् ॥ एकलक्षंतुरंगाणांसहस्रंहस्तिनांतथा ॥ ३४ ॥ द्विसहस्रंरथानांचधेनूनांलक्षमेवच ॥ शतभारसुवर्णा
नामीदृशींदक्षिणांनृपः ॥ ३५ ॥ निमंत्रितेभ्योविप्रेभ्यउग्रसेनोनृपस्ततः ॥ यथोक्तांदक्षिणांराजन्प्रददौतांचत्वंशृणु ॥ ३६ ॥

करो तब मैंने रुचिमतीरानीसहित उग्रसेनजीको स्थापन करायो ॥ २८ ॥ तब उग्रसेनने चैत्रशुद्ध पूर्णिमाके दिन कारो मृगचर्म पहरो और दीक्षा लीनी ॥ २९ ॥ और मेरी आज्ञाते असिपत्रनाम व्रत कियो यादवेंद्र उग्रसेनको कुलपूज्य मैं हे नृप ! गुरु हो ॥ ३० ॥ याते सब ब्राह्मणनको आचार्य्य मैंही होतोभयो तब सब ब्राह्मण श्रीकृष्णकी आज्ञासो वेदध्वनि करनेको प्रवृत्त भये ॥ ३१ ॥ और गणपत्यादिक देवतानकी पूजा करावतेभये तदनन्तर सब मुनिगणनने वा घोडेको खडाकरके केसर, चंदन, फूलमाला और चावल ॥ ३२ ॥ आरती, धूप और कुण्डलादिकनसो घोडेका पूजन शृंगारकरके राजाते कही कि आप दान करौ ॥ ३३ ॥ तब राजा उग्रसेन या वाक्यको सुनके शीघ्र सबके पहले मेरेलिये दान दिये एक लाख तो घोडा, एक हजार हाथी, ॥ ३४ ॥ दो हजार रथ, एक लाख गऊ और सौ १०० भार सुवर्णकी मेरे लिये दक्षिणा दीनी ॥ ३५ ॥ तदनन्तर निमंत्रण

किये ब्राह्मणनको उग्रसेन राजाने यथोक्त विधिसे दक्षिणा दीनी सो तुम सुनो ॥३६॥ एक हजार घोडा, दोसौ हाथी, दोसौ २०० रथ, एक हजार गऊ ॥ ३७ ॥ और बीश भार सुवर्ण ये दक्षिणा एक एक ब्राह्मणनकौ दीनी बाकी और जे ब्राह्मण विना निमंत्रणके आयेहैं उन एक एकको विधि विधानते प्रणाम करके ॥ ३८ ॥ एक एक हाथी, एक एक गऊ एकएक रथ, एकएक घोडा, एकएक भार सुवर्ण उग्रसेन राजाने दक्षिणा दीनी ॥ ३९ ॥ या प्रकारसो दान करके फिर घोडाके माथेमें केसरियाचंदनको तिलक लगायके सुवर्ण को एकपत्र माथेमें बाँधोहै ॥४०॥ ता पत्रमें सब यादवनके आगे उग्रसेनराजाको उत्कट जो प्रताप है सो मैने लिखोहै ॥४१॥ कि चंद्रवंशमें यदुराजाके वंशमें एक उग्रसेननामको राजा विराजैहै इंद्रादिक देवता जाके हुकुमके अनुसार वरताबो करैहैं ॥ ४२ ॥ और श्रीकृष्ण भगवान् जाके सहायक हैं जे भक्तनके पालन करनवारे उग्रसेनके स्नेहसो द्वारकामें निवास

घोटकानांसहस्रंचद्विपानांशतमेवच ॥ रथानांद्विशतंचैवसहस्रंचगवांतथा ॥ ३७ ॥ विंशद्भारंचहेमानामीदृशींदक्षिणांपुनः ॥ अथागतेभ्यो विप्रेभ्योनत्वाराजाविधानतः ॥ ३८ ॥ गजमेकंरथंगांचस्वर्णभारंचघोटकम् ॥ एकैकस्मैचविप्रायदक्षिणांप्रददौनृपः ॥३९॥ एवंकृत्वातुदानंवै ललाटेतुरगस्यच ॥ कमनीयेकुंकुमाद्यैस्वर्णपत्रंबबंधह ॥४०॥ तत्राहमुग्रसेनस्यप्रतापंवीर्यमूर्जितम् ॥ ततोऽलिखंसभायांवैयादवानांचपश्यताम् ॥४१॥ चन्द्रवंशेयदुकुलउग्रसेनोविराजति ॥ इन्द्रादयस्सुरगणायस्यादेशानुवर्तिनः॥४२॥ सहायोयस्यभगवाञ्छ्रीकृष्णोभक्तपालकः॥ अस्तिवैद्वारकापुर्यांतद्भक्त्यानिवसन्हरिः ॥ ४३ ॥ तद्वाक्याद्धयमेधंसउग्रसेनोनृपेश्वरः ॥ चक्रवर्तीहठाद्यज्ञंस्वयशोर्थंकरोतिहि ॥ ४४ ॥ मोचितस्तेनतुरगोहयानांप्रवरःशुभः ॥ तद्रक्षकःकृष्णपौत्रोऽनिरुद्धोवृकदैत्यहा ॥ ४५ ॥ गजाश्वरथवीराणांसेनासंघसमन्वितः ॥ राजानोयेकरिष्यंतिराज्यंकौशूरमानिनः ॥ ४६ ॥ तेगृह्णंतुयज्ञहयंस्वबलात्पत्रशोभितम् ॥ तम्मोचयतिधर्मात्मागृहीतंचहयंनृपैः ॥ ४७ ॥ स्वबाहुबलवीर्येणानिरुद्धोलीलयाहठात् ॥ तस्यान्यथाचपदयोःपतित्वायांतुधन्विनः ॥ ४८ ॥ इतिपत्रेचलिखितेदध्मुःशंखान्यदूत्तमाः ॥ कांस्यतालमृदंगाद्यानेदुर्भेर्यश्चगोमुखाः ॥ ४९ ॥ मंगलानिचरित्राणिश्रीकृष्णबलदेवयोः ॥ गंधर्वास्तत्रगायंतिननृतुरप्सरसोमुदा ॥ ५० ॥

करैं हैं ॥ ४३ ॥ तिन श्रीकृष्णकी आज्ञासो राजाधिराज राजा उग्रसेन चक्रवर्ती अपने यशके लिये हठसो अश्वमेध यज्ञको कररहेहैं ॥ ४४ ॥ वाने बडो उत्तम श्यामकर्ण ये घोडा अश्वमेधको छोडोहै ता घोडेको रक्षक श्रीकृष्णको नाती अनिरुद्ध या घोडेके सङ्गमें है ॥ ४५ ॥ गज, अश्व, रथनपे बैठे वीरनकी सेनाके समूहसो युक्त जे कोई राजा शूरवीर आपेको माननवारे भूमिमें हैं ॥ ४६ ॥ वे राजा सुवर्णपत्र जाके माथेपे बँधोहै ऐसे या अश्वमेधके घोडेको अपने बलसौं पकरौ तब राजानके पकरे या घोडेको धर्मात्मा अनिरुद्ध अपने बाहुनके बलवीर्यसो बडे हठसो छुडावेगो और जो राजा घोडेको न पकरै सो अनिरुद्धके पाँवनमें आयके परो ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ऐसे लिखके सुवर्णपत्र जब घोडेके माथेमें बाँधौ तब यादवनने शंख बजाये और कांस्यताल, मृदंगादिक तथा भेरी और गोमुखा बजे ॥ ४९ ॥ और श्रीकृष्ण बलदेव दोनोंनके मंगल चरित्रनको गन्धर्व गायन

लगे और अप्सरा बडे आनंदसो नृत्य करनलगीं ॥ ५० ॥ तदनंतर बडे प्रसन्न हैके उग्रसेनने सब यादवनके देखतेमें प्रद्युम्नके पुत्र अनिरुद्धको वा घोडेके रक्षा करनेको हुकुम दियो कि ये कहीं जाने न पावे तुम काबूमें राखो ॥५१॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डे भाषाटीकायां हयपूजनं नामैकादशोऽध्यायः ॥११॥ गर्गजी कहैहै कि फिर द्वारिकामें उग्रसेनने या अश्वको पूजनकर विधिसो चमर बांध वेदध्वनिके शब्द आके संगमें ताको छोडोहो ॥ १ ॥ तब ये अश्व सुधाकुंडलकनको खायके सुवर्णकी मालानसो शोभित निकसोहे ॥२॥ या अश्वकी रक्षाके लिये राजा उग्रसेनने बडे आदरसो वृकासुरके मारनेवारे अनिरुद्धको आज्ञा देके ये कही ॥ ३ ॥ उग्रसेन बोले कि, हे श्रीकृष्णपौत्र प्राद्युम्ने ! (प्रद्युम्नपुत्र!) जो तुमने वचन कहा कि हम घोडेकी रक्षा करेंगे वो अपनी इच्छासे जलदीसे करो ॥ ४ ॥ मेरे राजसूय यज्ञमें पहले प्रद्युम्नने भूमिकी रक्षा करीही तुमभी तो उन्हींके बडे पुत्र हो

अथानिरुद्धंतुरगस्यपालनेभूत्वाप्रसन्नःकिलकार्ष्णिनन्दनम् ॥ समादिदेशाच्युतयेवसंस्थितंयदूत्तमानामधिपस्यपश्यतः ॥ ५१ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांहयमेधचरित्रसुमेरौहयपूजनंनामैकादशोऽध्यायः ॥११॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ अथराजाकुशस्थल्यांपूजयित्वातुरंगमम् ॥ मुमोच ब्रह्मघोषेणविधिनाबद्धचामरम् ॥ १ ॥ सुधाकुण्डलकाःसोपिभुक्तातुरगराट्ततः ॥ निर्ययौस्वर्णमालाभिःशोभितःकुंकुमेनच ॥ २ ॥ रक्षणार्थंहयस्यार्थेनादरेणनृपेश्वरः ॥ अनिरुद्धंवृकहणमूचेरक्षार्थमुद्यतम् ॥ ३ ॥ ॥ उग्रसेनउवाच ॥ ॥ श्रीकृष्णपौत्रप्राद्युम्नेत्वयायत्कथितंवचः ॥ पालनार्थंतुरंगस्यस्वेच्छयातत्कुरुत्वरम् ॥ ४ ॥ मद्राजसूयेपूर्वंवैप्रद्युम्नेनजितामही ॥ त्वंतुशूरोसिबलवान्धन्वीतस्यात्मजोमहान् ॥ ५ ॥ वृकस्तुशकुनेर्भ्रातामहादैत्योहतस्त्वया ॥ राजानश्चजितास्सर्वेभीष्मोयुद्धेहितोषितः ॥ ६ ॥ अहोमृगांकलोकेशौयस्मिन्संलीनतांगतौ ॥ तस्मात्त्वामृषयःसर्वेपरिपूर्णंवदंतिहि ॥ ७ ॥ तस्मात्पालयत्वंवीरसेनयाचपरीवृतः ॥ राजन्येभ्यश्चसर्वेभ्योहयमेधतुरंगमम् ॥ ८ ॥ अर्भकान्विरथान्भीतान्प्रपन्नान्दीनमानसान् ॥ सुप्तान्प्रमत्तानुन्मत्तान्रणेतान्मानिपातय ॥ ९ ॥ श्रीकृष्णस्यप्रतापेननिर्विघ्नंतेस्तुकार्ष्णिज ॥ साश्वस्त्वंपुनरागच्छकुशलीसेनयान्वितः ॥ १० ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ ततःश्रुत्वानिरुद्धस्तुनृपस्यवचनंशुभम् ॥ तथेत्युक्त्वाहयस्यापिपालनार्थंमनोदधे ॥ ११ ॥ अथानिरुद्धंतेविप्राःकृष्णचन्द्राज्ञयात्वरम् ॥ तंमंत्रैःस्नापयित्वाचपूजांचक्रुर्मुदान्विताः ॥ १२ ॥

धनुर्धारी और शूरवीर बडे बलवान हो ॥५॥ शकुनिका भाई वृक नामका दैत्य बडा बली तुमने मारो सब राजा संग्राममे जीते और भीष्मको भी संग्राममें तुष्ट कियो ॥६॥ चंद्रमा और ब्रह्माजी ये दोनों तुमारे बीचमें लीन भयेहैं इसीसो आपको सब ऋषिजन परिपूर्ण कहैहैं ॥७॥ यासो हे वीर ! सेनासो युक्त भये आप सब राजानसो या अश्वमेधके घोडेकी रक्षा करो ॥ ८ ॥ बालकनको विरथनको डरपेनको शरण आयेनको जिनके दीन मन हैं तिनको सोवतेनको प्रमत्तपुरुषनको और उन्मत्तपुरुषनको संग्राममें मत मारियो ॥ ९ ॥ श्रीकृष्णके प्रताप करके हे प्रद्युम्नपुत्र ! तुम सर्वत्र निर्विघ्न होके और सब सेना सहित अश्वको संग लेकर कुशलसे तुम आओ ॥ १० ॥ गर्गजी कहते हैं कि या प्रकार अनिरुद्धजी भी उग्रसेन राजाके कहे वचनको सुनकर बहुत ठीक है ऐसे कहिके वा अश्वकी रक्षा करबेको मन करते भये ॥ ११ ॥ तब तिन ब्राह्मणनने बहुत शीघ्रतासे श्रीकृष्णकी

आज्ञासों अनिरुद्धको मंत्रनसों पूजनकर स्नान करावते भये और बडे प्रसन्न भये ॥ १२ ॥ फिर उग्रसेनने विधानसों अनिरुद्धको तिलक करके और बलि देके एक खड्ग युद्धके लिये दियो तदनंतर ॥ १३ ॥ शूरसेनजीने रत्नकी माला और वसुदेवजीने कुंडल, बलदेवजीने कवच, श्रीकृष्णने चक्र और प्रद्युम्नने कृष्णको दियोभयो धनुष और अक्षयबाणनके भरे अपने दो तरकस अनिरुद्धको दिये ॥ १४ ॥ १५ ॥ तब शिवजीने अपने त्रिशूलमेंते निकासके त्रिशूल दियो उद्धवजीने किरीट दियो और देवकीजीने पीतवस्त्र दियो ॥ १६ ॥ वरुणदेवताने नागपाश दियो स्वामिकार्तिकजीने शक्ति दीनी पवनदेवने दो पंखा दिये यमराजने कालदंड दियो ॥ १७ ॥ कुबेरने हीरानको हार, अर्जुनने परिघ भद्रकालीने बडीभारी गदा और सूर्यने माला दियो ॥ १८ ॥ भूमिने योगमयी खडाउँ दिये गणपतिने दिव्यकमल और अक्रूरजीने विजयको देनवारो दक्षिणावर्त

अनिरुद्धस्यतिलकंकृत्वाराजाविधानतः ॥ बलिंदत्वाचयुद्धायकरवालंददौततः ॥ १३ ॥ शूरोददौरत्नमालांतस्मैशौरिश्चकुंडले ॥ बलदेवश्च कवचंस्वचक्रंहरिरेवच ॥ १४ ॥ प्रद्युम्नश्चानिरुद्धायकृष्णदत्तंधनुर्ददौ ॥ तथास्वतूणौराजेंद्रतस्मैचाक्षयसायकौ ॥ १५ ॥ स्वत्रिशूलात्ससुत्पा द्यत्रिशूलंप्रमथाधिपः ॥ उद्धवश्चकिरीटंवैपीतवस्त्रंचदेवकः ॥ १६ ॥ प्रचेतानागपाशंचशक्तिंशक्तिधरःकिल ॥ श्वसनोव्यजनेदिव्येस्वदंडं यमराट्पुनः ॥ १७ ॥ हीरहारंराजराजोपरिघंतुधनंजयः ॥ भद्रकालीगदांगुर्वीददौकुंतंदिवाकरः ॥ १८ ॥ भूःपादुकेयोगमय्योपद्मंदिव्यंगणा धिपः ॥ शंखंचदक्षिणावर्तंसक्रूरोविजयप्रदम् ॥ १९ ॥ सहस्रवाजिसंयुक्तंविश्वकर्मविनिर्मितम् ॥ सहस्रचक्रंस्वर्णाढ्यंब्रह्मांडांतर्बहिर्गतिम् ॥ ॥ २० ॥ छत्रेणशतकुंभैश्चपताकाभिःशतैरपि ॥ शोभितंमेघनिर्घोषंघंटामंजीरनादितम् ॥ २१ ॥ मनोवेगंमहादिव्यंजैत्रंरत्नमयंरथम् ॥ अनिरुद्धायप्रददौद्वारकायांपुरंदरः ॥ २२ ॥ कंबुदुन्दुभयोनेदुःकांस्यवीणादयस्तदा ॥ मृदंगवेणवोरागेजयध्वनिसमाकुलैः ॥ २३ ॥ ब्रह्मघोषैर्लाजपुष्पैर्मुक्तावर्षसमन्वितैः ॥ अनिरुद्धोपरिसुराःपुष्पवर्षंप्रचक्रिरे ॥ २४ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायांहयमेधखण्डेऽनिरुद्धविजया भिषेकोनामद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ ॥ अथनत्वागुरून्सोपिप्रायात्प्रद्युंचदेवकीम् ॥ रोहिणींरुक्मिणींभामा मन्याःसर्वाहरिप्रियाः ॥ १ ॥

शंख दियो ॥ १९ ॥ विश्वकर्माको बनायो एक हजार जामें घोडा जुते एक हजार पहिया जामें लगे, ब्रह्मांडके बाहिर भीतर, वर्तमान, केवल, सुवर्णको बनो ॥ २० ॥ सुवर्णको जामें छत्र, सुवर्णकीही जामें पताका तिनसों शोभित, मेघकेसे शब्दके घंटासों शब्दित ॥ २१ ॥ मनकोसो जाको वेग, महादिव्य. जीतवेवारो, निरे रत्नको जडो जो रथ है ता रथको अनिरुद्धके लिये इंद्रने दियो ॥ २२ ॥ अनिरुद्धके चलवेके समय शंख, दुंदुभी, कांस्य, मृदंग, वेणु बजे और सबनने जय होय जय होय ऐसी ध्वनि सब ओरसों करी ॥ २३ ॥ ब्राह्मणने वेदध्वनि करी नगरवधूटीने धानकी खीलें और मोती वर्षाये और देवताने आकाशमेंसे अनिरुद्धके ऊपर फूल बरषाये ॥ २४ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहिता यामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां विजयाभिषेको नाम द्वादशोध्यायः ॥ १२ ॥ गर्गजी कहैहैं कि तदनंतर अनिरुद्धहू गुरुनको प्रणाम करके देवकीजी, रोहिणी और रुक्मिणी,

सत्यभामा औरहू सब हरिप्रियानको अपनी दादीनको प्रणाम करके ॥ १ ॥ और रति तथा रुक्मिवतीको प्रणाम करके बोले कि मोकूं घोडेकी रक्षा करवेको यादवसहित राजाने हुकम दियोहै सो मैं घोडेकी रक्षा करवेको जाउँहूं मोकूँ हुकम देउ ॥ २ ॥ तब वे सब गद्गद हैगई अनिरुद्धको छातीते लगायके प्रणाम कररहेको आशीर्वाद देतीभई ॥ ३ ॥ तब उन्हें प्रणामकर फिर अपने निजमहलनमें पत्नीनसों आज्ञा लेवेको गये तब तीनों पत्नी अपने प्राणपतिको आयो देखके ॥ ४ ॥ बडो आदर करतीभई और विरहसों अत्यंत खेदयुक्त भई तब उन सबनको आश्वासन करके फिर अनिरुद्धजी सभामें आये ॥ ५ ॥ गर्गजी कहेंहै कि तदनंतर बडे बूढे सब पूज्य यादवनको ऋषिनको गुरुलोगनको उग्रसेनको शूरसेनको ॥ ६ ॥ वसुदेवजीको दाऊजीको कृष्णको प्रद्युम्नको और सब यादवनको अनिरुद्धने प्रणाम कियो तब इन सबनने आशीर्वाद दिये और

नत्वारतिंरुक्मिवतीमहंगच्छाम्युवाचह ॥ राज्ञादिष्टःपालनार्थंहयस्यसहयादवैः ॥ २ ॥ ताश्चगद्गदभाषिण्योतंपरिष्वज्यकार्ष्णिजम् ॥ आशिषंप्रददौराजंस्तस्मैचप्रणतायवै ॥ ३ ॥ नत्वाताश्चययौसोपिभार्याणांभवनानिच ॥ तमागतंस्वभर्तारंतिस्रःपत्न्योविलोक्यच ॥ ४ ॥ आदरंतस्यनाश्चक्रुर्विरहात्खिन्नमानसाः ॥ आश्वासयित्वाताःसोपिचाजगामसभांकिल ॥ ५ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ अथाध्वरार्थेराजेन्द्रमुनिभिःकृतमंगलः ॥ सर्वाँश्चऋषीन्गुरूंश्चैवनृपेन्द्रंशूरमेवच ॥ ६ ॥ वसुदेवंचहलिनंकृष्णंस्वपितरंतथा ॥ अन्यांश्चयादवान्पूज्याननिरुद्धःप्रणम्यच ॥ ७ ॥ पूजितोनागरैःसर्वैर्धनुष्पाणिःशरीनृप ॥ बद्धगोधांगुलित्राणःकवचीकुण्डलावृतः ॥ ८ ॥ उपानद्गूढपादश्चपंचास्यसमविक्रमः ॥ करवालधरश्चर्मीकिरीटीशक्तिहस्तकः ॥ ९ ॥ महावीरःसुवर्णस्यह्यलंकारैरलंकृतः ॥ पुरंदररथेनापिनिर्ययौस्वपुराद्बहिः ॥ १० ॥ गीतवादित्रघोषेणब्रह्मघोषेणकार्ष्णिजम् ॥ यास्यंतंचामरैर्युक्तंददृशुःपुरवासिनः ॥ ११ ॥ ततःश्रीकृष्णचंद्रेणप्रेषिताउद्धवादयः ॥ भोजवृष्ण्यंधकमधुशूरसेनदशार्हकाः ॥ १२ ॥ अथराजायदून्प्राहानिरुद्धस्यचयादवाः ॥ सहायार्थंतुप्रधनेवदतात्कःप्रयास्यति ॥ १३ ॥ उग्रसेनवचःश्रुत्वासांबोजांबवतीसुतः ॥ सर्वेषांपश्यतांनत्वानृपंवचनमब्रवीत् ॥ १४ ॥

ब्राह्मणनने मंगल कियो है ॥ ७ ॥ सब नगरवासीननने सत्कार जिनको कियो ऐसे अनिरुद्ध हे राजन् ! धनुष बाणको हाथमें ले दस्ताने चढाय कवचको पहर कुंडल धारणकिये ॥८॥ पाँवनमें जोडा पहर सिंहके समान है पराक्रम जाको ढाल तरवार लेके शक्तिको रथमें धर किरीटको धारण कियोहै ॥ ९ ॥ वीरनमें महावीर सुवर्णके अलंकारनसों अलंकृत इंद्रके दिये रथमें बैठके नगरके बाहिर निकसेहैं ॥ १० ॥ गीत और बाजेनके घोषसों और वेदध्वनिके शब्दसों युक्त चमर जिनपै ढुरते जायँ हैं तिनको पुरवासी देखते भये ॥ ११ ॥ तब श्रीकृष्णचंद्रके भेजे उद्धवादिक सब भोज, वृष्णि, अंधक, मधु, शूरसेन, दशार्ह अनिरुद्धकी रक्षाके लिये तयारभये ॥ १२ ॥ तब राजा उग्रसेन बोले कि हे यादव हो ! संग्राममें अनिरुद्धकी रक्षाके लिये कहो कोन जायगो ॥ १३ ॥ उग्रसेनके कहेको सुनके जांबवतीके पुत्र सांब सबनके देखते देखते उग्रसेनको

प्रणाम करके बोले ॥ १४ ॥ कि हे राजेंद्र ! महारणमें अनिरुद्धलालकी सहायता करिबेको मैं जाऊँगो और सब शत्रुनसों मैं रक्षा करौंगो ॥ १५ ॥ और जो मैं रणांगणमें अनिरुद्धकी रक्षा न करौं तो सत्यवादीकी मेरी प्रतिज्ञाको सुनो ॥ १६ ॥ जो कोई मनुष्य दशमीविद्धा एकादशीका नहीं व्रत करने योग्यका व्रत करताहै वो मनुष्य जिस गतिको जाताहै मैं भी अवश्य उसी गतिको प्राप्त होऊँ ॥ १७ ॥ जो गति गोवध करनेवालोंकी, जो गति ब्रह्मवध करनेवालोंकी होतीहै वो गति मेरी होवे, जो मैं ये काम न करौं ॥ १८ ॥ गर्गजी कहतेहैं—इतने वचनको सांब कहिके महलके भीतर गयेहै फिर वहाँ माताको नमस्कार कर सब अभिप्राय अपना निवेदन कियेहैं ॥ १९ ॥ ये बातको माता जांबवतीजीने सुनके सांबसे प्यार कर विरहवश होके आशीर्वाद दियेहै तदनंतर सब मातानको नमस्कार करके पत्नीके घरको गयेहैं ॥ २० ॥ तब लक्ष्मणाजीने पतिको

॥ ॥ सांबउवाच ॥ ॥ अनिरुद्धस्यराजेन्द्रसहायमहमेवच ॥ महारणेचशत्रुभ्यःकारिष्येसर्वदाकिल ॥ १५ ॥ यद्यहंतस्यरक्षांवैनकरिष्येरणांगणे ॥ प्रतिज्ञांममराजेंद्रशृणुष्वसत्यवादिनः ॥ १६ ॥ त्याज्यांतुदशमीविद्धांयःकुर्वैकादशींनरः ॥ प्रयातियांगतिंराजंस्तामहंप्राप्नुयांध्रुवम् ॥ १७ ॥ गोहंतॄणांगतिर्यातुयागतिर्ब्रह्मघातिनाम् ॥ सागतिर्ममभूयाद्वैनकुर्य्यांकर्मचेदिदम् ॥ १८ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वावचनंसोपिययौचांतःपुरंततः ॥ नत्वाचमातरंसर्वमभिप्रायंन्यवेदयत् ॥ १९ ॥श्रुत्वासातंपरिष्वज्यविरहादाशिषंददौ ॥ ततोमातॄंस्तुताःसर्वान्नत्वापत्नीगृहंगतः ॥ २० ॥ सातमायांतमालोक्यलक्ष्मणावरलक्षणा ॥ दत्त्वासनंबाष्पकंठीनतुकिंचिदुवाचह ॥ २१ ॥ आश्वासयित्वातांसांबोह्यभिप्रायमवर्णयत् ॥ इतिश्रुत्वापतिंप्राहविरहात्खिन्नमानसा ॥ २२ ॥ ॥ लक्ष्मणोवाच ॥ ॥ अनिरुद्धस्यतुरणेरक्षणीयस्त्वयापते ॥ युद्धंहिसंमुखंकार्यंविमुखंनकदाचन ॥ २३ ॥ त्वद्भ्रातॄणांस्त्रियःसंतिमानवत्यःसहस्रशः ॥ संग्रामेयदितेनाथनिशम्यचपराजयम् ॥ २४ ॥ स्मितानना भविष्यंतिहस्यामांचतवप्रियाम् ॥ तदादुःखेनमेनाथमरणंतुभविष्यति ॥ २५ ॥ श्रुत्वैतद्वचनंसांबोप्रत्युवाचप्रियांहसन् ॥ ॥ सांबउवाच ॥ ॥ प्रधनेममसंग्रामंत्रैलोक्यंसंमुखंकिल ॥ २६ ॥ श्रोष्यसेत्वंमयाभद्रेसर्वंचविदलीकृतम् ॥ यदिसांबोरणाच्चक्रेविमुखोजायतेशुभे ॥ २७ ॥ तदासोस्तुस्वपापेनब्रह्मविप्रविनिंदकः ॥ पुनस्त्वहंनपश्यामिचन्द्राकारंतवाननम् ॥ २८ ॥

आयो देखके उत्तम है लक्षण जाके सो पति सांबको आसनदेके आसूं बहनलगे फिर कुछ नहीं बोली ॥ २१ ॥ तब सांबने आश्वासन करके अपनो अभिप्राय कह्यौ तब पतिके कहेको सुनके विरहखेदयुक्त मन जाको ऐसी हैके पतिसों ये वचन कहती भई ॥ २२ ॥ लक्ष्मणाजी बोली कि, हे प्राणपतिजी ! आपको अनिरुद्धकी रक्षाकरनो उचितहै और संमुखसों युद्धकरियो कभी विमुख नहीं हूजियो ॥ २३ ॥ तुमारे भाइनकी बड़ी मानवती हजारन स्त्रीहैं वे हे नाथ ! जो कहीं संग्राममें आप विमुख होउगे या हारोगे तो वे सब मेरी हांसी करेंगी ॥ २४ ॥ तब आपकी प्रियाको मेरो हे नाथ ! अवश्य या दुःखसों मरण होयगो ॥ २५ ॥ तब सांब या कहेको सुनके प्यारीसों हँसत २ ये वचन बोलो है ॥ २६ ॥ तब सांबने कही कि, हे प्रिये ! आजतक मैं संग्राममें सदा सन्मुखही भयो हूँ ॥ २७ ॥ और हे प्रिये ! तुम येही सुनोंगी कि सांबने संग्राममें दिग्विजय करी और हे शुभे !

शूरवीर सांब जो संग्राममें विमुख होय तब वो वेद और ब्राह्मणकी निंदा करनवारेके पापसों लिप्त होउँ और फिर तेरे चंद्राकार मुखको न देखूं ॥ २८ ॥ गर्गजी कहैहैं कि, या प्रकार दूसरी प्रियाको अपनीको आश्वासन करके और अभिमन्युसों तथा सुभद्रासों मिलके घरमेंसों निकसेहैं ॥ २९ ॥ धनुषको हाथमें लेके क्षणमें जाके खड्ग जुतेहुये रथमें बैठके यादवनको संगलेके उपवनके पास गयेहैं जहाँ अनिरुद्धजी है ॥ ३० ॥ तब गद आदि अपने सब भाई और भानु, दीप्तिमानसो आदिलेके जे हैं वे सब श्रीकृष्णने भेजेहैं ॥ ३१ ॥ ते सब धनुषनकों लिये बड़े शूरवीर सिंहकी ध्वजावारे और दिव्य सुवर्णाभरणनको पहरे ऐसे घोड़ेनसों जुते रथनमें बैठे आयेहैं ॥ ३२ ॥ ये भी सब धनुषधारी बड़े शूर कवचनको पहरे युद्धमें प्रवीण और चतुरंगसेनाको लियेहैं ये किरोड़न है ताल हंस और मत्स्यकी जिनके ध्वजा हैं ॥ ३३ ॥ जिनके देवतानके विमानकेसे ऊँचे रथ, छत्र, चमर जिनमें लगे

॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ ॥ इत्याश्वास्यप्रियांसांबोद्वितीयांचप्रयत्नतः ॥ अभिमन्युंसुभद्रांचमिलित्वानिर्ययौगृहात् ॥ २९ ॥ चापीनैस्त्रिशकःसज्जोस्यंदनीयादवैर्वृतः ॥ प्रातश्चोपवनेसांबोनिरुद्धोयत्रवर्त्तते ॥ ३० ॥ ततःस्वभ्रातरःसर्वेश्रीकृष्णेनगदादयः ॥ प्रेषिताआत्मजाश्चैवभानुदीप्तिमदादयः ॥ ३१ ॥ सर्वेहिधन्विनःशूरादंशितायुद्धकोविदाः ॥ चतुरंगबलोपेतानिर्जग्मुःकोटिशःपुरात् ॥ ३२ ॥ तालहंसमीनबर्हिमृगराजध्वजैरथैः ॥ दिव्यैश्चकनकांगैश्चचतुर्वाजिसमन्वितैः ॥३३॥ महोच्चैर्देवधिष्ण्याभैश्छत्रचामरसंयुतैः ॥ सूर्याभैश्चसुवर्णस्यकुम्भैर्जालकतोरणैः ॥ ३४ ॥ रेजुःसर्वेकृष्णसुताःकुशस्थल्याविनिर्गताः ॥ ततश्चनिर्ययूराजन्हेमनीडाश्चहस्तिनः ॥ ३५ ॥ गोमूत्रचयसिंदूरकस्तूरीपत्रभृन्मुखाः ॥ अंजनाभाःकज्जलाभाघनश्याममदच्युताः ॥ ३६ ॥ राजीवमूलसदृशाःशुक्लदंतामृगद्विपाः ॥ महोच्चाःपर्वताकारारणद्घंटामहोद्रटाः ॥ ३७ ॥ ऐरावणकुलेभाश्चतिस्रश्शुण्डाश्चपांडुराः ॥ चतुर्दंतास्तुकृष्णेनभौमान्नीताश्चनिर्ययुः ॥ ३८ ॥ ध्वजयुक्तालक्षगजालक्षादुंदुभिसंयुताः ॥ लक्षाःशून्यामहामात्यैःस्वर्णकंबलमंडिताः ॥ ३९ ॥ ततःशूरैश्चसंयुक्तागजेंद्राएककोटयः ॥ इतस्ततोविरेजुस्तेबलेऽब्धौमकरायथा ॥ ४० ॥ उत्पाटचगुल्मान्कुंडैश्चक्षेपयंतोनभस्तले ॥ महींपादैःकंपयंतआर्द्रीकुर्त्वामदैरपि ॥ ४१ ॥

सूर्यकीसी जिनकी कांति सुवर्णके कलश जिनमें विद्यमान और जालीदार जिनमें तोरण है ऐसे कृष्णके पुत्र द्वारिकासे निकसेहैं तदनंतर हे राजन्! सुवर्णमय अंबारी जिनपै ऐसे हाथी निकसेहैं ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ गोमूत्र, सिंदूर और कस्तूरी पत्ररचनावारे जिनके मुख अंजनकेसे जिनके रंग कज्जलकेसे श्याम मद जिनके चुचाय ॥३६॥ कमलकी जड़के समान श्वेत जिनके दन्त मृगद्विप जिनकी जाति बड़े ऊँचे पर्वतकेसे जिनके आकार घंटा जिनके बँधे ॥ ३७ ॥ ऐरावतकुलके तीन तीन जिनके शूँड़ चार चार जिनके दांत भौमासुरको जीतके जिने भगवान् लाये ध्वजा जिनके विद्यमान ऐसे एक लाख दुंदुभीनसों युक्त एक लाख हाथी और एक लाख बिना नगारेके सुवर्णमय झूल जिनपै परी शूर वीर जिनपै बैठे ऐसे एक किरोड़ हाथी इत उत सेनामें सुशोभित भयेहैं समुद्रमें मकर जैसे ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ झाड़ झंकड़नको शूँडनसों आकाशमें फेंकते अपने मद

जलसों धरतीकूं गीली करते और पाँयनसों कँपावते और अपने गंडस्थलसों प्रासाद (परकोटा) किले और पर्वतनको फेंकते और शत्रुसैन्यको खंडन करते श्याम, पीले, काले, श्वेत और लाल रंगकी झूल जिनके ऊपर परी सुवर्णकी सांकर जिनके पाँयनमें पड़ी ऐसे हाथी निकसेहैं ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ तिनके पीछे घोड़े निकसेहैं जे नारदने देखेहैं वह सब सोनेके हारनको पहरे निकसेहैं ॥ ४४ ॥ कोई तो चंचल अंगवाले कोई धूमले कोई श्यामवर्णके कोई कमलके रंगके कोई कृष्णवर्णके सुंदर जिनकी ग्रीवा कोई दूधिया कोई मांसके रंगके कोई हलदीके रंगके कोई केशरिया कोई केसूके रंगके कोई अनेक रंगके कोई स्फटिक रंगके मनकेसे जिनके वेग कोई तोतई कोई तामेके रंगके कोई कसूमेके रंगके कोई वीरबहोटीके रंगके कोई गौर कोई पूर्णेन्दुसे कोई सिंदूरिया कोई अग्निवर्णके कोई बालसूर्यके समान रंगवाले, हे राजन् ! इतने प्रकारके घोड़े सब देशनसो

श्यामपीतकृष्णशुक्लरक्तवर्णैश्चकंबलैः ॥ सुवर्णशृंख प्रासाददुर्गशैलांगान्पातयंतःशिरस्थलैः ॥ रिपूणांचबलंसर्वंखण्डयंतोमहाबलाः ॥ ४२ ॥ लैर्युक्तारेजुरेतादृशागजाः ॥ ४३ ॥ ततस्तुरंगमायेवैनारदेनविलोकिताः ॥ तेसर्वेनिर्गताराजन्स्वर्णहारैश्चसंयुताः ॥ ४४ ॥ केचिद्वैचंचलां गाश्चधूम्रवर्णामनोहराः ॥ श्यामवर्णाःपद्मवर्णाःकृष्णवर्णाःसुकंधराः ॥ ४५ ॥ दुग्धाभाघोटकाःकेचित्तथाकीलालसन्निभाः ॥ हरिद्राभाः कुंकुमाभापालाशकुसुमप्रभाः ॥ ४६ ॥ केचिच्चित्रविचित्रांगाःस्फटिकांगामनोजवाः ॥ हरिद्वर्णास्ताम्रवर्णाःकौसुंभाभाःशुकप्रभाः ॥ ४७ ॥ इन्द्रगोपनिभागौरादिव्याःपूर्णेंदुसन्निभाः ॥ सिन्दूरांगाश्चाग्निवर्णारविबालसमप्रभाः ॥ ४८ ॥ एतेतुरंगमाराजन्सर्वदेशात्समागताः ॥ पुर्यां कृष्णप्रतापेनतेतुसर्वेविनिर्गताः ॥ ४९ ॥ कृष्णस्यवाजिशालासुयेवर्ततेचतेहयाः ॥ वैकुण्ठवासिनश्चैवश्वेतद्वीपनिवासिनः ॥ ५० ॥ केचिन्म यूरवर्णाश्चनीलकण्ठनिभास्तथा ॥ विद्युद्वर्णास्तार्क्ष्यवर्णाःसर्वेपक्षैरलंकृताः ॥ ५१ ॥ शिखामणिधराःशुक्लचामरैःसमलंकृताः ॥ स्रग्भिर्मुक्ता फलानांचरक्तवस्त्रैर्विभूषिताः ॥ ५२ ॥ स्वर्णेनमंडिताःपुच्छमुखपट्टस्फुरत्प्रभाः ॥ सर्वांगसुन्दरादिव्यानिर्गतास्तेसहस्रशः ॥ ५३ ॥ नस्पृशं न्तःपदैर्भूमिंह्येतेकृष्णहयानृप ॥ चंचलावायुवेगाश्चमनोवेगामनोहराः ॥ ५४ ॥ बुद्बुदेष्वतिगाश्चैवपद्मसूत्रेषुभूपते ॥ लूताजालेषुकेचिद्वैचलंतः पारदेष्वनु ॥ ५५ ॥ स्फारावारिषुदृश्यंतेनिराधारानृपेश्वर ॥ अन्येपिनिर्गताराजन्म्लेच्छदेशभवाहयाः ॥ ५६ ॥

आयेहैं ये सब कृष्णके प्रतापसों आयेहै ये सब द्वारकासों निकसेहैं ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ और जे कृष्णकी घुड़शालमें हैं वे और वैकुंठवासी और श्वेतद्वीपवासी कोई मोरके रंगके कोई नीलकंठकेसे कोई बिजुलीके रंगके कोई गरुडके रंगके ये सब पंखवारे दिव्य घोड़ेहैं ॥ ५० ॥ ५१ ॥ शिखामें जिनके मणि श्वेत चमरनसों शृंगार किये मोतीनकी माला और रक्तवस्त्र तिनसों भूषितहैं ॥ ५२ ॥ स्वर्णसों भूषित पुच्छ और मुख पर झूमर तिनसों युक्तहैं सर्वांग जिनके सुंदर ऐसे दिव्य सब हजारन घोड़ा निकसेहैं ॥ ५३ ॥ जे पांवोंसे भूमिका स्पर्श नहीं करतेहैं बड़े चंचल मनको, पवनकोसो जिनको वेग मनके हरनवारे कमलसूतपे और पानीके बबूलनपे चलनवाले चलती जांवमें और पारेके ऊपर चलनवारे जिनके खुर दरियावमें न डूबैं निराधार गतिवारे हे नृपेश्वर ! ये और म्लेच्छदेशमें उत्पन्नभये हैं ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

और पर्वतनको उलांघके वीरनके समेत चलनेवालेहैं ॥५७॥
और किरोडन घोडे ऐसेहैं जे शत (१००) २ योजन चलनेवालेहैं बडे २ गर्त (गड्ढा) दुर्गस्थान नदी सौध (परकोटा) और पर्वतनको उलांघके वीरनके समेत चलनेवालेहैं ॥५७॥ खड्ग, चर्मको धारण करेहै
तब सब पदाति द्वारकासे निकसे हैं धनुष जिनने हाथनमें लेराखेहैं कवच पेहर राखेहैं बडे शूरवीर हैं और महाबली हैं और पराक्रमी हैं ॥ ५८ ॥ खड्ग, चर्मको धारण करेहै
लोहेके कवचनको धारण करेहैं संग्राममें शत्रुनके जीतनवारेहैं ॥ ५९ ॥ या प्रकार निकसी यादवनकी सेनाको देखके देव, दैत्य और सब मनुष्य परम विस्मयको प्राप्त भयेहै ॥६०॥
इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डे त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ गर्गजी कहेहैं कि, तदनंतर अनिरुद्धके मिलवेके लिये उग्रसेनकी आज्ञासों हे नृप ! वसुदेव, दाऊजी, श्रीकृष्ण,
प्रद्युम्न ॥ १ ॥ और सब यादव हे राजन् ! रथनमें बैठके सब निकसेहैं इनने सबनने सेनासों युक्त अनिरुद्धको देखोहै ॥ २ ॥ जो नीति पेहले श्रीकृष्णने राजसूययज्ञमें

शतयोजनगाश्चैवकोटिशःकोटिशोनृप ॥ गर्तदुर्गनदीसौधशैलादींश्चहरेहयाः ॥ उल्लंघयंतोनृपतेसवीरास्तेतुरंगमाः ॥ ५७ ॥ ततश्चनिर्ययुःसर्वे द्वारकायाःपदातिनः ॥ धन्विनोदंशिताश्शूरामहाबलपराक्रमाः ॥ ५८ ॥ खड्गचर्मधराश्चालोहकंचुकमंडिताः ॥ संग्रामेबहुशत्रूणांजेतारो गजसन्निभाः ॥ ५९ ॥ इत्थंविनिर्गतंसैन्यंयादवानांनिरीक्ष्यच ॥ देवदैत्यनराःसर्वेविस्मयंपरमंगताः ॥ ६० ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां ह्यमेधखण्डेयदुसैन्यनिर्गमनंनामत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ ॥ अथतन्मिलनार्थंवैउग्रसेनाज्ञयानृप ॥ वसु देवःकामपालःश्रीकृष्णःकार्ष्णिरेवच ॥ १ ॥ अन्येपियादवाराजन्रथैःसर्वेविनिर्ययुः ॥ गत्वानिरुद्धंददृशुःसेनयातुपरीवृतम् ॥ २ ॥ प्रद्युम्नाय राजसूयेयानीतिःकथितापुरा ॥ तांसर्वामनिरुद्धायकथयामाससमाधवः ॥ ३ ॥ इतिश्रुत्वाचकृष्णस्यशासनंसर्वयादवाः ॥ शिरसाजगृहूराजन्न निरुद्धादयोमुदा ॥ ४ ॥ अथगर्गमुनींश्चैववसुदेवंहलायुधम् ॥ श्रीकृष्णचन्द्रंकार्ष्णिंचप्राद्युम्निःप्रणनामह ॥ ५ ॥ वसुदेवरामकृष्णप्रद्युम्नाद्याः शुभाशिषम् ॥ अनिरुद्धायदत्वाचप्रविष्टास्तेपुरींरथैः ॥६॥ अथानिरुद्धस्यहयोदेशेदेशेगतोनृप ॥ नकेपिजगृहुस्तंवैभयात्कृष्णस्यभूमिपाः॥७॥ यत्रयत्रगतोवाजीतत्रतत्रससैनिकः ॥ कार्ष्णिजःपृष्ठतस्तस्यजेतुंशत्रून्गतःकिल ॥ ८ ॥ इत्थंविलोकयन्राज्यान्यनिरुद्धतुरंगमः ॥ राजितांन र्मदातीरंययौमाहिष्मतींपुरीम् ॥ ९ ॥ चातुर्वर्ण्यसमाकीर्णामश्मदुर्गेणमंडिताम् ॥ सदनैर्गगनस्पर्शैर्महेशस्यालयैर्वृताम् ॥ १० ॥

प्रद्युम्नके आगे कही ही वोही सब नीति अनिरुद्धके आगे कहीहै ॥ ३ ॥ तब श्रीकृष्णके हुकमको सब यादव सुनके अनिरुद्धादिक सब हे राजन् ! शिरसों ग्रहण करतेभये ॥ ४ ॥
तब गर्गजी और मुनीनको वसुदेव दाऊजीको श्रीकृष्णको तथा प्रद्युम्नजीको सबको अनिरुद्धने प्रणाम कीनीहै ॥ ५ ॥ तब वसुदेवजी दाऊजी कृष्णचन्द्र और प्रद्युम्न सब अनिरु
द्धको आशीर्वाद देके रथनमें बैठके पुरीमें प्रवेश करतेभये ॥ ६ ॥ तदनंतर ये अनिरुद्धको घोडा हे नृप ! देशदेशमें गयोहै तब कृष्णके भयसों कोईने नही पकरोहै ॥ ७ ॥ जहाँ जहाँ
ये घोडा गयोहै तहाँ तहाँ सेनासहित अनिरुद्धभी पीछे पीछे शत्रूनके जीतवेको गयेहैं ॥ ८ ॥ या प्रकार ये घोडा अनेक राज्यनको देखतो फिरतो २ नर्मदाके तटपे विराजमान
जो माहिष्मती पुरी तहाँ गयोहै ॥ ९ ॥ चारों वर्ण जामें रहैहैं पाषाणको जामें किलो है आकाशके स्पर्श करनवारे जामें घर और शिवालय जामें बनरहेहैं ॥ १० ॥

वनमें रहेंहें ... पक्षि
इंद्रनील नाम राजाको जामें राज्य है पांच योजनकी जाको प्रमाण है शाल, ताल, तमाल, वट और बेल तथा पीपलके वननसों अत्यंत सुशोभितहै और तलाव वापीसों शोभितहै पक्षि
गण अनेक जातिके पक्षी जामें शब्द कर रहेहैं ऐसी नगरीको या नगरीके एक बागमें गये घोडाने देखोहै ॥ ११ ॥ १२ ॥ या जगह इंद्रनीलको पुत्र नीलध्वज जाको नाम हो वो कहीं अपनी
हजारन वीर जामें ऐसी सेनाको साथमें लिये सिकारको आयोहो ॥ १३ ॥ सोही याने ये अश्व देखोहै जाके मस्तकपे सुवर्णके अक्षरनको लिखो पत्र बँध रह्योहै खिले भये पुष्पनके वनमें
कदंबके वृक्षके नीचे खडोहै ॥ १४ ॥ इतमें उतमें हरी हरी दूबको चर रह्योहै चमर दोनों तरफ जाके बँध रह्योहै गऊके दूधके समान श्वेतहै स्त्रीनके हाथके थापे केसरके जाके लग
रहे हैं मोतीनके हारनको पहर रह्योहै ॥ १५ ॥ तब या घोडेको ये राजकुमर देखके अपने घोडेपैसों उतरके बडे हर्षसों हे नृप ! लीला (खेल) सों या राजकुमरने ये घोडा

॥ ईदृशीं इन्द्रनीलेनराज्ञापिपालितांपञ्चयोजनाम् ॥ शालैस्तालैस्तमालैश्चवटैर्बिल्वैश्चपिप्पलैः ॥ ११ ॥ तडागैश्चैववापीभिर्घुष्टपक्षिगणैस्तथा ॥ नगरीमश्वोददर्शोपवनेगतः ॥ १२ ॥ इंद्रनीलस्यतनयोनाम्नानीलध्वजोबली ॥ पुर्याःसहस्रवीरैश्चमृगयार्थीविनिर्गतः ॥ १३ ॥ ततोददर्शतुरगंसपत्रंनृपनंदनः ॥ प्रफुल्लितेचोपवनेकदंबस्यतलेस्थितम् ॥ १४ ॥ चरंतंचामरैर्युक्तंसौरभेयीपयःप्रभम् ॥ स्त्रीणांकुंकुमहस्तैश्च मुक्ताहारैरलंकृतम् ॥ १५ ॥ हयंदृष्ट्वाराजसुतोस्ववाहादवतीर्यच ॥ केशेधृतंनिजग्राहहर्षेणनृपलीलया ॥ १६ ॥ तत्पत्रंवाचयामासयादवेंद्रेणयत्कृतम् ॥ द्वारकाधिपतीराजासर्वशूरशिरोमणिः ॥ १७ ॥ नान्योस्तितत्समःकोपिचक्रवर्तीबृहच्छ्रवाः ॥ विमोचितस्तुरगराट्तेनासौपत्रसंयुतः ॥ १८ ॥ पाल्यमानोनिरुद्धेनगृह्णंतुसबलानृपाः ॥ तस्यान्यथाप्रपदयोःपतित्वायांतुक्षत्रियाः ॥ १९ ॥ इत्यभिप्रायमालोक्यकोपेनाहनृपात्मजः ॥ अनिरुद्धोधनुर्धारीधन्विनोनवयंस्मृताः ॥ २० ॥ मत्पितरिस्थितेमह्यांकस्तुगर्वंसमाचरेत् ॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वासहयंनीत्वाप्रययौनृपसन्निधौ ॥ २१ कथयामासवृत्तांतंपितुरग्रेहयस्यच ॥ श्रुत्वापुत्रस्यवचनमिंद्रनीलोमहीश्वरः ॥ २२ ॥ शिवभक्तोमहामानीपुत्रंप्राहमहाबलः ॥ ॥ इंद्रनीलउवाच ॥ ॥ समर्थेनपुरादत्तंराजसूयेकृतूत्तमे ॥ २३ ॥ प्रद्युम्नायबलिंकिंचित्कुमंत्रिवचनान्मया ॥ अद्यानिरुद्धस्तुहयंपालयन्पुनरागतः ॥ २४ ॥

पकडलियो ॥ १६ ॥ वा पत्रको बचवायो हो तो जो उग्रसेनजीने जो कीनोहै सो लिखोहै कि, एक द्वारिकापुरीको राजा सब शूरनको शिरोमणि ॥ १७ ॥ जाके समान और कोई नहीं है बडो भारी जाको यश है वा चक्रवर्ती उग्रसेनने ये घोडा पत्र सहित छोडोहै ॥ १८ ॥ अनिरुद्ध याके रक्षकहैं सो जो कोई बली होय सो याको पकरै या अन्यथा अनिरुद्धके पाँवनमें आयके परजाउ ॥ १९ ॥ या अभिप्रायको बाँचकें ये राजकुमर कुपित हैके बोलोहै कि, कहा धनुर्धारी एक अनिरुद्धहीहैं कहा हम कोई नहींहैं ॥ २० ॥ या भूमिमें मेरे पिताके होते वीरपनको अभिमान करनवारो कौनहै गर्गजी कहैहैं कि, ये राजकुमर इतनी कहिके घोडेको लेके राजा अपने पिताके पास गयोहै ॥ २१ ॥ और याने बापके आगे जायके सब वृत्तांत कह्योहै तब इंद्रनील राजा पुत्रके कहेको सुनके ॥ २२ ॥ शिवजीको भक्त बडो मानी और बडो बलवान् अपने पुत्रसों बोलोहै, इन्द्रनील बोलो कि, मैंने पहले अपने

खोटे मंत्रिनके कहेसों समर्थ हैके भी राजसूययज्ञमें मद्युम्नको बलि देदीनो हो आज फिर भी अनिरुद्ध या घोडेको पालन करतो फिर यहां आयोहै ॥ २३ ॥ २४ ॥ देखो याहीसों दैवबल बडो मबलहै जो कुछ विपरीत नहैजाय वोही थोरा है देखो थोरे दिनामेंही यादव कैसे बढे है ॥ २५ ॥ यासों मैं अनिरुद्धादिक सब यादवनको जीतोंगो परन्तु या अभि मानी अनिरुद्धको श्यामकर्ण नहीं देऊँगो ॥ २६ ॥ भक्तिसों जिनको संतुष्ट कियोहै वे शिवजी मेरो पालन करेंगे इतनी कहिके ये बडो वीर माहिष्मतीको पति सेनासहित ॥ ॥ २७ ॥ कलावत्तूकी डोरीसों घोडेको बाँधके युद्ध करवेको मन करतोभयो तब अनिरुद्ध घोडेको देखतो २ आयो ॥ २८ ॥ सो अक्षौहिणीको लिये नर्मदाके तटपे आयोहै हे नृप ! सांब, मधु, बृहद्बाहु, चित्रभानु, वृक, अरुण, ॥ २९ ॥ संग्रामजित, सुमित्र, दीप्तिमान, भानु, वेदबाहु, पुष्कर, श्रुतदेव, सुनंदन, ॥ ३० ॥ विरूप, चित्रबाहु, न्यग्रोध और

अहोदैवबलंयेनकिन्नभूयाद्विपर्य्ययः ॥ गतावृद्धिंद्वारकायामल्पकालेनवृष्णयः ॥ २५ ॥ तस्मात्सर्वान्विजेष्यामिकार्ष्णिजप्रमुखान्यदून्॥ श्यामकर्णंनदास्यामितस्मैमानवृतायच ॥ २६ ॥ पालयिष्यतिमांयुद्धेभक्त्यासंतोषितःशिवः ॥ इत्युक्त्वासेनयायुक्तोवीरोमाहिष्मतीपतिः॥ ॥ २७ ॥ स्वर्णदाम्नाहयंबद्ध्वायुद्धंकर्तुंमनोदधे ॥ ततोनिरुद्धःसंप्राप्तोतुरगंचविलोकयन् ॥ ॥ २८ ॥ अक्षौहिणीशतयुतोनर्मदायास्तटेनृप ॥ सांबोमधुर्बृहद्बाहुश्चित्रभानुर्वृकोरुणः ॥ २९ ॥ संग्रामजित्सुमित्रश्चदीप्तिमान्भानुरेवच ॥ वेदबाहुःपुष्करश्चश्रुतदेवःसुनंदनः ॥ ३० ॥ विरूपश्चित्रबाहुश्चन्यग्रोधश्चकविस्तथा ॥ एतेसमाययूराजन्ननिरुद्धसहायिनः ॥ ३१ ॥ गदश्चसारणोक्रूरःकृतवर्मोद्धिचोद्धवः ॥ युयुधानः सात्यकिश्चशूराएतेचवृष्णयः ॥ ३२ ॥ सहायमनिरुद्धस्यकर्तुंसर्वेसमागताः ॥ स्थित्वातेनर्मदातीरेभोजवृष्ण्यंधकादयः ॥ ३३ ॥ श्यामकर्णमपश्यंतोत्स्वब्रुवन्विस्मयान्विताः ॥ केननीतः सपत्रश्चउग्रसेनस्यभूपतेः ॥ ३४ ॥ तस्मान्मित्राणिसोप्यत्रश्यामकर्णोनदृश्यते ॥ राजसूयेपुरास्यस्मैनरदैत्यसुरादयः ॥ ३५ ॥ नवखंडाधिपाश्चैवनिर्जिताश्चबलिंददुः ॥ यस्यवैशासनंचंडंतिरस्कृत्यकुधीर्नृपः ॥ ३६ ॥ तुरगंहृतवान्मानात्सस्तेनोदंडमर्हति ॥ सर्वेषामितिवाक्यंतुश्रुत्वादृष्ट्वापुरींपुरः ॥ ३७॥ उद्धवंमंत्रिणांश्रेष्ठंप्राहरुक्मवतीसुतः ॥ ॥ अनिरुद्धउवाच ॥ ॥ नगरीयंनदीतीरेकस्यभूपस्यराजते ॥ ३८ ॥

कवि हे राजन् ! ए सब अनिरुद्धके सहायक आयेहै ॥ ३१ ॥ और गद, सारण, अक्रूर, कृतवर्मा, उद्धव, युयुधान और सात्यकि ए सब यादव ॥ ३२ ॥ सब अनिरुद्धकी सहाय करवेको आयेहै सो वे सब भोज, वृष्णि, अंधक इनसों आदि लेके आये हैं ॥ ३३ ॥ सो ये सब श्यामकर्ण घोडा नहीं देखके बड़े भारी विस्मयमें मग्न हैके बोलेहै कि, भाई हो ! न जाने पत्र सहित घोडाको राजा उग्रसेनकेको कौन लेगयोहै ॥ ३४ ॥ जो हे मित्रहो ! वो घोड़ा श्यामकर्ण यहाँ नहीं दीखेहै पहले राजसूययज्ञमें जा उग्रसेनको मनुष्य, दैत्य, देवता ॥ ३५ ॥ और नवखंडके पतिनने हारके बलि दीनीही वाही उग्रसेनके प्रचंड शासनको कुत्सित बुद्धिवारो ये राजा ॥ ३६ ॥ घोडाको लेगयोहै सो ये अभिमानी चोर दंड पावेको योग्य है या प्रकारसों सबनके कहेको सुनके अगारी पुरीको देखके ॥ ३७ ॥ मंत्रिनमें श्रेष्ठ उद्धवसों रुक्मवतीके पुत्र अनिरुद्ध ये वचन बोलेहै । कि, हे उद्धवजी ! या

नदीके किनारे पर ये नगरी कोनसे राजाकी है । ३८ ॥ मोकूँ ऐसो मालूम पडैहै कि, हमारो घोडा याही नगरीमें गयोहै ये अनिरुद्धके कहेको सुनके कृष्णके मित्र उद्धव प्रसन्न ह्वैके
बोलेहै ॥ ३९ ॥ सुनो महाराज ! ये नगरी इंद्रनील नामके राजाकी है माहिष्मती याको नाम है या पुरीमें शिवजीके भक्त चारों वर्ण निवास करैहै ॥ ४० ॥ हे यदुराज ! या राजाने
पहले नर्मदा नदीके तटपर बारह वर्ष तक नर्मदेश्वर शिवजीको पूजन कियोहो ॥ ४१ ॥ तब षोडशोपचार पूजन करवेसों प्रसन्न ह्वैके दर्शन दियोहो और राजाको वर देवेको
प्रेरणा करीहै कि, वर मांगो ॥ ४२ ॥ तब महादेवजीके कहेको सुनके माहिष्मतीको पति राजा इंद्रनील हाथ जोरके गद्गद वाणीसों बोलोहै ॥ ४३ ॥ कि, नर्मदाके स्वामी
तुमको हे ईशान ! जगत्के गुरुको नमस्कार है सकाम पुरुषनके काम पूरण करवेको कल्पवृक्ष हो ॥ ४४ ॥ सो हे महेश्वर ! वर देनवारे आपसों ये वरदान मांगों हूं कि, देव,

तुरंगमोगतोस्त्यस्यामितिमन्येत्वहंकिल ॥ इतितद्वाक्यमाकर्ण्यप्राहकृष्णसखोमुदा ॥ ३९ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ इंद्रनीलस्यनगरी
नाम्नामाहिष्मतीशुभा ॥ महेशपूजनरतावर्णायस्यांवसंतिहि ॥ ४० ॥ नृपेणानेनवृष्णीशनर्मदायास्तटेपुरा ॥ द्वादशवर्षपर्यंतंपूजितोनर्मदेश्वरः
॥ ४१ ॥ ततःशिवःप्रसन्नोभूदुपचारैश्चषोडशैः ॥ तस्मैस्वदर्शनंदत्त्वावरार्थंतमनोदयत् ॥ ४२ ॥ महेशस्यवचःश्रुत्वानृपोमाहिष्मतीपतिः ॥
भूत्वाकृतांजलीरुद्रंप्राहगद्गदयागिरा ॥ ४३ ॥ ईशानत्वांनमस्येहंनर्मदेशंजगद्गुरुम् ॥ पुरुषाणांसकामानांकामरूपसुरद्रुमम् ॥ ४४ ॥
त्वत्तःप्रदातुःकांक्षेहंवरमेतन्महेश्वर ॥ देवदैत्यनरेभ्यस्त्वंरक्षमांसर्वदाभयात् ॥ ४५ ॥ इतितद्वाक्यमाकर्ण्यकृत्तिवासामुदान्वितः ॥ तथास्तु
प्रोच्यराजेंद्रततश्चांतरधीयत ॥ ४६ ॥ तस्मादेषनृपःशूरोहयंतुभ्यंनदास्यति ॥ विनायुद्धेनरुद्रस्यवरात्कंदर्पनंदन ॥ ४७ ॥ इत्थमौपगवे
र्वाक्यमनिरुद्धोनिशम्यच ॥ बलीधैर्येणप्रत्याहयादवानांचशृण्वताम् ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ अनिरुद्धउवाच ॥ ॥ नृपस्यैतस्यरुद्रस्तुसहा
यस्तेहुदाहृतः ॥ तथाकृष्णस्तुभगवान्कृष्णमंत्रिन्ममोपरि ॥ ४९ ॥ इत्युक्त्वायादवैःसार्द्धंवीरोरुक्मवतीसुतः ॥ हयस्यमोचनार्थंवैनृपंजेतुं
मनोदधे ॥ ५० ॥ ततःपरिघनिस्त्रिंशगदाचापपरश्वधैः ॥ बभूवुर्यादवाःसज्जाःप्राद्युम्निर्दंशितेस्थिते ॥ ५१ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायां
हयमेधखण्डेअनिरुद्धप्रयाणंनामचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

दैत्य और मनुष्यसों जो भयहै तासों मेरी सर्वदा रक्षा करो ॥ ४५ ॥ ये शिवजीके कहेको सुनके शिवजी बडे प्रसन्न ह्वैके बोले कि, तथास्तु ऐसे कहिके अंतर्धान ह्वैगये ॥ ४६ ॥
यासों ये राजा बडो शूरवीर है सो तुमको ये घोडाको नहीं देयगो हे कंदर्पनंदन ! ये युद्ध करे बिना नहीं देयगो ॥ ४७ ॥ या प्रकार उद्धवके कहेको अनिरुद्धजी सुनके बडे बली
धीरज धरके यादवनके सुनते सुनते बोलेहै ॥ ४८ ॥ अनिरुद्धने कही कि, देखो उद्धवजी तुमने या राजाके सहायक महादेवजी बतायेहैं तो देखो मेरेहू सहायक श्रीकृष्ण भगवान्
है ॥ ४९ ॥ इतना वचनको अनिरुद्धजी कहिके यादवनसहित घोडेके छुडायवेको और राजाके जीतवेको मन करते भयेहैं ॥ ५० ॥ तदनंतर परिघ, खड्ग, गदा, धनुष और फरसा
नको हाथनमें ले २ के सब यादव तयार ह्वै खडेभये तब अनिरुद्धजी हू कवच पहरके लडवेको तयार भयेहै ॥ ५१ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डे चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

गर्गजी कहैहैं कि, तदनंतर इंद्रनील राजाको पुत्र बडा बलवान् तीन अक्षौहिणी सेनासहित यदूनके जीतवेको बडे रोपसे पिताकी आज्ञासों पुरीके बाहिर निकसोहै ॥ १ ॥ तब श्रीकृष्णको नाती अनिरुद्धने राजकुमारको आयो देख धनुषको हाथमें लेकै इकलोही युद्ध करवेको प्रवृत्त भयोहै जैसे वृत्रासुरके मारवेको इंद्र प्रवृत्त भयोहे ॥ २ ॥ या प्रकार संग्राममें अनिरुद्धने आयके शत्रुनके ऊपर बाणनके समूह छोडेहै तब सबनके मनमें भारी त्रास पैदा भयोहे ॥ ३ ॥ तब नीलकेतुकी सेनाके संग्राममें डरपके सब भागेहैं तब अनिरुद्धजीने अपने दिग्विजयको शंख बजायोहै तब नीलने अपनी सेनाको भागी देख रणमें धनुषकी टंकार कीनीहै ॥ ४ ॥ ५ ॥ फिर अपनी सेनाकों धनुषकी टंकारसों प्रेरणा करी शत्रुनके मध्यमें अनिरुद्धको देख अत्यंत कुपित भयो सांब एक अक्षौहिणी सहित धनुष टंकार करी और वीस बाण तो नीलकेतुके मारे और पांच बाणनसों पांच रथीनके प्रहार कियो

॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ अथेन्द्रनीलस्यसुतोमहाबलोह्यक्षौहिणीभिस्त्रिभिरेवसंयुतः ॥ यदून्विजेतुंस्वपुराद्विनिर्गतोपितुश्चवाक्याद्गुरुरोषपूरितः ॥ १ ॥ तमागतंवीक्ष्यनृपस्यपुत्रंश्रीकृष्णपौत्रस्तुधनुर्गृहीत्वा ॥ युद्धंप्रकर्तुंप्रययौसएकोवृत्रंविजेतुंचयथाबिडौजाः ॥ २ ॥ गत्वानिरुद्धःसंग्रामेशत्रूणामुपरित्वरम् ॥ मुमोचबाणपटलान्सर्वेषांत्रासयन्मनः ॥ ३ ॥ ततश्चदुद्रुवुःसर्वेनीलकेतोश्चसैनिकाः ॥ रणाद्भीताःस्वशंखंचदध्मौप्रद्युम्ननंदनः ॥ ४ ॥ पलायमानांस्वांसेनांदृष्ट्वानीलध्वजोबली ॥ चापटंकारयञ्छीघ्रमाययौरणमंडले ॥ ५ ॥ सेनांस्वांनोदयामासपुनःसोपिधनुर्ज्यया ॥ द्विषांमध्येनिरुद्धंतंदृष्ट्वासांबोत्यमर्षितः ॥ ६ ॥ धनुष्टंकारयन्प्राप्तोह्यक्षौहिण्यावृतोरुषा ॥ विंशद्बाणैर्नीलकेतुंपंचभिःपंचभीरथान् ॥ ७ ॥ अताडयद्गजांश्चैवतथासतुहयान्नरान् ॥ भूम्यांनिपेतुस्तेसर्वेसांबबाणैःप्रताडिताः ॥ ८ ॥ गजोपरिगजाःकेचिद्रथोपरिरथास्तथा ॥ हयोपरिहयाश्चैवनरोपरिनराश्चवै ॥ ९ ॥ तत्क्षणेनाप्यभूद्भूमीरुधिरौघपरिप्लुता ॥ पतितैश्छिन्नभिन्नैश्चद्विपाश्वरथपत्तिभिः ॥ १० ॥ ततःप्रभग्नंस्वबलंविलोक्यनीलध्वजोभूपधनुर्गृहीत्वा ॥ बाणान्विमुंचन्किलयादवानांजेतुंमनोयस्यसचागमद्धै ॥ ११ ॥ सगत्वाप्रधनेराजन्दशबाणैरुषान्वितः ॥ चापंसांबस्यचिच्छेदप्रेमदुर्वचनैरिव ॥ १२ ॥ चतुर्भिश्चतुरोवाहान्द्वाभ्यांकेतुंरथंशतैः ॥ एकेनजघ्नेसूतंसइन्द्रनीलसुतोबली ॥ १३ ॥ एवंकृत्वाचविरथंसांबंवैनृपनंदनः ॥ पुनःसमागतांतस्यसेनांबाणैर्जघानह ॥ १४ ॥

॥ ६ ॥ ७ ॥ हाथी घोडे और मनुष्यनको बाणनसे प्रहार करतेभयो तब वे सब सांबके बाणनके मारे अतिपीडित हैके भूमिपर गिरतेभये ॥ ८ ॥ हाथीनके ऊपर हाथी रथनपे रथ घोडेनपे घोडे और आदमीनके ऊपर आदमी गिरतेभये ॥ ९ ॥ एक क्षणभरमेंही भूमि रुधिरसों भरगई गिरे और छिदे भिदे भये परे हाथी घोडे रथ पदातिनके रुधिरसों भरगई है ॥ १० ॥ तब नीलध्वज राजाने नष्ट भई अपनी सेनाको देखकर हाथमें धनुष लेके बाणनको मारतो यादवनके जीतवेको याको मन भयो है ॥ ११ ॥ तब याने संग्राममें क्रोधसो दश बाणनसो सांबको धनुष या ऐसे छेदन करके पटक दियो जैसे दुर्वाक्यनसों प्रेमकों ॥ १२ ॥ तब या बडो बली इंद्रनीलके पुत्रने चार बाणनसों तो चारो घोडे मारगेरे दो बाणोसों दोऊ ध्वजा पताका काट गेरी सौ बाणनसे रथ तोरगेरो और एकबाणसों सांबको सारथि मारगेरो ॥ १३ ॥ या प्रकार या नीलके पुत्रने सांबको विरथ करके फिर

सन्मुख आई सांबकी सेनाके ऊपर बाण बरसायेहैं ॥ १४ ॥ इतने नीलध्वजकी सब सेना आयगईहै सो यादवनकी फौजके ऊपर बडे तीक्ष्ण बाणनकी वर्षा करनलगी ॥ १५ ॥
तब दोऊ सेनानको परस्पर खड्ग, परिघ, गदा, शक्ति और बाणनसों संग्राम होनलग्यो ॥ १६ ॥ तब सांबने दूसरे रथमें बैठके दृढ धनुषके ऊपर प्रत्यंचा चढायके एकसौ १००
बाण मारे तिनसों याको रथ चूर्ण करदियो ॥ १७ ॥ तब धनुष जाको कटगयो और रथ जाको टूटगयो ऐसो यो राजकुमार बडो कुपितहैके हे मानद ! सांबके ऊपर दौरोहै ॥ १८ ॥
तब वाही समय सांब तत्कालही रथमेंसों कूदके गदाको हाथमें ले बडेक्रोधसों नीलध्वजके सन्मुख दौडोहै ॥ १९ ॥ तब राजा नीलध्वजने सांबको सामने आवतो देख एक गदा
मारी पन याको गदाके प्रहारसों मालासों मारे हाथीकी नाईं नेकभी सांब नहीं घबरायोहै ॥२०॥ तब सांबने नीलध्वजके एक गदा मारी सो गदाके प्रहारसों ये मूर्छित हैके गिरपड़ो

अथनीलध्वजस्यापिसेनासर्वासमागता ॥ यादवानांबलंसंख्येजघाननिशितैःशरैः ॥ १५ ॥ ततःसमभवद्युद्धमुभयोःसेनयोर्मृधे ॥ निस्त्रिंशैः परिघैर्बाणैर्गदापरुषशक्तिभिः ॥ १६ ॥ सांबोन्यंरथमारुह्यसज्जंकृत्वाधनुर्दृढम् ॥ तद्रथंचूर्णयामासशतबाणैरणेबली ॥ १७ ॥ सच्छिन्नध न्वाविरथोगदामुद्यम्यवेगवान् ॥ अभ्यधावद्रणेक्रुद्धोसांबस्योपरिमानद ॥ १८ ॥ तदैवसांबःसहसावतीर्याथरथाद्गदाम् ॥ नीत्वानीलध्वज स्यापिसंमुखेगतवान्रुषा ॥ १९ ॥ तताडगदयासांबमागतंवीक्ष्यभूपजः ॥ नचचालप्रहारेणमालाहतगजोयथा ॥ २० ॥ ततःसांबस्तुगदया तताडनृपनन्दनम् ॥ तत्प्रहारेणपतितोमूर्च्छांप्राप्तोरणेतुसः ॥ २१ ॥ सैनिकाद्दुद्रुवुस्तस्यहाहाकारंसमुच्चरन् ॥ ततोयुद्धायसंक्रुद्धइन्द्रनीलःस मागतः ॥ २२ ॥ साकमक्षौहिणीभ्यांचविमुंचन्धनुषाशरान् ॥ तमागतंविलोक्याथमधुःकृष्णसुतोबली ॥ २३ ॥ धानुष्कोविरथंचक्रइन्द्र नीलंशिलीमुखैः ॥ सेनांसमागतांतस्ययुयुधानोर्जुनप्रियः ॥ २४ ॥ शरैर्विव्याधसमरेमैत्रींदुर्वचनैरिव ॥ ततश्चयादवैर्मुक्तोनृपोमाहिष्मतींय यौ ॥ २५ ॥ गत्वापुर्यांचदुःखार्तःसस्मारस्वपतिंशिवम् ॥ अथतस्मैशिवःसाक्षाद्दत्वादर्शनमुत्तमम् ॥ २६ ॥ पप्रच्छसर्ववृत्तांतंश्रुत्वासतुन्यवे दयत् ॥ इत्थंनिशम्यवचनंप्रत्याहप्रमथेश्वरः ॥ २७ ॥ ॥ शिवउवाच ॥ ॥ शोकंमाकुरुराजेंद्रमद्रोपिमृषानहि ॥ देवदैत्यनराःसर्वेत्वां विजेतुंनचक्षमाः ॥ २८ ॥

॥ २१ ॥ तब याकी सब सेना भागगई और बडो हाहाकार भयो तब कुपित हैके इंद्रनील राजा युद्ध करबेको आयोहै ॥ २२ ॥ दो अक्षौहिणी सेना याके संगमें आई बाणनको
मारतो तब नीलध्वजको आयो देखके बड़ो बली मधुनामको कृष्णको पुत्र ॥ २३ ॥ तामें धनुष लेके बाणनके मारे इंद्रनीलको विरथ करदियो और आइभई याकी सेनाको अर्जुनके
प्यारे सात्यकिने दुर्वाक्यनसों मित्रताको जैसें नाश करै ऐसेही बाणनसों सेनाको नाश कियोहै तब यादवनने जाको छोड़दियो एसो वो नीलध्वज राजा माहिष्मतीको भागके चलोगयो
॥ २४ ॥ २५ ॥ पुरीमें जायके दुःखमें आर्त हैके अपने स्वामी शिवको याद कियोहै तब साक्षात् शिवने दर्शन दियो ॥ २६ ॥ और सब वृत्तांत पूछो तब राजाने सब वृत्तांत
शिवजीसों निवेदन कियो तब प्रमथनके स्वामी शिवजी राजासों बोले ॥ २७ ॥ शिवजी बोले–हे राजेंद्र ! तू शोक मत करै मेरो वर मिथ्या नहीं है सब देव, दैत्य, मनुष्य तोय जीतवेको

समर्थ नहींहैं ॥२८॥ कि हे राजन् ! ये जे कृष्णके पुत्र है श्रीकृष्णके अंशसों उत्पन्न भयेहैं हे महाराज ! ए न तो देवताहैं न दैत्य हैं और न मनुष्य हैं ॥२९॥ इनने जो तोको जीतोहै सो मनको मत बिगारै और हे भूपते ! तू कृष्णके अपराध करबेको योग्य नहींहै ॥ ३० ॥ सो हे नृप ! इसी हेतुसें विधिसों जो ए आयेहैं इनको ये अश्वमेधको घोड़ा देदेउ बिलंब मत करौ ॥ ३१ ॥ ये कहिके रुद्रजी अंतर्धान हैगये तब राजाइ जगत्पतिके माहात्म्यको जानके प्रसन्न हैके अश्वमेधके घोड़ेको लेकें ॥ ३२ ॥ नीलध्वजको संगलेके और बहुतसे रत्नको लेकें और १०० सौ भार सुवर्ण लेकें और एक हजार मत्त हाथीनको लेकें ॥ ३३ ॥ और दशलक्ष घोड़ा दशहजार रथ ये सब लेकर जहाँ अनिरुद्ध हो तहाँ सब मनुष्योंको संग लेकें नमस्कार करनेको आयो है ॥ ३४ ॥ ये राजा विधि विधानसों अनिरुद्धके पास जायकें सब वृत्तांत निवेदन कर फिर प्रणाम कर ये वचन बोलो ॥३५॥ इंद्रनील

एतेकृष्णसुताराजञ्छ्रीकृष्णस्यांशसंभवाः ॥ नदेवायेमहाराजनदैत्यानचमानुषाः ॥ २९ ॥ एतैर्विनिर्जितस्त्वंतुदुर्मनाभवमानृप ॥ अपराधंतु कृष्णस्यकर्तुंनार्हसिभूपते ॥ ३० ॥ समागतेभ्यएतेभ्यस्तस्मात्त्वंविधिनानृप ॥ शीघ्रंप्रयच्छभद्रंतेहयमेधतुरंगमम् ॥ ३१ ॥ इत्युक्त्वांतर्दधेरुद्रोनृपोज्ञात्वाजगत्पतेः ॥ माहात्म्यंचमुदायुक्तोगृहीत्वाक्रतुवाहनम् ॥ ३२ ॥ नीलध्वजेनसहितोरत्नान्यादायभूरिशः ॥ स्वर्णभारशतंचैवमत्तंगजसहस्रकम् ॥ ३३ ॥ नियुतंघोटकानांचह्यादायस्यंदनायुतम् ॥ यत्रानिरुद्धःप्रययौनमस्कर्तुंजनैर्वृतः ॥ ३४ ॥ अनिरुद्धस्यनिकटेगत्वा राजाविधानतः ॥ सर्वंनिवेदयामासनत्वावचनमब्रवीत् ॥ ३५ ॥ ॥ इन्द्रनीलउवाच ॥ ॥ नमःकृष्णायरामायप्रद्युम्नायमहात्मने ॥ नमोनमोनिरुद्धायसात्वतांप्रवरायच ॥ ३६ ॥ आदेशोदीयतांमह्यंकिंकरोम्यसुरार्दन ॥ अनिरुद्धस्तुतंप्राहमयासहनृपोत्तम ॥ ३७ ॥ शत्रुभ्यश्चमित्रहयंपालयत्वंहिमासकम् ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ इतितस्य वचःश्रुत्वातथेत्युक्त्वानृपोनृप ॥ ३८ ॥ नीलध्वजायराज्यंतुदत्त्वागंतुंमनोदधे ॥ ३९ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांहयमेधखण्डे विजयवर्णनंनामपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ अथमुक्तस्तुतुरगोदेशान्सर्वान्विलोकयन् ॥ उशीनरेचविषयेप्राप्तश्चंपावतींपुरीम् ॥ १ ॥ राज्ञाहेमांगदेनापिपालितांदुर्गमंडिताम् ॥ चातुर्वर्ण्यजनाकीर्णांप्रासादैःपरिवेष्टिताम् ॥ २ ॥ यत्रहेमांगदोराजापुत्रेणहंसकेतुना ॥ राज्यंकरोतिसुकृतिर्महाशूरजनैर्वृतः ॥ ३ ॥

बोले कृष्णचंद्रके लिये प्रणाम है राम (बलराम) के अर्थ महात्मा प्रद्युम्नके अर्थ यादवनमे मुख्य अनिरुद्धजीके अर्थ नमस्कार है नमस्कार है ॥ ३६ ॥ हे असुरार्दन ! मैं कहा करों मोकूँ आज्ञा देउ तब अनिरुद्धने इंद्रनीलराजासों कही हे राजन् ! हे मित्र ! मेरे सहित तुम मेरे या घोड़की रक्षा करौ कोई शत्रु बाधा न करे गर्गजी कहेहै हे नृप ! ये कह्यो सुनके इंद्रनीलने कही कि महाराज ! मैं ऐसोही करोंगो ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ और नीलध्वज अपने पुत्रको राज्य देकें संग चलनेको तयार भयो ॥ ३९ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहिताया अश्वमेधखंडे भाषाटीकायां पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ गर्गजी कहतेभये ताके पीछे यहांसो छूटके ये अश्व सब देशनको देखतो उशीनामके देशनमे चंपावती नाम पुरीमे पहुँचो है ॥ १ ॥ बड़े भारी किलेसो शोभित हेमांगद नाम राजासों पालित चारो वर्णके मनुष्य जामे निवास करें अनेक जाके चारो ओर परकोटानसों जो सुशोभित है ॥ २ ॥ जा पुरीमें

हंसध्वज पुत्रसहित हेमांगद राजा राज्य करतो हो और बड़े २ शूर वीर मनुष्यनसों जो राजा रक्षितहो ॥ ३ ॥ तब या हेमांगदने महात्मा अनिरुद्धको घोडा पकर्योहै यादवनको याने कोई माल नही गिने और घोडेको पकर अपनी नगरीको लेगयो है ॥ ४ ॥ घोडेको कलाबत्तूकी डोरीसों बांधके हेमांगद राजा क्रोधसों पूर्ण है पुरीमें भीतर लेगयो पुरीके फाटक बंद करायके ॥ ५ ॥ यादवनके विनाशके लिये किलेके डंडानपे दो लाख २००००० शतघ्नी (तोप) धरवायके युद्ध करवेको तैयार हैगयो ॥ ६ ॥ तदनंतर पांछेसों घोड़ेको देखते अनिरुद्धजी आयेहैं हे राजन् ! अनिरुद्धकी सब सेनाके डेरा तंबू चंपावतीके बाहिर परगये हैं ॥ ७ ॥ तब जब अनिरुद्धजीने घोडा नही देखो तब कृष्णचंद्रके मित्र उद्धवजीसों ये बचन बोले ॥ ८ ॥ अनिरुद्धजी बोले हे मंत्रीजी ! ये पुरी कौनकी है हमारे घोडेको कौन लेगयो ? हे महाबुद्धे ! आप जानतेहो सो विचार कर कहो ॥ ९ ॥ तब

गृहीतस्तेनतुरगोऽनिरुद्धस्यमहात्मनः ॥ स्वपुर्यालीलयाराजन्यादवानगणय्यच ॥ ४ ॥ बद्ध्वाहेमांगदोराजास्वर्णदाम्नाचवाजिनम् ॥ द्वारेषुचकपाटादीन्दत्त्वाक्रोधेनपूरितः ॥ ५ ॥ यादवानांविनाशायदुर्गभित्तिषुमानद ॥ शतघ्न्यश्चद्विलक्षाणिधृत्वायुद्धायवैमनः ॥ ६ ॥ ततः प्राप्तोनिरुद्धस्तुससैन्योश्वंविलोकयन् ॥ चंपावत्याह्युपवनेशिबिरोभूच्चतस्यवै ॥ ७ ॥ अथप्रद्युम्नतनयस्तत्राद्दृष्ट्वातुरंगमम् ॥ उद्धवंकृष्णचन्द्रस्यसखायमिदमब्रवीत् ॥ ८ ॥ ॥ अनिरुद्धउवाच ॥ ॥ कस्येयंनगरीमंत्रिन्केननीतोहयोमम ॥ त्वंजानासिमहाबुद्धेकथयस्वविचार्यच ॥ ९ ॥ इत्थंनिशम्यतद्वाक्यमुद्धवोबुद्धिसत्तमः ॥ ज्ञात्वावार्ताचशत्रूणामिदंवचनमब्रवीत् ॥ १० ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ इयंचंपावतीनाम्नानगरीद्वारकेश्वर ॥ हंसध्वजेनपुत्रेणयत्रहेमांगदोनृपः ॥ ११ ॥ कारोतिराज्यंतेनापिगृहीतस्तुरगस्तव ॥ एषराजामहाशूरोयज्ञस्याश्वंनदास्यति ॥ १२ ॥ पुर्यास्थित्वाभुशुण्डीभिर्बहुयुद्धंकरिष्यति ॥ ननिर्गमिष्यतिबहिर्युद्धायसनृपःपुरात् ॥ १३ ॥ तस्मात्तेच्छानृपतेयथाभूयात्तथाकुरु ॥ इतितद्वचनंश्रुत्वासउवाचरुषान्वितः ॥१४॥ ॥ अनिरुद्धउवाच ॥ ॥ अहंसर्वान्हनिष्यामिदुर्गयुक्तान्बहून्द्विषः ॥ लोहशक्तिसमैर्बाणैःप्रहरार्द्धेनसत्तम ॥१५॥ इत्थंतद्वाक्यमाकर्ण्ययादवाःक्रोधपूरिताः ॥ पुरींहंतुंययुःशीघ्रंमुंचन्बाणांश्चकोटिशः ॥१६॥

बड़े बुद्धिमान् उद्धवजी ये सुनके शत्रुनकी बातको जानकर ये बचन बोले ॥ १० ॥ उद्धवजी बोले हे द्वारकानाथ ! ये चंपावती पुरी है या नगरीमें हंसध्वज नामके पुत्रको लेकर हेमांगद नाम राजा राज्य करैहै ॥ ११ ॥ महाराज वाही हेमांगदने आपका अश्व पकराहै सो महाराज ! ये राजा बडो शूर है ये आपके यज्ञके घोडेको नही देयगो ॥ १२ ॥ पुरीमें भीतर स्थितहैके महाराज बड़ा भारी युद्ध करैगो ये राजा युद्ध करनेको नगरके बाहिर नहीं निकलेगो ॥ १३ ॥ सो हे राजन् महाराज ! जैसी आपकी मरजी आवै सो करै तब ये उद्धवजीके कहेको सुनकर बड़े कुपित हाके अनिरुद्धजी बोले हैं ॥ १४ ॥ सुनो उद्धवजी ! मै सबोंको मारोंगो जे कि किलेके भीतर हैं उनकोहू मारूँगो लोहकी शक्तिके समान जे बाण हैं तिनसों चार घडीमें ही सबनको मारूँगो हे रुत्तम ! ॥ १५ ॥ तब ये सुनके इनके कहेको यादव बड़े क्रोधमें मूर्छित भये पुरीके नाश करनेको हजारन बाण चलावन

लगे ॥ १६ ॥ तब यादवनके बाणनके मारे पुरीमें बड़ो हल्ला भयो जासों हंसध्वज आदिक सब वीर शंकित भयेहैं ॥ १७ ॥ तब राजाके कहनेसों वे वीर बड़े साहससों किलेनके ढहानपै चढके पुरीके बाहिर यादवनसों घिररही पुरीको देखतभये हैं ॥ १८ ॥ देखके वे सब भयको प्राप्त भयेहैं कवच जिनने पहर राखे शस्त्रनकी वर्षा कररहे सब ओरसे शृंगार जिनके कररासे ॥ १९ ॥ ऐसे यादवनपै शतघ्नी चलावन लगे जिनसों चारों तरफ अग्निसी लगगई है और सबनको मारेंगे चाहे सो होउ पन घोडा नहीं देंयगे ॥ २० ॥ ताके अनंतर सेनामें अनिरुद्धकीमें हाहाकार भयेहैं मारे शतघ्नीनके सब यादव अत्यंत पीडित भये हैं ॥ २१ ॥ संछिन्न भिन्न है सर्वांग जिनके ऐसे हैके बहुतेरे तो संग्राममेंसों भाग गयेहैं हे राजन् । कितनेई मूर्च्छित हैगये कितनेही संग्राममेंसों भागगये ॥ २२ ॥ और कितनेही मरगये कितनेही अग्निकी ज्वालनके मारे भस्मीभूत हैगये कितनेही पादहीन हैगये कितने

अंधकानांचबाणौघैः पुर्याकोलाहलोऽप्यभूत् ॥ शत्रवःशंकिताःसर्वेवीराहंसध्वजादयः ॥ १७ ॥ ततोनृपस्यवचनाद्वीरास्तेसाहसेनवै ॥ दुर्गभित्तिष्वथारुह्ययादवान्ददृशुर्बहिः ॥ १८ ॥ दृष्ट्वातेचभयंप्रापुःसन्नद्धान्यदुपुंगवान् ॥ शस्त्रवर्षंप्रकुर्वन्तःसर्वतःपरिमंडितान् ॥ ॥ १९ ॥ तेभ्यःशतघ्नीर्व्यसृजंश्चतुर्दिक्षुचवह्निना ॥ सर्वानेवहनिष्यामोनदास्यामोहयंत्वथ ॥२०॥ अथानिरुद्धसेनायांहाहाकारोमहानभूत् ॥ विह्वलावृष्णयःसर्वेशतघ्नीभिःप्रताडिताः ॥ २१ ॥ संछिन्नभिन्नसर्वांगाःकेचिद्युद्धात्पलायिताः ॥ केचिन्मूर्च्छांगताराजन्केचिद्वैनिधनंगताः ॥ ॥ २२ ॥ केचित्प्रज्वलितायुद्धेभस्मीभूतास्तथापरे ॥ केचिद्वैपादहीनाश्चकरहीनाविबाहवः ॥ २३ ॥ निःशस्त्राःपतिताश्चैवकेचिज्ज्वलितकंचुकाः ॥ हाहेतिवादिनःकेचिद्रामकृष्णेतिवादिनः ॥ २४ ॥ शतघ्नीभिर्विशीर्णांगागजाःकेचिन्मृधांगणे ॥ दुद्रुवंतश्चपतितामूर्च्छितानिधनंगताः ॥ २५ ॥ उत्पतन्तोदुद्रुवंतश्छिन्नदेहास्तुरंगमाः ॥ मृधेमृत्युंगताःकेचिद्विशीर्णाःपतितारथाः ॥ २६ ॥ अग्निनाप्रेरितंसर्वंयदुसैन्यंभयानकम् ॥ दृष्ट्वानिरुद्धःसंग्रामेशुशोचसंस्मरन्हरिम् ॥ २७ ॥ ततःकृष्णस्यकृपयाबुद्धिमाप्तउषापतिः ॥ प्रतिशार्ङ्गंगृहीत्वावैनिषंगाच्छरमेवच ॥ ॥२८॥नीत्वानिधायकोदंडेपर्जन्यास्त्रंसमादधे ॥ २९ ॥ बाणेप्रमुक्तेसतिवैबलाहकाःसमागतोवैयदुसैन्यमण्डले ॥ जलंववर्षाथयदून्प्रपाल्यन्कृपीटयोनिंकिलशांतयन्नृप ॥ ३० ॥

नकी भुजा और कितनेनके हाथ कटगये ॥ २३ ॥ कितनेई कवच जिनके जलगये शस्त्र जिनके हाथमें न रहे कितनेही हायहाय पुकारते कितनेई हे राम ! हे कृष्ण ! ऐसे पुकारन लगे ॥ २४ ॥ कितनेई हाथीनके अङ्ग शतघ्नीनके मारे बिखरगये ऐसे वे हाथी वा रणांगणमें भागते २ गिर पडे सो मूर्छित हैके संग्राममें गिरे वे मारेगयेहै ॥२५॥ कितनेही घोडे उछलते अंग जिनके कट गये वे संग्राममें भागते मारेगये कितनेई रथ चूरचूर हैके गिरपडे ॥ २६ ॥ सब यादवनकी सैना अति भयानक अग्निसे पूर्ण हैगई ये हाल देखके अनिरुद्धजी बड़ो शोच करनलगे ॥ २७ ॥ और भगवान् श्रीकृष्णचंद्रको स्मरण करनलगे तब श्रीकृष्णकी प्रेरणासों उषापति अनिरुद्धको ये बुद्धि उत्पन्न हुई कि शार्ङ्गधनुषको लैके तरकसमेंसों बाण निकालके ॥ २८ ॥ धनुषमें लगाय पार्जन्यास्त्रको प्रयोग कियो ॥ २९ ॥ सोही तो बाणके चलावतेही एक संग मेघमाला चारों तरफसे उठीहै गरजना होन लगी और यादव

नकी सेनापे अग्निको शांत करते हे नृप ! मेह मूसलधार पानी परनलगोहै ॥ ३० ॥ तब वे यादव अग्निके भयसे छूटे हैं शीतल जिनके अंग ऐसे वे सब अनिरुद्धकी बडाई करते लड़वेके लिये उठके तयार भयेहैं ॥ ३१ ॥ तब अनिरुद्धने उनसे कहीहै कि, सुनो भाईहो ! में पुरीमें अपने शत्रु या राजाके जीतवेकी पंखवारे घोडेपै चैठके भीतर जाउँगो ॥ ३२ ॥ गर्गजी कहें है कि हे राजन् ! या प्रकार सब सांव आदिक कृष्णके पुत्र अनिरुद्धके कहेको सुनके ए अठारह १८ महारथि अनिरुद्धसों बोले ॥ ३३ ॥ हरिपुत्र बोले कि हे राजन् ! तुम शत्रुनके नगरीके भीतर मत जाओ हम सब उन आततायीनके मारवेको भीतर पुरीमें जायेंगे ॥ ३४ ॥ या प्रकारसों वे सब कहिके पंखवारे घोडेनपे सवार हैंके वे वीर धनुषधारी कवच पहरे युद्ध करवेमें बडे प्रवीण ॥ ३५ ॥ परकोटाको लाँघके पुरीके भीतर भगवान्के पुत्र धसगये और सर्पाकार बाणनसों सब शत्रुनको मारन लगे ॥ ३६ ॥

ततस्तेऽग्निभयान्मुक्ताश्शीतलांगाश्चवृष्णयः ॥ श्लाघांकृत्वानिरुद्धस्ययुद्धंकर्तुंसमुत्थिताः ॥ ३१ ॥ तान्प्रत्याहानिरुद्धस्तुह्यहंयास्येपुरींप्रति ॥ अश्वेनपक्षयुक्तेनैकोविजेतुंद्विषांपतिम् ॥ ३२ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वावचस्तस्यसांबाद्याःकृष्णनन्दनाः ॥ प्रोचुःसर्वेचतंराजन्नष्टादशमहारथाः ॥ ३३ ॥ ॥ हरिपुत्रा ऊचुः ॥ ॥ गंतुंनार्हसित्वंराजञ्छत्रूणांनगरींप्रति ॥ प्रयास्यामोवयंसर्वेविजेतुंचाततायिनम् ॥ ३४ ॥ इत्युक्त्वाकुपिताःसर्वेसहसारुह्यघोटकान् ॥ सपक्षान्धन्विनोवीरादंशितायुद्धकोविदाः ॥ ३५ ॥ उल्लंघयित्वाप्राकारंपुर्यांप्रासाहरेःसुताः ॥ गत्वाजघ्नुर्द्विषःसर्वान्बाणैरुरगसन्निभैः ॥ ३६ ॥ तेशत्रवस्तुसहसानृपस्यवचनान्नृप ॥ युद्धार्थेधन्विनःक्रुद्धाआगताएककोटयः ॥ ३७ ॥ तानागतान्बहून्वीरान्कुपितानुद्यतायुधान् ॥ सांबोमधुर्बृहद्बाहुश्चित्रभानुर्वृकोरुणः ॥ ३८ ॥ संग्रामजित्सुमित्रश्चदीप्तिमान्भानुरेवच ॥ वेदबाहुःपुष्करश्चश्रुतदेवःसुनंदनः ॥ ३९ ॥ विरूपश्चित्रबाहुश्चन्यग्रोधश्चकविस्तथा ॥ एतेकृष्णसुताःसर्वेजघ्नुर्बाणैर्निरीक्ष्यच ॥ ४० ॥ ततःपुर्यांचवीराणांरुधिरेणभयंकरा ॥ नदीबभूवराजेंद्रपुरद्वाराद्विनिःसृता ॥ ४१ ॥ तामागतांनदींघोरामनिरुद्धस्तुशंकितः ॥ प्रत्युवाचरुषाराजन्मुखेनपरिशुष्यता ॥ ४२ ॥ मत्पितृभ्रातरःसर्वेरणेकिंनिहताअहो ॥ तस्मादस्मान्प्लावयितुंनदीघोरासमागता ॥ ४३ ॥ एतामग्निमयैर्बाणैःशोषयिष्येनसंशयः ॥ पातयिष्यामिनगरीमहंगिरिसमैर्गजैः ॥ ४४ ॥

वा समय राजाके कहेको सुनके वे शत्रु धनुषनको लिये कुपित हैंके एक किरोड बडे वेगसों युद्धकेलिये आयेहैं ॥ ३७ ॥ कुपित भये उन वीरनको शस्त्रनको हाथनमें लिये आवते देख सांब, मधु, बृहद्बाहु, चित्रभानु, वृक, अरुण, ॥ ३८ ॥ संग्रामजित, सुमित्र, दीप्तिमान्, भानु, वेदबाहु, पुष्कर, श्रुतदेव, सुनंदन, ॥ ३९ ॥ विरूप, चित्रबाहु, न्यग्रोध और कवि ये १८ कृष्णके बेटा सब सेनाको देखके बाणनसों प्रहार करन लगे ॥ ४० ॥ तब पुरीके भीतर वीरनके रुधिरकी बडी भयंकर पुरके द्वारसों निकली ऐसी घोर नदी बही है ॥ ४१ ॥ वा घोर नदीको निकली देखके अनिरुद्धके मनमें बडी शंका हुई मुख सूखगयो हे राजन् ! बडे कोपसों ये वाक्य कहतेभये ॥ ४२ ॥ हाय ! कहा मेरे पिताके भाई सब भीतर गये सो संग्राममें मारेगये कहा जिनके रुधिरकी ये नदी हमारे बहायवेको निकसीहै; कहा ॥ ४३ ॥ सो अपने अग्निमय बाणनसों आज या नदीको सुखाऊँगो और आज

निःसंदेह पर्वतके समान हाथीनसों नगरीको भर देऊँगो ॥ ४४ ॥ तब तो अनिरुद्धके कहेसों पीलवानने प्रेरणा किये मदमें मत्त बडे ऊँचे काजलके पर्वतके समान ॥ ४५ ॥ अपनी सूँडनसों वृक्षनसों उखार उखारके फेंकते पायनसों धरतीको कँपावते एक लाख हाथी पुरीमें धसेहैं ॥ ४६ ॥ तब वे हाथी हेमांगद राजाकी पुरीमें धसगये भीतर जायके अपने माथेनकी टक्करनसों सब ओरसों पटक दियेहैं ॥ ४७ ॥ और द्वारेनके बडे बडे कील कुलाबे सांकरन समेत किवार तोडके फेंक दिये और हाथीनने किलेके डंडा फेंकदिये या प्रकार व भगवानके हाथी किवारनको और किलेको गेरके शत्रुनके घरनसों पटकते पुरीमें धसगये ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ वा समय चंपावती पुरीमें हाहाकार मचगयो और राजा आदिक सब पुरवासी मनुष्य भयभीत हैके विस्मयको प्राप्त भयेहैं ॥ ५० ॥ तब तो राजा हाथीनके किये पुरके विध्वंसको देखके मालासों अपने दोनों हाथनको बांधके मेरी

ततोनिरुद्धवचनाद्धस्तिपैर्लक्षहस्तिनः ॥ महोच्चाश्चमदोन्मत्ताःकज्जलाद्रिसमप्रभाः ॥४५॥ करैर्गुल्मान्समुत्पाट्यक्षेपयंतश्चतत्पुरे ॥ कंपयंतो भुवंपादैःपुरोपरिसमागताः ॥ ४६ ॥ गत्वातेकुंजराःसर्वेहेमांगदपुरींरुषा ॥ सर्वतःपातयामासुःशीघ्रंकुम्भस्थलैर्नृप ॥४७॥ कपाटाःपतिताः सर्वेद्वाराणांदृढशृंखलाः ॥ दुर्गस्यपतिताःपुर्यामजैःपाषाणभित्तयः ॥ ४८ ॥ पातयित्वाकपाटादीन्दुर्गंचैवहरेर्गजाः ॥ पुर्यांप्राप्तानृपश्रेष्ठरिपूणांपातयन्गृहान् ॥ ४९ ॥ हाहाकारोमहानासीच्चंपावत्यांतदैवहि ॥ भयभीताजनाःसर्वेनृपाद्याविस्मयंगताः ॥ ५० ॥ तदातुधर्षितोराजास्रजाबद्धाकरद्वयम् ॥ संमुखेहरिपुत्राणामाययौपाहिमांब्रुवन् ॥ ५१ ॥ तमागतंनृपंवीक्ष्यरणेसांबस्तुधर्मवित् ॥ भ्रातॄन्निवारयामासदीनहंतॄंश्चहस्तिपान् ॥ ५२ ॥ निवारयित्वासर्वान्सराजानमिदमब्रवीत् ॥ ॥ सांबउवाच ॥ ॥ आगच्छराजन्भद्रंतेनीत्वाममतुरंगमम् ॥ ५३ ॥ गच्छानिरुद्धनिकटेततःश्रेयोभविष्यति ॥ इतिश्रुत्वासतद्वाक्यंनीत्वायज्ञतुरंगमम् ॥ हरिपुत्रैर्युतोराजानिश्चक्रामपुराद्बहिः ॥ ५४ ॥ गत्वानिरुद्धनिकटेसार्कंपुत्रेणभूपतिः ॥ हयंनिवेदयामासस्वर्णकोटिंचमानद ॥५५ ॥ अनिरुद्धस्तुराजेन्द्रनीतिविद्दीनवत्सलः ॥ तत्करौमालयाबद्धौमोचयित्वेदमब्रवीत् ॥ ५६ ॥ मयासहनृपश्रेष्ठपाल्यैनंतुरंगमम् ॥ राजन्येभ्यश्चशत्रुभ्यःकृष्णस्यप्रीतिहेतवे ॥ ५७ ॥

रक्षा करो ऐसे पुकारतो भगवानके पुत्रनके सन्मुख आयोहै ॥ ५१ ॥ तब धर्मके जाननेवारे सांबने रणमें आये राजाको देखके दीन मनुष्यनको मार रहे जे अपने भाई हैं तिन और हाथीनको मारवेसों निषेध कियेहै ॥ ५२ ॥ या प्रकार सबनको रोकके राजासों ये बोले सांबजी बोले कि, हे राजन् ! तुमारो भलो होय मेरे घोडेको लेकर आओ ॥ ५३ ॥ जाओ तुम अनिरुद्धके पास चले जाओ तब तुमारो कल्याण होयगो ये सांबके कहेको सुनके यज्ञके घोडेको लैके भगवानके पुत्रनके संग पुरके बाहिर निकसो है ॥ ५४ ॥ राजा हेमांगद भूमिको पति अनिरुद्धके पास पुत्रसमेत गयो और जायके एक कोटि मोहर और यज्ञको घोडा भेट कियो ॥ ५५ ॥ तब नीतिके जाननेवाले दीनवत्सल अनिरुद्धजी मालासों बँधे राजाके हाथ खोलके ये वाक्य बोले ॥ ५६ ॥ हे नृपश्रेष्ठ ! आप अब मेरे साथ चलो और जे हमारे शत्रु राजालोग हैं उनसे कृष्णकी प्रसन्नताके लिये

या अश्वकी रक्षा करो ॥ ५७ ॥ ये अनिरुद्धके कहे वचनको हेमांगद राजा सुनके बडो बुद्धिमान् वाही समय पुत्रको राज्य देकै अनिरुद्धजीके संग बडी प्रसन्नतापूर्वक चलवेके लिये तयार हैगयो ॥ ५८ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डे भाषाटीकायां षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ गर्गजी कहेहैं कि, तदनंतर ये अनिरुद्धजीको यज्ञियाश्व बडे उज्ज्वल अंगवारो यदुभवी रोंने छोडो बडे २ वीरवरनको देखतो २ धीरे २ उशीनर देशनके बाहिरबाहिर निकसो है ॥ १ ॥ या प्रकार हे राजन् ! वो अत्युत्तम अश्व अनेक देशों देशोंमें विचरतो अनेक राजा लोगनने जाको पकरो और छोडो है ॥ २ ॥ इंद्रनील और हेमांगद राजानको हारो सुनके औरहू अनेक खंडमंडलेश्वर राजानने अपे भये या घोडाको काहूने नही पकरोहै ॥ ३ ॥ वो घोडानमें उत्तम घोडा वीरन करके हीन जे बहुतसे देश है तिने देख हे नृपश्रेष्ठ ! अकस्मात् एक स्त्रीके राज्यको गयो ॥ ४ ॥ वहांभी राजाकी कन्या कोई सुरूपा नामकी

श्रुत्वानिरुद्धस्यवचोमहात्माहेमांगदोबुद्धिमतांवरिष्ठः ॥ दत्त्वाचराज्यंस्वसुतायप्रीत्यागंतुंमनस्तत्रचकारतेन ॥ ५८ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांहयमेधखण्डेचंपावतीविजयवर्णनंनामषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ ॥ अथानिरुद्धस्यहयोविमुक्तोयदुप्रवीरैश्वमहोज्ज्वलांगः ॥ उशीनराद्वीरवरान्प्रपश्यन्विनिर्गतःसोपिशनैःशनैश्च ॥ १ ॥ एवंसविचरन्राजन्राष्ट्राद्राष्ट्रंहयोत्तमः ॥ नृपैश्चबहुभीराजन्गृहीतश्चविमोचितः ॥ २ ॥ इंद्रनीलंजितंश्रुत्वातथाहेमांगदंनृपम् ॥ नृपाश्चान्येमण्डलेशाःप्राप्तंनजगृहुर्हयम् ॥ ३ ॥ वीरहीनान्बहून्देशान्विलोक्ययदुरगोत्तमः ॥ यदृच्छयानृपश्रेष्ठस्त्रीराज्यंतुजगामह ॥ ४ ॥ राजन्यकन्याकाचिद्वैसुरूपानामसुन्दरी ॥ यथापिराज्यंकुरुतेराजातत्रनजीवति ॥ ५ ॥ यत्रदेशेस्त्रियंप्राप्ययस्तांभजतिकामतः ॥ ऊर्द्ध्वंसंवत्सराद्राजन्कदाचित्सनजीवति ॥ ६ ॥ तत्पुरेतुरगोगत्वाह्युद्यानेपुष्पसंकुले ॥ लवंगलतिकावृन्देत्वेलागंधसमाकुले ॥ ७ ॥ पक्षिभिर्मधुपैर्घुष्टेस्थितोभूश्चिंचिणीतले ॥ ददृशुःस्त्रीजनाःसर्वेश्यामकर्णमनोहरम् ॥ ८ ॥ ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्याःशूद्राद्रष्टुंसमागताः ॥ हयंदृष्ट्वास्त्रियोगत्वास्वामिनीमवदन्नृप ॥ ९ ॥ श्रुत्वाराज्ञीरथेस्थित्वाच्छत्रचामरवीजिता ॥ नारीकोटिसमायुक्ताहयंद्रष्टुंसमाययौ ॥ १० ॥ अश्वंदृष्ट्वाचतत्पत्रंवाचयित्वारुषान्विता ॥ पुनःपुरेहयंबद्ध्वायुद्धंकर्तुंमनोदधे ॥ ११ ॥ काश्चित्रार्योगजारूढारथारूढाःसमाययुः ॥ हयारूढास्तथाकाश्चिद्दंशिताःशस्त्रसंयुताः ॥ १२ ॥

सुंदरी राज्य करेहै तहां राजा नहीं जिये ॥ ५ ॥ जा देशमें स्त्रीको प्राप्त हैकै जो पुरुष वाको कामते सेवन करे हे राजन् ! वो वर्ष दिनते ऊपर कैसेभी नहीं जिये ॥ ६ ॥ उस पुरमें वो घोडा जायके फूल जामें खिलरहे लवंगकी बेलनके झुंड जामें इलाइचीनकी सुगंध जामें आइरही पक्षीनके और भौंरानके शब्द जामें आय रहे एसो जो बगीचा है तामें इमलीके पेडके नीचे वो घोडा ठैरो मनोहर जो वो स्यामकर्ण है ताको सब स्त्री पुरुषनने देखो ॥ ७ ॥ ८ ॥ ब्राह्मण क्षत्री वनिया और शूद्र सब देखनेको आये घोडाको देखके स्त्रीनने हे नृप ! अपनी स्वामिनीसों जायके कही ॥ ९ ॥ रानी सुनके अपने रथमें बैठके छत्र चमरनते वीजित किरोडन स्त्रीनको संग लिये घोडाके देखनेको आई ॥ १० ॥ घोडाको देखके और वा पत्रकोभी बांचके क्रोध जाको आयो फिर अपने पुरमें घोडाको बांधके युद्ध करनेको मन कीनों ॥ ११ ॥ कोई स्त्री हाथिनपे बैठके आई कोई स्त्री रथनमें बैठके आई

कोई घोड़ानपै बैठी कवच पहरे शस्त्रलिये आई है ॥ १२ ॥ तिन स्त्रीजनोंको बाणोंकी वर्षा करती क्रोधमें डूबरहीं सन्मुख आई तिनै देखके अनिरुद्धजी हेमांगद राजासे बोले ॥ १३ ॥ अनिरुद्ध बोले कि हे राजन् ! ये लुगाईकी जाति हैके युद्ध करनेको आईहै और लडनेको तयार हैं सो ये कौन हैं सो तुम विस्तारसे मेरे आगे कहो जामें मेरो कल्याण होय सो कहो अब कहा कर्तव्य है ॥ १४ ॥ तब हेमांगदने कही कि, हे नृपेश्वर ! महाराज या देशमें रानीही राज्य करैहै महाराज कोई ऐसो कारण है कि, यहां राजा कोई जीवै हो नहीं है यासे स्त्रीही राज्य करैहै सो ये रानी स्त्रीजनोंको संगलेके युद्धको आईहै ॥ १५ ॥ आपको घोड़ा रानीनेही पकरोहै यह सुनके अनिरुद्धजी राजासों बोले ॥ १६ ॥ अनिरुद्ध बोले महाराजन् ! यहाँ स्त्री क्यो राज्य करैहै राजा या देशमें क्यों नहीं जीवैहै सो यदि आप जानेहोउ तो याको कारण विस्तारसे कहो ॥ १७ ॥ ये अनिरुद्धजीके कहेको सुनके राजा हेमांगदजी बोले याज्ञवल्क्यनामके ऋषिके अपने गुरुके चरणकमलको स्मरण करते कहते भये ॥ १८ ॥ कि हे यदुनाथ अनिरुद्धजी ! याज्ञवल्क्य

ताःसर्वाःकुपितावीक्ष्यशस्त्रवर्षंप्रकुर्वतीः ॥ आगताअनिरुद्धस्तुहेमांगदमुवाचह ॥ १३ ॥ ॥ अनिरुद्धउवाच ॥ ॥ राजन्नेताश्चकानार्यो युद्धंकर्तुंसमागताः ॥ विस्तरेणापिकथययेनमेस्याच्छिवंत्विह ॥ १४ ॥ ॥ हेमांगदउवाच ॥ ॥ अत्रदेशेचकुरुतेराज्ञीराज्यंनृपेश्वर ॥ नजीवतिनृपोराज्येतस्मात्स्त्रीभिःसमन्विता ॥ १५ ॥ हयंगृहीत्वातेसाचसंग्रामंकर्तुमागता ॥ इतिश्रुत्वानिरुद्धस्तुराजानमिदमब्रवीत् ॥१६॥ ॥ ॥ अनिरुद्धउवाच ॥ ॥ कस्मात्स्त्रीकुरुतेराज्यंराजाकस्मान्नजीवति ॥ एतांविस्तरतोवार्तांयत्त्वंजानासितद्वद ॥ १७ ॥ इतितद्वाक्यमाकर्ण्यराजाहेमांगदोऽब्रवीत् ॥ संस्मरन्याज्ञवल्क्यस्यस्वगुरोश्चपदांबुजम् ॥ १८ ॥ यादवेंद्रपुरावृत्तंयाज्ञवल्क्यमुखाच्छ्रुतम् ॥ चंपकायांमयापूर्वं कथयिष्यामितच्छृणु ॥ १९ ॥ पुराकृतयुगेराजन्नत्रदेशेबभूवह ॥ नारीपालइतिख्यातोराजातुमंडलेश्वरः ॥ २० ॥ तस्यासीन्मोहिनीभार्यासिंहलद्वीपसंभवा ॥ पद्मिनीहंसगमनापूर्णचंद्रनिभानना ॥ २१ ॥ तस्याःसौंदर्यजलधौमग्नोभूत्वामहीपतिः ॥ अहर्निशमविज्ञायरेमेतांशतवत्सरैः ॥ २२ ॥ नचकारप्रजानांवैन्यायंकामेनमोहितः ॥ तदासर्वाःप्रजाराजन्बभूवुर्दुःखपीडिताः ॥ २३ ॥ प्रजानांकदनंवीक्ष्यमोहिनीनृपवल्लभा ॥ न्यायंचकारसर्वासांस्वशक्त्यायादवेश्वर ॥ २४ ॥

नामके ऋषि हमारे गुरु हैं उनके मुखसे ये वृत्तान्त मैंने पहले श्रवण कियोहै सो आपसे कहूं हूं आप वा वृत्तांतको सुनो ॥ १९ ॥ हे राजन् ! पहले सतयुगमें या देशमें एक नारीपाल जाको नाम एसो राजा खंडमंडलेश्वर भयोहो ॥ २० ॥ वा नारीपाल राजाकी सिंहलद्वीपमें जाको जन्म भयोहो ऐसी मोहिनी जाको नाम वो भार्या होती हुई वो पद्मिनी ही हंसकोसो जाको गमन और चंद्रमाकोसो जाको मुख हो ॥ २१ ॥ वो नारीपाल या अपनी भार्याके सौंदर्यसमुद्रमें डूबोभयो है या रानीके संग शतवर्ष पर्यंत रात दिन रमण करतेको बीतगये ये नहीं जाने कब दिन रात होयहैं ॥ २२ ॥ काममोहित राजा प्रजाकी राज्यकी सब खबर भूलै गयो तब तो न्याय होने प्रजाके सब बंद हेगये तब हे राजन् ! सब प्रजा अति दुःखी हेगयी ॥ २३ ॥ तब मोहनी नामकी रानीने प्रजानको नाश होतो देखो तब ये रानी सब प्रजाके जितने मुकदमा झगरे आते है विनको आप रानी न्याय करन

लगी ॥ २४ ॥ एकदिन ऐसो भयो कि, अष्टावक्र नामके मुनि राजासों मिलबे आये सो राजाके महलनमें चलेगये ॥ २५ ॥ इन अष्टावक्र ऋषिको आयो देख स्त्रीमें आसक्त
जाको मन सो ऋषिजीको देखके हँसो और विचारन लगो कि, देखौजी ये कैसो कुरूप है कहांसों आयोहै ऐसो कहन लगो ॥ २६ ॥ तब तो कुपित होकर मुनि अष्टावक्रजी बोले
कि, रे मूढ ! अरे नपुंसक ! तू सुन देखिये स्त्रीजित हैके मुनि महात्माजनोंका तू अपराध कहा करैहै ॥ २७ ॥ जा आज पीछे या तेरे देशमें सर्वदा स्त्रीजनोंकोही राज्य होगो वोही
राज्य करैगी आज पीछे या देशमें राजा नहीं जीवैगो यासों जा तू याही समय निकसजा ॥ २८ ॥ और आज पीछे जो कोई राजा वा राजपुरुष या देशमें आयके जो स्त्रीको
सेवन करैगो वो एकवर्षके भीतर २ मर जायगो यामें संदेह नहीं है ॥ २९ ॥ गर्गजी कहैहैं कि, ऐसे कहिके वो मुनि अष्टावक्रजी अपने आश्रमको चलेगये मुनिके गये ऋषिके

एकदातंनृपंद्रष्टुमष्टावक्रोमहामुनिः ॥ आजगामनृपस्यापिप्रासादंतःपुरेकिल ॥ २५ ॥ तमागतंमुनिंदृष्ट्वानृपःस्त्रीलग्नमानसः ॥ विजहासकु
रूपोयंकस्मात्प्राप्तइतिब्रुवन् ॥ २६ ॥ ततोरुषामुनिःप्राहशृणुमूढनपुंसक ॥ मुनीनांस्त्रीजितोभूत्वापमानंकिंकरिष्यसि ॥ २७ ॥ त्वद्देशेचस
दाराज्यंनार्यःकुर्वंतिनित्यशः ॥ नजीवतिनृपोराज्येतस्माद्गच्छत्वमालयात् ॥ २८ ॥ अत्रदेशेस्त्रियंप्राप्ययस्तांभजतिनित्यशः ॥ सतुसंवत्स
रांतेवैनजीवतिनसंशयः ॥ २९ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वास्वाश्रमंसोपिप्रययौमुनिसत्तमः ॥ गतेमुनौनृपस्तत्रक्लीबोभूत्तस्यशा
पतः ॥ ३० ॥ सर्वंमुनिकृतंज्ञात्वागर्हयामासभूपतिः ॥ आत्मानमात्मनाचैवसदीनोदुःखदुःखितः ॥ ३१ ॥ ॥ नारीपालउवाच ॥ ॥
किंकृतंमंदभाग्येनस्त्रीजितेनमयाह्यहो ॥ मुनीनांपूजनंत्यक्त्वातथानिरययायिनम् ॥ ३२ ॥ अद्यमांपापिनंदुष्टंयमदूतैर्विलोकितम् ॥ दृष्ट्वावैत
रणीयोग्यंकःस्वतेजात्प्रमोचति ॥ ३३ ॥ इत्युक्त्वासगृहंत्यक्त्वाविचचारवनेवने ॥ भजन्मुक्तिदंविष्णुंलेभेचांतेहरेःपदम् ॥ ३४ ॥ अत्रदेशेच
राजानोराज्यंशापभयान्विताः ॥ नकरिष्यंतिनार्यश्चकरिष्यंतिनसंशयः ॥ ३५ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ एवंतयोःकथयतोर्नार्यःक्रुद्धाःस
मागताः ॥ विमुंचन्धनुर्वाणान्पुंश्चल्यःकोपपूरिताः ॥ ३६ ॥ ताःस्त्रीर्वीक्ष्याऽनिरुद्धस्तुविस्मितोभूद्भयान्वितः ॥ कथंकरिष्येयुद्धंवैस्त्रीभिः
सार्द्धमितिब्रुवन् ॥ ३७ ॥

शापसों वो नारीपाल राजा नपुंसक हैगयो ॥ ३० ॥ या सब वृत्तांत मुनिको कियो जानके अपने आपेकी आपही निंदा करने लगो और बड़ो दीन होकर दुःखीसोहू अत्यंत दुःखी
भयो ॥ ३१ ॥ और नारीपाल यों बोलो हाय स्त्रीजित बड़ो मंदभाग्य मैं ता मैंने यह कहा कीनो जो मुनीनको पूजन छोड़के मैं निरयगामी भयो ॥ ३२ ॥ आज बड़ो पापी दुष्ट
यमदूतनकरके देखो गयो वैतरणी जानेके योग्य जो मैं हूँ ता मोकूँ या पापसों कोन छुडावेगो ॥ ३३ ॥ ऐसे कहिके घरमें जायके फिर वाही समय घरको छोड़के वन वनमें विचरतो
मुकुंदके चरणको भजन करतो अंतमें भगवद्धामको प्राप्त भयो ॥ ३४ ॥ सो महाराज ! या देशमें शापके भयसों कोई राजा राज्य नहीं करैहै और न करैगो केवल स्त्रीही करैहैं और
करैंगी ॥ ३५ ॥ गर्गजी कहैहै कि, या प्रकार दोऊ बतलाय रहैहैं कि वे बड़ी कुपित भईं बाणनको वर्षा करती स्त्री आईहै ॥ ३६ ॥ वे स्त्रीनको देखके अनिरुद्धजी बड़े विस्मित

हुये और येभी विचार करनलगे कि, मैं स्त्रीनके संग युद्ध कैसे करोंगो ये कहते भयभीत भयेहैं ॥ ३७ ॥ वाही समय एक बड़ी रूपवती स्त्री सबकी मंडलेश्वरी बहुतसी स्त्रीनको संगलेके आईहै वो अनिरुद्धको देखके ये वचन बोली ॥ ३८ ॥ रानी बोली हे वीर ! रणमें आयके मेरे सन्मुख खड़े होव मेरे साथ संग्राम करो अपनी सब सेनाको संग लेके मोसे लडो संग्राममे आयके निष्प्रयोजन शोच क्या करतेहौ ॥ ३९ ॥ बड़े अभिमानी तुमको सब यादवन सहित संग्राममें जीतके कामज्वरसों पीडित भई मैं तुमको अपनो क्रीडामृग (खेलनेका खिलौना) बनाऊँगी ॥ ४० ॥ तब या स्त्रीके या वचनको सुनके अनिरुद्ध भयविह्वल ह्वै दीन वाणीसों सब बातके जाननवारे या मंडलभरकी मालिकिनीसों अपनी रानीसों ये बोले ॥ ४१ ॥ कि हे राज्ञि ! सब देवोंके स्वामी श्रीकृष्णचंदके या घोडेको यज्ञको पूर्ति हैवेको हमें देदेउ ॥ ४२ ॥ हे वरानने ! मैं तुमसे युद्ध नहीं करो चाहूँ हूं और मेरे कहनेसों तुम श्रीकृष्णके दर्शनके लिये द्वारकाको चली जाओ ॥ ४३ ॥ हे भद्रे ! जिनके नामकेही स्मरणमात्रसों मनुष्य कृतार्थ हैजायँ हैं ताके दर्शनके फलको मैं तेरे अगारी

तदैवतस्यनिकटेसुरूपामंडलेश्वरी ॥ स्त्रीभिःप्राताचानिरुद्धंदृष्ट्वावचनमब्रवीत् ॥ ३८ ॥ ॥ राज्युवाच ॥ ॥ तिष्ठतिष्ठरणेवीरकुरुयुद्धंमया सह ॥ सेनायुक्तस्तथापित्वंकिंशोचसिवृथारणे ॥ ३९ ॥ अहंत्वांमानिनंजित्वाप्रधनेवृष्णिभिर्युतम् ॥ क्रीडामृगंकरिष्याभिमदनज्वरपीडिता ॥ ४० ॥ इतितस्यावचःश्रुत्वानिरुद्धोभयविह्वलः ॥ प्रत्याहदीनयावाचासर्वविन्मंडलेश्वरीम् ॥ ४१ ॥ तुरगंकृष्णचंद्रस्यसर्वदेवेश्वरस्यच ॥ मह्यंप्रयच्छदेराज्ञिक्रतोरर्थेतुस्वेच्छया ॥ ४२ ॥ नाहंकरिष्येयुद्धंवैत्वयासार्द्धंवरानने ॥ गच्छद्वारवतींतस्माद्दर्शनार्थंहरेश्चवै ॥ ४३ ॥ यन्नामस्मरणाद्भद्रेनरोयातिकृतार्थताम् ॥ तस्यवैदर्शनस्यापिफलंकिंकथयामिते ॥४४॥ इतिसाचानिरुद्धेनबोधितानिपुणेनवै ॥ पूर्ववार्तांस्मरन्त्याहब्रह्माणंमोहिनीयथा ॥ ४५ ॥ ॥ सुरूपोवाच ॥ ॥ अहंपुराऽभवंदेवस्वर्वेश्यापूर्वजन्मनि ॥ मोहिनीनामविख्याताकंजांगाकंजलोचना ॥ ४६ ॥ एकदाहंसयानेनव्रजंतंपद्मसंभवम् ॥ दृष्ट्वातन्निकटेगत्वाभजमामित्युवाचह ॥ ४७ ॥ यदानजगृहेब्रह्माशापंदत्त्वातदाह्यहम् ॥ गत्वाककुद्मतीतीरेचकारदुष्करंतपः ॥ ४८ ॥ तपसातोषितोब्रह्मातपोंतेचसमागतः ॥ तपस्विनींप्रसन्नात्मावरंब्रूहीत्युवाचह ॥ ४९ ॥ तच्छ्रुत्वामोहिनीप्राहदेवदेवनमोस्तुते ॥ वरंयवरयलोकेशदीनांमांतपसिस्थिताम् ॥ ५० ॥

कहा कहौं ॥ ४४ ॥ या प्रकारसों अच्छी तरह अनिरुद्धने समझाई ये रानी पहली बातको याद करती बोली ब्रह्माजीसों जैसें मोहिनीजी कही थी ॥ ४५ ॥ सुरूपा बोली कि हे देव ! मैं पहले जन्ममें स्वर्गकी अप्सरा ही मोहिनी जाको नाम हो कमलकोसो जाको अंग और कमलकेसे जाके नेत्र हैं ॥ ४६ ॥ एकदिना हंसके विमानमें बैठे ब्रह्माजी चले जातेहे तिने देखके उनके पास जायके मैने कही कि आप मेरे संग रमण करो ॥ ४७ ॥ जब ब्रह्माने मेरो कह्यो अंगीकार न कियो तब मैंने ब्रह्माको शाप देके ककुद्मती गंगाके किनारे जायके दुष्कर तप कियो ॥ ४८ ॥ तप करके प्रसन्न भये ब्रह्माजी मेरे तपके अंतमें आये और तपस्विनीसों मोसों प्रसन्न ह्वैके कही कि तू वर माँगले ॥ ४९ ॥ तब ब्रह्माजीके कहेको सुनके मोहिनीने कही कि, हे देव ! हे देव ! हे लोकेश ! तुमको नमस्कार हैं मै आपसों यही वर मागोंहूं कि तपमें स्थित भई जो मैहूँ ता मेरो आप पाणिग्रहण करो ॥ ५० ॥

और जो आप दुःखिनीको मेरो पाणिग्रहण नहीं करौगे तब रोषसे तप करनेसों कृश भये शरीरको मैं त्याग करदेउँगी ये वचन सुनके ब्रह्माजीने कही कि हे भामिनी ! तू शोच मत करे हे भद्रे ! अन्य जन्ममें तेरो ये मनोरथ पूर्ण होयगो ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ देख मैं द्वारकामें कृष्णको नाती होउँगो तब मेरो अनिरुद्ध नाम होयगो और मेरो दिव्य वर्ण होयगो और तू राज्य करनवारी स्त्री होयगी ॥ ५३ ॥ तब हे भद्रे ! अनिरुद्ध हैके मैं तेरो पाणिग्रहण करूँगो मेरो कह्यो झूठ नहीं होयगो ये ब्रह्माजीके कहेको सुनके हे अनिरुद्धजी ! मैने भूमिमें जन्म लियोहै ॥ ५४ ॥ और हे यादवश्रेष्ठ ! मेरे लिये आपनेहू मनुष्य लोकमें आयके जन्म लियोहै आप ब्रह्माजीके अवतार हो ॥ ५५ ॥ गर्गजी कहैंहै कि ऐसे याके कहेको सुनके यादव सबरे विस्मयको प्राप्त भयेहैं तब धर्मात्मा अनिरुद्धजी या रानीसों ये बोले कि हे भद्रे ! जो ऐसो है तो तुम द्वारिकाजीको चली जाओ जब मैं दिग्विजय करके द्वारकामें आऊँगो तब तुमारो पाणिग्रहण करके तुमें अपनी पत्नी बनाऊँगो अब तो मैं राजाओंसे घोडेकी रक्षा करनेको जाऊँगो ॥ ५६ ॥

यदिमांत्वंनगृह्णासिदुःखितांशरणागताम् ॥ तदारोषेणत्यक्ष्यामितपसाचकृशांतनुम् ॥ ५१ ॥ इतिश्रुत्वाविधिःप्राहशोचंमाकुरुभामिनि ॥ अन्यजन्मनितेभद्रेभविष्यतिमनोरथः ॥ ५२ ॥ अहंपौत्रोभविष्यामिद्वारकायांहरेश्चवै ॥ सुवर्णश्चानिरुद्धाख्यःस्त्रीराज्येत्वंभविष्यसि ॥५३॥ ततोगृह्णामित्वांभद्रेनानृतंवचनंमम ॥ इतिश्रुत्वाचतद्वाक्यंजाताहंपृथिवीतले ॥ ५४ ॥ ब्रह्मात्वंयादवश्रेष्ठमदर्थेचसमागतः ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ वाक्यंतस्याःसमाकर्ण्ययादवाविस्मयंययुः ॥ ५५ ॥ अनिरुद्धस्तुधर्मात्माप्रत्याहविमलंवचः ॥ ॥ अनिरुद्धउवाच ॥ ॥ गच्छश्रीद्वारकांभद्रेतत्रगृह्णामित्वांप्रियाम् ॥ अद्ययास्यामितुरगंराजन्येभ्यश्चपालयन् ॥ ५६ ॥ ततःसातस्यवाक्येनप्रमिलांमंत्रिणींवराम् ॥ राज्येकृत्वातुरंगंचदत्त्वाद्वारवतींययौ ॥ ५७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायांहयमेधखण्डेस्त्रीराज्यविजयोनामसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ अथमुक्तोऽनिरुद्धेनकर्तोवाजीपयःप्रभः ॥ सिंहलद्वीपनिकटेविचचारयदृच्छया ॥ १ ॥ तृषार्तस्तुरगस्तत्रदृष्ट्वावापींजलान्विताम् ॥ वृक्षैश्चबहुभिर्युतांदृष्ट्वातोयंपपौस्वयम् ॥ २ ॥ वाप्यामश्वंविलोक्याथभीषणोनामराक्षसः ॥ वाचयित्वाचतत्पत्रंजग्राहतुरगंमुदा ॥ ३ ॥ तदैवयादवाः सर्वेतंपश्यन्तःसमागताः ॥ राक्षसेनगृहीतंवैदद्दृशुःक्रतुवाजिनम् ॥ ४ ॥

तब ये अनिरुद्धके कहेको सुनके अपनी प्रमिला नामकी श्रेष्ठा मंत्रिणीको राज्यपै स्थापनकर और घोडा इनको देके ये वाही समय द्वारकाकूँ चलीगई है ॥ ५७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ गर्गजी कहैंहैं कि ताके पीछे छोडो जो अनिरुद्धने यज्ञको घोडा है दूधके समान है रंग जाको वो सिंहलद्वीपमें पहुँचोहै वहां अपनी इच्छासों विचरन लगो ॥ १ ॥ तब या घोडाको प्यास लगीहै सोही याने एक वापी देखीहै स्वच्छ जामें जल भर रह्यो है जाके चारोतरफ अनेक वृक्ष लगरहेहैं वा वापीको देखके घोडाने पानी पीयोहै ॥ २ ॥ वामें एक बडो भीषण (भयंकर) राक्षस रहतोहै वाने देखके घोडेके माथे बँधे पत्रको बाँचके या भीषण नामके राक्षसने घोडेको पकर लीनो ॥ ३ ॥ सोही तो सब यादव घोडेको ढूँढते २ आयेहैं देखें तो कहा कि, या यज्ञके घोडेको पकरके एक राक्षस खडोहै ॥ ४ ॥

तब ये यादव राक्षसनसों बोले हे कि, रे तू कौन है यादवनके स्वामी राजा उग्रसेन महाराजके यज्ञियाश्वको सिंहकी वस्तुको जैसे गीदड़ चाहे कि मैं लेजाऊं ऐसे तू लेके कहां जायगो ॥ ५ ॥ हे धूर्त ! खडो हो खडो हो धैर्य धारण करके हमसों संग्राम कर ॥ ६ ॥ हम घोडेको छुडामेंगे और तोको संग्राममें मारेंगे देख शकुनि शकुनिको भाइ नरकासुर बाणासुर ॥ ७ ॥ और कलंक ये सब हमने मारेहैं यासों हम एक तृणकी बराबरहू तोको संग्राममें नहीं गिनेहैं ॥ ८ ॥ सो देख जो तेरी सूधी बनी है तो घोडाको देके चलोजा और नहीं तो तोकूं मारडारेंगे तब ये देवतानके भयको देनवारो भीषण नामको राक्षस यादवनके कहेको सुनके ॥ ९ ॥ शूल, गदा, खड्गको हाथमें लिये क्रोधयुक्त हैके बोलेहै ॥ भीषण बोला कि, रे यादव हो ! तुम मेरे खाजे मनुष्य हो मोसे कहा लड़ेगो ॥१०॥ और भली राक्षसनके अगारी तुम कहा पुरुषार्थ करोगे और जो उग्रसेनने ये निश्चित नामको

ततस्तेकोणपंप्राहुर्यादवायुद्धशालिनः ॥ ॥ यादवाऊचुः ॥ ॥ कस्त्वंश्रीयादवेंद्रस्यह्युग्रसेनस्यभूपतेः ॥ ५ ॥ सिंहस्यवस्तुकोष्टेवहयंनीत्वा क्वयास्यसि ॥ तिष्ठतिष्ठरणंधूर्तअस्माभिःकुरुधैर्यतः ॥ ६ ॥ तुरगंमोचयिष्यामोवधिष्यामोरणेत्वत्वाम् ॥ शकुनिर्भ्रातृसहितोनरकोबाणए वच ॥ ७ ॥ कलंकश्चवराजानएतेस्माभिर्विनाशिताः ॥ तस्मान्नगणयिष्यामोयुद्धेत्वांचतृणोपमम् ॥ ८ ॥ गच्छागच्छहयंदत्त्वाघातयामोन चेत्खलु ॥ तेषांभाषितमाकर्ण्यभीषणःसुरभीषणः ॥ ९ ॥ शूलीगदाधरःखड्गीतान्प्रत्याहरुषान्वितः ॥ ॥ भीषणउवाच ॥ ॥ केयूयंप्रति योद्धारोममभक्ष्यानराःस्मृताः ॥ १० ॥ संमुखेराक्षसानांतेकिंकरिष्यंतिपौरुषम् ॥ यदानिश्चजितंयज्ञंयादवेनकृतंपुरा ॥ ११ ॥ तदाहंकोणपा न्नेतुंलंकायांचगतःकिल ॥ यदाहंराक्षसान्नीत्वास्वपुरंचसमागतः ॥ १२ ॥ तदाशृणोन्नारदाद्वैयज्ञंपूर्णंचभूवह ॥ पुनर्वैहयमेधस्यप्रयासंवृथाकृ तम् ॥ १३ ॥ युष्मत्सुमद्गृहीतंचतुरगंमोचयंतिके ॥ तस्माद्धयाशांत्यक्त्वातुयूयंगच्छतगच्छत ॥१४॥ नचेत्सर्वान्प्रभक्षंतिचतुर्लक्षाममानुगाः ॥ अत्रस्थानात्समुद्रेतुपुरीद्वादशयोजने ॥ १५ ॥ उपलंकाचनाम्नावैवर्ततेममनिर्मिता ॥ निशाचरगणैर्युक्तासर्पैर्भोगवतीयथा ॥ १६ ॥ इत्युक्त्वा सहयंनीत्वासहसास्वपुरींययौ ॥ आकाशमार्गेणनृपशोकंचक्रुश्चयादवाः ॥ १७ ॥ अनिरुद्धस्ततःप्राहभोजराजतुरंगमम् ॥ निशाचरेणनीतं वैमोचयामोवयंकथम् ॥ १८ ॥ इतिश्रुत्वाचसांबाद्याःप्रत्याहुर्नयकोविदाः ॥ शोचंमाकुरुतेराजन्स्थितेष्वस्मासुकिंभयम् ॥ १९ ॥

यज्ञ पहले कियोहो ॥ ११ ॥ तब मैं राक्षसनके बुलायवेको लंकामें गयोहो फिर जब राक्षसनको लेके अपनी पुरीमें आयोहो ॥ १२ ॥ तब मैने नारदजीके मुखसों सुनी कि यज्ञ पूर्ण हैगयो फिर ये अश्वमेधको परिश्रम व्यर्थ कीनो है ॥ १३ ॥ तुममें ऐसो कौन है जो मेरे पकरे घोडेको छुडावेगो यासों घोडेकी आशा छोडके तुम चलेजाउ ॥ १४ ॥ और नहीं तो देखो चार लाख मेरे टहलुआ राक्षस हैं ये तुम सबको खाय जायँगे यहांसों बारह योजनपै समुद्रके भीतर पुरीहै ॥ १५ ॥ जाको नाम उपलंका है वो मेरी बनाईहै जामें अनेक राक्षसनके गण निवास करैहैं जैसे भोगवतीमें सर्प निवास करैहैं ॥ १६ ॥ ऐसे कहिके ये भीषण राक्षस घोडाको लेके आकाशमार्गमें हैके अपनी पुरीको चलो गयो तब सब यादव शोच करन लगे ॥ १७ ॥ तब अनिरुद्ध बोले कि जाको राक्षस लेगयोहै या राजा उग्रसेनके घोडेको अब हम कैसे छुडावेंगे ॥ १८ ॥ तब सांब आदिक सब यादव

नीतिमें चतुर कहनलगे कि, हे राजन् ! तुम शोच मत करो हमारे होते तुमको कोनको भय है ॥ १९ ॥ महाराज ! जे घोडे तुमारी सेनामें पंखवारे हैं वेही मानों विमान हैं और
जे दोनों लोकनके जीतनवारे महान् शूर वीर हैं ॥ २० ॥ ये सब हम अश्वविमाननमें बैठके अथवा बाणनसों समुद्रपै पुल बाँधके अथवा विष्णुके दिये विमानमें बैठके शत्रुनकी
पुरीमें जायँगे और घोडेको जीतके लामेंगे ॥ २१ ॥ ये सबनके कहेको सुनके धनुषधारीनमें श्रेष्ठ अनिरुद्ध मंत्रिमुख्य उद्धवको बुलायके ये बोले ॥ २२ ॥ हे मंत्रीजी ! मैं कहा
करूंगो देखो श्यामकर्ण घोडा न जाने कहां गयो आप कहौ सो करौं भगवान्ने मोसे कहिदीनीही कि जो उद्धव कहैं सो करियो सो बोलो तुम कहो सो करौं ॥ २३ ॥ मेरे
पिताके भाई उपाय बतामेंगे परंतु जो कछु तुम आज्ञा देउगे सो करूंगो ॥ २४ ॥ तब उद्धवजी ये सुनके लज्जितहैके बोलेहैं मैं तो विशेष करके कृष्णके पुत्र पौत्रनको ॥ २५ ॥

हयाःसपक्षास्त्वत्सैन्येविमानानिशरास्तथा ॥ शूराःसंतिमहावीराःलोकद्वयजिगीषवः ॥ २० ॥ अश्वैर्वयंगमिष्यामःसेतुंकृत्वाथवाशरैः ॥
विष्णुदत्तेनवाराजञ्छत्रूणांनगरींप्रति ॥ २१ ॥ सर्वेषांवचनंश्रुत्वानिरुद्धोधन्विनांवरः ॥ उद्धवंमंत्रिणांश्रेष्ठंसमाहूयेदमब्रवीत् ॥ २२ ॥ ॥
अनिरुद्धउवाच ॥ ॥ किंकरिष्याम्यहंमंत्रिञ्छ्यामकर्णेगतेसति ॥ त्वच्छासनेभगवताप्रेरितोहंवदस्वतत् ॥ २३ ॥ मत्पितृभ्रातरःसर्वेउपा
यंप्रवदंतिहि ॥ यदिदास्यसित्वंचाज्ञांतदासर्वंकरोम्यहम् ॥ २४ ॥ उद्धवस्तद्वचःश्रुत्वाप्रत्युवाचविलज्जितः ॥ अहंकृष्णस्यपुत्राणांपौत्राणांच
विशेषतः ॥ २५ ॥ सदादासोऽस्मिनितरामाज्ञावर्तीवदामिकिम् ॥ यदिच्छातवचैतेषांकुरुसाचभविष्यति ॥ २६ ॥ ततःप्राहानिरुद्धस्तुया
स्येहंदैत्यपत्तनम् ॥ अक्षौहिणीदशयुतोविष्णुदत्तेनयादवाः ॥ २७ ॥ सारणःकृतवर्माचयुयुधानश्चसात्यकिः ॥ अक्रूरसहिताएतेसेनारक्षंतुचा
त्रहि ॥ २८ ॥ इत्युक्त्वासविमानंत्वारुरोहसहसेनया ॥ अष्टादशैर्हरेःपुत्रैरुद्धवेनगदेनच ॥ २९ ॥ रेजेततोभास्करबिंबतुल्यंधनेशयानंस्वबले
ननीतम् ॥ श्रीकृष्णपौत्रेणयदुप्रवीरैर्यथाचरामेणपुराकपीन्द्रैः ॥ ३० ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांहयमेधखण्डेविमानारोहणंनामाऽष्टादशो
ऽध्यायः ॥ १८ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ अथरुक्मवतीपुत्रोमहत्यासेनयावृतः ॥ उपलंकांविमानेनप्रययौधनदोयथा ॥ १ ॥ यदुभिस्तत्र
गत्वासशरैराशीविषोपमैः ॥ बभंजनगरींराजन्वनान्युपवनानिच ॥ २ ॥

सदा दास हों उनोंकी आज्ञामें वर्तमानहौं मैं कहा करौं जो तुमारी इनकी राजी होयगी सोई होयगी ॥ २६ ॥ तब अनिरुद्ध बोले कि मैं हे यादव हौं ! दश अक्षौहिणी सेना
लेके दैत्यके नगरको जाऊँगो ॥ २७ ॥ सारांश कृतवर्मा युयुधान (सात्यकि) अक्रूर सहित ए सब यहाँ सेनाकी रक्षा करेंगे ॥ २८ ॥ ये कहिके सब सेनासमेत अनिरुद्धजी
विमानमें बैठके अठारह भगवान्के बेटा उद्धव और गद सबनको संग लेके गयेहैं ॥ २९ ॥ तब अपने बलको लायेमधो वो विमान सूर्यके बिंबके समान श्रीकृष्णके पौत्र करके
ऐसे शोभित भयोहै जैसे बंदरनको लेके गये तब रामचंद्र शोभित भयेहैं ॥३०॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायामष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ गर्गजी बोले हे राजन् !
या प्रकार रुक्मवतीको पुत्र अनिरुद्ध बडी भारी सेनासों आवृत वा विमानमें बैठके उपलंका नामकी पुरीमें उडके गयेहैं जैसे विमानमें बैठे कुबेर जाय ॥ १ ॥ सब यादवनसहित

उपलंकामें जायके सर्पके समान बाणनसों हे राजन्! पुरीके जितने बाग बगीचा हैं वो सब उजार दिये सब पुरीके अटा चौबारे गिराय द्वारे तोर गये ॥ २ ॥ क्रीडाके स्थान महल मंदिर और गोपुर सब फोरके मैदान करादिये और मनुष्यनके विमाननमेंते शस्त्रनकी वर्षा होनलगीहै ॥ ३ ॥ मूसल, शक्ति, परिघ, बाण और शिला बरसन लगे हे राजन्! धूलसों दशों दिशा जाके वेगसों भरिगयी ऐसो बडो प्रचंड पवन चलैहै ॥ ४ ॥ या प्रकार ये भीषणकी पुरी उपलंका यदुवंशीनि पीडित कीनी तब कोहू प्रकारसों कल्याण नहीं प्राप्त भयो जैसें शाल्वदेशीय राजाने द्वारिका विहाल कीनीही सो हवाल उपलंकाको भयोहै ॥ ५ ॥ हे नृपश्रेष्ठ! या समय नगरीमें बडो हाहाकार मचोहै और भीषणसों आदिलेकर जितने असुर रहे वो बडे भयके निमित्तसों विह्वल भयेहैं ॥ ६ ॥ तब ये राक्षसनमें मुख्यने नगरीको अति पीडित देखीहै देखके बोलेहै कि जो खबरदार डरपियो मती ऐसे सबको अभय देके राक्षसनको संग लेके पुरीके बाहिर निकसोहै ॥ ७ ॥ तब तो राक्षसनको यादवनके संग युद्ध प्रवृत्त भयोहै या पुरीमें हे राजन! जैसो

क्रीडास्थानानिद्वाराणिसदनाट्टालतोलकाः ॥ गोपुराणिविमानाग्रान्निपेतुःशस्त्रवृष्टयः ॥३॥ मुसलाःशक्तयश्चैवपरिघाश्चशराःशिलाः ॥ चण्ड वायुरभून्नाजन्रजसाच्छादितादिशः ॥ ४ ॥ इत्थंप्रमानायदुभिर्भीषणस्यपुरीभृशम् ॥ नाभ्यपद्यतकल्याणंयथाशाल्वैश्चद्वारिका ॥ ५ ॥ हाहा कारस्तदैवासीन्नगर्यांनृपसत्तम ॥ असुराभीषणाद्याश्चबभूवुर्भयविह्वलाः ॥ ६ ॥ बाध्यमानांचनगरींदृष्ट्वाराक्षसपुंगवः ॥ माभैष्टेत्यभयंदत्त्वा राक्षसैःसहनिर्ययौ ॥ ७ ॥ ततःप्रववृतेयुद्धंयादवानांनिशाचरैः ॥ तत्पुर्य्यांचैवलंकायांकपिभीरक्षसांयथा ॥ ८ ॥ वृष्णीनांचैवबाणैश्चराक्षसा श्छिन्नकंधराः ॥ निपेतुस्तेसमुद्रेवैवृक्षावातहताइव ॥ ९ ॥ केचित्पृथिव्यांपतिताःकेचित्पुर्य्यामधोमुखाः ॥ केचिदूर्ध्वमुखाराजन्केचिद्वैपंच तांगताः ॥ १० ॥ तत्रतेषांशोणितेनदुर्नदीचभयंकरा ॥ बभूवसाचदुष्पारामहावैतरणीयथा ॥ ११ ॥ तत्रतेषांबलंवीक्ष्यभीषणोविस्मयं गतः ॥ तिरश्चीनेननेत्रेणदृष्ट्वाप्राहयदूनिदम् ॥ १२ ॥ भवद्भिश्चकृतंयुद्धमाकाशान्निर्बलैरिव ॥ अश्लाघनीयंचवृथायूयंमानंकरिष्यथ ॥ १३ ॥ युष्माकंयदिदेहेषुशक्तिश्चेद्विद्यतेशृणु ॥ महीतलेतदागत्यमयाकुरुतवैरणम् ॥ १४ ॥

बंदरनको और राक्षसनसों युद्ध भयोहो ऐसो संग्राम भयोहै ॥ ८ ॥ या समय यादवनके बाणनसों ये राक्षस समुद्रमें ऐसे कटकटके गिरेहै जैसें वायुके उखारे वृक्ष गिरेहै ॥ ९ ॥ कितनेई तो भूमिमें गिरेहै कितनेही नीचेको मुख ऐसे पुरीमें भीतर मरके गिरेहै कितनेई ऊपरको मुखकिये परेहैं ॥ और कितनेही तो बिलकुलही प्राण जिनके मरगये ऐसे भूमिमें परेहै ॥ १० ॥ तब उनके रुधिरकी बडी भयंकर वैतरणीकीसी जाको पार न दीखे ऐसी नदी बही है ॥ ११ ॥ तब तो ये भीषणनाम राक्षस यादवनके बलको देखके बडे विस्मयको प्राप्त भयोहै सो तिरछी दृष्टिसों देखके यादवनसों ये वचन बोल्योहै ॥ १२ ॥ देखो जो तुमने ये निर्बल पुरुषोंकी तरह आकाशमेंसों युद्ध कीनोहै ये कुछ बडाई योग्य नही है ये निंदा करने लायक तुमारो युद्ध है ये जो तुम अभिमान करोहो सो व्यर्थ है ॥ १३ ॥ जो तुमारे शरीरमें शक्ति होय तो मेरी कही सुनो कि भूमिमें आयके मेरे संग

संग्राम करो ॥ १४ ॥ तब अनिरुद्ध या भीषण नाम राक्षसके कहेको सुनकर बडे दयालु अनिरुद्ध आकाशमेंसों विमानको धरतीमें खडोकर ये वचन बोलेहैं ॥ १५ ॥ हे भीषण ! अब तू आड मोते संग्रामकर हे महासुर ! झूठे विचार करेसों क्या होयगो सो भय छोडके संग्राम कर ॥ १६ ॥ तब ये भयंकर पराक्रमवारो भीषण नाम राक्षस धनुषमें तानके पांच बाण मारतो भयो ॥ १७ ॥ अनिरुद्ध आवते देख विन बाणनको अपने बाणनसों दोदो टूककरतो भयो और लीला करके एक बाणसों याको धनुष काटडारतोभयो ॥ १८ ॥ तब ये राक्षसने भी और धनुष लेके प्रत्यंचा लगायके सर्पाकार सौ बाण अनिरुद्धके मारेहैं ॥ १९ ॥ विन बाणनसों अनिरुद्धको रथ चूर्ण हैगयो सारथी मारोगयो और सब सारथी मारडारो और अनिरुद्ध मूर्च्छित हैके गिरपडोहै ॥ २० ॥ तब तो सब यादवनने अपने मालिकको मूर्च्छित भयो देखके क्रोधके मारे होठ फडकावनलगे सो बाणनको चलावते सब आयेहैं

इत्याकर्ण्यवचःसोपिकार्ष्णिजःकरुणामयः ॥ विमानंभूतलेकृत्वाप्रत्युवाचमहासुरम् ॥ १५ ॥ ॥ अनिरुद्धउवाच ॥ ॥ सहसात्वंमयसार्द्धंरणंकुरुमहारणे ॥ किंविचारेणभवतिभयंत्यक्त्वामहासुर ॥ १६ ॥ इतितद्वाक्यमाकर्ण्यभीषणोभीमविक्रमः ॥ धनुषापंचनाराचांस्तस्योपरिसुमोचह ॥ १७ ॥ अनिरुद्धोनिरीक्ष्याथस्वबाणैस्तान्द्विधाकरोत् ॥ चिच्छेदचधनुस्तस्यशरेणैकेनलीलया ॥ १८ ॥ सोप्यन्यंधनुरादायसज्जंकृत्वानिशाचरः ॥ सर्पाकारैःशतशरैर्जघानकार्ष्णिनंदनम् ॥ १९ ॥ रथस्तुतस्यभग्नोभूत्सारथिःपंचतांगतः ॥ हयामृत्युंगताःसर्वेप्राद्युम्निर्मूर्च्छितोऽभवत् ॥ २० ॥ तदैववृष्णयःसर्वेस्फुरिताधरपल्लवाः ॥ स्वनाथंपतितंदृष्ट्वाशरान्मुञ्चन्समागताः ॥ २१ ॥ तानागतान्वृष्णीन्दृष्ट्वाचापंधृत्वाऽसुरोरुषा ॥ गदयापोथयामासदंष्ट्रैवमृगान्हरिः ॥ २२ ॥ गदाप्रहारव्यथितायादवाःपतिताभुवि ॥ संभिन्नच्छिन्नसर्वांगाःकेचिन्निपतितारणे ॥ २३ ॥ ततोगृहीत्वास्वगदांगदःसंकर्षणानुजः ॥ ताडयामाससमरेभीषणस्यचमूर्द्धनि ॥ २४ ॥ गदाप्रहारव्यथितोसपपातमहीतले ॥ चालयन्वसुधांराजन्यथावज्रहतोगिरिः ॥ २५ ॥ भीषणंपतितंदृष्ट्वामूर्च्छितंभग्नशीर्षकम् ॥ असुरास्तेगदंहंतुंप्राप्ताःशस्त्रधराःकिल ॥ २६ ॥ तान्सर्वान्पोथयामासगदयावज्रकल्पया ॥ रामानुजोयथाराजन्सिंहोदंष्ट्र्याथगजान् ॥ २७ ॥ अथोत्थितोनिरुद्धस्तुब्रुवन्धन्वीक्षणेनवै ॥ भीषणोममशत्रुर्वैक्वगतःक्वगतःखलः ॥ २८ ॥

॥ २१ ॥ तब इनको (सब यादवनको) देख ये असुर धनुषको हाथमें लेके जैसे डाँढसों सिंह मृगनको मारे या प्रकारसों याने एक गदासों मारके यादवनको बिछाय दियेहैं ॥ २२ ॥ याकी गदाके प्रहारसों व्यथित हैके अंग भंग जिनके हैगये ऐसे यादव भूमिमें गिरपडेहैं ॥ २३ ॥ तब संकर्षण (दाऊजी) को छोटो भाई गदने अपनी गदा लेके भीषण राक्षसके मूँडमें मारी है ॥ २४ ॥ तब ये भीषण गदाके प्रहारके मारे व्यथित हैके भूमिमें गिरपडो तब भूमि हलनलगी जैसे वज्रके मारे पर्वत गिरे या प्रकार गदाके मारे गिरोहै ॥ २५ ॥ तब सब असुरनने मूर्छित भये भीषणको देखके मस्तक जाको गदाके मारे फटगयो तब ये सब असुर अनेकशस्त्रनको लेके गदके मारवेको आयेहैं ॥ २६ ॥ इन सबनको गदने अपनी वज्रके समान गदासों ऐसे मारके पटकदिये जैसे सिंहराज डाढसों हाथीनको मारके पटकैहै ॥ २७ ॥ तदनंतर एकक्षणमेंही अनिरुद्ध उठेहैं सोही धनुषको हाथमें

लेकै अरे मेरो शत्रु भीषण कहां है कहां गयो ऐसे कहते चारों बगल देखनलगे ॥ २८ ॥ सोही तो सब यादवनने अनिरुद्धको उठे देखके जय जय शब्द कियेहैं और आकाशस्थ देवताभी प्रसन्न भयेहैं ॥ २९ ॥ इतनेमेंही एक बक नामको असुर ये भीषणको पिताहै सो वनमें हो सो यासों नारदजीने कही सोई ये वनमेंसों बडो कुपित ह्वैके आयोहै ॥ ३० ॥ ये कज्जलके पर्वतके समान दश तालके समान लंबो जिह्वाको लपलपातो त्रिशूल और गदाको लिये ॥ ३१ ॥ सेनामुखमें बामहाथसो एक हाथीको लिये बाई हाथीको खातो रुधिरसो भीजरह्यो बडे भारी पिशाचके समान ॥ ३२ ॥ तालकी बराबर पायनसों धरतीको कँपावतो देवतानको भी भयको देनवारो आयोहै मनुष्यनके लिये तो साक्षात् मानों काल है ॥ ३३ ॥ याको आतो देखके सब यादव शंकित भयेहैं श्रीकृष्णके चरणनको स्मरण करते ये बोलेहैं ॥ ३४ ॥ कि, हे मित्र हो ! ये कौन है समीप आयगयो बडो भयंकर

उत्थितंचहरेःपौत्रंदृष्ट्वायादवपुंगवाः ॥ चक्रुर्जयजयारावंदेवाःसर्वेचहर्षिताः ॥ २९ ॥ ततोनारदवाक्याद्वैबकोनामनिशाचरः ॥ भीषणस्य पिताऽरण्यात्क्रुद्धस्तत्राजगामह ॥ ३० ॥ कज्जलाद्रिसमोराजन्तालवृक्षदशोत्थितः ॥ ललज्जिह्वश्चतुर्नेत्रस्त्रिशूलीचगदाधरः ॥ ३१ ॥ हस्तिनंवामहस्तेनगृहीत्वाचमुखेनवै ॥ प्रभक्षन्रुधिराक्तांतःपिशाचसदृशोमहान् ॥ ३२ ॥ पद्भ्यांतालप्रमाणाभ्यांकंपयन्पृथिवीतलम् ॥ भयप्रदश्चदेवानांजनकालोव्यदृश्यत ॥ ३३ ॥ तमायांतंविलोक्याथशंकितास्तत्रयादवाः ॥ प्रोचुःपरस्परंसर्वेस्मरन्कृष्णपदांबुजम् ॥ ३४ ॥ ॥ यादवाऊचुः ॥ ॥ कोयंमित्राणिगदतनिकटेचसमागतः ॥ महाबीभत्सरूपीनेकृतांतइवनिर्भयः ॥ ३५ ॥ इतिब्रुवत्सुसर्वेषुआसीत्कोलाहलोमहान् ॥ प्रसन्नास्तंनिरीक्ष्याथबभूवुस्तेनिशाचराः ॥ ३६ ॥ भीषणंमूर्च्छितंदृष्ट्वाबकोराक्षसपुंगवः ॥ शुशोचराजन्संग्रामेहादैवेतिमुहुर्वदन् ॥३७ ॥ ततोमूर्च्छांमुहूर्तेनविहायभीषणोनृप ॥ उत्थितस्तुब्रुवन्वाक्यंगदःकुत्रगतोभयात् ॥ ३८ ॥ स्वपुत्रमुत्थितंदृष्ट्वापुरुषादस्तुहर्षितः ॥ आलिंग्याऽऽश्वासयामाससुवाक्यैर्वाक्यकोविदः ॥ ३९ ॥ भीषणःपितरंदृष्ट्वासहायार्थसमागतम् ॥ नमश्चक्रेमहाराजभूत्वासच प्रसन्नधीः ॥ ४० ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायांहयमेधखण्डेबकागमनंनामैकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ अथाऽसुराणांमध्येवैस्थित्वाराजन्रुषान्वितः ॥ अभिप्रायंभीषणंचबकःपप्रच्छराक्षसः ॥ १ ॥

याको रूप है और कालके समान निर्भय है ॥३५॥ जबतक ये यादव ऐसे कहिही रहेहैं कि, बडो भारी कोलाहल भयोहै तब ये सब निशाचर बकासुरको देखके प्रसन्न भयेहैं ॥३६॥ तब राक्षसनमें श्रेष्ठ ये बकासुर अपने पुत्र भीषणको संग्राममें मूर्च्छित देखके हा दैव ! ऐसे कहतो हे राजन् ! शोच करनलगे ॥ ३७ ॥ ताके दो घडी पीछे हे नृप ! ये भीषण मूर्च्छाके निवृत्त होनेसे उठोहै तब येही कहतो उठो है कि, रे राक्षस हो गद कहां है ॥ ३८ ॥ तब ये बकराक्षस अपने पुत्रको उठो देखके हर्षित भयोहै और पुत्रको आलिंगन करके वाक्य कहनेमें बडो कोविद ये बोलेहैं ॥ ३९ ॥ तब भीषण पिताको सहाय करनेको आयो देखके बडो प्रसन्न ह्वैके हे महाराज ! नमस्कार करतोभयो ॥ ४० ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायामेकोनविंशोध्यायः ॥ १९ ॥ गर्गजी कहेहैं कि, तब ये बकासुर असुरनके मध्यमें खडो ह्वैके बडे क्रोधसों युक्त हे राजन् ! भीषण अपने पुत्रसों

तोको मूर्च्छा हेगई और ये सब राक्षस संग्राममें
अभिप्राय पूछतोभयो ॥ १ ॥ अरे बेटा ! ए एक तिनकाकी बराबर जे यादव हैं तिनके संग तेरो संग्राम क्यों भयोहै जा संग्राममें तोको मूर्च्छा हेगई और ये सब राक्षस संग्राममें
मारेगयेहैं सो बताय ये बात कहाहै ॥ २ ॥ तब ये पिताके कहेको सुनके हे राजन् ! भीषणने नीचेको अपनो मुख करके कहीहै जो कछु अश्वमेधके अश्वके निमित्तको हाल हो
वो सब बात कहीहै ॥ ३ ॥ तब ये बक पुत्रके कहेको सुनके अपनी गदाको हाथमें लेके जैसे वनमें दावानल प्रवेश करैहै ऐसेही यदुसैन्यमें बकने प्रवेश कियो है ॥ ४ ॥ तब ये बक
पाँवनसों और हाथनसो सन्मुख आये यादवनको और गदासों मर्दन करतोभयो जैसे सोये मृगनको सिंह मर्दन करैहै ॥ ५ ॥ और हाथी, घोडे तथा रथनको जे याके संमुख
आये तिने आकाशमें फेंक देतोभयो और मनुष्यनको भक्षणकरतो संग्राममें या बलीने बडो शब्द कियोहै ॥ ६ ॥ या अपनी गर्जनासों लोकनकरके समेत समग्र विश्वको
शब्दयुक्त कियोहै सब मनुष्य समूह जा गर्जनासो बधिर हेगयेहैं ॥ ७ ॥ तब तो या बकासुरके विपरीत युद्धसों हाहाशब्द करते सब यादव बडे खेदमें भये मन जिनके ऐसे

हयमेध
किमर्थयादवैःसार्द्धयुद्धमासीत्तृणोपमैः ॥ त्वंतुयत्रगतोमूर्छांराक्षसानिहताअहो ॥ २ ॥ इत्युक्तःसबकेनापिभृत्याराजन्नवाङ्मुखः ॥ हयमेध
तुरंगस्यवार्तासर्वामवर्णयत ॥ ३ ॥ श्रुत्वापुत्रस्यवचनंगृहीत्वास्वगदांबकः ॥ विवेशयदुसैन्येवैज्वलनस्तुयथावने ॥ ४ ॥ पद्भ्यांममर्दपाणि
भ्यांयादवान्संमुखेगतान् ॥ भुजाभ्यांगदयासिंहोप्रसुप्ताँश्चमृगान्यथा ॥ ५ ॥ हयाँश्चिक्षेपगगनेगजाँश्चैवरथाँस्तथा ॥ नराँश्चभक्षयन्युद्धेश
ब्दंचक्रेबकोबली ॥ ६ ॥ ननादतेनलोकैश्चविश्वंशब्देनयादव ॥ जाताचबधिरीभूतापृथिव्यांजनमण्डली ॥ ७ ॥ अथतस्यापियुद्धेनविपरी
तेनयादवाः ॥ हाहेतिवादिनस्सर्वेबभूवुःखिन्नमानसाः ॥ ८ ॥ बाध्यमानांचस्वांसेनांराक्षसेनदुरात्मना ॥ भृशंनिरीक्ष्यतप्तोभूत्सांबोजांबवती
सुतः ॥९॥ गृहीत्वापंचनाराचान्कोदंडेचण्डविक्रमः ॥ निधायाशुमुमोचाथबकस्योपरिमानद ॥ १० ॥ तेबाणास्तच्छरीरंवैभित्त्वाराजन्महीत
लम् ॥ विविशुस्तेतुगत्वावैपपुर्भोगवतीजलम् ॥ ११ ॥ सहतस्तुशरैराजन्पपातचालयन्महीम् ॥ पुनरुत्थायचबकोननादजलदस्वनः ॥१२॥
पुनर्जांबवतीपुत्रोजघ्नेतंपंचभिःशरैः ॥ तैर्बाणैर्विभ्रमन्सोपिलंकायांनिपपातह ॥ १३ ॥ आगत्यत्रिशिखंरक्षस्त्रिशूलंज्वलनप्रभम् ॥ राजन्सां
बायचिक्षेपप्रसूनमिवहस्तिने ॥ १४ ॥ त्रिशूलमागतंदृष्ट्वासांबोबाणेनलीलया ॥ चिच्छेदप्रधनेशीघ्रंनागंनागांतकोयथा ॥ १५ ॥

और अपने धनुषमें पाँच नाराच लगायके
होतेभयेहैं ॥ ८ ॥ तब जांबवतीमाताको पुत्र सांब या दुष्ट राक्षससों बाधाकीनी अपनी सेनाको देखके बडो तापयुक्त भयोहै ॥ ९ ॥ और अपने धनुषमें पाँच नाराच लगायके
हे मानद ! बकासुरके मारेहैं ॥ १० ॥ वे बाण बकासुरके शरीरको फोरकें धरतीमें समायगयेहैं और उन्ने भोगवतीको जल पीयोहै अर्थात् नागनकी भोगवतीपुरीमें वे बाण
पहुँचेहै ॥ ११ ॥ हे महाराज ! तिन पाँच बाणनसों ताडन कियो ये बकासुर धरतीमें गिरोहै जाके मारे धरती काँपनलगी फिर उठके याने मेघके समान गर्जना कीनीहै ॥ १२ ॥
तब फेरभी जांबवतीनंदन सांबने याके पाँच बाण मारेहैं तिन बाणनके मार उडके ये लंकामें जायके परोहै ॥ १३ ॥ लंकामें जायके या राक्षसनें एक तीन शिखाको त्रिशूल
अग्निके समान जाकी कांति वो सांबके ऊपर फेकोहै हाथीके ऊपर जैसे कोई फूल फैंके ॥ १४ ॥ तब वा त्रिशूलको आयो देखके सांबने लीलाकरके ऐसे काटगेरो जैसे गरुड

सर्पको ॥ १५ ॥ तब रणमें बड़ो दुर्मद ऐसे बकासुरने गदासों सांबके चारों घोड़े और सारथी मारगेरे ॥ १६ ॥ और ध्वजा काटके रथको चूरचूर कर सांबसो बोलो कि, अरे
सांब ! और रथमें बैठके मोसे संग्राम कर ॥ १७ ॥ विरथ भयेको तोको मैं अधर्मसों संग्राममें नहीं मारोंगो दैत्यके कहेको सुनके कछिक कुपित ह्वैके हँसते २ सांबने ॥ १८ ॥
याके हृदयमें एक गदा मारीहै या गदाके मारे ये बकासुर कछिक व्याकुल है ॥ १९ ॥ सांबको कछु नहीं समझके यदुसैन्यमें धस परोहै और गदासों हाथी, घोडे, रथ और
पदातीनको मारके फेंकतोभयोहै ॥ २० ॥ जैसे सिंह हाथीनको तब तो हे राजन् ! यदुसैन्यमें हाहाकार मचोहै ॥ २१ ॥ या बातको रुक्मवतीको पुत्र (अनिरुद्ध) देखके
हे राजन् ! बड़े रोषसों रथमें बैठके अक्षौहिणी सैनाको संग लैके भयको उत्पन्न करतो आयोहै ॥ २२ ॥ और अनिरुद्ध ये वचन बोलो कि, हे मूढ़ ! वीरके संमुखको छोडके

ततोनीत्वागदांगुर्वीबकस्तुरणदुर्मदः ॥ सांबस्यतुरगान्राजञ्जघानसारथिंतथा ॥ १६ ॥ रथंचैवपताकांचहत्वासांबमुवाचह ॥ रथमन्यंसमा
रुह्ययुद्धंकुरुमयासह ॥ १७ ॥ विरथंत्वामधर्मेणनहनिष्याम्यहंरणे ॥ इतीरितोसौदैत्येनहसन्किंचित्रुषान्वितः ॥ १८ ॥ शीघ्रंजघानगदयाहृ
त्कपाटेबकस्यच ॥ गदाहतोबकोयुद्धेकिंचिद्व्याकुलमानसः ॥ १९ ॥ अगणय्यततःसांबंयदुसैन्येविवेशह ॥ सगत्वातत्रगदयागजवाजिरथा
न्नरान् ॥ २० ॥ कौणपःपोथयामासमृगेंद्रस्तुयथामृगान् ॥ हाहाकारस्तदैवासीद्यदुसैन्येनृपेश्वर ॥ २१ ॥ ततोनिलोक्यरोषेणराजन्रुक्मव
तीसुतः ॥ तत्रागतोऽभयंकुर्वन्रथेनाऽक्षौहिणीयुतः ॥ २२ ॥ ॥ अनिरुद्धउवाच ॥ ॥ किंकरिष्यसिहेमूढत्यक्त्वावीरस्यसंमुखम् ॥ भीता
नांमारणेश्लाघानभविष्यतितेऽसुर ॥ २३ ॥ यदिशक्तिश्चत्वद्देहेविद्यतेशृणुमद्वचः ॥ मत्संमुखेसमागत्यकुरुयुद्धंप्रयत्नतः ॥ २४ ॥ इतिश्रुत्वा
ऽनिरुद्धस्यवाक्यंराजन्बकासुरः ॥ रुषास्फुरत्सर्पइवयुद्धार्थंशीघ्रमाययौ ॥ २५ ॥ आगतंतंविलोक्याथाऽनिरुद्धोधन्विनांवरः ॥ नाराचैर्दश
भिराजघ्नेवानप्रधनेरुषा ॥ २६ ॥ तेशरास्तच्छरीरंवैशीघ्रंभित्त्वाबहिर्गताः ॥ पुनस्तेभीषणंभित्त्वाविविशुर्वैमहीतलम् ॥ २७ ॥ ततःपपातस
बकोभीषणेनसमन्वितः ॥ पृथिव्यांमूर्च्छितोभूत्वायथावज्रहतोगिरिः ॥ २८ ॥ तदाजयजयारावोयदुसैन्येबभूवह ॥ नेदुर्दुंदुभयश्चैवभेर्यः
शंखाश्चगोमुखाः ॥ २९ ॥ ततश्चराक्षसाःसर्वेक्रोधपूरितमानसाः ॥ स्वनाथौपतितौदृष्ट्वायदून्हंतुंसमाययुः ॥ ३० ॥

कहा करोगो इन डरे भयेनके मारवेमें तेरी कोई श्लाघा नहीं होयगी ॥ २३ ॥ जो तेरे शरीरमें सामर्थ्य होय तो तू मेरे कहेको सुन मेरे सन्मुख आयके संग्राम कर बड़े यत्नसों
॥ २४ ॥ हे राजन् ! या प्रकार अनिरुद्धके कहेको सुनके ये बकासुर कोधसों सर्पकीसी तरह फुंकातो युद्ध करवेको बहुत शीघ्र आयोहै ॥ २५ ॥ तब धनुर्धरनमें मुख्य अनिरुद्धने
सामने आयो देख संग्राममें बड़े कोपसों दश नाराच बाण मारेहै ॥ २६ ॥ वे अनिरुद्धके बाण याके शरीरको फोरके पार ह्वैगयेहै और पहलेकी तरह फिरभी वे बाण भूमिमें
समाय गयेहै ॥ २७ ॥ तब ये बक दैत्य अपने भीषण पुत्र सहित मूर्च्छित ह्वैके धरतीमें गिरपड़ोहै जैसे वज्रको मारो पर्वत गिरे ॥ २८ ॥ तब तो जयजय शब्द भयो है यदुसैन्यमें
दुंदुभी भेरी शंख और गोमुखा बजनलगे ॥ २९ ॥ तब तो सब राक्षस क्रोधपूर्ण जिनके मन अपने दोनों मालिकनको मरो देखके यदुनके मारवेको आयेहै ॥ ३० ॥

तब तो दोनो सेनानको युद्ध भयोहै बाण, खड्ग, गदा, शक्ति और भिंदिपाल चलेहैं ॥३१॥ तब राक्षसनके बडे तीव्र बलको देखके हे राजन् ! श्रीकृष्णके पुत्र सांबादिक अठारह तीक्ष्ण बाणनसों राक्षसनको मारनलगेहैं॥ ३२ ॥ तब इन अठारहनके बाणनके मारे कितनेहू ते राक्षस मारेगये और बहुतसे मूर्च्छित हैके गिरपडे हैं ॥ ३३ ॥ फिर एक मुहूर्तमें हे राजन ! बकनामको असुर उठोहै और शत्रु अपने अनिरुद्धके सन्मुख आयोहै ॥ ३४ ॥ जायके याने तू मरो ऐसे बोलतो अनिरुद्धके माथेपै गदाको प्रहार कियो है ॥ ३५ ॥ वो गदा प्रद्युम्नने यमदण्डसों या प्रकार काटडारी जैसे कुवाक्यसों मित्रता छिन्न हैजाय है ॥३६॥ तब तो बकको बडो क्रोध आयो सो युद्धमें मुख फारके ऐसे अनिरुद्धको खायवेको दौडोहै जैसे चंद्रमाके खायवेको राहु दौडेहै ॥ ३७ ॥ तब याको आवतो देखके धनुषधारीनमें शिरोमणि अनिरुद्धने यमदंडको लायके फिर प्रहार कियोहै ॥३८॥ तब याको मूड फटगयो मुखसे रुधिरकी

ततःसमभवद्युद्धमुभयोःसेनयोर्मृधे ॥ बाणैःखड्गैर्गदाभिश्चशक्तिभिर्भिंदिपालकैः ॥ ३१ ॥ राक्षसानांबलंतीव्रंदृष्ट्वाराजन्हरेःसुताः ॥ अष्टादश चसांबाद्यानिजघ्नुर्निशितैःशरैः ॥ ३२ ॥ तत्रतेषांचबाणौघैःकौणपाःपतितामृधे ॥ केचिन्मृत्युंगताःकेचिद्बहुर्जीवितैषिणः॥ ३३ ॥अथोत्थितो मुहूर्तेनबकोराजन्भयंकरः ॥ त्वरंजगामशत्रोश्चाऽनिरुद्धस्यतुसंमुखः ॥ ३४ ॥ तत्रगत्वागदांगुर्वींचिक्षेपतच्छिरोपरि ॥ नाहुनाचबकोराज न्हतोसीतिब्रुवन्वचः ॥ ३५ ॥ तामागतांविलोक्याथयमदंडेनमाधवः ॥ चिच्छेदसहसाराजन्कुवाक्येनेवमित्रताम् ॥ ३६ ॥ ततःक्रुद्धोबको युद्धेप्रसार्यमुखमण्डलम् ॥ दुद्रावतंभक्षयितुंराहुश्चन्द्रमिवक्वचित् ॥३७॥ आगतंतंनिरीक्ष्याथानिरुद्धोधन्विनांवरः ॥ यमदंडंपुनर्नीत्वाताडया मासतेनतम् ॥३८॥ ततोभग्नशिराभूत्वाछुद्गमद्रुधिरंमुखात् ॥ चालयन्वसुधांराजन्पतितोमूर्च्छितोऽभवत् ॥३९॥ ततश्चभीषणोरोषात्पितरंवीक्ष्य मूर्च्छितम् ॥ परिघेणरणेराजन्निजघानतुयादवान् ॥ ४० ॥ ततोनिरुद्धोबलवान्नागपाशेनरोषतः ॥ चकर्षभीषणंबद्ध्वानागंविष्णुरथोयथा ॥ ॥ ४१ ॥ तंबद्धंपाशिनःपाशैर्भग्नमानमधोमुखम् ॥ विनिर्जितंहीनबलंसांबोवचनमब्रवीत् ॥ ४२ ॥ असुरेन्द्राऽनिरुद्धस्यहयमेधतुरंगमम् ॥ शीघ्रंप्रयच्छभद्रंतेपुरींगत्वाविधानतः ॥ ४३ ॥ अनिरुद्धंहरेःपौत्रंश्रीकृष्णस्यमहात्मनः ॥ नृणांप्रदर्शयन्रूपंविचरंतंमिषेणच ॥ ४४ ॥ यंनमं तिसमागत्यदेवदैत्यनराःसुराः ॥ तंविद्धिकृष्णसदृशंनृणांपापप्रणाशनम् ॥ ४५ ॥

उलटी करतो धरतीको हलावतो मूर्छित हैके बकासुर गिरि पडोहै ॥ ३९ ॥ तब तो भीषण नामको याको पुत्र पिताको मूर्च्छित देखके हे राजन् ! बडे रोषसे संग्राममें अनिरुद्धके तथा यादवनके परिघाको प्रहार करतो भयो ॥ ४० ॥ तब बली अनिरुद्धने भीषणको नागपाशसों बाँधके ऐसे घसीटो है जैसे नागको गरुड घसीटे हैं ॥ ४१ ॥ तब वरुणपाशसे बँधो भग्नभयो मान जाको नीचेको मुख हीन जाको बल संग्राममें हारेको देखके सांबने कहीहै ॥४२॥ कि-हे असुरेंद्र ! या अनिरुद्धके अश्वमेधके घोडेको पुरीमें जायके तू जलदी लायके देदे ॥ ४३ ॥ ये अनिरुद्ध कृष्णको पौत्र है ये मनुष्यको रूप बनायके मनुष्यलोकमें विचरैहै ॥ ४५ ॥ जाको देव दैत्य मनुष्यादिक सब नमस्कार करैहैं याको साक्षात् कृष्णके समान

जानौ ये मनुष्यनके पापको नाशकरनवारो है ॥ ४५ ॥ याने तोंको जीतोहै सो हे राक्षस ! तू मनमें दुःखी मत हो हमारे संग कृष्णके दर्शन करवेको चल ॥ ४६ ॥ गर्गजी कहैहैं कि या प्रकार जब सांवने समझायो वारुणपाशसों खोलदियो वाही समय पुरीमें जायके बहुत कछु धन समेत घोड़ा लायके निवेदन कियोहै ॥ ४७ ॥ तदनंतर अनिरुद्धने भीषणको अश्वकी रक्षा करिवेको हुकुम दियेहैं तब भीषण ये बोलो ॥ ४८ ॥ कि हे सुरपालक ! जब मेरो पिता चैतन्य हैजायगो तब मैं पिताकी आज्ञालैके निःसंदेह आऊँगो ॥ ४९ ॥ जब भीषणने ये कहीहै तब प्रद्युम्नके पुत्र (अनिरुद्ध) जी यदुसेनासहित यज्ञके घोड़ेको लेके विमानमें बैठारके आपहू वाही विमानमें बैठके आकाशमें उड़ेहैं ॥ ५० ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ गर्गजी कहते भये कि हे राजन् ! तब या प्रकार उषापति (अनिरुद्ध) सब यादवनसहित विमानमें बैठके अपनी सेनामें

तेनत्वंनिर्जितोयुद्धेदुःखंमाकुरुराक्षस ॥ अस्माभिःसहितोगच्छकर्तुंकृष्णस्यदर्शनम् ॥ ४६ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ बोधितःसोपिसांबेन मुक्तःपाशैश्चवारुणैः ॥ पुरींगत्वाददौतस्मैद्रव्ययुक्तंतुरंगमम् ॥ ४७ ॥ ततःसोप्यनिरुद्धेनतुरंगस्यतुपालने ॥ प्रार्थितोभीषणोराजन्प्रत्युवाचविचार्यतम् ॥ ४८ ॥ ॥ भीषणउवाच ॥ ॥ यदाभवतिचैतन्योमत्पितासुरपालक ॥ तदाहंतस्यवचनादागमिष्येनसंशयः ॥ ४९ ॥ इतीरितोसौकिलभीषणेनप्रद्युम्नपुत्रःक्रतुवाहनंच ॥ कृत्वाविमानेयदुसेनयावैस्वयंसमारुह्यजगामखंहि ॥ ५० ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांहयमेधखंडउपलंकाविजयोनामविंशतितमोऽध्यायः ॥ २० ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ ततःप्राप्तःस्वसेनायांविमानस्थउषापतिः ॥ शीघ्रंचाकाशमार्गेणनादयञ्जयदुन्दुभीन् ॥ १ ॥ दृष्ट्वातानागतान्सर्वेह्यक्रूराद्याश्चयादवाः ॥ मिलित्वाकुशलंसर्वंपप्रच्छुस्तेनिवेदयन् ॥ २ ॥ ततस्त्यक्त्वाविमूर्च्छांवैवृकस्तुसहसोत्थितः ॥ अदृष्ट्वायादवांस्तत्रपुत्रंपप्रच्छरोषतः ॥ ३ ॥ ततःपित्रेभीषणोवैवार्तांसर्वामवर्णयत् ॥ श्रुत्वावचःप्राहवृकोरुषाप्रस्फुरिताधरः ॥ ४ ॥ अहंजानामियद्वोविमानेनकुशस्थलीम् ॥ मद्भयाच्चगताःपुत्रयथासिंहभयान्मृगाः ॥ ५ ॥ तस्माद्यादवींपृथ्वींकरिष्येहंनसंशयः ॥ हनिष्यामियदून्सर्वान्गत्वाकृष्णस्यद्वारकाम् ॥ ६ ॥ ॥ भीषणउवाच ॥ ॥ मन्युंनियच्छभोराजन्नस्माकंसमयोनहि ॥ प्रसीदतियदादेवोतदाजेष्यामयादवान् ॥ ७ ॥

आयेहैं आकाश मार्गमें हैके फतेके नगाड़े बजवावते ॥ १ ॥ तब इनको आयेनको देखके अक्रूरादिक सब यादवनने इनसों मिलके कुशल पूछीहै तब इननें सब वृत्तांत अपनी कुशलसहित निवेदन कियोहै ॥ २ ॥ तदनंतर वृकासुरकोहू यहां मूर्च्छा खुलीहै सोही ये उठके बैठगयोहै तब याकूं यहां कोई यादव नहीं दीखो तब बड़े रोषमें मग्न हैके भीषणने अपने पुत्रसों पूछो है कि अनिरुद्धादि सब यादव कहां गये ॥ ३ ॥ तब भीषणने बापके आगे सब वृत्तांत कह्योहै तब पुत्रके कहेको सुनके वृकासुरके होठ फडकनलगे और यह कहतो भयो ॥ ४ ॥ महाराजजी ! मैं जानताहूँ कि सब यादव मेरे भयके मारे विमानमें बैठके द्वारकाकूं चले गये जैसे सिंहके भयसों हिरण भाग जायहै ॥ ५ ॥ सो मैं आज सब भूमिको यादवनसों रहित करौंगो यामें संदेह नहींहै मैं कृष्णकी द्वारकामें जायके सब यदूनको मारूंगो ॥ ६ ॥ तब भीषणने कही कि भो राजन् ! क्रोधको रोको या समय हमारो

समय नहींहै जब दैव दया करेगो तब हम फेरभी जीतेंगे ॥ ७ ॥ तब गर्गजी कैहेहैं कि हे राजन् ! जब ऐसे भीषण पुत्रने समझायोहै तब ये बकासुर चुप हैके वनके जीवनको भक्षण
करतो वनमें फिरने लगोहै ॥ ८ ॥ तब विधिपूर्वक ब्राह्मणनको दान देके और अश्वको पूजके अभिषेक करके विजयी प्रद्युम्नने फिर घोडेको छोडाहै ॥ ९ ॥ तब ये अश्व फेर अनि
रुद्धने जयको छोडोहै तब हे नृप ! धैवतचालसों चलतो अनेक वीरपुरुषनसों युक्त देशनको देखतो २ भद्रावती नामकी पुरीमें आयोहै ॥ १० ॥ जा पुरीके चारों तरफ अनेक
प्रकारके बाग बगीचा हैं चारों और जामे पर्वतनको किलो है चाँदीके जामें महल मंदिर है ॥ ११ ॥ महावीर मनुष्य जामे निवास करैहै और बडे मजबूत जामें केवल लोहके
किवाड हैं ता पुरीमें आयके ये घोडा या पुरीको राजा जो यौवनाश्व है ताके अगाडी आयके खडो हैगयो ॥ १२ ॥ तब नृपेश्वर यौवनाश्वने ये पकरलियो और अति कुपित हैके

॥ ॥ गर्गउवाच ॥ बोधितःसोपिपुत्रेणतूष्णींभूत्वाबकासुरः ॥ विचचारवनेराजन्वनजंतून्प्रभक्षयन् ॥ ८ ॥ ततस्तुरंगंविधिनाभिपि
च्यदानानिदत्त्वाद्विजपुंगवेभ्यः ॥ विमोचयामासपुनर्जयायप्रद्युम्नपुत्रोविजयीनृपेन्द्र ॥ ९ ॥ हयस्तुमुक्तःकिलकार्ष्णिजेनस्वरंप्रकुर्वन्नृपधैव
तंच ॥ पश्यन्सदेशान्बहुवीरयुक्तान्भद्रावतींनामपुरींजगाम ॥ १० ॥ तत्रभद्रावतीमश्वोनानाचोपवनैर्वृताम् ॥ गिरिदुर्गेणराजेंद्रतथारजतमं
दिरैः ॥ ११ ॥ महावीरजनैर्युक्तांयौवनाश्वेनपालिताम् ॥ दृढांलोहकपाटैश्चनृपस्याग्रेस्थितोऽभवत् ॥ १२ ॥ तंगृहीत्वातुतस्यापिवाताज्ञा
त्वानृपेश्वरः ॥ युद्धंकर्तुंचकुपितःससैन्योनिर्ययौपुरात् ॥ १३ ॥ ससैन्यमागतंदृष्ट्वायौवनाश्वंमहाबलम् ॥ आहूयमंत्रिणंप्राहकृष्णभक्तंहिका
र्ष्णिजः ॥ १४ ॥ ॥ अनिरुद्धउवाच ॥ ॥ कोयंसमागतोमंत्रिन्संमुखेसहसेनया ॥ हयहर्त्ताशत्रुमुख्योतत्सर्वंकथयस्वच ॥ १५ ॥ ॥
उद्धवउवाच ॥ ॥ नृपोयंयौवनाश्वाख्योमरुधन्वपतेःसुतः ॥ अत्रराज्यंचकुरुतेमृतेपितरिसत्तम ॥ १६ ॥ अयंषोडशवर्षीयोकुमंत्रिवचनाद्र
णम् ॥ करिष्यतिमहाराजमारणीयःसनत्वया ॥ १७ ॥ इतिश्रुत्वातथेत्युक्तायौवनाश्वेनकार्ष्णिजः ॥ युद्धंचकारप्रधनेयथानागेननागहा ॥
॥ १८ ॥ तंतुवैविरथंचक्रेहत्वाचाक्षौहिणीत्रयम् ॥ प्रत्याहविमलंवाक्यंयौवनाश्वमुपापतिः ॥ १९ ॥ ॥ अनिरुद्धउवाच ॥ ॥ राजन्प्रय
च्छतुरगंयुद्धंकुरुनचेन्मया ॥ वाक्यंश्रुत्वाहरेःपौत्रंज्ञात्वाराजाभयान्वितः ॥ २० ॥

सेनाको संग लेके युद्ध करनेको नगरके बाहिर आयोहै ॥ १३ ॥ तब महाबल यौवनाश्वको सेनासमेत आयो देखके अनिरुद्धने कृष्णको भक्त जो मंत्री है ताको बुलायके ये बोलेहै
॥ १४ ॥ कि मंत्रिन् ! ये सेनाको संग लिये सन्मुखसे कोन आवैहै जो याने हमारो घोडो बाँधोहै तब ये हमारो मुख्य शत्रुहै सो मंत्रीजी सब वृत्तांत कहो ॥ १५ ॥ तब उद्धवजी
बोलेहैं कि सुनो राजकुमार ! ये मरुदेशके पतिको पुत्र है ये यहां अपने पिताके मरेपै राज्य करैहै ॥ १६ ॥ याकी सोलह वर्षकी अवस्था है सो दुष्ट मंत्रिजनके कहिबेसों
संग्राम करेगो सो महाराज मेरी राय येही है कि ये मारदेनो चाहिये ॥ १७ ॥ ये उद्धवजीके कहेको सुनकर बहुत ठीक है ऐसा कह अनिरुद्ध वाही समय संग्राममें यौवनाश्व
राजाके संग युद्ध करनलगे ॥ १८ ॥ तब अनिरुद्धने यौवनाश्वको विरथकर और याकी तीन अक्षौहिणी सेनाको मारके बडे उत्तम वाक्य कहेहैं ॥ १९ ॥ देखो राजाजी ! याते अश्व

देवेद नाहीं तो हमारे संग युद्ध करो ये वाक्य सुनके राजा यौवनाश्व इनको कृष्णको पौत्र सुनके भयान्वित भयो ॥ २० ॥ वाही समय या यौवनाश्व राजाने अनिरुद्धको निवेदन कियो है हाथ जोरेहैं और ये बोलेहै ॥२१॥ कि हे नृपराजजी ! जब द्वारिकामें यज्ञ होयगो तब मैं आऊँगो कृष्णके दर्शन करूंगो ॥२२॥ तब तो अनिरुद्ध युवनाश्व राजाको राज्यमें स्थापन कर इनकी पूजा ले विजयी हो पुनः घोडेको विजयके लिये छोडेहै ॥ २३ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां हयमेधखंडे भाषाटीकायामेकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ गर्गजी कहेहैं कि, हे राजन् ! फिर यहाँसों उग्रसेनको यह घोडा अनेक देशनको देखतो २ राजपुर नामके नगरमें गयोहै मार्गमें सफरा नाम नदीको देखके अवंतिकाके वनमें जायके खडो भयोहै ॥ १ ॥ वाही समय वहां बडे महात्मा श्रीकृष्णके गुरु ब्राह्मणनमें मुकुटमणि तुलसीकी मालाको कंठमें पहरे हुये वस्त्रनको धारणकरे कृष्णनामको जपते ऋषि सांदीपिनी आयेहैं

अर्पयामासविधिनातस्मैयज्ञतुरंगमम् ॥ भूत्वाकृतांजलीराजाप्रार्थितस्तेनचाऽब्रवीत् ॥ २१ ॥ ॥ यौवनाश्वउवाच ॥ ॥ द्वारकायांयदा यज्ञोभविष्यतिनृपेश्वर ॥ तदाहंचागमिष्यामिकृष्णस्यांघ्रीविलोकितुम् ॥ २२ ॥ ततश्चकृत्वातंराज्येवेदितस्तेनकार्ष्णिजः ॥ मुमुचेवाजिनंश्रेष्ठंविजयीविजयायच ॥ २३ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायांहयमेधखण्डे भद्रावतीविजयोनामैकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ यदुप्रवीरस्यतुरंगमोवैविलोकयन्राजपुरंजगाम ॥ निरीक्ष्यमार्गेसफरांनदींचह्यवंतिकायांविपिनेस्थितोभूत् ॥ १ ॥ तदैवतत्रागतवान्महात्मा सांदीपनिःकृष्णगुरुर्द्विजेन्द्रः ॥ स्नातुंगृहाच्छ्रीतुलसीस्रजाढ्यःसधौतवस्त्रःप्रजपन्हिकृष्णम् ॥ २ ॥ ददर्शतत्रापिजलंपिबंतंतुरंगमंवैचचलंस्वपत्रम् ॥ वाक्यंब्रुवन्नेषकृतोश्ववाजीविमोचितःकेननृपेश्वरेण ॥ ३ ॥ तत्रस्नानंप्रकुर्वंतंदृष्ट्वाविंदुंनृपात्मजम् ॥ हयस्यार्थेमुनिर्गत्वानोदयामासतंनृप ॥ ४ ॥ ततःसर्वैर्वृतोवीरैश्चराजन्राजाधिदेवीतनयश्चशूरः ॥ जग्राहवाहंसहसानिरीक्ष्यनत्वागुरुंतद्वचसाप्रसन्नः ॥ ५ ॥ हयंगृहीत्वागुरवेदर्शयामासहर्षितः ॥ सपत्रंवाचयित्वाऽहनृपंसांदीपनिर्मुदा ॥ ६ ॥ ॥ सांदीपनिरुवाच ॥ ॥ उग्रसेनस्यतुरगंविद्धिप्राद्युम्निपालितम् ॥ यदृच्छयागतंराजन्कार्ष्णिजंत्वागमिष्यति ॥ ७ ॥ आगमिष्यंतिबहवोयादवायुद्धशालिनः ॥ मित्रविंदात्मजाश्चैवपश्यंतस्तेतुरंगमम् ॥ ८ ॥

॥ २ ॥ उन्ने वहां पत्र जाके माथेपर बँधरह्यो श्वेत जाको रंग जलको पीरह्यो ऐसे अश्व देखो है देखके पूछनलगे कि ये अश्वमेधको घोडा कोनको है और कौनसे राजाधिराजने छोडेहै ॥ ३ ॥ तब नदी स्नान कररहे बिंदु नामके राजकुमारको देखके सांदीपिनी पास जायके राजकुमार बिंदुको घोडेके पकरवेके लिये आपने प्रेरणा कीनीहै ॥ ४ ॥ तब ये राजाधिदेवीको पुत्र बडो शूर वीर बहुतसे अपने वीरनको संग लिये या घोडेको देख सांदीपिनीजीको प्रणाम कर इनके कहेसो या राजकुमारने वो घोडा पकरलियो ॥ ५ ॥ घोडेको पकरके बडो प्रसन्न हैकर गुरुको लायके दिखाये तब पत्रको बाँचकर सांदीपिनीजी बडे प्रसन्न हैके बोलेहै ॥ ६ ॥ देखौ राजकुमारजी ये अश्व उग्रसेनको है अनिरुद्ध याको पालक है अकस्मात् यहाँ ये अश्व आयगयोहै सो पीछेसे अनिरुद्धजी भी अवश्य आवेगे ॥ ७ ॥ और युद्धशाली बहुतसे

यादवहू आवेंगे और घोड़ेके देखनवारे मित्रविंदाके पुत्रभी आवेंगे ॥ ८ ॥ वे सब कृष्णके पुत्र आपके पूजनीय हैं सो मेरे कहेसे तुम युद्धकी बुद्धिको छोडके ये अश्व उनको दे देउ ॥ ९ ॥ ये गुरुको वचन सुनके धनुषधारी बडो शूरवीर राजकुमार अश्वके लेजायवेको जो विचार हो सो छोडदियो और चुप है गयो ॥ १० ॥ वाही समय लोकके मान दूर करनवारो यदुसेनाको बड़ो शब्द भयो है और धनुषनकी टंकार सहित दुंदुभीनको हूँ बडो भारी शब्द भयोहै ॥ ११ ॥ हाथीनकी चिंघार घोडेनकी हिनहिनाट रथनकी खनखनाट हुयी और वीरपुरुषनकी गर्जन भई है ॥ १२ ॥ लोकनके भयको देनवारो शतघ्नीन (तोपन) को शब्द न्यारो भयोहै ये सुनके राजकुमार (बिंदु) के मनमें बडो विस्मय भयो है ॥ १३ ॥ तब तो सब रथी और हाथी घोडेनकी फौजको लिये मधु भोज और दशार्हवंशके और शूरसेनके वंशके राजा आये हैं ॥ १४ ॥ जिनके पाँवोंकी रजसे आकाश भर

पूजनीयास्त्वयासर्वेकृष्णचन्द्रस्यनन्दनाः ॥ मद्वाक्याद्युद्धबुद्धिंत्वंत्यक्त्वादेहितुरंगमम् ॥ ९ ॥ इतिश्रुत्वागुरोर्वाक्यंधन्वीशूरोनृपात्मजः ॥ हयंनेतुंमनोयस्यतत्रतूष्णींबभूवह ॥ १० ॥ तदैवयदुसेनायाःशब्दोभूल्लोकमानहा ॥ महानादंदुंदुभीनांटंकारंधनुषांतथा ॥ ११ ॥ चीत्कारं दंतिनांचैवहयानांहेषणंतथा ॥ झणत्कारंरथानांचवीराणांगर्जनंतथा ॥ १२ ॥ शतघ्नीनांमहाशब्दंलोकानांभयदायकम् ॥ श्रुत्वाराजकुमार स्तुविस्मयंपरमंगतः ॥ १३ ॥ ततःसमागताःसर्वेरथिभिश्चगजैर्हयैः ॥ भोजवृष्ण्यंधकमधुशूरसेनदशार्हकाः ॥ १४ ॥ रजोभिश्चनभोव्या प्तंकुर्वंतश्चालयन्महीम् ॥ केननीतःकुत्रगतोहयःसर्वेब्रुवन्त्वचः ॥१५॥ ततश्चददृशुःसर्वेघोटकंबद्धचामरम् ॥ महाद्भुतेचोपवनेपुष्पितद्रुमसंकुले ॥ १६ ॥ गृहीतंलील्यातत्रनृपपुत्रेणबिंदुना ॥ दृष्ट्वानिरुद्धंनिकटेगत्वासर्वेह्यवर्णयन् ॥ १७ ॥ इतिश्रुत्वानिरुद्धस्तुविस्मितःप्रहसन्नृप ॥ उद्ध वंप्रेषयामासबिन्दोःपार्श्वेचधर्मवित् ॥ १८ ॥ ततःपुर्यांमहाराजचासीत्कोलाहलोमहान् ॥ भयभीताजनाःसर्वेसेनांवीक्ष्यभयंकराम् ॥१९॥ अथवैभ्रातरंद्रष्टुंह्यनुबिंदुर्भयान्वितः ॥ कोटिवीरगणैःसार्द्धंस्वपुर्यानिर्ययौबहिः ॥ २० ॥ दृष्ट्वायज्ञहयंतत्रसपत्रंचपयःप्रभम् ॥ भ्रात्रागृहीतंचभ यान्निषेधंसचकारह ॥ २१ ॥ ॥ अनुबिंदुरुवाच ॥ ॥ यदूनांकृष्णदेवानांभ्रातर्मोचयघोटकम् ॥ सम्बन्धस्यमिषेणापिकुलकौशलहेतवे ॥२२॥

गयोहै और भूमि हलन लगी है अरे कौन घोडेको लेगयोहै घोडा कहाँ गयो ऐसे कहते आयेहैं ॥ १५ ॥ तदनंतर इन सबनने चामर जाके बँधरहे ऐसे घोडेको देखोहै बडे अद्भुत पुष्पनके खिले वृक्षनके बीचमें खडो है ॥ १६ ॥ और खेल करके राजकुमार बिंदुने जाको पकर राखो है ताको देखके अनिरुद्धके पास जायकें सबनने कहीहै ॥ १७ ॥ ये सब बात अनिरुद्धने सुनकें विस्मित हैके हँसते हुयेने उद्धवको बिंदुके पास भेजोहै ॥ १८ ॥ तब तो हे महाराज ! पुरीमें बडो भारी कोलाहल भयोहै या भयंकर सेनाको देखके सब मनुष्य भयभीत होगये है ॥ १९ ॥ तदनंतर भाईके देखवेको अनुबिंदु भययुक्त हैके एक किरोड़ वीरगणोंको संग लेके अपनी पुरीके बाहिर निकसेहैं ॥ २० ॥ तब वे यज्ञके घोडेको पत्र सहित देखके दूधके समान जाको श्वेत रंग है भाईने जाको पकरो है सो अनुबिंदुने भयसों छुडायदियोहै ॥ २१ ॥ हे भ्रातः ! कृष्ण हे देवता जिनके ऐसे यादवनको घोडा है

ताको तुम छोड देउ संबंधके मिषसों और कुलके कौशलके लिये ॥२२॥ तुम यादवनके बलको तो देखो हे भ्रातः ! जिन यादवनने पहले राजसूययज्ञमें देव, दैत्य, मनुष्य सब जीतेहे ॥ २३ ॥ ये अनुविंदुको कह्यो सुनके बडो भाई विंदु घोडेपे बैठ आये जे उद्धव हैं तिनसों ये वचन कहतो भयो ॥२४॥ महाराज मैने मित्रनके मिलवेके लिये घोडा पकरोहे यासों मैने तुमारो सबको निर्मंत्रण कियो है सो तुम सब कोई यहांही रहो ॥२५॥ ये विंदुके कहेको सुनके उद्धवजी विंदुकी बहुत कुछ बडाई कर फिर बडे हर्षित हैके सब बात अनिरुद्धको निवेदन करतोभयो ॥ २६ ॥ तब अनिरुद्ध हे राजन् ! उद्धवके कहेकों सुनके बडो प्रसन्न हैके सेनासहित अवंतिकामें नदीके किनारेपे निवास करते भये ॥ २७ ॥ हे राजन् ! वहाँ नदीके तटपे दश योजनके बीचमें अनेक प्रकारके स्वर्ण कलशन समेत अद्भुत बडे शुभ डेरा तम्बू लगगयेहैं ॥ २८ ॥ भक्ष्य, भोज्य, लेह्य, चोष्य जे भोजन है सब आये यादवनको

यादवानांबलंपश्यदेवदैत्यनरासुराः ॥ पुरायज्ञेराजसूयेसर्वेभ्रातर्विनिर्जिताः ॥ २३ ॥ इतितद्वाक्यमाकर्ण्यविन्दुर्ज्येष्ठोऽश्वधर्षितः ॥ आगतंह्यु
द्धवंहष्ट्वाहयस्थंप्रत्युवाचह ॥ २४ ॥ ॥ विंदुरुवाच ॥ ॥ मयागृहीतस्तुरगोमित्राणांमिलनायच ॥ तस्मान्निमंत्रिताःसर्वेस्थितिंकुरुतचा
त्रवै ॥ २५ ॥ इतिश्रुत्वोद्धवोराजन्विंदुंसंश्लाघ्यहर्षितः ॥ अनिरुद्धस्यनिकटेगत्वासर्वंमुवाचह ॥ २६ ॥ श्रुत्वाऽनिरुद्धस्तद्वाक्यंभूत्वाराज
न्प्रसन्नधीः ॥ सेनयाऽवंतिकायांचनदीतीरेऽवसत्किल ॥२७॥ अनेकेशिबिराराजंस्तत्रवैदशयोजने ॥ नानावर्णाःसकलशाह्यभूवन्नद्भुताःशुभाः
॥२८॥ भक्ष्यंभोज्यंचलेह्यंचचोष्यमेतैश्चभोजनैः ॥ आगतेभ्यश्चसर्वेभ्योविंदुरर्हणमाहरत् ॥२९॥ तथाचैवतृणान्नादीन्पशुभ्योदत्तवान्नृपः ॥
इदंविधंचसत्कारंवृष्णीनांसचकारह ॥ ३० ॥ नृपोराजाधिदेवीचद्रौतथानृपनंदनौ ॥ भृशंमुमुदिरेसर्वेवीक्ष्यसर्वान्हरेःसुतान् ॥ ३१ ॥ ततो
निशायांकिलकार्ष्णिपुत्रोविद्यागुरुंतुस्वपितामहस्य ॥ आहूयतस्माऽऽसनमेवदत्त्वाप्रत्याहकृत्वावरपूजनंच ॥ ३२ ॥ भगवन्द्वारकायांचकृष्ण
वाक्यात्क्रतूत्तमम् ॥ करोतिहयमेधाख्यंचक्रवर्तीयदूत्तमः ॥ ३३ ॥ तस्मिन्क्रतुवरेब्रह्मन्कृपांकृत्वाममोपरि ॥ त्वंतुगच्छमुनिश्रेष्ठपुत्रेणचसम
न्वितः ॥ ३४ ॥ अनिरुद्धस्यवचनंश्रुत्वासांदीपनिर्मुनिः ॥ कृष्णदर्शनकांक्षीचचलितुंसमनोदधे ॥३५॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायांहयमेधखण्डे
अवंतिकागमनंनामद्वाविंशोऽध्यायः ॥२२॥ गर्गउवाच ॥ ॥ अथसांदीपनिंतत्रकृष्णपौत्रोब्रवीद्वचः ॥ स्मृत्वातुकिंचित्संदेहंगुरुंवृद्धश्रवाइव ॥ १ ॥

विंदुने निवेदन कियेहे ॥ २९ ॥ तैसेही तृण अन्नादिक पशुनको दीनेहे या प्रकार सब वृष्णीनको विंदुने सत्कार कियोहे ॥ ३० ॥ तब राजा राजाधिदेवी तैसेही दोऊ राजकुमार ये सब कृष्णके सब पुत्रनको देखके अत्यानंदयुक्त भयेहे ॥ ३१ ॥ तब रात्रिके समयमें अपने पितामह (दादे) के विद्यागुरुको बुलायके प्रणामकर आसन देके पूजन कर ये कहतोभयो ॥ ३२ ॥ हे भगवन् ! द्वारकामें श्रीकृष्णके कहेते चक्रवर्ती राजा यादवनमे उत्तम उग्रसेन अश्वमेध नामको यज्ञकर रहोहे ॥ ३३ ॥ हे ब्रह्मन् ! या यज्ञमें मेरे ऊपर कृपा करके हे मुनिश्रेष्ठ ! अपने पुत्रको साथ लेके आप पधारो ॥ ३४ ॥ अनिरुद्ध कहे वचनको सुनके मुनि सांदीपिनीजी कृष्णदर्शनकी जिनके इच्छाहो चलनेको मन करतेभये ॥ ३५ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥ ॥ गर्गजी कहेहे कि, फिर अनिरुद्धने सांदीपिनिजीसों कह्यो कि, कोई जो

मनमें संदेह हो वा बातको पूछो ही जैसे इंद्र बृहस्पतिसों पूछे ॥ १ ॥ अनिरुद्धजी बोले—हे भगवन्! मेरे अगारी सार होय सो कही जासों मैं आनंदमें रमण करौं और सब संसारके सुखनको स्वप्नके समान मिथ्या जानके उनको परित्याग करौं ऐसो उपदेश करौ ॥ २ ॥ हे राजन्! या प्रकार जब अनिरुद्धने प्रार्थना कीनी तब सांदीपिनि नाम गुरु हँसके ये कहतेभये जैसे पृथु राजाके प्रश्न सुनके सनत्कुमारने निरूपण कियो हो ॥ ३ ॥ सांदीपिनिजी बोले कि, अनिरुद्धजी तुम साक्षात् ब्रह्माजीके अवतार ही आप पहले भगवानके नाभिकमलसों उत्पन्न भयेहैं यासों हे लोकेश! मैं अवश्य तेरे आगे कहूँगो ॥ ४ ॥ तब भी हे राजन्! तेरे वाक्यके गौरवसों कहौंगो जासों सब दीन चित्तवारे मनुष्यनके कल्याणके लिये ॥ ५ ॥ हे राजन्! जो तुमने प्रश्न कियोहो ताको मेरे मुखसे सुनो देख बेटा! सार तो केवल कृष्णके चरणको सेवनही है ॥ ६ ॥ जिन

॥ अनिरुद्धउवाच ॥ ॥ भगवन्ब्रूहिमेसारंयेनानंदेरमाम्यहम् ॥ विहायचास्यजगतःसुखान्स्वप्नोपमान्मुने ॥ २ ॥ इतीरितोनिरुद्धेनराजन्सांदीपनिर्मुनिः ॥ प्रत्याहप्रहसन्प्रीत्याकुमारःपृथुनायथा ॥ ३ ॥ ॥ सांदीपनिरुवाच ॥ ॥ आदिदेवस्त्वमेवासीच्छ्रीहरेर्नाभिपंकजात् ॥ तस्मात्त्वाग्रेलोकेशकथयिष्यामिकिंत्वहम् ॥ ४ ॥ तथापिवर्णयिष्यामिराजंस्त्वद्वाक्यगौरवात् ॥ कल्याणार्थनराणांचसर्वेषांदीनचेतसाम् ॥ ५ ॥ त्वयापृष्टंचयद्राजँस्तच्छृणुष्वमुखान्मम ॥ कृष्णचंद्रस्यपदयोःसारमस्तिहिसेवनम् ॥ ६ ॥ ययोःपूजनमात्रेणध्रुवोध्रुवपदंव्रजेत् ॥ प्रह्लादश्चांबरीषश्चगयश्चैवयदुस्तथा ॥ ७ ॥ तस्मात्त्वमपिराजेंद्रश्रीकृष्णस्यचसेवनम् ॥ सर्वेषांसाररूपंयन्मनसाकुरुयत्नतः ॥ ८ ॥ यूयंलोकेभूरिभागाःश्रीकृष्णस्यचवंशजाः ॥ ज्ञातिसंबंधिनश्चैवजीवन्मुक्ताहरिप्रियाः ॥ ९ ॥ केचिज्जानंतिश्रीकृष्णंतनयंकेपिभ्रातरम् ॥ पितरंकेपिमित्रंचकिंकर्त्तव्यंपरंचतैः ॥ १० ॥ ॥ अनिरुद्धउवाच ॥ ॥ कःकर्ताचास्यजगतआदिरूपःसनातनः ॥ यस्मादासीत्पूर्वमिदंतन्मेवर्णयविस्तरात् ॥ ११ ॥ केनकेनापिरूपेणभगवाञ्जगदीश्वरः ॥ युगेयुगेमुनेधर्मकरोतीतिवदस्वनः ॥ १२ ॥ ॥ सांदीपनिरुवाच ॥ ॥ उत्पत्तिश्चनिरोधश्चयस्मादासीद्यदूद्वह ॥ सईश्वरःपरब्रह्मभगवानेकएवच ॥ १३ ॥

चरणनके पूजनमात्रसोंही ध्रुवजीको ध्रुवपद मिलो और प्रह्लाद, अंबरीष, गयराजा और यदुकोहूं ध्रुवपद मिलो ॥ ७ ॥ यासों हे राजेंद्र! श्रीकृष्णको सेवनही सबको सार है सो तुम वोही कृष्णचरण सेवन करौ ॥ ८ ॥ तुम ते कृष्णके वंशमें भयेहो यासों तुम बडभागी हो और जे कृष्णकी जातिके या संबंधी हैं वे सब जीवन्मुक्त हैं जो कि वे कृष्णके प्यारे हैं ॥ ९ ॥ जे तुम कोई तो कृष्णको पुत्र कोई भाई कोई पिता और कोई मित्र मानोहो फिर बताओ याहूसों अधिक और उनको कहा कर्तव्य है ॥ १० ॥ तब अनिरुद्धने प्रश्न कियो कि महाराज या जगत्को कर्ता कौन है जो आदि रूप सनातन है सो कौन है जासो पहले ये जगत् उत्पन्न भयोहै वाको मेरे अगारी विस्तरसों वर्णन करौ ॥ ॥ ११ ॥ और हे मुने! जगदीश्वर भगवान् कौन कौन रूपसों युगयुगमें धर्मको करेहै ये हमसों कहौ ॥ १२ ॥ तब सांदीपिनिजी बोले कि हे यदूद्वह! जासों या जगत्की

उत्पत्ति और प्रलय होयहैं वो परब्रह्म भगवान् ईश्वर एकही है ॥ १३ ॥ हे नृपसत्तम ! दक्षादिक सब युगयुगमें उत्पन्न होवेहैं और फिर लय होजायें हैं विद्वान् पुरुष यामें कभी मोहित नहीं होयहैं ॥ १४ ॥ हे राजन् ! ये कृष्णही परब्रह्म है याहीसों ये जगत् उत्पन्न भयोहै और जो जगद्रूप है और जामें जगत् है अंतमेंहू ये जगत् वाहीमें लय होवेहै ॥ १५ ॥ वो परंधाम परंपद कार्यकारणसों परेहै और ये सब चराचर जगत् जासों न्यारो नहीं है ॥ १६ ॥ वोही मूलप्रकृति है व्यक्त (प्रत्यक्ष) रूप जगत् वोहीहै वाहीमें सब लय हैके स्थित रहैहै ॥ १७ ॥ प्रकृति पुरुष जाते उत्पन्न भयेहैं जासों ये चराचर जगत् भयोहै जो या सबको कारण है वो कृष्ण मोपे प्रसन्न होउ ॥ १८ ॥ स्थितिरूप व्यापारको करनवारो चारों युगनमें विष्णुही हैं और हे राजेंद्र ! वो युगव्यवस्थाको जैसे करैहै सो तुम सुनौ ॥ १९ ॥ सतयुगमें कपिलादि स्वरूपको धारण करनवारो ज्ञानरूप

युगेयुगेभवंत्येतेदक्षाद्यानृपसत्तम ॥ पुनश्चैवनिरुद्ध्यंतेविद्वाँस्तत्रनमुह्यति ॥ १४ ॥ राजन्कृष्णःपरंब्रह्मयतःसर्वमिदंजगत् ॥ जगद्यश्चयोयत्र चेदंयस्मिँश्चलयमेष्यति ॥ १५ ॥ तद्ब्रह्मपरमंधामसदसत्परमंपदम् ॥ यस्यसर्वमभेदेनजगदेतच्चराचरम् ॥ १६ ॥ सएवमूलप्रकृतिर्व्यक्तरूपीजगच्चसः ॥ तस्मिन्नेवलयंसर्वंयातितत्रैवतिष्ठति ॥ १७ ॥ यतःप्रधानपुरुषौयतश्चैतच्चराचरम् ॥ कारणंसकलस्यास्यसमेकृष्णःप्रसीदतु ॥ १८ ॥ चतुर्युगेष्वसौविष्णुःस्थितिव्यापारलक्षणः ॥ युगव्यवस्थांकुरुतेयथाराजेन्द्रतच्छृणु ॥ १९ ॥ कृतेयुगेपरंज्ञानंकपिलादिस्वरूपधृक् ॥ ददातिसर्वभूतात्मासर्वभूतहितेरतः ॥ २० ॥ चक्रवर्त्तिस्वरूपेणत्रेतायामपिसप्रभुः ॥ दुष्टानांनिग्रहंकुर्वन्परिपातिजगत्त्रयम् ॥ २१ ॥ वेदमेकंचतुर्भेदंकृत्वाशतधाविभुः ॥ करोतिबहुलंभूयोवेदव्यासस्वरूपधृक् ॥२२॥ वेदांश्चद्वापरेन्यस्यकलेरंतेपुनर्हरिः ॥ कल्किस्वरूपीदुर्वृत्तान्मार्गेस्थापयतिप्रभुः ॥ २३ ॥ एवंकृष्णोजगत्सर्वंजगत्पातिकरोतिच ॥ हंतिचांतेष्वनंतात्मानान्यस्माद्व्यतिरेकतः ॥ २४ ॥ नमोस्तुहरयेतस्मैयस्माद्भिन्नमिदंजगत् ॥ ध्येयःसजगतामाद्यःसप्रसीदतुमेव्ययः ॥ २५ ॥ तस्मान्नृपेंद्रहरिपौत्रमनोमयंनसर्वंविहायजगतश्चसुखंचदुःखम् ॥ मोक्षप्रदंसुरवरंकिलसर्वदंत्वंद्वारावतीनरपतिंभजकृष्णचंद्रम् ॥ २६ ॥

ज्ञान देहै सब भूतनके हितमें रत सब भूतनको आत्मा वोही है ॥ २० ॥ वोही चक्रवर्ती स्वरूपसों त्रेतायुगमें दुष्टनको निग्रह करतो जगत्त्रयको पालन करैहै ॥ २१ ॥ वोही विभु एक वेदके चारभाग कर फिर शत भेद करैहै तब वेदव्यासको रूप धारण करैहै ॥ २२ ॥ फिर द्वापरयुगमें वेदनको विभाग करैहै तदनंतर कलियुगके अंतमें फिर वोही भगवान् कल्किरूप धारण करके दुष्टता करनवारे मनुष्यनको सन्मार्गमें स्थापन करैहै ॥२३॥ या प्रकारसों कृष्णही सब जगतको बनावेहै फिर वोही पालन करैहै फिर अंत कालमें अनंतात्मा वोही सबको मारैहै वास्तवमें सबसों न्यारो है ॥२४॥ वा भगवान्को नमस्कार है जासों ये सब जगत्भिन्न है वोही जगतनको आत्मा है वोही ध्यान करने योग्य है वो अव्यय भगवान मोपे प्रसन्न हो उ ॥ २५ ॥ यासों हे नृपेंद्र ! हे हरिपौत्र ! मनोमय या जगत्के सुखदुःखको छोडके मोक्षके देनवारे देवश्रेष्ठ सब वस्तुके देनवारे द्वारिकेश श्रीकृष्णचंद्रकोही केवल तुम भजन

करी ॥ २६ ॥ ये हरि श्रीकृष्णके वृत्तसारको सांदीपिनीके कहेको जो कोई मनुष्य कहै या सुनै भक्तियुक्त हैके वो निर्मलबुद्धि मनुष्य कभी आत्मविषय मोहको नहीं पावैहै और वो स्मरण करवेमें भक्तिके योग्य होयहै ॥ २७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ गर्गजी कहैहैं कि, ये सांदीपिनीजीके कहेको सुनके आनंदमें मग्नभये ऐसे अनिरुद्धजी अपने मनको कृष्णके चरणनमें लगाय उन मुनिजीसे ये वचन बोले ॥ १ ॥ कि, गुरुजी महाराज ! आपके वाक्यनसों मोहरूप शत्रु मेरो नष्ट भयो अब आप अपने पुत्रसहित द्वारिकाको पधारो ॥ २ ॥ ये अनिरुद्धके कहेको सुनकर सांदीपिनीमुनि कृष्णके दिये पुत्रको संग लेके रथमें बैठके द्वारकाको गयेहैं ॥ ३ ॥ तब कृष्णचंद्र तथा बलरामजीने सांदीपिनीजीको बड़े आदरसो निवास दियो सब यादवनने तथा उग्रसेनजीने विधिसों पूजन कियो ॥ ४ ॥ तदनंतर

इतिकृष्णस्यहरेश्चवृत्तसारंकथयतियश्चशृणोतिभक्तियुक्तः ॥ सविमलमतिरेतिनात्ममोहंभवतिचसंस्मरणेषुभक्तियोग्यः ॥ २७ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांहयमेधखंडेवैराग्यकथनंनामत्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ इतीदंवचनंश्रुत्वानिरुद्धस्तुमुदान्वितः ॥ निवेश्यकृष्णपदयोःस्वमनःप्राहतंमुनिम् ॥ १ ॥ गतःशत्रुश्चमेमोहस्त्वद्वाक्येनासिनाविभो ॥ अद्यत्वंगच्छकृष्णस्यपुरींपुत्रेणसंयुतः ॥ २ ॥ तस्यवाक्यंसमाकर्ण्यमुदासांदीपनिर्मुनिः ॥ कृष्णदत्तेनपुत्रेणरथस्थोद्वारकांययौ ॥ ३ ॥ सपुज्यौरामकृष्णाभ्यामादरेणनिवासितः ॥ पूजितोयादवैःसर्वैर्भोजेंद्रेणविधानतः ॥ ४ ॥ अथप्रद्युम्नतनयःश्यामकर्णंमहोज्ज्वलम् ॥ स्वर्णशृंखलयाबद्धंमुमोचविजयायच ॥ ५ ॥ हयश्चशीघ्रंप्रव्रजन्नृपेंद्रसुरंद्धवज्राजपुरेगतःसः ॥ यत्रानुशाल्वोनृपतिश्चराज्यंशाल्वस्यभ्राताकुरुतेचनित्यम् ॥ ६ ॥ तत्रैवतुरगंप्राप्तमनुशाल्वोयदृच्छया ॥ गृहीत्वावाचयामासतत्पत्रंचप्रहर्षितः ॥ ७ ॥ अभिप्रायंनिरीक्ष्यैवतिरश्चीनेनचक्षुषा ॥ स्वसैनिकान्प्रत्युवाचरुषाप्रस्फुरिताधरः ॥ ८ ॥ दिष्ट्यादिष्ट्याशत्रवोमेसर्वेचात्रसमागताः ॥ घातयिष्यामितान्सर्वान्यैर्मेभ्राताचमारितः ॥ ९ ॥ इत्युक्त्वासेनयायुक्तोनिश्चक्रामपुराद्बहिः ॥ अक्षौहिणीभिर्दशभिस्तृणीकृत्यतुयादवान् ॥ १० ॥ तदैववृष्णयःसर्वेदृष्ट्वासेनांसमागताम् ॥ बाणवर्षांप्रमुंचंतींमुमुचुस्तेशरांश्चवै ॥ ११ ॥

अनिरुद्धने ऋषिके गये पीछे सोनेकी संकलसों बँधो महोज्ज्वल वो श्यामकर्ण अश्व फिर छोडोहै ॥ ५ ॥ तब हे नृपेंद्र ! वो अश्व फिर चलतो चलतो राजेंद्र उग्रसेनके कहतो २ राजपुरमें गयो है जहाँ अनुशाल्व नामको राजा शाल्वराजको भाई नित्य राज्य करतोहो ॥ ६ ॥ तब वहां प्राप्तभये अश्वको अनुशाल्वने पकरलियो याने जो माथेमें पत्र लिखो बँधोहो वो बचवायोहै ॥ ७ ॥ और मतलब समझके कोधकों याके होठ फड़कनलगे और अपने सेनाके वीरपुरुषनसों बोलो ॥ ८ ॥ सोनेकी घडी आज बडी मंगल है कि, जे मेरे शत्रु हैं वे आपसेही यहां आयेहैं इन सबनको जिनने मेरो भाई मरवाय डारोहो आज मैं विन सबनको मरवाऊँगो ॥ वचन कहके अपनी दश अक्षौहिणी सेनाको संग लैके यादवनको एक तिनकाकी बराबर गिनके पुरके बाहिर निकसोहै ॥ १० ॥ सोही सब यादवसेनाको आईभाई

बाणनकी वर्षा कररही है ताके ऊपर ये भी बाण वर्षावनलगे ॥ ११ ॥ तब दोनों सेनानको खड्ग, बाण, गदा, शक्ति और भिंदिपालनसों संग्राम होनलगो ॥ १२ ॥ तब महाबली राजा अनुशाल्व अपनी सेनाको भागतीको रोकके गर्जतो रथमें बैठके आयोहै ॥ १३ ॥ याको आयेभयेको दीप्तिमान् नामको श्रीकृष्णको पुत्र या अनुशाल्वसों युद्ध करवेको सन्मुखसों आयोहै ॥ १४ ॥ तब दीप्तिमान्को सन्मुख आयो देखके अनुशाल्वने कुपित हैके दश बाण मारेहैं जैसे द्वीपी अपने नखसों हाथीको मारे ॥ १५ ॥ तिन बाणनसों ताडन कियो दीप्तिमान् वाही समय रुधिरसों अक्षतबाहुँसों धनुषको लेके रोषसों बाणग्रहण कियेहैं ॥ १६ ॥ उन बाणनको धनुषमें लगायके छोडेहैं तब वे बाण अनुशाल्वके शरीरको भेदन करके हे राजन् ! पार निकसगयेहैं ॥ १७ ॥ जैसे तृणगृह (बमँई) में सर्प प्रवेश करै अथवा जैसे तृणगृहमें पन्नगाशन गरुड प्रवेश करै तब तिन बाणनसों युद्धमें

उभयोःसेनयोर्युद्धंततःसमभवन्मृधे ॥ खड्गैर्बाणैर्गदाभिश्चशक्तिभिर्भिंदिपालकैः ॥ १२ ॥ पलायमानांस्वांसेनामनुशाल्वोमहाबलः ॥ वारयित्वानदन्युद्धेचाजगामरथेनवै ॥ १३ ॥ तमागतंविलोक्याथदीप्तिमान्कृष्णनन्दनः ॥ तेनसार्द्धंरणंकर्त्तुंतदैवसंमुखेऽभवत् ॥ १४ ॥ दीप्तिमंतंरणेवीक्ष्यधनुषादशभिःशरैः ॥ तताडामर्पितःसोपिद्विपंद्वीपीनखैरिव ॥ १५ ॥ ताडितस्तैःशरैर्धैस्तुरुधिराक्षतबाहुना ॥ नीत्वाशरासनंसद्योबाणाञ्जग्राहरोषतः ॥ १६ ॥ निधायकिलकोदंडेदशबाणान्मुमोचह ॥ तेशरास्तच्छरीरंवैभित्त्वाराजन्बहिर्गताः ॥ १७ ॥ यथातृणगृहंराजन्सहसापन्नगाशनाः ॥ तैर्बाणैर्निहतोयुद्धेनुशाल्वोमूर्च्छितोभवत् ॥ १८ ॥ ततस्तत्सैनिकाःसर्वेरुषाप्रस्फुरिताधराः ॥ दीप्तिमंतंरणेजघ्नुश्चित्रशस्त्रैःशरैरपि ॥ १९ ॥ तत्रागत्यहरेःपुत्रोभानुःसर्वान्निपुङ्खरैः ॥ नीहाराभ्रान्भानुरिवछिन्नभिन्नांश्चकारह ॥ २० ॥ ततश्चदुद्रुवुःसर्वेऽनुशाल्वस्यतुसैनिकाः ॥ तदैवतस्यमंत्रीवैप्रचण्डोनामरोषतः ॥ २१ ॥ शक्त्याजघानसमरेसत्यभामात्मजंनृप ॥ भानोश्चहृदयंभित्त्वासाविवेशमहीतले ॥ २२ ॥ सचापिमूर्च्छितोभूत्वानिपपातरथाद्रणे ॥ सएवंकौतुकंवीक्ष्यसांबस्तत्ररुषाज्वलन् ॥ २३ ॥ शीघ्रंगृहीत्वाकोदंडमाजगामरथेनवै ॥ प्रचण्डस्यरथंसांबःसतुरंगंससारथिम् ॥ २४ ॥ सध्वजंशतबाणैश्चसर्वंचूर्णीचकारह ॥ रथेभग्नेगदांनीत्वाप्रचण्डोरणदुर्मदः ॥ २५ ॥

अनुशाल्व मूर्च्छित हैगयो ॥ १८ ॥ तब याके सब सैनिक रोषसों होठ जिनके फडकनलगे तिने दीप्तिमान्के अनेक प्रकारके बाण मारेहैं ॥ १९ ॥ तब तो भगवान्के पुत्र भानुने आयके सब शत्रुगणनको बाणनके मारे ऐसे उडाय दियेहैं जैसे मेघसमूहको पश्चिमको पवन उडायदेयहै ॥ २० ॥ तब तो अनुशाल्वके सब सेनाके मनुष्य भागगयेहैं तब अनुशाल्वको प्रचंडनामको मंत्री बडे रोषसों ॥ २१ ॥ भानुके शक्तिको प्रहार करतोभयो वो शक्ति भानुके हृदयके पार हैगई है फिर भूमिमें प्रवेश करगईहै ॥ २२ ॥ तब भानु मूर्च्छित हैके रथमेसों धरणीमें गिरोहै तब या कौतुकको देखके क्रोधसों अग्निकी तरह जलनलगो ऐसो सांब ॥ २३ ॥ शीघ्रतासों धनुषको लेके रथमें बैठके आयोहै और आयके घोडे और सारथीके सहित प्रचंडके रथको ॥ २४ ॥ ध्वजसहित सो १०० बाणनसों चूर्ण करके पटक दियेहै तब रणमें बडो दुर्मद जो प्रचंड है सो रथको चूर्णभयो देख गदाको

लेके ॥ २५ ॥ अपने वैरी सांबके मारबेको आयोहे जैसे पतंग अग्निके सन्मुख आवैहे तब प्रचंडको आवतो देखके सांबने चद्रमा सूर्यके समान जाको तेज ॥ २६ ॥ ऐसे एकही बाणसों प्रचंडको मस्तक काटडारो तब प्रचंडकी सेनामें हे नृपेश्वर ! बडो भारी हाहाकार मचोहे ॥ २७ ॥ इतनेहीमें ये अनुशाल्व एक मुहूर्त पीछे मूर्च्छित निवृत्त होनेपर जब उठोहे तब अपने प्रचंड मंत्रीको मरोदेखोहे सांबने मारके पटकोहे ॥ २८ ॥ देखके रथमें बैठ धनुषको उठाय खड्ग जाके परतलेमें कवच पहरके चार शिलीमुख नामके बाणनसों सांबके चारों घोडे ॥ २९ ॥ दो बाणसों ध्वजा पताका तीन बाणसों सारथी पांच बाणसों धनुष और तीस बाणनसों रथ इनको मारके चूरचूर कर डारेहें ॥ ३० ॥ तब जांबवती पुत्र सांब धनुष जाको कटगयो रथ जाको चूर हैगयो घोडे जाके मरगये सारथी जाको मरगयो सो दूसरे रथमें बैठके शोभित भयोहे ॥ ३१ ॥ तब फिर धनुष हाथमें लेके

आजगामरिपुंहंतुंपतंगइवपावकम् ॥ आगतंतंविलोक्याथचन्द्रार्काकारवर्चसा ॥ २६ ॥ शरेणैकेनसांबस्तुजहारतच्छिरोमृधे ॥ हाहाकारस्तदैवासीत्तत्सेनायांनृपेश्वर ॥ २७ ॥ अथोत्थितोनुशाल्वस्तुमूर्च्छांत्यक्त्वामुहूर्ततः ॥ ददर्शमंत्रिणंतत्रसांबेननिहतंमृधे ॥ २८ ॥ निरीक्ष्यरथमारुह्यधन्वीखड्गीचदंशितः ॥ शिलीमुखैश्चतुर्भिश्चसांबस्यचतुरोहयान् ॥ २९ ॥ द्वाभ्यांकेतुंत्रिभिःसूतंपंचभिश्चशरासनम् ॥ त्रिंशद्भिश्चशरैर्यानंजघानसमरेनृपः ॥ ३० ॥ सच्छिन्नधन्वाविरथोहताश्वोहतसारथिः ॥ रथंचान्यंसमारुह्यरेजेजांबवतीसुतः ॥ ३१ ॥ ततोगृहीत्वाकोदंडंशतबाणैरमर्षितः ॥ तताडसरिपुंयुद्धेसर्पपक्षैर्यथाविराट् ॥ ३२ ॥ यानस्तस्यापिभग्नोभूत्तुरंगाःपंचतांगताः ॥ सूतोमृत्युंगतोयुद्धेनुशाल्वोमूर्च्छितोभवत् ॥ ३३ ॥ ततस्तत्सैनिकाःसर्वेगृध्रपक्षैःस्फुरत्प्रभैः ॥ आशीविषसमैर्बाणैःसांबंजघ्नूरुषान्विताः ॥ ३४ ॥ सांबमेकंरणेवीक्ष्यमधुःकृष्णसुतोरुषा ॥ पारावतसमेनापिहयेनागतवान्मृधे ॥ ३५ ॥ साकंसांबेनतान्सर्वान्निस्त्रिंशेनारिपून्खलान् ॥ प्रहरार्द्धेनराजेन्द्रमारयन्विचचारह ॥ ३६ ॥ ततोनुशाल्वउत्थायदृष्ट्वास्वस्यपराजयम् ॥ सलिलेनशुचिर्भूत्वाहंतुंसर्वान्मनोदधे ॥ ३७ ॥ ब्रह्मास्त्रंसंदधेरोषान्मयदैत्येनशिक्षितम् ॥ अजानन्तस्तुनाशंचसंप्राप्तेप्राणसंकटे ॥ ३८ ॥

अमर्ष जाको भयो सो युद्धमे याने सौ १०० बाण सांबके मारेहें जैसे सर्पके ऊपर गरुड प्रहार करै ॥ ३२ ॥ तब अनुशाल्वके रथकोहू चूर्ण हैगयो घोडेहू मरगये और सारथीहू मरगयो तदनंतर शाल्व मूर्च्छित हैगयो ॥ ३३ ॥ तब तो शाल्वकी सेनाकेजे सबने बडे तीक्षण गृध्रके पंखके प्रकाशवारे सर्पकेसे जिनके आकार ऐसे बाणनसों सांबको मारनलगे हें ॥ ३४ ॥ तब रणमें इकले सांबको देखके कृष्णको पुत्र नाग्नजितीके गर्भमेसों उत्पन्न भयो जो मधु है सो कुपित हैके कबूतरके रंगके घोडेपे सवार है संग्राममें आयोहे ॥ ३५ ॥ सांब भाई जाके साथमें है सो आवतेही बिन सब दुष्टनको आधे प्रहर (३॥ घड़ी) में खड्गसों मारतो विचरन लगोहे ॥ ३६ ॥ तब अनुशाल्व मूर्च्छासों उठो और अपनेनकी पराजय देख जलको स्पर्श करके अपने आपेको पवित्रकरके ये विचार कियो आज मैं सबको मारूँगो ॥ ३७ ॥ ये विचार कर मयदैत्यसों सीखो जो ब्रह्मास्त्र हो वो रोषके

मारे धनुषमें रोपण कियोहै परंतु ये या अस्त्रकी शांतिको नहीं जानतो हो केवल अपने प्राण बचायवेके लिये धनुषमें संधान कियोहै ॥ ३८ ॥ तब तो ब्रह्मास्त्रको वो दारुण तेज तीनों लोकनको नाश करतो बारह सूर्यके समान अंतरिक्षमें फैलोहै ॥ ३९ ॥ वा अस्त्रके तेजसों सब यादव भस्म होनलगे तब भयभीत है पुकारते अनिरुद्धके पास आये हैं कि, हे नृहरे ! हे महात्मन् ! या प्राणांत कष्टसों हमारी रक्षा करो ॥ ४० ॥ तब हे राजन् ! ये वीर रुक्मवतीको पुत्र (अनिरुद्ध) सबको अभय देके आपने अपने दूसरे ब्रह्मास्त्रसों या ब्रह्मास्त्रको संग्राममें कुपित हैके शांत कीनो है ॥ ४१ ॥ ऐसे ब्रह्मास्त्रकूं शांत करके पीछे या दैत्यने अपनो आग्नेयास्त्र छोडो है तब आकाश अग्निसों व्याप्त हैगयो है और खांडववनकी नाईं ज्वालानसों धरती जलन लगीहै ॥ ४२ ॥ तब बलवान् अनिरुद्धने वारुणास्त्रको प्रयोग कियोहै सोई तो मूसलधार पानी वर्षनलगो जासों वो सब अग्नि शमन हैगई है ॥ ४३ ॥ तब मेघके गर्जनेसों और पानीके वर्षणसों मोर, मेडका, कोकिल और सारसादिक पक्षीके जीवनको बडो आनंद भयो

तस्यापिदारुणंतेजोत्रींल्लोकान्प्रदहन्महत् ॥ चचारह्यंतरिक्षेचद्वादशादित्यसन्निभम् ॥ ३९ ॥ तत्तेजसादुर्विषह्येणसर्वेसंदह्यमानायदवश्च भीताः ॥ प्राद्युम्निपार्श्वंप्रययुर्ब्रुवन्तोरक्षस्वदुःखान्नृहरेमहात्मन् ॥ ४० ॥ ततःकृत्वाऽभयंराजन्वीरोरुक्मवतीसुतः ॥ ब्रह्मास्त्रेणतुब्रह्मास्त्रं जहारप्रधनेरुषा ॥ ४१ ॥ वह्न्यस्त्रंसोपिचिक्षेपवह्निनापूरितंनभः ॥ दह्यमानाचभूस्तत्रज्वालाभिरिवखांडवम् ॥ ४२ ॥ ततोनिरुद्धोबलवान्वा रुणास्त्रंपुनर्दधे ॥ प्रचंडमेघधाराभिर्वह्निःशीतलतांगतः ॥ ४३ ॥ मण्डूकाःकोकिलाश्चैवमयूराःसारसादयः ॥ प्रत्यनंदन्महामेघैर्वर्षाह्वा त्वापुनःपुनः ॥ ४४ ॥ ततोनुशाल्वोमायावीपवनास्त्रंसमादधे ॥ दृष्ट्वानिरुद्धोयुयुधेपर्वतास्त्रेणसर्वतः ॥४५॥ ततोभारसहस्राढ्यांनीत्वासोपिग दांनृपे ॥ अनिरुद्धंशूरमणिंक्रुद्धोवचनमब्रवीत् ॥ ४६ ॥ त्वत्सैन्येनास्तिराजेंद्रगदायुद्धविशारदः ॥ यदिचास्तितर्हिमह्यंतंतुशीघ्रंप्रदर्शय ॥ ४७ ॥इतितद्वाक्यमाकर्ण्यगदाधारीगदोमहान् ॥ उवाचचाग्रतोभूत्वानिरुद्धस्यप्रपश्यतः ॥ ४८ ॥ अत्रवैबहवःसंतिसर्वेशस्त्रविशारदाः ॥ मानंमाकुरुदैत्येंद्रत्वमेकाकीरणेऽसिहि ॥ ४९ ॥ नमन्यसेत्वंमद्वाक्यंमयासाकंरणेऽसुर ॥ कुरुपूर्वंगदायुद्धंततोन्यान्द्रष्टुमर्हसि ॥ ५० ॥ इत्युक्त्वासगदांनीत्वालक्षभारमयींदृढाम् ॥ तथाऽनुशाल्वंजघ्नेतुमूर्ध्निवक्षस्थलेनृप ॥ ५१ ॥

है जानी है कि मानो वर्षाऋतु आयगई है ॥ ४४ ॥ तब तो मायावी अनुशाल्वने वायव्यास्त्र चलायो है ताको देखके अनिरुद्धने पार्वतास्त्रको प्रयोग कियोहै ॥ ४५ ॥ तब अनुशाल्वने एक हजार भारकी गदाको लेके शूरनके मणि अनिरुद्धके सन्मुख आयके ये बोलो है ॥ ४६ ॥ हे राजेंद्र ! तेरी सेनामें गदायुद्धमें निपुण कोई नहींहै यदि कोई होय तो वाकूं मोयँ दिखा ॥ ४७ ॥ अनुशाल्वके या कहेको सुनके गदाको लिये गदनामको कृष्णको भाई अनिरुद्धके देखते २ अनुशाल्वके आगे आयके ये वचन कहतोभयो है ॥ ४८ ॥ अरे अज्ञ ! हमारी सेनामें गदायुद्धादि सब शस्त्र युद्धके ज्ञाता बहुतसे हैं तू ये अभिमान मत कर कि मैं एकही हूं ॥ ४९ ॥ यदि हे असुर ! मेरे कहेको नहीं मानेहै तो आयजा मेरे साथ पहले गदायुद्ध कर फिर औरनसों युद्ध करियो ॥ ५० ॥ ऐसे गद कहिके बडी दृढ ऐसी एक लक्षभारकी गदाको लेके अनुशाल्वके माथेमें और वक्षस्थलमें प्रहार कियो

है ॥ ५१ ॥ अनुशाल्वने संग्राममें गदको गदा मारी है तब ये दोनों क्रोधमूर्च्छित ह्वैके परस्पर प्रहार करन लगेहैं ॥ ५२ ॥ तब गदने अनुशाल्वको उठायके आकाशमें फेंकोहै फिर शत १०० बार फिरायके अनुशाल्वको धरतीमें पटको है ॥ ५३ ॥ तब तो अनुशाल्व उठके गदको पकरके हे राजेंद्र ! धरतीमें मारोहै वो एक बडो अद्भुतकोसो तमासो भयोहै ॥ ५४ ॥ तब गदने एक हाथीको लेके अनुशाल्वपै फेंकोहै तब या अनुशाल्वने वोही हाथी लेके गदके ऊपर फेंकके मारोहै ॥ ५५ ॥ फिर घोटू घोर मुक्कानके प्रहारसों दोनों परस्पर प्रहार करन लगेहै मर्दित भये वो दोनों मूर्च्छित ह्वैके धरणीमें परेहैं ॥ ५६ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥ गर्गजी कहेहैं कि, या प्रकार दोनोंनके युद्धको देखके यादव और शत्रुसैन्यके सब योधा परस्पर कहते भये कि, गद और अनुशाल्व दोनोंही धन्य हैं ॥ १ ॥ या प्रकार सबकोऊ कहिरहेहैं इतनेमेंही

अनुशाल्वस्तुगदयाजघानसमरेगदम् ॥ ततोन्योन्यंगदाभ्यांचजघ्नतुःक्रोधमूर्च्छितौ ॥ ५२ ॥ ततोगदःसमुत्थाप्यऽनुशाल्वंगगनेऽक्षिपत् ॥ भ्रामयित्वाशतगुणंनिपपातमहीतले ॥ ५३ ॥ ततोनुशाल्वउत्थायगृहीत्वारोहिणीसुतम् ॥ भूमौप्रमर्दराजेंद्रतदद्भुतमिवाभवत् ॥ ५४ ॥ गदो गजंगृहीत्वैकमनुशाल्वोपरिक्षिपत् ॥ तमायांतंगजंनीत्वाचिक्षेपसबलानुजे ॥ ५५ ॥ जानुभिर्मुष्टिभिर्घोरैःप्रहारैस्तौचजघ्नतुः ॥ मर्दितौताबु भौमह्यांपतितौमूर्च्छनांगतौ ॥ ५६ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायांहयमेधखण्डेराजपुरविजयोनामचतुर्विंशतितमोऽध्यायः ॥ २४ ॥ ॥ गर्गउ वाच ॥ ॥ एवंदृष्ट्वातयोर्युद्धंयादवाःपरसैनिकाः ॥ ऊचुःपरस्परंधन्योनुशाल्वस्तुगदोमहान् ॥ १ ॥ इतिब्रुवत्सुसर्वेषुगदस्तत्रैवचोत्थितः ॥ क्वगतःक्वगतःशत्रुर्हत्वामांचब्रुवन्रणात् ॥ २ ॥ ततोनुशाल्वंहस्तेनगृहीत्वाकृष्यरोषतः ॥ अनिरुद्धस्यनिकटेपातयामासवेगतः ॥३॥ पतितंमू र्च्छितंदृष्ट्वाह्यनिरुद्धस्त्वधोमुखम् ॥ कारयामासचैतन्यंव्यजनैःसलिलेनच ॥ ४ ॥ तदैवसप्रबुद्धोभूदनुशाल्वोऽसुरेश्वरः ॥ दृष्ट्वाग्रेसुन्दरंसोपि कृष्णपौत्रंघनप्रभम् ॥ ५ ॥ नत्वाप्रत्याहवचनंत्वंतुमेप्राणरक्षकः ॥ अनिरुद्धहरेःपौत्रअपराधंक्षमस्वतत् ॥ ६ ॥ ॐनमोवासुदेवायनमःसंकर्ष णायच ॥ प्रद्युम्नायनमस्तुभ्यमनिरुद्धायतेनमः ॥ ७ ॥ गृहाणवैतुरंगंतमहंयास्यामिपालयन् ॥ इत्युक्त्वास्वपुरंगत्वाददौतस्मैतुरंगमम् ॥ ८ ॥ अयुतंहस्तिनांचैवहयानांनियुतंतथा ॥ अर्द्धलक्षंरथानांचशिबिकानांसहस्रकम् ॥ ९ ॥

पहले गदजी उठ बैठेहैं कि मोको मारके रणमेंसों मेरो शत्रु कहां गयो ॥ २ ॥ तदनंतर अनुशाल्वकूँ हाथमें पकर रोषसों पकर खेंचके अनिरुद्धके पास वेगसों पटको है ॥ ३ ॥ तब मूर्च्छित ह्वैके धरतीमें परे नीचेको मुख जाको ऐसे अनुशाल्वको पंखाकर आँखनमें जल लगायके अनिरुद्धने सावधान कियोहै ॥ ४ ॥ तब ये असुरेश्वर अनुशाल्व सावधान भयो है तब अनिरुद्ध मेघके समान सुंदर तिने देखके ॥ ५ ॥ प्रणाम करके कहतो भयो कि, तुम तो मेरे प्राणनके रक्षक हौ हे अनिरुद्ध ! आप कृष्णके पौत्र हौ मेरे अपराधको क्षमा करौ ॥ ६ ॥ वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, चतुर्मूर्त्तिको तुमको नमस्कार है नमस्कार है नमस्कार है ॥ ७ ॥ महाराज ! आप घोडेको ग्रहण करौ मैं घोडोंको पालन करतो तुमारे संग चलूंगो ऐसे कहिके अपने नगरमें जायके घोडा निवेदन कियोहै ॥ ८ ॥ और दश हजार हाथी दश लाख घोडे पचास हजार रथ एक हजार पालकी ॥ ९ ॥

एक हजार ऊँट एक हजार वनगाय (रोझ) और पींजरामे बंद दो हजार सिंह ॥ १० ॥ एक हजार सिकारी कुत्ता एक हजार शिबिर (तंबुकनात) दशहजार वजंत्रीसमेत बाजे ॥ ११ ॥ दश हजार चिक (परदा) एक लाख गऊ हजार भार सुवर्ण चार हजारभार चाँदी ॥ १२ ॥ और एक भार मोती राजाने ये सब अनिरुद्धको भेट कियोहै अनिरुद्धने याको एक मणिहार दियो बड़े आनंदित भयोहै ॥ १३ ॥ तब ये अनुशाल्व अपने श्रेष्ठ मंत्रीको राज्यभार दैके यादवनके संग ये भी और और देशनको गयोहै ॥ १४ ॥ तदनंतर मणि और सुवर्णसों शृंगार जाको कियो वो अश्व फिर अगारी चलोहै वो और अनेक देशनको बडे २ वीर जिनमें रहें तिने देखतो भूमिमें भ्रमण करन लगो ॥ १५ ॥ तब अनुशाल्व यौवनाश्व और भीषण राक्षस इन तीननको पराजित सुनके जितने और खंडमंडलेश्वर राजा है उनने कादूने वो घोडा नही पकरो है ॥ १६ ॥ या प्रकार हे विशांपते ! वा

उष्ट्राणांद्विसहस्रंचगवयानांसहस्रकम् ॥पंजरेसंस्थितानांचसिंहानांद्विसहस्रकम् ॥ १० ॥ मृगयासारमेयाणांसहस्रंनृपसत्तम ॥ शिविराणां सहस्रंचशिञ्जिनांनियुतंतथा ॥ ११ ॥ जवनिकानामयुतंधेनूनांलक्षमेवच ॥ सहस्रभारंस्वर्णानांरजतानांचतुर्गुणम् ॥ १२ ॥ मुक्तानांभार मेकंचानिरुद्धायददौनृपः ॥ अनिरुद्धस्ततस्तस्मैमणिहारंददौमुदा ॥ १३ ॥ अनुशाल्वःस्वराज्येतुकृत्वावैसचिवंवरम् ॥ यादवैःसहितःसोपि देशानन्याञ्जगामह ॥ १४ ॥ ततोविमुक्तस्तुरगोमणिकांचनभूषितः ॥ देशानन्यान्वीरयुक्तान्पश्यन्बभ्रामभूपते ॥ १५ ॥ अनुशाल्वंजितं श्रुत्वायौवनाश्वंचभीषणम् ॥ राजानोऽन्येमंडलेशाःप्रासंनजगृहुर्हयम् ॥ १६ ॥ इत्येवंभ्रमतस्तस्यतुरगस्यविशांपते ॥ मासाश्चप्रगताःषड्वैता दशाश्चावशेषिताः ॥ १७ ॥ हयोमणिपुरेशेनगृहीतश्चविमोचितः ॥ तथारत्नपुरेशेनह्यनिरुद्धभयान्नृप ॥ १८ ॥ राष्ट्रान्सर्वानशूरांश्चविहा यतुरगोत्तमः ॥ ययौप्राचींदिशंराजन्बल्वलोयत्रदैत्यराट् ॥ १९ ॥ सोपिदैत्योहयस्यापिवार्तांश्रुत्वाचनारदात् ॥ यज्ञंशीघ्रंनाशयित्वानैमि षाद्माजगामह ॥ २० ॥ स्थितंत्रिवेण्यांसलिलंपिबंतंप्रयागतीर्थेक्रतुवाहनंच ॥ विलोक्यराजन्किलबल्वलाख्योजग्राहदैत्योंप्रविगणय्यकृष्णम् ॥ ॥ २१ ॥ तदैववृष्णयःसर्वेदंडकंचविलोकयन् ॥ चर्मण्वतींसमुत्तीर्यचित्रकूटंसमाययुः ॥ २२ ॥ रामक्षेत्रेचदानानिकृत्वाश्वंचविलोक यन् ॥ तस्यापिपृष्ठतोलग्नाआजग्मुस्तीर्थवासवम् ॥ २३ ॥ ददृशुस्तत्रतुरगंसपत्रंयदुसत्तमाः ॥ गृहीतंस्वबलाद्वज्रसुरेणदुरात्मना ॥ २४ ॥

अश्वको घूमते २ को छैमहीने बीते और छेही बाकी रहे हे ॥ १७ ॥ तदनंतर मणिपूरपतिने अश्व पकरो फिर छोड़दियो ऐसेही रत्नपुरके राजानेहू अनिरुद्धके भयसों पकरोहू फिर छोड दियो ॥ १८ ॥ ऐसे सब देशनको जिनमें कोई शूर नही तिने छोडके ये अश्वोत्तम पश्चिम दिशामें पहुँचो है जहां बल्वलनामको दैत्यराज निवास करतो हो ॥ १९ ॥ तब वो दैत्य घोडेकी बातको नारदसे सुनकर शीघ्रही यज्ञको नाशकर नैमिषारण्यसे आयोहै ॥ २० ॥ सो त्रिवेणीके पवित्र जलको पीते यज्ञके घोडेको बल्वल दैत्य देखके श्री कृष्णको नहीं गिनके घोडा याने पकरलीनोहै ॥ २१ ॥ तब सब यादव दंडकारण्यको देखते चंबलके पार उतरके चित्रकूटको गयेहै ॥ २२ ॥ तब रामक्षेत्रमें दानकर अश्वको देखते घोडेके पीछे २ लगे सब इंद्रतीर्थमें आयेहैं ॥ २३ ॥ तहाँ यदुश्रेष्ठनने पत्रसहित अश्वको देखो हे जो कि, दुरात्मा करणवारे बल्वल नामके असुरने पकर राखोहै ॥ २४ ॥

तब ये यादव नील अंजनके समान या बल्वलको देखके बोलेहैं जाको दो योजन ऊँचो अंग और अंगारके समान जाके नेत्र ॥ २५ ॥ तम ताम्रसी जाकी चोटी डाढी दंष्ट्रासे उग्र जाकी भृकुटी और मुख ब्राह्मणनको द्रोही लपलपाती जीभ और दश हजार हाथीकोसो जाको बल है ॥ २६ ॥ ताते क्रोधसे जिनके होठ फडकरहेहैं ऐसे यादव बोलेहैं कि, रे तू कौन है हमारे यज्ञियाश्वको लेके तू कहां जायगो ॥ २७ ॥ यासों घोडेको छोडदे नहीं तो तोकूँ हम मारगेंगे ये सुनके असुरने कही है कि, मनुष्य हो ! मेरे कहेको सुनो ॥ २८ ॥ देखो मेरो बल्वल नाम है दैत्य हो देवतानको दुःखदायी हौं जाके आगे मनुष्य सबरे भयविह्वल रहैंहै ॥ २९ ॥ तब यादवने सुनके बल्वलको बाणनसों प्रहार कियो है तब यादवनके मारके मारे ये बल्वल घोडेके समेत अंतर्हित हैगयो है ॥ ३० ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां पंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥ गर्गजी कहैहैं

ततस्तेबल्वलंदृष्ट्वानीलांजनचयोपमम् ॥ योजनद्वयमुच्चांगमुग्रमंगारलोचनम् ॥ २५ ॥ तप्तताम्रशिखाश्मश्रुदंष्ट्रोग्रभ्रुकुटीमुखम् ॥ ब्रह्मद्रुहं ललज्जिह्वंगजायुतसमंबलम् ॥ २६ ॥ तमूचुर्यादवारोषात्स्फुरिताधरपल्लवाः ॥ कस्त्वंयज्ञपशुंनीत्वाह्यस्माकंचक्वयास्यसि ॥ २७ ॥ तस्मान्मोचयतंशीघ्रंनचेद्धन्मोरणेचत्वाम् ॥ इतिश्रुत्वासुरश्चाहवचःशृणुतमेनराः ॥ २८ ॥ ॥ बल्वलउवाच ॥ ॥ अहंतुबल्वलोदैत्योदेवानांदुःखदायकः ॥ यस्याग्रेमानुषाःसर्वेभवंतिभयविह्वलाः ॥ २९ ॥ इतिश्रुत्वाचयदवोजघ्नुर्बाणैश्चबल्वलम् ॥ सहतस्तैश्चसहसासहयोंतर्दधेनृप ॥ ॥ ३० ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांहयमेधखण्डेबल्वलेनतुरंगहरणंनामपंचविंशतितमोऽध्यायः ॥ २५ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ अथसर्वेयदुगणागतेक्रतुपशौनृप ॥ शोकंचक्रुःक्वगच्छामःकरिष्यामश्चकिंभुवि ॥ १ ॥ नतत्प्रतिविधिंसर्वेनिरुद्धाद्याविदुस्ततः ॥ तदानारदरूपीतैर्भगवानागमन्नृप ॥ २ ॥ तमागतंमुनिंदृष्ट्वानिरुद्धोयादवैर्वृतः ॥ पूजयित्वासनेस्थाप्यप्रीतःप्राहमुनीश्वरम् ॥ ३ ॥ ॥ अनिरुद्धउवाच ॥ ॥ भगवन्यज्ञतुरगोबल्वलेनदुरात्मना ॥ नीतःक्वगतःसर्वंवदमेवदतांवर ॥ ४ ॥ त्वंपर्यटन्नर्कइवत्रिलोकींदिव्यदर्शनः ॥ अन्तश्चरोवायुरिवह्यात्मसाक्षीचसर्ववित् ॥ तस्मात्कंथयसर्वंमेश्रुत्वासोप्याहमाधवम् ॥ ५ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ राजंस्तवतुरंगोवैबल्वलेननिवेशितः ॥ ६ ॥ उपद्वीपेपांचजन्येसिंधुमध्येनृपेश्वर ॥ मृतेमित्रेचशकुनौयादवानांवधायच ॥ ७ ॥

कि, तब सब यादवनके गण यज्ञके अश्वको गयो देखके शोकमें मग्नभये हैं अब कहाँ जाँय और कहा करें ॥ १ ॥ तब सब अनिरुद्धादिकनको कोई उपाय जब न दीखो तब नारदरूपी भगवान् आयेहैं ॥ २ ॥ तब नारदमुनिको आयो देखके यादवन सहित अनिरुद्ध नारदजीको पूजन कर आसन पर विराजमान कर प्रसन्न है नारदजीसो प्रश्न करन लगेहैं ॥ ३ ॥ हे भगवन् ! हमारे यज्ञके घोडाको दुष्ट दैत्य बल्वल न जाने कहाँ लेगयो है सो आप बताओ ॥ ४ ॥ तुम दिव्यदर्शन हो सो सूर्यकी तरह तीनो लोकनमें विचरते अंतश्चर वायुकी तरह आत्माके साक्षी हो सर्ववित् हो ये सब मोसे आप कहो ये- सुन नारदजी भगवान् अनिरुद्धसों बोले ॥ ५ ॥ नारदजी बोले हे राजन् ! तुमारो घोड़ा बल्वलने समुद्रके भीतर पांचजन्य नामके उपद्वीपमें आयके स्थापन कियो है शकुनि नामको दैत्य याको भाई हो वो यादवनने मारगेरो हो सो वाको

बदलो लेवेको याने ये काम कियोहै ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ सो वो बल्वलने सुतललोकसों दैत्यनको बुलायके शिवजीके वरदानसों दर्पयुक्त हैके वहाँ राज्य करैहै ॥ ८ ॥ तब ये
वचन सुनके अनिरुद्धजी शंकित हैके बोले हैं अनिरुद्ध बोले कि, महाराजजी ! शिवजीने कहा बल्वलको वर दियो हो हे देवर्ष ! मोसे ये कहो बल्वलने शिवजीको कैसे प्रसन्न कियो
है तब वे मुनि बोले कि, हे राजन् ! आप मेरे कहे वचनको सुनो ॥ ९ ॥ १० ॥ एक समय ये दैत्य कैलास पर्वतमें आयके एक पांवसों खडो हैके तप करतो भयो सो बारह वर्ष
तक बडो दारुण तप कियो ॥ ११ ॥ तब शिवजीनें प्रसन्न है कही कि, वर माँग ये सुनके या दैत्यने कही कि, हे सदाशिव ! तुमको प्रणाम है ॥ १२ ॥ हे कृपानिधे !
हे देव ! आप संग्राममें मेरी सदा रक्षा करियो येही वर माँगो हूँ तब शिवजीने कही तथास्तु ऐसें कहिके अंतर्धान हैगये हे नृप ! ॥ १३ ॥ तदनंतर वो दैत्य

सुतलाच्चसमाहूयदैत्यवृन्दान्महासुरः ॥ राज्यंकरोतितत्रापिशिवस्यवरदर्पितः ॥ ८ ॥ इतिश्रुत्वानिरुद्धस्तुवचःप्रोवाचशंकितः ॥ ॥ अनि
रुद्धउवाच ॥ ॥ तस्मैचन्द्रललामेनकिंदत्तंप्रवरंवरम् ॥ ९ ॥ तन्ममाख्याहिदेवर्षेकस्मात्संतोपितोभवत् ॥ ततोवभाषेसमुनिःशृणुराजन्वचो
मम ॥ १० ॥ कैलासेचैकदादैत्योह्येकपादेनसंस्थितः ॥ वर्षद्वादशपर्यंतंतपश्चक्रेसुदारुणम् ॥ ११ ॥ ततश्चतोपितोदेवोवरंब्रूहीत्युवाचह ॥
तच्छ्रुत्वासउवाचाथसदाशिवनमोस्तुते ॥ १२ ॥ महामृधेचमांदेवपालयस्वकृपानिधे ॥ तथास्तुचोक्त्वादेवस्तुतत्रैवांतर्दधेनृप ॥ १३ ॥ सदै
त्योपांचजन्योवैराज्यंचक्रेबलात्ततः ॥ स्वतस्तुभ्यंनतुरगंविनायुद्धेनदास्यति ॥ १४ ॥ अनिरुद्धस्तुप्रोवाचहत्वादुष्टंचबल्वलम् ॥ ससैन्यं
चमुनिश्रेष्ठमोचयिष्येतुरंगमम् ॥ १५ ॥ सशिवस्यवरेणापियदियुद्धंकरिष्यति ॥ नपालयिष्यतिमृधेशिवःकृष्णद्विषंखलम् ॥ १६ ॥ इत्युक्त्वा
चानिरुद्धोवैप्रयाणार्थंजयायच ॥ यादवेभ्यश्चसर्वेभ्योसहसाज्ञांचकारह ॥ १७ ॥ ततोनुज्ञाप्यदेवर्षिःयुद्धकौतुकसंयुतः ॥ ययौचाकाशमार्गे
णतत्रस्थानंनृपेश्वर ॥१८॥ तदैवयादवाःसर्वेसज्जीभूतारुपान्विताः ॥ स्नात्वाकृत्वाचदानानितीर्थराजेविधानतः ॥ १९ ॥ उपद्वीपंययूराजन्र
थिभिश्चगजेहयैः ॥ द्विलक्षामार्गकाराश्चमार्गंचक्रुर्दिनेदिने ॥ २० ॥

पांचजन्य उपद्वीपमे बलात्कार करके राज्य करतोभयो सो वो युद्ध करे विना अपने आप तुमें यज्ञिपाश्वको नहीं देयगो ॥ १४ ॥ तब अनिरुद्धने कही कि,
दुष्ट बल्वलको सेनासमेत मारूँगो और अपने घोडेको छुडायके लाऊँगो ॥ १५ ॥ सो वो शिवजीके वरदानसों भी जो युद्ध करैगो तब कृष्णद्वेषीको
शिवजी कभी रक्षा नहीं करैंगे ॥ १६ ॥ इतनी कहिके अनिरुद्धने चलवेकी तयारी करी और सब यादवनके लिये बल्वलको जय करनेकी आज्ञा दीनीहै ॥ १७ ॥ तब ना
नारदजी इनकी आज्ञा लेके आकाशमार्गमें हैके युद्धके कौतुक देखनेको हे नृपेश्वर ! युद्धके हैबेके स्थानको पधारेहैं ॥ १८ ॥ वाही समय सब यादव कुपित होकर तयार होगये
हे तीर्थराज प्रयागमें सबने स्नान विधिसे कीनेहै और अनेक प्रकारके दान कियेहै ॥ १९ ॥ हे राजन ! फिर सबको रथी और हाथीवारे तथा सवारोंके लेकर सब कोई उपद्वीपको

गयेहैं या समय इनके सडक बनानेको दो लाख (२०००००) मजूर बडेबडे कुदालनसों दिनदिन मार्ग बनानेलगेहैं जा निष्कंटक मार्गमें हाथी, घोडे रथ और मनुष्य सब
कोई आनंदसे चलेजाँय ऐसे उपद्वीपके जानेको मार्ग बनायके इनने पहलेई तयार कियोहै जा समय ये सेना चलीहै तिसके भारसों पीडित भये शेषजीने अपने मनमें विचार
कियोहै ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ कि आज भूमिमें न जाने कहा भयोहै तब सबके अगारी जैसे कोई न देखै इस प्रकार हे नृप ! अनिरुद्धजीने गमन कियोहै ॥ २३ ॥ वा
यज्ञियाश्वकी रक्षाके मिषसों पधारेहैं मानो आजही सब पापिनको नाश करदेयँगे या प्रकार हे राजन् ! जहाँ जहाँ घोडेकी रक्षाके लिये अनिरुद्धजी गयेहैं ॥ २४ ॥ तहाँ २ सर्वत्र
श्रीकृष्णके समग्र यशको सुनते भयेहैं जिन २ ने श्रीकृष्ण बलिरामके यशको निरूपण कियोहै ॥ २५ ॥ उनके लिये अनिरुद्धजीने अनेक रत्न, वस्त्र और आभूषण दियेहैं जो

भिंदिपालैश्चसर्वत्रसेनायाःपूर्वमेवहि ॥ सुखेनयत्रगच्छंतिगजवाजितुरंगमाः ॥ २१ ॥ पदातयश्चराजेंद्रमार्गेनिष्कण्टकेत्वरम् ॥ इत्थंतुयदु
सेनायाःशेषोभारेणपीडितः ॥ इतिहोवाचमनसिकिंबभूवधरातले ॥ २२ ॥ अनिरुद्धोऽग्रतोभूत्वाऽलक्षितःप्रययौनृप ॥ २३ ॥ हयरक्षाप
देशाद्वैनाशयन्निवपापिनः ॥ यत्रयत्रगतोराजन्हयस्यार्थेचकार्ष्णिजः ॥ २४ ॥ तत्रतत्रोपशृण्वानःश्रीकृष्णस्ययशोखिलम् ॥ श्लाघांयेवैकरि
ष्यंतिगोविंदबलदेवयोः ॥ २५ ॥ ददौतेभ्यश्चरत्नानिवस्त्राण्याभरणानिच ॥ यत्किंचित्तस्यसैन्येषुवसुमात्रमनुत्तमम् ॥ २६ ॥ तत्सर्वमद
दात्प्रीतःकृष्णगाथाहृताशयः ॥ इत्थंशृण्वन्हरेर्गाथांकाशींपश्यन्गयांतथा ॥ २७ ॥ कुर्वन्दानानिराजेन्द्रकाष्ठांप्राचींजगामसः ॥
इत्थंभयंकरांसेनांयादवानांविलोक्यच ॥ २८ ॥ गिरिव्रजपुराधीशोसहदेवस्तुशंकितः ॥ भूत्वाकृतांजलिर्नीत्वारत्नानिविविधानिच ॥२९॥
अनिरुद्धस्यपदयोःपपातभयविह्वलः ॥ अनिरुद्धस्ततस्तस्मैरत्नमालांददौमुदा ॥ ३० ॥ राज्येकृत्वाचतंशीघ्रंशरणागतवत्सलः ॥ सम
न्वितोवृष्णिवरैर्जगामकपिलाश्रमम् ॥ ३१ ॥ स्नात्वाचतत्रैवयदुप्रवीरोभागीरथीसागरसंगमेच ॥ विलोक्यसिद्धंकपिलंमुनींद्रंससैन्ययासो
पिनमश्चकार ॥ ३२ ॥ तत्रस्थानाद्दक्षिणस्यांसिंधुतीरेचतस्यवै ॥ बभूवुःशिबिराराजन्नुच्चाःप्रासादसन्निभाः ॥ ३३ ॥

कछु और भी अनिरुद्धकी सैन्यमें उत्तमोत्तम वसुमात्र हो ॥ २६ ॥ वो सब अनिरुद्धने प्रसन्न हैके दियोहै और कृष्णकी कथा सुनके अंतःकरण इनको बहुत कछु प्रसन्न भयोहै या
प्रकार कृष्णकी कथाको सुनते २ काशीपुरी तथा गयाको देखते २ ॥ २७ ॥ हे राजेंद्र ! अनेक दाननको देतेदेते पूर्वदिशाको गयेहैं तब यादवनकी वा भयंकर सेनाको देखके ॥
॥ २८ ॥ गिरिव्रज (गया) को राजा जरासंधको पुत्र सहदेव ताको बडी शंका भईहै तब ये सहदेव कृतांजलि हैके अनेक प्रकारके रत्ननको लेके ॥ २९ ॥ भयभीत हैके अनिरुद्धके
पाँवनमें आयके गिरपरेहै तब अनिरुद्धने रत्ननकी माला सहदेवको बडी प्रसन्नतासों दीनीहै ॥ ३० ॥ और याहीको याके राज्यपर बैठायके शरणागतवत्सल अनिरुद्ध यादवन सहित
कपिलदेवके आश्रमको गयेहैं ॥३१॥ तथा गंगासागरके संगममें स्नान करके बडे सिद्ध मुनींद्र कपिलजीके दर्शन करके सब सैन्यसहित उनको नमस्कार कियोहै ॥३२॥ फिर हे राजन् !

गंगासागरके दक्षिणमें समुद्रकेही तटपें बडे ऊँचे २ जैसे महल मंदिर होय ऐसे शिविर (सेना निवेश स्थान) पर गयेहे ॥ ३३ ॥ उन शिविरनमें अनिरुद्धादि सब यादव अपने भृत्यवर्गनसहित हे राजेंद्र ! सब शूर जयकी इच्छा करते निवास कियेहें ॥ ३४ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां षड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥ ॥ गर्गजी कहेंहे कि, तदनंतर यदुराज अनिरुद्धने प्रातःकालके समय उद्धवको बुलायके हे विशांपते ! बडी गंभीर वाणीसों कहीहे ॥ १ ॥ कि उद्धवजी अब बताओ पांचजन्य यहांसे कितनी दूर है जामें मेरे यज्ञियाश्वको बल्वल दैत्य लेगयो है ॥ २ ॥ अनिरुद्धके कहेको सुनके ये श्रीकृष्णको प्रिय सखा मंत्री उद्धवजी मनसे कृष्णचरणनको स्मरण करके बोले ॥ ॥ ३ ॥ कि हे प्रभो ! तुम सर्वज्ञ हौ हे भगवन् ! मैं आपके कहेको बडो जानके जो कछु मार्गमें सुनेहि सो आपसों कहूँ हूँ ॥ ४ ॥ तीस योजनको विस्तीर्ण जो ये सागर है याके पार

शिविरेष्वनिरुद्धाद्यायादवास्तत्रसानुगाः ॥ चक्रुर्निवासंराजेन्द्रशूराःसर्वेजयैषिणः ॥ ३४ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायांहयमेधखण्डेतुरगार्थमुपद्वीपगमनंनामषड्विंशतितमोऽध्यायः ॥ २६ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ अथानिरुद्धोयदुराट्प्रातःकालेविशांपते ॥ उद्धवंतुसमाहूयप्राहगंभीरयागिरा ॥ १ ॥ कतिदूरंपांचजन्यंतन्ममाख्याहिसत्तम ॥ यस्मिन्मदीयोतुरगोनीतोदैत्येनवर्त्तते ॥ २ ॥ इत्युदाहृतमाकर्ण्यमंत्री कृष्णसुहृत्सखः ॥ मनसाकृष्णपादाब्जंस्मृत्वाप्रोवाचमाधवम् ॥ ३ ॥ प्रभोसर्वज्ञभगवन्नहंत्वद्वाक्यगौरवात् ॥ कथयिष्यामिलोकेशयथा मार्गेश्रुतंतथा ॥ ४ ॥ त्रिंशद्योजनविस्तीर्णात्सागरात्पारमेवच ॥ उपद्वीपंपांचजन्यंदक्षिणेस्तिनृपेश्वर ॥ ५ ॥ उद्धवस्यवचःश्रुत्वानिरुद्धोधन्विनांवरः ॥ बलीधैर्यधरःक्रुद्धोप्राहेदंयदुपुङ्गवान् ॥ ६ ॥ ॥ अनिरुद्धउवाच ॥ ॥ अहंयास्यामिपारंवैतस्माद्यादवसत्तमाः ॥ सेतुंकुरुतशीघ्रंतुसागरस्यशरैरपि ॥ ७ ॥ इतितद्वचनंश्रुत्वायादवायुद्धकोविदाः ॥ सागरेमुमुचुर्बाणान्प्रहसंतःपरस्परम् ॥ ८ ॥ ततःसर्वेजलचरास्तीक्ष्णबाणैःप्रताडिताः ॥ कोलाहलंप्रकुर्वंतोदुद्रुवुस्तेचतुर्दिशम् ॥ ९ ॥ नकेषांप्रगताबाणाःपारंवैसागरस्यच ॥ इतिवैकथितंवाक्यंखस्थेनचसुरर्षिणा ॥ १० ॥ तदाक्रूरोहृदीकश्चसात्यकिश्चोद्धवोबली ॥ कृतवर्मासारणश्चयुयुधानादयोनृप ॥ ११ ॥ हेमांगदइंद्रनीलोऽनुशाल्वाद्याश्चभूपते ॥ गतमानाबभूवुर्वैनारदोक्तंनिशम्यच ॥ १२ ॥

दक्षिणदिशामें हे नृपेश्वर ! पांचजन्य नामको उपद्वीप है ॥ ५ ॥ उद्धवके कहेको सुनके धनुषधारीनमें श्रेष्ठ अनिरुद्ध बडो बली धैर्यको धरनवारो कुपित हैके यदुश्रेष्ठनसों ये कहतो भयो ॥ ६ ॥ अनिरुद्धजी बोले-कि, हे यादवसत्तमहो मै या समुद्रके पार अवश्यही जाऊँगो सो तुम या समुद्रपें बाणनसों सेतु (पुल) बाँधो ॥ ७ ॥ अनिरुद्धके या वचनको सुनके युद्धमें बडे चतुर यादव परस्पर हँसते २ समुद्रके ऊपर पुल बाँधनेको बाण छोडनलगे ॥ ८ ॥ तब इनके तीक्ष्ण बाणनसों पीडित भये सब जलके जीव बडो कोलाहल शब्द करते चारो दिशानमें भागेहे ॥ ९ ॥ पन काहूके बाण पार नहीं गयेहें ये बात आकाशमें खडे नारदजीने कहीहे कि अभी तुमारे बाण समुद्रपार नहीं गयेहे ॥ १० ॥ तब अक्रूर, हृदीक, सात्यकि, बली उद्धव, कृतवर्मा, सरण और युयुधानादिक हे नृप ! ॥ ११ ॥ हे मांगद ! इंद्रनील और अनुशाल्व आदि सब हे भूपते ! नारदके कहेको सुनके सबनके मान

नष्ट ह्वैगयेहैं ॥ १२ ॥ तदनंतर बली अनिरुद्ध कृष्णके चरणकमलको स्मरण करते शार्ङ्गधनुषके समान धनुषको लेकर दिव्य बाणनको चलावतो भयो ॥ १३ ॥ तब तिन बाणनको देखके नारदजी बोले कि, हे अनिरुद्ध! ये शार्लीमुख (तेरे चलाये बाण) समुद्रके पार जायके वे बाण समुद्रके पछेपार पहुँच गयेहैं ॥ १४ ॥ ये नारदजीके कहेको सुनके सांब और दीप्तिमान्से आदिलेके सब यादव हैं वे सब बाणनको छोडतेभये वे सब बाण समुद्रके पार पहुँचेहैं ॥ १५ ॥ हे राजन्! बाणनमें बाण किरोडन प्रवेश करगयेहैं या बातको देखके सबके मनमें विस्मय भयोहै ॥ १६ ॥ या प्रकार यादवनने तीस योजन लंबो और एक योजन चौरो बडो मजबूत जलसों अधर पुल बाँधके तयार कियोहै ॥ १७ ॥ या प्रकार यादव चार प्रहरमें पुल बाँधके अनिरुद्धादिक सब रातमें सोयेहैं ॥ १८ ॥ याहीसों देखो कि, जिनने जलके ऊपर अधर बाणेंम बाणको छेदके जो पुल बाँधोहै फिर कहीं कृष्णके

ततोनिरुद्धोबलवान्स्मरन्कृष्णपदांबुजम् ॥ प्रतिशार्ङ्गंगृहीत्वावैदिव्यान्बाणान्मुमोचह ॥ १३ ॥ ततोदृष्ट्वाऋषिःप्राहहानिरुद्धशिलीमुखाः ॥ पारंगत्वासमुद्रस्यविविशुस्तेचतत्तटम् ॥ १४ ॥ इतिश्रुत्वाऋषेर्वाक्यंसांबदीप्तिमतादयः ॥ मुमुचुस्तेशरान्राजंस्तेपारंगताःशराः ॥ १५ ॥ शरेषुचशराराजन्कोटिशःकोटिशःकिल ॥ विविशुर्वीक्ष्यसर्वेऽपिधन्विनोविस्मयंगताः ॥ १६ ॥ चक्रुःसेतुंचतेसर्वेत्रिंशद्योजनलंबितम् ॥ दृढंजलाच्चांतरिक्षमेकयोजनविस्तृतम् ॥ १७ ॥ बद्धाततश्चतेसेतुंचतुर्भिःप्रहरैरपि ॥ अनिरुद्धादयोरात्रौसुषुपुःशिबिरेषुवै ॥ १८ ॥ तस्मा द्वैपुत्रपौत्राणांकृष्णस्यपरमात्मनः ॥ शूराणांकृष्णबिंबानांबलंकिंकथयाम्यहम् ॥ १९ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांहयमेधखण्डेसेतुबंधनंनाम सप्तविंशतितमोऽध्यायः ॥ २७ ॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ कृत्वातुशौचादिकमेवकर्मप्रभातकालेयदुनन्दनश्च ॥ जगामपारंयदुभिश्चसिंधो रामोयथावैकपिभिर्नृपेन्द्र ॥ १ ॥ ददृशुस्तत्रतेगत्वानिरुद्धाद्याश्चयादवाः ॥ उपद्वीपंपांचजन्यंशतयोजनविस्तृतम् ॥ २ ॥ राजतेतत्रराजेन्द्र नाम्नावैचासुरीपुरी ॥ विंशद्योजनविस्तीर्णादैत्यवृन्दसमाकुला ॥ ३ ॥ पुन्नागैर्नागचंपैश्चतिलकैर्देवदारुभिः ॥ अशोकैःपाटलैराम्रैर्मंदारैःकोवि दारकैः ॥ ४ ॥ निंबुजंबूकदंबैश्चप्रियालपनसैस्तथा ॥ सालैस्तालैस्तमालैश्चमल्लिकाजातियूथिकैः ॥ ५ ॥ नीपैःकदंबैर्बकुलैश्चंपकैर्मदना भिधैः ॥ शोभितानगरीरम्यारत्नप्रासादसंयुता ॥ ६ ॥

बेटा नातीनके बलको कहा निरूपण करों जे बडे शूर वीर हे और कृष्णबिम्बके (देहके) प्रतिबिंब है ॥ १९ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां सप्तविंशोऽध्यायः ॥ ॥ २७ ॥ ॥ गर्गजी कहैहै कि, तब यदुनंदन अनिरुद्धजी प्रातःकालके समय अपने शौचादिक कर्मनको करके यादवन करके सहित समुद्रके पार भयेहैं बानरनको संग लेके जैसें रामचंद्रजी गयेहैं ॥ १ ॥ तब तिन यादवनने समुद्रके पार जायके अनिरुद्धादिकनने शत (१००) योजनके प्रमाणको पांचजन्यके नामको उपद्वीप देखोहै ॥ २ ॥ जा द्वीपमें हे राजेंद्र! आसुरी नामकी पुरी है जो वीश योजनकी विस्तीर्ण है और दैत्यनके वृंदनसों पूर्ण है ॥ ३ ॥ और पुंनाग, नाग, चंपा, तिलक, देवदारु, अशोक, पाटल, आम्र, मंदार, कोवि दार, (कचनार) ॥ ४ ॥ नीबू, जामन, कदंब, प्रियाल, कटहर, शाल, ताल, तमाल, मल्लिका, चमेली, जुही, ॥ ५ ॥ नीप, कदंब, मोरसरी, चंपक, मदन ये हे नाम जिनके इन वृक्ष

नसों शोभित है बड़ी रमणीया है रत्ननके महल मंदिरनसों सुशोभित है ॥ ६ ॥ तब ये खल दैत्यने यादवनको आयो देखके इन यादवनकी गिनती करबेको मायावी मयको भेजोहै ॥
॥ ७ ॥ तब ये मय तोता बनके गयो यादवनको देखके इने गिनके फिर पुरीमें आयके विस्मित हैकें बल्वलसों कहतोभयो ॥ ८ ॥ मय बोलो—महाराज सुनौ यादवनकी बलीनकी
गणना कौन करसकेहै नियुत संख्याको नियुत गुण करै फिर उनको करोड़गुना करौ इतने यादव अनिरुद्धके संग हैं ॥ ९ ॥ वे सब यादव गणनको पुल बनायके समुद्रके या पार तेरे
ऊपर चढाई करके आयेहै हे राजन् ! देवतानको विस्मय करनवारी तिनकी सैन्यको आप देखौ ॥ १० ॥ आजतक बाणनसों समुद्रपें पुल बँधनो वृद्धने हम न कहीं देखो न सुनो
जो हे राजन् ! तुमारे आगे आज देखौ ॥ ११ ॥ पहले रामचंद्रजीने वृक्षयुक्त पर्वतनसों अपने नामके प्रतापसों लंकाके समीपमें समुद्रपे पुल बाँधो हो ॥ १२ ॥ सो तो

यदून्समागताञ्छ्रुत्वामयंमायाविनंखलः ॥ प्रेषयामासगणितुंयादवानांमहात्मनाम् ॥ ७ ॥ सचापिशुकरूपेणगत्वादृष्ट्वायदूत्तमान् ॥ आगत्यस्वपुरींमध्येबल्वलंविस्मितोऽब्रवीत् ॥ ८ ॥ ॥ मयउवाच ॥ ॥ कःकरिष्यतिसंख्यांवैवृष्णीनांबलिनांनृप ॥ नियुतानांचनियुतकोटिनास्तेसकार्ष्णिजः ॥ ९ ॥ सेतुंकृत्वाशरैःसिन्धोःप्राप्ताःसर्वेतवोपरि ॥ तेषांपश्यबलंराजन्देवविस्मयकारकम् ॥ १० ॥ सागरस्यशरैःसेतुंनदृष्टंनश्रुतंकृतम् ॥ वृद्धेनचमयाराजंस्त्वदग्रेऽथविलोकितम् ॥ ११ ॥ राघवेणपुरासेतुंपाषाणैर्द्रुमवेष्टितम् ॥ स्वनाम्नश्चप्रतापेनलंकायानिकटेकृतम् ॥ १२ ॥ तत्सर्वंचमयादृष्टंदृष्टंह्येवचाद्भुतम् ॥ श्रीकृष्णेनपुराराजन्कंसाद्याःशकुनादयः ॥ १३ ॥ मारिताःसंगरेदैत्यानृपाःसर्वेविनिर्जिताः ॥ कृष्णस्तुभगवान्साक्षाद्ब्रह्मणाप्रार्थितःपुरा ॥ १४ ॥ गोलोकादागतोभूमौभक्तानांरक्षणायच ॥ अकृतानांचनाशायकुशस्थल्यांविराजते ॥ १५ ॥ तस्माद्यदूत्तमाःसर्वेऽनिरुद्धाद्यामहाबलाः ॥ भीषणंचबकंजित्वाह्यन्याञ्जित्वात्रचागताः ॥ १६ ॥ पुत्राःपौत्राश्चकृष्णस्यज्ञातयश्चयदूत्तमाः ॥ आकाशंजेतुमिच्छंतिकावार्त्ताभूतलस्यच ॥ १७ ॥ अनिरुद्धायतस्माद्धेतुरगंदेहिबल्वल ॥ दैत्यानांहतशेषाणांकुलकौशल्यहेतवे ॥ १८ ॥ ततोनिरुद्धायहयंचदत्त्वासुरद्विषांवैसुखहेतवेच ॥ श्रीकृष्णचंद्रंप्रभजंश्चभुंक्ष्वराज्यंस्वकीयंतपसानुलब्धम् ॥ १९ ॥

पुल समुद्रमें बँधो हमने सुनोंहो पन आज तो अपनी आँखिनसों प्रत्यक्ष देखलीनो और हे राजन् ! श्रीकृष्णने पहले कंस और बकासुर आदिक राक्षस
संग्राममें मारेहैं और सब राजाहू संग्राममें उन्ने जीतेहै परन्तु वे साक्षात् भगवान् ब्रह्म हैं ब्रह्माजीकी प्रार्थनासों ॥ १३ ॥ १४ ॥ भक्तनकी रक्षा करबेको गोलोकसों आयके भूमिमें
जन्मे हैं और अभक्त दुष्टनके मारबेको द्वारकामें विराजैहै ॥ १५ ॥ ताहीसों अनिरुद्धादिक ये यादव बड़े बलवान् हैं भीषण दैत्यको और बक नाम दैत्यको औरनकोहू जीतके
तुमारी नगरीमें ये आये है ॥ १६ ॥ कृष्णके बेटा नाती और जातिके यदूत्तम ये आज आकाशकोहू जीत सकतेहै फिर भूलोककौ जीतनो इनको क्या बड़ी बात है ॥ १७ ॥
यासों सुनौ बल्वलजी तुम हमारो कह्यो मानो तो अनिरुद्धजीको या घोड़ाको देदेउ मरबेसों बाकी रहे दैत्यकुलकी कुशल चाहौ तौ ॥ १८ ॥ तुम मेरे कहेको सुनके हे बल्वल !

देवतानके द्वेषी दैत्यकुलके सुखके लिये अनिरुद्धको छोड़ा देके श्रीकृष्णको भजन करते तपसों प्राप्त भये अपने राज्यकी रक्षा करी ॥१९॥ ऐसे मयने शुभ वचनसों वल्वलको बहुत कुछ समझायो तोहू कृष्णसो बहिर्मुख ये वल्वल रोषसों लंबी २ श्वास लेके मयसों बोलोहै ॥२०॥ वल्वल बोलो कि हे दैत्य ! बिनाही युद्धके करे क्यों डरपैहै शूर पुरुषनके हाँसी करने लायक वचनोंको कैसे मेरे आगे कहैहै ॥ २१ ॥ तोको तनक भी बुद्धिका बल नहीं है वृद्ध होनेसों तेरी बुद्धि नष्ट हैगई है साठी बुद्धि नाठी हैगईहै इससे मैं तेरे कहेको न मानताहूँ ॥ २२ ॥ जो कृष्ण साक्षात् हरि हैं तब ये कृष्णके बेटा, नाती कुलके महादेवजीके भक्तके मेरे आगे कहा करेंगे मेरे आगे इनको कहा पुरुषार्थ है ॥ २३॥ यासों तू डरपे मति तेरी सब माया कहाँ गई मैं तो तेरे आश्रयसोंही युद्ध करबे जाऊँहूँ ॥ २४ ॥ अनिरुद्ध बड़ो शूर है कहा हम शूर नहीं है या भूमिमें मेरे होते २ कौनहै जो शूरपनेको अभिमान

एवंशुभैश्चवचनैर्बोध्यमानोपिबल्वलः ॥ निश्वस्योवाचरोषेणमयंकृष्णपराङ्मुखः ॥ २० ॥ ॥ बल्वलउवाच ॥ ॥ विनायुद्धेनत्वंदैत्य कथंभीतोभविष्यसि ॥ वदिष्यसिममाग्रेत्वंशूरहास्यकरंवचः ॥ २१ ॥ त्वंबुद्धिबलहीनश्चवृद्धत्वाच्छठतांगतः ॥ तस्मात्त्वदीयंवचनंनाहंगृह्णामिसांप्रतम् ॥ २२ ॥ यदिकृष्णोहरिः साक्षात्तेकृष्णस्यवंशजाः ॥ ममाग्रेशिवभक्तस्यकिंकरिष्यंतिपौरुषम् ॥ २३ ॥ भयंमाकुरुतस्मात्त्वंमायाःकुत्रगतास्तव ॥ अहंतवाश्रयेणापियुद्धंकर्तुंव्रजामिवै ॥ २४ ॥ अनिरुद्धोमहाशूरःशूराःकिंनवयंस्मृताः ॥ स्थितेमयिमहीमध्येकोयंगर्वोऽभवन्महत् ॥ २५ ॥ फलंगर्वस्यप्राप्नोतुममनिर्मुक्तसायकैः ॥ अद्यमेनिशिताबाणाअनिरुद्धंचमानिनम् ॥ २६ ॥ प्रकुर्वंतिरणेदैत्यरक्तांगंच्छिन्नकंचुकम् ॥ यथाकिंशुकवृक्षंवैवसंतदिवसाःकिल ॥ २७ ॥ दारयंतुकपोलानिनाराचाममहस्तिनाम् ॥ हयान्पश्यंतुशतशोरुधिरौघपरिप्लुतान् ॥ २८ ॥ पिबंतुयोगिनीवृंदारुधिराणिनृमस्तकैः ॥ कालीभवतुसंतुष्टायद्वैरिकव्यभक्षणैः ॥ २९ ॥ ममबाहुबलंसर्वेपश्यंतुसुभटाःकिल ॥ महाकोदंडनिर्मुक्तभल्लकोटीर्विमुंचतः ॥ ३० ॥ इतितद्वाक्यमाकर्ण्यमयोमायीमहामतिः ॥ जानन्कृष्णस्यमाहात्म्यंमदांधंचेदमब्रवीत् ॥ ३१ ॥ ॥मयउवाच ॥ ॥ यदाविजेष्यसिरणेकृष्णपुत्रांश्चयादवान् ॥ आगमिष्यतिश्रीकृष्णोजेतुंत्वांबाबल्वलश्चवै ॥ ३२ ॥

करै ॥ २५ ॥ सो मेरे चलाये बाणनसों शूरपनेके गर्वके फलको पावै आज मेरे तीक्ष्ण बाण शूराभिमानी अनिरुद्धको ॥ २६ ॥ हे दैत्य ! कवच काढके घायल कर लोहू लुहार ऐसो करैंगे वसंत ऋतुके दिन जैसे टेसूके वृक्षोंकोसो लाल करै है ॥ २७ ॥ आज मेरे नाराच हाथीनके गंडस्थलनको फारेंगे और रुधिरसे भीजे घोडेनको देखेंगे ॥ २८ ॥ और मनुष्यनकी खोपड़ीनमें रुधिरको भर २ के योगिनीनके झुंड पीऔ और मेरे वैरीनके मांसनको भक्षण कर २ के काली जैहैं वो संतुष्ट होउ ॥ २९ ॥ आज वीर योद्धा मेरे बाहुबलको देखो मयल धनुषमेंसे किरोड़न भल्लाकार बाण चलाऊँगो तिने देखो ॥३०॥ या प्रकार मायावी मय बड़ो बुद्धिमान् वल्वलके कहेको सुनकर कृष्णके माहात्म्यको जानतो मदसों अंध जो वल्वल है तासों मय ये वचन बोलो है ॥ ३१ ॥ मय बोलो कि हे वल्वल ! देख हाल तो इनीसों जीतनो कठिन है और जो कहीं बलवान् कृष्णके पुत्रनसों जीतभी गयो तो तेरे जीतबेको

श्रीकृष्ण बलिराम अवश्य आवेंगे ॥ ३२ ॥ तब ये महाबली दैत्य साँचे और हित करनवारे मयके वचनको सुनके भी कालकी फाँसीमें बँधोभयो क्रोधसों जलतो मयके कहेको नही ग्रहण करतोभयो ॥ ३३ ॥ और बल्वल ये बोलेहैं कि सुन रे मय ! राम कृष्ण मेरे वैरी है और सब यादवहूँ मेरे वैरी हैं सो जिनने मेरे मित्र मारेहैं उन यादवनको तथा कृष्ण, बलरामको मैं मारूँगो ॥ ३४ ॥ सो पहले यादवनको मारके पीछे यज्ञको करूंगो वा यज्ञके दिग्विजयमें द्वारिकापुरीको दिग्विजय करूँगो ॥ ३५ ॥ ये सुनके मयने कहीहै कि हे दैत्येंद्र ! देख तू अभिमान मत करै देख ये घोडा नही है ये कालरूप है सो देख मरवेसो बाकी रहे राक्षसनके मरवायवेको यहां आयोहै ॥ ३६ ॥ अनिरुद्धके सब बाण हे नृप ! तेरी या पुरीको शूरवीरनसो रहित करैंगे यामें संदेह नही है ॥ ३७ ॥ देख हिरण्याक्षसो आदि लेके दैत्य और रावण आदिक राक्षस जाने मारेहैं वोही भगवान् कृष्ण

इतिश्रुत्वामहादैत्योसत्यंहितकरंवचः ॥ कालपाशेनसंबद्धोनजग्राहरुषाज्वलन् ॥ ३२ ॥ ॥ बल्वलउवाच ॥ ॥ ममारीरामकृष्णौच शत्रवोवृष्णयश्चमे ॥ तान्सर्वान्मारयिष्यामियैर्मेमित्राश्चमारिताः ॥ ३४ ॥ हत्वाचयादवानत्रपश्चाद्यज्ञंकरोम्यहम् ॥ तस्यदिग्विजयेनापिविजेष्यामिहरेःपुरीम् ॥ ३५ ॥ ॥ मयउवाच ॥ ॥ मानंमाकुरुदैत्येन्द्रकालरूपस्तुरंगमः ॥ प्रातस्तवपुरेहंतुंहतशेषान्महासुरान् ॥ ३६ ॥ अनिरुद्धशराःसर्वेसद्यस्तवपुरींनृप ॥ छिन्नभिन्नांशूरहीनांकरिष्यंतिनसंशयः ॥ ३७ ॥ हिरण्याक्षादयोदैत्यारावणाद्यानिशाचराः ॥ मारितायेनसःकृष्णोजातोयदुकुलेश्रुतम् ॥ ३८ ॥ किंचिद्राज्यस्यमानेनत्वंनजानासिबल्वल ॥ प्रयच्छतुरंगतस्मैनयुद्धसमयोऽस्तिहि ॥ ३९ ॥ ॥ बल्वलउवाच ॥ ॥ अहंजानामित्वद्वार्त्तांयुद्धंतैर्नकरिष्यसि ॥ अनिरुद्धंगच्छतस्मात्त्वंविभीषणवत्किल ॥ ४० ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ बल्वलस्यवचःश्रुत्वामयोमायाविदांवरः ॥ प्रतिव्योढुंतत्रदुःखमिदमेवान्वपद्यत ॥ ४१ ॥ वैरभावेनपूर्वेवैकुण्ठंबहवोगताः ॥ निशाचराश्चदैत्याश्चतंभावंयःकरोतिहि ॥ ४२ ॥ इत्थंविचार्यसहसासउवाचमहासुरम् ॥ ॥ मयउवाच ॥ ॥ अद्यत्वांचमहावीरंननिषेधंकरोम्यहम् ॥ ॥ ४३ ॥ युद्धंकुरुरणेगत्वायदून्मारयसायकैः ॥ अहमेवकरिष्यामियुद्धंत्वद्वाक्यतोमृधे ॥ इत्युक्त्वावचनंसोपिविरराममहर्षयन् ॥ ४४ ॥ ऊर्द्ध्वकेशानदःसिंहःकुशांबाद्याश्चमंत्रिणः ॥ ऊचुःप्रकुपिताःसर्वेचत्वारोबल्वलंनृप ॥ ४५ ॥

रूप बनके यदुकुलमें जन्मोहै ये बात ऐसेही सुनीहै ॥ ३८ ॥ सो हे बल्वल ! तू या राज्यके अभिमानके मारे नही जानैहै सो देख घोडेको देदेउ ये युद्धको समय नही है ॥ ३९ ॥ ये सुनके बल्वल बोलेहै कि सुन मय ! मैं सब तेरी बातको जानूँ हूं तूं इनसों युद्ध नहीं करैगो सो तू निश्चय रावणके भाई विभीषणकी तरह उनके पास चलोजा ॥ ४० ॥ गर्गजी कहेहै कि, या प्रकार ये मय दैत्य बल्वलके कहे वचनको सुनके मायाके जानवेवारेनमें मुख्य वा दुःखके दूर हटायवेको ये विचार याने कियोहै ॥ ४१ ॥ कि आजतक बहुत दैत्य राक्षस वैरभावके करवेसोंहूं वैकुंठको गयेहैं यासो जो कोई वैरभाव करैहै वोहू सद्गतिको प्राप्त होयहै ॥४२॥ ये मयदैत्य ऐसे मनमें विचारके बल्वलसों मय बोलोहै सुन बल्वल भाई ! तुम तो महावीर है यासों मैं तोकूँ नाहीं नही करूँ हूं ॥४३॥ जा तू युद्ध कर सायक नाम बाणनसों यादवनको मार और मैंहूं तेरे कहेसो युद्ध ही करूँगो ॥ ४४ ॥ इतने वचन कहके

बल्वलको प्रसन्न करतो मय चुप हैगयो तब ऊर्द्धकेश, नद, सिंह और कुशांब ये चार मंत्री कुपित हैके बल्वलसों बोले हैं ॥ ४५ ॥ कि महाराज सुनौ आप शोच मत करौ सब यादवनके मारबेको पहले हम चारो युद्धको जायँगे क्योंकि महाराज ! हमने बहुत दिनसों संग्राम नही कियोहै ॥ ४६ ॥ सो हे राजेंद्र ! आप चिंता मत करौ हम मय दैत्यको संग लैके किरोडन मनुष्योंको मारेंगे ॥ ४७ ॥ गर्गजी कहैहैं ऐसे इन चारो मंत्रिनके कहेको सुनके प्रसन्न हैके युद्ध करनेमें चतुर ऐसे बल्वलने रणमें युद्ध करबेकी आज्ञा दीनीहै ॥ ४८ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायामष्टाविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥ गर्गजी कहैहैं कि, हे राजेंद्र ! तदनंतर बल्वलके चारो मंत्री एक किरोड दैत्यनको संग लैके कवचनको पहरके युद्ध करबेको नगरके बाहिर निकसेहैं ॥ १ ॥ ये सब धनुषधारी हैं बडे शूरवीर हैं विद्याधरनके समान है वो सब खड्ग, त्रिशूल, गदा, परिघ और मुद्गर

॥ ॥ मंत्रिणऊचुः ॥ ॥ पूर्वंवयंगमिष्यामोहंतुंसर्वान्यदूत्तमान् ॥ बहुभिर्दिवसैराजन्संग्रामंनकृतंयतः ॥ ४६ ॥ चिन्तांमाकुरुराजेंद्रमय दैत्येनसंयुतः ॥ क्षणेनमारयिष्यामोकोटिशःकोटिशोनरान् ॥ ४७ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ तेषांभाषितमाकर्ण्यबल्वलस्तुमुदान्वितः ॥ चकाराज्ञांनृपश्रेष्ठरणार्थेरणकोविदः ॥ ४८ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांहयमेधखण्डेदैत्यमन्त्रवर्णनंनामाऽष्टाविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥ ॥ गर्ग उवाच ॥ ॥ अथयुद्धायराजेंद्रचत्वारःकिलमंत्रिणः ॥ दैत्यकोटिसमायुक्तानिर्जग्मुर्दंशिताःपुरात् ॥ १ ॥ सर्वेहिधन्विनःशूराविद्याधरसमाः किल ॥ खड्गैःशूलैर्गदाभिश्चपरिघैर्मुद्गरैर्नृप ॥ २ ॥ एकघ्नीभिर्दशघ्नीभिःशतघ्नीभिर्भुशुण्डिभिः ॥ कुंतैश्चभिंदिपालैश्चचक्रसायकशक्तिभिः ॥ ३ ॥ संयुताःसर्वशस्त्रैश्चलोहकंचुकमंडिताः ॥ रथैर्गजैस्तुरंगैश्चगवयैर्महिषैर्मृगैः ॥ ४ ॥ उष्ट्रैःखरैःशूकरैश्चवृकैःसिंहैश्चक्रोष्टुभिः ॥ महागृध्रैःशंखचिल्लैर्मकरैश्चतिमिङ्गिलैः ॥ ५ ॥ एतैश्चवाहनैराजन्संयुक्तारणकर्कशाः ॥ शंखदुंदुभिनादेनवीराणांगर्जनेनच ॥६॥ शतघ्नीनांचशब्देनचचालवसुधा भृशम् ॥ इत्थंभयंकरांसेनामसुराणांविलोक्यच ॥ ७ ॥ भयंप्रापुःसुराःसर्वेमहेन्द्रधनदादयः ॥ यादवास्तेपिबलिनोनिर्जितायैश्चभूःपुरा ॥ ८ ॥ विषण्णमनसोऽभूवन्दैत्यसेनांनिरीक्ष्यच ॥ प्रद्युम्नेनराजसूयेचंद्रावत्यांपुरानृप ॥९॥ यादवेभ्यःप्रकथितंयन्नीतिर्धैर्यवर्द्धनम्॥तत्सर्वंकथयामास यदुभ्यःकार्ष्णिजःपुनः ॥१०॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ इति श्रुत्वाचयदवःशस्त्राणिजगृहुस्त्वरम् ॥ मृत्युंवरंमन्यमानाविजयाच्चपलायनात् ॥११॥

नको हाथनमें लैके और कुंत, भिंदिपाल, चक्र, बाण, शक्ति और अनेक शस्त्रनको लैके लोहके कंचुक धारण कर रहे वे रथ, हाथी, घोडे, रोझ, भैंसा, मृग, ऊँट, गधा, सूकर, स्यारी, सिंह, कुत्ता, गीध, शंख, चील, मगर और तिमिंगिलनपे बैठके रणमें बडे कर्कश, शंख, दुंदुभीनके शब्दको करते ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ और शतघ्नीनके शब्दसों धरतीको कँपावते जब निकसेहैं तब धरती अत्यंत करके हलन लगीहै या प्रकारसों भयंकरी वा राक्षसी सेनाको देखके इंद्रादिक सब देवगणनको बडो भारी भय प्राप्त भयोहै और जिन बलवान् यादवनने पूर्वकालमें भूमि जीतलीनी ही वे भी सब दैत्यसैन्यको देखके विषाद युक्त भयेहैं ॥ ७ ॥ ८ ॥ और जो नीति पहले चंद्रावती नगरीमें राजसूय यज्ञमें यादवनके अगारी धैर्यके बढावनवारी कही ही वो सब नीति अनिरुद्धने फिर यादवनके अगारी कहीहै ॥ ९ ॥ १० ॥ गर्गजी कहैहैं कि, यदु जे हैं वे या बातके सुनके यादवनने शीघ्रही शस्त्र

लडोंनेहैं जीतनेसें और भागनेसें मरनेको ही मुख्यमानते भयेहै ॥ ११ ॥ तब तो पांचजन्यमें यादवनको दैत्यनसो संग्राम भयोहै जैसो लंकामें वानरनके संग राक्षसनको संग्राम भयो हो ॥१२॥ रथिनको रथीनसों पत्तिनको पत्तीनसो घोडेनको घोडेनसों और हाथीवारेनको हाथीवारेसों संग्राम होतो भयो ॥१३॥ कितनेई ही हाथी अपने शुंडादंडनसों हे राजन्! वा संग्राममें घोडेनको और रथनको मारते भयेहैं॥१४॥अपने शुंडादंडनसो अश्व और सारथीन समेत रथनको उठाय उठायके हाथीनने धरतीमें पटकदियेहैं ॥ १५ ॥ कितनेनको पैंयनसों मींडगेरे कितनेही सुंडनसों घायल हैके रणसे भागे जे हाथी तिनने ये हवाल आदमीनको कियोहै ॥ १६ ॥ और हे राजन्! सवारोंसमेत घोडा रथनको उलाँघते रथनको फलाँगते हाथिनमें भागेहैं ॥ १७ ॥ सो पीलवाननको और हाथीनके सवारोंकों सिंहकी तरह मर्दन करते वे महाबलवान् घोडे उछलते हुये हाथियोंपर दौडे हैं ॥ १८ ॥ वे सवार तलवारनसों प्रहार करते

ततःसमभवद्युद्धंदैत्यानांयदुभिःसह ॥ पांचजन्येचलंकायांरक्षसांकपिभिर्यथा ॥ १२ ॥ रथिनोरथिभिस्तत्रपत्तिभिःपत्तयोमृधे ॥ हयाहयै रिभाश्चेभैर्युयुधुस्तेपरस्परम् ॥ १३ ॥ केचिद्धैदंतिनोमत्ताःशुण्डादण्डैरितस्ततः ॥ जघ्नूरथांस्तुरंगांश्चवीरात्राजन्महामृधे ॥ १४ ॥ शुण्डादंडैःसंगृहीत्वारथान्साश्वान्ससारथीन् ॥ निपात्यभूमावुत्थाप्यगगनेचिक्षिपुर्बलात् ॥ १५ ॥ कांश्चिन्ममर्दुःपादाभ्यांसंविदार्यकरैर्हदैः ॥ सक्षताश्चगजाराजन्प्रधावंतोरणांगणात् ॥ १६ ॥ तुरगास्तत्रधावंतःसवीरास्तेनृपेश्वर ॥ उल्लंघयंतश्चरथान्प्रोत्पतंतोगजान्प्रति ॥ १७ ॥ अंबष्ठंगजिनंयुद्धेमर्दयंतश्चसिंहवत् ॥ उत्पतंतश्चतुरगाःगजयूंदंमहाबलाः ॥ १८ ॥ असिप्रहारंकुर्वतोविदार्यचारिपून्बहून् ॥ वाजिपृष्ठेन दृश्यंतेतेदृश्यंतेनटाइव ॥ १९ ॥ केचिद्वीरास्तुखड्गैश्चद्विधाकुर्वस्तुरंगमान् ॥ केचिदंतान्संगृहीत्वाकुम्भेषुकरिणांगताः ॥ २० ॥ तुरगस्थाः केपिबलंसंविदार्यविनिर्गताः ॥ खड्गवेगैःकंजवनंलीलाभिर्वायवोयथा ॥ २१ ॥ बभूवतुमुलंयुद्धमद्भुतंरोमहर्षणम् ॥ बाणैर्गदाभिःपरिघैः खड्गैःशूलैश्चशक्तिभिः ॥ २२ ॥ युद्धेगजाश्चगर्जंतिहर्षंतितुरगाभृशम् ॥ हाहावीराःप्रकुर्वंतिनदंतिरथनेमयः ॥ २३ ॥ सैन्यपादरजोवृन्दै रंधीभूतंनभोभवत् ॥ तत्रस्वीयोनपारक्योदृश्यतेचमृधांगणे ॥ २४ ॥ परस्परंचबाणौघैःकेचिद्वीराद्विधाकृताः ॥ तिर्यग्भूतारथायुद्धेनिपेतुः पादपाइव ॥ वीरोपरिगतावीराहयोपरिहयाश्चवै ॥ २५ ॥

बहुतसे शत्रुनको काटते घोडेनकी पीठ पर बैठे नहीं दीखे हैं वे नटके समान दीखे है ॥ १९ ॥ और कितनेही वीर खड्गोसे घोडेनको काटते दीखे है और कितनेही वीर दंतोंको पकरके हाथीके मूडोपर चढगये हे ॥ २० ॥ और कितनेही वीर घोडोंपै बैठे फौजके दलको विदीर्ण करके ऐसे निकसे है जैसे वायु कमलवनको विदीर्ण करके निकलता होय ॥ २१ ॥ उस समय बडा घोर जिसे देखकर रोम खडे होवें ऐसा युद्ध हुयाहै बाणोंसे, गदाओंसे, परिघा, खड्ग, त्रिशूल और शक्तियोंसे वो संग्राम भयो है ॥ २२ ॥ वा युद्धमे हाथी चिघारी मारे है घोडे हिनहिनाय हैं रथनके पहिया खनखनाय है और बहुतसे मनुष्य हाय हाय करे हैं ॥ २३ ॥ सेनाकी उडी धूरसों आकाश अंधीभूत भयो है जासो कोई अपनो बिरानो मालूम नहीं परैहै ॥ २४ ॥ कितनेई वीर परस्पर बाणोंसे दोदो टूक हैगये है और कितनेई रथ वा युद्धमें वृक्षनकी नाई तिरछे हैके पडैहैं कहीं

वीरनके ऊपर वीर और घोडोंके ऊपर घोडे परे हैं ॥ २५ ॥ वहाँ वीरनके रुंड रणभूमिमें हाथनमें खड्ग लिये बडे भयंकर उठके खडे हैगयेहैं, वे रुंड खड्गनको लिये जे वीर हैं
तिनको काटते संग्राममें विचरन लगेहैं ॥ २६ ॥ कुंभस्थल जिनके फटगये ऐसे हाथीनके माथेनमेंते मोती वरसेंहैं जैसे रात्रिमें आकाशमेंसों तारागण गिरैं ॥ २७ ॥ वा समय
दोनों सेनानमें रुधिरकी नदी वही हैं और वा समय वडे २ वीरनके मुंडनको शिवजीकी मुंडमालामें लगायवेको वेतालनने लिये हैं ॥ २८ ॥ और डाकिनीन्को संग लियो महा
काली दुर्गा सिंहपै वैठी आई है सो राजन्! खोपडीमें भरके रुधिर संग्राममें दीखैहैं ॥ २९ ॥ और डाकिनी जे हैं वे अपने पुत्रनको तव रुधिर पान करातीं दीखैंहैं और
अरे वेटा औ रुदन मत करौ ऐसे विनके आँसूनको पोंछती भई हैं ॥ ३० ॥ और आकाशमें खडी जे विद्याधरी गंधर्वी और अप्सरा हैं वे क्षत्रधर्ममें स्थित जे शूर हैं वे देवरूप

उत्पेतुस्तत्रशूराणांकबंधाश्चभयंकराः ॥ पातयंतोखड्गहस्ताहयान्वीरान्महारणे ॥ २६ ॥ हस्तिनांभिन्नकुम्भानांमौक्तिकानिपतंतिखात् ॥
शश्वांधकारेग्रधनेरात्रौतारागणाइव ॥ २७ ॥ ततश्चसेनयोर्मध्येरुधिराणांनदीह्यभूत् ॥ वेतालाःशिवमालार्थंजगृहुस्तेशिरांशिच ॥ २८ ॥
मृगेंद्रस्थामहाकालीडाकिनीभिःसमागता ॥ कपालेनापिरुधिरंपिबंतीदृश्यतेमृधे ॥ २९ ॥ डाकिन्योरुधिरंतत्रपाययंत्यःसुतान्मृधे ॥ मारो
दीरितिवादिन्योनेत्राण्यपितदामृजन् ॥ ३० ॥ विद्याधर्यस्त्वंबरस्थागंधर्व्योऽप्सरसस्तथा ॥ क्षत्रधर्मस्थिताञ्छूरान्वव्रिरेदेवरूपिणः ॥ ३१ ॥
परस्परंकलिरभूत्तासांपत्यर्थमंबरे ॥ ममानुरूपोनायंवइतिविह्वलचेतसाम् ॥ ३२ ॥ केपिशूराधर्मपराररणाद्राजन्नचालिताः ॥ जग्मुस्तेवैष्णवं
लोकंभित्त्वातपनमंडलम् ॥ ३३ ॥ केचिद्वीरामहायुद्धंदृष्ट्वायुद्धात्पलायिताः ॥ ततवालुकमार्गेणजग्मुस्तेनिरयंनृप ॥ ३४ ॥ एवंदैत्यान्म
हावीराञ्जघ्नुःसर्वेयदूत्तमाः ॥ तथायदून्महायुद्धेनानाशस्त्रैश्चदानवाः ॥ ३५ ॥ रणेमृत्युंगताःसर्वेराजन्दैत्याश्चकोटिशः ॥ तथामृत्युंगतायुद्धे
यादवाश्चसहस्रशः ॥ ३६ ॥ बाणांधकारेसंजातेऽनिरुद्धोधन्विनांवरः ॥ ऊर्द्ध्वकेशेनयुयुधेयथावृत्रेणवासवः ॥ ३७ ॥

भये तिनको नारमें जयमाला डालती भई हैं ॥ ३१ ॥ उन विद्याधरी आदिकनको उन वीरनके लिये परस्पर कलह होतोभयो है ये मेरे अनुरूप पति है तेरे अनुरूप नही है
मेरो यार्कूं वरूँगी या प्रकार जिनके जिनके विह्वल चित्त हैगये हैं ॥ ३२ ॥ और हे राजन्! कितनेही क्षत्रधर्ममें तत्पर भये जे संग्राममेंसों चलायमान नही भये हैं वे सूर्यमंडल
को भेदनकर सूधे विष्णुलोकमें गयेहैं ॥ ३३ ॥ और कितनेई वीर वा महायुद्धको देखके संग्राममेंसों भागे हैं वे हे नृप! तप्त वालुकाके मार्ग हैके नगरमें गये हैं ॥ ३४ ॥ या
प्रकार विन महावीर दैत्यनको सव यदूत्तम मारते भये हैं, ऐसोही वा महायुद्धमें यादवनको अनेक शस्त्रनसों दैत्यनने मारेहै ॥ ३५ ॥ हे राजन्! या प्रकार किरोडन दैत्य रणमें
मरेहैं याही प्रकार हजारन यादवहू वा युद्धमें मारेगयेहैं ॥ ३६ ॥ जव वाणनको अंधकार हैगयोहै तव धनुषधारीनमें श्रेष्ठ जो अनिरुद्ध है सो ऊर्द्ध्वकेश नामके दैत्यसों ऐसे युद्ध

करतो भयोहै जैसे वृत्रासुरसों इंद्रने संग्राम कियोहै ॥ ३७ ॥ और नंद दैत्यसों गद सिंह नामके दैत्यसों वृक और कुशांब नामके दैत्यसों सांब संग्राम करतोभयो ॥ ३८ ॥ ऐसे बडो घोर परस्पर युद्ध भयो तब हे राजन् ! ऊर्द्ध्वकेश नामको जो दैत्य है सो वारंवार धनुष टंकार करतो ॥ ३९ ॥ संग्राममें अनिरुद्धके दश बाण मारतोभयो उन बाणनको धनुषधारी रुक्मवतीके पुत्र अनिरुद्धने काटगेरे ॥ ४० ॥ फिर ऊर्द्ध्वकेशने अनिरुद्धके कवचमें दश बाण मारे हैं ये बाण अनिरुद्धके कवचको तोरके शरीरमें समायगये ॥ ४१ ॥ और चार बाणनसो अनिरुद्धके चारों घोडा मारगेरे और बीश बाणनसो अनिरुद्धको धनुष काटगेरो प्रत्यंचा समेत ॥ ४२ ॥ तब बल्वल छोटे भाईके या पराक्रमको देख या रथको छोडके अनिरुद्ध और रथमें बैठेहैं ॥ ४३ ॥ और इंद्रके दिये प्रतिशार्ङ्ग नामके धनुषको हाथमें लेके और कृष्णके दिये धनुषमें एक बाण लगायके ॥ ४४ ॥ क्रोधसों भरे

नंदेनचगदोराजन्सिंहेनवृकएवच ॥ कुशांबेनचसांबोवैयुयुधेरणमण्डले ॥ ३८ ॥ एवंपरस्परंयुद्धंबभूवतुमुलंमहत् ॥ ऊर्द्ध्वकेशस्तदाराजन्धनुष्टंकारयन्मुहुः ॥ ३९ ॥ कार्ष्णिंजंताडयामासनाराचैर्दशभिर्मृधे ॥ तान्प्रचिच्छेदभगवान्धन्वीरुक्मवतीसुतः ॥ ४० ॥ ऊर्द्ध्वकेशः पुनस्तस्यकवचेसायकान्दश ॥ निचखानस्वर्णपुंखान्भित्त्वावर्मतनौगतान् ॥ ४१ ॥ चतुर्भिश्चशरैस्तस्यजघानचतुरोहयान् ॥ चिच्छेद बाणैर्विंशद्भिःकोदंडंसगुणंपरम् ॥ ४२ ॥ अनिरुद्धस्यराजेंद्रबल्वलस्यानुजोबली ॥ अनिरुद्धस्तुतंत्यक्त्वारथंचान्यंसमारुहत् ॥ ४३ ॥ शक्रदत्तंनृपश्रेष्ठप्रतिशार्ङ्गधरोमहान् ॥ कृष्णदत्तेचकोदंडेशरमेकंनिधायच ॥ ४४ ॥ तद्रथेनिचखानाथरुपाढ्योहस्तलाघवात् ॥ सायकस्तद्रथंनीत्वाभ्रामयित्वाघटीद्वयम् ॥ ४५ ॥ गगनात्पातयामासकाचपात्रंयथार्भकः ॥ अंगारवद्रथस्तस्यविशीर्णोभूद्धयाश्चवै ॥ ४६ ॥ ससूताश्चनृपश्रेष्ठपंचतांप्रापुरग्रतः ॥ ऊर्द्ध्वकेशस्तुपतनान्मूर्च्छितोभूद्रणांगणे ॥ ४७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायांहयमेधखंडेयादवासुरसंग्रामवर्णनंनामैकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ तदोत्थितश्चोर्द्ध्वकेशोरथंचान्यंसमाश्रितः ॥ अनिरुद्धस्यसंग्रामेयावदायायातिसंमुखम् ॥ १ ॥ तावद्भग्नंनिशितैर्नाराचैस्तद्रथंपुनः ॥ सभग्नंस्यंदनंदृष्ट्वापुनरन्यंसमाश्रितः ॥ २ ॥ सोपिभग्नःशरैराशुकार्ष्णिजेन रणेनृप ॥ एवंनवरथाभग्नाऊर्द्ध्वकेशस्यवैरणे ॥३॥ ततः क्रुद्धोरणेदैत्यःशक्तिंचिक्षेपसत्वरम् ॥ दृष्ट्वातामागतांवीरोनाराचैर्दशधाच्छिनत् ॥४॥

अनिरुद्धने हाथके लाघवसे या दैत्यके रथमें यो बाण मारोहै वा बाणने ये रथ उडायो दो घडी घुमायके ॥ ४५ ॥ ऐसे आकाशमेंसो पटको है जैसे काँचके पात्रको बालक फेंके तब ये अंगारकी तरह चूर्ण हैके गिरो और घोडे भी ॥ ४६ ॥ सारथी सहित हे नृपश्रेष्ठ ! चूर्ण हैगये और ऊर्ध्वकेशभी गिरनेसे रणांगणमें मूर्च्छित हैगयो ॥ ४७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायामेकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥ गर्गजी कहैहैं कि, ऊर्ध्वकेश जो है सो थोरी देरमें उठो है दूसरे रथमें बैठके जो अनिरुद्धके सामने आवे है ॥ १ ॥ त्योंही तीक्ष्ण नाराचनसों फिर अनिरुद्धने याको रथ तोर गेरे हैं तब याने वा रथको हू टूटो देखके फिर और रथमे बैठो है ॥ २ ॥ तब हे नृप ! वोभी रथ फिर अनिरुद्धने रणमे तोरडारो या प्रकारसों ऊर्ध्वकेशके नौ (९) रथ तोरे है ॥ ३ ॥ तब ये दैत्य कुपित हैके शीघ्र एक शक्ति मारतोभयो तब या आवती शक्तिको बाणनसों

तब ये ऊर्ध्वकेश सुवर्णके रथमें बैठके बडे वेगसों अनिरुद्धके सन्मुख युद्ध करबेको संग्राममें आयो है ॥ ५ ॥ आयके याने हर्षित अनिरुद्धने दश खंडकर पटक दीनो ॥ ४ ॥ तब ये ऊर्ध्वकेश सुवर्णके रथमें बैठके बडे वेगसों अनिरुद्धके सन्मुख युद्ध करबेको संग्राममें आयो है ॥ ५ ॥ आयके याने हर्षित
हैके पाँच बाण मारे हैं अनिरुद्धके तिन बाणनके मारे बड़ो खेदमें प्राप्त भयो है ॥ ६ ॥ फिर अनिरुद्धने सावधान हैके धनुषको लैकें चित्रवाज (पंख) के दश बाण मारे हैं अपने हाथके लाघवसों ॥ ७ ॥ वे दारुण अनिरुद्धके बाणनने याको रुधिर पियो हैं और वे रुधिरके पीके गिरे हैं जैसे भूठी गवाही देनवारेके पूर्वज (पुरखा) गिरे हैं ॥ ८ ॥ फिर ऊर्ध्वकेशने कुपित हैके ठाडोरहि २ ऐसे कहिके अनिरुद्धके मूँडमें दश बाण मारे हैं ॥ ९ ॥ वे बाण अनिरुद्धके किरीटमें गड़ गये हैं सो ऐसे मालूम भये जानो वृक्षमें शाखा निकसी है ॥ १० ॥ तब इन बाणनसों रुक्मवतीको नंदन (अनिरुद्ध) व्यथित नहीं भयो है हे नृपसत्तम ! जैसे पुष्पनसों हाथी ॥ ११ ॥ तब

ऊर्द्ध्वकेशस्तदासंख्येस्थित्वारुक्ममयेरथे॥आजगामसवेगेनानिरुद्धंप्रतियोधितुम् ॥५॥ कार्ष्णिजंपंचभिर्बाणैस्ताडयामासहर्षितः॥शरैस्तैर्निहतःसोपिकश्मलंपरमंगतः ॥६॥ संक्रुद्धोधनुरुद्यम्यचित्रवाजाञ्छरान्दश ॥ मुमोचहृदयेतस्यसहसाहस्तलाघवात् ॥७॥ शरास्तेपपुरेतस्यरुधिरंबहुदारुणाः ॥ पीत्वापेतुर्यथाभूमौकूटसाक्ष्यस्यपूर्वजाः ॥ ८ ॥ ऊर्द्ध्वकेशःपुनःक्रुद्धोतिष्ठतिष्ठेतिचाब्रुवन् ॥ बाणैस्तुदशसंख्यैश्चतताडतस्यमूर्द्धनि ॥ ९ ॥ सायकास्तेनिरुद्धस्यह्युष्णीषेपरिनिष्ठिताः ॥ विराजंतेस्मराजेंद्रदशशाखास्तरोरिव ॥ १० ॥ नविव्यथेसतैर्बाणैर्युद्धेरुक्मवतीसुतः ॥ यथापुष्पैश्चप्रहतोद्विरदोनृपसत्तम ॥ ११ ॥ बाणान्क्षतंस्वधनुषिनिधायाकृष्यमाधवः ॥ चित्रवाजान्स्वर्णपुंखान्मुमोचबहुरोषतः ॥ १२ ॥ तेबाणास्तस्यसर्वांगंभित्त्वाशीघ्रमधोगताः ॥ रुधिराक्तायथाराजन्कृष्णभक्तिपराङ्मुखाः ॥ १३ ॥ शरसंघैश्चसहतोपंचतांप्रधनेगतः ॥ हाहाकारश्चतत्सैन्येबभूवनृपसत्तम ॥ १४ ॥ तदाजयजयारावोयादवानांबभूवह ॥ अनिरुद्धोपरिसुराःपुष्पवर्षंप्रचक्रिरे ॥ १५ ॥ ऊर्द्ध्वकेशस्तुप्रधनाद्दिव्यदेहेनयादव ॥ ययौविमानमारुह्यस्वर्गंसुकृतिनांपदम् ॥ १६ ॥ भ्रातरंनिहतंदृष्ट्वानदःशोकेनपूरितः ॥ कुञ्जरस्थोगदंबाणैःकुञ्जरस्थंजघानह ॥ १७ ॥ आगतान्सायकान्दृष्ट्वाधनुर्द्धारीगदोमहान् ॥ तान्प्रचिच्छेदबाणेनानिरुद्धस्यप्रपश्यतः ॥ १८ ॥ नदस्तदेवसंक्रुद्धोभ्रातृशोकपरिप्लुतः ॥ अकरोद्विगजंबाणैःसंग्रामेरोहणीसुतम् ॥ १९ ॥

अनिरुद्धने चित्र जिनमें बाज सुवर्णके जिनमे पांख ऐसे अनेक बाण कुपित हैके मारेहैं ॥ १२ ॥ वे बाण याके सर्वांगनको भेदके रुधिरके भीजे नीचेको गिरे हैं हे राजन् ! जैसे कृष्णभक्तिसों बहिर्मुख मनुष्य नरकनमें पडेहै ॥ १३ ॥ तिन अनिरुद्धके बाणनसों ताडन कियो ऊर्ध्वकेश संग्राममें मरगयो तब हे नृपसत्तम ! याकी सेनामें बडो हाहाकार भयो ॥ १४ ॥ और यादवनकी सेनामें जयजयको शब्द भयो और अनिरुद्धके ऊपर देवताननें पुष्प वर्षायेहैं ॥ १५ ॥ और ऊर्ध्वकेश देहत्याग कर दिव्य देवदेह हैके विमानमें बैठके सुकृतीनके स्थान स्वर्गको गयो है ॥ १६ ॥ तब नद नामको दैत्य भाईको मरो देखके शोकमें पूर्ण हैके हाथीपै बैठके गदके ऊपर बाणनकी वर्षा करतोभयो ॥ १७ ॥ गदने याके बाणनको आवतो देखके धनुषको धारणकर अपने बाणनसों नदके सब बाण काटगेरे हैं अनिरुद्धके देखते देखते ॥ १८ ॥ तब भाईके शोकमें डूबे नदने कुपित हैके

बाणनके मारे गदके हाथीको मारडारौ ॥ १९ ॥ तब गदको हाथी नदके सौ (१००) बाणनसों मरगयो और गद धरतीमें खडो हैगयो ये बडो अद्भुत भयो है ॥ २० ॥ तब कुपित भयो गद गदाको हाथमें लेके सिंहके मारबेको जैसे सिंह आवै ऐसेही नदके मारबेको गद आयो है ॥ २१ ॥ तब आये गदको नदके हाथीने सूँडसों पकरके सौ योजन ऊँचो आकाशमें फेंक दियोहै ॥ २२ ॥ तब आकाशमेंसों गिरके गदने उठके शुंडादंडको पकरके और घुमायके हाथीको धरतीमें पटकोहै ॥ २३ ॥ तब ये नदको हाथी मरगयो नदको बडो विस्मय भयो और गदकी बहुत कुछ बडाई करके नदने अपनी गदा हाथमे लीनी है ॥ २४ ॥ और गदाधर गदको बहुत शीघ्र बुलायोहै और गदने नदको ललकारौ है ॥ २५ ॥ तब नदने कहीहै कि, हे यादव ! तू मनुष्य है यासों मोकूँ लाज आवे है तू मोसे कैसे संग्राम करैगो ॥ २६ ॥

गजस्तुशतबाणैश्चभिन्नांगःपंचतांगतः ॥ निपपातगदोभूमौतदद्भुतमिवाभवत् ॥ २० ॥ ततःक्रुद्धोगदांनीत्वाहंतुंशत्रुंरणेगदः ॥ आजगामत्व लब्धीभ्रंसिंहःसिंहंवनेयथा ॥ २१ ॥ आगतंतंगृहीत्वातुशुण्डादंडेनतद्गजः ॥ चिक्षेपसगदंराजन्नाकाशेशतयोजनम् ॥ २२ ॥ पतितःखात्समु त्थायशुण्डादंडंप्रगृह्यसः ॥ पातयामासभूपृष्ठेभ्रामयित्वागजंगदः ॥ २३ ॥ गजोमृत्युंगतोयुद्धेविस्मितोभून्महासुरः ॥ जग्राहस्वगदांगुर्वींश्ला घांकृत्वागदस्यच ॥ २४ ॥ शीघ्रंतमाह्वयामासगदंवीरंगदाधरम् ॥ तथासोपिनदंदैत्यंसंग्रामार्थेविशांपते ॥ २५ ॥ नदःप्रत्याहवचनंत्वंमनु ष्योसियादव ॥ तस्माल्लज्जांकरिष्यामिकथंयुद्धंकरिष्यसि ॥ २६ ॥ पूर्वंप्रहारंकुरुमेपश्चात्त्वंतुनजीवसि ॥ इतिश्रुत्वागदःप्राहयथावृत्रंपुरंदरः ॥ २७ ॥ ॥ गदउवाच ॥ ॥ नकिंचित्तेप्रकुर्वंतियेवदन्तिमुखेनवै ॥ नवदंतिरणेशूरादर्शयंतिपराक्रमम् ॥ २८ ॥ इतिश्रुत्वानदःक्रुद्धोगद स्यहृदयेनदन् ॥ ताडयामासराजेन्द्रगरिष्ठांमहतींगदाम् ॥ २९ ॥ गदयाताडितोवीरोनचचालमृधेगदः ॥ मदोन्मत्तोयथाहस्तीबालेनमाल याहतः ॥ ३० ॥ कथयामासवीराग्र्योदानवंवीक्ष्यलज्जितम् ॥ सहस्वैकंप्रहारंमेयदिवीरःपरंतप ॥ ३१ ॥ इत्युक्त्वानिजघानाथललाटेगदया भृशम् ॥ सचापितंकृपास्कंधेताडयामासधर्मवित् ॥ ३२ ॥ एवंभृशंप्रकुर्वंतौगदायुद्धविशारदौ ॥ गदायुद्धंप्रकुर्वाणौपरस्परवधैषिणौ ॥ ३३ ॥ अन्योन्यघातविमतौक्रोधयुक्तौजयोद्यतौ ॥ नकोवैतत्रजीयेतनप्रहीयेतकोपितु ॥ ३४ ॥

पहले तू प्रहार कर फिर मै तोकूं मारडारौंगो यह सुनके गदने ऐसे कही है जैसे वृत्रासुरते इन्द्रने कही ही ॥ २७ ॥ सुनले तू जे मोंहडेते कहैहै वे कछु करै नही है और जे शूरवीर होयहै वे कहै नही है किंतु वे पराक्रमको प्रत्यक्षकरके दिखावेहै ॥ २८ ॥ ये सुनके नदको बडो क्रोध आयो सो गर्जना करतेने गदकी छातीमें एक बडी भारी गदा मारी है ॥ २९ ॥ तब याकी गदासो गदको मालूम नही भई जैसे मदोन्मत्त हाथीको कोई बालक मालासों मारे तो मालुम नहीं होयहै ॥ ३० ॥ तब वीरनमें मुख्य गदने या दैत्यको लज्जित देखके कही कि जो तू वीर है तो अब मेरे एक प्रहारको सहिले ॥ ३१ ॥ ये कहिके नदके ललाटमें गदने एक गदा मारी है तब धर्मके जाननेवारे नदने कुपित हैके गदके कंधामें गदा मारी है ॥ ३२ ॥ ऐसे दोनो गदायुद्ध करते गदायुद्धमें बडे विशारद परस्पर मारनेकी इच्छा करते गदायुद्ध करतेभये ॥ ३३ ॥ परस्परके प्रहारनसों विमतभये क्रोधसों युक्त जय

करनेमें उद्युक्तभये पर दोनोंनमेंते न तो कोई हारेहै और न कोई जीतेहै ॥ ३४ ॥ ललाटमें कंधमें मस्तकमें हृदयमें और सब अंगनमें रुधिरसों भीजेभये खिले केसूके वृक्षके समान होतेभये ॥ ३५ ॥ हे महाराज ! फिर दोनोंनको गदायुद्ध भयोहै जामें वे दोनों गदा परस्परकी चोटसों चूर्ण हैके गिरपडीहैं ॥ ३६ ॥ तब फिर गदको और दैत्यको द्वंद्व युद्ध (कुश्ती) भई है तब तो गदने याको दोनों हाथनते पकरके कुपित हैके ऐसे धरतीमें पटकोहै जैसे सिंह महिषको पटके तब दैत्यने गदकी छातीमें एक मुक्का मारी है तब गदने ह मुक्का बाँधके दैत्यके माथेमें मारोहै या प्रकार मुष्टि, गोडू और लात चनकटे और बाहुनसों परस्पर दोनों प्रहार करतेभये ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ क्रोधसों होठनको डस २ के तब ये दैत्य रणमें कुपित है बलात्कारसों गदके दोनों पावनको पकरके घुमायके धरतीमें मारतोभयो तब गदने हू उठके दैत्यके पाँवोंको पकरके घुमायके कुपित हैके

भालेस्कंधेतथामूर्भिहृदिगात्रेषुसर्वतः ॥ रुधिरौघप्लुतौक्लिन्नौकिंशुकाविवपुष्पितौ ॥३५॥ तयोरासीन्महायुद्धंगदाभ्यामेवसंयुते ॥ विस्फुलिंगा न्क्षरंत्यौद्वेगदेचूर्णीबभूवतुः ॥ ३६ ॥ तयोर्युद्धमभूद्घोरंबाहुभ्यांगददैत्ययोः ॥ तदारामानुजःक्रुद्धोभुजाभ्यामुपगृह्यतम् ॥ ३७ ॥ पातयामासभू पृष्ठेमहिषंहरिराडयथा ॥ तदादैत्यस्तुतस्यापिहृदिजघ्नेप्रमुष्टिना ॥ ३८ ॥ तदासोपिशिरस्येकंमुष्टिंबद्ध्वाजघानह ॥ मुष्टिभिर्जानुभिःपादै स्तालस्फोटैश्चबाहुभिः ॥ ३९ ॥ परस्परंजघ्नतुस्तौसंदष्टाधरपल्लवौ ॥ ततःक्रुद्धोरणेदैत्योगदस्यचरणंबलात् ॥ ४० ॥ गृहीत्वाभ्रामयि त्वाचपातयामासभूतले ॥ तदागदःसमुत्थायगृहीत्वाचरणंरिपोः ॥ ४१ ॥ भ्रामयित्वागजोपस्थेनिजघानरुषाज्वलन् ॥ पुनर्दैत्यःसमुत्थायगृ हीत्वारोहिणीसुतम् ॥ ४२ ॥ चिक्षेपचौजसाराजन्गगनेशतयोजनम् ॥ पतितोपिसवज्रांगःकिंचिद्व्याकुलमानसः ॥ ४३ ॥ चिक्षेपगगनेदै त्यंयोजनानांसहस्रकम् ॥ पतितोपिसमुत्थायपुनर्युद्धंचकारसः ॥ ४४ ॥ गदोनदंनदोगदंनिजघ्नतुःपरस्परम् ॥ प्रमुष्टिभिश्चदारुणैर्महद्द्रणेनृ पेश्वर ॥ ४५ ॥ दंडादंडिमुष्टीमुष्टिकेशाकेशिनखानखि ॥ दंतादंत्युभयोर्युद्धंघोरमेवंबभूवह ॥४६॥ इत्थंनियुद्ध्यमानौतौप्रकुर्वंतौरणंपुनः ॥ पादेपादं हृदिहृदंकरेकरंमुखेमुखम् ॥ ४७ ॥ अन्योन्यमित्थंसंलग्नौपरस्परवधैषिणौ ॥ बलाक्रांतावुभौतौद्वौपतितौचमुमूर्च्छतुः ॥ ४८ ॥ इत्थंदृष्ट्वातयो र्युद्धंयादवाश्चैवदानवाः ॥ गदोधन्योनदोधन्यःप्रोचुर्वाक्यमिदंनृप ॥ ४९ ॥

हाथीपै मारोहै ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ पुनः दैत्यने उठके गदको पाँव पकरके हे राजन् ! पुरुषार्थसों आकाशमें सौ योजन ऊँचो फेंकोहै ॥ ४३ ॥ हे राजन् ! गिरोभी जो गद है वज्रकोसो जाको अंग सो कछुक व्याकुल मन हैके या दैत्यको पाँव पकरके आकाशमें एक हजार योजन ऊँचो उछारके फेंकोहै तब ये दैत्य इतने ऊँचेसों गिरकेहू फिर युद्ध करन लगेहै ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ या प्रकार नदको तो गद और गद नद परस्पर प्रहार करतेभये हे महाराज ! दारुण मुक्कानसों प्रहार करतेभये या प्रकार दंडादंडि दंतादंति मुष्टीमुष्टि नखानखि और केशाकेशि दोनोनको अनेक प्रकार युद्धभयो ॥ ४७ ॥ या प्रकार दोनों कुश्ती लड़ते पाँवपै पाँवको छातीपै छाती हाथमें हाथको और मुखमें मुखको परस्पर लिपटे दोनों बलसों भरे ये दोनों लड़ते २ दोनों धरतीमें गिरके मूर्छित हैगये ॥ ४८ ॥ ऐसे इनके युद्धको दानव और यादव देखके यादवनने तो कहीहै कि गदको धन्य है और दैत्यनने

नदको धन्यवाद दियोहै ॥ ४९ ॥ तब गदको धरणीमे परो देखके अनिरुद्धजी शोकमें पूर्ण ह्वैके जलसों और पंखाकी हवासों गदको होस करायोहै ॥ ५० ॥ तब तो एक क्षणमेंही गद उठो है नद कहां है नद कहां है मेरे भयसों संग्रामको छोडके कहां गयो ऐसे कहतोभयो ॥ ५१ ॥ तब रणमें मरो भयो परो ऐसे नदको देखके देवतानने और यादवनने जयजय शब्द कियो है ॥ ५२ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डे भाषाटीकायां त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥ गर्गजी कहैहैं कि, तदनंतर सिंह नामको दैत्य है गधापें बैठोभयो अपनी सेनाके पराजयको देखके क्रोधसों युक्तभयो रथमे बैठे वृकको बाणनसों प्रहार कियोहै ॥ १ ॥ तब कृष्णके पुत्र वृकने तिन बाणनको आयो देख लीला (खेल) करके अपने बाणनसों वे बाण काटगेरेहै ॥ २ ॥ तब सिंहने फिर बाण मारे वृकने वेहू काटगेरे तब तो हे राजन् ! संग्राममें सिंहको बड़ो क्रोध आयो ॥ ३ ॥ और याने अपने धनुषमें आठ शिलीमुख (बाण)

गदंनिपतितंदृष्ट्वानिरुद्धःशोकपूरितः ॥ चैतन्यंकारयामासजलेनव्यजनेनच ॥ ५० ॥ तदैवसोपिराजेन्द्रउत्थितःक्षणमात्रतः ॥ क्वनदःक्वन
नदोयातोत्यक्त्वायुद्धंभयान्मम ॥५१॥ निरीक्ष्यदानवंतत्रमूर्च्छितंपंचतांगतम् ॥ चक्रुर्जयजयारावंयादवाश्चैवदेवताः ॥ ५२ ॥ इतिश्रीमद्गर्ग
संहितायांहयमेधखण्डेऊर्द्ध्वकेशनदवधोनामत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ स्वस्याःपराजयंदृष्ट्वासिंहोदैत्योरुषान्वितः ॥
निजघानवृकंबाणैरथस्थंखरवाहनः ॥ १ ॥ दृष्ट्वासमागतान्बाणान्वृकोवैकृष्णनन्दनः ॥ चिच्छेदतान्स्वबाणैश्चलीलयाप्रधनेनृप ॥ २ ॥
पुनश्चिक्षेपबाणान्वैतांश्चचिच्छेदकृष्णजः ॥ ततःक्रुद्धोरणेराजन्सिंहनामाऽसुरेश्वरः ॥ ३ ॥ शरासनेसमाधत्तवसुसंख्याञ्छिलीमुखान् ॥
चतुर्भिस्तुरगान्वीरोवृकस्याह्ननयत्क्षयम् ॥ ४ ॥ एकेनध्वजमत्युग्रंचिच्छेदतरसाहसन् ॥ एकेनसारथेःकायाच्छिरोभूमावपातयत् ॥ ५ ॥
एकेनसगुणंचापमच्छिनत्प्रधनेरुषा ॥ एकेनहृदिविव्याधवृकस्यवेगवान्नृप ॥ ६ ॥ तस्यकर्माद्भुतंदृष्ट्वावीराविस्मयमागताः ॥ वृकस्तदैनस
हसादैत्यंशक्त्याजघानह ॥ ७ ॥ साशक्तिस्तत्तनुंभित्त्वाखरंभित्त्वाविनिर्गता ॥ विवेशभूतलेराजन्विवरंपन्नगोयथा ॥ ८ ॥ खरोमृत्युंगतस्त
त्रदैत्यःशीघ्रंपपातह ॥ जगर्जपुनरुत्थायसिंहःसिंहइवस्फुटम् ॥ ९ ॥ गृहीत्वाविशिखंशूलंचिक्षेपसवृकोपरि ॥ तमापतंतंजग्राहवृकोवामकरे
णवै ॥ १० ॥ तेनैवशत्रुंनिजघानराजन्कृष्णस्यपुत्रोवहुरोषयुक्तः ॥ निर्भिन्नदेहोनिपपातभूमौहाहाप्रकुर्वन्सजगाममृत्युम् ॥ ११ ॥

लगायेहै तिनमेंसो चार बाणनसो ता वृकके चारों घोड़ा मारडारे ॥ ४ ॥ और हँसतेहँसतेने एक बाणसो वृककी ध्वजा काटगेरी और एक बाण करके सारथीको मारडारो ॥ ५ ॥ और एक बाणसों प्रत्यंचा सहित संग्राममें धनुष काटगेरो और एक बाण वृकको छातीमें मारो ॥ ६ ॥ या सिंहके कर्मको देखके सब वीर बड़े विस्मयको प्राप्त भये तब वृकने सिंहके शक्तिको प्रहार कियो ॥ ७ ॥ तब वो शक्ति सिंहदैत्यको और याके गधाको भेदन करके हे राजन् ! बिलमें सर्पकी तरह धरतीमें धसगई है ॥ ८ ॥ तब ये खरदैत्य भी मरके धरतीमें गिरपरो है और सिंहने फिर उठके सिंहकीसी गर्जना कीनी है ॥ ९ ॥ तब सिंहने वृकके त्रिशूल मारो है वा त्रिशूलको वृकने वाम हाथसो पकरलीनो है ॥ १० ॥ और हे राजन् ! वाही त्रिशूलसों कृष्णके पुत्र वृकने शत्रु जो सिंह है ताके प्रहार कियो है तब ये सिंह हाहाकार करतो भिन्नदेह ह्वैके मरके गिरपरो है ॥ ११ ॥

याही समय संग्राममें दानवनको हाहाकार शब्द भयो है और यादवनने पुष्प वरसायके जय २ शब्द करी है ॥ १२ ॥ तब तो कुशांबको क्रोध आयो सो रथमें बैठके शीघ्र आयके याने सांबादिक यादवनको बाणनसों बेधो है ॥ १३ ॥ और या कुशांबके बाणनसों बहुतसे हाथी कटके गिरे हैं और तिर्यम्भूत रथ और छिन्नकंधर घोड़े रणमें गिरे हैं ॥ १४ ॥ और याही प्रकार शिर और भुजा जिनके कटगये ऐसे पदाति गिरे हैं या प्रकार अनेकनको मारतो कुशांब विचरो है ॥ १५ ॥ या पराक्रमको जांबवतीको पुत्र सांब देखके युद्धमें कोविद सांबने कुशांबको ललकारो है ॥ १६ ॥ सांबने कही कि, हे वीर! मेरे सन्मुख आयके संग्राम कर इन और विचारे मारे जो तैंने किरोड़न मनुष्य हैं तिनसों कहा है ॥ १७ ॥ ऐसे कहतेके या दैत्यके कहेको सुनके बली हँसते कुशांबने सांबके हृदयमें आठ बाण मारे हैं ॥ १८ ॥ तब इन बाणनको नहीं सहते सांबने धनुषमें लगायके सात बाण छातीमें

हाहाकारस्तदैवासीद्दानवानांरणांगणे ॥ पुष्पवर्षंसुराश्चक्रुःजयारावंयदूत्तमाः ॥ १२ ॥ तदाकुशांबःसंक्रुद्धोसांबादीन्यादवान्मृधे ॥ रथस्थः
शीघ्रमागत्यसर्वांन्विव्याधसायकैः ॥ १३ ॥ तस्यबाणैश्चबहवःपेतुश्छिन्नामहागजाः ॥ तिर्यग्भूतारथायुद्धेतुरगाश्छिन्नकंधराः ॥ १४ ॥
तथापदातयस्तत्रशिरोहीनाविबाहवः ॥ इत्थंसमारयन्राजन्ननेकान्विचचारह ॥ १५ ॥ एवंपराक्रमंदृष्ट्वासांबोजांबवतीसुतः ॥ कुशांबंचाह्व
यामासयुद्धार्थंयुद्धकोविदः ॥ १६ ॥ ॥ सांबउवाच ॥ ॥ आगच्छवीरसहसामयासहरणंकुरु ॥ किमन्यैस्त्रासितैर्दीनैर्निहतैःकोटि
भिर्नरैः ॥ १७ ॥ इत्युक्तवन्तमालोक्यकुशांबःप्रहसन्बली ॥ जघानहृदयेतस्यवसुसंख्याञ्छिलीमुखान् ॥ १८ ॥ तदमृष्यन्हरेःपुत्रःस्वको
दंडेदधच्छरान् ॥ तताडसप्तभिःशत्रुंदानवंवक्षसोंतरे ॥ १९ ॥ उभौसमरसंरब्धावुभावपिजयैषिणौ ॥ रेजातेतौहिसंग्रामेयथाषण्मुखतारकौ
॥ २० ॥ सांबःकुशांबंप्रधनेकुशांबःसांबमेवच ॥ अन्योन्यंसर्पसदृशैर्बाणैरपिववर्षतुः ॥२१॥ बाणान्धनुषिसंधायशतसंख्यान्स्फुरत्प्रभान् ॥
अकरोद्विरथंतैश्चसांबंछिन्नशरासनम् ॥ २२ ॥ सच्छिन्नधन्वाविरथोहताश्वोहतसारथिः ॥ आरुरोहरथंचान्यंकुपितश्चापसंयुतः ॥ २३ ॥
॥ सांबउवाच ॥ ॥ कुत्रयास्यसित्वंदैत्यकृत्वादीर्घपराक्रमम् ॥ क्षणमात्रंरणेस्थित्वापश्यमेविक्रमंपरम् ॥ २४ ॥ इत्युक्त्वासायकंचोग्रंस्वको
दंडेनिधायच ॥ मंत्रयित्वाचमंत्रेणतद्रथेनिचखानह ॥२५॥ अलातचक्रवद्भ्रमौतेनबाणेनतद्रथः ॥ बभ्रामयोजनेशीघ्रंससूतःसतुरंगमः ॥२६॥

मारे हैं ॥ १९ ॥ दोनोंही संग्राममें संरभी दोनोंही जीतो चाहे जैसे संग्राम करते स्वामि कार्तिक और तारकासुरसे मालूम भयोहो ॥ २० ॥ तब सांब और कुशांब दोनों सर्प सदृश बाणनसों सांबके कुशांब और कुशांबके सांब परस्पर प्रहार करतेभये ॥ २१ ॥ तब कुशांबने धनुषमें सौ बाण लगायके तिन बाणनसों सांबको धनुष काटके रथ तोर गेरो ॥ २२ ॥ तब धनुष कटेपे रथ टूटेपे और घोडे तथा सारथीके मरेपे सांब धनुष लेके दूसरे रथमें बैठगयोहै ॥ २३ ॥ और सांब ये बोलो कि, या बड़े पराक्रमको करके रे दैत्य! अब तू कहाँ जायगो एक क्षणभर मेरे सामने ठैरके मेरे पराक्रमको देखो ॥ २४ ॥ इतनी कहिके एक सायकको अपने धनुषमें लगायके वा बाणको मंत्रसों अभिमंत्रण करके याके रथमें वो बाण मारो है ॥ २५ ॥ तब या बाणके मारे अलातचक्रकी नाई कुशांबको रथ धरतीमें एक योजन ताई सारथी और घोड़नके समेत घूमो है ॥ २६ ॥

तब रथ समेत घूमरह्यो ऐसे याकु शांबको देखके सांब हँसके बोलो है बाणको धनुषमें लगाय लियो ॥२७॥ अरे ओ दैत्य ! तेरे समान महावीर इंद्रके बराबर पराक्रमी धरतीमें रहवे लायक नहीं है किंतु स्वर्गके रहने योग्य है ॥ २८ ॥ यासों दूसरे या मेरे बाणसों तू स्वर्गमें जा सो हे असुरेश्वर ! रथसमेत और देह सहित मेरी कृपासों स्वर्गको जायगो ॥ २९ ॥ क्योंकि देख ये मेरो अस्त्र आकाशमें प्राप्त करनवारो है ऐसे कहिके वो बाण छोड़ोहै तब वा बाणसों हे नृप ! रथसमेत भ्रमण करतो भूमिसो जो चलो है सो बहुतसों लोकनको अति क्रमण करतो रविमंडलको गयो है ॥ ३० ॥ घोड़े सहित वहाँ सूर्यलोकमें सूर्यकी ज्वालासों वो रथ दग्ध होगयो और दग्ध भयो शरीर जाको ऐसो वो दैत्य पुरीमें बल्वलके पास जायके पड़ोहै ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ तब पापी दैत्यको मरिके गिरोभयो देख सब दैत्य भयभीत हैके हाहाकार करनलगे ॥ ३३ ॥ और तदनंतर यादवनके सैन्यमें दुंदुभी बजी है और

भ्रमंतंसरथंदैत्यंदृष्ट्वाप्राहहसन्मुखः ॥ सांबोजांबवतीपुत्रोबाणंकृत्वाशरासने ॥ २७ ॥ ॥ सांबउवाच ॥ ॥ त्वादृशाश्चमहावीराःस्वर्गयोग्या भवंतिहि ॥ नराजंतेमहीमध्येशक्रतुल्यपराक्रमाः ॥ २८ ॥ तस्मात्त्वममबाणेनद्वितीयेनदिवंव्रज ॥ सरथस्त्वंसदेहश्चमत्कृपातोऽसुरेश्वर॥२९॥ गगनप्रापकंचास्त्रमित्युक्त्वाविमुमोचसः ॥ शरेणतेनसरथोविभ्रमन्भूतलान्नृप ॥ ३० ॥ लोकान्बहूनतिक्रम्यजगामरविमंडलम् ॥ सहयःसूतस हितस्तत्रसूर्यस्यज्वालया ॥ ३१ ॥ दग्धोभूत्तद्रथःसद्योदैत्योदग्धकलेवरः ॥ पपातभूतलेपुर्यांबल्वलस्यचसन्निधौ ॥ ३२ ॥ तस्मिन्निपतितेपा पेगतेमृत्युंचदानवे ॥ हाहाकारंततश्चक्रुर्दैत्याःसर्वेभयान्विताः ॥ ३३ ॥ यादवानांततःसैन्येनेदुर्दुंदुभयोमुहुः ॥ पुष्पवर्षंमुदाचक्रुःसांबस्योपरि निर्जराः ॥ ३४ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांहयमेधखण्डेसिंहकुशांबवधोनामैकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ अथवैबल्वलंदैत्यं शोचंतंकांचनासने ॥ मयःप्रत्याहवचनंज्येष्ठंकुंभश्रुतिर्यथा ॥१॥ अद्यदृष्टंत्वयाराजन्यदूनांबलमेवहि ॥ दैत्यवृन्दैश्चनिहताश्चत्वारोमंत्रिणस्तव ॥२॥ अवशेषस्त्वमेवासिद्यथावाहंचत्वत्पुरे ॥ तस्मात्तवेच्छादैत्येंद्रयथाभूयात्तथाकुरु ॥३॥ बल्वलःप्राहवचनमद्ययास्याम्यहंरणे ॥ शीघ्रंहंतुं यदून्सर्वांस्त्वंगुप्तोभवमन्दिरे ॥४॥ हरिःकृष्णस्तुनंदस्यपुरापुत्रःप्रकीर्तितः ॥ वसुदेवोमन्यतेतंमत्पुत्रोयंगतत्रपः ॥५॥ हैयंगवीनदुग्धाज्यदधित क्रादिकंतुसः॥चोरयामासगोपीनांरसिकोरासमण्डले॥६॥जरासुतभयात्सोपिसमुद्रंशरणंगतः॥मारितोमातुलोयेनकिंकरिष्यतिपौरुषम् ॥७॥

आकाशमेंसों देवतानने पुष्प बरसायेंहैं ॥ ३४ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायामेकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥ ॥ इसके अनंतर ये बल्वल दैत्य शोच करनलगो सुवर्ण आसनपर बैठो ताको देखके मय बचन बोलोहै अपने बड़े भैयासों ॥ १ ॥ कि देखो भैयाजी आज तुमने यादवनको बल देखो जो तुमारे चार मंत्री दैत्यवृंदन सहित यादवनने मारडारे हैं ॥ २ ॥ अब या तो तेरे पुरमें तू या एक मैं मरवेसों बाकी रहेहैं सो दैत्येंद्र जैसी तेरी इच्छा होय सो कर ॥ ३ ॥ सुनके बल्वल बोलोहै कि, अब आज मैं रण में जाऊँगो सब यदुनके मारवेके लिये और तू नगरमें छिपके रहि ॥ ४ ॥ कृष्ण जो है ये साक्षात् भगवान् है पहले नंदके पुत्र कहेगये तिनको ये निर्लज्ज वसुदेव अपनो पुत्र माने है ॥ ५ ॥ और माखन, दुग्ध, घी, दही और छाँछ आदि सब वस्तु याने चुराये है और या रासमंडलमें गोपीनको रसिक है ॥ ६ ॥ और देखो जरासंधके भयके मारे

अपनी पुरी मथुराको छोड़के समुद्रकी शरण आयो है और जाने अपनो सगो, मामा मारगेरो है सो ये कहा पुरुषार्थ करेगो ॥ ७ ॥ बल्वलके ये वचन सुनके कुपित हैके फिर मय बोलो है कि, रे जासौं ब्रह्मा, शिव, पार्वती और इंद्र तिनको भयको देनवारो जो आप निर्भय ऐसे कृष्णको तू आज निंदा करै है सो जो कृष्णकी निंदा करै वो अज्ञानसौं दुष्टसंगसों करैहै और महामूढ है ॥ ८ ॥ ९ ॥ और वो ब्रह्माकी आयुपर्यंत कुंभीपाकमें परै है ॥ १० ॥ बडे बडे चंडपाल और शिशुपाल तिनकी जो मंडली तिनको खंडन करनवारो दैत्यनके दर्पको भंजनवारो लक्ष्मीको पति कामदेवको मोह करनवारो जो कृष्ण तिनको अपने कुलके कौशल्के लिये भजन करो ॥ ११ ॥ मयके या कहेको सुनके ज्ञानको प्राप्त भयो जो बल्वल है सो हे राजेंद्र ! क्षणभर विचार करके मंद हँसतो सो कहतोभयो ॥ १२ ॥ मै विश्वपति कृष्णको शेषरूप साक्षात् बलदेव

इतितद्वाक्यमाकर्ण्यमयःप्रकुपितोऽब्रवीत ॥ ॥ मयउवाच ॥ ॥ यस्माद्बिभेतिब्रह्माचशिवोमायापुरंदरः ॥ ८ ॥ भयदंनिर्भयंकृष्णंतं विनिंदसिनिंदक ॥ कृष्णंनिंदतियोमूढोह्यज्ञानाच्चकुसंगतः ॥ ९ ॥ कुम्भीपाकेसपततियावद्वैब्रह्मणोवयः ॥ १० ॥ चण्डपालशिशुपालमण्ड लीभञ्जनंदनुजदर्पखण्डनम्॥माधवंमदनमोहनंपरंत्वंभजस्वकुलकौशलायच॥११॥मयस्यवचनंश्रुत्वाज्ञानंप्राप्तोतिबल्वलः॥क्षणंविचार्यराजेंद्र प्रोवाचप्रहसन्निव ॥१२॥ ॥ बल्वलउवाच ॥ ॥ जानाम्यहंविश्वपतिंचकृष्णंशेषंबलंवैमदनंचकार्ष्णिम् ॥ अत्रागतंपद्मभवंहिचैषांवध्यावयंतेनह योहृतोयम्॥१३ ॥एषांबाणैश्चनिहतोयदाहंनिधनंगतः॥तदासुखेनयास्यामिशीघ्रंविष्णोःपरंपदम् ॥१४॥ पुराचवैरभावेनवैकुण्ठंबहवोगताः ॥ दानवाराक्षसाश्चैवतंचभावंकरोम्यहम् ॥ १५ ॥ इत्युक्त्वादंशितोभूत्वादानवानांशिरोमणिः ॥ स्वसैन्यपालकंतूर्णंसमाहूयेदमब्रवीत् ॥ १६ ॥ पटहेनममाज्ञांत्वंघुष्यदिहिप्रयत्नतः ॥ अनिरुद्धेनयुद्धायवीरेषुसैन्यपालक ॥ १७ ॥ येममाज्ञांनमन्यन्तेतेवधार्हारणंविना ॥ आत्मजावाभ्रात रोवाह्यन्येषांचैवकाकथा ॥ १८ ॥ इतिश्रुत्वासतद्वाक्यंरथ्यांरथ्यांगृहेगृहे ॥ पटहेनापितस्याज्ञांघोषयामासवेगतः ॥ १९ ॥

जीको और कामदेवके रूप प्रद्युम्नजीको और ब्रह्माको रूप अनिरुद्धको मैं जानों हौं और इनकेही हाथसों हमारी मृत्यु है ये समझकेही हमने घोडा पकरो है ॥ १३ ॥ जब मैं इनके बाणनसों ताडन कियो मरोंगो तब सुखसों शीघ्रही विष्णुके परमपदको जाऊँगो ॥ १४ ॥ पुरा (पहले) बहुतसे दैत्य राक्षस वैरके करवेसों वैकुंठभवनको जायचुके हैं मैंहूं वाही वैरभावको करूंगो ॥ १५ ॥ दैत्यनको मुकुटमणि ये दैत्य इतनी कहिके कवच पहर अपने सेनापतिको बुलायके यह वचन बोलो ॥ १६ ॥ हे सेनापते ! ये डोंडीके द्वारा सब वीर पुरुषोंको खबर करवायदेउ कि, तुमको अनिरुद्धसों संग्राम करनो परैगो तयार हैजाउ ॥ १७ ॥ जे कोई मेरी आज्ञाको न मानै उनको भलेई बेटा या भाई होय वाको विनाही संग्राम मारडारो फिर औरनकी कहा कथा है ॥ १८ ॥ तब ये सेनापति राजा बल्वलके कहेको सुनके गली गली और घर घरमें बड़ी शीघ्रतासों डिंडिम पिटवायके सबको खबर

कराय देतेभये ॥ १९ ॥ या डिंडिमकी खबरको सुनके भयसो आतुर हैके सब दैत्य शस्त्रनको लेके बड़ी जलदी सभामें आयेहैं ॥ २० ॥ तब सेनापति सबसों पहले लक्ष दैत्यनको लेके रथमें बैठके कवच पहरके पुरके बाहिर निकला है ॥ २१ ॥ या सेनापतिके साथ दुर्नेत्र, दुर्मुख दुःखभाव और दुर्मद ये चार मंत्रिनके पुत्र निकले है ॥ २२ ॥ मत्त गज और चंचल अश्व विमानके समान रथ विद्याधरके समान सिपाही तिने संगलेके ॥२३॥ बहुत शीघ्र इच्छासों गतिवारो रथ मयको दीनो तामें बैठके चार लाख असुरनको संगले वल्वल निकसोहै ॥ २४ ॥ तब सेनापतिको पुत्र भूखोहो सो पे घरमें भोजन करतो रहिगयो युद्धके लिये नहीं निकलो है ॥ २५ ॥ तब याके पुत्रको नहीं आयो देखके सेनामें वल्वलके जे सेनापति है तिनने वल्वलसो कही है कि, महाराज सेनापतिको पुत्र नहीं आयो ॥ २६ ॥ तब वल्वलने हुकम दियो कि जाओ बाँधके लेआओ सोही वीर सिपाई गये और या

श्रुत्वापटहनिर्घोषंदैत्याःशीघ्रंभयातुराः ॥ गृहीत्वासर्वशस्त्राणिह्याजग्मुस्तेसभातलम् ॥ २० ॥ सैन्यपालस्ततःपूर्वंलक्षदैत्यैःपरिवृतः ॥ रथे नकवचीधन्वीनिर्जगामपुराद्बहिः ॥ २१ ॥ दुर्नेत्रोदुर्मुखश्चैवदुःखभावश्चदुर्मदः ॥ एतेवैमंत्रिणांपुत्राश्चत्वारस्तेविनिर्ययुः ॥ २२ मतंगजैर्महा मत्तैश्चंचलगैस्तुरंगमैः ॥ रथैश्चदेवधिष्ण्याभैर्विद्याधरसमैर्नरैः ॥ २३ ॥ सद्यःकामगयानेनमयदत्तेनवल्वलः ॥ स्वयंजगामयुद्धार्थेचतुर्लक्षै र्महासुरैः ॥ २४ ॥ सैन्यपालस्यपुत्रस्तुभोजनंकुरुतेगृहे ॥ बुभुक्षितश्चयुद्धायशीघ्रंसोपिननिर्गतः ॥ २५ ॥ नागतंतंविलोक्याथसैन्येवल्वलसै निकाः ॥ नृपायकथयामासुस्तस्यवार्तांचशंकिताः ॥ २६ ॥ ततस्तद्वचनाद्वीरावद्ध्वातंदामभीरुपा ॥ नृपायेचानयामासुःप्रफुल्लवदनेक्षणाः ॥ २७ ॥ तंदृष्ट्वाभर्त्संयित्वाचवल्वलश्चण्डशासनः ॥ भुशुण्डींवदनेचापिमारयामासवेगतः ॥ २८ ॥ दैत्याःसर्वेभयंप्रापुर्वधंतस्यनिरीक्ष्य च ॥ सैन्यपालस्तुसंग्रामेमृतंपुत्रंनिशम्यच ॥ २९ ॥ रथात्पपातदुःखार्तस्ताडयन्मस्तकंकरैः ॥ विललापभृशंसोपिपुत्रदुःखेनदुःखितः ॥३०॥ हापुत्रवीरपितरंत्यक्त्वामांजरठंरणे ॥ गतःशतघ्नीमार्गेणस्वर्गंमामविलोक्यच ॥३१॥ विनायुद्धेनहेपुत्रक्कगतोनृपशासनात् ॥ इत्येवंविलपंस्त त्ररोदरणमण्डले ॥ ३२ ॥ ततश्चमंत्रिणांपुत्राःशोचंतंप्रोचुरग्रतः ॥ ॥ मंत्रिपुत्राऊचुः ॥ ॥ रोदनंमाकुरुरणेशूरोसित्वंतुपालक ॥ ३३ ॥

सेनापतिके बेटाको रस्सीसो मुसक बाँधके प्रसन्न है मुख और नेत्र जिनके ये बांधके राजाके आगे लेआये है ॥ २७ ॥ तब प्रचंडशासनवारे वल्वलने सेनापतिके बेटाको धमकायो और बेटाके मुखमें वल्वलने एक भुशुंडी मारी है ॥ २८ ॥ तब ये याके पुत्रके वधको देखके सबको बडो भय भयोहै सेनापतिने भी अपने पुत्रको मरो सुनके ॥ २९ ॥ अपने हाथनसों मूँड कूटतो दुःखमें आर्त हैके रथमेंसो गिरपड़ो और पुत्रके दुःखसों बहुत कुछ दुःखी भयोहै ॥ ३० ॥ हाय वीर ! वृद्ध में पिता ता मोकों रणमें छोडके बिना देखेही या शतघ्नीके शीघ्रमार्गसों मोये यहांही छोडके तू स्वर्गको गयो ॥ ३१ ॥ विना युद्धकरे हाय राजाके हुकमसो कहां गयो ऐसे रणभूमिमे याके पिताने बहुत कुछ रुदन कियो है ॥ ३२ ॥ तब पुत्रशोकमें शोचकररहे सेनापतिते अगाडी आयके याके मंत्रीके पुत्रने समझायो और ये मंत्रिपुत्र ये बोले सेनापतिजी ! तुम रुदन मत करो हे पालक ! तुम

शूर हो ॥ ३३ ॥ देखो दुःख करनेसे मरो भयो तुमारो पुत्र अब नहीं आवेगो जन्म लेनेवालेकी मृत्यु अवश्यही होय है ॥ ३४ ॥ तामें धीर पुरुष शोच नहीं करे हैं मूर्खही नित्य शोच करेहैं कोई तो गर्भमेंही कोई जन्म लेतेही कोई बालकपनमें कोई युवापनमें और कोई वृद्धपनमें कोई शस्त्रसें कोई रोगसें कोई कोई दु खसें कोई गिरनेसें अपने कर्मनके वशसों दैवके बलसों सब मरेंगे कौन काऊको पुत्र कौन काऊको बाप कौन काऊको प्रिय कौन काऊकी माता विधाता सबको संयोग वियोग करे यामें संयोगमें आनंद और वियोगमें सबको दुःख होय है ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ परंतु ये सुख दुःख मूढ मनुष्यको ही होय हैं आत्मारामको नहीं होय हैं सो देख जब आत्मघाती हैके प्राणनको छोडे हैं तभी दुःखित होय है ॥ ३९ ॥ और पुनर्जन्म तथा नरकको निःसंदेह प्राप्त होयगो यासों यद्दूत्तमनके संग या महारणमें युद्धकर ॥ ४० ॥ क्षत्रियके लिये धर्मयुद्धसों अधिक परं श्रेय

दुःखेकृतेचत्वत्पार्श्वेनागमिष्यतिवैमृतः ॥ आजन्मतश्चजंतूनांमृत्युर्भवतिसांप्रतम् ॥ ३४ ॥ धीरास्तत्रनशोचंतिमूर्खाःशोचंतिनित्यशः ॥
गर्भेपिचमृताःकेचित्केचिद्विजन्ममात्रतः ॥ ३५ ॥ बालत्वेयौवनत्वेचवृद्धत्वेकेचिदेवहि ॥ केचिच्छस्त्रेणरोगेणदुःखेनपतनेनच ॥ ३६ ॥
सर्वेमृत्युंगमिष्यंतिदैवात्कर्मवशानराः ॥ कोवाकस्यपितापुत्रःकोवाकस्यप्रियाप्रसूः ॥ ३७ ॥ संयुनक्तिविधातावैवियुनक्तिचकर्मणा ॥ संयोगे
परमानन्दोवियोगेप्राणसंकटम् ॥३८॥ शश्वद्भवतिमूढस्यनात्मारामस्यनिश्चितम् ॥ आत्मघातीयदाभूत्वाप्राणांस्त्यजसिदुःखितः ॥ ३९ ॥
पुनर्जन्मचनिरयंव्रजिष्यसिनसंशयः ॥ तस्माद्यद्दूत्तमैःसार्द्धंयुद्धंकुरुमहारणे ॥ ४० ॥ क्षत्रियस्यपरंश्रेयोधर्मयुद्धान्नविद्यते ॥ धर्मयुद्धेनसंग्रामे
येहताःशत्रुसंमुखे ॥ ४१ ॥ व्रजंतितेविष्णुपदंलोकान्सर्वान्विहायच ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ एवंसंबोधितोदैत्यैःशोकंसर्वंविहायच ॥ ४२ ॥
सर्वान्वीरानागतांश्चददर्शरोषपूरितः ॥ दृष्ट्वासर्वान्ससंग्रामेशीघ्रंप्राहरुषाज्वलन् ॥ ४३ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांहयमेधखण्डेसैन्यपालसुतव
धोनामद्वात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३२ ॥ ॥ सैन्यपालउवाच ॥ ॥ अत्रागताश्चसर्वेपिधन्विनोयुद्धदुर्मदाः ॥ युवराजोनृपसुतोरणेचात्रनदृश्यते ॥
॥ १ ॥ सकिंकरिष्यतिगृहेमारयित्वाचमत्सुतम् ॥ सभुशुण्डीमुखेनापितन्मार्गंकिंनयास्यति ॥ २ ॥ इत्युक्त्वारोषताम्राक्षोग्रहीतुंनृपनन्दनम् ॥
जगामनगरींशीघ्रंसैन्यपालःप्रहर्षितः ॥ ३ ॥ सराजपुत्रोमदिरांपीत्वावैभोजनांतरे ॥ चकारशयनंरात्रौविस्मृतोमदविह्वलः ॥ ४ ॥

नहीं है जे शत्रुके सन्मुख धर्मयुद्ध करके संग्राममें मरेहैं ॥ ४१ ॥ वे सब लोकनको उल्लंघन करके विष्णुपदको जायहैं गर्गजी कहैहैं या प्रकार दैत्यननें समझायो तब ये सब शोकनको त्यागके ॥ ४२ ॥ आये सब वीरनको रोषसों पूर्ण हैके देखतोभयो सबनको संग्राममें देखके शीघ्रही रोषमें जलतो ये कहतोभयो ॥ ४३ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां द्वात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३२ ॥ सेनापति बोलो है कि, देखो सब दुर्मद धनुषधारी युद्धकरवेको यहां आये हैं पर राजकुमार जो युवराज हैं वो यहां संग्राममें नहीं दीखे है ॥ १ ॥ वो राजकुमर घरमें कहा करै है मेरे पुत्रको मरवायके आप घरमेंही बैठो है सो कहा भुशुंडीके मुखसों मेरे बेटाके मार्गको नहीं जायगो ॥ २ ॥ इतनी कहिके रोषसों लाल आँखन करके राजकुमरके ग्रहण करवेको ये सेनापति बडो प्रसन्न हैके शीघ्रतासों नगरीमें गयोहै ॥ ३ ॥ वा समय भोजनकर ये राजकुमर रात्रिमें मदिरामदमें विह्वल भयो पलंगपै

गैरहोस पराड़ो ॥ ४ ॥ सो याकी पत्नीने पटहको शब्द सुनके रोवती व भयविह्वल ह्वैके राजकुमार अपने पतिको जगायो है ॥ ५ ॥ कि हे वीर ! उठो उठो महाराज प्रातःकाल हैगयो है महाराज या भेरीके शब्दसों तुमरे पिताकी आज्ञा सुनाई परै है ॥ ६ ॥ कि जो कोई आज युद्ध करवेको नहीं जायगो ते वध करवेके योग्य है यासों आप बहुत जल्दी संग्राममें आउ और पिताजीसो जल्दी जायके मिलो ॥ ७ ॥ तब तो ये राजकुमारको ऐसी पत्नीने जगायो भी परन्तु ये चैतन्य नहीं भयो है तब याकी पत्नीने सेनासमेत वल्वलको गयो जानके फिर पतिको हुसियार कियोहै ॥ ८ ॥ तब तो ये राजकुमार निद्राको त्यागके उठो है और बाणसहित धनुषको लैके गणपति और शिवजीको मनमें स्मरण करतो रथमें बैठके युद्धके लिये गयो है ॥ ९ ॥ तब राजकुमारको आयो देखके सेनापति बड़े रोषसों बोलो है कि तैने दैत्यराजके हुकुमको कौनके बलसों लुप्त कियो

तत्पत्नीबोधयामासभर्तारंनृपनन्दनम् ॥ श्रुत्वापटहनिर्घोषंरुदतीभयविह्वला ॥ ५ ॥ उत्तिष्ठोत्तिष्ठवीरप्रातःकालोबभूवह ॥ त्वत्पितुःशासनंघुष्यंभेरीघोषेणश्रूयते ॥ ६ ॥ येनयास्यंतियुद्धार्थंतेवध्याहिसुतादयः ॥ तस्मात्त्वयाहिशीघ्रंत्वंगत्वाताततंविलोकय ॥ ७ ॥ प्रिययाबोधितःसोपिचैतन्योनबभूवह ॥ पुनःसाबोधयामाससससैन्येबल्वलेगते ॥ ८ ॥ ततःसनिद्रांचविहायचोत्थितःसद्योगृहीत्वासशरंधनुःकिल ॥ शिवंगणेशंमनसाचसंस्मरन्नगामयुद्धायरथेनभूपजः ॥ ९ ॥ तमागतंवीक्ष्यनृपस्यनन्दनमुवाचरोषेणतुसैन्यपालकः ॥ कथंत्वयादैत्यवरस्यशासनंविलोपितंकेनबलेनमेवद ॥ १० ॥ मत्सुतस्त्वादृशोभूत्वाशीघ्रंनागतवान्मृधे ॥ समारितोबल्वलेनशतघ्नीप्रमुखेनच ॥ ११ ॥ तस्माद्गच्छपितुःपार्श्वंसत्यवादीपितातव ॥ मारयिष्यतिशीघ्रंत्वंनेतुंत्वांप्रेषितोस्म्यहम् ॥ १२ ॥ वचस्तीक्ष्णंसमाकर्ण्यभयाच्छुष्कमुखस्तुसः ॥ पितुःपार्श्वंययौतेनसुधन्वादुःखितोयथा ॥ १३ ॥ ददर्शपितरंगत्वादैत्यवृंदैःपरिवृतम् ॥ रथस्थंकुपितंतत्रयुद्धनिरुद्धजयोत्सुकम् ॥ १४ ॥ दृष्ट्वातातंनमस्कृत्यव्रीडितोभयविह्वलः ॥ अधोमुखस्थितोभूमौदानवेंद्रस्यपश्यतः ॥ १५ ॥ बल्वलःकुपितःप्राहदंतान्दंतैर्विनिष्पिषन् ॥ आज्ञाभंगस्त्वयाकेनकृतस्त्वात्मविघातने ॥ १६ ॥

है सो बतायदे ॥ १० ॥ देख राजकुमार ! ऐसेही मेरे पुत्र संग्राममें नहीं आयोहो ताको बुलवायके तेरे बापने शतघ्नीसों मारगेरोहो ॥ ११ ॥ यासों तू अपने बापके पास जा तेरो पिता सत्यवादी है सो तोको मेरे पुत्रकी नाईं शीघ्रही शतघ्नीसों मारेगो याहीके लिये तेरे बुलायवेको हौं मोकूं भेजो है ॥ १२ ॥ ये वचन सुनतेही राजकुमारको मुख सूखगयो तब ये सुधन्वा मंत्रिपुत्रकी नाईं दुःखी ह्वैके बापके पास गयो है ॥ १३ ॥ तब या राजकुमारने दैत्यनके झुंडमें खड़े अपने पिताको देखो है रथमें बैठो है बड़ो कुपित और अति युद्धके जय करवेको उत्कंठित है ॥१४॥ पिताको देखके नमस्कार करो लज्जित ह्वैके भयसो विह्वल है नीचो मुखकर दानवेंद्रके देखते २ खडोभयोहै ॥ १५ ॥ तब वल्वल कुपित ह्वैके दांतनको किरकिरके बोलो क्यों रे कुपत तैने मेरी आज्ञा भंग कैसे कीनी है तू नहीं जाने कि जो कोई लड़वेको न निकसैगो याको मैं अपने हाथसों मारूंगो ॥ १६ ॥

सो या तेरे अपराधसों युद्धमंडलसों डरपोसों अपने प्राण बचायवेके लिये घरमें रह्यो सो तू कुपूत है मेरे शत्रुसमान है महामलीमस (मैलसों लिपटो) को तोको शतघ्नीवदन (तोपके मोडे)
सों मरवाऊंगो ॥ १७ ॥ वीर बल्वल पुत्रसों ये कहिके दुःखसों डूबो पसीना जाके आये सो मनमें विचार करनलगो कि, मैंने ये प्रतिज्ञा कहा कीनी ॥ १८ ॥ हाय बिना अपराध मैंने
सैन्यपालको पुत्र मारगेरे वाही पापसों मेरो पुत्र मरेगो यामें संदेह नही॥ १९॥ जो मैं वीरपुत्रको बलात्कारसों मृत्युके मुखसें बचाऊंगो तो मेरे सब सेनाके मेरी हांसी करेंगे और गाली देयँगे.२०॥
या प्रकार शोचमें डूब रहो दुःखमें मग्न पुत्रके शोकसों खिन्न जाको मन ऐसे राजाको देखके रोषके मारे हँसतो अमर्ष जाको उत्पन्नभयो ऐसो सैन्यपाल राजाबल्वलको सेनापति ये वाक्य बोलो
॥ २१ ॥ देखो राजन् ! तुम या अपने कुपुत्रको शीघ्रही मरवायगेरोगे तब पीछे दानवनको हमारी यादवनसों संग्राम होयगो॥२२॥हे दैत्येंद्र!तू सत्यवादी है और ये कर्म बडो दारुण है

तस्माद्विभीतंकिलयुद्धमण्डलाद्गृहेगतंप्राणपरीप्सयासुतम् ॥ कुनन्दनंशत्रुसमंमलीमसंहित्वाशतघ्नीवदनेनहन्म्यहम् ॥ १७ ॥ इत्युक्त्वास्वसुतं
वीरोदुःखादश्रुपरिप्लुतः ॥ खिन्नःप्रत्याहमनसिप्रतिज्ञाकिंकृतामया ॥ १८ ॥ अहोविनापराधेनसैन्यपालसुतोहतः ॥ तेनपापेनमत्पुत्रोमारि
ष्यतिनसंशयः ॥ १९ ॥ मोचयिष्येयदिसुतंवीरंमृत्युमुखाद्बलात ॥ तदामत्सैनिकाःसर्वेमांशपंतिहसंतिच ॥२०॥ शोचंतमित्थंनृपतिंचदुःखितं
स्वपुत्रशोकेनतुखिन्नमानसम् ॥ विलोक्यरोषेणहसन्नमर्षितोह्युवाचवाक्यंकिलसैन्यपालकः ॥ २१ ॥ ॥ सैन्यपालउवाच ॥ ॥ एनं
मारयशीघ्रंत्वंस्वपुत्रंचकुनंदनम् ॥ पश्चाद्भवतिसंग्रामोयादवानांचदानवैः ॥ २२ ॥ त्वंसत्यवादीदैत्येंद्रइदंकर्मचदारुणम् ॥ नकरिष्यसि
दुःखेननिरयस्तेभविष्यति ॥ २३ ॥ सत्याद्रामसमंपुत्रंतत्याजकोशलेश्वरः ॥ हरिश्चंद्रःप्रियांपुत्रंस्वात्मानंचैवभूपते ॥ २४ ॥ बलिश्चैव
महींसर्वांजीवनंचविरोचनः ॥ अकीर्तिंचशिबिश्चैवदधीचःस्वतनुंयथा ॥ २५ ॥ पृषध्रंतुगुरुश्चैवरंतिदेवश्चभोजनम् ॥ आज्ञाभंगकरंपुत्रं
तथामारयत्वंनृप ॥ २६ ॥ त्वयापूर्वंचयत्प्रोक्तंस्वपुत्रमपिभ्रातरम् ॥ आज्ञाभंगकरंहन्मिशीघ्रमन्यस्यकाकथा ॥ २७ ॥ तस्मिन्देशेचवस्त
व्यंयस्मिन्भूपश्चसत्यवाक् ॥ तस्मिन्देशेनवस्तव्यंयस्मिन्भूपोह्यसत्यवाक् ॥ २८ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ इतितद्वाक्यमाकर्ण्यबल्वलः
खिन्नमानसः ॥ मारणार्थंतुतस्यापितस्मैचाज्ञांचकारह ॥ २९ ॥

यदि दुःखके मारे न करोगे तो तेरे लिये नरक होयगो ॥२३॥ देखो सत्यके निमित्तसों दशरथने रामचंद्रसे पुत्रको वनमें निकासे हे और हरिश्चंद्र राजाने सत्यके पीछे अपने भार्या पुत्रको
और अपने आपेको परित्याग करदिये हे ॥२४॥ बलि राजाने सत्यके लिये सब भूमिको और विरोचन दैत्यने सत्यके लिये अपनो जीवन शिबिने अकीर्तिको और दधीच ऋषिने अपने
शरीरको सत्यके लिये परित्याग करदिये हैं ॥ २५ ॥ और याही सत्यके पीछे गुरुने पृषध्रको रंतिदेव राजाने भोजनको त्याग दिये हैं ऐसेही आज्ञाभंग करनेवारे पुत्रको हे नृप !
तुमभी मरवायगेरो ॥ २६ ॥ जो तुम पहले कहिचुकेहो कि, जो मेरी आज्ञाको नही मानेगो वो बेटा होयगो या भाई होयगो तो वाकोहू मरवायगेरोंगो औरको तो बातही कहा
है ॥ २७ ॥ वाही देशमें रहे जा देशमें सत्यवाक् राजा होय जा देशमें मिथ्यावादी राजा होय वा देशमेंहू न रहै ॥ २८ ॥ गर्गजी कहेहैं कि, सेनापतिके या कहेको सुनके

चल्चलने खिन्न मन ह्वैके पुत्रकेहू मारवेको सेनापतिके लिये आज्ञा दीनी ॥ २९ ॥ फिर ये दुःखमग्न ह्वैके यादवनके सन्मुख गयो तब सैन्यपालने जायकें याकी आज्ञा याके पुत्रके आगे निवेदन करी है ॥ ३० ॥ तब पिताके कहेको सुनके ये कुनंदन याके पुत्रने कही है, भाई सुन तेरो यामें दोष नहीं है परवश ह्वैके तोको मालिककी आज्ञा करनी परेगी ॥ ३१ ॥ देखौ परशुरामजीने पिताकी आज्ञासो माताको शिर काट गेरोहो सो हे सैन्यपाल ! मैं भी तयार हूँ मैंने अपनी धर्मक्रिया जो करवेलायक ही सो करचुको हूं ॥ ३२ ॥ मोकूं मरवेसो भय नहींहै शतघ्नीके मोंडे सों भलेही बाँधदेउ इतनी कहिके अपनो स्वर्णको और मोतीनके हार किरीट बाजू कुंडल, कडूला सब उतारके ब्राह्मणनको देदिये तब ब्राह्मणनने दुःखपायकें आशीर्वाद दिये ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ तब फिर न्हायके तीर्थकी मृत्तिकाको शरीरमे लगायके तुलसीकी मालाको कंठमे गेरके और तुलसीदलको मुखमें धरके

ततोजगामदुःखाढ्योयदूनांसंमुखेतुसः ॥ सैन्यपालस्तुतस्याज्ञांतत्पुत्रायन्यवेदयत् ॥ ३० ॥ श्रुत्वाप्रत्याहवचनंशीघ्रंतस्मैकुनंदनः ॥ ॥ राजपुत्रउवाच ॥ ॥ कर्त्तव्याचनृपस्याज्ञात्वयापरवशेनवै ॥ ३१ ॥ रामेणतुहृतंशीर्षंस्वमातुःपितुराज्ञया ॥ सैन्यपालप्रतीतोहंकृताधर्मक्रियामया ॥ ३२ ॥ मरणान्नभयंमह्यंशतघ्न्यांचनिवेशय ॥ इत्युक्त्वाराजपुत्रस्तुस्वकिरीटंतथांगदम् ॥ ३३ ॥ मुक्ताहारंस्वर्णहारंकुण्डलेकटकानिच ॥ ब्राह्मणेभ्योददौसर्वंतेदुःखादाशिषंददुः ॥ ३४ ॥ ततःस्नात्वासतीर्थस्यलेपयित्वाचमृत्तिकाम् ॥ तुलसीपल्लवंमालांमुखेकण्ठेनिधायच ॥३५॥ ब्रुवंश्श्रीकृष्णरामेतिचकारस्मरणंहरेः ॥ सैन्यपालस्तुतंशीघ्रंगृहीत्वाभुजयोर्बलात् ॥ ३६ ॥ कारयामासराजेंद्रशतघ्नीवदनेरुषा ॥ हाहाकारस्तदैवासीत्सैनिकारुरुदुर्भृशम् ॥ ३७ ॥ रुरोदबल्वलस्तत्ररुरुदुस्तेद्विजातयः ॥ हृष्ट्वाशतघ्नींतत्रापिप्रततांमदपूरिताम् ॥ ३८ ॥ ताम्रगोलकसंयुक्तामग्नियुक्तांभयंकराम् ॥ सराजपुत्रःश्रीकृष्णंसर्वव्यापिनमीश्वरम् ॥ ३९ ॥ अश्रुपूर्णमुखोभूत्वाप्रत्याहविमलंवचः ॥ ४० ॥ कृष्णंमुकुन्दमरविंददलायताक्षंशंखेन्दुकुंददशनंनरनाथभूपम् ॥ इंद्रादिदेवगणवंदितपादपद्मंप्राणप्रयाणसमयेचहरिंस्मरामि ॥४१॥ श्रीकृष्णगोविंदहरेमुरारेश्रीकृष्णगोविंदकुशस्थलीश ॥ श्रीकृष्णगोविंदव्रजेशभूपश्रीकृष्णगोविंदभयात्प्रपाहि ॥ ४२ ॥

॥ ३५ ॥ श्रीकृष्णके नामको मुखसो उच्चारण करतो हरिको मनमे स्मरण करनलगो तब सैन्यपालने राजकुमारके दोनों हाथ पकरके जबरनसो ॥ ३६ ॥ कुपित ह्वैके तोपके मोंडेमे बाँधदियो तब बड़ो हाहाकार भयो सैनिक अतिशय रोवनलगे ॥ ३७ ॥ तब बल्वल हू रोवनलगो और द्विजातीहु रोवन लगे तहाँहूं मद (दारू) सो भरी शतघ्नी (तोप) को ॥ ३८ ॥ ताम्रके गोलासों भरी अग्निसे युक्त अति भयंकरको देखके या राजकुमरने सर्वव्यापी कृष्ण ईश्वरको स्मरण करतो ये बचन बोलो है ॥ ३९ ॥ ४० ॥ मुकुंद कमल दलके समान जिनके नेत्र शंख कुंद और चंदके समान श्वेत जिनके दन्त इंद्रादि देवगणसों वंदन किये जिनके पादपद्म ऐसे हरि श्रीकृष्ण तिनको प्राणप्रयाणके समय मे प्रणाम करूँ हूं हे श्रीकृष्ण ! हे गोविंद ! हे हरे ! हे मुरारे ! हे श्रीकृष्ण ! हे गोविद ! हे द्वारिकेश ! हे श्रीकृष्ण ! हे गोविंद ! हे व्रजेश भूप ! हे श्रीकृष्ण ! हे गोविंद !

या भयसों मेरी रक्षा करौ ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ हे गोविंद ! तेरे स्मरणसों ग्राहके भयसों गजराज छूटगयो स्वायंभू मनु, प्रह्लाद, अंबरीष, ध्रुव, आनर्तराज कक्षीवान, रैवत
चंद्रहास इनने जैसे तेरी शरण लीनीहो मैंने हूं तेरी शरण लीनी है ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ अहो प्रभो मैंने अनिरुद्धको संग्राममें प्रसन्न न कियो विनाही संग्रामकरे पहलेही मैं मरूँ
हूँ ॥ ४५ ॥ मैंने यादव तुष्ट नहीं किये कृष्णके पुत्रनको मैं सूरतहूँ न देखी शार्ङ्गके बाणनसों शरीर मैंने अपनो घायल न करायो ॥ ४६ ॥ शूर वीर कुनंदन जो मैं ता मेरी
चोरकीसी गती भई मैं तुमारो भक्त ता मेरी सब हँसी करैहैं ॥ ४७ ॥ जाको देखके यमराजहू चपलके समान आचरण करै हैं और जाके भयसों विघ्न करनवारेहू स्वतः मरे हैं
ता मोकों पूज्य (पूजन करने योग्य) कृष्णभक्तको ये तोप कैसे मारैगी ॥ ४८ ॥ गर्गजी कहैहैं या प्रकार ये कुनंदन कहिही रह्यो है कि, सेनापतिकी आज्ञासे काहूने

स्मरणात्तवगोविन्दग्राहान्मुक्तोमतंगजः ॥ स्वायंभुवश्चप्रह्लादोंबरीषोध्रुवस्तथा ॥ ४३ ॥ आनर्त्तश्चैवकक्षीवान्मृगेंद्राद्बहुलातथा ॥ रैवतश्चंद्र
हासश्चतथाहंशरणंगतः ॥ ४४ ॥ पूर्वंभवतिमेमृत्युःसंग्रामंचविनाह्यहो ॥ नतोषितश्चप्रधनेऽनिरुद्धोविशिखैर्मया ॥ ४५ ॥ नतोषितायादवा
श्चनदृष्टाःकृष्णनंदनाः ॥ शार्ङ्गमुक्तैश्चविशिखैर्नदेहःशकलीकृतः ॥ ४६ ॥ कुनंदनस्यशूरस्यस्तेनस्येवाभवद्गतिः ॥ त्वद्भक्तंमांचपापिष्ठास्त
स्मात्सर्वेहसंहिति ॥ ४७ ॥ यंवीक्ष्यभूमौचपलायतेवैयमोमरिष्यंतिविनायकाश्च ॥ निरंकुशंकृष्णजनंचपूज्यंकथंशतघ्नीकिलमांहनि
ष्यति ॥ ४८ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ इत्थंवदतिशूरेवैसैन्यपालस्यचाज्ञया ॥ शतघ्नींमुमुचेकश्चिद्धाहाशब्दस्तदाभवत् ॥ ४९ ॥
स्मरणात्कृष्णचंद्रस्यचित्रमेकंबभूवह ॥ शतघ्नीशीतलाजाताज्वालाशांतिंगतानृप ॥ ५० ॥ दृष्ट्वाश्चर्यंचतत्रापिजनाःसर्वेनृपादयः ॥ विसि
ष्मूराजशार्दूलसैन्यपालस्तदाब्रवीत् ॥ ५१ ॥ शतघ्न्यांशुष्कमदिरागोलकेनसमन्विता ॥ नविद्यतेत्वसौतस्मान्नमृतोरणमण्डले ॥ ५२ ॥
इतितस्यवचःश्रुत्वाप्रोचुर्वीरारुषान्विताः ॥ अयंनिष्किल्बिषःशूरःकृष्णभक्तोमहामतिः ॥ ५३ ॥ रक्षितस्तेनदुःखाद्वैपुनर्हंतुंचनार्हसि ॥
तेषांवाक्यंसमाकर्ण्यसैन्यपालोरुषान्वितः- ॥ ५४ ॥ ददर्शराजपुत्रंवैशतघ्नीवदनेस्थितम् ॥ जपंतंकृष्णकृष्णेतिस्रजामीलितलोचनम् ॥ ५५ ॥

शतघ्नीपै बत्तीधरके चलायदीनी सोई तो एक संग हाहाकार मचो है ॥ ४९ ॥ तब श्रीकृष्णके स्मरणसों एक बडो आश्चर्य भयो हे नृप ! वो शतघ्नी शीतल हैगई और हे नृप !
वो ज्वाला शांतिको प्राप्त भईहै ॥ ५० ॥ तब या आश्चर्यको देखके हे नृप ! राजानसों आदि लेके जितने मनुष्य हैं वे सब विस्मित भये हैं तब ये सेनापति फिर बोलो है ॥ ५१ ॥
अरे भाई हू ये तोप रंजक चाट गई है सो गोलासहित अबके फिर रंजक धरके बाती धरौ याको रंजक उडगयो है यासों नहीं चली है याहीसों राजकुमार नहीं मरोहै ॥ ५२ ॥
ये सेनापतिको वचन सुनके वीर पुरुष कुपित हैके बोले हैं कि, महाराज ये राजकुमर निर्दोष है बडो बुद्धिमान् है कृष्णचंद्रको भक्त है ॥ ५३ ॥ सो श्रीकृष्णकरकेही रक्षा कियो
गयो है सो अब दूसरी बेर आप ऐसो काम मत करौ विनके कहेको सुनके सेनापति कुपित भयो है ॥ ५४ ॥ और राजकुमरको शतघ्नीके मुखपें खडो देखो है कृष्ण कृष्ण ऐसे

जप कर रह्यो है आँख बहरहे हैं आँसू जाकें बहिरहे हैं ॥ ५५ ॥ तब या दुष्टने अपने हाथसों तोपपे बत्ती धरी है तब तो ये तोपक फटके सो टूक ह्वगय और वज्रपातके समान शब्द भयो है ॥ ५६ ॥ वो गोला जो फटके उडोहै सो पासखडे या सेनापतिकेही लगो है सो सेनापति मरगयो है और जितने याके अनुग है वो सब याकी आगसों जरगये है ॥ ५७ ॥ और हाय हाय शब्दको करते कोई भाग गये है कितनेही याकी गर्जनासों बधिर हैगये है कितनेही तो धूँआँसोंही विह्वल हैगये हैं ॥ ५८ ॥ तब सबनने राजकुमर निर्भय देखो है तब बल्वलसहित सब कोई जयजय करन लगेहै हे नृपेश्वर ! ॥ ५९ ॥ और सब दैत्य ये बोले है कि, देखो भाई जाकी श्रीकृष्ण रक्षा करे है ताको कौनसो मनुष्य मारसके हैं जो भक्तको मारेबे आवे है सो आपही मरजाय है ॥ ६० ॥ याते भाईहो कृष्णके समान कोई नहीं है जा कृष्णने राजकुमरकी मृत्युभयसों रक्षा

दृष्ट्वातंद्विपुनर्हंतुंशतघ्नींसुमुचेखलः ॥ साशतघ्नीतदाभिन्नाशब्दोवज्रनिपातवत् ॥ ५६ ॥ बभूवसैन्यपालस्तुगोलकेनमृतोभवत् ॥ तथा तदनुगास्तस्यज्वालयाज्वलिताःकिल ॥ ५७ ॥ हाहाशब्दंप्रकुर्वंतोदुद्रुवुः केचिदेवहि ॥ केचिद्वैबधिरीभूताःकेचिद्धूमेनविह्वलाः ॥ ५८ ॥ ततश्चददृशुःसर्वेनृपपुत्रंचनिर्भयम् ॥ चक्रुर्जयजयारावंबल्वलाद्यानृपेश्वर ॥ ५९ ॥ ॥ दैत्याऊचुः ॥ ॥ यंचरक्षतिश्रीकृष्णस्तंकोभक्षतिमानवः ॥ भक्तंहंतुंचागतोयःसविनश्यतिदैवतः ॥ ६० ॥ तस्मात्कृष्णसमोनास्तियेनायंरक्षितोभयात् ॥ सर्वेवयंनमस्यामस्तंकृष्णंभक्तवत्सलम् ॥ ६१ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायांहयमेधखण्डेराजपुत्रजीवनंनामत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३३ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ अथवैबल्वलःपुनरोहयित्वारथेमुदा ॥ तेनसार्द्धंससैन्यस्तुयुद्धार्थंप्रययौत्वरम् ॥ १ ॥ नानाशस्त्रधराःसर्वेनानावाहनसंस्थिताः ॥ नानाकंचुकसंयुक्तानानारूपाभयंकराः ॥ २ ॥ गजेंद्रसदृशाःपुष्टामृगेंद्रसमविक्रमाः ॥ कंपयंतश्चपृथिवींवृष्णीनांसंमुखेययुः ॥ ३ ॥ तानागतान्वहून्दैत्याननिरुद्धस्तुशंकितः ॥ रक्षणार्थंचसर्वेषांचक्रव्यूहमकल्पयत् ॥ ४ ॥ सर्वतोयादवाःशूराःसर्वेशस्त्रधराःकिल ॥ गजैरथैस्तुरंगैश्चबभूवुः परिमंडिताः ॥ ५ ॥ तेषांमध्येस्थिताराजन्निंद्रनीलादयोनृपाः ॥ अक्रूरकृतवर्माद्यास्तेषांमध्येस्थिताःशुभाः ॥ ६ ॥ तेषांमध्येचराजेंद्रगदाद्याःकृष्णभ्रातरः ॥ तेषांमध्येमहावीराःसांबदीप्तिमतादयः ॥ ७ ॥

कीनीहै याही भक्तवत्सल कृष्णको हम नमस्कारकरै है ॥ ६१ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३३ ॥ अनंतर ये बल्वल दैत्य पुत्रको रथमे बैठारके संगमें लेके सेना सहित बहुत शीघ्रतासो युद्धके लिये निकसोहै ॥ १ ॥ नाना शस्त्रनको हाथनमें लिये नाना वाहनपे सवार भये नाना कवचनको धारण किये नाना प्रकारके भयंकर जिनके रूप ॥ २ ॥ हाथीके समान पुष्ट मृगेंद्रके समान जिनके पराक्रम वे भूमिको कँपावते यादवनके सन्मुख आये हैं ॥ ३ ॥ आये इन दैत्यनको देखके अनिरुद्ध शंकायुक्त भये है तब इनकी रक्षाके लिये चक्रव्यूह बनायो है ॥ ४ ॥ सब ओरसो शूरवीर यादव सब शस्त्रनको धारण करे हाथी, रथ और रथनसो परिमंडित भये है ॥ ५ ॥ तिनके मध्यमे स्थित भये इंद्रनील आदिक राजा अक्रूर कृतवर्मा आदिक तिनके मध्यमे स्थित भये है ॥ ६ ॥ इनके मध्यमे हे राजेंद्र ! गद आदिक कृष्णके भाई

और उनके हू मध्यमें बडे वीर सांब और दीप्तिमानसों आदिक स्थित भये हैं ॥ ७ ॥ ऐसे चक्रव्यूहको निर्माण करके हे भूपते ! सबके बीचमें अनिरुद्धजी स्थित भये हैं ॥ ८ ॥
तब वहाँ सिंधुके तटपे हे नृप ! घोरयुद्ध भयो है दानवनके संगमें यादवनको ऐसो युद्ध भयो है मानों परस्पर दो समुद्र लड रहे हैं ॥ ९ ॥ वहाँ रथिनसों रथिनको हाथीनसों
हाथीनको अश्वके सवारनसों घोडेवारनको संग्राम भयो है और पदातीनसों पदातीनको संग्राम भयो है ॥१०॥ तब तीक्ष्ण बाण, खड्ग, चर्म, गदा, पोलादी, फाँसी और फरसा, शतघ्नी
और भुशुंडी इनसों संग्राम भयो है ॥ ११ ॥ यादवनके मारे जे बल्वलकी सेना हैं वो सब अपने अपने रणको छोड भयभीत ह्वैके भागे हैं ॥ १२ ॥ तब सेनाके पाँवनकी धूल उडी है
सो सूर्यको और आकाशको ढकती भई है वा अंधकारमें सब महादैत्य रणसों पराङ्मुख भये हैं ॥१३॥भागतेमें कोई गढेलानमें जाय परे हैं कितनेई कूँआनमें परे हैं और तालबनमें

चक्रव्यूहंविनिर्मायचेद्दशंतत्रभूपते ॥ तन्मध्येकार्ष्णिपुत्रस्तुदंशितःसंस्थितोभवत् ॥ ८ ॥ बभूवतुमुलंयुद्धंतत्रसिंधुतटेनृप ॥ यदुभिर्दानवानां
चह्यब्धीनामब्धिभिर्यथा ॥ ९ ॥ रथिनोरथिभिस्तत्रगजाश्चाहागजैःसह ॥ अश्ववाहैरश्ववाहावीरावीरैःपरस्परम् ॥ १० ॥ युयुधुस्तीक्ष्णबाणै
श्चखड्गचर्मगदर्ष्टिभिः ॥ पाशैःपरश्वधैराजञ्छतघ्नीभिर्भुशुण्डिभिः ॥ ११ ॥ हन्यमानाश्चयदुभिर्बल्वलस्यचसैनिकाः ॥ सर्वेस्वंस्वंरणंत्य
क्त्वादुद्रुवुस्तेभयान्विताः ॥१२॥ रुरोधगगनंसूर्यंसैन्यपादरजोभृशम् ॥ अंधकारेमहादैत्यारणात्सर्वेपराङ्मुखाः॥१३॥केचिन्निपतिताःकूपेकेचि
द्गर्तेह्यधोमुखाः ॥ केचित्तडागेवाप्यांवैयदूनांसायकैर्हताः ॥ १४ ॥ ततोहष्ट्वाबलंभग्नंबल्वलोरोषपूरितः ॥ चतुर्भिर्मंत्रिणांपुत्रैःस्वपुत्रेणाजगा
मह ॥ १५ ॥ अनिरुद्धोबल्वलेनतत्रायुद्धचन्महामृधे ॥ दुर्नेत्रेणबृहद्बाहुर्दुर्मुखेणाऽरुणोबली ॥ १६ ॥ न्यग्रोधोदुःस्वभावेनदुर्मदेनकविस्त
था ॥ कुनन्दनेनसंग्रामेकृष्णपुत्रःसुनंदनः ॥ १७ ॥ एवंबभूवसंग्रामोदेवविस्मयकारकः ॥ प्रगतास्तत्रराजेंद्रसर्वेकार्तिकवासराः ॥ १८ ॥
बल्वलःकुपितोराजन्धनुष्टंकारयन्मुहुः ॥ इंद्रनीलंत्रिभिर्बाणैःषड्भिर्हेमांगदंमृधे ॥ १९ ॥ अनुशाल्वंचदशभिरक्रूरंदशभिस्तथा ॥ गदंद्वादश
भिर्बाणैर्युयुधानंचपंचभिः ॥ २० ॥ पंचभिःकृतवर्माणमुद्धवंदशभिःशरैः ॥ कार्ष्णिंजंशतबाणैश्चविव्याधसमरेऽसुरः ॥ २१ ॥ तच्छरैःसर
थाःसर्वेबभ्रमुर्घटिकाद्वयम् ॥ तुरगाःपंचतांप्राप्ताश्चूर्णीभूतारथारणे ॥ २२ ॥

कोई वापीनमें जाय परे हैं ॥ १४ ॥ तब तो रोषसों दूषित भयो बल्वल अपनी सैन्य भग्नभई देखके चार तो मंत्रिपुत्र और एक अपनो पुत्र इनको लेके आयो है ॥ १५ ॥ तब वा
संग्राममें बल्वलतें तो अनिरुद्ध दुर्नेत्रसों बृहद्बाहु दुर्मुखसों अरुण ॥ १६ ॥ दुःस्वभावसों न्यग्रोध दुर्मदसों कवि और कुनंदनसों कृष्णपुत्र सुनंदन लडतो भयो ॥ १७ ॥ या प्रकारसों हे
राजेंद्र ! देवतानको विस्मय करनवारो संग्राम भयो है लडते २ कार्तिकके सब दिन बीत गये हैं ॥१८॥ तब बल्वलने कुपित ह्वैके धनुष टंकारो इंद्रनीलके तीन बाण और हेमांगदके छै बाण
मार ॥१९॥ अनुशाल्वके दश बाण अक्रूरके दश बाण गदके द्वादश (बारह) बाण सात्यकिके पाँच बाण कृतवर्माके पाँच बाण उद्धवके दश बाण अनिरुद्धके सौ बाण या असुरने
युद्धसे मारे हैं ॥ २० ॥ २१ ॥ तब या दैत्यके बाणनके मारे जिनके बाण लगे वे सब अपने अपने रथन करके सहित दो घडी पर्यंत भ्रमण करतेभये रथ चूर्णीभूत भये हैं और

घोड़े मरगये ॥ २२ ॥ तब या दैत्यके लाघवको देखके सब यादव विस्मयमें मग्न हैके हे मानद ! अनिरुद्ध आदिक सब रथनमें बैठे हैं ॥ २३ ॥ हे राजन् ! तब बल्वल दैत्यहू और वीरनको देखनेको गयो है तब नेत्रनको अरुण करके बड़े क्रोधमें मग्न हैके अनिरुद्ध बोले हैं ॥ २४ ॥ आज अपने पराक्रमको दिखायके मेरे आगे खड़ो है जा हे दैत्य ! अब कहां जायगो मेरे तीक्ष्ण बाणनको देख ॥२५॥ तब ये कुनंदन नामको युवराज याके कहेको सुनके बड़ी शीघ्रतासों बल्वलके देखते ये वचन बोलो है ॥ २६ ॥ हे कार्ष्णिज ! (अनिरुद्ध) संग्राममें दैत्येंद्रके देखनेको तू योग्य नहीं है यासों या रणांगणमें पहले मेरे बलको देखो ॥ २७ ॥ यह सुनकर अनिरुद्धजी बोले-कि, हे दैत्यपुत्र ! तू अभी बालक है यासों अपने घरमें जायके कृत्रिम (खिलौना) नसों खेल तू अभी युद्ध करनेको योग्य नहीं है ॥ २८ ॥ तब राजकुमर (कुनंदन) बोलो कि हे अनिरुद्ध ! आज बालकको मेरो महावीरन संग

तद्धस्तलाघवंदृष्ट्वायादवाविस्मयंगताः ॥ रथानारुरुहुःसर्वेनिरुद्धाद्याश्चमानद ॥ २३ ॥ बल्वलोपिययौराजन्नन्यान्वीरान्विलोकितुम् ॥
अनिरुद्धस्ततःप्राहक्रोधादरुणलोचनः ॥ २४ ॥ तिष्ठतिष्ठममाग्रेयद्दर्शयित्वापराक्रमम् ॥ कुत्रयास्यसिहेदैत्यपश्यमन्निशिताञ्छरान् ॥२५॥
इतितस्यवचःश्रुत्वायुवराजःकुनन्दनः ॥ उवाचवचनंशीघ्रंबल्वलस्यचपश्यतः ॥ २६ ॥ ॥ राजपुत्रउवाच ॥ ॥ दैत्येंद्रंचरणेद्रष्टुंत्वंतु
नार्हसिकार्ष्णिज ॥ तस्मान्मदीयंचबलंपूर्वंपश्यमृधांगणे ॥ २७ ॥ ॥ अनिरुद्धउवाच ॥ ॥ त्वंबालोसिदैत्यपुत्रयुद्धंकर्तुंचनार्हसि ॥
तस्माच्चस्वंगृहंगत्वाक्रीडनंकुरुकृत्रिमैः ॥ २८ ॥ ॥ राजपुत्रउवाच ॥ ॥ अत्रपश्यमहावीरैर्बालस्यममक्रीडनम् ॥ गृहेयदिकरिष्यामितत्र
कोपिनपश्यति ॥ २९ ॥ इत्युक्त्वाचण्डकोदण्डेदधारशतसायकान् ॥ तताडकार्ष्णिजंतैश्चरथस्थंदर्शयन्बलम् ॥ ३० ॥ तैर्बाणैःसरथःसोपि
ससूतःसतुरंगमः ॥ विभ्रमन्नभमार्गेणपपातकपिलाश्रमे ॥ ३१ ॥ हाहाकारस्तदैवासीदनिरुद्धेगतेसति ॥ ततःक्रुद्धाश्चतंहंतुंसांबाद्याआययु
र्मृधे ॥ ३२ ॥ आगतांस्तान्बहून्दृष्ट्वायुवराजःप्रहर्षितः ॥ सांबंचदशभिर्बाणैःपंचभिश्चमधुंतथा ॥ ३३ ॥ बृहद्बाहुंत्रिभिर्बाणैश्चित्रभानुंचपं
चभिः ॥ वृकंचदशभिर्युद्धेसप्तभिश्चारुणंशरैः ॥३४॥ पंचभिःसंग्रामजितंसुमित्रंचत्रिभिःशरैः ॥ दीप्तिमंतंत्रिभिर्बाणैर्भानुंचदशभिर्मृधे ॥३५॥
वेदबाहुंपंचभिश्चपुष्करंसप्तभिःशरैः ॥ अष्टभिःश्रुतदेवंचसंमुखस्थंसुनन्दनम् ॥ ३६ ॥

खेलवो देख जो मैं घरमें खेलोंगो तब मेरे खेलको कौन देखे गो ॥ २९ ॥ इतने वचनको कहिके प्रचंड अपने (कोदंड) धनुषमें सौ बाण लगावतो भयो तिनी बाणनसों रथमें बैठे अनिरुद्धको मारतो भयो ॥ ३० ॥ तिन बाणनसों रथ, सारथि और घोड़न सहित अनिरुद्ध आकाशमार्गमें भ्रमण करतो कपिलाश्रममें जायके पड़े है ॥ ३१ ॥ तब अनिरुद्धके गयेपै हाहाकार मचोहै तब तो या राजकुमरके मारनेको सांब आदिक आये है ॥ ३२ ॥ अयेनको उनको देखके युवराज बड़ो हर्षित भयो और दश बाण सांबके और पाँच बाण मधुके मारे हैं ॥ ३३ ॥ तीन बाणनसों बृहद्बाहुको चित्रभानुको पांच बाणनसों दश बाणनसों वृकको सात बाणनसों अरुणको पांच बाणनसों संग्रामजितको तीन बाणनसों सुमित्रको तीन बाणनसों दीप्तिमान्को दश बाणनसों भानुको पंच बाणनसों वेदबाहुको सात बाणनसों पुष्करको आठ बाणनसों श्रुतदेवको बीस बाणनसों

सुनंदनको दश बड़े तीक्ष्ण बाणनसों विरूपको नौ बाणनसों चित्रबाहुको दश बाणनसों न्यग्रोधको और नौ बाणनसों कविको राजकुमारने प्रहार कियो है या प्रकार करके गरजना करते या कुनंदन बड़े अभिमानीने गर्जना कीनी है ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ तब या कुनंदनके बाणनसों भ्रमण करते ये सब रथ और घोडेनके सहित कोई एक योजनपै कोई दो योजनपै कोई पांचकोशपै जायके परेहैं ॥ ३९ ॥ हे नृपसत्तम ! तब तो सेनामें बडो हाहाकार भयो हे राम ! हे कृष्ण ! ऐसे सब यादव रोये है ॥ ४० ॥ तब गदादिक सब तीक्ष्ण बाणनको छोडते इंद्रनीलादिक सब क्रोधमें मग्न ह्वैके आये है ॥ ४१ ॥ तब इन वीरनको आये देखके या महाबल राजपुत्रने सबनके ऐसे बाण मारेहैं सो वे सब मूर्च्छित ह्वैके गिरपडे हैं ॥ ४२ ॥ ताके पीछे या बल्वलके बेटाने बाणनके समूहसों सब शूरवीर यादवनको ताडन किये है तब याके बाणनसों बहुतसे तो मरगये

विंशत्यासायकैस्तीक्ष्णैर्विरूपंदशभिस्तथा ॥ चित्रबाहुंचनवभिर्न्यग्रोधंदशभिःशरैः ॥ ३७ ॥ कविंचनवभिर्बाणैस्तताडप्रधनेबली ॥ शंखंद्ध्मौमुदायुक्तोनदन्मानीकुनन्दनः ॥ ३८ ॥ तद्बाणैर्विभ्रमंतश्चसरथाःसतुरंगमाः ॥ पेतुःकेचिद्योजनेचपंचक्रोशेद्वियोजने ॥ ३९ ॥ हाहाकारेतदाजातेसेनायांनृपसत्तम ॥ रुरुदुर्यादवाःसर्वेरामकृष्णेतिवादिनः ॥ ४० ॥ तदागदादयःसर्वेमुंचंतोनिशिताञ्छरान् ॥ इन्द्रनीलादयश्चैवह्याजग्मुःक्रोधपूरिताः ॥ ४१ ॥ दृष्ट्वासमागतान्वीरान्राजपुत्रोमहाबलः ॥ विव्याधसायकैःसर्वेऽप्यभूवन्मूर्च्छितारणे ॥ ४२ ॥ तत्पश्चाद्यादवाञ्छूरान्बाणौघैर्बल्वलात्मजः ॥ तताडतच्छरैराजन्बहवःपंचतांगताः ॥ ४३ ॥ संग्रमेतस्यबाणौघैरुधिराणांनदीह्यभूत् ॥ हस्तिनोयत्रमग्नाश्चसजीवास्तेम्रियंतिच ॥ ४४ ॥ हाहाकारस्तदैवासीत्सेनायांचनभस्तले ॥ महेन्द्रवरुणाद्याश्चभयंप्रापुश्चविस्मिताः ॥ ४५ ॥ जयंदृष्ट्वाऽसुराःसर्वेबभूवुर्मुदिताननाः ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ अथवैमूर्च्छितंदृष्ट्वानिरुद्धंकपिलोमुनिः ॥ ४६ ॥ हृतयांननिपतितंशरनिर्भिन्नवक्षसम् ॥ चकारतंतुचैतन्यंहस्तेनतपसानृप ॥ ४७ ॥ ततःसोपिसमुत्थायसिद्धंनत्वायदूत्तमः ॥ सेतुमार्गेणजगामयदून्सर्वान्प्रहर्षयन् ॥ ४८ ॥ अथान्यंरथमारुह्यप्रतिशार्ङ्गधरोबली ॥ निचखानशरंचैकंराजपुत्ररथेरुषा ॥ ४९ ॥ सशरस्तद्रथंनीत्वाससूतंसतुरंगमम ॥ चतुर्मुहूर्तपर्यंतंभ्रामयामासह्यंबरे ॥ ५० ॥

है ॥ ४३ ॥ और याके बाणनके मारे या रणमें रुधिरकी नदी बही है जामें जीवते हाथी डूबजाँय और सजीव ह्वैयैते मरजायँ ॥ ४४ ॥ तब सेनामें तथा आकाशमें बडो हाहाकार मचो है और इंद्र वरुणआदि देवता सब विस्मित ह्वैके भयको प्राप्त भये हैं ॥ ४५ ॥ या प्रकार जयको देखके सब दैत्य प्रसन्न जिनके मन ऐसे भये हैं गर्गजी कहैहैं कि, याके पीछे कपिलदेव नाम मुनि अनिरुद्धको मूर्च्छित भयो देखके ॥ ४६ ॥ घोडे जाके मरगये धरतीमें परो बाणनसों हृदय जाको विदीर्ण हैरह्यो ता अनिरुद्धको अपने तपके प्रभावसों और हाथसों चैतन्य करतेभये हैं ॥ ४७ ॥ तब ये यदूत्तम अनिरुद्ध उठके सिद्धको प्रणाम करके वाही सेतुके मार्गसों सब लो आनंद देतो आयो है ॥ ४८ ॥ तदनंतर प्रतिशार्ङ्ग नाम धनुषको हाथमें लेके दूसरे रथमें बैठके बड़े रोषसों या राजकुमारके रथमें एक बाण मारो है ॥ ४९ ॥ तब ये बाणने सारथी और घोडेनसहित या

रथको चार मुहूर्त पर्यंत आकाशमें घुमायो है ॥ ५० ॥ तब सब दानवनने और यादवनने आकाशमें उडतो डोले ऐसे कुनंदनको देखो है ॥ ५१ ॥ तब तो सांब आदिक सब वीरनने बडे वेगसों रथमें बैठके और सब अनुशाल्वादिक धनुषनको धारण किये आये है ॥ ५२ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥ गर्गजी कहे हे कि, तदनंतर वा संग्राममें दुर्मुखके संग अनुशाल्व दुष्टांतःकरण दुर्नेत्रके संग इंद्रनील दुर्मदके संग हेमांगद और दुःस्वभावके संग सारण रणमंडलमें युद्ध करतो भयो ॥ १ ॥ २ ॥ तब सारणने दुःस्वभावके गदा मारी है और हेमांगदने दुर्मदके तीन बाण मारे है ॥ ३ ॥ तब दुर्मदने हेमांगदके अपने बाण मारे हैं तब हेमांगदने शक्तिको प्रहार कियो इंद्रनीलने लीलाकरके दुर्नेत्रके बाण मारे है ॥ ४ ॥ तब अनुशाल्वने दुर्मुखको बाणनसों विरथ करदियो है तब दुर्मुखने दूसरे रथमें बैठके अनुशाल्व को बाणनसों विरथ

ततश्चदहशुःसर्वेदानवाश्चैववृष्णयः ॥ गगनेविभ्रमंतंवैसरथंचकुनंदनम् ॥ ५१ ॥ अथसांबादयोवीरारथानारुह्यवेगतः ॥ अनुशाल्वादयश्चैवा जग्मुःसर्वेधनुर्धराः ॥ ५२ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायांहयमेधखण्डेदैत्ययादवयुद्धवर्णनंनामचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ अथतत्रसंग्रामेऽनुशाल्वोदुर्मुखेनच ॥ युयुधेचेन्द्रनीलस्तुदुर्नेत्रेणदुरात्मना ॥ १ ॥ हेमांगदोदुर्मदेनदुःस्वभावेनसारणः ॥ एवंपरस्परंयुद्धंब भूवरणमण्डले ॥ २ ॥ सारणोगदयादैत्यंमारयामासवेगतः ॥ हेमांगदस्त्रिभिर्बाणैस्तताडदुर्मदंमृधे ॥ ३ ॥ स्वबाणैर्दुर्मदस्तंतु सोपिशक्त्याज घानतम् ॥ इन्द्रनीलश्चदुर्नेत्रंजघानलीलयाशरैः ॥ ४ ॥ दुर्मुखंचानुशाल्वोवैचकारविरथंशरैः ॥ सचान्यंरथमारुह्यचक्रेतंविरथंशरैः ॥ ५ ॥ परिघेणानुशाल्वस्तुजघानदुर्मुखंमृधे ॥ दुर्नेत्रेदुःस्वभावेचदुर्मुखेदुर्मदेहते ॥ ६ ॥ अवशेषाश्चदुद्रुवुर्दैत्याःप्राणपरीप्सया ॥ ततःपपातचाकाशाद्रा जपुत्रश्चविभ्रमन् ॥ ७ ॥ मूर्च्छितोभूद्रणेराजन्मुद्वमद्रुधिरंमुखात् ॥ रथश्चांगारवत्तस्यभग्नोभूत्तुरगाहताः ॥ ८ ॥ ततश्चबल्वलःक्रुद्धोपुत्रंदृष्ट्वा चमूर्च्छितम् ॥ मुमोचधनुर्बाणाननिरुद्धायवेगतः ॥ ९ ॥ तानागतान्दशशरान्दृष्ट्वारुक्मवतीसुतः ॥ स्वबाणैस्तीक्ष्णधारैश्चचिच्छेदस्वर्णभू षितैः ॥ १० ॥ ततोदैत्योरुपाविष्टश्चापेधृत्वापुनःशरम् ॥ उवाचमाधवंयुद्धेप्रद्युम्नंशकुनिर्यथा ॥ ११ ॥ ॥ बल्वलउवाच ॥ ॥ अनेन बाणेनयदुप्रवीरधनुर्द्धरंत्वांरणमानिनंच ॥ मृधेहनिष्येनवदाम्यसत्यंरक्षस्वप्राणान्यदिजीवितेच्छा ॥ १२ ॥

करदियो है ॥ ५ ॥ फिर रणमें अनुशाल्वने एक परिघासों दुर्मुखको मारके गेरदियो जब दुर्नेत्र दुःस्वभाव दुर्मुख और दुर्मद मरगये हैं ॥ ६ ॥ तब बाकी रहे दैत्य प्राण बचायवे की इच्छासो भाग गये है तब ये कुनंदन भ्रमण करतो आकाशसों गिरोहे ॥ ७ ॥ और हे राजन् ! मुखसों रुधिरकी उलटी करतो रणमें मूर्च्छित हैगयो और अंगारकी नाईं याको रथहू टूटगयो है और घोडे मारे गये है ॥ ८ ॥ तब बल्वल बडो क्रुद्धभयो पुत्रको मूर्च्छित देखके अनिरुद्धके लिये बडे वेगसों बाण मारे हैं ॥ ९ ॥ तब रुक्मवतीके पुत्रने विन दश बाणनको तीखी धारवारे स्वर्णभूषित अपने बाणनसों छेदन करदिये हैं ॥ १० ॥ तब ये दैत्यने क्रोधसों युक्त हैके अपने धनुषमें फिर बाण लगायके युद्धमें माधवसों (अनिरुद्धसों) बोल्यो है शकुनिने जैसे प्रद्युम्नसों ॥ ११ ॥ बल्वल बोलो है कि, हे यदुप्रवीर ! धनुर्धरको और रणमें मानीको बाणसों मारोंगो झूठ नहीं कहौं हौं सो

जो तेरी जीवेकी इच्छा होय तो अपने प्राणनकी रक्षा कर ॥ १२ ॥ तब ये सुनके अपने धनुषमें एक बाण लगायके हँसतेभयेने ये वाक्य कह्यो है जैसें प्रद्युम्नने शकुनिसों कह्योहै ॥ १३ ॥ अनिरुद्धने कही है कि, रे मूर्ख ! कौन काल्को मारे है और कौन काहूकी रक्षा करे है कालही तो मारे है और कालही सबकी रक्षा करैहै ॥ १४ ॥ मैं करो हों कर्ता हों मैं पालक हों और मैं हरनवारो हों ऐसे जो कहैं हैं वो कालके निमित्तसों नष्ट होय हैं ॥ १५ ॥ न तो मैं तोयें जीतोंगो न मोयें तू जीतेगो किंतु विश्वात्मा जो कालरूपी जगत्पति भगवान् है वोही मोकूँ और तोकूँ जीतेगो ॥ १६ ॥ मैं यह नहीं जानूं हूं कि, वो कौनको जय और कौनको पराजय करै है वा कालको हे बल्वल ! मैं मनसों प्रणाम करो हों मेरी जयको तू कर ॥ १७ ॥ यासों हे दानव ! कालकोही तू बलवाननमें बलवान् जान मेरे वाक्यसों या महा अज्ञानको छोडके तू संग्राम कर ॥ १८ ॥ ऐसे अनिरुद्धके कहेको सुनके

सोपिश्रुत्वास्वकोदंडेशरमेकंनिधायच ॥ प्रत्याहप्रहसन्वाक्यंप्रद्युम्नःशकुनिंयथा ॥ १२ ॥ ॥ अनिरुद्धउवाच ॥ ॥कःकेनहन्यतेजंतुस्तथा कःकेनरक्ष्यते ॥ हनिष्यतिसदाकालस्तथारक्षतिदुःखतः ॥ १४ ॥ अहंकरोमिकर्त्ताहंहर्त्ताहंपालकोप्यहम् ॥ योवदेचेदशंवाक्यंसविनश्यति कालतः ॥ १५ ॥ नाहंत्वांतुविजेष्यामिनविजेष्यसित्वंतुमाम् ॥ त्वांमांजेष्यतिविश्वात्माकालरूपोजगत्पतिः ॥ १६ ॥ नजानेकस्यकुरुतेजयंवाचपराजयम् ॥ कालस्तंमनसावंदेविजयार्थेचदानव ॥ १७ ॥ तस्मादेवहिमनसाकालंहिबलिनांवरम् ॥ मद्वाक्याचमहाऽज्ञानं विहायत्वंरणंकुरु ॥ १८ ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वाबल्वलोविस्मयान्वितः ॥ तमाहतोषितःप्रीतोयथात्वाष्ट्रोमरुत्पतिम् ॥ १९ ॥ ॥ बल्वल उवाच ॥ ॥ कर्मप्रधानंभूमध्येकर्मैवगुरुरीश्वरः ॥ ॥ उच्चावचत्वंभवतिकर्मणावैयदूत्तम ॥ २० ॥ सहस्रेषुगवांवत्सःयथाविंदतिमातरम् ॥ तथाशुभाशुभंयेनकृतंतिष्ठत्सुपश्यति ॥ २१ ॥ ततोजेष्यामिसंग्रामेभवतंदृढकर्मणा ॥ मयाकृतश्चशपथःप्रतीकारंकुरुत्वरम् ॥ २२ ॥ ॥ ॥ अनिरुद्धउवाच ॥ ॥ प्रधानंमन्यसेकर्मविनाकालेनतत्फलम् ॥ नविद्यतेयथापाकेकृतेस्याद्विभ्रताकचित् ॥ २३ ॥ पाकप्रकारेपाकश्चविनाकर्त्रानजायते ॥ तस्माद्वदंतिकर्त्तारंकर्मकालात्परंवरम् ॥ २४ ॥

बल्वल बडो विस्मययुक्त भयो और प्रसन्न हैके ऐसे कहतोभयो जैसे वृत्रासुर इंद्रसों कहै ॥ १९ ॥ बल्वल बोलो सुन अनिरुद्ध या भूमिमें कर्मही मुख्य है कर्मही गुरु और कर्मही ईश्वर है हे यदूत्तम ! कर्म करकरके ही उत्कृष्ट निकृष्टपन प्राप्त होय है ॥ २० ॥ हजार गऊमें जैसे बछरा अपनी माताको प्राप्त होयहै तैसेही करनवारेकोही शुभाशुभ कर्म प्राप्त होय है ॥ २१ ॥ यातें अपने दृढकर्मसों तोको संग्राममें जीतोंगो ये मैंने शपथ कीनीहै जो तोपै प्रतीकार बने सो कर ॥ २२ ॥ तब अनिरुद्धने कही कि, रे दैत्य ! तू कर्मको जो प्रधान माने है सो देख वो कर्म कालके विना फल देवेको समर्थ नहीं होय है जैसे पाकक करेपे भी विभ्रता कभू हैजाय है ॥ २३ ॥ रसोई करबेमें विना कर्ताके पाक सिद्ध नहीं होय है यासों कालसों और कर्मसों कर्ताकोही प्रधान कहै है ॥ २४ ॥

सो वो गोलोकको नियंता परेसों परे श्रीकृष्णही कर्ता है जाने ब्रह्मा रुद्रादिक सब बनाये है ॥ २५ ॥ बल्वलने कही श्रीकृष्णके तुम पौत्र हौ यासों तुम धन्य हौ वाक्यनसों तुम ऋषीनकोहू मात करौहौ तुम तीनों गुणनसों रहितहौ देखो मनुष्यनको स्वभाव बडो दुस्त्यज है ॥ २६ ॥ सो तू सावधान हैके आज प्राणहरनवारे मेरे बाणको देख हे यादवश्रेष्ठ ! अपने मनको युद्धमें करके मेरे बाणको रोक ॥ २७ ॥ ये कहिके अपने बाणके संग मयकी माया याने प्रादुर्भाव करी है तब एक संग तीव्र अंधकार भयोहै जा अंधकारमें कोई मालूम नहीं परोहै ॥ २८ ॥ बहुतसैनको ये मालूम नहीं भयो है कि, कौन अपनो है कौन बिरानो है, शिला और पर्वतनके समान बड़े बड़े सुभट ऊपरसे पडे है ॥ २९ ॥ ऊपरसे जलकी वर्षाके मारे सब अत्यंत व्याकुल हैगये, बिजली चमकै है और मेघ गर्जे हैं ॥ ३० ॥ वे मेघ रुधिर वर्षावें हैं, वारंवार जलकी वर्षा करै है

सकर्ताकृष्णचंद्रस्तुगोलोकेशःपरात्परः ॥ येनवैनिर्मिताःसर्वेब्रह्मविष्णुशिवादयः ॥ २५ ॥ बल्वलउवाच ॥ ॥ श्रीकृष्णपौत्रधन्यस्त्वमृषीन्वाक्यैर्विडंबयन् ॥ त्रिभिर्गुणैःपृथग्भूतःस्वभावोदुस्त्यजोनृणाम् ॥ २६ ॥ सावधानतयाचाद्यपश्यप्राणहरंशरम् ॥ संग्रामेयादवश्रेष्ठ कृत्वायुद्धेमनःस्वकम् ॥ २७ ॥ इत्युक्त्वाव्यसृजन्मायांस्वबाणेनमयस्यच ॥ तदाभवत्तमस्तीव्रंतत्रकोपिनलक्ष्यते ॥ २८ ॥ नचस्वीयोनपारक्योविदामासजनान्बहून् ॥ शिलाःपर्वततुंगाभाःपतंतिसुभटोपरि ॥ २९ ॥ वार्भिर्हताश्चसर्वेपिव्याकुलाश्चसमंततः ॥ विद्युतोविलसंत्यत्र गर्जंतिवारिदाभृशम् ॥ ३० ॥ वर्षंतिरुधिरंचोष्णंमुंचंतिसशकृज्जलम् ॥ गगनात्पतमानानिकबंधानिशिरांसिच ॥ ३१ ॥ तदाव्याकुलिताः सर्वेपरस्परभयातुराः ॥ पलायनपराजाताःसंग्रामेचयदूत्तमाः ॥ ३२ ॥ तदानिरुद्धःप्रधनेस्मृत्वाकृष्णपदद्वयम् ॥ मायांतांसविधूयाथमोहनास्त्रेणलीलया ॥ ३३ ॥ तदादिशःप्रसेदुस्ताःसूर्यस्त्वपरिवेषवान् ॥ मेघायथागतंयाताश्चपलाःशांतिमागताः ॥ ३४ ॥ तदादैत्यश्चपुरतोदृश्यते दानवैर्युतः ॥ नानायुधधरोराजन्मायावीचण्डविक्रमः ॥ ३५ ॥ ब्रह्मास्त्रंसंदधेक्रुद्धोयादवानांवधायच ॥ ब्रह्मास्त्रेणतुब्रह्मास्त्रंजहारमाधवःपुनः ॥ ३६ ॥ ततश्चबल्वलःक्रुद्धोगांधर्वींमोहनींपराम् ॥ विजयार्थेचसंग्रामेमायांसोपिचकारह ॥ ३७॥ गंधर्वनगरंयत्रदृश्यतेनृपसत्तम ॥ नदृश्यतेच संग्रामःस्वर्णसौधानिकोटिशः ॥ ३८ ॥

और बहुतसे रुंड अगारी परे है ॥ ३१ ॥ तब ये सब परस्पर भयातुर, व्याकुल हैगये हैं, ऐसे सब यदुश्रेष्ठ भयभीत हैगये हैं ॥ ३२ ॥ तब अनिरुद्धने श्रीकृष्णके पदकमलनका ध्यान कर मोहनास्त्रसों वा मायाको शांति करी है ॥ ३३ ॥ तब दिशा निर्मल भईहै, सूर्य ऊपरके मंडलसे रहित हैगयो है, मेघ जैसे आये हे वैसेही चलेगये बिजली चमकनो बंद हैगयो है ॥ ३४ ॥ तब ये दैत्य दानवनसहित दिखाई परो, अनेक शस्त्रनको हाथमें लिये महामायावी है, प्रचंड जाको पराक्रम है ॥ ३५ ॥ सो क्रुद्ध हैके याने यादवनके मारवेके लिये ब्रह्मास्त्रको धनुषमें संधान कियो है तब अनिरुद्धने ब्रह्मास्त्रसोंही याको ब्रह्मास्त्र शांत कियो है॥३६॥तब कुपित भये बल्वलने बडी प्रबल गांधर्वी मायाको विजयके लिये प्रादुर्भाव करीहै, ये माया अत्यंत मोह करनवारी है ॥ ३७ ॥ जा मायामें हे नृप सत्तम ! गंधर्वनगर दीखे है, शतशः सुवर्णके महल मंदिर दीखेहै, संग्राम कहीं दीख्योहो नहींहै ॥ ३८ ॥

नाचती और गान करती गांधर्वी दीखी हैं, वीणा, ताल, मृदंग, बजन लगेहैं और कोकिल बोलन लगी हैं कंदुक (गेंद) फेंके हैं ॥ ३९ ॥ हावभाव कटाक्षनसों और कमर तथा वेणीको दिखावे हैं, कमलसे जिनके नेत्र ऐसी सुंदरी मनुष्यनको संतुष्ट करती ॥ ४० ॥ तिनके सौंदर्यको देखके कामदेवसों विह्वल भये जे यादव हैं वे शस्त्रनकों धरतीमें धरके परस्पर ये बोलेहैं ॥ ४१ ॥ और हम सब कहाँ आयगयेहैं ये कोई स्वर्गलोक है या कोई अन्य देवलोक है जहाँ ये कलकंठवारी सुंदरी मनकी हरनवारी नृत्य करे हैं ॥ ४२ ॥ सो कामदेवसो आतुर भये हम इनके लावण्य समुद्रमें मग्न भये हैं और संग्राम तो यहाँ कहीं दीखेही नहीं है फिर जय कैसे होयगो ॥ ४३ ॥ या प्रकारसों सब यादव कहिरहेहैं कि, क्रोधमें मूर्च्छित भयो जो बल्वल है सो शीघ्रही खड्गको हाथमें लेके सबनके मारवेको आयो है ॥ ४४ ॥ आयके याने खड्गसों मोहित भये इनारन यदुमवीरनको युद्धमें मारे हैं

बभूवुस्तत्रगंधर्व्योनृत्यंत्योगानतत्पराः ॥ वीणातालमृदंगैश्चकलकंठैश्चकंदुकैः ॥ ३९ ॥ हावभावकटाक्षैश्चकटिवेणीनिदर्शनैः ॥ तोषयन्त्यो जनान्सर्वान्सुन्दर्यःकञ्जलोचनाः ॥ ४० ॥ तासांदृष्ट्वाचसौंदर्यंयादवाःस्मरविह्वलाः ॥ ऊचुःपरस्परंसर्वेधृत्वाशस्त्राणिभूतले ॥ ४१ ॥ वयंकुत्रा गताःसर्वेस्वर्लोकेकिंतुदैवतः ॥ यत्रनृत्यंतिसुन्दर्यःकलकण्ठ्योमनोहराः ॥ ४२ ॥ आसांलावण्यजलधौवयंमग्नाःस्मरातुराः ॥ कथंभविष्य तिजयोरणंचात्रनदृश्यते ॥४३॥ इतिब्रुवत्सुसर्वेषुबल्वलःक्रोधपूरितः ॥ शीघ्रंनिस्त्रिंशमादायहंतुंसर्वान्समाययौ ॥४४॥ आगत्यखड्गेनयदुप्रवीरा न्विमोहितान्सोपिसहस्रशश्च ॥ जघानयुद्धेयदितेनिपेतुर्दृष्ट्वानिरुद्धस्तुरुपातमूचे ॥४५॥ किंकरिष्यसिसंग्रामेऽधर्मसद्भिर्विगर्हितम् ॥ मोहिता न्मारणेचनश्लाघातेभविष्यति ॥ ४६ ॥ यदिशक्तिःशरीरेस्तिमयासार्धंरणंकुरु ॥ इतितद्वाक्यमाकर्ण्यबल्वलोबलदर्पितः ॥ आजगामपदा तिर्वैखड्गचर्मधरोनदन् ॥४७॥ तमापतंतंसनिरीक्ष्यरोषाद्रथादवप्लुत्यमनोजपुत्रः ॥ कृतांतदण्डेनजघानदैत्यंयथामहेन्द्रोभिदुरेणशैलम् ॥४८॥ निर्भिन्नहृदयोदैत्यःपपातचालयन्महीम् ॥ चतुर्वासरपर्यंतंमूर्च्छितोभूद्रणांगणे ॥ ४९ ॥ तदानिपतितेदैत्येमायाशांतिंगतास्वतः ॥ युद्धंप्रदृश्य तेतत्रयादवाविस्मयंगताः ॥ ५० ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांहयमेधखण्डेऽनिरुद्धजयोनामपंचत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३५ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ कुनन्दनोपिसंमूर्च्छांत्यक्त्वागाद्रणमण्डले ॥ रथस्थःक्रोधसंयुक्तःप्रवर्षन्धनुषाशरान् ॥ १ ॥

और इनको जब गिरे देखे हैं तब कुपित हैके अनिरुद्धजीने कही है ॥ ४५ ॥ कि, अरे देख ! ये सत्पुरुषनकरके निंदित अधर्मको क्यों करे है, ये आपही मोहित भये हैं तिनके मारवेमें तेरी कहा श्लाघा होयगी ॥ ४६ ॥ जो तेरे शरीरमें शक्ति है तो मेरे संगमें संग्राम कर तब बलमें दर्पित जो बल्वल है सो याके कहेको सुनके पदाति ढाल, तलवारको लिये गर्जना करतो आयो है ॥ ४७ ॥ तब याको आवतो बड़े रोषसों देखके कामदेवको पुत्र रथमेंसों उतरके या दैत्यके कालदंडसों प्रहार कियो है जैसेपर्वतके ऊपर इंद्र वज्र मारे ॥ ४८ ॥ तब हृदय जाको फटगयो ऐसो ये दैत्य भूमिको कँपावतो गिरो है सो रणांगणमें चार दिनतक मूर्च्छित भयो परो रह्यो है ॥ ४९ ॥ तब या दैत्यके मरेपै सब माया शांत हैगई हैं, युद्धभूमि दीखनलगी है और सब यादव विस्मयको प्राप्त भये हैं ॥ ५० ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां पञ्चत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३५ ॥ गर्गजी कहेहैं

कि, इतनेमें कुनंदनहूँ मूर्च्छा छोडके उठो है फिर रथमें बैठके क्रोधसों धनुषसों बाण दरसावतो रणमें आयो है ॥ १ ॥ तब परवीरहा अनिरुद्ध वीरने याको देखके रोषसों दीप्त हैके याके सेवकनसों पूछी है ॥ २ ॥ तब ये सेवक बोले है कि, महाराजजी ये बल्वलको पुत्र आपसो युद्ध करवेको आयो है ॥ ३ ॥ ये सुनके अनिरुद्धने कही है कि, मैं या कुनंदनको मारोंगो तब कृष्णके पुत्र सुनंदन अनिरुद्धसो बोलेहै ॥ ४ ॥ सुनंदन बोलो कि, हे राजन् ! ये दैत्यपुत्र कौन है और परिमित बल कहा इकीकत है, आपके अनुग्रहसो जीतोंगो यासो हे प्रभो ! मैं जाऊँहूं ॥ ५ ॥ हे राजन् ! मेरी प्रतिज्ञाको आप सुनो जो आपको आनंद देनवारी है, जो मैं आज संग्राम करवेमें प्रवीण या कुनंदनको न जीतलेऊँ तो ॥ ६ ॥ कृष्णचरणकमलमकरंदके आस्वादके वियोगीनको जो पाप होयहै सो पाप मोकूँ होय, जो याको मैं न जीतलेऊँ तो ॥ ७ ॥ और संसारके निवृत्त करनवारे पिता और

दृष्ट्वासमागतंवीरोनिरुद्धःपरवीरहा ॥ पप्रच्छसेवकांस्तस्यवार्तांरोषेणदीपितः ॥ २ ॥ सेवकास्तेततःप्रोचुरेषबल्वलनन्दनः ॥ त्वयासार्द्धंमहाराजयुद्धंकर्तुंसमागतः ॥ ३ ॥ श्रुत्वानिरुद्धःप्रोवाचहनिष्येहंकुनन्दनम् ॥ तदैवतमुवाचाथकृष्णपुत्रःसुनन्दनः ॥ ४ ॥ ॥ सुनन्दनउवाच ॥ ॥ राजन्कोयंदैत्यपुत्रःक्वेदंपरिमितंबलम् ॥ जेष्येहंत्वत्प्रतापेनतस्माद्गच्छाम्यहंप्रभो ॥ ५ ॥ राजञ्छृणुप्रतिज्ञांमेतवानंदप्रदायिनीम् ॥ नचेत्कुनन्दनंजेष्येबहुसंग्रामकोविदम् ॥ ६ ॥ कृष्णस्यचरणांभोजमध्वास्वादवियोगिनाम् ॥ यत्पापंचभवेत्तन्मेनजयेयदिदानवम् ॥ ७ ॥ योगुरुंभवहर्तारंपितरंचनसेवते ॥ यदघंतुभवेत्तस्यतन्मेभूयाज्जयेनवै ॥ ८ ॥ इतिप्रतिज्ञामाकर्ण्यानिरुद्धस्तस्यभूपते ॥ जहर्षचित्तेतंवीरंनिर्दिदेशरणंप्रति ॥ ९ ॥ इत्याज्ञप्तोनिरुद्धेनचैकाकीकृष्णनन्दनः ॥ जगामदंशितस्तत्रयत्रास्तेबल्वलात्मजः ॥ १० ॥ कुनन्दनस्तमाज्ञायत्वागतंप्रधनेरुषा ॥ प्रत्युज्जगामवीराग्र्योरथीशूरशिरोमणिः ॥ ११ ॥ अन्योन्यंतौसंमिलितौरथस्थौचापधारिणौ ॥ रेजातेराजशार्दूलयथादमनपुष्कलौ ॥ १२ ॥ उभौसायकभिन्नांगावुभौरुधिरविप्लुतौ ॥ मुञ्चंतौशरकोटीश्चसंधंतौतरसाशरान् ॥ १३ ॥ आदानंनैवसन्धानंमोचनंचनभूपते ॥ दृश्येतेतौमहाशूरौकुण्डलीकृतकार्मुकौ ॥ १४ ॥ तद्रथंराजपुत्रस्तुभ्रामकास्त्रेणशोभिना ॥ भूतलेभ्रामयामासकुंभकारस्यचक्रवत् ॥ १५ ॥

गुरुकी सेवा न करै याको जो पाप होयहै सो पाप मोकूँ होय जो मैं आज कुनंदनको न जीतो ॥ ८ ॥ याकी या प्रतिज्ञाको सुनके हे भूपते ! अनिरुद्ध राजी भयो और वीरको युद्धके लिये जायवेको आज्ञा दीनीहै ॥ ९ ॥ अनिरुद्धकी आज्ञाको सुनके कृष्णको नंदन कवच पहरके इकलोही जहाँ बल्वलको पुत्र है तहाँ आयो ॥ १० ॥ तब कुनंदनने याको संग्राममें आयो जानके बडे क्रोधसो वीरनमें मुख्य ये रथमें बैठके शूरवीरनको शिरोमणि आयोहै ॥ ११ ॥ तब रथमें बैठे धनुष धारणकरे परस्पर मिले हे राजशार्दूल ! दमन और पुष्कलकी तरह सुशोभित भयेहै ॥ १२ ॥ दोनो बाणनसो घायल अंगवारे, दोनों रुधिरसो भीजे, किरोडन बाणनको चलावते और धनुषमें संधान करते ॥ १३ ॥ महाशूर दोनो कुंडलीके आकार है धनु जिनके तिनको बाणनको लेनों लगामनो खेंचनो और छोडनो हे भूपते ! काहूको मालूम नहीं भयोहै ॥ १४ ॥ तब भ्रामक नामके अस्त्रसो राजकुमरने

याके रथको भूतलमें कुँभारके चाककी नाईं घुमायोहै ॥ १५ ॥ फिर दो घडी ताईं चक्कर खायके जब ये रथ ठैरोहै तब कृष्णके पुत्रने अश्वसहित या रथमें एक बाण मारोहै ॥ १६ ॥ तब या बाणके मारे मत्त हाथीकी तरह ये रथ आकाशमें घूमोहै फिर कांचके पात्रकी तरह टूटके भूमिमें गिरोहै ॥ १७ ॥ फिर रथके टूटेपै सारथि और घोडनके समेत रथके नष्ट भयेपै ये उठोहै, अन्य रथमें बैठके जो सम्मुख आयो है ॥ १८ ॥ यों कृष्णपुत्रने वोहू रथ तोरडारो या प्रकार या दैत्यपुत्रके सात रथ कृष्णपुत्रने तोरे हैं ॥ १९ ॥ तब ये कुनंदन विचित्र यानमें बैठके वेगसों कृष्णके पुत्रसो लडवेको आयो ॥ २० ॥ संग्राममें आवतेही याने दश बाण मारे, तिन बाणनके मारे ये बडे खेदको प्राप्त भयोहै ॥ २१ ॥ तब कृष्णके पुत्रने कुपित ह्वैके धनुष लैके याकी छातीमें दश बाण मारेहैं ॥ २२ ॥ वे बाण याके रुधिरको पीके धरतीमें परेहै जैसे झूठी गवाहीके देनवारेके पिता बचादिक नरकमें परैहैं

भ्रांत्वामुहूर्त्तमात्रंतुतद्रथोवाजिसंयुतः ॥ स्थितिंलेभेततःकार्ष्णिर्जघानतद्रथेशरम् ॥ १६ ॥ सयानस्तेनबाणेनखेबभ्रामभतंगवत् ॥ पपातकौ त्रिशीर्णोभूम्यथवैकाचभाजनम् ॥ १७ ॥ उत्थितःसोपिविरथोहताश्वोहतसारथिः ॥ अन्यंरथंसमारुह्ययावदायातिसंमुखम् ॥ १८ ॥ बभंज तावद्बाणैश्चतद्रथंकृष्णनन्दनः ॥ एवंसप्तरथाभग्नादैत्यपुत्रस्यवैरणे ॥ १९ ॥ तदाकुनन्दनःसंख्येस्थित्वायानेविचित्रिते ॥ आययौनृपवेगेन कृष्णपुत्रंनियोधितुम् ॥ २० ॥ आगत्यदशभिर्बाणैस्ताडयामासतंमृधे ॥ शरैस्तैःसोपिनिहतःपरंकश्मलतांगतः ॥ २१ ॥ ततःसधनुरुद्यम्य गृहीत्वादशसायकान् ॥ मुमोचतस्यहृदयेक्रुद्धःकृष्णात्मजोबली ॥ २२ ॥ तेशरारुधिरंपीत्वानिपेतुर्वैमहीतले ॥ यथाहिपितरोराजन्नरकेकूट साक्षिणः ॥ २३ ॥ कुनंदनःसुनन्दनंसुनन्दनःकुनन्दनम् ॥ महद्रणेमहच्छरैर्निजघ्नतुःपरस्परम् ॥ २४ ॥ एवंहितौद्वौशरभिन्नगात्रौरक्ताप्लुतौ चापधरौरुषाढ्यौ ॥ प्रचक्रतुर्युद्धवरंशरैश्चकुशांबसांबाविवसंयुगेवै ॥ २५ ॥ ततःकृष्णात्मजोवीरःकोदंडेस्वर्णनिर्मिते ॥ मृगांकार्द्धमुखंबाणं धृत्वाशीघ्रंतमब्रवीत् ॥ २६ ॥ ॥ सुनन्दनउवाच ॥ ॥ शृणुमद्वचनंवीरबाणेनानेनत्वच्छिरः ॥ सद्यश्छिन्नंकरिष्येहंशिरोरक्षबलीयदि ॥ ॥ २७ ॥ यदिमद्वचनंसत्यंप्रधनेत्वंनमन्यसे ॥ तदाशृणुप्रतिज्ञांमेतवमृत्युविषूचिकाम् ॥ २८ ॥ सतींचगुरुपत्नींचयोदूषयतिकामतः ॥ संया तियातनायांवैयमराजस्यसन्निधौ ॥ २९ ॥ सायातनाचमेभूयात्सत्यंममप्रतिश्रुतम् ॥ यःसमर्थश्चस्वगुरुंपितरंचनपालयेत् ॥ ३० ॥

॥ २३ ॥ कुनंदनने सुनंदनके और सुनंदनने कुनंदनके या महत् युद्धमें परस्पर प्रहार कियेहैं ॥ २४ ॥ ऐसें बाणनसों भिन्न हैं अंग जिनके रुधिर जिनके बहेहे, धनुषको लिये रोषसों भरे दोनो कुशांब, सांबकी तरह बाणनसों युद्ध करनलगेहैं ॥ २५ ॥ तब कृष्णके पुत्र सुवर्णके धनुषमें अर्द्धचंद्राकार बाण लगायके ये बोलेहै ॥ २६ ॥ मेरे सत्यबचनको सुनो हे वीर ! या बाणसों अभी मैं तेरे शिरको काटताहूँ यदि तू बली है तो रक्षा करले ॥ २७ ॥ जो सत्य या मेरे वचनको संग्राममें तू न मानिगो तब तेरी मृत्युके सूचना करनवारे मेरे वचनको सुन ॥ २८ ॥ जो कामवश ह्वैके सती, गुरुपत्नीको दूषित करै है या पुरुषको जो यातना मिले वो यातना मोकूँ होय ये मेरी सत्यप्रतिज्ञा है; जो समर्थ ह्वैके अपने

पिता और गुरुको पालन न करै वाको पाप मोकूं होइ जो मैं तोकूं न मारूंगो तो, ये कहे वचनको सुनके दैत्य जो है सो कहतो भयो रोषमें जलतो ॥२९॥३०॥३१॥ राजकुमार बोल्यो मैं शत्रुके सामने मरबेते नहीं डरूंहूं क्योंकि वर्तमानमें ऐसो कोई नहींहै जो मरतो न हो अर्थात् मरते सब हैं फिर मरबेसों क्यों डरपनो ॥ ३२ ॥ जो तू मेरे मारबेको महाबाणको छोडैहै तब मैं अपने बाणनसों तेरे या बाणको निःसंदेह छेदन करोंहूं ॥ ३३ ॥ देखो जे एकादशीके दिना अन्नको खायहैं तिन और माता, भ्रातृपत्नी, भगिनी, और बेटी इनते पाप करनवारे मनुष्यनको जो पाप लगैहै वो पाप मोको लगे जो तेरे या बाणको मैं न काटूंगो तो ॥ ३४ ॥ ये याके कहे जे स्पष्ट वचन हैं तिने सुनके राजकुमार सुनंदन याके कहेको स्मरण करतो बोल्योहै और कृष्णको ध्यान धरके बोल्योहै ॥ ३५ ॥ सुनंदन बोल्यो—कि, जो कृष्णके चरणकमलको मैं स्मरण करूंहूं निष्कपटसों तब मेरो ये वचन सत्य होयगो ॥ ३६ ॥ कि,

तस्यपापंममैवास्तुनहन्मिचेच्चत्वांरणे ॥ इतिश्रुत्वाचदद्वाक्यंदैत्यआहरुषाज्वलन् ॥ ३१ ॥ ॥ राजपुत्रउवाच ॥ ॥ नबिभेमिनाहं मरणात्संग्रामेशत्रुसम्मुखे ॥ प्राणिनांचैवसर्वेषांमृत्युर्भवतिसांप्रतम् ॥ ३२ ॥ यदिमुंचसिसंग्रामेमद्वधार्थंमहाशरम् ॥ तदाहंस्वशरेणापिशीघ्रंछेद्मिनसंशयः ॥ ३३ ॥ एकादश्यांनयेमानादन्नंभुंजंतिभूतले ॥ मातरंभ्रातृपत्नींचभगिनींचसुतांतथा ॥ पापंतेषांममैवास्तुनछेद्मियदितेवच्छरम् ॥ ३४ ॥ इतितस्यवचःस्पष्टंश्रुत्वाशंकितमानसः ॥ प्रत्युवाचपुनर्वाक्यंश्रीकृष्णंसोपिसंस्मरन् ॥ ३५ ॥ ॥ सुनन्दनउवाच ॥ ॥ मयाकृष्णांघ्रियुगलंसेवितंमनसायदि ॥ कपटेनविनातर्हिसत्यंभूयाद्वचोमम ॥ ३६ ॥ स्वपत्नींचविनावीर नान्यांपश्यामिकामतः ॥ तेनसत्येनसंग्रामेवाक्यंभूयादृतंमम ॥ ३७ ॥ इत्युक्त्वासायकंतीक्ष्णंविमुमोचसुनन्दनः ॥ मंत्रयित्वाचमंत्रेणमहाकालानलोपमम् ॥ ३८ ॥ प्रमुक्तंवीक्ष्यविशिखंस्वबाणेननृपात्मजः ॥ सद्यश्चिच्छेदतंयथासर्पंपक्षेणपक्षिराट् ॥ ३९ ॥ छिन्नेतस्मिञ्छरेराजन्हाहाकारस्तदाभवत् ॥ चचालपृथिवीलोकेदेवास्तेविस्मयंगताः ॥ ४० ॥ परार्द्धःपतितोबाणःपूर्वार्द्धःफलसंयुतः ॥ शिरश्चिच्छेददैत्यस्यतरोःस्कंधंयथागजः ॥ ४१ ॥

अपनीके सिवाय कोई स्त्रीको कामदृष्टिसों नहीं देखूंहूं या सत्यसों अर्थात् जो ये बात मेरी सांची है तो मेरो कह्योभयो वाक्य भी सत्य होयगो ॥ ३७ ॥ इतनो वचन कहिके सुनंदननें बाण छोडोहै, वो बडो तीक्ष्ण है महाकालानलके समान वो बाण है ता बाणको मंत्रसों अभिमंत्रण करके छोडोहै ॥ ३८ ॥ आते बाणको नृपनंदन अपने बाणसों छेदन करिके गेरदियो, जैसे सर्पको गरुड तोर गेरैहै ॥ ३९ ॥ हे राजन् ! या समय या बाणके कटेपै बडो हाहाकार मच्योहै और सब लोकनसहित भूमि चलायमान भई और सब देवता विस्मयको प्राप्त भयेहैं ॥ ४० ॥ तब हे राजन् ! कटेभये या बाणको नीचेको भाग तो कटके धरतीमें गिरपडो और आगेको कटोभयो आधो भाग जो गयो सो या दैत्यकी ग्रीवामें

जायके लगो सो दैत्यके शिरको काटके भूमिमें गिरादियोहै जैसे वृक्षके अंशको हाथी ॥ ४१ ॥ तब किरीट, कुंडलके सहित धरतीमें कटेभये परेको देखके सब दैत्यनने हाहाकार कियोहै ॥ ४२ ॥ तब शीघ्रही कुनंदनके कबन्धने उठके या संग्राममें खड्गसों मुक्कानसों और लातनसों बहुत शत्रु मारेहै ॥ ४३ ॥ तब तो यदुसेनामें नगाड़े बजेहैं और देवताननें सुनंदनके ऊपर पुष्प बरसायेहै ॥ ४४ ॥ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां षट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥ ॥ सूतजी कहैहै कि, यह सब वृत्तान्त सुनी तब वज्रनाभजीने प्रश्न कियो कि, महाराज हे ब्रह्मन्! कुनंदनके मरजानेपर और बल्वलके मूर्च्छित होनेपर भी दयालु शिवजीने रक्षा क्यों नहीं कीनी? सो कहो कि, शिवजी क्यों न आये और इन दैत्यनने घोडा कैसे छोड़ो और फिर यज्ञ पूर्ण कैसे भयो ये सब वृत्तान्त मेरे आगे कहौ ॥ १ ॥ २ ॥ सूतजी कहैहैं कि, वज्रनाभके प्रश्नको सुनके बड़े ज्ञानीनमें श्रेष्ठ

किरीटकुण्डलैर्युक्तंपतितंतस्यमस्तकम् ॥ निरीक्ष्यहाहाशब्दंवैचक्रुर्दैत्याश्चदुःखिताः ॥ ४२ ॥ कुनंदनकबंधस्तुशीघ्रमुत्थायसंयुगे ॥ खड्गमु
ष्टिभिःपादैर्बहूञ्छत्रूञ्जघानह ॥ ४३ ॥ ततश्चयदुसेनायांनेदुर्दुंदुभयोमुहुः ॥ सुनंदनोपरिसुराःपुष्पवर्षंप्रचक्रिरे ॥ ४४ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहि
तायांह्यश्वमेधखण्डेदैत्यपुत्रवधवर्णनंनामषट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥ ॥ वज्रनाभिरुवाच ॥ ॥ कुनंदनेहतेब्रह्मन्बल्वलेमूर्च्छितेरणे ॥ नकृतंतु
सहायंवैरुद्रेणकरुणात्मना ॥ १ ॥ कस्मान्नचागतोरुद्रोयज्ञःपूर्णःकथंभवेत् ॥ कथंविमुक्तस्तुरगस्तन्मेव्याख्यातुमर्हसि ॥ २ ॥ ॥ सौति
रुवाच ॥ ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वागर्गोज्ञानवतांवरः ॥ स्मृत्वासर्वांकथांब्रह्मन्बभाषयदुसत्तमम् ॥ ३ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ बल्वले
मूर्च्छितेराजन्हतेशूरेकुनन्दने ॥ महत्कोपंशिवश्चक्रेप्रेरितस्तुसुरर्षिणा ॥ ४ ॥ आरुह्यनंदिनंक्रुद्धोभक्तरक्षाकरःशिवः ॥ चन्द्ररेखांवहन्मूर्ध्नि
जटाजूटांतरेनृप ॥५॥ सर्पहारैर्मुण्डहारैर्भस्मलिप्तोभयंकरः ॥ दशबाहुःपञ्चमुखोनेत्रैःपञ्चदशैर्वृतः ॥ ६ ॥ सिंहचर्मांबरधरोमदमत्तोभयंकरः ॥
त्रिशूलपट्टिशधरोधनुर्बाणधरःपरः ॥ ७ ॥ कुठारपाशपरिघभिंदिपालैर्विभूषितः ॥ सहस्ररविसंकाशःसर्वभूतगणावृतः ॥ ८ ॥ हंतुंसर्वान्वृ
ष्णिवरान्कार्ष्णिजप्रमुखान्मृधे ॥ कैलासादाययौशीघ्रंचालयन्पृथिवीतलम् ॥ ९ ॥ कोलाहलोमहानासीदाकाशेभूतलेनृप ॥ देवदैत्य
नराःसर्वेभयंप्रापुश्चविस्मिताः ॥ १० ॥

श्रीगर्गजी सब कथाको यादकर वज्रनाभसों बोलैहै कि, हे राजन्! बल्वल जब मूर्च्छित हैगयो और कुनंदन जब मरगयो तब नारदजीने शिवजीसों सब वृत्तान्त कह्यो तब नारदकी प्रेरणासों शिवजीको बड़ो क्रोध आयो ॥ ३ ॥ ४ ॥ और भक्तनकी रक्षा करनवारे शिव नंदीश्वरपै बैठके चंद्रमाके चिह्नको माथेपै धारण करके, जटाजूटको धारण करे ॥ ५ ॥ सर्पनके हार और मुंडमाल पहरे, भस्मलिप्त जिनको अंग, दश जिनके भुज, पांच मुख, पंद्रह नेत्र तिनसों युक्त ॥ ६ ॥ बाघम्बर ओढे मदमें मत्त प्रलयके करनवारे त्रिशूल, पट्टिशको धारण करे धनुषबाणको लिये ॥ ७ ॥ कुठार, पाश, परिघ और भिंदिपाल तिनसों विभूषित हजार सूर्यके समान सब भूतगणनको संगमें लिये ॥ ८ ॥ संग्राममें अनिरुद्धादिक सब यादवनके मारबेको भूतलको कँपावते कैलाससों आयेहैं ॥ ९ ॥ तब हे नृप! आकाशमें और भूमिमें बड़ो भारी कोलाहल भयो है तब सब देव, दैत्य, नर, विस्मित है

कै भयको प्राप्त भयेहैं ॥ १० ॥ गण और परिवारसहित शिवजीको आयो देख, कुपित हैरहेहैं प्रलयके करनवारे हैं तिनको आयो देखके सब यादवनका भय भयोहै ॥ ११ ॥ और
अनिरुद्धको मुख निस्तेजस्क भयके मारे हैगयो है और दुःखी भयेको रणांगणमें हृदय काँपो ॥ १२ ॥ तब शिवजी सब यादवनसों ये निठुरवचन बोले, शूलको हाथमें लेके
कोधमें मूर्च्छित हैके ॥ १३ ॥ शिवजी बोले अनिरुद्ध कहाँ गयो सुनंदन कहाँ है और मेरे भक्त कुनंदनको मारके सांब कहाँ गयो ॥ १४ ॥ और बल्वलको मूर्च्छित करके मेरे भक्त
सत्तमको और याके भक्तनको मारके आज देखो यादव कहाँ जायँगे ॥ १५ ॥ यासों मैं जे मेरे भक्तनके वैरी हैं उने सबनको मारोंगो, मैं, विष्णु और ब्रह्माजी ये तीनो अपने भक्त
को दुःखसों रक्षा करेहैं ॥ १६ ॥ गर्गजी कहैहैं कि, इतनी कहिके शिवजीने अपने भैरव नामके गणको आज्ञा दीनीहै कि, हे शूर ! तू युद्धमें जीतनेवाले कृष्णके पौत्र अनिरुद्धके

सगणंसपरीवारमागतंवीक्ष्यशङ्करम् ॥ क्रुद्धंप्रलयकर्तारंभयंप्रापुर्यदूत्तमाः ॥ ११ ॥ अनिरुद्धस्यचमुखंनिस्तेजस्कमभूद्भयात् ॥ चकंपेहृदयं
तस्यदुःखितस्यरणांगणे ॥ १२ ॥ ततःप्रत्याहवचनंनिष्ठुरंसर्वयादवान् ॥ शूलंगृहीत्वाहस्तेनगिरीशःक्रोधपूरितः ॥ १३ ॥ ॥ शंकरउ
वाच ॥ ॥ अनिरुद्धःकुत्रगतोगतःकुत्रसुनन्दनः ॥ सांबादयःकुत्रगताभक्तंहत्वाकुनंदनम् ॥ १४ ॥ बल्वलंमूर्च्छितंकृत्वामद्भक्तंदैत्यसत्तमम् ॥
तस्यानुगान्मृधेहत्वाकुत्रयास्यंतिवृष्णयः ॥ १५ ॥ तस्मात्सर्वान्हनिष्यामिमद्भक्तानांरिपून्मृधे ॥ अहंविष्णुर्विधिश्चैतेभक्तंरक्षंतिदुःखतः
॥ १६ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ इत्युदीर्य्यानिरुद्धंसप्रेषयामासभैरवम् ॥ त्वंहियोद्धुंगच्छशूरकार्ष्णिजंजयिनंमृधे ॥ १७ ॥ सुनंदनंनंदिनंचप्रे
षयामासरोषतः ॥ गदंचवीरभद्रंवैसांबंचशिखिवाहनम् ॥ १८ ॥ भानुंचभृङ्गिणंयुद्धेविरूपाक्षःसमादिशत् ॥ यदूंश्चप्रेषयामासभूतप्रेतांस्ततः
शिवः ॥ १९ ॥ ततस्तेरुद्रवचनाद्भूतप्रेतविनायकाः ॥ भैरवाःप्रमथाश्चैववेतालाब्रह्मराक्षसाः ॥ २० ॥ उन्मादाश्चैवकूष्मांडाआजग्मुः
कोटिशोमृधे ॥ भूतानिजघ्नुश्चांगारैर्यादवाश्चविनायकाः ॥२१॥ पट्टिशैर्भैरवाःशूलैःखड्गांगैःप्रमथाःकिल ॥ जनानश्चान्गृहीत्वातुभक्ष्यंतिब्रह्मरा
क्षसाः ॥ २२ ॥ यातुधानाश्चर्वयंतोमनुष्याणांशिरांसिच ॥ कपालैस्तत्रवेतालाःपिबंतोरुधिरंरणे ॥ २३ ॥ पिशाचास्तत्रनृत्यंतःप्रेतागायंतिए
वहि ॥ शिरांसिकंदुकानीवक्षेपयंतोमुहुर्मुहुः ॥ २४ ॥ अट्टहासंप्रकुर्वंतःप्रधावंतइतस्ततः ॥ गजानथांश्चर्वयंतोदृश्यन्तेरणमंडले ॥ २५ ॥

मारनेको जा ॥ १७ ॥ और नंदी नामके गणको सुनंदनके मारनेको भेजोहै और बडे रोषसे गदके जीतनेको वीरभद्रको, सांबके जीतबेको स्वामिकार्त्तिकको, भानुके जय क.नेको
भृंगीगणको और सब यादवनके जीतनेको भूतप्रेतनके गणको शिवजीने भेजेहैं ॥ १८ ॥ १९ ॥ तब वे सब रुद्रके वचनसों भूत, प्रेत, विनायक, भैरव, प्रमथ वेताल और ब्रह्म
राक्षस, उन्माद, और कूष्मांड कोटिशः शिवजीके भेजे आयेहैं तब भूतगणनने तो अङ्गारनसों यादवनको मारेहैं, विनायकनने पट्टिशनसों, भैरवनने त्रिशूलनसों और प्रमथ
गणनने खड्गांगनसों यादव मारेहैं और ब्रह्मराक्षसनने मनुष्यको और घोडानको भक्षण कियेहैं ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ और यातुधान मनुष्यनके शिरनको चबावनलगे, वेताल
कपालनमें भर २ के रुधिर पीवनलगेहैं ॥ २३ ॥ पिशाच तहाँ नाचनलगे, प्रेत गावनलगेहैं और मूँडनको गेंद बनायके उडावनलगे ॥ २४ ॥ अट्टहास करते उत इतमें

धावते गजनकों, रथनको चबावते रणमंडलमें दिखाई परैंहै ॥ २५ ॥ और पिशाची तथा डाकिनी वा संग्राममें अपने पुत्रनकों रक्तको पान करावती मत रोओ एस कहती उनके नेत्रन फोडतीभई ॥ २६ ॥ उन्माद और कूष्मांड मुंडनकी माला बनायके श्रीमहादेवजीको निवेदन देयदेहैं, वे मुंड स्वर्ग जानेवाले शूरनके है ॥ २७ ॥ हे नृपेश्वर ! वा समय यदुसैन्यमे हाहाकार मचोहै जब घोडा और हाथी चारों तरफको भागेहै ॥ २८ ॥ संग्राममें पडे हजारन वीर मारेगयेहै या प्रकारसों श्रीमहादेवजीके गणनको पराक्रम देखके कृष्णको पुत्र दीप्तिमान् ॥ २९ ॥ धनुषमें बाणनको लगायके परम अद्भुत तिन बाणनको चलावनलगेहैं वे बाण भूत, प्रेत, विनायकनके शरीरमें प्रवेश करतेभये ॥ ३० ॥ जैसे वनमें मयूर प्रवेश करेहै, तब तिन किरोडन बाणनके मारे सब भूतगण भागेहैं ॥ ३१ ॥ कितनेई भूतगण संग्राममें गिरपडेहै और कितनेई मरगयेहै और कितनेई तो विना बाणन मारे

रक्तंपिशाच्योडाकिन्यःपातयंत्यःसुतान्मृधे ॥ मारोदीरितिवादिन्यअक्षीणिचतदाभृजत् ॥ २६ ॥ उन्मादश्चैवकूष्मांडानिर्मायमुण्डभिःस्रजः ॥
संयच्छंतिमहेशायशूराणांस्वर्गगामिनाम् ॥ २७ ॥ हाहाकारस्तदैवासीद्यदुसैन्येनृपेश्वर ॥ दुद्रुवंतोभयादश्वाधावंतस्तत्रदंतिनः ॥२८॥ वीराः
प्रपतितायुद्धेगतामृत्युंसहस्रशः ॥ दृष्ट्वाचेत्थंगणबलंदीप्तिमान्माधवात्मजः ॥ २९ ॥ चापेनिधायविशिखान्मुमुचेपरमाद्भुतान् ॥ तेशराविवि
शुस्तिग्माभूतप्रेतविनायकान् ॥ ३० ॥ कोटिशःकोटिशोराजन्यथारण्यंशिखण्डिनः ॥ ततश्चदुद्रुवुर्भिन्नाःसर्वेभूतगणाःशरैः ॥ ३१ ॥ केचि
न्निपतितायुद्धेकेचिद्वैनिधनंगताः ॥ नहताश्चशरैःकेपिपतिताःपूर्वमेवच ॥ ३२ ॥ पलायितेप्रेतगणेभैरवःक्रोधपूरितः ॥ त्रिशूलीसारमेयस्थआ
जगामकृतांतवत् ॥ ३३ ॥ तंदृष्ट्वाकालरूपंचभैरवंतुभयंकरम् ॥ नकोपियुयुधेतेनानिरुद्धोयुयुधेनृप ॥ ३४ ॥ अनिरुद्धःपंचशरैस्तताड
भैरवंमृधे ॥ सचापिपरिघेणापिबभंजतद्रथंवरम् ॥ ३५ ॥ सोप्यन्यंरथमारुह्यसज्जंकृत्वाधनुर्दृढम् ॥ ततोदशभिर्बाणैरौद्रंमायाविनंमृधे
॥ ३६ ॥ तैर्बाणैर्निहतःसोपिकिंचित्कश्मलतांगतः ॥ त्रिशूलंत्रिशिखंतस्मैचिक्षेपज्वलनप्रभम् ॥ ३७ ॥ शूलंसमागतंदृष्ट्वाबाणै
श्चिच्छेदकार्ष्णिजः ॥ छिन्नंस्वीयंत्रिशूलंवैदृष्ट्वारुद्रसुतोबली ॥ ३८ ॥ ससृजेमाययातत्रमुखादनलमेवच ॥ तेनाग्निनाजज्वलुश्चमही
वृक्षादिशोदश ॥ ३९ ॥

गिरपडेहै ॥ ३२ ॥ जब सब प्रेतोंके गण भागगये तब भैरवजी कोपसों पूर्ण भयेहै त्रिशूलको हाथमे लिये कुत्तापै विराजमान हैके आयेहै ॥ ३३ ॥ कालके समान विकराल जिनको रूप है, तब कालकीसो जिनको रूप ऐसे भयंकर भैरवजीको आयो देखके जब इनसों कोई नहीं लडेहै तब इनके संग अनिरुद्धने संग्राम कियोहै ॥३४॥ तब अनिरुद्धने भैरवके पाँच बाण मारेहै तब भैरवजीने एक परिघासों अनिरुद्धजीको रथ तोर गेरोहै ॥३५॥ तब अनिरुद्धजीने दूसरे रथमें बैठके और दृढ धनुषको सज्य करके मायावी भैरवके दश बाण मारे हैं ॥ ३६ ॥ तिन बाणनसों ताडन कियो भैरव कुछ कश्मलता (खेद) को प्राप्त भयो है फिर तीन शिखाको त्रिशूल अग्निके समान जाको प्रकाश वो अनिरुद्धको मारोहै ॥ ३७ ॥ तब अनिरुद्धने वा त्रिशूलको आयो देखके बाणनसों काटगेरो तब भैरवने अपने त्रिशूलको कटो देखके ॥३८॥ माया करके अपने मुखसे अनल पैदा कियोहै, वा अग्निसो भूमि, वृक्ष और दशो

दिशामे जलन लगीहै ॥ ३९ ॥ और पदाती, रथ, घोडे और हाथीनके शरीर वा अग्निमें ऐसे जलन लगेहैं जैसे सेमरकी रुई जले ॥ ४० ॥ कितनेई वीर तो मसालकी नाई जलने लगे और कितनेई जलके बिलकुल भस्म हैगये सब सेनामें आग लगगई है वा समय कितनेई कृष्णको स्मरण करन लगे ॥ ४१ ॥ या प्रकार सेनाको भयातुर भई देखके धनुषधारीनमें मुख्य जो अनिरुद्ध है याने अपने धनुषमें बाण लगायोहै या मायाको रची देखके ॥ ४२ ॥ या गणमे अनिरुद्धने पार्जन्यास्त्रको मंत्रसहित प्रयोग कियो है और कृष्णचरणको स्मरण करतेने वो बाण चलायोहै ॥ ४३ ॥ बाण छोडतेही घटा उमडआई और वर्षा करनेलगी अग्नि शांत हैगयो और ये माहूम पडनलगी मानों पूर्ण वर्षाऋतु है ॥ ४४ ॥ मोर, कोकिला, पपीहा और सारसादिक तथा मेडका बोलनलगे और इंद्रगोप (बीरबाहोटी) सुशोभित भईहैं ॥ ४५ ॥ आकाशमें इंद्रधनुष परगये बिजली चमकने

पदातीनांरथानांचहयानांदंतिनांतथा ॥ जज्वलुश्चशरीराणिमंजुपुष्पप्रतूलवत् ॥ ४० ॥ केचित्प्रजज्वलितावीराःकेचिद्भस्मतांगताः ॥ अग्निनापूरितंसैन्यंकृष्णंकेचित्स्मरंतिहि ॥ ४१ ॥ सेनांभयातुरांदृष्ट्वानिरुद्धोधन्विनांवरः ॥ दधारविशिखंचापेज्ञात्वामायांविनिर्मिताम् ॥ ४२ ॥ मंत्रयित्वाचमंत्रेणपर्जन्यास्त्रेणसायकम् ॥ मुमोचगगनेशीघ्रंस्मरन्कृष्णपदांबुजम् ॥ ४३ ॥ शरेमुक्तेसमागत्यमेघाःप्रववृषुर्जलम् ॥ अग्निःशांतिंगतोराजन्यथाप्रावृट्तथाबभौ ॥ ४४ ॥ शिखंडिनःकोकिलाश्चचातकाःसारसादयः ॥ मण्डूकाद्याश्चप्रजगुरिंद्रगोपाविरेजरे ॥ ४५ ॥ पुरंदरस्यचापेनसौदामिन्याबभौनभः ॥ प्रयासंनिष्फलंदृष्ट्वाभैरवोभैरवंरवम् ॥ ४६ ॥ चकारस्वमुखेनापिसर्वेषांत्रासयन्मनः ॥ ननादतेनब्रह्मांडंसप्तलोकैर्बिलैःसह ॥ ४७ ॥ विचेलुर्दिग्गजास्ताराराजद्भूखण्डमण्डलम् ॥ तदैवबधिरीभूताभुवःपतितानराः ॥ ४८ ॥ पुनश्चभैरवःक्रुद्धोहस्तंहस्तेनपीडयन् ॥ निष्पिपेषरदंतैर्लेलिहानःस्वजिह्वया ॥ ४९ ॥ नेत्राभ्यांरक्तवर्णाभ्यांपश्यन्सर्पैर्विभूषितः ॥ जग्राहपरशुंतीक्ष्णंतृणीकृत्ययदूत्तमम् ॥ ५० ॥ तदैवजृंभणास्त्रेणानिरुद्धोरणकोविदः ॥ भैरवंमोहयामासश्रीकृष्णइवशंकरम् ॥ ५१ ॥ तेनास्त्रेणरणेराजन्ननिरुद्धस्यपश्यतः ॥ पपातभूतलेरौद्रोजृंभितोनिद्रितोऽभवत् ॥ ५२ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांहयमेधखण्डेभैरवमोहनंनामसप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३७ ॥

लगी तब तो भैरवने अपने परिश्रमको व्यर्थ देखके एक भयंकर शब्द कियोहै ४६ ॥ वा शब्दसों सबनको त्रास उत्पन्न भयोहै जा शब्दसों सातो लोक और अतलादि सातो बिल सहित सब ब्रह्मांड गूँजउठौ ॥ ४७ ॥ भूखंडमंडलसहित तारागण चलायमान हैगयो दिग्गज चलायमान हैगये और वा समय हजारन मनुष्य बधिर (बहेरे) हैके गिरपरेहै ॥ ४८ ॥ तब तो फिर भैरवको कोप आयो सो दोनों हाथनको मीडके दांतनसो होठनको चबायके जीभसों दोनों गलफर चाटतो ॥ ४९ ॥ रक्तवर्ण नेत्रनसों देखतो सर्पनके भूषण नसो भूषित यदूत्तमनको तृणकी बराबर समझके एक फरसाकोही हाथमें लेतो भयोहै ॥५०॥ तब वाही समय रणकोविद अनिरुद्धने जृंभणास्त्रसो भैरवको ऐसे जृंभित कर दियोहै जैसे बाण युद्धमे श्रीकृष्णने शिवजीको जृंभित कियोहै ॥५१॥ हे राजन्! वा जृंभणास्त्रसों अनिरुद्धके देखते देखते भैरव जँभाई लेतो मोहित हैके रणभूमिमे गिरपडेहैं॥५२॥इति श्रीमद्गर्ग

संहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां सप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३७ ॥ गर्गजी कहैहैं कि, जब भैरवकोहू निद्रित (सोयो) देखोहै तब तो मृत्युंजयको बडो कोप आयो है सो वृषभको अनिरुद्धके सन्मुख प्रेरणा कियोहै, ये वृषभ बडो शूरमानी है ॥ १ ॥ तब तो सींगनसों यादवनको मारतो भयो तब ये वृष दंतनसों और पिछाडीके पांयसें सेनामें विचरन लगोहै ॥ २ ॥ सो शीघ्रतासों अपने शृंगसों संमुख खडे सुनंदनके प्रहार कियोहै तब याके शृंगनके मारे सुनंदनकी छाती फटिगई सोई ये मरगयो ॥ ३ ॥ तब अनिरुद्ध कुपित ह्वैके हाथीपै बैठो धनुषको लिये कवच पहरे मत डरो २ ऐसें कहतो आयोहै ॥ ४ ॥ आयके वा संग्राममें कृष्णके पुत्र सुनंदनको मरे देखोहै सोई तो बडे दुःखको प्राप्त भयो, अत्यंत कंपित ह्वैके शोकसों पूरित भयो ॥ ५ ॥ वीर सुनंदनके मरनेसें शोकमें डूबरहे अनिरुद्धसो शिवजी बोलेहै कि, हे अनिरुद्ध ! हे महाबल ! ॥ ६ ॥ शूरनको रणमें मरबो

॥ ॥ गर्ग उवाच ॥ ॥ तदामृत्युंजयःक्रुद्धोभैरवंवीक्ष्यनिद्रितम् ॥ वृषभंप्रेरयामासकार्ष्णिजंशूरमानिनम् ॥ १ ॥ तदैववृषभःकोपाच्छृंगाभ्यां
मारयन्यदून् ॥ दंतैःपश्चिमपादाभ्यांसेनायांविचचारह ॥ २ ॥ त्वरंजघानशृंगेणसंमुखस्थंसुनन्दनम् ॥ शृंगेणभिन्नहृदयःपपातपंचतांगतः ॥ ३ ॥
तदाऽऽजगामसंक्रुद्धोऽनिरुद्धोगजसंस्थितः ॥ धनुर्धरोदंशितश्चमाभैर्माभैरितिब्रुवन् ॥ ४ ॥ दृष्ट्वातत्रहतंवीरंकृष्णपुत्रंसुनन्दनम् ॥ प्राप्तोदुःखंह्य
त्यंतंकंपितःशोकपूरितः ॥ ५ ॥ हतेतस्मिन्महावीरेशोचंतंतंशिवोब्रवीत् ॥ माकुरुष्वत्वंरणेशोकमनिरुद्धमहाबल ॥ ६ ॥ रणमध्येपातनंचशू
राणांकीर्तयेस्मृतम् ॥ तस्मात्त्वमपिसंग्रामेमयायुद्धंचरस्वयत्नतः ॥ ७ ॥ प्रयातत्रक्षस्वप्राणान्ममाग्रेयुद्धकांक्षया ॥ ॥ गर्ग उवाच ॥ ॥
इतितस्यवचःश्रुत्वाशोकंत्यक्त्वायदूत्तमः ॥ ८ ॥ निचखानपंचबाणैःशिवस्यशिरसिनृप ॥ नाराचास्तेमहेशस्यजटाजूटेषुनिष्ठिताः ॥ ९ ॥
दृश्यंतेगृध्रपक्षाढ्याःशाखाइववनस्पतेः ॥ ततोरुद्रःस्वकोदंडेबाणमेकंनिधायच ॥ १० ॥ चिच्छेदतेनसहसातस्यचापस्यशिंजिनीम् ॥ अनि
रुद्धःपुनःशीघ्रंसज्जंकृत्वाधनुर्दृढम् ॥ ११ ॥ हरचापस्यचिच्छेदशिंजिनींसायकेनच ॥ ततःश्रुत्वातयोर्युद्धमद्भुतंरोमहर्षणम् ॥ १२ ॥ विमान
स्थाश्चशक्राद्याआजग्मुःकौतुकान्विताः ॥ ऊचुःपरस्परंखस्थानिरीक्ष्यभयविह्वलाः ॥ १३ ॥ ॥ देवा ऊचुः ॥ ॥ अमूलोकत्रयस्यापि
ह्युत्पत्तिलयकारकौ ॥ एतयोश्चरणंतस्माद्विफलंरणमण्डले ॥ १४ ॥

कीर्तिके लिये होयहै यासों तुम भी मेरसों युद्ध करौ, बडे यत्नसों ॥ ७ ॥ मेरे आगे युद्ध करनेको आये प्राणनकी रक्षा करौ, गर्गजी कहै हैं ऐसे शिवजीके कहेको सुनके यदूत्तम अनिरुद्ध शोकको छोडके ॥ ८ ॥ शिवजीके शिरमें पांच बाण मारतौभयो वे पांचो बाण शिवजीके जटाजूटमें उरझगयेहैं ॥ ९ ॥ वे ऐसे सुशोभित भये जैसे वृक्षमें डरगांसके पांख होयँ, तब महादेवजीने अपने धनुषमें एक बाण लगायके ॥ १० ॥ तब वा बाणसों शिवजीने अनिरुद्धकी प्रत्यंचा काटगेरी, फिरि अनिरुद्धने और प्रत्यंचा चढायके शिवजीके धनुषकी प्रत्यंचा काटगेरी तब इन दोनोंनके अद्भुत और रोमहर्षण संग्रामको सुनिके ॥ ११ ॥ १२ ॥ विमानोंमें बैठे इंद्रादिक देवता बडो कौतुक समझके आयेहैं, आकाशमें खडे ह्वैके युद्धको देखके भयभीत ह्वैके बोलेहैं ॥ १३ ॥ देवता बोलेहै कि, ये दोनोंही तीनों लोकनके उत्पत्ति, लयके करनवारे हैं यासों रणभूमिमें इनको युद्ध करनो निष्फल है ॥ १४ ॥

इनमेंसों कौन संग्रामको जीतेगो और कौनको पराभव होयगो ? गर्गजी कहैहैं कि, तदनंतर तीन दिन इनको युद्ध भयोहै ॥ १५ ॥ फिर शिवजीने कुपित हैके धनुष सज्य करके लोकको प्रलय करनवारे ब्रह्मास्त्रको संधान कियो ॥ १६ ॥ तब अनिरुद्धने ब्रह्मास्त्रसों याको ब्रह्मास्त्र शांत कियोहै फिर पार्वतास्त्र चलायो, अनिरुद्धने वज्रास्त्रसों शांत करदियोहै तब शिवजीने आग्नेयास्त्र चलायोहै, अनिरुद्धने पर्जन्यास्त्र चलायके शांत कर्योहै ॥ १७ ॥ तब शिवजीने कुपित हैके त्रिशिख त्रिशूल अनिरुद्धके ऊपर प्रहार कियोहै ॥ १८ ॥ सो त्रिशूल अनिरुद्धको और हाथीको भेदन करके पार निकसगयोहै, दोनोंनके बीचमें ऊपरको पुंख और नीचेको मुख स्थित भयोहै ॥ १९ ॥ इस युद्धमें हाथी तो मरगयो और अनिरुद्ध मूर्च्छित हैगये दोनोंकी छाती फटगई और रणभूमिमें गिरपरेहैं ॥ २० ॥ तब तो बडो भारी हाहाकार शब्द भयोहै सब यादव शिवजीके आगे रुदन

कोविजेष्यतिसंग्रामंप्राप्स्यतेकःपराजयम् ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ ततस्त्रिदिनपर्यंतंयुद्धमासीत्तयोर्भृशम् ॥ १५ ॥ पुनःशरासनंरुद्रःस
ज्यंकृत्वारुषान्वितः ॥ ब्रह्मास्त्रंसंदधेतत्रलोकप्रलयकारकम् ॥ १६ ॥ ब्रह्मास्त्रेणतुब्रह्मास्त्रंभिदुरास्त्रेणपार्वतम् ॥ पर्जन्यास्त्रेणचाग्नेयमनिरुद्धोजहा
रह ॥ १७ ॥ तदाप्रकुपितोऽत्यंतंपिनाकीप्रज्वलन्निव ॥ त्रिशिखेनत्रिशूलेनजघानकार्ष्णिनन्दनम् ॥ १८ ॥ सत्रिशूलश्चतंभित्त्वागजंभित्त्वा
विनिर्गतः ॥ स्थितोभूचतयोर्मध्येऊर्द्ध्वपुंखअधोमुखः ॥ १९ ॥ गजोमृत्युंगतोयुद्धेनिरुद्धोमूर्च्छितोऽभवत् ॥ पेततुस्तौचसंलग्नौभिन्नवक्षस्थ
लौमृधे ॥ २० ॥ हाहाकारस्तदैवासीद्रुरुदुःसर्वयादवाः ॥ रुद्रस्याग्रेयथाभीतायमस्याग्रेचपापिनः ॥ २१ ॥ अनिरुद्धंनिपतितंमृततुल्यंविमू
र्च्छितम् ॥ श्रुत्वाययौशंकितश्चसांबःस्कंदंविहायच ॥ २२ ॥ मूर्च्छितंयदुवीरंतुवीक्ष्यक्रोधपरिप्लुतः ॥ अश्रुपूर्णमुखःसांबःशर्वप्राहधनुर्द्धरः ॥
॥ २३ ॥ कस्मात्करिष्यसेरुद्रदानवानांहिपालनम् ॥ हत्वानिरुद्धंसंग्रामेवीरंचैवसुनन्दनम् ॥ २४ ॥ वेदेभागवतेशास्त्रेपुराविप्रैःश्रुतंमया ॥ श्री
कृष्णाख्यंपरंनित्यंशिवःसेवतिवैष्णवः ॥ २५ ॥ मृषाजातंहितत्सर्वंकार्ष्णिजेपतितेसति ॥ सुनन्दनःकृष्णसुतोसोपियुद्धेत्वयाहतः ॥ २६ ॥
वृथाकरिष्यसेयुद्धंधिक्त्वांतस्मान्महेश्वर ॥ अहंत्वांपातयिष्यामिरणेकृष्णपराङ्मुखम् ॥ २७ ॥

करनेलगे जैसे यमराजके अगारी पापीजन रुदन करैं है ॥ २१ ॥ इतनेमें मरेके समान मूर्च्छित भये परे अनिरुद्धको सुनके शंका जिनके मनमें उत्पन्न भई ऐसे सांबजी स्वामिका र्तिकजीको छोडके आयेहैं ॥ २२ ॥ तब यदुवीर (अनिरुद्ध) को मूर्च्छित परो देखके क्रोधमें पूर्ण हैके आंखोंमें जिनके अश्रु आयगये ऐसे सांबजी शिवजीसे बोले ॥ २३ ॥ हे रुद्र ! आज संग्राममें अनिरुद्धको और सुनंदनको पटककर फिर बताओ, दैत्यनको पालन कैसे करोगे ॥ २४ ॥ मैंने पहले वेदमें, भागवतमें और शास्त्रमें ब्राह्मणनके मुखसों सुनोहै कि, शिवजी नित्य परब्रह्म श्रीकृष्णकोही सेवा करैहैं, याहीसो शिवजी अनन्य वैष्णव कहे जातेहैं ॥ २५ ॥ सो आज अनिरुद्धके गिरनेपर वो बात (वैष्णव होनो) झूठी हैगई, जो तुमने कृष्णके पुत्र सुनंदनको मारदेरो याते तुमारो वैष्णवपनो जातो रह्यो ॥ २६ ॥ यासों हे महेश्वर ! अब तुमारो युद्ध करनो व्यर्थ है, तुमे धिक है जो अब तुम

कृष्णसें बहिर्मुख हैगयोहै, अब कृष्णसे बहिर्मुख भये तुमको मै संग्राममें मारके पटकौंगो ॥ २७ ॥ ठैर ठैर देख इन क्षुरप्र बाणनसो संग्राममें मारके पटकौंगो, ये सुनके प्रसन्न हैके शिवजी बोलेहै ॥ २८ ॥ शिवजी बोले हे यादवश्रेष्ठ ! तू धन्य है, तुम जो हमसों कहोहौ सो सब सत्य है ये देव और दानव जिनकी वंदना करैहैं वेही कृष्ण मेरे नाथ है ॥ २९ ॥ कुनंदनके मरेपै और बल्वलके मूर्च्छित भयेपै हे वीर ! सहायक बनके भक्तको रक्षा करवेकोही मैं आयो हौं ॥ ३० ॥ कछु क्रोधसों पूर्ण भयो अपने वचनके सत्य करवेको आयो मैं फिर युद्धांगणमें युद्ध करोंगो अपने भक्तको प्यार करवेकी इच्छासों ॥ ३१ ॥ शिवजीके या प्रकार कहनेपर रोषसों पूर्ण भयो सांब बडी शीघ्रतासों धनुषमें क्षुरप्रनामके जे बाण हैं तिनसों शिवजीके प्रहार कियेहै ॥ ३२ ॥ इन बाणनते शिवजीके किंचित् भी पीडा नहीं भई है जैसे मत्त गजके फूलनकी माला मारेसे नही पीडा होयहै ॥ ३३ ॥ तब शिवजीने अपनो धनुष हाथमें लियो है और बाण लगायके बडे तीक्ष्ण सांबके मारेहै या प्रकार सांबने शिवजीके और शिवजीने सांबके

क्षुरप्रैःसायकैःशीघ्रंतिष्ठतिष्ठरणेशिव ॥ एतद्वचःसमाकर्ण्यप्रसन्नःशंकरोऽब्रवीत् ॥ २८ ॥ ॥ शिवउवाच ॥ ॥ धन्यस्त्वंयादवश्रेष्ठसत्यंवद सिनोभवान् ॥ मन्नाथःकृष्णचन्द्रोयंदेवदानववंदितः ॥ २९ ॥ कुनंदनेचनिहतेबल्वलेमूर्च्छितेरणे ॥ सहायार्थमहंवीरभक्तरक्षार्थमागतः ॥ ॥ ३० ॥ सत्यंकर्तुंस्ववचनांकिंचित्कोपेनपूरितः ॥ करोमिप्रधनेयुद्धंभक्तप्रियचिकीर्षया ॥ ३१ ॥ इत्थंवदतिभूतेशेसांबोरोषप्रपूरितः ॥ तता डशीघ्रंचापेनक्षुरप्रैःसायकैर्मृडम् ॥ ३२ ॥ तैर्बाणैर्निहतोरुद्रोनाकिंचित्कश्मलंगतः ॥ यथामतंगजःपुष्पैर्जग्राहस्वधनुःशिवः ॥ ३३ ॥ तताड निशितैर्बाणैर्युद्धेजांबवतीसुतम् ॥ सांबःशिवंशिवःसांबंजघ्नतुस्तौपरस्परम् ॥ ३४ ॥ दृष्ट्वायुद्धंतयोर्लोकसंहारंमेनिरेऽमराः ॥ भूतलेगगनेराज न्महान्कोलाहलोऽभवत् ॥ ३५ ॥ भीताश्चवृष्णयस्तत्रनाथंकृष्णंस्मरंतिहि ॥ ३६ ॥ तदाहरिःश्रीयदुपालकश्चज्ञात्वायदूनांचमहाविपत्तिम् ॥ रथेनतत्रागतवान्रिपुघ्नोयुक्तेनशैब्यसुतुरंगमैश्च ॥ ३७ ॥ श्यामःकिरीटीनवकंजनेत्रोनवार्ककोटिद्युतिमादधानः ॥ कौमोदकीशंखरथांगपद्मको दंडबाणैर्नियुतोसिधारी ॥ ३८ ॥ श्रीवत्सचिह्नेनतुकौस्तुभेनपीतांबरेणापिचमाल्ययाढ्यः ॥ नीलालकैःकुण्डलकङ्कणाद्यैर्विभूषितःकोटिमनो जतुल्यः ॥ ३९ ॥ समुद्गलद्भिःसितफेनशीकरान्मुक्ताफलानीवचराजहंसकैः ॥ सुग्रीवमुख्यैरतिवेगवत्तरैर्हयैर्युतःसुन्दरसामगायनैः ॥ ४० ॥

परस्पर बाण चलायेहै ॥ ३४ ॥ तब इनके युद्धको देखके राजन् ! सब प्रजाने लोकनको संहार मानो है, या समय हे राजन् ! बड़ो भारी कोलाहल भयोहै ॥ ३५ ॥ भयसों भीत हैके सब यादव श्रीकृष्णको स्मरण करनलगेहै ॥ ३६ ॥ तब यदुवंशके पालन करनवारे भगवान् श्रीकृष्ण यदुवंशीनकी विपत्तिको जानके शत्रुनके मारनवारे शैब्य आदि अश्व जामें जुतरहे, दारुकयुक्त रथमें विराजमान हैके आप आयेहैं ॥ ३७ ॥ श्यामसुंदर किरीटको पहरें, नवीन कमलकेसे जिनके नेत्र, उदयकालीन कोटि सूर्यके समान तेजको धारण करनवारे, कौमोदकी, गदा, शंख, चक्र, कमल, धनुष, बाण और ढाल, तरवार ॥ ३८ ॥ श्रीवत्सको चिह्न, कौस्तुभ मणि, पीतांबर और वनमालाको धारण कररहे, नील अलक और कुंडल, कंकणसों विभूषित, किरोड कामदेवके समान हैं ॥ ३९ ॥ जैसे राजहंस मोतीनको उगले वैसे श्वेत फेनके कणनको मुखसों उगलरहे, सुग्रीव आदिक अश्व सामवेदकी ऋचानके

गनेवारे घोडनके जुते रथमें विराजमान ऐसे ॥ ४० ॥ अपने नाथ भगवान् श्रीकृष्णको आयो देखके हर्षसे विह्वल यादवनने स्वागत कियो और सुखी भयेहैं, शीतके मारे जैसें मनुष्य सूर्यको देखके प्रसन्न होयहै ॥ ४१ ॥ तब यदुसैन्यमें जय जय शब्द भयोहै और आकाशमें स्थित देवतानने पुष्प वर्षाये हैं ॥ ४२ ॥ तब सांबने सहाय करवेको आये कृष्णको देखके बडे हर्षित हैके धनुषको पटकके पायनमें गिरपरे ॥ ४३ ॥ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायामष्टात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३८ ॥ ॥ गर्गजी कहैहैं कि, तब श्रीकृष्णके दर्शनको करके श्रीशिवजी भयभीत है शंकित भयो मन जिनको सो अपने धनुष, त्रिशूलादिकनको छोडके बडी भक्तिसों श्रीकृष्णसों बोलेहैं ॥ १ ॥ शिवजी बोले हे विष्णो ! मेरे अविनयको दूर करो, मनको मेरे दमन करो, विषयमृगतृष्णाको शमन करौ, भूतनपर दयाको विस्तार करौ और संसारसागरसों मोय पार लगाओ ॥ २ ॥ दिव्यधुनी (नदी) को मकरंद और परिमल (गंध) के परिभोगसों सत्चित् जामें आनंद,

दृष्ट्वास्वनाथंयदवोस्वागतंहर्षविह्वलाः ॥ बभूवुःसुखिनःसर्वेशीतभीतारविंयथा ॥ ४१ ॥ तदाजयजयारावोयदुसैन्येबभूवह ॥ प्रचक्रिरेपुष्प
वर्षंगगनस्थाश्चदेवताः ॥ ४२ ॥ दृष्ट्वासांबस्तुश्रीकृष्णंसहायार्थंसमागतम् ॥ पपातपदयोस्तस्यचापंत्यक्त्वाप्रहर्षितः ॥ ४३ ॥ इति श्रीमद्ग
र्गसंहितायांहयमेधखण्डेऽनिरुद्धादिसाहाय्यार्थंकृष्णगमनंनामाऽष्टात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३८ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ कृष्णंदृष्ट्वाहरस्तत्रभीतः
शङ्कितमानसः ॥ त्यक्त्वाचापत्रिशूलादीन्भक्त्याश्रीनाथमब्रवीत् ॥ १ ॥ ॥ शंकरउवाच ॥ ॥ ॐअविनयमपनयविष्णोदमयमनः
शमयविषयमृगतृष्णाम् ॥ भूतदयांविस्तारयतारयसंसारसागरतः ॥ २ ॥ दिव्यधुनीमकरंदेपरिमलपरिभोगसच्चिदानंदे ॥ श्रीपतिपदार
विंदेभवभयखेदच्छिदेवंदे ॥ ३ ॥ सत्यपिभेदापगमेनाथतवाहंनमामकीनस्त्वम् ॥ सामुद्रोहितरंगःक्वचनसमुद्रोनतारंगः ॥ ४ ॥ उद्धृतनग
नगभिदनुजदनुजकुलामित्रमित्रशशिदृष्टे ॥ दृष्टेभवतिप्रभवतिनभवतिकिंभवतिरस्कारः ॥ ५ ॥ मत्स्यादिभिरवतारैरवतारवतावतावसुधाम् ॥
परमेश्वरपरिपाल्योभवताभवतापभीतोहम् ॥ ६ ॥

संसारके भयके खेदको छेदन करनेवारे श्रीपतिके पदारविंदको मै प्रणाम करौहौं ॥ ३ ॥ हे नाथ ! भेदके अपगम (निवृत्ति) में भी मै तो आपको हूँ पन आप मेरे नहीं हौ जैसे तरंग समुद्रको है परंतु तरंगनको समुद्र नहीं है ऐसेही आपके हम है, आपके बनाये हम सब ब्रह्मा, रुद्रादिक हैं परन्तु हमारो बनायो नहीं है किंतु तू स्वतः सिद्ध है ॥ ४ ॥ उखारे हैं नग (पर्वत) जिनने ऐसो जो नगभित् (इंद्र) ताके अनुज अर्थात् हे इंद्रानुज ! हे दैत्यनके कुलके अमित्र (शत्रु) अर्थात् हे दैत्यारे ! और सूर्य चंद्रमा है नेत्र जाके ताको संबोधन है कि, हे मित्रशशिदृष्टे ! और जब आपके दर्शन करे तोही संसारको प्रभाव नहीं होयहै तब फिर कहौ आपमें या संसारको प्रभाव कैसे हैसकैहै ॥ ५ ॥ और हे परमेश्वर ! मत्स्यसों आदिक जे अवतार तिन अवतारनसों अवतारवाले भूमिके पालन करनवारे जे आप तिन तुम करके मै पालन करनेयोग्य हूँ, हे प्रभो ! मैं संसारके तापसों भयभीत हौं,

आपकी शरण हौं, आप रक्षा करौ ॥ ६ ॥ हे दामोदर ! हे गुणमंदिर ! (हे गुणालय !) हे सुंदर है वदनकमल जाको ! हे गोविंद ! आप संसारसमुद्रके मंथन करनेके मंदराचल, और पर है मंदर स्थान (वैकुंठ) जाको, मेरे दोषनको दूर करौ ॥ ७ ॥ हे नारायण ! हे करुणामय ! मैंने आपके चरणनकी शरण लीनीहै ये षट्पदी मेरे मुखकमलमें सदा निवास करौ ॥ ८ ॥ यामकार शिवजीने जिनकी स्तुति करी ऐसे संकर्षणके अनुज श्रीभगवान् प्रणाम कररहे, श्रीशिवजीसों सब अभिप्राय पूछते भयेहैं ॥ ९ ॥ भगवान्ने कही है कि, सुनौ शिवजी मेरे कुबुद्धिपुत्रने आपको कहा अपराध कियो हौ ? जो तुमने मेरे पुत्रको तो मारगेरो और अनिरुद्धको मूर्च्छित करदियो ॥ १० ॥ और यादवनकी सेना आपने क्यों मारी ? और आप लडवेको क्यों आयेहो ? और आप क्यों लडेहो ? ये सब मोसों कहिये ॥ ११ ॥ ऐसें श्रीकृष्णके कहेको महादेवजी सुनके बडे लज्जित हैकें और बहुतकुछ

दामोदरगुणमंदिरसुन्दरवदनारविंदगोविन्द ॥ भवजलधिमथनमंदरपरमंदरमपनयत्वंमे॥७॥नारायणकरुणामयशरणंकरवाणितावकौचरणौ॥ इतिषट्पदीमदीयेवदनसरोजेसदावसतु ॥ ८ ॥ इतिस्तुतःशङ्करेणप्रीतःसंकर्षणानुजः ॥ पप्रच्छसर्वाभिप्रायंनमन्तंचन्द्रशेखरम् ॥ ९ ॥ ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ किंकृतस्तेऽपराधोवैमत्पुत्रेणकुबुद्धिना ॥ यतस्त्वयाहतःसंख्येनिरुद्धोमूर्च्छितःकृतः ॥ १० ॥ हतंयदुबलंक स्मात्कस्मात्त्वंचागतोरणे ॥ कस्माद्युद्धंचकृतवांस्तन्मेव्याख्यातुमर्हसि ॥ ११ ॥ इत्थंश्रीकृष्णवचनंनिशम्यप्रमथेश्वरः ॥ उवाचलज्जितो भूत्वाविचार्यमधुसूदनम् ॥ १२ ॥ ॥ शंकरउवाच ॥ ॥ देवदेवजगन्नाथराधिकेशजगन्मय ॥ पाहिपाहिकृपाकारिन्निस्त्रपंमांकृतागसम् ॥ १३ ॥ त्वंनजानासिकिंदेवकथयिष्यामिकिंत्वहम् ॥ भक्तस्यपालनंकर्तुमाययातवमोहितः ॥ १४ ॥ अहमागतवान्देवत्वंसर्वंक्षंतुमर्हसि॥ शास्ताहंसर्वलोकस्यमानादितिमयाहरे ॥ १५ ॥ मारितासंगरेशूरावृष्णयःकृष्णदेवताः ॥ तस्मात्संतःस्वयंत्यक्त्वापरमैश्वर्यमीप्सितम् ॥१६॥ ध्यायंतेसततंकृष्णपादाब्जंतेनिरापदम् ॥ सुखंदुःखंनृणांतावद्यावत्कृष्णेनमानसम् ॥ १७ ॥ कृष्णेमनसिसञ्जातोभक्तिखड्गोदुरत्ययः ॥ नराणांकर्मवृक्षाणांमूलच्छेदंकरोतियः ॥ १८ ॥

विचारके बोले हैं ॥ १२ ॥ शिवजी बोले—हे देवदेव ! हे जगन्नाथ ! हे राधिकेश ! हे जगन्मय ! हे कृपाकारिन् ! अपराध करनवारे निर्लज्जकी मेरी रक्षाकर रक्षा कर ! ॥ १३ ॥ महाराज ! आप नहीं जानौहौ का ? भलो मैं कहा कहौं ? मैं तेरी मायासों मोहित भयो भक्तके पालन करवेको आयोहौं ॥ १४ ॥ सो हे देव ! या मेरे सब अपराधको क्षमा करौ कि, मैं सब लोकको शासन करनवारो हौं, या मेरे मानको निवृत्त करौ ॥ १५ ॥ कृष्ण जिनके देवता ऐसे बडे शूर यादवनको जो मैंने मारेहैं या मेरे अपराधकोहू आप क्षमा करौ, याहीसों संतजन वांछित परमैश्वर्यको त्यागके निरंतर कृष्णके चरणकमलको जे ध्यान करैहैं तिनको कभी कोई आपत्ति नहीं आवैहै जबतक ये जीवें कृष्णमें मन नहीं लगावैहै तबीताईं याको अनेक दुःख सुख प्राप्त होयहै ॥ १६ ॥ १७ ॥ जब मनमें कृष्णविषयक भक्तियोग खड्ग उत्पन्न होयहै तब वो भक्तियोग मनु

स्यनके कर्मरूप वृक्षनकी जडको छेदन करैंहै ॥ १८ ॥ मेरी भक्तिके बल सौंदर्य जिनको भयो ऐसे पापी जे मनुष्य है वे मेरे स्वामी यदूत्तम जे आप हो तिनको नहीं मानैंहैं वे सब
अवश्य नरकनमें जायहैं ॥ १९ ॥ इतनी प्रार्थना करके श्रीशंकर चुप ह्वैकै कृष्णके चरणनमें दंडकीसी नाईं जायपरैंहैं और आकुल ह्वैकै आँखिनमें आंसू भरलायेहैं ॥ २० ॥ तब
पाँवनमें परे शिवजीको उठायके आश्वासन कियो फिर भगवान् मिलके कृपामृतभरी दृष्टिसों देखते भयेहैं ॥ २१ ॥ फिर आपने कहीहै कि, सुनौ शिवजी ! सबी देवता अपने
भक्तोंको पालन करैंहैं तब फिर जो तुमने भक्तको पालन कियोहै सो तुमने कोई बुरो काम नहीं कियोहै ॥ २२ ॥ देखो मेरो हृदय तुमही और तुमारो हृदय मैं हूँ, मेरो
तुमारो भेद नहीं है जे मंदबुद्धि है वे मेरो, तुमारो भेद देखैंहै ॥ २३ ॥ हे शिव ! जे मेरे भक्त हैं वे सब तुमको प्रणाम करैंहै और तुमारे भक्त सदा मोकूँ प्रणाम करैंहै, जे कोई
मेरे या वाक्यको नहीं मानैंहैं वे मनुष्य अवश्य नरकमें जाय है ॥ २४ ॥ गर्गजी कहैंहै कि, श्रीकृष्ण भगवान् ऐसे कहिकै पुत्र सुनंदनके मरेभयेको अपनी कृपामृत दृष्टिसों वा

मद्भक्तिबलदर्पिष्ठामत्प्रभुंत्वांयदूत्तमम् ॥ नमन्यंतेचतेसर्वेयास्यंतिनिरयंध्रुवम् ॥ १९ ॥ इत्युक्त्वाशंकरस्तूष्णींभूत्वाकृष्णस्यपादयोः ॥ पपा
तदंडवद्भक्त्याह्यश्रुपूर्णाकुलेक्षणः ॥२०॥ उत्थाप्याश्वास्यतंरुद्रंपश्चात्तत्प्रदर्शनात् ॥ मिलित्वाभगवान्कृष्णआलुलोकसुधार्द्रदृक् ॥ २१ ॥
आहकृष्णःसुराःसर्वेकुर्वंतिभक्तपालनम् ॥ त्वयाजुगुप्सितंकर्मकिंकृतंभक्तपालने ॥ २२ ॥ ममासिहृदयेत्वंतुभवतोहृदयेह्यहम् ॥ आवयोरंतरं
नास्तिमूढाःपश्यंतिदुर्धियः ॥ २३ ॥ त्वांनमंतिचमद्भक्तास्त्वद्भक्तामांसदाशिव ॥ येनमन्यंतिमद्वाक्यंयास्यंतिनरकंचते ॥ २४ ॥ इत्युक्त्वाभग
वान्कृष्णोहतंपुत्रंसुनन्दनम् ॥ दृष्ट्यापीयूषवर्षिण्याजीवयामाससंयुगे ॥ २५ ॥ तत्पश्चादनिरुद्धस्यहृदयाच्छूलमेवच ॥ शनैःशनैःसमाकृष्य
जीवयामासतंहरिः ॥२६॥ तत्पश्चाद्यादवान्सर्वान्निहतान्संयुगेभृशम् ॥ अजीवयत्सुधादृष्ट्याकृष्णस्तुप्रभुरीश्वरः ॥२७॥ तावत्सदुंदुभिरवंपुष्पवृ
ष्टिंदिवौकसः ॥ उत्साहलक्षणांचक्रुःप्रसाद्यगरुडध्वजम् ॥२८॥ सर्वत्रैलोक्यनेतारंकृष्णंदृष्ट्वायदूत्तमाः ॥ उत्थायसंभ्रमाच्चक्रुर्जयारावंमुदान्वि
ताः ॥ २९ ॥ अथोत्थितोबल्वलस्तुमहादेवेनरक्षितः ॥ क्वगतश्चानिरुद्धोवैब्रुवन्वाक्यंरुषान्वितः ॥ ३० ॥ ततःशर्वेणदैत्यस्तुबोधितोवचनैः
शुभैः ॥ ज्ञात्वाकृष्णस्यमाहात्म्यंमुदितोऽभून्महामनाः ॥३१॥ ततःप्रणम्यगोविंदंस्तुत्वादैत्यस्तुबल्वलः ॥ तुरगंप्रददौराजन्बहुद्रव्येणसंयुतम् ॥३२॥

संग्राममें जिवायदियेहै ॥ २५ ॥ फिर पीछे भगवान्ने अनिरुद्धके हृदयमेंसो धीरेधीरे त्रिशूल खैंचके निकासौहै तब अनिरुद्ध भी सजीव ह्वैके उठबैठोहै ॥ २६ ॥ ताके पीछे जितने
यादव संग्राममें मेरे परेहैं तिनको श्रीकृष्णने अपनी अमृतवर्षिणी दृष्टिसों सजीव करदियेहै यामें कोई आश्चर्य नहीं है क्योंकि, आप ईश्वर है ॥ २७ ॥ तब आकाशमें देवताननें
नगाडे बजायेहै, पुष्पनकी वर्षा करीहै और बडे उत्साहसों गरुडध्वजको प्रसन्न कियोहै ॥ २८ ॥ तब सब लोकनके नेता श्रीकृष्णको सब यादव देखके बडे संभ्रमसों उठके ॥३८
बैठगये और बडे आनंदित ह्वैकै जयध्वनिको करतेभयेहै ॥ २९ ॥ तब शिवजीने जाकी रक्षा करी सो बल्वल दैत्यहू उठोहै तब ये कहतोभयो उठोहै, अरे अनिरुद्ध कहाँ गयोहै ॥
॥ ३० ॥ तब शिवजीने शुभ वचननसो दैत्यको समुझायोहै तब ये दैत्य श्रीकृष्णके माहात्म्यको जानके महामना ये दैत्य प्रसन्न भयोहै ॥ ३१ ॥ तब ये बल्वलदैत्य गोविंद श्रीकृ

णाको प्रणाम करतोभयो और हे राजन् ! अनेक वस्तु समेत श्रीकृष्णको घोडा लायके निवेदन कियोहै ॥ ३२ ॥ तब यज्ञियाश्वके लेके पुत्रपौत्रसहित श्रीकृष्ण सेतुकी रस्तासों पश्चिम दिशाको गयेहै ॥ ३३ ॥ कृष्णभगवान्के गयेपै श्रीशिवजीहू बल्वलदैत्यको राज्यपै बैठायके भैरवको संग लेके कैलासको गये है ॥ ३४ ॥ या कृष्णके चरित्रको जे मनुष्य घरमें सुनेहै तिनकी सहाय श्रीकृष्णभगवान् सदा करैंगे ॥ ३५ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायामेकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ३९ ॥ गर्गजी कहैहै तदनंतर कृष्णने छोडो जो अश्व है, पत्र जाके माथेमें बँधो है और दोनों बगलनमें चमरसों भूषित वो अनेक देशनको नेत्रनसों देखतो अगारी चलोहै ॥ १ ॥ तब बल्वल दैत्यको जीतो सुनके अनेक देशोंके स्वामी राजानने श्रीकृष्णके भयसों काहूने नहीं पकरोहै, हे नृप ! ॥ २ ॥ या प्रकार वो घोडा या भरतखंडमें विचरतो २ हे राजेंद्र ! एक महीनामें व्रजमंडलमें आयके पोहुँचोहै ॥ ३ ॥ तब श्रीयमुनाजीके पार उत्तरके वृंदावनमें आयके ये अश्वरत्न एक

ततोयज्ञहयंनीत्वापुत्रपौत्रपरिवृतः ॥ सेतुमार्गेणकृष्णस्तुप्रययौपश्चिमांदिशम् ॥३३॥ कृष्णेगतेभगवतिराज्येसंस्थाप्यबल्वलम्॥कैलासंप्रययौरुद्रःसगणस्तुसभैरवः॥३४॥ एतत्कृष्णचरित्रंतुयेशृण्वंतिगृहेजनाः ॥ तेषांसहायंभगवान्करिष्यतिसदाहरिः ॥३५॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांहयमेधखण्डेऽनिरुद्धविजयवर्णनंनामैकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥३९॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ मुक्तस्तुरंगःकृष्णेनपत्रचामरभूषितः ॥ प्रययौसन्द्रन्देशान्नेत्राभ्यांचविलोकयन् ॥१॥ बल्वलंनिर्जितंश्रुत्वानानादेशाधिपानृपाः ॥ हयंनजगृहुःप्रासंश्रीकृष्णस्यभयान्नृप ॥ २ ॥ इत्थंव्रजन्भारतेवैयदुवीरतुरंगमः ॥ एकमासेनराजेंद्रप्राप्तोभूद्व्रजमण्डले ॥ ३ ॥ ततःकृष्णांसमुत्तीर्यहृष्टावृन्दावनंवनम् ॥ तमालस्यतलेराजन्स्थितोभूद्धयसत्तमः ॥ ॥ ४ ॥ दूर्वांचरंतंतुरगंविलोक्यविहायगास्तेकिलगोपबालाः ॥ समाययुस्तेनृपकौतुकेनहयस्यपार्श्वेकरताडनैश्च ॥ ५ ॥ इतिपश्यत्सुसर्वेषु श्रीदामागोपनायकः ॥ जग्राहलीलयाराजश्चरंतंचंचलंहयम् ॥ ६ ॥ गोपाशेनहयंबद्ध्वागलेगोपैःपरिवृतः ॥ केनोत्सृष्टोवदन्वाक्यंनन्दस्यनिकटंययौ ॥ ७ ॥ आगतंवाजिनंदृष्ट्वानन्दोपिहर्षपूरितः ॥ तत्पत्रंवाचयित्वाऽऽहसर्वान्गद्गदयागिरा ॥ ८ ॥ उग्रसेनहयश्चैषपुरेममसमागतः ॥ पालितोह्यनिरुद्धेनमत्प्रपौत्रेणसर्वतः ॥ ९ ॥ गृह्णामियज्ञतुरगंमित्राणांमिलनायच ॥ ततःप्रपौत्रंपश्यामिकृष्णाकारंप्रियंकरम् ॥ १० ॥ इत्युक्त्वानन्दराजस्तुहृष्टोगोपैःपरिवृतः ॥ कथयित्वायशोदायैऽभिप्रायंनिर्ययौपुरात् ॥ ११ ॥

तमालकी छायामें आयके ठेहरगयोहै ॥ ४ ॥ वहाँ हरी २ दूबको चरते घोडाको देखके गऊके चरावनवारे ग्वारिया लोग गोपनके बालक गऊनको छोडके ताली बजाते बडे खेलसों घोडेके पास आयेहैं ॥ ५ ॥ या प्रकार सब गोप देखरहेहैं कि, श्रीदामा नाम गोपेश्वरने चररहे वा चंचल घोडेको आयके पकरलीनोहै ॥ ६ ॥ गऊनके रस्सासों या घोडेको नारमे बाँधके गोपनसों परिवृत अरे भाइयो ! ये घोडा कौनको ऐसे वाक्यनको कहते २ घोडेको लिये नंदबाबाके पास गयेहै ॥ ७ ॥ तब आयेभये वा घोडेको देखके नंदबाबाहू हर्षसों पूरित हैके वा पत्रको बँचवायके बडी गद्गद वाणीसों ये बोलेहैं ॥ ८ ॥ भाइहो ! देखो ये उग्रसेनको घोडा मेरे नगरमें आयोहै मेरे पन्ती अनिरुद्ध याके संगमें रखवारे हैं ॥ ९ ॥ सो मै या यज्ञके घोडाकूँ पकरूहूँ, मित्रनके मिलवेके लिये, तब कृष्णकोसो जाको आकार ऐसे प्रिय करनवारे पन्तीको देखोंगो ॥ १० ॥ इतनी बातको नंदराज सुनके

गोपन समेत देखवेको यशोदाके आगे अभिप्राय कहिके पुरके बाहिर निकसेहैं ॥ ११ ॥ त्योंही वाही समय भोज वृष्णि और अंधकवंशी सब यादव घोडेके पीछे लगेभये हैं नृपेश्वर ! वहाँही आयेहैं ॥ १२ ॥ ये यादव नेपाल तीर्थ, मिथिलापुरी, अयोध्यापुरीको देखते बर्हिष्मतीपुरी, कन्नोजमें होते संकर्षण श्रीबलदेवजीके निवासस्थान श्रीगोकुलमें होते है राजन् ! ॥ १३ ॥ जहाँ श्रीयमुनाजी, मथुरापुरी विराजमान है, जो श्रीकेशवजीकी पुरी है तहाँ वृंदावनमें नंदपुरमें हे नृपेंद्र ! श्रीकृष्णसहित सब यादव आयेहैं ॥ १४ ॥ तब रथमें विराजमान भये श्रीनंदनंदनने नंदग्रामको देखके सब यादवनके अगारी हैके भगवान् नंदग्राममें आयेहैं ॥ १५ ॥ तहाँ आयके सब गोपनके अगारी नंदबाबाको देखेहैं, वडो भारी शृंगार कियो हाथीको अगारी खडो देखोहै ॥ १६ ॥ हे नृपेश्वर ! अनेक बाजे बजरहेहैं शंखशब्द हैरहेहैं, जयजय शब्द हैरहेहैं, पुष्पनके आभूपण मंगल कलश और

तदेवयादवाःसर्वेभोजवृष्ण्यंधकादयः ॥ हयस्यपृष्ठतोलग्नास्तत्राजग्मुर्नृपेश्वर ॥ १२ ॥ विलोकयंतोनयपालतीर्थंतथाचमार्गेमिथिलामयो ध्याम् ॥ बर्हिष्मतींचैवहिकान्यकुब्जंसांकर्षणंगोकुलमेवराजन् ॥ १३ ॥ मार्त्तंडकन्यांमथुरांपुरींचविराजतेयत्रतुकेशवश्च ॥ वृंदावनेनन्दपुरे नृपेंद्रसमागताःकृष्णयुताश्चसर्वे ॥ १४ ॥ नन्दग्रामंतत्रदृष्ट्वारथस्थोनन्दनंदनः ॥ सर्वेषामग्रतोभूत्वाह्याययौयादवैर्वृतः ॥ १५ ॥ ददर्शतत्रपुर तोगोपालैःपितरंहरिः ॥ संस्थितंतुपुरस्कृत्यवारणेन्द्रमलंकृतम् ॥ १६ ॥ वादित्रैःशंखशब्दैश्चजयशब्दैर्नृपेश्वर ॥ पुष्पालंकारकलशलाजा द्यैःपरिभूषितम् ॥ १७ ॥ ततश्चयादवाःसर्वेनेमुर्नंदंनिरीक्ष्यच ॥ हर्षाश्रुविप्लुताराजन्नुद्धवाद्याश्चतत्रवै ॥ १८ ॥ तदैवनन्दराजस्यदक्षिणांगम थास्फुरत् ॥ उवाचहृष्टमनसिह्युत्तमंशकुनंनृप ॥ १९ ॥ अद्यपश्यामिनेत्राभ्यांकृष्णंकिंप्रियवादिनम् ॥ यस्मान्ममाक्षःस्फुरतिदक्षिणश्चप्रि यंकरः ॥ २० ॥ मन्नेत्रगोचरःकृष्णोयदाभूयात्तदाह्यहम् ॥ गवांलक्षंप्रदास्यामिब्राह्मणेभ्योह्यलंकृतम् ॥ २१ ॥ इत्युक्त्वावचनंनंदोविररामयदा नृप ॥ तदाशृणोत्स्वपुत्रस्यागमनंव्रजवासिभिः ॥ २२ ॥ श्रीकृष्णागमनंश्रुत्वानन्दोविरहविप्लुतः ॥ पश्यन्हरिंचसर्वेषांनिचचाररुदन्निव॥२३॥ वदन्कृष्णेतिकृष्णेतिगिरागद्गदयाभृशम् ॥ हेकृष्णचन्द्रक्वगतोदुःखितंमांनपश्यसि ॥ २४ ॥

धानकी खीलसों भूषित है ॥ १७ ॥ तब सब यादव नंदबाबाको देखके प्रणाम करतेभये और हे राजन् ! उद्धवादिक सब आनंदके सागरमें डूबगयेहैं ॥ १८ ॥ तब नंदबाबाको दक्षिण अंग फडकनलगोहै तब हे नृप ! वा उत्तम शकुनक देखके मनमें विचार करनलगेहैं ॥ १९ ॥ कहा मैं आज प्रियवादी कृष्णको देखोंगो जो आज प्यारी बातको करनवारो मेरो दक्षिण अंग फडकैहै ॥ २० ॥ आज मेरे नेत्रगोचर श्रीकृष्ण होयँगे, कहा तब मैं शृंगार करीभई एक लाख गऊ ब्राह्मणनको देऊँगो जो मैं कृष्णके दरशन पाऊँगो तौ ॥ २१ ॥ इतनी बात नंदजी कहिके हे नृप ! जब चुप हैगये तब व्रजवासिनके मुखसों श्रीकृष्णको आगमन सुनोहै ॥ २२ ॥ तब श्रीकृष्णके आगमनको सुनके विरहमें डूबे नंदबाबा हरिको देखनेको सबके अगारी रोवतेसे विचरनलगेहैं ॥ २३ ॥ गद्गद वाणीसों हे कृष्ण ! हे कृष्ण ! ऐसे कहते गद्गद वाणी करके बोले हैं, हे श्रीकृष्णचंद्र ! ऐसे कहते दुःखी मोको

नहीं देखोहो कहा ? ॥ २४ ॥ तब पितृवत्सल श्रीकृष्ण पिता (नंदबाबा) को देखके रथमेंसों उतरके नंदबाबाके पाँयनमें गिरपडे हैं ॥ २५ ॥ तब बहुत दिनमें आये पुत्र कृष्णको उठायके, छातीसों लगायके, जलसों स्नान करायके आनंदमें मग्न हैगयेहैं ॥ २६ ॥ तब श्रीकृष्णके नेत्रनसों आँसूनकी धार बहीहैं, प्रेममें डूबे श्रीदामादिक अपने मित्रनको देखोहै ॥ २७ ॥ तब श्रीकृष्ण अपने एक एक मित्रनसों पृथक् २ मिलेहैं स्नेहके प्रवाहमें डूबेहैं, अहो देखो ये भूमंडलमें भक्तनके माहात्म्य कहिवेको कोन समर्थ हैसकै हैं ॥ २८ ॥ तब नंदादिक गोप और कृष्णादिक यादव रुदन करनलगेहैं, वे सब विरहमें विकल हैके बोलनेकोहू समर्थ नहीं भये हैं ॥ २९ ॥ तब श्रीनेत्रमें आँसूभरके गद्गद वाणीसों प्रेमानंदमें आकुल जे सब गोप हैं तिनको आश्वासन करतेभयेहैं ॥ ३० ॥ वा समय सब गोपनने परिपूर्णतम साक्षात् जगदीश्वर कृष्णको वैसोही देखोहै जैसे कि, जब

ततोनिरीक्ष्यपितरंश्रीकृष्णःपितृवत्सलः ॥ अवप्लुत्यरथात्तूर्णंपपातचरणौपितुः ॥ २५ ॥ श्रीनन्दराजस्तनयंसमुत्थाप्यचिरागतम् ॥ स्नापया मासस्सलिलैःकृत्वावक्षसिनेत्रयोः ॥ २६ ॥ अक्षिभ्यांकृष्णचन्द्रस्तुमुमोचाश्रुघृणातुरः ॥ श्रीदामादीन्सखीन्दृष्ट्वापश्चात्प्रेमपरिप्लुतान् ॥ २७ ॥ पृथक्पृथक्परिरेभेकृष्णप्रेमपरिप्लुतः ॥ भक्तानांकोस्तिमाहात्म्यमहोवक्तुंधरातले ॥ २८ ॥ नन्दाद्यारुरुदुर्गोपाःश्रीकृष्णाद्याश्चयादवाः ॥ प्रव क्तुंनसमर्थास्तेसर्वेविरहविक्लवाः ॥ २९ ॥ अश्रुपूर्णमुखेःकृष्णोगोपान्गद्गदयागिरा ॥ सर्वानाश्वासयामासप्रेमानंदसमाकुलान् ॥ ३० ॥ परिपूर्णतमंसाक्षाच्छ्रीकृष्णंजगदीश्वरम् ॥ तादृशंददृशुःसर्वेयादृशोमथुरांगतः ॥ ३१ ॥ नवीननीरदश्यामंकिशोरवयसंशिशुम् ॥ शरत्प्रभातक मलकांतिमोचनलोचनम् ॥ ३२ ॥ शरत्पूर्णेन्दुशोभाढ्यंशोभास्वाच्छादनाननम् ॥ कोटिमन्मथलावण्यंलीलानंदितसुन्दरम् ॥ ३३ ॥ सस्मि तंमुरलीहस्तंद्विभुजंह्यतिसुन्दरम् ॥ तडिद्वस्त्रधरंदेवंमत्स्यकुण्डलिनंहरिम् ॥ ३४ ॥ चन्दनोक्षितसर्वांगंकौस्तुभेनविराजितम् ॥ आजानुमाल तीमालावनमालाविभूषितम् ॥ ३५ ॥ मयूरपिच्छचूडंचसद्रत्नमुकुटोज्ज्वलम् ॥ पक्वबिंबाधिकोष्ठंचनासिकोन्नतशोभनम् ॥ ३६ ॥ एवंकृष्ण स्यराजेन्द्ररूपंनेत्रैर्व्रजौकसः ॥ पपुरानन्दसंमग्नाःपीयूषंमानवाइव ॥ ३७ ॥

व्रजसों मथुराजी गये हे वा समय जैसे हे ॥ ३१ ॥ नवीन मेघके समान श्याम, किशोर अवस्थाको जैसो बालक, शरत्कालीन कमलको लज्जित करनवारे जाके नेत्र ॥ ३२ ॥ शरदऋतुके चंद्रमाकी शोभाको आच्छादन करनवारो जाको मुख, कोटि कामदेवके सौंदर्यको निंदा करनवारो ज्याको सौंदर्य तासों आनंदित कियेहैं संत और सुर जाने ॥ ॥ ३३ ॥ मंद मुसकान करे, मुरलीको हाथमें लिये, दो जिनके भुजा अतिसुंदर बिजलीवत् वस्त्रको धारण करे मकर आकार कुंडल पहरे ॥ ३४ ॥ केसरिया चंदनसों सर्वांग जिनको लिप्त, कौस्तुभसों विराजित जिनको कंठ, आजानुलंबित भुजदंड, आजानु पर्यंत मालतीकी माला और वनमालासों विराजित ॥ ३५ ॥ मोरपंखनको मुकुट और उत्तम रत्नको मुकुट तासों उज्ज्वल, पक्व कंदूरीकेसे ओष्ठ, ऊँची नासिकासों अति शोभन ॥ ३६ ॥ हे राजेंद्र ! ऐसे श्रीकृष्णके रूपको व्रजवासी आनंदमें मग्न हैके ऐसे पीवोहै जैसे

अमृतको मनुष्य पीवे ॥ ३७ ॥ तब नंदबाबाने अनिरुद्ध और सांबादि यादवनको परम प्रसन्न हूंके प्रेममें डूबरहेने अनेक आशिष दीनी हैं ॥ ३८ ॥ तब नंदबाबाने अपने पुत्र, पौत्रनसहित व्रजमें प्रवेश किये तब महामति नंद सब दुःखसों रहित भयो ॥ ३९ ॥ तब सांबादि पुत्रनसों शोभित श्रीकृष्ण रथमेंते उतर माता (यशोदा) के घरमें आनंद देते आप पधारे हैं ॥ ४० ॥ तब श्रीकृष्णने घरके द्वारपें आई यशोदाको देखीहै, रुदन करती बाष्प जाके कंठमें ता माताको आपने देख प्रणाम करीहै ॥ ४१ ॥ तब माता यशोदाने प्राणनसों प्यारे अपने पुत्रको आलिंगन कर गद्गद होकर आशीर्वाद दिये हैं ॥ ४२ ॥ तब नंदजी, उपनंद, और छै वृषभानु और वृषभानुवर ये सब श्रीकृष्ण के दर्शन करवेको आयेहै ॥ ४३ ॥ और वहां आई जो सब गोपी है, यादवनसहित श्रीकृष्णने इन सबनको यथोचित मान कीनां है ॥ ४४ ॥ तब इन सबनने प्रसन्न मुख

अनिरुद्धंततोनन्दःसांबादींश्चैवयादवान् ॥ आशिषंप्रददौराजन्प्रीतःप्रेमपरिप्लुतः ॥ ३८ ॥ ततःसर्वैश्चयदुभिःपुत्रपौत्रपरिवृतः ॥ विवेशस्वपुरं नन्दोगतदुःखोमहामतिः ॥ ३९ ॥ अवरुह्यरथात्कृष्णःसांबाद्यैःपरिभूषितः ॥ त्वरंस्वमातुर्भवनमानंदंप्रददन्ययौ ॥ ४० ॥ दृष्ट्वास्वमातरंकृष्णोगृहद्वारेसमागताम् ॥ रुदतींवाष्पकण्ठींतांननामप्ररुदन्हरिः ॥ ४१ ॥ यशोदातस्यजननीस्वप्राणेभ्यःप्रियंसुतम् ॥ उपगूह्यददौतस्मैगिरा गद्गदयाशिषः ॥ ४२ ॥ नन्दस्तथोपनंदश्चतथापड्वृषभानवः ॥ वृषभानुवरश्चैवह्येतेद्रष्टुंसमाययुः ॥ ४३ ॥ तत्रागतानांगोपानांश्रीकृष्णोयादवैर्वृतः ॥ यथाविध्युपसंगम्यसर्वेषांमानमादधे ॥ ४४ ॥ तेतुकृष्णस्यकुशलंपप्रच्छुर्मुदिताननाः ॥ तेषांकृष्णस्तुभगवान्पप्रच्छकुशलंपरम् ॥ ॥ ४५ ॥ ततश्चयमुनातीरेवृंदारण्येनृपेश्वर ॥ बभूवुःशिबिराःसर्वेऽनिरुद्धस्यमहात्मनः ॥ ४६ ॥ शिबिरेष्वनिरुद्धाद्याःसांबाद्याश्चोद्धवादयः ॥ निवासंचक्रिरेकृष्णःस्थितोभून्नंदपत्तने ॥ ४७ ॥ आगतेभ्यश्चसर्वेभ्योनंदःकृष्णेनसंयुतः ॥ भोजनंप्रददौराजन्पशुभ्यश्चतृणानिच ॥ ॥ ४८ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायांहयमेधखण्डेव्रजप्रवेशोनामचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४० ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ आहूतोराधयाकृष्णःसन्ध्यायांनंदनंदनः ॥ जगामशश्वदेकांतिशीतलंकदलीवनम् ॥१॥ रंभादलैश्चंदनस्यपंकयुक्तंमनोहरम् ॥ स्फारास्फुरत्नभगेहंयमुनावायुशीकरम् ॥२॥

हूंके कृष्णको कुशल पूछीहै और भगवान् कृष्णने उनको कुशल पूछीहै ॥ ४५ ॥ तब तो हे नृपेश्वर ! यमुनाजीके तीरपै वृंदावनमें अनिरुद्धके सेनाके डेरा तंबू परगयेहैं ॥ ॥ ४६ ॥ उन तंबूनमें सब अनिरुद्धादिक और सांबादिक सब यादव तथा उद्धवादिकनने तंबू डेरानमें निवास कियोहै और कृष्णचंद्रने या रात्रिमें नंदमहलमेंही निवास कियोहै ॥ ॥ ४७ ॥ तब जे कोई अनिरुद्धादिकनके संगमें हे उननको सब खान पान दियोहै और पशु (हाथी घोडे आदिक) नको चारो, दानो, रातब आदि सबको सब चीज नंदबाबानेही दीनोंहै ॥ ४८ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४० ॥ गर्गजी कहेहै कि, संध्याके समय जब श्रीराधाजीने श्रीकृष्णको बुलवाई तब शीतल कदलीवनको आप राधाजीके पास गयेहैं ॥ १ ॥ जामें केलाके पत्रनको बनमें एक घर बन रह्योहै, जामें चोवा,

चंदन, छिरक रह्योहै, आगे जलकण चारों बगल झररहेंहैं और यमुनाजीको शीतल जल संबंधी पवन चलरह्योहै ॥ २ ॥ ऐसो अतिसुंदर श्रीप्रियाजीको मंदिर है परंतु यो सब प्रियाजीको विरहाग्निसों भस्मके समान मालूम परैहै ॥ ३ ॥ हे नृप ! ता मंदिरमें विराजीभई श्रीवृषभानुनंदिनी श्रीदामाजीके शापसों श्रीकृष्णके आगमनके लिये अपने शरीरकी रक्षा करैहैं ॥ ४ ॥ तब श्रीराधाजी वनमें पधारी श्रीकृष्णको आये सखीनके मुखसों सुनके आप आसनते उठके सब सखीनको संग लेके बडी शीघ्रतासों अपने मंदिरके द्वारपर लिवायवेके लिये आईहैं ॥ ५ ॥ श्रीकृष्णके लिये व्रजेश्वरीने अर्घ्य, पाद्य, आसन आदिक उपचार निवेदन कियेहै और श्रीव्रजेश्वरके लिये कुशल प्रश्नके वचन कहैहैं ॥ ६ ॥ परिपूर्णतम कृष्णको देखके परिपूर्णतमा राधिकाजीने विरहव्यथा दूर करी और समागमके हर्षसों पूर्ण भई हैं ॥ ७ ॥ फिर वस्त्रभूषणनसों अपनो शृंगार

एतादृशंराधिकायाःसुन्दरंमेघमंदिरम् ॥ सर्वंदुःखाग्निनानित्यंभस्मीभूतंबभूवह ॥ ३ ॥ श्रीदामशापेननृपदुःखेनवृषभानुजा ॥ तनुंरक्षतितत्रापिकृष्णागमनहेतवे ॥ ४ ॥ निशम्यकृष्णंस्ववनेसमागतंसखीमुखाच्छ्रीवृषभानुनंदिनी ॥ आनेतुमुत्थायवरासनात्त्वरंद्वारेसखीभिर्नृपसाजगामह ॥ ५ ॥ ददौह्यासनपाद्याद्यानुपचारान्व्रजेश्वरी ॥ वदंतीकुशलंवाक्यंकृष्णाकृष्णंव्रजेश्वरम् ॥ ६ ॥ परिपूर्णतमंदृष्ट्वापरिपूर्णतमा नृप ॥ जहौविरहजंदुःखंसंयोगेहर्षपूरिता ॥ ७ ॥ चकारस्वस्याःशृंगारंवस्त्रालंकारचंदनैः ॥ कुशस्थल्यांगतेनाथेशृंगारोनकृतस्तया ॥ ८ ॥ पुरातयानभुक्तंचतांबूलंमिष्टभोजनम् ॥ कृतंनशय्याशयनंकचिद्धास्यंनवाकृतम् ॥ ९ ॥ सिंहासनेस्थितंराधादेवंमदनमोहनम् ॥ हर्षाश्रूणिप्रमुंचंतीजगौगद्गदयागिरा ॥ १० ॥ ॥ राधोवाच ॥ ॥ गोकुलंमथुरांत्यक्त्वागतःकस्मात्कुशस्थलीम् ॥ वदतन्मेहृषीकेशत्वंसाक्षाद्गोकुलेश्वरः ॥ ११ ॥ क्षणंयुगसमंनाथजानामित्वद्वियोगतः ॥ घटीमन्वंतरसमांद्विपरार्द्धसमंदिनम् ॥ १२ ॥ कस्मिन्कुकालेविरहोमेबभूवचदुःखदः ॥ येनत्वच्चरणौदेवनद्रक्ष्यामिसुखप्रदौ ॥ १३ ॥ यथारामंतुसीतेवमानसंवरटेवच ॥ तथारासेश्वरंत्वांतुमानदंहिसमुत्सहे ॥ १४ ॥ सर्वंजानासिसर्वज्ञःकिंदुःखंकथयाम्यहम् ॥ शतवर्षंगतंनाथवियोगोनगतोमम ॥ १५ ॥

कियेहै, जबसों आप द्वारिकाको पधारेहैं तबसों सब शृंगार त्यागदियेहै, सो कियेहैं ॥ ८ ॥ जबसों आप गयेहैं वाही दिनसों राधिकाने ताम्बूलादिक मिष्ट भोजन, शय्यापै शयन, काहूसे हँसनो ये सब छोडदियेहै ॥ ९ ॥ तब सिंहासनपै विराजे देव मदनमोहनको देखके हर्षाश्रुनको बहावती गद्गद वाणीसों बोलीहै ॥ १० ॥ राधाजी बोली महाराज ! गोकुलका और मथुराजीको छोडके आप द्वारिकाजीको कैसे पधारे ? हे हृषीकेश ! आप तो साक्षाद्गोकुलेश्वर है, ये आप मोय बताओ ॥ ११ ॥ हे नाथ ! आपके वियोगमें मैं एक क्षणको एक युग जानोंहों, एक घडीको एक मन्वंतरके समान और एक दिनको द्विपरार्धके समान मानोंहो ॥ १२ ॥ हाय वो कौनसी खोटी घडी ही, जामें मेरो आपसों वियोग भयो हो, जासों फिर सुखप्रद आपके चरण न दीखे ॥ १३ ॥ जैसे श्रीरामको सीताजी, और मानससरको हंसी चाहे ऐसेही मान देनवारे आप रासेश्वरको मैं चाहूंहूं ॥ १४ ॥ तुम सर्वज्ञ हो,

सब जानोही मैं अपनो कहा दुःख कहौं सौ वर्ष बीतगयेहैं पर मेरो वियोग निवृत्त न भयो ॥ १९ ॥ हे राजन् ! स्वामिनीजी स्वामीसों इतने वचन कहिके वियोगके दुःखमें डूबी, दुःखनको याद करती रुदन करनलगीहैं ॥ १६ ॥ तब रुदन करती प्रियाजीको भगवान् देखके प्रिय वचन बोलेहैं, अपने वचननसों प्यारीके दुःखनको शांत करतेभये ॥ १७ ॥ श्रीकृष्णजी बोले कि, हे राधे ! शरीरको सुखावनवारो शोक तुमे नहीं करनो चाहिये, प्यारीजी ! मेरो तेरो तेज एकही दो हैगयोहै, वास्तवसों न्यारो नहीं है ॥ १८ ॥ या बातको ऋषि जानैहैं जहाँ तू है वहाँ मैंहूँ, जहाँ मैंहूँ तहाँ तू है, मेरो तुमारो कबहूँ वियोग नहीं है जैसे प्रकृति, पुरुषको वियोग नहीं है ॥ १९ ॥ और जे कोई हममें तुममें भेद देखैहै वे नराधम हैं, हे राधे ! वे मनुष्यदेहके अंतमें नरकनमें परैहै ॥ २० ॥ अब अगारी तुम मोकूँ अपने पासही देखोगी जैसे प्रातःकालमें चकवी अपने प्यारे

इत्युक्त्वावचनंराजन्स्वामिनीस्वामिनीपरम् ॥ वियोगखिन्नादुःखानिस्मरंतीसारुरोदह ॥ १६ ॥ दृष्ट्वाप्रियांरुदंतींतांप्रियःप्राहप्रियंवचः ॥
तस्याश्चशमयन्वाक्यैःकृष्णःकश्मलमेवच ॥ १७ ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ नकर्त्तव्यस्त्वयाराधेशोकश्चतनुशोषकः ॥ तेजश्चैकंद्विधाभूत
मावयोश्चंपयोविदुः ॥ १८ ॥ यत्राहंत्वंसदातत्रयत्रत्वंचाहमेवच ॥ वियोगआवयोर्नास्तिमायापुरुषयोर्यथा ॥ १९ ॥ भेदंहिचावयोर्मध्येये
पश्यंतिनराधमाः ॥ देहांतेनरकान्राधेतेप्रयांतिस्वदोषतः ॥ २० ॥ अथातस्त्वंतुमांराधेनित्यंद्रक्ष्यसिचांतिके ॥ प्रभातेचक्रवाकीवचक्रवाकं
प्रियंकरम् ॥ २१ ॥ किंचित्कालेनदयितेगोपगोपीभिरेवच ॥ साकंत्वयाऽक्षरंब्रह्मश्रीगोलोकंव्रजाम्यहम् ॥ २२ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥
माधवस्यवचःश्रुत्वागोपीभिःसहराधिका ॥ प्रसन्नापूजयामासरमेशंचरमायथा ॥ २३ ॥ श्रीराधयापुनःकृष्णोरासार्थंप्रार्थितोनृप ॥ प्रसन्नो
वृंदकारण्येरासंकर्तुंमनोदधे ॥ २४ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डेराधाकृष्णमेलनंनामैकचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४१ ॥ ॥ गर्ग
उवाच ॥ ॥ हेमंतेमासिपूर्वस्मिन्राकायांराधिकेश्वरः ॥ वंशींवशकरींदध्मौयथावृन्दावनेपुरा ॥१॥ ध्वनिर्बभूवतस्याश्चसर्वेषामाहरन्मनः॥
निशम्यगोप्यःसंखिन्नाःकामखेदेनतत्क्षणः ॥ २ ॥ रुंधन्नंबुभृतश्चमत्कृतिपरंकुर्वन्मुहुस्त्वंबरंध्यानाद्वंतनयन्सनंदनमुखान्विस्मेरयन्वेधसम् ॥
औत्सुक्याद्बलिभिर्बलिंचटुलयन्भोगेंद्रमाघूर्णयन्भिदन्नंडकटाहभित्तिमभितोबभ्रामवंशीध्वनिः ॥ ३ ॥

चकवाको अपने समीपमें देखैहै ॥ २१ ॥ हे प्रिये ! किंचित्काल बीते पीछे गोपगोपीनको संग लैके साक्षात् अक्षर ब्रह्मस्थान गोलोकको जाऊँहौ ॥ २२ ॥ गर्गजी बोलेहैं कि, ये श्रीकृष्णके कहेको सुनके श्रीराधिका सब सखीनके सहित प्रसन्न हैके रमेशको रमा जैसे ऐसे पूजन करतीभई ॥ २३ ॥ तब श्रीराधासे कृष्ण हे नृप ! रासके लिये प्रार्थना कियेगये तब प्रसन्न हैके वृंदावनमें रास करवेको तयार भयेहै ॥ २४ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायामेकचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ४१ ॥ गर्गजी कहैहै कि, हे राजन् ! हेमंतऋतुमें पहले महीनामें पूर्णिमामें राधिकानाथने वृंदावनमें जैसे पहले बजाई ही याहीप्रकार वशकरी वंशी बजाईहै ॥ १ ॥ ता समय सबनके मनको हरनवारी या वंशीकी ध्वनिको सुनके कामके खेदयुक्त भई जे गोपी वे सब त्रासयुक्त होतीभई ॥ २ ॥ समुद्रके वेग रुकगये अर्थात् जलमें हिलोर आनो बंद हैके जल स्थिर

हैगयो, आकाशमें अनेक चमत्कार दीखनलगे सनन्दनादिक योगिनके ध्यान छूटगये, ब्रह्माजीकोहू वडो भारी विस्मय भयोहै, बडी भारी उत्कंठासों अनेक प्रकार बोले लेकें बलि राजा चंचल हैगये, शेषजी कॉंपनेलगे और जब वंशी बजीहै तब सब जगत्, सब ओरसे ब्रह्मांड फूटनलगेहैं ॥ ३ ॥ इतनेमेंही चर्षणी (विरहीजननके) शोचनको धोवतो चंद्रमा उदय भयोहै, जैसे हे राजेंद्र ! परदेशसों आयो पति अपनी प्रियाके शोचको दूर करैहै ॥४॥ हे राजन्! वा समय यमुनाजीने दिव्य तनु धारण कियोहै और वृंदावन तथा गोवर्धन और व्रजकी भूमिने अपनो २ दिव्य रूप धारण कियोहै ॥ ५ ॥ सोही अब इनके दिव्य रूपनको वर्णन करैहै कि, वो श्रीयमुना नदी सर्वोत्कर्ष करके बरतेहैं, जामें मणींद्र मोती माणिक्य श्वेत (हीरा) और हरित (पन्ना) इनकी जिनमें तोलिका (कोट) तिनसों और वैदूर्य, नीलक, पन्ना, हीरा, पीतमणिनकी जिनमें सिढी ऐसे मणिमंडप तिनसों जो प्रकाश करैहै ॥ ॥ ६ ॥ अपनी-इच्छासों चलनवारे जे मत्स्यनके गण तिनसों युक्त निर्मल अपने अंगसो पापसमूहनको नाश करती बहिरहीहै ॥ ७ ॥ फिर कहैहैं कि, वा गोवर्धन पर्वतको भजन

अथोद्गाच्चंद्रमास्तुचर्षणीनांशुचोमृजन् ॥ यथाप्रियायाराजेंद्रविदेशादागतःप्रियः ॥ ४ ॥ तदैवयमुनाराजंस्तनुंदिव्यंदधारह ॥ वृन्दावनंगिरींद्रश्चव्रजभूमिश्चमानद ॥ ५ ॥ कृष्णानदीजयतियत्रमणींद्रमुक्तामाणिक्यशुभ्रहरिताकरतोलिकाभिः ॥ वैडूर्यनीलकहरिद्धरिवज्रपीतसोपानमण्डपयुताभिरतिस्फुरंती ॥ ६ ॥ स्वच्छंदसूत्पतितमत्स्यगणैर्वहंतीसच्छ्यामलेनवपुषाऽघगणंहरंती ॥ उत्तुंगलोललहरीकमलैर्लसंतीकृष्णानदीजयतिकृष्णगृहेलुठंती ॥ ७ ॥ गोवर्द्धनंभजगिरिंशतचंद्रयुक्तंमंदारचन्दनलतावृतकल्पवृक्षम् ॥ श्रीरासमण्डलयुतंमणिमंडपाढ्यंकोटीरसंकुलनिकुञ्जकुटीरकोटिम ॥ ८ ॥ वृंदावनंचयमुनातटनीरतीरसंपृक्तमंदगमनैरतिगंधवातैः ॥ तत्कंपितंचसुरभीकृतसर्वदेशंश्रीखण्डकुंकुममृदागुरुचर्चितंशम् ॥ ९ ॥ जुष्टंवसंतनवपल्लवपुष्पपर्णैर्मंदारचंदनसुचंपकनीपनिंबैः ॥ आम्रातकाम्रपनसागुरुनागरंगैःश्रीतालपिप्पलवटैर्नवनारिकेरैः ॥ १० ॥ खर्जूरश्रीफललवंगविराजमानमंजीरशालकतमालकदंबयुक्तम् ॥ संतानकुंदबदरीकदलीसिताढ्यंश्रीशाल्मलीबकुलकेतकिसच्छिरीषम् ॥ ११ ॥ सन्मोदिनीजलजवृन्दमनोहराभंवृन्दारकंवरवनंतुलसीलताढ्यम् ॥ श्रीमल्लिकाऽमृतलतामधुमाधवीभिःसंराजितंस्मरनृपेंद्रव्रजस्यमध्ये ॥ १२ ॥

करै जामें शत १०० चंद्र प्रकाश करैहै और मंदार और चंदनकी लतानसों लिपटे कल्पवृक्षनके वन हैं, रासमंडल जामें बनरह्योहै मणिनके मंडपनसों युक्त है, सुवर्णमय मंजुल निकुंजकुटी जामें किरोडन बनरही हैं ॥ ८ ॥ जमुनाजीके तटपै नीर (जल) सों मिलो, मंद गति जाकी और अति सुगंधित जो पवन तासों हलरहै, जिनके गंधसों सब देश सुगंधित है रह्यो और चंदन, केसरकी मृत्तिका और अगर तिनसों सब देश अतिसुशोभित है ॥ ९ ॥ बसंतके नवीन कोमल पल्लव और पुष्पनसों मंदार चंदनके, चंपाके, कदंब, और नीम, आम्रातक, आम्र, पनस (कटहर), नारंगी, ताल, पिप्पल, बट, नारियल ॥ १० ॥ खजूर, बेल, लवंग इनसों विराजमान है और अंजीर, शाल, तमाल, कदंबनसों युक्त है, संतान (कल्पवृक्ष), कुंद, बेर, केला, शाल्मली (सेमर), बकुल (मौलसरी), केतकी और शिरस है जामें ऐसो वृंदावन है ॥ ११ ॥ संतनके मनको आनंद देनवारो,

कमलनके वनसों मनोहर जाकी कांति, तुलसीनकी लतानसों युक्त, श्रीमल्लिका अमृतलता, वासंतीलता और माधवीकी लता इनसों जो वृंदावन अति सुशोभित है ऐसे श्रीव्रजक मध्यमें ॥१२॥ वंशीवट है और कोकिल आदि पक्षी तिनसों युक्त, यमुनाके तटपै पुलिन, कोमल, शीतल वालुकासों युक्त है, श्रीपाटल, महुआ, किंशुक, प्रियाल, गूलर, सुपारी, दाख, कैथ तिनसो युक्त ॥१३॥ कचनार, नींब, अर्जुन, पाकर, अशोक, सरौ, देवदारु, जामन, नेत्र, नरसल, कुब्जक, स्वर्णयूथी, पुन्नाग, नाग, गुडहर और वकके वृक्ष जामें तिनसों सघन है ॥१४॥ और चकवा, चकवी, सारस, तोता, श्वेत हंसनके बच्चा, कारंडव और जलमुर्गानसों कूजित है ॥१५॥ पपीहा, कोकिल, कपोत, नीलकंठ तिनसों और नृत्य करौ मोरनके मनोहर शोर जामे ऐसे वृंदावनको तू स्मरण कर॥१६॥और श्यामा चिडी, चकोर, खंजन, मैना, कबूतर, भ्रमर, तीतर, तीतिरी, कनकवेलि, मधु लता, जुही इनसों युक्त है और हरिण, वानर, वानरी, तिनसों युक्त है ॥ १७ ॥ पुखराजके जामें शिखर ऐसे निकुंजगेह जामें बनेहैं, जिन गेहनमें कौस्तुभ मणि, इंद्रनीलमणिनके समूह लगे तिनसों विराजमान है और कोटिइन,

वंशीवटंचकलकंठविहंगमैश्चकृष्णातटेचपुलिनंकिलवालुकाढ्यम् ॥ श्रीपाटलैर्मधुककिंशुकसत्प्रियालैरौदुंबरैःक्रमुकद्राक्षकपित्थयुक्तम् ॥१३॥ श्रीकोविदारपिचुमंदलतार्जुनैश्चप्लक्षैरशोकसरलैःसुरदारुभिश्च ॥ जंबूसुवेत्रनलकुब्जकस्वर्णयूथीपुन्नागनागकुटजैःकुरवैर्वृतंच ॥ १४ ॥ चक्राह्वसारसशुकैःसितराजहंसैः कारंडवैश्चजलकुक्कुटकूजितंच ॥ १५ ॥ दात्यूहकोकिलकपोतकनीलकण्ठैर्नृत्यन्मयूरकलरावयुतंस्मरत्वम् ॥ १६ ॥ श्यामाचकोरकलखञ्जनसारिकाभिःपारावतैर्भ्रमरतित्तिरतित्तिरीभिः ॥ श्रीकांचनीमधुलतामधुयूथिकाभिःसंवेष्टितंहरिणमर्कटमर्कटीभिः ॥ १७ ॥ श्रीपद्मरागशिखरंचनिकुञ्जगेहंश्रीकौस्तुभेंद्रमणिराजिविराजमानम् ॥ कोटींदुमंडलवितानगणैश्चहैमैःश्रीपट्टसूत्ररचितैर्मणितोरणाढ्यम् ॥ १८ ॥ मुक्तावृतैःकनकपीतपतत्पताकैःपारावतैःसितपतत्रिभिरावृतञ्च ॥ मंदारकुन्दकरवीरकयूथिकानांमालाविचित्ररचितंनवचंपकानाम् ॥ १९ ॥ नागेशपद्महरिचंदनपल्लवानांश्रीमालतीकुरबकांचनयूथिकानाम् ॥ मालाभिरावृतमनंगहरंगृहंतत्सद्रत्नदर्पणयुतंसितचामरैश्च ॥ २० ॥ सिंहासनैश्चनवपल्लवपुष्पयुक्तैःशय्यासनैःकनकविद्रुमपादवृन्दैः ॥ श्रीचंदनागुरुजलैर्मकरंदसंघैःकस्तूरिकामुदितकुंकुमचर्चितंतत् ॥ २१ ॥

चंद्रमंडलके समान वितान (चँदोए) तिनसों और सुवर्णमय पट्टसूत्रनसों रचे मणिनके तोरण तिनसों अति सुशोभित है ॥ १८ ॥ मोतिनके झुग्गा जिनके आगे लगे ऐसी सुवर्ण समान पीली पताका फहरायरहीहैं और अनेक जातिके कबूतर और हंस तिनसों जो आवृत है और मंदार, कुंद, करवीर और जुही और नवीन चंपानकी मालानसों विचित्र रीतिसों रचोहै ॥ १९ ॥ और नागेश (नागदमन) पद्म (कमल) और चंदनके दल, मालती कुरवक और कांचनजुही तिनकी मालानसों सुशोभित है और अनेक मालानसों आवृत है, कामदेवके भी मनको हरनवारो उत्तम रत्नजटित दर्पण जामें विद्यमान और चामरनसों युक्त वो भवन है ॥ २० ॥ और नवीन कोमल पुष्पनके रचे जामें आसन है मूँगानके जिनमें पाये, नवीन पल्लव, पुष्प ऐसे सिंहासननसों युक्त है और ऐसेही जामें शय्या, आसन हैं और श्रीचंदनजल और अगरुके जल और मकरंद और कस्तूरिका

केशरके सुगंधित जलनको जामें बाहिर भीतर छिरकाव है रह्योहै ॥ २१ ॥ हलरहे वसंतके वृक्ष कोंपल तत्संबंधी शीतल सुगंधि मंदमंद पवन तिनसों सुगंधित कियेहै अंग जाके ऐसे भगवान्‌के जामें निकुंज तिनको तुम याद करो, अत्यंत नम्र शाखावारे वृक्षनके पुष्पनसों युक्त है ॥ २२ ॥ ता वृंदावनमें आपने जायके जब वंशी बजाई तब वे सब व्रजकी बाला वा भगवान्‌के वेणुगीतको सुनके हे नृप ! श्रीकांत कृष्णकरके हरेगये मन जिनके ऐसी वे व्रजबाला नंदलालके पास कामनको छोडके आई है ॥ २३ ॥ हे राजन् ! उनके पतिनते रोकी भी परन्तु तब भी कृष्णने हरेहैं मन जिनके ऐसी वे अपने स्थूल शरीरको त्यागके बडी त्वरासों कृष्णके पास आई है ॥ २४ ॥ तब सुवर्णमय दिव्य सिंहासनपै विराजे सुंदर नंदनंदनको श्रीसुंदरी राधिकासहित गलेमें मालतीकी माला धारण कररहे ॥ २५ ॥ श्यामसुंदर प्रातःकालीन सूर्यके समान किरीटको पहरे, स्फुरत् प्रभा

एजद्वसंततरुपल्लवमेववातैःशीतैर्गजेंद्रगमनैःसुरभीकृतांगम् ॥ एतादृशंहरिनिकुंजगृहंस्मरत्वंसन्नम्रशाखतरुयुक्तमतीवपुष्पैः ॥ २२ ॥ श्रीवेणुगीतंयदुकामवर्द्धनंनिशम्यसर्वाव्रजयोषितोनृप ॥ श्रीकृष्णकांतेनगृहीतमानसाविसृज्यकर्माणिसमाययुर्वने ॥ २३ ॥ रुद्धायाःपतिभीराजन्कृष्णेनहृतमानसाः ॥ स्थूलंशरीरंतास्त्यक्त्वात्वरंकृष्णांतिकंययुः॥ २४ ॥ सिंहासनेहेमदुकूलसंवृतेमध्येस्थितंसुन्दरनंदनंदनम् ॥ श्रीसुन्दरीराधिकयासमंपरंगलेदधानंमधुमालतीस्रजम् ॥ २५ ॥ श्यामंप्रभातार्ककिरीटिनंहरिंस्फुरत्प्रभंश्रीमुरलीमनोहरम् ॥ पीतांबरंमन्मथराशिमोहनंव्रजस्त्रियस्तंददृशुःसमागताः ॥ २६ ॥ दृष्ट्वाप्रियाप्रियतमंमत्स्यकुण्डलिनंहरिम् ॥ गोप्योमूर्च्छांगताःसद्योभूपचालक्षितोद्यमाः॥२७॥ सांत्वयामासताःकृष्णोमिष्टवाक्यैःसुधासमैः ॥ तदागोप्योवनोद्देशेसर्वाश्चैतन्यतांगताः ॥ २८ ॥ कृष्णंगद्गदयावाचास्तुत्वाभीताःस्त्रियोवराः ॥ त्यक्त्वाविरहजंदुःखंगोविंदंददृशुःप्रियम् ॥ २९ ॥ वृन्दावनेभ्राजमानेमालतीवनसंकुले ॥ दिव्यद्रुमलताजालेमधुपध्वनिनादिते ॥ ३० ॥ विचचारहरिःसाक्षाद्देवोमदनमोहनः ॥ पद्माभंपद्महस्तेनगृहीत्वाराधिकाकरम् ॥ ३१ ॥ प्रहसन्भगवान्साक्षादाययौयमुनातटम् ॥ कृष्णातीरेनिकुंजेवैश्रीकृष्णोनिषसादह ॥ ३२ ॥ तस्मिन्गृहेमधुपतेःशृणुगोपिकानांश्रीकृष्णचंद्रचरणस्मरणावृतानाम् ॥ झंकारनूपुरझणत्करकंकणानांमंजीररत्नविचलत्कटिकिंकिणीनाम् ॥ ३३ ॥

जाकी, सुशोभित मुरलीको हाथमें लिये मनके हरनवारे पीतांबर पहरें अनेक मन्मथके मन मथनवारे कृष्णके समीप प्राप्तभई गोपीनने आयके देखेहै ॥ २६ ॥ तब वे प्यारी प्यारेको देखके मकराकार कुंडलनको पहरे है भूप ! अलक्षित जिनके उद्यम ऐसी वे सब मूर्च्छाको प्राप्त हुई हैं ॥ २७ ॥ तिनको श्रीकृष्ण मिष्ट वाक्यनसों सांत्वन करतेभये तब वे गोपी वा वनोद्देशमें सब चैतन्य भईहैं ॥ २८ ॥ तब गद्गद वाणीसों स्तुति करी जिनने ऐसी वे स्त्री विरहजन्य दुःखको त्यागके प्यारे गोविंदको देखतीभई ॥ २९ ॥ मालतीके वननसों संकुल ऐसे भ्राजमान वृंदावनमें दिव्य वृक्षलतानके जाल जामें, भ्रमरध्वनिसों शब्दित वो वन तामें ॥ ३० ॥ साक्षात् हरि मदनमोहन देव अपने हस्तकमलसों प्रियाके, हस्तकमलको धारण कर ॥ ३१ ॥ मंदमंद हँसते साक्षात् प्रभु यमुनातटपै पधारेहैं तब यमुनातटपै जो दिव्य निकुंज तापै आयके विराजे है ॥ ३२ ॥ मधुपतिके वा गृहमें तिन

गोपीनके भेद कहो हौ ताको सुनो वे कैसी है कि, श्रीकृष्णचद्रचरणस्मरणकी करनेवारी, झंकारयुक्त नूपुरनकी झणत्कार और कंकणनको झणत्कार मनोहर रत्नकी कमरमें किंकिणीको पहरें ॥३३॥ मंद मंद हसवेकी द्युतिकी स्फुर्ति चमत्कृति जिनमें ऐसे कपोल तिनसों और शोभायुक्त दंतपंक्तिसो सुशोभित बिजलीके समान सखीनके वेष तिनसों और सुवर्णके हार और बाजूनसों भूषित और प्रातःकालीन सूर्यमंडलके समान जे कुंडल तिनसो भूषित ॥ ३४ ॥ हे राजन् ! तिन गोपीनमें कोई तो मुग्धा, कोई तरुणी (मध्या) है, कोई तरु (वृक्ष), को हटायरहीहै, कोई हँसरहीहै, कोई सखी मदयुता वनमें विचररहीहै ॥ ३५ ॥ कोई सखी वा मदमाती गोपीके हाथ मारके भागीहै और जलमें न्हातीको पकर के कमलनको मारतीभईहै, काहूने काहूके ढीले भये हारको लेलियोहै, कोई सखी विहारमें मस्त है खुली कबरीको नहीं सँभारतीभईहै ॥ ३६ ॥ नाम गिनामें है श्रीजाह्नवी १ (गंगा) यमुना २ मधुमाधवी ३ शीला ४ रमा ५ शशिमुखी ६ विरजा ७ सुशीला ८ चंद्रानना ९ ललिता १० अचला ११ विशाखा १२ माया १३ चंद्रावली १४ श्यामा १५ और मनो

स्मेरद्युतिस्फुटचमत्कृतगंडदेशैःश्रीदंतपंक्तिविलसत्तडितालिवेशैः ॥ कोटीरहारहरिदंगदभूषितानांबालार्कमंडलविकुंडलमंडितानाम् ॥ ३४ ॥ तासांतुकापिमुग्धाकथिताचमुग्धामध्यापिकापितरुणीरुचिराप्रगल्भा ॥ काचित्तरुंविनयतीमधुरंहसंतीकाचित्सखीमदयुतासुवनेव्रजंती ॥ ३५ ॥ संताडच्यतामपिकरेणतुकाप्यधावत्संगृह्यकापिभुवनेकमलेजंबाम् ॥ काचिच्छ्लथत्कनकहारमुपाजहारकाचित्प्रमुक्तकबरीतुविहारमत्ता ॥ ३६ ॥ श्रीजाह्नवीचयमुनामधुमाधवीचशीलारमाशशिमुखीविरजासुशीला ॥ चंद्राननाचललिताऽत्वचलाविशाखामाया ऽऽदयएवकथिताभवनेत्वसंख्याः ॥ ३७ ॥ लीलातपत्रमतिमौक्तिकदामजालंनीत्वाचलंतिमणिभूमिषुतत्रकाश्चित् ॥ श्रीचामरव्यजनदंडधरावयस्यःकाश्चिद्व्रजंतिधृतपीतपतत्पताकाः ॥ ३८ ॥ नृत्यंतितत्रहरिवेषधरास्तुकाश्चिद्वीणाकरामधुरतालमृदंगहस्ताः ॥ वंशीधराश्चवृषभानुसुतासुवेषाःकेयूरकुण्डलयुतामणिवेत्रहस्ताः ॥ ३९ ॥ सद्भावभावरसतालयुतस्मिताद्यैर्झंकारनूपुरयुतैर्विशदैःकटाक्षैः ॥ संगीतनृत्यविदितैर्भ्रुकुटीविभंगैराधांहरिंचसततंपरितोषयंत्यः ॥ ४० ॥ तस्मिन्निकुञ्जभवनेयमुनातटेपिवंशीवटेवनधरानिकटेहरिंतम् ॥ श्रीराधयाचगिरिराजतटेव्रजंतंनंदात्मजंचनटवेषधरंस्मरत्वम् ॥ ४१ ॥

रमा १६ ये तो आली है और असंख्य गोपी हैं ॥ ३७ ॥ कोई लीलाछत्रको हाथमे लियेहै, कोई मोतीनके हारको लिये वा मणिमय भूमिमे चलेहै, कोई चमरदण्डको हाथमे लिये है, कोई पीत पताकाको हाथमे लियेहै ॥ ३८ ॥ कोई कृष्णको रूप बनके नाचैहै, कोई वीणाको लिये, कोई मधुर तालको लिये, कोई मृदंग लियेहै तिनमें वृषभानुनंदिनीने वंशी हाथमें लेराखीहै, शृंगार कियेहै केयूर कुंडल पहरेहै कोई मणिमय बेत हाथमें लेराखोहै ॥ ३९ ॥ उत्तम अपने २ हावभावनसो रसतालयुत मंदमुसकानसों और झँकारयुत नूपुरनसों और विशद कटाक्षनसो और संगीत नृत्यसो जाने अपने भृकुटीनके विलासनसो सब समय श्रीप्रियाप्रीतमको परितोष करती रास करतीभईहै ॥४०॥ हे राजन् ! वा यमुनातीर धीर समीर कुटीरमे विहार करते श्याम जिनको शरीर वंशीवटमे पर्वतके समीप श्रीराधाजीको संगमें गोवर्धनपे विचररहे, नटवेषको धारण कररहे ऐसे श्रीनंदनंदनको तुम स्मरण करो॥४१॥

पुखराजकेसे नख जिनमे ऐसे हैं पदारविंद जाके झँकारयुत नूपुरनको धारण कररहे, प्रकाशयुक्त अंगअंग जाके अपने चरणसों भूमिप्रदेशको अरुण करते श्रीमत्परागकी कांतिसो अति सुशोभित इतउत विचररहेहै ॥४२॥ लक्ष्मीके हस्तकमलसों ललित है जानुप्रदेश जाको, कदलीके समान जंघा, पीतांबर पहरे, बहुत सूक्ष्म उदर, पतली जाकी कमर, रोमावलिकी भौंरी जामें विराजमान ऐसो जाको अंग नाभि है सरवरके समान जामें ऐसी सिलवटसों सुशोभित जाको उदर, क्षुद्रघंटिकाको पहरे और छातीमें जाके भृगुलताको चिह्न, कण्ठमें कौस्तुभसों सुशोभित हैं ॥ ४३ ॥ श्रीवत्स और हारसों मनोहर, नवीन सजलमेघके समान नील पीतांबर पहरे, शुंडादंडसे भुजदंड, रत्नके बाजू और मणिमय कंकण धारण किये, हस्तकमल, श्रीराजहंसके समान उत्तम ग्रीवा तासों अति सुशोभित है ॥ ४४ ॥ शंखके समान कंठसों ललित, सुन्दर कपोल, निम्न (गढेला जामें परे) ऐसी ठोढी कुंदकलीसे शिखरी दंत, बिंब (कन्दूरी) से होठ, मंदमुसकान युक्त, सूआकी चोंचसी नासिका अमृतसी बोलन और चंचल हैं कटाक्ष जाके ॥ ४५ ॥ कमलसे जाके नेत्र, कामदेव

श्रीपद्मरागनखदीप्तिपदारविन्दंझंकारनूपुरधरंस्फुरदंगदेशम् ॥ कुर्वंतमेवतुपदाऽरुणभूमिदेशंश्रीमत्परागसुरुचालमितस्ततस्तु ॥४२॥ लक्ष्मी
कराब्जपरिलालितजानुदेशंरंभोरुपीतवसनंतुकृशोदराभम् ॥ रोमावलिभ्रमरनाभिसरस्त्रिरेखंकांचीधरंभृगुपदंमणिकौस्तुभाढ्यम् ॥४३॥ श्रीव
त्सहाररुचिरंनवमेघनीलंपीतांबरंकरिकरस्फुटबाहुदण्डम् ॥ रत्नांगदंचमणिकंकणपद्महस्तंश्रीराजहंसवरकंधरशोभिमानम् ॥ ४४ ॥ श्रीकम्बु
कण्ठललितंविलसत्कपोलंमध्यंतुनिम्नचिबुकंकिलकुन्ददंतम् ॥ बिंबाधरंस्मितलसच्छुकचंचुनासंपीयूषकल्पवचनंप्रचलत्कटाक्षम् ॥ ४५ ॥
श्रीपुण्डरीकदलनेत्रमनंगलीलंभ्रूमण्डलस्मितगुणावृतकामचापम् ॥ विद्युच्छटोच्छलितरत्नकिरीटकोटिंमार्तंडमंडलविकुण्डलमंडिताभम् ॥४६॥
वंशीधरंत्वहिविलोलगुडालकाढ्यंराधापतिंसजलपद्ममुखंचलंतम् ॥ कंदर्पकोटिघनमानहरंकृशांगंवंशीवटेनटवरंभजसर्वथात्वम् ॥ ४७ ॥
आरक्तरक्तनखचन्द्रपदाब्जशोभांमंजीरनूपुररणत्कटिकिंकिणीकाम् ॥ श्रीघंटिकाकनककंकणशब्दयुक्तांराधांदधामितरुपुंजनिकुंजमध्ये ॥४८॥
नीलांबरैःकनकरश्मितटस्फुरद्भिःश्रीभानुजातटमरुद्गतिचंचलांगैः ॥ सूक्ष्मस्वरूपललितैरतिगौरवर्णांरासेश्वरींभजमनोहरमंदहासाम् ॥ ४९ ॥
बालार्कमंडलमहांगदरत्नहारांताटंकतोरणमणींद्रमनोहराभाम् ॥ श्रीकण्ठभालसुमनोनवपंचदाम्नींरत्नांगुलीयललितांव्रजराजपत्नीम् ॥ ५० ॥

कीसी लीला, मंदमुसकानयुत कामधनुषकीसी भृकुटी, बिजलीकीसी छटायुक्त रत्नमय किरीट, किरोड सूर्यबिंबकोसो जाको प्रकाश, कुण्डलनसों सुशोभित है ॥ ४६ ॥ वंशीको लिये काली सटकारी घुँघराली अलकनसों युक्त राधाके पति सजल कमलके समान मुख, कोटि कामके सौंदर्यके हरनवारे, वंशीवटमें विराजमान, नटवरको तू सर्वथा भजन कर ॥४७॥ महावरकेसे नखयुक्त जाके चरणकमल, मंजीर नूपुर सहित बजनी कौंधनीको पहरे, श्रीघंटिका और सुवर्णके कंकणशब्दसों युक्त वृक्षनके मध्यमें निकुंजमें विराजमान जे श्रीराधिकाजी हैं तिने मै अपने हृदयमें धारणकरूँहूं ॥ ४८ ॥ फिर श्रीराधाजी कैसी हैं तो ११ श्लोकसों वर्णन करैंहैं कि, सुवर्णद्युति व जमुना जल संबन्धी वायुसों कंपित व सूक्ष्म नीलाम्बरसों युत गौरवर्णा मन्दहासा, रासेश्वरी (राधिका) को भजो ॥४९॥ उदयकालीन सूर्यमंडलके समान जे बाजूबंद और हार तिने धारणकरैंहै, ताटंक और तोरण मणींद्रकेसी है कांति जिनकी

और कंठ तथा ललाटमें नौलरी तथा ललाटभूषण (वेनी, वंदी, झूमर) आदि मणीन्द्रनको धारण कररहीहै, रत्नांगुलीय (रत्नमय अँगुठी) पहरेहै श्रीव्रजराजकी पत्नी है ॥ ५० ॥ अर्द्धचंद्रकी कांति युत स्फुरत् (प्रकाशित) चूड़ामणि तथा अनेक कंठाभरणसों विचित्र है रूप जिनका श्रीपट्टसूत्र मणिपट्टसों चलत दुलरीको पहरे, प्रकाशित सहस्रदल कमलको धारण कररहीहै ॥ ५१ ॥ श्रीयुत भुजानमें सुशोभित कंकण हैं, रत्ननपै रत्ननको प्रकाश, नासिकामें नकवेसर तासों सुशोभित हैं कपोल जिनके, उत्तम यौवनसों अलस जिनकी गति, मनोहर काली नागनके समान वेणी और सायंकालीन चंद्रके समान जाको मुख और नवीन खिले चंपाके पुष्पके समान अंगकांति तासों सुशोभित है ॥ ५२ ॥ उत्तम हाव भावसहित नवकमलके समान नेत्र प्रकाशित, मंद मुसकान प्रकर्ष करके चलत है कटाक्ष जिसके, कृष्णकी प्रिया ललित कुंतलनकी कांति और मंदार हारमें मधुर भ्रमरीनके शब्द सों युक्त है ॥ ५३ ॥ श्रीकुंकुम चंदनकी मृद और अगरुके जलसों सींची है और ललाटपै वेंदी तथा कपोलनपै पत्ररचना जाके हैरहीहै और कल्पवृक्षके पत्र तद्वत् भ्रमत है नेत्रनमें

चूडामणिद्युतिलसत्स्फुरदर्द्धचंद्रांग्रैवेयकाल्पनपत्रविचित्ररूपाम् ॥ श्रीपट्टसूत्रमणिपट्टचलद्विदाम्नींस्फूर्ज्जत्सहस्रदलपद्मधरांभजस्व ॥ ५१ ॥ श्रीबाहुकंकणलसत्कुचरत्नदीप्तिंश्रीनासिकाभरणभूषितगण्डदेशाम् ॥ सद्यौवनालसगतिंकलसर्पवेणींमध्येंदुकोटिवदनांस्फुटचंपकाभाम् ॥ ॥ ५२ ॥ सद्धावभावसहितांनवपद्मनेत्रांस्फूर्ज्जत्स्मितद्युतिकलांप्रचलत्कटाक्षाम् ॥ कृष्णप्रियांललितकुन्तलपुंतलाभांमंदारहारमधुरभ्रमरीरवाढ्याम् ॥ ५३ ॥ श्रीखंडकुंकुममृदागुरुवारिसिक्तांश्रीबिंदुकीरुचिरपत्रविचित्रचित्राम् ॥ संतानपत्ररुचिरामलमंजनाभांरासेश्वरींगजगतिंभजपद्मिनींताम् ॥ ५४ ॥ एतादृशींरतिवरांतुसमेत्यकृष्णोगच्छन्निकुंजवनजालविलोकनार्थं ॥ धावंतितत्रमणिछत्रधराश्चगोप्योनीत्वातथाचमरचारुपतत्पताकाः ॥ ५५ ॥ षड्रागमेववरधैवतमध्यमाद्यैर्गायंतमादिपुरुषंभजनन्दपुत्रम् ॥ षट्त्रिंशतस्तदनुवर्त्तितरागिणीनांवंशीरवेणललितेनवरंव्रजंतम् ॥ ५६ ॥ शृंगारवीरकरुणाद्भुतहास्यरौद्रबीभत्सशांतकभयानकनित्ययुक्तम् ॥ भक्तप्रियंव्रजवधूमुखपद्मभृंगंयोगीन्द्रहृत्कमलविस्फुरदंघ्रियुग्मम् ॥ ५७ ॥ क्षेत्रज्ञमादिपुरुषंस्वधियज्ञरूपंसर्वेश्वरंसकलकारणकारणेशम् ॥ कृष्णंहरिंप्रकृतिपूरुषयोःपुमांसंसर्वनिरस्तकपटंनिजतेजसेह ॥ ५८ ॥

अंजनसो विराजित अमलकांतिधारी श्रीरासेश्वरी, गजगामिनी, पद्मिनी, नायिका, श्रीवृषभानुनंदिनीको भजन करौ ॥ ५४ ॥ ऐसी श्रीरासेश्वरीजीके श्रीकृष्ण समीप जायके उने अपने संगमें लेके निकुंजवनके समूहन देखनेको गयेहैं, वहाँ ता समय मणिमय छत्रनको हाथनमें लिये गोपी साथमें आयके दौरेहैं, हाथमें चमरनको और फेरायरही पताका तिनको हाथनमें लियेहै ॥५५॥ धैवत और मध्यम आदि छै रागनके गान करनवारे आदिपुरुष नंदलालै सेवन करौ जो अपनी वंशीके मार्गसो छै राग और छत्तीसो रागिनीनको गावैहैं और वृंदावनमें विचरैहैं तिनै भजन करौ ॥५६॥ श्रृंगार, वीर, करुणा, अद्भुत, हास्य, रौद्र, वीभत्स, शांति और भयानक इन रागनके गान करते भक्तनके प्यारे व्रजवधूनके मुखकमलके मकरंदको पान करनवारे भ्रमर और योगीनके हृदयकमलमें निवास करनवारे राजहंस ॥ ५७ ॥ क्षेत्रज्ञ, आदिपुरुष, अविद्यज्ञस्वरूप, सर्वेश्वर, सब जगत्के कारणकेहू कारण

कृष्ण और हरि जिनको नाम प्रकृति, पुरुष दोनोंनमें पुरुषरूप आपने तेजसों सब तेजनको निराश करनवारे ॥ ५८ ॥ जिनको शिवजी, धर्मराज, इंद्र, शेष, लोकपाल, सिद्धि देनवारे गणेश और सब देवतामात्र और राधा, रमा, प्रकृति, भूदेवी, लीलादेवी, विरजा और सरस्वती और सब वेद जाको सेवन करैंहै वही कृष्णको हमहू सेवन करैंहै ॥ ५९ ॥ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां द्विचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४२ ॥ ॥ गर्गजी कहैंहै कि, हे राजन् ! वा वृंदावनमें अनेक प्रकारके वृक्ष लता भ्रमरनके गुंजारनसों संकुल, शीतल मंद सुगंध जामें पवन तामें कृष्णचंद्रजी अपने मुखमारुतसों वंशीके छिद्रनको भरते मुहुर्मुहुः (पुनः पुनः) देवतानकेहू मनको चुरावें है ॥ १ ॥ तब कीर्तिरानीकी राजदुलारी श्रीराधा काममें विह्वल हैके श्रीकृष्णको अपनी दोनों भुजानसों आलिंगन करतीभईहैं ॥ २ ॥ श्रीगोकुलकी चकोरी राधाको श्रीगोकुलके चंद्रमा श्रीकृष्ण देखके प्रियाके मनको हरते, पुष्पनके पर्यंकपे प्यारीके मनको हरते रमण करतेभये ॥ ३ ॥ श्रीकृष्णके संग विहारकरके स्वामिनी

यंवैस्तुवंतिशिवधर्मसुरेशशेषलोकेशसिद्धिदगणेशसुरादयोपि ॥ राधारमाप्रकृतिभूविरजास्वराद्यावेदाभजंतिसततंतमहंभजामि ॥ ५९ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडेरासक्रीडायांद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४२ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ वृंदावनेवृक्षलतालिसंकुलेमंदानिलेवीजतिशीतलेनृपे ॥ रंध्राणिवेणोःकिलपूरयन्हरिर्मुहुर्मुहुर्हरत्येवदिवौकसांमनः ॥ १ ॥ वेणुगीतंततःश्रुत्वाश्रीराधाकीर्तिनंदिनी ॥ भुजाभ्यांनन्दसूनुंवैजग्राहानंगविह्वला ॥ २ ॥ गोकुलस्यचकोरींतांकृष्णोगोकुलचन्द्रमाः ॥ दृष्ट्वाकुसुमपर्यंकेतयारेमेहरन्मनः ॥ ३ ॥ श्रीकृष्णस्यविहारेणब्रह्मानन्देनस्वामिनी ॥ मुदंलेभेमहात्यंतंतथास्वामीवशीकृतः ॥ ४ ॥ रमणीयंरतिकरंरासेरामारमेश्वरम् ॥ जगृहुःसर्वतोराजञ्छतयूथाश्चयोपितः ॥ ५ ॥ ताभिःसार्द्धंहरीरम्योरेमेवैरासमण्डले ॥ तावद्रूपधरोराजन्यावत्योव्रजयोषितः ॥ ६ ॥ विहारिण्यश्चताःसर्वाविहारेणविहारिणः ॥ ब्रह्मानंदेनसन्मर्त्याआनन्दंलेभिरेयथा ॥ ७ ॥ श्रीकराभ्यांश्रीकराभ्यांश्रीशःश्रीश्यामसुन्दरः ॥ दधारहृदयेसर्वास्ताभिर्भक्त्यावशीकृतः ॥ ८ ॥ स्वेदयुक्तान्याननानितासांप्रीत्याव्रजेश्वरः ॥ प्रामृजत्पीतवस्त्रेणकिंवदामितपःफलम् ॥ ९ ॥ विनासांख्येनयोगेनतपसाश्रवणेनच ॥ विनातीर्थेनदानेनप्राप्ताःकामेनताहरिम् ॥ १० ॥

राधिका ब्रह्मानंदके समान आनंदित भई हैं, तैसेही प्रियाके वशकिये श्रीकृष्णचन्द्र स्वामी आनंदित हुए हैं ॥ ४ ॥ रति करनेवारे कृष्णको रामा श्रीराधाजी रासमें लक्ष्मीकांतको रमण करातीभई हे राजन् ! शतयूथ गोपी सब ओरसे श्रीकृष्णको ग्रहण करतीभई ॥ ५ ॥ उनके साथ रम्य भगवान् रासमंडलमें रमण करतेभये, हे राजन् ! जितनी गोपी ही उतनेही रूप आपने बनायेहैं ॥ ६ ॥ तब विहरिणी वे गोपी विहारीके विहारसों ऐसे आनंदको प्राप्त भई ही जैसे ब्रह्मानंदको प्राप्त हैकें मनुष्यको आनंद प्राप्त होयहै ॥ ७ ॥ तब श्रीश श्रीकृष्णने उन सब गोपीनको अपने शोभायुक्त हाथनसों अपने हृदयमें स्थापन कियो उन गोपीननेभी आपको अपनी भक्तिसों वश कियोहै ॥ ८ ॥ तब व्रजेश्वर कृष्णने प्रीतिसों विनके पसीनायुक्त मुख अपने पीतांबरके कोनेसों पोंछेहैं ॥ ९ ॥ सांख्य, योग, तप, श्रवण, और तीर्थ, दानादि करबेके विनाहीं केवल कामभावसोंही वे हरिको

प्राप्त भईहे ॥ १० ॥ तब वे परस्पर मानवती भई सब गोपी कृष्णके विहारसों तृप्त भई वे कुवाक्यको कहती भई है ॥ ११ ॥ पहले श्रीकृष्ण हमें छोडके मथुराको गये मूर्ति मती सुंदरी स्त्रीनको देखवेको ॥ १२ ॥ जब विनने वे सुंदरी न देखी तब फिर द्वारकाको चलेगये, द्वारकामेंहू जब वे सुंदरी न देखी तब फिर विवाह करतेभये ॥ १३ ॥ पहले भीष्मककी कन्या रुक्मिणी ब्याही वाको रूपिणी नही मानके फिर आपने सोलह हजार १६००० विवाह और किये ॥ १४ ॥ उनकूं भी रूपवती नही मानके बारंबार शोच करते हे सखीहो ! फिर हमें देखवेको व्रजमें आयो है ॥ १५ ॥ तब सबको देखनवारो महेश्वर श्रीकृष्ण रमेश्वर ऐसो राजीभये जैसो पहले रासमें प्रसन्नभये हे ॥ १६ ॥ यासों हमही सब सुंदरीनमे श्रेष्ठा हे, सुंदर जिनके नेत्र, सुंदर जिनके मुख और निरंतर स्थिर जिनको यौवन ॥ १७ ॥ ऐसी हमारी समान सुंदर आकाशमें देवांगनाहू नही हैं

ततोगोपीजनाःसर्वामानवत्यःपरस्परम् ॥ कुवाक्यंकथयामासुःकृष्णतृप्ताविहारतः ॥ ११ ॥ अस्मांस्त्यक्त्वापुराकृष्णोगतःश्रीमथुरांपुरीम् ॥
विलोकितुंरूपिणीश्चसुन्दरीःस्त्रीश्चसुन्दरः ॥ १२ ॥ नदृष्टास्तेनसुंदर्योजगामद्वारकांपुनः ॥ नदृष्टास्तेनतास्तत्रविवाहंकृतवान्पुनः ॥ १३ ॥
रुक्मिणींभीष्मकसुतांनमत्वातांतुरूपिणीम् ॥ पुनर्विवाहान्कृतवान्सहस्राणिचषोडश ॥ १४ ॥ नमत्वारूपिणीस्ताश्चशोकंकुर्वन्पुनःपुनः ॥
व्रजमागतवान्सख्यःश्रीकृष्णोऽस्मान्विलोकितुम् ॥ १५ ॥ दृष्ट्वारूपाणिचास्माकंसर्वद्रष्टारमेश्वरः ॥ प्रसन्नोभूत्तथासख्योयथारासेहरिःपुरा ॥
॥ १६ ॥ तस्माद्वयंचसर्वासांसुन्दरीणांवराःस्मृताः ॥ सुनेत्राश्चंद्रवदनाःशश्वत्सुस्थिरयौवनाः ॥ १७ ॥ अस्मत्तुल्याश्चरूपिण्योनैवदेवांगना
श्चखे ॥ याभिःश्रीभ्रंकटाक्षैश्चकृष्णःकामीवशीकृतः ॥ १८ ॥ अहोवैयेनहंसेनमुक्ताःपूर्वंप्रभक्षिताः ॥ सएवान्यत्कथंवस्तुभक्षयिष्यतिदुःखतः ॥
॥ १९ ॥ नसंतिमुक्ताःसर्वत्रसंतिमानसरोवरे ॥ तथावरस्त्रियोभूमौनसंतिसंतिचात्रहि ॥ २० ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ इतिमानवतीनांच
स्वात्मारामोजगत्पतिः ॥ वचःश्रुण्वन्राधयाचतत्रैवांतरधीयत ॥ २१ ॥ निर्द्धनोपिधनंलब्ध्वामानंप्रकुरुतेनृप ॥ यस्यनारायणःप्राप्तोतस्यकिं
कथयाम्यहम् ॥ २२ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडेरासक्रीडायांत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४३ ॥ ॥ वज्रनाभिरुवाच ॥ ॥
अद्भुतंकृष्णचरितंमयात्वन्मुखतःश्रुतम् ॥ किंचक्रुर्गोपिकास्तासांसकथंदर्शनंददौ ॥ १ ॥

जिनने अपने कटाक्षनसों कामी कृष्णकोहू वशीभूत कीन्हो ॥ १८ ॥ अहो जा हंसने केवल मोतीही चुगेहे वो चाहे जैसा दुःखी क्यों न हो तो फिर कहो मोती विन दूसरी चीज कैसे खाय ॥ १९ ॥ जैसे सर्वत्र मोती नही हैं किंतु मानसरमेंही हैं तैसेही सुन्दरी और जगे नहीं, या व्रजमेंही हे ॥ २० ॥ गर्गजी कहेहे कि, मानवती भई उन गोपीनके कहेको सुनके जगत्पति भगवान् राधाजीसहित अंतर्धान हेगये ॥ २१ ॥ हे नृप ! निर्धन भी धनको प्राप्त हेके मान करेहे फिर कहो जाको नारायण प्राप्त भयो ताको अभिमानको फोक कहाँताई कहे ॥ २२ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायां हयमेधखंडे भाषाटीकायां त्रयश्चत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ४३ ॥ ये सुनके वज्रनाभजी प्रश्न करेहैं कि, महाराजजी ! मैंने आपके मुखसों ये बडो अद्भुत कृष्णचरित्र सुनो, फिर ये कहो कि, कृष्णके अंतर्द्धान भयेपै कृष्णने कहा कियो और विनको भगवानने कैसे दर्शन दियो ॥ १ ॥

या सब वृत्तांतकूं श्रद्धालु जो मैं हूं ता मेरे आगे निरूपण करौ, वेही मनुष्य धन्य हैं जे सदा कर्णनसों कृष्णकथाको सुनेहैं ॥ २ ॥ और मुखसों श्रीकृष्णचन्द्रको नाम जपैहै हाथनसों उनकी सेवा करैहै ॥ ३ ॥ और नित्य कृष्णको ध्यान तथा दर्शन करैहैं और जे पादोदक नित्य पीवे हैं और प्रसादको खायहैं ॥ ४ ॥ ऐसो भावसों श्रम करके जे जगदीश्वरको भजन करैहैं वे हरिके परमपदको जायहैं ॥ ५ ॥ और जे संसारमें नानाप्रकारके भोगनको तो भोगैहै और श्रवणकीर्तनादि साधनको नहीं करैहैं और देहसुखसों जो दुर्मद हैं ॥ ६ ॥ वे मनुष्य भयानक यमदूतनकरके पकरगये जबतक सूर्य, चंद्रमा रहैं तबतक काल सूत्र नरकमें परैहैं ॥ ७ ॥ सूतजी बोलैहैं कि, ऐसे कहरहे राजाते मुनीश्वर कहते भयेहैं, बडी गद्गद वाणीसों भगवान्के चरित्रनकी प्रशंसा करते ये बोलेहे ॥ ८ ॥ गर्गजी बोले–

तत्सर्वंमुनिशार्दूलमह्यंश्रद्धालवेवद ॥ धन्यास्तेयेहिशृण्वंतिकर्णैकृष्णकथांसदा ॥ २ ॥ मुखेनकृष्णचन्द्रस्यनामानिप्रजपंतिहि ॥ हस्तैःश्रीकृष्णसेवांयेप्रकुर्वंतिनित्यशः ॥ ३ ॥ नित्यंकुर्वंतिकृष्णस्यध्यानंदर्शनमेवच ॥ पादोदकंप्रसादंचयेप्रभुंजंतिनित्यशः ॥ ४ ॥ इतीदृशेनभावेन श्रमेणजगदीश्वरम् ॥ येभजंतिमुनिश्रेष्ठतेप्रयांतिहरेःपदम् ॥ ५ ॥ संसारेयेप्रभुंजंतिभोगान्नानाविधान्मुने ॥ श्रवणादीन्नकुर्वंतिदेहसौख्येनदुर्मदाः ॥ ६ ॥ तेचांतेयमदूतैश्चगृहीताश्चभयानकैः ॥ पतिताःकालसूत्रेवैयावद्रविनिशाकरौ ॥ ७ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ ॥ इत्युक्तवंतंराजानंप्रत्युवाचमुनीश्वरः ॥ गद्गदस्वरयावाण्याप्रशंस्यचरितंहरेः ॥ ८ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ कृष्णेचांतर्हितेराजंस्त्वरंसर्वाश्चगोपिकाः ॥ अपश्यंत्यस्तताःसर्वा ... णाश्चतंतप्ताःहरिण्योहरिणंयथा ॥ ९ ॥ अन्तर्हितंहरिंज्ञात्वागोप्यःसर्वाश्चपूर्ववत् ॥ यूथीभूताविचिन्वंत्युर्वैसर्वतस्तंवनेवने ॥ १० ॥ पप्रच्छुर्भूरुहान्सर्वान्मिलित्वातुपरस्परम् ॥ हत्वाह्यस्मान्कटाक्षेणक्वगतोनंदनन्दनः ॥ ११ ॥ तदस्माकंचवदतयूयंसर्वेवनेश्वराः ॥ मार्तंडकन्यकातीरेपुलिनेगाश्चचारयन् ॥ १२ ॥ नित्यंचकारलीलांतुसगतःक्वनोवद ॥ शतशृंगगिरींद्रस्त्वंश्रीनाथेनधृतःपुरा ॥ १३ ॥ वामहस्तेरक्षणार्थंवासवाद्व्रजवासिनाम् ॥ नजहातिहरिस्त्वांतुस्वपुत्रंहृदयोद्भवम् ॥ १४ ॥ सगतोनदकुत्रास्तेविहायविपिनेचनः ॥ हेमयूराश्चहरिणाहेगावोहेमृगाःखगाः ॥ १५ ॥ किरीटीकुण्डलीकृष्णोयुष्माभिःकिंविलोकितः ॥ वदंतसोपिकुत्रास्तेवनेकस्मिन्मनोहरः ॥ १६ ॥

कि, हे राजन् ! कृष्णके अंतर्धान भयप सब गोपी जलदी करती कृष्णको नहीं देखके ऐसे दुःखी भईहैं, हरिणके देखे विना हरिणी जैसे ॥ ९ ॥ सब गोपी हरिको अंतर्हित जानके पहलेकी तरह इकट्ठी हैकें वनवनमें श्रीकृष्णको ढूँढन लगीहैं ॥ १० ॥ वे सब परस्पर इकट्ठी है सब वृक्षनसों पूछनलगी हैं कि, कटाक्षसों हमसबनको मारके नंदनंदन कहाँ गयोहे ॥ ११ ॥ सो हे वनदेवताहौ ! तुम हम सबनसों कहौ, जो यमुनाके पुलिनमें गऊनको चरावतो नित्य लीला करतो हो वो कहाँ गयोहै ! ये हमसों कहौ, हे गिरिराजजी ! तुम शतशः शिखरवाले हो तुमको श्रीकृष्णने धारण भी कियो है ॥ १२ ॥ १३ ॥ वाम हाथमें व्रजवासियोंकी इन्द्रसे रक्षा करनेको आपको उठायोहै, अपने निजपुत्रकी नाई भगवान् तुमें कभी नहीं छोडैहैं ॥ १४ ॥ सो कहौ वनमें हमें छोडके कृष्ण कहाँ गयेहैं, हे मयूरहो ! हे हरिणहो ! हे गावः ! हे खगहो ! हे मृगहो ! ॥ १५ ॥ किरीटको पहरे

अलक जाके विखररही सो कृष्ण कहाँ तुमने देखेहैं कहा ? ये कहो कि, हमारे मनको हरनवारो या वनमें कहाँ है ॥ १६ ॥ इन वाक्यनसों पूछे ये बडे कठोर तीर्थवासी निश्चय मोहित भये उत्तर नहीं देतेभये ॥ १७ ॥ गर्गजी कहे हैं कि, या प्रकार ये सब बाला वनवनमें नंदलालाको पूछती पूछती और हे कृष्ण ! हे कृष्ण ! ऐसे कहती तन्मय हैगईहैं ॥ ॥ १८ ॥ तब वा वृंदावनमें तन्मय भई गोपी सब कृष्णचरित्र करतीभईहैं फिर यमुनाजीकी रेतीमें कृष्णके चरण देखेहैं ॥ १९ ॥ जे वज्र, ध्वज और अंकुश आदि चिह्नसो चिह्नित हैं तब वा महात्माके विनी चरणनके अनुसार ढूँढती २ अगारी गईहैं ॥ २० ॥ तब वे व्रजस्त्री या चरणरजको माथेपै धरके दूसरे चिह्ननसों युक्त वहाँसो दूसरे और भी चरण देखेहैं ॥ २१ ॥ तब उन दूसरे चरणनके देखके बोलीहैं कि, री सखीहों ! प्यारो तो प्यारीको संग लेके गयोहै, इकलो नहीं गयोहै ऐसे देखती २ वो गोपी तालवनमें गईहैं ॥

एतैस्तुवाक्यैःसंपृष्टाःकठिनास्तीर्थवासिनः ॥ उत्तरंनैवदास्यंतिसर्वेतिमोहिताःकिल ॥ १७ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ एवंसर्वाहिपृच्छन्त्यःकृष्णचन्द्रंवनेवने ॥ वदंत्यःकृष्णकृष्णेतिबभूवुस्तन्मयास्ततः ॥ १८ ॥ चक्रुःकृष्णचरित्राणितत्रकृष्णमयाःस्त्रियः ॥ यमुनावालुकायांचपदानिददृशुर्हरेः ॥ १९ ॥ वज्रध्वजांकुशाद्यैश्चचिह्नितानिमहात्मनः ॥ तत्पदान्यनुसारेणपश्यन्तःप्रययुस्त्वरम् ॥ २० ॥ कृष्णांघ्रिरेणवोनीत्वामूर्ध्निधृत्वाव्रजस्त्रियः ॥ पदान्यन्यानिददृशुश्चान्यचिह्नयुतानिहि ॥ २१ ॥ निरीक्ष्याहुःप्रियासार्द्धंगतःप्रियतमोह्यसौ ॥ एवंवदंत्यःपश्यन्त्योगोप्यस्तालवनंगताः ॥ २२ ॥ व्रजन्श्रीव्रजेंद्रस्तुव्रजेश्वर्याव्रजेनृप ॥ कोलाहलंचगोपीनांश्रुत्वाप्रत्याहस्वामिनीम् ॥ २३ ॥ शीघ्रंगच्छप्रियेत्वंतुकोटिचन्द्रसमप्रभे ॥ आगताव्रजनार्योहिनेतुंत्वांमांचसर्वतः ॥ २४ ॥ ततःप्रियाहरेःपूर्वंशृंगारंकुसुमैर्नृप ॥ चकारसुंदरंदिव्यंवृन्दारण्येचपूर्ववत् ॥ २५ ॥ नंदसूनुःप्रियायाश्चदिव्यंशृंगारमेवच ॥ चकारबहुभिःपुष्पैर्भांडीरेचयथापुरा ॥ २६ ॥ केशप्रसाधनाद्यैश्चस्रक्तांबूलानुलेपनैः ॥ सुंदरीसुंदरेणापिबभूवात्यंतसुन्दरी ॥ २७ ॥ ततःकृष्णस्तुमुदितःपुष्पवृक्षतलेनृप ॥ शय्यांपुष्पमयींकृत्वातयारेमेरमेश्वरः ॥ २८ ॥ वृन्दावनेगोवर्द्धनेकृष्णायाःपुलिनेतथा ॥ नंदीश्वरेबृहत्सानौतथारोहितपर्वते ॥ २९ ॥

॥ २२ ॥ हे नृप ! तब व्रजेश्वरीसहित वन जायरहे श्रीव्रजेंद्रजी पीछेसे वा वनमे गोपीनके वा कोलाहलको सुनके श्रीस्वामिनीजीसे आप ये बोले हैं ॥ २३ ॥ कि, हे प्रिये ! हे कोटिचंद्रसमप्रभे ! तुम शीघ्र जाओ, देखो प्रिये ! ये गोपी तुमें, मोकूं लेवेको ये सब पास आयगईहै ॥२४॥ तब प्रियाने पहले पुष्पनसों श्रीकृष्णको शृंगार कियोहै जैसो कि, पहले भांडीरवनमें करचुकी ही ॥ २५ ॥ और नंदनंदनने अनेक प्रकारके पुष्पनसो प्रियाको शृंगार कियोहै जैसो भांडीरवनमें पहले करते भयेहै ॥ २६ ॥ केशप्रसाधनादि और स्रक् तांबूल अनुलेपनादिकनसो शृंगार करी जो सुंदरी है, सुंदरके संगमे अत्यंतही सुंदरी भईहै ॥ २७ ॥ तब प्रसन्न भये श्रीकृष्ण पुष्पमय एक वृक्षके नीचे पुष्पमयी शय्याको बनायके रमेश्वर श्रीकृष्ण प्रियाके संग या सेजपै रमण करतेभयेहैं ॥ २८ ॥ वृंदावनमें, गोवर्धनमे और यमुनाजीके पुलिनमें, नंदीश्वरकी बडी शिखिरमें, तैसेही रोहिणीपर्वतपै ॥ २९ ॥

ऐसेही शारदू वननमें सब ब्रजमंडलमें प्यारीके संग विचरते २ वंशीवटके नीचे विराजेहैं ॥ ३० ॥ तब वा जगे बैठके कृष्णने बोलरही गोपीनको बडो शब्द सुनोहै तब हे राजेंद्र ! स्वामिनीजीके संग श्रीगोपीजनवल्लभ श्रीकृष्ण ॥ ३१ ॥ प्रियाजीसों बडे प्रेमसों बोलेहैं, हे प्रिये ! जलदी पधारो जलदी पधारो, कृष्णके वचनको सुनके प्रियाजी मानिनी हैके बोलीहै ॥ ३२ ॥ राधाजी बोली ! कि, हे दीनवत्सल ! मैं कभी घरसों बाहिर नहीं निकसीहूँ यासों मेरी चलवेकी सामर्थ्य नहीं है, मैं दुर्बला हूँ सो जहाँ आपको मन आवे तहाँ ले चलो ॥ ३३ ॥ याप्रकार प्रियाके कहेको सुनके रामानुज श्रीकृष्ण प्रियाके पसीना आये देखके अपने वस्त्रसों पंखा करते भयेहैं ॥ ३४ ॥ और हाथसों पकरके बोलेहैं कि, राज्ञि ! जैसे तुमारी मरजी आवे तैसेही आप पधारो याप्रकार कृष्णके वचनको सुनके अपनेको सर्वोत्तम मानके ॥ ३५ ॥ कि, देखो ये मेरो प्यारो या रात्रिमें अन्य स्त्रीजननको छोडके

अरण्येषुद्वादशसुसर्वेब्रजमंडले ॥ कांतयाविचरन्कांतोवंशीवटतलेस्थितः ॥ ३० ॥ तत्रशुश्रावगोपीनांवदन्तीनांरवंपरम् ॥ स्वामिन्यासहरा राजेंद्रश्रीगोपीजनवल्लभः ॥ ३१ ॥ पुनःप्राहप्रियांप्रेम्णागच्छगच्छप्रियेत्वरम् ॥ कृष्णवाक्यंततःश्रुत्वाप्राहभूत्वाचमानिनी ॥ ३२ ॥ ॥ राधोवाच ॥ ॥ नसमर्थाप्रचलितुंकचिद्गेहान्ननिर्गता ॥ नयमांतेमनोयत्रदुर्बलांदीनवत्सल ॥ ३३ ॥ इतितद्वाक्यमाकर्ण्यरमारामानुजस्ततः ॥ स्वेनपीतांबरेणापिवीजयामासस्वेदतः ॥ ३४ ॥ प्रगृह्यपाणिनाप्राहसपराज्ञियथासुखम् ॥ इतिसाहरिणाप्रोक्तामत्वात्मानंवरंपरम् ॥ ३५ ॥ हित्वासौस्त्रीजनात्रात्रौभजतेमांरहःस्थले ॥ इतिमत्वातुहरयेभूत्वातूष्णींव्रजेश्वरी ॥ ३६ ॥ वस्त्रेणाननमाच्छाद्यपृष्ठंदत्त्वास्थिताभवत् ॥ पुनराहहरिस्तांतुप्रियेगच्छमयासह ॥ ३७ ॥ भजामित्वामहंभद्रेवियोगार्तांतुशापतः ॥ विहायगोपीःसर्वाश्चलग्नास्त्वांतुभजाम्यहम् ॥ ३८ ॥ त्वंतुमेस्कंधमारुह्यसुखंव्रजरहःस्थले ॥ इत्युक्तामानिनींमानीस्कंधयानमभीप्सतीम् ॥ ३९ ॥ त्यक्त्वाह्यंतर्दधेराजन्स्वात्मारामःस्वलीलया ॥ अन्तर्हितेभगवतिसहसासावधूर्नृप ॥ ४० ॥ अन्वतप्यतदुःखार्त्तांगतमानारुरोदह ॥ ततस्तद्रोदनंश्रुत्वावंशीवटतटेत्वरम् ॥ ४१ ॥ आजग्मुर्गोपिकाःसर्वाददृशुस्तांचदुःखिताम् ॥ चक्रुःस्त्रियस्तदंगेषुवायुंव्यजनचामरैः ॥ ४२ ॥ स्नापयित्वातुतांप्रेम्णाकाश्मीरसलिलेनच ॥ सिषिचुर्मकरंदैस्तांचन्दनद्रवशीकरैः ॥ ४३ ॥

एक मोकूँही रहस्य स्थलमें भजेहै (सेवन करेहै) ऐसे मनमें मानके ब्रजेश्वरी चुप हैगई और ॥३६॥ वस्त्रसों मुखको ढँकके पीठ फेरके बैठगईहै तब फिर आपने कही कि, हे प्रिये ! मेरे साथ चलो ॥ ३७ ॥ हे भद्रे ! शापके कारणसों वियोगसों आर्त भईको मैं सेवन करूँहूँ, देखो सब गोपीनको छोडके तुमें मैं सेवन करूँहूँ ॥ ३८ ॥ जो तुमपै नहीं चलोजायहै तो तुम मेरे कंधापै बैठके चलो मैं तुमकूँ एकांत स्थलमें लेचलूँगो, तब कंधापै बैठके चलो चाहै जो मानिनी तिनसों मानी श्रीकृष्ण ऐसे कहिके ॥ ३९ ॥ तिनें छोडके आत्माराम भगवान् अपनी लीलासों अंतर्धान हैगये तब प्रभुके अंतर्धान भयेपै हे नृप ! वो वधू ॥४०॥ दुःखतत हैके मान सब जाको नष्ट हैगयो सो वनमें रुदन करनेलगी तब प्रियाके रुदनको सुनके वंशीवटके समीप बडी जलदीसों ॥४१॥ सब गोपी आईहैं तो वहाँ दुःखी हैरही ऐसी प्यारीको देखीहै तब वे गोपी प्रियाजीको पवन करनलगीहैं ॥४२॥ और केशरके जलसों

न्हवाईहैं, चोवा, चन्दन ऊपरसों छिरकनलगीहैं ॥ ४३ ॥ फिर सेवाकर्ममें बडी चतुर वे गोपी सुंदर वाक्यनसों आश्वासन कर फिर उनके मुखसों मानके निमित्तसों श्रीकृष्णको अंतर्धान होनों सुनके ॥ ४४ ॥ मानिनी वे सब गोपी बडे विस्मयमें मग्नभईहैं फिर वे सब मानको छोडके हे नृप ! पुलिनमें आयके श्रीकृष्णके आयवेको बडे स्वरसों श्रीकृष्णके गुणनको गान करनलगीहै ॥ ४५ ॥ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४४ ॥ ॥ गोपी गान करैंहैं, अपने होठनकी लालीसों मूँगाको लज्जित करैहै, मधुर वेणुके शब्दसों विनोद करनवारे नीलोत्पलकी शोभाको निंदित करनवारो जाको मुख वा गोपकिशोरको हम उपासन करैहै ॥ १ ॥ श्यामलांग वनकी केलि करनेमें आसक्त, अति कोमल कमलदलसे जाके नेत्र, व्रजविलासिनीनके नेत्रनके आनंददायक, अति शीतल और बुद्धिके हरनवारे प्राणेश्वरको हम भजन करैहै ॥ २ ॥ विशेषकरें चञ्चल हैं पलक जाके, अतिप्रिय जो कमलकलिका ताकी समान, ताको आचरण करैंहैं, कोमलाधर जाके, आँगुली जाके छिद्रनपै धरी वा वंशीसों युक्त है मुख

पुनर्वाक्यैःसमाश्वास्यगोप्यःकर्मसुकोविदाः ॥ निशम्यतन्मुखाध्यानंगोविंदस्यचमानतः ॥ ४४ ॥ मानिन्योगोपिकाःसर्वाविस्मयंपरमंययुः ॥ विहायमानंताःसर्वाआगत्यपुलिनंनृप ॥ स्वरैर्जगुःकृष्णगुणांस्तदागमनहेतवे ॥ ४५ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डेरासक्रीडायांचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४४ ॥ ॥ गोप्यऊचुः ॥ ॥ अधरबिम्बविडंबितविद्रुमंमधुरवेणुनिनादविनोदितम् ॥ कमलकोमलनीलमुखाम्बुजंतमपिगोपकुमारमुपास्महे ॥ १ ॥ श्यामलंविपिनकेलिलम्पटंकोमलंकमलपत्रलोचनम् ॥ कामदंव्रजविलासिनीदृशांशीतलंमतिहरंभजामहे ॥ २ ॥ तंविसंचलितलोचनांचलंसामिकुड्मलितकोमलाधरम् ॥ वंशवल्गितकरांगुलीमुखंवेणुनादरसिकंभजामहे ॥ ३ ॥ ईषदंकुरितदंतकुंडलंभूषणंभुवनमंगलश्रियम् ॥घोषसौरभमनोहरंहरेवेंषमेवमृगयामहेवयम् ॥४॥ अस्तुनित्यमरविंदलोचनःश्रेयसेहितसुरार्चिताकृतिः॥यस्यपादसरसीरुहामृतंसेव्यमानमनिशंमुनीश्वरैः ॥ ५ ॥ गोपकैरचितमल्लसंगरंसंगरेजितविदग्धयौवनम् ॥ चिंतयामिमनसासदैवतंदैवतंनिखिलयोगिनामपि ॥ ६ ॥ उल्लसन्नवपयोदमेचकंफुल्लतामरसलोचनांचलम् ॥ वल्लवीहृदयपश्यतोहरंपल्लवाधरमुपास्महेवयम् ॥ ७ ॥ यद्धनंजयरथस्यमण्डनंखंडनंतदपिसञ्चितैनसाम् ॥ जीवनंश्रुतिगिरांसदामलंश्यामलंमनसिमेस्तुतन्महः ॥ ८ ॥

जाको, वेणु बजायवेमें रसिक जो प्राणेश्वर ताको भजन करैंहैं ॥ ३ ॥ छोटे २ निकसेहैं कुंदकलीसे शिखरी जाके दंत, कर्णमें कुंडलाभरणको पहर, भुवनमें मंगल जाकी शोभा, घोषसौरभसो मनोहर हे हरे ! वा तेरे शृंगारको हम ढूँढैहै ॥ ४ ॥ कमलसे जाके नेत्र देवताहू जाकी आकृतिको पूजन करैहै वो हमारे सदा मंगलके लिये होउ, जाको चरणारविंदमकरंदरूप अमृत निरंतर मुनीश्वरन करके सेवन कियोगयोहै सो हमें दर्शन देउ ॥ ५ ॥ गोपकरके रचोहै मल्लयुद्ध जाने और संग्राममें जय कियोहै विदग्ध (चतुर) यौवन जाने वाकूं में मनसों सदैव चिंतवन करैहै, जो निखिल (सब) योगिनको परम इष्टदेवता हैं सो हमें दर्शन देऊ ॥ ६ ॥ अतिशय करके सुशोभित, नवीन मेघके समान सुंदर, खिले तामरस (कमल) के समान जाके लोचनांचल (पलक), वल्लवीनके हृदयनके चुरावनवारे और नवीन आम्रदलके समान अधर जाके ताकी हम उपासना करैंहैं ॥ ७ ॥ जो अर्जुनके रथके भूषण हैं, संचित पापनके खंडन करनवारे, वेदकी वाणीनको जीवन है ऐसे श्यामसुंदर कृष्णरूप तेजः पुंज

मेरे मनमें प्रकाश करौ ॥ ८ ॥ गोपिकानके स्तन तथा चंचल नेत्रप्रांत तिनमें जो नैत्रनकी परंपरा तासों आवृत हैं और बालक्रीडा रसमें ॥ लालसाको भ्रम जाको वा माधव भगवानकी हम अहर्निश भावना करैहैं ॥ ९ ॥ मयूरपिच्छको जाको मुकुट और नील मेघके सदृश है अंगसौंदर्य जाको, नीलकमलके समान जाके नेत्र और नील अलकका धारण करें तिनको मैं ध्यान करौहौं ॥ १० ॥ गोपीनकरके गान कियो वैभव जाको कोमल है स्वरित वेणुको निस्वन जाको और अभिराम संपदानको धाम, कमलके समान नेत्र जाके ताको मैं भजन करो हौ ॥ ११ ॥ शार्ङ्ग धनुषके धारण करनवारे, मनके मोहन, मानिनीनको छोडके जानवारे, नारदादि मुनीनकरके सेवित, नंदके तनयको मैं मनमें भजन करौहों ॥ १२ ॥ रमणीजनके मध्यमें विराजमान जो कृष्ण रासमंडलमें सर्वोत्कर्ष वर्तें हैं वाही कृष्णको दुःखिता भई राधिकासहित हम प्राणप्रियको ढूंढैहैं ॥ १३ ॥ हे देव ! हे देव ! हे व्रजराजनंदन ! हे हरे ! हमें दर्शन देउ और पूर्ववत हमारे सब दुःखनको दूर करौ कृपादृष्टिसों देखो हम आपकी विनामोलकी दासी हैं ॥ १४ ॥ जाने सकल भूमंडलके उद्धरण करनेके

गोपिकास्तनविलोललोचनप्रांतलोचनपरंपरावृतम् ॥ बालकेलिरसलालसंभ्रमंमाधवंतमनिशंविभावये ॥ ९ ॥ नीलकण्ठकृतपिच्छशेखरं नीलमेघतुलितांगवैभवम् ॥ नीलपंकजपलाशलोचनंनीलकुंतलधरंभजामहे ॥ १० ॥ घोषयोषिदनुगीतवैभवंकोमलस्वरितवेणुनिस्वनम् ॥ सारभूतमभिरामसंपदांधामतामरसलोचनंभजे ॥ ११ ॥ मोहनंयनसिशार्ङ्गिणंपरंनिर्गतंकिलविहायमानिनीः ॥ नारदादिमुनिभिश्चसेवितं नंदगोपतनयंभजामहे ॥ १२ ॥ श्रीहरिस्तुरमणीभिरावृतोयस्तुवैजयतिरासमण्डले ॥ राधयासहवनेचदुःखितास्तंप्रियंहिमृगयामहेवयम् ॥ ॥ १३ ॥ देवदेवव्रजराजनन्दनदेहिदर्शनमलंचनोहरे ॥ सर्वदुःखहरणंचपूर्ववत्संनिरीक्ष्यतवशुल्कदासिकाः ॥ १४ ॥ क्षितितलोद्धरणाय दधारयःसकलयज्ञवराहवपुःपरम ॥ दितिसुतंविददारचदंष्ट्रयासतुसदोद्धरणायक्षमोस्तुनः ॥ १५ ॥ मनुमताद्रुचिजोदिविजैःसहवसुदुदोहध रामपियःपृथुः ॥ श्रुतिमपाद्धृतमत्स्यवपुःपरंसशरणंकिलनोस्त्वशुभक्षणे ॥१६॥ अवहदब्धिमहोगिरिमूर्जितंकमठरूपधरःपरमस्तुयः ॥ असुहरंनृहरिःसमदंडयत्सचहरिःपरमंशरणंचनः ॥ १७ ॥ नृपवलिंछलयन्दलयन्नरीन्मुनिजनाननुगृह्यचचारयः ॥ कुरुपुरंचहलेनविकर्षयन्यदुवरःसगतिर्ममसर्वथा ॥१८॥ व्रजपशून्गिरिराजमथोद्धरन्व्रजपगोपजनंचजुगोपयः ॥ द्रुपदराजसुतांकुरुकश्मलाद्ववतुतच्चरणाब्जरतिश्चनः ॥१९॥

यज्ञवाराहरूप धारण कियो, जाने दितिसुत (हिरण्याक्ष) को खेल करके जैसे होय ऐसेही मारगेरो वोही भगवान् हमें या दुःखसमुद्रसों उद्धार करौ ॥ १५ ॥ और जाने रुचिके घरमें आकूतिमाताके गर्भद्वारसे जन्म लेके मनुस्वायंभूकी रक्षा करी और पृथुरूप बनके सब देवनको संग लेके अनेक प्रकारकी औषधिरूप दूध लेनेको भूमिको गऊ बनाकर दुही और मत्स्य शरीर धारणकर जिनने वेदनकी रक्षा करी वोही आज या हमारे क्लेशसमयमें रक्षा करौ ॥ १६ ॥ और कच्छप बनके जाने मंदर पर्वत पीठपे धारण कियो और नृसिंह बनके जाने हिरण्याक्षको उरोविदार करके मारो वोही परमेश्वर आज हमारी शरण होउ ॥ १७ ॥ और हे नृप ! बलिराजाको छलनेके लिये वामनरूप बनायो, वैरीनको जाने नाश कियो और मुनिजनपै अनुग्रह कियो, कुरुपुर (हस्तिनपुर) को जाने गंगामें खेंचके गेरनो विचारो वो यदुपति भगवान् हमारीहू रक्षा करौ ॥ १८ ॥ और जाने गोवर्धन उठायके व्रजके

गोपी ग्वाल वृद्ध बाल सबको इंद्रकोपसों बचायके रक्षा कियो और कुरुसभामें जाने द्रौपदीकी लज्जा राखी वोही भगवान् हमारी लाज राखो और वोही हमारी रक्षा करो ॥ १९ ॥ और जाने विषके मोदकनसों दावानल अग्निसों महान् अस्त्ररूप विपत्तिके गणनसों सब पांडुपुत्र रक्षा किये जिनने यदुकुलके मणिरूपने ये सब काम किये वोही द्वारकेश हमारी रक्षा करो ॥ २० ॥ जामें पांच रङ्गके वनके पुष्प लगे ऐसी वनमालाको पहरे, मयूरनके मनकी हरनवारी जे अलक तिनको धारणकरे, केशर, कस्तूरी, अगरु मिले चंदनके तिलकको धारण करे, सब समय मनकी हरनवाली लीलासों युक्त जो वेणुशब्दरूप जो अमृत ताहीको है एकरस जाके साक्षात्सौंदर्यरूप और बालतमालके समान है शरीर जाको वा देवताको हम वंदन करेहैं ॥ २१ ॥ गर्गजी कहेहैं या प्रकार जब स्त्री स्तुति कररहीही तब रेवतीरमण (दाऊजी) के भाई श्रीकृष्ण भक्तिसों बुलाये भगवान उन्हीं गोपीनके बीचमें प्रादुर्भाव भयेहैं ॥ २२ ॥ इति श्रीमद्गर्ग

विषमहाग्निमहास्त्रविपद्गणात्सकलपांडुसुताःपरिरक्षिताः ॥ यदुवरेणपरेणचयेनवैभवतुतचरणःशरणंचनः ॥ २० ॥ मालांबर्हिमनोज्ञकुन्तलभरांवन्यप्रसूनोषितांशैलेयागुरुकृतचित्रतिलकांशश्वन्मनोहारिणीम् ॥ लीलावेणुरवामृतैकरसिकांलावण्यलक्ष्मीमयींबालांबालतमालनीलवपुषंवंदामहेदेवताम् ॥ २१ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ इतिस्त्रीभीरुदंतीभीरेवतीरमणानुजः ॥ आविर्बभूवचाहूतोतासांमध्येचभक्तितः ॥२२ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडेरासक्रीडायांकृष्णागमनंनामपंचचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४५ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ कृष्णंसमागतंदृष्ट्वाताःसमुत्थायहर्षिताः ॥ चक्रुर्जयजयारावंगोप्योदुःखंविसृज्यच ॥१॥ दृष्ट्वासंमूर्च्छितांराधांगोपीभिःप्रार्थितोहरिः ॥ चैतन्यार्थंव्रजेतत्रचकारमुरलीरवम् ॥ २ ॥ नोत्थितांराधिकांदृष्ट्वाश्रीराधावल्लभोहरिः ॥ तस्यैसंश्रावयामासवेणुगीतंपुनःपुनः ॥ ३ ॥ ततःसमुत्थिताराधास्मृत्वादुःखंवियोगजम् ॥ बभूवमूर्च्छिताराजन्माधवस्यप्रपश्यतः ॥ ४ ॥ ततःकृष्णस्यवचनात्सख्यश्चन्द्राननासखी ॥ चन्द्रावलींप्रत्युवाचप्रसन्नाकृष्णवेणुना ॥ ५ ॥ ॥ चन्द्राननोवाच ॥ ॥ कृष्णचन्द्रःपुरानिर्गतोमानतोह्यागतःसोपिराधेयुगांतेपुनः ॥ नाशयन्सर्वदुःखानितेसन्निधौसंजगौवेणुनादेवकीनंदनः ॥६॥ धुंगधुंगेनिनादंमृदंगेकलंवाद्यमानेसुरस्त्रीजनैःसेवितः ॥ रासरम्यांगणेनृत्यकृन्माधवःसंजगौवेणुनादेवकीनंदनः ॥७॥

संहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां पंचचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४५ ॥ श्रीगर्गजी कहेहैं कि, कृष्णको आयो देखके वे सब हर्षित हैके उठीहैं और अपने दुःखनको त्यागके जय जय शब्द करती भईहैं ॥१॥ गोपीनने प्रार्थना किये भगवान् श्रीराधाजीको मूर्च्छित देखके उनके चेतन करवेको मुरली बजाईहै ॥ २ ॥ राधावल्लभ भगवान्ने जब राधिकाको नहीं उठी देखीहै तब वेणुगीतको भगवान्ने राधिकाको सुनायोहै ॥ ३ ॥ तब राधाजी उठीहैं, दुःखजन्य वियोगको स्मरणकर श्रीमाधवजीके देखते २ मूर्च्छित हैगईहै ॥ ४ ॥ तब श्रीकृष्णके कहेते वाही समय चन्द्रानना नामकी सखी कृष्णकी वंशीके शब्दसों प्रसन्न हैके चंद्रावलीसों बोलीहै ॥ ५ ॥ चंद्रानना बोली कि, हे राधे ! जो कृष्णचंद्र पहले तुम्हारे मानको देखके चलेगये हे वो फिर आयेहै ये सब दुःखनको नाश करते तेरी सन्निधिमें देवकीनंदन वंशी बजातेभये ॥ ६ ॥ धुंग धुंग (ये मृदंगशब्दको अनुकरण है) ऐसो मृदंगको कलशब्द हैरह्यो है

वा रासके रम्य अंगणमे देवांगना जाको सेवन कररहीहैं ऐसे देवकीनंदन वेणुसों गान करतेभयेहै ॥ ७ ॥ सुवर्णके समान पीतांबर पहरे, वैजयंतीकी कांतिसों प्रकाशित जाको वक्षःस्थल है ऐसे भगवान् नंदके वृंदावनमें गोपीनके बीचमें वेणुसों गान करतेभये ॥ ८ ॥ चन्द्रावलीके नेत्रनसों चुंबन किये गोपगोपीनके वृंदनको और गउनके प्यारे और कंसके वंशरूपवनको भस्मकरतवारे देवकीनंदन वेणुसों गान करतेभये ॥ ९ ॥ बालिकानको जे तालिनके ताललीलालयमे आसक्त करके सम्यक् दिखायीहै, भ्रूलताको विभ्रम जाने और गोपीनके गीतमें जाको अवधान ऐसे देवकीनंदन वेणुसों गान करतेभये ॥ १० ॥ किरीट, माला और बाजू, किंकिणी, कुंडल तिनसों भूषित ऐसे नंदनंदन सो नंदरायको प्रसन्न करनवारे देवकीनंदन हे देवि ! तुम्हारी प्रीतिके लिये वेणुमे गातेभयेहैं ॥ ११ ॥ जो राधारमण पारिजातको उखारके भामा (सत्यभामाके) आँगनमें रोपतेभये, बल्लवीनके वृंद

चारुचामीकराभासिवासाविभुर्वैजयंतीभराभासितोरस्थलः ॥ नंदवृन्दावनेगोपिकामध्यगःसंजगौवेणुनादेवकीनंदनः ॥ ८ ॥ चारुचंद्रावली लोचनाचुंबितोगोपगोवृन्दगोपालिकावल्लभः ॥ कंसवंशाटवीदाहदावानलःसंजगौवेणुनादेवकीनंदनः ॥ ९ ॥ बालिकातालिकातालिलीलाल यासंगसंदर्शितभ्रूलताविभ्रमः ॥ गोपिकागीतदत्तावधानःस्वयंसंजगौवेणुनादेवकीनंदनः ॥ १० ॥ मौलिमालांगदैःकिंकिणीकुण्डलैर्भूषितो नंदनोनंदराजस्यच ॥ प्रीतिकृत्सुन्दरोदेविप्रीत्यातवसंजगौवेणुनादेवकीनंदनः ॥ ११ ॥ पारिजातंसमुद्धृत्यराधावरोरोपयामासभामाभयादंगणे ॥ बल्लवीवृन्दवृन्दारिकाकामुकःसंजगौवेणुनादेवकीनंदनः ॥ १२ ॥ ऋक्षराजंविनिर्जित्यनीत्वामणिंसंददौभीतवद्भूमिनाथायच ॥ सोपिरासे समागत्यरासेश्वरोसंजगौवेणुनादेवकीनंदनः ॥ १३ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वाराधिकातुमहिमांवेणुवादिनः ॥ प्रसन्नाहिसमुत्थाय परिरेभेप्रियंप्रिया ॥ १४ ॥ वृन्दावनेशोगोविंदोरेमेवृन्दावनेवने ॥ वृन्दावननिवासिन्यापश्यन्वृन्दावनद्रुमान् ॥ १५ ॥ ततःकृष्णंचजगृहुःसर्वे तोव्रजयोषितः ॥ वर्षाकालेनृपश्रेष्ठसौदामिन्योयथाघनम् ॥ १६ ॥ यावतीस्तत्रगोप्यश्चतावद्रूपधरोहरिः ॥ यमुनापुलिनंराजँस्ताभिःसा कंसमाययौ ॥ १७ ॥ बभूवुर्मुदितानार्योयथाचश्रुतयःपुरा ॥ स्ववस्त्रैःकृष्णचन्द्रायह्यासनंताअचीक्लृपन् ॥ १८ ॥ श्रीराधारमणस्तस्मिन्नास नेसहराधया ॥ निषसादह्यहोराजंस्ताभिर्भक्त्यावशीकृतः ॥ १९ ॥

और देवांगनानके मनोरथपूरक देवकीनंदन वेणुमे गातेभये ॥ १२ ॥ ऋक्षराजको जीतके, मणि लायके भयभीतकी तरह उस मणिको उग्रसेनको देतेभये विन देवकीनंदनने वेणुमें गान कियोहै ॥ १३ ॥ गर्गजी कहैहैं कि, यामकार वेणुके बजायवेकी महिमाको राधिकाजी सुनके बड़ी प्रसन्न हैके उठीहै और प्यारीने प्यारेको आलिंगन कियोहै ॥ १४ ॥ तब वृंदावनेश गोविंद वृंदावनमे रमण करतेभये, श्रीवृंदावनवासिनीके संग वृंदावनके वृक्षनको देखते विचरतेभये ॥ १५ ॥ तब सब व्रजकी बालाननें नंदके लालाको पकरलीनोंहै जैसे हे नृपश्रेष्ठ ! वर्षाऋतुमें बिजली घनको ॥ १६ ॥ तब जितनी गोपी ही उतनेही रूप आपने बनायेहैं और फिर विनको अपने संगमें लैके यमुनाजीके पुलिनमें आप गयेहैं ॥ १७ ॥ तब सब गोपी बड़ी प्रसन्न भई हैं यथा (जैसे) श्रुति तैसे श्री कृष्णचंद्रके लिये सबननें अपने वस्त्रनसों बैठबेको आसन रचोहै ॥ १८ ॥ तब श्रीराधारमण राधाजीके

सहित या आसनपै विराजेहैं, कैसे हैं कि, जिनने भक्तिसों अपने वशमें किये हैं ॥ १९ ॥ तब आपने अपनो जो गोलोकमें रूप है वो रूप दिखायोहै, जो रूप तीनों लोकनको मोहन करनवारो है वोही रूप सब गोपीनको दिखायोहै ॥ २० ॥ तब वे सब गोकुलचंद्रमाके वा परम अद्भुत रूपको देखके ब्रह्मानंदमें मग्न भईं, यो सबरी अपने आपेको नही जानतीभई हैं कि, हम कौन हैं ॥ २१ ॥ या प्रकार पहले स्थलमें विहार कियेहै फिर यमुनाजीमें जलविहार करबेको प्रवेश करतीभईहैं भक्तिसों जिनने वशमें करलियेहैं सो आप सब गोपी और राधाजीको संग लेके जलमें पधारेहै ॥ २२ ॥ वहाँ भगवान्ने सब गोपीनके साथ जलविहार कियोहै जैसे अप्सरागणको संग लेके इंद्र स्वर्गमें मंदाकिनी नामकी नदीमें विहार करैहै ॥ २३ ॥ ऐसेही गोपीनके संग यमुनामें विहार कियो है, हे राजन् ! माधव तो माधवीको और माधवी माधवको जलमें अन्योन्य सींचतेभये, शीघ्रतासों ॥ २४ ॥ प्रियाकी कबरीसों और प्यारेके केशपाशसो गिरे पुष्पनसों वे पुष्प

गोलोकेयादृशंरूपंदर्शयामासतादृशम् ॥ गोपीनांराधयासार्द्धंकृष्णंत्रैलोक्यमोहनम् ॥ २० ॥ दृष्ट्वागोकुलचन्द्रस्यसुरूपंपरमाद्भुतम् ॥ स्वात्माननंनाविदन्गोप्योब्रह्मानन्देननिर्वृताः ॥ २१ ॥ स्थलेकृत्वाविहारंतुविवेशयमुनाजलम् ॥ ताभिर्भक्त्यावशीभूतोगोपीभिःसहराधया ॥ ॥ २२ ॥ वारांविहारंभगवान्स्त्रीभिःसार्द्धंचकारह ॥ मन्दाकिन्यांयथाशक्रोह्यप्सरोभिर्वृतोदिवि ॥ २३ ॥ माधवोमाधवींराजन्माधवीमाधवंजले॥ अन्योन्यंतौसिषिचतुःसलिलैःसलिलैस्त्वरम् ॥ २४ ॥ कबरीकेशपाशाभ्यांप्रच्युतैःकुसुमैर्नभौ ॥ यमुनाचित्रवर्णैश्चयथोष्णिङ्मुद्रितानृप ॥ २५ ॥विद्याधर्योदेवपत्न्यःपुष्पवर्षंप्रचक्रिरे॥प्रश्लथद्रशनीभ्यस्तामोहंप्राताःस्मरातुराः ॥२६॥ अथकृष्णोवारिलीलांकृत्वावैलीलयायुतः ॥ जलान्निष्क्रम्यराजेंद्रगिरिंगोवर्द्धनंययौ ॥ २७ ॥ अनुजग्मुर्गोपिकास्तंसहचर्योनृपेश्वर ॥ काश्चिद्व्यजनहस्ताश्चकाश्चिचामरवाहकाः ॥२८॥ काश्चित्तांबूलहस्ताश्चकाश्चिद्दर्पणवाहकाः ॥ काश्चिद्भूषणहस्ताश्चकाश्चित्कुसुमवाहकाः ॥ २९ ॥ काश्चिचंदनहस्ताश्चकाश्चिद्भाजनवाहकाः ॥ काश्चिद्यावकहस्ताश्चकाश्चिदंबरवाहकाः ॥ ३० ॥ काश्चिन्मृदंगहस्ताश्चकाश्चित्कांस्यधराश्चनै ॥ मुरयष्टिधराःकाश्चित्काश्चिद्वीणाधराः पराः ॥ ३१ ॥ करतालकराःकाश्चित्काश्चिद्गानपरायणाः ॥ षट्त्रिंशद्रागरागिण्योव्रजस्त्रीरूपधारकाः ॥ ३२ ॥

अनेक रंगके हे तिनसो बँधी जैसी पगड़ी शोभित होय ऐसी यमुनाजी शोभित भईहै ॥ २५ ॥ तब विद्याधरी और देवांगनानने पुष्पवर्षा करीहै, कटिबंधन जिनके खुलगये ऐसी वे कामातुरा हैके मोहको प्राप्त भईहैं ॥ २६ ॥ तदनंतर श्रीकृष्ण जलविहार करके लीलासो युक्त हे राजेंद्र ! जलमेंसों निकसके गोवर्धन पर्वतको पधारेहै ॥ २७ ॥ तब हे नृपेश्वर ! सहचरी गोपी सब कृष्णके पीछे गईहै, कोई पंखानको हाथमें लियेहे और कोई चमर लियेहे ॥ २८ ॥ कोई तांबूलनको, कोई दर्पणनको, कोई भूषणनको और कोई पुष्पनको हाथनमें लिये है ॥ २९ ॥ कोई चंदनको, कोई भाजननको, कोई महावरको और कोई वस्त्रनको हाथनमें लियेहै ॥ ३० ॥ कोई मृदंगनको, कोई कांस्य (वाद्यविशेष) को कोई मुरजको और कोई वीणानको हाथमें लियेहै ॥ ३१ ॥ कोई करतलको लियेहै और कोई गान करवेमें परायण हैं और छत्तीस रागरागिणी व्रजस्त्रीरूपकी धारण करनवारी होती भईहै ॥ ३२ ॥

वे सब पहले गोलोकतें राधाजीके संग भारतखंडमें आई हीं वे सब श्रीराधेश्वरकी संनिधिमें नृत्य गान करतीभई ॥ ३३ ॥ तिनके बीचमें मदनमोहनने नृत्य कियेहैं वेणुसों गीत गावते तीनों लोकनको मोहित करतेभयेहैं ॥ ३४ ॥ बाजे किंकिणी कंकण नूपुर तिनसों मिलो शब्द रासमंडलमें भयोहै ॥ ३५ ॥ तब देवता और देवांगना हरिके वा रासको देखके कामपीडित हैके मूर्च्छित हैगई है ॥ ३६ ॥ तब चंद्रमाकी चांदनीमें चंचल श्रीकृष्ण चंद्रावलीके संग चलते बिजलीसहित मेघके समान शोभित भयेहै ॥ ३७ ॥ तब गोवर्धनमें श्रीकृष्णने माला, महावर काजल और कमलदलनसों राधाजीको शृंगार कियोहै ॥ ३८ ॥ फिर राधाने कुंकुम, अगर, कस्तूरी, चंदन और कमलनसों श्रीकृष्णको शृंगार कियोहै, ॥ ३९ ॥ तब हँसती राधिकाने मंदहासयुक्त कृष्णके मुखको देखतीने पानको बीडा भगवानके मुखमें दियो है ॥ ४० ॥ तब प्रियाके दीने पानको आपने चबायोहै, ऐसही कृष्णको

गोलोकाद्भारतेपूर्वमागताराधयासह ॥ जगुस्तानननृतुस्तत्रश्रीराधेश्वरसन्निधौ ॥ ३३ ॥ ननर्त्तमध्येतासांचकृष्णोमदनमोहनः ॥ प्रगायन्वेणुनागीतंत्रिलोकींमोहयन्हरिः ॥ ३४ ॥ वादित्रैःकिंकिणीभिश्चवलयनूपुरकंकणैः ॥ गीतैर्मिश्रितशब्दोभूत्तुमुलोरासमंडले ॥ ३५ ॥ देवाश्चदेवपत्न्यश्चरासंदृष्ट्वाहरेरपि ॥ बभूवुर्मूर्च्छिताराजन्गगनेस्मरपीडिताः ॥ ३६ ॥ चंद्रिकायांतुचंद्रस्यचतुरश्चंचलश्चलन् ॥ चंद्रावल्याबभौचैववनश्चंचलखवच ॥ ३७ ॥ राधायास्तत्रशृंगारंस्रग्भिर्यावककज्जलैः ॥ चक्रेकमलपत्राद्यैर्गिरौगिरिधरोमहान् ॥ ३८ ॥ कुंकुमागुरुकस्तूरीचन्दनाद्यैश्चराधिका ॥ चक्रेकमलपत्रैर्वैश्रीकृष्णस्याननेवरम् ॥ ३९ ॥ ततश्चसस्मिताराधासस्मितंभगवन्मुखम् ॥ पश्यन्तीनागवल्ल्याश्चवीटकंप्रददौमुदा ॥ ४० ॥ प्रियाप्रदत्तंतांबूलंबुभुजेनंदनंदनः ॥ कृष्णदत्तंचतांबूलंचखादराधिकामुदा ॥ ४१ ॥ कृष्णचर्वितताम्बूलंनीत्वाराधाबलात्पुनः ॥ जघासभक्त्यासाशीघ्रंसतीपतिपरायणा ॥ ४२ ॥ प्रियाचर्वितताम्बूलंययाचेभगवान्हरिः ॥ राधाददौनतंभीतःपपाततत्पदांबुजे ॥ ४३ ॥ पद्मापद्मावतीनंदीआनन्दीसुखदायिनी ॥ चंद्रावलीचंद्रकलावेश्याद्येताहरिप्रियाः ॥ ४४ ॥ वृन्दावनेहरिस्ताभिर्वसंततुंप्रपूरिते ॥ नानाप्रकारंशृंगारंसचकारमनोजवत् ॥ ४५ ॥ काश्चित्पिबंतिगोप्यस्तुश्रीकृष्णस्याधरामृतम् ॥ काश्चिद्दालिंगनंचक्रुःकृष्णस्यपरमात्मनः ॥ ४६ ॥ ततःकृष्णस्तुभगवान्गोपीनांकुचकुंकुमैः ॥ सुवर्णवर्णोभूत्वावैरेजेमदनमोहनः ॥ ४७ ॥ पुनर्गोपीजनैःसार्द्धंश्रीगोपीजनवल्लभः ॥ रासंचकारराजेंद्रसुन्दरेकदलीवने ॥ ४८ ॥

दियो पान राधिका चबायोहै ॥ ४१ ॥ फिर कृष्णके चबाये पानको प्रियाने लेके आपने खायोहै क्योंकि आप पतिधर्ममें परायण है ॥ ४२ ॥ तब भगवानने प्रियाको चबायो पान माँगोहै जब राधाने नही दिया तब आप राधिकाके पाँयनमें गिरपडेहैं ॥ ४३ ॥ तब पद्मा, पद्मावती, नंदी, आनंदी, सुखदायिनी, चंद्रावली, चंद्रकांता और वेश्या इत्यादिक जे हरिप्रिया हैं ॥ ४४ ॥ इनके संगमें वसंतऋतुपूर्ण वा वृंदावनमें कामदेवके समान नानाप्रकारके शृंगार आपने कियेहैं ॥ ४५ ॥ कोई गोपी तो श्रीकृष्णके अधरामृतको पीती भई और कोई गोपीने आलिंगन कियोहै ॥ ४६ ॥ तब श्रीकृष्ण भगवान् गोपीनके कुचकुंकुमसों सुवर्णवर्ण हैके मदनमोहन भगवान् सुशोभित भयेहैं ॥ ४७ ॥ हे राजेंद्र ! फिर

गोपीजनवल्लभने कदलीवनमे गोपीनके संगमें रास कियोहै ॥ ४८ ॥ या प्रकार हेमंतऋतुकी रात्रि गोपीनके रासमें हे राजन्! आनंदमें वहाँ क्षणकी नाईं व्यतीत भईहै ॥ ४९ ॥ फिर कृष्णभगवान् नंदके घरमें गयेहै और रास करके राधाजी वृषभानुके घरको गई और गोपी सब अपने २ घरनको गई ॥ ५० ॥ गोपनको या रासकी खबरहु नहीं भई है क्योंकि, विन गोपनने अपनी २ पत्नीनको अपने २ पास सोवती मानीहै ॥ ५१ ॥ ये श्रीराधामाधवको शृंगारचरितको जे सुनेंहै, पढेंहै वे अक्षय धामको जायँगे ॥ ५२ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां षट्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४६ ॥ गर्गजी कहेंहै कि, ये कृष्णको चरित्र शास्त्रमें गुप्त कह्यो सो मैने तेरे आगे निरूपण कियो अब और चरित्रको कहौंहो सो विस्तारसो सुनो ॥ १ ॥ ऐसें आठ दिन श्रीकृष्णने नंदनगरमें निवास कियोहै, नंदनगरवासीनको परमानंद भयोहै, फिर आपने वहाँसों जानेको मन कियोहै

एवंहेमन्तरजनीगोपीनांरासमण्डले ॥ व्यतीताक्षणवद्राजन्नित्यानंदेनतत्रवै ॥ ४९ ॥ अथनंदस्यसदनंरासंकृत्वाययौहरिः ॥ वृषभानुपुरंराधा तथागोप्योगृहान्ययुः ॥ ५० ॥ नजानंतिव्रजेगोपारासवार्तांहरेरपि ॥ स्वान्स्वान्दारान्स्वपार्श्वस्थान्मन्यमानानृपेश्वर ॥ ५१ ॥ इदंशृंगार चरितंराधामाधवयोःपरम् ॥ येपठंतिचशृण्वन्तितेव्रजिष्यंतिचाक्षरम् ॥ ५२ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डेरासक्रीडासंपूर्तिर्नामषट् चत्वारिंशोऽध्यायः ॥४६ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ इदंकृष्णस्यचरितंगुप्तंशास्त्रेषुवर्णितम् ॥ मयातवाग्रेराजेंद्रअथान्यच्छृणुविस्तरात् ॥१॥ एवंस्थित्वादिनान्यष्टौश्रीकृष्णोनंदपत्तने ॥ आनंदंप्रददन्नृणांपुनर्गंतुंमनोदधे ॥ २ ॥ यशोमतीकृष्णमाताप्राणेभ्योऽपिप्रियंसुतम् ॥ गन्तुमभ्यु दितंदृष्ट्वारुरोदोच्चैर्यथापुरा ॥ ३ ॥ रुरुदुस्तत्रगोप्यश्चबाष्पपर्याकुलेक्षणाः ॥ स्मरंत्यःपूर्वदुःखानिगेहेगेहेनृपेश्वर ॥४ ॥ यावत्योव्रजनार्यश्च तावद्रूपधरोहरिः ॥ पृथगाश्वासयामासतथाराधांसकोविदः ॥ ५ ॥ मातरंप्राहभगवान्मातःशोकंतुमाकुरु ॥ शीघ्रमत्रागमिष्यामिकारयित्वा क्रतूत्तमम् ॥ ६ ॥ त्वंनमन्यसेचेन्मातर्नित्यंद्रक्ष्यसिचांतिके ॥ पुत्ररूपंचमांभक्त्याकृतांतभयभंजनम् ॥ ७ ॥ एवंतांतुसमाश्वास्यनिष्क्रम्य सदनाद्धरिः ॥ गोपैर्युक्तोऽश्रुपूर्णाक्षःप्रौत्रसेनांजगामह॥८॥गत्वानिरुद्धसेनायांयादवान्हयमोचने॥ददावाज्ञांनृपश्रेष्ठसाक्षान्नारायणोहरिः ॥९॥

॥ २ ॥ कृष्णकी माता यशोमतीने प्राणसे प्यारे पुत्रको जानेको तयार देखके जैसे पहले रुदन कियो हो ऐसेही उच्चस्वरसो रुदन कियोहै ॥ ३ ॥ तब सब गोपीनके आँसू वहनलगे हे नृपेश्वर! पहले कृष्णके वियोगको स्मरण आयोहै ॥ ४ ॥ तब जितनी गोपी ही इतनेही रूप बनायके सबनको कृष्णने आश्वासन कियोहै और ऐसें ही राधाजीको आपने सम झाईहै ॥ ५ ॥ फिर भगवान्ने मातासों कहीहै कि, हे मातः! तू शोच मत करे मै या यज्ञको समाप्त करवायके जलदी आऊँगो ॥ ६ ॥ हे मातः! यदि तुम नहीं मानोहो तो कालके भयको भञ्जन करनवारे पुत्ररूप हमें नित्य अपने पास तुम देखोगी ॥ ७ ॥ या प्रकार माताको आश्वासन करके भगवान् घरसों निकसेहै, गोपनसहित आँखिनमें आँसू भरते अनिरुद्धकी सेनामें आप आयेहै ॥ ८ ॥ अनिरुद्धकी सेनामें आपके यादवनको घोडेके छोडवेको कृष्णने आज्ञा दीनीहै ॥ ९ ॥

कृष्णके हुकुमसों घोडेको यत्नसों पूजन कर अनिरुद्धने पहलेकी तरह फिर घोड़ा छोडदियोहै ॥ १० ॥ तब अनिरुद्ध आदिक यादव सब अश्रुपूरित हैके नंदादिकनको प्रणाम कर बडे कठिनसों फिर सब सवारिनपै सवार हैगयेहैं ॥ ११ ॥ तब कृष्णकेसे जिनके आकार ऐसे कृष्णके बेटा नातीनको कृष्णसहित जानेको तयार भये सुंदर सब यादवनको देखके वे सब गोविंदके विरहमे आतुर भये पहले दुःखनको याद कर सूखगयेहैं, कंठ, ओष्ठ, तालु जिनके ऐसे है रोवनलगे और बाष्पव्याकुललोचन हैके नंदबाबाहू रोमनलगे, सुख जिनको सूखगयो, दुःखमे मग्न भये कुछ नही बोलेहै ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ तब श्रीकृष्णनेहू आँसू भर सबनको समझायो है एक २ सों मिलके आपने कहीहै कि, मैं आऊँगो घबडाओ मति ॥ १५ ॥ और चैत्रमें यज्ञ होयगो तब हे गोपाल हो ! मैं निःसन्देह सबनको द्वारकामें बुलाऊँगो ॥ १६ ॥ और हे गोपालहो ! तुम नित्य मोकूँ गोकुलमें देखोगे सो तुम

नोदितःकृष्णचन्द्रेणहयंसंपूज्ययत्नतः ॥ पुनर्मुमोचतत्पौत्रोविजयार्थेहिपूर्ववत् ॥ १० ॥ यादवाश्चानिरुद्धाद्यानंदंनत्वाश्रुपूरिताः ॥ गंतुमारुरुहुस्सर्वेवाहनानिचकृच्छ्रतः ॥ ११ ॥ कृष्णाकारान्कृष्णपुत्रान्कृष्णपौत्रांश्चसुन्दरान् ॥ गंतुमभ्युदितान्सर्वान्कृष्णेनसहितान्यदून् ॥१२॥ दृष्ट्वातेरुरुदुर्गोपागोविंदविरहातुराः ॥ स्मरंतःपूर्वदुःखानिशुष्ककंठोष्ठतालुकाः ॥ १३ ॥ रुरोदनंदराजोपिबाष्पव्याकुललोचनः ॥ नकिंचिदूचेदुःखार्त्तोमुखेनपरिशुष्यता ॥ १४ ॥ सर्वानाश्वासयामासकृष्णोप्यश्रुपरिप्लुतः ॥ आयास्यइतिवाक्यैश्चमिलित्वातुपृथक्पृथक् ॥ १५ ॥ चैत्रमासेयदायज्ञोद्वारकायांभविष्यति ॥ आह्वयिष्यामिगोपालायुष्मान्सर्वान्नसंशयः ॥ १६ ॥ गोपालागोकुलेनित्यंगोपालंमांहिद्रक्ष्यथ ॥ तस्मान्निवासंकुरुतअत्रैवव्रजमण्डले ॥ १७ ॥ एवमाश्वास्यतैर्दत्तंपारिबर्हंप्रगृह्यच ॥ नंदंनत्वारथेस्थित्वाप्रायाद्वृष्णिवरैर्हरिः ॥१८॥ नन्दाद्याढुःखितागोपाःकृष्णस्यचरणांबुजे ॥ क्षिप्तंमनःपुनर्हर्तुमनीशागोकुलंययुः ॥ १९ ॥ गोपागोप्यश्चश्रीकृष्णंप्रेममग्नाश्चनित्यशः ॥ समीपेनृपपश्यंतियोगिनामपिदुर्लभम् ॥ २० ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डेव्रजादन्यत्रगमनंनामसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४७ ॥

॥ गर्गउवाच ॥ ॥ कृष्णांसमुत्तीर्यततःप्रपश्यन्नगामवाजीकुरुपत्तनञ्च ॥ करोतिराज्यंनृपचक्रवर्त्तीविचित्रवीर्योबलवान्हियत्र ॥१॥ ततोददर्शतुरगःकौरवाणांपुरंवरम् ॥ नानाचोपवनैर्युक्तंतडागैश्चसरोवरैः ॥२॥ दुर्गेणगंगयायुक्तंतथापरिखयानृप ॥ सुवर्णरौप्यसदनैर्महाशूरजनैर्वृतम् ॥३॥

यहाँही व्रजमंडलमें निवास करौ ॥ १७ ॥ ऐसे सबनको आश्वासन कर विनके दिये पारिबर्हको लैके, नंदको प्रणाम कर रथमें बैठके यादवनको संग लैके आप पधारेहै ॥ १८ ॥ तब नंदादिक सब गोप कृष्णके चरणमें लगे मनके फिर लैबेको असमर्थ हैके सब गोकुलमें आयेहै ॥ १९ ॥ तब प्रेममें डूबे ऐसे सब गोप और गोपी नित्यही श्रीकृष्णको अपने पास देखतेभये जो कृष्ण योगिनकोहू दुर्लभ है तिने नित्य समीपवर्ती देखते भयेहैं ॥ २० ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४७ ॥ गर्गजी कहे हैं कि, तदनंतर ये घोडा यमुनाके पास उतरके कुरुपत्तनमें गयोहै जहाँ बडो बली विचित्रवीर्यको पुत्र राज्य करतो हो ॥ १ ॥ तब या घोडाने वो श्रेष्ठ कौरवनको पुरवर देखोहै, अनेक बाग और सरोवरनसों जो सुशोभित है ॥ २ ॥ बडो किलो है और गंगाजी जाकी खाई है, सोने, चाँदीके जामें घर और बडे शूर जन जामें रहैहैं ॥ ३ ॥

वहाँ वा दिन वनमें सिकार खेलवेको निकसो हो सो रथमे बैठेन ये पत्रसहित घोडा देखोहै बहुतसे वीर पुरुष दुर्योधनके संगहै ॥४॥ तब घोडेको देख रथमेंसों उतरोहै, हे राजन्। तब बडो अभिमानी याने प्रसन्न हैके घोडा पकरलियो ॥५॥ कर्ण, भीष्म, कृपाचार्य, द्रोण, भूरि और दुःशासनादिक सहित घोडा पकरलियो और घोडेके माथेपै लिखो भयो जो पत्र हो सो याने बँचवायोहै ॥ ६ ॥ कि, आज चंद्रवंशी, यदुकुलोत्पन्न एक राजा उग्रसेन विराजमान है इंद्रादिक देवताहु जाके हुकमको आजदिन उठावैहैं ॥ ७ ॥ और भक्तनके पालक श्रीकृष्ण जाके सहायक है याही उग्रसेनकी भक्तिकरके भगवान् द्वारकामें निवास करैहैं ॥ ८ ॥ उन्ही भगवान्के कहेसों उग्रसेन राजा जो चक्रवर्ती है वो हठसों अपने यशके लिये अश्वमेध यज्ञ करे है ॥ ९ ॥ याने ये अश्वनमें मुख्य बडो शुभ घोडा छोडोहै ताको रक्षक कृष्णको नाती वृकदैत्यको मारनवारो अनिरुद्ध है ॥ १० ॥ वो गज, अश्व, रथ और पत्तिनकी

सुयोधनस्तत्रपुराद्विनिर्गतोहंतुंमृगान्वैवनगोचरान्नृप ॥ ददर्शयज्ञस्यहयंसपत्रकंरथस्थितोवीरजनैर्विभूषितः ॥ ४ ॥ दृष्ट्वातुरंगमंप्रीतोस्वरथाद्वतीर्यच ॥ मानीदुर्योधनोराजंस्त्वरंजग्राहलीलया ॥ ५ ॥ कर्णभीष्मकृपद्रोणभूरिदुःशासनादिभिः ॥ युक्तस्तद्भालपत्रंचवाचयामासहर्षितः ॥ ६ ॥ चंद्रवंशेयदुकुलउग्रसेनोविराजते ॥ इन्द्रादयःसुरगणायस्यादेशानुवर्तिनः ॥ ७ ॥ सहायोयस्यभगवाञ्छ्रीकृष्णोभक्तपालकः ॥ अस्तितद्वैद्वारकापुर्य्यांतद्भक्त्यानिवसन्हरिः ॥ ८ ॥ तद्वाक्याद्धयमेधंसउग्रसेनोनृपेश्वरः ॥ चक्रवर्तीहठाद्यज्ञंस्वयशोर्थेकरोतिहि ॥ ९ ॥ मोचितस्तेनतुरगोहयानांप्रवरःशुभः ॥ तद्रक्षकःकृष्णपौत्रोऽनिरुद्धोवृकदैत्यहा ॥ १० ॥ गजाश्वरथवीराणांसेनासंघसमन्वितः ॥ राजानोयेकरिष्यंतिराज्यंकोशूरमानितः ॥ ११ ॥ तेगृह्णंतुयज्ञहयंस्वबलात्पत्रशोभितम् ॥ तंमोचयतिधर्म्मात्मागृहीतंचहयंनृपैः ॥ १२ ॥ स्वबाहुबलवीर्येणानिरुद्धोलीलयाहठात् ॥ तस्यान्यथाचपदयोःपतिस्त्वायांतुधन्विनः ॥ १३ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ तत्पत्रंवाचयित्वैवंकौरवास्तेतुशत्रवः ॥ ऊचुःपरस्परंक्रुद्धामानिनोरक्तलोचनाः ॥ १४ ॥ ॥ कौरवाऊचुः ॥ ॥ अहोकिंलिखितंधृष्टैर्भालपत्रेहयस्यच ॥ नसंतिकिंहिराजानोयादवानांचसंमुखे ॥ १५ ॥ राजसूयेपुरास्माभिर्यादवायेविनिर्जिताः ॥ हयमेधंकरिष्यंतिपुनस्तेगतबुद्धयः ॥ १६ ॥

सेनासमूहसों युक्त है सो जे कोई राजा या भूमिमें वीरमानी राज्य करैहै वे या पत्रसे शोभित घोडेको अपने बलसे पकरैं तब वा घोडेको धर्मात्मा अनिरुद्ध हठसो अपने बलवीर्यके प्रतापसे छुडावेगो, याते धनुषधारी राजा अनिरुद्धके पाँयन परो और भेट देउ अथवा अनिरुद्धसों संग्राम करो ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ गर्गजी कहेहैं कि, ऐसे लिखे वा पत्रको बाँचके वे शत्रु कौरव बडे मानी लाल नेत्र करके बडे कुपित हैके परस्पर बोले है ॥ १४ ॥ अरे देखो इन ढीठ यादवनने घोडेके माथेके पत्रमें कहा बेसमझ लिखदियोहै ! क्या यादवनके मुकाबलेपै आज कोई राजा नही है ? जो ऐसो विनेने लिख दियोहै ॥ १५ ॥ जिन यादवनको पहले राजसूय यज्ञमें हमने जीतलिये हैं वे गतबुद्धि यादव

फिर अश्वमेध करेंगे ॥ १६ ॥ सो हम सब यादवनको जीतेंगे और या घोडेको हम काहूप्रकार नहीं देंयँगे और फिर हमभी यज्ञनमें उत्तम जो अश्वमेध यज्ञ है ताको करेंगे ॥१७॥ कौन उग्रसेन? कौन कृष्ण? और घोडेकी रक्षा करनवारो कौन होय है ? और ये सब मिलके यादवनसहित हमारो कहा करेंगे ? ॥ १८ ॥ देखो कृष्णसों आदिलेके यादव तो येही हैं जे जरासंधके डरके मारे अपनी पुरी मथुराकौ छोडके समुद्रकी शरण गयेहैं हमारे भयसों जिन यादवनने युद्धको परित्याग कियो वे आज कौन बलसों लडेंगे ? ॥१९॥ दयाकरि जे हम सो हमनेही पहले इन यादवनको राज्य दियो, वोही कुलघ्नी यादव आज अपने आपेकों चक्रवर्ती मानेहैं ॥ २० ॥ केवल पांडवनके संबंधको देखके हमने नहीं मारे हैं, वो पांडवहू तो हमारे पूरे २ शत्रु हैं, जिन पांडवनको हम देशनिकालो देचुकेहैं, फिर हमको पांडवनके संबंधसों कहा मतलब है ॥ २१ ॥ संग्राममें जे भागगये तिनी यादवनको आज जीतके या यादव उग्रसेनको चक्रवर्तीपनो दिखवावेंगे ॥ २२ ॥ हे राजन् ! या प्रकारसों राजलक्ष्मी और राजविभूतिके गर्वसों वो कौरव श्रीकृष्णके विमुख हैके कहन

तस्मात्सर्वान्विजेष्यामो न दास्यामस्तुरंगमम् ॥ पश्चाद्वयं करिष्यामो हयमेधं क्रतूत्तमम् ॥१७॥ क उग्रसेनः कः कृष्णः हयरक्षाकरस्तु कः ॥ यादवैः सहिता ह्येते किं करिष्यंति पौरुषम् ॥ १८ ॥ कृष्णाद्या यादवाः सर्वे विहाय मथुरां पुरीम् ॥ गताः समुद्रं शरणं युद्धं त्यक्त्वा भयाच्च नः ॥ १९ ॥ राज्यं दत्तं पुरा ह्येषामस्माभिश्च कृपान्वितैः ॥ कृतघ्नास्ते च मन्यंते स्वात्मानं चक्रवर्तिनम् ॥२०॥ पांडवानां च सन्मानाद्यादवा न हि मारिताः ॥ निष्कासिताश्च तेऽस्माभिः पांडवाः शत्रवः किल ॥ २१ ॥ यदूनद्य विनिर्जित्य संग्रामे च पलायितान् ॥ दर्शयामश्चाहुकाय सहसा चक्रवर्तिताम् ॥ २२ ॥ एवं श्रीकृष्णविमुखा वाचः सर्वे वदंति हि ॥ दृप्तास्ते कौरवा राजञ्छ्रिया राजविभूतिभिः ॥ २३ ॥ ततश्च जगृहुः सर्वे नानाशस्त्राणि वेगतः ॥ हयं नवेशयामासुः पुरे तत्र तु संस्थिताः ॥ २४ ॥ गते च तुरगे दूरं सांबः कृष्णेन नोदितः ॥ त्वरं कृष्णां समुत्तीर्य गंभीरां मार्गदायिनीम् ॥ २५ ॥ अक्षौहिणीभिर्दशभिः पृष्ठतो दंशितो रुषा ॥ हस्तिनापुरमक्रूरयुयुधानादिभिर्ययौ ॥ २६ ॥ एवं ते यादवाः सर्वे हस्तिनापुरसन्निधौ ॥ आयाता हयहर्तॄंश्च कौरवान्ददृशुः स्थितान् ॥ २७ ॥ ऊचुस्ते वीक्ष्य बलिनो लोकद्वयजिगीषवः ॥ तान्सर्वांश्च तृणीकृत्य यादवाः कृष्णदेवताः ॥ २८ ॥ अहो बबंध कश्चाश्वं कस्य हृष्टः कृतांतराट् ॥ प्राप्स्यते कस्तु संग्रामे नाराचैः परमां व्यथाम् ॥ २९ ॥

लगेहै ॥ २३ ॥ और बडे वेगसों अनेक अस्त्र शस्त्रनको हाथनमें लेलिये और घोडाको नगरको भेजदियो और ये सब कौरव लडबेको खडेहैगये ॥ २४ ॥ जब यहाँ घोडा दूर चलोगयो तब श्रीकृष्णचंद्रने सांबको आज्ञा दीनी ही सो वोही सांब बहुत जलदी वाही समय गंभीर जमुनाजीके पार जायके प्राप्तभये ॥ २५ ॥ दश अक्षौहिणी सेनाको अगाडी करके पीछे कवचनको पहरके कुपित है, अक्रूर और सात्यकी आदिकनको संग लेके सांब गये हैं ॥ २६ ॥ या प्रकार ये यादव सब हस्तिनापुरकी संनिधिमें आये है तब घोडेके पकरबेवारे कौरवनको लडबेकेलिये तयार खडे देखेहैं ॥ २७ ॥ तब ये बडे बलवान् दोनों लोकनको जीतोचाहैं ऐसे ये यादव सब कौरवनको मारबेको तयार भये, कौरवनको अपने अगाडी तिनकाकी बराबर मानतेभयेहै ॥ २८ ॥ और ये बोलेहैं, अरे कौनने ये घोडा बाँधो है, अरे ! यमराजाजी कौनपे राजी भयेहैं, आज नाराच नाम बाणनके मारे

कौन परम व्यथाको अधिकारी होयगो ॥ २९ ॥ बडे आश्चर्यकी बात है,क्या कौरव आजतक ये नहीं जानैंहैं कि, उग्रसेन चक्रवर्ती है जो आज राजानके राजा उग्रसेन देव, दानवनक रके वंदित हैं ॥ ३० ॥ जो उग्रसेन राजसूय यज्ञको करनवारो अद्वितीय राजाधिराज हैं तिनके घोडेको जे पकरैंहैं वे अपने मस्तेके पकरैंहैं ॥ ३१ ॥ राजा हेमांगद, राजा इंद्रनील, बक, भीषण, बल्वल और अनेक राजा हमनें संग्राममें जीतलियेहैं ॥ ३२ ॥ ये सुनके ये कौरव क्रोधसों हौंठ जिनके फडकनलगे और यादवनको तिरछी निगाहसों देखते यादवनसों ये बोलैंहैं ॥ ३३ ॥ अरे जाओ हाँ हमने घोडा पकरो हमारो तुम कहा करोगे, तुम सबनको हम बाणनके मारे अभी यमपुरके मिहमान बनावैंगे ॥ ३४ ॥ अरे उग्रसेन के दिनको राजा है,कृष्णके द्वारा राज्य पायके अभिमान मानैंहैं सो उग्रसेनको बाँधके कैद करके हम आज जरूर राज्य करैंगे ॥ ३५ ॥ जो हमारे भयसों भागके गयो सो अनिरुद्ध कहाँ है हमें

अहोवैकिंनजानंतिवृष्णींद्रंचक्रवर्तिनम् ॥ उग्रसेनंराजराजंदेवदानववंदितम् ॥ ३० ॥ राजसूयस्यकर्तारमद्वितीयंनृपेश्वरम् ॥ नृपाःस्वात्मविनाशायगृह्णंतितुरगंततः ॥ ३१ ॥ हेमांगदश्चेंद्रनीलोबकोभीषणएवच ॥ बल्वलश्चनृपाःसर्वेरणेऽस्माभिर्विनिर्जिताः ॥ ३२ ॥ इतिश्रुत्वाकौरवास्तेक्रोधप्रस्फुरिताधराः ॥ प्रत्यूचुस्तान्विपश्यंतस्तिरश्चीनैश्चचक्षुभिः ॥ ३३ ॥ ॥ कौरवानुगाऊचुः ॥ ॥ गृहीतस्तुरगोऽस्माभिर्यूयंकिंतुकरिष्यथ ॥ युष्मान्सर्वान्नयिष्यामःसायकैर्यमसादनम् ॥ ३४ ॥ उग्रसेनःकतिदिनैराज्यंलब्ध्वातुकृष्णतः ॥ मानंकरोतितंबद्ध्वाराज्यंकुर्मोवयंकिल ॥ ३५ ॥ अनिरुद्धस्तुकुत्रास्तेह्यस्माकंचभयाद्गतः ॥ वदतैनंशरैर्युद्धेपूजयामोनसंशयः ॥ ३६ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ इतितेषांवचःश्रुत्वायादवाःक्रोधमूर्च्छिताः ॥ चिक्षिपुःसायकांश्चापैःकौरवाणांमुखेषुच ॥ ३७ ॥ केचिद्भग्नभ्रुवोबाणैश्छिन्नजिह्वाश्चकौरवाः ॥ भग्नदंताश्छिन्नमुखावमंतोरुधिरंबहु ॥ ३८ ॥ दुर्योधनंछिन्नमुखानिहतास्तेययुर्द्रुतम् ॥ पृष्टास्तेकथयामासुर्यादवैःप्रकृतंचतत् ॥ ३९ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डेकौरवैःश्यामकर्णग्रहणंनामाऽष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४८ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ दुर्योधनःस्ववीराणांभीष्मद्रोणकृपादिभिः ॥ दृष्ट्वामुखानिभग्नानिकोपंकृत्वेदमब्रवीत् ॥ १ ॥ अहोवैयादवास्तुच्छाआगताम्मृत्युसंमुखे ॥ किंनजानंतितेमूढाधृतराष्ट्रबलंमहत् ॥ २ ॥

बताओ, आज याको बाणनसों पूजैंगे ॥ ३६ ॥ गर्गजी कहैंहैं कि, तब कौरवनके ये कहेको सुनके यादव क्रोधसे मूर्च्छित हैगये और वाही समय कौरवनके ऊपर बाण चलावन लगे हैं ॥ ३७ ॥ सो यादवनके बाणनके मारे कितनेही कौरवनकी जीभ कटिगई है और कितनेईनके दांत टूटगयेहैं. कितनेईनके मुख घायल हैगयेहैं ॥ ३८ ॥ तब वे जीभकटे, दांत टूटे मुखसों रुधिर उगलते कटे हैं मुख जिनके.वे भागके दुर्योधनके पास गयेहैं तब उनसों दुर्योधननें पूछीहै कि, रे ये कहा भयो तब वे ये सब यादवनको पराक्रम है ऐसे दुर्योधनसों कहते भयेहैं ॥ ३९ ॥ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायामष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४८ ॥ ॥ गर्गजी कहैंहैं कि, तब दुर्योधन, भीष्म, द्रोण और कृप इन करके सहित अपने सब वीरोंके मुखनको भग्न भये देखके कोप करके ये बोलेहैं ॥ १ ॥ देखो जी ! ये बडो आश्चर्य है कि, ये तुच्छ यादव मृत्युके सामने आये हैं कहा ? ये मूढ धृत

राष्ट्रके मेहइल्लको नही जानेहे ॥ २ ॥ इतने वचन कहिके अपनी चतुरंगिणी सेनाको दुर्योधन भेजतोभयो, गज, अश्व, रथ और वीर इनसों युक्त है यादवनसों युद्धकेलिये जाट ॥ ३ ॥ तब ये सेना धरतीको कँपावती चलीहे दश अक्षौहिणी सहित बलसों शत्रुनको त्रास देती आईहे ॥ ४ ॥ तब आवती या सेनाको जांबवतीके पुत्र सांबने देखके हर्षसों अपनी सेनाको आज्ञा दीनीहे, वीरनसों सांब भूषित है ॥ ५ ॥ तब सब कौरवनने अपनी रक्षाके अर्थ क्रौंचव्यूह बनायोहे वा क्रौंचके मुख, पक्ष, अंग बनके ठाडे भयेहे ॥ ६ ॥ वा क्रौंचके मुखस्थानमें तो भीष्म और ग्रीवामें द्रोण दोनों बगल पंखनके स्थानमें कर्ण और शकुनी और पुच्छस्थानमें दुर्योधन खडे भयेहे ॥ ७ ॥ और बीचमें सब चतुरंगिणी सेना खडी भईहे, यामकार शत्रुनकरके दुर्जय रचेभये वा चक्रव्यूहको देखोहे ॥ ८ ॥ तब युद्धसों शंकित भये सब यादव वा क्रौंचव्यूहको देखके बोलेहे कि, हे सांब ! तुमहू अपनी व्यूह

इत्युक्त्वाप्रेषयामासुःस्वांसेनांचतुरंगिणीम् ॥ गजाश्वरथवीरैश्चयुक्तांयुद्धेचयादवान् ॥ २ ॥ साचचालमहासेनाकंपयंतीमहीतलम् ॥ अक्षौहिणीभिर्दशभिस्त्रासयंतीबलाद्रिपून् ॥ ४ ॥ आयांतींतांततोदृष्ट्वासांबोजांबवतीसुतः ॥ स्वांसेनांनोदयामासहर्षाद्वीरैर्विभूषितः ॥ ५ ॥ ततश्चकौरवाःसर्वेरक्षणार्थंतुस्वात्मनः ॥ क्रौंचव्यूहंविनिर्मायतत्रसर्वेहिसंस्थिताः ॥ ६ ॥ आसीत्तस्यमुखेभीष्मोग्रीवायांद्रोणएवच ॥ पक्षयोः कर्णशकुनीतस्यपुच्छेसुयोधनः ॥ ७ ॥ मध्येतस्यमहासेनाचतुरंगबलैर्युता ॥ कृतंहिददृशुर्व्यूहंक्रौंचंवैशत्रुदुर्जयम् ॥ ८ ॥ क्रौंचव्यूहंतत्रदृष्ट्वा यदवोयुद्धशंकिताः ॥ ऊचुर्हेसांबत्वमपिकुरुव्यूहंप्रयत्नतः ॥ ९ ॥ इतितेषांवचःश्रुत्वासांबःसंग्रामकोविदः ॥ नचकाररणेव्यूहंकौरवानगणय्यच ॥ १० ॥ युद्धंकर्तुंप्रचलितेतेद्वेसेनेयदानृप ॥ तदामुहूर्तपर्यंतंचकंपेवसुधाभृशम् ॥ ११ ॥ जघ्नुर्भेर्यश्चशंखाश्चह्युभयोःसेनयोस्तदा ॥ टंकाराश्चैवचापानांश्रूयंतेतत्रतत्रह ॥ १२ ॥ गर्जंतिदन्तिनस्तत्रहयाह्रेषंतितत्रह ॥ शब्दंशूराःप्रकुर्वंतिनदंतिरथनेमयः ॥ १३ ॥ सैन्यपादरजोभिश्च ह्यंधकारोभवद्रणे ॥ मलिनंगगनंभूत्वासूर्यस्तत्रनदृश्यते ॥ १४ ॥ उभयोःसेनयोर्युद्धंततःसमभवद्भृशम् ॥ बाणैर्गदाभिःपरिघैःशतघ्नीभिश्च शक्तिभिः ॥ १५ ॥ परस्परंतेयुयुधुराहवेनिशितैःशरैः ॥ गजागजैरथारथैर्हयाहयैर्नरानरैः ॥ १६ ॥ शरांधकारेसंजातेसांबोबाणैर्धनुर्द्धरः ॥ रणेभीष्मेणयुयुधेऽक्रूरःकर्णेनतत्रच ॥ १७ ॥

रचनाको करो ॥ ९ ॥ ये यादवनके कहे वचनको सुनके सांबने कौरवनके कुछ नही समझके इनने व्यूहरचना नहीं करीहे ॥ १० ॥ हे नृप ! जब ये दोनों सेना युद्ध करबेको चलीहे तब दो घडीतक अत्यंत धरती कॉपीहे ॥ ११ ॥ तब दोनों सेनानके भेरी और शंख बजेहें और जगेजगे वीरनके धनुषनके टंकार सुनाई परेहे ॥ १२ ॥ हाथीनकी गर्जना, घोडेनकी हीसन भईहे, रथनके धवावनके खनखनाट भयोहे शूरवीरनकी गर्जनाके शब्द भयेहे ॥ १३ ॥ सेनाको पॉवनकी रजको अंधकार भयोहे, आकाशके मलिन हैवेसों सूर्यको दीखनो बंद हैगयोहे ॥ १४ ॥ तब दोनों सेनानको घोर युद्ध भयोहे, बाण, गदा, परिघ, शतघ्नी और शक्ति दोनों बगलसों चलनलगेहें ॥ १५ ॥ वा संग्राममें वे परस्पर हाथीनसों हाथी, रथनसों रथ, घोडेनसों घोडे और पदातिनसों पदाति लडनलगेहें ॥ १६ ॥ तब शरांधकार जब हैगयो तब सांब धनुषको लेके बाणनसों भीष्मके संग संग्राम करतोभयो और

कर्णके संग अक्रूर लडतेभयेहैं ॥ १७ ॥ शकुनिके संग युयुधानको और द्रोणके संग सारणको और दुर्योधनके संग सात्यकिको संग्राम होनलगोहै ॥ १८ ॥ दुःशासनके संग बलीको, भूरिके संग कृतवर्माको संग्राम होनलगो याप्रकारसों परस्पर भयकारक संग्राम भयोहै ॥ १९ ॥ तब सांबने कुपित हैके दृढ धनुषको हाथमें लेके शूरनके हृदयमें कंप पैदा करतेने धनुष टंकारोहै ॥ २० ॥ श्रीकृष्णको प्रथम प्रणाम करके सांबने दश बाण मारेहैं, आये तिन बाणनको भीष्मजीने अपने बाणनसों काटगेरेहै ॥ २१ ॥ फिर सांबने सिंहवत् गर्जना करके स्वर्णमय और दश बाण याके कवचमें मारेहैं ॥ २२ ॥ और चार बाणनसों याके चारों घोडे मारगेरेहैं और दश बाणनसों प्रत्यंचासहित याको धनुष काटगेरेहै ॥ २३ ॥ तब भीष्मजीने धनुष कटो देख, घोडनको मरो देखके, सारथीको मरो देखके बडे रोषसे उठके गदा हाथमें लीनीहै ॥ २४ ॥ तब सांबने कहीहै, मैं तुम्हारे पदातिके संगमें कैसे

युयुधानःशकुनिनाद्रोणाचार्य्येणसारणः ॥ दुर्योधनेनसंग्रामेसात्यकिःशीघ्रमेवच ॥ १८ ॥ बलीदुःशासनेनापिकृतवर्मातुभूरिणा ॥ एवंपरस्परंह्यासीत्संग्रामोभयकारकः ॥ १९ ॥ ततःसांबस्तुसंक्रुद्धःसज्यंकृत्वाधनुर्दृढम् ॥ टंकारयामासतदाशूराणांकंपयन्हृदि ॥ २० ॥ श्रीकृष्णंप्रथमंनत्वामुमुचेसायकान्दश ॥ तानागतान्छरान्भीष्मश्चिच्छेदस्वशरैरपि ॥ २१ ॥ रणेसांबःपुनस्तस्यकवचेसायकान्दश ॥ निचखानस्वर्णमयान्नादंकृत्वातुसिंहवत् ॥ २२ ॥ चतुर्भिःसायकैस्तस्यनिजघ्नेचतुरोहयान् ॥ चिच्छेदबाणैर्दशभिस्तत्कोदंडंगुणान्वितम् ॥ २३ ॥ सच्छिन्नधन्वाविरथोहताश्वोहतसारथिः ॥ उत्थायभीष्मःसहसागदांजग्राहरोपतः ॥ २४ ॥ सांबःप्राहत्वयासार्द्धंकथंयुद्धंकरोम्यहम् ॥ पदातिनारथंचान्यंतुभ्यंदास्यामिसंयुगे ॥ २५ ॥ सशस्त्रंस्यंदनंयुद्धेत्वंगृहाणकुरूद्वह ॥ जयमांनिर्त्रपंमूढंवृद्धस्त्वंपूज्यएवच ॥ २६ ॥ सउवाचततःसांबंक्रोधात्प्रस्फुरिताधरः ॥ दंतान्दंतैर्लिहन्नोष्ठंजिह्वयारक्तलोचनः ॥ २७ ॥ त्वद्दत्तेस्यंदनेस्थित्वायदायुद्धंकरोम्यहम् ॥ तदाभवतिमेकीर्तिःपापंनिरयमेवच ॥ २८ ॥ प्रतिग्रहपराविप्रादातारश्चवयंस्मृताः ॥ दत्तंराज्यंयदुभ्यश्चपुरास्माभिःकृपालुभिः ॥ २९ ॥ श्रुत्वातद्वचनंसांबःप्रत्युवाचरुषान्वितः ॥ भयाद्राज्यंप्रदास्यंतिराजानोमंडलेश्वराः ॥ ३० ॥ निरीक्ष्यभूमौशास्तारंसंस्थितंचक्रवर्तिनम् ॥ इत्येवंवाक्यमाकर्ण्यभीष्मःशूरशिरोमणिः ॥ ३१ ॥

युद्ध करोगो सो हेड संग्राममें तुम्हारे लिये रथ देउँहों यामें बैठो ॥ २५ ॥ शस्त्रसहित मेरे दिये या रथको तुम ग्रहण करो और हे कुरूद्वह ! संग्राममें निर्लज्ज मूढ मोकूँ जीतो, तुम वृद्ध हौ यासों पूजा करवेके योग्य हौ ॥ २६ ॥ तब भीष्मके क्रोधसों होठ फडकनलगे, दांतनसों दांतनको बजायके जीभसों होठनको चाटतो लाल नेत्र करके भीष्मजी बोलेहै ॥ २७ ॥ कि, सुन सांब ! आज जो तेरे दिये रथमें बैठके लडों तब मेरी अकीर्ति होयगी और पाप हैवेसों घोर नरक मिलेगो ॥ २८ ॥ अरे देख ! हम देवेवारे हैं, प्रतिग्रह लेवो तो ब्राह्मणको काम है, दयालुनने हमनेही तो यादवनको ये राज्य दीनों है ॥ २९ ॥ याप्रकार भीष्मके वचनको सांब सुनके कुपित भयो सांब बोलेहै कि, देखो भीष्म भयके बिना मंडलेश्वर राजा कहीं राज्य देत होयँगे ये तो जब देखेहैं कि, ये हमें मारेगो, ये चक्रवर्ती है, प्रबल है, हमें शासन करेगो तब फोकट काहूको देयहै, ये सुनके शूरोंमें शिरोमणि

भीष्मने ॥ ३० ॥ ३१ ॥ एक बडी भारी गदासों हे नृप ! सांबके वक्षस्थलमें प्रहार कियोहै, वा गदाके प्रहारसों सांब मूर्च्छित ह्वैगयो ॥३२॥ तब ये सारथि सांबको रथमें गिरेको शंकासों रणमेंसों भगायके लेगयोहै तब हे नृपेश्वर ! यदुसैन्यमें बडो कोलाहल भयोहै ॥ ३३ ॥ भीष्मजी दूसरे रथमें बैठके कवच पहर, धनुष बाणको लेके मार्गमें यादवनको मारतो बडी शीघ्रतासों दुर्योधनके पास गयोहै ॥ ३४ ॥ तब हे राजेंद्र ! वा संग्राममें सात्यकिने बाणनसों गीधके पक्षकेनसों दुर्योधनको विरथ करदियोहै ॥ ३५ ॥ तब विरथहु भयो दुर्योधन वेगसों दूसरे रथमें बैठके सर्पाकार बाणनसों शत्रु (सात्यकी) को विरथ करदियोहै ॥ ३६ ॥ तब सात्यकिनेहु दूसरे रथमें बैठके शीघ्र जाको पराक्रम ताने हे नृप ! एक बाणसों याके रथको एक योजनपै उडायके फैंकदियोहै ॥ ३७ ॥ तब रथ घोडासहित, सारथिसहित भूमिमें पडोहै और अंगारकी तरह चूर २ ह्वैके गिरपरो है तब सुयोधन मूर्च्छित

जघानगदयागुर्व्यासांबवक्षस्थलेनृप ॥ गदाप्रहारव्यथितःसांबःसंमूर्च्छितोभवत् ॥३२॥ सारथिस्तंरथेकृत्वाऽपोवाहशंकितोरणात् ॥ कोला
हलस्तदैवासीद्यदुसैन्येनृपेश्वर ॥ ३३ ॥ भीष्मोन्यंरथमारुह्यदंशितःसशरासनः ॥ ययौसुयोधनंशीघ्रंयादवान्मारयन्पथि ॥ ३४ ॥ संग्रामे
तत्रराजेन्द्रसात्यकिश्चसुयोधनम् ॥ चक्रेबाणैश्चविरथंगृध्रपक्षैस्फुरत्प्रभैः ॥ ३५ ॥ विरथोपिरथंचान्यंससमारुह्यवेगतः ॥ तंशत्रुंविरथंचक्रेशरै
राशीविषोपमैः ॥ ३६ ॥ सचान्यंरथमारुह्यसात्यकिःशीघ्रविक्रमः ॥ बाणेनैकेनतद्यानंचिक्षेपनृपयोजनम् ॥ ३७ ॥ रथःपपातभूमध्येससूतः
सतुरंगमः ॥ अंगारवद्विशीर्णोऽभून्मूर्च्छितोभूत्सुयोधनः ॥ ३८ ॥ तदाद्रोणस्तुसंक्रुद्धोबाणेनाग्निमयेनच ॥ जघानसात्यकिंयुद्धेत्यक्त्वाशत्रुंतुविहा
यसे ॥ ३९ ॥ रथस्तुतस्यदग्धोभूत्सतुरंगःससारथिः ॥ अभवन्मूर्च्छितःसोपिदग्धांगोबाणज्वालया ॥ ४० ॥ कृतवर्माततःक्रुद्धोभूरिंजित्वा
रणांगणे ॥ आजगामनदन्राजन्द्रोणःपरिरुषान्वितः ॥ ४१ ॥ सगत्वाप्रधनेरोषाद्द्रोणाचार्यंशरैरपि ॥ चक्रेपदातिनंवीरोनिःशस्त्रंछिन्नकं
चुकम् ॥ ४२ ॥ ततःकर्णस्तुसंक्रुद्धस्त्यक्त्वाक्रूरंरणांगणे ॥ तताडकृतवर्माणंशक्त्याशक्तीवतारकम् ॥ ४३ ॥ साशक्तिस्तत्तनुंभित्त्वाविवेश
धरणीतले ॥ निर्भिन्नहृदयोभूत्वाकृतवर्मापपातह ॥ ४४ ॥

है गिरपरयोहै ॥३८॥ तब द्रोणाचार्यजीने कुपित ह्वैके एक अग्निमय बाणसों अपने शत्रुको छोडके सात्यकिके बाण मारोहै ॥३९॥ तब घोडनके सहित सारथिसहित वो रथ भस्मके समान ह्वैगयो और वा बाणके मारे बाणकी ज्वालासों जलो जाको अंग ऐसो ह्वैके ये भी मूर्च्छित ह्वै गिरपरो ॥४०॥ तब कृतवर्मा कुपितह्वै रणांगणमें भूरिको जीतके नाद करतो भयो हे राजन् ! कुपित ह्वैके द्रोणाचार्य आयेहैं ॥ ४१ ॥ तब कृतवर्माने संग्राममें आयके बडे रोषसों बाणनके मारे द्रोणाचार्यको शस्त्रसों रहित कर कवचको काटके पदाति करदियेहै ॥ ४२ ॥ तब तो कर्णने कुपित ह्वैके रणांगणमें अक्रूरको छोडके कृतवर्माके ऊपर एक शक्तिको प्रहार कियोहै जैसें स्वामिकार्तिकने तारकासुरके ॥ ४३ ॥ ये शक्ति कृतवर्माके शरीरके पार ह्वैके

धरतीमें समायगई तब छाती जाकी विदीर्ण हैगई ऐसो कृतवर्मा भूमिमें गिरपडोहै ॥ ४४ ॥ तब सात्यकि शकुनिको जीतके बडो कुपित हैके हे राजेंद्र ! रथमें बैठ कर्णके ऊपर आयोहै ॥ ४५ ॥ आयके सात्यकिने धनुष लगायके कर्णके दश बाण मारेहैं तिन बाणनको कर्णने अपने बाणनसों काटके डार दिये हैं ॥ ४६ ॥ तब इन दोनोंनके बाण आपसे घिसेहैं सो पतंगानको गेरते अलातचक्रकी नाई घूमतेभये हैं ॥ ४७ ॥ तब हे जगतीपते ! सात्यकिने कर्णके कवचमें काकपक्ष बाणनको प्रहार कियोहै ॥ ४८ ॥ वे बाण कर्णके कवचमें विनाही लगे धरतीमें गिरपडेहैं जैसे पापी पुरुष स्वर्गमें विनाही गये नरकनमें पडैहैं ॥ ४९ ॥ तब कर्णने हँसके विस्मित भये सात्यकिको अस्त्रयुक्त अनेक बाणनसों विरथ करदियोहै ॥ ५० ॥ तब सात्यकिने युद्धमें बलिको और दुःशासनके मूर्छित करके वायुवेगरथमें बैठके कर्णके ऊपर आयोहै ॥ ५१ ॥ फिर सूर्यपुत्र कर्णने बलीको आयो देखके

युयुधानस्ततःकोपान्निर्जित्यशकुनिंमृधे ॥ कर्णस्योपरिराजेंद्रह्याजगामरथेनच ॥ ४५ ॥ गत्वाशरासनेनापिसुमुचेसायकान्दश ॥ वीक्ष्य तानागतान्कर्णोनिजघानस्वसायकैः ॥ ४६ ॥ संघृष्टास्तत्रसंग्रमेतयोर्बाणाःपरस्परम् ॥ विस्फुलिंगान्क्षिपंतस्तेभ्रमन्तेऽलातचक्रवत् ॥ ॥ ४७ ॥ युयुधानस्ततःकोपात्कर्णस्यजगतीपते ॥ जघानकवचेबाणान्काकपक्षयुताञ्छितान् ॥ ४८ ॥ तेशराःकर्णकवचेनलग्नाःपतिता भुवि ॥ राजन्पापस्यकर्तारोनस्वर्गेनिरयेयथा ॥ ४९ ॥ ततःप्रहस्यकर्णस्तुयुयुधानंतुविस्मितम् ॥ चकारविरथंयुद्धेशरैर्नानास्त्रयोजितैः ॥ ॥ ५० ॥ दुःशासनंबलिंचैवकृत्वायुद्धेविमूर्च्छितम् ॥ आययौसंयुगेकर्णरथेनानलवर्चसा ॥ ५१ ॥ आगतंबलिनंदृष्ट्वाकर्णोभास्करनंदनः ॥ पवनास्त्रेणबाणेनतंचिक्षेपसवाहनम् ॥ ५२ ॥ पपातयोजनेसोपिसांगस्तत्रागमत्पुनः ॥ अंधकारंशरैःकुर्वन्कौरवान्मारयन्नृप ॥ ५३ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डेयदुकुरुसंग्रामवर्णनंनामैकोनपंचशत्तमोऽध्यायः ॥ ४९ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ तदेववृष्णयःसर्वेभोजवृष्ण्यं धकादयः ॥ माथुराःशूरसेनाद्याःसमुत्तीर्य्ययमस्वसाम् ॥ १ ॥ रजोभिश्चनभोव्याप्तंकुर्वतश्चमहीतलम ॥ चालयंतश्चबलिनोमहासंग्रामकर्कशाः ॥ २ ॥ विलोकयंतस्तुरगंसर्वतस्तेमहाबलाः ॥ आजग्मुश्चानिरुद्धाद्याःश्रीकृष्णाद्यानृपेश्वर ॥ ३ ॥ वृष्णयस्तत्रयुद्धस्यमहाघोषंभयंकरम् ॥ शरासनानांटंकारंशतघ्नीनांरवंतथा ॥ ४ ॥ शूराणांगर्जनंचैवशस्त्राणांचट्चटंतथा ॥ कोलाहलंचहाःकारंश्रुत्वातेविस्मयंययुः ॥ ५ ॥

वायव्य अस्त्रसो रथसमेत दूर फेकदियोहै ॥ ५२ ॥ तब ये बली एक योजनपे जायके परोहै तब वहाँ फिर सांब आयोहै, बडे रोषसों बाणनसों कौरवनको मारतेंनें बाणनके मारे अंधकार करदियोहै ॥ ५३ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडेभाषाटीकायामेकोनपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ४९ ॥ गर्गजी कहैहैं कि, तब सब यादव, भोज, वृष्णि और अंधकादिक और शूरसेनादिक यमुनाजीके पार हैके ॥ १ ॥ धूलिसों आकाशको व्याप्त करते और भूमिको कंपावते चढे बली संग्राममें कर्कश वे चडे बलवान् सब तरफसे घोडेको देखते अनिरुद्धादिक और श्रीकृष्णादिक आयेहैं ॥ २ ॥ ३ ॥ तब वे यादव वा युद्धके महाभयंकर घोषको, धनुषनके टंकारको, शतघ्नीनके रवको, शूरवीरनके शब्दको, शस्त्रनके

चटचटा शब्दको और हाहाकारके कोलाहलको सुनके बडे विस्मित भयेहैं ॥ ४ ॥ ५ ॥ तब जानपडैहै कि, ये यादवनको कौरवनसों संग्राम हैरह्योहै तब शंकित हैके अनिरुद्धादिक और कृष्णादिक बहुत शीघ्र आयेहैं ॥ ६ ॥ तब अनिरुद्धादिकनको कृष्णसहित आयो देखके अपनी सब सैन्यसहित सांबादिकननें प्रणाम करी है और सहायकेलिये प्रार्थना कीनी है ॥ ७ ॥ श्रीकृष्णचंद्रके आनेको देख भेरी, शंख, गोमुखा बजे है और देवताननें पुष्पवर्षा कर जयजयको शब्द कियोहै ॥ ८ ॥ एकसौ १०० अक्षौणीको संग लेके आये अनिरुद्धको धरतीको हलावते बडे बलीको देखके भयभीत हैके सब कौरव भागगये हैं ॥ ९ ॥ वा समय प्रलयके समुद्रकी तरह उमडी चली आवे ऐसी अंधकनकी सैन्यको देखके सब वैश्य भागेहै, और सबननें अपने घरनके दरवाजे बंद करलिये हैं ॥ १० ॥ तब ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र तथा सब स्त्रीजन दुर्योधनको गाली देते घरनसों निकस

मत्वातेयुद्धमासीद्वैयादवानांचकौरवैः ॥ शंकिताअनिरुद्धाद्याःकृष्णाद्याआययुर्द्रुतम् ॥ ६ ॥ श्रीकृष्णमागतंदृष्ट्वानिरुद्धाद्यैःसमन्वितम् ॥
ससैन्यंचसहायार्थंनेमुःसांबादयोनृप ॥ ७ ॥ कृष्णेसमागतेनेदुर्भेर्य्यःशंखाश्चगोमुखाः ॥ पुष्पवर्षजयारावंदेवाश्चक्रुश्चयादवाः ॥ ८ ॥ दृष्ट्वा
निरुद्धंप्रधनेसमागतंह्यक्षौहिणीभिःशतभिःपरीवृतम् ॥ प्रचालयंतंवसुधांमहाबलंविदुद्रुवुस्तेतुभयाच्चकौरवाः ॥ ९ ॥ प्रलयाब्धिसमंसैन्यमंध
कानांविलोक्यच ॥ भीताश्चदुद्रुवुर्वैश्यागेहेगेहेकृतार्गलाः ॥ १० ॥ ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्यावृषलाःस्त्रीजनास्तथा ॥ दुर्योधनंशपंतश्चरुरुदुर्निर्ग
तागृहात् ॥ ११ ॥ ततोविहायमूर्च्छाविमृधेदुःशासनाग्रजः ॥ सद्यःसुप्तइवोत्तस्थौयदुसैन्यंददर्शह ॥ १२ ॥ दृष्ट्वाभयंकरांसेनांयादवानांसुयो
धनः ॥ स्वपुरंशंकितोभूत्वापद्भ्यांभीतस्त्वरंययौ ॥ १३ ॥ कर्णभीष्मकृपद्रोणभूरिदुर्योधनादयः ॥ सभायांधृतराष्ट्रंवैनत्वासर्वमवर्णयन् ॥
॥ १४ ॥ स्वानांपराजयंश्रुत्वायादवानांजयंतथा ॥ कृष्णस्यागमनंचैवनृपोविदुरमब्रवीत् ॥ १५ ॥ ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ ॥ अक्षौहिणी
शतयुतेवासुदेवेसमागते ॥ कुपितेत्वयंवीरकरिष्यामश्चकिंवद ॥१६॥ नृपस्यवचनंश्रुत्वाप्रहस्यविदुरोब्रवीत् ॥ ॥ विदुरउवाच ॥ ॥ पुरारामे
णचैकेनकुपितेनगजाह्वयम् ॥ १७ ॥ विकर्षितंचगंगायांतस्यभ्राताहिचागतः ॥ हरकंजकोशादेवस्यांजातोयःसहरिर्नृप ॥ १८ ॥

गये और सब रुदन करने लगेहैं ॥ ११ ॥ तब संग्राममें दुःशासनके बडे भाईकी मूर्छा जगीहै सो सोयके उठेकी नाईं यादवनकी सेना देखी है ॥ १२ ॥ तब यादवनकी वा भयंकर सेनाको देखके दुर्योधन भयभीत हैकें पायनसों भागते शंका मनमें जाके उपन्न भई सो अपने पुरको भागके चलोगयोहै ॥ १३ ॥ तब कर्ण, भीष्म, कृप, द्रोण, भूरि और दुर्योधनादिक धृतराष्ट्रकी सभामें आयके प्रणाम करके सब वृत्तांत कहतेभयेहैं ॥ १४ ॥ तब यादवनकी जय और अपनी हार कृष्णको आगमन सुनकें धृतराष्ट्र विदुरजीसो कहतोभयो ॥ १५ ॥ धृतराष्ट्र बोलो कि, हे वीर विदुर! शत १०० अक्षौहिणी सेनाको लेके कुपित हैके कृष्ण आयेहैं अब हम कहा करैं ? ये कहो ॥ १६ ॥ धृतराष्ट्रके या कहेको सुनके विदुरजी हँसके बोले हैं, विदुरजी बोले कि, देखो पहले इकले इकले कुपित भये दाऊजीने गंगामे गेरबेको हस्तिनापुर खेंचो हो, वाहीके भ्राता कृष्ण आयेहै, जाने

सं०

३॥

देवकीके उदरकमलमें जन्म लियो है यो कृष्ण साक्षात् परमेश्वर है ॥ १७ ॥ १८ ॥ और जानें रणमें हे राजन् ! कंस और शकुनि आदि बहुतसे दैत्य मारेगेहैं और आनै देवता
तथा राजा जीतेहैं ॥ १९ ॥ यासो हे राजन् ! तुम देखलेउ युद्धको समय नहीं है सो सब कौरवनके द्वारा श्यामकर्ण घोडेको कृष्णको देदेउ ॥ २० ॥ कौरवनको और यादवनको
नाश करनवारो परस्पर कलह होनो अच्छो नहीं है ऐसे जब भाई विदुरने समझायो ॥ २१ ॥ तब बडो बुद्धिमान् राजा धृतराष्ट्र देशकालके उचित वचन बोलोहै धृतराष्ट्रने
कहीहै कि, देखो तुम सब जाओ ये घोडा कृष्णको जायके निवेदन करो ॥ २२ ॥ देवदेव श्रीकृष्णतें युद्धकरवेको तुम योग्य नहीं हो, यादवनकी सहाय करवेको कुपित हैके
कृष्ण आयेहै ॥ २३ ॥ सो तिनके पास जायके तुम सब जैसे बनै तैसे प्रसन्न करो तब कौरवेंद राजा धृतराष्ट्रके कहे वचनको सब कौरव सुनके ॥ २४ ॥ अनेकन उपचार

येनवैसंयुगेराजन्कंसाद्याःशकुनादयः ॥ मारिताबहवोदैत्यानिर्जिताश्चनृपाःसुराः ॥ १९ ॥ तस्माद्युद्धस्यसमयोनास्तिराजन्विलोकय ॥ कौर
वैःश्यामकर्णंतुकृष्णायदातुमर्हसि ॥ २० ॥ माभूत्कुरूणांवृष्णीनांकलहोनाशकारकः ॥ एवंराजाबोधितस्तुविदुरेणानुजेनवै ॥ २१ ॥ उवा
चकौरवान्प्राज्ञोदेशकालोचितंवचः ॥ ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ ॥ गत्वाकृष्णस्यनिकटेतुरगंदातुमर्हथ ॥ २२ ॥ संमुखेदेवदेवस्ययुद्धंकर्तुंचना
र्हथ ॥ यादवानांसहायार्थमागतंकुपितंहरिम् ॥ २३ ॥ यूयंप्रसन्नंकुरुतगत्वातन्निकटंशनैः ॥ कौरवेंद्रस्यवचनंकौरवास्तेनिशम्यच ॥ २४ ॥
विविधानुपचारांश्चगंधाक्षतयुतान्किल ॥ गृहीत्वादिव्यवस्त्राणिरत्नानिविविधानिच ॥ २५ ॥ वदंतःपुण्यनामानिरामकेशवयोर्मुदा ॥ पद्भिर्वि
निर्ययुःसर्वेकृष्णंद्रष्टुंभयान्विताः ॥२६॥ आगतान्कौरवान्दृष्ट्वायादवाःक्रोधपूरिताः ॥ नानाशस्त्राणिजगृहुस्तत्रयुद्धायवेगतः ॥ २७ ॥ ऊचुस्ता
न्कौरवाःसर्वेवयंयुद्धायनागताः ॥ करिष्यामश्चकृष्णस्यदर्शनंदुःखनाशनम् ॥२८॥ इतितेषांवचःश्रुत्वायादवाविस्मयंगताः ॥ कृष्णायकथया
मासुःकौरवाणांविचेष्टितम् ॥ २९ ॥ ततःकृष्णस्यवचसाकौरवान्यदुसत्तमाः ॥ आहूयामासुस्तेप्रीतानिःशस्त्रानागतान्नृप ॥ ३० ॥ आहू
तास्तेतुहरिणागत्वाश्रीकृष्णसन्निधौ ॥ लज्जयावाङ्मुखाःसर्वेप्रणम्योचुःपृथक्पृथक् ॥ ३१ ॥ पूर्वंद्रोणउवाचाथकृष्णभद्रजगत्पते ॥ रक्षमां
कौरवान्रक्षमायथातवमोदितान् ॥ ३२ ॥

गंधाक्षतसहित लेके दिव्य वस्त्र और अनेक रत्ननको लेके ॥ २५ ॥ बडे आनंदसों कृष्णबलरामके पवित्र नामनको लेते भयभीत हैके पाँवनसों कृष्णके समीप दर्शन करनेको
आये है ॥ २६ ॥ तब कौरवनको आयो देखके यादव क्रोधमे पूर्ण है अनेक शस्त्रनको हाथमे युद्धकेलिये लेतेभये ॥ २७ ॥ तब कौरवनने कही है कि, हम लडवेको नहीं आये
है हम तो दुःखनके नाश करनवारे कृष्णके दर्शन करवेको आयेहै ॥ २८ ॥ ये कौरवनके कहेको सुनके यादव बडे विस्मयमे मग्न हैगये और कौरवनको विचेष्टित कृष्णसों कह्यो
है ॥ २९ ॥ तब कृष्णके वचनसों यादवनने सब कौरवनको बुलायोहै, वे कौरव वा समय बेहथियार आये है ॥ ३० ॥ कृष्णके बुलायेसो ये सब कौरव कृष्णके पासमे जायके
लज्जासो नीचो मुख कर पृथक् पृथक् प्रणाम करके बोलेहै ॥ ३१ ॥ पहले द्रोणाचार्यजीने कहीहै, हे श्रीकृष्णभद्र ! हे जगत्पते ! मेरी रक्षा करो और कौरवनकी रक्षा करो, तेरी

मायामें हम मोहित हैं ॥ ३२ ॥ फिर कृपाचार्यजी बोले कि, हे मधुकैटभके मारनवारे ! मेरे जन्मको येही फल है, मेरे ऊपर अनुग्रह करो येही मोकूँ प्रार्थनीय है, हे लोकनाथ ! मै तेरे भृत्यनके जे भृत्य तिनके परिचारक तिनके जे भृत्य तिनके भृत्यनको भृत्य हौं ऐसें मेरो स्मरण करो ॥ ३३ ॥ फिर कर्ण बोलो है कि, हे प्रभो ! मेरी येही प्रार्थना है कि, मेरो धन भक्तकेही लिये क्षीण होउ और अपनी पत्नीकेही लिये यौवन क्षीण होउ और स्वामीकेही अर्थ मेरे प्राण जाओ अंतमें एही तीनों बात मोकों अभीष्ट है ॥ ३४ ॥ फिर भूरिने कहीहै कि, हे अनन्यनके नाथ ! हे वरद ! मैं येही मागूँहूं जो आपकी सुमुखी दिव्य दृष्टि है तो मेरे ऊपर प्रसन्न होउ मैंने परवश हैके ये आपके लिये अंजलि कीनी है येही मोकों जन्मजन्मांतरमेंहु प्राप्त होउ ॥ ३५ ॥ फिर दुर्योधनने कहीहै कि, हे प्रभो ! मै धर्मको जानतोहौं पर मेरी प्रवृत्ति नही है और मै ये जानूंहूं कि, ये पाप है पन मेरी पापसों निवृत्ति नहीं है कोई देव मेरे हृदयमें विराजमान है जो कुछ वोही करावै है वोही मै करूँहूं ॥ ३६ ॥ यंत्रके गुण, दोष करके हे मधुसूदन ! क्षमा

॥ ॥ कृपाचार्यउवाच ॥ ॥ मज्जन्मनःफलमिदंमधुकैटभारेमत्प्रार्थनीमदनुग्रहएषएव ॥ त्वद्भृत्यभृत्यपरिचारकभृत्यभृत्यभृत्यस्यभृत्यइतिमां स्मरलोकनाथ ॥ ३३ ॥ ॥ कर्णउवाच ॥ ॥ भक्तस्यार्थेधनंक्षीणंस्वदारगतयौवनम् ॥ स्वामिकार्येगताःप्राणाअंतेतिष्ठतुमाधव ॥ ३४ ॥ ॥ भूरिरुवाच ॥ ॥ याचामहेवरदकिंचिदनन्यलभ्यंनाथप्रसीदसुमुखीयदिदिव्यदृष्टिः ॥ अस्माभिरंजलिरयंविवशैर्निबद्धएवैवमेभवतुदेवभवां तरेपि ॥ ३५ ॥ ॥ दुर्योधनउवाच ॥ ॥ जानामिधर्मंनचमेप्रवृत्तिर्जानामिपापंनचमेनिवृत्तिः ॥ केनापिदेवेनहृदिस्थितेनयथानियुक्तो स्मितथाकरोमि ॥ ३६ ॥ यंत्रस्यगुणदोषेणक्षम्यतांमधुसूदन ॥ अहंयन्त्रोभवान्यंत्रीममदोषोनदीयताम् ॥ ३७ ॥ ॥ भीष्मउवाच ॥ ॥ रागांधगोपीजनचुंबिताभ्यांयोगींद्रयोगींद्रनिवेशिताभ्याम् ॥ आताम्रपंकेरुहकोमलाभ्यांचाभ्यांपदाभ्यामयमञ्जलिर्मे ॥ ३८ ॥ ॥ विदुरउ वाच ॥ ॥ आस्तेतिविक्रयकृतांसुकृतानितानियेब्रह्मबालमिवतत्परिपालयंति ॥ यद्दैत्यदेवमुनिभिर्मनसाप्यगम्यंयन्नेतिनेतिचवदन्नहिवेद वेदः ॥ ३९ ॥ ॥ श्रीगर्गउवाच ॥ ॥ एवंसंप्रार्थितःकृष्णःकौरवैःशरणागतैः ॥ प्रीतःप्रत्याहताब्राजन्मेघनिर्ह्रादयागिरा ॥ ४० ॥

करौ मै तो यंत्र हूं आप यंत्री हो सो मेरे लियें गुण दोष मत देउ ॥ ३७ ॥ फिर भीष्मजी कहतेभयें कि, रागमें अंध भई गोपीनने जिनने चुंबन कियोहै और बडे बडे योगींद्र और भोगींद्र (शेष) ने जिनको सेवन कियोहै किंचित् ताम्रकमलके समान तेरो चरणनके अर्थ मेरी ये अंजलि है ॥ ३८ ॥ विदुरजी बोले के कोई बालककी नाई या तेरे ब्रह्मरूपको पालन करैहै अर्थात् जैसें बालककी सब समय याद रहैहै ऐसेंही जे निरंतर ब्रह्म विचारमें मग्न रहैहैं विनके किये जितने सुकृत दुष्कृत हैं वो विक्रय कियेके समान होयहै अर्थात् जैसे विक्रय करी वस्तुमें स्वत्व नही रहैहै ऐसेही ब्रह्मनिष्ठनको किये कर्मनमें स्वत्व नहीं रहैहै अर्थात् कीनेभये कर्म वाके नही किये गिनेजायँ हैं, जो ब्रह्म देव, दैत्य और मुनिजननकोहू मनसोंहू अगम्य है और जाको न इति न इति ऐसे कहतो वेदहू जाको नही जानैहै वा ब्रह्मके विचारमग्न पुरुषको शुभाशुभ कर्म बंधक नहीं होयहै सो ब्रह्मरूप आप हो ॥ ३९ ॥ श्रीगर्गजी कहैहैं कि, जब सब कौरवनने या प्रकारसों शरणागत भयेनने प्रार्थना कियेहै

तब हे राजन् ! मेघके समान गंभीर वाणीसों प्रसन्न हैके भगवान् बोलेहैं ॥ ४० ॥ श्रीकृष्णजी बोले–हे आर्याः ! मेरे वाक्यको तुम सुनो जा कारणसों मैं तुम्हारे पास या समय यहाँ आयोहों मोसें नारदने जायके या युद्धको वृत्तांत कह्योहै सो तुमारे युद्धके रोकवेको मैं आयोहों ॥ ४१ ॥ देखो ये मेरे बेटा, नाती निरंकुश हैगयेहैं, मेरी आज्ञाकूं नहीं माने है, हाय! देखो ये बडेनको अपराध करैहैं, येही इनको बडो दूषण है ॥ ४२ ॥ हे वीर! देखो तुम धन्य हो, मान्य हो, मिलवेके लिये आयेहो सो जो कछु मेरे पुत्र पौत्रादिने कियोहै याकों क्षमा करो ॥ ४३ ॥ और या उग्रसेनजीके यज्ञियाश्वको जलदी छोडदेउ तुम भी या यज्ञियाश्वके पालन करवेको संग जाओ ॥ ४४ ॥ यादव और कौरव तो मित्र हैं सो तुम आपसमें कलहकरवेके योग्य नहीं हो. अपने प्रथमके स्नेहको देखलेउ कि. पहले तुमारो हमारो कैसो प्यार है ॥ ४५ ॥ या प्रकार जब श्रीकृष्णचंद्रने मीठेमीठे

॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ आर्याःशृणुतमद्वाक्यमहमागतवान्यतः ॥ युद्धंवारयितुंचात्रनारदेनप्रचोदितः ॥ ४१ ॥ नमन्यंतिममाज्ञांवैमत्पुत्राश्चनिरंकुशाः ॥ दीर्घाणांचप्रकुर्वंतिह्यपराधंचदूषणम् ॥ ४२ ॥ यूयंधन्याश्चमान्याश्चमिलनार्थसमागताः ॥ मत्पुत्रैश्चकृतंयद्वैतत्सर्वंक्षंतुमर्हथ ॥ ४३ ॥ उग्रसेनहयंवीराःकृपयाचविमुच्यताम् ॥ पालनार्थंतुतस्यापियूयंगच्छतगच्छत ॥ ४४ ॥ यादवाःकौरवामित्राःकलहंतुपरस्परम् ॥ प्रकर्तुंनैवचार्हंतिपूर्वंप्रेमविलोक्यच ॥ ४५ ॥ एवंतेकृष्णदेवेनमिष्टवाक्यैश्चतोषिताः ॥ तुरगंचददुःप्रीताःपारिबर्हेणसंयुतम् ॥ ४६ ॥ दत्त्वातुरंगमंसर्वेकौरवाःखिन्नमानसाः ॥ स्वपुरंविविशूराजन्भीष्मोगंतुंमनोदधे ॥ ४७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डेहस्तिनापुरविजयोनामपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५० ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ अथकृष्णस्तुभगवान्यादवानांचपालनम् ॥ कृत्वामिलित्वाप्रययौरथेनापिकुशस्थलीम् ॥ १ ॥ कृष्णेगतेऽनिरुद्धस्तुहयंसंपूज्ययत्नतः ॥ बंधनान्मोचयामासविजयार्थंनृपेश्वर ॥ २ ॥ मुक्तस्तुरंगःप्रययौदेशान्देशान्विलोकयन् ॥ पृष्ठतस्तस्यराजेंद्रत्वरंजग्मुश्चवृष्णयः ॥ ३ ॥ दुर्योधनंजितंश्रुत्वाभूपभूपास्तुरंगमम् ॥ प्रातंनजगृहुराप्रेकृष्णस्यबलिनोभयात् ॥ ४ ॥ अथाव्रजत्तुरंगोयंशृण्वन्पश्यन्नितस्ततः ॥ संप्राप्तोभूद्द्वैतवनेयत्रराजायुधिष्ठिरः ॥ ५ ॥

वाक्यनसों ये समझायेहैं तब कौरवनने ये अश्वभी देदियो और याके संगमें बहुत कुछ नजरानाहू दियोहै ॥ ४६ ॥ अश्वको देकै कौरव बडे खेदित भयेहैं और हे राजन् ! और सब अपने २ घरनमें गये और भीष्मजी भी जानेको मन करतेभये ॥ ४७ ॥ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां पंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५० ॥ ॥ श्रीगर्गजी कहेहैं कि, अनंत श्रीकृष्णभगवान् यादवनको पालन कर कौरवनसों मिल भेटके रथमें विराजमान हैके आप द्वारकाकी पधारेहैं ॥ १ ॥ श्रीभगवान् कृष्णके गयेपै अनिरुद्धने घोडाको पूजन कियोहै और हे नृपेश्वर ! विजयकेलिये फिर ये घोडा, बंधनसों खोलदियोहै ॥२॥ ये अश्व छोडतेही फिर देशदेशांतरनको देखतो चलेहै परंतु बली कृष्णके भयके मारे याको फिर काहूने नहीं पकरोहै ॥ ३ ॥ हे भूप ! जब राजनने सुनीहै कि, दुर्योधनहूको यादवनने जीतलियोहै तब फिर काहूने नहीं पकरो और सब यादव याके पीछे पीछे जातेभये

है याप्रकारसों ये अश्व चलतो चलतो देखतो सुनतो द्वैतवनमें पहुँचोहै जहाँ राजा युधिष्ठिर है तहाँ आयोहै ॥ ४ ॥ ५ ॥ जहाँ भाइनसहित द्रौपदीको संग लेके निवास करतेहैं तब वा वनमें कहीं भीमसेन वनके द्वीपिनके संग ॥ ६ ॥ क्रीडा कररह्यो हो जैसे बालक खिलोनानसों खेलै तहाँ बडे सघन वनमें या घोडाको देखोहै ॥ ७ ॥ वो वन कैसो है कि, वट पीपल, बेल, खिजूर, कटहर, मोरसरी, सप्तपर्ण, तिंदुक, तिलक, शाल, ताल, तमाल, बेर, लोध, पाकर, बबूर, सेमर, बाँस, ढाकते आदि लेके जे वृक्ष है तिनसों सघन हेरह्योहै ॥ ८ ॥ ९ ॥ तहाँ आये या घोडाको देखके या दुर्जर निर्जन वनमें जो वनवराह, मृग, शार्दूल, स्यारी और सर्पनसों युक्त है ॥१०॥ झींगरनके झंकारनसों युक्त है और गीध तथा चील जामें बोलरहेहै ॥११॥ स्यारिया, बंदर, भैसा, रोझ, नीली गौ, हाथी, रीछ, वनबिलाव और वनमानुष ॥ १२ ॥ इनके हैवेसो अतिभयंकर है ऐसे वा घोरवनमें भीम है पराक्रम जाके

भ्रातृभिर्भार्यया सार्द्धं वनवासं करोति हि ॥ तस्मिन्वने भीमसेनो वनद्वीपगणैः सह ॥ ६ ॥ नित्यं करोति क्रीडां वै बालः क्रीडनकैरिव ॥ ददर्श तुरगं तत्र तं वनं गह्वरं महत् ॥ ७ ॥ न्यग्रोधाश्वत्थबिल्वैश्च खर्जूरपनसैस्तथा ॥ बकुलैः सप्तपर्णैश्च तिंदुकैस्तिलकैरपि ॥ ८ ॥ शालैस्तालैस्तमालैश्च बदरीलोध्रपाटलैः ॥ बब्बूरशाल्मलीवेणुपलाशादिभिरन्वितम् ॥ ९ ॥ आगतं घोटकं दृष्ट्वा दुर्जरे निर्जने वने ॥ वराहमृगशार्दूलवृकसर्पगणैर्युते ॥ १० ॥ झिल्लीझंकारसंयुक्ते गृध्रचिल्लादिभिर्युते ॥ वृते तथा भुजंगैश्च वल्मीकाद्दर्द्धनिःसृतैः ॥ ११ ॥ शृगालमर्कमहिषगवयादिभिरन्विते ॥ नीलगोगजभल्लूकमार्जारैर्वनमानुषैः ॥ १२ ॥ युक्ते भयंकरे राजन्भीमो भीमपराक्रमः ॥ अश्वं जग्राह केशेषु सपत्रं नृपलीलया ॥ १३ ॥ केनोत्सृष्टं वदन्वाश्वं स्वाश्रमं प्रययौ शनैः ॥ तदैवानिरुद्धाद्या आजग्मुः सर्वयादवाः ॥ १४ ॥ पश्यंतो यज्ञगन्धर्वमरण्ये नृप कृच्छ्रतः ॥ दृष्ट्वा गृहीतं तुरगमूचुस्ते तु परस्परम् ॥ १५ ॥ अहो वनचरो ह्येष दृश्यते भीमसेनवत् ॥ बृहद्बाहुर्महापुष्टो महोच्चो रक्तलोचनः ॥१६॥ महागौरः कृच्छ्रधरो धूलिलिप्तो गदाधरः ॥ इत्थं ब्रुवंतस्ते सर्वे पुनरूचुश्च तं जनम् ॥ १७ ॥ कस्त्वं श्रीराजराजन्य हयं नीत्वा क्व यास्यसि ॥ तस्मान्मोचय शीघ्रं त्वं नचेद्धन्मो शिलीमुखैः ॥ ॥ १८ ॥ इति तद्वाक्यमाकर्ण्य हयं बद्ध्वा च गह्वरे ॥ जगाम स्वगदां गुर्वीं भारायुतसमन्विताम् ॥ १९ ॥

ऐसे भीमसेनने देखके या यज्ञियाश्वको पकरलियोहै पत्र जाके माथेमें बँधो ताको लीला करके बाँधलियो ॥ १३ ॥ ये घोडा कौनको है कौनने छोडो है ऐसो कहतो धीरे २ अपनो आश्रमको गयोहै त्योंही अनिरुद्ध आदिक सब यादव आयगयेहै ॥ १४ ॥ वा यज्ञके अश्वको देखते २ हे नृप ! बडी कठिनाईसों आयेहै तब घोडेको पकरो देखके वे यादव परस्पर बोलेहै ॥ १५ ॥ अहो ! देखो बडो आश्चर्य है ये कोई वनचर है पन ये तो भीमसेनसों दीखेहै, लंबे याके भुजदंड है, महापुष्ट है बडो ऊँचो है, लाल याके नेत्र हैं ॥ १६ ॥ अति गौर है खंती, पिटारीको लिये है, धूलिमें लिपटो है, गदाको हाथमें लियो है ऐसे कहते वो सब यादव फिर परस्पर बोलेहै ॥ १७ ॥ अरे भाई ! तू कौन है ये राजराजा उग्रसेनके यज्ञियाश्वको पाकरके तू कहाँ जायगो यासों तू घोडेको छोडदे जल्दीसों नही तो हम तोकूँ शिलीमुख (बाण) नसों मारडारेंगे॥१८॥या प्रकार इनके कहेको सुनके घोडेको

गदृएमें बाँधके अपनो दशहजार भारकी बडीभारी गदाको हाथमें लेलीनीहै ॥ १९ ॥ फिर भीम जाको पराक्रम ऐसे भीमसेनसो गदाके प्रहारसों यादवनको मारतो भयो तब भीमसेनके मारे ये यादव संग्राममें गिरपरेहैं ॥ २० ॥ तब याके पराक्रमको देखके अनिरुद्धको बडो क्रोध आयो और एकहजार मत्त गजराजनको याके ऊपर छोडोहै ॥ २१ ॥ तब पर्वतनके शिखरके समान तिन हाथीनने चारों तरफसो घेरलियो और दांतनके मारे धरतीमें पटकदियोहै ॥ २२ ॥ तब कोपसों होंठ चाबके फडकनलगो ऐसे भीमसेनने तिन मत्त हाथीनको गदासों मारके पटकेहै ॥ २३ ॥ कितनेनको तो धरतीमें पटकादिये और कितनेनको पकरके आकाशमें फेंकदिये, कितनेई पांवनसों मीडगेरेहैं और कितनेही हाथीनको हाथीनसोंही फिरायके मारेहै ॥ २४ ॥ तब तो सब हाथी भयसो विह्वल हैके भाजेहै तब तो अति कुपित हैके गदाको हाथमें लेके गद आयोहै ॥ २५ ॥ जब भीमसेनके सन्मुख

तयाजघानसंग्रामेयादवान्भीमविक्रमः ॥ निपेतुर्वृष्णयस्तत्रभीमेननिहताश्चये ॥ २० ॥ अनिरुद्धस्ततःक्रुद्धोदृष्ट्वातस्यपराक्रमम् ॥ सहस्रवा रणान्मत्तान्नोदयामासशत्रवे ॥ २१ ॥ ततःसदिग्गजैःसोपिभूभृच्छिखरसन्निभैः ॥ पातितोधरिणीपृष्ठेविषाणैरवपीड्यते ॥ २२ ॥ ततोभीमः समुत्थायक्रोधात्प्रस्फुरिताधरः॥मत्तान्गजाञ्जघानाथगदयावज्रकल्पया ॥ २३ ॥ कांश्चिच्चिक्षेपगगनेकाँश्चिद्भूमौव्यपोथयत् ॥ काँश्चिन्ममर्द पादाभ्यांगजान्काँश्चिद्गजेषुच ॥ २४ ॥ ततश्चदुद्रुवुःसर्ववारणाभयविह्वलाः ॥ तदाजगामसंक्रुद्धोगदस्तत्रगदाधरः ॥ २५ ॥ गत्वातत्सन्निधौसो पिज्ञात्वाभीमंतुशंकितः ॥ उवाचनत्वाहेवीरकस्त्वंवदममाग्रतः ॥ २६ ॥ सोब्रवीद्भीमसेनोहंजित्वाद्यूतेनहेगद ॥ दुर्योधनेनरिपुणापुरान्निष्का सितावयम् ॥ २७ ॥ अत्रस्थानाद्योजनेतुभ्रातृभिश्चयुधिष्ठिरः ॥ करोतिवनवासंवैह्यहोदैवस्यमायया ॥ २८ ॥ वनेवर्षागताश्चाष्टौचत्वारस्त्व वशेपिताः ॥ वर्षमात्रंकरिष्यामोऽज्ञातवासंवयंपुनः ॥ २९ ॥ अर्जुनस्तुगतःस्वर्गमाहूतोवासवेनच ॥ अहंनजानेतुकदाऽऽगमिष्यतिमही तले ॥ ३० ॥ गदत्वंतुयदूनांचकुशलंकथयस्वनः ॥ तुरगःकस्यभूपस्यकिमर्थंयूयमागताः ॥ ३१ ॥ इत्युक्त्वाभीमसेनस्तुरुरोदाश्रुपरिप्लुतः ॥ दुर्योधनकृतान्क्लेशान्संस्मरन्दुःखपूरितः ॥ ३२ ॥

गद आयो तब तो भीमसेनको समझके गदके भी मनमें शंका भई है तब तो प्रणाम करके गदने कहीहै कि, हे वीर ! तुम कौन हो ये मेरे आगे कहो ॥ २६ ॥ तब याने कहीहै कि, मैं भीमसेन हौं हे गद ! छलसों जूआमें जीतके शत्रु दुर्योधनने हमको नगरमेंसो निकासदीनोंहै सो यहाँसों एक योजनके अंतरालमें भाईनसहित युधिष्ठिर वनमे निवास करेहैं देखो ये दैवकी माया बलवती है ॥ २७ ॥ २८ ॥ सो वनमे निवास करते हमको आठ वर्ष बीतगयेहैं चार वर्ष शेषमे बाकी रहेहै फिर एक वर्ष अज्ञातवास करेंगे ॥ २९ ॥ और भाई अर्जुन हमारो स्वर्गमें गयोहै इंद्रके बुलानेसों सो मैं नहीं जानो हौं कि, न जाने अर्जुन भूमिमें कब आवेगो ॥ ३० ॥ हे गद ! भलो तुम भले मिले यादवनकी कुशल तो कहो और ये अश्व कौनको है और या अश्वके संगमें तुम कैसे आये हौ ये कहो ॥ ३१ ॥ इतनी कहतेमें भीमसेनके आँसू आयगये और दुर्योधनके दिये क्लेशनको याद करिके

दुःखसों पूर्ण हैंगयो ॥ ३२ ॥ या प्रकार भीमसेनके कहे वचनको सुनके गदने भीमसेनको बहुत आश्वासन कियो फिर गदभी दुःखित भयोहै ॥ ३३ ॥ और गदने भीमसेनके आगे सब वृत्तांत विस्तरसे कह्योहै ये सुनके भीमसेन प्रसन्न भयो और अनिरुद्धादिक यदूत्तमन करके युक्त युधिष्ठिरके पास गयेहैं ॥ ३४ ॥ तब यादवनको आयो देखके राजा युधिष्ठिर प्रसन्न भयेहै और हे राजन्! नकुलादिकनको संग लेके यादवनके लिवायवेको आयेहैं ॥ ३५ ॥ तब सब यादवनने युधिष्ठिरको प्रणाम कियोहै युधिष्ठिरजीने सबनको आशीर्वाद दियेहै फिर सबनको लिवायके द्वैतवनमें लायेहैं ॥ ३६ ॥ तब आये जे यादव है तिनको यथायोग्य और यथारुचिसों सूर्यको दीनी ठौकनीके प्रतापसों सब यादवनको आतिथ्य कियोहै ॥ ३७ ॥ तब यहाँ अनिरुद्धने एकरात्रि द्वैतवनमें राखेहै प्रातःकालही अनिरुद्ध यज्ञको निमंत्रण पांडवनको देके शत्रुके ताप देनेवारे ॥ ३८ ॥ यादवनसहित बहुत शीघ्रतासों

इतिश्रुत्वासतद्वाक्यंतंसमाश्वास्यदुःखितः ॥ भीमायकथयामासवार्तांसर्वांचविस्तरात् ॥ ३३ ॥ श्रुत्वाभीमस्तुमुदितोनिरुद्धाद्यैर्यदूत्तमैः ॥ समन्वितस्तुप्रययौधर्मपुत्रस्यसन्निधौ ॥ ३४ ॥ आगतान्यादवाञ्छ्रुत्वाजातशत्रुःप्रहर्षितः ॥ आनेतुंनिर्ययौराजन्नकुलाद्यैःसमन्वितः ॥ ३५ ॥ नेमुस्तंयादवाःसर्वेसोपिदत्त्वावराऽशिषम् ॥ निवासयामाससमुदासर्वान्द्वैतवनेनृप ॥ ३६ ॥ आगतेभ्यश्चसर्वेभ्योयथायोग्यंयथारुचि ॥ प्रददौभोजनंराजास्थाल्याभास्करदत्तया ॥ ३७ ॥ उषित्वारजनीमेकांप्रभातेकार्ष्णिनंदनः ॥ कृतोनिमंत्रणंदत्त्वापांडवेभ्यःपरंतप ॥ ३८ ॥ यादवैःसहितःशीघ्रंमोचयित्वातुरंगमम् ॥ ययौसारस्वतान्देशान्तुरगस्यचपृष्ठतः ॥ ३९ ॥ अशूरांश्चबहून्देशांस्त्यक्त्वातुगराद्ततः ॥ स्वेच्छयाविचरन्राजन्ययौकौंतलकंपुरम् ॥ ४० ॥ तस्मिन्पुरेमहाराजचंद्रहासश्चवैष्णवः ॥ पालितोयःकुलिन्देनकेरलाधिपतेःसुतः ॥ ४१ ॥ कृष्णदेवप्रसादेनराज्यंतत्रकरोतिहि ॥ कथास्तस्यापिभक्तस्यराजञ्जैमिनिभारते ॥ ४२ ॥ अर्जुनाग्रेविस्तराद्वैनारदेनतुवर्णिता ॥ तस्मिन्पुरे नराःसर्वेकृष्णभक्तावसंतिहि ॥ ४३ ॥ ब्रह्मण्याःपुण्यकर्त्तारःपरदारपराङ्मुखाः ॥ स्वदारनिरताःसर्वेकृष्णपूजनतत्पराः ॥ ४४ ॥ गोविंदगाथां शृण्वंतिपुराणानितथैवच ॥ जपंतितत्रनामानिराधामाधवयोर्मुदा ॥ ४५ ॥ तुलसीमालिकाभिश्चऊर्ध्वपुंड्रधराद्विजाः ॥ गोपीचन्दनकाश्मीरैर्हरिमंदिरचर्चिताः ॥ ४६ ॥

घोडेको छुडायके घोडेके पीछे पीछे सरस्वतीके तटके देशनको गये हैं ॥ ३९ ॥ तब बहुतसे देशनको कि, जिनमें कोई शूर नहीं है तिने छोडके यदृच्छासों विचरतो २ ये अश्व कौंतल नाम नगरमें पोहुँचोहै ॥ ४० ॥ या नगरमें राजा चंद्रहास नामको परम वैष्णव रहेहै, कुलिंदसों पालित है और केरलाधिपतिको पुत्र है ॥ ४१ ॥ जो श्रीकृष्णदेवजीके अनुग्रहसों वहां राज्य करेहै या चंद्रहास भक्तकी कथा जैमिनि भारतमें लिखी है ॥ ४२ ॥ जो कथा अर्जुनके आगे नारदजीने कही ही या पुरमें सब मनुष्य मात्र कृष्णके भक्त निवास करेहैं ॥ ४३ ॥ और पुण्यके करनवारे, परस्त्रीको नहीं देखनवारे, बडे ब्रह्मण्य अपनी पत्नीमें रतेही और कृष्णपूजनमें तत्पर मनुष्य रहेहैं ॥ ४४ ॥ गोविंदकी कथानको और पुराणनको सुनेहैं और बडे आनंदसों राधामाधवके नामनको जप करेहैं ॥ ४५ ॥ और जामें ब्राह्मण तुलसीकी माला और तिलकको धारण करेहैं, गोपीचंदन और केसरसों

जिनके अंग लिप्त हैं ॥ ४६ ॥ कोई तो श्यामबिंदुको और कोई श्रीको धारण करैहै, बारह तिलक और आठ मुद्रानके छापे लगावैहैं ॥ ४७ ॥ और जहाँ गृहस्थलोग गोपीचंदनकी शीतल मुद्रानको ब्राह्मणादिक चारौ वर्ण नित्य लगावैहैं ॥ ४८ और जहाँ कितनेई विरक्त यति अग्निसंस्कारके लिये तप्त मुद्रानको लगामैंहैं ॥ ४९ ॥ ता नगरमें देखतो २ ये अश्व राजमंदिरमें पौहँचोहै, जामें चंद्रहास नामको राजा चंद्रमाके समान प्रकाश करैहै ॥ ५० ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायामेकपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५१ ॥ गर्गजी कहैहे कि, तब श्रीव्रजचन्द्रको दास जो राजा चंद्रहास ताने आयेभये यज्ञके घोडेको देखके याने घोडेको पकरके पत्र बँचवायो तब सुनके बडो राजी भयो ॥ १ ॥ तब हे नृप ! महाभागवत चंद्रहास वा पत्रको बँचवायके मनमें विचारनलगो कि, मैं आज धन्य हौं जो नेत्रनसों परमात्माके पौत्रको देखौंगो ॥ २ ॥ न जानौं कौनसे पूर्वपुण्यसों कृष्णके

श्यामबिंदुधराःसर्वेश्रीधराःकेचिदेवहि ॥ तिलकैर्द्वादशैर्युक्ताष्टमुद्राधराःपराः ॥४७॥ गृहस्थाःशीतलांमुद्रांगोपीचन्दसंयुताम् ॥ नित्यंविप्रादयो वर्णाःप्रभातेधारयंतिहि ॥ ४८ ॥ अग्निसंस्कारणार्थंतुविरक्ताःकेचिदेवहि ॥ तप्तमुद्रांधारयंतिकेचित्संन्यासिनस्तथा ॥ ४९ ॥ तस्मिन्पुरेहयः पश्यन्प्राप्तोभूद्राजमंदिरे ॥ यत्रराजतिराजातुचन्द्रहासश्चचन्द्रवत् ॥ ५० ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांहयमेधखण्डेकौंतलपुरगमनंनामैकपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५१ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ समागतंयज्ञहयंविलोक्यश्रीचन्द्रहासोव्रजचन्द्रदासः ॥ सद्योगृहीत्वाकिलतस्यपत्रंसवाचयामास तदैवहृष्टः ॥१॥ तत्पत्रंवाचयित्वाहमहाभागवतोनृप ॥ अहोपश्यामिनेत्राभ्यांपौत्रंश्रीपरमात्मनः ॥२॥ केनपुण्येनपूर्वेणकृष्णतुल्यंयदूत्तमम् ॥ मनायदृष्टःश्रीकृष्णोमायामानुषविग्रहः ॥३॥ सहितःकार्ष्णिजेनाहंतस्माद्गच्छामिद्वारकाम् ॥ तत्रपश्यामिश्रीकृष्णंबलंप्रद्युम्नमेवच ॥ ४ ॥ उग्रसेनंमहाराजंश्रीकृष्णेनापिपूजितम् ॥ इत्युक्त्वानिर्ययौराजाह्यनिरुद्धंविलोकितुम् ॥५॥ गृहीत्वाचोपचारांश्चगंधपुष्पाक्षतादिकान् ॥ दिव्यवस्त्राणिरत्नानिगृहीत्वातुरंगचसः ॥ ६ ॥ सर्वैःपुरजनैःसार्द्धमालातिलकशोभितैः ॥ गीतवादित्रघोषैश्चपद्भ्यांराजाजगामह ॥ ७ ॥ आगतंतंनृपं दृष्ट्वानागरैःसहितंनृप ॥ अनिरुद्धोसुदायुक्तोमंत्रिणंचेदमब्रवीत् ॥८॥ ॥ अनिरुद्धउवाच ॥ ॥ कोयंराजमहामंत्रिन्सर्वैःपुरजनैःसह ॥ आगतो मिलनार्थंवातस्यवार्तांवदस्वनः ॥९॥ ॥उद्धवउवाच ॥ ॥ नृपोयंचंद्रहासाख्योकेरलधिपतेःसुतः ॥ मृतयोर्मातापित्रोश्चकुलिंदेनानुपालितः ॥ १० ॥

तुल्य यदूत्तमको देखौंगो, मैंने मायाकरके मनुष्य विग्रह श्रीकृष्णको नहीं देखोहै ॥ ३ ॥ और न अनिरुद्धको देखेहै यासों मैं तो द्वारकाको जाऊँगो तब वहाँ श्रीकृष्णको बलदाऊको और प्रद्युम्नको देखौंगो ॥ ४ ॥ महाराज उग्रसेनको जिनको श्रीकृष्ण मान करैहै ये कहिके चंद्रहास राजा अनिरुद्धके दर्शनको नगरमेंसों निकरोहै ॥ ५ ॥ गंध, पुष्प, अक्षत, दिव्यवस्त्र, रत्ननको या प्रकार सर्वोपचारनको लेके निकरोहै ॥ ६ ॥ माला, तिलकसो शोभित, सब नगरके निवासीनको संग लेके गीतवादित्रनके संग पाँयनसों राजा आयोहै ॥ ७ ॥ आगे राजाको नगरवेनके संग देखके अनिरुद्धजीने ये कही सब मंत्रिनसों ॥ ८ ॥ हे मंत्रीजी ! ये राजा कौन है ? जो अपने सब पुरजनको लेके आयोहै ये मिलनेकेलिये आयोहै अथवा कुछ अन्य प्रयोजनसों आयोहै ? सो सब बात हमसों कहो ॥ ९ ॥ तब मंत्री उद्धवजीने उत्तर दियो कि, महाराज ये राजा चंद्रहास नामसों विख्यात है, केरल

धिपतिकी पुत्र है,माता पिताके मरजानेके कारण जिसको कुलिंदने पालन कियोहै ॥ १० ॥ जो बालकपनेसों श्रीकृष्णचंद्रनेही बचायो, श्रीकृष्णको पूर्ण भक्त है और जाने दुष्टबुद्धि नामके दिवानकी बेटीको परिणय कियोहै ११ ॥ जाके लिये कुंतल राजा राज्य देके वनमें गयोहै, या चंद्रहासको वृत्तांत मैंने द्वारकामें सुनेहै, श्रीकृष्णनेही सब हवाल मेरे आगे कह्यो हो ॥ १२ ॥ जाको दर्शन देवेको द्वारकानाथ आप यहां पधारेंगे, उद्धवजीके या कहेको सुनके अनिरुद्धको बडो विस्मय भयोहै ॥ १३ ॥ इतनेमें चंद्रहासने पास जायके सब अपने मनुष्यनसहित अश्वको निवेदन कर प्रणाम करी और बहुतसे धन, पदार्थ निवेदन कियेहैं ॥ १४ ॥ पचास हजार तो हाथी, एक लाख रथ, एक किरोड घोडे, एक हजार मोहर, एक हजार गवय (रोझ) एक हजार पालकी, दश लाख भेड, दश हजार सिंग, एक किरोड सुवर्ण, और चार किरोड रूपा, तथा एक लाख आभरण ये

आबाल्यात्कृष्णचन्द्रस्यभक्तस्तेनाऽपिरक्षितः ॥ दुष्टबुद्धेःप्रधानस्यसुतांयः परिणीतवान् ॥ ११ ॥ यस्मैकुंतलकोराजाराज्यंदत्त्वावनंययौ ॥ तस्याख्यानंद्वारकायांमयाकृष्णमुखाच्छ्रुतम् ॥ १२ ॥ यस्मैस्वदर्शनंदातुंश्रीकृष्णोत्रागमिष्यति ॥ उद्धवस्यवचःश्रुत्वाविस्मितोभूद्यदूत्तमः ॥ १३ ॥ गत्वानिरुद्धनिकटेचन्द्रहासोजनैर्वृतः ॥ श्यामकर्णंददौप्रीतोधनानिबहुशस्तथा ॥ १४ ॥ गजानामर्द्धलक्षंचरथानांलक्षमेवच ॥ तुरगाणामेककोटिंसुद्राणांहिसहस्रकम् ॥ १५ ॥ गवयानांसहस्रंचशिबिकानांसहस्रकम् ॥ धेनूनांदशलक्षंचशिङ्गानामयुतंतथा ॥ १६ ॥ एककोटिंसुवर्णानांरौप्याणांचचतुर्गुणम् ॥ लक्षमाभरणानांचमाधवायददौनृपः ॥ १७ ॥ ॥ चन्द्रहासउवाच ॥ ॥ नमोऽनिरुद्धायसुरोत्तमायश्रीकृष्णपौत्रायजनेश्वराय ॥ प्रद्युम्नपुत्राययदूत्तमायदेवायपूर्णायनमःपराय ॥ १८ ॥ इतिभक्तवचःश्रुत्वाप्रसन्नोमदनात्मजः ॥ संश्लाघ्यप्रददौतस्मैप्रदीप्तांरत्नमालिकाम् ॥ १९ ॥ चन्द्रहासस्तुराजेन्द्रराज्येकृत्वातुमंत्रिणम् ॥ स्वपुराद्यादवैःसार्द्धंगंतुंचालंमनोऽकरोत् ॥ २० ॥ उषित्वातत्पुरेसर्वेह्येकरात्रंयदूत्तमाः ॥ प्रातःकालेययूराजंश्चन्द्रहासेनसंयुताः ॥ २१ ॥ जगामह्यग्रतस्तेभ्योतुरगःपत्रशोभितः ॥ ततःसत्ववतींदृष्ट्वाह्यावर्त्तशतसंकुलाम् ॥ २२ ॥ तरंगैस्तटंनिघ्नंतींदीर्घवेगांदुरत्ययाम् ॥ नौकाभिःसंयुतांदृष्ट्वावीरःप्रद्युम्ननन्दनः ॥ २३ ॥

सब वस्तु चंद्रहासने अनिरुद्धके भेट कियेहैं ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ ये सब निवेदन कर हाथ जोर स्तुति करनलगोहै, देवतानमें उत्तम अनिरुद्धके लिये श्रीकृष्णचंद्रके पौत्रके अर्थ मनुष्यनके स्वामीके लिये प्रणाम है, प्रद्युम्नके पुत्र यदूनमें उत्तम पूर्णदेव परको मेरो प्रणाम है ॥ १८ ॥ ऐसे भक्त चंद्रहासके कहेको सुनके अनिरुद्ध प्रसन्न भये और चंद्रहासकी बहुत श्लाघा करी और बडी प्रदीप्त एक रत्नकी माला याके कंठमें पहरायदीनी ॥ १९ ॥ तब ये चंद्रहास राज्यकाम मंत्रीको सोंपके अपने नगरसों यादवनके संग चलवेको मन कियोहै ॥ २० ॥ तब सब यदूत्तम एकरात्रि वहाँही रहेहैं फिर प्रात कालही चंद्रहासको संग लेके प्रयाण कियोहै ॥ २१ ॥ तिनके आगे पत्रसों शोभित अश्व चलेहै तदनंतर शतशः आवर्त (भ्रमर) जामें परे ऐसी सत्ववती नदीको देखके ॥ २२ ॥ जो नदी अपनी हिलोरनसों किनारको तोरेहै दीर्घ जाको वेग जासों दुर्लंघन करवेलायक नहीहै

ताकों बड़े वीर प्रद्युम्ननंदन देखके ॥ २३ ॥ जामें अनेक बड़ी २ नौका हैं ता नदीके पार जायबेको सौ अक्षौहिणीसमेत विचार कियोहै तब अनिरुद्ध हाथीपे बैठके सांबादिक
सहित ॥ २४ ॥ हे नृपश्रेष्ठ ! नावको छोडके नदीके जलमें प्रवेश कियोहै तब पहले जल गैंदलो हैगयोहै ॥ २५ ॥ फिरको जामें बड़े ऐसी भूमि हैगई, ये बड़ो विचित्र भयो तब
सब यादव हँसतेहँसते विस्मययुक्त भयेहै ॥ २६ ॥ तदनंतर ये अश्व धीरे धीरे चलोहै सो चलतो चलतो सिंधुनदी और समुद्रके संगम हो तहाँ गयोहै जहाँ समुद्रमध्यमें नारायण
सर नाम तीर्थ है ॥ २७ ॥ वा जगे तृषामें आतुर भयेने याने तीर्थके जलको पीयोहै इतनेईमें अनिरुद्धादिक सब यादव आयगयेहैं ॥ २८ ॥ धर्मके द्वेषी नीच म्लेच्छनको संग्रामांगण
में जीतके आये यादवनने वहाँ घोडेको देखके सबनने सरोवरमें स्नान कियोहै ॥ २९ ॥ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां द्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५२ ॥ ॥
गर्गजी कहैहैं कि, ये उग्रसेनको घोडा बड़े २ वीर राजानको देखतो भारतखंडमें विचरतो और अन्य देशनको गयोहै ॥ १ ॥ ऐसे या घोडेके विचरते हे विशांपते ! फाल्गुन मास

अक्षौहिणीशतयुतोपारंगंतुमनोदधे ॥ सपूर्वंगजमारुह्यसांबाद्यैःपरिवेष्टितः ॥ २४ ॥ नावंत्यक्त्वानृपश्रेष्ठप्रविवेशनदीजले ॥ प्रथमंसलिलंतस्यां
समलंचबभूवह ॥ २५ ॥ ततःपंकद्रवाभूमिश्चित्रमेतद्बभूवह ॥ हसंतोयादवाःसर्वेविस्मयंपरमंययुः ॥ २६ ॥ अथव्रजंस्तुरंगस्तुसजगामशनैः
शनैः ॥ नारायणसरोयत्रमध्येसिंधुसमुद्रयोः ॥ २७ ॥ पपौतीर्थजलंतत्रतुरगश्चतृषातुरः ॥ ततस्तत्रायुःसर्वेऽनिरुद्धाद्यायदूत्तमाः ॥ २८॥
धर्मद्वेषकरान्नीचान्म्लेच्छाञ्जित्वामृधांगणे ॥ दृष्ट्वातुरंगमंतत्रस्नानंचक्रुःसरोवरे ॥ २९ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डेद्विपंचाशत्तमोऽ
ध्यायः ॥ ५२ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ पश्यन्नृपान्महावीरानुग्रसेनतुरंगमः ॥ विचरन्भारतेवर्षेदेशानन्यान्जगामह ॥ १ ॥ एवंविचरतस्त
स्यहयस्यचविशांपते ॥ आगतःफाल्गुनोमासःसर्वेषांगृहदर्शिकः ॥ २ ॥ आगतंफाल्गुनंदृष्ट्वाचानिरुद्धस्तुशंकितः ॥ उवाचमंत्रिप्रवरमुद्धवंबु
द्धिसत्तम् ॥ ३ ॥ ॥ अनिरुद्धउवाच ॥ ॥ चैत्रेश्रीयादवेंद्रस्तुमंत्रिन्यज्ञंकरिष्यति ॥ वयंतुकिंकरिष्यामोदिवसाबहवोनहि ॥ ४ ॥ भूमौतुरंगह
र्त्तारोनृपाःकेतेवशेषिताः ॥ तेषांचवदनामानिमह्यंशुश्रूषवेत्वरम् ॥ ५ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ नसंतिभूतलेशूरागगनेसंतिवाहरे ॥ तस्माद्यदु
पुरींगच्छस्वर्णद्वारांचद्वारकाम् ॥ ६ ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वाह्यनिरुद्धःप्रहर्षितः ॥ तस्यापिवचनंराजन्नश्वाग्रेपुनरब्रवीत् ॥ ७ ॥ एवंतद्वाक्य
माकर्ण्यसर्वज्ञातातुरंगमः ॥ प्रययौद्वारकांशीघ्रंकिष्किंधांहनुमानिव ॥ ८ ॥

आयोहै, ये मास सबनको घरकी याद दिवावनवारोहै ॥ २ ॥ तब फाल्गुनको आयो देखके अनिरुद्धजी शंकित हैके मंत्रिमुख्य उद्धवजीसों बोलेहै, ये उद्धव बुद्धिमें अति उत्कृष्ट है ॥
॥ ३ ॥ अनिरुद्धजीने कहेहै कि, हे मंत्रिन् उद्धवजी ! या चैत्रमासमें श्रीउग्रसेनजी यज्ञ करेंगे, अब हम क्या करें दिन तो अब बहुतही थोरे रहेहैं ॥ ४ ॥ अब भूमिपे अश्वके पकर
नेवारे कितनेही बाकी हैं उन राजनके नाम कहो मैं जलदी सुनो चाहूहूँ ॥ ५ ॥ तब उद्धवजी बोले, अब भूमिमें तो घोडेके पकरनेवारे राजा कोई नहीं है, आकाशमें होयँ तो
भलेंहि होयँ सो अब आप स्वर्णको जामें द्वार ता द्वारिकाको चलो ॥ ६ ॥ ये बात उद्धवजीने कही ताको सुनके अनिरुद्धजी हर्षित भये और उद्धवको कह्यो वचन घोडेके आगे
कह्यो कि, हे वाजिन् ! अब जो कोई और वीर होयँ तो वहाँ चलो नहीं तो अपनी द्वारिकाको चलो ॥ ७ ॥ अनिरुद्धके या वचनको सुनके ये सर्वज्ञाता तुरंगम बहुत शीघ्रतासों

द्वारिकाजीको ही चलेहै जैसे हनुमान् किष्किंधाको ॥ ८ ॥ तब या घोडेके पीछे घोडनपै बैठे राजालोग चलेहैं, जिन घोडनके पवनके और मनकेसे वेग हैं उनपै सवार है भातृ
और सांबादिक सब घोडेके पीछे चलेहैं ॥ ९ ॥ वे सब कलावनूके रस्सानसों घोडेको बाँधके हाथसों पकरके सेनाके बीचमें करके शंकित ह्वैके द्वारिकाको चलेहैं ॥
॥ १० ॥ गीत गावते, बाजे बजाते, दुंदुभीनको शब्द करते, भूमिको कँपावते, सब शत्रुनको त्रास उपजावते ॥ ११ ॥ याप्रकार यादवनसहित
घोडा चलोजायरह्यो ताको नारदजी देखके दूतकीतरह लड़ाई करायवेके लिये इंद्रके पास गये ॥ १२ ॥ इंद्रके आगे या घोडेको सब हवाल विस्तारसों कह्योहै
तब नारदके कहेको सुनके इंद्रने घोडेके हरवेको विचार कियोहै ॥ १३ ॥ तब अंतर्धान ह्वैके इंद्र घोडेके देखवेको मनुष्यलोकमें आयोहै देखो आश्चर्य है कि, विष्णुकी मायासों सब

तस्यापिपृष्ठतःशूरादुद्रुवुस्तेतुरंगमैः ॥ वायुवेगैर्मनोवेगैर्भ्रातुसांबादयोनृप ॥ ९ ॥ गृहीत्वातुरगंसर्वेबद्धातंस्वर्णदामभिः ॥ सेनायामन्तरेकृत्वा
शंकिताःस्वपुरींययुः ॥ १० ॥ गीतवादित्रघोषैश्चनादयंतश्चदुंदुभीन् ॥ चालयंतश्चपृथिवींत्रासयन्तःखलान्रिपून् ॥ ११ ॥ व्रजंतंयादवैःसा
र्द्धंतुरगंवीक्ष्यनारदः ॥ दूतवत्कलहार्थायप्रययौशक्रसन्निधिम् ॥ १२ ॥ तस्याग्रेकथयामासवाजिवार्तांसविस्तरात् ॥ श्रुत्वाशक्रस्तुराजेंद्र
हयंहर्तुमनोदधे ॥ १३ ॥ आययौभूतलेशीघ्रंद्रष्टुंभूत्वातिरोहितः ॥ अहोविष्णोर्माययाचसर्वेमुह्यंतिदेवताः ॥ १४ ॥ कुबेरब्रह्मशक्राद्याभूजना
नांतुकाकथा ॥ सगत्वातत्रवृष्णीनांसेनांसर्वांददर्शह ॥ १५ ॥ प्रलयाब्धिसमांरौद्रांयुतांशूरैश्चकोटिभिः ॥ यादवानांमहासेनामुद्भटांवीक्ष्य
शंकितः ॥ १६ ॥ ययौकृष्णभयाद्राजञ्छीघ्रंशक्रोमरावतीम् ॥ कृष्णदेवस्यकृपयायुद्धस्यशांतिमृज्यच ॥ १७ ॥ अथव्रजंतीचतुरंगिणीभिः
सेनानिरुद्धस्यमहात्मनश्च ॥ गजैरथैर्वैतुरगैर्नरैश्चरेजेमघोनःपृतनेवस्वर्गे ॥ १८ ॥ गजाःसर्वेपृथग्भूताःपृथग्भूतारथास्तथा ॥ पृथग्भूतास्तुरंगा
श्चपृथग्भूताःपदातयः ॥ १९ ॥ अनुजग्मुर्द्वारकांतिहृष्टिताःकृष्णपोतकाः ॥ जंबूद्वीपस्यजेतारोलोकद्वयजिगीषवः ॥ २० ॥ अग्रेवाहंपुरस्कृत्य
वादित्रैर्विविधैरपि ॥ गीतनृत्यादिभीराजन्संयुक्तास्तेयदूत्तमाः ॥ २१ ॥

देवताहू मोहित होयहैं ॥ १४ ॥ तो जब कुबेर ब्रह्मा और इंद्रादिकहू भगवन्मायामें मोहित होयहैं तब और सामान्य मनुष्यनकी कहा चर्चा है ॥ १५ ॥ तब प्रलय
के समुद्रके समान बडी भयंकरा, किरोडन शूरनकरके युक्त ऐसी यादवनकी प्रचंड वा सेनाको देखके शंकित भयोहै ॥ १६ ॥ तब कृष्णके भयसों हे राजन् ! शंकित है इन्द्र
अमरावतीको गयो , कृष्णदेवकी कृपाकरके युद्धकी आशाको छोडके ॥ १७ ॥ तदनंतर चतुरंगिणीसहित महात्मा अनिरुद्धकी चलीजाय जो सेना है वो जैसे इंद्रकी सेना
होय ऐसी सुशोभित भई है, जो हाथी, रथ, अश्व और पदातिसहित है ॥ १८ ॥ जामें सब हाथी पृथग्भूत हैं रथ पृथग्भूत हैं, पृथग्भूत जामें घोडा हैं और पदाति पृथग्भूत
(न्यारे) हैं ॥ १९ ॥ तब वे सब कृष्णके बालक जंबूद्वीपके जीतनेवारे और दोऊ लोकनको जीते चाहें वे बडे हर्षित ह्वैके घोडेके पीछे गये हैं ॥ २० ॥ घोडेको आगारी करके अनेक

प्रकारके बाजे बजावत, गीत, नृत्यादिकनके सहित वे सब यदुराम द्वारकाको गयेहैं ॥ २१ ॥ तब अनिरुद्ध सांबादिकनसों सहित और इंद्रनीलादिक तथा चंद्रहासादिक हजारन राजानसों भूषित ॥ २२ ॥ सांबकी अनुमतिसों आनर्तदेशमें प्रवेश कर दो योजनसों द्वारकामें खबर करवेको उद्धवजीको भेजते भयेहैं ॥ २३ ॥ तब सांबके भेजे उद्धवजी द्वारकामें जायके अनिरुद्धजीको शीघ्रतासों पालकीमें बैठारके हर्षित हैके पुरीको गयेहैं ॥ २४ ॥ जहाँ मुनिमंडलीमें उग्रसेनजी श्रेष्ठ पिंडारक नाम क्षेत्रमें बैठेहैं जो सभामंडपसों भूषित है ॥ २५ ॥ और वसुदेवादिक और रामकृष्णादिक और बडे बली प्रद्युम्नादिक सब बैठेभये नित्य यज्ञकी रक्षा कररहे हैं ॥ २६ ॥ ता यदुसभामें जायके यदुराज महाराज उग्रसेनजीको सांत्वन करके और वसुदेवजीको कृष्णबलरामको और प्रद्युम्नादिक सब यदूत्तमनको ॥ २७ ॥ यथोचित सबको प्रणाम कर अगारी खडो हैके प्रसन्नभये वसुदे

अनिरुद्धस्तुसांबाद्यैरिंद्रनीलादिभिर्नृप ॥ चन्द्रहासादिभिर्भूपैःसहस्रैरभिभूषितः ॥ २२ ॥ सांबस्यानुमतेनापिचानर्तेसंप्रविश्यच ॥ उद्धवंप्रेषयामासद्वारकांयोजनद्वयात् ॥ २३ ॥ एवंप्रणोदितःसोपिनत्वारुक्मवतीसुतम् ॥ शिबिकांशीघ्रमारुह्यहर्षितःप्रययौपुरीम् ॥ २४ ॥ यत्रास्तेह्युग्रसेनस्तुमुनिभिःपरिवारितः ॥ श्रेष्ठेपिंडारकक्षेत्रेसभामंडपभूषिते ॥ २५ ॥ वसुदेवादयोयत्ररामकृष्णादयोनृप ॥ प्रद्युम्नाद्याश्चबलिनोयज्ञंरक्षन्तिनित्यशः ॥ २६ ॥ गत्वानृपसभांतत्रयादवेंद्रंप्रणम्यच ॥ वसुदेवंबलंकृष्णंप्रद्युम्नादीन्यदूत्तमान् ॥ २७ ॥ सर्वान्नत्वायथायोग्यंतेषामग्रेससंस्थितः ॥ कथयामासवृत्तांतंपृष्टस्तैर्हृष्टमानसैः ॥ २८ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ आगतस्तवराजेंद्रनिर्विघ्नेनतुरंगमः ॥ आगताश्चानिरुद्धाद्याःकुशलेनयदूत्तमाः ॥ २९ ॥ गोविंदस्यापिकृपयाचेंद्रनीलःसमागतः ॥ हेमांगदःसुरूपाचह्यागतामण्डलेश्वरी ॥ ३० ॥ निर्जितस्तुवकोयुद्धेभीषणेनसमन्वितः ॥ विंदुश्चैवानुशाल्वश्चस्वपुराद्वौसमागतौ ॥ ३१ ॥ उपद्वीपेपांचजन्यबल्वलौनिर्जितोऽसुरैः ॥ तस्मिन्युद्धेमहेशेनह्यनिरुद्धसुनन्दनौ ॥ ३२ ॥ निहतौनरुषाढ्येनयादवाश्चैवमारिताः ॥ तत्रगत्वात्वसौकृष्णोजीवयामासयादवान् ॥ ३३ ॥ तस्मात्कृष्णस्यकृपयावयंसर्वेसमागताः ॥ निर्जिताःकौरवाःसर्वेभीष्मोह्यसमागतः ॥ ३४ ॥ दृष्टाद्वैतवनेस्माभिःपांडवादुःखकर्शिताः ॥ व्रजेगोपगणाश्चैवकृष्णविश्लेषविह्वलाः ॥ ३५ ॥

वादिकनके पूछनेसे उद्धवने सब वृत्तांत कह्योहै ॥ २८ ॥ उद्धवजी बोले कि, हे राजेंद्र ! आपको घोडा निर्विघ्नतासों सर्वभूमिमें फिरके आयगयोहै और अनिरुद्ध आदिक सब युद्धमें जीते प्रसन्न है ॥ २९ ॥ और गोविंदकी कृपासों इंद्रनील राजाभी आयोहै और हेमांगद और मंडलेश्वरी सुरूपाहू आई है ॥ ३० ॥ और भीषणसहित वृकासुरभी जीत लीनोहै और विंदु तथा अनुशाल्व दोनो अपने पुरसों संग आये हैं ॥ ३१ ॥ और उपद्वीपमें जायके पांचजन्य बल्वल दोनों असुरनसहित जीतेहैं, जा युद्धमें क्रोधमें मग्नभये महादेवने अनिरुद्ध और सुनंदन दोनोको मारगेरेहैं ॥ ३२ ॥ और सब यादवनको मारगेरे है, जहाँ जायके श्रीकृष्णने सब यादवनको जिवायेहैं ॥ ३३ ॥ यासों श्रीकृष्णकी कृपासों हम सब आयेहैं और सब कौरव जीते जामें भीष्मजीहू आये है ॥ ३४ ॥ और फिर द्वैतवनमें जायके दुःखमें कर्शित सब पांडव हमने देखे और कृष्णके वियोगमें

विह्वल भये ऐसे सब गोपगोपीनके गणहूँ हमने देखे ॥ ३५ ॥ और जो बालकपनसों कृष्णको भक्त चंद्रहास हो सोहू आयोहे और आपके भयसों भयभीत भये अनेकन राजा आयेहे ॥ ३६ ॥ गर्गजी कहैहैं, या प्रकार उद्धवके मुखसों उग्रसेनजी कृष्णके गुणनको सुनके प्रेमके मारे आनंदके समुद्रमे मग्न हैके कछुभी नहीं बोलेहैं ॥ ३७ ॥ फिर उद्धवजीको प्रसन्न हैके माणिनको हार, अनेकन रत्न, वस्त्र, पालकी, हाथी, रथ और घोडा दीनेंहैं ॥ ३८ ॥ तदनंतर श्रीभगवान् कृष्ण बडे हर्षसों जलदीसों उठके या सभामे उद्धवको छातीसे लगायके आलिंगन कियोहै ॥ ३९ ॥ तब हर्षमें पूर्णभये श्रीउग्रसेनजी भगवान्सों बोलेहैं कि, हे श्रीकृष्ण ! तुम अनिरुद्धको लिवायके लाओ ॥ ४० ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां त्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५३ ॥ गर्गजी कहैहैं कि, तब उग्रसेनजीके कहेसों वसुदेवसों आदिलेके सब हे नृप ! आये जे दिग्विजय

आबाल्यात्कृष्णभक्तस्तुचंद्रहासःसमागतः ॥ भीताश्चबहवोभूपाआगतास्तेभयात्तव ॥ ३६ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ इतिकृष्णगुणाञ्छ्रुत्वा श्रुद्धवाद्यादवेश्वरः ॥ नकिंचिदूचेप्रेम्णातुमग्नश्चानन्दसागरे ॥ ३७ ॥ मणिहारंददौतस्मैरत्नानिचांबराणिच ॥ शिबिकावारणरथहयादीनुद्धवा यसः ॥ ३८ ॥ ततःकृष्णस्तुभगवाञ्छीघ्रमुत्थायहर्षितः ॥ सख्यासार्द्धसभायांचचकारपरिरंभणम् ॥ ३९ ॥ उग्रसेनउवाचाथगोविंदंहर्षपू रितः ॥ आनेतुंचानिरुद्धंवैगच्छश्रीकृष्णयादवैः ॥ ४० ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डेउद्धवागमनंनामत्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥५३॥ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ अथोग्रसेनवचनाद्वसुदेवादयोनृप ॥ नेतुंविनिर्ययुःसर्वेह्यनिरुद्धंसमागतम् ॥ १ ॥ गजैरथैस्तुरंगैश्चशिबिकाभिर्यदूत्तमाः ॥ श्रीकृष्णबलदेवाद्याःप्रद्युम्नाद्यानृपेश्वर ॥२॥ उद्धवाद्यागजस्थाश्चहयंद्रष्टुंविनिर्गताः ॥ देवकीप्रमुखानार्योमातरःकृष्णरामयोः ॥३॥ शिबिकाभिर्विचित्राभिर्निर्ययुर्नृपसत्तम ॥ रुक्मिणीसत्यभामाद्यानार्यःकृष्णस्यएवहि ॥ ४ ॥ शिबिकाभिर्ययुःसर्वाःसहस्राणिचषोडश ॥ लाजानांमौक्तिकानांचकुसुमानांनृपेश्वर ॥ वर्षंकर्तुंययुःशीघ्रंगजस्थाश्चकुमारिकाः ॥ ५ ॥ कलशैर्जलहारिण्योनिर्ययुर्जलपूरितैः ॥ सौभाग्यवत्योब्राह्मण्योगंधपुष्पाक्षतांकुरैः ॥ ६ ॥ वारांगनाश्चरूपिण्योनृत्यंकर्तुंविनिर्ययुः ॥ शोभिताःसर्वशृंगारैर्गायंत्यश्चगुणान्हरेः ॥ ७ ॥

करके अनिरुद्ध तिनके लिवायवेको आयेहै ॥ १ ॥ हाथी, रथ, घोडे और पालकीनमें सब यादव बैठबैठके श्रीकृष्ण बलदेवादिक और हे नृपेश्वर ! प्रद्युम्नादिक द्वारकामेंसों निकसेहैं ॥ २ ॥ वा समय उद्धवादिक सब हाथीनपै बैठके घोडेके देखवेको निकसेहैं, देवकी आदिक स्त्री श्रीकृष्णकी माता ॥ ३ ॥ विचित्र पालकीनमें बैठके अश्वमेधके अश्वके देखवेको निकसीहैं और रुक्मिणी और सत्यभामा आदिक श्रीकृष्णकी पत्नी षोडशसहस्र ये भी पालकीनमें बैठके या यज्ञियाश्वके दर्शनार्थ निकसीहैं ॥ ३ ॥ ४ ॥ और हे नृपेश्वर ! हाथीनपै बैठकें कुमारिका धानकी खील, मोती और पुष्पनकी वर्षा करवेको आईहैं ॥ ५ ॥ और हे राजन् ! सौभाग्यवती ब्राह्मणी जलके भरे सुवर्णके कलशनको लिये गंध, पुष्प, अक्षत जिनमें परे तिनको माथेपै धरे मंगलकलशनको लेके आईहैं ॥ ६ ॥ और ऐसेही रूपवती वेश्या अपने २ शृंगार किये हरिके गुणनके

गान करवेको नृत्य करती निकसीहैं ॥ ७ ॥ और जितने यादव हैं, शंख, दुंदुभीनके शब्द और वेदध्वनिके शब्दनसों वारणेंद्रको अगारी करके गर्गादि मुनिनको संग लेके निकसेहैं
॥ ८ ॥ अनेक पताकानसों सुशोभिता अपनी पुरीको देखते भतर, अरगजानके जामें छिरकाव हैरहे, केलाके खंभ और चंदनवारनसों विराजिता मणिके दीपकनसों प्रकाशिता अनेक
चंदोवनसे मंडिता है, दिव्य नारीनरनसों भरी सुवर्णके कलशनसों झलमलायरही, पक्षिनके मनोहर शब्द जामें हैरहे, अगुरुके धूमके गुब्बार जामें उठरहे तिनसों शोभिता ऐसी
मालूम होयहै मानों दूसरी इंद्रकी अमरावती है ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ ऐसे ये यादव पुरीको देखते २ जहाँ सेनासहित घोडेके लिये अनिरुद्धजी सन्मुखसों चले आवैहैं तहाँ आयेहैं
॥ १२ ॥ तब सन्मुखसे आते देखके अनिरुद्धजी रथमेंसे कूद अश्वको अगाडी कर सब अपने साथी राजानको संग लेके आगे आयेहै ॥ १३ ॥ पहले कुलाचार्य गर्गको नमस्कार
करी फिर वसुदेवजीको, फिर बलदेवजीको, श्रीकृष्णको, फिर पिता प्रद्युम्नजीको पृथक्पृथक् प्रणाम कर अश्वको अगारी निवेदन कियो ॥ १४ ॥ तब सबने प्रसन्न हैके आशीर्वाद

शंखदुंदुभिनादेनब्रह्मघोषेणयादवाः ॥ वारणेंद्रंपुरस्कृत्यगर्गाद्यैर्मुनिभिर्युताः ॥ ८ ॥ विलोकयंतःस्वपुरींपताकाभिश्चमंडिताम् ॥ सिक्तमार्गां
गंधजलैरंभातोरणशोभिताम् ॥ ९ ॥ प्रदीतांमणिदीपैश्चवितानैर्विविधैरपि ॥ दिव्यनारीनरैर्युक्तांसुवर्णसत्नैर्वृताम् ॥ १० ॥ पक्षिणांकलश
ब्देनधूम्रेणागुरुगंधिना ॥ शोभितांकृष्णनगरींशक्रस्येवामरावतीम् ॥ ११ ॥ इत्थंविलोकयंतस्तेप्राप्ताःशीघ्रंचयादवाः ॥ यत्रानिरुद्धःसहयो
वर्त्ततेसेनयावृतः ॥ १२ ॥ तान्दृष्ट्वाचानिरुद्धस्तुस्वरथादवतीर्यच ॥ पुरस्कृत्यहयंचाग्रेनृपैःसार्द्धंसमाययौ ॥ १३ ॥ पूर्वंनत्वाकुलाचार्यंवसु
देवंबलंतथा ॥ श्रीकृष्णंपितरंचैवतेभ्यश्चाश्वंददौपुनः ॥ १४ ॥ शुभाशिषोददुस्तेतुप्रीताःप्रेमपरिप्लुताः ॥ त्वयासाधुकृतंवत्ससर्वाञ्जित्वारिपू
न्नृपान् ॥ १५ ॥ आनयामासतुरगंमध्येसंवत्सरस्यच ॥ इतितद्वचनंश्रुत्वानिरुद्धःप्राहमांपुनः ॥ १६ ॥ कृपयालनविभेंद्रमार्गेमार्गेमृधेमृधे ॥
बहुभिःशत्रुभिश्चाश्वोगृहीतोपिविमोचितः ॥ १७ ॥ गुरोरनुग्रहेणैवसुखीभवतिमानवः ॥ तस्माद्गुरुंचविधिनायथाशक्त्याप्रपूजयेत् ॥ १८ ॥
भूपास्ततःसमागत्यसमीपेरामकृष्णयोः ॥ नेमुःपृथक्पृथक्सर्वेप्रीताःप्रेमपरिप्लुताः ॥ १९ ॥ सर्वान्दृष्ट्वानतान्भूपाञ्छ्रीकृष्णोबलसंयुतः ॥
चंद्रहासंचगांगेयंविन्दुंचैवानुशाल्वकम् ॥ २० ॥ हेमांगदंचेंद्रनीलंपरिरेभेहरिर्मुदा ॥ कृष्णभक्तात्परःकोपितस्माद्भूमौनविद्यते ॥ २१ ॥

दियेहैं और प्रेममें मग्न भये बोलेहैं, हे वत्स ! तुमने बडो अच्छो कियो जो अपने शत्रु नृपनको जीतके ॥ १५ ॥ और अश्व लायके निवेदन कियो और वर्षके भीतरही आयगये
हो ये बडो काम कियो ये इनके कहेको सुनके अनिरुद्धजीने मोसों ये कही कि, हे प्रभो ! हे विप्रेंद्र ! आपकी कृपासों मार्गमार्गमें और संग्रामसंग्राममें बहुत २ शत्रुनने अश्वको
पकरो परन्तु सब जगेसों छुडायो ॥ १६ ॥ १७ ॥ सो महाराज ! ये बात सत्य है कि, "गुरु मेहरबान तो चेला पहलवान" होयहै यहै गुरुके अनुग्रहसों ही मनुष्य सुखी होयहै
यासों गुरुकोही यथाशक्ति विधिसों पूजन करै ॥ १८ ॥ तदनंतर सब राजानने आयके श्रीराम, कृष्णको प्रणाम करीहै, सब पृथक् २ प्रणामकर सब राजा प्रेममें मग्न भयेहैं
॥ १९ ॥ तब श्रीकृष्णबलरामने सब राजानको नम्र भये देखके चंद्रहास, भीष्म, बिंदु, अनुशाल्व, हेमांगद, इंद्रनील इन सबनसों बडी प्रसन्नतापूर्वक भगवान्ने आलिंगन एक

एकसों कियेहे यासों देखो ! कृष्णभक्तसों अधिक या जगत्में कोऊ नहीं है ॥ २० ॥ २१ ॥ तदनंतर जीतके आये अनिरुद्धको हाथीपै बैठारके द्वारकामें लेगये फिर सब यादव और पुत्र पौत्रनसहित वसुदेव प्रसन्न भयेहैं, हे नृपेश्वर ! ॥ २२ ॥ मकरंदसहित पुष्पनकी तो देवांगनाननें और मोतीनकी तथा धानके खीलनकी नगरकी स्त्रीनने हाथीनपै बैठीनने अनिरुद्धपै वर्षा कीनीहै ॥ २३ ॥ नृत्य, वादित्र, गीतसों और वेदध्वनिसों शोभित छिरकरहे मार्ग जाके ऐसी पुरीको देखते पिंडारक तीर्थको गयेहैं ॥ २४ ॥ तब यादवनके वा देवदुर्लभ वैभवको देखके सब राजालोग अपने अपने वैभवको विस्मित ह्वैके निंदा करतेभयेहैं ॥ २५ ॥ तब उन राजानने वो यज्ञस्थल देखेहै जामें घृतके गंधको धूम छायरह्योहै और वेदध्वनि ह्वैरहीहै और असिपत्रव्रतसों युक्त है ॥ २६ ॥ तब यदूत्तम राजा उग्रसेनको देखके इंद्रियनके दमन करनवारे इंद्रके समान प्रतापी पुष्टांग

ततोनिरुद्धंजयिनंसमागतंगजेसमारोप्यकुशस्थलींययौ ॥ शौरिःप्रसन्नःकिलसर्वयादवैःपुत्रैश्चपौत्रैर्मुदितैर्नृपेश्वर ॥ २२ ॥ पुष्पाणांमकरंदानांवर्षंचक्रुःसुरस्त्रियः ॥ लाजानांमौक्तिकानांचकुञ्जरस्थाःकुमारिकाः ॥ २३ ॥ नृत्यवादित्रगीतेनब्रह्मघोषेणशोभिताः ॥ पश्यंतःसिक्तमार्गांतांपुरींपिण्डारकंययुः ॥२४॥ नृपाःसर्वेयदूनांचवैभवंदेवदुर्लभम् ॥ विलोक्यवैभवंस्वंस्वंगर्हयंतिचविस्मिताः ॥२५॥ यज्ञस्थलंतेददृशुर्धूम्रेणघृतगंधिना ॥ व्याप्तंब्राह्मणघोषेणह्यसिपत्रव्रतेनच ॥२६॥ निरीक्ष्यतत्रभूपालमुग्रसेनंयदूत्तमम् ॥ पुरंदरसमंदांतंपुष्टंगौरंस्फुरत्प्रभम् ॥ २७ ॥ कुशासनस्थंसुभगंनियमेन्यस्तभूषणम् ॥ संयुक्तंमृगशृङ्गेणमृगचर्मणिभार्यया ॥ २८ ॥ कुर्वंतंपूजनंचाग्नेर्घृतगंधाक्षतादिभिः ॥ मण्डपेमुनिभिर्युक्तंधूम्रेणारुणलोचनम् ॥ २९ ॥ तंसर्वेचानिरुद्धाद्याःकृत्वाग्रेयज्ञघोटकम् ॥ वाहनेभ्यःसमुत्तीर्यनेमुःप्रीताःपृथक्पृथक् ॥ ३० ॥ ततःश्रीयदुराजस्तुसर्वान्दृष्ट्वानृपान्यदून् ॥ सर्वेषामाददेमानंयथायोग्यंयथाबलम् ॥ ३१ ॥ अनिरुद्धस्ततोनत्वाशीघ्रंभूत्वाकृतांजलिः ॥ सर्वेषांशृण्वतांप्राहजंबूद्वीपपतिंनृपम् ॥ ३२ ॥ ॥ अनिरुद्ध उवाच ॥ ॥ एनंपश्यमहाराजइन्द्रनीलंनृपोत्तमम् ॥ पादयोःपतितंप्रेम्णासमुत्थापयदेववत् ॥ ३३ ॥ हेमांगदंचानुशाल्वंबिन्दुंश्रीचन्द्रहासकम् ॥ एनंदेवव्रतंपश्यचागतंतवसन्निधौ ॥ ३४ ॥

और गौर जिनको अंग बडे तेजस्वी ॥ २७ ॥ कुशासनपै विराजमान नियमके निमित्तसों भूषणरहित मृगके शृंगको हाथमें लिये भार्यासहित मृगचर्मपै बैठे ॥ २८ ॥ अग्निपूजन कररहे घृतगंधाक्षतादिको लिये, मुनिमंडलीमें बैठे धूमसे लाल जिनके नेत्र ह्वैरहे ॥ २९ ॥ ता उग्रसेनको सब अनिरुद्धादिक यज्ञियाश्वको अगारी करके अपने अपने वाहननपैसों उतरके प्रसन्नतापूर्वक सब पृथक्पृथक् प्रणाम करतेभये ॥ ३० ॥ तब श्रीयदुराज उग्रसेनजी सब राजानको और यदूनको देखके सबनको आपने मान कियोहै जैसो जाको बल हो और जैसो जाको चाहितो हो ॥ ३१ ॥ तब अनिरुद्धजी शीघ्रतासों हाथ जोर नमस्कार कर सबके सुनते २ जंबूद्वीपपति राजासों ये बोलेहैं ॥ ३२ ॥ अनिरुद्धजी बोले कि, हे महाराज ! या राजानमें उत्तम इंद्रनीलको आप देखो ? ये आपके पाँयनमें परोहै हे देव ! याको उठाओ ॥ ३३ ॥ फिर या हेमांगदको, अनुशाल्वको, बिंदुको, श्रीचंद्रहासको

और या देवव्रतको जे आपके आगे खडेहैं इनको आप देखो ॥ ३४ ॥ और ये मेरी रक्षा करनेवारे जांबवतीके पुत्र सांब है और मोकूं शिवजीने मारगेरहैं फिर श्रीकृष्णने जिवायो हो तिनें देखो ॥ ३५ ॥ और ऐसेही या सुनंदनको देखो याकोहू शिवजीने मारगेरो हो फिर श्रीकृष्णने जितायो हो और इन सबनको देखो जे कृष्णकी कृपासों आयेहैं ॥ ३६ ॥ और निर्विघ्नतासों आये या यज्ञके अश्वको ग्रहण करो और युद्धकेलिये दिये या खड्गको ग्रहण करो, आपको नमस्कार है ॥ ३७ ॥ या प्रकार अनिरुद्धके या कहेको सुनके यदुराज बडे प्रसन्न भये और अनिरुद्धकी और सब राजानकी श्लाघा करके यथायोग्य आशीर्वाद दियेहैं ॥ ३८ ॥ सब राजानको सत्कार करके फिर भीष्मजीसों बोलेहैं कि, हे भीष्मजी ! आओ तुम एकवेर मोसों आलिंगन करो ॥ ३९ ॥ इतनी कहिके भीष्मजीसो आलिंगन कियो तदनंतर दानमानसों सत्कार किये ये राजा ॥४०॥

ममरक्षाकरंपश्यसांबंजांबवतीसुतम् ॥ रुद्रेणनिहतंमांचपश्यकृष्णेनजीवितम् ॥ ३५ ॥ तथारुद्रहतंपश्यजीवितंचसुनन्दनम् ॥ अन्यान्पश्ययदून्सर्वान्कृष्णस्यकृपयाऽऽगतान् ॥ ३६ ॥ गृहाणयज्ञतुरगंनिर्विघ्नेनसमागतम् ॥ दत्तंयुद्धायनिस्त्रिंशंतंगृहाणनमोस्तुते ॥ ३७ ॥ इतितद्वाक्यमाकर्ण्ययदुराजःप्रहर्षितः ॥ संश्लाघ्यतंनृपाँश्चैवयथायोग्याशिषंददौ ॥ ३८ ॥ पूजयित्वानृपान्सर्वास्ततोभीष्ममुवाचह ॥ एहिभीष्ममयासार्द्धंकुरुत्वंपरिरंभणम् ॥ ३९ ॥ इत्युक्तातंसमुत्थायपरिरेभेयदूत्तमः ॥ ततस्तेदानमानाभ्यांपूजितायदुनानृपाः ॥ ४० ॥ निवासंचक्रिरेप्रीताद्वारकायांगृहेगृहे ॥ ततोदृष्ट्वानिरुद्धंवैप्राप्तंसांबादिभिर्नृप ॥ ४१ ॥ देवकीरोहिणीचैवरुक्मिण्याद्याःस्त्रियोवराः ॥ अन्याश्चरुक्मवत्याद्याःपरिष्वज्यमुदंययुः ॥ ४२ ॥ सुरूपारोचनाद्यपाराजन्नेतामुदंगताः ॥ सांबश्लाघांततःश्रुत्वासुयोधनसुताभृशम् ॥ ४३ ॥ मुदंययौस्वनेत्राभ्यांमुंचंतीहर्षजंजलम् ॥ बभूवमंगलंराजन्द्वारकायांगृहेगृहे ॥ ससैन्येनृपशार्दूलह्यनिरुद्धेसमागते ॥ ४४ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डेद्वारकायांतुरगागमनंनामचतुष्पंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५४ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ अथवैमण्डपेरम्येद्वारैरष्टभिरन्विते ॥ पतत्पताकेकुण्डाढ्येयाज्ञिकैरध्वैर्युते ॥ १ ॥ पलाशजैर्बिल्वजैश्चतथाश्लेष्मातकैर्नृप ॥ वेदिकाभिस्तथायूपैश्चपालैरपिभूषिते ॥ २ ॥ स्रुवचमसकुशमुसलोलूखलाद्यैर्विशोभिते ॥ अन्यैःसंभृतसंभारैर्नानावस्तुभिरन्विते ॥ ३ ॥

बडे प्रसन्नतासों निवास करतेभयेहैं, ता द्वारकाके घरघरमें सांबादिक सहित अनिरुद्धको आयो देखके आनंद भयोहै ॥ ४१ ॥ तब देवकी, रोहिणी और रुक्मिणी आदिक जे और सामान्य स्त्रीजन है वे सब आलिंगन करके प्रसन्न भई है ॥ ४२ ॥ और सुरूपा, रोचना, कृपा, हे राजन् ! ये भी सब प्रसन्न भईहैं तब दुर्योधनकी बेटी लक्ष्मणा सांबकी श्लाघाको सुनके नेत्रनमेंसे आनंदके आँसू बहाती परम आनंदित भईहै ॥ ४३ ॥ हे राजन् ! वा समय द्वारकामें घरघरमें सांबसहित अनिरुद्धके आयेको परमानंद भयोहै ॥ ४४ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां चतुष्पंचाशत्तमोऽध्याय ॥ ५४ ॥ गर्गजी कहेहैं कि, तदनंतर वा आठ द्वारके मंडपमें पताका जिनमें लगी ऐसे कुंड जामें बनरहे और अध्वर्यु पढनमारे याज्ञिकनसों युक्त है ॥१॥ और ढाक, बेल, निशोडेनके यज्ञस्तंभ है और वेदिका तथा चषाल (यज्ञस्तंभनकेऊपर लगे काष्ठकंटक) तिनसों भूषित है ॥२॥ और स्रुवा, कुश,

मुसल, उलूखल इनसों तथा अनेक औरहू संभार (सामग्री) तिनसों युक्त है ॥ ३ ॥ ता मंडपमें राजा उग्रसेन वेदपारग ऋषि तिनसों ऐसे शोभित भये जैसे अमरावतीमें देवतानसों इंद्र शोभित होयहै ॥ ४ ॥ तब श्रीकृष्णके बुलायबेसों नंदादिक और वृषभानुआदिक और श्रीदामादिक सब गोप आयेहैं ॥ ५ ॥ ऐसेही यशोदादिक और राधिकाजी और सब व्रजकी स्त्री पालकी तथा रथनमें बैठके बडी प्रसन्न है द्वारकाको आईहै ॥ ६ ॥ फिर बुलायेसों पुत्रनको संग लैके धृतराष्ट्र सब कौरवनसमेत द्वारकामें आयेहैं ऐसेही औरभी सब राजा आयेहैं ॥ ७ ॥ और युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन, नकुल, सहदेव, ये सब द्रौपदीसहित वनमेंसों आयेहै ॥ ८ ॥ और श्रीकृष्णने नारदजीको भेजके बुलवाये सो इंद्रादिक आठौ दिक्पाल, आठौ वसु और बारहू सूर्य, सनत्कुमार,

उग्रसेनस्तुराजर्षिर्ऋषिभिर्वेदपारगैः ॥ यादवैश्चामरावत्यां रेजे शक्र इवामरैः ॥ ४ ॥ आहूताः कृष्णचन्द्रेण गोपा नन्दादयस्ततः ॥ वृषभानुवराद्याश्च श्रीदामाद्याः समाययुः ॥ ५ ॥ यशोमतीराधिकाद्याश्चान्याः सर्वा व्रजस्त्रियः ॥ द्वारकामाययुः प्रीताः शिबिकाभी रथैरपि ॥ ६ ॥ आहूतो धृतराष्ट्रस्तु कौरवैश्च सुतैर्युतः ॥ आजगाम कुशस्थल्यां नृपाश्चान्ये समागताः ॥ ७ ॥ युधिष्ठिरो भीमसेनश्चार्जुनो नकुलस्तथा ॥ सहदेवो वनादेत्याजग्मुर्भार्यया सह ॥ ८ ॥ श्रीकृष्णेन समाहूताः प्रेषयित्वा च नारदम् ॥ शक्राद्या लोकपाला वसवो रवयस्तथा ॥ ९ ॥ यज्ञेसनत्कुमाराश्च रुद्राश्चैकादशापि हि ॥ मरुद्गणाश्च वेताला गंधर्वाः किन्नरास्तथा ॥ १० ॥ विश्वेदेवाश्च साध्याश्च सर्वे विद्याधरास्तथा ॥ देवाश्च देवपत्न्यश्च गंधर्व्योऽप्सरसस्तथा ॥ ११ ॥ आजग्मुर्द्वारकां राजन्कृष्णदर्शनकांक्षया ॥ कैलासाच्च समाहूतः सर्वमंगलया शिवः ॥ १२ ॥ सुतलाद्दैत्यवृन्दैश्च प्रह्लादो बलिरेव च ॥ विभीषणो भीषणश्च मयो बल्वल एव च ॥ १३ ॥ जांबवान्दंष्ट्रिभिः सार्द्धं हनूमान्वानरैर्युतः ॥ पक्षिभिः पक्षिराट् तत्र तथा सर्पैश्च वासुकिः ॥ १४ ॥ धेनुभिः सहिता राजन्धेनुरूपधरा धरा ॥ मेरुः शैलैर्हिमगिरिर्वटः साक्षाद्द्रुमैर्वृतः ॥ १५ ॥ रत्नाकरा रत्नयुतानदीभिः स्वर्धुनी तथा ॥ तीर्थैः सर्वैश्च राजेंद्र तीर्थराजश्च पुष्करः ॥ १६ ॥ एते सर्वे समाहूता आजग्मुर्मुदिताः क्रतौ ॥ ततः कृष्णेन चाहूता व्रजभूमिः समागता ॥ १७ ॥ कृष्णयज्ञोत्सवं द्रष्टुं यमुना शमनस्वसा ॥ सर्वान्दृष्ट्वाऽगतान्प्रीतो वासयामास चाहुकः ॥ १८ ॥

ग्यारहू रुद्र, मरुद्गण, वेताल, गंधर्व, किन्नर, विश्वेदेवा, साध्यदेवता, सब विद्याधर, देवता और देवपत्नी, गंधर्व अप्सरा ये सब हे राजन ! श्रीकृष्णके दर्शनकी इच्छासों आयेहैं और कैलाससों बुलाये शिवजी सर्वमंगलाजीको लैके आयेहै ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ और सुतल लोकमेंसों दैत्यनके वृंद प्रह्लाद, बलि, विभीषण, भीषण, मय, बल्वल ॥१३॥ और सब दाढवारेनको संग लैके जांबवान्, वानरनको संग लैके हनुमान्, पक्षिनको संग लैके गरुड, सर्पनको संग लैके वासुकि॥१४॥ सब गउनके संग लैके गऊरूप बनके भूमि, पर्वतनको संग लैके हिमालय और सब वृक्षनके संग वटवृक्ष ॥ १५ ॥ रत्नसहित सब समुद्र, नदीनको संग लैके यमुना गंगा और सब तीर्थनको संग लैके पुष्करजी ॥ १६ ॥ ये सब उग्रसेनके यज्ञमें बुलायेसों आयेहै तब कृष्णकी बुलाई व्रजभूमि आई है ॥ १७ ॥ और या यज्ञोत्सव देखबेको यमुनाजीसहित यमराजजी आयेहैं तिनको आयो देखके

प्रसन्न हैके उग्रसेनने सबनको निवास दियेहैं ॥ १८ ॥ शिबिरनमें, मंदिरनमें, विमाननमें और बगीचानमें निवास करतेभयेहैं. या यज्ञमें व्यासजी, ब्रह्माजी और ऋषि बकदाल्भ्यजी आचार्य बनेहैं ॥ १९ ॥ और जिनको पहले निमंत्रण कियो हो वो सब ऋषि बरण कियेहैं तब हे नृप ! श्रीकृष्णकी इच्छासों अनिरुद्धने तीन रूप बनाये हैं, एक ब्रह्माजीको और एक चंद्रमाको और एक अपनो इन तीन रूपनको धारण करके शोभित भयेहैं तब अनिरुद्धजीकी या लीलाको देखके सब देवता और यादव ॥ २० ॥ २१ ॥ परस्पर कानकानमें कहतेभयेहैं तब श्रीवेदव्यास उग्रसेनसों बोलेहैं कि, हे यादवश्रेष्ठ ! आप सुनौ ॥ २२ ॥ सब राजा तथा ब्राह्मण अपने अपने स्थानमें यथावत् बैठेहैं इनमेंसो चौसठ दंपती (मायापति) गोमतीके तटपे जाओ ॥ २३ ॥ सो मेरे कहेके अनुसार गोमतीको जलको लाओ अदितिसहित कश्यप, अरुंधतीसहित वशिष्ठ ॥ २४ ॥ कृपीस

शिबिरेषुमंदिरेषुविमानेषुवनेषुच ॥ अथाचार्यःकृतोव्यासोबकदाल्भ्योविधिर्यथा ॥ १९ ॥ ऋत्विजश्चकृतादिव्यायेपूर्वंनिमंत्रिताः ॥ अथयज्ञेऽनिरुद्धस्तुश्रीकृष्णस्येच्छयानृप ॥२०॥ विधेर्विधोश्चस्वस्यापिकृत्वारूपत्रयंबभौ ॥ दृष्ट्वालीलांकार्ष्णिजस्यदेवाश्चयदवोनृपाः ॥ २१ ॥ विस्मिताःकथयामासुःकर्णंकर्णेपरस्परम् ॥ व्यासःप्रत्याहराजानंशृणुयादवसत्तम ॥ २२ ॥ उपविष्टानृपाविप्रायथास्थानेविभागशः ॥ चतुष्षष्टिदंपतीनांयांतुवैगोमतीतटे ॥ २३ ॥ आहर्तुंसलिलंतस्यामयादिष्टंयथोचितम् ॥ अदित्याःकश्यपश्चैववसिष्ठोऽरुंधतीयुतः ॥ २४ ॥ द्रोणाचार्यस्तुकृप्याचह्यत्रिश्चैवानसूयया ॥ रुक्मिण्याकृष्णचन्द्रस्तुरेवत्यारामएवच ॥ २५ ॥ मायावत्याचप्रद्युम्नउषयाकार्ष्णिजस्तथा ॥ सुभद्रयार्जुनश्चैवसांबोलक्ष्मणयातथा ॥ २६ ॥ तथाहेमांगदाद्याश्चस्वांस्वांस्वस्वभार्यया ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ एवंतेव्यासवचनात्सपत्नीकाद्विजानृपाः ॥ २७ ॥ आनेतुंगोमतीतोयंप्रययुर्वद्धपल्लवाः ॥ देवकीरोहिणीकुन्तीगांधारीचयशोमतीम् ॥ २८ ॥ पुरस्कृत्यनिजप्राक्तकुंभोपिव्याययुतोहरिः ॥ तथारामस्तुरेवत्यासस्त्रीकायेपिभूमिपाः ॥ २९ ॥ सुवर्णरौप्यकलशैःसपुष्पैश्चसपल्लवैः ॥ रुक्मिण्यासहितंयांतंकृष्णंदृष्ट्वासमागमे ॥ ३० ॥ नारदःकलहंकर्तुंसत्यभामागृहंययौ ॥ दृष्ट्वैकाकिंहरेर्भार्यासंपुष्टःसत्यब्रवीत् ॥ ३१ ॥

हित द्रोण, अनसूयासहित अत्रि, रुक्मिणीसहित कृष्ण, रेवतीसहित बलदेवजी ॥ २५ ॥ मायावतीसहित प्रद्युम्न, ऊषा अनिरुद्ध सुभद्रा अर्जुन, लक्ष्मणा सांब ॥ २६ ॥ ऐसेही हेमांगदादिक सब अपनी अपनी पत्नीनको संग लैके चौसठ मनुष्य जल भरनेको जाइ । गर्गजी कहैहैं, ऐसे व्यासजीके कहेसो सब सपत्नीक ब्राह्मण ॥ २७ ॥ गोमतीके जल लायवेके पंचपल्लवनको बाँधके गयेहैं, देवकीको, रोहिणीको, कुंतीको, गांधारीको और यशोमतीको आगे करके रुक्मिणीसहित भगवान्ने सुवर्णके कलश जल भरवेको लियेहैं ऐसेही रेवतीसहित बलदेवजीने कलश लियेहैं तैसेही और सब राजानने जलकेलिये अपनी अपनी पत्नी सहित सबनने जलके भरनेको कलश लियेहैं ॥ २८ ॥ २९ ॥ पंचपल्लव सहित चाँदी, सोनेके कलश लियेहैं तब सबके आगे रुक्मिणीसहित श्रीकृष्णको जातो देखके ॥ ३० ॥ नारदजी कलह करवेको परमें इकली

सत्यभामाको देखके गये हैं सत्यभामाने नारदजीसों पूछी तब नारदजीने कही कि, ॥ ३१ ॥ हे सत्यभामे ! तुमारा तो घरमे कछु आदर नहीं है, देखो ! गोमतीके जल भरवेको कृष्ण गये तो रुक्मिणीको संग लेके गयेहैं तुमे संग नहीं लेगये ॥ ३२ ॥ बहुतनने जाको माँगी पारिजातकी हरनवारी कृष्णसंकल्पकी करनवारी मणि युक्त मानिनी ॥ ३३ ॥ ऐसी वरारोहा तुमको छोडके रुक्मिणीसहित श्रीकृष्ण शोभा देखवेको गयेहैं ॥ ३४ ॥ सो हे माताजी ! जाको प्रद्युम्न पुत्र है और अनिरुद्ध नाती है वो रुक्मिणी अपनी बातको और अपने मानको दिखावैहै ॥ ३५ ॥ गर्गजी कहेहैं कि, या प्रकार रुक्मिणीसहित प्राणनाथको जल भरनेको गये सुनके सत्यभामाजी रोषमें भरगई और रोवने लगी तब तो भगवान् सुनके और ये नारदको कर्म है ऐसो जानके ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ वाही समय एक रूपसों सत्यभामाके पास पधारे और सब बातोंके जाननवारे

॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ आदरंसदनेनास्तिसत्राजितसुतेतव ॥ गतःकृष्णस्तुरुक्मिण्याचाहर्तुंगोमतीजलम् ॥ ३२ ॥ बहुभिर्याचितास्त्वंतुपारिजातकहारिणी ॥ कृष्णसंकल्पकरिणीमणियुक्ताचमानिनी ॥ ३३ ॥ ईदृशींत्वांवरारोहांगरुडोपरिगामिनीम् ॥ विहायभैष्म्याश्रीकृष्णःशोभांद्रष्टुंजगामह ॥ ३४ ॥ यस्याःपुत्रश्चप्रद्युम्नोयस्याःपौत्रोनिरुद्धकः ॥ सादर्शयतिभोमातर्वार्तामानंचगौरवम् ॥ ३५ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वाप्राणनाथंरुक्मिण्यासहितंगतम् ॥ ३६ ॥ रुरोददुःखिताराजन्सत्यभामारुपान्विता ॥ तदैवकृष्णोभगवान्ज्ञात्वानारदचेष्टितम् ॥ ३७ ॥ सत्यभामागृहंशीघ्रंरूपेणैकेनचागमत् ॥ गत्वाप्रत्याहवचनंसर्वज्ञातारमेश्वरः ॥ ३८ ॥ नगतोहंसमाजेवैरुक्मिण्यासहितःप्रिये ॥ आगतोभोजनंकर्तुंगतोरामश्चभार्यया ॥ ३९ ॥ इतितद्वाक्यमाकर्ण्यसत्यभामामुदंगता ॥ भीतोनारदउत्थायगेहंचान्यंजगामह ॥४०॥ गत्वा जांबवतीगेहंतस्याग्रेसर्वमब्रवीत् ॥ श्रुत्वाहसंतीसाप्राहमृषामावदहेमुने ॥ ४१ ॥ करोतिशयनंगेहेश्रीनाथोभोजनांतरे ॥ इतिश्रुत्वाशंकितस्तुत्वरंनिर्गत्यनारदः ॥ ४२ ॥ मित्रविंदागृहेगत्वाप्रत्युवाचविलोकयन् ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ नगतासिनृपस्थानंमातर्गेहेस्थितासिकिम् ॥ ४३ ॥ आहर्तुंगोमतीतोयंप्रयातियत्रमाधवः ॥ भैष्मीसत्यांजांबवतींसहनेष्यतितत्रवै ॥ ४४ ॥ ॥ मित्रविंदोवाच ॥ ॥ केशवस्यप्रियाःसर्वांगतासौयांविहायच ॥ सानजीवतिकृष्णस्तुपौत्रंलालयतिगृहे ॥ ४५ ॥

भगवान् बोले कि, ॥ ३८ ॥ हे प्रिये ! मै तुमारे विना समाजमें रुक्मिणीके संग नहीं गयो भोजन करवेको आयोहूं भाई दाऊजी अपनी पत्नीसहित गयेहैं ॥३९॥ ये बात सुनके सत्यभामा प्रसन्न भई सोई तो डरकेमारे नारद उठके और घरमें चलेगयेहैं ॥४०॥ सो जांबवतीके पास जायके वोही सब बात कही सोई हँसके जांबवतीने कही कि, मुने ! मिथ्या मत बोलो ॥ ४१ ॥ नारदजी ! देखो भगवान् तो अभी भोजन करके सोगयेहैं ये सुनके नारद बडे शंकित भयेहैं और बडी जलदी घरके बाहिर निकसे ॥ ४२ ॥ फिर मित्रविंदाके घरमें गये चारों तरफ देखके बोले अजी मित्रविंदाजी ! तुम नहीं गईहो राज्यस्थानमें वा तुम तो घरमेंही बैठीहो देखो, रुक्मिणी, सत्यभामा, जांबवती ये तो तीनों कृष्णके संग गोमतीजीके पानी भरवेको गई है तुमें नहीं लेगयेहैं ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ तब मित्रविंदाने कही कि, ऋषीजी ! कहूँ बावरे तो नहीं होगयेहो ?

देखो कृष्णके सब भार्या प्यारी हैं, जिनें छोडके कभी नहीं जायहैं, जाय छोडके जाय वोही नहीं जीवे सो देखो प्राणनाथ तो नातीको खिलाय रहेहें ॥ ४५ ॥ तब तो मुनि उठके सब रानीनके घरमें गयेहैं पर सबने येही कही कि, कृष्ण तो घरमें हैंहैं ॥ ४६ ॥ फिर नारदजी विचारके गोपीनके पास गयेहैं, पहलेही बात कहिवेको राधिकाजीके पास गयेहैं ॥ ४७ ॥ तो सब गोपीन सहित राधिकाजीके संग चोपर खेलते भगवान्को देखके तब यहाँसों और स्थानमें जायबेको विचार कियो ॥ ४८ ॥ सोही तो भगवान् उठे नारदको हाथ पकर वहाँही बैठारके यथाविधि पूजन कियो ॥ ४९ ॥ और आप बोले कि, हे विप्रेंद्र! कहा करोगे ? मोहके वश हैके क्यों भ्रमण करोहो, मैंने पत्नीनके घर घरमें तौको देखो सो तुम बावरे तो नाये हैगयो ॥ ५० ॥ हे ऋषिसत्तम ! मैंने तुमारेही डरके मारे रूप धारण किये, हे विप्र ! आपको दंड तो मैं दे नहीं सकोहों

ततोमुनिःसमुत्थायसर्वाणिमंदिराणिच ॥ बभ्रामकृष्णभार्याणांसकृष्णानीत्यमन्यत ॥ ४६ ॥ पुनर्विचार्यदेवर्षिर्गोपीनांमंदिराणिच ॥ प्रययौ कथितुंवार्तांराधिकायैचमानद ॥ ४७ ॥ तत्रदीव्यंतमक्षैश्चराधयानंदनन्दनम् ॥ गोपीभिःसहितंवीक्ष्यतत्रऋषिर्गंतुंमनोदधे ॥ ४८ ॥ तदैवकृष्ण उत्थायगृहीत्वापाणिनामुनिम् ॥ तत्रैवस्थापयामासपूजयित्वायथाविधि ॥ ४९ ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ किंकरिष्यसिविप्रेंद्रवृथा भ्रमसिमोहतः ॥ गेहेगेहेस्वपत्नीनांमयात्वंतुविलोकितः ॥ ५० ॥ मयाधृतानिरूपाणित्वद्भयादृषिसत्तम ॥ नाहंदास्येदमन्तुभ्यंविप्रत्वात्प्रा र्थयाम्यहम् ॥ ५१ ॥ सर्वेषांचैवदेवोहंममदेवाश्चब्राह्मणाः ॥ येद्रुह्यंतिद्विजान्मूढाःसंतितेममशत्रवः ॥ ५२ ॥ येपूजयंतिविप्रांश्चमत्प्रभावेन भूजनाः ॥ तेभुंजंतिसुखंचात्रह्यंतेयास्यंतितत्पदम् ॥ ५३ ॥ माययाममपुर्यांत्वंमोहितश्चापिमाखिदः ॥ सर्वेमुह्यंतिदेवर्षेब्रह्मरुद्रादयःसुराः ॥ ५४ ॥ इतितद्वाक्यमाकर्ण्यसंस्तुतःसमहामुनिः ॥ आययौमण्डपेतूर्णंभूत्वाऋत्विग्जनैर्वृते ॥ ५५ ॥ अथतेगोमतीतीरंजग्मुःकृष्णादयोनृपाः ॥ रुक्मि ण्याद्याःस्त्रियश्चैववादित्रैर्विविधैरपि ॥ ५६ ॥ नारीणांचैववृन्देनगायंतीनांहरेर्यशः ॥ वलयानांनूपुराणांशब्दोऽभून्मधुरध्वनिः ॥ ५७ ॥ पूज यित्वाजलसुरान्व्यासःसार्द्धमयामुनिः ॥ कलशंतोयसंयुक्तमनसूयाकरेददौ ॥ ५८ ॥

क्योंकि तुम ब्राह्मण हौ यासो मैं प्रार्थना करोहो ॥ ५१ ॥ सबको देवता तो मैं हौ और मेरे देवता ब्राह्मण हैं, जे मूढ कोई ब्राह्मणनते द्रोह करैहैं वे मेरे शत्रु हैं ॥ ५२ ॥ जे मनुष्य मेरी भावनासो ब्राह्मणनको पूजन करैहैं वे मनुष्य या लोकमें तो सुख भोगैहैं और अंतमें मेरे पदको जायहैं ॥ ५३ ॥ हे देवर्षे ! तू मेरी पुरीमें आयके मेरी मायामें मोहित भयोहै सो खेदको मत पाओ, मेरी मायामें सब ब्रह्म रुद्रादिक देवताहू मोहित होयहै ॥ ५४ ॥ या प्रकार भगवानके कहेको सुनके सम्यक् स्तुति कियो जो महामुनि है सो चुपहैके ऋत्विक् जनन करके युक्त जो मंडप है तामें आयोहै ॥ ५५ ॥ तदनंतर कृष्णादिक सब राजा गोमतीके किनारेपै आयेहैं और अनेक बाजे बजते रुक्मिणी आदिक सब स्त्रीजनहू आई हैं ॥ ५६ ॥ भगवद्गुणनको गान करैं ऐसी नारीनके कंकणनकी तथा नूपुरनकी मधुर ध्वनि भई है ॥ ५७ ॥ तब श्रीवेदव्यास मेरे संग जलके देवतानको

पूजन करके जलको भरे कलशको अनसूयाके हाथमें देतभयेहैं ॥ ५८ ॥ तब रेवत्यादिक सब नारीनने जलके घड़ हाथमें लीनेहैं तब इनके कोमल हाथनसों कलश उठे नहीं हैं ॥ ५९ ॥ जिनको पुष्पमालानकोहू बोझ लगती है वे कहाँ जलपूर्ण कलशनको कैसे उठावैंहें ! तब तो सब राजनकी रानी परस्पर हाँसी करनलगीहैं ॥ ६० ॥ कि, कलशनके विना यज्ञस्थानमें कैसे जायँगी ऐसे वे सब रुक्मिणी आदिक स्त्रीजन अपने मनमें भगवान्‌से प्रार्थना करनलगीहैं ॥ ६१ ॥ हे श्रीकृष्ण ! हे जगन्नाथ ! हे भक्तनके कष्टके नाश करनवारे ! आप बडे बलवान् चक्रके धरनवारे हो सो आप या समय हमारे या कष्टको दूर करौ ऐसो बल हमको देउ जो हम इन जलके कलशनको उठावैं ॥ ६२ ॥ ऐसे कहिके इनने कलश उठाये तो इनके बोझ न जाने कहाँ गये तब भाररहित विन कलशनको शिरपै धरके मणिके,मोतिनके आभूषण जिन शिरनमें पहररही हीं विनी मस्तकनपै कलशनको धरके यज्ञस्थानको गईहैं ॥ ६३ ॥ याप्रकार वे स्त्री अपने पतिनके संग यज्ञवाटको गईहैं, जहाँ भेरी, शंख और पणव आदि बाजे सब बजरहेहैं ॥ ६४ ॥ हे नृप ! गोमतीके जलको लेके

ततश्चजगृहुःकुम्भान्रेवत्याद्याश्चयोषितः ॥ नोत्थिताःकलशाःसर्वेकोमलैश्चकरैरपि ॥ ५९ ॥ धारयंतिकथंकुम्भम्पुष्पभारेणपीडिताः ॥ ततश्चजहसूराज्ञ्योनृपाणांचपरस्परम् ॥ ६० ॥ कथंयामोयज्ञवाटमित्यूचुःकलशैर्विना ॥ रुक्मिण्याद्यास्त्रियःसर्वास्ताऊचुर्मनसाहरिम् ॥ ॥ ६१ ॥ हेश्रीकृष्णजगन्नाथभक्तकष्टविनाशन ॥ सबलस्त्वंचक्रधारीह्यस्मान्पालयसंकटे ॥ ६२ ॥ एवंब्रुवंत्योजगृहुःसकलान्भारवर्जितान् ॥ स्वेस्वेशिरसिसंधायसंयुक्तेमणिमौक्तिकैः ॥ ६३ ॥ यज्ञवाटंसमाजग्मुर्नार्य्यःशीघ्रंसभर्तृकाः ॥ यत्रभेर्यश्चशंखाद्यावाद्यंतेपणवादयः ॥ ६४ ॥ आनीयगोमतीतोयंप्रापितास्तत्रतेनृप ॥ श्यामकर्णेनसहितायत्रवैयादवेश्वरः ॥ ६५ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डेगोमतीजलानयनं नामपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५५ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ उग्रसेनस्ययज्ञेवैहयमेधेमहात्मनः ॥ तस्यासन्परिचर्य्यायांबांधवाःप्रेमबंधनाः ॥ १ ॥ ततश्चकारयदुराण्नानाकर्मसुबांधवान् ॥ भीमंमहानसाध्यक्षंधर्मंधर्मस्यपालने ॥२॥ शुश्रूषणेसतांजिष्णुंनकुलंद्रव्यसाधने ॥ पूजनेसहदेवंचधनाध्यक्षंसुयोधनम् ॥३॥ दानेचदानिनंकर्णंद्रौपदींपरिवेषणे ॥ रक्षायांकृष्णपुत्रान्वैह्यष्टादशमहारथान् ॥४॥ युयुधानंविकर्णंचहृदीकंविदुरंतथा ॥ अक्रूरमुद्धवंचैवनानाकर्मसुभूपतिः ॥५॥ कृत्वाप्रत्याहश्रीकृष्णंदेवत्वंकिंकरिष्यसि ॥ श्रुत्वाकृष्णउवाचाथब्राह्मणानांकरोम्यहम् ॥६॥

यज्ञस्थानमें आई हैं, श्यामकर्ण अश्व जिनके संगमें है वे सब जहाँ उग्रसेन है तहाँ आईहैं ॥ ६५ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डेभाषाटीकायां पंचपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५५ ॥ गर्गजी कहेहैं कि, श्रीमहात्मा उग्रसेनके हयमेधयज्ञमें वा महात्मा उग्रसेनके बांधव यज्ञकी परिचर्यामें होतभयेहैं ॥ १ ॥ तब श्रीउग्रसेनजीने यज्ञके सब काम अपने बांधवनहीं करवायेहैं, महानस (पाकशाले) के मालिक भीमसेनको कियेहैं, धर्मके पालनमें धर्मराजको नियत कियेहैं ॥ २ ॥ सत् पुरुषनके सत्कार करनेमें अर्जुनको नियत कियेहैं, द्रव्यके साधनमें नकुलको नियत कियेहैं, पूजन करनेमें सहदेवको नियत कियेहैं, धनाध्यक्षके कामपै दुर्योधनको ॥ ३ ॥ दानके काममें दानी कर्णको नियत कियोहै, द्रौपदीको परोसनमें नियत करीहै, रक्षाके काममें कृष्णके पुत्र अठारह महारथीनको ॥ ४ ॥ और सात्यकि, विकर्ण, अक्रूर, विदुर, कृतवर्मा, उद्धव इत्यादिनको अनेक कामनमें स्थापन कियेहैं ॥ ५ ॥ फिर उग्रसेनने श्रीकृष्णसों

कहीहैं कि, लाला ! तू कहा करैगो ? तब भगवानने कही कि, नानाजी मैं तो ब्राह्मणनके चरणनके धोयबेपै रहोंगो येही काम मैंने पहले युधिष्ठिरके राजसूयमें इंद्रप्रस्थमेंहू कियो हो, ये सुनके ब्रह्मादिक और सब मनुष्य हँसैहैं ॥ ६ ॥ ७ ॥ गर्गजी कहैहैं कि, ऐसे श्रीकृष्ण कहिके सब ऋषिजननके और तपस्विनके पाँवनको धोयधोयके सबको आसननपै बैठायेहैं ॥ ८ ॥ तब वे वस्त्र पहरके चारह २ तिलक लगायके आसननपै बैठे, दिव्याभूषणनसों भूषित भये है ॥ ९ ॥ अनेक मतनकी मालानको पहरे कर्पूरयुक्त बीडानको खायके विराजमान भये वे ब्राह्मण ऐसे दीखे है जैसे देवता बैठे होंय ॥ १० ॥ तदनंतर अर्थी, भिक्षु विरक्त और बुभुक्षित जे दूरदूर देशसों आयेहैं वे सब याचना करैहै कि ॥ ११ ॥ हे नरेश्वर ! अन्न देउ अन्न देउ अन्न देउ और उपानह, पात्र और वस्त्र देउ, दुशाला देउ ॥ १२ ॥ मुनिवृंदनसों युक्त जो उग्रसेनको यज्ञ है ताके विषयमें तिन भिक्षुकनकी वाणीको सुनके यदुस

पादप्रक्षालनंराजन्निंद्रप्रस्थेकृतंमया ॥ इतिश्रुत्वाचब्रह्माद्याजहसुर्भूजनास्तथा ॥ ७ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वाभगवान्साक्षादृषीणांच तपस्विनाम् ॥ पादप्रक्षालनंकृत्वास्थापयामासतान्नृप ॥ ८ ॥ आसनेषूपविष्टास्तेवासांसिपरिधायच ॥ तिलकैर्द्वादशैर्युक्तादिव्याभरणभूषिताः ॥ ९ ॥ नानामतानांमालाभिर्युक्ताःकर्पूरवीटकान् ॥ भुक्त्वातेरेजिरेयज्ञेदेवाइवमहीसुराः ॥ १० ॥ ततोर्थिनोभिक्षवश्चविरक्ताश्चबुभुक्षिताः ॥ कुर्वंतियाचनांसर्वेदूरदेशात्समागताः ॥ ११ ॥ ददस्वान्नंददस्वान्नंददस्वान्नंनरेश्वर ॥ उपानहश्चपात्राणिवस्त्राणिकंबलानिच ॥ १२ ॥ उग्रसेनस्ययज्ञेवैमुनिवृंदैर्नृपैर्वृते ॥ तेषांतांकरुणांवाचंनिशम्ययदुसत्तमः ॥ १३ ॥ सुवर्णंरजतंचैववस्त्राणिभाजनानिच ॥ गजाश्वरथगोछत्रशिबिकादीनिहर्षितः ॥ १४ ॥ येषांयेषांप्रियंयद्वैतेभ्यस्तेभ्योददौनृपः ॥ उग्रसेनःकृतस्नानःक्रतुकर्मणिदीक्षितः ॥ १५ ॥ असिपत्रव्रतधरोरुचिमत्याबभौततः ॥ विप्राविंशतिसाहस्रावेदशास्त्रविशारदाः ॥ १६ ॥ व्यासगर्गादयश्चैवकारयंतिक्रतूत्तमम् ॥ हस्तिशुण्डासमाधाराश्चाग्निकुंडेपपातह ॥ १७ ॥ घृतस्यचनृपश्रेष्ठमुनिभिर्ब्रह्मवादिभिः ॥ तद्यज्ञेकृष्णकृपयाह्यनलोजीर्णतांययौ ॥ १८ ॥ ततःप्रोवाचवह्निस्तु सर्वेषांशृण्वतांनृपम् ॥ प्रसन्नोहंप्रसन्नोहंपशुंममप्रयच्छवै ॥ १९ ॥ निशम्यचाग्नेर्वचनंसभायांश्रीयादवेन्द्रोमुनिभिःसमंच ॥ बद्धंतुरंगंतपनीययूपेहिरण्यदाम्नाचतमाहभूपः ॥ २० ॥

त्तम उग्रसेनजी ॥ १३ ॥ सुवर्ण, चाँदी, वस्त्र, आभूषण, पात्र, हाथी, घोडे, रथ, गऊ, छत्र और पालकी आदि जो जो माँगेहैं वोही २ दियेहैं ॥ १४ ॥ और जिनको जिनको जो जो प्रिय पदार्थ है तिनको वोही वोही वस्तु दीनीहै, फिर उग्रसेनजीने स्नान कियोहै, यज्ञकर्ममें दीक्षा लियीहै ॥ १५ ॥ तब रुचिमती रानी सहित असिपत्रव्रत धरचोहै वा समय बीसहजार वेद, शास्त्रमें विशारद जे ब्राह्मण ॥ १६ ॥ व्यास, गर्गादिक है, वा यज्ञोत्तमको करावते भयेहैं वा समय अग्निकुंडमें हे नृपश्रेष्ठ ! धारा घीकी हाथीकी सूँडके समान मोटी ब्रह्मवादी मुनिननें गिरवाईहै ये सब श्रीकृष्णकी कृपा ही, जा घीकी धाराके पानेसें अग्निको अजीर्ण हैगयोहै ॥ १७ ॥ १८ ॥ तब सबके सुनते सुनते अग्निदेवने उग्रसेनसों कहीहै कि, महाराज मैं प्रसन्नहूँ प्रसन्नहूँ अब मेरेलिये पशु निवेदन करौ ॥ १९ ॥ तब श्रीयादवेंद्र उग्रसेनजी अग्निदेवताके कहे वचनको सुनके सब ऋषिमंडली सहित सुवर्णके

यज्ञस्तंभमें सुवर्णके रस्संसे बँधे घोडेको देखके उग्रसेननें कहीहै ॥ २० ॥ कि, हे हय ! तुम अग्निके कहेको सुनौ यज्ञ शुद्ध पशु तुमको घृतधारसे तृप्त भयो भी अग्नि भक्षण
करैगो ॥ २१ ॥ तब उग्रसेनके कहेको ये श्यामकर्ण घोडा सुनके प्रसन्न हैके श्रीकृष्णको दर्शन करतो अपने मुखको हलावतो भयो ॥ २२ ॥ तब अश्वके मतको जानके वेदव्यासजी
गर्गजी कहैहै कि, मेरेसहित मुनिनकरके युक्त वा मंडपमें और श्रीकृष्ण आदि राजानसों युक्त जो वो मंडप है तामें ॥ २३ ॥ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और यज्ञको देखनेकी इच्छा
वारे शूद्रनकरके सहित और स्त्रीनकरके युक्त वा यज्ञस्थलमें वेदव्यासजीने दाऊजीसे कही कि ॥ २४ ॥ हे बलभद्रजी ! आप खड्गको लेके उठो और अग्निकी प्रसन्नताके लिये बहुत
शीघ्रतासे या घोडेकी ग्रीवाको छेदन करो ॥ २५ ॥ हे रामजी ! या घोडेके वध होनेपर पश्चात् हवन भयेपै या यज्ञमें यज्ञावतारी कृष्ण प्रसन्न होयँगे ॥ २६ ॥ गर्गजी बोले याप्र

॥ ॥ उग्रसेनउवाच ॥ ॥ अग्नेर्वाक्यंशृणुहयशुद्धंत्वांचपशुंकृतोः ॥ भक्षयिष्यतिवह्निस्तुघृतैस्तृप्तोपिचाध्वरे ॥ २१ ॥ नृपस्यवचनंश्रु
त्वाश्यामकर्णस्तुरंगमः ॥ कृष्णंविलोकयन्प्रीतोकंपयामासस्वाननम् ॥ २२ ॥ ततोहयमतंज्ञात्वावेदव्यासःसमंमया ॥ मण्डपेमुनिभिर्युक्ते
श्रीकृष्णाद्यैर्नृपैर्वृते ॥ २३ ॥ ब्राह्मणैःक्षत्रियैर्वैश्यैःशूद्रैर्यज्ञदिदृक्षुभिः ॥ स्त्रीभिर्युतंप्रलंबघ्नंप्राहद्वैपायनोमुनिः ॥ २४ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ ॥
उत्तिष्ठबलभद्रत्वंकरवालंप्रगृह्यच ॥ छिंधिकंवाजिनश्चाग्नेःप्रीतयेह्यधुनात्वरम् ॥ २५ ॥ निहतेतुरगेरामहवनेचकृतेसति ॥ यज्ञावतारःकृष्ण
स्तुप्रसन्नोभवतिकर्तौ ॥ २६ ॥ - ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ एवंव्यासवचःश्रुत्वाबलःखङ्गेनसत्वरम् ॥ शिरोहयस्यचिच्छेदतच्छिरोगगनंययौ ॥
॥ २७ ॥ गत्वोर्द्ध्वंनृपशार्दूललीनंतद्रविमंडले ॥ देवदैत्यनराःसर्वेतद्दृष्ट्वाविस्मयंगताः ॥ २८ ॥ हयस्यहृदयेशूलंनिजघानहसन्हरिः ॥ मक
रंदसमाधाराराजँस्तत्रविनिर्गताः ॥ २९ ॥ ततश्चनिर्गताज्योतिस्तुरगस्यकलेवरात् ॥ पश्यतांचैवसर्वेषांविवेशमधुसूदने ॥ ३० ॥
पश्चाद्भूत्वाचकर्पूरंशरीरंपतितंपशोः ॥ गात्राच्च्युतायथाराजन्विभूतिःशंकरस्यच ॥ ३१ ॥ दृष्ट्वाचकर्पूरसमूहमद्भुतंसभांसुगंधेनवृतांचद्वार
काम् ॥ व्यासादयस्तेमुनयःप्रहर्षिताऊचुर्नृपंयज्ञेतुकर्मणिस्थितम् ॥ ३२ ॥ दिष्ट्यातेनृपशार्दूलसफलोभूत्क्रतूत्तमः ॥ कर्पूरेणापिहवनं
करिष्यामस्त्वंकुरु ॥ ३३ ॥

कार व्यासजीके कहेको सुनके बलदेवजीने खड्गसों वा पवित्राश्वको छेदन कियो है, सोई कटतेही वा घोडेको वो शिर उडके आकाशको गयोहै ॥२७॥ और वो शिर हे राजशार्दूल !
सूर्यमंडलमें लय हैगयोहै या बातको देखके सब देव, दैत्य, मनुष्यनके मनमें बडो भारी विस्मय भयोहै ॥ २८ ॥ तब भगवान्ने घोडेके हृदयमें एक त्रिशूल मारोहै तब याके हृदय
मेंसों मकरंदके समान धारा निकसीहै ॥ २९ ॥ फिर घोडेके शरीरमेंसे एक ज्योति निकसीहै सो सबनके देखते देखते मधुसूदनमें प्रवेश हैगईहै ॥ ३० ॥ फिर वो घोडेको शरीर
कपूर हैके गिरपरोहै जैसे गात्रसों च्युत शंकरके शरीरकी भस्म गिरै ॥ ३१ ॥ तब कपूरके समान याके शरीरको और कपूरके गंधसों भरगई सभाको और द्वारिकाको देखके व्यासा
दिक मुनिनने प्रसन्न हैके यज्ञमें बैठे राजासों कहीहै कि॥३२॥हे नृप ! आज बडो मंगल है तुमारो ये यज्ञ सफल भयो अब या कपूरसों हम हवन करेंगे और तुमभी हवन करो ॥ ३३ ॥

इतने वचन कहिके सब ऋत्विजननें वाही समय वा यज्ञकुंडमें वा कपूरको लेके पहले यज्ञेश्वरके नामसों हवन कियोहै ॥ ३४ ॥ सो हे नृप ! जा यज्ञमें श्रीमूर्तिमान् भगवान् यज्ञेश्वर चतुर्व्यूह रूपके धारण करनवारे पुत्रपौत्रन सहित आप विराजैहैं भला तहाँ कौनसी बात दुर्लभ है ॥ ३५ ॥ वा यज्ञमें मैंने इंद्रसों कही कि, हे शक्र ! या यज्ञमें या कपूरकी आहुतिको तुम ग्रहण करौ ॥ ३६ ॥ सो तुम आवो और उग्रसेनकी निवेदन कीनी या कर्पूराहुतिको ग्रहण करो अब आगे कलियुगमें ये दुर्लभ है जायगी ये सुनके इंद्रने मंद २ हँसके कहीहै ॥ ३७ ॥ कि, हे मुनिजन ! मै तुमारेही आगे राजा युधिष्ठिरके अश्वमेधमें याही कर्पूराहुतीको फिरहू पीओंगो और हस्तिनापुरमें कुल क्षय भये पीछे ब्राह्मण जो कर्पूराहुति देंयँगे वा कर्पूराहुतिको पान करोंगो ॥ ३८ ॥ य हरि इंद्रके कहेको सुनके सब मुनीश्वरनेने सत्य मानके वा यज्ञमें हे महाराज ! सब देवतानको

इत्युक्त्वाऽऋत्विजःसर्वेयज्ञकुंडेचतत्क्षणात् ॥ घनसारंहिजुहुवुःपूर्वंयज्ञेश्वरायच ॥ ३४ ॥ यत्रयज्ञेश्वरःकृष्णश्चतुर्व्यूहधरःपरः ॥ रेजेपुत्रैश्चपौत्रैश्चतत्रकिंदुर्लभंनृप ॥ ३५ ॥ तस्मिन्यज्ञेमहेन्द्रायवचःप्रकथितंमया ॥ गृहाणशक्रयज्ञेस्मिन्कर्पूरस्याहुतिंविभो ॥ ३६ ॥ एहिराज्ञार्पितांचैनांकलावग्रेहिदुर्लभाम् ॥ इतिश्रुत्वावचनंशक्रःप्रोवाचसस्मितम् ॥ ३७ ॥ पुनर्गृह्णामिमुनयोधर्मराजक्रतूत्तमे ॥ कुलक्षयेगजपुरेप्रदत्तामाहुतिंद्विजैः ॥ ३८ ॥ इतिश्रुत्वाहरेर्वाक्यंसत्यंमत्वामुनीश्वराः ॥ सर्वान्देवान्नृपश्रेष्ठह्यध्वरेचाहुतिंददुः ॥ ३९ ॥ अन्येकेपिनजानंतिवज्रिणाकथितंचकिम् ॥ अग्नयेस्वाहेतिमन्त्रैश्चसर्वानेवाहुतीर्ददुः ॥ ४० ॥ कर्पूरहवनेनापिप्रीतंविश्वंचराचरम् ॥ उग्रसेनस्तुराजावैनिर्ऋणोभून्महाध्वरे ॥ ४१ ॥ यज्ञांतेऽवभृथस्नानमुग्रसेनोद्विजोत्तमैः ॥ कृष्णाद्यैर्यादवैर्भूपैस्तीर्थेपिण्डारकेकरोत् ॥ ४२ ॥ भार्ययासहितःस्नात्वावेदोक्तविधिनानृपः ॥ धृत्वाक्षौमांबरंरेजेयज्ञोदक्षिणयायथा ॥ ४३ ॥ देवदुंदुभयोनेदुर्नरदुंदुभयस्तदा ॥ उग्रसेनोपरिसुराःपुष्पवर्षंप्रचक्रिरे ॥ ४४ ॥ कारयित्वास्वधापानंप्राशयित्वायथाक्रमम् ॥ सर्वेभ्यश्चपुरोडाशंदत्त्वाशेषमथासृजत् ॥ ४५ ॥ उग्रसेनंचवंदिनस्तुष्टुवुर्वंदिनोमुदा ॥ ततोनीराजनंचक्रुर्देवक्याद्याश्चयोषितः ॥ ४६ ॥

आहुति दीनीहै ॥ ३९ ॥ और कोऊ नहीं जानतेभयेहैं कि, वज्रीने (इंद्रने) कहा कह्योहै " अग्नये स्वाहा " या मंत्रसों सब देवतानको जो आहुति दीनी ही ॥ ४० ॥ और जो वा कपूरके हवन करेते सब चराचरजगत प्रसन्न भयोहै ताको भी कोई नहीं जानतेभयेहैं तब उग्रसेन राजा-वा यज्ञको करके ऋणरहित भयेहै ॥ ४१ ॥ तब उग्रसेनने द्विजोत्तमनके संग यज्ञांतस्नान कियोहै कृष्णादिक यादव और सब राजानको संग लेके पिंडारक नामके तीर्थमें ये यज्ञांतस्नान कियोहै ॥ ४२ ॥ वेदमें कही विधिसों भार्यासहित स्नानकरके अपनी पत्नी सहित शोभित ऐसे भयेहै जैसे दक्षिणा पत्नीसहित क्षौमांबर धारण करे मूर्तिमान् साक्षात् यज्ञ शोभित होयहै ॥ ४३ ॥ आकाशमें देवतानके और धरतीमें मनुष्यनके नगाडे बजेहैं और सब देवताननें उग्रसेनके ऊपर पुष्प बरषायेहै ॥ ४४ ॥ तब स्वधापान करायके और चरु पुरोडाश प्राशन करके यज्ञको जो शेष है वो सबको दियोहै ॥ ४५ ॥ तब वंदीजनने

अनेक बाजे बजाये उग्रसेनकी स्तुति कीनी और देवकन्यादिक सब सौभाग्यवतीनने उग्रसेनको नीराजन (आर्ती) उतारोहै ॥ ४६ ॥ तब नीराजन किये पीछे उग्रसेननें उन सुवासिनीनको रत्नाभूषण मोहरसों लेके अनेक प्रकार दक्षिणा दीनीहै ॥ ४७ ॥ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां षट्पंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५६ ॥ ॥ गर्गजी कहैहैं कि, तब कृष्णने और भीमसेनने सब राजानको सत्कारपूर्वक भोजन करायो अनेकप्रकारके पदार्थनसों ॥ १ ॥ तदनंतर सब ब्राह्मणमात्रनको शष्कुली (इमरती, जलेबी), खीर, तंडुल (भात,) मालपूआ, सूप (दाल, कढी), और अत्युत्तम फेनी, घेवर आदिक पदार्थनसों बडे सत्कारसों सबनको भोजन करवायोहै ॥ २ ॥ सिखरिणी, घेवर, सुशक्तिका, सुपटिनी, दधिपूप, लप्सिका उत्तम घृतमें चंद्रसुहालिका, बडा लड्डू, पापड इत्यादिक पदार्थजातिनसों सबनको तृप्त कियेहैं ॥ ३ ॥ तामें कोई २ फल

अलंकारांश्चरत्नानिवस्त्राणिविविधानिच ॥ नीराजनांतेप्रददौताभ्यःप्रीतोनृपेश्वरः ॥ ४७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डेयज्ञपूर्तौनृपस्याभिषेकोनामषट्पंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५६ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ ततःकृष्णेनभीमेनप्रार्थयित्वाद्विजान्नृपान् ॥ भोजयामासयदुराड्भोजनैर्विविधैरपि ॥ १ ॥ सच्छष्कुलीपायसतण्डुलाभिःसंयावकापूपसुसूपकाद्यैः ॥ सत्फेणिकाद्यैस्तुनिमन्त्र्यविप्रान्संभोजयामासविशेषमन्नम् ॥ २ ॥ शिखरिणीघृतपूरसुशक्तिकाःसुपटिनीदधिपूपकलप्सिकाः ॥ सुघृतसुंदरचन्द्रसुहालिकावटुकमोदकपर्पटकैरदात् ॥ ३ ॥ केचित्फलाशनास्तत्रशुष्कपर्णाशनास्तथा ॥ केचिज्जलाशनाविप्राःकेचिद्दूर्वारसाशनाः ॥ ४ ॥ केचिद्वाताशनाराजञ्जन्मतस्तपकारिणः ॥ भोजनानांचनामानितेनजानंतिविस्मिताः ॥ ५ ॥ भक्तंचमेनिरेकेचिन्मालत्याःकुसुमानिच ॥ मोदकांश्चद्विजाःकेचिदुदुंबरफलानिच ॥ ६ ॥ पायसंफेणिकांदृष्ट्वाचन्द्रबिंबंचमेनिरे ॥ पर्पटान्फेणिकादृष्ट्वापत्राणिकिंशुकस्यवै ॥ ७ ॥ मेनिरेऽर्कफलानीतिदृष्ट्वाचमधुशीर्षकान् ॥ प्रलेहिकांलप्सिकांचऋषयश्चंदनद्रवम् ॥ ८ ॥ दृष्ट्वातेमिश्रचूर्णंवैवालुकांमुनिसत्तमाः ॥ इतिमत्वाद्विजाःसर्वेबुभुजुर्भोजनानिच ॥ ९ ॥ केचित्पिबंतिदुग्धंवैकेचिद्द्राक्षारसंतथा ॥ केचिदाम्ररसंविप्राःप्रहसंतिलुठंतिवै ॥ १० ॥ ततःकृष्णस्तुभगवान्भीमेनप्रहसन्मुदा ॥ चकारहास्यंविप्राणांसंस्थितानांतपस्विनाम् ॥ ११ ॥

खानवारे, कोई सूखे पत्ता खानवारे, कोई जलमात्र पीके रहनवारे और कोई केवल दूबके रसको पीके रहनवारे ॥ ४ ॥ कोई पवनमात्र पीके रहनवारे, कोई जन्मसों लेके तप करनवारे, कोई ऐसे जे भोजनके नामकोहू न जानें ॥ ५ ॥ ऐसे वे ब्राह्मण हैं जब विनके आगे भात परोसो तो विनने मालतीके फूल जाने और लड्डूनको गूलरके फल जाने ॥ ६ ॥ और खीरको तथा फेनीको देखके चंद्रमाके बिंबको जानो पापर तथा फेनीको देखके विन ब्राह्मणनने टेसूके पत्ते समझे ॥ ७ ॥ और मधुशीर्ष (व्यंजनविशेष) को देखके आकके फल जाने और प्रलेहिका (कढी) तथा लप्सीको परोसी देखके ब्राह्मण वनवासीनने चंदनको द्रव मानो ॥ ८ ॥ और विन ब्राह्मणनने मीठे चूर्णको देखके वनको रेत समझो या प्रकार विन अज्ञात ब्राह्मण मानके भोजन करतेभये ॥ ९ ॥ कोई दूध पीवें, कोई दाखको रस पीवें, कोई आम्ररसको पीवें, कोई हँसेहैं, कोई लोटेहैं ॥ १० ॥ तब कृष्ण भगवान्

भीमसेन सहित हँसे और बैठे ब्राह्मण, तपस्विनकी हँसी करनलगे ॥ ११ ॥ और भगवान्ने कही कि, मुनीहो ! इनको नाम बताओ तब तुमको देयँगे ॥ १२ ॥
तब श्रीकृष्ण और भीमके कहेको सुनके तिन मुनिनने कछु जवाब नहीं दियो परस्पर देखनलगे ॥ १३ ॥ तब उग्रसेनजीने तैलंगी, कर्णाटकी, गुजराती, गौड़, सनाढ्य आदि
अनेक ब्राह्मणोंको सुवर्ण, वस्त्र, और रत्ननके समुदायसे पूजके इन विप्रवरनको नमस्कार करीहै ॥ १४ ॥ गर्गजी कहेहैं कि, यज्ञके अंतमें एक लक्ष तो घोडा, एक हजार हाथी,
दो हजार रथ, एक लाख गऊ ॥ १५ ॥ और सौभार सुवर्ण, इतनी दक्षिणा तो सबके पहले मेरे लिये दीनीहै और मेरी दक्षिणासे आधी दक्षिणा बकदाल्भ्य और व्यासजीको दीनी
फिर एक हजार घोडा सौ हाथी ॥ १६ ॥ १७ ॥ दोसौ रथ और एक हजार गऊ और बीस भार सुवर्ण ये दक्षिणा सब निमंत्रित ब्राह्मणनको एकएकको दीनीहै और एक

भोजनानांचनामानिमुनयोवदतत्वरम् ॥ तान्प्रयच्छामियुष्मभ्यंभीमेनसहितोप्यहम् ॥१२ ॥ श्रीकृष्णभीमयोर्वाक्यंनिशम्यमुनिसत्तमाः ॥
नकिंचिदूचुर्मुदिताःप्रपश्यन्तःपरस्परम् ॥ १३ ॥ तैलंगकर्णाटकगुर्ज्जराद्यानन्यान्द्विजान्गौडसनाढ्यकादीन् ॥ संपूज्यहेमांबररत्नवृन्दैर्नृपेश्व
रोविप्रवरान्ननामह ॥ १४ ॥ एकलक्षंहयानांचगजानांचसहस्रकम् ॥ द्विसहस्रंरथानांचगवांलक्षंविधानतः ॥ १५ ॥ शतभारंसुवर्णानामीदृशीं
दक्षिणांनृप ॥ उग्रसेनस्तुयज्ञांतेपूर्वमह्यंददौकिल ॥ १६ ॥ मदर्धंबकदाल्भ्यायददौव्यासायचैवतथा ॥ तुरगाणांसहस्रंचगजानांशतमेवच ॥ १७ ॥
द्विशतंस्यंदनानांचधेनूनांचसहस्रकम् ॥ विंशद्भारंसुवर्णानामीदृशींदक्षिणांपुनः ॥ १८ ॥ निमंत्रितेभ्योविप्रेभ्यउग्रसेनोददौमुदा ॥ गजमेकं
रथंगांचस्वर्णभारंचघोटकम् ॥ १९ ॥ द्विभाररजतंचैवयादवेंद्रःप्रहर्षितः ॥ ईदृशींदक्षिणांराजन्ब्राह्मणेब्राह्मणेददौ ॥ २० ॥ महाध्वरेकृष्णपुरीय
दाबभौमहीतलेस्वेह्यमरावतीयथा ॥ तदागतामागधसूतकादयोवंदीजनागायकवारयोषितः ॥ २१ ॥ तदानृपद्वारिमहोत्सवोभून्मृदंगवीणामु
रयष्टिवेणुभिः ॥ सुतालशंखानकदुंदुभिस्वनैःसंगीतनृत्यादिकवाद्यगीतकैः ॥ २२ ॥ जगुःसुकण्ठैर्ननृतुःसुतालैःसंगीतगीताक्षरसामगीतैः ॥
कौसुंभवस्त्राणिविचालयन्त्यःसंगीतनृत्येनपरिस्फुरंत्यः ॥ २३ ॥ बन्दीजनामागधगायकाश्चयेचागतास्तेभ्यउपागतेभ्यः ॥ प्रादाद्धिरण्यंबहुर
त्नवृन्दंतथाऽगताह्यप्सरसश्चताभ्यः ॥ २४ ॥

हाथी, एक रथ, एक गऊ, एक भार सुवर्ण, एक घोडा ॥ १८ ॥ १९ ॥ दोभार चांदी इतनी इतनी दक्षिणा एकएक ब्राह्मणमात्रको यादवेंद्रने हर्षित हैके सबको जे यज्ञमें
आये हे तिनको दीनीहैं ॥ २० ॥ वा महान् यज्ञमें कृष्णकी पुरी द्वारिका स्वर्गमें जैसी अमरावती होय ता प्रकार शोभित भईहै तब पीछे मागध, सूत, बंदीजन, गवैया और
वेश्या आईहैं ॥ २१ ॥ तब राजद्वारमें बडो उत्सव भयो मृदंग, वीणा मुरज, वेणु, ताल, शंख, नगाडे, दुंदुभी आदि बाजे बजेहैं और संगीत, नृत्य, वाद्य, गीतनको आनंद
भयोहै ॥ २२ ॥ वा समय दिव्य वेश्याने कोकिलकंठसों गान कियो, तालबंधनसों नृत्य कियो, संगीतके अनुसार साममें गान कियो, कसूमके रंगे वस्त्रनको उडावती और संगीतके
नृत्यसों प्रकाश करतीभईहैं ॥ २३ ॥ वा समय बंदीजन, मागध, गायकादिक जे आयेहैं तिनको सबको सुवर्ण, अनेक रत्नके वृंद ये सबको दीनेहैं और जे अप्सरा आई ही

तिनकोहू ये हीं दीनेहैं ॥ २४ ॥ और सूत, मागध, बंदी सबनके लिये बहुत धन ऐसे वर्षायो जैसे मेघ वर्षे और बडे महर्षित भये ॥ २५ ॥ तदनंतर उग्रसेनने राजानकों विदाके समय नियुत २ तो अश्व, एकएक हजार हाथी, सौसौ पालकी, कुंडल, कड़ा और तीसतीस भार सुवर्ण ये एकएक राजानको दीनेहै ॥ २६ ॥ २७ ॥ और यासों द्विगुण सब यादवनको नंदादिक गोपनको दीनेहैं और यशोदा आदि गोपी, देवकी आदि यदुस्त्री, रुक्मिणी आदिक कृष्णपत्नी और राधिकाजी आदिक सब गोपी इनको दिव्यवस्त्र, अलंकारसों उग्रसेनजीने सबको संतुष्ट कियोहै ॥ २८ ॥ २९ ॥ तदनंतर बडी प्रसन्नतासो गर्गजीको उग्रसेनने सौ ग्राम फिर दिये तब गर्गजीने वो सब धन ब्राह्मणनको सबको क्रमसों यथोक्त देदियोहै ॥ ३० ॥ तदनंतर बलदेवसहित श्रीकृष्णकोहू वस्त्र, अलंकार, तिलक, माला और नीराजनादिकसों सत्कार

सूतेभ्योमागधेभ्यश्चसर्वेभ्योबहुलंधनम् ॥ ववर्षघनवद्राजाहयमेधप्रहर्षितः ॥ २५ ॥ तत्पश्चाद्यादवेंद्रस्तुह्युग्रसेनोमहीश्वरः ॥ नियुतंतुरगाणां चसहस्रंहस्तिनांतथा ॥ २६ ॥ शिबिकानांशतंचैवकुण्डलेकटकानिच ॥ त्रिंशद्भारंसुवर्णानांभूपेभूपेददौमुदा ॥ २७ ॥ द्विगुणेनयदून्सर्वान्नंदादींश्चैवभूपतिः ॥ यशोदाद्याश्चगोप्यश्चदेवक्याद्यायदुस्त्रियः ॥ २८ ॥ रुक्मिण्याद्याराधिकाद्याःपट्टराज्योहरेरपि ॥ दिव्यांबरैरलंकारैराज्ञासर्वाश्चतोपिताः ॥ २९ ॥ पुनर्ददौचगर्गायराजाग्रामशतंमुदा ॥ ससगौब्राह्मणेभ्यश्चप्रददौह्रिक्रमादृषिः ॥ ३० ॥ ततःसंपूजयामासकृष्णंसंकर्षणान्वितम् ॥ वस्त्रालंकारतिलकैःस्रग्भिर्नीराजनादिभिः ॥ ३१ ॥ उवाचकृष्णःप्रहसन्मह्यंराजन्महाध्वरे ॥ समर्थेनत्वयाह्यत्रनदत्तंकिंचिदेवहि ॥३२॥ इतिश्रुत्वानृपःप्राहरामेणसहमाधवः ॥ यथोक्तांदक्षिणांशीघ्रंगृहाणजगदीश्वर ॥३३॥ ॥गर्गउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वाप्रददौराजाहर्षितःप्रेमविह्वलः ॥फलंसर्वंकृष्णकरेराजसूयाश्वमेधयोः॥३४॥तदाजयजयारावोद्वारकायांबभूवह ॥ सद्यःसुराश्चसंतुष्टाःपुष्पवर्षंप्रचक्रिरे॥३५॥ सर्वाश्चदेवतास्तुष्टाःप्राप्तभागादिवंगताः ॥ रक्षोदैत्यादंष्ट्रिणश्चखगामर्काबिलेशयाः ॥ ३६ ॥ शैलागावोवृक्षसंघानद्यस्तीर्थानिसिन्धवः ॥ संतुष्टाःप्राप्तभागायेसर्वेस्वंस्वंगृहंगताः ॥ ३७ ॥ पूजितादानमानाभ्यांराजानोयेसमागताः ॥ जग्मुःस्वंस्वंगृहंसैन्यैःकंपयन्तोमहीतलम् ॥ ३८ ॥

कियोहै ॥ ३१ ॥ तब श्रीकृष्णने कही कि, हे राजन् ! तुम सब प्रकारसों समर्थ हौ पन आपने या इतने बडेभारी यज्ञमें मेरे लायक मोकूँ कुछ नहीं दियोहै ॥ ३२ ॥ तब उग्रसेनजी श्रीकृष्णके कहेको सुनके बोले कि, सुनो लालजी ! अब तुम दाऊजीसहित यथोक्त दक्षिणाको जलदी ग्रहण करौ, हे जगदीश्वर ॥ ३३ ॥ गर्गजी कहेहैं कि, इतनी कहिके प्रेममें विह्वल भये ऐसे उग्रसेनजी बडे हर्षित भये फिर राजसूय और अश्वमेधयज्ञका समग्र फल श्रीकृष्णके हाथमें निवेदन करदेते भये ॥ ३४ ॥ तब द्वारकामें जयजय शब्द भयो और प्रसन्न भये देवतानने फूल बरसाये ॥ ३५ ॥ फिर सब देवता प्रसन्न है अपने २ भागको लेकें स्वर्गको गये फिर राक्षस, दैत्य, दाढवारे, पशु, पक्षी, वंदर, बिलवासी ॥ ३६ ॥ पर्वत, गऊ, वृक्षसमूह, नदी, तीर्थ और समुद्र संतुष्ट हैके अपने २ भागनको लैके अपने २ स्थाननको गये ॥ ३७ ॥ और जे राजा आये हे वेहू दान, मानसों पूजन किये

सैन्यनसें भूमिको कँपावते सब राजा अपने २ घरनको गयेहै ॥ ३८ ॥ फिर सब नंदादिक गोप और यशोदा आदिक व्रजकी स्त्री हे राजन् ! कृष्णने जिनको पूजन कियो वे सब विरहमें आर्त हैके व्रजको गईहैं ॥ ३९ ॥ या प्रकार यादवेंद्र राजा उग्रसेन अपने मनोरथरूप दुस्तर समुद्रके पार उतरके श्रीकृष्णके प्रभावसों गईहै व्यथा जिनकी ऐसे होतेभयेहैं ॥ ॥ ४० ॥ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां सप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५७ ॥ गर्गजी कहैं हैं कि, तदनंतर श्रीकृष्ण महात्माने कंसादिक नौ भाईनको आह्वान कियो सो ये सब वैकुंठसो आयेहैं ॥ १ ॥ तब उन सबनको आयो देखके सबनको बडो विस्मय भयो तब वे सब श्रीकृष्णसों बलदेवजीसों प्रद्युम्नसों और अनिरुद्धसों मिलके कंसादिकनने सबको प्रणाम करीहै तब हे नृप ! सुधर्मासभामें उन सबनको देखेहै ॥ २ ॥ ३ ॥ रुचिमती पत्नीसहित इंद्रासनपै बैठे प्रसन्न भये कंसादिक अपने पुत्रनको उग्रसेन

सर्वेगोपाश्चनन्दाद्यायशोदाद्याव्रजस्त्रियः ॥ कृष्णेनपूजिताराजन्विरहार्ताव्रजंययुः ॥३९॥ एवंराजायादवेंद्रोमनोरथमहार्णवम् ॥ दुस्तरंचसमुत्तीर्यहरिणासीद्गतव्यथः ॥ ४० ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डेविश्वभोज्यदक्षिणावर्णनंनामसप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५७ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ ततःसर्वेसमाहूताःश्रीकृष्णेनमहात्मना ॥ वैकुण्ठादाययुःशीघ्रंकंसाद्यानवभ्रातरः ॥ १ ॥ दृष्ट्वातानागतान्सर्वेविस्मयंपरमंययुः ॥ तेसमागत्यश्रीकृष्णंबलंप्रद्युम्नमेवच ॥२॥ अनिरुद्धंचकंसाद्यानेमुःसर्वेपृथक्पृथक् ॥ ददर्शचोग्रसेनस्तुसुधर्मायांसुतान्नृप ॥३॥ शक्रसिंहासनस्थोवैरुचिमत्यासमन्वितः ॥ कंसादीन्स्वसुतान्प्रीतोकृष्णाकारांश्चतुर्भुजान् ॥ ४ ॥ शंखचक्रगदापद्मैर्भूषितान्पीतवाससः ॥ कृष्णपार्श्वेस्थितान्पुत्रानाह्वयामासभूपतिः ॥ ५ ॥ ततःकृष्णस्तुभगवान्कंसादीन्प्राहसस्मितः ॥ पश्यस्वमातापितरौयुष्माकंदर्शनोत्सुकौ ॥ ६ ॥ गत्वासमीपेहेवीरायूयंनमतभक्तितः ॥ इतिकृष्णस्यवचनंकृष्णभृत्यानिशम्यच ॥ ७ ॥ ऊचुःप्रहर्षिताःसर्वेकंकन्यग्रोधकादयः ॥ ॥ कंसाद्याऊचुः ॥ ॥ ईदृशाःपितरोऽस्माकमीदृश्योमातरश्चवै ॥ ८ ॥ बहवश्चाभवन्नाथभ्रमतांतवमायया ॥ हरिःपितातुजीवस्यश्रुतिरेपासनातनी ॥ ९ ॥ तस्माचान्यंनपश्यामोवयंत्वन्निकटेस्थिताः ॥ पुराविलोकितस्त्वंवैसंग्रामेबलसंयुतः ॥ १० ॥ पश्चाज्जातौद्वारकायांनदृष्टौकार्ष्णिकार्ष्णिजौ ॥ तस्माद्द्रष्टुंचतुर्व्यूहंवयमत्रसमागताः ॥ ११ ॥

जैसे कृष्णकेसे जिनके आकार ऐसे सबनको देखेहैं । और सब चतुर्भुज देखेहैं ॥ ४ ॥ शंख, चक्र, गदा, पद्मनसों भूषित हैं पीतांबर पहरेहैं, कृष्णके पास खडे पुत्रनको उग्रसेनने बुलायेहै ॥ ५ ॥ तब श्रीकृष्ण भगवान् हँसके कंसादिकनसों बोले, देखो ! ये तुमारे दर्शनमें उत्कंठित है ये तुमारे मातापिता हैं इनें देखो ॥ ६ ॥ हे वीरहो ! इनके पास जायके नमस्कार करौ, ये कृष्णके कहेको सुनके ॥ ७ ॥ वे कंकन्यग्रोधादिक प्रसन्न हैके बोले कि, हे नाथ ! कर्मनके मारे या संसारमें भ्रमण करै ऐसे हमारे न जानें कितने मातापिता हैगये और न जाने कितने होयँगे ॥ ८ ॥ तेरी मायाको बडो बल है, या जीवको पिता हरि हैं ये सनातनी श्रुति है ॥ ९ ॥ तोसों अन्यको नहीं जानैहै हम तो तुमारे पासमेंही खडेहैं, पहले हमने आपको संग्राममें देखेहैं बलदेवजी सहित ॥ १० ॥ हमारे गयेके पीछे प्रद्युम्न, अनिरुद्ध दोनों उत्पन्न भये सो हमने देखे नहीं सो अब हम आपको चतुर्व्यूह

मूर्त्तिके देखवेको आयेहै ॥ ११ ॥ श्रीकृष्ण, बलभद्र, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध ये सब आज हमने देखे तुम परिपूर्णतम हौ ॥ १२ ॥ सो हम ये नहीं जानैहै कि, हमारो कौनसो पूर्वपुण्य है जो हमने आपको दर्शन कियोहै, आपको दर्शन संतनकोहू दुर्लभ है, आप परिपूर्ण चतुर्व्यूह हौ, हम आपको नहीं जानैहैं, ॥ १३ ॥ हे संकर्षण ! हे कृष्ण ! हे अनिरुद्ध ! हे प्रद्युम्न ! मूढ कुबुद्धि जे हम हैं तिनके अपराधको क्षमा करौ ॥ १४ ॥ हे गोविंद ! आप वैकुंठको जाओ आपको सुंदर धाम सूनो है, धन्य ये द्वारका है जो आपने वैकुंठसोंहू अधिक कीनी है ॥ १५ ॥ जो तेरो चरण ब्रह्मा, इन्द्र, अग्नि, सूर्य, शिव, मरुत, यमादिक, कुबेर चंद्रमा, वरुण इनसों पूजित है वाही चरणको हम निरंतर भजन करैहैं ॥ १६ ॥ बडे २ मुनींद्र, लक्ष्मी, देवता और भक्तनने चंदन, पुष्प, धूप, दीप, धानकी खील, अक्षत और दूर्वा, सुपारीसों पूजन कियो ता तेरे चरणको मैं निरंतर भजन करौहौं ॥ १७ ॥ गर्गजी कहैहैं कि, ऐसे कंसादिक सबनके

श्रीकृष्णोबलभद्रश्चश्रीप्रद्युम्नउषापतिः ॥ परिपूर्णतमाएतेह्यहोस्माभिर्विलोकिताः ॥ १२ ॥ केनपूर्वेणपुण्येनदृष्टोयोदुर्लभःसताम् ॥ परिपूर्णश्चतुर्व्यूहोनजानीमोवयंकिल ॥ १३ ॥ हेसंकर्षणहेकृष्णहेप्रद्युम्नउषापते ॥ मूढानांनःकुबुद्धीनामपराधंक्षमस्वच ॥ १४ ॥ गच्छगोविंदवैकुण्ठंशून्यंतेधामसुन्दरम् ॥ धन्यात्वयाद्वारकातुवैकुण्ठाच्चकृताधिका ॥ १५ ॥ यदर्चितंब्रह्मशचीशवह्निभिरादित्यगौरीशमरुद्यमादिभिः ॥ पौलस्त्यतारेशजलेशपूजितंपादारविंदंसततंभजामहे ॥ १६ ॥ मुनींद्रलक्ष्मीसुरभक्तसात्त्वतैःसुपूजितंचंदनगंडधूपकैः ॥ लाजाक्षतैश्चांकुरपूगचर्चितंपादारविंदंसततंभजामहे ॥ १७ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ इत्युक्तातेचकंसाद्यावैकुण्ठंप्रययुर्नृप ॥ सर्वेषांपश्यतांराजाविस्मितोभूत्सभार्यया ॥ १८ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायांअश्वमेधखण्डेकंसादिदर्शनंनामाष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५८ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ अथोग्रसेनोनृपतिःपुत्रस्याशांनिसृज्यच ॥ व्यासंपप्रच्छसंदेहंज्ञात्वाविश्वंमनोमयम् ॥ १ ॥ ॥ उग्रसेनउवाच ॥ ॥ ब्रह्मन्केनप्रकारेणहित्वाचजगतःसुखम् ॥ भजेत्कृष्णंपरंब्रह्मतन्मेव्याख्यातुमर्हसि ॥ २ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ ॥ त्वदग्रेकथयिष्यामिसत्यंहितकरंवचः ॥ उग्रसेनमहाराजशृणुष्वैकाग्रमानसः ॥ ३ ॥ सेवनंकुरुराजेंद्रराधाश्रीकृष्णयोःपरम् ॥ नित्यंसहस्रनामभ्यामुभयोर्भक्तितःकिल ॥ ४ ॥ सहस्रनामराधायाविधिर्जानातिभूपते ॥ शंकरोनारदश्चैवकेचिद्वैचास्मदादयः ॥ ५ ॥ ॥ उग्रसेनउवाच ॥ ॥ राधिकानामसाहस्रंनारदाच्चपुराश्रुतम् ॥ एकांतेदिव्यशिबिरेकुरुक्षेत्रेरविग्रहे ॥ ६ ॥

देखते देखते वैकुंठको गयेहै तब सब और भार्यासहित राजा उग्रसेन बडे विस्मित भयेहैं ॥ १८ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायामष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५८ ॥ गर्गजी कहैहै कि, तदनंतर उग्रसेनजी पुत्रकी आशाको छोडके श्रीकृष्णके अनुग्रहसों या विश्वको मनोमय जानके व्यासजीसों संदेह पूछनलगे ॥ १ ॥ उग्रसेनजी बोले कि, हे ब्रह्मन् ! या जगत्के सुखको छोडके परब्रह्म कृष्णको कौनसे प्रकारसों भजन करै ये मोसों व्याख्यान करौ ॥ २ ॥ तब वेदव्यासजी बोले कि, मैं तुमारे आगे जो सत्य और हितकर वचन है सो कहौंगो, हे उग्रसेन हे महाराज ! तुम एकाग्र मनसों सुनौ ॥ ३ ॥ हे राजेंद्र ! केवल तुम राधाकृष्णकोही भक्तिसों दोनोंनके सहस्रनामनसो आराधन करौ ॥ ४ ॥ हे भूपते ! राधाजीके सहस्रनाम ब्रह्माजी जानैहैं या शंकरजी, नारदजी या कोई अस्मदादिक हैं वे जानैहैं और कोऊ नहीं जानैहै ॥ ५ ॥ तब उग्रसेनजीने कही कि, महाराजजी !

मैने राधिकाजीके तो सहस्रनाम कुरुक्षेत्रमे दिव्यशिविरमे, सूर्यग्रहणमे एकांतस्थानमें नारदजीके मुखसा सुनेहै ॥ ६ ॥ परंतु अक्लिष्टकर्मा श्रीकृष्णके सहस्रनाम नहीं सुनेहैं सो इनके सहस्रनामको कृपा करके कहौ जासौं मैं कल्याणको प्राप्त होऊँ ॥ ७ ॥ तब गर्गजी बोले कि, या प्रकार उग्रसेनजीके कहेको सुनकै महामुनि श्रीवेदव्यासजीने श्रीकृष्णको ध्यान कर और साक्षात् कृष्णको नेत्रनसों अगारी दर्शन करते हँसके प्रसन्न हैके उग्रसेनसें बोलेहैं ॥ ८ ॥ व्यासजीने कही कि, हे राजन् ! मैं उत्तमोत्तम श्रीराधिकानाथके हजार नामनको कहौहो तिन्हें तुम सुनौ जे नाम अपने निजधाम गोलोकमें श्रीकृष्णचंद्रने राधाके आगे कहेहैं तिनको तुम सुनौ ॥ ९ ॥ श्रीभगवान् बोले ये रहस्य (गोप्य) है निश्चय छिपावने योग्य है हरएकके आगे कहै तो कहनवारेको निरंतर हानि हैबेको कारण है, ये मोक्षको देनवारे, सुखके देनवारे परमकल्याणरूप और सर्वोत्कृष्ट पुरुषार्थ देनवारे हैं ॥ १० ॥ कि, हे भूप ! ये कृष्णसहस्रनाम मेरो रूप है याको जो पाठ करै वो पुरुष मेरो प्रसिद्ध रूप है, ये सहस्रनाम शठ मनुष्य और दंभी मनुष्यको बतानेयोग्य नहीं है ॥

नश्रुतंनामसाहस्रंकृष्णस्याक्लिष्टकर्मणः ॥ यदतन्मेचकृपयायेनश्रेयोऽहमाप्नुयाम् ॥ ७ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ श्रुत्वोग्रसेनवचनंवेदव्यासो महामुनिः ॥ प्रशस्यतंप्रीतमनाप्राहकृष्णंविलोकयन् ॥ ८ ॥ ॥ व्यासउवाच ॥ ॥ शृणुराजन्प्रवक्ष्यामिसहस्रंनामसुन्दरम् ॥ पुरास्वधाम्निराधायैकृष्णेनानेननिर्मितम् ॥ ९ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ इदंरहस्यंकिलगोपनीयंदत्तेचहानिःसततंभवेद्धि ॥ मोक्षप्रदंसर्वसुखप्रदंशंपरंपरार्थंपुरुषार्थदंच ॥ १० ॥ रूपंचमेकृष्णसहस्रनामपठेत्तुमद्रूपइवप्रसिद्धः ॥ दातव्यमेवंनशठायकुत्रनदांभिकायोपदिशेत्कदापि ॥ ॥ ११ ॥ दातव्यमेवंकरुणावृतायगुर्वंघ्रिभक्तिप्रपरायणाय ॥ श्रीकृष्णभक्तायसतांपरायतथामदक्रोधविवर्जिताय ॥ १२ ॥ ॐअस्यश्रीकृष्णसहस्रनामस्तोत्रमंत्रस्य नारायणऋषिर्भुजंगप्रयातंछंदः श्रीकृष्णचन्द्रोदेवता वासुदेवोबीजं श्रीराधाशक्तिःमन्मथःकीलकं श्रीपूर्णब्रह्मकृष्णचन्द्रभक्तिजन्मफलप्राप्तये जपेविनियोगः ॥ अथध्यानम् ॥ शिखिमुकुटविशेषंनीलपद्मांगदेशंविधुमुखकृतकेशंकौस्तुभापीतवेशम् ॥ मधुररवकलेशंभजेभ्रातृशेषंव्रजजनवनितेशंमाधवंराधिकेशम् ॥ १३ ॥ ॥ इतिध्यानम् ॥ हरिर्देवकीनन्दनःकंसहंतापरात्माचपीतांबरःपूर्णदेवः ॥ रमेशस्तुकृष्णःपरेशःपुराणःसुरेशोच्युतोवासुदेवश्चदेवः ॥ १४ ॥

॥ ११ ॥ जाके हृदयमें दया होय, गुरुचरणमें जाकी भक्ति होय, श्रीकृष्णभक्त होय, संतनको सेवक होय, क्रोध मदसों विवर्जित होय वाके आगे कहै अन्यके आगे न कहै ॥ १२ ॥ पहलेही हाथमें जल लेके विनियोग करै कि, या श्रीकृष्णनामरूप मंत्रके नारायण ऋषि है, भुजंगप्रयात छंद है श्रीकृष्णचंद्र देवता है, वासुदेव बीज है, श्रीराधा शक्ति है, मन्मथ यामे कीलक, पूर्ण ब्रह्म श्रीकृष्णचंद्र भक्तिफल प्राप्तिकामनासौ जप करबेको विनियोग है ऐसे विनियोगजलको पात्रमें पटक देय फिर ध्यान करै–मोरपै मोरमुकुट है नीलउत्पलसमान जाको अंग, चंद्रवत् मुखके ऊपर खुली अलकनकी जामें शोभा, कंठमें कौस्तुभमणि और कटि पीतांबरसो सुशोभित, वंशीके मधुर शब्दको कररहे शेष जाके भ्राता, गोपीगणनके पति ऐसे माधव भगवान् राधिकाको मैं भजन करौहौ ॥ १३ ॥ या प्रकार ध्यान करके हाथ जोर इन नामनसों प्रार्थना करै

हरि, देवकीके नंदन, कंसके मारनवारे, पर (सर्वोत्कृष्ट) आत्मा, पीत अंबरको पहरे, पूर्ण देव, रमाके स्वामी, सबके मनके खेंचनवारे ब्रह्मादिकनके नियंता पुराण (अनादिसिद्ध) रुद्रादि देवतानको वश करनवारे, अच्युत (सब समय एकाकार), वसुदेवनंदन अथवा शुद्धांतःकरणमें निवास करनवारे, देव नाम प्रकाशरूप ॥ १४ ॥ भूमिको बोझ उतारनवारे, कृती, राधिकाको स्वामी, पर, पृथ्वीको पति, दिव्य गोलोकको नाथ, सुदामागोप राधिकाके शापके हेतु, दयालु, मानिनीनको मानको देनवारो और दिव्यलोकस्वरूप ॥ १५ ॥ लसद्गोपवेश (सुंदर जाको गोपवेश), अज (जन्मरहित), राधिकात्मा (राधिकाके आत्मा), चलत्कुंडल (हलेहैं कुंडल जाके), कुंतली (सुन्दर अलक जाके विद्यमान), कुंतलस्रक् (अलकनमें माला जाके), राधासहित रथमें विराजमान, सुधासौधभूचारणः (श्वेत महल भूमिमें विचरनवारे) दिव्यवस्त्रके धारणवारे ॥ १६ ॥ कौनसे दिन, अपने लोकमें वृंदावनमें विचरनवारो महारत्नके सिंहासनपै विराजमान अत्यंत शांतस्वरूप हंसवत् श्वेतचमर जापै दुरै चलच्छत्र और मुक्तावली

धराभारहर्त्ताकृतीराधिकेशःपरोभूवरोदिव्यगोलोकनाथः ॥ सुदाम्नस्तथाराधिकाशापहेतुर्घृणीमानिनीमानदोदिव्यलोकः ॥ १५ ॥ लसद्गोपवेषोह्यजोराधिकात्माचलत्कुंडलःकुंतलीकुंतलस्रक् ॥ रथस्थःकदाराधयादिव्यरत्नःसुधासौधभूचारणोदिव्यवासाः ॥ १६ ॥ कदावृन्दकारण्यचारीस्वलोकेमहारत्नसिंहासनस्थःप्रशांतः ॥ महाहंसभैश्चामरैर्वीज्यमानश्चलच्छत्रमुक्तावलीशोभमानः ॥१७॥ सुखीकोटिकंदर्पलीलाभिरामःक्वणन्नूपुराऽलंकृतांघ्रिःशुभांघ्रिः ॥ सुजानुश्चरंभाशुभोरुःकृशांगःप्रतापीभशुंडासुदोर्दंडखंडः ॥ १८ ॥ जपापुष्पहस्तश्चशातोदरश्रीर्महापद्मवक्षस्थलश्चन्द्रहासः ॥ लसत्कुन्ददंतश्चबिंबाधरश्रीःशरत्पद्मनेत्रःकिरीटोज्ज्वलाभः ॥ १९ ॥ सखीकोटिभिर्वर्त्तमानोनिकुंजेप्रियाराधयारासासक्तोनवांगः ॥ धराब्रह्मरुद्रादिभिःप्रार्थितःसद्धराभारदूरीकृतोर्थंप्रजातः ॥ २० ॥ यदुर्देवकीसौख्यदोबंधनच्छित्सशेषोविभुर्योगमायीचविष्णुः ॥ व्रजेनन्दपुत्रोयशोदासुताख्योमहासौख्यदोबालरूपःशुभांगः ॥ २१ ॥ तथापूतनामोक्षदःश्यामरूपोदयालुस्त्वऽनोभञ्जनःपल्लवांघ्रिः ॥ तृणावर्त्तसंहारकारीचगोपोयशोदायशोविश्वरूपप्रदर्शी ॥ २२ ॥

तिनसों शोभायमान ॥ १७ ॥ सुखरूप कोटिकामदेवनको अभिराम देनवारे शब्दयुक्त नूपुरसों अलंकृत जाके चरण शुभ जाकी अंघ्रि सुंदर जाके जानु केलाके समान जाके सुंदर ऊरु कृश जाके अंग बडे प्रतापी हाथीके शुंडादंडके समान जाके भुजदंड ॥ १८ ॥ जपा (गुडहर) के पुष्पके समान जाकी हथेली पतली जाकी कमर महापद्मके समान जाको वक्षस्थल चंद्रवत् जाको हाँस शोभित कुंदकलीकेसे जाके दंत बिंब (कँदूरीसे) जाके ओष्ठ शरदके कमलसे जाके नेत्र किरीटसो उज्ज्वल जाकी कांति है ॥ १९ ॥ कोटि सखीनको संग लिये निकुंजमें विराजमान प्यारी राधिकाको संग लिये रासमें आसक्त नवीन जाको अंग भूमि तथा ब्रह्मरुद्रादि तिनकी प्रार्थनासों धरणीके बोझ उतारवेको जाने जन्म लियोहै ॥ २० ॥ यदुकुलको आभूषण देवकी वसुदेवको बंधनकाटके सुखदायक शेषजी सहित विभु (समर्थ) योगमाया जाकी शक्ति विष्णु (सर्वांतर्यामी) व्रजमें नंदसुत और यशोदानंदन नामसों ख्यात महासुखको देवेवारो बालरूप और सुभग जाको अंग ॥ २१ ॥ पूतनाको मोक्ष देनवारो श्याम जाको रूप दयालु शकटको विखेरनवारो आम्रदलसे कोमल जाके

चरण तृणावर्तको संहारकरनवारो गडनको ग्वारिया यशोदाकों यश विश्वरूप दिखावनवारो ॥ २२ ॥ गर्गके कथनानुसार सुंदरभाग्ययुक्त सुंदर बालक्रीडा करनवारो बलसहित सुंदर
जाकी वाणी नूपुरनके शब्दयुक्त नंदके आँगनमें क्रीडा करनवारो नंदके अंगणमें घुटनेनपै हाथधरके डोलनवारो ॥ २३ ॥ दहीको स्पर्श करनवारो माँखनको खानवारो दूधको भोक्ता
दहीको चोर दुग्धभुक् दहीके माटको फोरनवारो मृत्तिका जाने खाई नंदपुत्र विश्वरूप सूर्यकी कांतिसो मंडित जाको अंग ॥ २४ ॥ यशोदाके हाथनसों बँधी सबको आदि दामसों
बँधेने जाने मणिग्रीवको बंधन छुडायो गोपीनके संगमें व्रजमें नृत्य करनवारो और नंदसन्नंदको लाडलडायो ॥ २५ ॥ नंदगोपकी गोदमें गोपालरूपसों विराजमान यमुनाके पुलिनमें
विहार करनवारो और घन तथा पवनसों व्याप्त भाँडीरवनमें नंदके हाथसों राधिकाके पाणिग्रहण करनवारो ॥ २६ ॥ जो गोलोकनामके लोकमें आये और महारत्नसमूह तथा नंद

तथागर्गदिष्टश्चभाग्योदयश्रीलसद्बालकेलिःसरामःसुवाचः ॥ क्वणन्नूपुरैःशब्दयुग्रिंगमाणस्तथाजानुहस्तैर्व्रजेशांगणेना ॥ २३ ॥ दधिस्पृग्नव
हैयंगवीदुग्धभोक्तादधिस्तेयकृद्दुग्धभुग्भांडभेत्ता ॥ मृदंभुक्तवान्गोपजोविश्वरूपःप्रचण्डांशुचण्डप्रभामंडितांगः ॥ २४ ॥ यशोदाकरैर्बंधनंप्रा
प्तआद्योमणिग्रीवमुक्तिप्रदोदामबद्धः ॥ कदानृत्यमानोव्रजेगोपिकाभिःकदानंदसन्नंदकैर्लाल्यमानः ॥ २५ ॥ कदागोपनन्दांकगोपालरूपीक
लिंदांगजाकूलगोवर्त्तमानः ॥ घनैर्मारुतैश्छिन्नभांडीरदेशेगृहीतोवरोराधयानन्दहस्तात् ॥ २६ ॥ निकुंजेचगोलोकलोकागतेपिमहारत्नसंघैः
कदंबावृतेपि ॥ तदाब्रह्मणाराधिकासद्विवाहेप्रतिष्ठांगतःपूजितःसाममन्त्रैः ॥२७॥ रसीरासयुङ्मालतीनांवनेपिप्रियाराधयाराधिकार्थरमेशः॥
धरानाथआनन्ददःश्रीनिकेतोवनेशोधनीसुंदरोगोपिकेशः ॥ २८ ॥ कदाराधयाप्रापितोनंदगेहेयशोदाकरैर्लालितोमंदहासः ॥ भयीक्वापि
वृन्दारकारण्यवासीमहामंदिरेवासकृद्देवपूज्यः ॥ २९ ॥ वनेवत्सचारीमहावत्सहारीबकारिःसुरैःपूजितोऽघारिनामा ॥ वनेवत्सकृद्गोपकृद्गोप
वेषःकदाब्रह्मणासंस्तुतःपद्मनाभः ॥ ३० ॥ विहारीतथातालभुग्धेनुकारीसदारक्षकोगोनिपार्श्विप्रणाशी ॥ कलिंदांगजाकूलगःकालियस्यदमी
नृत्यकारीफणेष्वप्रसिद्धः ॥ ३१ ॥

बलतासो आवृत निकुंजमें राधिकाके संग उत्तमविवाहमें ब्रह्माजीके गाये साममंत्रनसों जो प्रतिष्ठाको प्राप्त भयो ॥ २७ ॥ नवरस आमें विद्यमान मालतीलतानके वनमें प्रिया
राधासहित राधिकाके लिये रासको करनवारो धराके नाथ नंदको आनंद देनवारो श्रीको निकेत वनको स्वामी धनवान् अतिसुंदर गोपीनको नाथ ॥ २८ ॥ नंदके घरमें कब राधाने
पहुँचायो यशोदाने हाथसों लाड लडायो मंद जाको हाँस डरकी तरह कभूं वृंदावनको निवास करनवारो महामंदिरमें विराजमान देवतानसों पूजनीय ॥ २९ ॥
वनमें बछरा चरावनवारो महावत्सासुरको मारनवारो बकासुरको अरि देवतानसों पूजित अघासुरको शत्रु वनमें वत्सकृद् और गोपकृद् गोपनकोसो जाको वेष ब्रह्माजी
करके स्तुतिकियो और जाकी नाभिमेंसों कमल उत्पन्न भयोहै ॥ ३० ॥ तालफलको भोक्ता धेनुकासुरको अरि तालवनको विहारी सब समय रक्षक

गठनकी विषकी पीडा निवृत्त करी यमुनाके कूलमें क्रीडा करै कालीकी फणालीपर जाने नृत्य कियो ॥ ३१ ॥ लीलासहित शम जाके विद्यमान ज्ञानको देनवारो कामनको पूरक गोपनसों युक्त गोपनके आनंदसों युक्त अतिस्थैर्ययुक्त दावानल जाने पीलीनो बालकनकीसी जाकी लीला वंशीमें सुंदर राग गावें पुष्प धारणकरे ॥ ३२ ॥ ॥ ३२ ॥ प्रलंबासुरकी प्रभाको नाशक गौर जाको वर्ण बलदेव जाको नाम रोहिणीको पुत्र रामनाम शेषावतार बलवान् कमलकैसे जाके नेत्र कृष्णके बडे भैया धरणीधर नागराज नीलांबर पहरे ॥ ३३ ॥ अतिसुख देनवारे अग्निहार ब्रजके स्वामी शरद ग्रीष्म वर्षा करनवारे कृष्ण जिनको वर्ण ब्रजमें गोपीनसों पूजित चीरनको चोर कदंबपे बैठे चीर देनवारो ब्रजसुंदरीनको स्वामी ॥ ३४ ॥ गोपनकी क्षुधाको नाशक यज्ञपत्नीनको चित्तचोर कृपाकरनवारो क्रीडा करनवारो भूमिको स्वामी ब्रजमें इंद्रयज्ञको निवर्तक मितभोजी इंद्रको जाने व्यामोह उत्पन्न कियो बाल जाको रूप ॥ ३५ ॥ गोवर्धनको पूजाकरनवारो नंदको पुत्र गिरिधारी कृपालु गोवर्धनधारी जाको नाम आँधी मेह जाने निवृत्त कियो ब्रजको रखवारो

सलीलःशमीज्ञानदःकामपूरस्तथागोपयुग्गोपआनन्दकारी ॥ स्थिरीह्यग्निभुक्पालकोबाललीलःसुरागश्चवंशीधरःपुष्पशीलः ॥ ३२ ॥ प्रलंबप्रभानाशकोगौरवर्णोबलोरोहिणीजश्चरामश्चशेषः ॥ बलीपद्मनेत्रश्चकृष्णाग्रजश्चधरेशःफणीशस्तुनीलांबराभः ॥ ३३ ॥ महासौख्यदोह्यग्निहारव्रजेशःशरद्ग्रीष्मवर्षाकरःकृष्णवर्णः ॥ व्रजेगोपिकापूजितश्चीरहर्त्ताकदंबेस्थितश्चीरदःसुंदरीशः ॥ ३४ ॥ क्षुधानाशकृद्यज्ञपत्नीमनस्पृक्कृपाकारकःकेलिकर्त्तावनीशः ॥ व्रजेशक्रयागप्रणाशीमिताशीशुनासीरमोहप्रदोबालरूपी ॥ ३५ ॥ गिरिःपूजकोनन्दपुत्रोह्यगध्रःकृपाकृच्चगोवर्द्धनोद्धारिनामा ॥ तथावातवर्षाहरोरक्षकश्चव्रजाधीशगोपांगनाशंकितःसन् ॥ ३६ ॥ अगेन्द्रोपरीशक्रपूज्यःस्तुतःप्राङ्नृपाशिक्षकोदेवगोविंदनामा ॥ व्रजाधीशरक्षाकरःपाशिपूज्योऽनुजैर्गोपजैर्दिव्यवैकुण्ठदर्शी ॥ ३७ ॥ चलच्चारुवंशीक्वणःकामिनीशोव्रजेकामिनीमोहदःकामरूपः ॥ रसाक्तोरसीरासकृद्राधिकेशोमहामोहदोमानिनीमानहारी ॥ ३८ ॥ विहारीवरोमानहृद्राधिकांगोधराद्वीपगःखण्डचारीवनस्थः ॥ प्रियोह्यष्टवक्रर्षिदृग्धासराधोमहामोक्षदःपद्महारीप्रियार्थः ॥ ३९ ॥ वटस्थःसुरश्चन्दनाक्तःप्रसक्तोव्रजंह्यागतोराधयामोहिनीषु ॥ महामोहकृद्गोपिकागीतकीर्त्तीरसस्थःपटीदुःखिताकामिनीशः ॥ ४० ॥

ब्रजको अधीश गोपांगनानसों शंकित ॥ ३६ ॥ गोवर्धनके ऊपर जाकी इंद्रने पूजाकरी और स्तुति करी नंदादिकनको नृपा उपदेष्टा गोविंददेव जाको नाम नंदकी जाने रक्षा करी वरुणने जाकी पूजा करी अनुजा और गोपनको जाने वैकुंठ दिखायो ॥ ३७ ॥ चंचल मनोहर वंशी जाने बजाई कामिनीनको स्वामी कामिनीनको मोहकरनवारो साक्षात् कामरूप रससों लिप्त रस जाके विद्यमान रासविहारी राधिकानाथ महामोहको उत्पादक माननीनके मानको निवर्तक ॥ ३८ ॥ विहारकरनवारेनमें श्रेष्ठ मानहारी राधिकाको अंग भूमिद्वीपमें जाने जन्म लियो खंडनमें विचरे वनमें स्थितरहे प्यारे अष्टावक्र ऋषिको द्रष्टा और राधासहित जायके वा अष्टावक्रको मोक्षदीनी प्यारीके लिये जाने कमल चुराये ॥ ३९ ॥ वटपे विराजमान चंदनसों लिप्त प्रसक्त हैके राधायुत ब्रजमें आये मोहनियोंमें महामोहकरनवारे गोपीनने जाकी कीर्ति गाई रसमें स्थित पटी और दुःखिता और कामिनीनको स्वामी॥४०॥

वनमें गोपीनको त्यागकरनवारो चरणचिह्नको दिखावनवारो कलानको करनवारो कामदेवको मोहदेवचारो वशी, गोपीनके मध्यमें विराजमान मनोहर जाकी वाणी प्रियाकी प्रीति करनवारो रासमें रंगो सर्वकलानको स्वामी ॥ ४१ ॥ रसमें रंगो जाको चित्त अनंत जाको रूप वनमाला पहरे गोपीनके मध्यमें स्थित सुंदर जाके भुज सुन्दर जाके पाद सुंदर जाके वेश और केश व्रजको स्वामी सखा प्यारीको स्वामी सुंदर जो देश ॥ ४२ ॥ शब्दयुक्त किंकिणीको पहरे पाँवनमें जाके नूपुर शोभित जाके कंकण बाजू जाके विद्यमान कंठमें जाके हारको भार किरीट और चंचल कुंडल और अँगूठी स्फुरत्कौस्तुभ मणि और मालतीसों मंडितहै अंग जाको ॥४३॥ रासरंगमें मग्न महानृत्यकरनवारो कलानसों पूर्ण चंचलहारकोसी जाकी कांति भामिनी नके नृत्यसों युक्त यमुनाजलमें विहारी कुंकुमकी जाके शोभा और देवनायिका और नायक जाको गानकरें ॥४४॥ राधाको पति सुखसों पूर्ण पूर्ण जाको बोध कटाक्षसों मुसकान करन

वनेगोपिकात्यागकृत्पादचिह्नप्रदर्शीकलाकारकःकामंमोही ॥ वशीगोपिकामध्यगःपेशवाचःप्रियाप्रीतिकृद्रासरक्तःकलेशः ॥ ४१ ॥ रसारक्त चित्तोह्यनन्तस्वरूपःस्रजासंवृतोवल्लवीमध्यसंस्थः ॥ सुबाहुःसुपादःसुवेशःसुकेशोव्रजेशःसखावल्लभेशःसुदेशः ॥ ४२ ॥ क्वणत्किंकिणीजाल भृन्नूपुराढ्योलसत्कंकणोह्यंगदीहारभारः ॥ किरीटीचलत्कुण्डलश्चांगुलीयस्फुरत्कौस्तुभोमालतीमंडितांगः ॥ ४३ ॥ महान्नृत्यकृद्रासरंगः कलाढ्यश्चलद्धारभोभामिनीनृत्ययुक्तः ॥ कलिन्दांगजाकेलिकृत्कुंकुमश्रीःसुरैर्नायिकानायकैर्गीयमानः ॥ ४४ ॥ सुखाढ्यस्तुराधापतिःपूर्ण बोधःकटाक्षस्मितीवल्गितभ्रूविलासः ॥ सुरम्योऽलिभिःकुन्तलालोलकेशःस्फुरद्बर्हकुन्दस्रजाचारुवेषः ॥ ४५ ॥ महासर्पतोनन्दरक्षापरां घ्रिःसदामोक्षदःशंखचूडप्रणाशी ॥ व्रजारक्षकोगोपिकागीयमानःककुद्मिप्रणाशप्रयासःसुरेज्यः ॥ ४६ ॥ कलिःक्रोधकृत्कंसमन्त्रोपदेष्टातथा क्रूरमन्त्रोपदेशीसुरार्थः ॥ बलीकेशिहापुष्पवर्षोऽमलश्रीस्तथानारदाद्दर्शितोव्योमहंता ॥ ४७ ॥ तथाक्रूरसेवापरःसर्वदर्शीव्रजेगोपिकामोह दःकूलवर्त्ती ॥ सतीराधिकाबोधदःस्वप्नकर्त्ताविलासीमहामोहनाशीस्वबोधः ॥ ४८ ॥ व्रजेशापतस्त्यक्तराधासकाशोमहामोहदावाग्निदग्धा पतिश्च ॥ सखीबन्धनान्मोचिताक्रूरआरात्सखीकंकणैस्ताडिताक्रूररक्षी ॥ ४९ ॥

वारो चंचलभ्रूविलासी सुरम्य भ्रमरयुत जाकी अलक सुंदर मोरमुकुट और कुंदकी मालासों सुंदर जाको वेष है ॥४५॥ महा अजगरसों नंदके प्राण बचावनवारो सदा मोक्षको दाता शंखचूडको नाशक व्रजाको रक्षक गोपीनसों गानकियो ककुद्मीके प्रणाशमें जाको प्रयास देव जाको पूजनकरें ॥ ४६ ॥ कलिरूप क्रोधकृत कंसको मंत्रोपदेश करनवारे तथा देवकार्य साधक अक्रूरको मंत्रोपदेशक बलवान् केशीके मारनवारो पुष्पवर्षासों अमल जाकी शोभा और नारदके कहेसों व्योमासुरको मारनवारो ॥ ४७ ॥ और अक्रूरकी सेवामें तत्पर सबको द्रष्टा व्रजमें गोपीनको मोहक तटस्थ हैके रहनवारो सती राधिकाको बोधदेनवारो स्वप्नकरनवारो आप विलासी महामोहको नाशकर्ता आप अपने ज्ञानसों युक्तहै ॥ ४८ ॥ शापके कारणसों जाने राधिकाजीको व्रजमें समीप छोडो तब परस्पर महामोहदावानलसों दोऊ तापितभये अक्रूरने सखीनके बंधनेसे छुडाये तब सखीनके कंकणनकी मारसों अक्रूरको बचा

वनवारे ॥४९॥ जब कृष्णचंद्र रथमें विराजे और जानेको तयारभये तब राधाजीने और गोपगोपीमंडलीने जिनको रोको मनोहर है लीला जाकी तब मार्गमें अक्रूरके संदेह दूरकरबे को जलमें जिनने अक्रूरको दिव्यरूप दिखायो मथुराके देखनेकी जिनकी इच्छा भई तब पुरी (मथुरा) की मोहिनी (माधुरी) नके चित्तके मोहकरनवारे ॥ ५० ॥ तैसेही कंसके रंगकार धोबीको जिनने मारो सुवस्त्र पहरे माली सुदामाकी मालनको जिनने पहरी दरजीकी प्रीति करनवारे और मालीने जिनकी पूजाकरी महाकीर्तिके देनवारे फिर कुब्जासों जिनने क्रीडा करी फिर कंसके स्फुरचंडकोदंडको खंडनकरनवारे ॥ ५१ ॥ कंसके भटनको आर्ति जिनने दीनी फिर जिनने कंसको दुःस्वप्न दिखाये महामल्लनकोसों जाको वेष कुवलयापीडको जिनने मारो फिर महामात्यको मारके जिनने रंगभूमिमें प्रवेश कियो तब नवरस (शृंगार) आदिसों पूर्ण यशस्वी बलवान् कहनवारेनमें अतिप्रवीण शोभासों परिपूर्ण है ॥ ५२ ॥ महामल्ल चाणूरादिकनको मारनवारो स्त्रीनकी वाणीनको सुनके युद्धकरनवारो भूमिको स्वामी कंसको मारनवारो और जो पहले पूजित यदु उग्रसेननामसों प्रसिद्ध हो वाको जाने

रथस्थोव्रजेराधयाकृष्णचन्द्रःसुगुप्तोगमीगोपकैश्चारुलीलः ॥ जलेक्रूरसंदर्शितोदिव्यरूपोदिदृक्षुःपुरीमोहिनीचित्तमोही ॥ ५० ॥ तथारंगकारघ्नणाशीसुवस्त्रःसजीवायकप्रीतिकृन्मालिपूज्यः ॥ महाकीर्तिदश्चापिकुब्जाविनोदीस्फुरच्चण्डकोदंडरुग्णप्रचंडः ॥ ५१ ॥ भटार्त्तिप्रदःकंसदुःस्वप्नकारीमहामल्लवेषःकरींद्रप्रहारी ॥ महामात्यहारंगभूमिप्रवेशीरसाढ्योयशःस्फुरबलीवाक्पटुश्रीः ॥ ५२ ॥ महामल्लहायुद्धकृत्स्त्रीवचोर्थी धरानायकःकंसहंतायदुःप्राक् ॥ सदापूजितोह्युग्रसेनप्रसिद्धोधराराज्यदोयादवैर्मंडितांगः ॥ ५३ ॥ गुरोःपुत्रदोब्रह्मविद्ब्रह्मपाठीमहाशंखहादंडधृक्पूज्यएव ॥ व्रजेह्युद्धवप्रेषितोगोपमोहीयशोदाघृणीगोपिकाज्ञानदेशी ॥ ५४ ॥ सदास्नेहकृत्कुब्जयापूजितांगस्तथाक्रूरगेहंगमीमंत्रवेत्ता ॥ तथापांडवप्रेषिताक्रूरएवसुखीसर्वदर्शीनृपानंदकारी ॥ ५५ ॥ महाक्षौहिणीहाजरासंधमानीनृपोद्धारककारकोमोक्षकर्त्ता ॥ रणीसार्वभौमस्तुतोज्ञानदाताजरासंधसंकल्पकृद्धावदंघ्रिः ॥ ५६ ॥ नगादुत्पतद्वारिकामध्यवर्त्तीतथारेवतीभूषणस्तालचिह्नः ॥ यदूरुक्मिणीहारकश्चैद्यजेयस्तथारुक्मिरूपप्रणाशीसुखाशी ॥ ५७ ॥

भूमिको राज्य दियो यादवनने जाको पूजन कियो ॥ ५३ ॥ वेदको पढके ब्रह्मज्ञ हैके जाने गुरुको पुत्र लायकें दियो दंडको धारणकर जाने शंखासुरको मारो फिर व्रजमें उद्धव को भेजो जो गोपनको मोहक यशोदापै जाने अनुग्रह कियो और गोपीनको जा उद्धवने ज्ञानोपदेश कियो ॥ ५४ ॥ सदा स्नेहयुक्त कुब्जाके घर गयो कुब्जाने जाको पूजनकियो फिर अक्रूरके घरमें जाने गमनकियो मंत्रको वेत्ता फिर जाने अक्रूरको हस्तिनापुरमें पांडवनके पास भेजो अत्यंतसुखी सर्वज्ञ और उग्रसेनको जाने आनंदयुक्त कियो ॥ ५५ ॥ तेईस अक्षौहिणी सहित अनेकवार जरासंधको जीतके जाने द्वारका बनाई मुचुकुंदकी जाने मोक्षकरी चक्रवर्ती राजानकरके स्तुति कियो ज्ञानको दाता और जरासंधके मनोरथ पूर्णके लिये मथुरा छोडके भागे ॥ ५६ ॥ फिर प्रवर्षणगिरिसों कूदके द्वारिकामें गये रेवतीके भूषण तालको जाके चिह्न यदुनसहित रुक्मिणीको जाने हरणकियो शिशुपालकरके वैद्य रुक्मीको

मुँडमुँडके जाने विरूपकियो और गुप्तमें जाकी आशा ॥ ५७ ॥ अनंत, मार, कार्ष्णि, काम, मनोज, शंबरारि, रतीश, रथी, मन्मथ, मीनकेतु, शरी, स्मर, दर्पक, मानहा और पंचबाण (ये सब प्रद्युम्नके नाम हैं) ॥ ५८ ॥ सबको प्रिय सत्यभामाको पति यादवनको स्वामी सत्राजितके प्रेमको पूर्ण महारत्न (स्यमंत) को देनवारो जांबवान्सों जाने युद्ध कियो महाचक्रधारी खड्गधृक रामसों संधिकरी ॥ ५९ ॥ विहारमें स्थित पांडवनसों प्रेमकारी कालिंदीमोहन खांडववनके लिये मित्र अर्जुनकी जो प्रीतिकारी अगारी करनवारो क्रीडा करवेको मित्रविंदाके पति ॥ ६० ॥ नग्नजित राजाके प्रेमकृत सातरूप वनके सात वृषनको जाने दमन कियो सत्याके पति पारिबर्ह जाने ग्रहण कियो यथेष्ट राजनसों संवृतहै भद्राके पति मधुको विलासी मानिनीनको और जननको स्वामी ॥ ६१ ॥ इंद्रके मोहसों आवृत सत्यभामाभार्या सहित गरुडपै बैठके मुरदैत्यको अरि पुरीसंघको भेत्ता सुरेशशिर

अनंतश्चमारश्चकार्ष्णिश्चकामोमनोजस्तथाशंबरारीरतीशः ॥ रथीमन्मथोमीनकेतुःशरीचस्मरोदर्पकोमानहापंचबाणः ॥ ५८ ॥ प्रियःसत्यभामापतिर्यादवेशोऽथसत्राजितप्रेमपूरःप्रहासः ॥ महारत्नदोजांबवद्युद्धकारीमहाचक्रधृग्खड्गधृग्रामसंधिः ॥ ५९ ॥ विहारस्थितःपांडवप्रेमकारीकलिंदांगजामोहनःखांडवार्थी ॥ सखाफाल्गुनप्रीतिकृन्नग्रकर्त्तातथामित्रविंदापतिःक्रीडनार्थी ॥ ६० ॥ नृपप्रेमकृद्गोजितःसप्तरूपोऽथसत्यापतिःपारिबर्हीयथेष्टः ॥ नृपैःसंवृतश्चापिभद्रापतिस्तुविलासीमधोर्मानिनीशोजनेशः ॥ ६१ ॥ शुनासीरमोहावृतःसत्यभार्यःसताक्ष्योमुरारिःपुरीसंघभेत्ता ॥ सुरेशःशिरःखण्डनोदैत्यनाशीशरीभौमहाचंडवेगःप्रवीरः ॥ ६२ ॥ धरासंस्तुतःकुंडलच्छत्रहर्त्तामहारत्नयुक्राजकन्याभिरामः ॥ शचीपूजितःशक्रजिन्मानहर्त्तातथापारिजातोपहारीरमेशः॥६३॥गृहीचामरैःशोभितोभीष्मकन्यापतिर्हास्यकृन्मानिनीमानकारी॥ तथारुक्मिणीवाक्पटुःप्रेमगेहःसतीमोहनःकामदेवापरश्रीः ॥ ६४ ॥ सुदेष्णःसुचारुस्तथाचारुदेष्णोपरश्चारुदेहोबलीचारुगुप्तः ॥ सुतीभद्रचारुस्तथाचारुचन्द्रोविचारुश्चचारुरथीपुत्ररूपः ॥६५॥ सुभानुःप्रभानुस्तथाचन्द्रभानुर्बृहद्भानुरेवाऽष्टभानुश्चसांबः ॥ सुमित्रःक्रतुश्चित्रकेतुस्तुवीरोश्वसेनोवृषश्चित्रगुश्चंद्रबिंबः ॥६६॥ विशंकुर्वसुश्चश्रुतोभद्रएकःसुबाहुर्वृषःपूर्णमासस्तुसोमः ॥ वरःशांतिरेवप्रघोषोथसिंहोबलोऊर्ध्वगोवर्द्धनोन्नादएव ॥६७॥ महाशोवृकःपावनोवह्निमित्रःक्षुधिर्हर्षकश्चानिलोऽमित्रजिच्च ॥ सुभद्रोजयःसत्यकोवामआयुर्यदुःकोटिशःपुत्रपौत्रप्रसिद्धः॥६८॥

खंडन दैत्यनाशी चंड जाको वेग अतिप्रवीर बाणधारी भौमासुरको जाने मारो ॥ ६२ ॥ भूमिने जाकी स्तुतिकरी कुंडल छत्रको लाये महारत्नसों युक्त राजकन्यानमें अभिराम जाको शचीसों पूजाकियो इंद्रको मान जाने हरौ पारिजातवृक्षको लाय सत्यभामाके द्वारमें लगायो रमाको स्वामी॥६३॥गृहस्थी चमरनसों शोभित रुक्मिणीको पति हाँसी करनवारो मानिनीको मान करनवारो प्रेमको घर रुक्मिणीके वाक्यनको ज्ञाता सतीनको मोहन कामदेवके समान जाकी शोभाहै ॥ ६४ ॥ सुदेष्ण, सुचारु, चारुदेष्ण, चारुदेह, बली, चारुगुप्त, भद्रचारु, चारुचंद्र, विचारु, चारुरथी, पुत्ररूप ॥६५॥ सुभानु, प्रभानु, चंद्रभानु, बृहद्भानु, अष्टभानु, सांब, सुमित्र, क्रतु, चित्रकेतु, वीर, अश्वसेन, वृष, चित्रगु, चंद्रबिंब ॥ ६६ ॥ विशंकु, वसु, श्रुत, भद्र, एक, सुबाहु, वृष, पूर्णमास, सोम, वर, शांतिः, प्रघोष, सिंह, बल, ऊर्ध्वग, वर्धन, उन्नाद ॥ ६७ ॥ महाश, वृक, पावन, वह्नि, मित्र, क्षुधि, हर्षक, अनिल, अमित्रजित,

सुभद्र, जय, सत्यक, चाम, आयु और यदु इत्यादिक कोटिश बेटा नाती जाके भये ॥ ६८ ॥ और हली, दंडधृक, रुक्मिहा, अनिरुद्ध, राजानसों हाँस्य गोद्यूतकरनवारो, मधु, ब्रह्मभू, बाणपुत्रीको पति महासुंदर, कामपुत्र, बलीश ॥ ६९ ॥ महादैत्यसों संग्रामकरनवारो यादवेश, पुरीभंजन, भूतनको संत्रासकारी संग्राममें रुद्रको जयी और रुद्रको मोही संग्राम करवेको तयार स्वामिकार्तिकको जयी, कूपकर्णको मारनवारो ॥ ७० ॥ धनुषको भंजक बाणासुरके मानको खंडक ज्वरको जाने उत्पन्नकियो और ज्वरने जाकी स्तुति करी बाणकी १९६ भुजनको छेदक महाशिवने जाकी स्तुतिकरी युद्धकर्ता और भूमिको भर्ता ॥ ७१ ॥ नृगको जाने उद्धारकियो यादवनको ज्ञानदाता रथमें स्थित व्रजस्थप्रेम को रक्षक गोपनमें मुख्य महासुंदरीनके संग जाने क्रीडाकरी पुष्पमालाधारी यमुनाको जाने भेदनकियो हलको हाथमें लिये ॥ ७२ ॥ महादंभीनको मारनवारो पौंड्रकके अभिमा नको दूरकरनवारो फिर जाने शिरछेदनकियो काशिराजको जाने मारो महाक्षौहिणीनको ध्वंसन चक्र जाके हाथमें काशीको जलावनवारो राक्षसीमायाको नाशक ॥ ७३ ॥ अनंत,

हलीदंडधृग्रुक्मिहाचानिरुद्धस्तथाराजभिर्हास्यगोद्यूतकर्ता ॥ मधुर्ब्रह्मभूर्बाणपुत्रीपतिश्चमहासुन्दरःकामपुत्रोबलीशः ॥ ६९ ॥ महादैत्यसंग्रामकृद्यादवेशःपुरीभंजनोभूतसंत्रासकारी ॥ मृधीरुद्रजिद्रुद्रमोहीमृधार्थीतथास्कंदजित्कूपकर्णप्रहारी ॥ ७० ॥ धनुर्भंजनोबाणमानप्रहारीज्वरोत्पत्तिकृत्संस्तुतस्तुज्वरेण ॥ भुजाछेदकृद्बाणसंत्रासत्तामृडप्रस्तुतोयुद्धकृद्भूमिभर्त्ता ॥७१॥ नृगंमुक्तिदोज्ञानदोयादवानांरथस्थोव्रजप्रेमपोगोपमुख्यः ॥ महासुन्दरीक्रीडितःपुष्पमालीकलिंदांगजाभेदनःसीरपाणिः ॥ ७२ ॥ महादंभिहापौंड्रमानप्रहारीशिरश्छेदकःकाशिराजप्रणाशी ॥ महाक्षौहिणीध्वंसकृच्चक्रहस्तःपुरीदीपकोराक्षसीनाशकर्त्ता ॥ ७३ ॥ अनंतोमहीध्रःफणीवानरारिःस्फुरद्गौरवर्णोमहापद्मनेत्रः ॥ कुरुग्रामतिर्य्यग्गतोगौरवार्थःस्तुतःकौरवैःपारिबर्हीससांबः ॥ ७४ ॥ महावैभवीद्वारकेशोह्यनेकश्चलत्प्रारदःश्रीप्रभादर्शकस्तु ॥ महर्षिस्तुतोब्रह्मदेवःपुराणःसदाषोडशस्त्रीसहस्रस्थितश्च ॥ ७५ ॥ गृहीलोकरक्षापरोलोकरीतिःप्रभुर्ह्युग्रसेनावृतोदुर्गयुक्तः ॥ तथाराजदूतस्तुतोबंधभेत्तास्थितोनारदप्रस्तुतःपांडवार्थी ॥ ७६ ॥ नृपैर्मन्त्रकृद्धुद्धवप्रीतिपूर्णोवृतःपुत्रपौत्रैःकुरुग्रामगंता ॥ घृणीधर्मराजस्तुतोभीमयुक्तःपरानंददोमंत्रकृद्धर्मजेन ॥ ७७ ॥ दिशाजिद्बलीराजसूयार्थकारीजरासंधहाभीमसेनस्वरूपः ॥ तथाविप्ररूपोगदायुद्धकर्त्ताकृपालुर्महाबंधनच्छेदकारी ॥ ७८ ॥

द्विविदवानरके शत्रु, गौर जिनको वर्ण कमलदलके समान जाके नेत्र हस्तिनापुरको खेंचके जिनने गंगामें गेरनो विचारो तब कौरवनने जाकी स्तुति करी सांब सहित जाने पारिबर्ह ग्रहणकियो ॥ ७४ ॥ महान् जाको वैभव द्वारकाको स्वामी अनेकरूप चलप्रारद श्रीप्रभादर्शक महर्षिनकरके स्तुतिकियो ब्रह्मदेव पुराण सब समय षोडश हजारस्त्रीनमें स्थित ॥ ७५ ॥ गृहस्थी लोकरक्षामें तत्पर लोकरीति प्रभु उग्रसेनावृत दुर्गयुक्त राजदूतनने जाकी स्तुति करी बंधनको छेत्ता नारदने जाके गुण गाये और पांडवनको कार्यकरनवारो ॥ ७६ ॥ राजनसों सलाहकरनवारो उद्धवकी प्रीतिसों पूर्ण पुत्र पौत्रकरके सहित कुरुग्रामके जानवारे दयालु धर्मराजसों स्तुति किये भीमसेनसहित परानंददेनवारो युधिष्ठिरसों सलाह करनवारो ॥ ७७ ॥ दिशानको जयी बलवान् राजसूयको कार्यसाधक भीमसेनके द्वारा जरासंधके प्राणनको नाशक ब्राह्मणको रूपधरके गदायुद्धकारी दयालुने

जाने २०८०० राजानको बंधन छुडायो ॥ ७८ ॥ राजनने जाकी स्तुतिकरी फिर इंद्रप्रस्थमें आये फिर ब्राह्मणन सहित धर्मराजके यज्ञसामग्री तयारकर जनननें जाको पूजन कियो शिशुपालके दुर्वाक्य जाने सहे फिर जाने शिर छेदन करके शिशुपालको मोक्ष दीनो ॥ ७९ ॥ युधिष्ठिरके महायज्ञको शोभाकरनवारो चक्रवर्ती नृपनके आनंदकारी विहारी सुहारी सभामें संवृत मानको हरनवारो दुर्योधनको जलमें स्थलादिक जाने दिखायो और शाल्वको संहारकरके सौभविमान जाको तोरो ॥ ८० ॥ कृतवर्मासहित वृष्णि, मधु, शूरसेन, दशार्ह, यदु, अंधक, लोकजित, द्युमानके मानके निवर्तक कवचधारण कर दिव्य है-शस्त्र जाके ज्ञानधन सदा रक्षक दैत्यनको मारनवारो ॥ ८१ ॥ तैसेही दंतवक्रको मारनवारो गदाधारी जगतकी तीर्थयात्राको कर्ता, कमलके जाको हार कुशको धारक सूतको वधकरनवारो परमदयालु स्मृतिनको नियन्ता अमल वल्कलसो अंग प्रभाको

नृपैःसंस्तुतोह्यागतोधर्मगेहंद्विजैःसंवृतोयज्ञसंभारकर्त्ता ॥ जनैःपूजितश्चैद्यदुर्वाक्क्षमश्चमहामोक्षदोऽरेःशिरश्छेदकारी ॥ ७९ ॥ महायज्ञशोभाकरश्चक्रवर्तीनृपानंदकारीविहारीसुहारी ॥ सभासंवृतोमानहृत्कौरवस्यतथाशाल्वसंहारकोयानहन्ता ॥ ८० ॥ सभोजश्चवृष्णिर्मधुःशूरसेनोदशार्हो यदुश्चांधकोलोकजिच्च ॥ द्युमन्मानहावर्मधृग्दिव्यशस्त्रीस्वबोधःसदारक्षकोदैत्यहंता ॥ ८१ ॥ तथादंतवक्रप्रणाशीगदाधृग्जगत्तीर्थयात्राकरःपद्महारः ॥ कुशीसूतहंताकृपाकृत्स्मृतीशोऽमलोवल्वलांगप्रभाखंडकारी ॥ ८२ ॥ तथाभीमदुर्योधनज्ञानदाताऽपरोरोहिणीसौख्यदोरेवतीशः ॥ महादानकृद्विप्रदारिद्र्यहाचसदाप्रेमयुक्श्रीसुदाम्नःसहायः ॥ ८३ ॥ तथाभार्गवक्षेत्रगंतासरामोऽथसूर्योपरागश्रुतःसर्वदर्शी ॥ महासेनयाचास्थितःस्नानयुक्तोमहादानकृन्मित्रसंमेलनार्थी ॥ ८४ ॥ तथापांडवप्रीतिदःकुंतिजार्थीविशालाक्षमोहप्रदःशांतिदश्च ॥ वटेराधिकाराधनोगोपिकाभिःसखीकोटिभीराधिकाप्राणनाथः ॥ ८५ ॥ सखीमोहदावाग्निहावैभवेशःस्फुरत्कोटिकंदर्पलीलाविशेषः ॥ सखीराधिकादुःखनाशीविलासीसखीमध्यगःशापहामाधवीशः ॥ ८६ ॥ शतंवर्षविश्लेषहृन्नंदपुत्रस्तथानन्दवक्षोगतःशीतलांगः ॥ यशोदाश्रुचःस्नानकृद्दुःखहंतासदागोपिकानेत्रलग्नोव्रजेशः ॥ ८७ ॥

खंडनकरनवारो ॥ ८२ ॥ तैसेही भीमदुर्योधनको ज्ञानदाता रोहिणीको सौख्यद रेवतीके रमण महादानके कर्ता विप्रके दारिद्र्यके हंता सदा प्रेमयुक्त जो सुदामा ताके सहायक है ॥ ८३ ॥ तैसेही परशुरामके क्षेत्रके जानवारे फिर सूर्यपर्वमें सबसो जो मिले भेंटे यहां सेनासमेत स्नानके लिये स्थित भये, मित्रनसों मिलके जिनने अनेक प्रकार दानकिये ॥ ८४ ॥ और पांडवनको प्रीति देनवारे पांडवनके कामकरनवारे विशाल जाके नेत्र मोहशांतिकरनवारे वटमें राधिकाके आराधन करनवारे और किरोडन गोपीसहित राधिकाके प्राणनाथ ॥ ८५ ॥ सखीनकी मोहदावाग्निको नाशकरनवारो अनेक वैभव देवेमें समर्थ किरोड कामके समान जाकी लीला है सखी और राधिकाके दुःखनको नाशक सखीनके मध्यमें वर्तमान शापको नाशक और माधवीको स्वामी है ॥ ८६ ॥ नंदको पुत्र सौवर्षके वियोगको हरनवारे नंदके कंठको जाने आलिंगनकियो यशोदाके

आनंदाश्रुनसों स्नान जाने कियो सदा दुःखको हंता और गोपीनके नेत्रमेंही निवास करेहैं ॥ ८७ ॥ एकांतमें देवकी रोहिणीने जाकी स्तुति कीनी गोपीनको ज्ञान और मानको देनवारो पटरानीनने जाकी स्तुति कीनी और लक्ष्मणाको सदा प्राणनाथ है ॥ ८८ ॥ और षोडशसहस्र स्त्रीनने जाकी स्तुति करीहै और शुक, व्यासदेव, सुमंतु, सित, भरद्वाज, गौतम, आसुरि, वशिष्ठ, शतानंद, परशुराम ॥ ८९ ॥ पर्वतमुनि, नारद, धौम्य, इंद्र, असित, अत्रि, विभांड, प्रचेता, कृप, कुमार, सनंद, याज्ञवल्क्य, ऋभु, अंगिरा, देवल, श्रीमृकंड, ॥ ९० ॥ मरीचि, क्रतु, और्व, लोमश, पुलस्त्य, भृगु, ब्रह्मरात, वशिष्ठ, नर, नारायण, दत्त, पाणिनि, पिंगल, भाष्यकार, ॥ ९१ ॥ कात्यायन, पतंजलि, गर्ग, बृहस्पति, गौतमीश (द्रोण), जाजलि, कश्यप, गालव, सौभरि, ऋष्यशृंग, कण्व ॥ ९२ ॥ द्वित, एकत, जातूकर्ण्य, घन, कर्दमपुत्र, (कपिल) और कर्दम, भार्गव, कौत्स, आरुण, शुचि,

स्तुतोदेवकीरोहिणीभ्यांसुरेंद्रोरहोगोपिकाज्ञानदोमानदश्च ॥ तथासंस्तुतःपट्टराज्ञीभिराराद्धनीलक्ष्मणाप्राणनाथःसदाहि ॥ ८८ ॥ त्रिभिष्षोडशस्त्रीसहस्रस्तुतांगःशुकोव्यासदेवःसुमन्तुःसितश्च ॥ भरद्वाजकोगौतमोह्यासुरिःसद्वसिष्ठःशतानन्दआद्यःसरामः ॥ ८९ ॥ मुनिःपर्वतोनारदोधौम्यइन्द्रोऽसितोऽत्रिर्विभांडःप्रचेताःकृपश्च ॥ कुमारःसनंदस्तथायाज्ञवल्क्यऋभुर्ह्यंगिरादेवलःश्रीमृकण्डः ॥ ९० ॥ मरीचिःक्रतुश्चौर्वकोलोमशश्चपुलस्त्योभृगुर्ब्रह्मरातोवसिष्ठः ॥ नरश्चापिनारायणोदत्तएवतथापाणिनिःपिंगलोभाष्यकारः ॥ ९१ ॥ सकात्यायनोविप्रपातञ्जलिश्चाऽथगर्गोगुरुर्गीष्पतिर्गौतमीशः ॥ मुनिर्जाजलिःकश्यपोगालवश्चद्विजःसौरभिश्चर्ष्यशृंगश्चकण्वः ॥ ९२ ॥ द्वितश्चैकतश्चापिजातूद्भवश्चघनःकर्दमस्यात्मजःकर्दमश्च ॥ तथाभार्गवःकौत्सकश्चारुणस्तुशुचिःपिप्पलादोमृकंडस्यपुत्रः ॥ ९३ ॥ सपैलस्तथाजैमिनिःसत्सुमन्तुर्वरोगांगलःस्फोटगेहःफलादः ॥ सदापूजितोब्राह्मणःसर्वरूपीमुनीशोमहामोहनाशोऽमरःप्राक् ॥ ९४ ॥ मुनीशस्तुतःशौरिविज्ञानदातामहायज्ञकृच्चाभृतस्नानपूज्यः ॥ सदादक्षिणादोनृपैःपारिबर्हीव्रजानंददोद्वारिकागेहदर्शी ॥ ९५ ॥ महाज्ञानदोदेवकीपुत्रदश्चाऽसुरैःपूजितोहींद्रसेनादृतश्च ॥ सदाफाल्गुनप्रीतिकृत्सत्सुभद्राविवाहेद्विपाश्वप्रदोमानयानः ॥ ९६ ॥ श्रुतंदर्शकोमैथिलेनप्रयुक्तोद्विजेनाशुराज्ञास्थितोब्राह्मणैश्च ॥ कृतीमैथिलेलोकवेदोपदेशीसदावेदवाक्यैःस्तुतःशेषशायी ॥ ९७ ॥

पिप्पलाद, मार्कंडेय ॥ ९३ ॥ पैल, जैमिनि, सुमंतु गांगल, स्फोटगेह, फलाद, इत्यादि मुनि जाको पूजन करैहैं सब ब्राह्मणरूप है सर्वरूपी है मुनीश है और प्रथम सबके मोहको नाशक है ॥ ९४ ॥ इन मुनिनकरके स्तुतिकियो वसुदेवको ज्ञानोपदेष्टा महायज्ञको कर्ता यज्ञांतस्नानसों पूजनीय है सब समय दक्षिणाको देनवारो राजानसों भेंट लेनवारो व्रजको आनंददेनवारो द्वारिकाको दर्शी ॥ ९५ ॥ महाज्ञानदाता देवकीको मरे पुत्रनको दिखावनवारो असुरन करके पूजित इंद्रसेन (बलि) ने जाको आदरकियो सदा अर्जुनकी प्रीति करनवारो सुभद्राके विवाहमें हाथी घोडे आदिकनको जाने अर्जुनको दिये ॥ ९६ ॥ मैथिल ब्राह्मण श्रुतदेवके लिये ज्ञानोपदेष्टा ब्राह्मणन सहित बहुलाश्वके मनोरथ पूर्ण करनवारो

और बहुलाश्वको लोक वेदको उपदेष्टा वेदव्यासने जाकी स्तुति करी शेषपै शयनकरनवारो ॥९७॥ और सब देवतानमेंसों परीक्षा करके भृगु आदि ब्राह्मणनने जाको स्मरण कीर्तन निश्चय कियोहै भस्मासुरको भस्मकरायके जाने शिवजीकी रक्षा करीहै अर्जुनके मित्र है तबहूँ जिनने अर्जुनको मान खंडनकियो अपने निजधामसों जिनने मरे भये ब्राह्मणके पुत्र लायके दिये ॥ ९८ ॥ माधवीन करके विहारमें स्थित भये कलारूप आप जै महामोह अग्निमें जलीभईहै फिर यदु, उग्रसेनराजा, अक्रूर, उद्धव, शूरसेन, शूर, ॥ ९९ ॥ हृदीक, सत्राजित, अप्रमेय, गद, सारण, सात्यकि, देवभाग, मानस, संजय, श्यामक, वृक, वत्सक, देवक, भद्रसेन ॥ १०० ॥ युधिष्ठिर, जय (अर्जुन) नकुल, सहदेव, भीष्म, कृपाचार्य, धृतराष्ट्र, पांडु, शंतनु, बाह्लीक, भूरिश्रवा, चित्रवीर्य, विचित्र ॥ १०१ ॥ शल, दुर्योधन, कर्ण, अभिमन्यु, परीक्षित, जनमेजय और सब कौरव पांडव और सर्वतेजा

परीक्षावृतोब्राह्मणैश्चामरेषुभृगुप्रार्थितोदैत्यहाचेशरक्षी ॥ सखाचार्जुनस्यापिमानप्रहारीतथाविप्रपुत्रप्रदोधामगंता ॥ ९८ ॥ विहारस्थितोमाधवीभिःकलांगोमहामोहदावाग्निदग्धाभिरामः ॥ यदुरुग्रसेनोनृपोऽक्रूरएवतथाचोद्धवःशूरसेनश्चशूरः ॥ ९९ ॥ हृदीकश्चसत्राजितश्चाप्रमेयोगदःसारणःसात्यकिर्देवभागः ॥ तथामानसःसंजयःश्यामकश्चवृकोवत्सकोदेवकोभद्रसेनः ॥ १०० ॥ नृपोऽजातशत्रुर्जयोमाद्रिपुत्रोऽथभीष्मःकृपोबुद्धिचक्षुश्चपांडुः ॥ तथाशंतनुर्देवबाह्लीकएवाथभूरिश्रवाश्चित्रवीर्योविचित्रः ॥ १०१ ॥ शलश्चापिदुर्योधनःकर्णएवसुभद्रासुतोविष्णुरातःप्रसिद्धः ॥ सजन्मेजयःपांडवःकौरवश्चतथासर्वतेजाहरिःसर्वरूपी ॥ १०२ ॥ व्रजंह्यागतोराधयापूर्णदेवोवरोरासलीलापरोदिव्यरूपी ॥ रथस्थोनवद्वीपखण्डप्रदर्शीमहामानदोगोपजोविश्वरूपः ॥ १०३ ॥ सनन्दश्चनंदोवृषोवल्लभेशःसुदामार्जुनःसौबलस्तोकएव ॥ सकृष्णोंशुकःसद्विशालर्षभाख्यःसुतेजस्विकःकृष्णमित्रोवरूथः ॥ १०४ ॥ कुशेशोवनेशस्तुवृंदावनेशस्तथामाथुरेशाधिपोगोकुलेशः ॥ सदागोगणोगोपतिर्गोपिकेशोऽथगोवर्द्धनोगोपतिःकन्यकेशः ॥ १०५ ॥ अनादिस्तुचात्माहरिःपुरुषश्चपरोनिर्गुणोज्योतिरूपोनिरीहः ॥ सदानिर्विकारःप्रपञ्चात्परश्चससत्यस्तुपूर्णःपरेशस्तुसूक्ष्मः ॥ १०६ ॥ द्वारकायांतथाचाऽश्वमेधस्यकर्त्तानृपेणापिपौत्रेणभूभारहर्त्ता ॥ पुनःश्रीव्रजेरासरंगस्यकर्त्ता हरीराधयागोपिकानांचभर्त्ता ॥ १०७ ॥

सर्वरूपी भगवान् श्रीकृष्ण ॥ १०२ ॥ इन सबनको संग लेके पूर्णदेव भगवान् व्रजमें आये तब राधासहित रथमें विराजे जो दिव्यरूप भगवान् रासलीलामें तत्पर हैं सो आपने रथमें बैठके नवखंडको प्रियाको दिखायो महामान दियो जो आप विश्वरूप है ॥ १०३ ॥ सनंद, नंद, वृषभानु, सुदामा, अर्जुन, सुबल, तोक, वेदव्यास, शुक, विशाल, ऋषभ, तेजस्वी, वरूथक ॥ १०४ ॥ ये सब कृष्णके मित्र और कुशेश वनेश वृंदावनेश और माथुरेश गोकुलेश और गोगणेश गोपिकेश गोवर्धन गोपति और कन्यकेश ॥ १०५ ॥ अनादि, आत्मा, हरि, पुरुष, पर, निर्गुण, ज्योतीरूप, निरीह, निर्विकार, प्रपंचसे परे, सत्यपूर्ण, परेश, सूक्ष्म ॥ १०६ ॥ द्वारकामें अश्वमेधको कर्ता राजारूपसो और पौत्ररूपसो धरणीको बोझ उतारनवारो और फिर व्रजमें आयके रासको करनवारो राधासहित गोपीनको भर्ता ॥ १०७ ॥

सदा एक है तोहू अनेक है प्रभासों पूरित जाको अंग है योगमायाको करनवारो कालकोहू जयकरनवारो सुंदर जाकी दृष्टि महत्तत्त्वरूप निर्विकार जगत्रूपस्वरूप आदि अंकुररूप ॥ १०८ ॥ विकारनमें स्थित वैकारिक तैजस तामस अहंकाररूप है समीर (वायु) सूर्य, वरुण, अश्विनीकुमार, अग्नि, इंद्र, विष्णु, मित्र ॥ १०९ ॥ श्रवण, त्वचा, नेत्र, नासिका, जिह्वा, वाणी, भुजा, मेढ्र, पायु और पाँय, भूमि, आकाश, जल, पवन, अनंतर तेज, रूप, रस, गंध और शब्द, स्पर्श ॥ ११० ॥ चित्त, बुद्धि, विराट, कालरूप, वासुदेव जगतको करनवारो या अंडमें जो शयन करेहै सहस्त्ररूप शेषहै लक्ष्मीके नाथ आद्य अवतार है ॥ १११ ॥ सब समय सर्गकरनवारो ब्रह्मारूप कर्मकर्ता नाभिपद्मसों उत्पन्नभयो दिव्य जाको वर्ण कवि लोकको रचनवारो कालको बनावनवारो सूर्यरूप निमेषरहित जन्मरहित वत्सरांतस्वरूप अतिमहान् ॥ ११२ ॥ तिथि, वार, नक्षत्र, योग, लग्न, मास,

सदैकस्त्वनेकःप्रभापूरितांगस्तथायोगमायाकरःकालजिच्च ॥ सुदृष्टिर्महत्तत्त्वरूपःप्रजातःसकूटस्थआद्यांकुरोवृक्षरूपः ॥ १०८ ॥ विकारस्थितश्चाहंकारएवसवैकारकस्तैजसस्तामसश्च ॥ नमोदिक्समीरस्तुसूर्यःप्रचेताश्विवह्निश्चशक्रोह्युपेंद्रस्तुमित्रः ॥१०९॥ श्रुतिस्त्वक्चदृग्घ्राणजिह्वागिरश्चभुजामेढ्रकःपायुरंघ्रिःसचेष्टः ॥ धराव्योमवार्मारुतश्चैवतेजोथरूपंरसोगन्धशब्दस्पृशश्च ॥ ११० ॥ सुचित्तश्चबुद्धिर्विराट्कालरूपस्तथावासुदेवोजगत्कृद्धृतांगः ॥ तथांडेशयानःसशेषःसहस्रस्वरूपोरमानाथआद्योवतारः ॥ १११ ॥ सदासर्गकृत्पद्मजःकर्मकर्त्ताथनाभिपद्मोद्भवोदिव्यवर्णः ॥ कविर्लोककृत्कालकृत्सूर्यरूपोनिमेषोभवोवत्सरांतोमहीयान् ॥ ११२ ॥ तिथिर्वारनक्षत्रयोगाश्चलग्नोथमासोघटीचक्षणःकाष्ठिकाच ॥ मुहूर्त्तस्तुयामोग्रहायामिनीचदिनंचर्क्षमालागतोदेवपुत्रः ॥ ११३ ॥ कृतोद्वापरस्तुत्रितस्तत्कलिस्तुसहस्रंयुगस्तत्रमन्वंतरश्च ॥ लयःपालनंसत्कृतिस्तत्परार्द्धसदोत्पत्तिकृद्धक्षरोब्रह्मरूपः ॥ ११४ ॥ तथारुद्रसर्गस्तुकौमारसर्गोमुनेःसर्गकृद्देवकृत्प्राकृतस्तु ॥ श्रुतिस्तुस्मृतिःस्तोत्रमेवंपुराणंधनुर्वेदइज्याथगांधर्ववेदः ॥ ११५ ॥ विधाताचनारायणःसत्कुमारोवराहस्तथानारदोधर्मपुत्रः ॥ मुनिःकर्दमस्यात्मजोदत्तएवसयज्ञोऽमरोनाभिजःश्रीपृथुश्च ॥११६॥ सुमत्स्यश्चकूर्मश्चधन्वंतरिश्चतथामोहिनीनारसिंहःप्रतापी॥द्विजोवामनोरेणुकापुत्ररूपोमुनिर्व्यासदेवःश्रुतिस्तोत्रकर्त्ता॥११७॥धनुर्वेदभाग्रामचन्द्रावतारःससीतापतिर्भारहृद्रावणारिः ॥ नृपःसेतुकृद्वानरेंद्रप्रहारीमहायज्ञकृद्राघवेंद्रःप्रचण्डः॥११८॥ बलःकृष्णचन्द्रस्तुकल्किःकलेशस्तुबुद्धप्रसिद्धस्तुहंसस्तथाश्वः ॥ ऋषींद्रोऽजितोदेववैकुण्ठनाथोह्यमूर्तिश्चमन्वन्तरस्यावतारः ॥ ११९ ॥

घटी, क्षण, काष्ठा, मुहूर्त, याम, ग्रह, रात्रि, दिन, नक्षत्रमालामें गतसूर्य ॥ ११३ ॥ सतयुग, द्वापर, त्रेता, कलि, सहस्रयुग, मन्वंतर, लय, पालन, सत्कृति, परार्द्ध, सदा उत्पत्ति करनवारो अक्षरब्रह्मरूप ॥ ११४ ॥ रुद्रसर्ग, कौमारसर्ग, मुनिसर्ग, देवसर्ग, और प्राकृतसर्ग, श्रुति, स्मृति, स्तोत्र, पुराण, धनुर्वेद, गांधर्ववेद ॥ ११५ ॥ विधाता, नारायण सनत्कुमार, वराह, नारद, धर्मपुत्र (नरनारायण) कर्दमके पुत्र कपिल सुयज्ञ, ऋषभदेव, पृथु ॥ ११६ ॥ मत्स्य, कूर्म, धन्वंतरि, मोहिनी, नृसिंह, वामन, परशुराम, व्यासदेव, श्रुतिस्तोत्रकरनवारे ॥ ११७ ॥ और धनुर्वेदके जाननवारे रामचंद्र सीताके पति धरणीके बोझ उतारनवारे रावणके शत्रु मनुष्यनके पालन करनेवारे वालीको मारनवारे महायज्ञ कर्ता राघवेंद्र बडे प्रचंड ॥ ११८ ॥ बलदाउ, कृष्णचंद्र, कल्कि, कलानके स्वामी, प्रसिद्ध, बुद्ध, हंस, हयग्रीव, ऋषींद्र, दत्त, अजित, वैकुंठनाथ, अमूर्ति इनसों पृथक् तत्तन्मन्वं

तरावतार ॥ ११९ ॥ गजोद्धारण, ब्रह्मा, मनु, दुष्यंतज (भरत) बडो दानशील जैसो न भयो न होयगो न देखो न सुनो और जो स्थावर जंगम छोटो बडो है सो सब कृष्णरूपही है ॥ १२० ॥ ये गर्गजी कहेहैं भुजंगप्रयात छंदसों हरि भगवान् श्रीराधिकेशजीके हजार नाम कहेहे जो द्विजहैके भक्तिसों पाठकरै वो कृतार्थ और साक्षात् श्रीकृष्णचंद्रस्वरूप है जायहै ॥ १२१ ॥ जो सुने तो महापाप राशिको भेदनकरैहै ये सदा वैष्णवनको प्यारो मंगलरूप है या स्तोत्रको आश्विनसुदी पूर्णाको पाठकरै या कृष्णजन्माष्टमीके दिन पाठ करै ॥ १२२ ॥ अथवा चैतसुदी पूर्णाके दिन अथवा भाद्रपदकी बदी सुदी अष्टमीके दिन पुस्तकको पूजनकरके पाठकरै तो तब वाको चार प्रकारको मोक्ष वा पुरुषको मिले है ॥ १२३ ॥ और मथुरा, वृंदावन, व्रज, गोकुल, वंशीवट, अक्षयवट, या यमुनातटपर पाठकरै वो भक्त गोलोकधामको जायहै ॥ १२४ ॥ या भक्तिभावसों कही भूमिमें वनमें या

गजोद्धारणःश्रीमनुर्ब्रह्मपुत्रोनृपेन्द्रस्तुदुष्यंतजोदानशीलः ॥ सदृष्टःश्रुतोभूतएवंभविष्यद्भवत्स्थावरोजंगमोल्पंमहच्च ॥ १२० ॥ इतिश्रीभुजङ्गप्र यातेनचोक्तंहरेराधिकेशस्यनाम्नांसहस्रम् ॥ पठेद्भक्तियुक्तोद्विजःसर्वदाहिकृतार्थोभवेत्कृष्णचन्द्रस्वरूपः ॥१२१॥ महापापराशिंभिनत्तिश्रुतं यत्सदावैष्णवानांप्रियंमंगलंच ॥ इदंरासराकादिनेचाश्विनस्यतथाकृष्णजन्माष्टमीमध्यएव ॥ १२२ ॥ तथाचैत्ररासस्यराकादिनेवाथभाद्रेच राधाष्टमीसद्दिनेवा ॥ पठेद्भक्तियुक्तस्त्विदंपूजयित्वाचतुर्धासुमुक्तिंतनोतिप्रशस्तः ॥ १२३ ॥ पठेत्कृष्णपुर्यांचवृन्दावनेवाव्रजेगोकुलेवापिवं शीवटेवा ॥ वटेवाक्षयेवातटेसूर्य्यपुत्र्याःसभक्तोथगोलोकधामप्रयाति ॥ १२४ ॥ भजेद्भक्तिभावात्सर्वत्रभूमौहरिंकुत्रचानेनगेहेवनेवा ॥ जहाति क्षणंनोहरिस्तंचभक्तंसुवश्योभवेन्माधवःकृष्णचन्द्रः ॥ १२५ ॥ सदागोपनीयंसदागोपनीयंसदागोपनीयंप्रयत्नेनभक्तैः ॥ प्रकाश्यंननाम्नांसह स्रंहरेश्चनदातव्यमेवंकदालंपटाय ॥ १२६ ॥ इदंपुस्तकंयत्रगेहेपितिष्ठेद्वसेद्राधिकानाथआद्यस्तुतत्र ॥ तथाषड्गुणाःसिद्धयोद्वादशापिगुणैस्त्रिंश तैर्लक्षणैस्तुप्रयांति ॥ १२७ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डेश्रीकृष्णसहस्रनामवर्णनंनामैकोनषष्टितमोऽध्यायः ॥ ५९ ॥ ॥ गर्गउ वाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वाव्यासमुखात्कृष्णनाम्नांसहस्रकम् ॥ संपूज्यतंयादवेन्द्रोभक्त्याकृष्णेमनोदधे ॥ १ ॥ ततःसमिथिलायांचबहुलाश्व श्रुतदेवयोः ॥ दत्त्वास्वदर्शनंकृष्णआययौद्वारकांपुरीम् ॥ २ ॥

घरमें या स्तोत्रको पाठकरै वा भक्तको भगवान् एकक्षणभरभी संग नहीं छोडेहै और माधव कृष्णचंद्र वा भक्तके वशमें हैजायहै ॥ १२५ ॥ ये सदा गोपनीय सदा गोपनीय सदा गोपनीय है ये सहस्रनाम कभी कहने लायक नहीं है और लंपट मनुष्यनके अगारी कहने लायक नहीं है ॥ १२६ ॥ ये सहस्रनामको पुस्तक जा घरमें रहैहै वहां आद्य राधि कानाथ सदा निवास करैहै और छहौ गुण बारह सिद्धि और तीस लक्षणहूं वहांही निवास करैहैं ॥ १२७ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायामेकोनषष्टितमोऽध्यायः ॥ ५९ ॥ गर्गजी कहैहै कि, ये व्यासजीके मुखसों सुनके कृष्णके सहस्रनामको तब उग्रसेनजी व्यासदेवजीको पूजनकर भक्तिसों कृष्णमें मन लगायोहै ॥ १ ॥ तब मिथिलानगरीमें बहुला

चितायके सब विराटनगरमें सेनासहित एकत्र भयेहैं ॥ ४ ॥ तब सब कौरव श्रीकृष्णने जिनसों प्रार्थना करी परन्तु तब भी कौरवनने आधो राज्य ताते आधो और बाहूसों आधो पांड वनको कौरवनने देनों नहीं विचारो ॥ ५ ॥ तब भगवान् कौरव पांडवनके युद्धको समझके कि, अवश्यही इनको युद्ध होयगो ये निश्चयकरके आप निरायुध हैके स्थितभयेहैं कि अब मैं शस्त्रको हाथमें नहीं लैंऊंगो तब सूत और बल्वलको दाऊजीने मारेहैं ॥ ६ ॥ तब ये सब धर्मको क्षेत्र जो कुरुक्षेत्र तामें आयके कौरव और पांडव परस्पर युद्ध करतेभयेहैं ॥७॥ तामें कृष्णकी दयासों पांडवनको जय भयोहै और पापकरनवारे सब कौरव मारेगयेहैं ॥ ८ ॥ ताके पीछे राजा युधिष्ठिरने नौ वर्ष राज्य कियो तामें तीन अश्वमेध यज्ञ किये तिन

ततश्चपांडवाःसर्वेद्रौपद्यासहभार्यया ॥ द्वारकायाविनिर्गत्यविचेरुस्तेवनेवने ॥ ३ ॥ भुक्त्वाचवनवासंतेऽज्ञातवासंतथैवच ॥ विराटनगरेसर्वेसंसै
न्यास्तेभवन्नृप ॥४॥ ततश्चकौरवाःसर्वेश्रीकृष्णेनापिप्रार्थिताः॥नतेषांप्रददूराज्यमर्धार्द्धंचतदर्धकम् ॥ ५ ॥ पांडवानांकौरवाणांज्ञात्वायुद्धंज
नार्दनः ॥ निरायुधोभूत्वाचास्थाद्बलोऽहन्सूतबल्वलौ ॥ ६ ॥ ततःसर्वेकुरुक्षेत्रेधर्मक्षेत्रेप्रविश्यच ॥ कौरवाःपांडवाश्चैवयुद्धंचक्रुःपरस्परम् ॥ ७ ॥
जयःकृष्णस्यकृपयापांडवानांबभूवह ॥ भारतेचमृताःसर्वेकौरवाःकृतकिल्बिषाः ॥ ८ ॥ ततश्चनववर्षाणिधर्मोराज्यंचकारह ॥ हयमेधत्रयंय
ज्ञेतेनशुद्धोऽभवन्नृप ॥ ९ ॥ ततःकृष्णेच्छयाराजन्द्वारकायांकिलैकदा ॥ यादवेभ्यश्चसर्वेभ्योविप्रशापोऽभवन्महान् ॥ १० ॥ ततःकृष्णस्तु
भगवान्प्रपन्नायोद्धवायच ॥ अश्वत्थेकथयामासश्रीमद्भागवतंपरम् ॥ ११ ॥ ततोबभूवसंग्रामोयादवानांपरस्परम् ॥ निहतास्तेप्रभासेवैशस्त्रै
र्नानाविधैरपि ॥ १२ ॥ बलःशरीरंमानुष्यंत्यक्त्वाधामजगामह ॥ देवांस्तत्रागतान्दृष्ट्वाहरिरंतरधीयत ॥ १३ ॥ व्रजेगत्वाहरिर्नंदंयशोदांराधि
कांतथा ॥ गोपान्गोपीर्मिलित्वाऽहप्रेम्णाप्रेमीप्रियान्स्वकान् ॥ १४ ॥ ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ ॥ गच्छनंदयशोदेत्वंपुत्रबुद्धिंविहायच ॥
गोलोकंपरमंधामसार्द्धंगोकुलवासिभिः ॥ १५ ॥ अग्रेकलियुगोघोरश्चागमिष्यतिदुःखदः ॥ यस्मिन्वैपापिनोमर्त्याभविष्यंतिनसंशयः॥ १६ ॥
स्त्रीपुंसोर्नियमोनास्तिवर्णानांचतथैवच ॥ तस्माद्गच्छाशुमद्धामजरामृत्युहरंपरम् ॥ १७ ॥

सों राजा पवित्रभयेहैं ॥ ९ ॥ ताके पीछे हे राजन् ! कृष्णकी इच्छासों एकदिन द्वारकामें सब यादवनको ब्राह्मणनका महान् शापभयोहै ॥ १० ॥ तब भगवान् कृष्ण अपने भक्त उद्धवके लिये पीपरके नीचे बैठके भागवत उपदेश कियो ॥ ११ ॥ तब यादवनको परस्पर संग्रामभयो तब प्रभासतीर्थमें नानाशस्त्रनसों सब मरगये ॥ १२ ॥ तब श्रीबलदेवजी मनुष्यदेहको छोडके धामको गये फिर वहां सब देवतानको आयो देखके हरि अंतरधान हैगयेहैं ॥ १३ ॥ फिर भगवान्ने व्रजमें जायके यशोदा राधिका गोप गोपीनको मिलके प्रेमी भगवान् बड़े प्रेमसों सब अपने प्यारेनको कहतेभये ॥ १४ ॥ श्रीकृष्णजी बोले—हे नंद ! हे यशोदे ! तुम जाओ अब पुत्रबुद्धिको छोडके गोलोक मेरे धामको जाओ सब गोकुलवासिन समेत जाओ ॥ १५ ॥ देखो आगे प्रजाको दुखदाई घोर कलियुग आवेगो जामें पापीमनुष्य होयँगे यामें संदेह नहींहै ॥ १६ ॥ या कलियुगमें स्त्रीपुरुषके कोई

नियम नहींहै और वर्णकोहू कोई नियम नहींहै यासों तू शीघ्रही मेरे धामको जाओ जो मेरो धाम जरा और मृत्युको हरनेवारोहै ॥ १७ ॥ या प्रकार श्रीकृष्णके कहनेपर एक पांचयोजन विस्तीर्ण और पांचयोजन ऊँचो परम अद्भुत रथ आयोहै ॥ १८ ॥ निरे हीरानको बनो मुक्ता और रत्नसों विभूषितहै जो नो लाख मंदिरनसों और मणिमय दीपनसों युक्तहै ॥ १९ ॥ और दोहजार जामें पहिये और दोहजारही जामें घोडे जुतरहेहैं सूक्ष्मवस्त्रसों आच्छादितहै और एक कोटि सखीनसों आवृतहै ॥ २० ॥ तब गोलोकसे आये वा रथको गोप देखके बडे प्रसन्न भयेहैं इतनेईमें वहाँ कृष्णके शरीरमस एक देवता निकसो है ॥ २१ ॥ चार जाके भुज हैं और कोटि कामदेवकेसे सुंदर है तैसेही शंखचक्रको धारण करेहै जगतके पतिहै लक्ष्मी जिनके संगमेंहै ॥ २२ ॥ वो सुंदररथम बैठके शीघ्रतासों क्षीरसमुद्रको चलेगयेहैं तैसेही श्रीकृष्ण भगवान् हरि विष्णुरूप हैके ॥ २३ ॥ लक्ष्मीसहित

इतिब्रुवतिश्रीकृष्णेरथंचपरमाद्भुतम् ॥ पञ्चयोजनविस्तीर्णंपञ्चयोजनमूर्ध्वगम् ॥ १८ ॥ ॥वज्रनिर्मलसंकाशंमुक्तारत्नविभूषितम् ॥ मन्दिरैर्नव लक्षैश्चदीपैर्मणिमयैर्युतम् ॥ १९ ॥ सहस्रद्वयचक्रंचसहस्रद्वयघोटकम् ॥ सूक्ष्मवस्त्राच्छादितंचसखीकोटिभिरावृतम् ॥ २० ॥ गोलोकादागतं गोपाद्दृशुस्तेमुदान्विताः ॥ एतस्मिन्नंतरेतत्रकृष्णदेहाद्विनिर्गतः ॥ २१ ॥ देवश्चतुर्भुजोराजन्कोटिमन्मथसन्निभः ॥ शंखचक्रधरःश्रीमाँल्ल क्ष्म्यासार्द्धंजगत्पतिः ॥ २२ ॥ क्षीरोदंप्रययौशीघ्रंरथमारुह्यसुंदरम् ॥ तथाचविष्णुरूपेणश्रीकृष्णोभगवान्हरिः ॥ २३ ॥ लक्ष्म्यागरुडमारुह्य वैकुण्ठंप्रययौनृप ॥ ततोभूत्वाहरिःकृष्णोनरनारायणावृषी॥२४॥कल्याणार्थंनराणांचप्रययौबद्रिकाश्रमम् ॥ परिपूर्णतमःसाक्षाच्छ्रीकृष्णोराध यायुतः ॥ २५ ॥ गोलोकादागतंयानमारुरोहजगत्पतिः ॥ सर्वेगोपाश्चनन्दाद्यायशोदाद्याव्रजस्त्रियः ॥ २६ ॥ त्यक्तात्रशरीराणिदिव्यदेहा श्चतेऽभवन् ॥ स्थापयित्वारथेदिव्येनंदादीन्भगवान्हरिः ॥ २७ ॥ गोलोकंप्रययौशीघ्रंगोपालोगोकुलान्वितः ॥ ब्रह्मांडेभ्योबहिर्गत्वाददर्शविर जांनदीम् ॥२८॥ शेषोत्संगेमहालोकंसुखदंदुःखनाशनम् ॥ दृष्ट्वारथात्समुत्तीर्यसार्द्धंगोकुलवासिभिः ॥२९॥ विवेशराधयाकृष्णःपश्यन्न्यग्रो धमक्षयम् ॥ शतशृंगंगिरिवरंतथाश्रीरासमण्डलम् ॥३०॥ ततोययौकियद्दूरंश्रीमद्वृंदावनंवनम् ॥ वनैर्द्वादशभिर्युक्तंद्रुमैःकामदुघैर्वृतम् ॥३१॥

गरुडपै विराजमान हैके हरि भगवान् हे नृप ! वैकुंठको चलेगयेहैं तदनंतर श्रीहरि कृष्ण नरनारायणरूप हैके ॥ २४ ॥ मनुष्यनके कल्याणके लिये बदरिकाश्रमको चलेगये फिर परिपूर्णतम साक्षात् श्रीकृष्ण श्रीराधाके संग ॥ २५ ॥ गोलोकसे आये यानमें विराजमान हैके गोलोकको पधारेहैं तब सब नंदादिक गोप यशोदादिक व्रजकी स्त्री ॥ २६ ॥ अपने शरीरनको छोडके वे सब दिव्यदेह हैगयेहैं तब नंदादिकनको भगवान् दिव्यरथमें स्थापनकर ॥ २७ ॥ गोपाल भगवान् सब गोकुलको संगलेके गोलोकको चलेगयेहै ॥ तब सब ब्रह्मांडनके बाहिर जायके विरजानाम नदी देखीहै ॥ २८ ॥ शेषके उत्संगमें सुखदेनवारो दुःखनको नाशकरनवारो एक महालोक देखोहै तब देखके रथसों उतरके सब गोकुलवासीन समेत ॥ २९ ॥ श्रीकृष्ण राधाजी सहित अक्षयवटको देखते वा महालोकको प्रवेश करते भयेहैं शतशृंगनाम पर्वतको और रासमंडलको देखते ॥ ३० ॥ तदनंतर कितनेही दूर

जायके श्रीमद्वृंदावननामके वनको देखोहै जो बारह वननसों युक्तहै और कल्पवृक्षके समान वृक्षनसों युक्तहै ॥ ३१ ॥ यमुनानदीसों युक्तहै वसंतके पवनसों सुशोभितहै पुष्पनके कुंज निकुंज और गोपीगोपजननसों युक्तहै ॥ ३२ ॥ तब जयजयको शब्द गोलोकमें भयोहै जो धाम श्रीकृष्णके यहाँ पधारनेसों पूर्व शून्यहो॥३३॥तदनंतर यदुपत्नी स्त्री चितामें आरोहण करती भईहैं और देवकी आदिक यादवनकी सब पत्नी पतिलोकनमें गईहैं ॥३४॥ तब नष्ट भये गोत्र जिनके ऐसे यादवनको सांपरायिक कृत्य अर्जुनने कियोहै और गीताके गानसों दुःख सब शांत करके ॥ ३५ ॥ अर्जुन जोहै सो अपने पुरको आयके युधिष्ठिरको सब बात कही तब युधिष्ठिर भाइनको सायलेके भार्याको साथलेके स्वर्गको गयेहैं ॥ ३६ ॥ कृष्णके पधारेपै रैवतपर्वतसहित द्वारिकाको समुद्र डुबोय देतोभयोहै एक श्रीरुक्मिणीपतिके निज महलके विना ॥ ३७ ॥ जा हरिकी द्वारावतीमें आजतक ये समुद्रमें शब्द सुनाई परैहै कि चाहै

नद्यायमुनयायुक्तंवसंतानिलमंडितम् ॥ पुष्पकुञ्जनिकुंजंचगोपीगोपजनैर्वृतम् ॥ ३२ ॥ तदाजयजयारावःश्रीगोलोकेबभूवह ॥ शून्यीभूतेपुराधाम्निश्रीकृष्णेचसमागते ॥ ३३ ॥ ततश्चयदुपत्न्यश्चचितामारुह्यदुःखतः ॥ पतिलोकंययुःसर्वादेवक्याद्याश्चयोषितः ॥ ३४ ॥ बंधूनांनष्टगोत्राणांचकारसांपरायिकम् ॥ गीताज्ञानेनस्वात्मानंशांतयित्वासदुःखतः ॥ ३५ ॥ अर्जुनःस्वपुरंगत्वातमुवाचयुधिष्ठिरम् ॥ सराजाभ्रातृभिःसार्द्धंययौस्वर्गंचभार्यया ॥ ३६ ॥ प्लावयद्द्वारकांसिन्धूरैवतेनसमन्विताम् ॥ विहायनृपशार्दूलगेहंश्रीरुक्मिणीपतेः ॥ ३७ ॥ अद्यापिश्रूयतेघोषोद्वार्वत्यामर्णवेहरेः ॥ अविद्योवासविद्योवाब्राह्मणोमामकीतनुः ॥ ३८ ॥ विष्णुस्वामीरिवेरंशःकलेरादौमहार्णवे ॥ गत्वानीत्वाहरेरर्चांद्वार्वत्यांस्थापयिष्यति ॥ ३९ ॥ तंद्वारकेशंपश्यंतिमनुजायेकलौयुगे ॥ सर्वेकृतार्थतांयांतितत्रगत्वानृपेश्वर ॥ ४० ॥ यःशृणोतिचरित्रंवैगोलोकारोहणंहरेः ॥ मुक्तिंयदूनांगोपानांसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ४१ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डेराधाकृष्णयोर्गोलोकारोहणंनामषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६० ॥ ॥ वज्रनाभिरुवाच ॥ ॥ ब्रह्मन्नारायणः कृष्णोभगवान्प्रकृतेःपरः ॥ तस्यरूपंकथंश्यामंतन्मेव्याख्यातुमर्हसि ॥ १ ॥ त्वादृशामुनयोब्रह्मञ्जानंतिचरितंहरेः ॥ तथाकृष्णस्यदेवस्यनवयंकर्ममोहिताः ॥ २ ॥ सूतउवाच ॥ ॥ इत्याकर्ण्यवचस्तेनसंस्तुतःसमुनिर्मुने ॥ तत्त्वज्ञानायतत्त्वज्ञःकरुणःप्रत्यभाषत ॥ ३ ॥

पढो होय या नही पढो होय पन ब्राह्मण तो मेरोही शरीर है ॥ ३८ ॥ कलियुगकी आदिमें एक हरिको अंश होयगो वो समुद्रमें भीतर जायके भगवान्की प्रतिमाको लायके द्वारकामें वा मूर्तिको स्थापन करेगो ॥ ३९ ॥ सो जो कोई मनुष्य कलियुगमें वा द्वारकेशके दरशन करेंगे वे हे नृपेश्वर ! कृतार्थ होयँगे ॥ ४० ॥ जे कोई हरिके या गोलोकके पधारबेको सुनेगे औ यदुनको और गोपनको मुक्तिको सुनेंगे वे सब पापनसों छूट जायँगे ॥ ४१ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६० ॥ वज्रनाभजी पूछेहै कि, हे ब्रह्मन् ! मायासों परै जो भगवान् श्रीकृष्ण नारायण हैं तिनको श्यामरूप क्यों हो ये कारण मेरे आगे आप कहो ॥ १ ॥ हे ब्रह्मन् तुम्हारे समान जे मुनिजन हैं वेही हरिके चरित्रको जानेंहैं जे हमारेसे कर्मनमें मोहित हैं वे नही जानेंहैं ॥ २ ॥ तब सूतजी कहेंहैं कि, हे मुने ! या प्रकार वज्रनाभके स्तुति कियेको सुनके तत्त्वके जाननवारे बडे

दयालु गर्गजीहैं सो तत्त्वके जाननेको ये कहते भयेहैं ॥ ३ ॥ गर्गजी बोले कि देखो राजन् ! श्याम जो रूप है सो शृंगाररसको रूप है या शृंगाररसको देवता श्रीकृष्णही है तो लावण्यके समूहसों और उज्ज्वलरसके हैवेसों हरिको श्यामरूप समझनो ॥ ४ ॥ जैसे घटाको दूरसों श्यामरूप दीखेहै और जैसे नदको गहेलामें श्यामरूप दीखेहै और जैसे आकाशमें आकाशको श्यामरूप नहीहै किंतु उज्ज्वल है ॥ ५ ॥ और जैसे श्वेतवस्त्रमें श्यामल छवि दीखेहै ऐसेही कोटिकंदर्पकी लीला हैवेसों संतजन हरिको श्यामरूप कहेहैं ॥ ६ ॥ तब वज्रनाभजी बोलेहैं कि हे मुनिश्रेष्ठ ! तुम्हारे वाक्यसों मेरो संदेह दूर भयो पन हे ब्रह्मन् ! अगारी घोरकलियुग आवेगो ॥ ७ ॥ तामें कैसे मनुष्य होयँगे ये आप मोसें कहो आप भविष्यको जानो हो यासों मैं आपको प्रणाम करोहौं ॥ ८ ॥ तब श्रीगर्गजी बोलेहैं कि, देखो राजाजी ! कलियुगमें दश हजारवर्षतक जगन्नाथजी मनुष्यलोकमें

॥ ॥ गर्ग उवाच ॥ ॥ श्यामन्तुशृंगाररसस्यरूपंश्रीकृष्णदैवंकथितंमुनीन्द्रैः ॥ लावण्यसंघाच्चतथोज्ज्वलत्वाच्छ्यामंसुरूपंहितथाहरेश्च॥४॥ यथादूरतोदृश्यतेश्यामरूपंघटायास्तथैवंनदस्यापिगर्ते ॥ यथाकाशरूपंमहच्छ्यामलंवाजलंचाम्बरंचोज्ज्वलंनापिकृष्णम् ॥ ५ ॥ यथाधौतवस्त्रेपरेश्यामलाहिच्छविर्दृश्यतेचैवभावैःपरस्य ॥ तथाकोटिकंदर्पलीलाश्रयत्वाद्धरेःश्यामरूपंतुसंतोवदंति ॥ ६ ॥ ॥ वज्रनाभिरुवाच ॥ ॥ तववाक्यान्मुनिश्रेष्ठसंदेहश्चगतोमम ॥ अग्रेब्रह्मन्कलिर्घोरआगमिष्यतिभूतले ॥ ७ ॥ तस्मिन्मर्त्याःकीदृशाश्चभविष्यन्तिमुनेवद ॥ त्वंजानासिभविष्यंचतस्मात्त्वांप्रणमाम्यहम् ॥ ८ ॥ ॥ श्रीगर्ग उवाच ॥ ॥ कलेर्दशसहस्राणिजगन्नाथस्तुतिष्ठति ॥ तदर्द्धंजाह्नवीतोयंतदर्द्धंग्रामदेवताः ॥ ९ ॥ ततःसर्वेभविष्यन्तिपापिनःकलिमोहिताः ॥ नरकास्तेप्रयास्यंतिसर्वेचाल्पायुषोनराः ॥ १० ॥ विप्राःस्वकन्यांदास्यन्तिब्राह्मणायचमौल्यतः ॥ क्षत्रियाश्चपुत्रींस्वांमारयिष्यंतिलोलुपाः ॥ ११ ॥ मृषाकुर्वंतिवाणिज्यंवैश्याब्रह्मस्वतत्पराः ॥ शूद्राश्चम्लेच्छसंगेनदूषयिष्यंतिब्राह्मणान् ॥ १२ ॥ ब्राह्मणाःशास्त्रहीनाश्चराज्यहीनाश्चक्षत्रियाः ॥ वैश्याश्चद्रव्यहीनाश्चशूद्रानाथस्यदुःखदाः ॥ १३ ॥ दिनेव्यवायनिरताविरताधर्मकर्मणि ॥ स्त्रियःस्वच्छन्दगामिन्यःपुरुषायोनिलम्पटाः ॥ १४ ॥ पितृणामर्चनंचैववेदानामृत्विजांतथा ॥ विष्णोश्चवैष्णवानांचतुलस्याश्चगवांतथा ॥ १५ ॥ नप्रायेणकरिष्यंतिमानवाःकलिमोहिताः ॥ गणिकासुपरस्त्रीषुपरवित्तेषुमोहिताः ॥ १६ ॥

स्थित होयँगे तातें आधे दिन गंगाजी और ताके आधे दिन कलियुगमें ग्रामदेवता मनुष्यलोकमें रहेंगे ॥ ९ ॥ ताके पीछे सब मनुष्य कलियुगसों मोहितभये पापी होजायँगे वे सब अल्पायु होयँगे और वे सब नरकनको जायँगे ॥ १० ॥ और ब्राह्मण पुत्रीनको मोल लेलेके ब्राह्मणनको देयँगे और अत्यंतलोलुप हैवेसों क्षत्रिय लोग बेटीको मारगेरेंगे ॥ ११ ॥ और वैश्यलोग ब्रह्मस्वमें तत्परभये झूठे व्यापार करनवारे होयँगे और शूद्रजाति जेहैं वे म्लेच्छनके संगसों ब्राह्मणनको दूषण लगावेंगे ॥ १२ ॥ शास्त्रसे हीन तो ब्राह्मण राज्यसों हीन क्षत्रिय द्रव्यसो हीन वैश्य और अपने स्वामिनके दुःख देनवारे शूद्र होयँगे ॥ १३ ॥ दिनमें मैथुनकरनवारे धर्मकर्मसों भ्रष्ट होयँगे स्वेच्छासों विचरनवारी स्त्री और योनिलंपट पुरुष होयँगे ॥ १४ ॥ और पितरनको वेदनको और ऋत्विजनको और ऐसेही विष्णु वैष्णव और तुलसी तथा गऊनकोभी कोई पूजन नहीं करेंगे ॥ १५ ॥ क्योंकि कलिने जिनको

मोहितकियो ऐसे वे मनुष्य वेश्या या परस्त्री और परधनमें मोहित होयँगे ॥ १६ ॥ और सब महाशूद्रके समान सब एकवर्ण हैजायँगे और ओलानकी वर्षासों सब भूमि खेतीसों रहित होयगी ॥ १७ ॥ और वृक्ष फलहीन होयँगे नदीनके जल सूख जायँगे प्रजानसों राजा ताडित होयँगे और राजा प्रजानको मारेंगे ॥ १८ ॥ तब राजाने प्रश्न कियो—कि, महाराज ! कौन उपायसों कलियुगमें उत्पन्नभये मनुष्यनकी मुक्ति होयगी हे विप्रेंद्र ! सो तुम मेरे आगे कहो क्योंकि महाराज तुम परावरवित्तम हो ॥ १९ ॥ तब गर्गजी बोले हैं कि, सुनो राजन् ! देखो युधिष्ठिर विक्रम और शालिवाहन विजयाभिनंदन तथा नागार्जुन ॥२०॥ तथा कल्कि भगवान् ये छे कलियुगमें शककरनवारे होयँगे ये छै कलियुगमें धर्मको स्थापनकरेंगे ॥ २१ ॥ इन छैनमेंसों युधिष्ठिर हैगयो और ये पाँच आगे होयँगे ये चक्रवर्ती हैके अधर्मको नाशकरेंगे ॥ २२ ॥ और वामन विधि शेष और सनक ये विष्णु

एकवर्णाभविष्यंतिमहाशूद्रसमाःकिल ॥ सस्यहीनाभवेत्पृथ्वीशिलावृष्ट्यानिरंतरम् ॥ १७ ॥ फलहीनोपिवृक्षश्चजलहीनासरित्तथा ॥ प्रजाभिस्ताडितोभूपोभूपेनताडिताःप्रजाः ॥ १८ ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ केनोपायेनजीवानांकलौमुक्तिर्भविष्यति ॥ तन्ममाख्याहिविप्रेन्द्रत्वंपरावरवित्तमः ॥ १९ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ युधिष्ठिरोविक्रमश्चतथावैशालिवाहनः ॥ विजयाभिनन्दनश्चैवतथानागार्जुनोनृपः ॥ २० ॥ तथाकल्किश्चभगवानेतेवैशककंधिनः ॥ करिष्यंतिकलौभूपाधर्मस्थापनमेवच ॥ २१ ॥ अभूद्युधिष्ठिरोराजाभविष्यंतिनृपाश्चते ॥ अधर्मनाशयिष्यंतिभूत्वावैचक्रवर्त्तिनः ॥ २२ ॥ वामनश्चविधिःशेषःसनकोविष्णुवाक्यतः ॥ धर्मार्थहेतवेचैतेभविष्यंतिद्विजाःकलौ ॥ २३॥ विष्णुस्वामीवामनांशस्तथामाध्वस्तुब्रह्मणः ॥ रामानुजस्तुशेषांशोनिंबार्कःसनकस्यच ॥ २४ ॥ एतेकलौयुगेभाव्याःसंप्रदायप्रवर्त्तकाः ॥ संवत्सरेविक्रमस्यचत्वारःक्षितिपावनाः ॥ २५ ॥ संप्रदायविहीनायेमन्त्रास्तेनिष्फलाःस्मृताः ॥ तस्माच्चगमनंह्यस्तिसंप्रदायेनरैरपि ॥२६॥ पापक्षयकरायत्रश्रीकृष्णस्यकथाभवेत् ॥ वैष्णवैर्विप्रमुख्यैश्चनारायणपरायणैः ॥ २७ ॥ कृतेतुलिप्यतेदेशोत्रेतायांग्रामएवच ॥ द्वापरेचकुलंप्रोक्तंकलौकर्त्तैवलिप्यते ॥ २८ ॥ ध्यायन्कृतेयजन्यज्ञैस्त्रेतायांद्वापरेर्चयन् ॥ यदाप्नोतितदाप्नोतिकलौसंकीर्त्यकेशवम् ॥ २९ ॥

भगवानके वाक्यसों धर्मार्थस्थापनकरवेको कलियुगमें ब्राह्मण होयँगे ॥ २३ ॥ वामनजीके अंशसों तो विष्णुस्वामी ब्रह्माके अंशसों माध्व शेषजीके अंशसों रामानुज और सनकुमारके अंशसों निंबार्क होयँगे ॥ २४ ॥ ये चारों कलियुगमें संप्रदायके प्रवर्तक होयँगे और ये विक्रमसंवत्सरमें ही होयँगे और चारों भूमिके पावन होयँगे ॥ २५ ॥ क्योंकि जे संप्रदायविहीन मंत्र हैं वे मंत्र निष्फल मानेहैं यासों सब मनुष्यनको संप्रदायके मार्गनसोंही चलनो चाहिये ॥ २६ ॥ जहाँ पापनकी क्षयकरनवारी श्रीकृष्णकी कथा होयहै वैष्णव और नारायणपरायण ब्राह्मण प्रवृत्तकरे हैं ॥ २७ ॥ सतयुगमें पापकियेको देशभरको दोष लगतोहो त्रेतामें पापकियेको फल गामभरेको लगतोहो द्वापरमें पापकियेको दोष कुलभरको होतोहो और कलियुगमें तो केवल करनवारेको ही पापकियेको दोष होयहै औरको नहीं ॥ २८ ॥ सतयुगमें ध्यानकरवेसों त्रेतामें यज्ञनके करवेसों द्वापरमें पूजनकर

वैसों जो फल मिलतोहो सो कलियुगमें केवल नामकीर्तनकरवेसों ही हैजायहै ॥ २९ ॥ और सतयुगमें दशवर्षमें सिद्धि होती वो सिद्धि त्रेतामें एकवर्षमें और द्वापरमें एकमहीनामें वो सिद्धि होती सो सिद्धि कलियुगमें एकदिनरातमेंही हैजायहै ॥ ३० ॥ ये कलियुग सर्वधर्मनसों बहिष्कृत बडो घोरहै यामें जे वासुदेवपरायण हैं वेही मनुष्य कृतार्थहै और नहीं ॥ ३१ ॥ हे नृप ! वेही तो सभाग्यहै और वेही मनुष्यनमें कृतार्थहै जे कोई या कलियुगमें आप स्मरणकीर्तन करैंहैं और औरनपै करावैंहैं ॥ ३२ ॥ कृष्ण जो नामहै तामें कृषि जो पदहै सो सबको वचनहै और णे जो अक्षरहै वो आनंदको वचन (करनवारो) है यासों जो सर्वात्मा परब्रह्म सर्वानंददायक होय वाको कृष्ण कहैंहैं ॥ ३३ ॥ सब वेदनको सार परेते परे और जासों परे और कोई नहीं है ऐसे कृष्ण ये दो अक्षरही परब्रह्म है ताको जपके मुक्त हैजायहै ॥ ३४ ॥ गर्भमें तभीताई बसैहै और कामीको यमयातना तभीताई होयहै तभीताई गृही और भोगार्थी तभीताई होयहै जबतक कृष्णको सेवन नहीं करैहै ॥ ३५ ॥ देखो दुनियाँके विषयभोग और भाई बंधु ये सब नश्वर है

कृतेयद्दशभिर्वर्षैस्त्रेतायांहायनेनच ॥ द्वापरेचैकमासेनह्यहोरात्रेणतत्कलौ ॥ ३० ॥ घोरेकलियुगेप्राप्तेसर्वधर्मविवर्जिते ॥ वासुदेवपरामर्त्यास्ते कृतार्थानसंशयः ॥ ३१ ॥ तेसभाग्यामनुष्येषुकृतार्थानृपनिश्चितम् ॥ स्मरंतिस्मारयंतेयेहरेर्नामानिवैकलौ ॥ ३२ ॥ कृषिश्चसर्ववचनो णकारश्चात्मवाचकः ॥ सर्वात्माचपरंब्रह्मतेनकृष्णःप्रकीर्त्तितः ॥ ३३ ॥ संजप्यब्रह्मपरमंवेदसारंपरात्परम् ॥ परंनास्तीतिनास्तीतिकृष्णेत्यक्षरद्वयम् ॥ ३४ ॥ तावद्गर्भेवसेत्कामीतावत्तीयमयातना ॥ तावद्गृहीचभोगार्थीयावत्कृष्णंनसेवते ॥ ३५ ॥ नश्वरोविषमःसत्यंभोगश्च बन्धवोभुवि ॥ स्वयंत्यक्तासुखायैवदुःखायत्याजितैःपरैः ॥ ३६ ॥ श्रुत्वादेवान्महन्निंदांश्रीकृष्णस्मरणाद्बुधः ॥ मुच्यतेसर्वपापेभ्योनान्यथा रौरवंव्रजेत् ॥ ३७ ॥ नकाष्ठेविद्यतेदेवोनशिलायांनकांचने ॥ यत्रभावस्तत्रहरिस्तस्माद्भावंहिकारयेत् ॥ ३८ ॥ सकृदुच्चरितंयेनकृष्णइत्यक्षरद्वयम् ॥ बद्धःपरिकरस्तेनमोक्षायगमनंप्रति ॥ ३९ ॥ सरोगतासाधुजनेषुवैरंपरोपतापोद्विजवेदनिंदा ॥ अत्यन्तकोपःकटुकाचवाणी नरस्यचिह्नंनरकेगतस्य ॥ ४० ॥ स्वर्गागतानामिहजीवलोकेचत्वारिचिह्नानिसदावसन्ति ॥ दानप्रसंगोमधुराचवाणीदेवार्चनंब्राह्मणपूजनंच ॥ ४१ ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ व्रतेषुकिंवरंब्रह्मन्सत्सुतीर्थेषुकिंमहत् ॥ देवेषुपूजनीयेषुकोमुख्यःकथयस्वनः ॥ ४२ ॥

याहीसों सत्य नहीं है जब ये आपही त्यागदिये जाँय तब तो सुखदेनवारे होयहैं नहीं तो ये सब दुःखदेनवारे होय हैं ॥ ३६ ॥ देवकी इच्छाते महन्निंदाको सुनके बुधपुरुष श्रीकृष्णके स्मरणकरनेसे सब पापनसों छूटजायहै अन्यथा रौरवनरकमें जायहै ॥ ३७ ॥ काष्ठमें शिलामें और सुवर्णादिकोंमे देवता नहीं है किंतु जहां भावहै तहाँही देवताहै
यासों भावको करनोही मुख्यहै यासों भावकरै ॥ ३८ ॥ जाकाहूने एकबार कृष्ण ये दोनो अक्षर उच्चारण किये वा पुरुषने मानो मोक्षके जानेको कमर बाँध लिये है ॥ ३९ ॥ शरीरमें रोगसहित होनो पर (गैर) को दुःखदेनो साधुजनोंमें वैरकरनो ब्राह्मणोंकी वेदकी निंदा करनो अत्यंतकोप और कटुवचन बोलनो ये सब नरकमें जानेके चिह्न होतेहै ॥ ४० ॥ और या लोकमें स्वर्गमेंसे आये मनुष्यके ये चार चिह्न होतेहैं दानकरनेमें तो प्रसंगहोनो मीठो बोलनो देवपूजनकरनो और ब्राह्मणनको पूजनकरनो ॥ ४१ ॥ फिर राजाने प्रश्न किये

कि, हे ब्रह्मन् ! व्रतनमें मुख्य कौनसा व्रत है सत्तीर्थनमें श्रेष्ठ कौन है और पूजनीयदेवोंमें श्रेष्ठ कौन है ये कहो॥४२॥तब गर्गजी बोले कि, व्रतनमें तो एकादशीको व्रत मुख्य है तीर्थनमें गंगानदी मुख्य है और देवभक्तनमें वैष्णव मुख्य हैं ॥ ४३ ॥ देवतानमें विष्णु भगवान् मुख्य है और पूजनीयनमें गुरु मुख्य हैं जे ये कहेको नहीं मानेहैं वे कुंभीपाकमें परेहै ॥ ४४ ॥ राजा बोले कि, हे मुने ! एकादशीके माहात्म्यको और औरनके माहात्म्यकोभी कहो हे गुरुदेव ! अनुग्रह करो मैं आपको नमस्कार करूँहूं ॥ ४५ ॥ तब गर्गजी कहतेभये कि, हे यदुनंदन ! मै आपके आगे सब कहूँगो तुम सुनो देखो एकादशीके दिन तो अन्न या फल नहीं भोजनकरने ॥ ४६ ॥ मनुष्य यथोक्तविधिसे आनंदसे करे तब वो एकादशी फलदेनवारी या मनुष्यको होयहै ॥ ४७ ॥ तब वज्रनाभजी बोले कि, हे महाराज ! जे मनुष्य हरिवासरके दिन फलाहार करेंहैं उन मनुष्यनकी कौन गति होयहै ये

॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ एकादशीवराह्यस्तिव्रतेषुयदुनन्दन ॥ भागीरथीचतीर्थेषुदेवभक्तेषुवैष्णवः ॥ ४३ ॥ सुरेषुविष्णुर्भगवान्पूजनीयेषुश्रीगुरुः ॥ इमांवार्तानमन्यंतेकुंभीपाकेपतंतिते ॥ ४४ ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ एकादश्यास्तुमाहात्म्यमन्येषांचैवमेमुने ॥ कथयस्वप्रसादेनगुरुदेवनमोस्तुते ॥ ४५ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ कथयिष्याम्यहंसर्वंशृणुष्वयदुनन्दन ॥ एकादश्यांनभोक्तव्यमन्नंचैवफलंतथा ॥४६॥ यथोक्तविधिनाकुर्य्यादेकादशींमुदानरः ॥ तदासातस्यफलदाभवतिनृपसत्तम ॥ ४७ ॥ ॥ वज्रनाभिरुवाच ॥ ॥ फलाहारंचकुर्वंतिये नराहरिवासरे ॥ तेषांगतिःकाभवतितन्नोवर्णयविस्तरात् ॥ ४८ ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ समस्तंचोपवासेनयथोक्तंलभतेफलम् ॥ फलाहारेणचार्द्धंस्यात्किंचिन्न्यूनंजलेनच ॥ ४९ ॥ अन्नान्सर्वान्वर्जयित्वागोधूमाद्यान्नृपेश्वर ॥ एकादश्यांप्रकुर्वीतफलाहारंमुदानरः ॥ ५० ॥ अन्नंभुनक्तियोराजन्नेकादश्यांनराधमः ॥ इहलोकेसचांडालोमृतःप्राप्नोतिदुर्गतिम् ॥ ५१ ॥ दधिदुग्धंतथामिष्टंकूटंकर्कटिकांतथा ॥ वास्तूकंपद्ममूलंचरसालंजानकीफलम् ॥ ५२ ॥ गंगाफलंपत्रनिंबुन्दाडिमश्चविशेषतः ॥ शृंगाटकंनागरंगंसैंधवंकदलीफलम् ॥ ५३ ॥ अम्रातकमार्द्रकंचतूलंचबदरीफलम् ॥ जंबूफलमामलकंपटोलंत्रिकुशंतथा ॥ ५४ ॥ रतालूंशर्कराकंदमिक्षुदंडंतथैवच ॥ द्राक्षादीनिहिचान्यनिपवित्रंचफलंतथा ॥ ५५ ॥

सब हमसों विस्तारसों कहो ॥ ४८ ॥ तब गर्गऋषि बोलेहैं जो यथोक्तव्रत करेंहैं उनको समस्तफल होयहै और जो फलाहार करे तो आधो फल मिलेहै और जलमात्र ग्रहण करे तो किंचितन्यूनफल मिलेहै ॥ ४९ ॥ और हे नृपेश्वर ! जो गोधूमादिक सब अन्ननको वर्जन करे और आनंदसों केवल फलाहारकोही मनुष्य करे तब वाको आधो फल मिलेहै ॥ ५० ॥ और हे राजन् ! जे मनुष्य एकादशीको अन्न खाय है वो या लोकमें चंडाल है और मरेपै दुर्गतिको पावेहै ॥ ५१ ॥ दही दूध मिष्टान्न वा कूट या ककडी या वास्तूक (बथुआ) या कमलकंद अथवा रसाल आम या जानकीफल (सरीफा) ॥ ५२ ॥ या गंगाके फल या पत्र निंबु अनार सिंघाडा नागर (सोंठ) सैंधव या केलाके फल ॥ ५३ ॥ आम्रातक अदरख तूल या बदरी फल (बेर) जामन आमले परवर त्रिकुश ॥ ५४ ॥ रतालू शर्कराकंद (सकरकंद) गाडा और दाख इनसे आदि लेके औरहू फल पवित्र

है वे एकादशीके फलाहारमें ग्रहण करे ॥ ५५ ॥ और हे राजेंद्र ! हरिवासरके दिन एकवार भोजनकरै परंतु तीसरे प्रहरमें थोरो या बहुत फलाहार करै ॥ ५६ ॥ जो कुछ फला
हार करै वामेंसों आधो तो ब्राह्मणको देय आधो आप खायलेय जल दोवारसो अधिक न पीवे फलादिक जो खाय वो एकवार खाय ॥ ५७ ॥ जनार्दनको पूजन करके रात्रिमें
जागरण करै और जो कोई मनुष्य दोवेर या तीनवेर फल खायहै वाको व्रतकरेको किंचित् भी फल नहीं होयहै ॥ ५८ ॥ और जो पंद्रहदिन अन्न खानेमें पाप होयहै ॥ ५९ ॥
सो सब एकादशीके उपवासकरनेसे निवृत्त हैजाय है ब्राह्मणको भोजनदेय और आप उपवासकरै ॥ ६० ॥ और एकादशीके माहात्म्यको सुनै वो सब पापनसों छूटजायहै द्रव्यकी
इच्छावारेको द्रव्य पुत्रकी इच्छावारेको पुत्र और मोक्षकी इच्छावारेको मोक्ष मिलैहै एकादशीके व्रतकरेसों ॥ ६१ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायामेकषष्टितमो

एकवारंचराजेंद्रभोक्तव्यंहरिवासरे ॥ तृतीयेप्रहरेतीतेप्रस्थेस्यचफलस्यच ॥ ५६ ॥ द्विजायचार्द्धंदातव्यमर्द्धमात्मनिभोजनम् ॥ द्विवा
रंजलमश्नीयादेकवारंफलंतथा ॥५७॥ समाचरेज्जागरणंपूजयित्वाजनार्दनम् ॥ द्विवारंवात्रिवारंवायोनरोहरिवासरे ॥ ५८ ॥ करोतिचफलाहा
रंतस्यकिंचित्फलंनहि ॥ अन्नभुक्तेनयत्पापंजातंपंचदशैर्दिनैः ॥ ५९ ॥ एकादश्युपवासेनतत्सर्वंविलयंभवेत् ॥ भोजनंब्राह्मणेदत्त्वाह्युपवासंस
माचरेत् ॥६०॥ श्रुत्वातस्याश्चमाहात्म्यंसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ द्रव्यार्थीलभतेद्रव्यंसुतार्थीलभतेसुतम् ॥ मोक्षार्थीलभतेमोक्षमेकादश्याव्रतेनवै ॥
॥ ६१ ॥ इतिश्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डएकादशीमाहात्म्यंनामैकषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६१ ॥ ॥ गर्गउवाच ॥ ॥ तपःकृतंपुरायेनदु
र्जरंपूर्वजन्मनि ॥ इहलोकेचतस्याशुगुरौभक्तिर्हिजायते ॥१॥ गुरोःसेवांनकुरुतेस्वगुरुंयोनमन्यते ॥ यःसमर्थश्चपततिकुंभीपाकेचसर्वदा ॥२॥
गुरोरभक्तंमगतंदृष्ट्वागोघ्नोभवेन्नरः ॥ स्नात्वागंगांचयमुनांतदाभवतिनिर्मलः ॥ ३ ॥ द्रव्यलाभस्तुशिष्यस्यभवेद्वैयत्रयत्रच ॥ दशांशंचगुरो
स्तस्मिन्गृहद्रव्येतथाहिनः ॥ ४ ॥ तंभुंजतिबलाच्छिष्योनदास्यतिगुरुंपृथक् ॥ समहारौरवंयातिहीनःसर्वसुखैरिह ॥ ५ ॥ हरौकुर्वंतियेनि
त्यंभक्तिंचनवलक्षणाम् ॥ संसारसागरंराजंस्तेतरंतिसुखेनवै ॥ ६ ॥ ज्ञातिंविद्यांमहत्त्वंचरूपंयौवनमेवच ॥ यत्नेनपरिवर्जेतःपंचैतेभक्तिकं
टकाः ॥ ७ ॥ भक्त्याकृष्णस्यराजेन्द्रप्रसादंचरणोदकम् ॥ येगृह्णंतिभवेषुभूपावनानात्रसंशयः ॥ ८ ॥

ध्याय. ॥ ६१ ॥ गर्गजी कहैहै कि जा मनुष्यने पूर्वजन्ममें दुर्जर तप कियो होयहै वा मनुष्यको या लोकमें गुरुमें भक्ति होयहै ॥ १ ॥ जो मनुष्य गुरुकी सेवा नहीं करैहै और जो
मनुष्य अपने गुरुको नहीं मानैहै समर्थ हैके वो मनुष्य सर्वदा कुंभीपाकमें परैहै ॥ २ ॥ गुरुके अभक्तको जो सन्मुखसों आवतो देखै तो वा मनुष्यको गोवधको पाप लगेहै फिर जब
वो मनुष्य गंगामें या यमुनामें स्नानकरै तब निर्मल होयहै ॥ ३ ॥ जो शिष्यको कहीं द्रव्यको लाभ होय वामेंसे और घरमें द्रव्य है वामेंसे दशांश द्रव्य गुरुको समर्पै ॥ ४ ॥ वा दशांश
द्रव्यको यदि शिष्य आप खायलेय और गुरुको न देय तो वो मनुष्य महारौरव जायहै और यहाँ सब सुखसों हीन होयहै ॥५॥ जे कोई मनुष्य गुरुमें नवलक्षणाभक्ति करैहै वे मनुष्य संसारसागरको
सुखसों पार होयहै ॥६॥ ज्ञाति विद्या महत्त्व रूप और यौवन इनको यत्नसों परित्यागकरै ये पांच भक्तिके कंटकहै ॥७॥ जे मनुष्य श्रीकृष्णके प्रसादको और चरणामृतको ग्रहण करैहै वे निःसंदेह

भूमिके पावन होयहैं ॥ ८ ॥ गंगा तो पापको हरैहै और चंद्रमा तापको हरैहै और कल्पवृक्ष दीनताको दूरकरैहै और साधुनको समागम तीनों तापनको दूर करैहै ॥ ९ ॥ तबतक या संसारमें या मनुष्यके पितर पिंडकी चाहना करते डोलैहैं जबतक वंशमें कोई पुत्र पौत्रादि कृष्णको भक्त नही होयहै ॥ १० ॥ वो गुरु नही वो पिता कहा वो पुत्र कहा वो सखा कहा वो राजा कहा और वो बंधु कहा जो हरिमे मति न देय अर्थात् वे कोई कामके नही है ॥ ११ ॥ जे मनुष्य विद्याके धनके घरके कलानके अभिमानी हैं और रूपादि दारा और पुत्र इनमें नित्य बुद्धि माननवारेहैं और जे अन्यदेवतानको देखके फल चाहना करनवारेहैं और केशवभगवान्‌को भजन नहीं करैहैं वे आदमी जीवते मुरदा गिने जायहै ॥ १२ ॥ हे नृपसत्तम ! ये सब वृत्तांत मैंने आपके आगे या अश्वमेधपर्वको सुमेरु कह्योहै जो ये कृष्णके चरित्रसों व्याप्तहै ॥ १३ ॥ जाके श्रवणमात्रसोंही कृष्णमें भक्ति होयगी हे नृप

गंगापापंशशीतापंदैन्यंकल्पतरुर्हरेत् ॥ पापंतापंतथादैन्यंसद्यःसाधुसमागमः ॥ ९ ॥ तावद्भ्रमंतिसंसारेपितरःपिंडतत्पराः ॥ यावद्वंशेसुतः कृष्णभक्तियुक्तोनजायते ॥ १० ॥ सकिंगुरुःसकिंतातःसकिंपुत्रःसकिंसखा ॥ सकिंराजासकिंबंधुनर्दद्याद्योहरौमतिम् ॥ ११ ॥ विद्याधनागारकलाभिमानिनोरूपादिदारासुतनित्यबुद्धयः ॥ दृष्ट्वान्यदेवान्फलकामिनश्चजीवन्मृतास्तेनभजंतिकेशवम् ॥ १२ ॥ इयमेधचरित्रस्यसुमेरुः कथितोमया ॥ व्याप्तःकृष्णचरित्रैश्चतवाग्रेनृपसत्तम ॥ १३ ॥ यस्यश्रवणमात्रेणकृष्णभक्तिर्भविष्यति ॥ नराणांनृपशार्दूलशोकमोहभयापहा ॥१४॥ अनेनचरितेनापिलभतेवांछितंफलम् ॥ धनंधान्यंसुतंभक्तिंतथाशत्रुक्षयंनरः ॥ १५ ॥ तस्माद्भजाशुराजेन्द्रश्रीकृष्णंजगदीश्वरम् ॥ भक्त्यागृहेवाविपिनेज्ञात्वाविश्वंमनोमयम् ॥ १६ ॥ आयुस्तेनरवीरवर्द्धतुसदाहेमंतरात्रिर्यथालोकानांप्रियदर्शनोभवसदाहेमंतसूर्योयथा ॥ शत्रूणामतिदुःसहोभवसदाहेमंततोयंयथानाशंयांतुतवारयोपिसततंहेमंतपद्मंयथा ॥ १७ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ ॥ इतिश्रुत्वावज्रनाभिर्हर्षितः प्रेमविह्वलः ॥ स्मरन्कृष्णस्यमाहात्म्यंनत्वागुरुमथाब्रवीत् ॥ १८ ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ धन्योहंचकृतार्थोहंभवताकरुणात्मना ॥ श्रुत्वा कृष्णस्यमाहात्म्यंलग्नःकृष्णेचनोमनः ॥ १९ ॥

शार्दूल ! जो भक्ति मनुष्यनके शोक मोह और भयको दूरकरनवारीहै ॥ १४ ॥ या चरित्रके श्रवणकरेसोंहूँ वांछितफल मनुष्यको मिलैहै और धन धान्य पुत्र और भक्ति तथा शत्रुनको नाश हे नृपसत्तम ! होयहै ॥ १५ ॥ यासों हे राजेंद्र ! श्रीकृष्णजगदीश्वरको शीघ्रही भजन कर चाहे घरमें या वनमें या विश्वको मनोमय जानके भक्तिसों कृष्णकोही भजन कर ॥ १६ ॥ हे नरवीर ! हेमंतकी रात्रिकी तरह तो तेरी आयु बढ़ी लोकनको प्रियदर्शन तुम ऐसे होउ जैसे हेमंतको सूर्य प्रियदर्शन होयहै और हेमंतको जल जैसे दुःखदाई असह्य होयहै ऐसेही आप अपने शत्रुनके दुःखदाई और असह्य होउ और जैसे हेमंतमें कमलनको नाश होयहै ऐसे आपके शत्रुनको नाश होउ ॥ १७ ॥ सूतजी कहैहैं कि वज्रनाभ या वृत्तांतको सुनके प्रेममें विह्वल हैके बडे हर्षित भयेहैं फिर श्रीकृष्णके माहात्म्यको श्रवणकरते गुरुजीको प्रणाम करके ये बोलैहैं ॥ १८ ॥ राजा बोले कि, गुरुजी महाराज ! दयालु आपने

मोकूं कृतार्थ कियोहै अब मैं धन्यभयोहूँ श्रीकृष्णके माहात्म्यकों सुनके अब मेरोहूँ मन श्रीकृष्णमेंही लगगयोहै ॥ १९ ॥ सूतजी कहे है कि ये कहिके राजसत्तमने गर्गगुरुको पूजन कियोहै गंध पुष्प अक्षत और रत्ननकी मालानसों पूजन कियोहै ॥ २० ॥ और गज रथ अश्व पालकी मंदिर चाँदीके भार सुवर्णके भार रत्न ग्राम प्रदक्षिणा और प्रणाम तथा नीराजनादिकसों हर्षपूरित राजाने सब प्रकार पूजन करके प्रसन्न कियोहै ॥ २१ ॥ सूतजी कहैहैं कि तदनंतर गर्गजी उठेहैं और वज्रको आशिर्पदैके राजाने जिनको प्रणाम कियेहैं सो गर्गजी दक्षिणाको ग्रहणकरके पधारेहैं ॥ २२ ॥ तब श्रीगर्गमुनिजी यमुनाके तीर श्रीविश्रांतनाम तीर्थमें जायके वो सब धन माथुर ब्राह्मणनको देदियेहै ॥ २४ ॥ तब गर्गजीके कहेसों वज्रनाभजीने मुनीश्वरनकरके सहित मथुराजीमें फिर अश्वमेध कियोहै जैसे पहले हस्तिनापुरमें कियो हो ॥२५॥ फिर वज्रनाभने मथुराजीमें दीर्घविष्णुको केशवदेवको वृंदावनमें

॥ ॥ सूतउवाच ॥ ॥ इत्युक्त्वापूजयामासगर्गाचार्य्यंनृपोत्तमः ॥ गन्धाक्षतैःपुष्पहारैस्तथाजालकमालया ॥ २० ॥ गजैरथैस्तुरंगैश्चशिबिकाभिश्चमंदिरैः ॥ रौप्याणांचैवभारैश्चस्वर्णभारैश्चशौनक ॥ २१ ॥ तथारत्नैश्चग्रामैश्चह्यात्मनाहर्षपूरितः ॥ प्रदक्षिणाप्रणामैश्चतथानीराजनादिभिः ॥२२॥ सूतउवाच ॥ ॥ ततश्चगर्गउत्थायदत्त्वावज्रायचाशिषम् ॥ भूपेनवंदितःसोपिययौदक्षिणयायुतः ॥ २३ ॥ सगत्वायमुनातीरेतीर्थेविश्रांतिसंज्ञके ॥ माथुरेभ्यश्चविप्रेभ्योमुनिःसर्वंधनंददौ ॥ २४ ॥ गर्गवाक्यात्ततोवज्रोमथुरायांमुनीश्वरैः ॥ चकारहयमेधंवैयथानागपुरेश्वरः ॥ २५ ॥ ततःसमथुरायांचदीर्घविष्णुंचकेशवम् ॥ वृन्दावनेचगोविंदंहरिदेवंगिरीश्वरे ॥ २६ ॥ गोकुलेगोकुलेशंचगोकुलाद्योजनेबलम् ॥ स्थापयामासवज्रस्तुहरेश्चप्रतिमाश्चषट् ॥ २७ ॥ बलस्यप्रतिमाश्चान्याःपञ्चैवव्रजमण्डले ॥ नृणांशुभायवज्रस्तुस्थापयामासहर्षितः ॥ २८ ॥ अब्दाश्चतुःसहस्राणिकलौपञ्चशतानिच ॥ गतेगिरिवरेहिश्रीनाथःप्रादुर्भविष्यति ॥ २९ ॥ तंपूजयिष्यतिमजेविष्णुस्वामीरवेस्तनुः ॥ वल्लभाद्याश्चतच्छिष्याश्चान्येगोकुलस्वामिनः ॥ ३० ॥ श्रीमद्भागवतान्मुक्तिंदृष्ट्वावज्रःपरीक्षितः ॥ वैराग्येणापिमुनयोराज्यंत्यक्तुंमनोदधे ॥ ३१ ॥ तदाऽऽययौचोपगविर्नरनारायणाश्रमात् ॥ पादुकांमस्तकेबिभ्रत्कृष्णचन्द्रस्यवैष्णवः ॥ ३२ ॥ भूपेनवंदितःसोपिप्रत्युत्थानासनादिभिः ॥ कथयामासवज्राग्रेश्रीमद्भागवतंमुदा ॥ ३३ ॥

गोविंददेवजीको और गिरिराजमें हरिदेवजीको गोकुलमें गोकुलेशको और गोकुलसे एक योजन दाऊजीको ऐसे ये भगवान्की छ प्रतिमा स्थापनकरीहै ॥ २६ ॥ २७ ॥ ताके पीछे वज्रनाभजीने व्रजमंडलमें बलदेवजीकी पांच प्रतिमा औरभी स्थापन की मनुष्यनके कल्याण करवेके लिये ॥२८॥ फिर कलियुगके चारहजार पांचसौ ४५०० वर्षबीते पीछे श्रीगिरिराजमें श्रीश्रीनाथजी प्रादुर्भाव होयँगे ॥२९॥ तिनको सूर्यको अवतार श्रीविष्णुस्वामी नाम हैके वि‍न श्रीनाथजीकी पूजा करैंगे फिर वल्लभते आदि विनके जे शिष्य होयँगे वे और तिनके पीछे औरभी गोकुलवासी श्रीनाथजीकी मूर्तिको पूजन करैंगे॥३०॥तब वज्रनाभजी श्रीभागवतके प्रभावसों परीक्षितकी मुक्तिको देखके हेमुनयः! वैराग्य लेके राज्यत्यागवेको मन करतेभये॥३१॥ तब विष्णुभगवान्के भक्त उद्धव श्रीकृष्णभगवानके पादुकानको माथेपे धरे बदरिकाश्रमते आये ॥३२॥ इनको वज्रनाभने प्रणामकरी उठके खडेभये आसन दियो तब उद्धवजीने आनंदसे

वज्रनाभके आगे श्रीभागवत निरूपण कियो ॥ ३३ ॥ तब वज्रनाभजीने उद्धवके मुखसों आनंदसे श्रीभागवत सुनके ये कही कि, हे तात ! पहले मैंने राजा परीक्षित्‌जीकी सभामें ये कथा सुनीही ॥ ३४ ॥ जो भागवत श्रीव्यासजीकी समाधिभाषा श्रीशुकदेवजीने वर्णन करीही वोही अब आपने कही अब मैं कृतार्थ हेगयो ॥ ३५ ॥ फिर वज्रनाभजी प्रतिबाहु नामके अपने पुत्रको राज्यदेके विमानमें बेठके और उद्धवजीको हू अपने संग विमानमें बेठारके गोलोकको चलेगये ॥ ३६ ॥ तदनंतर प्रतिबाहुने मथुराके दक्षिणमें और मथुराके उत्तरमें जन्मेजयने राज्य कियोहे ॥ ३७ ॥ हे राजन् ! आगे कलियुग अत्यंतघोर आवेगो परन्तु पापनको नाश करनवारो एक निर्वाह दीखेहे ॥ ३८ ॥ जबतक यहाँ श्रीभागवतशास्त्र हे और जबतक गोकुलके स्वामी हे और जबतक गोवर्द्धनपर्वत और गंगानदी विद्यमान है तबतक कलियुग नहीहे ॥ ३९ ॥ हे मुने ! जैसे जंबूद्वीपके भारतादि खंडनके मध्यमें सोनेको

श्रुत्वोद्धवाद्भागवतंवज्रःप्रोवाचहर्षितः ॥ श्रुतामयापुरातातसुसभायांपरीक्षितः ॥ ३४ ॥ समाधिभाषाव्यासस्यशुकदेवेनवर्णिता ॥ पुनस्त्वयापिकथिताकृतार्थोहंबभूवह ॥ ३५ ॥ इत्युक्त्वावज्रनाभिस्तुस्वराज्यंप्रतिबाहवे ॥ दत्त्वाजगामगोलोकंविमानेनापिचोद्धवः ॥ ३६ ॥ चकार राज्यंधर्मेणमथुरायांचदक्षिणे ॥ प्रतिबाहुःसुतस्तस्यचोत्तरेजनमेजयः ॥ ३७ ॥ अग्रेकलियुगोब्रह्मन्नागमिष्यतिदारुणः ॥ परंतुचैकंनिर्वाहं दृश्यतेपापनाशनम् ॥ ३८ ॥ यावद्भागवतंशास्त्रंयावद्गोकुलस्वामिनः ॥ यावद्गोवर्द्धनोगंगातावत्कलियुगंनहि ॥ ३९ ॥ भारतानांचखंडानां जंबूद्वीपेयथामुने ॥ मध्येसंराजतेमेरुःसौवर्णःपद्मपुष्पवत् ॥ ४० ॥ तथागोलोकखण्डानांसंहितायांमहामुनेः ॥ हयमेधचरित्रस्यमध्येमेरुर्विराजते ॥ ४१ ॥ अस्यश्रवणमात्रेणविप्रहागुरुतल्पगः ॥ स्त्रीराजपितृगोहन्तामुच्यतेसर्वपातकैः ॥ ४२ ॥ विप्रस्तुलभतेविद्यांराज्यंराजन्य एवच ॥ श्रवणाच्चधनंवैश्योधर्मंशूद्रस्तथैवच ॥ ४३ ॥ नदीषुचयथागंगादेवेषुभगवान्यथा ॥ तीर्थेषुवैतीर्थराजइयंवैसंहितासुच ॥ ४४ ॥ अस्याःश्रवणमात्रेणतृप्तिंयातिनरोत्तमः ॥नसज्जेतान्यशास्त्रेषुयथाभागवतान्मुने ॥४५॥ तस्माद्भजतपादाब्जंश्रीकृष्णस्यमहात्मनः ॥ कल्याणार्थंचमुनयोभक्तदुःखहरस्यच॥४६॥ ॥श्रीगर्गउवाच॥ ॥ इतिश्रुत्वाशौनकाद्यामुनयश्चरितंहरेः॥श्लाघांवैसूतपुत्रस्यचक्रुर्हर्षितमानसाः॥४७॥

सुमेरु विराजेहै जैसे कमलका पुष्प ॥ ४० ॥ ऐसेही या गर्गसंहिताके गोलोकादि खंडनके मध्यमें ये अश्वमेधखंड एक सुमेरुपर्वतकी नाईं विराजमान है ॥ ४१ ॥ या अश्वमेधके श्रवणमात्रसों ब्रह्महा, गुरुतल्पग, स्त्री, राजा, पिता, गऊ, इनको मारनवारो होय वोभी सब पापनसों छूटजायहै ॥ ४२ ॥ ब्राह्मणको विद्या राजाको राज्य वैश्यको धन और शूद्रको धर्म, याके श्रवणकरिबेते प्राप्त होयहै ॥ ४३ ॥ नदीनमें जैसे गंगा देवनमें जैसे भगवान् तीर्थनमें जैसे तीर्थराज ! ऐसेही संहितानमें गर्गसंहिता है ॥ ४४ ॥ याके श्रवणमात्रसेही नरोत्तम तृप्तिहोयहै यासों अन्य शास्त्रनमें आसक्त न होय जैसे भागवतके श्रवणसों तृप्ति होयहै ऐसेही याके श्रवणसों तृप्तहोयहै ॥ ४५ ॥ यासों श्रीकृष्ण महात्माके पादकको भजन करौ हे मुनिहो ! जो कल्याण चाहतेहो तो भक्तनके दुःखनके हरनवारे भगवान्‌कोही भजनकरो ॥ ४६ ॥ श्रीगर्गजी कहतेभये या प्रकार शौनकादिमुनि हरिके चरित्रको

सुनके हर्षितहैके सूतकी श्लाघा करतेभये ॥ ४७ ॥ हे करुणानिधे ! संसारसागरमें डूबे दीनको मोकूँ कालरूप ग्राहने जिसको पकर राखोहै ताको हे विष्णो ! रक्षाकरौ मेरो आपको नमस्कार होय ॥ ४८ ॥ हे साधो ! तुम अनाथनके प्यारेहो सो हमारे ऊपर अनुग्रह करो जैसे स्वामी त्रैलोक्यको अभयदेवै तैसेही करो ॥ ४९ ॥ श्रीगुरुकी कृपाकरके और श्रीमदनमोहनकी सेवाकरके हे हरे ! जैसे मेरी वाणी आपके गुणानुवादको गान करनवारी हो ऐसी करो ॥ ५० ॥ वाल्मीकादि और व्यासादिक जे महाकवि है या लघूक्त मेरी कविताको और आपलोगभी देखौ और देखके मेरे अपराधको क्षमाकरौ ॥ ५१ ॥ श्रीमाधव व्रजके पति नवमेघके समान जाको अंग राधाके पति देवतानके पति मुरलीके धारण

संसारसागरेमग्नंदीनंमांकरुणानिधे ॥ कालग्रहगृहीतांगंत्राहिविष्णोनमोस्तुते ॥४८॥ अनुग्रह्मीष्वनःसाधोत्वंह्यनाथस्यवल्लभः ॥ त्रैलोक्यस्या भयंदद्याद्यथास्वामीतथाकुरु ॥ ४९ ॥ श्रीगुरोःकृपयाहिश्रीमदनमोहनसेवया ॥ बभूववाङ्ममहरेस्तवाचरितमीरितम् ॥ ५० ॥ वाल्मीक्या द्याश्चव्यासाद्यालघूक्तांकवितांमम ॥ पश्यन्तुदृष्ट्वायूयंचाऽपराधंक्षंतुमर्हथ ॥५१॥ श्रीमाधवंव्रजपतिंनवमेघगात्रंराधापतिंसुरपतिंमुरलीधरञ्च ॥ भक्तार्तिदञ्चपरमार्थमनन्तदेवंकृष्णंनमामिशिरसामनसाचभक्त्या ॥ ५२ ॥ षड्विंशञ्चशतारामापिसप्ताशीतिसुप्रियाः ॥ श्लोकाश्चरित्रमेरोर्वैश्री कृष्णस्यममात्मनः ॥ ५३ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखण्डेसुमेरुसंपूर्त्तिर्नामद्विषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६२ ॥ समाप्तोऽयंग्रन्थः ॥

करनवारे भक्तजननकी आर्तिके दूरकरनवारे परमार्थरूप अनंतदेव श्रीकृष्णको भक्तिपूर्वक मनसे तथा शिरसे प्रणामकरौहौ ॥ ५२ ॥ या सुमेरुभूत अश्वमेधखंडमें अत्यंतप्यारे सताइससे सत्तासी सुरनको प्यारे श्लोक है जिनमे श्रीकृष्णजीका केवल चरित्र गान कियोहै ॥ ५३ ॥ इति श्रीमद्गर्गसंहितायामश्वमेधखंडे भाषाटीकायां द्विषष्टितमोध्यायः ॥ ६२ ॥

समाप्ता चेयं गर्गसंहिता ॥ शुभम्भूयात् ॥

इद पुस्तक क्षेमराज–श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना तथाप्रकाल्वुलोपमलालश्यामलालेन मुम्बय्यां (खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लेन) 'श्रीवेङ्कटेश्वर' (स्टीम) मुद्रणयन्त्रालये मुद्रयित्वा प्रकाशितम्। संवत् १९६८, शके १८३३.

पुस्तक मिलनेका पता–

लाला श्यामलाल,

श्यामकाशी प्रेस–मथुरा.

पुस्तक मिलनेका पता–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम प्रेस–बम्बई,

अत्रेयमभ्यर्थना.

अस्माकं मुद्रणालये वेद-वेदान्त-धर्मशास्त्र-प्रयोग-योग-सांख्य-ज्योतिष-पुराणेतिहास-वैद्यक-मंत्र-स्तोत्र-कोश-काव्य-चम्पू-नाटकालं-
कार-संगीत-नीति-कथाग्रंथाः, बहवः स्त्रीणां चोपयुक्ता ग्रंथाः, बृहज्ज्योतिषार्णवनामा बहुविचित्रचित्रितोऽयमपूर्वग्रन्थः ।
संस्कृतभाषया, हिन्दीभाषयाऽन्यतरभाषाग्रन्थास्तत्तच्छास्त्रार्थानुवादकाः, चित्राणि, पुस्तकमुद्रणोपयोगिन्यो याव-
त्यस्सामग्र्यः, स्वस्वलौकिकव्यवहारोपयोगिचित्रचित्रितलिखितपत्रवत्पुस्तकानि च; मुद्रयित्वा प्रकाश्यन्ते
सुलभेन मूल्येन विक्रयाय । येषां यत्राभिरुचिस्तत्तत्पुस्तकाद्युपलब्धये एवं नव्यतया स्वस्वपुस्तकानि
सुमुद्रयिषुभिः सुलभयोग्यमौल्येन सीसकाक्षरैः स्वच्छोत्तमोत्तमपत्रेषु मुद्रिततत्पुस्तकानां
स्वस्वसमयानुसारेणोपलब्धये च पत्रिकाद्वारातैः प्रेषणीयोऽस्मि ।

अधिकमल्पमूल्यसूचीपुस्तकानां भिन्नभिन्नविषयाणां आपणेन "श्रीवेङ्कटेश्वरसमाचार" पत्रिकायाश्चद्वारा च ज्ञेयमिति शम् ।

क्षेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) मुद्रणालयाध्यक्षः—मुंबई.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADAS, 'SHRIVENKATESHWAR'STEAM PRESS,

BOMBAY.

॥ इति श्रीमद्गर्गसंहिता भाषाटीकासहिता समाप्ता ॥